राजस्थान के जैन शास्त्र भगडारों की ग्रंथ सूची

पंचम भाग



# राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

# 💳 ग्रंथ-सूची 💳

(पंचम भाग)

(राजस्थान के विभिन्त नगरो एवं ग्रामों के ४५ शास्त्र भण्डारों में मंग्रहोत २० हजार में मी भ्रधिक पाण्डलिपियों का परिचयोत्मक विवरग् )

धाशीर्जाट

मुनि प्रवर १०० श्री विद्यानन्दर्जी महाराज

पुरादाय -

डः॰ हजारीप्रमाट द्विवेदी

माचारक

डा० कम्तरचन्द कामलीवाल

्म. ए. पी नाच. डी., शास्त्री एं० अनयचन्द्र स्यायतीर्थ

माहिस्यग्त्न

41156440

प्रकाशक

सोहनलाल सोगागी

मन्त्री:

प्रवन्ध कारिसी कमेटी

श्री दि० जैन ग्र० क्षेत्र श्रीमहावीरजी

# प्राप्ति स्थान

- १. साहित्य शोध विमाग, दि० जैन २० चेत्र श्रीमहावीरजी महाबीर मबन, सवाईमानसिंह हाईबे, जयपुर-३
- २. मैनेकर दि० जैन अ० चेत्र श्रीमहावीरजी श्रीमहावीरजी (राजस्थान)

प्रथम संस्करण वी० ति० ते० २४६६ शृज्य ४०० प्रति मार्च ७२ ४०)

# = विषय-सूची =

			•	
2	213.3	मण्डारा	कार	नामावली

२ त्यामकोय --- मोहनलाल सोगागी

३ ग्राणीर्वाद -- मृति श्री विद्यानन्द जी महाराज

४ पुरोबाक डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी

वामन्द्र एवं प्रस्तावना ग्राहि

		ग्रन्थ संख्या	पत्र संख्या
Ę	यायम मिद्धान्त एव चर्चा	= E &	3=-9
ق	दर्भ ⊓त प्राचार शास्त्र	६२२	309-09
ς	ग्रन्थातम, चितन एव योगशास्त्र	७२३	१८०-२४७
£	स्याय एक दशेन णास्त्र	१७५	२४८-२ <b>६</b> ३
90	पुरागा माहित्य	850	₹ <b>६४ -</b> 3 <b>१</b> 3
19	काव्य एवं चरित	3009	₹१४-४२•
१२	कथा साहित्य	900	४२१-५०६
\$3	ध्य करमा जास्य	२२४	¥ \$ 0 − <b>X</b> ₹ 0
**	कोश	१०५	436-AR0
१४	ज्योतिष, शकुन एव निमित्त शास्त्र	३४२	४४१-५७२
۶ę	<b>या</b> युर्वेद	२०४	५७३ ५८२
ę٩	मलकार एव छन्द शास्त्र	33	* 63~ 40 7
<b>१</b> <	नाटक एव सगीत	Ę.	307-503
₹€	लोक विज्ञान	₹ 9	६१०-६१६
२∘	मत्र शास्य	४७	६२०-६२५
₹₹	भृगार एव कामशास्त्र	3 €	६ <b>२</b> ६~ <b>६</b> २६
33	रास फागु वेलि	<b>१</b> ३२	ときゅーまだっ
₹3	इतिहाम	Хź	६५ <b>१–</b> ६५७
28	विलास एव सग्रह कृतिया	<b>१</b> 8	६४८-६८०
२४	नीति एव सुभाषित	२७३	€ <b>⊏१-७</b> ०⊏
२६	स्तोत्र साहित्य	<b>€</b> ८•	३७७-३०७
२७	पूजा एव विधान साहित्य	१६७५	<b>3</b>
	गुटका समृह	१२३५	₹891-043
38	धविशष्ट साहित्य	<b>२</b> ६६	<b>११</b> ७३- <b>१</b> २ <b>०</b> 年

२० प्रथानुकमिशिका २१ प्रथ एव प्रथकार २२ णासको की नामाविक २२ प्राम एवं नगर नामाविक २४ शुद्धाणुद्धि विवरसा

\_\_\_\_

₹२०१-१३०० १३०१-१२६४ १३६४-१३६७ १३६६-१३८० १३८१-१३८३

# शास्त्र भण्डारों की नामार्चलि

*	शास्त्र सण्डार	भ० दि० जैन मन्दिर, (बढा घडा) श्रजमेर
¥	••	दि० जैन खण्डेलवान पत्रायती मन्दिर, भ्रालवर
3	14	दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर, भ्रलवर
٧	,,	दि० जैन मन्दिर, दूनी
y	21	दि० जैन वर्षेत्वाल मन्दिर, ग्रावा
٤		दि॰ जैन मन्दिर पार्श्वनाय, बूदी
3	7.9	दि० जैन मन्दिर श्रादिनाथ, बुदी
E	,	दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्वामी, बुदी
3	21	दि० जैन मन्दिर महाबीर न्वामी, बूदी
e	0	दि॰ जैन मन्दिर नेमिनाच स्वामी, बूदी
₹	1.	दि॰ जैन मन्दिर बधेरवाल, नैरावा
0	,	दि० जैन मन्दिर तेरापथी, नैगावा
3	• •	दि० जैन मन्दिर ग्रग्नवाल, नैगावा
6	at	दि० जैन मन्दिर, द <b>बला</b> ना
×	•	दि० ौन मन्दिर पार्श्वनाष्ट, इन्दरगढ
į.	10	दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, फनेहपुर (शेखावाटी)
3	,,	दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर
S		दि० जैन मन्दिर फीश्रसम, भरतपुर
3	11	दि॰ जैन पंचायती मन्दिर, नयी डीग
10	19	ि० जैन बटी पंचायती मन्दिर, नयी डीग
ę	10	दि० जन मन्दिर, पुरानी शीम
२		दि० जॅन खण्डेलवाल प्चायती मन्दिर <b>, शामा</b>
<b>:</b>	10	दि० जैन ग्रग्याल मन्दिर, कामा
16	,,	दि० जन नेमिनाथ मन्दिर, टोडारायसिंह
¥.	19	दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, टोड <b>ारायसिह</b>
<b>( C</b>	,,	दि० जैन मन्दिर, राजमहल
ভ	•	दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा
<b>'</b> 5		दि॰ जैन पचायती मन्दिर, बयाना
3	•	दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना
	11	दि० जैन मन्दिर, वैर
8	7	दि॰ जैन ग्रग्रवाल मन्दिर, उदयपुर

<b>३</b> २	शास्त्र भण्डार	दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर
33	,,	दि० जैन सभवनाथ मण्दिर, उदयपुर
₹४	,,,	दि० जैन तेरहपथी मन्दिर, बसवा
34	••	दि० जैन पत्रायती मन्दिर, बसवा
₹	.,	दि॰ जैन मन्दिर कोटडियोंका, हूं गरपुर
३७	,,	दि० जैन मन्दिर, भ।दवा
३८	,,	दि० जैन मन्दिर चोषरियान, मालपुरा
3 €		दि० जैन भादिनाथ स्वामी, मालपुरा
¥.	•	दि० जैन मन्दिर तेरहपथी, मालपूरा
88	,	दि॰ जैन पचायती मन्दिर, करोली
४२		दि० जैन मन्दिर सोगासोयो का. करोली
<b>¥</b> 3	,,	दि० जैन कीसपयी मन्दिर, दौसा
W	,	दि॰ जैन तेरहपयी मन्दिर, दौसा
४ኣ	11	दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

\_\_\_\_

# प्रकाशकीय

दिगम्बर जैन प्रतिक्षय क्षेत्र प्रीमहाबीरकी की प्रबंधकारियी कांग्रेटी की घ्रीर से गत २४ वर्षों से साहित्य धमुस्यमा का कार्य हो रहा है। सद १६६१ में राजस्थान के जैन भारत भण्डाने की प्रंथ सूची का चनुर्य भाग प्रकाशिन हुमा था। तत्वर्णवात्र जिलादन वर्णित, राजस्थान के जैन मस्त-व्यक्तित्व एव कृतित्व, हिन्दी पद संग्रह, चैन राजस्थान है ने राजस्थान के जैन साहित्य के भोधायियों के लिखे विद्वानों की हिन्द में सभी पुस्तके महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। शास्त्र मण्डारों की प्रथ मूची पचम माग के प्रकाशनार्थ विद्वानों के प्रावह को प्यान में रुप्ते हुये घीर मणवान महाबीर की २५०० थी निर्वाण गताबित समारोह हेतु गठित प्रतिक्त भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समिति द्वारा साह शानितस्राद जी वरी घण्यस्रता में देहले प्रविद्वान में राजस्थान के जैन प्रकाशारों की सुचिया सफ्तान के कार्य को भी प्रवास स्वत् २५०० तक पूर्ण करते हेतु पारित प्रस्ताव को भी प्रमान स्वते हुये क्षेत्र कर्में से प्रय सूची के पदम भाग के प्रकाशन के कार्य को और गति दी धीर मुर्भे यह निक्की हुये समनता के सिहा भी के पदम भाग के प्रकाशन के कार्य को और गति दी धीर मुर्भ यह निक्की हुये समनता है कि महाबीर केत्र कमेटी ने दिगास्त्र प्रकाशन के कार्य को और गति दी धीर मुर्भ यह निक्की हुये समनता है कि महाबीर केत्र कमेटी ने दिगस्त्र प्रकाशन के कार्य को और गति दी धीर मुर्भ यह निक्की हुये समनता है कि महाबीर केत्र कमेटी ने दिगस्त्र प्रकाशन के कार्य को और गति दी धीर सुर्भ यह निक्की हुये समनता है कि

य स सूची के दम यचन भाग मे राजन्यान के विमिन्न नगरों व कस्वों में स्थित ४४ साहव सण्डारों के सहकृत, अद्भाज है। यदि प्रदर्शों में संबद्दीत पाष्टुनिर्पयों की सच्या को जोड़ा जाय तो इस मूची मे बीस हुजार प्रिया गया है। यदि दिवा प्रया है। यदि स्वें में संबद्दीत पाष्टुनिर्पयों की सच्या को जोड़ा जाय तो इस मूची मे बीस हुजार प्रियंत प्रया है। यदि विवास पन सूची का अहावन सम्बद्ध प्रया चटना है। ये इस्तिलिखत यां राजस्थान के प्रमुख नगर जयपुर, अजंगर, उदयपुर, इगरपुर, कोटा, बूदी, अलबर, अरतपुर, एवं प्रमुख कस्वे टोडारायित है, मानपुरा, नैएवा, उदशर, बमाना, वेर, दबलाना, फतेहपुर, दुनी राजमहल, बसबा, मादवा, दीता आदि के दिगम्बर जैन मन्दिरों में स्थापित शास्त्र मण्डागों में साहित हैं। इस्की प्रया सूचा बनाने का कार्य हमार्थ हमार्थ विवास प्रया विभाग के बिद्धान हाल करनूरच वो कासलीबाल एव प्रयुप्यत्य वी स्थायति में तथा स्थान स्थान पर जाकर प्रकाशन कर पूर्ण किया है। यह उनकी लगन एव साहित्यक कि का मुक्त है। यह मूची साहित्यक, साम्झर्तिक एव ऐतिहासिक हिट से अत्यावक महत्वपूर्ण है। य स मूची के सन्त से दी गई पहुक्तिशिक्ष एवं साहित्यक, साम्झर्तिक एव ऐतिहासिक हिट से अत्यावक महत्वपूर्ण है। य स मूची के सन्त से दी गई पहुक्तिशिक्ष एं बाची की कितनी ही प्रजात एव स्मुश्तक्व प्रवेश का प्रयम बार परिचय प्राण होगी। कोषार्थियों के लिए प्रयमिक महत्वपूर्ण सिद्ध होंगी। कोषार्थियों पर्व विद्वानों को कितनी ही प्रजात एव स्मुश्तक्व प्रयो का प्रयम बार परिचय प्राण होगा विष्य स्था मार्थ में वार प्रयम बार परिचय प्राण होगा विष्य स्था में प्रयम बार परिचय प्राण होगा विष्य स्था में का प्रयम बार परिचय प्राण होगा होगा विष्य साथ में स्था राज होगा होगा होगा हम स्थान है।

भगवान महाबीर के जीवन पर निबंद नवलराम कवि का ''बर्द्धमान पुराग्।'' कामा के शास्त्र भवार में उपलब्ध हुआ है वह १७ वी शताब्दी की इति है तथा भगवान महाबीर के जीवन से सम्बन्धित हिन्दी कृतियों में ग्राय्यिक प्राय्योन है। श्रीमहाबीर जी क्षेत्र की घोर है भगवान महाबीय के जीवन से सम्बन्धित प्रयुख हिन्दी कार्क्यों के बीद्य प्रकाशन की योजना विचारामीन है। सभी राजस्थान मे नागीर कुवामन, प्रतापनह, सानवाडा, प्रादि न्यानो के महत्वपूर्ण यंच प्रवडारों की मुची का कार्य प्रवक्तित्व है। इनकी सुची दो भागों मे समात हो जावती, ऐसा प्रावा है। इस प्रकार राजस्थान के बास्य प्रवडारों की प्रय सूची के 0 भाग प्रकाणित हो जाने के पत्थानत्व य तूची प्रकाणन की हमारी योजना भगवान महावीर की २५०० वी निर्वाण वताक्षी तक तुर्ण हो तक्षेत्री।

प्रवत्यकारिएं। कमेटी उन विभिन्न नगरों एवं कस्त्रों के गारत्र भण्डारों के व्यवस्थापकों की प्राभारी है जिन्होंने विद्वानों को प्रयासूची बनाने के कार्य में पूर्ण गहरोग प्रदान किया है। भागा है भविष्य में भी साहित्य सेवा के पूरील कार्य में उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

क्षेत्र कमेटी पूर्ण १०० गुनिवर श्री विद्यानक्षत्रों महाराज की भी भाभाशी है जिस्होने इस मूची भे प्रकासनार्थ प्रथम पुनीत सार्वीविद प्रशान करने की महत्या हुए। की है। माहित्योद्धार वे कार्य मे मुनिश्री द्वारा कुमे बराबर भेरणा मिलती रहती है। हम साहित्य का पुदंग्य विदान त्राठ हमारीप्रमादजी दिवेदी के भी मामारी है किस्होने दक्षका पुरीवाक निकास की कृषा की है।

> महाबीर भवन अथपुर

मोहनलाल सोगारणी मंत्री

## ग्राशीर्वाट

धर्म, जाति और समाज की स्थित मे जहां सस्कृति मूल कारण है, वहा उनके संबर्धन और सरकाण में साहित्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। सस्कृति एवं साहित्य दोनों ओवन और प्राण्डवायु सहण परस्परोक्षी हैं। एक के बिना दूसरे की स्थित समय नहीं। यतः दोनों का सरकाण प्रावस्थक है।

धादि युगपुरुष नीयं कर नृषभदेव से प्रवित्त दिख्य देशना ने तीयं कर बर्द मान पर्यन्त घोर ध्याविष को स्मिरना पारणा की, बहु साहित्य की हि तेन है। यदि धाल के युग से प्राचीन साहित्य हमारे बीच न होता होनार प्रतित्त हो मानार भी भाज भी बेयुल हमारि बीच न होता तो हमारा धिनत्य हो समान्त प्राच या। भारत के प्रभुत शास्त्रवाणों से प्राचा भी बेयुल हमारित्य पुरीसित है। न जाने, किन किन सहापुरुषों, धमेश्री मियों ने इस साहित्य की कैसे कैसे प्रत्यनों से रखा की। पिछले समयों से बड़े बड़े उत्तर प्रवाद घाये। मुणल साम्राज्य धौर विद्वेषियों के केस कब कितने कितने वर्षहाही संभावात चले, इनका तो धतीत इनिहाग साशी है। पर हा यह धवष्य है कि उस काल से यदि सस्कृति, साहित्य चौर धमें के प्रीमी न होते तो धाल के भण्डारों से विपुत्त साहित्य सर्वया दुनेंग होता। संतीय है कि ऐसे साहित्य पर विद्वालों का ध्यान नया धौर धव धोर धीरे तीवयनि से उसके उद्धार का कार्य जनता के समझ धाने क्या, यह मुखद प्रमा है।

राजन्यान के जास्त्र मण्डारों की ग्रथ मुची का पचम माग हमारे समक्ष है। इसके पूर्व चार मार्गो में सगरना पच्चीम हजार येथी की मुची प्रकाशित हो चुकी है। इस भाग में भी लगभग बीस हजार प्रवेशी की नामावली है। प्राप्त मार्थण, मस्हल, राजन्यानी प्रति हत्वी सभी भाषाधों में लगभग एक हजार नेलकों, भाषायों, मुनिंगो भीर विद्वानी की ज्वनाये है। इन ज्वनायों में दोहा, चौपई, रास, कानू, बेलि, सतसई, वावनी, जनक शादि के साध्यम से तन्तु, साजार विचाय एक क्या सबभी विविध या है।

श्री डा० करनूरचन्द्र कासनीवाल समाज के जाने माने गीय विद्वान हैं। मडारों के बीच कार्य पर इन्हें गी--एव. डी भी श्रान है। बृहस्भवी के उत्तर सकलन, समायन में इन्हें लगभग बीस वर्ष लग जुके हैं भीर प्रभी कार्य गेंग है। इस प्रमा में डा० साहब एवं उनके सहयोगियों को पैदल, उट गाडी व उन्हें पर सैकड़ों भीलों ते यात्रा करनी पड़ी है, उन्होंने घणक परिश्रम किया है। यह ऐसा कार्य है जो परम प्रावश्यक साथ किसड़ों में का इस पर कार्य कर में ध्यान नहीं गया डा० साहब के इस कार्य से बर्तमान एक प्रावी पीटी के शोबार्थियों को पूरा पूरा लाभ मिनेगा ऐसा हमारा विश्वास है। साथ हो तीर्य कर महावीर की २५०० वी निर्वाण बती के प्रसा में इस पर का उपयोग भीर भी वट जाता है। संथ नण्डारों में उपलब्ध तीर्थ कर महावीर सन्वस्थी धनेक पंची का उत्तरेख भी इस गुन्नों में है, जिनके घाषार पर तीर्थ कर महावीर का प्रमाणिक जीवन प्रकाश में साथा बा सकता है। धीर भी धनेक प्रथ प्रकाशित किये जा सकते हैं। समाज को इथर प्यान देना उचित है। डॉ॰ साहब का प्रशास सर्वया उपयोगी एवं प्रकृतरुणीय है। प्रस्तुत प्रकाशन के महत्वपूर्ण कार्य से श्रीमहासीरची घतिशय क्षेत्र कमेटी, उसके तत्तकालीन मंत्रियों श्री जानस्यद सिन्दुका व श्री सोहननाल सोगाएंगी के साहित्योद्धार में मक्षी भत्तक सहज ही मिल जाती है। ग्रन्थ तीर्थक्षेत्रों के प्रकच्यकों को इनका चनुकरण कर माहित्योद्धार में रुचि लेना सर्वेषा उपयोगी है। ग्रंथ संपादन के कार्य में श्री प० प्रमुपय व न्यायनीयं, साहित्यरल से द्याः माहब को पूरा पूरा सहयोग मिला है। हमारी भावना है कि समाज चीर देव दस समूच्य मूची का अधिकाधिक लाभ ने सर्वः।

विद्यानन्द मूनि

खण्जैन ३०-१२-७१

# पुरोवाक्

युक्ते राजस्थान के जैन सास्त्र मण्डारों की इस पांचवों प्रंथ सूची को देख कर बड़ी प्रसन्ना हुई । डा॰ कासलोवालजी ने विभिन्न नगरो एव प्रामी के ४४ सास्त्र मण्डारों का झालोइन करके इस प्रंथ सूची को तं यार किया है । इसमें लगमग बीस हनार पाण्डुलियों का विवरण दिया हुआ है । इस प्रंथ सूची में कुछ ऐसी महस्वपूर्ण पुस्तक भी हैं जिनका सभी तक प्रकाशन नहीं हुमा है । मुक्ते यह कहने में जरा भी सकीच नहीं है कि दा॰ कस्तूरचन्द जी एवं पं॰ स्तूरचन्द जी ने इस प्रंथ सूची का प्रकाशन करके मारो शोध कर्ताधों ग्रीर शास्त्र जिजासुओं के लिए बहुत ही महस्वपूर्ण प्रंथ दिया है । इस प्रकार की ग्रंथ सूचियों में निम्न भिन्न स्थानों में सुरक्षित और अज्ञात तथा अस्पनाता पुस्तकों का परिचय मिलता है और शोध कर्ता की अपने समीच्य मार्ग की सूचना में सहायता मिलती है । इसके पूर्व भी डा॰ कासलीवालजी ने ग्रंथ सूचियों का प्रकाशन किया है । वे इस के पूर्व भी डा॰ कासलीवालजी ने ग्रंथ सूचियों का प्रकाशन किया है । वे इस के में चुपचाप महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं । मेरा विश्वास है कि विवृत्त समाज उनके प्रयस्तों का पुरा लाभ उठाएगा ।

यद्यपि इन प्रथों की सूची जैन अण्डारों से संग्रह की गई तथापि यह नहीं समक्षता चाहिए कि इसमें केवल जैन धर्म से संबद्ध प्रथा ही है। ऐसे बहुत से प्रथा हैं जो कि जैन धर्म क्षेत्र के बाहर भी पड़ते हैं धौर कई प्रथा हिन्दी साहित्य के शोध कर्ताओं के लिए बहुत उपयोगी जान पड़ते हैं। इस महत्वपूर्ण पंथा सूची के प्रकाशन के लिए थी महाबीर तीर्थ क्षेत्र कमेटी के मन्त्री की सोहालाल जी सीगाएगी तथा डा॰ कस्तूरचन्द जी थ्रीर प॰ अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ साहित्य और विद्या प्रेमियों के हार्दिक धन्यवाद के श्रीधकारी है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराससी

# ग्रंथ सूची-एक झलक

FH	संस्था	नाम		सस्या
	?	ग्रंथ सस्या		χοχο
	२	पाण्डुलिपि सस्या		20,000
	3	ग्र <b>ंब</b> कार		१०८०
	¥	ग्राम एव नगर	•	६२०
	¥	शासकों की सस्या		१३४
	Ę	श्रक्षात एवं श्रप्रकाशित ग्रथ विवरस		<b>?</b> o o
	•	ग्रंच भण्डारों को संख्या		¥¥

#### ग्राभार

हम सबेप्रवम क्षेत्र की प्रवास कारियाी कमेटी के मंत्री माननीय सदस्यी तथा विशेषतः निवर्तमान मंत्री स्त्रीजानवन्द्र जी विस्तृका एवं वर्तमान प्रस्यक्षः श्री मोहतानात्र जी काला तथा मंत्री श्री सोहतवालजी सौगायी के प्राथारी है जिन्हीने यथ सूची के इस भाग को प्रकाणित करवाकर नारीव्य जनात् का महात् उपकार किया है। कीत्र कांस्टी द्वारा माहित्य श्रीय एवं माहित्य प्रकाणन के शेव में जो महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। वह प्रत्यिक प्रमाननीय एवं स्वापनीय है। प्राणा है भविष्यं में साहित्य प्रकाणन के कार्य की श्रीर भी प्राथमिकता मिनेयी।

हम राज्यवान के उन सभी दि० जैन मन्दिरों के व्यवस्थापकों के माभारी हैं जिस्होंने भपने यहा स्थित मानन अन्तरों की यंथ मुंबो बनाने में हमें पूर्ण महयोग दिया। बास्तव में यदि उनका सहस्रोण नहीं मिलता हो हम इस कार्य में प्रगति नहीं कर सकते थे। ऐसे व्यस्थापक महानुभावों में निम्न निवित्त सज्बनों के नाम विशेषतः उनस्वाती में है

2 37777....

उन्दर्भ गोराजन्य जी गांधी

£ 416.3 s	स्वयं त्रा नारावस्य जा गावा
	स्व० श्री रत्नलालजी कोटडिया
	मृरजमलजी नन्दलाल <i>जी खे</i> ह सर्राफ
फ्नेहपुर	श्रीबाबू गिन्नीलालजी जैन
ग्रजमर	समस्त समाज दि० जैन मन्दिर बडाधडा (भट्टारक) झजमेर
काटा	श्री द्वा० नेमीचन्द जी
	र्था स्व० ज्ञानचन्द जी
नैसवा	श्री बाबू जयकुमार जी वकील
बूदी	श्री सेठ मदनमोहन जी कासलीवाल
•	श्रीकेशरीमल जी गगवाल
दूनी	श्रीमदननाल जी
मालपुरा	श्रीसमीरमल जीब्दाबडा
टोडारायसिह—	श्रीमोहनलाल जी जैन
	श्रीरतनलाल जीजैन
भरतपुर	श्रीबा० शिखरचन्द जीगोधा
उदयपुर	श्री सेठ पत्रानाल जी जैन
3	श्री मोतीलाल जी मीडा
बयाना	श्रा रोशनलाल जी ठे <b>केदा</b> र
जयपुर	श्री मुशी गैदीलाल जी साह
	•

इस प्रवसर पर स्व॰ गुरुवर्ध प० चैनवुलदास भी सा० स्यायतीयं के चरणों में सादर अद्धान्त्रजीत स्वित है जिनकी सतत प्रराण से ही राजक्यान के इन सारक मण्डारों की ग्रंथ मूची का कार्य किया जा सका । इस दूसारे सहयोगी स्व० सुगनवन्द जी जैन की सेवाओं की भी नहीं चुना सकते जिन्होंने हमारे साथ रह कर साहत्र अध्यारों की यंव सुवी बनाने में हमे पूरा सहयोग दिया था। उनके प्रायक्तिमक स्वगंवास से साहिरियक कार्यों में हमे कार्यों की प्रमान हमें साहिरियक कार्यों में हमें कार्यों अति पढ़ ची है। हम उदीयमान शोधार्यों भी प्रमान र रावका के भी ग्रामारी है जिन्होंने ग्रथ सूची की ग्रनुकाणिकार्यं तैयार करने में पूरा सहयोग दिया है।

हिन्दी के सूर्यंत्य विद्वान् डा॰ हजारी प्रसाद जी दिवेदी के हम प्रस्यपिक ग्रामारी हैं जिन्होंने हमारे निवेदन पर य'य सूची पर पूरोबाक् सिवाने की महती कुपा की हैं। जेन साहित्य की घोर शायकी विशेष क्वि रही हैं ग्रीर हमें शाशा है कि भ्रापकी अरेग्या से हिन्दी के उतिहास में जेन विद्वानों की कृतियों को उचित स्वान प्राप्त होगा।

राष्ट्रसत मुनिप्रवर श्री विद्यान दश्री महाराज का हम किन शब्दों में साभार प्रकट कर । मुनि श्री कर भाषीर्वाद हो हमारी साहित्यक साधना का सबल है।

१-१-७२

कस्तूरचन्द कासलीवाल ग्रनूपचन्दन्यायतीर्थ

#### grataat

राजस्थान एक विशास प्रदेश है। इसकी यह विशासता केवल को शक्त की हरिट से ही नहीं है किन्तु साहित्यक, सास्कृतिक एव ऐतिहासिक हरिट से भी राजस्थान की गरमृता सर्वोपिर है। जिस प्रकार यहां के बीर शासकों एव योड़ाकों ने अपने बहादुरी के कार्यों से वेश के इतिहास को नयी दिवा प्रयान करने में महत्वपूर्ण योग दिया है उसी प्रकार यहां के साहित्य सेवी समुचे भारत का गौरस्थय वातावरण, बनाने से सक्षान रहे यो यहां की सरहित भारत की प्राप्ता है जो प्रहित्ता, सहस्रस्तित्व एव समस्य की भावना ने योतप्रीत है। यही कारण है कि इस प्रदेश में युद के स्थय में भी शांति रही और दस्त्री वर्ष भारतीय सरहित के विकास में अपना योग देत रहे। भारतीय साहित्य के विकास में, उसकी मुग्का एव प्रचार प्रसार में राजस्थानवासियों का महत्र्यपूर्ण योगदान रहा। सरहत्त भाषा के साथ-साथ यहा के निवासियों ने प्राकृत, प्रपन्न सा, हिन्दी, राजस्थानी एव गुवारानी के विकास में भी सर्वाधिक योग दिया। राजस्थानी यहा की अन भाषा रही और उसके माध्यम से हिन्दी का सूब विकास हुआ। इसीनिये हिन्दी के प्रवीननम कवियों सी हतिया यहीं के प्रधानारों में उपसक्त

राजस्थान के मान्य भण्डारों का यदि मुस्ताकन किया जादे तो हमारे पूर्वजों को बुद्धिमला एव उनके साहित्यक प्रेम की जितनी भी प्रणवा को आवे वहीं कम रहेगी। उन्होंने समय की पति को पहिचाना, साहित्य का संघट कर निया । उसने मुस्ता की घोर भी श्वान दिया घोर चीरे-पीर लाकों की संख्या में पाश्वितियों का संघट कर निया। मुसनिय मानन काल में जिस प्रकार कहाने साहित्यक घरोहर को प्रणवा में पाश्वितियों प्रधिक प्रिय समक्त कर पुरक्षित रखा वह प्राज एक कहानी बन गयी है। यहा के मासक एवं जनता दोनों ने ही मिल कर अपका से साहित्य की प्रमुख्य निर्मित को नियर होने से बचा निया। इसिवये यहां के मासकों ने बहा मिल कर अपका से साहित्य की प्रमुख्य निर्मित को क्या राज्य स्तर पर घ का सहस्तायों एवं प्रीक्षालों की स्थादना की, बहा यहा की जनता से प्रपन-प्रभा मन्दिरों एवं निया मान्यों पर भी पाश्वितियों का प्रपूर्व मयह किया। बीकानेर की प्रपूर संस्कृत लायक री एवं जयपुर का पोधीलाना जिस प्रकार प्राचीन पाश्वितियों के प्यपूर्व के मिल ये विकास किया है उसी प्रकार नागीर, जैसनमर, प्रजमर, प्रामेर, बीकानेर एवं उदयपुर के जैन प्रथालय भी इस शिवर में सर्वितियों के प्रसुत के स्वान प्रथा है कि प्रभी गत २० वर्षों में इस समझालयों को जो दिस मुख्य सामे मार्गी है उनसे विद्वान गए। इस भीर प्राकृत्य ही से से में है और अब वर्ष में मैं में सुर्गीत सामित्य का अपनी होने लगे है।

जनता द्वारा स्थापित राजस्थान के इन गास्त्र भण्डारों में जैन ग्रास्त्र भण्डारों की सबसे बडी संस्था है। ये ज्ञास्त्र भण्डार राजस्थान के सभी प्रमुख नगरों एवं कस्बों में मिलते हैं। यद्यपि द्वामी तक इन ग्रास्त्र जण्डारों की पूरी सुबी तैयाद नहीं हो सकी है। मैंने सपने Jain Granth Bhandars in Rajasthan में ऐसे १०० ग्रास्त्र भण्डारों का परिचय दिया है लेकिन उसके पत्र्यात् स्रीर भी कितने ही प्रायागारों का सन्तित्व हुमारे सामने आया है, इसिनवे राजस्थान में दिगन्वर एव द्वेतास्वर शास्त्र भण्डारों की संस्था की जावे तो वह २०० से कम नहीं होनी चाहिय । व्वेतास्वर शास्त्र मण्डारों की ग्रंथ मूचिया एव उत्तर सामाय्य परिचय तो बहुत पहिले मूनि पुण्यिवस्य की, मुनि जिनिकायको एवं श्री प्रत्यक्ष तो नाहुद प्रभूति (बिद्धाने ने साहित्यक ज्यात को दे दिवा या नेकिन दियास्त्र की माहित्य कि सारक्ष के प्रत्य मुनि दिवा या नेकिन दियास्त्र जैन महित्रों में स्थापित शास्त्र भण्डारों का गरिक्य देने एवं जनको यथ सूची वताने का कार्य अनेक प्रयत्न के बावड़ तात्र १९४७ के पूर्व तक मोजना बढ तरीके से प्रारम्भ नहीं किया जा कार्य प्रति प्रत्य के प्रवाद की शास्त्रों, स्व० पं० जुगनिकशोर जो मुख्तार एवं अद्येत स्व० पं० जैनमुक्दासकी स्थापनी थे हार सुक्तार एवं अद्येत स्व० पं० जैनमुक्दासकी स्थापनी के कार्य प्रारम्भ नहीं किया जा सका । साबित प० जैनमुक्दासकी स्थापनी के बार बार प्रेरणाओं के कत्वस्त्र की स्वाधी स्वर्ध के तत्कालीन मंत्री भी रामचन्द्रशी सा० विद्वा को हार बार प्रेरणाओं के कत्वस्त्र की खोर से साहित्य शोध विमान की स्वापना की गयी। इस प्रकार दिगम्बर जैन मन्दिरों में स्वित शास्त्र मण्डारों की प्रयंत्र सूची का कार्य प्रारम्भ हुमा। इसके पश्चात्र पंच सूचियों के प्रकारण का कार्य प्रारम किया गया भी से सन्त स्वर्ध प्रथम राजस्वान के जैन साहत्र प्रयत्त तीन प्रारम की प्रया सूची ) प्रकाशित हुणा । इसके पश्चात्र तीन भाग धीर प्रकार ही चुके हैं जिनमें बीस कुणार से भी विषक प्रयो का राचियात्रक विवरण दिवा जा चुका है।

प्रथ सुनी का पाषवा माग विद्वानो एव पाठको के समक्ष प्रस्तुत है। इपये अयपुर नगर के बाहव मण्डार दि० जैन मन्दिर लक्कर के मिरिक्त सभी शास्त्र भण्डार राजस्थान के विभिन्न नगरों एव कस्त्रों में स्वर्श है। प्रस्तुत भाग में ४५ णाइन भण्डाने में सम्बद्धीत २० हजार के भी मिषिक गण्डुनिर्मिण का परिचयात्मक विवस्त प्रदिय नाम है। एक ही भाग में इतनी घषिक पण्डुनिर्मिणों का परिचय देने हा हमारा यह प्रथम अपने हैं। इन शास्त्र भण्डारों की सूचीकरएण के कार्य में हमें दक वर्ष में भी मिष्क समय लगा। एक एक भण्डार को देखना, वहां के पंथों की पुत्त सांक करना, उन्हें मूची बढ़ करना, अस्तव्यक्त पत्रों को अवस्थित करना, पुराने एवं जीर्म प्रीमाण वेदनी के अवस्थित करना, पुराने एवं जीर्म प्रमाण के स्वर्धित करना, पुराने एवं जीर्म प्रमाण के प्रमाण के स्वर्धित करना, पुराने एवं जीर्म प्रमाण के स्वर्धित करना, पुराने एवं जीर्म प्रमाण के स्वर्धित करना, प्रहान प्रमाण के स्वर्धित करना, प्रहान प्रमाण के स्वर्धित करना, प्रहान के प्रमाण के स्वर्धित करना, प्रमाण के स्वर्धित करना प्रमाण के स्वर्धित करा कि स्वर्धित करना प्रमाण के स्वर्धित करा स्वर्धित स्वर्धित करा स्वर्धित करा स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित करा स्वर्धित करा स्वर्धित स्वर्धित करा स्वर्धित करा स्वर्धित स्वर्ध

हम यं च जूनों में बीस हशर पाण्डुनिषियों के परिचय के प्रतिशिक मेंकटो प्रच प्रशिक्तियों, तलक प्रवित्तियों ते वा प्रवित्तियों का परिचय का दिवानों को इसका पदा बात नाम किया हि मैकडी प्रचा का किया कि प्रवित्तियों का परिचय का दिवानों को इसका पदा लगा नाम के मा कि मैकडी प्रचा की कितनों ने पहुं जिनकी पाण्डुनिष्या राज स्वान के प्राय: सभी शास्त्र मण्डुनिष्या को ताक प्रयोग में चा कुछ तेने प्रच है जिनकी पाण्डुनिष्या राज स्वान के प्राय: सभी शास्त्र मण्डाों में उपलब्ध होती है जो उनकी नोकप्रियता की शांत्रक है। स्वय प्रचक्तारों की प्राय: सभी शास्त्र मण्डाों में उपलब्ध होती है जो उनकी नोकप्रियता की शांत्रक है। स्वय प्रचक्तारों की प्रमुख पाण्डुनिष्यों के शांत्रक है। समय प्रचक्तारों की प्रमुख पाण्डुनिष्यों के शांत्रक पर प्रकाशन के समय पाठ में ते बात हुन कार्य कम हो कार्या गरी पाठ की प्रमाणिकता में उद्योग हुन ही करना परेगा। महाप्तित ही उद्योग के प्रायानुशासन भाषा की विभिन्न मण्डारों में ४ म प्रवितिष्या सप्रशित है इसी प्रकार मनेह्रदशस्त्र के प्रायानुशासन भाषा की विभन्न मण्डारों में ४ म प्रवितिष्या सप्रशित है इसी प्रकार मनेह्रदशस्त्र कोती की प्रमंत्रीला की ४० पाण्डुनिष्यां, जिल्लीवह के कियाकोश्य की ४५, शास्त्रस्थ के चार्यानुलक्त की ३००

प्यतिन्य पंचीवक्षति की ३५, ऋष मदास निगोरया के सुलावार भाषा की ३३, ग्रुपवन्द्र के जानाएंच की ३५, भूवरदास के व्यविस्ताधान की २६ पाण्डुलिपियां उपलब्ध हुई हैं। सबसे प्रधिक सहाकवि भूवरदास के पाक्ष्युंत्राएं की पाण्डुलिपियां हैं जिनको सम्या ७३ है। पाण्डुलिपियां क्षेत्र के सिक्त प्रधिक सहाकवि भूवरदास के पाक्ष्युंत्राएं को समाज में कितना क्षित्र भ्रवार या और स्वाध्याय भ्रे में इसका कितनी उत्सुकता से स्वाध्याय करते होंग यह इस पाण्डुलिपियां की सक्या से अच्छी तर जाना का सकता है। पाण्डुल्यों को सब्दे प्राचीन समुत्र १७६४ की है जो प्रवान काल के पांच वर्ष परकात ही लिखी गयी थी। इसी तरह मुक्त भाग में एक हवार से भी अधिक प्रध प्रधानिया एवं लेक्क प्रधानियां भी दी गयी हैं जिनमें कि एव काथ्य परिचय के खितिन्त किननी ही ऐनिहासिक तथ्यों की जानकारी मिलती है। इतिहास लेकन में ये प्रशान्या प्रयाविक महत्वपूर्ण महायक सिद्ध होती है। उनमें जो तिथि, काल, वार नगर एवं शासकों का प्रभान मानेल्य किया वे स्वा है अप स्व प्रधानिक प्रधानिक के स्व प्रस्तुत्र या सूची में से सकड़े शासकों का उल्लेख है जिनमे केन्द्रीय, प्रान्तीय एव प्राविक्ष मिलता है जोन केन्द्रीय, प्रान्तीय एव प्राविक्ष मिलता है जो इतिहास की दिन्त से हिन्द से स्वप्ति का नहत्वपूर्ण है।

इस भाग में राकस्थान के विकास नगरों जब धामों में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरों में संग्रहीन ४५ लाइन मण्डारों की हस्तिनिंदन पाणुनिर्मियों का परिवार दिया गया है। ये जाइन मण्डार छोटे बड़े सभी नगर के हैं। कुछ ऐने य मण्डार है जिसे से हजार से भी म्रायक पाणुनिर्मियों का परिवार है कि हम हम्बिता है कहा कुछ काइन मण्डारों में १०० से भी कम इस्तिनित या वहें। इन सण्डारों के ध्वनोकत के पच्चान इता जा कहा जा सकता है कि १४ वां जाताव्दी से लेकर १० वीं जाताव्दी तक या यो की प्रतिनिध्य तथा उनके सम्रह का प्रत्यिक और रहा। मुझिनेम नाल में प्रतिक्रित की गयी पाणुनिर्मियों को सबसे प्रतिक्र सस्या है। या अध्वारों के विचे इन जाताव्दियों को ३० वनका स्वर्गत काल सकत है। धामेर, नागीन, प्रजमेर, सामया हा, माम, मोजमाबाद, वृद्धी टोडामर्मिट, जनाविद्धों में स्थापित किये गोर घीर इन्ही दानों पर वर्षों को तेजी से प्रतिनिधित की गयी। यह पुन पहारक सम्बा का क्यां पुन या। माहित्य लेकन एवं उनकी मुरक्का एवं प्रवार प्रतिनिधित की गयी। यह पुन पहारक सम्बा का व्याप्त किसी माधु मस्वा एवं समाज का नहीं रहा। महारक सक्तिनीत से लेकर १० वी जानावित कहीं वोले महारक सम्बा का स्वार्ण पुन या। महित्य प्रवार किया योगदान रहा उतना योगदान हिसी साधु मस्वा एवं समाज का नहीं रहा। महारक सक्तिनीति से लेकर १० वी जानावित तक होने वाले भहारक के प्रति समाज का नहीं रहा। महारक स्वार्ण प्रवार किया योगदान रहा उतना योगदान किसी साधु मस्वा एवं समाज का नहीं रहा। महारक सक्तिनीति से लेकर १० वी जानावित कहीं वाले भी ने का प्रवार किया योगदान रहा वाल के कि इस को राम्पा के का प्रवार किया योगदान का किया स्वीत का वाल की इस घोर मोडने का प्रयान किया।

लेकिन राजण्यान में सहायदित टोडरमल जो के क'लिकारी विचारों के कारण इस सस्या को जबरदरन आयान पहुंचा और फिर साहित्य लेलन का कार्य अवरुद्ध साहो गया। जयपुर नगर ने सारे जैन समाज का मार्गदर्शन दिया और यहां पर होने वाले प० बौलतराम कासलीवाल, प० टोडरमल, मार्ड रायमल, प० जयचन्द्र छाइड़ा, प० सदामुखदान कासनीवाल जैने विदानों को कृतियों की पण्डुलिपिया तो होती रही किन्तु प्राकृत, सरकृत, अपभांत एव हिन्दी राजस्यानी माया कृतियों को सर्वेषा उपेका कर दी गयी। यही नहीं यों को सुरक्षा की छोती की मार्थ में स्थान कर दी गयी। यही नहीं यों को सुरक्षा की छोती में कोई छान नहीं दिया गया। भीर हमारी इसी उपेका वृत्ति से अय अवहारी के ताले लगा गये। सैकडों अय चूहों और दीमकों के लिकार हो गये धीर संस्कृत एव प्राकृत की हुआरों पाइदिलियों को नहीं समझ सकने के कारण जब प्रवाहित कर दिया गया।

लेकिन गत २५-३० वर्षों से समाज से एक पुनः साहित्यिक चेतना जामत हुई मीर साहित्य पुरक्षा एव उसके प्रकाशन की मोर उनका ध्यान जाने लगा। यही कारण है कि माज सारे देश में पुनः जैन मंबाकारों के यह सूचियों की मांग होने लगी है। क्योंकि प्रारंगिक सन्वामों का महस्वपूर्ण सपह प्राज भी इन्हीं भण्डारों में मुरावित है। विश्वविद्यालयों में जैन झावायों एवं उनके साहित्य पर रिसर्च होने लगी है क्योंकि धाव के विद्वान एवं लोकार्या समायां की परिष से निकल कर कुछ काम करना चाहता है। इसनिये ऐसे समय में यथ मूचियों का प्रकाशन एक महस्वपूर्ण कार्य है। प्रस्तुत ग्र य सूची में राजस्थान के जिन सास्य मण्डारों का विवरण विद्या गया है उनका परिचय निमन प्रकार है—

#### शास्त्र मण्डार मद्रारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर

अट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रवसेर का णास्त्र मण्डार राजस्थान के प्राचीनतम यथ मण्डारों में से एक हैं। इस प्रथ मण्डार की स्थापना कर हुई थी इसकी तो प्रभी तक निश्चित लोज नहीं हो सकी है किन्तु यदि भुट्टाकों की गादी के साथ शास्त्र भण्डारों की स्थापना का सबय जोडा जावें तो यहां का णास्त्र भण्डार रेर वी खताब्दों में ही स्थापित हो जाना चाहिये, ऐसी हमारी मान्यता है। क्योंकि सबत ११६६ में मट्टारक विकाल कीति प्रथम भट्टारक के क्या में यहां की गादी पर बंदे थे। इसके पश्चान १६ भी जताब्दी से तो प्रवस्त स्थापक योग हिला की स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप

इस मण्डार को सर्व प्रयम स्व० श्री जुगलिक शोरजी मुख्तार एवं प० परमानः देवी शस्त्री ने यहां कुछ समय ठहरकर देखा था किन्तु वे इस की ग्रंथ सूची नहीं बना पाये इसलिए इसके पण्डार्श दिसम्बर्ग १६४ = में हम लोग वहां गये भीर पुरे शाठ दिन तक ठहर कर इस मण्डार की ग्रंथ सूची नैयार की।

इस मण्डार में २०१५ हस्तिलित प्रथ एवं गुटके हैं। कुछ एसे प्रश्नेण व गृहर पत्र वालं घ प्रभी है जो सब्दूकों में महे हुए हैं। विकित समयानाव के कारण उन्हें नहीं देवा जा. मका ! शाहन भण्डार प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्रयाप्त ग एवं हिस्से इन वारे भाषाओं के ही चक्कें प्रच है। इनसे प्रार्थन पहिल्लिय समयसार प्राप्त की है जो सबन १८४३ की निक्षों हुई है। यह प्राप्त नामार ग व व है छोर सावस्य कुरकृत की सीलक कृति है। इसके प्रतिश्चित समयसार प्राप्त नामार वर्मामृत (सावाधर), पर्मवरीका (प्राप्त वालं), मृह्याल विष्य (१०० तक कोति) की प्राप्तीन पार्तिवाक कृति है। इसके प्रतिश्च का प्रप्याप्त वालं विषय त्र) सावस्य (१०० तक कोति) की प्राप्तीन पार्तिवाक है। इस पर्व पाशाधर का प्रप्याप्त रहत्व प्राप्त विषय त्र भाषा (१०० तक कोति) की प्राप्तीन वालं विषय है। सहा पर पाशाधर का प्रप्यप्त रहत्व प्राप्त की सावसार त्र के प्रतिश्च की की प्राप्त की सावसार है। हो पर प्राप्त की प्राप्त की की सावसार है। हो पर प्राप्त की प्राप्त की हो प्रप्त की सावसार है। हो प्राप्त की प्राप्त की प्रतिश्च की की प्राप्त की प्राप्त की प्राप्त की प्रतिश्व की सावसार की सावसार के प्रति की सील की सील की प्रति की सील की सील की सील की पार्ट की सावसार की सावसार के सावसार की सावसार की सावसार की सील पार्त की पार्व की पार्व की पार्व की पार्व की पार्व की सावसार की सावसार की सील पार्व की की पार्व की की पार्व की पार्व की पार्व की की पार्व की की पार्व की की पार्व की पार्व की की पार्व की पार्व की पार्व की की पार्व की की पार्व की पार्व की की पार्व की की पार्व की की पार्व की पार्व की की पार्व की की पार्व की की पार्व की पार्व की की पार्व की पार्व की पार्व की पार्व की की पार्व की की पार्व की की पार्व की पार्व की की पार्व की पार्व की पार्व की की पार

जीवन एवं द्यापु के सम्बन्ध में विशेष प्रकाश पड़ता है। यदि इस प्रकारित का सम्बन्ध प० टोडरमनजी से ही है तो किर टोडरमजजी की ब्रापु के सम्बन्ध में सभी मान्यताए (पारणाएं) गलत सिद्ध हो जाती हैं। यदि सबत् १७८२ में पंडितती की ब्रापु १५-१६ वर्ष की भी मान लें जावे तो उनके जीवन की नयी कहानी प्रारम्म हो जाती है, और उनकी मापु २५-२६ वर्ष की न रहकर ५० वर्ष से भी अपर पहुंच जाती है जैकिन प्रभी इस की को जोती है जीरा जेगर है।

#### ग्रस्टर

अलवर प्रान्त का नाम पहिले मन्स्य प्रदेश वाजो महाभारत कालीन राजा विराट का राज्य था। मुझेरी के नाम से सब भी गहा एक प्राप्त है। जो मत्स्य का हो अपन्न मा सब्द है। सही कारए है कि राजस्थान निर्माण के पूर्व भनवर, मरतपुर, यौजपुर और करीनी राज्यों के एक पर्राण के पथ्यात इस प्रदेश का नाम सस्य देश रच्या गया था। १६ वीं जताक्षी के पूर्व भनवर भी जबपुर के राज्य में सम्मितन या लेकिन महाराजा प्रतायिक ने ज्यापना स्वत्य स्वापन स्वापन किया और उसका प्रताय नाम दिया। अलवर नगर और देशनी जयपुर के मध्य में बसा हवा है।

जैन साहित्य ग्रीर सम्हिन का भी ग्रनकार प्रदेग प्रच्छा केन्द्र रहा है। इन प्रदेश में प्रनकार के श्रतिरिक्त निजारा, पजनगढ़ राजगढ़, धादि प्राचीन स्थान हैं और जिनमें सास्त्र प्रण्डार भी स्थापित हैं। यहां अ मन्दिर है श्रीर सभी में यंग मण्डार है। सबसे प्रविक्त ग्रंथ सण्डेलनाल पंचायती मदिर में है दिल जैन सण्डेलनाल पंचायती मदिर में भक्तामर स्त्रीज एवं त्यापंत्र की स्वर्णाक्षरी प्रतिग्री है जो कका की हिंदर संदल्लनीय है। जववुर के महाराजा सबार्ट प्रतापसिट द्वारा निवित्त ग्रायुवेदिक ग्रंथ प्रमृतसागर की भी एक उत्तम प्रति है इनका निवन काल मल १७३१ है। सण्डेलनाल पंचायती मदिर के साहज भण्डार में २११ हस्तानिकार ग्रंथ गढ़ ४६ मुटले हैं जिनके घायास बारह्मछ (दीनतराम कासनीवाल), ग्रंथीपर चरित (सी. राजर) राजवानिक (भट्टावर्लक) की प्रतिथा विजयत उल्लेकनीय है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन मंदिर दूनी

जयपुर में देवली जाने बाली सड़क पर स्थित दूनी एक प्राचीन कस्वा है। यह टांक से १२ मील गय देवली से ६ मील है। जयपुर राज्य का यह बागीरी गाय था जिसके छातुर राज्य का कहलाते थे। यहां एक दिन जैन मिर है। मिर के एक माग पर एक जो लेल ज किन है उसके जनुसार इस मिर र का निर्माण संव १४८५ में हला या घोर स्तीलिये यहां का येथ भण्डार भी उसी समय का स्थापिन किया हुआ है। यहां के प्रथ मण्डार में १४३ हस्त लिखत ज य हैं। जिनमे प्रधिकां घा येथ हिन्दी भाग के है। जम भण्डार में सबसे प्राचीन पण्डुलिपि संवत् १५०० में लिपि की हुई जिनदस कथा है। जियासागार की हिन्दी रणनाएं मी यहां संयहीत हैं जिनसे सोलह स्वप्त, जिनराज महोत्यत, अपनव्यतन सर्वेगा, धादि के नाम स्लेलवानीय हैं। इसी तरह लानुगाह का भूतमा, या कवि का 'राजुन का बारह मामा' हिन्दी की प्रजात रचनाएं हैं।

संग कवि पर्वत बर्मार्थी के पुत्र थे। सङ्गरक जुभचन्द्र के जीवपर स्वामी चरित्र की सबत् १६१४ में तिस्त्री हुई पाण्डुलिपि भी उल्लेखनीय है। बाग्र कवि कृत कलियुगचरित्र (संबद् १६७४) की हिम्दी की घच्छी कति है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जेन बधेरवाल संदिर धावां

टींक प्रांत का बाबों एक प्राचीन नगर है। साहित्य एवं संस्कृति की हृष्टि से १६-१० वीं जनाव्दी में यह पीरव दूरी एसान रहा। चारी घोर छोटी र पहास्थितों के प्रध्य में पित होने के कारण जैन सामुर्थों के सिल्य के प्रवास करने का यह एक प्रच्छा केन्द्र रहा। संवद् १९६२ में यहा महलाव्या प्रमेतीत के नेतृत्व में एक विच्य प्रतिकृत करने का यह एक प्रच्या केन एक विच्य प्रतिकृत के महित्य से प्रकृति के नेतृत्व में एक विच्य प्रतिकृति के शासन की प्रणंता की गयी है इसी लेख में महाराजा पृथ्वीराज के नाम के का उल्लेख हुआ है। नगर के बाहर सतीय ही छोटी सी गहाडी पर सन प्रभावन्द्र मन जिनवन्द्र एव भन प्रयंचन्द्र की तीन नियंधिकाए हैं जिनवर लेख भी घर्षित है। ऐसी निर्थिकाए इस क्षेत्र में प्रथम कार उपलब्ध हुई है जो प्रयंचे वृग में मुद्राहकों के जबरदस्त प्रभाव की धीक है।

यहां दो मदिर हैं एक बधेरवाल दि० जैन मदिर तथा दूसरा खण्डेलनाल दि० जैन मदिर । दोनी ही मदिरों में हस्तिलिखित प्रयों का उल्लेखनीय सगह नही है केवल स्वाध्याय में काम प्राने वाले प्रत्य ही उपलब्ध हैं।

बूं दी

बूदी राजस्थान का प्राचीन नगर है जो प्राचीन काल के बृत्यावती में नाम से प्रसिद्ध था। कोटा से बीस मील परिचम की घोर रिस्त बूदी एक मालाबाड़ का बीर हाडोती प्रदेश कहवाता है। मुगलवासन में वृदी के गासको का देश की राजस्थान की राजनीति में विशेष न्यान रहा। माहित्यक एक मांस्कृतिक हुन्दिन मी ९७ वी १६ वीं एवं १६ थीं जनावदी में यहां पर्योग्त माजितिया चलती रही। १७ वी जनावदी में होने वाले जैन कि प्रधानामें बूदी वा निम्न जाब्दी में उल्लेख किया है—

> बूदी ध्रष्टपुरी जिस्तपुरी कि कुनेरगुरी रिद्धि सिद्धि परी द्वारिक काली गरीधर से धोमहर पाम, घर घर विचित्र याम नर कालवेज जैसे सेवं मुख्य सर से वापी बाग बाकगा बाजार बीणी विद्या बेट विक्यु विशोद थानी कोने मूलि नर से सहा करे राज भावस्यक्ष महाराज हिन्दू पर्यसाज पानसाहि साज कर से

१८ वीं शताब्दी में कबि दिलाराम और हीरा के नाम उल्लेखनीय है। बूदी नगर मे ५ यस्य भण्डार हैं जिनके नाम निम्न प्रकार है—

१ ग्रंथ भण्डार दि जैन मदिर पार्श्वनाथ

२ ., ग्राहिनाथ ४ . म्रिनन्दन स्वामी

४ ., महावीर स्वामी

५ ,, , नागदी (नेमिनाथ)

#### ग्रंच मण्डार वि० जैन मन्दिर पार्श्वनाच

इस मण्डार में २३४ हस्तिमित्तत ग्रंथ एव गुटके हैं। प्रविकांत ग्रंथ संस्कृत एवं हिन्दी भाषा के हैं तथा पूजा, कथा प्रवान एव स्तीत व्याकरण, विषयक हैं। इस भण्डार में बद्धा जिनदास विरोखत' रामजन्द राव' की एक मुक्टर राण्डामित है। इसी तरह सक्तामरस्तीत हिन्दी गद्य टीका की प्रति भी यहां उपलब्ध हुई है जो हेसराज कृत है।

#### गंथ मण्डार दि० जैन संदिर धादिनाथ

इस मन्दिर के ग्रथ भण्डार में १६८ हस्तिनिखित येथों का संग्रह है इस सबह में ज्योतिव रस्तमाला की सबसे प्राचीन प्रतिनिधि है जो सबन् १४१६ में निधि की गई थी। इसी तरह सागारवर्मामुन, जिलोकसार एव उपदेशमाला की भी प्राचीन प्रतिया है।

#### ग्रंथ भण्डार दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्वामी

इस स्रव भण्डार में २६८ हस्तिनिक्त यंथों का संबह है। यह मदिर महारकों का केन्द्र रहा था मेर यहां महारक गादी भी थी, और समस्तः इसी कारण यहां यदों का सम्ब्रास्थ है। मण्डार से प्रयाभ स भागा की कृति 'करकण्ड चरिज की' प्रमुण प्रति है जो सस्कृत टीका सहित है। सबह सम्ब्राह तथा प्रयो की प्राचीन प्रतिया भी उन्तेयनीय हैं।

#### प्रथ मण्डार दि० जैन मंदिर महाबोर स्वामी

यह मन्दिर विदानों का केन्द्र रहा है। यहां के प्रयोक्त प्रसिक्षण संघट हिन्दी भाषा के प्रयों का है। इनमें पुरास, कथा, पूत्रा एवं स्तोत्र साहित्य का बाहुत्य है। प्रयोकी मध्या गुरकों सहित १७२ है। प्रविकाल प्रय १८-१६ वी सलाब्दी के हैं।

#### ग्रंथ मण्डार दि० जैन संदिर नागदी (नेमिनाथ)

तीमनाय के मदिर में स्थित यह यंथ प्रध्वार नगर का महत्ववृक्षं भण्डार है। यहां पूर्ण यथों की मध्या २२२ है जो मधी प्रध्नी दशा मे हैं। लेकिन कुछ यथ प्रपूर्ण सवस्था में हैं जिनके पत्र इयर उत्तर हो गये हैं इस सदहालय में 'साध्वानत प्रवार्थ जो गोकुत के सुत नरसी की हिन्दी कृति है, की सवद ९६४६ को घण्डी प्रति है। श्रें सिक चरित (र० काल म० १०२४-रीलत पोमेरी) जनुर्यतिनाटक (हाल्राम), घाराधनासार (विमतकीर्ति), मध्यत पुरासा (श्रीधर) घारि के नाम जल्लेलानीय हैं। इस संग्रह में एक गुटके में बूचराज कवि की हिन्दी रचनामों का प्रच्छा संग्रह है।

इस प्रकार ब दी नगर में हस्तलिखित ग्रंथों का महत्वपूर्ण सग्रह हैं।

#### नैरावा

हूं दी प्रात का नैसाबा एक प्राचीन नगर है ओ चूदी से २२ मील है ग्रीर रोड से जुड़ा हुमा है। यह नगर प्रारम्भ से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। उपलब्ध हस्त्रांसिलत य थों में प्रयानवरित की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है जो सन् १४६१ में इसी नगर निक्षी गई थी। महारक सकलकीति के गुर घट्टारक प्रथान या आरेद सकलकीति ने प्राठ क्ये यही रह कर उनते सिक्षा प्रारत की थी। महारक परानित्व द्वारा प्रधान था और सकलकीति ने प्राठ क्ये यही रह कर उनते सिक्षा प्रारत की थी। महारक परानित्व द्वारा प्रधान प्रधान के अतिक से सहर को देश है के बाहर जैन निवाम में वित्त के सहरक को देश है के क्यों के का किया है। इसी तरह जन १७१६ में कैमवित्व कांवि में महार कोई है। उसी होन जैन मिन्टर है और इन तीनों में करीब २२० हस्तिनिश्चत प्रंचों का सहर है। लेकिन यहां पर प्रतिनिध्यों निवेद हुए यह बाज भी हूँ दी, कोटा, उवनाना, इन्दरात, सामेर, ज्यापुर, परतपुर एवं कामां के भण्डारों में उपलब्ध सेता की सामे प्रधान में साम किया है। तिका निविद्या जयपुर में प्रधान के अपनी पायुक्त स्वाचित्व में प्रधान के सामे प्रधान में प्रधान के सामे प्रधान प्रधान प्रधान प्रधान प्रधान प्रधान प्रधान प्रधान के सामे प्रधान प्रधान

#### शास्त्र मण्डार हि० जैन बहेरवाल छोत्र

यह यहां का प्राचीन एवं प्रसिद्ध मन्दिर है जिसके आरंत्र भण्डार में १०४ हस्तिचितित ग्रंबों का सम्बद्ध है। सभी घंच सामान्य विषयों से सम्बन्धित है। इसी मण्डार में एक गुठका भी है जिसमें हिन्दी की कितनी ही प्रज्ञात रचनाओं का संग्रह है। कुछ रचनाओं के नाम निग्न प्रकार है—

सारसीखामिए रास	मट्टारक सकलकीति	१५ वी मताब्दी
नेमिराजमतिगीत	बहा यशोधर	१६ वी शताब्दी
पञ्चेन्द्रियगीत	जिनसेन	,,
नेमिराजर्मात वेलि	सिहदास	"
वैशस्य गीत	वद्यायकोधर	**

#### शास्त्र भण्डार वि० जैन तेरावंथी मन्दिर

इस ब्राह्म भण्डार में पुरास, पूत्रा, कथा एवं चरित सम्बन्धी रचनाची का मध्य सिन्ता है। एट्टिंग सफलहोति के लिख श्री लालकर द्वारा विसित सम्मेदिलियर दूता की एक प्रति हंत्रों भवत रूप १८८२ में १८०. नगर में छर्पोबद की गयी थी। यहां नीत मन्त्र हैं जो कपटे पर जिसे हुए है। फ्रियडल मन गवन् १८८८ का विका हुमा है। तथा १२८२६ इस्त्र बाने आकार का है। मत्र गर्दा हुई प्रदास्त निस्त प्रतार है—

श्री श्री श्री श्री शुक्षचन्द्रमृतिस्थीनमः । प्रश्न सबत्यरेतिमन् श्री नृतविक्रमादित्य गताब्दः सबन् १५८५ वर्षे कानिक बदी रे शुक्ष दिने श्री रिचीमडल यत्र बदा प्रण्ड्योग्य प० प्रहर्तिन क्रियाप० ग्रहमन्तेन निश्चित यत्र भवतु । बृहर् विद्वचक यत्र वा लेखन काल सबन् १६१८ है सीर सम्मेचक यत्र कालेखन काल सबन् १६७८ है ।

### ग्रंथ मण्डार दि० जैन सग्रवाल मन्दिर

इस मन्दिर में कोई उल्लेखनीय संग्रह नहीं है। केवल २७ पाण्डलिश्यि हैं जो पुराण एवं क्या में सम्बन्धित है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन मंदिर दक्षलाना

बूँदी से १० मीन पश्चिम की धोर स्थित दक्ताना एक छोटा सा नाव है, लेकिन हस्सिक्तित व बों के सबह की हिट से सहस्त्रपूर्ण है। यहां के सण्डार में ४२ इस्तिक्षित व बों का सबह है। संग्रह से ऐसा पता लगात है कि यह सारा मण्डार किसी भट्टारक प्रवचा साधु के पास था। दिससे यहा लाकर मिदर में विराजन सात कर दिखा। मण्डार में काण्य, चिरत करा, रात, उनाकरण, प्रायुवेंट एव ज्योतिय दिवसक व बों का घण्डा संबह है। बूँदी, नैरावा, गोटडा, इन्दरगह, जयपुर, जोवपुर सामवाडा एव सीसवानों में तिले हुए बंधों की प्रमुखता है। सबसे प्राचीन प्रति 'यडावयक बर्लावबोय' की पाण्ड्रितिए है जो सबत् १४११ में मालवा सहल की राजवाती उन्मेत में निर्मा पयी। सबत् १४६२ में बिश्चत प्रेष्ठ कि का घादिताथ स्वत्र लालदात का हतिहाससार समुख्य, साधु झानवचर हारा रचित निर्मान स्वतिक्षीर प्राचीन एव सुद है।

#### शास्त्र भण्डार वि० जैन मन्दिर पाश्वंनाथ इन्दरगढ

इन्टरमढ कोटा राज्य का प्राचीन महर है। यह पहिचयी रेजने की बहा लाइन पर सवाईमाधोपुर और कोटा के मध्य में स्थित है। यहां के दिन जेब पाइनाय मिटर में हस्तानितन यायों का एक मयह उपलब्ध है बाल्य मण्डार में हस्तानिता प्राची की सम्बाद स्ट है। इपमें सिद्धान, स्तीन, घ. चार मास्त्र हे सम्बाधन पार्वुनिधियों की मन्या नदांचेक हैं कुख पत्र परे भी है। विनक्त निकल इस नवार में हुखाया।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन ग्रयवाल मन्दिर फतेहपुर (शेखावाटी)

फतेहरर सीकर जिले का एक सन्दरतम नगर है। चुरु से सीकर जाने वाली रेल्वे लाइन पर यह पश्चिमी रें वे का स्टेशन है। जैन साहित्य भीर कला की शब्द से फतेदपर प्रारम्भ से ही केन्द्र रहा । देहली के भटारको का इस नगर में मीधा सम्पर्क रहा धीर वे यहां की ब्यवस्था एवं माहित्य मग्रह की धीर विशेष ध्यान देते रहे । यहां का शास्त्र भण्डार इन्हीं भट्टारकों की देन हैं। शास्त्र भण्डार में हस्तिलित प्रथों एवं गटकों की सक्या २७४ है। इनमें गुटको की सख्या ७३ हैं जिनमें कितने ही महत्वपूर्ण जुनिया नंग्रहीन है। पण्जीवनराम द्वारा लिखा हुमा यहा एक महत्वपुर्ग गुटका है जिसके १२२२ पूष्ठ है अभी तक शास्त्र भण्डारों में उनलब्ब गुटकों में यह सबसे बड़ा गूटका हैं इसमे ज्योतिष एवं भाय्वेंट के पाठो का सग्रह हैं। जिनकी एक लाख श्लोक प्रमाए। सस्या है। इस गुरके को लिखने में जीवनराम को २२ वर्ष (सबन १८३८ से १८६०) लगे थे। इसका लेखन चुरु में प्रारम्म करके फोहबर में संगात हमा था। इसी तरह भण्डार में एक 'रामोकार महातम्य कथा" की एक पाण्डलिपि है जिसमे १३" × ७३" बाकार बाले ७०० पत्र हैं। यह पाण्डलिपि सचित्र है जिसमें ७६ चित्र हैं जो जैन पौराशिक पुरुषों के जीवन कथाओं पर तैयार किये गये है। प्रथ मण्डार में हस्तलिखित प्रथ की प्रशिक संस्था न होते हुये भी कितने ही हिन्दी के ग्रथ प्रथम बार उपलब्ध हुए जिनका परिचय ग्रागे दिया गया है। यहां वं बो की लिपि का कार्य भी होता था। जिलोकसार मावा (सबत १८०३), हरिवंश पुरास (संबत १८२४) महाबीर प्राणा. समयक्षार नाटक एवं झानाएांव खादि की कितनी ही प्रतियों के नाम गिनाये जा सकते हैं। ग्रंथ सुवी के कार्य मे नवर के प्रसिद्ध समाज सेवी एवं साहित्य प्रेमी श्री विश्लीलाल जी जैन का सहयोग मिला उनके हम ध मारी है।

#### भरतपूर

राजस्थान प्रदेश का भरतपुर एक जिला है। ओ गर्यान गमय तक सार्डित्यक केन्द्र रहा था। यत्र भूमि भूमि में होने के कारण यहां की भाषा भी पूर्णतः त्रज प्रभावित है। भरतपुर जिले में भरतपुर, डीग, कामा, वयाना, वेर, कुम्हेर धादि स्थानी में हस्तलिखित यथों का घच्छा समृह है।

भरतपुर नगर की स्थापना मूरजमन जाट इंटर को गयी थी। १८ वी शनाब्दी की एक कवि शुन-सागर ने नगर की स्थापना का निस्त प्रकार वर्णन किया है—

> देण काठहुड बिरिज मैं, बदनस्यर राज्यान । ताके पुत्र है भलों, मूरिजमल गुरुष्धाम । तेज पुज रांव है मयों लाभ कीति गुरुष्वान । ताको सुजस है जयत मैं, तर्प दूसरो सान । विनहु नगर जुब साइयों नाम मरतपुर तास ।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन पंचायती मंदिर मरतपुर

य थो के नकलन की टिष्ट में इस मन्दिर का जान्य मण्डार इस जिने का प्रमुख सण्डार है। सभी य य कागज पर लिखे हुए है। बाध्य मण्डार की स्थापना तक हुई थी, इसकी निश्चन निश्चित निश्चित हो उल्लेख सही मिलता लेकिन सन्दिर निर्माण के बाद ही जिने के स्थाप करानी ने लाकर यहा या थो का मण्या कि उल्लेख निश्चित ने पार्थ पर्यो का प्रमुख किया गया। १६ वी जातादी में याची का सबसे प्रमिक्त मण्ड हुया। भण्डार में स्विचित नांशी की मच्या ००१ है जिनमें सहस्त एख हिस्सी माणा के ही स्थाप के या है। मनमें प्राचीन गाणुंजिय उल्लेख नांशी की मच्या ००१ है जिनमें महस्त एख हिस्सी माणा के ही स्थाप के लावा कित निर्माण की माणा की प्रमुख के प्रमुख प्रमुख के हिस्सी माणा की माणा की प्रमुख के प्रमुख के प्रमुख की प्यू की प्रमुख की प्रमुख की प्रमुख की प्रमुख की प्रमुख की प्रमुख की

#### शास्त्र भण्डार दि० जेन मन्दिर फी जाम

भरतपुर नगर का यह दूसरा जैन मन्टिर है जहा हस्तिनियन ग्रंथों वा सबह है। मन्दिर क निर्माण को सभी संविक समय नहीं हुमा दमलिये हस्तिनियन ग्रंथों का सबह भी करीब १०० वर्ष पुराना है। इस मण्डार में ६५ हस्तिबित ग्रंथा का सबह है। इसी भण्डार में कुस्टेर के निरावर्गमह की तहशार्थमुत्र गर दिन्ही गण्ड होका उल्लेखनीय कृति है। इसकी रचना सबन १६३५ में की गयी थी।

### शास्त्र मण्डार पंचायती मन्दिर डीग (नयी)

'डीयां पहिंच भरतपुर राज्य को राजधानी थी। खाज भी फडवागों की नगरी के नाम से सह नगर प्रसिद्ध है। पचायती मन्दिर में हस्तिविक्षित ग्रंथों का छोटा मा मग्रह है जिसमें ⊂ैं प.ण्डुलिपिया चपलक्थ होती. हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध कि सेवाराम पाटनी इसी नगर के थे। उनके द्वारा रिक्त मिल्लनाण्यारित की मून पाण्डुलिपि इसी मण्डार में मुगक्षित है इस यरित काब्य का रचनाकाल सबत् १८५० है।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग

इस मन्दिर मे पहिन हम्तनिखित य थो का अच्छा सबह था। लेकिन मन्दिर के अवन्यको की इस भोर जवासीनता के कारण प्रविकाण सबह नदा के निये गमान्त हो गया। वर्तम न में यहा ४६ ग्रंथ तो पूर्ण एवं अच्छी स्थिति में हैं और गेल बसूर्ण गर्व बुटिन दणा में सब्दीत है। अच्छा से मगवती धाराधना भी सबसे प्राचीन पाण्डुनिषि है। जिनका लेखन काम सबन् १४११ बंशाल गुक्ला सन्तमी है। इसकी प्रतिनिधि साहतगढ़ में महाराणा कु मकर्ण के शासन काल में हुई थी। इसके धानिरितः रावर्तम के पट्टांग समुख्य, अपभंत काल्य भविस्थान चरित्र (शीधर), आग्मानुसामन (मुस्पुक्त) भूत सक्लवकीनि के जम्बुस्वाभी चरित की भी भच्छी पाण्डुनिधिया है।

### शात्र मण्डार दि० जैन मन्दिर पुरानी डीग

पुरानी दोग का दि० जैन मस्त्रिय प्रत्यिक प्राचीन है प्रीर एसा मानून देता है कि इसका निर्माण १८ वो जन करी पूर्वहों हो जुसा होगा । मस्त्रिर के प्रति विश्व है ए यहा प्रवृद्ध शाहन संद्वाह होना चाहिए नैकिन निर्माण में प्रति हो के प्रति होना चाहिए ने किन निर्माण में प्रति होना चाहिए ने किन निर्माण में प्रति होने के प्रवृद्ध हो स्वाद के प्रति हो निर्माण हो है है । स्वाद के प्रति हो निर्माण होने प्रवृद्ध हो है । स्वाद स्वाद है दिन स्वाद है हो स्वाद स्वाद है है । स्वाद स्वाद स्वाद है है । स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद है है । स्वाद स्

#### शास्त्र मण्डार दि० जीन खण्डेलवाल मन्दिर कामा

राज्ञस्यात के प्राचीन नगरों में कामा नगर का भी नाम नियं जाता है। पहिले बहु भरतपुर राज्य का प्रसिद्ध नगर या लेकिन प्राप्तकल नद्भीन का प्रधान कार्यालय है। उक्त मिहर के बाग्य भरपार में समझित प्रयो के स्थापा पर इतना प्रवेश्य करा जा सकता है। वि यह नगर १८-१२ वी बातावरी में सादिरक्षण गीतिविषयों का प्रभुत केन्द्र रहा। जिन्दी के प्रसिद्ध भराकवि दीवरणाम कारणीवाल के मुप्त लीपराज कासनीवाल यहा स्थाकर रुद्धे नगे थे जिन्होंन नवन् १९८९ में मुख्यितालम की रचना को थी। इसी सरह इनसे भी पूर्व प्याप्तिकाय एवं प्रवानमार को नेमाण के हिल्हा दोवा की पाण्डियांचा भी इगी मण्डार में उपयव्य होती है।

भण्डार मे गृटको महित ५.०६ ग.०८ जिपना उपलब्द होती है। ये पाण्डुलिप्या सस्कृत, प्राकृत प्रय-भ ग, हिन्दी, त्रज एव राजस्थानी भाषा मे मध्यथित रचनाये है। यह भण्डार महत्वपूर्ण एव प्रजात तथा प्राचीत पाण्डुलिप्यो को ४ पि से राजस्थान के प्रमुग भण्डारो म से है। कामा नगर और फिर यह सारत भर्जार माहित्यक गतिविध्यो का बटा भागी केन्द्र रहा। भागरा के पत्रभर् और रामानेर एव व्ययपुर के पूर्व कामा मे ही एक मच्छा नयहानय था। जहां बिद्धनो का समायर था इसतिल, भण्डार मे मवत् १४०५ तक की पाण्डु-निश्चित मिनते है। यहां की कुछ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपिया के नाम निस्त प्रचार है—

<sup>9</sup> प्रबोध चितामिता	गजशेखर सूरि	संस्कृत	लिपि संबत् १४०४,
े भारमानुशासन टीक	प्रभावनद	**	62.66
३. ब्रात्मप्रबोध	कुमार कवि	**	१४४७
४. धर्मपचिंवशति	बदा जिनदास	धापञ्च श	
<b>५. पार्श्व पुरा</b> स	पद्मकीर्ति	**	१४७४
६. यशस्तिलक चम्पू	में मदेव	सम्कृत	१४६०
७. प्रखुम्न चरित	सम्रारू कवि	व्रज भाषा	१४११ (रचना काल)

उक्त पाण्डुलिपियों के मतिरिक्त भड़ार में भीर भी ब्रजान, प्राचीन एवं ब्रेप्रकाणित रचनाएं हैं।

#### शास्त्र भण्डार ग्रप्रवाल पंचायती मन्दिर कामां

इस मन्दिर में प्रचों की सल्या सिंधक नहीं हैं। पहिने ये सभी प्रच खण्डेनवाल पवायती मन्दिर में ही वे लेकिन करीव ०० वर्ष पूर्व इस मन्दिर में से कुछ यंच प्रयवाल पंचायती मन्दिर में स्थापित कर दिये गये। यहां रिश्र हस्तालिक्त प्रच हैं। इस भण्डार में सधारू किन कुछ एक प्रचुन्न चरिन की भी पण्डुनिषि हैं। विवसें उसका रचना काल म० १३११ दिया हुआ है। हिन्तु यह प्रति धपूणे हैं। इसी भण्डार में नवस्राम कुछ चढ़ेंमान पुरासा भाषा की पाण्डुनिषि है जो प्रयम बार उपलब्ब हुई हैं। इसका रचना काल सं० १६१९ है।

### शास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारार्यासह

टोडारायसिंह का प्राचीन नाम नलकगढ या। जैन ग्रंथों को प्रशस्तियों, शिलानेको एव सूनि नेन्यों में सलकगढ़ का काफी नाम माता है। इसकी क्यापना नागाओं ने की यो तथा ११ भी शताब्दी नक यह प्रदेश उदयपुर के महारायाओं के स्थीन रहा। विशेषित्या के एक लेल में वर्षों ने मात्री सम्बन्ध रहा। विशेषित्या के एक लेल में वर्षों ने पाल है कि टोडानगर में राजा नत्यक के पूर्वजों ने एक जैन मोदिर बनाया था। जब से यह नगर सानकी वशी राजपूनी के स्थीन हुया बम उसी समय में जैन साहित्य के विकास में इन राजायां का काफी योगदान रहा। महाराजा रामव्य राज के शामनकाल में यहा बहुन से य थो भी जिनिशिया मध्य हुई। इनमें उपसकाव्यवन, एगायकुमार चरित्र (म० १६१०) ग्राविय पाल १९४५) जददबामी चरित्र (स० १९१०) ग्राविय यो के नाम उल्लेखनीय है।

यहा दो मन्दिरों में हस्तिलिखन ग्रंथों का सग्रह मिलना है। जिन हा परिचय निस्त प्रकार है ---

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्यासह

नेमिनाय स्वामी के मन्दिर के बाहन मण्डार मे २१६ हम्तर्निलित य यों का सबह है। इस मण्डार में सबसे प्राचीन पाण्ड्निए त्रिनोकसार टीका माध्यवण्ट प्रंबेश की है जो सक ११६६ सावशा सुनी १४ की निल्ली हुई है एक प्रवत्तवार की संस्कृत टीका है जो सक १६०% को है। इसके प्रतिरक्त चांबीस तीर्थ करपूत्रा (देवीसास), प्राव्यवित्तमी टीका (पक सोमदेव), पुगस्थान चोप्ट (या जितदास) रिवित्तकचा (विद्यासागर प्रादि प यों की पाण्ड्विपिया भी उल्लेचनीय हैं। सण्डार में ऐसी कितनी हो रवनायें हैं जिनकी निपि तक्षांतुर। (टोडागवर्तिह) में हुई थी। इसके इस नगर को सास्कृतिक महत्ता का स्वताः है पता चल जाता है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर पाश्वंनाथ टोडारायसिह

इस मन्दिर में छोटा या ग्रथ भण्डार है जिसमे क्षेत्रन ६१ पाडुनियिया है जिनमे पुटके सी सम्मिनित हैं। यहाँ विनास राजक रचनाओं का भ्रष्युत्र सण्ड है जिनमे पर्यविकास (धानतराय) क्यूकिलास (सण्यनीदास) सभाविकास, बनारमीविनास (बनारसीदास) प्रदिके नाम उल्लेखनीय है देखे यहा पर खंखों का सामाध्य सजह है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर राजमहल

राजमहल बनाम नदी के किनारे पर टोक जिने का एक प्राचीन कस्वाहै। सबत् १६६१ मे अब महाराजा सानसिंह का आमेर पर शासन था तब राजमहल भी उन्ही के शबीन था। इसी सबत् मे राजमहल मे बह्य जिन्दास कृत हरिवणपुराण की प्रति का लेखन हुआ था।

इस मन्दिर के बास्त्र भण्डार मे २२५ हस्तितिखित पाण्डुलिपियां है जिनमे बहा जिनदास इस्त करकण्डुगस, मुनि गुमचन्द्र की होसी कथा, त्रिनोक पाटनी का इन्द्रिय नाटक घादि के नाम उत्तेखनीय है। मण्डार में हिन्दी के प्रधिक यथ है।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा

दि० जैन सिन्य में स्थित जात्म भण्डार नगर के प्रमुख य य सम्मानाओं से है है। इस मण्डार में ४० ४ हस्तिनित्त त यो का प्रस्का तयहु है। वेसे तो यहा प्रमुख, सन्द्रन, यरभंन, राजस्यानी एव हिन्दी सभी भाषाओं के यथे का सम्मान स्थान हिन्दी के ये यों की साथकता है। १० दो जाताक्षी में तिले तथे यथे से का यहां प्रिथ्य सामित सम्मान स्थान के या या प्रमुख साथ सम्मान स्थान के स्थान साथित के साथ स्थान स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान साथ सिन्य १००० १० विकास स्थान स

#### शास्त्र भण्डार वि० जेन मन्दिर बयाना

राजस्थान प्रदेश का अथाना नगर प्राचीनतम नगरों में से हैं। यहां का किला चतुर्व शताब्दि से पूर्व ही निमित्त हो चुका था। डा० घरनेकर को यहा गुप्ता कालीन स्वयं मुदाय प्राप्त हुई थी। जैन सस्कृति धीर साहित्य की इन्टि से भी यह प्रदेश घरयों कि समुख रहा था। यहां के दि० जैन मन्दिर १० वी शताब्दि के पूर्व के माने आते हैं इस इन्टि से यहा के जात्व भण्डार भी प्राचीन होने चाहिये थे लेकन मुस्तिम शासको का यह प्रदेश सर्देव कोए भाजन रहा इसलिये यहां बहुसुस्य यंय सुरक्षित नहीं रह सके।

पचायती मन्दिर का शास्त्र भण्डार यशिष प्रत्य सस्या की हिन्द से प्रविक्त महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन भण्डार पूर्ण व्यवस्थित है श्रीर प्रमुख रूप में हिन्दी पाण्डुलिपियो का श्रन्छ। मग्रह है जिनकी संस्था १५० है। इनमे क्रत बिधान पूजा (हीरालाल बुहाबिया), चारप्रभाषुराणः जिनेद्रपूषण्) बाहुबीन छार (कुमुद्दवार) नैमिनाय का छत्र (देमबार) नेमिराजुनगीत (गुणुबार) उदरणीत (छीहल) के नाम उल्लेखनीय है।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार में १५१ पाण्ट्रलिपियों का नग्रह है। घीर को प्राय. समी हिन्दी भाषा की है। पौड्याकारप्राखणसमूद्रा (सुमतिसागर) समीमरन गाठ (सल्यूसास-रचना स० १६३४) सीनावती भाषा (लातचन्द रचना स० १७३६) प्रधानावती। किणाव दास रचना सवन् १७३६) हिन्दी पट (सान मुहस्मद) मार्ट पाण्ड्रलिपियों के नाम विशेषन, उल्लेखनीय है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर बेर

बयाना से पूर्व की भीर वेर'नामक एक पाचीन करवा है, जो साजकत तहसीन कार्यान्य है। यह स्थान चारी भीर परकोट से परिवेदित हैं। मुगल एव मरहता शामन में यह उन्लेखनीय स्थान माना जाता था। यहा एक दि॰ जैन मेरिद हैं जिसको शासन भण्डार पूर्यात, धश्यविस्ति है। कुछ कृतिया महत्त्वपर्या स्वत्थ्य है इसमें साधुन्ददना (प्राचार्ये कुतर जी रचना कारन न० १६२४) स्थानमक बारहस्त्वी (दीलनराम नामनीवान) के अतिरिन्त प० टोडरमल, मानसीदान, रामचन्द्र, सुवालचन्द्र आदि का कृतियों का प्रस्तु मंत्रह है।

#### उदयपुर

उदयपुर प्रवने निर्माण काल से ही राजस्थान की सम्मानित रियासन रही । महारागण उदयिवह त इस नगर की स्थापना सबत् १९६६ में की थी। भारतीय सम्भित एवं साहित्य को यहां के जासको हार का विषय भी स्थापना सबत् १९६६ में की थी। भारतीय में मी स्थापना को इस्टिंग से जिस्सा है। विकोद के बाद में इसे हो सभी हरिस्सों मी प्रमुख स्थान सिना। भेवार के जास में अहार का विषयर स्थान है। विकोद के बाद में इसे हो सभी हरिस्सों में प्रमुख स्थान किया। विकाद के बाद में इसे हो सभी हरिस्सों में प्रमुख स्थान विषया और उन्हों के शायर राजस्य में भी हैन-वर्म सम्प्रति एवं साहित्य के प्रथम राजस्य मार्ग विया और उन्हों के शायर राजस्य में मित्रती का निर्माण कराया गया। जास्त्र भण्डानों से इस्तान स्थान की पायह स्थान के निर्माण कराया गया। जास्त्र भण्डानों से स्थान है। इसे साह प्रमुख की जासक सम्मान के स्थान के प्रयोग की साल प्रयोग की स्थान की स्थान की है। अहार साह स्थान की स्थान की स्थान जीवन की १९ प्रस्त कतुन हों। नगर से स्थान की स्थान स्थापन की स्थापन की

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन ग्रग्नवाल मन्दिर

दि० जैन प्रयंत्राल मन्दिर के जाम्त्र भण्डार में हम्मीलियन गण्डलियियों का स्वस्था मध्द है जिनको संख्या विद्या है। इसमें हिम्सी के सम्यो को मन्या सबस प्रांत्रक है। पृत्रवयाद की सर्वार्षियिद्ध को सबसे प्राचीन पाण्डुनिष्ठ है जो सबत् १२७० की है। इसकी प्रतिनिधि सोमिनीपुर में हुई थी। महाकांव दोलनराम कासली-वाल का यह मन्दिर साहित्यिक केन्द्र था। उनके जीयधर चरित की मूल गण्डुनिष्ठ इसी मण्डार में गुर्शिय है। इस गाम्त्र भण्डार में वर्षनात कवि के वर्षमानराम की एक महत्वपूर्ण पाण्डुनिष्ठ है। इसके प्रतिरिक्त प्रकलकयतिरास (अयकीनि) यजितनायरास, ग्र विकारास (३० जिनदास) श्रावकाचार (धर्मविनोद) पवकत्यासक पाठ ( जानभूषसा ) चेतन-सोहराज सवार (बेस सागर) ग्रादि इस भण्डार को चलकृत प्रतिचा हैं ।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर

इस शास्त्र भण्डार में १८५ हस्तिलित यत्यो का सब्द है जिनमें भ्रायकाण हिन्दी के ग्रन्य हैं। इनमें नेमीनापराम (बद्धा जिनदास। परमहस राम (बद्धा जिनदास) बद्धा जिनदास) सहा जिनसा भागवतीदास) सहाजारीगीत (कुमुद्दन्द) रानकान राम (ब॰ जिनदास) भविष्यदस्त रास (ब॰ जिनदास) रामराम (माथवदास) भ्रादि के नाम विजेषन उल्लेखनीय है। भण्डार में भ० मकनकीति की परम्परा के भट्टारकों एव ब्रह्मचारियों की भ्रायक कतिया है।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर संमवनाथ, उदयपुर

नगर के तीनों जास्त्रों से इस मन्दिर का जास्त्र अच्छार सबसे प्राचीन, महत्वपूर्ण एव वडा है। अध्यार में मण्डीन सैकड़ो पण्डीलिया प्रशान किया प्रशान त्या का बुद्धावद करने वाली है। तथा साहित्यक इरिट से इतिहास को नसी दिवा देने वाली है। येसे यहा के इस्विलिय प्रयो से समया २०४ है लेकिन प्राचिकाण पाण्डितिया है। इस है, १६ वीं, १६ वीं, १६ वीं, १९ वीं तरास्त्रि की हैं। अब जालपूषणा, व बिजनसा के ब्रम्यो यो प्रतिवो का जनत सबह है। महारक सकलकीति रास एक ऐतिहासिक होत है जिसमें भ स्मकलकीति पह पुत्रकार्ति का जीवन वृत्त दिवा हुआ है। आवार्ष जयकीति द्वारा पितन कना। 'भीनाशीनवत्यकारणुर्धावां' की एक मुख्द प्रति है जिसमें भ स्मकलकीति पह पुत्रकारिक स्मान्द प्रति है है। इसी नहत स्वना काल स्म १६५६ है। इसी नहत वन स्वन्य काल स्म १६५१ गामोकारपुरव (नाराहित हिन्दाह) स्वन्य १५१ गामोकारपुरव (वनराहित हिन्दाह) स्वन्य १५१ गामोकारपुरव (का जिनदाय का साम उत्त्रवानीय है। इसी शास्त्र अण्डार से एक ऐमा गुटका भी है जिससे बहा जिनदाय का उत्तरकार समा उत्तरकार्ति है। इसी शास्त्र अण्डार से एक ऐमा गुटका भी है जिससे बहा जिनदाय का उत्तरकार समा उत्तरकार है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा

वसवा जयपुर प्रदेश का एक प्राचीन नगर है। इसमें हिन्दी के कितने ही बिद्वानी ने जन्म लिया भीर धपनी हिन्दी में हिन्दी भ पाके विकास से महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन विद्वानों से मराकवि पक दोलनाम कासनीवाल का नाम प्रमुख है। पडित जी ने २० से भी प्रविक्त प्रयो की रचना करके इस क्षेत्र में प्रथम एक नया की तिमान स्थापित किया। सेट प्रमस्कर विलाला भी मही के रहने वाले थे। यहां कितनी ही हम्बलितित प्रयो को अधितिति हुई यो जो राजस्थान के विभिन्न भण्डारों में एवं विशेषदः जयपुर के भण्डारों में संबहीत है।

तेरहपकी मन्दिर के दास्त्र मण्डार मे यद्यपि प्रधों का मग्रह १०० से प्रधिक नहीं है किन्तु इस लघु संग्रह मे भी कितती ही पाण्डुलिपियां उल्लेखनीय हैं। इनमें पार्श्वनायस्तुति (पासकवि) राजनीति सर्वय्या (देवीदास) भ्रष्यास्य बारहलडी (दौलतराम) म्रादि रचनाये उल्लेनीय हैं।

#### ज्ञास्त्र मण्डार दि० जैन पंचायती मंदिर बसवा

स्ती तरह यहा का प्वायती मदिर पुराना मदिर है जिसमें १२ वी शताब्दी की एक विज्ञाल जिन प्रतिमा है। यहा करुपसुत्र की दो पाण्डुलिपियां है जो स्वर्णकारी हैं तथा सार्थक है। इनमें एक में ३६ वित्र तथा दूसरे में ४२ चित्र हैं। दोनों ही प्रतियां संवत् १५३६ एव १४२८ की निल्ली हुई है। यहा प्यानित्य महाकाव्य की एक सटीक प्रति है जिसके टीकाकार प्रहुताद हैं। इस प्रव की प्रतिनित्य सवत् १७६६ में बसवा मे ही हुई थी। महाकवि भीयर की प्रपक्ष के किंत भविसयल वरिज की सवत् १४६२ की पाण्डुलिपि एव समयतार की नाल्यवृत्ति से संवत् १४४० की पाण्डुलिपि उल्लेसनीय है। प्राचीन काल मे यह मण्डार भीर महत्वपूर्ण रहा होगा ऐसी पूर्ण संभावना हैं।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर मादवा

भादवा फुनेरा तहसील का एक छोटासा ग्राम है। पश्चिमी रेल्वे की रिवाडी फुलेरा बाब लाइन पर भीमलाना स्टेमन है। जहां से यह ग्राम तीन मील दूरी पर स्थित है। जैन दर्शन के प्रकाण्ड विदान स्व॰ पं॰ वैनसुखदास न्यायतीर्थ का जन्म यही हुआ। चा। यहां के डि० जैन मन्दिर मे एक झास्त्र है जिसमें १४० से प्रियक हुस्तिलियत यभी का संग्रह है।

सास्त्र भण्डार में हिल्दी इतियो की प्रच्छो सन्या है। इनमें छानतराय का यसे विलास भैग्या मगवनीयास का 'बहा विजास' तथा भर्मदास का 'ध्यावकाचार' के नाम विशेषतः उन्लेखनीय है। गुरुको में भी छोटी छोटी हिन्दी इतियों का श्रम्छा स्प्रह है।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर डुंगरपुर

हू गरपुर नगर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एव मन्होंन का तेन्द्र रहा। १५ वी झता दी मा जब से भट्टारक सकलकीति ने यहा मपनी गादी की स्वापना की, उसी समय से यु, नगर २-३ जनावित्यो तक स्ट्रारकी एवं समारीते का केन्द्र रहा। संवा १४८२ में यहा एक भन्न समारीते से सकलकीति वो सहारक के भ्रत्यत सम्माननीय पद की दीशा दी गयी।

> च अदय स्थासीय स्वति कुल दीवक नरवाल सप्यति । हुगरपुर दीक्षा महाञ्चन नीति कीया ए। श्री सकलकीनि मह गुरि मुकरि दीधी दीक्षा श्रास्त्र । जय जय कार संयनि मचरान्त्रम् ग्रास्त्र ।।

म० सकलकोति के परचात् यहा भुवनकोति, जातभूषमा, विजयकीति एव गूभचन्य जैसे महाइ ध्यानित्व के घनी भट्टारको का यहा सम्मेलन रहा धौर इस प्रकार २०० वर्षो तक यह नगर जैन समाज की गतिविधियों का केन्द्र रहा। इसलिए नगरके महत्व को देखते हुए वर्तमान में जो यहा गाम्य भण्डार है वह उन्तमा महत्वपूर्ण नहीं है। यहां का खार्च मण्डार देठ जैन कोर्टाड्या मन्दिर से स्वागित किया हुया है सिसमें हस्तानिस्तान प्रयोक्ती संख्या ४५२ है। जिनमे चन्दनसम्बागित कथा, धारित्यवार कथा, एव राग रागनियों की संख्य पाण्डुलिपियों है। इसी मण्डार से व० जिनदास हन रामरास की पाण्डुलिपि है जो खस्त्रविक महत्वपूर्ण है। इसके प्रतिरिक्त स॰ जिनदास को भी रासक कृतियों का यहां प्रच्छा संग्रह है। वेग्गीदास का सुकीशवरास, यक्षोधर चरित (परिहानन ) सम्प्रेबीलसर पूजा (रामपाल) जिनदत्तराम (रतनप्रवामुदि) रामायण स्थ्यय (वयसागर) धावि धौर भी पाण्कृतिपियों के नाम उत्तेखनीय हैं। यहा अष्ट्रारकों द्वारा रचित रचनाओं का प्रच्छा संग्रह है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर मालपुरा

सासपुरा सपने क्षेत्र का प्राचीन नगर रहा था। तत्कालीन साहित्य एव पुरातत्व को देखने से सालूम होता है कि टोडारायसिंह (तक्षकगढ) एव चाटमू (चम्पावती) के समान ही सासपुरा सी साहित्यक एवं सास्कृतिक गतिविधियों का सम्छा केन्द्र रहा। अयपुर के पाटीपी के सदिर के शास्त्र भण्डार में एक गुटका संवद् १६१६ का है जो यही निला गया था। सामपुरा का पूसरा नाम प्रथ्यपुर भी था। यहां सभी जैन सन्दिर विवास ही नही किन्तु प्राचीन एव कता पूर्ण भी है तथा दर्शनीय है। ये मन्दिर नगर के प्राचीन यैनव की भीर संकेत करते है। यहा की दावाबाडी भीसवास समाज का नीथस्थान के क्ष्य में मिसद है।

यहा तीन मन्दिरों में मुख्य रूप से जास्त्र भण्डार है। इनके नाम हैं चौधरियों का मन्दिर, झादिनाथ स्वामी का मन्दिर तथा तेरायथी मन्दिर। यर्छाप इन मन्दिरों में ग्रंथों की सख्या अधिक नहीं है किन्तु कृद्ध पाण्डुनिषया भवस्य उल्लेसनीय हैं। इनमें ब्रद्ध कपुरचन्द्र का पार्थनाथरास तथा हथंकीति के पद है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर करौलो

करौली राजन्यान की एक रियामत थी। धाजकल यह सवाईमाघोषुर लिले का उपिलला है। १८ वीं रि वी मताव्दी में यहा धन्छी साहित्यक गतिविध्या रही। तथामत बिलाला, विनोदीलाल, लालक्द धादि कावयों का यह नगर केन्द्र रहा था। यहा दो मन्दिर है और दोनों में ही माराजे का सबह है। इन मन्दिरों के नाम है दिव जैन प्रवासनी मन्दिर गय दिव जैन मीमाखी मन्दिर। इन दोनों बंग मण्डारों में २०४ हस्तिविखत पाण्डुनिपियों का मध्य है। धिकाल हिन्दी की पाण्डुनिपियों का मध्य है। धावकाल हिन्दी की पाण्डुनिपियों का मध्य है। सबह है। सबन् १८४६ ने सामेसरतमाल बीबीसों पाठ की प्यान करीलों में हुई थी। इसकी छन्द सन्या ४०४ है। यह मंगवत नयमल बिलाला की कृति है। प्रथ भण्डार पूर्णंत व्यवस्थित एवं उत्तम निष्यित में है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन बीस पथी मंदिर दौसा

दौसा दुढाइड प्रदेश का प्राचीन नगर रहा है। यहा पहिले मीशा जाति का सासन वर धौर उसके प्रचान यह कछबाहा राजवृतों नो राजवानी रहा। इसका प्राचीन नाम देवनिर्धिया। यहादों जैन मन्दिर है स्रोर दौनों से हो हस्तर्लिम्बन प्रयो का सकलन है।

इस मन्दिर के प्रमुख देदी के विद्युत भाग में च कित लेखानुसार इन मन्दिर का निर्माण सबन् १७०१ में हुआ था। यहा के बारव भण्डार मे इस्तिनियन प्रचोक्ती सब्दा १७० है जिनमे पुरुषे भी सम्मितित हैं। प्रियक्तांन प्रंम (त्रिन्दी साथा के हैं जिनने परमहत चार्ड (वर रायमस्त्र) श्रावकाचार राम (जिल्हास) यक्तीचर स्विक्त नुस्लेवें सामकाच्या साथा (मृति दायान्दर) रामयन रमायन (केबराज) सादि प्रचों के नाम विश्वेष: उन्तिन्द्रीय) हो।

# शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा

इस मन्दिर के जास्त्र मण्डार मे हस्तिनित प्रथों को सन्धा १४० है लेकिन सब्द को दृष्टि से भण्डार की सभी पाण्डुलिपियां महत्त्वपूर्ण हैं। ग्राधकात्र य प्रयक्ष त्र एवं हिन्दी के हैं। यपक्षंत्र य वो में जिल्लासन चरिंड (लाज्न) सुकुमाल चरिंड (श्रीवर) बहुदमालकहा (व्यविमतहल) भविमयसकहा (पत्तान) महापुराल (युण्यदत) के नाम उल्लेकनीय हैं। हिन्दी माया के प्रयो में नोत्द्रगुल्यन वर्षा (यववरात श्रीमान) विल्हाल चौषर्द (सारम) प्रियम्न सक्त चौष्ट (समयमुन्दर सिहासन बत्तीमी (हीर कनत्र) की महत्वपूर्ण पाण्डुलियां हैं। इसी भण्डार में तत्वायंत्रत्र की एक सस्कृत दीका सबत् १४७० को पाण्डुलियां ने उत्सल्य है।

#### शास्त्र मण्डार वि० जैन मन्दिर सहकर जयपुर

अयपुर के मधिकाण साहत भण्डारों की सूची इससे पूर्व वार भागों में प्रकाशित हो चुकी है लेकिन मन भी कुछ साहत भण्डार बच गये हैं। दिन जैन मन्दिर लाकर नगर का प्रनिद्ध एवं विशाल मन्दिर है। यहां का साहत भण्डार भी अच्छा है तथा सुख्यतिष्य है। पाण लोकर रहा है। बच्या दर्द है। समझ स्थाप के सहस सर्वाधिक महत्व पूर्ण है। यह मन्दिर बचा से स्वति हित्य गतिविदियों को लेकर रहा है। बच्या राम सह ने प्रपंत नुद्धितिवास एवं सिद्धाल सरकत की रचना इसी मन्दिर में बेट कर की थी। के सरीतिवह में में बढ़ें सान पुराण ( सचत्र १६९६) की भाषा टीका इसी मन्दिर में पूर्ण की थी। यह मदिर बीसवय आन्नाय वालों का माध्य दाता था। यहां सस्कृत प्रयोक्त मिन संस्था संस्था उपलब्ध संस्था प्रयास स्वति आन्या स्वति आन्या प्रयास स्वति आन्या स्वति आन्या स्वति आन्या स्वति आन्या प्रयास स्वति आन्या प्रयास (विद्यानिव) रत्यकरण्डलावान रहेका (प्रमाच-३) शानिपुराण (पर अमन) भारि के नाम उल्लेखनीय है। महारक जानभूषण के आदीदवरकाग की सवन् १५८० की एक मृत्य प्रति यहा संस्था से संस्था में से

#### विषय विमाजन

प्रस्तुत यस्य मूची में हस्तिलिक्त प्रस्थों ना २४ विषयों में विमाजित किया गया है। धर्म, प्राचार बाहर, विद्वाल एवं कोने तथा पुत्रा विषयों के प्रतिक्ति पुरामा, काव्य, विरंत, कवा, व्याकरणा, कोण, व्यक्तिय, प्रावृद्धें, तीति एवं नुभाषित विषयों के प्राचार पर प्रस्थों को पाश्र्तिक विषयों वा परिचय दिया रखा देश है से बाहर संगीत राम, कार्यु, विक्त एवं विचार लेवे पूर्णत. साहित्यक विषयों में मानविष्य व्यथे को विशेष विवयरण मिनेया। जैन भण्डारों में इन भण्डारों की महंज विपयें में के प्रतिक्र विवयरण प्रतिक्र विपयें में इन विषयों के मार्थजनिक उपयोग के प्रत्या की न्यान के मानवा है। बाहर कार्य विवयरण प्रियं प्रोधी विषयों के नियं तो ये जात्र कार्य मानवा निर्माण के प्रस्था मानवा है। बाहर कार्य विवयरण हो प्रयवा महित्य को कोई विवय, प्रस्य भण्डारों में उत्तर प्रत्य हम्माणित व्यव्या प्रवया, पश्चीती, कार्य, कार्य, विवय हो प्रवा महित्य की कोई विवय, प्रस्य भण्डारों में उत्तर प्रत्य हम्माण, द्वारणा, पश्चीती, क्षित्र हमीती, विवामान्यक कृतियों के स्वितिक की स्वयः, व्यव्य वारत्य प्रवाण, पश्चीती, क्ष्मीती, वानक सत्तर्व हैं कि प्रपत्य कार्य के प्रवित्य विवास के प्रवित्य के स्वयं प्रसा प्रवित्य होते हैं। यही नहीं कुछ ऐमें काव्यात्मक विवय हैं जिन पर प्रययत इनने विजाल क्यं में सारित्य पित्रवा कार्य है है। वही नहीं कुछ ऐमें काव्यात्मक व्यवह हैं। जैन कवियों ने प्रपत्न कार्य ही मोह प्रियत बहाने के नियं उत्तकों नेये वियं वामा देश । यह नस उनकी पुर्म्पूक है। जैन कवियों ने प्रपत्न कार्य ही नोह प्रया बहाने के नियं उनकों नेये विष्णा है।

सैकडो ऐसी कृतियां हैं जो घमी तक प्रकाश में नहीं घा सकी हैं धोर जो कुछ कृतिया प्रकाश में बायों है उनकी मी प्राचीनतम पाण्डृनिधि का विवरण हमें ग्रन्थ सूची के इस माग में मिलेगा। किसी मी ग्रन्थ की एक से प्राधिक पाण्डुनिधि मिलना नि.मनेंह ही उसको जोक्तिप्रयता का खोतक है। क्योंकि उस पुग में ग्रन्थों का लिक्कदाना, शास्त्र मण्डारों में दिरावसान करना एवं उन्हें जन जन की पढ़ने के सिये देना जैनाचार्यों की एक विवेदता रही थी। ये पन्य मण्डार हमारी सतत साधना के उजज्ञका पक्ष हैं।

# महत्त्रपूर्ण साहित्य की उपलब्धि

प्रस्तुन यथ्य मूची में संकठों एंसी इतिया झार्यो है जिनकों हमें प्रथम बार परिचय प्रास्त हो रहा है। व ये हतिया मुख्यत सहस्त, हिस्सी तथा राजस्वानी भाषा की हैं। इनमें भी सबसे घरिक हतिया हिस्सी की हैं। चात्तव से जैन कवियों ने हिस्सी के विकास से जो योगदान दिया उसका घरी हुछ भी नृत्यांकन नहीं हो सका है। धर्मेले ब्राग्न जिन्हाम की ६० से भी घरिक रचनायों का विचरण इस सूची से मिलेगा। इसी तरह घीर भी कितने ही कवि हैं जिनकी बीस से प्रथिक रचनाएं, उपलब्ध होती हैं लेकिन घरों नक उनका विषय परिचय हम नहीं जान सके। यहां हम उन सभी इतियों का सक्षित्त कर से परिचय उपरिचय करा रहे हैं जो हुमारी इस्टि में से नयी घरवाय घणात रचनाय हैं। हो सकता है उनसे से कुछ इतियों का परिचय विदानों को मालूम हो। यहां इन इतियों का परिचय मुख्यत विषयानुसार दिया जा रहा है।

### १ कर्मविपाक सूत्र चौपई (८१)

प्रस्तुत कृति किस कवि द्वारा लिखे गयी थी इसके बारे में रचना में कोई उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन कमं गिदान पर यह एक मच्छी कृति है जिसमें २५११ पद्यों में विषय का वर्गन किया गया है। चौपई को भाषा हिन्दी है जिस पर गुजराती का प्रभाव है। इसकी एकमात्र पाण्डुलिपि स्वजमेर के महारसीय झाक्त्र भण्डार से सम्बन्धत है।

#### २ कमंबिपाक रास (द२)

कर्म सिद्धान्त पर धाषारित रास गोली में निवद्ध यह दूसरी रचना है जिसकी दो पण्डुनिपिया राजमहल (टोंक) के कान्त्र भण्डार में उपलब्ध होती हैं। रचना काफी वडी है तथा इसका रचना काल सदत् १८२४ है।

#### ३ खोदह गुरा स्थान वचनिका (३३२)

झलपराज श्रीमाल १८ वीं ग्रातास्त्रिक प्रमुख हिन्दी गद्य लेखक थे। 'चौदह गुण क्यान वचनिका' की कितनी ही पाण्ड्रीलांग्या मिनती है लेकिन उनका प्राकार सलग प्रसग है। दि० जैन तेरहण्यी मेचिर दोता में द∗की एक रण्ड्रीलारि है जिलसे ३६६ पत्र हैं। इससे गोम्मटसार, त्रिलोकसार एवं लिखसार के ग्रायार पर गुण्युक्यानों सहित ग्रन्थ सिद्धान्तो पर चर्चा की गयी है। बच्चिक की भाषा राजस्थानी है। प्रस्वपराज ने रचना के ग्रन्स में निमन प्रकार टोहा लिख कर उनकी समाप्ति की है। चौदह गुरास्थान कथन, भाषा सुनि सुख होय। श्रह्मयराज श्रीमाल ने, करी जधामित जोयः।

#### ४ चौबीस गुग्गस्थान चर्चा (३४१)

रांदूपय के साधु गोबिन्द दाम को इस कृति की उपलब्धि टोझारायसिंह के दि० जैन नेनिनाय मन्दिर के सास्त्र मण्डार मे हुई है। गोबिन्द दास नासरदा मे रहते ये भीर उसी नगर में सबत १८८६ कानुसा मुद्दी १० के दिन इसे समाध्य की गयी थी। रचना श्रीयक बड़ी नही है नेतिन किन ने नित्या है कि सस्कृत और गाया (बाक़त) को समझाना कठिन है इसलिये उसने हिन्दी में रचना की है। प्रारम्भ में उसने यच परमेर्टि की नमस्कार किया है।

#### ५ तस्वार्थ सूत्र मावा (५३०)

तत्वार्य सूत्र जैनवर्मका सबसे श्रद्धान्यदग्रन्थ है। संस्कृत एवं हिन्दीभाषामें इस पर प्रवासो टीकाये उपसब्ध होती हैं। प्रस्तुत प्रत्य नूची मे २०० ते श्रविक पाण्डुनिपिया ग्रायी है जो विभिन्न विद्धानों की टीकामों के रूप में है।

प्रस्तुत कृति साहिबराम पाटमां को है जो बूँदी के रहने वाले थे तथा जिन्होंने तस्वार्थ सूत्र पर विस्तृत ज्यास्था सबत १९६८ में तिस्ती यो। वयाना के जाश्त्र भाष्ट्रार से जो पाण्ड्लिपि उपनस्थ हुई है बह मी उसी समय को है जिस वर्ष पाटनी द्वारा मूल कृति निस्ती गयीथो। किंव ने अपने पूर्ववर्ती विदानों की टीकाफों का प्रथयन करने के पत्रवात रही जिला था।

#### ६ त्रिभंगी सुबोधिनी टीका (६२३)

विभौगीसार पर यह पहित धानाघर की सम्कृत टीका है जिसकी दो प्रतिया जयपुर के दिए जैन सिंदर, लक्कर के शास्त्र सण्डार में सहतेत हैं। नाषुराम प्रेमी ने प्राजायर के जिन १६ उन्यों का उन्येख किया है उसमें दत दखना का नाम नहीं है। टीका को जो दो पाण्डुलिथ्या मिली है उनसे एक सबन् १८८९ की लिली हुई है तथा दूसरी प्रतिस्क हिन्दी विदान जोघराज गोदोंका की स्वयं की पाण्डुलिए है जिसे उन्होंने मालपुर में दिवन किसी क्षेतास्वर बण्यु से ली थी।

# धर्म एवं आचार शास्त्र

#### ७ कियाकोश माषा (६६६)

यह महाकवि दीवतराम कानलीवान को रचता है जिसे उन्होन सबन १०६५ में उदयपुर नगर में लिलाया। प्रम्तुत पाण्डुलिपि न्वय महाकवि की मूल प्रति है जो डॉन्हाम एव माहित्य की धम्रूल घरोहर है । उस समय कवि उदयपुर नगर में जयपुर महाराजा को घोर न वकीन की पर पर नियुक्त थे।

### द **चतुर चितार**सी (१०५८)

प्रस्तुत अधुकृति महाकवि दौलतराम की क्रांत है जिसकी एक मात्र पाण्डुनिषि उदयपुर के दि० जैन स्रग्रवाल मन्दिर में उपलब्ध हुई है। महाकवि का यहाँ मन्दिर काव्य माधना का केन्द्र था। रचना का दूसरा नाम भवजलतारिस्सी मी दिया हुआ है। यह कवि की संबोधनात्मक कि है।

#### ६ बहा बावनी (१४५७)

वह्म बावनी एक माध्यात्मिक कृति है। इसके किव निहानवार है जो समबतः बसास में किसी कार्यवश गये से घोर वहीं मक्यूदाबाद से उन्होंने इसकी रचना की थी। बेसे किव क नपुर के पास की खावनी में रहते थे इसकी एक घोर होति नयवकमाया प्रस्तुत सूची के २३३४ सक्या पर पार्यी है जिससे किव ने अपना सीक्षेप्त परिचय दिया हैं। नयवकमाया सबन् १८६७ की हित है इसनिये बहा बाबनी इसके पूर्व की रचना होनी बाहिये क्योंकि उन्होंने उने धेये के सत्य बेंट कर सिलने का उन्नेख किया है। बाबनी एक लमुकृति है लेकिन आध्यानिक रस से घोत प्रोत है।

### १० मुक्ति स्वयंबर (१५३६)

मुक्ति स्वयवर एक कपक काव्य है जिसमें मोश रूपी नश्मी को प्राप्त करने के लिये स्वयवर रवे जाने का स्पक बाधा गया है। यह उचना काफी बढ़ी है तथा ३१६ पुटरों में सम्पष्ट होती है। स्पक्कार वेणीचन्द कांव है जिन्होंने इसे लक्कर में शरम्भ किया था और जिसकी सम्प्रित उन्दीर नगर में हुई थी। येने कांव ने प्रपने को फलटन का नावामी जिला है और मनूकचन्द का पूत्र बतलाया है। स्पक्त काव्य का रचना काल सबत् १३४ है। उन प्रकार कांव ने हिन्दी जैन स्पक्त काब्यों की परम्परा में प्रयनी एक रचना और जोड़ कर उसके विकास में योग दिया है।

#### ११ बसुनन्दि धावकाचार मावा (१६६४)

वनुनिन्द यातकाचार गर प्रस्तुत भाषा वचनिका ऋषमदास कृत है जो स्मालपपाटन (राजस्थात) के तिवासी थे। कवि दूसक प्रति के प्रावक पे। इनके पिना का नाम नामिदास था। इस प्रथम की रचना करने में भागिर के प्रदूषक देवेन्द्र कोर्ति की प्रेरणा का कवि ने उन्नेस किया है। भाषा टीका विस्तृत है को २४७ पृष्ठों में पूर्ण रोत्री है। इसका रचनाकत संबन १६०७ के जिलका उल्लेख निस्त प्रकार दूसा है—

> ऋषि पूरमा नव एक पुनि, साध पूनि शुभ क्वेत । जया प्रथा प्रथम कुजदार, मम मगल होग निकेत ।।

कवि ने भासरापाटन स्थित शातिनाथ स्वामी तथा पार्वनाथ एव ऋषभदेव के मन्दिरका भी उल्लेख किया है।

#### १२ श्रावकाचार रास (१७०२)

पदमा किव ने श्रावकाचार रास की रचना कब की यो उसने इसका कोई उल्लेख नहीं किया है। इससे पद्यासक रूप से श्रावक घर्म का वर्णन किया गया है। रास भाषा, शैली एवं विषय वर्णन की दृष्टि से उत्तम कृति हैं। इसकी एक प्रपूर्ण प्रति दि० जैन मन्दिर कोटो के बास्त्र भण्टार में समझीत है।

#### १३ सुक्त बिलास (१७६१)

जोधराज कासलीवाल हिन्दी के प्रसिद्ध महाकवि दौलतराम कासलीवाल के सुपुत्र थे। प्रपने पिता के सामन ही जोधराज भी हिन्दी के प्रच्छे कवि थे। मुख विलास में कवि की रचनाघों का संकलन है। उनका यह काव्य सबत् १८८४ में समाप्त हुमा बा जब कि की धन्तिम सबस्या यो। दोलतरामधी के मन्ने के पत्थान् जोघ-राज किसी समय कामां नगर में चले गये होगे। किन ने कामा नगर के बर्गान के साथ ही वहां के जैन सिवारे का भी उल्लेख किया है। कामा उस समय राजस्थान का सम्खा व्यापारिक केन्द्र या इसलिए कितने ही विदान भी बहा जाकर रहने सने ये। मुख बिलास को तीनो ही प्रतिया भरतपुर के प्यायती मन्दिर के जास्त्र मण्डा से सम्बद्धीत हैं।

सुख विलास सद्य पद्य दोनों में ही निबद्ध है। किव ने इसे जीवन को सुखी करने वाले की सजा दी है।

सुख विलास इह नाम है सब जीवन सुखकार। या प्रसाद हम ह लहै निज मातम सुखकार।।

## अध्यातम चिंतन एवं योग

## १४ गुरा विसास (१६८८)

विलास सज्जक रचनायों में नयस्त्व विलाला कृत गुरा विलास का नाम उल्लेखनीय है। गुरा विनास के स्रतिरिक्त इनको 'बोर विलास' सज्जक एक कृति और है जो एक गुटके में (पृष्ठ संस्था ६६२) स्पर्धेत है। गुरा विलास में किंव को लच्च रचनायों के समुद्र है। यह सकतन संबन् १८२२ में समाल हुणा था। किंव की कुछ प्रमुख रचनाओं में जीवस्थर चरित्र, नाराकुमार चरित्र, सिद्धानतसर दीरक झरित के नाम उल्लासनीय है। वैसे कवि सरसपुर में झवीपाजन के लिए झाकर रहते लगे ये और सम्बन्ध स्त्रीमहावीरजा की याज पर गरे थे।

#### १४ समयसार टीका (२२८७)

सट्टारक शुभवन्द १६-१७ वी शताब्दी के महाद विद्वान थे। सस्हन, प्रावन, हिन्दी, गुजरानी माथा पर उनका पूर्ण मधिकार था। प्रस्न तक शुभवन्द्र की जितनी हतिया मिली है उनमें समयसार टीका का नाम नहीं निया जाता था। इसलिए प्रस्तुत टीका को उपलक्षित्र प्रथम बार हुई है। टीका किन्नुत है भीर कवि ने टमका नाम सम्यासनगरिमाणी दिया है। किन ने टीका के सन्त में विन्तृत प्रशस्ति दी है जिसके सनुसार इनका रचना काल सबत् १४७३ है। इस टीका की एक मात्र प्रति शास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर कामा में सबहोन है। इसका प्रकासन होता प्रावस्थक है।

#### १५ वटपाहुड भाषा (२२५६)

बट्पाहुंड पर प्रस्तुत टीका प० देवीदास खावडा कृत है। जिसे इन्होंने सबत् १८०१ सावण सूटो १३ के दिन नमाप्त की थी। टेक्सीनह प्राकृत, सन्कृत एव हिन्दी के सब्धे विदान ये तथा माणा टीकाण लिखने से जन्ते विशेष रुचि वी। यद्पाहुड पर उनकी यह टीका हिन्दी पद्य से हैं। जिससे किंदी ने झावार्य कुन्दकुत्य के भावों को ज्यों का त्यों सरने का प्रयास किया है। भाषा, भावशंत्री की हस्टि से यह टीका झम्यविक सहस्य पूर्ण है।

#### १६ ज्ञानाएंव गद्य टीका

प्राचार्य ग्रुमचन्द्र के जानासंव पर सन्कृत भीर हिन्दी की कितनी ही कियाएं उपलब्ध होती है। इनमें जानचन्द्र द्वारा रचित हिन्दी गद्य टीका उल्लेखनीय है। टीका का रचना काल सन १६६० मात्र नुदी र है। टीका की भाषा पर राजस्वानी का स्पष्ट प्रमाद है। इसकी एक प्रति दि० जैन मन्दिर कोटडियान ट्रनस्टुर में संग्रीत है।

#### १७ चेतावराी प्रथ (२००२)

यह कविवार रामचरण की कृति है तो राजन्यानी भाषा मे निबद्ध है। कवि ने इसमें प्रत्येक व्यक्ति को सजग रहने की चेताबनी दी हैं। इति का उद्देश्य मोते हुए प्राणियों को अदिन जा रहा है। इसमें २१ पछ है जिसमें किन ने रथह शक्यों में विषय का विवेचन किया है। साथा मात रच खेली की इस्टि से रचना उत्तम है। इसकी एक सात्र प्रति दिन जैन मन्दिर की आहे समझ्टाद में मुद्धात है।

#### १८ परमार्थशतक (२०६६)

परमार्थं सतक भैय्या भगवतीदान की है तो प्रथम बार उपलब्ध हुई है । रचना पूर्णतः ग्राध्यात्मिक है जिसकी एक मात्र पाण्डलिपि पचायनी गौन्दर भरतपुर में सग्रहीत है ।

#### १६ समयसार बृत्ति (२३०५)

समयमार पर प० प्रभावन्द्र जन सक्ष्यन टीका की एक सात्र पाण्डुनिधि महुप्तकीय दि० जैन मन्दिर स्वच्य के बाग्न भण्डा से उपलब्ध हुई है। प० प्रभावन्द से कितने ही यथों पर सस्कृत टीकार्थे निस्तकर प्रपनी विद्वला का प्रदणन ही नहीं किया किन्तु स्वाध्याय प्रेमियों के सिथे भी कठिन अधी के प्रयं को सरल बना दिया। अंगानपुराम प्रेमी ने समाचार जूनि का ''जैन साहिश्य धोर दनिहास ''से उल्लेख धवक्य किया है, लेकिन उन्हें भी दसकी पाण्डुनियि उपलब्ध नहीं हो सकी थी। प्रस्तुत प्रति संवन् १६०२ समितर सुदी ६ को लिपिक्ट की हुई है। वृत्ति प्रकाशन योग्य है।

#### २० समयसार टीका (२३०६)

भ० देवेन्द्रकीति ग्रामर गादी भट्टारक थे। वे महारक ने साथ २ साहित्य ग्रेमी भी थे। ग्रामेर ग्राम्स भण्डार को स्थापना एव उनके विकास से म० देवे-द्रकीति का प्रमुख हाथ रहा था। समयसार पर उनकी यह टीका सर्थाय प्रिक कदी नहीं है। किन्तु मीलिक तथा सार गॉनन है। दस टीका से पता लगता है कि समसार जैसे प्राध्यान्त्रिक प्रथं का भी इस युग में कितना प्रचार था। इसकी एक मात्र पाण्डिनिय त्राम्य भण्डार दि० जैन मन्दिर ग्राम्य स्थार दि० जैन मन्दिर ग्रामेश स्थार दिल जैन स्थार प्राप्त स्थार दिल जैन स्थार प्राप्त स्थार स्थार है। इसका टीका काल सबन् १७६० नादवा सुदी १४ है।

#### २१ सामाधिक पाठ भाषा (२४२१)

स्यामराभ कल सामायिक पाठ भाषा की वाण्डुलिपि प्रयम बार उपलब्ध हुई है। इसका रचनाकाल स॰ १७४६ है। कृति की वाण्डुलिपि दि॰ जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर में सब्रहीत है। रचना भ्रच्छी है।

#### ( बोबीस )

## पुराख साहित्य

#### २२ वदावरित टिप्परेग (२८७१)

रिविचेशालार्थकृत पयचरित पर श्रीचन्द मुनिद्वारा सिचाहुमायह टिप्पए है। टिप्पए सिमान है भीर कुछ प्रमुख एक कठिन मन्दो सिखाग्याहै। प्रस्तुत पाण्डुविधि सबन् १४११ की है जो जयपुर के सबकर के मन्दिर में सम्हीत है। श्रीचन्द मुनिद्याघन्ना मापाकी रचनारत्नकरण्ड के कर्नाचे तो १२ वी सनाइटी के विद्यान थे।

#### २३ पार्श्व पुराश (३००६)

भ्रमभ्रम के प्रसिद्ध कवि रह्मधू विरचित पार्श्वपुरासा की एक प्रति ज्ञास्त्र मण्डार दि० जेन मस्टिर वोरसको कोटामे सम्रदीत है। पार्श्वपुरासा भ्रमभ्रम की सन्दर कृति है।

#### २४ पुरासासार (३०१३)

सागर क्षेत्र द्वारा र्राचत पुराणसार को एक मात्र पाण्डुलिपि शास्त्र मण्डार दि० जेन मन्दिर मन्त्रेन से समझेत हैं। किंदि ने स्वताकाल का उत्तेख नहीं किया है लेकिन यह समझन. १४ वी शालाब्दि की रचना साहम पदनी हैं। कृति मच्छी है। महारक सकतकीति ने जो पुगालसार यथ निला है सभव∴ वह इस त्रित के मात्राद पर ही जिल्ला गया था।

#### २५ वर्धमानपरांश मावा (३०८२)

बर्जवात स्वामी के जीवन पर हिन्दी में जो काश्यानिय गये है वे ब्रामी तक प्रवाण में नहीं साथे ?। इसी याब सूची में बर्जमान पर कुछ काल्या मिले हैं बीर उनमें नवलराम विश्वित वर्दामान पुराणा भाषा भी एक काल्या है। यह काल्या नवन् १९६१ का है। महार्काव बनारसी दाग जब समयमार नाटक स्थित रह से तभी भाषाना महाबीर पर यह काल्या लिला जा रहा था। नवलराम बुदेलगढ़ के निवासी ये बीर मुद्दि स्थल कींति के उपदेश से नवलराम एवं उनके पुत्र दोनों ने मिल कर उस जाल्या की स्वासी बीरा। याल्या विस्तृत है तथा उसकी एक प्रति दिन्न जैन पन्न स्वी मिट्टर काला मा उपदेश होती है।

#### २६ वर्धमानपुराग (३०७०)

वर्षमान स्वामी के जीवन पर यह दूसरी कि है जिस कविवर नवन शाह ने मश्री १८५% में समारत की थे। इसमें १६ मिलकार है। पुराण में ममवान महाबीर के जीवन पर महाधिक मुन्दर रीति से बसोन किया गया है। इस पुराण की प्रति बयाना एन दें प्रतिभा फरेरपुर समावादी के बास्त्र भण्डार में उपलब्ध होती है। कवि ने पुराण के मन में पत्रना काल निम्म प्रकार दिया है

> उज्जयन विकम नृपति, सबस्मर मिनि तेह । सन अठार पच्चीस अधिक समय विकारी एह ॥

## २७ शांतिनाथ पुरास (३०६४)

यह ठाकुर कवि की रचना है जिसकी जानकारी हमे प्रथम बार प्राप्त हुई है। हिन्दी माचा में सान्तिनाथ पर यह पुराए। सर्वीधिक प्राचीन कृति है जिसका रचनाकाल संवत् १६५२ है। इस पुराए। की एक साथ पाण्डुलिपि प्रथमेर के महारकीय शास्त्र मण्डार में सग्रहीत है।

## २८ शान्तिपुरास (३०१४)

महापडित साशाधर विरचित झानितपुराग सस्कृत का सच्छा काव्य है। कवि ने इसकी प्रशस्त में सपना विस्तृत परिचय दिया है। श्री नापूराम प्रमी ने साशाधर की जिन रचनाओं से नाम गिनाये हैं उसमे इस पुराए का नाम नहीं निया गया है। इसकी एक प्रति जयपुर के दिश जैन मन्दिर नप्कर से समहीत है। पूराण क्रमाझन योग्य है।

## काव्य एवं चरित्र

## २६ जीवन्धर चरित (३३५६)

महार्काव दोलनराम कासनीवाद की पहिले जिन कृतियो एव काष्योका उल्लेख मिलता या उनमें जीवन्वर लिएन का गाम नहीं या। उटयपुर के प्रधवाल दि० जीन मन्दिर में जब हम लीय य यो की सूची का कार्य कर रहें ये। नभा इसकी एक घटन उपल प्रदेश ति पर प्रश्निक को प्राप्त हुई। किव का यह एक हिस्सी का प्रच्या में कार्य कार्य है। किव का यह एक हिस्सी का प्रच्या में या प्रप्राप्त में कार्य के नवस्त पूर्ण कहा है जिसे कालाइरण के था चनुप्त मुद्र प्रधवान एव पृथ्वीराज नया सागवाडा के निवासी श्रीवेतजी हुंबड के प्रमुरोध पर उदसपुर प्रवास में गया १६०६ निकलर मा भारती को भेट की थी। उदसपुर में प्रप्रवास दि० जैन मन्दिर की ग्राप्त में प्रवास में प्रवास हुई थी, वह कवि की भून पार्ड्लिय है जिससे इसका महस्त धीर भी बढ़ सार है। कार्य प्रकार कार्य की साम हो।

#### ३० जीवधर चरित (३३५८)

महार्काद रह्यु द्वारा बिरिजन जीवस्यर चरित प्रपन्न को विजिष्ट रचना है। इस काब्य की एक प्रति दिल्जैन मस्टिर पतेहपुर वेश्यावाटी के शास्त्र मण्डार में सप्रहोत्त है। पाण्डुलिपि प्राचीन है और सबत् १६४८ में लिपि बद्ध की हुई है। यह काब्य प्रकाणन योग्य है।

#### ३१ जोबन्धर चरित्र प्रवन्ध (३३६०)

जीवनधर चरित्र हिन्दी माथा का प्रवन्य काव्य है जिसे अट्टारक यक्ता कीर्ति ने ख्रन्दीबद्ध किया या यमःकीर्ति भट्टारक चन्द्रकीर्ति के प्रतिच्या एव भट्टारक रामकीर्ति के विषय ये। ये हिन्दी के सम्चे विद्यान थे। प्रमुत्त काव्य हिन्दी को कोई बढ़ा काव्य नहीं है किन्तु माथा एव मैंनी की ट्रिट्से काव्य उल्लेखनीय है। इसकी एक पाण्हिति प्रथ्यपुर के सभवनाय मन्दिर के बाह्य भण्डार मंसप्रहीत है। इसकी रचना संबत् दैव्ध में हुई थी। किंव ने गुत्ररात देश के ईडर दुर्ग के पास भीतोड़ साम में इसे समास्त किया था। उस साम में चन्द्रभाम में चन्द्रभाम मान्दर या और बहु इस प्रवन्य का रचना स्वन्य था।

संबत घठारामें इकहोत्तर भादवा सुदी दशमी गुरुवार रे।
ए प्रवथ पूरो करो प्रशामी जिन गुरु गाय रे।
गुजर देश मे सोभतो इंडर गढ ने गास रे।
मीलोडी मुगाम है तिहा आवक नो सुमवादरे।
बन्दप्रभ जिनवाम है ते भच्य पूर्ज जिन गाय रे।
विहा रहिने रचना करी, यावकीति सुरी राग रे।

#### ३२ धर्मशर्माम्युदय टीका (३४६१)

वर्मन्नमां न्युरस सम्कत भाषा के घ्र'टर महाकाब्यों में से हैं। यह महाकाब हरिचन्द की रचना है धीर प्राचीन काल में इसके पठन पाठन का प्रच्छा प्रचार या। इसी महाकाब्य पर भट्टारक सवाकीति की एक विस्तृत टीका प्रवसेर के बाहन भण्डार में उपलब्ध हुई है जिसका सदेहस्यान्त रीपिना नाम दिया गया है। टोका विद्यापुर्त्त है तथा उसमें काब्य के कंटिन नक्टो का प्रच्छा चुनासा किया गया है।

## ३३ नागकुमार चरित (३४८०)

नयमत बिलाला कृत नागकुमार चरित हिन्दी की सच्छी कृति है जिसकी पाण्ड्लिया। राजस्थान के बिमिन्न ब्रास्त्र भण्डारों में उपलब्ध होती हैं। प्रस्तुत पाण्डुलियि स्वयं नयमल विसाला द्वारा नियिवंड है। इसका सेवन काल सवत १८३९ है।

> प्रथम जेठ पूनम मुदी सहस्त्र रात्रा वर बार। प्रयम् तिलापूरत कियो हीरापुरी संक्षार। नयमल नै निजकर यकी यंथ लिक्यो घर प्रीत। भूल चुक यामै लली तो सूच की जो मीत।

#### ३४ वारा ग्रारा महा चौपई बध (३६६०)

मट्टारक मकलकोति को परन्तरा में होने वाले मट्टारक रामकीति के प्रशिष्य एवं प्रचानित के जिया बंध रूपकी की उक्त कृति एक ऐतिहासिक कृति है जिसमें २४ तीर्थ करों का शरीर, श्रायु वर्ण झादि का वर्णन है। इसमें तीन उल्लास है। यह किव की मूल पाष्डुलियि है जिसे उसे महिमाना नगर के झादि जिन जैन्यालय में छन्दोबद किया था। इस चौषई की एक प्रति उदयपुर के मभननाय महिद्दर में उपलब्ध होती है।

#### ३५ मोज चरित्र (३७२१)

हिन्दी माथा में भोज चरित्र भवानीदान ध्यास को उचना है। यह एक ऐतिहासिक कृति है जिसमें राजा भोज का जीवन निवद हैं। किन ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है —

> गढ जोघासा सतोल वाम ग्राई विलाडे। पीर पाठ कल्यासा सुजस गुरा गीत गवाडे।।

#### ( सवाईस )

भोज चरित तिन सौ कहां। कविया सुख पावं।।
व्यास भवानीदास कवित कर वात सुखावं।।
मुखी प्रवच चारस मते भोजराज बीन कहां।।
कल्यागदास भपान को धर्म बज्जा धारी कहां।।

#### ३६ वहां घर चरित्र (३८२४)

महाराजा बनोबर के जीवन पर सभी भावाओं से छनेत काव्य लिलं गये हैं। हिन्दी से भी विभिन्न कियों ने रचना करके इस कवा के लोकप्रियता में धिनृद्धि की है। इन्हीं काव्यों में हिन्दी किये देवेन्द्र कृत यमोधर चरित भी है जिसकी पाण्डुलिपिया हूं गन्धुर के जान्य भण्डान में उपलब्ध हुई है। काव्य काकी बढा है। इसका रचनाकाल सक्त १६०२ है। देवेन्द्र किये विक्रम के पुत्र के जो स्वय भी सम्कृत एवं हिन्दी के अच्छे किये थे। विक्रम एवं गंगायर मोर्ड के जो जेन बाह्मण के। गुजरात के कुतन्नुता के दरवार में जैनवर्म की प्रतिष्ठा बढाने का ध्येय के जातिकाम को या और उसी के प्रशास के कारण विक्रम के प्राना पिता ने बैनवर्म स्वीकार किया था। इन्हीं के सन् देवेन्द्र ने महाद्यातन ने प्रयाचीर की रचना की थी।

सबत १६ म्राठ मीमि म्रासो मुदी बीज मुक्कवार तो रास रच्यो अवस्स मरयो महम्रा नगर ममार तो ।

कांव ने ध्रपनी कृति को नवरम से परिपुर्ण कहा है।

#### ३७ रस्नपाल प्रबन्ध (३८८८)

रस्तवाल प्रबन्ध हिन्दी की ग्रन्छी कृति है जो बर्ज श्रीपती द्वारा रची गयी थी। इसका रचनाकाल मर्ज १७३२ है। भाषा एवं शेली की हरिट से रचना उत्तम प्रकास काव्य है तथा प्रकाशन योग्य है।

#### ३८ विक्रम चरित्र चौपई (३६३१)

माउ कॉब हिन्दी के लोकप्रिय कवि थे। उनकी रविवनकथा हिन्दी की भन्यधिक लोकप्रिय रचना रही है। विकासित चौधर उनकी नवीन रचना है। विसकी एक पाष्ट्रलिय दक्लाना के साहत मण्डार म संबरीत है।रचना काल सर्वन् १९८० है। इस रचना के माउ कवि का समय मी निश्चित हो जाता है। कवि ने रचना काल का उनकेल निम्न प्रकार सिचा है—

> सबत् पनर प्रठासिइ तिथि बिल तेरह हु ति मगसिर मास जःण्यो रविवार जते हु ति । चडी तर्णाइ पसाउ सचढउ प्रबन्ध प्रमाण । उबभाय भावे भरणह बातज मावा ठाए।।।

#### ३६ शांतिनाच चरित्र मावा (३६६४)

सेवाराष्ट्र पाटनी हिन्दों के प्रच्छे विद्वान् थे। सातिनाथ चरित्र उनके द्वारा सिला हुमा विश्विष्ट काव्य है। कवि महापद्वित 'टोक्टरमल के समकालीन विद्वान् थे। उनको उन्होंने पूर्ण मादर के साथ उल्लेख किया है। इन्हीं के उपरेश से सेवाराम काव्य रचना की घोर प्रवृत्त हुए ये। शांतिनाथ चरित्र हिस्सी का अच्छा काव्य है जो २३० पत्रों में समाप्त होता है। सेवाराम बूंबाहुड देश में स्थित देव्याड (देवली) नगर के रहने वाने थे। कवि ने काव्य के घरत में निम्न प्रकार उपलेख किया है—

देश तृंदाहड घादि दे सबोधे बहुदेश।
जवी रची प्रत्य कठिल टोडरमल महेल।
ता उपदेश लखास लही सेवाराम सवान।
रच्यो प्रय फियाल के हुई हुई प्राधिकान।।१२॥
सबत प्रय्टादश सतक पुनि चौतीस महान।
सावन क्रमणा ब्यट्यो पूरन क्यो पुरान।
प्रति प्रयार मुक्तसो बेरो नगर देश्याह सार।
आवक बसे महामनी दान पुण्य मितवार।।१४॥

#### ४० श्रीपाल चरित्र (४०५०)

श्रीपाल चरित्र बह्य चन्द्रसागर की कृति है जो भट्टारक सुरेश्टकोति के प्रशिष्य एव सकतकोति के सिष्य थे। जो काल्टासम के रामसेन के परम्परा के महानक थे। कवि ने मुरेश्टकोति एव सकतकीति दोनों की प्रशासा की है तथा प्रपनी लख्ता प्रकट की है। काव्य की रचना सोजन नगर में सबन १८२३ में समाप्त हुई थी।

> सोजाच्या नगर सोहामणु दीसे ते मनोहार। सासन देवी ने देहरें परनापुरे ग्रपार। सकलकीर्त तिहां राजता खण्जता गुण महार। ब्रह्मचन्दमागर रचना रची तिहा वेगी मानाहार।।३०।।

चरित्र की माथा एवं शैली दोनों ही उत्तम है तथा वह विविध छन्दों में निर्मित की गयी है। इसकी एक प्रति फतेहपुर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध होनी हैं।

#### ४१ घो शिक चरित्र (४१०३)

श्रीस्मिक वरित्र महाकवि योजनगम कासनीवाज की कृति है। ग्रव तक जिन काव्यों का विद्वत बनत को पता नहीं था उनमें किंव की यह कृति भी सिम्मिलन है। लेकिन ऐसा मानूम पहला है कि कवि के पर्पपुरास, हरिलकपुरास, ग्रादिपुरास, पुण्यालव कयाकोश एव प्रध्यात्मवारहव्या जैसी बृहद किनयों के सामने इस कृति का प्रथिक प्रचार नहीं हो सका इसीलए इसकी वागरिलिया भी राजस्थान के बहुत कम प्रण्डारों में समस्ती है।

श्रेगिक चरित्र कवि का लघु काव्य है जिसका रचनाकाल सबत् १७६२ चैत्र सुदी पचमी है।

सवत सतरसे बीग्रामी, भी वैत्र मुकल तिथि जान । पंचमी दीने पूरगा करी, वार चद्र पचान ।। कृति ५०० पद्यों में समाप्त होती है जिसमें दौहा, चौपई, छन्द प्रमुख है। रचना की भाषा प्रविक वरिरक्तन नहीं है। इसकी एक प्रति दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर में सबदीत है।

## ४२ सुदर्शन चरित्र माचा (४१८८)

मुद्रशंत के जीवत पर महाकवि तयतिंद ने प्रपन्नं या भाषा में सबत् १९०० में महाकाश्य सिला था। उसी को देख कर जैनन्द ने संबन् १६३० में प्रामरा तनर में प्रस्तुत काब्य को पूर्ण किया था। जैनन्द ने महारक यम भीति क्षेमकीति तथा चित्रुवनकीति का उल्लेख किया है। इसी तरह बारखाइ मकबर एवं जहातीर के शासन का भी कांग किया है। काव्य स्वर्धि सिक बहा नहीं है किन्तु भाषा एवं वर्षान की टिन्ट से काव्य खादा है। काव्य स्वर्धि है। काव्य स्वर्धि है। काव्य स्वर्धि है। काव्य स्वर्धि है। काव्य सिक बहा नहीं है किन्तु भाषा एवं वर्षान की टिन्ट से काव्य क्षेप्रदा है। काव्य के प्रमुख एन्ट दौहा, चौपई एवं सीरटा है। भिव ने निम्न सुन्द निक्त कर प्रपनी स्वर्थन एवं सीरटा है।

छद भेद पद भेर हो, तो ककु आपरे नाहे। ताकी कियो न सेर, कथा मई निज भक्ति स्स ।।

## ४३ अं रिगक प्रबन्ध (४१०४)

कल्यामाकीति की एक रचना चारुदल चरित्र का परिचय हम ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग से दे हुके हैं। यह कवि की इसगी श्यात है। जसकी उपनिच्य राजस्थान के कतेहपुर एव बूदी के मण्डारों में हुई हैं। किय महारक सकलकोति की परम्परा में होने वाले महारक देवकोति के क्रिय्य से । किये ने इस प्रवश्य को बागड प्रदेश के कोटनगर के श्यावक विमन ने शाग्रह से आर्थिताथ मन्दिर में समाप्त की थी। रचना गीतासक है तथा प्रकाशन शोध है।

#### कथा साहित्य

#### ४४ प्रनिरुद्ध हरएा-उषा हरएा (४२२३)

यह रन्नभूषण की सांत है वो नहारक ज्ञानभूषण के विष्य एव भ० सुमितकीर्त के परम प्रशंसक थे। यांनर द हरण की रचना भ० जानभूषण के उपदेश से ही हो सकी थी ऐसा कि ने उस्तेश किया है। कि ने कृति का रचनाकान नहीं दिया है नेकिन भट्टारक ज्ञानभूषण के समय की देखते ही हुए यह कृति सचत् १४६० से पूर्व की होनी नाहिए। धनिकद हरण की भाषा पर मराठी भाषा का प्रभाव है कि ने रचना को "रचना ह बहुरस कहुँ "हट्स मरी कहा है। धनिकद प्रशुक्त के पुत्र थे। कि ने काव्य का नाम क्रवा हरण न देकर धनिकद हरण दिया है।

#### ४५ झनिरुद्ध हररा (४२२४)

धनित्व के जीवन पर यह दूसरा हिन्दी काव्य है जो बहा जयसागर की कृति है। बहा जयसागर महारक महीवन्द के शिष्य थे। ये सिहपुरा जाति के आवक थे तथा हांसोर नगर में इन्होंने इस काव्य को सबत् १७३२ में समान्त किया था। इसमें बार घिकार हैं। इस रचना को माथा राजस्थानी है तथा उस पर गुजराती का प्रमाव है। रानभूषण सुरि के धनिरूब हरण से यह रचना बड़ी है। ग्रनिरूद्ध हरएाज में कर्यु दुःस हरएा ए सार । सामला सूल ऊपजे कहे जयसावर बहाचार जी ॥

#### ४६ सभयकुमार प्रबन्ध (४२२६)

उक्त प्रवन्त्र परमराज कृत हिन्दी काव्य है जिसमे अभयकुमार के जीवन पर प्रकाश दाला गया है। पदमराज लरतर गच्छ के स्नाचार्य जिनहत के प्रशिष्य एवं पुण्य सागर के शिष्य थे। जैसलमर नगर में ही इसकी रचना समाप्त हुई थी। प्रवन्य का रचनाकाल सबत १६५० है। रचना राजस्थानी भाषा की है।

#### ४७ स्नादित्यवार कथा (४२५१)

प्रस्तुत कथा प० नगादास की रचना है जो कारंजा के मट्टारक धर्मचन्द्र के लिप्प थे। धारिन्यवार कथा एक जोकप्रिय कृति है जिसे छन्होंने संवत १७४० से समाप्त किया था। कथा की दो सवित्र प्रतिया उननन्व हुई है जिसमें एक मट्टारकीय दि०जैन मन्दिर प्रवर्गर में सद्या दूसरी हु गएने काशत्र मण्डार मे उनतन्य हुई है। दोनों हो मचित्र प्रतियां धरवधिक कलात्मक है। हु गएपुर वाली प्रति से स्वय व गादास एवं भ० धर्मचन्द्र के चित्र भी हैं। कथा की रचना केली एव वर्णन मोली दोनों ही धन्छी है।

## ४८ कथा सग्ह (४३०८)

भट्टारक विशेषकीर्ति प्रजमेर गादी के प्रसिद्ध भट्टारक थे। वे शना के माथ साथ विश्वान एवं वर्षि में ये इनकी दो रचनायं कर्णामृत पुरास्त एवं श्री सित्क चित्र पहिले ही उपलब्ध हो चुकी है। क्या सबट इनकी तीसरी रचना है। इसका रचनाकाल सबत १८२७ है। इस कथा सबद में कतक कुमार, प्रस्त कुमार नथा ज्ञानिकाद की कथाए चौपई इस्टर में निबद्ध हैं। रचना की एक पार्शक्रविर मट्टारकीय दिन जैन मान्दर सबसेर से सबदीत है।

## ४६ चन्द्रप्रम स्वामीनो विवाह (४३२६)

प्रस्तुत कृति म० तरेष्ट्रकीति की है जिसे उन्होंने सबन १६०२ में छुटोबड किया था। किय न इस काब्य को गुजरात प्रवेश के महसाना नगर में समाप्त किया था। व महारक सुप्रतिकीति क गृरू आहा नहाक सकलभूषण के शिष्य थे। विवाहनी भाषा एवं वर्शन जैसी की दृष्टि से सामान्य है इसकी एक पांक्ट्रिनिए कोटा के बीरासली के मन्दिर से उपस्तव हुई है।

## ५० सम्यक्त्व कौमुदी (४८२८)

जगतरार्य की संस्थवर कीमुरी कवा हिन्दी कवा कृतियों से प्रच्छी कृति है। इससे विभिन्न कवायों का संबह है। कि "धार्गरे के निशसी थे। कवि की पचनित्र पर्वावनितका, धानसविनास धारि पहिने ही उपसब्ध हो चुकी हैं। रचना सामान्यतः धन्छी है।

#### ११ होली कथा (४६००)

यह मुनि मुमबन्द्र की कृति है। जो सामेर नादी के सहारक वशवकीति के जिय्य ये। मुनि श्री हकोती बवेब के कुजबपुर से रहते ये। यहां बन्द्रसभ स्वामी का जैन्यालय वा श्रोर स्वी से इस रचना को छन्दी-बद्ध किया गया था। रचना साथा की हरिट से सन्दर्श कथा कृति है। इसकी रचना वसंवरीका से विश्वित कथा के सनमार की गयी है।

मुनि मुभवन्द करी या कथा, धर्म परीक्षा मे ली जथा। होली कथा मुने जे कोई, मुक्ति तरगा सुख पावे सोय। सबत सतराम परि जोर, वर्ष पवावन प्रविक ग्रोर ॥ १२६ ॥

#### ५२ वचन कोश (५२३२)

वृत्ताकीदान कृत ववनकोश दिन्दी भाषा की अच्छी हीत है। कवि की पाण्डबपुरास एव प्रकातरोगसकावार दिन्दी अगत की उत्तक दुनिया है जिल पर ग्रन्थ कृती के पूर्व भागों से प्रकाश द्वारा जा कृत है। वयनकोश के माध्यम में केन शिक्षान को कोश के रूप में प्रस्तुत करके कवि ने हिन्दी बगत की महान् सेवा की है। इस होते का प्यनाकान सबत १९३३ है। यह कवि की प्रारम्भिक कृति है। दचना प्रकाशन योग्य है।

## श्रायुर्वे**द**

#### ४३ धजीर्गमंजरी (४४६२)

ग्यामनकां फंतेहपर (शेवाबाटी) के शासक नयामका के शासन काल के हिन्दी कि ये । उन्होंने पानुनेंद को इस अ़ति को वंदक शाम्त्र के अन्य प्रत्यों के अन्ययन के प्रकात सिखी थी। इससे जात होता है कि न्यामतला सस्कृत एवं हिम्दी दोनों ही आयाधों के बिद्धान थे। इसकी रचना संवत १७०४ है। कि ने ने सिखा है कि उसने यह रचना दूसनों के उपकारार्थ नित्यों है।

> वैद्यक शास्त्र को देखि करी, नित यह कियो बखान । पर उपकार के कारग़ी, सो यह ग्रन्थ मुखदान ।। १०२ ।।

#### ४४ स्वरोदय (५७६४)

प्रायुवंद विषय पर यह मोहनदास कासस्य की रवना है। यदाश इस विषय की यह लघुरचना है। नाडी परीक्षा पर भी स्वर के साथ इसमे विशेष वर्णन है। सबत १६८७ मे इस रचना को कन्नोज प्रदेश मे स्थित नेमखार के समोप के ग्राम कुस्स्य में समाप्त किया गया था।

## रास, फागु वेलि

## ४४ बहा जिनवास की रास संज्ञक रचनायें

बह्य जिनदास सस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही महाकवि ये। दोनों ही मावाओं पर इनका समान अविकार या। इससिये जहां इन्होंने संस्कृत में बड़े बड़े पुराया एवं वरित्र प्रन्य लिले वहां हिन्दी में रात संत्रक रचनाये तिल कर १४ वीं खताब्दी में हिन्दी के पठन पाठन में घपना धपूर्व योग विधा। प्रस्तुत शम्य सूची में ही इनकी १४ रचनाओं का व्यवस्था दिया गया है। इनमें संस्कृत की ४, प्राष्ट्रत की एक तथा ग्रेय ४१ रचनायें हिन्दी भाषा की है। प्रस्तुत भन्य सूची में खबसे प्राचिक इतिया इन्हों की है इसविये वहा निजयास साहिस्यक सेवा इतिष्ट से सर्वायिर है। किब की बिक रास सक्रम रचनाओं की उपस्थिय हुई है दनने नाम नित्न प्रकार है—

१. श्रजितनाथ रास	(११३३)	२. ब्रादिपुराश रास	(६१३५)
३. कर्मविपाकरास	(६१४६)	४. जम्बूस्थामी रास	(६१५३)
५. जीवंधर रास	(६१४७)	६. दानफल रास	(६१६१)
७. नवकार रास	(६१७१)	<ul><li>घमंपरीक्षाराम</li></ul>	(६१६५)
६. नागकुमार रास	(६१७२)	१०. नेमीश्वर रास	(६१७३)
११. परमह+ रास	(६१८०)	१२. भद्रबाहुर'स	(६१११)
१३. यशोधर रास	(4889)	१४. रामचन्द्र रास	(६२०२)
१४. राम रास	<b>(६२०३)</b>	१६. रो∤िग्गीराम	( <b>६</b> २०६)
१७, श्रावकाचार रास	(६२१४)	<b>१</b> ०, श्रीपाल रास	(६२१५)
१६. श्रृतकेवलि रास	(६२२३)	२०. श्रीसाकराम	(६२२४)
२१. सोलहकारण रास	(६२३८)	२२. हनुमत राम	(६२४३)
२३. धनतत्रत रास	(35505)	२४ ग्रठाईसमूलगुरा रास	(१०१२०)
२५. करकडुनो रास	(६१४७)	२६. चारदन प्रवय गम	(207.0)
२७. धन्यकुमार रास	(६१६३)	२६. नागश्रीरास	(१०२३६)
२६. पानीगालग रास	(१०१२०)	३०. बकचूल गीम	( = 9 € 0 )
३१. भविष्यदत्त रास	(६११३)	३२. सम्यक्त्य रास	
३३. मुदर्शन राम	(१०२३१)	३४ हाली । स	(36236)

१५ की बतास्त्री से होने वाने एक ही किब के इननी प्रशिक राम सजक बुनियों का उपलब्धि हिन्दी साहित्य के इनिहास से सम्मुन एक सहत्वपूर्ण कहानी है। किब का राममीताराम ही स्थानकि नुत्रमीदास की रामाया है। बीने कि कि कि कि कुछ इतिकार हो। धीन कर साम रामाया पर सेवी की दौट से उस्लेखनीय है। किब का जाजस्वान का बातर अरण एव पुत्रमत मुख्य ने प्री स्वान करा बात इसिंग एवं पुत्रमत मुख्य ने प्री स्वान करा बात का बातर अरण एवं पुत्रमत मुख्य ने प्री स्वान करा बात का बातर अरण एवं पुत्रमत मुख्य ने प्री स्वान करा बात के स्वान करा बात करा करा विकास करा करा विकास करा बात करा विकास करा विकास करा करा विकास करा विकास करा विकास करा विकास करा विकास करा विकास करा करा विकास करा विका

ब्रह्म जिनदास को रचनाम्रो का सभी सून्याकन नहीं हो पाया है। यद्यप्ति कवि पर राज्य्यान विकाय विद्यालय में ब्रोम कार्य चल रहा है लेकिन प्रभोतक घनेक साहित्यिक दिख्या है जिनके प्राधार पर कवि का मून्याकन किया जा सकता है। एक ही नहीं वीसी कोध निकस्य लेख जा सकते है।

वित महारक सकलकीर्ति के भाई ही नहीं किन्दु उनके प्रमुख किया भी थे। इन्होने प्रपत्ती कृतियों में पहिले सकरशांति की स्पीर उनकी मृत्यु के पण्यान मुश्यक्तिर्दिका स्मरण किया है वो उनके पण्यान महारक गादी पर बँठे थे। का जिनदास रास सजक रक्ताओं के स्वितिरक स्पीर भी रक्तायें निक्कों है। जिनके सामार पर यह कहा जा नाता है कि किय संजीमुखी प्रतिमा वाले विदान थे।

### थ्र अतुर्गति रास (६१४६)

वरिचन्द हिन्दों के प्रच्छे कि वं । इनकी प्रव तक कितनी ही रवनाधों का परिचय मिल चुका है। इन रचनाचों में चतुर्गति रास इनकी एक लघु रचना है। जिसको एक पाण्डुलिपि कोटा के बोरसली के मन्दिर के ब्राटन मण्डार में संबद्धीन है। रचना प्रकाशन योग्य है।

#### ४७ वर्धमान रास (६२०७)

अपवान महबीर पर यह प्राचीनतम राझ सजक काथ्य है जिसका रचना काल सबत १६६५ है तथा जिसके निर्माता हैं वह मान कि । रास यद्यपि प्रभिन्न अका नहीं है कि सभी महावीर पर किली जाने वाली यह उस्सेलानीय रचना है। काथ्य की इस्टी से भी यह अध्यक्षी रचना है। वर्षमान कवि ब्रह्मचारी ये और सहारक व्यक्तिमुक्ता के मिन्न ये।

> सबत सोज पामध्य भागंश्वर मुद्दि पत्रमी सार । बहा बर्धमाँ राम रच्यो तो सामनो तम्हे नरनारि ॥

## ५= सीताशील पतःका गुरावेलि (६२३२)

बंसि सज़क रचनामों में भाषायं अपकीर्ति की इस रचना का उल्लेखनीय स्थान है। इसमें महासती भोता के उल्क्रस्ट चरित्र का यजीशान गाया गया है। भाषायं अपकीर्ति हिन्सी के मण्डे किय थे। मस्तुत यन्य सूची में ही उनस्ती ६ रचनामों का परिचय दिया गया है। इतने सकतकवितरात, समरस्त मित्रानन्य रासो, रिवित्रत कथा, बनुदेय प्रकल, जानमुनदी प्रवस्य उन्त बेनि के म्राविरित्त हैं। कित के काव्य के विवय क्यों में रचनामें निश्मी मो तथा मानी अतियां की विषय क्यों में सिल्य कर पाठकों को इस मोर क्या जायत किया करते थे।

प्रा० अग्रकोति ने मट्टारकीय युग में मट्टारक सकतकोति की परस्परा में होने वाले भ० रामकीित के जिय्य बद्धा टरखा के आग्रह से यह वेजि जिलों यो। इस का रचना काल संबत १६७४ ज्येष्ट सुदी १३ चुंचवार है। यह गुजरान प्रदेश के कोटनगर के प्रादिनाथ चैत्यालय में जिल्लो गयी थी। प्रस्तुत प्रति की एक ग्रीर विशेषता है कि बहु स्वय प्रथकार के हाथ से लिली हुई है जैसा कि निस्न प्रवस्ति में स्पष्ट है—

मक्त १६७४ ग्रायाउ सुदी ७ गुरो श्री कोटनगरं स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं आ॰ श्री वर्षकीर्विना स्वत्रस्ताच्यां विभिनेय ।

#### १६ जम्बस्यामोरास (५१५४)

प्रस्तुत रास नयविषयन की रचना है। इसमें शन्तिम केबली जम्बूस्वासी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश द्वाला नया है। यह राख प्राथा एवं जैती की दृष्टि से सत्यधिक सहत्वपूर्ण है। रास में रचनाकाल नहीं दिया है केकिन यह १० वीं जनाव्यी का मालून देता है। इसको एक प्रति खास्त्र मण्डार दि॰ जैन मन्दिर बोरसणी कोटा में संग्रहीत है।

#### ६० ध्यानामृतरास (६१७०)

यह एक प्राध्यासिक रास है जिससे ध्यान के उपयोग एव उसकी विशेषतायों के बारे में विस्तृत प्रकाद डाला गया है। रास के निर्माता है ब॰ करमसी। जो भट्टारक गुभवन्द्र के प्रांतप्य एव मुनि विनयवन्द्र के फ़िष्य थे। रास की मापा एवं शैली सामान्य है। कवि ने युपना परिचय िस्न प्रकार दिया है—

> जिन सामण विराजयो विश्वह पद्य प्रयासण सूर । वाउविह सम्ब सदा जयो विषन जायो तुम्ह दूर ।। श्री शुभवन्द्र सूरि नमी समरी विनयवन्द्र मुनिश्य । निज बृद्धि अनुसरि रास कियो ब्रह्म करमसी हरसाय ।।

#### ६१ रामरास (६२०४)

रामरास कविवर मायवदास की इति है। यह इति बाल्मीकि रामाध्या पर शाधारिन है। ग्वना सबत नहीं दिया हुम्रा है लेकिन रास १७ वी शताब्दी का मालूम पडता है। मबत् १७६८ की लिखी हुनी एक पाण्डलिपि दि॰ जैन कब्बेलबान मन्दिर उदयपुर में संबहीत है।

#### ६२ थे शिकप्रबंधरास (६२२४)

यह बहा समजी की रचना है जिसे उन्होंने सबन १०७४ में समान की थी। जीव ने प्रपनी होते की प्रव एवं रास दीनों सिक्सा है। यह एक प्रवप काव्य है भीर आपा ाव तीनी की हरिट से काव्य उन्नेगनीय है। समवान महाबीर के प्रमुख उपासक महा-ाजा थे लिक का जीवन का विन्तृत बगान रिया गया है। ज्वना प्रकाशन सीम्य है।

#### ६३ सुकौशलरास (६२३४)

वेसीदास भट्टारक विश्ववेत के शिष्य थे। मुकोशल्यान उन्हीं की प्रवाह है जिसे उन्होंन १० वी शताब्दी में निबद्ध किया था। यद्यिय यह एक लयु राम है लेकिन साम्यक की ट्रिट में सह एक पन्धी होते है। राम की पाण्डुलिपि सहमदाबाद के शानिनाथ वेस्थालय में सबन् १०१४ की माय मुदी प्रवास का की साथ भी वी आप्रकल होंगपुर के शास्त्र मण्डार में समझीत है।

#### ६४ बृहद्वपागच्छ गुरावली (६२६८, ६२६६)

श्वेनास्वरीय त्यापच्छ से होने वाले राष्ट्रयों ही विस्तृत प्रश्चिता की एक प्रति हिन्दीन प्रवास प्रवास सिन्दर समझ की एक प्रति पंचायती सिन्दर स्थापन के प्राप्त अध्यार से स्वहीत है। दोनो ही पाचुनियाय पाचित है नेकिन भरतपुर वाली प्रति प्रक्रिक की है और रूपनों से गूर्ण होनी है। मलकर बाली प्रति से पुलि सुक्यपूरित के से गुरूपों की प्रदायनों दो हुई है। जबकि भरतपुर वाली प्रति स्वयं मुक्त सुन्दर मूर्रि की तिसी हुई है और उसका नेवन कान सबन् १४६० कायुग्य सुन्दी १० है।

## ६५ मट्टारक सकलकीतिनुरास (६३१०)

भट्टारक सकलकीति १४ वी धताब्दी के जबरदस्त बिद्वान सत में । जैन बारु स्य के निष्णात जाता थे । उनकी वाणी में सरकती का बास या एव वे तेबोमय व्यक्तित्व के पनी थे । उन्होंने बागड देख में मट्टारक सस्या की इननी गहरी नीव लगाओं कि बहु धागामी २०० वर्षों तक उपने समस्त समाज पर एक छत्र राज्य किया । स्ट्रारक सकलकीति रूप ज के विद्वान एवं धनेक मास्त्रों के रचिया थे । इसके प्रविच्य मी वहे भारी साहित्य तेषी होते रहे । प्रनृत्त रास में मट्टारक सकलकीति एवं उनके ब्रिय्य पर भुवनकीति का संक्रिय पित्व वे भारी साहित्य तेषी होते रहे । प्रनृत्त रास में मट्टारक सकलकीति एवं उनके ब्रिय्य पर अवनकीति का संक्रिय परिच्य दिया गया है । राग ऐनिहानिक है घीर यह उनके जीवन की कितनी घटनाओं का उद्घाटित करता है । रास के प्रारम्भ में प्राच्या पर परम्पार दी है । धीर किर ए० सकलकीति के जन्म, माता, विता, प्रध्यपन, विवाह, संयम प्रहार, पर परम्पार पर परम्पा, प्रथ पन स्वाह पर पर प्रसार पर परम्पार । इसके परमात् । इसके परमात्य

हर सामल की यह रचना प्रश्लाधिक शहरववूगां है जिसकी एक पाण्डालिप उदयपुर के सभवनाथ मन्दिर में सबहीत है।

## विलाम एवं संग्रह कृतिया

#### ६६ बाहुबलि छन्द (६४७६)

यर लघुरवता भ० प्रभावन्द्र के शिष्य बादिवन्द्र की कृति है। इसमे केवल ६० **पट हैं जिसमें** भरत सम्राट के छोर भाई बाहुबलि की प्रमुख जीवन घटनाधों का वर्णन है। रचना **ग्रन्छी है। तथा एक संब**ह ग्रंथ में सगरीन है।

## ६७ चतुगंति नाटक (६५०४)

आजूराम हिन्दी के प्रसिद्ध कवि था। य ब सुची के उसी भाग में उनकी द सीर रचनाधी का विवरण दिया गया है। अर्जुगति नाटक में चार नािन देव, मृत्युत्त, तिर्यञ्ज और नरक्यानि में सहे जाने वाले दुःखों का वर्षान किया गया है। यह ओव स्वय उनन् क्यो नाटक का नाथक है जो विभिन्न मौनिमी की चारण करता हुआ। सवार परिश्रममा करता रहता है। रचना अच्छी है तथा पठनीय है।

#### ६८ संबोध संत्रागुन इहा (६७७६)

यह बीरचन्द की रचनाहै जो सबोधनात्मक है। बीरचन्द का परिचय पहिले दिया वा चुका है। भाषा एवं गैली की टिप्ट मे रचना सामान्य है।

#### स्तोत्र

#### ६६ ग्रकलंकदेव स्तोत्र मावा (६७६४)

स्रकलंक स्तोत संस्कृत का प्रसिद्ध स्तोत्र है सौर यह उसी स्तोत्र की परमतस्रक्षिती नाम की भाषा टीका है। इस टीका के टीकाकार चंपालान बागडिया है जो ऋालरापाटरा (राजस्थान) के निवासी थे। टीका विस्तृत है तथा बहु पद्धमय है। टोकाकाल सबल् १६१२ श्रावरण सुदी २ है। टोकाकी एक प्रति बूंदी के पान्नसंबद मस्तिर के समस्य भण्डार में संग्रहीत है।

#### ७० ग्राहिनाथ स्तवन (६८०७)

यह स्तवन तप्रायच्छीय साधु सोमसुन्दर सूरि के किया येहड द्वारा निमित है। इसका रचनाकात संबत् १४८२ है भाषा हिन्दी एवं पद्म सस्था ४० है। इसमें राएकपुर के मन्दिर का सुन्दर वर्शन किया गया है रचना ऐतिहासिक है। स्तचन का अन्तिम पद्म निम्न प्रकार है—

> भगति करूं सामी तुष्ठी ए छइ दरसण् दाण् । चिहु विसि कीरति विस्तरी, ए घन घरण् प्रथम । संवत चयुवनवाण्यद ए पुरि काली माले महुठ कहुद नद्द स्तवन कीड मति रोला लोते । ४८ ।। इति श्री राख्यर में प्रणा श्री भाविनाय स्तवन वेग्स्यों ।।

#### ७१ मक्तामर स्तोत्र भाषा टीका (७१७३)

सकामर स्तोत्र को हेमराज कृत साथा टीका उत्लेखनीय कृति है। दि० जैन मन्दिर कामा के बाह्य सम्बार में २६ पृष्ठों वाली एक पाण्डुलिपि है जो स्वयं हेमराज की प्रति थी ऐसा उस पर उल्लेख मिलता है। यह प्रति सवत् १७२७ की है। स्वयं यं बकार की पाण्डुलिपियों में हमका उल्लेखनीय स्थान है।

#### ७२ मक्तामर स्तोत्र वृत्ति (७१८४)

भक्तामर स्तोत्र पर भ०रलचन्द्रको यह सस्कृत टीका है। टीका बिस्तृत है तथा सरल एव सुवेष्ट है। अवसेर की एक प्रति के अनुसार इसकी टीका सिद्ध नथी के तट पर स्थित ग्रीवापुर नगर के पार्थनाव चीट्यालय में की गई थी। टीका करने में आवक करमसी ने विशेष ग्रावट किया था।

#### ७३ वर्षमान विलास स्तोत्र (७२८७)

प्रस्तुत स्तोत्र भट्टारक जानभूषणा के प्रमुख शिष्य भ० जगद्शृषणा द्वारा विरक्ति है। इसमे ४०१ पक्ष है स्तोत्र विस्तृत है तथा उसमें भगवान महावीर के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है। पाण्डुलिपि धपूर्ण है तथा प्रारम्भ के २ पत्र नहीं है फिर भी स्तीत्र प्रकाशन होने योग्य है।

#### ७४ समवशरण पाठ (७३५४)

सस्कृत भाषा में निबद्ध उक्त समबद्यारण पाठ रेखराज की कृति है। रेखराज किंव ने इसे कद्य समाप्त किया वा इसके बारे में कोई उल्लेख नहीं मिलता है। रचना सामान्यतः ग्रच्छी है।

इसी तरह समवधारण मगल मनुकांव मायाराम का (७२५५) तथा समवसरण स्तोत्र (विष्णुसेन) को इस विषय की उल्लेखनीय कृतिया है।

## पूजा एवं विधान साहित्य

उक्त विषय के प्रस्तर्गत जन रचनाधों को दिया गया है जो या तो पूजा साहित्य, में सम्बन्धित हैं सथवा प्रतिक्ठा विद्यान प्रांति पर निक्की गयी है। प्रस्तुत विद्यान की १६७५ पाण्ड्रीनिष्यों का परिक्य हस आग में दिया गया है जंब सूची के आग में सबसे प्रांतिक कृतियां इन्हीं विषयों की है। ये सूजाएं मुख्यतः सक्कृत एवं हिस्दी भाषा को है। यूजा साहित्य का मध्यकाल में कितना प्रांतिक प्रचार या यह इन पाण्ड्रीनिष्यों की सदया से जाना जा सकना है। इस विषय को इक्क प्रजात एवं उन्नेवानीय रचनायं निम्म प्रकार है—

ŧ	श्रकृत्रिम चैत्यालय पूजा	मल्लिसागर	(७४६४)	सस्कृत
?	बनन्तचतुर्दंशी पूजा	मास्ति <i>र।</i> स	(\$38¢)	1,
3	धनन्तनाथ पूजा मडल विधान	गुर् <b>गचन्द्राचा</b> र्थ	(৬% ০০)	,,
¥	धनन्तवन कथा पूजा	वितकीति	(७५१६)	1,
×	धनम्तवत पूजा	पाण्डे धर्मदास	(७११७)	,,
Ę	धनन्तवत पूजा उद्यापन	सकलकीर्ति	(9 \$ \$ \$ 0)	,,
•	भ्रष्टाह्निका दतो <b>चा</b> पन पूजा	प० नेमिचन्द	(७४४६)	,,
5	मादित्यवार व्रतोद्यापन पूजा	वयसःगर	(७५७१)	,,
ĉ	कल्यासामन्दिर पूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(७६४७)	**
٠ ٢	चतुर्दशी व्रतो <b>द्या</b> पन पूजा	विद्यानन्दि	(७६=१)	"
11	चौदोस तीर्थकर पूजा	देवीदास	(७५७०)	हिन्दी
<b>१</b> २	चतुर्विशति तीर्थंकर पचकल्यासक पूजा	जयकीर्ति	(9288)	संस्कृत
<b>₹</b> ३	जम्बूद्वीप पूजा	प० जिनदास	(७८६८)	,,
**	तोस चौदीस पूजा	प <b>० साधार</b> सा	(७६२५)	,,
<b>?</b> ¥	त्रिकाल चतुर्विणति पुत्रा	त्रिभुवनचन्द्र	(383cl)	,,
<b>१</b> ६	त्रिलोकसार पूजा	नेमी <b>च</b> न्द	<b>(७१</b> ६२)	हिन्दी
e; \$	**	सुमितसागर	(ક્ષ્યકલ)	संस्कृत
<b>?</b> =	दशलक्षरावृतोद्यापन पूजा	भ० ज्ञानभूषरा	(८० <i>६</i> ४)	संस्कृत
3 🕈	नन्दीश्वर द्वीय पूजा	प० जिनेश्वदास	(=२२१)	19
२०	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	<b>वि</b> रधीचन्द	<b>(</b> ⊏२३१)	हिन्दी
२१	पच कल्यारएक पूजा उ <b>द्या</b> पन	गु <b>जरमल</b> टग	( <b>≍</b> ₹३६)	"
??	<b>९च क</b> ल्याग् क पूजा	प्रभाचन्द	( = 3 × 8)	संस्कृत
<b>२</b> ३	पच कल्याराक	वादिभूषगा	(# <del>?</del> %%)	**
२४	पच कल्य। शाक विधान	हरी किणन	(=?Co)	हिन्दी
₹ <b>₹</b>	पद्मावती पूजा	टोपस	<b>(</b> 5754)	संस्कृत
२६	पुत्र । ष्टक	ज्ञानभूषरा	(६४५२)	29
२७	प्रतिष्ठा पाठ टीका	परशुराम	<i>(≈६२३)</i>	,,
२८	लघु पंच कत्याराक पूजा	हरिमान	(=0 € 0)	हि म्दी

#### ( प्रवतीस )

₹8	वत विधान पूजा	श्रमरचन्द	(5505)	हिन्दी
₹•	षोडशकारसा व्रतोद्यापन पूजा	सुमतिसागर	(€3€3)	संस्कृत
₹ ₹	सम्मेदणिखर पूर्जा	ज्ञानचन्द	(\$232)	हिन्दी
₹?	सम्मेदशिखर पूजा	रामपाल	(=33=)	,,

#### गुटकासंब्रह

#### ७६ सीता सतु (६१६६)

यह कविवर मगौतीदात की रचना है जो देहली के ध्रापभंत्रा एवं हिन्दी के प्रतिस्व कियं । ध्रजार के भट्टारकीय झास्त्र भण्डार से एक बड़ा गुरुका है जिससे सची रचनायं प्रगीतीदास विद्यालत है। सीनास्त्र भी उन्हीं से से एक रचना है जो दूसरे गुरुके से भी मधहीत है। यह सबत् १९८४ की ज्वला है कॉव ने जो घणना परिचय दिया है वह निस्न ककार है—

> मुख्युनि महिदसैसा भगोती, रिसि पद पक्क रेसु भगोती। इस्प्युसस बनि तनुक भगोती, तुरिस ग्रह्मो त्रुतु मुक्त भगोती। नगरि चुडिस्टे बानि मगोती, जन्म भूमि कि मानि मगोती। सम्बाल कुल बस लगि, पहित पद निरक्ति भनि मगोगी।

सीतासत् की कृत पद्य संख्या ७७ है।

#### ७७ मृगी संवाद (६१६६)

यह किव देवराज की कृति है जिसे उन्होंने सबत् १६६३ में लिली थी। सबाद रूप में यह एक स्<sup>तरर</sup> काव्य है जिसकी पद्य सल्या २५० है। किव देवराज पासचन्द्र सूरि के शिष्य थे।

#### ७८ रत्नचूडरास (६३००)

रत्नलूडरासं सबत् १५०१ की रचना है। इसको पद्य सक्या १३२ है। इसकी मापा राजस्थानी है नेणा काव्यत्व की हुटि से यह एक सच्छी रचना है। कवि बडनवगच्छ, के साधु रत्नमृति के लिएय थे।

#### ७६ बद्धि प्रकाश (६३०१)

घेल्ट हिन्दी के प्रच्छे कवि थे । बुद्धिप्रकाण इनकी एक लघु रचना है जिसमे केवल २७ पद्य है । रचना उपदेशात्मक एवं सुमापित विषय से सम्बद्ध हैं ।

## ८० वीरचन्द दूहा (६३६६)

यह लक्ष्मीचन्द को ंकृति है जिसमें मट्टारक बीरचन्द के बारे में ६६ पण्डो में परिचय प्रस्तुत किया है। रचना १६ वी शतीब्दी को माञ्चम पड़ती है। यह एक प्रकाशन योग्य कृति है।

#### दश् धर्मलपुर जिन वन्दना (६३७१)

यह रचना भी कविवर मगवतीयान की है जो देहनी निवासी थं। इसमे ग्रागरे में सवत् १६४१ में जनते भी जिन मन्दिर एवं चेत्यानय थ उन्हों का वर्णन किया गया है। रचना ऐतिहासिक है तथा "मर्गलपुर पट्टिशा जिला मन्दिर जो प्रतिमा रिनि गई" यह प्रत्येक पद्य को टेक है। प्रत्येक पद्य १२ पिक वाला हैं। पूर्ये परिन पर पत्र हैं। प्रत्येक पद्य १२ पिक वाला हैं। पूर्य रचना में २९ पत्र हैं। प्राग्य में तत्कालीन प्रावकों के भी कितने ही नामों का उल्लेख विद्या गया है। एक उदाहरण देलिये—

साहुनराइनी करिंड जिनालय क्रित उत्तग धुज सोहद हो।
गथकुटी जिन बिब बिराबत प्रमार खबर लोहह हो।
जगभुगुनु मट्टारक तिट थिंज कर्भु करि छुमद यो हो।
जगभुगुनु मट्टारक तिट थिंज कर्भु करि छुमद यो हो।
जिनि ४कु ब्लोकु मुनायो मुल यानी रामधुरी धीन लोक हो।
जिह सम्बर्धिन हस विराजद सोम खस बा स्तोक हो।
नृद मराल अर्थि जांति जहां ने तिह मरिंसोभा नाही हो।
जानी घर शानी जग सहगा समुफ्ति लालो मनसाही हो।
गानी यह शानी जग सहगा समुफ्ति लालो मनसाही हो।
गान सुफ्त लव्हि मन माहि सगुण जग्ना सुनि वानी गुढ़ देवा।
गान मुल्ड सिंस प्रभी पर पावहि कर्याह साधु रिसि सेवा।सर्था।

#### **८२ संतोष जयतिलक (६४२१)**

यह ्वराज कार्य का रूपक काव्य है जिसमें सतीय की लीम पर विजय का वर्णन किया गया है।
सभीय के प्रमुख ग्रंग है की।ल, सदाचार, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र, वैराग्य, तथ्, करुणा क्षमा एवं सयम । लीम के प्रमुख ग्रंगों में मान, बीध, मीह, माया कलह आदि हैं। कवि ने इन पात्रों की संयोजना करके प्रकाश भीर प्रम्यकार पार की मीलिक उद्भावना प्रस्तुत की हैं। इसमें १३१ पद्य हैं जो मार्थिक, रह रिश्वका, गाया, दोहा, पद्या, प्राट्मिन, रामा, स्राद्य छुट्यों में विभक्त है। इस काव्य की एक प्रति दिन जैन मन्दिर नैमिनाय बूदी के स्राप्त प्रश्वार में स्वरीत हैं।

## **८३ चेतन पुरुगल धमालि ६४२१)**

यह काँव का दूसरा रूपक काव्य है। बैसे तो कवि का 'मयए जुरूम' अत्यक्षिक प्रसिद्ध स्पक काव्य है। लेकिन भाषा एव ग्रेलों की दृष्टि से चेतन पुराल धमालि सबसे उत्तम काव्य है। इसमें किव ने जीव और पुराल के पारस्परिक सम्बन्धों का गुननारमक स्थान किया है। बास्तव में यह एक सवादास्पक स्पक काव्य है। जिसके वह एवं जीव दोनों नावक है। काव्य का पूरा संवार रोचक है तथा किव ने उसे वहें हो सुन्दर उंग से प्रस्तुत किया है। इसमें १३६ पछ हैं जिनसे १३६ पछ दीपकराय के तथा ४ पछ सार छत्या छत्व के हैं। रचना में स्वाकाल का उत्तेख नहीं है। धन्तिम पछ निम्म प्रकार है—

जे वचन श्रीजिए। धीरि भासे, तास नित घारह हीया। इव मणइ वचा सदा निम्मल, मुकति सरूपी जिया।।

#### **८४ ग्राराधना प्रतिबोधसार (६६४६)**

यह कृति भा• विभन्नकौति की है जो संभवतः भः सक्तकौति के पश्चान् गादी पर बंटे वे लेकिन प्रभिक्त दिनों तक उस पर टिके नहीं रह सके। इस कृति मे ४५ छन्द हैं। कृति मारावना पर सम्बद्धी सामग्री प्रस्दुत करती है। इसकी मांधा प्रपर्भेष मय है।

> हो बाप्पा दक्षण णाता हो, ब्राप्पा सबस जाता। हो बाप्पा मुख्य गमीर हो, बाप्पा बिज पद बार ।।४१॥ परसप्पा परसबद्धेद, परसप्पा सकल बाभेद । परसप्पा देवल देव, इस जात्सी ब्राप्पा सेव ।४१॥

#### **८५ सुकौशल रास (६६४**६)

यह सांसूकित की रचना है जो प्रमुख रूप से चौपई छन्द में निबद्ध है। प्रारम्भ से किन का नाम सानु भी दिया गया है। इसी तरह कृति का नाम भी "सुकोसल रास च उपई" दिया है। किन ने प्रपने नामोल्नेस के स्रतिरिक्त सन्य परिचय नहीं दिया है सौर न प्रपने गुढ़ परम्परा का हो उल्लेख किया है। नास की माया सरन एवं सुबोध है। एक उदाहरण देखिये—

> स्रजोध्या नगरी स्रति मली, उत्तम कहीइ ठाम । राज करि परिवार सु, कीति धवल तस नाम ॥१०॥ तस घारि राणी रूपडी, रूपवत सुव सेव। सहि देवी नामि सुणु, भक्ति मननार विवेक ॥११॥

#### द६ बलिमद्र चौपई (१६४**६)**

यह चौपई काव्य ब्रह्म यशोधर की कृति है जिसमें नैसठ शानाका महापुरानों में ने स्विन मंदे। पण प्रकास बाला प्या है। इसका रचना काल सबत १५८५ है। इक्त नगर के प्रतिन नाथ चैत्यात्र से दशकी रचना की प्याची थी। तुरु स्वीचर कर रामदेव के प्रमुक्त में होने वांत्र महारक प्रशाक्त कि कि निष्य थे। चीपई में १६६ प्या है।

> सबत पनर पञ्चासई, स्कंब नगर मभारि । मविण ग्रजित जिनवर तीण ए गुरा गाया सार ॥१८६॥

#### ८७ यशोधररास (६६४६)

यह सोमकोर्तिका हिन्दी काव्य है जिसमें महाराज्य बकोघर के जीवन पर प्रकास डाला गया है। रचना गुढ़ लीनगर के बौत जनगथ स्वामी के मन्दिर में की गयी थी। सारा काव्य दक्ष डालों से विमन्त है। वे डाले एक रूप से सर्वका ही काम देती है। इसकी भाषा राजस्थानी है जिसमे कहीं कहीं गुजराती के सब्दी का भी प्रयोग हुझा है। रास की संवन १६=५ की पाण्डु निष् कूँदीन्गर के मन्दिर कैंगुटक में उपनब्ध होनी है।

#### ६० चूनड़ी. ज्ञान चूनडी प्रांवि (१७०८)

चूनडी एव झान चूनडी, पर सग्रह. नेमि व्याह पच्चीसी, बारहलाड़ी एव झारदा लख्मी सवाद सादि सभी रचनायं वेगराज कवि की हैं। कवि १६ वी णतान्दी के थे।

#### **६१ नेमिनाच को छ**न्द (६६२२)

'नैमिनाच को छंद' कृति हेमचन्द्र काहै जो श्रीप्रदर्श के जिष्य थे। इसमें नैमिनाचका कीवन चित्रित किया गया है। रचना विनिध्र छुन्दी में किशनः है छन्द की माद्या सरकृत निष्ठ है लेकिन वह सरल एवं सामान्य है। इसकी पद्य संस्था २०४ है। रचना प्रकाशन होने और्य है।

#### दद शालिमदरास (१६७८)

यह श्रावक फकीर की रचना है जो वधेरवाल जाति के खडीय्या गोत्र के श्रावक ये। इसका रचना काल संबन् १७४३ है। राग की पढ़ संख्या २२१ है। रचना काल निम्न प्रकार दिया गया है—

> ग्रहो मक्त् स्तरामं वरस तीवाल । मास क्रेसाल पूरागम प्रतिपाल । जोग नीलन सक्त मत्या मिल्या गुडामसी । पूरणवास रखते सनरफ राजई। पहो सगली मन की पुगली जास गालियद्र गुण करलंड ।।२२१।।

#### पह गुराठारमा गीत (६६८३)

मुखाठारणा गीत ( गुखारचान गीत) बहा बदाँन की इन्ति है जो शोमाचन्द सूरि के खिष्य थे। गीत बहुत छोटा है भीर १७ छन्दों में ही समाप्त हो जाता है। इसमें गुणस्थान के बारे में सच्छा प्रकाश बाला गया है। माचा राजस्थानी है।

#### ER 48 (EE34)

यह एक मुसलिम कवि की रचना है जिसमें नेमिनाथ का गुणानुबाद किया नया है। नेमिनाथ के जोवन पर किसी मुमलिम कवि द्वारा यह प्रथम पर है। कवि नेमिनाथ के जीवन से परिचित्त हो नहीं या किन्तु वह उनका मक्त भी था। जैसा कि पद कं। निम्न पक्ति से जाना जा सकता है—

> छपन कोटि जादी तुम मुकुट मिन। तीन लोक तेरी करत सेवा। स्नान मुहम्मद करत हो बीनती। रास्तिने मरण देवाचिदेवा।६।।

## १३ बनकुमार चरिउ (१०,०००)

धन्यकुमार चरित महाकवि रहवू की कृति है। रहधू धपन्न व के १५ वी ग्रताध्रि के उबरदस्त महा कवि थे। घब तक इनकी २० से भी धविक रचनायें उपनव्य हो चुकी हैं। धन्यकुमार चरित इसी कवि की रचना है जिसको पाण्डलियि कामा के दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार में सप्तरीत है।

#### ६४ तीर्षं कर माता पिता वर्णन (१०१३७)

यह सबत् १४४८ की ज्वना है जिसमें ३० यह है। इसके कवि है हेमनु जिसके दिता का नाम जिमझाम एवं माला का नाम बेल्हा था। वे गोलापूर्ज जाति के विशिक्ष थे। इसमें २४ तीचे करों के माला पिता, करीर, साबु स्नादिका वर्शन मिलता है। वर्शन के भाषा एक जैली सामान्य है। यह एक गुटके में सबहीत है जो असपूर के सक्कर के दि≎ जैन मन्दिर में सफ्हीत है।

#### ६४ यशोधर चरित (१०१८१)

सनमुखसागर हिन्दी के प्रज्ये कि वि । इनका गम्मेदशिखर महास्थ्य हिन्दो हति पहिले ही मिल चुकी है। प्रस्तुत कृति में यशोधर के जीवन पर वर्तान किया गया है। यह मंत्रत् १८८७ की हित है। इसी मवत् की एक प्रति कास्त्र भरेवार है। वि के निर्माण स्वार कि जीव मिल्द प्रतिहरू में सबहीत है। यह रिन्दी की घण्डी रचना है। मनगुलसागर की बभी और भी रचना मिलने की समावना है।

#### ६६ गुटका (१०२३१)

दि० जैन घरवान मन्दिर उदयपुर में एक गुटका पत्र सख्या १८-२१ हो। यह गृटका सबन् १६५१ से १६४३ तक विभिन्न वर्षों में लिया गया था। इसमें १८८ ज्वनाधी का स्थर है। गृटका के प्रमुख लेगर महुरक वी विद्यापुराण के प्रक्रिय एवं विनयकीति के जिय्य ४० थना थे उसमें जिनता भी हिन्दी कृतिया है व सभी महत्वपूर्ण एवं धप्रकाषित हैं। उन्हें किब ने भिन्नि, न्वयुष्धी नगरी में तिस्था था। गृटके से कुछ महत्वपूर्ण पाठ निस्न प्रकार है—

जीवघरराम	সি <b>সুৰন</b> শীনি	रचना काल सबन् १६०६
श्रावकाचार	प्रवापकोर्ति	
मुकमाल स्वामीरास	য <b>্দ</b> িৰ	
बाहुबलियोलि	गानिदास	****
सुकोणलरास	मागु	***
यशोधररास	मोमकीति	
भविष्यदनरास	विचाभूषगा	****
	श्रावकाचार मुकमाल स्वामीराम बाहुबलिवीलि मुकोभलरास यमोबरराम	स्रायकाचार प्रनापकीर्ति मुकस्यत् स्वामीरास धर्मसृष्टि बाहुबनियोलि गातिरास मुक्कोमबरास मागु

#### ६७ मट्टारक परम्परा

हूं गरपुर के शास्त्र भण्डार मे एक गुटका है जिसमें १४७१ में १६६२ तक सट्टारक सकलकोति की परम्परामे होने वाले म्ट्टारको का विस्तृत परिचय दिया गया है। सर्श प्रथम सगढ देश के मुभक्त राज्य से होने वाले देहभी पट्टाय पटटारक पपचन्द से पाम्परा दी गयी है। उसके बक्चान् भ० पद्मनिक्द एथं उसके बक्चान् भ० सकलकीति का उल्लेख किया गया है। भ० सकलकीति एक प्रुवनकीति के सध्य में होने वाले भ० विमनेटकीति का भी उल्लेख हुधा है। पट्टावनी महस्वपूर्ण हैन्या कितने हो नये तथ्यों की उद्घाटित करती है।

#### ६८ महारक पट्टावलि (६२८६)

उदयपुर के सभवनाय में ही यह एक दूसरी पड़ावली है जिसमें जो १६६७ मार्गशीय सुदी ३ गुक्तार से ब्रास्म को गयो है इस दिन पठ क्षमा का जम्म हुए। या जो भट्टारक देवेन्द्रकीत के पश्चान् सटटारक बने थे। इसके पदचात्र विशिक्त नगरों में रिहार एवं बार्ग्यास करते हुए, भावकी को उपदेश देते हुए सह १७५७ की मार्गकीय बुड़ी ए के दिन प्रदासवाद नगर में ही स्वर्गनाम लिया। उस समय उनकी प्रायु ६० वर्ष की यी। पूरी पहुरवनी अमेन्द्रकार्ति की है। एगे सिन्दुन पट्टावली बहुन कम देवने में ब्रायी है। उनकी ६० वर्ष की जो जीवन माथा कही गयो है वह पूर्णन: एनिहासिक है।

## ६६ मोक्षमार्ग बावनी (१५६३)

यह मोहनदास की बावती है। गरेहनदास कोन ये तथा कहा के निवासी थे इस **सम्बन्ध में कवि ने** कोई पश्चिय नहीं दिया है। इसमें मजैय्या, दोहा, कुबनिया एवं खण्यय मादि खन्दों का प्रयोग **हया है। बावनी** पूर्णत ब्राच्यास्मिक है तथा भाषा एवं गीनी को इस्टि से रचना उनम है।

> है नाही जामै नहीं, नहि उताति विनास। सो ग्रेजेट पातम दरव, एक भाव परगास॥१३॥ चित्र परता नहि मेरसम, अधिर न पत्र समान॥ जयो नरपवन अकीलनै ठोरन तजन मुजान॥१४॥

#### १०० सुमतिनाथ पुराश (३१०४)

दांशित देवदल सरकृत एसं हिम्दी के भन्नेत्र विद्वान थं । उनकी सस्कृत रचनाओं में सगर चरित्र, सम्मेदालया महत्स्या एक पृत्रांत चरित्र उन्तेसकीय वस्तायं हैं। मुम्मिताय पुरासा हिन्दी कृति है सिसमें पापने तीर्थ कर मुम्मिताय के कीनन पश्यकाण डाला गया है। इसमें पाच स्थाय हैं। कवि जिनेन्द्र मूचसा की जिल्हा में। पुरासा के कीन में मन्त्रा के ब्लोको का प्रयोग सिन्दा गया है।

# ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

प्रस्तुत यस मूची में बोग त्यार ने भी सिंघक पाण्ट्रिचिष्यों का बहुत है। जिनसे मूच प्रयूप्ण हैं। ये यस सभी भाषामी के हैं लेकित मुख्य भाषा सम्हल, प्राक्षत एव हिन्दी है। प्राक्षत भाषा के भी उन हो प्रांची की पाण्ट्रिजिया है जो राज्यकाल के प्रायूपण स्वारों में मिलती है। प्रयुक्त का बहुत कम रचनामें इस सूची में प्रायी है। प्रश्नेर एवं कामा जैसे प्रयाणारों को छोडकर प्रस्थन इस भाषा की चनामें बहुत कम मिलती है संस्कृत भाषा में सबसे मिक रचनाये स्तोत्र एवा पूजा सम्बन्धी हैं। बाकी रचनाये वही सामान्य है। समयसार पर सम्बन्ध भाषा की जो तीन सम्बन्ध टोकाए उपलब्ध हुई है भीर जिवका ज़पर परिषय भी दिया जा कुका है वे सहस्वपूर्ण हैं। लेकिन सबसे भीषक रचनाये हिल्सी भाषा की प्राप्त हुई हैं। वस्तुतः यब तक हिल्सी जैन साहित्य अपना ये माया है वह तो यब मुची से बींगुन साहित्य का एक भाग है। अभो तो मैकडो ऐसी रचनाये हैं जिनका विद्यानों को परिचय भी पाप्त नहीं हुखा है और को हिल्सी की महत्वपूर्ण प्रवास हैं। संकडों की सरुवा में गीत मिने हैं जो गुटकों में मयहीन हैं। इन गीतों में नीम राजुन गीत वर्षाप्त सम्बा में हैं। इनके साविरिक्त हिल्सी की सम्य निष्मायों की भी पचनाये उपलब्ध हुई है बात्सव में जीन विद्यानों ने काव्य के विभिन्न रूपों से अपनी रचनाये अस्तुत करके प्रपत्ती विद्वता का हो प्रदर्शन नहीं किया किन्तु हिल्दी को भी

प्रथ सुची के इस विज्ञालकाय भाग में बीस हजार पाण्डूलिपियों के परिचय में यदि कहीं कीई कमी रह गयी हो अपवा नेखक का नाम प्रचानकाल मादि देने में कोई गतनी हो गयी हो तो विडाय उन्हें हों। सुचित करने का करद करेंगे। जिससे मविष्य के निये उन पर प्यान रखा जा सके। जानक मण्डारों के परिचय हमने उनकी सुची बनाते समय लिया पा उसी पाणार पर इस मुची में परिचय दिया गया है। टमने मभी पाण्डुलिपियों का अधिक से प्रथिक परिचय देने का प्रयास किया है। तभी महत्वपूर्ण ये ये गृह नेवक प्रजीवनिया भी देनी गयी है जिनकी सस्वया एक हजार से कम नहीं होगी। इन प्रशासित्यों के आधार पर साहित्य गृह इतिहास के कितने ही नियं तथ्य उद्यादित हो सकेंग नथा राजस्वान के किनने ही विदानों, अवकां गृज जानका के सम्बन्ध में साहित्य जावकारी सिन मकेंगी।

राजस्थान के विभिन्न नगरी एल बार्मों में स्थापित कुछ भण्याणे को छोल्कर लग को स्थित पन्छी नहीं है और यही स्थिति रही तो थोड़े ही चार्मी कुन वास्त्रियों का मट्ट होत वा भट्टी। इन भण्याणे के अबस्थापकों को चाहिये कि वे इस्ते व्यवस्थित करके बेस्टमी में बाद्य कर विशासनात कर . जिसमा व भवित्य म असराव भी नहीं हो बीर समय नगर उनका उपयोग भी होता रहे।

महाबीर भवन

जयपुर

दिनाक २४-१२-७१

करपुरचन्द्र कासलीवाल अस्थानस्य स्वासतीर्थे

# कतिपय ग्रज्ञात एवं ग्रप्रकाशित ग्रंथों की नामाविल

ऋम सम्या	ग्रथ सूची ऋमाक	ग्रंथ नाम	ग्र थकार	माषा
*	६७६४	ग्रकलकदेव स्तोत्र माषा	त्रपालाल बागडिया	हिन्दी
5	<b>પ્</b> ષ્ટ્ર	ग्रजीमां संबरी	स्थामतस्त्रा	,,
3	६१३६	ग्रक्तिनाथ गम	<b>व</b> ्जिनदास	
*	8553	धनिमद्ध ,रसा (उषाहरसा)	रश्मभूषम्	
ሂ	A528	ग्रनिरूद्ध हरण	-यमागर	,,
£	*54E	श्रभयकुमार प्रजन्य	गदमराज	• a
3	४५५१	श्रादित्यवाः कथा	गगाराम	,,
c	१०१२०	भठाईस म्लगुग्रास	व ० जिनदास	हिन्दी
ĉ	१८६३	ग्रगंलपुर जिनवन्दना	भगवतीदास	*,
90	Fish	ग्रादिपृत्सम् राम	<b>ब</b> ० जिनदास	,,
११	ره عو	ग्रादिनाथ प्तवन	मेह उ	,,
۶.	88.4	भ्रादिपुरासा राम	<b>द</b> ० जिनदाम	.,
ĘЭ	७४३१	ग्रनन्तवत एका उद्यापन	सकलकीर्ति	संस्कृत
88	6305	कथा सग्रह	विजयकीर्ति	हिन्दी
१४	c 9	कर्मविषाक सूत्र चोपई		हिन्दी
१६	5	कर्मविपाक राम		n
१७	<b>દ</b> શ્ક્	कियाकोण भाषा	दौलतराम कासलीवाल	,,
₹ =	६१४६	कर्मविपाक रास	ब्र० जिनदास	,,
38	€₹₹3	करकण्डुनोराम	,,	हिन्दी
२०	<b>₹</b> ६५ <b>५</b>	गुग्ग विलाम	नथमल बिलाला	,,
२१	६ ६ = ३	युग्र <b>ामा</b> गीत	<b>ब</b> ह्य वर्डन	.,
<b>२</b> २	७६५१	चतुर्दशीवतोद्यापन पूजा	विद्यानिद	n
२३	و چوو	चौवीस तीर्यं कर प्ञा	देवीदास	हिन्दी
48	१०५५	चनुर <b>चिनार</b> स्गो	दौलतराम कासलीवाल	,,
२ <b>४</b>	£ 6 x 6	चतुर्गतिरास	वीरचन्द	हिन्दी
२६	€¥0%	चतुर्गति नाटक	डालूराम	,,
२७	४३२६	चन्द्रप्रभ स्वामीनो विवाह	नरेन्द्रकीति	1,
२⊂	<b>३३२</b>	चौदह गुग्रस्थान वचनिका	ग्रलयराज	,,
२६	₹ <b>४</b> १	चौबीस गुरगस्थान चर्चा	गोविन्दराम	,,

## ( खियासीम )

कम संख	या ग्रथ सूची कमांक	ग्रथ नाम	ग्रं थकार	<b>মা</b> ৰা
₹•	१०२३६	चास्दत्त प्रबन्धरास	<b>व</b> ्जनदास	<i>िन</i> दी
₹ \$	२००२	चेतावसी ग्रय	रामचरग्	**
3 2	६४२१	चेतन पुद्गल धमालि	<b>ब</b> ०बूचराज	,,
<b>۽</b> ۽	€:90€	चूनडी एवं ज्ञान <b>चूनडी</b>	वेगराज	**
₹४	७६६६	जम्बूद्वीय पूजा	प० जिनदास	संस्कृत
३४	३३५८	जीवधर चरिउ	रइध्	ध्यपश्च श
₹€	3755	जीदघर चरित	दौलतराम कामनीवाल	हिन्दी
छ ह	३३६०	जीवंघर चरित्र प्रवाध	भ <b>० यश.की</b> नि	हिन्दी
३८	€ १ प्र ७	जीववर राम	<b>ब</b> ० जिनदास	
3 5	६१५३	जम्बूस्वामीराम	ब्र० जिनदाम	हिम्ही
٧.	<b>४१५४</b>	**	नयविमल	74
¥ξ	2 0 X X	ज्ञानार्णव गद्य टीका	ज्ञानचन्द	<i>म</i> म्कृत
*3	x 3 o	तत्वायं सूत्र भाषा	साहिवराम पाटनी	,,
83	६२३	त्रिभगी सुबोधिनी टीका	ग्रामाचर	संस्कृत
**	१०१३७	तीर्थकर माता पिता वर्णन	हेमलु	हिन्दी
४४	<b>१</b> 0,000	धनकुमार चरित्र	रइच्	धपश्च श
84	₹ 4 € \$	<b>धर्मश</b> र्मभ्युदय टीका	यण कीर्नि	सम्क्रत
¥9	६१६४	धर्मपरीक्षा गस	ब ० निनदास	हिन्दी
४८	६१७०	<b>व्यानामृत</b> राम	व ० करमसी	**
38	3 6 = •	नागकुमार चरित	नथमल बिलाला	हिन्दी
X 0	६१७१ -	नवकार राग	व ० जिनदास	
ሂ የ	६१७२ .	नागकुमार राम	a <b>ে নি</b> ৰৱাশ	हिन्दी
χş	५९,३६	नेमीश्वरराम	,	•
y÷	3 € F • 9	नागश्री राम		,•
ጸ.ሌ	६८≈२	नेमिन.चको छन्द	हेमचन्द	हिन्दी
*4	२१२१	परमात्मप्रकाश माया	बुध जन	**
Ŋξ	२१२ ७	परमात्मप्रकाण टीका	४० जीवराज	दिन्दी
<b>2</b> '9	२८७१	पद्मचरित टिप्पग	श्रीचन्द्र मुनि	मं स्कृत
¥ε	३५२०	पार्श्वचित्र	तेजपाल	श्रपञ्ज श
ΧC	१०१२०	पानीगालए। राज	द्र० जिनदास	हिन्दी
ξø	5 0 6 3	पुराग्सार	सागरसेन	सम्कन
εş	२०१६	परमार्थमातक	मगवतीदास	िस्दी
Ęą	६१८०	परमहस रास	व्र जिनदास	हिन्दी
83	१४५७	ब्रह्म बाबनी	নিল-ল ভাব	

# ( सैनामील )

	स्था ग्रंथ सूची कमा	क ग्रेंथनाम	ग्र थकार	माव
Ę		बलिभद्र चौपई	व० यजोधर	0
Ęś		बाहुबलिबेलि	गानिदाम	हिन्दी
€ 9		बारा ग्रारा महाचौपई बध	<b>व० यञो</b> धर्	.,
5.5		बुद्धि प्रकाश	चे <b>ल्ह</b>	हिन्दी
ξz		भक्तामर स्वोत्र भाषा टीका	हेमराज	**
€ €	७१८४	भक्तामर स्वीत्र बृत्ति	म० रतसचन्द	••
130		भट्टारक परस्परा		."
9 ق	€>¤€	भट्टारक पट्टावर्टन		हिन्दी
⊊و	£868	भविष्यदत्त राम	विद्यानुष्यम्	हिन्दी
6 3	३७२१	भोजवस्त्रि	भवानीदास व्याम	<b>हिन्दी</b>
98	<b>८१६६</b>	मृगोस व।द	देवराज	**
હય	\$ X & 3	भौक्षमार्गवावती	मोहनदास	••
<b>৩</b> ৩	3,7,3€	मृक्ति स्वयवर	वेग्गीचन्द	
62	: 4 5	यशोधर चरित्र	देवेन्द्र	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
٠ و	€7.5 9	यक्रोधर गम	व • जिनदाम	हिन्दी
= 0	१८३३	यशोचर राम	मोमकीर्ति	हिन्दी
c !	90828	यशोधर चरित	मनमुखसागर	,,
c 5	6360	रत्नचूडराम	3.4414.	"
c 3	***	रन्नपालप्रवस्थ	श्रीपनि	ri
= 4	∓२०३	रामरास	प्र• जिनदा <del>श</del>	2+
ΕÄ	६२०२	रामचन्द्रराम		,,
ĸχ	६२०४	रामरास	" माधवदास	,,
و'⊃	४२३२	वचनकोश	वुलाकी <b>दा</b> म	हिन्दी
55	{ £ € ₹	वसुनस्दि श्रावकाबार भाषा	अस्वभद् <del>श</del> म	1,
⊏€	३०≒२	वर्द्धभानपुरागा भाषा	नवलराम	19
0 3	3000	बद्धं मानपुरामा	नबलशाह	
€ 8	وهچ	वर्षमानराम	व • जिनदास	.,
દ ર	3363	वरिचस्द दूहा	न्य जिन्दास लक्ष्मीचन्द	हिन्दी
₹3	३६३१	विक्रम चित्र चौपई	माउ	हिन्दी
58	१६६४	वमुनन्दि श्रावकाचार माषा	413 	"
£ x	६२६=	वृहद् तपागच्छ पट्टावली		
έĘ	७ २ ६ ७	वर्धमान विलास स्तीत्र	No Business	संस्कृत
્ ક	३०६४	मातिपुरास	भ ० जगद्भूषत्। प • स्रामाधर	,,
ξ =	¥3∘€	शातिनःबदुरास्		सम्कृत
		34	ठाकुर	हिन्दी

## ( भडतासीस )

कम सस्य	ग्रय सू <b>ची कवांक</b>	ग्रंथ नाम	ग्र चकार	भाषा
33	<b>३</b> ८६४	शांतिनाथ चरित्र भाषा	सेवाराम पाटनी	••
<b>१००</b>	<b>१७</b> ६३	शालिभद्ररास	फकीर	हिन्दी
₹•₹	₹ <b>७०</b> ₹	श्रावकाचार	व ० जिनदास	,,
<b>१</b> ०२	१०२३१	श्रावकाचार	प्रतापकीत्ति	
₹ 0 ₹	804 ·	श्रीपालचरित्र	व ० चन्द्रसागर	
१०४	<b>¥₹•</b> ₹	श्रे शिक वरित्र	दौलतराम कासलीवाल	••
१०५	X 6 0 X	श्रे शिकप्रवन्ध	कल्यासकीर्ति	,,
105	<b>६२२३</b>	श्रुतकेवलीरास	व ० जिनदास	3.
१०७	२२८७	समयसार टीका	ম ০ <b>সুমৰ</b> কঃ	सस्कृत
१०८	₹३० <b>६</b>	समयसार टीका	देवेन्द्रकीर्नि	33
30\$	२३ <b>०४</b>	समयसार वृत्ति	प्रभाचन्द्र	,.
११०	<b>%</b> = <b>₹</b> =	सम्यक्त्व कीमुदी	जगतराय	हिन्दी
255	७३४४	समवसरणपाठ	रेखराज	.,
११२	७३५४	n	मायाराम	,,
११३	4360	सकलकीतिब्रुरास	व० सामल	**
668	६७७६	सबोध सतासानुदृहा	वीरचन्द	
<b>१</b> १४	४७६४	स्वरोदय	मोहनदास	
११६	<b>E</b> & 5 <b>6</b>	सतोष तिलक जयमाल	बूचराज	••
११७	२४२१	सामायिक पाठ भाषा	<b>ज्यामराम</b>	**
११८	६२३५	सुकौणलरास	वेगगीदास	**
315	£446	,,	सांग्	••
१२०	३१०४	सु <b>मतिनाथ पुरा</b> गा	दीक्षित देवदल	13
१२१	<b>४१</b> नन	मुदर्शन चरित्र भाषा	जै <i>नन्द</i>	**
<b>१</b> २२	१०२३१	सुकुमाल स्वामी रास	धर्मरुचि	,,
१२३	<b>१०</b> २३ <b>१</b>	सुदर्शन रास	ब ० त्रिनदास	"
१२४	१७६१	सुस्तविसाम	जोबगज कासनीवाल	-1
१२४	२ <b>२५६</b>	षट् पाहुड भाषा	देवीसिह	••
<b>१</b> २६	¥ 6 0 0	होली कथा	मुनि शुभवन्द्र	हिन्दी

# राजस्थान के जैन शास्त्र भगडारों

**-**

# ग्रंथ सूची-पंचम भाग

## विषय-आगम, सिद्धान्त एवं अर्था

**१. ग्रनुयोगद्वार सूत्र— × ।** पत्र सस्या ४६ । भाषा—प्राकृत । विषय—प्रागम । रचना – काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टुन स० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--- यह पाच मूल मुत्रों में से एक सूत्र है।

**२. प्रार्थप्रकाशिका—सदामुख कामलीवाल** । पत्र स० ४६८ । प्रा० १४ $\times$ ७३ इन्त । प्राण-राजरथानी (हु हारी गद्य) । विषय-सिद्धान । रचना काल स० १६१४ वैशाल मुदी १० । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन प्रथवान यंचायती पन्दिर प्रसवर । वेष्ट्रन स० १ ।

विशेष—इसका रचना कार्य स० १८१२ मे प्रारम्भ हुग्राथा । यह तस्त्राधंसूत्र पर सदासुख जीकी बृहद् राख टीका है।

- ३. प्रति सं०२ । पत्र स०२६४ । ले० काल स०१६२६ वैणाल सुदी ११ । पूर्गा वेष्टन स०२ प्राप्ति स्थानः — उपरोक्तः मध्य ।
- ४. प्रति सं०३ । पत्र स० ४१६ । आ० १२४७ ३ इन्छ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । प्राप्ति स्थान दि० जैन खण्डेलवाल पत्रायती मन्दिर, प्रलक्षर । वे० सं० १४३ ।
- ५. प्रति सं०४ । पत्र म०३०६ । ब्रा०१३ ४६ १ इच्चा ले काल स० १८६१ । पूर्णा विष्टन स०१७ । प्राप्ति स्थान ---वि० जैन मन्दिर महावीर, बुदी।
- **६. प्रति सं० ४ ।** पत्र म० २८६ । ष्रा० १० $\frac{3}{2}$ ×६ इचा । ले० काल स० ११४० वैशाल बुदी म । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाय, टोडारायसिंह ।
- ७. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३२१ । ब्रा० १११ँ,४७३ इन्ध । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । प्राप्ति स्थान —पाध्वंताथ द० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—गरोक्षलाल पाण्ड्या चौधरी चाटसू वाले ने प्रतिलिपि कराई। पुस्तक साह भैरूबगसजी कस्य धन्नालाल जी इन्द्रगढ़ वालों ने मथुरालाल जी प्रप्रवाल कोटा वालों की मारफत लिलाई।

द्र. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१२ । या०१२×७६ इश्व । लेखन काल स० १९३३ कार्तिक दुदी २ । पूर्णु। वेष्टन सं०६ ⊏ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मन्दिर वयाना । विशेष -धावक माधोदास ने इसी मन्दिर में ग्रन्थ की चढाया था।

६. प्रि≘िसंट । पत्र सर्व ६१६ । घार १०६१ x ७ इला । लेखन काल x । पूर्ण । वेष्टन सख्या ५६ । प्राप्ति स्थान— दिरुजन छोटामस्टिर बयाना ।

**१०. प्रति सं० है।** पत्र संस्था १६३। ग्रा॰ १२<sup>3</sup>ू ४७ इश्वालेखन काल १६३०। पूर्ण। वेष्टन सन्या ४। **प्राप्ति स्थान**-∽दि० जैन पचायनी मन्दिर कामा।

**११. प्रति सं० १०** ३ पत्र सस्या १२१ । **ग्रा० १०×६** देश । लेखन काल सबन् १६४४ सावरण सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टुन सस्या ४**१ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटियोका नैस्पदा

**१२. प्रति सं० ११।** पत्र सं० ६०१। लेखन काल स०१६२६। पूर्मा। वेष्टन सब्या ६५। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर)।

विशेष-रिखबदास जैसबाल रहने वाला हवेली पालम जिला दिल्ली वाले ने प्रतिलिपि कराई थी ।

**१३. प्रति सं० १२।** पत्र सम्या १०६। ग्रा० ११३/×४ है उन्ध । लेखन काल स० १६४० भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन संस्था ४६४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नश्कर, जयपुर ।

विशेष—रिलवचन्द विन्यायक्या ने प्रतिनिधि की थी तथा सवर् १११६ कार्तिक कृष्णा व की लक्कर के सदिर में विराजनात किया था।

१४. स्वर्थसंहिष्टि— $\times$  । पत्र मस्या ४ । आ० १२४४ इत्राः भाषा पास्त-सम्यतः । विषयः— प्रायमः । र० कालः  $\times$  । नेवन कालः  $\times$  । अपूर्णः । बेष्टन सम्या २१२ । ६५५ । प्राप्ति स्थानः—ीद० हैन सभवनाय सन्दिर उदयपुरः ।

१४. श्रागमसारोद्धार—देवीचन्द्र । पत्र सन्त्या ५० । बारु ६ १ ६ १ च्या १ भाषा - हिन्दी । विषय-सिद्धान । रुक्त सन्त्र स्थान - दिक् जैन सद्भान सिद्धान सिद्धान स्थान - दिक्जन सद्भान सिद्धान सिद्धान सिद्धान सिद्धान सिद्धान ।

विशेष--गुटका के रूप में हैं। टीका का नाम मृत्ययंथ शेका है।

**१६. प्रति सं० २ ।** पत्र सम्या १६ । प्रा० १०१५ ए ७ । तेपन काल ८ । त्रष्टन सम्या १६६/१२६ । <mark>प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर</mark> नीमनाथ टाडाराथीन/ । रा

इति थी खरतरगच्छे थी देवेन्द्रचन्द्रमांग विरविता थी धारणः । र बालायबाध सपूर्णा ।

**१७. श्रन्तगडदसाझो**— × । पत्र सम्या २१० व्यक्तमार ४३ इस्त । **भाषा प्राकृत** विषय—धागमा । रचना काल ४० लेखन काल ४० पूर्ण । बहुद काउ, ४६० । <mark>प्राप्ति स्थान</mark> भट्टार – कीय दि० जैन मन्दिर श्रदमेर ।

विशेष--द्वसका सम्कृत मे अन्तकृष्टणाभूम नाम है । यह जैनागम का आठवा अ क्रू है ।

**१८. अन्तकृतदशांग वृत्ति— ×** । पत्र मं∘ ८। ग्रां० १०}े ४ टब्ल । भाषाः प्राकृत । विषय–आगमः । र०काल × । लेखन काल म० १६७४ । पूर्ण । वष्टन म० ६ । **प्रास्ति स्थान – रि०र्जन** प्रवदाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रणस्ति निम्न प्रकार है-स० १६७४ वर्षे शाके १४४० प्रवर्षमाने धाश्विनिमासे शुक्ल

पक्के पूर्णमास्या तियौ बुधवासरे श्री चन्द्रगच्छे श्री हीराचन्द सुरि शिष्य गगादास लिखितमल ।

**११. श्राचारांग सूत्र— × ।** पत्र स० २६ । झा० १०×४५ डेड्न । साथा-प्राकृत । विषय-झागा । २० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सच्या २०१ । **प्राप्ति स्थान-**−दि० जैन भन्दिर झ्रीसन्दन स्वार्य व ही ।

विशेष—प्रति प्राचीन है कही कही हिन्दी टीका भी है। प्रथम श्रृतस्कथं तक है। श्राचारांग—सुभ प्रथम स्नामसञ्ज्य है।

२०. प्रति सं०२। पत्र सस्या १। लेखन काल  $\times$ । वेष्टन स०६६८। प्रपूर्ण। प्राप्ति स्थान–दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

२१. श्राचारांग सूत्र वृक्ति— ग्रमयवेव सूरि । धर्म ४० १-१६५ । श्रा० १०१ $\times$ ४ इत्य । भ्राया-सम्ब्रम । विषय-प्रागम । र०काल  $\times$  । लेखन काठ  $\times$  ै ध्रूपूर्ण । वेष्ट्रन स० २५३ । प्राप्ति—स्थान-दि० जैन मंदिर प्राप्तनन्त न्वामी, बृंदी ।

विशेष-प्रति प्राचीन है पर बीच के कितने ही पत्र नहीं हैं।

२२. **ग्राचारांग सूत्र वृत्ति** ×ापत्र स० १०० । ग्रा० १०३ × ४ ई डञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय—ग्रागम । र० काल → ≿ाले काल <mark>→ x</mark>ा पूर्णा वे.स १४२ । **प्राप्ति स्थात** →दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाण, वंदी ।

२३. **बावश्यक सूत्र** -- × पत्र मर -- १० से ४४ । भाषा-प्राकृत । विषय-प्रागम । रचना काल--× । लेखन काल × । बापुर्ग । वेस्टन स० ७४६ । **प्राप्ति स्थान**--- दि० जन पंचायनी मदिर भग्नपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम पडावण्यक सूत्र भी है । ग्रंथ में प्रतिदिन पाली जानी योग्य कियाओं का वर्णन है।

२४. ग्रावश्यक सूत्र निर्मुक्ति ज्ञानिबसब सूरि—पत्र सब्धा-४४ । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रागम । रचना काल $-\times$  । तेखन काल-स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पश्चायती मन्दिर, अरतपुर

२**५. ग्राध्यव त्रिभंगो-नेमिचन्द्राचार्य—पत्र स**०२─३२। ग्रा १०४४<mark>३ इखा भाषा—प्राकृत ।</mark> विषय— मिद्धात । र काल ४ । ले काल ४ । ग्रपूर्णा । वे सं, ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष---प्रति सस्कृत टीका महित है।

२६. प्रति सं. २. । पत्र स०१० । म्रा १२ × ५३ इ.चा । ले० काल । × वे० स०६३३ । म्रपूर्णः। प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मन्दिर लगकर, जयपुरः।

विशेष-- प्रति टीका सहित है।

२७. प्रति सं. ३. । पत्र म. च७ । घा० १२ ४ ६ इ.चा ले० काल ४ । अपूर्णावे. स. १४ व. । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाय, जुदी।

विशेष— ६७ से झामे के पत्र नहीं है।

२८. प्रति सं. ४ । पत्र सं ६०। घा० १३ ४ ६ ३ इ.च. । मे० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १३१ (२) प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोहारायसिंह (टोक) । विशेष— प्रान्तम पुष्पका— इति श्रीनेमिचन्द्रसिद्धान्तचकवर्तीविरचितायां श्री सोमेवेव पण्डितेन कृत टीकाया श्रीप्राश्रववेषउदय उदीरेसा सत्व प्रभृति लाटी भाषाया समाप्ता । प्रति सटीक है । टीकाकार प्रकृतमेक्षरेत है ।

२**६. इक्तोस ठारगाप्रकररा्—नेमिचंद्राचार्य** । पत्र स०७ । प्रा०-१०**४**४ रै इच । भाषा-प्राहत विषय—सिद्धान्त । र० काल ४ । ले० काल स० १⊏२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाव्येनाय चौगान, वंदी ।

विशेष--नैरमसागर ने प्रतिलिपि की थी।

३०. प्रति सं २.। पत्र स० १४। ग्रा० ११,४४ हे इला। ले० काल 🗴 । । वे० स० १८६ प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लग्नकर, जयपर।

३१. प्रति सं. ३. । पत्र सं०६ । घा० १० 🗙 ४ इच्छ । लेखन काल × । पूर्ण। वे० स०६७ । प्राप्ति स्थान — टि० जैन मन्दिर डोस्सली कोटा ।

३२. उक्तिनिरूपस्म— × । पत्र स०२१ । घा०१०, ४४६ इस । भाषा — सस्कृत । विषय— धागम । र०काल × । लेकाल × । पूर्ला विकस० १७६ । ५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाय मन्दिर, इन्दरगढ ।

३२. उत्तरप्रकृतिवर्णन—× । पत्र सं० १२। घा०-१०×७} इ.च.। भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्तः । र काल—× । ले० काल—× । पूर्णः । वे० स० १३७। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी, बृंदी ।

विशेष - पं॰ विरधीचन्द ने स्वपठनार्थं मुदारा मे प्रतिनिपि की थी।

३४. उत्तराध्ययन सूत्र- × । पत्र स॰ ३६ । प्राकार-१०४४ है इन्छ । भाषा —प्राकृत । विषय— ग्रामम शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण् । वे० स० ३३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (वंदी )।

विशेष-प्रति जीसं है। गुजराती गद्य टीका सहित है। निपि देवनागरी है।

३५. प्रति सं. २ । पत्र सस्था—७ । भाषा-प्राकृत । लेखन काल — ४ । पूर्ण । वेस्टन स० ७१६ । प्राप्ति स्थान—यवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—वीमवा श्रध्याय सस्कृत छाया सहित है ।

३६. उत्तराध्ययन टीका—  $\times$  । एवं सं ११४ । या॰ १०  $\times$  ४६ इवा । भाषा — प्राकृत-सम्बद्ध । विषय — प्रागम । र॰ काल  $\times$  । संपूर्ण । वे॰ स॰ ४४४ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि॰ जैन सन्दिर प्रजमेर ।

३७. प्रति सं. २ । पत्र स० ७६-३२८ । प्रा० १० $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  प्र इ.स. । ले० काल imes । प्रपूर्ण । वे स० ११२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली, बोटा ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

देनः उत्तराध्ययन सूत्र वृत्ति — × । पत्र स. २-२१६ । भाषा — संस्कृत । विषय — म्रागम । र र काल – × । ले० काल – × । कपूर्ण । वे० स० ४५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) विशेष- बीच के बहुत से पत्र नहीं है।

**३६. उत्तराध्ययनसूत्र बलावबोधटीका-**  $\times$  । पत्र सं २-२०४ । द्या० १० $\times$ ४ इ.स. । भाषा— प्राकृत-संस्कृत । विषय—प्रागम । र० काल  $\times$  । ले० काल । स० १६४१ कार्तिक सुदी १३ । प्रपूर्ण । वे० स० ३१६ । **प्राप्ति स्थात** —दि० जैन संभवनाय मन्दिर तदययर ।

प्रशस्ति — संबत् १६४१ वर्षे कार्तिक सुदी १३ वारसोमे श्री जैसलमेरमध्ये लिपिकृता श्रावके ऋषि श्री ज्येठा पठनार्थे।

४०. उत्तराष्ट्ययन सूत्र बालावबोध टीका × । पत्र स०२(१८। ग्रा०१०×४६ व । भाषा-हिस्ती (गर्षा) । विषय-स्थापम । र०कान × । ने०कान × । पूर्ण । वे०स०४१। प्राप्ति स्थान-रि० जैन मन्दिर दबनाग (बंदी)

विशेष--प्रति प्राचीन है।

**४१. उपासकादशांग**—पत्र सं० ७६ । ग्रा० १० ४४ है इन्छ । भाषा-प्राकृत । विषय-भागम ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । बेग्रुन स० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (चंदी) ।

विशेष — मूल के तीचे गुजराती प्रभावित राजस्थानी गद्य टीका है। संबत् १६०७ में फागुगा मुदी २ को साधु माराक चन्द ने बाम नायद्वारा में प्रतिनिषि की थी

४२. प्रति सं०२ ' पत्र म०७ ! धा०१० $^1_{2}$ ४ $^1_{2}$  दुःख । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं०२४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रदी) ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

४३. **उबाई सूत्र**— ×ापत्र स० ७८। ग्रा० १० × ४ डचा माषा-प्राकृता विषय-मागमा। र०काल— ×ाने०काल— ×ा पूर्णावेष्ट्रन स० १४६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरसची कोटा।

४४. प्रति सं०२ । पत्र स०३६ । ले० काल स०१६२६ । पूर्ण । वेष्टन स०४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पद्मायती मन्दिर बसवा ।

विशेष—राजपाटिका नगर प्रतिलिपि कृत ।

**४५. प्रति सं०३।** पत्र स०८४। ब्रा०१०३ ×४३ इञ्च। ले० कान ×। पूर्णा । बेष्टन स०२००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन० मन्दिर बोरसली, कोटा।

विशेष-प्रति प्राचीन है तथा सटीक है।

४६. **एकचव्छि प्रकर्ण** × । पत्र स० २१ । झा० ११३ ×५३ इ.ख. । भाषा-प्राकृत । विषय— मिद्रात । र०काल × । ते०काल स० १७६४ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेप्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान-**दि० जैन पर्वाचती मन्दिर, बयाना ।

विशेष - जिनेश्वरसूरि कृत गूजराती टीका सहित है। अर्थ गायाओं के ऊपर ही दिया है।

४७. एकसीम्रङ्गतासीस् प्रकृति का ब्यौरा—  $\times$  । पत्र स॰ २। प्रा॰ ११ $\times$ ४६ था । भाषा-संस्कृत । विषय—सिद्धात । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६१। प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन म्राज्वाल मन्दिर उदयपर ।

४**८. ग्रङ्गपण्यात्ती**— $\times$  । पत्र स० २४ । ग्रा० १० $\times$ ४ $^1_{\tilde{e}}$  इश्व । भाषा—प्राकृत । विषय—ग्राम । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४**६. प्रति सं०२** । पत्र स०२ ⊸६ । ग्रा० १२ × ५३ इ.चा ने० काल स०१४६६ । श्रपूर्ण । वेष्टन सं०४ ६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन श्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

बिशेष --प्रशस्ति निम्न प्रकार है। सबत् १४६६ वर्षे पौष बुदी ४ भौमवामरे श्रीर्गारपुरे श्री श्रादिनाथ चैत्यालये श्री मुल सप्ते भट्टारक श्री श्रभचन्द्र गुरुपरेशात लिखित द्वार तेजपाल परनार्थ।

५०. कर्म प्रकृति — नेमिचन्द्राचार्य । पत्रसं० १६ । घा. ११ ×  $v_{g}^{2}$  इञ्च । भाषा — प्राकृत विषय — मिद्धात । र०काल —  $\times$  । ले०काल — स० १६६६ पौष बुदी ग्रमात्रस । पूर्ण । बेशन सं० १३६१ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

विशेष -- प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सकत् १६८८ वर्षे मिति पौषमासे श्रसितपक्षे भ्रमावस्या निषौ गुभनक्षत्रे थोकुरस्कृत्रावार्यात्वये महनाः वार्यः श्री ४ भीक्षण कीर्तिस्तव्विद्धाः इ० गोगालदासस्तेन स्वयमर्थं निषिकृत स्वातमपटनायं नगरे श्रीमहाराष्ट्र राजा श्रीकीरकदामगरास्यः ।

**५१. प्रतिसं०** २ । पत्रस**० २०** । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टनस० २१६ । **प्राप्ति स्थान** - उपरान्स मन्दिर ।

**४२. प्रतिसं० ३** । पत्रस**० १**२ । आ० १०३ ४ ४५ इन्छ । ते०कातः 🗴 । पूर्णः । बेष्ट्रतंस० २०० । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

**५३. प्रतिसं० ४** । पत्रस•२६ । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनस॰ ४७२ । **प्राप्ति स्थान** उपरान. मन्दिर ।

४४. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ७ । ले०काल 🗶 । पूर्णा । वेष्टनस० १०८० । प्रास्ति स्थान⊸उपरोक्त सन्दर ।

**५५. प्रतिसं∘ ६** । पत्रस० १३ । म्रा० १० ८ ४ इन्छ । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १३६३ । **प्रास्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

**५६. प्रतिसं० ७** । पत्रस० ११ । लंश्काल 🗴 । पूर्गा। तेष्टन म० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० क्रेन मन्दिर प्रादिनाथ, बुदी ।

विशेष-प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४७. प्रतिसं० मः । पत्रम०१२ । ले०काल—स०१७०२ । पूर्णं । वेष्टनस०४१२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पचापती मन्दिर, भरतपुर ।

विषय--त्रिलोक चन्द के पठनार्थ लिखा गया था।

५६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १२ । घा० १२×४ दै उचा। ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं० १४० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन महिर दीवानजी कामा।

**५६. प्रतिसं० १०** । पत्रस० २६ । घ्रा० १० 🗙 ४ इ.च. । लेखन स० १८०६ मात्र बुदी १५ । पूर्णु। वेकनस० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामा में जिनांभह के शासन काल में पार्श्वनाथ चंत्र्यालय में रननचन्द ने स्व पठनार्थ प्रतिनिधि की थीं।

६०. इ.ति.सं०११ । पत्रस० १४ । मा०११×५ इच्छ । ले०काल × । पूर्णावेशृतसं०४६ । प्रास्ति स्थान—वि० जैन मन्दर क्षेत्रात जीकामा ।

**६१. प्रतिसं० १२** । यत्रसं० ४२ । ले०काल, स०१६८६ चैत बुदी ६ । पूर्णा विद्यनस०१७ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति सम्बत टीका सहित है । इस प्रति की खडेनवालान्वय वैद गोत्रवाल ५० लाला भाषां लालसिर ने प्रतिस्थि करवायी थी ।

६२. प्रतिसं० १३ । पत्रस० १६ । ले०काल 💢 । पूर्ण । वेष्टनस० ११२ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन पत्रायनी पन्तिर करोली ।

६३. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १२ । लेश्काल ग्०१७०० । पूर्ण । बेष्टनस० २५२-१०१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, इंगरपुर ।

प्रशस्ति— न ० १ ३०० वर्षे फागुणमाने कृष्णपक्षे ११ दिनं गुण्यानरे इट्टकायांने श्रीप्रारिनायर्वत्यानये श्रीमृत्यसये मरश्यनी गर्चे बलान्कारमाणे श्री कृष्यकृत्याचार्यान्वये ५० श्री रत्नवन्द्रास्माये बद्धा केणवा तत् श्रीप्रय व० श्री गणदाम तत् शिष्य व० देवराजात्या पुस्तक कर्मकाद्दिन्। न निष्यितमस्ति स्वानावर्गकर्म-श्रीपर्य ।

६४. प्रतिसं०१५ । पत्रस० १−१७ । ले०काल x । प्रपूर्ण । बेहन सं० ७४३ । प्रास्ति – स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**६५. प्रतिसं० १६** । पत्रसं० १० । आ० ११ x ४ । बेहनस०१० । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त सन्दिर ।

**६६. प्रतिसं० १७ ।** पत्रस०१८ । घा०११ $\times$ ५ । लिपकाल सं०१०६५ एउप मृदो २ । बेहनसं० ११ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष — प्रति टब्बाटीका सहित है। महारात्राधी जर्याशह के शासन काल ने सम्बावती नगर मे प॰ चौक्यक्ट ने प्रतिलिपि की थी।

६७. बेष्टन स० । १६ । पत्र स० १६ । आ॰ १० ×  $x_3^2$  । बेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त सहित्र ।

६८. कसंप्रकृति टीका-ग्रमस्यवन्द्राचार्य । पत्रस० १४ । घा० १० रे ४४ हे दव । भाषा-सन्कृत विषय----तिद्वात । र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १६७ । प्राप्ति स्थान--- अहारकीय दि० जैन मुल्टिर प्रजमेर ।

विशेष - लेखक प्रशस्ति भपूर्ण है।

७०. कमंप्रकृति वर्णन— × । पत्रसं० १२० । मा०-४ रे 🗙 ४ इचा भाषा -हिन्दी सस्कृत । विषय – सिद्धान । र०काल— × । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८४ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर नागडी, वॅडी ।

विशेष - ग्रन्थ पाठ भी हैं।

७१. कमंत्रकृति वर्णन $-\times$ । पत्रस०२। मा०११ $\times$ ४ है दश्च। भाषा -सस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टनसं०१२०६। प्राप्ति स्थान -भ०दि० जैन मन्दिर प्रजीर।

विशेष--१४८ प्रकृतियों का व्यारा है।

- ७२. कमंग्रकृति वर्णन $-\times$ । पत्रस०२४-६३। घा०११ $\times$ ४३ डबः। भाषा —सम्बनः। विषय —सिदान्नः। र०कासः  $\times$ । सं०कासः  $\times$ । सपूर्णः। वेष्टनस०—२४१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रथसात मन्दिर उदयपुर।
- ७३. कमंप्रकृति वर्णन $-\times$ । पत्रस० ११। झा० ० $\times$ ५ इब । मापा-िन्दी गर्छ। विषय-मिद्यान । र०काल $-\times$ । ने०कान स० १८११। पूर्ण। वेष्टन स० १५१। प्राप्ति स्थान -दि० जैन सन्दिर पार्थनाथ चौगान, बुदी।
- **७४. प्रतिसं०** २। पत्रस० २१। लेकाल म० १६२०। पूर्णः। वेष्टनस०--२३। <mark>प्रास्ति-स्थान---</mark>दि० जैन सण्डेलवाल महिदर उदयपुर।
- ७**५. प्रतिसं**० ३ । पत्रस० ६ । ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण । बेहन स० ६६ । २७६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर टोडागर्यासह ।
- ७६. कर्मविषाक  $\times$  । पत्र स० १४ । आ० १२  $\times$  ५ १ ३ उच्च । भाषा सम्कृत । विषय सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० १५२ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मदिर मादिन नाय वंदी ।
- ७७. कर्मविषाक—बनारसीदास । पत्र स०१० । ग्रा०— २ २ ४६ ३ इथा । भाषा —िहन्दी पव्य । विषय—सिद्धान्त । २०काल —१७०० । त०काल — 🗙 । पूर्ण । वेष्टुन स०२६३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर पाप्येनाथ चोगान, वृद्धो ।
- ७८. कर्मविषाक—भ० सकलकोति । पत्रम० १६ । ग्रा० १० ४ ४) इच । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान । २०कार ४ । ले०कान ४ । श्रपूर्ण । वेषुनम०२३६ । <mark>प्राप्ति स्थान- -म० दिसम्बर्स्स्य स्थान- -म० दिसम्बर्स्स्य स्थान- -म० दिसम्बर्स्स्य स्थान- -म० दिसम्बर्स्स्य स्थान-</mark>

विशेष-कर्मों के विपाक (फल) का वर्णन है।

७**६. प्रतिसं०** २ । पत्रस० ३३ । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनस० ६१ । **प्राप्ति स्थान—वि०** जैन मंदिर श्रादिनाय बूदी ।

**८१. कर्मविपाकसूत्र चौपई—** × । पत्रसं० १२७ । मा० ११३ × ५ इख । भाषा—हिनी (पद्यः) । विषय—निदान्तः । २०काल × । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टनसं० ५७ । **प्राप्ति स्थान** —े ० दि० जैन मन्दिर मजमेर ।

विशेष--ग्रंथ का भादि भन्त भाग निम्न प्रकार है .--

श्री परमात्मने नम । श्री सरस्वत्यं नमः।

देव निराज्यश्न्म नमुं, मलल सकर र्राभगम । घट घट सन्तर स्नातमा, परम जीत पर्नाम ।। १।। सावद वचन मने तर्जि, राज्यिष महार । देना सावद वचन मने तर्जि, राज्यिष महार । देना सावद वचना मुंजिस के महार ।। १।। जिनवर वागी थे नमुं, भविक जीव हितकार । जनम मरण ना दुख बकी, खुटे ने निरमार ।। ३।। शीलवन नर नार ने, समकीत वस्त महित। । १।। शीलवन नर नार ने, समकीत वस्त महित। । ४।। स्वाप्त से होने नमुं, कर्म मुभट वेसी जीत ।। ४।।

# मध्यभाग (पत्र ७१)

देव नीरीय मनुष्य ते जागा । लेग काष्ट्र धने पाषाणा ।
ए ज्यारे नी कर बंबागा, पण ये मुण जो चतुर सुजान ॥ १४०३ ॥
मन बंबन काया ये जागा । एहं मोकले घरमनी हाए। ।
ए त्रणे चीगाणा ज्यार । लेगे करना या ये बार ॥ १४०४ ॥
करन करावत धनमोदना, निगगाबार करो एक मना ।
एम करना छती से भया । इस्टी पच गए। ते मया ॥ १४०४ ॥

प्रान्तम—

मंतोषी कवने सदा समता सहित मुजारण ।

इर्या विसर्या रहे सदा ते पहुँचे तिनवाए ॥ २४०७ ॥

प्राप्तम्याराणे उवर उर न बोले बोल ।

द्यापरुषे रात दित हसाये रहे प्रदोल ॥ २४०८ ॥

एक भगत चूके नहीं पाछे जन नो त्याग ।

प्राप्तम हेन जाएं सही ते समभे जिनमाग ॥ २४०६ ॥

पर निद्या मुखनिब गर्मे हास्यादि न करत ।

सक्ता काक्षा कांए नहीं जीत्यो ते शिवमंत ॥ २४१० ॥

एहण साराग जे चले ने तर जाएंगे साथ ।

एएए घी बीजा के नरा ते सब जाएंगे बाघ ॥ २४११ ॥

इति श्री कर्मविषाक मुत्र चीपई सपूर्णम् । श्री उदयपुर नगर मध्ये लिपि कृता।

- द. कर्मविषाक रास । यत्र तं० १६३ । प्रा०—६ $\frac{1}{7} \times 1$  इत्र । भाषा हिरी पर्य । विषय सिद्धात । र०काल स० १६२४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६ । प्रास्ति स्थान दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।
- **द ३. प्रति सं० २** । पत्र संस्था १५६ द्वा० रङ्के×६ इश्वा। ले०काल स०१८८२ फागुण सुदी ६ । पूर्णे । बेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोक)।
- क्र**४. कर्मविषाक सूत्र**—ण्यस०१४ से १७ । झा०१० x ४ इव । माषा—प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल x । ले०काल सं०१४१२ भादवा मुदी १३ । झपूर्ण । वे०सं०४४४ । **प्राप्ति**∽ स्थान—अ०दि० जैन महिटा सबसेर ।
- **विरोध**—श्रीकानपेरोजनिजयराज्ये श्रीनागपुरमध्ये बृहर्गच्छे सागरभूनस्रिशिष्य श्रीदेशीतलक तच्छिष्य मृनि श्रतमेरुणा लेखि । रा० देव्हा पूत्र संघप मेघा पठनार्थ ।
- ६५. कर्मविषाक सूत्र—वेवेन्द्रसूरि— 'ज्ञानवन्द्रसूरि के शिष्य'। पत्रस०११। प्रा०९०४४ इंच । प्रापा—प्राकृत । विषय — सिद्धात । र०काल स० × । ले०काल × । पूर्ण । वेकृनम०१६६। प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर दवलाना (बंदी)।

# विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

क्द. प्रतिसं∘ २ । पत्र सं० ४६ । झा० १०३ ४ ६३ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन म० १७२ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मंदिर दबलाना ।

विशेष-प्रति टब्वा टीका सहित है।

**६७. कर्मसिद्धान्त मांडरगी—** $\times$  । पत्र सं० ६। मा०-१० $\times$ ४३ इञ्च । माषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल- $\times$  । ले०काल- $\times$  । पूर्ण । वैष्टन स० ११३-६ । पूर्ण । मास्ति स्थान-दि० जैन मदिर बाड़ा बीस पथी दौना ।

विशेष-हिन्दी (गद्य) ग्रथं सहित है।

स्म **कल्पसूत्र — मद्रबाहु स्वासी** । पत्रस० २०-४० । ग्रा०-६ॄे ४४ डञ्च । भाषा-प्राकृत विषय ग्रागम । र०काल ४, त्रो०काल स० १६१३ चेत्र मृदी ७ । ग्रपूर्ण । बेहनस० ६४ । प्रास्तिःस्वान — दि० जैन महिदा बोससती कोटा ।

विशेष-श्रीपत्तननगरे भट्टारक श्री धर्ममूर्त्तिमूरिनिखापित जयमहनगरिंग पठनाथे ।

- **८६. प्रतिसं० २** । पत्रसर्वे प्रश्नामा १० $\times$ ४ है इन्हा ने विकास  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन म ० ६४५ । प्राप्ति स्थान भव दिव जैन मन्दिर प्रजमेर ।
- **६०. प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २-१४६ । ले०काल स० १८२३ । घणूर्स । बेष्टनसं० १३३७ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।
- **९१. प्रतिसं० ४** । पत्रस० ६ । ले०काल स० १४८४ चैत्र सुदी ४ । **प्रपू**र्ण । बेहनस० ३३ । प्रा**प्ति स्चान**—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ बूंदी ।
- ६२. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० १४६ । ले॰कान सimes । प्रपूर्ण । बेष्टनसं० ७४८ । प्राप्तिः स्थान—दि॰ जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

**१३. प्रतिसं० ६** । पत्रसं० १३४ । ले०काल × । पूर्ण ( ८ ग्रध्याय तक ) । बेष्टनस० १६।१५ **प्रास्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पंथी, दौसा ।

विशेष--पत्रस० २४ तक गायाओं के उत्पर हिन्दी में मर्प दिया हुमा है। इसके यद बीच में जगह २ मर्प दिया है। भाषा पर गुजराती का मधिक प्रभाव है।

**६४. प्रतिसं० ७—**पत्रसं० ७५ । ले॰काल  $\times$  । अपूर्णं । वेष्टनस० २६४ । प्रास्तिस्थान— वि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदमपुर ।

**६५. प्रतिसं० ८**। पत्रस० २-६३। प्रा**० १**२imes४ इञ्च । **ले०काल** imes । प्रपूर्ण । बेप्टन म० २०६ । ६०१ । प्रास्ति स्थान—वि० जैन संभवनायः मन्दिर उदयपुरः ।

विशेष-प्रति प्राचीन है। बन्तिम पत्र के ग्रावे दिस्से पर वित्र है।

**६६ प्रतिसं० ६** । पत्रस० १२२ । ले०काल ७० १४३६ । पूर्ण । बेहुन स० १ । प्राप्तिः स्थान— वि० जैन मन्दिर बसवा ।

**बिरोध** — प्रति सचित्र है तथा चित्र बहुत सुन्दर हैं। प्रधिकतर चित्रों पर स्वर्श का पानी या रंग चढाया गया है। चित्रों की सस्या ३६ है। प्रा**प्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा।

६७ कल्पसूत्र टीका— × । स०१२ मा०१० ४४ इथा। भाषा— गुजराती । विषय— मागम । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ए । वेष्टन गं० ३०१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष --- प्रति प्राचीन है लिपि देवनागरी है ।

**६८. कल्पसूत्र बालावबोध** —  $\times$  । पत्रस० १२८ । ग्रा० १० $\times$ ४ इख । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय — प्रागम । र०काल —  $\times$  । ले०काल —  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो क , इंगरपुर ।

**६६ कल्पसूत्र वृत्ति**— × । पत्रसः० १४० ग्रृं मा० १० × ४३ इश्व । भाषा—प्राकृत सस्कृत । विषय—सागम । र०काल — × । ले०काल — × । स्पूर्ण । वेष्ट्रन सः० २५४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रीभनन्दन स्वामी, बन्दी ।

**विशेष** — १४० से धार्ग पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है। प्रथम पत्र पर सरस्वती का चित्र है।

१०० कल्पसूत्र वृक्ति— ४ । पत्रस० १८३ । भाषा—प्राकृत-गुजराती लिपि—देवनागरी । विषय—प्रागम । र०काल् — ४ । ले०काल— ४ । प्रपूर्ण् । बेष्टनस० ५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती मन्दिर बसवा ।

विशेष—थी जिनचन्द्रसूरि तेह तागी आलाइ एवविष श्री पर्यूषगोपर्व आराधनउ हुतउ श्रीसघ आचन्द्राकं जबवंत पमार ।

**विहोत**— सबत् १४२६ वर्षे कार्तिक बुदी ५ मनौ तहिने लिलिचे । प्रति सचित्र है तथा इसमे ४२ चित्र हैं जो बहुत ही सुन्दर है ।

- १०२. कल्याबचूरि $-\times$ । पत्रसं ०४०। मा०१० $^2_\chi \times ^-$ ं । भाषा-प्राकृत । विषय-मागम । र०कार  $\times$ । ले०काल  $\times$ । मुपूर्ण । बेष्टनस० १८। प्राप्ति स्थान —पार्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दराद (कोटा) ।
- **१०३. कल्पाबत्तर**— $\times$  । पत्र सं०१४१ । प्रा० १० $\times$ ४ $_{g}^{+}$  इचा । प्रावा—संस्कृत । विषय— प्रायम । 'र०काल— $\times$  । ले०काल—संवत् १६६१ प्रासीज बुदो ४ । पूर्ण । बेष्टुन स० २०८ । प्राप्ति—स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (चंदी)
- १०४. कल्पलता टीका —समयसुन्दर उपाच्याय । पत्रस० १२४ । भाषा मस्कृत । विषय —झागम । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । धपूर्ण । बेष्टन स० ६२१ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।
- १०५. कवायमार्गरा। ४ । पत्रस० १-२५ । म्रा० १२३ ४ ७ इव । म्राया-संग्हन । विषय सिदान्त । र०काल— ४ । ले० काल— ४ । बेष्टनसं०—७३७ । म्रपूर्ण । प्रास्ति स्थान - वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर
- १०६. कार्मारणकाययोग प्रसंग $-\times$ । पत्रस0-१। भाषा --सस्कृत । विषय --निदान । र० कार्स $-\times$ । ते० काल  $-\times$ । पूर्ण । बेष्टन सं0-६७६ । प्राप्ति स्थान --दि० पत्रायनी जैन मन्तिर भरतपुर ।

वशेष -- तत्वार्य सुत्र टीका श्रात सागरी में से दिया गया है।

१०७. कृटप्रकार —  $\times$  । पत्रस०-२ । या० १२  $\times$ ५ इ.स. भाषा-मन्त्रतः। विषय-निक्रान्त । २०काल —  $\times$  । ले० काल —  $\times$  । पूर्णः । वेष्ट्रतसं० — २१७ — ६४८ । प्राप्ति स्थानः – दि० जैन मभवनाथ मन्दिरः, उदयपुरः ।

विशेष-प्रनंतानुबधी कपायों का कूट वर्णन है।

- **१०८. क्षप्रशासार---माधवचन्द्र त्रेतिद्यदेव** । पत्रस० १४२ । ब्रा० ११ ४६ (उचा । भाषा-संस्कृत । विषय----मिद्धान्त । र०काल । ले०काल × । पूर्ण । धट्टनम० ४१ । **प्राप्ति स्थान**- रि० त्रैन मंदिर दीवानजी, कामा ।
- **१०६. गर्भ ककृतसंख्यापरिमास्**  $-\times$  । प्रथम् २ । प्रा० १२  $\times$  ४ उथः । भाषा आकृत । संस्कृत । विषय —सागम । १०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्णः । बेष्ट्रन सं० २१६ । ६४८ । प्राप्ति स्थान दि० जैन सभवनाथ संदिर उदयपुर ।
- **११०. गुरास्यान चर्चा**  $\times$  । पत्रम० २०। ब्रा॰—१० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  उत्र । भाषा  $\dots$ सम्ब्रन । विषय—सिद्धान चर्चा । र०काल—  $\times$  । ने० काल—म० १७०१ माघ मुद्दी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० २०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नेमिनाथ, टोडारायमिह ।
- **११२. गुरास्थान चर्चा— ×** । पत्रसं० २० । ग्रा० ११ × ५<sup>5</sup> इस्त्र । भागा—हिन्दी । विषय—चर्ची । २०काल × । के०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५ । **प्राप्ति स्थान** दि०जैन संदिद राजसहन ।

विशेष-पंचकल्याएको की तिथि भी दी हुई है। गुटका साइज मे प्रना है।

- **११३ गुएस्यान चर्चा**  $\times$  । पत्र सं० ४१ । प्रा $^{0}$  १२ $^{1}_{5}$   $\times$  ः इन्ज । भाषा हिन्री गद्य । विवय- मिद्दान्त चर्चा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्त । बेहुन स० ५० । प्राप्ति स्थान दि० जैन संदिर वडा बीम पथी दौला ।
- **११४. गुरुस्यान चर्चा** x । पत्रस० ४२ । प्रा० १२१ x ७१ इखा भाषा —िहारी। विषय —िसद्यान्त चर्चा । र०काल x । ले०काल x । पूर्णा वेहनसं० ११७–७४-प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्देर भारतः।
- ११४. गुरास्थान सर्वा × १ पत्र त० २-६७ । प्रा० १० × ४६ । भाषा —हिन्दी । विषय-तिद्वान्त । रत्काल × । ले० काल × । तेष्टन सं०२४ । ब्रपूर्ण —प्रथम पत्र शही है । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर नक्कर, जयपुर ।
- **११६. प्रति सं० २ ।** पत्रस० १–१६ । आ० १०१ ४४ ४४ १ ते० काल ४ । बेष्टनसं० २६ । स्रपुर्ण—१६ से प्राणे के पत्र नहीं है । **प्राप्ति स्थान** —उपयोग्त मन्दिर ।
- ११७ गुरास्थान चर्चा × । पत्रस० १-२। आ० ११ × १। भाषा हिनी । विषय— चर्चा । र०काल × । ने० काल × । वेष्टुनसं० ७०१ । श्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दिगव्यर जैन मदिर लक्कर, जयपर ।
- **१९८. गुरगस्थान कमारोह** ⋌ाषत्रसञ्कर। घ्रा०१२ **४** ५१ इ.चा. भाषा—सस्कृत। विषय—चर्चाः रञ्कालः ४ । लेञ्काल ४ । ग्रपूर्णः । बेष्टनसञ्दर्शः । **प्राप्ति स्थान**— भञदिञ्जैन मदिर प्रजमेरः ।
- **११६. गुरुएस्थान गाथा** Xा पत्रस**े ३ । आ० ११ X ४** हे दशा आरण्य---प्राकृत। विषय----सिद्धात । २०का५ Xा पे०काल Xा पूर्ण । वेष्ट्रस**े २४०। प्राधित स्थान**-४०६० जैन सर्दिर अजसर ।
- **१२०. गुरास्थानचर्चा** / । पत्रस० १३ । मा० १०<sup>2</sup>१४०३ इस्त्र । भाषा सस्कृत । विषय---चर्चा। २०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २३४ । **प्राप्तिः स्था**न -- भ०दि० जैन मन्दिर प्रजीते ।
- १२१. प्रतिसं० २ । प्यस० ३० । ले०काल स०१७०५ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०३ । प्राप्ति स्थान ---दि० जैन मन्दिर नेमिनाय, टोडारायसिंह ।
- **१२२. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस**०** १८० । ले०काल 💉 । पूर्ण । वेष्टनस०७७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मस्दिर ग्रादिनाय, व दी ।
- **१२३. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस**०** २० । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर, राजमहल
  - विशेष-पन कल्यागाको की तिथिया भी दी हुई है। गृटका साइज मे प्रन्थ है।
- **१२४. प्रतिसं० ५ ।** पत्रसं० ५१ । ले०काल × । अपूर्णं । बेष्टनसं० ५० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बडाबीम पथी दौसा ।

**१२५. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ५२ । ले०काल~ × । पूर्णः । वेष्टनसं० ११७।७५ । **प्राप्ति स्थान**~ दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

**१२६. प्रतिसं० ७ । पत्रस०** २६७ । ले०काल  $\times$  । मपूर्ण । बेष्टन स० २४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर

विशेष--प्रथम पत्र नही है।

**१२७. प्रतिसं० ८ । पत्रस० १-१८ । ले०काल × । मपूर्ण ।** वेष्ट्रनस० २६ । **प्राप्तिस्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--१८ से भागे के पत्र नहीं हैं।

**१२६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १**८ । लेश्काल 🗴 । बपूर्णः । बेप्टन स० ७०१ । **प्राप्ति स्थान** — लपरोक्त मन्दिर ।

**१२६. गुएएस्यान चौप\xi—बक्च जिनवास** । पत्रसं० ४ । सा $\circ$ –६ $\xi$  ४४ इव । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—चर्चा । २० काल— $\times$  । ले॰ काल— $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स $\circ$  १२२ । प्राप्ति स्थान—िद $\circ$  जैन मन्दिर नैमिनाथ, टोडारायसिष्ट् ( टोक ) ।

**१२०. गुरग्स्यान मार्गर्गा वर्गन—नेमिचन्द्राचार्य।** पत्रस०-५६ । ग्रा०-१०.४ ४१ इ**च ।** भाषा—प्रकृत। विषय—सिद्धान्त । र०काल—४ । ले० काल—स०१८८४ चंत्र मुदी११। पूर्गा । वेष्टुनसं०२४४-५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इगरपुर ।

विशेष--- ग्रामेर में प्रतिलिपि की गई थी।

**१३१. गुरुस्थान मार्गरमा चर्चा**  $-\times$  । पत्रस- १२१ । प्रा॰- १२ १ । प्रा॰- १२१ । प्राप्ति स्थान- सस्कृत । विषय - चर्चा । २०काल-  $\times$  । ते० काल-  $\times$  । ध्रपूर्ण् । वेष्ट्रन स- २२१ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-इसमें अन्य पाठ भी है।

**१३२. गुरास्थान मार्गरमा वर्णन** $- \times 1$  पत्र स॰ - 32.1 मार॰  $\xi \times 2.23.1$  भाषा निर्देश । भाषा निर्देश विषय—सिद्धान । ७० काल  $- \times 1$  ने० काल  $- \times 1$  पूर्ण । बेधून म॰ - 138 - 138.1 प्राप्ति स्थान - 138 - 138.1 प्राप्ति स्थान - 138 - 138.1

विशेष---यत्र सहित वर्गान है। पच परावर्त्त का स्वश्य भी दिया है।

**१३३. गुगास्थान वर्गान** -> । पत्र स० - - - - ८८ । आ० - - ११ / ८५ इख । भाषा - - याहुन । विषय - मिद्रान । २० काक् --  $\times$  । ने० काल --  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन सं० -- २६३ । प्राप्तिः स्थान -- दि० जैन सन्दिर अभिनस्दन स्वामी, बुदी ।

**१३४. गुरास्थान बर्शन**—  $\times$  । पत्रस०— ३ । ब्रा॰—१० १८/ इखः । भाषा—मम्बन् । विषय—सिद्धान्न । ८०काल—  $\times$  । ने० काल— म० १७६७ । भादवा बुदी २ । पूर्णः । बेष्टन म०-६३७ । प्रा**प्टिः स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अवनंर ।

**१३५. गुरास्थान रचनाः**—× । पत्रस०-२० । ग्रा०-१२ ८६ इख । भाषा-हिन्दी । विषय+

सिद्धान्त । र०कास— 🗙 । ले० काल— 🗙 । **मपू**र्ण । वेष्टनस०— १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा ।

**१३६. गुरास्थान वृत्ति—रत्नशेखर सूरि ।** पत्रस**्—३**४ । प्रा०—१ $\frac{2}{8}$ ×४ $\frac{2}{9}$  इ.च । भाषा— संस्कृत । विषय—सिदान्त । र०काल— $\times$  । ले० काल— $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टनस०—४६ । प्राप्तिः स्थान— वि० जैन मन्दिर वैर ।

बिशेष--सत्र २० २-६-६ नहीं है।

**श्चन्तिम**---प्राय. पूर्वीपरचितै श्लोकै रुद्धतो रत्नशेषर:सुरिमि ।

कहदगच्छीय श्रीवजसेनमुरिशिष्यै. ।

श्रीहेमतिलकसृरिपद्रप्रतिवृत्त.

श्रीरत्नशेखरमृरिः स्वपरोपकाराय प्रश्नरसारूप तथा ॥

प्रत्याप्रत्य सं० ६६० ।

१३७. गोम्मटसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्रत्न०—१४। द्वा०—११३ $\times$ ४६ डच । भाषा— प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— $\times$  । त०काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०—१३४ । प्राप्ति स्थान– दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगान, दूंदी ।

१३८. प्रतिसं० २ — पत्रस०— १४० । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । बेष्टनसं०— १४५ । प्राप्तिः स्थान— दि ० जैन मन्दिर महावीरजी बृदी ।

विशेष—धर्मभूषण के शिष्य जगमोहनं के पठनायं प्रतिकिप हुई थी। मित सस्हत टीका सहित है। १३६. धृतिसंठ—३ पत्रसठ—२३ । तेठ काल—४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसंठ—२०४। प्राप्ति

विशेष- प्रतिम तीन पत्रों में जीव एवं धर्म हब्यों का वर्शन है।

१४०. प्रतिसंo--४. पत्रसंo-६७ । ले० काल-स० १७५६ (शक सं० १६२४) पूर्ण । बेष्टन संo-६४ । प्राप्ति स्थान--पनायती मन्दिर नगाना ।

१४१. प्रतिसं०--५. पत्रसं०-८७। ले० काल-×। पूर्णं । बेष्टनसं०--१६। प्राप्ति स्थान-दि० जेन बडा पत्रावती मन्दिर. डीग

विशेष --- प्रति प्राचीन है।

स्थान--दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह ।

१४२. प्रतिसं०—६. पत्रस०—६७ । ते० काल— $\times$  । अपूर्ण । वेष्टनसं०—१७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अप्रवाल मन्दिर, उदयपुर

विशेष---प्रतिक्रमरापाठ के भी कुछ पत्र हैं।

**१४३. प्रतिसं**०—७ । पत्रसं०—३–४४ । ले० काल स०—imes । सपूर्णं । बेष्टनस०—२३ । प्रा<del>पित स्थान</del>—दि० जैन मदिर तेरहपंथी दौला

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१४४. प्रतिसं०--- । पत्रसं०--- ६७ । ले० काल--स० १६११ । पूर्णे. । वेष्ट्रनसं०-१८२/७७ ।

प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर कोटडियो का, डूंगरपुर।

विशेष-लेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

१४४. गोम्मट्टसार्—नेमिचन्द्राचार्यः। पत्रसः — ५३७ । भाषा — प्राकृतः । विषयः -सिढान्तः । र०काल— × । ते० काल-१७६६ द्वि० भारवा सुरी १ । पूर्णः । बेष्टनसं०—३ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन बडा पंचायती सन्दिरः क्रीणः ।

विशेष-श्री हेमराज ने लिखी थी। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

**१४६. प्रतिसं० २ ।** पत्रसं०—२८१ । द्या०—१२imes५imes१६ च । ले० काल—imes । सपूर्णं । वेष्टतसं०—१६२ । **प्राप्त स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४७. प्रतिसं०३ । पत्रसं०—२४१ । झा०१२२ ४ ८ इङ्च । ले० काल—४ । सपूर्ण । वेष्टनसं०—२७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रस्टिर दीवानजी, कामा ।

विशेष---प्रति तत्व प्रदीपिका टीका सहित है ।

१४८. गोस्मटसार—नेमिचन्द्राचार्य  $\times$  । पत्रसः २२७ । धा० १२ $_1^2 \times$ ६ इव । भाषा— प्राकृत—संस्कृत । विषय—सिंद्रान्त । २०काल  $\times$ । ने० काल स० १७०५ । धपूर्णः । वेष्टनसं०१४२ प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-वहत से पत्र नहीं है। प्रति संस्कृत टीका सहित है। प्रशास्ति निम्न प्रवार है-

संवत् १७०५ भादवा मुदी ५ श्रीरायदेशे श्रीजमन्नायजी विजयराज्ये भीलोडा नग<sup>रं चन्</sup>रस्भ चैत्यालये . . . . . ।

१४६. गोम्मटसार टीका—सुमतिकीति । पत्रसं० ३४७ । घा० १४ ४ ७ त्या । भाषा — संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०कास—स० १६२० भाइपद मृती १२ ने०काल-- म० १६६७ । पूर्ण । बेहुनस० १४४–२११ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायीमह (टोक) ।

विशेष---लेखक प्रणस्ति विस्तृत है।

१५०. प्रतिसं०२ । पत्रस०३२ । आर०---१२ ४ ४ है इस्त्रानिककाल --स०१७६५ प्राप्तोज मुदी१२ । पूर्णा वेष्ट्रनस०६२ । प्राप्ति स्थान----दिजन मदिर प्रादिनाय दृदी।

विशेष---वमुपर मे पडित दोदराज ने पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

**१५१. प्रति सं० ३ ।** पत्रस० ६५ । ले०काल स०१८०६ । पूर्णं । वेष्ट्रनस०१८०६ । प्रा<mark>प्ति स्थान</mark>—दि० जैन मदिर दीवानजी ४ कामा ।

**१५२. प्रति सं० ४ ।** पत्रसं० ४८ । ले० काल 🗶 । पूर्ण । **वेष्ट**नसं० १६२ । **प्राप्टिः स्थान** दि० जैन मदिर दीवानजी, काम्मा ।

१५३. प्रति सं० ५। पत्रस०६०। ले॰ कान x । प्रपूर्ण । बेष्टनस०६६। प्राप्ति स्थान-सण्डेलवान दि॰ जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष-प्रति जीएं। है। ग्रन्थ का नाम कमं प्रकृति मी दिया है।

१४४. प्रतिसं० ५ । पत्रसं०१ से ६६ । ले० काल —  $\times$  । सपूर्ण । बेष्टनसं०—६७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन तेरह पन्थी मन्दिर, बसवा ।

**१४५. प्रतिसं० ६** । पत्रस० ४७ । प्रा० ११३ ४ ६ इब । ने० काल स० १८५६ सादवा सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ११६८ । **प्राप्ति स्थान**—स०दि० जैन सन्दिर प्रजनेन ।

१४६. गोम्मटसार (कर्म काण्ड टीका)—नेमिचन्द्र । पत्रस्व १४। ग्राव ११ ४४ है इख । माथा—प्राकृत सन्द्रत । विषय—निद्धान्त । २०काल-४ । नेव काल १७४१ मार्गशीर्य मुदी १४ । पूर्ता । वेष्टनसव २४ १ अगस्ति स्थान-दिव जैन मन्दिर योगसर्थी कोटा ।

विशेष —प्रणानि संवत १७५१ वर्ष मार्ग भुदी /५ वृधे श्री भूनसथे कलात्कारमणे सरस्वतीगछे कुंदकुत्पावार्यान्वये भट्टारक श्री सकनकोतिदेव तत्पट्टे भट्टारक श्री ३ युरेन्द्रकीतिदेव तद्गुरु भ्राता प० विद्यारीदासेन जिम्बत स्वहस्तेन जानावर्णी कमंक्षवार्ष । श्रीत सस्कृत रुक्ता सहित है ।

**१५७. प्रतिसं० २** । पत्रसः १२ । ले० रूप्ल-सं० १०६४ जेष्ठ बुदी २ । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० २६० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा 1

**१५६. प्रतिसं० ३**। पत्रस० ३-११६ । लेक्काल—  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० २४। **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन मदिर तेरह यथी दौसा ।

विशेष-प्रति सस्तृत टीका सहित है।

१५६. गोम्मटसार कर्मकाण्ड— $\times$  । पत्रस० १० । भाषा—प्राकृत । विषय—िमदाल । र०काल— $\times$  । ने०काल— $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टुनस० ८८६ । प्राप्ति स्थान—िर० ईन प्रवायती मंदिर, भग्नपर ।

१६०. गोम्मटसार चर्चा $--\times$ । पत्रस $\circ$ ४। प्रा $\circ$ १२ $\times$ ६ इत्थः। भाषा-हिन्दी गद्यः। विषय-मिद्रागः। र $\circ$ काल $--\times$ । ते $\circ$ काल $-->। पूर्णः। वेष्टनस<math>\circ$ ३२-१-। प्राप्ति स्थान-वि $\circ$  जैन मन्दिर कोटडियो का, ह गरपुरः।

**१६१. गोम्सटसार जूलिका**—  $\times$  । पत्रस०७ । भाषा— सस्कृत । विषय— सिद्धात । र०कात—  $\times$  । ले०काल—  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६६७ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन पत्रायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष-हेमराज ने लिखा था।

१६२. गोम्मटसार पूर्वाह (जीवकांड) —  $\times$  । पत्रस॰ १२३ । द्वा॰ ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इच्च । माषा — सस्कृत । विषय — सिद्धात । र०काल —  $\times$  । ले०काल —  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १०४३ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन सन्दिर, सजमेर

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) मावा टीका—  $\times$  । पत्रसं० ४० । घा० १० $\times$ ४ इश्व । . भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—  $\times$  । ले०काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्टुनसं० ११६ । प्राप्ति स्थान—प्र० दि० जैन मन्दिर, प्रजमेर ।

१६४. गोम्मटसार ( जीवकाण्ड ) माया-महा पं० टोडरमल । पत्रस० १०० । प्राप्त १३ $\times$ ७ $\frac{1}{5}$  इस ।भाषा—राजस्थानी (दूडारी गद्य) । विषय—मिद्धांत । र०काल— $\times$ । ते०काल— $\times$ । प्राप्त स्थान—दि० जैन क्षोटा मन्दिर बयाना ।

**१६५. प्रतिसं० २** । पत्रस**०** ४६० । म्रा० १२ ८ ६३ इख । ले०काल— 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० ६६-१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बढा बीस पथी दोसा ।

**१६६. प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ६ । ग्रा० १०३ ४ ४ ३ इ.च. । ते०काल म**० 📐 । पूर्णा । वेष्टुनस०** ६१४ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-केवल प्रथम गाथा की टीका ही है।

**१६७. प्रतिसं० ४** । पत्रस० २६ । ले०काल-— ⋋ । पूर्णं । बेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर म्रादिनाथ स्वामी मालपुरा ।

**१६८. गोम्मटसार माथा-महा पं० टोडरमल ।** पत्र सु० १–६० । प्रा० १२  $\forall$ , ६ । भाषा- राजस्थानी गद्य । विषय —सिद्धान्त । र०काल —  $\chi$  । ले०काल —  $\chi$  । वेष्ट्रन म० ३३६ । प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान —वि० जैन मन्दिर लक्कर, जवपुर ।

**१६६. गोम्मटसार माधा-महा पं० टोडरमल ।** पत्रस्य १७२ । ब्राव १३०० इखा । भाषा-राजस्थानी (दुवारी) गखा विषय---सिद्धान । र०काल --स० १८१८ माध सुदी ५ ल०कान - । भप्रुणं । वेष्ट्रनस्य १९७५ प्रास्तिस्थान---भव दि० जैन मस्टिर ग्राजसर ।

१७०. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६६० । लेक्काल - । पूर्ण । बहुन स० १८०० । प्राप्ति - स्थान — उपरोक्त महिर ।

विशेष---सम्यक्जान-चन्द्रिका टीका सहित है।

१७१. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०२० । ले०कात म० - र । ब्रपूर्ण । वेद्नस०५५ =४ । प्रास्तिस्थान — दि० जैन बीम पथी मन्दिर दौगा ।

विशेष-सम्यक्तान-चन्द्रिका टीका सहित है ।

१७२. प्रतिसं० ३ । पत्रम० १०२१ । ले०काल म० 🕜 । पूर्ण । बेष्टन म०२४२ । प्राप्ति ---स्थान -- दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष--प्रति सन्दर है।

**१७३. प्रतिसं० ४** । पत्रम० १०२६ । ने०कात २०१८५६ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । बेष्ट्रनस**०** ६ । **प्रास्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर महाबीर स्वामी व दो ।

१७**४. प्रतिसं० ४** । पत्रस**०** ३२४ । लेश्कालः । ग्रपूर्ण । बेहुनस० ४२० । **प्राप्ति-**स्**यान**—दिञ्जेन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

**१७४. प्रतिसं० ६** । पत्रम० ७६४ । ले०काल म० १८६० आस्वा सुरी २ । पूर्ण । वेष्ट्रन**स०** ४२३ । **प्राप्तिस्याम**—उपरोक्त मिल्दर ।

विशेष--प्रति लब्धिमारक्षपणासार सहित है । कुएस म स्माबीत के राज्य म प्रतितिपि हुई थी ।

१७६. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ६८२ । ले०काल सं०— 🗴 । पूर्ण । वेष्टनस० २३ । प्राप्ति – स्थान — टि० उँग प्रयासनी मन्दिर करीली ।

१७७. प्रतिसं० ८ । पत्रस० २०६ । ले०काल—× । पूर्णं । वेष्टनस०१ । प्राप्तिस्थान— दि० जैन मन्दिर चेननदास परानी डीग ।

विकोज----प्रति सहित है। पत्रस॰ १४६ तक लब्बिसार क्षपरामार है। १७ वे पत्र में संहास्ट मुमिका नया म्रान्नम १० पत्रों में लब्बिसार, क्षपरासार तथा गोम्मटसार की भाषा है।

१७८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ५०४ । ले०काल सं०---१५१६ । पूर्णे । वेष्टनस० ६ । प्राप्ति-स्थान--- उपरोक्त मन्दिर ।

विरोध - पत्रस० २७० से ५०४ तक दूसरे बेइन स० मे है।

१७६. प्रतिसं० १०। पत्रम० १०००। ने०कान स०१ ्रें कार्तिक पृदी १०। पूर्ण । वेष्टनसं० १७। प्राप्तिस्थान – दि० जैन मन्दिर कोट्योका नैगन्त (ब्रॉदी) ।

विशेष--- स्थकज्ञान चन्द्रका टीका सहित है ।

१म०. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ∮३२ । ले काल म०---.× । पूर्ण । बेष्टनस० १४।१७१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पचायती मन्दिर कालवर ।

१**८१. प्रतिसं० १२** । पत्रस० ६.४१ । ले० काल $-\times$  । अपूर्छ । वेष्ट्रनस० १४५ । **प्राप्ति - स्थान** —वि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायिमह टॉक ।

विशेष - - ६ मध्ये सामे के पत्र नहीं है।

१८२. प्रतिसं० १३ । पत्रस० १३४६ । ले० काल स० १६२२ सावरा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टुनस०१ । प्रास्तिस्थान---दि० जैन वडा मन्दिर फ्लेहपुर (लेखावाटी)

विशेष -- यह प्रत्य ४ वंप्टनों से बधा है। टीका का नाम सम्बक्जान चिन्नका है। लिब्बसार क्षपणात्मार महिन है। प० सदासुखदासजी कासलीवान ने उथव लान पाण्डे चौकसू वानों से प्रतिनिधि करवार्ष्ट थी।

**१८२. प्रतिसं० १४** । पत्रस० १२६४ । ले० काल स० १८६० माघ बुदी ११ । पूर्ण । वे**ष्टनस०** १४।६१ । **प्राप्ति स्थान** --- दि० जैन पार्थ्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष — सम्यक्जान चिन्द्रका टीका है सहिष्ट भी पूरी दी हुई है। यह ग्रन्थ तीन वेस्टनो से बचा हमा है।

१८४. प्रतिसं०१४ । पत्रस० ७६-३८४। ग्रा०—१२४८ इ.च. । ले० काल—४ । प्रपूर्ण । बेष्टनस०८४-३८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बड़ा बीम पथी दौसा ।

१६५. गोम्मटसार मावा —  $\times$  । पत्रस० २५ । ले० काल —  $\times$  । धपूर्णः । बेष्टन सं० ७८।५६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर भाववा (राज०)

१८६. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा— हेमराज । पत्रस० ६१। प्रा० १४४ ८, दश्च । भाषा — हिन्दी । विषय—मिद्रांत । र०काल — १७३४ घामोज मुदी ११ । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । वेहनसं० १४१६ । प्राप्तिस्थान । दि० जैन पंचायती मन्दिर भनवर । १८७. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६६ । से० काल — 🗙 । पूर्ण । बेष्टन स० ४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन स्रग्रवाल पंचायती मन्दिर सलदर ।

**१८८. प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ६६। ले० काल स०१८६४ पीष बुदी ४। पूर्ण। वेष्टनसं० ११४। **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन प्रयाल प्रवायती मन्दिर ग्रन्तर।

**१८६. प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १०७ । ले० काल $-\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १४ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बुन्दी ।

**१६०. प्रतिसं० ५** । पत्रसं० ४६ । ले० काल स०१८२४ । पूर्णं । बेष्टनसं० १२४ । प्रास्ति*न* स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान व दी ।

**१६१. प्रतिसं० ६** । पत्रस• ५६ । ले० काल स०१६३१ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७६ । प्रास्ति⊸ स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--रसिक लाल मुशी ने प्रतिलिपि करवायी थी।

विशेष--सवतु १६४१ में गुजरमल गिरधरवाका ने ग्रन्थ को मन्दिर में चढाया था।

**१६३. प्रतिसं∘ ⊏**ापत्रस॰ ६४ । ले० कान — × । पूर्णं । वेष्टनस०७ । प्रास्तिस्थान — दि० जैन मन्दिर बीम पथी दौसा ।

विशेष-श्रवक सेमचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१९४. प्रतिसंग्। ६ पत्रसम् ७६ । लेक्काल--- सर्ग्यद्वाः । पूर्णः । वेष्ट्रनस्य ८६ । दिक्जैन पचायनी मन्दिरंकरौली ।

विशेष---धनन्तराम ने प्रतिनिपि की थी ।

**१६५. प्रतिसं० १०** । पत्रस**० १२**७ । ले० काल— 📐 । वेष्टनस० १२७ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन पत्रायती मन्दिर करीली ।

**१६६. प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ६२ । ले० काल स० १८२३ प्रथम माधबुदी ६ । पूर्णा । बेष्टनसं० १८।२२ **प्राप्तिस्थान**—वि० जैन मन्दिर कोटडियो काडुगरपुर ।

विशेष-सम्कृत टीक महित है। २३८ के ग्रागे पत्र नहीं है।

**१६८. प्रतिसं० २** । पत्रस०—३२० । प्रा०—१४८६ हुँ इखा । ले० काल —स०१६२४ । पूर्णे । बेष्टनस०—५३–३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जेन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६६. गोम्मटसार (पंचसंग्रह) वृत्ति--ग्रमयचन्द्र । पत्रस० ४०१ । ग्रा० १४ ८६ इक्षा

भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— $\times$  ले० काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन सं०—५३७ । प्राप्टिः स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

२००. प्रतिसं०–२ । पत्रसं०–१-१४७ । ब्रा०–१०३ × ५ $\xi$  इख । ले० काल- × । वेष्टनस०–७६४ । धपूर्ण । प्रास्टिः स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

२०१. प्रतिसं∘—३ । पत्रसं∘—१४६। ग्रा०-१२२ ४२ डचा ले० काल—× । पूर्ण । बेष्टतसं∘—१६७। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

**२०२. प्रतिसं**०—४ । पत्रसः०—२३० । बा०—१४ $\times$ ६ डवा । ले० काल—म० १७१७ भाइषा दृदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं०—२४४ । प्राप्तिः, स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-प्रवंतिका में प्रवेश धर्मधीय ने उतिलिपि की थी।

२०३. गोम्मटसार वृत्ति —केशववर्गी । पश्रसः — ३०६ । आ०—१४४ ५ इश्व । आथा— सम्कृत । विषयः—मिदान्त । र०कालः — ४ । ले० केल्न — वीर म० २१७७ जंगठ सुरी ४ । बेष्ट्रन म०— १ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयथुर ।

**धिशेष**—महसमस्य के कहने मे प्रेति विखी गई थी।

२०४. गोम्मटसार बृत्ति — 🗴 । पत्रम० ४२६ । घा० १२ 🗴 ८ है इन्छ । भाषा —सम्ब्रुत । विषय — सिद्धालः । २०कालः 🗴 । ले० काल म० १७०१ । पूर्णः । बेष्टनस० ७ । प्राप्ति,स्थान —दि० जेन ब्राप्त्रशत्न महिर, उदयपुर ।

२०**४. गोम्मटसार जीवकाण्ड वृत्ति ( तत्वप्रदीपिका**) —  $\times$  । पत्रतः २६ ने १६६ । म्रा० —१०  $\times$  ४ इच । भाषा - सम्कृत । विषय — सिद्धानः । र०काल —  $\times$  । ते० काल —  $\times$  । सपूर्णः । वैकृत स० ११६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सदिर नागदी, वृदी ।

२०६. गोम्मटसार संहष्टि—ग्रा० नेसिचन्द्र । पत्रस०११। ग्रा०१०३ × ४३ इचा । भाषा — प्राकृत । विषय — सिदान्त । र०काल × । ने०काल × ग्रपूर्ण । वेष्टनस०२०१। प्राप्तिः स्थान — दि० जैन भदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—१२ वापत्र नहीं है। प्राकृत के नृत्र सामने हिन्दी अर्थ सुत्र रूप मे है। गृत्र स०६४। २०८. गौतसपच्छा— ४ । पत्रस०१८। धा०११४४ है इञ्च । भाषा सस्कृत। विषय– विशेष---पंडित शिवजीराम ने शिष्य नेमिचन्द्र के पठनायं दूसी नगर मे प्रतिलिपि की थी।

्१०. प्रति सं०३ । पत्रस० ७६ । ते०काल स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टनसं०७४२ । प्राप्तिः तथाग--वि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

**१११. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० ४२ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ७४५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रथायनी मंदिर भरतपुर ।

२१२. गौतम पृच्छा - × । पत्रतः - ७६ । भाषा - सस्कृत । विषय - निद्धान्त । र०काल × । ले०काल -- १८७५ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ७४२ । प्राप्तिः स्थान -- दि० जैन पश्चायनी मन्दिर भरनपुर ।

**२१३. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ४२ । भाषा—सस्कृत । ले० काल— 🔀 । पूर्ण । बेध्टन स० ७४४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्तः मदिर ।

**२१४. गौतम पृच्छा** — × । पत्रस० ४ । ग्रा० १० हे × ४ डखा । भाषा - हिन्दी । विषय — सिद्धान्त र०काल × । ले०काल × । श्रपूर्ण । बेष्टन स०५४२ । **प्राप्ति स्थान** — प्र०दि० त्रैन मंदिर ग्रजमेर ।

विशेष--११६ पद्य है।

**२१५. प्रतिसं० २**---पत्रसं० ६ । ने० कान 🗴 । पूर्णं । वेष्टन म०११ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन सण्डेनवान मदिर उदयपुर ।

**२१६. चतुःशरर्गप्रकीर्गक सूत्र**—गत्रम०— ४ । माया—मन्द्रन । विषय – गिळान । र०काल —  $\times$  । ने० काल —स० १७०३ । पूर्ण । वेष्टन म० १४ । प्रास्ति स्थान —िद० जे० पत्रायनी मदिर होग ।

२**१७. चतुःसरग् प्रज्ञन्ति** -- × । पत्रतः० २ से ४ । घा० १० × ४३ टखा । भाषा-प्राकृत । विषय — आगमः । र०कालः × । ले०कालः × । घपूर्णः । वष्टनः स०१६० । **प्राप्तिस्यान** — २० दि० जैन सर्विर भजनेर ।

**२१८. चर्चा--म० सुरेन्द्रकीति ।** पत्रस० १३ । ग्रा० द ४ ६ दश्व । भाषा--सस्कृत । विषय---चर्चा । वेष्टन म० ४६ । **प्राप्तिः स्था**सं- दि०वेन मदिर राजमहल टाक ।

विशेष---जैन सिद्धान्तों को चर्चा के माध्यम में समभाया गया है।

**२१६. चर्चा**  $-\times$  । पत्रस**ः** ३ । ग्रा०६ ${}^2_x \times {}^2_x$ । भाषा -सन्कृत । र०काल  $\times$  ॥ से० काल  $\times$  । वेष्टन स०६७६ । **प्राप्तिस्यान** -दि० जैन मदिर लक्ष्कर, जसपुर ।

२२०. **चर्चा**—पत्रसु० २६ । ग्रा० १३ × ९ दे इस । भाषा—हिन्दी (गद्य) । २०काल × । ले०काल × । भ्रपसं । बेपन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर राजमहल टोक ।

**२२१. सर्चाकोश**— $\times$  । पत्रस**ः** १२४ । भाषा-हिन्दी । विषय—वर्ची । र०काल $-\times$  । सेखन काल $-\times$  । स्रपूर्ण । वेयन० म० घट । **प्राप्ति स्थान**— वि० भेन नेरह पथी मंदिर बमवा ।

**२२२. चर्चा ग्रन्थ**—  $\times$  । पत्र स० २–६ । ग्रा० ११ $\times$ ५ $^2$  इञ्च । माषा-हिस्सी । मन्दिर विषय—चर्चा । ले॰ काल—  $\times$  । र॰ काल—  $\times$  । वेष्ट्रत स० ७१४ । प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान—हि॰ जैन लक्ष्म, जयपुर ।

२२३. **चर्चा नामावली** — ४ । पत्र स० ३३। धा० १२४७ इच । भागा—िह्नरी। विषय—चर्चा। र०काल— ४ । ने० काल०—प० १९७६ माथ रूई १४। पूर्ण । वेष्ठन स०४४। प्राप्ति स्थान—प्रयाल प्रचारती मन्दिर प्राप्तवर।

विशेष-जैन मिद्रारों की चरचायों का वःर्व है।

२२४. **चर्चा नामावली हिन्दी टीका सहित**— ४ । तत्र म० ५७ । ग्रा०— १० ' १ इन्ध । भाषा— प्राकृत हिन्दी । विषय— निद्धार चर्चा । २०काल— ४ । ले० काल०— स० १६३६ मावन बुदी १० । पूर्ण । वेपून म० ११८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर थो महावीर बुदी ।

२२**४. चर्चापाठ**— ४ । पत्र ग० १८ । झा०—२४७ इखा । भाषा—किती गया । विषय-निदाल । रेजकाल— । नेज काल—४ । पूर्ण । बेपून सठ ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दिज्जैन सर्विर स्राप्तिनाथ द्वरी ।

२२६. **चर्चाबोध** -> । पत्र स०१४ । ग्रा० १त्रै ≾्टर्स्य । भागा-हिन्दी । विषय चर्चा । र०काल- > । ले० काल- > स०१६७३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०। ६१ । २२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर भारता (राज०)

२२७. **चर्चाप्रंय**—> । पत्र म० ४० । ध्रा० ११ $\times$ ४ $\xi$ ंडच । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काप्-  $\vee$  । ले० काल-म० १८०२ । पूर्णं । वेष्टन स० १४५५ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार ध्रतसेर ।

२२८. **चर्चाशतक—ग्रानतराय** । पत्र म०६। प्रा०१०३८.५८४व । भाषा—हिन्सी (पद्य) । रिकाल - 🗸 । ले० काल- . । प्रपूर्ण । बेप्टन स० ४५७ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय णाग्य भण्डार ग्राजीय ।

विशेष-- संद्रास्तिक चर्चाग्री का वर्णन है।

२२६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६२ । ले० काल-स० १६४० काली मुद्दी ४ । पूर्मा । बेहनस० १४७७ । प्राप्ति स्थान-- भट्टारकीय णास्त्र भण्डार स्रजमेर ।

विशेष-प्रति टब्बा टीका सहित है ।

२३०. प्रतिसं० ३ । पत्र म० १७ । ले० काल०—— ः । पूर्ण । बेष्टन ग० २२६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पाथ्वेनाथ चीगान बुंदी । **२३१. प्रतिसं०४ ।** पत्रसं० १०२ । ले०काल स० १६४२ घासीज सुदी ६ । पूर्ए । वेष्टनसं० ६९ । **प्राप्तिःस्थान**—वि० जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगान वंदी ।

विशेष --- फंगडावन कस्तूरचन्द जी तत् पुत्र चोखचन्द ने प्रतापगढ़ के चन्द्राप्रभ चैरयालय मे जिखवाया था।

२३३. प्रतिसं०६ । पत्रस० २६ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०१३६ । प्राप्ति-स्थान—वि० जैन मन्दिर नागदा ब दी ।

२३४. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ७१ । लेकाल—× । धपूर्ण । वेष्टन म०१६३ । प्रास्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी ।

विशेष-प्रथम पत्र नही है।

२३४. प्रतिसं**० ६ ।** पत्रस० १०० । ले० काल — स० १६४२ । पूर्ण । वेप्टन स० २७ । **प्राप्तिस्थान** — दि० जेन मन्दिर श्री महावीर व दी ।

विशेष -- प्रति टीका सहित है।

२३७. प्रतिसं० १० १ पत्रम० १६ । लेल्काल-स० १६८३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६ । प्रा**प्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्धनाथ टोडारायगिह टोक ।

**२२८. प्रतिसं० ११ ।** पत्रस० १६ । लेक्काल म० १८६२ । पूर्णे । बेस्टन म० ४५ । **प्राप्तिस्थान** —दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा ।

२३६. प्रतिसं० १२ । पत्रम० १०२ । लेक्काल म० १८२७ । ध्रामीज बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । प्राप्ति स्थान-नावर्षनाथ जैन मन्दिर इन्द्रगढ (कोटा) ।

विशेष -- प्रति टीका सहित है।

२४०. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ६३ । ते०कात स० १९३८ । ज्येष्ठ सुदी ३ । वेग्टन स० १२४/२० । प्राप्ति स्थान—पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष-प्रति बहुत मुन्दर है तथा हिन्दी गद्य टीका सहित है।

विशेष--१६ वें पत्र से द्रव्य संग्रह है।

२४४. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ६६ । ले०काल सं० १६२६ । पूर्गं । वेप्टन स० १७६ । प्राप्ति -स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष--- प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है । टीकाकार राजमल्ल पाटनी है ।

२४४. प्रतिसं० १८ । पत्रस० ७५ । ले०काल — 🗙 । वेष्टन म० ४२ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन प्रप्रवाणे प्रवासनी मन्दिर घलवर ।

विशेष--हि-दी गद्यार्थं सहित है ।

**२४६, प्रक्तिसं० १६। पत्र**म० ४६। ग्रा० १०३४७ इला। ले०काल स० १६३८ वैद्याल सुदी ⊏। पूर्णा वे० स०६०। **प्राप्ति रधी**।र.-दि० जैन प्रप्रवाल प्लासती सन्दिर बयाना ।

२४७. प्रतिसं० २० । पत्रसं० ६५ । ले०काल $--\times$  । पृष्पं । केप्टन स०१३ । प्राप्तिस्थान--दि० जैन दीवानजी का मन्दिर मरतपुर ।

विशेष -- हिन्दी टीका महित है ।

२४८. प्रतिसं०-२१ । पत्रस०-४३ । ले० कास-१८१४ । पूर्णं । वेष्टन स०--३४८ ।

विशेष-हिन्दी दीका महित है । प्राप्ति स्थान-उपरोक्त मन्दिर ।

२४६. प्रतिसं० -- २२ । पत्रसः --- ५४ । १० काल --- ४ । पूर्णं । वेष्ट्रन स०--- ३६४ ।

विशेष-हिन्दी टीका सहित है । प्राप्ति स्थान-उपरोक्त मन्दिर ।

२५०. प्रतिसंट—२३ । पत्रमट्—१८ । ले॰ काल—१८१८ ब्रामोज मुदी ८ । पूर्णं । वेष्टन स॰ –२२४ । प्राप्ति स्थान – उपरोक्त मन्दिर ।

विशेख -- भरतपुर में प्रतिलिपि की गई थी। मल पाठ है।

२५१. प्रतिसं०--२४ । पत्रसः---५३ । ल० काल---१८६ । दूर्गं । बेष्टन स०---३६६ । विशेष---विन्दी टीका सहित है । उपराक्त मन्दिर ।

२५२. प्रति सं०— २५ । पत्रसः ०—५३ । ले० काल— 🗙 । पूर्णः । वेष्ट्रन स०-४२२ । प्राप्तिः स्थान— अपनोक्त मन्दिरः ।

२५३. प्रति सं०—२६ । पत्रस०-१० । ले० काल—स० १६२२ । पूर्ण । बेष्ट्रन स०—११६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन छाटा मन्दिर बयाना ।

विशेष- लश्कर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२५४. प्रतिसं०—२७ । पत्रसः — ८६ । भाषा—हिन्दी । ले० काल- सः० १६२८ भादवा सुदी ५ । पुर्या । बेहन सः — ८२ । प्राप्तः स्थान- दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

२**४४. प्रतिसं**०—२६ । पत्रसः — ४४ । ले० काल—स० १६२० । पूर्णं । वेष्टन स०-२०**१ ।** प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२.५६. प्रतिसंo----२६ । पत्रसo--- ५३ । ले० काल-१६३१ माघ सुदी १५ । पूर्ण । बेष्टन संo १२ । प्राप्तिः स्थान----दि० जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावालो का डीग । २५७. प्रतिसं०— ३० । पत्रसं०-५६ । ले० काल-१६३२ । पूर्ण । वेष्टन स०--५६ । प्राप्ति स्थान--वि० जॅन प्रवासी मध्दर हण्डावालो का. डीग ।

२५६. प्रतिसं०—३१ । पत्रस०—६६ । ले॰ काल $-\times$  । घपूर्ए । वेष्टन स॰—६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दीवान चेननदाम, पूरानी डीग ।

विशेष--प्रति अशृद्ध एव अञ्चवस्थित है।

**२५६. प्रतिसं०—३२ ।** पत्रसरः—१०४ । ले० काल—म०१६४७ सवाढ बृदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सर्०—६३ । **प्राप्ति स्थान** —दिः जैन मन्दिर बडा बीस पथी दीमा ।

विशेष-हिन्दी गद्य में टीका भी है। जयपूर में प्रतिलिपि हुई थी।

२६०. **प्रतिसं०—३३।** पत्र स० ७७ । ले० काल-स० १६३४ वैशास्त्र मृदी ६ । पूर्गं । वेष्ट्रन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शस्त्राद्यों (मीकर)

वशेष—नेत्रक प्रणस्ति निम्न प्रकार है कास्टामिये मातुर्गये पुष्करगणे लोडाचार्य मान्गय भट्टारक जी श्री श्री १०८ श्री लिलतकीति महारकजी श्री श्री १०८ श्री राजेर,कीति जी तन् शिष्य पाँडत आगवर वद जी लिखायो फनेडार मध्ये लिएकत असमस सोजक।

२६१. प्रतिसं०३४ । पत्र म०१२ । ले० काल— ७०१६०० कार्तिक बुदी १४ । पर्गा। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फनेटपुर शेलाबाटी ।

विशेष---माली ललचन्द ने लिपि की थी।

**२६२. प्रतिसं० ३५ ।** पत्र स०६२ । ले० काल—प०१६३६ । पूर्णा । *वेपून म०—६४* । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

२६३. प्रतिसं० ३६ । पत्र स०२६ । ले०काल ---१६०३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० --५ ६९ । प्राप्ति स्थार---वि० जैन मन्दिर कोटडियो का, इंगरपूर ।

**२६४. प्रतिसं०३७ । पत्र स०—**३६ । ने०काल—- स०१ १६ कालिक वृदी ८ । पूर्ण<mark>े । बेष्टत स०-- ४१३</mark> ।

**विशेष**--रियमचल्द विस्दायक्या ने प्रतिनिषि कर लब्दर ते गर्ट में विराजमान विया । **प्राप्ति स्थान**---वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**२६५. चर्चाशतक टीका—हरजीमल** । पत्र संव्यव्या । याव १६ - ३ इत्र । सावार हिन्दी (पदा तथा गदा) । विषय—चर्चा । १०काल— ४ । त्रेष काल—सर १६३० । पूर्ण । वेष्ट्रन सवस्वर **प्राप्ति स्थान**—दिव जैन प्रचारती सदिव वयाता ।

विशेष—हरजीमन पानीपन वाने की टीका सहित है। १०४ पत्र है। स्थि ठाकुरदास हिण्डीन बाले ने प्रतिनिधि की थी। लिखाइन लालाजी माथीनिहत्री पठनाथ मुखनान कानृनगा का यटा नानी हुलासी राम का, गोत्र चादुबाड बयाना वाले ने साथीशम व्यावक उदागीन चादबाड कारण छाप घर ग स्कित होकर यह ग्रन्थ निव्यवकर चरद्रप्रभु के पुराने सिंहर में चढाया।

२६६. प्रतिसं०२ । पत्रस० ७६ । विषय-चर्चा । ७० काल-४ । ले० काल-४ । पूर्ण ।

बेष्टन सं० १०३ । प्राप्तिस्थान--दि० जैन मंदिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—इति चर्चाणतक माथा कविल द्यालतराय कृति तिनकी धर्ष टिप्पण हरजीमत पाणीपय की बर्णाई सपूर्य । यह पुस्तक श्री प्रमिनदनजी का मदिर की छै ।

६७. प्रतिसं०३ । पत्रस०६७ । ले०काल-स०१६४६ पौष मुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन ं०१४० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर नागदी, वृदी ।

२६६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ८० । ने० कान— × । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । प्राप्ति स्थान— दि - जैन मंदिर भेटावीर स्वापी, बूदी ।

२६६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४२ । ले०काच-स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२१ । प्राप्ति-स्थान – ि० जैन मन्दिर महाबीर स्वामी, बूदी ।

२७०, **चर्चामतक टोका** — नायूलाल नोसी । पत्र सर्व्यः । ध्रा०१२४६ है इस । माषा-हिन्दी (पत्र)। विषय -मिहान-चर्चा। २०काल — ४। ००क ले – ४। पूर्णः। वेष्ट्रन स० — ५६। **प्राप्ति स्था**न — ६० जैन महिन्द महाबीर स्वामी व दी।

विशेष--प्रति टब्बा टाका सहित है।

२७**१. चर्चासमाधान** — ४ ! पत्र स॰ १३ । फ्रा० ६३ ४७ इच । भाषा —पस्कृत । विषया—चर्चा । ले∘काल— ४ । र०काल ४ ! पूर्ण । बेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्यान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

२७२. **चर्चाममाधान - मूधरदास ।** पत्र स०१४४ । घा० ६२४४ हुन्छ । भाषा— हिन्दी (पद्य) । विषय - चर्चा । र०काल —स०१८०६ माघ मुदी ४ । लेकाल--स०१६८७ सावण मुदी ११ । पद्यो । वेष्टन स०१०८८ । **प्राप्ति स्थान**-- महारकीय शास्त्र मध्यार प्रजमेर ।

२७३. प्रतिसं० २ । पत्र म० ६७ । ले०काल-स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । प्राप्ति स्थात-स्वर्णन मन्दि पार्थनाथ चौगान वृदी ।

विशोष - सबन् १८३६ साइपद कृष्णा २ बुधवारे लिखायत पंडित छोगालाल लिखित मिश्र रूपनारायस भीलाय मध्ये ।

्षे**४. प्रतिसं० ३** । पत्र स० ह१ । लेक्काल— ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति**-स्थान—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बृदी ।

२७५. प्रतिसं० ४ । पत्र म० ४७ । ग्रा०—११×५३ इन्द्र । लेक्काल—स०१८६७ । पूर्णे । बेष्टन म०६१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर महाबीर स्वामी बूदी ।

२७६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १११ । ध्रा० -- १२ रॄै ४ ६ इख । ले०काल स० १८८७ । पूर्ण । बेष्टन स० २८ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर ीटडियो का, नैरावा ।

विशेष-धर्ममूर्ति रोट् । स्थीवसी विप्रसे लोचनपुर मे प्रतिलिपि कराई थी।

२७७. प्रतिसं० ६ । पत्र म० ११४ । घा० १४६ इ.च । ले०काल—स० १८७४ । वैशास बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० १६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायनी मन्दिर हुगी । २७८. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १२३ । प्रा० ६ $\frac{2}{7} \times 4\frac{2}{7}$  इन्छ । ले०काल—स० १८८६ । पूर्ण  $^4$  बेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—राजमहल वा दूशी मध्ये लिखित । कटार्या मोजीराम ने राजमहल के चन्द्रप्रम मन्दिर को मेंट किया था।

२७६. प्रतिसंग्दापत्र सम्बद्धाः ११३ ४४ हुःचा लेकाल—स्राप्ट १८४० चैत्र सुदी ४ । पर्सं । बेस्टन स्राप्ट १ प्राप्ति स्थान—दिव्योन मन्दिर गणमञ्जल ।

विशेष — विजयकीति जी तत् शिष्य पडित देवचन्दजी ने नक्षकपुर मे धारिनाथ चैत्यालय मे व्यास महजराम से प्रतिलिपि कराई थी।

२८०. प्रतिसं०६ । पत्र स० ६६ । स्रा० १०३ ४५} इ.च.। लेक्शल -- स० १८६२ । पीष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५-३१ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह

विशेष--तक्षकपुर में गुमानीराम ने प्रतिलिपि की थी।

२**८१. प्रतिसं० १०।** पत्र सः ८४। म्रा० ११imes४ इ.च.। ले०काल—स० १६७८ मणाढ **दुरी** १४। पूर्णः। वेष्टन म०१४१। **प्राप्ति रुषान**—दि० जैन मन्दिर फ्तेक्ट्पुर शेलावाटी।

विशेष-वाबुलाल जैन ने मार्फत बाबू वेद भास्कर मे ग्रागरे में लिखवाया था ।

२६२. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ७७-१०६ । ग्रा०—११४ ६ इखा । लेवकाल स० १८४६ । पौष बुदी ४ । प्रपूर्ण । बेय्टन स० ६४।६२ । प्राप्ति स्थान —दिव जैन पार्थनाय मन्दिर इन्दरगढ ।

२८३. प्रतिसं० १२ । पत्र स० १३४ । द्या० १२ ८७ इन्छ । ले०काल---- ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१३७ । प्राप्ति स्थान----वि० जैन प्रचायती मन्दिर प्रलवर ।

२८४. प्रतिसं**० १३ ।** पत्र स० ८५ । ग्रा० १२ ४६ इ.च.। लेक्काल स० १८०६ । पूर्यो । वेस्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल पचायनी मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष--जयपुर मे प्रतिनिपि हुई थी।

२६५. प्रतिसं० १४ । पत्र म० १६६ । ले०काल —  $\chi$  । पूर्ण । बेट्टन म० ४१२ । प्राप्ति-स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर मन्तपुर ।

२६६. **प्रतिसं० १४ ।** पत्र स०—१६१ । ले०काल म० १८२३ जेठ मुदी ४ । पूर्ण । वस्टन स**०** ४**१७ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—पुस्तक कामा में लिखी गई थी।

२८७. प्रतिसं०१६ । पत्र स०११८ । ले० काल स०१६२४ । पूर्णा । वेण्टन स०४१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी तया दो प्रतियो का मिश्रमा है।

२६६. प्रतिसं० १७ । पत्र स०६१ । लेक्काल —स०१६५ । पूर्ण । वंग्टन स० ४१६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पवायनी मन्दिर सरतपुर । २.**६. प्रतिसं०१६ ।** पत्र स० १३१। प्रा०१०<sup>2</sup>, ४.५ इचा नि०काल—म० १८१५ । माह बुदी ४.५ पूर्ण । बेहन स०४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवायती मन्दिर बयाना ।

**२६०. प्रतिसं० १६ ।** पत्र सं० ८६ । घ्रा० १२४४ इन्छ । ले०काल — ४ । पूर्य । केवन स०७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायनी मन्दिर बयाना ।

२**६१. प्रतिसं०२०।** पत्र स०१४८ । ने०काल— × । पूर्या । वेष्टन स०४६ । प्राप्ति – स्थान— दि० जैन पनायनी मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

**२६२. प्रतिसं० २१** पत्र स० ११८ । घा० ११६  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  दश्व । ले० काल — स० १८३४ कार्तिक मृदी १४ । पूर्ण । लेप्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**— टि० जैन प्रचायनी मृदिर करौली ।

विशिष- बगालीमल छावडा ने करौली नगर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

**२६३. प्रतिसं**० २२ । पत्र स० १३४ । ग्रा० ११४४ हुआ। ले० काल--- स०१०१४ ग्राप्त्रित मुदी १०1 पूर्ण। बेष्टत स०१३४ । **प्राप्ति स्थान-**ं द० जैन प्रवासती मंदिर करीली ।

**२६४. प्रतिसं०२३** । पत्र म०१०३ । झा०१२०४ ६ इखा। ले० काल-१६०७ जेठ सुदी १३ । पूर्ण । बेपून म०१२/२० । **प्राप्ति रुष्मन**----दि० जैन सोप्दीन मन्दीर करौली ।

विशेष-चद्रप्रभ चैत्यालय करौली में साहिदराम ने प्रतिलिपि की थी।

२**६५ प्रतिसं०२४** । पत्र स०१२२ । ले० काल—सं०१६५२ ज्येग्ठ सुदी ६ । पूर्ण । बष्टन स०२०-३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जेन मदिर बड़ाबीस पथी दौसा ।

**२६६. प्रतिसं० २५** । पत्र स०६ । ग्रा०६ ∴ ६ इक्षा । ले० काल — स०१=१५ । पूर्णा । वेष्ट्रन स०१३१-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर नेप्ट पथी दौसा ।

थिशेष--चिमन लाल छावडा ने प्रतिलिपि की थी।

**२९७. प्रतिसं० २६ ।** पत्र म०१२९ । ले० काल म०१६२३ फागुरा सुदी २ । दूर्सी । वेकृत स०४७/४० **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर भादवा (राजस्थान) ।

२६८. प्रतिसं० २७ । पत्र स० १६७। ले०काल-स० १६२०। पूर्ण । वेष्टन स० ४४/ १०६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर भादवा ( राज० ) ।

विशेष---भवग्लाल पाटौदी ने प्रतिलिपि की थी।

२६६. प्रतिसं० २ म्. । पत्र स०११७ । ग्रा०१३ x ४ इच्च । ले० काल—म०१६३१ ग्रापाट सुदी ६ । पूर्णा । बेष्टन स०५० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेहसुर गेलावाटी (मीकर) ।

विशेष--ईश्वरीय प्रसाद शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

३००. प्रतिसं० २६ । पत्र सं० १११ । ले० काल—स० १८२८ फागुग मुदी २ । पूर्णा। बेहुत सं० ४६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---साह रतनचन्द ने स्वय के पठनायं प्रतिलिपि की थी।

३०१. चर्चा समाधान- मुघर मिश्र । पत्र म० ५३ । प्रा० १२×६ इचा । भाषा--हिन्दी

गद्य । विषय—सिद्धांत चर्चा । र०काल—र । ले०काल—स० १७४४ । पूर्स । वेष्टन स० ६४-४७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डगरपर ।

बिशेष-ह बड जातीय लघ् भाषा के पाडलीय नवलचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी।

- ३०२. चर्चासागर— पं० चम्पालाल । पत्र स०-३६०। घा० १३×६ है इस्त । आवा— हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात चर्चा । र०काल—स० १६१० । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०४४ । प्राप्ति स्थार—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर, मेखावाटी ।
- ३०२. चर्चासागर बचिनका—पत्र स॰ ३०६। धा॰ ११ $\times$ ७३ इस । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा। र०काक्ष— $\times$ । ले॰काल् $-\times$ । पूर्णं। वेष्टन स॰ १२५२। प्राप्तिस्थान—म. दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर ।
- ३०४. **बर्चासार-घन्तालाल**—ात्र म०२७ । घा० १०१४६१ इ.च. । भाषा—िहन्दी । विषय—िसद्वात । र०कार;—म०१६४७ फागुए। मुदी १० । ले०काल— स०१६४७ फागुरा। मुदी १२ । प्राप्तिस्थान—ाण्यंनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा ।
- ३०**५. चर्चासार—पं० शिवजीलाल ।** पत्र स०११० । ग्रा० १११ ८६ इस । आपा— हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—म०१६१३ । ले०काल—स०१६५२ । पूर्ण । वेष्टन म०८ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाय चीगान. वंदी ।

विशेष-पडित शिवजीलाल ने ग्रंथ रचा यह सार।

सकल शास्त्र की साखिनै देखि कीयो निराधर।।

३०६. प्रतिसं० २ । पत्र म० १०७ । ले० काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ४ । प्राप्ति -स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

**३०७. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० १११ । ने०काल-— $\times$  । पूर्णः । वेष्ट्रन स० ६६ । **प्राप्तिस्थान** — दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी, टोक ।

**३०८. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स० ५६ । ने०काल— ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५०-४५ । **प्रा**प्ति-स्थार—६० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिह, टोक ।

**३०६. प्रतिसं० ४.** । पत्र म० ६६ । लेब्बाल—म० १६२६ । सपूर्ण । वेउन म० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन तेरहपथी मन्दिर बमवा ।

**३१०. प्रतिसं० ६** । पत्रः स० १२७ । लेब्काल—्,८ । अपूर्णः । तेष्ट्रत स० ६० । **प्राप्ति-**स्थान—दिञ्जने तेरहण्यी मन्दिर बसवा ।

- ३**११. चर्चासार** ८ । पत्र म० ४० । या० १०  $\times$  ४ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय— सिदात । प्रकाश—  $\times$  । से०काल—  $\times$  । पूर्ण । यष्ट्न स० १४७ । **प्राप्ति स्थार** महारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।
- ३१२. **चर्चासार** ४ । पत्र स ६६ । ग्रा० ११ × ४ इश्व । भाषा-सम्कृत-हिल्दी । विषय-सिद्धात । र०काल — × । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५० । **प्राप्ति स्थान** — महारकीय दि**०** जैन मन्दिर ग्रजसर ।

- **३१३. चर्चासार**  $\times$  । पत्र सं० ७६। घ्रा० १० $\frac{3}{6} \times १\frac{3}{6}$  इश्वः । माधा-हिन्दी गद्यः । विषय-सिद्धांत चर्चा । र०काल— र । ले० काल— स० १६२६ फागुन बुदी १२ । पूर्णः । वेष्ट्रतः स० २६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान, बुंदी ।
- **३१४. चर्चासार** ८. । पत्र स० ४३ । ब्रा० ६ुँ ४६ इश्व । भाषा –िहस्दी गद्य । विषय— निद्धात । र०काल— ४ । ले०काल— ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर वंदी ।
- **२१४. चर्चासार संग्रह—म० सुरेन्द्र सूचर्ग**ापत्र म० २। म्रा० १०३ ८४) इ.स.। भाषा— सम्कृतः। विषय—गिद्धात चर्चा। र०काल—४। विकाल—म० १७३४। पूर्णः। बेप्टन म० १३०। प्रा**रित स्टान**— २० जैन मन्दिर पार्वताच चौगात बुदी।

विशेष-- बाह्मण चपे ने ब दी में छोगालान के प्रश्नार्थ प्रतिनिधि की थी।

- **३१६. चर्चासार संग्रह**—पत्र म० २१६ । ग्रा॰ १४}×७ है उचा । भाषा-हिन्दी । विषय— चर्चा । र०काल—म० १६०० । ले०काल— म० १६६० । पूर्ण । बट्टन म० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फेनेड्यर, मीकर ।
- **३१७. चर्चा संग्रह** .. । पत्र स० १० । ध्रा० १० ७६ । भाषा-प्राक्ष्म । विषय— सिद्यान । २०कार, - १ । लेज्बाल— २ । अपूर्ण । वेष्ट्रन स०६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेरहपथी मालपुरा ।

विशेष - प्रति हिन्दी टीका सहित है।

- **३१८. चर्चा संग्रह**ः (। यत्र म०२१ । आ०१२ ४६ इ**छ । भाषा-**मस्कृत । हिन्दी । विषयः - चर्चा । २०कास - र । ले०क.ल / । बेष्टन म० ७३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लष्कर जयपुर ।
- **३१६. चर्चासंग्रह—** रापत्र मण्यभ्यः भाषा-हिन्दी । रण्काल ४ । लेण्काल ५ । पूर्णः । वेष्टुन मण्ड६१ । **प्राप्ति स्थान** दिण्जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।
- **३२०. प्रतिसं० २ ।** पत्र म० २६ । ले∘काल ५. । पूर्णुं । बेग्टन स० ३६३ । **प्राप्ति -स्थान**—दि० जैन पचष्यती मस्टिर मरनपुर ।
- ३२१. चर्चा संग्रह—  $\times$  । पत्र स० १४३। ग्रा० १२ $^{3}>$ ६ $^{3}$ ६२। भाषा-हित्ती। विषय— चर्चा। र०काल—  $\times$  । ते०काल— स० १८५२ साथ बुदी २। पूर्णा। बष्टन स० १२०। प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन सन्दिर, प्रजमेर ।

**विशेष**—विविध प्रकार की चर्चाक्रो का सम्रह है।

- ३२२. चर्चा संग्रह— '.। पत्र स० ६२ । आ०११ ४४ इच । भाषा हिन्दी। विषय चर्चा । अपूर्ण । र०काल \ । लेकाल \ । वेष्टन म० ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वाभी, मानपुरा ।
- ३२३. चौदह गुण्एस्यान यर्गन— नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स०३४ । घा०१०३४ ४३ इत्था। भाषा–प्राकृत । विषय—सिद्धात चर्चा। र०काल—रालेकाल—स०१८३० ग्रापाद सुदी१। पूर्ण।

वेग्रन स० ११३६ । प्राप्ति स्थान--- भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--वौदह गुलस्थानो का वर्णन है ।

३२४. प्रतिसं०२ । पत्र स०३८ । ले०काल स०१२४८ । पूर्णं । बेष्टन स०६२३ । प्रास्ति -स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३२५. प्रतिसं० ३ । पत्र म० ११ । ले०काल— 🗙 । पूर्ष । वेष्टन म० ४६१ । प्राप्ति -स्थान— म० दि० जैन मंदिर प्रजनेर ।

३२६. **चौदह गुरास्थान वर्गन**—पत्र सं०२। भाषा-संस्कृत। विषय—सिद्धान। र०कान- $\times$ । लेकान $-\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०७१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर मरतपुर।

३२७. चौदह गुरास्थान चर्चा—  $\times$  । पत्र सं० ३६ । प्रा० ६ $\frac{1}{5}$  ×६ $\frac{1}{5}$  दश्च । भाषा— हिन्दी । विषय—सिद्धान । र०काल—  $\times$  । ले०काल—प्र०१८४४ माघ मुदी र । पूर्ण । बेष्टन स०३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष-भूगमल की पुस्तक में महादास ने प्रतिलिपि की थी।

३२०. **चौदह गुएस्यान चर्चा**— × । पत्र म०३७ । ग्रा० ६ ×६ है इश्वा । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा र०काल— × । ले०काल— स०१६४४ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । बेध्न स०६६ । प्राप्ति स्थार— दि० जैन पचायनी मन्दिर बयाना ।

३३०. चौदह गुरास्थान चर्चा — ४ । पत्र स० २६६। घा० ६ ८ ६ इख । भाषा-किंदी । विषय—चर्चा । र०काल — ४ । ने०काल — ४ । पूर्ण । बेप्टन स० २० । प्रास्ति स्थान -दि० तैन मन्तिर दीवासकी कामा ।

विशेष-- तालिकाओं के रूप में गुग्गस्थानों एवं मार्गगाओं का वर्णन किया हुआ है ।

**३३२. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० १६६ । प्रा० १है २ ६ इश्व । लेक्काल---- ८ । पूर्ण । बेहुन स**०** १९७ । **प्राप्ति स्थार-**--दि० जैन मन्दिर तेरह पूर्धी दोसा ।

विशेष -- नादराम तेरह पथी ने चिमनलाल तेरहपथी से प्रतिनिधि कराई थी ।

917FH---

सर्म पुरस्थर प्रादि जिन, प्रादि धर्म करतार । मैं नमी प्रथ हरगा नै, सब विधि मगल सार ।।१।। प्रजित प्रादि पारस प्रभू, जयबन्ते जिनराय । धाति चतुरूक कर्ममल, पीछे सुधे जिबसाय । बरधमान वर्तो सदा, जिन शासन सुद्ध सार । यह उपगार तुम तर्जी, मैं पाये सुवकार ।  $\times$   $\times$   $\times$   $\times$ 

भग भारत गोमट्रसार जी वा त्रिनोकमार जी वा तबिबसार जी के घनुसारि वा किंचत धीर शास्त्रों के घनुसारि चर्चा निर्मिय है मो हे मध्य तुं जानि सो ज्यानूं जाय्या पदारया का सरूप जयार्थ जाय्यां जाया । घर पदारय का सरूप जागिन वा करि सम्बन्दक की प्राप्ति होय । घर सम्बन्दक की प्राप्ति से सुद्ध स्वरूप की प्राप्ति होय सो एही बात उपारेय जागि भव्य जीवन के चर्चा सीवजी तजिन है ।

# श्चन्तिम पुष्पिका ---

इति श्री चौदह गूएस्थानक की वचनिका करी श्री जिनेसर की वाएगि के ब्रनुसारि सपूर्ण।

बोहा--वौदह गुरास्थानक कथन, भाषा सुनि सुख ही।

धलयगज श्रीमाल नै, करीं जथामति जोय।।

इति श्री गुग्गस्थान टीका सपूर्ण । ग्रन्थ कर्ला ग्रख्यराज श्रीमाल ।

३३३. प्रतिसं∘—३ । पत्र स०—३६ । ले० काल- × । अपूर्णः । वेष्टन स०—६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

विशेष---पत्र स० ३० से ३४ व ३६ से भागे नहीं हैं।

३३४. प्रतिसं⊙—४। पत्र ज्ञ⊙–४२। ते० काल स०१७४१ कार्तिक बुदी ६। बेष्टन स०६०६। प्राप्ति स्थान-- दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

३३५. प्रतिसं∘--५ । पत्र स०—-२० । घा०---६×४३ इख । घपूर्णः । वेष्टन स०—-२६६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३३६. प्रतिसं∘६ । पत्र स० ४२ । ले० काल सं०१⊂१२ । पूर्णावेष्टन स०६**१ । प्राप्ति** स्थान—दि० जैन ग्रम्माल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

स० १८१२ वर्षे पौषमासे इत्यापक्षे तीज तियौ क्रानिवासरे गुग्गस्थान की भाषा टीका लिखी उदयपुर मध्ये ।

ग्रन्थ प्रमार्गः -- प्रति पत्र १२ पक्ति एव प्रति पक्ति ३५ मक्षर ।

३३७, प्रतिसं०७ । पत्र सं०५३ । ले० काल स०१८५४ । पूर्णं। बेष्टन सं०११६ २८ । प्राप्तिक स्थान—पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

३३८. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ४२ । ले० काल सं० १७४० कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं० १६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--कामा मे गोपाल बाह्मए। ने प्रतिलिपि की थी।

३३६. प्रतिसं०६ । पत्र सं०६४ । ग्रा०१०१४ ४ ४ हेच्य । ले० काल सं०१७४८ । पूर्ण। बेष्टन सं०७० । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा । ३४०. प्रतिसं० १० । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १७४१ मादवा बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० २१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजीकामा ।

३४१. चौबीस गुरास्थान चर्चा— गोबिन्द दास । पत्र स० ६ । ग्रा० १० ४४ इखा । साथा-हिन्दी । विषय-गुरास्थानों की चर्चा । र० काल स० १८ कि फानुन सुदी १० । ले०काल स० १८ कि.। पूर्णे । बेहन सं० ४३-११६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टॉक) ।

#### पारस्य --

गुण ख्रियालीस करि सहित, देव घरहृत नमामि । नमो ग्राट गुण लिये, सिद्ध सब हित के स्वामी ॥ छत्तीस गुणा करि, विमल ग्राप ग्राथारिज सोहृत । नमो जीरि कर ताहि, मृतत बानी मन मोहृत । घर उपाध्याय पच्चीस गुण नदा बसन ग्राभिराम है । गृण ग्राट बोम फिरि साधु है, नमो पच सुख घाम है ॥

#### ग्रस्तिम ---

सस्कृत गाथा कठिन, धरण न समझ्यो जाय ।
ता कारण गोविद कवि, भाषा ग्वी बनाय ।।
जो या की मीचे मुगँ, धरण विवारं जोय ।
ममा माह धादर लहें, मूरिण कहें न कोय ।।
धलर धरण यामें घटि विंद होय ।
बुवजन सबं मुसारच्यो माफ कीजिये मोच ।।
धारामं उपरं पत्र, इक्यासी और
फागुण मुदी दशमी मुनिषि, शशि वामर विरमीर १६ ॥
दाद्वी को साधु है, नाम जो गोविन्दरास ।
तानं यह मापा ग्वी, मनमाहि वार्ग उस्टाम ।।
नामरदा हो नगर में रच्योजु, भाषा य थ ।
जो याहु सीचे मुगँ लहें जेन वन पथ ।।

३४२. **चौदह मार्गराग टीका** —  $\times$  । पत्र सं० न्हः । ग्रा० १०५६ हुन्तः भाषा — हिन्दी । विषय — मिद्रात । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । षपूर्णः । वेष्ट्रन स०१५१ । प्राप्ति स्थान । दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४३. चौबीस ठाएग — × । पत्र म०२४। घा०२कृँ४४३ इस । भाषा—सम्कृत । विषय—चर्चा। र०काल × । ते० काल × । दूर्ष । वेष्ट्रन म०६१०। **प्राप्ति स्थान**—अट्टारकीय दि० जैत मन्द्रिर घजोर ।

३४४. चौबीस ठार्गा चर्चा — नेमिचन्द्राचार्य । टिप्प्सकार — दयातिलक — पत्र म० १२३। म्रा० १११४४ इच । भाषा --प्राहन-सरहत । विषय—सिद्धान । र०काल 🗴 । ने०काल स० १८४०-मगहन । वेष्टन स०३२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर । विशेष—महाराजा सवाई प्रतापांसह के शासन काल में प० रत्नचन्द्र ने जयपुर के लक्ष्मर के मन्दिर में पूर्ण किया तथा प्रारम्भ "चम्पावती नगर में किया । ग्रन्थ का नाम "जैन सिद्धान्त सार" भी दिया है जिसको देवातिनक ने मानन्द राय के लिये रचा था ।

२४४. **- वौशीस ठारणा चर्चा** - ४ : पत्र सं०१०। घा०१६४११३ डचा। भाषा-संस्कृत। विषय--- मिद्रांला। रक्ताल ४ । ले० काल स० १६४३ ग्राषाड सुदी ४ । पूर्णा। वेष्टन सं०८६ । **प्राप्ति स्थान**--- मास्वेताख दि० जेन मन्दिर इन्टरगढ़ (कोटा)

विशेष --- बडा नक्शा दिया हमा है।

4**४६. बौबीस ठाएगा चर्चा—ग्रा० नैमिचन्द्र** ।पत्र सं०२६ 'ग्रा० १०१ै ४४<mark>१ इचा। माषा</mark>-प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल ४ ।के० काल ४ ।पूर्ण । वेष्टन सं० १६२७ । प्रास्ति स्थान—भट्टाफ्तीय दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

**३४७. प्रतिसं∘— २** पत्र स० ३०। धा० १०२<sup>°</sup>, ४<sup>°</sup> इ.ख । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० १६६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

**३४६. प्रतिसं० ३** पत्र सं० २८ / ले० काल-स०१६२६ स्वावण बुदी ४ । वेष्टन सं २२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष -- ठाकूरसी ने ब्राह्मण चिरजीव राजाराम से प्रतिलिपि कराई थी।

३४६. प्रतिसं० ४ ।पत्र सं८ ३२ । ले० काल- । बेष्ट्रन स० २३ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर लक्कर ।

विशेष--प्रति सम्बुत टिप्पमा महित है । कृत्यागढ के चन्द्रप्रम चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३५०. प्रतिसं० ५ । पत्र म० ५० । ते०काल-म० १७८६-फागुण् मृदी १२ । वेष्टन स० २४ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष - तेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

मवन्तर १७८४ फागुरमाने णुक्तपक्षे द्वादणतिषौ रविवारे उदयपुरनगरे श्रीपार्थनाय चैत्यालये श्री मूलमधे महारकेट महारकती श्री १०८ देशदकीलित्री ग्राचार्य श्री गुनवन्द्रजी तत् शिष्याचार्यवर्या-चार्यजी श्री १०८ क्षेमकीलि जी तब्ह्यस्य पाडे गोर्द्धनाव्यस्तेनेद पुस्तक तिस्तिन ।

३४१. प्रतिसं०६ । पत्र स० ३०। ले० काल स०१-८४ । पूर्णा विष्टन स०१७४-७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डोगरपुर ।

३५२. प्रतिसं० ७ पत्र स० २६। ले० काल स० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ११०/११ । प्राप्ति स्थान—प्रप्रवाल दि० जैनमन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति तिमन प्रकार है— सबत् १७३१ वर्षे आपाइमामे बुदी १ शुक्रे श्री गिरिपुरे श्री ग्रादिनाथ बैग्यालये श्री काष्टासंघे नंदीतटमच्छे विद्यालएं। महारक श्री राजकीति ६० श्री ग्रमयहिष पठनार्थ।

३५३. प्रतिसं० ८ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १७१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१२ । १६७ । प्राप्ति स्थान—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर । प्रशस्ति — स० १७१३ कार्तिक सुदी ७ सोमवार को सागवाडा के मन्दिर मे रावल श्री पुंज विजय के शासन में कल्याराकीर्ति के शिष्य तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी।

३४४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २४ । ले०काल 🗴 । मपूर्ण । वेष्टन स० ४१३ । १६८ । प्रास्ति स्थान—सभवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३४५. प्रतिसं० १० पत्र म०३०। ले० काल स०१७७४। पूर्ण। वेष्ट्रन स०४१४/१६६ प्रास्ति स्थान-स्थवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपर ।

प्रशस्ति—स॰ १७७४ मगसिर सुदी ४ रविवार को श्री सागपत्तन नगर मे ब्रादिनाथ चैत्यालय मे जीवम जैकानस मध्ये द० केवाव ने प्रतिनिधि की थी।

**३५६. प्रतिसं० १९ ।** पत्र सं० १६ । ले० काल 🗴 । खपूर्णं । बेठून स० २००। प्रा<sup>दित</sup> स्थान—समननाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३**४७. प्रतिसं० १२ ।** पत्र सं० ४४ । ले० काल० × । पूर्एं । वेष्टन द१∼११४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लेरद्रपथी दौता ।

े **३५६. प्रतिसं०१३** । पत्र म०३४ । ले० काल × । श्रपूर्ण । बेपृत स०४६ । **प्राप्ति स्थान** द० जैन मन्दिर बडाबीम पथी दौसा ।

विशेष-हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३५६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १३ । ले० काल 🗴 । पूर्एं । बेटून स० १६४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६०. प्रतिसं० १५ । पत्र स० २३ । ले०काल ं× । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ८४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन महिन्द दोवानजी कामा ।

**३६१. प्रतिसं० १६।** पत्र स० ३१। ले० काल स० १७३६ मगमिर मुरी १५। पूर्ण । बेटन स० ८४। **प्राप्ति स्थान**िद० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६२. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स ≒६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६३. प्रतिसं० १८ । पत्र स॰ २५ । ले॰ काल  $\times$  । 2 प्रपूर्ण । बेष्टन स॰ ३२४ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मण्दिर दीवानजी कामा ।

३६४. प्रतिसं० १६ । पत्र स०६७ । ले० काल ४ । पूर्णः । वेटन म० ११२/४ प्राप्ति स्थान—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा )

३६५. प्रतिसं ०२०। पत्र स०३०। ले० काल स०१८४७। पूर्णा । जीर्णा वेष्टन स० ३८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी ।

**३६६. प्रतिसं० २१।** पत्र स० २४। ले० काल  $\times$ । पूर्णः । बेष्टन म० ३४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३६७. प्रतिसं० २२ । पत्र मं० १७ । मा० ११ × ४३ इन्हा ले० काल--- स० १६१७ श्रावसा

सुदी । पूर्ण । वे॰ सं॰ ३१४ । प्राप्ति स्थान--दि॰ जैन मन्दिर ग्रमिनन्दनस्वामी बुंदी ।

प्रशास्ति— धव सवतसरेत्मन् श्रीविकमादित्यराज्ये सवत् १६१७ श्राव्यामासे शुक्तपक्षे तक्षत्रे श्रीमृत्वसंचे सरस्वतीयच्छे बलात्कारगणे तदाम्नाये ग्रा० श्री कुन्तवार्यात्रये म० जिनचद्रदेश सकलताकिकबूडामिंग श्री शिषकीत्तिदेव तत्यट्टे म० वर्मकीतिदेवानदम्नाये सतारोग्नरीरनिविश्न त्रयांदशविधिचारित्रप्रतिपालक मध्यजनकुमुदप्रतिवोधित चंद्रोदये मेनार प्राचार्य श्री मदनवद तत्त्राध्यि पडितावार्य श्रीध्यानवदेन
बूदं चतुर्वकस्थान लिपिकृत । प्रनितत्पर पुस्तक कृत्वा लेलकाना श्रीनोहनवास्तव्येन सा० ग्ररहदास
पठनार्ष कर्मध्यानिमिल ।

**२६८. प्रतिसं०२३ ।** पत्र स०४२ ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रांभनन्दनस्वामी बूदी ।

**३६६. प्रतिसं०२४ ।** पत्र स०४६ । ले० काल—ग्र≄्६४६ घ्रासोज सुदी १३ । पूर्ण। बेकन सं०१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर घादिनाय बुदी ।

विशेष---मम्कत टीका सहित है।

३७०. प्रतिसं० २५ । पत्र म०२३ । बा०११ $\times$ ४ $\frac{1}{\epsilon}$  इत्र । ले०काल $\times$  । बपूर्ण । बेष्ट्रन म०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर क्रादीनाथ बूदी ।

३७१. प्रतिसं० २६ । पत्र म०३०। ले०कान 🔀 । पूर्णः । वेष्ट्रत्र सं० ४२ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर प्रादिताय बूदी ।

३७२. **जीबीसठाएमा चर्चा**—रत्र सन्था २१। प्रा० १०३ ×५३ इख । प्राचा-सस्कृत । विवय-चर्चा। र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनस्तर स्वासी, बुदी।

३७३. **चौबीसठारणा चर्चा**— × । पत्र स० २६४ । आ० ११ ४७ इचा । आपा—हिन्दी । विषय-चर्चा । ग०काल × । ले०कात स० १७४५ कालिक सृदी १४ । पूर्णा । वेश्न स० १४४७ । प्राप्ति स्थाल-अद्यान्तीय दि० जैन मन्दिर स्रजसर ।

३७४. **खोबोसटाराग चर्चा**— × । पत्र स० १६२ । द्या० १२ ×६३ इस्व । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वेट्न स० १४५८ । **प्राप्ति स्थान**—प्रहारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३७**४. चौबोसठाराा चर्चा** $--\times$  । पत्र स०१४०। प्रा० ११३ $\times$ ६ $^2_7$  इन्छ । भाषा-हिन्दी ( ग्रह्म ) । विषय -चर्चा । २० काल  $\times$  । ले० काल स० १६१४ प्रासोज मुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन सं० २/४४ । प्राप्ति स्थान--पार्श्वनाय दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष-- प्रज्ञालाल ने माधोगढ मे प्रतिलिपि कराई थी।

३७६. चौबीसठारमा चर्चा $-\times$  । पत्र सं० ७४ । ग्रा० ५ $\frac{1}{8}$  $\times$  ४ डच । भाषा-िहरी । विषय-चर्चा । र०कास $\times$  । ले० काल-पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । प्राप्ति स्थान-मार्थनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

३७७. **चौबीसठारा। चर्चा**— × । पत्र स०१। म्रा० ४८ ×१४ इन्त्र । भाषा—हिन्दी ।

विषय-सिद्धान्त चर्चा। ले० काल × । र० काल × । पूर्णः । बेष्टन सं० १०/७ । **प्रास्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर देनी (टोंक)

३७८. चौबीसठार्गा चर्चा —  $\times$  । पत्र स०-१। धा० — १० $\times$ ६ $\frac{3}{7}$  इख । विषय — हिन्दी । (पद्य) विषय — सिद्धान्त वर्चा । र०कास —  $\times$  । ले० काल —  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन स० — ३७४। प्राप्ति स्थान — दि०जैन मन्दिर दबलाना वृदी ।

३८०. **चौबीसठारा। चर्चा** — ४ । पत्र स०-४२ । आ०-१०२४१ इ.स. । आषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त-चर्चा । र०काल — ४ । ने० काल — ४ पूर्ण । वे० स० — १९७ । प्रास्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर नागदी, वंदी ।

३६१. प्रति सं—२ । 'पत्र स०—४४ । ले० काल— ४ । पूर्ण । वे० स० —१४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर करोली ।

३६२. प्रति सं० — ३ । पत्र स०-५६ । ले० काल-स० १६२६ । पूर्ण । वे० स०- २४-१६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेज-भादवा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३८२. चौबीसठारणा चर्चा  $\times$  । पत्र स०—५४ । प्रा०—११ $\times$ ५ डच । भाषा —िहन्दी संस्कृत । विषय—िसद्वान चर्चा । र०काल— $\times$  । के० काल— $\times$  । प्रपूर्ण । वे० स०—१४०–६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

३६४. **चौबोस ठार्गा** —  $\times$  । पत्र स० ६ । घा० ११ $\times$ ३ $^2_7$  टखा । भाषा — किसी । विषय — सिद्धान चर्चा । ले० काल —  $\times$  । पूर्ण । वे० स० —१३२ । प्राप्ति स्थान च्यान चित्र स्थान विषय स्थान ।

विशेष--- बसत्रा में प० परसराम ने चि० ग्रनतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

**३८५. प्रति सं०—२।** पत्र म०—६। म्रा०—१००} x ५ इखा। भाषा —हिन्दी । ले० कालx । पूर्ण । वे० म०—२६१ । **प्राप्ति स्थान** —दि जैन मन्दिर दवलाना (बंदी) ।

**३६६. प्रतिसं∘—३।** ४ । पत्र म॰ –१४ । ले॰ काल- ४ । पूर्ण । वे॰ स॰ -१६१ । **प्राप्ति स्थान** – दि॰ जैन मन्दिर फनेह्पुर भेलावाटी (मीकर)

३८७. **जीवीसी ठाएगा पीठिका**— $\times$  । पत्र म०-२-६४ । आ०—६ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  $\frac{1}{2}$ द्ध । त्याय —सिदाल । २०कास— $\times$  । ते० काल— $\times$  । पूर्ण । ते० स०—३०२-१४३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन सन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

३८८. चौरासी बोल--- / । पत्र स०--- ८। द्याः --- ११ / ४४ / ६वा । भाषा--- हिन्दी । विषय -- चर्चा । र०कास--- / । ते० काल-म० १७२८ वैशास बुदी ६ । पूर्णः । वे० स० १६० । प्राप्ति स्थान --दि० जैन सण्डेलवान मन्दिर उदयपुर । विशेष-- लिखित प० जगन्नाय ब्राह्मण लघुदेवगिरी वास्तव्य ।

३**न.६. श्चिमालीस ठारणा चर्चा**—×। पत्र स०-१४। ग्रा०-१०३४४ इचा । मापा— हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—म० १०४० ग्रापाड बुदी १२। पूर्णा । वे० स०— १६२। **प्राप्ति कथान**—दि० जैन सन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष--त्रेषठ शलाका पुरुषों के नाम भी दिये हुये हैं। शेरगढ़ में पार्थनाथ चैन्यालय में लिखा गया था:

**३६०. छत्तीसी ग्रन्थ**— 🗴 । पत्र स०११-६६ । प्रा०११ है 🗴 ४ इत्रा । साथा—सस्कृत । विषय —मुगल्यान चर्चा । र०काल ४ । ले०काल स० १६८८ । सपूर्ण । वेष्टन म०४४ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन स्रवदान मंदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवन् १६४६ वर्षे घासोज बुदी १३ दिने श्री मृतमधे कृत्दकृत्राकार्याच्ये महारकः श्री वादिभूषण् गृरूपदेशात् नाग्दा शातीय मा० धकता मार्या वहा पुत्री राजा एते. स्वज्ञानादग्गीय कर्मध्यार्थं इद स्वतीसी नाम शास्त्र निवास्य बद्धा महारक श्री विजयकीति बद्धा नारायणाय दत्तीसर : .............................. पठनार्थं दत्त । गुभ भवत् । ह्यतीसी श्रन्य समातः ।

पिक १२ प्रति पक्ति २१ अक्षर है।

विशेष--- नदयेगा सञ्भाय भी है।

- ३६२. **जीवतत्वस्वरूप** × । पत्र स० १० । भाषा —सस्कृत । विषय सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन म०६४। २४१। **प्राप्ति स्थ्यन** — दि० जैन समवनाय मदिर उदयपुर ।
- ३६३. जीवविचार सूत्र— पत्र म०१०। धा०१ × ४३ इ.च.। भाषा —सस्कृत-हित्ती। विषय—सिद्धान । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर देवताना वृदी।

विशेष-प्रति प्राचीन है तथा भातिसरि कन हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

३**६४. जीवस्वरूप** — × । पत्र स०७ । द्वा० ६ × ६ ६ च । भाषा — प्राकृत । विषय— सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१४५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मरिर दवलाना बूबी ।

विशेष--- प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३**६५. ओवाजीव विचार**— ४ । पत्र स० ६ । ग्रा०- १० ४ ४ी इन्छ । भाषा — प्राफ्त । विषय—सिद्धान्त । ४०काल् ४ । ले०काल् म० १६१६ । पूर्णे । वेष्ट्रन स० ७६ ४६ । प्राप्ति स्थान्—वि० तेन मोदर कोटडियों का हुंगरपुर । विशेष--हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३६६. ज्ञातृषर्म सूत्र—  $\times$  । पत्र सं० १०२। घा० १०  $\times$  ५ $^3$  इखा भाषा—प्राकृत । विषय—घागम । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १६६६ पौष सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० । प्राप्ति स्थान—िद० जै० मदिर दीवानजी कामा ।

३९७. **ओवविचार प्रकरएः— ग्रांतिसूरि ।** पत्र स० मा । प्रा०१० ४ ४ दे द्वा । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल ४ । ते० काल स०१७२६ ज्येष्ठ मुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रत सं०२४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जेन मदिर दवलाना वंदी ।

विशेष--मूल के नीचे हिन्दी की टीका है।

३६८. प्रति सं०—२ । पत्र स०—७ । घा०—१०×४ है इल्ब । ले० काल म० १७६३ पीष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टुन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है।

३६६. प्रति सं०—३। पत्र स०—६। ले० काल—४। पूर्णं। वेष्टन स०—४६। प्रास्ति स्थान—दि० जेन मस्टिर दवनाताः।

विशेष--- मूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है।

४००. प्रति सं०—४ । पत्र स०—७ । ने० कान—४ । पूर्ण । वे० म०—४१ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर दबलाना (बुंदी) ।

विशेष--- मुल के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है। पत्र ७ में दिशाशूल बगांत भी है।

४०**१. प्रति सं—५ ।** पत्र म०-७ । ले० काल- × । पूर्णः । वे० मं०–२१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्थनाय मन्दिर डन्टरगढ ।

विशेष---प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४०२. प्रति सं०—६। पत्र स०— ६। प्रा०-१० ४४ डश्वा । ले० काल × । पूर्ण । बेस्टन स० ६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४०२. जीवसमास विचार—  $\times$  । पत्र म०- ६ । प्रा० १० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इवः । भाषा-प्राहत- सस्हत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स०—१२४ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

४०४. जीवस्वरूप वर्शन $--\times$ । यत्र स०--१ से १४ । प्रा० १२ $\times$ ४ इ.स. । भाषा— संस्कृत-प्राकृत । विषय—मिद्धात । र०कान $--\times$ । ने० कान $--\times$ । वे० स०--७४६ । धपूर्ण । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति सम्कृत टीका सहित है। गोग्मटसार जीवकांड में से औ**व स्वरूप का वर्**शन किया सवा है।

प्राप्ति स्थान-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४०६. प्रति सं०—२। पत्र स०—२-४४ । ते० काल स० १८२८ भादों सुदी ४ । पूर्ए । वे० सं०—२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

विशेष--विभिन्न चर्चामी का सपह है।

४०८. ज्ञानसार—मुनि पोर्मासह । पत्र स०४ । प्रा॰ १० $\frac{1}{2} \times V_0^2$  । प्राथा—प्राहत । विषय— निदात । र०काल—१००१ प्रावण सुदी १ । ने० काल—स०१०२१ मादवा सुदी ११ । बेष्टन स०६ । प्राणित स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-पडित श्री चोखबन्द्र के शिष्य श्री सखराम ने नैशातागर है प्रतिलिपि कराई थी।

चिरोष — प्रति हिन्दी टब्बा टीका महित है। प्रश्नित निम्न प्रकार है। टीका विस्तृत है। सबद् १६४६ वर्षे कार्निक मुटी दिनीया मोमे निरिकृत प्रात्मर्थे । प्रभयदेव सूरि विरचिने स्थानास्थ तृतीयाग विवरणस्थानकास्थे । प्रन्त मे— जागाग बण्यावयोच समाप्त च डीडवागा। स्थाने । २ से १२ तक पत्र नहीं है। इस यंघ ने पत्र १,१३-२३२ तक बेप्टन स० १८२ मे है। प्राप्ति स्थान—दि० जन मन्दिर दबनाना (बृती)।

४१०. प्रतिसं० २ .। पत्र म०—१ से ६६ । ले० काल—— 💢 । घपूर्णः । बेष्टन सं० ३४० । प्राप्ति स्थानः --दि० जैन पवायनी मन्दिरः मण्तपुरः ।

४**११. ढाढसी गाथा—ढाढसी** । पत्र म०—२–६ । प्रा० ११×४ ६ च । माषा—प्राकृत । विषय–भिद्रान्त । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रमुणं । वेष्ट्रन स० ४८० । २४७ । सस्कृत टीका सहित है । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

४१२. तत्वकौस्तुम—पं० पन्नालाल पांडचा। पत्र स०—८७४। प्रा० १२४७, इच। मापा-हिन्दी (गर्छ)। विषय-सिद्धान्त। र०काल म० १६३४। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० १३६— १३७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर प्रलबर।

विशेष--तत्वार्थराजवार्तिक की हिन्दी टीका है।

प्रति दो बेष्टनो मे है--पत्र स०--१-४०० तक बेष्टन सं० १३६

पत्र स०---४०१-६७४ तक बेष्टन सं० १३७।

४१३. तत्वज्ञानतरिगर्गो-भ० ज्ञानभूवर्ग । पत्र सं०७६। प्रा० १३×७३ इच । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल—स० १४६० । ले० काल सं०—१६७६ । पूर्ण । बेष्टन सं०—१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी, दूंदी । ४१४. प्रतिसं० २ । पत्र स०—३०। प्रा० १० $\times$ ६ इच । ते० काल स० १८४४ । पूर्ण । नेप्रन स० ६८/४२ । प्राप्ति स्थान—दि० मन्दिर कोटिंडयो का, इंगरपुर ।

४१४. तस्ववर्शन $-\times$ । पत्रस०३ ३६। म्रा०१० $\times$ ४२ द न। भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र०काल $-\times$ । ले० काल $\times$ । स्वपूर्ण। बेष्टुन स०६०। प्राति स्थान- दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाय टोहाराय्मिह (टोक)।

विशेष -- गुजराती मिश्रित हिन्दी गद्य है।

**४१६.** तत्वसार—देवसेन । पत्र स०४। प्रा०१३ $\frac{3}{2}$  $\times$ ६। भाषा—प्रपन्न शः। विषय— सिद्धान्त । रे०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । वेष्ट्रन स०४०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर।

४१७. तत्वानुशासन-रामसेन । पत्र स०१७ । ब्रा०१० $_{\wedge}$ ४६व । भाषा नस्कृत । विषय-सिद्धान । र०काः —  $\times$  । ले० कान —  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन - मन्दिर दीवानत्री कामा ।

४१८. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल-> । बेष्टन स० ५२ । प्राप्ति स्थान—िद्दर् जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४**१६. तस्वार्थबोध---बृधजन ।** पत्र स० १०६ । आ०-११: ७ इ.व.। भाषा-रिन्दी गयः। विषय-सिद्धानः । र०काल स० १८७६ कानिक सुदी ४ । ले० काल स० १८८२ फाल्गुन बुदी ४ । पूर्णा । वेष्ट्रत स० ७१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन अग्रवाल धनायनी मन्दिर यनवर ।

४२०. प्रति सं०२ । पत्र म० ७४ । द्या० १३ . ८ इ.च । ले० काल — 🕟 । पूर्ण । बहुन स० ६६ । ४६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर मादवा ।

**४२१. प्रति सं० ३ ।** पत्र स**० १**४४ । ले०काल — 🗵 । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ४१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नागदी व दी ।

४२२. प्रतिसं०४ । पत्र स०— ६९ । ले० काल— स० १८६० फाल्युग सुरी ५ । पूर्मा । बेकन स०१३५ । प्रास्तिस्थान दि० जैन सन्दिर नागरी बुदी ।

विशेष-- ५० हरगोबिन्द चीबे ने प्रतिलिपि की थी ।

४२३. तत्वार्थरत्तप्रभाकर — म० प्रमाचन्द्र । पत्र म० १२६ । धा० ११% ४८% दण । भाषा—सन्द्रत । विषय—सिदान्त । २०काल म०—१४८६ भारवा मुत्री ४ । ने०काल — 🗸 । पूर्ण । वेष्टुन स० ३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुदी ।

विशेष--तत्वार्थं सूत्र की प्रभावन्द्र कृत टीका है।

४२४. प्रति सं २ । पत्रस० १७२ । ते० काल — · । पूर्ण । वेष्ट्रत न० ५४६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पत्रायमी मन्दिर, भरतपुर ।

४**२५. प्रति सं ३** । पत्र सं०११६ । ले० काल स०—१६६० कार्तिक नुधी ११ । पूर्गा। वे**ष्टन** स०२२ । <mark>प्राप्ति स्थान—</mark> दि० जैन पत्राधनी मस्टिर, करौली । **४२६. प्रति सं०४ ।** पत्र स०७६। म्ना०११ $\times$ ६ इच । ले०काल  $\times$ ।पूर्णं। वेष्टन स०—७२। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

४२७. प्रति सं० ४ । पत्र म० १४३ । धा० १२imes४६ । ले०काल स० १६८३ बँगाख बुदी ४ । बेहुत स० १६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर लग्कर, जयपुर ।

४२ म. तस्वार्थराजवातिक—सट्टाकलंक । पत्रस० ६७४ । भाषा —सम्कृत । विषय — मिद्धान्त । ५०काश्र— $\times$  लं ० काल —  $\times$  पूर्ण । बेष्टुनस० ३,१३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पवायती मिल्टर अलवर ।

**४२.६. प्रति स०**—२ । पत्रस० ६२ । झा०—१३४८ इश्व । ले०काल—४ । धपूर्णं । वेष्ट्रतस० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जेन पत्रायती मन्दिर, घलवर ।

विशेष--प्रति उत्तम है।

४**३१. प्रति सं**०- ४ । यत्रस० १२ । ले० काल---- ४ । बेष्टनसं०३३ । प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान---- वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष १२ स ग्रागे पत्र नहीं लिखे गये है।

४३२. प्रति सं०—५ । पणस० ५८० । घर०—११×४२ इन्थ । ले०काल— × । घपूर्ए । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भन्दिर दीवानजी कामा ।

४३३. तस्वार्थवृति पं० योगदेव । पत्रम० १ से १४६ । प्रा०—१२×४} डखा । भाषा— सम्कृत । विषय —मिद्धान्त । र०कारः — ८ । प्रपूर्ण । बेष्टनसं० ४७ **४ प्राप्ति स्थान—दि० जै**न प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। प्रति पत्र में ६ पक्ति एवं प्रति पक्ति में ३२ श्रक्षर है। १००—११६ तक अन्य प्रति वे पत्र है।

४३४. तत्वायंश्लोकवातिक द्या० विद्यानित्व । पत्रस० ४४३ । द्या०-१२४ - इत्व । भाषा-सस्कृत । विषय - मिद्रान्त । र०कार - ১ । ले०काल स० १६७६ पौष सुदी ह । पूर्ण । बेहनस० ३८ । प्राप्ति स्थान-(द० जैन मन्दिर पार्वनाथ चौमान व दी ।

४३४. तस्वार्थसार— ग्रम्तचन्द्राचार्य । पत्रस० ३३ । घा०— ११×४, दश्व । भाषा— सस्कृत । विषय—िनद्वान । र०कात × । ने०काल स० १६३६ ग्रासोज मुदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२४ । प्राप्ति स्थान—िव० जैन ग्रायवान मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---इति प्रमृतचन्द्रसूरीगा कृति मुतत्वार्थसारो नाम मोक्षशास्त्र समाप्त । श्रय ग्रन्थाग्रन्थस्त्रोक सरु ७२४ ।

प्रशस्ति सबत् १६३६ वर्षे घासोज मृदी ३ बुधे श्री मोजिमपुर वैत्यालये श्रीमृत्तसये सरस्वती गच्छे बसास्कारगरी कुरदकुन्दाचार्यात्वये म० श्री सुमतिदेवास्तत्यट्टे म० गुराकीतिदेवा त्र० कर्मसी पठनार्यं देवे माहवजी लक्ष्मी तः...... ४३६ प्रति सं० २ । पत्रस० ४६ । ते०काल १८१४ ग्रायाठ बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० २१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--भरतपूर में लिखा गया था ।

४३७. तस्वार्थसारवीपक—म० सकलकोत्ति । ण्यस० ६३ । प्रा०- १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ५ इच । भाषा—सत्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—  $\times$  । ले०काल— $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ७६—४३ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मदिर कोटडियों का हुं नरपूर ।

विशेष —प्रति प्राची । है। **प्रन्तिम प्रशस्ति**-सागवाडा वास्तव्य सं॰ जावऊ भार्या वार्द जिमस्पादे तयोः पुत्री बाई अस्प अस्विसा पठनार्थं।

४३ म. प्रति सं० २ । पत्र सं०६८ । घा० १२ imes ४ $rac{1}{4}$  । ले०काल-स०१८२६ । बेहुन सं०४४ । दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष -- महाराजा सवाई पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे जयपुर नगर मे केणव ने प्रतिलिपि की थी।

४२**६. तत्वार्थसूत्र मंगल**— 🗙 । पत्रसं० ४ । प्रा० ११३ 🗙 ५३ इख । भाषा—हिरी । विषय—सिद्धात । र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनम० ४६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लम्कर जयपुर ।

विशेष - हिन्दी में तत्वार्थ नुत्र का सार दिया हुन्ना है।

४४०. तत्वार्थसूत्र-उमास्वामि । पत्र म० ३३। ग्रा० ११ ४ ४ है इ.च.। भाषा—सन्दर्गः। विषय—सिदान । र०कास 🗴 । ते०कास स०४ पूर्णः । वेष्ट्रन स० ११०६ । प्राप्ति स्थान -भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

विशेष-इमी का दूसरा नाम मोक्षणास्त्र मी है।

४४**१. प्रति सं०२** । पत्र म०११ । घा०१०३ ४८ ३ इथा । ले०**काल म०१**०५३ । पूर्ण । वेष्टुनसं०म०६०४ । **प्राप्ति स्थान** — महारकीय दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

४४२. प्रतिसं०३ । पत्र स०१६ । प्रा०६ 🗡 ५ इथा। ने०कास स०१६२५ वैज्ञास बुदी ३ । पूर्णं। बेष्टनस०१३२३ । प्राप्तिः स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४४३. **प्रतिसं०४** । पत्रसं०४ । बा०१० $\times$ ४ है इखा । लेक्काल $\times$  । पूर्णा । बेष्टनसं० १००३ । **प्राप्ति स्थान**— महारकीय दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

४४४. प्रति सं० ५ । पत्र मं०४० । ले०काल— 🟏 । पूर्णे । बेष्टनस० २२७ । प्रास्ति स्वान—दि० जैन मदिर पार्वनाय चौगान वृदी । हिन्दी टीका महित है ।

४४५. प्रति सं०—६। पत्र म० १७। ले०काल  $\vee$ । पूर्णं वेष्ट्रन स०—२२६ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पात्रवंताथ जीगान बूदी।

विशेष-मूल के नीचे हिन्दी टीका भी है।

४४६. प्रति सं०—७ । पत्र सं०४६ । लेब्काल— 🗴 । पूर्ण । बेष्टनस०२२६ । प्राप्तिः स्थान—उक्त मन्दिर ।

विशेष-हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

४४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । ग्रा॰ १३ × ५२ इन्छ । ले॰काल— × । पूर्ण । बेहन सं० २३१ । प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन मदिर ग्राभिनन्दनस्वामी वंदी ।

विशेष --हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४४६. प्रति सं० १० । पत्र म० २४ । लेब्काल—स० १६२७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १५० प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--हिन्दी टब्बा टीका सहित है। प० 'रननलाल चिमनलाल की पुस्तक है।

४**५०. प्रतिसं० — ११।** पत्र स० ११। जिल्काल ग०१६४७ चैत्र मुटी ७। पूर्ण। बेष्टन सं**०१२१। प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बंदी।

विशेष-प्रति स्वर्गाक्षरों में लिखी हुई है। चंपालाल आवक ने प्रतिलिपि की थी।

विशेष - इसके भ्रतिरिक्त निम्न पाठो का सम्रह भीर है-

जिनसहस्त्रनाम- (सस्कृत) अविनायजी की वीनती किशोर-(हिन्दी)।

श्री सकलकीति गुरु बदी काति स्याम दसेसी।

विननी रचीय किशोर पूर केयोगा वसै जी।

जो गावे नर नारि सुस्वर भाव धरेजी।

त्या घरिनोनिथ होई धन कोष भरेजी।

पाश्वनाथ स्तुति-बलु-हिन्दी (१०काल सं० १७०४ ग्रवाड बुदी ४)

**ग्राविनाथ स्तुति**-कुमदचन्द्र-हिन्दो ।

प्रारम्म-प्रमु पायि लागु करु सेव थारी । नुम्हे सामलो श्री जिनराज महारी ।

धान्तिम--- घरा विनउ हं जगनाथ देवो ।

मोहि राखि जे भवै भवै स्वामी सेवी ॥

या विनती भावम् जे भगीजे ।

कुमुदचन्द्र स्वामी जिसो हो खमीजे।।

**प्रक्षरं माला**--मनराम-हिन्दी ।

विवापहार स्तोत्र भाषा - अचलकीति-हिन्दी (२०काल सं०- १७१५)

विशेष--नारनील में इस ग्रन्थ की रचना हुई थी।

४५२. प्रतिसं०—१३ । पत्र सं० ४५ । पृश्तं । बेष्टनसं० २१ । प्राति स्थान—दि० जैन निवार राजमहल । विशेष--प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

४५३. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ८ । ले०काल — 🗴 । प्रपूर्ण । बेहनसं० १४४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर, राजमहल ।

४५४. प्रतिसं० १५ । पत्रसः — ५२ । ले॰ काल — 🗙 । पूर्णं । बेष्टनसं॰ — ५० । प्राप्ति स्थान – दि॰ जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारायसिह ।

विशेष--हिन्दी टीका सहित है।

४५५. प्रतिसं० १६ । पत्रस०-३३ । ले० काल सं० १८५३ । पूर्ण । बेष्टनसं०-४६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष---मक्तामर स्तोत्र भी दिया हमा है

४५७. प्रतिसं० १८ । पत्रस०—१२-३० । ले०काल स० १८१६ पूर्ण । बेष्टनस०—२८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाला (बूदी) ।

विशेष --इसी मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे तत्वार्थ सूत्र की पाच प्रतिया ग्रीर है।

४**५८ प्रति सं० १६**। पत्रस॰-३८। ले० काल-सं० १६४० प्रापाड बुरी ४ । पूर्ण । बेटन सं० ७८।४०। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पाश्वेनाथ मन्दिर, इन्दरगढ (कीटा) ।

विशेष — प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। नसीराबाद की छावनी मे प्रतिनिधि की गई थी। इस ग्रन्थ की दो प्रतिया प्रीर है।

४५६. प्रतिसं० २० । पत्रसः –२ ते १० । विषय – मिद्धान । २०काल  $- \times$  । ते काल स० १६३० । अपूर्ता । वेष्ट्रन स०—२६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

**४६०. प्रतिसं० २१ ।** पत्र स०११ । ले०काल —  $\times$  । पूर्ण । वेट्रन स०२२४ । **प्राप्ति** स्थान — रिजैन मेदिर बोरमली कोटा ।

विशेष - सम्कृत द्वा टीका महित है ।

**४६१. प्रतिसं० २२** । पत्र म०१४ । ले० काल—म०१७६७ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टुन स०२७६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैत मदिर बोरसली कोटा ।

४६२. प्रतिसं० – २३ । पत्र स० १४ । लेक्काल – ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४४ । प्राप्ति-स्थान – दि० जैन मदिर बोरसजी कोटा ।

४६३ प्रतिसं• – २४ । पत्र स०२०। लेब्काल---- स०११४८ पीय जुक्ता १२। पूर्ण। बेष्टत स०१५३। प्राप्ति स्थान दि० जैन लज्जेलवाल पश्चायनी मदिर ग्रानवर।

विशेष-स्वर्गाक्षरों में बहुत मृत्यर प्रति है।

४६४. प्रतिसं० २४ । पत्र स० २०। ने०कान-स०११४८ फाल्गुन सुदी १०। पूर्ण । बेहनसं०३२। प्रास्ति स्थान -- दि० जैन प्रवचाल पश्चायती मदिर घलकर । विशेष-प्रति स्वर्गाक्षरो में लिखी हुई है। चिम्मनलाल ने प्रतिलिपिकी थी।

**४६५. प्रतिसं० २६ ।** पत्र स० ३४ । ले०काल-  $\times$  । पूर्णः। वेष्टनसं०६२ । प्राप्ति स्थान—- दि० जैन मन्दिर दीवानजी, भरतपुर ।

विशेष-हिन्दी टब्बा टीका महित है। बहुत मुन्दर है।

४६७ प्रतिसं० २८ । पत्र म०४७ । ले०काल स०१८८१ । पूर्णा विकृतस०२५७ । प्रास्ति स्थास—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष-हिन्दी अर्थ महित है तथा अक्षर मोरे हैं।

४६८. प्रतिसं० २६ । पत्रस०६३ । ले०काल—४ । पूर्ण । वेष्टनस०१८४ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन पश्वायनी मदिर, भरतपुर ।

विशेष --सामान्य अर्थ दिया हुआ है। इस मन्दिर में तत्वार्थ सूत्र की १३ प्रतिया और है।

४७० प्रतिसं**० ३१** । पत्रस० २७ । लै०काल—स०१८३८ । पूर्गा । बेष्टनस० ७२ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पश्चायनी मदि , बयाना ।

विशेष-प्रति हिन्दी तथा टीका सहित है ।

४७**१. प्रतिसं० ३२।** पत्रस०२१। ले०काल--म० १६०४। पूर्णा। बष्टनस० ६६। प्राप्ति स्थान --दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना।

विशेष - इसी मन्दिर मे दो प्रतिया ग्रीर है।

४७२. **प्रतिसं० ३३ ।** पत्रस० ३० । लब्काल— ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ६४ । <mark>प्राप्ति स्थान</mark>— दि० जैन मदिर, कामा ।

विशेष--- प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। इसी मदिर मे दो प्रतिया ग्रीर हैं।

४७३. प्रतिसं० ३४। पत्र स० २०। ले॰काल — 🔀 । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ३०१। प्राप्ति - स्थान — दि० जेन मदिर दीवानजी, कामा ।

विशेष - प्रति हिन्दी टीका सहित है।

४७४ प्रतिसं० ३५। पत्र स० १२। ने०काल— 伏 । पूर्णं । बेष्टन म० १६। प्राप्ति-स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष--नीने रङ्ग के पत्री पर स्वर्गाक्षरों की प्रति है।

४७६. प्रतिसं० ३७ । पत्रसं० १२१ से १६२ । ले०काल — 🗴 । सपूर्णः । बेहन सं० ११० । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-प्रति हिन्दी धर्थ सहित है ।

४७७. प्रतिसं० ३६ । पत्रसं० २१ । ले०काल—स०१८६० । पूर्ण । बेप्टन सं० ३३५ । प्राप्तिकस्थात—व्ययोक्त मन्दिर ।

४७८. प्रतिसं० ३६ । पत्रस० १६ । ले॰काल — × । पूर्ण । बेष्टन स० ६६ । प्राप्ति -स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावालो का, डोग ।

४७६. प्रतिसं० ४० । पत्रस० ७० । ले•काल—१६५४ । पूर्णं । वेष्टन स० ६६ । प्रास्ति -स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--हिन्दी ग्रयं सहित है।

४८१. प्रतिसं० ४२ । पत्रसं० २-१६ । ले॰काल —  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ७७ । जीर्ण । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर बडा बीसपयी दीसा ।

४६२. प्रतिसं० ४३ । पत्रस० ६ । ले•काल — 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४२ । प्राप्ति स्वान-टि० जैन मन्दिर तेरद्रपथी दौसा ।

४८३. प्रतिसं० ४४ । पत्रस० २० । से •काल — 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६४ मे १०१ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४८४. प्रतिसं० ४५ । पत्रस० ११ । ले•काल—स० १६६७ । पूर्ण । बेष्ट्रन स०६५ से **१०१ ।** प्रास्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-ईश्वरलाल चादवाड ने प्रतिलिपि की थी।

४८५. प्रतिसं० ४६ । पत्रस० २८ । ले०काल —  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलाबाटी (सीकर) ।

विशेष--लिपि मुन्दर है। ग्रक्षर मोटे हैं। हिन्दी गदा में भ्रम् दिया हुआ है।

४६६. प्रति सं०४७ । पत्रस्०२० । से•काल × । पूर्णः । वेष्टन स०१३२ । प्रास्ति – स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर लेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति सनहरी है पर किसी २ पत्र के ब्रक्षर मिट से गये हैं।

४८७. प्रतिसं० ४८ । पत्रस०१३ । लेक्सल — सं०१८४३ धानीत्र वदी ७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१४३ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

४८८. प्रतिसं०४६। पत्रस०१६। लेकाल — 🗴 । पूर्ण । बेष्ट्रन सं०१६५। प्रास्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर कंतहपुर शेलावाटी (मीकर)।

विशेष -ऋषिमडल स्तोत्र गौतम स्वामी कृत और है जिसके पांच पत्र हैं।

४८६. प्रतिसं० ५० । पत्रस० ४२ । ते०काल  $\times$  । पूर्णः । बेहन सं० १८६ । प्राप्ति स्थान- दिः जैन मदिर फतेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

विशेष - एक प्रति और है। प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

४६०. प्रतिसं० ५१ । पत्रसं० १० । (ते क्वाल 🗴 । सपूर्ण । वेष्टन स० ४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बला मन्दिर उदयप्र ।

४**६१. प्रतिसं०५२।** पत्रसं०६-१६०। लेक्काल सं०१८७७ जैत बुदी२। पूर्णी बेक्नस०८५। **प्राप्ति स्थान**—वि०र्जनमन्दिर तेरहपथीदौसा।

विशेष-सस्कृत टीका सहित है। लेकिन वह अशद है।

प्रमारण नयैरिक्षणमः :— चरवारि सजीवादीना नव पदार्थ तस्त अगार्गा भेद द्वैकरि । नय कियते भेद द्वयं प्रमारण भवति । नय भवति विकल्प द्वय । तत्र प्रमारण कोर्ज । प्रमार्ग भेद द्वय । स्वार्थ प्रमारण परार्थ प्रमारण । तत्र व प्रय प्रमारण को विशेषः । प्रमारण नुकानगरिष्ट्रितदात्रणात्र स्वार्थ प्रमारण भवति । स्वार्थ प्रमारण वर्षे प्रमारण स्वति । यत्र जातास्मक भावत्र न श्रूनमूक्ष्मत्रस्या प्रमारण वर्षे प्

४६२. प्रतिसं० ५३ । पत्रस० २६ । ले॰काल 🔀 । धपूर्ण । वेष्टन स० १०१ । प्राप्ति स्थान--रि० जेन लब्बेनवाल स्टिर, उदयपुर ।

विशेष - प्रति प्राचीन है एवं हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

४६३. प्रति सं० ५४। पत्रस० ३२। ले॰काल  $\times$ । पूर्ण्। वेष्टन स० १६६। प्राप्ति स्थान—दि० लेन शडेलवाल मदिर उदयपुर।

विशेष-- प्रति टब्बा टीका सहित है ।

४६४. प्रति सं० ५५ । पत्रस० १६ । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १३६—६२ । प्राप्ति स्थान ६० जैन मदिर कोटडियो का हुँगरपुर ।

४**६५. प्रति सं० ५६ ।** पत्रस० ६। ले•काल 🔀 । बेष्टन स० ४०७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४६६, प्रति सं० ५७ । पत्रसं० २३ । ले॰काल imes । बेष्टन स॰ ४२ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन मन्दिर नक्कर जयपुर ।

४६७. प्रतिसं० ५८ । पत्रस० ८२ । झा० ११ x ४ हैइआ। ले० काल x । बेष्टनस० ४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४६८. प्रतिसं० ५६ । पत्रस० ८१ । ले० काल 🗴 । बेष्टनसं० ४४ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मदिर ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४६६. प्रतिसं० ६० । पत्रसं० २० । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । बेच्टन स० ३५७ । १६० प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर सभवन।य उदयपुर ।

## विशेष --- प्रति संस्कृत टीका सहित है।

**५००. प्रति सं० ६१।** पत्रसं० २४। ले० काल 🔀 । पूर्णं । वेष्टनसं० ३५६। १६१। प्राफ्तिस्<del>यान</del>— उपरोक्त मन्दिर। प्रति प्राचीन है।

**५०१. प्रतिसं०६२। पत्र**सं० ६४। ग्रा०११३ × ४४ देखा ले०काल स०१६१२ चैत्र बुदी दापूर्णावेष्टन स०१३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

**विशेष**—प्रति सस्कृत टीका सहित है। मरतपुर में प्रतिलिपि करायी गयी थी। श्री मुखदेव की मार्फत गोपाल से यह पुस्तक खरीदी गयी थी।

चढायत जैन मदिर कामा के रार्मासक कासलीवाल दीवान उमरावसिंह का बेटा वासी कामा के सावरण सदी ५ स० १६२६ में ।

५०२. प्रति सं०६३ । पत्रसः ६२ । ते० काल स० १९४६ ज्येष्ठ मुदी २ । पूर्णं । बेष्टनस०२१० । प्राप्तिस्यान—दि०जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष---प्रति हिन्दी टीका सहित है । म्रानदीलाल दीवान कामावाले ने प्रतिलिपि कराकर दीवान जी के मंदिर में चढायी थी।

५०३. प्रति सं०६४ । पत्रस० ७८ । ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टन स०७० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन श्रववाल मदिर उदवपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है तथा सम्कत टीका सहित है ।

५०४. तस्वार्यं सूत्र भाषा ४ । पत्रस० ५३ । घा० १२३ ४७३ दश्व । भाषा — हिन्दी गर्छ । विषय—सिद्धान्त । र०काल ४ । ले•काल स० १६१३ भादवा सुदी ६ । घपूर्ण । बेष्टनस० २३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन घण्याल सन्दिर प्रस्तवर ।

**५०५. प्रतिसं० २** । पत्रस० ३३ । घा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ० । ते० काल  $\times$  । पूर्णं । बेहनस० २४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन प्रप्रवाल पद्मायनी मन्दिर ग्रालवर ।

विशेष —हिन्दी में टिप्पगा दिया हुमा है।

**५०६.** तस्वार्थं सूत्र टीका —श्रुतसागर । पत्रस० २१६ । प्रा०—११ $\times$ ५ इन्त्र । मापा — सस्कृत । विषय —सिदाल । ७०काल  $\times$  । ले०काल म० १७६५ । पूर्ण । बेष्टनस० ५३ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रसितन्दनस्वामी वृदी ।

विशेष ---जयपुर मे श्वे० प्रयागदाम ने प्रतिलिपि की थी।

५०७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३६६ । ले०काल ः । मपूर्णः । बेहनसं० ७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टॉक) ।

विशेष--- प्रनितम पत्र नहीं है। यन्य के दोनों पुट्ठे मिनत्र हैं।

४०८. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ४७६ । ले० काल स०१८७६ । पूर्वे । बेष्ट्रनसं० २६।१४ ।

प्राप्तिस्थान-दि॰ जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोक)।

**५०६. प्रतिसं० ४**। पत्रसं० २३३। ले० काल सं० १८४६ माघ सुदी १३। पूर्णं। बेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

विशेष-प्रत्याप्रत्य स० ६००० । लिखायत टोडानगर मध्ये ।

५१०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ३१४ । ले० काल सं० १८२१ । पूर्ण । बेष्टन सं० २४४ । प्राप्ति स्थान—र्व० जैन पत्रायती मन्दिर भन्तपुर ।

**५११. प्रतिसं**० ६। पत्रसं० ४६३। से०कास imes। पूर्णे । बेष्टनसं० १७५। **प्राप्ति** स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष---प्रति सगृद्ध है।

५१२. तत्वार्षं सूत्र माषा — महाचन्द्र । पत्रस० ४ । षा० १२ $\times$ ४ $\xi$  इच । माषा — हिन्दी गद्य । विषय-सिदान्त । ६०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०२३० - ८३। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ६४ स्पूर ।

म्नान्तम-- मध्त तत्व वर्शन कियो, उमास्वामी मृतिराय।

दशाध्याय करिके सकल शास्त्र रहस्य बनाय।

स्वल्प वचनिका इम पढी, स्वल्प मती बुध चिन्ह।

महाचन्द्र सोलापुर रहि, पचन कहे ग्राधीन ।।

५१३. प्रतिसं०२ । पत्रसं०३७ । लेश्काल सं०१९५५ काती बुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रतसं० २३३–५६३ । प्राप्ति स्थात --दि० जैन समयनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष -- भट्टारक कनकवीनि के उपदेश से हुबडजातीय महता फतेलाल के पुत्र ने उदयपुर के समवनाथ चैन्यालय में इस प्रति को चढाई थी। भीडर में गोकुल प्रसाद ने प्रतिलिप की थी।

५१४. तत्वार्थसूत्र भाषा— कनककीर्ति । पत्रस्य २–६२ । मार्थ ११ $\frac{1}{4} \times 4$  इत्था । भाषा— हिन्दी गर्य । विषय – निद्धाल । २०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टनसंय १६०४ । प्राप्त स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर मजमेर ।

**५१५. प्रतिसं० २**। पत्रस० ५५। से०काल ४। पूर्णं। वेष्टनस० ३४।३८। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

५१६. प्रतिसं० ३ । पत्र स०११८ । ते०काल स०१८४४ पौष बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष----भाषायं विजयकीर्ति के शिष्य प॰ देवीचन्द ने प्रति लिखाई थी। लिखत माली नन्दू मालपुरा का।

४१७. प्रतिसं ४। पत्र स० २२०। ले०काल 🗴 । पूर्णः । वेष्ट्रन स० २७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बैर ।

**५१८. प्रतिसं०५ ।** पत्र स० ६८ । ले०काल × । सपूर्णं। वेष्टन स० ७८ । प्रास्ति -स्थान—उपरोक्त मन्दिर । विशेष---- प्रन्तिम पत्र नही है।

**४१६. प्रतिसं० ६।** पत्र स० १९७। ले०काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन स०४०६-१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर।

५२०. प्रतिसंo ७ । पत्र सं० ५४ । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । प्राप्तिस्थान— दि॰ जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

५२१ प्रतिसं**० ८**। पत्र स०१६६। घा० ११×७३ इत्वः। ले०काल × । पूर्णः। बेष्टन स०२३-५०। प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष---रतनचन्द्र पाटनी ने दौसा से प्रतिनिधि की थी।

५२२ प्रतिसंव ६ । पत्र स० १६३ । लेवकाल स० १७८५ जेष्ठ मुदी १ । पूर्ण । बेहनसंव २५-४० । प्राप्ति स्थान दिव जैन मन्दिर बडा बीमपंथी टीमा ।

विशेष--- रहित ईसर ग्रजमेरा लालसोट वाले ने प्रतिलिपि की थी।

**५२३. प्रतिसं० १०।** पत्र स०३७। ग्रा०१२ X ५ है इला । ले०काल स०१६६१। घपूर्णं। वेष्टन स०६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दोसा।

विशेष--भवानीराम से प्रतिलिपि कराई थी।

**५२४. प्रतिसं० ११**। पत्रस० १२६ । बा० १०३/४ ७३ डखा । लेक्सल स० १८५६ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स० ६८-३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेप्टलथी दौसा ।

विशेष-प्रति उत्तम है। सेवाराम ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी।

**५२६. प्रतिसं० १३** । पत्रस० ४-६५ । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १८० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुंदी) ।

विशेष-- उसका नाम तत्वार्थरत्नप्रभाकर भाषा भी दिया है।

५२७. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ६० । ते०काल म० १०४४ माघ गुदी १३ । पूर्ण । बेट्टन स०---११ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर चेननदास दीवान पुरानी डीग ।

**४२६. प्रतिसं० १५** । पत्रस० ७६ । ले∘काल × पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर।

विशेष-तत्वार्यमुत्र की श्रतमागरी टीका के प्रथम ग्रव्याय की माषा है।

५२६. तस्वार्<mark>यसूत्र टीका —िगिरिवर्रासह ।</mark> पत्र म०- ७७ । माषा-हित्री । विषय — सिद्धात । र०काल १९३१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन म० ६३ । **प्राप्तिस्थान** —दि० जैन मन्दिर दीवानजी, मन्तुर ।

विशेष--टीका वहीं में लिखी हुई है।

स्मसमें—ऐसे स्वामी उमास्वामी धावार्य कृत दशाध्यायी मृत तृत्र की सर्वार्था/दि नामा संस्कृत टीका ताकी माधावर्षातका ते संत्रेप मात्र धर्य लेके टीबान बातनुकृत्य के पुत्र विर्मादर्शसह बाती कुभेर के के सपती तृत्य दुदि के धतुसार मृत्य मूत्रति को धर्ष जातिये के लिए यह वचतिका रची ध्रोर स० १६३५ के व्येष्ठ सुदी र रिक्वार के दित सुपूर्ण कीती।

४३०. तत्वार्थसूत्र माषा-साहिबराम पाटनी । पत्रस०४० । प्रा० १९१ ४६ इन्छ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सिद्धात । र०काल स० १८१८ । लेकाल स० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । प्रास्तिस्थान-दि० जैन छोटा सदिर बयाना ।

विशेष -- ग्रन्थ गृटका साइज में है । ग्रन्थ का श्रादि श्रन्त भाग निम्न प्रकार है---

श्चावि भाग-- सुमरण करि गृरु देव द्वादशागवाणी प्रसामि ।

मुरममुक्ति मस् मेव, मूत्र शब्द भाषा कही। पूर्वेहृत मु(नराय, लिखी विविध विधि वचनिका। तितह अर्थं समुदाय लिख्यो अन्त न लब्यौ परे।

टीका--शिवमग मिलवन कर्मागर भजन सबं तत्वज्ञ ।

बदौ तिहाँगुण लब्धिकौ बीतराग सर्वज्ञ ।।

ग्रन्तिम—कवि परिचय — है ग्रजाना जिन ग्राथमी वर्ण वनिक व्यवहार !

गोत पाटगो वण गिरि है बूदी आगार ॥ २१ ॥ वमुदल णत परि दसस्वमु माघ विशति गुग्याम ॥ प्रस्थरच्यौ गुरुजन कृपा सेवक साहिबराम ॥ २२ ॥

ऋषि खुणालचन्द ने बयाना मे प्रतिलिपि की थी।

५३१. तत्वार्थं सूत्र भाषा—छोटेलाल । पत्रस० ७५ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय— सिद्धाल । र०काल ग० १६५६ । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्ट्रन ग० १०६ । प्राप्ति स्थान–दि० जैन पत्रापती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—धोटेलाल जी श्रलीगढ वालो ने रचाया। कविकापूर्णं परिचय दियाहुमाहै तथा गुटकासाइज है।

- ५३२. तत्वायं सूत्र भाषा-पं० सदामुख कासलीवाल । पत्रस० ८०। घा०१२ ४५ इन्य । भाषा---हिन्दी (गष्टा) । विषय-निद्वात । र०काल म०१६१० फालगुरा बुदी १० । ले० कान स०१६१० । पूर्णु । बेष्टन स०४२ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मदिर पाष्ट्रनाथ टोबारायसिंह (टॉक) ।
- ५३३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८८ । ले० काल-स० १६७६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २२ । प्राप्ति-स्थाल-सि०वैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।
- ५३४. प्रतिसं० ३ । पत्र म० १७७ । ग्रा० १०३ ४४३ इख । ने०कान स० १६५२ । मपूर्ण । वेष्ट्रन सं०—३६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दवलाना बुदी ।
- **५३५. प्रति सं० ४।** पत्र स० ३७ । ब्रा० १० $\frac{1}{4}$  $\times$  ५ $\frac{1}{4}$  इत्थ । लेक्काल स १६१४ प्रासोज सुदी १४ । पूर्णा । बेष्टन स० ६।६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ, कोटा ।

५३६. प्रति सं० ५ । पत्रस० ७३ । से काल-सं० १६१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२-३६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेच-मैरवबन्श ने प्रतिलिपि करायी थी।

**४३७. प्रतिसं० ६**। पत्रस० ६४ । प्रा० १२ × ४६२वा । ले∘काल सं० १६१३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन प्रवायती मन्दिर म्रलवर ।

४.२ म. प्रतिसं०७ । पत्रस०६६ । ग्रा०१२ ४ ४ इ.च । से०कास स० १६२४ । पूर्णे । वेष्टनस०११२ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

४३६. प्रतिसं० मा पत्रस० ६७। ले०कास स० १६६२। पूर्ण । बेष्टनसं० ११६। प्राप्ति स्थान —उपरोक्त मन्दिर।

४४०. प्रतिसं≎ ६। पत्रसं∘ १०७। ले•काल १६६२ चैत्र बुदी ४। बेष्ट्रनसं० २०। प्राप्ति स्थान-चपरोक्त मन्दिर।

 $\mathbf{Y}$ ४१. प्रतिसं**० १०** । पत्रस**० ६०** । प्रा० १४ $\times$ ६ $^{\dagger}$  इचा । ले०काल स० १९४६ भादवा बुदी २। पूर्ण । वेष्टन स०२६ प्रास्ति स्थान – उपरोक्त मन्दिर ।

**४४२. प्रतिसं० ११** । पत्रसन्थ६ । ग्रा० १४३ ४४३ इ.स. । लेक्जल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

**४४३. प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ७३ । श्रा॰ १४imesद हजा । ने०काल imes । पूर्ण  $^{f i}$  बेष्टुन स० ३६ । **प्राप्ति, स्थान** —दि० जैन प्रचायती मन्दिर बयाना ।

४४४. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ७३ । ले०काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टनस०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

५४५. प्रतिसं० १४ । पत्रसः ६३ । ब्रा० १३ ४७ इञ्च । ले०काल 📐 । पूर्णे । बेष्टनस० १६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर मेलाबाटी (सीकर) ।

४४६. प्रतिसं०१४ । पत्र स०३०। प्रा०१२ ४७ इन्दा। ले०काल स०१६४३ । पूर्णे । बेष्टत स० २३०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर पाण्वेनाय चौगान, वृदी ।

५४७. तत्वार्थसूत्र साथा - (वचिनिका) -- पन्नानान सथी । पत्र स०५४ । मा० १३४६ इ.ख. । साथा-राजस्थानी (हुटारी) गया । विषय-निद्धांन । र०काल स०१६३६ । ले० काल स०१६४६ । पूर्णे । वेट्न स०१६१ । प्राप्ति स्थाने-दि० जैन मन्दिर श्री महावीरजी बूदी ।

विशेष--बीजनपुर मे प्रतिनिधि हुई।

४४६. प्रतिसं० २ । पत्र म० ६४ । लेल्काल स० १६४२ । पूर्ण । बेष्टन स०१४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बृंदी ।

४४६. तत्वार्यसूत्र भाषा-(बर्चानका)-जयचन्द खाबडा । पत्र स० ३६२ । म्रा० ११३४ ६ इ.ख । भाषा-राजस्थानी (हूं ढारी) गण । विषय-निद्धात । र०काल सं० १८६५ चैत्र मुदी ४ । ले०काल-सं० १८६० माथ सुदी ४ । पूरों । वेष्ट्रनंस० २१ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन पंचायनी मन्दिर करोली । ११०. प्रतिसं० २ । पणसं० २६६ । मा० १३ ४७ इल्च । ले०काल सं० १६४१ माथ सुदी १४ । पूर्ण । बेहन सं० ११-३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दराढ (कोटा) ।

विशेष - धन्नालाल मांगीलाल के पठनार्थ लिखी गयी थी।

४.५१. प्रतिसं**० ३ । पत्रसः** ३.५४ । झा० १३.४ पट्टै इन्त्र । ले० काल सं० १६४५ वैशास सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०१६६ । प्राप्तिस्चान—उपरोक्त मन्दिर ।

**५५२. प्रतिसं०४।** पत्रस० ३५४। मा० ११४६ इञ्च । ले० काल० स० १६१८। पूर्त । बेष्टुन स०१४२। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बृंदी।

४५**२. प्रतिसं०५ । पत्रस**०३१० । धा० १४×६ है इ.च.। ले० काल स०१६२६ । पूर्ण । बेकृत सं०६ । **प्राप्ति स्थान-**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहाबोर बूदी ।

**५५४. प्रतिसं∘६।** पत्रस• ३५४ । द्या० १०×० इन्छ। ने० काल० स० १८६५ । पूर्ए। बेहुत स० २१७ । **प्राप्ति स्थान-∞**फे० जैन खण्डेलवाल पंचायती यन्दिर मुलवर ।

**५५५. प्रतिसं०७ ।** एत्र स०५३ । घ्रा०११ ४४ इन्छ । ले०काल सं०१६६७ । पूर्ण । वेष्टतस०१०३ । **प्राप्त् स्थान**—दि० जैन पदायती मन्दिर धलवर ।

१५६. प्रतिसं० ⊏ । पत्रस० २६ । घा० १९३४ ४३ इ.च । ले•काल × । घपूर्ण । बेष्टतसं० २ । प्राप्ति स्थानः— दि० जैन मदिर तेरहपंथी मानपुरा (टोक) ।

५५७. प्रतिसं•६ । पत्रस•४४७ । प्रा०१०१५ ५७} द्वा । ले•काल स०१६५८ । पूर्ण । बेष्टुतस•६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मान्दर कोट्योका, नैस्सा।

**५५**८ प्रति स**० १०। पत्रसः** २०१। घा० १२ ४६ इश्व । ले०काल स० १६३२ घ्रावाढ़ बुदी २। पर्ला । बेग्रन स० ५१ । **प्राप्ति,स्थान** —दि० जैन पश्चायती मन्दिर बयाना ।

प्रस्ट. प्रति स० ११ । पत्रस० २२१ । घा० १२३ ×५३ इत्र । लेक्सल स० १६११ प्रायाद बदी ६ । पर्स । बेष्टन म० ५६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेलाकटी (सीकर) ।

४६०. तत्वार्यसूत्र भाषा— $\times$ । पत्र स॰ ३६ । म्रा०११  $\times$  ६ १६ । भाषा—हिन्दी । विषय— विद्वान्त । र०काल— $\times$  । से॰काल  $\times$  । मपूर्ण । वेष्ट्रन स॰ २६२ । प्राप्तिः स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

५६१. तत्वार्थसूत्र भाषा...... । पत्रसः १ । भाषा — हिन्दी । विषय — मिद्धात । २०काल — ४ । तेककाल १७४५ म्रायाद दुरी १ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर सीगः ।

५६२. तत्वार्थसूत्र भावाः  $\cdots$ । पत्र तं० ६४ । ग्रा० १२ $\times$ ६३ इख । भाषा -हिन्दी । विषय-सिद्धात । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । प्राप्ति स्थान -दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदाल परानी डींग ।

**५६३. तत्वार्थसूत्र माधा**...... । पत्र सं $\sigma$  ४३ । द्वा $\sigma$  ११ × ६ $\frac{1}{2}$  इश्व । भाषा — सस्कृत — हिन्दी । विषय — सिद्धात । र०काल × । से $\sigma$ काल १६५३ । पूर्ण । वेष्टन सं $\sigma$  ३५ । प्राप्तिः, स्थान -- दि $\sigma$  अतं संदिर दीवान चेतनदास पूरानी डीग ।

विशेष--हिन्दी धर्य सहित है।

४६४. तत्वार्थसूत्र भावाः.....। पत्रसं∘ २२ । भाषाः...हिन्दी । विषयः...सिद्धांत । र०काल-× । ते०काल स०१८२६ माह सुदी ११ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१३८ । प्राप्तिः स्थानः...चि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

**५६५. तस्वार्थसूत्र भावा……।** पत्रस० ३४। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-सिद्धांत ।र०काल ×। लेक्काल ×। पूर्ण्। बेष्ट्रन स० ५४०। प्रास्ति स्थान---दि० जैनपचायती मन्दिर, भरतपुर ।

४६७. तस्वार्थसूत्र माषा <sup>.......</sup> । पत्रसं∘ ४४ । भाषा-हिन्दी । ले∙काल १८६६ । पूर्ण । वेष्टत स० ४४१ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

५६ म. तत्वार्यसूत्र टीका ...... । पत्र सं० ६३ । भाषा — हिन्दी । लेकाल ४ । पूर्ण । वेष्टुन स० ५५२ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - गुटका साइज है ।

४६६. तत्वार्थसूत्र माषा'''''' । पत्रस०-१४ । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४४ ।

विशेष—हासियं के चारो धोर टीका लिखी है। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

५७०. तस्वार्यसूत्र माखा  $\times$  । पत्रस० ६२ । मापा—हिन्दी । र०काल —  $\times$  । ने० काल- १७६६ । पूर्ण । बेष्टन स० ५५६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-- भ्रुतमागरी टीकानुमार कनककीर्ति ने लिखा था ।

५७१. तस्वार्थसूत्र माथा imes । पत्रस॰ ६४ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान ।  $^{7}$ ०काल imes । में ककाल १६२४। पूर्ण । वेष्टुन में ० ४५८ । प्राप्तिः स्थान —उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष --- मूल सहित है।

५७२. तस्वार्थसूत्र भाषा > । पत्रस० ३० । घा० रहे × ४३ इत्था । भाषा-सन्तृत-हिन्दी । विषय-निदान । र०काल × । ले०काल म० १०१६ माह मुदी ४ । पूर्ण । वेष्टुन स० १०१६ । प्राप्तिःस्थान — भट्टाकीय वि० जैन सदिर अजमेर ।

१७३. तत्वार्धसूत्र-सावा × । पत्रस० ७६ । मा० ५ रे ४ १ १व । मापा-सस्कृत हिन्दी । विषय- मिदान्त । र०काल- ४ । ले०काल म० १६०४ म्रामोत्र बृदी १ । पूर्ण् । बेप्टून स० ७२६ । प्रास्टितस्थान-भटारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५७४. **तत्वार्ष सूत्र माबा** × । पत्रस० ६६ । प्रा० ११ है × ६ है इक्षा । मा<mark>षा — सस्कृत –</mark> हिन्दी । विषय — सिद्धान्त । र०काल × । लेकाल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२७ । **प्राप्ति स्थान** — महारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५७५. तत्वार्यसूत्र माषा 🗴 । पत्रस०२० । ग्रा० १२ 🗴 ५५ इन्ह । माषा—हिन्दी ।

विषय — सिद्धात । र०काशः — ४ । ले०काल — स०१६४६ सावन सुदी ३ । पूर्णः । वेस्टन स०१०२१। प्रास्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मदिर, प्रजमेर ।

५७६. तस्वायंसूत्र भाषा  $\times$  । पत्रस० ११६ । प्रा. ११ह्रै  $\times$  ५ दश्व । भाषा —संस्कृत हिन्दी । विषय —सिद्धान । १०काश —  $\times$  । से०काल म० १८०७ ज्येटठ मुदी १३ । पूर्ण । बेटटन स० ७७ । प्रास्टित स्थान —दि० जैन तेरहपशी मदिन, नैसावा ।

विशेष --- जीवराज उदयराम ठोल्या ने तोलाराम बैद्य से नैसाबा में प्रतिलिपि कराई थी।

४७७ तस्तार्थसूत्र - भाषा 🗴 । -- पत्र स० ४२ । झा० ७३ ४ १३ इच । भाषा -- सस्कृत-हिन्दी । विषय--- सिद्धांत । २०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । प्राप्तिः स्थान---सण्डेलवाल दि० जैन प्रवायती मन्दिर धलवर ।

प्रथम. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० १४३ छ।०१० x ४१ टच्च : भाषा—सस्त्रत, हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०कास × । ते०कास × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६३-४४ । प्रास्ति स्थान—हि० जैन प्रष्टिर कहा वीरूपनी दीना ।

५७६. तस्वार्थसूत्र मादा > । पत्रमण ६ से ५३ । बाण १२  $\times$  ५ इ.च.। भाषा—सस्कृत हिन्दी । विषय— निदात । रण्काल  $\times$  । लेण्काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन सण १०६–६। प्राप्ति स्थान—दिण्जैन मंदिर बदा शीमपथी दोना ।

५ त. तत्वार्थ सूत्र भाषा  $\times$  । पत्रस० ११६ । प्रा० १०  $\times$  ६ हे हच्च । भाषा—सस्कृत क्रियो । विषय —सिदात । र०काल  $\times$  । से०काल स० १८५३ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेक्रम स० २३ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मदिर कोट्यो का, नैगवा ।

४६१. तस्वार्थसूत्र भाषा > । पत्रस०१४७। ब्रा०६ ४ ६डइव । भाषा—सस्कृत, हिन्दी। विषय — मिद्धाना ६०काल स० ४। लेकाल स०१६६६ चैत्र मुदी ३।पूर्ण। वेष्टन स०२७। प्राप्ति-स्थान — दि० जैत मदिर कोटगो का. नेगावा।

विशेष---नैगावा नगर में लखमीनारायगा ने टोइराम जी हंडा के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

४८२. तत्वार्यसूत्र भाषा ४ । पत्रस०२७ । प्रा०१२ ४ ७१ डज्व । भाषा सस्कृत, हिन्दी । विषय - मिद्धात । र०कारा ४ । लेक्साल ४ । पूर्ण । वेस्टन स०३० । प्रास्तिस्थान — विक्रालेन मन्द्रित कोको का. नेमावा ।

विशेष---प्रति टब्बा टीका सहित है।

४८३. तत्वार्थसूत्र भाषाः 🕒 । पत्रसः ६३ । प्रा०१० 🗙 ५ इञ्च । भाषा — हिली । विषय —सिद्धात । २०कारः 🗡 । ले०कान स०१७८३ । पूर्णः । वेष्टन स०१३८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन भगवाल महिर, उदयपर ।

५८४. तत्वार्थसूत्र—साखा  $\times$  । पत्रसः १००। प्रा० = १२ $^2$   $\times$  ५२ इञ्च । भाषा — सस्कृत-हिन्दी (गदा) । विषय—सिढान्त । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ३६१। प्राप्ति स्वाप्त—दि० जैन सदिर बोरसनी कोटा ।

विशेष-हिन्दी गद्य टीका दी हई है।

५६५. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रसः ६० । ग्रा० १० हे × ४ हे इञ्च । भाषा— संस्कृत – हिन्दी (गद्य) । विषय – सिद्धान्त । र०काल् × । ले०कान्त स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सण्डेनवाल प्रवासती मन्दिर ग्रनवर ।

४६६. तस्वार्थसूत्र भाषा  $\times$  । पत्रस० ३४ । मा० १० $\frac{3}{4} \times \frac{1}{4}$  इञ्च । भाषा— सस्कृत हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ते०काल स० १६२३ । पूर्ण । विष्टत सब्बा ११३ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

५८७. तत्वार्थसूत्र—भाषा  $\vee$  । पत्रतः २-३६ । आ० १४  $\times$  ६ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा— हिन्दी (गवा) । विषय—मिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्ट्रन म० १६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बुदी ।

४६६. तस्वार्थसूत्र भाषा  $\times$  । पत्रस०६१ । आ०६  $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  इन्त । भाषा—सन्हत-हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल $\times$  । ले० कान  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०४। प्रास्ति स्थान—दि० की मन्दिर प्राभनन्दनस्वामी वृदी ।

विशेष- लेखक प्रशस्ति का पत्र नहीं है।

५८६. तस्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस• ४० । मा॰ १३ ४ १ डञ्च । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय—निदात । र०काल ⋋ । ले॰काल स॰ १६०७ डि॰ जेठ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्ठन स॰ ३० । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिर नागदी, बुदी ।

५६०. तस्वार्यमुत्र भाषा ४ । पत्र स० ३६ । सा० ११४५ दश्व । भाषा-हिन्दी । विषय---मिद्धान । २०काल ---४ । ले०काल स० १६६५ भादना बुदी ४ । पूर्णे । बेप्टन म० १४१० । प्राप्ति स्थान---भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, स्रजमेर ।

**५६१. तस्वार्थसूत्र भाषा** ८ । पत्र म०६५ । ग्राठ १२०६ दश्च । भाषा — गरकृत । हिन्दी । विषय — मिद्रात । र०काल ४ । लेवकाल म०१६५४ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । बट्टन स०१५७२ । **प्राप्ति स्थान** — सट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**४.६२. तत्वार्यसूत्र भाषा** ८ । पत्र स० ४३ । प्रा० १४ / ४.इल्ब । भाषा सरुरा । हिन्दी । विषय—सिद्धान । र०काल — ४ । ले० काल—स० १६०१ आवश्य सुदी ४ । पूर्ण । बहुन स० १४-११ । **प्राप्ति स्थान**—सहारकीय दि० जैन सन्दिर खन्नसर ।

४६३. तस्वार्थसूत्र—भाषा ८ । पत्र ग०१२ । ग्रा० ११८४ टक्ष । भाषा —िस्तो । विषय—सिद्धात । र०काल स०१८१६ । लेकाल स०१८२६ । पूर्ण । वेष्टुन स०१८६७ । प्रास्ति स्थान—महास्कीय दि० जैन मन्दिर ग्रजसेर ।

**१६४. तत्वार्थमूत्र भाषा**  $\times$  । एत्र म० २१ । आ० १२  $\times$  ७ $^{1}$  दवा । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेपून म० ११३० । **प्राप्ति स्थान** — सङ्गारकीय दि० जैन मन्दिर, अवभेर ।

६८६. तत्वार्थमूत्र भाषा ४ । पत्र स०१११ । घा०१२६ ८ ८ इख । भाषा—सन्कृत. हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल ४ । लेकाल स०१८४२ माह सुदी१२ । पूर्ण । बेस्टन स० १५७६ । **प्राप्ति स्थान**—मट्टारकीय शास्त्र भण्डार ध्रजमेर ।

१६६. तत्वार्थसूत्र भाषा > । पत्र स०१६६ । ग्रा०१ × म इन्छ । भाषा हिन्दी । विषय—मिद्रात । २०काल × । ले०काल स० १०४३ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६२७ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

विशेष--किशनगढ मे प० चिमनलाल ने प्रतिलिपि की।

**५६७. तत्वायंसूत्र** भाषा —  $\chi$  । पत्रस० ६१ । प्राकार १० $\frac{1}{6}$   $\times$  ७ $\frac{1}{6}$  इन्त । भाषा — हिन्दी ग्रंह । विषय—सिद्धान्त । १०काल —  $\chi$  । ले०काल — स० १६३२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११४ । प्राप्ति स्थान—स्वष्टेलवाल दि० जैन पनायती मन्दिर, अनवर ।

५६ स. तत्वाधंसूत्र भाषा  $\vee$  । पत्र स० १२७ । प्रा० १० $\frac{5}{2}$   $\times$  ५ इब । भाषा—हित्दी— ( गढा ) । विषय— मिद्रात । ५० कान्द्र +  $\times$  । लेक्काल + ० १८ ७७ आपः उ बुदी २ । पूर्ण बेष्टत स० ३६ । प्राप्ति स्थान —हि० जैन मिट्टर, राजमहल (टोक) ।

विशेष श्लोक स० २०२० प्रमास एन्थ है।

४.६६. तस्यायंसूत्र भाषा ४ । पत्र ग०२४० १ था०१४ १६ है इञ्च । भाषा — हिन्दी गद्य विषय मिद्रान । २०कान – ४ । **के०काल** स०१६६३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

६००. तस्वायंसूत्र,भाषा . । पत्रस० २२६ । आ० । ९ ४ ४ देडच्य । भाषा —हिन्दी गरा । विषय – सिद्धान । २०कास — १. । लेकबाल स० १६६० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४४ । प्रास्ति स्थान सण्डेलकाल रिक्जन पनायनी मन्दिर, अनवर ।

६०१. तस्वार्थसूत्र भाषा । पत्रसः ६०। ग्रा० ११६ ४ ६ इच्च । भाषा —हिन्दी (गर्य) विषय – गिद्धान । २०काल , । लेक्काल म०१८०० मगसिर मुदी ४ । पूर्ण । बेहन स०८/३३ । प्राप्ति स्थान (द० अने मन्दिर भावता राज)।

विशेष--- मालपुरा मे प्रतिनिधि की गयी थी।

६०२. तत्वार्थसूत्र भाषा— ` । पत्रस० ३८ । प्रा०— १० × ५१ इख । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय - गिद्धान्त । ४० काल— × । त्रे० काल— × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३६-२३ । प्राप्ति-स्थान - दि० जैन मदिर कोटडियो का दूसरपूर ।

६०३. तत्वार्थसूत्र भाषा  $\checkmark$ । पत्रस॰ ७६। ब्रा॰—१२ $\frac{1}{4}$  ×६ $\frac{1}{4}$  इत्त्व । भाषा—हिन्दी गद्य । विद्ययः— सिद्धान्त । र०कार् —  $\lor$  । लेकाल—स॰ १८६७ । पूर्णं । वेष्ट्रन स॰ २४ । प्रास्ति स्थार —दि० जैन सदिर दीवान चेननदास पुरानी डीग ।

६०४. तस्वार्थसूत्र भाषा  $\times$  । पत्रस०२६ । प्रा०११  $\times$  ७ इञ्च । भाषा —सस्कृत — किंदी । विषय —सिद्धान । र०काल —  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण बेष्टन स०११६ । प्राप्तिः स्थान — वि० जंन लडेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष-प्रति टब्बा टीका सहित है।

६०**४. तस्वायंसूत्र** भाषा— X । पत्रसः ४१ । धा० १०<sup>१</sup>१ X ४<sup>९</sup> इञ्च । भाषा— हिन्दी गर्या । विषय—सिद्धारत । र०कारः— X । ले०काल— X । पूर्णं । वेष्ट्रन स० १४६ । प्रास्ति स्थास— दि० जैन प्रवासनी प्रदिश करीली ।

विशेष-केवल प्रथम ग्रध्याय तक है।

**६०६. तस्वार्थसूत्र** भाषा । पत्रस**० ४६**। आ० १० $\frac{3}{4}$   $\times$  ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान । र०काल $\to$  । ले०काल $\to$  । पूर्ण । वेष्टनस $\circ$ —६६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सप्डेनवाल मन्दिर, उदयपुर ।

६०७. तस्वार्यसूत्र भाषा —  $\times$  । पत्रस० १०० । ग्रा०—११६  $\times$  ४१ इन्त । भाषा — हिंगे गर्व । विषय — गिद्धान्त । र०काल —  $\times$  । ले०काल —  $\times$  । श्रपूर्ण । वेग्टन स० ३६ । श्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष-केवन प्रथम अध्याय की टीका है और वह भी अपूर्ण है।

६०७ (क). तस्वार्थसूत्र भाषा ४ । पत्रस०३६ । ग्रा०—१२१ै ४ ६ इञ्च । २०काल । ले० काल स० १६१६ । पूर्ण । बेष्टन स०३० । **प्राप्ति स्थान**—उपयोक्त मदिर ।

विशेष-हिन्दी टब्बा टीका सहित है। ज्ञानचद तरापथी ने दौमा मे प्रतिलिपि की थी।

६०८. तस्वायंसूत्र वृत्ति —  $\times$  । पत्रसः ४०। ग्राः ५८  $\xi$  इन्त । भाषा — सम्बन् । विषय — सिद्धाल । र०काल —  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रन संग्रः ११ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—प्रतिनम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति श्रीमदुमास्वामी विर्वित नःवार्थसूत्र तस्य वृक्तिस्तरवार्थदीपिका नाम्नी समाप्तम् । इस वृक्ति का नाम तत्वार्थदीपिका भी है ।

६०६. तस्वार्थसूत्र वृक्ति — × । पत्रस० ३६४ । घा० १० > ४१ इत्रच । भाषा - मस्त्रच । विषय —सिद्धान । र०काल — × । ते०काल — म० १७६१ फागुग मुदी १३ । पृग्ये । वेष्ट्रच ०३४ । प्रास्ति स्थान — ४० जैन मन्दिर दीवानजी, नामा ।

**६२०. तस्त्रार्थसूत्र वृत्ति**  $\times$  । पत्रसं० २३ । आ० १२  $\times$  ६ इन्य । भाषा---सम्ब्रत । विषय---मिद्धान्त । २० काल----  $\times$  । लेक्शन-----  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० १६२-६० । प्राप्ति-स्थान - दि० जैन मदिर बोटिंडयो का उनग्युर ।

**६११. तत्त्वार्थस्**त्र वृक्ति—  $\times$  । पत्रम०६४ । भाषा —सम्कृत । विषय-सिद्धाल । र०काल— $\times$  । अपूर्ण । वेष्टुनम० ११।३२४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायनी संदिर, उदयपुर ।

विशेष-- प्रति प्राचीन है।

**६१२. त्रिभंगोसार-नेमिचन्द्राचार्य** । पत्रसञ्ज्ञ । म्राप्त ११४५ इन्छ । भाषा-प्रा<u>कृत ।</u> विषय-मिद्धान । रुकाल ४ । नेक्शन सञ्करित्व वैज्ञाल बुरी १० । पूर्ण । बेष्ट्नसञ्ज्ञ १६२ । प्राप्ति स्थान । सञ्जिक जैन मन्दिर यजमेर ।

**६१३. प्रतिसं०**२ । पत्रस० ६१ । ले०काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६२ । **प्राप्ति** 

स्थान - दि॰जैन पनायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष-हिन्दी टीका सहित है तथा टीकाकार स्वरचन्द ने स० १६३३ मे टीका की थी।

**६१४. प्रतिसं० ३**। पत्रस॰ ३३। ले॰काल — 🔀 । पूर्णः । बेहनसं० १५ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर, डीगः।

विशेष -- कठिन शब्दों का ग्रर्थ भी है।

**६१५. प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ५६ । ले॰काल— 🗴 । ब्रपूर्ग । बेष्टनस०१६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

**६१६. प्रतिसं॰ ४**। पत्रस॰ ४४ । म्रा॰ ११ $^2_x$  × ४ $^2_z$  । र०काल— imes । लिपिकाल— imes । प्रास्तिस्थान—दि॰ जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

**६१७. त्रिभंगीसार तीका-विवेकतन्दि ।** पत्रसः ५६ । प्रा० १२ ४ ५६ स्व । भाषा—सन्द्रतः । विषय — सिदान्तः । टीकाकाल— ४ । लेकाल स० १७२७ आमोज बुदी ३ । पूर्ण । वेप्टन स०२ । प्राप्ति स्**रा**प्त—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

**६१८. प्रतिसं० २ ।** पत्रम० ६७ । बा० ११ 📯 ४३ इञ्च । ले० काल--- ः । पूर्णं वेस्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**----दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

**६१६. प्रतिसं० ३।** पत्रस० ६७ । ग्रा० ११ ४ ४१ इन्छ । लेव्काल-- र । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ ।**प्राप्ति रथान-**-- दि० जैन मन्दिरर दीवानं जी, कामा ।

६२०. त्रिअंगीसार भाषा × । पत्रस० ५८ । मा० १ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गर्छ) । विषद —सिद्धात २०काल--- × । लेवकाल स०--- ४ । म्रपूर्ण । वेग्टन स० १७१ । प्राप्ति स्थान--वि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपर ।

**६२२. त्रिभगीसार भाषा**  $\times$  । पत्रस $_0$  २२ । भाषा — हिन्दी । विषय — र०काल —  $\times$  ।  $q \dot{q} \dot{q}$  । वेषटन स $_0$  २७४ । **प्राध्तिस्थान** — दि $_0$  जैन पत्रायती मन्दिर, भरतपुर ।

६२३. त्रिभेगी सुबोधिनी टीका—प० ग्राशाधर । पत्रसं० २७ । ग्रा०११३ ४ ४ । ग्राषा —सस्कृत । विषय — सिद्धात । र०काल — ४ । लिपिकाल — स० १७२१ माह सुदी १० । वेस्टन स०२० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---ग्रथ समाप्ति के पत्रचान् निम्न पक्ति लिखी हुई है--

''यह पोथी मालपुरा का सेतावर पाश्चि लई छै। तार्तयह पोथी साह जोधराज गोदीका सामानेर वालो की छै।''

**६२४. प्रतिसं० २ ।** पत्रस्० ८६ । लिंगिकाल—स० १४८१ द्यासीज सदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-- हस्तिकान्तिपुर में गगादास ने प्रतिनिधि की थी।

६२४. श्रेपनमाव चर्चा $-\times$ । पत्रतः ४ । प्राः — ६ $^2_7 \times 4^3_7$  इञ्च । नावा- हिन्दी । विवय- चर्चा। र०काल $-\times$ । लेकाल स०१८७३ । पूर्णं । वेष्टन स०६४। प्रास्तिस्थान-वि० जैन मन्दिर पत्रायती इनी (टोक)।

विशेष - अजमेर मे प्रतिलिपि की गयी थी।

६२६. दशवैकालिक सूत्र $-\times$ ा पत्रसः १६। भाषा—प्राकृत । विषय-प्रागम। र०काल $\times$ । के०काल स० १७१३ । पूर्णे । बेठ्नस० ७४७ ।प्राप्तिः स्थान— दि० जैन प्रचायती । मन्दिर, मरतपुर ।

विशेष---गुजरानी : लिपि हिन्दी) टीका सहित है गाथाओ पर अर्थ है ।

६२७. प्रतिसं० २ । पत्रस० १७ । लेक्काल-सं०१६२६ । पूर्णं । बेष्ट्रनस० ५१० । उपरोक्त मंदिर । दि० जैन मन्दिर प्रचायती भरतपर ।

**६२**८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६६ । आ० ६ $\frac{2}{3} \times Y_{\frac{1}{3}}^{\frac{1}{3}}$  । ले॰काल स० १६७६ माह बुटी ११ । प्रार्ण । वेप्टन स० १३२ । प्रार्ण्स स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाच टोडारार्यासह (टोक) ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

**६२६. प्रतिसं०४ ।** पत्रस० २० । ग्रा० १२<sub>१</sub> ४ ६ इञ्च । ले०काल स० १४६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन प्रग्रवाल मदिर, उदयपुर ।

विशेष —सवत् १५६१ वर्षे प्रथम श्रावमा मृदि ३ शनौ ज्ञानावरगादिक कर्मध्यायै तेजपानेन इद ग्रंथ स्वहस्तन लिखित ।

६३०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ६१ । ब्रा० १० 🌣 ४ है इञ्च । ले०काल स०१७४१ साप सुदी २ । पूर्णा । बेष्ट्रनस०१५१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा।

६३१ द्व**ट्यसमुरुधय-कजकोति।** पत्रस०२। ब्रा०१२ ४.१ । भाषा—सम्प्रतः। विषय सिद्धान्त । २०कारः – ×.। लिपि कान०— ×.। वेग्टन स०६ **प्राप्तिस्यान**—दि० जैन मदिर सम्बर जयपुर।

विशेष -- शभचन्द्र की प्रेरगा से कजकीति ने रचना की थी।

६३२ **प्रतिसं० २** । पत्रस० ६ । मा० ११ ४ ४ । भाषा —सम्बन । विषय—सिढाल । र०काल ४ । लिपिकाल — ४ । वेष्ट्रन स०७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त सरिरर ।

६३२. द्वच्यसंब्रह् ने मिचन्द्राचार्य । पत्रस० ० । ब्रा० १० $^1$  $\times$ ५ $^1$ इल । भाषा - प्राकृत । विषय—सिद्धाना । २०कार— $\times$  । ते०काल—म० १०४० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६०२ । प्राप्ति स्थान—म० १० जैन मन्दिर ब्रजमेंग ।

विशेष---प्रति टब्बा टीका महित है ।

विशेष---प्रति सम्कृत टीका सहित है। इस मन्दिर में संस्कृत टीका सहित ४ प्रतिया धीर है।

६२५. प्रतिसं०३ । पत्रस०७ । मा०११ x ५ इन्त्रः । निपि स०१६६ ६ । बेष्टनसं०५ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर । विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है। धावार्य हरीचन्द नागपुरीय तपागच्छ के पठनार्य प्रतिलिप की गई थी।

६३६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४ । ले०काल—  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० २६ । प्रास्तिस्थान— दि० जैन पत्राथती मन्दिर भग्नपुर ।

विशेष-इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार में ४ प्रतिया और है।

६३७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४ । लं०काल — स० १७४० । पूर्ण । बेष्टन स० ३१४ । प्रास्त्— स्थानः — दि० जैन - मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष -- इस मन्दिर में ४ प्रतिया ग्रीर हैं जो संस्कृत टीका सहित हैं।

६३ म. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २१ । ले०काल — स० १७२६ फाल्गुन मुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । प्राप्तिस्थान - दि० जैन पत्रायती मदिर हण्डावाली का टीन ।

विशेष-हिन्दी ग्रथं सहित् है।

६२६. प्रतिसं० ७ । पचस० ४ । ले०काल— 🗙 । पूर्णः । बेहनस० ७ । २० । प्राप्ति— स्थान-—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिङ (टोक) ।

६४०. प्रतिसं० म । पत्रस० ४ । ले०काल--स० १७६६ जैन्ट सुरी १२ : पूर्ण । वेष्टनस०-५६-१६६ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर नेम्निय टोझर।यसिंह (टोक)

विशेष--गोनेर में महात्मा साहिमल ने प्रतिलिपि की थी !

६४१. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४ । ले०काल-स० १६०० क्षत्र बुदी १३ । ुर्र्ण । वेष्टनसं०-२७ । प्राप्ति स्थान-द० जैन मन्दिर पाण्वेनाय टोडारायसिंह (टोक) ।

६४२. प्रतिसं० १० । पत्रस०२४ । ते०काल — 🗙 🖰 पूर्णे । वेष्ट्रनस० ८७।१६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

६४४. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ४६ । लेब्काल — 🔀 । पूर्ण । वेष्टनस० २४४ । आस्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर प्रधिनन्दन स्वामी, बुन्दी ।

विशेष---प्रति सम्कृत टीका सहित है।

६४५. प्रतिसं० १३ । पत्रस० १० । लेक्काल-स० १६४२ मावन सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स०-१०क । प्राप्ति-स्थान -- दि० जैन मन्दिर पार्चनाथ चौगान बूदी ।

विशेष - भगडावन कस्तरचन्द के पुत्र चोकचन्द ने लिखी थी।

६४**६. प्रतिसं० १**४ । ण्यस्त० ४ । ले०काल----स० १६७६ माह बुदी २ । पूर्ण । बेहनस०--२६० । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष--- १० हीरानन्द ने प्रतिनिधि की थी।

६४७. प्रतिसं० १५ । पत्रसं० ५ । ने०काल — 🗡 । अपूर्ण । बष्टनसं० १३ । प्राप्तिस्थान-

दि॰ जैन मदिर दबलाना (बुन्दी)।

विशेष -- एक प्रति और है।

६४६. द्रतिसं० १७ । पत्रस० १४ । लेकाल—सं० १७१३ । पूर्णे । बेष्टनस० ३६८-१४१ । प्राप्तिः स्थान —दि०जैन मन्दिर कोटडियो का डुगरपुर ।

विशेष-पाडे जमा ने नागपुर मे प्रतिनिधि की थी।

६५०. प्रतिसं० १८ । पत्रसं० १८ । ग्रा० १२ ४ ५ इचा लेक्सल— 🗙 । पूर्णी वेष्टनस्०१६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर ग्रलवर ।

**६५१. प्रतिसं० १६** । पत्रसं०१७ । ग्रा० म $_2^2$   $\times$  ४ $_4^2$  इख । ने०काल —स०१६४६ सावन बृदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स०१५० । **प्राप्ति स्थान** – उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-प्रति स्वर्णाक्षरी है। तथा सुन्दर है। चम्पालाल ने प्रतिलिपि की थी।

६५२. द्वव्यस्याह टोका — प्रमाचन्द्र । पत्रस० १४ । ध्रा० ११ × ५१ इन्छ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान । २०काक्ष-- ४ । लेकाल—न० १८२० माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८० । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन सन्दिर ब्रजमेर ।

६५३, द्रव्य सम्रह् टोकः — तत्र सं० १५ । मा० १० $\frac{1}{2}$  ४  $\frac{1}{2}$  इख । भाषा — मन्तृत । विषय — सिद्धान्त । २०काल —  $\times$  । ले०काल — स० १८२२ । पूर्ण । बेष्टुनम० १३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्वनाय जीगान वृदी ।

६५४. द्रब्यसम्बद्धं वृत्ति—प्रह्मदेव । पत्रसः ११६ । ग्राः ११ $\times$ ५ इत्व । भाषा - सन्कृत । विषय—सिद्धान । २० कास् —  $\times$  । ले०काल —  $\times$  । पूर्णः । वेष्ट्रसः ० २११ । प्राप्ति स्थान  $\cdots$  मे॰ दि० जैत मस्दिर, प्रजमेर ।

६५५. प्रतिसं० २ । प्यस० ११७ । ले०काल 🟏 । पूर्णा । बेष्टनस० ६६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६५६. प्रतिसं० ३ । पत्रन० ५१ । लेब्लाल-- म० १७४३ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रनस०६ । प्राधिनस्थान-- दिव् जैन मन्दिर नेरहपथी मालपुरा (टीक्) ।

६५७. प्रतिसं० ४ । पत्रम० ६ । घा० १२ 🍃 ४ इ.च.। लेब्बाल 🗵 । घपूर्ण । बेष्टनस०-१४२ । प्रास्तिस्थान — दि० जैन सम्बाल मदिर, उदयपुर ।

६५६. प्रतिसं० ५ । पत्रम० १०१ । लेक्काल—म०१७१० जेक्ठ बुदी ३ । पूर्ण । बेहुनम०-१२२ । प्रास्तिस्थान —दि० जैन मन्दिर, प्रादिनाथ वृत्तो ।

विशेष — म॰ १७१० ज्येष्ट बुटी १ को धावार्य महेन्द्रकीति के पठनार्थ विद्यागुरु श्री तेजपाल के छपदेश से बुदावती में जयभित्र के राज्य में प्रतिलिए हुई थी।

६५६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १४ । छा० ६२ ÷ ४१ इन्छ । लेकाल—सं० १८०७ घाषाइ सुदी ३ । पूर्ण । बेटनस० ६६।३१ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन सोगागयों का मन्दिर, करीली । ६६०. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १०६ । प्रा० १० × ४ हे इचा । ले∙काल -- । प्रपूर्ण । बेहन स०-२४ । प्रास्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६१. प्रतिसं ० म । पत्र सं ० - १७१ । प्रा० ११ $\times$ ४ हे इस । ले ब्हाल  $-- \times$  । पूर्ण । बेच्टनस् ० १२२ । प्राप्तिः स्थान --दि० जैन मन्दिर बोरमणी कोटा ।

६६२. इट्यसंग्रह वृत्ति— ८ । पत्रसं० ६६ । ग्रा० १८ ४६) इश्व । भाषा—सस्कृत । विषय—सिदान्त । र०कार्स— 🗙 । से०कास— 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी नामा ।

६६४. ब्रग्यसंग्रह टीक्क्न $\times$  । पत्र स०४७ । मा०-११, ४७ इत्व । भाषा -सस्कृत-हिन्दी । विषय-निदांत्र । र०कारर- $\times$  । ले०काल-स०१८१७ बैकाल सुदी १० । पूर्ण । बेष्टत स०२३।२२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन सीगाणी मन्दिर करोली ।

६६५. द्रव्यसंग्रह माषा—४ । पत्र सं०१९ । ते०काल-स०१८६७ । पूर्ण । बेष्टन म०३२।१६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन पचायती मन्दिर दुनी, टॉक ।

विशेष--टोडा के नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

६६६. द्रध्यसंग्रह भाषा टीका। पत्र स०१-१०। प्रा॰१० $\frac{1}{7} \times 7\frac{3}{7}$  किया। ले०काल— म०१७१६। बेगाम गुदी १३। प्रपूर्ण। बेष्टन सं०१४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ वर्षो।

विशेष--- लेखक प्रशस्ति ।

सम्बन् १७१६ वर्षे बैनास मासे गुक्तपक्षे १३ रवी सागपत्तन गुमस्याः श्री ध्रादिनाय चैरयालये श्री काष्ट्रापपं नदीनदानः विद्यागाग्रे स० रामसेनान्वये तदनुक्रमेणा स० श्री रानभूसगा स० श्री जयकीति स० श्री कमलकीति तराष्ट्रं स० धुवनकीति विद्यमाने २४० श्री कमलकीति तत् शिष्य ब्रह्म श्री गमसागर लिखितं स्वय पटनार्थः।

६६७. द्रध्यसप्रह भाषा —  $\times$  । पत्र स $\circ$ —१७ । घा० १० $^1_2$   $\times$ ६ $^1_2$  इत्रा । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय-सिद्धात । प्रवा काल $\times$  । लेखन काल स $\circ$ १६५० ज्येष्ठ बुटी ग्रमावस । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$ १२६ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन पार्वनाथ मदिर इन्टरगढ, कोटा ।

विशेष-श्री प्रणानान बचेरवान पुत्र जिनदास ने इन्दरगढ़ को प्रपने हाथ से प्रातिनिधि की बी । प्रकस्ति निम्न प्रकार हैं—

सम्बन् उन्नीस-सै-गवास ग्रुम ज्येष्ठ हि मासा । इच्छा माबस वन्द्र पूर्ण करि चित्तहुतासा ॥ घन्नासाल बचेरवास मे गोत्र सुभघर । तथु सुत मै जितदास सिसी इन्दरगढ निजकर । पठनार्थ घारमहित सुद्ध चित्त सदा रहो सुभा मावना । हो मृत सुद्ध करियो तहा मो परि क्षमा रखावना ।

६६८. द्रव्य संग्रह टीका × । पत्र संस्था - ४० । ग्रा० १० × ४३ इस । भाषा-हिन्दी । विषय-

विशेष--- बखतलाल ने प्रतिलिपि की थी।

६६८. द्रव्य**रांग्रह सटोक** —  $\times$  । पत्र स०२६ । ख्रा० ११ $\times$ ४ इन्छ । भाषा-प्राकृत-हिन्दी (गद्य) । विषय— सिद्धान । र. काल  $\times$  । ले० काल स०१८१ माह बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स०४३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन घ्रयबाल पनायनी मन्दिर भ्रतन्तर ।

**६७०. द्रव्यसंग्रह भावा---पर्वातधर्मार्थी ।** पत्र स० ४३ । ग्रा० १२ ४४ १ इथा । ग्राया --गुजराती । लिपि हिन्दी । विषय -- निद्वात । र०काल --- ४ । ले० काल स १७७० । वेष्ट्रन स० २१६ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर नागदी व दी ।

६७१. प्रति सं०२ । पत्रस०२३ । घा०१०३ × ४ इ.ख.। ले० काल स०१७४१ चैत्र बुदी ६ । पर्याः प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाला, बुदी ।

**६७२. प्रतिसं०३ ।** पत्र स० ७२ । लेखन काल स० १७६२ । पूर्ण । बेठून स० ४०६-१५३ **। प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोटडियान, हुगरपुर ।

६७३. द्रव्यसंग्रह भाषा —  $\times$  । पत्र सन्या १६ । ग्रा० १३ $\times$ ६ इत्र्व । भाषा — हिन्दी विषय — सिद्धान । र०काल —  $\times$  । लेखन काल —  $\times$  । पूर्ण । बेट्टन स० १५७ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर फेलेडपूर फेलाबाटी (मीकर) ।

विशेष-गायाम्रो के नीचे हिन्दी ग्रद्य में मनुवाद है-

श्रन्तिस — सर्वगृत के नियान बढ़े पहिल प्रधान । बहु दूपत रहिल, गृत भूषण सहिल है। नित प्रति वित्तवत, तेसिचन्द सृति नाथ । सीधियों बु जाको, तुम प्रशं के श्रद्धित है। घत्थ द्रव्य सग्रह, मुक्तीति मे बहुत थोगें। सेरी करत बृद्धि चल्प, शास्त्र सोमहित है। नातें मैं बु यह यथ रचना करी है। कर्ड गृत गृहि जीवों गृरी वीनगों कहित है।

६७४. द्रध्यसम्बद्धः साथा $-\times$ । पत्र स० २६। मा० ६४७६ द्रञ्च । भाषा-सर् $\pi$ । द्रिन्ती । विषय -मिद्धान । र० काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । वेषृत स०६४६ । प्राप्ति स्थान -िः अंग मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-गणेशनान विन्दापन्या ने स्वय पठनायं निस्ती थी ।

६७४. द्रव्यसंप्रह भाषा—४ । पत्र मश्दरः। प्राठ १०३४ ४१ इज्व । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । ते० काल—४ । पूर्ण ।वे स १४ । **प्राप्ति स्थान—**दि० तैन मुद्रिर बोरसुवी कोटा ।

६७६. ब्रह्मसंग्रह भाषा— र । पत्रस० ६१। प्रा० १०१ ४६ इव । भाषा — क्रियी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— र । ले०काल र । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ३४० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी, कामा ।

विशेष-भद्रागम सागर ने प्रतिलिपि की थी।

६७८. द्वर्थसंग्रह भाषा—×। पत्रस०२०। म्रा०—१२×५३ इत्र। माषा— हिन्दी। विषय—सिद्धान । र०काल — ×। ले०काल—स०१८२२ चंत्र सुदी१२। पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१०४। पारित स्थान – टिल्जेन पत्राधनी सदिर कामा।

विशेष-साहिबी पाण्डे ने भरतपुर में इच्छाराम से प्रतिनिधि कराई ।

**६७६. इब्यसंग्रह भाषा** 🔀 । पत्रस० १३ । भाषा —हिन्दी । विषय-विद्वान । २०काल-४ । ले०काल १६३१ । पूर्णे । वेष्टनस० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायक्की मदिर हण्डावालो का डीग ।

वशेष-मधुपूरी म लिल की गई थी।

६८०. द्रव्यसप्रह भाषा टीका— बसीधर । पत्रस० ११ । प्रा० ६२ ४ ५ है इस । भाषा— हिन्दी । विषय— मिद्रान्त । र०काल— ४ । लेकाल स०—१८१८ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टत स० १४७ । प्राप्ति स्थान— पत्रापती टि० जैन सटिए करीली ।

विशेष-पहित लालचढ ने करौली में प्रतिलिपि की थी।

६८९ प्रतिसं०२ । पत्रस०२८ । ले०काल— स०१८६२ वैशास बुदी १४ । पूर्ण। वैष्टतस०७०--२८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर वदाबीस पथी दौना ।

विशेष - महात्मा गलाबचद जी ने प्रतिलिपि की थी।

६८२ इत्यसम्बह् भाषा-पंकजस्यन्त् सावकाः। पत्रसः०-१ ४,२०-४४ । सा० ८६६ छ। भाषा - राजस्थानी (३ द्वारी) गद्य । विषय---मिद्धान्त । र०काल स० १८६३ । ले०काल х । वेष्ट्रसः ६८७ । धर्मणं । प्रास्ति स्थान-- दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

६८३ प्रतिसं०२ । पत्रसः ०८४ । । ले० काल × । सपूर्ण । वेष्टनसः ३७ । प्राप्ति स्थान –दि० जन पत्रायती सदिर भरतपुर ।

६८४ प्रति सं०३। पत्रस०१३। ले० काल 🗵 । मपूर्णं वेष्टनस०१०। प्राप्ति स्थान दि० जैन, मदिरश्री महावीर वृदी।

६८५. प्रतिसं०४ । पत्रस०१३ । प्रा०६-३ × ६ इ.च. । ले० काल × । पूर्ण । वेक्रनस०२४ । प्राप्ति स्थानः— विगम्बर जैन महिर श्री महावीर बृदी ।

६८६. प्रतिसं० ४ । पत्रम० १३ । ले०काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टनस० ७२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर श्री महाबीर बूदी ।

६८७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४० । ले०काल सं०१६४४। पूर्ण । वेष्टनसं० १४८ । प्रास्ति— स्थान—दि० जैन मन्दिरश्री महाबीर बूंदी ।

६८८. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ४० । ले०काल सं० ११४२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८ । प्राप्तिस्थान --दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाय चौगान बंदी । ६८६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४४ । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १६४० । पूर्ण । बेष्टुनसं० १३२/३३ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पास्त्रनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

६६०. प्रतिसं**०६ । पत्रसं**०४७ । ले०काल स०१ मण्ड कार्तिक बुदी ७ । पूर्णै । बेहुनसं०२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा ।

विशेष-मंजराम गोघा वासी गाजी का याना का टोडाभीम मे धात्मवाचनार्थ प्रतिलिपि की थी।

**६६१. प्रतिसं० १० ।** पत्रस० ४० । ले०काल स०१८७० । पूर्ण । बेट्रनस० १०२ । प्रा**प्ति स्थान**—स्राप्याल पत्रायती दि० जैन मन्दिर, स्रलवर ।

विशेष-जहानाबाद मे प्रतिलिपि हुई थी।

**६६२. प्रतिसं० ११ ।** पत्रसं० ४६ । ले०काल स० १८७६ कार्तिक वदी २ । पूर्णं । बेकनसं० १९७ । **प्राप्ति स्थान**— प्रयाल पचायती दि० जैन मन्दिर भ्रलदर ।

**६६३. प्रति सं० १२** । पत्रस**ः**—६६ । स्ना० च $\frac{3}{2} \times 2$ , इन्छ । ले० काल स०१८८०। पूर्यों । बेक्नस॰ १६१ । प्राप्ति स्थान —सण्डेलवाल दि० जैन पचायती मदिर सलवर ।

६६४. प्रति सं० १३ । पत्रस०—४७ । ले० काल स० १६८३ पूर्ण । बेष्टनसं०—१६१ (म्र.) । प्राप्ति स्थान —उपरोक्त मन्दिर

**६६५. प्रतिसं० १४ । पत्रसः —**३६ । ले० काल — × । पूर्णः । बेष्टनसः — २६।२१ **प्राप्ति** स्थान— दि० जैन मन्दिर भादवा ।

**६६६. धर्मचर्चा**  $\cdots \cdots$  । पत्रसं• ४ । म्रा० १० $\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{4} = आपा — हिन्दी । विषय — सिद्धान्त । र०काल <math>\times$  । ले॰ काल  $\times$  । लेशन संग्रह । धर्मन्त स्थान – दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**६६७. घर्मकथा चर्चा** $\times$  । पत्रसं• २२ । ग्रा० ६ $\times$ ४ $^{2}$  इत्थ । नापा-हिन्दी प० । विषय-मिद्धान । र०काल-  $\times$  । ते० काल- स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३५-१६४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष-प्रश्नोत्तर के रूपमे चर्चाएँ हैं। भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य प० मुखराम के पठनार्थ भीनोडा में लिखा गया था।

६६ द्र. नवतस्य गाथा  $\cdots$  । पत्रसं• २४ । प्राः• + १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ४३ उच । भाषा —माकृत विषय —नी तत्वो का वर्णन । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । धपूर्ण । बेष्टनसं• २४१ । प्राप्ति— स्थान—दि जैन मदिर दीवान जी कामा।

**विशेष**— हिन्दी टीका सहित है।

६६६. प्रति सं०२ । पत्रस० ६। ग्रा०१० x ४ दे इन्छा। ले० काल x । ग्रपूर्ण। बेष्टनसं०१०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बडाबीस पथी दौमा।

विशेष--बालावबोध हिन्दी टीका महित है।

७००. नवतत्व गाया भाषा —पन्नालाल चौधरी—पन्नस०४१ । प्रा०१०३ ४७ इश्व । भाषा—हिन्दी गर्च । विषय—सिद्धात । र०काल १६३४ । ले० काल स०१६३४ वैकालबुदी ६ । पूर्ण । बेह्नसं • ३८।१७८ । प्राप्ति स्थान - पंचायती दि • जैन मंदिर अलवर ।

विशेष--- मूलगाथाएँ भी दी हुई हैं।

७०१. नवतत्व प्रकररण् $-\times$ । पत्र सं० ६। सा० १० $\frac{1}{2} \times Y$  इत्व। माया--प्राकृत । विषय-नव तत्वों का वर्णनः। २०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णः। बेहन सं० ४४६। प्राप्ति स्थान-म० दि० वैका मन्ति सजमेरः।

विशेष — जीव धजीव धाश्रव बंध सवर निजंरा मोक्ष एवं पुण्य तथा पाप इन नव तत्वों का वर्णन है। इस भण्डार में ३ प्रतिया धौर हैं।

७०२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६ । घा०—११ ४ ४ इश्व । ले० स० १७८४ बंशाल बुदी १ । पूर्णं । बेष्टनस० २६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा !

विशेष - हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

७०३. प्रतिसं० ३ । प्रश्नं। ले०काल  $\times$  । पूर्णं। वेष्टनसं० १४४ । प्राप्ति स्थान—- दि० जैन मन्दिर दबलाना (वृंदी) ।

विशेष-४४ गाथावें हैं।

७०४. प्रतिसं० ४ । पत्रम० ११ । लेक्सल — ४ पूर्ण । बेष्टनसं० ३४२ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष — मून के नीचे गुजराती गद्य में उल्या दिया है। मूलि श्री नेमिविमल ने जिब विमल के पठनार्थ इन्द्रगढ में प्रतिलिपि की थी। इस भण्डार में चार प्रतिया ग्रीर है।

७०**४ प्रतिसं० ४** । पत्रस०१० । घा० १०१४४ इ.ख । ले०काल—४ । पूर्ण । **बेह**नस० १७८-७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हूंगरपुर ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। इस भण्डार में एक प्रति और है।

७०६. प्रतिसं०६ । पत्रस० ४। ले० काल स० १७७६ । पूर्ण । बेष्टनस०—१२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भगवाल पचायती मन्दिर भलवर ।

विशेष -- प्रति हिन्दी प्रर्थ सहित है।

७०८. नवतस्य प्रकरण् टीका —टीकाकार् पं० भान विजय । पत्रस०—२१ । मा०  $\mathbb{E} \times \mathbb{E} = \mathbb{E$ 

विशेष - मूल गयाएं भी दी हुई है।

७०१. **नवतस्य शब्दार्थ**—imes। पत्रसं०-१६। ब्रा० १० $rac{1}{2} imes rac{1}{3}$  इश्वः। भाषा —प्राकृतः। विषय—सिद्धान्तः। २०काल—imes। ले० काल सं० १६६८ वैद्याल सृदी १।पूर्णः। वेष्टनसं०—५१।

विशेष - रचना का मादि मन्त भाग निन्न प्रकार है-

प्रारम्भ — जीवा १ जीवा २ पुन्न ३ पावा ४ श्रव ४ संवरोय ६ निजरमा ७ । बंधो प मुकोय ६ तहानव तत्ता हनिनायव्वा ॥ १ ॥

ह्याख्या—साची बस्तुन उस्त्रक्ष्णते तत्त्व किंद्रिय। तेसम्यग्दृष्ट्रिन उलाण्या चाह्यिय । तेह् भरिग पिहलो तेहूना नाम निर्मालय छह । पिहिल उभीव तत्त्व वीश उ प्रजीव तत्त्व पुष्पातत्व रेपागतत्व ४ प्राप्त्रव तत्त्व ४, सबर तत्त्व ६ निर्जरा तत्त्व ७ । बच तत्त्व ५ मोश तत्व ६ तथा ए गव तत्त्व होहि विवेकीएए जारियव।

**भ्रन्तिम**—श्रनउसन्पिगी श्रगतापुग्गात परियट्टो मुग्गेयव्वो ।

तेरातिम ग्रहा ग्रगागयहा ग्ररातुगुरा।।

ट्यास्या—धनत उत्सिपिगोइ धवसपिगो एक पुत्राल परावतं होइ । मुग्रेयव्यो कहता जागिवउ । ते पुत्राल परावतं प्रतीत कालि धनता धनागत कालि धनतपुरगा इहा कहिउ उ पछइ श्री जिन वचन हुइ ते प्रमाग् इति नव तत्व शब्दायं समाग्दः ।

ग्रन्थ स० २७४ । सबत १६६⊏ वर्षे बैजाल मामे कृष्ण पक्षे प्रतिपदा तिथी सोमवासरे अर्गलापुर मध्ये फोफलिया गोत्रे सा० रेखा तद्धार्या रायजादी पठनार्थ ।

७१०. नवतत्व सूत्र  $\times$ । पत्र स० ०। भाषा — प्राकृत । विषय — नव तत्वो का वर्णत । ए० काल —  $\times$  । ले काल —  $\times$  । पूर्णा । वेष्टन स० — ६६४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

७**११. नाम एवं भेद सग्रह— ४ । पत्रसः—** २४ । भाषा —क्षिन्दी । विषय — सिद्धात । रुकाल — ६ । लेवकाल — ४ । वेक्रासव ४४४ **प्राप्ति स्थान**-दि जेन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

७१२. नियलावित मुक्त —  $\times$  । पत्र स० १६ । आ० १०  $\times$  ५ $^{3}$  देख । भाषा — पात्र न विषय — आगम । र०काल  $\times$  । ने० काल स० १७०१ फागुन बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० १ । प्रार्थित स्थान — दि० जैन मदिर खंडेनवाल उदयपुर ।

७१३. नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव । पत्रसः १०३ । छा० १९८४ १७४ । आपा—सन्कृत । विषय—निद्धान । र०काल— 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्ट्रनं स० १५६ । प्राप्ति—स्थान—भ० दि० जैन सन्दिर प्रवनेर ।

विशेष - स० १६४७ में भीमराज की वह ने चढाया था। मूल्य १५ ४४ पैसे।

**७१४. प्रतिसं० २** पत्रस० १६४ । ग्रा० ६१ -६१ इ.च । ले०काच म० १०३५ । पूर्ण । **वेक्नसं० १**४२१ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

**७१४. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० ८३ । ग्रा० १०, ४४ इखा । तं०काल म० १७१४ मङ्गमिर **बदी** ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जेन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७१६. नियमसार भाषा – जयचन्द छाबडा । पत्रस० १४३ । घा० १२३४७ इव । भाषा —हिन्दी गया । विषय —सिद्धान्त । र०काल बींग स०२४६८ । ले०काल स० १६६४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ११२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाय चोगान बृन्दी ।

विशेष - चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

७१७. पंचपरावर्तन टीका imes । पत्रस $\circ$  ४ । ग्रा॰ १०imes ४ हुँ इन्छ । भाषा सस्कृत । विषय— सिद्धात । र॰काल imes । ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं॰ ४३ । प्राप्तिस्थान—स॰ दि॰ जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**७१८. पचपरावर्शन वर्शन २** । पत्रसं०२ । ग्रा०१० $rac{1}{2} imes rac{1}{2} = rac{1}{2}$  । भाषा —सस्कृत । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन त० १०६४ । **प्रास्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

**७१६. पंचपरावर्शन वर्**शन × । पत्रसं० ३ । घा० ६ ४५ इच । भाषा -हिन्दी । विषय -सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पुर्ण । वेष्टन स० १०६६ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

७२**१. पचलंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य।** पत्रस०२०। ग्रा०११६४४ दश्वः। भाषा—प्राहतः। विषय—सिद्धानः। र०कानः— 🗡 । ले०काल—स०१८३१ । ग्रपूर्णः। वेष्टुनस०१६६ । **प्राप्तिः स्थान**— स०दि० जैन सन्दिर ग्रजनेरः।

७२२. प्रति स०२ । पत्रस०६३ । द्या०११११४५३ दश्व । ले०काल — 🗴 । पूर्ण । वेद्रतसं०३०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कामा ।

७२३. प्रतिसः ३ । पत्रस० १७२ । प्रा० १११ ४४ इच्छा । ते०काल—स० १७१७ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनम० १०१ । प्राप्ति स्थान — दि० जेन मन्दिर झदिनाथ बन्दी ।

विशेष -- जती नैगामागर ने पांडे लीवसी से जयपूर में लिखवायी थी। प्रति जीगाँ है।

७२४. पचसप्रह वृत्ति—सुमितिकोर्ति । पत्रसं० ३७४ । प्रा० १२ ४६ इत्व । भाषा— प्राकृत सन्हत । विषय—सिद्धान । २०काल—स० १६२० भादवा मृती १० । ले०काल—स० १६२२ श्रावण वृदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनग० २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर दीवानवी कामा ।

विशेष -- इसका दूसरा नाम लघु गोम्मटसार टीका है।

७२५. प्रतिसं० २ । पत्रम्० २०५ । लेब्काल — म० १७६४ सावन सुदी ६ । पूर्ण् । वेष्टनम०— २६६ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - धागरा में केसरी। मह ने प्रतिलिपि की थी।

७२६. पंच ससार स्वरूप निरूपण 🔀 । पत्रसः ४ । आ० १०१८ ४ है इख । आपा — सस्कृत । विषय — मिद्रान । र०काल — 🗡 । ले०काल — म० १६३६ । पूर्ण । वेष्टनम०१७६-७५ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरपर ।

विशेष--स० १६३६ वर्षे श्रामोज सुदी १२ उपाध्याम श्री नरेन्द्रकीत्ति पठनार्थ ब्रह्मदेवदासन ।

७२७. पंचास्तिकाय-झा० कुन्दकुन्द । पत्रस० २५ । झा० ६ × ४ इख । भाषा— प्राकृत । विषय---मिद्रात । २०काल × । लेक्काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १५ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मदिर, वैर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

७२८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १६ । ग्रा० १०२ 🗶 ६ इचा । ले०काल सं० १६०६। बेबुन सं० ५०/१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष---प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है।

७२६. पंचास्तिकाय-कुंबकुंबाबायं। पत्रसं० १४२। प्रा० ११३ x ४३ दवा। भाषा— प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०कास x । लेकाल स०१७१८ वंत्र सुदी ११ । पूर्ण । बेहन सं० १३४४। प्राप्तिस्थान—भट्टारकीय वि० जैन मदिर स्रजभेर ।

विशेष-प्रति धमृतचन्द्राचार्यकृत संस्कृत टीका एव पाण्डे हेमराज कृत हिन्दी टीका सहित है।

श्री रूपचन्द गुरू के प्रसाद थी। पाण्डे श्री हेमराज ने घपनी बुद्धि माफिक लिखित कीना। जे बहुश्रुत हैं ते सवारिक पढियो ।।६।। इति पचारितकाय ग्रय समाप्त । संबद् १७१८ वर्षे चैत सुदी ११ दीतवार रामपुर मध्ये पचारितकाय ग्रंथ स्वहस्तेन लिपी कृता पाण्डे सेमेन इदं धारमपठनाथे।

७३०. प्रति सं० २। पत्रस० ७६। घा० १२× ४ इता। से काल स० १४१३। पूर्ण । बेष्टन-सं० १७५ २४१ प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मदिर सभवनाय उदयपुर ।

विशेष--प्रति सस्कृत टीका सहित है । प्रशस्त--संवत्सरेस्मिन १४१३ वर्षे ग्राश्विन बुदि ७ शुक्रवासरे श्री ग्रादिनाय चैत्यालये मलसथे '....' इससे ग्रागे का पत्र नहीं है ।

७३१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३० । ग्रा० १०२ ४ ४ । स्व । ने०काल — × । पूर्ण । बेष्टन स० १८ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बुदी ।

७३२. पञ्चास्तिकाय टीका-टीकाकार-ग्रम्तचन्द्राचार्य। पत्रस०१० । मा०११३  $\times$  ५३ । भाषा—प्राहत-सरहत । विषय—सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ले०काल म०१५७३ माघ सुदी १३ । वेष्ट्रन स०२० औन मंदिर लक्कर जयपुर ।

७३३. प्रति स०२। पत्रस०११४। ले॰काल – स०१७४७ माघ बुरी १। वेग्टन स०२६ प्रास्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर।

विशेष — महात्मा विद्याविनोद ने फागी में लिखा था ।

७३४ प्रति सं०३ । पत्रस० ४६ । लेक्सल स०१४७७ प्रासोज बुदी ६ । षपूर्ण । वेष्टन स०२२३।प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानकी कामा ।

विशेष-- प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

सवत् १४७७ वर्षे प्राण्विन बुदि ६ बुधवारे लिखिन **तिजारास्थाने प**रन्तावतसान राज्यप्रवर्त्तराने श्रीकाष्टासचे माषुरात्वये पुण्करगर्ए। महारक श्रीहेसचन्द्र तदानगांथे प्रगरवातात्त्वये मीतन योगे सार महादास तत्पुत्र सारु योगाल तेनेद पर्चास्तिकाय पुस्तक लिखाच्य पश्चित श्री साधारस्याय पठनार्थं दन ।

७३४. प्रतिसं०४ । पत्रस०७७ । ले∙काल स० १६१४ कागुण मुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन– सं• १६६ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-राजपाटिकाया लिखिनोय ग्रथः

**७३६. प्रतिसं० ४.। पत्रसः० १**३७ । झा० १३ ४. ४. इ.च्च । से०कालः सवत् १६३२ भादवा ब्रुदी ४.। पूर्णे । बेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष — कुम्जागलदेश सुवर्गपथ सुभस्थान योगिनीपुर मे ग्रकवर बादशाह के शासनकाल में ग्रथवास जातीय गोयल गोत्रीय साह चांदर्गु तथा पुत्र ग्रजराजु ने प्रतिलिपि कराई। लिखितं पाण्डे बङ्ग हरिचंद पुत्र । प्रशस्ति विस्तृत है। पत्र जुड़े काट गये है।

७३७. पंचास्तिकाय टीका-स्रमृतचन्द्र । पश्चल ४१। प्रा० १० $\frac{1}{5}$  ×  $\frac{1}{5}$  इव । आषा— संस्कृत । विषय— मिदान्त । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१२ । प्राप्ति स्थान— भटारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२८. पचारितकाय टीका— × । पत्रस० ४७ । गा० १० × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । ले०काल स०१७४८ कार्तिक बुदी ७ पूर्ण । वेष्ट्रन स०२०१। प्राप्ति स्थान- दि० जैन प्रप्रवान मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रशस्ति निस्त अकार है---

सबत् १७४८ वर्षे कार्तिकसामे कृष्णपक्षे ससम्यानियौ क्रतिचागरे श्री विजय गर्चक्षे श्री मट्टारक श्रीसुमतिसागरसूरि तत् शिष्य सनि वीरचर लिपीकत श्रीसकबराबादसध्ये ।

७३६. पंचास्तिकाय टब्बा टीका $-\times$ । पत्र स० २०। म्रा०१०  $\times$  ६ इष्ट्य । म्राया-प्रा॰ हिन्दी । विषय-म्रध्यारम । र०कारः $-\times$ । ले०कान $-\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० २०३-६४ । प्राप्ति - स्थान - म० र० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

७४०. पचास्तिकाय बालावबोध — $\times$  । पत्र स० १३५ । प्रा०  $c_0^2 \times \xi$  इङ्च । भाषा-सम्कृत । हिन्दी । विषय—सिहान्त । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ६०६ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन सन्दिर सत्रमेर ।

७४१. पचास्तिकाय भाषा-हीरानंद । पत्रस० १८६ । ग्रा० ६ $\times$   $Y_{2}^{1}$  इञ्ज । भाषा—हिन्दीपद्य । विषय—सिद्धान्त । २०कास स० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले०कान्—स० १७११ । प्रपूर्ण । वष्ट्रन स० १३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रायनास मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--वीच के कितने ही पत्र नहीं हैं।

७४२. पचास्तिकाय भाषा-पाध्वे हेमराज । पत्र स० १३६ । भाषा-हिन्दी पर्य । विषय— सिद्धान्त । र०काल—४ । ले०काल —स० १८७४ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेठून स० ३०१ । प्राप्ति स्थान—द० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४३. प्रति स०२ । पत्र स०११४ । ले०काल—स०१८४ । पूर्ण । बेष्टन स० ३०४ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

७४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६। ले०काल—१७२७ कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष — निलाइतं साह श्री देवीदास जिलत महात्मा दयालदास महाराजा श्री कर्मीसह जी विजय⊸ राज्ये गढ़ कामावती मध्ये । ७४५. प्रति सं०४। पत्र स०१४६ । ते०काल— 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२२ । प्राप्ति-

७४६. प्रतिसं० ४.। पत्र स०११०। झा०१२ रे ४ ४ ई इचा। ले॰काल—स०१६२६। पूर्ण। वेष्टन स०१२२। प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर, वयाना।

**७४७. प्रतिसं०६ ।** पत्र स०—१३१। घा०११ ⋋ ६ इचा। ले०काल स०१७४६ । पूर्ण । वेष्टन सं०३३७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७४८. प्रतिस० ७। पत्र स०६६ । झा० १२  $\times$  ६ इ.स. । भाषा-िहरी। विषय-सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स०२८/२३ । जैन मन्दिर भादना (राज०)

७४६. प्रति स० ६ पत्र । स० ६७ । घा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ७ $\frac{1}{6}$  इत्त्व । भाषा— हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र०काश्व  $\times$  । ले०काल—स० १६३६ प्राप्तांत्र सुनी २ । पूर्ण । वष्टन स० ४७ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर धनमेर ।

७५०. प्रति स० ६ ।प त्र स० १३६ । प्रा०१ १३ ४३ इ.स. । भाषा-हिन्दी (गया) विषय— सिद्धावनो । र०काल ४ । लेकाल स० १८४१ । पूर्ता । वेष्टन स० २१४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रकाल मन्दिर उदयपुर ।

७४१. प्रति स०१०। पत्र स०११०। म्रा०१० X १३ हवा। भाषा - हिन्दी गद्यः। विषय—सिद्धान्तः। र०कान— X। ले०कान—स०१८०४। पूर्णः। वेष्टुन स०२४०-६४। प्रास्ति स्थान— (२० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गण्युरः।

विशेष-अन्तिम दो पत्रो मे बहा जिनदास कृत शास्त्र पूजा है।

७५२. प्रति स. ११ । पत्र स० ११० । प्रा० १२६ ४ ५१ इ.स. । भाषा— हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— ४ । ले०काल — स० १७४६ पोष सुरी ६ । पूर्ण । वेस्टन स० २४-६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर बडा बोसपथी दौमा ।

७५३, प्रति स०१२ । पत्र स०१६१ । प्रा०—१२८४ इब । भाषा— हिन्दी । विषय—सिद्धान । र०काल— ४ । लेकाल स०१६६२ मात्र सुदी१३ पूर्ण। वेष्टतस०३। प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी मालपुरा(टोक)।

बिशेष--- धनराज गोधा सत रामचद ने टोडा में मालपुरा के लिये प्रतिलिधि करवाई थी।

७५४. पचास्तिकाय भाषा —ब्यजन —पत्र म०६२ । प्रा० ११×४३ दश्व । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय —िमद्वात । र०कास स०१८६२ । ले०काल — < । पूर्ण । वेष्टन म०७३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन प्रयवाल पचायती मन्तिर प्रलवर ।

विशेष - दीवान समरचन्द्र की प्रेरगा से ग्रंथ जिला गया।

७१५ । परिकर्पाष्टक— पत्र म०१० । घा०१० $^2$   $\times$  ६ $^3$  इत्र । भाषा—हिन्दी (गर्छ) । विषय—सिदात । र०काल  $\times$  । लेकाल—  $\times$  । धपूर्ण । बैप्टन स० ११० । प्राप्ति स्थान—हि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-गोम्मटसार की सहिष्ट भादि का वर्णन है।

७४६. पश्चित्रय मुत्त —  $\times$  । पत्र स० ६। म्रा० ७ $\frac{3}{4} \times 3\frac{1}{4}$  इन्त्र । माषा — प्राकृत । विषय — म्रागम । र०काल  $\times$  । ने०काल — स० १६४४ । पूर्ण । वेप्टन स० २८० । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर टबलाना ( व दी ) ।

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवत् १६४४ वर्षे श्रावरण बुदि द्वितीयाया सोमवासरे श्रीवृहनुवस्तरगच्छे श्रृःगारहार श्रीमज्जिनसिहसूरि राजेण्वरात्मां शिष्य कवि लालचन्द पठनार्थं लिखित श्रीलाभपुर महानगरे। इसके मागे श्रीजिनपपसुरि का पाण्वेनाथ स्तवन (सस्कृत) भी लिखा हमा है।

७**५७. प्रतिसं० २ ।** पत्र स १४ । मा० १० 🗴 ४<sup>१</sup>. इश्व । ने०काल— 🗴 । पूर्णावेष्टन स०१६६ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

७५.च. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ⊏ । घा० ११.४४ है इला । ले•काल —सं० १६५४ वैशास सदी ५ । पूर्ण । वेष्टुनस० ६५३ । **१६।प्ति स्थान** — ग० दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

विशेष - इसी मण्डार में इसकी एक प्रति और है।

**७५६. प्रतिसं० ४**। पत्रस० २ से ४। मा० ८३ ४५ इला। ले∙काल — ४। मपूर्ण। वेष्ठनम० २०४। **प्राप्ति स्थान** — टि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष--प्रथम पत्र नहीं है। लिपीइन जती कल्यारोन विजय पन्धे महिमा पुरे मकसुसावादमध्ये। ७६०. प्रतिसंव ४। पत्रसव १६। मा० ११×४० इचा। से•शाल— × । पूर्ण । वेहनड०-१११। प्राप्ति, स्थान— दिव जैन मन्दिर दबलाना।

विशेख - १०वें पत्र मे साधु भनिक्षार एवं २४वें तीर्यंकर दिया हुआ है।

७६१. प्रतिसं**० ५** । पत्रस० ६ । घा०१०३ × ४३ इ.ख । से०कास—स० १५६५ कार्ति**क कुदी** १४ । पूर्ण । वेष्टनम० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बून्दी)

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबन १४६५ वर्षे कार्तिक मुदी १४ सोमवासरे श्रीयोगिनीपुरे । श्रीबरतर गच्छ । श्री उहेम निधान तत्पहे श्री श्रीपाल तत्पहे थी श्री मेरि ऋषि मृति तत् किप्य महासती रूप सुन्दरी तथा गुण मृन्दरी पठिनायें कमेशय निम्नतः । निश्चित विश्वन ।

७६२. पार**क्षो सूत्र**— × । पत्रस०१४। घा०६<sup>‡</sup>,×४ इचा भाषा—प्राकृत । विषय— (चितन)। र०काल— × । **से०**काल— × । **बन्दुर्स**। वेष्टनस०२५६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर मनितन्दन स्वामी दुरी।

विशेष--१४ से बागे पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है।

७६३. प्रज्ञापना सूत्र (उपांग) — × । पत्रस० ४४१ । छा० १०३×४३ इच । आया— प्राकृत । विषय—प्रागम सन्य । र०काल— × । ले०काल — स० १०२२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४−२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टोंक) । विशेष--मलयागिरि सूरि विरचित सस्कृत टीका के धनुसार टब्बा टीका है। प॰ जीवविजय ने गुजराती भाषा टीका की है। टीकाकाल स॰ १७८४।

७६४. प्रश्नमाला — × । पत्रस० २१ । सा० १०१८४१ इन्हा । साधा—हिनी । विषय— चर्चा । र०काल — × । ते०काल — × । पूर्ण । वेष्टनस० १४४४ । प्राप्ति स्थान—स० दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष-सुदृष्टि तरंगिसी भादि भ्रन्थों मे से सम्रह किया गया है।

. **७६५. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० २८ । प्रा० १२ $\frac{3}{7}$ ४६ $\frac{3}{7}$ ६व्य । ले०काल-  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनम० ४६ । प्राप्ति स्थान-६० जैन प्रयवाल मन्दिर फतेहपुर ( सीकर)

. ७६६. प्रश्नमाला वचनिका — ४ । पत्रसञ्चरः । प्रा०१२४ ६ इत्र । भाषा —हिन्दी गद्य । विषय —सिद्धान । २०काल — ४ । लेक्काल —सं०११६७ । पूर्णः । वेष्टन स०३७ । प्राप्ति — स्थान —दि० जैन मदिर नागदी (नेमिनाथ) वृदी ।

**७६७. प्रश्नब्याकरणा सूत्र — ×** । पत्रस० ४१ । भाषा—प्राकृत । विषय-प्रागम । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेशून स० ६३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पदायती मन्दिर भरतपुर ।

**७६⊏. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ६७ । ब्रा० १०५४<sub>१</sub> इश्व । ले∘काल— × । घपूर्ण । वेष्टतस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष---प्रति सम्कृत टब्बा टीका सहित है ।

७७६. प्रस्तव्याकरण् सूत्र वृत्ति—श्रमयदेव गरिए । पत्रस्त ११६ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ४२ व । माया—प्राकृत संस्कृत । विषय—स्मागम । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस्क १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष— श्री सिवयहविहारिया श्रृतिनिष्ठ चारित्रवृक्षामीय प्रक्षिण्येयाामयदेवाण्यपूरिया विवृति कृता प्रश्नव्याकरणागस्य श्रृत भक्तया समासना निवृत्ति कुलनभगून चन्द्रद्रोलारूयपूरि सृश्येन' पडिन गर्गन मुरगावनप्रियेया न गुरावनप्रियेना संशोधना चय ।

७७०. प्रश्नशतक—जिनवल्लभसूरि । पत्रस्व ४७ । साव ११ ४४ इच । भाषा—सङ्घ । विषय—चर्चा। रवकाल ४ । नेवकाल सव १७१४ प्रयाद मुदी २। पूर्ण । बेष्टन मव ३०२ । प्रास्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति - स० १७१४ वर्षे अपाढ मुरी २ ण्कवामरे थी पार्थनाय बन्यालवे थी सरोजपुर नगरे भट्टारक थी जगकीनि देवस्य शिष्य गुणदामेन इद पुस्तक लिखित ।

७७१. प्रश्नोत्तरमाला —  $\times$ । पत्रस॰ १३ । म्रा॰ ११ $\times$ १ $^{\circ}$  दश्व । भाषा- हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल  $\times$  । लेक्काल—म॰ १६१७ । पूर्ण । वेष्टनस॰ ८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन म्रायवाल मन्दिर फतेपुर शब्बावादी मीकर ।

**विशेष**—मुदृष्टितर्राङ्गिशि के ग्राधार पर है।

ः ७७२. प्रति सं० २ । पत्रतः ३६ । प्रा० १०३४१ है इन्छ । लेक्काल — स० १६२४ । पूर्ण । थष्टन सं० ६३ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त संदिर । ७७३. प्रश्नोत्तररत्नमाला ग्रमोधवर्ष १ पत्रसं०२। प्रा०१२४४ इचा। भाषा— संस्कृत । विषय—चर्चा। र०कास ४ । से०कास-स०१७६६। पूर्ण । बेष्टन स०१२०। प्रास्तिस्थान— कि. जैन प्रदिर बोरससी कोटा।

७७४. प्रश्नोक्तरी —  $\times$  । पत्रत० २६ । घा० १० $_{i}^{2} \times V_{i}^{2}$  इन्छ । भाषा — सस्कृत । विषय — सिद्धांत । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन त० २६३-१०५ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, इ गरपूर ।

७७५. **बासरु मार्गरा। बोल ।** पत्रस**े से १ । भाषा—हिन्दी । विषय —मिद्रात ।** र०काल× ले**॰काल × । म**पूर्ण । वेष्टुनस**े** २२१ । **प्रास्ति स्थान —दि० जैन पत्रायती पद्धिर भरतपुर ।** 

७७६. बियालीस ढार्गी— $\times$  । पत्रम० २३ । म्रा० १० $\times$  ७ $^{\circ}$  ह ६९ । भाषा-हिटरी । विषय - सिद्धात चर्चा । रक्काल  $\times$  । पूर्ग् । वेष्ट्रन स० ४४ । प्राप्तिस स्थान - पार्यनाय दि० जैन मन्दिर पार्यनाय, टोडारार्गीसह (टोक)

७७७. **बधतत्व — वेवेन्द्रपूरि ।** पत्रम० ३ । भाषा — प्राप्तुन । विषय — सिद्धान (वय) । रक्तान × । लेक्कान × । पूर्ण । वेष्टुनम ७०६ । प्रास्ति स्थान-—दि० जैन पवायनी मन्दिर भरतपुर ।

७७८. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनस० ७२६ । प्रास्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

७७६. भगवती स्त्र x । पत्रम० ६६० । ब्रा० १०३ 📐 इच्छ । भाषा—प्रकृत । विषय— प्रागम । र०काल x । ले०काल — म० १६१४ कार्तिक सुदी १० । वेष्ट्रन ४० १४१ । प्राप्ति स्थान— दिः जैन मन्दिर नीमनाथ टोडारायमिह (टोक)

७६०. भगवती सूत्र वृक्ति— $\times$  । पत्रम० ३४–५२२ । मा० ११ $\frac{1}{6}$  $\times$ ४ इश्व । भाषा-सम्ब्रुत । विषय — प्रागम । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टत म० ३११ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष--- प्रारम्भ के ३४ तथा ५२२ से ग्रागे पत्र नहीं हैं।

७६**१. भावत्रिभगो—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्रम० २३४ । द्या०१०१ै: ६ इखा । भाषा प्राकृत । विषय - मिद्धात । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स २१६ । प्राप्टिर स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष-प्रति टब्बा टीका सहित है।

७६२. प्रतिसं०२। पत्रम०५१। धा०११ $\times$ ५ इथा। भाषा—प्राकृतः । विषय—निद्धात। au०काल $\times$ । लेक्काल $\times$ । पूर्णं। वेष्टुनस०५१। प्रास्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर दीयानजी कामा।

७६**३. प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ३७ । ले**०**काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन म० ६२ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

**७६४. प्रतिसं०४ ।** पत्रसं १४३ । लेक्काल स० १७२६ । पूर्णं । वेष्टन स = ३ । **प्राप्ति** स्थान — उपरोक्त मन्दिर । ७=५. **भावसप्रह-भृतमुनि ।** पत्रस० १३ । म्रा० ११<sub>२</sub> × ४३ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धानः । र०काल — × । लिपिकाल —स० १७३४ । बेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर ।

े विशेष - श्रवावती कोट में साहश्री विहारीदास ने महात्मा हुगरसी की प्रेरएगा से प्रतिनिधि की थी।

७८६. प्रतिसं० २। पत्रस० ६८। लिपिकाल स०१७८७ माह बुदी ५। बेष्टनसं०१८। प्राप्ति स्थान – उपरोक्त मन्दिर।

विशेष केष्ट्रीण नगर मे दुर्जनकाल के राज्य मे लिला गया था। त्रिभंगीसार भी इसका नाम है। ७८७. प्रतिसं० ३। पत्रस० ४-४१। घा० १२३ ४ ४ इच्छा लिपि कास० स०१६३७ भाषाढ बृदि १२। वेष्टन स०१६। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

७८८. प्रतिसं० ४ । पत्रसः० ४६ । से०काल सं०१७४७ कार्तिक बुदी २। पूर्णः । बेष्टुनसः०—२१६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

**विशेष** —तीन प्रतिया भौर हैं । जिनके वेष्टन स०१००,२०२, १०१≀२०३ एव**१०**२, २०४ है ।

७६०. मार्गसास्वरूप — × । पत्रस० ६१ । घा०१० × ४३ इच । भाषा —प्राकृत सस्कृत । विषय — सिद्धान्त । र०काल — × । वे०काल — × । पूर्स । वेष्टनस०—२४६ । प्राप्ति-स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-सस्कृत टब्बा टीका सहित है।

७६**१. रत्नकोश** - × । पत्रस० १२ । ग्रा० १२ × ४ इ.च । मापा—सम्कन । विषय-सिद्धान्त । २०कान — × । ले०कान × । पूर्ण । बेष्टनस० ४४७ । २८१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन समयनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

प्रारभ --

जयित रराधवलदेव मकलकलकेलिकोविद :
कुशलविचित्रवस्तृविज्ञान रत्नकोषमदाहन ।

७६२. रैयरएससर-**कु वकु दाचार्य ।** पत्रस० ११ । सा०—११ ×४) इन्त्र । भाषा— प्राकृत । विषय —सिदान्त । २०काल- × । ले० काल- × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२४४ । प्रा**स्ति स्वान**— भ० दि० जैन महिर प्रजनेर ।

७६३ प्रतिसं० २ । पत्रसः ११ । ले॰काल 🗴 । सपूर्यः । बेष्टनसं० १३६ । प्राप्ति स्थातः— दि॰ जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७६४. प्रतिसं० ३। पत्रस्व०४-६। प्रा० १० 🗴 ५ इत्यः ले०काल 🗴 । सपूर्णः हेकुदसं० १६६-६। प्राप्ति स्थान— विगम्बर जैन मन्दिर बडा बीसपंत्री होता । ७**६५. प्रतिसं० ४**। पत्रसं० ११। प्रा० १०३ × ४ हुँ इश्वा। ले०काल सं० १८२१ मार्दवा बुदी ७। बेष्टनसं० ८२। प्राप्ति स्थान---दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर।

विशेष—प॰ चोलचद के शिष्य मुलराम ने नैस्सागर तपागच्छी से अयपुर मे आदीश्वर जिनालय के प्रतिचिपि करायी थीं।

७६६. लयु सम्रहणी सूत्र । उत्रस०४ । प्रा०१० 🗙 ४ है इचा माया—प्राकृत । विषय— मानम । र०काल × । ले०काल स०×। पूर्ण । वेष्ट्रन स०४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाला (वृदी)।

विशेष-- शल गायाची के नीचे हिन्दी में टीका है !

७६७. **लघुकेत्रसमासविवरण रानगेलर सूरि ।** पत्रस्क ४१ । घा० १२ ४ ४ इखा। भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । रक्ताल ६ । तेक्काल सक् १४३२ सावण बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टत सक् १४१ । **प्राप्ति स्थान**— दिव गेर मस्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष - प्रति मलयांगरि कृत टीका महित है। कुल २६४ गावाए हैं। प्रयस्ति तिस्न प्रकार है। सबत् १५३२ सबस्मर प्रवत माने श्रावण वदि ६ चम्या जनी अब हे श्रीपत्तनवास्तव्या दीसावाल शानीय मक देवरासेन चिलित। भी नांगरहाक्कें प्रकारतम्ति गृहीता।

७६८ मध्यसार भाषा बचिनका पंटाहरसन्। पत्र स. १८४ । घा०१० ४७ १ १व । माषा — राजस्थानी (ढ़डारी) गद्य । विषय — सिद्धान । र०कान ४ । ने०कान । ४ । पूर्ण । के० न०१४६१ । प्राप्ति स्थान — भा० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७६**६. प्रतिसं० २** । पत्र म०१४ । द्या० १४ x ७ इ.च. । ले०काल x । अपूर्ण । के०स०२१८ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन ब्रग्रकाल मन्दिर, उदयपुर ।

६००. प्रतिसं० ३ । पत्र म० १६६ । घा० १२३ × ४३ इ.ख. । ले० काल × । पूर्ण। वेषन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिरपावनाय चीगान (बंदी) ।

**६०१. प्रति सं०४।** पत्र म०२२७। ले०काल $\times$ । पूर्णं। बेष्टन स०१४६। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन सण्डेलबान प्रवायनी मन्दिर उदयपुर।

द**्रात सं० २।** (पत्र सं० २२७ । ले० काल स०१८७४ सावन बदो २। (पूर्ण । बेष्टन स०७१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

विशेष-- मन्तिम दो पृथ्ठो पर गोम्मटसार पूजा सस्कृत मे भी है।

द्र**०४ प्रति सं०३।** पत्र स०२ ५४ । द्रा०११ ४ द इञ्चाले काल स०१ द६० । पूर्ण। वे**ष्टत इं०** द । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन० मन्दिर तरहपदी दौसा ।

विशेष---नाउनाल तेरापंथी ने प्रतिलिपि कराई थी ।

द्र**०५. विचारसंग्रहरागे वृश्यि** —  $\times$  । पत्रसं०२४ । ग्रा०१० $\frac{3}{4}$   $\times$   $\frac{3}{4}$  इ.स. । प्राचान प्राकृत । विषय — ग्रागम । र० काल सं०१६०० । ले० काल स०१७१२ पूर्ण । वेष्टन सं०४६३  $\times$  । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियान इंगरपुर ।

विशेष -प्रति संस्कृत टब्वा टीका सहित है । टीका काल सं० १६६३ है ।

८०७. विशेषसत्ता त्रिभगी-नैमिचन्द्राचार्य। पत्रसः ४-३७ तकः। प्राः ११र्डे ४४१ द्वाः। भाषा — प्राकृतः। विषय — मिद्धान्तः। र०कालः — × । से०कालः — × । प्रपूर्णः। वेष्ट्रनः सः०१४०। प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मदिर पादिनाय वदीः।

८०८, प्रति स० २ । पत्रस० २० । तेश्काल स० १६०६ ज्येष्ट बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० / १२४ प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

विशेष--श्री मूलसथे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वयं भ० गुभचन्ददेवा त० म० जिनचंद्र देवा त. भ सिद्धकीत्ति त. म. श्री धर्मकीत्ति तदान्ताये वाई महासिरि ने लिलवाया था ।

प्रवर्शक स्वास्ताको टीका-त्रिमस्ला। पत्रसः १०। प्राः १२ ४ ४ ६०च । भाषा स्सर्वः । विषय—सिद्धातः । र०कालः ४ । ले०कालं म० १६६४ ज्येष्ठ बुदी ७। पूर्णः । बेष्टनं स० ६८ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर दबनानाः ।

विशेष— प० रत्नसौभाग्येन चिनदेदेन्द्रविमल बाचनार्थ सदा १८६४ वर्षे ज्येग्ठ कृष्णा ७ गुरुषमे महाराजा जी शिवदानसिंह जी विजयराज्ये ।

ष्ट**्र स्लोकवार्तिक—विद्यानंदि ।** पत्र म० ३१६ । या० ११र्ट्रे ४ ४८्टे इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय —सिद्धान्त । ४० काल ४ । ले०काल स० १७२० । पूर्ण । वेष्ट्रत स० १४० ७ । दि० जैन पाक्षेत्राय मन्दिर इन्दरगढ़ ।

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबन् १७२० वर्षे कार्तिकसासे कृत्यापक्षे पबच्या रिवरिन श्री मृतसक्षी सरस्वतीगच्छे बनात्कार गरी मुद्रास्क श्री सकलकीति तत्यट्टे मुद्रास्क-कोहिम्कदायस्त्रमान स्ट्रास्क श्री १ रानसन्द्र तत्किष्य पिडत कृत्रमा निम्नित वृदी नगरे प्रक्रिनस्त चैत्यालय तत्वार्थ टीका समाप्त ।

६**११. इलोकवार्तिकार्लकार** । पत्र स० ७ । या० १२ **४** ४ इच । **भाषा**—सम्हत । विषय— सिद्धात । र०कारा ४ । ते०काल ४ । यपूर्ण । वेष्ट्रत स० १७६/२१० । **प्राप्ति स्थात –** दि० जैन मन्दिर सभवनाय *उदस्प*र ।

- १२२. सत्तात्रिभगी - **मा० नेमिचन्द्र** । पत्र स०४०। मा०१०४६ इचाः भाषा - प्राकृत हिन्दी। २०काल ४ । ले•काल स०१९७० पूर्ता। वेष्टन सं०४३५-१६४। **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन सदिर कोटडियो का हुगरपुर।

विशेष -हिन्दी गद्य में प्रवं दिया हुआ है। मार्गणाओं के चित्र भी दिये हुये हैं।

- द **१३. सत्तास्वरूप** × । पत्र स० ४३ । प्रा० १३ ×७ इखा । भाषा हिन्दी पद्या । विषय-सिद्धांत । र०काल × । वे•काल स० १६३३ कार्तिक मुदी ४ पूर्णे । वेष्टन स० १०४ । **प्रास्ति स्थान** — कि**ं** अने प्रधाल पत्राधती मेलिंग प्रानवर ।
- **६१४. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० १६ । प्रा० ६ $\frac{1}{4}$   $\times$  ६ $\frac{1}{4}$  हक्ष । ले•काल  $\times$  । श्रपूर्ण । बेष्टन स० १९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (गज०) ।
- **६१४. सप्ततिका**  $\times$  । पत्र स० २०-३६ । आ० ११ $\times$ ४ $\S$  इस्त्र । भाषा—पस्कृत । विषय— सिद्धात । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन म० २२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मृदिर उदयपुर । इति क्यंप्रत्य पटक सुत्र समाप्त ।
- क**१६. सप्तपदार्थ वृत्ति**  $\times$  । पत्र त० २६ । म्रा० ११३  $\times$  ४ $\}$  ३-ख । भाषा-सन्हत । विषय-तिद्धात । र०काल —  $\times$  । केकाल स० १४४१ धामोज बुदी ११ । वेष्ट्न स० १४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नक्कर, जयपुर ।

विशेष---रत्नशेलर ने स्वय के पठनार्थ लिखी थी।

**८१७. सस्तपदार्थी टीका—भावित्योश्वर** । पत्र स०३७ । प्राठ १२×१३ इन्छ । भाषा - सस्कृत । विषय—सिदान । २०कार— । ते**०काल** > । पूर्ण । श्रष्टन स०२०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर प्रप्रवान उदयपुर ।

विशेष--- र्रात भावविद्ये श्वर रचिता चमरकार ' " नाम सप्तपदार्थी टीका ।

**६१६. समयमूबरा—ःग्द्रनदि ।** पत्र म० ३ । स्रा० १३ ४४ ६% । भाषा — मस्कृत । विषय – मिद्राल । र०काल— र । ले•काल— । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ४६ ४३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपर ।

विशेष -- इति श्री मदिन्द्रनदाचार्यं विरचितो नाम समयभुषगगपरधेय ग्रन्थ ।

६**१६. समवायांग सूत्र ।** पत्र म० ७७ । भाषा —प्राकृत । विषय —सिद्धात । र०काल— ४ । ले∙काल — ४ । क्रपूर्ण । वेटून स० ४६ ४१४ । **प्रास्ति स्थान** —टि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

द२०. **सर्वार्थासिद्धि—पूज्यपार** । पत्रस०—१४० । प्रा०६ x ४ र्द्ध इस्त्र । माषा —सम्कृत । विषय - सिद्धान । र०काल— । ने० वाल स १८३१ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०—द्द । प्राप्ति स्थान- भ० दि० जैन मन्दिर स्रजीन ।

विशेष ग्रजमेर मे भट्टारक श्री त्रिलोकेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

दर**१. प्रतिसं० २।** पत्रसः —- १ से १६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०--११३२ । प्राप्ति स्थान -- उपरोक्तः सन्दर ।

६२२. प्रतिसं० ३ । पत्रस॰— ४ से १०४ । ब्रा० ११ $\frac{1}{6}$  $\times$ ४ $\frac{1}{6}$  इश्वः । ले०काल  $\times$  ।  $\frac{1}{6}$  $\frac$ 

६२३. **प्रतिसं० ४ । पत्र**स०—-११२ । ले० काल सं० १७४५ घ्राषाढ सुदी १५ । पूर्ण । बेष्टन सं०—-१७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

द२४. प्रति सं० ६ । पत्रसं०—१६६ । ग्रा० ११ ८५ १ । ले० काल —स० १७७६ प्रामोज मुदी ⊂ । पूर्ण । बेष्टन स०—३० । प्राप्तिः स्थानः – दि० जैन पचायनी मन्दिर वयाना ।

विशेष —हिण्डोन में प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

**८२६. प्रतिसं० ७ ।** 'पतस० —२१६ । द्वा०  $= \frac{1}{2} \times \xi_{+}^{2}$  । ते० काल  $\cdots \times$  । पूर्ण । बेष्टन स०–६६ । **प्रार्ट**ः स्थान —दि० जैत प्रवायती मन्दिर करोती ।

द्भरु७. प्रतिसंक्द । पत्रस० १११ । ग्रा० १०¦४६ हे उच्च । लेक्काल म०---१६८० कार्तिक बदी ११ । पूर्स । बेस्टन स० १८० । प्रा**प्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर पचायती करौली ।

विशेष—नेश्वक प्रशस्ति विस्तत है।

**८२८. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस०—१४४ । आ० १११े ५४ है इश्व । ले० काल∞१६०० पोष सुदी ६ ।पूर्ण । बेष्टन स० ६/१२ **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर सीमारिगयो का करीली ।

**६२६. प्रतिसं० १० ।** पत्रस० ३६-२०७ । लेब्काल म० १३७० पौप बुदी ७ । सपूरा । वेस्टन स० १०१-१० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सम्बाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रत्येक पत्र मे १० पक्ति एव प्रति पक्ति मे ३१ - ३४ ग्रक्षर है।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है -- मवन १३०० पीय बुदी १० गृज्वासरे शी गोगिनीपुरियनन साधु श्री नारामण् मृत भीम भृत श्रावक देवघरेण स्वपठनार्ध तत्त्वार्थयूनि पुस्तक निष्पापित । निस्ति गोडास्थ्य कायस्थ पर गथ्ये पृत्र बाहडदेवेन ।

निष्पदीत्रतः चिलचडिवहगाः, पचाप्यक्षकृत्यानकाः।

्यानश्वरासमस्त्रकित्वियविषाः शास्त्रा वृथे पारमा ः

हेलोन्मुलितकम्मेकदनिचया काम्ण्य पृण्याणया ।

योगीन्त्रा भयभीमईन्यदलना कुर्वन्तु वो मगल 🕡

लेखक पाठयो शुभ भवतु । इसके पश्चात् दूसरी कलग से निस्न प्रशस्ति ग्रीर दी हुई है

श्रीमूलमये २० श्री मजलकीनिदेवारनस्पटने श्रीभृवनकीशिदवा नश्री श्री गौजनश्री पठनाथ जुभ भवनु।

**८२०. प्रतिसं० १९ ।** पत्रस० १७० । प्रा० १०∱्र, ठश्च । लेक्कात । पूर्गाः वण्न स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर वर्षेरवालो का नैनका ।

विशेष---स० १६६३ प्रासीज मुदी ४ कोटडिया का मन्दिर भे ग्रन्थ अटाया ।

द**२१. सर्वार्धसिद्धि भाषा- पं० जयचन्द्र ।** पत्रन० २१६ । ग्रा० १६ - ४ ४७ । भाषा -राजस्थानी (द्वृद्वारी) गर्ख । विषय — सिद्धान । २०कार म० १६६१ चैत्र मुदी ४ । लेकाल सम्या १६६**६** माघ बुदी १२ । पूर्ण । वस्टन म० ११६६ (क) । **प्रास्तिस्थान**~ भ० दि० जैन सन्दिर ग्रजमंग ।

**ददे२ प्रतिसं∘ २** । पत्र स० २६४ । त० काल स० १८६० । पूर्ण । त० स० ५३**४ ।** 

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष नार्नामह वडजात्या ने निववायी थी।

**६३३. प्रतिसं∘ ३** । पत्र सख्या—३१३ । लेखन नाल म० १५७३ । पूर्ण । वेप्टन स० ४३४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायनी मन्दिर भग्नपुर ।

विशेष-जोधराज कामलीवाल कामावाले ने लिख गया था ।

**६३४. प्रति सं. ४** । पत्र स<sub>.</sub> २४३ । ले०काल — 🗙 ; पूर्णा। व०स० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**— जपरोक्त सन्दिर ।

**६३५. प्रति सं. ५** १पत्र ग० ४७२ । ते० काल ४० १८७४ नावण बुदी १२ । पूर्ण । वे **म०**— ६१ । **प्राप्ति स्थान** —१६० जैन प्रव्रवाल पत्रायती महिदर प्रानवर ।

६३६. सारसमुच्चय-कुश्रमद्राचार्य। पत्र स०१८। सःगाः-चस्त्राः। विषय<math>-सिद्धात। रुकाल $-\times$ । ते० काल स०१२०० वैद्याल सुदी १३। पूर्ण। वे० स० २४०। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायनी मन्दिर अस्तपुर।

मदे**७. सिद्धांतसार - जिनचन्द्राचार्य ।** पत्रस०० । ४९० १८५ ४ इखा । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल ∠ालेकाल स० १५२४ आसीज मुदी ११ । पूर्णा । वेष्टृतस०११ । **प्रास्ति** स्थान —दि० जैन मस्टि ग्रजनेरा।

विशेष-- साभर मे प्रतिनिधि हुई थी। नेखक प्रशस्ति अपूर्ण है।

**६३६. प्रतिसं० २** । पत्रम०६ । ब्रा०६ ४ ३<sup>5</sup> इञ्च । **से०श्वल स०१**४२४ आगोज सुदी ११ । पूर्ण । बेटन स०४१० । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त सदिर ।

विशेष - केवल प्रशस्ति धपूर्ग है।

**८३६. प्रति स** ३ । पत्र स० ७ । श्रा० १०,४४ } डल्ड । ले० काल स० १४२४, । पूर्णा । वे० स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान —** उपरोक्त सन्दिर ।

विशेष- प्रजन्ति किन प्रकार है—स०१४२५ वर्षे श्रावस सुदी१३ श्री मूलसमे भ० श्री जिन चन्द्रदेवा कीरते जिल्लायित ।

मर्थ**ः प्रति सo ४** । पत्र सo १२ । ब्राo  $= \frac{3}{2}$  X  $= \frac{3}{2}$  इस्त । लेसन काल सo १४२४ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । तरु १० १० १० १३१ । **प्राप्ति स्थान** —िद् o जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष कामी ग्राम प्रतिनिधि हुई थी।

क्ष ४१. प्रति सं. ५. । पत्र स०६ । छात् ११ x ४६ इ.च. । ले० काल x । पूर्णा । वे० स०१७ । प्राप्ति स्थान ि कि जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष कही कही सस्कृत में टिप्पणी भी हैं।

मध्य. सिद्धान्तसार दोषक—भे० सकलकर्ति । पत्रस० १२४ । श्रा० ११ ⋋े्४ इत्य । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल ४ । ने०काल स० १८१४ चैत सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टुनसं०—१०२३ । प्राप्ति स्थान— भे० दि० जैन मन्दिर, श्रजमेर । ६४३. प्रति स $\circ$  २। पत्रस $\circ$  ११। से॰काल imes। पूर्ण। वेस्टन स $\circ$  ११८४। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त पन्टिए।

६४४. प्रति स $\circ$  ३ । पत्र स $\circ$ — १२ $\sim$ १४१ । प्रा $\circ$  १ $\circ$ १  $\times$ ४१ इखा। ले $\circ$ काल —  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स $\circ$  ६४६ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

द्र**४५. प्रति स**० ४ । पत्रसं∘---१६० । ग्रा० ६ ४ ६ इन्द्राः। ले०काल स० १८४८ ग्रापाढ मुदी १३ । ग्रपूर्णः । बेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिरः ।

विशेष---प्रारम्भ के ८१ पत्र वेष्ट्रन स० २२१ मे है।

**८४६. प्रति स०५।** पत्रस०—१-४५,१६६। ले∘काल—१८२३ माघ बदी ११। धपूर्गा। बेष्टुत स०२५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भन्तपुर।

विशेष--भरतपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

द्ध**४७. प्रति स०६ । पत्र**स०—- ४२ से १४७ । ले० काल - × । ब्रपूर्ण । बेठून म००-१४ । प्राप्ति स्थान--- उपरोक्त मन्दिर ।

**८४८. प्रति स० ७** । पत्र स०—२३१ । ले० काल स० १७६० आसोज मुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-जिहानाबाद मे प्रतिनिधि हुई थी।

द४६. प्रति स० ६ । पत्र म० १६० । ले० काल --- र । अपूर्ण । वेहन ग० ४० । प्राप्ति स्थान—दि० तैन मन्दिर वैर ।

**६५०. प्रति स० ६ ।** पत्र स० १२६ । ले० काल—११५७ कार्तिक मुद्री ३ । प्रागं ४ वेष्ट्रन स० -६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फनेह्मुर शेखावाटी (नीकर) ।

विशेष—ा० जीवतराम ने फतेहपुर में रामगोपाल बाह्यांग मौजपुर वाले में प्रांतीनिप कराई थी ।

६८१ प्रतिसं० १० । पत्र म०६२ । ले० कात्र म०१,०२६ चैत वृक्षी ३ । स्रमूर्ण । येष्ट्रन स०३४६ । प्रास्तिस्थान — दि० जैन प्रवनाण मन्दिर उदयपुर ।

द्ध**५२. प्रतिसं० ११ ।** पत्र स० ३–१६४ । आा० १०.८४} छला । ले० कण्य – × । प्रपूर्गा । वेष्टुन स० १४ **। प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

**६५३. प्रतिस्०१२।** पत्र स०२५७। ले०कात स०१६४८। पर्गा। बेहुन स०४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल् ।

विशेष--- प्रशेक स ५५००।

प्रशस्ति निस्न प्रकार है-मिन पांच सुदी ह नौसी शुक्रवासरे लिपिक्रन स्नालायं विजय

चि॰ सदामुख चीवे माचन्द्र को बोर्ट लुणाला मिर्नि गीय सुदी हे सम्बन् १६४२ का नरस्याम नगर हाडा राज्ये माशनकात्री श्री उत्तरस्थापत्री राज्ये एकचार भागता गोत्रे राज्य बातिसम्बच तो गदिनकी श्रीलाल की नानात्री तन् माशेल गोर्व साहकी श्री हीरानन्दकी त्र पृत्र साहकी श्री धर्ममृति कृत उधारणीक लुक्यालवस्त्र की भायाँ कनुस्भवन्दे तत्र पुत्र शाहकी श्री धर्ममृति कृत उधारणीक साह श्राहुरामजी भावां खालादे माई चट्टा शास्त्र घटापित । शास्त्र को रोस्ह तृष्य श्रयं । **८५४. प्रतिसं० १३।** पत्र स० १६६। ले० काल स० १७६४ सावन सुदी ७। पूर्गं। वेष्ट्रन स० १४०। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मस्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बूदी।

विशेष - सवाई माघोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**८५५. प्रति सं० १४ ।** पत्र स० ३४६ । स्रा० १० $\frac{1}{2} \times 4^{\frac{3}{2}}$  । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्खनाथ चौगान सूदी ।

**८५६. प्रतिसं० १४ ।** पत्र स० २-२२६ । झा० १३ ⋌ ५ इखा । ने० काल —१७५४ मगसिर मुदी ४ । झपूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--प्रथम पत्र नहीं है। धर्मपुरी में प्रतिलिपि हुई थी।

**८५७. प्रति स०१६ ।** पत्र स०१४०। प्रा०१३ ∖, ५२ँ। ने० काल म०१६१६ । पूर्ण। वेशक स०६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेरहपथी नैगावा।

विशेष---म०१८० ६ में चन्दालाल बैद न चढाया था।

**८५८. प्रति स १७ ।** पत्र स० २०१ । ब्रा०११ २ ६ दश्च । श्रे० काल स०१८८५ सावन सूदी २ पूर्ण वेपन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर यवलाला **बु**दी ।

विशेष — श्री भाष्यविमनजी तत् शिष्य प० मोनीविमलजी तत् शिष्य प० देवेन्द्रविमनजी तत् । श्रिय मुख्यमिनेन निर्मिकत् ।

**८५६. प्रति सं०१८ ।** पत्र म०११३ । प्रा०१० √ ६६ च । ले० काल — ⋌ । पूर्ण् । वेष्ठन म०५० । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन पाण्येनाळ मन्दिर चेबलला (वृद्धः) ।

्र६०. सिद्धांत सारदीपक — नथमल बिलाला । पत्र म०३७८ । घा०१० ४ ६१ इथा। भाषा- जिस्सी (पत्र) । विषय — मिद्धान । र०कास म०१८२४ माह मुदी '८। ले० काल म०१८६४ कार्तिक मुदी ११। पूर्ण । येकन म०१६०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, श्रवमेर ।

द्र**१. प्रति सं०२ ।** पत्र सं०२४६ । ले० काल — ∞ । पूर्यो । वेष्टन सं०४६६ । **प्राप्ति** स्थान - दि० जैन पत्रायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष -- २०१ तथा २०२ का पत्र नहीं है।

द्रद्र, प्रति स०३ । पत्र म०००६ । लेक्काल — । पूर्ण । बेष्टन म०५६४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन प्रभावती मन्दिर भन्तपुर ।

६६३. प्रतिसं० ४ । पत्र म० २६६ । ले० काल म० १.७७ । फायुण मुदी ३ । पूर्मा । बेप्टन स० २१७ । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जोधरात्र कामलीबाल के पुत्र उमरार्वामह व पात्र लालजीमल वामी कामा ने लिखबायाचा।

द्ध ४. प्रति सं० ५ १ पत्र म०१५६ । ले० काल — ८ । पूर्ण । वेष्टन म०५० । प्रास्ति स्थान — दि० जैन प्लायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

द्धप्र, प्रतिसं**०६।** पत्र स०६। ने० काल स०१६५६। पूर्ण। वेष्टन स०३। प्राप्ति

स्थान - दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

स्६६. प्रति सं०७ । पत्र म० २०६ । ले० कात्र म० १६२५ वैद्याख मुदी ५ । पूर्ण । बेहन म० ४ । प्राप्ति स्थान --दिर्जन पचायती मन्दिर बयाला !

विशेष— प्रतियो के मिले हुए पत्र है। प्रथम पाति के २६६ तक तथादूसरी प्रतिके २६६ से ३०६ तक है।

**६६७. प्रतिसं० ६ ।** पत्रम० २३७ । ग्रा० १ ४ दश्व । **ले०काल** म०१६२१ चैत मुदी ६ । पूर्या । बेब्रन स०५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रार ः शस्त्रिर बयाना ।

विशेष - स०१६३२ में इस ग्रन्थ को मंदिर १ ५% चढाया गया था।

**८६८. प्रति सं०६ ।** पत्रम० २११ । आ.० १ - ७' इन्खा। लेक्काल म० १८३४ । पूर्णा। बेष्टन स०६४ । **प्राप्ति स्थान -** दि० जैन छोटा मदिर बताना ।

**८६८. प्रति सं० १० ।** पत्र स० १३१ । प्रा० १२ - ६ है द्वा । से०काल । पूर्ण । बेयून स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायनी महिर करोली ।

**८७०. प्रति स० ११ ।** पत्र स० २२३ । प्रा० १३ $\times$ ४६ इ.स. । ते**०काल** स० १६६८ चैत्र मुरी १४ । पूर्ण । वेब्रन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाय स्वामी मानपुरा (टाफ) ।

**८७१. प्रति सं० १२।** पत्र स० २२५। ग्रा० ११ ८५ इ.ख.। लेक्सल स० १८८८ चैत्र बुर्दा १३। पूर्ण। बेष्टन स० ३२। **प्राप्ति स्थान**— दि० दैन मन्दिर चौथरियो का मालपुरा (टोक)

**८७२. प्रति स० १३।** पत्र म० १४३। खा० ११ $\frac{3}{7} \times \mathbb{Q}^3$  दश्च । ले०काल म० १८८४ - भावश सुदी १। पूर्ण । बेपून म० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जेन मदिर पत्रायर्ता राजमहल (टाक)

विशेष--- महात्मा स्यभूराम ने जयपूर मे प्रतिनिधि की ।

द्ध**३. प्रति सं० १४ ।** पत्र म० २११ । प्रा० ११ ४६ है डखा । मे०काल म० १८८३ । पूर्णा वेष्ट्रन म० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

मध्ये. प्रति स १५। पत्र स०१७६। ग्रा०१२९८४ है इश्वः। ने०काल स०१०७५ कागुन बुदी ३। पूर्णं (बेष्टन स०१२२। प्रास्ति स्थास—वि० जैन मदिर महाबोर स्वासी बृदी।

मध्यः प्रति संव १६। पत्र स० २७२। प्राच्य १२  $\times$ ६ इन्छ । लेकाल स० १८७० काती सुदी १३। एगी । वेपून स० १०५-११। प्राप्ति स्थान —िद० जैन पार्वनाय प्रदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेच-इन्दरगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

द्ध**६. प्रति सं० १७ ।** पत्र स० १२१ । घा० ११ ४ ४ इखा । लेक्काल स० १८६८ । पूर्ण । बेटन स० ११६-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर बोटडियान *द्व गरपुर* ।

८७७. प्रति सं०१८ । पत्र स०२३१ । ग्रा०११४७ इचा । लेकाल ४ । पूर्ण । बेष्टुन स० प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर बीसपथी दीसा ।

म**्म. प्रतिसं० १६ ।** पत्र स०१८० । ब्रा०११४७३ इखा । लेक्काल स०१८६४ ग्रामोज बुदी ४ । पूर्णे । वेष्टन स०१०६-३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपवी दोसा । विशेष-श्री गौरीबाई ने पन्नालाल चुन्नीलाल साह से प्रतिलिपि क्रवाई थी ।

ष्ट**७. प्रतिसं०२०।** पत्र म०२०६। घा०११ ≾ ७ है इश्व**। ले∘काल** म०१८५६। पूर्ण। वेष्टुनम०१२/१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मर्दिर, भादवा।

**६६०. प्रतिसं० २१ ।** पत्र स० १७७ । स्रा० १३ × ६ इश्व । ले**०का**ल ८ । पूर्ण । बेहन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी नेमिनायजी बुदी ∔

द्रदर्शः सिद्धांतसागरप्रदीप १ । पत्रम० १२६ । आ० १२८६ इ.च. । आपा—सस्कृत । विषय - सिद्धात । रक्काल ८ लेक्काल - म० १८७१ । पूर्ण । वेपुत स० १२८-५६ । प्रास्ति स्थान --विरुक्ति सदिर कीर्रोडियान इ.गरपुर ।

**८६२. सिद्धांतसार सग्रह— नरेन्द्रसेन ।** पत्रम० २६७ । ग्रा० ११,८७ इ.च. । आपा—सम्क्रन हिन्दी । विषय - निद्धांत । २०काल २ । ले**०का**ल म० १६३३ । पूर्गो । वेष्ट्रन क्रं० ११४ । **प्राप्ति स्थान** -दिक क्रेन महिरुर नेमिनाथ टोडारायाँच्य (टोक)

खिशेख प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

**६६३. प्रतिसं० २** । पत्रम० ७६ । खा० १० ४१ तथा । ते**०काल** म० १६२२ श्रायम सुदी ७ । पूर्ण । बेपून स० १०२० । **प्राप्ति स्थान**—स० दि० जैन सन्दिर अवसेर ।

विशेष - महारोठ नगर म राठोड वर्णाधपनि महाराजाधियात सहाराजा थी विजयोगहर्जा के शासनकाल में संज्ञातकर पाक्य, न प्रतिनिधि की थी।

६६**४. प्रतिसं०३ ।** पत्रस०१०२ । आ०१२ - ६३२व **। ले०**काच स०१००६ आसीज बुदी ७ । पूर्णा । अपूर स०१२ । **प्राप्तिस्थानं** — दि० जैन महिर दीवानजी काम**ः ।** 

विशेष - जिल्लानाबाद में प्रतिनिधि हुई थी।

सद्भः प्रति स० ४ । पत्रम० ४ । म्रा० १०३ - ८३ । १० काल 💢 । लेक्सल — । बेप्रुत स० १९३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर, वयपुर ।

सद्धः सूत्र प्राकृतः कुवकुदाचायं । यत्र ग०६। आ०१२है, ५६८७। भाषा—प्राकृतः। विषयः - प्राप्तामः । ४० कामः । लेककानः । पूर्णः । वेष्ट्रनः सः १०**। प्राप्तिस्थान**—दि० जैन महिर दीवानजी कामाः ।

द⇔. **सूत्र सिद्धांत चौषर्ड** । पत्र स०१० । आयाः—हिन्दा पद्यः। विषयः—सिद्धान्त । २०कास ः । ला० कालः— । पूर्णा । बेप्रुत स०४०२ । **प्राप्ति स्थान**ः—दि० जैन सन्दिर कोटडियो काइ सम्पर

द्रदर्शः संग्रहस्सी सूत्र— र । पत्र सर्व ६१। ग्राव १०८४ है दश्व । भाषा-प्राकृत । विषय— प्रायम । १०काल ४ । ले०काल सब्देश्व चेत्र बुदी १। पूर्ण । वेष्ट्रन स०११८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर ददलाला व दी । द्वहरु प्रतिस्रं र २ । पत्र सं०१२ । लेक्काल स०१७७१ । पूर्णा येकस०१७१-४६ । प्रास्तिस्थान--- दि० जैन मार्क्नाप्य मन्दिर, इन्दरगढ ।

विशेष-सवत १७७१ वर्षे माह बुदी = दिने लिपीकृत कौटडामध्ये ।

**८६१. सग्रहरणी सूत्र—मिल्लपेरण सूरि।** पत्र स० १२। भाषा—प्राकृत । विषय —ग्राणम । र•काल ≻ । ले•कान्न स• १६४७ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६-४४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

प्रशस्ति – सवन् १६५७ वर्षे बासौज बुदी १४ दिने शनिवामरे श्री मागलउर नगरे वागारीस श्री नयरग गणि तत्र शिष्य जती तेजा तत् शिष्य जती बासण लिखित ।

**८६२. प्रति सं०२।** पत्र स०२१। म्रा०८×३ै इश्वा। ले०काल म०१६०१ भाववा बुदी ७। पूर्ण। वेष्ट्रन स०२६**। प्राप्ति स्थान**िद० जैन मन्दिर दबलाना।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

सनत् १६०१ वर्षे भाद्रपद बुदी ७ जनौ भट्टारक श्री कमलसेन पठनार्थ लिखित सम्मन श्री बहोडा नगरे।

= **६३. संग्रहरणी सूत्र — वेदमद्र सूरि ।** पत्र म० २६ ।धा०-१०८४ इत्रा । भाषा - प्राधुत । विषय — सिद्धान । र०काल ४ । ले० काल स० १७०७ । ध्रपूर्ण । वे० म० २६६ । ब्रास्ट्रिस्थान - दि० जैन मन्दिर दीवानती कामा ।

विशेष -- संस्कृत मे चूरिए सहित है।

**८६४. सप्रहर्मी सूत्रं** — ४१ पत्र स० ६। धा० १० ४४ दक्षा भाषा पुरानी दिया। विषय—स्प्रापम । रेक्निल ४ । लेक्नाल स० १७०६ । । वेक्स० ६०१ । **प्राप्ति स्थान**—अ पत्रकीय दिक्जन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष — सत्रत् १७०६ वर्षे आपाढ मामे श्रृक्त पक्षे १ दिने मेदवरे श्रीकांतपुरे मनिकीर्ति रिलिबिल्यित ।

**८६५. प्रति सं०२ ।** पत्र म०४४ । ले० काल स०१७१३ कार्तिक बुटी २ । पूर्णा । ४० म० ३१४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मस्दिर दक्लाला (बुल्डी)

**-६६. सग्रहरा। सूत्र भाषा--वर्गासह गरिए।** पत्र म० ४७। प्रा०१०५४/इज। भाषा--प्राकृत हिन्दी। विषय---प्रागम। र०काल ५०। ले० काल म०११४७ मावण मुद्री १४।पुर्ण। वे० स०१६१। **प्राप्ति स्थान**---वि० जैन मन्दिर कामा।

विशेष - वीयाइ सुयपरेसु इमहीलाऊ हु तिपनीउ । सनिम महिपयरे दिमि इक्कतके विदिसनार्ये ॥ ५५

बीया कहना बीबड्र प्रनरह । पनार्ड २ एके कठ उछ्छ करण । सानमइ नरकड् उए।रचान मड् प्रतरह दिसट एकेकठ नरकाबास उछड् । जिदसाइ एकड् नरकाबास उ नहीं ॥८६॥

नायक महारक श्री रत्नसिहरूरि नई शिष्यदई पंडित याहेमगगाङ ए बालावबोध रच्चउ सबमौक्य मागलिवय नक्क समेक हुवु ।

क्र.८७. संघरण सूत्र —  $\times$ 1 पत्र स० १२ । आ० १० $\times$ ६० इन्छ । भाषा — प्राहृत । विषय — प्राप्त । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० २१३ । प्राप्ति रूथान — दि० जैन मस्दिर प्राप्तिनस्वानी कृती ।

----

विशेष--गिए श्री जीव विजयग एए शिष्यिए गत जी विजयेन लिखित मूर्नि जसविजय पठनार्थ ।

## विषय - धर्म एवं आचार शास्त्र

द**्दः ग्रचित्रिंग्य**— > । पत्र स० २४ । प्रा०११३ ५ ४ इंडच । भाषा⊷ हिन्दी। विषय—चर्चा र रुकार्स > । ले० काल स०१६१४ मगसिर सुदी १२ । पूर्णा वेजून स०७१ । **प्राप्ति** स्थान—स०दि० जैन मन्दिर ग्रजसेर ।

विशेष --- श्रेमठशनाका परुषो की चर्चा है।

**८६६ ग्रतिचारवर्गन**—पत्र स० २ । भाषा- हिन्दी । विषय —ग्रावार गान्त्र । र०कान—× । ले०कान— > ।पूर्ण ।वेटन स० ७६६ । प्रा**रित स्थान** -दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरतपुर ।

**६०० ग्रनगारधर्माम्त— प० ग्राशाधर ।** पत्र म० २२–२६०। ग्रा०११ ४ उस्था भाषा—सम्बृत । विषय—ग्राबार शास्त्र । र०काल । ते० काल । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन म० १३६ । प्रा**पित स्थान**—दि० जैन ग्राधवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष — इसका नाम यत्याचार भी है। इसमे मनियम का वणान है प्रति स्वोपश टीका महित है।

**६०१ प्रतिसं० २ ।** पत्र ग० २२४ । ब्रा० १०६१, ४ ट-इ. । ४० कल्यः । सञ्चर्णः । वेष्टन ग० १०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरमर्ला कोटा ।

विशेष -- २२४ में आगे पत्र नहीं है। प्रति स्त्रोपज टीका महिन है।

**६०२ प्रतिस्थपचारात - त्रिभुवनचद्द ।** पत्र संबद्द । प्राव ११ ४ १८-तः। भाषा हिन्दी पद्य । विषय — पर्म । २०काल ४ । लेव काल । पूर्ण । यपून सव ४१ । **प्राप्ति स्थान** — दिव जैन नेस्ट्रपथी मन्दिर दीमा ।

विशेष---म्लकर्लापदनदि है।

**६०३ प्रमितिगति श्रावकाचार भाषा—भागचद** । पत्र न ० १८४ । प्रा० १४६ ६ इक्ष । भाषा—हिर्दा गद्य । विषय प्राचार जास्त्र । १००गल- म० १८१० प्रापाद सर्दा १४ । ले॰ काल- - ४ । पूर्ण । वे० ग० - १४१ । **प्राप्ति स्थान** विकलित महिरू नागरी, बढी ।

**६०४ प्रति स०२।** पत्र स०२०१। प्रा०१२¦ ४ ४, ट्रेप्स । ले० काल म०१(६१ । पौप वदी ११। पूर्ण । बेपून स०१४४ । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मदिर फनल्पुर लगावाटी (सीकर) ।

**६०४. ग्रहेन् प्रवचन**— ४ ।पत्र स०२ ।ग्रा० - १११ ४१ ३७ । भाषा—सस्कृत । विषय —सर्म । र०काल — х । ले०काल х । पूर्ण । देष्ट्र स०२८७ । **प्रास्ति स्थान** — म० दि**० जैन मदिर ग्रन्**मर ।

- ६०६, प्रष्टाह्निका व्याख्यान—हृदयरग ।पत्र स०११ । भाषा —सम्कृत । विषय —यमं । र०काल × । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्ट्रत स०७०७ । प्राप्ति स्थान —दि० और प्रवासनी मदिर भरतपर ।
- ६०७ प्रहिंसाधर्म महात्स्य × । पत्र स० म । ब्रा० ११ × घडका । भाषा सम्ब्रत्। विषय — वर्षा । र०काल × । ले० काल स० १मम् १ प्राणुण सुदी १० । पूर्ण । बेप्टन स०१४६१ । प्राप्ति स्थाल - भ०दि० जेन सदिर क्रजमेर ।
- **६०८ प्राचारसार-वीरनन्वि।** पत्र स० ६१। म्रा० १ : ५ ४ डच्य । भाषा सम्कृत। विषय — म्राचार गण्त । २०काल : ४ । ले० काल स० १६२३ म्रावाट मृदी १। पूर्णी। वेष्ट्र स० ३१६। प्राप्ति स्थास - अ० ठि० तेन मंदिर स्रजमेर ।
- **१०६. प्रति स**०२ । पत्र स० १२६ । आ॰ ११ ९ ८¦ िका । ते० काल स० १४१४ । पूर्ण । बेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सदिर दीवल्की कासा ।

**विशेष**---प॰ हीरानान ने बाबू वेद भास्कर जी <mark>जैन प्रागरा</mark> नियासी द्वारा बाबूनाल हाथरस वालो से प्रतिलिप कराई ।

- ६११. श्राचार्यगुरावर्णन ४ । पत्रस० ३ । भाषा सस्क्र∕ । विषय ब्राचार जास्त्र । २०काल ४ । लेळ्याल ४ । ब्रपूर्ण । वेष्ट्रनस० २० । प्राप्ति स्थान--दि० जैन तेरहपर्या सरिद्रा बसवा ।
- ६१२. म्राराधना प्रतिबोधसार-सकलकीर्ति पत्रस०३ । भाषा हिन्दें। विषय— म्राचार णास्त्र ।र०काल -- × । वे०काल -- × । म्रपूर्ण । वेष्टनस०६१,२४६ । प्राप्तिस्थान-—दि० जैन समबनाथ सन्दिर, उदयपुर ।

विशेष ग्रातिम भाग निम्न प्रकार हे-

जय मरगइ सुगाइ नर नार ते जाइ भवनइ पारि ।

श्री सकलकीर्ति कहि सुविचारि ग्राराघना प्रतिबोधसार ॥

र्टात प्राराधनासार समाप्त । दीक्षित बेग्गीदास लिखित ।

- **६१३. प्रतिसं० २** । पत्रस० ४ । प्रा० ६४५ इश्व । ले०काल— 🗴 । पूर्ण । वे**ष्ट**नस०३३४ । **आदि**ह **स्थान** —दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।
- ६१४. प्राराधनासार—देवसेन । पत्रस० ३-७६ । प्रा० १२ ४ ४ इच भाषा—प्राकृत । विषय—वर्म । र०काल— x । ले०काल— x । स्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३१६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर वोरमनी कोटा ।

विशेष-प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

- **११५.(क) प्रतिसं० २** । पत्रस० ११ । घा० ११ × ५ इश्व । ले०काल— × । घपूर्ण । बेबन सं०१० ३२४ । प्राप्तिस्थान— दि० जैन संमवनाथ मदिर उदयपर ।
- . १९६. घाराधनासार—प्रमितिगति । पत्रसं० २-६६ । घा० १० × ४६ इ.च. । भाषा— सस्कृत । विषय—घाचार जास्त्र । र०काल— × । ले०काल— स० १५३७ श्रावसा बुदी द । घ्रपूरी । वेक्नसं० १४६६ । प्राप्ति स्थान —मडारकीय दि० जैन मन्तिर घ्रजमेर ।
- **६१७. ग्राराधना**  $\times$  । पत्रस $\circ$  ६। प्रा०६  $\times$  ४ इ न । भाषा— हिन्दी। विषय— धर्म। र०काल $-\times$  । प्रे०काल  $\times$  । प्रूगं । वेष्टनस $\circ$  ३३३। प्राप्तिः स्थान— दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।
- **१९८. आराधनासार माथा टीका** × । पत्र स० २१ । आ० १० × ६} इ.च । भाषा प्राह्मन हिन्दी (गद्य)। विषय आवार शास्त्र । र०काल स० १६२१ । ले०काल स० १६५३ आवगा– मुदी १४ । पूर्ण । वेषून स० १६७ ६३. **प्राध्त स्थान** दि० जैन पार्धनाय मदिर इन्दरगह कोटा ।
- ६१६. माराधनासार टीका—  $\times$ । पत्रसंक ३६। मा० ११  $\times$   $4 ^{2}$  इच्च । भावा—सङ्ख । विषय—पर्म । २० काल  $\times$  । ले०काल—स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । प्राप्तिः, स्थान—विक औन महिन्दे रीधानजी कार्य
- ६२०. म्राराधनासार टोका—निवगिंगः । पत्रसः ४०३ । प्राः ११  $\times$  ४५ । मापा—मम्ब्रुतः । विषय म्रापार शास्त्रः । २० कालः  $\times$  । ले०कालः । पूर्णः । वेष्टनमः १५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रयवान मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है। प्रशस्ति पूर्ण नहीं है।

- **६२१. ब्राराधनासार टोका—प० जिनदास गयवाल** । पत्रस०६४ । ब्रा०१००५) २७ । भाषा—िहन्दी (पद्य) । विषय—प्राचार शास्त्र । र०कान स०१⊏३० । ले०कान लग०१⊏८० चैन मुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस०३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (दृदी) ।
- **६२२ प्रतिसं०२ । पत्रस०१०६ । ग्रा०११ ६८%। ले**०काल स०१८३१ जीस्ठ सुदी१ । पूर्यो । **बेष्ट**नस० ३३४ । **प्राप्तिस्थान** - दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा ।

विशेष---भानपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**६२३. ब्राराधनासार भाषा-दुलीचन्द्र।** पत्रम० २४ । माषा —किट्यी । विषय — प्रभी । रचना काल २० वी जनाब्दी । ले०काल — 🔀 । पूर्ण । वष्टन म० ४३६ । **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन पचाबती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- स० १६४० मे भरतपुर मन्दिर में चढाया गया था।

६२४. ग्राराधनासार वर्चानका — प्रशासल चौधरी । पत्रस० २० । ग्रा० १२१ ... ४१ डब्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—ग्राधार जान्त्र । र०काल म० १६२१ मेल बुढी ६ । से०काल × । पूर्ण । बेष्टन स०१६/१६ । प्राप्ति स्थान — ६० जेन मन्दिर भाववा (राज०) । ...  $\xi = \chi$ . प्राराधना पंजिका—देवकोत्ति । पत्र सः १७८ । प्रा॰ १२  $\times$  ५ । भाषा— संस्कृत । विषय—पर्म । र०काल  $\times$  । ले० काल सं०१७८० पीय सुदी १ । वेष्टन सं ७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन म०लक्कर, जयपुर ।

विशेष-- मुरत बन्दरगाह के तट पर बढ़ीदाम ने लिखा था।

**१२६. ब्राराधनासूत्र--सोमसूरि ।** पत्रस**्टा मा० १rac{3}{4}×४rac{1}{4} इन्दा । भाषा—प्राकृत विषय—धर्म । ७० काल imes । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्ट्रनस० १०१६ । <b>प्राप्तिस्थान**—४० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-- लिखत तिलकसूदरगीए।

**६२७. प्रतिसं० २ ।** पत्रसं० १२ । ब्रा० र्ै ×४३ इथा । लेक्काल स० १७४० चैत्र सुदी १ । पूर्णा वेष्ट्रन स० ४४० । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन सन्दिर अजमेर ।

**ष्टिशेष**—६६ गाथाम है। प्रति दुख्या टीका सहित है।

**६२८ प्रतिसं० ३** । पत्रस**० ४** । ग्रा० १० × ४ ग्रैडच्च । लेकाल स० १६४८ । पूर्ण । बेटस स० ७२६ । **प्राप्तिस्थान**----भ० दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

विशेष — २०१६४६ वर्षे वैकाल गुदी १३ शृगुवारे लिखिता मु० हमस्तेन मृथाविका सवीरा पठनार्थ ।

- ६२६. **प्रासादना कोश** ''''' । पत्र स० १४ । आ० १२ ४४ है इ.ख. । भाषा—सस्कृत । विषय योषार शास्त्र । २०काल । ले० काल ⋋ । वे० स० ६३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर अपपुर ।
- **६२०. इक्काबन मूत्र** ः । पत्र म०२८ । याण ६३ ४६३ दश्च । भाषा *ाहिन*री । विषय धर्म । ट०काल म०१७८० चैत्र बुरी हो। ते०काल ६ । पूर्ण । वे० **स०२**३८ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० तैन मन्दिर ध्वनर ।

विशेष-- धर्मका ४१ मूत्रों में बर्गन किया गया है

- **६३१. इन्द्रमहोत्सव** ४ । पत्र स०४ । खा०१० ४ ४ दुःच । भाषा-डिल्टी । विषय— भगवान के जम्मोत्सव पर ५६ कुमारी देविया आदि के आने को वर्गन । र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्गा । वेषुन ग०१०६१ । प्रास्ति, स्थान—भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर खजमर ।
- **६३२. इष्ट छतीसी—बृधजन ।** पत्र स० २ । आ०७<sup>3</sup> ४५३ उखा । भाषा—िहन्दी । विषय—धर्म । र०कान ∴ । ले० काल ∴ । बेष्टन स० ६४८ । **प्राप्ति स्थान**—िद० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।
- **६३३. प्रतिसं० २ ।** पत्र म०२ । घा०१० $\times$ ४२ हुआः । र०कालः । तं०कालः । **प्र**पूर्णः । बेष्टन म०५३ । **प्राप्ति स्थान**—पात्रवंताय दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ, (कोटा)
- **६३४. इच्टोपदेश—तृज्यपात ।** पत्र म० २-२०। ग्रा० १०३<sup>3</sup> ४५३ इखा। भाषा —मस्ट्रत । विषय — धर्म। रज्जाल ≒ालेञ्जाल ≿ा श्रपूर्णा। वेष्टन साध्या मास्ति स्थान - दिञ्जैन प्रवजाल मस्तिर उदयपुर ।

**६३५. प्रतिसं०२।** पत्र स०६। मा०१२ ४७ इ.च.। २०काल ४.। ते०काल ४.। पर्यो। बेपन स०२४–१३४। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दि<sup>०</sup> नैमिनाथ टोडागयभिह (टोक)

विशेष—प॰ तिलोक ने बृत्दी मे प्रतिलिपि की थी। कही २ संस्कृत मे कठिन शब्दों के धर्म भी दिए इस है।

ह३६. उपदेशरत्नमाला—सकलमूचरा। पत्र स०६७। बा०१०, ४१ इ.स.। मावा— सस्कृत । विषय - प्राचार शास्त्र । र० काल स०१६२७ श्रावरा मुदी ६। न० कात्र म०१६३१ सावरा मुदी २। पूर्ण । बेपन स०१२४। प्रास्ति स्थान—महारकीय दि० जैत मन्दिर खबनेर ।

**६३७. प्रतिसं० २।** पत्र स० १४२ । म्रा० ११ - ४ इ.च. । लेक्सल स० १५७४ भादवा गृदी ६ । बेष्टुन स० ५७२ । **प्राप्ति स्थान**—अट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजसर ।

**६३८. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० १४४ । ले० काल म० १६८६ भादवा सुदी २ । पूर्ण । वेष्टुन स० ६८० । **प्राप्ति स्थान**— भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**६३६. प्रतिसं० ४** । पत्र स० १२६ । ग्रा० १०३४४२ उचा । ले०काल स०१४४६ । पूर्यो । बेघन स०२१४ । **प्राप्ति स्थान** — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष---जोबनेर के मन्दिर जयपुर मे प्रतिनिपि हुई थी।

**६४०. प्रतिसं० ५** । पत्र म० १०५ से १७० । द्या० ८६ ५, ४१ इ.स. । ले० काल म० १८४३ । बपूर्सा वेष्ट्र म० ३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दनस्वामी वृदी ।

विशेष---प • जिनदाम के लिये लिखी गई थी।

**६४१. प्रतिसं०६ ।** पत्र स०१२४ । घा०६३ ४६ दश्वः । ले० काल स०१६४४ पीष गुटी १४ । पूर्णा विष्टुत स०१० । **प्राप्ति स्थान**— दिर्जन मन्दिर नागदी वदी ।

विशेष- खडारि मे प० सदामुख ने प्रतिलिपि की थी।

**१४२. प्रति सं० ७ ।** पत्रस० २१६ । घा० २<sup>९</sup> ४८३ इख । ले० काल म० १८२६ ज्यास्त दुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनम० ६६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुन्दी)

विशेष --- विमल ने इन्द्रगढ में शिवसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी।

**१४२ प्रतिसंग्या** पत्रसम्बद्धाः सार्वे १४८ ६ इस्ताः विश्वकाल सर्वे १८८ । पूर्णः । वैष्टुन सर्वे १ **प्राप्ति स्थान** - दिरु जैन सन्दिर कोटडियो का होगरपुरः।

विशेष -- म० १६७१ ब्रासीज मुदी १३ बुधवासरे लिलिन भरनपुर मध्य पोधी ब्राचारज श्रां मकलकीर्तिजी ।

**६४४. प्रति सं०६।** पत्रस० १३६। झा०१०१ै ≾५ इचा ते० काल ∞ा पूर्णा वे**व्तस०** १४३–६५। **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ह्यरपुर।

**६४५. प्रतिसं० १०**। पत्रस० १४४। ग्रा० १०६ै ४४ । ले० काल स० १७४० माह सुर्वा **११**। **बेह**न सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष -- प्रम्बावनी कवंटे नगर में महाराजा रामसिंह के शासन काल में प्रतिलिप हुई थी।

**८४६. प्रतिसं० ११ ।** पत्रस० १०१–१३६ । घा०१४ ४५<sup>3</sup> इ**ल्डा ।** ले० काल स० १७७६ । भपूर्ण । बेष्टनसं० ७२२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष -- हीरापुर मे प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

६४७. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ४२ । आ० १२ ४ ४५ । ले०काल ४ । अपूर्ण । बेष्टन म० ६८८ । प्राप्ति स्थान चिंद० जैन मन्दिर लक्ष्यर जयपुर ।

६४८. उपवेशसिद्धांतरत्नमाला-नेमिचन्द्र भण्डारी । ४त्रय० १३ । प्रा० १० $^{\circ}$  / १ $^{\circ}$  ८० ८० । भाषा—प्राप्त-सन्द्रत । विषय — घर्ग गव प्राचार ग्रास्त्र । र० काल  $\times$  । क्षे०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहुनस० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-गाथायो पर सम्कृत में ग्रर्थ दिया हमा है।

१४६. प्रतिसं०२ । पत्रस०१२ । ले०काल ८ + पूर्णः । वेस्टड स०६० प्रास्ति स्थान — दि० जैन महिर दीवानडी कामा ।

६५० प्रतिसं०३ । पत्रस० १६ । नं० कष्णः । पूर्णः । वेष्टुन ग०६१ । प्राप्ति स्थान— कपरोत्तः सन्दिरः ।

**विशेष** - प्रति सम्कृत टीका सहित है।

**६५१ प्रतिसं०४** । पत्रस०२१ । ले०काल स० 🗴 । पूर्णः । वेष्ट्रनस०६२ । प्रास्तिः स्थान—चपरोक्त सन्दिर ।

विशेष---प्रांत संस्कृत टीका सहित है।

- **६५२ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला न्यास्त्रे लालचन्द्र ।** यदः म०११४ । ब्रा० १४ को ट्रच । भाषा —िरसी यद्य । विषय वसं गृब धाचार । २०कार स०१८२६ । लेक्काल म०१८५२ । पूरण । वेस्टन म०१३१ । **प्राप्ति स्थात**—िद्र० जैन चण्डेनवाल पचायती मन्दिर, ब्रलवर ।

विशेष - प्रतिजीमां है। मूल गाथाओं के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया है।

**१५४. प्रतिसं० २** । पत्रस० २०। प्रा० १० १ ४ १७०च । लेक्काल स० १६०३ । पर्यो । केक्नस० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष - प्रणस्ति निम्न प्रकार है—

ाध्यो।। मः १८६३ वर्षे कानिक सुदि ७ भौसदिन (मागरा नगरमध्ये निलायिन ऋषि टोहर । पटनाथं मुखावक श्रीमाल गोत्र पारमान मुखावक मानसिह तत्पुत्र श्रावक महासिह तस्य भारी मुखाविका पुष्य प्रमाविका देवगुरुभक्तिकारिका श्राविका रसा पटनार्थ ।

६५५. उपवेशसिद्धांतरत्नमाला— भागचन्द । पत्र स०२६ । या०१०१ व्यवस्था । भाषा—हिन्दी (गदा) । विषय—वर्ष । र०काल स०१६१२ आयाठ बुदी २ । ले०काल . । पूर्ण । वेष्टत म०१२१६ । प्राप्ति स्थान—अट्टारकोय दि० जैन संदिर प्रवर्धर । **१५६, प्रतिसंoः २ । प्रत**्सरू० ४४ । आर्थ १ $\times$ ४ $^{1}$  इ.च. । ले० काल स०११४४ भाववा सुदी ४ । पूर्ण । वेप्टन स०४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचासती सन्दिर बयाना ।

६५७. प्रतिसं०३ । पत्र सं०७४ । ने०काल स०१६४० । पूर्ण । वेष्टन ≾ा प्राप्ति स्थान-दि०जैन पचायती यन्दिर मस्तपुर ।

**१५८. प्रतिसं० ४।** पत्र स० ३४। प्रा०१४ × ८ इन्छ। ले० काल स० ११३० चैत्र बदी १४। पुर्णे । बेष्टन स०१४। **प्राप्ति स्वान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)।

विशेष --- ठाकुरचन्द मिश्र ने प्रतिनिपि की थी।

**६५६ प्रतिसं०५ ।** पत्र स०३३ । ग्रा० १२ $\frac{1}{5} \times 4^{\frac{1}{5}}$  इश्वा । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वैकृतस०३०६ । **प्राप्ति स्थान**—५० दि० जैन मन्दिर, प्रजमेर ।

**१६०. प्रति संरुष्ट् । पत्रस**० २८ । ग्रा० १३ 🗴 ८ इ.च. । लेक्काल — म०१६३१ । वैकास मुद्री ८ । पूर्ण् । वेष्टन संरुष्ट ७० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्यनाथ मन्दिर करीनी ।

विशेष-जती हरचद के मदिर वियाने में ठाकुर चद मिश्र हिण्डीन वाले ने प्रतिलिपि की ।

**६६१. प्रतिसं० ७ ।** पत्रस० १४ । ग्रा०१२ ${}^5_1 \times {}^6_2$  इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्गं । बेप्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

**६६२. प्रतिसं० म**ा पत्रस० ३४। ग्रा०१३.६ इच्च । ले०काल म० १६१६ मगिमर सुदी ६। पूर्यो । वेष्टनस० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेटपुर (शेलाबाटी)।

विशेष-इस प्रति में र०काल स० १६१४ माघवृदी १३ दिया हुन। है।

**६६३. प्रतिसं∘ ६।** पत्रस०४६ । प्रा•६ड्डै ४ ७ इच । ले०काल म० १६३८ फागुन बुदी १४। पूर्णा । बेष्टनस० १०६। प्रास्ति स्थान - दि० जैन मदिर श्री महाबीर स्वामी बुदी ।

६६४. प्रतिसं• १०। पत्रसः ४६। ते०काल 🗴 । पूर्णः । वेष्टनसः 💢 । प्रास्तिस्थान— दिः जैन मन्दिर दीवानबी भरतपुर ।

६६**४. प्रतिसं० ११**। पत्रसं० ४३ । प्रा० ११ 🗴 म्हत्वा । ले**०काल** स० १६३३ । पूर्ण । बे**ट्नस०** १२६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सण्डेलवाल पत्रावनी मदिर ब्रालवर ।

**१६६. प्रतिसं० १२** । पत्र स० ४० । ले०काल स० १९३४ । पूर्यं । बेष्टनस० १३० । **प्राप्ति** स्थान----दि० जैन खण्डेलवाल पचायुती मन्दिर, धलवर ।

६६७. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ७१ । घा० १२ $rac{1}{2} imes rac{1}{2} rac{1}{2}$  स्व । ले०काल स० १६४० सगीसर बुदी द । पूर्ण । बेष्टन स० ४६२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपूर ।

६६तः **उपासकःश्वार-पूरुयपाद** । पत्रस० ६ । ग्रा०११ ४ ४ कुटे । भाषा–सस्कृत । विषय—ग्राचार शास्त्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । **बे**ष्टनस०२०६ । प्राप्ति स्थान— महास्कोय दि० जैन मन्दिर ग्रज्मेर ।

६६९. उपासकाचार-पदार्नीद । पत्रसः १०४ । घा० ११४४ इन्द्र । भाषा-सस्कृत । विषय---प्राचार शास्त्र । र०काल ४ ,। ले०काल ४ । मपूर्ण । बेष्टन सं० १३१-६३ । **प्राप्ति स्थान** --- दि॰ जैन मदिर कोटडियो का हु गरपुर।

विशेष---१०५ संग्राग पत्र नहीं है।

**१७०. उपासकसम्कार—पद्मनदि ।** पत्रम० ४। ग्रा०१२ ४४ इन्त । भाषा-सम्कृत विषय-—प्राचार । १०७६६ ) । ले० काल ग०११४२ । पूर्ण । बेष्ट्रन स०२०१।१५८ **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन समबनाथ महिर उदयुर ।

विशेष ---

भृतक बृद्धिहानिभ्या दिनानि दशद्वादण। प्रगृति-स्थान मार्थक वासरे पच श्रोतिमा ॥ प्रमृति च मृत वाले देशातरसृते रगो ॥ सन्दार्भ मरगो चैव दिनेक सृतक श्रवेत ॥

प्रशस्ति स० १४०२ वर्षे वैशास मुद्दी अलिखन ।

१७**१. उपासकाध्ययन-पडित श्री विमल श्रीमाल**ा पत्रमुक १८३ । या०६ १८व । भाषा हिन्दी पर्या विषय आनारणस्य र ७कान् ≿ । ले० कान् **४** । पूर्ण । ४८न म०६२२८-१६९ । **प्राप्ति स्थान**ाकि भेन मन्दिर नोद्यायों का इसस्ट्रेर ।

१७६. **उपासकाध्ययन टिप्परा** 🗙 । पत्रमुक १०४ । प्राः १० ४४ १ छ। भाषा — सन्तरः । १४५४ - प्राचार जान्य । २०४० म 🗴 । लेकान स्व १४८० । अपूर्णः । बेहुनस्व ३४३/१६३ प्रास्तिस्थानः विकास सम्बन्धि प्रविष्टुः १

**विशेष** — प्राप्ति पुणिकः एव प्रणस्ति निस्त प्रणार है—इति श्री असुनदिसिद्धातविर्णवनसृपासका असन्तिरूपमाल समान्त ।

सबन् १४८७ वर्षे नैत बुद्रो ६ रबी श्री मलमपे सरस्वतीयच्छे श्रीकुदकुदाचार्यस्वये छाचार्ये श्री रतस्वर्गतस्तिच्छाय मनि शीर्रारम्भागोतद तिस्ति कमंद्रयार्थ ।

१७३, **उपासकाध्यम विवरण**--- ४ । पत्रम०१७ । ब्रा० ६ट्टै ४४<mark>३ टखा । आपा---</mark> सन्दर्भ । विषय-प्रांतार आस्त्र । ००काल । कि०काल ५ । दूर्ण । वेष्ट्रनस०७३६ । **प्रास्ति स्थान**--सद्वारकीय रि० केन मन्दिर खनगर ।

२७४, जुपासकाध्ययन श्रावकाचार-श्रीपाल । पत्रम०१-२३० । प्रा०११ ४ ४) इ.ज.। भाषा (१२१) । विषय—प्राज्ञार जारत । र०काल । विष्काल स०१८२३ । पूर्ण । बेहन स०१६३ १६१ । प्राप्तिस्थान-- वि० केन सभवनाथ मन्दिर, जदयपुर ।

विशेष श्रन्तिम सन्दर्---

भेरत किया ए वेयन किया ए राम धतीराम । अभ आवता नार मनोहर प्रवथ रच्या रोयसामार्था मुनतिन वथन भविजन मुखकर । भागो भागार्थ भागत्वो भावनु नार्थ तवार्व मार । अधाया कहा वे माभवाशा तह धर मान घर नेह रूप अयकार । इति उपासकाध्ययनास्थाने श्रीपालविग्चिते । सघपति रामजी नामाकिते श्रावकाचार ग्रीनधाने प्रवध समाप्त ।

गाथी वर्डमान् तन्युत्र गाथी पूषालजी भार्या पानवाई पुत्र जोतिसर जवेरचन्द्र जडावचन्द्र एते कृद्वपन्वार आवकाचारनी ग्रथ लखावो ।

१७५. उपासकाध्ययन सूत्र भाषा टीका $-\times$ । पत्रस॰ ४४। म्रा॰ १० $\times$ ४ स्त्रः। भाषा-प्राकृत हिन्दी। विषय —म्राचार शास्त्र। र०काल  $\times$ । ले०काल स० १७०३ म्रावाह सुदी ४। पूर्ण। बेहुतस॰ २८। प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन मन्दिर दोवान चेतनदास प्रानी डीग्।

विशेष--हिन्दी सर्थ महित है। समसोपासक आवकसथपु स्रांभगत जिलायमं पालनु विवरह। ति द्वारह नेह गोमानु मत्राली पुण्डवी। कथा वार्ता लाधा मावती। इम खलु निश्चि सहालु पुष्य आर्जीविकाना धर्म शेटली नह ग्रांगा निर्मेषु पर्म तेह पडिव ज्यो आदरसा।

**१७६. क**र**पार्थ** —  $\times$  । पत्रस**०** ४२ । सा० १० $\times$  ५ इ.स. । भाषा — प्राकृत । विषय — पर्म । र०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेष्टनस० १११-१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौमा ।

१७७. कु**देव स्वरूप वर्गन**— पत्र म०२४। प्रा०१२ र ४१ इखा। भाषा – हिन्दी (गर्य)। विषय—धर्म। २०काल (x)। लेकाल (x)। विषय—धर्म। २०काल (x)। लेकाल (x)। धरूर्गं। वेष्टन म०४४। **प्राप्ति स्थान**—हि० जैन मन्दिर बैर (वयाना)।

१७८. कुदेव स्वरूप वर्णन — ४ । पत्र म० ३७ । ब्रा० ६३ । पूर्ण । अगा - हिन्दी गद्य । विषय चर्म । १०काव ४ । ते०काल म० १६११ डि० ब्रापाठ मदी २ । पूर्ण । येहन २००० । प्राप्ति स्थान वि० जैन मन्दिर दीवान चेननदास पुरानी टीग ।

**१७६. कुदैव स्वरूप वर्शन—** र १पत्र स०२४। ग्रा०११६े . १८२४। भाषा- किदौ । विषय—धर्म । २०काल (१) लेकाल स०१८६६। स्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०३४,४६। **प्राप्ति स्थान** विकलन महिर भारता (राज०)।

विशेष — स्वराज रावका मादवा वाले ने प्रतिलिप की थी।

६**८०. कुदेवादि वर्गन ।** पत्र सस्या २१। भाषा—हिन्दी । विषय —धर्म । रक्ताल र । सेवन काल १ । पूर्ण । बेटून सक २८६ । **प्राप्ति स्थान** - दिव् जैन प्रवासनी मदिर भरवपूर ।

**६६१. केशरचन्दन निर्माय** × 1 पत्रस्य १६ । या० ११ × ४ इन्त्र । भाषा—िन्दी गळ । विषय --प्राचार गान्त्र । र० काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान** ---दि० जैन मन्दिर नागरी वृदी ।

विशेष - संग्रह ग्रंथ है।

€ द.२. कियाकलाप टोका— प्रभाचनद्वाचायं ।। पत्रस० २-६०। भाषा —सन्कृत । विषय— ग्राचार लास्त्र । र० काल् ४ । ले० काल स० १६०७। भ्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०६। प्राप्ति स्थान—दि० क्रैन तेन्द्रपथी सर्विर वसवा । **६६३. प्रतिसं० २ ।** पत्रसं० ४३ । घा० १० $^1_2$  ४ $^1_3$  इञ्ज । ले० काल० imes । पूर्ण । **वेष्ट**तसं० ६०–४६ । प्राप्ति, स्**यान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

६८४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४४ । घा० ११ $\frac{1}{2} \times V_{\frac{1}{2}}$  इन्त्र । ले० काल  $\times$  । धपूर्ण । बेष्टत सं० ५१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**६८५. कियाकोश —दोलतराम कासलीवाल ।** पत्रस्त ११०। प्रा० १० $_3^2 \times Y_2^2$  दश्व । मापा—िहरी पद्य । विषय —प्राचार ज्ञास्त्र । ७० काल सुरु १७६५ भादवा मुदी १२ । ले० काल ०  $\times$  । पूर्ण । वेहन सुरु १४०। प्राप्ति स्थान —महान्कोय दि० जैन मन्दिर प्रजंसर ।

विशेष - इसका दसरा नाम त्रेपन त्रियाकोश भी है।

**६८६. प्रतिसं० २ ।** पत्र म० १३ । ग्रा० १२×६ **६था** । — ले०काल स० १८६७ मगसिर बरी ४ । पूर्ण । बेप्टन म० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष-वैर मे प्रतिलिधि की गई थी।

्रेडम् ७. प्रतिसं० ३ । पत्रम० ११२ । बा० ११२५७ है इख । ले०काल स० १८५४ भादवा मुदी १२ । पूर्ण । बेष्टनस० ४६१ । प्राफितस्थान—४० जैन मदिर लक्कर जमपर ।

**६८८. प्रति स**० ४ । पत्रस० १०६ । आ० ६<sup>7</sup> ४६<sup>7</sup> इच्च । ते०काल स० १८७७ सावन बुदी ऽ ऽ । पूर्ण । वेपून स० १११ । प्रास्ति**स्थान** । दि० जैन मन्दिर आदिनाय बूदी ।

विशेष -- भोपनराय बाकलीवाल बसवा वाले ने सवाई माथोपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८६. प्रति स० ५ । पत्रन० १०६ । आ० ० रें ४६ है डच । ले•काल स० १८६६ हि० प्रापाद बुदी ४ । प्रण । यहन स० ११२ । प्राप्ति स्थान चिंद० जैन मन्दिर क्रादीनाथ चुदी ।

विशेष - - सवाई मार्थापुर में प्रतिविधि की गई थी।

**६६०. प्रतिसं०६** । पनत०१३० । चा०१०३४७) इश्व । ले•काल सा१६४० । पूर्ण । वैष्टन म०२२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दनस्थामी व दो ।

**६६१. प्रतिसं० ७ ।** पत्र न० १२७ । ब्रा० ११ ४ ४ इ.च । ले**०**काल स० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बृदी ।

विशेष - छबडा में प्रतिनिधि हुई थी।

**६६२. प्रतिसं० ६** । पत्र गर्० १२४ । लेक्काल सर्० १६०१ । पूर्ण । बेहन सर्० ११४ । **प्राप्ति** स्थान—दिञ्जैन पत्रायनी मन्दिर देनी (टोक)

**६६३. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ११२ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$ दश्व । लेक्काल स० १९०४ पीष बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष-गोमदलाल वटवाल ने मोतीलाल से कोटा के रामपुरा में लिखाया था।

**६६४. प्रतिसं० १०** । पत्र स० ६० । ग्रा० १३ ४६ है इख । ले∙काल स०१⊏६६ ग्रापाड बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राप्तिः **स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

विशेष-गुमानीराम रावका ने बयाना मे प्रतिलिपि की थी। इस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी का

जासन था। भावको के ८० घर तथा १ मन्दिर था।

**६६५.प्रति सं० ११ ।** पत्रसं० ११० । ब्रा० २३ x ६ इन्द्र । ले० काल स० १८६६ आदों बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११-३४ । **प्राप्तः स्थान**—दि० जैन सौगागी मन्दिर करीली ।

विशेश --- नानिगराम द्वारा करौली मे प्रतिलिपि की गई थी।

**६६६. प्रतिसं० १२** । पत्रसं० १३६ । आ० १०४ ७३ इ.स. । ले०काल स० १७६४ । पूर्ण । वेष्टनस० २१८ । प्रारिक्त स्थान—ति० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपूर ।

विशेष—स्वयं प्रथकार के हाथ की मृत प्रति है प्रथ रचना उदयपुर में हुई थी। प्रत्निम भाग निम्म प्रकार है—

सवत् सत्रासौ पच्यागाव भादवा मुदी बारम निथि जागाव ।

मञ्जलवार उदयपुर का है परन कीनी समैं ना है ।।१८७१।।

श्रानन्दसृत जयम् ··· · को मन्त्री जय को ग्रनुवार ज्याहि कहै।

सो दौलति जिन दासनि दास जिन मारम की सरमा गहे।।

**१९७ प्रतिसं० १३** । पत्रस० २७। ले० कार्यः । पूर्णः । बेष्टनस० ४१६।१५६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुसरपुर ।

**६६८. प्रतिसं० १४ ।** पत्रस० ६३ । स्रा० १३ है , ६ इ.स. १२० काल स० १६५७ । पूर्ण । बेव्हन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मध्यिर श्रीमहाधीर स्रुथी ।

**८६६ प्रति स० ११।** पत्र स० १०६ । आ०६०० ५० घा। त्राहस्य । त्राहस्य स० १=६० प्रास्त्रात् मुदी १२ । पूर्णः । बेष्टन स० १२६ । **प्रास्तिस्थान** — दि० अत्र महित्य नेत्राप्त हि दोगा ।

विशेष--नोनन्दराम छावडा ने सवाई माधोपूर मे प्रतिलिपि करवायी थी।

**१०००. प्रतिसं० १६ । पत्र** म० ६५० । आर० १२ / २६६७ । ले० काल । अपूर्ण । वेराज स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**ः – दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दीमा ।

**१००१. कियाकोश भाषाः—किशनसिंह।** पत्र स०७७। छा०१२ . ५ उ.४ । भाषाः—िस्या (पत्र)। विषयः—छाचार शास्त्र। २०कालः स०१७६४ भाषवा सुरी १५। ले० कालः स०१७८३ सगसिर सुरी १२। पूर्णः। वेष्टन स०१४६३। **प्राप्ति स्थान** —भट्टारकीय दि०कने सौरर जन्नगः।

विशेष-- शहरयों के आचार का अर्गन है।

**१००२. प्रतिस०२ ।** पत्र स०७६ । आर० १०८४ इञ्च । लेक्काल । पूर्ण र शहन स०५१६ । **प्राप्ति-स्थान**— स०६० जैन सील्य अजनेर ।

**१००३. प्रति स० ३ ।** पत्र स० २७ । यारु १३ ६५ उच्च । । लेक्का र स० १८३८ ।  $- q\dot{m}$  । बेष्टुत स० १११ । **प्राप्ति स्था**ल—दिरु जैन मन्दिर पार्थनाथ बीमान बृन्दी ।

१००४. प्रति स० ४ । पत्र म० ११४ । ब्रा० १० ुे.. ४ इ.च । ते०काल----र ० १६४४ । पूर्णा । बेष्टन ग० २४७-६६ । **प्राप्ति स्थान**---वि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

**१००५. प्रतिसं०५ ।** पत्र स०६६ । स्रा० १२६९ ५ द्वा । ले∘काल स०१६२२ । पूगा ।

वेष्टन सं० ६२-४७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

**१००६. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० २४ । प्रा० ६imes६ इ.ख. । ले०काल imes । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २६६/१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संसवनाथ उदयपुर ।

**१००७. प्रतिसं० ७ ।** पत्र म० २६ । म्रा० १३imes७ इत्था । ले०काल स० १६२७ म्रापाङ, बुदी १२ । पूर्णः । वेस्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर फनेहपुर गेल्वाबाटी (मीकर) ।

विशेष—लाला रामचन्द बेटे लालाराम रिखबदाम श्रग्रवाल श्रावक फनेहपुरवासी (दूकान शहर दिल्ली) ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

**१००६. प्रति सं० ६ ।** पत्र गु० ६० । द्वार १२ है ४७ इश्वर । लेक्नाल स० १६६५ (पूर्ण । वेष्टन गुरु १९ । **प्राप्ति स्थान**— दिठ जैन मन्दिर फुनेहपुर (मीकर)

विशेष —फोहपुर वासी धप्रवाल लक्ष्मीचन्द्र के पुत्र मोहनजाल ने रतलाम मे अनिर्जिप करवाई थी। द मगलजी शावक।

**१००६ प्रतिसं**०६ । पत्रस० १४५ । ब्रा०१० x ६ डश्व । ने०काल म०१६३१ वैद्यास मृदी ७ । पूर्णा । वेष्टुन स०५ १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादना (राज०) ।

**१०१०. प्रतिसं० १०** । पत्रस्य० १४१ । आ० १० ० ४३ इन्छ । ने०काल स० १८६६ फासूस् सुदी ७ । पूर्व । बे**प्नस०** १२४ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मदिर नेरहपत्री दौसा ।

विशेष पन्नानान भाटन प्रतिनिधि की थी।

**१०११. प्रतिसं० ११** । पत्रसण १४३ । ग्राण १० × ४<sup>१</sup> उच्च । लेक्काल स० १६१६ । पुरुष । बेबुन स० ६० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० केन सदिर नेरावधी दोगा ।

विशेष-भीगने से प्रक्षना पर स्वाही फैल गई है।

१०१२. प्रतिसं० १२ । पत्रम० २१४ । लेक्काल 🕝 । पूर्ण । येष्ट्रनम० ३२ । 🗷 प्रित स्थान दिक्ष जैन प्रयाकनी महित्र हुणा वाना जा शीन ।

१०१३ प्रतिस**ः १३** । पत्रसर्व २२ । प्राठ १२ 💢 २ ८२च । लेक्काल सर्व १८५० । पूर्ण । बेहुतसर्व १४ । **प्राप्ति स्थान** -- दिर्कत पचावनी मन्दिर कामा ।

**१०१८ प्रति स० १८ ।** पत्रम० १२१ । या० म $_2$   $\times$  १ $_2$  डख । यक्काल म० १म्४५ डि० प्रयात खरी १२ । पूर्ण । वेश्वम० २२ । **प्राप्ति स्थाल** —िद्धः जैन १वस्य में मन्दिर कामा ।

**१०१५. प्रतिसं० १५** । पास० १४६ । म्रा० १६ ६ ५ ४ ३ व । लंशकाल 🗴 । पूर्ण । बेष्टुनसं० ४४७ । ४६ । **प्राप्ति स्था**ल—पि० जैन पत्रायों सन्दिर, कामा ।

**१०१६ प्रतिसं० १६।** पत्रस० म७। प्रा० १३ ४ म इज्या । ते० काल स० १म्दर कासुसा भुटी ३। पूर्ण । बेष्टनस० ४। **प्राप्ति स्थान** लिय जैन पचायनी महिर बयाना ।

विशेष वधीराम ने प्रतिनिधि करवारी थी।

**१०१७. प्रतिसं० १७** । पत्रस० ११६ । आ० १३ x म्हला। लेवकारा मर १६७७ ज्येष्ठ वृदी २ । पूर्णा । बेष्टनस० १०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पत्रायती मदिर बयाना । १०१८: प्रतिसं० १८ । पत्रस्र० ५२ । ले०काल 🗴 । सपूर्णः । बेष्टनस०२०२ । प्राप्ति स्थान— विगम्बरः जैन पत्राथनी मन्दिरः भरतपुरः ।

१०१६, प्रतिसं० १६ । पत्र स० १३२ । लेब्काल --स० १६७४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६३ । प्राप्ति स्थान --दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - इसे कामा के जोधराज कासलीवाल ने लिखवायी थी।

१०२०. प्रतिसं० २०। पत्र स १११। लेब्काल  $\times$ । पूर्ण। वेच्टन सब् २६४। प्राप्ति स्थान— दिव जेन प्रवायती मन्दिर भरतपुर।

**१०२१ प्रतिसं०२१** । पत्रस० =३ । ले०काल — स० १६११ द्यायाङ बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टनस० २५५ । **प्राप्तिस्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर सग्तपुर ।

विशेष-इमे जिहानाबाद मे प० भयाचन्द्र ने लिखवायी थी।

**१०२२. प्रतिसं० २२** । पत्रस० १४२। ले०काल स०१८०५ वैसाल मृदी १ । पूर्ण । बेष्टुनम० २०६। **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--- भरतपुर निवासी गुजरमल के लिए दसवा मे प्रतिविधि भी गई थी।

**१०२३. प्रतिसं० २३ ।** पत्रस० ६४ । ते०काल— स०१८४७ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टुन ५०२८७ । प्रा**प्तिः स्थान** -दि० जैन पत्रायती मन्दिर सन्तपुर ।

विशेष - हुलाशगय चीधरी ने प्रतिलिपि करवाधी थी ।

१०२४. प्रतिसं० २४ । पत्रसः० ५६ से १०४ । क्षेत्रकालमः० १७८५ । श्रपुर्गः । वेष्टुन म० ४१४ । प्रास्ति स्थानं – दि० जैन पचायनी - मन्दिर भरतपुर ।

**१०२५. प्रति सं० २५** । पत्रस० ११२ । स्रा० १२२७ इन्छ । ने०काल — 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अप्रवाल पचापनी मन्दिर झलतर ।

१०२६, प्रतिसं० २६ । पत्रस० ६२ । या० १२¦५४¦ द्वा । ने०कान - म० १८०६ माह सुदी १२ । पूर्ण । नेष्ट्रन स० ४४, १६४ । प्रास्ति स्थान - दि० जैन प्रचायनी मन्दिर ग्रानवर ।

**१०२७ प्रतिसं०२७** । पत्रस०१३४ । लेक्काल स०१६४६ । पूर्ण । वेष्ट्रनम०४४ १४ । प्रा**प्ति स्थान** — दिव्जीन प्रचायनी मन्दिर मलबर ।

**१०२८ प्रतिसं० २८ ।** पत्रस० १०५ । ले**०**काल—स० १८७४ भाववा सुदी २ । वेप्रनस० ४६ १५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायनी मन्दिर सलवर ।

**१०२६. प्रतिसं० २६ ।** पत्रस०----२४--७६ । प्रा० १२ ८६ दुला। ले**०काल --** स० १८८३ । प्रपूर्ण । बेप्टन स० ३२**० । प्राप्ति स्थान**-----दि० जैन मदिर क्षेत्रमली कोटा।

विशेष-कोटा मे प्रतिलिप हुई थी।

**१०३०. प्रतिसं० ३०** । पत्रस० १४२ । ग्रा० १० imes ४ इच्च । ले०काल स० १६२२ । **पू**र्ण । वेष्टन स० ११५/७७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्यनाथ मन्दिर इन्द्रस्य**ः** (कोटा) ।

विशेष-- लिखाइत मुवानीलाल जी श्रावगी बासवान माधोपूर या लिखाई इन्द्रगढ मध्ये ।

**१०३१. प्रतिसं० ३१।** पत्रसं० २ से ८४। ग्रा० १२ × ५} इचा। लेक्सल — स० १८०८ कार्त्तिक बुरी १०। श्रपुर्सा। वेष्टन स० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)।

**१०३२. प्रतिसं०३२** । पत्रस०११४ । ग्रा०११ ४५ हुउचा । लेककाल स०१८८६ पीष बुदी१३ । पूर्णा। बेष्टनस०४०। **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन मन्दिर राजमहल टोकः।

विशेष--राजमहल मे प्रतिलिपि हुई थी।

**१०३३. प्रतिसं० ३३** । पत्रस० ३१ । बा० १२×५ इल्ब । ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण । बेष्टुन म०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बवेरवालो का झावा (उस्सिवारा) ।

**१०३४. प्रतिसं० ३४।** पत्र म०१२४ । घा०१० $\frac{7}{4}$  ४४ है इख । लेब्लाल म०१६५० वैशास मुदी१। पूर्णा । बेटनस०३५। **प्रास्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूती (zin)।

**१०३५. प्रति सं० ३५ ।** पत्र स० ६४ । झा० ११ ४ ५१ इ.ख । ले**०काल** नस० १६५४ माघ जक्ता ४ । पूर्ण । बहुत स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**ः—दि० जैन मदिर कोटयो का, नैरगवा ।

**१०३६. प्रतिसं० ३६ ।** प्यसं० १०२ । घा०११ x ६ हुँ इन्छ । लेक्काल । पूर्णा। केवनस्०१६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन सन्दिर कोटयो का नैस्स्या।

**१०३७. प्रतिसं० ३७ ।** पत्रस० ७३ ।म्रा० ११३ 📐 ६३ दख । ले०काल स० १८१४ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । बेष्टुन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैसला ।

विशेष प्रणस्ति निम्त प्रकार है।

ियांन मनगर गृदी १५ रबी गवन १६५४ का माल की पीबी समही सुन्ददेव सामानेर का की में उतारी हैं जियान संस्वारम सुब्धालकार बैंद की पोधी नम मैगावा मध्य बार्च जीने श्री गवद बचा। यो नेपापधी का में 1र चराया मिनी फागुण मुदी ६ सबन् १६९१ विश्वी काल् भे बहाया श्री निरनार जी की साम्रानं न नहामा श्री मावजनानाथ स्वामी के

**१०३८. प्रतिसं० ३८ ।** पत्रस० १६-८६ । ग्रा० १०×७ इव्य । ले०काल स० १६८६ । ग्रपुर्मा । बेष्टनस०२२ । **प्राप्ति स्थान**ादिक लेन सन्दिर ग्रादिनाथ बूदी ।

**१०३६. प्रतिसं० ३६ ।** पत्रस० १९≒ । आ ० १२ 🗙 ४१ दश्य । लंककाल स० १६३७ *माह* मृदी १२ । पूर्ण । बेहुनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारार्थास्ट (टोक) ।

विशेष--- मालपुरा निवासी प॰ जौहरीलाल ने टोडा में सावला जी के मंदिर में लिखा था।

१०४०, प्रति स० ३० । पत्रस० १२३ । प्रा० ११ ४ ४३ इच्च । नेवनानः स० १८४६ । पूर्मो । बेष्टनस० ४१ । प्राप्ति स्थानः - दि० जैन मदिर पाण्येनाथ टोडारायमिह (टीक) ।

विशेष--महजराय व्याम ने प्रतिलिपि की थी।

१०४१ प्रति सं० ४१। पत्रस० १५६ । ब्रा०६ ८ उहै इखा। ले०कान म० १६४०। पूर्मा। बेष्टन स० ११३ ६। प्राप्ति स्थान – दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष— लाखेरी मे प्रतिलिपि की गई थी।

१०४२, प्रतिसं० ४२ । पत्रस० १२४ । आ०६२ ४ ६ इखा । ले० काल — स०१६१४ । पूर्ण । बेष्टनस० १८० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कीटा । **१०४३. प्रतिसं० ४३।** पत्रस० ६५। श्रा० १० 🗙 ७ इल्डाले० कालः स०१६२६ फाल्गुन बुदी ३। पूर्णः। बेहन स०११९ – ४७। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर बडाबीसपथी दौसा।

विशेष -- सालगाट मे प्रतिनिधि की गई थी।

१०४४ प्रतिसं० ४४ ।पत्रस० ६४ । प्रा०१२ ० ५ इन्ता | ले० काल - स० १७०० फाल्गुण वृदी = । पूर्णा | बेट्न स० १२० | ।प्राप्ति स्थान-- दि० जॅन मदिर वटा बीसपथी दीसा ।

विक्रोत पुरुष्णानीसम् ने प्रतिनिधि की थी।

**१०४५. पतिसं० ४५** । प्यस**ः १४१ । या०— १२**१ × ५) इव । ते० कान म०१०-१ वैत नुरी ५ । पूर्व । युगस**०** १०१ । **प्राप्ति-रुषान**—ोह जोन प्रवायनी मदिर क्रीवी ।

१०४६. कियाकोष भाषा—दुनिचन्द । पत्रस० ५७ । भाषा हिन्दी गद्य । विषय । हुन्य की कियाको का वर्णन । ं०काद ४ । त्र० काल ४ । पूर्ण । बेहुनस० ४ । प्राप्ति स्थान दिः जैन सहिर दीवानको भरतपर ।

**१०४७. कियापद्धति** २ । सास्तर्भ था याज ६२४ इब । भाषा—सम्प्रत् । सन्धय — स्राचार मास्य । २०कान २ । प्रश्चे । प्रश्चे । प्राप्ति स्थान - ६० अन मास्य नामरी (बारी) ।

विशेष - जैनेतर ग्रन्थ है।

**१०४६, कियासार भद्रबाह** । स्वयः १६ । ख्रा० १६ । द्रां ४ १ ४७ । भाषा - क्रारा । तिस्य -ग्राचार जास्त्र । २०काल - । ले०काल म० × । पूर्ण । तेन्त्रम० ६६ । **प्राप्ति स्थान** - दिरु वेन मदिर लक्कर, जयपुर ।

**१०४६. क्षेत्रसमास** ४ । पत्रस०४ । घा० १०६ ४४६ ३७। भाषा- प्रारत। विषय वर्षा । रक्काल (। तक्काल स० १७४३। पूर्ण। वेददर स०४४ । **प्राप्ति स्थान** --स्ट्रारसिंद ३० वैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--- ग्रलवर नगर में प्रतिनिधि की गई थी।

**१०५०. क्षेत्रसभाम प्रकरा**ण- । पत्र स= । प्रा०१० $\times$ ४, उत्र । भाषा पात्र । विषय—धर्म । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स०४४१ । प्राप्ति स्थान स्मृतकीए १८० जैन सन्दिर सजमेर ।

**१०५१. गुरादोषविचार**— । पत्र मुरुषा प्रक्रिक १२ ४ ४ ४ ३ हा। भाषा स्पङ्कात विषय—म्याचार । र⊛कालः । लेशकालः ४ । पूर्ण । वश्मश्ची । **प्राप्ति स्थात**ः अस्ति । स्वाप्ति स्थातः अस्ति । स्वाप्ति

१०५२, गुरुपदेशश्रावकाचार - डालुराम । पत्र म० २०३ । या० ११४ ०६ व । आगा— हिन्दी । विषय-ब्राचार शास्त्र । र०काल म० १६६० । ले० काल म० १६६४ । पुग्प । बेठून म० १७६१ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मस्टिर प्रजमेर ।

**१०४३. प्रति सं० २ ।** पत्र म० २२१ । स्रा० १०१ ४४ इच्छा विक काल म० १८७० सात्रत सुदी ३ । पूर्णावेष्टन स०४०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजनगर । **१०५४. प्रति सं० ३ ।** पत्र सं० १८५ । म्रा० १०८७३ इ.च. । ले० काल सं० १९५० । पूर्ण । वेष्ठन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजी ब दी ।

**१०५५. प्रतिसं० ४** । पत्र म० २३६ । घा० १२१४ ७ इञ्च । ले० काल म० १६४६ । पूर्ण । वेषन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान** — टि० जैन० मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

१०५६. गृहप्रतिकम्मण् सूत्र टीका— रत्नग्रेखर गरिणः। पत्र ग० ४८ । भागा - सस्कृत । विषय—प्रमं । र०कालः ॰ । ते० कालः म० १८७६ । पूर्णः । वेष्ट्रन म० ७४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्राध्येनी मन्तिर भागवरः।

**१०४७. चउसररावृत्ति** — ा पत्र म०१२। सा०१० ४४, इत्था। भाषा—प्राकृत। विषय-वर्मा र०काल ्रा लेकाल ्रा पूर्णा । बेण्टन म०२१। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष-इह चतुर्गचतार्गण भवजल नार्गण।

कारिंग शिवपूर साधक है

वाचो धर राचो या में माची टोलॉट स्रविनाणी''''' ।

इति श्री चतुरचितारमां समाप्त ।

१०**५६. चतुंदशी चौपर्ड—चतुरम**ल । पत्र म०२७ । भाषा —िन्दी । विषय—पसं । <sup>२</sup>०काल । त्र०काल म०१६५२ पोष मृदी१३ । पूर्णा । वेष्ट्रन म०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर इण्डाबानों का क्षीण)

**१०६०. चतुष्कगरमा बर्मान**ापत्र स० ⊏। प्रा० १०}ें इच । प्राया—प्राकृत हिन्दी। विषय—धर्म । रुप्त्राल र । ले० काल । । पूर्णा । वेष्ट्रन म ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बंदी।

विशेष-गाथाओं के ऊपर हिन्दी अर्थ दिया हथा है।

**१०६१. प्रतिसं० २** । पत्र म०३ । स्रा० ६९४ ४ । इच । लंक काल् 火 । श्रपूर्ण । वे<mark>ष्टन</mark> स०२६६ । **प्राप्ति स्थान**-दिक जैन मन्दिर दबलाना ब दी ।

**१०६२. चर्जुमास धर्म ब्याल्यान** २ । पत्र स०४ मे १२ । भाषा — हिन्दी । विषय— धर्म । २०काल ≿ । ले०काल 🏒 । ब्यूग्यो । वैग्रुन स०६२६ **। प्रा**प्ति/स्थान— दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

**१०६३. चतुंमास व्याख्यान—समयमुन्दर उपाध्याय ।** पत्र म० ४ । भाषा—सस्क्रम । विषय—षमं । र०कात ⇒ । ले० काल خ । पूर्ण । वेष्टन म० ६४३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर भरतपुर । **१०६४. प्रतिसं० २।** पत्र स०३-४। ले० काल 📐 । ब्रपूर्ण । वेष्टन स०६६६। **प्राप्ति** स्थार---- उपरोक्त मन्दिर।

**१०६५. चारित्रसार — चामुण्डराय ।** पत्र स० ५१ । घा० ११ रे ५२ हे । भाषा — सस्क्रत । विषय — माचार शास्त्र । र०कार र । ले० काल स० १५२१ ज्वंग्ठ सुदी६ । वेष्ट्रन स० १२≍ । **प्रास्ति** स्थाम — दि० जैन मदिर लक्कर, जवरर ।

**१०६६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स०६२ । ग्रा० ११ 🗴 १३ इन्छ । ने० काल 📐 । अपूर्ण । बेष्टुन स०१२६ । प्रा**धित स्थान** - दि० जैन सन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--- ४७ से ६२ पत्रों पर संस्कृत में टिप्पग्री भी दी गई है।

१०६७, **चारित्रसार—वीरनदि।** पत्र स०२-१६। ग्रा०१०}४४} इश्वः। भाषा-प्राकृत। विषय – ग्राचार वारत्रा रकाल × । ले० काल स०१४८६ चैत्र बुदी ११। ग्रपूर्णः। प्राप्तिःस्**यान**— दि० कृतं मन्तिर दीवानत्री, कामा ।

विहोन—फानुण मुस्ति। वर्ष सबन् १५० निक्षते ब्राचार्य श्रीसपनिद देवाम् प्राचः प्रेथमं कीति देवा तन् शिष्यणी प्रृत्वकीवार्ड पारो । निक्षते ज्ञानावरणी कमं क्षयार्थ ॥ म० १५८८ वर्षे चैत्र बुरी एकादसी मुख्यनारे ३ स्वान्मण्यनार्थ निक्षते कल्पकी पारो ॥

**१०६८. प्रतिसं० २ ।** पत्र म० ७८ । प्रा०्रै र ४्रृंडखा । ले० काल २० । प्रयुगो । बेहन म० २३१ । **प्राप्ति स्थान –** दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-- ७६ में आगे के पत्र नहीं है प्रति प्राचीन है।

१०६६. चारित्रसार वचित्तका मन्तालाल । पत्रस० ६८ । या० १२ ४६) इ.च. । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय —ग्राचार कास्त्र । र०कार स०१८७ १ माघ सूटी १ । लेक्काल —स०१८०३ । पूर्ण । बेष्ट्रस० १३१-५६ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन मन्दिर कोटटियों का दूपरपुर ।

१०७०, प्रति सं० २ — पत्र म०१८३ । प्राण् ११ ४.४, इश्वा । ते०काल - स० १८८६ । पूर्णा । बेष्टुन म०१०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१०७१. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० १६१ । लेल्याल--- र । पुरम् । बेहुनस० ४१३ । प्रास्तिस्थान --दि० जैन प्रवासनी मन्दिर, भरतपुर ।

१०७२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १०० । ले०काल । अपूर्ण । बहुतस० ४१४ । पास्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मस्दिर, भरतपुर ।

विशेष-गृटके में है तथा अन्य पाठों का सग्रह भी है।

१०७४. चौबीस तीर्थकर साता पिता नास-- । पत्र सoः । भाषा -िहरी । विषय-- धर्म । r०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ग्ग । बेष्टन सo-२०६ । प्राप्ति स्थान -दि० जैन प्रचायती सिंदर भरतपुर ।

**१०७५. चौबीस वण्डक—धवलचन्द्र ।** पत्रस० ७ । म्रा० १०×४३ दश्व । भाषा —प्राक्त, हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ने०काल—स० १८११ माघ सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनस०-१८० । प्राप्तिस्थान —दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर, इन्दरगढ ।

विशेष---प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। सबत् १८११ माघ मृदी ५ भगत विमल पठनार्थ रामपुरे लिपी कृत-नेमिजिन चैन्यालये।

१०७६. **चौबीस दण्डक**—सुरेन्द्र**कोति ।** पत्रस्त० २ । म्रा० १० ४  $\xi$ ृै दख । भाषा —सन्द्रन । विषय—धर्म । रक्ताल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वे०स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर पाण्डेनाथ चौगान बन्दी ।

**१०७७. प्रतिसं० २** । पत्रस्त० ३। द्या० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ १। ले०काल  $\times$  । बेष्टन स $^{\circ}$ -२१। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--एक पत्र और है।

१०७६ **चौबीस दस्क भाषा—पं वौस्तराम ।** पत्रस् २ । ग्रा० ६ $\frac{7}{2}$  ५ $\frac{7}{2}$  ६% । भाषा—हिन्दी । विषय—प्रमं । र०काल १६श्री क्षान्दी । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेक्टनस० १५०–६६ । प्राप्ति स्थान दि०जैन मन्दिर कोटटियों का इनरपुर ।

१०७६. प्रतिसं० २ । पत्रम० ४ । धा० १२ ४ ६१ इश्व । ले०काल ⇒ । पूर्ण । बेष्टनसं० २४४-१०२ । प्राप्ति स्थान-उपरोक्त सन्दिर ।

१०८०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६ । ग्रा० ११ ४४ हुँ इञ्चा लेक्काल 🗴 । पूर्गा । बेष्टनस० १८६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जबपुर ।

**१०६१. प्रतिसं**० ४ । पत्रस०१२ । खा०२×६ डवा । ले०काल × । पूर्णा । बेहनसं० ५२२ । **प्राप्ति स्थान** - दि०जैन मस्टिर कोटस्थि का इसरपुर ।

विशेष-प्रथम = पत्र पर वत उद्यापन विधि है।

१०६२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४ । छा० ११६४ इच । ले०काल — 🗧 । पूर्ण । बेष्टनस० १६४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगान वृदी ।

**१०६३. प्रतिसं० ६** । पत्र न०४। घा० १२ ४ ४ डच । ले॰काल म०१६७६ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्मो । बेग्टन म०३२ । १३६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारार्थानह (टीक) ।

**१०६४. प्रतिस**० ७ । पत्रम० १ । आ० १० $\times$ ४ $\S$  इखा । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—(द० जैन प्रवायनी मन्दिर, करोली ।

**१०६५. चौबीस दण्डक**े । पत्रस० ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल । ले० काल × । पूर्सा । वरटन म० ४०६-१५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियान हु गरपुर ।

**१०६६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ३ । म्रा० १० $\frac{1}{8}$  $\times$  ४२ इश्व । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवायती मन्दिर करौली ।

**१०८७. प्रतिसं० ३**। पत्रस० ११। धा० ६<sup>3</sup>,×४, ६२४। **से०काल** × । पूर्ण। वेष्टन स**०** ३४। **प्राप्ति स्थान—(६० जैन मन्दिर दबलाना बृदी।**  **१०८६. प्रति सं०४ ।** पत्रस०११ । आर०१२×७ इचा। ले•काल स०१६२६ । पूर्ण। वेष्टन सं०२१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बुदी।

**१००६. चौबीस २०७क**—  $\times$  । पत्रस० १०। ग्रा० ११ $\times$ ५१ इश्व । भाषा—सःस्कृत । विषय—मर्म । र०काल— $\times$ । ले०काल स० १०२२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बुदी ।

विशेष-पाडे गुलाब सागवाडा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

- १०६०: चउबोली की चौपई —चतरू शिष्य सांबलजी । पत्रस० ३७ । प्रा० १०८४ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय —धर्म । र०कान 🙏 । लेक्काल सं०१७६८ । पूर्ण । बेप्टन स० ३४१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर प्रिभिनन्दन स्वामी बंदी ।
- **१०६१. चौरासी बोल**  $\times$  । पत्र स $\circ$  १। माषा हिन्दी । विषय धर्म । •० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स्० ६७४ । विशेष स्थान—हि० जैन प्रचायती मंदिर मन्तप्र ।

विशेष—काष्ठासभ की उत्पत्ति, प्रतिष्ठा विवरण एव मुनि ग्राहार के ४६ दोषों का वर्णन है।

- **१०६२ छियालोस गुरा बर्शन**  $\times$  । पत्रसुर है। ब्रा॰ ६  $\} \times \times ^3$  इश्व । भागा—सम्ब्रन । विषय—बर्म । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहुन सु० १६४ । प्राप्टिः, स्थान दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडागार्थासह (टोक) ।
- **१०६३. जिनकल्पो स्थावर आचार विचार** ० । पत्र म०१३ । प्रा०१०, ४ टखा। भाषा - प्राकृत, हिस्दी (पद्य) । विषय --धाचार शास्त्र । २०००० । ले०काल -स०१६०४ । पूर्णे ।वेष्टन स०१६३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन ध्रयबाल मन्तिर उदयपुर ।
- **१०६४. जिन कल्यासाक-प ग्राशाघर ।** पत्र म०५ । घा० ११४८ हे उ.च. भाषा- सन्दर्ग । विषय—घर्म । र०काःः—४ । ले०काल× । पूर्ण । वेष्ट्रत म०४४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जेन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।
- **१०६५. जिन प्रतिमा स्वरूप** रा ५वम०६५ । म्रा०११४७; डजा भाषा (१८) (नव)। विषय---धर्म । २०काल-- ४ । वे०काल म०१६४४ फागुमा मुदी १०। पूर्ण । वेष्ट्रन सर्दर । **प्राप्ति स्थान**--पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर उन्दरमह (कोटा)।
- **१०६६. जिन प्रतिमा स्वरूप**  $\times$  । पत्रम $\circ$  १४। प्रा० १० । ५६७ । भाषा क्रिनी । विषय-धर्म । रचना कान  $\times$  । तथान काल  $\times$  । तूर्ण । थेटन म $\circ$  १४६। प्रास्ति स्थान —िद $\circ$  नैन मिटर थी महावीरजी व दी।
- १०६७. जिन प्रतिमास्यरूप भाषा-छीतरमल काला । पत्र सन्या+६२ । सा० ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इवा । भाषा-िन्नी (पद्य) । विदयः समें । र०काल स० १९२५ बंगाल सुरी २ । ते०काल स० १९३३ कालिक सुरी १८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६।११ । प्राप्तिः स्थान+10 संतर्भाद (कोटा) ।

विशेष -- उत्तमचन्द व्यास ने मलारएगा इंगर मे प्रतिलिपि की थी। प्रश्नोत्तर रूप मै है।

**१०६८. जीव विचार प्रकरण** । पत्रसं० ६। भाषा---प्राकृत । विषय --- धर्म । र०काल imes । के०काल--स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टुनस० ६२४ । **प्राप्ति स्थान** --- दि० जैन पचायनी मन्दिर भग्तपुर ।

विशेष-- श्रलवर मे प्रतिनिपि की गई थी।

१०६६. जीव विचार । पत्रसः ३। प्राः १२ × ५ इच । भाषा—प्रकृतः। विषय—पमं। र• कालः ४ । ते० काल— ४ । पूर्णः । वेष्टनसः०—१७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्वनायः चोषान वंदी।

११०० जीवसार समुख्यस— × । पत्रस०-२० । प्रा० १२ × ५ इन्छ । भाषा—मन्कृत । विषय— वर्म । २०काल × । ले० काल — × । पूर्ण । वेष्टुनस०—३१।३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन भववाल मन्दिर उदयप् ।

**११०१. जैन प्रबोधिनी द्वितीय भाग** $--\times$  । पत्रस् २६ । प्रार्थ  $\Rightarrow$  ६५ ६५ । भाग -िहन्दी (पदा) । विषय —वर्म ।  $^{7}$ ०काल $--\times$  । ते० काल $--\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस ०६६६ । प्राप्ति स्थान - भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमर ।

**११०२. जैनआवक ग्राम्नाय—समताराम** । पत्रस०—२६ । या० १०३ ४ ७ डखा । भाषा—हिन्दी (पदा) । विषय—शाबार । २०काल ४ । ले० काल मं० १६१४ ग्रामांत्र बुरी ७ । पूर्ण । उपूर्व म० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानती, कामा ।

विशेष विविभेतमा का रहने वाला था। रचना सम्वत निम्न प्रकार है --

सवत एका पर नो उभै पचदण जानो सोय ।

कारगपथ ग्राटी रही भग बैमास्य जो होस ।

पत्र २६ से २६ तक प्यारेलाज कत स्रभिषेक सकती है।

११०३. जैन सर्वाचार मार्तण्ड नामक पत्र का उत्तर—  $\vee$  । पन म० २७ । प्रा० ११ $\frac{1}{8}$  ८ ६ व । मारा ्टिनी । विषयः प्रावार जास्त्र । रुकान—  $\vee$  । ने०कान—  $\vee$  । प्रपूर्णः । वेपून म० ६४ । प्राप्ति स्थानः —(द० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

१९०४ ज्ञानचिन्नामिस्सिः मनोहरदासः । पत्रसुरु १ । माषा—हिन्दीः । विषय—श्रमे । २० काल गरु १७०० । ले० काल 🗴 । पूर्णाः वेष्ट्रन सरु १६० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रचायनी मदिर सन्तपुर ।

**११०५. ज्ञानवर्धमः वीपचन्द्र।** प्रथम० ३१। ग्रा० ११ ४. ६५ इश्वः। भाषा —िहिन्दी गर्खः। विषय— धर्मः। रच्यालः र्रात्मेच कालः म०१६७० जेठ मुदी १४। पूर्णः। बेट्न स०४१। **प्रास्ति** स्थान — दिव्जेन ग्राध्याल प्रयासनी महिर्ग्यनवरः।

**११०६. प्रतिस० २ ।** पत्र म० =२ । घा० =ै ् ४ इखा । ले• काल—म०१=६० । माप्रवृदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६६-१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० ईन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

**१९०७. ज्ञानवीपिका भाषा** 🔎 । पत्र स० २०। आ ०१२ र्६ इ.ख.। भाषा—हिन्दी गढा। विषयः — धर्म। २०काल स० १६३१ मावन बुटी ३। ले० काल स० १६६० फातृन वर्धा १३। पूर्णः। वे० सं० -२२। **प्राप्ति स्थान**ं दि० जैन पार्थनाय मन्दिर करौली। विशेष-सवाई माधोपुर मे ही रचना एव प्रतिलिपि हुई थी । लेखक का नाम दिया हुमा नहीं है।

**१९०६. ज्ञानपञ्चोसो-बनारसोदास ।** पत्र स०१ । प्रा०-१०×४) इन्छ । भाषा— हिन्दी । विषय — मर्म । र०काल × । ले०काल स०१७७६ । पूर्ण । वेस्टन स०६२३ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जेन मन्दिर अकार, जयपुर ।

विशेष-कोकिय नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**११०६. प्रति सं० २** । पत्र स०- १ । ले०काल ⋋ । पूर्ण । वे०म० ६⊏० । **प्राप्ति** स्थान—रि० जैन पचायती मन्दिर मरलपुर ।

११९०. **ज्ञानपंचमी व्याल्यान-कनकज्ञाल ।** पत्र म०६ । भाषा—फस्कृत । विषय—पर्स । र०काल ∖ । लेककाल—स०१६५४ । पूर्ता । वेठ स० ७३७ । **प्राप्ति स्थान**—६० जैन पनायनी मन्दिर भनतार

विशेष-भेडवा में लिपि हुई थी।

**१९९१. जानानद श्रावकाचार-भाई रायमल्ल ।** पत्रस्वरु २२६ । ग्राव ११. ७, ऽत्र । भाषा-राजस्थानी (हुंडारी) ग**र्य**ा विषय---प्राचार शास्त्र । रवकाल 🔀 । लेव काल 🔀 । पूर्णा । वैव सव----१६०६ । **प्रान्ति स्था**नं----गड़ारकीय दिव जैन मदिर । ग्रावसेर ।

**१९२२ प्रति सं०२ ।** पत्र स०१३५ । ग्रा०१२ ४ ६ इथा । ते० काल ः । पूर्णः । बेष्टन स०१३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जै० मदिर ग्रीभनत्वन स्वामी वृदी ।

**१११३. प्रति सं०३।** पत्र स०१२६ । ग्रा०१२ 🗴 ६<sup>3</sup> तथा। ने० काल स०११४६ । पूर्णः। बेप्टन स०१४। **प्राप्ति स्थान**ं दि० जैन मंदिर श्री महाबीर स्वामी वृदीः।

**१११४. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० **११७ । आ०** १३<sup>3</sup>, ५५ इन्द्र । ले०कारा म० १६५६ । पूर्ण । बेगन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपूषी मस्टिर, नेगवा ।

**१११५. प्रतिसं० ५ ।** पन स० २०६ । प्रा० १२ ४ ६ इ.ब.। ले० कारा स० १९५२ पोप णुक्ता ११ । पूर्ण । बेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन महिदर राजमहत्त होत्रः ।

विशेष--जयपुर मे प्रतिनिपि की गई थी। लिपि कराने मे १६।।।) सर्च हुए थ।

**१११६. प्रतिसं० ६ । पत्र म० १**८६ । आ० १२¦ ४ ६ इञ्च । अञ्चान म० १८५० मगसिर बदी १० । पूर्ण । बेठ सठ २५ ४१ **प्राप्ति स्थान**—दिठ जैन प्रचायती मुन्दिर स्वत्रर ।

**१११७. प्रतिसं०७ ।** पत्र स० १८६ । प्रा०१२; 🗴 ७ दुख । ले०काल म०११६२ स्रपाद बुदी १ । पूर्ण । बेपून स० ६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन स्रप्रवाल प्रवासनी मन्दिर स्रलवर ।

विशेष--गृहस्थ धर्म का वर्गान है।

**१११म. प्रतिसं० म ।** पत्र म० १६४ । मा० १०३ 📐 ६२ इञ्च । ल० काल—म० ११०६ । पूर्मा । बेप्टन म० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवान मन्दिर उदयपुर ।

११९६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १६६ । आ० १२ २ ६<sup>°</sup>, इन्त्र । ले०कान १६०५ घाषाडू बुदी ३ । पूर्णा वेष्टन स० ७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेलावाटी (सीकर) ।

विशेष--टोंक मे प्रतिनिधि हुई थी।

**११२०. प्रतिसं० १०** × । पत्र स० १४६ । ग्रा० १३ × ६ रूउच । ले॰काल स० १८२६ । पूर्ण । वेपन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रुपयाल मन्दिर ग्रालवर ।

११२१. **प्रतिस**०११ । पत्र सक्यान्६३ । स्रा०११ 🗙 ५ इल्डा ले० काल स०१६०५ । पूर्मा। बेपुन स०६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादबा, (राज्) ।

विशेषः - रूबनाथगढ मे प्रतिनिधि हुई थी।

१९२२. दू हियामत उपदेश  $\times$  । पत्र स० १४ । म्रा० ७ $\times$ ४ इन्छ । भाषा-िहन्दी (प्रष्य)। विषय-घमं ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । ले० कात  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्टत स० १६० । प्राप्ति स्थान-िहि० जैन मन्दिर दवनाना (ब्रिटी)।

**१९२३. तस्ववीपिका**  $\times$  । पत्र स० २२ । ब्रा० १२ $\frac{1}{3}$   $\times$  ६ दश्व । भाषा—िहन्दी । विषय—घमं । २० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेठन स० १५६० । प्राण्ति स्थान—महास्कीय दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

१९२४. तत्वधमम्मितः । पत्र म०२० । ग्रा० ११ भः ४ ४ वः । भाषा-सम्बन्धः । विषय-धर्मः । २० कालः ५ । ले० कालः ५ । अपूर्णः । बेष्टनः स०१२५ । प्रास्तिः स्थानः—दि० जैन मध्यि विल्लासः (वृदी) ।

१९२५. तीर्थवंदना द्रालोचन कथा  $\times$  । पत्र ग० १३ । द्रा० १० $\frac{3}{2}$  ६ इन्छ । भाषा—सम्बन्ध । विषय-धर्म । २०कास्  $\times$  । ले० काल  $\times$  पूर्ण । वेष्ट्रत स्न० ६१-१७१ । प्रास्ति स्थान—दि० त्रत्र मन्दिर तीमसाथ डोडाराय[सह (टोक) ।

११२६. तीस चौबोमो 🕜 । पत्र ग० ४ । घा० १० अ ६ इख । भाषा—हिन्दी । विषय धम । र०काल— । नं०काल म०१६३६ । पूर्ण । वेष्ट्रन म०६१ । **प्रास्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैसाथा ।

११२७. तेरहपथ खडन—पश्चालाल दूनीवाले । पश्चर० १६ । प्रा० १० । १६ खा । भाषा — स्टिंग वर्षा । विषय — यमं । २०काल 🗙 । लेक्काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३२५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ जीवाल व दी ।

११२८. त्रिवर्णाचार—ध्री बहासूरि । पत्रस० ४७ । प्रा०११ × ४ इन्छ । भाषाः— सम्हतः । निषयः—पाचार वास्यः । र०कातः × । ले०कालः - । स्रपूर्णः । वेष्ट्रन ग० ४१६ । प्रास्तिः स्थानः—दि० जैन सदिर प्रवादनी देनी (टोकाः)।

यन्य का प्रारम्भ के नम श्रीमच्चतृष्किति शीर्षेस्यो नम । ध्रश्नोस्तते त्रियसाना शोचाचार-विधि-त्रम । श्रीचाचार विधि प्राप्ती, देह सम्बद्धान्ते ।।

सन्धि समाप्ति पर-

इति श्री बहागूरि विरचितं श्रीजिनसहिता मारोद्धार प्रतिष्ठातिजक नार्मन ति र्शागकाचारमञ्जे सुत्र प्रमोसध्यावदनदेवाराधनायात विश्वदेवसत्तर्पाणादिनविधानिय नाम चनुर्थ पर्व । **११२६. त्रिवराधिगर-सोमसेन।** पत्रसु० १२१। प्रा० १० × ६ इन्छ। भाषा—सस्कृत। विषय—प्राचार। र०काल सं० १६६७ कात्तिक मुदी ११। ले०काल स० १८६२ माह मुदी १०। पूर्ण वैधन-सं० १३४। **प्राप्ति स्थान**—हि० जैन मदिर पाण्वेनाथ चौगान वंदी।

**११३०. प्रतिसं० २** । पत्रस० १४४ । घा० १० ४ ४<sup>°</sup>, इत्त्र । लेकाल म० १८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्था**र.— वि० जैन मदिर पाष्ट्यंताथ चौगान वृदी ।

विशेष-गोर्डन ने तक्षकगढ़ टोडानगर के नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

**१९३१. प्रति सं० ३ ।** पत्र स० १०–१४३ । ग्रा० १० $] \times ५<math>]$  इच्च । au० काल imes । अपन्यं। बेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान** स्व दि० जैन मंदिर राजमहल टोक ।

**११३२. प्रति सं० ४।** पत्रस० १५२। प्रा० ६  $^{\lor}$   $\times$  ४  $^{\lor}$  इन्छ । ले०काल म० १८६४ सावन मुदी १। प्रपुर्ता। वेण्टन म० १६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब दी) ।

विशेष- १०१ से ४६ तंक के पत्र नहीं है। इसका दूसरा नाम धर्म रसिक ग्रंथ भी है।

१९३३ प्रति स० ४ । पत्रस० ४२ । भाषा — सन्कृत । लेक्काल स० १८०१ । पूर्णा कोटन स० २००। प्राप्ति स्थान दि० जैन पचायती मन्दिर मण्तपुर। इस मन्दिर मे एक यपूर्णप्रति स्रोप्ति :

. विशेष बुझी नाल ने सरतपुर मे प्रतिलिपि कर इसे मन्दिर मे चढाया था।

**११३४. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० १०४. । आर्था ११ ४ ४.डचा । ले०काल स० १०५२ पुग्गं। बेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

**११३५. प्रति स०** ७ । पत्र म० १०१ । घा० १२ imes ६ $^1$  इन्द्र । ले०काल स० १०७. सावन मुद्री १ । पूर्ण । बेपून म० १०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मदिर करोणी ।

विशेष गुमानीराम ने कल्यागपुरी के पचायती मंदिर नेमिनाथ में प्रतिलिपि की थी।

**११३६ प्रतिसं०६।** पत्रस०१०३ । स्रः०१० x ४<sup>3</sup> डळ्च । ले०काल स०१८५०। चैत द्वरी १४ । पूर्णा वेषुत स०१४ –२१ । **प्रास्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर कोटेडियो का दुर्गरार ।

११३७. दण्डकः ४ । पत्रसः २१। सा० १० १४ ६ ६० । भाषा—मस्यतः त्रिती । विषयः साचारणस्य । ० कालः । निककानः ४ । पूर्णः । वेष्ट्रत २० १४१६ । प्रास्ति स्थापः— भटारकीय दि० जैन सदिर स्रजमेर ।

**१९३६. वडक —** ४, एव स० ४,। सा० १० , ४ट्टेटच । भाषा—सम्बन्धः । ति । व साचार बाह्यः । २०कालः ४। तेष्कालः ४,। एगी । वेष्ट्रनं स० १०१४। **प्राप्तिः स्थातः** भट्टारीयः १० जैन महिन्यं स्वरोतः

**११३६. दडक** — 太 । पत्र स०१२ । प्राप्त ० ८ ८ । भाषा — हिन्दी । थिपसः प्राचार शास्त्र । र०काल > ले० काल ≾ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६१६ । **प्राप्ति स्थान** — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर फ्रजमेर ।

११४०. दडक- <ापत्र स०४। छा०११ x ४६ दश्यः। साया —सस्ताः विषयः — धर्मः े∘ज्ञानः ४। ले०काल स०१६१३। पूर्णः। वेष्ट्रन स०३१७। स्ट्रास्कीय दि० जैन मस्टिर स्रजीरः। ११४१. वडक—  $\times$  । पत्रस० २७ । ग्रा०  $\xi_{\chi}^2 \times Y_{\chi}^2$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— श्रावार शास्त्र । २०कात —  $\times$  । नं० कान —  $\times$  । गूर्ण । वेष्ट्रस० २० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सिंहर कोरका ।

**११४२. वडक प्रकरणः जिनहस मुनि** । पत्रस० २६ । आया—प्राकृत । विषय - धर्म । र०काल - 💉 । ले०काल —- 🔀 । पूर्णः । बेष्टुन म० ६०७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायती मदिर भगनपुर ।

**११४३. वंडक प्रकर्ण- वृत्वावन** । यत्रम्० २-२६ । आ०६६ ४ ६ इख । आपा --हिन्दी । विषय-स्थानार । र०काल----४ । ने०काल----- । अपूर्ण । बेष्टनम० ६२ । **प्राप्ति स्थान**---वि० जैन महिर कोटयाका नेणवा ।

**११४४. दंडक वर्**गन  $\times$  । पत्रसं ११२ मा० १० हे $\times$  ४) एवा । भाषा हिन्दी गर्छ । विषय-प्राचार । १०काल  $\times$  । लेक्सल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेहुनसर ११३ । प्राप्ति स्थान । १० जैन मन्दिर बोर्ग्मनी कोटा ।

विशेष-१६ में भागे पत्र नहीं है।

**११४५. बंडक स्तवन-गजसार ।** पत्रस**्**रा सा० ११ ४ ६ इक्त । भाषा — प्राहरः । विषय— मानरा रक्ताल - । ने०काव ४ । युग्पा । त्रष्टतस्य २१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरम्यो कोटा ।

विशेष—रित्दीटब्बाटीका महित है। लिखित ऋषि श्री ५ घोमगानस्य शिष्य ऋषि श्री ५ गोपाल त्रीप्रमाद ऋषि ∍तमी लिखित पटलार्थबाई कुमरिबाई।

११४६. प्रतिस०२ । पत्रस०७ । आ०१० ४४ इन्ता ले० काल 🖂 । पूर्णा । बेहनस० -४४ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष-सम्बत रख्या टीका महित है।

**११४७. प्रति सं०३** । पत्र मु०७ । या०६ १ ४ ४ है इस्त्रा ने० काल म०१७०६ । पूर्ण । बेग्रुत मु०२१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दबलाना (बुंदी) ।

विशेष-- प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

११४८, दशलक्षराधर्म वर्गन । पत्रसुरु १४ । ग्रा॰ ६ ६ १ इञ्च । भाषा — सम्हत, । विषय — धर्म । र०बाल । ने०बाल । पूर्ण । वेय्टन म०१४४७ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जेन मन्तिर प्रवर्ग ।

११४६, दशलक्षस्थर्म वर्णन '। पत्तरार ८:। प्राप्त ६२ उच्च । भाषा— हिन्दी (गदा) । विषय—प्रमं । २०कान । भ०कान । पूर्ण । वेप्टन ग०११६४ । प्राप्ति स्थान—प० दि० जैन मदिर स्रतमेर ।

**११५०. दशलक्षराधमं वर्शन**— ः। पत्रम० १८। म्रा० द $^1_2 \times ^2_2$  इज्यः । भाषा— हिन्दी । विषय—धर्म । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वष्ट्रम० ३६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर सक्कर, जयपर । ११५१. दशसकाराष्यमं वर्शन-रह्यू। पत्र स० २१। भाषा—प्रपन्न मा विषय—वर्म । २० काल $-\times$  । से॰काल $-\times$  । प्रपूर्ण । वेप्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन तेरहपथी मिटिर बसवा ।

११५२. दशलक्षम् भावना—प० सदामुख कासलीवाल । पत्रस० २६ । बा०—१४ ं ४ ८ इखा । भाषा — राजस्थानी (इढाडी) गणा । विषय - घर्म । र०काल — ४ । ले०काल म० १६५४ । पुर्णे । बेब्रनस० ६१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दोगा ।

विशेष — मांगीराम गर्मा ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी । रत्नकरण्ड श्रावकाचार मे से उद्घृत है ।

**११५३. प्रतिसं० २** । पत्र म० ३८ । प्रा० १२<sub>१</sub>०५ इश्वा । ले० काल — ४ । पूर्ण । बेष्टनम० १२४ **। प्राप्ति स्थान**—(द० जैन मदिर फनेटपुर लेलाबाटी (सीकर) ।

**११४४. प्रतिसं० ३** । पत्रस० २७ । घ्रा० १२५ / ७ इन्छ । ले०काल स० १६७७ फागुन सदी १० पूर्ण । बेक्स्स ७ १३७ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मन्दिर फतेक्टपुर शेलाबाटी (सीकर) ।

**११४५. प्रतिसं०४** । पत्रस०७: । स्रा०६ ६६ च । ले**०**काल --> । पूर्गा । वेष्टनम० ३**१ । प्राप्ति स्थान** —दि० जेन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

**११५६. प्रतिसं० ५।** पत्रम**०** ४६ । आ० १० है ८ ४ है इश्व । ले०काल ⋋ । पूर्ण । व¤नन० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अध्वाल मदिर उदयपुर ।

**१०५७. प्रतिसं० ६**। पत्रम**ः २०। ग्रा**० १२६ **४**६) इत्ता निककाल । पूर्णा । वसून स० ३५८।**१३**६। **प्राप्ति रुवान** दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

**११५६. प्रतिसं०७ ।** पत्र म०३१ । लेक्काल – ं ।पूर्ण । वेष्टन म०४२६ । **प्रास्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

११५६. दर्शनिक्शुद्धि प्रकरम् - देवभट्टाचार्य । पत्रम० १४२ । प्रा० १० ४) १३ । भाषा-सम्बन्त । विषय-स्पर्य । रक्काल ८ । जकाल । प्रयुक्ते । बहुत म००० ४६ । प्रास्ति स्थान-स्वर्णन मन्दिर जैन मन्दिर बडा बीमपथी बोमा ।

विशेष -- सालह कारमा भावना का वर्गन है।

११६० वर्षनसम्ति — । पत्र म०३। म्रा०१२ १५ इन्। भाषा प्रकार । विषय—धर्म । रक्काल ४ । लेक्बाल म०१७६२ वैज्ञाल मृदी ६ । पूर्ण । वेद्यन १८४ । ध्रापित् स्थान—दिञ्जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१९६९. दर्शनसम्बतिका**— । पत्रमण्डा प्राप्तः १९०५ १८२व । भाषा ग्राप्तः । भिष्य-धर्मः । रुक्तातः । लेक्कालः , । पूर्णः । वेष्टनं मण्डाण**ः प्राप्ति स्थान**—दिञ्जेतः साधः र दक्ताना (वृद्धीः) ।

विशेष-मूल के नीचे दिन्दी गद्य संग्रंथं दिया है। प्रत सं विश्वा हे-

इति श्रीसम्यक्त्वसप्तातिकात्रवृति ।

११६२. दानशील भावना— मगीतीदास । पत्रम० ३-१ । ग्रा० १०६८ ४ ८-व । भागा— हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र०काल ∠ । ले०वान ∠ । प्रपूर्ण । वेष्टन म० ११०-६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वीसपयी दोगा । **१९६३. दानशीततप भावना — मुनि ग्रसोग** । पत्रस $^3$  । भाषा — प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल —  $\times$  । ले०काल म $^0$ —  $\times$  । पूर्ग । वेग्टन म $^0$  ५७ ६८२ । प्राप्ति स्थान—दि $^1$  जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

## ग्र'तिम---

छदाइस छागा श्रयागायण श्रमीग नामा भीग पुगवण ।

मिद्ध तनि स्मरेय इमि जिसा होसाहिय सूरि खमतू तसा । इति

**११६४. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ६ । ग्रा० १०, ४ इङ्च । लेक्काल — ४ । पूर्णे । बेस्टन स० ५६~५४ । **प्राप्ति स्थान**ी६० जैन मन्दिर बडा बीसवर्षी दोसा ।

विशेष-४६ गाथांगे है।

**१९६५. दानारिकुलकवृत्ति**—१४२० २०६। भाषा - गस्युत । तिषय - प्राचार प्रास्त्र । रक्काल — , । लेककाल -- । पूर्ण । बण्डन ५० २१० । **प्राप्तिस्थान**—१४० जैन पचार्यनी मन्दिर, भरतपुर ।

**१९६६. हिजमतसार** । पश्रम० २१ । ग्रा० १२% ४० इ.च. । भ्रापा - सम्ब्रुत । विषय — धर्म । २०काल — ४ । लेकबाल । पुर्ग । बाटन म० १२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जेन मन्दिर भारता (श्राकः) ।

**१६६७. धर्म कुडनियां--बालमुकुन्द।** पत्रनर २६। बाठ १२६ च दव। भाषा -हिस्तो। विषय - प्रमाणकराज - । वेजाल मुठ १६२६ ब्रामात्र मुदी १०। कृता । वेस्टन स० ६६। **प्राप्तिस्थान** - दिरु देन प्रचारती मन्दिर ब्रववर।

११६६ प्रति स० २ । एत्र २०११ । त्रुक्तारः — । प्रपूर्णः । बहुनस् ०२४ । प्रास्ति स्थानः दिञ्जैन मंदिर दीवानजी भरतपुरः ।

**११६६ धमंद्राल ।** पत्र म० १। ग्रा०६ १ ५ इच । भाषा—ित्तरी । विषय — धमं। रुकाल । भुकाल । ग्रागं । वेषुनम० ३४५ । **प्राप्ति स्थान—ि**द**े जै**न सदिर दबलाना (वृद्यो।)

विशेष--- धार भी तात दी हो है।

१९७० धर्मवरोक्षाः स्रमितिमनि । पत्र सर् ३० । यार ११ ४ ६ व । भागाः सर्यतः । विषयः - धर्मा रक्षातं सर् १००० । तक्षालः २० १४६० । तिक पूरी ४ । पूर्णे । बेवृतस् २१४ । प्राप्ति स्थानः—मः दिरु ने मन्दिर (प्रजेषेर) । प्राप्ति निवार प्रवार ३ -

सबन् ११८० वर्षे कार्तिक विदि १ सामे मध्यारं रणांने श्री श्रीजननाथ चैत्यात्रय राजाधिराज-वां स्वयमण्य-चित्रयराज्ये श्रीमन् कारशाचे भशीनरपण्डः (बद्यागण प्राप्तक वी राममेगान्वमे २) रास्तितीत तरप्रदे आ सम्बम्भनं नत्त्रकुष्टारणाची राष्ट्राच्यां अ आरोमानीति तर्त्व विषय राजायं श्री वीरमन् आन्तारे विमनसेन मृतिक्रमंत्रक स्वयमेति व सीम्पाद साना। व कारण एवं गारीवा। व जामणा । श्रीरका वर्षाद विममनी स्राधिका विनयोजित । स्रा जिनाजित। श्री कारण गारीनार्व। व सान्नी। विषय स्वर्णा। **११७१. प्रतिसं०२।** पत्रस०१४४ । ब्रा०१०३  $\times$  ४३ इच्च । ते०काल स० १७३३ ब्रासोज बुरी ७ । पूर्या विकृतस०१४४० । **प्राप्ति स्थान**— स०द० त्रैन मन्दिर, स्रजमेर ।

**११७२. प्रति स. ३।** पत्र स० १०० । स्रा० ११ $\frac{1}{9} \times 3\frac{1}{5}$  इन्छ । लेक्काल स० १७२१ । वेष्टन स० १२३ । प्रा**प्ति स्थान** – दि० जैन सन्दिर लक्कर जयपुर ।

**११७३. प्रति सं० ४ ।** पत्र सं० ६२ । ब्रा० ११×५३ इन्दा । ले**०**काल × । ब्रपूर्स । वेष्टन स० १२०/१७ । **प्रास्तिस्था**न—वि० जैन ब्रयवाल मन्दिर उदयपुर ।

**११७४. प्रतिसं० ४.।** पत्र सं० १.से ६६ । द्या० १० ८.४¦ इञ्चा ले० काल र । अपू<sup>र्णा</sup> । वेकन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रयत्नाल मन्दिर उदयपुर।

**११७५. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० ११६ । ले० काल सं० १६६७ कार्त्तिक बुद्दं १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४६–१६ । **प्राप्ति स्थान**-—दि० जैन मन्दिर सौगारणी करोली ।

विशेष—मनत् १६८७ वर्षे कात्तिक बाँद १३ शनिवासरे भोजमाबाद मध्ये लिखन जोभी रामा। स्वस्ति श्री वीतारागायनम. शबन् १७१२ सामानेरी मध्ये जीमा चैत्यार्ल टोल्या के देहरे बायिका चट्टधी बार्ट होरा। चैति नाहिल—हम्मेशिका। (धर्मपरीक्षा) शास्त्र छठाई के प्रत के निमित् । प्रयंका चन्द्र शी देहरे मेन्द्री (कर्म) कुमर्ख के निमित्त सिंदि चैत्र बाँद - प्रमीबार ।

**११७६. प्रति सं० ७** । पत्रस० ११२ । ग्रा० ११ > ४ दे डब्ब । ले०काल २ । ग्राग्गे । वेक्नस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती सदिर करीती ।

**११७७. प्रति सं० ६ ।** पत्र म०१०२ । ले०काल म० १७६६ वैमाल मृदी २ । पूर्गा । तपुन म० २**० । प्राप्ति स्थान** —दि० जैन बडा प्लायती मन्दिर डीग ।

**१९७६. प्रति सं०६ । पत्र** स०**११० । ग्रा०१२ - ४ इल्बा**। ले०काल ग० । पृशं। **बेब्रन स**० स**० ३३ । प्राधित स्थाल – दि० जैन म**न्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति श्रमुद्ध है।

**११७६. प्रतिसं० १०**। पत्र म० ६६। ले०काल म० १८४४ माह मदी १६। पूर्ण। बेष्टुतस्० २२७। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष- फरुखाबाद मे प्रतिलिपि की गई। स० १६२२ में सरनपुर के मस्दिर में बढाया था।

**११६०. प्रतिसं० ११ ।** पत्र मण्डदा । २०काल ४ । लेक कालकम् ०१७६२ मगसिर सुदी ६ । पर्मा । बेष्टन मक २३४ । **प्राप्ति स्थान** । दिव जैन पत्रायती मस्टिर भव्तपुर ।

**११८१. प्रतिसं०१२** । पत्र स०११६ । घा०१२ ४ डच । भाषा—सम्कृत । तिकार । लेक्काल म०१६६४ फालुण सुदी ६ । पूर्ण । वेषून स०३२७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन संस्टर बोरसली कोटा ।

प्रणमिन - मनत् १६६४ वर्षे फागुण बुदी ६ गृश्वामरे मेश्रिवा वास्तर्ध्य राजाधिरात्र महाराज। धी मानसिक राजप्रवर्तमाने स्रजितिताथ जिनवेद्यालये धी मूलवर्षे व स गर्च्य कुरद्ध भ गृज्य-इ देवास्वपृष्ट्रे प्रथमिदिदेव स्वेहेतवाल दोसी गोत्र वाले सचवी रामा के बणवालों ने प्रतिनिधि कराई थी। प्राप्ते गत्र पट गया है। **११८२. प्रति सं० १३।** पत्र स० ८७। धा० १० $\frac{3}{4} \times \frac{1}{2}$  इन्छ। ले०काल स० १८३६ सावता सुरी ६। पूर्ण । बे० स० १४६/३६ । प्राप्ति स्थान—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर उन्दरगढ (कोटा)।

**११८३. प्रतिसं०१४ ।** पत्र स०८५ । ग्रा०१२ ४६ इचा ले०काल स०१८७८ माघ बुदी७ । पूर्सावेष्टन स०२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय स्थामी मालपुरा (टोक) ।

विशेष---ग्रन्थ के पत्र एक कोने से फटे हये हैं।

**११६४. प्रतिसं० १५ ।** पत्र स० ६१ । ग्रा० १३ ८ ६ ड च । ले० काल स० १६७७ । पूर्गा । वे० स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दुनी (टोक) ।

**११८५. ्रतिसं० १६** । पत्र म०५ । आ०१२ ४४ इ.च.। ले० काल ४ । पूर्ण। बेण्टन स०१७३ । **प्राप्ति स्थान**— (द०जैन मन्दिर पार्ण्वनाथ वदी।

**११८६. धर्मपरीक्षा** · X । पत्र म० २८ । ग्रा० १० ⊼ ४} डख । भाषा—सन्हत । विषय-—बर्म । र०काल-— ४ । ले०काल म० १४४८ जाके फागुन मुदी ४ । पूर्ग । वेग्टन स० १६७ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-- पार्थपुर नगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिप हुई थी।

**११८७. धर्मपरीक्षा भाषा—मनोहरदास सोनी।** पत्रम**ः १४**। ग्रा० १२४५१ दृश्यः। भाषा-ीरसी। विषय—पर्म। उ०काल म०१७००। ले०काल— ८।पूर्णा। वेष्टुन म०१६१७। प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजनेरः।

**११८८. प्रतिसं० २** । पत्र स० १२१ । घा० १२६ ८ ४% डला । ले**०काल स०** १८८३ सादवा सर्दा ८ । पूर्ण । बहुन २० १०८८ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर स्रवसेर ।

**११८६. प्रतिसं० २** । प्रयास**० १**३६ । स्थार ८१ - ४ इन्छा । लेक्काल 🔑 । पूर्ण । बेट्टन सक ७४ ४३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुनरपुर ।

**११६०. प्रतिसं**० ४ । पत्रम० उदे । प्रा० ट्रेडिया । लेक्काल स० १७६८ । पूर्ण । वष्टन स० २८१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन सम्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--गृटका सग मे है।

**११६९ प्रतिसं० ४** । पत्र स० ११६ । प्रा० ११८ । ६६७। । ते०काल स० १६७२ । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ३३ ।**प्रान्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मस्थित उदयपुर ।

**१९६२. प्रति सं० ६** । पत्रम० १८३ । ग्रा० ७३ - ६) इश्व । ले**०काल सं०** १८४२ । पूर्गा । वेष्ठन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**११६३. प्रति सं० ७ ।** पत्रमण्याः । प्राण्य १२८५, इत्यः । लेक्काल सण्य १८६० । पूर्णः । बेष्टनसण्य १६७ । **प्राप्तिः स्थान**----दिल्जीन लम्बेश्वाल मन्दिर उदयपुरः ।

# विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

सिति पौष मुदी ६ वृहस्पतिवार म० १८६० का श्रीमान परमपूज्य श्री राजनीति जी तन् क्रिप्य पण्डितोत्तम पण्डित श्री जगस्पदासजी नन् क्रिप्य पण्डितजी श्री दुनीचन्दजी तन् क्रिप्य लिपिकृतं पण्डित देवकरमगम्नाय प्रजयगढ का लिलायित पुरुषपवित्त दयावत धर्मातमा साहजी श्री तोलजी गोत्रे राउका स्वात्मार्थ बोधनीय प्राप्ति भेवत । ग्राम इन्द्रपूरी मध्ये ।

**११६४. प्रति सं० द**ा पत्रस० ६३ । मा० ११ ्र ६ इ.स. । लेण्काल स० १८०७ वैज्ञास सुदी ३ । पूर्ण । बेक्रनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**िद० जैन सन्दिर फलेहपुर क्रेस्सावटी (सीकर) ।

**११६५. प्रतिसं०६ ।** पत्रस० ८५। ब्रा० १२ :६ इचा । ले०काल ---स० १८५५ गाँकि सुदी ८ । पूर्म । बेपून स० ६२।५२ । प्राप्ति स्थान --- स० द० जैन मन्दिर भाववा (राज०) ।

विशेष सीताराम के पठनार्थ परणुराम लुडाहिया ने प्रतिनिधि की थी।

**११६६. प्रतिसं० १० ।** पत्रस० ६४ । आ० १२४६ $\frac{1}{2}$  ट्वा । लेक्काल २४० १०३७ वैणाल सृदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४६।४४ । प्रा**प्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष - सम्बदास रावका ने भादवा में प्रतिलिंग की थी।

**११६७. प्रति सं० ११**। प्रास्त ११४८। प्राठ १९५५ एड्या विकास 🗙 । पूर्णा विकृतसर ५०-७२ । **प्राप्ति स्थान** विकास महिदर नेप्रतायी दीसा ।

विशेष -- दोल-राम नेरापथो न प्रतिनिधि करवासी थी।

**११६८, प्रतिसं० १२ ।** पश्चन ११३ । लेब्काल स०१६५१ । पूर्ण । यहनगर <sup>१६</sup>।-३ । प्रा**प्ति स्थान**—दिरु हेन गुन्दिर बडा बीसपुर्था दीमा ।

विशेष-महाराजा प्रवासीयह जी के जासनकाल में दीमा में प्रतिलियि की गई थे।

**११६६. पति सं. १३** । पत्रमः १३३ । आ० १५ ६५ उच्च । लेक्काल स० १०० **प्राध्यि** स्थान—दिव्ह केन मन्दिर गामासी करीती ।

**१२००. प्रतिसं० १४** । पत्रस**० १०२** । स्रा०१२ - ५१ डवा । त०काल - । स्रपुरण । ४०० । स०१३० ॥ **प्राप्ति स्थान** -- दिल्जीन सन्दिन करोला ।

**१२०१. प्रतिसं० १५** । पत्र २० ७० । लेक काल २० १८१२ यापार गुरा । पुरा । वेक्रन **२० । प्राप्ति स्थान** दिव्जैन बटा प्रवासनी मंदिर (डीक्) ।

**१२०२. प्रतिसं० १६ ।** एक स० १२० । लेककात स० १२१७ । पुरः । बधुन स० ७७ । प्रा<mark>रित-स्थान - ११</mark>० जेन पनामनी सदिर हण्डावाला का डीग ।

विशेष -- मेवाराम पाटनी ने जिस्तवाया था।

**१२०३ प्रतिसं० – १७** । एक स० ११३ । लेककल—स० १८६० साझे बढा ६ । पूरा । प्रतन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान-दि**० जन पश्चायती मदिर हण्डा बालो का डीन ।

**१२०४. प्रतिसं० १म**ा पत्र स० १३३। आ०१० ४७१ इ.च. । ४०काल — ७०१६४२ पूर्यो । बेहुतस०१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पश्चायमा प्रदिर कामा ।

**१२०५. प्रतिसं० १६** । पत्रस० १०४ । झा० १११ x ४ ई इन्त्र । ले**०का**ल ग० १८४१ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । बेप्टन स० ४७ । **प्राप्तिः स्थान**— दि० जैन मदिर बैन ।

विशेष--वैर मे प्रतिनिधि हुई थी।

**१२०६. प्रतिसं० २० । पत्र**सं० ६३ । ग्रा०११ 🗴 म इश्व । लेक्काल स०१६२० । मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०१४ । **प्राप्तिः स्थान** — दि० जैन पनाथनी मन्दिर बयाना ।

विशेष— ६६ पत्र के ध्रांग भक्तामरस्तोत्र है। ले० काल स० १८३४ दिया है। प्रति जीशां शीर्म है।

**१२०७. प्रतिसं० २१** । पत्रस० १८२ । लेक्काल १८७४ सावन वदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायनी मदिर भरनपुर ।

विशेष--जोधराज ने प्रतिलिप करवाई थी।

**१२०६. प्रतिसं० २२ ।** पत्रस० २२४ । ले**०काल म०१७**४६ । पूर्णा। बेपून म०३२६ । प्राप्ति स्थानः—िक जैन पचायनी मदिर भरतपुर ।

विशेष - विद्याविनाद ने मागानेर में प्रौतिलिपि की थी । गुटका साइज ।

**१२०६. प्रतिसं० २**३ । प्रवस्० १६६ । लेखन काल १०२४ । पूर्ण । बे<mark>टुनस० ३२६ । प्रास्ति</mark> स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--भरतपूर में जवाहर्रागढ़ जी के जासनकाल में प्रतिलिपि हुई।

**१२१०. प्रतिसं० २४** । पत्रस०६६ । ले०काल म०१७६१ । पूर्ण । बेटुनस०३३० । **प्राप्ति** स्थान—विरुजन पत्रासर्ग मस्यापुर ।

१२११. प्रतिसं० २५ । पत्रस० ६८ । ले०काल स०१८१३ पूर्णा । वेष्टनस० ३३१ । प्रास्ति सथान—िंदर क्षेत्र पत्राधनी सन्दिर भरतपुर ।

विशेष तक्षकपुर म प्रतिलिपि हुई थी।

१२**१२. प्रति सं०२६** । पत्र म०१२४ । ले० काल १६१३ । पूर्मा । वे**ष्ट्रन स**०३३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचावती मन्दिर भरतपुर ।

१२१**२. प्रति सं**० २७ । पत्र स० १२३ । लल्काल ः, । पूर्णः । बे**टुन स०** ३३३ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचालनी महिदर भरतपुर ।

**१२१४. प्रति सं० २६ ।** पत्रमण् १२१ । ग्राण् ११ ( उ.इ.च.) लेक बाल मुक्त १२२५ । पूर्णः । बहुनस**्**च । **प्राप्ति स्थानः** अध्यक्षणः दिक्ष जैन प्रवायनो मन्दिरः, ग्रलबरः ।

**१२१५. प्रति सं० २६** । प्रप्ततः ११२ । ग्रा० १२ ६ इल्बा । लेक्काल म० १६६३ स्थारु मुरी १०। पूर्णा । बेधूनम**०**४६ ४७ । **प्राप्ति स्थार**ं दि० जैन पत्राधनी मन्दिर, ग्रलनर ।

**१२१६ प्रति स० ३०** । पनस० १०३ । लेक्काल म०१६२२ कार्तिक बुदी उ.। पूर्मा । वेदन ग० १० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मस्टिर ग्रास्वर ।

**१२१८. प्रति सं०--३२ । पत्रसः० ८६** । ग्रा०१२ १<sup>५</sup>९ इ.च्या ने क्यार 🕟 । पूर्ण । बट्टास० २१४ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा। **१२१६. प्रतिसं० ३३ ।** पत्रसं० १४२ । घा० १० $\frac{5}{4} \times \chi^2_{\frac{5}{4}}$  इचा । ले० काल स० १६१२ । पूर्ण । बेष्टनस० २६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर, दवलाना (ब्रूदी) ।

१२२०. प्रतिसं० ३४ । पत्रस्य ६७ । ने० काल ४ । पूर्णं । जीर्गा शीर्णः । वेष्ट्रन स०३६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नेरह पथी मालपुरा (टोक) ।

**१२२१. प्रतिसं० ३५** । पत्रस० १२ । ले० काल स० १६०१ द्यावाड मृदी १३ । *वपूर्ण* । बेक्रनस०-३३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पार्धनाथ टोडारायसिह (टोक)

**१**२२२**. प्रतिसं० ३६ ।** पत्रसु०४६ । फ्रा० ८ $^1_{\ell}$  × ६ इन्ध ।  $^{\prime}$ ०काल  $^{\prime}$  ।  $^{\prime}$ वे काल  $^{\prime}$  । प्रयुर्णे । वेष्टनसं०१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

**१२२३. प्रतिसं० ३७ ।** पत्रस०—१३४ । स्ना० ६ 🗴 ५ इल्बा। ले० काल म०१८६४ । पूर्वा। बेक्नस०—६४ । **प्राप्ति स्थान**ः विकास तरितर राजमहल टोक ।

विशेष-- मटु तोलाराम भवानीराम दमोरा ने प्रतिलिपि की थी।

१२२४ प्रति सं० ३६ । पत्रस० १४ । प्रा० १०×७ इश्व । ले० काल- । अपूर्ण । वेट्न स०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सडेलवान मन्दिर प्रावा (उगियारा) ।

१२२**५. प्रतिसं० ३६ ।** पत्रम० २-१०४ । आ०१०है र ६१ डला। लेक्सल म० । पूर्ण । बेहन २० -११२ । **प्राप्ति स्थान-**-दि० जैन मन्दिर पत्रायनी दूसी (टोक)।

**१८२६. पतिस्ं ४०।** पत्रः स० १०६ । घा०१६ ५१ इ.स. लेक्सल । पूर्णः । देशन स०२ । **प्राप्तिः स्थान**—दि जैन मदिर पंचायती देती (टोक)

**१२२७. प्रति स० ४१ ।** पत्रस० १०७ । द्या**० १**२ ० ६ दश्चाले कतन म० १८४० फागण इसी २ । पूर्मा । बेब्रन म० १६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर कोटथों का नैणका ।

**१२२६. प्रतिसं०४२ । पत्र** स०१०१ । आर०११ ४ इच्चा तेलकात स०१६४० कासूण. अदी ७ । पूर्ण । बेबून स०१४ । **प्रास्ति स्थान** दिल्जैन तिरह प्रथीमदिर, नैस्सवा।

**१२२६. प्रति स० ४३ ।** पत्र स० ११२ । खा० १००४ द्वता निकाल स० ४५.४० पूना । बेप्रत स० ११६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर श्री महाबीर स्थानी बोदी ।

**१२३०. प्रति सं० ४४ ।** पष्ट स०६० । बा० १० - ४५ न्य । ले० हात ४० ४००० पोप सदी १४ । पूर्ण । बेहत स०१ । **प्राप्ति स्थान--**दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाय वृदी ।

विशेष अरगप्रपुर में विनयसागर के जिल्ला ऋषिदयाल ने प्रतिलिधि की थी।

**१२३१. प्रति सं० ४४ ।** पत्र २०६६ । स्ना०१० - ६१ डखा। लणकारा— ग० १८२० पौष सुदी ६ । पूर्णा विष्टन स०६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० प्रेन मन्दिर पश्चिताय वाणन वृती ।

**विशेष** — लोचनपुर मंलिल गयाथा।

**१२३२. प्रति सं०४६ ।** पत्र ग०६३ । छा०१२ , ६ इन्छ । ले० काल — म०१६४६ छषाढ मुदी ह। पूर्णा । वेष्टुन म०३६ । **प्राप्ति स्थान** — उपराक्त ।

विशेष—पवार्ड माथोपुर के गढ रगायरमोर में झामर के राजा प्रवापसिंह के शासन काल से समझा पायुरास के पुत्र निहालबंद ने प्रतिलिधि कराई थी। पुस्तक प॰ देवीलाल चि॰ विरधूचंद की है।

**१२३३. प्रति सं० ४७ ।** पत्र स० १०४ । बा० १२्रै×७ इच । ले०काल—स० १६७६ । पूर्णे । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बूदी ।

विशेष- चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

१२३४. धर्मपरीक्षा बचितका-पन्नालाल चौधरी। पत्रसः १६२। म्रा० १०४७ इन्छ। भाषा---हिन्दी गद्य। विषय -- धर्म। २०काल स० १६३२ । ले० काल----×। पूर्ण। वेष्ट्रत स० ३१। प्राप्ति स्थाल - दि० जैन मध्यि भागवीर स्वामी. बंदी।

**१२३४. प्रति सं२।** पत्र स०११७। म्रा०१२३४ - इ.ज. । ले० काल स०—१६५१ स्रापाङ सुदी १४। पूर्णः । बेष्टुन स०५३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन सन्दिर, श्री सहावीर स्वामी बदी ।

**१२३६. घर्मपरीक्षा माषा—बाबा दुलीचन्द**। पत्र म०२४१। भाषा—हिन्दी। भाषा— धर्म।र०काल— x ।ले०काल म०१६४० वैमाल सुदी३।पूर्णावेष्टन म०३६। **प्राप्तिस्थान—** दि० जैन मन्दिर दीवानची भरनपुर।

विशेष -- भरतपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**१२३७. घर्मपरोक्षा भाषा सुम्रतिकोर्ति** । पत्र म० ७६ । ब्रा० १०⋌४ॄँ इश्वा । भाषा — हिन्दी (पद्य) । विषय — धर्म । र०काल म० १६२४ । ले० काम स० १६४६ । पूर्मा । वेष्टन म० १४ । **प्राप्ति स्थान ।** वि० जैन धप्रवाल मंदिर उदयपुर ।

**१२३८. धर्मपरीक्षा भाषा—दशरख निगोत्या** । पत्रस० ११० । चा० १२.४ १ ट्या । भाषा — हिन्दी ग्रह्म । १०काल स०—१७१८ फापुन बुदी ११ । ने०काल—म० १७६० । पूर्ण । वेष्ट्रन स– २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी व दी ।

**१२३६. प्रतिसं० २** । पत्रस० ३५ घा० १०<mark>१ ४</mark>४ इ.स. । ले०काल स० १८२० माह बुटी ६ । पर्या । बेग्रन सं०६४ । **प्राप्ति स्थान**ः—दि० जैन-पदायती मदिर, करौली ।

**१२४०. प्रतिसं० ३** । पत्र स० २३५ । आ०१२ × ५२ इ.च. । लेखन काल—स० १७५० । पूर्ण । वेटटन स० १९६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

## **विशेष** — गदाण

ससार में भौता जोवा के मुख्युख को झातर हार्ट केती सेर सिरस्थोंत्रे तो जाग्गिज्यों। भावार्थ से योजु ससारी जीवार्स दुखती सेरू बरावर झर मुख न सरसी बरावरि जागाज्यों।। २१ ।।

## ग्रन्तिम पाठ---

साह श्री हेमराज मृत मानु हमीर दे जागि । कुल नि गोन श्रावक यम दश्चरपाज दलागी ।। १।। सबत् मतरासे सही अस्टदण श्रप्तकाय । फागुगा तम एकादणी पूरगा गाम मुमाय ।। २ ।। यमे परीक्षा जबनिका मुद्दरदास रहाय । भाषमी समस्ति दशदय हति चित लाय ।। ३ ॥ इति श्री ग्रमितगति कृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी वचिनका बालबोध नाम भ्रपर नाम तात्पर्ययण्ये टीका तस्य धर्मार्थ दणरथेन कृता समाप्ता ।

**१२४१. धर्मपंजिवशतिका—बर्णाजास ।** पत्र सरु ३ । प्रारु ११ $\times$ ४ $^3_2$  इश्व । मापा—मापा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल— $\times$  । ने० काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रत सरु १६६ ।

विशेष - ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है-

स्नादि सारा—भव्य कमल मायह मिद्ध जिलानि हुवालिह सद पुज्ज । ऐसि सिन गुक्बीर पर्गामियतिय मुधिभव महत्ता ।। ससामज्ञिक जीवो [हब्धिमिच्छर विस्तयनसतो । सनहतो जिलासम्म सहितसञ्जाय निएहेह ।। २।। चजमह दुह सत्तो चजरामी लक्क जीला सहक्तिसो । कम्मफल सुजतो जिला धर्म विवर्जिज उसीवे ।। २।।

श्चन्तिम--जिराधम्म मोक्खछ ग्ररागा हवेहि हिमगायरगा ।

इय जारिंग भव्वजीवा जिल्म्प्रस्थिय धम्मु प्रायरिंह ।। २० ॥ एतम्मल दसराभत्ती वयमगुपेहारा भावत्ग। चित्र। । प्रते समहराग किञ्जद इच्छीह मुनिवरण्याणी ।। २५ ॥ मेहा कुपुर्हाग् चद भवदु नायरण जात्मपन्तिमा । चम्मिवनासमुदह भीगद जिल्हान वहंग्या। २ ॥ इतिसमें प्रविचारिका मध्योगीं ।

प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर दीवनजी कामा ।

१२४२. **धर्मप्रमोत्तरी** । पत्र स०१ । प्रा०८२६ १३३२ । भाषा - हिन्दी । १०काल-४। **२०काल स०१८८६ यवाढ** बुरी १२ । पूर्ण । बेहनस० ३४ । **प्राप्ति स्थात** --दि० केन मन्दिर वरस्पनी मालपुरा (टोक) ।

विशेष— जन्म पत्र की साइज का लम्बा पत्र है।

**१२४३. धर्ममडन माथा**—लाला नथमल । पत्रम० ७०। घा० २१८६ इन्य । भाषा हिन्दी । विषय --धर्म । र० काल ्रा | लेखन काल म० १६२६ पूर्ण । वधून त० १६०-४६ । प्रास्ति स्थान--दिक जैन मस्टिर कोटिंडयो का ४४एपर ।

**१२४४. धर्मरत्नाकर—जयसेन** । पत्र म०६०। ग्रा० ११४४.इ.च्च । भाषा-सम्बन्ध । विषय—समे । रक्तान म०१०४४ । लेक कालम०१६३४ चैन मृदी ३ । पूगः। व.म.१०३३ । **प्रास्ति** स्थान—अ०दिक जैन मदिर अजनेर ।

विशेष - अजमेर मध्ये लिखित ।

**१२४५. प्रतिसं०२** । पत्रम०६१ । ग्रा०६ × ५ है इक्षा लेककाल म०१८४८ कालिक ्दी ६ ।पूर्णे । वेष्टनस०१२०२ । **प्राप्ति स्थान**—अ०दि० जैन महिर ग्रजमेर ।

विशेष - प॰ गोपालदास ने अजमेर मे प्रतिनिधि की थी।

**१२४६. प्रतिसं० ३**। पत्रसं० १६५। म्रा० ६×४} इश्वः। ले० काल स० १७७५ वैणाल गुदी ७। बेष्टन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—गान्त्र भण्डार दि० जैनमन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--महात्मा धनराज ने स्वय पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१२४७. धर्मरसायन - पदानिस् । पत्र सन्या १३ । भाषा—प्राहृत । विषय—पर्म । र०काल —  $\lambda$  नेव्यन काल —  $\lambda$  । पूर्ण । तृष्टन स०४०८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन प्रवायनी मन्दिर भरतपुर ।

१२४६. प्रतिसं०२ । पत्र स०१० । ग्रा०१० ५ १ उल्बाले कल्ला पूर्णा । बेहुन स० ५ - । प्राप्ति स्थाल दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१२४**६. धर्मगुक्तध्यान निरू**षस्य — ० । पत्र ग०३ । भाषा — मस्कृत । विषय — धर्म । रक्ताल — ४ । लेककाल ४ । पूर्ण । बकृत स० ६२।२४१ । **प्राप्ति स्थान** — सभवनाथ दिवर्जन मन्दिर उदयपुर ।

**१२५०. धर्मसग्रह श्रावकाचार पंजिसको।** पत्र सक् ६३। ग्राव ११८ ४ इन्छ । भाषा—सम्प्रत । विषय —ग्राचार । रकाल सक् १४४०। तेकाल सक् १४२६। पूर्ण । बेहुन सक २०१। **प्राप्ति स्थान**—प्रदारकीय दिव जैन सन्दिर खजगर ।

**१२५१. प्रति स०२ ।** पत्र स०४५ । घा०१२ , ४८ इ.स. । ल०काल स०१७८८ श्रावण सुदी ६ । पुर्णा विष्टन स०२६ । **प्रास्ति स्थान** दि० जैन सन्दिर ग्राटिनाथ वृदी ।

विशेष--द्रव्यपूर नगर के चन्द्रप्रभ चैत्यालय में यशकीति के शिष्य छाजूराम ने प्रतिलिपि की थी।

१२**५२. प्रतिस<b>०३ ।** पत्रस्य ६६ । आग्रहर्-४, इटच । लेश्काल मश्रद्धः । वेस्टन स्याद्यान स्थान - आस्त्रसण्डार दिया जैन मस्टिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष- महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में यस्तराम के पुत्र सेवाराम ने नीमजिनालय में जिल्हाथा ।

१२५३, धर्मसार—प**ाशियासा**। पत्रस**ं** ३६। प्रा०१०} ४ ५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषयः धर्म। र०वाल स०१७३० वैशास सुदी ३। ले**०**काल स०१६५६। पूर्ण। वेच्टन २०१६२२। **प्राध्तिस्थान**—स०दि० जैन भण्डार धर्मर।

**१२५४. प्रति स**० २ । पथन० ४८ । ग्रा५ १० ः, ५, इञ्च । लेक्काल स० १७७६ अगहन सुदी २ । पूर्वा । वेस्टन सम्या ४११ । **प्राप्ति स्थान**— महास्कीय दि० जैन भण्डार अजसर ।

**१२५५. प्रति सं०३।** पत्रसुर ७२। बा०३ ६ इञ्चा ले**०काल स०**१६४६ भादवा मुदी ६। पूर्णा बेहुन स० ३१२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

१२४६. प्रति स०४ । पत्रस०३४ । प्रा०१२ ४ ६ टब्ब्ब । ले०काल स०१६६१ चैत्र सदी १३ । पूर्णा विद्यत स०५६-६ प्रास्ति स्थान्—दि० जैन सम्बर्ग नेप्टपथी दीसा ।

विशेष—श्री नाज़बाल दौसा बाले न सवार्ट माशोगुर म प्रत्य की परिविधि हुई थी। ग्रंथकर्ताने सकलकीनि के उपदेश से ग्रंथ रचना होना लिखा है।

१२५७, प्रति स० ६ । पत्र स० ४४ । प्रा० १३ ४ ६ डब्ब । ने०काल स० १८६८ सावत सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन स० १२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर करीली । **१२५६. प्रति सं० ६ ।** पत्र सं० ५३ । ग्रा० १३imes६ इन्छ । ले०काल imes पूर्ण । बेष्टुन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पन्नायती मन्दिर करोली ।

**१२५६. प्रति सं०७ ।** पत्र सं०५६ । घा० १्है×६१ डचा। ले० कःल स०१८५६ बैशाल सुदी १३ । पूर्ण। वेष्टन स०१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

**१२६०. प्रति सं० ट ।** पत्र स० ५५ । घा०  $\mathfrak{e} \times$  ५ $\frac{1}{6}$  इच्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विक्रोस-७६३ प्रस है।

**१२६१. प्रति सं० ६ । पत्र**सं० ६६ । **ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टुन स० २६६ । प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

**१२६२. प्रति सं० १०** । पत्रस० ५६ । घ्रा० ११ 🗴 ५ इच । ले०काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर, कामा ।

विशेष-हेमराज ग्रग्रवाल सत मोतीलाल शेखावाटी उदयपुर मे प्रतिलिपि करवायी थी।

**१२६३. प्रति सं० ११ । पत्रसं० ५३ । से०काल**—१८७१ । पूर्ण । बेष्टन म० ३७० । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रायती मंदिर मरतपुर ।

१२६४. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ६६ । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवासनी मन्दिर, भरतपुर ।

**१२६५ प्रतिसं० १३ । पत्रस**० ६६ । ते ब्काल स० १८७६ ज्येग्ठ सुदी १५ । पूर्मा । बहुन ग० २७२ । **प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन प्रचायती मन्दिर, भग्नपुर** ।

विशेष--दीवान जोघराज के पठनार्थ लिखी गई थी।

**१२६६. प्रतिसं० १४ । पत्रस०** ४६ । ग्रा० ६ , ५ इ.च.। ले० काल १ । पूरगः बेष्टुत स०२ । **प्राप्**तः **स्थानः**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैस्पता।

विशेष-सकलकीर्तिके उपदेश से ग्रन्थ रचनाकी गई थी।

**१२६७. प्रतिसं० १५ ।** पत्रस० ४२ । झा० ११ 🔈 ७ इञ्च । ले०काल स०--- १६५९ । पूर्मा । बेब्रुन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**-----दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

**१२६८. प्रतिसं० १६।** पत्रस० ४७ । ब्रा० १० ८ ७ डैब्ब । लेक्काल स० १६४१ । पूर्ण । बेबून स० २**१० प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नागदी बृदी ।

**१२६६. प्रतिसं० १७ । पत्र** स० ४६ । आ० १० ८ ७ इच्च । ने० काल स १६५१ वैज्ञाल शक्ता १५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नगरी वृदी ।

**१२७० धर्मसार**—> । पत्र स० २६। आ० १२ $\times$ १ दुः वा भाषा-हिन्दी  $_1$  त्वा $_1$  विषय—धर्म। र०काल— $\times$ । ले० कान स० <। पूर्ण। वण्टन म०६५। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

१२७१. घर्मसारसंग्रह—सकलकोति । पत्र स०२६। प्रा०१२ $\frac{1}{2}$  , ४ इच । भाषा—सम्क्रतः। विषय—पर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल- म० १५२२ । पूर्णः । बेहुनस०१३-४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटाईयो का द्वारपुर ।

**१२७२. धर्मोपवेश-रस्मभूषरा** । पत्र सं० १४६ । सा० १०३ × ४ इन्द्र । भाषा—संस्कृत । विषय -- प्राचार । र०काल स० १६६६ । ले०काल स० १६०३ । पूर्ग । वेष्ट्रन सं० २८६–११६ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन मदिर कोटेडियो का हुँगरपुर ।

ग्रिन्स पुष्पिका—श्री वर्मीपदेशनाग्नि ग्रथं श्रोमत्मकलकलापडित कोटीरहीद भूतभूतल विक्यातकीत्ति. भट्टान्क श्री त्रिभुवनकीत्तिपदमस्थित सूरिश्रीरत्नभूषण् विर्वावते प्रह्नोदपादि सकल दीक्षाग्रहण् गमगति. गमनोनाम एकादण सर्गः ।

देवगढ मध्ये भट्टारक देवचन्द जी ह बड जाति लघ शाखाया ।

**१२७३ प्रति सं०२** । पत्र स० ७४ । घा० १२ x ५१ इञ्च । ले०काल स० १७७६ वैज्ञाल सुदी ४ । पूर्गा । वेष्टनसं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बृदी ।

विशेष-मालपुरा के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में श्री भुवन भूपरा के शिष्य पडित देवराज ने स्वपटनायं प्रतिलिपि की थी।

१२७४. धर्मोपदेश $-: \times 1$  पत्रस० १६। प्रा०  $- \xi \times \xi_{\chi}^2$  इञ्च । भाषा—हिन्दी गढा । विषय—धर्म । र०काल  $\chi$  । ले०काल  $\chi$  । पूर्ण । बेष्टनस० १६०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष - प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

१२७६. **धर्मोपदेश श्रावकाचार-व.नेमिदत्त ।** पत्रस० २० । प्रा० १०हे ८. ४<u>६ै इत्त्र्व ।</u> भाषा —सस्कृत । विषय —ग्राचार शास्त्र । र०काल ४ । ले०काल स० १६५८ प्रापाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस०१३२७ । **प्राप्ति स्थान** -भट्टारकीय दि० जैन मदिर, ग्रजमेर ।

विशेष-- इसका दूरारा नाम धर्मोपदेशपीपूर्व भी है।

**१२७७. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० **३**१ । ले०कालस० १८२४ । पूर्यो । वष्टनसं० २६१ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन पश्चायती सन्दिर, भग्नपुर ।

विशेष -थागा में केसरीसिंह ने लिखी थी।

**१२७८ प्रतिसं०३ ।** पत्रस०३१ । फा० ६ है ४४ है उच्च । ले०काल --- ४ । पूर्सा। बेष्टतस०२२४ । **प्राप्ति स्थान** --- दि० जैन सदिर, बीबानजी कामा।

**१२७६. प्रतिसं**० ४ । पत्र स० ३१ । लेक्काल 💢 । पूर्ण । बेष्टन स० २२६ । प्राप्ति -स्थान — दि० जैन मंदिर दीवानश्री कासा ।

**१२८०. प्रतिसं० ४.।** पत्र स० ६-२६ । लेब्बान — 🗴 । स्रपूर्ण । वेष्टन सं० २६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१२८१. प्रतिसं०६ ।** पत्र स०३४ । द्या० १०×४<mark>१</mark> इञ्च । ले०काल - म०१८१२ चैन दुरी १०। पूर्ला । बेष्टुनस०२ । **प्राप्ति-स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा । **१२६२. प्रतिसं० ७ ।** पत्र स० २३ । बा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  हथ । ते० काल स० १६६१ भादवा सुदी २ । बेहन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

**१२६३. प्रति स० ६** । पत्रस० २३ । प्रा० ११ $\frac{3}{5}$  × ५ इंच । भाषा-मस्कृत । विषय-प्राचार गास्त्र । २० काल- × । ले० काल × । बेष्टुन म० १२६ । **प्रांति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

**१२६४. प्रति सं० ६।** पत्र स० २६ । प्रा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\delta_{p}^{p}$ । ले० काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० १९७ । प्राप्ति स्थान— द० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१२ **६ ५. प्रति सं०१०।** पत्र म०२४। ले०काल— > । ब्रहूर्णा वेठून म०२०। प्राप्ति स्थान— दे० जैन पत्रायती मन्दिर डीगा

**१२६६. धर्मोपरेश श्रायक।चार—प० जिनदास ।** पत्र स० ११७ । बा० १० ४ ४ न । भाषा—सम्कृत । विषय —प्राचार शास्त्र । र०काल — 🗴 । ले०काल-> । पूर्ण । वणन स० ७४ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—साह टोडर के धायह में ग्रंथ रचना की गयी थी । प्रारम्म में विस्तृत प्रणीस्प दी गई है।

१२८७. धर्मोपदेश श्रावकाचार-धर्मदासः । पत्र सर्वश्रः । स्राठ १०) १ १ इन्त । भाषा इन्द्रो । विषय-स्रावार शास्त्र । रक्ताल सर्व १४७८ वैशास सुद्री ३ । तेक काल सर्व १५७४ कार्लिक वृद्री ६ । पूर्ण । वेष्ट्रत सर्व १२ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन सन्दिर दीवान चेननदास पुरावी दीण ।

विशेष-चपावती में प्रतिलिपि की गयी थी।

१२=७. धर्मोपदेशसिद्धान्त रत्नमाला—भागचन्द । पत्रम० ७७ । प्राठ र ११०० । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २०काल स०१६१२ आषाढ वटी २ । ते०काल स०१६४८ अस्द्रश सुदी १८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६७-११३ । प्राप्ति स्थान-६० जैन मन्दिर नीमनाथ टोटारार्थम् (टारा) ।

**१२८६. पतिसं० २** । पत्रसर २६ । भाषा—हिन्दी । विषय—प्रमा किर्ण करण २०१६८१ । सपूर्ण । वेकन सर्थ ५६४ । **भाष्तिस्थान**—दिर्श केन प्रवासनी सन्दिर भरनपुर ।

**१२६०. नमस्कार महास्यः** । पश्चलः २ । प्रा०१० 🗴 ८) इत्यः । आपा-मस्कृतः । निषयः— धर्मः । १०कालः— । । ते कालः— । पूर्यः । वेश्वः स०१११ः । **प्रारितः** स्यान- दि० जैन प्रकालः पनायती मस्दिर स्रावतः ।

**१२६१. नरक दुःख वर्गनः भूधरदास** । पत्रम०४.। घा० ५½ ४ ७ ८०० । आपा इन्दि। विषय—धर्म । ७०काल— ४ । ते•काल ४ । पुग्यं । वृत्न म० ४६६ । **प्राप्ति स्था**न— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--कविवर द्यानतराय की रचनाये भी है।

१२**६२. नवकार ग्रयं**— 🗡 । पत्र म० ३ । ग्रावर है . . ४ इथा। भाषा-क्रियी (ग्रय)। विषय — घर्मा रक्काल 🗴 । लेक्काल म० १७३३ कार्तिक बुदी २ । पूर्णा । बेहन संव ३०१ । **प्राप्ति** स्थान—दिव जैन सन्दिर दबनाया (बुंबी)। **१२६३. नवकार बालावबोध ।** पत्रस**्ट ४**। माषा—हिन्दी । विषय—घम । र०काल  $\times$  केकाल —  $\times$  । पूर्णा । बेहनस**्ट ५२२ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

**१२६४. निस्यकर्मपाठसंग्रह** । पत्रस० १०। म्रा०११ $\times$ ४, इ.च.। भाषा —िहन्दी (पद्य)। विषय — धर्म । र०काल — $\times$  । लेकाल स०१६३७। पूर्ण । बेप्टन स०१६२। **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन भगवाल मन्दिर उदयपर ।

**१२६५. पंच परस्मेठो गुरा वर्**शन— $\times$  । पत्रस० २३ । प्रा० १०३ ×६३ इव । भाषा — हिन्दी (पद्य) । विषय—पत्र । २०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौना ।

विशेष--- प्रन्थ वही की साइज में है।

**१२६६. पंचपरावर्तन वर्**गन $\times$  । पत्रस**्ट** । प्राच्च १२ $\times$  2है इंच । भाषा—िहिन्दी(गळ) । विषय—प्रमं । २०काल—ः । ले०काल —ः । पूर्णं । वेष्ट्रन म० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—िह० जैन मन्दिर दलाना (चुरी) ।

१२६८. प्रचपरावर्तन बर्गन - । पत्र ४०६। ग्रा०११४७ इ.च.। भाषा—हिन्दी। विषय—चिनन यमे। २०काल—x। ने०काल— । पूर्ण। वेष्टन ४०७१/४६। **प्राप्ति स्थान—**६० जैन गन्दिर भादवा (राज०)।

१२६६. **पचप्रकार ससार वर्गन—ः ।** पत्रस० ४। ब्रा० १०}∷१४ डखा भाषा—सङ्कत । विषय थर्म । रुक्तान—ः । ते०कान—ः ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भडार दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१२६६. (क) प्रतिसं० २ । पत्रमण्डे । द्यार १०५५ ५ १ इच्छा ले०काल ० । बेप्टन स० ३७ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

१३००. पन्द्रहपात्र चौपई— स. भगवतीदास । पत्रसुरु । ब्रा० १०४६ है इच । भाषा—हिन्दी । विषय धर्म । २० काल । लेक्काल — । पूर्ण । वेष्टुन स० ६२-४४ । प्राप्ति-स्थान—दि० तेन सन्दर कोट्डियो का ४ गरपुर ।

#### द्यादि---

नमो देव अस्टित की नमी सिद्ध जिवस्य । नमें माध के चरण को जोग जिविध के भाव । पात्र कुपात्र अपात्र के पनरह भेद विचार । ताकी हैं रचना कहें जिन आगम अनुसार ।।

#### ग्रन्तिम---

निरेतो दस मैं पुर निरन्नार मरण करेतो चोथंसार। ऐसे भेद जिनायम माहि

त्रिलोकसार गोमतसारग्रथकी छाह।।

भाषा करहि भविक इहि हेत

पाछि, पढत द्वर्षं कहि देत ।

बाल गोपाल दहि जे जीव

भैयाते सुख लहि सदीव ॥

**१३०१. पद्मानंदि पंचर्विशति—पद्मानंदि** । पत्रस० १३२ । ब्रा० १०६५४ प्रद्रव । आपा---संस्कृत । विषय—स्माचार शास्त्र । र०काल— × । लेक्काल— × । पूर्णं । बेहन म० ११६४ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

**१३०२. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १३१ । बा० १०% ४४ १ इ.च । ले०काल — 🚈 । पूर्ण । बेहन स० ६७८ । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर सजमेर ।

विशेष - साहमलु ने इस ग्रथ की प्रतिलिपि करवाई थी।

**१३०३. प्रति सं०३** । पत्र स० ८५ । आर० १२ 🗴 ५ इश्वः । ले०काल 🗴 । बेष्ट्रनस० १२० । **प्रपूर्णः । प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--- दर मे ग्रागे पत्र नहीं हैं।

**१३०४ प्रति\_सं०४**। पत्र स०१–५०। ग्रा०१० $\frac{1}{2} \wedge V_0^2$ । ले०काल  $\mathbf X$ ा वष्टनम० ७६२। **प्रपूर्ण। प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर।

**१३०५ प्रति सं०५ ।** पत्र म०७-६६ । ब्रा०११>४३ । ल०काल - । विषय प्राचार स्रपूर्ण । वेष्टन स० ६२२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

**बिशेष**—प्रति प्राचीन है। पत्र मोटे है। प्रति १६वी शताब्दी को प्रतीत होता है।

**१३०६. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ४३ । आ० १०३ ८ ४ इ.च.। लेक्काल — । पूरण । बेष्टुन स**० १६०-७१ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का ड्र गरपुर ।

**१३०७. प्रतिसं० ७ ।** पत्र स**० १४-१**४ । ब्रा० १२३ ५ ४ इ.च । लेक्काल — र । ब्रपूर्ण । वेष्टन स० ३०६ २४६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रतिजीरणं है तथा सभी पत्र सील में चिपके हुए है।

**१३०६. प्रतिसं० ६ ।** पत्र म०१६२ । घा०१६ ४ इ.च. विश्वकाल— ४ । घपुणः । बेहुत स०४०६,२४४ । **प्राप्ति स्थान**—विश्वकेत सभवनाथ मन्दिर उदयपुरः ।

१३०६. प्रति सं०६ । पत्र स० ८०। से० काल 🕡 । सपूर्या । वेष्ट्रन स० ८१०/२/५ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**१३१०. प्रतिसं० १०** । पत्र स० ७७ । ले०काल स० १४६१ । प्रपूर्ण । बेहनस० ४११/२४३ । प्रतिजीर्ण है एवं प्रणस्ति निम्न प्रकार है ।

सबन् १५६१ वर्षे प्रथम श्रावण बुदी २ शुक्रवासरे स्वस्ति श्री मूलसधे मरस्वनी गच्छे, बलाल्कार गर्णे कु वकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीति तत्पट्टे भृवनकीति तत्पट्टे श्री ज्ञानभूवण तत्पट्टे विजयकीति तरपट्टे बूभचन्द्र प्रवर्तमाने रायदेश ईडर वास्तव्य हुंबड जातीय मोडा करमसी भावाँ पूर्तालयो मुन हो भाडा मेथपाजवाजु डोमाडा चोषा भावाँ वापत्वदे तथो भूत डोमाडा मिहराज मार्या दाडयरे एते स्वजानावर— स्मादि कमें क्षमार्थ स्वमावरूचने श्रीपद्मादि एचविजातिका निवाला ईडर मुमस्याते श्री मम्बनायायये स्मियनाया श्री विजयकीति सिरायाय प्रदत्तं। प्राप्तिक स्थान—दिव जैन सम्बनायसनिट उदयपर।

**१३११. प्रतिसं० ११ ।** पत्र स०१४४ । ध्रा०६४८ च् च । ले० काल स०१७८३ स्पामोज सदी १ । पूर्वा । वेष्ट्रन स०—-११-६ । **प्राप्ति स्थान** —-दि० जैन मन्दिर वडा शीमपथी दौमा ।

विशेष सम्कृत पद्यों के ऊपर हिन्दी अर्थ दिया हथा है।

१३**१२. प्रति सं०१२ ।** पत्रस००४ । स्रा०-६४६ हुँ इश्वा ले०काल ४ । पूर्णा विष्टुन स्राप्ता । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन प्रचायनी सन्दिर करीली ।

१३१३. प्रतिसं० १३ । ण्यस० १३१ । ले०काल म० १६१४ । पूर्ग । बेहनस० ७४ । प्राप्ति स्थानः दि० जैन प्रवासनी मदिर इण्डावालो का दीग ।

विशेष --- प्रति सम्कत टीका सहित है।

१३१४. प्रति सं०१४ । एक स० ७२ । घा० १०} ५.६१ डच । ले०काल--- स०१६३२ । पर्गा। प्राप्ति स्थान---- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१३१५. प्रतिसं० १५ ।** पत्रस० ५३ । चा० ११ र ४५ है डचा। ले०काल — ४ । स्रपूर्ण । वेदनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१३१६ प्रतिसं० १६** । एवं म० १७ । बा० १३ ४ ५१ डखा । ले० काल म० १७३२ । पूर्ण । बेबुत स० १०७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन भन्दिर दीवानजी कामा ।

१३१७. प्रतिसं० १७ । पत्र स०३२ । आ०६ -६ डैट्या । लेक्सल स०१६३२ । पूर्ण । वेष्टत स०११८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैत छोटा मन्दिर वयाता ।

विशेष-प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है।

**१३१**८. प्रतिसं**० १८ ।** पत्र ग०६५ । ले० काल म०१७५० आसीज सुदी ११ । पूर्गा। बेष्टन ग०४७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पचायती मन्दिर भन्तपुर ।

**१३१६. प्रतिसं० १६ ।** पत्र म० १६४ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन म० १६ । **प्रास्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरनपुर ।

**१३२०. प्रतिसं० २०।** पत्र स० ६६ । झा० १२ । ५ इच्चाः ले० काल० ४ । पूर्णाः वेष्टुन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मध्दिर बोरमली कोटाः।

१३२१. प्रतिसं० २१ । पत्र स० ११४ । प्रा० ११ँ ४४ । द्वा । ले० काल स० १७३५ पौष बुदी ४ । पूर्यो । बेष्टन स० १७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर बेरन्सली कोटा ।

विशेष--इम प्रति को ग्राचार्य शुभकीति नत् शिष्य जगमति ने गिरधर के पठनाथं लिखी थी।

**१३२२. प्रतिसं० २२ ।** पत्र म० ६७ । ग्रा० ११.४ ५ इल्डा ले० काल 🗙 । पूर्णा । बेष्टन स० २३८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । **१३२३. प्रतिसं० २३ ।** पत्र सं० १६१ । द्वा० ४×६ इञ्च । ले०काल सबत् १५३१ आषाढ बुदी १२ । पूर्ए। वेष्ट्रन सं० ३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

**१३२४: प्रतिसं० २४ । पत्रस**० ६७ । ग्रा० ११२ × ४२ इश्व । ले०काल स० १४८० पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष प्रशस्ति—स० १५८० वर्षे पौषमासे गुनलपक्षे पचनी भूगो आयोह श्री धनैहेन्द्रगे चन्द्रप्रभवेत्यालयं श्री मूलसबे भारतीयच्छे बलात्कारसयो श्री कुन्दकुन्दाचार्यात्वये सहारक श्रीपमनिद देवाहनत्पट्टे भट्टारक श्री ३ देवेन्द्रकीतिदेवाहनपट्टे भ० विद्यानदिदेवाहनतपट्टे भट्टारक श्री श्री श्री .......

**१३२४. प्रतिसं० २४ ।** पत्रस**०** १०६ । घा० १०३ ४४३ इञ्च । ले०काल स० १७१४ मगसिर सुदी ११ । पूर्ल । बेहुन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—स॰ १७१४ मार्गाशर सुदी ११ तिखित बहा मुखदेव स्वयमात्मा निमित्त नैगापुरमध्ये । सुर्रीसह सोलखी विजयराज्ये गुम श्री मूलसथे मरस्वतीगद्धे बलात्कारगरो भ श्रीपदाकीति बहा मुखदेव पठनार्थे । लिखित मुखदेव ।

**१३२६. प्रतिसं० २६** । पत्र स० ६२ । ग्रा०१० 🗵 ४३ डङ्च । लेक्सल स० १७६१ माघ बुटी ६ । पूर्ण ।वेष्टन स० ४४ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मदिर दबलाना (बुटी)

क्रियेस—प्रशस्ति । सं० १७६१ वर्षे माके १९१८ प्रवनंमानं साथ मासे कृत्यायसे पर्शमिन को मुक्काबारे परितालमधित श्री १०८ श्री समरविमत्त्रको तत् शिष्य गणे श्री ३५ श्री रणांसिमनको नन् शिष्य मृति संघितमनेन निवित नयायावानगरमध्ये साहजी श्री ओघराजजी पुस्तकोगरि चिपि कृता दीवानश्री कृषराज्ये सुम्र सब्द । श्री रुद्ध ।

**१३२७. प्रतिसं० २७ ।** पत्र स∙ ११३ । ले० काल ः । पूर्गा । बेष्टन स<sup>ु</sup>४४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रुदी)

विशेष-कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुए है। प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है। प्रीत प्राचीन है।

**१३२८. प्रतिसं० २८** । पत्र स० ६७ । द्वा० १३) ६१ इन्छ । ले० काल स० १६३५ । पूर्णु । बेपून स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपयी मस्दिर नेगाया ।

विशेष---चन्दालाल बैंद ने नैगाबा के मंदिर में लिपि करवा कर चढाया था।

**१३२६. प्रतिसं०२६ । पत्र**स० २२ । आ०१० × ४ इच्छा। लेकाल स०१५०३ साध इदी ३ । पूर्णा विश्वन स०३२३ । **प्राप्टितस्थान**ः दि० जैन सदिर दबलाना (वृदी) ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

प्रय संवन्तरेश्मिन श्रीविक्रमादित्यराज्यं सवत् १६०२ वर्षे माघ वदि ६ णकवागर तिज्ञ सामास्मिद्धिनस्वर्षे श्रीमप्रवद्यामपुरे ।। श्री मुलसर्थे गरस्वतीगच्छे बलात्कारगण श्री कृदकुः।चार्यास्य भट्टारकः श्री प्रयत्नदिदेवास्तलपुरे मृष्टारकं श्री प्रसाय:देवारा । तदास्नायं भट्टारवार्षे श्री धर्मकीतिद्वा रियनरात्वाचार-मेद्धानिकचक्रवत्यांचार्यं श्रीविमचस्देवास्त्यं प्रयत्निप्रपात्वाचार्यं श्री जिनदात्तव्रद्धः । तदास्त्रायं महस्वताल कुल कमसमामुसाह पद्म तद्धार्या पन्होत्यां प्रणेष्ठ पुत्र माह त्रोत्या येवत् । प्रथम पुत्र बाला तद्धार्या कपूत्री । दितीय पुत्र द्वारा । तद्भावं प्रतामा । माहु पद्मा दितीय पुत्र साहु साला तद्धार्या बाक प्रथम पुत्र वत्याल् तद्धार्यां रुडी दितीय पुत्र कोरः । तृतीय पुत्र वेता । वर्ष्यं पत्र मागदास साहुपण् तृतीय पुत्र दूलहुत-द्वायी सरो । तयो पुत्र ऊवा । एतेषा मध्ये साहु लोल पण्चनदि पंचविंशतिका कर्मसार्वितिसम् लिक्सावि ।

**१३३०. प्रतिसं० ३०।** पत्रस० ६१। म्रा०१४ x प्र<sup>5</sup> द्वः । ले॰काल स०१४६३। पूर्णः । बेष्टुत स०२४-४७। **प्राप्तिः स्था**स---दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टोकः)

विशेष—स०१४६२ वर्षे चैत्र मुदी १सोमे श्रीमृलसभे भ०र्था विजयकीर्ति तत् म०श्री कुमुदचन्द्र (सुमचन्द्र) त. बहा भोजा पाठनार्थ।

**१३३१. प्रति सख्या ३१ ।** पत्रस० ६७ । ब्रा० १२ ८ ४ इञ्च । लेक्काल स०१७६४ । पूर्गा । वेष्टुन म०२४७ । **प्राप्ति स्थाल**--- दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

**१३३२. प्रति सं**० ३२ । पत्रस० ४३ । ब्रा०११ 🗴 ८ दशा लेश्काल 🗴 । ब्रपूर्ण। वेष्टुन स०१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पत्रायनी दुनी ।

विशेष स्योवकम दोमा वालो ने प्रतिलिपि की थी । जिवजीराम के जिप्य प० नेमीचर के पठनार्थ दूस्सी में हीरालाल कोट्यारी ने इसे भेंट स्वरूप प्रदान की थी । प० हीरालाल नेमंत्वर की पुस्तक है ।

**१३३३. प्रति सं० ३३ ।** पत्रस० ८६ । झा० १८३ × ४३ डब्च । ले०काल ४ । धपूर्ण । वेष्ट्रन म० २६६ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मदिर अभिनस्दन स्वामी, बंदी ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है। प्रन्तिम पत्र नहीं है।

१३३४. प्रति सं० ३४ । पत्रस० ४४ – ७६ । छा० ११ 🗙 ४ डचा । ले∙काल 🕆 । घपूर्ण। प्राप्ति स्थान—ाइ० जंन मटिर प्रभावन स्थामी, बंदी.

**१३३५. प्रतिसं० ३५ ।** पणम०६०। ग्रा०१२ 🖂 ५ डब्बा। ले०काल स०१७८८ पीष सुदी १ । पूर्णाविष्टन स०१०६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ बृदी ।

विशेष - प॰ छाजूराम ने प्रतिनिधि की थी।

१२३६, **पद्मानियर्चियाति टीका— x** । पत्रसं०१३४ । ब्रा०१२३ ४ ७ इख । भाषा—सम्हन । विषय—बाचारणास्य । र०काल ४ । ने०काल स०१६६८ । पूर्ण । वेष्टन स०१९६४ । **प्राप्ति स्थान** भद्रास्कीय दि० जैन मन्दिर खन्नसर ।

१३२७. पद्मनदिपचित्राति टीका — ४ । पत्रतः ६२। मा०११५ ४ ४ ४ ४ ॥ भाषा — मॅन्कत । विषय --प्राचार शास्त्र । र०काल 📐 । लेकाल ग०१७५६ मानोज नृदी १०। पूर्ण । बेहन म०१०२२ । प्राप्ति स्थान -- भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर फ्रजमर ।

१३३६. परानन्दिराचिकातिका—ात्रस० २४७ । घा० ११ x ५ इन्छ । भाषा— सम्कृत । विषय—प्राचार गान्त्र । र०काल x । ले०काल म०१६७१ घाषात्र बृदी २ । पूर्ण । बेष्ट्रतस०११५ । प्राप्तिः, स्थानः—दि० जैन भदिर प्रसिनन्दन स्वामी बृदी ।

सेखक प्रशस्ति—मवत् १६३१ वर्षे घाषाद बुदी २ बार मोमवामरे हरियागादेमे पश्चास्त्रव्यं प्रकब्बर मृत बहागीर जलालदी मलेमसाहि राजि प्रवर्तमाने श्री कारठामधे माधरात्वये पुरकरगागे महारक श्री विजयसेनदेवास्तरपृष्टे सिद्धान्त्रजनममुद्रविवेककलाकमिननी-विकाशनैक-दिगमागि सहारक नयमेनदेवा तरपृष्टे महारक श्री ग्रस्वमेनदेवा तरपृष्टे भृहारक श्री धननकीत्तिदेवा तरपृष्टे भृहारक श्री क्षेमकीत्तिदेवा तरपृष्टे श्री हेमकीतिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्रीकुमारसेतदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री हेमक्ंद्रदेवा तत्पट्टे श्री पद्मनदिदंवा तत्पट्टे अवसमहावत्पारका पत्मसमित-विगुति-गुतान् देव-विदेव-विज्ञानमान् पंच-सस-त्यामी भट्टारक यहाः कीति तत्पट्टे निर्म चृत्रकामान् वादीस-परिवह-साहत सीता कमलमतिनामान् चारिक्यामान् निर्म्तीर नाजा विज्ञान्य निर्मात् स्वाचान्य निर्मित् स्वाचान्य स्वाचान्य स्वाचान्य निर्मित् स्वाचान्य स्वचान्य प्रवाचान्य स्वचान्य प्याचान्य स्वचान्य स्वचान्य स्वचान्य प्रवाचान्य स्वचान्य प्रवाचान्य स्वचान्य प्रवाचान्य स्वचान्य स्वचचन्य स्वचान्य स्वचचन्य स्वचान्य स्वचान्य स्वचान्य स्वचचन्य स्वचचन्य स्वचचन्य स्वचचन्य स्वचचन्य स्वचान्य स्वचचन्य स्वचचन

**१३३६, पद्मतित्वंचिंकाति टीका**  $\times$  । पत्रसः २०७ । प्रा० ११  $\times$  ५१ इस । भाषा—सस्कृत । विषय—पद्मी । २०काल  $\times$  । के०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टतसः ७० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौता ।

**१३४०. पर्यानंविषच्चीसी माला-जगतराय ।** पत्र स०१०४ । प्रा०१० 🗙 ४.१०४ । **माषा**—हिन्दी पद्य । विषय—माचार शास्त्र । ८०काल स०१७२२ फागुन मुदी १० । ले०काल म०१८ ६१ फागुना मुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स०१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौमा ।

**१३४१. प्रतिसं० २ ।** पत्र स०११८ । आ०११ ५ ४ इन्दा । लेक्काल ५ । पूर्णा । वष्ट्रन स०६६ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन प्रवायनी सन्दिर करीली ।

**१३४२. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० १०१ । ग्रा० १२३ ४७ इन्छ। ले०काल स० १६६२ घासीज सदी १० । पूर्णा। वेष्ट्रन स०----७० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन प्रग्रवाल पचायती सदिर ग्रलवर ।

**१३४२. प्रति सं०४ । पत्र स०१३४ । ग्रा०१०**ौ > ४ उथा । लेक्काल - । पूर्ण । बेहुन स० =७ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

१३४४. पद्मानंदि पच्छीसी भावा—मन्नालाल खिन्दुका । पत्रस्व १२६ । आव १४ ७ इखा भाषा—राजस्थानी (हूँ द्वारी) गद्य । विषय—धर्म (आचार जारत्र) । रवकाल मव १६११ मर्गानर वृदी ४ । लेक्सल मा पूर्ण । बष्टन मव १५७४ । प्राप्ति स्थान- भट्टार्ग्यय दिव जैन मदिरस्वतर ।

विशेष---प्रति जीगां है।

**१३४५. प्रति सं० २ । पत्र**स्त० २४६ । ब्रा० १३] ४ च इ.च । ले०काल स० ४६६१ सावन मुदी २ । पूर्ण । बेष्टून स० ६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर फलेक्ट्र केलावाटी (सीकरः ।

**१३४६. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स०२४ । ग्रा०१४ ४ ६ इ.च. ते बकाल म०११४ ६ मावन वृदी २ । पूर्मा । बेपुन म०१०१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायती मन्दिर ग्रालवर ।

**१३४७. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० २८७ । आ० १२ / ८ इ.च । लेकाल - ग० १८३३ चन बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाथ टोडाययमिह (टौक)

विशेष--भैक्लाल पहाडिया चुरुवाले में मदिरों के पची ने लिखवाया था।

**१३४८. प्रतिसं० ४** । पत्र स० २८३ । बा० १२ ४७ इन्छ । ले०काल स० १६३० प्रापाट बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बुदी । विशेष—प॰ मिश्र नरत्नाल ने चन्द्रापुरी मे प्रतिलिपि की थी। चुन्नीलाल राथका की बहु एव मोतीलाल शाह की बेटी जानकी ने भेट किया था।

१३४६. पद्मतिव पच्चीसी माबा  $\times$ । पत्रस०४२। प्रा०६ $\times$ ४ इ.च.। भाषा—हिन्दी (पद्म)। विषय—चर्म। ५०काल  $\times$ । ने०काल  $\times$ । प्रपूर्ण। बेष्टनस०१४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर राजमहल टीक।

**१३५१ प्रति सं०२।** ण्यस०५६ । म्रा०११हुँ ४४ हेडच । ले० काल म०१७१३ मादवा बुदी ४। पूर्ण। बेशुन स०१२६६ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टास्कीय दि० जैन, मदिर ग्रजमेर ।

**१३५२. प्रति सं० ३** । पत्रस० ५७ । ग्रा० १०१ × ४) इच्या । ले० काल स० १८५४ चैत्र बुदी ४ । पूर्णे । बेष्टनस० १४६८ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

**१३५३ प्रति स०४** । पत्रस० ६१ । ग्रा० १०४७ है इचा ले० काल— x । पूर्ण । बेहुतस०११० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

१३**५४. प्रति स० ५ ।** पत्रस० ५६ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनम० १२ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर बडा प्रचायनी डीग ।

१३**४४. पुरुषार्थ सिद्धणु पाय—स्मृतजन्द्राचार्य** । पत्रस्य ११। स्रा० ६ ४४ इच्छा । साया—सम्कृत । विषय—धमा १०काल— ४ । तै०काल— ४ । पूर्ण । वेष्टुनस्य १४७२ । **प्राप्ति स्थान—** सृद्राम्त्रीय विच जैन मन्दिर स्रजमर ।

विशेष--प्रत्थ का दूसरा नाम 'जिन प्रवचन स्ट्रस्यकोष' भी है।

**१३ ४६. प्रति स**० २ । पत्र स० २–१४ । ध्या० १२ ४.४६ ै इञ्च । ले∘काल ⋋ । ध्यपूर्ण । वष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**ंदि० जेन मन्दिर लक्कर, वयपूर ।

विशेष-प्रथम पत्र नहीं है। = पत्र तक सम्बन्त टिप्पगी भी है।

**१३५७. प्रतिसं० ३**। पत्रस० ४२। बा० १११ ४ ४<sub>२</sub>। ले**०का**ल स० १८१७ ज्येट्ठ सुदी १५। बेष्टुनस० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर लक्कर, जयपर ।

विशेष---प्रति नैगामी कृत सम्कृत टीका महित है।

**१३५६. प्रतिसं०४ ।** पत्रसर्था प्रार्थित १०१९ ५४ । लेक्काल स०१७४७ भादवा सुदी १३ । बेहन स०६१/४६ । **प्राप्ति स्थान**ीद जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष -- द्रव्यपुर पतन मे सेमा मनोहर ग्रमर के लिए प्रतिलिपि हुई थी।

**१३५६. प्रति सं० ५** । पत्रस**्४**२ । म्रा० १३.८६१ इञ्च । ले०काल 🔈 । पूर्य । **वेष्ट**नसं० २६ । **प्राप्ति स्था**नं —दि० जैन मदिर नेरहपथी दोसा ।

**१३६०. प्रति स०६।** पत्रस० २७। ले०काल स०१८८९ मङ्गमिर मुटी ३ पूर्ण। बेष्टनम०२१८। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर, घरतपुर । **१३६१. प्रति सं०७ । पत्र सं०**२६ । झा० १२४५ हे इसा । ले०काल स०१७५० । पूर्णः । वेष्ट्रन स०१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--फामा मे प्रतिलिपि हई थी।

**१३६२. प्रति सं०६ ।** पत्रसं०११ । ने०काल ४ । पूर्णः । वेष्टनस०१४५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१३६३. पुरुरायं सिद्धणुषाय भाषा—सहापडित टोडरमल ।** पत्रस० नह । प्रा० १२१ -६१ इस । भाषा—गजस्यानी (ढुंडारी) गणः । विषय—धर्मः । र०काल स० १८२७ । ने० कान म० १८६५ मञ्जासर सुदी ५ । पूर्णः । वेष्टनस० १५३४ । **प्राप्ति स्थान**—अ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेंगः ।

विशेष— इस यथ की श्रवूरी टीका को पंडित दौलनरामजी कामलीवाल ने सबद् १८२७ में परा किया था।

**१३६४. प्रति स०२ । पत्र**स०१२६ । छा०११है×६ इश्वाने काल स०१८८६ । पूर्णा बहुतस०३४६ । **प्राप्ति स्थान** — म०दि० जैन मंदिर श्रजमेर ।

**१३६५. प्रति स० ३ ।** पत्रस० १२७ । प्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० =: । प्राप्ति स्थान — दि० जैन अप्रवाल पत्रायती मन्दिर मनवर ।

**१३६६. प्रति स०४** । पत्र स०७४ । ग्रा०१२ \ ६ डला। ले० काल स०१८६१ । पूर्णा। बेक्टन स०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेरहपयी दौसा।

**१३६७ प्रति स०५** । पत्र स०२१ । द्या०१२ }⁄ ७३ इञ्चा ले०काल - र प्रपृग्ण । बे**ब्रन स०१२२ । प्राप्ति स्थान**—टि० जैन छोट। मदिर बयाना ।

**१३६८. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० १८६ । ते०काल 🗸 । पूर्ण । वेष्टन म०१३२ । प्रास्ति-स्थान—दि० जैन स्रोटा मन्दिर (बयाना) ।

**१३६६. प्रतिसं०७ । पत्रस०** २६ । ब्रा**० १० ४** व्डब्धा लेक्काल म० १६११ माघ मृदी १४ । पूर्णावेष्टन स०२२० । **प्राप्टित स्थान**---वि० जैन मन्दिर नागदी, बृदी ।

विशेष—चाकम् मे प्रतिलिपि हुई थी;।

**१३७०. प्रतिस्कर्णा पत्रस**्क प्रशासक्षित्र १३ ५ ६३ खा लेक्काल म**्**१८५१ । पुर्या । वेष्टन-स्कु ७३ । **प्राप्ति स्थान**- – दिजैन मन्दिर शीमहाधीर वृंदी ।

**१३७१. प्रति सं०६ । पत्रस**० म्या आर्थि १२ ४ ५ १८च्चाले • कालास ०१६६४ । पूर्णा वेष्टन स**०२**६ । **प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपशी मंदिर नैसाक्षा ।** 

**विशेष—का**ह्यरण भीताराम नागपुर मध्ये लिपि कृत ।।

**१३७२. प्रति स० १०।** पत्र म० ५१। घा० १३ 👉 🤌 इञ्चा ने० काल म० ११२६ । पूर्या। बेहन स**०** २४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोट्या का नैस्पता।

विशोध — लोचनपुर में भोपनराम जी धापाराम जी ठग ने बलदेव मट्ट में प्रति कराकर कोटधों के मंदिर में भेंट की थी।

**१३७३. प्रति संस्था ११। पत्र**स० १२४ । म्रा० ११३ × ६३ डघ्य । लेक्काल 🕜 । पूर्या । बेहन स० ४ । **प्राप्ति स्था**न—दि**०** जैन मंतिर पार्यनाथ टोडारायसिंह (टोक) । **१३७४. प्रति सं० १२।** पत्रस० ६७ । छा० १२ $\frac{1}{2} \times \mathbb{X}^2$  इञ्ज । ले०काल सं० १६६२ । प्रार्थ । वेहन सं० १०६/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पारवेनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

विशेष — ब्राह्मण भोपतराम ने सर्वाईमाधोपुर में प्रांतिलिप की थी। यह प्रतिउ िणवारा के मदिर के बास्ते लिखी गयी थी।

**१२७५. प्रति स॰ १३ ।** पत्रस०-१२८ । आ॰ १२  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ ७५ १७० । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन पंचायती मंदिर मलवर ।

**१३७६ प्रति सं० १४** । पत्र २० १२४ । लेक्काल म० १६२० । पूर्ण । बेष्टन म० ४८-१७० । प्राप्तिक**थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर मलवर ।

१३७७. प्रति सं० १४.। पत्र स०१०४ । से०काल ४.। प्रपूर्णावेष्टनस०६४.१०४।

**१३७८. प्रति सं०१६ ।** पत्र स०६६ । ले०काल 🔀 । पूर्ण । बेष्टन स०१६ । **प्राप्ति** स्थान—दि०जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

**१३७६. प्रति स ०१७** । पत्रस० ८० । ने० काल म०१८७२ । पूर्णः । वेष्टन स०३२२ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

**१३००. प्रति स०१०।** पत्रस०७४ । ले०काल स०१६६५ । पूर्ण । **बेहन स०**३२३ । **प्राप्ति स्थान** - टि०जैन पनायती मंदिर भरतपुर ।

**१३८१. प्रतिसं० १६** । पत्रस० ८८ । स्ना० १२ / ५ इन्ड । ले०काल – ४ । पूर्ण । वण्य म०१०६ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन पत्रापनी मस्दिर कामा ।

**१३६२. प्रति स**०२०। पत्र म०६३। ग्रा०१२ imes ७ टश्वः। ले०काल स०१६७६ मावरण बुरी १। पूर्णः। वेष्टुन स०३४६। **प्राप्ति स्थान**----वि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष --दौलनराम जी ने टीका पूर्ण की थी। जोधराज ने प्रतिलिपि कराई थी।

**१३८३. प्रति सं० २१ ।** पत्र स० १२८ । लेलन काल 🗴 । भपूर्ण । वेस्टन स० ३६ । **प्राप्ति** स्थान —दि० जैन पचायनी मदिर रण्डावालो का डीग ।

विशेष---प्रतिजीर्गहै।

**१३७४. प्रति सं** २२ । पत्र स०६२ । ब्रा०१२ 🗴 स डश्वा। ले**०** काल स०१ स७८ व्वार सुदी २ पूर्णा। बेष्टुन स०२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर दीवान चेननदास पुरानी डीग।

१३८४, प्रति स० २३ । पत्र म० १०६ । ब्रा० १२३ ४ ४१ इञ्च । ले० काल स० १८६० माथ बढी ८८ । पूर्ण । बेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मदिर करोली ।

**१३८६. प्रति स०२४।** पत्र स०१००। ग्रा०१११ 🗶 ८ । ले० काल स०१६४१। पूर्या। बेबून स०३४–४८। **प्राप्ति स्थान** ⊹ दि० जैन मन्दिर बड़ाबीस पथी दौसा।

**विशोध**—-रननचद दीवान की प्रेरगा में दीलनरास ने टीका पूर्ण की थी। धिनवक्स ने दीसा में प्रतिलिपि की। पुस्तक छोटीलाल जी विलाल ने दौसा के मन्दिर में चढाई। **१३८७. प्रति सं०२५।** पत्र स०१५२ । छा०१०३ ४ ५ डङ्च। ले० काल स०१८१८ वैशास मुदी४ । पूर्णा वेष्टन स०६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेसाबाटी (मीकर)।

विशेष — रघुनाथ बाह्यरा ने प्रतिनिधि की थी। लाला मुखानन्द की धर्म पत्नी ने अनत्वन चतुर्वजी उद्यापन में स० १६२६ भादवा गृदी १४ को बहा मन्दिर में चढाई।

**१३८६. प्रति स० २६.** । पत्र म० १०८ । द्वा० १३ 💢 ६ ॄंडङच । ले० काल म० 🏏 । पूर्यो । वेस्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष —राजमहल मध्ये सा तेजपाल जी भाई नार्राम जी तस्य पुत्र नेमलाल ज्ञाति शहेलवाल गोत्र कटार्या ने ब्राह्मण सुवलाल में प्रतिलिपि कराकर चन्द्रप्रभ चैत्यालय में विराजमान कराया ।

**१२८६. पुरुवार्थसिद्ध घुषायः भाषः**— ४ । पत्र स०६२ । ब्रा०१२ ∴ ७ डवः । भाषा— हिन्दी गद्यः विषय— पर्मः । र०काल — ९ । वे०काल स०१६६१ । पूर्णः। वेष्टन स०१६ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर श्री महायोग स्वामी बुदी ।

विशेष-- चदेरी में ( स्वालियर राज्य ) प्रतिलिपि हुई । प्रति मूला साह केमन्दिर की टै।

१३६०. परिकर्म विश्व –  $\times$  । पत्र स० १३ । ग्रा० १०  $\Sigma$  १७४ । भाषा - सम्कृत (पत्र)। विषय -- धर्म । २०कास -- र. । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान** -- प्रयंशल दि० कृत मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - प्रत्येक पत्र पर १० पक्ति एवं प्रति पक्ति मे ३४ ग्रक्षर है।

**१३६३. प्रतिकापत्र**ा पत्र स०१। भाषा—हिन्दी । विषय—स्वाबार । ४०कालः । ले**० काल स०** १८८८ । पूर्ण । वेष्ट्र स०४८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरनपुर ।

१३६४. प्रतिमा बहत्तरी—शानतराय। पत्रम०६। ग्रा०१०¦ १८८। भागः— हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल—४। ने०कान म०१६०३। गूर्ग। बेग्न म०१४। प्राप्ति स्थान कि. बैन क्षोरा मन्दिर बयाना।

**१३६५. प्रतब्धानिधान लघुवृत्ति** — × । पत्र म०२ से १० तक । ब्रा०११ ७ ८७ । भाषा — सस्कृत । विषय — प्राचार जास्त्र । र०कान — ४ । ले०काल स०१७६१ प्रानीत्र सुनी १३ । प्रपूर्ता । वेषून स०२११ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पदिर बोरसनी कोटा ।

१२६५. प्रश्नमाला भावा— ४ । पत्र स०२०। घा०१२०६ ६ इन्छ। भाषा— हिन्दी। विषय - धर्म। र०काल— ४। ले०काल म०१६०७ पोष बुदी१२। पूर्म। बेहन म०५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मदिर बयाना

विशेष--- ला० तेजराम ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी थी।

**१३६७. प्रश्नमाला**— $\times$  । पत्र स०३६ । प्रा० १११ $\frac{1}{2} \times \mathbb{Q}^2$  इत्ता । प्राया—हिन्दी । विषय — पर्म ।  $^2$  काल — $\times$  । हेन काल — $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०५३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन छोटा मन्दिर असला ।

विशेष---मृट्टिंटतर गिरणी में से पाठ मग्रह किया गया है।

**१३६८. प्रश्नोत्तर मालिका** —  $\times$  । पत्र स॰ ४२। घा॰ १ ४ इख । भाषा — स्म्कृत । विषय — धर्म । ॰ काल —  $\times$  । ले॰काल ५० १८६० । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ४८ ३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि॰ जैन मन्दिर कोटडियो का इगरपर ।

प्रशस्ति – मबर् १८६० वर्षे गाके १७४१ प्रवनंसाने उनरगोल उनरायनगत मुधं भ्रोग्म दिने महारागन्य प्रदेशे मामोन्समासे ज्याठ मासे कृग्य पक्षे तियो २ ्विवान उद्देशर मध्ये (कृणलगढ) प्राविताथ चैत्यालये महलालार्थ श्री रामकीति जी लिखित ग्रंथ प्रश्नोनर मालिका समर्पणं।

१३६६. प्रश्नोत्तरस्तमाला वृत्ति—ग्राचार्य देवेन्द्र । पत्र न०१०३। ग्रा०१० ८ ८ हे इन्द्र । भाषा—मस्कृत । विषय—ग्रानार जास्त्र । रुक्ताल 🗡 । लेक्नाल 🔀 । ग्रपूर्ण । वेष्ट्रन म० १४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ वृर्ता ।

विशेष —प्रति प्राचीन एवं सम्हत्त् टीका महित् है । १४२ में यांगे पत्र मही है । रहत्याचार्य श्री देवट विशाबनाया प्रश्नोत्तर रत्नमाला बन्तो परधनामधारमाधा नागदन्ती कथा ।

१४००, प्रति सं०२ । पत्र र∙ १८-१४१ । ग्रा० ६∫६४ ४ । टचा ने० काल ४ । धपूर्ण । यादन स० ४३ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाय यूदी ।

१८०१. प्रक्नोत्तर रत्नमाला—, । पत्र म०१६ । ब्रा० २्रे. ४ इका । भाषा — हिन्दी पद्य । विषयः आत्तार गास्त्र । र०कालः ४ । लेकालः म०१६७१ । पूर्णः । बेष्टुन म०८३७-१६६ । प्रास्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर, कोटिइया का दुसरपुर ।

१४०२: प्रश्नोत्तर श्रायकाचार भ. सकलकीत्ति । पत्रत०२०६ । बा०११८, १इख । भाषा संस्कृत । विराय – बाचार शास्त्र । २०००८ ४ । ते०काल स०१७०० कागुण मुदी ७ । पूर्ण । वेष्ट्रतस०१२३६ । प्राप्ति स्थान भ०६० जैन सदिर बजभेर ।

बिरोज-ले॰ काल के प्रतिरक्ति निभ्न प्रकार घौर लिला है—म॰ १६०१ माह मुदी १४ को प्रजनेर में उक्त प्रश्न की प्रतिनिधि हुई ।

**१४०३. प्रति सं०२ ।** पत्र स०११४ । ग्रा०८ ट्रै ४ डला । ले० काल म०१८४० ग्रावाड सुदी = । पूर्णाविष्टन स०१२६४ । **प्रास्ति स्थान** — म०दि० जैन मन्दिर श्रवभेर ।

१४०४. प्रतिस०३ । पत्रस०१४१ । लेज्काल म०१६६५ माघ मुदी ३ । पूर्ण । वेधनस० १२६५ । प्राप्तिस्थान भ०वि० जैन मन्दिर प्रजीमर ।

**१४०५. प्रतिस०४ ।** पत्रस**०१**३२ । आर०१०} ४३ टश्व । से०काव ⊠ । पूर्णा । बेष्टनस० १०४४ । **प्राप्तिस्थान**— भ०दि० जैन मन्दिर अवसंघ ।

**१४०६. । प्रति स० ५ ।** पत्र म० ८५ । लेब्काल म० १४६२ भादवा सुदी ११ भीम दिने । पूर्यो । बेक्न स० ६६० । **प्राध्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष - श्री मृलसधे लिखित नान् भोजराजा सुन ।

**१४०७. प्रति सं० ६** । पत्र स०७३ । ले० काल imes । पूर्गा। वेष्टन सं०७४७ । **प्राप्ति** स्थान— म० दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

**१४०६. प्रतिस् ०७ ।** पत्रस्र० ७२ । ग्रा० १२४६ इचाले क्कालस० १४५३ श्रावराबुदी। पूर्या। बेष्टनस० १२२ । **प्राप्ति स्थान**--- उपरोक्त मन्दिर।

प्रशस्ति —राउल गङ्गदास विजयराज्ये स० १४५२ वर्षे आवग् माने कृष्णपक्षे सोमे गिरपुरे श्री मादिनाथ वेद्यानये श्री मुस्तये मरस्वतीगच्छे, बनात्कारणाणे भट्टान्क श्री झानभूषण, श्राचार्य श्री स्तनकीति हुबब्बातीय श्रीट अकार बाई रूपिशी सुत माइम्रा मार्या सहिजनदे एते धर्मप्रकोनन्य पुस्तक निन्नाग्ति । मृति श्री माम्बरिद दल ।

**१४०६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स०१२४ । क्षे०काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्ट्रन स०१७२ । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन महिर. प्रजमेर ।

**१४१०. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० १६४ । ग्रा० ६ $\frac{1}{2} \times$ ४ इश्व । लेक्काल  $\times$  । पूर्ग् । वृष्टन स० ३१० । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन सन्दिर ग्रजमेर ।

**१४११. प्रति सं०४ । पत्रस**०-१६ । ग्रा०१२ 🗴 ५५ डच । ले० काल 📐 । सपूर्ण । वेग्रन स०--१४१७ । **प्राप्ति स्थान**--- भट्टाग्बीय दि० जैन मन्दिर ग्रजसर ।

**१४१२. प्रति सं०५ ।** पत्रस० १६ । घा०१०३ > ५३ टश्च । ते० वाल । ग्रपुर्ण । वेष्ट्रत स**०—१२**०३ । **प्राप्ति, स्थान** —महारकीय दि० जैत मन्दिर ग्रजमेर ।

**१४१३. प्रतिसं०६ । पत्र**स० १४ । ग्रा०१०्रं ४५ डब्स्च । ले० काल स०१०६०४ फासूमा बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स०−११८६। **प्रार्ट्सिस । अ**ट्टारकीय दि० जैन सन्दिर अजसर ।

१४**१४. प्रतिसं०७ १** पत्रस०१६०। ब्रा०१२/>४-१ दश्च । विषयः भागार नाम्य । र**०**काल × । लेक्काल **स०१**८५१ फागुन बुदी ११ । पूर्णः । वेप्टन स०७१० । प्राप्ति स्थान । दि० जैन मन्दिर सौगाणियो का करौनी ।

विशेष---माहिबराम सौगार्गा ने करौनी में प्रतिलिधि की थी।

१४१५. प्रतिसंक ६ । पत्रस्क १६२ । आक १०) । ४८-४ । लेक काल सर्व १६०८ पाप सदी १४ । पूर्ण । बेपून सक २०६ । प्राप्तिः स्थान -- दिक जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी वृति ।

प्रशस्ति - मनन् १६१४ वर्षे पौष मुटी १४ तिथी नुषवामरे मृशीमरासाथ महाराजाराज्ञ अं सायवीसह त्री राज्ये कोटा नगरे श्री महावीरजेन्यामय श्री मुनगरे नजारात्र बनार्यारच्यो मारक्ती सावदे कुरकुरवास्त्रये महारक श्री प्रभावददेवा तर्यपूर्व भे अंतदक्षीनिदेश त्यपूर्व भे अंति दे हत्कानि देवा तर्यपूर्व भुगारेक महारक श्री प्रभावदेवा तर्याया याण्येनवासायये साधार्मी गांत्र साह भं साधा तर्माय है .... "ऐतया साव्य साध्यस्त्रात्रक महारक श्री के साह्यस्त्रात्रक नगान्न आर्थिक साहयस्त्रात्रक याथ्यस्त्रात्रक साह्यस्त्रात्रक साह्यस्त्रक साह्यस्त्रात्रक साह्यस्त्रात्रक साह्यस्त्रक साह्यस्

**१४१६. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० ६१ । घा० १२ × १ इञ्च । ले०काल स० १७३२ । पू*मा* । वेप्टन स० २६ । **प्राप्तिस्थान**—वि० जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष-- त० वादिचन्द्र के पठनाथं लिखा गया था।

विशेष--- चतुर्थं परिच्छेद तक है।

**१४१८. प्रति सं० ११** । पत्रसः १३४ । ग्रा० १२ ८ ५३ इथा । ले०काल सस्या १८५७ माघ बढी १०। पर्णा । बेटटन सं० १०४। **प्राधितस्यान**ः भ० दि० जैन मन्दिर प्रवासनी देगी (टोक) ।

विशेष-श्री सन्तोपराम जी स्पीजीराम जी ने पडित मीताराम में प्रतिलिप कराई थी।

**१४१६. प्रतिसं० १२** । पत्र स० १०१ । श्रा० ११ $\frac{1}{4}$  ४ ६ इच्छ । ले० काल स० १५६७ । प्रयो । ते० स० १४ ।

विशेष--- प्रशस्ति निम्त प्रकार है----

म्बरिन मनन् १४१७ वर्ष द्वितीय चैनमानं गुक्तपक्षे द्विनीयादिनं रिश्वासरे अग्रेड भिनोई द्वाँ श्री चम्द्रप्रसर्चन्यानदे थी मुन्नने श्रीसम्प्रवनीमच्छे श्रीवनात्कारगक्ते श्री कुन्दनुरावार्यन्यं महुरिक श्री पपनिदेवास्तरमु भ० श्री देवस्कातिदेवास्तरपु भ० विद्यानिद्देवास्तरपु भ० श्री मिनन्यरण रामन्तर्यु भ० श्री नारमीचम्द्रदेवास्तरपु भ० श्रीसम्बद्धेवास्तरपु श्री भहुरिक श्री जानमुष्यगदेवास्यो नमास्तु । मृशुरुणा **मुक्तिकातिता** स्मीध्युषं श्रावकाचारो श्रशीलिकिन यथ स्व २८६०।

**१४२० प्रतिस १३ ।** पत्र २०११६ । घा०१०४४ हुँ इस । लेकाल स०१७४२ वैशास पुर्वी ४ । पूरम । बेष्ट्रन स०६० । **प्राप्ति, स्थान** —दि० जैन सदिर दबलाना बुंदी ।

विशेष -- प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

मनन् १७८२ वर्षे बैजाय वृदी १ साम्रजायरं श्री मृतस्ये सरस्वतीगच्छे बसाकारसणे श्री कृदकु टाचार्यावये महारक श्री रूपतान्व तर्पष्टुं भट्टारक श्री हृषं चन्द्र सन्दर्दे भट्टारक श्री जुभचन्द्र तन्पर्टुं सकत्वतार्थक स्वत्या महारक श्री धमनच्य विजय राज्ये तदास्मायं ब्रह्मचारी श्री नागरज तन्त्रिय सम्बन्धन श्री सम्बन्धन विजय स्वत्या स्

**१४२१. प्रति स० १४** : पत्र म० ६१ । घा० १२ ४६ इच्छ । लेक्काल म० १६१० । पूर्मा । थे8्न स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मदिर बोरमली (कोटा) ।

विशेष — प्रणस्ति सबत् १६५० समये बैशास बुदी चउत्री ४ लिखायित पुस्तक जयगा पार श्रावक लिखन रोमकरणा मृत दुर्गादास मुकाम ट्राजिपुर नगरे मध्य दबहरा मुगय ।

**१४२२. प्रति स० १५** । पत्र स० १७० । या० ११० ४ इका । लेक्काल स० १८११ । पूर्ण । बेधन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दिव्जैन मन्तिर बोरसल कोटा ।

विशेष --पडिच श्रो भागेबदास के शिष्य सविस्थिताम नागरचाल देश म. महाराज सरदारसिंह जी के शासनकाल में नगरमाम में नतुर्विशति तीर्थकर चैत्यालय में प्रतिलिति की थी।

**१४२३, प्रति सं० १६ ।** पत्र स० १३० । लेब्कान १-३२ । खासाइ पूर्वी ४ । पूर्णा । बेहन स० २०७ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन पशायनी मदिर भरतपुर ।

**१४२४, प्रतिसं०१७** । पत्र स०१२७ । लेब्बाल स० > । पूर्णा वेष्टन स०२१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती सदिर भग्तपुर । **१४२५. प्रतिसं० १८** । पत्र सल्या—११६ । लेखन काल imes । पूर्म । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**--वि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**१४२६. प्रति सं. १६**। पत्र स०१७८। ग्रा०११×४८ृंदश्व । ले०काल — x । पूर्ण् । वे०स०३६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१४२७. प्रति सं. २०**। पत्र स०१४०। प्रा० ११:५७ इस्था। ले०काल स०१६३६ माह बुदी ६।पूर्णा वे स०२१६। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर दीवानओं कामा।

**१२२८.प्रति सं० २१** पत्र स०७६ । सा० १३ ँ ४ ५ ँ इला । ले० काल स०१६६६ भाइपद । पूर्ण । वे० स० २४७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर श्रेष्याबाटी (सीकर) ।

**१४२६. प्रति स० २२।** पत्रस० ६। प्रा० ११ × ४ $\frac{1}{6}$  इत्या। लेक्काल स० १७०६। पूर्ग्ग । बेहन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन लब्देलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१४३०. प्रतिसं० २३ । पत्र**स० १४८ । आ० १२ 🗴 ४१ इञ्च । ले०काल 🛝 । अपूर्ण । वेष्टुत स० २४६-४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्तिर मरनपुर ।

विशेष-- दो प्रतियो का मिश्रण है। प्रति प्राचीन है।

**१४३१. प्रति सं २४** । पत्र सं०२१४ । आर्० ११४५ इ.च.। ले० काल र्. । अपूर्णा । बे० म० २३६ । **प्राप्ति स्थान —** दि० जैन प्रयसाल मन्दिर उदयपुर ।

**१४३२. प्रति स० २५ ।** पत्र स० =३-१५७ । या० १२ 🗙 ५३ टचा । तकन काल म० १६०३ पीष सुदी १० । प्रपुर्ता । वे० स० ७४६ । **प्राप्ति स्थान** —वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

विशेष— धलवरमढ महादुर्ग में सलेमणाह के राज्य में प्रतिविधि हुई थीं। ग्रंथ शिरवाने वाले वी विस्तृत प्रणति दी है।

**१४३३. प्रति सं. २६** । पत्र स०१-६७ । ख्रा०११३ ४ ६ इचा ले० काल ४ । ख्रपूसा । वे० स० ७४७ । **प्राप्ति स्थान**—हि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**१४३४. प्रति स० २७** । पत्रस० ६७ । प्रा० ११ - ७३ उत्तर । लेक्काल ग० १८०२ मधीसर मुदी १२ । **वेग्रन स०--१६७ । प्रास्ति स्थास** - दि० जैन मस्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-- किशनगढ निवासी महात्मा राधाकृष्ण न जयपुर मे प्रति ि की थी।

**१४३५. प्रति स० २८** । पत्र म० ४२ । सा० १२८४) । तेकाल म० १८१६ हाल्गुण तृहा ६ । बेटन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान** जास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लाकार, जयपुर ।

विशेष- - मवाई जयपुर में व्यास गुमानीराम ने प्रतिकिप की थी।

**१४३६. प्रति सं० २६।** पत्र म०६० । ग्रा० १८] , ४ इतः । त्र० कालः । पूर्णः । बेष्टन म०१३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पाण्येनाथ मन्दिर चीगान (बादी)।

**१४३७. प्रति सं० २०। पत्र म**० ६७। ग्रा० १०(८८) इन्छ। ले०काल । पूर्णः। बेष्टन स०५६। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन श्रप्रवाल मन्दिर, उदयपुरः।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

१४३ म. प्रति सं० ३१ । पत्र स० ६४ । ले॰ काल imes । पूर्गा । वेष्टन स॰ ६० । प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन अप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष --- प्रति प्राचीन है।

**१४३६. प्रति सं०३**२ । पत्र स०५६ । घ्रा०११ × ४<sup>1</sup>ृडखा । ले० काल स०१६०४ पूर्गा। बेष्टन स०११९-५७ । **प्रतित स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वगण्युर ।

प्रशस्ति – सबत् १६६४ वर्षे ज्येष्ट मामे शुक्ल पक्षे १५ रवी लिखित ४० श्राठाकरमी तत् शीष्य ग्राचार्यश्री ग्रमरेचन्द्र कीर्ति ः ।

१४४०. प्रश्नोत्तः ावकाचार माया वचनिका-४। पत्र म० नः । प्रा० १४.४६ हुन्छ । भाषा—मन्त्रत जिस्सी (तथा) र्राय—माचार आस्त्र । र०काल ४ । ले० काल— ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १४६ । प्राप्तिन स्थान— दि० जैन मन्त्रिर फेलेडपुर शेखाबाटी (शीकर) ।

१४४१. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार माथा वचनिका— $\vee$ । पत्र स० ५४। छा०६० $^{\downarrow}_{\chi}$  दश्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—ग्राचार शास्त्र । रि०काल  $\chi$  । ले०काल— $\chi$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६१ । प्राप्ति स्थान । दि० जैन मन्दिर, फतंहदुर शैलाबाटी (सीकर) ।

१४४२, प्रायक्वित प्रंथः ८ । पत्र म०३२ । सा० १८४६ च्या । प्राया —प्राकृत-हिन्दी गयः। विषय—प्राचार शास्त्र । र०कालः ८ । ते०काल म०११०४ माध्य वृद्धे १ । पूर्णः। वेष्ट्रन म०३० । प्राप्ति स्थानः दि० तैन मादर नागरी युदी ।

१४४३, प्रायश्चित ग्रंथ - रामक स्टेश्ना ब्राह्म स्टेश्चा भाषा — प्राकृत-सन्दुन । विषय - प्रापार जास्का रेरकी के अले के काल राम्यों। बेपून सरु १६। प्राप्ति स्थान — रिर्कन महिर नामदी वृदी।

विशेष भाजराताटन के गभवनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

१४४४, प्रायम्बन सास्त्र—मुनि बीरसेन । पत्र म०१६ । या० ११८४१ । भाषा — सम्त्रत । विषय—ग्रावार त्राप्त । २० शत् 🗴 । ते० काल म०१६०४ द्विनीय खेटर गुक्ता १४ । पूर्ण । वेपन म०१६० । **प्राप्तिस्थान** दि० वैन सन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष — प्रथ समाध्य के बाद विवा हुषा प्रण — तकव्याकरमें वितरहवकत प्रध्यातमारों गृह : श्रीमञ्ज्ञालमनपांडरमात श्री गोरमेनीद्वस्त्र ।। मिद्धान क्रिन पशुरु मृश्विदत्त श्री बीरनेना मृति. ।। मध्यत्त १९०४ वर्षे व्याप्त द्वितेय सुकत १५ सोमवारे।

१४४३ प्रायश्चितशास्त्र— स्रकलकदेव । पत्र स०६। प्रा०११ ५  $\delta$  हे उच्च । भाषा — सन्द्रतः । विषय – द्याचार । र०काल X । लेव्काल स०१४४६ फागुण सुदी ५ । पूर्णा । बेष्टन स०११४१ । प्राप्तिस्थान — भट्टारकीय दि० जैन भण्डार स्रजमेर ।

**१४४६ प्रतिस**०२ । पत्र स०७ । ग्रा०६१ , ४१ इ.चा । ले० काल । पूर्ण । वेट्न स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाण्वेताथ बूदी । **१४४७. प्रति स० ३ ।** पत्र सं० १६ । स्ना० ४imes४ ६ इश्व । ले० काल $_{ imes}$  imes । पूर्ग्ं, । वेष्ट्रन म० प्रास्तिस्थान – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जोगान बूदी ।

**१४४८. प्रतिसं०४ । पत्र** स०८ । आर०६<sup>3</sup>,४४३ इच्छ । लेक्काल स०१८८४ । पूर्ण । वेष्टन स०६ । प्रास्ति**रचान**—वि०जैन मन्दिर दबलाना दृदी ।

विशेष-स० १८६५ लिपि कृत प० रतिरामेगा । श्री चन्द्रप्रभाचैत्यालये ।

१४४६. प्रायम्बित समुच्चय वृत्ति — निवगुरु । पत्र स० ५२ । घा० १३ ८ ६ ४ व । भाषा -सम्कृत । विषय-घाचारमास्त्र । ते०काल × । ते०काल स० १५६४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । प्राप्ति स्थान—विक जैन प्रणवाल सन्दिर उदयपर ।

१४५० प्रति स०२। पत्र स०५४। आ०१० है ४५% इञ्चा लेक्सल ५ । अपूर्ण। वेष्ठत स०४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

१४५१. बार्डस स्रभक्ष्य वर्शन-  $\times$  । पत्र सः ६२ । सा० १० $\frac{1}{2}$  प्रद्रा । भागा-- क्रियो । विषय—सामार सारत । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सः ६७ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन प्रमायनी मन्दिर वयाना ।

१४५२. **बाईस परीयह-मूधरदास ।** पत्र स० ६-१४ । आर०६ ४४ डअ। प्राथा-- निस्ती। विषय - चर्म। र०कान ×। गे०कान ×। घपूर्या। वेष्टन स०४१। **प्राप्ति स्थान**-- विश्व तंत्र लोका मण्डित कारा।

१४५३, बालप्रबोध जिम्नतिका-मोतीलाल पञ्चालाल । पत्र म० २४ । भाषा— हिन्दी । विषय—पर्म । र०कार म० १९७७ । ले०काल ' । पूर्ण । वेष्ट्रन म०६४ । प्राप्ति स्थान— विक जैन मस्टिर दीवानकी भरतपर ।

१४५४. **बुद्धिप्रकाश-टैकचंद**ा पत्र म०६४। ब्रा०१२ है ६५ उसा भागा - हिन्दी पत्र । विषय----प्रमा । २०काल म०१६२६ ज्येष्ठ बुदी ६। ले०काल म०१६६० फालगुग सुदी १० । पूर्ण । व्यून म०१३४। **प्राप्ति स्थान** — दि० तैन महिदा फेनेहपुर चेलावादी (सीकर)।

## ग्राटिभाग---

मन दुख हर कर जिबमुरा तरा सकल दुखदाय । हरा कर्म घरटक ग्रिटिंग ने मिध्र गदा सहाय ॥ त्रिभुवन निलक त्रिलोक पनि त्रिगुग्गात्मक फलदाय ॥ त्रिभवन फिर तिरकाल नै तीर तिहारे ग्राप ॥२॥

#### धन्तिम भाग ---

मभन अध्यादक मन जांच, और खबीम मिनाचो सांच।
माम जेठ बुदि साटेबार, वृध समापन तो दिनधार ॥२२॥
या प्रथ के सबचार ने विधि पूरव बुधि होय।
छद्ध द्वाल जाने धनी ममुक्ते बुधवन जोव ॥२३॥
नार्त भी निज हिन बढ़ी, नी यह मील मनाव।
बुधि प्रकास मुख्याय के बाढ़ धर्म मुभाव ॥२४॥

पढौ मुनौ सीम्बो सकल, बुध प्रकास कहत ।

ता फल शिव श्रघ नासिकै टेक लही शिवसत ॥२५॥

इति श्री बुधप्रकाण नाम ग्रथ संपूर्ण। पडित कृपाराम चौबे ने प्रतिनिपि की थी। विविध धर्म सम्बन्धी विषयो का मन्दर वर्णन है।

२४५**५. प्रतिसं० २** । पत्र स० ११४ । द्या० १२ $^1_2$ ×६ $^3_2$  दश्च । ले० काल imes । पूर्ण । वेकृत स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ बंदी ।

विशेष---प्रथम यह इन्दौर में लिखा गया फिर भाडल में इसे पूरा किया गया।

१४**५६. बुद्धिविलास-बस्तराम ।** पत्र स० १०१ । प्रा० १०<sub>२</sub> ४५ टना । भाषा-हिंदी प**य ।** विषय — यमं । रकाल स० १-२७ । से० काल स० १८६६ कार्तिक सूरी १०। पूर्ण । वेप्रुन स० १२१-१०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दोसा ।

विशेष--इसमे जयपुर नगर का ऐतिहासिक वर्गन भी है।

१४५७. **बहाबावनी-निहालचरद** । पत्र स० ४ । साथा—हिन्दी । विसय—धर्म । र०काल स० १८०१ । लेककाल ४ । पूर्ण । वष्टुन स० ७१२ । **प्राप्ति स्थान**— द्वि जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--- मकस्दाबाद (बगाल) मंग्रथ रचा गया था।

१४६६ प्रश्नोत्तरोपासकाचार-बुलाकीदास । पत्रस०११६ । स्रा०११६ ४ १६०७ । भाषा - क्रियी (पद्य) । विषय—स्वासार शास्त्र । र०काल स० १७४७ वंशास सुदी २। ले०काल स०१६०० माथ सुदी ७। पुगा । वेष्टनस०२०। प्रास्ति स्थान — महास्कीय दि० जैन शास्त्र भडार सत्रसर।

१४**५६ प्रतिसं०२ ।** पत्रस०१६२ । लेककाल स०१६७६ मादो सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स०२२६ । **प्राप्ति स्थान**ा दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - प्रति दीवान जीधराज कामलीवाल ने जिम्बवाई थी।

**१४६०, प्रति सं**० ३ । पत्रस० १४२ । लं०काल म०१६१३ द्यामोज वटी १२ । पूर्ण । बहुतस० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर भन्तपुर ।

विशेष निहासचन्द्र मनी द्वारा सिसी गयी थी।

**१४६१. प्रतिसं० ४** । प्रयस्० १२४ । प्रा०११ . दृष्ट्या ने ०काल स०१८८८ कार्तिक वर्दारा पुर्णावे**वृत्तस०** २४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन सप्रवाल गचायती सन्दिर सलवर ।

**१४६२. प्रति सं० ४ ।** पत्र म० १२१ । लखन काल म० १=३३ पीप वदी ४ । पूर्मा । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन प्रवायनी मन्दिर हण्डावालों का द्वीग ।

**१४६३. प्रति सं०**६। पत्र म०११६। ले० काल म**०**१६२७। पूर्णा। बेष्टुन स०४६। **प्रारित स्थान** - दि० जैन मन्दिर तेरहसंबी बसवा।

१४६४. प्रतिसं०७ । पत्र स०११६ । या०१०६ ४५ इत्था । ले०काल म०१६५७ ब्रावाड मुदी१४ । पूर्णा । वे०स०६३ –६० । प्राफ्तिः स्थानि – दि० जैन मन्दिर, तेरहपथी दीमा। विशेष - चिमनराय नेरापथी ने इसकी प्रतिलिपि की तथा दौलतराम तेरापथी ने इसे दौसा के मन्दिर में चढाया था।

**१४६४. प्रति सं० ६ ।** पत्र स० १२६ । ले॰काल स० १७६१ कालिक मृदी ३ । प्रगं । बेष्टन स० ४२-१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन पनायनी मन्दिर, धनवर ।

**१४६६. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० १६१ । ले० काल स० १८८५ पीप बुदी १४ । पूर्णा । बेप्टन स० ४३-१४६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन प्चायती मन्दिर ग्रलवर ।

**१४६७. प्रति सं० १०।** पत्र स० १४२। द्या० २ $\frac{1}{2} \times 9^3_0$  इन्छ । ले० काल स० १६०० चैत सुदी २। पूर्ण । बेष्ट्रस स० १०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजसहल (टोक) ।

१४६ च. प्रतिस०११ । पत्र स० १-४७ । क्रा०-११६४ ४ है इस्त । ले०काल ≻ । धपुस्ता। बे०स०१६६ । प्राप्तिः, स्थान – दि० जैन मन्दिर राजमहल (ट्रोक) ।

**१४६६. प्रति स० १२।** पत्र म० १२१। बा० १२ ८५ हेडख । ले० काल 🔻 । पूर्णा । के० म० १४६-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष —मालपुरा में शिवलाल ने लिपि की थी। स० १६३६ में नदलाल गोधाकी बहुत टोड़ा के मन्दिर में चढायाथा।

१४७०, प्रति सं०१३ । पत्र स०१२७ । ग्रा०१०२ 🏏 🤌 इस्ता ने ० काल स०१८५० । पूर्णावे ० २०३६६ । प्राप्ति स्थप्त - दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुन्दी)

**१४७१. प्रति स० १४।** पत्र म० १०६। ब्रा० १२०६ इन्हा। लंककाल 🗴 ।प्राः। वेकस० ३१६-११६। **प्राप्ति स्थान**—दिक्जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरगुर ।

**१४७२. प्रतिसं० १५ ।** पत्रस**० १५३ । घा० ११**१७ ४५ । उत्तर । लेककाल २०० १६२७ । पूर्ण । बेपून सं० २००-६१ । **प्राप्ति स्थान** - वि० जैन मस्टिर कोटडियो का हु गरपुर ।

१४७**३. प्रतिसं० १६ ।** पत्रस० १६ । घा० ११ 🗴 ७ इला । ले०काल स० १८२३ व्यवस्य मुदी १ । पूर्यो । वेष्ट्रनस० ४०-२७ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर भादवा (राज )

**१४७४. प्रति सं० १७**। पत्रस० १३४. । प्रा० ८५ ८, इ. च. । लेक्बाल स० १३४४. वैकास्य मुद्री ४.। पूर्णा । बेष्टुन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन सदि२ दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

१४७५ प्रति सं०१६ । पत्र तुरु १३६ । यारु १२ ५ १ इखा । लेरु काल मरु १८५४ साबरा। बुदी १ । पूर्णा । बेष्टुन सरु १०२ । प्राप्ति स्थान-- दिरु जैन पत्रायती मन्दिर द्वाता ।

१४७६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १७ । ले० काल--- म० १६७६ । पूर्ण । बेहन म० २४६ । प्राप्ति स्थान-- दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--जीर्ग-पानी में भीगे हुए पत्र है ।

**१४७७. प्रति स० २०।** पत्रस० १४४ । झा० १२ ४४ <sup>†</sup> उचा ले**०काल** — स० १७८२ सीय बुदी **१०**। पूर्णा । बहुन स० ४०३ । **प्रास्ति स्थान** — दि० जैन सदिर बोग्सली कोटा ।

१४७**८ . प्रतिसं० २१ ।** पत्रसं० १२४ । घा० १२ 🗴 ५ इश्व । ले०काल स० १६१० । पूर्ण । बेष्टुतस्क ४६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) । विशेष-प॰ गोविन्दराम ने प्रतिनिपि की थी।

१४७**६. प्रतिसं० २२ ।** पत्रस० १४१ । घा० १२ 🗴 ४५ इ.ख. । ले०काल स० १८४१ पौष इ.दी. १२ । पूर्णः । वेष्ट्रन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैसावा ।

विशेष-कोट्यो के देहरा में बजवामी के पठनार्थ पहित ग्रावेराम ने प्रतिनिधि की थी।

**१४५०. प्रति सं० २३।** पत्रसं० न्छ । घा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ६ इच । ले•काल — स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर चौषरियान मालपुरा (टोक) ।

१४५१. समबतीधाराधना—शिवार्य । पत्रसं०११ । द्वा०११ $\times$ ५ ६७। भाषा— प्राकृत । विषय—प्राचार णास्त्र । र०काल $\times$  । ले०काल $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १२३ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

**१४८२. प्रतिसं० २** । पत्रस० १२३ । ग्रा० १२२<sup>2</sup> ४५<sup>3</sup> इन्त । ले**०**काल स० १७३२ चैत्र मुदी ६ । बेष्टन स० ४७ । **प्रास्ति स्थान** दि० जैन सन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष -- मालपुरा में राजा रामसिंह के शासन काल में प्रतिलिप हुई थी।

१४६३. प्रतिसं० ३ । पत्र स०६५ । र०काल × । ने०काल स०१५११ वैशाल सुदी न । पूर्णे । वेप्रनग०२४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

प्रशस्ति—मवन् १५११ वर्षे वैशास विदि ७ गुरी पुष्यनक्षत्रे सकलराज-जिरोमुकुट-माणिक्य मरीक्षियः प्ररीकृत चरणकमलपादगीष्टम्य श्री राग्या कु भक्तम् सकल-साम्राज्य-श्रुरी विश्वामस्य समये ओ स डलगढ शुस्त्रयाने भारिताय चैत्यालयं ......।

१४८४. भगवती द्वाराधना टीका । पत्र म० २०६ । हा० १२३४ ६३ इ.स. । माया-प्राहन-सम्बन्त । विषय -- ब्राचार । र०कार । । ले०काल स० १६३२ संगमिर सुदी ६ । पूर्ण । वेगून स० १३ । प्राप्ति स्थान - भहारकीय दि० जैन सन्दिर खन्नसेर ।

विशेष-प्रति टब्बा टीका सहित है।

१४६५. भगवती ग्राराधना टीका । पत्र म०२६१ । प्रा०११ $\times$ ५ इक्ष । भाषा-प्राकृत सस्कृत । विषय — ग्राचार । रठकाल  $\times$  । लेठकाल  $\times$  । बेठन स०१४४६ । प्रास्ति-स्थान — मठ्ठारकीय दिठ जैन मदिर ग्राक्तेग

विशेष—प्रशंत टब्बा टीका महित है। 4०१६११ में यह प्रति सेठ जुहारमल जी मोनी के घर से चढाई गई थी।

१४८६. भगवती ब्राराधना (विजयोदया टीका) ब्रपराजित सूरि । पत्र सस्या ११८ सं १८४। ब्रा० ११  $\times$  ४ $^2$  इथा। भाषा—सन्द्रन । विषय -श्राचार । र०काल  $\times$  । सेखन काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन म० ४३६ । प्राप्ति स्थान- भट्टारकीय दि० जैन मदिर ब्रजमेर ।

**१४८७. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ५१४ । ले०काल म० १७६४ भादो वदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २८६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**१४८८. प्रतिसं० ३** । पत्रस० ३३३ । स्रा० १२ ${}^1_{2} \times {}^1_{2}$  इल्ल्य । ले० काल स० १८६४ चैत्र **बु**दी ७ । बेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—जास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--- महात्मा कभुराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

१४८६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २४६ । मा० ११४६ इ.ख. । लेवकाल म०१७६६ कार्तिक वृदी १ । पूर्ण । वेष्टुनस०१७५ । **प्राप्तिस्यान**— दि० जैन ग्रमवाल मदिर उदशपुर ।

१४६०, सगवती प्राराधना टीका —निस्त्रिम् । पत्रस्व ४३६। ग्रा० १० $^{3}$  ४७ १७ । भाषा —प्राकृत-सन्द्रत । विषय —न्याचार जास्त्र । २०कान् imes । लेक्काल् imes । पूर्ण । बेष्ट्रन स $^{-28.4}$  प्राप्ति स्थान् — मट्टान्कीय दि० जैन जास्त्र सन्दिर श्रवसंर ।

**१४६१. प्रति स०२।** पत्र स०३०६ । घा०११२ ७ इथा । ले०काल स०१६६६ । पूर्णा बेष्ट्रन स०११३-७५ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर नैमिनाथ टोडारायमिह (टोफ) ।

विशेष-प० शिवजीराम की दूग्गी के चैन्यालय की प्रति है।

१४६२. प्रतिसंठ ३ । पत्र म० ६४२ । झा० ११ 🗴 ५२ ुखा रुक्का १० कार्या । लेकबाल , । पूर्ण । बेष्टुन स० ४४ । **प्रास्ति स्थान** —दि० जैन मदिर दीवानर्जी कामा ।

१४६३, भगवती प्राराधना भाषा-प्य. सदानुष कासलीवाल । पणस्व १४६ ४८०। प्राव १०१५ ७ इच्छा भाषा-राजस्थानी (ढुडारी) गद्याः विषय-प्राचार । उठाल मुरु १८०६ सदा गृहा २ । लेकाल - मुरु १६६६ कानिक बुदी १० । प्रमूर्ण । चट्टन गुरु ४८। प्राप्ति स्थान - भुरु ६० प्रीर सहिर प्रकार ।

**१४६४. प्रतिसं० २** । पत्रस्य ४२४। ग्रा० १४ $\times$  द $^{\dagger}$  इच्छा । लल्कान ग्र० १८ $^{\dagger}$  , संदर्भा वृद्धी ६६। पूर्ण । वेष्ट्रस्स ०४। **प्राण**ः स्थान । दि० जैन मन्दिर पत्रस्पुर विस्तारों (संगरः) ।

विशेष—परमादीलाल गुजाधरलाल पद्मावती पीरबाल । निकटा (प्रमारा) र पंर्माती करवाई थी।

१४६५ प्रतिसं २३ । प्राप्त २४६ । प्राप्त १९६८ (३)। प्रश्चात सर्व १८६४ म् १७४८ वृद्धी ५ । पूर्ण । बेहनस्र २८७ । प्राप्ति स्थानः विश्व कर्षास्त्र भारत्यः (राप्तः)

**१४८६. प्रति स०४। पत्र म०२**६३ में ६६१। आ०२१ के उन्हान तर तरायक १**९१०। आगाउ मुटी** १४। <mark>अपूर्ण । बेष्टन ग०१६३। प्राप्ति स्थान</mark> - १४० के सम्यानी मंदिर काणा।

**१४६७. प्रतिसं० ४** । पत्र स० ५४६ । प्राठ १० हे । त्रु १७ । तिरुवान स० १६४० महासर बुद्धी १७ । पूर्णा । वेपून स० ७६ । **प्राप्ति स्थान** चिक्कोन होग्य कारण्यपास ।

**१४६८. प्रतिसं ६।** पश्चसक ००१-६७६ । त्रकात १०११ । युग । बेष्टुनसक १५० । **प्राप्ति स्थान**— दिक जेन प्रयोशनी मस्तिर भरतपुर ।

विशेष--जयपुर में विलयक्तर प्रत्य भरतपुर व केन्द्रर के नद्धार गाया ह

**१४६६. प्रतिस्थ ७ ।** पत्रम्य १०० । सार्थ १०० १० त्र । विशासक १०० । त्रकृतम्य २२ । **प्राप्ति स्थान**्तिक वेत्र प्रस्कित, प्रयोजन्य

**१५०० प्रतिसंग्रह**ाण्य स्थापन २००० । आग्नार्थः जुल्लान १००१ । १८६० । जा। बेहुत स्थापन १२६ । **प्राप्ति स्थान** विश्व का प्रशासनी संदेश यात्रस्य। **१५०१ प्रतिसं० ६** । पत्र स० ५१६ । झा० ११ 🗴 ५ इश्व । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १४ १० ।**प्राप्तिस्थान**—वि० जैन मन्दिर पश्चायती दुनी (टोक)

**१५०२. प्रतिसं० १०।** पत्र स०४६०। धा०१२ $\times$  ५ $\frac{1}{8}$  डखा ले० काल स०१६१२। पूर्णं। बेष्ट्रन स०४४। प्राप्ति, **स्थान** — दि० जैन मदिर कोड्यो का नैसवा।

**१५०३. प्रति स० ११** । पत्र स० ४६ । ग्रा० ११५ 🗶 ४६ इ.च.। ते०काल 💢 । पूर्गा । बेटन स० ११० । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मधिर श्रीमहाधीर बृदी ।

**१५०४. प्रति स० १२** । पत्र स० ४२०। प्रा० १२ $\frac{1}{4}$  $\times$ ७ इश्च । ले०काल म० १६३० मिह्नसर वरी ४। प्रमो । वेप्रन म० ३७। **प्राप्ति स्थान** विक जैन प्रवासती मन्दिर वयाना ।

विशेष --वयाना के पन श्रावकों ने मिश्र गनेण महस्रा वाले से प्रतिनिधि करायी थी।

**१५०५. प्रति स० १३।** पत्र म० ३०१। या० १०५ूँ, ७५ूँ इच्य**ा ले**०काल 📐 । प्रपृग्णी। तेष्टत म० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैत छोटा मन्दिर बदाला ।

१**५०६. प्रति स्० १०।** यत्र २०४६ । आ० १२<sup>९</sup> ८ इट्या । लेक्काल १८। पूर्ण । वेष्टन स ४६-२८ । **प्राप्ति स्था**सः दि० जैन सदिर काट्यियों का द्वरायपुर ।

१४०७. प्रति स० १५। पन म० ४२४। आ० १३% म् टटन । ७०काल । पूर्णे। याटन स० म४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन गटेलवाल सन्दिर उदयपुर ।

१५०६, प्रति स० १६ । पण्यस्य २०२६ । झाय्र ११० ६ उच्च । लेव्यकालः । पूर्णः । बेप्ट्रस्य २ १४ । प्राप्ति स्थातः—ने व्यक्ति कार्यकार्यका

विशेष - फारस्य प्रक्राचा न प्रतितिष की भी।

१४१०, प्रति सुरु २ । १००० १० । प्राप्त १०१ । ४) इस्र । लेकाल । , । स्पूर्ण । नेप्टन १० ६० ६८ । **प्राप्तिस्थान** । दिव्योग महित्र भावता (राजस्थान)

१५११. भावदीपक भावा— । १पत्र म० १४ । आ/० १३ ८६ी इल्ला । भाषा जिसी गर्ध । विषय—माम १००का ४ । १४० काल । अपूर्ण । धेटन म० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भारतर्भी कोटा ।

१५१२, भाव प्रदीषिका — रा पश्चन १००२१४ । आ०१२ ४४१ उठवा। भाषा— सम्बन्धा विषय—पर्स । रवकार । लेककार । अपूर्ण एव जीर्ग । वेष्ट्रन स०६७ । प्रास्ति स्थान— दिव जैन मन्तिर, नेरुणर्था दोगा ।

१५१३. **भावशतक — नागराज** । पत्र स०११। ग्रा० ११४४ हुँ इखा भाषा — यस्कृत । विषय — पत्रमे । रक्काल 📯 । यक्षाल 🗙 । पूर्णा । बेष्टन स०६६**१। प्राप्ति स्थान** -- स०दि० **जैन** मदिर फ्रायम । निष्ति बद्धा डाल कामगी । **१५१४ भावसंग्रह**—**वामदेव ।** पत्र स० ४२ । झा० १४ $\times$ ५ इश्व । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २०काल— $\times$  । ले०काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६१–३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इ गरपुर ।

विशेष---भ० विजयकीति की प्रति है।

१**४१४ प्रतिसं० २ । पत्रस०** २३ । चा० १२ ८ ६५ इच्छा । लेक्सल स० १८६१ भादवा बुदी ३ । पूर्या । बेकन सं० ४६ । **प्राप**त् स्थान—दि० जैन मन्दिर नेरहपथी दौसा ।

विशेष—पत्रों को चूहों ने खा रखा है। नीनदभाग जी पुत्र हनुनान जी ने दौमा के मन्दिर के बास्ते भोपत बाह्मण से सवाई माधोपुर में प्रतिनिधि करवाई थी।

**१४१६. प्रतिसं० ३** । पत्रस० ४१ । ग्रा० ११  $\smallsetminus$  ४ $\frac{1}{2}$  इत्त्व । ले०काल imes । पूर्ण । बेकुतस० ५३ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१५१७. प्रतिसं०४ । पत्रस०४६ । ग्रा०११**८५ है इ.च.। ले० काल स०१६०३ पीप सर्दी १२ । पूर्ण। बेष्टन स०२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर नागदी बूदी।

**१५१८ प्रतिसं०५ । पत्रस०६० । बा०१३** ४५१ इन्छ । ले० काल स०१६३३ आजगा मुदी १ । पूर्यो । बेटून स०१ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर पाण्वेनाय जीगान, बुदी ।

१५१६, **भावसंग्रह—देवसेन।** पत्रस्त ३०। या० १०। ८ ४१ इञ्च। भाषा—याग्न। विषय—वर्म। २० काल २ । लेक्काल स० १५४१ पीप बुदी ८। वेपूनस० १३०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन गाम्त्र भण्डार मन्दिर लक्कर जवपुर।

विशेष--- मु० गयासदीन के राज्य में कोटा दुर्ग में श्री बर्ड मान चंत्यातय में प्रतिलिपि हैं श्री ।

**१५२० प्रतिस०२ ।** पत्रस०३५ । बा०११३ ४ । ते०काल म०१६५२ श्रापाट उदी १४ । कुर्ण । वेक्तस०१२४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त सन्दिर ।

विशेष-वडवाल नगर के ब्रादिनाथ चैत्यालय म प्रतिनित्त हुई थी।

**१५२१. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस• ६१ । प्रा० ११ / ५ ८ च । ले०काल । पूर्ण । बेप्रन म० ११ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवानती (कामा) ।

विशेष--प्रति प्राचीन है लिपिकाल के पत्र पर दूसरा पत्र निपका दिया गया है।

**१५२२. मायसंग्रह— श्रुतमुनि** । पत्र म० ३६ । प्रा० ११ - ५ इन्ध । भागा-सस्तुत। विषय—धर्म । २०काल × । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रत म० ६५६ । **प्राप्ति स्थान—**भट्टारकार (२० जन मदिर शास्त्र भण्डार ग्राजेमेर ।

**१५२३ भावसयह टीका** — × । पत्र स०१६ । आर०१० ४¦ इत्य । भारा – सस्त्र । विषय—चर्म । र०काक्ष ा ले०काल – ४ । पूर्ण । बेयून स०२४० । **प्राप्ति रथान** —च्यासक मन्दिर ।

१६२४ **भावस्यह टोका**— ६ । पत्र म०१७ । त्रा०१० १४ द्विष्ठा भाषा - सम्हन् । विषय—वर्म । र०काल— ४ । ले० काल स०१६३२ श्रावणा शुक्ला द । पूर्ण । वे० स०---२६६ । **प्राप्ति** स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर । विशेष-सवाई जयपुर मे पं० केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

**१५२५. महादण्डक-विजयकीति** । पत्र स०६६ । ग्रा०१ $\frac{2}{5}$  $\times$ ४ इच्च । प्राया—हिन्दी । विषय—धर्म । २०काल-स०१६२६ । ले० काल २०१६२६ । प्रारं । वेष्ट्रन स०१७०६ । प्रारंत स्वास—उपरोक्त सन्दिर ।

#### विशेष----

सोरठा-सवत जानि प्रवीन ग्रठारासै गुगानीम लिख ।

महादंडक सूम दीन, ज्येष्ठ चोथि गुरु पुस्य शृक्ल ।।

गढ ग्रजमेर मुथान श्रावक मुख लीला करें

जैन धर्मबहुमान देव शास्त्र गुरुभक्तिमन ।

इति श्री महादङक कर्णानुयोग भट्टारक श्री विजयकीर्ति विरन्तिते लघुदण्डक वर्णन टक्तालीसमा ग्राघिकार ४१। स०१६२६ का।

**१५२६. सिध्यात्वस्तवन — बस्तराम** ।पत्र म०६३ । बा०१२% ५१ ट्रन्च । आग्रुग्नान्तिनी (पद्य)। विषय -धर्म। रक्ताल स०१६२१ पोष मृदी ५ । लेक्जाल स०१६६२ भारवा सुदी २४ । पूर्ण। वष्टुन स०१४०१ । **प्राप्ति स्थान**— स०दि० जैन मन्दिर, जास्त्र भड़ार बज़मेर ।

**१५२७ प्रतिसं**० २ । पत्र म० १६ । स्ना० १२३ ५ ५५ इन्छ । ले० काल 🗡 । पूर्ण । बेष्टुत स० १०१० । **प्राप्ति स्थान—** उपरोक्त मन्दिर ।

**१५२८. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० ११८ । खा० ११८४ टखा । ले०काल म० १८५३ आपाढ मुदी ४ । पुगा । बेहुनस० ३२ । **प्राप्ति स्थान** -- भट्टास्कीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष -- जयनगर में मन्नालाल लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

**१५२६ प्रति म**०४ । पत्र म०२५ । ग्रा०११ $\mathbf{x}$ ५ $^2_{\mathbf{y}}$  इन्छ । ले०काल म०१६६३ ग्रापाड पृती १०। पूर्ण । बहुत म०६४ । **प्राप्तिस्थान**--दि० जैन पत्रायमी मदिर कामा ।

१५३० सिच्यामतखडन । पत्र मु० ४ । भाषा । हिन्दी । विषय—धर्म । ए० काल— ( । कृष्काल - । पूर्ण । वेष्टुन मु० ६०१ । **प्राध्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती सन्दिर भरनपुर ।

**१५३९ मिथ्बास्य निषेध ।** यत्र म०१६ । आ० १६६/८६} इस्त । भाषा—िहन्दी गया । विषय—भूमे । रणकाल ( । तेणकाल ) । पुणा । वेष्ट्रन म०४६ । **,पारित स्थान** —दिण्जेन खुबबाल पुणारी महिरु क्षान्तर ।

१४३२. मिथ्यास्य निषेध- ४ । पत्रसव्दर्शकाव १०३९४ इन्हा भागा—हिन्दी गया। विषय — धर्मा २० काल - ्रा लेव काल स्— ९१। पूर्णा । येष्ट्र सव्दर्श **प्रास्ति स्थास** —दि० जैन महिल्लास्य रोका ।

विशेष ---तनमुख ग्रजमेरा ने स्वय पठनार्थ प्रतिलिपि की यी । कुल लागत १।।।) 🚊 ।

१५३३, मिण्यास्य निषेध $- \vee 1$  पत्रस०२७। ब्रा० १० $\frac{3}{4} \times -\frac{5}{4}$  उत्था । भागा—हिन्दी गद्या विषयः—समं। ८०काल  $\vee 1$  लेक्काल स०१८६६ फागुण सुदी १०। पूर्ण। वष्टनस०६३। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दि॰ पचावती दूनी (टोफ)।

विशेष---परनालाल वैद ग्रजमेरा ने लिखा ।

विशेष — मोहनताल ने गढ गोपाचल (ग्वालियर) में प्रतिलिपि की थी। श्रीराम के पठनार्थ पुन बलदेव ने ग्वालियर में पुस्तक लिखी थी।

१५३५. मिथ्यास्य निषेध — × । पत्र स॰ २४। प्रा॰ १२क्वे , ७ इन्त्र । भाषा हिन्दी गर्छ । विषय-भर्म । रुकाराः -- ४ । लेकाराः स॰ १६६६ भारता बुदी ४।पूर्ण । वेष्ट्र स॰ ४५ । प्रास्ति स्थानः -- दि० कैन सन्दिर फ्लेक्ट्यर फेलावाटी (शोकर) ।

विशेष-चौत्र जुड़ीलाल चदेगीवालो न खुगई मे प्रतिलिपि की थी ।

१५३६. **मिथ्यात्व निषेष--- ।** पत्र मुश्दर्भ। भाषा-हिन्दी। विषयः घम । २०००० । निकात १८६४ । पूर्ण । बेष्टन सुरु १९४ । **प्राप्ति स्था**न । दिल्जैन पुचार्यो मस्दिर भरत्युर ।

१४३७. सिम्यास्य निवेध । एव मु० २०। आ० १०१. ४५ दृश्व । भागा - हिसी (पद्य) । विषय-नवा । १०कास--> । से०कास स० १६२६ आसीब मुदी १२ । पूर्ण । ४०० । आस्ति स्थान---दिश के छोटा मन्दिर वयाता ।

१४३म. सिच्यास्य निर्मेषः । पत्र स०३२ । ब्रा०१३०४ इक्षः आगाः -िहसी (प्रक्रीः) विषय—भने । ज्ञानः ४ । तेक्कान —० । पूर्णः। बेहन स०६७ । **प्रास्तिस्यान**ाः० जन्न छारा मन्दिर युवानाः।

१५३६. मुक्तिस्वयवर—वेगीचन्द्र । पत्तकः—३१६ । आ०१३∫ × ८११व । भाग हिन्दी (गण पटा) । विषय —धर्म । ए०काव म०१६३४ कानिक वृदी र । स०वाल स०११ - साम वृदी १४ । पूर्ण । थएन म०—१३६ । प्रास्ति स्थान - दि० क्रैन मन्दिर पत्तवुर व्यावर्ग स्थान ।

स्वरित्स लम्बर में ब्राट भियो पूरण उन्होंने जान । काविक वह नीमी दिना मना उसनीमणे वार्ताम मान । जा दिन में स्वाट भित्रो पूरण के दिन माना । स्वाल नक्षत निक्स दिनम मिश्रुन अन्य मक्कार ।। जग माना परमाद ने पूरण सर्गा कु मार ।। ३।। इति श्री मुक्ति स्वयवर की हथ भागा व्यक्तिका सपूर्ण । समीबर्ग मनक बस्द वा एव फाउट का निवासी मा।

१४४० **. मुनिराज के क्षियालीस अन्तराय-भैग्या मगवतीदास ।** पत्रमुख्य । याज १२८४६ ज्वा । भाषा--हिन्दी (पद्य) । विषय - प्राचार जाम्य । र क्वाल सब १७४८ उगाउ नहीं ७ । लेव काल - र । पूर्ण । बपून सव १४। **प्राप्ति स्थान** - भद्वार्कीय विव जैन मन्दिर क्षजीर ।

१४४१. **मुलाचार सुत्र—बटुकेराचार्य ।** पत्रस**् २०। धा०११**१७४८ छक्ष । भाषा --प्राकृत । विपय—घाचार सास्त्र । २०कान ्राने कनान् ्र। बेष्टन स०४६ । **प्राप्ति स्थान**—ाद० जैन मन्दिर क्षकर जयपुर । १४४२, मूलाचार वृत्ति — वसुनंति । पत्रस० ६ से २४७ । आ० १२१४ १ इश्व । आषा-सस्कृत । विषय — आचार । र०काल ४ । ले०काल ४ । अपूर्ण । वेष्ट्रन स०१२६० । प्राप्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मन्दिर अजसेर ।

**१५४३. प्रतिसं०२ ।** पत्र सं०२६० । आ.०११५,४४ } इ.आ. । ले०काल म०१७३० । पूर्ण। वेप्टन स.०१४४-७० । **प्राप्ति स्थान** — वि०जैन मन्दिर बोटक्रियों काउगरपर ।

प्रशस्ति—म बन् १७३० वर्षे पीप बुदी १ वृषे श्री मृतम घे सम्बतीमक्ते बनात्वारमणे श्री कृत्दकुरावायांनचे भ० श्री मकनकीस्तित्वस्वये भट्टाग्क श्री प्रयत्ति नत्तृ श्री देवेस्कीत्तिगृहगदेशान श्री उदयपुरे श्री शमवनायवंत्यानयं हु बक्जानीय गुरमान्य गरीमा भागां वार्ड पुरी नयो तुत्र गरीमा, रत्त-इक्षेत्र मार्गावस्त्री नयो तृत नावजी राघवजी एतं स्वजानायरम कसंश्रयार्थ श्री मृत्याचार प्रथ भृत्येन गृहीत्वा ब्रह्मा श्री नय जी नत्शिय ब्रह्म लाक्ष्यत्वस्तर ।

१**१४४. मूलाचार प्रदोप - सकलकोत्ति ।** पत्रस्त १८२ । ग्रा०२ ४ ४५ ४५ ॥ भाषा -सम्बन्त । विषय—प्राचार वारत । २० काल अ. । ते० काल ग० १८३५ वैवास सुदी १८ । पूर्ण १ वेष्ट्रस्त स्थास—प्रदेश देश के वेष्ट्रस्त १८६ । **प्राप्ति स्थास**—प्रश्**रिक के**न सन्दिर प्रवसर ।

विशेष -- राजगर में प्रादिनाथ चे गालय में प्रतिनिधि 25 था।

**१५४५. प्रति स० २ ।** पत्रस० १०४ । आ० १० × ५ ऽत । लेकात स० १८५२ लैव हुदा च । पर्यो । बेट्स स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मधिर पत्र्यंनाथ चौपान बस्दो ।

**१४४६. प्रतिसं० ३।** तपस० १४०। आ० ११५५४ ही दल्ला। तेलकार १०५६ चंग्रहा १०। पर्सा: देष्ट्रनगर १२३। **प्राप्ति स्थान**—दिरु जन महिद्दर प्रक्रियदन स्वामा यदी ।

विशेष - प्येतास्वर मारीराम न सकाः असपुर से प्रतिनिध की जी ।

१४४७ मुला**वार भाषा ऋषभदास निगोरमा** । पत्रम**ः** २२२ । प्रा०१८ = इत्य । भाषा—११४१थार्था (१८८४) गण्य । (द्वार —प्रावार आग्रत । १० कार म० १८८५ द्वारित मर्था ) । सन्वात । पूर्ण । वेग्रमभू०२२ १२२ । **प्राप्ति स्थान—दि**० जन व्यापनी गरिदर क्रवरूप ।

विशेष — अमनिवासी मानुन दीहा के बाधार पर भाषा रीहा की गर्रे थी। इस अपने काला सुने प्रश्न सन्तर्भक्ष न प्राप्त कर भी तथा ५ प्रश्चितर ५ साथा वह भाषा दीहा वर्ण हरने हे पण्याद इत्या स्वर्धकार १ पाना था किर दुने क्षप्रवास न पूर्ण किया।

**१५४८. प्रतिसं० २** । पत्रत्य करिं। पार १४ । ८ १८ । विकास पर (१७४१) स्वयं वर्ष १८ । पार्म । वेपूनस्व १०१ । **प्राप्ति स्थान** - दिल्ला स्मेरन कोल्पुर विवासकी । वेपूनस्व

**बिरोद:** --धेर म० २४४४ भाउता स्थी = भगराम गरा सम्यागत्रेषत्री । एकः कोत्युर क्षेत्रकी के बन्त मन्द्रित प्रदाया एकः। प्रीतः वेतनी में तः।

१५४८, प्रतिसंव ३ । पत्रसक उक्त । आक्राहरू जुल्ला । निजापार का का । विध्यसक १ । प्राप्तिक स्थान-निकारक मान्या पश्चित्या स्थामी, प्रकार

विशेष - दशम मृत्या के पश्चिम का स्थल एक एक एक राजनाय है पुत्र कारणाहर है। उत्तरमा सर्थ भवेशी में १९११ र में इस पीत की रसीयों के व १५५०. प्रतिसं० ४ ोृपत्रसं० ३६१। श्रा० ११३ ४७ डखा ले० काल स० १६०२। पूर्ण। वैष्टनस० १३१। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बूदी।

**१५५१. प्रतिसं०५** । पत्रस०४४ म् । झा०१५४५ इ.च । ले० काल स०१६५५ । पूर्ण। वेष्टनसं०२० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोट्यो कानैसावा।

**१५५२. प्रतिसं० ६** । पत्र स**० ४०**० । प्रा० ११९ ४६ इ.च. । ले०काल स० १६०० । पूर्ण । बेप्टन स० १२० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष-फागी मे प्रतिलिपि हुई थी।

**१४५३. प्रतिसं० ७ ।** पत्र स० ४६२ । ब्रा० ११ ४ ७ इ**च** । ले०काल स० १६४१ । बेप्टन स० ६३/२ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, इस्ट्रगढ (कोटा) ।

विशेष---मागीलाल जिनदःस ने गरोगलाल पाण्ड्या चाटस् वाले से प्रतिलिपि करवायी थी।

**१५५४ - प्रति स० ⊏ ।** पत्रस० ३७२ । ले० काल १८६३ । पूर्ण । बेय्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरनपुर ।

विशेष —सगही ग्रमण्यन्द दीवान की प्रेरगगा में यह ग्रंथ पूरा किया गया था। श्री कृत्तनशान द्वारा इसकी जयपुर में प्रतिनिधि हुई थी।

**१४५४. प्रतिसं∘ ६ ।** पत्र स० ४७४ । (ब्रा० १२३) ४७} इच्च । ले० काल स० १६३२ वैसाल सुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर बयाना ।

विशेष - गनेण महुद्रा दालों ने प्रतिनिधि की थी।

**१५**५६. **प्रतिसं० १०**। पत्रस० १-१५०। झा० १० $\{\times,0\}$  इच । ने०काल . । अपूर्ण । बेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर बयाना ।

**१५५७. प्रतिसं० ११ ।** पत्र म० ४०० । स्रा०-१३१% ७१ इन्द्रा । ले० काल म० १६४१ फागुन बुदी ८ । बण्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, करोली ।

१४५६. प्रति सं० १२ । पत्र म० ४३० । खा० १२ ⋋ ६ इश्व । ले० काल म० १६०४ । अपूर्ण । बेठम ्ं०/६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्टिर मास्वा ।

१४,५६. प्रतिसं० १३ । पत्र म० ३६२ । आ० १०१५ ६१ इ.स. । ले० काल । पूर्ण । वे० स० ४५- ∴ा प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियान इन्युपर ।

प्रशस्ति—सबत् प्रदारहर्सं प्रख्यागी साम कातिना से । स्वेत पक्ष सक्षमी गृतिथि शुक्रवार है । टीका देश भाषा सब प्रारम्मी सुनदस्ताल ॥ पुरन करी ऋषभदास निरवार है ।

र्षा भी बहुकेर स्वामी विरावित मूलाबार नाव प्राकृत ग्रंथ की बसुनीन्द्र सिद्धांत चक्रवील विरावित क्रापार १ति नाम संस्कृत टीका के प्रमुमार यह सक्षेपक भावार्थ मात्र देश भाषा सय वचानिका सपूर्ण। १५६०. मोलमार्ग प्रकाशक महा—प० टोडरमल । पत्रस० २८८ । घा० ५३ ४७३ इच । भाषा —राजस्थानी (क्रूडारी) गर्छ । विषय—धर्म । र०काल स० १८९७ के प्रास पास । लेक्काल स०— १९२४ । प्रपर्ण । वेजन सं० १६०७ । प्राप्ति स्थान—भहारकीय वि० जैन सन्दिर प्रवर्गर ।

किरोध — इसमे मोक्ष माग के स्वरूप का बहुत मुन्दर उग से वर्णन किया गया है टोडरमल जी की मिलाम कृति है जिसे वे पूर्ण करने के पहले ही शहीद हो गये थे।

**१५६१. प्रतिसं० २** । पत्रस० २४७ । घा० १० ४७ ॄै इ.च । ले•काल — ४ । पूर्ण । बेहन सं०१७२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर वृदी ।

१४६२. प्रति सं० ३ । पत्रस० २३७ । घा० ११४४ इवा । ले∙काल--- ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन ब्रग्रवान मन्दिर नैरावा ।

**१५६३. प्रतिसं० ४** । पत्रस० १५० से ३२७ । प्रा० १३१ू×७ **६ख** । ले०काल—×। प्रपूर्ण । बेष्टन स०१६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—श्री स्रादिनाथ महाराज के मन्दिर में श्री जवाहरलाल जो कटारया ने स्नतन्नत जी के उपलक्ष में बढाया मिनी भाइपद गुवला स० १६३६।

१५६४ प्रतिसं०५ । पत्रस०२४६ । श्रा०११३¦५६ इत्र । ले∙काल — × । अपूर्ण । वेष्टतस०१२३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजसहल, टोक ।

विशेष - ग्रन्तिम पत्र नहीं है।

१५६५ प्रतिसं० ६ । पत्रस० १४६ । मा० १३४७ इ.च.। ले०काल — 🗴 । मपूर्ण । बेष्ट्रनस० ४३ । प्राप्ति स्थान --दि० जैन मन्दिर पात्रबैनाय टोडारायमिड (टोक) ।

**१५६६. प्रतिसं० ७** । पत्रस० २८६ । द्रा० १२ $\S >$ ६ $\S दल्य । ले० काल० <math> imes$  । ऋष्याँ । बेष्टनस० ६२ । प्राप्टितस्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारार्थासह (टोक) ।

१५६७. प्रतिसं ० म । पत्र स० ४४३ । आ० १ ४६ । ते० काल स० १८८५ आषाढ वृदी ५ । पूर्ण । वृद्य स० ६० । प्राप्ति स्थास—(द० जैन मन्दिर तेरहपन्थी मालपुरा (टोक) ।

विशेष-प॰ शिवप्रिय ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी।

१५६८. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २२७ । ग्रा० ११×८ इचा । ले०काल स० १६२२ पौष सुरी १२ । श्रपुर्णा । वेप्टन स० १४३ । प्रास्ति स्थान—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर भलवर ।

१५६६. प्रतिसं० १० । पत्रस० २४६ । घा० १३ ५ ४७ इक्षा ले•काल— ४ । अपूर्ण । वेकनस० १० ७१ । प्राफ्टिस्यान — दि० जैन प्रवासनी मंदिर अलंदर ।

१५७०. प्रति स० ११। पत्रस० २६७ । ले०काल —  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ११,६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवासनी मन्दिर प्रलवर ।

**१५७१. प्रति स० १२ ।** पत्रस० २१२ । से॰कास  $-\times$  । पूर्ण । जीर्ण बीर्ण । वैष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१४७२. प्रतिसं० १३ । पत्रस० २०६ । ले॰काल — 🗵 । पूर्ए । वेष्टन स॰ १४१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर । विशेष---माधोसिह ने प्रतिलिपि करवाई थी।

**१५७३. प्रतिसं० १४।** पत्रस० २०५। ले०काल 🔀 । प्रपूर्ग (२ से १८४ तक पत्र मही है)। वेबन स० १३७। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१५७४. प्रतिसं० १५। पत्रस०१०६। ले०काल 🖂 । सपूर्ण। वेष्ट्रन स०१६६। प्राप्ति स्थान—कि जैन प्रवासनी मन्दिर भरतपर।

**१५७५. प्रतिसं०१६। पत्रस०**े३६। ग्रा०१३×६१ै इल्बा। ले**०काल स०** १९३१ <sup>चैत</sup> बदी २।पुर्मा। बेष्टुन स०१। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष--हीरालालजी पोतेदार ने प्रतिलिपि करवायी थी । बयाना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

**१५७६. प्रतिसं० १७**। पत्रस० २४०। ग्रा० १२ $\frac{7}{2}$  $\times$ ७ $\frac{7}{3}$ डचा ले•काल स० १६००। पर्सा । बेहन स० १२६। प्राप्तिः **स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

**१५७७ प्रतिसं० १६ ।** पत्रस० २३० । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रनस०१२ (क) । प्राप्ति स्थान—दिगम्बर जैन मन्दिर बैर (बयाना) ।

**१५७८. प्रतिसं० १६** । पत्र स० १६–६७ । ले०काल — × । प्रयूर्ण । नेरटन स० ३०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

**१५७६. प्रतिसं० २०।** पत्र स ३१०। स्रा० ११ ४ ६ हुइख । ले०काल म० १६२७। पूर्ण । वेक्टन म० ३०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१४६०. प्रति स० २१ । पत्रस० २०२ । ने०काल 🕥 । अपूर्ण । बेहनस० १ । प्राप्ति स्थान कि० चैन प्रवासनी मन्दिर स्थानानों का श्रीग ।

१५८१. प्रतिसं० २२ । पत्रस० २०२ । ले०काल , । अपूर्णे । वेष्टनस०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर हण्डावालों का डींग ।

**१५६२ प्रतिसं०२३**। पत्रस०१४४-२६४। लेशकाल स०१६१५ द्यापाट सुदी <sup>१३</sup>। स्रपुर्ता। बेक्नस०५। प्रा**प्तिरूपान**—दिश्जैन पचायनी मन्दिर हण्डावाली का डीग।

१५६३. प्रतिसं० २४ । पत्रस० १४३ । ले०काल 📐 । प्रपूर्ण । वेष्टन म०४३ । प्राप्ति स्थाल—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

१५६४. प्रति स० २५ । पत्रस० २७६ । आ० १२१ 🗡 ५१ डखा । ल० काल 💛 । पूर्णा। बेहुतस०२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पत्रायनी मदिर करौली ।

१५६५, प्रति स०२६ । पत्रस०१५७ । बा०११३ 🖂 ६३ ड । विक्काल 🦠 । अपूर्णः । वेक्टनसंक२४ , प्राप्तिः स्थान—दिक्जैन सीमार्गासिटर करीली ।

**१५६६. प्रति स० २७ ।** पत्रस० २४७ । प्रा० १२ ४ ६ व । ले०काल स० १६२६ । पत्रौ । बेबनस० ७१/६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष---माह जीवरगराम ने भादवा में प्रतिनिधि करवाई । दो प्रतियों का मिश्रगा है ।

१५६७. प्रति स० २६ । पत्रम०१६० । ग्रा०१३ ५ ६१ इ.च.। ने०काल म०१११६ श्रावमा सुदी ५ । प्रपूर्ण । वेष्टनस०३४ । प्राप्तिःस्थास- दि० जैन मदिर फतेहमुर बेलावाटी (सीकर) । **विशेष**—हरिकिशन प्रग्रवाल ने स्वय पठनार्थ व्यास सिवलाल ममाई (बम्बई) नगर मे कराई । प्रति पूरी नकल नही हुई है ।

**१५८८. प्रति स० २६ ।** पत्रसं० २१२ । आ० १३ $\frac{2}{6} imes \mathbf{c}^2$  इच्च । ले०काल स० १६७७ स्रायाङ बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टुन स० १०३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन सन्दिर फतेहपुर शेलाबाटी (सीकर)

विशेष--वीर स० २४४६ भादवा सुदी ७ को जरावरमल मटरूमल ने बड़ा मन्दिर मे चढ़ाया ।

**१४८६. प्रति स० २०।** पत्रस० २१०। श्रा० १२imes६३ इसा। ले०काल imes। श्रपूर्ण। वैष्टन स० १७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रिमिनदन स्वामी बन्दी।

विशेष --- २१० ने मागे पत्र नहीं है।

**१५६०. प्रति सं० ३१**। पत्र स० २६१ । आ० ११ imes ६  $\frac{1}{2}$  इ.ख. । ले०काल imes । पूर्एं । वेष्टन स० १७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१५६१. प्रति स० ३२** । पत्रस॰२१० । घा० १०३ × ४३ इला । ले०काल × : घपूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान** —वि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

**१४६२. प्रति स० ३३ ।** पत्रस० ४०३ । बा० १३ ४७ इञ्च । ले० काल 🗴 । **बपू**र्ण । वेष्ट्रन म० १४३/१३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

१५६३. मोक्समार्ग बाबनी – मोहनदास । पत्र स० ७ । घा० ६ $\frac{1}{6}$  $\times$ ५ इच । भाषा— हिन्दी । विषय – धर्म । र०काल  $\times$  । ने० काल स० १६३५ मङ्गसिर मुदी ५ । पूर्ण । वेष्टुन स० २६१ । प्राप्ति स्थान — दि० तैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष-- यथ रामपुरा (कोटा) में लिखा गया था।

१५६४, **मोक्ष स्वरूप - र ।** पत्र सरु २५ । म्राब १०४३ है इखा। भाषा—हिन्दी (गर्वा)। रुकाल ⊼ालेक काल ा गर्या। बेब्रन सरु १३६२ । **प्राप्ति स्थान**-मरु दिव्**जैन** सन्दिर ग्रजमेर ।

१४६५ सत्याचार वृत्ति - वसुनिद् । पत्र म०१२-३८०। प्रा०६ $\xi^2$ ४८ $\xi^2$ ६ठ्न । भाषा— मस्कृत । विषय - प्राचार ज्ञान्त । र०काल , । ले०काल म०१५२५ । स्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०२३४ । प्राप्ति स्थान — ६० जैन प्रथवाल मन्दिर उदयपुर ।

१५६६. रस्नकरण्ड आवकाचार -- प्राचार्य समस्तमद्र । पत्रस० १३ । आ० ११ ४ ५ इञ्च । भाषा -- मस्कृत । विषय -- आवन धर्म का वर्गन । र०काल ४ । ले० काल म० १४६३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०४२ । प्रास्ति स्थान -- भ० दि० जैन मन्दिर प्रवर्भर ।

**विशेष**—सम्कृत में मक्षिपत टीका महित है।

१४६७. प्रति सं०२ । पत्र म०१३ । ले० काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टन स०११२३ । प्राप्ति स्थान— म०दि० जैन मदिर धजभेर ।

**१५६ ... प्रतिसं० ३** । पत्र स० ३० । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६५३ । पूर्ण । बेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालों का डीग ।

१५६६. प्रतिसं० ४ । पत्र मं०१८ । घा० ८ ¦४४ है इच्छा। ले० काल स० १७५६ ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्णा। बेष्टन स०१५३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा। **१६००. प्रति स० ४।** पत्र स० १४। ले० काल रा० १६४४। बेष्टन स० ४४८। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर।

**१६०१. प्रति स०६ ।** पत्र सं०४ । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेटन स ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी मरतपूर ।

**१६०२. प्रति सं० ७ । पत्रस० ६ । धा०** १२×५ इश्व । लेब्काल सं० १६२१ । पूर्ण । वेकनस०१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल प्रचायती मन्दिर ग्रलवर ।

**१६०३. प्रतिसं० ६ ।** पत्रसं० ११ । द्या० १०३ ४.४ इश्व । ले०काल 🗴 । पूर्ग । वेक्नसं० १८/१३ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर पत्रायती दुनी (टोक)

**१६०४. प्रतिसं० ६** । पत्र स. २७ । म्रा० १०३ 🗶 ४ इञ्च । ले०काल स० ११५४ । वैशास्य वदि १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर, म्रादिनाथ बूदी ।

**१६०४. प्रति स०१०।** पत्र स०१४। ग्रा०१२ × ४ डश्वा ले० काल ्राप्ता के० स०३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर झादिनाथ बँदी

**१६०६. प्रति सं० ११ ।** पत्र स०१३ । प्रा०१३ imes १८ इत्था। ने० कान imes । पूर्ग । वे० स०३४४/१६० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्बनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**१६०७. प्रति सं० १२ । पत्र स० १**८ । ग्रा० १×४ इन्छ । त्रे० काल म० १६६६ । पूर्ण । वेष्टुत स० ४५० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर म भवनाथ उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स बन् १६६६ वर्षे फायुग्ग मुदी १५ श्री मूलस थे भट्टारक श्रीवादिभूषण् जिप्य व वर्डमान पठनार्थ। स्व का नाम उपासकाच्ययन भी है।

**१६०६. प्रति स० १३** । पत्र स० १६ । या० १२ ८४१ इल्ब । ले० काल 🖔 । पुग्ग । वेष्टुत स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

**१६०६ प्रतिसं० १४ ।** पत्र म० ३४ । या० ६६०४ इश्वः । ले० कालः । बष्टन म० ६४६ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-प्रति सम्कृत व्याख्या महित है।

**१६१०. रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका-प्रमाचन्द ।** पत्र स० २४ । श्रा० ११.४ इन्छ । ते**०** काल स० १४४६ । पूर्ण । तेष्ट्रन × । **प्राप्ति स्थान-**-भट्टारबीय दि० जैन मस्दिर ब्रजमेर ।

**१६११. प्रतिसं० २** । पत्रस० ५६ । ग्रा० १० 🕜 ४ हे दख । ने०काल 🗴 । वेस्टन स० ६६ । प्रा**प्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

. **१६१३. प्रतिसं० ४**ा पत्रस० ४६ । बा०१० > ४डच । ले०काल × । ब्रपूर्ए । बेहनसं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर प्रादिनाय बृदी । विशेष -- प्रन्तिम पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है।

**१६१४. रत्मकरण्ड आवकाचार टीका:**  $\times$  । पत्रसु० १-३० । ग्रा० ११ $\frac{3}{4}$  ४२ $\frac{3}{4}$  इत्त्व । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्राचार शास्त्र । र०काल $\times$  । ले०काल  $\times$  । बेष्टनसं० ७१६ । ग्रपूर्ण । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**१६१५. रत्नकरण्ड आवकाचार टोका** । पत्रस० ४६ । झा० ६  $\times$  ५ $\frac{3}{2}$  इश्व इञ्च । आया—सस्कृत, हिन्दी । विषय—प्राचार शास्त्र । 7०काल  $\times$  । ले०काल स० १६५६ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ती । वेष्ट्रम सं० ३३ । प्राप्ति, स्थान — दि० जैन मदिर कोटयों का नैसावा ।

विशेष---मथुरा चौरासी में लिखा गया था। प्रति हिन्दी टीका सहित है।

**१६१६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा-प०सदामुख कासलीवाल ।** पत्र स० २३१ । ब्रा० १४ ८ इ.च. । भाषा-राजस्थानी (द्वादारी) गदा । विषय-श्रावक पूर्व वर्गात । र०काल स० १६२० चैत्र बुरी १४ । ने०काल सं० १६४४ । पूर्णा । बेप्टन स० १४६६ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैत सरिवर प्रवर्मर ।

विशेष -- प्रा० समन्तभद्र के रत्नकरण्ड श्रादकाचार की भाषा टीका है।

**१६१७. प्रतिसं० २** । पत्रस० २४ । ग्रा० ११ ४ ७१ इन्च । ले०काल ४ ग्रपूर्स । बेप्टन स० ६२६ । **प्राप्त्त्स्थान--**---मट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

**१६१८. प्रति स० ३**। पत्रस० ४०१ । ब्रा० १२५ ४७५ इञ्च । ले०काल म० १६३५ केठ बुदी ६। पूर्ण । बेष्टुनस० ६। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाइबेनाथ टोडारायसिह (टोक)।

विशेष--विधेग में प्रतिलिपि हुई थी।

**१६१६. प्रति स०४** । पत्रत्त० १६६ । ते०काल ग० १६२१ । पूर्ण । बेयुन स०४६७ प्राप्ति स्थान—वि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

**१६२०, प्रतिसं० ५** । पत्र स० ३३२ । आ० ११.८५१ इन्छ । ले०काल 🤈 । अपूर्ण । बेस्टन स० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अवकान मन्दिर उदयपुर ।

**१६२१. प्रतिसं० ६** । पत्र म० ४४७ । झा० १३ ′ ४ इच्छा । ले० काल म० १६४३ । पूर्ण । बेष्टन म० ≂३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२२. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १७३ । ले० काल म०१६२० । अपूर्ण । वेष्टन म०६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन वण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१६२३ प्रतिसं० म**ापत्र स० ३६४। ग्रा० १०५ × महश्वा ने०काल स० १६४५। पूर्ण । बेष्ट्रतसं० १२५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

**१६२४. प्रतिसं ० ६ ।** पत्रस० २६१ । ग्रा० १०६ 🗙 ५ इ'च । ले०काल ४ । ग्रप्सं । बेष्टन म० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१६२४. प्रति सं० १०**। पत्र सं० ३२६। प्रा० १४३ ४७ है इंच । ने०काल स० १६२४ भादवा वदी १४। पूर्ण। बेष्टन स० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपूर (शेखावाटी-सीकर)। विशेष—सदानुस को स्वय की लिखी हुई प्रति मे प्रतिलिपि की गई थी। यह प्रयस्व० सेट निहालचदकी स्मृति मे उनके पुत्र ठाकुरदास ने फतेहुपुर के बड़े मदिर मे चढाया सबन् १६०४ प्राणाड सदी १४।

**१६२६. प्रतिसं० ११** । पत्र स० ४१६ । ग्रा०१३ 🗴 ६ इश्वा ले०काल स० १६४४ माघ बुदी ११। पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर ग्रेखावाटी (सीकर) ।

विशेष-प्रति सुन्दर है। द्वारिकाप्रसाद ने प्रतिलिपि की थी।

१६२७. प्रति सं० १२ । पत्र सच्या ४७० । ले० काल स० १६२१ । पूर्ण । वेष्टन सं०२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेखावाटी (मीकर) ।

विशेष--प्रति दो बेस्टनों में  $\hat{\xi}$ । सदामुख कासलीवाल डेडाका ने गोरूलाल पाड्या चौधरी चाटसू वाले से प्रतिलियि कराई थी।

**१६२८. प्रतिसं० १३।** पत्र स० ४३२। ब्रा० १३×८ इश्वा । ले०कात × । पूर्णा वेष्टन स० ११/४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

विशेष-- स्वय म थकार के हाथ की लिखी हुई प्रति प्रतीत होती है।

**१६२६ प्रति स० १४** । पत्र स० २६६ । द्वा० १२  $\times$  ७ $^3_2$  इन्छ । ने० काल म० १६३१ स्थायट बढी २ । पूर्ण । बेहुन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर करौली ।

**१६३०. प्रति सं० १४।** पत्र स० २२७ । छा० १२ imes ७ $\xi$  इच्छ । ले० काल imes । छापूर्ण । बेष्टन स० १३३१ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** पचायती मन्दिर करीली ।

**१६३१. प्रति सं० १६ ।** पत्र स० ४४२ । द्वा० १२ × ७३ इका । ते० काल- × पूर्ण । वेष्टत म० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैत प्रवासती मन्दिर करीली ।

**१६३२. प्रति सं० १७।** पत्र स० ३०६-४५०। ग्रा० १२<sup>५</sup> ८ ७६% । ले०काल। म०१६३२। ग्रपूर्ण। **बेहुन स०१। प्रास्तिस्थान—**दि० जैन पचायनी मन्दिर कामा।

विशेष -- ग्रखयगढ मे प्रतिलिपि की गई थी।

**१६३३. प्रति सं०१६ । ।** पत्रस०२१२ । ग्रा०१२ हुँ 🗙 ७१ इन्छ । ले०काल 🕥 । अपूर्ण । वेष्टन स०१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचाननी मन्दिर कामा ।

**विशेष—** पत्र स०२१२ से द्यागे के पत्र नही है।

**१६३४. प्रति सं० १६** । पत्रस० ३४० । झा० १२ 🗙 ७ इला । लेक्काल 🕜 । झपूर्ए । बेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन छोटा महिर बयाना ।

**१६३५. प्रति सं० २०।** पत्र स० ३६२ । द्या० १२ 🗴 ७३ डखा । ले० (काल 🤾 । सपूर्ण । बेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष-3६२ के आगे के पत्र नहीं हैं।

**१६३६. प्रतिसं० २१ ।** पत्र स० ४८० । ले० काल स० १६२१ **चै**त बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रनायती मदिर मरनपुर ।

**१६३७. प्रति सं०२२।** पत्र स०३२१। ग्रा०१४ × ६ इचा। ले० काल × । पूर्णः । वेष्टन सं०२२। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन अग्रवाल पत्रायती मदिर अलवर। **१६३८. प्रतिसं० २३।** पत्र स० २४६। स्रा० १२३ × ७३ इखा । ले० काल स० १६७४। पूर्या । बेब्रुन स० ७६। **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन स्प्रवाल प्रवासनी मन्दिर सलवर ।

**१६३६. प्रति सं०२४।** पत्र म०२८६ । ग्रा०१३× चङ्खा ले०काल म०१६३१। पूर्णा वेष्टुन स०१२३। **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन खडेलवाल प्रवासती मन्दिर ग्रालवर ।

**१६४०. प्रति स० २५ ।** पत्र स० ४०३ । प्रा० ११ 🗶 ६ इरूच । ले० काल 💥 । पूर्गा। वेष्ठन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन खण्डेलवाल प्रचायती महिर खलवर ।

**१६४१. प्रति सं० २६।** पत्र म० ३६० । ग्रा०१३ ४ ६ इच । ले० काल स० १६२४ । भ्रुपसं। बेस्टन म० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर ग्राहिनाथ स्वामी माववरा (टोक)।

**१६४२. प्रति सं० २७ ।** पत्र स० ४१४ । प्रा० १२ ४ ६ इ.च । ले० काल 🕜 । अपूर्ण । वेप्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पावर्षनाथ टोडारायमिह (टोक) :

विशेष--- पत्र म० ४१४ में ग्रांग नहीं है।

**१६४३. प्रतिसं०२६ ।** पत्र स०३६६ से ५७०। द्या०११३ \ ७५ इच्छा ले^ काल ं। प्रयुग्गे।वेष्टन स०२३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर राजसहल (टॉक)।

**१६४४. प्रति स०** २६ । पत्रम० ३८०। ग्रा० १२<sup>०</sup> ७ इच । ले०काल—स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टुनम० १४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वधेरजालो बा, ग्रावा (उस्सियारा) ।

विशेष - चदेरी मे प्रतिनिधि हुई थी।

१६४५. प्रति सं०३०। पत्रस०००। ले०काल ४ । अपूर्ण । बेहन म०१३। प्राप्ति स्थान—हि० जैन प्रयास मन्दिर नेगावा

**१६४६. प्रतिसं० ३१ ।** पत्रस**०** ५०६ । मा० ११ . ७ गृहचा। ले०काल—स० १६६४ । पर्गा। बेग्रनस्० ३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी वृदी।

**१६४७. प्रतिसं० ३२ ।** प्यस्त० ४८६ । प्राकार ११ 🗅 ७) इश्व । लेक्कात । पूर्ण । वेष्ठत सक ३६ । **पारित स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महाबीर स्वामी बुदी ।

**१६४८. प्रति सं०३३ ।** पत्रस०३५६ । आ०१४८६ इश्वा । ले∘काल ४ । पूर्गा । बेहतसं०१५० । **प्राप्तिस्थान** –दि० जैन मन्दिरतागरी, बृंदी ।

**१६४६.प्रति सं० २४ ।** पत्रस० ४१३ । आ० १२१ × ६१ इच्च । लेक्काल म० १६४४ । पर्या । बेक्कतस०-२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मधिर अभिनत्वन स्वामी, बूदी ।

**१६५०. प्रति स० ३५ ।** पत्र स० ३२२ । प्रा० १४ ४ ७३ इ.ख.। ले० काल स**०** ११६१ चेत्र वदी म.। पूर्ण । वेप्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जेन मदिर पाश्वेनाथ चौगान बुदी ।

विशेष—वदेशी में चोबे दामोदर ने शतिनिधि की थी।

१६४१. रत्नकरण्ड आवकाचार भाषा वचनिका—पन्नालाल दूनीवाला। पत्रस्व २४।
आठ १०-्रे ४६ टेटचा भाषा-राजस्थानी (हुटारी) गण। विषय—आवक धर्म का वर्णना। र०काल म० १६३१ पोष बुदी ७। नेक काल म० १६४६। पूर्ण। वेक स० २०। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) विशेष---पं० फतेहलाल ने इस टीका को शुद्ध किया और पं० रामनाथ शर्मा ने इसकी प्रतिलिपि की शी।

१६५२. रत्नकोश सूत्र व्याख्या—  $\times$  । पत्र स०७। प्रा० १० $\times$ ४) इत्र । भाषा— सस्कृत । विषय—प्रमं । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १७४ । प्राप्ति स्थान—म॰ कि जैन मदिर प्रजनेर ।

१६५३. रस्तेत्रय वर्णन $-\times$ । पत्र स०३७। घा० १२ $\frac{1}{3}$  $\times$  $\mathbb{V}_{0}^{2}$  इन्छ । आषा-सस्कृत । विषय-धमं । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । धपूर्णं। वेष्ट्रन स० ६४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन महिर राजमहल टोक ।

विशेष-पत्र २२ से आगे दश लक्ष्मरा धर्म वर्गान है पर वह अपूर्ण है।

१६५४. लाटीसहिता—पाँडे राजमत्स्त । पत्र स० ७७ । सा० ११ ८४ १ ३व । भाषा— सम्कृत । विषय—प्राचार साहत्र । र०काल स० १६४१ । ते० काल स०१८४६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०६ । प्राप्ति स्थान—हिन्न के पत्रित्व रेशनवजी काम ।

**१५४.५. प्रति सं० २ ।** पत्र स०६४ । प्रा०११ $\times$ ५ है इ.स.। ले० काल स०१७१० । पूर्णे । बेष्टन स०१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

विशेष--पत्र भीगे हुए हैं।

**१६५६. प्रति सं० ३।** पत्र स० ७६ । प्रा० १० $\frac{1}{2} \times 1$  इञ्च । ले० काल स० १८६६ फागुण सुदी ४। पूर्ण । वे० स० १२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती दृशी ।

विशेष—्र्गीनगर मे पाक्ष्वेनाथ के मन्दिर मेपडित जीश्री २०८ श्री मीनारामजी के शिष्य शिवजी के परनार्थ निस्ती गयी थी।

१६५७. लोकांमत निराकरण रास-सुमितिकोत्ति । पत्र स॰ १३ । घा० १४) ४४) दश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०काल स० १६२७ चैत्र बुदी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन म० २६१ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसर्ला कोटा ।

१६५६. **बसुतित्व श्रावकाचार—ग्रा० वसुनत्वि ।** पत्र सं० १७ । प्रा० १० ४ ५ ६२व । भाषा—सम्कः । विषय—ग्राचार शास्त्र । २०काल ४ । ले० काल स० १८१० माच बुदी १० । पूर्ण । वेष्ठन स० २० । प्रा**प्ति स्थान—**भेटारकीय वि० जैन मन्दिर ग्रवसेर ।

वशेष --इसका दसरा नाम उपासकाध्ययन भी है।

१६५६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११ । घा० ११ ३ ४५ इ.ख. । ले० काल 🗴 । पूर्णा । बेष्टन स० १३२० । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**१६६०. प्रति सं०३ ।** पत्रस०१६ । आर०११×६३ दशाः ले∙काल ×ः। पूर्णाः वेष्टनस० ७०२ । **प्राप्ति स्थान** —दि०जैन मदिर अजमेरः।

१६६**१. प्रति सं० ४** । पत्र स० ४४ । घा० ८}×६ इन्त ले**०कान सं०** १८६४ पीय बुदी ६ । बेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लकार, जयपुर ।

विशेष —महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में साह श्री जीवरएराम ने प्रागदास मोट्टाकावासी से सर्वाई जगतः म प्रतिलिपि करवाई थी।

**१६६२. प्रतिसं० ५ ।** पत्रसं० २० । प्रा० ६ है $\times$ ४ है इञ्च । ले**०**काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० २२५ । **श्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

**१६६३. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ५३ । प्रा० १२ ४ ८ इञ्च । ले० काल स० १९८४ । पूर्ण । केटन सं० १७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेलावाटी (सीकर) ।

विशेष-प्रति टब्बा टीका सहित है कीमत दा) है।

१६६४. वसुनन्दि श्रोबकाचार भाषा—ऋषभदासः । पत्रः स० ३४७। प्रा० १ × १.५ इ.स. । भाषा—हिन्दी । विषय—प्राचार शास्त्रः । र०काल स०११०७ । लेकान स०११२४ । पूर्णः । केव्हन स०५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी और ।

### विशेष- प्रन्तिम ।

गर्गदेश भत्लरि प्रथम पत्तन परस धनुपः। भालाबार मुहावनी मदनसिंह तम् भूप ॥ पृथ्वीराज सत तास कैसौमित पद कृंपाय। राजकर पाले प्रजा सबही क सखदाय।। तिसि पत्तन में शांति जिन राजें सबक शांति। द्याचिक्याधि हरै सदा कमें क्षोण को भ्राति ।। ताकी थिति तिय भवन की मोभा कही न जाय। देखत ही ग्रम हरत है सूर सिव मग दरसाय।। पार्वनाथ को भूवन इक ऋषभदेव की ग्रीर। नाना सोभा सहित पनि राजत है इसि ठौर ॥ मन्य जीव वदै सदा पुत्रै माव लगाय। नर नारी गावे सदा श्री जिन गुरा हरखाय ।। तिसी पृरी में ज्ञाति के लोग वसे जू पूनीत। तामै हंबड जानि के वगवर देस जनीत ।। श्री नेमिश्वर वस सुत बाल सोम ग्राख्यात । सो चउभान नियुक्त है ताके सूत विख्यात।। नाभिजदास बखानिये ताक सूत दो जानि । तामैं श्रोप्ठ बखानिये पडित सूनौ बखानि।। वासू पुज्य जिन जनम की पूरी राज सूत जानि। ····फृनि ग्ररुण मृत लघ भ्राता जुकहानि।। तार्में गुरू भ्राता नहीं मृढ एक तुम जान। सब जैनी में बसत है दो सुत सुत ग्रमिराम।। ताकूं श्री वसूनदि कृत नाम श्रावगाचार । गाथा टीका बध कू पढि वैकू सूख काारे॥ भट्टारक झामेर के देवेन्द्र कीत्ति है नाम।

जयपुर राजं गुग्गिनिध देत भए श्रीभराम ।।

ताङ्ग लिल मन भयो दिलार ।

होय वर्जनिका तो मुख कार ॥

सब ही बार्च मुनी दिलार ।

मुगम जानि नहीं भ्रालस धारें ॥

सो उपाय मन नहि करि निली ।

बानवोध टीका जिन मुली ॥

सामैं बुढी मद बनाय ।

फूनि प्रमाद मुरलता लाय ॥

ऋषि पूररा नव पुनिस पुनि गुन येत ।

जया प्रथम कुजवा , मम ममन होय निकैत ॥

**१६६५. बसुनदि श्रावकाचार बचनिका** — रायत्र सर्थप्रहान्नार १२५. ८ ८० । भाषा — हिन्दी ग्रेचा विषय—प्राचार शास्त्र । १०काल सर्थ १६०७। लेर्कल सर्थ १८२६ । पूर्णा बेस्टन सर्थ ४७–२६ । **प्राप्ति स्थान** — दिर्जन सन्दिर कोटडियो का हुगरपुर।

> ऋषि पूरमानव एक पुनि मोघ पूनि शुभ खेत । जयाप्रधाप्रधम कुजबार सम सगल होय निकेत ।।

विशेष-मृत कर्ता ग्रा॰ वमुनन्दि है। प्रति टब्वा टीका सहित है।

**१६६८. बसुनन्दि श्रावकाचार भावा**—गत्र म० १७६। ग्रा० ११ प्र<sub>र्</sub> इत्र्वा। भाषा— हिन्दी। विषय-प्राचार शास्त्र। र०काल ८ । ने०काल ≿ । प्रामे । वेग्टन म० १४६०। प्राप्ति-स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**१६६६. असुनन्दि आवकाचार भाषा** । पत्र स०३४१ । प्रा०१२ ४ ८४ । आपा— हिन्दी गर्य । विषय—प्राचार जास्त्र । २०कार: । वेशनायः । पूर्ण । वष्टन स०१४१ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर वृत्ती ।

**१६७०. बर्द मानसमवशरण वर्णन-क० गुलाल ।** पत्र म०१२ । धा०६०२०७ माण-किस्ती । विषय-धर्म । र०काल म०१६०० माण वृद्धी १०। लेकाल- । पूर्ण । वेष्ट्रन स०३४। प्राप्ति स्थान-दि० जैन सन्दिर वेर (बयाला) ।

विशेष-- प्रादि अत भाग निम्न प्रकार है--

#### प्रारम्म--

जिनराज भ्रमन गुलिम्यान मगल सिव सत ।
जिनवाणी गुमरण मित बढे।
ज्यो गुणठास्म निषम दिवा चढे।
गुरू निर्णय चरणा चित लाव ।
देव शास्त्र गुरू मगल भाव।।
इनहीं गुमरि बगों मुककार।
स्मोमरण कें कें विस्तार।।

#### ग्रस्तिम पाठ

सोलहर्सं घटबीस मं माघ दसं सुदी पेख। गुलाल ब्रह्म मिन नीत इनी जयौ नद को सीख।। कुरु देश हथनापुरी राजो विकस साह। गुलाल ब्रह्म जिल धुनं जय उपमा दीजे काह।

**१६७१. विचारसट्त्रिशकाबर्दारा**—पत्र म० १३ । भाषा—स्हरून । विषय-घर्म । र०काल म०१४७८ । ने०काल म०१८८४ । पूर्ण । वेध्टन स०६४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर चरनपुर ।

१६७२. विचार सूखाई — पत्रमण ४ । भाषा-सम्बन्धः । विषय-धर्मः । रण्काल 🗴 । लेश्कालः सण्य १६७२ । पूर्णः । वेग्रनः सण्य ३२२ । प्राप्तिः स्थानः—दिण्जैन पचायनी मन्दिरः भण्नपुरः ।

१६७३. बिद्धज्जन बोधक-सभी पन्नालाल दूनीवाला । पत्र स०६३७ । सा०१३५ ४ ६) इक्षा भाषा-राजन्यानी (४ तरी) ग्रज्ञ । विषय-धर्म । र०काल स० १६३६ माघ मृदी ४ । लेकाल स० १६३६ माघ मृदी ४ । लेकाल स० १६६६ फामृत गृदी ६ । पूर्ण । त्रेरत्न स० ४ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिर फतेहपुर सेखाबाटी (भीकर)।

**१६७४. प्रतिसं० २** । पत्र म० ५४६ । ग्रा० १३र्टु×द**ै इला। ले**०काल स० १६६२ श्रावण बुदी ६ । पूर्णा। वष्टन म० ५०० । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष - रियमचन्द विन्दायक्याने प्रतिनिपि की थी।

१६७४ विवेक विलास-जिनवत्तसूरि । पत्रसं० २३ । बा० ६ $\frac{2}{6}$   $\times$  ५ $\frac{1}{6}$  इव । माषा-संस्कृत-हिन्दी । निषय-घमं । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टनस० १३१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मंदिर स्निनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष--स स्कृत पद्यों के साथ हिन्दी ग्रथं भी दिया है।

**१६७६. विश्वस्थान**  $\times$  । पत्रसः । ३६ । भाषा—िहन्दो । विषय-धर्म । र०काल  $\times$  । के०काल सं॰ १८७६ । पूर्ण । बेहन सं॰ ६२६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पनायती मदिर सरतपुर ।

**१६७७. वतनाम**—  $\times$  1 पत्रस**०** १२ । ग्रा० १०  $\times$  ४ $_{v}^{2}$  इश्व । आया—हिन्दी (पवः)। विषय-वर्षः। र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्णः । बेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिंदर राजमहत्त टोक ।

१६७८ व्यतिन्संय $-\times$ । पत्रस० ५२। मा० ११  $\times$  ६ इन्त्र। भाषा - सन्द्रत। विषय- धमं। र०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टनस० १५४६। प्राप्ति स्थान- महारकीय दि० जैन मदिर फ्लोरे।

**१६७६. बतसमुख्यम** — × । पत्रस० २१ । म्रा० ११ × ४ै इश्व । माषा-हिन्दी। विषय-घमं । र०काल × । ले०काल स० १⊏३३ सावन बुदी १२ । पूर्णः । बेष्टनस० ३०० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१६८०. वतसार— X । पत्रस०७ । प्रा०६१ x ४० इ.स. । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल X । सै०काल X । पूर्णे । वेष्टनस० ४४४ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**१६८१. व्रतोद्योतन आवकाचार-ग्रभ्नदेव ।** पत्रस० ४४ । ग्रा० ६  $\times$  ३ उन । भाषा-सस्क्रत । विषय-प्राचार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनम० १८७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर, पार्वताय चौगान बृदी ।

विशेष — प्रयंस वत्सरेस्मिन् स वत् १४६३ वर्षे पौष मुदी २ फ्रादित्यवामर भी मृतस थे मरस्वनी गुच्छ भी कृंदकृत्वाचार्याच्ये व. मानिक लिखापित ग्रान्म पठनार्थं परोपकाराय ।

स बत् १६५७ वर्षे ब्रह्म श्री देवजी पठनार्थं इद पुस्तकः।

**१६८३. प्रतिसं०३** । पत्रस०३३ । आ०११ × ४१ इला । ले०काल स०१८८२ श्रावण बदी ३ । पूर्ण । बेष्टनस० **१४४ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लण्कर जयपुर ।

**१६८४. वर्तो का स्थोरा**— ४ । पत्रसुरु ४। या १११३ ४ ४ ८७ । आपा-क्रियो । विषय-धर्म । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । बेपून स०१५८७ । प्राप्तिः स्थान — स्ट्राग्कीय विरु जैन मन्द्रिर सर्वेगर ।

१६८५. वतो का बयोरा— 🖈 । पत्रतः १६ । प्राः ११८४) इन्तः । भाषा-हिन्दी । विषय—पर्मः । र०काल 🗡 । ले०काल 🗡 । पूर्णः । वेष्टनसः १४८२ । प्राप्तिः स्थान—भट्टारकीयः दि० जैन सन्तिर मजमेर ।

**१६८६. तत ब्यौरा बर्मान** । पत्रस० ७ । झा० ११५ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-प्राचार त्रास्त्र । र०काल ×। ने० काल ×। पूर्ण । वेष्टनस० ११४६ । **प्राप्ति स्थान**-सहारकीय दि० जैन मन्दिर मजमेर । १६८७. शलाका पुरुष नाम निर्हाय-मरतदासः। पत्रसं०६१। प्रा० १४६ इश्वा। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र०काल स०१७८८ वैशाल मृटी १४। ले० काल स०१८८८ सावसा सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स०३७३। प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्टिर दबलाना बूंदी।

विशेष--- कविनाम----

गोमुत केरो नाम ताम में दास जु ठानो । तामुत मोहि जान नाम या विधिमन धानो ॥ सधुकर को धरी जोय, राग फुनि तामे ह्वीजे । यह कर्ता को नाम धर्य पडित जन कीजे ॥

भालरापाटन के शांतिनाथ चैरुयन्त्रय में ग्रंथ रचना हुई थी। कवि भालरापाटन का निवासी था। र०काल सम्बन्धी दोहा निम्न प्रकार है---

> शुप्त एक गिगा हीगा शील उत्तर भेदन मे । · · मदयम् तार्पै धरपा भेद जो होवे इनमे ।।

**१६**६६. **शास्त्रसार समुख्यम**  $\times$  । पत्रस्त ४ । ब्रा०१०  $\times$  ४ ३ख । भाषा-सङ्कत विषय—धर्म । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मिटर दुनी (टोक)

प्रारम्भ —शीमप्रस्नामग्स्तोत्र प्राप्तानत चतुष्टय । नत्वा जिताशिष वश्ये शास्त्रमार समुख्वय ॥१॥ स्रय त्रिविधोकाल ॥१॥ डिवियो वा ॥२॥ पत्रविधोवा ३॥ दशविधा कल्पद्गमा ॥

श्चन्तिम -

चतुराध्यायमपनं जाहत्रमार समुज्वये । पठते त्रयोपवासस्य कल स्यात्मुतिभाषते ॥ श्रीमाधनन्दियोगीन्द्रं सिद्धात वोधिचन्द्रमा । श्राभवन्तुं विचितार्थं शास्त्रमारममुज्वये ॥२५ सुसुक्षु सुमतिकोत्ति पठनार्थं ।

१६६६. शिव विधान टीका — ्र । पत्रस० २ । श्रा॰ ६ ४ ४ ४ व । भाषा-हिन्दी, सम्कृत । विषय-धर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दलाना (बुदी) ।

१६६० शीलोपदेशमाला – सोमतिलक । पत्रस० १३२ । ब्रा०११ ४ ४ इखा । भाषा — सन्कृत । विषय-धर्म । र०काल 📐 । ले०काल 💢 । पूर्ण । बेष्टनस०१४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष--- प्रति टीका महित है। एव प्राचीन है।

१६६१. आवक किया  $\times$  । पत्र स० २७ । प्रा० ११ $\times$ ४ इ.स. । भाषा—गस्कृत । विषय— प्राचार मास्त्र । र०काल  $\times$  । न० काल म० १८८५ माह सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४७० । प्राप्ति स्थान—भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर घजमेर ।

विशेष-इति कल्पनाकरनग्र थे श्रावक नित्य कर्म षट् तत्र षण्टमदान षण्टोध्याय ।

१६६२. **श्वावक किया**  $\times$  । पत्रस॰ १६। प्रा॰ १० $\times$ ४३ हजा। माषा-हिन्दी गत्न। विषय-श्वाचार शास्त्र। र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टुनस॰  $\times$ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मदिर श्रीमनन्दन स्वामी वेदी।

**१६६३. श्रावक किया** X । पत्रस० १६। या० १X६ इ**थ**ा भाषा-हिन्दी। विषय-प्रमं। र०काल X। ले०काल X । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६,७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पारवेनाथ इन्दरगढ़ (कोटा)

**१६६४. श्रावक गुरा वरांन**् । नत्रस०३ । भाषा—प्राकृत । विषय-प्राचार शास्त्र । र०कालः । ने०काल स० × । पूर्णः । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन नेरहत्वधी मन्दिर बसवा ।

**१६६५. श्रावक घर्म प्ररूपसा**— X। पत्र त० ११। ग्रा० १२  $\times$  ६ इख । भाषा—प्राप्तत । विषय—प्राचार मान्त्र । २०काल X। ले०काल X। प्रपूर्ण । वेष्टन २०२७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१६६६. श्राचकाचार** $\cdots$  ं " $\cdots$ । पत्र सं १४। प्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$   $\frac{1}{2}$ , इ.च. । भाषा— प्राकृत । विषय—प्राचार ज्ञारत । र० काल स० १४१४। ले० काल  $\times$  । वे० स० ८१। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मिंदर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - मडल दुर्ग मे रचना की गई। ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति अवरी है।

**१६६७. श्रावकाचार**— × । पत्र स० १ । ग्रा० १२ × ४ इखः । भ्रापा—मस्कृत । विषय— ग्राचार गान्त्र । र०काल × । ले० काल × । श्रपूर्ण्। वे० स० ३००/१४४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर मभवनाथ उदयपुर ।

**१६६८. श्रावकाचार — उमास्वामी** । पत्र म० १६ । ब्रा० ८ $\frac{1}{2}$ ४  $\frac{1}{2}$  इन्त्र । भाषा — क्रियी । विषय-प्राचार बाग्य । र०काल  $\times$  । ले० काल म० १६६६ भारवा मुदी १ । पूर्ण । बेष्टून म० ६५७ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर प्रवंगर ।

विशेज-प्रति हिन्दी टीका महित है।

**१६६६. श्रावकाचार — प्रमितिगति ।** पत्र स० ७४ । प्रा० १२ × ४, इ.ख. । आपा-सन्द्रत । विषय — प्राचार णास्त्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्ट्रत सं० १४२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**१७००. प्रति सं० २ ।** पत्रस० ७८ । बा० १० $\frac{3}{8}$  × प्रश्व । भाषा —सस्हत । विवय — ब्राचार शास्त्र । र०काव × । ते०काव स० १६७० फाल्गुन सुदी ६ । बेष्ट्रन स० १४२ । **प्राप्ति स्था**न उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष — जहागीर नृरमोहम्मद के राज्य मे—हिमार नगर मे प्रतिथिषि करबाकर श्रीमर्गा हेमरन ने विश्ववनकीर्ति को मेंट की थी ।

**१७०१. धायकाचा**र  $\times$  । पत्रस०२। म्रा०१० $\times$ १ इश्व । माषा-हिन्दी । विषय-प्राचार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१८१७ धासोज सुदी १०। पूर्ण । वेष्ट्रनस०१८८-१२०। **प्राप्ति** स्**याम**—(२० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायिंमह (टोक)

१७०२. श्रांककाचार रास—पदमा। पत्रस० ११६। घा० ११ $\times$ ६ इच्च । माखा-हिन्दी । विषय --माबार गाला । रुकाल $\dot{x}$ । ते० काल  $\dot{x}$ । श्रुर्ए । वेहनस० १३३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिटर बोरमनी कोटा ।

विशेष-प्रथम पत्र नहीं है।

**पारस्य** :---

समीसर्गं माटे जब गया

निसा सानस्ट भवित्रमा मन भगा ।

मुखिकन जिय जयकार,

भेट्याजिनवर त्रिभवन तार ॥

तीन प्रदक्षगा भावै दीघ,

ग्रष्टप्रशारि पुजा कीथ ।।

जल गध ग्रक्षित पःप नैवेद ।

दीप घप फल ग्रन्थ वस भेद ।।

ग्रन्तिमः--

थावकाचार नसा श्रावकाचार नसा.

रास की उमिसगी परि।

भविजन मनरजन भजन कर्मकठोर, निर्भर पश्च परमेग्टी मन बरि ।

यसरि सदा गृह निर्याथ सनोहर

अनुदिन जे धर्म पालसि

हाली सब जनीचार जिन सेवक।

पदमो काहि ने पामसि भवपार ॥२५

१७०**३. श्रावकाराधन – समयमुन्दर ।** पत्रसु० ३ । भाषा — सस्कृत । विषय — श्रावक धर्म । २०काल । ले०काल ( । पूर्ण । बेष्टनस० ६४२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायनी मदिर भरतपुर । १७०**४. प्रतिसं० २** । पत्रस० ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । बेष्टनस० ६६१ । **प्राप्ति स्थान** –

दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१७०**४. बट्कमीपदेशरत्नाला—ग्रमरकोति** । पत्रतः ८१ । ग्रा० १२रू४ ६ उत्र । भाषा-ग्रपक्षेण । विषय-ग्राचार शास्त्र । र०काल म०१२८७ । ले० काल म०१६०० चैत्र बुटी १ । पर्णा । वेग्रतस्य १६०२ । **प्राप्ति स्थान**— ग्रदास्कीय दि० जैन मस्त्रिर ग्रजमेर ।

**१७०६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ६- च३ । छा० १२ ४ ८ इ**व** । लेशकाल । स्रपूर्ण । बेष्टत म० ६६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

१७०७. प्रतिस० ३ । पत्रस० १०४ । स्रा० १० १४ टक्षाले काल म० १६५२ फागुण मुदी २ । पूर्या। बेप्नस० ७८ । प्राप्ति स्थान— भ०ंदि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

विशेष -- नेखक प्रशस्ति भपूर्ण है।

१७०८. **खट्कमीपदेशरत्नमाला— सकल मूब्या।** पत्र स०१३६। मा० १४४ है इत्र । भाषा—संस्कृत । विषय—मानार सास्त्र । र०काल स०१६२७ । ले०काल स०१८५७ पौष बुदी १०। पूर्ण। वेष्टुन स०३२०। **प्राप्ति स्थान**— अ०दि० जैन मन्दिर मजसेर ।

१७०६. प्रति स० २ । पत्र स० १०४ । मा० १० $\times$ ४  $\xi$  इन्छ । ले० काल  $\times$  । घपूर्ण । वेष्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी व दी ।

विशेष-- १०४ से ग्रागे पत्र नहीं है।

१७**१०. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस०१६५ । ले०काल सं०१६२० चंत बुदी ६ । पूर्णं । **बेहनस०** २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपूर ।

विशेष--विराट नगर मे प्रतिलिपि की गई।

**१७११. प्रतिसं० ४।** पत्रस० १२४। ले०काल $--\times$ । पूर्णं । वेष्टृतस० ३७७। प्राप्ति स्**यान**—दि० जैन प्रवायती मन्दिर सरतपर ।

**१७१२. प्रति सं० ५।** पत्र स० ११४ । ले०काल—imesा ध्रपूर्ण । वेष्टन स०६२ । imesपित स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर सलवर ।

१७१३. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला भाषा—पाष्ठे लालचन्द्र । पत्रस० १४६ । मा० ११४७ इ.च. । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—माचार । र०काल स० १८१८ माह मुदी ४ । ले०काल स० १८८७ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२६ । प्राप्तिस्थान—भट्टारकीय वि० जैन मन्दिर मजमेर ।

विशेष—ग्रजमेर पट्टेश्री १०८ श्री रत्नभूषण् जी तत् क्रिष्य पण्डित पन्नालाल तन् क्रिप्य प॰ चर्चाज इद पुस्तक लिखापित ।

बाह्याग् श्रीमाली सालगराम वासी किश्वनगढ ने ग्रजयगढ (ग्रजमेर) में चन्द्रप्रम चैन्यालय में प्रतिलिपि की थी।

**१७१४. प्रति सं०**२ । पत्रस०१७१ । प्रा०१ $^2_{
m t} imes ^2_{
m t}$  इचा। ले० काल स०११४७। पूर्ती। बेष्टन सं०१६१६। **प्राप्ति स्थान**—महारकीयदि० जैन मन्दिर, प्रजमेर ।

१७१५. प्रति सं० ३ । पत्रस० १४२ । या० ११ $\times$ ५ $^{\circ}_{\gamma}$  इन्ध । ले०काल स० १६११ मगुसिर बुदी = । पूर्ण । बेष्टुनसं० =२ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर फनेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

विशेष - हरकिशन भगवानदास ने दिल्ली से मगाया ।

१७१६ प्रतिसं० ४ । पत्रस॰-१६४ । घा॰ १०१×५ इ.च । ले॰काल × । पूर्ण । वेक्नसं• ७१-२६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौना।

१७१७. प्रति सं०— ४ । पत्रस० १३४ । घा० १०२ ४७ है इख । ने० काल ४ । पूर्ग । वेष्टनसं० ११० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरह्मथी दौसा ।

१७१८. प्रति सं०—६ । पत्रस० ८४ । आ ० १३४८ है इला। से०काल मं० १६०८ । पूर्ण। वेष्टन सं० ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रप्रवाल नैरावा।

१७१६. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १८४ । लेखन काल स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहण्यी बसवा । **१७२०. प्रति सं० ६ ।** पत्र स० १२४ । ष्रा० १२४६ है इच । ले०काल सं० १८८२ मंगसिर बदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन प्रप्रवाल पनायती मन्दिर भलवर ।

१७२१. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १४३ । ग्रा० १२×६ इन । ते•काल स० १८१६ ग्रावाढ सुदी ४ । पूर्यं । नेपृत स० ८१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मंदिर पनायती बयाना ।

विशेष-श्री मिट्टूराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी थी।

१७२२. प्रतिसं० १०। पत्र म० १०६ । म्रा० १२३ ४७३ इच । ले० काल ४। मपुर्णा। वेष्टन स०१४३। प्राप्ति स्थान— दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना।

१७२३, प्रति स०११ । पत्रम०१३७ । ले० काल स०१८१६ वैसास्य मृदी ६ । पूर्ए । वेहन म०५६ । प्रांति स्थान— दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपूर ।

विशेष-प्राचीन है तथा प्रशस्ति विस्तृत है।

१७२४. प्रति सं० १२। पत्र म० १६१ । ध्रा० ११३४७ इञ्च । ले० काल् $\chi$ ि० १८६४ भादबा बुदी ७ । पूर्य । वे२न म० १२६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष राजमहल में वैद्याराज सस्तीषराम के पुत्र ध्रमीवन्द, ध्रभयवन्द्र सीगानी ने प्रतिलिपि करवायी थी।

१७२४. प्रति स० १३ । पत्र म० १६६ । म्रा० ६ $\frac{1}{2}$  ४ ६ $\frac{3}{6}$  इच्च । ले० काल स० १०४६ प्रापाड बुदी १४ । पूर्ण । बठून म० ३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहन्न टोक ।

विशेष--प॰ देवीचन्द न ब्याम महजराम से तक्षकपुर मे प्रतिलिपि कराई।

१७२६, प्रतिसं० १४ । पत्र म० १११ । ग्रा० १०३ × ४५ ६७ । ले० काल स० १८२७ त्रठ मुद्री ७ । पुर्मा । बेग्रन म० ११२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पश्चायनी करौली ।

विशेष--टेकचद विनायक्या न करीली में प्रतिलिपि कराई थी।

१७२७. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १४६ । प्रा० ११ $rac{1}{2}$  imes  $rac{1}{2}$  स० १८ । पूर्ण । बेट्टन स० ५८ ३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर सौगासी करौली ।

१७२८. प्रति सं० १६ । तत्रसः १८३ । या० १०३ 🗙 ४ इला । ने॰कान 🗙 । पूर्णं । वेष्टन सः० ४७-४२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर सौगागी करौली ।

१७२६. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ८७ । प्रा० ११ imes ५ इस्थ । ले० काल imes । अपूर्ण । बेहुन स० १० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

१७३०. प्रति स० १६ । पत्रस० १२२ । ग्रा० १२ × ७} इञ्च । ते०काल—स० १६२६ । पूर्ण । बेब्रन स० १२७ । प्राप्ति स्थान– दि० जैन सन्दिर श्रीमहाबीर बुदी ।

१७३१. प्रतिस० १६ । पत्रस० ६१ । आ० १२३ × ६ है इञ्च । **तेश्काल स० १**६४४ । पूर्मा । बेष्टन म० ४४ २६ । प्रा**प्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष - सवत १६५४ माद्रव णुक्ल पक्ष गविवासरे लिखित भगडावत कस्त्रचंद जी चोखचंद्र।

१७३२. प्रतिसं० २०। पत्र स०१०४। ग्रा०१२ 🗴 ४३ इखा। ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं०१६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर । १७३३. षडसीतिक सास्त्र— ×ापत्रसं∘ १२। सा०६ १४४ है इचा भाषा-मस्कृत-कियी। विषय-पर्मा र०काल ×ा ले काल स० १७१४ मनितर नृदी १। पूर्णा वेष्टन स०६४। प्रास्ति स्थास— कि वेज महिर कोलस्ति कोटा।

विशेष-स्पार्श्वंगिंग के शिष्य तिलक गरिंग ने भड़क्दा नगर में प्रतिलिपि की थी।

१७३४**. षडावस्यक** — × । पत्र सन्या ३० । ग्रा० १० ४४६% । आषा-प्रकित । विषय-वर्म एवं ग्राचार । र०काल — ४ । लेक्सन काल — ४ । पूर्ग । बेप्टन म०२४ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन पाक्ष्येनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष--प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है

**१७३४. पडावरपक बालावबीघ टीका** — ः । पत्र स०२६ । ग्रा०१० ३ ३% । भाषा-प्राहुत हिन्दी । विषय-प्राचार ग्रास्त्र । र०काल ४ । ले०काल स०१६१० भाष्या सूदी - । पूर्ण । वेष्ठत स०६६-६७ । **प्राप्ति स्थात** — दि० जैन मन्दिर बहा बीमपथी दीना ।

विशेष — टब्बा टीका है। ग्रहमदाबाद में प्रतिनिधि की गई थी।

पत्र १---नमी प्ररिद्धताण-प्रस्कित नइ नमहारु नमस्कार । नमी सिद्धाण-भिद्ध तर नमस्कार । नमी मार्थास्याम् सार्वार्थ नइ नमस्कार । नमी उवक्रभायाग उपाध्याय तर नमस्कार । नमी लागु सध्य नाहण लोक कहिता मनुष्य लोक तेठ साहि सर्व साधु नइ नमस्कार ।

पत्र २---मिडामा बुडामा-मिड कहीड आठ तड छ्या करी मीघा छ । बुडामा करा जात तब छह। पार गयामा-ममार तड परि गया छह। परंगार गयामा चंडर भूमाठामा की परंपरा बुहता खह। जो सम्म भूतमा पीडा-नोकाफ कहीड मिथि तहा उबनायामा कहीड पुरता छ.। नमेगामस्य निडामा सर्वेत सकता निर्दित त्र त्रमस्कार गड।

विशेष---मूल प्राकृत के नीचे गस्कृत में टीका है।

प्रशस्ति--- म बत् १५७६ वर्षे ग्राप्यन गृदि १३ गृरी।

१७३७. षडावश्यक बालाबबोध-हेमहस गरिग । पत्र म०४७ । प्रा०१०१ ४१ उचा । भाषा---हिन्दी (गुजराती मिश्रित)। र०काल । विकास स०१४२१। पूर्ण । ४००४०। प्राप्ति स्थान---- दि० केन मन्दिर दक्ताना वृदी ।

विशेष-- रचना का आदि अन भाग निम्न प्रकार ह---

## म्रादिमाग —

पहिलाउ सकल मगलीक तउ, मूल श्री जिनशासनऊ सार ।

इग्यारह ध्रग चऊद पुर्व नउद्घार,

तो देव ज्वामननुश्री पच परमेरिट महामत्र नउकार ।

## ग्रंतिम पुष्पिका ---

इति श्री नपागच्छ नायक सकल सुबिहित पुर दर श्रीसोसमुदरसूरि श्रीजय बाहनूरि पद-कमल ससेबिता शिष्य पित हेसाहसर्गाणना श्राह्वयान्यथेन्या कृतोच्य पहावश्यक वालावबीध श्राचन्द्राकं नद्यात् । ग्राथ स ० ३३०० । सं ० १४२१ वर्षे श्रावण विद ११ रविवासरे मालवसङ्कते उच्चियन्या लिखित ।

१७३ म. षडाबश्यकविषयरण् $-\times$ । पत्र स०२६। म्रा०१०  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  द्व । भाषा-सस्कृत विषय-म्राचार । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं । बेष्टन स०१३६१ । **प्राप्ति स्थान** —मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

१७३६. **षोडम काररा दशलक्षा जयमाल-रइध् ।** पत्र स०३६ । ग्रा० ८४७ इञ्च । भाषा-ग्राप्त्र म । विषय-धर्म । र०काल २ । ले०काल स०१८८६ । पूर्म । वेट्टन म०३४ । **प्रास्ति** स्थान--दि० जैन मन्दिर पचायनी कामा ।

१७४०. षोडशकारए मावना-प० सदासुख कासलीवाल । पत्रस० ७२ । घा० १२ $\frac{7}{8} \times$  द इञ्च । भाषा—गजन्यानी (कू ढाडी) (ग०) । र०काल  $\times$  । ले०काल म० १८६४ मादवा मुटी १४। पूर्ण । वेष्टन म० १२७ । प्राप्तिस्थान— वि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

१७४**१. प्रति सं०२ ।** पत्रस० ११० । बा०१११ 🗴 ४३ डब्च । ले०काल 🦿 । पूर्णा । वेस्टन सम्या ४६३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१७४२, प्रतिसं०३ । पत्रस०६० । ब्रा०१४३ 🗴 स्डब्च । ले०काल स०१६४४ । पूर्णं। बहुन स०६२ । प्राप्तिस्थान— दि०जैन मन्दिर नेरहपथी दौसा।

विशेष मार्गाराम शर्माने दासामे प्रतिलिपि की थी।

१७४३, प्रति स०४ । पत्रस्य २ मे २१४ । ले० काल स० १६६४ पूर्ण । बेप्टन म०२६६ प्रास्ति स्थान—चिरु कैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--रत्नकर इ धावकाचार से उद्धान है।

१७४४. संदेह समुच्चय ज्ञानकलशा । पत्रस० १६ । आ० १२ > ४३ डञ्च । भाषा-सम्बन्ध । विषय-पर्म । २०कालः । ने०कालः , । पूर्णं । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान-**-दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुदी) ।

१७४५. सप्तदशबोल ् । पत्र म०४ । ध्रा० ५ ४३ इखा भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल ६ । ले०काल ८ । पूर्ण । वेष्टन 'स०३० । प्राप्तिस्थान- दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृदी)

१७४६. सप्तितिका सूत्र सटीक — ्रापत्र स०४४ । घा० ×४३ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल स०१७६३ फाणुण सुदी१४ । पूर्ण । वेप्टन स०३४६ । प्राप्टिः स्थान – दि० जैन मन्दिर दवलाना व दी ।

विशेष---गुजरानी मिश्रित हिन्दी में गद्य में टीका है। ब दी में प्रतिनिधि हुई थी।

१७४७. सम्बक्त वर्गन  $\times$  । पत्र स॰ ११ । प्रा० १० $^{3}$   $\times$  ४ इच । भाषा हिन्दी (गढा) । विषय—षमं । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दबलाना बृंदी ।

१७४८, सबोध पंचासिका-गौतम स्वामी । पत्रसः १४ । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल-सावन मुदी २ । मे०काल स० १८६६ फागुन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २८६ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन प्वायती मदिर भरतपर ।

विशेष-प्रति सस्कृत टीका महित हैं तथा अलगढ मे प्रतिलिपि हुई।

१७४६. सबोध पंचासिका—  $\times$  । पत्रस्क १४। झा०१२  $\times$  १ $^{1}{2}$  इक्षा । भाषा-सम्कृत । विषय-धर्म । र०काल  $\times$  । लेक्काल सं०१८२६ द्वि. झाबाड बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स०१३६६ । प्रास्ति स्थान— म०६दि० केन मंदिर अजसेर ।

१७५०. सबोध पंचासिका  $\times$  । पत्रस०१३। प्रा०१२  $\times$  ७ इव । भाषा-प्राहत, संस्कृत । विषय-धमं । र० काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । धपूर्ण । वेस्टन स०६४ । प्राप्ति स्थान - दि० वेस्टन सामा प्राह्म ।

१७५१. प्रति सं०२ । पत्रस०२६ । ले०काल 🗴 । पूर्णा । वेष्टन स०१५ । प्राप्ति स्थान—टि० जैन प्रवासनी मन्दिर क्रलवर ।

१७५२. संबोध पंचाशिका-चानतराय । पत्रस० १२ । प्रा० ६ ४ ७ इथा । भाषा-क्रिनी । विषय-वर्गारककाल ४ । सेक्काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रत म० ४७६ । प्रास्ति स्थान - दि० जैन मदिर सक्कर जयपुर ।

विशेष-इस रचना का दूसरा नाम सबोध प्रक्षर बावनी भी है।

**१७५३. संबोध सत्तरी-जयशेखर सूरि ।** पत्र स०६ । आ० १० $\frac{1}{2}$   $\cong$  ५ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २७२ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन धर्मवाल मंदिर ज्वयपूर ।

विशेष--हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

१७४४ सबोध सत्तरी -  $\times$  । पत्रस०७ । प्र.०१० $\{\times, ''\}$  इन्छ । भाषा-प्राप्तः । विषय-पर्यः । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्णः । वेष्ट्रतं म० १६० । प्राप्ति स्थान ार्वः अंग मधिर दीवानकी कामा ।

१७४४. मंबोध सत्तरी प्रकरण- १ । पत्रम०२ । आ० १ ४ ४ उपन । भाषा-सस्कृत । विषय — धर्म । २०काल ४ । ले०काल स० १६१४ । पूग । बेहृन २०४१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

**१७५६. सबोध सत्तरी बालावबोध**-  $\times$ 1 पत्र संश्चा आ० १० ं ४० देश । भाषा हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल  $\times$ 1 केवकाल  $\times$ 1 पूर्ण । वेषुत संश्चार १६० । **प्राप्ति स्थान** दिल् जैन मन्दिर दवलाना (ब्रुदी)

१७५७. सम्यक्तव प्रकाश भाषा-डालूराम । पत्र स० १२६ । भाषा — १न्ती (पत्र) । विषय – बसे । २०काल १८७१ चैत सुरी १४ । ते० काल १८३४ । प्रगं । बेपून स० ४४२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवासनी मदिर भरतपुर ।

**१७५८. सस्यवत्व बत्तीसी-कवरपाल** । पत्र म०६। भाषा – हिन्दी । विषय – बर्म । २०कास imes । ने० काल imes । पूर्ण । वेषून स० ५०६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपुर। १७४६. सम्पन्ध्य सप्ताविष्टि सेद $- \times 1$  पत्र स $\circ$  ६। प्रा $\circ$ ६ $\times$ ४ इ.व.। भाषा-प्राकृत । विषय-पर्य। र०काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण। वेष्टुन स $\circ$ १८६ । **प्राप्ति स्थान** - दि $\circ$  जैन भित्तर दीवानजी कामा ।

१७६०. सागर धर्मामृत-प० स्नाशाधर । पत्र सं०५६ । स्ना०११४५ हुड्डा । भाषा-सम्कृत । विषय-आवक धर्म वर्णन । र०काल स०१२६६ । ले० काल स०१४६५ । स्नायाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स०४१७ । प्राप्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मदिर स्रवसेर ।

विशेष--रितिवासानगरे सर्यमल्ल विजयराज्ये ।

१७६१. प्रतिसं० २ । पत्र म०३ मे १३७ । घा०१०५ 🗶 ४६ है इन्छ । ले० काल 🗴 । ग्राप्तां। बेष्टन स०१२७६ । प्राप्ति स्थान— भट्टारकीय दि० जैन सन्दिर ग्राबंगर ।

**१७६२. प्रति सं० ३ ।** पत्र स० ६३ । स्रा० १९<sup>5</sup>४४ दे इन्त । लेकाल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १०११ । **प्राप्ति स्थान**-महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

१७६३. प्रतिसं**० ४ ।** पत्रस**० ४६ । आ० १२** ४४१ हुन्य । लेक्काल 🔀 । पूर्गा । बेप्टन म० १०८७ । प्राप्ति स्थान—अदारकीय दि० जैन मस्टिर ग्रजमेर ।

विशेष -- प्रति सम्कत टीका गहित है।

१७६४. प्रतिसंव ४ । पत्र सव ४४ । लेक्काल सव 🕟 । प्रपूर्ण । वेष्टन स १०६६ । प्रास्ति स्थान—अट्टारकीय दिव जैन मन्दिर, अजमेर ।

**१७६५. प्रतिसं० ६ ।** पप्रस० =२ । आ० ११४४ इञ्च । ले० काल स० १६४४ आपाड मुदी ३ । पूर्ण । वाटन म० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

**१७६६. प्रतिसं० ७** । पत्र म० १८ । आ० ११<sup>3</sup>, ४२<sup>3</sup> इन्द्रा । ले० काल म० १६३५ । तालिक मटी ५ । पूर्ण । वेष्ट्रतम० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—मटारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष -- मोजमाबाद में मा० हेमा ने प्रतिलिपि की थी।

१७६७. प्रतिसं० ६ । पत्रम० ४२ । खा० ११४४ इश्व । ले०काल 🕥 । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १०४२ । प्रास्ति स्थान—भट्टाक्तीय दि० जैन सन्दिर स्वतंत्र ।

१७६८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४१ । ले॰काल — 🗸 । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन बढा पवायनी मन्दिर डीग ।

**१७६६. प्रतिसं० १० ।** पत्रस० ६६-१५६ । आ० १३: ४१ द्वा । लेक्काल 🤾 । पूर्ण । वेष्टतम० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-स्वापज टीका पहित है । प्रारम्भ के ६५ पत्र नहीं ।

१७७० प्रतिसं० ११ । पत्रस० ४३ । प्रा० १० ४ ४¦ इथा । लेक्काल ग०१६५६ चैत्र गदी ६ । पूर्णे । बेहन स० २०/१३ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर पवायती दूनी (टॉक) ।

विशेष - प्रति संस्कृत टीका सहित है साह श्री भोटाकेनस्य भाडागारे लिखापित ।

**१७७१. प्रतिसं० १२ ।** पत्र स० १३० । स्रा० १२ ⋋ ४३ इचा । ले०काल स० १६२० चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । बेहन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ बृत्री । विशेष महाराज माववसिंह के शासन में चम्पावता नगरी में अतिलिपि की गयी थी प्रति सटीक है। १७७२. प्रतिसं० १३ । पत्रसः० २० । ग्रा० १२ x ४ इख । ले०काल स० १४४७ कार्तिक वटी १ पर्यो । वेटन स० ३१ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बन्दी ।

१७७**२. प्रतिसं० १४ ।** पत्रस**० ८६ । ग्रा० ८**१ ४ इश्वा । ले०काल म० १४८० बैशास्त्र बदी ४ । पूर्णा । वेउन स**० २२८ । प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पंचायनी मदिर भरतपुर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

स्वत् १४८० वर्षे बैजाल नृषी १ बुखवासरे श्री मूलसाथे नद्यास्ताये बलाखारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्यये म. श्री पमानिददेव तत्पट्टे भ श्री गुभवन्द्रदेवा तत्पट्टे भ श्री जिनवन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टास्क श्री प्रमानन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टास्क श्री प्रमानन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टास्क श्री प्रमानन्द्रदेवा तत् श्रिष्य म ० श्री वर्षचन्द्रद्रास्तदास्ताये लण्डेलवालास्यये मू इ गोधे सा देव तद्भाव्यां गोपी तत्पुत्र सा वाला तद्भाव्यां होली । तत्पृत्र वालावा तत्पुत्र सा वाला तत्पुत्र सा होला । तत्प्रमा स्वाचा प्रमान भावां सरवाम भावां प्रमान तत्पुत्र सा तत्प्रमा होला, तत्प्रमा होला भावां द्रपोत्पत्र साह हालू नामा इंद्यास्त्र श्रीवकाश्ययनं विलाय प्रमानन्द्रप्रमान्त्र प्रमान श्रीवकाश्ययनं विलाय प्रमानन्द्रप्रमान्त्रय स्वाचायां स्वच्यां स्वाचायां स्वच्यां स्वाचायां स्वचचायां स्वच्यां स्वच्यां स्वाचायां स्वच्यां स्वचच्यां स्वचयां स्वचच्यां स्वच्यां स्वचच्यां स्वचच्यां स्वच्यां स्वच्यां स्वच्यां स्वचच्यां स्वचचच्यां स्वचच्यां स्वचच्यां स्वचचच्यां स्वचच्यां स्वचचच्यां स्वचचच्यां स्वचच्यां स्वचचच्यां स्वचचच्यां स्वच

**१७७४. प्रतिसं० १६**। पत्र म०३८। ग्रा० १२.४१)। लेक्काल ग० १८१६ वैज्ञास मुदी १५। वेटन स०१६**। प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर।

विशेष—महाराजा माधवसिंह के शासनकाल में जयपुर में पड़ित चोलचन्ट के शिर्य मुखराम ने प्रतिविधि करवाई थी।

१७७५. पतिसं० १७ । पत्रस० १.७३-१३३ । बा० ११] ४ ५ी इखा । ले०काल २ । मपूर्ण । बेबूनस० ३७ । प्राप्ति स्थास लंदि० जैन सन्दिर पार्थनाथ जीगान वृदी ।

**१७७६. प्रति सं० १६ ।** पत्र म०१—४०। ग्रा०१११ॄँ,४५ दश्व । ले∘काल म०१७०४ । भ्रपूर्स । वेष्टुन म०६४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन भ्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेच-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स्वत् १७२५ वर्षे मात्र मुदी = णुके श्री मूलकार्डे सरस्वती गच्छे म श्री देवेन्द्रकीर्नि तदाम्नाये क्राचार्यश्री कल्यागाकीर्तितन् शिष्य ब्रह्मस्य जिष्णोरिय पुस्तक ।

१७७७. प्रति सं० १६ । तत्र स० १३२ । ले॰ काल स० १४४२ । पूर्ण । वस्त स० १४,३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सन् १५४२ वर्षे कातिक वृदी ४ णितवासरे ण्यासन्तु घटेरा जातीय सघर्ट नीउ भाषी नागधी तस्य पुत्र संघई दौन्ना भाषी रक्ताधी सुत घनराज भाषी तस्य पुत्र सोनापाल एतै- कर्मक्षयार्थ लिलापित ।

१७७**५. प्रति स० २० ।** पत्र म० १४५ । प्रा० १२ 🗴 ६ इवा । ले० काल ग० १६७१ ज्येष्ठ वृदी ४ । पूर्ण । वेयन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रप्रवाल पंचायती मन्दिर ग्रलवर ।

१७७६. सागार धर्मामृत साथा—  $\times$ । पत्र स $\circ$ २१२ । स्रा $\circ$ ११ $\times$ १ इ.स. भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-प्राचार ज्ञास्त्र । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल स $\circ$ ११८ $\circ$  प्रापाद ज्रुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$ १ । प्रापित स्थान—दि $\circ$  जैन प्रग्रवाल प्रचायती सन्दिर सलवर ।

विशेष--वदेरी में प्रतिलिपि हुई थी।

१७६०. **साधु घाहार लक्षरा** — 🗙 । पत्र म०६ । ग्रा० ११ 🗙 इ.ख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-प्राचार णास्त्र । र०काल 🗴 । लेकाल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० २८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नागदी व ही ।

**१७६१. साथु समाचारी— 📐 ।** पत्र म० ४ । भाषा-सस्कृत । विषय-साधु चर्या । र०काल 🗴 । ले० काल 🔈 । पूर्ण । बेष्टुन स० ६४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मदिर भरनपुर ।

१७६२. सार**चर्नुविशतिका—सकलकीत्ति ।** पत्रस० १४० । स्रा० १० $\frac{1}{2}$ × $\frac{1}{2}$  इत्र । भाषा - सम्कृत । विषय-प्रमं । रक्काल  $\times$  । ले० काल । पूर्ण । बेष्टुनस० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर व दी ।

**१७८३. प्रतिसं०** २ । पत्र म० १०४ । घा० ११६ै , ४¦ दश्य । ले० काल ा पूर्णा । बेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मस्दिर तेरहपथी मालपुरा (टॉक) ।

१७६४ . प्रतिसं० ३ । पत्रस०१०० । झा०११×५ टखा । ले० काल स०१६७१ । पूर्णा । वेष्टनस०२११ । प्राप्ति स्थान — दि० जैत मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष - कोटा मे प्रतिलिपि हुई थी।

१७८५. सारचीबीसी - पाश्वंदास निगोत्या। पत्रस० ४००। ब्रा० १२ ५८ ६२ । भाषा-रिग्दा । विषय धर्म । ०० काल स० १२१८ कार्तिक सुरी २ । ले० काल स० १२६८ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स०६ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन सन्दिर फोन्दपुर विस्वादी (सीकर)

विशेष जयगोविद नाराचन्द की बहिन ने बड़ा मन्दिर में चढ़ाया था।

१७६६. प्रति सं० २ । पन्नस० ४३८ । ब्रा० १२ ५ ७३ इन्त्र । ले० काल म० १६४५ । पूर्ण । बेष्टुत म० १३८ । प्राप्ति स्थानः --दि० जैन खण्डेलवाल पचायनी मन्दिर अलबर ।

१७६**७ सार समुख्यय—कुलभद्र** । पत्रस० १०। प्रा०१०×४१ इला। भाषा-सम्कृत । विषय प्रमा र०काल (। ले०काल र । वेशून म०१२१। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मरिर लक्कर, वयवर।

विशेष -- पत्र वहन जीगां है।

१७६६ सारसमुख्य । पत्रस० १६ । प्रा० ११ । प्रृंदिश । भाषा—सस्कृत । विषय-धम । रक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० १७१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, ब्रारी ।

१७८६. सार समुख्या वित्रस०१६ । आ०११ ४ टच्चा भाषा-सम्बन्धा विषय-धर्मा र०काल ं ने ने काल ं पूर्णा विषय-धर्मा प्राध्यस्थान—दि० जैन मरिर कोटडियो का इनस्पर ।

**१७६०. सार सदाह**--- , । पत्रस० २४७ । प्रा० १२ है ४४ है इ.स. । प्राप्त । विषय – घर्म । र०काल ( । ले० काल ∴ । प्रश्नुर्या । वेष्टनस० ३१३ । प्राप्ति स्थान---दि० जेन मदिर टीवानजी कामा । विशेष-संस्कृत तथा हिन्दी में टीका भी दी हुई है।

१७६१. सुखबिलास—जोधराज कासलीवाल । पत्र स०६४। भाषा-हिन्दी। विषय-घर्म। र०काल १८६४ मंगमिर सुदी १४। ले० काल स०१६३६। पूर्ण। वेष्ट्रन सं०४४३। प्रास्ति स्थान—पद० जेन पचायती मदिर भरतपुर।

विशेष--प० दौलतराम के पूत्र जोधराज ने कामा में संख्विलास की रचना की थी।

१७६२. प्रति सं०२ । पत्रस० ३११ । लेक्सल १८८४ पूर्णः । वेष्टन स०४४४ । प्राप्ति स्थान—दि० र्जन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--पोदकर ब्राह्मरण से जोधराज ने कामा में लिपि कराई थी।

१७६३. प्रति सं० ३ । पत्रस० ३६४। ले०काल 🗴 । १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४५ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—जो यामे अलप बुद्धि के जोग ते कही ग्रक्षर धर्य मात्रा की भूल होय तौ विशेष जानी धर्म बुद्धि मोक् प्रत्य बुद्धि जानि क्षमा करि धर्म जानि या कौ सोध के सुद्ध करि लीज्यों।।

#### प्रारम्भ---

एमो देव ब्रग्हन्त की नमी सिद्ध महाराज। श्रुत निम गुर को नमन हो मुख विलाम के काज।। येही चउ मगल महा ये चउ उत्तम मार। इन चव को चरगो गह होह समनि दातार

### ग्रन्तिम-

जिन वागी अनुस्वार सव कथन महा सुखकार । भले पथ ग्रनादि तें मारग पावै सार ।। मारग दोय थन में कहें मोक्ष और समार। सुख विलाग तो मोक्ष है दुख थानक समार ।। जिन बारगी के ग्रन्थ मृति उमग्यो हरण ग्रापार । ताते सख उद्यम किया ग्रथन के ग्रनसार ।। व्याकरसमदिक पढयो नहीं, भाषा ह नहीं ज्ञान । जिनमत ग्रन्थत वे कियो, केंद्रल भक्ति जुद्धाति ।। भल चुक ग्रक्षर ग्रन्थ, जो कुछ यामे होय। पडित सोच सुघारिये, धर्म बृद्धि धरि जोग ॥ दौलत सूत कामा वरी, जौध कामलीवाल । निज सुम्ब कारए। यह कियो, सुख विशास गुरममाल ।। सूख विलाग सूख्यान है, मूखकारण सूखदाय । सुख अर्थ सोयो सदा, शिव सूख पानौ जाय ।। कामा नगर महावनै, प्रजा मुखी हरपत । नीत सहत तहा राज है, महाराज बलवन्त ।।

जिन मन्दिर तहा चार है सोभा कहिय न जाय ।
श्री जिन दर्शन देखा ते आतन्द उर न समाय ।।
श्री किन दर्शन देखा ते आतन्द उर न समाय ।।
श्री कह नी बहु क्षी भारसा में हु प्रीति ।
जिन वागी सरया करें पालंडी नहिंदिन ।।
एक सहस्र घर घाट भन घसी उपरचार ।
सो समत सुन जानियो कुकल पक्ष मृतुवार ।।
सोसिर निषि पाली विवं उत्तरापाह निहार ।
ता दिन यह पुरमा कियो जिल मुल को करनार ।।
सुन विलास इह नाम है सब जीवन मुलकार ।।
सुनी हों हु राजा प्रजा सेवो धर्म सरीव ।
भूनी हों हु राजा प्रजा सेवो धर्म सरीव ।

# ग्रन्तिम मञ्जल--

देव नमो ग्रन्हन सकल मुखदायक नामी।

नमो सिद्ध मगवान भये शिव निज सुख ठामी ।। साध नमौ निरुपंथ सकल परिग्रह के त्यागी ।

सकल सृख्य निज थान मोक्ष ताके ग्रनुरागी ।।

बन्दो सदाजिन धर्मको देय सर्व मुख सम्पदा। य सार धार तिहलोक मे करो क्षेम मञ्जल सदा।।

मगिमर मुदी ५ म १८८४ में जोधराज कामलीवाल कामा के ने लिखवाया था।

१७६४. मुद्दिष्टितरंगिरागे - टेकचन्द्र । पत्रन० ६३४ । ब्रा० १२३४.७३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । १०काल स० १७३६ । ले०काल स० १६१० पूर्ण । वेष्टन स० ३। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन प्रचायनी मस्टिर दीवानजी कामा ।

१७६**५. प्रति सं०२ ।** पत्रस० ५६६। ले० काल स० १६१० । पूर्ण । बेष्टन स०५३७ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्द्रियः।

१७६६. प्रतिसं० ३ । प्रयस् ० २६६ । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । बेष्ट्रनस् ० ४३६ । प्राप्ति स्थान — प्रयोक्त सर्विर ।

१७६७. प्रति सं० ४ । पत्रस० ३१० । द्या० १५ ५ ८ इ.च । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १४५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन स्वष्टेलवाल पचायरी मन्दिर ग्रलवर ।

**१७६८. प्रतिसंo १.** १ पत्र सo २–२ o । श्राo १२ $\frac{1}{2}$ imes ६ च । सेoकाल imes । श्रपूर्ण । बैष्टत सo २१६ । **प्राप्ति रुवान** — दिo जैत मन्दिर बोरसजी कोटा ।

विशेष---२०० से भागे पत्र नही है।

१७६६ प्रति सं०६ । पत्र स०१४० । घा०११्रे×७३ इ.च.। ले०काल स०१६२६ । पूर्णः । वेष्टनसं०३ १६⊏ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन पार्थनाय मदिर इन्दरगढ (कोटा) विशेष-- मवाई माधोपूर में प्रतिलिपि को गयी थी।

**१८०० प्रति सं०७**। पत्र स० ७०७। म्रा० १०१ ४ ४ है। लेक्काल स० १६०८ ज्येष्ठ गुरी ७। पूर्या। वेष्ट्रन स० १६। **प्राप्ति स्थान**— दि जैन मन्दिर तेरह्वथी मालपुरा (टोक)

**१८०१ प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० २१ । ग्रा० १२ ∖७ । ले०काल स० १८३३ । ब्रदूसं । बेब्रुत स० ४८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो काङ्गरपुर ।

१८०२. प्रति स० ६ । पत्रस० ५४७ । बा० ११ ४ ७ इश्व । लेक्काल स० १६०७ । पूर्ण । बेष्टन २० ११३ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन लण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

**१८०३. प्रति सं० १०।** पत्रस० ४३४ । या० १० र्रै प्रच्छवा **से∘काल** स०१६१२ कार्तिक मुदी ६। पूर्यो । बेष्टन स०२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फ्तेहपूर केलावाटी (सीकर)

**१८०४. प्रतिसं० १२ ।** पत्रस० ३०४ । आ० १४ ४ ११ इच । ले०काल म० १८६१ आसीज मुदी ४ । पूर्णा वेष्ट्रन स्०६४ । **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन मन्दिर, तरहपथी दीसा ।

विशेष---नाउलाल तेरापथी ने पन्नालाल तेरापथी स प्रतिलिपि करवायी शी।

१८०५ प्रतिसं० १३ । पत्रस० ३५३ । आ० १३ ८७३ इच । ते०काल ८ । अपूर्ण । वष्ट्रन स० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर, करोती ।

१८०६. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १ मे ६३ । ते० काल ःः । अपूर्ण । बेष्टन म० ६६ । द्रापितः स्थान—दि० जैन पत्रायती मदिर हण्डावाली का डीग ।

१८०७. प्रतिसं० १४ । पत्रम० ४११ । प्रा० १३ ) ७ उत्य । ते०काल म० ११८३ । पूर्णे । बेपुन म० १३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर यथैरवालो का ग्रावा, (उगियारा) ।

१८०८. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २४७-४७४ । प्रा० १३१ १ ७) इ.च.। लेक्सल गर्० १९२८ । क्रपूर्स । बेहन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पचायनी दूर्स (टोक) ।

१८०६. पतिसं० १७ । पत्र म० २६४ । छा० १८ ८ ७ इञ्च । ले० काल ५ । यकृष्ं । बेग्टन स० ४२,२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूती (टोक) ।

१८९०, प्रतिसं० १८ । पत्रम० ४३० । ब्रा० १६%, ६६ च । ले० काल स० १६०८ पाप बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटधो का नैसवा।

विशेष-- बल्देव गुजराती मोठ चतुर्वेदी नैन मध्ये लिखित ।

**१८११. प्रतिसं० १६ । पप्रस**० ३६ । घ्रा० १२ ४६ डच । ले०काल स० १६४४ । ध्रपण । बेष्टुत स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बृंदी ।

**१६२२. प्रतिसं०२०।** पत्र म०५४४ । छा०१३ ४६ इन । ले०काल म०१६२५ । पूर्ण। बेष्टन म०१३३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बूदी।

विशेष-लोचनपुर (नैगावा) में लिखा गया था।

**१८१३. प्रतिसं० २१** । पत्र स० १६ । म्रा० १० ४ ७ इन्छ । ले० काल ४ । म्यूप्सं । बेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बूदी । **१८१४. सूतक वर्णन**—मे० सोमसेन । पत्र स० १७। ग्रा० १० $\times$ ४ हे इ.च.। भाषा— सम्कृत । विषय—प्राचार मास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । बेष्टन स० १०० । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन प्रयाल पत्रायती संदिर ग्रनवर ।

१६१४. सूतक वर्णन $-\sim \times$  । पत्र म०२ । ग्रा०११ $\times$ ४ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय- ग्राचार ग्रान्त । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०४४७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जबपूर ।

**१६१६. सूर्य प्रकाश-मा० नेमिचन्द्र ।** पत्र स० १११ । मा० १०६ ४४६ इखा । भाषा— सम्कृत । विषय — माचार मानत । र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४६ । **प्राप्ति** स्थान । दिव जैन मन्दिर नेमिनाथ रोजारार्थामह (रोक)

**१८१७. सोलहकारएा मावना** — 🔀 । पत्र स० १० ब्राब १० X ४६ ३ व । भाषा -हिन्दी । विषय —धर्म । र०काल 🔀 । ले० काल 🔀 । पूर्ण । वेष्टन स० ३३४ **। प्राप्ति स्थान** —म• दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

 $\xi = \xi = -\frac{1}{2} - \frac{1}{2} - \frac{1}$ 

**१८१६. स्वाध्याय मिक्ति** । पत्रस०२। म्रा०१०३४५३ इ.ख.। भाषा - सम्कृत। विषय—प्रमं। र०कालः । ने०कालः म०१६४४ म्रगष्टत बुदो १। पूर्णः। वेषृत म०१३५। **प्राप्ति** स्थान - दि० नैन मन्दिर राजमहल टोकः।

- 0 ---

# विषय - अध्यातम चिंतन एवं योग शास्त्र

१८२०, **ब्रध्यात्मोपनिषद्-हेमखंद्र।** पत्र स०२०। मा०१० x ४ इ**च**ा भाषा — सस्कृत। विषय—मध्यात्म। र०काल X । लेकाल X । अपूर्ण। वेष्ट्रत स०२६२। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर, प्रमिनन्दन स्वामी, ब दी।

१८२१. ब्रष्ट्यास्म कल्पद्वस्म- मुनि सुन्दरसूरि । पत्र म०७ । ब्रा०१० $\frac{1}{7}$   $\times$  ४ $\frac{1}{7}$  ट्व । साथ- सस्कृत । विषय-्याय्यास्म । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० ६२२ । प्रास्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयद्गर ।

**१८२२. ग्रष्टारम तरिंगिए।— ग्राचार्य सोमदेव** । पत्र म० १० । ग्रा० ११ $\xi \vee \chi_{\gamma}^2$  इ.च । माषा-सस्कृत । विषय— ग्रष्टारम । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\sim$  । वेठून स ६१ । **प्राप्ति स्थान**—किंठ जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१८२३. मध्यात्म बारहखडी—दोलतराम कासलीवाल—पत्र म० २०४ । भाषा-हिन्दी (पदा)। विषय—प्रध्यात्म । र०काल स० १७६६ फागुग्ग मुदी २। ले० काल  $\times$ । पूर्णः । बंदन म० ६१। प्राप्ति स्थान-दि० तैन नेरहपयो मन्दिर बसवा।

विशेष—पाच हजार पद्मों में अधिक की यह क्विति अध्यात्म विषय पर एक मृत्दर रचना है। यह स्रभी तक अप्रकाशित है।

१६२४. प्रतिसं० २ । पत्र स०८३ । ले० काल 💢 । ब्रपूर्ण । वेष्टन स०४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरापथी मस्टिर बसवा ।

**१८२५. प्रति सं०३ ।** पत्र स०१२२ । ब्रा०१२ - ६ दश्वा। ले०काल स०१०६० । पूर्यो। बेष्ट्रन स०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दीमा :

विशेष—हरूलाल जी तेरहपथी ने माधोपुर निवासी बाह्मस्य भोपन से प्रतिलिपि करवाकर दौसा के मस्टिर में विराजमान की थी।

१६२६. प्रति स० ४ । पत्र म० १४६ । सा० १०} १ ७ उठक । लेकाल म० १६६१ कास्तिक बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन म० ११ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर, दीवान चेननदाम पृपनी डांग ।

१६२७. प्रतिसं ० ४ । पत्र म० २१६ । आ।० १२ 🗵 ६ इ.च.। ले०काल म० १६७६ फानुस्स सदी ७ । पूर्या । बेष्टन म० १७-२६ । प्राप्ति स्थान—विच्यति पचायती मन्दिर ब्रलवर ।

विशेष-भवानीराम ने ग्रनवर म प्रतिलिपि की थी।

१८२८ - प्रतिसं०६ । पत्र स०१२८ । ले॰ काल म०१८०३ ब्रासोज मुदी ७ । पूर्ण। बेष्ट्रन स०४३३ । प्राप्तिस्थान–दि० जैन पचायनीमन्दिर भरतपूर ।

**१६२६. प्रति सं०७ ।** पत्र स०२६०। का०१०४६ उश्वरा ने० कान ४ । ब्रपूर्सा । वे० सं०१७२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर ब्रग्रवान उदयपुर । **१८३०. प्रति स० ६ ।** पत्र स० ३२ । घा० ११ $\frac{2}{5} \times 5\frac{2}{5}$  इश्वा । ले० काल  $\times$  । घपूणाँ । वे० स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन संदिर वैर (वयाना)

विशेष-४०० पद्य है।

**१८३१. प्रध्यात्म रामायरा**—  $\times$  । पत्र म० ३३६ । प्रा०१०  $\times$  ६ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । रुकाल  $\times$  । ले० काल म०१८५५ माघ सुदो १ । पूर्ण । वे० म०३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागरी वृदो ।

विशेष---ग्रन्तिम पुष्पिका---

इति श्री ब्रध्यात्मरामायणे ब्रह्मापुराणे उत्तरःबडे उमामहेश्वरसवादे उत्तरन्वडे नवम सर्ग । ब्रध्यात्मोत्तरकाटे ग्रह सम्बया परिक्षिप्ता । उत्तर काड ।

१८३२. **प्रानुप्रेक्षा सग्रह**— ≻ । पत्र स० ७ । ज्ञा० ११ × ४१ इख । भाषा-हिन्दी (प)। विषय-चिनन । २०काल 'ा ने०काल x । पूर्णा वे**हन स० ७१० । प्राप्ति स्थान**—भट्टाग्कीय विकर्जन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--- नीन तरह से वारह भावनाओं का वर्णन है।

१८३**३. धनुभव प्रकाश-दीपचन्द कासलीबाल** । पत्रस० २४ । आ०१०४४ ऽश्व । भाषा-तिन्दी (गढ) । विषय-प्रध्यान्म । र०काल स०१७८१ गीप बुदी ४ । ले०काल . । पूर्णा बेटुनस०२२-४५ । **प्राध्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर भादवा (गज०)।

१६३४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३६ । ग्रा० १२ × १३ इला । ले०काल म० १०१२ चैन मृदी १। पूर्ण । बेकुन स० २६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी चेतनदास पुरानी डीग ।

१६३५. प्रति सं० ३ । पत्रसर्वका व्याव १२३ × ७३ इच्छ । लेक्काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रस्थ २० । प्राप्ति स्थान—दिव्जैन प्रवासनी मंदिर कामा ।

१८३६ प्रतिसं०४ । पत्रस०४७ । ने०कान 🔀 । पूर्णं । बेष्टनस०४३४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन प्रवायनी मन्दिर भरनपुर ।

१८३७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४२ । ब्रा० ८३ ८ ५३ इच्च । ले० काल---- । ब्रपूर्ण । बेष्टतसं० १६ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदाम पुरानी डीग ।

१८३६ म्हसरम्भाय नियुत्ती > । पत्रस्य ४ । म्रायः १० ४ ४ इच । म्राया-प्राकृत । विषय-म्रायास्म । रक्कालः भागेलकालः — । पूर्णः । वष्टनं स्थापः । प्राप्ति स्थानः स्थापः । जीनं मदिरं म्रावसेरः ।

१८३६. ग्रह्मट पाहुड — कुंदकुंदाचार्यं। पत्रस० ८२। प्रा०१२ × ४३ इस्त । साथा-प्राहुत । विषय-प्रध्यात्म । र०काल ४ । ने०काल म०१८१२। पूर्ण । बेष्टनस०११८। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

१८४० प्रति सं०२ । पत्रस्य ५६ । लेक्काल म०१८१४ । पूर्णं । बेष्टन म०३६३ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन प्रचायती मन्दिर मरतपुर ।

**१८४१. प्रध्याहुड माचा-जयचन्द छावडा ।** पत्रस०१७० । मा०१३ $\frac{1}{7}$  $\times$  $\frac{1}{7}$  $\times$ द्ध । भाषा-राजस्यानी (द्वारारी गद्य। विषय-प्रध्यारम । र०कास स०१८६७ भारवा सुरी १३। लेकाल

स॰ १९७२ पीष मुदी ६। पूर्ण । बेस्टन स॰ ६२७ । प्रास्तिस्थान—भ॰ दि॰ जैन मन्दिर ग्रजमर । विशेष—टीकमजन्द सोनी ने पुत्र दुलीचर के प्रसाद बडाघडा के मदिर में चढाया ।

**१८४२. प्रतिसं०२** । पत्र स०१४२ । ग्रा०११ × ७३ डखा । ले०काल स०१८७७ कार्तिक सुदी१४ । पूर्ण । वे० स०१४६६ । **प्राप्ति स्थान** — मट्टारकीय दि० जैन सदिर ग्रजमेर ।

१८४६ प्रति सं० ३ । पत्र स० २७० । म्रा० ११ × ५ हुँ इ॰ व । ले०काल स० १६१६ म्रायाड बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**ः – दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

विशेष-मध्य पीपली चौंठ बजार दौलतराम ने अपने पुत्र के पठनार्थ प्रतिनिधि करवायी थी।

**१८४८. प्रतिसं० ४।** पत्र स० २०६। प्रा० १३×६ इन्छा । ले०काल म० १६४० - फागुन वदी १२। पूर्ण । वेटन स० ६६/४७। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन महिर मोगागियो का करीनी ।

**१६४४. प्रति सo १** । पत्र सo २६२ । **या**o ११imes६ इ.स. । नेoकाल सo १८०२ सावन सुरी ११ । पूर्ण । वेष्टन सo २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती करोली ।

विशेष - अलवर नगर मे जयकृष्मा ने प्रतिलिपि की थी।

**१८४६. प्रति सं०६।** पत्र स०१७० । म्रा०१२ $^{\circ}_{1} \times ^{\circ}_{2}$  इन्छ । लेक्काल म०१६२०। पूर्णे। बेष्टुन म०१४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर छोटा बयाना ।

विशेष — श्रावक साधोदास ने यह ग्रथ मदिर में भेट किया था।

**१८४७. प्रतिसं०७** । पत्र स०२२६ । प्रा०१२ॄै×७ इश्वः । ले०कालः । पूर्णः। वेष्टन स०११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती कामा ।

१८४६. प्रति सं० ६ । पत्र स० २४४ । घा० ११ $\times$ ७ इ.स. । लेबकाल म० १६४७ सखन मुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन स० ७७ । प्राप्ति स्थाने —(द० जैन मन्दिर फतंहपुर शंकावाटी (सीकर)।

विशेष--दिगम्बर जैन सरस्वती भण्डार मथुरा के मार्फन प्रतिनिर्ण हुई थी।

**१६४६. प्रतिसं०६**। पत्र स०१६१। फ्रा०१३२८७३ इखानेक्काल म०१६००। पूर्णा वेष्टन स०२१। **प्राप्ति स्थान**—वि०जैन मन्दिर पंचायनी कामा।

१**८५०. प्रति स० १०**। पत्र स० २२२। ले०काल १८७३ ज्यंप्ठ मुदी १३।पूर्मा। बेधून म० ३६२। **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर पत्रायती भरतपुर ।

विशेष --जोधराज के पुत्र उमगर्वासह ने लिखवायी थी।

**१८५१. प्रतिसं० ११** । पत्र स० २११ । ले० काल स० १८७२ माह सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ३६४ । **प्राप्तिस्थान** ---दि० जैन पचायती मन्दि० सरनपुर ।

विशेष --- भरतपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

**१⊏५२ प्रतिस०१२** । पत्र स०१६० । लें०काल १८८७ । पूर्ण। बेष्टन स०३१५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पद्मावती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- मरतपुर मे चिम्मनराम बजाज ने लिखवायी थी।

१८६२ प्रति सं०१३ । पत्र स० ११२ । घा० १३ ४८ ८ इ.च. । लेकाल म०१८६२ ॥ पूर्णा वेष्टन स०१०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर । विशेष — रियभचन्द बिन्दायक्या ने लश्कर पाटोदी के मिन्दिर जयपुर में महाराजा सवाई मात्रोसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी।

**१८५४. प्रति सं० १४ ।** सत्र स० २८६ । प्रा०१२ ४६३ इन्छ । ले० काल स० १८७२ सावन बुदी २ । पूर्णे । बेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति रूपान**—दि० जैन घषवाल पंचायती मन्दिर खलकर ।

**१८५६. प्रति स० १४** । पत्र म० १६६। म्रा० १३ ४७) इथा । त०काल स १६३८ सावण् सुदी ८ । पूर्णा । वेष्टन म० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर झलवर ।

**१८५६. प्रतिसं० १६**। पत्र सस्या १८५। छा० १२×८ इचा ।। नेखन काल म० १६४६। पुर्गा। वेस्टन स० ११०--१२। **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर पाछ्वेनाथ इन्दरगढ, कोटा

**१८५७. प्रति सं. १७**। पत्र स० २५४। आ० ११३ (६५ इखा। जे०काल स० १८८२। पुर्मा विकस**० ३४। प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नेरहपथी मालपुरा (टोका)।

विशेष -- ग्राचार्यश्री मागाक्य नन्दि के णिएय ने लिखा था।

१८६८ प्रति सं. १८ । पत्र स०१६० । ग्रा० १० १६ १ इ.च.। ले० काल 💢 । श्रपूर्ण । वे स० ११६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमङ्ख्योक ।

**१८४६. प्रति सं० १६** । पत्र स०२४१ । ब्या० ११८७<sup>9</sup> इच्छा। ले० काल स०१६४५ । पूर्या । वे० स०२३ । **प्राप्ति स्थान** --- दि०तैन मन्दिर पार्थ्वताय टोडारायसिह (टोक) ।

१८६०, प्रति स० २० । पत्रस० २०२। घा० ११ ४ १३ टला । लेकाल म० १८५४ (शक म० १७४६) । पूर्ण । वेक्नस० ७६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन नेस्ट्रपूषी मन्दिर नैसावा ।

विशेष - जाणी गोपाल ने लोचनपुर (नैगावा) में लिखा है।

**१८६१. प्रतिसं० २१ ।** पत्रत्त० १७६ । ग्रा० १३ <sup>२५</sup> ६ उब्च । ले०काल म० १६२६ कार्तिक सुद्री ४ । पूर्ण । बेप्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूती (टोक) ।

विशेष-- सदामुख वैद न ग्रपने पठनाथं लिखी ।

१⊏६२. प्रति सं २२ । पत्र स० २०५ । घा० १०५ ∑६ इ.च.। ले०काल 🖂 । पूर्णा। वे० स० १४० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर थी महावीर वृदी ।

१८६३, श्रात्म प्रबोध । पत्र म०३। आ०१० 🗴 ४३खा। भाषा—सस्कृत। विषय— प्रत्यासम् । र०काल 🔑 । तेवल काल म०१६२० कार्तिक सुदी १। प्रपूर्ण । वे०स०४। प्राप्ति स्थान— भटारकीय दि० केन मन्दिर प्रजोर ।

विशेष-नैगसागर ने प्रतिलिपि की थी।

१६६४. प्रात्म प्रबोध—कुमार कवि । पत्र म०१४ । बा०१० ४ ४} इश्व । भाषा— संस्कृत । विषय—सध्यास । र०काल 🌫 । ले०काल म०१४७२ प्राप्तिम बुदी १०। ले०स०४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष —वीरदास न दीवलागौ के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

**१८६५. प्रति स० २** । पत्रस० ११ । प्रा० १०३ ∖. ४३ इम्च । ले०काल स० १५४७ फागुग्ग सुदी ११ ।पूर्गः । वेष्टुनस०— द० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा । सिकोर---श्रीपचा नगरे खण्डेलवाल वश गगवाल गोत्रे संघई मेठापाल लिखापित ।

१८६६. **प्रात्म सबोध — रह्यू**। पत्र स० २१। प्रापा — प्रपन्न न । विषय — प्रध्यात्म । ग्रकाल × । संग्रकाल म०१६१०। पूर्णः। वेष्ट्रन स०५१३। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**१८६७. प्रति सं०२।** पत्र स०६–२६। घा०१९×४ इश्वा । ले० काल स०१४५३ । घपूर्ण । वेष्टन स०११८ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स० १४५२ वर्षे चैत्र सुदी ६ पुष्य नक्षत्रे बुचे घृतिनाम्नियोगे गौगौलीय पत्तने राजाधिराजा श्री\*\*\*\* राज्य प्रवत्तमाने जीतिश्रीलाल तच्छपुत्र जीति गोपाल लिखत पुस्तक लिखिमिति । शुभ भवत् ।

**१८६८. प्रारमानुसासन—गुराभद्राचार्य।** पत्र स० १-२०। ग्रा०१२३ / ५३ इस । माषा—सस्कृत । विषय—प्रध्यातम । २०काल— $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रमुवाल उदयपुर ।

**१८६६. प्रति सं०२** । पत्रस०३५ । ले०काल १६१० चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन म०<sup>३</sup> । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग ।

विशेष---प्रति जीएं है तथा संस्कृत टीका सहित है।

१८७०. प्रतिसंठ ३ । पत्रस० ५० । ग्रा० ११३ $\chi$ ६ इच । ले॰काल . । वेष्ट्रन् स० ६०३ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

**१८७१. प्रति सं०४ ।** पत्रस०४६। घ्रा०१० $\{ \times ^{\vee} \} \times ^{\vee} \}$  इश्व । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टुन म०१०५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७२. प्रति स**०५।** पत्रस०५२। ग्रा०१०×४६च । ले०काल × । पूर्गा । वेष्ट्रन म० ४५। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन महिंदर दीवानओं कामा ।

**१८७३. प्रतिसं० ६ । प**त्रस० १८ । आ० ११६ ८ ४६ इ.च. । ले•काल ⋋ । पूर्ण । वेप्रन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष -प्रति के प्रारम्भ में सावार्य श्री श्री हेमबन्द्र परम गुरुभ्या नम ऐसा जिला है। सम्झन में कठिन शब्दों के सर्थ भी दिये हुए है।

**१८७४. प्रति सं० ७ ।** पत्रस० ११ २६ । स्ना० १२ ४.५ इच । ले०काल रू० १७८३ मगमिर सुदी ६ । अपूर्ण । बेष्टन स० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजो कामा ।

विशेष -- मन नाराम ने कामा मे प्रतिलिपि की थी।

**१८७४. प्रतिसं० म ।** पत्रस० ४७ । म्रा० १०×४ इच । ले०काल म० १६८१ कागृण बुटी ६ । अपूर्ण । बेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नेरहपदी मानपुरा (टोक) ।

१८७६. म्रात्मानुसासन टोका —टोकाकार पंजप्रभावन्त्र । पत्रस्य दरा ग्राव १०४४ हु व । भाषा—सस्कृत । विषय —प्रधारम । रण्काल 🗴 । लेकाल सण् १४८० मापाढ मुदी द । पूर्ण । बेकुन सण् २ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दिल्जीन सन्दिर मुजेने ।

विशेष -- हिसार नगर मे प्रतिलिपि की गई थी।

१८७७. प्रतिसं०२ । पत्र म० ८१ । घा० १०३ ४४ इन्त्र । ले०काल सं०१४४८ पौष बुदी ३ । पूर्णे ।वेष्टनस०२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष-गोपाचल दुर्ग मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

१८७८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३३ । प्रा० १०२/४४ इञ्च । लेखन काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० १०६ । प्राप्ति स्थान-- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७६. ग्रारमानुशासन भाषा $\cdots$ । पत्र स०१-५६। ग्रा०१२ $\times$ ५५ ६ञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—प्रध्यास्म । र०कास्म  $\times$ । ले० काल्  $\times$ । वेष्टन स०७२४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर लक्कर, ज्यपूर।

१८८० **प्रारमानुशासन भाषा**— × । पत्रस० १६१ । ब्रा० १२ × ४ इथ । भाषा — हिन्दी (गर्थ) । विषय — प्रध्यारम् । २० काल × । ले०काल स० १६४२ फागुन सुदी ६ । पूर्ण। बेष्टन २०६७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सौगाणी मदिर करीली ।

१८८१: ख्रात्मानुशासन भाषा टीका - 🖂 । पत्रसः ११०। ब्रा० ११र्दे 🔏 ६३ इता। भाषा—सरकृत हिन्दी । विषयः अध्यात्म । रजकाल 🗲 । लेजकाल सः०१८६० बैशाल सुदी ३ । पूर्ण । बेकृत सर्० ७०१। प्राप्ति स्थान — महारकीय दिरु जैन सन्दिर अजसेर ।

विशेष---रामनाल पहाज्या ने हीरानाल के पठनार्थ पचेवर मे प्रतिलिपि की थी।

१८८२ **प्रात्मानुशासन भाषा –टोडरमल जी।** पत्र म०१४०। भाषा-हिन्दी।विषय-प्रत्यातम । २०काल ४। ले०काल १६३१ पूर्मा। बेष्टन म०४३। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पत्रायती मन्दिर भग्नपुर।

विशेष -- प्रयंगद में पतिनिधि हुई थी।

१८८३, प्रतिसंव २ । पत्र सक् १८६६ । ग्राव ११ 💢 ६ इखा । लेव काल सक् १८२४ । पूर्णु । बेठुनसक् २३ । प्रास्ति स्थान- दिव जैन मन्दिर भादवा (राज.) । सवासपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

**१८८४ प्रतिस०३** । पत्र स०६६ । स्रा० १२३ ८ ६३ इञ्च । ले०काल ⋋ । पूर्ण । वेष्टनस०२६ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन पचायनी मन्दिर कामा ।

**१८८५. प्रतिसं०४ ।** पत्र म०१४५ । ग्रा०१०}्र५्रै इच्छा। ले०काल स०१८८७ सावन बुदी१४ । पूर्ण। वेष्टन म०५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन तेरहपथी मदिर मालपुरा (टोक)

विशेष-- श्री चन्द्रप्रभ के मन्दिर में जीवगाराम कामलीवाल ने मालपुरा में प्रतिलिपि की ।

**१८८६. प्रति सं०५ ।** पत्र स०८७ । ब्रा० ११ $\frac{1}{2} \times$ प्र इख । ले०काल  $\times$  । सपूर्ण । बेष्टुन स० १३ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन तेरह पथी मन्दिर मालपूरा (टोक)

**१८८७. प्रति सं०६।** पत्र स०१३८। घा०१३ 🗴 ७३ इखा। ले०काल स०१८५२ चैत्र सुदी२। पूर्ण। बेष्टनसं०१२। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मदिर बयाना।

**१८८८. प्रति सं०७ ।** पत्रस० १३६ । घा० १३ 🗴 ६ इञ्च । ले०काल स० १८७५ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । बेहन सं०७८ । **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन अग्रवाल पंचायती संदिर, अलवर । १८८६ प्रतिसं० ६ । पत्रस० १६३ । म्रा० ११ 🗙 ७ इञ्च । ले०काल स० १८७० <sup>ज्ये</sup>ष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । बेहुन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रवाल प्रवायती मन्दिर मनवर ।

१८६० प्रतिसं०६ । पत्रस० १६०। ले०काल स० १८६० चैन मुदी ११ । पूर्ण । बेष्ट्रनस० ३६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पश्चायती मदिर भरतपर ।

विशेष--प० लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

**१८६१. प्रतिसं० १०।** पत्रसः० १०६। ले०काल स० १८३० फाणुत बुदी १। पूर्गा। वेष्टन सं० ३६१ - **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पश्चायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष -- कुशलसिंह ने प्रतिलिपि करवाई थी तथा ग्रामर की गई थी।

१८६२. प्रतिसं० ११ । पत्रस्य १४४ । लेक्काल मुण्डिएर । पूर्गा । वेष्ट्रन सक् ४८८ । आफ्ति स्थान—दिव जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-रूदावल की गही मे प्रतिलिपि की गई थी।

१८६३, प्रति स० १२। पत्रस्त १८७। ग्रा०११ ५४ हुँ इश्वा तेलकाल स०१८०० वैज्ञाल मुदी १ (पूर्यो । बेष्टन स०११७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मदिर करीली।

विशेष-- बुधलाल ने प्रतिलिपि की थी।

१८६४. प्रति सं० १३ । पत्रस० ८६ । प्रा० ११ $^\circ_i$  ४ ६ $^\circ_i$  इन्छ । लेकाल - ग० १८३४ साबमा सुदी ८ । पूर्ण । बेष्टन स० ६३'। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान नेननदान पुराना होग ।

विशेष-जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

**१८६५. प्रति सं० १४ । पत्रस० ८७ । आ० ६ ४** ६ इञ्च । ले०काल । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० ३१ । प्राप्टिन **स्थान**—पार्थनाथ दि० जैन सन्दिर उन्दरगढ (कोटा) ।

१८६६. प्रति सं० १५ । पत्रस० १८ । ले०काल 🔧 । अपूर्ण । त्रेष्ट्रन ८०२३ । प्रास्ति स्थान—पाद्यवेताय दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

१८६७. प्रति सं• १६ । पवस० १३६ । आ० १२] 🗙 १ दवा । लेक्सव सं• १८६० श्रैव सुदी ७ । पूर्ण । बेपून सं• १२५/७१ । प्राप्ति स्थान—पार्वनाय दि॰ जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

**१८६८. प्रतिसं० १६क. ।** पत्रस०११८ । ग्रा० १२ $\times$ द $_{0}^{3}$  इच्छे । **ने०का**ल स०१६४८ कार्ति**व** मुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स०१६ । **प्राप्ति स्था**न—पाक्ष्वनाथ दि० ईन मन्दिर, उन्दरगढ (कोटा)

**१८६६. प्रतिसं० १७** । पत्रस० ४७। स्रा० १० - १ इ.च. १ - लेक्काल . । पूर्गा । बेठून स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१६००. प्रतिसं० १८** । पत्रस० ११० । श्रा० १०¦ × ७१ दृष्टः । विश्वकाल ५ । पूर्मा । वे**ष्टनसं०** १२० ।**प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बे**लवाल मन्दिर जदयपुर ।

**१६०१ प्रतिसं०१६।** पत्रस०न्धः । या० १८४६ उज्ज्ञः । ते०काल स०१८३७ चैत्र सुदी१२ । अपूर्णा वे**ष्टनसं०**८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली (कांटा) ।

**१६०२. प्रति सं० २०**। पत्र स०२०३। घा०११ . ५ इच्च । ले० काल स० १६६६ घाषाढ सृदी १५ ।पूर्ण । वेष्टनस०१६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० तैन पचायती वण्डेलवाल सदिर उदयपुर । विशेष - धलवर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१६०३ प्रतिसं० २१ । पत्र स० १३५ । ले०काल × । सपूर्ण । बेष्टनस० १६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवादती खण्डेलवाल मन्दिर झलवर ।

'१६०४. प्रतिसं० २२ । पत्र स० १७३ । ग्रा० १२३ 🗴 ६ इञ्च । लेकाल स० १६१० कार्तिक मुदी ११ । पूर्ण । बेष्टुन स० ३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—लाला रामदयाल फतेहपुर बासी ने ब्राह्मण हरमुख प्रोहित से मिर्जापुर नगर में प्रतिलिपि करवाई थी।

१६०**५. प्रति सं० २३** । पत्रस० ११० । म्रा० ११४८ द दवा । लेक्सल स० १८४७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर)

१६०६. प्रतिसं० २४ । पत्रस० १३२ । घ्रा० १४ ८ ५ इ.च.। ले० काल स० १८६० मगमिर मुदी ३ । पूर्णा वेष्ठन स० ८–२० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर वडावीसपथी दौसा।

विशेष-- उदैचन्द लृहाडिया देविगरी वासी (दौसा) ने प्रतिलिपि की थी।

१६०७. प्रतिसं० २५ । पत्रस० ७१ । ग्रा० १२३ × ४३ इचा । ले०काल स० १८५५ वैशाख मुदी १४ । पूरा । बेटून म० ४२-६२ । प्राप्ति स्थानः --दि० जैन मदिर वडा बीसपथी दौसा ।

१६०८, प्रतिसं० २६ । पत्र स० १७४। आ० ११४४ इश्व । लेखन काल 🗴 । पूर्ण । वेप्टन स० १२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तरहपर्या मन्दिर दौसा ।

**१६०६. प्रति स**०२७ । पत्रस० १२६ । प्रा०१२३ 🖂 ५ इच्छ । लेक्काल 🗙 । पूर्ण । बष्टुन स०१०३ । **प्राप्ति स्थान** दि०जैन नग्टपथी मन्दिर दौसा।

विशेष-- रगपथी चिमनलाल ने प्रतिनिधि की थी।

१६१०. प्रति स० २६ १ पत्रस० २२ । आ० ११ % ७} टब्च । ले० काल स० १६६२ चैन मुदी २ । पूर्ण । वेपून २० २५ । प्राप्ति स्थान-प्रिक जैन मदिर पाप्रवेनाय टोडारायांसह (टोक)

१**६११ प्रतिसार २**६ । पत्र मरु १०६ । ग्रारु १२×४ है इञ्च । लेरुकाल सर्राप्ति । पूर्ण । बेपुल सर्राप्ति ११० । प्राप्ति स्थानः —(दर्जन सन्दिर नेमिनाच टोडारायसिह (टोक)

विशेष- दसकत स्थोवगर का व्यास फागी का ।

**१६१२. प्रति सहया ३०।** पत्रस० १००। म्रा०६ ८,६ इञ्च। ले०काल म० १८३२ पोष बुदी ३। पूर्मा । बेठून म० २६–६१ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष-हरीसिह टांग्या ने रामपुरा (कोटा) मे प्रतिनिधि करवाई थी।

**१६१३. प्रति स० ३१** । पत्रस० ११६ । ग्रा० १२×६ इश्व । ले०काल स० १८६७ । पूर्ण । ¶ष्टतम० १७२ । **प्राप्ति स्थान** ≔िद० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

१९**१४. प्रतिस० ३२** । पत्रस० १७४ । ग्रा० १०३ ४५} इच्य**ा ने०काल स० १८६६ सावर युदी ४** । पूर्ण । बेष्टुनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन नेरहपयी मदिर नैरावा ।

विशेष-- लिखित प० श्री बाह्मन भगवानदास जो बांचे सूने को श्री जिनेन्द्र ।

१९१४. प्रति सं० ३३। यत्र स० ११८। या० १२५  $\times$  ६ इखा। ले०काल स० १९१४ कार्तिक बुदी ११। पूर्ण । बेष्टन सं० ४०। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर तेरहपथी नैगावा।

विशेष-पूस्तक चपालाल बैद ने की है।

**१६१६. प्रति सं० ३४ ।** पत्र स∙ ११४ । ब्रा० १२१×६ इल्डा । ले० काल × । धपूर्ण । वेप्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर श्री महाबीर, बुदी ।

विशेष--११४ से भागे पत्र नहीं है।

**१६१७. प्रतिसं० ३५ ।** पत्र स०१६२∼२६२ । बा० ६४५ इश्व । ले०काल ४ । बपूर्ण । वेष्टन स०२१७ । **प्राप्तिः स्थान**रूदि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

**१९१८: प्रति स० ३६।** पत्रस० १२६ । ग्रा० १०३% ६ इश्व । ले०काल 🗙 । पूर्ण । वेष्टुनस० ७८-४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का द्वारपुर ।

**१६१६. प्रति सं० ३७ । पत्रसः० १**९७ । म्रा० १२४६१ इच्छा । ले० काल म० १८४८ भारवा मुदी ४ । पूर्णे । **वेष्टन स० ४० । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ व दी ।

विशेष---- पवाई प्रतापसिंह के राज्य में सवाई साधोदर से प्रतिविधि हुई।

**१६२०. प्रति स० ३६ ।** पत्रसं० ७६ । आ० १२ 🖂 ११ इक्च । ने०काल 😾 । सपूर्यों । वेष्ट्रनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर स्रादिनाथ बुदी ।

**१६२१. प्रति सं० ३६ । पत्रस०** १३१ । घा० १२ $\times$ प्रॄं इन्धाः ने० कानः म० १६३५ श्रावण सुदी १ । पूर्णः । वेष्टुनस० ४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर स्नादिनाथ वृदी ।

विशेष--- मवाई माघोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**१६२२. । प्रति सं०४० ।** पत्र स०१२ म् । ग्रा०१० ४६ ¦ उचा। ले० काल⊸. । ग्रपूर्ण। वेटन स०१७ । **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन मन्दिर ग्रवशल उदयपुर ।

**१६२३. प्रतिसं०४१ ।** पत्र स० १०४ । घा०१०१/४४६ इ.च. । ले० काल ४ । प्रपूर्ण वेष्टत स०२१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वामी बृदी ।

विशेष---१०४ से झामे पत्र नहीं है।

**१६२४ प्रतिसं०४२ ।** पत्र स०६४ । ग्रा०१० / हे≾ ७हेडखा ले० काल x । पूर्णा बेष्टत स०२१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रीभनदन स्थामी बृदी ।

विशेष---भारम्भ के पत्र किनारे पर कुछ कटे हुये है।

**१६२५. प्रति सं०४ ३।** पत्र म० २८६। प्रा०११: ६ ट्रचा। ले० काल म०१६१८। पूर्यो। बेष्टन स०७। **प्राप्ति स्थान** — दिर्जन मन्दिर पाण्वेनाथ जोगान बडी।

विशेष—साहजी श्री दोलतराम जो कामलोबाल ने लिखबाया था। १६२६. प्रति स**०४४।** पत्रस०१-१३०। आ०११ ४ ४१ इच्छा ने० काल ४ । पूर्ण। वेष्ट्रनस०६६४। अपूर्ण। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मस्टिर लक्कर, जयपुर।

**१६२७ प्रतिसं०४४ । पत्रस०१७**३ । ब्रा०११ ८६ । ले०काल 🔈 । बेष्टन स०६२६ । प्रास्ति **स्थान**—वि० जैन मस्विर लक्ष्कर, जयपुर । **१६२८. प्रति सं०४६।** पत्रस०११७। ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेहनसं०८६। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन तेरहपदी मन्दिर बसवा।

**१६३०. प्रति सं० ४८ ।** पत्र स० ६३ । स्रा० १० $\frac{2}{3} \times 9$ ्ट्रै इ.ख. । लेखन काल सं० १६०७ । स्रामोज बुटी ३ । पूर्ण । बेष्टन स० १३०६ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि**०** जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

१६३१. प्रारमावलोकन—वीपचन्द कासलीवाल । पत्र स०१०६ । घा०११४४ है इञ्च । भाषा–िक्तरी गद्य । विषय–प्रध्यान्म । र०काल ४ । ले० काल सं• १७२१ । पूर्ण । बेहन सं• ६४ । प्राप्ति स्थान–प्रवासनी दि॰ जैन मन्दिर मलवर ।

**१६३२. प्रति सं०२ ।** पत्र स०१०४. । ते० काल स०१६२७ प्राषाढ शुक्ला १ । प्रपूर्ण । वे० स०१४ । प्राप्टित **स्थान** — दि० जैन मन्दिर, दीवातजी भरतपुर ।

**१८३३. प्रति स० ३** । पत्र स० ४६ । प्रा० १२ imes ६ $rac{1}{2}$  इच्च । ले० काल imes । धपूर्ण । बेपून स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१६३४. प्रति सं०४।** पत्रस०६१। घा०१२३,४७ इल्डा विककाल स०१८८३ झासोज बुदी १३। पूर्णा वेष्ट्रन म०८७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती कामा।

विशेष — जोधराज उमरावसिंह कामलीवाल कामा ने प्रतिलिपि कराई थी। सेढमल बोहरा भरनपुर वाले ने प्रचनेरा में प्रतिलिपि की थी। ज्लोक स० २२५०।

**१६३५. पतिसं० ४ ।** पत्र म० १०७। स्रा० १०३ ४ ४ है इञ्च । ले०काल म० १७६६ स्रामोत्र मृदी च। पूर्ण । बेष्टन म० १२६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर, कामा ।

विशेष -- श्री केणरीमिह जी के लिये पुस्तक लिखी गई थी।

**१९३६. ग्रालोचना** 🖂 । पत्र स०७ । भाषा-हिन्दी मन्द्रत । विषय-चितन । र०काव 🗴 । लेक्काव 💢 । पूर्ण । बेट्टन स०९३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**१६३७. ग्रालोचना**—  $\times$  । पत्र स०-१। ग्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$   $\frac{3}{2}$  इका । गापा-हिन्दी । विषय— चिनत । १० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०--१७४-१२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिङ (टोक) ।

१६३६ मालोचना जयमाल लब्ब किनदास । पत्रम ०३। ब्रा० ६३ ४६ । प्राप्त स्थान — हिन्दी । विषय - जितन । रक्काल ४ । नेक्काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६१६ । प्राप्ति स्थान — भडारकीय दिव नेन मन्दिर ग्रवर्गर ।

विशेष-- किये हुए कार्यों का लेखा जोखा है।

१६३६. प्रालोखनापाठ—  $\times$  । पत्रस॰ १३। प्रा॰ ११ $\times$ ४२ इठच । भाषा-सस्कृत । विषय-चितन । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स॰-१३७६ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय कि अने सन्तर प्रवर्ष ।

१६४०. **इन्द्रिय विवरम्** $\sim \times$  । पत्रस $\circ$ ३ । घा० ११४४ इला । भाषा-प्राकृत । विषय—चित्रल १०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टत स $\circ$ २१४/=४१ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपर ।

१९४१. इष्टोपदेश. -पूज्यपाद। पत्रस०६। घा०११ $\times$ ५ इन्छ। भाषा-सस्कृत। विषयश्रध्यातम। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । बेष्टन स० ४१। प्राप्तिः स्थानः—दि० जैन मन्दिर लक्कर
जयपुर।

११४२. कार्तिकेयानुप्रकेशा—स्वामी कार्तिकेया। पत्रस्य २७ । धा० ६२ ×  $^{\prime}$ १ इच्च । भाषा—प्राकृत । विषय-प्रस्थारम । र०कालः  $\times$  । ले० कालः  $\times$  । पूर्णः । वेष्टतः म० ११ । प्राप्तिः स्थान—प्रदारकीय दि० जैतः मन्दिर ग्रजोरः ।

१८४**३. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ३२ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेप्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**१६४४: प्रतिसं० ३ ।** पत्र त० ३४ । ले•काल स० १६१७ भाववा मुदी १२ । पूर्ण । वेण्टन स० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—भटारकीय दि० जैन मस्टिर ग्रजमेर ।

विशेष — मडलाचार्य भुवनकीति के शिष्य मुनि विशाल कीति में साह जाट एवं उसकी भागी जाटम दे खडेलवान भीसा ने प्रतिलिपि करवासी सी ।

**१८४५. प्रतिस्० ४ ।** पत्रस० २८ । म्रा० १३ ४ ६ इच्च । ले०काल म० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १७२/१७० । **प्राप्ति स्थान** —वि० जैन मन्दिर सभवनाय उदयपुर ।

**विशेष** —प्रतिजीर्ग है।

श्रशस्ति—स० १६१० वर्षे वैशास बुदी १४ मोर्ग श्री मूलमधे मरस्वीगच्छे बलाक्यमणे श्री कृदकुदालायांत्रवेश भट्टारक श्री विजयकीति तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभक्तद तर जिल्ला क० तत्या। क० लीवा पटनार्थे हुवस गोत्रे छ। समा मा० रमादे मु० ला० प्रवासींग मा० परिमानदे टर पुस्तक कर्म लमार्थ विवासित।

कठित शब्दों के ग्रर्थ दिये हुए है ।

**१६४६. प्रतिसं० ४** । पत्र स० २३ । श्रा०१२३/४४ इञ्च । ले०काल स० १६३८ । पूर्ण । वेप्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

मब ६ १६३० वर्षे मार्गाणर वांद २ भीगं जयनास्मा- गुभस्थानं श्री जिनवेत्यालय श्री मुलनशं बलात्कारगणे श्री कुदकु दावार्यास्ये श्री पद्मकीर्ति, सकतकीर्ति, मृदनकीर्ति, जानभूषण विजयकीर्ति, गुभक्ट देवा सुमतिकीर्तिदेवा श्री गुसकीर्ति देशस्त्रद् गुरु श्लाला बद्धा श्रो सामल पठनार्थ ।

**१६४७. प्रतिसं०६।** पत्र स०७६। फ्रा०६८ ४ इच्च । ले० काल म० १५७५ मादवा मुदी ४। अपूर्ण । वष्टन स २६२। **प्राप्ति स्थान**- ऋग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

१**८४६. प्रतिसं०७** । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६१३ । पूर्म । वेष्ट्रन स०६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष---मम्कृत टब्बा टीका महित है।

**१६४६. प्रतिसं० म ।** पत्रस० ७४ । मा० म 🗴 ६ इल्ब । ले०काल स० १८६६ चैन बुदी ४ । पूर्णं । बेष्टन स० १४ । प्रापित **स्थान**—ादि० जैन सदिर बैर (बयाना) ।

**१६५०. प्रति स**० ६ । पत्रस० २१ । ग्रा० १० $^2_7 > 2$  इञ्च । लेक्काल स० १५११ चैत्र वृदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृदी) ।

विशेष - रत्त्रविमल के शिष्य प० रामविमल ने प्रतिलिप की थी।

१६**५१. प्रति स**ः **१० ।** पत्रस०— । धा०१३ ८ ५ इञ्च । ले० काल 🗡 । पूर्ण । बेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोग्मली कोटा।

१**६५२ प्रतिस**० ११ । पत्र स० २४ । आ० १०<sup>५</sup>६ इच्चा । ले०काल 🗴 । स्रपूर्णः । बेष्टन स० १२६ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बृदी ।

**१६५३, प्रति सं०१२** । पत्र म०६ – ५६ । घ्य०११३ · ५३ इ.च. । ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण। वेष्टतम०५११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष -- प्रारभ के = पत्र नहीं है।

**१६५४. प्रति सं० १३ ।** पत्र २०१३ । प्रा० ८३ , ५३ इक्च । ले०काल 'ा पूर्ण । वेष्टत २०५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१६**५५. प्रतिस<b>०१**४ । पत्रस०१० । ब्रा०१० ५५ दश्व । ले० काल × । बेष्टन स०६२ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर-लक्कर, जयपुर ।

विशेष -- कही २ कठिन शब्दों के सम्कृत में अर्थ एवं टिप्परणी दिये गए हैं।

१६५६. प्रति स० १५ । पत्रस० २६ । आ ० १० रे ४ रे इश्व । भाषा-प्राहृत । विषय-प्रध्याम । २०काल । ते० काल । वेष्ट्रन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ताकार, वयपुर ।

विशेष -मृति लक्ष्मीचन्द्र ने कर्मचन्द्र के पठनार्थ लिखा था।

१६४७. प्रतिसं० १६ । पत्रसः० २४ । ग्रा॰ १०१ 🗴 ४५ इ.च. । ने० कान-सः० १४३६ मार्च क्षोर्च सुदी १५ । बेष्टन सः० ६४ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, खबपुर ।

**१६५ म. प्रति स०१७ ।** पत्र म०२० । ब्रा० म<sub>्</sub>रै ५ ४ ६%। ले०काल १ । प्रदूर्णा। वेष्टन स०२०-४६ । **प्रास्ति स्थान**-- दि० जैन मदिर बडाबीसपथी दोमा ।

१६**५६. प्रति सं०१६ ।** पत्र स०४१ । लेखन काल 🗴 । पूर्ण । वेध्टन स०२७ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन प्रचायनी महिर डीग ।

१८६०. कातिकैयानुप्रेक्षा टीका-शुभक्तम् । पत्र म०२६६ । स्रा०१० र्रे ४ ६ त्रिया । भाषा-सम्बद्धतः । विषय-चितनः । र०काल स०१६०० । ले०काल स०१७६६ माघ सुदी ४ । पूर्णा । बेप्रत म०१०७६ । प्राप्ति स्थान-भट्टारकीय दि०जैन मदिर अजमेरः ।

१८६१. प्रति सo२ । पत्र सo१०-१८४ । ग्रा०१२ imes१६ इञ्च । ले०काल imes1 प्रपूर्ण । बेष्टन सo२०६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।  $_{11}$ 

**१६६२. प्रति स०३**। पत्र स•३२६। ले० काल सं•१७८० कार्तिक मुदी १३। पूर्णा बेष्टत स०२६०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती मरतपुर ।

विशेष--- मूरतनगर मे लिखा गया था।

**१६६३. प्रति सं०४** । पत्र स०२३६ । ग्रा०१२ 🗴 ६ इञ्च । ले० काल स०१७६० । पूर्ण । बेष्टन स०३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति जीसं है।

**१९६४. प्रतिसं० ५ ।** पत्रस०२–१४५ । ले० काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रचायती मन्दिर डीग ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

**१८६४. प्रतिसं० ६ ।** पत्र सरूया ४० । मा० १४ $\frac{3}{2} \times 5 \frac{3}{6}$  इच्च । लेखन काल स० १६२४ पौष सदी १० । पूर्ण । बेक्न स० १४४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मस्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष-लेखक प्रशस्त-

स्वाति श्री सवत १६२४ वर्षे पौप माने गृबन पक्षे दशस्या १० निथी श्री बृधवारे थी ई लावा गृमस्याने श्री ऋपम जिन वैत्यालये श्री मूलसचे श्री सरस्वनी गच्छे, श्री बलात्वारणांगे थी कुरदकुदावायांच्यर महुरास श्री पयति देवास्तराहुं भ० श्री देवेन्द्र सीति टेबानल्यहुं भी विद्यानिद देवास्तराहुं भ० श्री मान्नि भूषणवेदास्तरहुं भ० श्री तस्मीचन परमणु देवास्तरहुं भ० श्री वीरपन्दर देवास्तरहुं भग्ना श्री आत्र भूषणा पुरवो अयनु तथाराहुं भ० श्री वीरपन्दर देवास्तरहुं भग्ना श्री आत्र स्वराग गुपता पुरवो वस्तु । श्री श्रीवार्य श्री मुमिन कीर्तिना निलापिता स्वहस्तेन श्रीधिये टीका । श्राधार्य रसभूपणा खता । श्री कानिकेयानुश्रेका स्वराग समान्ता ।

१९६६. कानिकेयानुप्रेक्षा माथा — जयचन्द्र छावडा। पत्र म० १०६। प्रा०१०, व् इचा । माथा — राजस्थानी (बृहारी) गद्या । विषय — क्रम्यास्म । रुकाल म०१६६२ मावन वृदी । लेकान म०१६६४ वैज्ञास वृदी । पूर्णा । वेष्टन स०१४७०। प्रास्ति स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर प्रकोर ।

विशेष--- प्रथ रचना के ठीक १ माह बाद निर्मा हुई प्रति है।

**१६६७. प्रतिसं० २** । पत्र स० १०६ । ग्रा० ६२ ४६ ६ इञ्च । ले० काल ्रापूर्ण । येष्ट्रन स०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दि ग्रम्मालो का ग्रम्बर ।

**१८६८. प्रतिसं० ३**। पत्र स० १०६ । आ० १०६ 🗙 ७ इञ्च । ले०काल १८७१ । पूर्ण । वैष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर स्रग्रयालो का स्रलवर ।

**१६६६. प्रतिसं० ४** । पत्र स० १३६ । आ० ११र्ड ४ ५६ दश्वा । ले० काल म० १८६७ । पूर्ण । वे**ष्टुन स०**६ । **प्राप्ति स्थान**----दि० जैन मन्दिर तेरह पथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष — जीवनराम कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

**१६७०. प्रतिसं० ५**। पत्रस० २३७ ।। प्रा० १० ४७ टखा । ले० काल स० १८५३ । पूर्ण । वे**टुत स० ५६ । प्राप्ति स्थान** —दि० जैन - मन्दिर श्री महाबीर ब दी ।

**१९७१. प्रति सं०६।** पत्रस०६३। ब्रा०१३४८ इन्छ। ने०काल स०१८६१। पूर्ण। बेष्टत स**०८। प्राप्ति स्था**न—दि० जैन अगवाल मदिर नेगावा। **१९७२ प्रति स**० ७ । पत्रस० १७ । मा० ११ 🗴 ६ इश्व । ले० काल । पूर्ण । बेष्टनस० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

**१९७३. प्रति सं० ६ ।** पत्र स० १४७ । ग्रा० १२× ५ इख । ले०काल स० ११४६ ज्वेस्ठ बुदी १ । पूर्ण । बेहन स० १०४/५ । **प्राप्ति स्थान—**पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

**१९७४. प्रति स० ६ ।** पत्र स० ६३ । घा० ६३ ४ ६३ इचा। ते० काल स० १८३७ चैत बुदी १२ । ष्रपुर्ण । बेपून स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

**१८७४. प्रति स० १०।** पत्रस० १०८ । घा० ११imesद इख । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—िर० जैन पचायनी मन्दिर खण्डेलवाल घलवरु ।

१९७६. प्रति स०११। पत्र स०६१। ले० काल 🔀 । अपूर्णः । बेष्टनस०१६४ । प्राप्ति स्थान—दिव्जन लक्ष्टेनबान पचायती मस्टिर अस्तदरः ।

१६७७. प्रति सं० १२ । पत्रस० ५०१ । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । बेष्टनस० १६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पवायनी मन्दिर मन्तपुर ।

विशेष- भरतपुर में हेतराम रामलाल ने बलवन्तांसह जी के राज्य में प्रतिलिपि करवाई थी।

**१९७६. प्रतिसं० १३ ।** पत्रस० ११४ । तं०काल imes । पूर्ण । वेष्टास० ४३२ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१६७६. प्रति स० १४ । पत्रस० १०६ । ले० काल imes । पूर्ग । बेष्टुनस० ४३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायनी मदिर भरनपुर ।

**१६५०. प्रति सं० १**६ । पत्र स० २२२ । ग्रा० १० imes ६ इन्ह । ते० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**ार० जैन मन्दिर छोटा वयाना ।

१**६८१. प्रतिसं० १६ ।** पत्र म० ११२ । ग्रा० १२४७ इञ्च । लेक्काल म० १८६८ । पूर**ी** । बेटन म० १० । **प्राप्ति स्थान** ⊸ दि० जैन मन्दिर पचायनी कामा ।

विशेष - प्राकत म मूल भी दिया हुन्ना है।

१९५२ प्रति सं० १७ । पत्रस० १६२ । ते०काल imes । पूर्ण । वेष्टन स०७ । प्रास्ति स्थान—िव० जैन पत्रायती प्रदिर हण्डावालां का डीग ।

**१६८२. प्रति सं० १८ ।** पश्वस० ४८ । आ० १३  $\times$  ६ $\S$  डब्ल । ले•काल स० १८६२ मादो नुर्दी ६ । पूर्ण । वेरटन सल्या ६४ । **प्राप्ति स्था**न— दि० जैन पत्रायती मन्दिर करीली ।

विशेष -- चिम्मनलाल बिलाला ने नेमिनाथ चैत्यालय मे इस प्रति को लिखवाई थी।

१६६४. . प्रतिस० १६ । पत्रस० १०६ । घा० १०६ × ७६ इञ्च । पूर्ण । बेष्टन स० १६ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दीमा ।

विशेष - १०६ में ग्रागे के पत्र नहीं है।

१६**८५. प्रति स**० २०। पत्रस० १४०। ग्रा० १२  $\times$  ५ $\frac{3}{6}$  इञ्च । ले० काल स० १८६१ भादवा बुदी २। पूर्णे । बेष्टन स० ६३। **प्राप्ति स्वा**न्स—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर सेलाबाटी (सीकर) । विशेष—श्री चौवरामू ने चन्द्रपूरी ने प्रतिलिपि की थी ।

**१८८६. प्रति सं०२१। पत्रस**०११२। ग्रा०१२  $\vee$ ६३ इङ्च। लेश्काल स०१६१२। पूर्णे।वेष्टन स०३४३–१२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर।

**१६०७. गुरातीसीभावना** —  $\times$  । पत्र स० १ । ब्रा० ६  $\setminus$  ४ $\S$  इख । भाषा — हिन्दी । विषय — चिनत । रुकाल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० २६० १९६६ । प्रास्तिस्थान — दि० जैन मन्दिर सम्भवनाथ उदयपुर ।

श्चन्तिम--- उगगात्रीसीमावना संगोजे सत्य विचार ।

जेमनमाहि समरसि ते तरमे ससार ।।

१६८८. गुरा विलास—नथमल विलाला। पत्र ग० ११। भाषा --हिन्दी (पद्य)। विषय—
प्रथ्यातम। रचना काल १८२२ प्रषाढ बुदी १०। लेब्काल १८२२ द्विब प्रपाद मुदी २। पूर्ण। वेपून मब २७१। प्राप्तिस्थान—दिव जैन पचावती मंदिर भरतपुर।

१६८६. चारकवाय सरुक्ताय—पद्ममुन्दर । पत्रसः ० । धार्० १० 🗴 ४ उद्धाः भाषा — हिन्दी । विषय —िवतन । रुकाल् 📐 । लेरुकाल् सरु १७६३ पोष बृदी ३ । पूर्ण । वेरटन सरु ३० । प्राप्ति स्थान — दिरु जैन मन्दिर बोरमती कोटा ।

विशेषः ऋषि रन्न ने उदयपुर में लिखा।

**१६६०. चिर्विलास—दीपचन्द कासलीवाल ।** पत्र म० ४८ । छा० १०१ - ४ ट्रच्च । भाषा-हिन्दी (नष्ट) । विषय—प्रध्यात्म । र०काल म० १००६ फागुगा बुदी ४ । ल०काल । । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४० । **प्राप्तिस्थान**—भटारकीय दि० जैन मन्दिर छन्नेस ।

**१६६१. प्रति स०२।** पत्र म०२४। आ०१०२४ हुट्या लेक्सल म०१०६१। पूर्णा वेष्टन स०१२२। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर भाष्टवा (राज्ञा)।

विशेष -- महात्मा जयदेव ने जोबनेर में प्रतिनिर्धि की थी।

**१६६२ प्रति स०३।** पत्र स०१४१। ब्रा० ८): ४ उङ्ग । ते० काल स०१८४४ ज्याठ सदी१३। पूर्ण । वेष्टन स०२७/७। **प्राप्तिस्थान** – दि० जेन प्रप्रयाल मन्दिर उदयपर ।

विशेष--प्रत्येक पत्र मे ७ पक्ति एव २२-२४ ग्रहार है।

**१६६३. प्रति सं०४ ।** पत्र म०६७ । झा०१×४) दश्व । वेश्काल म०१७७२ । पूर्ण । वेष्टन म०११४ । **प्राप्ति स्थान**—विश्जन मन्दिर दीवानशी कामा ।

**१६६४. प्रति सं० ४** । पत्रस**०** ५१ । फ्रा० १३ ४ ७) उच्चाले कलाल स० १६०६ । पूर्णा। वे**ष्टुतसं० ६ । प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायली मन्दिर कामा।

**१६६५. प्रतिसं०६ । पत्रस०**५६ । ब्रा०१०९ ७ दश्व । लेक्सल । पूर्ण। त्रप्रस स०६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पत्रायती बयाना ।

विशेष — मोहनलाल कासलीवाल भरनपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी। माह मुदी १४ म० १६३२ मे पौतदार चुन्नीराम बैनाडा ने बयाना के मदिर में चढाया था।

१९६६ प्रतिसंo ७ । पत्रसo ६६ । ले०काल 🔧 । पूर्णा । वेष्ट्रन सo ४११ । प्राप्ति स्थान—दिo जैन मन्दिर प्रसायनी मरतपुर । विशेष - जोधराज कामलीवाल ने लिखवाया था।

**१६६७. प्रति सं० ६**। पत्रस० ६५ । ले०काल स० १६५४ । पूर्ण । **बे**ष्टन स० ४१६ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन सन्दिर पचावनी सन्तपुर ।

विशेष --- भसावर वालो ने भरतपुर में चढाया था।

**१९९८. प्रतिसंग्रह**। पत्रसंग्रहिष्या क्षा १४१। द्वार १८४६ इन्छ । लेक्काल सग्रद्धर । पूर्ण । वेष्टन सग्रहिष्ट प्रा**प्ति स्थान—** दिश्लन मन्दिर बोरसली कोटा ।

**१६६६. प्रति सं. १०।** पत्रम०६६ । घा० ६<sup>५</sup>%६ इचा। ले**०काल** ४ । पूर्णं। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रयवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

२०००. **प्रतिसं० ११** । पत्रस० ६४ । प्रा० ६३ ४ ४३ ४ था । ले०काल म० १७५१ । पूर्ण । बेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती खडेलवाल झलवर ।

विशेष - इस प्रति में रचताकाल मु० १७४६ तथा लेखनकाल मु० १७५१ दिया है जबकि अन्य प्रतियों में रचना काल मु० १७७६ दिया है।

२००**१. प्रतिसं०** १२ । पत्र स०६६ । ले०काल ≾ । पूर्गा । लेष्टन स०६४ । **प्राप्ति** स्थान —दि० जैन पचायनी मदिर सङ्खबाल ग्रन्थर ।

२००२. चेतावरागे ग्रंथ रामचररा । पत्र म० ७ । ब्रा० १३ × ५ इश्वा । भाषा — हिन्दी । विषय — मुभाषित एव बस्थास्य । २० काल् × । ले०काल म० १८३३ । पूर्ण । वेष्ट्रत स० १०७ । प्राप्ति-स्थान — दि० जैन मदिर वास्सली कोटा ।

विशेष - ग्रादिभाग--

प्रथम नमी भगवत कू, फैर नमी सब साथ। कहू एक बेनावणी सुवाणी विमुद्ध प्रकार ।। बंधे स्वाद रम भीग मु टन्ड्या तमाप्रया। उन जीवन के बेनवे करू बिनावणी प्रथा। रामवरण उपदेश हिन करू प्रथ विस्तार। एक्क्यो प्राण भव कूप में निकस् ग्रथ विस्तार।।

चौकी:--दिवाना चेन रेमार्ट, तुज सिर गजत चिन ग्राई। जराकी फौज ग्रांनि मारी, करेतन लट के स्वारी।।

**ग्रन्तिम** — रामचरण जज राम कुरूत कहे समभाय।

मुख मागर कू श्लंड के मन छीलर दुख जाय ।। सोरठा—भरीयादक किन जाय सबद बढ़ानाही कले । गमचरगायहन माहिचोरासी भटकाटले ।।

चोरासी की मार भजन विना छुटे नहीं। ताते हो हुश्चियार एह भील सत्तगुरू कही ॥१२१॥ इति चेतावसी ग्रंथ।

लिखित सुनेल मध्ये प० जिनदासेन परोपकारार्थ ।।

२००३. **छहदाला-टेकचन्द ।** पत्र स०१। घा० त × ५३ इञ्च । घाषा—हिन्दी । विषय-चिन्तन । र०काल × । ते०काल— × । पूर्ण । वेष्टन म० तदा । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मिदर मादवा (राज.) ।

२००४. **छहडाला—बीलतराम पत्लीवाल** । पत्र स०१२ । ब्रा० ८ ४ इला । भाषा—हिन्दी। विषय—चिन्तन । र०काल सं०१६६१ वैज्ञाल सुदी ३ । ले०काल— 🄀 । पूर्ण । वेजनस०१४२। **प्राप्ति स्थान**—महारकीय वि० जैन महिर छज्येर ।

२००**४. प्रतिसं० २** । पत्रस० १४ । म्रा० ७१ ४ ४१ इन्था लेक्सल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्तिः स्थान** — भट्टारकीय दि० जैन मदिर मजमेर ।

विशेष-- ग्रत मे बारहमासा भी दिया हुग्रा है जो ग्रपूर्ण है।

२००६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १७ । आर० ७१ 🗴 ५१ इञ्च । ले०काल 🔨 । प्रपर्मा । वेप्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर छोटा बयाना ।

**२००७. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १० । आ**० ६×६ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वरटन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—६० जैन मन्दिर पार्थ्वनाथ चौगान बुदी !

२००८. प्रतिसं० ५ । पत्रस० २८ । या० १२ ४ ६ ३ डच्च । ले० काल---स० १८६४ मगसिंग मुदी १२ । पूर्ण । वेप्टन स० ११७ । प्राप्तिस्थान---दि० जैन मन्दिर, फनेहपुर केलावाटी (नीकर) ।

बिशेष--प॰ जगन्नाय चदेरी वाले ने प्रतिलिपि की थी।

२००**६. प्रति स०६ । पत्रस०**१० । ग्रा०८≻६३ इच । ले०काल ४ । पण । बेग्टन स०१२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर भादवा (राज०) ।

२०१०. प्रति स०७ । पत्रस० १० । द्वा० ६५८४६ हुन । लेलकाल ्र । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ ६२ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

२०**११ प्रति सं० ⊏ । पत्र स० १**२ । ग्रा० ११: ७ डब्च । ले०काल----म० ११४३ । एगं। बेक्टनसं० ६३ । **प्राप्ति स्थान** --- दि० जैन मदिर श्रीमहाबीर यूदी।

विशेष--प॰ उदैराम ने डिग्गी मे प्रतिनिधि की थी। प्रति रचना के एक वर्ष बाद की ही है।

२०१३. **जानचर्चा** — × । पत्र म० ४७ । आ० १०} ४६ द च । आधा—मस्कृत । विषय -ग्राध्यात्म । रक्काल × । लेक्काल स० १६५४ पीप मृदी १८ । पूर्यो । बेष्टन म० १४४४ । प्रास्ति स्थान—महास्कीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**२०१४. ज्ञान दर्पम् —दीपचंद कासलीवाल** । पत्र स० २६ । प्रा० ११ × ५ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रध्यातम । र०काल × । ले० काल स० १६६५ कार्तिक गृदी ६ । पूर्म । वेष्ट्रन स० ३१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा ।

विशेष--रामपुरा के कोटा में प्रतिलिपि हुई थी।

२०१**५ प्रतिसं०२।** पत्र स०३१ । घा०१ $\times$  ६  $\frac{1}{2}$  इश्वः । ले० काल  $\times$  । घपूर्णं । वेष्टत स०३६ । प्राप्त्रिस्सन—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैगावा ।

विशेष--- ३१ से ग्रागे के पत्र नहीं हैं।

२०**१६. जानसमुद्र—जोधराज गोदीका** । पत्र स० ३४ । म्रा० १०३४ ४ इ.च.। भाषा— हिन्दी । विषय — मध्यात्म । र०काल स० १७२२ चैत्र बुदी ४ । ले०काल ४ । पूर्णा । बेष्टून स० ४१,२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

२०**१७. प्रति सं०२** । पत्र स०२६ । घा०१०१ ४४ १ इश्वः । ले०काल स०१८६५ म्रापाढ बुदी ७ । पूर्णा । बेष्टन स०६८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पद्मायती मन्दिर कामा ।

विशेष — हेमराज अग्रवाल के गुत मोतीराम ने प्रतिलिपि की थी । कृपाराम कामा वाले ने

२०**१८. जानास्यंत- प्राचार्य शुमचनद्र ।** पत्रतः १४२ । प्राः १०३ ४४ हे इश्व । भाषा— सह्तत । विषय - योग । २०काल ४ । ने० काल स० १६५० ज्यष्ट बुदी ७ । पूर्णः । वेष्ट्रनस० ४०० । स्मारिक स्थान- १० हे ७ केल महिल अर्जाम् ।

२०**१६. प्रतिसं०**२ । पत्रस०१४६ । ग्रा०१०> ५१ दश्व । ले० काल 🗙 । पूर्णे । वेष्ट्रनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान** – भ०दि० जैन मस्दिर ग्रजभेर ।

२०२०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १४१ । आ० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} \lesssim \frac{1}{2}$  । ले० काल म० १७६५ मादवा बुदी  $^{\circ}$  । पूर्ण । बेष्टुनस० १२६६ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेषः --लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

२०२१. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २०६ । झा०६ ्५ ट्रेड्स । लेब्लान स०१८१२ पीप सदी१५ । पूर्गा । बेष्टुन स०१०७६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टास्कीय दिब्<mark>षेन मन्दिर क्रजमेर</mark> ।

विशेष --प्रति हिन्दी टीका महित है।

२०२२. प्रति स० ४.। पथस० ७४.। प्रा०११ ४.५ ५५ डला। ले० काल म० १७७३ कार्तिक बुदी ४.। पूर्णः। बेष्ट्रन स० ८८५.। प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर प्रकमेर ।

विशेष -- तक्षकपुर मे प० कर्पूरचन्द्र ने ग्रात्म पठनार्थ लिखा था।

२०२३. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १२० । ग्रा० १०३ ४ ४ हे डब्ब । ले० काल स० १७६७ फागुण् बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टनस० १२०६ । प्राप्ति स्थान— म०१दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

२०२४ प्रतिसं**०७ ।** पत्रस० ६२ । झा०११ ४ इन्छ । ले०काल ⋌ । पूर्ण। बेहनस० ११४१ । प्रास्तिस्थान—स०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२०२**५. प्रतिस० म ।** पत्रस० रुष्ट्रो प्रा० म् २०४७ दश्व । ले०काल 🗴 । अपूर्णः । बेष्टनस० म् ६म । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष — ग्रंथ चिपका हुग्रा है। गुटका साइज में है।

२०२६. प्रति स० ६ । पत्रसं० ७७-१४६ । 'आ० ११४६' हस्य । ंति०काल imes । पूर्ण । बेष्ट्रतस० १३० । प्रास्ति स्थान---दि० जैन अग्रवाल मन्दिर भरतपुर ।

विशेज-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

२०२७, प्रति स० १०। पत्रस० २-१४। स्रा० १३ imes ४ $\xi$  इन्थ । ले० काल imes । पूर्ण । बेहन स० ७६। प्रास्ति स्थान -वि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-केवल योगप्रदीपाधिकार है प्रति प्राचीन है।

२०२६. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १३ । छा० ६ $\frac{3}{7}$  $\times$ ४ $\frac{3}{7}$  इन्छ । ले०काल । छपूर्ण । वेष्टन स० ४१+4 । प्राप्ति स्थान । दि० जैन सप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०२**६. प्रतिसं० १२** । पत्र स० ७६ । म्रा० ६<sup>3</sup> × ५१ इच्छ । ले**०**काल ∞ । पूर्गा । बेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन म्रजवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०२०. प्रति सं० १३ । पत्रम० २-४२ । आग० १०१ ८ = इच्छा । लेक्काल ४ । आपूर्ण । बेष्टुन स० २१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**२०३१. प्रति सं० १४ ।** पत्रस० ७६ । स्रा० ६ $\frac{3}{7} \times \frac{3}{4} = 3 । ले०काल ् । पूर्णः । बहुन म० १७२ ।$ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन रुप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२०३२. प्रतिसं० १५ १ पत्र म० १०७। ग्रा० १०४५ इ.स. । लेकाल स० १७<sup>०८ का ति</sup>क बुदी ४। पूर्ण । बेपून न० ६० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेखाबाटी (सीठर)

विशेष—रामचन्द्र ने लक्ष्मीदास से जहानाबाद जीसहपुरा में प्रतिनिधि कराई । कासिक वदी ३३ स॰ १०७० से जहसल्ल के पुत्र ज्ञानीरास ने बड़ा मस्दिर फतेहपुर से चढ़ाया ।

२०३३. प्रतिसं० १६ । पत्र म०११ । ग्रा०१०४४ है डबा। ले०काल 🔏 । पूर्णा। वेहन स०५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा।

विशेष--केवल योगप्रदीपाधिकार है।

**२०३४. प्रतिसं० १७।** पत्रस० ११७ । स्रा० १२ \: ४ुँ इन्त्र । ले**०**काल म० १७५२ पूर्णे । वेष्टुनसं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०२**५. प्रति स०१८।** पत्र स०१२७ । ब्रा०१२४६ इ.च । ले**०**काल 🗸 । बेप्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्यान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**२०३६. प्रति स० १६ ।** पत्र स० ११८ । छा० ११.४ ५ इन्छ । ले**०काल म०** १७८६ भादव। सुदी २ पूर्सा । बष्टुन म० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०३७. प्रतिसं० २०। पत्र स० ६७ । ले० काल स० १६६६ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । बहुन स० २४६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पचायनी मदिर भरतपुर ।

विशेष -- सिरोज मेलिका गया था।

**२०३८. प्रतिसं० २१।** पत्र सं० १३६। लं० काल 🗶 । पूर्ण । वेष्टून म० २५६। **प्राप्ति** स्थान--दि० जैन पचायती मन्दिर अनतपुर ।

**२०३८. प्रतिसं० २२ । पत्र** सं० १३३ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २८० । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

**२०४०. प्रतिसं० २३** । पत्र स० ६३ । स्रा० १२×४ इच । ले०काल स० १५४८ । पूर्ण । बेष्टुत स० १३७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवन् १४४६ वर्षे वैशास मुदी २ गुरुवामरे गोपाचनगढ दुर्गे महाराजाधिराज धी मार्नासहदेव राज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्टासये सदुराज्ये पुष्करमणे बहारक श्री गुगकीतिदेवा तत्यहे भट्टारक थी यक्कीलियेवा तत्यहे मे ० श्री मत्यक्कीलियेवा तत्यहे महासिद्धान श्रापम विद्यानुवाद-जद्धाटन सम्बति- तत्यदिलाचार्यश्री गुगमस्देवा तत्य श्राम्ताय श्रशोक्तास्यये गगगोत्रे सादिछ ज्ञानार्ग्य ग्रथ निष्पापित क्रमेश्यमितिमः।

२**०४१. प्रतिसं० २४।** पत्र स०१६६ । ब्रा०४ × ४ डला। ले० काल क०१७१४ फागुम मुदी१४ । पूर्णावेकस०१३६ । **प्राप्ति स्थान**—वि०जैन मन्दिरबोगसशीकोटा।

विशेष—नम्द्रपुरी में महाराजाधिराज श्री देवीमिट के शासनकाल में श्री मावता पाप्त्रंताध कैत्यालय में प्रतिनिधि को गई था। सिरोजपुर मध्ये पडित मदारी लिलित।

२०४२. प्र**तिसं०** २४. । पत्रस० १७१ । या० ६<sup>9</sup>ू ४ इ.च. । ले०काल स० १८३३ सङ्गासिर बुदी १४ । पूर्णा । बेष्टन स० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—रिक जैन मदिर दबलाना (बुंदी)

२०४३. प्रतिसं० २६ । पत्र म० ४६ । ब्रा० ६ुँ । दुँ इखा। ले०काल म० १७४१ भादवा बुदाँ २ । पूर्णा। बेष्टुन स० १६४ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)।

२०४४. प्रति स० २७ । पत्र म० १६ । या० ११५ ५४ इचा । लेक्बाल म० १५४७ आसीज मुद्दी १० । पूर्ण । बष्टन म० १००-७१ । प्राप्ति स्थान—दि० पैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारागीसह ।

विशेष -- प्रशस्ति ।

मकर् १६४० वर्षे आणी माने णुक्त पक्षे दशस्या तिथी मोमे । रेह्र श्री घटाडा णुअस्थाने श्री पाण्येनाय वैत्यातय मुक्तक्षे भारती गाँद श्री कु दकु दाखर भ० श्री लक्ष्मीचड देवास्तरपुट भ० श्री बीरचड देवास्तरपुट भ० श्री आनंभूपाग देवास्तरपुट म० प्रभावड देवारतरपुट भ०श्री बादिबड देवास्तर्मा शिष्य ब्रह्म श्री कोतिमापारणा जिल्ला।

२०४**५. प्रति स० २८ ।** पत्र म०१४४ । ब्रा०११३ ८६ इ.स. । ले॰काल 🔀 । पूर्ण । बेष्टन स १२४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोक) ।

२०४६. प्रति सं० २६ । पत्र म० ११४ । खा० १०१ १६१ डङ्च । लेक्काल स० १०३४ ब्रह्माढ बुदी १ । पूर्ण । बेच्टन म० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जेन मन्दिर कोट्यो का नैसावा ।

२०४७. प्रति स० ३० । पत्र म०३४७ । आ०१, ४ुँडचा । ले०काल स०१६१२ समसिर बुदी ७ । पूर्या । बेहुन स०३ । प्रास्ति स्थान—नेप्रस्थी दि० जैन मदिर नैगावा ।

**विशेष**----प्रति टब्बा टीका सहित है।

२०४८. **प्रतिसं० ३१ ।** पत्र स०११६ । ब्रा०१२४ ४ इला ) ने० काल  $\times$  । पूर्ण। बेष्टन स०४२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नागदी, दूदी ।

विशेष - अन्तिम पत्र दूसरी प्रति का है।

२०४६, प्रतिस्०३२ । पत्रस०१३७ । ब्रा०१०३४ ४३ द्वा । ले०काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टनस०१ । प्राप्तिस्थान -- दि० जैन मन्दिरनागरी दूदी २०४०. प्रतिसं० ३३ । पत्र स० ६६ । बा० १३ $\times$ ७ इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बृंदी ।

विशेष---४२ वी मधि तक पूर्ण।

**२०५१. प्रतिसं० ३४** । पत्रस० ६३ । आ० १२ $\times$ ५ $^2$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर आदिनाथ वदी ।

विशेष--- ६३ से भ्रागे के पत्र नहीं हैं।

२०**५२, ज्ञानार्ग्य यद्य टीका**—श्रु**लसागर।** पत्र स०११। घ्रा०११ $\times$ ४ हेडच । भाषा-सस्कृतः । विषय—योग। रक्काल  $\times$  । ले० काल स०१६६१ माघ मुदी ५। पूर्णः। बेष्ट्रन स०१२०७। **श्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मदिर अवसेर।

विशेष--जोबनेर मे प्रतिनिपि हुई थी।

**२०५३. प्रति सं० २ ।** पत्रस० ११ । म्रा० ११ $\times$ ४ $\xi$  इश्च । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० ४६/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पाञ्चेनाथ सदिर इन्द्रगढ (कोटा)।

२०**५४. प्रतिसं० ३** । पत्रस०६ । द्या० १३ॄँ x ४ इच्छ । ले•काल ४ । पूर्ण । बेष्टनस०१४७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

**२०५५. ज्ञानास्**यं **गद्य टोका-ज्ञानचन्द** । पत्र स $e \times 1$  ब्रा $e = \{e^2, 2\}$  इथा । भाषा-हिन्दी गद्य । **विषय-**योग । र०काल स $e = \{e^2, 2\}$  स्वय । त्रिकाल स $e = \{e^3, 2\}$  स्वय । त्रिकाल स $e = \{e^3, 2\}$  स्वय । त्रिकाल स्वयान—दि $e = \{e^3, 2\}$  स्वयान—विष्य जैन सन्दिर कोटिडयों का हु गरपुर ।

२०**५६. ज्ञानार्ग्य गद्य टीका** — पत्र स०५ । ग्रा०१० × ५ इक्षः । भाषा-सम्बन्धन । त्रि० योग । र**०काल** × । ले०काल × । बेष्टन स०४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-प्रति संस्कृत टिप्परा महित है।

**२०५७. ज्ञानार्श्य भाषा —टेकचर** । पत्र मुश्र २६६ । घ्रा० ११ र७ दश्य । भाषा नहिन्दी गछ । विषय योग । र०काल × । ले० काल — ः । अपूर्ण । शहन म० ११ । **प्राप्ति स्थान** — ि० जैन मदिर श्री महावीर वृदी ।

विशेष--- २६६ से भागे पत्र नहीं है।

२०४८. ज्ञानास्पंद माषा — ं । पत्रम० २८६ । प्रा० १० रे४८ इ.ख । भाषा- सम्बन्धिः हिन्दी । विषय- योग । २०काल ≿ । ते०काल स०१६३० भादवा मुदी ८ । पूर्णः । बेहुनस० २२ । प्रास्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ योगान व दी ।

२०५६ झानार्गव भाजा-लब्धिवमल गरिंग । पत्रस०१६४ । ब्रा०१०१४ ४) इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रध्यान्य । र०काल स०१७५६ घामोज सूरी १० । ले० काल म०१०६६ मावण सुरी १३ । पूर्णे । वेहनस०७६ । प्रास्तिस्थान—दि० जैन प्वायती मन्दिर वयाना ।

**विशेष—दू**सरा नाम लक्ष्मीचद भी है।

२०६०. प्रति स०२ । पत्र स० ८१ । घ्रा०१२ > ६ इञ्च । ले० काल स० १८१६ । पूर्ग । बेष्टन सं०१७ । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मदिर भादवा (गज॰) **२०६१. प्रतिसं० ३**। पत्र स० १३६ । ग्रा० १० $\times$ ४ है इन्छ । ले० काल स० १०२१ माषाढ़ सुदी ४। पूर्ण । बेष्टन स० प्रश**ाप्त स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर करौली ।

विशेष---प्रतिम--इति श्री जानागृंवे योगप्रदीपाधिकारे गुण दोष विचारे प्रा॰ गुभवंद्र प्रणीता-नुसारेग श्रीमालान्वयं वदिलया गोत्रे भैया ताराचद स्याम्याच नया पढित लक्ष्मीचद्र विहिता सुखबीधनार्य शुक्राच्यान यागेन एकचल्यारिकत प्रकरण ।

यग्रवाल वशीय शोभाराम सिगल ने करौली में बूघलाल से प्रतिलिपि कराई।

२०६२. प्रति सं० ४ । पत्रस० ६३ । प्रा० ११३ $\times$  ६३ इख । ले०काल १७६६ माघ सुदी ५ । पूर्ण । बेहन स० ६३ । प्राप्ति स्थान—पवायती दि० जैन मन्दिर करीली ।

विशेष-किसनदास सोनी व शिष्य रतनचद ने हीरापरी मे प्रतिनिधि की ।

२०६३. प्रति स० ४ । पत्रस० १३४ । ब्रा० १२६ ×६ इञ्च । ले०काल स १८४४ । पूर्ण । बेकनस० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर, कामा ।

२०६४ प्रतिसं०६ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १७६१ माघ सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ५३ । प्राप्ति रुयान — दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

२०६**५. प्रति सं**० ७ । पत्रस० ११२ । द्या० १३imes४६ इत । ले० काल स० १७८० फागुरा बुदी ११ । अपूर्ण । बेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**ः—दि० जैन सदिर बोरसली कोटा ।

विशेष -- १११ वापत्र नहीं है।

२०६६. प्रति स० ⊏ । पत्रस० १५⊏ । ले०काल १७⊏२ श्रवाड मुदी १५ । पूर्ण । बेष्टनम० ३७⊏ । प्राप्ति स्थान-—दि० जैन ण्वायनी मन्दिर, भरतपुर ।

विशेच-- लोहरी में लिखी गई।

२०६७ प्रति सं०६ । पत्रसः १११ । लेव काल स०१७=४ । पूर्णः । वेष्टुनसः० ३७६ । प्राप्ति स्थान — दिव जैन, पश्चायनी मादिर भरतपुर ।

२०६८. प्रति सं० १० । पत्रसम् ४८ । ले० काल स० १७६४ । प्रपूर्ण । बेष्टनस० ६८० । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन पश्चायती मदिर भरतपुर ।

२०६६: ज्ञानार्गव भाषा-जयचन्द छावडा। पत्रस० २६०। बा० ११४७ इच । भाषा-हिन्दी (गर्या)। विषय-संग । र०काल स० १६६६ मध्य मुदी ४ । ले०काल स०१८८६ । पूर्ण । वेष्टनस०१६१४। प्राप्ति स्थान-भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२०७०. प्रति स० २ । पत्रस० ३३४ । ग्रा० ११  $\times$  ७ $rac{1}{2}$  इरून । ले०काल imes । पूर्त । बेष्टन स० १२२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०७१. प्रति स० ३ । पत्रस० २०२ । ग्रा० १४ ४ ७३ इत्रा । ले०काल—सं० १९७१ माघ वृदी २ । पूर्णे । वेष्टनसं० ७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष--परशादीलाल ने मिकन्द्रा (ग्रागरे) मे प्रतिलिपि की ।

२०७२, प्रति सं० ४। पत्र स० २६६। ब्रा० १३ ×७ हुँ इञ्च । ले०काल स० १६०१ द्वि सावस्य बुदी ३। पूर्ण । वेष्ट्रन स० २।२ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सौगास्मी करौली । विशेष-- मार्थासिह ने मरतपुर में सेढ़राम से प्रतिलिपि करवाई।

२०७३. प्रतिसं० ४। पत्रस० ३२६ । स्रा० १२ $^{3}$  $\times$ ६ $^{5}$  इञ्च । ते०काल म० १६०७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवास्ती मन्दिर करोली ।

विशेष--- तगर करौली में श्रावक विमनलाल विलाला ने नानिगराम से प्रतिविधि करवाई।

**२०७४. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ३६४ । आ ० १३ × ७ ३ इला । ले०काल स० १८६८ । पर्गा । वेक्तस० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**्दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**२०७४. प्रति सं०७ । पत्रस०६० । प्रा० १२**है×८ इञ्च । ले**०काल म०१**८६७ वैज्ञास बृदी १० । पूर्ण । बेष्टुन स०६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

२०७६ प्रति स० म । पत्रसं० १३४ । आ० १२३ ४ ६३ इ.च. । ले० काल 🔍 । प्रयूर्ण । वेष्ट्रन स० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, खोटा वयाना ।

२०७७. प्रतिसं० ६ । पत्र म० २१२ । ले० काल 📐 । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन म०—१८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर छोटा बयाना ।

**२०७८. प्रति सं० १० । पत्रस०** २८६ । ले०काल १८७४ । ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । ४८न म० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरतपुर ।

२०७**६. प्रतिसं० ११ ।** ण्यस• २०४ । ले०काल म० १८८३ । पूर्णं । वेष्टनम० ४५ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी सरतपुर ।

**२०६० प्रति सं०१२। पत्र स०,३५७** । आ०१२४६ इच । लेककाल — स०४००० । पूर्मी । बेपून स०७७ । **प्राप्ति स्थान— दि० जैन अ**ग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

**२०६२ प्रतिसं० १४ । पत्र स० २६० ।** आ० ११ ७ एखा । ले० काल ग० १६०० प्रानोज मुदी १२ । पूर्ण । बे**ट्न स० २४ । प्रास्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोधरियान मालपुरा (टोक) ।

विशेष - प० शिवलाल ने मालपुरा में प्रतितिपि की ।

२०६३: प्रतिसं० १४ । पत्र स० ३११ । ग्रा० १३ , ७] इन्ह । लेक्काल स० ११८० पाप सुदी ३ । पूर्यों । बेष्टुन स० ३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ टोडारायीमह (टोक.)

**२०६४. प्रतिसं० १६ । पत्र** स०३६० । आ.**०** १०३ ४४ १३ इच्च । ले० काल । पूर्णा। बेष्टन स०१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती सन्दिर अलवर ।

विशेष-प्रति उत्तम है।

**२१८४. प्रतिसं० १७ ।** पत्र स० ४०० । ग्रा० १०५ 🗙 ४६ इ.स. । ले० काल 🕟 । ग्र**प्**रां । बेष्टुत स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

२०**८६. प्रतिसं० १८ ।** पत्र स० १३२ । आ० १२ ५६ इच्च । ले० काल० > । पूर्सा। वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैस्पना। **२०५७. प्रतिसं० १६ ।** पत्र स० २७१ । ग्रा० १३imes६ दुः इचा। ले० काल imes । ग्रदूर्णं। वेष्टन स० ३ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रामनन्दन स्वामी बुँदी।

विशेष - केवल ग्रन्तिम पत्र नहीं है।

**२०८६. प्रतिसं० २०।** पत्र स० ४४०। झा० ११ $\times$ ८ इश्व**ा** ले० काल म०१८८३ सावस्य बुदी ८। पूर्णे। बेटून स० ५१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सक्कर जयपर।

विशेष--कालुराम साह ने खुशाल के पुत्र सोनपाल माँवसा से प्रतिलिपि करायी।

२१६६ तस्वत्रयप्रकाशिती टीका— × । पत्र स०१२ । भाषा-सस्तृत । विषय-योग । २०काल × । ने०काल स०१७४२ । पूर्ण । वेष्टन सं०१२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्तिर योजनस्त स्थानी वड ।

विशेष—मः १७४२ वर्षे माह शुक्ता त्रयोदमी तिथी लिक्तिमाचार्य कनक कीर्ति शिष्य पंडित राय मल्लेन गुरोति । जानागांव में लिया गया है ।

२०६०. **हादशानुमेका कुन्दकुन्दाचार्य ।** पत्र म $\bullet$  ६। छ्रा $\bullet$  १०> १ $^2$  इञ्च । भाषा— प्राप्त । विषय-अध्यास । २०काल  $\times$  । ले $\bullet$  काल  $\times$  । वेस्टन म $\bullet$  ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि $\bullet$  जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

२०**२१. प्रति स**०२ । पत्र म०१२ । या०१००० ५५ स्थः । लेक्काल म०१६६६ वैशाख बुदी २ । बेस्टन म०६७ । **प्रास्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर सबक्त ज्ञयपुर ।

विशेष - मागासचन्द ने लिपि की ।

२०६२ **, होदशानुप्रोक्षाः गीतम** । पत्र म०५ । ग्रा० १०४४ है इ**थ**ा भाषा— प्राकृत । विपन - ग्रन्थाम । २०काल — । लेकाल — । वेट्टन ४०६६ । **प्राप्ति स्थान — प्र**प्रवाल दि० जैन मन्दिर लक्कर असपुर ।

२०६३. ध्यानसार--- ः । पत्र म० ६ । बा० १४६ इश्वः । भाषा — सम्बृतः । विषय — गोग । र०काल — । ने० काल स० १६०३ । पूर्णः । वेष्टन म० १६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ जोगान, बुदी ।

२०६४, निर्जरानुप्रेक्षा  $\cdot$  । पत्र म०१। प्रा० ६ $\times$ ४३ दश्व । भाषा—िहत्ती। विषय— प्रध्यातम। र०काल---  $\times$  । ते० काल---  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । प्रास्ति स्थान—िर० तेन मन्दिर देवलाना (व दी)।

२०**६४. पच्चनखारणनारुय**  $\sim \lor$  पत्र म०२६। मा०१० $\times \lor$ ६ इन्च। भाषा — प्राहृत। विषय — चिनन । र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०१८५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पाइनेताथ, बौगान बुदी।

२०६६**. परमार्थ शतकः—मगवतीदास** । पत्रम०७ । भाषा—हिन्दी । विषय—प्रघ्यास्म । २०कारः— ४ । से**०काल म० १६०६** । पूर्ण । वेष्टन म० १०४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

२०६७. परमात्मपुराग्-दोपचन्द कासलीवाल । पत्र स० ३७ । ग्रा० ६×६ इन्छ ।

भाषा--हिन्दी गद्य । विषय -- प्रध्यातम । र०काल -- स० १७५२ अषाढ मुदी १ । से०काल × । पूर्ण । वेष्ठन स० ६० । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मदिर प्रवायती कामा ।

विशेष —दीपवर साधर्मी तेरापथी कासलीवाल ने आमेर मे स॰ १७५२ मे पूर्ण किया । प्रतिलिपि जयपुर में हुई थी ।

२०६८. प्रति सं०२। पत्र सं०२६। प्रा०६ $\frac{5}{4} \times 4\frac{5}{6}$  इख । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०६४-४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियों का हु गरपुर ।

विशेष-सामेर मे लिखा गया।

२०६६. परमात्मप्रकाश — योगीन्द्रदेव । पत्र स०१२ । प्रा० ११ $\times$ ४ $\frac{3}{2}$  इ.स. । भाषा — प्रपन्न स । विषय — प्रध्यातम । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म०६६० । प्राप्तिस्थान — भड़ारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

**२१००. प्रति सं० २ ।** पत्र म० १६ । घा० १  $\times$  १ $\S$  इश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्ण 1 बेहुनसं० स० १४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**२१०१. प्रतिसं०३ ।** पत्र सं०१७४ । घा०७३  $\times$ ५ इ.च.। लेब्बान  $\times$ । पूर्णः। बेटुन स०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

**२१०२. प्रतिसं०४ ।** पत्र स० १५ । झा० ११ $\frac{1}{6}$   $\times$  ५ $\frac{1}{6}$  डच । ले० काल । पूर्ण । बै॰ स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

**२१०३. प्रतिसं० ४।** पत्र स० २३ । मा०६१ × ४१ इला । ले० काल स० १८२८ ज्यष्ट मुदी १ । बेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**२१०४. प्रतिसं० ६** । पत्र स. २३ । **ग्रा० ६\frac{1}{2} \times ४\frac{1}{2} हे ज्ञ । ले० काल ग० १८२८ ाष्ठ बुदी १३ । वे० सं० ५६ । <b>प्राप्ति स्थान –** दि० **जैन म**दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---रामपुरा मे प्रतिलिपि हुई।

**२१०५. इतिसं०७** । पत्र स०४ । झा०१३ ैं ४६ इ.च.। ले० काल् ≾ । झपण । बाहन स०४०**४ । प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मदिर लब्कर, जयपुर ।

**२१०६. प्रतिसंक ६।** पत्र सक २० । म्रा० ११ - ४१ उश्च । लेक्काल 💢 । पूर्मा । नाटन सक ६५ । **प्राप्ति, स्थान**—दिक जैन मदिर म्रीभनदन स्वामी, वू । ।

विशेष--३४३ दोहे है।

२१०७. परमास्म प्रकाश टीका—पाण्डवराम 33 म० १८३। भाषा—मन्सन । विषय—प्रध्यासम । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १७५० वैणाल मुटी २ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २३६ । प्रास्ति स्थान–दि० जैन पत्रायनी मन्दिर मरनपुर ।

**२१०६. प्रतिसं० २** । पत्रस० १७२ । लेब्काल े. । पूर्मा । यच्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

२१०६. परमात्मत्रकाश टीका— X । पत्रसः ११४ । बार १० X ६) इन्त । भाषा— संस्कृत । विषय—श्रम्यारमः । र०काल X । ले०काल सः १७६४ मगमिरः नृती २ । पूर्णः । वेष्ट्रनसः १२१७ । प्राप्ति स्थान—मः दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर । २११०. परसात्मप्रकाश टीका — बहादेव । पत्र स० १७४ । ब्रा० १२ × ८ इस्र । भाषा — अपभं स सत्कृत एवं हिन्दी (गण्) । विषय — अध्यात्म । २०काल × । ले० काल स० १८६१ डि० चैत्र सुदी ४ । पुर्ण । वेष्ट्रत स० ४-१७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर वड़ा वीसपंथी दौसा ।

विशेष—दौलतराम की हिन्दी टीका सहित है । देवगिरी निवासी उदैचन्द्र लहाडिया ने दौसा में प्रतिलिप की थी ।

२**१११. परमात्मप्रकाशः टीका**— × । पत्रस० १८० । प्रा०६<sup>3</sup> × ३ इश्वः । भाषा— सम्कृतः । विषय—प्रध्यात्म । र०काल × । ते०काल × । वेष्ट्रन स० १२६२ । प्राप्तिः स्थान—मट्टारकीय वि० जैन मन्तिरः ग्रजनेरः ।

विशेष -- लेलक प्रणस्ति ग्रति प्राचीन है। ग्रक्षर मिट गये है।

२**११२. परमात्मप्रकाश टीका-ज. जीवराज।** पत्रस**०३४ । आ०११**४२ इन्त्र । र०काल स०१७६२ । तेककाल म०१७६२ माघ सुदी ४ । पूर्ण। बेष्टन स०४३४ । **प्राप्ति स्थान—** महास्कीय कि. जैन प्रतिन प्रकार ।

विशेष—बलतराम गोधा ने चाटमू मे प्रतिनिधि की थी। टीका का नाम वालावबोध टीका है। ग्रन्तिम प्रशस्ति—

> श्रावक कुल मोट मुजस, खण्डेलवाल बखारण । साहबडा साम्बा बडी, भीम जीव कल भागा ॥१॥ राजै तस मत रेलजी, पृष्यवत मप्रमारण । ताको कृत सिगार, मृत जीवराज मुवजाग ॥२॥ पुर नोलाही में प्रसिद्ध राज सभा को रूप । जीवराज जिन धम में, समर्भ ग्रातमरूप ॥३॥ करि ग्रादर वह जिन कह्यों, श्री धमसी उसभाव । परमान्म परकास को, वालिक देह बनाय ॥४॥ परमान्म परकास सी सास्त्र ख्रुवाह समुद्र । मेठा बर्थ गम्भीर भरिग, दर्न ग्रम्यान दलिङ ॥५॥ सुपुरुस्यान ग्रैवक संजे पाये कीय प्रतद्य। श्रर्थ रत्न धरि जननम् , देखो परम्बी पद्य ॥६॥ सतर्रेसे बासीट समे, पत्वयज सगासार । परमात्म परकास की, वालिक कह्यो विचारि ॥७॥ कीरति सुदर सुभकला, चिरातीव जीवराज। श्री जिन सासन सानधे, सुधमं मुभित्वसराज ॥६॥ इति श्री योगीन्द्देव, विरचिते तीनमौपैतालीम. दोहा पद प्रमारग, परमात्म प्रकास को बालाबोध । सम्पूर्ण सवत १७६२ वर्षे माह बदी ४ दसकत बलतराम गोधा चाटमु मध्ये लिखित ।।

**२११३. प्रति सं० २** । पत्रस० ४१ । म्रा० ९ $\frac{3}{5} imes \frac{3}{5}$  इच्च । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । **बेष्ट**न सं० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

**२११४. प्रति सं०** ३। पत्र म० ७४। प्रा० ६imes६ इ.ख.। ते०काल imes। पूर्णं। तेष्टनस० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर दूनी (टोक)

**२११५. प्रति स०४ ।** पत्र स०४ – ६६ । घा०१०×४ है इञ्च ।। ले० काल स०१८२६ । घपुर्सावेष्ठन स०६० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—सवाईजयपुर में म्रादिनाय चैत्यालय में प्रतिलिपि हुईं। जती गुग्गकीर्ति ने ग्रंथ मन्दिर में पंचराया सुरु १८२६ में पुरु देवीचन्द ने चढाया।

**२११६. परमात्मप्रकाश टीका**—  $\times$  । पत्र सं०१२२ । बा०१० $\times$  $\ell$ ृ इथा । भाषा— भणभ्र श-सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१४२६ देशाय सुदी २ । अपूर्ण । वैष्टत स०२७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० केन मन्दिर दीवानकी कामा ।

विशेष—१२२ वा पत्र नहीं है। टीका ४४०० श्लोक प्रमास बताया सवा है। सारावल में श्री कीर्तिसहदेय के शामन काल में प्रतिलिधि हुई।

**२११७. परमात्मप्रकाश भाषा—पांडे हेमराज ।** पत्र स०१७४। या००} ६८०४ । भाषा—हिन्दी। विषय—प्रध्यात्म । ४०काल ∨ । ले०काल स०१८८६ । पूर्ण । वेल्टर स०००६ १००। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन सन्दिर कोटडियोका इंगरपुर ।

**२११८. परमात्मप्रकाश भाषा** —  $\times$  1 पत्रम० १०२ । आ० १३० ६८ तवा भाषा — हिन्दी । विषय — अध्याप्म । र०कारा — । स०कार्म  $\times$  1 अपूर्ण । वेष्ट्रन २० १/४७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष--- ग्रन्तिम पत्र नहीं है।

२**११६ परमात्म प्रकाश भाषा**— × । पत्र म० १-१४० । या० १०१ ८४) ठखा । भाषा—हिन्दी ग्रह्या विषय—प्रध्यान्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्ट्रन स ६१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमतल (टीक)

विशेष---प्रति सस्कृत टीका सहित है।

२**१२०. परमात्मप्रकाश भाषा**— > । पत्रस**्वर्धः । आग्रा** ६०४८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय —श्रद्यातम । २०काल × । ले०काल ः । अपूर्णः । वेष्टन स**०७७ । प्राप्ति स्थान** —हि० जैन मन्दिर पार्वनाथ टोडारायमिङ (टोक)

रचयिता-बन्दाबनदास लिखा है।

२१२१. परमात्म प्रकाश भाषा—बुधजन । पत्रस० ४४ । भाषा—हिन्दी । विषय— ब्रध्यातम । र०काल × । ने०कान ४ । पूर्यो । वेष्टनम०२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्राथनी मन्दिर हुण्डावालो का डीग ।

२१२२. परमात्मप्रकाश वृत्ति —  $\times$  । पत्रम० ४६-१७६ । ब्रा० ११ $\frac{1}{2} \times 3^{\frac{1}{2}}$  इश्र । भाषा-संस्कृत । विषय — ब्रध्यात्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । वेष्ट्रनस० १३० । प्राप्ति स्थाम — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा । विशेष-प्रति प्राचीन है। श्लोक स०४००० है।

२१२३. परमात्मप्रकाश माषा—बौलतराम कासलीबाल । पत्र स० २६४ । आ० १०३४ ६ इथ्व । आपा—हिन्दी । विषय— अध्यात्म । २०काल ४ । ने०काल म० १८६६ पीप बुदी ४ । पूर्ण । वेप्रतम० १२६४ । **प्राप्ति स्थान**—अहारकीय दि० जैन मन्दिर स्रवंगर ।

**२१२४. प्रतिसं० २** । पत्रस० १८२ । आ<sup>०</sup> ११ 🗙 ४ इचा। लेक्नाल स० १८६६ मङ्गसिर सुदी ३ । पूर्णा वेषुन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन अथवाल पत्रायती सन्दिर अलवर ।

विशेष-ब्रह्मदेव की सम्कृत टीका का हिन्दी गद्य में अनुवाद है।

**२१२५. प्रतिसं० ३ ।** पत्र म० १४५ । आ० १२३५ ७३ इचा । ले०काल स० १६०४ फागुस सुदी ७ । पूर्मा । वेष्टुन स० ५ । प्राप्तिः **स्थान** — दि० जैन मन्दिर पनायती वयाना ।

विशेष —-प्रथ क्लोक स०६६६० मृत्तप्रथकर्ता—याचार्य यागीन्यु टीकाकार ब्रह्मदेव (सस्कृत) लालाजी मार्थोमहजी पटनार्थ प्रतिलिपि की गयी।

**२१२६. प्रतिसं० ४** । पत्र ग० १४६ । या० १२ ८७३ इ.स. । ले० काल अ० १६३४ । पूर्ण । बेष्टत म० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा (बयाना) ।

**२१२७. प्रतिसं० प्र**ापत म०२०२। खा०११\प्रश्रृद्धा ल०काल स० '६२७ पीष मर्दा १ । पूर्णा वेष्टुनस०२०/६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रचायनी अलवर ।

**२१२६. प्रति सं०६ ।** पत्र स०१७६ । ले० काल स०१८५६ ज्यंष्ठ बुदी १ । पूर्ग । बे<mark>प्टन स०</mark> ७६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पत्रायती सरिष्ठ प्रलवर ।

२१२**६. प्रति सं० ७ ।** पत्रमण्<sup>९</sup>६१ । स्रा० १०६ ८ ४६ इन्छ । लेज्बाल म० १८८८ मगसिर सुरी १४ । पूर्ण । वेटन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**िद्ध जैन मन्दिर तरहपत्री मानपुरा (टोक्र)

विशेष—मालपुरा मे श्री जन्द्रप्रभ चैन्यालय मे प्रशिविधि की गई ।

**२१३०. प्रति सं० ६** । पत्रस० ११२ । खा० १२०,६१ इ.स. । लेल्काल स० १६६२ सगमिर मृदी ११ । पुर्य । वेटन स० ११ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन नेरहदयो मन्दिर दोसा ।

विशेष-चिम्मननान ने दीमा मे प्रतिनिपि की।

**२१३१. प्रति सं० ६**। पत्र स०२=७। ब्रा०१२} = ३७। ले०काल ४ । पूर्ण। वेस्टन स०१३२ प्राप्तिः **स्थान**---दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी।

**२१३२. प्रतिसं०१०** । पत्र स०६१-१२७ । ग्रा०११ × २ उच । ले० काल × । श्रपूर्ण । बेष्टुन स०२६७ । **प्राप्ति स्थान** —सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

**२१३३. प्रतिसं० ११ ।** पत्र स० १२४ । ग्रा० ११६४ ८ इ.च । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टुन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर राजमहल टॉक

विशेष--प्रोहित रामगोपाल ने राजमहल मे प्रतिलिपि की।

**२१३४. प्रति सं० १२ । पत्रस० १०७** । ले०काल म० १८६६ । पूर्सा । **बेष्टुन स०** २६६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-- ग्रक्षर काफी मोटे हैं।

**२१३५. प्रतिसं० १३ ।** पत्र स० १६० । लेल्काल 🗴 । पूर्णे । वेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२१३६. परमात्मस्वरूप $-\times$ । पत्र सं०२। ग्रा०१० $\times$ ४ इश्वः। ग्राप-संस्कृतः। विषय-ग्रध्यात्मः। र०काल $\times$ । लेकाल $\times$ । पूर्णः। बेष्ट्न स०३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लक्केलबाल मन्दिर उदयपुरः।

विशेष --- २४ पदा है।

२१३७. पाहुड दोहा—योगचन्द्र मुनि । पत्र स० ८ । प्रा० ८१ ४४ इस्त । भाषा— भगभ्र स । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०६ । प्राप्ति स्थान— विक जैन मन्त्रित नदा नीमणणी तीमा ।

**२१३८. प्रतिकमरा**— × । पत्र स०४। ग्रा०२×४ इखा भाषा—प्राकृत। विषय— चिन्तन। र०काल × । ले० काल × । पूर्णं। बेय्टन स०४५१/२८०। **प्राप्ति स्थान**—मभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

**२१३६. प्रतिकमरा**— ्र । पत्र स० १६ । भाषा — प्राक्कत । विषय — विन्तन । र०काल  $\times$  । वृष्णं । वेष्टन स० ४५, ४१५ **प्राप्ति स्थान** — सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

**२१४०. प्रतिकमस्** - ∖ापत्रस० २३ । प्रा० ११ ×१ इला । भाषा —स*म्हत-*प्राहत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १७० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बृदी ।

**विशेष**--सम्कृत टीका सहित है ।

**२१४१. प्रतिकसरा**— ः । पत्रस० १० । ब्रा० १० ८६ दृश्व । आषा—हिन्दी (गठ)। विषय – धर्म । २०काल ≿ । ले०काल २ । ब्रपूर्ण । वेष्टन स० २७ । प्राप्ति स्थान—गाव्येनाय दि० जैन सन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष -- प्रति हिन्दी टीका महित है।

२१४२. **(बृहद्) प्रतिकम्पण**— ×ा पत्रस**्** ४० । प्रा० ११√५ इखा भाषा-- सस्कृत । विषय—चिन्तत । र०काल ×ा ने०काल ×ा पूर्ण । बेष्टन म० ११५२ । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२१४३. (बृहद्) प्रतिकम्पण् $-\times$ । पत्रस०१७। ग्रा०१० $\times$ ४३ इस्त्र। भाषा--राहृत। विषय्-चित्रत। र०काल्  $\times$ । ले०काल् स०१५७१। पूर्ण। वेष्टतस०६२१। प्राप्तिस्थान---भटारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

२१४४. (बृह्द्) प्रतिकमरा— × 1 पत्रस० १ से २०। घा०१० ई ४४ डवा। भाषा— प्राक्त-सस्क्रत । विषय—चित्रन । र०काल × । ले०काल म०१८८१। पूर्ण । बेष्टुनम०१७६। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष--हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

२१४५ (बृह्द्) प्रतिकमस्य । पत्र स०५-२०। प्रा० १२ $\times$ ५ इन्छ । माषा—प्राकृत । विषय—जिल्ला । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । ध्रपूर्ण । वेष्टन स० १७१-४१७ । प्राप्ति स्थान—समबनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

**२१४६. प्रतिकमरा पाठ**—  $\times$  । पत्र स० = । घ्रा० =  $\times$   $\times$  = = = । माषा-प्राकृत-हिन्दी । विषय—िंबतन । र०काल  $\times$  । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १५०-२७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

२१४७. प्रतिकम्पा—गौतमस्वामी । पत्रसः १८० । प्राः १०१ ४ इत्तः । भाषा— प्राकृतः विषय—अर्थः । र०कालः ४ । ले०काल सः० १४६६ चैत सुदी १४ । पूर्णः । वेष्टनसं० ११ प्राप्तिमध्यान—दिः जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--प्रति प्रमाचन्द्रदेव कृत संस्कृत टीका सहित है।

**२१४८ प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ६६ । ग्रा० १०imes४२ इखा । ले० काल imes । पूर्णः । वेष्टनस० ४२ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन सप्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रति पृष्ठ १० पक्ति एव प्रति पक्ति ३५ अक्षर हैं।

**२१४६. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० ६६ । प्रा० ११ $\times$ ४ईंडख । ले० काल स० १७२६ । पूर्ण । बेष्टुनस० ३१७/४१४ । प्रास्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष --श्री प्रभाचन्द्र कृत सस्कृत टीका सहित है। प्रति जीस है।

ग्रन्तिम पृष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री गौतम स्वामी विरचित वहत् प्रतिक्रमण टीका श्रीमत् प्रमाचन्द्रदेवेन कृतेय ।

मवन् १७२६ नानिक बदि २ गुभै श्री उदयपुरे श्री सभवनाथ चैत्यावये राजा श्रीराजीमह विजय-राज्ये श्री मृत्यमधे सरस्वती गर्चर, बलान्कार गर्मे कृत्यकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक पदानदिदेवा तत्पट्टे मट्टारक सकनकीत्ति तत्पर्र अहारक भुवनकीत्ति"""श्री कल्यासकीत्ति शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पठनार्थे निषिकृतः

२१४०. प्रतिक्रमग् $-\sim 1$  पत्र स $\circ$  २१ । धा०१०  $\times$  ६ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-वितन । १०काल > । ने०काल > । पूर्ण । बेष्टन म $\circ$ १=१ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मिन्दर फनेहगुर शंसाबाटो (भीकर) ।

विशेष---१७ वा पत्र नही है।

२१४१. प्रतिक्रमण् —× । पत्रस० १७ । ब्रा० १० × ४ इश्व । भाषा—प्राकृत । विषय— चितन । र०काल  $\times$  । ले०काल म०  $\times$  । ध्रपूर्णः । वेष्टन स० १४१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृन्दी) ।

२१४२. प्रतिक्रमण् टीका—प्रमाचन्द्र । पत्रस० २७ । भाषा—सन्द्रत । विषय—सारम् चितन । २० काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण् । वेष्टन स० । २७ । ४१६ । प्राप्ति स्थान—सभवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

**२१५३. प्रतिकमए। सूत्र**— $\times$ । पत्र स०७। घा०१० $\times$ ४ इ.च.। भाषा—प्राकृत । विषय-चिनन। र०काल $\times$ । ले०काल स०१७०३। पूर्ण। वैष्टन सं०१४३**। प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर धजमेर।

२१४४. प्रतिकमरण सूत्र— $\times$ । पत्रस $\circ$ २। षा $\circ$ १०  $\times$ ४ $^\circ_2$  इखः। भाषा—प्राहतः। विषय—चित्रतः। र $\circ$ काल  $\times$ । ले $\circ$ काल  $\times$ । पूर्णः। बेष्टतःसं $\circ$ ४६४। प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय वि $\circ$ कतं मन्दिर धजनेर।

**२१५५. प्रतिकम्भास् सूत्र**— $\times$  । पत्र म०३। ब्रा० १० $\frac{3}{2}$   $\times$  १८७। भाषा— प्राकृत । विषय— विनन । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०४६७ । प्रास्ति स्थान—महारकीय विक जैन महिर अजेर ।

विशेष -- गूजराती टब्बा टीका सहित है।

**२१५६. प्रतिकमरा सूत्र**—४। पत्र म०२०। आ०१० ४४ ड्रेड शासा आहल । विषय-- ग्राम्सक्तिन । र०काल ১ । ले०काल ४ । श्रपूर्ण । वेप्टन म०२०६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मस्टिर दवलाना व दी ।

**२१५७. प्रवचनसार—कुदकुदाचार्य**। पत्र स०६२ । माया—प्राकृत । विषय-पध्यान्स । र०काल  $\times$  । ते० क.ल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन स०३१६ । प्राप्ति स्थान - दि० प्रेत प्रभावनी मन्दिर भनतपुर ।

प्रशस्ति—श्री मवत् १६०५ वर्षे भगितर मुद्दी ११ रबो। घर्षेह श्री वान्मीवपुर कुमराग श्री मुनिमुख्त जिन वैद्यालये श्री मुन मवे श्री मरक्वरीगर्केद श्री वानावारमामे श्री कु रुकु राष्प्रतिस्था भहरक श्री पदानहि देवास्तरम् श्री वेशद्रक्रीति ववास्तरम् हे भ० श्री विद्यालि देवास्तरम् भू भी वेशद्रक्रीति ववास्तरम् हे भ० श्री विद्यालि देवास्तरम् भ भी व्यक्षित वदर देवास्तरम् हे भ० जानभूगाम गर्द्धारमञ्ज वर्ष्याम्यावार्षे श्री मुमिवनीतिना कम्प्रवार्षे स्वयायेषकाराच प्रवचनमार ॥ योष श्रितान । गोलुमं यय गा० श्री रक्तभूपाणा मिद्र। (श्रीन जीगों है)।

विद्यानशिक्यर देव मिक्क भूषगणद्गुर । लक्ष्मोल्द च वीरेन्द्र बंदे श्री ज्ञान भूषण ॥ १ ॥

२१४६. प्रवचनसार टीका — x । पत्र म० ११७ । पा० ११ . ४) उचा । भाषा—४६८० सस्द्रत । थिपया अध्यास्म । र०कारा — . । लेक्काल ग० १४६४ कालिक पूर्वा १६ । पूर्ण । वेटरन म० १६२५ । प्राप्ति स्थान—भट्टास्कीय दि० जैन मन्दिर खबसेर ।

२९६०. प्रवचनसार टीका—४। पत्रसः १२०। बा० ६५/४% ट्या। भाषा - सर्प्तः । विषय—प्रधासा । र०काल ४ । ले०काल स० १७४४ मगसिर सुरी १२ । पूर्णः । बेकुनस० ४१ । प्रास्तिः स्थास—प्रकृतिक मन्दिर नेरहपथी मालपुर। (टोक) ।

२**९६१. प्रवसनसार भाषा**— ं । पत्रस० १४६ । आ० १२ ४ ४३ उठव । भाषा— हिन्दी (गात्र) । विषय—प्रध्यात्म । र०काल ४ । ले०काल स० १८४७ वैकाल मृदी ११ । पूर्ण । वेकृतस० ६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नेरहराधी दासा ।

विशेष--नेरापथी चिमनराम ने प्रतिनिधि की थी।

२१६२, प्रवचनसार माथा— $\times$ । पत्रस०१४६। प्रा०१२ $\times$ ६ इंव। भाषा—हिन्दी (सव)।विषय—प्रध्यात्म। र०काल $\times$ ।ले०काल म०१७१७ सामोज मुदी ३।पूर्ण। बेष्टन स०६०/ $\gamma$ ४। प्रास्ति स्थान—दि०जैन मदिर मादवा (राज०)।

विशेष--श्री त्रिमलेशजी ने हूं गरसी से प्रतिलिपि करवायी।

**२१६३. प्रवचनसार भाषा** —  $\times$  । पत्रस० २०१। ब्रा० १२ $\times$ १ $\frac{1}{5}$  इन्छ । भाषा — हिन्दी (गद्य) । विषय प्रध्यान्म । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७४३ । पूर्ण । वेष्ट्न स० ४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवान चेननदास पुरानी डीग ।

**२१६४. प्रवचनसार माषा** —  $\times$  1 पत्रस्न० १७२ प्रा० ६३  $\times$  ४३ इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय — प्रथ्यास्य । रकाल  $\times$  । लेक्सल  $\times$  । वेष्ट्रन म० १७७ । **प्रास्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर विवासन ।

२१६५. प्रवचनसार भाषा बचनिका—हेमराज । पत्रस०१७७ । ग्रा०११ ∑ ६ इथा । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय — ग्रन्थान्म । र०काल म० १७०२ माघ मुटी ५ । ले० काल स० १८८५ । वेष्ट्रन स०११७३ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर ग्राजोर ।

२**१६६. प्रतिसं०२ ।** पत्रम०२२०। ग्रा०१२४४ हुँ इच । ले**०काल** स०१८८६ ब्राघाट बदी ४ । पूर्णा वेष्ट्रनस०२६ । **प्राप्ति स्थान**ः भ०दि० जैन मन्दिर ब्रजनेसर ।

२१६७. प्रतिसं०३ । पत्र स०२६३ । खा० १०५ँ४७३ इला। ले० काल स०१६४१ प्रगहन बुदी रे। पूर्णा विक्षुन स०६६ ६३ । प्राप्तिः स्थानः – पत्रायती दि० जैन मन्दिर खलवर ।

२१६८. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ३५४ । ले० काल 💢 । पूर्ण । बेहन स० २७/६३ । प्राप्ति स्थान—पत्रामी दि० का महित्र प्रतबर ।

२१६६. प्रतिसंव ४ । पर्यं मुक्त १७० । ब्राव्हिप् प्रश्चालेव काल सुव १६४० माघ सुदी १३ । स्कृत । युव्यं सुव ४० ४२ । प्राप्ति स्थान—केन्द्रपूर्वी दिव जैन सन्दर नैसाया ।

विशेष -- वीच वीच म कुद्र पत्र नृती है। गुगाविष्ण ब्राह्मण ने प्रतिनिषि की थी।

२१७०. प्रतिस्र० ६ । पर ग० २=२ । छा०१२ ४ ६ इश्व । ले०काल १७=४ पूर्ण । बेप्टन स० ४४-२४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर राष्ट्रीहर्यों का द्वरारपुर ।

विशेष---गमदास ने प्रतिनिधि की थी।

२१७**१. प्रतिस्**०७ । पत्र म०१६७ । ग्रा०१४ ४ ५२ इ.च. । लं∘काल ८. । **ग्रपूर्ण** । वेष्टन स० १२२ । **प्रास्तिस्थान** - दि० जैन मंदिर राजमञ्ज टोक ।

**२१७२. प्रतिस० म**ा पत्र म० २३० । ब्रा० १२.८५१ डला । ल० काल ∖्रापूर्ण । वेष्टन म० ८२ ५८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जन मन्दिर वडाबीस पथी दोसा ।

विशेष—पत्र १६० तक प्राचीन प्रति है तथा आरोग के पत्र नवीन लिखवा कर ग्रथ पूरा किया गया है।

**२१७३. प्रतिसं०६।** पत्र सल्या १४४। सा०११ 🗴 ७ इश्व । लेखन काल स०१६३६ । पूर्मा । बेपून स०२१२ । **प्राप्ति स्थान**—- दि० जैन स्रायनाल मदिर डदयपुर ।

**२१७४. प्रतिसं० १०।** पत्रस० १८०। ग्रा० १२ $\frac{1}{2} \times$ ६ इञ्चा। ले० काल स० १७८६। **प्राप्ति स्थान**—स्रग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

२१७४. प्रतिसं० ११। पत्रस० २०१। फ्रा० ११ × ४२ इस । ले०काल स० १८४६। पूर्तो । बेब्रनसं० १०४। प्राप्ति स्थान—वि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — स० १८५६ भादवा कृष्ण ६ रविवार उदयपुर मध्येसार जीवरणदास लडेलवाल के पठनार्थ लिक्स्रो ।

**२१७६. प्रतिसं० १२ ।** पत्रस० १६४ । आ० १२  $\times$  ४ इन्त्र । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी वृदी ।

**२१७७. प्रति सं० १३।** पत्रस० २०६। ले०काल स० १७२४। पूर्णा वेष्टनसं० ३१७। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर।

**२१७८. प्रतिसं० १४ ।** पत्र स० १६८ । ले०काल म० १७२४ । पूर्ण । बेष्टनम० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष —हेमराज ने ग्रंथ कामागढ में पूर्ण किया । साह ग्रमरचन्द्र वाकलीवाल ने ग्रंथ निष्णाकर भरतपुर के मन्दिर में चढायाथा।

**२१७६. प्रतिसं० १५ ।** पत्र म० १४६ । स्रा० १३imes६ इन्ह । लेक्काल imes। अपूर्ण । बेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवान चेत्तनदास पुरानी डीग ।

**२१८०. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २**५१ । आ० १० 🔀 है इस्त । लेक्काल 🔨 । अपूर्ण । वेष्टन सुरु ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

**२१६१. प्रति सं० १७ ।** पत्र स० २५४ । ब्रा० ११ $\frac{5}{6}$   $> 2<math>\frac{3}{6}$  इख । ले० काल म० १८७२ फागुन सुदी ३ । पूर्ण । बेप्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पचायती मन्दिर करोली ।

विशेष-करौली में प्रतिनिपि हुई।

२१८२. प्रतिसं०१८ । पत्र स०२१३ । प्रा०१२ ४ ४ डव्य । ले०काल स०१७८४ । पूर्या। बेप्रन स०६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

**२१८३. प्रतिसं० १६। पत्र स० १४८ । प्रा० ११** ४ ५५ इक्टब । लेक काल स० १७१६ ्रीकृषीत सुदी १३। पूर्ण । बेतुन स० २४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष -- कामावती नगर मे प्रतिलिपि हुई।

**२१८४ प्रति सं० २०।** पत्रसं० १७६ । ले**०काल स०** १७४६ ग्रासोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २४४ । **प्राप्ति स्थान**िद० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**२१८५. प्रतिसं०२१** । पत्रस० १६४ । ले० काल म०१७४२ ज्येष्ठ बुदी१३ । पूर्गा। बेष्टुन स०२४५ । **प्राप्तिस्यान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

**२१८६. प्रति सं०२२** । पत्रस०२७१ । लेश्काल — स०१७८२ ज्येष्ठ बुदी१४ । पूर्ए। बेकन सं०२४६ **। प्राप्ति स्थान** — दि०जैन मन्दिर दीवान जीकामा।

२१८७. प्रति सं० २३ । पत्रस० २८६ । प्रा० १२ 🗴 १३ इञ्च । ते०काल स० १७४४ प्राप्तोज सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३२ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

्रश्यस. प्रतिसं० २४ । पत्र सं० २०६ । आ०१२ × ५३ इखा । ले०काल स०१७४४ । पूर्णा वेष्ट्रन सं०१२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**२१८६. प्रति सं०२५ ।** पत्र स०७० । धा०१२×६ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । बेष्टुत स०६७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**२१६०. प्रतिसं० २६** । पत्रसं० २२६। म्रा० ११८७३ इच । ले**०काल ×** । म्रपूर्ण । बेम्न स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मदिर कामा ।

**२१६१. प्रतिसं० २७ ।** पत्र स० २१० । स्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ $\frac{1}{8}$ ऽच । ले० काल स० १६२६ कागुसाबुदी १३ । पूर्ण । बेप्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पत्रायती कामा ।

विशेष—प्राकृत में मूल तथा सस्कृत में टीका दी हुई है। चुरामन जी पोदार गोत्र बनावरी बयाना वालों ने ग्रंथ की प्रतिनिधि करवायी। ज्यास स्थोबक्ष ने अर्थगढ़ में प्रतिनिधि की।

**२१६२. प्रवचनसार माषा – हेमराज**। पत्रम० ६१। स्रा०११  $\times$  ४ है इन्त । भाषा — हिन्दी (पद्य)। विषय प्रध्यारम । र०काल स० १७२४ प्रापाद मुदी २ । ने० काल स० १८८५ मादवा बुदी ६। पूर्गा । बेष्टन सं०१८१ । **प्रांति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

किशेश--प्रतिलिपि दोलतराम निरमैचद ने की थी। इसको बाद में काट दिया गया है।

२१६३. प्रति सं०२ । पत्र स०२२६ । ले०काल ∷ा पूर्णा । बेष्टन स०६४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रवासनी मन्दिर हण्डावालो का डीग।

२१६४. प्रति स० ३ । पत्रस० ४१ । ने०काल 🗴 । पूर्ग्ग । वेष्टन स० १२६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर ब्रादिनाथ ब्रुटी ।

विशेष--- ग्रथ जीर्ग एव पानी से भीगा हमा है।

**२१८५. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० २११ । ब्रा० ११¦ 🖂 ७५ इन्छ । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**— म० पचाय दि० जैन मंदिर वयाता ।

२१६६. प्रवचनसार वृत्ति-स्रमृतचद्व सूरि । पत्रस०२-६६। प्रा० ११ $\frac{1}{4}$   $\times$   $\frac{1}{4}$  इश्व । साथा-सम्ब्रत । विषय-प्रध्यास्म । २० काल  $\times$  । ले०काल । स्रपूर्ण । वेग्टन स० ५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, व दी ।

विशेष - प्रथम पत्र नहीं है।

२१६७ प्रति स०२ । पत्रस० ७१ । ले०काल १८०३ । पूर्ण । वेष्टन सं०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बढा प्रचायनी दीग ।

**२१६**८. प्रवचनसार वृत्ति  $\times$  । पत्रस० १४३ । ब्रा० १२  $\times$  ५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रध्यारम । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १५६० । क्रपूर्ण । वेष्टन स० २४० । प्रास्ति स्थान— प्रथमाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष-प्रथम पत्र नही है।

**२१८६. प्रवचनसारोद्धार**— $\times$ । पत्र सं० १४=। घा० १० $\times$ ४ इख । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-प्रध्यात्म। र० काल  $\times$ । ले०काल सं० १६६६। पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३२४ । प्राप्ति स्थान—रि० जैन मंदिर दबलाना बृदी ।

विशेष-कृति भी प्रवचन सारोद्वार सुत्र।

२२०० प्रायश्चित पाठ- श्रकलंकवैव । पत्रस० ५-२७ । ग्रा०१०  $\times$   $\times^{0}_{1}$  इच्च । भाषा- सस्कृत । विषय-चितन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स० २६६।१५७ प्रास्ति स्थान- समवनाय दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

**२२०१. प्राथश्चित विधि** — पत्रम० १.। भाषा — सस्कृत । विषय-चित्तन । '०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । प्राप्ति स्थान — वि० जैन पश्चायती मंदिर भरतपुर ।

२२०२. प्रायश्चित समुच्चय—निदगुरु । पत्र स०१२ । ग्रा०१२ , ४इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय—चितन । र०काल 🗴 । ने०काल स०१६६० पूर्ण । वेष्टुन म०२७०/२४६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उपस्पृप ।

मनन् १६६० वर्षे पीप बिट १२६ श्री मुननाथे सरस्वती गच्छे बलाकार गागे भट्टारक श्री बादिभूषण तत्त्वहुं भट्टारक रामकीति विजयराओं ब्रह्मारामस्त्राय प्राह्मार या भेषाव्य ज्ञास्त्र दान विजयराओं कहारामस्त्राय प्राह्मार व्याप्ता । कोट नगरे हुवडज्ञानीय शुरूद्धानों मध्यपित श्री लामगांच्याना भागी लानतादे दिलाय भाग मा १० स्थाप दे नगांच्या स० विजयाम भाग मा १ महोत्य दे संग काहानजी स० स० कपूँ रहे स० मानजी भाग संबोधवर्श दे भाग सम्

२२०३. प्रति स० २ । पत्र स० १-१०६। या० ११५ ५ ४ / टब्स । ो० कार ५ । बेष्टन स० ७५७ अपूर्मी । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर लक्कर, जयपुर ।

**२२०४. बारह भावना** +  $\times$  । पत्र सं०४ । घा०  $\mathbb{Q}^*_{+}$  ४८८२न । भाषा +  $[\pi$ रण । विषय - चितन । २०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेप्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**-६० वन स्थित दवलाना (२ थी) ।

२२०५. बहाज्योविस्वरूप श्री धराचार्य । पत्र म०१ । प्राः १०} ४ ६८ । भाषा— सस्कृत । धिरव - अध्याम । २०काल > । ले०काल > । वेष्ट्रत म०-१२६५ । प्रार्थः, रथान—िः अन सन्दिर लक्कर वयपुर ।

२२०६. मबदीपक भाषा—जोधराज गोदीका—पत्रस० २१४ । आ० १०६ । . ७५ ८ त । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योग जास्त्र । १०काल 📐 । लेक्सल —म० १६४४ फागुग्ग मुदी 🖘 । पूर्णा । बहुनम० ६१ । प्रास्तिस्थान – पार्थनाथ दि० जैन मदिर टस्टरगढ (कोटा) ।

२२०७. अब वैराज्यशतक $-\times$  । पत्रतः ४ । त्रा० १० $\times$ ६ इञ्च । आगा-प्राक्त । विषय —िवनन ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । ते० काल  $-\times$  । पूर्य । वेष्टन स० २७६-१४२ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन सन्दर कोटडियो का हु गण्युर ।

२२०८, स्मावद्गीता — X । पत्रस० ६८ । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रध्यात्म । रचता काल X । लेक्काल — X । स्रपर्या । वेषून म० ३० । प्राप्ति स्थान — प्रचायती दि० जैन मन्दिर हण्डावालो का डीग । **२२०६. भावदीपिका**— पत्रस**०** १७७ । मापा-हिन्दी । विषय-ग्रध्यात्म । र०काल 🗙 । ले**०काल**— 🗙 । मपुर्ण । वेष्ट्रन मु० १६ । **प्राप्ति स्थान**-पुचायती दि० जैन मन्दिर हण्डावाली का डींग ।

**२२१०. मोक्षपाहुड—कुंदकुंदाचार्य।** पत्रस० ६८ । आ० १० ४६ ८च । आपा-प्राकृत । विषय—स्थासमा रण्डात  $\mathbf{x}$  । लेखाल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्ट्रत प० २४१-१५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटिशों का बु सन्प्र ।

२२**११. योगशास्त्र —हेमचन्द्र** । प्रत्यत-४१ । ब्रा०१०,४४<sup>५</sup> इच । भाषा-सन्द्रत । विषय-योग । र०काल र् । लेकाल— स०१४६७ । पूर्ण । वेष्टन स०४६४ । **प्राप्ति स्थान—** भरारकीय दि० जैन सन्दिर ग्रजीयर ।

मबन् १५६७ वर्ष ग्रापाट नुरी ११ रवा । ज्ञानमगर्न्द्र श्री उदय सूरिस्यो नम प्रवर्त्तनी लडाधड श्री गणि जप्याणी जपश्चीनीण लक्ष्वापित पठनार्थ प्रक्षेत्रिकाबादधी ।

२२**१२. प्रति सं० २** । पत्रस० ७-१४ । प्रा० १० ४ १ उ.व. । लेक्काल — 📐 । पूर्ण । वष्टत स० २१५ । **प्राध्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दश्लान। (व.सी.) ।

विशेष ∼ इससे द्वादण प्रकाण वर्णन है । यहा द्वादण प्रकाण में पचम प्रकाण है । ऋतिस पुष्पिका निस्त प्रकार रे—

र्टात परमहित श्री कुमारपाल भगाल विरोचन गुड्यपिके खाचार्य श्री हेमचन्द्र तिर्दाचने अध्यक्षिय-निवक्रामि संभाग पट्टपे श्री नामकारने झाडल प्रकास समारतः ।

२२**१३. प्रतिस**० ३ । पत्रस० ६० । मा० १० ॄं ४ुँ इ.स. । ने०कान ग० १४४५ वैनाल सुदी २ । पुर्ण । वशन ग० ००७ । **प्राप्ति स्थान** वि० केन प्रस्थित दवनाना (बू दी) ।

विशेष - सबर् १४,४% वर्षे बैजाल मुद्री २ जुन्ते । श्रीमीत भटन दुर्ग नगरे । महोपात्याय श्री भागान गटन । कित्यम निकासिता सा० शिवदास । स्थिविधि सहजारहे कृते ।

२२१४ प्रतिसं० ४ । पत्रम० १० । या० १० । ८८ । उत्त । लेक्काल —  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ३०० । प्रास्ति स्थान — भट्टाफॉल दिर जैन मन्दिर स्वकेर ।

२२**१५. योगसार—घोगोग्द्रदेव** । यत्नल ७ । आ० १२४५, इ.च. । भाषा-प्रपन्न ग्रा. विषय—प्रभ्यास्म । रुक्तान ४ । केक्काल—स ०१६३१ चैन मुद्दी १ । पूर्ण । वेष्टन स०१२ । प्रास्ति स्थान—महारकीय दि० औन गन्दिर प्रजनेर ।

बिशेष -- मिति चेत मुद्री १ स वत १८३१ का लिखित ग्राचार्य श्री राजकीति पडित सवाई रोमए। भेसलाए॥ मध्ये।

२२**१६. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १७ । ग्रा०११ x ४ <sup>पु</sup> इञ्च । ले०काल० स० १६६३ माह बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टुनस० १८३ । प्राफित**स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

विशेष-- लिखायन श्री १०८ श्राचार्य कृष्णदास वाचन हेतवे लिखित सेवग श्राज्ञाकारी मुलतान ऋषि कर्रापुरी स्थाने ।

२२१७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ११ । ले० काल स० १७४४ श्रासोज मृदी ४ । पूर्ए । बेहन स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष--कामा मे प्रतिलिपि हुई।

२२१८. प्रतिसं**०४ ।** पत्र स० २० । ग्रा० ११  $\times$  ५ इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४२६/२२६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन संमवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

श्रतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है---

इति श्री योगमार भाषा टब्बा ग्रर्थ सहित सम्पूर्ण ।

२२**१६. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स० २४ । आ० १०३  $\times$  ५  $^2$  इच्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १६२ -७२ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपर ।

२२२०. प्रति सं० ६ । पत्रस० ६ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुनस० ४७८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

२२२१. योगसार वचनिका—  $\times$  । पत्र स०१७ । घा० ११ $\times$ ५ इ.च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योग । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१ ५३२ । पूर्ण । बेष्ट्रन स०२२२-११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटिष्ठयो का इ गरपुर ।

विशेष---नौगावा नगर मे ग्रादिनाथ चैत्यालय मे बदा करगोफल जी ने प्रतिलिपि की ।

**२२२२. योगेन्दु सार—बृधजन** । पत्रसं० ७ । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । र०काल १८६५ । ले**०काल** imes । पूर्ण । बेष्टनस० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

२२२३. बच्चनामि चक्रवित की वैराग्यभावना— $\times$ । पत्रस $\circ$   $\in$ । आ $\circ$  १० $\times$ १ $\rangle$  इ व । मापा—हिन्दी। विषय—चितन। र $\circ$ कान  $\times$ । ले $\circ$ कान  $\times$ । पूर्णं। बेष्टनस $\circ$  ५८४। प्रास्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मदिर लक्कर जयपुर।

विशेष--निम्न रचनाएँ ग्रौर हैं--वैराग्य सज्भाय छाजू पवार (हिन्दी) विनती देत्राब्रह्म ।

२२२४. **वैराग्य वर्गमाला** × । पत्रस० १०। प्रा॰ ५×६१ इञ्च । भागा—हिस्री गद्य । विषय—वैराग्य चित्तन । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ४० । **प्राप्ति स्थान**—रि० जैन प्रयक्तल प्रचावती मन्दिर प्रजवर ।

२२२५. **वैराग्यशतक** । पथस० १ । भाषा—प्राकृत । विषय—वैराग्य । र०काल > । से**०काल स० १६५७ पीय वदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ६४६ । <b>प्राप्ति स्थान** — दि० जेन प्रचायनी मदिर भरतपुर ।

२२२६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६ । ले०काल imes । पूर्णं । बेष्टनसं० ४११ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन पत्रायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष-- टीका सहित है ।

२२२७. वैराग्य शतक-यार्नासह ठोल्या । पत्र स० २० । आ० १० $\frac{1}{2}$  ×  $\frac{1}{6}$  इचा । आपा—हिन्दी पद्य । विषय—चितन । र०काल स० १८४६ वैशास मुदी ३ । ले० काल स० १८४६ जेळ बढी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर करौती ।

२२२६. **शान्तिनाय की बारह आवना** × । पत्र स० १२ । प्रा० १३ × ७ इ.च । नाषा-हिन्दी। विषय—र्वितन । र०काल × । ले० काल स० १९४४ वैत बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स० ४३ ॥ प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बूदी।

विशेष--दमकत छोगालाल जुहाडया प्राकादो हे ।

२२२६. शील प्रामृत—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र स०४। प्रा० १०१४५ इच। भाषा— प्राकृत। विषय - सध्यातम। रक्ताल ४। ले० काल ४। पूर्ण। बेष्टन स २४४। प्रास्ति स्थान— दि० जैन मदिर लक्कर जवपुर।

विशेष -- प्रारम में लिग पाहड भी है।

२२३०. प्रति सं॰ २ । पत्रस० ४ । आ० १२हे ४६ इवा । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्ट्रनस० ३११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२३१. श्रावक प्रतिक्रमस्य $-\times$  । पत्रस $\circ$  १३ । द्या $\circ$  १० $\times$ ७ इख । माया-संस्कृत । विषय-विरात । र॰काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुतस $\circ$  १७७-११३ । प्रास्ति स्थान-दि $\circ$  जैन मिल्र नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक्र) ।

२२३२. **आवक प्रतिक्रम**रा —  $\times$  । पत्र स ३-१४ । मा० ६ $\times$ ४ इञ्च । आधा-प्राकृत । विषय-चितन । र०कान  $\times$  । ले०कान स० १७४४ माघ बृदि ४ । प्रपूर्ण । वेस्टन स० २७१ । **प्रास्ति स्थान** — दि० त्रैन मन्दिर, दवलाना वृदी ।

विशेष - मूल के नीचे हिन्दी में ग्रथं दिया है।

२२३३. **शावक प्रतिक्रमरा**  $-\times$  । पत्र स० ७ । प्रा० १० $\times$ ४ इख । माषा—प्राइत । विषय—िवनन । र०कान  $\times$  । ले० कान  $\times$  । पूर्ण । वे० स० ४१/८१ । प्राप्ति स्थान—दि० वैन मन्दिर भादश (राज०)

विशेष--प्रति जीगां है।

२२३४. श्रावक प्रतिकमस्स- र । पत्र म०६। ग्रा०१३ $\frac{3}{2}$ ४६ इश्वः । माषा—सस्स्रत । विगय—विनन । ७०कान  $\times$  । पूर्यं । वे० स०४०६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर लस्कर जयपुर ।

२२३५. बट्पाहुड—ग्रा० कुन्दकुन्द । पत्र स॰ ४८ । ग्रा० १० $\S \times$ ६ $\S$  इखा । भाषा— विषय—ग्रायाम । र०काल  $\otimes$  । ले० काल स॰ १८८६ । पूर्ण । बेष्टन स॰ ३६० । प्राप्तिः स्थान—दि॰ जैन मन्दि॰ कोर्टच्यो का हु गरपुर ।

२२३६. प्रति स० २ । पत्र स० २२ । । ले० काल स० १७६७ मार्ग सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स० २४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२२३८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २८ । द्या० ११३  $\times$  ४ $\frac{3}{6}$  इश्व । ले०काल स० १७२३ । वेष्टन सं० १६४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन लण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष —सिरूजशहर मध्ये पण्डित विहारीदास स्वपठनार्थ सं० १७२३ वर्ष भादु सुदी ३ दिने ।

२२३६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २०। प्रा० १२ $\frac{1}{3}$   $\times$  ३ इश्व । ले०काल स० १०१६ पौष सुदी १२ । पूर्ण । बेपून स० ४४/४३ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मंदिर मादवा (राज०) ।

२२४०. प्रति स० ६ । पत्रसं० ४८ । घा० १२  $\times$  ५ $\frac{1}{5}$  इञ्च । ले०काल स० १७४० । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० ६८ । प्राप्टिः, स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४१. प्रति सं० ७ । पत्रस० ६ । घा० १२ $^2_y$ imes६ इ.स. । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० २११ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२२४२. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ७४ । धा० १० $\frac{3}{4} \times 8\frac{1}{4}$  इला । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । केटन स० १४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**२२४३. प्रतिसं० ६** । पत्र स० २३ । ले० काल स० १७२१ पौष सुदी १२ । पूर्एं । बेहन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष -सागानेर मे प्रतिलिपि हुई। ग्रन्थाग्रन्थ ६०८ मुलमात्र।

२२४४. प्रतिसं० १० । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १७१२ मगसिर बुदी । पूर्णे । वेष्टन स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष -देहली मे शाहजहां के शासनकाल मे सुन्दरदास ने महात्मा दयाल से प्रतिलिपि कराई।

**२२४५. प्रतिसं० ११** । पत्र स० २३ । ग्रा० १२  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इश्व । ले०काल  $\times$  । श्रपूर्ण । बेहुनसं० १८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४६. प्रतिसं १२ । पत्रस॰ ३१ । घ्रा० १०१ॄै × ४ॄै इ.च । ले०काल × । अपूर्ण । वैष्टन सं० २६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४७. प्रति स० १३ । पत्र सं० ६७ । ग्रा० ११३ 🗙 ४३ इ.च.। लेक्सल 📈 । पूर्गा। वेष्टन स० १८७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष - प्रति प्राचीन है।

२२४६, प्रतिसं० १४ । पत्र सं० १४ । प्रा० ११ × ६ इश्व । ले० काल म० १०५१ जैत्र भूदी १४ । पूर्ण । बेकन म० १००/३१ । प्राप्ति स्थान—पाण्वेताय दि० जैन मन्दिर इंदरगढ ।कोटा) ।

विशेष—लिखत बाह्मरा ग्रमेदावाम वान आत्रदा का । लिखाइत वावाजी ज्ञान विमलजी तत् शिष्य व्यानविमलजी लिखत इंद्रगढ मध्ये ।

२२४**६. प्रति सं० १५ ।** पत्र स० ६२ । आर० १२ ४ ४ है डखा । ले० काल स० १७६५ चैत सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टुन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बुदी ।

विशेष-सस्कृत टीका सहित है।

२२५०. प्रति सं० १६ । पत्र स०६७ । आ०१०३ ४ ४३ इञ्च । ले०काल स०१७१७ सगसिर बुदी ११। पूर्या । बेष्टन स०३२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर आदिनाय बूदी ।

विशेष---प० मनोहर ने लिखा ।

२२५१. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ६२ । प्रा० ६ ४ ६ इव । ले० काल स० १७६६ जेठ सुदी ८ । पूर्ण। बेस्टन सं० <२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पाप्तनाथ जीगान बृदी ।

... २०५२ . प्रति सं०१८ । पत्र स०२१ । घा० ८ दे ४८ इ.च.। ले० काल 🗴 । पूर्णी वेष्टन सं०२२१ । प्राप्ति स्थान- - दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०) २२५३. बटपाहुड टीका--- $\times$ । पत्र स॰ २-७३। प्रा॰ ११ $\times$ ७ इश्वः। जाया--हिन्दी गणः। विषय---प्रध्यान् । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्णः। वेष्ट्रन स॰ २०४। प्राप्ति स्थान---दि॰ जैव मन्दिर नागदी व दी।

२२४४. वट्षाहुड टीका—। पत्र स॰ ६४। प्रा॰ १० $\times$ १ $\frac{1}{2}$  इच्च । माषा —हिरदी । विषय— प्रध्यात्म । र०काल्  $\times$  । ले० काल स० १७६६ । पूर्गं । बेष्टन स० १४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रिमनस्त स्वामी ब दी ।

लेखक प्रशस्ति—सबत १७६१ का वर्षे माह बुदी १३ दिने । लिखत जती गंगाराम जी मारणपुर ग्रामे महाराजाधिराज श्री सवाई जयसिंह जी राज्ये ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है।

**२२५५ प्रतिसं० २।** पत्रस०५०। ग्रा०१० $\times$ ५ $^3_{\theta}$  इच्च। ले०काल सं०१-२४ कार्तिक बढी ३। पर्णः। बेप्टन स०१४५। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्वामी बढी।

सवन १८२४ वर्षे कार्तिक मार्ग कृष्ण पक्षे तिथि ३ वार सनीचर वासरे कोटा का रामपुरा मध्ये महाराजा हरकृष्ण लिपि कृता पाडेजी बखतराम जी पठन हेतवे । गुमानसिंघ जी महाराब राज्ये ।

प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२२**५६. बट्पाहुड भाषा—देवीतिह छाबडा।** पत्र स०५०। ग्रा०१३ ४ ६ इच । माषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—प्रध्यात्म। <sup>२</sup>०काल सं०१८०१ सावण् सुदी १३। ले०काल स० १६४२ पूर्णा विष्टत म०३१५:२२०। **प्राध्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष - उदयपुर मे प्रतिनिधि हुई ।

२२५७. प्रति सं० २ । पत्र म०२७ । ग्रा० म ४४ है इश्वा ले० काल स०१८७७ । पूर्ण । वे० स०११६ ८६ । प्राप्ति स्थान—नाव्वंनाथ दि० जैन मन्दिर इत्यरगढ (कोटा) ।

विशेष--राजगगवाल ने इस्टगढ़ में प्रतिलिपि की ।

२२५ फ. प्रतिसंठ ३ । पत्र स०३६ । स्ना०११४ ५ इश्वः । ले० काल स०१ फ४० । पूर्णः । वे० स०४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ बदी ।

२२५६. षट् पाहुड माथा (रचनिका) — जयचन्द छाबडा । पत्र स०१६३ । यः०११४ ७ इखः । भाषा — हिन्दो (गदा) । विषय — प्रध्यास । र०काल स०१६७ भाववा सुदी १३ । लेखन काल × । वेग्रन स०७६ । प्राप्तिक्यान — नेरहण्यी दि० जैन महिर नैराजा ।

२२६०. प्रति स० २ । पत्र स० १६६ । ग्रा० १० $\frac{1}{4}$  $\times$ ७ $\frac{2}{5}$  इश्व । ले०काल स० १=६४ । पूर्ण । बेटुन स० ४० । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

विशेष—पञ्चालाल साह बसवा वाले ने दौसा मे प्रतिलिपि की । नाठूलाल तेरापयी की बहू ने चढाया।

२२६१. प्रतिसं० ३ । पत्र स०१६०। धा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ७ $\frac{1}{6}$  इत्था। ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टुन स०२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन ध्रप्रवाल प्लायती मदिर ध्रलवर ।

षटपाहुड वृत्ति-श्रुतसागर । पत्रसं० १८३ । आ० ११×१ इश्व । भाषा-हिन्दी संस्कृत ।

**२२६२. प्रतिसं०२ । पत्रतः०२०३ । ग्रा०१२**×५२ दश्वाले ककाल स०१७८५ मगसिर सुदी३ पूर्णावेष्टन स**०११६ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रभितन्दन स्वामाबुदी।

विशेष---लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है।

२२६३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३४ । प्रा० १०१  $\times$  ४१ इन्छ । आपा—सन्छत । विषय — सन्यास । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । सपूर्ण । बेहन स० १०१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर पास्त्रेनाय चीतान वृदी ।

२२६४. प्रतिसं**० ४ । पत्रस० ६१ । आ० ९३**८४१ इस्त्र । ते० काल स० १७७० । पूर्ण । वेष्ट्रन स**० १५१ ४० । प्राप्ति-स्थान —**पार्थनाथ दि० जैन मदिर इस्टरगढ, बोटा ।

विशेष - लिखत साह ईसर भ्रज्मेरा गैगोली मध्ये लिखी स० १७७० माह गर्दा ५ गरीयारे ।

**२२६५ प्रतिसं०५ । पत्र स०२३० । आ०१३**४ ६ १ इश्वः । ले०काल ४ । पूर्मा । बेस्टन सं**०६१ । प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायती मन्दिर. कामा ।

**२२६६. प्रतिसं० ६। पत्रसः० १६० । म्रा० १०**१% ४ इन्छ । ले०कान ६ । पुर्ता । बेण्टन सं**० २**५३ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

२२६७. **योडशयोग टीका** — × । पत्र स० २०। ब्रा० १०′१४ इत्यः। भागा — गन्छतः। विषय — योगः। र०कालः × । ले० काल स० १७६० पूर्गः। वेष्ट्रन स० १६६ । प्राप्ति स्थानः — दि० जैन मन्दिरं भादिनाथ बृंदीः।

सेखक प्रशस्ति --सवत् १७५० वर्षे आवसा विद अ शतौ लिखत श्री गौडणतीय श्रीमद् नरेण्वर सत जयराभेगा फ्रोवेर ग्राम मध्ये जोसी जी श्री मल्लारि जी ग्रुहे।

२२६६, समयसार प्रामृत—कु दकु दाचार्य । पत्र ग० १-४४ । धा० १०४६) ट्या । माया–प्राकृत । विषय—प्राच्यारम । र०काल 🗴 । ले०काल ८ । घ्रमूम् । वेष्ट्रन ग० ४६३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष--प्रति ब्रात्मस्याति टीका सहित है ।

**२२६६. प्रति सं०२। पत्रस**्वेशः। प्रा०१३ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ $\frac{1}{2}$ प्रच। लेकाल स०१६३२ काती सदी १। पूर्णः। बेष्टुनसं०४१। प्राप्ति स्थान—नेग्हपथी दि० जैन मन्दिर नैस्पता।

विशेष-इसका नाम समयसार नाटक भी दिया है। प्रति संस्कृत टीका गहित है।

२२७०. प्रति सं० ३ । पत्रस० १०७ । या० १२ ४ ४ इच । ते० काल 🗴 । पूर्गा। बेष्टत सं० १६८/२२७ । प्राप्ति स्थाने—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रत्याप्रन्य श्लोक स० ४५०० । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२२७१. समयसार कलशा—श्रम्तचन्द्राचार्य। पत्रसं॰ ६१। प्रा॰ ११ $\frac{3}{7}$   $\times$  ५ इंच । माचा—संस्कृत। विषय—प्रध्यास । रक्तान  $\times$ । ने॰कान  $\times$ । प्रपूर्त। वेष्टनसं॰ ४६२। प्रास्ति स्वान—प्रद्राकीय दि॰ जैन मन्दिर, अजमेर।

**२२७२. प्रतिसं०२।** पत्रस०२१। ग्रा०१० $\frac{5}{7} \times \frac{1}{7}$  इच्च। ले०काल स०१६०१ वैद्याल सुदी६। वेष्टुत स०१६४। **प्राप्ति स्थान**—भटारकीय दि० जैन मन्दिर, प्रजमेर।

२२७३. प्रति सं० ३ । पत्रस० १२ । ब्रा०१०×४ः} इला । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टनसं०२४१-१०१ । प्राप्तिस्थान-—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वंगरपूर ।

विशेष---प्रति टब्बा टीका सहित है।

**२२७४. प्रति सं० ४।** पत्रस० ३३। म्रा०११ × ५१ इश्व । लेक्काल × । मपूर्ण । वेष्टुतसं०१२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रवनाल उदयपुर।

विशेष---पत्र १६ तक हिन्दी में अर्थ भी है। ३३ से आगे के पत्र नहीं है।

२२७५. प्रति स०५ । पत्र स०७६ । ब्रा० ८ है ४ ५ है इस्त्राले काल ४ । पूर्णा विष्टत स०२४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर ग्रुप्रवाल उदयपुर ।

विशेष--प्रति टब्बा टीका सहित है।

२२७६. प्रति स०६। पत्रस०१४। म्रा०१३imes४३ । ने० कालimes। म्रपूर्णः। वे० स०४३४। प्राप्ति स्थान—स्भवनाय दि० जैन मदिर उदयपुरः।

२२७७. प्रतिसं० ७ । पत्रम० १०१ । बा० १८ ४ इन्त्र । लेक्काल 🗴 । ब्रप्म । वेष्टनस० ३१२/२१८ । प्राप्ति स्थान—समवनाथ वि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति बहुत प्राचीन है। पत्र माटे है।

२२७६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३६ । आर० ११ × ५१ इ.च.। ले०काल स० १७१६ । पूर्ण। बेष्टन स० २६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मस्टिर नेयह पथी दीसा।

२२७६. प्रतिसं० द । पनम० द६ । ले॰कान $\times$ । पूर्म । वेष्टन स० २१३ । प्रास्तिस्थान-दि० जैन पवायनी मन्दिर भरतपुर ।

२२६०, प्रतिसं**० ६**। पत्रस० २७। ग्रा० १० १४५ हुन्छ । ले०काल स० १६५० वैशाख बुदी ७। बे<u>ट</u>न स० ३६। प्रास्टित **स्थान** — दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

२२**८१. प्रतिसं० १०** । पत्रस० ५७ । ग्रा० १० 🗆 ४ इश्व । ले०काल 🗙 । पूर्ण । **वेष्टु**नसं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मन्दिर पचायती दुनी (टोक) ।

२२६२. प्रतिसं० ११ । पत्र स०६७ । ग्रा० ११ $\times$  $^{\vee}$  हुच । ले०काल  $-\times$  । ग्रपूर्ण । वेष्टन स०६६ । प्राप्ति स्थान -दि० जैन प्रतिस् कोरुशों वा नेगावा ।

विशेष—४४६ श्लोक तक है। प्राकृत मूल भी दिया हुन्ना है।

२२८३. प्रतिसं० १२ । पत्र स ४१ । ग्रा० १०×६ है इश्व । ले०काल स० १६४६ कार्तिकी ७ । पूर्यो । बेफ्टन स० ६८ । प्राप्ति स्थान—तेरहपयी दि० जैन मन्दिर नैरावा ।

विशेष--नैनपुर मे प्रतिलिपि की गयी।

२२ सर्थ. प्रति सं०१३ । पत्र सं०१४ । प्रा०१०×४ इ.च.। ले०काल स० १६३४ मादवा बुदी ४ । पूर्णः । बेष्टन सं०३४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रथिनन्दन स्वामी वृदी । २२ स्ट. **अस्तर्स० १**४ । पत्रसं० २३ । बा०१३ × ४३ इ.च । ले०काल × । ब्रपूर्ण । वेष्टनसं०७० । **प्राप्ति स्थात** — दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

विशेष-डीका का नाम तत्वार्थ दीपिका है ।

२२८६ समयसार कलशा टोका — निस्य विजय । पत्रसं० १३२ । प्रा० १२ $\times$ ५ $^1$ १ इंग । भाषा — सस्कृत । विषय — सन्यास्म । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १३१ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष - अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

इति श्री समयसार समाप्त ।। कुंदकु दाचार्ये प्राकृत ग्रथ रूप मदिर कृत समयसार शास्त्रसम् मद्या भ्रमत चन्द्रे ए। सस्कृत रूप कलकः कृतस्तस्य मदिरोपरि ।

> नित्य विजय नामाह भाव सारस्य टिप्पर्गा । ग्रानन्द राम संजस्य वाचनाव्यलीलिखम ।

प्रारम्भिक-

सिद्धान्नत्वानिसानीद मर्थ सारस्य टिप्परा । ग्रारादिराम सजस्य वाचनाय व शद्धये ॥

प्रति टब्बा टीका सहित है।

२२८७. समयसार टीका (ब्रध्यात्म तर्रागिगो)—म० शुनचन्द्र । पत्रम० १३० । ब्रा०१० $\times$ ४ $\frac{1}{7}$  इव । भाषा—सस्कृत । विषय—प्रध्यात्म । र०काल स० ११७३ झालोज सुत्तै ४ । ले०काल सं०१७६४ । पुर्गु । केप्टन स० २८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

## विशेष--

प्रारंभ-प्राटिभाग-

शुद्धं सच्चिद्दं भव्याबुजचन्द्रममृत मकलक । ज्ञानाभूप वादे सर्व विभाव स्वभाव सयुक्तं । १ ॥ सुधाचन्द्रमुं ने वीक्या पद्यारयुद्ध्य रम्मारिए । विवस्पोमि भक्तितोह चिद्वं पे रक्त चित्तम्ब । २ ॥

## ग्रन्तभाग-

जयतु जित विपक्षः पालिनाशैयणिष्यो
विदित्त निज म्यतत्वरचोदितानेक सत्व ॥
अमुत्रवियुप्तीणः कुंदकुदो गर्गेणः ॥
श्रृत्तपुत्रनिज्ञाः कुंदकुदो गर्गेणः ॥
श्रृत्तपुत्रनिवादः माद्रियदायिवादः ॥ १ ॥
सम्पक् समार वस्तीवत्रय-विद्यन्तेमत्तमातगमानी ॥
पृष्पतायोभकुम्मोद् गमन करत कुष्ठ कष्टीरवारिः ॥
विद्वद्विद्याविनोदा कलित मित रहो मोहतामस्य सार्या ॥१॥
विद्वपोद्यापिक्वता विदित्त सुभ्यतिक्षान् भूषस्तु भूषातः ॥ २ ॥
विजयकोति यतिकाति विमत्त भीति वरोशृति वारकः ॥
व्यप्तात्रास्त मादति विता पर वादिकः ॥ ३ ॥

१. गुरुविवृत धर्म चुरीद वृत्तिधारक : ऐसा भी पाठ है।

शिष्य स्तस्य विशिष्ट शास्त्र विशयः ससार भीताशयो । भावामाव विषेक वार्रिष्ठ तरत् स्याद्वार् विद्यानिषः ॥ श्रीमान्यामाव विषेक वार्रिष्ठ तरत् स्याद्वार् विद्यानिषः ॥ श्रीमान्य्यान्य व्याप्ता व्याप्ता । श्रीमान्य्यान्य स्थान्य विद्यान्य स्थान्य स्थान

इति श्री कुमसद्भुम मूलोन्मूलनमहानिर्भरेगो श्रीमदध्यात्मतरिंगगी टीका । म.० १७६५ वर्षे पोष वदा १ शनौ । लिखिता ।

२२८८ समयक्षार टीका (ग्रात्मस्याति)—ग्रम्तचन्द्राचार्य । पत्रतः १११ । प्रार् १० $\frac{3}{5}$ ८% २७ । भाषा—प्राृत मन्त्रतः विषय—ग्रध्यात्म । र० काल  $\times$ । वेश्काल म० १४६३ मगमिर वृदी १२ । पूर्णे । वेहन मं० १८ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--- यन्यायन्य मै० ४५०० है।

## लेखक प्रशस्ति-

स्वित्त श्री सवन् १४६३ वर्षे मार्गकृरण त्रयोदय्या मोमवासरे अग्रोह श्री कानवी नगरे समस्त राजावली समास्त्रत विनिजितारियली प्रवक्ष महाराजावित्राज गुरुवाग् श्री महसूदसाहि विजयराज्य प्रवक्ष मार्ग प्रवाद प्रवाद प्रवाद प्रवाद मार्ग प्रवाद मार्ग प्रवाद मार्ग प्रवाद प्रवाद प्रवाद प्रवाद प्रवह मार्ग प्रवाद मार्ग प्रवाद मार्ग प्रवाद मार्ग प्रवाद मार्ग प्रवाद प्रवाद प्रवाद मार्ग प्रवाद प्रवाद मार्ग प्रवाद प्रवाद प्रवाद प्रवाद प्रवाद मार्ग प्रवाद प्रवाद प्रवाद प्रवाद मार्ग प्रवाद प्रवाद प्रवाद प्रवाद प्रवाद प्रवाद प्रवाद मार्ग प्रवाद मार्ग मार्ग प्रवाद मार्ग मार्

लिखाप्य ससार समुद्रो तारएगार्थे दुरितदुष्ट्र विध्वस नार्थ ज्ञानावरएगद्यपुत कर्मक्षयार्थ श्री धर्महेतोः सुगुरोः धर्मचन्द्र देवेभ्य. पुस्तकदान दत्तं ।

२२८६. प्रति स० २ । पत्रस० १७१ । आ० १२ x x हे इन्ता लेब्काल स० १७३७ आषाढ सदी १२ । पर्गा । वेष्ट्रन स० २४० । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२२६०. प्रति स० ३ । पत्रस० १२६ । ग्रा० ११३ x ४ इञ्च । ले०काल स० १४७४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१६४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रतिलिपि रोहितक ग्राम में हुई। श्री हेमराजजी के लिये प्रतिलिपि की गई।

श्चित्स-विशास कुल मडन हेमराज सोय चिरजीवत पुत्र पौत्री। तद्यर्थं मेतल्लिखितं च पुस्त दानव्य मे तद्धि दुले प्रयत्नात् ।।

२२६१. प्रति सं० ४ । पत्र स० १४३ । ले०काल स० १६४८ माघ सदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०

१६५ । पारित स्थान --हि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

श्री मुलसवे भारती गच्छे बलात्कार म० विद्यानद्यास्ताये श्री मल्लिभूषण्देवा त० प० भ० श्री लक्ष्मीचन्द्र देवा तरपट्टे श्री भ्रभय चन्द्र देवा तरपट्टे भ० श्री रत्नकीति तद्गुरु भ्राना बहा श्री कल्याग्सागर-स्येद पुस्तक काकुस्थपुरे विकिथेत नीत मृतकरीये देवनीत अर्गलपुरस्थ कल्यागा मागरेगा पडित स्वामाय पटलं पठाणाय ।

२२६२. प्रतिसं**० ४** । पत्रस० १६६ । भ्रा० १२ × ५ इन्ह्या ले ब्लाल × । वेष्ट्रनस० २४६ । प्राप्ति स्थान--वि॰ जैन भग्नवाल मन्दिर उदयपुर ।

२२६३. प्रतिसंo ६ । पथस० १४३ । ग्रा० १०२ × ४% डब्ब । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । बेष्ट्रनस० ६ ५ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

२२**६४. प्रतिसं०७ ।** पत्र स०१४३ । आ०१०५ ४६ दखा ले० काल म०१७८८ वैशाख वदी ११। पूर्ण । वेप्टन सा० १३/२५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सीगास्ती करौली ।

२२६४. प्रति सं० ८। पत्रस० ११२ । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । बेप्टनस०४० । प्राप्ति स्थान---नेरहपथी दि० जैन मदिर बसवा ।

२२६६. प्रति स० १ । पत्रस० १६४ । ग्रा० १० हे 🗙 ४ है इ.च । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १४० । प्राप्तिः स्थान-दि० जैन मन्दिर श्रादिनाथ बुदी ।

२२६७. प्रति स० १०। पत्रस० १६। ग्रा० ११ × ५ इच । ले०काल स० १७३६। पूर्ण । वेष्टन स०६० । आदिह स्थान--दि० जैन मदिर श्रीभनन्दनस् वामी, बुदी ।

विशेष—इस टीका का नाम धात्मस्थाति है । लवाग मे धा० ज्ञानकीति ने प्रतिलिपि की ।

२३६८. प्रति सं० ११ । पत्रस० १३२ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २६४ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन प्वायती मदिर मरतपुर ।

विशेष - तात्पर्य वृत्ति सहित है।

२२६६. प्रतिसं० १२ । पत्रस० २०२ । भाषा-संस्कृत । विषय-प्राध्यातम । र०काल 🗴 । ले॰ काल स॰ १४४० । पूर्ण । वेष्टन स॰ १ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष -- तात्पर्यं वृत्ति सहित है।

प्रशस्ति— सवत् १४४० वयं जैत्र सुदी १० सोमवासरे षद्योह योगिनिपुर पेरोजसाहि राज्यप्रवर्तमाने स्त्री जिसलेत श्री धर्मसेन भावसेन सहस्रकीतिदेशः तरुजीवनगरे श्री श्रीष्ट्र कुलान्वये गर्गगोत्रे साह पत्रा गच्छे ...... तेना समयमार ब्रह्मदेव टीका कर्ता मृतकर्ता श्री कुन्कुन्दाचार्यदेव विरक्षित लिखाप्य सहस्रकीति साचार्य भवतः ।

२३००. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० २३ । प्रा० १४ × ५ै; इश्व । ले०काल × । पूर्णं। वेष्टनसं० २९–६३ । प्राप्ति स्थान दि० जैन सदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

२३०१. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ५० । घा० ११ × ४ इव्य । ले०काल स० १६०७ सावरा *बुदी* ६। पूर्या । वेष्टन स० २३४ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

बिरोष प्रशस्ति—सवन् १६०७ वर्षे सावणा बुदि ६ खक नाम गगरे पातिसाहि ग्रेलेमिसाहि राज्ये प्रवर्तमाने श्री शातिनाय जिन चैट्यालये श्री मुलसबे नवाम्नाये बलात्कार गुरो सरस्वती गुच्छे ....................

२३०२. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ६३ । ब्रा० ११ $\frac{5}{4} \times$ ५ इञ्च । ले०काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेकृतसं० ११ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर, प्रादिनाय बुदी ।

२३०३. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ६८ । बा० १२ × ५ है इंच । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ४४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन घणवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रतिपत्र १० पक्ति एव प्रति पक्ति शक्षर ३७ हैं।

प्रति प्राचीन है।

२३०४ प्रतिसं०१७ । पत्रस०१६७ । बा०११ x ४ है इञ्च । ले० काल x । सपूर्ण। वेष्टनसं०५०१ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष—प्रतिस पृष्ठ नही है पाढेराजमल्ल कृत टीका एवं पं वनारसीदास कृत नाटक समयसार के पदा भी है।

२३०५. समयसार बृत्ति—प्रभाजन्द । पत्रस॰ ६५ । घ्रा॰ १२ $\frac{1}{2}$  ×  $\frac{1}{2}$  ह्रख । साथा—संस्कृत । विषय—अध्याग्म । र०कारा × । ले०काल स॰ १६०२ मगमिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं॰ १९०२ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२३०६. समयसार टीका—म० देवेन्द्रकीर्ति । पत्रसं० १५ । मा०  $-\frac{1}{5}\times$ ४ इवा । माषा—सस्कृत । विषय-मध्यान्म । र०काल स० १७५८ भारवा मुदी १४ । लेकाल स० १८०४ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेटन स० ३१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रिभनन्दन स्वामी बुन्दी ।

खिशेख—आं कुन्दकुन्द के समयसार पर आमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्त्त की यह टीका है जो प्रथम बार उपलब्ध हुई है।

प्रशस्ति--

वास्त्रपट युक्त सप्तेन्द्र युते वर्षे मनोहरे, शुक्ने मादपदेमासे चतुर्देश्यां शुभे तिषौ । ईसरदेति सद्ग्रामे टीकेयं पूर्णतामिता । भट्टारक जगत्कीत्ति पट्टे वेवेन्द्रकीत्तिमा ॥२॥ दुः कम्महानये शिष्य मनोहर गिराकृता ।

टीका समयसारस्य सुगमा तत्ववोधिनी ॥३॥

बुद्धिमद्भिः बुद्धैः हास्यं कर्त्तव्यंनो विवेकभिः।

शोधनीय प्रयत्नेन यतो विस्तारता वृजेन् ।।४।। बुधैः सपाट्यमान च वाच्यमानं श्रत सदा ।

शास्त्रमेतळूम कारि चिर सतिष्टताभूवि ॥ ॥।

पुज्यदेवेन्द्रकीत्ति सन्निष्येगा स्वात हारिगा ।

नाम्नेय लिखिता स्वहस्तेन स्वबुद्धये ॥६॥

सवत्तरे बनुनाग मुनींद्र द्रमिते १७०८ भादमासे णुक्त पक्ष चतुरंगी तिथी इनरदा नगरे श्रीरिक श्री सजीतसिंहजी राज्य प्रवर्तमाने श्री चन्द्रप्रम चैत्यालये ""। मट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीतितेनेसं समस्सार टीका स्वीक्रस्य मनोहर कमनाद् पठनाय तत्त्ववीक्षिनी सुगमा निज बुद्ध्या पूर्व टीका भवनोक्य निहिता बुद्धि मद्भि क्षोधनीया प्रमादाद्वा धल्यबुद्धया यत्र होनाधिक मवेत् तद्वोधनीय समोभवीत् श्रीजन प्रत्यक्षते।

सवन् सरेन्द्रसमु गून्यवेदपुढे १८०४ युते वर्षे वैद्याल माने गुक्तपक्षे त्रयोदस्या चढ्रवारे चन्द्रप्रम चैत्यालये पढितोत्तमपढित श्री चोजचन्दत्री तत् शिष्य रामचन्द्रेगः टीका लिनितेय स्वपटनार्थं फिलडी नगरे बाचकानां पाटकाना मगनावत्ती संबोभवतु ॥

२३०७ समयसार प्रकरण्—प्रतिबोध । पत्र स० ६ । धा० १०३ ४४३ इन्छ । आपा— प्राकृत । विषय —ग्रध्याम । र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १७७/४८ । प्राप्तिःस्यान— पार्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दराख (कोटा) ।

.. **२३०८. समसार भाषा टीका—राजमल्ल ।** पत्र म० २६८ । प्रा० १०३/४४ है इश्व । भाषा—हिन्दी (गढा) । विषय—सध्यारम । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन म० १२० । प्रास्ति स्थान-म० दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

**विशेष---**हिन्दी टब्बा टीका है ।

**२३०६. प्रतिसं०२ ।** पत्र स०१७६ । ग्रा०१२×७ इञ्च । ले० कात्र स०१६०७ वैज्ञाला **ग्रुटी १२ ।** पूर्णा वेष्टन स०२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौघरियान मानशुरा (टोक)

विशेष-ग्रकवराबाद (ग्रागरा) मे प्रतिलिपि हुई।

२३१०. प्रति स० ३ । पत्रसं०२१०। ग्रा०११४४ १ हुँ इचा। ले०काल स०१७२४, भादवा सद्भी १। प्रस्तां। बेष्टुन स०२६७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान जीकामा।

२३**११. प्रतिसं० ४।** पत्र सं० २१४। आ० १९०४४ ६ इ.च.। ले० काल 🗴 । पूर्यो । बेहन स**० ११५ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२३१२. प्रति सं०५ । पत्रस $\circ$  १३ । घा $\circ$  १ $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इश्व । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  ३० । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मंदिर घादिनाथ बूदी ।

२३१३. प्रति सं०६। पत्र स० ५७-२६४। झा०६१ 🗶 ६ इच्छा। ले० काल 🗴 । सपूर्ण। वेष्टन सं०१८६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बूदी। **२३१४. प्रति सं०७।** पत्र स०२३७। ग्रा० १३ $\times$ ७ $^{3}$  इश्वः। ले० काल स०१ = ६= ग्रायाद बुदी १०। पूर्णं। बेष्टन स०६०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचावती मन्दिर कामा।

विशेष--कामा मे प्रतिलिपि हुई।

२३१४. प्रतिसं० म । पत्रस०१४५ । घा०११ $^2_1 imes ^2_5$  इञ्च । ले० काल स०१७४० । पूर्ण । बेहुत स०१६१ प्राप्ति स्थान—दि० जैन घष्टवाल मदिर उदयप्र ।

२३१६. समयसार टीकर—  $\times$  । पत्र स॰ २५ । आपा—सस्कृत । विषय—प्रध्यात्म । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण् । वेष्टन स॰ ५१ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मंदिर तेरहपंथी नैगावा ।

२३**१७. समयसार भाषा—जयजन्द छाबडा।** पत्र सन्या ४९८। प्रा०१९ ४ ७, इन्दा। भाषा-हिन्दी गद्य (वृडारी)। विषय-ग्रध्यात्म । र०काल स०१८६४ कात्तिक बुरी १०। ले०काल सं०१६१६ कानुरा बुदी २। पूर्ण। वेष्टन म०२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर)।

विशेष-- महानन्द के पुत्र रामदयाल ने स॰ १६१३ भादवा सुदी १४ को मदिर मे चढाया था।

२३१८. प्रति स० २ । पत्र स० ३३६ । प्रा० १२०  $\times$  ७३ इचा । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२३१६. प्रति स० ३ । पत्रस० ३६० । ग्रा० ११×६ इच । ले०काल स० १⊏६६ पौष कुदी १ । पूर्ण । बेट्न म० ७३–१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष --बल्यतलाल तेरहपथी ने कालराम से प्रतिलिपि करवाई।

२३२०. प्रति सं० ४ । पत्र स० १६६ । द्या० १२१ × ६ इला। ते० काल स० १६७६ वैशाल वृदी १०। पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६०। प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करीली।

विशेष--- बस्तराम जगराम तथा मूसेराम की प्रेरणा से गुमानीराम ने करौली मे प्रतिलिपि की ।

२३२१. प्रतिसं० ४ । पत्रस०२६६ । ले॰काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२४ । श्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - भरतपुर नगर में लिखा गया।

२३२२. प्रतिसं०६। पत्र म०२६४। ले०काल स०१८७४।पूर्णं। वेष्टन स० ४२६। प्राप्ति स्थान—दि० कैन पत्रायती मदिर मरनपुर।

२३२२. प्रति सं०७। पत्र स०२४७ । ग्रा०११ 🗴 ७ ॄै इच्चाले० काल स०१८७६ माह् मुदी ६ । पूर्णु । बेष्टुन स०८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल प्वायती मदिर प्रलवर ।

विशेष -- जयपूर मे प्रतिलिप हुई।

२३२४. प्रतिसं० द। पत्र स०३१६ । ग्रा०१४ × ७२ इ.च. । ले० काल स०१६४३ माघ सुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स०७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर झलवर ।

२३२४. प्रति स०६। पत्रस० ३७२। ग्रा० १३ 🗴 ४ इश्वः। ले०काल 🗴 । पूर्सं। वेष्टतसं० ८६। प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२३२६. प्रतिसंग् १०। पत्रसः ३८७ । मा० १२३४ ५३ इच । लेक्सल सः १६४४ । पूर्ण । बेष्टन सः =१/१। प्राप्ति स्थान-पार्धनाथ दि० जेन मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा) विशेष — मांगीलालजी जिनदासजी इन्दरगढवालों ने सवाई जयपुर मे जैन पाटसाला, जिल्प कम्पनी बाजार (मिएाहरों का रास्ता) में मारफत भोलीलालजी सेठी के स० १६४४ मे यह प्रति लिखाई। लिखाई में पारियमिक के ३२॥। = )।। सले थे।

२३२७. प्रति सं० ११। पत्रस० २४४। प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  द दश्व । पूर्ण । वेष्टन स० ६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर दृती (टोक)

विशेष-पत्र सं० १-१५० एक तरह की तथा १५१-२४४ दसरी प्रकार की लिपि है।

२३२६. समयसार माथा—रूपचन्द । पत्र स० २२२ । आ० १२  $\times$  १ $^{\circ}$  इश्व । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) । विषय —प्रध्यात्म । र०काल स० १७०० । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४७ । प्राप्ति स्थान – तेरहपयी दि० जैन मिंदर नैस्त्वा ।

विशेष - महाकवि बनारसीदास कृत सभयसार नाटक की हिन्दी गद्य मे टीका है।

**२३२६. प्रति सं० २ । पत्रसं० ३११** । प्रा० १० १ × ४ है इश्व । ले०काल स० १७३५ सावस्य **बुदी ५** । पूर्यो । वेष्टन स**० ६७ । प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर दृन्दरगढ (कोटा)

विशेष-ग्रागरा में भगवतीदास पोलाड ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की ।

**२३३०. प्रति सं० ३ ।** पत्रस० १७३ । ब्रा०१०१४३१ इञ्च । ले॰काल स०१७६४ **वैकास बुदी १** । पूर्ण । बेष्टन सं० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

२३३१. समयसार नाटक-बनारसीदास । पत्र मं०१११ । छा० ६ २४१ । आग ६ २४१ । आग - १४१ । आग - १४१ । मामा-हिन्दी (पदा) । विषय-प्रध्यास्म । र०काल स०१६६३ प्रामोज मुदी १३। लेकाल × । पूर्ण । वेष्ट्रनंसं०१०६३ । प्रास्ति स्थान-भ०दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

२३३२. प्रति सं०२ । पत्र स०१४२ । बा० ६३ १८ ४ दञ्च । ले०काल ८ । पूर्णे । बेष्टुन सं०१४८६ । प्राप्ति स्थान— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

ं २३३३. प्रति स०३ । पत्रस० २३४ । ब्रा० १११ँ ४ १ । इल्ब । ले० काल х । पूर्ण । बेहन स०६३ । प्राप्ति स्थान — महास्कीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२३३४, प्रति स०४ । पत्रस०६६ । घा०६४६ इ.च. । ले० काल म०१७३३ । बेप्टन सं०१४०० । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--(गुटका स० २७६)

**२३३५. प्रति स०५ ।** पत्र स०१०६ । प्रा०७×५ै इच्च । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स०७६१ । **प्राप्ति स्थान**— महारकीय दि०जैन मन्दिर धजमेर ।

**२३३६. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस**० १०२** । ले०काल म० १८६८ । पूर्णः । वेष्टनसं० २३ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

२३३७. प्रतिसं० ७ । पत्र सं०१४६ से २३०। घा० १०३ x ४ इला। लेक्काल स०१८१२ । पूर्या वेष्ट्रन स०३४-२०। प्राप्तिस्**रमान**--- दि० जैन मदिर कोटडियो का हुगरपुर।

विशेष-बह्य विलास तथा समयसार नाटक एक ही गुटके मे हैं।

ं २३३६. प्रति संभ्दा पत्रसम्बर्धः । प्राव्हः २४६ ६३ इञ्चातेन्कालसंव १८८० । पूर्वः । बेष्टनसंव १०२-४० । प्राप्ति स्थान— दिव्जीन मदिरकोटिश्यों का हुंगरपुर। **२३३९. प्रति सं**० १ । पत्र सं० ४२ । आ० ५ $\times$  ६ $^1_{\gamma}$  इन्छ । लेक्काल सं० १५६४ ।पूर्ण । वेष्टन स० १३२-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरपुर ।

विशेष-४२ पत्र के बाद कुछ पत्रों में कबीर साहब तथा निरजन की गोष्टि दी हुई है।

२३४०. प्रतिसं० १०। पत्र स०१४०। म्रा०७×४१६च। लेखन काल स०१६०४। पूर्या। वेष्टन स०१३५-६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सदिर कोटडियों का हंगरपुर।

**२३४१. प्रति सं० १०**। पत्र सं० १०। ब्रा० ६५ै ×  $\chi^2_1$  इचा लेक काल  $\times$ । ब्रपूर्ण। वेष्टन सं० २१०- द $\times$ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष — १० से धारो पत्र नही है।

२३४२. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ६६ । ग्रा० १० ४५ इध्व । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० ४ । प्राप्तिस स्थान—दि० जैन मदिर ग्रग्रवाल उदयपुर ।

**२३४३. प्रतिसं० १२** । पत्र सं० ६२ । प्रा० १० $\times$ ४ इन्छ । ले० काल सं० १७२३ मादवा सुदी ११ । पूर्ण । वेष्ट्रन स ४१ । **प्राप्ति स्थान**—प्रग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति पत्र ११ पक्ति एव प्रति पक्ति ३३ श्रक्षर है।

स्रोखरानगर मे प्रतिलिपि हई।

२३४४. प्रति सं० १३ । पत्रस० ७३ । ऋा० ११४४१ इन्छ । ले०कान स० १७६६ । पूर्ण । वेट्टन स० ७४ । प्राप्ति स्थान — सम्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२३४५. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १६६ । झा० ११×७ इञ्च । ले०काल स० १७२८ । पूर्ण । बेष्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अपवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति टब्या टीका सहित है। (हिन्दी गद्य टीका)

२३४६. प्रतिसं०१४ । पत्र म० ८६ । ग्रा०१०४४ इ-ख ले०काल । पूर्णं । बेप्टन स० १६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**विशेष**—बनारसी विलास के भी पाठ है।

२३४७. प्रतिसं० १६ । पत्र स० १२४ । ग्रा० म ४६३ डचा । ले०काल स० १७४६ कार्त्तिक सुदी ११ । पूर्णः । बेष्टनस० २६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन भग्नवाल मन्दिर उदयपुर ।

(गुटकाकार न०१२)

२३४८. प्रति सं० १७ । पत्र स० ४६ । घा० ११ × ४३ इञ्च । ले० काल ४ । स्रपूर्णं । वेक्नसं० १०६ । प्राप्ति स्थान – खण्डेलवाल दि० जैन मदिर उदनपुर ।

२३४६. प्रतिसं० १८ । पत्र स० १७४ । आ० १११ै × ७१ै इचा । ले० काल स० १६२६ । पूर्णा वेष्टन स० ⊏८ । प्रास्ति स्थान—खडेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर । ∵

**२३५०. प्रतिसं० १८** । पत्र स० ३-६७ । आ० १० $\times$ ४  $\frac{1}{4}$  इ.च. । ते० काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टुन सं० १८२ । प्राप्ति स्थान—सण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२३४१. प्रति सं० २० । पत्र सं० ६६ । बा० १०३ ४ ६ इला '। ने० काल सं० १८६३ सावस्य सुदी द । पूर्स । बेष्टन सं० द७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेक्षुर शैक्षावाटी (सीकर) । विशेष---सरावगी लिखमीचंद ने लिखाया तथा भादवा सुदी १४ स० १८६३ में बतोद्यापन पर फतेपुर के मदिर में चढ़ाया।

**२३५२. प्रति सं० २१।** पत्र सं० १३०। प्रा० १४ $\times$  क $^{2}_{7}$  इस्त्र । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १३६। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर) ।

विशेष-प॰ हीरालाल जॅन ने बाबुलाल ग्रागरे वालो से प्रतिलिपि कराई।

**२३५३. प्रक्ति सं० २२ ।** पत्र स० ४० । ग्रा० १२ $\frac{1}{2}$   $\times$  ७ इञ्च । ले० काल स० १६१४ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २१ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर मेलावाटी (सीकर) ।

विशेष---प्रति सुन्दर है।

२३५४. प्रति स० २३ । पत्रस० ७० । झा० १३ imes ६ इश्वः । लेक्सल—स० १६१६ पौष वदी १३ । पूर्णः । वेष्टनस० ३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर क्तेष्टपुर पेखावाटी (सीकर) ।

विशेष-व्यास सिवलाल ने जे गोविन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

२३५५. प्रति सं० २४ । पत्रतः १८० । ग्रा० १ $\times$ ६ इसः । ले० काल—स० १७४८ काती बुरी १२ । पूर्णं । बेष्टनसं०—१०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जन मन्दिर मादवा (राज०) ।

विशेष-जोबनेर मे प्रतिलिपि हुई ।

२३५६. प्रति सं०२४ । पत्रस०२२१ । ग्रा०१२३ ४ ६ इ.ख. । ने० कास— स०१८५७ कात्तिक बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं०—३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष-चिमनलाल तेरहतथी ने प्रतिलिपि की ।

**२३५८. प्रति स० २७** । पत्र स० १३७ । प्रा० ६ $\frac{9}{8} \times 4\frac{9}{8}$  हजा । ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पत्रायती मन्दिर करौली ।

**२३५६. प्रति सं० २८ ।** पत्र स० ३--३६६ । ब्रा० १२ $\times$ ५९  $^{\circ}$ १९७। ले०क(स $--\times$  । **प्रपू**र्ण । बेष्टन स०६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टीबान चेननदान पुरानी डीग ।

विशेष -- ग्रमृतचन्द्र कृत कलशा तथा राजमल्ल कृत हिन्दी टीका सहित है। पत्र जीएं है।

२३६०. **प्रति सं०२६** । पत्रस०६० । ग्रा०१० 🗙 ५ इञ्च । ले० काल 🗴 । अपूर्णः । वेष्टनस०१६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२३६१. प्रति सं० ३०। पत्रस० ७६ । ले० काल स०१६६७ ज्येग्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स०२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी, कामा।

२३६२. प्रति सं० ३१। पत्र स० ६-१४४ । ध्रा०६  $\times$  ४ इश्व । ले० काल $\leftarrow$   $\times$  । श्रपुर्ए । वे० म० २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२३६२. प्रतिसं० ३२ । पत्र स० २०६ । ब्रा० ११ $\frac{1}{6} \times \mathbb{R}^2$  इश्वः । ले०कास स० १०६४ व्यवस्य सुरी ११ । पूर्ण । वे० स०३५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-रिष्मुदास कासलीवाल के पुत्र ने कामा में प्रतिलिपि कराई।

्रेड्रिंस् प्रति सं० ३३ १ पत्रसं० १६४ । मा० १२३ ४६ इर्जा । लेक्काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

२३६४. प्रतिसं० ३४। पत्रसं० ७३। ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पदिर डीवानजी कामा ।

े २३६६. प्रति सं० ३४.। पत्रस० १०३ । से०काल सं० १७२१ जासोज सुदी६। पूर्ण। वेष्टन स० २६८ क । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२३६७. प्रति सं० ३६ । पत्र स० ६३ । घा० १०imes६ $^2_{
m c}$  इंच्या । ले•काल स० १८६८ । पूर्ण । बेष्टन स० २३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

विशेष--जोधराज कामजीवाल ने प्रतिलिपि करायी थी।

२३६८. प्रतिसं० ३७ । पत्रस० १०६ । प्रा० १० ४६ ६ ६ अ । लेक्काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रत स० ८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

**२३६६ प्रतिसं०३६ ।** पत्रस० ३४७ । ले॰काल सं०१७४२ सावरण सुरी३ । पूर्ण। वेष्टुनसं०६६ । **प्राप्तिः, स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष-पहिले प्राकृत मूल, फिर सस्कृत तथा पीछे हिन्दी पद्मार्थ है।

पत्र जीर्गशीर्गग्रवस्थामे है।

२३७०. प्रति सं० ३६ । पत्र स० ६० । प्रा० १२ $\frac{3}{4} \times \xi^3$  इश्व । ले०काल—  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म० १४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

२३७१. प्रति सं०४० । पत्र स० १२३ । आ०६४५<sup>3</sup> इच्च । ले०काल स०१७४८ माघ बुदी १० । पूर्ण । बेपुन म०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती बयाना ।

विशेष—भगमपुर में मवानीदास ने प्रतिनिधि की थी। १२३ पत्र के छागे २१ पछों में बनारसीदास कृत सुक्ति मुक्तावली भाषा है।

२३७२. प्रति सं० ४१ । पत्रस० ୬७ ।ले॰काल म० १८५४ पूर्ण । वेष्टनस०१७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जंन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष-- वयाना मे प्रतिलिपि हुई।

ं **२३७३. प्रतिसं**० ४२ । पत्रसः०—७० । लेखन काल सं० १६२६ फागुस सुदी २ । पूर्स । बेस्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती बयाना ।

विशेष--श्री ठाकुरचन्द मिश्र ने माधीसह जी के पठनाथं प्रतिलिपि करवायी तथा स० १६३२ में मदिर में चढाया।

ं २२७४: प्रतिसं० ४२ । पत्र सच्या—४१ । ले॰काल imes । पूर्णं । वेष्टन स० २१० । प्राप्ति स्वान—दि० जैन मन्दिर पत्रायती भरतपुर ।

विशेष--जीर्ग है।

२३७४. प्रतिसं० ४४ । पत्र सं० २-४१ । ने० काल × । श्रपूर्ण । वेष्टन स० ४०३ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर पंचायतती सरतपुर । २३७६. प्रतिसं० ४५ । पत्रसं० १६२ । ले०काल सं० १८६६ पूर्ण । बेष्ट्रन सं० ४२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३७७. प्रतिसं् ४६ । पत्रस० १५ । से •काल सं० १७०३ । पूर्ण । बेष्टन सं० ५२७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती मरतपर ।

२३७६. प्रतिसं० ४७ । पत्रस० ६१ । ले०काल स० १७३३ प्रासोज बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन म० ५२२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पचायती मरतदर ।

२३७६. प्रतिसं० ४८ । पत्रस० २३ । ते०काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टन सं० ४४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३८०, प्रति स० ४६ । एवस० १५४ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २५८ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपर ।

विशेष-हिन्दी प्रथं सहित है।

२३८१. प्रति सं० ४०। पत्र सं० २२३। द्वा० १२ 🗴 ४३ इन्छ । ले०काल सं० १७३४ पौष सुदी ८। पूर्ण । बेष्टन सं० १२४। प्राप्ति स्थान—खडेलवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर अनवर ।

२३८२. प्रतिसं० ५१ । पत्र स०६०। ले॰काल स०१७७६ । प्रपूर्ण । बेष्टन स०१२६। प्राप्तिस्थान — खडेलवाल टि० जैन मन्टिर सल्वर।

विशेष-प्रतिका जीगोंद्वार किया हमा है।

२३८३. प्रतिसं० ४२ । पत्र स० ११७ । ले०काल स० १६०१ पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । प्राप्ति स्थान — खडेलवाल दि० जॅन मदिर अलवर ।

२३ **८ प्रति सं० ५**३ । पत्र स० ६३ । से•काल— × । प्रपूर्णं । बेष्टन स० १२० । **प्राप्ति** स्थान— जडेलवाल दि० जैन मन्दिर घलवर ।

२२**८**५. द्व**ति सं० ५४।** पत्रस० ६०। प्रा० ११३ $\times$ ५३ इच्च । लेक्सल  $\times$  । धपूर्ण । बेक्न सं० २३/१६१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर झलवर ।

२३८६. प्रति स० ४४। पत्र स० १४६। ग्रा०७ $\times$ ४३ हजा। ले० काल स० १६०३ पूर्ण। वेष्त स० ३८१। प्राप्तिस्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

२३८७. प्रति सं० ४६ । पत्र स० ३२-७१ । प्रा॰ ६ $\frac{3}{4}$   $\times$  ६ ६७ । ते॰काल स० १८३१ द्वितीय वैशाख बुदी ८ । स्रपूर्ण । बेष्टनसं० २०१ । प्राप्ति स्थान—दि जैन मन्दिर दबलाना (बंदी) ।

विशेष—दोलतराम चौधरी ने मनसाराम चौधरी की पुस्तक से उतारी । प्रतितिषि टोडा में हुई । २३ दम् प्रति सं० ४७ । पत्र स० ११७ । प्रा० ६×६ द्वा । ले∙काल स० १७३३ मादवा सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० ३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरह पंषी मालपुरा (टोक) ।

विशेष--- कर्णपुरा मे लिखा गया।

. २३८६. प्रति संव ४६ । पत्रसंव २-११८ । घा० ८ ४ ४६वा । लेकाल सव १८५० पीष सुदी ४। प्रपूर्ण । बेष्टन संव १०१-१३७ । **प्राप्ति स्थान**—दिव जैन मन्दिर, नेमिनाथ टोडारायीसह (टॉक) क्षे विशेष-सहजराम व्यास ने तक्षकपूर मे प्रतिलिपि की।

२३६०. प्रति सं० ५६ । पत्रस० ६८ । घा० १० ४५ इन्त्र । से०काल स०१८६१ । पूर्ण । बेष्टुन सं० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्वनाथ टोडारायसिंह (टॉक) ।

**२३.६१. प्रतिसं० ६० ।** पत्रसं० ६१ । ग्रा० ११ imes १ $rac{1}{2}$  इंच । से०काल imes । प्रपूर्ण । केष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल टोक ।

विशेष--- ग्रतिम पत्र नही है।

२३६२. प्रतिसं० ६१ । पत्रस० ६० । झा० १० 🗙 ४ इ'च । ने०काल म०१६२५ । पूर्ण । बेष्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टोक) ।

विशेष—प्रशन्नि निम्न प्रकार है। सबत् १-२४ वर्षे माह मासे कृष्ण पक्षे घष्टमी दिने बुधवारे कतु धारा यामे श्री मूलसवे सरस्वती गच्छे बनात्कार गर्णे श्री कुंदकुं दावार्यात्वयं महारक श्री १ रत्नवद्ग जी तरस्हें महारक श्री १ देववन्द जी महारक श्री १०६ धर्मवन्द जी तत क्रिया गोकलवन्द जी तत लक्ष भाता बढा मेधजी।

ग्रंथ के ऊपरी माग पर लिखा है ---

श्री रूपचन्द जी शिष्य सदामुख बाबाजी श्री विजयकीर्ति जी।

२३६३. प्रतिसं० ६२ । पत्रस० १३८ । झा० ६ imes ४६ हवा । ले० काल स० १५४० । सपूर्ण । बेष्टन स० ६८ । प्राप्टित स्थान — दि० जैन मदिर कोट्यो का मैरावा।

विशेष — प्रारंभ के २० पत्र जिनोदय सूरि इत हसराज वच्छराज चौपई (रचना स०१६००) के हैं।

२३६४. प्रतिसं० ६३ । पत्रस० ८१ । प्रा० १०३ $\times$ ६३ इञ्च । ले॰काल स० १६३३ कातिक बुदी ११ । पूर्ण । बेपून स० ३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैसाबा ।

विशेष--नैगावा मे प्रतिलिपि हुई।

२३.६.४. प्रतिसं० ६४ । पत्र स० ११६ । ग्रा० १०३ $\times$ ४ इ.च । ते०काल स० १०६६ चैत्र दुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैएवा ।

विशेष -- नैगावा नगर में चुन्नीलाल जी ने लिखवाया।

२३६६. प्रतिसं० ६५ । पत्र स० ६५ । द्या० १० $\frac{3}{2} \times 2\frac{3}{2}$  इञ्च । ले० काल स० १७३३ शासोज मुदी १४ । पुर्ण । वेग्टन म० ३५ । प्राप्ति स्थान—तेरहपत्री दि० जैन मन्दिर नैरावा ।

विशेष -- पूजा की प्रतिनिधि पडित श्री शिरोमगि्दास ने की थी।

२३९७. प्रति सं० ६६ । पत्रस० ३३७ । ग्रा० १२४७ इंच । ले० काल स० १९४३ । पूर्यो । बेष्टन स० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बूदी ।

२३८८. प्रतिसं० ६७ । पत्रस०८२ । ते०काल स०१८६२ चैत सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स०१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर स्वामी बूदी ।

२३६६. प्रति स०६ म**ा** पत्रस०१३२। घा०१०४४ इचा। ले०काल स०१८६७। पूर्ण। वेष्टनस०२०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी दूदी। **२४००. प्रति सं०६**६। पत्रसं०१४०। स्ना०११ $\times$ ७ इंच। ले० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टुनस०३६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष--हिन्दी गद्य टीका सहित है टोक नगर में लिपि की गई थी।

२४०**१. प्रति स० ७०**। पत्रस० ६–१००। म्रा० ६ $\times$ ४ इ.च.। ले०काल स० १८४४ वैशाख बदी ६। ग्रपुर्स। वेष्टन स० २२१। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रश्निनन्दन स्वामी बदी।

**२४०२. प्रति सं० ७१।** पत्रस**०** ३१। आ० ६ $\frac{7}{4}$  $\times$ ५ इच्छ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेट्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पाश्वेनाथ चौगान बुदी ।

**२४०३. प्रति स०७२**। पत्रस०६६। स्रा०६्रै ४६ है इन्हा ले०काल १८८२। प्रां। केवनस०१६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ वृदी।

**२४०४. प्रतिसं० ७३ पत्रस०** ६० । **मा॰** १२imes६ $^2$  इश्व । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन म० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाथ चौगान वृदी ।

**२४०१. प्रतिसं० ७४** । पत्र स० ८१ । प्रा० ११×५२ इश्व । ले० काल ग० १७०४ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक) ।

विशेष — सवत् १७०४ कार्तिक बुदी १३ शुक्रोबार लिख हरि जी शुभ मबतु।

**२४०६. प्रति सं० ७४ । पत्र स०**४ से ६४ । प्रा० ६ $\frac{3}{4}$  $\times$ २ $\frac{3}{4}$ इ च । ले० काल म० १५१४ कार्तिक । ब्रपूर्स । बेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर चौयरियान (मालपुरा) ।

विशेष--- ८६ से ब्रागे भक्तामर स्तोत्र है।

**२४०७. प्रति सं०७६ । पत्र स०**६६ । ब्रा०१६ दे ८ ५ इ.ख । ले०काल ४ । पूर्गा। **वेष्टुत सं०४**६६ । **प्राप्ति स्थान—दि**० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

२४०**८. प्रति सं० ७७ पत्र स० ६६**। ब्रा० ११र्डू×५ इ**श्व । भाषा**—हिन्दी । ले० काल स० १६२६ । पूर्णे । बेष्टन स० ५०३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

२४०**६. प्रतिसं० ७८ । पत्र स० १०१-**१२६ । ब्रा० १२ 📐 ५३ टखा ने ० काल १६४६ । बेष्टन स० ७५६ **। ब्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

२४१०. समाधितत्र — पूज्यपाद । पत्र स०६ । ग्रा०६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  ट्खा । भाषा सम्कृत । विषय — । योग र०काल  $\times$  । त्रे० काल  $\times$  । पूर्णा । बेष्ट्रन म० ४१५ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर, अजभेर ।

२४**११. प्रतिसं० २** पत्रस**० १**४ । ले०काल 💥 पूर्ण । बेष्टन स० २६६ । **प्राप्तिस्थान** —दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

**२४१२. समाधितंत्र भावा—पर्वतधर्मार्थी** । पत्र म०१४७ । ब्रा०१३> ६<sup>3</sup> इश्व । भाषा— हिन्दी. गुजराती । विषय—योग । र०काल ४ । ले०काल म०१७४४ फागुग बुर्दा६ । पूर्ण् । बेप्टन सं**०६९० । प्राप्ति स्थान**—भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

. **२४१३. प्रतिसं०२ ।** पत्र स०१०० । प्रा०१२१×७३ इचा । ले०काल × । प्रपूर्ण । बेष्टुल सं०११६७ । प्राप्तिस्थान—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**२४१४. प्रतिसं० ३**। पत्र स० १५८ । खा० ११ ४६ इच । ले०काल १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० २२२–६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

२४१**५. प्रतिसं** ४४ । पत्र स०१४४ । ग्रा०११ $\times$ ५ इ.च । ले०काल स०१६६ । पूर्ण । वेष्टन स०१७६ । **प्राप्ति स्थान**—प्रग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- प्रजस्ति निम्न प्रकार है---

मबन् १६६८ मे वर्ष फागुग बुदी १२ दिने श्री परतायपुर गुमस्थाने श्री नीमनाथ चैत्यालये कुट-कुदा चार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्ति तदाम्नाये भ० रामकीर्ति तत्यष्ट्रे भ० श्री पद्मनिदग्गा शिष्य ब्रह्म नागराजेन इद पुम्चक लिलिन ।

२४१६. प्रति सं० ५ । पत्रस० १८७ । स्रा० ११३ ४ ५ इ.च. । ले०काल म० १७३७ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । प्राप्ति स्थान— सम्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष --सागवाडा के ग्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिनिधि की गई थी।

२४**१७. प्रति सं० ६** । पत्र स० १७६ । प्रा० ११  $\times$  ५ इस । लेक्सल स० १७०६ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । बेष्टून म० ३१०/२२६ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन सम्भवनाय मंदिर उदयपुर ।

विशेष - ५० मागला पठनार्थ ।

२४१८. प्रति स० ७ । पत्र स० १७८ । ग्रा० ११३/४४) इचा । लेक्सल स० १८४४ । पूर्ण । बेपून स० १०६ । प्राप्ति स्थान—खण्डेलवाल दि० जैन मदिर उदयपूर ।

२४**१६. प्रति स० ६।** पत्र स० २६६। म्रा० १०३४ ५ इखा से केकाल स० १८०८। पूर्ण । वेष्टन स० १४३। **प्राप्ति स्थान** —लण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

स्वत १८०८ वर्षे शाके १६७३ प्रवर्तमाने सासोल मे सासे फायुग्यमासे शुक्लपक्षे पचमीतिथी ।

२४२०. प्रति स० ६ । पत्र स० १३१ । स्रा० १० $\times$  प्र्रै इश्व । ले०काल स० १८७५ काती सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० ८८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेहपूर शेखाबाटी (सीकर) ।

विशेष—फनेहपुर के डेडराज के पुत्र कवीराम हीराकस्पी ने प्रतिलिपि कराई । मालवा में प्रप्टा नगर है वहा पोरवार पदावनी घामीराम श्रावक ने घाटतले कुण्ड नामक गाव में प्रतिलिपि की थीं ।

**२४२१ प्रति सं०१०।** पत्र म०११३। ग्रा०१४ $\times$ ६ $\frac{1}{6}$ इच। ले॰काल १८२७ वैशाल बुदी  $\mathbb{X}$ । पूर्गा। बेप्रन म०१/६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

जोबनेर मे प्रतिलिपि की गई।

२४२२ प्रतिसं०११ । पत्र स०१८३ । ग्रा०१२ imes६ इ.खा। ले० काल स०१८०५ । पूर्गा। बेष्टन स०४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा।

विशेष--- आरतिराम दौसा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

**२४२३ प्रति सं०१२।** पत्रस०११६। घा०१२  $\times$  ६ इला। ले० काल स०१८५२ सामन बुदी २। पूर्ण। बेष्टनस०१३–३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष-हीरालाल चादवाड ने चिमनराम दौसा निवासी मे प्रतिलिपि करवाई थी।

**२४२४. प्रति सं० १३ ।** पत्र स० २०१ । घा० ६ $\frac{3}{7} \times c_0^2$  डश्व । ले०काल स० १७४८ सावन सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन स० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्राधती मन्दिर करौली ।

विशेष--रामचन्द्र बज ने साह जयराम विलाला की पोथी से मानगढ मध्ये उतरवाई।

२४२**५. प्रति स०१४ ।** पत्र सं०१३७ । घा०१२रॄं×५ॄं इच्चा ले० काल स०१६१२ । पूर्णं । बेष्टन स०३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पूरानी डीग ।

२४२६. प्रति स० १४ । पत्रस० ११३ । मा० १३imes६२६ है इच्च । ले० काल imes । पूर्ण । बेहन सं० २०७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४२७. प्रति स०१६ । पत्र स०२०१ । प्रा०१० $^3_1 imes imes^3_1 imes imes^3_1$  हुन्। ले० काल स०१६१७ । प्रार्ण। वेष्ट्रत संवान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४२६. प्रति सं० १७ । पत्रस० १३६ । ते० काल सं० १७४१ । पूर्एं । बेहृतस० ३४२ । प्रास्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-वयाना मे प्रतिलिपि हुई थी।

**२४२६. प्रति सं० १८ ।** पत्र सं० २२० । प्रा० ११ $\times$ ४ $^2_1$  दंच । ले०काल स० १७२६ । पूर्ण । बेपून स० १०० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**२४३०. प्रति सं० १६** । पत्र सं०१२ । घ्रा० १२ $\times$ ४ है इश्वा । ले० काल  $\times$  । प्रपृष्। **बेह**न सं० २६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सन्दिर दीवानजी कामा ।

२४**३१. प्रति सं० २०।** पत्र स० ३१६ । द्या०११ ४४ डब्ब । ले० काल स० १७०४ । पूर्ग्ग । बेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

**२४३२. प्रतिस०२१** । पत्र स०१३४ । म्रा०११×७३ इश्वाः ने०काल स**१८७७ म्रासोज** सुदी १३ । पूर्णः । बेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायतीकामा ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल कामा वालो ने सेढमल बोहरा भरतपुर वाले से प्रतिलिपि कराई थी । श्लोक स॰ ४५०१।

**२४३३. प्रतिसं० २२** । पत्र संख्या २०६ । स्रा० ११ $\S \times \S$  इन्ध । ले०काल स० १७३० कार्तिक वदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष—काशीराम के पठनार्थ पुस्तक की प्रतिलिपि हुई थी। प्रति जीएं है।

२४३४. प्रति सं. २३ । पत्र स० १८२ । ले०काल स० १७७४ । पूर्ण । व०स० २७० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-गुटका साइज है।

२४३५. प्रति सं. २४ । पत्र सं० २०० । ले०काल स०१७७० । पूर्ण । वं. स०४६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

**२४३६. प्रति सं० २५**। पत्र सं० १५६ । म्रा० १ $\frac{3}{7}$  $\times$ ५ $\frac{1}{7}$  इखा । ले० काल स०१६३५ । पूर्णे । वे० सं० १२६ । प्राप्ति स्थाने—वि० जैन प्रयमान पंचायती मन्दिर प्रलबर।

**२४३७. प्रति स० २६ ।** पत्रस० १८३ । प्रा० ११ $\times$ ४ इन्छ । लेक्काल सं० १८८२ प्रवाह सुदी ८ । पूर्ण । बेष्टनसं० १८/१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवायती मन्दिर ग्रलवर ।

**२४३८. प्रतिसं० २७।** पत्रस० २०६ । ग्रा० ११ imes ७ इञ्च । ले**०का**ल स० १८२३ सावस्य सुदी १ । पूर्णः । वेष्ट्रन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—साहजी श्री मोहगणरामजी ज्ञाति वयेरवाल बागडिया ने कौटा नगर में स्वयभूराम बाकलीबाल से प्रतिलिपि कराई।

२४३६. प्रति सं२६ । पत्र सं०१७२ । ग्रा०१०१४६ इ.स. । ले० काल सं०१७६१ म्राषाढ बुदी १ । पूर्णा । वे० स०१/६४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पार्थनाथ सन्दिर इत्यरगढ (कोटा) ।

विशेष - कोटा नगर मे चन्द्रभारण ने बाई नान्ही के पटनार्थ लिखा था।

२४४०. प्रति सं० २६ । पत्र स० १८३ । ग्रा० ११ $\frac{2}{5}$   $\times$  ५ इच्च । लेखन काल सं० १७८१ श्रापाढ मुदी ७ । पूर्णा । वे०म० ७६/६६ । प्राप्ति स्थान —वाष्ट्रंनाथ दि० जैन मन्दिर इन्टरगढ़ (कोटा) ।

विशेष - ग्रतिम पत्र दूसरे ग्रथ का है।

धरणी वस सागरे दहायने नभतरे च।

नासस्यासितपक्षे मनतिथि सुरराजपुरीवर ।।

नि० चन्द्रभागोन बार्ड नान्ही सति शिरोमिंग जैनधर्मधारिगी ५ठनार्थ कोटा नगरे चौहान बंश हाडा दुर्जनसाल राज्ये प्रतिलिपि कृत । पुस्तक बडा मदिर इन्दरगढ की है ।

२४४१. प्रतिसंठ ३०। पत्र स०१७६ । स्रा०१३ × ६१ द्वाः । ले०काल स०१६१ म । पूर्याः ते०स०६० । प्रा**प्ति स्थान** —पार्यनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष-सवाईमाधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२४४२. प्रति म० ३१। पत्रस० १८। आ० १०  $\times$  ४ $^{\circ}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेहन सं $\infty$ —३४८। प्राप्ति स्थान —वि० जैन मन्दिर दवलाना (ब दी)।

२४४३. प्रति सं० ३२। पत्रम०७१। ग्रा० १०४४ ॄै इच। ले०काल स०१७६४ चैन सुदी ८। पूर्ण। बेष्टनस०७०-११४। प्राप्तिक स्थान – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)।

२४४४. प्रति सं० ३३ । पत्रस० ३१७ । प्रा० १०३ ४४ इच्च । ले०काल ५० १७७६ पौष बुदी १ । अपूर्ण । बेपून सं० ३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैसाबा ।

विशेष —नाषुराम काहाए। जोशी बराहटे के ने प्रतिनिधि की । लिखाई साह मोहनदास टोनिया के पुत्र जीवराज के गठनायं । चिमननाल रतनलाल टोनिया ने स० ११०८ में नैराबा में तेरहपंथियों के मंदिर में प्रति चढ़ाई।

२४४५. प्रति सं. ३४ । पत्रस० १११ । ब्रा० १३imes६३ इञ्च । ले०काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

२४४६. प्रतिसं० ३५ । पत्रस० १५७ । बा० १२ $\times$ ५ $^2_{\tau}$  इच्च । ले०काल सं० १७३६ मगसिर मुदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बादिनाथ ब्रुदी ।

विशेष-सावलदास ने बगरू मे प्रतिलिपि की थी।

२४४७. प्रति सं० ३६। पत्र स० २६३ । ग्रा० ८ $\frac{3}{7} \times$ प्र इख । ले० काल स० १६२४ । पूर्यों । नेष्टन स० ३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पाइवेनाय चौगान बूदी ।

**२४४८. प्रति सं० ३७।** पत्र स० २११। ब्रा० ११ $\chi$ ४ $\xi$  इच्च । ले० काल स० १८८३ वंशास सुदी ३। पूर्ण । वेष्ट्रन स० ८३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती सदिर कामा ।

**२४४६. समाधितत्र भाषा—नावूलाल दोसी ।** पत्रस० १०१-१४२ । प्रा० १२५ ५ प्रदेश । भाषा—हित्दी (पद्य) । विषय — योग । र०काक्ष १६२२ चैत सुदी १२ । ले० काल स० १६४३ प्रज्येष्ठ सदी ४ । प्रप्रगं । वेष्टन स० ४६३ । प्राप्ति स्थान—भटारकीय दिठ चैन मन्दिर प्रजमेर ।

२४५० समाधिदंत्र भाषा-रायचंद । पत्रस०५७। ब्रा०१०  $\chi$  ४३ इच । भाषा-हिन्दी गया । विषय—साँग व्यास्त्र । र०काल  $\chi$  । ते०काल स०१०६२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६२ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष--ग्रन्तिम पद्य--

जैसी मल श्री गुरु कही तैसी कही न जाय।

पै परियोजन पाय के लखी जह चदराय ।।

२४५१. समाधितंत्र माथा—  $\times$  । पत्र स० ६१ । आ० ११ $\times$ ४ $१ इः ४ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी (गर्य) । विषय—योग गास्त्र । र०काल <math>\times$  । से०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेषृत स० २४४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन अधवाल मन्दिर उदयपुर ।

२४५२. समाधि तत्र भाषा —  $\times$  । पत्र स॰ २४। घा० १० $^1_2 \times ^0_3$  इत्र । भाषा —िहरदी (तद्य) । विषय —योग । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन स॰ २०७ । प्रास्ति स्थान — वि॰ जैन सम्बन्धन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - २४ से ग्रागे पत्र नहीं है।

२४५३. समाधितंत्र भाषा-मास्पकचंद । पश्चतः १८ । प्रा० १२५ ४७ इश्व । भाषा-शित्यं । गद्य । विषय-स्थान । र०काल ४ । लेकाल स० १६४७ चैन मुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन प्रयवास प्रवासती मन्दिर प्रतवर ।

विशेष--त्रपभदास निगोत्या ने संशोधन किया था।

२४**५४. प्रतिसं० २** । पत्र स० ३२ । आग० ७३% ६३ इन्छ । लेक्काल ्र । पूर्ण । बेहुन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल प्रचायती मन्दिर अलवर ।

२४५५. समाधिमरस्ग भाषा—द्यानतराय । पत्र स०० । ग्रा० ६ $\times$ ६) दश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—वितन । र०कास $\times$ । ते०काल $\times$ । वेष्ट्र स०६४५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

२४५६. समाधिमररण साथा--सदासुल कासलीवाल । यत्रस० १४ । प्राण १२ ४४ १ इच । भाषा---द्वित्वी (गद्य) । विषय----वितन । र०काल ४ । वेश्काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ४१६ । प्राप्ति स्थान--भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर । २४**५७. समाधिमरण् भाषा**— × । पत्र सं०२७ । घा० ११% ५२ हुन्न । भाषा— हिन्दी । विषय—जिन्तन । र०काल × । से०काल स० १६१६ पीय बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४४६ । प्राप्तिकस्थान— भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

२४५८. समाधिमरस्य मावा $---\times$ । पत्र म० १४। बा० १२%६ इत्त्व । भाषा--हिन्दी । विषयः—वितन । र०कार् $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्स्स । वेष्टन स० १६१३। **प्रास्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन सन्दिर अजमेर ।

३४५६. समाधिमरएा माषा —  $\times$  । पत्र स०१७ । घ्रा०१० $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ इन्छ । भाषा — हिन्दी ग० । विषय — चिनन । र०काल  $\times$  । ने० काल स०१६०६ । पूर्ण । बेष्टन स०२२–६८ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

२४६०. समाधिसरण भाषा—  $\times$  । पत्र स० १४ । भाषा—हिन्दी । विषय—िचतन 1 र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहणवी मन्दिर बसबा ।

२४**६१. समाधिमररा मोवा** $-\times$  । पत्र स० १४ । सा० १२ $\frac{2}{5}$  × ६ इक्ष । भाषा - फित्र ग्रा । विषय — चितन । र०काल × 1 ने० काल स० १८१६ कात्तिक सृदि १४ । पूर्ण । वेष्ठन स० १०६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर, शेलाबाटी (सीकर) ।

विशेष-सरावगी हरिकिसन ने व्यास शिवलाल देवकृष्ण से बस्बई मे प्रतिलिपि कराई थी।

२४६२. समाधिमररण भाषा —  $\times$  । पत्र स०१६ । ब्रा०११  $\times$  ५ इस्त । भाषा — हिन्दी । (गद्य) । विषय — म्राग्मिननन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । वेष्टन स०१६३ । प्राप्ति स्थान — (२० जैन प्रययाल मन्दिर उदयपर ।

२४६३. समाधिमरस्य स्वरूप — x । पत्र स०१३ । ग्रा०१०३४७ इख । भाषा — हिन्दी । विषय —योग । र०काल ४ । ले०काल स०१८२० ज्येष्ठ मुदी ११ । पूर्मा । वेष्टन म०१४६ । प्रास्ति स्थान—दि० जेन पत्रायती मस्टिर वयाना ।

२४६४. समाधि स्वरूप —  $\times$  । पत्र सः १६ । मापा—सःकृत । विषय—चितत । ग्राकाल— $\times$  । ते० काल  $\times$  । म्रपूर्ण । वेहन सः ६३,७५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ महिर उदयपर ।

२४६४. समाधिमररण स्वरूप—  $\times$  पत्रस०२३ । घा०११  $\times$  ४ इख । प्राथा—हिन्दी गढा । विषय—योग । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगान वृदी ।

२४६६. समाधिशतक—पूज्यपाद । पत्रस्त ७ । ब्रा० १२ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इच । भाषा—सस्कृत । विषय—स्रध्यसम । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१६५ । **प्राप्ति स्थान**—म्रहुगकीय दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

२४६७. प्रति स० २ । पत्रस० २ । प्राट १ ४४ इचा । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेक्टनस० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

२४६ द. प्रति स०३ । पत्रस० ८ । सा० १० $\frac{3}{7}$  ४ ६ च । ते०काल  $\times$  । वेष्टन स० १५ प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

२४६६. समाधिशतक टीका - प्रभावन्त्र । पत्रसः १० । घा० १२  $\times$  ५२ इंव । माषा-संस्कृत । विषय----प्रध्यात्म । २०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान---भटारकीय दि० जैन मन्दिर घनमेर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

२४७०. प्रति सं० २ । पत्रस० २६ । घा० १२imes४ इ.च. । से०काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं० १६२६ । प्राप्ति स्थान— अट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

२४७**१. प्रतिसं०३ ।** पत्रस०३०। घा०११×५ इंच । ले०काल स०१७४७ । पूर्ण । वेष्टन सं०२६। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४७२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २-४३ । प्रा० १० 🗵 ६ च । लेकाल स० १४८० । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० २४० । प्राप्ति स्थान— प्रवताल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबत् १४८० वर्षे ज्येष्ठ मासे १४ दिने श्री मूलसबे मुनि श्रीमूबनकीति जिल्लापित कमंशयिनिमत्त । २४७३. प्रति स**० १**। पत्र स० २१ । श्रा० ११५  $\times$  १ इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण ।

वे० स० १७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर श्रीमनन्दन स्वामी, बूदी । विशेष —प्रति प्राचीन है ।

**२४७४. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स०८ । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स०३० <sup>२</sup>२३० । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपर । गलमात्र है ।

२४७५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १२। प्रा० ११ $\frac{3}{7} \times \frac{3}{7}$  इन्छ । ले० काल स० १७६१ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-- बसवा मे जगत्कीति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी।

२४७६. प्रति सं० ६ । पत्रस० ११ । म्रा०१० 🗙 ४ इन्त । ले०काल 📌 । पूर्ण् । बेब्रनस० १४ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन प्रवासन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

२४७७. समाधि शतक—पन्नालाल चौधरी । पत्रस०६० । भाषा—हिन्दी । विषय— प्रध्यास्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० १७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी मन्तपुर ।

२४७८. सामायिक पाठ— $\times$  । पत्र स॰ माया-प्राकृत । विषय-प्रध्याग्य । र०काल  $\times$  ।  $\frac{1}{2}$  संक्षां । वेष्टन सं॰ ३६८-१४६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन महिर कोटडियो का द्वरारप्र ।

२४७**६. प्रति सं०२** । पत्रस०११ । आ०१२ 🗴 ५२ ६ खा। ले०काल 🗴 । पूर्णा। वेक्टनसं०४६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियो काङ्गरपुर ।

२४ द $\circ$ . प्रतिसं० ३। पत्रस० १४। प्रा० १०  $\times$  ६ इन्त्र । ले० काल— स० १६०६ सावस्य सुदी ७। पूर्यं । वेष्ट्रन स० १६४। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपूर मेक्षावाटी (सीकर) ।

विशेष — प्रन्त में दौलतराम जी कृत सामायिक पाठ के भ्रन्तिम दोहे हैं जो स॰ १८१४ की रचना है। सस्क्रत में भी पाठ दिये हैं।

२४**८१. प्रति सं० ४ .** पत्रस० ६ । आ० ७५X ३ $\frac{3}{5}$  इच्च । ले०काल सं० १४८३ । पूर्ण । बंकन सं० २४४ । प्राप्ति **रूपान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

सवत् १४८३ वर्षे ज्येष्ठ मुदि १३ शनी नागपुर नगरे जयासाद गरिए लिखतं चिरनद तात् श्री सपे प्रशादात् ।

२४८२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १४६ । ले०काल 🗴 । स्रपूर्णं । बेष्टनस० २४४ । प्रास्ति इन्धान—दि० जैन प्रवायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२४८३ प्रति स०६ । पत्रस०२४ । म्रा०५ 🗙 ५१ इचा। ले०काल 🗙 । पूर्णं। बेष्टन स०१६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुँदी ।

२४ मर्थ. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १४ । ले०काल स० १७६२ । पूर्ण । वेष्टन सं० म । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवायती मदिर डीग ।

विशेष--डीग में प्रतिलिपि हुई थी।

२४८५. प्रति सं० म । पत्रस० १४ । घा० ११×५ इखा । बेष्टन सं० ३७२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

२४८६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४८ । प्रा० ११ $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ इ.च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन खण्डेनवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। सेठ बेलजी सूत बावजी पठनायं लिखी गयी।

२४८७. प्रतिसं० १० । पत्र स० ११। ग्रा॰ ११४५ इन्छ । लेखन काल 🗴 । पूर्ण । बेप्टन स० २५१-१११ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुँगरपुर ।

विशेष-सम्कृत में भी पाठ है।

**२४६ म. प्रति स० ११** । पत्रस० २१ । ग्रा० १० $\frac{5}{8} \times 1$  इत्था । ले०काल स० १६१२ भाववा बुदी ६ । पूर्यो । बेपून स० ३७३ –१४२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

२४६६. प्रति सं० १२ । पत्रस० ७ । ग्रा० ६ $\frac{3}{4} \times \frac{1}{4}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । ।वेष्टन स० ४६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हूं गरपुर ।

२४६०. सामाधिकपाठ - × । पत्र स० ३३ । ग्रा॰ १२×६१ इख । माषा—सस्कृत । विषय--प्रध्यात्म । र०काल × । लेकाल स० १६१३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४१२ । **प्राप्ति स्थान**— भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-- प्रति हिन्दी ग्रथं सहित है।

२४६१. सामायिक पाठ $--\times$ । पत्र स० ७२ । भाषा --सस्कृत । विषय --प्रध्यात्म । र•काल  $\times$  । से•काल सं॰ १६४१। पूर्ण । बेप्टन स॰ ६/४१० । प्राप्तिस्थान--सभवनाय दि॰ जैन संदिर उदयपुर ।

विशेष--- प्रशस्ति निम्त प्रकार है---

स्वस्ति मवत् १९४१ वर्षे थी मूलस्थे सरस्वतीमच्छे धनोट द्वृगे चन्द्रनाथ चैत्यालये भ० श्री ज्ञानभूषण प्रभाचन्द्राणा जिथ्येण उपाध्याय श्री धर्मकीर्तिणा स्वहस्तेन लिखन ब्रह्मप्रजिन सागरस्य पुस्तकेद । इ.० श्री प्रेष्ट्रगणनन्तिकळ्ण इ.० सक्बीस्निक्छ्या ।

दर्शनविधि भी दी हुई है।

**२४६२. सामाधिक पाठ**— $\times$ । पत्रस० १६। प्रा० ६  $\times$  ४१ इता। भाषा—सस्कृत। विषय—प्रध्यात्म। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन म० २५६। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मिंदर पार्थनाथ चौगान व दी।

२४६३. सामाधिक पाठ(लघु)—×। पत्र स०४१। ब्रा०१२×५ इञ्च। भाषा—सन्कृत। विषय—प्रध्यात्म। रे०काल ×। ले०काल स०१७४६। पूर्ण। वेट्टन स०२२१। प्राप्तिस्थान— वि० जैन मन्दिर नागदी बदी।

विशेष-सहस्रनाम स्रोत्र भी है।

२४६४. सामायिक पाठ $-\times$ । पत्रस० १६। प्रा० १ $\times$ ६ $^2_{\nu}$  इख । भाषा-सरहत । विषय-प्रध्यारम । र०काल  $-\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६/१५ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पत्रायती मन्दिर इनी (टोक) ।

२४६५. सामाधिक पाठ $-\times$ । पत्र स०२०। भाषा-सस्कृत । विषय-प्रध्यात्म । र०कास $--\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स०४६१। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२४६७. सामाधिक पाठ $-\times$ । पत्र स०१३। म्रा० १० $\times$ ४ $_{\xi}$  इञ्च। भाषा- सन्कृत। विषय-मध्यात्म। र०काल $-\times$ । ले०काल $\times$ । पूर्ण। बेपून २०२०। प्राप्ति स्थान-पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

२४६६. सामायिक पाठ— $\times$  । पत्र म०१७ । आ० ६ $\frac{3}{7}$  $\times$ ५ दख । भाषा—मस्कृत । विषय—प्रध्याम । र०काल  $\times$  । ले•काल — $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म०२५६-१०२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोटडियो का हु गरपुर ।

**२४६६. सामाधिक पाठ**— $\times$  । पत्रस**ः** २३ । म्रा॰ १० $\frac{3}{7}$  $\times$ ४ इन्त्रः । भाषा—सस्कृत । विषय—प्रष्यास्म । र०काल्  $\times$  । ले० काल् स० १६६६ । पूर्णं । वेष्ट्रन स० ४१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

२५००. साधु प्रतिकम्पण् सूत्र— $\times$  । पत्र सं० ६ । प्रा॰ १० $\times$ ४ $\xi$  दश्व । भाषा—प्राहृत । विषय—चित्रत । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १७६० माघ बुदी १२ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १०६–१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

विशेष--हिन्दी प्रथं भी दिया हुन्ना है।

**२५०१. सामाधिक पाठ (बृहद्)** —  $\times$ । पत्रस $\circ$  १४। घ्रा $\circ$  १० $\times$ ७ इश्वः। भाषा — सस्कृत । विषय — प्रध्यारमः। र $\circ$ कालः  $\times$ । ते $\circ$ कालः  $\times$ । वेष्ट्रमः स $\circ$ १७६-११४। **प्राप्ति स्थान** — दि $\circ$  जैन मन्दिर तेमिनाच टोडारायमित (टोक)।

२५०२. सामायिक पाठ (लघु) — × । पत्रसः १ । प्राः १० × ४ है इश्व । भाषा – संस्कृत । विषय — प्रत्यासः । २०काल × । वे० काल × । पूर्णः । वेष्टन स० २६३ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाला (ब्रुदी)

२५०३. सामायिक पाठ (लघु)— × । पत्र स०४ । ध्रा० द ४६ इखा । भाषा — प्राकृत । विषय — मध्यान्म । २० काल × । लेक्काल × । पूर्णा । वेष्टन स०२०५–११७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरपुर ।

विशेष-सम्बत में भी पाठ दिये हैं।

२**५०४. सामाधिक पाठ—बहुमुनि** । पत्र स० ४१। ग्रा० ६४६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मापारम । रक्ताल 🔀 । ले० काल 🗙 । पूर्गा । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्तिस्थान** —दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा ।

२५०५. प्रति सं० २ । पत्र म०१७ । ग्रा०११×५ इश्व । ले॰काल म० १६१७ वैशास सदी ४ । पूर्ण । वेष्टन म०३४ । प्राप्ति स्थान—तेरहपयी दि० जैन मन्दिर नैस्सा

**२५०६. सामाधिक पाठ**  $\times$ । पत्रस**्थ ।** भाषा — हिन्दी । विषय — ग्रध्यात्म । र०काल  $\times$  । कुर्ण । वेष्ठन स० ७४३ । **प्राप्ति स्थान**िद० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

२५०७. सामायिक पाठ भाषा—जयचन्द छाबडा । पत्रस०७०। ग्रा०११ $\times$ ४ दश्व । भाषा—हिन्दी (गर्य) । विषय-ग्रन्थारम । र०काल स०१८२२ वैज्ञाल मुदी १४। ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रम०१३६४। प्राप्ति स्थान—महारकीय दि०जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२५०८. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३० । छा० ११ है 🌣 ५ इन्छ । ले०काल स० १८८७ माघ सुदी १३ । पूर्ण । येष्ट्र स० ३०७ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन सन्दिर ग्रवसेर ।

२५०६. प्रतिसं० ३ । पत्र स०४५ । घा० १९ ४५ है टच। ले∘काल ४ । पूर्गा। बेष्टन स० १८ । प्राप्ति स्थान -- महारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५**१०. प्रति सं०४।** एव स०१४। ग्रा०७ 💢 ६ इल्बाले० काल 📐 । पूर्णा वे०स० ११। **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बुदी।

विशेष — जिनदास गोधा कृत सुगुरु शतक तथा देव शास्त्र गृरु पूजा और है।

**२५११. प्रतिसं० ५।** पत्रस० ६२। म्रा० १०३ × ५३ डचा। लेक्काल स० १६१६ चैत. बुदी ४। पूर्यो। बेटून स० ६६। **प्राप्ति स्थान** - वि० जैन मंदिर फतेहचुर शेलाबाटी (सीकर)।

२५१२. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४४ । मा० १ $\times$ ७ इश्व । ले०काल स० १६२६ पौष सुदी ६ । पूर्णे । वेष्टनस० १०० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर) ।

**२५१३. प्रति स**० ७ । पत्र स० ४३ । ग्रा० १२imes६ है इन्छ । लेक्काल imes । पूर्गे । बेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सण्डेलवाल पनायती मन्दिर ग्रनवर ।

२**५१४. प्रति सं० ६ ।** पत्र स॰ २५ । ले•काल 🗴 । पूर्णः । वेष्ट्रन स ४४१ । **प्राप्ति स्थान** दि॰ जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

२५१**५. प्रति सं० ६ ।** पत्र स० २४ । ले॰काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४२ । **प्राप्ति** स्थान—दि॰ जैन पचायती मन्दिर (भरतपुर) ।

**२५१६. प्रति सं० १० ।** पत्र स० ४४ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स० ५५४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पत्रायती मंदिर मरतपूर ।

**२५१७. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ४८ । प्रा०** १३×६ इश्व । ले० काल म० १८८१ । पूर्ग । वेष्ठन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर पावनाय टोडागयसिंह (टोक) ।

२५१६. सामायिक पाठ भाषा - म. जिलाकेन्दुकीर्ति । पत्रस्व १८ । आव ७४५ है इस । भाषा —हिन्दी । विषय — अध्यारम । र०काल ४ । ले॰काल स० १८४१ सावरा मुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३४ । प्राप्ति स्थान —भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५१६. सामाधिक पाठ मावा— धक्तालाल । पत्र स०३१ । प्रा०६ $\frac{3}{7} \times \frac{5}{9}$  इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय— धर्म । र०काल स०१६४५ घासोज बुदी ६ । ते० काल स०१८७५ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्ठन सं०१३६ २१ । प्राप्ति स्थान— पार्थनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—गोविन्दकवि कृत चौबीस ठाएग चर्चा पत्र स०२७-३१ तक है। इसका र०काल स० १८८१ फागूएग सदी १२ है।

२५२०. प्रति सं० २ । पत्रस० २७ । घा० ६३ × ६ डच्च । ने०काल म० १६४६ वैशाल सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन स० ४/४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—२५ से २७ तक चौबीस ठाएग चर्चाभी है जिसकी गोविन्दकवि ने स०१८११ में रचना की थी।

२५२१. सामायिक पाठ भाषा— स्थामराम । पत्रत्तः  $^{3}$ । भाषा-हित्री । विषय-मध्यान्य । रक्ताल १७४६ । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनसक्षरः । प्राप्ति स्थान — जैन दिव पश्चायती मन्दिर, मस्तपुर ।

२५२२. सामाधिक पाठ- × । पत्रसः  $^{\circ}$  । छा० ६  $\times$   $^{\circ}$  ६ उच्च । भाषा- हिन्दी (गळ्) । विषय- प्रध्यात्म । २०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेठुनसः ७७०। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रु दी) ।

२५२३. सामायिक पाठ—  $\times$  । पत्र म० १ । आ० ६×५ डवा । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय—प्रध्यातम । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । तेष्टुन म० १८७ । प्रास्तिः स्थान—दि० जैन भंदिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

२५२४. सामायिक पाठ $-\times$ ा पत्रस० ७६। छा० ६ $\frac{7}{4}$  ×१ इश्व । भाषा -हिन्दी । विषय- श्रध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । स्पूर्ण । वेष्ट्रस० ३३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रिमनन्दन स्वामी, बूँदी ।

२५२५. सामायिक पाठ संग्रह— × । पत्रस० ६४ । ग्रा० १३२ ४६ इन्छ । माया-संस्कृत । विषय—मध्यारम । र०काल × । ले०काल स० १०२७ ग्रायाढ़ मुदी ११ । पूर्ण । बेष्ट्रनस० ४७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर मे महाराजा पृथ्वीसिंह के राज्य मे जिमनराम दोषी की दादीने नैसासायर से प्रतिलिपि करवाकर चढाया था।

मल्यत निम्न पाठों का सग्रह है-

बृहद् सामायिक, भक्ति पाठ, चौतीसश्रतिशयमक्ति, द्वितीय नदीश्वर भक्ति, बृहद् स्वयमूस्तोत्र, भाराधना सार, लघप्रतिकमण, बहुत्र प्रतिकमण, कायोत्सर्ग, पट्टावली एव आराधना प्रतिद्वोध सार ।

२५२६. सामाधिक प्रतिकमस्ग $--\times$ । पत्रतः १०३। प्रा० १०३/ $\times$ ७ इञ्च। भाषा— हिन्दी। विषय—प्रध्यान्म। र०काल  $\times$ । ले०काल स० ११४४ पूर्ण। वेष्ट्रन स० ३४६। प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर दीवानजो कामा।

२५२७. सामाधिक टीका--- ×। पत्रस० ४७-७७। आ० १३४५ इख । भाषा--सस्स्त । विषय--प्रध्यात्म । र०काल । ले०काल × । स्रपूर्ण । वेष्ट्रनस० १७६/४१६ । प्राप्त्ति स्थान-सम्मवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५२८. प्रति स $\circ$ २। पत्रस $\circ$ २-२६ । ले॰काल  $\times$  । धपूर्ले । बेष्टन स $\circ$ १८०/४२० । प्रास्ति स्थान—सभवनाथ दि॰ जैन मन्दिर उदयपुर ।

२४२६. प्रतिसं० ३ । पत्र म०२-१७ । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । बेष्टन स० १८१/४२१ । प्राप्ति स्थान—समबनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२५३०. सामाधिक पाठ टीका- × । पत्रस० ६०। घा० १२ ×४३ इख । भाषा —हिन्दी सस्कृत । विषय —घण्यास । र०काल × । ने०काल स० १०२७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २१-०४ । प्राप्ति स्थान —दि० तेन मदिर वडा बीसपथी दीसा ।

विशेष - स्योजीराम लुहाडिया ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२५३२. सामायिक पाठ टीका $-\times$ । पत्रस०४१। प्रा०११ $\frac{5}{4}\times \frac{5}{2}$ ६व। भाषा— सस्कृत । विषय — प्रध्यात्म । र०काल  $\times$ । लेकाल स०१८१४ चैत सुदी ४। पूर्ण । बेष्टन स०२८२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-सवन् १८१४ चैन मासे गुक्लपक्षे पचस्या लिपिकृत पडित भ्रालमचन्द तत् शिष्य जिनदास पठनार्थं ।

२५३३. सामाधिक पाठ टीका— × । पत्रस्य ४४ । आ० १३×४६ख । आपा-सस्कृत । विषय-प्रध्यात्म । र०काल × । ले०काल सं० १७६० आपाढ बुरी ७ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० २७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर शक्षमृत्य (टोक) ।

विशेष-प्रति जीएां है।

२५३७ स. सामाधिक पाठ टीका —  $\times$  । पत्र स०४५ । बा०१२ $\frac{1}{4}$   $\times$  ७ इव । माषा — सस्क्रन-हिन्दो । विषय — ब्राब्धारम । र०काल  $\times$  । सै०काल स०१०३० ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । बेहुन स०२४ । प्राप्ति स्थान — हिन्दे केन प्रिटर डीजारोजी कामा ।

२५३५. सामाधिक टीका— × । पत्र स० ७४ । मा० १ ४७ इश्वः । माषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय—प्रध्यातः । र०कालः × । ते० कात्र स० १८४१ चैतः सुदी १३ । पूर्णः । बेष्टुन स० ३/७४ । प्राप्तिक स्थातः—दि० जैन प्रदिर वडाबीसपणी दीसा ।

विशेष---रतनचन्द्र पाटनी ने दौसा में प्रतिनिधि की ।

३५३६. सामायिक पाठ टीका सहित— 🔀 । पत्रस० १००। घा० ६३ ४५ ६वा । माषा— हिन्दी । विषय—प्रध्यासम् । २०काल ४ । से०काल स० १७८७ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्णे । वेष्टन स० ११४ । प्राप्ति इक्षास—दिव जैन प्रचारती प्रतिदर कार्या ।

विशेष -- जहानाबाद मे प्रतिलिपि हुई ।

२५३७. सास्यभावना—  $\times$  । पत्रस० ३ । प्रा० १२ $\times$ ४ इख । भाषा—सस्कृत । विषय — श्रष्यास्म । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २६२/१६८ । प्राप्ति स्थान—समवनाय दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२५३६. **सवराधनुमप्रेक्षा — सूरत ।** पत्रस०२ । प्रा०११×४ इखा । भाषा — हिन्दी । विषय — विन्तन । र**०काल ×** । ते०काल × । बेष्टन स०६१४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्षक जयप ।

विशेष--दादश अनुप्रेक्षा का भाग है।

२५३६. संसार स्वरूप —  $\times$ । पत्र स $\circ$ ६। ग्रा० ११  $\times$ ५ इञ्च । भाषा —सग्कृत । विषय —िवतन । र $\circ$ काल  $\times$ । ले $\circ$  काल स $\circ$  १६४५ । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  र $\circ$ । प्रास्ति स्थान —िर $\circ$  जैन सिंदर नागरी व दी ।

विशेष --- प्राचार्य यश कीत्तिना स्वहस्तेन निम्बत ।

२५४०. सरवमसार संत विचार—नवलराम । पत्रस०२७८ । घा०१०६ ४ १/५८७ । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रध्यान्म । र०काल ग०१८३४ पीप बुदी १४। ने०काल स०१८३७ । पुग्गं । वेष्ट्रन स०१०५ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष -- ( गुटका में है )

प्रारम्भ---

सतगुरु मुफ्ति परि, महरि करि बगसो बुधि विचार । श्रवङ्गसार एह घ थ, जो ताको कर उचार । ताको कर्र ज्वार सालि सता की त्याङ । ज्वर्कति जुक्कित परमाएग, श्रीर धर्तहास मुनाङ । नवलराम नरएं सदा, तुस पद हिन्दै धारि । सनगुरु मुक्तपर महर करी, बगगो बुधि विचार । २**५४१. सिद्धपचासिका प्रकर**स्ग- imes । पत्रस्व १० । घाउ ६ $^{1}_{7}$ imes १ इख । भाषा— प्राकृत । विषय—प्रध्यात्म । <sup>ग</sup>०काल imes । लेकाल imes । पूर्ण । वेष्ट्रन स्व ४६६ । **प्राप्ति स्थान**— मुद्रास्त्रीय दि० जैन मन्दिर धन्नेप ।

२५४२. स्वरूपानस्य — दोपचन्यः । पत्रसः ११। प्रा०१०४४ इञ्चः। भाषा — हिन्दी। विषय — प्रध्यासः । र०काल स०१७५१ । ले०काल स०१८३५ कार्लिक सुदी ६ । पूर्णः । बेष्टुनस०२१३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसती (कोटा)।

विशेष--कोटा के रामपुर में महाबीर चैत्यालये में प्रतिलिपि हुई थी।

## विषय - न्याय एवं दर्शन शास्त्र

२५४३. **प्रवृत्तहली—प्रा० विद्यानन्दि** । पत्र स०२२१ । धा०१२ $\times$ ५२ हखा । भाषा— सस्कृत । विषय—जैन न्याय । र०काल  $\times$  । क्षे०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं०१४६३ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर भ्रजमेर ।

विशेष-देवागम स्तोत्र की विस्तत टीका है।

**२५४४. प्रति स० २ ।** पत्रस० २८५ । खा॰ १२×४ इन्ह । **ले॰काल** × । पूर्णं । वेष्टुन स**॰** ३८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२५४५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २०१ । म्रा० १३ imes ५ इञ्च । ले०काल imes । सपूर्ण । बेष्टन सं० १५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्स्स है। बीच में कितने ही पत्र नही है। भ० वादिभूषरण के शिष्य द० नेमिदास ने प्रतिनिधि की थी।

२५४७. ग्राप्त परीक्षा — विद्यानि न्व । पत्र स० १४३ । ग्रा० १२ $\times$ ५ इत्तः। भाषा – सस्कृत । विषय - दर्शन ग्रास्त्र । एकाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन भाषवाल मन्दिर उदयपर ।

विशेष-मृति श्री धर्मभूपरा तत् शिष्य ब्रह्म मोहन पठनार्थ ।

विशेष—श्रकवर जलालुहीन के शासनकाल मे श्ररगलपुर (श्रागरा) मे प्रतिलिपि हुई थी।

२५४६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६३ । बा० १२ 🗵 इका । ले० काल 🗴 । पूर्णा । वेप्टन स० ११६३ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर ।

**२५५०. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स०६ । ग्रा० ११imes १३ इच्छा । लेण्काल imes । श्रपूर्ण । वेष्टन स**०** २४४/२३४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२५५१. श्राप्तमीमांसा—प्राचार्यं समन्तभद्र । पत्रस० ५०। झा० ११ $\times$ ५ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय न्याय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$ । पूर्णं । वेष्टन स०३५०। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन श्रयबाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-गोविन्ददास ने प्रतिलिपि की थी। इसका दूसरा नाम देवागम स्तोत्र भी है।

२५५२. प्रति स० २ । पत्रस० ३५ । ले०काल  $\times$  । भूपूर्ण । वेष्टन स० १५७/५१० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है। "व. मेघराज सरावगी" लिखा है।

२५५२, प्रति सं० ३ । पत्रसं० २६ । म्रा० १२ १८ = इव । ले० काल सं० १६५६ ज्येष्ठ इदी ४ । पूर्ण । बेष्टुनस० १२७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पार्धनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

२५५४. ब्राप्तमीमांसा माघा—जयचन्य छावडा । पत्रसं० ११६ । घा० १०हें ४ ११ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (हुंडांगी) गद्य । विषय—स्याय । र०काल स० १८६६ चैत बुदी १४ । ले०काल स० १८८६ माह बुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ११८५ । प्राप्ति स्थान—महास्कीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

नोट-इसका दूसरा नाम देवागम स्तीत्र माथा भी है।

२**४४५. प्रति स० २ ।** पत्रस० १०४ । द्या० १०<sup>३</sup> ४५ इ.च. । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टुतस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२५५६. प्रति स० ३ । पत्र स० ७६ । घा० १० $\frac{1}{4}$  $\times$ ७ इश्व । ले०काल स० १६६१ । पूर्ण । बेठून स० ५६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बुदी ।

विशेष-चन्देरी में प्रतिलिपि हुई थी।

२५५७, प्रतिसंo ४। पत्र म० ८२। म्रा० ११८५ इस्त्र । ले० काल स० १८८० भादबा बुदी १। पूर्ण बेष्टन स० ४५। **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर म्रमबाल प्रवायती उदयपुर ।

२५५६, प्रतिसं० ५ । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १६१४ । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ३१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२५५६. प्रति सं०६। पत्र स०६१। ले०काल स०१८६। पूर्णं। वेष्टन सं०३११। प्राप्ति स्थान---विजैन पत्रायनी मन्दिर भरतपुर।

२.५६०. प्रति स० ७ । पत्रस० १०१ । प्रा० ११ × ५ है इस्व । ले० काल स० १६२५ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन स० ५३ १९७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सप्रवाल प्लायती मन्दिर धलवर ।

२**५६१ प्रतिसं० ⊏।** पत्रस० ६७ । म्रा० १२×⊏ इश्व । ले० काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टुन स० ८० २५ । **प्राप्ति स्थान**—िंद० जैन पार्थनाथ मन्दिर इस्टराह (कोटा) ।

विशेष---माह घःनालाल चिरन्जीव मागीलाल जिनदास शुभघर इन्दरगढ वालो ने जयपुर मे प्रति-लिपि कराई थी।

२५६२. प्रति सं० ६ । पत्रस० ५६ । घ्रा० १२×५३ इन्छ । ले० काल स० १८६७ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष--फागी मे प्रतिलिपि की गयी थी।

**२५६३. प्रतिसं० १०** । पत्रस० ६१ । आ० १२imes५६ । इत्था । ले० काल imes । पूर्य । **वेष्टनस०** ७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

२५६४. प्रति सं० ११ । पत्र स० ५६ । घ्रा० १३ $\times$ ७ $\xi$  इचा । लेखन काल सं० १६४१ सावन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करोजी ।

विशेष--चुन्नीलाल बाह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

**२५६५. प्रति सं० १२** । पत्रस० ६६ । झा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ $\frac{1}{2}$  इंच । ले०काल स० १६६२ चैत बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

विशेष - बसुवा में सोनपाल बिलाला ने प्रतिलिपि की थी।

२५६६. **माध्तस्यरूप विचार** — × । पत्र स०६। झा०११×४-} इञ्च। प्राया⊸सस्त्र । विचय-न्याय । ४०काल × । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०६७। **प्राप्ति स्थान** – पनायती दि० जैन महिन्द्र ध्यवदा ।

विशेष — ग्रत में स्त्री गुरादोष विचार भी दिया हुआ। है।

२**५६७. प्रालाण पद्धति—वेबसेन ।** पत्र स०७ । ब्रा० १२३ x ४३ इ.च.। भाषा—सस्कृत । विषय—स्याय । र०काल × । ले०काल सं• १६६१ सावण बुदी ऽऽ। पूर्ण, । वेष्ट्रन स० ११७६ । **प्राप्ति** स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--बाह्मरा भोपतराम ने माधवपुर मे ताराचन्द्र गोघा के पठनार्थ प्रतिनिधि की थी।

२५६ म. प्रति सं०१ । पत्र स०५ । ले० काल म०१ म् २० वैशाल बुदी १ । पूर्णा । वे० म० ११७६ । प्रास्ति स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२५६६. प्रति स०२ । पत्र स०७ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०११८२ । प्राप्ति स्थान—स०दि० जैन मन्दिर ग्रजसेर ।

२५७० प्रतिसं०३ । पत्र स०११ । आर०१०४५ इन्दाः ले०काल ४ । पूर्गाः वेष्टनम० २६ । प्रास्ति स्थान — भ० दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

२**५७१ प्रतिसं०४ ।** पत्र स०११ । ग्रा०६ ८ ७ इला । ले० काल ४ । पूर्णा । वेष्ट्रत स०१७ । प्राप्तिस्**राम** — वि० जैन मदिर नागदी, बुदी ।

विशेष-लं • काल पर स्याही फेर दी गयी है।

२५७२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ८ । ब्रा० १० ५ ५१ इ.स. । ले०काल 🔀 । पूर्ण । बेष्टन सं० २३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान वृदी ।

२५७३. प्रति स०६ । पत्र स०६। आ०१०३ ४४ इ.च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेग्रुन स०१४७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२५७४. प्रतिसं०७ । पत्रस०१० । प्रा०१३४५ इन्तः । ले०काल स०१७७२ सगीसर सुदी १४ । पूर्णः । बेट्टनस०११६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष-- सबन् १७७२ में सागानेर (जयपुर) नगर में इगरसी ने नेमिनाथ चैत्यानय में प्रतिलिपि की थी। कठिन शब्दों के सकेत दिये हैं। धन्त में नवधा उपचार दिया है।

२५७५. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ७ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ७३१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-संस्कृत टीका सहित है तथा प्रति प्राचीन है।

२४७६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १०। घा० ११३ ४४३ इ.स. । ले० काल स० १७६४ । पूर्ण । बेक्तसं० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी श्रीम । २५७७. प्रतिसं० १० । पत्र स० ६ । घा० ११ $\times$ ५ इन्त्र । ले०काल स० १७६८ मादवा बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० २३६ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन प्रयास मन्दिर उदयपुर ।

२५७८. प्रति सं० १६ । पत्रस० ८ । ग्रा० १०  $\times$  ४ इश्व । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स० २०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

**२५७६. प्रतिसं० १२ ।** पत्रस० ६ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

२५८० प्रतिसं० १३ । पत्रसं० १६ । मा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इचा । भाषा—सस्कृत । विषय—स्याय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १३६ । प्रास्तिस्चान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२.५८२. प्रति सं० १५ । पत्रस० ६ । धा० ११६/५४३ इ.च. । ने०काल स० १७८६ । वेष्ट्रनसं० ६०७ । प्र.प्ति स्थान—र्दिठ जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

विशेष—कोटा नगर मे भट्टारक देवेन्द्र कीर्त्ति के शिष्य मनोहर ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी। प्रति सटीक है।

२५६३ प्रतिसं० १६। पत्र म० १३। प्रा० ११ $\frac{1}{3}$   $\times$  ५ इञ्च । ले॰काल $\rightarrow$  स० १७७६ मगसिर सदी ५ । पूर्ण । बेपन म० ५६६। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर।

विशेष -- मागानेर मे भ. देवन्द्रकीति के शासन मे प० चोक्चन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२५८४. ईश्वर का स्विट – कर्तृस्व खडन —  $\times$  पत्र स॰ २ । घा॰ १३  $\times$  ४६% । माषा — सस् $\pi$ । विपस — स्वास । २०कान  $\times$  । ने०काल —  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स॰ ४४४ ५०१ । प्राप्ति स्थान – दि॰ जैन मनवनाथ मदिर उदयपुर ।

२५८५. उपधि प्रकरण् $\to \times$  । पृत्र तः २ । प्रा० १०  $\times$  ४ इश्व । भाषा $\to$  सकृत । विषय $\to$  दर्गत । २०काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्टन तः २१५,६४७ । प्राप्तिः स्थान $\to$ दि० जैन सम्बनाथ पर्दिर उदयपुर ।

२५८६. **संडनलाटा प्रकर**रण्-  $\times$  । पत्र सं० ६५ । प्रा० ६ $^{3}_{4}$   $\times$  ५ $^{5}_{5}$  इञ्च । भाषा- सस्कृत । विषय- न्याय । २०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स० १४०६ । प्राप्ति स्थान- म० दि० जैन मदिर प्रजनेर ।

२५८७. चार्वाकमतीभडी—  $\times$  ।पत्रस० १८ । ब्रा० १० $\times$ ६ $^1$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय - स्थाय । र०काल  $\times$  । ले० काल—स० १८६३ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष--प जयचन्द छावडा द्वारा प्रतिलिपि की गयी थी।

२५८८. तकंदीपिका --विश्वनायाभ्रम । पत्र सं० १ । मा० १०×४३ इ.च.। माषा-संस्कृत (मद्य)। विषय--न्याय । र०कास × । से० काल × । पूर्ण । वेस्टन स०१३ । प्राप्ति स्थान--वि० वैन मन्नयाल मन्दिर उदयपुर ।

२४८६. तकं परिभाषा—केशबिमधः। पत्रस्तः २४। द्वाः ११३ ४ $\xi$  इतः । भाषा — संस्कृतः। विषय—न्यायः। र०कालः  $\times$ । ले०कालः  $\times$ । पूर्णः। वेष्टनः स० १४१६। प्राप्तिः स्थानः — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, प्रजमेरः।

**२५६०. प्रति सं० २ ।** पत्र सं० २६ । प्रा० १० $\times$ ४ $^2_3$  इञ्च । ले०काल- स० १७२८ । प्राप्ति स्थान- महारकीय दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

२**४६१. प्रतिसं० ३** । पत्र स० २२ । ब्रा० १०×४ इच । ले•काल × पूर्ण । वेष्टनसं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बदलाना (बृदी) ।

२५६२ प्रति सं०४ । पत्र सं०५४ । ग्रा०१२्रे×५ इच । ले∘काल स०१५८१ फागुण सुदी१४ । पूर्णा वेष्ट्रनस०४७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

२**५६३. प्रतिसं० ५**। पत्र स० ३-४४ । आ०१० x ४<sup>5</sup> इखा । ले० काल स०१६६४ । सपूर्ण । बेष्टुन स०११ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन स्रग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवन् १६६४ वर्षे कृष्ण पक्षे वैशाल .सुदी २ दिने मार्चाण्डवासरे मालविवयये श्री मारापुर गुभ स्थाने श्री महावीर चैत्यानये सरस्वती गच्छे बलान्कार गणे कु दकु दावार्यान्वये मट्टारक श्री रत्नचन्द्र तदाम्नाये **४० श्री जेसा तत्** शिष्य **४०** श्री जसराज तन् शिष्य ब्रह्मचारी श्री रत्नपाल नर्कभाषा लिलिता।

२५८४. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १२ । आ० १०  $\times$  ५ इ.च.। ले०काल  $\times$  । अपूर्णः केक्नसं० १२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दवलाना (बूंदी)

विशेष---प्रति टीका सहित है ।

२५६५. तकं भाषा –  $\times$  । पत्रस० ११ । आ० १०imes४ $^{\circ}$ १ इख । भाषा $^{-}$ सम्ब्रुत । विषय $^{-}$ स्वाय । २०काल imes । ले० काल imes । पूर्ग । वेष्टनस० ४०४। प्राप्ति स्थान $^{-}$ दि० जैन मदिर सजमेर

२५६६. तकं परिभाषा प्रकाशिका— चेन्नमट्टी पत्र म०६२ । प्रा०१० ४ ४ इन्छ । भाषा— सरकृत । विषय — त्याय । र०काल । ले०काल स०१७७५ ज्येष्ठ गुरी ५ । पूर्णे । बेप्टन फ०४७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर अयपुर ।

विशेष — सुस्थान नगर के चितामिए। पार्श्वनाथ मदिर में मुमित कुशन ने सिंह कुशन के पठनार्थ . प्रतिनिधि की थी।

२५६७. तर्कमाषावात्तिक—  $\times$  । पत्र स०४। आ० १० $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  इञ्च । भाषा—सन्द्रत । विषय—दर्णन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स०२६४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रिनन्दन स्वामी, यूँदी ।

२५८६. तकंसंग्रह-प्रश्नं महा। पत्रसंग्रेशः। प्रा०१० × ४६ इता । भाषा—सस्हतः। विषय—न्यायः । र०कालः × । ले०कालः स०१७६१ प्रापाढ बुदी २ । पूर्णः । वेष्टन सं०२०२ । प्राप्ति स्थान—प्र०दि० जैन मंदिर प्रजमेरः। २५६६. प्रति सं० १ । पत्रस० ३ । ले०काल सं० १८२० वैशाख सूदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सक्या ३१४ प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

२६००. प्रति सं०२ । पत्र म•१७ । म्रा०११×६ हुँ इचा। ले॰ काल ४ । सपूर्ण। बेब्रन सं०१७४-७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

२६०२. **प्रतिसं०४ ।** पत्रसं०१६। ग्रा०१ × ४ इस्त्रा ले० काल सं०१७६६ । पूर्एं। बेष्टन सं०१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय वृदी ।

२६०३. प्रतिसं० ५ । पत्र सम्ब्या १६ । घा० ६ × ४ इ.च. । लेखन काल स०१८६६ माच सुदी ११ । पूर्ण । बेबन म०१३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर पावर्षनाथ चौगान बन्दी ।

२६०४. प्रतिस०६। पत्रस०६। झा०१२ हुँ ५ ५ हुँ इस्त। से० काल स०१८२१। पूर्ण। बेष्टनस०४७१। प्राप्तिस्थान—प्दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर।

विशेष - जयनगर मे श्री क्षेमेन्द्रकीति के शासन मे प्रति।लिप हुई थी।

२६०४. प्रति स०७ । पत्र स०७ । म्रा० १२×४ इ.च । ले० काल × । वेग्न स ४७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

२६०६. प्रति सरुया ६ । पत्रस० ७ । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर नेमिनाथ टांडारार्थासह (टोक)

२६०७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १४ । प्रा० ६  $\times$  ४ है इन्छ । ले० काल स० १८०१ प्रगहन बुदी १२ । पूर्ण । बेहनस० १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुंदी)

विशेष -- लिखिन खातोली नगर मध्ये । प्रति सस्कृत टीका, सहित है ।

२६०८. प्रति सं० १० । पत्र म० ८। छा० ११४ ४ इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--प्रित टीका सहित है।

२६०**६. प्रति स० ११** । यत्र स० १७ । ले० काल । पूर्णं imes । वेष्टन सं० ७५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पनायती मन्दिर भगनपुर ।

२६१०. प्रति सं० १२ । पत्रसः० ११ । ब्रा० १०  $\times$  ५ $^{3}$  इत्था । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १३३२ । प्रास्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

विशेष-प्रति टीका सहित है।

२६११. प्रति सं० १३ । पत्र स०६ । घा०११×५ इचा । ले० काल स०१८६१ । पूर्ण । बेकुनस० ३३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी बुंदी ।

२६१२. दशंतसार—वेबसेन । पत्र स० ६ । घा० ११ $\frac{1}{2} \times 1\frac{3}{2}$  दशं । भाषा—प्राकृत । विषय—दर्शन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४५६ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

२६१३. प्रति सं०२ । पत्र म०४ । प्रा०१२ $\times$ ४ १ इ.स. । ले०काल $\times$  । पूर्णं। वेण्टन स०१३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागरी बुदी ।

**२६१४. प्रति सं० ३ ।** पत्र स०४ । ग्रा० १२ <sub>१</sub>४६ इ.च । ले०काल म०१६२४ । पूर्णा। वेष्टन सं०२१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नागदी वृंदी।

विशेष-देवीलाल के शिष्य थिरधी चन्द ने प्रतिलिपि भालरापाटन में की ।

२६**१५. प्रतिसं० ४** । पत्र स० ५ । श्रा० १२<sup>2</sup>४ ७ इचा । ले•काल स० १६२५ । पूर्ण । बेहन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दीवानजी कामा ।

**२६१७. प्रतिसंo ६**। पत्रसo २। ले० काल imes । सपूर्ण । वेष्टनसo २५७/८५ । प्राप्ति **स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२६१८. प्रति सं०'७ । पत्र स०३ । ग्रा० १०} ४ ४ है इञ्च । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन म० ४४८ । प्राप्ति स्थान⊷िंद० जैन सदिर लक्कर, जयपुर ।

२६१६. द्रस्था पदार्थ $\rightarrow$   $\times$  1 पत्र स० १। प्रा० १० $\times$ ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय— तकं (दर्गन) । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स**०** ११३ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मंदिर सजनर ।

२६२०. द्विजवदनचपेटा—  $\times$ । पत्र स०१०। प्रा०१३  $\times$  ४ इच । भाषा—सरकृत । विषय—वार्याववार (न्याय दर्गन)। र०काल  $\times$ । ने० काल स०१७२४। प्रयूपं । वेष्टन स०४३२/४०७। प्राप्ति स्थान—द० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६२१. प्रतिसं०२ । पत्र स०१६ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०४३३/४०६ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

२६२२. **नयसक—देवसेन ।।** पत्र म०१४ । प्रा०१३४७ इ.स. । भाषा —मस्कृत । विषय-त्याय । र०कारा ∠ाते**०** काल स०१६४४ मात्र मुदी १०। पूर्ण । बेष्टन स०११२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बन्दी ।

विशेष---प्रति जीर्ग् है।

२६२३. प्रति-ऋं० २ । पत्रस० ४= । ग्रा० १०  $\times$  ६ $\frac{1}{2}$  इच्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ग । बंग्रनस० २१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष -- प्रति जीर्ग है।

२६२४. नयुक्क, साया वयनिका—हेमराज । पत्र स० ११ । मा० ८१ ४,६६ै इखा। माया —हिन्दी (गद्य) । विषय्—दर्गन् । र०काल स० १७२६ फागुण मुदी १० । ले० काल ४ । पूर्णः । बेष्टन स० ४६ ।१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रयवान मन्दिर उदयपुर ।

२६२४. प्रतिश्चं २ १ पत्र स० २७ । ग्रा० म्हे ४ ६ १ इ.स. । ले॰ काल ४ । पूर्णः । वेष्टन स० ६ । प्राप्ति स्थान — प्रवताल प्रवायती दि॰ जैन मन्दिर ग्रानवर । **२६२६. प्रतिसं० ३** । पत्र स० १३ । ब्रा० १०imes६० च । ले**० काल** imes । ब्रपूर्ण । बेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर, ब्रालबर ।

२६२७. प्रति सं० ४ । पत्रस० १२ । प्रा० १२३ ×४३ इश्व । ने० काल ∞ । पूर्ण । बेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

श्चान्तिम पुष्पिका—इति श्री पडित नरायगादानोषदेशात् साह हेमराज कृत नयचक की मामान्य वचनिका सम्पूर्ण ।

**२६२८. प्रति सं० ४ ।** पत्रस० २२ । आ० १०% ४ ६१ इङ्च । ले०काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्चनाय मदिर, इन्दरगढ (कोटा)

**२६२६. प्रतिसं०६ ।** पत्र सं०६ । ग्रा० १२ $\frac{3}{4}$   $\times$  ६ इथा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३६/२६ । प्राफ्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.) ।

२६३०. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १७ । घा० = रैं ४७ है इञ्च । लेखन काल म० ११३४ । ग्रपूर्ण । बेष्टुत सं० २०६ । प्राप्ति स्थान-–दि० जैन सन्दिर दीवानजी कथ्या ।

विशेष--पत्र म०४ नहीं है। लाला श्रीलाल जैन ने रतीराम ब्राह्मस्य कामावाले से प्रतिलिपि कराई थी।

**२६२१ प्रति सं० ८** । पत्र स०१४ । ग्रा०११ 🗡 ५ै इञ्च । ले०काल 🧭 । ब्रपूर्ण । वेष्टनस०८०। **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन पचायती मन्दिर कामा ।

२६३२. प्रतिसं• ६ । पत्र स॰ १४ । आ० ११ 🖂 ४३ इन्छ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानी डीग ।

२६३**३. प्रतिसं० १०** । पत्रम० १६ । श्रा० १०१<sup>९</sup>, **४ इ**ञ्च । ने०कान स० १६३७ । पूर्मा । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**∸भ० दि० जैन मस्दिर ध्रजमेर ।

२३३४. नयचक माया-निहालचःद ? पत्र म०६५ । ग्रा० १२ ६ ७ डव्स । भाषा-हिन्दी । विषय—न्याय । र०काल स० १९६६ मागंशीय वटी ६ । ले० काल स० १९७३ । पूर्ण । बहुन स० १७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मदिर करीली ।

> विशेष--सहर कानपुर के निकट कपू फोज निवास । तहा बैठि टीका करी थिरता को प्रवकास ।। वबत प्राटादस सतक उपर सठ सठि घान । मारग वदि यटटी विग्व वार निवास कान ।। ता दिन पूरन भयी बडी हुएँ विज्ञ द्यान ।। र के माठ निवि नहें हथी मुख मो उर प्रान ।।

टीका का नाम स्वमति प्रकाशिनी टीका है।

२६२**१. प्रति सं० २ ।** पत्रस**० ४७ । प्रा० १४ imes५ इ.च. । से० कान imes । पूर्ण । बेष्ट्रनस<b>०** १३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पत्रायती मदिर नयाना ।

२६३६. प्रतिसं०३ । पत्रसं०४५ । द्वा०१२ है ४७ है इन्छ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं०३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटामस्टिर दयाना।

२६३८. त्याय प्रंथ —  $\times$  । पत्र स०६। ग्रा०१३  $\times$  ४ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-जैन त्याय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टन स०४४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

**२६३६. न्याय ग्रंथ**— $\times$  । पत्र सं० ३–२३५ । मा० १३ $\times$ ५ इन्थ । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन न्याय । रं० काल $\times$ 1 ते० काल $-\times$ 1 म्रपूर्ण । बेष्टन स० ४२०/२८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयप्र ।

२६४०. न्याय**चित्रका — मह केदार ।** पत्रस०१६। ग्रा०१० $\times$ ४ इच । भाषा-सस्कृत विषय - न्याय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०१४३७ । प्राप्तिस्थान — भ० दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

२६४१. न्यायदीपिका-धर्मभूवरगः। पत्रसं० ३६ । घा० ११४४ इश्वः । भाषा-सस्कृतः। विषय-जैन न्यायः। र०कालः 🗴 । ले० कालः 🗴 । पूर्णः। बेष्टनसं० ३०० । प्राप्ति स्थानः—म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेरः।

२६४२. प्रति सं०१ । पत्र स०३० । ले० काल सं०१८२४ भ्राषाढ बुटी ४ । पूर्ण। बेष्टत स०३२७ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मदिर ।

२६४३. प्रतिस**० २ ।** पत्रस० ३४ । घा०६ $\frac{3}{6} \times ५ इञ्च । ले०काल स० १६५३ घासीज$ सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० ६३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पाप्रवेशप चौगान बूदी ।

विशेष - स्यौजीराम ने प० जिनदास कोटे बाले के प्रसाद से लिखा।

२६४४. प्रति स० ३ । पत्रस० ३४ । ग्रा० ११ × ४ इञ्च । ले० काल स० १७०४ । पूर्णं । बेष्टन स० १७० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन श्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६४५. प्रति सं० ४ । पत्र म० २१ । ग्रा० १२ $\frac{1}{2}$  imes ६ इश्वः । ले०काल imes । वेष्टन स० ३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

२६४६. प्रति सं० ४ । पत्र स० २८ । झा० १२ 🗴 ४ १ इश्व । ले०काल 🗡 । बेष्टन स० ३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लघ्कर, जयपुर ।

२६४७. न्याय दोषिका माथा वचिनिका—संघी पन्नालाल । पत्र स०११ । प्रा०१३३ ४ ५३ इञ्च । पापा-सस्कृत हिन्दी । विषय—न्याय । २०काल स०१६३५ मगसिर वदी ७ । ले० काल स०१६४७ ।पूर्ण । वेष्टन सं०४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फनेहपुर लेखावाटी (सीकर) ।

२६४८. स्यायाबतारबृत्ति— X । पत्र स० X । आ० १०३ X ४ हु इश्व । भाषा—संस्कृत विषय—स्याय । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन म्रायवाल मन्दिर, उदयपुर । २६४६. न्याय बोधिनी  $\times$  । पत्र सं० १-१७ । घा० ११ $\frac{7}{8} \times 2$  इन्त । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टन सं० ७४४ । घपूर्ण । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

घ्यात्वा गोवर्द्धं नं सुधीस्तन्ते न्यायबोधिनीम् ॥

२६५०. न्द्रायबिनिश्चय - ग्राचार्य ग्रकलंकवेव । पत्रस० १। माषा — संस्कृत । विषय — ग्याय । र०काल × । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१/४०४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाय मंदिर उदयपुर ।

२६५१. न्यायसिद्धांत प्रमा—ग्रनंतसूरि । पत्र स० २३ । प्रा० १० $\frac{1}{6} \times \frac{1}{2}$  इख । भाषा— सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेपृन स ७१४ । प्राप्तिस्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

२६४२. न्यायसिद्धांतदीपक टीका-टीकाकार शिकास । पत्रस०१२७। प्रा०१० $\times$  ४ $\frac{1}{3}$  इञ्च। भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । २०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स०७१४। प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-एक १८ पत्रों की अपूर्ण प्रति और है।

२६५३. पत्रपरीक्षा—विद्यानन्दि । पत्रस ३३ । म्रा१३४ १प्र1 । प्राप्त —सस्कृत । विषय-रणंन । र०काल 1 । प्रं0 । प्राप्त । विष्त स्थान —दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

२६४४. परीक्षामुख-मास्यियनंदि । पत्रस० ४ । धा० १२ $\times$ ४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय--रणंग । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टनसं० २०२/१४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६५५ परीक्षामुख (लघुवृत्ति) —  $\times$  । पत्रसः २० । धा० १० $\frac{7}{2} \times \frac{9}{4} \times 1 सावा - सस्कृत । विषय —स्याय । २०काल <math>\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर प्रवर्गर ।

विशेष--पत्र स० ७ से 'ब्राप्तरीक्षा' दी गई है।

२६४६. परीक्षामुख माषा-जयचन्द छबड़ा। पत्रस०१२७। प्रा०१४ × न्दै इख । भाषा-राजस्थानी (हूँडारी) गद्य । विषय-दशन । र०काल स०१८६० । ले•काल स०१६४३। पूर्ण । वेष्ट्रन स०१३६३। प्राप्ति स्थान--दि० जैन प्रवासती मदिर मलवर।

२६४७. प्रतिसं० २ । पत्र स०१८८ । लेक्नाल स०१६२२ जेठ कृष्णा ११ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर दीवान जी भरतपुर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

२६४६. प्रमासानयतस्वालोकालंकार वृक्ति—रस्तप्रभावार्य । पत्र स०३–६७। धा०११४ ४१ इत्र । भाषा—सस्कृत । विषय—स्याय । र०काल × । ले० काल × । धपूर्मा । वेष्ट्रन सं०२६१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन धप्रवाल मस्दिर उदयपुर ।

विशेष -- दो प्रतियो का सम्मश्रम है। टीका का नाम रत्नाकरावतारिका है।

**२६६०. प्रति स०२** । पत्रस० ६६ । आ०१०५४४६ । लेक्काल स० १४४२ आसीज **वृदी** ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष—वित्र श्रीवस्त ने वीसलपुर नगर में प्रतिलिपि की वी भ्रौर मुनि मुजारानगर के णिय्य पं॰ श्री कल्यारा सागर को भेंट की थी।

**२६६१. प्रतिसं० ३।** पत्रस० ७६। लेक्काल स० १५०१। पूर्णा बेष्टन स० ६१/४६३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन समबनाथ मदिग उदयपुर ।

विशेष -- प्रति प्राचीन एव जीएाँ है। भ्रतिम पूष्पिका निम्न प्रकार है--

प्रमासानयातस्वालकारे श्री रत्नप्रश्नीवरविनाया रानावनारिकास्य लघु टीकाय वादस्वस्य निक्यगो-यानामप्टम परिचक्रेद समाप्ता । श्री रत्नावनारिकास्य लघुटीकेति । सवन् १५०१ माध गृदि १० नियौ श्री ५ महारक श्री रत्नप्रभृति शिष्येण लिबिनामिद ।

२६६२. प्रमासानय निर्साय-श्री यशःसागर गरिस । पत्रस०१६ । प्रा०१० ×  $\epsilon$  ३ डन्न । मामा-सरकृत । विषय-न्याय । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन म०२७ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन सम्बर लक्कर जयपर ।

२६६३. प्रमार्ग निर्मय—विद्यानंदि । पत्र स० ५७ । ब्रा० ११९४ इच । आया — सस्कृत । विषय—स्याय । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन म० २१३ । प्राप्ति स्थान—कि॰ जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष प्रति प्राचीन है। मुनि धर्ममूषरा के शिष्य ४० मोहन के पठनार्थ प्रति निकासी समीधी।

**२६६४. प्रतिसं० २** । पत्रस ५६ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स २८८ । **प्राप्तिः स्थान**—दिः जैन प्रवायती मदिर भरतपुर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है पं वह वंकल्यास की पुस्तक है। कठिन मध्यों के अर्थ भी है।

२६६५. प्रमाण परीक्षा—विद्यानंद । पत्र म० ७४ । प्रा० ११ $\times$ ४ इ.च । भाषा—संस्कृत । विद्यन—स्याय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म०२२३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रयुवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-ग्रादिभाग-

जयति निर्जिताशेष सर्वर्षकातनीतयः । सरववाक्याधियाशश्वन् विद्यानदो जिनेश्वरा ।। स्रथ प्रमास परीक्षा तत्र प्रमास सक्षस परीक्ष्यते ।

मृति श्री धर्म भूषए। के शिष्य बह्म मोहन के पठनायं प्रतिलिपि की गयी थी।

**२६६६. प्रतिसं० २** । पत्र स०४७ । घा० १४-३ × ४. इञ्चा ने०काल × । पूर्णा बेष्टन स० ३३१७४८ । **प्राप्ति स्थान**-— दि० जैन स गवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- मट्टारक वादिभूषण् के शिष्य इ॰ नेमीदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

२६६७. प्रतिसं० ३ । पत्र स०६३ । म्रा०१३ ४७ १ इचा ले० काल स०१६३७ । पूर्ण। वेष्टन सं०३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२६६६ प्रमारा परीक्षा माषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्रसं ६० । ब्रा० १३४७ इंच । भाषा—जिल्हो ग० । विषय दर्शन । र०काल म० १६१३ । क्षेत्रकाल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान— टि० जैन मदिर पाण्येनाथ चौगान बंदी ।

२६६६. प्रमारा प्रमेय कलिका—नरेन्द्रसेन । पत्र स०१०। प्रा०११३४४ इश्व । भाषा—सन्द्रत । विषय—दर्शत । र०काल ४ । ले०काल स०१७१४ फाल्गुत सुरी १२।पूर्ण । बेष्ट्रन स०२६२ प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर क्रियनस्व स्वामी बुदी

विशेष--श्री गूगाचद्र मनि ने प्रतिलिपि की थी।

२६७०. प्रमास्य मंजरी टिप्पस्मी— × पत्रसं∘ ४ । घा० १०× ४ है इख । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल स० १६१४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन ग्रायनाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रणस्ति निस्त प्रतार है---

म० १६१५ वर्षे भादवा गदी १ रवी श्री शुभनन्द्रदेवा तन् शिष्योपाध्याय श्री सकलभूष्याय पठनार्थ ।

२६७१. प्रति सं०२ । पत्रम०२४ । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टनस०२२३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पनायनी सदिर भरनपुर ।

विशेष--- प्रति स्रति प्राचीन है।

२६७२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २७ । या॰ ११ imes१ इञ्च । ले॰काल imes । पूर्ण । बेष्टन स॰ १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अववाल सांत्रर उदसपुर ।

२६७३. प्रेमयरत्ममाला- धनन्तवीर्यः । पत्रत०७० । ग्रा० ११४६ इच । भाषा-सम्कृतः । विषय-स्थायः । २०कालः ४ । ले०काल स०१८६१ कार्तिक बुदी ८ । पूर्णः । वेष्ट्रन स०११८० । प्राप्ति स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः ।

विशेष-परीक्षा मख की विस्तन टीका है।

२६७४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६३ । म्रा० ११ 🗴 ४६ ६८४ । ते०काल स० १७०४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६२ । प्रास्तिस्थान—वि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर में सभवनाथ चैन्यालय में प्रतिलिपि हुई थी। धर्मभूषरा के शिष्य प० मोहन ने प्रतिलिपि की थी। कही कही टीका भी दी हुई है।

२६७४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४३ । ग्रा० १३×४ इचा । ते० काल × पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रथवाल मन्दिर उदयपुर । २६७६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७५ । प्रपूर्णं । बेष्टन स० २२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती मदिर भरतपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

२६७७. प्रति सं० १ । पत्र सं० ३३ । घा०१२  $\times$  १ $\frac{1}{2}$  इश्व । ले•काल  $\times$  । बेष्टन स० ६८७ । प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

२६७८. पंचपादिका विवरस्य—प्रकाशास्त्रज भगवत । पत्र स०१८६ । प्रा०१०३ $\times$  ४ $\frac{1}{3}$  इ.च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्याय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०१११ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष-पृष्पिका निम्न प्रकार है-

इति श्रीमत् परमहंस परिद्राजकात्यानुभव पूज्यपाद शिष्यस्य प्रकाशात्मज भगवत् कृतौ पचपादिका विवरसो द्वितीय सुत्र समाप्तम् ।

२६८०. महाविद्याः— $\times$ 1 पत्र तं० ४। प्रा० १३ $\times$ ४ इच । भाषा —सस्कृत । विषय — र्जन त्याय । र०काल । ते०काल  $\times$ 1 पूर्ण । वेष्टन त० ४४४/४०० । प्राप्ति स्थान — दि० जंन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

ग्रन्तिम पुष्पिका---

इति तर्क प्रवासीना महाविद्याभियोगिना ।

इति विद्यातकी .. ....शास्त्रं समाप्त ।।

२६ द**१. रस्तावली न्यायवृत्ति—जिनहर्ष सूरि** । पत्रम० ४७ । भाषा —सस्कृत । विषय— स्याय । र०काल  $\times$  । ते•काल । पूर्ण । वेष्टन म० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्राधती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--जिनहर्षं मूरि वाचक दयारत्न के शिष्य थे।

२६८२. विदम्ब मुल्लमंडन — घर्मदासः । पत्र सं०१८ । प्रा० १२४४ इश्व । भाषा — सस्कृतः । विषय — न्यायः । २०काल — ४ । ने० कान सं०१७६३ माघ मुदी १० । पूर्ण । वेट्टन स०२२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

विशेष-- ब्रह्म केसोदास के शिष्य ब्रह्म कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी।

२६ $\pi$ ३. प्रति सं० २ । पत्रस० १६ । प्रा० १२imes४५ $^2$ , इश्व । ले॰काल imes । पूर्ण । बेक्टन म $\circ$  २३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर घादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

२६**८४. प्रति सं० ३ ।** पत्र स० ६ । मा० ११३  $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  इश्व । ते० काल स० १७१४ चैन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स**०** २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२६ म. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २८ । प्रा॰ १२ ४ ४ इ.च. । ले० काल ४ । पूर्ए । बेष्टन स० ४६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर । विशेष - प्रति सस्कृत टिप्पण सहित है ।

२६८६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १४। ब्रा० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इञ्च। ले० काल सं० १८१४ ध्वावम् सुदी १२। वेज्यत सं० ४६८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपूर।

विशेष-प्रति सस्कृत टिप्पग् सहित है।

**२६**८७. प्रति स० ६ । पत्र सं० ५ । द्या० १३ $\frac{1}{6}$ ४५ $\frac{1}{6}$ ६चा । लेक्सल imes । वेष्टन स० ६८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत टीका सहित है।

२६८८. विदाध मुखसंडन—टीकाकार शिवचन्द । यत्र स० ११७। प्रा० १०  $\times$  ४ हे इन्द्र । भाषा—सम्ब्रत । विषय—न्याय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २१८ । प्राप्ति स्थान — ७० जैन मन्द्रि प्रभिनन्द्रन स्वामी, बंदी ।

२६ व. वेदान्त संप्रह $-\times$ । पत्र सं० ११। प्रा० १२ $^2_7 \times 3^3_7 \times 3^1$ । भाषा—सङ्ख्त। विषय—दर्शन। २० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वेष्टनस० ४७। प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२६६०. **षट् दर्शन** —  $\times$  । पत्र स० ४। म्रा० १२ $\times$ १ द्वा । भामा — मण्डून । विषय — न्याय । र०काल  $\times$  । ले० कान  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १७२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, वृदी ।

२६**८१. षट् दर्शन बचन**—  $\times$ । पत्र स०६। भ्राया-सस्कृत । विषय-दर्शन । र०काल $\times$ । के० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स०१०६/४६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

२६६२. षट् दशंन विचार । पत्र म०३। म्रा० १०X४६७ । भाषा — सस्कृत । विषय – दर्णन । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । बेष्टन स०२१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर भीमनन्दन स्वामी बुँदी ।

२६६३. **घट् दशंन समुख्य** —  $\times$  । पत्रस० १०। ग्रा० १० $\times$ ४ $^{1}$  इत्थ । भाषा — सस्कृत । विषय—दशंन । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । वेष्टन स० १२०४। प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

२६६४. **वट् दशंन समुज्यय—हरिचन्द्र सुरि** । पत्र स० २८ । घा० ११×४ ६ व्य । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र०काल × । ले∙काल स० १४४८ । घपूर्ण । वेष्टन स० ६२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष—पत्र स०१६ पर स०१५४६ वर्षे श्रासोज वदि न—ऐसा लिखा है पत्र २६ पर हेमचन्द्र इत 'वीर द्वातिशतिका' भी दी हुई है।

२६६५. प्रति सं० २ । पत्रस० २ । लेक्सल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स० १०५/४६६ । प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन समयनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६६६ प्रति सं०३। पत्र सं०६। ग्रा० १०×४ः हैं इंच। ले०काल स०१८३१ ग्रासोज सुदी ११। पूर्ण। बेष्टन स०२१२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा। २६६ म. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३७ । घा० १२ ×६ इथा। ले० काल स० १६०१ । पूर्णे। केष्टन सं० २४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी वदी।

विशेष - सवाईमाधोपुर में नोनदराम बाह्मण ने प्रतिलिपि की थी। प्रति सटीक है।

२६६६. प्रतिसं० ४। पत्रस०६। ते०काल स०१६३४।पूर्ण। बेष्टनस०१०४/४०३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदगपुर।

विशेष—सवत् १६३५ वर्षे तथा शाके १४६६ प्रवर्तमाने मार्गसिर मुदी शनौ व्र० श्री नेमिदासमिद पुस्तक ॥

२७००. षट् दर्शन समुच्चय टीका—राजहंस । पत्रसं० २२-२६ । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । रं०काल 🔀 । सेक्काल सं० १४६० ब्रासीज बुदी ४ । ब्रपूर्ण । बेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**— दिंठ जैन पंजायनी महिर होते ।

२७०१. षट् दर्शन समुख्य सूत्र टीका— 🗴 । पत्रसः ४४ । आः १११ ४ १ इव । भाषा—सम्कृत हिन्दी । राजकाल 🗴 । लेव काल सव १०१० वैशाख बुदी । पूर्ण । बेष्ट्रन सव ६७ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन सन्दिर, नागदी ब दी ।

२७०२. **यट् दर्शन समुच्चय सटीक** $\cdots\cdots$  । पत्र स० ७ । आ० ११ $\times$ १ $^1_{\gamma}$  इन्त । भाषा—संस्कृत । विषय — न्याय । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रयूगों । बेहन स० १५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - प्रति अपूर्ण है। चौथा पत्र नहीं है एवं पत्र जीर्ण है।

२७०३. **यट् वर्शन के छिनव पासंड**— × 1 पत्र स० १ । भाषा—हिन्दी गव । विषय— दर्गन । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०-१४६ । **प्राप्ति, स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिस (टोक)

२७०४. सस्तपदार्थी—शिवादिस्य । पत्र स० १४ । प्रा० १२ × २१ इन्छ । भाषा — सस्कृत । विषय — दर्शन । २० काल्  $\times$  । ले०काल्  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० २४६ । प्राप्ति स्थान — महारकोय दि० जैन मन्दिर प्रजेम ।

२७०**५. प्रति सं० २ ।** पत्रस० ६ । आर० ६×५ इच्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६५० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त, मन्दिर ।

२७०६. सस्तर्भगी न्याय —  $\times$  । पत्रसः २ । घा० १२ $\times$ ४ इख । भाषा -सम्कृत । विषय-न्याय । २०काल  $\times$  । ले० कान  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसः ० ४४१ २६२। प्रास्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदशपुर ।

२७०७. सप्तमंगी वर्गन $-\times$ । पत्रस०१२। बा०११ $\times$ ५ इत्र। माध्य-स्कृत। विषय-स्याय। २०काव  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। बेप्टनस०१< $\times$ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवानती क मा।

२७०८ सर्वज्ञ महारम्य — ४ । पत्रतः २ । भाषा —सस्कृत । विषय —दर्गन । २०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसरू, ५८ ६४० । प्राप्ति स्थानं — दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर । विशेष — देवानम स्वीत्र की व्याख्या है । २७०६. सर्वज्ञसिद्धि । पत्रस० २०। म्रा० ११ $\times$ ४ इन्छ । भाषा — सस्कृत । विषय — याय । २०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टृन स० ४४४ २२५४ । **प्राप्ति स्थान** — सभवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

२७१०. सार संग्रह—बरदराज । पत्रसं० २-१०० । प्रा० ११ × ५३ इच । भाषा— संस्कृत (गर्य) । विषय—स्याय । र०काल × । ले०काल × । प्रपूर्ण । बेष्टनसं० १२ । प्रास्ति स्थान— वि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपर ।

२७**११. प्रतिसं० २ ।** पत्र स०७ । ग्रा०११×५ इन्था । ले**०काल** × । प्रपूर्ण । बेप्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन प्रग्रवान मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-इसका दसरा नाम तार्किक रास भी है।

२७१२. प्रति स०३। पत्रस०६३। ग्रा०११ $\frac{3}{6} \times \frac{3}{6}$  इच । लेक्नाल स०१६५२। पूर्ण । बेप्टन स०३२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अप्रवास गन्दिर उदयपुर ।

२७१३. सांख्य प्रवचन सुत्र— × । पत्र सं०१४० । ष्या० ६३ × ५६ च । भाषा— सरकृत । विषय—न्याय । २०काल × । ले० कान स०१७६५ फागुन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन म०१७६ । प्राप्ति स्थान—दि० तैन मन्दिर वोरमली काटा ।

२७१४. सांख्य सप्तति  $\times$  । पत्र म०४। ग्रा०१०  $\times$   $\mathbf{Y}_3^2$  इखा । गाया--सस्त्रन । विषय---दर्गन ।  $^7$ ०काल  $\times$  । ते० काल स० १६२१ भादवा बुदी १४। पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**--- वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष — अयपुर नगर में प० चोमचन्द्रजी के शिष्य प० सुखराम ने नैशासागर के लिए प्रतिसिपि की ग्री।

२७**१५. सिद्धांत मुक्तावली**—  $\times$  । पत्र स०६२ । प्रा०१०  $\times$  ४१ दश्व । भाषा— सम्कृत । विषय--न्याय । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१२१० भादवः बुदी २ । पूर्णे । वेप्टन स०१२१७ । प्रास्ति स्थान — भट्टाकोष दि० जैन मदिर धजमेर ।

२७१६. स्याद्वाद मंजरी – मिल्लिथेए सूरी । पत्र स० ३६ । आ० ११ $\times$ ४ इच । भाषा – सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टुन स० ३६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिलर बोरसनी कोटा ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

२७१७. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६७ । ग्रा० १०×४३ इला । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स० १०४/६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टींक)

विशेष-प्रति प्राचीन एव टीका सहित है।

# विषय-पुरारा साहित्य

२७१८. प्रजित जिनपुरास्म पंडिताचार्य प्रदेशासिए। पत्र स० १९१। बा० १२६ ४ ४ इच्छ । भाषा — सस्कृत । विषय — पुरास्म । र०काल स० १७१६ । ले०काल स० १७६७ वैशास सुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० सं० ४२६ । प्राप्ति स्थान — स० दि० जैन मन्तिर प्रजमेर ।

। 1 वष्टनसञ्सञ्बर्धः प्रसम्बर्धाः — भगादञ्जनमान्दरं भ्रजमन् विशेषः — प्रतिजीर्गां भीर्गहै।

२७१६. प्रतिसं०२ । पत्र सं०३४ । ले॰काल  $\times$  । सपूर्ण । बेष्टन स०४४६ । प्राप्ति स्थान—दि० उपरोक्त मन्दिर।

विशेष--अजितनाथ द्वितीय तीर्थंकर है। इस पूरारण मे उनका जीवन चरित्र विस्तृत है।

२७२०. **ग्रांदि पुराग्ण महात्म्य**— पत्र स० २ । ग्रा० १०  $\times$  ४ है इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—महात्म्य वर्णन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स० ७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना बुंदी ।

२७२१. ग्राविपुराग् — जिनसेनाचार्य । पत्र स०४४० । ग्रा०१० रू ४६ रू इ. ॥ भाषा — सस्कृत । विषय — पुराग् । र०काल 🗴 । ते० काल स०१६७३ पीष बुदी । बेपून सं०१४० । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर अवभेर ।

२७२२. प्रतिसं० २ । पत्र सं. ३६२ । प्रा० १२  $\times$  ६ इश्व । भाषा —सस्कृत । विषय-पुरासा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १९५६ पूर्मा । वे० सं० १४४३ । प्राप्ति स्थान – उरोक्त मन्दिर ।

२७२३. द्र**तिसं**०३ । पत्र स०४८१ । आ०१० $\frac{3}{5} \times 3$ इच । ते० काल स०१६८१ आवस्त सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स०१४४३ । **प्राप्ति स्थान**— म०६० जैन मदिर प्रजमेर ।

२७२४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४०४ । प्रा० १२ $\frac{3}{6} \times$ ७ इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेध्टन स० २११ । प्राप्ति स्थान— न० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

२७२५. प्रतिसं०४ । पत्र स०७६२ । प्रा०११ $\times$ ६ इ.च. । ले०काल स०१८८५ वैशास्त्र सुदी १४ । पूर्णा । वेटन स०१५६७ । प्राप्ति स्थान-भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष---प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

**२७२६. प्रतिसं० ४**। पत्रस० २०० । प्रा० ११३ × ६ इञ्च । ने०काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २०३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रग्नशाल मन्दिर उदयपुर ।

२७२७. प्रति स० ६ । पत्रस० ७ । प्रा० १२ $\times$ ६ इश्व । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टनसं• ३६/६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७२**८. प्रति सं०७**ं। पत्र स० ४४३ । प्रा० १२×६ इचा। ले० काल × । श्रपूर्ण । वेष्टन स०६। **प्राप्तिस्थान** ≟दि० जैन श्रप्रधाल मंदिर उदयपुर ।

२७२६. प्रतिसंब ट । पत्र सब् ३५१ । घाव १२४ ८ इन्छ । लेक्सल ४ । पूर्ण । वेस्टन सब् ३ । प्राप्तिस्थान—पनायती दिव्जैन मदिर करीली ।

विशेष—लं ० प्रशस्ति भपूर्ण है।

चादनगाव महावीर मे गूजर के राज्य मे पाण्डे मुखलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२७२६ (क) प्रति सं० ६ । पत्र स० ४२४ । ब्रा० ११ है ४६ इश्वर । ले० काल × । पूर्या । बेष्टन स० ६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

**२७३०. प्रति स०१० ।** पत्र स०४६४ । प्रा०१०३/४५ इल्ड । ले० काल स०१६६६ फागूरा सुदी११। पूर्ण । बेष्टुन स०५६,२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगार्गा मन्दिर करीली।

२७**३१. प्रतिसं० ११** । पत्र स० ६०६ । ले०काल स० १७३० कालिक मुदी १३ बुषवार । भूपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समबनाय मन्दिर उदयपुर ।

**विशेष** प्रतिजीएंशीएं है।

प्रशस्ति—भी मूलगर्ध सरस्तीगच्छे बलात्कारगणे श्री कु दकु दावायांन्वये भट्टारक श्री सकल कीति तत्पट्टे भव मुत्रवर्धीत तरप्टे देव कीति तरप्टे अव मुत्रवर्धीत तरप्टे स्वयं कित्रवर्धी स्वयं मुत्रवर्धीत तर्दा किया स्वयं कित्रवर्धी स्वयं कित्रवर्धीत तर्दा मित्रवर्धीत तर्दा मित्रवर्धीत तर्दा मित्रवर्धीत कर्षा मान्यवर्धीत तर्दा मित्रवर्धीत स्वयं मान्यवर्धीत स्वयं मान्यवर्धीत स्वयं मान्यवर्धीत स्वयं मुत्रवर्धीत स्वयं मान्यवर्धीत स्वयं मुत्रवर्धीत स्वयं मान्यवर्धीत स्वयं प्रवर्धीत स्वयं स्वर्धीत स्वयं प्रवर्धीत स्वयं प्रवर्धीत स्वयं प्रवर्धीत स्वयं स्व

२७३२. प्रति स० १२ । पत्र स० १८७ । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन वडा पचायनो मन्दिर डींग ।

२०३३ प्रतिसं०१३। पत्रम० २४२ । ग्रा०१२ 🗶 ५६ खा । ले० काल स० १७४८ । पूर्णा । वेष्ट्रमा०४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर टीवानजी कामा ।

विशेष---म ग्रामपुर निवासी माहजी श्री द्यानतरायजी श्रीमाल जातीय ने इसकी प्रतिलिपि करवायी शे।

२७३४. प्रति स० १४ । पत्रस० ३६६ । ब्रा० ११३ $\times$ ५ $^{\circ}$  इन्त । ने०काल स० १७२२ चैत मुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० १३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रमिनन्दन स्वामी, दू द. ।

लेखक प्रशस्ति--

श्री भवनभूषणेन स्वहस्तेन भट्टारक श्री जगरकीर्त्तिजितरूपदेशात् सागावत्या मध्ये सबत् १७२२ मधुमास गुक्तपक्षे यटी भृगुवासरे ।

२७३४. प्रति सं० १४ । पत्रस० २४१ । ग्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इचा । ले०काल स० १६६१ माघ मुदी ५ । पूर्ण । बेष्टुनस० ६४ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर नागदी, बुदी

विशेष— जयपुर में पन्नालाल लिंदूका ने प्रतिलिपि करवायी थी। प्रारम्भ के १८५ पत्र दूसरी प्रति के हैं।

२७३६. प्रतिसं०१६ । पत्रस०६० । झा०१२४५ इचा । ले०काल स०१६७६ जेष्ठ बढि ८ । झपुर्सा । बेल्टन स०२३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

२७३७. प्रति सं० १७ । पत्रस० १६६ । ग्रा० १२imes६ इ.च. । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टुनसं० १३६ । प्राण्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

२७३६ **. धाविपुरायः — पुष्पदंत ।** पत्र सं० २३४। ब्रा० १२ $\times$ ५ इश्च । आया — धपश्चं ग । विषय — पुराया । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६३१ भारवा मुदी १२ । पूर्ण । वेग्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर प्रजमेर सण्डार ।

विशेष---लेखक प्रणस्ति अपूर्ण है। मालपुरा नगर मे प्रतिलिपि हुई थी। इसमे प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का जीवन वत्त है।

२७**३६. प्रति स०२ ।** पत्रस०२ = ६ । घा०१२ × ५ इक्षा । ले०काल × । घपूर्ए । वेक्रनसं०२०७ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर, ग्रभिनन्दन स्वामीवृदी।

२७४० **मादिपुरासा ।** पत्रस० १७२ । मा०११४५ । भाषा-सस्कृत । र०काल ४ । ले•काल ४ । वेक्टनस० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—ग्रास्त्र भण्डार दि० जैन, मदिर लक्ष्तर जयपुर । **विशेष**—रत्नकीत्ति के शिष्य **क**०रतन ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२७४१. प्रादिपुरास् — सक्सकोति । पत्रसु०१६७ । ब्रा०१०४४ हुँ इ.स. भाषा — सस्कृत । निषय — पुरास्प । रेज्जान ४ । नेज्जान स०१८८० चैन मुदी ८ । पूर्स । बेष्टनस०४६४ । साहित स्थान — स० दि० जैन सदिर सजसेर ।

विशेष—श्री विद्यानदि के प्रशिष्य रूडी ने प्रतिलिपि की थी।

२७४२. प्रति सं०२ । पत्रस० २१⊏ । ब्रा०१२ × ४ इच्च । ले० काल स०१७७६ । पूर्ण। वेकनस०४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)।

विशेष — तक्षकपुर (टोडारायसिंह) में प० विजयराम ने ब्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२७४**३. प्रतिसं०३ । पत्रस०१**८६ । आर०१२ ४ ५१ इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्णा। वेष्टतस०५ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ बुती ।

२७४४. प्रति स० ४ । पत्रसं० १४६ । प्रा० १२ ८ ६ इश्व । ले०काल—स० १६०५ पूर्ण । बेक्टनस० ६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर अमिनन्दन स्वामी, तूदी ।

विशेष-वृदी मे प्रतिनिषि की गई थी।

२७४**४, प्रति स० ४** । पत्र स० २२७ । आ० १०्रे≾४ डञ्च । लेक्काल सं० १७४२ । पूर्ण । बेक्न स० १० । प्राप्ति स्थाने — उपरोक्त ।

विशेष--- म • देवेन्द्रकीत्ति के शिष्य अ • कल्यागमागर ने स्वपटनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७४६. प्रति स० ६ । पत्रस० १६७ । घा० ११ $\frac{1}{2}$  ४ ६ इच्च । लेक्काल स. १७७६ । पूर्ण । बेहुतस० ३३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, प्रमिनन्दनस्वामी, बुदी ।

विशेष--मालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी।

२७४७ प्रतिसं०७ । पत्र स० १७६ । ग्रा० १० 🂢 ६ इ.च. । ले० काल स० १६१० वैगाख बुदी १४ । पूर्या । बेष्टन स० ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नागदी बुदी ।

विशेष-व दावती में नेमिनाय चैत्यालय मे प० विम्मनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२७४८. प्रति सं० ८ । पत्रस० २१४ । म्रा० १०३ ४ ६ $\frac{1}{6}$  इंच । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

२७४**६. प्रतिसं० ६**। पत्र स० २१४। ग्रा० १० $\frac{1}{2} \times 1$  इत्त । ले० काल स० १६९७ वैशास सदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० २२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति — घो ह्यो स्वस्ति श्री संवत् १६८७ वर्षे वैशालमाने शृक्तपक्षे सप्तमी बुधवासरे सरूज नगरे श्री पार्वनायचैत्यान्ये श्रीसहिगवर काष्टासये जैन गच्छे चारित्रगरी भट्टाग्क श्री रामसेनाग्वये तदनुके माग अ० गोमकीत्ति तदनुक्रमेशा अ० ग्लाभूषणा तत्यदृष्टाभरशा भट्टाग्क जयकीत्ति विजयगञ्ये तत् सिष्य इ० किवदाम तत् शिष्य पं० दशरण निस्तत पठनार्थे । परमात्मप्रसादात् श्री गुरुप्रसादात् श्री पदावती प्रमादातः ।

२७५०. प्रति सं० १० । पत्रस० १४१ । लंब्काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टनसं० २२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रचायती मन्दिर भग्नपुर ।

२७**४१. प्रति सं० ११।** पत्रस० २३ म् । ले० काल स० १६७६ मगसिर बुदी ३ । पूर्छ । बेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहरधी मन्दिर बसवा ।

२७**५२. प्रति सं० १२ ।** पत्रस० १-३२ । म्रा०१२×५३ इञ्च । ले॰काल×। म्रपूर्ण । बेहन स० ७०६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

२७५३. **प्राविपुरारा**—क **जिनदास** । पत्रस० १८० । प्रा० १०  $\times$  ४ है इस । भाषा— राजस्थानी पदा । विषय —पुरागा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ३८५-१४४ । प्राप्ति स्थान—६० जैन मन्दिर कोटडिया का हु गण्युर ।

२७४४. प्रति स०२ । पत्रस०१६४ । धा०११४६ । इता ले०काल स०१८८२ । पूर्णं। बेहनस०४२ । प्राप्ति स्थान---- दि० जैन मन्दिर स्थिनन्दन स्वामी दृदी ।

विशेष सरोला ग्राम में प्रतिलिपि की गई थी।

२७४४. ग्राविपुरास्य भाषा—पं० दोलतराम कासलीवाल । पत्र स० ६२४ । ग्रा० ११ ∑ः इश्व । भाषा—क्षेत्री (गद्य) । विषय—प्रयम तीर्थकर ग्रादिताथ के जीवन का वर्णन । र०काल म० १६२४ । ने० काल स० ११७१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २२४ । ग्राप्तिः स्थान—प्र० वि० जैन मन्दिर ग्रजन ।

२७**४६. प्रतिसं०२ ।** पत्र स०२०१ । प्रा०१४× ७ इश्वर । ले० काल × । सपूर्ण । बेष्टत स०१४७३ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त सन्दिर ।

२७५७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १५० । घा० १० $\} \times ७$ ३ इश्वः । ले० काल  $\times$  । अपूर्णः । बेष्टन स० १०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहुपथी दोसा ।

विशेष--- ग्रागं के पत्र नहीं है।

२७४८. प्रति स॰ ४। पत्र स० २६४। प्रा० ११imes६६ इन्छ । ले०काल imes। प्रपूर्ण । वेष्टन स० १०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सङेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७४६. प्रतिसं० ५। पत्र म० ४३। घा० १३imes७ इच । ले०काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टून स० ६०। प्राप्तिस्थान — दि० जैन सण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

२७६०. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १४८ । द्वा० १३ $\times$ ७ इश्व । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**२७६१. प्रतिसं० म ।** पत्र संख्या ६०१ । ग्रा० १२  $\times$  ६ $^{\circ}_{i}$  इला । लेखन काल स० १६१६ । पूर्णे । वेष्टन स० २७५-११० । प्रा**प्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटडियो का द्वंगरपूर ।

विशेष--रतलाम मे प्रतिलिपि की गई थी।

२७६२. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० २०४ । आ० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\epsilon$  इञ्च । ले० काल स० १६४० । अपूर्ण । बेप्टन स० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पास्वेनाथ टोडारायसिह (टोक)।

विशेष-६६ भ्रध्याय तक है। मिल्लनाथ तीर्थंकर तक वर्णन है।

२७६३ प्रति संख्या १०। पत्र स० २२६-४२७। ब्रा० १२४६ इव। ने०कान म० १२१७ ब्राचाढ सुदी ८। ब्रपूर्ण। वेष्ट सं० २७। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर बडा बीमपथी दौसा।

विशेष-रामचन्द छावडा ने दौसा मे प्रतिलिपि की की।

२७६४. प्रति सं० ११। पत्र स० ४७३। लेखक काल 🔀 । पूर्गा वेस्टन सम्या ४२७। प्राप्ति स्थान—दि. जन पनायती मदिर मस्तपुर ।

**२७६५. प्रति सं० १२।** पत्र संस्था २ से ३१=। लेखन काल $\times$ । सपूर्ण । बेय्टन मध्या ४२=। **प्राति स्थान**—दि जैन प्रचायती मंदिर भरतपुर ।

२७६६ . प्रति सं०१३ । पत्र सस्या ४१ से ४३१ । ब्रा०१४ ४६ । ब्रचा लेखन काल— स०१⊂६६ । प्रपूर्ण। बेष्टन संस्था ११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टॉक)

विशेष - जयकृष्ण व्याम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

**२७६७ प्रति सं० १४।** पत्र स० ४६६। म्रा०१६×१० इ.च.। ले. काल स०१८६७ पौष सदी ४। पर्या । वेष्टन स०४४**। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्थनाथ टोडारायसिह (टोक)

**२७६८. प्रतिसं० १५।** पत्र सस्या चयम । प्रा**० १२ ४५** इ.च.। ले० काल स०१८५३ कार्तिक बुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन सस्या २५। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मदिर, नैगावा

बुदी १२ । अपूर्ण । बेष्टन सस्या २४ । **प्राप्ति स्थान**िद० जैन तरहपथी मदिर, नेगावा **विशेष**-पत्र सस्या ७०२ से ७७५ तक नहीं है । ब्राह्मण मालिगराम द्वारा प्रतिलिपि की गयी थी ।

२७६**६ प्रति संख्या १६ ।** पत्र सच्या १८० । **घा०** १३ ८७ इ.च । ले० काल सम्या १६२२ । पूर्या । वेप्टन संख्या १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर वृदी ।

विशेष--लोचनपुर नैरावा मे प्रतिलिपि हुई थी।

२७७० . प्रति सं० १७ । पत्र सस्या६३० । आर०-१३ ×६ है इंच। ले० काल स०१८६७ । पूर्ण। वेष्टन स०११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर ग्रादिनाय बुदी ।

विशेष-सेवाराम पहाड्या केशी वाले ने ग्रपने सुत के लिये लिखवाया था।

२७७१. प्रति सं०१ क। पत्र सख्या६२२ । प्रा०१४ ४६ हुइ । ले० काल स०१६०७ । पूर्णावेहन स०४ क। प्राप्ति स्थान—वि•जैन मदिर प्रमिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष--प॰ सदामुख जी ग्रजमेरा ने प्रतिलिपि करवायी थी।

२७७२. प्रति संख्या १६ । पत्र स॰ १०१-५०७ । आ॰ १०४७ इच । ले॰ काल 🗙 । अपूर्ण । बेष्टन स॰ १६० । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मदिर दबलाना (बृदी) २७७३. प्रति सं०२० पत्र स० ६०२ । प्रा० १२३ ४ ४ इंच । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । बेष्टुन सं०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर तरहपथी मालपुरा (टोक)

२७७**४. प्रति सं०२१।** पत्र सं०६२१। ग्रा०१०×७ इच। ले० काल स०१६४६। पूर्ण। वेष्टन स०४३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटयो का, नैसावा

२७७**४. प्रति सं० २२।** पत्र सं० ४८ से १३८। मा० १२ ४६ है इंच। ले० काल ४। म्यूप्सं। बेहनसं० ३३। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

२७७६. प्रति सं ०२३। पत्र स० ६६२। ग्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इच। ले०काल  $\times$ । वेष्ट्रनस० २४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

२७७७. प्रतिसं० २४। पत्र स० ७१६। म्रा० १२ x ७ है इंच। ते० काल म० १११६ साघ बुदी ११। पूर्ण। बेग्टन स० १०७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती स्रग्रवाल मन्दिर, प्रलवर।

२७७६. प्रति सं ० २४ । पत्र स० ४१० । या० १४imesृढ च । ले० काल सं० १६१० वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेटन म० ४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पदायती प्रप्रवात मंदिर, प्रलदर ।

विशेष - ग्रन्थ नीन वेरतनो से है।

२७७६. प्रति सं०२६ । पत्र स० ४०१ । ग्रा० १०३ ४६ इ.च.। से० काल स० १८७५ । पर्गावेदन सं०१३४ ।

विशेष-पाडे लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी। प्राप्ति स्थान-दि० जैन छोटा मदिर, बयाना ।

२**७८०. प्रतिसं० २**७ । पत्र सं० ४५२ । ग्रा० १२ ४७ इश्वर । ले० काल 🗶 । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मदिर कामा ।

२७ म.९. प्रति सं०२ म.। पत्र सं० ८४३ । ब्रा० १२ ४७३ इंचाले० काल स०१ ८६६ । स्पूर्णा वेटन स०३६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पंचायती मन्दिर, कामा

विशेष -- बीच के पत्र नहीं है।

२७८२. प्रति सं० २६ । पत्र म ० २२२ । ग्रा०१३ ४६ १ इ.च । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० ३३७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

२७६**२. प्रतिसं० ३०।** पत्र स० ६१३ । ग्रा० १२ ४६ इच्च । ले० काल० ४ । पूर्ण । वेष्टन स०१७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर करीली ।

**२७६४ प्रति सं०३१**। पत्र म• ४६४। ग्रा०१२ × ७ इथा। ले० काल स०१६०६ वैणाख बुदी ६। पूर्णे। वेष्टुन स०१। **प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन सौगरणी मदिर करौली।

विशेष-करौली नगर में नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी।

**२७८१. प्रतिसं**० ३२ । पत्र स० ७२८ । ग्रा० १२ $\frac{3}{7}$ × ६ $\frac{1}{7}$  इश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्ए । बेष्टन स० ४/४ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

**२७६६. प्रतिसं० ३३**। पत्र सं० ११२३। धा० १२imes६ इ.ख.। ले० काल imes। धपूर्ण । बेष्टन सं० २६ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन संदिर बड़ा बीसपथी दौसा।

२७८७. प्रति स० ३४ । पत्र स० ८८६ । झा० १५ imes ७ इन्छ । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० २ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलाबाटी (सीकर) ।

विशेष - दो वेष्टनो मे हैं। इसे श्री भगवानदास ने जयपूर से मगवाया था।

२७८८. प्रतिसं० ३४ । पत्र स० ३१६ । ब्रा० १३×६३ हुआ । ते० काल स० १६०६ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपूर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष-पाडे जीवनराम के पठनार्थ रामगढ़ में ब्राह्मण् गोपाल ने प्रतिलिपि की थी।

२७८६. प्रति सं० ३६ । पत्र स० २२३ से ४२६ । प्रा० १२×७ इश्व । ले० काल × । अपूर्ण । बेष्टन स० ३८ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास प्रानी डीग ।

**२७६०. प्रति सं० ३७ ।** पत्र स० ४२६ । प्रा० ११ $\times$ ६ इश्व । ले० काल स० १८२६ सावन बढी ४ । पूर्ण । वेप्टन स० १७८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

विशेष-करौली में लिखा गया था।

२७६**१. उत्तरपुराग्** — गुराभद्माचार्य। पत्र स०४४६ । झा०१०१४४ इस । भाषा— संस्कृत । विषय — पुराग्ग । २०काल । ले० काल स०१७०४ । पूर्ण । बेष्टनस०७४ । प्राप्ति स्थान— महारकीय वि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

विशेष — मगवान श्रादिनाथ के पश्चान् होने वाले २३ तीर्थंकरो एव श्रन्य शलाका महापुरुण का जीवन चरित्र निबद्ध है। सबत्सरे बारगरधमनीदमिते।

२७६२. प्रतिसं०२ । पत्र स०२२० । ग्रा०११ 🗙 ५ इञ्च । ले० काल 🔈 । पूर्ए । बेप्टन सं०७२४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२७६३. प्रति सं० ३ । पत्रस० ४०६ । छा० ११ × ४ हुन्थ । लेब्काल म० १७५० फागुन बुदी म । पूर्ण । बेष्टनस० १९७४ । प्राप्ति स्थान----भट्टाग्कीय दिव् जैन मन्दिर स्रजमेर ।

विशेष---प्रांत जीएं है

२७**६४. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स० ३१३ । ब्रा० १३×४ इञ्च । ले० काल स० १८४६ फागुण बुदी १४ । ब्रयुर्णे । बेप्रन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—कि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक) ।

विशेष-ग्राचार्यं श्री विजयकीति ने बाई गुमाना के लिए प्रतिलिपि करवायी थी।

२७६**५. प्रति सं० ५ ।**पत्रस० २२५ । ग्रा० १२ 🗴 ६०च । ले०काल म० १७८५ ग्रायाह सदी ११ । पूर्सा । येक्नस० १२१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पाण्वेनाथ मन्दिर चौगान वृदी ।

विशेष - दूरी में ज्योतिबिद पुष्करने रावराजा दलेलीसह के शामनकाल में आदिनाथ चैरयालय में प्रतिनिधि की थी।

२**७६६. प्रति सं० ६।** पत्रस० ३६६ । प्रा०१६ × ४६ इच । ले॰काल 🔑 । पूर्णे । वेस्टन स॰ ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ बन्दी ।

विशेष --- प्रति प्राचीन है।

२७**६७. प्रतिसं०७।** पत्रस० ३००। ग्रा०१११ै × ४१ै इचा ने•काल स० १⊏२४ प्र. सावन सुदी ४ । पूर्णा वेष्टुन स०२४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रामिनन्दन स्वामी बृदी । विशेष--प॰ महाचन्द्र ने जीएं पुस्तक से शोधकर प्रतिलिपि की थी। दो प्रतियो का मिश्रए है। २७६८. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ३२४ । ग्रा० १३ ×७ इश्व । ले०काल स० १६५३ । पूर्ण ।

वेव्रम स० १४६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नागदी, वृदी । २७६६. प्रति सं० ६ । पत्रस० २६४ । ग्रा० १२ % × ४ ई इन्दा । ने०काल स० १८११ भादवा बदी ३ । पर्गा । वेष्ट्रन स० ३८४/२८ । प्राप्टि: स्थान -- दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

२६००. प्रतिसं० १० । पत्रस० ३६० । ले०काल 🗡 । पूर्ण । बेप्रन सं० १२४ । प्राप्ति

स्थान — दि० जैन प्रवासती मन्दिर करौली।

विक्रोच -- कही २ कठिन शब्दों के ग्रथं हैं।

२८०**१ प्रतिसं०११।** पत्रस०२३१। ब्रा०१३×६} इ.च.। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनस० १२७-४८ । **प्राध्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इगरपुर ।

२६०२. प्रति सं० १२ । पत्रस० ११४ । ग्रा० १३४५ है इंच । ले० काल 🗴 । ग्रपुर्गा । वेष्टन स॰ ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन श्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२८०३, प्रतिसं० १३ । पत्र सं० १६२ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रयवाल मन्दिर उदयपर ।

२६०४. प्रति स० १४ । पत्र स० ३४७ से ४४६ । ब्रा० ११ × ४३ इश्व । ले० काल स० १६४४ कार्तिक मृदी ह । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - लेखक प्रशस्ति विस्तृत है। इसके अतिरिक्त एक प्रति और है जिसके १-१२२ तक पत्र हैं।

२८०४. प्रति सं० १४ । पत्र म० ४४-३०० । सा० १०% ४५% इ॰ । ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वे० म० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थ्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

२००६. प्रतिसं १६ । पत्रस० ४०० । ग्रा० ११ 🗙 ४ इच । ले०काल 📈 । पर्गा । बेप्टन स० ३०६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

२८०७. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ३८४ । ग्रा० १२ 🗙 ४ इचा ले० काल 🔀 । पूर्ण । वेप्रन स० ३१० प्राप्ति स्थान - उपरोक्त मन्दिर ।

२८०८. प्रति स० १८ । पत्र स० २-४५२ । ग्रा० १२ ४ ६इ च । ले० काल स० १८३३ । भ्रपुर्ण । वेष्ट्रन स० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति-सवत् १८३३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पचम्या तिथौ भौमवासरे मालवदेशे सुसतेर नगरे पडित बालमचन्द तन् शिष्य प जिनदास तथान मध्ये प० ग्रालमचन्देन पुस्तक - उत्तरपुराग् स्वयः ।।

२८०६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २८४ । ग्रा० १४×६ इचा। ले० काल सं० १७८३ फागूसा मुदी ४ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-- उदयपूर में महारागा नग्नामसिंह के शासन काल में सभवनाथ चैयालय में प्रतिलिपि हुई थी।

२०६०. प्रतिसं०२०। पत्र स०२३१ । धा०१२ imes ४ इच्च । ले० काल imes । अपूर्णं । बेष्टून स०१२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति प्राचीन है। दो प्रतियों का मिश्रए है। कठिन शब्दों के ग्रर्थ भी दिये हुए है।

२**८११. प्रति सं०२१।** पत्रस०४६४। ले०काल सं०११२६। पूर्ण। वेष्टनस०२७३। प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर।

**२६१२. प्रति सं० २२ । पत्रसः० ११४**–२२० । ले०काल १६६६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**२८१३. प्रति सं० २३ ।** ण्यस० ४१६ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुनस० २४६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर दीवानजी भरनपूर ।

**२०१४. प्रति सं० २४** । पत्रस० ४३४ । ले०काल स० १७२६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ **। प्राप्ति स्था**त— लपरोक्त मत्तिर ।

२**८१५. प्रति सं० २५।** पत्र स० ५०१ से ५३६। लेक्काल स० १८२२। प्रपूर्ण। बेष्टन म० २६१। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२८१६. उत्तरपुरागः—पुष्पदत । पत्र स० ३२४ । ब्रा० १२१४४ हुं दशः। भाषा-ग्रपभ गः। र०कालः ४ । ले॰काल स० १४३८ कार्तिक सुदी १३ । पूर्णः। बेष्टन स० ११२,६४ । प्राप्ति स्थानः— दि० जैन मन्दिर तेरहणयो दौसा।

लेखक प्रशस्ति—सवत १४३६ वर्षे कार्त्तिक मुदी १३ धादिरणवारे ध्रव्यविनक्षत्रे मुननान गयामुहीन राज्य प्रवर्तमाने तोद्दागढस्थाने श्री पार्थनाय चैत्यालये श्री मुनसबे बलात्कारम्मं मरम्बनीगच्छं श्री कुन्द-कुन्दाचार्याक्वेस मुद्रारक श्री पद्मानित देवा । तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभवन्ददेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणाबन्द देवा तत् शिष्य मुनि जयनित्व दितीय श्रिष्य मुनि श्री रत्नकीत्ति । मुनि जेनित्व तत् शिष्य बद्धा अवन् इद जतस्पुराण शास्त्र प्रान्म हस्तेन लिखित जानावर्णी कर्मक्षयार्थ मुनि श्री महनावार्य रन्नकीत्ति तत् श्रिष्य बद्धा नरीक्ष जोष्य पठनार्थ ।

२०१७. उत्तरपुराण्— सकलकीति । पत्रतः १६२ । १२ $\times$ ६ इश्व । भाषा—सम्कृत । विषय—पुराण् । र०काल । ले०काल स० १८५० पीय मृदी ३ । पूर्ण् । वेष्टन स० २७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चेननदान दीवान पुरालं। डीग ।

२८१८. उत्तरपुरामा भाषा—खुगालचन्द । पत्र म०२०१ । प्रा०१४ ८० इख । भाषा— हिन्दी (पदा) । विषय—पुरामा । २०काल स०१७६६ । ले०काल स०१६४६ । पूर्मा। बेष्टनस०३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपशी दौसा ।

विशेष-जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२ द**१६. प्रति सं० २** । पत्र स० २१७ । स्रा०११ imes ४ दुँ इला। ले० कालimes । पूर्णा । वेष्टन स० ११७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडाबीसपथी दौसा ।

विशेष-भगवान आदिनाथ को छोडकर शेप तेईस तीर्शंकरो का जीवन चरित्र है।

**२८२०. प्रतिसं० ३।** पत्र स०४८८ । झा० ११ $\times$ ५ $^1_2$  इचा । ले० काल स०१८२४ पीय बुदी **१**। पूर्ण । वेष्टन स०३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक

विशेष--राजाराम के पुत्र हठीराम ने जयपुर में बखता से प्रतिलिपि कराई थी।

२**८२१, प्रति सं०४।** पत्र सं०२७१। प्रा०१४ $\times$ ६ $^{3}$  इस्त्र । ले० काल स०१६४ $^{6}$  कार्तिक सुदी १२। पूर्ण । बेष्टन स०३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह्यथी मदिर नैसावा ।

२ ६२२. प्रति सं० ४.। पत्र स० ६२१। घा० ६३४७ इ.च.। ले० काल स० १६४६। पूर्ण। बेष्टन स० १३६। प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी।

**२६२३. प्रतिसं०६** । पत्रस० ४४१ । म्रा० १० ${}_{1}^{3}$  $\times$ ६ ${}_{2}^{3}$  इला । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । बेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महात्रीर बृदी ।

२ **८२४. प्रति सं०७ ।** पत्र म०२०२~२४१ तक । द्या०१४ $\times$ ६ $^2_1$  इ.ख । ले० काल स० १८६६ । प्रपूर्ण । वेष्टन स०३०० । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्वामी वंदी ।

विशेष--- प्रारम्भ के २०१ पत्र नहीं है।

२६२५. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २६६ । आ० ११ $\frac{1}{2} \times 9\frac{1}{2} ६ % । लेकाल <math>\times$  । पूर्ण । बेष्टतसं० २ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मिन्दर चौर्घारमान मालपुरा (टोक) ।

२८२६. प्रति सं०६ । पत्र स०४६१ । ग्रा०१२ 🗴 ५१ इ.च्च । ले० काल स०१८८२ । पूर्णा वेष्टन स०८३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैसावा ।

२६२७. प्रति सं० १० । पत्र स० ३३४ । म्रा० १२ $\times$ ६ $\frac{3}{2}$  इंच । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४–२४ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मदिर नेमिनाय टोडारायमिंह (टोक)

२८२८. प्रति सं० ११ । पत्र स० २६४ । ले॰ काल 🗴 । पूर्णे । वेष्टन स॰ ७३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायाी मन्दिर हण्डावालो का होग ।

विशेष-जीगोंद्वार किया गया है।

२६२**६. प्रति स० १२** । पत्र स० ४६६ । प्रा० १२ $\times$ ६ इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । देष्टन स० ६३ । प्राण्ति स्थान — दि० जॅन प्रवायती मन्दिर करौली ।

२६३०. प्रति स० १३ । पत्रस० ४१२ । घा॰ १३ imes ६ इञ्च । ले०काल स० १६४२ माघ बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टुनस० १४ । प्राप्तः स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

विशेष --फीजीराम सिगल ने स्व एव पर के पठनार्थ प्रतिलिपि करवाई।

२६३१. प्रति सं० १४ । प्रस्त० १०४ । प्रा० १२ $\times$ ४ $^2_2$  इश्व । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ११४ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--- शान्तिनाथ पुरागा तक है।

२६२२. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १८६ । प्रा० १३ ४६ है इस । लै॰काल स० १८७८ श्रावसा बुदी ६ । पूर्ण । बेट्टनसं० २० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विरोध — पाडे सावर्तामह जी फ्रापमनके देहरा में दयाचन्द से प्रतिलिपि करवाई जी दिल्ली में रहते थे।

२६३२. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ३४६ । घा० १३ ×७ । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० १६६ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन खडेलवाल प्वायती मन्दिर ग्रलबर । २८३४. प्रतिसं० १७ । पत्र सं० ३४४ । या० १४ $\times$ ६ $^{\dagger}$  उचा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सण्डेलवाल पचायती मंदिर ग्रालवर ।

२ द ३ ५. प्रति स**० १ द** । पत्रसं• २६७ । ले० काल स० १८५३ । पूर्णः । बेष्टन स० ४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, भरतपुर ।

विषय - कुणलसिंह कासलीबाल ने प्रिनिशि करवाई थी।

२८३६. प्रति स० १६ । बेष्टन स० ४०५ । ले० काल 🗴 । पूर्णा । बेष्टन म० ३४७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रवायती मन्दिर सरतपुर ।

२६३७. उत्तरपुरासा भाषा—पत्नानान । पत्र म०४६६ । ब्रा०१२×६ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय पुरागा । र०काल स०११३० । ले० कान स० × । पूर्मा । वेष्टन स०१४४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर श्री महावीर ब दी ।

२८३८. कर्गामृत पुराग्—भ० विजयकोति । पत्रत० ८६ । ब्रा० ६ ' ४६ इङ्च । भागा-हिन्दी (पद्य) विषय— पुराग्य । र० काम । ले०काम स० १८२६ पीप मृदी ६ । पूर्ग । वेहन म० १०१० । प्राप्टित स्थान—भ० वि० जैन मदिर प्रजसेत ।

२८३६. प्रति स० २ । पत्रस० २४६ । आ० ४ ८४ इञ्च । ले०काल 📐 । पूर्ण । बेष्टनस० ६०६ । प्रार्टिन स्थान ग० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**विशेष** - दसरा नाम महादडक करमानयोग भी दिया है।

२८४०. प्रति स० ३ । पत्रस० ३८ । आ० १०४४) उच्च । ले•काल > । अहुमा । महन स० ११३४ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त महिदर ।

**२८४१. प्रतिस् ४।** पत्र स० १३१। आ० १८ .८ ३५। ते० कार्या । पूर्ण । वेहन स० ३१८–३१६। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मस्टिर कोटरियो ता ४ मस्टर ।

२८४२, **गरुषुपुरागा** । पत्रमु० ६४ । आ० १०४४ (उ.स.) भाषा समृतः। निषय पुराना रककाल ४ । लेक्काल स०१६६४ । पूर्णः। वेष्टन स०६४ । **प्राप्ति स्थान** — रि० जैन सावर पाप्तनाय चौगान वर्षः।

विशेष ---दणम अध्याय तक है।

२८४३. गरुष्ठपुरासः ४ । पत्र २०२२ । छा० १८) ८६ एका । भाषा-सस्त्र । विषय -पुरास् । २० काल ७९ । ते० बाल - ८ । छपुर्य । बेष्ट्रतः २० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**-स्थि० केन मध्यिर प्रभितन्त्वत स्वामी, युवी ।

२६४४. **चौबीस तीर्थकर मवान्तर** । पत्रम्न०२। ग्रा०१२ / ८८ ३२। भाषा-शिन्धा (ग्राठ) विवय-पुराग्य । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन २० २६ । प्राप्ति स्थान-थि० जैन महिर गत्रमञ्ज (शैक)

२६४**४. चन्द्रप्रभपुरारा--भ० गुभवन्द्र।** पत्रम० ७२ । द्या० १०१८ ४६ २६ २६ । भाषा सस्कृत । विषय-पुरागा । र० ४ । ले•काल स० १६२६ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेट्न स० ४२ **प्राप्ति** स्थान—-भ० दि० जैन मंदिर, प्रजमेर

विशेष--ग्राटवें नीर्थंकर चन्द्रप्रम का जीवन चरित्र है।

२ स्४६, प्रति स०२ । पत्रस०६० । स्ना०११ × ५ द्वै । लेक्काला सं०१ स्३२ चैत्र सुदी १३ । बेहुत स०१७३ । प्रार्ण । प्राप्ति स्थान— दि० जैन म० लक्कर, जयपुर ।

विशेष-सवाई जयपूर नगर मे भामूराम साहने प्रतिलिपि की थी।

२८४७ वन्द्रप्रमपुरास्य — जिनेन्द्रभूषस्य । पत्रस० २४। घा० १२१ ४ ७१ इत्त्र । भाषा — हिन्दी । विषय पुरास्य । र०काल सबत १८४१ । लेकाल × । पूर्स्य । बेष्टन स० ६। प्रास्ति स्थान — दि० जैन प्रवासती सदिर बयाना ।

विशे --- इटावा में ग्रंथ रचना की गयी थी। ग्रंथ का ग्रादि ग्रंत भाग निम्न प्रकार है---

प्रारंभ - जिदानद भगवान सब णिव सुख के दातार । श्री बन्द्रश्म नाम है तिन पुराण सुख सार ॥१॥ जिनके नाम प्रताप से कहें सकल जजाल । ते बन्द्रश्म नाम है करी .........पूर पार ॥२॥

### द्यंतिस पाठ --

मृल सघ है मैं सरस्वति गच्छ ज्यु। बलान्कार गरण कह्यो महाराज परतछ ज्य । धामनाय कहै बीच कुन्दकुन्द ज्यु । कुन्दकुन्द मुनराज ज्ञानवर ग्रापण्य ।।२७।। भट्टारक गुरमकार जगनभूषरम भये। विण्वभवगासभाषाय स्रान परन ठये। निनके पद उद्धार देवेन्द्रभूषणा कहे । मुरेन्द्रभूषमा मनराज भट्टारक पद लहे। जिनेन्द्र भूषण लघ णिय बुद्धिवरहीन ज्यः। कह्यो पुरामा मुज्ञान पुरमा यद जान ज्य । मवत ठरामै इकतालीम सामने । सावन मास पवित्र पाप भक्ति की गलै।। सदि है बैज पूर्नात चन्द्र रिवबार है। पूरन पुण्य पुरागा महा सुम्बदाइ है । शहर इटावी भली तहा बैठक भई । श्रावक गुन संयुक्त बुद्धि पूरन लई।।

इसके द्यागे ८ पद्य और है जितम कोई विशय परिचय नहीं है।

इति श्री हर्षमागरस्यात्मज मट्टारक श्री जितेन्द्रभूषण् विरचिते चन्द्रप्रभृषुराखे चन्द्रप्रभृ स्वामी निर्वाण गमनो नाम पाटम सर्ग । श्लोक स प्रमाण १०६१ ।

#### मध्य भाग---

सब रितु के फल ले भाया तिन भेंट करी सुखदायी। राजा सुनि मनि हरयार्व तब भ्रानन्द भोर बजावै।।२४।। सब नगर नारि नर भाये बदन चाले मुख पाये। चन्द्री सब परिजन लेई जिनवर चरनन चित देई।।२४॥

२६४८. प्रतिसं०२ । पत्रस०१२ $\frac{1}{6}$  imes ५ $\frac{1}{6}$  इ.स. । ले०काल स०१८३३ । पूर्ण। वेष्टन सं०१३६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

२८४६. चन्द्रप्रमचरित्र भाषा—हीरालाल । पत्र स०१८२ । ग्रा०११ ४ ४६७ । भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय--पुरारा। र०काल सं०१६०८। लेकाल स०१६३८। पूर्ण। वेष्ट्रन स०८७ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन खडेलवान मन्दिर उदयपुर।

२६५०. जयपुरार्ग — **ब**० कासराज । पत्र स० २६ । ब्रा० ११ $\frac{3}{7}$   $\times$  ५ इख । भाषा— सस्कृत । विषय—पूरार्ग । ७०काल  $\times$  । ले० काल स० १७१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रग्रवाल मंदिर उदरपुर ।

प्रशस्ति-निम्न प्रकार है--

स० १७१३ पीष मुद्दी २ रवी श्री मुनसचे सरस्वनीयन्त्रे बनात्कारमणी श्री कुदकुदानार्यान्वये भ० श्री सक्तकति तदान्नामे भ० श्री रामकीनि तत्त्वहुँ ०० श्री पयनदि तत्त्वहुँ २० श्री देवरकोति मुक्तदेवात गुजेरदेवे श्री भ्रमसाबादनगरे हुवड जातीय गगाउ गोत्रे सा० धर्मदान भार्या धर्मादे नयो मुन सा करूपा भार्या जमा मृत विमानाद्या श्रममी महस्रवीर प्रतापांसह एनं ज्ञानावरणी क्ष्यार्थ ग्राचार्य मेरन्द्रकीति तत्तु क्षित्व इन कुणारी लाइयाकान्------- कुणामगजाय जमपुराण निलाय दन ।

२**८५१. प्रति स०२** । पत्र स० ८६ । ले० काल स०१८६६ सर्वासर सुदी ६ । पूर्गा । वेष्टन सं० २१२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती स्विटर भरतपुर ।

विशेष--प॰ बस्तराम ने प्रतिलिपि की थी।

२८५२. त्रिष्ठिट स्मृति —  $\times$  । पत्र स० ३१ । प्रा० ११ $\times$ ५ इश्व । भाषा सम्कृत । विषय —पुराण । र०काल  $\times$  । ते०काल स० १६०६ । पूर्ण । वेच्टन स० ७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रथाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबन् १६०६ वर्षे थी मगसिर मृदी ३ गुर्गदेने थी मृत्रसये सरस्वनीगच्छे, बलानुकारगए। श्री कुंदकुदाचार्यात्रये महारकसी पदानदिदेवा तत्पट्टे भ०थी सकलकीनित्वा तदत्वयं द्व०थी जिनदास तत्पट्टे अ. ग्रातिदास ४०थी हसराज ४०थी राजपालस्तक्षियाय कसंध्यार्थनिसन्तः।

२८५३. त्रिषध्दिशलाका पुरुषचरित्र-हेमचन्द्राचार्य । पत्रस०६६। प्रा०१४८४६७ । भाषा---सन्द्रता । विषय--पुरागः । र०काल 🗴 । लेक्काल -- म०१४६४ चैत्र माम । पूर्णः । बेष्ट्रनसं०१२३ । प्राप्तिस्थान----दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२८४४. त्रेस**ठसलाका पुरुष बर्**शन— × । पत्रस० ७ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय—पुराग । र०काल × । ले०काल— × । पृग् । वेष्टन म०२२१ । **प्राप्ति, स्थान**— भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर भजमेर ।

विशेष—इसमे त्रेसरकालाका पुरुषों का पर्यात् २४ तीर्थकर ६ नारायण, ६ प्रतिनारायण, ६ बलभद्र एवं १२ चक्रबर्तियो का जीवन चरित्र वर्षित है।

२८४५. नेमिपुराग् माथा-भागवंद । पत्रसं०१८२। घा०१२४७ इत्व । भाषा-हित्यी पद्य । विषय-पुराग् । पत्ना काल स०१६०७ । लेक्काल – स०१६१४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बंदी ।

२**८५६. प्रतिसं० २ ।** पत्र सं० १६० । प्रा० १३ॄं ×७ इञ्च । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । बेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

विशेष — चदेशी में लिखा गया था। नेमीश्वर के मंदिर में छोटेलाल पक्षालाल जी गढवाल बालों ने जढाया था।

२६५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७० । म्रा० १३४७३ इ.स. । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

२६४६. नेमिनाय पुरास् — त्रः नेमिदत्त । पत्रसः २६६ । घा० १०हे ४४ है इ व । भाषा — संस्कृत । विषय —पुरास् । र०काल × । ने०काल स०१६४४ चैत बुदी ७ । पूर्स । वेहनसं०६३१ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

विशेष --- इसका दूसरा नाम नेमिनाथ चरित्र है।

२**८५६. प्रतिसं०२** । पत्रस०६२ । ग्रा०११ ८ ५ इच्छ । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्णं। बेब्रुल म०२६७ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-प्रति जीएं है। प्रणस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १८२० ना वर्षे द्वितिय चैत्र मासे शुक्त पक्षे थी वान्वर देशे पुक्षं दपुर मध्ये थी शातिनाथ चैत्यालयं। महारक श्री १ रत्नचन्द्र त्री तन्पट्टे भट्टारक थी १ देवचन्द्र जी तत्पट्टे महारक शी श्री १०८ श्री धमेचन्द्र जी तनुनिष्य ब्रह्ममेचजी स्वय हस्तेन जिपि कृत्।

**२६६१. प्रतिसं० ४** । पत्र स० २-२२० । आ० १ $\frac{1}{2} \times \mathbb{V}_7^2$  इश्व । ले॰काल  $\times$  । अपूर्त्त । वेण्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्यवेनाथ चीगान, बूदी ।

२८६२. प्रतिसं**० ५** । पत्रसं० १६४ । स्रा० १०¦४७ इख । ले० काल स० १६२४ पीष बुदी ८ । पूर्ण । वेग्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर नागदी, बुदी ।

**विशेष**—शिवनान जी का चेना विरदीचंद ने प्रतिनिधि की थी। यह प्रति जो जोवनेर में लिली गई सं॰ १६६६ वाली प्रति ने निल्ली गई थी।

२६६६. प्रति सं० ५ का। पत्र स० १२४ । प्रा० १०३ × ४३ इथा । ले० काल० स० १७६६ प्राचाढ बुदी ६ । पूर्णा । बेष्टन सं० १३२ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृदी) ।

विशेष---रत्नविमल के प्रशिष्य एव मक्तविमल के शिष्य धर्मविमल ने प्रतिलिपि की थी।

२ म ६४. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० १३४ । या० १२३ ४ ६ हे इश्व । लेब्काल स० १८७३ । पूर्ण । वैष्टन स० १८१-७६ । **प्राप्ति स्थान-**--दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का हूं गरपुर । २६६**४. प्रतिसं० ७**। पत्र स० २४२ । द्या० १० × ४३ इन्ड । ले०काल × । सपूर्ण । वैष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर बैर।

२८६६. प्रतिसं**० ६** । पत्र २०१४ । द्वा०११ $\times$ ४ $_{2}^{+}$  इश्व । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुन स०२१ $\times$  । प्राप्ति - स्थान — वि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

२८६७ प्रतिसं• ६ । पत्रस० २४३ । ले०कालस० १६४६ । पूर्गा । वेष्टनसं० १ । प्राप्ति स्थान—विशस्य जैन पचायती मन्दिर डीग ।

२६६८. प्रतिसं० १० । पत्र स० १६५ । घा० १२ $\frac{1}{6}$  $\times$ ६ इच । ले०काल स० १८१७ द्वि. बैत सुदी १४ । वेग्टन स० १७–१७ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष--जालचद के पुत्र खुशालचन्द ने करोली मे प्रतिलिपि की थी।

२८६६. प्रतिसं० ११ । पत्र स १३८ । ले०काल स० १६१४ । पूर्ण । वेण्टन स० ४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

२८७०. प्रति स० १२ । पत्रस० ८६ । आर० १३×६ ृद्द । ले०काल म० १८६६ । पूर्ण । वेष्टुनस० २७२ १०६ । प्राप्ति स्थाने—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वनरपुर ।

२८७१. पद्मचरित टिप्प्श-श्लीचन्द्र मुनि । पत्रस $\circ$ २६ । द्वा० १० $\frac{3}{2}$   $\times$  १ इख । भाषा  $\cdot$  गन्छत । विषय-पुराग् ।  $\cdot$  नकाल  $\times$  । लेकात २० १५११ चैत्र मुदी ११ । बेष्टन स $\circ$  १०२ । दि॰ जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

नेत्रक प्रशस्ति—सवत् १४११ वर्षे चंत्र गृदी २ थी मुनतावे बलान्कारमणे सरस्वनीमच्छे थी कुर-कुरदानायांरमं भट्टारक थी पद्मनिदिदेवास्तत् पट्टे भट्टारक थी गृत्रचटदेवास्तत्गट्टे भट्टारक थी जिनचढ देश -यट्टारक थी पद्मनिद्ध किय्य मृति मदनकीनि तत् जिय्य ब्रह्म नर्मसय निमित्त सर्वेदवायास्य नायक गोत्रे सा । इयर नस्य भायां उदययी तयो पुत्र माल्हा सोदा डाल् इट शास्त्र कम्मसय निमित्त ।

२८७२ प्रयाम पुरास्—म० सुभवन्द्र । पत्रतः ११० । घा० १२ $\times$ ४३ दश्च । भाषा—सर्गा निषयः— पुरास्य । २०कास्  $\times$  । लेकाल्  $^{\circ}$  , । बेहनस० १८७ । प्रास्तिस्थान—दि० जैन मिर्टालकर, अयहर ।

विशेष -- प्रारम्भ के ६४ पत्र नतीन लिखे हार है।

२ = ७३. प्र**ति सं० २ ।** पत्रस० ७१ । ग्रा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ इखा । लेक्काल स० १६५४ ग्रासीज सरी ं । वेष्ट्रनस० १८६ । **प्राप्ति स्थान** —(द० जैन मिर लक्षकर,जयपुर ।

बशेच---भट्टारक अमरकीति के शिष्य बर्ज जिनदाम, पर शान्तिदाम ब्रादि ने प्रतिनिधि की थी।

२८७**४. प्रति सं० ३ ।** पत्र स०१०७ । या०१०<sub>.</sub> ४ ५६९४ । ले० काल स०१८२६ आहार । गर्था : गर्मा । वेस्टन स०१६७ । **प्राध्ति स्थान—दि० जैन मदिर दबला**ना (बृदी) ।

२८७५. पद्मपुरास् — रिविदेसानायं । पत्रसः ७१२ । प्रा०१०१४ हर्नु इस । याया — सर । हार –पुगस्स (रिवेशको ४ । लेव काल मव १६७७ सावस बुदी ६ । पूर्स । वेव संव । प्राप्ति स्थान — अव दिव जैन महिर प्रजनर । विशेष—संवत् १६७७ वर्षे माके १४४२ प्रवसंसाने श्रावण बुदी ६ मुकवारे उत्परनताने मतिगतनामकोने महाराजाधिराज रावशी भावसिंह प्रतापे लिखत जोसी मलावस्स बुदिवाल पश्चास्ती मध्ये ।

२६७६. प्रतिसं० २ । पत्रत्त० ४६० । ग्रा० ११ $^3_y$  $^2$  $^4_x$  $^3_y$  इ.ख । क्षे०काल स० १८७६ पाँच बुदी १४ । पूर्ण । बेहुनस० १०६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२८७७. प्रतिसं**० ३**। पत्रस० ४१०। ग्रा० १२×४) इ.च.। ले०काल म०१८८३। पूर्गः। वेष्टन स०६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दुनी (टोक)।

विशेष-- ५ डित शिवजीराम ने लिखा था।

२८७८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ५६० । मा० ११) - ५) इख । लेक्काल म० १८०६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ८७/८ । प्राप्ति स्थान---थि० जैन पार्यनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष--गमपुर मे प्रतिनिधि की गई थी।

२६७६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २६६ । ले०कालः । पूर्णः । बेष्टन २००२२० । प्रास्तिः स्थान – दि० जैन पत्रायसी मधिर मण्यपुर ।

विशेष - मणुद्ध प्रति है।

२८८०. प्रति स० ६ । पश्च ७ ३४६ । ग्रा० १० - ४५ उच्च । ले० काल ग० १८१० कालिक मृदी १० । प्राप्तां । वेपन म० १४२ । प्राप्ति स्थान- वि० जैन पतायती मन्दिर करोती ।

२६=१. प्रति स**०७।** पत्र स०५७३ । छा० ११¦ ४१¦ ढवा। ते० काल ) । पूर्णा। बेष्टुत स०१४ । **प्राप्ति, स्थास**—दि० जैने पश्चायती मेन्दिर करोली।

२**८८२ प्रतिसंक म**ा पत्रसक ८-४६० । फाक ११, ११ इला । तेक्काल सक १५६२ । इपुर्ण । बेक्कसक १५६ । **प्राप्ति स्थान**ाडिक जैन प्रवासन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- प्रशस्त निस्त प्रकार है --

मधतु १४६२ पर्यकानिक मुदी ह बुधे अर्छाट गोणिल प्रामेप० नसामृत पेथा छातृ भीकम विकित ।

२८६३. पष्पपुरस्स - वर्ग जिनदास । पत्रमण्डिः । याण्डरहे ४६ ड्या । शाया— सम्बन् । विषय—पुरासा । रण्यान 🔏 । लेण्यान — । पूर्म । वेष्ट्रन सण्डरहर । द्वारि, स्थान— भण्डिण जैन सदिर, बजनर ।

२८८४. प्रतिसं० २ । पत्र म ४३४ । प्रा० ११८४ है इञ्च । ले०काल स० १८७१ स्वार सुदी १२ । पूर्गा । वेष्टुनम० १०६१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर पत्रागती दूती (टोक)

२८८५. प्रतिसं ३ । पत्र म० २८८ । ग्रा० १२%६ इंच । ले०काल म० 🗴 । अपूर्ण प्राप्ति स्थान—६० जैन पार्श्वनाथ मदिर इत्दरगढ (कोटा)

विशेष—सम्कृत में मकेतार्थ दिये हैं। स०१७३६ में भट्टारक श्री महरचन्द्र जी को यह ग्रन्थ भेट किया गया था। २८६६. पद्मपुरासा—मञ्चर्मकोति । पत्र स० २२६। प्रा० ११३४६ इथा। प्राया— सस्कृत विषय — पुरासा १८०काल - ४ । लेञकाल स० १७१४ । पूर्ण । वेष्टन त०२७०। प्राप्ति स्थान विकृतिक प्राप्ति को स्थानिक कोरा

प्रशस्ति—सबत् १७१५ वर्ष भाद्रपदमासे मुक्लपक्षे पचम्या तिथौ मुख्वासरे श्री सिरोज नगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री ..... ।

२८६**७. पद्मपुराग्—म० सोमसेन।** स०२८२। झा०१०३,४४ इन्च। भाषा —संस्कृत। **विशेष**—पुराग्। १२०काल। ले० काल ४ । पूर्ण्। वेष्टन स०१४३२। **प्राप्ति स्थान—**म०दि० जैन मन्तिर ध्वतेर

२६६६. प्रति स० २ । पत्रस० २७६ । ले० कालimes । पूर्णं । वेष्टत स० २२६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष - जयपूर में प्रतिलिपि की गई थी।

निष्कृत । प्रतिसंव ३ । प्रश्न सुव २०६ । आव १० ४६ इश्वा । लेव काल सुव १८६८ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेव सुव १७० । प्राप्ति स्थान—विव जैन सन्दिर, राजमहत ।

विशेष — राजमहल नगर मे प० जयचंद जी ने लिखवाया तथा बिहारीलाल शर्मा ने प्रतिलिपि की थी।

२६६०. **पद्मपुरांग्ः भाषा** —दीलतराम कासलीवाल पत्र सं० १६६। ग्रा० १३४८ इ**स ।** भाषा —हिन्दी गव । विषय —पुरागः । र०काल स० १६२३ माच मुद्री ६ । ले०काल ४ । धपूर्णः । वेष्टन स० १४४२ ।**प्रा**प्ति स्**षान** — भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**२८११. प्रति स० २**ः पत्र स० ६४४ । ग्रा० १२४४ हुँ इञ्च । ले०काल स० १८६० ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टुन स०१७६ । **प्राप्ति स्थान**—प० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

२८६२. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६४३ । ले०काल स० १६३१ । पूर्मा । बेहनस० । २६३ । प्राप्ति स्थान भ० दि० जैन मन्दिर अजसर ।

२ मध् ३ . प्रति स० ४ । पत्रस० १-२७४ । ग्रा० ११४ ७इश्व । ले०काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रनसं० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष--२७५ से आगे पत्र में नहीं है।

२८६४. प्रतिस**्ध**ा पत्रस**्धः ।** या १२×८ इश्वः । लेकाल स**्धः १११४ कार्तिक** मुदी ११ । पूर्णः । वेष्टनस**्धः । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर ग्रावा (उलिग्यान)

विशेष---प॰ रामदयाल ने चदेरी मे प्रतिलिपि की थी।

**२०६४. प्रतिसं० ६।** पत्रस० ३६०। प्रा० ६१ ४६१ इसा। ले० कालम० १८४६। चैत सुदी ११ पूर्ण । बेष्टनस० १२४। ×। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दोसा।

२८६६. प्रतिसं० ७ । मा० १४ $\times$ ७ $^+_{\nu}$  इख । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७-७४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर तेरहमयी दौना ।

विशेष - जिमनराम तेरहपथी ने प्रतिलिपि की थी।

२ द्रष्ट**ः प्रति स**० **६।** पत्रस० २२४-४२१ । ग्रा० १३ $\times$ ७ इच्च । ले० काल सं०  $\times$  ।  $\pi$ पूर्ण । बेष्टन सं० ८१। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर मादवा (राज०)

२८६८. प्रति सं० १०। पत्र सं० ६०७। घा०११×७} इन्च। ले॰ स० १६१५। पूर्व । बे० काल स० २८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष -- दो वेष्टतो मे है।

२६६६. प्रति सं० ११ । पत्र स० ६३६ । आ० १२imes६३ दश्च । लेश्काल स० १६२६ स्थेष्ठ सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन स० ७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फरोहपुर शेक्षावाटी (सीकर)

विशेष-- रो वेष्टनो मे है।

२६००. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ६२८ । आ० ११ ×८ इख । लेक्शल × ।पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६०१. प्रतिसं० १३ । पत्रस०२४० । ग्रा०११ ४ ⊏ इञ्च । ले•काल ४ । ग्रपूर्ण ।वेष्टनसं• ⊏६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६०२. प्रति सं० १४ । पत्र स० ४३७ । द्वा० १२ १४ ६ ३ इ.च. । ने०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर

२६०३. प्रति सं० १५ । पत्र म० ७४७ । द्या० १०४७} इला । ले०काल सं० १८४३ । पूर्णं । बेष्टन म० २०१/८२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२६०४. प्रति सं० १६ । पत्रस० ४२६ । ग्रा० १०३ ४७ इञ्च । ले∙काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्ट्रस० २१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन ग्रग्नाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रणान्न निम्न प्रकार है— स॰ १८५४ पीप सुदी १३ महाराजाधिराज थी सवाई प्रताप्तिहजोराज्यं सवाईजयनगरमध्ये लिखापित साह थी मानजीदासजी बाकसीबाल तत् पुत्र कवर मनसाराम जी विमनरामजी नेवारामजी नोनवराम जी मनोरखरामजी परमायं शुम्र मथात्।

निश्वित सर्वार्टराम गोधा गवार्डजयनगरमध्ये श्रदावनी द्वाजार मध्ये पाटोदी देहरे श्रादि चैल्यालये कतीजी श्री कृष्णसागरजी के जायगा निली।

**२६०६, प्रतिसं० १८ ।** पत्र सल्या ४७ । घा० १०×६ इ.च । **ले∘काल** सं०१८२३ । घपूर्ण । वेष्टन स० ७४ ।**घा**ष्टिर **स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

२६०७. प्रति सं० १६। पत्र स० ५६६। घा० १२ × ६ इला। ले० काल सं० ११४३। पूर्णे। बेष्टन स० १३।६। प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर पत्रायती दुनी (टोक)

विशेष-ऋषि हेमराज नागौरी गच्छवाले ने प्रतिलिपि की थी।

२६० म. प्रतिसं० २०। पत्रस० १४२। प्रा० ११४८ दञ्च । ले० काल सं०४। प्रपूर्ण। वेष्टत सं०४१।२२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पत्रायती दुनी (टोक) **२६०६. प्रति सं० २१** पत्र स० ४४६ । प्रा० १४ $\times$ ६ $_{7}^{2}$  इच । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सदी ४ । पूर्ण । वेष्टुन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर, नैस्पवा

२**६१०. प्रतिसं०२२** । पत्रस०६०६ । प्रा० १३४७ इथा । ले० काल ४ । पूर्ण वेष्टन स०१३**४ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर वृदी ।

**२६११. प्रतिसं०२३**। पत्रस०४०४। प्रा०१३× = इ.च. ले० काल स०१९५६। पूर्णे। वेष्टन स०१४२। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर श्री महावीर बदी।

२**६१२. प्रतिसं०२४ (क)।** पत्र सल्या ३२४ से ५१६ । ब्रा०१३ ४७ इच्छाले० काल स० १८६२ । क्रपूर्ण। वेष्टन स० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाण्वनाथ चौगान ब्रुटी।

विशेष-शेष पत्र ग्रभिनन्दन जी के मदिर में है। सवाईमाधोपूर में प्रतिलिपि हुई थी।

**२६१३. प्रति स० २४** । पत्र स० २–३२३ । ग्रा० १३ $\times$ ७ इन्द्र । ग्रqग्रं । ले० काल  $\times$  । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रामिनन्दन स्वामी, व दी ।

विशेष --पत्र १ तथा ३२४ से अस्तिम पत्र तक पार्ण्वनाथ दि० जैन मदिर मे है।

**२६१४. प्रति स⇒ २५। पत्रस**्टन्द्र । स्ना०११<sup>9</sup> × ५ इज्व । ल०कान स०१८५७ **याबाढ बुदी = । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१२ । प्राप्तिस्थान —**(द० जैन महिर नेन्ह्यशी मालपुरा (टाक)।

**२६१५. प्रति स० २६।** पत्रस० ६१३ । प्रा० १२ $\{ ^{1} \setminus 5 \}$  दुखा । नेवकानव स० २ चैत्र बुदी **१०**। पूर्ण । बेष्टन स० १०**१—१**। **प्राप्ति स्थान—दि**० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष-शातिनाथ चैत्यालय मे लिग्या गया था।

**२६१६. प्रतिसं० २७** । पत्र स**० ६०६** । ध्रा० १३ ८ ७ इला । ले० काल स० <sup>१</sup>६३३ । पूर्यो | बेकन स० १६५/७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पाण्येनाथ मदिर, इन्दरगढ (काला) )

**२६१७. प्रति सं० २६ ।** पत्र स० ७२ । आ० १२ × ७ इथा । ले॰काल > । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इनरणाढ (काटा)

**२६१८. प्रति स० २६ ।** पत्रस० ६५३ । घा० १९ 🖰 ६ इन्च । ले०काल स० १८६६ **बैगाल सुदी १०**। वेष्टन स० **१०१**। पूर्ण । **प्राप्ति स्थान—दि**० जैन मन्दिर बोरसली काटा ।

विशेष--गुलाबचंद पाटोदी से सवाई भाषोपुर मे प्रतिलिपि कराई थी।

**२६१६. प्रतिसं० २०** । पत्र स० ५०६ । ग्रा० १५ 📐 ७ दक्ष । लेक्नाल 🗴 । पूर्ण । वेक्टनसं० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्वयंत्रताल प्रचायनी मन्दिर ग्रनवर ।

२६२०. प्रति सं० ३१ । पत्र स०४४० । प्रा० १४ ८ ८ इञ्च । ले० काल 😾 । पूर्ण । बेष्टन स०११८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन खण्डेलवाल पनायनी मन्दिर ग्रनवर ।

**२६२१. प्रति स ० ३२**। पत्रस० ५६२। ले० काल  $\times$  । पूर्णं। वेष्ट्रन स० ११६। **प्राप्ति** स्थान — उपरोक्त मदिर।

**२६२२. प्रति सं०३३**। पत्र स०६७१ । ले० काल imes। पूर्ण । बेहन स० १२०। प्रा**प्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

२६२३. प्रति सं० ३४ । पत्र म० ४५१ । लेखन काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टन सं० १/६० प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेनवाल पश्चायती मंदिर ग्रलवर ।

२६२४. प्रतिस**ः ३५** । पत्र स०५५१ । ब्रा०११ × ६ इचा । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं०१३२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन लब्डेलवाल मदिर मलबर ।

**२६२४. प्रतिसं० ३६** । पत्र म० ५१४ । ब्रा० १३ $\frac{7}{3}$ ४ म्ह छन्च । ले० काल सं० १६६६ फागून बुदी १२ । पूर्णा । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ब्रखवाल पत्रायती मदिर प्रलवर ।

विशेष -- ग्रलवर में लिखा गया था।

२६२६. प्रतिसं• ३६ (क) । पत्र सं∘ ६४६ । घ्रा० १०४७ इन्छ । ले० काल सं० १८७२ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । बहुन सु ३५ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

२६२७. प्रति सं० ३७ । पत्र स० ५३६ । ले०काल स० १८६३ माघ शुक्ला ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवान जी, सरतपुर ।

विशेष---प्रति जीसं है।

२९२६. प्रतिसं० ३६ । पत्रस० २०१ । ले॰काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । बेष्टन स० १५७ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-ग्रागं के पत्र नहीं है तथा जीगां है।

२६२६. प्रतिसं० ३६ । पत्र म० ३०१ से ४८१ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० १६३ । प्राप्ति स्थान—उपराक्त महिन्य ।

३६३०. प्रतिसं० ४०। पत्र स० ५६५ । ले० काल स०१८६३ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० १८०। प्राप्ति स्थान – उपरांक मन्दिर ।

२६३१. प्रति सं० ४१। पत्र म०२४३। ले॰ काल  $\times$ । प्रपूर्ण। बेष्ट्रनसं० १६२। प्राप्ति स्थान अपरोक्त महिर।

२६**३२. प्रतिसं०४२ ।** पत्र स०४८१ । ले०काल 🗙 । पूर्णं । वेष्टन म०१८३ । **प्राप्ति** स्थान — ज्यारोक मंदिर ।

२१३३. प्रतिसं०४३ । पत्र स० २११–३४४ । झा० १४ $rac{1}{2}$ imes६२ । ले० काल imes ।  $rac{1}{2}$  $rac{1}{2}$ r

२६३४. प्रति सं० ४४ । पत्र म० ४७६ । घा० १३ ४ ८ इखा । ले० काल सं० १६२६ माघ मुदी २ । पूर्ण । बेपून म० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना ।

२६३५. प्रतिसं० ४५ । पत्र म०४५१ । ग्रा०१४४६ इका। ले० काल स०१८८२ । पूर्णे । वेष्ट्रन म०७४ । प्राप्ति स्थान --टि०जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष--जनी लकाल ने बयाना में ग्रथ की प्रतिलिपि की थी।

२६३६. प्रति सं० ४५ (क) । पत्र स० ५१६ । आ० १४४६ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ मगसिर बुदी १० । पूर्ण । वेस्टन स० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष-वैर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**२६३७. प्रति सं० ४६।** पत्रसं० ७६७। ग्रा०१३  $\times$  ७ इ.स.। ले० काल  $\times$  । पूर्णं। बेहुन सं० ४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

**२६३**न. प्रति सं**० ४७ ।** पत्रस $_0$  ४३८ । ब्रा० १४  $\times$  द इख । ले० काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । बेहन सं $_0$ —३४४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**२६३६. प्रति सं०४८ ।** पत्रस० ७२७ । ले० काल स०१८२६ । पूर्ण । बेष्टनस०४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

२६४०. प्रति सं०४६ । पत्रस० २०१। ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । बेष्टनस०६४ । प्राप्ति स्थान — चपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--प्रति जीर्ग है।

**२६४१. प्रति सं० ५०**। पत्रसं० ३६४। ले० कान  $\times$  । घपूर्णं । वेष्टुनस० ७२ । प्राप्ति **स्थान**-दि० जैन पचायती मस्टिर हण्डावालों का होत्त ।

**२६४२. प्रति सं० ४१ ।** पत्र स० ४-१०१ । द्वा० १४ $\times$ ४ $\frac{3}{2} दुःख । ले०काल<math>-\times$  । घपूर्ण । बेकुत स० ६२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

**२६४३. प्रति सं० ५२।** पत्रस० ३२२ से ७०६। द्या० १३ × ५२ डब्च। ले० काल × । प्रपूर्ण । वेक्नस० ११६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन प्रचायती मदिर करौली ।

**२६४४. प्रति सं० ५३ ।** पत्रस० ३२१ । ग्रा० १२imes४५ $^3$  इन्छ । ले० काल imes । ग्रदूर्ण । बेहुत सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करीली ।

२**६४५. प्रति सं० ५४।** पत्र स० ७४४। या०१२ 🗴 ७३ इचा। ले॰ काल—स०१६५८ च्येष्ट सुदी ४। पूर्ण। वे० स०१५। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन प चायनी मन्दिर करीली।

विशेष-अजमेर वालो के चौवारे जयपूर में लिखा गया या।

**२६४६. प्रतिसं० ५५**। पत्र स० ५२६ । स्रा० १० $\frac{1}{2} \times \S^{\frac{3}{2}}$  डच्च । ले० काल स० १६५५ स्थासक सदी ११। पूर्ण । वे० स०३१३ । प्राप्ति स्थास—दि० जैस सौगाणी मन्दिर करीली ।

विशेष-छीतरमल सोगाएगी ने प्रतिलिपि की थी।

२**८४७. प्रतिसं० ४६।** पत्र स०६३६ । ले०काल स०१५३४ । पूर्ण । वेग्टन स०४। प्राप्ति स्थान— दि० जैन तेरहपपी मन्दिर बसवा।

**२६४ ट. प्रति स० ५७ । पत्र**स० ५२३ । ग्रा०१४ हे×७ इला । लेकाल स०१८८२ । पूर्णे । **बेग्रन सं०** ५४१ । **प्राप्ति स्थान—दि**० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--प्रथम पत्र नही है।

२६४६. पदापुरास्य — खुशालचन्द काला । पत्रस० २६१ । ग्रा० १२  $\times$  ६ $^1_2$  इञ्च । माषा — हिन्दी (पदा)। विषय — पुरास्य। र०काल स० १७८३ पीय सुदी १०। ले०काल सं० १८४१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४२ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२६४०. प्रति सं०२ । पत्र स०३४० । आ०१२  $\times$  ५२ इ.च. । लेक्सल सं०१८४१ । सं०४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैसावा ।

विशेष - अर्व राम ब्राह्मण ने नैसावा में प्रतिलिप की थी।

**२६५१. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० २७२ । ब्रा० १३ imes imes ६२ हुँ इखा। ले० काल सं० १६०४ । **प्रपू**र्ण । वेष्टन स० २= । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन नेरहपथी मन्दिर नैसुका।

**२६५२. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स०२१६ । आ० १२×७ है इख । ले० कल स०१६५१ श्रावस्य बडी ६ । पर्यो । वेस्टन स०२०१ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष — श्रीमन् श्री विजयमधे श्रीपृजि श्री १०० श्री विष्यासागर मूरिजी तत् शिस्य ऋषिजी श्री चतुर्भुज जीतः सि० ऋषिजी श्री सावल जीतरपट्टे ऋषिजी श्री ५ रूपचद जीतः श्रीपा रिलाइ, स्वातिक स्वातिक

**२६५३. प्रतिसं० ५ ।** पत्र स० २४४ । ले० काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेटन स०४६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन प्रचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष---प्रति जीसां है।

२९४४. प्रति सं०६। पत्रस०२३८। ग्रा०१२४६ इंच । ते०काल ४ । ग्रपूर्ण। वेष्टन स०८८। प्राप्ति स्थान—दि०जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष---२२६ से २३० तक के पत्र लम्बे है।

२६५५. प्रति सं ०७ । पत्र स०४२१ । प्रा०११  $\times$  ५३ दश्च । ले० काल म०११७६ सावत मुदी १०। पूर्सा वेरटन स०१६७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल पंचायनी मदिर सलवर ।

२६४६. प्रति स० द । पत्र स० १०४ । प्रा० ११ $\frac{3}{4} \times 9$ ्रै इच्छ । ले॰काल स० १६७७ । पूर्ण । केस्टन सं० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर तेरहपूर्णी दंखा ।

विशेष-तेरापथी चिमनलाल ने प्रतिलिश की थी।

२६५७. प्रति स० ६ । पत्र स० ३२४ । प्रा० १२५ $^3$   $\times$  ७ $^3$  दश्च । ले॰ काल स० १७६६ प्राथाङ मुदी १ । पूर्ग । बे० स० १०६ । प्राप्ति स्थान-प्रदि० जैन मंदिर तेरह्मथी दौमा ।

विशेष-- दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी।

**२६५८. प्रति स**० **१० ।** पत्र स० २६४ । घा० १३ × ६ इखा । ले० काल स० १७६२ सावस् सदी १ । पूर्या । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष-हिरदैराम ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी थी।

२६५६. प्रतिस० ११ । पत्र म०२६२ । प्रा०१२ ३ ४ ६ इ.च. । ले०काल स० १८२४ बैबास्त बुदी १३ । पूर्ला। वेष्टन स०४६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-- माधोसिंह के शासन काल में नाथूराम पोल्याका ने प्रतिलिपि की थी।

२६६०. प्रति सं० १२ । पत्र स० ३४६ । ले०काल स० १६०० । पूर्ण । वेस्टन स० १७६ । प्रास्ति स्थान- दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

२६६१. पाण्डवपुरासा – श्री मूचरा (शिष्य विद्यामूचरा सूरि) । पत्र सस्या ३०८ । मा०१० × ५३ हचा भाषा —सस्कृता विषय —पुरासा । र०काल स०१४०७ । ले०काल × । पूर्सा । वेष्न स०२४ । प्राप्ति स्थान — म०वि० जैन मस्टिर मजमेर । **२६६२. प्रतिसं० २** । पत्र 'स० २४२ । धा० १२ ४ ६ इ'च । ले० काल स० १०४४ चैत्र बुदी ६ । पूर्णे । बेपून स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जन पाप्तनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

**२६६३. प्रतिसं**ं ३ । पत्र स० २६८ । ले०काल स० १६६८ म गसिर गुदी । वेष्टन स० २२६ । प्रा**प्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपर ।

विशेष-- ब्रह्म शामलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

२६६४. प्रति सं ०४ । पत्र स० ११४ । घ्रा० १२४४ इन्छ । ले०काल ६ । घ्रपूरा । बे० स० १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन घ्रवर्शल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — बीच '२ के पत्र नहीं है। प्रत्येक पत्र में ११ पिक्तवा एव प्रत्येक पिक मे ४५ प्रकार है। उक्त यथ के प्रतिरिक्त महात्क सकलकीर्ति द्वारा विर्राचत वृषभनाथ चरित्र एव युराभदात्रार्य कृत उत्तर पुरागा के श्रुटित पत्र भी हैं।

**२६६५ प्रति सं० ५** । पत्रम० २२६ । स्रा० १२ $\times$ ४  $\xi$  इश्व । ले०काल म० १७३२ मर्गासर बुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन म० १२३ । **प्राध्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बुदी ।

विशेष -- मनोहर ने नैगावा ग्राम में प्रतिलिप की थी।

२**६६६, पाण्डवपुरारा—भ०गुभचन्द्र** । पत्र स०४१४ । द्वा०११ ४ ४<sub>२</sub> इच । भाषा— सस्कृत । विषय—पुरारा । १०काल म० १६०८ । ने०काल म० १७०४ चैत्र मुदी १ । पूर्णा । वेष्ट्रन म० ६४ । **प्रा**प्तिः स्थान—भ० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष — खण्डेलबालगोत्रीय श्री क्षेतसी द्वारा गोवर्धनदाम विजय राज्य में प्रतिलिपि की ससी थी।

**२६६७. प्रति सं० २** । पत्रस० २०४ । म्रा० ११} ४६ इल्ड । ले०काल म०१८६६ भारत। सुदी १ । पुर्गा बेहुन स०३४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बृदी ।

विशेष -- माधवपुर नगर के कवंटाधपुर मे श्री महाराज जगतिसह के शासन में २० थी क्षेमस्कीति के प्रिप्य श्री भुरेरकीति तराहुँ मुनेरकीति नदान्त्राये साह मन्त्रचन्द नुरादिया के व श्र में विश्वत्यास के पुत्र विजयराम श्रीपुराम येगराज । श्रम्भुराम के पुत्र ही---नोनदराम यन्त्रालाल । नोनदराम ने प्रतिनिधि करवाई थी।

यह प्रति व दो के छोगालाल जी के मन्दिर की है।

**२८६८. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० २२० । आ० १२ ४ ६ इल्ब । लेक्काल म० १६७७ मात्र शुक्ता २ । पूर्ण । बरटन म० ३११, । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बन्दी ।

प्रशस्ति---सबन् १६७० वर्षे माघ माने शृत्वपक्षे द्विनीया निवो बम्बावनी वास्त्रध्ये थी महाराजा भावसिष्य राज्य प्रवर्तमाने थी गृत्तसर्थे '' ''' भ० थी देवे दक्षीनिदेवा तदास्त्राये बण्डेनवानास्वये भीमा गांत्रे सा० ऊदा भाषां नृदलदे '' ''' । प्रशस्ति पूर्णे नहीं है ।

**२६६६. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स० २४६ । ग्रा० १४imes४६ था । ते० काल imes । पूर्ण । वेट्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान** —िद्र० जैन मन्दिर नागरी, बूदी ।

२६७०. प्रति सं० ४ । पत्र स० २०१ । प्रा० १० $\{X \times V\}$  इन्छ । लेक्सल स० १६२६ । प्रपूर्ण । । बेष्टन स० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी ।

विशेष —्वृन्दावती नगर मे प० सेवाराम ने लिखा। १ – ६५ तक के पत्र दूसरी प्रति के हैं। ६६ से १ ५४ तक पत्र नहीं हैं।

२**६७१. प्रतिसं० ६** । पत्रस० १३६ । ब्रा०९० ४८ इ.च. । ले०काल स० १८३४ घ्राषाढ़ मुदी ७ । पूर्ण । बेष्टनस० १८–२७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर नीमनाय टोडारार्बर्मह (टोक)

विशेष---चम्पावती नगरी में श्री बदावन के शिष्य सीताराम के पठनार्थ लिखा गया था।

२६७२. प्रतिसं०७ । पत्रस० १४६ । म्रा० १२ ४ ४ इ.च । ले०काल ४ । पूर्णा । बेष्टनस∙ ३१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**२६७३ प्रतिसं० ⊏ ।** पत्रस० २५७ । ले० काल स० १६६७ । पूर्णा । वेष्टुनस० २६/२० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रति जीगां है।

प्रमस्ति—सवन् १६२७ वर्षे श्री णानिवाहन णांके १५६२ प्रवर्तमाने मार्गणिर मीनात् १ रविवासरे श्रीमानवर्देश श्रीउरपपुरनगरे श्रीणानितायनेत्यालये भी मृत्यस्ये मरहव्यनिष्के वनान्नार्यम् प्रावासं श्री मृत्यस्ये मरहारक्ष्मीप्यनित्रदेवा तत्पट्ट प्राथासं श्री जुन्दकुन्दान्वयं मरहारक्ष्मीप्यनित्रदेवा तत्पट्ट प्राथासं श्री जानक्षित्तिदेवा तत्पट्ट प्राथासं श्री जानक्षित्तिदेवा तत्पट्ट प्राथासं श्री जानक्षित्तिदेवा तत्पट्ट भे श्रीवत्त्वव्यदेवा त स. श्री रत्नव्यदेवा तत्पट्ट प्राथासं श्री ह्में श्रीवत्त्वव्यदेवा त स. श्री रत्नव्यदेवा त स्थ ग्रामाये श्रीकपूरात् जिप्य श्रीमूरजी वधेरवान जातीय परोहगोशे नेत्रामि गाट श्रीगम्भी तद्भायो गोजार्ष पुत्र सह् श्री परवा नद्भावा गोजार्ष पुत्र सह श्री परवा नद्भावा गोजार्ष पुत्र सह श्री परवा नद्भावा गोजार्ष प्राथा गोजार्म प्राथा नद्भावा गोजार्म प्राथा नद्भावा गोजार्म प्राथा गोजार्म प्राथा नद्भावा गोजार्म प्राथा नद्भावा गोजार्म प्राथा नद्भावा गोजार्म प्राथम गोजार्म प्राथमिति विवाय स्वाया नित्रवाच नत्न ।

पुनः सबन् १७१२ की प्रणस्ति दी है । समवत दुवारा यही ग्रंथ फिर किसी के द्वारा मङलाचार्य सुमतिकीनि को भेट किया गया था ।

२**६७४. प्रतिसं०** ६ । पत्र स० ३५०। ग्रा०१०३ ४ ४¦ इखा। ले०काल (। वेल्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० त्रैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

**२६७५. पांडवपुराग्—यशःकोत्ति** । पत्रस० २०-११०, २०५–२४६ । आ० १० ४५६०। भाषा —अपभ्रः शः । थिषमः—पुराग् । र०काल ४ । ते०काल ४ । अपूर्ण् । वेष्ट्रन स० २६ । **प्राप्ति** स्थान —दि० जैन मन्दिर नेरहपथी दीमा ।

विशेष -- प्रति प्राचीन एव जीसी है।

२६७६. पाण्डवपुराग् — बर्जनिदास । पत्र स० ४२१ । ब्रा० १२४६ इस्त । आया — सम्ब्रत । विषय-पुराग् । रजकाल ४ । ले० काल स० १४२८ मगसिर मुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १६०६ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मदिर ब्रजमेर ।

**विशेष**—प्रशस्ति महत्वपूर्ण है।

२९७७. पाण्डबपुराग्—वैवन्नमसूरि। पत्र स $\circ$  ४६ ते २६१। मा $\circ$  ६ $\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}$  इश्व । माषा—संस्कृत । विषय—पुराग् । र॰काल्  $\times$  । ले॰काल्  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  ११२१ । प्राप्ति स्थान—भ $\circ$  दि $\circ$  जैन मन्दिर अजेर ।

२६७८. पाण्डव पुरारा —  $\times$  । पत्रसं० १७६ । आ० ११ $\times$ ४ दे इस । भाषा —सस्त्रत । विषय —पुरारा । २०कास  $\times$  । ले०कास  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३ $\times$ १ । प्राप्ति स्थान — स०दि० जैन सिंदर प्राप्ति ।

२६७६. पाण्डव पुरास् — × । पत्रसः १०१ । झा० ११४८ इच । भाषा-हिसी (गर्वा)। विषय-पुरास्। र० काल × । से०काल × । झपूर्सं। वेष्टन सं० ६३१ । प्रास्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

२६**८०. पाण्डवपुरारा—बुलाकीशास**। पत्रस० १६२। झा०१२×८ इंच । भाषा— हिन्दी। विषय—पुरारा। र०काल स०१७४४ झाषाढ सुदी २। लेक्काल स०१६४४। पूर्या। वेष्टन सं० १४७७। **प्राप्ति स्थान—**भटारकीय दि० जैन सन्दिर खजमेर।

**२९-१. प्रतिसं० २**। पत्रस० २०४। ग्रा० १० $\frac{3}{4}$  $\times$ ४ $\frac{3}{4}$  हच । से•काल स० १८७६। पूर्ण । बेष्टन सं० २१। प्राप्ति स्थान —भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धाजमेर ।

२६८२ प्रति सं० ३ । पत्रस० २१६ । ग्रा० १३×७ इश्व । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टुत स० ८३-१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पत्रायती दनी (टोक)

विशेष - सदामुख वैद्य ने दुनी मे प्रतिलिपि की थी।

**२६८३ प्रतिसं०४** । पत्र स० २४४ । धा० १० ४ ५ १ इ.च । ले० काल स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान---** दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी ।

२६८४. प्रति सं० ४ । पत्र स० १८२ । या० ११४७ देव । ले०काल स० १६४६ चैत बुदी ८ । पुर्ण । बेष्टन स २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष-हीरालाल ने प्रतिलिपि की थी।

**२६८५. प्रति सं०६ ।** पत्र स० २२६ । द्रा०१२ ×५२, इल्बाले० काल स०१८४१ । पूर्णावेष्टन स ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन तेरहपथी मन्दिर नैशावा

**२६८६. प्रतिसं० ७ ।** पत्रस० २६८ । झा० ११ × ४१ हुँ इ.च. ले∙काल स० १८४१ । झाषाढ बुदी ⊏ । पूर्ण । बेपून स० ३२ । **झाप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैसुबा ।

विशेष - अर्थराम ने नैरावा मे प्रतिनिधि की थी।

२६८७. प्रतिसं० ६ । पत्र स०३७७ । घा० १४×७,१इंच । ले०काल स० १८६६ माटवा सुदी । १० ।पूर्ए । वेष्टन स०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रत्रवाल प्रचायती मदिर प्रलबर

**२६८८. प्रति सं०६।** पत्र स०२३८। ले० काल स०**१७८२ धासोज बदी ६। पूर्ण।** बेष्टन स०७८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मदिर मरतपुर।

२९८८. प्रति सं०१०।पत्र स० १४७। प्रा०१२३ ४ ७३ इ.खा ले०काल ४ । पूर्णा। वेष्टन सं०१४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना। २६६०. प्रति स० ११ । पत्रसं० १८६ । धा० १४ 🗴 ७ हैइन्स । ले०कास १६६३ वैवास सुदी ११ । पूर्ण । वेहनस० २२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानवी (कामा)

२६६१. प्रतिसं० १२ ।पत्रसं० २-६४ । आ.० १२ ४६ इन्य । से०काल ४। अपूर्ण । बेहन सं० ६१ । आस्तिस्थाल — वि० जैन सन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानीबीग

२६६२. प्रतिसं० १३ । पत्र स० १६१ । द्या० । ११४५ है इन्ता । ले० काल सं० ४ । स्रपूर्ण । वेष्टन सं० २० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर करौली ।

विशेष - ग्रन्तिम दो पत्र भाषे फटे हुये है।

२**९६३. प्रतिसं० १४ ।** पत्रसं० २६० । घा० १२ ४६ है इला। ले∙काल ४ । पूर्ण। वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

२**६६४.प्रतिसं० १५ ।** पत्र स० २३२ । प्रा० १३ $\times$ ६ इला । ले० काल सं० **१**-६६ प्रासीज बुदी ६। पूर्ण । बेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौता ।

बिशेष--पन्नालाल माट ने प्रतिलिपि की थी।

२६६४. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १६४ । घा० ११ $\} \times Y_0^2$  इञ्च । ले० काल० स० १०११ काके १६७६ । पूर्ण । बेष्टुन स० ३२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौरा ।

२६६६. प्रतिसं० १७ । पत्रसं० २४२ । द्या० १२×५१ इंच । ले० काल × । सपूर्ण । वेष्टन सं० ३।४ । प्राप्ति स्थानि—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)

विशेष - शन्तिम दो पत्र नहीं है।

२६६७. प्रति सं० १८ ।पत्रस० २४३ । प्रा० ११ है ४५ है इस । ले०काल सं० १६२३ । पूर्ण । बेहनसं० २८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर फोहपूर गेखावाटी (सीकर)

२९९८ म. प्रतिसं० १९ । पत्र स० २३४ । मा० १३२ ४७ इ'च । ले० काल स० १९४३ म्रावाड बुदी । १४ । पूर्ण वेस्टन स० ४२ । प्राप्तिः स्थान – दि० जैन मन्दिर फतेहपुर वेसावाटी (मीकर)

२६६६. प्रति सं०२०। पत्रस० ३२८। प्रा०१२१४६ इच। ले० काल स०१६११ बैबाख सुदी १। पूरा। बेप्टन स०६०। प्रा**प्ति स्थान**— उपरोक्त मदिर।

विशेष -- रामदयाल श्रावक फतेहपुर वासी ने मिजपुर नगर मे प्रोहित मूरामल क्राह्मण से प्रति-लिति कराई थी।

३००१. प्रतिसं० २१ । पत्रस० १२० । प्रा० १४ ४६ १ इवा । ले०काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टुन स० ५२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३००२. प्रतिसं० २२ । पत्र सं०११८ । घा० १२ x ७ इञ्च । से०कास सं०१६६६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन स्वतेनदात पंत्रायती मन्दिर सनवर ।

३००३, प्रतिस्तं २३ । पत्रसं १७६ । लेक्सल सं १११६ मासीच । पूर्ण । बेष्टन नं १७६ । प्राप्ति क्यानं — उपरोक्त मन्दिर । ३००४. पाण्डव पुरास्य वचितका—पन्नालाल चौधरी । पत्रस० २४६ । म्रा० १३४ मे इञ्च । माषा —हिस्दी (गळ) । विषय—पुरास्य । र०काल सं० १६३३ । ते०काल स० १६६५ वैनाल बुढी १ । पुर्ते । वेहन स० १२११ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर म्रजमेर ।

३००५. पास्वं पुरास् — चन्नकीस्ति । पत्र स० १२८ । आ० १०४४ इख । भाषा--संस्कृत । विषय — पुरास् । र०काल स० १६४४ । लेकाल सं० १६८१ फागुरा बुदी १ । पूर्स । वेष्टन स० ४४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरहाथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—धाचार्य चन्द्रकीति श्रीभूषण् के शिष्य थे। पुराण् मे कुल १४ सर्ग हैं। पत्र १ से ४६ तक दसरी लिपि है।

**३००६. पास्वपुरारा — पद्मकीति ।** पत्र स० १०६ । ध्रा० १०×४) इञ्च । भाषा-स्रपन्न स्र। विषय — पुरारा । र०काल स० ११६१ । ले० काल स० १४७४ काती बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन म० १७७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—चित्रकृटे राए।श्रीक्षप्राम राज्ये "" भ० प्रमाजन्द्रदेश सण्डेलवालान्त्रये भीमा गीत्रे साष्ट्र सहस्र मार्या महाश्री पुत्र साह मेखा भावाँ मेधसी दितीय मा. मा श्रीणा भावाँ जंगमश्री तृतीय मा. मा सूरज मार्या सूर्यदे चतुर्थ श्राता सा पृता भावाँ पृतादे एतेषा मध्ये साह मेषा पुत्र हीरा इंसर महंसर करममी इह पार्चनाण्यतित्र मृतिश्री नरेटकीर्ति योग्य पटापित ।।

. **३००७. पार्वपुराग्-रहणू।** पत्रस्य ६१ । सा०११३ ४४ इता । भाषा-स्याप्त्रण । विषय-चरित्र । २०काल ४ । ने० काल स०१७४३ माघ बुदी ३ । पूर्ण । बेहन स०२८७ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन मंदिर बोरसनी कोटा ।

विशेष—१७४३ वर्षे माघ कृष्ण ३ चन्द्रवारे लिखित महानन्द पुष्कर मक्क्ष्मज पालव निवासी ।

**३००८, पाश्वंपुरारा—वादिचन्द्र।** पत्र स० १२२ । घा० ११४४ द्रेड्ड । भाषा—सस्कृत। विषय—पुरारा। र०काल × । ले० काल स० १८१० माघ मुटी १। पूर्ण। वेल्न म० २६०। प्रापित म्बास—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष - नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य प० वृत्तचन्द ने इस ग्रथ की प्रतिनिधि की थी।

३००**६. प्रति स० २ ।** पत्रस० ७३ । आर० १०×४ इच । लेक्काल स० १६४० । पूर्गा । वेहत स० २३४–१३ । प्राप्ति **स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष--नौतनपुर मे ब्र. नेमिचन्द्र ने ग्रंथ का जीर्गोद्धार किया था।

**६०१० पुरागासार (उत्तरपुराग्) — भ० सकलकीत्ति ।** पत्र म०१८२ । आ०१०४४<mark>६ ६ स । आघा—सस्कृत । विषय — पुराग् । र०काल</mark> ४ । ने०काल स०१८६० मादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रत स०१४४८ । **प्राप्ति स्थान —**अट्टास्कीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

: **२०११. प्रतिसं० २**। पत्र स० ३४। म्रा० १२×५ इ.च.। ले० काल स० १८२६ मासीज **यूरी १२**। पूर्णा विष्टुत स० १४५६ । **प्राप्तिस्थान**— स० दि० जैन मन्दिर म्रजमेर ।

्र विशेष—भड़लाबार्य भट्टारक विजयकीत्ति की श्राम्नाय में साकमरिनगर (सांमर) में महाराजा पृथ्वीसिंह के राज्य में श्री हरिनारायगाजी ने ज्ञास्त्र लिखवाकर पडित मागुकबन्द को भट किया था । ३०१२, प्रतिसं० ३ । पत्रस० २३६ । झा० १०×५ इ.च । ले० काल सं० १७७० पीच बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

३०१३. पुरागासार — सागरसेन । पत्रसं० ६२। घा० ११४४ इच । प्रापा — संस्कृत । विषय — पुरागा । "०काल ४ । से०काल स० १६५७। पूर्ण । वेष्टन सं० १०७३ । प्राप्ति स्चान — महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवत १६५७ वर्षे भादवा बुदी १ वार शुक्रवार धजमेर गढ मध्ये श्रीमद्भकवरसाहिमह्रानुरत्रासु राज्ये लिखित च जोमी सरदाम साह धारा। ततुगुत्र साह सिरमल ।

३०१४. भागवत महापुरास्म — × । पत्रस० १३३ । प्रा० १२×७ इश्व । माषा-संस्कृत । विषय — पुरामा । र०काल × । ल०काल स० १०१२ । पूर्म । वेष्ट्रन सं०७२ । प्रास्ति स्थान — द० जैन मन्दिर प्राप्तनत्वन स्वामी व दो ।

विशेष --३१ वें अध्याय तक पूर्ण है।

३०१४. भागवत महापुराएग $-\times$ । पत्रस०२०४। धा०१०३ $\times$ ४५ इत् । भाषा— सस्कृत । विषय —पुराण । २०काल । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर धीमनदन स्वामी वृदी ।

विशेष -- दशमस्कथ पूर्वाद्ध तक है।

३०१६. भागवत महापुरास् — × । पत्रस० २-१४६ । झा० १×१ इञ्च । भाषा— हिन्दी गण । विषय —पुरास । २०काल म० १७०० श्रावसा बुदी १० । से०काल × । प्रपूर्स । वेष्ट्रनसं• ६० । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर, सारिताय बुदी ।

३०१७. भागवत महापुरास्य भावायं दीपिका (एकावश स्कंध)—श्रीघर । पत्रत्तक १२८ । प्रा० १२ > १२३ । भागा—सस्कृत । विषय—पुरास्य । र०कान  $\times$  । से० काल स० १८०१ । पूर्ण । वेवृतस० १०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३०१८. प्रति सं०२ । पत्रस०३४ । घा०१४×६ इला। ले०काल × । घपूर्ण । वेष्टन स० ११७ । प्राप्ति स्थान – उपरोक्त मन्दिर ।

३०१६. मागवत महापुरास भावार्थ दीपिका (तृतीय स्कंघ) —श्रीघर । पत्रसः १३२ । द्याः १२४५ इन्द्र । भाषा — सस्कृत । विषय —पुरास । रे०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन सं• १०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

े ६०२०. प्रति स० २ । पत्रम० ७७ । प्रा० १२ × ६ इच । ने०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० ११४। प्राप्ति स्थान — द० जैन मन्दिर, नागरी बुंदी ।

. ३०२१ जागवत महापुरास मावार्थ दीपिका (हादश स्कंब) —श्रीधर । पत्र सं०४४। प्राण १४×६ दश्व । भावा —सस्कृत । विषय —पुरास । रक्कान X । सेंक्कान X । पूर्ण । वेष्टन सं०११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संविर नागरी, वंदी । ३०२२. मागवत महापुरारा सावार्थ बीपिका (चतुर्थ स्कंघ) — श्रीघर । पत्र स॰ ६७ । मा॰ १४×७ १व । भाषा — सस्कृत । विषय —पुरासा । र०कास × । से०काल × । पूर्स । बेय्टन स॰ ११३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नागदी वृदी ।

३०२३. मानयत सहापुरास मावार्थ दोपिका (द्वितोय स्कंब) — श्रीधर । पत्र स० ३२। मा० १४ 🗴 इ.च.। भाषा — सस्कृत । विषय—पुरासा । र०काल 🗴 । केश्न सं० ११२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी दृदी ।

३०२**४. प्रति सं०२ ।** पत्र स०४३ । घा०१४ × ६ इ.च । ले**०का**ल × । अपूर्ण । वेष्टन सं०११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी ।

३०२५. भागवत महापुरारा मावार्थ दीपिका (सप्तम स्कंघ) — श्रीघर । पत्र स०६४ । मा०१५ × ७ इवा । भाषा —सस्कृत । विषय — पुरारा । र०काश × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०११० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर नागरी व दी ।

३०२६ भागवत महापुरारा मावार्य वीषिका (बस्टम स्कंघ) – श्रीधर । पत्रस० ६२। घा० १४ × ६ १ १४ व । मे० काल स० १७७६ । प्रांत १४ × ६ १४ १४ । मे० काल स० १७७६ । प्रांत । वेषम — पुरारा । र०काल × । मे० काल स० १७७६ । प्रांत स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी व दी ।

**३०२७. प्रति सं० २** । पत्रस० ६२ । आ० १५ $\times$ ७ इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी वूदी ।

३०२८. भागवत महापुरास्य मावार्थ दीपिका (झब्टम स्कथ) - श्रीघर । पत्रस० ५८ । मा० १५ $\times$ ६ १ इखा भाषा-सस्कृत । विषय --पुरास्य । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० । प्रास्टिः स्थान -- दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

३०२६. भागवत सहा प्रारण भावायं वेषिका (नवस स्कंघ) — श्रीघर । पत्र स०११। ग्रार १४×६२ इचा । भाषा — सस्कृत । विषय — पुराण । र०काल × । लेक्काल स०१८६१। पूर्ण । वेष्टत स०१०७। **प्रास्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०३०. मागवत महापुरारा भावार्य दीपिका (पंचम स्कंघ) —श्रीधर। पत्र स० ८३। ग्रा॰ १५×६ १ इञ्च । भाषा —सस्कृत। विषय —पुरारा। र०काल × । ते० काल स० १७४६। पूर्ण। वेप्टन स० १०४। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०३१. प्रति सं०२ । पत्र स०१६–२३ । मा०१५×६ $^2_7$  इका । ले•काल  $\times$  । स्रपूर्ण । केटन सं०१०६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त सन्दिर ।

३०३२. मागवत महापुरास मावार्थ दीपिका (प्रथम स्कंध) — श्रीचर । पत्रसं० १०। प्राः १३ $\times$ ६ इच । माषा — संस्कृत । विषय — पुरासः । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्ट्रसं० १०४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३०३३. मागवत सहापुरास्य भावायं वीपिका (दशम स्कंव)—श्रीवर । पत्रस्व ४३७ । मा॰ १२×४३ रच । माया—संस्कृत । विषय-पुरास्य । र० काल स० ४ । ले०काल स० १७४१ माव बुदी ऽऽ । पूर्ण । बेकुनसं० १०१ । प्राप्ति स्थान—दि० वैन मन्दिर नायदी मृदी । विशेष—इद पुस्तकं लिखितं बाह्मएा जोशी प्र**ह्लाद** तत्पुत्र चिरंजीव मयुरादास चिरंजीव भाई गंगाराम तेन इद पुस्तकं लिखित । जबूढीप पटएस्थले । श्री केशव चरएा सन्निच्यौ ।

३०३४. मस्लिनाथ पुरारा— × । पत्रसं॰ २६ । आ॰ १२३४५ १३ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय—पुरारा । र॰काल × । ते॰काल × । अपूर्ण । बेट्न सं॰ ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज॰) ।

३०**३५. मिल्लनाय पुरास्य भाषा—सेवाराम पाटनी** । पत्र सं० १०६ । झा० १०१ × ५१ इ.च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुरास्य । र०काल स० १०५० । ले०काल सं० १०६४ फागुस्य मुदी २ । पूर्तो । बेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष — लेलराज मिश्र ने कोसी में प्रतिलिपि की थी। सेवाराम का भी परिचय दिया है। वे दौसा के रहने वाले थे तथा फिर डीग में रहने लगे थे।

३०३६. महावण्डक- × । पत्र स०४ । मा० १० है × ४ इ.च. । माया—सस्कृत । विषय × । राज्काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स०६०२ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

बिरोख—हित श्री जैसलमेर दुर्गस्य श्री पार्श्वनाथ स्तुतिश्वकेड चकेरा चेत सालाचक सहज्कीति नाम महादङकेन स॰ १६-२ प्रमारो विजयदणमी विवसे । जिल्यातीन महादण्डक विदुषाक्षपराभेसा साणा नगरमध्ये मित्री ज्येष्ठ प्रतियहिंचसे स॰ १७-२ का ।

विशेष -- किशनगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

३०३ म. प्रतिसं०२ । पत्र सं०१८२ । म्रा०६३ ४६ इ.च. । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रतस्य म्रह् । **प्राप्ति स्थान** स्थारिक जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रथ मे ४१ ग्रधिकार है तथा ग्रजयगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

३०३६. महापुरारा—जिनसेनाचार्य —गुरामद्राचार्य । पत्र स०१-१४४ । धा०१३ $\times$ ५१ इत्थ । मापा-सस्कृत । विषय —पुरारा । र०काश  $\times$  । से०काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टन स०३२१/२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संसवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

३०४०. प्रति स०२ । पत्रस०६-४१७ । प्रा०११६ 🗙 ६ इ.च. । ले० काल 🗴 । धपूर्णः । केटन पं०६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष-वीच २ मे कई पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन एवं जीए हैं।

२०४१. प्रतिस० ३। पत्र सं० ३६६। घा० ११× ४.वैडचा लैब्काल १८८०। पूर्ण। वेष्टन स०१२/८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर दुनी। (टॉक)

३०४२, प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ६४०। ले० काल सं० १६६३ । पूर्ण । ते० स ३ - । प्राप्ति स्थाल — दि० जैन तेरहांची मन्दिर बसवा । विशेष --- रएवंभौर के चैल्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

३०४३, प्रति सं० ४ । पत्र स० ३६२ । ले० काल सं० १७६४ । पूर्व । येष्टन सं० २०७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मंदिर मस्तपर ।

३०४४. प्रति संर्० ६ । पत्र स० १ से ४६४ । ते० काल सं०  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० २६२ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन पंचायती मदिर गरतपुर ।

२०४**४. प्रति सै०७।** पत्रस०४३४। म्रा०१२ $\times$ ५१ इन्छ । ते•काल स० $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टनसं•२२२। **प्राप्तिस्थान**—र्दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-- ३७१से ४३४ तक तथा ४३५ से ब्रागे के पत्र मे नहीं है।

३०४६. सहापुरारा-पुरायतः । पत्र स० ३४७ । आ०११ $\times$ ४ हु इथा । आधा-सपत्र मा विषयः । पुराया । रकालः । से कालः  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनत० ४३७ । प्राप्ति स्थानः अ० दि० जैन मन्दिर अजेरः ।

विशेष-५० भीव लिखित ।

३०४७. प्रतिसं० २८। पत्र स० ६४६ । सा० १० $\frac{1}{7}$  $\times$ ४ $\frac{1}{7}$  इन्छ । ते०काल $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । प्राप्तिस्थान—उपरोक्त मदिर ।

२०४८. प्रति सं० ३। पत्रस०३१४।मा० ११ $3\times$ ५ इश्व । से०काल  $\times$  ।म्रपूर्ण । वेष्टनस०२६  $\times$ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर बड़ा बीमपथी दौसा ।

विशेष -- बहत से पत्र नहीं है।

३०४**६. प्रतिसं०४** । पत्र स०११ । सा० ११रै¦ ४५ है इ**च । ले∘काल ×** । स्रपूर्ण । वेष्टन सं०२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहवयी दौसा ।

विशेष - प्रति प्राचीन एव जीगाँ। पत्र पानी मे भीगे हये है।

३०५०. प्रति सं० ४ । पत्र स० २४७ । ग्रा० ११२ ४ ४३ डखा ले० काल स० ४ । पूर्वा । बेप्रन स० ≒३ । प्रार्थित स्थान – दि० जैन मदिर फनेहपुर लेखाबाटी (नीकर)

विशेष-प्रतिप्राचीन है। प्रशस्ति काफी वडी है।

३०५१. प्रतिसं०६ पत्र स० १३८ । ते० काल 🗴 । छपूर्ण । वेष्टन मं० २६/४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३०४२. महापुरारा चौपई—गगादास (पर्वतमुत)। पत्रस० ११। घा०१०३ ४४३ इ.स.। भाषा—हिन्दी (गदा)। विषय — पुरारा । २०काल। ने० कान स० १६२४ कार्तिक बुदी ४। पर्या। वेशन स० २१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर दवलाना बुदी।

२०४३: प्रतिसंव र । पंतरं ० १०। लेक्काल संव  $\times$  । ब्रपूर्ण । बेहन संव १०६ । प्राप्ति स्थान —िवंव जैन सभवनार्थ मन्दिर उदयपर ।

३०४४ सहामारते  $-\infty$  । पत्र स० ६१ । प्रा० ११×४% इन्छ । भाषा तांसकत । विषय पुराएं। २०काल  $\times$  । क्षेत्रकांसर्र  $\times$  प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १२ । प्राप्ति स्थान —द० धन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बुंदी ।

विशेख---कर्णपर्व-द्राधिप सवाद तक है।

**३०५५. मुनिवत पुरास—व० कृष्णवास ।** पत्र सं० १५६। प्रा० १०४५ इन्छ । साथा— सस्कृत । विषय—पुरासा । र०काल ४ । ने० काल स० १६६१ । पूर्म । वेष्ट्रन स० ३६५। **प्राप्ति** स्थाम—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष -- श्रन्तिम पत्र जीर्ए हो गया है।

**३०४६. रामपुराए — सकलकोति।** पत्र स०३४४। घा०१२ × ६ इच । भाषा — सस्कृत । विषय—पुराए। र०काल × । ले०काल स० १३७१। पूर्ण । वेप्टन स०७६। प्राप्ति स्थान — भ० दि० केन मन्द्रिर प्रवर्षर ।

विशेष - भट्टारक भवनकाति उपदेशान् इ हाहर देशे दीर्थपुरे लिपीकृतं ।

३०४७. रामपुरास्—स० सोससेन।पत्र स० १८८ । घा० १२४६ इश्व । भाषा— सस्कृत । विषय-पुरासा ।र०काल ४ । ले०काल।पूर्या । वेष्टन मं० १०४४ । **प्राप्ति स्थान—भ०** दि० जैन मन्दिर ग्रजीर ।

**२०५**८, प्रति **सं०२** । पत्र स०२३० । ब्रा०१३<sup>5</sup>ू ५६ इख । **खे०**काल स० १८६६ माध मुदी १३ । पूर्ए। बेष्टन म०१४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर झदिनाथ वृदी ।

३०५६. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २७६ । द्या० ११४५ इश्व । ले० काल स० १७२३ । पूर्ण । बेष्टन सं० १≂२ । प्राप्ति स्थान —ीद० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बुंदी |

प्रशस्ति—स० १७२३ वर्षे जाके १५८६ चैत्र मुदी ४ णुकवासरे ग्रंबाववी महादुर्गे महाराजाधराज श्री जयसिंह राज्य प्रथनीमाने विमलनाथ चैल्यालये सहारक थी नरेन्द्रकीर्ति के समय मोहनदाम भीमा के वशको ने प्रतिक्षित कराई थी।

३०६०, प्रतिसं ४ । पत्रस० १८४ । या० ११ 🗡 ५ ५ ६ खा लेक्काल १८५७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

विशेष- व दावती में पार्श्वनाथ चैत्यालय में सेवाराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०६१. प्रतिसं**० ४** । पत्र सं० २५० । ले०काल सं० १६४६ । श्रंपूर्ण । बेष्टन स०११ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दवलाना बृदी ।

**३०६२. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स०३६-२४४ । आ०१२×५ इञ्च । ले० काल ⋋ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**२०६३. प्रति सं० ७ । पश्चस**० २३६ से ३६२ । ब्रा० १२×५२<sup>9</sup> इखा लेक्काल सं० १८४३ । **प्रपूर्ण ।** बेक्रन सं० २१२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

३०६४. प्रतिसं० म । पत्र सं०२६० से ३४४ । घा० ११४५३ । ले०काल × । घपूर्ण । बेष्टुत स० २१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्धनाय मन्दिर इन्दरगढ ।

३०६४. प्रतिसं० है। पत्र सं० २३७ । झा० १३ ४४ ६९४ । के के कास्त ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२६ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा।

३०६७. वद्धंमान पुरास्य भाषा—  $\times$  । पत्र स०१४७। प्रा०११ $\times$ ७ $^2_1$  इत्र । भाषा— हिन्ती गद्य । विषय—पुरास्य । २०काल  $\times$  । ले०काल —  $\times$  । पूर्णः । बेप्टन सं०४१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रिनन्दन स्वामी वृंदी ।

३०६८, **बहुँ मान पुरास्** — कवि क्रमम । पत्रसं० १०४। ब्रा० १०३४४<mark>)</mark> इस्त्र । मामा — सस्क्रत । विषय — पुरास् । र०कालं २० १००६ । ले० काल स० १४४० कानुस् सुरी ६ । पूर्सं । बेष्टन स॰ १४६ । **प्रास्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानओं कामा ।

विशेष - लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबन् १४४० वर्षे । फालगुण शुल्क नवस्यां श्री मूलसभे नंबस्नाये बलात्कारगरी महारक श्री पद्मनंदिदेवास्तरपट्टे भट्टारक श्री शुनचन्द्रदेवास्तरपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तर्विषय मुनि रत्नकीर्ति स्तद्दास्नाये खण्डेलवालास्वये पाटरागे गोत्रे …… "।

३०६६. वर्द्ध मान पुरासा—  $\times$  । पत्रस० २१४ । मा० १३१ × दश्व । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुरास् । रुक्तां । तेष्ठन सं० २७ । प्राप्ति स्थान—सम्बास पंचायती दि० जैन मन्दिर समबद ।

३०७०. वर्द्ध मानेपुराग् —नवलशाह । पत्र स० १४७ । मा० १२१४७ । इत्र । माण-हिन्दी । विषय —पुराग् । र०काल स० १८२४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं• २८ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन प्रवायती मदिर वयाना ।

विशेष -- पुरासा में १६ अविकार हैं।

## प्रारंभिक पाठ-

ऋषभादिमहाबीर प्रशामानि जनदुनुहं। श्री बर्द्धमानपुराशोऽय कथयानि यह बवीत्। प्रोक्तर, उच्चास्करि स्थावत मृनिगशः सोह। तामि रनित पश्चित तमय बदौ दोह। गुगु-अनन्त सागर विमन विश्वनाथ भगवान। धर्मक्क मस बीर जिन बदौ सिर धरि स्थान।।।।।

# म्र'तिम पाठ-

उज्जयति विकम नृगति सदसर गिनि तह । सत् प्रदार पश्चीस प्रीयक समय विकारी एह ।।३२॥ द्वार्यम में सूर्यज्ञ गिनै द्वारम प्रमाहि ऊन । द्वारमामी मासहि मनों गुक्नपञ्ज तिथि प्न ।।३३॥ द्वारमामी मुक्ति प्रमाहि प्रमार पृद्धि जोग । द्वारमामाम पश्चात में थी दिन लेख मनोग ।।३५॥। रितबसत प्रफुल्ल भ्रति फागुसमय शुभ हीय। बद्धांमान भगवान गुन ग्रथ समापति कीय।

## मविको लबुता --

इच्य नवल क्षेत्रहि नवल काल नवल है और।
भाव नवल भव नवल प्रतिबृद्धि नवल इहि ठौर॥
काय नवल प्रह मन नवल वचन नवल विसराम।
नव प्रकार जत नवल इह नवल साहि करिनाम।।

## म्न'तिम पाठ - दोहा---

पच परम गुरु जुग चरणा भन्नियन बुध गुन धाम । कृपावत दीजी भगति, दास नवल परनाम ॥४२॥

३०७१. प्रतिसं० २ । पत्र स० १३६ । प्रा० १२ $\times$  ६ $^{3}$  इवा । ले० काल स० १०१५ सावन बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स० ६१ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन मदिर फतेहपुर गेलावाटी (शीकर) ।

३०७२. प्रति सं० ३ । पत्र स०७२ । प्रा० १० $rac{1}{6} imes rac{1}{2}$  इक्षा । ले॰काल स० १६१७ । पूर्ण । बेष्टन स०७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर शैखाबाटी ।

विशेष — मगवानदाम ने बबई मे प्रतिलिपि कराई थी। स॰ १६२६ मे श्री रामानद जी की बहू ने फोदर के मिरर इने चडाया था।

३०७३. बद्धं मान पुरास्य —सकलकोत्ति । पत्र सं०१८ । प्रा० १०३ $\times$ ४ इन्छ । माषा — संस्कृत । विषय —पुरास्य । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन स०११४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिरं श्री महानीर ब दी ।

२०७४. प्रतिसं० २ । पत्रस० १२१ । घा० ११४६ इखा । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टुन स० २०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

२०७४. प्रतिसं० २ । पत्रस० १३८ । आ० १०३ × ४३ इन्छ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रतस० २३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३०७६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १३८ । ग्रा० १२ ×७ है इश्वा । ले० काल सं० १७६४ । पूर्णा। वैष्टनस० १ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायनी मन्दिर करौली ।

विशेष--- करौली नगर में किसनलाल श्रीमाल ने लिखा।

३०७७. प्रति सं० ४ । पत्रस० १२६ । घा० ११४८ इ व । लेब्काल स० १६०२ पूर्ण । बेष्टुन सं० ६५ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन मन्दिर भावता (राज०) ।

३०७८. प्रति स० ६ । पत्र स० १०३ । झा० ११×४१ इञ्च । ले० काल सं० १५८८ । पूर्वा बेष्टन सं० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रवनाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार---

सबत् १५८८ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १२ गुरू प० नला सुत प० पेथा भ्रात श्रकिमः .... ... लिखितं ।

दूसरी प्रशस्ति---

... स्थवीराचार्यश्री ६ चन्द्रकीर्ति देवाः ब्रह्म श्रीवंत तत् शिष्य ब्रह्म श्री नाकरस्येद पुस्तक पठनार्यं।

३०७६. प्रति सं०४ । पत्र स०२०६ । मा०१२४६ १ इन्छ । भाषा — हिन्दी। विषय — पुराए। र०काल स०१ ८२४ । ले० काल स०१६०८ । पूर्णावेष्ठन स०२३० । प्राप्ति स्थान — वि•र्जन मन्तिर दीवानजीकामा।

#### विशेष-

कामा के मन्दिर में दीवान चुन्नीलाल ने मेंट किया।

३०८०. प्रति सं० ४ । पत्रस० १८८ । घा० ६१ ४७१ इञ्च । ले०काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेक्नसं० ७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

**२०८१. प्रति सं०६।** पत्रस० १२०। ले०काल स०१८८६। पूर्णः। बेष्टनस०७६२। प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती संदिर भरतपुर।

३०६२. **बढ़ मान पुरास्। भाषा— नवलराम ।** पत्रस० २४३। आ०११ ४७ इच। भाषा— हिस्दी पद्यः। विषय—पुरास्। र०काल सं०१६६१ अगहन गुडी। ले० काल सं०१६०३। पूर्सः। वेष्टन सं०४६। **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** पंचायनी मन्दिर कामा।

विशेष-लेखक प्रशस्ति विस्तृत है वैश्य कुल की दर्थ गोत्रों का वर्गुन किया गया है।

बोहरा--

सौरहसै इक्यारावें भगहरा सुम तिथि वार । नृप जुक्तार बुदेल कुल जिनके राजमक्तार । यह सक्षेप बलाराकरि कही पितरठा धर्म, परजाग जुन वाडी विमव निगा उत्पति बहुधमें ॥

## दोहरा---

क्षत्रसालवती प्रवल नाती श्रीहरि देस । सभासिह सुत हिइपित करिह राज इहदेस ॥ इति भीति व्यापै नहीं परजा ग्रांति शागुद । भाषा पढिहि पढाविह पट पूर श्रावक वृद ।

## पद्धही छंद-

ताहि समय करि मन में हुनास, कीजे कथा श्री जिल्ल गुलाहि दास। बक्ताप्रभाव बढ़ी उर धान। तब प्रष्टु बढ़ें मान गुलाबान। करो अस्तवल्ल भाषा चीर। नवससाह तज मदमल्ल भीर। सक्तकीत उर्वेश प्रवाल। चितापुत्र मिनि रच्यों प्राल।

#### धन्तिम दोहा---

पंच परम जग चररा निम, भव जरा बुद्ध जुत घाम ।
कपावत दीजे भगत दास नवल परसाम ।।

ग्रंथ कामापर के पचायती मन्दिर मे चढाया गया।

३०८३, विमलनाथपुरास्य — त्र० कृष्यस्यासः । पत्र स० २६६ । प्रा०१२४७६ इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय — पुरास्य । र०काल स०१६७४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं०१७३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फ्नेंडपर गेसावाटी (सीकर)

३०८४. प्रतिसं०२। पत्र स०१४१। ग्रा०१० $\frac{2}{3} \times \frac{2}{3} \times \frac{2}{3}$ 

३०८५. विमलनाथ पराग् भाषा—पांडे लालचन्द । पत्र स० १००। प्रा० १४ ४ ६ हे हवा। भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—प्राण । र०काल स० १६३४ वैशास बुदी ६। पूर्ण । वेदन स० ३१। प्राप्ति स्थान—प्रयवान प्रवायती दि॰ जैन मन्दिर प्रलवर ।

**२०८६. प्रतिसं०** २ । पत्र म० ११८ । ग्रा० ६¦ ४६ इञ्च । ले० काल स० १८९० । पूर्ण । वेष्टन स०७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर बयाना ।

२०८७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १३७ । ग्रा० १२ 🗴 ५१ इख । ले० काल स० १६३३ आवाढ बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स० १७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मदिर करीली ।

३०८८. प्रतिसं०४। पत्रत०११८। ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं०१७१। प्राप्ति स्थान—दिञ्जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष — ब्रह्म कृष्णदास विर्वित सस्कृत पुरासा के प्राधार पर पाठे लालचन्द ने करौली में प्रंथ रचना की थी।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

## ग्रडिल्ल--

गढ गोपाचल परम पुनीत प्रमानिये, तहा विश्वभूषण भट्टारक जानिए । तिनके शिष्य प्रसिद्ध ब्रह्म सागर सही, श्रप्रवार वर वश विषे उत्पत्ति लही ।

#### काज्य छन्द--

जात्रा करि गिरनार सिखर की श्रति सुख दायक।
फुनि प्राये हिंडीन जहा सब श्रावक लायक।
जिन मत को परभाव देखि निज मन थिर कीनो।
महावीर जिन चरण कमल को शरण लीनी।

## बौहा---

ब्रह्म उदिध के शिष्य फुनि पांडेलाल श्रयान । खुंद कोस पिगल तनौ जामे नाही ज्ञान । प्रमु चरित्र किम मिस विषय कीनों जिन गुरागान। विमलनाथ जिनराज को पूररा भगे पुरारा।। पूर्व पुरान विलोकि कै पाडेलाल ग्रयान। भाषा वस्थ प्रबंध में रच्यो करौरी धान।।

## चौपाई---

सवत् श्रष्टादश सत जान ताउपर तैनीस प्रमान । प्रस्थिन सुदी दशमी सोमवार ग्रंथ समापति कौनौ सार ॥

३०८६. विष्णु पुरास्पः—  $\times$  । पत्रस०७-४०। प्रा०११ $\times$  ५ $^{1}$  इन्तः। भाषा—हिन्दी। विषय—पुरासः। र०कासः  $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्णः। वेष्ट्रसं०६०। प्राप्तिस्थान—दि० जैन पंचायती मदिर वयाता।

विशेष --पत्र सं० ७-१ तक प्रठारहपुराण तथा १-४० तक विष्णुपुराण जिसमे प्रादिनाय का वर्णन भी दिया हुआ है।

२०६०. श्रो रिणक प्रास्— विजयकोत्ति । पत्र सं० =१। आया-दिन्दी । विषय-पुरासः । र०काल सं० १६२७ कायुन बुदी ४ । ले०काल स० १६०३ सासोज सुदी ४ । पूर्यः । वेष्टन स० ४४६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर अरतपुर ।

३०११. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४५ । घा० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इल माया—हिन्दी पद्य । विषय— पुरास्स । र०काल स० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल स० १८८७ । वेष्ट्रन म० ६१४ । पूर्म । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष — भट्टारक परिचय दियागयाहै। भट्टारक धर्मचन्द्र डोड्या वैराठ के थे नथा मलयश्रेड के सिहासन एव कारजा पट्ट के थे।

**३०६२. शान्ति पुरास्- धशमा** । पत्र स० ८४ । प्रा० ११ × ४, इत्था आघा-सस्त्रत । विषय-पुरास्। र०कास × । ले०काल स० १८४१ प्रापाठ बुदी ४ । पूर्स । बेरून स० ८ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाथ बुदी ।

विशेष - उग्गियारा नगर मे ब्रह्म नेतसीदास ने अपने शिष्य के पठानार्थ लिला था।

**३०६३. प्रतिसं० २ । पत्रसः १**२४ । आ० ११<sup>3</sup>, ४६ डञ्च । ले०काल म० १४६४ कानुसः सुदी १२ । दुर्गा । वेष्टन स० ४१७ । **प्राप्ति स्थान**–भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३०६४. शान्ति पुरास्य-पं. श्राशाघर कवि । पत्र स० १०७ । ग्रा० १२  $\times$  ५ इञ्च । माषा —— सस्कृत । विषय—पुरास्य । र०काशं  $\times$  । ले० काल १५६१ ग्राषाद्र मुद्यं १४ । पूर्यं । बेष्ट्रत स०२०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--- प्रशस्ति प्रच्छी है।

३०६४. **शांतिनाथ पुरारा—ठाकुर** । पत्र स० ७४ । प्रा० ११×४, ैरञ्च । साथा-हिन्दी हिन्दी । विषय-पुरारा । र०काल स० १६४२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६०४ । प्राप्ति स्थान—स० दि० जैन मंदिर प्रजमेर । ३०६६, शान्तिनाथ पुरास्य—सकलकोत्ति । पत्रतः २०३। म्रा० १०  $\times$ ६ इच । माया—विषय—पुरास्। र०काक्ष  $\times$ । ले०काल स० १८६३ मायाङ सुदी ३। पूर्स् । बेष्ट्रनस० १६४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

**२०९७. प्रति सं० २ ।** पत्रस० २२४ । लेक्काल सं० १७८२ वैकाले सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष-इसे पं० नरसिंह ने लिखा था।

**१०६८. प्रतिसं० ३**। पत्र स० २२७। आ० १२३ ४ इचा । तेबकाल सं० १७६८ मगसिर सुदी १। पूर्ण । बेपून स० २८/१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सीगाएंगे मन्दिर करीली।

विशेष — प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

**२०६६. गान्तिनाथ प्राग्-सेवाराम पाटनी ।** पत्र सं०१४७ । प्रा०१२३ ८८ इश्व । माषा—हिन्दी । विषय—पुराग् । र०काश स०१८३४ सावन बुरी ६ । ले०काल स०१९६५ चैत्र बुरी ४ । पूर्णु । बेष्टन स०१३-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रप्रवाल पंचायनी मन्दिर ग्रलवर ।

**३१००. प्रतिस ० २** । पत्र म० १४६ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ४२३ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

**३१०१. प्रतिस**ं **२ है** । पत्र स०२२१ । प्रा० १२imesद इखा ले॰ कात्र imes । पूर्ण । बेहन स०१३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महाबीर बृदी ।

**३१०२. प्रति सं० ४**। पत्र त० १६४। घा० १३ × ८ इ**था। ले०काल स० १८६३ माघ सुदी** १३। पुर्रो। वेष्टन स० १०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष — नेवाराम ने प० टोडरमल्ल शी के पथ का धनकरण किया तथा उनकी मृत्यु के पश्चात् जयपुर छोड के बले जाना लिया है। कवि मालव देण के थे तथा मिल्ल नाथ चैल्यालय मे प्रव रचना की थी। प्रय रचना देवगढ़ मे हुई थी। कवि ने हुबड़ वणीय ग्रांबावत की प्रेरणा से इस ग्रंथ की रचना करना लिखी है।

ग्राल्मचन्द बनाडा सिवन्दरा के रहने वाने थं। देवयोग से वे वयाना में श्राये धीर यहा ही वस गये। उनके दो पत्र थे सेमचन्द धीर विजयराम। सेमचन्द के नवमल धीर चैनराम हुए। नयमल ने यह ग्रंथ लिलाकर एम मन्दिर में चढाया।

३१०३. शान्तिनाथ पुरास भाषा— $\times$  । पत्रस० २४६ । बा॰ १३ $\times$ ६ ै इश्व । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुरास । २०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्स । वेष्टन सं॰ १४६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर स्री महावीर वंदी ।

३१०४. सुम्रतिनाथ पुराग् — बीक्षित देवदल । पत्रस० २-४२। ग्रा॰ १२४६ इस । भाषा — हिन्दी पद्या विषय — पुराग् । र०कास ४ । ले०काल सं०१-४७ चैत सुदी १०। पूर्ग् । बेग्रन सं०१२७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्रादिनाथ बृदी ।

विशेष ग्रन्तिम - प्रगवान मुमति पदार्गवदिन व्यादमान सानंद के। कवि देव सुक्षित पुराय यह, विरच्धे सनित पद छद के। जो पक्दे प्रापु पवाई घोरीन मुनदि बाच मुनावही। कत्यारा मनवेषित सुमति परमाद सो नन पांक ही। इति श्री मगवत् गुएगमदाचार्यानुक्रमेए। श्री मट्टारक विश्वभूषरा पट्टाभररा श्री बहा हर्षसागरात्मज श्री मट्टारक जिनेन्द्रभूपरागेरिकात् दीक्षित देश्यस कवि रचितेन श्री उत्तरपुरासान्तवत सुमति पुरासे श्री मिवास कल्यास वर्सनी नाम पुत्रमो श्रीयकार । मगवानदास ने ग्रटेर में प्रतिविधि की थी ।

प्रारम्भ में त्रिभगी सार का खंश है।

३१०५. हरिवस पुराग् — जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ४२६ । मा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$  ५ इच । भाषा — संस्कृत । विषय पुराग् । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण् । वेष्ट्रन स० १२०८ । प्राप्ति स्थान — म० वि॰ जैन मन्दिर अर्थार ।

३१०६. प्रति तं० २ । पत्र स०४०६ । ग्रा० १२  $\times$  ५ इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१४ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मदिर ।

विशेष-नेसक प्रशस्ति वाला पत्र नही है।

३१०७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १४० । झा० १० $\frac{2}{3}$  $\times$ ५ $\frac{3}{5}$  इन्छ । ने० काल $\times$  । अपूर्ण । वे० स० १२७६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

३१०**८. प्रति स०४** । पत्रस० २६४ । ग्रा० १२ × ५<sup>६</sup> इश्व । ले० काल × । पूर्ण । **बेस्टन** स० ५०४ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर नागदी दृंदी ।

**३१०६. प्रतिसं० ५** । पत्रस० ३१४ । ग्रा० १२×५ इच । से०काल १७५६ धारोज सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन सर्०'६६/११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पावनाय मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष-रावराजा ब्र्धासह के बूदी नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**३११०. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ३१६ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनस० २२० । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रायती, मन्दिर भरतपुर ।

विशेष ---तीन चार प्रतियो का सग्रह है।

**३१११. प्रतिसं** ७ । पत्रस० ३६२ । घा० १२ × ४ इल्डा ले० काल × । पूर्ण । बेहनसं ० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**३११२. प्रतिसं० ८ १** पत्रस० १६ । झा० १२ 🗙 ६ इन्छ । ले० काल स० १७११ । घपूर्ण । बेक्नसं० १११/७६ । सभवनायमन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति – स० १७११ वर्षे ज्येष्ठमासे मुक्तपक्षे श्री सागपत्तने श्री श्रादिनाय चैत्याक्षये निकित । श्री सरस्त्रती गच्छे बनात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वयं २० श्री वादिश्यण, तत्तर्द्व ३० श्री रामक्रीति तत्त्वहूँ प्रदृत्क श्री पदानिद त० भ. श्री देवेन्द्रकीतिस्तदास्तायं धाचार्यं श्री महीबन्द्रस्तत्विष्य इ० बीरा पठनार्य।

३११२. प्रतिस्तृ रापत्र स०१४ । प्रा०१२३४४४ इच । ले० काल × । प्रपूर्ण । वेष्टत स०३१७ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन प्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--बीच के अनेक पत्र नहीं हैं। तथा ६४ से ग्रागे पत्र भी नहीं है।

**१११४. प्रतिसं० १० ।** पत्रस० २०२ । ग्रा० १३ $\times$ ४ $\xi$  इच । ते० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० १६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष-- प्रति जीएां है।

३**११४. हरिवशपुराग् माषा—लङ्गलेन ।** पत्रसं० १७० । प्रा० १२×४ इश्व । आषा— हिस्ती पद्य । विषय – पुराग्ग । र०काल × । ले० काल सं० १८२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि**० जैन म**दिर बोरसती कोटा ।

विशेष--३१३३ पद्य हैं। गागरडु मे प्रतिलिपि हुई थी।

३११६. हरिबश पुरास् – मट्टारक विद्यासूयस्य के शिष्य भीसूबस्य सूरि । पत्रस॰ ३१४। प्रा॰ ११ $\times$ ५ इन्द्रा । भाषा —सस्टत । विषय —पुरास् । र०काल  $\times$  । ने० काल स० १७०१ भादवा बुदी १ पूर्स । बेहनसं० २४-१४। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू नरपुर ।

विशेष — राजनगर में निला गया था। ३११७. हरिवेशपराएा — यशाःकीति । पत्रतं∘ १८८ । ग्रा० ११४६ इला । भाषा— ग्रापक्षंत्र। निषय — पुराणः। ले∘कात ४। ले∘कात म० १६६१। पूर्णः। नेष्टनसं∘ २४८/२१। प्राप्ति स्थान — दि० जैन समजनात्र मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति—सवत् १६६१ चैत्र मुदी २ रविवासरे पातिसाह श्री अकब्बर जलालदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री ब्रागरा नगरे श्रीमन काष्टासचे माथरगच्छे पुष्करगरो लोहावार्यान्वये भट्टारक श्री श्रीमलयकीनिसरी-श्वरान् तत्पट्टे मजसोराशिमुश्रीकृतदृग्वलयाना प्रतिपक्षसिरिस्फोटान् प्रवीमव्याजविकासिना समालिना गुराभद्र देवा । तत्पट्टे वादीभकु भस्यल विदारगीकः ... . . . . . . . भ० श्री भानकीतिदेवा तत्पट्टे ... ......... म० कमारगेनदेवा तदाम्नाये प्रश्नोतकान्वये गोयलगोत्रे इदानी श्रागरा वास्तव्यं मदेमप्रदेसविख्यातमात्यान दानप्रतिश्रेयासावनारान दीपकराडबल तस्य भार्या भील तोयनर गिनि विनम्नवागेश्वरी साध्वी अर्जु नदे तयो पुत्र पच । प्रथम पुत्र देवीदास तम्यभार्या नागरदे तत्पुत्र कू वर तस्य भार्या देवल तथो. पुत्र द्वय प्रथम पुत्र चन्द्रसैनि हितीय पुत्र कपूर । राइवल हितीय पुत्र रामदास तस्यभाया देवदत्ता । राइवलू तृतीय पुत्र लक्ष्मीदान तस्य मार्या धनामिका । राध्वल चतुर्थ पुत्र पेमकरसा तस्य भार्या देवल । राध्वल पचम पुत्र दानदानेश्वराम् जैनसभाशः गार हारानु जिनपजापूर दरानु ..... . . . साह ग्रासकरण तस्य भार्या .... .. साध्वी मोतिगदे तयो पूत्र .... ... साह श्री स्वामीदास जहरी तस्य भार्या .... साध्वी वेनमदे तयो पुत्र पच । प्रथम पुत्र भवानी, द्वितीय पुत्र मरारी तस्य भार्या नार गदे । तयो तृतीय पुत्र लाहुरी मार्या नथउदास तस्य भार्या लोहगमदे तयो पुत्र त्रय गोकलदास तस्य भागां करतूरी पुत्र मुरारि । स्वामिदास तृतीयपुत्र पचमीप्रत उद्धरराघीरान् ..... साहु प्रथीमल तस्यभार्या सुन्दरदे तस्य पुत्र मायीदास स्वामीदास चतुर्थ पुत्र साहु मथुरादास स्वामीदास पचम पुत्र जिन शासन उद्धरणधीरानु ... ... साह .. ... ...। इससे श्रागे प्रशस्ति पत्र नहीं है ।

३११८. हरिवश पुरासा— सालिवाहन । पत्र स०१६७ । झा० १२ँ ४ ४ इच । भाषा— हिन्दी । विषय—पुरासा । र०काल स०१६६४ । ते०काल— स०१७८६ फांगुस सुरी १३ । पूर्सा । वेक्नसं०२८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पंचायती मंदिर वयाना ।

३११८. प्रति सं० २। पत्रसं० ४२। से॰काल १७६४। पूर्ण । वेस्टन सं० १७४। प्रास्तिः स्वास-वि• जैन पनायती प्रदिर सरतपुर। ३१२०. प्रति सं०३ । पत्रस०१३०। प्रा०१२३ ४ ६३ इञ्च । ले०काल सं०१८०३ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेप्टन सं०७०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर फतेहपुर क्षेक्षावाटी (सीकर)।

विशेष-शाहजहांनाबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

ध्रप्रवाल ज्ञातीय वजल गोत्रे फतेपूर वास्तव्ये वागड देगे साह लालचंद तत्पुत्र साह सदानद तत्पुत्र साह राजाराम तत्पुत्र हरिनारायरण पाडे स्वामी श्रो देवेट्टकीर्त्ति जी फतेपूर मध्ये वास्तव्य तेन दिल्ली मध्ये पातमाह मोहन्मद साहि राज्ये सपूर्ण कारांपित ।

३१२१. हरियंत पुरासा—दौलतराम कासलीवाल । पत्रस० ३०६ । घा० १४ ४७ ६ञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुरासा । र०कारा स० १८२६ । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वेण्टन स० १४/ ११। प्राप्ति स्थान —दि० जैनमन्दिर पंचाया हिंदी (टोक) ।

विशेष--जयकृष्ण व्यास फागी वाले ने प्रतिलिपि की थी।

**३१२२. प्रतिसं०२ ।** पत्रस० ४६२ । घा० १३ × ४ है इन्छ । भाषा-हिन्दी (गर्य) । र०काल स०१ प्र-२६ चेत सुदी १५ । ले० काल स०१ प्रथप प्रासीज सुदी १३ । पूर्ण । बेट्टन स०७१७ । प्राप्ति मधान-रि० जैन मदिर ग्रजभर भण्यार ।

३**१२३. प्रतिसं० ३ ।** पत्रसः० ४६ मः। आ० १२} ४७ इश्व । आषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुरारा । र०कास स० १८२६ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

३१२४. प्रति सं० ४ । पत्रस० २०२ से ६१३ । ब्रा० ११४७ हु दश्व । मापा-हिन्दी (गर्यः) । विषय—पुरत्यः । २०कास सं० १८२६ । ते० काल स ० १८६३ । प्रपुर्णः । वेष्टनस० १०६ । प्रास्ति स्थान—र्व० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—चौधरी डोटीराम पुत्र गोविन्दराम तथा सालगराम पुत्र मन्नालान छावडा ने राजगहल मे टोडानिवामी बाह्मएा सुखलाल से प्रतिलिपि कराकर च द्रप्रमु स्वाभी के मदिर में विगाजमान किया।

३१२४. प्रतिसं० ४.। पत्र स० ४३० । म्रा० १३४६ १ इण्ड । भाषा-हिन्दी गण्य। विषय— पुराष्ण । र०काल स०१८२६ । लेखन काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स०३७ । प्राप्ति स्थान—दि० वीन सन्दिर श्री महावीर बुंदी ।

**३१२६. प्रति सं०६।** पत्रसर्० ४४४ । ग्रा० १२४६ है इखा माषा — हिन्दी गर्णा। विषय — पुराणा। र०काल सर्० १८२६। ने० काल सर्० १८६३। पूर्णा। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्थामी, बुदी।

. विशेष—- ग्रथकामूल्य १५) रु० ऐसालिलाहै।

३१२७. प्रतिःं ७ । पत्रसः ४४४ । मा० १२३ × ७इञ्च । भाषा—हिन्दी गदा । विषय—पुगाग । र०काल सं० १८२६ चैत सुदी १४ । ते०काल स० १६६१ माघ बुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी ।

३१२ म. प्रति सं व मा पत्रसः ३०६। प्राः ११३/४६ इता । माषा—हिरो गद्य । विषय— पुराषा । रुकाल सः १८२१/। बेट का ४८६४ वंशास बुदी २ । पूर्ण । बेष्टनसः २० । प्राप्ति स्थान— दिः जैन मन्दिर तेरहपथी प्रास्पुरा (टोक) । ३१२६. प्रति सं०६ । पत्र सं०६१७ । घा०१२×५ ६७ । भाषा—हिन्दी (गळ) । विषय— पुराणु । र०काल सं०१०२६ । ले०काल सं०१००६ कार्तिक सुदी ४ । पूर्णु । वेष्ट्रन सं००/००० । प्राप्ति स्थान—दि० पार्थनाथ जैन मन्दिर इन्दराठ (कोटा) ।

३१३०. प्रति स० १०। पत्र स० २१३। आ० १२५ ४६ इथा। आया-हिन्दी (गया)। विषय-पूराए।। र०काल स० १८२६। ले० काल ×ा अपूर्ण। वेष्टन स० दद। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन जब्माकी अस्टिए सम्बद्ध।

३१३१. प्रति सं०११ । पत्र सं०४२७ । घा०१२ ४ ०६वा । माषा-हिन्दी (गवा)। र०काल स०१८२६ । ले०काल स०१८५३ । पूर्णं। वेष्ट्रत स०१७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन स० प्रवासनी प्रतिर प्रजवर।

विशेष-- कमावती नगर मे प्रतिलिपि की गई थी।

३१३२. प्रति सं० १२ । पत्र स० ३२६ । प्रा० १६ 🗴 ७ इवा । भाषा-हिन्दी ग० । विषय-पुराएं। ते० काल स० १८८४ पौष वदी १३ । र०काल स० १८२६ चंत सुदी १४ । पूर्एं । वेष्टन स० ३० । प्राप्ति स्थान—दि जंन प्रप्रवाल प्रचायती मन्दिर प्रजनर ।

विशेष-प्रति दो वेष्टनों में है।

३१३३. प्रति सं० १३। पत्रसं० ४०६ । भाषा-हिन्दी गयः। विषय-पुराए। र० काल स० १८०२ मर्गासर सुदी ११। पूर्ण । वेष्टनसं० १४३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपर।

विशेष -- नवनिधिराय कामलीवाल ने प्रतिकिपि करवाई थी।

३१३४. प्रति सं०१४ । पत्रस०३५७ । भाषा-हिन्दी गवा । विषय-पुराए। र०काल स०१८६६ ते सुधी १४ । ले॰ काल स०१८७४ । पूर्ण । वेष्टन स०१६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपर ।

३१३**५. प्रति स० १५** । पत्रस० ४७५ । ले०काल १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रायनी मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष — कुभावती मे प्रतिलिपि हुई थी । स० १८६१ मे मन्दिर मे चढाया गया ।

३१२६ प्रतिसं० १६ । पत्र स० ४६३ । घ्रा० १२ॄे×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गण्य । विषय—पुराएा । र०काल स० १६२६ चैत सुदी १४ । ले०काल—स० १६५५ कालिकसुदी १० । पुर्णा । वेष्टनसं० ६६। प्राप्ति स्थान—वि० जैन पचायती मदिर वयाना ।

३१३७. प्रति सं० १७ । पत्र स० ४६० । ग्रा० १३ ४७ इ.च.। श्रावा—ले∘काल ४ ।ग्रपूर्ण एव ओर्सा। वेष्ट्रतसं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वैर भरतप्र ।

२१३६ प्रति स०१६ । पत्र सं० २२४ । पा०१३१४ ८१ इचा । भाषा —हिन्दी (पद्य) । विषय—पुरास् । र०काल × । से०काल × । बपूर्स । बेहन सं०३४६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर रीवान जी कामा ।

३१३६. प्रतिसं०१६। पत्र स०४८०। भाषा—हिन्दी गणः। विषय पुरासः। र०काल सं० १८२६। ले० काल स०१८३४। पूर्णः। वेष्ट्रन सं०६३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पदायती मन्दिर, हण्डावालो का श्रीमः।

३१४०. प्रति सं० २०। पत्रसं० २ से २४६। ले० काल× । प्रपूर्ण । नेष्टुनस० ८०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मदिर हण्डावालो का डींग ।

विशेष—नगर करौली मे साहबराम ने गुमानीराम द्वारा लिखाया था। बीच के कुछ पत्र जीएां है।

३१४२. प्रतिसं०२२। पत्र स०१-२०४। भाषा-हिन्दी (गव)। विषय—पुराणा। र०काल सं०१८२६। ले०काल ×। प्रपूर्णा। वेष्ट्रन स०१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तंरहपथी मन्दिर कनवा।

३१४३. प्रति सं० २३ । पत्र स० ४४० । घा० १२० ६० इञ्च । भाषा-हिन्दी ग०। विषय-पुरासा । २०काल स० १०२६ चैत सुदी १४ । ले०काल स० १०६४ माघ बुदी १ । पूर्स । वेद्यन स० ४७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फलेहपुर शेलाबाटी (सीकर) ।

विशेष - जीवरगराम जी ने बाह्मए। विजाराम श्रासाराम से प्रतिसिपि कराई थी।

विशेष -- चिमनलाल तेरहपथी ने प्रतिलिपि की थी।

३१४५. प्रतिसं० २५ । पत्रस० २२७ । आ० १२ ४ ० इन्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय — पूराए। १०कान सं० १८२६ । ले०काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्यान — दि• जैन मदिर तेरहरभी दौसा।

विशेष-दोसा मे प्रतिनिपि हुई थी।

३१४६. प्रति सं० २६ । पत्रस० ३०० । आ० ११  $\times$  ७ $^1$  इञ्च । भाषा-हिन्सी (गव्य) । विषय-पुरासा । २०काल स० १८२६ चैत्र सुदी १४ । ने०काल स०  $\times$  । प्रमूर्ण । वेष्ट्रन स० ६२ । प्रास्ति स्थान-पिठ जैन सब्धेतवाल मन्दिर जदवपुर ।

् ३१४७. प्रति सं० २७ । पत्र स० ४४१ । प्रा॰ १२१४६ । इत्र । भाषा-हिन्दी गय । विषय-पूराख । र०काल स० १८२६ । ने०काल स० १८४६ । पूर्ण । बहुनस० २६-१४ । प्रास्ति स्थान—दि० बैद मन्दिर, कोटबियों का हू परपुर ।

३१४८. हरिव श पुरासा—क० जिनदास । पत्रस०२४४ । सा०११ ४६ इञ्च । स्राचा—संस्कृत । विषय —पुरासा । र०कान ४ । ने०कान स०१८४---(?) फानुसा सुदी ६ । पूर्स । केक्स्नबं०१७४ । प्राप्ति स्थान—सास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर सस्कर, जयपुर ।

विशेष--- बूंदी नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

३१४६. प्रति सं० २ । पत्रस० २७७ । धा०११ $^{3}$  $\times$ ५ इ.स. । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं०१२० । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मदिर पश्चायती दूनी (टॉक) ।

विशेष--प्रति उत्तम है।

३१५०. प्रति सं०३ । पत्रसं०२०⊏ । झा० ⊏ुै ४६ इला । ले० काल ४ । सपूर्णं। वेक्ससं० ३१ । प्राप्ति स्थान— म०दि० जैन मन्दिर स्रवसेर ।

३१४१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १०६ । मा० १०४६ ) इन्हा । माषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रक्ताल ४ । लेक्काल स० १८४३ । पूर्ण । बेहत स० २६२ । प्रास्ति स्थान — म० दि० जैन मंदिर प्रकोर ।

३१४२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ३६४ । आ० १३ $\times$ ६ इचा । माषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल  $\times$  । ले० काल म० १४६३ । पूर्णे । वेष्टनसं० ३४३ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर भजनेर ।

३१५३ प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ३४३ । घा० १२ x ५१ इन्छ । माया-हिन्दी । र० काल x । के॰काल स० १५८६ । पूर्ण । नेषन स० १३०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३१४४. प्रतिसं०७ । पत्रसं०२०७ । म्रा०१३ $\times$ ४ $^{3}$  इन्त्र । माषा-संस्कृत । विषय-पुरासा । र०काल  $\times$  । लेकाल स० १८२४ । पूर्णं। वेष्टन स० ५० । प्राप्ति स्त्रान —दि० जैन मंदिर श्री महावीर बुरी ।

३१४५. प्रतिसं ० सः । पत्रस० ३०६ । प्रा० १११, ४५ इन्द्राः माया-संस्कृत । विषय-पुराखाः। र० कातः ४ । ने० काल म० १६५७ । पूर्णः । वेष्ट्रन सं० ११३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर धादिनाथ वृती ।

विशेष — मनत् १६४७ वर्षे मादन मृदि १२ नुषवामरे श्री मूलसचे श्रीयवावयानौ शुभस्याने राजाधिराज श्रीमट प्रकवरणाहिराज्ये वहप्रम वैत्यालये सहैतवाल ज्ञातीय समस्त पंचाहतु वयानै को पुस्तक हरियण णाप्य पहिल द्वरा प्रदत्त । पृत्तक लिखित ब्राह्मनु परामर गोत्रे पाढे प्रहृतादु तत्तुत्र मित्रसीनि लेखक पाठक दरानु । इर परनक दरमकृतवा पडित सभाचन्द तदात्मक रचुनाथ सवत् १७६७ वर्षे प्रश्वनि मासे कृप्ता पक्षे निभी १ नुमवार ।

३१४६. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० २८४ । प्रा० ११ $\times$ ५ इच । माषा-संस्कृत । विषय-पुरास्त । र०काल  $\times$  । लूंग । वेष्टन स० १८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३१४७. प्रतिसं० १० । पत्रसं० २२१ । प्रा० १२  $\times$ ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय — पुरारा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैनमन्दिर दवलाना (वृंदी) ।

विशेष—म्प्रित्तम २ पत्र फट गये है। प्रतिजीएं है। सावडा गीत्र वाले श्रावक सुलतान ने प्रतिलिपि की थी।

- ं **११४** म**. प्रतिसं० ११।** पत्रसं० १२२। घा० १०  $\times$  ४३ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय— पुराए। १० काल  $\times$ । स्रोक्त  $\times$ । स्राप्तां। वेष्टनसं० २०३४। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर देवलाना (वृदी)।
- : **३१४६. प्रतिसं० १२।** पत्रस० १२३-२२५ । घा० १०४५ इव । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराए। १०काल ४ । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वे० स० ३३७ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर दवलाना व दी ।

विशेष - अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

इति श्री हरियम सपूर्ण । लिखिलं मुनि घर्मियमल घर्मोपरेगाय स्वयं वाचनार्यं सीसवाली नगर मध्ये श्री महावीर चैंत्ये ठाकुर श्री मानॉसहजी तस्यामात्य सा० श्री सुखरामजी गोत छावडा चिरजीयात् । सवत् १७६६ वर्षे मिती चैत्र बृदी ७ रिविवासरे ।

- **३१६०. प्रतिसं० १३**। पत्रस० २७०। प्रा० १२ $\times$ ४ इन्त्र। भाषा-सम्कृत । विषय-पुराए। र०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स० २१७–६२ प्रास्ति स्थान—दि० जैन सन्दर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)।
- ३१६१. प्रतिसं० १४। पत्रसं० २०६। मा० १३×६ इला। भाषा—सस्त्रतः। विषय— पुरासः। र०काल ×। ले०काल स०१=४४। पूर्सः। वेष्टन स०१०२-७।प्राप्ति स्थान–दि० जन मन्दिर नेमिनाच टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष-तक्षकपुर मे प० शिवजीराम टोडा के पठनार्थं प्रतिलिपि हुई थी।

- **३१६२. प्रतिसं० १५।** पत्रस० २२२ । आ० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ५ इन्छ । भाषा-सरकृत । विषय-पुराए। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूरएं। वेष्टन स० १६/१२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाश्वेनाथ मन्दिर इन्दरगढ।
- ३९६३. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २२४ । प्रा० १२ $\times$ ६ इ.च । भाषा-सम्ब्रन । विषय -पुराण । २० काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६७/१० । प्राप्ति स्थान दि० जैनपाश्यंनाय मन्दिर इन्दराह (कोटा) ।
- ३१६४. प्रतिसं० १७ । पत्रस० २४४ । या० ११४४ इंच । भाषा—सन्सृत । विषय— पुराए। १०कास ४ । ले•काल स० १६८६ वैशाल बुदी १४ । पूर्णा । वेष्ट्रन स० ३३६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।
  - विशेष्—नैनवा वासी सगही श्री हरिराज खडेलवाल ने गढनलपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी।
- ३१६५. प्रतिसं० १६ । पत्र स०२७१। प्रा०१०}४४२ इ.च । भाषा सस्कृत । विषय-पुरासा । र०काल ४ । ले० काल सं०१७७६ फागुन गुरी १०।पूर्स । वे० म०१६१ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर दीवानकी कामा ।
  - विशेष बादशाह फर्ल कसाह के राज्य मे परश्राम ने प्रतिलिपि की थी।
- र ३१६६. प्रतिसंज १६ । पत्र तं० १ते१२७ । माषा-मस्कृत । विषय-पुराणः । र०काल 🗶 । लेखन काल 🗶 । प्रपूर्णः । वे०सं० १० प्रास्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर डीगः ।

३१६७. प्रति सं०२०। पत्र सं०३१०। प्रा०१०  $\times Y_{\tau}^{+}$  इत्था नाला-सस्कृत । विषय-पुराए। र०काल  $\times$ । ते० काल स०१ न१६। पूर्ण। वे०स०१६ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन प्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२**१६६. प्रतिसं० २१।** पत्रस० २२३। प्रा० ११×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय— पुराए। १० कान ×। ले•कास ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३७। यथायथ ६९६४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन प्रप्रवास मन्दिर उदयपुर।

**३१६६. प्रति सं० २२।** पत्रसं० ३१७ । आ० १० $\frac{3}{6}$  $\times$ ४  $\frac{3}{6}$ ऽ च । आषा-सस्कृत । विषय-पुराग्। १० काल  $\times$ । लेकाल सं० १०१८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०५–५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटिडियों का इंगरपुर।

**३१७०. प्रतिसं० २३ ।** पत्र स० २१७ । प्रा०११ $\frac{1}{4}$   $\times$  ४६२४ । मापा—हिन्दी पद्य । विषय—पुरारा । र० काल  $\times$  । ले० काल १६६२ । पूर्ण । वे० स० १५६ । प्रा**रित स्थान**—दि० जैन लडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

**३१७१. प्रति सं० २४**। पत्र स० २६३-२६२। घा० ११४४ इ.स.। माघा-हिन्दी पद्य। विषय-पुरारा। २०काल ४। ने० कान स० १६६५। पूर्ण। वेष्टन स० ३६४/७८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाय मंदिर उदयपुर।

विशेष स० १६६५ वर्षे फागुण मुदी ११ णुकवासरे मालवदेले श्री मुलसाथे सरस्वतीमच्छे कुदकुन्दाचार्यान्वये अट्टान्क श्री मकलकीत्ति तत्स्हुं म० रत्तकीत्ति तत्स्हुं म० गुणाचन्द्र तन्
म०जिनभद्र तन् भ० सकलबन्द्र तत्स्हुं भ० रत्तकीत्ति तत्स्हुं म० श्रानीति तत्स्हुं म० गुणाचन्द्र तन्
म०जिनभद्र तन् भ० सकलबन्द्र तत्स्हुं भ० रत्तक्ष्य तदाम्नाये ब० श्री श्रीमा तद् श्रिमा प्राचार्य अयकीति तत्
श्रान्य प्राच प्राच प्राच कर्मा व्या भाग कर्मा तत् पुत्र सागवाडा प्राप्ते हु बड्यातीय वजीपणा गोशे सा० गोसल
मार्या दम्मी । तत् पुत्र मा० च्या भाग कर्मा तत् पुत्र माणांक भागी यात्र पत्र बात अविनिष्ठ तिस्क्षीतं ।
ग १६६४ वर्षे कामुणा बुदी ६ सोमे मुजालपुरे पाथंनाय चैत्यालये ब० जेसा विषय जयकीति शिष्य प्राच मुनि
चन्द्र केन ब्राद्य भोगीदासाय मुक्त भागे हृत्यिक पुराण स्वहत्नेन निविद्या स्वामानावरणी कर्मक्षायार्थ दत्त ।
गणाय नगरे लिखित । श्री धायार्थ युवनकीति तत् विषय ब० श्री नारायण्यासस्य इद पुरनकः ।

३१७२. प्रति स० २५ । पत्र स० ३६६ । ६०० ११ $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इन्त्र । भाषा-रास्कृत । विषय—पुरास्त् । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १५५६ । प्रपूर्ण । वेष्टुन स० २४७/६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- ६० से २७६ तक के पत्र नहीं है।

प्रश्नास्त — संवत् १४५८ वर्ष पोष मुद्दी २ रबी श्री मुनलाथे बलात्कारमणे कु दकु दावार्यान्वये म० श्री प्रमादित्व तरमट्टे मा श्री प्रमादित्व तरमट्टे मा श्री प्रमादित्व तरमट्टे मा श्री प्रमादित्व तरमट्टे मा श्री प्रमादित्व तरमट्टे भी अपनित्र स्वाद्य तरमट्टे श्री विजयकीति नुरूपयेणात् वास्यदेशे नुमामास्याने राजल श्री उदयसिङ्की राज्ये श्री मादितायत्वे सालसे हु बढ आतीय विराणित से सेसी माम मार्ग साल कुत सम्यन्दवादिद्वारणजनत्व प्रमापन दोनी मा स्वाद्य साम ठेवित वृद्ध भाग सेसी निमास मार्ग टेक्स साल सेसी मा स्वाद वहू भाग सेसीयोप मा प्रमाप दोन देशा मार्गा देवल दे तेया प्रमापन एते हिर्मिक पुराण्डे लिखाय्य दर्स । बहु रामा पठनार्थ ।

३१७३. प्रति सं० २६। पत्र स०४०३। प्रा०१०  $\times$  ४ इथा। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराए।। र०काल  $\times$ 1 छे० काल स०१६०१। पूर्ए। बेहन स०१४४/१०। प्राप्तिस्थान—दि० जैन सम्बनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सनत् १६०१ वर्षे कार्तिक मांगे गुननपक्षे ११ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री श्री कुत्त्वकृत्तावार्यान्वये मुद्रारक श्री भुवनक्षीति तत्तृहें भुद्रारक श्री झानमूल्यदेवा तत्तृहें भ० विजयकीतिदेवा तत्त्रहें भ० श्री शुभवन्द्रदेवा तत् शिष्पत्र क० श्रीरमा आत्रत्वतंत्रमंत्रधार्य लिलत्वा बागदरेशे गुवाणीमार्थी शानिनाथ नैत्यानये श्रम भवति स्नाचार्य श्री प्रकृतिये दत्त हरिक्शास्त्र महापराण ज्ञानवर्षा स्वार्य श्री

३१७४. प्रति सं० २७ । पत्र स० २३० । प्रा० १०३ × ४३ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-पुरारा । र०काल × । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रयवान मन्दिर उदयपुर ।

प्रणस्ति निम्न प्रकार है---

सवन् १६५३ वर्षे माण मुदी ७ वृधे श्री मृलसाचे सरस्वतीमच्छे बलान्कारमणे कुन्दकुन्दानार्यान्वये महारक श्री सकलकीमिदेवा तरपट्टे मुवनकीतिदवा तरपट्टे ज्ञानभूमण्डेदास्तपट्टे महारक श्री विजयकीतिस्त भ० मुनवन्ददेवास्तत् भ० मुनविकीतिदवास्तरपट्टे म० मुणकीतिदेवास्तरपट्टे महारक श्री वादिभूषण् नादाम्नाये श्री इंतरकारे श्री सम्भवनाय चैत्यालये श्रीसचेन इद हरिवजपुगण् जिलावि स्वजानावरणीकमेश्यार्थं बहा लाहकाय दत्त ।

३१७४. हरिनंश पुरास् — जुजालचन्द । पत्र स० २२३ । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय — पुरास्म । र०काल स० १७६० । ले० काल स० १६४२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सदिर पनायती दुनी (टोक) ।

विशेष-- फागी में स्योबक्स ने प्रतिलिपि की थी।

**३१७६. प्रति सं० २।** पत्रस० २१६ । आ० १२imes६६ दश्च । विषय-पुराग्य । र०काल स० १७८० वैज्ञाल सुदी ३ । ले०काल imes । अपूर्ण । बेष्टनसं० २४० । **प्राप्तिः स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर ध्रजमेर ।

**३१७७. प्रति सं० ३**। प्यस्त० २३६ । प्रा० ११ ४६) इश्वः । साया हिन्दी (पद्यः) । विषय-पुरागा । र०काल म० १७६० । ले० काल स० १६२२ । पूर्णः । बेष्टनसं० १६१८ । प्राप्तिः स्थान-स० वि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

३१७ म. प्रति सं० ४ । यत्र स० २१४ । ब्रा० १० $\frac{1}{2} \times 2\frac{3}{5}$  इ.ख । भाषा-हिन्दी (पद्य)। र०काल सं० १७८० । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३ । प्राप्ति स्थान । दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) । विशेष —प्रति और्रा है ।

३१७६. प्रति सं० ४ । पत्र स०२६६ । घा० १०३४४१ हेडच्य । माषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—पुरागा । र०काल सं०१७६० वैकाल सुरी ३ । लेलन काल स०१६३४ पौथ सुदी ११ । पूर्ण । देष्टन स०४६ । प्राप्ति स्थान--तेरहपंत्री दि० जैन मन्दिर नैगुवा । विशेष--महाराजा विश्वनिसह के शासन में सदासुख गोदीका सांगानेर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

**३१००. प्रति सं०६।** पत्र सं०२२२। झा० १३ $\frac{1}{2} \times \S_p^2$  इस्त्र । माषा—हिन्दी (पदा)। विषय—पुरासा। र०काल सं०१७००। ले० काल स०१०३१ चंत बुदी १३। पूर्ण। बेष्टन स०११। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बंदी।

**३१०१. प्रति सं०७।** पत्र म० २३१। ग्रा०११ $\times$ ५ $^{3}$ ृदुखः। प्राया—हिन्दी पद्यः। र० काल स०१७००। ले० काल सं१०६० श्रावण मुदी १। पूर्णः। वेष्टन स०६१। **प्राप्ति स्थान**-हि० जैन मन्दिर नापदी बूंदी।

. **१९८२. प्रति सं०**६ । पत्र । म०२४१ । घा० १२४६ इत्त्र । भाषा—हिन्दी (प**द्य**ा)। विषय—पुरामा । र०काल ४ । ने०काल स०१६४० । पूर्णा । वेष्टनस०४६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० क्रीज सन्दिर कोळ्या का नेणावा ।

**३१८३. प्रति सं० ६ ।** पत्रस० २७६ । प्रा० १०<sup>3</sup> ४५ इञ्च । प्रापा—हिन्दी पद्य । विषय — पुरागा । र० काल स० १७८० बैंबाल सुरी ३ । ले०काल स० १८३६ माह सुदी ४ । पूर्ण । बेंब्नसं० १०३-२०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टोक)

विशेष—सवत् १६१५ में साह हीरालान जी तत्पुत्र जेंडुमार जी अमैचन्द जी ने पुष्प के निमित्त एवं कमैक्षयार्थ टोडा के मन्दिर सांबलाओं (रेसा)के में चढ़ाया था।

**३१ म ४. प्रतिसं० १०।** पत्र स० २१७। ग्रा०११४६ इला। ले० काल स०१८४५ कार्तिक मदी ४। प्रग्रो। बेष्टन स०११६/७३। प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोका)।

विशेष — प्रजमूमि मधुरा केपास में पटैल माहिब के सक्कर में पारबंताय चैत्यालय में प्रतिनिधि हुई थी।

३१८५. प्रति सं० ११ । पत्रस० २०१ । ब्रा० १२×६६ च । प्राया —हिन्दी पत्र । विषय — पुराए। १०काल स०१७८० । से०काल स०१८८४ । पूर्ण । बेष्टन सं०१४२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर बोरसनी कोटा।

**३१८६. प्रति सं० १२।** पत्रसं० २२३। घा० १३×६ इन्दा। भाषा-हिन्दी पद्य। ले**०काल** ×। घपुर्णः। वेष्टन स० १४३। **'प्राप्ति, स्थान** — उपरोक्त मन्दिर।

विशेष---२२३ से आगे पत्र नहीं है।

३१८७. प्रति सं० १३। पत्र सं० २४२। धा०११३X६१६२४। मापा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराए। र० काल स०१७८०। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन सं०१६। प्रास्तिस्यान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर करीली।

३१८८. प्रतिसं०१४ । पत्र सं०२३१ । भाषा— हिन्दी । विषय— पुराए। र०काल स० १७६० वैकाल सुसी २ । पूर्ण । वेष्टन सं०११६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विज्ञेष — संवत् १७६३ वर्षे वैज्ञाल मासे गुक्ल पक्षे डितीया गनी निकित्तोष-प्रय । साथमीं पंडित बुक्काल वेला श्री सुरेद्रकीर्ति का बानो । विशेष--कुर्त्दनलाल तेरापथी ने प्रतिलिपि की थी। वोहा--

देश इ दाइ सहावनी, महावीर संस्थान । जहां बैठ लेखन कीयी धर्म ध्यान चित ग्रान । तीन सिखिर मडीप भृति सौमै। गीरद चह कोर मन मोहे।। वन उपवन सोभत धिषकार। मानौ स्वर्गपरी भवतार ।। दर्शन करन जात्री ग्राचै। धमं ध्यान ग्रति प्रीति बतावै ॥ श्री जिनराज चरन सो नेह। करत सकल सुख पार्व तेह ।। चन्दनपर श्रुकबर पर जानि । मन्दिर दिग जैसिंह पुर झानि ।। नदी ग्रह्भीर चौतिरदा सानि । पडित दो नर है तिस थान।। सखानन्द सोभाचन्द जान । ता उपदेश लिखी परान ।। मार्ग सुद दोज सो जान ।।६।। ं ता दिन लिख परन करौ सो हरवश सोसार। पढ़ें सुनै जो भाव सौ जो भवि उतर पार।।

**३१८८. प्रति सं० १५ ।** पत्रसं० २३८ । घा० १२३८६ इख । **२००**ताल स० १८०८ मादवा बुदी ८८। पुर्छ । वेष्ट्रन सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्राधती मन्दिर करीनी ।

३१९०. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ३३७ । प्रा० १२३ ४६३ इचा । भाव-हिन्दी पत्र । विषय— पुरासा । र०काल स० १७६० वैज्ञाल सुदी ३ । घपूर्ण । वे० स० ४१ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोनानी मन्दिर करोती ।

३१९१. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २६७ । माधा—हिन्दी । विषय—प्रास्। र०काल स०१७८० । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वेष्टनस० ८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

३१६२. प्रतिस्ं १८ । पत्रस० १८४ । म्रा० १२४८ इस । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुरासा १२० काल स०१७८० बैशाल मुदी ३। ले०काल ४ । पूर्स । वेष्ट्रनस०४-६४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर बड़ा बीसपथी दीसा ।

३१६३. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० १४४ । घा० १२×८ इका भाषा-हिती । विषय-पुरासा । २० काल सं ६ १७८० । ले॰काल × । पूर्य । वेहनसं० ६३ । प्राप्तिस्थान-दि० जैन मन्दिर तेरहनपी दौता । **३१६४. प्रतिसं० २०।** पत्रसं० ३१४ । ब्रा०११४४ इ.ख.। आया —हिन्दी विषय— पुराए। १०काल सं०१७६०। ले०काल सं०१६२८ । पूर्ए। वेष्टनसं०१७१। प्राप्ति स्थान— दि० जैन सडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

३१६४. प्रतिसं० २० (क) । पत्रसं० २४०। प्रा० १० है ४६ ६ इच्च । मावा-हिन्दी पद्य । विषय—पुराल । र०काल स० १७६०। ले•कालस० १८६४ कातिक बुदी ४। पूर्ण । वेष्टन सं० १४-६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ड गरपुर ।

विशेष--- भालरापाटन मध्ये श्रीशातिनाय चैल्यालये श्रीमूलसचे बलात्कारगरो श्रीकुन्दनाचार्यान्वये ।

**३१६६. प्रतिसं०२१**। पत्रस०१६०। म्रा०१२×६ इला। भाषा-हिन्दी। विषय—पुरासा। र०काल सं०१७६०। **से०काल ×**। पर्या। वेपन स०४२/२४। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर मादवा।

**३१९७. प्रतिसं० २२** । पत्रस० २२७ । म्रा० १०३/४५३ इ.च. माषा—हिन्दी । विषय— पुराग । र० काल सं १७६० । ले**०का**ल स० १६२६ - पूर्ण । बेष्टन स० १७/२१ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर, मादवा (राज०) ।

३१६८. प्रतिसं० २३ । पत्रसं० २६५ । भ्रष्टा—हिन्दी । विषय — पुरासा । र० काल १७८० । ले•काल × । पूर्सा । वेष्ट्रन स० २३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन बढा पचायती मन्दिर, डीग ।

विशेष-४-५ पक्तियां का सम्मिश्रम है।

**३१६६. प्रतिसं० २४ ।** पत्रस० २८६। प्रा० १२६ × ४६ इस । साया—हिन्दी पर्ण विषय — प्राग्ग । र० काल स० १७६० । ले० काल स० १६२ । पूर्ण । बेष्ट्न स० ३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर दीवानजी चेननदास प्रानी बीग ।

३२००. प्रतिसं० २४ । पत्रस० २३० । ग्रा० १२३ ४ ६००च । माषा — हिन्दी (पद्य) । विषय –पुरासा। र०काल स० १७०० वैद्याल मुत्री ३ । से०काल स० १७६२ कार्तिक मुदी.. रविवार । पूर्मा । बेष्टन म०२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष--प्रथ क्लोक स॰ ७५००। बयाना मे प० लालचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी। श्री लुगाल ने ग्रथ की प्रतिलिपि करवायी थी।

३२०१. प्रतिसं० २६। पत्रस० १८१ । माघा—हिन्दी विषय-पुराणः । र० काल १७८० वैज्ञान मुदी २ ।ले०काल स० १८६६ कार्तिक मुदी १३ । पूर्णः । वेष्टन स० १३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पनायती मन्दिर मस्तपुर ।

विशेष-- मुललाल बुर्धासह ने भरतपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

**३२०२. प्रतिसं० २७ ।** पत्रम० ३०३ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण् । र०काल सं०१७०० । सं० काल स० १८१७ । पूर्ण् । वेष्टन स० १४२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--मागरमल्ल ने मरतपुर मे लिखवाया था।

३२०३. प्रति सं० २८ । पत्रसं० २६४ । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराए । र०काल स०१७६० । वैशास सुरी ३ । ने०काल स०१७६२ । पूर्ण । वेष्टनस०१६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती । संविर्दे भरेनपुर ।

अभिकेष १६०४: प्रति संव २६:। पत्र संव २६२'। लेवकात संव १८१४ । पूर्ण । बेष्ट्रत संव १८१६ । प्राप्ति स्थान-दिव जैन पंचायती मंदिर सरतपुर ।

# विषय -- काव्य एवं चरित

३२० ४. प्रकलंक चरित्र —  $\times$  । पत्र सं० ४१ । मा०  $-\frac{\pi}{4}$  × ६ इचा । भाषा — हिन्दी गया । विषय — चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८८२ वैद्याल सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रयाल प्रवासनी मन्दिर प्रत्य र ।

३२०६. ग्रमष्क शतक---  $\times$  । पत्रसः १-६। प्रा०१०ै $\times$ ५६ खः। भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल  $\times$  । ले०काल सं०१५२० । बेष्ट्रन सं०७२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

विशेष-देवकुमार कृत संस्कृत टीका सहित है।

३२०**७. प्रंजना चरित्र—भुवनकोति।** पत्र सं० २४ । भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र०काल १७०३ । ले०काल स० १६६० । पूर्णुः वेष्टनस० ७१६ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जॅन पचायती मन्दिर मरतपूर ।

३२० मा <mark>जनता सुन्दरी चउपई - पृष्यसागर ।</mark> पत्र सं० ३२ । धा० ६ हे× ४ इ.च.। प्रापा-हिन्दी (पदा) । विषय-काळा। र०काल स० १६ न्द सावरा मुदी ४ । ले०काल ४ । पूर्णा। वेष्टन म० १३ न्द्र । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर घजमेर ।

ग्रन्तिम भाग---

ते गछ दोपै दोपता साच उर मकार।
वीर जिएसर रो जिहा तीरब प्रछद उदार।।
नानुपाटि प्रनुकम प्रालस सागर नूर।
विनयराज कर्मसागर बाचक दोह सतूर।।
तामु सीस पुण्यसागर बाचक भएँ एम।
प्रंजनागुन्दर चउपई परएसचले प्रेम।।
संवत सोल निवासीय अगलए मास गमाल।
मृदि तिथि पचम निमंनी कृदि बृद्धि मंगल माल।।
।। सर्वेगाया २४६।।

३२०६. प्रति सं०२ । पत्र स०१७ । प्रा०१०४४) इ.च.। ले० काल सं०१७२१ कालिक सुद्धी। पूर्णावेष्टन स०७३२ । प्राप्ति स्थान---भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष -- मेडतापर में प्रतिलिपि हुई थी।

३२१०. अंबड चरित्र—  $\times$  । पत्र स० १-५० । प्रा० १ $\frac{1}{7}$  $\times$ Y $\frac{1}{7}$  इ.स. । आवा-हिली (वस)। विचय-चित्र । र०कास  $\times$  । से०कास  $\times$  । प्रपूर्णं,। बेष्टन स० १७ । प्राप्ति स्वान-चिर् जैन मस्दिर -कस्मान (बंदी) ।

विशेष-धिन्तम पुष्पिका निम्न प्रकार है---ग्रबड बतुर्थ ग्रादेश समाप्त ।।

विशेष--रचना गुटका के धाकार मे है।

३२१२. **म्रादिनाथ के दस सब**—×। पत्रसः १०। माषा-हिन्दी। विषय-जीवन चरित्र । र०काल×। ने०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स०४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पर्वायती सरतपुर।

**विशेष** — पत्र ४ के बाद पद सग्रह है।

३२१३. उत्तम चरित्र  $\cdots$  । पत्र सं०१३ । प्रा०१० $\times$   $Y^2_\xi$  इच्च । साथा -संस्कृत । विषय — चरित्र । रे०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  पूर्ण । बेष्टन सं०१६७ । प्राप्ति स्थान — दि० , जैन संदिर लक्कर कथपर ।

विशेष-भवेताम्बरनाथ के अनुसार 'धन्ना शालिभद्र' चरित्र दिया हथा है।

३२१४. ऋतु संहार —कालिदास ।पत्र ।स०२०। धा०१० $\times$ ४१ ६ वा । साथा — सस्कृत । विषय—काल्य । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१८८२ आषाउ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०२४। **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

३२१४. करकण्ड चरित्र—मुनि कनकासर । पत्र स० २-७७ । ग्रा० १० रे४ इन्द । भाषा—ग्राप्त ग्राविषय - चरित्र काव्य । र० काल ४ । न० काल ४ । ग्रपूर्ण । बेष्टन स० १०४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मदिर ग्राभनन्दन स्वामी व दी ।

३२१६. करकण्ड्चरित्र— म०शुमचन्द्र । पत्रस० ५८ । घा० ११४४३ इञ्च । माथा— सस्त्रत । विषय — चनित्र । २०काल स० १६११ । ले०काल स० १६७० । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ४१ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--प्रतिजीगं है।

३२१७. प्रति सं०२ । पत्रस०१४–१६६ । म्रा०११×४ इ.च । ले०काल सं०१४७३ । मपुर्सं । वेष्ट्रसं०१६३/४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १४७३ वर्षे थी आदिजिनवैत्यालये श्री मृतसवे सरस्वतीमच्छे कुन्दकृत्वाचार्याच्ये मट्टारक श्री पद्मवित्रेवा तत्पट्टे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे म० विद्यानन्दिदेवा तत्पट्टे म० वदमीचन्ददेवा स्तेषां पुरतक ॥ श्री मिल्लभुष्या पश्चकीमद ।

३२१८. काव्य संग्रह —  $\times$  । पत्र सं $\bullet$  १४ । म्रा० १० $\times$ ४ $\frac{3}{2}$  इला । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । २० काल  $\times$  । ले० काल स० १६४६ सावन सुरी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं $\bullet$ १८६-७७ । प्राप्ति स्थान—दि $\bullet$  जैन मन्दिर कोटडियों का द्वंगरपुर ।

विशेष-मेघाम्युदय, बृन्दावन, चन्द्रदूत एवं केलिकाव्य भादि टीका सहित है ।

३२१**६. प्रति सं०**२ । पत्र स०६ । म्रा०७×५६ च । भाषा —संस्कृत । विषय काव्य । 'र०कास × । से०कान × । म्रपूर्ण । वेष्टन सं०६० । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिर कोट्यों कानैसावा ।

विशेष--नवरत्न सम्बन्धी पद्य है।

३२२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । से॰कान × । ब्रपूर्ण । बेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन मदिर कोट्यो का नैरावा ।

२२२१. किरातार्जुनीय—मारिव । पत्र स०१०६। धा० $\mathbb{I}^2_{\mathbb{R}} \times \mathbb{V}^2_{\mathbb{R}}$  इश्चः। भाषा— सस्कृतः। विषय—काव्यः। र०कालः  $\times$ । ले० कालः  $\times$ । पूर्णः। बेष्टनं सं०४७०। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजनेरः।

३२२२. प्रति सं० २ । पत्र स० १०२ । धा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इन्द्र । ले०काल $\times$ । पूर्ण । बेष्टनस० १२८१ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन सन्दिर अजमेर ।

३२२३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४४ । ध्रा० ११ ४४ १ इ.च.। ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेस्टन स० १२३६ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन संदिर स्थमेर ।

३२२४. प्रति स० ४ । पत्रस० १३४ । घा॰ १ × ६ इचा । ले॰काल स० १७६८ वैशाल सुदी १ । पूर्ण । बेष्टुन स० ११३६ । प्राप्ति स्थान — मट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--- अजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**३२२५. प्रति स० ५** । पत्र स० ४४ । घा० १०×४ इ.च.। ले० काल × । बेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्षकर जयपुर ।

३२२६. प्रति स०६ । पत्र स०११२ । आ०११  $\times$   $^{\downarrow}$  इ.ख । ले० काल  $\times$  । बेष्टन स०२६ । प्रास्ति स्थान—द० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--सामान्य टीका दी हुई है।

३२२७. प्रति सं०७ १ पत्र स०१४४। ग्रा०१२ै ४६ इञ्च । ले० काल ४ । बेष्टन स० २६४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर।

विशेष-मेघकुमार साधु की टीका सहित है।

३२२८. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० १०। ते० कात 🔀 । पूर्ण । (प्रयम सर्ग है ।) बेष्टुन म० ४२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पवायती मन्दिर हाण्डावालों का डीग ।

३२२६, प्रति सं०६ । पत्रस० ४३ । ग्रा० ११×५ है। लेक्काल × । पूर्ण । बेहन स०२०३। प्रास्तिस्थान—दि० जैन मंदिर प्रिनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष-धर्ममृति शालिगराम के पठनार्थ द्विज हरिनाराए। ने प्रतिलिपि की थी।

३२३०. प्रतिसं० १०। पत्रस० ५०। घा० ६४६-१ इन्डा । मे०काल ४ । घपूर्स । बेहन स० २१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी वंदी । बिशेष—प्रारम्भ में निला है—संबत् १८६६ मिति पौप बुदी ११ को निल्ली गई शिवराम के पठनार्ष ।

**३२३१. प्रति सं०११** । पत्र स०१४५ । प्रा०१२३ $\stackrel{.}{\times}$ ४३ ६ $\stackrel{.}{*}$ ६ १७ । ते० काल स०१७५५ ग्रायाढ मुदी २ । पूर्ण । वे० सं०६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष-प्रति व्याख्या सहित है।

**३२३२. प्रतिसं०१२** । । पत्रस०११४ । प्रा० ८३<sup>°</sup> ४४ ६ जा। ले० काल१७४० ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं०४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मंदिर नागदी बुंवीँ ।

विशेष-- लिपि विकृत है---१= सर्ग तक है।

**३२३३. प्रतिसं०१३।** पत्रसं०७६ । मा०६×५ इचा। ते∘काल स०१६०७ चैत मुदी ७। पूर्णा। वेष्टन सं०६ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बृदी।

विशेष-११ समं तक है। कही २ सस्कृत में शब्दार्थ दिये हये है।

३२३४. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १२१ । म्रा० ११ $\times$ ४६ इच । ले॰काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेष्टत स० ८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

**३२३४. प्रतिसं०१४ । पत्रस्० ४६ । प्रा० १०**४६ इ.च. ते**०काल** 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स०१८४ । **प्राप्ति, स्थान**—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान व दी ।

विशेष—११ सर्गतक है।

३२३६. प्रतिसं०१६। पत्र स०३२ । प्रा०११ $\frac{3}{7} \times \frac{3}{7}$  इंच। ले० काल  $\times$  । पूर्ण। बेब्रन स०१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा।

३२३७. प्रति सं० १७ । पत्रस० ×ां नि० काल मं० १७१२ भादवा मुदी ३ । पूर्ण । वेष्टुनसं० २४२-६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष-- प॰ भट्टनाथ कृत संस्कृत टीका सहित है

प्रशस्ति - सवन् १७१२ वर्षे भाद्रपद मासे गुक्ल पक्षे तृतीया " " लिपि सूध्म है।

३२३६. **कुमार संगव — कालिदास** । पत्र स० १६। ब्रा० १०३४४। इश्व । भाषा---सस्कृत । विषय - काव्य । र०काल × । लेखन काल सं० १७८६। वेष्टन स० २८३। **प्राप्ति स्थान--**वि• जैन मन्दिर लक्कर; जयपर।

विशेष ---टौंक नगर में प० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३२४०. प्रति स०२ । पत्रस०३२ । आ०१० $^{3}$   $\times$  ४६९० । ले०कात  $\times$  । बंहन स०२५४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

३२४१. प्रति सं०३ । पपसं०४३ । धा० ⊏्रै ४३ इञ्च । .ले॰काल ४ । बेहन सं०२०४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर। ३२४२, प्रतिसंग्रंथी पत्र संग्यान सार्थित ११%४२ हमा । लेक्सल संग्रेटिय पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्ट्रन सग्रेटिश प्राप्ति स्थान—दिश्जैन मन्दिर राजमहल (टॉक) ।

३२४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । घा० १२ ४ ५ इला । लेक्सल स० १०२२ । पूर्ण । बेष्टन २२४ । प्राप्तिस्थान— दि० जैन मदिर राजमहल (टॉक) ।

विशेष-श्री अंपापुरी नगरे वाह्य चैत्यालये पं० वृन्दावनेन लिपि कृतं ।

३२४४, प्रति सं०६ । पत्र सं०५२ । प्रा०११ $\times$ ६ $^1$  इन्छ । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२४ । प्राप्ति स्थान $^{-1}$ द० जैन मदिर नागदी बंदी ।

विशेष-सात सर्ग तक है।

३२४**४. प्रति सं०७।** पत्र स०६०। म्रा०१०१४४ हेच्च। से०काल स०१७१६ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्णं। वेप्टन स०६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष — गुकवासरे भी मूनसथे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगरो भट्टारक जयकीत्ति के शिष्य पहित गुरावास ने लिखा था।

३२४६. प्रति सं० द। पत्र स०३०। मा०११×४ इञ्च। ले० काल सं०१६६६। पूर्ण। वेष्टुन स०१३४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—सवन् १६९६ वर्षे भाषाद बुदी द्वितीया शुक्रे श्री खरतरगच्छे मट्टारक श्री जिनचंद्र सूर्रिम तत् शिष्य सोमकोत्ति गरिए तत् शिष्य कनकबद्धन मृति तत् शिष्य कमल तिलक पठनायं लेखि ।

३२४७. **कुमारसंभव सटीक-मिल्लनाथ सूरि।** पत्र त०११४ । ग्रा०११४४ स्था। भाषा—सङ्कृत । विषय—काव्य । २०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन त० द१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय ब दी ।

विशेष-सातसर्ग तक है।

२२४८. प्रति सं० २ । पत्रस० ७६ । घा० ११X४ $^1_{\xi}$  इन्छ । से०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

३२४**६. क्षक बुद्धामरि**ण न **वादीमसिंह** । पत्र स॰ ४६ । घा॰ १३ × ४ दञ्च । गाया — संस्कृत । विषय — काब्य । रे०काल × । ले० काल × । पूर्य । वेष्ट्रन स॰ ३४६ । **प्राप्ति स्य**ान— वि० जैन प्रान्ति वोगसवी कोटा ।

३२५०. संडप्रयस्ति काब्य $-\times$  । पत्र स० ४ । भाषा - सन्कृत । विषय-काब्य । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण ।, वेष्टुन स० १६०,२६६ । प्राप्ति स्थान-वि॰ जैन समवनाय मन्दिर उदयपुर ।

३२५१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६१/२७० । प्राप्ति स्थान—समवनाथ दि० जैन मिंदर उदयपुर ।

३२४२. गजसुकुमाल चरित्र—जिनसूरि । पत्र स० २० । आ० १०४४} इचा । माषा— हिन्दी (पद्य) । विषय — कथा । पर्वकाल स० १६१६ वैशाल मुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३१ । प्राप्ति स्थान—अहारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर । ३२५३. गर्जासहकुमार चरित्र — विनयसन्द्रसूरि । पत्रसं० २-३३ । ग्रा० १४ ४ है इस । ग्राचा — सक्कत । विषय — चरित्र । र०काल ४ । ले०काल सं० १७५४ । ग्रपूर्ण । बेहन सं० १०२ । ग्राफ्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल टीक ।

विशेष--प्रथम पत्र नही है।

धन्तिम पुष्पिका एव प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

इति श्री चित्रकीयगच्छे श्री विनयचन्द्र सूरि विरचित गर्जासह कुमार चरित्रे केवली देशना पूर्वभाष-स्मता वर्णन दीक्षा मोक्ष प्राप्तिवर्णनो नाम पत्रम विश्राम सम्पूर्ण ।

स० १७५४ वर्षे माध्यिन सुदी ६ मती श्री बृहत्करतरणच्छे पीपल पक्के श्री लेमडाधिशालायां बाचक पर्यवाचना पर्य श्री १०० जानराजको तत् किय्य सीहराजजी तत् विनय पहित श्री श्रमरजन्द जी क्रिय्य रामचन्द्रे नोलेलिमद्र श्रमान् । श्रीमेदपाटदेशे विजय प्रधान महाराजाधिराज महाराणा श्री जैतिहजी कृदश्री प्रमर्शतह जी विजय राज्ये बहुचिन श्री पीटलग्राम जनुमीस ।

३२४४. गुरावर्मा चरित्र — माशािष्यमुन्दर सूरि। पत्रसं० ७४। भाषा — सस्कृत। विषय-चरित्र। र०काल ४। ले०काल स०१८७४। पूर्ण। बेष्टनसं० ६०१। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

विशेष--- मिरजापूर में प्रति लिखी गई थी।

३२४**५. गौतम स्वामी चरित्र— धर्मचन्द्र** । पत्रसु० ४२ । ब्रा० ११र्हे×४ इञ्च । आया— संस्कृतः । विषय — चरित्र । र०काल स०१७२६ ज्येष्ठ मुदी २ । लेक्काल सं०१६१७ वैद्याल मुदी १३ । पूर्णः । बेहुन स०१०४० । **प्राप्तिः स्यान—** अहुरकीय दि० जैन मन्दिर धजनेर ⊅

विशेष --- श्रजयगढ मे जिनचैत्यालय मे प्रतिनिपि हुई थी।

३२५६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५२ । घा० ११३४४ दे इंच + ले०काल × पूर्ण । वेष्ट्रनसं०१५६४ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

३२५७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४४ । ग्रा० ११ imes ४२ है इ.च. ४। ले०काल स० १८४० माह बुदी १ । बेष्टनसं० १४१ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर १

विशेष—सवाई प्रतापसिंह के शासन काल में श्री बस्तराम के पुत्र सेवाराम स्वयंने प्रतिलिपि की पी।

३२५ द. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३४ । प्रा० १३ $\frac{3}{7} \times V_0^2$  द्वा । ते० काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । बेष्टन स० १५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-प्रति रचनाकाल के समय ही प्रतिलिपि की हुई थी । प्रतिलिपिकार प॰ दामोदर थे ।

३२४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४० । घा० १२ ४ ३ हे दव । ते•काल ४ । पूर्ण । बेहन सं० ९८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेसावाटी (सीकर) ।।

३२५६. प्रति सं० ६। पत्रसं० ५०। झा० १०×५ इचा। से०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेफावाटी (सीकंद) औ

विशेष--भगवन्ता तनसुवाराव क्लेहपुर वालों ने पुरोहित मीतीताम क्षेत्रातिमिपि कराई बी ।

३२६०. प्रसिसं० ६ । पत्र सं० ४६ । आ ० ११ × ४ इन्छ । ले० काल स० १८४२ । पूर्ण । बेहन सं० ३६४ । प्रा**टित रकान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३२६१. घटकपॅर काव्य—घटकपॅर । पत्रसं $\circ$  ४ । प्रा $\circ$  १० $\frac{1}{4}$   $\times$  ४ इवा । भाषा—स्टकृत । विषय—काव्य । र $\circ$ कान्  $\times$  । ते $\circ$  काल्  $\times$  । वेष्ट्रनसं $\circ$  २०६ । प्रास्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर  $\nu$ 

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३२६२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । मा० १० $^2_1 \times$ ४ इंच । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । बेष्टुनसं० ३१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

३२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । धा० १० ${}^2_{i} \times$ ५ इला । ले० काल imes । वेल्टन स० ३११ । प्राप्ति स्थान—६० जैन मन्दिर लेकर, जयपुर ।

३२६४, **प्रतिसं०४** । पत्रसं०४ । घा०१२ × ४ है इन्जा लेक्काल स०११०४ । पूर्ण। वेकृतसं०६७ । **प्राप्ति स्थान**—पद०जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

३२६४. चन्दनाचरित्र—भ० मुमचन्द । पत्रस० २०। ग्रा० १०४४) इञ्च। भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल ४ । से काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३७ । **प्राप्ति स्थान**—मट्टारकीय विष्णेत सविर प्रजमेर १

**३२६६. प्रतिसं\sigma २ ।** पत्रस $\sigma$  ३३ । घा० ११ $\times$ ४ $\frac{2}{\sigma}$  इ.च. । ले० काल स $\sigma$  १८३२ घाषाढ बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन सं $\sigma$  १७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, लक्ष्कर जयपुर ।

विशेष -- जयपुर के लश्कर के अन्दिर में सुखराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

३२६७. चन्यकूत. काठ्य-विसयभम । पत्र स०१। घ्रा०१० $\frac{2}{5}$  × ५३ इ.च. भाषा— सस्कृत। विषय— काव्यः। र०काल  $\times$ । ले० काल स०१८२५ घ्रायाहः। वेष्ट्रन स०१०५। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर सम्बर, जयपुर।

३२६६. चन्द्रप्रमंग्यरित्र—यशःकीति । पत्र स० १२१ । घा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इच । गाया— अपभ्रज्ञ । विषय —विरुत्र , र०काल , $\times$  । ले० काल  $\times$  । घपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भाववा ।

३२६२. चन्द्रप्रभु चरित्र-वीरनंदि । पत्रस०२७ । ग्रा०१० ${}^1_1 \times {}^1_2$  इख । भाषा— सस्कृत । विषय—कार्व्य ।  ${}^1_1$ रे०कास सं०१०६२ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०४२० । प्रास्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जुनै मृन्दिर मृजमेर ।

विशेष - जीसी शीर्स प्रति है।

३२७०. प्रति सर्व २ । पत्र स० १२२ । प्रा० ११ $\frac{3}{2}$  $\times$ ५ इ.च । से०काल स० १६७६ मादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ प्रारंपित स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३२७१: प्रस्तिसर्व ३ । पत्र स० १२ । घा० म ४६ है इथा । ले०काल ४. । बेहनस० ६४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लक्को सीन्दर्शवपपुर ।

a = केंबल-श्रमे**ब-पहितार्थ** सर्ग जिसमें क्लांब श्रक्तरण है -दिस है a प्रवास सर्ग अपूर्ण है + : ी

३२७२. प्रति संo ४ । पत्र स०१३ व । मा०१०१ ४ ६ इला। ले० काल सं० १०२६ वैशास सुदी २ । पूर्वो । वेष्ट्रन स०२३० । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष-दीर्घं नगर जवाहरगज मे चेतराम लण्डेलवाल सेठी ने प्रतिलिपि कराई थी।

३२७३. प्रति सं० ४.। पत्रस० १२३। मा० १२imes४ $^2$  इश्वः। ले० काल imes । पूर्णः। केवनसं० २०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानशी कामा ।

३२७४. प्रति सं०६ । पत्र स० १२०। ले० कालसं० 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० ८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष-प्रति सस्कृत टीका सहित है तथा भ्रलग २ भ्रध्याय है।

**३२७५. प्रति सं० ७ ।** पत्रस० ११६ । ले० काल स० १७२६ मादवासुदी २ । पूर्णा। वेक्टनसं० ३६–४१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३२७६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३-२०४ । बा० ११×४ इ.च । ले०काल स० १६०८ । धपूर्ण । बेष्टन स० ३८७/२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

सबत् १६०८ वर्षे ग्राषाढ मासे गुक्त पक्षे ११ तिथौ रिववासरे सुरत्राण श्री महमूद राज्य प्रवर्तमाने श्री गयार मन्दिरे श्री पाण्वेताय चैत्यालये श्री मूलस रे सरस्वती गच्छे वलात्कारगरो कुदकुदाचार्यात्वये— इसके मागे का पत्र नहीं है।

३२७७. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३-१४ । प्रा० ११×४ इच्च । ले० काल स १७२२ मासीज सुदी १३ । प्रपूर्ण । बेष्टनस० २६७ '२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच २ मे पत्र चिपके हुए है तथा कुछ पत्र भी नही है। प्रति जीएं है।

प्रशस्ति— सः १७२६ में कल्यारगकीति के शिष्य ब्रह्मचारी संघ जिष्णु ने सागपत्तन में श्री पुरुजिन चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रतिविधि की थी।

**३२७८. प्रतिसं० १०।** पत्र स० ८४ । घा० ६२ ४७ इल्डा ले० काल स० १८६६ । पूर्ण। बेष्टन सं०४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाय जीगान बृदी ।

विशेष — प्रशस्ति — मिनी वैशाख बुदी ६ मगलवार दिने सवत् १८६६ का शाके १७६४ का साल का । लिखी नगरणा रायसिंह का टोडा में श्री नेमिनाय चैन्यालये लिखी प्राचार्य श्रीकीर्तिजी

३२७६. प्रति सं० ११ । पत्रस० ⊏६ । ग्रा० १२४ ⊏ॄै इच । ले० काल स० १६४६ झावाड सदी १२ । पूर्ता । वेष्ट्रन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—पाण्यंनाथ दि० जैन मन्दिर इंदरगढ ।

३२००. चरद्रप्रम चरित्र—सकलकोति । पत्रस० २२-४२ । घा० १२ $\frac{3}{2} \times 4\frac{3}{2}$  इच । माषा-संस्कृत । निषय—चरित्र । २०काल  $\times$  । ले०काल स०  $\times$  । घपूर्ण । वेष्टनस० ३१६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन घपवाल मन्दिर उदयपर ।

३२**८१. चरद्रप्रमः चरित्र--अधिकांद** । पत्रस० १२६ । झा० १० × ४६ इच । भावा-घपभ्र स । विषय--चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १७६३ कार्तिक बुदी  $\mathbf{E}$ ापूर्ण बेष्टमं स० २२१-५६ । **प्राप्ति** स्थान--वि० जैन सन्दिर कोटडियों का डूगरपर ।

**३२८२, चन्द्रप्रम चरित्र—होरालाल** । पत्र स० २३२ । म्रा० १२, ४७० इश्व । माषा — हिन्दी प० । विषय-चरित्र । र० काल स० १६१३ । ले०काल स १६६३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४२ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहर र ग्रेसावाटी (सीकर) ।

विशेष-प्यारेलाल ने देवीदयाल पण्डित से वडवत नगर में प्रतिलिपि कराई।

३२६३. चन्द्रप्रम काव्य मावाटीका । पत्र स०१३३ । भाषा—हिन्दी । विषय — काच्य । र० काल × । ले०काल × । सपूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२८४. **चन्द्रप्रम काव्य टीका**। पत्र स० ५०। भाषा—हिन्दी विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे०स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

३२६४. चारुवस्त चरित्र—दीक्षितः वेयदस्तः । पत्रसः । १४२ । भाषा — सस्कृतः । विषय — चरित्रः । २० कालः  $\times$  । ते० कालं स० १६४७ । पूर्णः । वे. स० २७६ । प्राप्तिः स्थान — दि० अंत पचावती मन्दिर सरसपर ।

विशेष-रामप्रसाद कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

३२६६. जम्बूस्वामी चरित (जम्बूसामि चरित) — महाकाव विकास प्रसः १६। मार्ग १० ४४ दे इञ्च । भाषा — मगन्न या । विषय — काव्य । र० काल सं ० १०७६ । लेश काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं ० ११३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

३२८७. जस्मूस्वामीचरित्र— म० सकलकोति । पत्र स० १२ । प्रा० १० $\frac{3}{4} \times \frac{3}{9}$  इन्छ । प्राण-सहकृत । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६६६ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६२ । प्राप्ति स्थान-भट्टारकीय दि० जैत मन्दिर ग्रजमेर ।

३२८६. प्रति स०२ । पत्र स० ५२ । ग्रा० १० $rac{1}{3}$  imes imes । ले॰ काल imes । पूर्ण । बेष्टुत सं० १२३३ । प्राप्ति स्थान – भट्टास्कीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३२ मध्ये । त्रित सं०३ । पत्रसं०११२ । आ०१०्रै ४००० इच्चा । ले०काल स०१ म०६ । पूर्णावेष्टन स०३४४ । प्रास्ति स्थान — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमर ।

विशेष-उग्रवास मध्ये श्री नथमल घटायितं । खण्डेलवाल लुहाडिया गोत्रे ।

३२६०. प्रति सं०४ । पत्र सं०६६ । ले० काल स ०१६८४ । पूर्ण । वेष्टुत म०१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर डीग ।

३२**६१. प्रतिसं० ४.।** पत्र सं० ७६। घा० ११९ ४४ इ.च. । ते० काल स० १७०० साथ इदी ७ । पूर्ण । वेष्टुन सं० ३२४/५२ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — प्रति जी एं है। बीच में कुछ पत्र नहीं हैं। सबत् १७०० मे उत्पपुर में सभवनाथ मदिर में प्रतिलिपि हुई थी।

३२ हर. प्रति सं०६ । पत्र सं०६६ । प्रा०११ ४ ५ इ.च । ले० काल स०१६६७ । पूर्णु। बेहुक सं०१७४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन समयान मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

सवत् १६६७ वर्षे माटवा मुदी १ दिने श्री वाग्वरदेशे लिखितं पं॰ कृष्णदासेन ।

३२६३. प्रति सं०७। पत्रस० ११। धा० ११×५ इवा । ते•काल × । पूर्ण वेष्टन स० २५३। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

३२६४. जम्बूस्वामी चरित्र—बहा जिनदास । पत्र स० ६३ । घा० ११ ४४ है इचा माचा— सस्कृत । विषय चरित । २०काल ४ । ले०काल स० १७०६ कार्तिक मुदी ४ । वेष्ट्रन सं० ३ । पूर्ण । प्राप्ति स्थान—महान्कीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष—विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है।

**३२६५. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ६४ । ग्रा०११×५ इ**च । ले∘काल** × ।पूर्णं । बेष्टन स०१४५० । **प्राप्ति स्थान** — भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३२६६. प्रति सं० ३ । पत्रस० १२१ । ग्रा० ६ र्रे 🗴 ४ इच । ले०काल स० १५२६ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टुनस० ४०१ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३२६७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १०६ । घा० ११ $\frac{2}{5} \times \frac{1}{5}$  छश्व । भाषा—सस्कृत । विषय— चित्र । र०काल  $\times$  । ले•काल  $\times$  । वेष्ट्रन सं० २०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर अयपुर ।

३२६६. प्रति स० ५। पत्रस० ७५। ले•काल  $\times$ । ध्रपूर्ण । वेष्टन स० २३६। प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन पचायती सन्दर भरतपुर ।

३२६६. प्रतिसं० ६ । पत्र स०६० । ब्रा० १०१ × ४१ इ.स. । ले० काल सं० १६७० । पूर्ण । बेपून स०२६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३३००. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १२ । घा० ११ × ५ इचा। ले० काल स० १६४१ घासोज मुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बुंदी ।

प्रशस्ति - स्वत् १६५१ वर्षे आधित सुदी ६ शुक्रवासरे स्माधाक्ष देशे राजाधिराज श्री मानसिंह राज्य प्रवर्तमाने श्री मुलसचे सरस्वती गच्छे बलात्कार गरी श्री कृदकु दाचार्यान्वये ।

३३०**१. प्रतिस**० ६ । पत्र म० १४४ । बा० ६२ ४ १६७। ले॰काल सं०**१८७४ घाषाढ** मुदी ४ । पूर्ण । वेप्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—भट्टारक मुरेर,कीर्तिक गुरू भ्राता कृष्याबन्द्र ने दौलितराव महाराज के कटक में लिखा गया ।

३३०२. प्रति सं० १ । पत्र स० १६ । ग्रा० १० ४४ १२वा । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्नाय, चौगान ब्रुदी ।

३३०३. प्रतिसं० १० । पत्रस० ११६ । घा० १० × ४ इला । ले० काल स० १६३२ । पूर्णे । वेष्टनसं० १३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर पात्र्वनाय चौगान बूंदी ।

विशेय-चम्पावती मे प्रतिलिपि की गयी थी । प्रशस्ति प्रपूर्ण है ।

३२०४. सम्बूत्वामीचरित्र-पाष्टे जिनवास । पत्र स०३-४६ । द्या० १०१४ ४१ हरू । भाषा—हिन्दी (प०) । विषय —चरित्र । र०काल स०१६४२ भारवा बुदी ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टुन सं०२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष---प्रति भग्रद है।

३३०६. प्रति सं० २ । पत्रस० ६७ । घा० ८ ४ ४ इच । ले०काल स० १८८६ । अपूर्ण । वेहनसं० ६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष - प्रतिजीर्ग है। कामा मे प्रतिलिपि हुई थी।

**३३०७. प्रति सं० ३ ।** पत्रस० १३० । ब्रा० ४<sup>२</sup> ४ ४<sup>2</sup> इत्ता । ले०काल स० १८२२ मार्गणीयं सदी ११ । पूर्ण । वेटन सं० १०५ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर करीली ।

बिरोष — प्रति गुटकाकार है । ग्यानीराम ने सर्वाई जेंपुर मे प्रतिलिपि की थी । पत्र १२७ से बौबीमी बीनती बिनोटीलाल लालचंद कत ग्रीर है ।

**३३००. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० १२४ । धा० ८  $\times$  ५ $^3_2$  इख । ले॰काल स० १६२४ कानुन सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं० ५/४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

#### ग्रन्तिम---

सबन सोलासे तौ मण, वियालीस ता उपरि गए।
भादो बुदि पाची गुरुवार ता दिन कथा कीयो उचार।।
धनवर पातसाह कउ राज, कीन्ही कथा धर्म कै काजु।
कोर धर्म निषि पाना साह, टोडर मुन प्रागरे सनाह।।
ताक नाव कथा हुंह धरी, मधुरा पासै नित ही करी।।
पिलवदास धर मोहनदाम, रूपमण्डु अरू नस्भीदास।।
धर्म बुद्धि तुम्हारे हियो नित्य, राजकरहुँ परिवार मजुन।।
पर्छ मुने जे मन दे कोय, मन बख्ति कर पार्च मोय।।१।।

मिती फागुन सुदी १ गुक्रवार स॰ १६२५ को मदा सुख वैद ने पूर्ण नगर मे प्रतिलिपि की थी।

**३३०६. प्रति सं० ४.।** पत्र म० २६ । घा० ११ $^2_i$  $\times$ म इन्त्र । ले०काल म० १८४४ । घपूर्ण । के० सं० ४६ $^2_i$ २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पत्रायती दूनी (टोकः) ।

**३३१०. प्रतिसं ६ ।** पत्रस० २४२ । घा० १३ × ६३ इच । लेक्सल स० १६२० । पूर्या । बेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर णेलाबाटी (सीकर) ।

विशेष---स॰ १८४१ की प्रति से प्रतिनिधि की गई थी।

३३११. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २८ । सा० ११ $\frac{3}{7} \times ६ \frac{3}{5} \times 9$  । ले०काल स० १६६४ सगसिर सुदी द । पूर्ण । लेष्टन स० १४० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर फतेहपुर शेकावाटी (सीकर) ।

विशेष--प्रति सुन्दर है।

३३१२. प्रति सं० मः । पत्र सं०३६ । स्ना०११×४ १ इ.च.। ले० काल स०१७४४ वेगाख सुदी १३ । पूर्या । बेहन सं०११७ ।प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसभी कोटा ।

विशेष--ताजगंज भागरा मे प्रतिलिपि हुई।

३३१३. प्रतिसंo ६ । पत्रसंo २० । प्राo १० $\frac{2}{3} \times o$  इ.स. । ले० काल सo १६४४ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसंo ६/७ । प्राप्ति स्थान—दिo जैन पंचायती मन्दिर प्रलवर

**३३१४. प्रतिसं० १०।** पत्र स०२१ । लेक्काल स०१६२६ । ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्णे । बेकुत म०७/४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर प्रलंबर ।

• **३३२४. प्रति सं० ११ ।** पत्रस॰ ६२ । ग्रा॰ ११×४ हुँ इश्व । ने॰काल × । श्रपूर्ण । केइन सं० १०१ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर वोग्सली कोटा ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

**३३१६. प्रतिसं० १२** । पत्रस० २३ । ग्रा० १२ है ४६ है इ.स. । ले०काल स० १६०७ । पत्रों । केवन स० २७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

**३३१७ प्रतिसं०१३।** पत्रस०२४ । ले०काल स०१६३०। पूर्णः । **बेष्ट**नसं०२ । प्राफ्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

**३३१⊏. प्रति सं० १४।** पत्रस० १८ । ग्रा० १२३¦४६ इ'च। ले० काल स० १८०० माध बृदी ⊏। पूर्या। वेस्टन स० ४६/४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)

३३**१६. जम्बूस्तामी चरित्र – नायूराम लमेत्र ।** पत्रस०२८ । घा० ११ × ७<sup>३</sup> इन्छ । भाषा-हिन्दी ग०। विषय — चरित्र । र०काल × । ले० काल स०१६८६ प्रपाढ मुदी ११ । पूर्ण । वेष्टुन स०१६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर बेलावाटी (सीकर) ।

विशेष-हरदत्तराय ने म० १६६१ कालिक मुदी १४ अप्टाहिन का पर चढ़ाया था।

३३२०. जस्बू स्वामी चरित्र $--\times$ । पत्र स० मः भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$ ।  $\gamma$ ण्णं। बेष्टन स० ७३६ । **प्राप्तिः स्थान**—वि० जैन पदायती मन्दिर भरतपुर ।

३३२१. जम्बू स्वामी चरित्र— $\times$ । पत्र स०२०। ग्रा०२० $\frac{2}{5}\times \frac{1}{5}$  इला । माघा-हिस्दी गढा प्रमाव । विषय—विष्य । र०काल  $\times$  । ले० काल म०१८२६ । पूर्ण । वैष्टन म०२७६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष - सवत् १८२६ जेष्ठ बुदी ४ बार सोमे लखीवे माजपुर मध्ये लीखत धाराजा सोना ।

३३२२. जम्बू स्वामी वरित्र— $\times$ । पत्र स०१। प्रा०१ $\times$ ४ इत्र । भाषा-हिन्दी (ग०)। विषय-चरित्र । र०काल  $\times$ । ले० काल स०१७४= माह सुरी ११। पूर्ण। वेष्टन स०११। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रुदी)।

३३२३. जस्बू स्वामी चरित्र—  $\times$  । पत्र सं०७ । मा० ११· $\times$  ६ इख । माषा-हित्ती । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनस० ६५/५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पास्त्रेनाथ मन्दिर हन्दराढ (कोटा) ।

३३२४. जम्बू स्वामी चरित्र— $\times$ । पत्र त० १३४। मा० १०  $\times$  ४ इञ्च । भाषा-प्राहत-संस्हत । विषय-चरित्र । र०काल $\times$ । ले० काल  $\times$ । सपूर्ण । बेष्टन सं०१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संक्षेत्रकाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- बीच २ मे पत्र नहीं हैं।

३३२४. जयकुमार चरित्र—ब. कामराज । पत्र सं० ६१ । प्रा० ११  $\times$  ४ इञ्च । माया—सस्क्रत । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० ३१० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रथवाल महिर उदयपर ।

विशेष-६१ से आगे के पत्र नहीं है।

३३२६. प्रति सं० २ । पत्र स० १३२ । द्या० ६३ ४ ४ ई इचा । ले० काल सं० १०१० पौष सदी १२ । प्रपूर्ण । बेपन स० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

विशेष - पत्र स० ६२ से ६५ व ११२ से १३१ तक नहीं है।

भरतपुर नगर मे पाण्डे वखतराम से साह श्री चूढामिंग ने प्रतिलिपि कराई थी।

३३२७. जसहरचरिख—पुष्पदंत । पत्र स०६१ । घा० १०% ४४ द च । भाषा — घपभ्र स । विषय — काव्य र०काल् ४ । ले०काल् ४ ! कपूर्ण् । वेष्टनस०२७१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तीवान जी कामा ।

३३२८. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६३ । धा० १० र्रे ४ ४ है इश्व । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर दबलाना (बुदी) ।

३३२६. जसहर चरिउ $--\times$ । पत्रस० २६। मा० ११ $\frac{1}{3}\times$ ५ इख । माषा-प्रपन्न म विषय—काल्य। र०काल्  $\times$ । लेकाल स० १५७६ मानौज सुदी ७ । पूर्णः। बेष्ट्रनसंग्रह्म स्थान-भद्रारकीय दि० जैन मदिर मजभेर।

विशेष - प्रति सस्कृत टिप्पग् सहित है ।

३३२०. जिनदत्त चरित्र —गुराभद्रावार्य । पत्र स० १२ । प्रा० १२ $\frac{1}{5}$  $\times$  $\frac{1}{6}$  इव । माषा—संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । वेष्टन स० १६४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

३३**३१. प्रतिसं० २ ।** पत्र सं०४५ । म्रा०११×५३ इ**च** । ले०काल × । बेष्टन स०१६५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३३३२. प्रति सं० ३ । पत्रसं०४४ । घा० ६४६ इथा । ले०काल ४ ।पूर्णं । बेष्टनस० २२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

३३३३. प्रति स० ४ । पत्र म० ३६ । घा० १२ 🗴 ५.} इ.च । ले० काल स० १८६२ । पूर्ण । वे० म० २३४ **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर ग्राभिनन्दन स्वामी बंदी ।

विशेष - कोटा के रामपुरा मे श्री उम्मेदर्मिह के राज्यकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

३३३४. प्रति सरुण ४ । पत्रसः ३६ । छा० १२×४ इश्व । लेक्नाल × । पूर्ण । बेष्टन सं० १२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्राप्तिन्दन स्वामी ब्रुटी ।

विशेष-यह पुस्तक सदामुख जी ने जती रामचन्द्र को दी थी।

३३३४. प्रतिसं०६ । पत्र स०६१ । मा०६१ ४४ हुइ श्वाः ले∘काल **४ । मपूर्णः वेष्ठक** सं∙७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा । **३३३६. प्रति सं० ७** । पत्र स० ४३ । प्रा० १० ै $\times$  ४ है इञ्च । ते० काल  $\times$  । पूर्ग । वेष्टन सं० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन श्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

३२३७. प्रतिसंब्दापत्रसः ५०। बार् ११९४५ इचा । लेर्काल 🗴 । पूर्णं । बेष्ट्रन संब १२६ । प्राप्ति स्थान—दिरुजैन स्रवाल मन्दिर उदयपर ।

विशेष-- मगवतीदास ने प्रितिलिप की तथा नेमिदास ने संशोधित की थी।

३३३८. प्रतिसं $\bullet$  ६ । पत्रस $\bullet$  ३६ । प्रा $\bullet$  १२ $\frac{3}{2}$   $\times$  ५ $\frac{3}{2}$  इन्छ । ले $\circ$  काल स $\bullet$  १६१६ मर्गासर बुदी ३ । पूर्ण । बेटून स $\bullet$  ११६ । प्राप्ति स्थान – दि $\circ$  जैन प्रगवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति पर्ग है। गिरिपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

३३२८. जिनदत्त चरित्र—प० लाखू। पत्र स०१६४। ग्रा०११४४ है इश्वा आया— ग्रपभंगः। विषय — चरित्र। र०काल स०१२७४। ले०काल 🗴 । अपूर्णः। जीर्णं शीर्णः। वेषृत स०६ सः। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बसा बीयपथी दौसा।

३३४०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १००-१४६ । घा० १०३४ ५ इखा । ले० काल 🗴 । घपूर्ए । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वीसपथी दौसा ।

३३४१. जिनदत्त चरित्र—रत्नमूष्ण सूरि । पत्रस०२० । मादा —हिन्दी । विषय— चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनस०८५/७३ । प्राप्तिः स्थान–दि० जैन सम्भवनाथ गन्दिर उदयपुर ।

विशेष--हासीट नगर मे ग्रथ रचना हुई थी।

३३४२. प्रति सं० २ । पत्रस० २३ । ते० काल मं० १८०० । पूर्ण । बेष्टुन म० १६/७२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

३३४३. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल imes । पूर्णं । बेष्टन स० ६७,७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

३३४४. जिनदत्त चरित्र— × । पत्र स०६२। ग्रा०१२३ ४७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल × । ने०काल स०११६६ ज्येष्ठ बुदी ११। पूर्श । बेप्टन स०१६७। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर फनेट्यर शेखावाटी (गीकर)।

३३४५. जिनवत्तं चरित्र-विस्वमूष्यगः । गनस० ७१ । झा० ११३४४३ इश्व । ते०काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टनस० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जन पनायती मन्दिर बयाना ।

#### प्रारम्म--

श्रीजिन वन्दौ भावसों तोरि मदन को बाए। मोह महातम पटल को प्रगट भयो मनु मानु।। १४३

#### मध्यम भाग---

विनितासीं वार्तें कहैं ग्रामी हमारो देस । सुमर ग्राम जन्पापुरी वन में कियो प्रवेश ३३

## चौपई

दम्पति वन मे पहुंचे जाइ सूर्यं घस्त रजनी भई माइ । कही प्रिया बनवारि मिटाइ, समनु करो विस्मै सुखपाई ।।३६।। -

#### ग्रस्तिस पाठ--

संबत सन्नहसं ग्रस्तीय, नाम प्रमोदा ब्रह्माबीस, ग्रगहन वदि पांचे रिववार, ग्रस्तेय ऐन्द्र जोग सुघार । यह चरित्र पूर्ण जब भयी, ग्रति प्रमोद कविता चित ठ्यो, यह जिनदत्त चरित्र रसाल, तामैं भासी कथा विशाल ।

भव्यकजन पहियो चितुलाड पठत सुनत सम्यकत्व हिठाई । धर्म बिरुद्ध खन्द करि छीन, ताहि बनायौ पम्यौ परवीन ।

भव्य हेत मैं रच्यो चरिन, सुनो मन्य चित दें वृष मित्र। याके सुनत कुमति सब जाइ, सम्मक्तिय्द मुख होइ भाइ ॥६४॥ याके सुनत पुष्प की वृद्धि, याके मुनत होई वृह रिद्धि। यातें सुनो भव्य चितलाइ, याके मुनत राप मिट जाइ। याहि सुनत मुख सम्पति होई, यातें मुनत रोग नहीं कोइ। याकें सुनत दुख मिट जाई, याकें मुनत सुख होई भाइ॥६६॥ नर नारि मन देकें सुनो, ताको जमु तिलोक में गानो। यह चरित्र सुनियो मन लाइ, विकासपूरण मृति कहत बनाइ॥

खरवं

गना सागर भेर लीट धामापति मना।
ब्रह्मा विरण महेस तोव तिथि गौरी धना।
जोतो जिनवर धर्म नाग श्रुव मडल सीभा।
जो ती सिद्धममृह मुक्ति रामा मू लोभा।
तो ती तिश्रो च यह श्री जिनदत्त चरित्र।
विश्वमृष्यम् भाषा करी मुनियो अविवन मित्त।।६८।।
। ह मणिया है।।

३३४६. प्रति सं० २। पत्र म० ७८। बा० ११ × ५ इखा। ने० काल स० १८२३ चैत सुदी १३।पूर्ण। वेष्टन स० १२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मदिर करौली।

विशेष-सोमचन्द भोजीराम अप्रवाल जैन ने करीली मे प्रतिलिपि करवाई थी।

३३४७. प्रतिसंठ ३ । पत्र स०४२ । घा०१२३ ४४६ इथा। ले०काल ४ । पूर्ण। बेष्टन स०२२ । प्राप्ति स्थान—दिव्जन मन्दिर बैंग् ।

३३४८. प्रतिसं० ४ । पर्णसः १०४ । प्रा०६ $\frac{2}{5} \times \frac{3}{5}$  इला । ले० काल स०१८७४ प्रगहन बुदी १० । पूर्ण । वे० स०६४/८ । 'प्रा**थ्यिः स्थान** – दि० जैन मन्दिर सौनाष्ट्री करोली ।

विशेष---वजलाल ने गुमानीराम से करीली में प्रतिनिधि करवाई थी।

**३३४६. प्रतिसं० ५**। पत्रस**० ७१। लेब्काल स०१००० चैत सुदी ११** गूप्पै। बेष्टन संब **१६०। प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३३४०. प्रति सं०६। पत्र स०८७। ने०काल ×। पूर्णं। वेष्टन सं०३६२ । प्राप्ति स्थान-—दि० त्रैन प्रवायी मदिर मरतपुर।

३३**५१ः प्रतिसं०७** । पत्रसं०५१ । घा०१३ ४ ८<sup>3</sup> इञ्च । ले०काल सं०१६५६ मासोज बुदी ५ । पूर्णः । बेष्टन सं०६३/८ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन पचायती मन्दिर, प्रलवर ।

३३४२. जिनदस्त चरित्र माषा—कमलनयन । पत्र स० ६६ । द्या० १० १४ ८ इश्व । माषा—हिन्दी । विषय क्षया । २०काल स० १६७० । ले०काल 🗙 । पूर्ण । वेस्टन स० २८३ । प्रास्ति स्वास—२० ४० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष-- ० ७ ह

गगन ऋषीश्वर रध्रफुनि चन्दतथा परमान । सब मिल कीजे एकद्वे धवतसर पहिचान ।।

३३५३, जीवन्धर चरित्र —  $\times$  । पत्र स॰ १४० । आ॰.११ $\times$ ४ ६ख । भाषा—संस्कृत । विषय —चरित्र । २०काल  $\times$  । ले॰ काल स॰ ११०४ । पूर्ण । वेष्टन सं॰ १२४ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर थी महावीर बुदी ।

३३५४. जोबन्धर चरित्र — गुमचन्द्र । पत्र स०११६। प्रा०११४४ हे इच । भाषा— सस्हत । विषय — चरित्र । ० काल स०१६०७ । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स०४४ । प्राप्ति स्थान— २० विक जैन मन्दिर प्रवंगर ।

३३४४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८३ । छा० ११३ ४ ४ इञ्च । ले०काल ४ । घपूरा । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३३५६ प्रतिसं० ३ । पप्रस० ७६ । धा० १२ ४ ६२ इश्वः । ले०काल ४ । पूर्णः । वेष्टन सं० २०६ । प्राप्ति स्थान — टि० जैन मन्टिर बोरमली कोटा ।

३३५७. प्रति स०४ । पत्रतः ६१ । छा०११४५ इश्वः । ले०काल स०१६१४ ।पूर्णः। वेष्टन स०६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पदायती देनी (टोक)

प्रमहित—मन्त् १६११ वर्षे फाल्गुन बुदी व बुधे श्री मुलमधे बलात्कारमणी सरस्वतीमच्छे कुन्द-कुन्दाचार्यान्वयं मृद्राक श्री विजयकीनिदेश तत्यहे भ० श्री शुन्यन्द्र देशस्तस्य शिष्य श्राचार्यं श्री दिसस-कीत्तिस्तस्य शिष्य बद्धा मोगाल पटनार्यं श्रीवश्च सित्त ध्रोनेक मीमर राज सुनेदित चरणारिवद चतुरसीत्य सक्त लन्द्रमी लीझत राज्य धामकरण राजे श्रीविज्ञ प्रनादात्रि विराजिते सक्तिंद्धसुरू थावकजन सभूत शुद्ध सम्यक्तवादि द्वादगत्रत प्रतिपालक पट् जीवनकाय द्योगलाजित चातुर्यं गुणालकृतिकप्रह सदामद् मुर्चाका प्रतिपालन पुरेशो विराजिते गिरामु गिरपुरे जिन पूजनाया गख्द गच्छदिमः बहुमि स्त्रीपुर्यं नित्योत्सवे विराजिते निर्देशित कृति लीला विलास श्री धारिनाच चैत्यालये हुद्धान्यये स्वयमप्रवर्ण मिणसमान सच्यी समसी तस्य भाव धम्मा तथा.मुत प्रथम जिनवज्ञवीतायजनपतिसर्यं चर्गुवस्य सोचनुरसामामिक जनदान महोस्तव- जगमाल तस्य भातृं स॰ जयमाल मार्या जयतादे तस्य मगनी पूर्व पुष्पापित पूर्णं लिलित लक्षणं तस्त्र ना सभट्टं गर्णोभूया पक्ष तिलकोपमा सीनेन सीता समामाश्राविका जयवती द्वितीया अगनी माका निमित्य जीवचर चरित्र ज्ञास्त्र लिखाप्यदन कसंक्ष्यार्थं।

३३५६. जीवन्धर चरित्र—रह्मू। पत्र स० १८५। घा० ११ $^{1}$  $\times$ ४ $^{1}$  इज । भाषा— प्रपन्नं । विषय —चरित्र । र०काल  $\times$  । से० काल स० १६५६ भावा बुदी ७ पूर्ण । बेप्टन स $^{2}$  । प्राप्ति स्थाल — टि० जैन मदिर फतेहपर भेखावाटी (सीकर)

विशेष — प्रकवर के शासनकाल में रोड़ितगढ़ दुर्ग में बालचन्द सिगल ने मडलाचार्य सहसकीर्ति के लिए पाड़े केसर से प्रतिलिप करवार्यों थी। प्रशस्ति काफी बड़ी है।

३२,४६. जोनन्धर चरित्र—दौलतराम कासलीवाल । पत्रस० ६०। ब्रा०१०) ४६३ इ.च.। भाषा — हिन्दी (पद्या)। विषय — चरित्र। र०काल स०१६०४ प्रापाद सुरी २। ले॰काल स० १६०४। पूर्ण । बेक्टनस०२२०। प्राप्ति स्थान— दि० जैन क्षत्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—स्वय प्रथकार के हाथ की लिलि हुई मूलप्रति है। इस ग्रथ की रचना उदरपुर धानमडी प्रथमाल जैन मन्दिर में सं रैप्प्य में हुई थी। यह ग्रथ ग्रय तक प्राप्त रचनाधों के अर्तिरिक्त है तथा एक मुस्दर प्रबन्ध काव्य है।

विशेष—दक्षिणदेश मे मुरमग्राम मे चन्द्रप्रमु चैत्यालय मे हुमङक्षातीय लग्गालाह मे बाई ज्येष्ठी ताराचन्द बेटी श्री गुजरदेश मुमेई (मृबई) ग्रामे ज्ञातावरणकर्म क्षयार्थ शास्त्रदाना करनाव।

**३३६१. जीवन्धर चरित्र — नथमल विलाला** । पत्रस० १०४ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  १ च । माषा—हिन्दी पद्य । विषय — चरित्र । र०काल स० १०३४ कानिक सदी ६ । नै० कान(x) । पूर्ण । बेष्टुन स० ८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सदिर प्रतेहपुर नेखावाटी (सीकर) ।

विषय—गोरवराम की धर्मपस्ती जडिया की माता ने बीर स०२४४२ में बड़े मंदिर फनेह्युर में चढ़ाया था।

३३६२. प्रतिसं०२ । पत्र स०४४ । आ०६४६ इश्व । ले० काल ८ पूर्ण । बेपून स०६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर पार्थनाथ चीगन वृती ।

**३३६३. प्रति सं० ३ ।** पत्रस० ६३ । प्रा० १२ ४ ६ इथा । ले० काल ४ । पूर्णे । वेष्टनसं० १४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बृदी ।

३३६४. प्रति सं०४ । प्रतस्० १९१ । ग्रा० ११३ $^2$ ४५ । इत्तः। लेब्काल imes । पूर्णं। बेह्न सं०१७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पत्रायती करोली ।

विशेष - करौली में बुधलाल ने लिखवाया था।

३३६५. प्रतिसं**० ५ ।** पत्र स० ११४ । घा० १२×६१ इन्छ । ले० काल × । पूर्ण । वे<del>ष्ट्रत सं०६</del>४-११४ । प्राप्ति स्वान-भ० दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपयी दौसा ।

विशेष - तेरापंथी चिमनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३३६६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८७ । द्या० ११४ ८ है इत्था। ले० काल ४ । द्यपूर्ण । बेष्टत सं० १३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष -- दौसा में प्रतिलिपि हुई थी।

३३६७. प्रतिसं०७ । पत्र स०१०४ । ले० काल स०१६३२ । पूर्ण ।वेष्टन सं०२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

**३३६८. प्रति स० ८।** पत्र स० २१३। म्रा० १३}४६ इ.च.। लेल्काल स० १८६८ **मदवा** सदी ८। पूर्णः। वेष्टनस० १०,६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सीमानी करीली।

३३६६. प्रतिसं०६ । पत्र स० १३७ । ग्रा० १३४६ इंच । ले०काल स० १८३६ मादवा बुदी ३ । ग्रपूर्स । बेष्टन स०६० । प्रास्तिस्थान - दि० जैन पचायनी मदिर करीली ।

विशेष-पत्र २ से ४६ तक नहीं है। नयमल विलाला ने अपने हाथों से हीरापुर में लिखा।

३३७०. प्रति सं० १०। पत्रस० १०४। प्रा० ११३४४ , १३७। ले०काल स० १०३६ भादबा इदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १७१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

> विशेष - सवत् प्रष्टारस सतक गुनतालीस विचार । भादो बदी नृतीया दिवस सहसरस्म वर वार ।। परित्र मुलिल पूरन कियो हीरापुरी सभार । नयमल ने निजकर पकी, पर्म हेतृ निरधार ।।

३३७**१. प्रति सं० ११।** पत्रस० १३० । ले० काल स० ३८११ पूर्ण । वेष्टन स० ६०**।** प्रा**प्ति स्थान**—िद० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

विशेष --गोपालदासजी दीध (डीग) वालो ने श्रागरे मे प्रतिलिपि कराई थी।

३३७२. प्रति सं० १२ । पत्रस० ११-१४६ । ग्रा० १२<sup>९</sup>४७३ इञ्च । **ले०काल ४। घपूर्ण ।** वेष्टनस० ७१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायरी मन्दिर बयाता ।

३३७३ प्रति सं० १३ । पर स० १२७ । ब्रा० १३ ४४३ इला। ले० काल स० १०६७ भारवा सुदी ८ । पूर्णा । वेस्टन स० ४७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पत्रायती मन्दिर कामा ।

विशेष - प्रात्मभवन्द के पुत्र जिमानद तथा विजयराम सहेलवाल बनावरी गोत्रीय ने बयाना में प्रतिलिपि की । हीरापुर (हिण्डोन) के जनी वसन्त ने बयाना में प्रतिलिपि की की थी ।

३३७४ प्रति स०१४ । पत्रस०१४२ । ग्रा०१२ ४ ६ १ इश्व । ले०काल ४ । सपूर्ण । वेष्टनसंक१२० । प्राप्तिस्थान — टि० जेन प्रवासनी मन्दिर बयाना ।

विशेष प्रशस्ति याला ग्रनिम पत्र नही है।

३३७४. प्रतिस०१४ । प्यसं० १३४ । छा० १२ $\frac{3}{2} \times 9\frac{3}{2}$  इश्व । ले० काल १६४६ चैत्र बुदी ४ पूर्ण । बेष्टुनसं० ४८० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन, मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेख - बद्रीनारायरा ने सवाई जयपर में प्रतिलिपि की थी।

३३७६. प्रतिस० १६ । पत्रस० म्४ । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । बेष्टनसं० ७८१ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन पत्रायती मंदिर सरतपुर । ३३७७. प्रति सं० १७ । पत्रसं० १४६ । मा० ८ ै ४६ । से० काल ४ । पूर्ण । बेबनसं०७ । प्राप्ति स्थान— दि०जैन प्रग्रवाल पंचायती मंदिर मलवर ।

३३७८. प्रति सं०१८। पत्रस०१११। मा०१३×८ इञ्च। ले०काल १६६२ भादवा इदी१३। पूर्ण। बेष्टनस०६४,२०४। प्राप्ति स्थान—दि०जैन पवायती मन्दिर धलवर।

३३७६. प्रति स० १६। पत्रस० ११७। ले॰कालस० १६६८ मगसिर बुदी ६। पूर्ण । बेष्टनसं॰ ६५/२०४। प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन पचायती मन्दिर मलदर।

३३८०. प्रति स० २०। पत्र स० ६७-१०७। धा० १२४८ इञ्च । ले०काल ४ । धपूर्ण । बेष्टुत सं० द४ । । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैस्पत्र ।

**३३८१. प्रति स० २१।** पत्रस० १२०। बा० १२३ ४६१ इञ्च । ले०काल स० १६०४। पूर्ण । वेष्ट्रनस० ४७ । प्रा**रित स्थान**—तेरहपथी दि० जैन सन्दिर नैगावा।

३२६२. सार**कुमारचरिउ** — पुष्पदस्त । पत्रतः ६२। सा० १०,१४४) दश्च । भाषा— सप्रजंश । विषय — चरित्र । २०काल ४ । ले०काल स० १६२४ । स्रपूर्ण । वेष्ट्रनस० २४६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान औकामा ।

३२=२. प्रतिसं०२ । पत्र स०६६ । द्या०१०४६ इला । ले०काल स०१४६४ फाल्गुए। इदी १४ । एएं । दे∤न स०३२ । प्रास्तिस्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष - जिनचन्द्राम्नाये इथ्वाकवशे गोलारान्वये साथ वीरसेन पचमी वृती द्यापन निस्मायितम् ।

**३३ म.४. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस**० ३ - ४** म. था० १०१ × ४१ इ.च.। ले०काल × । प्रपूर्ण । वेष्टुन स०१५ । प्रारिः,स्थान — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ध्रजमेर ।

विशेच-पादि ग्रन्त भाग नही है।

३३८%. **७ मिलरिस्ट—महाकवि दामोदर** । पत्रसः ६२ । ग्रा० ११ × ५ इश्व । भाषा— **प्रपन्न** शा विषय-चित्रत्व ।  $\cdot$ ० कार्र  $\times$  । लेकाल  $\times$  । प्रपृष्टं । वेष्टन स० २८ । प्रार्ट्स-स्थान— दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

**दिशेष**--- ६२ से बागे पत्र नही है।

३३८६. त्रिविध्विशालाका पुरस्विरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्रसः १६-११७ । भाषा— संस्कृत । विषय — परित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । स्पूर्ण । बेष्ट्रन स०६६ । प्राप्ति स्थान— सेरहपथी दि० जैन मन्दिर बसवा ।

३३८७. दापालिका चरित्र —  $\times$  । पत्र सं०४। प्रा०६ $\times$ ४) इच । भाषा-संस्कृत । विषय — बरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ५२४ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर अजेर ।

विशेष--मुनिशुभकीति लिखित ।

३३८८. दुगंसबोध सटीक—  $\times$  । पत्रस॰ ४० । प्रा॰ १४ $\times$ ६ $^1_7$  इच । प्राच— संस्कृत । विषय— काव्य । र० काल  $\times$  । से॰ काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्ट्रन स॰ १३ । प्राप्ति स्थान— दि॰ वैन सन्दिर धादिनाय बूँदी ।

३३ व्ह. बुर्घंट काव्य  $\times$  । पत्र सं० १। प्रा० ११ $\frac{1}{4}$   $\times$  ५ इच्च । भाषा — संन्कृत । विषय — काव्य । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । बेष्टन सं० २१४। पूर्ण । प्रास्तिः स्थान — दि० जैन मदिर, सकतर, जयपूर ।

३३६०. **घन्यकुमार चरित्र-गुरामद्राचार्य** । पत्र सं०४० । घा० ११४४ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ठनसं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३३६१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६३ । प्रा० ११×४ इ.च । लं०काल स० १४६५ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० २१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानवी कामा ।

विशेष — देवनाम नगर मे पार्श्वनाथ चौद्यालय मे श्री सूर्य सेन के राज्य मे व श्री रावत वैरसङ्ग के राज्य मे बायुक्तीवाल गोत्र वाले सार्क फौरात तथा उनके वश्यों ने प्रतिलिपि करायी थी।

**३३६२ प्रतिसं० ३**। पत्र स० ४२। ग्रा० ११ × ४ इन्द्रा । लेवकाल स० १४६४। पूर्ण । वेष्टुन स० ७६/३२। **प्राप्ति स्थान**—पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष--- प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवन १९६५ वर्षे ज्येष्ठहरी १९ वृहस्पतिवासरे श्री मृतसर्थे नद्याग्नाये बलास्कारणाऐ सरस्वतीगच्छे कुटकुदान्यशंक्ष्ये भृष्टाक श्री पर-निर्देशस्तदस्वष्टं भ० श्री ग्रु चरावेद्यसस्वास्माये रहेरः नानाव्ये काच्या बालभोत्रे ना० चेत्रसाद्भावां चोक्तिरि सा० नाष्ट्र कि. न्दर तृतीय गागा। नाष्ट्रभायां नदस्यश्री द्विनेमा कु० कुम्। नाला भावा भावा नारसे । गागासार्था गीरशेद एतेया मध्येसा० नाष्ट्र दशास्त्र निर्दाय महत्ताचार्यं श्री धर्मचन्द्रायं दनः यह पुरुक इत्यस्त्र संदर्भ की है।

३३६३, प्रतिसo४ । पत्र मo४४ । प्राo१० $\frac{1}{2}$  $\times$  $Y<math>\frac{3}{2}$ इन्स । लेoकाल सo१६७६ भादवा सुदी २ वेष्ट्रन मo१२६१ । प्रास्ति स्थान – दिoजन मदिर लस्कर जयपुर ।

विशेष - जहागीर के राज्य में चम्पावती नगर में प्रतिलिपि हुई। प्रशस्ति विस्तृत है।

३३६४ प्रतिसं० ४ । पत्रत्त० ४० । घा० ६ $\times$ ४ इच । भाषा—संस्कृत । भाषा—परित्र । र०काल  $\times$  । लेकातस० १५६२ ज्येष्ठ मुदी १० । वेष्टनस० १६३ । प्राप्ति स्थान—दिगम्बर जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - हमनपुर नगर के निमिजन चैत्यालय मे श्रतबीर ने प्रतिलिपि की।

३३६४. प्रतिसं०६ । पत्र स०४१ । घा०११×५ इंच । लेव्काल स०१६०५ माह बुदी ६ । वेष्टन स०१६० । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष — नेशक प्रशस्ति विस्तृत है। तक्षक गढ़ में सोलकी राजा रामचंद के राज्य में ध्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिप हुई।

३२६६. धम्यकुसार चरित्र—सकलकीति। पत्र सं ४६। मा०११  $\times$  Y इच । माषा—सस्कृत । विषय—पित्र । २०काल  $\times$  । ले०काल स० १६७३ । पूर्ण । वेप्टन स० ६५२ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर म्रजमेर ।

३३६७. प्रति सं० २। पत्रस० ५३। ले॰काल × । पूर्ण । बेष्ट्नसं० ४०३/४७। प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि॰ जैन मन्दिर उदयपुर। ३३६८. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २५ । ले॰काल  $\times$  । भपूर्ण । बेष्टन स॰ ४०४/४८ । प्राप्ति स्थार-सभवनाथ दि॰ जैन मन्दिर उदयपुर ।

३३६६ प्रतिसं०४। पत्रस<sup>०</sup>४३। लेकाल X। पूर्ण । बेहन सं०४०५/४०। प्राप्ति स्थान— सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

३४००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २-३४ । ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० ४०६/४६ । प्राप्ति स्थान-सभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

३४०**१. प्रति स० ६ ।** पत्र सं० ७० । म्रा० ११ imes ५ $rac{1}{2}$  इन्त्र । ले० काल imes । वेष्टन स० १५८ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपूर ।

३४०२. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ४३ । ब्रा० १० ४६ ] इचा । ले० काल स० १८६७ । पूर्ण । वे० स० ३८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर क्रभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेय-वृंती मे पं० नन्दलाल ने प्रतिलिपि की।

३४०३. प्रतिसं० मः । पत्र स० ४१ । घा० १०} ४४ ३ इश्वः । ले० काल स० १६६७ पूर्णः । वेष्टन स० ८८ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर ग्रीभनदन स्वामी, बंदी ।

विशेष -- चपावती मे ऋषि श्री जेता जी ने प्रतिलिप करवायी।

३४०**४. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० २० । घा० १३×५१ इ.ख. । ले० काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं०६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ बृदी ।

विशेष -- बन्दावती में नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई।

३४०**५. प्रतिसं० १०।** पत्र स०४२। म्रा० १२४६ इचा । ने० कान ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १९७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर पार्थनाथ चौगान बंदी ।

३४०**६. प्रति स० ११।** पत्र स० ६-४०। घा० १२×५१ इखा। लेक्काल स० १७४८ माघ सुदी ४। पूर्ण। बेपून सं० २१३। **प्राप्ति स्थान**---पार्यनाय दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ।

३४०७. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ३७ । धा०१२ ४ ६खा । ले०काल स० १७६६ फागुरा सुदी १२ । पूर्ण । बेटनसं० ६६ । प्राप्ति स्थान वि० जैन मदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोक)

विशेष--प० केशरीसिंह ने सवाई जयपुर में लिखा।

श्चितम प्रशस्ति—पातिसाह श्री महमद साह जो महाराजाविराज श्री सवाई जयांमह जी का राज में लिखी सागा साह के देहरी जी मध्ये प० बालचद जी के शास्त्रमुं उतासी ख्रै जी।

३४०**८. प्रतिसं० १३ ।** पत्रस० ४७ । प्रा० १० <sup>१</sup> ४ ५ इच । ले॰काल स० १८५८ जेष्ठ वटी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान** दि॰ जैनसन्दिर बोरसनी कोटा ।

विशेष - प॰ शम्भूनाथ ने कोटा में लिखाया।

३४०**६ प्रतिसं०१४ ।** पत्रस०६० । ले०काल स० १७४२ वैसाल बुदी२ । पूर्ण । वैष्टनसं०२७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-कनवाडा नगर मे प्रतितिपि हुई।

३४१०. प्रतिर्स**०१**५ । पत्र स०२० । आ०११×५६ च । ले०काल स०१८१२ आर्वसा सुदी २ । पूर्णे । बेष्टन सं०५७-२० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ा दीसपथी दौसा ।

विशेष-देवपुरी में प्रतिलिपि हुई।

**३४११. प्रतिसं० १६** । पत्र सं० ४२ । घा० ११३ ४ ४३ इन्छ । ले०काल स० १६३४ पूर्ण । वेष्टुन स० १२४-४७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डगरपुर ।

प्रशस्ति सन्त् १९३४ वर्षे प्रासोज बुदी ४ धनौ थी मूलसथे सरस्वती गच्छे बलात्वारगरो मट्टारक थी कुंदकु राजार्थात्वये भट्टारक श्री सत्तलकीत्ति तत्यट्टे भ०थी जसकीत्ति तत् शिष्य मडलाचार्य श्री गुराचंद्र तन् शिष्य षाचार्यं श्री रत्तचद्व तत् शिष्य बद्धा इरियाचाय पटनार्थं।

**३४१२. प्रति सं०१६** । पत्र स०२४ । प्रा०१२ <sup>4</sup> ४६ इथा । ले०काल स०१८७१ । पूर्ण । वे• सं०४३-२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इयरपर ।

विशेष-- लिखी भरतपूर माह मिती जेठ वदी १ वार बीमपतवार सवत १८७१।

**३४१३ प्रति सं०१६** । पत्र सं०४५ । आ०११८४ ुँदला । ले०काल स०१७२८ पूर्णः । वेकन स०४८-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डगप्पर ।

प्रशस्ति—स० १७२८ वर्षे श्रावसा वदी ४ । जनी रामगढ मध्ये लिखीतं ।

भ० विजय कीर्त्ति की यह पूस्तक है ऐसा लिखा है।

३४१४. घन्यक्मार चरित्र—ख० नेसिद्तः । पत्र स०२४ । घा०१०३ ४४ । घाषा—सम्कृत । विषय—चरित्र । प्रकाल ४ । लेक्नाल स०१७०२ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०४१३ । घाषिः स्थान—स० टि० जैन महिर ग्रजीर ।

३४१५. प्रति सं० २ । पत्रतः २३ । द्याः १०  $\times$  ६ इश्वः । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । बेष्टन सं० ५५ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर राजमहल टोकः ।

३४**१६. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० २० । प्रा० १२ $\times$ ५ इख । ले**०का**ल म० १५६६ वैशाल सुदी ७ । पूर्ण । शेटन स० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष —प्रति जीरां है।

३४१७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २४ । या० ११६ ८४ | इस्त्र । ले० काल स० १७२६ मासोज इदी १४ । घटन स० १५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लगकर, जयपुर ।

विशेष — बालिक जन के पुत्र जोसी नायू ने कोटा में महाबीर चैत्यालय में प० बिहारी के लिए प्रतिलिपि की।

**३४१८. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० २६ । आ० ६<sup>3</sup>, ४ ४ ३% । ले**०**काल स० १७६६ माघ बुदी ४ । वैष्टुतसं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष—भत्तायनगरके पाव्यंनाय चैत्यालय में अ० टेकचद्र के शिष्य पाण्डे दया ने प्रतिलिपि की।

३४१६, प्रतिसं०६। पत्र स०४३। प्रा००४४ ¦ इखा । ले० काल सं०१७२४ मगसिर बुदी ५। बेष्टन स०१६१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर।

विशेष—्रीडौली नगर के पार्थ्वनाय चैत्यालय मे श्री झाचार्य कनककीर्त्त के शिष्य प० रायमल्ल ने स्वपठनाय प्रतिलिपि की ।

३४२०. प्रति सं०७ । पत्रस०४१ । ग्रा० ६३,४४३ इ.च । ने०कान सं०१७७१ । पूर्ण । बेष्टन सं०५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ बूंदी ।

३४२१. प्रति सं० द्र । पत्रस०२७ । ग्रा०१०४४ ) इचा। ले० काल स०१७०३ पीष बुदी १२ । पूर्ण। बेट्टनस० ७६ । प्राप्ति स्थान− दि० जैन पवायती मन्दिर दूनी (टोक) जीर्ण।

विशेच - बहा मतिसागर ने स्वय अपने हाथों से लिखा।

३४२२. प्रति सं० ६। पत्र सं०१८। प्रा०१० रे×५ इश्वा ते० काल सं०१६६८ पूर्ण । बेष्टन सं०१४८-७०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का हुंगरपुर।

प्रमास्ति— संबत् १९६८ वर्षे क्रांत्तिक मुदि २ रवी प्रतापपुरे श्री नेमिनाय चैरवालये महारक श्री बादिभूत्य तस्सीय प्राचार्ये श्री जयकीति तस्सीय्य ४० तदराज पठार्थं उत्तेश्वर गोत्रे सा० छाछा मार्यी भावका नयो द्वत सा० सतीय लस्य भार्यो जयती दि० पुत्र श्री वत तस्य मार्या करमदती एतं स्व ज्ञानावर्णी क्रामें झार्यार्थं।

३४२३. **धन्यकुमार चरित्र—भ० मिलसमूयरा ।** पत्रस० २० । ब्रा० ११४५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाय चौगान बंदी ।

विशेष--- प्रति प्राचीन है।

३४२४. **घरवकुमार चरित्र** —  $\times$  । पत्रतं ५ । प्रा० १२ $\times$ १ $१ हञ्च । माधा — सस्कृत । विषय — चरित्र । र०काल <math>\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० १७८/५३ । प्राप्तिः स्थान — पार्थनाय दि० जैन मनिर इन्दरपढ (कीटा) ।

३४२५. **धन्यकुमार चरित्र — खुशालचन्द काला ।** पत्रत०४० । प्रा० ११४५ हे इन्च । भाषा — हिन्दी । विषय — चरित्र । र०काल 🗶 । लेकाल सं०१६५७ । पूर्ण । वेष्टन स०१४६ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रत्रमेर ।

३४२६. प्रतिसं० २ । पत्र सं०४२ । घ्रा० ११% ८०० इ.च. । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं०३४ । प्राप्ति स्थान —भटारकीय दि॰ जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३४२७. प्रति सं० ३। पत्रस० ६१। बा० १० ४४ १ इश्व । लेक्सल 🗴 । पूर्ण । बेहन स० २०। प्राप्ति स्थान —तेरहनथी दि० जैन मदिर नैसावा।

विशेष-श्रीतम पद्य निम्न प्रकार है-

चद कुशाल कहै हित लाय,

जे ज्ञानी समर्फ निज पाय ।

मुधातम लो लावन भ्रान,

धमुभ कमं सब ही मिट जात **।** 

प्रारभ के तथा बीच २ के कई पत्र नही है।

३४२ द. प्रति सं०४ । पत्र सं०५२ । बा०६१ ४५ इचा। ले० काल स०१६७६ । पूर्ण। बेष्टत स० २०। प्राप्ति **स्थान**— प्रवाल दि० जैन मन्दिर नैसावा।

३४२६. प्रति सं० प्र.। पणतः० ३४ । आ० १२) ४६ १ इत्यः । लेक्सल स० १०६६ । पूर्णः । वेष्टनः स० २१ । प्राप्तिः स्थान-दि० जैन मंदिर कोटयो का (नैरावा)

३४२०. प्रतिसंग् ६ । पत्रसंग्रंग । आग् ११ 🗙 ५ इत्व । सेश्काल संग् १६०३ । पूर्ण । बेष्टन संग्रहः । प्राप्ति स्थान—दिन्जन मदिर, पचायती दूसी (टॉक) । ३४३१. प्रति सं० ७ । पत्रस० ३१ । प्रा० ११ $\times$ ५ इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० ६१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मंदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

३४३२. प्रति सं०६ पत्र स०१६ । धा०१०३ $\times$ ५ इ.च । ले० काल  $\times$  । धपूर्एं। बेहन सं०२३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जन मदिर राजमहल टोक ।

३४३३. प्रति सं० ६ । पत्र स० ६६ । घा० १० $^1_i \times ^1_j$  इंच । ले० काल सं० १८६२ फायुन सुदी ७ पूर्णा । वेप्टन स० ३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल टॉक ३

विशेष — प्रमीवन्द के लघु भाता भावचन्दजी ने राजमहल के चन्द्रभग चैल्यालय में बाह्मए। सुख-साल वाम टोडा से प्रतिलिपि करवाई।

३४३४. प्रति सं०१०। पत्र स० २१। ग्रा०१४×७१ ६ घ। ले०काल स० १६०७ भादबा बुदी ६। पूर्ण। बेहन स०४६। प्राप्ति स्थान—दि० जन मदिर श्री महावीर बूदी।

३४३५. प्रति सं० १९ । पत्र स० ६३ । प्रा०१०×७ इंच । ले०काल स० १६४५ । बेष्टनसं० २२२ । प्राप्ति स्थान—६० जैन मदिर नागदी बुरी ।

३४३६, प्रतिसं० १२। पत्र स०६६। आ०६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इंच। ले० काल स०१=७४ सावन सुदी १५। पूर्ण। वेस्टन स०१४०। प्राप्ति स्थान—दि०जैन पचायती मन्दिर करौसी।

विशेष-नेभी बन्द्र ने गुमानीराम से करोली में प्रतिलिपि कराई।

३४३७. प्रति सं०१३ । पत्र स०४१। घा० ६ै४६ इंच । ले० काल सं०१७०० बैशाख सुदी १ । पूर्या । बाटन स०७३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

विशेष -- धवावती नगरी मे प्रतिलिपि हुई।

३४३ द. प्रति सं०१४ । पत्र स० ६४ । घा० ६४४ देवा ले० काल सं०१ ६१६ माघ शीर्षस्वी१३ । पूर्णावेष्टन सं०१४६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

३४३६. प्रतिसं०१५। पत्र स०५५। ब्रा०१३  $imes \sqrt[3]{2}$  इ.स. । ले॰ काल स॰ १८८७ प्रषाढ सुदी द ।। पूरं। बंदुत स०१६०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रापती मदिर करौली।

३४४०. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ३४ । ले० काल 🗴 । पूर्णा । वेप्टन सं०१७ । प्राप्ति स्थान— ि० जैन प्रवासनी मदिर डीग ।

विशेष — करीली मे प्रतिलिपि हुई । मन्दिर कामा दरवाजे का ग्रन्थ है ।

३४४१. प्रति सं०१७ । पत्र सं० २४ । ले० काल 🗴 । घपूर्ण । वेष्टन सं०**१६ । प्रास्ति** स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर डीग ।

३४४२. प्रति सं०१६ । पत्र सं०४०। घा० ११४६ इच। ले०काल सं०१६२१ फायुन बुदी ३। पूरों। वे०स.०३१। प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेलावाटी (सीकर)।

३४४३. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ३५ । झा० १२% ४६ १६चा । ले० काल० 🗙 । पूर्ण । बेष्टुन स०४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेलावाटी (शीकर) ।

दे४४४. प्रति सं० २०। पत्र स० ४४। ग्रा० १० ४६ इचा । ले० काल सं० १६१२। पूर्णः । वेष्टन स० २४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर । . ३४४४. प्रतिसं० २१। पत्र सं० ३४। प्रा० १४४२२ इखा ते काल ४। पूर्ण । वेष्टन सं० ४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल पंचायती मन्दिर प्रलवर ।

. **३४४६, प्रतिसं० २२ ।** पत्र सं०६३ । आ० १०×६ इश्वः। ले०काल स० १६०७ वैशास सुदी २ । पूर्णः। वेष्ट्रन स०५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्रवाल प्रवासती मदिर स्रलवरः।

३४४७. प्रतिसं० २३ ! पत्र स० ६६ । म्रा० ६१ ४४ | इश्व । ले० काल स० १८४१ । पूर्ए । बैच्टन सं० ८५ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मग्रवाल मन्दिर मलवर ।

. **३४४६. प्रतिसं० २४।** पत्र संस्था ५४। झा० ११३ × ४३ इचा तेस्वन काल × ।पूर्ण । वेकन स० १४ १०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मंदिर ग्रलवर ।

३४४६. प्रतिसं० २५ । यत्रस॰ ३८ । ले॰ काल 🗴 । श्रपूर्ण । वेष्ट्रन स॰ १५/१०४ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पचायती मन्दिर झलवर ।

३४४० प्रति संख्या २६ । पत्र स० ३६ । ले० काल × पूर्णः । वेस्ट स० ३६७ । प्रास्ति स्थान —िक्ष्ण जैन पत्रायती मदिर भरतपूर ।

३४५१. प्रति सं० २७ । पत्र स० ५२ । लेखक कालimes । पूर्ए । बेप्टन स० २६ । प्रास्ति स्थान—दि. जैन तेरहमधी मदिर बसवा ।

३४५२ धन्यकुमार चरित्र वचितिका— $\times$ । पत्र स०३४। ब्रा०१० $\times$ ६ $^{\circ}$ टन । भाषा-हिन्दी । विषय—चरित्र । २०कास  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेस्टन स०१४५६। प्रास्ति स्थान—मट्टास्कीय दि० जैन मदिर ब्रजमेर ।

३४४३. धन्यकुमार चरित्र माधा—जोधराज । पत्र स० ३७ । ग्रा० २४६ इंच । भाषा—हिन्दी । निषय-चरित्र । र०काल स०१६१० । ले०काल ४ । पूर्ण । धरटन म०११५ प्रास्ति स्थान—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

३४४४४ ध**-कुमार चरित्र भाषा** ४ । पत्र सच्या २६ । बा॰ ११४६ इ.च.। भाषा- कियी। विषय-— चरित्र । रुकार ४ । ले० काल स०१८६४ माह मुदी१२ । पूर्ण। बंग्टन स०१८ । **प्रान्ति** स्थान-— दि० जैन मदिर दीवान चेननदास पुगनीडीग।

३४५५. धन्यकुमार चरित्र भाषा— × । पत्र मन्या १०० झा० ७×७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय— चित्र । १०काइ × । पूर्ण । ले० काल स० १०१० । बेष्टुन स० ३३ । प्रास्ति स्थान-वि• ज'न पचायती मदिर कामा ।

३४५६. धर्मदत्त चिरित्र — दयासागर सूरि । पत्र स० १-१७ । द्या० १ $\times$ १ $^{1}$  ६ च । साया—हिन्दी । विषय -चरित्र । ८०काल  $\times$  । संपूर्ण । वेष्टनस० २११ । प्राप्ति स्थान—दि जैन मदिर बोरसजी कोटा ।

३४५७. धर्मदत्त चरित्र—माश्मिक्यसुन्दर सूरि। पत्र तं० १०। आ० ११४४ इ.च.। भाषा—सत्कृत । विषय —चरित्र। ८०काल ४। ते० काल स० १६६६ प्रासीन सुरी १०। पूर्ण । बेष्टन सं० १४६। प्राप्ति स्थान – दि० जैन सदिर राजमहल टोक।

विशेष — मारिएक्यमुन्दर सूरि प्राचार्य मेरुतुंग सूरि के शिष्य थे। लिखित गुरासागर सूरि शिष्य ऋषि नाषु पटनार्य असरारागपुर मध्ये। ३४५८, धर्मशर्मान्युवय — सहाकवि हरिचन्द । पत्र संख्या ६८। म्रा०११ ४४ ६च । माषा-संस्कृत । विषय —काव्य । २०काल ४ । ते० काल स०१५१४ । पूर्णे । वेष्टन सं० २०६/१४ । प्राप्ति स्थान—दि. जैन समयनाय मंदिर उदयपुर ।

विशेष - प्रतिप्राचीन है। पत्र केंबी से काट दिये गये है (ठीक) करने की।

प्रशस्ति—सबन् १११४ वर्षे घाषाठ मुदी १ गुरौ दिने भोषादिने कृते भी वन्द्रप्रभ चल्यानये श्री मूलसंचे बलात्कार गणे सरस्वती गक्त्रे श्री कु दकुदावार्यान्वये महारकीय श्री पपनदिदेवा तत् जिप्य श्री मदन कीतिदेवा तत् ग्रिय्य श्री नवरणानदिदेवा तश्चिमिन ६८ पुस्तक हुवडज्ञानीय श्रावकः लिलाप्यदत्त । समस्त भगेष्ट मबत् । म०श्री जानभूषण तर् जिप्य मुत्रिय श्री विचालकीति पठनाये । ५० पाहूना समंपितं । म०श्रीष्ठभवनददेवा तत् श्रिय्य इ० श्रीणाल पठनायं प्रदत्त ।

३४५६ प्रतिसं०२ । पत्र सल्या ११२ । स्रा०१०४४ इच। ले०काल ४ । पूर्णै। वेष्टुन सल्या३६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

३४६० प्रतिसं० ३ । पत्र स०६४ । इन० १०३ 🗡 १ृँडच । ते० काल 🗴 । धपूर्ण । जीएां । बेहन स० ७४ । प्राप्ति रुधान—दि० जैन मान्दर बडा बीसपथी दौमा ।

विशेष-४६ पत्र तक सम्कृत टीका (सक्षित) दी हुई।

३४६१. धमंशमांम्युवय टीका — यशःकीति । पत्रस॰ १६२ । ग्रा० १३ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ ६ञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय — काव्य । र० काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ ११७० । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन भट्टाकीय मन्दिर प्रजनंर ।

विशेष - घमंनाथ नीर्थंकर का जीवन चरित्र वर्णन है।

३४६२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ७४ । ले०काल × । बपूर्एं। वेष्ट्रन स० ११७१ । प्राप्ति स्थान---भट्टा॰कीय दि० जैन मन्दिर बजमेर ।

३४६३. प्रति सं० ३ । प्यसः० १११ । ले०काल स०१६३७ । सावण सुदी ७ प्रपूर्ण । वेष्टनसं० ११७२ । प्राप्तिस्थान भट्टारकीय दि० जैन मदिर धजनेर ।

विशेष---प्रजमेर के पार्श्वजिनालय मे प्रतिनिधि हुई। २१ सर्ग तक की टीका है।

३४६४. प्रति सं० ४ । पत्रसः० १८५ । प्राः० १२ $\frac{1}{2}$ ४६ $\frac{1}{2}$ ४६ । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४६५. प्रति स० ५ । पत्रस० १०२ । छा० १० $\times$ ४ हे इन्छ । ले०काल  $\times$  । छपूर्ण । वेष्टन स० १५१ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन प्रादिनाथ मन्दिर वृदी ।

विशेष -- टीका का नाम सदेहध्वात दीपिका है। १०३ से आगे पत्र नहीं है।

३४६६. नलोवय काख्य—काल्यास । पत्र सं० ३३ । ग्रा० १० $\times$ ५ इत्र । भाषा —संस्कृत । विषय—काल्य । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  प्रपूर्ण । वेष्टुन स० २३–२२४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन भन्दिर नेमिचन्द टोडारायसिंह (टोक) ।

३४६७. नलोदय टीका— $\times$ । पत्र सं०१-२३। घा०११ $\forall \times$ १ रे भाषा सस्कृत । विषय-काव्यः। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । सपूर्णं। बेष्टन सं० ७६०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नक्कर, अवपूर्

विशेष-टीका महत्वपूर्ण हैं।

३४६६ नसोबय टीका — रामऋषि पत्र स॰ ७। भाषा — सस्कृत विषय — काव्य । र॰ कास सं॰ १६६४। ते॰ काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन सं॰ ७८। प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन पवायती मन्दिर हण्डा— वाली का डीग।

नलोदयीमिया टीका शुद्धायमक बोधिनी।

रचना स॰ । ४६६ वेदागरस चन्द्राढ्यो वर्षे मामे तु माघवे । शुक्त पक्षेतु मध्नम्यां गुरी पुष्ये तथोद्र्नि ।

३४६६. नलोटय काय्य टीका-रिविदेव । पत्र स०३७ । ब्रा०१० $\times$ ५ इ.च. भाशा-संकृत । विषय—काव्य । र० काल । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१३६ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन मन्दिर दबलान (व दो) ।

विशेष — रामऋषि कृत टीका की टीका है।

३४७०. प्रतिसं०२ । पत्र स० ३६ । ले० काल स०१७५१ । पूर्ण। वे० स १६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बुदी।

**विशेष**—प्रवावती में नेमिनाथ चैरुयालय में भ० जगर्कीर्ति की धाज्ञानुसार दोदराज ने स्वपठना**यं** प्रतिलिपि की थी ।

३४७१. प्रति स० ३१ पत्रस० ३१ । या० ११ $\frac{3}{4} \times$ ६ इश्व । बेष्टन स० २६४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष — इति बृद्ध व्यामात्मज मिश्र रामिषदाधीच विरक्तिया रविदेव विर्याचन महाकाव्य नलोदय टीकाया यमकबीरिन्या नवराज बद्धा नाम चतुर्य आश्वास समाप्त ।

३४७२. नागकुमार चरित्र —मस्लिषेगासूरि । पत्र स० २३ । बा० ११ ४४ इन्छ । मापा — सस्कृत । विषय - चरित्र । र०कास ४ । ते०काल स० १६३४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ३८८/१२७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष----प्रणस्ति निम्न प्रकार है -- सबत् १६३४ वर्गे फागुन बुदी ११ भोने श्री गातिनाय चैत्या-सदे श्री स्हाप्टास ने नी त्राच्चे विद्याली महारक श्री रामनेनान्त्रये स० श्री भूवनकीति श्राचार्य श्री जय-सेन तत् बिन्य मु० कल्या पकीति बद्धा श्री वस्ता निवित ।

सवत् १६८४ वर्षे मार्ग भीवं बुदी ५ ली श्रीशीलचन्द्र तत् शिष्याणी वाई पोटोना तथा ब्रह्म श्री मेघराज तत् शिष्य ब्र॰ सबजी पठनायं इर नागकुमार चरित्र प्रदत ।

३४७३. प्रति सं० २ । पत्र स०३३ । प्रा०९० 🗴 ४) दला । ले० काल 🗴 । प्रयूर्ण । वेष्टत स०२४४ । प्रार्पः, स्थान—दि०जैन धप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—मुमतिकीर्ति के गुरु भागश्री सकलभूषर्ण केशिष्य श्री नरेन्द्रकीर्ति केपठनार्थ लिखाययाथा।

३७७४. प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ घा० १११ ४५ हे इला । र०काल ×ा ने०काल सं∙ १६४४ । पूर्ण । बेस्टन स० १४⊏ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन ६ प्रशास मन्दिर उदयपुर ।

३४७५. प्रतिसं० ४ । पत्रस॰ २३ । बा॰ ११ ३ 🗶 ४ है इश्वः । ले० काल स॰ १६०० । पूर्णे । बेष्टनसं० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर अयपुर । ३४७६. नागकुमार चरित्र — विव्ययस्ताकर । पत्र सं० ३६। आ० ११३ ४ ६ इच । आवा — सस्कृत । विषय चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १३६/१६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पार्थनाथ मदिर, इन्दराव (कोटा) )

३४७७. प्रति स० २ । पत्रसं० ४६ । आ० ६३ ४५ इच्च । लेक्काल स० १८८३ । पूर्ण । वेबन सं० २४४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष-गोठडा में चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

३४७८. प्रति सं० ३ पत्र स० ४२ । घा० ११ ४४ है इंच । ले० काल सं० १८६१ फागुए। सुदी १४ । पूर्ण । बेहन स० ३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन कप्रवाल मदिर, नैस्सा।

विशेष---प० रत्नाकर ललितकीति के शिएय थे।

३४७६. प्रतिसं∘ ४ । पत्र त०४७ । प्रा० १३१ै × ५ इका । ले० काल सं०१ ८७५ चैत सुदी ९ । पूर्वावेष्टन स०५ ६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर नागदी बृंदी ।

विशेष — बाह्मण चिरजी ने उलियारा मे प्रतिलिपि की थी। पं॰ निहालचन्द ने इसे जैन मन्दिर मे रावराजा भीमांसहजी के ज्ञासन मे चटाया थो।

३४८०. नागकुमार चरित्र—नथमल विलाला। पत्र सं० ८७। ब्रा० १२४४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्यः। विषय —चरित्रः। र०काल स० १८३७ माह सुदी ४ । ले० काल स० १८७८ सावन सुदी ६ । पूर्मा । वेस्टन स० १४६ । प्राप्ति स्थान्—दि० जैन पत्रायती मन्दिर करौली ।

विशेष--नेमिचन्द्र श्रीमाल ने करौली में गुमानीराम से प्रतिलिपि करवाई थी।

३४८१. प्रति सं०२।पत्र सल्या १०६।प्रा०११ ४ ५ इच्चा ले० काल स० १६६१ फाल्युन सदी ८।पर्यो । वेयन स० १६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्धनाय चौनान बदी।

३४५२ प्रति स०३। पत्र स०४६। घा०१११४। ले०काल 🗴 । ग्रपूर्ण । बेष्टन स० ४६/६६। प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दीसा।

विशेष - शन्तिम पत्र नहीं है।

३४८२. प्रति स० ४। पत्र त० १०७ । ग्रा० ११×५३ । ले० काल सं० १८७६ सावरा सुदी १३ । पुरां । बेटन स० ६१ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दोसा ।

विशेष-मोतीलाल की बहुने प्रतिलिपि कराई।

३४८४. प्रतिसं० ४। पत्रस० ७४। मा० १११ × ६ इञ्च लेवकाल स०१८७७ द्विज्येष्ठ बुदी ३। पूर्णं । बेटून स्ठ०६। प्राप्ति स्थान—-दि० जैन मन्दिर तेरहुपयी दौमा ।

बिरोय —जसलाल तेरहपथी ने पन्नालाल साह बसवा वाले से देवगिरि (दौसा) मे प्रतिलिपि करवाई ।

३४८५. प्रतिसं०६ । पत्र स० ८० । आ० ११३४५३ इ.च. । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ६२/८१ । प्राप्ति स्थान— दि० जॅन मदिर बढा बीस पथी दौसा ।

३४८६. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ४६-६६ । मा० १०२ ४५ इचा । ने० काल ४ । स्रपूर्ण । वैकृतसं० १८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बढाबीस पंथी दौसा ।

विशेष-चिम्मनराम तेरहपंथी ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

३४८७. प्रसि सं $\phi$  द । पत्र सं $\phi'$ ६४। प्रा० १२ $\times$ ४२ हचा। ले० काल सं $\phi$  १८३६ प्र० जेष्ठ सुदी १५। पूर्ण । बेष्टनसं $\phi$ ६४। प्राप्ति स्थान — दि $\phi$  जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष--१४३७ छंद हैं।

प्रवम जेठ पुनं सुदी सहस्वरस्य वर वार ।
पंच सुलिल पूरन कियो हीरापुरी मकार ।
नघमता निजकर वकी प्रव तिल्खी पर प्रीत ।
भूतवृक्क यो यामें नली तो मुच कीजो मीत ।।
प्रति ग्रं चकार के हाथ की लिखी हुई है।

३४८८. प्रति सं० ६। पत्र स०६१ । घा० १२×६ इन्छ । ले० काल सं० १८७७ घाषाढ फूदी ३। पूर्णे । बेष्टन सं० ४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मदिर बयाना ।

विशेष-करौली से गुमानीराम से ग्रथ लिखाकर बयाना के मन्दिर में विराजमान किया ।

३४८९. प्रति सं० १०। पत्रस०७७। ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६८। प्राप्ति स्थान—दि० जन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३४६० प्रतिसं०११। पत्र स०४३। प्रपूर्णः। वेष्टन स०३६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर मरतपूरः।

३४६१. नेमि चरित्र—हेमचन्द्र । पत्र सं० २६ । प्रा० १० $_2^2 \times V_2^2$  इत्त्र । माथा —सस्त्रत । विषय — चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । , वेष्ट्रन सं० २३६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बुंदी ।

विशेष-- २६ से ग्रागे पत्र नही है। प्रति प्राचीन है। त्रिषष्टि गलाका चरित्र में से है।

३४६२. नेमिचिन्द्रिका माखा —  $\times$  । पत्र स०२०। ६ $^1_x$  ४६ $^1_z$ । प्राया —िहन्दी पद्य । विषय —विरित्र । र० काल स०१८८० ज्येष्ठ सुदी ११। ले॰ काल स०१८८६ माध बुरी ६ । पूर्ण । बेष्टन सं०३४। प्राप्ति स्थान —वि॰ जैन मदिर सीमाणी करीली ।

३४६३ - नेमिजिन चरित्र—व. नेमिबल। पत्र स०६२। आ० १२४६ हेच। भाषा— संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल 🗴 । से०काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन स ४२७। प्राप्तिस्थान—म० वि• जैन मन्दिर प्रजोर।

३४**६४. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०१७५ । म्रा०१०}४४ } इञ्च । ले०काल ४ । पूर्णं। वेष्टन स०१२२६ । प्राप्तिं स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३४६**४. नेमिद्रतं काव्य — महाकवि विकम ।** पत्र संस्था १३। प्रा० १०<sup>3</sup>,४४३ इस । माषा-सस्तृत । विषयं-काव्य । २०काल ४ । लेखन काल स० १६८६ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० २४२। प्राप्ति स्थान—दिवं जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बग्दी ।

विशेष—इति श्री कि विकर्म यह विरिचतं मेचदूतां तत्यादं समस्यासंयुक्त शीमन्त्रीमचरिता— मिषानां काव्य ममान्तं । संः १६६६ वर्षे कार्तिकाशित नवस्या ६ माचार्यं श्रीमदरलकीत्ति तिच्छायेरा लि • विजयहर्षेग् ।

पुस्तक प० रतनलाल नेमिचन्द की है।

३४८६. प्रति स० २ । पत्रसं० २४ । घा० १२३ ४७ इचा । से॰काल स० १८८६ घासीज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर फ्लेक्ट्रपुर क्रेस्नावाटी (सीकर)

विशेष प्रति हिन्दी ग्रनुवाद सहित है।

३४६७. प्रति सं० ३ । पत्रस०१४ । घा०११×५र्हु। ले**०काल** सं०१६⊏५ कार्तिक बुदी १ । बेष्टुत स०१४३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थात**—िदि० जैन मं० लक्कर, जयपुर ।

३४६ म. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १४ । म्रा० १० १ × ४ १ इ.च. । क्षे०काल × । बेष्टन स∙ -१४४ । सपूर्ण । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मंदिर लक्कर जयपुर ।

३४६६. तेमिनाय चरित्र—  $\times$  । पत्रस० १०६ । म्रा० १०४४ इचा भाषा—प्राकृत । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलान (बंदी)

विशेष--प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है

३५००. **नेमिनाथ चरित्र**— $\times$ । पत्र स॰ ६६ । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । अपूर्ण । बेष्टन स॰ ६१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि॰ जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३५०१. **नेमिनाथ चरित्र**— $\times$  । पत्र त०१०३। भाषा-सस्कृत । विषय चरित्र । र०काल $\times$ । ले० काल  $\times$  । खपूर्ण । त्रेष्ट्रन स०१६७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैनपचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष — हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है तथा नेमिनाय के अतिरिक्त क्रुप्सा, वसुदेव व अरासिन्ध का भी वर्णन है।

3५०२. नेमिनिर्वाग् — वाग्मट्टा पत्रसं० ६३। म्रा०११४५ इचा। नाया — सस्कृत। विषय—काव्या र०काल ४। लेठकाल स०१०६० वैद्याल बुदी१०। पूर्णा विष्टन म०१०७,५७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्यवेनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष - रामपुरा में गुमानीरामजी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई।

३५०३. प्रति सं०२ । पत्रसं०६ । क्रा० १२(×५ इञ्च । ले० काल सं० १७२६ कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । बेष्टुन सं० २०१ । प्रार्पः, स्थान—दि० जैन क्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३५०४. प्रति स० ३ । पणस०६-६१ । बा० १०  $\times$  ६ इञ्च । ले० काल स०१७६८ । धपूर्ण । बेहुन स०२३७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवात मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — सवन् १७६८ वर्षे कार्तिक बुदी ८ मूम पुत्रे श्री उदयपुर नगरे महाराणा श्री जगतिसहजी राजवी विश्वतद क्षेत्रमी स्वयनार्थ ।

३५०५. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ६६ । झा० १ $\times$ ४ $\frac{3}{4}$  इच्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ए । बेष्टन स० ४७/४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सौगाएं। करौली ।

३ ५०६. प्रतिसं० ५। पत्रस० १०६ । घा० ६ ३ ४४ इ.च. । ले० काल स० १७१४ । पूर्ण। वेष्टन सं० २७४ । प्राप्तिस स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी वंदी।

विशेष सं १७१५५ मेरपाट जरपपुर स्थाने श्री झारिनाय वैत्यालये झाहराज राह्या राजसिंह विजयराज्ये श्री काहासचे नन्दीतटगच्छे विजयगणे महारक राजसेन सोमकीर्ति, यक्तकीर्ति जरवसेन त्रिडुक्त कीर्ति रस्तवस्थ, जयकीर्ति, कमककीर्ति, युवनकीर्ति, नरेन्द्रकीर्ति । प० गगादास ने लिखा ।

३५०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७० । घा० १२ 🗴 ४ इश्व । ले० काल स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टत स० ४०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसती कोटा ।

विशेष-सवत १६७६ ब्रह्म श्री बालचन्द्रेन लिखित ।

३५०**म. प्रतिसं० ७ ।** पत्र स० ५३ । झा० १०हैं x धहै इञ्च । ले० काल स० १८४२ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स**० १**५५ । **प्राप्ति स्थान** —वि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

३५०१. नैवद्य चित्र टीका—  $\times$  । पत्र त०२-१ । प्रा०१३  $\times$  ५१ ह्र-४ । भाषा— सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन त० ७५३ । प्राप्ति स्थान—वि॰ र्जन मन्दिर, लक्कर, जवपर ।

३५१०. नेषधीय प्रकाश — नर्रासह पांडे । पत्र सं॰ ८ । धा॰ १० $\times$ ४ ; इश्व । भाषा— संस्कृत । विषय — काल्य । २० काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टन स॰ ५१६ । प्राप्ति स्थान — वि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

विशेष--प्रति जीर्गं एवं भपूर्णं है।

३५११. पद्मचरित्र —  $\times$  । पत्र स॰  $\times$  । प्रा॰ १३ $\times$ ४६वा । भाषा — संस्कृत । विषय — चरित्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स॰ २४२/७४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपर ।

३५१२. पदाचरित्र—विनयसमुद्रवाचक गरिए । पत्रसं० ६१। घा०११ $?\times$ ४? इत्र । माषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । ८०काल $\times$ । ले० काल $\times$  । घपूर्ण । बेष्टुनसं०२५४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयवर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

३५१३ पद्मतंदिमहाकाव्य टीका—प्रह्लाद । पत्र तं०१३६। भाषा—सन्कृत । विषय — काव्य । र० कान × । लेखन काल स १७६८ चैन सुदी ४ । पूर्ण । वेस्टन २०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर वसवा ।

विशेष--- असुवा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई।

इति थी पद्मनदाचार्यं विरचिते महाकाव्यटीका सूत्र सापूर्णं । तस्य धनपालस्य शिष्यस्तेत शिष्यंस्य नाम्नाप्रहलादेतं श्री पद्मनदिन, मुरे ब्राचार्यं कृते काव्यस्य टिप्पएकं प्रकट सानदं ।

३५१४. परमहंस संबोध चरित्र—नवरंग। पत्रस०१०। प्रा०१०४४] इञ्च। भाषा—संस्कृत। थिपय—चरित्र। र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्ट्रन स० २६६। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३५१५. परसहंस संबोध चरित्र—  $\times$  । पत्र स०२६ । प्रा०१०३ $\times$ ४) ६ च । भाषा— प्राकृत । विषय —चित्र । ए० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मेदिर बोरमली कोटा ।

३५१६. पवनंत्रम चरित्र — भुवनकीत्ति । पत्र सं०२४ । मा० ११×४ । मापा — हिन्दी । विषय — वरित्र । रुकाल × । ले॰काल × । मपूर्ण । वेष्ट्रन सं०२०२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर दीवानजी काम । ३५१७. पाण्डवचरित्र—व श्वानदास । पत्र स० १-३६ । म्रा० १०  $\times$  ४ दे इश्वः । म्राषा-संस्कृत । विषय—पुराए । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । स्रपूर्ए । वे० सं० २५३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रुंदी) ।

विशेष-- ग्रथ का ग्रपर नाम नेमिन्नारा भी है।

३५१८. पाण्डव चरित्र—देवप्रभसूरि । पत्र स० ३६१ । प्रा॰ १२ ४ ४ १ इच । भाषा— संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल ४ । ले०काल स० १४४४ । पूर्ण । वे० सं०१ । प्रास्ति स्थान— वि० जैन मन्तिर दीवानजी कामा ।

विशेष -- प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबन् १४५४ वर्षे ज्येष्ठ मुदी ७ सप्तमी शुक्रवारे श्री पाण्डव चरित वयरमरोन लिखितं मद्वाहडीय गच्छे श्री मुस्त्रिभसुरीगा योग्य ।

३५१६. पारिकात हरस्—पंडिताचार्य नारायस्य । पत्र सं० १२ । झा० ६३,४४३ इच । झाथा—सन्द्रत । विषय—काव्य । र०काल ४ । ले•काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दवलाला (बृंदी) ।

विशेष-- प्रतिम पृष्पिका निम्न प्रकार है--

इति श्रीमत् विकुलतिलकश्रीमन्नारायण् पश्चिताचार्यं विरचिते पारिजात हरणे महाकाव्ये तृतीर्यः स्थासः । श्री कृरणार्यगमस्तु ।

इन्द्रगढ मे देवकरण ने प्रतिलिपि की थी।

३५२०. पास्वंचरित्र —तेजपाल । पत्रसः १०१ । घा० १०४ ६ इव । भाषा — प्रपन्नं सः विषय — चरित्र । र०काल सः० १४१५ कात्तिक बुटी ४ । ले०काल ४ । पूर्णः । वेष्ट्रनसं० ३४४ । प्रास्ति स्थान — भटारकीय दि० जैनमन्दिर म्रजसेर ।

विशेष---ग्रतिम पत्र नहीं है।

षादिभाग---

गगुबयतबमायग्उ वारिज सायक, गिक्वमवासय मुद्दिणिलंड । पर्गाविव तियकर कदयग्ग मृद्यक रिसहु रिसीसर कुल तिलंड ॥ देविदेदिण ग्रीवरो मित्रयगो कत्याग्ण मालापरो । भागा जेगा जिंड पिर्ट ग्रागृहियो कम्मटु दुद्वा । सबोसीय पाग जिंगाद सम्र वरदो बोच्छ परिस्त तही ॥१॥

तीसरी सधि की समाप्ति निम्न प्रकार है -

डय सिर्रि पासर्वारत्त रहम कह तेजपाल साग्यद अगुमणियं मृहह 'पूर्वाल सिवराम पुत्ते ण जउगाहि माग्गमहर्गे पासकुमारे विबड्ढियोहे शिवकीला वण्णगए तहस्रो सधी परिसम्मतो ।

रैथरिश. पारबंपुरास्म—मा० चन्द्रकोति । पत्रस० १२४ । मा० न ४ ६ इन्च । साथा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २०काल ४ । ले०काल सं० १८२६ वैद्याल बुरी ३ । पूर्ण । बेष्टनसं० १४३३ । प्राप्तिस्चान—न० दि० जैन मन्दिर मजसेर ।

३५२२. पारवंनायचरित्र— भ० सकलकीति । पत्र स० ११६ । प्रा० १० ${}^1$   $\times$  ५ ${}^1$  इख । माया—स स्कृत । विषय—चरित्र । २० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्न स० २३३ । प्रास्ति स्थान—मदास्कीय दि० जैन सदिर प्रजनेर ।

३५२३. प्रति स०२। पत्रस०२३। द्या०१२३ ४० दे इत्था। ले०काल 🗴 । पूर्णी। बेहुतसं०१०२४। प्राप्ति स्थान—मद्रारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

३५२४. प्रति सं० ३ । पत्रस० १६२ । द्या० ६ 🗙 ५ इच्छ । ले० काल स० १८४७ ज्येष्ठ कृदी ५ । पूर्ण । बेष्टनस० १५४४ । प्राप्ति स्थान—स्ट्राग्नीय दि० जैन सन्दिर खजमेर ।

३५२५. प्रति सं०४ । पत्रसः ६८ । ग्रा०१२४६ इश्वालेश्काल ४ । पूर्णं। बेष्ट्नसंश् ६ । प्राप्ति स्थान— दिश्जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बंदी ।

विशेष -- २३ सर्ग हैं।

३५२६. प्रति सं०५ । पत्रस० १५१ । घा० १२ ४५ है इला । ले० काल स० १६०६ मंगसिर सदी ११ । पूर्ण । बेष्टुन स० ५७ । प्राप्ति स्थान ⊹ दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष — टोडरमल वाकलीबाल के बणजो ने ग्रंथ निखबाया था कीमत ४।।। ६०

३५२७. प्रति स०६ । पत्रस०११२। ग्रा०१३४५ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्णं। वेक्टनसं०१७६। प्राप्ति स्थान-दि०जैन मन्दिर दीवानजीकामा।

३५२ ⊏ प्रति सं०७ । पत्र स०७ । ग्रा०१०४६ है इचा ले∘काल—४ । पूर्णावेष्टन स० ⊏५ ६२ । प्राप्ति स्थान— रि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

३५२६ प्रति स० म । पत्रस० २० से ७० । घा०१०  $\times$  ६ दे इञ्च । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स०१४४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रग्वाल मदिर उदयपुर ।

३५३०, प्रति स॰ ६ । पत्र स॰ १६ । स्रा॰ १०<sup>१</sup> ४ ६<sup>९</sup> इ.च. । ले० काल ४ । **धपूर्ण** वेष्टन स॰ ६४४ । प्रा**प्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - प्रति तृतीय सर्ग तक पूर्ण है।

३५३१. पास्वेनाथ चरित्र— ४ । पत्र स०२७ । स्रा०१०<sup>9</sup> ४४ १ इस्त । भाषा — संस्कृत (मख)। विषय — चरित्र । ००कार स०१६२० ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स०१६३ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दवलाना (नृदी ।

३५३२. पार्श्वनाथ चरित्र $-\times$ । पत्र स०११२ । ब्रा०११ $^3\times ^3$ ृद्ध । भाषा— संस्कृत । विषय-चरित्र । २०कार  $\times$ । लेकात स० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन स०११६ । प्रास्ति स्थान— स्वदेशवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

३५३३. पाश्वेषुरारगः सूधरदासः । पत्र सस्या १०५ । घा० ६ ४ ४ इत्र । मापा—हिन्दी पद्यः । विषयः —पुरागः । २०कान स०१७६६ प्रापाढ मुदी ४ । ले०काल सं०१६६२ चैत्र मुदी १ । पूर्वः । वेष्टन स०१४७१ । प्राप्ति स्थान – म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष- साखुरामध्ये लिपिकृत पं विरधीचन्द पठनायं ।

३५३४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८६ । घा० १० 🗙 ५ ६वा । ले० काल सं० १८८४ । पूर्वी । वेष्टन सं० ३५२ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर धनमेर । **३४३४. प्रतिसं० ३**। पत्र स०१२६ । ध्रा०६imes४ इच्च । ले०कलimes । पूर्णं । वेष्टन सं०१४३३ । **प्राप्ति स्थान** – भट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

३४३६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ५७ । ले० काल स० १८८१ वैशाल सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४२ । प्राप्ति, स्थान — अटारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजभेर ।

३**५३७. प्रति सं०५ ।** पत्रस० ६३ । श्रा० १२, ४५) इ.च । ले० काल स० १६४६ **।** पूर्णा वेष्टन स० ३१३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन क्रयबाल मदिर उदबपुर ।

३५३ स. प्रति सं०६ । पत्र स०१२ । प्रा०१ $\times$ ४ / इन्छ । ले०काल स०१ स्४७ पीष सुदी १। पूर्ण। बेप्टन स०२६०१०४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर कोटब्रियो का हुगरपुर ।

विशेष--नौतनपुर ग्राम मे म्रादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

३५३६. प्रति स० ७ । पत्र स० ६३ । प्रा० ११ ४५ १ इ.च. । ले०काल स० १८४४ । पूर्ण। वेष्टन स० १६१–७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का हुगरपुर।

३५४०. प्रति सं० क्ष । पत्र म०१०० । प्रा०१२ $^{1}_{2}$   $\times$  ५ $^{1}_{3}$  इश्व । ले० काल स०१६३२ चैत सुदी १०। पूर्ण । वे० म०५४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर केलावाटी (सीकर) ।

३४४१. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ७७ । सा० १२३४४३ इच । ले० काल स० १८४६ वैशास सुदी १३ । पूर्ण । वेप्टन स० ५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फनेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष--गमवक्स बाह्मण ने रूपराम के पठनार्थ प्रतिलिप की थी।

३५४२. प्रतिसं० १०। पत्र सच्या ६४। ग्रा०११ $\times$ ५) इच । ते०काल स०१५३६ । पूर्ण । बेघ्टन स०४३/२४। प्राप्टिः स्थान—दि० जैन मन्दिर, भादवा (राज०)।

३५४३. प्रति सं० ११ । पत्र स०६४ । घा० १२  $\times$  ५ $^{3}$  इश्व । ते० काल सं० १५२५ । पूर्णे । बेष्टन स०२४ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष-- नालमोट मे प्रतिलिपि हुई थी।

३५४४. प्रतिसं०१२ । पत्रस०६१। ते० काल स०१८१६ । पूर्णः। जयपुरमे प्रतिलिपि हुई। प्राप्ति स्थानः - दि० जैन मदिर भारता (राज०)।

३५४५ प्रतिसं० १३ । पत्रतः० १०६ । ले०काल स०१८४६ माघ मुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान --तेन्द्रवनी दि० जैन मन्दिर बमवा ।

३४४६. प्रतिसं० १४। पत्रस० ७४। लेक्सल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्ट्रनस० ६४ । प्राप्ति स्थान—तेरहपंशी दि० जैन मन्दिर बमवा ।

३५४७. प्रति सं० १५ । पत्र म० ११५ । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । प्रास्ति स्थान —तेरहपथी दि० जेन मदिर वसवा ।

३५४ म. प्रति सं० १६ । पत्र स० ७५ । म्रा० १२४५ इच्च । ले०काल सं० १७६४ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । बेब्रन स० १६/२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष-यती प्रयागदास ने जयपुर मे प्रतिलिपि की।

३५४६. प्रति सं० १७ । पत्रस० १६ । बा० १२ १४६ इञ्च । ले॰काल × । पूर्ण । वेक्तसं० २३-१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौमा ।

३४.४०. प्रति सं०१६ । पत्र स०६४ । धा०१२ हे ४६ इ.च । ले॰काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं०१११ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मदिर नेरहपयी दौता ।

विशेष--चिमनलाल तेरहपथी ने प्रतिलिपि की।

३४.४१. प्रति स०१६ । पत्रस०६७ । घा०११३ 🗴 ५ देखा । ले०काल स०१६३२ । पूर्णे । बेष्टन स०४० । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष---नन्दलाल सोनी ने प्रतिलिपि की थी

३४४२. प्रति सं० २०। पक्स० ७६। ग्रा० १३४८ । ७ इन्था । ले०काल स० १६०० सावरा सदी १३। पूर्णा । वेष्ट्रन सं० ३४४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष--लझ लाल प्रजमेरा ने प्रलवर मे प्रतिलिपि की थी।

**३४.५३. प्रतिसं० २१ । पत्रस० ८६ । ले०काल स० १८३७** । पूर्णा । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

३५५४. प्रति सं० २२ । पत्रस० ८५ । ग्रा० ६ १४५ १ इच । ले० काल स०१७६२ । पूर्ण । बेहन सं० २५० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४.५५ प्रतिसं० २३ । पत्र स० २०६ । द्या०  $- \frac{2}{5} \times 5$  हुआ । ले०काल स १०६६ सासोज सुदी २ । पूर्ण । बंध्टन सं० ६४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सोगानी करोली ।

३५५६. प्रतिसं० २४ । पत्रसः० । ग्रा॰ १०३४ । वे० काल सः० १०१४ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण । बेच्टन सः० १५१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैनपनायती मन्दिर करोली ।

किरोध- इंडराज के पत्र मगनीराम ने पाढे लालचन्द से करोली में लिखवाया।

३५५७. प्रति सं० २५ । पत्र स० ६४ । प्रा० १०} × ५१ इ.ख । ले० काल० म० १८४३ । पुर्य । बेष्टत स० ४२ । प्रास्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर दीवानजी चेतनदास पुरनी द्वीय ।

३४.४८. प्रतिसं० २६ । पत्रस० ७३ । ग्रा० १२्रै ४६ इत्र । ले∙काल स० १८७० ।पूर्स । वेष्ट्रन स० ७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेननदास पुरानी डीग ।

बिशेय---जीवारामजी कासलीवाल ने सूरतरामजी व डनके पुत्र लिन्द्रमनसिंह कुम्हेर वालो के पठनार्थ बैर में प्रतिलिपि करवाई थी।

३४४६. प्रतिसं० २७ । पत्रस० ८७ । ले॰कालस० १८४४ । पूर्मा । बेष्टन म० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैनपवायती मन्दिर हन्डावलो का डीम ।

विशेष-- प्रागदास मोहावाले ने इन्दौर में कासीरावजी के राज्य में प्रतिलिपि की थी।

३५६०. प्रतिसं० २६। पत्र सं० ६४ । ले० काल स०१६७४ प्राघाढ वदी १० । पूर्ण। बेष्टन सं०१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मस्दिर हण्डावालों का डीग ।

**३५६१. प्रतिसं∘ २८** । पत्र सं०१०२ । ग्रा०१२×५३ देखा। ले०काल × । पूर्सा। वेष्टन सं०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि०र्जन मन्दिरदबलाना बूंदं,। ३५६२. प्रतिसं० ३०। पत्रसं० ७६ । बा० १२२ ४,९६३ इंच । ले०काल सं० १८६४ मासोज बुदी १। पूर्ण । बेष्टनसं० ८६-७३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पावनाय मन्दिर इन्दरगढ़।

३५६३. प्रति सं० ३१। पत्रसं० ६३। घा० १०३ ×६ इचा । ले० काल ×। पूर्णः । वेष्टुनसं० ६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पावर्षनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

३५६४. प्रति सं० ३२ । पत्रसं० ११७ । ब्या० १० 🗴 ५ इंच । ले०काल स० १८८४ पूर्ण । वेष्ट्रनस० २२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली काटा ।

३५६५. प्रतिसं०३३ । पत्र सं० ८६ । प्रा० ६१ ४६ १ इल्डाले ∘काल ४ । पूर्णा । वेष्टन स०१६२ । प्राप्तिः स्थान--- दि० जैन पचायती मन्दिर प्रलवर ।

३५६६. प्रतिसं० ३४ । स० ११४ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण। वेष्टन स० १६३ । प्राप्ति स्थान—म० टि० जैन खडेलवाल मन्दिर अलवर ।

३५६७. प्रति स० ३५ । पत्रस० ६४ । घा० १२३ ४७ इचा । ले० काल स० १६४७ । पूर्एं । वेष्टत सं० ४,८० । प्राप्तिस्थान—िद० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३५६८. प्रतिसं० ३६ । पत्र स० ६६ । ले०काल सं० १६४८ । पूर्ण । वे० स० ४/१४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर सलवर ।

३५६६. प्रतिसं० ३७ । पत्र स० ६४ । ध्रा $\circ$  १२imes५ इ.ख । ले०काल स १८६७ आयाढ इ.दी ३ । पूर्ण । वेग्टन स० १०४ । ।प्राप्ति, स्थान – दि० जैन पचायती मन्दिर अनवर ।

३५७०. प्रतिसं० ३६ । पत्रस० ५६ । ले॰काल स १८४५ पोप बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टनस० १०६ । प्राप्ति स्थान — दि० चन पवयती मन्दिर फलवर ।

३५७१. प्रतिसं० ३६ । पत्र सं० १२६ । ले० काल स० १८१४ भादवा सुदी १४ । पूर्णः । बेष्टन स० १६३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पचावती मदिर मरतपुर ।

विशेष-- पाडेलालचन्द ने प्रतिलिपि की थी। ३५७२. प्रतिसं० ४०। पत्रस० ६६। ले

३५७२. प्रतिसं०४० । पत्रस०६६ । ते०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स०१७७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर जयपुर ।

३.५७३, प्रति स० ४१ । पत्र स० ६१ । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । बेष्टन स० ३१६ । प्राप्ति स्थान-— दि० जैन पत्रायती मदिर भरपुर ।

३५७४. प्रति सं० ४२ । पत्रस० १६ । आ ० १० ४५ इश्वाले काल स० १८८४ । पूर्ण। बेष्ट्रतसं० ६१ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष — स॰ १८८८ मगसिर मुदी ५ के दिन नथमल खडेलवाल ने इस ग्रंथ को चन्द्रप्रभ के मंदिर में भेंट दियाथा।

३ ५७५. प्रति सं०४३ । पत्रस०१०६। घ्रा०६४६ इ.चा। ले०काल सं०१ ५२५। पूर्ण। वेष्ट्रसं०१२ । प्राप्ति स्थान—दिञ्जैन मन्दिर वैर।

३ **५७६. प्रति स**० ४४ । पत्र सं० ६६ । बा० १० <sup>२</sup>४ ६ <sup>2</sup> इ.च. । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना । ३५७७. प्रति सं० ४५ । पत्र स ⊏१ । ब्रा० ११३ॄं × ५ इश्व । ले० काल स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती सन्दर दीवानजी कामा ।

३५७८. प्रति सं०४६ । पत्र सं० ८२ । घा॰ १२,१४६ इश्व । ले० काल 🗴 । पूर्यं । वेष्टन सं०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती दीवानजी कामा ।

३५७६. प्रति सं० ४७ । पत्र सं० २०४ । ग्रा० १०५७ इञ्च । ले० काल स० १६५३ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । प्राप्ति स्थान—वि०जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

विशेष-- ग्रहालाल गर्मा ने प्रतिलिपि की ।

३५८०. प्रति सं० ४८। पत्र सं० ५३। घ्रा० १२}×६} इञ्च। ले० काल स० १८६६ पौष सदी १२। पूर्ण। वेटन स० ५२। प्राप्ति स्थान —दि० जेन तेरहपथी मदिर नैसाया।

विशेष—लिलाइत साहाजी श्रीभैरूरामजी गगगान तत्तुत्र जिरजीव कवरजी श्रीजैलालजी पठनार्थ। यह प्रथ १८७३ में तेरापयी के मन्दिर में चडाया था।

३ **५८. प्रति सं० ४ ६.।** पत्र स० ७२.। ग्रा० ११ ४ ७ इ.च.। ले० काल स० १६५६। पूर्ए। वेष्टन स० १००। प्रा**प्तिः स्थान** — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर ब्रुदी।

३४**⊏२. प्रतिसं० ५०।** पत्रस० ५६। घा० १०३ ४४ हे इखा ले∘काल ×ापूर्ण। वेष्टन स० ११६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

३ ४ द ३ . प्रति सं० ४१ । पत्र सं० ७७ । ग्रा० १२ ४ ४ ३ इट्च । ले० काल स० १६४० मंगसिर सुदी ३ । पूर्णा वेष्टन स० ३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोट्यों का नैएवा।

विशेष — नैसाबा में बाह्मस सीताराम ने प्रतिलिपि की थी।

३५८४. प्रति सं० ५२ । पत्र स०८६ । झा०१०४६ इ.ख.। ले०काल स० १६१४ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष---माह पन्नालाल ग्रजमेरा ने प्रतिलिपि की थी।

३५८५. प्रतिसं० ५३ । पत्र स०८६ । घा०१२  $\times$  ५ $^{3}$  इख । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं०३६,१८ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन सन्दिर पचायती देनी (टोक)

३५८६. प्रतिसं० ४४। पत्र स०१४४। ग्रा०१२४४१ इञ्च। ले०काल स०१८८८। पूर्ण। बेप्रत स०३७/१८। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायनी मन्दिर दनी (2)क)

विशेष - सर्वमुख गोधा मालपुरा वाले ने दीवान ग्रमरचन्द्रजी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी।

३५६७. प्रति सं० ५५। पत्र स० ४४। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वेष्टन स० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सडेलवालों का, आवा (उरिएयारा)

विशेष -- जन्म कल्यागक तक है।

३५८८. प्रति स० ५६ । पत्र स० ८५ । प्रा० ६ $\frac{1}{4}$  ४६ $\frac{3}{9}$  इश्वः । ले० काल  $\times$  । पूर्णः । बेष्टन सं० ३१ । प्राण्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोकः ।

विशेष - पद्य स० ३३३ है।

सवत् १८७६ चैत्रमासस्य शुक्लपक्षाः राजमहल मध्य कटारया मोजीराम चन्द्रप्रम चैत्या-सर्वे स्वापित । काव्य एवं चरित ] [ ३५१

३५८६. प्रति सं० ५७ । पत्रस० ७० । ले॰काल सं० १९४७ सावरा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं• ३२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष-लिखित प० लखमीचन्द कटरा ग्रहीरों का फिरोजाबाद जिला ग्रागरा।

३५६०. प्रति स० ५८। पत्रस० १३३। प्रा०१० रे ४५ इञ्चा से०काल स० १८४६ सावरा सदी १३। पूर्ण । बेहन स० १२७। प्राप्तिः, स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहन टोक।

विशेष—तक्षकपर में व्यास सहजराम ने प्रतिलिपि की थी।

३५६१. प्रतिसं० ५६ । पत्रस० ६३ । घा० ११ - ५ इ.स. ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० १७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्थनाय टोडारायसिंह (टॉक)

३५६२. प्रतिसं० ६० । पत्र म० १२४ । मा० ११३  $\times$  ५ $^3$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ११०/६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर नेमिनाय टोडारायसिह (टॉक)

३५६३. प्रति सं० ६१ । पत्र स० ६१ । घा० ११०० हुँ इंच । ते० काल स० १९०४ फायुन हुदी १ । पूर्ण । वेरटन स० ५०-६० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर नेमिनाय टोडारायमिह (टोक)

विशेष — टोडारार्याक्षत्र के श्री सांबला श्री के मन्दिर में जबाहरलाल के बेटा विसनलाल ने बती-धापन के उपलक्ष में भारता मुदी १४ स० १६४८ को चढाया था।

३५६४ प्रतिसं ६२ । पत्र म० ११६ । ब्रा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इख । से०काल । ब्रपूर्ए । वेष्टन स०१७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरहमधी मालपूरा (टोक) ।

३५६५. प्रति स<sup>्</sup> ६३। पत्रतः ६८। प्राः १२ × ५<sup>2</sup>, इञ्च। ले॰ काल स॰ १८२८। पूर्णं। वेष्टन ग॰ २५। **प्राप्तिस्थान** - दि॰ जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)।

विशेष-धनराज गोधा रूपचन्द मुत के पठनार्थ लिखा गया था।

३ ४६६. प्रति स०६४ । पत्र सं०३-१२० । प्रा०६ $\times$ ६ इत्थ । ले० काल स०१ प्रप्1 जीगाँ जी $10^{\circ}$  । प्राप्त । वेष्ट्र स०३६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दरते रहपंथी मालपुरा (टोक)

३५६७. प्रतिसं० ६४ । पत्र स० ४२ । आ० १२ 🗴 = इञ्च । लेक्सल स० १६४६ । पूर्ण । बेष्टन स० ३३ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

३५६ ⊏. प्रतिसं० ६६ । पत्रसः० १३४ । ग्रा० १०१,४४३ इश्व । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । बेष्टन स० ४४ । प्रा⊓ितः स्थार—दि० जैन मन्दिर, पार्धनाथ चीगान खदी ।

३५६६. प्रति सं० ६७ । पत्र स० ५७ । म्रा० ११४७ इश्व । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वैष्टन सं० १०८ । प्राधित स्थान—दि० जैन मन्दिर मादिनाष व दी ।

विशेष--- बूदी मे प्रतिनिपि हुई थी।

३६००. प्रतिसं०६ ६। पत्र स० ६३ । झा० १३ ४ ४ १ इ.च. । ले०काल स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । प्राप्ति-स्थान-—दि० जैन मन्दिर स्रादिनाथ बूंदी ।

विशेष - खडार में लिक्षमणुदास मोजीराम बाकलीवाल का बेटा ने विस चढायो ।

३६०१. प्रतिसं० ६६ । पत्रस० १०१ । घा० १३ × ५ इचा । में∘कास सं० १८३१ घाषाढ बुदी १ । झपूर्ण । बेहनसं० १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर लस्कर जयपुर ₽

विशेष-दासएगैती के जीवराज पांड्या ने लिसा था ।

३६०२. प्रति सं० ७० । पत्र सं० ७६ । आ १२ ४४ ६ इत । ते० काल स०१८५१ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । बेष्टनसं० ७ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मदिर खादिनाथ बूदी ।

विशेष - रएषंभौर में नाषुराम ने स्व पठनार्थ लिखा था।

३६०३. प्रति सं० ७१। पत्र सं० ६७। घा०१२१४६१ इन्च। ले० स० १६७४। पूर्ण । बे०स०२१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी वदी।

विशेष-इन्दौर मे प० बुद्धसेन इटावा बाले ने प्रतिलिपि की थी।

३६०४. प्रति सं०७२। पत्रसः १४८। घा० १४६ इ.च. । ले॰काल स॰ १८३३। पूर्णः । बेष्टन स०२४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रमिनन्दन स्वामी व दी ।

३६०**४. प्रति सं० ७३ ।** पत्रस० ४६ । ले•काल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति** स्थान—वि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

३६०६. **पारवंपुरारा** —  $\times$  । पत्रस० २४७ । भाषा—हिन्दी (गय) । विषय —पुरारा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर । बसवा ।

३६०७. प्रद्युष्टनचरित —महासेनाचार्य । पत्रस॰ ६६ । धा॰ ११ $\times$ भ $^2_7$  हच । भाषा — सस्कृत । विषय —चरित । र०काल  $\times$  । लेकाल स॰ १४३२ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं॰ ५८ । प्राप्ति स्थान — सण्डेनवाल दि॰ जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- भट्टारक ज्ञान भवरण के पठनाथं लिखी गयी थी।

३६०**६. प्रति सं० २** । पत्रसं० १२६ । म्रा० १० ४४ <sup>3</sup> इख । ले०काल सं० १४८६ । पूर्वे । बेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी वृदी ।

विशेष - छीतर ने ब० रतन को मेंट दिया था।

प्रशस्ति—संवत् १५-६ वर्षे चैत्र सुदी १२ श्री मृतवते बलात्कारमधे सरस्वती गच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यात्वये महारक् श्री जिनचन्द्र तत्यहे भ० प्रभाचन्द्र तदाम्नाये खडेसवालान्त्रये वाक्तनीवाने गोत्रे स० केल्हा तदमार्या करमा " " : """।

३६०६ प्रतिसं०३ । पत्र स०६४ । ग्रा०१२ है ४ ५ है उचाले ० काल स०१८४१ । पूर्ण। बेध्टन सं०१७१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

३६१०. प्रख्नुस्नचरित्र | सोसकीति । एव स०१७२। प्रा०१० $^1_2 \times ^1_3$  इव । साथा—सस्कृत । विषय – चित्र । र०काल स०१४३१ पीप सुदी १३ बुधवार । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स१४३४ । प्राप्ति स्थान—अङ्गरकीय दि० जैन मिंदर प्रजनेर ।

३६**११. प्रति,सं० २।** पत्र सं० १४६ । झा० १०३<sup>2</sup> ४४ ३ इन्छ । ने० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स ४४६ । **प्राप्ति, स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

३६१२. प्रतिसं०. ३ । पत्रस०१७३ । आ० १० $\times$ ४ । सं $^{1}$  इंच । संब्काल सं०१८१० पौच बुदी १ । पूर्ण । बेटन सं०१०२, ३४ । आमित स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्यनाय इन्दरस्य (कोटा) ।

काव्य एवं चरित ] [ ३५३

विशेष —वशस्य पत्तनस्य रामपुर मध्ये श्री नेमिजिन चैत्यालये ग्रातांवर मनस्य व्याधानवये घटोड गोत्रे सा० श्री ताराच दजी श्री लघु भ्रातृ सा० जगरूपजी कियो कारापित जिन मन्दिर तास्मन् मिदरे चतम्मिक कत ......

३६१३. प्रतिसं०४। पत्र स०२३७। प्रा० १२४५ इ'च। ले० काल स०१८१० कार्तिक सूदी १४ ।पूर्ण। बेष्टन स०३०४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

३६२४ प्रति सं० ५ । पत्र स० १६५ । ले॰ काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टन सं० २१ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पचायती मंदिर होग ।

३६१**४. प्रतिसं०६** । पत्र स० १६२ । प्रा०११  $\times$  ४ $\S$  इच्च । र०काल स०१**५३१ ।** के०काल स०१६७४ । पूर्ण। बेष्टन स०१६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर लयपुर ।

३६१६. प्रति स०७। पत्र स०२७३। ले० काल स०१६६६। पूर्ण। वेष्ट्रन स०६१। प्राप्ति स्थानः – दि० जैन पत्राधनी मदिर हण्डावालों का होता।

विशेष---ग्रनवर में लिखा गया था।

**३६१७. प्रति सं० म ।** पत्र स० २२० । ग्रा० ११×५ इच । ले० काल स० १६१४ माह सुदी ४ । पूर्ण । बेपून स० १२४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान दुंदी ।

विशेष-चट्याली मे प्रतिलिपि कराई । मृति श्री हेमकीत्ति ने सशोधन किया । प्रशस्ति भी है ।

३६१८. प्रति सं० ६ । पत्रस० १४५ । धा० ६ $^1_i \times ^1_i \times ^1_i$  स्वा । ले०काल स० १८२० मगसिर बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टनम० ३३६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

विशेष -- दवलाना मे प्रतिनिधि हुई ।

३६१६. प्रद्यासन्तरित्र—शुम्बस्यः । पत्र स० ६७ । प्रा०१०१ × ४ इच । भाषा— सम्कृतः । विषय—चित्रः । १०काल × । ले०काल × । प्रपूर्णः । वेष्टनत० ३० । प्राप्ति स्थान— वि० जैन महिरा प्रतिनरदन स्वामी व दी ।

विशेष---केवल ग्रन्तिम पत्र नहीं है।

३६२०. प्रखुम्न लीला वर्गन—शिवचम्द गिर्मा। पत्र स० २६१ । भाषा—संस्कृत । विषय—चित्र । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६०२ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरनपुर ।

३६२१. प्रद्यासम्बद्धिन्  $\times$  । पत्रस्य ४२ । श्राः १० $^3 \times$ ४ $^3 १६ख । भाषा-स स्कृत । विषय — विष्य म्यां न रूकत । से क्काल <math>\times$  । स्रपूर्णं । बेष्टनसं०१६१ । प्राप्ति स्थान — सहारकीय दि० जैन मन्दिर स्रवंसर ।

३६२२. प्रद्युम्न चरित्र—  $\times$  । पत्र स० ७६-२१४ । द्या० १४ $\times$ ७ इथ । भाषा —हिन्दी गय । विषय-चित्रत्र ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । से०काल स० १६४७ । द्यपूर्ण । वेष्ट्रन स० २०७ । प्राप्ति स्थान—-दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान व दी ।

विशेष --- प्रारम्भ के ७५ पत्र नहीं है।

३६२३. प्रकृष्म चरित्र $-\times$ । पत्र सं० १८७। घा० १३  $\times$  ६ इख । भाषा - हिन्दी गढा। विषय - चरित्र। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण। बेष्टन सं० ७६। प्राप्ति स्थान - दि० जैन महिर श्री महावीर बंदी।

३६२४. प्रस्कृष्टन चरित्र—  $\times$  । पत्र स० ३३४ । भाषा – हिन्दी । विषय—जीवन चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६२५. प्रदानन चरित्र टीका —  $\times$  । पत्रसं० ७५ । म्रा० १४  $\times$ ७ इश्व । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय — चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । म्रपूर्ण । बेप्टन स० ११५ । प्रास्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर श्री महावीर ब्रंदी ।

३६२६ प्रशुक्त चरित्र रत्नेचंद्र गरिए। पत्रस०१०४। प्रा०१०४५ इथा। आधा—सस्त्रत। विषय-चरित्र। रक्ताल ४। लेक्सल स०१८३४। पूर्ण। वेष्टन स०१३७–३२। प्राप्ति स्थान — विकर्जन मन्दिर नेमिनाय टोडारायमिह (टोंक)।

३६२७. प्रशुक्त चरित्र वृत्ति-देवसूरि । पत्र स० २ से १०४। भाषा सस्कृत । विषय— चरित्र । र०काल ४ । ले•काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६११। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवासती मन्दिर भरतपर ।

३६२६. प्र**शुक्त चरित—संघार** । पत्रसं० ३२ । म्रा० ११ $\times$ ४१ इच्च । भाषा -हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल स० १४११ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष — दि० जैन प्रतिशय क्षेत्र थी महावीरत्री द्वारा जनवरी ६० मे प्रकाशित । इसके सपादक स्व० प० चैनमुखदास जी न्यायतीर्थ एव डा० कस्तृत्वन्द कामलीवाल एम. ए पी. एच, डी है ।

**३६२६. प्रतिसं० २।** पत्रस० ४०। श्रा० १२ ४ ६ $\frac{1}{2}$  दश्व । से०काल स० १८८१ वैशाख बुदी १०। श्रपूर्ण । बेष्टन स० ७७। **प्राप्ति स्थान**— पचावनी दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष — स्कोज एव अस्य प्रतियों के ब्राधार पर सही र०काल सं० १४११ भादवा मुदी ५ माना गया है जबकि इस प्रति में र०काल सं० १३११ भादवा मुदी ५ दिया है। बीच के कुछ पत्र नहीं है तथा प्रति जीर्गों है।

३६३०. प्रद्युम्नचिरित्र—मझालाल । पत्रस०२४६। ग्रा०१३ $\times$ ० $\frac{3}{2}$ ६७ । भाषा—हिन्दो (गद्य)। विषय—चरित्र । र०काल स०१६१६ ज्येष्ठ बुदी ५ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनम०४७६ । प्रास्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

३६३१. प्रद्यान्न चरित्र भाषा—ज्वालाप्रसाद बस्तावरींसह। पत्रस०२११ । बा०११५ूँ× ६ इंच । माया—हिन्दी (गढा)। विषय—चरित्र । र०काल स०१६१४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर चौषरियान मालपुरा (टोक)

विशेष — प्रंथ की भाषा प्रथम तो ज्वाला प्रसाद ने की लेकिन स० १६११ में उनका देहान्त होने से कन्दनलाल के पुत्र बरूतावर्रीसह ने १६१४ में इसे पूर्ण किया ।

मुलग्रंथ सोमकीति का है।

**३६३२. प्रतिसं०२** । पत्रस० २०३ । धा०१२×= इञ्च । ले०काल स०११६१ । पूर्गा। वे**डनसं०२**७ । **प्राप्ति स्थान — प्र**प्रवाल दि० जैन मन्दिर, नैगावा।

३६३३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २१६ । ग्रा०१२ imes ६ छ । ते० काल imes । पूर्ग । बेहुनसं० १४७/१२७ । प्राप्ति स्थान—खण्डेलवाल दि० जैन प चायनी मन्दिर ग्रलवर ।

३६३४. प्रति सं० ४ ।पत्रसः ० २६३ । लेकाल सः ० १६६१ । पूर्गः । वेष्टनः सं० १४५/४० प्राप्तिः स्थान—सण्डेलवाल दि० जैन पचायनी मन्दिर प्रतन्तर ।

**३६३४. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० १६७ । आ० १५ $\times$ ८ $^2_{\tilde{r}}$  इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर म्रजनर ।

३६३६. प्रति स० ६। पत्रसं० १७६। घा० १३  $\times$  ८ इश्व । ले०काल स० १६६४ घासौज बुदी १३। पूर्ण । बेष्टन स० १५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशोष — सबत १६१५ में पन्नाताल जी ते प्रारम्भ किया एवं १६१६ में बस्तावरसिंह ने पूर्ण किया ऐसा भी लिला है।

३६३७. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २८७ । लेक्काल स० १६४६ सावण बुदी ८ । पूर्ण । बेप्टन स० १५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोकारायसिंह (टोक) ।

३६३६. प्रश्चुम्नचरित्र माद्या— खुशालचन्द । पत्र स०३० । द्या० १२ $\frac{2}{5}$ ४०६ व । माद्या—हिन्दी (गर्छ) । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स०४७६ । प्राप्ति स्थान—हि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

३६३६. प्रश्चुम्मचरित्र मावा $-\times$ । पत्र स० ३६४। प्रा० १३  $\times$  ६ इञ्च। मावा- हिन्दी। विषय-—चरित्र। र०काल  $\times$ । ले० काल स० १६४१। पूर्ण। वेष्ट्रन स० ६। प्राप्ति स्थान - विर्जन मन्दिर भादवा राज्र।

विशेष--इन्दौर मे प्रतिलिपि हुई।

३६४०. प्रद्युम्न प्रबंध —भ० देवेन्द्रकोति । पत्रसं०२३ । प्रा०१० $\times$ ६ इख । माषा — हिन्दी (पय) । विषय —काव्य । २०काल स०१७२२ चैन मुदी ३ । ले०काल स०१८६४ काती बुदी ६ । पूर्णे । वेष्ट्रन स०३६८ ६६ । प्राप्ति स्थान —सभवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - देवेन्द्रकीति निम्न ग्राम्नाय के भट्टारक थे-

ग्रादि ग्रन भाग निम्न प्रकार है---

श्रादि भाग-- दोहा।

सकल मध्य सुष्कर चदा नेमि जिनेश्वर राय । यदुकुल कमल दिवस पति प्ररामु तेहना पाय । जगदबा जय सरस्वती जिनवाणी तुफ काय । प्रविरल वाणी श्राप जो भू भूंठी मुफमाय ।

तसपटकमल कमल बहु श्रीय देवेन्द्रकोति गच्छहस्रदे । प्रयुक्त प्रवय रच्यो तिमि भविवागु भंगु जो निश्चोसरे ॥४३॥ संवत सतर बाबीस मृदि चैत्र तीज बुचवार रे । माहेश्वरमाहि रचना रची रहि चन्द्रनाथ ग्रह द्वार रे ॥४४॥ सुरव वासी संघपित क्षेगमजी सुरजी दातार रे। तेह बाबह थी प्रद्यम्न नो ए प्रविध रच्यो मनोहार रे।।४५।।

781-

मनोहार प्रबंध ए गुंध्यों करी विवेक । प्रकुम्न गुणि मुत्रे करी स्तवन कुमुम प्रनेक ।। भविष्या गुण् कठे घरी एह प्रपृवं हार । घिर मगल तक्ष्मी घणी पुष्य तणो नहीं पार ।। भणे भणोव सामलो निल्ले विल्लावे एह । देवेन्द्र कीर्ति ग्राञ्चपति कहे स्वयं मिक्त लहुँ तेह ।।

इति श्री प्रद्युम्न प्रवयं संपूर्णं श्री दक्षाण देशे प्रशास ग्रामे पं० खुश्यालेन प्रतिलिपि कारित । प्राय का अपर नाम प्रदामन प्रवंध भी मिलता है।

३६४१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। आ०१०×४} इश्वा । ते० काल स.०१८१२ फागुण बुदी। पूर्ण । बेष्टन स०१३८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)।

विशेष - भट्टारक श्री शुभचन्द्र ने रामपुरा में प्रतिनिषि की थी।

**३६४२. प्रतिसं० ३ ।** पत्र सं० ४७ । ग्रा० ६ै, ४४ है इल्ख । ले० काल स०१६०२ पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगान बूदी ।

विशेष- ब्रह्म श्री फतेचन्द ने लिखनाया था।

३६४३. प्रबोध चद्विका—  $\times$  । पत्र स॰ - २२ । मा० १०  $\times$  ४ ३ १४ । भाषा-सन्छत । विषय—काव्य ।  $^{\circ}$ ० कात्र  $\times$  । ते० कात्र स० १२६ । भाषित स्थान—(२० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

३६४४. प्रबोध चंद्रोदय—कुरुए मिश्रा । पत्र स० १६ । घा० १० × ४ १ दश्व । भाषा— संस्कृत । विषय—काव्य । ए०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर बोरसनी कोटा ।

३६४५. प्रभंजन चरित्र—  $\times$  । पत्र स०२ से ४२ । म्रा० ६ $\frac{1}{4}$  $\times$ ६ इथा । भाषा—सस्कृत । विषय—चिरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टनस०१२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नगरी बुदी ।

३६४६. प्रभंजन चरित्र— $\times$ । पत्रसं० २१ । मा० १२ × ४ इच । माया-संस्कृत । विषय-चित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६२३ आसीज सुदी १। वेष्टुनसं० १४० । प्राप्ति स्थान—िह्० जैन सिंतर लक्कर, जयपुर ।

विशेच—ग्रा० श्रीलखमीचन्द्र के शिष्य प० नेमिदास ने स्वय के पठनार्थलिखवाया।

३६४७. प्रश्न विष्ट शतक काव्य टीका-टीकाकार पुण्य सागर । पत्र छ० ४ । घा० ११ × ४ इ.च । माषा—संस्कृत । विषय—काव्य । टीका म० १६४० । लेककाल स० १७१४ सावन मुदी ७ । पूर्णे । बेष्टनसं० २३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३६४८. प्रीतिकर चरित्र—सिंहनन्दि । पत्रसं० ११ । प्रा० ११ $\frac{1}{2}$ ४६ इल । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १११० । पूर्ण । वेष्टन स०२८ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३६४६. **प्रीतिकर चरित्र—कः नेमिटस** । पत्रसं० ३० । ग्रा० ११ × ५ इश्व । प्रापा— संस्कृत । विषय चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६०४ पूर्ण । वेष्ट्रनसं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**— महारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

् दे६५०. प्रतिसं०२ । पत्र स०१ से २५ तक। प्रा०१०३ ४४३ दवा। से०काल ४ । पूर्ण। बेबन सं०१३६०। प्राप्ति स्थान — भटारकीय दि० जैन मन्दिर सजसेर।

३६४१. प्रति सं० ३। पत्रस० २३। आ० १ × ६ इचा । लेक्सल स० १६०७ फानुसा सुदी ११। पूर्ण । वेष्टन सं० २४३। प्राप्ति स्थान—पाव्यंनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

**३६५२. प्रीतिकर चरित्र—जोधराज गोबीका।** पत्र सं०२३। प्रा०१<sup>2</sup>, ४६इख । भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र०काल सं०१७२१ फागुग मुदी ४। ले०काल स०१८८७। पूर्या। बेष्टुन स०१४६६। **प्राप्ति स्थान—**महारकोय दि० जैन मन्दिर सजमेर।

३६५३. प्रति सं० २ । पत्रस० १० । आ० ११imes६६ दश्वः । ले•काल imes । प्रपूर्णं । बेग्रन स० ७० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर, तेरहपथी मालपुरा (टोक) ह

३५४४. प्रति सं० ३। पत्र स०३०। घा०११३४४३ इश्वा। लेक्काल स०१८८४ । पूर्णं वेष्टन स०४०। **प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)।

३६**५५. प्रति सं०४ ।** पत्र म०६५ । ग्रा०११ ४५ १ इल्खा । ले०काल ४ । पूर्णः । बेहन सं०⊂२ । **प्राप्ति स्थान**—पत्रायती दि०जैन मन्दिर ग्रनवर ।

३६४६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ४४ । ते०काल सं १७६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--जोधराज मनीराम के पुत्र चादवाल ने भोजपुर मे लिखा।

३६४७. प्रति सं०६। पत्र स॰ ३३। ले॰काल स॰ १९०२। प्रपूर्ण। वेष्टन स० ३२१। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

३६५ म. प्रति सं०७ । पत्र स० ६६ । मा०६३ ४५ इञ्च । ले∘काल स०१७=४ फागुए। बुदी ५ । पूर्ण । वे०सं०४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना । ं

३६५६. बसतवर्षम् — कालिदास । पत्रसं०। १७ । आ० १  $\times$  ४ $^2_{\xi}$  इख । भाषा — सस्कृत । विषय — काल्य । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १८६६ सावरा सुदी १० । पूर्णं । वे. स० १४३०। प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर अजभेर ।

३६६०. बारा ग्रारा महाचौपर्दबंध—ज्ञ० रूपजी । पत्रसं० १८ । प्राया—हिन्दी । विषय – चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १०५/१४३ । प्राप्ति ,ह्यान—सभवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - चौबीस तीर्थकरों के शरीर का प्रमास, वर्स खादि का पद्यों में संक्षिरत वर्सन है।

धादि धत भाग निम्न प्रकार है :—

प्रारंस—धोनमः सिद्धं मः । बारा धारा चौगई निस्थते :

प्रथम वृषम जिन निस्ततु जे जुग धादि सार ।

भव एकावस ऊजला भव्य उताररण पार ।।?।।

इह प्रथम जिनद दुख दावानल कद

भव्यकज विकासनवन्द नुषकाधिव धाररणचन्द ।। २ ।।

सरस्वती निवलीनम् जेह सान ध्यार ।

मनवास्त्र जेहरीफसी कविजन नाम सार ।। ३ ।।

श्री मुलस्य सहामणी सरस्वतीमच्छे सार ।

बलास्कर णुभगरण भष्यो श्री कुंडकुंद सारि ।। ४ ।। इस से मागे म॰ पमनंदि, सकलकीर्ति श्रुवनकीर्ति, शानभूषण, विजयकीर्ति गुभचन्द्र, सुमतिकीर्ति गुराकीर्ति की परम्परा भौर उसके वाद

बादीभूषण नेह मनुकिम रामकीरतिज सार।
पपनिद निवलीस्तव नेल रहित मुलकार।
तेहना क्षिप्यज उजलो करि बार मार विचार।
बाह्मरूपजी नामिमण्यो मुण्ययो सज्जनसार।
सानस्य देमेज कवि मुण्यद गुण्यार
तेहनागुण मन्साहि परि कवि बोलं मुलकार।

ग्रन्तिम-

चष्ट्रमूरज यह तारा जाए रामयक्षताक निर्वाण रामयक्षताक निर्वाण स्वाप्त किंग्स्त को ॥६३॥ सत्तर उक्त बीम दूहा सही मात्री सत्रण सिजोए कही ब्रह्मसर्थाण के हरे स्वाप्त्य जिल्लामा ॥

इति महाचौपई वंधे ब्रह्मरूपजी विरक्षितं ब्रष्टकान स्वरूप कथानाम तृतीय उल्लाम । इति बारा ख्रारा महाचौपई वर्षे वमाप्तः ।

स्वय पठनाय स्वय कृतं स्वयं लिखितं । महिमाग्गा नगर ग्रादि जिन चैल्यालये कृता । इसमें कुल तीन उल्लास है —

१. कालत्रय स्वरूप

२. चतुर्थं काल वर्णन स्वरूप ३. ग्रष्टकाल स्वरूप वर्णन ।

३६६१. भद्र**वाह खरित्र—रत्नर्गांद** । पत्रस० २४। घा० ६ $\times$ प $^1_V$  इश्च । भाषा —सकृत । विषय —चरित्र । र०काल  $\times$  । से०काल सं०१८४ । पूर्ण । बेष्टन स०१२३३ । **प्राप्ति स्थान**— मुद्रारकीय दि० जैन मन्दिर सबसेर । **३६६२. प्रतिसं० २ ।** पत्र स०२१ । प्रा० ११ × ४ इञ्च । ले० काल स० १६२७। पूर्ए । वेष्टन स० ११४० । **प्राप्तिस्थान**— भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-कही २ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये है।

३६६३. प्रतिसं**०३।** पत्रस०२६। प्रा०१०४६ इखालेक्काल ४।पूर्णावेष्टन सं०३७। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर फ्रिंभनन्दन स्वामी,खरी।

३६६४. प्रतिसं० ४ । पत्र स०२०१ । ग्रा० ६×५ै, इत्त्र । ले०काल सं०१६०६ । पूर्ण । वेष्टन स०२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वमी बंदी ।

**३२६४. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स० २४ । प्रा० ११३ $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इख । ले॰काल स० १८३२ फागुस मुदी ११ । पूर्स । बेक्ट स० १७१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ बौगान बूदी ।

३६६६, प्रतिस० ६ । पत्रस० २४ । झा० १०३ ४४ इन्छ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेहुनस० १२४ । प्राप्टित स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिरनदनी (टीक्र)

३६६७. प्रतिसं० ७ । पत्रम० २८ । छा० ११४४ इश्वा । ले० कालस० १८२५ । पूर्ग । बेब्रनस० ८० । प्राप्ति स्थान --दि० ईन पचायनी मन्दिर धलवर ।

३६६८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २७ । स्रा० १२ ४ ५ है दश्च । ले० काल स० १८१६ फागुगा बृदी ५ । पूर्ण । बेस्टन स० १५ । प्रास्ति स्थान---दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

३६६६ प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३१ । ग्रा० ६×४ दक्षा । ले०काल × । पूर्णा । बेष्टन स० १४० । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन क्रप्रवाल मदिर उदयपुर ।

३६७०. प्रति सं० १०। पत्र स० २३ । म्रा० १० $^1$  $^2$  $^2$  $^2$  इ.ख.। पूर्ण ्ले॰काल imes । बेष्टन स० १४६ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

३६७१. प्रतिसं० ११ । पत्रस० २-११ । प्रा० १२ × ५३ ६ च । ले०काल सं० १७६० माघ मुदीब १३ । पूर्ण । बेष्टुनस० ७४२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

३६७२. सद्रवाहु चरित्र भाषा— किशनिसिह पाटनी । पत्र स०४३ । ग्रा०१२ 🗴 ६ इख । भाषा— हिन्दी (पद्य) विषय—चरित्र । र०काल स०१७५२ माघ बुदी ६ । ले०काल स०१५६२ माह सुदी १२ । पूर्ण बेष्टुन स०१४६२ । प्राप्ति स्थान—अट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजभेर ।

विशेष-- किशनसिंह पाटनी चौथ का बरवाडा के रहने वाले थे।

३६७३, प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । आ० १३ ४७ इन्छ । ले० काल स० १६०५ पीष सुदी ४ । पूर्य वेष्टन स०४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शैखाबाटी (सीकर)

**३६७४. प्रति सं०३।** पत्र स०४७। म्रा०६ १४६१ इच । ले**०काल ४**। पूर्णै। बेष्टन सं०७३-४२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर।

३६७**५. प्रति सं० ४ ।** पत्रस०२८ । प्रा०१२१×७ इन्ब । ले**०काल ×** । पूर्ण । बेष्टन स०६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३६७६. प्रति सं० ४ । पत्र स०३६ । ले० काल स०१६७४ । पूर्ण । बेष्टन स०१६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मंदिर प्रभिनन्दन स्वामी, ब्रुदी । ३६७७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १६ । म्रा० १० है×४ हैं हथा । ले० काल स० १६७६ मादबा बुदी १२ । पूर्सा । बेट्टन स० ६८ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बूंदी ।

३६७८. प्रति सं०७ । पत्रस० ३४ । घा० १०४६ इश्वा । से०काल स० १६४० । पूर्ण । वेट्टन स० ८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रथवाल मन्दिर नैस्पृता ।

३६७८. प्रतिसं० म. । पत्र स०३२ । घा०६ 🗴 ५ इञ्च । ले० काल सं० १६०० । पूर्णे । केवन स०१ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन तेरहपंत्री मन्दिर नैरावा ।

> विशेष — लोचनपुर गुज याम में सिषराज जिनवाम । बुद्धि प्रमाण लिक्यो मुझे जिपये श्री जिननाम ।। १ ।। साइ करो मुझि ऊपरे, रोषहरो मनवान । सरण नगण प्रादिकतह स्टाऊं श्री जिनवाणि । प्रमाप्रस्ण नाय के मार्च विनती एह । देव भां श्रुत सामृ को चरण नम् धरि नेहा ।। सभव है प्रतालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३६ म**ः प्रतिसं≎ ६ ।** पत्र सं०२ मः। भ्रा०१० ×७ इश्वाले काल स०१६०२ । पूर्णा। बेष्टन स०४ × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का नैसावा।

विशेष—महाराजाविराज श्री रार्मासहजी का राज मे बूदी के परगरो नैरावा मध्ये ।

३६८१. प्रति स० १०। पत्र सं० २६। ग्रा० ११४७ इश्व । ले०काल स० १६६२। पूर्ण । वेष्टुन १०। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर बचेरवालो का (उिएयारा)

३६८२. प्रति सं० १६ । पत्र स० ४३ । म्रा० १०४७ इ.ख.। ले०काल १८८२ । पूर्णः। बेष्टत स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टीक)

३६⊏३. प्रति सं० १२ । पत्र स० ३१ । घा० १२४⊏ इश्वा । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टन सं० ११.४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (टोक)

विशेष-भेलीराज ज्ञानि सावडा चम्पावती वाले ने माधोराजपुरा मे प्रतिलिपि कराई थी।

३६८४ **प्रतिसं० १३।** पत्रस० ४१। ग्रा० १०×४ ्रै इच्च । र०काल स० १७८३ माघ इदी ८। ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ७६। । **प्राप्ति स्थान— दि० जैन** पचायती मन्दिर प्रतन्दर।

३६८**५. प्रतिसं० १४ ।** पत्रस० २०। झा० १२¦्र ४७ १ इश्वा । ले०काल ४ । पूर्णा । वेष्टनस० ४४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष--- ५६५ पद्य है।

३६८६. प्रतिसं०१४ । पत्र सं०४७। ग्रा०६ $१ \times 1$ , १६वा। ले० काल स०१८१३ ग्रासोज मृदी १०।। पूर्ण। बेष्टन स०४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचावती मन्दिर बयाना।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है-शुभ सवत् १०१३ वर्षे धासोज मासे शुक्कपक्षे दशम्पां रविवासरे सण्डेलवानान्वये गिरधरवाल गोत्रे शावकपुनीत श्री उदैरामजी तस्य प्रभावनामकारक श्री बुरामलजी तस्य प्रश ह्वय ज्येष्ठ पुत्र लीलापती लघुमृत बनारसीदाम पौत्रज राधेक्रय्स एतंवां साहजी श्री चुरामिएजी तेनेद शास्त्र विस्तापितं।

**बोहा**—चूरामनि ने ग्रन्थ यह निजहित हेत विचार ।

लिखवायो भविजन पढो ज्यो पार्व सुखसार ।।

३६ म्ह . प्रति सं० १६ । पत्र सं० म्ह । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मन्दिर अरलपुर ।

विशेष — उपगृहन कथा ऋषि मण्डल स्तोत्र, जैन शतक (स॰ १७६१) बील तीर्थकरीं की जराड़ी खादि भी है।

३६८८. प्रतिसा० १७ । पत्रसं० ४१ । ग्रा० १० 🗙 १ इ.खा । ले०काल स० १८५७ ग्रपाढ युदी १४ । पूरां । वेष्टनसं० ६२-६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष-विमनलाल तेरहाथी दौसा ने प्रपिलिपि की थी।

३६८६. प्रतिसं० १८ । पत्र स०४४ । ले० काल १८२७ । पूर्ण । बेष्टन सं०३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहतथी बसवा ।

विशेष -- कामागढ में भोलीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३६६०. प्रतिस**ं** २ १६ । पत्र स० ४१ । ग्रा० १२imes५ इच्छा ले० काल स०१=४२ वैज्ञास सुदी १ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १७ ९ । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर वहा वीसपयी दौसा ।

विशेष—चृहो ने सा रसा है।

३६६१. मदबाह चरित्र माषा—चंपाराम । पत्र सं० ४३ । आ० १०} ४ ६ इच्च । भाषा—हिन्दी (गयः)। विषय—चरित्र । र०काल स०१=६४ सावन सुदी १४ । ले०काल सं०१६२६ मगसिर बुरी १४ । पूर्ण । बेष्टन सं०६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेखाबाटी (सीकर)

विशेष - ब्राह्मण् पूष्करगा फतेराम जात काकला में प्रतिलिपि की थी।

सवत् १६२ = भाटवां सुदी १४ को धनन्तव्रतोद्यापन के उपलक्ष में हरिकिसन त्री के मन्दिर में चढायाथा।

३६१२. प्रति स० २ । पत्र स० २३ । ग्रा० ११ $^{\circ}$  $\times$ ६ $^{\circ}$ १ इख । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्राभिनन्दन स्वामी बूदी ।

३६६३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७१ । आ० १०१४६२ हुन्छ । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । वैष्टन सं० १४४. ४४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पाछ्येनाथ मदिर, इन्दरगढ (कोटा)

३६९४. प्रति स०४। पत्रस०४६। मा०६१४६ इश्व। ले०काल सं०१६२२ स्रायाढ सुरी १४। पूर्ण। बेष्टनस०४२/४४। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर पाव्यंनाथ इन्दरगढ (कोटा)

३६६५. प्रति सं० ५ । वत्रस० ३४ । आ० १३४६ इञ्च । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वैष्टतसं० १४५ । प्राप्ति स्थान----वि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

३६८६. मद्रबाहु चरित्र भावा—  $\times$  । पत्र सं० - ४। धा० ६ $\times$  ४ $^{3}$  ६ञ्च । भाषा—हिन्दी गय । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन स०४० । प्राप्ति स्चान—विः जैन मन्दिर श्री श्रहाचीर दूंदी ।

३६६७. भद्रबाहु चरित्र सटीक $--\times$ । पत्रस $\circ$  ४१। घा $\circ$  १२  $\times$   $\circ$  १ व्या । साधा- हिन्दी गृद्य । विषय- चरित्र । र $\circ$  काल्  $\times$  । ले $\circ$  काल्स  $\circ$  १६७७ माघ मुदी = । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  १४०। प्राप्ति स्थान-दि $\circ$  जैनमन्दिर करोहपर मेखावाटी (सीकर) ।

विशेष---रलन्दि कृत सस्कृत की टीका है।

३६६६. भविष्यवस् चरित्र — श्रीघर । पत्रस० ६४ । बा०१०, ४४ इञ्च । भाषा — भ्रपञ्च च । विषय — चरित्र । र०काल ४ । ले०काल स०१६६४ ज्येष्ठ मुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं०६४ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

**३६८६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० पर्र । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । प्राप्ति **स्थान** — भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

३७००. प्रतिस्**ं ३**। पत्र स० ६१। ले० काल स० १६१३ मादवा सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० २०१। प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर।

विशेष-तक्षकमहादुरं मे मडलाचार्यं ललितकीत्तिदेव की ब्राम्नाय मे सा हीरा भौना ने प्रतिनिधि करवायी थी ।

३७०१. प्रतिसं०४ । पत्रस०६३ । ले० काल १६४३ । पूर्या । वेष्टनस०४६ ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर संभवनाय उदयपुर ।

## प्रशस्ति---

सवत् १६४३ वर्षे श्रावशा बुदी ५ तिथी रिवासरे श्री चन्द्रावतीपुर्या श्री प्रादिनाय चैन्यालये श्री मूलसचे सरस्वतीमच्छे बलात्कारगणे भी कुन्दकुन्दाचार्यान्ये भट्टारक श्री सक्वकीनिदेवा तत्यहुँ भ० भुवन-क्षीतिदेवा तत्यहुँ भ० आनुस्पादेवा तत्यहुँ भी विजयकीतिदेवा तत्यहुँ भ० श्री मुभकः १२वा स्तत्यहुँ भ० श्री त्रुप्तकार्याचा सत्यहुँ भ० श्री गुणकीति तत् विष्य स्त्राम्पात्र पटनार्यं। सिरोजवास्तव्यं परवार जाती चौचरी साह तद्भायों भाव तर्यों पुत्र चर्मभारणु पटनार्यं। सिरोजवास्तव्यं परवार जाती चौचरी साह तद्भायों भाव तर्यों पुत्र चर्मभारणु क्वावित्रण समुक्ता चौचरी बाचराज तद्भायों भावसती ताम्या जानावर्णी कर्मकार्यं भी भवित्यत्त पवमी चिरिने तिज्ञवादतः।।

३७०२. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४४ । आ० १०३ ४ ५ ई इंच । ले॰काल स० १७३१ संगमिर बृदी = । पूर्ण । बेष्टन स० ४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ बृदी ।

विशेष--प० लक्ष्मीदास ने स्व पठनायं लिखा था।

३७०३ प्रतिसं०६ । पत्रसं० २६-४८ । प्रा०१२×४६ दश्व । ले०काल × । स्रपूर्ण । वेष्टतसं०७०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

३७०**४. प्रतिसं० ७ ।** पत्र स० ८६ । आ० १० ई 🗴 ४ इचा। ले॰ काल स० १४१६ श्रावस्स दुदी ४ । पूर्स्स । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर पचायती दुनी (टोक)

श्रमस्ति— संवत् १४४६ वर्षे श्रावण मान्ने इत्याणको प्रति पत्तियौ वुप दिने गंबारे मन्दिरे श्री पाष्ट्रवेनाय वेर्पालये श्री मुक्तये सरस्वतीगच्छे बलाकारायो श्री हुन्दहुन्दाचार्यान्वयं भ० श्री सहस्त्रकोति तत्पट्टे भ० कुनकीनि तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण्य तन्त्रिय्य मुनि श्री गुणमूषण् पठनार्यं वाई ज्ञानिका मदनश्री ज्ञानावरत्यीय कम्मदेशयार्व निवासिन प्रविच्यत्म वित्रि ॥ ३७०**४. प्रतिसं० ⊏ ।** पत्रस० ⊏६ । प्रा० ११ × ५ इश्व । ले० काल स० १६५६ । पूर्गा । बेष्टत स० ३६७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—स॰ १६५६ काती सुदी ४ गुरुवारे घ्रउडक्ष देशे भेदकी पुर नगरे राजाधिराज मानस्यंघ राज्ये प्रतिलिपि हुई थी।

३७०६. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ५० । धा० १२ है ४४ है इन्छ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं∙ २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रंदी) ।

३७०७. प्रतिसं० १० । पत्र सं० २-६६ । ग्रा० १२×४१ इञ्च । ले० काल × । श्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ३२२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३७०**८. प्रति सं० ११।** पत्रस० १-७५। ने० कान सं० १६१०। पूर्गा। वेष्टन स० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग।

३७०**६. प्रति सं० १२** । पत्र स॰ ६७ । ले०काल स० १४८२ वैशाल सुदी १०। पूर्ण । वेष्टन स॰ ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष -- प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

स वत् १४८२ वंशाख मुदी १० श्री योगिनीपुरे साहिशादा मुरादक्षार राज्य प्रवर्तमाने श्री काष्ठासघे मापुरान्वयं पुष्कर गर्गो स्नावार्य श्री भावसेन देवास्तत् पट्टे श्री गुराकीर्ति देवास्तत् शिस्य श्री यस कीर्ति देवा उपदेशेन निर्वापित ।

३७१०. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ६३ । प्रा० १२ $\times$ ४ १ इच्च । ले०काल स० १६३१ वैशास सुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३७११. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १-५६ । प्रा० ११३ $\times$ ४३ । त्रः । ते०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ५४ । प्राप्ति स्थान — प्रवचाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- = पत्र से आगे के पत्र नही है। प्रति प्राचीन है।

३७१२. **मिक्छ्य दत्त चरित्र** $-- \times$ । पत्रस० १६ । मा० १०६ ×५ इख । माषा -सस्कृत । विषय -चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मिन्दर नेमिनाथ टोडारायमिङ (टोक)

३७१३. **मविष्यदत्त चौपई—कः रायमल्ल** । पत्रस०४२ । ग्रा० १० $\times$ ४५ इच्च । माषा—हिन्दी । विषय— चिन्त्र । र०काल स० १७६४ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेहन स० १२४५ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि**०** जैन मन्दिर प्रवर्भर ।

३७१४. प्रति सं० २ । पत्र स ५० । धा० १२ $\times$ ५ $^{1}$  इच्च । ले० काल स० १९४५ काती सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । प्राप्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३७**१४. प्रति सं**०३ । पत्र सं०७० । घा० ८३,×६ इचा। ले०काल सं०१८४४ । पूर्णी। वेष्टनसं०१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल, टोक ।

विरोष — महात्मा ज्ञानीराम सवाई जयपुर वाले ने प्रतिलिपि की । लिखायित पं० श्री देवीचन्द जी राजारामस्यंथ के केटा मध्ये । ३७**१६. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० ४४ । प्रा० १०३<sup>2</sup> ४ ४<sup>2</sup>, इन्दा । ले० काल स० १८२० । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर स्नादिनास स्वामी मालपुरा (टोक) ।

सेलक प्रशस्ति—मिति मादवा बुदि ११ वर दीतवार सवत् १८३० साके १६६४ प्रवर्तमान मट्टारक श्री १०८ श्री मुरेरहकीर्ति जी प्रवृतमान मूलस वे बलात्कार गरी सुरस्ती गच्छे धामनाये श्री कुँद-कृत्वाचार्ये लिखिनार्षं साहा नाषुराम सोनी जाति सोनी। लिखतुं रूडमल गोधा। श्री ब्रादिनाथ के देहरा।

३७१७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४३ । आ० १० imes ४ है इन्छ । ले०काल imes । सपूर्ण । बेष्ट्रत स० ५०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

विशेष - ईश्वरदास साह ने प्रतिलिपि की।

३७१८. भुवन मानुकेवली चरित्र  $\times 1$  पत्रस $\circ$  ३७। घा॰ १० $\times Y_{\sigma}^{1}$  इश्व । मापा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  ,से॰काल स $\circ$  १७४७। पूर्ण । वेप्टन स $\circ$  ६५ । प्रास्ति स्चान—दि $\circ$  जैन मन्दिर दवलाना वृदी ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

इति श्री भवनभान् केवलि महाचारित्रे वैराग्यभय समाप्त ।

सन्त १७४७ वर्षे बाके १६१२ मिति कागुण बुदि १ पडितोत्तम श्री १ श्री नश्मी विमलगणि विषय पडित किरोमणि पडित श्री १ श्री र गविमलगणि किय्य समर विमल गणि किया गाँग श्री रत्नविमल ग. पठनार्थ भगवतगढ नगरे पातिवाह श्री घोर गसाह विजेराज नवाब झस्तवागी नाम राजशी साहुलविह्जी राखे जिलात।

३७१६. मोजाप्रबंध — पं० बल्लाल । पत्रस०४०। प्रा०१३ ४६ इचा। भाषा — सस्हत। विषय-काच्या। र०काल स०१७४४ । से०काल ४। पूर्णावेष्ठन स०४=३। प्राप्ति स्थान — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धनमेर।

३७२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ग्रा॰ १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ५ इश्व । ले०काल स० १८६६ । वे० स॰ २६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

३७२१. भोज चरित्र — मवानीदास स्थास । पत्रसं० ३४ । आ०१०  $\times \vee_0^2$  इव । भाषा — हिन्दी । विषय — काव्य । र०काल  $\times$  । से०काल स०१ २२४ । वेष्टन स०६७२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-गढ जोघारा सतोल धाम ग्राई विलाडे ।

पीर पण्डकल्याग् सुजस गुण गीत गवाह ॥ भोज बरित तिए सु कह्यो कविषया सुख पावे ॥ व्यास सवानीदास कवित्त कर वात मुणावे ॥ मुणी प्रवथ चारण प्रते भोजराज बीन कह्यो ॥ कत्याणदास भूपान को घर्म ध्वजादारी कह्यो ॥

इति श्री मोज चरित्र सम्पूर्णं। सवत् १८२५ वर्षे मित कातिग बुद्धि ४ दिने बाबीबारे लिखितं। पचायक विजयण् श्रीमशागपुरे श्री पार्श्वांनाय प्रसादातु। ३७२२. मोजप्रबंध —  $\times$  । पत्र स०२०। प्रा०१ $\times$ ४ इ.ख. । भाषा — सस्कृत । विषय — काव्य । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०५४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मदिर दबलाना (कंडी) ।

३७२३. मोजराजकाव्य $--\times$ । पत्र सं०१ । मा०१० $\times$ ४ इंच । भाषा—सस्त्रत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०३३३ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

३७२४. मरिएपति चरित्र—हरिचन्द सूरि । पत्र स०१६ । भाषा—प्राहृत । विषय-चरित । र०काल स०११७२ । ले० काल  $\times$  पूर्ण । वेष्ट्रन स०४६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर मरतपुर ।

३७२५. मयर्गरहाचरित्र—  $\times$  । पत्रस०७ । म्रा०११ $\times$ ५ ह्वः । मापा—हिन्दी (पद्य) विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ते० काल स०११११ काती बुदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रनस०३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

३७२६. सलयमुन्दरीचरित्र—जयतिलक सूरि। पत्र स०६७। भाषा—सःकृत । विषय-चरित्र। र०काल × । ले०काल स०१४६० माथ सुदी १ सोमदिने। पूर्ण। वेष्ट्रन सं०६। प्राप्ति स्थान—दि० जन प्रचायनी मन्दिर बसवा।

३७२७. मलयमु दरी चरित्र भाषा — झखयराम जुहाडिया । पत्रस० १२४ । भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। र०काल 🗴 । ले० काल सं० १७७४ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । बेष्ट्रनस० ६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तरहपयी मन्दिर बसवा ।

विशेष---पारंम --

रिषभ ग्रादि चौबीस जिन जिन सेया ग्रानन्द।

नमस्कार त्रिकाल सहित करत होय मुखकंद ॥

३७२८. मिल्लिनाव चरित्र— मे० सकलकोति । पत्र सं०२७ । ब्रा०११ $^1_1 \times ^1_2 \times ^1_3 \times ^1_4 \times ^1_4 \times ^1_5 \times ^1_4 \times ^1_5 \times ^1_5$ 

३७२६. प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । झा० १०४४ इन्त । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० २७६ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७३०. प्रति सं०३ । पत्र स०४१ । म्रा०११ $imes^2_\xi$  इन्त । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स०७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३७३१. प्रति सं० ४ । पत्रस०४१ । ग्रा० १० ×४६ ह्या । ले०काल स० १६२३ ग्रामोज बुदी १४ पूर्यो । बेहुतस० २५५/२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मदिर उदयपुर ।

विशेष-दीमक लगी हुई है।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबत् १६२३ वर्षे प्राथ्वनि १४ णुके श्री मूलसपे मट्टारक श्री सकलकीति तुलाट्टे भ० श्री अवनकीति तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० विजयकीति तत्पट्टे भ० श्रुभचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री सुमितिकीति स्तदास्नाये िपरिपुर वास्तम्य हुवडजातीय का० साइया भार्या सहिजवर्द तयो मृत सम्यक्तवपानीय प्रशानित पायकरूँ म प्रञ्नी-कृत द्वारमवर्तान्यम । दानदत्ति सर्तापत त्रिविषपात्र विहित श्री सत्रु व्ययेताजीयेत तु नी प्रमुख तीर्थ पात्र समस्त गुरुगराखारेय को जावड तर्दमार्या भौनेवजीत संपन्ना दानपूजापराययात्तावस्य जलघेवंता वचनामृतवापिका श्राविका गोरा नाम्नी द्वितीय मार्या मुहुरुये तथो पुत्र को सामलदास एतं. ज्ञानावरस्यो कमं क्षयार्थ व्र० कर्ण-सामरास श्री माजनाय चरिक्र महिल्लाप्यप्रदत्त ।

**३७३२. प्रतिसं० ४** । पत्रस० ७६ । ले०काल १६२२ घ्राषाढ सुदी २ । पूर्ए । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष--- भरतपुर मे पन्नालाल बढजात्या ने लिखवाई थी।

३७३३. मिल्लिनाथ चरित्र – सकलमूबर्गः । पत्र स० ४१ । प्रा० ११र्\४५ इच । प्रापा– सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल ४ । ले० काल स० १८०८ फाल्गुन बुदी ४ । पूर्गः । बेष्टनस० १३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी (बुदी) ।

३७३४. मिल्लिनाथ चरित्र भाषा—सेवाराम पाटनी । पत्रस० ४१। ग्रा० ११४७ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी ।विषय—चरित्र । र०काल स० १८५० भारवा बुदी ५ । लेकाल स० १८६४ । पूर्णे । वेष्टन स० १०। प्राप्ति स्थान–दि० जैन मिल्दर दीवानजी कामा ।

विशेष--कामा में सदासुख रिषभदास ने प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ --

> (नम.) श्री मिल्लिनाथाय, कर्ममल्लविनाशने । धनन्त महिमासाय, जगत्स्व।मनिर्निण ।।

पद्य--

मिल्लिनाथ जिनको सदा बदो मनवचकाय ।
मञ्जलकारी जगत मे, मध्य जीवन मुखदाय ॥
मञ्जलकार मञ्जलकरण, मिल्लिनाथ जिनराज ।
मार स्यों में प्रथ यह, सिद्धि करो महाराजि ॥२॥

हिन्दी गद्य का नमुना---

समस्त कार्य करि जनत गुरू ने ले करि इन्द्र बडी विभृति स् पूर्ववत पुर ने ले स्नावता हुसा। तहा राज स्रांगरण के विर्य बडा सिंहासन पाड हर्य करि सर्वाङ्ग भूपित इन्द्र बैठतो हुई।

## ग्रन्तिम प्रशस्ति---

रामसुल परभागिम्ल, जोवराज मगहि बुविमल ।
दीपचन्द गोषो गुरावान इनि चारमा मिलि कही बलानि ।।१।।
मिल्लाण चरित्र की भाषा, करो महा इह ग्रति विक्यात ।
पढ सुनै साधरमी लोग, उपजे पुष्प पाप क्षम्म होत्र ।।१।।
तब हमने यह किसी विचार, वचनरूप भाषा मितसा हो।।
साधाचन्द को नदत जानि, मोतापाटणी सुलकार ।।३।।
साधाचन्द को नदत जानि, मोतापाटणी सुलकी जानि ।
सेवाराम सास है सही, माला कि को जानी इहि ।।४।।

श्रन्य दुद्धि मेरी श्रति घणी, कवि जन स्विनती इस माणी।
भूल चुक जो लेडु सुपार, इहि प्रस्का मेरी प्रवचार ॥५॥
प्रथम वास दोसा का जानि, डीगमाहि बुलवास वलानि।
महाराज रणजीत प्रवड, जाटवंश मे घतिवलवह ॥६॥
प्रवा सवै मुलमो ग्रति वसँ, पर दल ईति भौतिनही लसौ।
स्वायवत राजा ग्रति मली, जेवती महि मडल खरो।
सवव् घरटादणात जानि, और पवास घणिक ही मान।।
भादीमास प्रथम पित माहि, पाचै सोमवार के माहि।।
वह इह यह सपर्यो कियो, कविजन मन वाश्वित फल लियो।।

३७३४. प्रति सं०२ । पत्र स०२६ मे ६४। ले०काल स०१८५० । प्रपूर्ण । बेष्टन सं०४६ । प्राप्ति स्थान—दि जैन प्रचायनी मन्दिर हण्डावाली का डीग ।

३७३६ प्रति सं०३ । पत्र स०४६। घा०१०३४६ इचि । ले**०का**स स०१६५० भादवा बुदी५ । पूर्णं । बेहनस०२६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष —स॰ १८५० भादवा बुदी ४ सोमबार डीग सहर में लिख्यो सेवाराम पाटनी मयाचन्दत्री का जानावरणी कर्मक्षयार्थ।

प्रति रवनाकाल के समय की ही है। तिथि तथा सवत् एक ही है।

३७३७. प्रति स० ४ । पत्रस० ८४ । ग्रा० १०४५ है इश्वा । लेक्काल स० १८८३ काती सुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पश्वायती सन्दिर कामा ।

विशेष —कामा में सदाणुष कासलीवाल ने प्रतिलिपि की । महाराजा सवाई बलबर्तासह जी के शासनकाल मे फीजदार नाथूगम के समय में लिखा गया था ।

३७३८ महावीर सत्तावीस भव चरित्र— $\times$ । पत्र स० ३। प्रा० ६ $\times$ ३ $^{1}$  इव । माषा—प्राकृत । विषय-चरित्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मंदिर राजमहल ।टोक) ।

विशेष--जिनबल्लभ कवि कृत संस्कृत टीका सहित है।

३७३६. महीपालचरित्र—बीरदेव गिर्स्स । प्रत्न स०६१ । प्रा०११  $\times$  ४इच । भ्राथा— प्राकृत । विषय—चित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल सं०१७३६ । पूर्स्स । वैष्ट्रन स०२०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर दीवानजी कामा ।

३७४०. **महोपाल चरित्र— चारित्रमूषस्य।** पत्र स० ५०। झा० १०४४ है इखा आघा— सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल स०१७३१ श्रावण मुदी २। ते०काल सं०१६४२ माघ सुदी। पूर्ण। वेष्टत स०१०५६ **्रप्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन मन्दिर ध्वमेर।

विशेष---ध्रजमेर मे प्रतिलिपि हुई।

३७४१. प्रति सं० २ । पत्र म० ३६ । आ० १२×५ इचा । से०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६१ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर । ३७४२. प्रति हां २३। पत्र सं०४८। प्रा०६३,४५,३ इ.च.। ले०काल स०१८६५ मादवा बुदी १०। पूर्णः। बेष्टनसं०.४/८०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारावर्सिह (टोक)। विशेष—१० मोतीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३७४३. प्रति सं ०.४। पत्र सं० २६। .बा॰ १२% ४ ६३ इचा। ले॰ काल स॰ १७८३ सावरा

बुदी ७ । पूर्णं । बेहन सं० ७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैरावा ।

विशेष— उल्लियारामध्ये रामपुरा के गिरवारी ब्राह्मला ने जती जीवसाराम के कहने से लिखाया था।

३७४४. प्रतिसं∘ ४. । पत्र सं∘ ४२ । घा० १०३ ४८ इङच । ले०काल स० १९३३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४ । प्राप्तितः स्थान ∸दि० जैन मंदिर राजमहल टोक ।

३७४५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६ । ब्रा० १० ई४४ ) इन्त । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । बेहन स० २४० । प्राप्तिः स्थान—पार्यनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३७४६. प्रतिसं०७ । पत्र सं०४० । ग्रा०१०×४३ इन्छ । ले० काल स०१८५४ कार्तिक इदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं०६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष-कोटा नगर के रामपुरा शुभ स्थान के प॰ जिनदास के शिष्य हीरानन्द के पठनाय प॰ सालचन्द्र ने लिखा था।

३७४७. महोपाल चरित्र भाषा—नथमल बोसी। पत्र स•६६। धा॰१०४६ इच। भाषा—हिन्दी गवा। विषय—चरित्र। र०काल सं०१११८ मासोज बुरी ४। ले०काल ४। पूर्ण। बेक्नस०४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बदी।

विशेष-दलीवन्द दोसी के सुपौत तथा शिवचन्द के मुपूत नवमल ने ग्रथ की भाषा की थी।

३७४**८. प्रतिसं०२ ।** पत्रस**०**४३ । ब्रा०१३ × ८ इच्चा ले०काल स०**१**८६ ⊏ । पूर्एँ। बेबन स०४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाव्यंनाय चौगान वंदी ।

विशेष-प्रतापगढ नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३७४६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६१ । झा० ११ ४७ इ.च । ले० काल ४ । पूर्णं । वेय्टन स० १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रधवालो का नैसावा ।

३७५०. प्रति सं० ४। पत्र स॰ ६८ । ग्रा० ११४७ इन्ब । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन म० ३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बुदी ।

३७४१. प्रति सं०४। पन स० १३३। ग्रा० १२४५ इखा। ले० काल स० १८२४ श्रावण बुदी १२। पूर्ण । बेष्टन स० ३३२-१२७। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंनरपुर।

३७५२. प्रति सं० ६ । पत्रसं० ४० । बा० ११४४ इन्ज । ले० काल स० ११४६ । पूर्ण । बेष्टतसं० ११४-५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वंगरपुर ।

३७५३. प्रति सं०७ । पत्र स०७२ । ग्रा०६ ४७ ॄै इश्वाले काल ४ ।पूर्णं। बेष्टन स० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर ग्रनवर ।

३७४४. प्रति सं० म । पत्रसं० ६१ । घा० ११४७ इला । ले० काल सं० १९४म घासीज बुदी १ । पूर्ण । वेप्टन स० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाच टोडारार्यासह (टोंकी) । ३७४४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४७ । ग्रा० १२ ४७ है इला । ले०काल सं० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूदी) ।

३७५६. महीमट्ट काल्य — महीभट्ट । पत्रसं॰ ७२ । या॰ ६ $\frac{1}{7}$  $\times$ Yहै इस्त । माया — संस्कृत । विषय —स्याकरए। १२० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टनसं॰ १८६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पश्वेनाथ इन्दरण (वं ती)

३७४७. मुनिरंग सौपाई—लालचन्द । पत्र तं० २३ । माषा—हिन्दो । विषय—चरित्र । र०कास  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर, मरतपर ।

३७५८. मेघदूत—कालिवास । पत्रसं॰ २१। प्रा॰ ६ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  द्वा । माषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल  $\times$  से॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं॰ १२६१ । प्राप्ति स्थान—म॰ दि॰ अँन मन्दिर प्रजीर ।

३७४६. प्रति सं०२ पत्र स०१७। झा०६४४} इथा। ले० काल ४ । झपूर्ण। वेच्टन स० १६०३। प्राप्ति स्थान—भट्टारकोय दि० जैन मन्दिर झजेनेर।

३७६०. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १४ । घा० १२ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इश्व । ले० काल  $\times$  । वेष्टन स० १३ $\times$  । भिष्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी. बंदी ।

३७६१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १० । ब्रा० ११२ ४४ हुं इन्था । ले०काल 🗴 । पूर्ण बेष्टन सं० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्राभिनन्द स्वामी, बंदी ।

३७६२ प्रति सं० ५ । पत्रसः०१४ । म्रा०ं १२ ४ ६ वा । ले०काल ४ । पूर्णं । बेष्टनसं० ६६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर ग्राभिदन्दन स्वामी, बंदी ।

३७६३. प्रति स०६। पत्र स०१७। घा०१० 🗴 ४६व। ले० काल 🗴 । पूर्ण ।वे० स० ७८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनदन स्वामी बृदी।

२७६४. प्रति सस्या ७ । पत्रसः ६ । प्राः १४ ४ इश्व । लेक्सल 🗴 । स्रपूर्ण । वेष्ट्न सं० २२१ । प्राप्ति स्थान – दिः जैन मन्दिर दवलाना बुंदी ।

३७६४. प्रतिसं० म । पत्र स०१७ । प्रा०१० $^2$   $\times$  ४ $^3$  इचा । लेल्काल स०१ -१६ फागुए।  $^4$ दिन स०३०६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सदिर लक्कर, जयपुर ।

२७६६. प्रति सं० ६ । पत्र स० २४ । ग्रा० १० $^{3}_{7}$ imes४ ६ दश्व । से०काल imes । पूर्एं । बेष्टन सं० २०६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

विशेष-सजीवनी टीका सहित है।

३७६७. मिलसं० १० । पत्र सं० २८ । ग्रा० प<sub>र</sub>े ४४ इचा । ले० काल सं० १६८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मस्दिर दबलाना (बंदी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—संबन् १६८७ वर्षे बेगाल मासे गुक्तपक्षे एकादश्यां तियो भीम-वासरे वृंदीपुरे वर्जुविवति ज्ञातिना शारंग घरेए। लिखिलं इदं पुस्तकं । ३७६८. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १७ । घा० १२ 🗴 ४ इच्च । ले०काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्ट्रतसं० १३४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मंदिर वोरसली कोटा ।

३७६६. प्रतिसं० १२ पत्रस० ४७। ले॰काल 🗴 । सपूर्ण । वेष्ट्रन स० ४२०। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पत्रायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष--सस्कृत टीका सहित है।

३७७०. प्रति स० १३ । पत्रस० २३ । प्रा० १०० ४४ रॄे इश्व । ले० काल × ।पूर्णे । बेष्टन सं• १८४-७७ ।**प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, द्व तरपुर ।

विशेष-प्रति प्राचीन एवं टीका सहित है।

३७७१. मेघदूत टीका (संजीवनी)—मिल्लिनाथ सूरि । पत्र स० २-३३ । ग्रा० ६ $\frac{2}{5}$  २% इन्छ । माया—सङ्कत । विषय—काच्य । र०काल  $\times$  । ले० काल स १७४७ । ग्रापूर्ण वेष्टन स० १४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन कपवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष — ग्रन्थापन्य स० १७०० प्रणस्ति निम्न प्रकार । है—सबत् १७४० वर्षे मगसिर मुदी ६ । दिने लिखित क्रिप्य लालपन्द केन उदैपूरे ।

**३७७२. मृगावती चरित्र—समयसुरहर।** पत्र म०२–४६। घा० १०×४३ इञ्च। प्राया-हिन्दी (प**छ)। विषय -** चरित्र र०काल स०१६६३। ले०काल स०१६८७ फागुण सुदी २। प्रपूर्ण। वेष्टन स०४**४। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायनी मदिर बसाना।

विशेष---प्रति जीएां है।

३७७३. मृगावती चरित्र × । पत्रतः ३२ । घा० १०४४ हु इव । भावा —हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । से०काल × । घपूर्ण । बेष्टनसः० १११-६ । प्राप्तिः स्थान —हिर् जेन मन्दिर बना नीमर्पणी टीमा ।

३७७४. यशस्तिलक चम्यू—मा०सोमदेव । पत्र स० ४०४ । मा० ११)  $\times ^1 / \mathbb{R} = \mathbb{R}$  सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल स० ९८९ (शक) वि० स० १०१६ । ले० काल स० १८४४ । पूर्ण । वेकृत स० १ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन सन्दिर प्रजमेर ।

३७७४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २४४ । ले० काल 🗶 । पूर्ण । वेष्टन स०२७ । प्राप्ति स्थान-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

३७७६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २६४ । मा० १२<sup>2</sup>,४ ४ इच्च । ले० काल स० १८७६ पौद सदी ४ । पूर्ण । वेष्टुन स०२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर म्रादिनाय बूंदी ।

विशेष-महात्मा फकीरदास ने खधारि मे प्रतिलिपि की थी।

३७७७. प्रति सं० ४ । पत्रस० २७० । प्रा० १२imes४ ६ च । ले० काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० २३ । प्राप्टिः, स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

३७७८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ३६२ । मा० १२×४ हे इ.च । ले० काल स० १७१६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्णे । वेष्टन स० ३१६ **। प्राप्टित स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष — सरवाड नगर ने राजाधिराज श्री मूर्यमल्ल के शासन काल मे ग्रादिनाय चैल्यालय में श्री कनककीर्ति के शिष्य पं॰ रायमल्ल ने प्रतिलिपि की थी। संस्कृत में कठिन शब्यों का ग्रुपं भी है। ३७७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २०१-२५२ । घा० ११ $\times$ १ $\frac{3}{2}$  डख । ले० काल स० १४६० वैशास बुदी १२ ।घपुर्गं । बेष्टन स० २२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष-- विमचन्द्र मुनिना उद्दत हस्ते लिखापित पुस्तकमिद ।

३७६०. यशस्तिलक टिप्पर्ग $-\times$ । पत्रस० ३५३ । प्रा० १२ $\times$ ६ इथ ।भाषा-संस्कृत । (गष्य) विषय-काव्य २०काल  $\times$ । ले० काल स १६१२ । प्रषाद सुदी १३ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० १२१ । प्राप्ति स्थान-भटान्कोय दि० जैन मन्दिर प्रवर्षेग

३७=१. यशस्तिलक चम्पू टोका—ध्रातसागर । पत्रस० २०। घा० ११  $\times$  ७ है इस । भाषा— सस्कृत । विषय—काव्य । रुकाल  $\times$  । लेककाल स० १६०२ ज्येष्ठ मुदी २ । पूर्ण बेष्टनसंक १०१। प्राप्ति-स्थान-दिव जैन मन्दिर लक्कर जयपुर

विशेष — सवाई मार्नासह के शासन काल में जयपुर के नेमिनाथ चैरुयालय मे (लक्कर) विजयचन्द की भार्यों ने अष्टाह्निका बनोबापन में प० आंअराम से प्रतिलिपि करवाकर मन्दिर में भेट किया।

३७६२. य**शोधर चरित्र—पुष्पदंत।** पत्र स० ७२। ग्रा० ११ 🗙४ ट्रै इञ्च। माषा— ग्रमभ्रण। विषय—चरित्र। र०काल 🗴। ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० १२५५। **प्राप्ति स्थान**— मट्टाकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर।

विशेष --- स० १६२६ में चादमल सौगानी ने चढाया था।

३७८३. प्रतिसं० २ । पप्रस० ८६ । या० ११  $\times$ ४६थ । ले० काल स० १५६४ । पूर्ण । बेष्टन स०४८६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति - सबत् १५६४ फाणुग गृदी १२ । श्री मूल सभै सरस्वती गच्छे कु दतुंदावार्यान्यये श्री धर्मचन्द्र की प्राप्ताय में वर्ण्डलवाल हरसिंह की भाषी याजस्वती ने ध्राचार्य श्री तीमचन्द्र की ज्ञानावरणी क्षयार्थ दिया।

३७८४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १०७ । ग्रा० १२ ४४ ी इञ्च । ले०काल म० १५४६ पूर्ण । वेष्ट्रनस० २५६।३२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सम्भवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष प्रणानि निम्न प्रकार है—सबत् १४५६ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ६ भीमे श्री मृतसधे सरस्वती गच्दे श्री कुद कु दाचार्यास्य भट्टारक थी सबलवरीति देवातरपट्टे भट्टारक श्री कुबनकीति देवातरपट्टे भ० श्री जानपूष्पा देवा तद्भान् पा० श्री रत्तवर्गीतिदेवा नत् शिष्प ह्राप्त सागर उपदेनेन श्रीमती नचार मन्दिरे श्री पार्थनाथ केंद्राणने यु ह्वा तानीय थी पना भाषी परोपकारिंगी द्वादणानुष्रे शा चिनन विचायिनी सुद्धशील प्रति पाणिनी माजी नाम्मी स्वश्रेय थे ०ने श्री यशीथर महाराज चरित्र तिसाय्य दत्त ज्ञानावरप्री कर्म अमार्थ सुभ भवत्। कल्यारापुर्वात् ।

३७८.४. यशोधर चरित्र टिप्यसी—प्रमाचन्द्र। पत्रसर्व १२ । आ० ११४४ इचा। भाषा सस्कृत । विषय – चन्त्रि । रकाल × । तेर्काल सक १४७४ । अपूर्स । वेष्ट्रनसर्क ४८७ । प्रान्ति स्थान —जन दिरु सन्दिर सम्मनाथ उदयपुर ।

प्रसित्त—सवन् १५७४ जोग्ड मुदी ३ वुघे श्री हसपत्तने श्री वृषम चैत्यालये श्री मूलसचे श्री भारती गच्छे श्री कुंदकु दावार्याच्ये भ० श्री पदानि त. प. देवेद्रक्षीति त. म. विद्यानिद तत्त्वुं भ. मिलसूब्रस्य त. प. म. तस्मीवन्द्र देशानां शिव्य श्री झालवन्द्र पटनायं श्री सिंहपुरा जाने श्रेष्टि माला श्रीष्ट माथव सुता बार हरसाह तस्या पत्र जन्म निर्मत सिलापित । ३७८६. यशोधर चरित्र पीठिका—  $\times$  । पत्रस०१८ । प्रा०११ $\times$ ६ इख । भाषा — संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल सं०१६८६ । पूर्ण । वेष्टनसं०२६५ । प्रास्ति स्थान—घत्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबत् १६६६ श्रावण बदी ११ दिने श्री मूलसंबे भट्टारक श्री पधनदी तद् गुरुन्नता ईस ब्रह्मचारी साडयका तत् शिष्य ब्रह्म श्री नागराज ब्रह्म लालजिष्णुना स्वहस्तेन पठनायँ।

३७८७. यसोषर चरित्र पीठबध—प्रभंजनगुरु । पत्रसं०२०२ । प्रा०१४४ $\xi$  इञ्च । साधा-संस्कृत । विषय—परित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल सं०१६४४ । पूर्ण । बेष्टन स०४६४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

संवत् १६४४ फागुरा सुदी ११ सोमे श्रीसूरपुरे श्री ग्रादिनाथ चैत्यालये क० कृष्णा पं० रामई ग्रास्यां लिखापित ।

**ग्रन्तिम पृष्टिपका-**इति प्रभंजन गुराश्चरिते (रचिते) यशोधरचरित पीठिका बंधे पचम सर्गः ।

३७८८. यशोषरचरित्र — वाविराज । पत्रस० २-२२ । घा०११ x ५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय — चरित्र । र० काल x । से०कास सं०१६६२ । घ्रपूर्ण । वेष्टन स० ३२७ । प्रास्ति स्थान— ध्रमवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष — संबत् १६६२ वर्षे माह सुदी १३। शानौ श्री मूलवधे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे थी कुन्दकुन्दाचार्थान्वये भट्टारक श्री वादिभूषण तत् शिष्य पं० वेला पठनार्थं शास्त्रांमद साहराम लिलतिमदं। सेलक पाठकयो शुभ भवत्।

३७८**६. प्रतिसं०२ । पत्रसं०**२० । ग्रा० ६×४-१ इ.च । ले०काल स०१५८१ । पूर्णः। वेकृत सं०४८५ । **प्राप्तिः स्थान**---सभवनाय दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत् १५=१ वर्षे स्रावरा वृदी ७ दिने श्री मूलसर्वे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दावार्यान्ये मट्टारक श्री पद्मनदि तरहे भट्टारक श्री जिनवन्द्र देवा तदाम्नाये गोलारान्डान्वये पं०श्री घनश्याम तत्पुत्र पडित सुस्तानन्द निजाप्ययनार्थिमिद ग्रंच लिखापित।

३७६०. यशोधर चरित्र—वासवसेन । पत्रसव् ४१ घा० १० $\frac{1}{7} \times Y_{p}^{2}$  इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-वरित्र । रक्काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६४६ । प्रास्ति स्थान—भव दिव जैन मन्दिर, धजनेर ।

३७६**१. प्रतिसं० २ ।** पत्रसं० ७६ । ग्रा० १०<sub>१</sub> × ४१ इचा। ले० काल स०१६०३ । पूर्या। बेष्टन स०१४२ । प्राप्तिः स्थान---दि० जैन मदिर ग्राभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष - जयपुर नगर मे महाराज सवाई ईश्वरसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई।

३७६२**. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० १७ । म्रा० १० $rac{1}{4} imes rac{1}{4}$  ६०वा ले०काल imes । वेष्टन स० ७६३ । प्रपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर । ३७६३. यशोधरचरित्र--पद्मनामकायस्य । पत्रसं० ६०। म्रा० १०३ ४४ इञ्च । भाषा--संस्कृत । विषय-चरित्र । २० काल ४ । से०काल स० १८६४ पीष सुदी ४ । पूर्णः । वेष्ट्रन सं० १४४१ । प्रास्ति स्थान - महारकीय दि० जैन मन्दिर मजमेर ।

३७६४. प्रतिसं० २ । पत्रमं०७६। ले० काल 🗙 । पूर्णं । वेष्टन सं०२७६। प्राप्ति स्थान—दिः जैन पंचायती मन्दिर भरतपर ।

३७६५. प्रति सं० ३ । पत्रस०४१-७० । मा०११५ $3\times$ ४६ दख । माषा-सस्कृत । विषय-चित्रम । २०काल  $\times$  । ले० काल स०१८५५ फागुण सुदी ६ । वेष्ट्रनस०१४६ । म्रपूर्ण । प्राध्तिस्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपर ।

३७६६. यशोषर चरित्र—पद्मराज । पत्र सं० १-४०। म्रा० १२ $imes V_{\xi}^{1}$ । माषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल imes । ले०काल imes । वेष्ट्रन स० ७४२ । म्रपूर्ण । म्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपर ।

३७६७. यशोधर चरित्र—झाचार्य पूरांदेव । पत्रतः १८ । माः २३ ४५ इच । आपा— सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल ४ । ले० काल स० १६७५ बासोज बुदी १३ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ६६ । प्राप्ति क्यान—दिः जैत मन्दिर बडा बीम पथी होता ।

विशेष -- पाडे रेखा पठनार्थ जोशी भ्रमरा ने प्रतिलिपि की ।

३७६ द. प्रतिसं०२ । पत्रस०२ द। ग्रा०६ १ × ४ डवा । ले० काल × । पूर्ण। बेष्टनस० १६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)।

विशेष--लेखन पद्म विमल स्वकीय वाचनार्थ

३७६<mark>६. प्रतिसं० ३ ।</mark> पत्रसं० १३ । झा० १० ४ ५ इंच । वेष्टनसं०१४७ । पूर्ण । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मदिर लक्षर, जयपुर ।

विशेष --- कही २ कठिन शब्दों के ग्रर्थ भी दिये गये हैं।

३८०० **यशोधरचरित्र—सोमकीति** । पत्र सं॰ २८ । धा॰ ११ $\times$ ४ इख । माधा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल  $\times$  । ले॰ काल सं॰ १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४५६ । **प्रास्ति स्थान**—दि॰ संमवनाय जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

सबन् १६५८ वर्षे जैज नुदी २ भीमे जवाछा नगरे राजिषराज श्री चन्द्रमाएगराज्ये श्री झादिनाच वैख्यालये काष्ट्रासमे नन्दीतदमन्द्रे श्री रामसेनान्त्रये म० सोसकीति म० यज्ञः कीति त० ४० उदयसेन त० ४० श्रिपुतनकीति त० २० ४० रतनभूषरा साचार्यं श्री जनसेन श्री जयसेन शिच्य कच्याराकीति तत् शिच्य क सज्वराजेन तिकस्रते।

३५०१. यशोधर चरित्र—सकलकीर्ति । पत्रसं॰ २२ । घा॰ १ $^2_1 \times ^2_2$  इख । आषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । २०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनसं॰ ११४२ । प्रास्ति स्थान—महास्कीय दि॰ जैन मन्दिर सजनेर ।

३८०२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २६ । प्रा० १२×५ इञ्च । सेंब्राल×। पूर्ण । वेष्ट्रनसः० १५६ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मंदिर मजभेर । २६०२ प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६१। घा० १० है×४ है इ.च.। ले०काल स० १८४६। पूर्णी । वेष्टनस०२८। प्राप्ति इध्यान—श्रप्रयाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर।

विशेष --- उदयपुर नगरे श्री तपागच्छे ।

३ त**०४. प्रति सं०४।** पत्र स०२ तः। आगः ११  $\times$  ४ इन्तः। भाषा—सस्कृत। विषय—
चरित्र। र०काल  $\times$ । ले० काल स०१६४४। पूर्णः। वेष्टन स०६ तः। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० र्जन मन्दिर उदयपुर।

३ म**०१. प्रितः सं० ४ ।** पत्र स० ४४ । ग्रा० १०×४ इन्छ । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—ग्रजवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १६४१ वर्षे पौष मुटी ७ भीमे ईलदुर्ग मध्ये लिखत चेला श्री धमंदास लिखत गढराय सघ जीवनाथ वास्तव्य हुँबढ झातीय कोठारी विजातत् भार्या रंगा सुत जे संग जीवराज इद पुस्तक ज्ञानावरणी कमंत्रयार्थ मनि जयभवत्य दत्तं लिखायित ।

३८०६. प्रतिसं०६ । पत्रस०३६ । प्रा॰१०३  $\times$ ३६ दश्च । र०काल  $\times$  । से०काल स०१६७६ । पूर्ण । बेण्टन स० ३६२-१३६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हॅगरपुर।

प्रशस्ति—सम्बत् १६७६ वर्षे कार्तिक सुदी ३ निवित पूनक रामपुरा ग्रामे श्री झादिनाथ चैत्यालये श्री मुल्त से सरक्वनी मच्छे कु रकु दावादांक्यों श्री ५ सक्तवन्त तत्युटरे गच्छ भार शुर घर भ० श्री पूरन्यक्त तत्र शिष्य वहा वृचरा बागड देशे " वास्तवण हैंबड कातीय सा० भोजा भागों सिरधा भातृ भीया झचीडा बहा बुचरा कमंद्रवार्थ इंदे यकोधर पत्नक निवागित । शुभ भवत ।

३८०७ प्रति सं०७ । पत्र म०३४ । प्रा०१०३ $\times$ ६ इ.च. । ले०काल पूर्ण । बेष्टन  $\times$  । स० ४१–४२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३६०६. प्रति सं० ६ । पत्र २० ५२ । प्रा० १३imes ४ $\xi$  इश्वा । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टनस० २६ । प्राप्ति स्थान—दिं० जैन मन्दिर बैर ।

३६०६. प्रति सं० ६ । पत्रम० १२ । प्रा० १२ $\times$ १३ इ.च. । विषय —चिरत । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्मा । बेष्टन स० १०३/१६ । प्राप्ति स्थान—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इंदरगढ (कोटा ) ।

३०६९०. प्रतिसं० १० । पत्रस० २४ । झा० ६ $\frac{1}{7} \times 3$ ृंदश्व । ले०काल स० १६५० । पूर्ण । बेप्टनस० १०१ १६ । प्रास्ति स्थान—गाव्येनाथ दि० जैन सन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३८११. प्रतिसं० ११ । पत्रस॰६६ । ग्रा० १० $\frac{7}{4} \times \frac{9}{4}$  इच्छ । ले०काल स० १८८० । वेष्टुत स० ६८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोक) ।

विशेष-टोडानगरे श्री श्याम मन्दिर पं ० शिवजीरामाय चौ ० शिववक्सेन दत्त ।

३७१२. प्रतिसं० १२। पत्र स० म० । मा० १११×४ इ.ख । ले० काल स० १६२१ र्जत बुदी १४। पूर्ण । बेष्टनस० ११। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी । ३**८१३. प्रतिसं० १३** । पत्रस० ३४ । बा० १२ } ४ ६३ इच्छ । ले० काल सं० १८४६ । पूर्ण । -वेष्ट्रनसं० ३२ । **प्राप्ति स्थान** --तेरहपयी दि० जैन मन्दिर नैगावा ।

विशेष — स०१६३० में भादवा सुदी १४ को घासीलाल ऋषभखाल औद ने तेरहपथियों के मन्दिर में जनाया।

३८ **१४. पतिसं० १४** । पत्रस० ४४ । ग्रा० १० × ५ है इला । ले० काल स० १६११ । पूर्ण । वेकनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पाक्षनाथ बुदी ।

विशेष-वंदी में प्रतिलिपि की गई थी।

्र स्**१४. प्रतिसं० १४ ।** पत्र सं० ४०। घा० ११ 🗴 ५ इचा। ने० काल सं० १७४५ द्वि० ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण । वेष्टन स० २३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्वामी, बृदी ।

विशेष--- तुतनपुर में मनि श्री लाभकीति ने अपने शिष्य के पठनार्थं लिखा ।

३६८६. प्रतिसं०१६। पत्रस०५४। प्रा०२ $\frac{2}{3} \times 2\frac{2}{3} \times 3\frac{2}{3} = \frac{2}{3} - \frac{2}{$ 

सवत् १८४७ का वर्षे ज्येष्ट कृष्णुपक्षे झप्टम्या जुकवासरे श्री नैमिनाय वैस्यालये वृद्धावती मध्य लिखित प हु गरमीदापजी तस्य जिप्यत्रय सदासूल, देवीलाल, सिवलाल तेषां मध्ये सदासुखेन लिपि स्वहस्तेन ।

३८१७ यशोधर चरित्र × । पत्र स०२२ । बा०११×४३ देख माया—सस्कृत । विषय~ चरित्र । । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०४१२ । प्राप्ति स्थान्त-महारकीय दि० जैन मन्दिर प्राचीर ।

३८१८ यशोधर चरित्र—  $\times$  । पत्रस $\circ$  २ से २० आ $\circ$  ११ $\frac{1}{5}\times$ ५ ६७ भाषा —सन्द्रत । विषय —चिरित्र । र०काल  $\times$  । ते० काल म. १६१५ फागृत बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं $\circ$ १४६१ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मदिर अवभेर ।

 $\frac{3}{4}$ स्ह. संशोधर चरित्र—  $\times$  । पत्र संव imes १। प्राप्त ११ $\frac{1}{2}$   $\times$ १ $\frac{1}{3}$  इव । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रुकाल  $\times$  । तेव काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टसंस १०७१ । प्राप्ति स्थान—सहारकीय दिव के मंदिर संवोत्ते ।

३६२०. यशोधर चरित्र —  $\times$  । पत्र स० २० । प्रा० १८%  $\xi$  इला । भाषा नसङ्का । विषय — चरित्र । र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वहल स० ३४० । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मंदिर प्रमिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३८२१. यशोधर चरित्र  $\times$  । पत्रसंव ११। घा० ११ $\times$ ६ इ.स. ३ मापा-सस्तृत । विषय-चरित्र । २०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसंव १४। प्रास्ति स्थानः— दि० जैन मन्दिर श्री महाविर इंग्री

विशेष—दबलासा मे प्रतिलिपि बुई। ३२७ श्लोक है।

प्रारम्म—प्रणाम वृषभ देव लोकलोक प्रकाशक 1 श्रवस्तवनोषरेष्टारं जगत पूज्य निरंजनं ।। श्रवंतिक जगतपुर्व्यानच्य चाति चतु प्रणमिष । सदा सातान विश्व विष्क प्रणातप ।। २ ।। श्रीन्तम—पर्याद्यापिच क्लियोव पूर्ण देवोमही तले । जगत मन्दिर मुद्दलं कीतिस्तयो विराजते ।। ३२६ सो व्याद्यी सुन्नत सक्वतः स्व्यानोभक्ति कारिएणा ! स्वस्त तोष समुष्मनविष्ठोषरं महीचुन्न ।। ६२६ ।। ३८२२ यकोषर चरित्र -- × । पत्रसं० १३ । मा० ११ × १ इच । माथा-संस्कृत । विषय-चरित्र । २० काल ×्र। ले०काल सं० १८२६ मासोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ८ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर दक्ताना (इ.दी) ।

३६२३. **यहोघर चरित्र ×** । पत्रस० ११०। झा० ११४५ इखा । प्राणा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १६४४ चैत बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर नागरी बुदी ।

३८२४. **यसोघर चरित्र—विकसमुत बेवेन्द्र।** पत्र स॰ १३४। ग्रा० १०३४४ स्था। माया-हिन्दी (ग्रष्टा)। विषय—कथा। र०काल सं० १६८३। ले० काल सं० १७३१। पूर्णः। बेष्टन स**॰** ४३८-१६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटिडयों का द्वंगरपुर।

३ दर्भ. प्रति सं०२ । पत्रस०१७१ । आ०१० ४ ४ ॄे इञ्च । ले०काल स०१८३१ । पूर्ण । बेष्टन स०५०-३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष -- प्रतापगढ में लिखा गया।

३८२६. **यशोधर ।** पत्रस० २२। घा० ११३४ ६ खा ले०काल स० १६७० । पूर्ण । वेष्टनसं० १४४-६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियों का हुंगरपुर।

**बोहा**—सवत् सोरह से भ्रषिक सत्तर सावन मास ।

सुकलसोम दिन सप्तमी कही कथा मृदुमास ।।

ः ग्राडित्ल-प्रगरवाल वर दस गोसना थान को।

गोइल गोत प्रसिद्ध चिन्हना घ्वान को ।। माताचन्दा नाय पिता मेंरो भन्यो ।

' परिहान (द) कही मनमोहन ध्रगन गुन ना गन्यो ।। ६३ ।।

विशेष - ग्रन्थ में दो चित्र है जो सस्कृत ग्रन्थ के ग्राघार पर है।

३८२७. प्रति सं०२ । पत्रस०३६ । म्रा०११ ४६ इञ्च । माषा—हिन्दी । विषय— चरित्र । र०काल स०१६७० सावन मुदी ७ । ले०काल स०१८५२ प्रषाढ मुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२। २४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डुगरपुर ।

३८२८. प्रति सं० ३ । पत्र स० २५ । ग्रा० १२४८ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६।२० प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायती मन्दिर क्रलवर ।

३८२६. प्रतिसं० ४ । पत्रसः ४२ । ले०काल स० १६४३ द्यासोज सुदी ७ । पूर्णं । वेष्टन सं० ६७। १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर ग्रनवर ।

३८२०. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३४ । ते० काल स० २१११ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६८ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन पत्रावती मन्दिर खलवर ।

देन्देशः प्रति सं०६। पत्रस० ४६। ले॰काल स०१६२६ द्यासोज सुदी १४। पूर्एं। बेष्टन सं०६६/१८। प्राप्ति स्थान—दि० जैनपवासती मदिर प्रलबर।

३८३२ प्रतिसं० ७ । पत्र स० ४२ । ग्रा० १० × ४ इश्वा । ले० काल सं०१७६४ प्रवाह सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं०५३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बयाना । विशेष-चूडामिए। के वश में होने वाले सा. मुकुटमिए। ने शास्त्र लिखवाया।

३८३३. प्रति सं० द । पत्र स० २२ । ले०काल स०१८६७ चैत सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनसं∙ ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बयाना ।

३८३४. द्र**तिसं**ठ ६ । पत्र सठ४५ । ब्रा०११४५ हुँ इंख । ले० काल सं०१८१० । अपूर्ण । बेष्टन सं०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिरवैर ।

३८३५. प्रति स०१०। पत्रस०४६। ते०काल स०१८२०पौष सुदी७।पूर्ण।वेष्टन स०४३। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर बसवा।

३८३६. यशोधर चरित्र माथा—लुशालचन्द काला । पत्र सं०६१। घा० ११४४ दश्व । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल सं०१७८१ कार्तिक सुदी ६ । । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०१४८१ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रवर्गर ।

३८३७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५१ । छा० १२×८ इश्वः । ले० काल १६६० । पूर्णं । बेष्टनसं० ३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रग्रवाल मंदिर नैलावा ।

विशेष-सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि कराई थी।

३८३८. प्रतिसं० ३ । पत्रस०७३ । छा० १४ ४३६७ । से०काल ४ । अपूर्ण । वेष्टन स०४४ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन तेरहपदी मन्दिर नैसावा ।

बिशेष-- ७३ से ग्रागे के पत्र नहीं है।

३८३६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ८३ । घ्रा० ६ $imes imes imes_{ imes}$  इ.च । ले०काल imes । घ्रपूर्ण ।वेष्टन सं० १२ । प्राप्ति स्थान—िट० जैन मन्दिर कोटडियो का नैशाया ।

३८४०. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४६ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का नैसावा ।

३**८४१. प्रतिसं०६।** एत्र स०८४। झा०१० $\times$ ४ $\frac{1}{6}$  इ.च । ले० काल  $\times$  । पूर्ग्। बेष्टन म०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

३८४२. प्रति सं०७ । पत्रसं० स०३६ । ग्रा० १३ $\times$  ५ इथा । ते० काल स०१८३० । पूर्णे । वेष्टनस०११ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बूदी ।

**३८४३.** पत्रस० ४८ । ग्रा०११×५२ै इचा । ले० काल स० १६७६ । पूर्ण । **वेष्टन**सं०४३ । प्रा**प्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर ग्राभिनन्दन स्वामी, बदी ।

३८४४. प्रतिसं० ६ । पत्र स०४६ । ग्रा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ८ । इत्त्र । ले० काल स० १६२५ फागुन सुदी ५ । बेण्टन स०६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

३८४५. प्रति स० १० । पत्रस० ७३ । स्रा० १० $\frac{5}{4} \times 4\frac{5}{8}$  इला । ले०काल स० १६४५ । बेष्टन स० २४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रराठ कोटा ।

**२८४६. प्रति सं० ११।** पत्रस० ४५। लेक्नाल स० १८०० वैशास बुदी १०। पूर्ण। बेप्टन स॰ ५७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर। ३८४७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५५ । मा० १०१४५ १ इ.च.। ले० काल स०१८१६ । बेष्टन सं० ८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बैर ।

३८४८. प्रति स० १३ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १८१२ सावना मुदी १५ । पूर्ण । बेष्टन स० ६ ।प्रास्ति स्थान—र्वि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

विशेष— स्वामी सुन्दरसागरके खतोद्यापन पर पाण्डे नुवाराम के शिष्य पाण्डे माकचन्दने प्रतिकिपिकी थी।

३६४६. प्रति सं० १४। पत्र स० ६६। घा० १०! 🗙 ५१ ६०० । स० काल स० १८१७ भारता सदी ५। पर्सं। बेष्टन सं० १४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्वायनी मन्दिर करीली।

३८५०. यशोधर चरित्र भाषा—साह लोहट । पत्र स० २-७६ । ग्रा० ५,४ ४३ इन्थ । भाषा-हिन्दी (गळ) । विषय-चरित्र । र०काल स०१७११ । ले०काल स०१७५६ ग्रासोज मुटी १३ । पूर्ण । वेष्ठन सं०१७० । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दवलाना (व'दी) ।

विशेष – मुनि णिवबिमल ने इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की थी। कवि ने बूदी मे सन्य रचना की थी। इसमे १३६६ पछ है।

३८५१. यशोधर चरित्र भाषा— × । पत्रस०३६ । मा०१२ ४६ इख । भाषा -- क्रियी । विषय -चरित्र । र०काल × । ले० काल × । स्रपूर्ण । वेष्टन स०१६ (क) । भारित स्थान—दि० जैन मस्तिर शहवा ।

३८५२. यशोधर चरित्र भाषा—  $\times$  । पत्र स० १०-४५ । बा० १  $\times$  ६५ इन्छ । भाषा—हिन्दी प० । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । छे काल  $\times$  । छ पूर्ण । बेग्रुन स० ६६-६० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मिरिर बडा बीसपयी दौसा ।

३८५३. यशोधर चौपई—  $\times$  । जन्न ० ६२। म्रा०६ $\times$ ५ इच । मापा—हिन्दी । विषय - चित्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स०१६६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मिन्दर नागरी दूरी ।

विशेष--गृटकः ग्राकार है।

३८ ४४. रघुवंश — कालिदास । पत्रस० १०८ । झा० १०१ ४४ इता । भाषा— सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेय्टन स० १४७६ । प्राप्ति स्थान— भटारकीय दि० जैन मन्दिर अजीर ।

३८ ४४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १०६ । घा० ११ $^{1}_{3}$  ४४ $^{1}_{3}$  इ.च.। लेक्सल स०१७२७ साथ बृदी ८ । पूर्ण । बेपून स०६७० । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन सन्दिर स्रजमेर ।

्रेक्प्र६, प्रति सं०३ । पत्र म०२२ से १०४ । आ० १०४४ ) इन्छ । ले०काल ⋉ । इत्यूर्ण । बेहुन स०२३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर योग्मली कोटा ।

**३८५७. प्रति सं०४ ।** पत्र स०६७ । झा० ११ ४४ इच्चाले० काल स०१८३<sup>....</sup> । पूर्या। वेष्टन सं० ८६-४६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो काटुगरपर ।

प्रशस्ति - सबत् १८२ : वर्षे मास वैशाल वदी २ गृहवानरे देशह तगरे मिल्लनाथ चैत्यालय श्री मूलसचे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगरी श्री कुंदकुदाचार्यान्वयं भट्टाग्क श्री ग्रमरचन्द्र तत्पट्टे म० श्री हर्षचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री गुभचन्द्र तत्पट्टे भ० ग्रमरचन्द्र तत्पट्टे महारक श्री रतनचन्द्र तत्पट्टे भह्हारक श्री १० च देवचद्र जी तत् गिष्य क. फतेचन्द्र जी रच्चण काव्य लिखापित ।

३ स्प्रस्त, प्रति स० ५ । पत्र स० ६० । प्रा० १० $\frac{2}{5} \times \frac{2}{5}$  इच्च । ले०काल सं० १७६६ घगहन सुदी १५ । पूर्ण । केष्टन स० २४७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी ।

विशेष ---लण्हरा नगर में प्रतिलिपि हुई।

३८५६. प्रति स०६। पत्रस०१२। धा०९४४ इञ्च। ने०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं० ७६। प्राप्तिः, स्थान - दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारार्यासह (टोक)

३८६०. प्रतिसंo ७ । पत्र स० २ –२७२ । ग्रा० १० ४४ ट्रै इ.चा ले० काल ४ । ग्रपूर्णं। वेष्टन संo ६७ २२० । जाा - स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष - प्रति प्राचीन है लगभग स० १६०० की प्रतीत होती है।

३६६१. प्रति स० ६ । पत्रस० ११३ । ब्रा० १० $\frac{2}{5} \times \frac{1}{5}$  इत्त । से०काल स० १८५१ । प्राप्त स्वी ४ । पूर्ण । वेपून म० ३२२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दबलाना ब्रुदी) ।

विशेष -- इन्डगड म' ये महाराजा श्री सन्मतिसिंह जी विजयराज्ये लिपिकृत ।

३८६२. प्रति स $\circ$  १। पत्रस $\circ$  ६१। लेक्सल स $\circ$  १६६३। पूर्णं। वेष्टन स $\circ$  ३२४। प्राप्ति स्थान—ि $\circ$  जैन मिंदर दवलाना (बु दी)।

३६६३. प्रति स० १०। पत्र स० ३६। ब्रा०१० $^{3}_{c}$ ४५ $^{3}_{c}$  इवा। ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण। बेष्टनस०३४०। प्राप्तिस्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृदी)

३८६४. प्रति सं० ११ । पत्र स० ३० । घ० ११ है ४४ है इन्हा । ले०काल 🗴 । ब्रपूर्ण । बेष्टन स० २२४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन सन्दिर प्राप्तनन्दन स्वामी ब दी ।

३८६४. प्रति सं० १२ । पत्रतः १४ धा० १०३ × ४३ इत्था ते० काल × । पूर्णं । बेष्टन म० १२१ (१) । प्राप्ति स्थान --दि० जेन मदिर स्राभिनदन स्वामी, बंदी ।

विशेष - द्वितीय सग तक है।

३ म६६ प्रति सं० १३ । पनस० मा प्रा० १०५ ४७ इल्बा ले०काल ४ । पूर्णा वेष्ट्रनसं० १६। प्राप्तिः स्थान — वि० जेन मन्दिर नागदी वदी ।

विशेष -- द्विनीय सर्ग तक है।

३८६७ प्रतिसं० १४ । पत्रस० १२४ । आ० १२ ५५ १ इला । ले० काल × । बेष्टनस० ६२६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्षर, जयपुर ।

विशेष - प्रति प्राचीन है।

३ म ६ म. प्रति सं० १४ । पत्र स० १४२ । घा० ११ 🗡 ६ इचा। ले० काल 🗡 । घपूर्णा। वेष्टन स० २२४ । प्राप्ति स्थान वि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)।

३८६६. प्रति सं० १६। पत्रस० ४-१३। लेखन काल सं० १७१५प्रपूर्ण । वेष्टन सं० २२७। प्राप्ति स्थान - - दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

विशेष---प्रारंम के ३ पत्र नहीं हैं।

३८७०. प्रति सं० १७ । पत्र स० ७२ । मा०  $= \frac{\pi}{2} \times$  ५ इ.च. । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टींक) ।

३८**७१. प्रति सं० १८ ।** पत्र स० १६०। ले० काल स० १७६० फागुगा सुदी ११ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंशी मन्दिर ससवा ।

विशेष--रएछोडपुरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

३६७२. प्रति सं० १६। पत्र स० २१। लेखन काल 🗴 । धपूर्ण । वेप्टन स० ७६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर हण्डा वालो का डींग ।

३६७३, प्रतिसं० २०। पत्र सं०२२। ले॰काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०७७। प्राप्ति स्थान—दि० जन पत्रायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

विशेष--मिल्लनाथ कृत संस्कृत टीका सहित केवल द वा ग्रध्याय है।

३६७**४. प्रति सं० २१।** पत्र स० २६। आ० १० 🗙 ६ इश्वः । ले०काल 🗴 । पूर्णः । बेष्टन सं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाय चौगान बृदी ।

विशेष-४ सर्ग तक है।

३८७५. रथुवंत्र टोका—मिल्लनाथ सूरि । पत्र स०६१ से ६०। छा०१०  $\times$  ४ इच । माषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स०१३–२२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष-टीका का नाम सजीवनी टीका है।

**३८७६. प्रतिसं० २ । पत्र स०१४ । धा०१०**  $\times$  ४ इश्वा । ले० काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । बेष्टुन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मदिर धादिनाथ बुदी ।

३६७७. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १६२ । स्रा० ११ imes ५ $^2$  इन्छ । ले० काल सं० १६४६ माघ मुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनस० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर म्रादिनाथ बूदी ।

विशेष--- माघ सरादराज दाद्रपंथी ने बन्दावती में प्रतिलिपि की थी।

**३८७८. प्रति सं०४ । पत्रसं०१६**४ । प्रा०१११¦ × ४ इच्च । ले० काल स०१८७६ श्रावसा इदी २ । बेष्टुन स०२६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**३८७६. प्रति सं० ६ । पत्रस**० ६० । खा० १० $\times \times_{\frac{1}{2}}$  इला । ते० काल  $\times$  । पूर्गा । वेष्ट्रन सं० ८७–६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष---द्वितीय सर्ग तक है।

३८८०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २८१ । प्रा० १०१४ ४३ इत्त्रः । से काल स० १७१४ कासिक बुदी ४ । पूर्णः । वेटन स० १८४ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति— सवत् १७११ वर्षे शाके १६२० प्रवत्तं माने निगते श्री मूर्ये कानिम माने गुकनपक्षे पचम्या तिथी बुधवासरे वक्षपुर स्थाने वासपुञ्च चैत्यानये श्रीमत् काष्ट्रामचे नदीतटगच्छे, विद्यागणे मट्टारक श्री रामसेनान्वये मट्टारक श्री त्रिधुवनकीत्ति न० रत्नभूषण त० भ० जयकीत्ति त०भ० कमलकीति तत् पट्टीभराग मट्टारक श्री १ शुवनकीत्ति तदाम्नाये पवनामघर मडलाचार्य श्रावार्य श्री केणवसेन तत्पट्ट मंडलाचार्य श्री विश्वकीत्ति तस्य लघु भ्राता भ्राचार्य रामचद्र त्र० जिनदास त्र० श्री बलभद्र बाई लक्ष्मीमित पडित मायाराम पडित भूपत समन्वितान् श्री वलभद्र स्वय पठनायं लिखत ।

३८८९ प्रतिसं∘ ६ । पत्र स० ४०। ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । प्रास्ति स्थान — दि० जन पंचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

३८६२. रघुवंश टीका—समय सुन्दर । पत्र स० ३६ । प्रा० १० x  $Y_2^{\dagger}$  इख । आपा—सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल स० १६६२ । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १४३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३८८३. रघुवंश टीका—  $\times$  । पत्रस० २-६४। आ० ११  $\times$  ५५ दश्व। भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । सपूर्ण । बेहनसं० १४७-६७ । प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डांगरपुर ।

३८८४. रघुषश काष्य वृत्ति—सुमिति विजय । पत्रतः २१८ । प्रा० १०४४ इच । माषा-मस्कृत । विषय-काष्य । र० काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनम० १४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फ्रमिनन्दन स्वामी व दी ।

**ग्रन्तिम प्रशस्ति—**इति श्री रघुवसे महाकवि कालिदासकृतौ पडित मुमर्तिविजय कृताया मुगमान्यप्रवीधिकायामेकोनविग्रति सगं समाप्ता ।

> श्रीमस्र दिविजयाल्याना पाठकानाम भूषर । शिष्य:पुण्यकुमारेति नामा सपुण्यवारिधि: ।।१।। तस्याभवत विनेयाश्व राजसारास्त वाचकाः । मज्जनोक्तिकयायकाः वैराग्यरसर जिता ॥२॥ शिष्यम्खाम् तेषां तु हेमधर्मा सदाह्वयः । **जिल्लिक** गुरगाभिष्टा वभूव साधमडले ॥३॥ तद्विनयश्च जीया सुधी धनाचेइ । श्रीमद् पाठकवादिव देन्द्राः विनयमेरवः समतिविजयेनेव विहिता सुगमान्वया । वृत्तिर्बालबोघार्थ तेषा शिष्येगा धीमता ॥ १॥ विक्रमास्ये पुरे रम्ये भीष्टदेवप्रसादतः । रघकाव्यस्य टीकाय कृता पूर्णा मया श्रुमा ।।६।। निविग्रह रसग्रशिसवतुसरे फाल्ग्रन सितै--कादश्यां तिथौ संपूर्ण कीरस्तु मगल सदा कर्त् हीमान ॥७॥

प्रधाप्रध्य १३००० प्रसास्य प्रारम्भ – प्रसाम्य जनवाणीय मुहं सदावारनिरमलं । वामागप्रभव जातवा वृत्ति सन्यादि दण्येय ॥ मुम्निविजयास्येन कियते सुगानवया । टीका शीरणकाव्यस्य ममेय विष्णुदेने ॥२॥ ३८८५ प्रति सं० २ । पत्रतः १४६ । घा० १२ 🗴 ५१ इखा । ले०काल 🗴 । अपूर्णं । वेष्टुनस० २३४ । प्राप्ति स्थान—पार्श्वनाय दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

३८८६. रखु**बंग काव्य वृत्ति — गुरावितय** । पत्रस०४१ । बा० १४४६ इश्व । भाषा— संकृत । विषय—काव्य । २०काल X । क्षे०काल X । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१३३४ । **प्राप्ति स्थान** — भटारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रवितेर ।

विशेष-ततीय ग्रधिकार तक है।

३८८७. रबुवंशसूत्र— ×। पत्र स० ६२। आ० १० × ४ इश्वः। भाषा-सस्कृतः। विषय-काव्यः। र०कालः ×। ते०कालः ×। धपूर्णः। बेष्टनं स० ४५६ः। प्राप्ति स्थान—स्टारकीय दि० जैन सन्दिरं प्रवर्गरः।

३८८८ रस्नपाल प्रबन्ध—क० श्रीपति । पत्रस० ६२ । सा० १३,४४, दश्वः । भाषा— हिस्सी प० । विषय -चरित । र०काल स० १७३२ । ले०काल स० १८३० । पूर्णः । वेष्टन स० ३३७-१३२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

३८८६. प्रतिसं०२ । पत्र स० ४६ । ले० काल 🗴 । पूर्णा । बेहन स० १६-११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इसरपुर ।

देस्ट. रसायन काव्य — कवि नायूराम । पत्रसं १६ । धा० ६  $\times$  ४ $\xi$  इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय — काव्य । र०काज्ञ  $\times$  । ते० काल्  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस् ३ ६६७ -१४४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटेडियो का हुंगरपुर ।

३८६१. राक्षिस काव्य  $\times$  । पत्रस $\circ$  ४। प्रा $\circ$  ११  $\times$  ५ इ.च । साथा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टन स $\circ$  ३०६ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर जक्कर जयपुर ।

२०१८ (क) प्रति स॰ २ । पत्रस॰ ४ । प्रा॰ १० $\frac{1}{2}$   $\times$ ६ इन्ध । भाषा —सस्कृत । विषय — काव्य । २०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । वेषुत स॰ ३१२ । प्रास्ति स्थास —दि॰ जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

३८६२. प्रतिसं० ३ । पत्र स०४ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इ च । भाषा — सस्कृत । विषय -काव्य । र०कार्स  $\times$  । ते० काल  $\times$  । वेष्टन सं० ३१३ । प्राप्तिः स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

३८६३. राधव पांडवीय —धनंजय । पत्रस० २६६ । घा० १२ ४ ६ इ न । भाषा-सरकृत । निषय —काव्य । र०काल ४ । ले० काल स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । प्रास्ति स्थान — १२० जैन महिर प्रादिनाय वृदी ।

ग्रंथ का नाम द्विस्त्रान काव्य भी है।

विशेष -- चपावती नगर में प्रतिलिपि हुई थी। चाटमु मध्ये कोटिमाहिल देहरे घारिताथवैत्यालये द्विसंचान काव्य की पुस्तक पिंडनराज-जिरोमिंगा प० दोरराज जी के शिष्य पिंडत दयावर के व्याखान के ताई लिखायों मान महास्मा नहें।

प्रति सस्कत टीका सहित है।

३८६४. राघय पाण्डवीय टीका—नेमीचन्द । पत्रस्व ४०६ । प्राव ११ $\times$ ४ है इस । माया— संस्कृत । विषय-काव्य । रक्काल  $\times$  । लेक्काल सक १६६६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सक १२३० । प्रास्ति स्थान—महारकोय दिक जैन मन्दिर, अजमेर ।

**विरोध** — गेरपुर नगर में राजाधिराज श्री जगन्नाय के शासन में लडेनवाल ज्ञानीय पहाड्या गोत्रवाले डाङ्की भार्या लाडमदे ने यह ग्रंथ लिलवाया था।

पाण्डुलिपि मे दिसधान काव्य नाम भी दिया हुग्रा है।

**३८६५. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०४ मः । घा०१२×४ इचा। ले० काल स०१८२३ । पूर्ण। बेस्टन सं०३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष --- जयपर मे प्रतिलिपि की गई थी।

३८६६. राघवपाण्डवीय टीका-चरित्रवर्द्धन । पत्रस० १४-१४५ । प्रा० १०-४४ इन्छ । भाषा — मस्हत । विषय — काल्य । रजकाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० १२६ । प्राप्ति स्थान — भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजकेर ।

३८६७. राघव पांडवीय—कविराज पडित । पत्रतः १० । ग्रा॰ १०  $\times$  ४ हु इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । रुकाका  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०६७१ । प्राप्ति स्थान—महास्कीय दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--- इति थी हलघरणीप्रमून कादबकुलिलक चक्रवर्ति चीरश्रीकामदेव प्रोन्साहित कादराज पडित विर्चिनं राधवराण्डवीये महाकाव्यं कामदेव्याके श्रीरामयुविष्ठिर राज्यप्राप्ति नाम त्रयोदण सर्ग । ग्रय ग० १०७० ।

३८६८. राघव पांडवीय टीका—  $\times$ । पत्रतः १–४४ । आ० ११  $\times$  ४ इज्य । भाषा— सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४८१/१८ । प्राप्ति स्थान— सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३८६६. वरांग चरित्र तेकायाल । पत्रस०४६। ग्रा॰ ११ $\times$ ४) इञ्च । भाषा ग्रपभ्रंण । विषय-चित्र । २०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन म०११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर करीनी ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

३६००. वरांगचरित्र—महारक वर्द्धमानदेव । पत्रस॰ ७८ । ब्रा॰ ५ $^1$ × $^1$ × $^2$ रव्य । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रुकाल् × । ले॰ काल स॰ १८१२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ १२९१ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि॰ जैन मन्दिर स्रजमेर ।

३६०१. प्रति सं० २ । पत्र स० ४४ । घा० ११३ × ४ इञ्च । ले० काल × । स्रपूर्ण । वेष्टन स० २४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन स्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३६०२. प्रतिसं० ३। पत्र स० ४४ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल स० १६⊏० । पूरो । वेष्टन मं०१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रमत्ति निम्न प्रकार है -

सबत् १९८० वर्षे श्री मूल वंचे सरस्वतीगच्छे बनास्कारगणे, श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वे भ० श्री गुग्ग-कीति तत्पट्टे भ० वादिभूषण तत्पट्टे भ० रामकीति तत् गुरुआता पुण्यघामः श्री गुग्गभूषण वराण चरित्रसिद पठनार्थ। **३६०३. प्रति सं**० ४। पत्र सं० दह । ग्रा० १२ $\times$ ४ $_{i}^{2}$  इच । ले०काल स० १६६० ज्येष्ठ सुदी १४। पूर्णः । बेष्टन स० २६। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

विशेष--राजमहल नगर मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

३९०४. प्रतिसं० ४ । पत्र सं. ४९ । ग्रा० १२३ ४ ५ इचा । ले० काल स० १८६९ सावन बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६१/४२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर सीगाएंगि करोली

विशेष-- करीली में लिखा गया था।

**३८०५. प्रतिसं०६** । पत्रस० ७६ । सा० १०३ ४ ४ ई. इ.च. । ले० काल स० १८२३ । **पूर्ण ।** वेक्टनसं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पनामती मन्दिर करीली ।

विशेष-सोमचन्द और मोजीराम सिघल अग्रवाल जैन ने करौली में प्रतिलिपि करवायी थी।

**३८०६. प्रतिसं० ७** । पत्र स० ५७ । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं०२२६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-दयाराम के पठनायं लिखी गई थी।

**३६०७. प्रतिसं० म**ापत्र स० ६म । ले० काल स० १म१४ घाषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १**३१ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - प॰ लालचन्द जी बिलाला ने प्रतिलिपि की थी।

**३८०८. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ७४ । म्रा० ६×५ इला । ले० काल स०१८३८ आदवा बुदी ४ । पूर्णा । वे**हन स० ७ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बुदी) ।

विशेष —गोठडाम्रामे चन्द्रप्रम चैत्यालये लिखित व्यास रूपविमल शिष्य भाग्यविमल ।

३६०६. प्रतिसं० १० । पत्र स०६२ । प्रा० ११कुँ×४० हुँ इखा । ले० काल स० १४४६ आर्थियन बुदी ११ । बेष्टन स०१६४ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

विशेष-स० १५४६ वर्षे प्राप्तिन बुदि ११ मूमवासरे लिखिन मायुरान्वय कायस्य श्री गोइ द तत् पुत्र श्री गुजर श्री हिरंजयपुर नगरे। जलवानी मुनितान ग्रहमदसाहि तत्पुत्र मुनितान महमदसाहि राज्य प्रवेत्तमाने।

**३८१०. प्रतिसं० ११ ।** पत्र स० ४२ । प्रा० १३ imes १ इञ्च : ले० काल १६०० वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १६४ । <mark>प्राप्ति स्थान</mark>—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-सांगानेर में राव सागा के राज्य में लिखा गया था।

**३६११. प्रतिसं० १२ ।** पत्र स० ७० । ब्रा० १२ ४४ इश्व । ले० काल स० १८४४ ब्रायाढ़ बुदी ४ । पूर्ण । बेपुन स० **१**६६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

विशेष-जयपुर प्रतिलिपि हुई थी।

**३.६१२ प्रति सं०१३ ।** पत्रसं०३२ । ग्रा०१२ ४५३ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण। वेष्टनसं०१६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नककर जयपर ।

विशेष--प्रशस्ति बाला पत्र नही है।

३६**१३. वरांग चरित्र—कमलनयन** । पत्र स० १२१ । ब्रा० ६×५<mark>२ इञ्च । भाषा</mark>–हिन्दी । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल स० १६३८ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स**०** ६६१ । **प्राप्ति** स्थान—म० दि० जैन मंदिर ग्रजमेर ।

# विशेष-प्रथ प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

जाति बुढेनेबंस पटु, मैनपुरी सुबबास ।
नागएवार कहावते, कासियो तसु ताषु ॥
नंदराम इक साहु तह, पुरवासिन सिर मौर ।
है हत्यद सुरास तह, वंदा कियावर चौर ।
तिनहीं के मुत दोय हैं, माणू निनके नाम ।
तितरि कुनो कॉज्रहम, परै भाव उर साम ।
समु तक कीनो जह कथा भावा करि चित स्थाय ।
मङ्गल करी भवीन की, हुने सब सुखदाय ।
एन समै घरतं चितके वरवास कियो तु पराण मफारी ।
हीगामल सुत लालनी तासो तहा चमें सनेह बाडा घषिकारी ।
हीत् सिन सुत बह ती कुबारि सा किया हिंच सौं। सुविवारी ।
हीह सदा सब को सुबदायक राग वरंग को कीरित मारी।

बोहा-

सवत नवइते सही सतक उपरि फुनि भाषि । युगम सप्त दोउधरी श्रकवाम गति सालि । इह विधि सब गन लीजिये करि विचार मन बीच । जेठ मुदी पूनी दिवस पूरन करि तिहि खीच ।।

हित लिपिकृत प० साखूरिएस्य ध्रमीचन्द शिष्य जूगराज बाराबंकी नवाबगजमध्ये सवत् १६३८ का कार्तिक कृष्णा ७ ।

३६१४. **वरांग चरित्र—पांडे** लालचन्दा । पत्रसं०६६। ग्रा०१२३४६३ दश्च । आया— हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल स०१८२७ माह सुदी ४। ते०काल स०१८८३ माघ सुदी ४। पूर्णे । वेष्टनस०३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सीगाणी करौसी ।

विशेष-अजलाल ठोल्या ने गुमानीराम से करोली में प्रतिलिप करवाई थी।

३**६१५. प्रति सं०२।** पत्र स०६४ । ब्रा०११है×१है इचा। ले० काल स०१६३५ म्रावाड सुदी११ । पूर्ण। वेष्टन स०६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मदिर करीली।

३८१६, प्रति सं० ३ । पत्र स० १०४। ग्रा० ११×५ है इंच। ले० काल स० १८३३ वैज्ञास सुदी ७। ग्रपूर्स। वेष्टन स०४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर करौली।

विशेष—१०३ वा पत्र नही है। मोतीराम ने भ्रपने पुत्र प्रारासुख के पठनायं बुघलाल से नगर रूढावल में लिखवाया था।

३८१७. प्रतिसं०४। पत्र स०६२। प्रा०११३४६ इञ्च। ले•काल स०१८८३ भादवा बुदी६। पूर्णे। बेष्टुन स०३६। प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रथवाल प्रवासती मन्दिर सलवर।

विशेष — धलवर में प्रतिलिपि की गई थी।

**३६१८. प्रतिसं० १ ।** पत्रसं० १०१ । ग्रा० प $\frac{1}{4}$ ४६ इ.च. । ले० काल स० १८७४ वैशाल सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७ । **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन पचायती मदिर वयाना ।

विशेष-पाढे लालचन्द पाढे विष्कृपयण के शिष्य थे तथा गिरतार की यात्रा से लौटने समय हिडीन तथा श्री महावीरजी क्षेत्र पर यात्रार्थ आये एवं नयमल बिलाला की प्रेरणा से ग्रंथ रचना की। इसका पूर्ण विवरण प्रशस्ति में दिया हमा है।

३६**१६. वड्डमारा (वर्द्धमान) काव्य—जयमित्रहल।** पत्रस०१-५४। मा०१० $\times Y_2^2$  इश्व । मापा-मपत्रं ग्र। विषय-काव्य । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्न स०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तैरहपयी दौसा।

विशेष-पंचम परिच्छेद तक पूर्ण है।

**३६२०. प्रतिसं० २ ।** पत्र सं० ४६ । घा० ११× ५ इल्ड । ले० काल स० १४४६ पीष बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन सं० २८० । प्राप्ति, **स्थान**—दि०<mark>, जैन</mark> मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष --गोपाचल दुगं में महाराज मानसिंह के राज्य में जैसवाल ज्ञातीय साधु नाइक ने प्रतिनिधि करवार्ड थी।

**३६२१. वर्द्धमान चरित्र—भीधर।** पत्रस० ७६ । म्रा० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इखा भाषा-प्रगक्षण। विषय-चरित्र। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वेष्टन सं० १६/१३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचामती मन्दिर देनी (टोक)

विशेष -- १० वा परिच्छेद का कुछ ग्राग नहीं है।

**३६२२. वर्द्धमान चरित्र— ग्रशाग।** पत्र मं० १११। ग्रा०१०३ ४४) इ.च। मापा— संस्कृत । विषय— चरित्र। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वे०स०८६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन ग्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

**३६२३. बर्द्धमान चरित्र—मृति पद्मानियः** । पत्र स०३४ । झा०६ $^1_1 \times ^1_2 \times ^1_3 \times ^1_4 \times ^1_4 \times ^1_4 \times ^1_4$  संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  पूर्ण । बेष्टन स०२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय बूंदी ।

विशेष—इति श्री बढंमानकथावतरे जिनरात्रिवतमहारम्बप्रदर्शके मुनि पद्मनन्दिविरचिने मुन मुखनामांकिते श्री वढंमान निर्वाण गमन नाम द्वितीय परिच्छेदः समाप्त ।

३६२४. बर्द्ध मान चरित्र—विद्यानुष्यम् । पत्रस $\circ$  २३६ । घा॰ १० $\times$ ४ $^{2}$  इंच । भाषा — सस्कृत । विषय—चरित्र । र $\circ$  काल  $\times$  । ते $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स $\circ$  ६ $\circ$ /२६ । प्राप्ति स्थान—वि $\circ$  जैन मन्दिर कोटडियो का डंगएपुर ।

**३८२५. वर्द्धमान चरित्र—सकलकोर्ति** । पत्र सं०१४५–२१० । ब्रा०१२ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  दश्च । माषा—सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१६५६ जेष्ठ मृदी २ । ब्रपूर्ण । केप्टन स०३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रिनिन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष — मालपुरानगरे माधवसिंह राज्ये चन्द्रप्रम चैन्यालये ...... ... ... लिखिन । प्रति जीशाँ हो चकी है ।

**३६२६. प्रतिसं० २ ।** पत्रसं० १०३ । प्रा० १२३ ४६ इला । ले०काल ४ । पूर्ग । बेष्टन स**०** ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर पाण्येताय चौगान ब्रुदी । ३६२७. प्रति स० ३ । पत्र स० ५-११ । ६१० ११ $\times$ ५ ६२॥ । ले० काल  $\times$  । भपूर्ण । वेष्टन स० ३०४। प्राप्तिः स्थान — दि० जैन संमवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३६२६. प्रति सं० ४ । पत्र स० १३२ । प्रा० १० $\frac{1}{2} \times V_0^2$  इन्द्र । ले० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । बेहन सं० १६५८ १ प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष--इन्द्रगढ मध्ये महाराजा शिवदानसिंह के राज्य में ज्ञान विमल ने प्रतिलिपि की थी।

३८२८. **बलि महानरेन्द्र चरित्र**—४। पत्रस० ६६। माषा-सस्कृत । विषय-जीवन चरित्र । १०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ५९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६३०. विकम चरित्र—रामचन्द्र सूरि । पत्रस० ६६। प्रा० १० $\times Y_{q}^{2}$  इख । भाषा— स स्कृत । विषय-चरित्र । र०काल सं० १४६० । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुराती होग ।

३६३१. **विकम चरित्र चौपर्ह**—साऊ **कवि ।** पत्रस्य २५ । मा० १० $\times$ र्भः इच । माषा~ हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  ने०काल स १५८६ । पूर्णः । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० नैन मंदिर दवलाना व दी ।

विशेष--ग्रादि अन्त माग निम्न प्रकार है-

प्रारम्भ—द्गृहा—नमो नमो तुम्ह् चिन्नका तुम गुन पारन हुंति । एकजिल तिउ मुमरता मुख सम्पति पामति । तिउहेज महिष्यामुर बिघ्व देश्यज मोड्यामान । जाग्य त्रम नित्रभना तद्य हरिया तद्य प्रारा ।

ग्रस्तिमभाग---

स बत् पनर श्रांनाइ तिथि बिल तेरह हु ति । मगसिर भास जाण्यो रविवार जते हु ति । नडी तरणड पसाउ सबदुउ प्रवन्ध प्रमाण । उवभाय भावे भए।इ वातज मावा ठाए । इति विकसचरित्र चौपई ।

३६३२, विजयसन्द चरिय $--\times$ । पत्र स० न् । आ० १०  $\times$  ४ $\frac{3}{6}$  दश्व । भाषा-शकृत १ विषय-चरित्र । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन सं० २६**५ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रीननन्दन स्वासी, बुदी ।

३६३३. **बुधमनाय चरित्र—सकलकोति** । पत्र तं० १४६ । ग्रा० १२<sup>2</sup> ४ ६ इ.च.। माषा— सस्कृतः। विषय-चित्रः। र०कालः ४ । ले०कालः स.० १८३६ फागुए। सुदी १४ । पूर्णः । वेष्टुनसं० १२७३ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेरः।

३६३४, प्रतिसं० २ । पत्रसं० १८६ । मा० १०४४ इला । ले∙काल स १७६३ मासोज सुदी १४ । मपुर्ण । बेष्टन स०२४६ । प्राप्ति स्थान—भटारकीय दि० जैन मन्दिर मजमेर ।

विरोध —सासवाली नगर मध्ये राज श्री मार्नासवास्थ्यात्रियो धर्ममूर्तयः सा श्री सुखरामजी श्री बखतरामजी श्री दोलतरामजी तेषा सहायेन लिखितं। मृनिधर्मविमल ने प्रतिलिपि की थी। **३८३५. प्रतिसं० ३ ।** पत्रसं० २०६ । प्रा० १० है ४४ <sub>दे</sub> इखा । ले०काल स**०** १६७५ । पूर्ण । वेकनसं० ७१६ । **प्राप्ति स्थान—**भटारकीय दि० जैन मंदिर ग्रजीय ।

विशेष — संवत् १६७४ मगसिर सुदी ३ के दिना ग्राहिपुरास्। सा. नानी भीसो बेगी को घटापितं बार्र भनीरानी मोजाबाद मध्ये।

३**८३६. प्रति सं∘४ ।** पत्रस॰४५/५०। ग्रा०१०१४५ १ इला। ले∘काल ४ । पूर्ण। वेष्ठन सं०४४ । **प्राप्ति स्थास**— दि॰ जैन मन्दिर बैर ।

**३८३७. प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ६ – ४७ एव १०३ से १३७ । घा० ११ x ४ इश्व । ले**०**काल × । प्रपुर्ता। वेबन स० ४ । प्राप्ति स्थाने — दि० जैन मन्दिर वैर ।

३**६३८. प्रतिसं०६।** पत्र स०१८६। प्रा०११× ४ इला। ते० काल स०१७६६। पूर्ण। वेष्टन सं०२०६।१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपर।

विरोध —स॰ १७६६ कार्तिक सुदी ११ को उदयपुर मे श्री राखा जगतिंसह के शासन काल मे क्वेतांबर पृथ्वीराज जोधपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थाग्रन्था। ४६२०। रोडीदास गांधी ने ग्रन्थ मेंट दिया था।

**३६३६. प्रति सं०७ । पत्र** सं०१०६ । मा०१०×६३ इञ्च । ले०काल सं०११०-४२ । प्रा**प्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर कोटडियो का, इंगरपुर ।

**३६४०. प्रतिसं० म**ापत्र सं०१७१। झा०१०  $\sqrt[3]{x}$  ४ १ इच्छाले० कान सं०१७४१ **भाषाढ** बढी माप्तर लक्कर जयपुर।

**३६४१. प्रति सं० ६**। पत्रस० १४८ । प्रा० ११ १ै × ५ इला । ले०काल स० १५७५ । पूर्ण । वेकन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैसावा ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-सबत् १५७४ वर्षे ग्राध्वन मासे कृष्ट्एयक्षे पचम्या तियो श्री निरिपुरे पौषी लिली । श्री मृतस थे सरस्वतीगच्छे बलारकारगएं। श्री कु दकु दाचार्यान्वये म० विजयकीर्ति तत् शिष्य ग्रा. हेमचन्द पठनार्थ ग्रादिपुराएं श्री के थेन लिलाप्य दत्त ।

**३६४२. प्रति सं० १०। पत्रसं० १३४**। ग्रा० १०३ ४ ५ ५ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्णः। वेस्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैसुवा।

विशेष-१३४ से बागे के पत्र नहीं है।

**३६४३. प्रतिसं० ११ । पत्र**सं० २४७ । प्रा० १०४ ६ है इञ्च । ले० काल सं० १८२२ झासोज सदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०४ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-जयपूर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३६४४. विद्वयुष्वराकाच्य $--\times$ । पत्रस०१४ । ग्रा०१० $\times$ ४ ै इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-काच्य । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३६४५. शतस्तोक टीका — मल्लभट्ट । पत्रस्त ११। प्रा० ११ $\frac{1}{2}$  प्रश्चे दख । माषा — संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २४७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, वंदी ।

३६४६. शांतिनाय चरित्र —  $\times$  । पत्र त० १२६ । आ० १०५  $\times$ ४५ इ. था । प्राचा-सस्कृत ग्रह्म । विवय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० २१ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर शैवानजी कामा ।

विशेष-श्वेताम्बर भ्राम्नायका ग्रंथ है। १२८ से भ्रागे पत्र नहीं है।

३८४७. सांतिनाथचरित्र—मजितप्रससूरि । पत्र सं०१२६ । प्रा०१० $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  दुन्छ । माषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल सं०१२०७ । लेखन काल  $\times$  ।पूर्णं । बेष्टमः स०१६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**३३४८. प्रतिसं**० २ । पत्रस०१८६ । घा०११४४ ॄेड्या। ले०काल स०१८५१ । पूर्ण। वेट्टन २०४०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३६४६. **शांतिनाथ चरित्र—मारगंद उदय ।** पत्रस० २७ । म्रा० १०<sup>३</sup> ४४ ई इन्च । भाषा-हिन्दी (गदा) विषय-चरित्र । र०कास सं१६६६ । लेकाल स० १७१६ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बंदी ।

३८५०. शांतिनाय चरित्र—भावचन्द्र सूरि । पत्रस० १३८ । झा० १०४४ इच । भाषा— सस्कृत (गद्य) । विषय-चरित्र । २०काल ४ । ते० काल १४३४ मादवा बुदी १ । पूर्ण । वेष्टृतस० १५८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लच्छेलवान पवायती मन्दिर म्रलवर ।

विशेष--भावचन्द्र मृरि जयचन्द्र सरि के शिष्य तथा पार्श्वचन्द्र सुरि के प्रशिष्य थे।

**३६५१. प्रति सं० २** । पत्रस० १२६-१७२ । ग्रा०१०<sub>१</sub> ×५१ इन्त्र । लेक्काल × । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर दीवानजी कामा ।

३६५२. **शांतिनाय चरित्र—सकलकोर्ति** । पत्र स०१६३ । ग्रा०१२ $\times$ ५ इच । **आगः**—सम्ब्रुत । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१६६६ मादवा सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स०१२५१ । **प्राप्ति स्थान**—अट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-ग्रजमेर नगर मे नेमीचन्द जी कासलीवाल ने प्रतिलिपि करायी थी।

**३९५३. प्रतिसं**० २ । पत्र स० १९७ । आ० १०  $\times$  ४ है इखा । ने० काल स० १८७० आषाढ मुदी ११ । पूर्ण । ने० स० ७१३ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष--महारोठ नगरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंह जी राज्ये प्रवर्तमाने मिडत्यासाले महाराज श्री महेसदास जी श्री दुर्जनलाल जी प्रवर्तमाने खंडेसवाल जातीय ला॰ सिमुदास जी ने प्रतिलिपि कराई।

३६४४, प्रतिसं०३ । पत्रसं०१६७ । झा०१०४४ है इला । से०काल ४ पूर्ण। बेष्टन स०१४७⊏ । प्राप्तिस्थान— म०दि० जैन मंदिर क्रजमेर ।

३६४५. प्रतिसं**० ४**। पत्र स०१८६ । घा०१०३ $\times$ ४ $_{y}^{3}$  इ.ख. । ले०काल $\times$ । पूर्ण। बेष्टतसं०१८४ । प्रा**प्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर।

**३६५६. प्रतिसं० ५** । पत्र स० १२४ । ग्रा० १२ ४६ट्टै इ**ख । ले०काल** १८०६ कार्तिक बुदो १२ । पूर्ण । बेष्टन स० १०५**१ । प्राप्ति स्थान—महा**रकीय दि० जैन मन्दिर, श्रजमेर । **३८५७. प्रति सं० ६ ।** पत्रस० ३२४ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इख । ले० काल स० १७२६ पौष बुदी ११ । पूर्एं । बेच्टन प० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

विशेष - जोघराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

**३८५८. प्रति सं० ७** । पत्र सं० १८३ । द्वा० १०३ ४ ४ <sup>3</sup> इला । लेक्सल १६६० । पूर्ण । बेष्टन स० १००/४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हूं गरपुर ।

प्रशस्ति—सन्त् १६६० वर्षे भाषाड सुदि १२ कुके सागवाडा शुक्तस्वाने श्री भादिनाच चैरयालये श्री मूलसचे सरस्तनीतम्ब्रे स्वास्कारतर्गो श्री कुरङ्गदाचार्यान्वये मङ्गतावार्यं श्री मुराबद्ध तराष्ट्र महत्वाचार्यं श्री जिनचंद्र तराष्ट्रं म० श्री सकत्वचन्द्र तदाननावे स्थविराचार्यं श्री मस्लिभूषण् ग्राचार्यं श्री हेमकीत्ति तत् विष्य वार्षे कनकागु वार्स्त चौतीस श्री शांतिनाय पुराण क० श्री मोजा ने तिस्तापि दत्तः।

३८**५८. प्रति सं० म ।** पत्र स० ६-१६६ । **प्रा•** ११×४२ ४४ इ.ख । ले० कालस० १६१० । अपूर्ण । बेष्टन स० ३७२।१५ **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवन् १६१० वर्षे शाके १४७४ प्रवर्तमाने मेदपाट मध्ये जवाक्षस्थाने ग्रादीश्वर चैत्यालये लेखक गहुजी लिखत । श्री मूलसभे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुदकु दाचार्यास्वये महारक श्री प्रधानित तरपट्टे म० श्री सकलकीति तरपट्टे भवनकीति तरपट्टे भट्टारक श्री शानमूषण तरपट्टे श्री विजयकीति तरपट्टे म० श्री शुभवन्द्र नदाम्नाये बह्य श्री विजयसीति तरपट्टे म० भी शुभवन्द्र नदाम्नाये बह्य श्री विजयसीति तर्पाट क० श्री शांतिदास तत्पाट क० श्री हमा तस्य णिष्या बाई भवनती बाई श्री लतमती चरणकमल मधुननावस्या चैली बाई धनवती कमंक्षयार्थ पठनार्थ इट पुस्तक लिलापित।

३६६०. प्रति सं० ६ । पत्रस० १४४ । ग्रा० ११ 🗴 ४ इला । से०काल स० १४६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१६ । प्राप्ति स्थान-सम्मवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवद् १४६४ वर्षे भादवा सुदी ११ मुक्ते श्री मृतनभे श्री गिरिपुरे श्री धादिनाथ वैत्यालये हुवड जानीस सदला गोभे बुहरा गोधा भाषां माराम्बरे तस्य पुत्री रमा तस्य जमाई गाधी बाखा भाषां नाथी श्री गातिनाथ चरित्र लिलाय दन । कर्स क्षयार्थ गुभ मवतु । कुरकुं दाचार्यान्य भट्टारक श्री मक्तककींत तत्पर्ट् भ० श्री मुबनकींत तत्पर्टे भ० जानभूषणा तन् विषय घाचार्य श्री नेमिचन्द्र त. सुश्री गुरुकींति । भट्टारक श्री पथार्यिन स० कमराय प्रदत्त पुरुककींतद ।

किनारो पर दीमक लग गई है किन्तू ग्रन्थ का लिखा हुग्रा भाग सुरक्षित है।

३६६१. प्रतिसं० १० । पत्रसं० ४० से १२६ । ब्रा० १३ imes ५ श्राला । लेक्काल imes । ब्रपूर्ण । विकास १७३ । प्राप्ति स्थान—सम्भवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

३६६२. प्रतिसंत ११ । पत्रसंत १८६ । आ० ११४४ इञ्च । लेश्काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसंत १४१ । आफ्टि स्थान-दिल जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष---प्रन्य मे १६ अधिकार हैं। ग्रन्थाग्रन्थ स ० ४३७५ है।

३६६३. प्रति सं० १२ । पत्रस० ६०-१४० । प्रा० १० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेहनस०१३० । प्राप्तिः स्थान--- दि० जैन मदिर प्रादिनाय बूंदी ।

३६६४. शांतिनाथ चरित्र — मुनिवेव सूरि । पत्रस० ११८ । प्रा० १७५३४४६ इञ्च । साया-सस्कृत । विषय — चरित्र । र०काल ४ । ले०काल सं० १४१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । प्राप्ति-स्थान-सथ्वेतवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३८६५. शांतिनाथ चरित्र माथा—सेवाराम । पत्र स० २३०। ब्रा० ११४६ है इश्व। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। र०काल स०१८३४ श्रावमा बुदी र । ने०काल स०१८८७। पूर्ण। बेष्ट्रन स०१-८ । प्रास्ति स्थान - अट्टारकीय वि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरपुर।

## विशेष--

देण बुडाहड प्रांदि दे संबोधे बहुदेस,
राबी रावी प्रस्य कठित टोडरसस्ल महेश ।
ता उपदेश लवांस तही सेवाराम सयान,
राब्यो प्रस्य सर्वमान के हुयं हुएँ अधिकान ।। २३ ।।
म बन् प्रस्टादस शनक फुनि चौनीस महान ।
सावन क्रस्ता प्रस्टमी पूरत कियो पुरान ।
प्रति प्रपार मुनसो बसे नगर देख्याद सार,
आका कसे महाजनी दान पर्यम मितारा। २४ ।।

३६६६. शालिभद्र चरित्र —पं० धर्मकुमार । पत्रतः १४ । घा० १०३ ×४ ६ व । माषा मग्रतः । विषयः चरित्र । र०काल  $\times$  लेकाल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन स० २०२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मिदर लक्कर जयपुर ।

३८६७. शालिमद्र चौपई — जिनराज सूरि । पत्रस० २८ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०कान स १६७८ झासोज बुदी ६ । ले० काल म० १७६६ चैत बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन ग० ६४० । प्रास्ति स्थान- दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

३६६८. प्रति सं० २ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४०० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३६६६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २१ । लेक्सल स० १७६६ । पूर्ण । बेष्टन स० ४६१ । प्राप्तिः स्थान— द० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३८७०. प्रतिसं० ४ । पत्र स०१६ । म्रा०११imes४ $_{\frac{1}{2}}$  इञ्च । ले०काल स०१८७६ । पूर्ग । वेकनस०१६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

३६७**१. शिशुपालवस--साध कवि** । पत्र स० १६ । ख्रा० १२×४ ॄेइ च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर फ्रजमेर ।

विशेष — ४ सर्गतक है।

३६७२ प्रतिसं०२ । पत्र सं०७० । ग्रा०१० ४ ४ इला । ले०काल ४ । ग्रपूर्ग् । वेष्ट्रन सं०१४४० । प्राप्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

विशेय--- ग्रन्तिम पत्र नही है। प्रति प्राचीन है।

३६७३. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ३६-१ = २ । द्या० ११ $_{\phi}^{2}$  $\times$ ४ इथा । ले० काल  $\times$  । सपूर्ण । बेहुन स०६० । प्राप्ति स्थाल—म० दि० जैन मदिर अजमेर ।

३९७४. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० २०७ । प्रा० ११×६ इचा । ले०काल स० १८८० । वेष्ट्रनसं० २६६ । प्राप्ति स्थान—दि जैनमन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष — लक्कर के मन्दिर में प० केशरीसिंह के शिष्य ··· · ने देवालाल के पढ़ने के लिए प्रति – लिपि की थी।

**३८७४. प्रतिसं० ४** । पत्र स० १०६ । घ्रा० १२३ ४४ इंच ।ले०काल स० १८३६ । बेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर, जयपुर ।

विशेष-जयपुर नगर मे श्री ऋषभदेव चैत्यालय में प० जिनदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३९७६. प्रतिसं०६ । पत्र स ४ । मा०१० $\frac{2}{5}$  ४ १ इच । ले०काल  $\times$  । प्रथम सर्ग पूर्ण । वेष्टन सं०१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बंदी ।

३८७७. प्रतिसं०७ । पत्रस०१७। प्रा० १० $\times$  ७ इचा ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं०३४/१६ प्राप्ति स्थाम—दि० जैन पनायती मदिर दुनी (टोफ)।

**३८७८. प्रतिसं० ८ । पत्र**स० ६ । प्रा० १०×४<sup>२</sup> इन्थ । ले**०का**ल × पूर्ण । वेष्टन स० १८६-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

३६७६. शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथ सुरि । पत्रस०२२। प्रा० १३४ ६ १ स्था । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । २०काल ४ । से०काल ४ । अपूर्ण । बेष्टनस०२६६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, व दी ।

३८०० श्रीपाल चरित्र—रस्नशेखर । पत्र सं० ३० । मा० ६३ ४४ इ.ख.। भाषा-प्राकृत । विषय-कथा। र०काल स०१४२०। ले०काल स० १६६६ चैत सुदी १३ । पूर्ण। वेष्ट्रन स०२१४ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन सदिर प्राप्तिन्दन स्वामी, व दी।

३६८१. प्रति सर् रे। पत्र स० ६४। ने० काल स० १८८४ झासीज सुदी १। पूर्ण । बेष्टन स० ६३४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मदिर भरतपुर।

विशेष-हिन्दी'(गुजराती मिश्रित) ग्रथं सहित है।

३९**८२. प्रति सं०३ ।** पत्र स० ६१। ते० काल स० १८७६। पूर्णा । वेष्ट्रन स०६०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायदी मन्दिर भरतपुर ।

३६६३. श्रीपास, वरित—प० नरसेन । पत्र स० २७ । मा० ११ ×५ इख । भाषा-मपभ्र म । विषय-चरित । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान** -- महारकीय दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

३६६४. प्रति सं०२। पत्र स०४६। प्रा०१०४४ इञ्च। भाषा-प्रपन्न स। विषय— चरित्र ∤। र०काल ४। ले०काल ४। पूर्ण। बेष्टन सं०१११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर रीवानजी कामा। ्ह्रद्भः श्रीपाल चरित्र—जयमित्रहल । पत्र सं०६०। मा०११ 🗴 ४० इच । मावा-मपभ्रंत्र । विषय-चरित्र । र०काल 🗴 । ले० काल स०१६२३ मावाद्र दृदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं०३०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानवी कामा ।

विशेष--भैरवदास बाह्यरा ने प्रतिलिपि की थी।

३८६६. **श्रीपाल चरित्र—रह्यू**। पत्र सं० १२४। प्रा० १०३<sup>२</sup>४४ हचा। साथा-प्रपन्न । विषय-काव्य। र०काल ४ । ले० काल स० १६०६ ग्रासोज बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० १४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रतिनाथ बंदी।

विरोध — गुकवासरे कुर जांगल देसे श्री सुर्गंपण गुमस्थाने सुनितान श्री सलेमसिंह राज्य प्रवर्तमाने श्री काहासचे मायुरान्वये पुष्कर गर्गे उभयमावाप्रवीरा तपोनिधि मट्टारक श्री उदरसेनदेवा तत्पट्टे भ० श्री बमंतेनदेवा तत्पट्टे श्री गुराकीर्ति देवा तत्पट्टे म० श्री यक्कीकीर्तिदेवा तत्पट्टे श्री मसयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुराभद्रमुरीदेवा तत्पट्टे भानुकीर्तिदेवा।

३८८७. श्रीपाल चरित्र—सकलकोत्ति । पत्र सं० ३४ । बा॰ ११४५ इख । माषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल स० १४ वी जताब्दी । ले॰ काल सं० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०४-६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

प्रशस्ति—स वत १६६४ वर्षे महामुदि १० सोमे श्री मूनसंसे सरस्वतीगछे स्वास्कारमणे श्री कृप्दकृत्याचार्यात्यये भट्टारक श्री सकनकीर्तास्तरन्य भट्टारक श्री रामकीर्तास्तरस्टे भट्टारक श्री पपनिद स्वतानाये इत्तर श्री ताझका तिस्तय मृति श्री पर्मभूषण तिस्तव्य इद्या मोहनाय श्रीईडर बास्तव्य हुँवड कातीय गया गोत्रे कमु मास्त्रया नवीची प्राविदाज भाषा उत्तमदे तयो सुतः लाघा तथा लट्टूजी एते स्वज्ञानान्याय कम्मे क्ष्यार्थ श्रीपालको भरिव विलाय सर्त ।

३६८६६. प्रति सं०२ । पत्र स०४६ । धा०११४४ इञ्च । ले० काल स०१६३१ । पूर्ण । वेष्टन सं०११२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

३८८८. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४५ । ब्रा० ११३ ४४ ई इञ्च । ले० काल स० १७६८ । वेष्टन स० २०० । पूर्णे । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर लक्ष्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति ग्रच्छी है ।

**३६**६०, प्रति सं० ४ । पत्र स० ३६ । ब्रा० ११४५ इवा । ले० काल स० १६४⊏ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष-- प्रथाप्रथ स० ८६४। प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

सं ० १६४८ वर्षे क्षावण मुदी ८ मनिवासरे बढोद गुभस्याने श्री मूलस थे सरस्वतीगच्छे बलात्कार गणे श्री नेमिजिनचैत्यालये म० प्रमयनदिदेवाय तिसच्य ;ग्राचार्य श्री रत्नकीति पठनार्य। श्रीपालचरित्र निर्मित जोसी जानार्दन।

३६६१. प्रतिसं० ४.। पत्रस० ३२.। धा० १२ × ४१ इ.ख.। से०काल सं० १८७८ स्रावस्स् सुदी ४.। पूर्णः। वेष्ट्रन सं० ७३.। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती इनी (टोंक)।

विशेष-टोडा नगर के श्री सांबला जी के मन्दिर में पं॰ शिवजीराम के पठनायं प्रतिलिपि हुई थी। प्रति जीएँ है। ३६६२. प्रति सं०६ । पत्रस० ५३ । घा० १० 🗙 ५२ इञ्च। ले∘काल स० १९३६ । पूर्ए । वेष्टुन स०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैराखा ।

३९६६३, प्रतिस०७ । पत्रस०३ ⊏ । घा०१२ ×४ इञ्च । ले०काल स० १७७३ माघ सुदी४ । पूर्णे। बेष्टुनस०२१४ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर नागक्षी बृंदी।

विशेष-पं मयाराम ने परानपूर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

३**६६४. श्रीपाल चरित्र—क० नेमिन्**सा । पत्रस० १६ । आ० ६ र्रं ४ ४ रूच । माया— सस्कृत । विषय-चरित । र०काल स० १४०४ श्रावाह सुदी ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १४३६ । **प्राप्ति स्थान**—मटटारकीय दि० जैन *मन्दि*र अजसेर ।

**३९९५. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ६० । **धा० ११**  $\times$  ४ $^{\circ}$  इञ्च । ले०काल स० १९०४ मगिमर सुदी २ । पूर्ण । बेष्टुन स० १२०६ । **प्राप्ति स्थान**— मट्टारकीय दि० जैन मदिर खजनेर ।

३८८६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६८ । प्रा॰ १२ 🗴 ६च । ले० काल स० १८३२ मावन बुदी १२ । पूर्णु । वेस्टन स० १३१८ । प्राप्ति स्थान—मट्टारकीय दि० जैन मदिर धजमेर ।

३६९७. प्रतिसंव ४ । पत्र स॰ ५५ । घा० १२ × ४ इन्छ । लेक्काल स॰ १८१६ । पूर्ण । बेक्ज स॰ १७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर बैर ।

**३८६८. प्रति स**्थ्रापत्रसन्दर्शलेकालसन्दर्शः । पूर्णं । वेष्टनसन्दर्शः प्रा**प्तिस्थान**—दिक्जैन प्रवासती मंदिर सरतपुर।

विशेष-भरतपुर मे ब्रादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई थी।

३६<mark>९६. प्रति स० ६</mark> । पत्र स० ६६ । घ्रा० १र्डे ४४ <sup>†</sup> इल्बाले० काल म० १८८४ । घपूसं। बेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

४०००, प्रतिसं० ७ । पत्र स० २४ । ब्रा॰ ६ $\frac{1}{8} \times \frac{1}{8}$  इश्वः । ते॰काल  $\times$  । प्रपूर्णः । बेहुनसं० १०६–१७५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टोक) ।

४००१. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० १३५ । घा० १० $\times$ ४३ इख । ले० काल स० १८७६ बेष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । बेष्टन स० ४०/२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

४००२. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६६ । लेखन काल 🗴 । पूर्ण । वे०स० १४७ । प्राप्तिस्थान-टि० जैन मन्दिर नागदी, बुँदी ।

४००३. प्रतिसं० १०। पत्र स॰ ४७। ब्रा॰ १२१४६ इला। ले० काल स०१६०४। पूर्या। वे० सं०१०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर घमिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष--प० सदासुखजी एव उनके ५त्र चिमनलाल जी को बूदी में लिखवाकर मेंट किया था।

४००४. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ५४ । घा० १ $\times$ ५५ इश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्टन म० ७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, वृंदी ।

विशेष --- सिद्धचक पूजा महारम्य भी इसका नाम है।

४००५, श्रीपाल चरित्र—पुरासागर । पत्रसः १८ । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । त्रे०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ७३४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पचासती मिरिर भरतपुर ।

४००६. श्रीपाल चरित्र—  $\times$  । पत्र स०११ । प्रा०१०  $\times$  ५ $^{3}_{7}$  इचा । भाषा—संस्कृत । विषय—र्वारत्र । र०काल  $\times$  । ने०काल स०१६१० सावस्य सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं०१६० । प्राप्ति स्थाम—दि० जैन मंदिर फनेहपुर गेलावाटी (सीकर)

४००७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ से २१ । भाषा—संस्कृत । विषय—बरित्र । ५० काब  $\times$  । केश्काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टुन स० ७०६ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतप्र ।

४००८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २१ । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ६६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायनी मदिर भरतपुर ।

४००६. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ५३ । घा० १० $\times$ ६ १ इंच । ले०काल  $\times$  । घपूर्णं । बेष्टन स॰ ३०/१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रचायती मन्दिर दनी (टॉक) ।

४०१०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १०६ । स्रा० १२४७ इंच । प्राथा—सस्कृत । विषय— वरित्र । र०काल ४ । लेकाल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सढेल-वालों का प्रावा (उलियारा) ।

विशेष-वीच के बहुत से पत्र नहीं हैं। १०८ से आगे भी पत्र नहीं हैं।

नोट---पुण्यास्रवकथाकोश के फुटकर पत्र है और वह भी अपूर्ण है।

४०११. श्रीपाल चरित्र—परिमल्ल । पत्रस०१३७ । मा०१०४६३ इ.च. । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल स०१६४१ माषाउ बुरी ४ । से०काल स०१८१० म्रासीज सुरी ८ । पूर्ण । वेष्टुतसं०१४८४ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष - कवि ग्रागरा के रहने वाले थे तथा उन्होंने वही रचना की थी।

४०१२. प्रतिसं० २ । पत्रसः० ६१ । घा० १३×६ इंच । ले० काल स० १६११ श्रावण बुदी ४ । पर्ण । बे० म० १- । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष - प्रति ग्रच्छी है।

४०१३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५६ । घा० १३ $\times$ ५ $^3_2$  इख । ते॰काल स० १८६६ प्राषाढ सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स० ५८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—मोहम्मदणाह के राज्य में दिक्षी की प्रति से जो मनसाराम ने लिखी, प्रतिलिपि की गई। ४०१४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ⊏५। प्रा० १११४ ६३ इचा। ले∙काल स० १११७ मादवा

बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

४०**१५. प्रतिसं० ५ ।** पत्रस०१८०। या० १०×७ इ.च । ले•काल स०१६६६ फागुण मुदी १२ । पूर्ण । जीराँ भीर्ग । बेट्टन स०१४१ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तैरहरायी दौसा ।

४०**१६. प्रतिसं०६।** पत्र स०१२०। ग्रा०६<sup>3</sup>, ४ ४<sup>3</sup>, इन्दा। ले०काल स०१६२६। पूर्णावे०सं०१४। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर तेरहपयी दौसा।

विशेष--दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०१७. प्रति सं०७। पत्र स०१२४ । ग्रा०१०४६ दृष्ट्यः। ले॰ काल स०१८८४ । पूर्णः । बेष्टन सं०१२२/३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर बडाबीसपंथी दौसा।

४०१८. प्रतिसं० द । पत्रस्० १६ । लेव्काल सव १७७४ फागुरा सुदी ७ । पूर्रा । वेष्ट्रन सं• द । प्राप्ति स्थान-दि जैन मन्दिर बडावीस पथी दौसा ।

विशेष - जादौराम टोग्या ने प्रतिलिपि की थी।

४०१६, प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६७ । झा० १०×४३ इञ्च । ले० काल स० १८२० कार्तिक बदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष-डेडराज के बढे पुत्र मगनीराम ने करौली नगर में बुधलाल से लिखवाया था। प्रति जीगां है ।

४०२० प्रति स० १०। पत्रस० ११७ । प्रा० १३ 🗴 ६ दुःख । ने०काल स० १८८६ मगसिर सुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६१ । प्राप्तिः स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष-गुमानीराम ने करौली में प्रतिविधि की थी।

४०२१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १६० । ग्रा० द 🗴 ६३ इच्छ । से० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं • १६ । प्राप्ति स्थान-दि • जैन प्रचायती मन्दिर करौली ।

४०२२. **प्रिति सं०१२। पत्र** सं०१६१ । आर्था० ५३ ×५३ इच्छा । ले० काल × । पूर्णा । वेष्टन सं • ३१/४३ । प्राप्ति स्थान--दि • जैन सौगासी मन्दिर करौली ।

४०२३. प्रतिसं १३। पत्रसः १५०। घा० १०×४३ इचा। ले० काल म० १८८३। पूर्णं। वेष्टन सं ० ४३ । प्राप्ति स्थान--दि • जैन सौगागी मंदिर करौली ।

विशेष-अयाने मे प्रतिलिपि हुई तथा खुशालचन्द ने सौगासी के मन्दिर में चढाया।

४०२४. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० ६४ । लेखन काल स० १६४७ थावरा गुक्ला ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं ० १० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

४०२५. प्रतिसं० १५ । पत्र स० १२६ । घा० ११×७ इन्ह । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन स. ३१ । प्राप्ति स्थान-दि जैन पचायती मंदिर कामा ।

४०२६. प्रतिसं०१६ । पत्रसं०१३० । आ०१२ ×७ । इन्हा । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन सं १४३१ प्राप्ति स्थान-दि जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष--पन्नालाल बोहरा ने प्रतिलिप की थी।

किरोक - बयाना में लिपि कराकर चन्द्रप्रभ मन्दिर मे चढ़ाया ।

४०२७. प्रति सं०१७। पत्र सं०११७। ग्रा०११×६। ले०काल सं०१६१० मादवा सूदी थ । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ ४३ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

४०२ द. प्रति सं० १६ । पत्रसं० १४६ । आ० १० X ४ देखा । ले० काल स० १७६६ सावग्रा सदी १ । पूर्ण । बेष्टन स०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बैर ।

४०२६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ६८ । ग्रा० १२×६ हुँ इश्व । ले० काल स० १८०४ प्रथम चैत सदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २०। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पंचायनी मन्दिर वयाना ।

विशेष--- अप्रवाल जातीय नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी। कुल पद्य स० २२६० है।

४०३०. प्रतिसं २०। पत्र स॰ १०३। ले० काल स० १८८० माघ बुदी १। पूर्ण । वेष्टन मं २१ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन पंचायती मदिर बयाना ।

विशेष-भागरा में पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

४०३१. प्रतिसं० २१। पत्र स॰ १२३। प्रा॰ ११×५ इन्वः। ले॰ काल स॰ १००६ फागुरा इटी १०। पूर्णः। वेष्टनसं० ५०२ प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपूरः।

विशेष-महवा में साह फतेचन्द मुख्शी के लडके विजयलाल ने ताराचन्द से लिखवाया था।

४०३२. प्रतिसं० २२ । पत्र सं० २०४ । । ले० काल 🔀 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवादती मन्दिर भरतपुर ।

४०३३. प्रतिसं० २३ । पत्र स० १००। ले० काल १५४४ । पूर्णः। बेष्टन स० ५०१। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पनायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष-भीमराज प्रोहित ने भरतपूर में प्रतिलिपि की थी।

४०३४. प्रति सं० २४। पत्रसं० १४४ । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ५६२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपूर।

विशेष-भरतपूर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०**३५. प्रतिस० २५** । पत्र स**० ६**७ । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० ५६५ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पदायती मंदिर भरतपुर ।

∏न—ाद० जन पचायता मादर भरतपुर **विशेष—**प्रति प्राचीन है ।

ें ४०३६. प्रतिसं० २६ । पत्र सं० १०१ । घा० १२ रे 🗴 ७ इखा । ले० काल सं० १६०३ बेष्ठ मुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स०१० । प्राप्ति स्थान—प्रवशल दि० जैन मन्दिर पदायती मलवर ।

४०३७. प्रति स० २७ । पत्रस० १४२ । घा० ६ १४६ इञ्च । ले•काल स० १८७२। पूर्यो । बेग्न म० ५६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ब्रायना पश्चायती मंदिर म्रसवर ।

४०३८. प्रति सं० २८। पत्र सं० १२१। ले० काल सं० १८६१। पूर्ण। बेष्टन सं० ३६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर, दीवानजी भरतपुर।

विशेष---बलवन्तर्सिह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०३६. प्रति सं० २६। पत्र संस्था ११०। घा० १२ × ७ इखा । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १४१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन लण्डेलवाल प्चायती मुद्दिर घलवर ।

४०४०. प्रतिसं० ३०। पत्र स० १३१ । आ०६२ ४ ६२ इचा। ले०काल ४ । पूर्ण। वेष्टन सं०१। प्राप्ति स्थान—दि०र्जन मन्दिर, चौधरियो का मालपुरा (टोक)।

४०४१. प्रतिसं० ३१ । पत्रस० १४३ । धा० ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} ३ छ्रच । ले० काल सं० १८७७ फागुगा बुदी १४ । यूगा । वेष्टन स० २० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा <math>(z)$ कः)

विशेष-प० रामलाल ने प० चोली भवानीवक्स से शाहपरा में करवाई थी।

४०४२. प्रतिसं० ३२ । पत्रसं० ११६ । घा० १२×६ इन्छ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेहन स० ५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, राजमहल टोंक ।

विशेष---२२०० चौपई है।

४०४**३. प्रति सं० ३३ ।** पत्र स० १६४ । मा० १२ ४६ है इच ∄ाले० काल सं० १८७६ । पूर्यों । बेष्टन स० दश्र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।. विशेष---रावराजा श्री चांदांसह जी के शासनकाल दूर्णी में हीरालाल श्रीभा ने प्रतिलिपि की ।

४०४४. प्रतिसं० ३४ । पत्र स०५७ से १११ । घा० ११ $\frac{3}{7}$  $\times$ ६ इश्व । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स०४८ २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती दृती (टोंक) ।

४०४५. प्रतिसं० ३५ । पत्रस०१२४ । म्रा० ६२ ४ ६३ इच । ले०काल स०१८६० काती सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४७ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मंदिर कोटयी का नैरावा ।

विशेष-साह नदसम ने झावा में ग्रंथ लिखा। स॰ १६६५ में साह रोडलाल गोपालसाह गोठडा वाले ने नेगावा में कोटयो के मंदिर में चढाया।

४०४६. प्रतिसं० ३६ । पत्रस० १०४ । घा० १२ $\frac{1}{5}$   $\times$  ६ $\frac{1}{5}$  इञ्च । से०काल  $\times$  पूर्ण । बेष्टत स० १२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बुदी ।

४०४७. प्रति सं० ३७ । पत्र स० १२६ । घा० १२×६ इञ्च । ले० काल स० १६७२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मतिर श्री महावीर वृदी ।

विशेष--वृन्दावती मे निखा गया था।

४०४८. प्रतिसं० ३८ । पत्रस० १७ । प्रा०१० ४ ६} इञ्च । ले०काल स० १६०६ । पर्ण । बेग्न स० ४८ । प्रास्ति स्थान—तेरहणयी दि० जैन मन्दिर, नेसावा ।

**४०४६. प्रति स**० ३६ । पत्र स० २४ । ग्रा० १२  $\times$  ६ इश्व । ले०काल सं० १६०२ । पूर्ग । केन्द्रन स० ७०/४६ । **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

विशेष-प्रति शुद्ध एव उत्तम है। फागी मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०**५०. श्रोपाल चरित्र—चन्द्रसागर ।** पत्र स०५०। ग्रा०१० $\frac{1}{7}$   $\times$  ६ इखा भाषा— हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल स०१८२३ । ले०काल स०११४४ । पूर्ण । बेप्टन स०५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर सेक्षावाटी (सीकर) ।

### विशेष---श्राटिभाग---

सकल किरोमिए जिन नमू तीर्थंकर बीबीस । पर्वंकत्माएक बेह लह्या पाम्या किवपद ईवा ॥१॥ वृपमेनेन ग्रा देकिर गोतम अन्तिम स्वामा । व्यामेन ग्रा देकिर गोतम अन्तिम स्वामा । चडदे । वावन उपरि सदगुरु परिएगम ॥२॥ जिन मुख ली जे उपनी, सारदा देवी सार । तिह वरण प्रएगमी करी, ग्राये बुद्धि विवाल ॥३॥ गुरेरकीत् गुरु गद्धपनी कीत्ति तेह प्रवदात । तेह पार्य अन्तिम जाता सकलकीत् गुरु सारा ॥ तस पर समन अगर सम चन्द्रसागर विदोधार । श्रीपाल नरेन्द्र तरागों कहुँ विराष्ट्र रसाल ॥

### ग्रन्तिम भाग--

काष्ट्रा संघ सोहामणुं, उदयाचल जिमभाण । गळ तट नदी तट रामसेन ग्राम्नाय बलारा ।। तद अनुक्रमे हुवा गछपति विद्या भूषणः स्रि राय । नेह पाटे अनि दीपता श्री श्री भूषणः यतिराय ।।२१।।

- त्रोटक तेह पाटे धर्ति सोमता चन्द्रकीति कीनि घपार। बादी मद गजन जनु केलरीसिंह समामनुषार ॥२२॥ तेह पाटे विन जोभता राज्य कीत्ति विद्या भडार। लक्ष्मीमेन धर्ति दीपता जेह पाटे धनसार ॥२३॥
- चाल तेह वाटे प्रति दीपता इन्द्रभूषण प्रवतार ।

  पुरेन्द्र कीर्ति गुरु गच्छपति तेह पाटे श्रवतार ।

  कीर्त्ति देश विदेश मे जाल प्रागम श्रपार ।

  तेह पाटे सुन्विर मही सकसकीर्ति गुलुधार ।।२४।।
- त्रोटक—गुग्ग्यार ते सकल कीत्ति ने मूरिवर विद्यानुग् भडार । लक्ष्मग द्वाधिकालकस्या कला बीहोत्तर नत् धार ॥११॥ व्याकग्गं तर्क पुराग् सागर वादी मद ते निवार । गुग्ग अनन नेह राजता ने कोर्ड न पार्व पार ॥२६॥
- चाल व्या तेह पर कमल सोहामणु मधुकर सम ने जािण । इहाचन्द्र सागर कहे वाल ख्यान मन घािला । व्याकर्ण तर्क पुरागन ते रही जालु भेर । मभ मति ग्रह्म जुकत है कवि गुगा स्नगम सभेर ॥२७॥
- श्रीटक श्रीपाल गुए। ते भनि पए।। मुक्त मनि भन्य भागार ∤ काविना जन होसिन कोजे नुहुई गुए। तसी भड़ार ।।२६।। बाल कर मनि श्रीय ए में ए ग्यान रची भ्रापर । जे मधी ते विन साभले ते लड़े सीच्य भड़ार ।।२६।।
- खाल—सोजन्या नयर सोहामणु दीसे ते मनोहार। सासन देवी ने देहरे परतापुरे प्रपार। सकलकीर्ति तिहा राजता छाजता गुरा भडार।। बहा चन्द्रसागर रचना रची तिहा बेसी मानाहार।।३०॥
- श्रीटक मनोहार नगर सोहामगु दीसे ते का कडमाल । श्रावक तिहा बिल श्रोकता गेवाडा नामे विक्यात ।।३१।। पूजा करे ते नित्य प्रांते चलाए। मुगो मनोहार । नागकुमार जिम दीपता श्रावक श्राविका तेह नारि ।।३२।।
- चाल—प्रथ सल्या तम्हे जागाज्यो पचदण मत प्रमागा । तेह ऊपर बलि शोमता साठ बत्तीस ते जागि ।। ढाल वशीस ते सोभती मोहनी भवियगा लोक । सामलता सुख ऊपजें, नामै विधन ते शोक ।।३३।।

श्रोटक-सोक नासे जाय चिंता पासे रिद्धि भडार । पुत्र कलत्र सुभ सपने जयकीं ति हाँद प्रपार ।।३४॥ मन प्रनीते जुंसांचले ने पूजे ते मनोहार । मन बाँखित कल्प पासीइ स्थरों मगति सहे धवतार ।।३४॥

चाल—सवत शत ध्रशदश तथ विशति घतधार।
तेह दिवसा पूरण पयो ए गंग सुम सार।।
श्रीपाल गुण भगम प्रपार केविल सिद्ध चक्र भवतार।
तुम गुण स्वामी भाग्ययो धनर इच्छा नहि सार।।
मुफ तेवक प्रवधार ज्यो दीज्यो प्रविचल धान।
बह्य चन्द्रसागर कहे सिद्ध चक्र महाधाम।।२।।
माध मास सोहामग्रों धवल परव मनोहार।
श्रीज विधि प्रति सोभती सुम तिर्धि रविवार।।३।।

इति श्री श्रीपाल चरित्रे मट्टारक श्री सकलकोत्ति तत् शिष्य श्री ब्रह्मचन्द्रसागर विरचितं श्रीपाल चरित ।

मालव देश तलपुर में मनिसन्नतनाथ चैत्यालय में पंडित नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

४०५१. श्रीपाल चरित्र—imes। पत्र स०१२। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—चरित्र। र०कालimes। ले०कालimes। प्रपूर्ण। वेष्टन स०७६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

४०५२. श्रीपाल चरित्र---  $\times$  । पत्र सस्या ११४ । ग्रा॰  $-\times$   $-\frac{1}{6}$  इंच । ग्रापा  $-\frac{1}{6}$  त्यं न प्वायती विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । लेककाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन प्वायती मन्दिर करोली ।

विशेष—प्रति गुटका झाकार है। ११५ से झागे के पत्रो मे पत्र सख्या नही है। इन पत्रो पर पत्र मंगल, है जिनसहस्रनाम तथा एकी भाव स्तोत्र झादि का सम्रह है।

४०५३. श्रीपाल चरित्र—  $\times$  । पत्र सं० १५ से ३०। ग्रा० ११  $\frac{1}{2}$  $\times$  ५ $\frac{1}{4}$  रशा । मिल्र मिल्र । र०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ७६ । प्रास्तिस्थान— दि० जैन पंचायती मन्दिर करीती ।

४०१४. स्रीपाल चरित्र— $\times$  । पत्रस॰ २७ । सा॰ १२ $\times$ ७ इच । माषा-हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ते॰काल स॰ १६३६ । पूर्ण । वेष्टनसं॰ ७१ । प्राप्तिस्थान—िद० जैन मन्दिर श्री महावीर व दी ।

४० ५५. श्रीपाल चरित्र— $\times$  । पत्र त० २६। झा० १२ $\times$ ६ इत्तः। भाषा-हिन्दी (नछ)। विषय-चरित्र। र०काल  $\times$ । ते० काल स० १९६१। पूर्णः। वेष्टन सं० ३३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन अथवाल मदिर नैस्पता।

४०५६. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र स० ४७ । प्रा० १.४६ दे इच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र०काल ४ । ते० काल सं० १८४१ सावरण सुदी १३ । पूर्ण । बेहुन स०४३ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर बैर । विशेष--संग्रही ग्रमरदास ने प्रतिलिपि की थी। कथाकोष में से कथा उद्धृत है।

४०५७. श्रीपाल चरित्र— $\times$  । पत्रस० ४१ । प्रा० ८ $\frac{1}{2}\times$ ६ $\frac{2}{6}$  इंच । भाषा-हिस्री गर्च । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६६२ भारवा बुदी ३ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ४६३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष --रिखबचन्द विदायक्या ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

४०**५६. श्रीपाल चरित्र**—  $\times$  । पत्र स॰ ३४ । घा॰ १०  $\times$  ७ इश्व । **भाषा**-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मंदिर नागदी ब दी ।

**४०५६. श्रीपाल चरित्र x ।** पत्र सं० ५८ । भाषा-हिन्दी । विषय-जीवन चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । बेट्टन सं० ५७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४०६०. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र स०३६ । प्रा० म × ५ इक्ष । मापा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र०काल × । ले०काल स०१६२३ वैज्ञाल बुदी ५ । प्रपूर्ण। वे०स० ३२० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मदिर जदयपुर।

विशेष--कुल पद्य मं ० ११११ है:।

संबद्ध प्रठारे सतसठे सावण मास उत्तम । कीसत पक्ष की सप्तमी रवीबार मुभवना ॥ ११०६ ॥ तादिन पूरण जिल्लो बरिज सकल श्रीपाल । पढो पढायो बुधजन मन सृहरक विकास ॥११०६॥ नगर उदयपुर रूबडो सकल सुला की थाम । तहा जिन सन्दिर सोमही नानाविज प्रमिराम ।१११०॥ ताहा पारिस जिनराज को मन्दर प्रत सोहंत । तहा निको ए प्रन्य ही बरतो जग जयबत ॥ ११११ । इति श्रीपाल कथा संचर्ण।

नगर भीवर मध्ये थी रिखबदेवजी के मन्दिर, श्रीमत् काष्ट्रास घ नदितटगच्छे विद्यागरो धावार्य श्री रामसेन तत्पट्टे थी विजयसेण तत्पट्टे थी भ० श्री हेमचन्द्रजी तत्पट्टे भ० श्री क्षेमकीर्ति तत् सिष्य प. मञ्जालाल लिक्यत । सं० १६२३ वैज्ञास वृदी ५ ।

प्रारम्भ मे गौलम स्वामीका लक्ष्मीस्तोत्र दिया है। धागे श्रीपाल चरित्र भी है। प्रारम्भ का पत्र नहीं है।

४०६१. श्रीपाल चरित्र---लाल । पत्र स०१४२। भाषा---हिन्दी। विषय-चरित्र। र०काल स०१८३०। ले०काल स०१८६६। पूर्ण। वेट्टन स०६८। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

४०६२. **श्रीपाल प्रबंध चतुरुपवी** — पत्रसं०४। सावा नहित्ती। विषय ४। र०काल ४। सै०काल स०१८८६। पूर्णं। वेष्टन सं०१८७। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर। ४०६३. अर्थे स्थिकचरिश्— म० शुमचन्द्र । पत्रत० १३७ । मा० १० $\times$ ४३ इ.स. । माषा- संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । से कहाल सं० १६७७ भारवा सुदी २ । पूर्ण । वेप्टन स० ६१ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

विशेष--जोशी श्रीधर ने ग्रम्बावनी से प्रतिलिपि की थी।

४०६४. प्रति सं०२ । पत्रसं० १०१ । ले० काल 🔀 । घपूर्यं । बेष्टनसं०१३२ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मंदिर प्रजमेर ।

**४०६५. प्रति सं० ३ ।** पत्रसं० १०० । म्रा० १० $\times$ ४ै इञ्च । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । केक्नसं० १२२३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

४**०६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६**४ । झा० १२३४ ४३ इञ्च । ले०कालस०१८३६ । पूर्ण । वेकनसं० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

४०६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७४ । ब्रा० ११३ × ४३ इञ्च । ले०काल सं० १८१६ । भादवा सदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १३८६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त सन्दिर ।

विशेष---गुलाबचन्द छावडा ने महारोठ नगर मे प्रतिनिधि की थी।

४०६ स. प्रति स०६ । पत्रस० ७६ । या०१० $^3_i \times ^1_i$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

४०६६. प्रतिसं० ६। पत्रस० १४८। म्रा० ११४४ इ.स. । लेक्सल स० १८४५। पूर्ण । वेष्ट्रसं० १२२। प्राप्ति स्थान—दि० जॅन रुप्टिट मुमिनन्दन स्वामी, बूदी।

विरोध—कोटा नगर के लुस्यालाडपुरा स्थित शास्त्रियक विरोक्तस्य सं आ० १४ जननार्शन नात्रियः सदासुख चेला रूपचन्द प्रॉडन ने प्रतिनिपि की थी।

४०७०. प्रतिस्र० मः पत्र सं०६० । ग्रा०१३×५ इचाः लेक्सल स०१८०२ कानुस्य इदी ५ । पूर्याः वष्टन स०८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष-सवाई जयपुर में नैरासागर ने प्रतिलिपि की थी।

४०७१. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १०५ । आ० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इस । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेकृत स० ७५ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोक) ।

विशेष---प्रति जीर्ग् है।

विशेष-दौसा के तेरहपंथियों के मंदिर का ग्रंथ है।

४०७३. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १४७ । बा० १०१४ ७ हुन्ता । ले०काल म० १७६२ वंशास बुढी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १३७,१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ सन्दिर इन्टरगढ (कोटा)।

४०७४. प्रतिसं० १२ । पत्र स० १३४ । घा० ७ $_{2}^{2} \times V_{3}^{2} इख । ले० काल स० १७२७ कार्लिक सुदी ११ ।पूर्ण । वेष्ट्रन स० २१३ । प्रास्ति स्थास—दि० जैन मन्दिर बोरसली कांटा ।$ 

प्रशस्ति — संवत् १७२७ वये महामागत्य कात्तिक मासे सुकुलपक्षे तिथौ एकादसी आदित्यकासरे श्री मुलसक्षे सरस्वतीगर्छ बलात्कारमणे कुदकुदावायं तदाम्माये भट्टारक श्री सकलकीत्ति तित्वाच्य पंडित मनोरयेक स्वडत्तेन ह वड जातीय स्वपठनार्थं कर्मक्षयायं।

४०७५. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ६६ । बा० ११ ४ ४ दे इन्य । ले०कान ४ । पूर्ण । बेहुतसं० ३६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४०७६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० ६६-८६ । घा० ११×४ इच्च । सं० काल सं० १६६४ मगसिर बुटी २३। अपूर्ण । बेष्टन स०४००। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति – संबत् १६६४ वर्षे मर्गासर वर्षि १३ रवी श्री मूलसंग्रे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगरो श्री सरोजनगरे मुगाव्यंनाथर्यस्थालये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्ति तत् शिष्य प० बूलक्ट तत् शिष्य पं० प्रानमकटः।

४०७७. प्रतिन्स० १५। पत्र स० ६४। घा० ११×४ इखा। लेक्काल स० × । ब्रपूर्ण। वेष्टुन स० ७४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

४०७८. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १२० । ले०काल स० १८२४ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २३२ । प्राप्ति स्थानः दि० जैन प्रचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष--- ब्राशाराम ने भरतपूर में प्रतिनिधि की थी।

४०७६. प्रतिसं० १७ । पत्रस० १८२ । ले०काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टनसं० १० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन बढा पचायती मन्दिर डीग ।

४०८०. प्रतिसं**० १८ ।** पत्रस० ७७ । घा० १०३ ४ ५ १ इ.च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १६५ । प्रा**प्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४०८१. प्रतिसं० १६ । पत्र स०४४ । प्रा० ११ $\times$ ५ इच । ले० काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

४०६२. प्रतिसं० २०। पत्रस० २२-१४२। प्रा०१०३ ४४ ट्रेड्स । ले०काल स० १६६२। प्रपूर्ण । बेष्टन स० २३४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४०६३ प्रतिसं० २१। पत्रस० १२१। घा० ६×५ इच। ले०काल स० १६६५ वैशाख सदी ३। पर्यो । वेबनस० २६३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्रवाल मन्दिर उदयपर।

विशेष--- ब्रह्म श्री लाड्यका पठनार्थ ।

४०६४. प्रति सं० २२ । पत्रस० ११ । ग्रा० १२  $\times$   $Y_0^2$  इश्वः । ले॰काल  $\times$  । सपूर्णं । वेष्टतसं० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रग्रवाल मिंदर उदयपुर ।

विशेष —प्रति प्राचीन है। बीच के कुछ पत्र नहीं हैं। इसका दूसरा नाम पपनाम पुराए। भी है।

४० द्रथ्न. श्रे स्पिक चरित्र भाषा—स० विजयकीर्ति । पत्र सं० ६२ । प्रा० १२ $^1_2$   $\times$  दश्य । माषा–हिन्दी पद्य । विषय–वरित्र । र०काल स० १८२७ । ले०काल  $\times$  । दूर्ण । वेष्टन सं० २३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्राप्तनन्दन स्वामी वृंदी ।

#### प्रशस्ति--

गढ अवभेर सकल सिरदार । पट नागौर महा प्रिषकार ॥
मूलसब मुनि लिखिय बणाय । भट्टारक पट नो भव भाय ॥
सारद गच्छ तणुं सिगार । बलात्कार गणु जानुसार ॥
कुन्दकुन्द पुरस्य सही । पट अनेक मुनि सो अप सही ॥
प्रत्नकीति पट बिद्यानद । ततु पट भूवन भूषण् चिर जीया ॥
सिजयकीति पट धारि भया । ततु पट भूवन भूषण् चिर जीया ॥
सिजयकीति पट द्यार भया । ततु पट भूवन भूषण् चिर जीया ॥
सिजयकीति पट्टारक जानि । यह भाषा कीनि परमाण् ॥
संवत् अटारासय सत्तवीस । फागुण् सुवी साते सु जमीस ॥
वृथवार इह पूरण् भई । स्वांति नवतृत्र बुद्ध पामु चई ॥
गोत पाटनी है मनिराय । विजयवकीति भट्टारक वाय ॥
तसु पट धारी श्री मुनि जानि । बडजात्या तमु गोत्र पिछानि ॥
सिजयेक्ट कीति रिपरा । जिनि प्रति साथ्य भारत काज ॥
विजयमुनि सिप्य दुनिय मुजाग् । श्री वैराड देश तमु भ्रामा ॥७६॥
सम्बंद भट्टारक नाम, ठोल्या गोत वष्यो स्रीभराम ॥
मलयलड निहानन तही । कार जय पट मोमा लही ॥६०॥

**४०६६. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १२६ । धा० ११×५ इश्व**ाले० काल \times । पूर्ण** । वे० म० २७४ **। प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्यनाथ चीमान बूदी ।

विशेष--प्रति नवीन है।

**४०८७. प्रतिसं० ३**। पत्र स० ७१। मा० ५<sup>२</sup>, ४ ७ इच्छ**ा ले० काल स० १८१ पूर्ण।** वेष्टन स० ४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाथ बुदी।

**४०८६. प्रतिसं० ५** । पत्र स०८८ । म्रा०१० 🗙 ४ इ.च. । लेक्सल स०१८२६ मावण बुदी १४। पूर्णे । बेहन स०२७६ । **प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष --- प्रजबगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०६०. प्रति सं०६। पत्र स०७७। स्रा०१०१ ४ ४१ इ.च.। ले० काल स०१८८४ चैत्र बुदी ३।पूर्णः। वे० सं०११। प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिरः।

विशेष-पद्य स० २००० है।

४०६१. प्रति सं० ७ । पत्र स० ६३ से ११७ । ब्रा० १२ $^1_2$  ६ इथा । ने०काल स० १८७६ । श्रपूर्ण । वेष्टन स० ४७-२५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती द्वृंनी (टोक) ।

विशेष — दूनी में रावशी श्री चार्टामह जी के राज्य में मासिकचन्द जी संघी के प्रताप से श्रीका हरीनारायस ने प्रतिनिर्धि की थी। ४०६२ प्रतिसं**० ८ । पत्र स० १०१ । आ० ११ × ५** देशा । ले० काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

४०६३, प्रति सं० ६ । पत्रस० १४२ । ग्रा० ११ 🗴 ५ इचा । विषय-चरित्र । ले०काल स०१८६१ कामुगा बुटी ११ । पूर्णा । वेष्टन सं० ३३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—सथोक (सतीय) रामजी सौगारगी तत् ग्रमीचन्द धर्मचन्दजी राजमहल मध्ये चैत्यालय चन्द्रप्रम के मे बाह्यरग मुखलाल वासी टोडारायसिह से प्रतिलिपि कराकर चढाया था।

४०**६४. प्रतिसं० १० ।** पत्रस० १३० । स्रा० ६  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इश्व । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । वेग्टन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष---तक्षकपूर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०**६५. प्रतिसं० ११।** पत्र स० ६१ । स्रा० १४ × ७ इश्वा । ले० काल स० १६०१ भादवा बदी १४ । पर्गा। वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

४०६६. प्रति सं० १२। पत्र स० ७८। ग्रा० १२ ४८ ६२४। लेक्काल ४। ग्रपूर्ण। बेष्टन स० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाण्वेनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

४०६७. प्रतिसं० १३। पत्र सं० १४३ । ग्रा० १०३४ ४ इखा । ले० काल स०१६६४ । पर्गा । बेपून स०६६ । प्राप्ति स्थान—ाद० जैन प्रवासती मदिर ग्रुलवर हैं।

४०**६ म. प्रतिस०१४** । पत्रस०१२६ । द्या०१०१ ४७ इ.च । ले० काल स०१६२७ भ्रामोज बुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन स०१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० श्रप्रवाल प चायती जैन मन्दिर ब्रलवर ।

४०**६६. प्रतिसं०१५** । पत्रस**०६**६ । म्रा०६५ ४६ इ**७ । ले॰**काल म०१६३० चैन वदी ३। पूर्ण। बेष्टन म०३७ । **प्राप्ति स्थान**—उपशेक्त मन्दिर।

**४१००. प्रतिसं० १६ । पत्रस०** ⊏५ । आा० १२ 🗴 ७ है इश्वा । ले०कालस० १०१८ ब्रापाढ मुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन ग० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर बयाना ।

विशेष-वयाना में घनराज बोहरा ने प्रतिलिप की थी।

**४१०१. प्रतिसं० १७।** पत्र स० १२७ । ले० काल स० १६१३ । पूर्ण । बेष्टुन स० ४४ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मस्टिर हण्डावाली का डीग ।

**४१०२. प्रति स०१ ८** । पत्र स०१०६ । आ०१३ कुै 🗴 ५ इल्ब । ने० काल स०१८३१ भादवा सूदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स०५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फ्लेहपूर शेखाबाटी (सीकर) ।

विशेष---शमणाबाद (भ्रागरा) मे ईश्वरं प्रसाद ब्राह्माए ने प्रतिलिपि की थी।

४१०३. श्री रिएक चरिश माया—बौलतराम कासलीवाल । पत्रसः २४ । भाषा—िहन्दी । विषय-चरित्र । २०काल 🗴 । ले०काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मंदिर भरतपुर ।

४१०४. श्रेरिणक चरित्र— दौलतक्रोसेरी । पत्र न०१७२ । झार्०११४७ । इत्या । भाषा— हिन्दी पद्या । विषय – चरित्र । र०काल स०१८३४ समसिर सुदी ७ । ने० काल स०१८६१ । पूर्ण। वैष्टन सं०६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर नागदी बुदी । विशेष--- =:) कल्दार में स॰ ११६२ में लिया गया था।

४१०५. श्रे स्पिक प्रवन्य—कल्यारणकीिल । पत्र स० १७ । झा०१० ४ ६ १ च । भाषा-हित्यी पद्य । विषय-चरित्र । र०काल स० १७७४ ध्यासीज सुदी ३ । ले०काल सं १८२८ चैत वदी १३ । पूर्ण । वेषटन सं० १४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर फतेहपुर लेवावाटी (सीकर) ।

क्राहिसारा—

के बम: सिद्धे भ्या.--श्री वषभाय नम. । बोहा-सुलकर सन्मति शुभ मती चौबीस भो जिनराय। भगर खचरनि करि ... सेवित पाय ॥१॥ ते जीन चरण कमलनसी हृदय कमल घरी नेह। जिन सख कमल थी उपति नम वाग्वादिनी गरा गेह ॥२॥ गुरा रत्नाकर गौतम मुनि वयसा रयसा झनेक। ते मध्य केता ग्रही रच प्रबध हार विवेक ॥३॥ श्री मलसंघ उदयावलि, प्रभावद्र रविराय । श्री सकलकीरति यर अनक्रमि, नमश्री रामकीरति शुभकाय ।।४।। तस पद कमल दीवाकर नम, श्री पद्मनदी सुलकार। वादि बाररण केशरि अकलक एह अवतार ॥४॥ नीज गरू देव कीरति मूनि प्रएाम चित घर नेह।। मडलीक महा श्रीशीक नो प्रबन्ध रच गुरा गेह ।।६।। नमी देवकीरति गरु पाय ॥ जिन० भावि० ॥ ६ ॥ कल्यास कीरति सरी वरे रच्यो रे।। लाल लो॰।। ए श्रीरणक गरा मिराहार ।। जिन० भावि०।। वागड विमल देश सोमते रे ।। लाल लो ।। तिहाँ कौट नयर मुखकार ।। जिन ॰ मावि॰ ।। १० ।। धनपति विमल वसे धर्मा रे॥ लाल लो ॥ धनवत चतुर दयाल ॥ जिन० ॥ भावि० ॥ तिही भादि जिन भवन सोहामगुरे ॥ लाल लो ॥ तक्रिका तोरस विशास ।। जिन० भावि०।। ११।। उत्सव होयि गावि माननी रे ।। लाल लो ।। बाजे ढोल मृदग कशाल ।। जिन०।। मावि०.। भ्रादर ब्रह्मसिघ जी तसोरे ।। लाल लो ॥ तहा प्रबंध रच्यो गुएमाल ।। जिन् ।। भावि ।। १२ ।। सतत सतर पचोतरि रे ।। लाल लो० ।। धासो सदि श्रीज रवि ॥ जिन० भावि०॥ ए सामलि गायि लिखि भावसुरे । लाल लो ।। ते तहि भंगलाचार ।। जिनदेवरे मावि जिन पद्मगाभ जागाज्यो ॥१३॥ इति श्री श्रे शिक महामंडलीक प्रबन्ध संपूर्ण।

#### धरितम---

मनोहर मलसघ दीपतो रे ।। लाल लो ।। सरस्वती गन्न श्रांगार ॥ जिन० भावि। १४॥ पटोधर कंदकंद सोमतोरे ॥ लाल लो ॥ जिस्सि जलचर कीधा कंदहार।।जिन० भावी०।।१।। ग्रनकाम सकल कीरतिह वरि ॥ लाल लो०॥ श्री ज्ञान भुराप सुभकाय ॥ जिन० भावि० ॥ ६ ॥ विजय कीरति विजय मुरी रे।। लाललो० ।। तस पट णूमचंद्र देव ।। जिन् ।। भवि ।। शभ मिनी समतिकीरनि रे॥ लाल लो०॥ थी गराकीरति करू सेव।। जिन० भावि।। श्री वादि भूषए। बादी जीयतो ।। लाल लो ।। रामकीरति गछ राय ॥ जिन् ।। प्रवि ।। तस पट कमल दिवाकक रे।। लाल लो।। जेनो जस वह नरपति गाय ॥ जिन० भावि० ॥७% सकल विद्या तसी वारिध रे ।। लाल लां।। गळपति पद्मनंदि राख ।। जिन् ।। भावित ॥=॥ एसह गछपति पदनमी रे ॥ लाल लो ॥

प्रशस्ति--सं वत् १८२८ का मासोत्तम माने चैत्रमाने कृष्णपक्षे तिथि त्रोदशी वार बहस्पतवार मूर्यपुरिमध्ये चद्रप्रभ चैत्यालये श्रीगृक पुराण संपूर्ण । श्री मूलमंचे वलात्कारमण्डे सरस्वतीमध्ये कुम्बकुन्दा-चार्यालये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीति जी तरपट्टे भट्टारक श्री विसालकीति जी तरपट्टे भट्टारक श्री राजेन्द्र कीति तरपट्टे भट्टारक श्री रलेन्द्रकीति स्वहस्तेन लिपि कुते कम्मेंखयाम् पठनाम् ।

४१०६. प्रति सं०७ । पत्रस० १७१ । घा० १०४७ इञ्च । ले०काल म ० १६४६ । पूर्ण । बेष्टनसं०४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बूंदी ।

४१०७. स्रोशिकचरित्र—लिकमीदासः। पत्र स० न ४। प्रा०११ ४ ४ १ इ.च.। माया— हिन्दी। विषय—चरित्र । र०काल सं० १७४६। लेक्काल सं० १६४१ । पूर्ण। बेष्ट्रन स० १२०। प्रान्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर धजमेर।

**४१०८. प्रति सं०२।** पत्रसं०६८ । आर०१२ ४ ६ इचा। ले०काल 🗴 । पूर्ण। बेष्टन स०१७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली। ४१०६. प्रति सं० ३ । पत्रस० १०४ । ले०काल 🗙 । पूर्ण । वेष्टनसं० २४ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन वडा पंचायती मन्दिर डीग ।

४११०. प्रतिसं०४ । पत्रस०१०३ । झा०६ $\times$ ४३ इ.स.। ले० काल स०१८६४ धासोज सुदी१४ । पूर्ण । वेष्टन स०४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा ( 7 )क) ।

**४१११. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० २७ । स्रा० १०३ × ५ इ.च. । ले० काल० × । पूर्ण । बेष्टुत स० २३६ । **प्राप्तिः स्थान**--दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रूंदी) ।

**४११२. प्रतिसं० ६** । पत्र स०४६ । प्रा० १२ $\times$ ४५ इत्था । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रग्रवाल प्रचायती मन्दिर स्रज्वर ।

४**११३. प्रतिसं०७ ।** पत्र स०१२१ । घा०६५ ४६१ इ.च । ले० काल स०१८७६ फ्रायाढ सदी २ । पूर्ण । बेब्रन सं०३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ध्रवदाल प्रचायनी मन्दिर फ्रालवर ।

**४११४. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स०६४ । म्रा०११×५ दे इचा । ले० काल स०१६२२ प्र. सावण बदी १ । पूर्ण । वे० स ३१ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष-ग्रन्तिम भाग ।---

सोरठा--

देस ह्रंडाहर माहि राजस्थान भावावती । भूप प्रभाव दिपाहि राजसिंघ राजै तिहा ।।६१॥

दोहा---

ता समीप सागवती धन जन करि भरपूर।
देवस्थल महिला घर्षो भला यहस्त सहुर ।।
रहात दक्षरण मुम्म मुत सदानग्द तमु ता। १२।।
पाडित दक्षरण मुम्म मुत सदानग्द तमु ता। १२।।
सवत सतरासे ऊपरै तेतीस ज्येष्ठ मुदी पक्ष।
तिथि पत्रम पूरए। लही मङ्गलवार मुमक्ष।।६४।।
फैर लिलि गुणवास में लल्मीदास निज बोघ।
मृत्यो ज्वयो सबद कोउ बुधजन लोज्यो गीप।।६४।।

बलिराम के पुत्र सालिगराम बोहरा ने बयाना में अन्द्रप्रम चैत्यालय में यह यथ ऋषि बसत से हीरापुरी (हिडीन) में लिखबाकर चढाया। सालिगराम के तेला के उद्यापनार्थ चढाया गया।

४**११४. प्रति स०**६ । पत्रस० ८८ । प्रा० १२ $\frac{5}{7} \times 6\frac{5}{7}$  इला । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

४११६. प्रतिसं० १०। पत्र सं०१४६ । घा० ५१, ४५ हे इखा ले० काल स०१६०० माह बुदी ४। पूर्णा । वेष्टन सं०१६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दीवान वेतनदास पुरानी झीगा।

विशेष-प्रति गुटकाकार है। रचना पडित दशरथ के पुत्र सदानन्द की प्रेरएग से की गई थी।

४**११८. प्रतिसं०१२। पत्र**स०१४२। ब्रा०६×४ इ.चा। ले० काल सं०१८२६ पीष सुदी ११। पूर्ण। केष्ट्रनसं०११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा(राज०)।

१ । पूर्णा । बेप्टनस**्र ११६ । प्राप्त्त स्थान—ा**द० जन मादर भादवा (राज०) । **विशेष** —कोठीग्राम मे सुखानन्द ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

४११६. सगरचरित्र— दीक्षित वैवदस्त । पत्रसं० १८ । छा० १२  $\times$  ८ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय—चरित्र । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १०६१ । प्राप्ति स्थान—ग० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४१२०. प्रति सं०२ । पत्र स० १ । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० १०६२ । प्रास्ति स्थान भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

४१२१. सीताचरित्र—रामजन्द्र (कवि बालक) । पत्र सं०१०४ । आ०१२ $\times$ ४२ हव । भाषा—हिन्दी (पछ) । विषय — चरित्र । र०काल स०१७१३ मङ्गीसर सुदी ४ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्र म०३३ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

४**१२२. प्रति स० २**। पत्रस० १२४। घा० १२×५३ इवा । ले०काल स० १७४६। पूर्णे । बेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्वामी बृंदी।

विशेष--मागानेर मे प्रतिलिपि की गई थी।

**४१२३. प्रति सं० ३ ।** पत्र सं० ११४ । मा० १२×८ इच । ले० काल स० १९२३ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर) ।

४१२४. प्रति सं०४ । पत्र स०१३६ । घा०१२imes६ इ.च । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स०१५ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मदिर वैर ।

४**१२४. प्रतिसं० ४**। पत्रस० १४७ । बा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ५ $\frac{1}{6}$  इच ।ले०काल स० १८४१ । ब्रपूर्ण । बेहुत स० १५८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-४६ वा पत्र नही है।

**४१२६. प्रतिसं० ६**। पत्र स० २३८ । ग्रा० ४×४ इ'च । ले० काल स० १७६० मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०) ।

४१२७. प्रति सं०७ । पत्र स० २३८ । घ्रा०६×६ इ'च । ले० काल स० १७६० मगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।वेष्टन स० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४१२६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ११४ । लेब्बाल imes । पूर्णं । वेष्टुन स० ७१ ४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहणयी मन्दिर दौसा ।

विशेष-सदासुख तेरापथी ने प्रतिलिपि कराई थी।

४१२६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १६१ । सा० १२×६ इ.च । से०कास सं० १७५६ माघ सुदी १ । पूर्णे । वेष्टन सं० ६-२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा बीसपंथी दौसा । विशेष -- दीपचन्द छीतरमल सोनी ने ग्रात्म पठनार्थ प्रतिलिपि कराई ।

४१३०. प्रतिसं० १०। पत्र स० २६६ । ग्रा० ५ imes ४ इच्च । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष --- प्रति जीगां है । गुटका साइज मे है ।

**४१३१. प्रति सं० ११ । पत्रस**० ११-१२८ । ग्रा० ११ $^1$   $\times$  ५ $^1$  इश्व । ले० काल  $\times$  । **श्रपूर्ण** । । **श्रेष्ट्रन स० २७५। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

## विशेष बोहा-

कियो ग्रंथ रिविषेण्नै रघुपुराण् जियजान । वहै ग्रस्थ इनमे कह्यो रामचन्द उर ग्रान ॥३०॥ कहै चन्द कर जोर सीस नय ग्रत जै।

सकल परमाव सदा चिरनन्दि जै। यह सीता की कथा मने जो कान दे।

गहै ग्राप निज भाव सकल परदान दे ॥३१॥

४१**३२. प्रतिसं०१२**। पत्र स० ६७। घा०११×४-१ इन्च। ले०काल स० १७७७। वैशास सुदी २।पूरा । वे०स०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बयाना।

विशेष-वयाना मे प्रतिलिपि, की गई थी।

४१३३. प्रति सं० १३ । पत्रस०१६०। ले०काल 🗴 । क्षपूर्ण । बेष्टन स०१०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बयाना ।

४१३४. प्रतिसं०१४ । पत्र सं०१०६ । स्रा०१२३  $\times$  ५३ इक्ष । ले० काल  $\times$  । पूर्ण। के० स०६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष---श्लोक स० २५००।

**४१३५. प्रति सं० १५ ।** पत्रस० १६४ । लेक्काल सं० १७६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पचायत मरतपुर ।

विशेष - गृटका साइज है तथा भाकरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

**४१३६. प्रति सं० १६ ।** पत्रस० १२६ । ले० काल स० १६१६ । पूर्ण । बेष्टन स० ५७३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पवायती मंदिर भरतपुर ।

४१३७. प्रति सं०१७। पत्र स०१२६। ले० काल स०१८१। पूर्णः। बेष्टन स०५७४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुरः।

४१३ म. प्रति सं० १ म.। पत्र स०६७। ले० काल स०१ म४६। पूर्या। वेस्टन स०४ ७४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर भग्नपुर।

**४१३६ प्रति सं०१६।** पत्र स०१८२। या०६५<sup>5</sup>% ७ इच। ले॰काल सं०१८५७ आसीज बुदी १०। पूर्ण। बेष्टनस०४८। **प्राप्ति स्थान**—प्रप्रवाल दि० जैन पंचायती मदिर मतवर। ४१४०. प्रति सं०२०। पत्र स०१०१-१३२। ग्रा०१४६ ६ चाले० काल स०१६२६। मपुर्ए। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

विशेष - राजमहल मे चन्द्रप्रम चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

४१४१. सुकुमालचरिज-मुनि पूर्णमद्र (गुर्णमद्र के शिष्य) । पत्रसं० ३७ । प्रा० ६४५ इन्छ । भाषा-- धपभ्र म । विषय - वरित्र । २०काल ४ । ले०काल सं० १६२२ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वैकृतसं० ७६ । प्राप्तिः स्थान---भट्टापकीय दि० जैनमन्दिर प्रजमेर ।

४१४२. प्रतिसं०२। पत्रस०४७ $\xi$ । प्रा०६ $\times$ ५ इंच। से०कास $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स०६५६। प्रास्ति स्थान-भ०दि० जैन सन्दिर ग्रजमेर।

४१४३. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ३६ । म्रा० ४ $^3$   $\times$ ४ इ.चा । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

विशेष -- इसमे ६ सधियां हैं । लेखक प्रशस्ति वाला श्रन्तिम पत्र नहीं है ।

४१४४. सुकुमालचरिउ — श्रीघर । पत्र स० १-२१ । ब्रा॰ ११४५ इंच । भाषा-ध्रमश्र श । विषय —काव्य । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । वेष्टन स० १८ । प्राप्ति स्थान —वि॰ जैन मंदिर तेरहण्यी दीमा । बोर्ण जीर्ण ।

विशेष---प्रति प्राचीन है । पत्र पानी में भीगने से गल गये हैं ।

४१४५. मुकुमालचरित्र —भे० सकलकीिल । पत्र स०४४। प्रा०१२४६ इंच । भाषा— मस्कृत । विषय —र्पात्त्र । २०काल ४ । ले० काल स०१५३७ पीष मुदी १० । पूर्ण । वेपटन सं०६८६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवन् १५३७ वर्षे पीय गुदी १० मूलमधे बलात्कारताले सरस्वतीमच्छे कुन्दकुन्दाचार्यास्य महारक श्री पदानदिस्ता तराष्ट्री भ० मुक्तमस्टेश्वा तराष्ट्री भ० जिनकन्द्रदेवा तत् जिष्य मुनि श्री जैनित्व तदामनाये बहैलवालान्त्रये श्रीह गोथे स० बीन्द्रा भाषां पेशी तत्पुता. स० वाहू पार्थ वाहू भाषां इत्हू तत्पुत्र सा० गोल्हा बालिराज, भोजा, चोणा, चापा, एतेषा मध्ये वालिराजेन इद सुकुनाल स्वामी प्रय लिखाप्यत । प० धामुयोगु पठनार्थं निमित्त समर्पित ।

४१४६. प्रति सं०२। पत्र स०४६। ब्रा०१०१ ४ ४ १ इस्त्राभाषा—संस्कृत। विषय— वरित्र। र०काल ४ । ले० काल स०१८२० चैत्र बुदी२।पूर्ण। वेष्ट्रन स०६६। प्रास्ति स्थान—म० दि० जैन मदिर प्रजमेर।

४१४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं०१७३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर धजभेर ।

४१४ द. प्रति सं०४ । पत्र सं०४ । ग्रा०१२  $\times$  ५ है इन्दाने ० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टन सं०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर स्रादिनाथ बृदी ।

४१४६. प्रतिसं० प्रापत्रसं० २०। घा० १०  $\times$   $\mathbb{Y}_{q}^{2}$  इत्या से० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० २१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवनाना (वंदी)

**४१५०. प्रति सं० ६** । पत्र स• २३-४३ । आ० १० $\times$ ४० हुँ इच्च । ले० काल स० १७८७ सावण बुदी द । अपूर्ण । बेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बुंदी)

विशेष-- लाखेरी ग्राम मध्ये.... " ....)

४१५१. प्रतिसं०७ । पत्र स०१०० । घा०६ ४४ इचा। ले०काल स० १८७८ वैशाख सुदी ४ । पूर्णु। बेष्टुन स०६० । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर पचायती दूरी (टोक)

बिशेख-हरिनारायस्म ने प्रतिलिपि की थी। वर्ममूर्ति जैन वर्म प्रतिपालक साहजी सोलाल जी ध्रजमेरा वासी टोडा का ने दूनी के धादिनाथ के मन्दिर मे चढाया था।

**४१५२. प्रतिसं० ८ ।** पत्रस० ६४ । या० ६ $^4_x$ ४ $^4_z$  इच । ले० काल सं० १८७६ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोंक)

विशेष-हरीनारायन से सोहनलाल ग्रजमेरा ने प्रतिलिप करवाई थी

पडित श्री शिवजीराम तत् शिष्य सदासुलाय इद पुस्तक लिख्यापित्त । श्रजमेरा गोव साहजी श्री श्री मनसारामजी तत्पुत्र साह शिवजालेन ।

**४१५३. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ४८ । म्रा० ११ × ४ इच्छ**ा ले०काल ×** । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष--- विमलेन्टकीतिटेव ने लिखाया था।

४१ 🗙 ४. प्रति सं० १० । पत्रस० २६ । आ० ११ 🗙 ५ इन्द्र । ले० काल स० १६०६ । पूर्ण । बेष्टनस० १६–१२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हूं गरपुर ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रए है।

संबन् १६०६ वर्षे मात्र गुक्लपक्षे पचम्या तिथी गुष्वासरे श्री मूलमंथे सरस्वतीगच्छे, बलात्कारगणे कुंदकुंदा…… समार्थ लिखाप्य दत्तं । ब्रह्मः दत्तं आचार्यं श्री हेमकौति तत् शिष्य ब्रह्म मेचराज्ञ प्रेमी शुम भवतः । लि. भर्मदास लिखापितः महात्मा लिखमीचन्द नाषुजी सत् वरत्तर गच्छे ।

४१४४. प्रति सं० ११ । पत्रस० ६० । ते० काल 🗴 । स्रपूर्णं । बेष्ट्रनस० २२४-४४ ।प्राप्ति स्थान—मटारकीय दि० जैन संभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन किन्तु जीर्ग है।

४१**५६. प्रति स० १२** । पत्रस० ५४ । ले० काल स० १४६७ । पूर्ण । वेष्टनस० ६०,४२ । प्रा**प्ति स्थान** — दि० जैन सम्भवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---ग्रन्थाग्रन्थ स ० ११०० है।

प्रशस्ति—सन्त् १४८७ वर्षे भादवा मुदी १० भृगी श्रखेह देलुलिग्राम वास्तव्यं मेदपाट ज्ञानीय शबदोसन लिखिता।

बाद में लिखा हम्रा हैं---

थी मुनसबे भ० श्री गुभवन्द्र तत् शिष्य मुनि बीरचन्द्र पठनार्षं । स० १६४१ वर्षे माहसुदी १ शनो भद्रारक श्री गुराकीति उपदेशात्रः । ४१५७. प्रति सं० १३ । पत्रस० ५६ । घा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इवा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० १६२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन कप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**४१५६. प्रति स०१४** । पत्रस०४४ । धा०१२ $\times$ ४२ हे इस्त्र । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन सं०२२ । प्राप्ति स्थान–दि० जैन क्षयवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-नवम सर्ग तक पूर्ण है। ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

भट्टारक श्री सकलकीर्ति विरचिते घाचार्यश्री विभलकीर्ति नत् शिप्य बहुर गोपाल पठनार्य। शुभ भवत्।

**४१४६. प्रति सं० १४ ।** पत्र सं० ३६ । ग्रा० १० $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इन्स । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रग्रवाल मन्दिर जदयपुर ।

४१६०. सुकुमाल चरित्र—नायूराम दोसी । पत्रस० ६१ । आ०१२६ ४४ इञ्च । भाषा-हिरदी (गदा) । विषय-चरित्र । र०काल सं० १६१ । ते० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १२१ । प्रास्तिस्थान—दि० जैन लंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

४१६१. प्रति सं०२ । गित्र स०७१ । प्रा०१० $\frac{2}{5} \times 6^2_5$  इत्त्व । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेग्टन स०१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर)

**४१६२. प्रतिसं० ३** । पत्र म० ७२ । ष्रा० १३ 🗴 ६ इला । ले०काल सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन म० १०२ । **प्रास्ति<sup>3</sup>स्थान** — दि० औन पचायती मन्दिर कामा ।

४१६३. मुकुमाल चरित्र भाषा—गोकल गोलापूर्व। पत्र स० ४२ । घा० ११ × ४३ इत्र । भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र । र०काल स० १८७१ कार्तिक बुदी १ । लेक्काल स० १६३८ । पूर्ण। वेस्टन स० ८७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बुदी।

विशेष-- ग्रन्तिम पुष्पिका---

इहि प्रकार इहि शास्त्र की भाषा का संशेष रूप मद बृद्धि के अनुसार गोलायव गोकल ने की।

**४१६४. प्रतिसं० २ ।** पत्र सम्बा६३ । ग्रा० ११ imes ७ है इन्दा । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्रीभनन्दन स्वामी बदी ।

४**१६५. प्रतिसं० ३ ।** पत्र सं० ४४ । ब्रा० १३ 🗴 ७ इ.चा । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन स**०११ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैरावा ।

**४१६६. सुकुमाल चरित्र यचितिका** $-\times$  । पत्र संख्या ७२ । म्रा० १३ $\times$  ६ इव । भाषा- हिन्दी गद्य । विषय-चित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टुन संख्या १२४ । प्राप्ति स्थान- वि॰ जैन मदिर श्री महावीर वृदी ।

४१६७. सुकुमाज चरित्र बचिनिका— × । पत्र स० ७७ । बा॰ १० ४७ इख । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-चरित्र । र०काल × । ले॰ काल सं १६५४ प्रासोज बुदी ७ पूर्ण । वेष्ट्रनस० १२७२ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-चन्द्रापुरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

४२६६. **सुकुमाल चरित्र मावा**— ४ । पत्रतः ६२। मावा<sup>ः</sup>हित्ती । विषय-जीवन वरित्र । २०काल ४ । से०काल स०१६५३ । पूर्णः । वेष्टनसं० ५५६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पंचायती मन्तिर भरतपर।

४१६६. **सुकुमाल चरित्रा भाषा-** × । पत्रसु०६०। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र०काल × । लेककाल × । पूर्णः। बेष्टन स०११७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचावती मन्दिर हण्डालालो का. सीत्र।

४१७०. सुकुमाल चरित्र- $\times$ । जनतः १३। साः $(7\times \times \frac{3}{5}$  दश्व । माषा-सस्कृत । विषय-वरित्र । रुकाल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसः ३२७ । प्रास्तिस्थान—मष्टारकीय दि॰ जैन मदिर स्राजनेर

४१७१. सुकुमान चरित्र- $\times$  ।पत्रस० ११ । प्रा० १० $\frac{1}{7}\times 5\frac{3}{7}$  दश्व । भाषा—सस्कृत ।विषय— चरित्र । २०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयुर ।

विशेष-११ से आगे के पत्र नहीं है।

४१७२. **मुकुमाल चरित्र—** ४ । पत्रस० ६२ । घा० ११४४ । भाषा-सस्कृत । विषय— वरित्र । र०काल ४ । वेशकाल ४ । वेशन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४१७३. सुकुमाल चरित्र— $\times$  । पत्र स०४६ । द्वा० ११ $\times$ ५ इच । भाषा — सन्हन । विषय—विरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  अपूर्ण । वेष्टन स० १३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचावती मन्दिर करोनी ।

४**१७४. सुकुमाल चरित्र— म० यशःकोति** । पत्र स० ४८ । प्रा० ११४७ इत्त्र । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रे०काल ४ । ने० काल स० १८८५ मगसिर सुदी ४ रविवार । पूर्ण । वेष्टन स० ४२६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपर ।

×

मुनिस्वर नागवरः वत्सर मे मार्गामर शुक्त मास । पत्रमी रिववार सुयोगे पूर्ण मन्त्र करयोगास । विद्यमान नही मुलनेश कवित्व कला नहि मान । स्वपर जीवतऐ हित कारएं करयो प्रवच बखान । गद्धनायक भये तास्त्री जानतः। भण्डार । यशकीरिण कया प्रवच वर्ण म कहारो हितकार ॥

X X भेदपाट वर देशपति ये नगर सल् वर सार।
उत्तम वर्णे वर्स तिहां श्रावक गाले श्रावकाचार।
वृद्ध न्यात नागद्रा हुम्छ गुस्मृणी श्रावक जेह।
धर्म दिगम्बर गाले उत्तम दान पूजा करे तेह।
धर्मदिनाम जिन मन्दिर सोहै हहा रहे मुखं नीवास।
सकल सुध नो धादर जानि वरित्र कहनो उल्लास।

सावना ग्राम में प्रतिनिपि हुई थी।

४**१७५. मुखनिषान—जगन्नाय।** पत्र सं० ४४। ग्रा० १०१४४ **दे इ**ख । मापा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल ४ । ले• काल स० १७६७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१६२ । **प्राप्ति स्थान** – महारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रुथेनर ।

४१७६. **मुदलस्य चरिउ-नयनित** । पत्र स० १-६६-१०६ । प्रा० १०<sup>3</sup>,४४<sup>2</sup>, इ.च.। आया-प्रपन्न न । विषय-६९त्र । र०काल स ११०० । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्य । बेष्टनस्व २६० । प्रास्ति स्थान-वि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४१७७. सुदशंन चरित्र—म० सकलकोत्ति । पत्रतः २-४६। घाः ११  $\times$  ४ इञ्च । माषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल सः १६७२ चैत सुदी ३ । प्रपूर्ण । बेष्टन सः २६६/४१। प्राप्ति स्थान—सभवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

#### प्रशस्ति---

सवन् १६७२ वर्षे चंत सुदी ३ भीमे श्री मूलसभे सरस्वतीयच्छे .बलात्कारतासे कुन्दकुनेदाचार्याच्ये भट्टारक गुगत्कीनिदेवा तन्तर्षु भ० वारिभूषण्येवा तत्त्र्युं भ० श्री रानकीनिदेवा साचार्यः श्री जयकीति तन् तिस्य ब्रद्धा श्री सवराजाय गिनिपुर वास्तव्य पहुषावच्छा भागी गुजाएदे तथे। पुत्र पं० काहानजी भागी त्रमुवदं ताम्या नृद्यनेवर्षित्र स्वजानावर्गी कर्मश्रायार्थं दत्तः।

४**१७६. प्रति सं० २ ।** पत्रस० २२-४४ । आ०११ $\times$ ५ इञ्च । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टुत स०२४६ । प्राप्ति, स्थान - दि० जैन अववाल मन्दिर उदयपुर ।

४१७६. प्रतिसं० ३ । पत्रत्त० ६२ । प्रा० ११imes५ ४ इन्छ । ले० काल imes । पूर्ण । बेप्तृत म० २२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थताथ चौगान बुंदी ।

४१६० मुदर्शन चरित्र—मुमुल विद्यानंदि । पत्र स०७३ । आर०६ $\times$ ५ इ.च.। आरा—सल्कृत । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$ । ले० काल स०१६३५ चैत्र शुक्ला ६ । पूर्ण । वेस्टन स० ६२ । प्रास्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मदिर स्रजभेर ।

४**१८१. प्रतिसं०२** । पत्रस०७७ । ग्रा०१०×४ हुँ डच । ले०काल स०१८७३ । पूर्ण । वेष्टन स०१२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वामी बृदी ।

विशेष वृदावती नगर मे श्री नेमिनाय चैत्यालय मे श्री हूं गरसी के शिष्य मुखलाल ने प्रतिर्लिप की थी।

४१८२, प्रति सं०३ । पत्र सं०१-२४ । प्रा०११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इख । लेब्काल  $\times$  । बेष्टन स० ७५० । ब्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन्द्रेमदिर लक्कर जयपुर ।

४१८३. सुदर्शनचरित्र—बीक्षित देववस (जैनेन्द्रपुरास्)। पत्र स०१०४। भाषा—सस्कृत। विषयः—चित्र । ए० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्ट स०२३४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती मिदर भरनपुर।

हति श्रीमनमुमुष्ठ दिव्य मुनि श्री केवनत्तवनुत्रमेशा श्री महारक कविम्पण पट्टामरसा श्री कहा हर्य सागरात्मक श्री भः जिनन्द्रम्परा उपदेवान् श्रीदीक्षित देवदत्त हुने श्रीमिजनेन्द्र पुगस्मानर्गन श्रीपचनम-स्कारकत्तव्यावसां श्री सुदर्शन मुनि मोक्ष प्रास्ति वस्तृती नाम एकदिशोषिकारः।

४१६४. प्रति सु० २ । पत्र स०६७ । ले० काल स०१६४६ वैसाल गुदी १० । पूर्ण । वेष्ट्रन म० २३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर । ४१८५. सुदर्शन चरित्र—क नेमिटल । पत्र स॰ ७६ । घा॰ १० $\frac{3}{4} \times 4$  इचा । माला—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स॰ ६६२ । प्रास्ति स्थान—म॰ विश्व जैन मन्दिर घडारेर ।

४१८६. प्रति सं०२। पत्रस०६३। प्रा०११३४६ इचा। से॰काल स० १६०४ भादवा मुदी३। पूर्यो। बेष्टन स०२३४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—इदं पुस्तक ज्ञान।वराणी कर्मक्षयार्थं पुस्तक श्री जिनमन्दिर वहोडित रामचन्द्र सुत नवानी-राम ग्रजमेरा वास्तव्य बृंदी का गोठडा अनार सुखपुर्वक इन्द्रगढ वास्तव्य ।

**४१८७. प्रति सं० ३ ।** पत्रस० प्यः । स्रा० १० $\times$ ४ रे । लेक्सल स० १६१६ मादवा सुदी १२ । वेष्ट्रन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म० लक्कर, जयपूर ।

विशेष---प्रशस्ति ग्रच्छी है।

४१८८. सुदर्शनचरित्र भोषा—पशः कोति । पत्रसं० २८ । मा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ८ इख । भाषा— हिन्दी (पदा) । र०काल सं० १६६३ । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २८४ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दिं० जैन मन्दिर खबसेर ।

## विशेष-- प्रारंभ--

प्रथम सुमरि जिनराय महीतल सुरासुर नाग लग । भव भव पानिक जाय, सिद्ध सुमति साहस वढै ॥१॥

## योहा ।

इन्द्र चन्द्र औ चक्कवे हरि हलहर फनिनाह । तेउ पार न लहि सकै जिनगुग् अगम अथाह ॥२॥

## चौपर्र---

सुमरी सारद जिनवर वानि, करी प्रगाम जोरिकरि पान ।
मूरस सुमर्र पिकत होय, पाप पक किह घाते सोय ।।३।।
जो किस किवत कहें पुरान, ते मांगीह सो देव की आिन ।
अब किस किवत कहें पुरान, ते मांगीह सो देव की आिन ।
हस्यक्डी कर बीना जासु, यिख बुढि लयु जास्यो तासु ।
मुक्तामिन मई माग सवारि, ऊस्यो सूरज किरन पसारि ।।४।।
अबनहि कुंडल रतनिन लवे, नौनिधि सकति प्रापनी गर्च ।
खुटेखरा कठ कठ सिरी, विना सकति ख्रापनी शर्च ।
उस्वसहार प्रदूपम हिये, विधना कहै तिनोई किये।

# सोरठा--

विद्या श्रीर मडार जौ माने सी पावही। कित झायौ ससार जायहि वर तेरो नही।।=।। मन वच कम गुरू चरएा निम परहित उदति जे सार।

बोहा---

करहु सुमित जैनदकी होइ कवित्त बिस्तार ॥६॥

#### चौपई ---

मुक्त गोतम गरापरदे भ्रादि, हादशाग भ्रमृत भ्रास्ताद । सुमित गुन पालन तप थीर, ते बदी जो ज्ञान गम्भीर ।।१०।। गरापर परावत गुराकद, महारक अवकीति मुनित्द । तापर प्रयट पहुमि जग जासु लीला कियो सीन को बास ।।११। नाम मुक्षेमकीति मुनिराइ, जाके नामु दुरित हरि जाय । ताहि पहत खूत सागर पाए, त्रिमुक्तकीति क्रीति विस्तार ।।१२।। ताहि सहत खूत सागर पाए, त्रिमुक्तकीति क्रीति विस्तार ।।१२।। ताहि सहत खूत सागर पाए, त्रिमुक्तकीति क्रीति विस्तार ।।१२।। ताहि सहत खूत सागर पाए, त्रिमुक्तकीति क्रीते निष्का सामे

#### धंतिम पाठ---

बोहा

बोहा---

सोरठा--- छद भेद पद भेद हों तो कछु जांनै नहीं।

ताकौ कियो न सेद, कथा भई निज भक्ति वस ॥१६८॥ धगम धागरो पवरूपुर उठ कोह प्रसाद।

तरे तरिङ्ग नदी बहे नीर श्रमी सम स्वाद ॥१६६॥

## चौपई

भाषा भाउ भती जहिरीत, जानै बहुन गुणी सौ प्रीत ।
नागर तगर लोग सब गुली, परपीडा कारत सब दुली । १८०।।
पन कन पूरत नुग प्रवाम, सबहि नि सेक घमं के दात ।
छ्वाधीस हमाउ बस, प्रकट नश्टन वेर विश्वस ।।१॥
तलत बलत पूरो परचड, गुर नर नृष मानहि सब दंड ।
नाम काम गुन प्रापु वियोग, रिव पिंच प्रापु विधाता योग ।।२॥
जहाँगर उपमा दोजे काहि, श्री मुलतात प्रे दीसे साहि ।
कोस देस मन्त्री मित गुरु, छत्र चमर सिवासन च्ड ।।३॥
करें प्रसीस प्रजा सब नाहि, बरने कहा दित मित छाहि ।
सबत सीलहुकी उपरत, भेनिर्जानह बरस महुत ।।२०४॥

सोरठा -- माघ उजारी पाल, गुरवासुर दिन पश्चमी । बध चौपई भाषा, कही सत्य साहरती ॥२०५॥

> कथा मुटशंन सेठ की पढै मुनै जो कोय । पहिले पावै देव पद पार्ख सिवपुर होय ।।२०६।। इति सुदर्शन चरित्र भाषा सपर्शम्

४१८६. सुमाहुचरित्र – पुष्पसागर। पत्र सं० ५। घा० १०३ × ४३ इस्त्र । माया— हिल्दी। विषय—चरित्र। र०कास स०१६७४। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्ट्रन सं०३३७। प्रास्ति स्वास—च० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

## विशेष---ग्रन्तिम---

सबत सोल चडीतर बरसइ जेसलमेर नयर सुभ दिवसइ। श्रीजिन हंत सूरि गुरु सीसइ पुग्यसागर उबकाय जगासडा। श्री जिन नाशिक सूरि झारेसइ सुबाहु चरित्र मागीउ लव लसई। पास पसाइए हरिष चुणता रिधि सिधि बाउ नितु मणता।। ।। इति संबाह वरित्र सप्रोम्।।

**४१६०. सुमीम चरित्र—रस्तचन्द्र ।** पत्रस्तः ५६ । प्रा०११  $\times$  ४१ इन्छ । भाषा— संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल सं०१६६६ भादवा मुदी ५ । ने०कान  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस०२४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनस्यामी बूंदी ।

**४१६१. प्रति सं० २ ।** पत्र स०२६ । स्रा० १२३/४६ इश्वराले ककाल स० १८३८ उसेष्ठ सुदी ४ । पूर्णावेष्टन स०१६३ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुरः ।

४१६२, सुलोचना चरित्र—वादिराज । पत्रसं० दर्भ । ह्या० ११ $\times$ ५ इच । भाषा सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर दलाना (ब्रुदी) ।

४१६३. मुषेर्ण चरित्र  $\times$  । पत्र स० ४४ । प्रा० १० $\times$ ६ $\frac{1}{3}$  इच । मापा $^{-}$ सहत्त । विषय-चित्र । र०काल  $\times$  । लेकाल १६०६ प्राणाढ सुदी १४ । पूर्ण । बेहन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान** $^{-}$ निरु जैन सिंदर नागदी बुँदी ।

विशेष-कोटा में लिखा गया था

४१६४. समब्राजन वरिज--तेजपाल । पत्रस० ३२से ४१ । भाषा धपन्न स्ना । विषय— चरित्र । र०काल 🗙 । ले० काल 🗴 । धपूर्ण । वेष्टुन म० ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन वडा पनायनी मन्दिर डीग ।

४१९५. हनुमच्चरित्र -- **य० प्रजित ।** पत्रस० ६४ । आ० १० $\frac{1}{2} \times 4^{\frac{1}{2}}$  दृञ्च । त्राया—सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ते०काल स० १६०४ पौप मुदी ११ । पूर्ण ।वेष्टनस० म । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-टोडागढ में रामचन्द्र के शासन काल मे प्रतिलिपि हुई थी।

४१**६६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ७४ । प्रा० १३ × ४ १ इश्वा । ले० काल × । पूर्णा । वेस्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४१९७. प्रति स० ३ । पत्रस० १०६ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण ।वेष्टन स० २३३ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**४१६ म. प्रतिसं० ४।** पत्रस० ६३। ग्रा० १२ x प्र इश्वाले काल १६१७ पीप बुदो ६। पूर्णे। **बेष्ट**नसं० १२६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन, मदिर बोरसली कोटा।

चिशेष — फाणुई वास्तब्ये कवर श्री चन्द्रसोलि राज्य प्रवर्तमाने ज्ञातिनाथ चैन्यालये खण्डेलवालान्ध्रम् मजमेरा गोत्रे सभी सुरज के वणजो ने प्रतिनिधि की थी। ४१६६. प्रतिस**्ट ५** । पत्र स० ६५ । आ० १०१४४ हुँ । ले० कालस० १६१० आगाउ बुदी १३ । पूर्यो । बेहन स० १४६ । प्राप्तिस्थान— दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--- ग्रलवर गढ मे लिपि की गई थी।

४२००, प्रतिसं० ६ । पत्र स०७४ । घा०१२×६ १ इचा । ले० काल सं० १६१७ बैकाल सदी १०। पूर्ण । बेष्टन स०२२ २६ । प्राप्ति स्थान—दिठ जैन सौगानी मन्दिर करौली ।

**विरोध**— कल्यासपुरी (करौली) में चन्दप्रभ के मन्दिर में लालचन्द के पुत्र खुशालचन्द ने पतिनिर्माण की थी।

४२०**१. प्रति सं० ७ ।** पत्र स० ६४ । ग्रा० १२ $\frac{1}{3}\times$ ५ इश्व । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेप्टनस० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२०२. प्रतिसं० म । पत्र स० ४–३६ । ले०काल  $\times$  प्रपूर्ण । बेष्टन स० ४४/३म । प्राप्ति स्थान — दि० जैन समबनाय मंदिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

४२०३. हनुमच्चरित्र--कः जिनदास । पत्रसः ४१। प्राः १२३ ४५ इस्य । भाषा---सस्कृत । विषय-चरित्र । राज्काल × । लेक्काल संव्हेश्वर । पूर्ण । वेष्ट्रनसंव २६७। प्रास्ति स्थान---रिव्यन प्रवाल मन्दिर उदयपर ।

४२०४. हनुमान चरित्रा—त्र ज्ञानसागर । पत्रस० ३४ । प्रा० १०×४ इ.च. । माषा-हिन्दी । विषय चरित्र । र०काल म.० १६३० प्रामोत्र मुदी ४ । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । बेष्टनसं० १८४ ४० । प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

चिशेष — प्रति जीगं है रचना का घतिम भाग निम्न प्रकार है — भी ज्ञानसागर ब्रह्म उचिर हुर्मत गुणह अपार । कर जोडो करि बीनती स्वामी देख्यों गुण सार ॥ सम्बन् सोनजीमि वर्षे अध्वनीमास मभार । मुक्त पक्ष पत्रमी दिन नगर पालुवा सार। मीतलनाथ भुवनु च्युं रास भन्नु मनोहार । श्री संघ पिटड गुणांननु स्वामी संक कर्यु जयकार। हुँबड व्याति गुनिन्, साह अक्चकुल भाण ; धमरादेश घर ऊस्तंत्र श्री ज्ञानसागर ब्रह्म सुनाए। धमरादेश घर उस्तंत्र अञ्चलकार सहार सुनाए।

इससे भागे के ग्रक्षर मिट गये हैं।

४२०**५. हनुमच्चरिश — यशःकीत्ति** । पत्रस० १११ । भवा-हिन्दी पद्य । विषय⊸चरित्र । र०काल सं० १८१७ । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०५ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

४२०६. **हनुमान चरित्र**— × पत्रस॰ ११०। भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । २०काल × । ले०काल × । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० ११। **प्राप्तिः स्यान**—दि० जैन मन्दिर तेरहर्गयी मालपुरा (टोंक)। ४२०७. हरिस्वन्द्र चौपई--कनक सुन्दर । पत्र सं०१६। प्रापा- हिन्दी। विषय-चित्रः। र०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन सं०६४६। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर।

विशेष-हरिश्चनद्र राजा ऋषि रासी तारा लोचनी चरित्रे ततीय खंड पूर्ण ।

४२०८. होली चरित—पं० जिनदास । सं० २१। घा० ११३ × ५३ इ.च. । माण-सस्कृत । विषय—गरित । र०काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १८१४ ज्येष्ठ सुरी ३ । पूर्ण। वेष्टन सं० ११४ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

विशेष--ग्रजबगढ मध्ये लिखित ग्रा॰ राजकीति पठनायँ जि॰ सवाईराम ।

४२०**१. प्रति सं०२। पत्रसं०४। प्रा०१**४६ इला। ले०काल सं०१८४८ चेत्र सुदी १३। पुर्यो । वेष्टन सं०६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर प्रचायती दनी (टोक) ।

विशेष-ग्रजमेर में लिखा गया थी।

४२१०. होलिका चरिंग—  $\times$ । पत्र स॰ २। प्रा॰ १ $\times$  ६ $^{\circ}$  १व । भाषा-स स्कृत । विषय-चिंदत । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० सं० १८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पारवंताव कोनान वंदी ।

# विषय -- कथा साहित्य

४२११. मगलदत्तक कथा-जयशेलर सूरि । पत्र स० १ । मा० १४  $\times$  ४ इच । माथ-सहकृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १४६८ माथ सुदी ११ रिवबार । धपूर्ण । बेष्टनसं० १२६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

४२१२. प्राठारहनाते का चौढालिया-साह लोहट—पत्रस०२ । ष्या० १० x ४ स्वा । साथा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल १० वी शतास्त्र । ले०काल x । पूर्ण । वेष्टनसं० १४८१ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धन्नेर ।

४३१३ **प्रठारह नाते की कथा—देवालाल ।** पत्रस**्४। प्रा० ११**३ ४५ ६ खा। भाषा-हिन्दी (९०)। विषय कथा। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन स**० ४०७। प्रारित स्थान**-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष - ग्रतिम पुष्पिका—-रित श्रीमद्धर्मान्यवर्णित तच्छिप्य ॥० श्रीवत विरचिता ग्रष्टादण परस्पर सम्बन्य कया समाप्त ।

४२१५ ग्रनन्तचतुर्वसीवतकथा—जुशालचन्द । पत्र सं०७ । म्रा० ११ x ४ इन्छ । मापा—हिन्दी (पदा) । विषय-कथा । २० काल x । ले० काल x । पूर्ण । वेष्टन स० १५-१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

विशेष--- माद्रपट सुदी १४ को ग्रानन्त चतुर्दशो के व्रत रखने के महात्म्य की कथा।

४२१६ प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । ग्रा० ११ × ५ इ.च. । ले० काल × । पूर्ण । त्रेष्टन सं०७७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बूदी ।

४२१७. श्रानन्तचातुर्वशोवतकथा—  $\times$  । पत्रस० ४ । मा० ६  $\times$ ४ है दश्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८२१ पीष दृदी थ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १५३६ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मदिर म्रजभेर ।

४२१८. प्रमंतव्यतकथा—स० पद्मनिष्ट । पत्रत०६ । मा०११४४ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । २० काल × । ले•काल × । पूर्ण । बेष्टन स०३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर प्राप्तिनाथ इंदी ।

४२**१६. प्रतिसं० २** । पत्रस० ४ । ले०काल × । पूर्णं । **बेहनसं० १३ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहवशी मन्दिर वसना ।

४२२१. **प्रनन्तत्रतरूया—ज्ञानसागर ।** पत्रस०४। प्रा० ११४५<u>२ इचा । माया-हिन्दी</u> (पदा)। विषय-कथा। रकाल ४ । लेक्सल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १११ । प्रा**प्ति स्थान—**वि० जैन पत्राव्यती मंदिर व्याना ।

विशेष-ऋषि स्पालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

४२२२. प्रनन्तवतकथा—क० श्रुतसागर । पत्र स०४। प्राः ११३ $\times$ ४ इच । भाषा— सस्कृत । विषय—कथा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण वेष्टन स०२३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

४२२३. प्रनिकद्वहरस्। (उषाहरस्।)—रत्नभूषस्। सूत्र । पत्र स०३२ । प्राण ११× $Y^{\lambda}_{\chi}$  इत्र्व । प्रापा-हिन्दी । विषय —कथा । र०काल  $\times$  । ने० काल सं०१६६६ । पूर्ण । बेष्टन  $\times$  । प्राप्ति स्थान—दि० जैन स भवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष--- ग्रादि ग्रत माग निम्न प्रकार है---

परम प्रतापी परमत् परमेश्वर स्वरूप।

## प्रारम---दूहा

परमठाय को लहीं जे श्रकल ग्रक्ष ग्ररूप। सारदादेवी मन्दरी मारदा नेहन नाम। श्रीजिनवर मूख थी उपनी श्रनोपम उमे उत्तमा ठाम ।। ग्रगा " " नव कोडि जो मनिवर प्रान महत् । तेह तरणा चरण कमल नम् जेहता गुण छै अनत । देव सरस्वती गुरु नमी कहैं एक कथा विनोद। भवियसा जन सहँ सामलो निज मन घरी प्रमोद । उषाहरए। जैजन कहि जे मिथ्याती लोक। ग्रिसिश्च हरिकारि ग्रास्थो तहनी वचन ए फोक ।। शुद्धपुराल जोइ करी कथाएक एक सार। भवियम जन सह साभलो ग्रानिरुधि हरमा विचार ॥ बात कथा सह परहरो परहरो काज निकाम ।। एह कथारम साभलो चित्त घरो एक ठाम ।। ४६।। मध्यमाग---ऊपा बोलि मधरी बारिए, सामल सस्त्री तु सुखनी स्त्राए। लखी लली तू देलाडि लोक, ताहरी म सागति सचली फोक ।।५७।। ग्रेर जिन त्रेबीम तरणा जे वश ग्रनि बीजा रूप लख्या परसंस । भूमि गोचरी केरा रूप नगमि तेहनि एक सरूप साध्या द्वारावती नगरी को ईस जेहनि बहजन नामि सीस । राजा समुद्रविजय विक्षात, नेमीश्वर केरो ते ताल ॥ १६॥ एह आदि हरिवशी जेह कपटि लिख्या पांडवना देह । तेह माही को तेहिन नविगमि, लखी तुकामुर्आत नमी ।।६०।।

जरासिय केरो मुत युवा, धनि जो जजोउ ते ते नवा । रूप लबी देख्या ज्या तास केहि महथी नवि पोहचि घास । वसुदेव केरा सुन्दरपुत्र, जिसे घर राज्या घरना सत्र । सुन्दर नारायसा तिराम रूप देखाच्या ते घीमराम ।।६१।।

## ग्रन्तिम---

श्री गिरनारि पाडियो सिद्ध तम्मू पद सार । सुख धनता भोगवे धकल धनत ग्रपार । । १।। उषाधि मन चितव्यं ए संसार ग्रसार। घडी एक करि मोकली लीधो सयम भार ॥२॥ लिंग छेद नारी तसा, स्वर्गिहिरा सरदेव। देव देवी कीडा था करि पूजी श्री जिनदेव।।३।। श्रीगरुष हरगाज सामलो एक चित्तसह ग्राज । जिनपुराग जोई रच्यु जिथी सरि बहकाज ॥४॥ श्री ज्ञानभूषणा ज्ञानी नम् जे ज्ञान तरागे भडार। तेह नगा मूख उपदेश थी रच्यो ग्रिंगिक्यहरमा विचार ॥१॥ मुमतिकीरति मुनिवर नमुजे बहुजननि हिनकार। मात तत्व नित चितवि जिन शासन भ्रागार ॥६॥ दक्षिमा देश नो मछपति श्री धर्मचन्द्र यतिराय । नेहरा। चररा कमलन की कथा कही जदराय ।।७।। देव सरस्वती गुरुनभी कहू ग्रामिण्य हरगाविचार। रत्नभूसरम् सरिवर कहि श्री जिन शासन सार ॥६॥ करि जोडी कह एटल, तब गूगुद्यो मुक्त देव। विज कामि माग नहीं भवे भवे तुम्हारा पद सेव ॥६॥ रचनाइ बहरस कह या सामलो सहजनसार।

श्री रत्नभूषण सूरीसर कहि बरतो तम्ह जयकार ॥१०॥ इति श्री भ्रतिकथ हरण श्री रत्नभूषण सूरि विर्णवत समाप्त ।

## प्रशस्ति---

सबत् १६६६ वर्षे भादवा गृदी २ भोमं मेगला प्रामे श्री यादीक्वर जैरायालये श्री मृतसके सरम्बनी गच्छे बलात्कारराषे कुन्दु दाचार्यात्वय महारक श्री मजनकीत्वांच्ये महारक श्री वादिभूषण तराष्ट्रे महारक श्री रामकीति तराष्ट्रे भट्टारक पयनंदि देवा महगृह आता मृति श्री मृतिचन्द्र तत् क्षिप्य मृति श्री ज्ञानचन्द्र तत्र क्षिप्य बर्षिण लाखानीना लिखित । गृभ भवत् ।

४२२४. धनिरुद्धहरण कथा—व**० जयसागर** । पत्रस०४६ । ध्रा०६<sup>3</sup> ×४ इचा । भाषा— हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स०१७३२ । ले०काल स०१७६६ । पूर्णा । वेष्टन स०२४८/६५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन संस्थनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रतिम भाग निम्न प्रकार है |

धनिरुध स्वामी सुगतिगामी कीवुं तेह बखाएा जी। मवियरा जन जे भावे भरासे पामे सख खारा जे ।।१।। ग्रस्य श्रुत हैं कोइ न जाए। देज्यो मुक्त ने ज्ञानजी। पूर्ण सुरि उपदेशे कीघो ग्रनिरुध हरता सरधानजी ।।२।। कविजन दोष मां मुक्तते दीज्यों कहें हैं मुक्ति मान जी। हीनाधिक जे एहमा होने सोधज्यो सावधानजी ।।३।। मलसघ मा सरस्वती गच्छे विद्यानद मुनेंदजी । तस पट्टे गोर मल्लिभूषण दीडे होय धनदजी ।।४॥ लक्ष्मीचन्द्र मूनि श्रुत मोहन बीर चन्द्र तस पाटेजी। ज्ञानभवरा गोर गौतम सरिखो सोहे वश ललाट जी। प्रभाचन्द तस पाटे प्रगट्धो हैंबड चागी विडिल विकात जी। बादिचन्द्र तम अनुक्रम सोहे वादिचन्द्रमा क्षान जी ।। तेह पाटे महीचन्द्र भदारक दीठे नर मन मोहे जी। गोर महिचन्द्र शिष्य एम बोले जयसपार ब्रह्मचारजी । श्रनिरुध नामजे नित्य जपे तेह घर जयजयकार जी। हांसीटे सिंहपूरा शुभ ज्ञाते लिख्यु पत्र विशाल जी। जीववर कीतातरों वचने रचियो जू यूथे ढाले जी ॥२॥ दहा-श्वनिरुघ हरराज मैं करयुं दु:ख हररा ऐ सार। साभला सम्ब ऊपजे कहे जयसागर ब्रह्मचारजी।।

इति श्री भट्टारक महीचन्द्र शिष्य बहुा श्री जयमागर विरचिते ग्रानिरुद्धहरणाख्यानो श्रनिरुद्ध मक्ति गमन वर्णानो नाम चतर्योऽधिकार सर्प्रशसस्त ।

सबन् १७६६ मा वर्षे श्रावरामासोत्तम मासे शुमकारि मुक्तपक्षे द्वितीया श्रुगुवाकरे श्री परतापपुर नगरे द्वैवड जातीय लघु बाखायां साह श्री मेघशी तस्यारमज साह दयालजी स्वहस्तेन लिम्बितीमदं पुरतक जानावर्गी क्षयार्थं।

**४२२५. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० २७ । ले० काल स० १७६० चैत बुदी **१ पूर्ण । वेष्टनसं०** २४०/६६ । **प्राप्ति स्थान** – समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२२६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३६ । घा० ११ $\times$ ४ इंच । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४२२७. **प्रपराजित ग्रंथ (गौरी महेश्वर वार्ता)**। पत्र स॰ २। माषा-- संस्कृत । विषय-सवाद। र० काल × । ते॰ काल × । पूर्ण । वेष्टनस॰ ४३८/३६२ । **प्राप्ति स्थान**---संभवनाथ दि॰ जैन मन्दिर उदयपुर।

४२२६. ग्रमणकुमार कथा— × । पत्र सं०६। ग्रा०१०×७ इ.च. । भाषा-हिन्दी पद्यः। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्णः। वेष्टनस०६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदीं बूदी । झिन्तम—श्रमयकुमार तजी कथा पिंड है सुगि जो जीव । सुगाँदिक मुख भोगि के शिवसुख लहे सदीव । इति ग्रमयकमार काव्य ।

४२२६. सभयकुमार प्रबंध —पदमराज । पत्रसः २०। प्राचा-हिन्दी (पदा)। विषय-कथा। रुकाल सं० १६४०। लेशकाल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टनसंग्द। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती संदिर बसवा।

विशेष---

सबत् सोलहसइ पंचासि जैसलमेरू नयर उत्तलाति । खरतर गफ़्तायक जिन हस तस्य सीस गुगायंत सस । श्री कृष्यसागर पाठक सीस पदमराज पन्यहर सुनगमिस । जृगप्रधानजिनचर मुगाँगर जिजयभान निरूपम प्रानन्द । भराह गणह जे चरिता महत रिद्धिसद्ध सखते पामन्ति ।

४२३०. प्रवंती सुकुमाल स्वाध्याय—पं० जिनहृषं । पत्र सं०३ । प्रा०११४४ हे च । प्राया—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल सं०१७४१ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०११ । प्राप्ति स्थान—म० द० जंन मदिर वोरसली कोटा ।

४२३१. **प्रशोक रोहिएगी कथा**— × । पत्र सं० ३७ । प्रा० १०० ५ ४ ५ ६ च । भाषा संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × पूर्ण । बेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान-क**दि० जैन सदिर बोरसली कोटा ।

४२३२. ब्रष्टटायक कथा टीका-विश्वेश्वर । पत्रसंullet भा । प्राप्त ullet १० $X^{2}_{\mu}$  इथा । भाषा— सस्कृत । विषय —कथा । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्ट्रन संullet २६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोग्मनी कोटा ।

बिशेष - सबत १७२ " माह मासे कृष्ण पक्षे तिथि २ लिखितं सारंगदास ।

४२३३, प्रष्टांग सम्यक्त्य कथा—ब जिनदास । पत्र म० ५५ । प्रा० ६  $\times$  ५ द्व । माषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १६१/६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मण्यनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४२३४. प्रष्टाह्मिकावत कथा —  $\times$ । पत्र सं०६। प्रा०१० $\frac{1}{7}$  ×  $\frac{1}{7}$  इन्छ । भाषा — सस्कत । विषय —कथा। र०काल  $\times$ । ले० काल सं०१७=१ कागुण बुदी १०। पूर्ण । बेष्टन सं०४३६। प्राप्ति स्थान —भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--प० रूपचन्द नेवटा नगरे चन्द्रप्रम चैत्यालये ।

४२३५. ब्रष्टाह्निका व्रत कथा —  $\times$  । पत्र सं०११ । ब्रा०१० $\times$ १६ द्वा भाषा — संस्कृत । विषय — कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०२५७ । **प्राप्ति स्थान** — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धजनेर ।

४२३६. ब्रष्टाह्मिका तत कथा— X । पत्रसं० ११। ब्रा० १० ४६ ६ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा १०काल X । से०काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० २३६ । प्राप्ति स्थान - महारकीय वि० वैत मिन्दर ब्रज्जतर । ४२३७. सप्टाह्मिकावत कथा —  $\times 1$  पत्र स०१६। प्रा०६ $\times ^{\vee}$ , इत्व । भाषा-सस्हत । विषय—क्या। र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०३०५। प्राप्ति स्थान—भट्टाग्कीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

४२ देम. **अस्टाह्निजत कथा**— × । पत्रकं∘ १४ । धा० १० × ४३ इथा । सवा—सहका । विषय—कवा । र० काल × । ले० काल × । पूर्णे । वेष्टन स० ६५४ । प्रास्ति स्थान—सहारकीय कि जैन सविर्ध सकसे ।

४२३६. अस्टाह्निकावत कथा—  $\times$   $\mathbb{I}$  पत्रस० ६। प्रा० १० $^{1}\times$ ६ $^{1}$  इव । भाषा-मन्तर। विषय-कथा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्तर अंतरों का तैनावा ।

४२४०. मष्टाह्निकावत कया—सं० गुसवादः । पत्रतः c । प्रातः १० $\frac{3}{2}$  × ५ ३७ । साम —संस्कृत । विषय — कथा । र०कान × । ते० कान × । वेष्ट्रन सं० २३१ । पूर्णः । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर नक्कर जयपुर ।

४**२४१. प्रतिसं०२ । पत्रस०५ । धा०१९**३ ५ ६ च । ले० काल ग०१८३० । पूर्ण । वैष्टन सं०२३४ **। प्राप्ति स्थान—दि०** जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष — जयपुर नगर में चन्द्रप्रम चैत्यालय में प० चोल्लचदणी के शिष्य ए० रामचन्द्र जी ने कथा की प्रतिक्रिप की थी।

४२४२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४ । प्रा० ११३ ४ ३३ डब्ज । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनस० २३५ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर, लक्कर जयपुर ।

४२४३. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १७ । ग्रा० १०३ × ४ इच । ले० काल स० १०६४ । वृग्यं । वेष्ट्रस० २०४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चीमान युदी थी ।

विशेष -- लश्कर में नेमिनाथ चैत्यालय में भाभू राम ने प्रतिलिपि की।

४२४४. अस्टाहिक्कातत कथा— त. जानसागर । पत्र स० ४०। प्रा० १० $\times$  ८, इच्छ । आधा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स० ६३० । प्राप्ति स्थान—अद्राकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**४२४५. प्रति सं०२।** पत्रस०१०। घ्रा०६<sup>3</sup> ४६ इत्वः। ले∙काल ४। पूर्णः। बेष्टन सं०३१६-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगप्पुरः।

**४२४६. प्रतिसं० ३** । पत्र स०४ । घा० १२×६ इश्व । ले०काल स०१६६४ । पूर्य । बेष्टन स०२६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

४२४७. प्रतिसं०४ । पत्र स०३ । प्रा०१२imes५३ ह्या । ने०कात्र imes । पूर्ण । बेष्ट्र स० ५३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाप्र टोडागद्यसिंह (टोकः) ।

४२४ त. प्रत्यनवंत्री कथा— × । पत्रस०७ । ब्रा०८ ४४ इचा भाषा-सस्त्त । विषय-कथा । र०काल × । लेक्काल स०१ द१३ ब्रासीज मुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं०१२४ । प्रास्तिस्थान— वि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी । विशेष--स्कथ पुरास में से है। सेवाराम ने प्रतिलिपि की थी।

४२४६. ग्राबित्यवार कथा— पत्रसः १०। भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल imes । के काल imes । पूर्णः । बेष्टनसः ४४४ । प्राप्ति स्थान—दिः जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- राजल पश्चीसी भी है।

४२५०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १० से २१ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

४२५१: **प्रादित्यवार कथा** - पं० गंगादास । पत्रसं० ४१। प्रा॰ ६४६ इ.स. । साथा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७५० (शक स० १६१४) ले**०काल** सं० १०११ (शक स० १६७६) पूर्यो । बेहन स० १५२५ । **प्राप्ति स्थान** ---अट्टाफीय दि० जैन सदिर प्रजमेर ।

बिशोध — प्रतिसचित्र है। करीब ७५ चित्र हैं। चित्र प्रच्छे हैं। प्रंथ का दूसरा नाम रविव्रत कथा भी है।

४२५२. प्रति सं०२ । पत्र स०१ । प्रा०१०३ॄं×५ इला । ले०काल स०१८२२ । पूर्ण । बेष्टन स०१७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर धमिनन्दन स्वामी बूदी ।

४२५३, प्रतिसं० ३ । पत्रस० १ । घा० १०३ ४५६ च । ले०कास स० १८३१ । पूर्ण । बेष्टतस०१८ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मंदिर धीमनन्दन स्वामी बूंदी ।

४२५४, प्रतिसं० ४। पत्र सं०१८। ग्रा०१० ४ ७ इश्व। ले०काल ४ । पूर्गं। बेष्टनस० १-२। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का इंगरपुर।

विशेष-प्रति सचित्र है तथा निम्न चित्र विशेषतः उल्लेखनीय हैं-

पत्र १ पर--प प्रवंताय, सरस्वती, धर्मचन्द्र तथा सगाराम का चित्र, बनारस केराजा एवं उसकी प्रजा १ २ ३ ४ पत्र २ पर मतिसागर श्रेष्ठि तथा उसके ६ पत्र इनके घतिरिक्त ४६ चित्र और हैं। सभी चित्र कथा

् पर सामारित हैं उन पर मुगल कथा का प्रभुत्व है। मुगल बादणाहों की वेशभूषा बदलायी गयी है। स्त्रिया कहुगा, प्रोप्तनी एव काचली पहुन हुने हैं कपडे पारवर्षक हैं सग प्रत्यन दिलता हैं,

## म्रावि भाग---

प्रशामुपास जिनेसरपाय, सेवत सुख सपति पाय। बहुवर दायक सारदा, यह गुरु चरन नयन युग सदा। क्याक हुँ रविवार जक्षणी, पूर्व प्रंय पुराग्ये अगी। एक चित्त सुने जे सामले तेहने दुख दालिब्रह टले।

#### धन्त माग--

देश बराह विषय सिरापार, कार जा मध्ये गुराषार। बद्रनाष मन्दिर मुखकंद, भव्य कुमुम भामन वर षद्र ॥११०॥ मृत्तमय मतिवंत महत, पर्मवत मुख्तर घति संत। तस यद कमल दल मिक्त रस हुग, वर्षमुद्रमण रस रोवे भूग ॥१११॥ विशाल कीर्ति विमल गुण जाण, जित शासन पकज प्रगट्यो मान । तत पर कमल दल मित्र, धर्मजम्द धृत धर्म पवित्र ॥११२॥ तेहृनो पेंडित गंगाशास, कथा करी भविष्य उन्हास । शाके सोलासत पत्ररसार, सुदि ध्रावाढ बीज रविवार ॥११२॥ श्रम्य बुढि थी राजना करी, क्षाम करो सज्जन वित्त धरी । भणे सुष्टी भावे नरनारि, तेह घर होये मगताचार ॥१४॥

इति धर्मचन्द्रानुचर पडित गग दास विरचिते श्री रविवार कथा सपूर्ण ।

४२५५. ब्रा**बित्यवत कथा**—माऊकवि । पत्र त० १० । ब्रा० १० $\times$ ४ $\xi$  इश्व । भाषा— हिन्दी । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण वेष्टन सं०६१४ । प्राप्ति स्थान—मट्टारकीय वि• जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-इस का नाम रविवृत कथा भी है।

४२४६. प्रति सं० २ । पत्र सं०६ । घ्रा० ६३ × ४३ इचा । ले०काल स० १७८० माह बुदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं०३०६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर श्रीभनव्दन स्वाभी, बुदी ।

विशेष--रामगढ में ताराचद ने प्रतिलिपि की थी।

४२४७. प्रति सं० ३ । पत्रस०६ । ग्रा०१०, ४४६ च । से०काल × । पूर्ण । बष्टन स०२०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्राप्तिनन्दन स्वामी, बुदी ।

४२.५ . प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । सा० ६ ४ ४ इ.च । ले० काल स० १६०० वैणाल सुदी दापूर्णे । वेष्टन स० २६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बूदी ।

विशेष-प॰ सदासुख ने नेमिनाथ चैत्यालय मे लिखा था।

**४२.५६. प्रतिसं० ५ ।** पत्र सं० १४ । म्रा० ६imes४ इ.ख । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पाश्वेनाथ चौगान त्रूदी ।

**४२६०. प्रतिसं०६। पत्रस०**१३। ग्रा०१२ $\frac{1}{2} \times$ ५ इचा। ले०काल  $\times$ ा पूर्ण। वेष्टनस०**६७। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन श्रम्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४२६१. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० १८ । लेब्काल सं० १८५० ग्रावाढ सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४४३ । प्रांति स्थान वि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष — नेमिण्यर की बीनती तथा लघु सूत्र पाठ भी है। भरतपुर में लिखा गया था।

४२६२. **ब्रावित्यवार कया—क. नेमिदत्त ।** पत्रसः १७ । ब्रा॰ १०×५ इत्त । प्रापा— हिन्दी, (गुजराती का प्रभाव) । विषय—कया । र०काल × । ले०काल पूर्ण । वेष्टनसं० ५२१ । प्रास्ति स्थान—प्रष्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-पादि भन्त माग निन्न प्रकार है-

द्यादिमाग---

श्री शांति जिनवर २ नमते सार । तीर्थंकर जे सोलमुं वांछित फन बहुदान दातार । सारदा स्वामिणि वली तबुं बुद्धिसार म सरोइ माता । श्री सकलकोति गुरु प्रणामोने श्री मुवनकोति प्रवतार दान तण् फल वरणवूं बहा जिल्लास कहिसार बहा जिल्लाम कदिसार । ।

#### प्रस्तिभाग---

श्री मुलसंव महिमा विरमलोए, सरस्तती गच्छ सिएागारतो। मिलकुष्यण प्रति भनाए थी लक्ष्मीचन्द्र मुरिरास तो। तेत हुर चरणकल गमीए, ब्रह्मा निमदत्त मिए चगतो। ए बतये भविषणकरिए, तेत हिंगी प्रभगती।। ३०।। मनबश्चित सपदा लहिए, ते नर नारी सुजाएतो। इम जाएती पात निएतता।, ए रिवेशत करो मिव माएतो। ए प्रतभावना माने तेहां, जमी जमी पास्व जिएदतो। । ए अनभावना माने तेहां, जमी जमी पास्व जिएदत।।

## वस्तु---

पास जिलावर पास जिलावर बालब्रह्मचारी। केवनागासी गुणानिजो, भवनमुद्र तारण समरपछ। तमु ताणा अदित वस नो के करि भवीमण सार। ते भव सकट भजिकरिमुल पामिद्र जगितार॥ इनि श्री पार्थनाष्टितवारनी कवा समाप्त।

४२६३. **प्रादितवार कथा—सुरेन्द्रकी**ति । पत्र स० १३। **प्राया**—हिन्दी। विषय-कथा। र०काल स०१७४४। ले० काल स० पूर्ण। वेष्टन स० ४४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पवायती मदिर भरवपुर।

विशेष - राजुल पच्चसी भी है।

४२६४. **ग्राराधना कथा कोश**—  $\times$  । यत्र स० ६० । ग्रा० १ $\frac{3}{7}$  $\times$   $\frac{1}{7}$  इखा । ग्रापा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । वेष्ट्रसं०४७० । **प्राप्तिः स्थान**—भ० दि० जैन मस्दिर ग्रजमेर ।

४२६५. **प्राराधना कथा कोश**— $\times$ ाणत स० ६५ । प्रा० ११ $\times$ ६ इश्वः। भावा— संस्कृतः। विषय-कथा र०कालः  $\times$ । ले० काल $\times$ पूर्णः। वेष्टन सं० ७२० । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर प्रजमेर।

विशेष- श्राराधना संबधी कथाओं का संग्रह है।

४२६६. **बाराधना कथा कोश**—पत्रतः १०४। बा०१० $\times$ ६ ्रेइख । माषा — हिन्दी । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ५३ । **ब्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रयवाल पंचायती मन्दिर प्रतवर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

४२६८. **प्राराधना कथाकोश— बस्तावरासिह रतनसास** । पत्रस०२६२ । प्रा०१०३४ ७ इंच । माषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल सं०१८६६ । ले० काल रा०१६३२ बँगास सुदी १२ । । पूर्ण । बेष्टनसं०१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन प्रध्वाल प्वायती मदिर अलवर ।

४२६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० २८२ । ले० काल स० १६०३ । पूर्ण । बेष्टन स० ४४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपूर ।

४२७०. झार्यमा कथाकोश — त० नेमिदत्त । पत्रस० २४७ । झा० ११४५ इख । माया-संस्कृत । विषय-कर्म । र०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्ट्न स०४३० । प्राप्ति स्थान— महास्कोय दि० जैन मंदिर स्रज्येर ।

४२७१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १२ । घा० ११३ 🗶 हुँ इन्छ । लेक्नल 🗴 । प्रपूर्ण । बेप्टन स॰ १३१५ । प्राप्ति स्थान—प० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

४२७२. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० २६० । ले० काल स० १८११ चैन बुदी ४ । पूर्ण वेष्टन स० २६३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-भरतपूर मे लिपि की गई थी।

४२७३. **प्राराधना कथाकोश-अ**ृतसागर । पत्रस० १४ । प्रा० १२ $\}$  ४ $\}$  ६७ । भाषा-सस्कृत । विषय —कथा । र०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ । **प्राप्ति** स्थान---वि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष-पात्र केशरी एव सकलंकदेव की कथाये है।

४२७४. प्राराधना कवाकोष-स्रियेण । पत्रस० ३३८ । पा० १२४१ इस । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल स० ६८६ ले०काल x ।पूर्ण । वेष्टुन स० १६८ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४२७५. म्राराधनासारकथा प्रबंध--प्रभाचन्त् । पत्र स० २००। म्रा० १० $\times$ ४ इन्छ । माषा--सस्कृत । विषय -- कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६०८ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २६१ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन प्रयवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२७६. प्रतिसं० २ । पत्रस० १-६२ । म्रा० ११४५ इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेस्टन स० ७२० । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

४२७७. द्वाराधना चतुष्पदी — धर्मसागर । पत्र स॰ २० । ६ $\times$ ४ इला । प्रापा —हिन्दी पत्र । विषय — कथा । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १६६४ प्रासीज सुदी = । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

४२७८. एकावसी महास्म्य $-\times$ । पत्र स॰ १०। प्रा॰ ११४५ इचा। भाषा—सस्हत। विषय—कवा। र०काल  $\times$ । ले०काल स०१६२१। पूर्ण। वेष्टन स १४८। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नागदी इंदी।

विशेष-स्कद पुराए। मे से है।

४२७६. **एकादसी महात्म्य** —  $\times$  । पत्र सस्या १०१। घा० ११ $\times$ ४ इच्च । भाषा - संस्कृत । विषय - महात्म्य । र०काल  $\times$  । लेखन काल सं० १८५२ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी (ब्रुंदी) ।

४२६०. एकादशी तत कथा—  $\times$  । १पत्र स्छ। मा० १ $\frac{1}{6}$  $\times$ ४ इख । मापा-प्राहुत । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर विकास ।

विशेष-इसका नाम 'स्वतऋषिकथा' भी है।

४२**८१. ऋषिदत्ता चौपई— मेघराज ।** पत्रस०२२ । आ.० १०<sup>3</sup>,४४<mark>३</mark> इंच। आपा---हिन्ती (पदा) । विषय—क्या । र०काल स० १६५७ पौष सुदी १ । से०काल सं० १७६६ झासोज सुदी ११ । पूर्णु । बेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दवलाना बुंदी ।

४२६२. ऋविमण्डलमहासम्य कथा—  $\times$ । पत्र सं० १०। धा० १२ $^{1}_{7}$   $\times$  भ $^{2}_{7}$  इखा। आवा—सस्कृत । विषय—कथा। र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नक्कर जयपुर ।

४२६३. कठियार कान**डरी चौपई—मानसागर**।। पत्र स०४। झा० १०४४३ इच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र०काल स०१७४७। ले०काल स०१६४०। पूर्ण। वेष्टनस० २६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

४२ म्४. कृपर्णः कथा — वीरचन्द्रसूरि । पत्रसः २ । आ०१२ ४५ इत्त । आया — हिन्दी (गदा)। विषय — कथा। र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णः । बेष्टनसं ०३०७/१०४ । प्राप्ति स्थान — विक जैन मन्दिर सम्बनाय उदय्पर ।

विशेष--- र्यान्तम---

---दाभतो तब दुखि उथयो नरक सातमि मरीनिगयो । जपि वीरचन्द्र सरी स्वामि एम जारिए मन राखो गम ॥३२॥

४२८५. कथाकोशः—  $\times$  । पत्र सं० ४१-६८ । मा० १० $\times$ ५ इस्त्रः। भाषाः-सस्कृतः। विषय-कथा । र०काल $\times$ । ले० काल $\times$ । भपूर्णः । बेष्टन सं०३३८/१६७ । प्रास्ति स्थान—सभवनाथः दि० जैन मदिर उदयपुरः।

४२८६. प्रतिसं० २ । पत्र सं०८ । ले० काल स० १७२०। पूर्णं । वेष्टन स०१६०/५६४ । प्राप्ति स्थान—सभवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपर ।

४२६७. कथाकोश—चन्द्रकीर्ति । पत्र सस्या १४-६६ । प्रा० १० $\frac{3}{5}$  ×  $\frac{3}{5}$  इंच । भाषा— संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । प्रास्ति स्थान -- वि० जैन प्रयक्षाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--धन्तिम भाग निम्न प्रकार है-

श्रीकाष्ट्रमत्रे विवुष्यप्रपूज्ये श्रीरामसेनान्वय उत्तमेस्मिन् । विद्याविभूषायिथ मूरिरासीत् समस्तनस्वायंकृतावतार ।।७१।। तत्पादपकेहहभंचरीक:

श्रीभूषरासुरि बरो विभाति ।

सघ्नष्ट हेतु वृत सत्कथांच ।

श्रीचन्द्रकीर्तिस्त्वमकाचकार ॥७२॥

इति श्री चन्द्रकीर्त्याचार्यविरचिते श्री कथाकोशे घोडवकारएावतोपाख्याननिरूपएां नामसप्तमः सर्गे ॥७॥

४२ तम् क्याकोशः— ज ० नेमियत् । पत्र सं०२२० । मा०१२ $\frac{1}{2} \times ६ ६ % । भाषा— सस्कृत । विषय - कया । र०काल <math>\times$  । ले० काल सं०१७१३ । पूर्णं। वेष्टन सं०१०२ । प्राप्ति स्थान — दि० र्जन संदिर दीवानजी कामा ।

४२८६. प्रतिसं०२। पत्र संस्था १७३। ग्रा०११ 🗴 ४ इचा। नेखन काल स०१७६३ श्रावरण सुदी १३। पूर्ण 1 वेष्ट्रन स०२२६। प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष-मालपुरा में लिखा गया था।

४२.६० प्रति सं० ३ । पत्र स० २५७ । बा० ११×५ ) इंच । ले०काल × । पूर्ण । बेहनसं० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४**२.६१. प्रति सं०४ ।** पत्र स०१४४-२१६ । ग्रा०१०×४ ॄँ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं०१६७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

४२६२. कथाकोश—मारामत्त् । पत्र स० १२६ । ब्रा० १३ $\times$ ५े इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ते०काल सं० १६४३ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ७४ । प्राप्ति स्थान—िक जैन सप्रवाल प्रवायती मंदिर सलवर ।

४२६३. कथाकोश— मुमुक्ष रामचन्द्र । पत्र स०४४। प्रा॰ १०४५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय — कथा । २०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स०२४ । प्राप्ति स्थान दि० जैन महिर नागरी, बुदी ।

४२६४. कथाकोश-श्रुतसायर । पत्र स० ६६ । ग्रा० १२४५ हुन्न । भाषा-सस्त्रत । विषय-कथा । र०काल ४ । ले० काल सं० १६२० पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०१ । प्रास्ति स्थान-म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४२६५. कथाकोश—हरिवेर्ग । पत्र स० ३५० । धा० ६ $\times$ ५ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । लेककाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । प्राप्ति स्थान—मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४२६६. कथाकोश— × । पत्र स० ७८ । घा० १०१४७ इन्छ । माषा—हिन्दी (पछ) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर कतेहपुर केलावाटी (सीकर)

विशेष--१, २ एव २ वां पत्र नहीं है।

४२९७. प्रति सं०२ । पत्रसं० ७६ । प्रा०११रैु×५३ इचा ले० काल स∙ १६११ । प्रपूर्ण । बेष्टन सं०१५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैनमन्दिर फतेहपुर गेलाबाटी (सीकर)।

विशेष-४७ से ५१ तक पत्र नहीं है।

```
निम्न कथात्रों एव पाठो का सग्रह है।
                          कर्लाका नाम
    कथाकानाम

    श. ब्रादिनाथजी का सेहरा— लिनतकीत्ति— र०काल × । हिःदी पत्र १सेद ।

       विशेष - बाहबलि रास भी नाम है।
 २. द्रव्यमग्रह माचा टीका सहित-
                                        × । --- × । प्राकृत हिन्दी । पत्र द से २६ तक ।
 ३. चौशीम ठाएगा---
                                        × 1 -- × । हिन्दी। पत्र २६ से २६ तक।
 ४. रत्नत्रय कथा --
                      हरिकृष्ण पांडे
                                        र०काल स०१७६६ हिन्दो। पत्र
                                        २६ से ३१ तक।
                                        र०काल × । हिन्दी। पत्र म ● ३१ से ३४ तक।
 ४. धनन्तवत कथा---
                                        र०काल स०१७६४ । हिन्दी पत्र स०३४से३६
 ६. दणलक्षरा वत कथा
                                        र०काल १७६२ । हिन्दी । पत्रस० ३६ से ३६
 ७. ग्राकाश पचमी कथा
 ८, ज्येव जिनवर कथा
                                        र०काल सं० १७६८ । हिन्दी पत्र सं० ३६-४१
                            ,,
 ह जिन गग सपत्ति कया
                        ललि उकी ति
                                        र०काला 🗙 । हिन्दी। पत्र ४१ से ४६ तक
१०. मगधदशमी कथा---
                         हेमराज
                                        र०काल × । हिन्दी। पत्र ४६ से ५३ तक। सपूर्ण
११ रविव्रत कथा---
                                        र०काल स०१६७६ । हिन्दी । पत्र ४३ - ४४
                         ग्रकलक
                                        र०काल स० १७७१। हिन्दी। पत्र ५४। भपूर्ण
१२. निर्दो समसी कथा---
                       हरिकयग
१३. कर्मविपाक कथा ---
                                        र०काल × । हिन्दी । पत्र ४४ से ४८
                         विनोदीलाल
28 TE-
                                        3 2 - 2 2 EP
१४. समोसरन रचना--
                         ब्रह्मगुलाल
                                        पत्र ४६ से ४३। र० काल १६६८
१६ घट दर्शन
                            ×
                                        पत्र ६३ पर
१७. रविग्रत कथा --
                         भाऊ कवि
                                        पत्र ६३ से ७१ तक
१८. पुर दरविधान कथा---
                        हरिकष्गा
                                        र०काल १७६८ फाल्गुन सूदी १०। पत्र ७१-७२
१९. नि णत्य ग्रप्टमी कथा--
                                        र०काल × । पत्र ७२-७३
२० सङ्कटचौयकथा---
                         देवेन्द्रभष्म
                                        र०काल × । पत्र ७३ से ७४
२१. पचमीद्रत कथा --
                        सरेन्द्रभूपरा
                                       र०काल स० १७५७ पौष बुदी १०। पत्र ७५-७६
```

४२६८. कथाकोश—  $\times$ । पत्र स॰ २७६ ग्रा० १२  $\times$  १ $^2_1$  इच । भाषा —हिन्दी । विषय—कथा । २०नाल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण वेष्टन स॰ १३ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन तैरहाथी मदिर दौता ।

४२६६. कथासंग्रह $-\times$ । पत्रसं० १३। घा० ६ $\times$ ५ $^3$  इञ्च। भाषा —संस्कृत। विषय-क्षा। रे० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन स० ३४६। प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन पत्तिर प्रजनेर।

विशेष--- निम्न कथाओं का संग्रह है --

पुष्पाञ्जली, सोलहरूरण, मेघमाला, रोहिणीवत, लब्बिबिबान, मुकुटसतमी, सुगंधदशमी, दशलक्षण रूपा, सादित्यवत एवं आवणहादशी रूपा। ४३००. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ६ । ग्रा० १०४४ १ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३४ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष - प॰ मुमतिसुन्दरगिणिभरलेखि श्री रिस्तिनगरे।

धन्यकुमार, शालिभद्र तथा कनककुमार की कथाएं है।

४**३०१. कथा संग्रह** —  $\times$  । पत्रसं० १२४ से २०४ । घा० १११ $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इथा । भाषा-संस्कृत । विषय —कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । थेष्ट्रन स० १४४ । **प्राप्ति** स्थान —िव० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४३०२. कथा संग्रह— × । पत्रसं० ८१ । ग्रा० १० ×४) इच । भाषा — सम्झ्र । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । बेष्टनस० १०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर दक्ताना (राज्ञ ०)

४**३०३. कथा संग्रह—**≫ । पत्रसं∘ .....। भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । वेष्टनम० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

- १. भ्रष्टाहिनका कथा--भ० सुरेन्द्रकीति । सस्क्रत
- २ पुष्पाजलिवत कथा— श्रुतसागर। "
- ३. रत्नत्रय विधानकथा --- " । "

४२०४. कथा संग्रह— $\times$  । । पत्रस० २८। ग्रा० १० $\times$ ६३ इ.च । माया—हिन्दी । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । के॰काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन प्रययाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—भारामल की चार कथास्रो का सग्रह है।

४३०**५. कथा संग्रह**— × । पत्रस० ३७-४६ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल । भे**०काल** × । प्रपूर्ण । वेष्टुन स० १४६/१०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३०६. कथा संग्रह— $\times$  । । पत्र त० ४६। प्रा० १२  $\times$  ४ इला । मागा-सम्बन्। विषय-कथा । रुकाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १४६, १०७ । प्राप्ति, स्थान वि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष-निम्न कथाओं का सग्रह है।

fadding	in and 6 i		
१ ब्रष्टाह्निका कथा	सस्कृत		भप्रसं
२ प्रनन्तवत कथा	भ०पद्मनदि	ı	
३ —लब्धि विधान	प० ग्रभ्रदेव	rr .	पुरगं
४ रूक्मिएी कथा	छत्रसेनाचार्यं	u	W
५शास्त्र दान कथा	ग्रभ्रदेव	"	
६जीवदया	भावसेन	n	
७ त्रिकाल चौबीसी कथ	प ॰ ग्रभ्रदेव	n	**

४**६०७. कथा संग्रह**—imes। पत्र स० २१। माषा—प्राकृत । विवय—कथा । र० काल imes। के० काल imes। पूर्ण । वेष्टनस० ४६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

४३०**८, कथा समह—विजयकोर्ति।** पत्रस० १८ । मा० १०२ ४४१ इञ्च । माबा—हिन्दी पद्य । विषय —कथा । २०काल स० १८२७ सावस्य बुदी ५ । से**०काल सं०** १८२८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४४ । **प्राप्ति स्थान**—अदारकीय दि० जैन मन्दिर फ्रजमेर ।

विशेष - कनककुमार, धन्यकुमार, तथा सालिभद्र कुमार की कथाएं चौपई बध खद मे है।

४३०६. कलिजीदस कथा—म० सुरेन्द्रकीति । पत्रसं०५। प्रा० ११× ५६४व । माषा-हिन्ती पद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले॰काल × । पूर्ण । बेट्टन सं० १०२ । प्राप्तिस्थान— रिवर्जन मिर्फर नेप्रस्था नेपार

४३१०. कार्तिक पंचमी कथा। पत्रसं० ४। सा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} ६ च्ला भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल <math>\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० १६४।२०२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाय टोडागर्साम्ह (टोक)

विशेष---प्रति प्राचीन है। १७ वी शताब्दी की प्रतीत होती है।

४३११. कार्तिक सेठ को चोडात्यो  $\times$  । पत्रस॰ ४ । घा॰ १०  $\times$ ४ $^{\circ}_{i}$  इव । भाषा-हिन्दी विषय — कथा। र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०१३० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दक्लाना व दो ।

४३१२. कार्तिक महारम्य — × । पत्र त० ८। प्रा० ६२ ×५१ इच । भाषा — सस्कृत । विषय-कवा (जैनेतर) । र०काल × । ते०काल मं० १६७२ कार्तिक सुरी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६-१७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर टोडारायसिह (टोक)

विशेष-पदमपाराण से ब्रह्म नारद सवाद का वर्णन है।

४३१३. कालक कथा —  $\times$  । माया — प्राकृत । विषय — कथा । र० काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेपन  $\pi$ ० ४४०-३१/२८२-५३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर । विशेष — दो प्रतियों के पत्र है । फुटकर है ।

४३१४. कालाकाचार्या कथा—श्री माशिक्यसूरि। पत्रन० ४। छा० १० ४ ४ इत्त । भाषा-सन्ता । विषय-कथा। रक्काल ४। लेकाल ४। पूर्ण । वेष्टन संव ४६६। प्राप्ति स्थान— महास्कीय दिव केन महिरर प्रवर्गर।

४३१५, कालकाचार्य कथा—समयसुन्दर । पत्रसं० ११। मा० ११×५ इःवा भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७१५ वैद्याल बुदी १। बेष्ट्रनस० १२६ । पूर्ण । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष-देलवाडा मे प्रतिनिधि हुई थी।

४२१६. कालकाचार्य प्रबंध जिनसुखसूरि। पत्र सं० ११। मावा —हिन्दी। विषय — कथा। रक्काल × । लेक्काल १८६६। पूर्ण । बेष्ट्रन सं० ७३१। प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन पंचायती मंदिर मरतपुर।

विशेष--प्रति जीसं है ।

४३१७. कु वकु दाचार्य कथा —  $\times$  । पत्र स० २ । धा० १० $\frac{1}{7}$   $\times$  ४ ६ व । माषा-हिन्दी गर्य । विषय — कया । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर भी महावीर कृती ।

विशेष — भन्त में लिखा है-इति कु दकु दस्वामी कथा। या कवा दक्षणम् एक पडित छावणी माऋरो भयो उक भनुसार उतारी है।

¥**२१८. कौमुदी कथा**—×। पत्रस० ४६-१०४ । घा० ११३ × ४९ दला । प्रापा-सस्क्रत । विषय—कथा । २०कान × । से०कान × । ध्रपूर्ण । वेष्टनसं० २६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सम्बद्ध करा सेवांची होता ।

**४३१६. कोमुदी कथा**— × । पत्रसं० २०। माषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । **के॰काल स १**७३६ । मपूर्ण । वे**हन स०६ । माप्ति स्थान**— दि० जैन प्रवायती मदिर डीग ।

४२२०. कौमुदी कथा— $\times$ । पत्र स० १३६। घा० १० $\times$ ६ इख । मापा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$ । ले०काल स० १५२६ माह सुदी ५। पूर्णे । बेष्टनस० २६७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्यनाथ मन्दिर चौगान (बुंदी) ।

खिरोष----राजाधिराज श्री पातिसाह ग्रकबर के राज्य में चम्यानगरी के मुनिमुबननाय के चैत्यालय में प्रतिनिधि हुई थी। स॰ १६६२ की प्रति से लिखी गयी थी।

४३२१. गर्जासह चौपई—राजसुन्दर । पत्रस० १६। धा० १०' ४ ४' इश्व । आषा— हिन्दी (पद्य)। विषय कथा। र०काल स० १४१६। ले०काल x । पूर्णः। वैष्टनस०४। **प्राप्ति स्थान**-वि• जैन सम्बेनवान मन्दिर उदयपर।

विशेष — प्रत्येक पत्र पर १७ पक्तिया एवं प्रति पक्ति मे ३५ प्रक्षर है।

— नगर जोइन ६ घावियो कुमर वे धावा हेिछ । गारी ते देवह नहीं, जोवट दम दिन देिछ । १५६ ॥ मनिव्वतद कारण विश्व केगिग हिरोग वाल । पणजोतद सह तेहुना चारि बुद्धि मुदिसान । १५७ । नरमहि घूरतना पडौँ धैठया नारी माहि । पत्नी माही बाइन सही जोवड पणह जाहि । १५८ ॥ वड घातें प्रजानकरि चान्यउ ननर मन्धारि । पन जोवतड नारी ताणी पहुत्व वेस हवारि १५६

४३२२ ग्रुगसुन्दरी चउपई — कुशललाभ । पत्र स०११ । आ०१० रे×४) इञ्च । मापा-राजस्वानी । विषय कथा । र०काल स०१६४६ । लेकाल स०१७४८ । पूर्ण । बेष्टन स०२००। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४३२३. गोतम पुरुष्ट्या— $\times$ । पत्र त्यः ६७ । ब्रा० ६×६ इत्र । भाषा-सस्कृतः । विषयः— क्या । रुकालः  $\times$ । ले० कालं स०१८६० । पूर्णः । वेष्ट्रनं स०३८ । प्राप्ति स्थानं — दि० जैन तेरहपश्री मन्दिर नैस्यता ।

४२२४, चतुरंशी कथा—झानूराम । पत्र त० २१। ग्रा० १:४४ इत्र । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १७४४ । ने० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । आस्ति स्थान—अट्टारकीय दि० जैन मदिर प्रजमेर । ४३२५. चंदराजानी ढाल—मोहन । पत्र स० १। घा० ६ $\ \times \$ ४ स्था । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० २०१/६६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपर ।

४२२६. चन्द्रप्रम स्वामिनो विवाह—म० नरेन्द्रकोत्ति । पत्रतः २४ । प्राः ११४४ है इत् । माषा—रजस्मानी । विषय—कथा । र०काल स० १६०२ । से०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । प्राप्ति स्थान—कि जैन प्रदेशन कोरवानी कोराः ।

## धावि भाग--

सकल जिनेश्वर भारती प्रणमीने
गरावर लहीय पसाउ ।
लोए श्री चन्द्रप्रभ वर नमित नरामर
गायस्युं तेह वीवाहलोए ।।१।।

#### मध्य माग-

जड़ने बोलावे मात्त लक्षमागा देवी मात । उठोरे जिनेश्वर कहिए एक बात ।।१।। सामीरे देखीजें रेपुत्र साहिजे सदा पित्रत्र । रजमुभदासे वस्त्र निरमल गात्र ।

#### ग्रन्तिम भाग---

विकमराय पद्धी सबत् मोश वय सवस्तर जांग्य वैज्ञाल बदी मली सलमी दिन मोमबार मुक्षमाय गुजरेज सोहामणो महीसान नवर मुक्षमा । विवाउ लंड रवंड मनरली धारिखंद भवन मफार ॥ श्री मुलसब गद्धपति गुभवन्द मट्टारक सार । तरपदकमल दिवाकक, श्रीय मुमतिकीरति मबतार ॥ गुरु घाता तम जागांड श्रीय सक्तपूष्यण मुरी देव । नरेन्द्रकीरती गुगैवर कहे, कर जीदि यद सेव । के नरनारी भावे सुर, भर्णेंद सुर्णे यह गीत। ते पद पांस साम्वता, श्री चन्द्रप्रभुनीरीति ॥

इति श्री चन्द्रप्रभ स्वामिनो विवाह सपूर्ण । बहा श्री गोनम लखीतं । पठनाथं बहा श्री रूपचन्दजी ।

४३२७. चन्द्रतमलयागिरी चौपई— मद्रसेन । पत्रस०२० । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय— कथा । र०काल १७वीं मताब्दी । ले०काल स०१७६० जेष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रत स०१/१ । प्राप्ति स्थान—विक जैन महिदर कोटिहियों ना इंगरपर ।

प्रशस्ति—संवत् १७६० वर्षे मासोतममाने जेड मासे गुक्त पक्षे त्रयोदणाम्यां तिथौ भौमवासरे स्ट पुस्तकं तिलापित कार जा नगर मध्ये श्री चन्द्रप्रम चैत्यालये लेलक पाठकयो गुत्रं भवत् ।

प्रति सचित्र है तथा उसमे निम्न चित्र है-

٠	र।धाकृष्णु		पत्र १ पर
			8
	राजा चन्द्रन ग्रानी मलयागिरी		,
3	महल राजद्वार		
٧.	राज्य देव्या संवाद		?
٩.			3
€.	रानी मलियागिरी राजा चन्दन	"	ş
٥.	रानी मलियागिरी श्रीर राजा चन्दन सायर के तीर		A
٩,	D D	-	×
8.	,, पाक्वंनाथ के मन्दिर पर	_	ч
<b>१</b> ٠.	सायर नीर गौउ चरावे छै	_	×
११	चोवदार सौदागर		Ę
<b>१</b> २.	रानी बनखंड में लकडी बीनवे	_	Ę
₹₹.	रानी मलयागिरी एव चोबदार		· ·
88.	"		4
१५	मिलयामिरी को लेकर जाते हुए		3
₹.	रानी मलयागिरी एवं सौदागर		१०
१७	थीर, सायर नदी नीर श्रमरालु		११
8=	राजा चन्दन स्त्री	_	१२
₹€.	राजा चन्दन पर हाथी कलश ढोलवे		१३
२०	राजा चन्दन महूल मा जाय छै		१४
२१	राजा चन्दन भ्रानन्द नृत्य करवा छै		१६
<b>२</b> २	राजाचन्दन भलो छै		१६
२३	नीर सायर मीला छै रानी मलियागिरी		१६
२४	राजा चन्दन रानी मलियागिरी सीदागर भेट कीघी		१७
२४	राश चन्दन के समक्ष सायर नीर पुकार करैं छैं		<b>१</b> 5
२६.	चन्दर मलियागिरी		39

४३२६. चंदनखठीव्रतः कथा—खुमालचन्द । पत्र सं॰ ६। म्रा॰ १२ $\times$ ४ , इत्थ । भाषा– हिन्दी । विषय-कथा । र०काल $\times$ । ले॰ काल स॰ १५२६ । पूर्ण । वेष्टनस॰ १४४ । प्राप्ति स्थान—िद॰ जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

४२२६. चपावती सीलकल्यागादे—मुनि राजचन्द । पत्र स० ६ । प्रा० ११.४६ इन्य । माषा—हिन्दी पर्यः विषय—कथा। र०काल स० १६६४ । ले०काल x । प्रपूर्णः। वेष्ट्रनसं० ४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सहेलवाल मन्दिर उदयपुरः।

४३२०. **चारमित्रों की कथा** — × 1 पत्र सं० ६८ । प्रा० ११ × ४ इखा । **माधा** — सस्कृता । विषय — कथा । र०काल × 1 ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान — दि०** जैन मदिर बोरसली कोटा । ४३३१. **बाह्यस कया** —  $\times$  । पत्र सं० १। ग्रा० ११ $\times$ ४३ दश्यः। माया - संस्कृतः। विषय — कया। र०कातः  $\times$ । ते० काल  $\times$ ।। पूर्णं। वेष्टन स० ६६। **प्राप्तिं स्थान** — ग्रहवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

४३३२, **बारबल सेठ** (स्पामोकार) रास—क जिनवास । पत्र स० ३५ । घ्रा० १०  $\times$  ५ इल्ब । भाषा —हिन्दी । विषय —कया । र०काल  $\times$  । लेक्काल सं० १७५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०३ । प्रास्ति स्थान —सभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

४३३३. चारदत्त प्रवस्य — कल्यास्पक्षीति । पत्रसं०। १३। मा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इच । माणा—हिन्दी (पछ) । विषय—कथा । र० काल स० १६८२ । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वे. स० २७०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मदिर उदयपुर ।

४३३४. चित्रसेन पद्मावती कथा—पुरासाधु। पत्र सं०४४। भाषा – सस्कृत। विषय— कथा। र०काल सवत १७२२। ले०काल स० १८६८ घासीज सुरी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ५८८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रचायनी मन्दिर भरतपुर।

विशेष —हिन्दी श्रथं सहित है।

४३३५. वित्रसेन पद्मावती कथा—पाठक राजवल्लम ।पत्र स०२३ । म्रा०६} ४४ इख । भाषा—मस्कृत । विषय—कथा । र०काल स०१४२४ । ले० काल 🗶 । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१६२ । प्राप्ति स्थान—पठ जैन मन्दिर दवनाना (व दी) ।

४३३६. प्रति सं०२ । पत्र स०४२ । म्रा०१० है ×४ ई इच । ले० काल × । पूर्ए । बेष्टन स०२०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष--कुल ५०७ पद्य है। प० हीरानन्द ने प्रतिसिपि की थी।

४३३७. प्रति**सं०३ ।** पत्रस०६। मा०१०×४ इ**था। ले०काल स०१६**५१ फागुए। बुदी १०। पुर्छ। बेक्नसं०२३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लक्कर जयपर।

विशेष---प्रशस्ति घच्छी है।

४३३६. चित्रसेन पदावती कथा—  $\times$  । पत्र म०२१। भाषा—सस्कृत । विषय —कथा। र०काल सं० १४२६। ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६३६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४३३६. चेलर्गासतीरो चोडालियो—ऋषि रामचन्द्र । पत्र स० ४ । प्रा० ६ $\times$ ४ इ च । माषा—राजस्थानो । निषय—कथा । र०काल  $\times$  ।  $\sqrt{n}$ ० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर दवलाना (इ दी)

४३४०. चोबोली लीलावती कथा — जिनचन्दा पत्र सं०१४। ब्रा०११ ×४६ इत्र्य । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय — कथा । र०काल स०१७२४। ले०काल स०१६४६। पूर्ण । वे०स०३३६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा।

४३४१. **बौबीसी कथा** — X  $\frac{1}{2}$ । पत्र सं०७। ग्रा०१०X६२ इत् । माषा-सस्कृत । विषय – कथा । र० काल X। ले० काल X। पूर्ण । वैष्टन स०२४३ । **प्राप्तिं स्थान** — दि० जैन मन्दिर सम्कर, जयपुर ।

. ४३४२, **लोबोसी तत कथा** —  $\times$  । पत्र स॰ ८७। प्रा॰ १४ $\times$ ७ दश्वः। भाषा — हिन्दी पद्यः। विषय — कथा। र० कालः  $\times$ । ले॰ कालः। पूर्णः। वेष्टनः सं॰ २२। **प्राप्तिः स्थान** — दि॰ जैन मन्दिर नागदी वृंदी।

४३४४. जम्बूस्वासी प्रध्ययन—पदातिलक गरिए । पत्र तं० ६३ । प्रा० ८३४४६ स्थ । भाषा—प्राइत । विषय—कवा । र०काल ४ । तं० काल स० १७८६ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० २०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाला बंदी ।

विशेष-पद्मसुन्दरगिए कृत हिन्दी टब्बार्थ टीका सहित है।

४३४५. जम्मूस्वामी कथा—  $\times$  । पत्र स०५ । ग्रा०१० $^2_i \times ^3_j$  इश्व । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ते०काल । ग्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० २९७ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मदिर दवनाना (वंदी)

४३४६. जम्बूस्वामी कथा —  $\times$  । पत्रसं॰ ३१ । मा॰ ११×५ इश्व । भाषा-िल्यों (पखें) । विषय — कथा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । प्रास्ति स्थान — लण्डेनवान दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४३४७. जम्बुस्वामी कथा-पं० दौलतराम कासलीवाल । पत्र त० २ मे २७ । ग्रा० ११ $\frac{1}{2}$ ४६ इञ्च । मापा-हिन्दी गण । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन त० ५५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्वनाथ टोडारायसिंह (टॉक) ।

विशेष-पृथ्यास्तव कवाकोश में से है। प्रथम पत्र नहीं है।

४३४६. जिनदत्त कथा—  $\times$  । पत्र स०२४ । द्या०११  $\times$  ४६ख । प्राया—सस्क्रत । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ते०काल स०१४०० जेष्ठ बुरी ७ । पूर्णः । वेष्टन स०६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती दुनी (टोक)

प्रशस्ति—सबत् ११०० वर्षे जेष्ठ बुदि ७ वर्षो गवार मन्दिरे श्रीमचे मट्टारक श्री पचनन्दि तिच्छस्य श्री देवेन्द्रकीति तिच्छस्य विद्यानन्दि तहीतित ब० हरदेवेन कर्मतयार्थं निवापित ।

''श्रेष्ठि प्रजुन सुत भूठा लिलापित म० थी ज्ञानभूषरास्तरपट्टे म० श्री प्रभवद्रारणा पुस्तक । ये शस्ट पीछे लिले गर्वे मालूम होते हैं।

वारस्भ--

महामोहनमद्यन्न युवनाभोजभातनः । सतु तिव्ह यगता सङ्ग मुख्यतः त्रपदे जिनाः ॥१॥ यदा पता जगद्वतनु व्यवस्थ नमामि ता । विनेन्द्रवदानाभोज राजहसी सरस्वती ॥२॥ मिन्यामहाहिताबट्ट सद्भामृतपातनः । प्राप्तास्यति विषय ये तात्र स्तृवे यतिनायकाद् ॥३॥

### ग्रन्तिम---

कृत्वा सारतरं तपो बहुविध शांताश्विरं चाँग्का । कल्प नास्तमबापुरेत्परता दत्तो जिनाशिगुंतः । यत्रासौ मुखसागरातरगएगा विज्ञाय सर्वेपिते । स्योग्य तत्र जिनादि वदनपराः शीताः स्थिति तन्वते ॥१६॥

६ सर्ग हैं।

४३४६, जिनवस चरित - गुराभद्राचार्य। पत्र सं०४७। बा०१२४७} इच। मापा--सस्कृत। विषय--चरित। र०काल ४। ले०काल सं०१६२०। पूर्ण। वेष्टन सं०२२०। प्राप्ति स्थान--महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

विशेष-- इसका नाम जिनदत्त कथा दिया हुमा है।

४३५०. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३८ । धा० १० ४४ ई इञ्च । ले० काल सं० १६८० । पूर्ण । केन्न सं० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४३५१ **जिनदत्त कथा माषा** — × पत्रसं० ४८। प्रा० १२४७ इंच । भाषा-हित्दी। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल स० १६६२। पूर्ण । बेष्टनसं० २२६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा।

४३५२. जिनरात्रिवत सहारम्य—मुनि पद्मानिद । पत्र सं०३६ । ग्रा० ११  $\times$  ४६२४ । भ्रापा—सम्इत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १५६४ पीय बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन सं०६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष द्वितीय सर्गकी पुल्किश निम्न प्रकार है---

इति श्री बर्द्धमानस्वामि कप वतःरे जिनरात्रिजनसहारम्य दर्शके मुनिश्रीपद्मनदिविरचिते सनः सखाय नामानिते श्री बद्धमानतिवारणगमन नाम द्वितीय सर्गः॥२॥

४३५३. जिनरात्रि विधान —  $\times$  । पत्र स० १४ । धा० १० $\times$ ४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर दीवानकी कामा ।

४३,५४. ज्ञातुधमं कथा टीका —  $\times$  । पत्रसं० ६६ । प्रा॰ १०  $\times$  ४ $^2_{i}$  इच । भाषा-प्राकृत संस्कृत । विषय कथा । र०काल  $\times$  । ले॰काल सं० १०७४ मगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६/७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष - वर्णपुर मध्ये नयगेखर ने प्रतिलिपि की थी।

४३ ५ ६ तेला मारूगी चौपई —  $\times$  । पत्र सं० १४ । मा० १२  $\times$  ५ $\frac{1}{6}$  इव । माया-राजस्थानी (पद्य) । विषय-कथा । २०कार  $\times$  । ले०काल  $\times$  । म्रपूर्ण । बेप्टन स० ५७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरत्रपथी दौसा ।

४३५६. रामोकार संत्र महास्म्य कथा—  $\times$ । पत्र सं०६८६ । प्रा०१३ $\times$  ७ $^{3}$  इख । मावा-हिन्दी गर्य । विषय-रूपा । २०काश  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेहुन सं०१३३। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फ्लेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

विशेष -- सचित्र प्रति है। चित्र सुन्दर है।

४३ ५७. ताजिकसार— × । पत्रसः ० । प्राः १० ४४ १ इंच । माषा-सरकृत । विषय— कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्णा । बेष्टन स० १५८८ । प्राध्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्ति क्योरे ।

४३५८. त्रिकाल **जीवीसी कथा—पं० प्रभ्नदेव ।** पत्रस्य ४ । त्रा०१०३ ४ ४३ इखा । माया-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस०२४० । प्राप्ति स्थान— किं जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

४३५६. त्रिलोक्तदर्ये**ए कया—लडगसेन** । पत्रसं० १८४ । प्रा० १११<sup>\*</sup> × ४१ इत्र । भाष हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान कथा । र० काल स० १७१३ चैत्र सुदी ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४३६०. प्रतिसं० २ । पत्र स०१५६ । आ०१२१ै ४४१ इन्थ । ले० काल स०१७७७ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स०४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष--केशोदास ने प्रतिलिपि की थी।

४३६१. प्रति सं०३। पत्र स०१७६। प्रा०१० $\{\times \xi\}$  इन्दा । ले० काल स०१८४६ प्राप्तोज सदी ६ गरुवार। पूर्ण। वेष्टुन स०१११। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर राजमञ्ज टोक।

विशेद—लिखायित देवदीदास जी लिखत व्यास सहजरामेगा तक्षकपुर गःथे। इस प्रति में रेचना काल स० १७१० सावरण मुदी १० भी दिया हुआ है -

**४३६२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १**०० । द्या० १० $\times$ ४३ इश्वः । ले० कालः स १८६३ सावरा **दर्शः । पू**र्णः । वेष्ट्रनः स०७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजम*श्न*ंटोकः ।

४३६३. प्रति स० ४.। पत्रस० ६२ । आ० १२ 🗴 ६५ दश्च । ने०काल स० १७६३ मर्गासर सुदी १४ । पूर्ण बेष्टनस० ४.। प्राप्तिः स्थान-दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

४३६४. प्रति सं०६। पत्रस०१४७। ग्रा०१२×४) इश्वा। ले० काल म०१८३२ कासिक मुदी६। पूर्ण। वेष्टनस०१११-८८। प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्यासह टोक।

विशेष - सुरतराम चौकडाइत भौमा चाकनु वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४३६५. प्रतिसं०७ । पत्र स० १६८ । आ० १० ४४ है इञ्च । ले० काल स० १८३० । पूर्या । बेष्ट्रत स० ६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगान बुदी ।

४३६६. प्रतिसंo ६ । पत्रसः ११२-१२६ । ले० काल सः० १७४७ । स्रपूर्णः । वेष्टन सः० १६ । प्रास्ति स्थानं—वि० जैन तेरहत्यथी मदिर बसवा ।

४३६७. प्रतिसं०६। पत्रस०१४२ । घा०११imes१ृ इञ्च । ले०कालimes। पूर्ए । केष्टनसं०२२। प्राप्ति स्थान-वि० र्जन सण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

**४३६ स. प्रतिसं०१०।** पत्र स०११४ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेग्टन स०२७। **प्राप्तिः** स्थान — अण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उरयपुर । ४३६६. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १६५ । झा० १०४४ है इचा। ले०काल स० १८०० । पूर्ण । बेष्टुन स०६६−४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

४३७०. प्रति सं०१२ । पत्र स०१८४ । घा० ८२४ ५ ६०६। ले०काल सं०१८२२ प्रापाढ युदी१३ । पूर्एा। बेष्टन स०८३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रज्ञवाल पंचायतीमन्दिर प्रतवर।

विशेष -- मानन्दराम गोघा ने जयपूर मे प्रतिलिपि की थी।

४३७१. प्रति स० १३ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १८२४ सावन बुदी म । पूर्ण । वे० स० ३७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३७२. प्रति सरुण १४ । पत्रस॰ ७६ । ले॰काल imes । अपूर्ण । वेष्टन स॰ ३७४ । प्रास्ति स्थान—वि॰ जैन पवावती मन्दिर भरनपुर ।

४३७३. त्रिलोक सप्तमी वृत कथा—क जिनवास । पत्र स॰ ७। घा० ११  $\times$  ४ १ ख । प्राप्त —हिन्दी । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस॰ ३६३/१२४ । प्राप्ति स्थान—सनवनाथ दि॰ जैन मदिर उदयपुर ।

४३७४, दमयंतो कथा — त्रिविकस सह । पत्र सं० १२१ । घा० १४४६ इस । माषा— सस्कृत (गवा) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७१७ श्रावसा सुदी २ । पूर्ण । बेष्टन म० १८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाला (ब्रुदी) ।

विशेष-इन्द्रगढ में मूनि रत्नविमल ने प्रतिलिपि की थी।

४३७४. दर्शनकशा—सारामल्ला। पत्र स०३७। घा० १३१ै×६१ इच्च । साषा—कथा। र०काल ×। ने०काल ×। पूर्ण। वैष्टन स०१३६० । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि०जैन मस्दिर प्रकार

४३७६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३७ । आ० १०३ ४५ देखा । ले०कालस० १६३६ । पूर्ण । बैप्टन स० ६८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन खडेनवाल मन्दिर उदयपुर ।

४३७७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २ से २५ । आ० १३ र्रे ४ ७ इवा । ले०काल ४ । सपूर्ण । वेष्टन स० १२२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शलावाटी (सीकर) ।

विशेष-- १,१० एव ११ वा पत्र नही है।

४३७८ प्रति सं० ४ । पत्रस० २८ । खा० १२३४७ है इच । ले॰काल स० ११४२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७-७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का द्वगरपुर ।

४३७६. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० २७ । ग्रा० १२<sup>९</sup>४८ इ.च. । ले०काल स०१६४३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४३८०. प्रति सं० ६ । पत्र स॰ २२ । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेण्टन सं० ३६ । प्राप्ति स्थान —िवि॰ जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४३८१. प्रति सं० ७ । पत्र स०२८ । ले० काल × । पूर्णं । वेष्टन सं० २७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपयी मस्दिर बसवा ।

४३६८. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ३४ । प्रा० १०३४७ इचा । से०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स॰ १०० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पचायती सदिर कामा । **४३८३. प्रति सं० ६** । पत्र सं० ५४ । घा० १२ १ ४ १ इ.च. । ले० काल स० १६०७ । पूर्णी वैष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान—**वि० जैन छोटा मन्दिर खबाना ।

४३८४. प्रति सं० १० । पत्रसं० ३८ । घा० १० ×६० हु इथा । से०काल स० १६२८ घासोज वदी ८ । प्रपुर्ण । वेष्टन स० ४४ । प्राप्ति स्थान—सोनार्ण। वि० जैन मदिर करोली ।

विशेष-प्रथम पत्र नही हैं।

४३६५. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ४६ । घा० ६ × ५३ इच्छा । ले० काल स० १६४६ साबन सदी ७ । पर्यो । बेग्रन स० ७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर करीली ।

**विशेष** — विरजीलाल व गजरमल वैद ने करौली मे प्रतिलिपि की थी।

४३८६. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० ४१ । घा० १० ¦४५ हुँ इखा । ले०काल स० १६२७ चैत्र सुदी १० । पूर्णा । बेष्टुन स० ७२ १६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचावती मन्दिर सलवर ।

४३८७. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० २८ । घा० ११ ४७ है इथा । लेक्शल सं० १६६१ कास्तिक सदी १४ । पूर्ण । बेस्टन स**० १०१ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पाण्येनाथ जीगान बुदी ।

४३ दन्द. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ४६ । मा० द $^1_2 \times \S^3_2$  इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी वृदी ।

४३, ८६. प्रति सं० १४, । पत्रस० २४ । आ० १३  $\times$  ७ इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ६० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बंदी ।

४३६०. प्रति सं०१६ । पत्रस०३२ । ब्रा०१०४७ इचा ले०काल स०१८६१ । पूर्ण। वेक्तसं० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, नागदी बुदी ।

**४३.६१. प्रति सं० १७ ।** पत्र स० २३ । द्या० १२३ ४ ८ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । केकन सं० ४३७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयगर ।

४३६२. **दशलक्षम् कथा** $--\times 1$  पत्रस**े** ३। मा० १०  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इखा माया-सस्कृत । विषय-कथा । रुकाल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०६७। **प्राप्ति स्थान** - भट्टास्कीय दि० जैन सिंदर प्रतिप्ते ।

४३६३. दशलक्षरण कथा— × । पत्रसं० ४ । मा० १० रे ४४ हथा। भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्णं। वेय्टन स० २३३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जबपुर ।

४३६४. **दशलकारा कथा—हरिचन्द ।** पत्र म • १० । म्रा० ११४४ हेडचं। भाषा-मयस्रं स । विषय-कथा १०काल स०१४२४ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मण्डिर दोवानजी कामा ।

विशेष आगे तीन कथाएं और दी हुई है प्रारम्भ — को नमी जीतरागाय।

> वंदिवि जिएा सामिया सिव मुह गामिय पयडमि दह लखगामि कहा ।

सासय सुह कारण भविणहितारण भवियहिण सुगाहु भत्ति यहा।।

#### ष तिम--

सिरि मूलसंध बलत घारगिए । सरसइ गच्छवि संसार मिए।। यहचंद पोम नदिस्वरं, सुहचन्द्र भडार उप पहुंबरं।। जिराचन्द सूरि शिजियडयरा, तहु पट्ट सिहकीर्ति विसुगंश मुनि लेमचन्द मूरि मयमोहहुए, श्री विजयकीति तवलीए तेएां ।। घाँज्जय सुमदरासिरे पयरामियं पडित हरियद् विजयसहिय ।। जिए। बाइए।ह चोइहरय। विश्हय दहलवख्या कह सुवय ।। उवएसय कहिय गुराग्गलयं । पदहसइ चउबीस मलय। भादव सुदी पंचिम ग्राइ विमल । गुरुवारु विसारयगु खतु ग्रमल ।। गोवागिरि दुग्ग हारणइय । तोमरह वस किल्ह्स समयं। वर लबुकचुवसहितल। जिरादास मधम्म पूरा हण्यालय'।। भज्जावि सुसीला गुरासहिय। एदरा हरिपार बुद्धि गिहिय ।। रादह जे पढिह पदावहिय । वाचित बखाराति दखसितय ।। ते पावहि सुरग्गर सुक्खबर ।

धत्ता---

सासय सुहरत्तु भविगाहिवल्तु परम पुरिस् आराहिमगा। दह धम्मह भाउ पुग्ग सय हाउ हिन्यद ग्यमसिय जिगावरगा।। इति दस लाखग्मिक कथा समान्त।

पाछे पुरमु मोस्तलच्छिय वरं।

इसके ब्रतिरिक्त मौनवर कथा (सरकृत) रत्नकीर्ति की, विद्यावर दशमीवत कथा (सस्कृत) तथा नारिकेर कथा (प्रपन्न श) हरियन्द की ग्रीर है।

४२६४. दशलक्षरण् कथा-क० जिनवास । पत्र स० १६ । आ० ४×४ इत्व । आषा-हिन्दी। विषय⇒क्षा । र०काल × । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन सं• ४४७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोटडियों का द्वारपुर । ४३९६, **दशलकारण कया । पत्रस**० ६। भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र०कान × । से० काल स० ११६६ । पूर्ण । बेहुनसं० ३१३। प्राप्तिः, स्थान—दि० जैन पुष्पावती मन्दिर भरतपुर। विशेष—वत कथा कोष मे से ती गई हैं। पुष्पावति कथा धौर है।

४३६७. **दान कथा - भारामस्ल**। पत्र स० ८ । ब्रा०११८४ इत्व । भाष-हिन्दी । विषय-कथा । रुकाल 🗶 । लेक काल ४ ।पूर्ण । वेष्टन संक ३६६/६८ । **प्राप्ति स्थान**-विक जैन सभवनाथ मन्दिर उदयुर ।

४३९८. प्रति सं०२। पत्रस०१०। ले॰ काल  $\times$  पूर्ण। वेष्टन स० ४००/६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर।

४३**६६. प्रति सं०३।** पत्र स०३०। मा०११४७} इश्वा । ले०काल स० १६४३। पूर्ण । वेप्टन स०११ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर वयेरवालो का मावा (उल्लियारा)

विशेष-सीलोर ग्राम मे प्रतिलिप की गई थी।

४४००. **प्रति सं०४**। पत्रस० ४८। प्रा०७ 🗶 ५ इन्छ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनस० ६७। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर कोट्यों का नेगवा।

४४०**१. प्रतिसं० ५।** पत्र स० २६। श्वा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ६ देश्वा । ले० काल स० १६३६। पूर्ण । बेप्रन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहवधी मन्दिर नैस्पता ।

४४०२. प्रति सं०६ । पत्रस० २-३४ । ले०काल 🗴 । ब्रगूर्गं । वेष्टन स० ४५ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन तेरहक्षी मन्दिर नैगावा ।

४४०**३. प्रतिसं०७ ।** पत्र स० ३२ । ब्रा० ६ 🕽 🗶 ६ डब्ल्चा ने० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अध्याल मन्दिर नैसाया ।

४४०**४. प्रतिसं० ६ ।** पत्र म० २२ । ने०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन श्रवनाल मन्दिर नैरावा ।

४४०**४. प्रतिसं० ६**। पत्र स० ३७ । ब्रा० ६४६ इन्त्रा । ले० काल १८६१ । पूर्णा । बेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागरी बूरी ।

४४०६. प्रतिसं ० १० । पत्र स० २४ । घा० ११ ×७ इन्छ । ले० काल × । झपूर्ण । बेष्टुत स० ६६ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन पात्रवनाथ मन्दिर चौगान बुदी ।

४४०७. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० २० । घा० १०<sup>९</sup> ४ ७ १ इञ्च । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । बेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय | बुदी ।

४४० म. प्रति सं०१२ । पत्र स०२६ । म्रा० १४६ इ.च. । लेक्काल 🗴 । पूर्ण वेष्टन स०१५१ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन मदिर थी महाबीर वृंदी ।

४४०**८. प्रति सं०१३।** पन मं०२६। ग्रा० १०} ४७<mark>३ दश्व । से०काल १६३७। पूर्स ।</mark> वेष्टन स०१४६। **प्राप्ति स्थान**—िद० जैन मदिर श्री महावीर बूदी।

४४१०. प्रति सं० १४ । पत्र स० २० । घा० ५ ¦४६ इ.च । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंशी । ४४१**१. प्रीतसं० १४ ।** पत्रस० २२ । ग्रा० ११, ४६ - इञ्चा सेंश्कास १६३० माह बुदी १३ । पूर्णा वेष्टनसं० ७१ १८४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर क्रमवर ।

विशेष — १८ पत्रों की एक प्रति और है।

४४**१२. प्रतिसं० १६ ।** पत्रस० २६ । घा० १०१४६ ६ ऱ्रं इला । ले**० काल** स०१६४६ । पूर्ण । वेद्यनसं० ३३२ । **प्राप्ति, स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४४**१३. प्रतिसं० १७ ।** पत्र स०२०। ने० काल सं०१६२६ । पूर्पे । बेष्टन स०६२ । **प्राप्ति** स्थान---दि० जैन तेरत्यंथी मन्दिर बसका ।

४४१४, प्रति सं०१६ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६२६ पूर्ण। बेहन स० १२४ । प्राप्तिहस्थान — दि० जैन तेरहपंथी मदिर बसवा।

४४१**५. प्रति सं० १६ ।** पत्रस**० २६ । मा० १२** ${}^{1}_{1}$ रू इच्छ**ा ले०काल**  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स**०** ४३५ । **प्रा**प्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४४१६. दान कथा— $\times$  । पत्र स० ६४ । प्रा० ६ $\times$ ६ ६ व । भाषा-हिन्दी । विषय -कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । बेष्टन स० १०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष--- निशि भोजन कथा भी दी हुई।

४४१७. **दानजील कथा—माराम**ल्ल । पत्र स० ७० । माषा क्ष्न्दी । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । त्रेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिऱ दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—कठमर में लिखा गया था।

४४१६. **दानशील सवाद—समयसुन्दर** । पत्र स० ७ । घा० १  $\times$  ४ इश्व । भाषा— हिन्दी । विषय—कथा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २६१/१७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—कोट ग्राम मे प्रतिनिति हुई थी।

४४१६. दानडी की कथा $-\times$ । पत्र स० ५। ब्रा० १०४६ इ.सं। भाषा -हिन्दी पद्य । विषय-कथा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$  अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३६-१३२ । प्राप्ति स्थान -दि० जैन सन्दर कोटडियो द्वारपुर ।

४४२०. **द्वादशयत कथा—पं० सभ्यदेव** । पत्र स०६ । ग्रा० १११ × ४ इख । भाषा— संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सक्कर, जयपुर ।

४४२१. द्वादशक्त कथा (म्रक्तयनिधि विधान कथा) —  $\times$  । प्रसं ३६ । मा० १० $\times$  ४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । विष्य-कथा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । विष्य-कथा । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर म्रजनेर ।

४४२२. द्वादशस्त कथा—  $\times$  । पत्रस०६ । आ०६ $\times$ ५ इला । भाषा—स स्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ते०काल स०१=४५ । पूर्ण । वेक्ष्तसं०२०४ । प्रारित स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--- शवर्यगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

४४२३. **ब्रिडप्रहार**—**लाबन्यसमय ।** पत्रस**ः** १ । भाषा-हिन्दी । विषय-कवा । र० काल × । से**० काल** × । पूर्णे । वेष्ट्रन स० २००/६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयसुर ।

विशेष-- शादि शंत भाग निम्न प्रकार है--

घावि माग---

- पाय प्रणामीय सरसति वरसति वचन निकास ।
  मुनिवर केवल घरगार सुमहिम निवास ।
  सुरे गायमु केवल घरे तो सुनिवर दिवसहार ऋषिराज ।
  सीहतणी परि स्थम पानी जिलाह सार्या सिकार
- साहतराग पार सयम पाला जिल्पाइ सार्या सावकाल । कवरण दीपपुर मातपिता कुरण किमए प्रगट्ट नाम । कहिता कविष्यण सुरायो भविषयण माव घरी श्रमिराम ।।

धन्तिम--

सिरि और जिलेनर नामिन सोहद नार।
मगनकर केनलनाएं। दिव महार तुरै दिव महार।
केनल केन मुणिदनार चरिन जेणाद धार
त्याह उतारि कावा करी पनित्र।
किएल पुरस्दर समय रतन गुरु सुरस्द ततु पाय पामी।
सीस लेल लानक्यास प्रमान प्रमान ।
किरि दिव महार।
किरि दिव महार।
किरि दिव महार।

४४२४. **दीपमालिका कल्प**\*\*\*\* । पत्र स० १ । फ्रा० १०४४ इश्वः । माषा—सस्त्रत । विषय—कथा । र० काल ४ । लेक्काल सं० १७७३ व्येष्ठ मुदी १३ । पूर्णः । वेष्ट्रन स० २६८ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिरं लक्कर जय*नु*र ।

४४२४. वीपावली कल्पनी कथा —  $\times$  । पत्रतः २५ । या० ११ $\times$ ४३ इस्त । भाषा — हिन्ती (गद्य) । विषय —कथा । २० काल  $\times$  । ते०काल स० ११३६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १६५ । प्राप्ति स्थान —िरं० जैन प्रधवाल मन्दिर उदयपुर ।

४४२६. **देवकोनोढाल** —  $\times$  । पत्रस० १०। प्रा० १२ $\times$ १ इत्य । माषा —हिन्दी (पद्य )। विषय —कया । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेटटन स० ३४२ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मदिर देवनाना (हुँदी) ।

विशेष---जैनेतर साहित्य है। मार्कडेय पुराए। में से ली गयी है।

४४२६ **धन्नाचउपई—मितिशेखर** । पत्रस० १४ । द्वा० १०<mark>१×४ इच । माषा—हिन्दी</mark> (पद्य) । निषय—कवा । र०काल स० ११७४ । ले०कालस० १६४० । पूर्ण । वे**टन सं० १**१२/६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दीसा ।

#### प्रारम्भ---

कथा साहित्य ]

पहिलज परामिय पय कमल बीर जिरादह देव।
मविय मुराौ भन्ना तराौ चरिय भराउ अंखेबि
जिरावर चिहु परिभासीज सासरिए निम्मल भन्म।
तिह धरि पससिज जिंह तटड सवि कम्म ॥२॥

#### पत्र ८ पर---

बहुय वचन मिन हरिषयो निसिभिर धनसार । नीसिरियो प्रागलि करी, सहुयइ परिवार ॥६४॥ गामि २ घरि २ करइ जिउ काम वराक । तऊन पुरउ हव वरउ, धिग धिग कर्म विपाक ।

#### धन्तिम पाठ---

भी जबएन गम्छ सिरागारो, पहिलंड रक्साप्पह गराधारो ।
गुरा गोमम प्रवतारे ॥
अल एव सूरिद प्रसोपड, तामु पट्टि जिगि जिन अनु लीघो ।
स्वम सिर्प उत्तरित्रारो ॥२०॥
प्रमुक्तमदेव गुप्ति मूरीय, सिद्ध सूरि नमहि तमु सीस ।
मुनिजन सेविय पाय ।
नामु पट्टि सयम जयवजंड, गम्हनायक महि महिमा वतंड ।
कन्कतूरी, गुरुत्य ॥२६॥
सयहिव व्यापी पतिरा गराहारी, गुरावतानील मुद्दर वारागिर ।
वामु सीम मितिशेखर हरिपिंह, पनरहसय चडवोत्तर वर्रासिंह ।

एह चरित यन्ना नज भाषिहि, भएाइ गुणाइ वे कहद कहावह। वे संपत्ति देई दान। ते नर मन बद्धिय फल पावह। परि वहटा सर्वि संपद धावह। विनसह नवई रिपान।।३०।। इति धन्ना चजप्र समाप्ता।

संवत् १६४० : ... बुदी ६ शनिवारे । लेतइ रिपनो भाइई लिख दीइ ॥

४४२६. धर्मपरीक्षा कथा—देवचन्द्र । पत्र स $\circ$  २६ । आ $\circ$  १२ $\times$ ४ ६ च । भाषा-सस्त्रत । विषय कथा । र $\circ$  काल  $\times$  । ले $\circ$  काल स $\circ$  १६४४ फागुन सुरी २ । वेष्टन स $\circ$  १२२ । प्राप्ति स्थान – दि $\circ$  जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - जगन्नाथ ने ग्राचार्य लक्ष्मीचन्द के लिए प्रतिलिपि की थी

४४२०. **घर्म बृद्धि कथा**— × । पत्रसं० ६-१२० । घा० ७×५ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा। र०काल × । ते० काल स० १८५२ वैशाल बुदी १ । पूर्ण । वेट्टन सं० ७० । प्रास्ति स्थाल—दि० जैन मदिर प्रादिनाय बूंदी । ४४३१. **धर्मबृद्धि मत्री कथा — बखतराम ।** पत्र त० १७ । घा० ५ $\frac{1}{6}$  $\times$ ६ $\frac{1}{9}$  इख । भाषा — हिस्सी (पर्छ) । विषय—कथा । २०काल स० १६६० धासोज बुडी ८ । से० काल स० १६७४ सावरा सुदी २ । पूर्ण । बेक्न सं० ६१४ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मन्दिर धवमेर ।

विशेष-धर्मयुक्त बुद्धि को मत्री के रूप में सलाहकार माना गया है।

४४३२, नरकनुढाल—गुग्सागर । पत्रस० २ । छा० १० $\times$ ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । ४०काल  $\times$  । ले० काल०  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० २८ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर बोगसली कोटा ।

४४३३ नलदमयंती चउपई—  $\times$ । पत्रस॰५६। प्रा॰१ $\times$ ४३ इन्छ। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र॰काल  $\times$ । से॰काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वेप्टन स॰११७। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दबपाना बुँदी।

४४३४. नलदमयंती सबोध—समयसमुन्दर । पत्रस०३० । ध्रा०६ $3 \times 4$  हुन्दा । गाया—हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १६७३ । ले० काल स० १७१६ मगामर मुदी ११ । पूर्म । बेष्टन म० १३६५ । प्राप्ति स्थान—महास्कीय दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

विशेष---ग्रजयगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

रचना का श्रन्तिम भाग निम्न प्रकार है-

सबत मोलतिहुत्तरइ मास बसत ग्रह्माद । नगर मनोहर मेडतो जिहा वासपूज्य जिगाद । बामुपूज्य तीर्थकर प्रसाद गञ्ज खरतर गृह गृहद । गृद्धराय जयप्रधान जिसिधप्ति स्वरूप अस लहह । जबभ्याद अम कहद समयगुन्दर कीद्यो अपह नेतर्स । चुज्यदि नजदमयती किंगे चतुरमागास चिन बसी ।

इति श्री नल दमयती सम्बन्ध भापसदेव कृत सप्तकोटी स्वर्ग वृष्टि ।

४४३५. नलोपास्यान—  $\times$  । पत्रस॰ ४७ । स्ना॰ १२ $\times$ ७ $^3$  इत्रः । भाषा-सस्कृत । विषय— कवा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । स्पूर्ण । बेष्टनस॰ १२५ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर स्थानेर ।

विशेष--- राजानल की कथा है।

४४३६ नागकुमारचरित्र—मस्लिषेस्गः । पत्रसः २२ । बा०१००० ४ दवः । माषा-सस्कृतः । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स०१६७५ ध्रासोज सूदी १ । पूर्णः । बेष्टून स०७० । प्राप्ति स्थान—महास्कीय दि० जैन सन्दिर ध्रजमेर ।

४४**३७. प्रति सं०२।** पत्रस० २६। झा० १है ४४ इल्डा। ले०काल स०१८३० चैत्र सुदी ४। झपूर्ण। वेष्टनस०६६२। **प्राप्ति स्थान**— भट्टाग्कीय दि० जैन मन्दिर स्रजसेर।

विशेष-इसका ग्रपर नाम नागकुमार कथा.भी है।

४४**३ =. प्रति स० ३** । पत्रस॰३= । ग्रा० ६×४ै इश्वा । से∙काल × । पूर्ण । वेष्टन स∙ ३४= । **प्राप्ति स्थान** — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धर्जमर । ४४३६. प्रति सं०४। पत्र स०२७। प्रा०१२४ ५ इञ्च। ले० काल ४। पूर्ण। बेष्टन स०२०७/१४०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

४४४०. प्रतिसं० ५ । पत स० २-१५ । प्रा० ११ 🗙 ४ इञ्च । ले० काल 🗴 । श्रपूर्ण । बेष्टन स० २५३ /१४४ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४४४**१. प्रति सं० ६ ।** पत्रस० ३-२७ । ते•काल स० १६१६ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २४४/ १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—संबत् १६१६ वर्षे गुरु कोटनगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये मट्टारक अश्री गुभचन्द्र शिष्य मृति वीरचन्द्रे स्मृतानावरसी कर्मक्षयार्थं स्वद्रस्तेन लिखित गुममस्त् । ब्रह्म धर्मदास ।

४४४२, प्रतिसं०७ । पत्र स०२-२०। घा०१०४४ इञ्च । ले०काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स०२३६-१२६। प्राप्ति स्थान---दि० जैन समयनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४४४३. प्रतिसं०। पत्र स०२०। ले० काल १६०७। बपूर्ण। बेष्टन स०४७/१२६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपर।

विशेष-प्रशस्ति अपूर्ण है। "बहा नेमिदास पुस्तकसिद।"

४४४४. प्रति स० ६ । पत्र स० २६ । म्रा०१०  $\times$  ४ $\frac{1}{4}$  इन्छ । ले० काल सं०१७१४ । पूर्ण । बेप्टन म० २० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन म्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रशस्ति निम्त प्रकार है--

मवन् १०१४ वर्षे भादौ माने इस्एपक्षे ५ बुधे श्री मूनसबै बलास्कारगरो सरस्वतीगच्छे कु दकु दाचा-यान्वयं तत्पट्टे मट्टारक श्री पधकीति तत्पट्टे श्री सकनकीति साधु श्री द्वारकादास ब्रह्म श्री परमस्वरूप प्रनावरामेख निवित । विनवपुर प्रामेष् मध्ये श्री प्राध्वेनाथ चैत्यालय स्नम सबत ।

४४४५. नागश्रीकथा—क निमदत्त । पत्रस० २० । ब्रा० १०३ $\times$ ४१ इ.च । भाषा -सस्कृत । विषय कथा । र०काल  $\times$  ले० कान  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० ३१ । प्रास्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

४४४६. प्रति सं०२ । पत्रस०४१ । प्रा०१० $^{3}_{2}$  $\times$  $\chi^{2}_{3}$  इन्छ । ले० काल स० १६०८ । पूर्ण। बेष्टन स०२२, १२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोटडियो का, हुगरपुर ।

प्रशस्ति — सबन् १६० = वर्षे पौष गृरी १४ तिथी मृगु दिने श्री धनोधेन्दुने श्री ध्रादिनाय चैरयालये मूलमने मागरीमच्छे बलास्कारमणी श्री कु बकु दावार्यानये म० पप्रमुदिश्वा तत्पट्टे भ० देनेन्द्रकीतिदेवास्तत्पट्टे म० श्री विद्यानदिदेवा तत्पट्टे म० श्री स्मारीतभूषण्देवा तत्पट्टे प० श्री लक्ष्मीचरदेवा तत्पट्टे म० श्री वीपचरदेवा श्री जिनवन्देन जिल्लापित ।

४४४७. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६ । घा० १०× ४ हे इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं० १२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मंदिर चौगान बूदी ।

४४४८. प्रतिसं०४ । पत्र स०१८ । घा०१० $\times$ ४ $_0^2$  इञ्च । ले० काल स०१६४२ माहसुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स०२४१ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

विशेष---प्रशस्ति सुन्दर है।

४४४६. निर्भरपंचमी विधान - × पत्र स० २। ग्रा० ११ ×५२ इञ्च। माधा-प्रपन्न सा विधान - ×। ले० काल ×। पूर्णा वेष्ट्र स० ६१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर दीवानजी कामा।

४४५०. निर्दोषसप्तमी कथा—ब्रह्म रायमस्ल । व्यस्त २ । मा० १२ $\times$ ५ै इख । माषा— हिन्दी पद्य । विषय-कथा । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स० ५१–१८६ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायीम्ह (टोक)

### ध्रन्तिम---

जिनपुराण मह इम सुण्णाौ, जिहि विधि बहारायमल भण्यौ ।।५६।।

४४५१. निशिमोजनकथा—िकशर्नासह । पत्रस॰ २-१४ । प्रा॰ १४ × ६३ इस । भाषा—िहन्दी । विषय-कथा । र०काल स॰ १७७३ सावन सुदी ६ । ने॰ काल स॰ १६१८ । प्रपूर्ण । वेष्टन स॰ १२८ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन मन्दिर बयाना ।

विशेष--- प्रादि प्रन्त भाग निम्न प्रकार है---

प्रारम्भ---

माषुर बस तराय बोहरा को परधान । समही कत्याणगव पाटनी बलागिये । रामपुर बास जाको भुत मुख्येद गुपी । ताको मुत कृष्णामह कविनाम जानये । तिहि निगमोजन स्थान बत कथा मुनी ता कीनी चौधई मुखगाम प्रमानिये । भूलिर्मुक स्रक्षर जु घरे ताको बच जा को बीच व्यो विननी हमारी मानिये ।

#### 22000

प्रयम नागिश्रय चित्र देवभाषा मय सोहै सिष्मदि शिष्य नेमिदन करता बुण जोहै। ता अनुनार जुरबी वर्षानका दसस्य पहित । वत निवाभोजन त्यजन कथन जामें गुण महित । चौपई वस दिह स्प्य को कियो विज्ञानिह नाम कवि जो पढ़य मुनय सरक्षान कर अनुक्रम शिव लह सबि ॥॥॥

### दोहा

सवत सर्वसै अधिक सत्तर तीन सुजान । श्रावन सित जटवार भृग हर पूर्णता ठान ।।६॥ कथा साहि चौपर्ड च्यारसे एक वलानी इकतीसापन छप्पन दोय नव बोधक जानी । सब इक टीर किये नारसे सजह गनिये मुज मित लघु कछु छद स्थाकरए। न भनिये। बढ घट जबरन पद मान जो होय जलविमो दीनती कर मुढ पढेंबे तज्ञ कर जीर करें किव विनती।। रचना दक्षरा नाम 'नामश्रीकथा भी है

४४५२. प्रतिसं०२ । पत्रस० ३६ । ष्रा०१० $\times$ ५२ इंच । ते०काल सं०१८२ फागुन सदी १३ । प्रां । वेष्टन स०१०६ (ब्र) । प्राप्ति स्थान—य दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)

४४५२. प्रति सं० ३ । पत्र म० ४२ । प्रा० ६ $\times$ ४  $^1_2$  इन्त्र । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । प्राफिन स्थान—हि॰ जैनपनायनी मन्दिर करौली ।

४४५४, प्रति सं० ४ । पत्र स० ३२ । घा० ६×६ इश्वा । ले० काल सं० १६४० । पूर्ए । केटन स० ७२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर दनी (टोक)

४४**५५. प्रतिस०५ । पत्रस**्ट्रै२ । झा० १२×५३ इ.च । **ते०काल** स० १६७६ भादवा बुदी २ । पूर्णे । बेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पचायती मन्दिर झलअर ।

४४५६, प्रति सं०६। पत्रसं०२१। लेक्काल सि०१६०५ -वैणाख बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन म०१०। प्राप्ति स्थान---वि० जैन पचायती मन्दिर धलवर।

४४५७. प्रति सं० ७ । पत्र म० १७ । ते० काल म०१८१६ । बेष्टुन स० ६१ । प्राप्ति स्थान-

४४५६. प्रति सं०६ । पत्र म०३१ । ग्रा०१०३४५ इख । ले० काल स०१६४७ बुदी १३ । पर्यो । बेवनम० ६६ ।प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैसाबा ।

४४५६. प्रति स० ६ । पत्रस० २३ । ले॰काल सं० १८४४ पूर्ण । बेष्टन स० ५७६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन पत्रावती मदिर भरतपुर ।

४४६०. निशि भोजनकथा—भारामल्ल । पत्र स० १२। घा० १० $^3$  $\times$ ६ $^1_7$  रख । माषा— हिन्दी । विषय—कषा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३३० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवनजी कामा ।

४४६**१. प्रति सं०२ ।** पत्र म०१२ । घा०१३× ८ इश्वा । ले०काल स०१६५२ । बेष्टन स०४६/२५ । **प्राप्तिः स्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायती दूती (टींक) ।

४४६२. प्रति सं०३ । पत्र स०१७ । ग्रा०१०×३ ईडला। ले० काल स०१६०२ । पूर्णा। बेष्टतसं०४२ । प्राप्ति स्थान—तेरहपयी दि० जैन मन्दिर नैरावा।

४४६**३. प्रति सं० ४ ।** पत्रस० १३ । ले॰काल 🗴 । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**— तेरहवंपी दि० जैन मन्दिर नैराया ।

४४६४. प्रतिसं० ४.। पत्रस० १२। आा०१२ ४६ इचा भाषा-हिन्दी। पद्या विषय-कथा। र०काल ४ । ले०काल स० १६४७ । पूर्णा वेष्टन स० १६६। प्राप्ति स्थान-दि० जैन सन्दिर श्रीमहानीर कृंदी। ४४६५. प्रतिसं०६ । पत्रस०२ –१४ । ग्रा०१२४७ इ.च । लेक्जलस १६३७ । पूर्ण। वेष्टनसं०१७० । प्राप्तिस्थान – दि०जैन मदिरश्री महावीर वदी।

४४६६. प्रति सं ०७ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । बेष्टन स० ७६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी व दी ।

४४६७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २६ । ग्रा० ७३ × ४ १ इव । ले०काल स० १६१६ ग्रगहन बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टुन सं० ११६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्वामी, बुदी ।

४४६८. प्रतिसंo ६। पत्रसंo १३। घा० १० ४७ ई डवा। लेब्काल स १६३४ सावन बुदी १३ । पूर्या । बेष्टन सo ११३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बुदी।

विशेष--दो प्रतियो का मिश्रसा है।

४४६**६. प्रतिसं०१०।** पत्रसं०२१। ग्रा०५ × ५३ इचा ले० काल स०१६६१। पूर्ण। वेष्टुत स०१२७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चीगान वृदी।

विशेष-चदेरी में प्रतिलिपि हुई थी।

४४७०. प्रतिसं० ११ । पत्र स० १४ । ग्रा० १० ३ ४ ७ ३ इश्व । ले० काल imes । पूर्ण । बेहन स० १०७ । प्राप्टिस्थान — दि० जैन मंदिर आदिनाण ब दी ।

४४७१. प्रति सं० १२ । पत्रस० ७ । ब्रा० ११×५ इन्छ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०१/६७ । प्राप्ति स्थान—समबनाथ दि० जैन मन्दिर जयसपुर ।

४४७२. प्रति स० १३ । पत्र स० ६ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । पं० स०४०२ १०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर जदयपर ।

४४७३. निशिमोजन कथा— × । पत्र स० १६ । घा० ६२ ४३ इन्हा । भाषा - हिन्दी (पदा) । विषय —कथा । र०काल × । ले०काल म० १८५७ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ८१ । प्राप्ति स्थान— विक जैन महिर कोट्यों का नैयादा ।

४८७४. नंदीस्वर कथा—शुभचन्द्र। पत्रस०पत्रस०११। ग्रा० १० $\times$ ४ इत्र। भाषा— सस्कृत। विषय—कथा। र०कान  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६०। प्राप्ति स्थान— प्रग्रवान प्राप्तान दि० जैन मन्दर भनवर।

विशेष - इमे प्रशृह्मिका कथा भी कहते है।

४४७**४. नंदीरबर जत कथा।** पत्र म० ६६ । प्रा०१२२् $\chi$  ५ इत् । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेस्टन स० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—प्रश्रवाल दि० जैन मन्दिर उदरापुर।

४४७६. नंदीस्वर तत कथा  $--\times$  । पत्रसः २–६ । प्राः १० $\frac{1}{2}\times \frac{1}{2}$  इच । भाषा– संस्कृद । विषय-कथा । रं०काल  $\times$  । ले०काल सः १२२७ ज्येष्ठ बुदी २ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सः २६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगान व दी ।

विशेष-जनपुर मे प्रतिनिपि हुई थी।

४४७७. नन्दीश्वर कथा—  $\times$  । पत्रम० व । मा० १०  $\times$  ४ $\frac{1}{4}$  इच । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । सै०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २०६/वध । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटिक्शों का इंगरपर ।

४४७८. पंचतंत्र—  $\times$  । पत्रस॰ २-६२ । मा० १० $^2_1 \times Y^2_2$  ह च । साथा—संस्कृत । विषय— क्या । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्ट्रन स० ६५८ । प्रास्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मनित प्रतिमेर ।

४४७६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १०३ । मा० १० $\frac{3}{6} \times \frac{6}{5} \approx 1$  लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ११३३ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमर ।

४४६०, पत्रमोकाया टिप्पर्ग-प्रमाचन्द्र । पत्र म० २-२० । आ० १०  $\times$  ४६ इश्व । आप-प्रपन्न स, सस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । सपूर्य । वेष्ट्रन म० २१६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोक) ।

४४८१. पचपरवी कथा - बहा विनय । पत्रस $\circ$ ६। म्रा $\circ$ १ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इं $\pi$ । माथा-हिन्दी प $\circ$ । विपय-कथा । र $\circ$ कान म $\circ$ १७०७ सावग्र मुदी २। ले $\circ$ कान  $\times$ 1 पूर्ण । बेष्टन म $\circ$ १८२। प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर फतेहपर शेलावाटी (शीकर) ।

विशेष--रधनाथ बाह्यगा गुजर गीड ने लिपि की थी।

ग्रन्तिम—

सनरामं सनोमरं कही मावग बीज उजाली सही। सन माहे थरियो सानद, सकल गोठ मुक्करी जिला द। भूलमध गछ महलतार, महावली जीन्यो जिहरार।। स्वासकीर समें गळुराती, सोमें दिगवर नवें नरपति। माथ मिघाडो रहे छतुम, मेवा करे बर्डरा भूग। महावती छएगुती धार, सेवें चरणा फिरन है लार।। ताम जिप्प विरामें बहुत्यार, करी कथा सब जन हितकार। वोडी वृद्धि रसीकी चालि, जाएँ। गोन वाकलीवाल। सानद्युप छुं धानद थानि, मना महाजन घरम निधान।। देव शाहब गुरु माने बालता, गुरुवाहक रू मकलमुजाण। पांच परवां कथा हरनकर कही मिकक हित जानि।।

४४६२, पचास्थान—विष्णुदस । पत्र म०१८६ । घा०१०३ × ४ दखा । भाषा-सस्हत । विषय-कथा । र०काल ः । ने० काल स०१८५ - । पूर्ण । वे० स०१६/१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—सहजराम व्यास नं तक्षकपुर में प्रतिलिपि की थी। द्रोग्रीपुर (दूनी) में पार्वनाथ के सन्दिर में नेसीबद के पठनार्थ लिखा गया था। े ४४६३. पंचालोनी क्याह—मुरासागर सूरि। पत्र स०१। प्रा० ६२४४ इचा प्राथा— हिन्दी पद्य । विषय-कथा। २०काल 🗴 । ले० काल ४। पूर्ण । बेहन सं० २४८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर प्रमिनन्दन स्थामी, बुंधी।

विशेष---२४ पद्यों में वर्णन है।

द्मिन्सम् सप्तास्मा शलमइ पंचालीनो व्याह । कहि श्री गरासागर सरि जी गजपुर माहि उछाह ।

४४६४. परंदारो परशील सङ्काय कुमुदचन्द्र । पत्र स०१। प्रा०१०  $X_{c}^{2}$  दुर्था। माया—हिन्दी। विषय—कृष्य। र०काल X। ले०काल स०१७६७। पूर्ण। वेष्टनस०२४३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

४४८५. परदेसी राजानी सङ्काय $-\times$ ३ एव स० १। ग्रा० १०  $\times$   $^1$ १ इव । भाषा-िहन्दी । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४४। प्राप्ति स्थान-िद० जैन सिंदर बोरसली कीटा ।

४४८६. पर्वरत्नावलि—जपाध्याय जयसागर । पत्रस० २०। झा० ११ ४५ इथा । माषा-सस्कृत । विषय-वत कथा । र०काल सं० १७४८ । ले०काल स० १८५१ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १२५ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन सदिर बोरसली कोटा ।

विशेष --कांटा के रामपुरा में वामुपूज्य जिनासय में प० जिनदास के शिप्य हीरानद ने प्रतिकिपि की ।

४४६७. पस्य विद्यान कथा —  $\times$ । पत्रस० ७। प्रा० १० $\frac{3}{7}$   $\times$  ४६ च । भाषा —सस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ८। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

४४८८, पत्यविधान कथा— खुशालचन्द काला। पत्रस० १४६। ग्रा० १०४७ इच । माषा—हिन्दी (पदा)। र०काल स० १७८७ फागुग, वृदी १०। लेकाल स० १६३८ मावग मुदी १२। पूर्ण। बेगन स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—पचायनी दि० जैन मन्दिर प्रलवर।

विशेष-- ग्रक्षयगढ़ मे प्रतिलिपि की गयी।

४४८६. पत्यविधान स्रतोद्यापन कथा—श्रुतसागर । पत्रसः ४८ । धाः १२ x ४ रेडस्य । भाषा—सन्द्रन । विपय—कथा । र०काल x । ले०कान स० १८२६ काती सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८६ । प्राप्ति स्थान—भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर ध्रजमेर ।

४४६०. पत्यवत फल $-\times$  । पत्रस० ११ । प्रा० ११  $\times$  ४१ इरूव । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा ।  $^{7}$ ० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६६२ । प्राप्ति स्वान — भट्टारकीय दि० जैन सिंदर ग्रजमेर ।

४४६१. पुष्पात्स्य कथाकोश-मुमुखुरामचन्त्रः । पत्र सः १४६ । मा० १०३ 🗶 इञ्च । मापा-संस्कृतः । विषय-कथा र०कालः 🗶 । ते०कालः स० १८४० वैशालः सुदी ३। पूर्णः । वेष्ट्न सं० १०७२ । प्राप्ति स्थान-भट्टारकीय वि० जैन मन्दिर प्रजमेरः । ४४६२. प्रतिसं० २ । पत्रस० १३४ । प्रा० ६ हे ४ ५ इश्व । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १०६४ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

४४६३. प्रति सं०३ । पत्रस०११४ । प्रा० १२ $\frac{1}{5}$   $\times$  ५ इ.स. । ले० काल सं० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन स०२०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागरी बुंदी ।

विशेष—बूदी मे प्रतिलिपि हुई थी।

४४६४. प्रति स० ४। पत्र स० १५६। म्रा० १२ $\frac{1}{2}$   $\times$   $\frac{1}{2}$  इल्ब । ले०काल स० १८३६ ज्येष्ठ बुदी २। पूर्ण । बेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जनपुर ।

विशेष-जयपुर नगर के लक्कर के मन्दिर में साह सेवाराम ने प० केशव के लिए प्रतिलिपि की थी।

४४६५. प्रति सo १ । पत्र सo २४६ । याo १० $\frac{2}{9}$   $\times$  ४ $\frac{3}{9}$  इन्छ । लेo कालमo १६६४ वंत सुरी १ । पूर्ण । बेहन सo ६२ । प्राप्ति स्थान— दिo कुंत मन्दिर राजमहल (टोक)

४४६६. प्रति स० ६ । पत्रस० १०३ । प्रा० १२ imes ५ इ.स. । लेबकाल imes । श्रपूर्ण । बेष्टन स० ४११ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूरी ।

४४६७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २३६ । घा० १०  $\times$  ४ $\frac{1}{\epsilon}$  इला । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २२-३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

४४६८. प्रतिसं० म । पत्रस०१८७ । प्रा०१० $\frac{1}{2} \times Y^2_{\gamma}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनसं०१२६ । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४४६६. प्रति सं०६ । पत्रस०१४६ । प्रा०११४५ इञ्च । ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण । बेष्टनसं० ४२ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मदिर दीवानजी कामा

४५००. प्रतिसं० १० । पत्र स०"ः । ग्रा० १३ $\times$ ५ $^2$  इंच । ले०काल स० १५६० बैशास सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन प्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

स्वरित भी मुननथे सररवतीगच्छे बलारकारागी भी कुंदकू दावार्याचानवरे म० सकलकीति तत्यट्टे महारक भी बुवनकीति नत्यट्टे भे शुभवन्द प्रवर्तमति स्वत् १४६० वर्षे वंशान मृत्री ६ जुके ईडर वास्तव्ये हु वह ज्ञातीय साह लाला भार्चा आविका वाडिकरे तथी पुत्री वाहि साला भार्च आविका वाडिकरे तथी पुत्री वाहि साला मार्च आविका वाडिकरे तथी पुत्री वाहि साला नत्य भार्या श्राविका हांसवदे प्रतास्या पुत्रवास्य क्षाव्या कर्षा वाहिकर होसवदे प्रतास्या पुत्रवास्तव्या कर्षा कर्षा वाहिकर होसवदे प्रतास्या पुत्रवास्तवशास्त्रिक प्रतास वाहिकर होस वाहिकर होसाय प्रवास वाहिकर होसाय होसाय प्रवास वाहिकर होसाय होसाय प्रवास वाहिकर होसाय होस

४५०१. पुष्पालवकथाकोशः भाषा—बौतलरामः कासलीबाल— × । पत्र स० १४७ । ष्रा० १०३ ४४ हे इला । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र०काल स० १७७७ भादवा बुदी १ । ले०काल सं १६५५ मगसिर बुदी १२ पूर्ण । बेष्टन स० १५४४ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर घजमेर ।

बिरोध---कवि की यह प्रथम कृति है जिसे उन्होंने अपने आगरा प्रवास में समाप्त किया था।

४५०२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २०० से २८८ । प्रा० १० $\frac{1}{4}$ ४७ $\frac{1}{4}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बैच्टन स० ६६५ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४**५०३. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० २०० । बा० ११८७ इन्छ ।ले० काल 🗴 । ब्रपूर्णे । वेष्टन स० १६१६ । **प्राप्ति स्थान** — भट्टारकीय वि० जैन मन्दिर ब्रागेर ।

४५०४. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २४४ । घा० १० ४६ १ इ.च । ले०काल स० १६४१ घाषाढ बुदी १३ । पूर्ण । बेहन स० ४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बृदी ।

विशेष-पुस्तक हेमराज बती की है। छवडा में प्रतिलिपि हुई थी।

४५०५. प्रति सं० ५ । पत्र स० २१० । आ० १० × ५ इन्छ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर (वृदी)

४**५०६. प्रति सं०६।** पत्र स० १२४-३६४। घा० ६४६ इ.च.। ले०काल 🗴 । सपूर्ण। वैष्ठत स०१४३। **प्राप्ति स्थान –** दि० जैन मन्दिर राजमहल (टीक)

४५०७. प्रति सं० ७ । पत्रस० २४३ । प्रा० १० $\frac{1}{2} \times G_{0}^{2}$  दश्व । ले० काल स० १६३४ घासोज सुदी १४ । पुर्ण । बेप्नत स० ४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्धनाय मंदर टोडारायमिंह (टोक)

विशेष-मैक्लाल पहाडिया चह बाले ने प्रतिलिपि की थी।

४५०६ प्रति सं० ६। पत्रस० ३३७। ब्रा० १०३ $\times$ ६ इथा। ले०काल  $\wedge$ ा पूर्ण। बेष्टनसं० १०६। प्रापित स्थान — दि० जैन पचायती दुनी मन्दिर (टोक)

विशेष—- बन्तिम पृष्ठ ब्राघाफटाहबाहै।

४५०६. प्रति संo ६। पत्रस० २१६। ग्रा० १० र्रे ४६ र्रे उला। ले०काल म०१६०४ भादवा सुदी १०। पूर्णे। बेष्टनसंo १२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर दृती (टीक)

४५१०. प्रति सं० १०। पत्र स०२२३। ग्रा०१३×६ दश्या ने० काल म०१८२३ बैग्राख बुदी ७। पूर्मी । बेष्टन स०२१। प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर चोषरियान मानपुरा (टोक)

**४५११. प्रति सं० ११ । पत्रस०** ३५६ । या० १० ४ ६ इखा । ने०काल स० १८२३ । पूर्ग्। वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान** - वि० जैन मन्दिर चौबरियान मालपुरा (टोक)

४५१२. प्रति स०१२ । पत्र स०२२ । बा०११४ ६ ॄै इश्वाले काल ८ । ब्रपूर्ण । वेक्तसं०७६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर कोटडियो कानैणवा

विशेष--गृटका रूप मे है लेकिन प्रवस्था जीरां है।

४**५१३. प्रतिसं०१३** । पत्रस०२४६ । मा०११x ५ इला। ले०काल म०१८३२ । पूर्ण। वेष्टुन स०१०१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर भाववा (गज०)

४**५१४. प्रतिसं० १४। पत्रस०** १२५। लेब्बाल imes। अपूर्ण । बेष्टन म**०४। प्राप्तिस्थान**— दि० जैन वडा पत्रायती मन्दिर डीग ।

४५१५. प्रति सं० १५। पत्र म० २६१। ते० काल स० १८७० ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स०२१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती बडा मदिर डीग ।

४**५१६. प्रति सं० १६** । पत्र सच्या १५१ । लेकाल स० १८६२ ग्रासोज मुदी ५ । पूर्ण । बे**ष्ट**न सं• ६२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन नेरहपथी मदिर बमवा । ४**५१७. प्रतिसं० १७** । पत्र स० ३५२ । द्या० १२ × ५१ इन्ड । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष - बयाना में प्रतिलिपि हुई थी।

४५१८. प्रतिसं० १८ । पत्रसं० ३२६ । झा० १० × ७ इञ्च । ले० काल स० १८६६ झाषाढबुदी २ । पुर्णु । वेष्टन स० ६६-१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा वीसपथी दौसा ।

विशेष--थागा निवासी गोपानलाल गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

४५१६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ३२४ । घा० ११४ ५ हुः च । ले०काल म० १७८म मगसिर बुदी म । पूर्ग । बेप्टन स० २३ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष--चोहरी में लिखा गया था।

४५२०. प्रति सं० २० । पत्र स० १८७ । मा० १२ $\{\times u\}$  इश्व । ले० काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेष्टत स० २५३ । प्राप्ति स्थान—िंद० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४**५२१. प्रतिसं० २१।** पत्रसः १-३६। झा० १२४५ इ**था। ले०काल ४**। श्रपूर्णं। वेष्टन स॰ ४५। प्राप्तिः, स्थान — दि० जैन मदिर वयाना।

४५२२. प्रतिसं०२२ । पत्र स०२ ८४ - ३ स्थ । ले०कालः स०१ ८५७ चैत सुदी६ । प्रपूर्णः । वेष्टनसं०४६ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर बयाना ।

विशेष — जीवारामजी मिश्रा वैर वालो ने प्रतिलिपि कराई थी।

४५२३ प्रतिसं०२३। पत्र स०२८०। या०११ 🗴 ५३ इत्र । ले०काल 🗴 र पूर्ण । बेष्टुन सं०४४६। प्राप्ति, स्थान—दि०जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेच-- प्रनथ प्रमस्ति अपूर्ण है किन्तु महत्वपूर्ण है।

४५२४. प्रति स० २४। पत्रस० १८३। घा० १२ $^{\circ}_{1}$  $\times$ ७ $^{\circ}_{2}$  इञ्च । ले॰काल स० १६२६ पौष बढी ४। पूर्ण । बेप्रन स० १४२। प्रास्ति स्थान---दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

४५२५. प्रति सं० २५ । पत्र म० २३६ । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । बेप्टन सं० ३०२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

४५२६ प्रतिसं० २६ । पत्र म० २६५ । ले॰काल स० १८१३ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ३०३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रचायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- बेनीराम चादवाड ने ग्रन्थ लिखवाया था।

४५२७ प्रति स० २७ । पत्र स० १५६ । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३१४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पचायनी मंदिर भरतपुर ।

४५२ ८. प्रति सं०२ ८। पत्रस०१३४। ले०काल  $\times$ । धपूर्णं। वेष्टन सं०३२४। प्राप्ति स्थान—र्द० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर।

४४२६. प्रतिसं० २६ । पत्र सं० १०६ से २२३ । ले० काल 🔀 प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३२५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५३०. प्रतिस्रं० ३०। पत्र सं० १२६। ले० काल १८८६। पूर्ण । वेष्टन स० ३२६। प्राप्ति स्यान — दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५३१. प्रतिसं० ३१ । पत्रस० २०१ । घा० १२ × ५ १ इञ्च । ले०काल स० १८७१ ब्राघाड सदी ७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १ । प्राप्ति रचान—दि० जैन ब्रग्नवाल पचायती मन्दिर, धलवर ।

४५३२. प्रति सं० ३२ । पत्र स० २८० । लेकाल स० १८६६ बावाड सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७/४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पश्चायती मदिर घलवर ।

४**५३३. प्रति सं० ३३।** पत्र स०२६०। ले० काल × । पूर्णं। बेष्टन स०४८/८५। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन प्लायसी महिर ग्रलवर।

४**५३४. प्रतिसं० ३४ ।** पत्रस० २६० । घा० १२×४<sup>3</sup> इचा । ले०काल स० १०५८ चंत्र शुक्ला १ । पूर्ण । बेम्नसं० १४४ । **प्राप्ति स्यान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मदिर ग्रनवर ।

४**४३४. प्रतिसं०३४ ।** पत्र स०४०६। घ्रा०११र्४४ इचा। ले०काल सं०१६४२। पूर्या। बेग्रन स०२१२-६४ । **प्राप्ति स्थान**—वि०जैन मन्दिर कोटडियो का हुगन्पुर।

**४५३६. प्रति सं० ३६।** पत्र सं० २६४। म्रा०१२हूँ ४६१ इ.ख.। ने० काल सं०१८८४ म्रासोज सुदी १०। पूर्ण। बेप्टन स०३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनेहनुर केलावाटी (मीकर)।

विशेष—फतेहपुर वासी हरकठराय भवानीराय श्रप्रवाल गर्ग ने मिश्र राधाकृष्णा से सामनी नगर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

४५३७. प्रति सं० ३७ । पत्र स० १–१८६ । घा० ६×४६ ६७३ । ले०काल  $\times$  । धपूर्ग । वेष्टन सं० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृंदी) ।

४५३८. प्रतिसं० ३८ । पत्र स० ३३६ । बा० ११४७ है । ले० काल स० १६४३ साबग्ग बुदी ३ । पूर्यो । वेप्टन स० १-७४ । **आप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

४५३६. प्रति स० ३६ । पत्रस० २३४ । बा० १०३ ४४ इखा । ले०काल स० १६४६ । पूर्ण । बेहुनसं० ६५/४५ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष — शेरगढ नगर मे श्राचारजजी श्री मुखकीत्तिजी बाई रूपा चि० तत् श्रिप्य पटित मानक चन्द लिखी।

४५४०. पुण्यास्त्रबरूषा कोश— ४ । पत्रस० ३२७ । स्रा० १२१ ४४ है डखा । भाषा-हिन्दी गद्या । विषय-कृषा । र०काल ४ । ने०काल स० १०१६ वैशाल सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्चायती मन्दिर करीली ।

४४४१. पुष्पास्त्रवक्षधा कोश $-\times$ । पत्र म० ८४४ । प्रा० ७ $\frac{3}{5}$ × $\frac{3}{5}$  इख । भाषा-हिन्दी । ते० काल स० १८७० भादो सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स०४१/४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सोगाणी मन्दिर करीली ।

विशेष -- लकडी का पूट्रा चित्र सहित बडा मृन्दर है।

४५४२. पुण्णासन कहा—पं० रह्मभू । पत्र त० २-६१ । आवा-अपन्न गः । विदय-कवा । र०काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । बेटून स० ११७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष-सीम लगते से ग्रक्षरों पर स्याही फिर गई है।

४५४३. पुरंदर कथा — माबदेव सूरि। पत्र सं०७। बा०११६ ४४ इथा। भाषा — हिन्दी पद्या विषय — कथा। र०काल ४ । होका काल ४ । पूर्णी। वेस्टन स०१०६ ६ । प्राप्ति स्थान — कि अर्जन प्रतिर कमा नीपध्यो निर्मा।

४५४४, प्रतिसं० २ । पत्र सं० १३ । लेक्काल स० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पवायती मन्दिर मरतपुर ।

४५४५. पुष्पांजलि कथा सटीक $-\times$ । पत्र स०४। धा० १० $\frac{7}{2}$ × $\frac{1}{2}$  इख । भाषा— प्राकृत-सस्कृत । विषय—कथा । २०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६०। प्राप्ति स्थान- मट्टाफ्कीय दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

विशेष--प्रति म स्कृत टीका सहित जीएाँ है।

४५४६, पुष्पांजलि विधान कथा— X । पत्रस० ११। ब्रा० ११४४६ इ.च.। भाषा— सस्कृतः । विषय—कथा । र०काल X । ले० काल X । पूर्णः । वेष्टन स० १५७ । प्राप्ति स्थान—ध्यवाल दि० जैन मन्तिर उदयपुर ।

४५४७. पुष्पांजलि दत कथा—खुशालचन्द । पत्रस्त १३ । घा० ५२४७ इख । भागा— राजस्थानी (हू हारी) पद्य । विषय-कथा । र०काल 🗙 । ले०काल 🗴 । बेष्टनसं० १५४ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर होटा दीवानजी बयाना ।

विशेष-- वानतराय कृत रतनत्रय पूजा भी दी हुई है।

४५४६. पुष्पांजली बत कथा—गंगादास । पत्र स० ६ । प्रा० १०६४५ १३ द न । आपा— सम्ब्रुत । विषय—कथा । २०काल × । से०काल सं० १८६६ फागुरा सुदी १० । पूर्ण । बेट्न सं० ७५/ १०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडागार्थास्ट (टोक) ।

४५४६. पुष्पांजलि **वत कथा--मेधावी** । पत्रसं० ३१ । मा० १०१ ४४६ एथा । भाषा — सस्कृत । विषय---कथा । र०काल स० १५४१ । ते० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**---वि० जैन मन्दिर रोवानको कामा ।

४५५०. पूजा कथा (सैंडक की) व जनहास । पत्र तं ६ । म्रा॰ ११४४ दश्व । भाषा – हिन्दी । विषय -कथा । र०काल ४ । तें० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३०४-१०६ । प्रास्ति स्थान---सभवनाथ दि॰ जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रित प्राचीन है।

४४४२. प्रद्यान्न कथा प्रबन्ध—संव वेबेन्द्रकोत्ति । पत्र सव्धर्थ । साया-हिन्दी । विषय-कथा । रवकाल सव्धरुर चैन सुरी ३ । लेवकाल सव्धर्भ १ । पूर्ण । वेष्टन सव्धर्भ १०३ । प्राप्ति स्थान—दिव्योन सन्दर कोटिंडयो का इंगरपुर ।

गुटका साइज है । मलारगढ में ब्रासाद ब्राह्मरूस ने प्रतिलिपि की थीं।

४५५६. प्रियमेलक चौप $\xi$ —  $\times$  । पत्रस०००। ग्रा०५ $\times$ ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कया। र० कास  $\times$  । से०कास  $\times$  । श्रपूर्णः। वेष्टन स०३७४। प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपूर ।

विरोष—गुटका है। दान कथा में प्रियमेलक का नाम ग्राया है एक दान कथा और भी दी हुई है।

४५५४. प्रियमेलक चौपई—समयसुन्दर । पत्र स०६। ग्रा० १०३४५३ इवा। भाषा—
राजस्थानी (पदा)। विषय—कथा। र० काल सं० १६७२। ले∘काल सं० १६००। पूर्ण। वेष्टन सं० १३।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर नेरदण्यी दौसा।

मंगलाचरस-

प्रस्म सद्गुरु पाय, समस् सरसती सॉमस्सी। दान घरम दो पाप, कहिस कथा कौतक भस्सी। घरमा माहि प्रधाना, देता रूडा दीसियड। दीघउ वरसी दान, श्ररिटन दीक्षा अवसरड।

सोरठिया दोहा-

उत्तम पात्र तड एह्, साधन इदी जड नूम. तड।
लहिक्द लाखि प्रदेह, घटनिक दान जड प्रापियह ।।
पनि मीठा धाहार सरवार देश्यों सावना ह ।
सुख लहिस्यट श्रीकार, फल वेश्यों सावना ह ।
प्रियमे माहि प्रसिद्ध, मुिणपद दान कथा सदा ।
प्रियमे माहि प्रसिद्ध, सरस घणु मन्वन्य छुई ।।
मुण्ड मिनड जड नीक्ष, मुणुड जे अप्टस्स्य है।
मुण्ड प्रमार क्षित्र सरस घणु स्वान्य स्वान्य ।
स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य ।
स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य ।
स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य ।।

पार्विगी लागी मुन्ह प्यास ॥१॥ पार्गिरि पायज हु तस्सी थई खिएा एक मड नल माय जीएा । कठ मुक्द काया तपर्डार जीसट बोल्यज न जाय ॥

वृहा---

×

कथा पाट मू की किहर कातरहितकुमार। नगर कुमर ते निरखता निरखी तिए हे नारि॥ के इक दिन रहना थका विस्तरी समलइ बाद। कुमरी किया त्रिणा तपस्या करइ परमारथ न प्रीखना॥ बोल एक बोलइ नहीं दिव्य रूप वेह। प्रभागन की मारिण घइ नउते लायद तेह॥

×

×

×

राजामती ग्राबी रली साचउ गह नज सल । जिम तिम बोली जेड जड चिट पट लागी चिल ॥

ग्रस्तिम प्रशस्ति-

सबत मोल बहत्तरि मेडता नगर मफार। पिरामेलक तीरथ चतपदरी कीधी दान ग्राधिकार ॥ करूर उभावक कीतकीरि ' जेसलपेरा जास । चत्र जोडावी जिसा ए चउनई मूल आग्रह मूलतासा ॥ इसा चीउपई एह विशेष छडरि सगवट सगली ठाम । बीजी चउपई वह देख जोरि नहि सगटन् ना ॥ श्री खरतर गछ सोहता श्री जिमाचन्द्र मरीस । शिष्य मकलचन्द्र सुम दिसारि समयसुन्दर तस् सीस ॥ जयवता गुरू राजिया श्री जिनसिंह मुरि राय । समयमन्दर तस सनिधि करी इम भराइं उवभाव ॥ भगाता गुगाता भावसु सामलता सुविनोद। समयसन्दर कहड सापजर पुण्य अधिक परमोद ।।

सर्वगाधा - २०३० । इति श्री दानाधिकार प्रियमेलक तीर्थ प्रवध सिहलसत वडपई समाप्त ।। रावत १६८० वर्षे मार्ग्र मिर मुदी १४ दिन लिखत वर्षमान लिखत । (वाई भगरा का पाना) ।

४४५५, पण्यसार चौपई-पुण्यकीसि । पत्रस० ७ । आ० १०×४ है इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा। र०काल स०१६६० मगसिर मुदी १०। ले० काल स०१७००। पूर्ण। वेष्टन स० २८६। पारित स्थान- दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष--यह सामानेर में रचा गया एवं जाठगा ग्राम में लिखा गया था।

४४४६, बधाष्टमी कथा--- × । पत्रस०३। ग्रा०१२×५ इला। माषा-सस्कृत। विषय-कथा । र०काल 🗴 । ले० काल म० १६४० मादवा बढी ७ । पुर्ण । वेष्ट्रन सं० ४१ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर नागदी बदी।

विशेष-- जैनेतर माहित्य है।

४४४७. वैतालपर्चावशतिका-शिवदास । पत्र स० ३६ । आ० १० X ४ इन्त । भाषा-सस्कत । विषय — कथा । र० काल 🗴 । ने० कान 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४३**४ । प्राप्ति स्थान**— भ० हि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४४४६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४२ । ग्रा० १० x ४इन्च । लेब्काल X । पूर्ण । बेप्रन स० ३०५ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष---२५ कहानियों का संग्रह है।

४४.४६. बैतालपच्चोसी-- × । पत्रस० २०। ग्रा०१० ×४ है इन्द्र । भाषा--हिन्दी । विषय - कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६८६ । प्राप्ति स्थान - भट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

४५६०. प्रति सं०२ । पत्र सं०७ । प्रा०११ $\times$ ४ हुन्छ । ले॰काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स॰ २१३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (बंदी)

२१३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) **विशेष** —प्रति प्राचीन है ।

४५६१. **बकचोर कया — (धनस्त सेठ की कया) नधमल**। पत्रसं०३३ । भाषा— हिन्दी । विषय कथा । र०काल सं० १७२५ प्रायाट सुदी ३ । ले०काल स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टनस०६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहरोयी मन्दिर बसवा ।

४५६२. सक्तामरस्तोत्र कशाः — imes । पत्र स० १२ । भाषा -सस्कृत । विषय-कथा । र०काल imes । लूर्णः । वेष्ट्न सं० ३२/५०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

४५६३. भक्तामरस्तोत्र कया—विनोदोलाल । पत्र स०२२७ । छा०  $\mathfrak{E}^{3}_{\gamma} \times \mathfrak{E}^{3}_{\beta}$  इव । माषा—हिन्दी (ग. प.) । विषय—कथा । ए० काल सं० १७४७ सावण मुदी २ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रणवाल मदिर नैसावा ।

४५६४. प्रतिसं० २ । पत्र स० २०६ । झा० १२ × ५१ इश्व । ले०काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टुन स० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेरहपथी दौसा ।

विशेष ---बसवा मे प्रतिलिपि हुई ।

४५६६: प्रतिः स० ४। पत्र सं० २०४। घा० ११×५ इ.च.। ले० काल ×। पूर्ण। बेष्टन स० ६३। प्रास्तिः स्थान-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

४५६७. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १०८ । घा० ११६ × ५६ इख । लेक्काल × । पूर्ण । वेष्ट्रतसं० २७ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टॉक) ।

४५६ ६ . प्रतिस<sup>°</sup> ०६ । पत्र स० फुटकर पत्र । झा० १० १४६ इ.च. । ले० काल 🗴 । झप्**ग्**। बेपन स० १२ । **प्राप्ति स्थान — अ**ग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर झलवर ।

४**५६६: प्रतिसं० ७ ।** पत्र सं० १८७ । ष्रा० १२ × ७ इश्व । लेखन काल स० १६१४ सावन बदी १२ । पूर्ण । वे०सं० ७३ । प्रा**प्ति स्थान**-स्रवताल पचायती दि० जैन मन्दिर म्रलवर ।

४५७०. प्रतिसं० म । पत्र स० ३१म । ले० काल स० १म६६ चैत मुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १४४ । प्राप्ति स्थान ंदि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष-नालजीमल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

४४७१. प्रतिसं• ६ । पत्रस• १४२ । आ॰ १२४६ इचा। ले॰काल स० १८३६ चैत बुदी ६। पूर्णे । वेगटन सं∘ेरं०। प्रास्ति स्थान-—दि० जैन पचावती मन्दिर बयाना ।

विशेष - श्लोक स॰ ३७६०। प्रधान ग्रानन्दराव ने प्रतिलिपि की थी।

४५७२. प्रतिसं० १० । पत्रस० ४१ । झा० १० $\times$ ५ ६श्व । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेघ्टन सं० ४५. । प्राप्ति 'स्थान—पवायती दि० जैन मदिर कामा ।

४५७३. प्रतिसं० ११ । पत्र स० १३८ । ग्रा० ११ ४ ५ ? इ.च । ले०काल स० १६०४ । पूर्ण । बेष्टन स० ८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलाबादी सीकर । कथा साहित्य ] [ ४६५

विशेष—पं० क्षेमचन्द ने प्रतिलिपि की थी। स० १६२६ मे ग्रनन्त चतुर्दशी के ब्रतोद्यापन में साहजी सदाराम जी के पौत्र तथा वि० ग्रमीचंद के पत्र जोखीराम ने ग्रंथ मन्दिर फरोहपुर में विराजमान किया।

४५७४. प्रतिसं० १२ । पत्रसः० १७८ । मा० १० ४६ इचा । ते०काल सं० १८५४ कास्तिक सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनसः० २५/२८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सौगाणी मदिर करीली ।

विशेष-- २ प्रतियो का मिश्रसा है।

४**५७५. प्रतिसं० १३ ।** पत्र स०१८२ । ग्रा०६ $\frac{1}{7}$ ×६ $\frac{1}{7}$ ६च । ले० काल  $\times$  । पूर्ए । वेष्टन सं०३६-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डोगरपर ।

४**५७६. प्रति सं० १**४। पत्रसं० स० २१३। धा० १२× ५३ इचा। ले० काल स० १८०२। पूर्णे । बेष्टनस० २४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४५७७. प्रति स० १५ । पत्रस० १६६ । प्रा० १३ ${}^3\chi={}^5_{\rho}$  इला । ले० काल  $\chi$  । पूर्ग । वेष्टुनसं० १० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर फतेहपूर शेखावाटी (सीकर) ।

४५७६ सक्तामर स्तोत्र कथा—नशमल । पत्र स० ६१ । आ०६×४ई इसा आया— हिन्दी पद्य । विषय कथा । र० काल स० १८२६ जेट सुदी १० । ले० काल х । पूर्ण् । वेष्टन स० ७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्यायती मन्दिर करोली ।

विशेष--करौली में लिखी गई थी।

४५७६. प्रति स० २ । पत्रस० ५२ । घा० ११ × ४६ इला । ले०काल स० १८२६ । पूर्ण । बेष्टन स० १२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन खंडेलवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष-कल्याग्पुर में बाबा रतनलाल भौसा ने प्रतिलिपि की थी।

४५६०. प्रति सं० ३ । पत्रस० १६८ । लेकाल स० १६२१ । पूर्ण । बेष्टन स० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

४**५६१. प्रति सं**०४। पत्र स०४७। ग्रा०१० $\frac{1}{6}$ ४६ इञ्च। ले०काल स०१५३० फागुन मुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस०१२३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर करीली।

विशेष - बगालीमल छावडा ने करौली मे प्रतिलिपि करवाई थी।

४५६२. महब्बाहुकथा — हिरिकशन । पत्र स०३६ । आ०१२  $\times$  ५ $^2$  इंब । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ले० काल स०१६७४ सावण सुदी ३ । पूर्ण । बेग्टन स०१४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंबी ।

४५६२. भरटक कथा —  $\times$  । पत्रस० १२ । स्रा० ११ ×४३ इ.स. । भाषा-सस्कृत गद्य । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- २७ कथाएं है।

४५६४. **मविसयत्तकहा—धनपाल** । पत्र सं०२-६६ । द्या० ११ $\times$ ५ इन्छ । माथा— मप्तभंग । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वे० सं० ६५७ । प्राप्ति स्थान— मुद्रारकीय दि० जैन मन्दिर म्रजनेर ।

४**४८५. प्रतिसं०२** । पत्रस०१३६ । ग्रा०१० ४ ४ <sup>3</sup> इला। ले० काल ४ । ग्रापूर्ए। वेष्टनसं०२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर मादिनाथ वृदी।

४**५८६. मिवष्यवस्त कथा—ऋ० रायम**रुल । पत्रस० ८०। मा० १ रे ४४ दश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स०१६३३ कार्तिक सुदी १४। लेकाल स०१८२६ माघ बुदी २ । पूर्णे । वेटन स०२४। **प्राप्ति स्थान**—पवायती दि० जैन मन्दिर वयाना ।

४**५८७. प्रतिसं० २** । पत्र स० ४६ । आ० १०×६ १ इ.च. । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । बेष्टत स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैत मन्दिर कोटयो का नैसुखा ।

४५८६. सविष्यदत्त कथा—  $\times$  । पत्र म० २१ । प्रा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ६ $\frac{3}{6}$  इञ्च । प्रापा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रथवाल प्रवासनी सदिर प्रथवर ।

विशेष---३१ से ग्रागे पत्र नहीं है।

४५ वर. मधुमालती कथा — × । पत्र स० २८-१५६ । बा॰ १ × ५ इश्व । माया-हिन्दी प॰ । विषय-कथा । र॰ काल × । ले॰ काल स॰ १६३५ वैज्ञाल बुदी १३ । ब्रदूर्ण । येप्टन स॰ ७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडागर्यासह ।

४५६०. मनुष्य भवदुर्लम कथा—  $\times$  । पत्रस०२। प्रा०१० $\frac{9}{4}$   $\times$   $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस०२७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

**४५६१. मलयमुन्दरी कथा—जयतिलकसूरि।** पत्र स० २-५६। या० १२  $\times$  ४ $_{v}^{3}$  उच्च । भाषा—सन्द्रत । विषय-कथा। र०काल  $\times$  । ले० काल स० १५२०। बेट्टन स० ७६५। प्रपूर्ण। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपर।

विशेष — संय स० ६३२ । सबत् १५२० वर्षे माघ वदि मगले लिखित वा. कमलचन्द्र प्रमादात् त. पाचाकेन मडा ग्रामे श्री रस्तु । शुभमस्तु ।

४५६२. मलयमुन्दरो कथा — × । पत्रसः ४० । म्रा० ११ × ४ । इ.च.। भाषा-मस्कृत । विषय-कथा। रञ्काल × । लेञ्काल सः × । स्रपूर्ण । वेष्टन सञ्दर्ग । प्रास्ति स्थान—दिञ्जन मन्दिर तेरहयथी दौता।

विशेष--४० से आगे पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है।

४५६३. महायक्षविद्याधर कथा—व जिनतास । पत्र स. १० । प्रा० १० 🗴 🖓 इच । भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र० काल 🗴 । ने० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स०१८ । प्राप्ति स्थान — थडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

१**५६४. महावोरनिर्वार्ग कथा**— Xा पत्रस० ४। प्रा० ७ X ४ इव । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र०काल X। ते० काल X। पूर्ण । वेष्टनस० २०१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्खनाय चौगान बूदी।

४५६५. माघवानल कामकंदला चौपई — कुशललाभ । पत्र स० २-१२ । आ० १० × ४१६च । माषा-राजस्थानी । विषय-कथा । र०काल स० १६१६ फागुए। मुटी १४। ले० काल स० १७१४ । प्रपूर्ण । बेष्टन स० २४६ । प्राप्ति स्थान-पि० जैन मन्दिर देवलाता । विशेष---नाई ग्राम मध्ये लिखत ।

४**४६६. प्रतिसं**० २ । पत्र स० ३१ । घा० ६४ ५ <sup>2</sup> इल्डाले० काल स० १८०३ चैत्र बुदी ४ । पूर्णे । बेष्टन स० १४६ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृदी)

४४६७. **माधवानल च**उपई $-\times$ ।यत्रतः = । प्रा० ६ $\frac{1}{5}$  $\times$ ५ $\frac{1}{5}$ १ स्व । माधा-हिन्दी पद्य । विषय-कया । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ७०६ । प्राप्ति स्थान-मस्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष ---प॰ जगजीवन कृशल ने प्रतिलिपि की थी।

४५६ म. मुक्तावली व्यत कथा — सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्रसं० ५ । म्रा० ११ x ४ इश्व । माषा –हिन्दी । विषय-कथा । पूर्णे । वेष्ट्रस० ११६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष -- स्रेन्द्रकीति सकलकीति के णिष्य थे।

४४६६. मेघकुमार का चोडास्या—गणेस । पत्र स॰ २ । झा॰ १० 🗴 ४ ; इस । आषा-हिंदी । विषय-क्या । रुकाल 🗴 । ले॰ काल 🔀 । पूर्ण । वेष्टन स॰ १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिन को सम्बंधी कोटा ।

४६००. मौन एकावसी दत कथा—जहा ज्ञानसागर । पत्रसं० १३६-१६६/३१ पत्र । प्रा० ११४५ इच । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल म० १६६६ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहयथी दौसा ।

विशेष —दौलतरावजी तेरापथी की बहु ने लिखा था।

विशेष -- गिरधरलाल मिश्र ने देवडा मे प्रतिलिपि की थी।

४६०२. **मृगापुत्र सङ्काय**— × । पत्र स०१। ग्रा०१० × ४ इच्छा भाषा-हिन्दी । विषय-क्या । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० २४१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

४६०३. यशोधरक्तथा — विजयकीर्ति । पत्र सस्या १७ । म्रा० ६१ँ  $\times$ ४ $१ँ १ इव । माषा — सस्कृत । विषय —कथा । र०काल <math>\times$  । लेक्काल स०१४६६ माषाव सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स०१४६ । प्राप्तिः स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४६०४. रतनाहमीररी बात—  $\times$  । पत्रस० २४-४१। घा०  $\times$  ४ इख । आया-राजस्थानी गद्य । विषय—कथा। र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४५० । प्रास्ति स्थान-भट्टास्कीय वि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष---बडे ग्रन्थ का एक भाग है।

४६०५. रत्नपाल चउपई—मावितलक । पत्रसं॰ १२ । बा॰ १० $\times$ ४ इच । माया-हिन्दी । विषय—कया । र०काल सं॰ १६४१ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं॰ २५३ । प्राप्तिस्थान—दि॰ जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष--प्रति जीर्ग है।

४६०६. रस्तत्रयवतकया—देवेन्द्रकीति । पत्रस०६। मा०१२४५३ इत्था भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०१४६६ । प्राप्ति स्थान – मट्टारकीय दि० जैन स्रोदेश स्वयोर ।

४६०७. रस्तत्रयकया—मृति प्रमाचन्द्र । पत्रस० ६ । प्रा० ११ ×  $Y_{2}^{2}$  इत्त्व । भाषा—सस्हत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । प्राप्ति स्थान—द० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपर ।

४६०६. रस्तत्रयकथा— $\times$  । पत्र स०४। आ० ११ $\times$ ४  $\frac{1}{2}$  इज । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८८० मगसिर बुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स० १०७ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रशेर ।

४६०**६. रत्नत्रायकथा—** राजसा० १ । ब्रा०११८८ इत्त । भाषा-सम्कृत । विषय-कथा । र०काल ४ । ले० काल स० १६३६ झासोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १२१४ । **प्राप्ति** स्थान--महारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४६१०. रस्तत्रयकथा—× । पत्रस० ४ । मा० ६ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-कवा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२७। प्राप्ति स्थान—सहारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजसेर ।

४६११. रस्तत्रयकथा टब्बा टीका सहित । पत्रस० २ । आ० ११ $\frac{3}{4} \times \frac{3}{4}$  इञ्च । आपा—संस्कृत । विषयः कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६०-२०० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिह (टोक)

४६१२, रस्तत्रयक्षया— $\times$ । पत्रस०६। आ०११ $\times$ ५ इच । सामा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल $\times$ । ले० काल  $\times$ । अपूर्ण । बेष्टन स०६५। **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपयी मन्दिर मालयुरा (टोक)

४६१३. रस्तत्रप्रविधानकथा—क० श्रृतसागर । पत्र स० ६। प्रा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ १६ स । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर सस्कर जयपुर ।

४६१४. रस्तत्रब्रिक्षमानकशा-पद्मतंति । पत्रसं० ७ । मा०११ $\times$ ५ टच । भाषा-मस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २२७।१२४ प्राप्ति स्थान—दि० जैन समबनाय मन्दिर उदयपुर ।

४६१४. रस्नशेखर रस्तावतीकथा। पत्र स॰ १६। बा॰ ११  $\times$   $\forall \xi$  डच । भाषा—प्राइत । विषय—कथा। र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेटन स॰ २१२ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर ग्रमिनन्द स्वामी बूदी।

४६१६. रससामरकवा— × । पत्र त०२४। मा०१०४४ इखा भाषा-मपन्न म । विषय-कवा । र०काल × । ते० काल × । मपूर्ण । वेष्टन स०१०४।६५ प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर । ४६१७. रविवारकथा—रह्यू । पत्रस०४। भाषा-प्रपन्नं ग । विषय-कथा । र०काल 🗴 । ते०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्ट्रनसं० १० । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४६१८. रविवार प्रवन्ध—व शिनवास । पत्रस्य ४ । आ ११ ४४ इ.च । प्राचा-हिन्दी । विषय-कथा । रश्काल ४ । लेश्काल स्व १७३४ । पूर्ण । वेष्टन संव ६८ । प्राप्ति स्थान—दिश्जैन प्रवन्न मन्दिर उदयपर ।

### प्रशस्ति-निम्न प्रकार है-

सवत १७३४ वर्षे धानोज सुरी १० शुक्ते श्री राजनगरे श्री सुलसंधे श्री झादिनाथ चैत्यालये अट्टारक श्री क्षेमकीतिस्तदाम्नाये मृनि श्री धर्म भूषण् तत् शिष्य ब्रह्म बाधजी लिखित ब्रह्मरायमाण् पठनार्षे ।

४६१९. रिविवतकथा--सुरेन्द्रकीर्ति । पत्रसः १४ । घा० ६ $\times$ ४ हथा । माया-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल सः १७४४ । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनसः २५० । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

#### द्यादिभाग---

प्रवस सुमरि जिनवर चौबीस चौदहसे नेपन मुनि ईस । नुमरो सारद मिल अनन, गुरु देवेदक्लीत सहस्त ।। मेरो सन इक उपजी साव, रिवतन कथा करन को चाव । मेरो तक हीन ज प्रकार करों, तुम गन पर कवि नीकके घरो ।।

### धन्तिम भाग--

मुरेन्द्रकीति स्रव वही रिव गुन रूप स्नृत्य सव ।
पिटत मृतु किव सुववर लीजी, जूक सुधाक सव
गढ गोवाणन गाम नी, सुम्यान बसानी ।
सवत विकम भूप गई, भजी सत्रह सी जानी ।
जो उपर ववाजीम जेठ मृदी दसमी जानी ।
वार जो मगलवार इस्त नक्षत्र जु परियो तव ।
हरि विवृत्य कथा मुरेन्दर रचना मुद्रत पुनजु स्रनन्त ।

४६२०. रविश्वतकथा-विद्यासागर । पत्रस्व ४ । प्राः १ १४ १४ । भाषा-हिन्दी ।विषय-कथा । र०काल  $\times$  । क्षेण्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २५-१६५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोबारायसिंह (टॉक)

#### प्रारम्भ---

पत्रम गुरु पर नमी, मन घरी जिनवाली । रविवत महिमा बहु ग्रमार शुन्न फ्रांस द घाली ॥ पूरव दिसि सोहे नुदेश, काश्मीर मनोहार । बालाग्सी तेह मध्य सार नगर उदार ॥१॥ न्यायवत नरपति तिहा सप्तामे सोहे । पुरुवाल नाम सोहामलो गुली जनमन मोहे ॥ तेह नयरे धन करो करी घनवंत उदार। मतिसागर नामे सुश्रेष्ठी शुभमित महार ॥२॥

### मन्तिम---

विधि जे क्रत पालि करि मन भावज प्राएत ।
समिकत फले मुरा गति गया कहे जिन इस वाएगी ।।
मन वच काया गुढ़े करी क्रत विघ जे पालई ।
ते नरतारी मुख लहे मिए माएक पावई ।।३६।।
श्री मूलसचे महण हवी गछ नायक सार ।
सभयचंद्र सूरि वर जयो वहु भच्याबार ।।
तेह पद प्रएमिने कहे सति मुललित वाएगे ।
विद्यासाग वेद सुणी मनि साण द प्राएगी ।।३६।।
इति रविव्रत कथा सुणुणे

४६२१, रक्षाबंधनकथा—ज $\alpha$  ज्ञानसागर। पत्रस० २। घा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4}$ । माधा-हिन्दी (पद्य)। विषय —कथा। र०काल  $\times$ । ते०काल स० १८७६ पौथ सुदी =। वेष्टुन स०३=। प्रास्ति स्थान—मट्टारकीय दि०जैन मन्दिर धजमेर ।

विशेष -- प० देवकररा ने मौजमाबाद में प्रतिलिपि की थी।

४६२२, रक्षाश्रधनकथा- विनोबीलाल । पत्र म० २६ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—क्षा । र० काल  $\times$  । ले०काल सं० १६१७ । पूर्ण । बेष्टन सं० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४६२३. रक्षाबंधनकथा— $\times$ । पत्र सं० ७। मा० १२ $\frac{1}{2}$   $\times$  = इख । माथा-हिन्दी । विषय-कथा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० ६३। प्राप्ति स्थान दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान बूंदी।

४६२४. र**क्षाबंधनकथा** —  $\times$  । पत्र स॰ ३ । ग्रा॰ ६ $\frac{3}{4}$   $\times$  १ इत्त्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले०काल स॰ १८७७ म्रायाद बुदी १० पूर्णः । बेप्टन स॰ ११६२ । प्राप्ति स्थान — महास्कीय दि॰ जैन मंदिर म्रजमेर ।

४६२५. रक्षाबंधनकशा— $\times$ । पत्रस्त ४। घा० ११ $\chi$  ४ इखा भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल  $\kappa$ । ने०काल स०१८५७ फार्तिक सुदी ४। पूर्णः। वेष्टनस०११५७। प्राप्ति स्थान—महाकीय वि० जैन मन्दिर क्षजेर।

४६२६. रक्षाविधान कथा — सकलकीति । पत्र स०४ । मा० ११ $\frac{1}{2}$  × $\frac{1}{2}$  इश्व । भाषा – सस्क्रत । विषय — कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

४६२७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ ।₄मा० १२×४ इच । ले०काल स० १⊏१७ माघ सुदी १ । पूर्णे । वेष्टन स० ३१३ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वसी बूदी । ४६२ म. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६ । प्रा० म $\times$ ४ इश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४६२६. **रात्रिविधानकथा**— × । पत्रस॰ २ । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले॰ काल × । अपूर्ण । वेष्टन स॰ १०३।४**० प्राप्ति स्थान**— दि॰ जैन मन्दिर कौटडियो का, इ गण्यर ।

४६३०. रक्षाख्यान--रस्तनंदि । पत्रस० ४। मा० १० ${}^{9}_{i}$ ×५ इञ्च । मापा--सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७०४ । पूर्ण । बेष्टनमं० १६५ । **प्राप्तिस्थान**--दि० जैन म्राग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६३१. राजा विकास की कथा —  $\times$  । पत्र स० ३१ । म्रा० १० $\times$ ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । सपूर्णं । वेष्टुन स० १००-१ । **प्राप्ति स्थान** — दि॰ जैन सम्बन्ध करा बीसपथी दीसा ।

विशेष - ग्राग के पत्र नहीं हैं।

४६३२, राजा हरिचंद की कथा—  $\times$  । पत्रस० २३। श्रा० ८ $\times$ प $^1_0$  इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० २७५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

४६३३, रात्रिभोजन कथा—बहु निमदत्त । पत्र म०१६। प्रा०११ $\times$ ४१ हत्र । भाषा— सस्कृत । विषय-कथा । र॰काल  $\times$  । ले॰काल म०१६७७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन कडेनवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवत् १६०० वर्षे कातिक गृरी ११ पूरी थी मूलसधे मगस्वती गच्छे बसातकारमारी थी कुंदकुंदा-चार्यात्वरे भ० थी गुभचन्द्र तत्पट्टे भ० सुमतिकीतिदेवा तत्पट्टे भ० थी मुराकीतिदेवा तत्पट्टे वादिभूपरा तत्पटटे भ० थी गुभचनंद्र तत्पट्टे भ

४६३४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । ग्रा॰ १२ imes १५ ईंडच्य । ले०काल स० १७६३ । पूर्ता । बेष्ट्रतसं० ३५१ । प्राप्ति स्थान — बप्रवाल दि० जैन सदिर उदयपुर ।

४६३५. प्रतिसं०३ । पत्रस०१२ । घा०१०४४ डचा। ले०काल सं०१६२६ फागुसाबुदी ६३ । पूर्सा। बेहनस०१४३ । प्राप्तिस्थान---वि० जैन मन्दिर राजमहल टॉक।

विशेष -- भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने प० जिनदास को प्रति दी थी।

४६३६, रात्रिभोजन कथा—मर्शसहलंदि । पत्रसः २१ । घाः १२३ ४ ६ इच । भाषा-सुस्कृत । विषय-कथा । र०काल- ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४४ । प्राप्ति स्थान-दिः जैन प्रवासनी मंदिर करीली ।

विशेष-पत्र १६ में भक्तामर एवं स्वयम् स्तीत्र है।

४६३७. रात्रिमोजन चौपई—सुमतिहंस । पत्र स०११। मा०१० $\times$ ४६ँ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा। र०काल स०१७२३ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

### श्रन्तिम--

रात्रि भोजन दोष दिखाया, दीनानाथ बताया जी ।।१।। ग्रचल नाम तिहाँ रहवाया, दिन दिन तेज सवाया जी ॥२॥ धन २ जेनर ए वृत पाल इ, भोजन त्यागी टाल ड जी। नव २ नर सदा निया भाखड विलसड लील विसालड जी। सतरह सह तेवीस वरसह हे जड़ हीयड़उ हरसइजी। मगसिर बढि छटि वर वध दिवसड चउपई कीधी सुबसइ जी ।।३॥ श्री खरतर गछ गगन दिलादा श्री जिला हरप सुरिदा। धाचारिज जिन लबवि मशीदा, उदया पनिम चदाजी। श्री जिराद्रय्य सरिद समीसड, समित हम संजगीसड जी। पद जबभाग घरद निमि दीनै भामै विसवा वीसडजी । विमलनाथ जिनेस प्रसादङ जाय तारांग मभसादङ जी । रिद्धि बद्धि सदा ग्रागादह सघ सकल चिर नदह जी। भ्रमरसेन जयसेन नरिदा थापः परमानदा जी। जयसेना राग्गी सुलकदा जस साखी रवि चदा जी। साव-शिरोमिशा गरा गाया सगला रह मिन भाया जी। जीभ जनम सफली की काया मिल्ह सूगरा मल्हाया जी ।।४।।

## ग्रादिमाग--

मुबुधि लवधि नव निधि समृद्धि सुखसपद श्रीकर। पासनाह प्रमप्णवता वमु जस हुवह विसतार।। श्री गुरु सानिधि लही रमणी भोजन पाय। कहिस्यूं शास्त्र विचार सु भगवत म च उपाय।।

४६३८. रात्रिमोजनत्थागं कृश —श्र तसागर। पत्रतं २२ । ग्रा०१० ४४ इख । माषा-सस्कृत । विषय-कथा। र०काल × । ले०काल स० १७४८ ज्येष्ठ बुरी ४ । पूर्ण । बेग्नस० १४६२ । प्राप्ति स्थान—मटटारकीय दि० जैन मन्दिर झत्रमेर ।

४६३६. रासध्यशरसायन-केशराज । पत्रस० ६४ । या० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इच । मापा-हिन्दी प० । विषय-कथा । र०काल स० १६६० प्रासीत मृदी १३ । ले० काल स० १७३० । पूर्ण । बेहन स० ६४-६३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी डीमा ।

विशेष — प्रारम्भ का पत्र फटा हुआ है अन ११ वें पश्च मे प्रारम्भ किया जाता है। अंबूढीपड क्षेत्र भरन भलड, लकानगरी यानिक निरमलड। निरमलड बानिक पुरी लका द्वीप तठ राक्षस लुड़। अजित विनवर तएक बान्ड मृत घन बाहन हुई। महारक्ष मुत पाटि याची अजित स्वामी हालिए।। चरए पामी मोक्ष पहुँतड चएगा मुनिवर साविए।।११।। राक्षस राजा राजकरी घराउ धवसर जाएी। तप सबम तराउ धवसर जाएी। पुण्य प्राराणी देव राज्यन सुन मरागी। राज धापी पही संबग नहीं मीज सीहामरागी।। सन्वस्थाता हुधा मूपति समह दशया जिन तराग। कीर्ति धवल नरेद्रती केउ राख आववर मराइ।।१६॥।

### चन्तिम---

सवत् सोलै धनीइरे, प्राञ्ज ग्रासो मान तिथि तेरसि । श्रतरपुर माहि श्र'ग्री श्रति उल्हास, सीता श्राव रे घरि राग ।।ढाल।। विषय गाँछ गाळ नध्यक गिरह गौतम नज धवतार । विजयवन विजय ऋषि राजा की यस धर्म सदार ।। धर्ममृति धर्मनउ धोरी धर्मतणो भडार। खिमा दया गुगा केरउ मागर सागर क्षेम उदार ॥६१॥ श्री गरुपद्म मूनीक्वर मोटौ जेहन उवंश । चउरासी गछ मे जारगी तउ प्रगट पराइ परसंस ॥६२॥ तस पटोधर गराकरि गाजै गरा सागर जयबत । कइमृतन कलप तर कलि में सुरि शिरोमिशा सत ।।६३।। ए गुरुदेव तर्गौ सुपसाइ ग्रंथ चढिउ सुप्रमारा। ग्रंथ गुर्ग गिरि मेरु सरीखंड नवरस माहि बखारा ।।६४।। एव वासवि ढाल संघति वचन रचन सविसाल । रामयशो रे रसायण नामा ग्रथ रवित सुरसाल ।। कवि जन तउ कर जोडि करे रे पडित सं ग्ररदास । पाचा भ्रागे तउविविव उजगाह भ्रद्गा भ्रध्यास । श्रक्षर भगे डाल जुभगे रागज भगइ जोइ। बाचना रे चमन ने भगे रस नहीं उपजड़ कोड़ ॥१७॥ ग्रक्षर जागी ढालज जागी कागज जागी एट। पाचा आने बाबना थी ऊन्जि सिड ग्रति नेह ।।६६।। जब लग सायर नउ जल गाजै जब लग सुरिज चाइ। केशराज कहें तब लिंग ग्रंथ करउ ग्रानद ।।६६।।

#### कानडा--

रामलक्ष्मण अने रावण सनी सोना नी चरी। कही भाषा चरित साकी यचन रचन करी खरी।। सघ रंग विनोद वक्ता अने श्रोता मूल मणी। केशराज मुनिद जपैं सदा हर्ष वंशामणी।।३००।। ४६४०. रामसीता प्रवध-समयमुन्दर । पत्र स०१-७६ । प्रा०१०४४ इथा । प्राध-हिन्दी पद्य) । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल ४ । प्रपूण् । वेप्टन स०१७४ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर दक्षत न (बृंदी) ।

४६४१. रूपसेन चौपई— × । पत्र स०२२ । ग्रा०१० × ११ इवा । भाषा-हिन्दी। विषय-क्रवा । रुक्तन × । ते० काल × । श्रद्रशं । वेष्टन स० १६१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर जोगस्त्री कोटा ।

विशेष--- २२ से धारे पत्र नहीं लिखे हये है।

४६४२. **रुपसेन राजा कथा—जिनसूरि।** वत्रस०४३ । प्रा० ६ $\times \times \gamma = 1$  साधान सह्तत । विषय कथा १ रुकाल  $\mathbf X$  । ले० काल  $\mathbf X$  । पूर्ण । बेष्टन स० २६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सिटर डोमस्त्री कोटा ।

४६४३. रोटतीज कथा—  $\times$  । पत्र सं० १ । म्रा० ११  $\times$  ५ $^{3}$  हव । भाषा-संन्कृत । विषय-कथा। २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स० १२५६ । प्राप्ति स्थान—स्ट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४६४४. रोटतीज कथा—  $\times$  । पत्र सं०२ । ग्रा० १० $^1_1$   $\times$  ५ इख । माया-सस्तृत । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रनस्त० १६६ । प्रास्ति स्थान — भर्टारकीय दि० जैन मिर ग्रजमेर ।

४६४५, रोटतीजकथा—  $\times$  । पत्र स॰ २ । या० १० $\times$ ४ है उन्न । भाषा संस्कृत । विषय—कद्या । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २२६ । प्राधित स्थान—दि० जैन मिदर पार्वनाय चीगान व दी ।

४६४६. रोटतीज **क्या** —  $\times$  । पत्र स॰ ३। ग्रा॰  $\xi_j^0 \times Y_j^0$  इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय — कथा । २०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ ५६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन संभागि। मन्दिर करोनी ।

४६४७. रोटतीज बत कथा— नुस्रोराय वैदापत्र सं०१२। घा० ७२०३ ३ इचा। भाषाः -हिन्दी। विषय-कथा। र०काल स०१६०६ भादवा मुदी३। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स∙४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर करीली।

विशेष — सदत सत गुनईससे ना ऊपर नव जात । भारो नुद त्रितिया दिना बुदबार उर सान ॥६३॥ एक रात दिन एक मैं नगर करोली माहि । चुनी बेदगय ही करी कथा मुख्याय ॥६४॥

४६४६: रोटतीजकथा—गुरानित । प्रस० २ । प्रा०१०३  $\times$ ४३ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०कान  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०६२ । प्राप्ति सान—दिठ जैन मन्दिर प्राप्तिन्दन स्वामी बूंदी ।

४६४**६. प्रतिसं०२ ।** पत्र स०६। प्रा०७ × ४ इ.च. । ले०काल स०१६४३ । पूर्सा । बेष्टुत स०६१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर प्रिमनस्त स्वामी ब दी । ४६५०. रोहिस्पी कथा—  $\times$  पत्रस०१६ । प्रा० ६ $\frac{3}{8} \times \frac{3}{9}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी (मय)। विवय-कथा। र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनसं०१३७० । प्राप्ति स्थान— यहारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजीर ।

४६५१. प्रतिसं० २ । पत्रस० १५ । ले०काल सं०१८७३ पीष बुदी १३। पूर्ण । बेष्टनसं० १२७१ । प्राप्ति स्थान— भटटारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६५२, रोहिस्पीवत कथा—सानुकीति । पत्र सं०४ । म्रा० १०३ ४ ६ व । माषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२४२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४६५३, रोहिस्पी वत कथा— × । पत्र सं० ११ । मा० १० १४ ६ । भाषा - हिन्दी (गद्य) । विषय-कथा ७० काल × । ले०काल स० १६६४ वंशाल सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११६४ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धजनेर ।

४६५४. रोहिणी तत प्रबंध—प्र० वस्तुपाल । पत्रस० १४ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रक्ताल स० १६५४ । लेक्काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १५/१३१ । प्राप्ति स्थान—सभवनाय दि० जैन मदिर उदयपर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है एवं पत्र चिपके हुए है। ग्रादि ग्रंत भाग निम्न प्रकार है।

### प्रारम वस्तु छंद ---

वान पुत्र्य जिन नमू ते सार। नीवंकर जे बारमो मन विद्वित बहुदान दातार सार ए। ग्रास्ता वरण मोटामणो नेक्या दिपि मुख तार ऐ। बाल ब्रावारी स्वडो सत्तरि काय उद्धन सहज्ञल। बस् पुज्य राम नादनु निपुण विज्यादेशी सात कुक्षि निरमल। जम पमाड जागीमि कठिन कर्ता मुक्तिरार। विद्या सब दूरि टिलि मगल वानि सार।।१॥

#### रागमल्हार--

तह पद प कज प्राममीन रास कह रसाल।
रोहिंगो बन नागो मिलो सुणज्यो बाल गोपाल 11१11
मारदा स्वामिनि बली सुब सह गुरू लागू पाय।
नेवम सांव दुर्गिट लि जिम निर्मेल मित बायि 11१11
मजन विजन सह सामनो कह बीनती कर जीट।
सजन सभाति निर्मेला दुर्जन पाडि सोडि 11३11

# म्र तिम-दूहा

पुत्री फ्रांक्कित जेह तारे स्त्री लिंग करीय विश्वास । सर्राग गया सोहामणा पाम्पा देव पद बास ॥१ः॥ पुत्र घ्राठे सयम सीयोरे बामु पूज्य हसूसार। स्वर्ग मोक्ष दो पामीया तप सासते लार ॥१॥ रोहिली कथा बत साभनीरे श्री सिक राजा जालि । नमोस्तु करी निज बानिक गयो भोगिब मुख निरवाण :। १॥ नर नारी जे बत करि मावना भावि वग । प्रशोक रोहिलि बित ते नहि उपज्यु पुण्य प्रसंग।। १॥ सावकी नयर सोहामला राय देश मभारि। रास करीति रूबडो कथा तिला धनसारि।। १॥

वस्तु---

मूलसम् मडण् २ सरसती गच्छ सगगार। बलात्कार गणे प्रागना मुगचन्द्र सार वतीग्वर। तस्य पटोश्वर जाणीपि भूमितकोरीत सार मुबकर। तस्य पटांकर मुकर गुणकीरीत मुक्तिमान। तस्य वरणंत्र नमी सदा बोलि बहा बत्लुगान।

बोहा--

विकमराथ पिश्च मुणो सबच्छर सोलसार। धोवनो ते जाएग्रिड प्रापाड मास मुलकार।।१।। धवेत पक्ष सोहासणो रे तृतीयानि सोमनार। सो तेमितन भुवन भल् रात पुरूह चोनार।।२।। पिछ नृष्णि के सामलि मनि झाणो बहु भाव। बहुसबस्तुपाल सृष्ठ कहि तेहिन मब जल नाव।।३॥

इति रोहिए। वत प्रबंध समाप्त ।

४६५५. लिब्बियान कथा--पं ग्राम्बेव । पत्रतः ११ । माया-सस्त्रतः । विषय-कया। र-काल 🗴 । ले॰ काल स॰ १६७७ । पूर्णः । वेष्टन सं॰ ४०७,१२१ । प्राप्ति स्थान--सभवनाय दि॰ जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

सबत् १६७७ वर्षे घासीज मुती १३ णुकै श्री भूनसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुदा-चार्याच्ये महारक श्री गमकीतिवेशस्त्वास्मायं कुश्ची मेपराज तत् शिष्यं कुसक्की पठनाषं। श्री हत्ता प्राकारे श्री पाव्वताय चैत्यात्वये कोठारी जनी भायाँ जमकादि तयो सुत कोठारी भीमओ इय लिक्य विषान कथा निक्यत युक्त भी मेचराज तत् शिष्यायं दत्तं।

४६५६, लिब्बिबानन्नत कया—िकशनिसिंह । पत्रस्य १७ । ग्रा०१० ४५३ इश्व । माया-हिन्दी प० । विषय—कया । र०कान स०१७६२ फागुस्स मुदी ६ । ते०काल स०१०१० मससिस वदी २ । पूर्णे । वेष्टन स०१३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष--फतेहपुर मे लिखा गया था।

४६५७. प्रति सं०२ । पनस०२६ । धा०६imes४१ दुव्य । पूर्णं । वेष्टनसं०५० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायत मदिर करौती t

४६५६. प्रति सं० ३ । पत्रसं० २२ । प्रा॰ १ $^3_1 imes ^3_2 imes ^3_1$  इञ्च । ले॰काल imes । पूर्ण । केवनसं० ३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सीमासी मन्दिर करीली ।

४६५६. **लक्ष्मी सुकृत कवा — × ।** पत्रसं• ७ । घा० १० × ४**३ इ.स** । भाषा-सस्कृत । विषय-कवा । र० कान × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं• ११८ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन प्रप्रवान पत्राचानी महिरा धनवर ।

नियोग-कनक विजयांगाने पनिजिप की थी।

४६६०. **बद्धाना स्वामी कया : मुनि श्री पद्मानित्** । पत्र सं०२१ । घा०११ $\frac{1}{7}$  ४ $\frac{1}{7}$  हरूव । भाषा-सस्कृत । विषय-कया । र० काल  $\times$  । लेकाल सं०१५३७ फ.ल्गुन सुदी १ । बेष्टन सं०१६०। प्रार्थन स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४६६१. बत्तरुवाकोशा—श्रुतसागर। पत्र स० ८७। घा० १२१  $\times$  ५ $\frac{7}{6}$  इत्र । आपा—सस्कृत । विषय—कथा। र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी काम। ।

विशेष-- २४ वत कथाओं का सम्रह है। अंतिम पत्यवतविधान कथा अपूर्ण है।

४६६२. प्रति सं० २ । पत्रस० १४४ । ग्रा० १०३ × ५३ इच्छ । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म० ५६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी बृदी ।

४६६३. प्रति स० ३ । पत्रस० ७२ । झा० १२ × ४ है । ते०काल × । वेष्टन स० १७० । प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मं० लक्कर, जयपुर ।

विशेष-प्रथम ७ पत्र नवीन लिखे हुए हैं तथा ७२ से धागे पत्र नहीं है।

४६६४. प्रति स०४ । पत्र त०१२ । ले०काल १७६८ चैत वदी ११। पूर्ण। बेप्टन स०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवासनी मन्दिर डीग ।

४६६५. वतकशाकोम —वैवेदक्रकीति । पत्र स० ७६। प्रा० १२६  $\times$  ५६ इचा । भाषा – सस्कृत । विषय-कषा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०७४ । प्राप्ति स्थान— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रवर्षर ।

४६६६.—प्रति सं०२ । पत्र स०१३३ । ग्रा० १०हुँimes६६ख । से०काल सं०१६६६ मगसिर बुदी १ । पूर्गा । बेष्टन स०१६१ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २-६२ । ग्रा० १२ $rac{1}{2} imes rac{1}{6}$  इन्छ । से०काल स०१६७३ । पूर्ण । बेप्टन म०१२६-४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का द्वारपुर ।

४६६ म्, **ततकशाकोग्न—वः नेमिटल** । पत्र स॰ १६ म् । ग्रा• ११,४४ है इवा । भाषा— सस्कृत विषय-कथा। र०काल ४ । ले० काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**— भट्ठारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४६६६. ततकशाकोम-मिल्लिमुचर्ण । पत्र स०१६६। प्रा०१२४४६ टब्च । प्राया-सस्कृत । विषय कथा। र०काल × । ते० काल स०१६०६ चत बुदी १४ । पूर्ण । वेस्टन स०१०७। प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर प्राप्तनस्य स्वामी, बुदी। ४६७०. **व्यतकथाकोस**—मु**० रामबन्द्र।** पत्र स०११०। प्रा० ११३४.५ इवा भाषा-संस्कृत । विषय क्या कोण । र० काल ४ । ले० काल सं०१७८३। पूर्ण । वेष्टन सं०१४ । प्रास्ति स्वान—दि० जेन मन्दिर पार्थनाय, बीगान वंदी।

४६७१. व्रतकथाकोश-सकलकोति । पत्र सं० ४६ । प्रा० १२ $\times$ १ $^2$  इञ्च । माषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १०१ । प्राप्ति स्थान | दि० जैन लडेनवाल मंदिर उदयपर ।

विशेष—लिले प्रवीराज पं०लेतसी साहदत्तं। स०१७६६ ग्रावाड बुदि ३ बुधे उदैपुर रास्मा जगतसिंहराज्ये।

४६७२. **व्यतकयाकोश**—**पं० प्रभ्रदेव ।** पत्रसं० १०४। घा० १२ $\times$ ४ इञ्च । माषा-संस्कृत । विक्य कथा। **२०** काल  $\times$  । ले॰काल स० १६३७। पूर्ण । बेप्टन स० २६४-१३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष —दीमक ने सारसाहै। प्रशस्ति-संवत् १६३७ वर्षे मगसिर मुदी ७ रवी। देव महावजी जिस्तामोठ वेदी पाटसी।। उ० श्री जयनग्दी पठनार्षे।

४६७३. **वतकथाकोश** —  $\times$  । पत्र स० ८० । ग्रा०११३/४५ इञ्च । भाषा-सस्हत । विषय-कथा। र०काल  $\times$ । ले० काल स०१८२६ भादवा बुदी १।पूर्ण । वेष्टन स०११६८ । प्राप्ति स्थान—सहारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष —कथाम्रो का सप्रह है।

४६७४. वतकथाकोश —  $\times$  । पत्रसं० २१२ । ब्रा० ६ $\frac{3}{4} \times c_0^3$  ६ $\frac{3}{4}$  इन्थ । मापा-सस्कृत । विषय-कथा । ७० काल  $\times$  । ते०काल स० १८३२ घाषाढ़ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४८ । प्राप्तिः स्थान—महारकीय दि० जैन मस्दिर अजेगर ।

विशेष -- बाह्मराम जी गुजर गौड ने प्रजैनगर में प्रतिलिपि की थी।

४६७५. **यतकथाकोय**— X । पत्र स० १०६। प्रा० १० x ७} इ.च.। मापा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल X । ले० काल X । पूर्ण। वेष्टन स० २३०। पूर्ण। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष--विभिन्न कथाओं का समूह है।

४६७६, **दातकथाकोय** —  $\times$  । पत्र स० ४५ । छा० ११ ×५ इन्त्र । भाषा-सम्कृत । विषय-क्या । र० काल  $\times$  । छै० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४०-२३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष--- निम्न वत कथाश्रों का संग्रह है---

प्रष्टाह्निका वत कथा सोमकीति ।
 प्रनत व्रत कथा लिलतकीति ।
 रत्नव्रय कथा "

४. जिनरात्रि कथा

<b>x</b> .	ग्राकाश पंचमी कथा	,,
٤.	दमलक्षरणी कथा	,
७.	पुष्पाजलि वत कथा	,
۲,	द्वादश व्रत कथा	,,
8.	कमं निजंरा द्रत कथा	n
₹∘.	षट्रस कथा	,,
११.	एकावली <b>कथा</b>	,,
<b>१</b> २	द्विकावली वृत कथा	विमलकीर्ति ।
१३.	मुन्तावलि कथा	सकलकीर्ति।
<b>۶</b> ۲,	लब्धि विधान कथा	प० ग्रभ्र ।
१४.	जेष्ठ जिनवर कथा	श्रुतसागर ।
१६.	होली पर्व कथा	"
१७.	चन्दन पष्ठि कथा	11
٤5.	रक्षक विधान कथा	ललितकीति ।

४६७७. व्यतकथाकोशः — × । पत्रस०१२४ । या०११ × ६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। २० काल × । ने० काल स०१६४१ पीच बृदि १ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं०२१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मंदिर इन्दराद (छोटा)।

४६७६. व्यत्तकथाकोशा—  $\times$  । पत्र स॰ ६ । बा० १२ $\frac{1}{4} \times 9\frac{3}{2}$  इञ्च । मापा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टन स० ११२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रभिन दन स्वामो बूंदी ।

विशेष - ६ठा पत्र भाषा लिखा हुआ है आगे के पत्र नहीं लिखे गये मालूम होते हैं।

४६७६. वतकथाकोशा— $\times$ ा पत्रस०२०-२। प्रा० १० $\frac{1}{4}$  $\times$  $\frac{1}{4}$  $\times$  $\frac{1}{4}$  इखा भाषा—सस्त्त । विषय—कथा । २०काल  $\times$ । प्रांत स्थान — दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी बुदी ।

# निम्न कथाश्रो का संग्रह है--

१. नदीश्वर कथा— २. षोडशकारण कथा	रत्नपा <b>ल</b> ललितकीर्धित	भपूरां पूरां
३. रत्नत्रय कथा	"	
¥. रोहिस्सीवत क <b>या</b>	•	"
५. रक्षा विधान कथा	u	**
६- घनकलश कथा	"	**
७. जेष्ठ जिनवर कथा	**	"
<ul> <li>झक्षय दशमी कथा</li> </ul>	**	и
६, षट्रस कथा	शिवमुनि	"
<b>१०</b> . मुकुट सप्तमी कथा	सकलकीर्ति	и

११. श्रुतस्कंधकथा	×	"
१२. पुरन्दर विधान कथा	×	"
१३. द्याकाश पंचमी कथ	×	**
१४. कजिकावत कथा	ललितकीर्ति	u
१५. दशलाक्षामिक कथा	ललितकीर्ति	पूर्ण
१६. दशपरमस्थान कथा		и
१७. द्वादशीवत कथा	×	u
१८. जिनरात्रिकथा	×	a
१६. कमैं निजैराक या	×	u
२०, चतुर्विशति कथा	ग्रभकीर्ति	0
२१. निर्दोष सप्तमी कथा	×	a

४६८०. द्रतकण।कोशा— $\times$  । पत्रतः १६२। घा० १ $\times$ ६ इचा । यापा-सस्कृत । विषय-कया । र०काल  $\times$  । के०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनस० ४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाय मदिर जीनान बुदी ।

४६ स**१. बतकं धाकोश**— $\times$  । पत्र स० ६६ । आ० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इस । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रक्कालं  $\times$  । ते०कालं भ० १७७० माघ सुदी १३ ।पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पार्वशंसव चौगान मंदिर वृंदी ।

४६८२. **संतकथाकोश**— × । पत्र सं० फुटकर । पाषा-सस्क्रन । विषय – कथा । र०काल × । ले०काल × × । अपूर्ण । वेष्टन ३७५।१३६ **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाय मदिर उदयपुर ।

४६ द ३. ब्रत्तकथाकोक्ष—बृकालचन्द । पत्रस० २६ । घा० ६ $rac{1}{2} \times rac{1}{2}$ इख । भाषा — हिन्दी (पद्य) । तिषय-कथा । र०काल स० १७६० फानुस बुदी १३ । ले॰काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकोथ दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष -- निम्न कथायो का सग्रह है --

ब्राकाण पचमी. सुगयदशमी, श्रावणद्वादशीप्रत, मुक्तावलीप्रत, नंदूकी सप्तमी, रत्नप्रय कथा, तथा चतुर्दशी कथा ।

४६८४ प्रति सं०२ । पत्र स०१६१ । घा०१०१ ४ इन्छ । ले० काल स०१६१४ कार्तिक सुदी१० । पूर्ण । वेष्टन स०१४०-७२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्यासह टोक)

४६८५. प्रतिसं० ३ । प्यस्त० १२२ । या० ११४ ५ है इसा ले० काल १८४५ । पूर्णा । वेदन सं० ४७ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन सदिर राजमहल (टोक)

बिशेष —टोडा में महारक श्री महेन्द्रकीति की ग्राम्ताय के दयाराम ने महाबीर चैरयाल में प्रतिलिपि की थी।

४६८६. प्रतिसं० ४ । प्रतं० ६८ । ब्रा० १०३ $\times$ ५ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुनस० १०६ । प्राप्तिस्थान — दि० जैनं मंदिर राजमहल (ोक)

विशेष---२३ कथाधों का सग्रह है।

४६ मध्य भी त्रिक्त । पत्र स० १३२ । म्रा० १० $\times$ ६ इश्वर । ले॰काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेष्टन सं॰ न । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन पंचायती मन्दिर युनी (टॉक)

४६८८, प्रति सं०६ । पत्र स० ७४ । ग्रा॰ १२ ×७ है इन्द्र । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बृंदी ।

४६८६. प्रतिसं०७ । पत्र स० १३५ । ग्रा० १०३ ४ ५३ [इन्डा ने०काल 🗴 । अपूर्ण । देशन सं० ७२/४६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन तेरहपथी मदिर दोसा।

विशेच -- ग्रागे के पत्र नहीं है।

४६६०. प्रति सं० द्मा पत्रसं० १४२ । द्या० ११ $\times$ ४ है इन्छ । ले०काल १६०८ । पूर्ण । वैष्टुतसं० ७२।३६ । प्रास्तिः स्थान —दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष-जयपुर मे नाथुनाल पाण्ड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४६६१. प्रति सं० ६ । पत्र स०११६ । ले० काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टन सं० ७६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पदायती महिर भरतपर ।

४६६२. प्रतिसं० १०। पत्र संस्था ११०। सा० १२  $\times$  ५१ इ.स. । भाषा-संस्कृत । विषय-क्या। र०काल  $\times$ । लेखन काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० ३४ म**ापित स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बृदी।

विशेष--मृलकर्ता श्रुतसागर है।

४६६३. प्रति स० ११ । पत्र सं० १७ । ग्रा० १२३४६ इंच । ले•काल स० १६०० पीष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २६५ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--जहानाबाद जैसिधपुरा मध्ये लिखावतं साहजी "

४६६४ प्रति सं० १२ । पत्र स० २१६ । ग्रा० ६ है  $\times$  ६ ? इन्छ । ले॰काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टन स०२७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पार्चनाय मन्दिर चौगान बृदी ।

विशोध — इस कथा सग्रह में एक कथा पत्र ६४ से ७१ तक पत्यवत कथा धनराज कृत है ससका प्रादि ग्रन्त निम्न प्रकार है—

# ग्रादिभाग -

प्रथम नमी गरापति नमी सरस्वती दाता।
प्रगममें सदमुर पाय प्रगट दोवो ग्यान विस्थाता।।
पन परम पुर सार प्रणांत क्या प्रनोपम।
भावी प्रत प्रमुक्ता दिविच प्रापम में प्रमूचम।।
श्रुतसागर बहा जुं कही परय विधान कथानिका।
माषा प्रतिद्ध सो कह सुणी भव्य धनुकमनिका।।

## बोहा---

द्वीप मांही प्रसिद्ध प्रति, जंबूदीपवर नाम । भरत क्षेत्र तामै सरस, साहे सुख की घाम ॥

## चन्तिम मारा---

विकल्प नृप परमास्ति, सतरासि जौराँ।
सास प्रावाद गुक्ता परमसार ।
दणमी दिन घक भी तृहवार ॥२४=॥
ध्यापरिज चिहु दिसि परसिधि ।
चदकीति महीयल जसमिदि ।
ता सिच हर्षकीति भीवसी,
मोहे बृद्ध बृहस्पति सी ॥२६६॥
भूतसागर माधित वत एह,
पर्या नाम महियल मुखदेह ।
ताकी भाषा करो धनराज,
पदित भीवराज हितकाज ॥२६०॥
रही चिरजय सककस्य गळ्यति जती समाज ।
वहा चिरजय सककस्य गळ्यति जती समाज ।

इति श्री श्रुतसागरकृत व्रतकथाकोश मावाया श्राचार्य श्री चन्दकीति तत् शिष्य भीखसी कृत पत्य व्रतकथा संपूर्ण ।

४६६४. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ११४ । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं०६६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-महात्मा राधेलाल कृष्णगढ वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४६८६. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ४४ । ब्रा० ११ रे ४ ७ डब्च । लेक्सल सं० ११६२ । पूर्ण । बेष्टुनसं० ११३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष-मुख्यतः निम्न कथाश्रो का सग्रह है। मुकुटसप्तमी, श्रक्षयनिधि, निदौष सप्तमी, सुगन्ध दशमी, श्रावरा द्वादशी, रन्तत्रय, श्रनतचतुरंशी, श्रादि बनो की कथाएँ है।

४६६७. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १२३ । खा० ६ 🗴 ५ ट्रै इन्ह्या ले०काल सं०१८७१ । पूर्ण । बेहुनस० २२८-१२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु सरपूर ।

विशेष-जोधराध ने प्रतापगढ में लिखा था।

४६९८, द्रतकथाकोश  $\times$ । पत्र स० ५–९६ । धा० १० $\times$ ४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टन सं० २६५-१२० । प्राप्ति स्थान – दि०जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

४६.६६. ब्रतकथारासो — × । यत्र स०१४ । घा०१२ ४ ५ है इ.स. । प्रापा-हिन्दी गय । विषय-कथा। र०काल ×। ते० काल स०१८६६ जेव्ट सुदी १०। पूर्या वेष्ट्रनस०२१२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पार्थनाय चीमान बुदी।

विशेष-गानन्दपुर नगर मे लिखा गया था।

४७००. व्रतक्कया सम्रह्— ×। पत्र सं० ११ । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । कृष्काल × । म्रपुर्ण । बेष्टनस्र० ५३ । प्रास्ति स्थान-प्रि० जैन प्रचायती मन्दिर हृष्डावालों का डीग ।

४७०१. प्रतिसं० २ । पत्र स०६ –७३ । घा०११ 🗙 ५ इ.चा। ले० कात्र 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्टन सं०७१ तः । प्राप्तिः स्थान – वि० जैन मदिर लक्ष्कर जयपुर ।

४७०२. व्यतकथा संग्रह्—  $\times$  । पत्र स० १४ । धा० १०  $\times$  ५ दव । भाषा-हिन्दी । विषय-क्या । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १८८४ । पूर्ण । वेस्टन स० ११८ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन संदिर कोसली कोटा

विशेष-मुस्य कथाएं निम्न हैं-

**१. शोलधास कथा मलुक** । र० काल स० १८०६ ।

कह मलुको सुर्यो ससार हूँ मूर्व मत दीए प्रपार । प्रासोजा सुद आठ कही, याकवल लाग सोसही ।। जोडी गाव सालडा ठान, सम्मत प्रठाराख क माह । कुडी हुत सो दूर करो, वाकी सुध सुनी रही घरो ।।

२. सुर्गंघ दशमीध्यत कथा—मकरंव। र० काल १७४८। सम्मेत प्रधान अधावण तेरस स्वेत । पुरुवामरपुरी करी सुष्यो भविजन हेत । कथा कही लघु मतीनी पट्ट पद्मावनी परवार ॥। पाठय गाय मकरंव ने पंडित लेही संमाल ॥

३. रोहिस्पीव्रत कथा — हेमराज । र० काल १७४२ । रोहस्पी कथा सपूर्ण भई, ज्यो पूरव परमासी गई । हेमराज ई कही विचार, गुरू सकल ज्ञास्त्र घव घार ।। ज्यो वृत कला ..... में तही, सोविधि घथ चोपई तही नगर वीरपुर लोग प्रवीत, दया दात तितको मन लीत ।।

४. नंदीस्वर कथा—हेमराज।

यह व्रत नन्दीश्वर की कया ।
हेसराज परमाधी यथा ।।
सहर इटावी उत्तम थान ।।
सहर इटावी उत्तम थान ।।
धावक कर धर्म मुग घ्यान ।।
मुने सदा जे जैन पुरान ।
गुरो लोक को राखै मान ।।
तिहिटा सुनो धर्म सन्वन्थ ।
कीनी क्या चौपई वध ।।
१. पंचमी कथा—सुरेस्न पूत्रसा । र काल सं० १७५७ ।
सब व्रत करे भाव सो कीई ।
साको स्वर्ण मृति स्व होई ।

सत्रहते सत्तावन मानि । संवत पोष दसे वदि जानि ॥ हस्तिकांतपुर में पट्ट सची । भी सुरेन्द्रभूषण तह रची ॥ यह तत विधि प्रतिपाले ओह । सो नर नारि प्रमरपति होइ॥

विशेष-सीगोली ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी।

. 1

४७०३. **बत कथा संग्रह**—  $\times$  । पत्र त० १ । घा० १० $\frac{1}{4}$  ×  $\frac{1}{4}$  इख । भाषा-हिन्दी पछ । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स० १६२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर केळावाटी (सीकर) ।

विशेष---निम्नलिखित कथाएं हैं।

१. दशलक्षत्रत कथा — हरिकृष्ण पांडे । र० काल स० १७६५ । पत्र स० २ तक ।

धन्तिम---

सैसी कथाकोश से कही, तैसी स य चौपई लही ।
सन्नह पर पैकेट मानि, सबत भादन पन्नीम जानि ॥
तापरि सम सरो लोग विक्यात ।
दयापर्य पान्ने मुनगात ॥
सब श्वाम पूजाविधि करें ।
पान्नदान ने मुक्त लुने ॥३३॥
मन सैं समें बृषि जब मई।
हरिकृष्ण पाढे कथा घर ठई।।
सो इस मुने मान घरि कोग ।
सो सह मुने मान घरि कमा या ।
सोने निहन्हें सम्मायपित होइ॥३६॥
इति इक्तवाण जन की कथा समर्थों।

२. धनतवत कथा— ४ । ४ । पत्र सं०3 से ४

३. रतनत्रय कथा—हरिकृष्ण पाडे। र० काल स० १७६६ सावन सूदी ७। पत्र स०४ से ७

४. श्राकाशपत्रमीकथा— ,, । पत्र ७ से ह

४, पचमीरास कथा--- × । × । पत्र सा०३

६. धाकाशयचमीकया— × । र० काल १७६२ चैत सुदी२ । पत्र ३

४७०४. **बसुदेव प्रबंध—जयकोत्ति** । पत्रस० १४ । बारु ११ × १ इथा । शाया— हिन्दी प**छ ।** विषय—कसा । र०काल ४ । ले०काल स० १७३४ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ६३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन प्रग्रवान मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रादि प्रन्त भाग निम्न प्रकार है---

### धावि माग-

भ्रों नमः सिद्धेम्यः । राग सोरठा ।

#### दूहा-

इन्द्रवरण सह घोष नागेन्द्र जाति देव । पंच परमेप्टी के घसाकरीतिहुंती सेव ॥१॥ वसुदेव प्रवध रष्टु मले पुन्द तर्णा फन केह । देवशास्त्र गृह मन घरी प्रस्ति समृद्धि एह ॥२॥ हरियंग कुल सोहामणु घंयक वृष्टि राय । सीरीपुर सीहिये चनी वासव सम गुमगाय ॥३॥

#### ग्रन्तिम माग--

श्रीमूलसघे उजागजी, सरस्वती गच्छ मुजाराजी। गुराकीरति गुराग्रामजी बंदू वादिभूषरा पुण्यधामजी ॥१३:।

## दूहा—

बहा हरला गुए अनुसरी कहा बार्चान । मएाज्यो मुएाज्यो भावनी लसिस्यो सुल संतान ॥१॥ कोट नगर कोडामएी बासे श्रावक पुण्यवत । चैत्यालुं आदि देवनु धर्म समुद्र समस्त ॥ तिहां जिनवर सेवाकरी बसुदेव तप फल एह । जयकीरति एम रच्छं वरस्यो वरसी नेह ॥

इति श्रीवसुदेव ग्रास्याने तृतीय सर्गे रापूर्ण । सवत् १७३१ वर्षे ज्येष्ठ बुदी १० ५० श्री कामराज सत् शिष्य ग्र० श्री वाषणी लिखित ।

४७०**४. प्रति स० २।** पत्रसं० १४। ग्रा० ११×४ इचा। ले०काल सं० १६७५। पूर्णं। बेहन स० १८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन श्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४७०६. विक्रमलीलावती चौपई—जिनचन्द्र। पत्र सं० १७ । बा० १०४४ है हवा । बाषा-हिन्दी । विषय — कथा । र०काल स० १७२४ ब्रायाड सुरी ७ । ले०काल सं० १७६६ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वैष्टनसं० ७४२ । प्राप्तिः स्थान—स० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--- लिखित चेला खुशाल बीजन लिपी कृता दरीबा मध्ये।

४७०७. विदरमी चौप $\xi$ —पारसवस्त । पत्र सं० १४ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

४७० स. बिस्**हरा चौपई— कवि सारत।** ',पत्र सं० ४२ । प्रा० १० ४४ इख । मापा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल स० १६३६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्रास्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

#### प्रारम्स-

प्रसाम् सामित्ति सारदा, सकल कला सपसिद्ध । बह्या केरी बेटडी, भावे अविकल बृद्धि ॥१॥ सुसर ग्रलापइ नादरस हस्ति बजावइ बीरा। दिनि दिन ग्रति ग्राएद भर, सवल सुरासर लीए।।।२।। भादि कुमारी झाज लगि, ब्रह्म रूद्र हरिमात । मलख भनत भगोचरी म्यम जगत्र विख्यात । ३॥ कासमीर मुख मडरगी, सेवक पूरइ भ्रास । सिद्धि बुद्धि मगलकरइ, सरस बचन उल्हास ॥४॥ श्री सद्गुरू भुषसाउ कर, समरी श्रतुपम नाय । जास पसाइ पामीइ, मन बख्दित सविकाम ॥५॥ नारी नामि ससिकला तेह तस्य भरतार । कवि विस्हरए गुरा वर्गन् सील तराइ अधिकार ॥६॥ सील सबि सुन्व सपजइ सीलै सपति होइ। इह मनि परिभवि सख लहड़, सील तरगा फल जोड़ । ७॥ ं सील प्रभावि भाषदा टाली पाप कलक। कवि विरुहरण सूख विलासिया मुराज्यो मुकी सक ॥=॥

# धन्तिम---

ए किंव विरुह्णनी चुपई मराइ एक मनावद । तास घरे नव निषि विस्तरह निमुगता सुब सपति करह ।। विरही तह्या विरह दुल टक्ट, मनममती रस रमगी मिलद ।। समकई श्रोता चतुर सुजाल ।

# दोहा---

सुज्जासासिंउ गोठ की, लाहु विहु परेह । स्रहूरा पूरा करइ पूरा स्नामो रेइ ।।४.।

मूरिखम लहइ भाग ग्रजागा।।

#### श्लोक-

स्रतसुखमाराध्य सुखनरमाराध्यते विशेषतः। शानतस्वदुविदाध सद्वापि नर नर त्यादि ॥५॥ वर पर्वतनुर्गेषु ऋोत वनवरः सह। या मूर्वतनसर्वाः नुरेश्वसवनेव्यपि ॥६॥ वंदिकोदिष वर कष्ट्र मा मूर्वा हितकारकः। वानरेश हतो राजा विद्या चौरेश रिकत ॥७॥ चौपई---

हुंस कोइ मय करसिउ तथा।

मित अनुसारि बिच कथा।

उछु प्रिचिकु प्रक्षर जेह।

पडित मुघउ कर सो तेह।।-।।

दूहा---

धीमस्राह्ड गण्डवर विद्यमान जयवंत ।

जानसागर सूरी प्रवह गृहिर महागुणवंत ।

तास गाँव प्रति विदुल मित वयमुन्दर गुरुसीस ।
कविसारंग रिए पिर कहु द्यागो मनह वर्गीस ॥

ए गुण च्याच्य वर्षार उत्तरिस सहस सील ।

सुदि धासाडी प्रतिपदा की उंकित करलोल ।

पुग मौलन बार गुरु " धमन सिद्ध ॥

धो जवालेपुरि प्रगट की तिम कारण विद्ध ॥

सजना जुगु सभन दंधित मित बाए।

दिव्य विद्यामह सही कुलल सेम कल्याए।।

बीच बीच में स्थान चित्रों के लिए छोड़ा गया है।

४७०६. विष्णुकुमार कथा— $\times$ । पत्रत $\circ$  ५। प्रा $\circ$  न् $^2_{\bullet}$  $\times$ ४ ५ १० । भाग-सस्त्रत । विषय-कथा। र०काल  $\times$ । ले०काल सं० १८२४। पूर्ण । बेष्ट्रन सः० २३५। प्राप्ति स्थान—अट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर।

४७१०. प्रति सं० २ । पत्र म० ४ । प्रा० ११×१ इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्य । वेष्टन स० प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरहपषी मालपुरा (टोक)

४७११. शालिमद्र चौपई—  $\times$  । पत्रतः २२ । मा॰ ११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इच । माषा – हिन्दी पछ । विषय-कथा । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । सदूर्ण । बेष्टनसं० १०६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रयवाल पचायती मिलर प्रजवर ।

४७१२. शालिमद्र चौपई --जिनराज सूरि । पत्र स०२६। ग्रा०१०४४ इच । माषा-हिन्दी (पद्य)। विषय - कथा। र०काल स०१६७८। ले० काल 🗴 । पूर्ण। वैष्टन सं०२४। प्राप्ति स्थान ---दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा।

४७१३. शालिमद्र चौपई — मनसार । पत्र स० २७ । भाषा — हिन्दी । विषय — कथा । र० काल स० १६०६ आपाड बुदी ६ । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । बेष्टन सं० २२६ । प्राप्ति स्थान — सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-श्री सागवाडा में श्रादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिनिधि हुई थी।

श्रन्तिम---

सोलहमम ग्रठोतिर वरस्यह ग्रास वदि छठि दिवसहजी ।

श्रीजिनसिंह सूरि सीष मनसारइ भवियण उपगारइजी । श्री जिनराज वचन धनुसारइ चरितइ कहया सुविचारइजी ।।

४७१४. शालिमद्र चौपई - विजयकोति । पत्र मंग्४६। घा० १०, ४८ दश्व । भाषा— हिन्दी । विषय — कथा । र०काल स०१८२७ । लेश्काल १६७२ । पूर्ण । वेट्टन म०२८३ । प्राप्ति स्थान—भटारकीय दिश्जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष -दान कथा का वर्णन है।

४७१५. शांतिमद्र बन्ना चोन्द्र - सुन्नित सागर । पत्र सं० २०। प्रा० १०×४ इंच । भाषा—िहानी । विषय—कथा । र० काल  $\times$  । ले० जाल स० १८२६ चैत्र सदी ११ । पूर्ण । बेटन सं० ३१२ । प्राप्ति स्थास —दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष --बुरहानपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४७१६. **शालिनम् घन्ना चौपई - मनसार** । पत्रस्व २० । मा० १०१ ४४ इन्छ । भाषा — हिन्दी पद्य । शिष्य -कबा । २०काल १६०० म्रासीन बुरी ६ । ते० कात १७४४ मार्क १६१० । पूर्ण । बेस्टन स० ७०३ । प्रास्ति **स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४७१७. **शोलकथा— भारामल** । पत्र स॰ ३१ । प्रा० द×६ १ इश्व । भाषा —हिरी (पद्य)। विषय-कथा। २०काल × । ले० काल स० १६४४ भाववा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२१२ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन संदिर प्रजनेर ।

४७१ स., प्रतिसं० २ । पत्रस० ३४ । घा० १० $\times$ ४ है इश्वः । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स० ७४४। प्राप्ति स्थान – भद्रारकीय दि० जैन मदिर धजमेर ।

विशेष —सेठ मूलवन्दत्री सोनीने सवत १९५८ ग्रायाद मुदी२ की बडा घडाकी नशिया में चढायाया।

४७१९. प्रति सं ० ३ । पत्रसं० ४० । मा० पर्े ४ ६ इन्हा से०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० १२७५ । प्राप्ति स्थान —महारकी र दि० जैन मन्दिर बजोर ।

४७२०. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४४ । ले० काल स० १९४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । प्राप्ति स्थान—दिश्जन तेरहाथी मन्दिर बसवा ।

४७२१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २२ । ग्रा० १२× ६ है इस । ले॰काल सं० १६६३ चैत्र बुदी ६ । पूर्णे । बेपुन स० ७०/१८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष -- पत्र सं०३६ भीर ३३ की दो प्रतिया भीर हैं।

४७२३. प्रतिसं०७ । पत्र स०५२ । घा०११×६ इ.च । ले० काल 🗴 । फ्रूर्ए । बेप्टन सं० ७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बैर ।

४७२४. प्रति सं० म । पत्र सं० ११ । घा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ $\frac{1}{2}$ इख । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं॰ ६व । प्राप्ति स्थान —वि० जैन खोटा मदिर बयाना ।

४७२५. प्रति सं०६ । पत्र सं०५३ । ले० काल स०१८६३ । पूर्ण । वेष्टन सं०७० । प्राप्ति स्थान—दि जैन स्रोटा मन्दिर वयाना ।

४७२६. प्रति सं० १० । पत्र स०३२ । प्रा० १० $^1_2 \times 5^1_3$  इश्व ।  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्य । बेहन ४०३३ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४७२७. प्रति सं० ११ । प्रत्तं०३७ । ग्रा० १३४६) इन्छ । २०कल ४ । लेक्काल सं०१८६० कानिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स०७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.)

विशेष---सरवरागम मेटी ने प्रतिनिधि करश्रयी थी।

४७२ स्. प्रति सं०१२ । पत्र स०५३ । ले० काल 🗴 । ब्रपूर्ण । वेटून म०७/४६ । प्राप्ति स्थान – टि० जैन मटिर बसवा ।

४७२६ प्रतिसं० १३ । पत्र त० २ -३६ । ग्रा० १०३ ×६ इला । ने०काल सं० १६२६ । पूर्ण । पेवनसं० ७० । प्राप्ति स्थान — ६० जैन तेरह पथी मन्दिर नैशवा ।

४७३०. पतिसं० १४ । पनस०४८ । झा० १२१ 🗶 ५ इथा। ले॰काल 🗴 । पूर्णे । वेष्टनसं०१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहरूत टींक ।

विषय — ततमृख ग्रजमेरा स्वाध्याय करने के लिये प्रति अपने घर लाया ऐसा निम्न प्रकार से लिखा है---

"तनसम्ब ग्रजमेरो लायो वाचवा ने गरु सं० १६५४ ।

४७३१. प्रतिसं० १४। पत्र स० २४। ग्रा० १३ $\times$ = इक्षा । र० काल  $\times$ । ले०काल सं० १९४३। पूर्ण । वेष्ट्न ४४ २४। प्राप्तिः स्थान —दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)।

४७३२. प्रतिसं० १६। पतस० ३२। ग्रा॰ ६४६ इवा। र०कास४ । ने०कास सं० १६१० पूर्णे । बेहुनस० ७२ १२३। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिह (टोक)।

विशेष- केकडी में गगोणलाल ने प्रतिलिपि की थी। पदा स० ५४७

४७३३. प्रतिसं० १७ । पत्र स०२४ । ग्रा० १२ ४ च इश्व । ने० काल स०१६४५ । पूर्ण । बेष्टसं० ११/७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष्ट-- १६६ पद्म सस्या है।

४७३४. प्रतिसं०१६ । पत्र स०३२ । घा०११ $\times$ ५ इक्षा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० सं ४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर ग्रमिनन्दन स्वामी, ब्रुदी ।

४७३५. प्रतिसं०१६ । पत्र म०२२ । ग्रा०१२ है ४८ इ.चा ले० काल ४ । पूर्णा विष्टन सं०५३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४७३६. शीलकथा—imes। पत्र स०१०। प्रा०१०imes६ व्या। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०कास imes। ले० काल imes। पूर्ण वेष्टुन सं०१२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.)

विशेष--- प्रति जीएां है।

४७३७. शीलकथा— X । पत्र स०१४ । ग्रा०७ रे X रं इन्द । मापा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल X । ने०काल X । ग्रपूर्ण । बेष्टनसं०४६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन छोटा मन्दिर जगाना ।

४७३६ सीलकथा—भैरौँलाल । पत्र स० २६। ग्रा० १२ है ४५ रेड अरा आपा – हिन्दी प्या । विषय—कथा। र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । बेष्टन स० ४०। प्रास्ति स्थान—दि० जैन पंचारती मन्दिर करीती ।

> सील कथा यह पूरएा भई। भैरोलाल प्रगट करि गहि।। पढें सुनी धव जो मन लाई।। जन्म जन्म के पातिग जाई।।४४॥ सील महात्तम जानि मिंद पालहु मुख को बास हुर्द हरख बहु धार्फि लिखी जो उत्तम नाम।४६॥

इति श्री शीलकथा मपर्गा लिखते उत्तमचन्द्र व्यास मलारगा का ।

४७३६. शीलतरंगिरणी— (सलयसुन्दरी कथा) ग्रस्तयराम जुहाडिया। पत्रस० ५८६ ग्रा० १० $\frac{2}{5} \times 9\frac{2}{5}$ ६७। भाषा-हिन्दी (प.)। विषय—कथा। २०कार  $\times$ । ने० काल स० १८६ सावन बृदी ५। पूर्ण। वेषून स० ४०७। ग्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष---प्रारम्म के ५३ पत्र नवीन है। ग्रागरा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४७४०. प्रति स०२ । पत्र स०७७ । घा०१०९ ४ ५ इन्द्रा नै० काल० ४ । ग्रपूर्या । वेष्ट्रत स०५० :। प्रास्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-प्रनितम पत्र नही है।

४७४१. शीलपुरंदर चौपर्द $-\times$ । पत्रस०१०। प्रा०१० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$ डख । भाषा-हिन्दी (प )। विषय-कवा। ग्रन्थाल  $\times$ । लेक्सल स०१७२०। पूर्ण । वेष्ट्रन स०१०२। प्राप्ति स्थान दि० जैन मिरर ववलाना (वृंदीः ।

विशेष - मृति ग्रमरविमलगरिए ने बीकानर मे प्रतिलिपि की थी।

४७४२. शीलसुन्दरीप्रवध—जयकीति । पत्रतः १६ । घा० ११ $\S \times$  ४ इञ्च । मापा—हिन्दी (पदा) । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ले०काल स० १६१० । पूर्ण । बेष्टनस० २४२ । प्राप्ति स्थान—घषवाल २० जैन मदिर उदयपुर ।

४७४३, शोलोपदेश रत्नमाला—असकोत्ति । पत्र स०११ । घ्रा०११ $\times$ ४ इंच । आया—प्राकृत । विषय—कवा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१२० । प्राप्ति स्थान —िद० जैन स्रवान प्वायती महिर स्रवहर ।

विशेष --गुजराती मावा में टिप्पण है। जसकीति जयसिंह सुरि के शिव्य थे।

४७४४. शीलोयदेश माला—मेरुमृत्यर । पत्र स०१६६ । प्रा०र $\frac{3}{2} \times 4$ ्रै इख । मापा—सरुकत । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ते० काल मं०१२२६ भादबा बुदि ३ । पूर्ण । वेष्टन स०२२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर ग्रमिनन्दन स्वासी, बूदी ।

४७४**५. श्रीपाल सौभागी आख्यान—बादिचन्द्र** । पत्रस**०२२ । ग्रा०११ ४४ १०४ ।** भाषा—हिन्दी (पद्य) । बिषय—कथा। र०काल सं०१६४१ । ले०कान स०१७६० कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टुनस०२४६,७६ । प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष - उदयपूर मे प्रतिनिधि हुई थी । प्रति म्रत्यन्त जीएाँ है ।

४७४६. प्रति सं०२ । उन्नतः ३० । म्रा० १०१ × ४ इ.च । ले०कान स० १७४३ । पूर्ण । वेम्नसं० ६२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन खडेनवाल मन्दिर उदयपुर ।

४७४७. प्रतिसं० ३ । पप्रतः० २ ३१ । आ० ११ ४४ इश्व । ले० काल स० १८१६ । अपूर्ण । वेष्टत स० ३४७ । आणित स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४७४६, श्रुतावतार कथा— $\times$  । पत्रतः ५। प्राः ११ $\times$ ५ हे र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। ०काश्च  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्यं । वेप्टन स॰ ४४६ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मदिर सफकर जयपर ।

४७४**८ क. प्रतिसं०** २ । घा० १६ × ४ हुँ इश्वा **ले० काल स० १**८६३ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्णा। वेष्टन सं० ४४६ । प्राप्ति स्थान — १० जैन मदिर लक्कर जयवर ।

विशेष — महाराज मवाई रामसिंह के राज्य में जयपुर में लक्कर के नेमि जिनालय में प० आसूराम ने प्रतिलियि की थी।

४७४६. श्रे रिएक सहामांगलिक प्रबन्ध — कत्याराकीति । पत्र स॰ ३६ । बा॰ ११ ४४ है इन्छ । भाषा जिन्ही (पदा)। विषय कवा। र०काल स॰ १७०४ । ले०काल स॰ १७३१ । पूर्ण। वेस्टन स॰ १४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन श्रयवाल मदिर उदयपुर।

४७५०. षटावश्यक कथा—  $\times$ । पत्र स०६। या॰ १० $\times$ १ $^{2}_{2}$  इच । भाषा हिन्दी । विषय कथा। ॰०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । स्रपूर्ण। वेष्टन स०११४। प्राप्ति स्थान-दि० जैन सदिर बोग्मली कोटा।

विशेष -- प्रन्तिम पत्र नहीं है। प्र कथा तक पूर्ण है। प्रति प्राचीन हैं।

४७५१. सगर प्रबन्ध — ग्रा० नरेन्द्रकोर्ति । पत्र सं०१० । ग्रा०११  $\times$  ५ ६ च । भाषा-हिन्दी (प $\overline{u}$  । विषय कदा । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वे०स०१ न्४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन ग्रावान मंपर उदयपुर ।

४७५२ सदयबच्छ सार्वीनगा चीयई —  $\times$  । पत्र स० १२ ग्रंग्० ५ $\frac{1}{2}$  ४६ $\frac{1}{2}$  इछ्व । भाषा— हिन्दी । विषय कशा १०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । घर्र्सणं । वेष्ट्रन स० ७६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवान चेननराम पुरानी डीग ।

विशेष -- पत्र ६ तक है आगे चौबीम बोल है वह भी अपूर्ण है।

४७५३ सन्तरुवसन कथा--सोमकीति । पत्रतं० १०२। ब्रा० ११४४, इञ्च । माषा-सरुकत । विषय-कश । २०कारा म० १४२६ माघ मृटी १। ले०काल स० १८३६ ब्रगहन मृटी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ २६ । ब्राप्ति स्थान - दि० जैन पार्धनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोग) ।

विशेष - लाखेरी नगर मध्ये लिखित बाबा श्री ज्ञानविमल जी तत शिष्य रामचन्द्र ।

४७५४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ११२ । बा॰ १ 🔆 🗵 इत्थ । ले० काल स १८८३ । पूर्ण । बेक्न स० ७८ । प्राप्ति स्थान —-दि० जैन पत्रायती मन्दिर बयाता ।

ग्रन्थारस्य २०६७ श्लोक प्रमाण है।

४७५५. प्रति स०३ । पत्रसं∘ २/११६ । झा०१०४४ } इला । ले० काल स० १७३६ । वर्षो । बेष्टन स०३५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — सबत् १७३८ वर्षे प्रथम चैत्र बुदी १ रवि दिने बहा श्री धनसागरेण लिखित स्वयमेव प्रकार्थ ।

४७५६, प्रतिसं०४ । पत्र स० ६६। ग्रा० ११×५) इश्वा । ले० काल सं०१६६० ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वेनुन म०२०५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रग्नवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सन् १६६० वर्गे ज्येष्ठ मासे मुक्त पसे पूणिमा तिथी भीमे भेतसा महास्थाने श्री चन्द्रप्रभ चेत्या-समे भी मुससे सारवर्गामण्डे बतात्वारणणे श्री कृदकुरावार्यात्वये मा श्री महत्वतीतिदेवा गश्री श्री भुवन क्रीतिदेवा गश्री ज्ञानभूषणपरेग मश्री विवयकीतिदेवा मश्री सुनयन्त्रदेवा भश्री मुमितकीति अश्री मुण्यकीतिदेवा भश्री वार्विभूणपरेवा भश्री रामकीतिदेवा भश्री प्रामारित त्री ज्ञिष्य बह्य रुढजी स्वय सिवित । पुत्रो भक्तु ।

४७५७. प्रतिसं० १ । पत्र स० ७६ । आ० ११×४ है इख । लेक्सल स० १६०४ । पूर्ण । बेष्टन स० १४४-६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १६०५ समये ष्राश्विन बुदी ३ बुधवासरे श्री तीर्थराज प्रयाग ग्रामे सलेम साहिराज्ये ।

४७५८, प्रतिसं०६ imes। पत्र स०६३ । द्या० १२imes५ इक्का लेब्काल स० १६१६ । imes१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का उनगपुर । ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

४७५६. प्रति सं० ७ । पत्रतः १४२ । प्रा० १०३ ४४} इखा । ने० काल स० १६५८ । पूर्छ । बेष्टुन स० २४३ - ६७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर कोटडियो का ङ्गरपुर ।

विशेष-- उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४७६०. प्रतिसं० म. । पत्र सं०७६ । घा० १० २ ४ ६ चा। ले० काला सं०१ ८४२ । पूर्ण । वेष्ठन स०७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रनवर ।

विशेष -- शेरगढ मे दयाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४७६१. प्रति सं० ६ । पत्र स० ६७ । या०१० 🗴 ४ इ.च. । ले० काल स० १७४१ माह सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४७६२. प्रति सं० २० । पत्रस० १७ । प्रा०११३४४ है इश्व । लेक्सल सं० १७८५ पीव सुदी १० । पूर्ण । बेब्रुन स०७७६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर इनी (टॉक)

विशेष-वन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी।

४७६३, प्रतिसं० ११ । पत्र स० ११३ । घा० ८ र्रे ४६ इंच । से० काल स० १६२५ फागुरा बुदी ४ । पूर्ण । बेहुन स० १८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नागदी बुंदी ।

४७६४. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ६८ । ग्रा० १२ ४४ है इच । से०काल सं० १८२४ । पूर्ण । वेष्ठन स० २१२ । प्राप्ति स्थान—दि०वैत मंदिर नागरी व दी ।

विशेष---प० गुलाबचदजी ने कोटा मे प्रतिलिपि की थी।

४७६**५. प्रतिसं०१३** । पत्र स० २५ । ग्रा०१३ 🗴 ५१ देखा। ले०काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टुनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रिमनन्दनस्वामी, बूंदी।

विशेष---निम्न प्रशस्ति दी हुई है

मिति ग्रासोज जुनना प्रतिपदा सोमवासरान्त्रित लिखित नग्र कोटा मध्ये निखापित पहिस्तोत्तम पहितजी श्री १०८ श्री जिन्नालजी तत्त्विच्य श्री रत्नलालजी तस्य लघुभाता पहितजी श्री बीरदीस्रालजी तत् जिप्य श्री नेमिलाल दवनारणा हालान ।

४७६६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १०८ । ग्रा० ६४४ इन्छ । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । बेष्टन स० २२८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रश्निनस्त स्वामी वृदी ।

विशेष-पत्र वर्ड जीग् भीगां है तथा १०८ से आगे नही है।

४७६७. प्रतिसं० १५ । पत्र स० ३२ । प्रा० ६ ४ ५५ इला । ले•काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी व दी ।

४७६८. प्रतिसं० १६। पत्रस० ३५ । ले॰काल 🗴 पूर्ण । बेष्टनसं० ७०३ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४७६९. सप्तब्यसन कथा — भारामत्ल । पत्रस० ७४ । म्रा० १२imes६३ इश्व । ले०काल सं० १८२४ । पूर्ण । बेष्टुनस० ४०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर म्रलवर ।

४७७०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०१ । घा॰ ११ रै ४६ इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनस० ६६–११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्यासह (टॉक)

४७७१. प्रतिस० ३ । पत्र स० १६५ । बा० ११×४ १ इन्छ । लेकाल स० १८६१ । पूर्ण । बेष्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक) विशेष -- राजमहल नगर में सुखलाल शर्मा ने तेजपाल के लिये लिखा था।

४७७२. प्रति सं० ४ । पत्रस० १०७ । ग्रा० ११ 🗙 ५ इच । ले०काल 🗙 । पूर्ण । बेष्ट्रनसं• १३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपरा (टोक)

४७७३. प्रति सं० ४ । पत्र स० १२६ । प्रा० ११४७ इञ्च । ते० कान सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० २२३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नागदी बंदी ।

विशेष - चदेरी में प्रतिलिपि हुई थी।

४७७४. प्रति सं०६ । पत्रस० ११४ । प्रा० १३१४ ८ ॄे इञ्च । के०कास ४ । पूर्ण । वेष्टन स०३७४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर फोइद्वर सेक्षाबाटी (मीकर)

४७७५. प्रति स० ७ । पत्र स० १२४ । ग्रा० १० ४ ७ इचा । ले॰काल स० १६६१ । पूर्णे । वेष्टनस० २० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर श्री महावीर व दी ।

४७७६. **प्रति संक्ष्या ।** पत्र स०१०० । आ० १२ $^1_1 \times \S^1_2$  इवा । ले०काल स०१६५५ ।  $^1_1$  प्रति स्थान – जपरोक्त मन्दिर ।

४७७७. प्रतिसं०  $\boldsymbol{\epsilon}$  । पत्र स० ११३ । घा० १३ $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  इश्व । ले०काल स० १६६७ । पूर्ए । वेष्टुत स० १७३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायती मन्दिर करोली ।

४७७८. **प्रतिसं० १०।** पत्र स० ८१। घा० ११ 🖔 ४८ दश्व । ले०कालस० १८७१ घासोज बुदी १०। पूर्ण । वेहन स० ३६। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन ग्रप्रवाल मन्दिर नैलावा।

विशेष-गृहजी गुमानीराम ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४७७६. सम्तब्यसन कथा  $-\times$ । पत्रस० ७४। भाषा-द्वित्वी । विषय-कथा । २०काल $\times$ । वै॰काल  $\times$ । धृषुष् । बेप्टनसं० ४४। प्राप्ति स्थान-िद० जैन तेरहपयी मन्दिर मालपूरा (टोक)

४७०० सम्यक्तव कौमुदी— धर्मकीति । पत्रस० २३ । घा० १० ४ ५ इ.व. भाषा-सस्क्रत । विषय-कथा । र०काल स० १६७६ भादवाबुी १० । लेवकाल स० १६६५ । पूर्णा । वेण्टन स० २०-१२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुनरपुर ।

## ग्रन्तिम---

स्री भूतमधेवरमध्ये क्वात्वारमणे वने ।

कु दकु दम्य सनाने मुनियनित हीनिवाक्
तरस्व पात के प्रति मिनि हिन्
तेनाय रवि में प्रत्य निर्मात हिन्
तेनाय रवि में प्रत्य निर्मात व्यव्य बुद्धिना ।।४।।
स्वर्ष्य रस्वान्ते वर्गे भारणरित्ति निर्मात ।।४।।
स्वर्ष मुवासिन किसि ज्ञानाद्वा प्रमादन ।
तर् भी सक्वा प्रसाद मनेता सहस्वी मुख ।
विवर्षक्ष पुनितास्वा प्रमोदन ।।।।
विवर्षक्ष पुनितास्व प्रमो निर्मेशन ।।।।
विवर्षक्ष पुनितास्व प्रमादमा निर्मेशन ।।।।।

इति श्री सम्यक्तकोमुदीग्रथे उदितोरूप महाराज सुबुद्धि मंत्रीश्रेष्ठी ग्रर्हदास सुवर्ण खुर चौर स्वर्गतमनवर्णन नामः दशम सथि ।।

४७.६१. सम्यकस्य कौमुदी - ब्रह्मखेता । पत्रसः १८३ । सा॰ १२.४५ १ इथा भाषा-सस्कृत । विषय-कया । र०काल ४। ले॰ काल स॰ १८०१ । पूर्ण । बेष्टनसं• ६१ । प्राप्ति स्थान--दि॰ जैन मन्दिर पार्थनाय चौगान बृदी ।

४७६२. प्रतिसं० २ । पत्रस० १४३ । सा० ११४६ । इत्या । माथा-संस्कृत । विषय कथा । २०काल ४ । ने० काल स० १=६५ वैद्याल बुदी १३ । पूर्ण । देष्ट्यसं० ६६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर स्टरगढ (कोटा) ।

४७८३. प्रति सं० ३ । पत्र स० १२४ । प्रा० ११ × ४ इन्ह । लेक्काल स० १६७३ श्रावरण सुदी ३ । पूर्ण । बेटुन स० ७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--- प्रशस्ति प्रपुर्श है।

४७ दर्भ प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १६२ । आ० १२  $\times$  ५ इञ्च । ले० काल स० १६२६ ग्रासीज मुदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

लेखक प्रशस्ति— श्री मृतसभे सरस्वतीगक्षे वाताकारगणे श्री कुंदकु दाचार्या-वये महारक धर्माच्या तत् ति बदा गोकनजी तत् लघु भ्राता बहा मेघजी लीखिता । श्री दक्षिणदेशमध्ये अमरापुर नये । श्री शांतिनाथ चैत्यालये ।

४७८५. प्रति स॰ ५। पत्र स॰ १२०। सा॰ १२ × ४० हुँ हुँ । ले॰ काल स॰ १७४६। पूर्णे। वेग्टन म॰ २। प्राप्ति स्थानः— दि॰ जैन मन्दिर राजमहल (टोकः,।

विशेष:- श्री जिनाय नम सवन् १७४६ वर्षे मिति श्राव्यिन कृष्णा पंचम्या भीमे । लिखित सावलराम जोमी वगाहय मध्ये। निर्णापन पाठे व दावन जी।

४७८६. प्रतिसं० ६। पत्र स०१०। प्रा०१२ $^2_1$  imes ६ इवा। लेव्हाल सं०१८४१ चैत्र सुदी १२। पूर्णः। बेटन स०१२६। प्राप्ति स्थान – दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक्र)।

विशेष - सीताराम ने स्वपठनार्थ चाटमू नगर मे प्रतिनिधि की थी।

४७८७. प्रतिसं० ७ । पत्र स०१४४ । घा० ११ $\times$ ४० है इख । ले०काल स०१६३४ आसोज बुदी = । बेय्टन स०८७ । प्रास्ति स्थान=िद० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष - धर्मचन्द्र की शिष्याणी ग्रा० मिएक ने लिखवाकर श्रीहेमचन्द्र की भेंट की थी।

४७८८. प्रतिसंव ६ । प्रा सस्या ४६ । प्राव १० $^2_{\gamma}$   $\times$  ४ $^2_{\gamma}$  इच्च । लेक्काल सक् १६६६ पीय बुदी १४ । बेग्टन सक्द ६ प्राप्ति स्थान— दिव जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-प केणव के पठनार्थ रामपुरा में प्रतिलिपि हुई थी।

४७८६. सम्ययस्वकौमुदी--जोधराज गोदीका। पत्र स० ६२। प्रा० ११ × ४१ इस्व। माषा-हिरी (पत्र)। विषय-क्या । र०काल सं० १७२४ फागुगा बुदी १३ । ले०काल स० १८६६ कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० १२। प्राप्ति स्थान--महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजसर। . ४७६०, प्रतिसं० २ । पत्र संख्या ४८ । ते० काल स० १८८५ कार्तिक बुरी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन संख्या १४८ । प्राप्ति स्थान — अट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष--- किशनगढ मे लहाडियो के मन्दिर मे प० देवकरण ने प्रतिलिपि की थी।

४७६**१. ऋतिसं० ३** । पत्र स० १५६ । झा० ११ 🗴 ७ , इन्छ । ले० काल स १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १६२० । **प्राप्ति स्थान** — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर खजमेर ।

१७६२. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ६२ । झा० १० ४ ६ इन्छ । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वे० स० ७५ । प्राप्तिस स्थान— दि० जैन मंदिर प्रभितन्द्रत स्वामी बुंदी ।

४७६३. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६४ । था० ११  $\times$  ७ इला । ले० काल स० १८२३ पूर्ण । बैप्टन स० ३३ /१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पवायती दूनी (टोक्र) ।

विज्ञान-सदासुल ने दूनी मे प्रतिलिपि की थी । स॰ १६३१ मे पान उपनास के उपलक्ष में प्रभवनद की बढ़ ने चढ़ामा था।

४७६४, प्रतिसं० ६ । पप्रसं० ६३ । खा० १०३ × ६३ इख । ले० काल सं० १६३३ भादवा वदी १३ । पर्णा । बेकन सं० १ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मस्दिर कोटयो का नैगावा ।

४७६५, **प्रतिसं०७** । पत्र सं०४४ । आ०१२ ४ ६ इ.च.। ले०काल स०१६५६ माह सदी ५ । पूर्ण । वेबन सं० द२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैसावा ।

४७६६, प्रति सं ० प्र। पत्र स० ७७ । ब्रा० १० $\} \times ४$  इन्छ । ले० काल स० १७५७ कालिक बुदी १२ । पूर्ण । बे० सं० ३१-१४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष — स्याराम भावसा ने घासीराम जी की पुस्तक से फागुई के तेरह पथियों के मन्दिर में प्रतिकिपि की थी।

४७६७ **प्रति सं० ६** । पत्र स० ७७ । ग्रा० १२ $\times$ ४ । इत्या । लेब्काल स० १८३४ वैसाल सुदी ११ । प्रपूर्णः,। वेष्ट्रन स० ४१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर लक्कर अयपूर ।

४७६६. प्रतिसं० १० । पत्रस० ६३ । प्रा० ११ imes ४ $^2_2$  इ.च । ले॰काल स० १८६६ । पूर्ए । वेष्ट्रन स० ५६/८२ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पार्धनाथ मन्दिर इन्दरगङ (कोटा) ।

विशेष --टोडाकागोऽडामध्ये लिखित ।

४७६६ प्रतिसं० ११। पत्र सं० ७२। ले० काल स० १८८०। पूर्ण। वेष्टत स० ६३। प्राप्ति स्थान— दि० जेन पार्थनाथ मन्दिर इस्टरगढ कोटा।

४८००. प्रति सं ०१२ । पत्र स० ११ । ले०काल स०१८८४ चैत्र मुदी १४ । पूर्ण । वैष्टनसं ०६४ । प्राप्ति स्थान--- दे० जैन पाण्येनाप मिंदर इन्दरगढ (कोटा)।

४००१. प्रतिसं० १३ । पनस० ४१ । मा० १२ $\times$ ५ $\xi$  इंच । ले०काल सं० १८६६ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । लेवन स० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाय मन्दिर इस्टराह (कोटा) ।

विशेष-- ारोत्तमदासजी अप्रवाल के पुत्र ताराचंद ने प्रतिलिपि कराई थी।

४८०२. प्रति सं० १४ । पत्र स० ५१ । प्रा० १३ है × ८ इ.च । ले०काल × । पूर्ण । बेहनसं० ५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल प्लायती मन्दिर प्रलबर ।

४८०३. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० ८४ । ग्रा० १ ४४ हे इञ्च । ते०काल सं० १८४१ । पूर्ण । बेष्टतसं० ५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रम्याल पंचायती मन्दिर मलवर ।

४८०**४. प्रति सं० १६ ।** पत्र सं० ६२ । घा०१२ ४७ इ<sup>.</sup>च । ले० काल सं० १६४१ सावरा बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन सं० २१,१४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर घलवर ।

४८०**५. प्रतिसं० १**७ । पत्र स**० ४४** । ले० काल सं० १८६२ पौष बुदी ६ । पूर्ए । वेष्टन सं० १२(क)/१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर धलवर ।

४६०६. प्रति स० १६ । पत्रस० ७७ । ले०काल सं० १८७७ पौप सुदी १५ । पूर्ण । बेष्टन स० ३२ (ल) १७५ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पनायती मन्दिर मलवर ।

४८०७, प्रति सं०१६। पत्र सं०६४ । ले० काल सं०१८८४ । पूर्वं । वे०स०४६६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४६०६, प्रति सं० २० । पत्र स० ४१ । ले० काल सं० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० ५७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४६०६. प्रति स० २१। पत्र स० ६२। ले॰काल स० १७६६। पूर्ण । बेच्टन स० १७१। प्राप्ति स्थान---दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष -- मनसाराम ने प्रतिलिपि की थी।

४८१० प्रति सं० २२ । पत्र सं० १११ । घा० ८ ४५ देख । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टत स० ८८ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

४**८११ प्रतिसं० २३।** पत्रस० ६३ । स्रा० १०३ 🗶 ६ इ.ख. । ते० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टुनस० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

४६१२. प्रतिसं० २४ । पत्र स०३६ । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० २५ । प्राप्ति स्थान—प्रवायती वि० जैन मन्दिर बयाना ।

४६१३. प्रतिसं० २५ । पत्रस० ५७ । म्रा० १३८५ है इच । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पचानती मदिर करोली ।

४६१४. प्रतिसं० २६ । पत्र सं० १०१ । ग्रा० ८ $\frac{3}{2}$   $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  इखा । ले०काल सं० १६१० कास्तिक बदी ३ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६०/७ । प्राप्तिक स्थान—दि० जैन सौगाणी मदिर करोती ।

विशेष-करौली में लिखा गया था।

४**८१४. प्रति स**० २७ । पत्रसं० ५६ । धा० १२ 🗴 ६ इचा । ले० काल सं० १८६० कायुन सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन स० ६६–३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष - सेवाराम श्रीमाल ने गुमानीराम से करौली में प्रतिलिपि करवाई थी।

४८१६. प्रति स० २८ । पत्रसं० ४४ । ते० काल सं० १८४६ । पूर्ण । बेष्टनसं० ८४ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन तेरहप्यी मन्दिर बसवा । विशेष-नोनदराम लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

४६**१७. प्रति स० २६। पत्र**सं० ४० । घा० १२ imes ४, इन्छ । ले० काल imes । पूर्ण । वेकनसं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास परानी डीग ।

४६१६, प्रति स० २० । पत्रस० ४४ । म्रा० १२imes० इत्र । ते०काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास प्रानी डीग ।

विशेष — डीग नगर मे प्रतिलिपि की गई थी।

४८१**६. प्रति सं० ३१ ।** पत्रस० ७० । म्रा० १२×६ इच । ले० काल स० १६११ । पूर्ण । बेष्टुत सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पूरानी डीग ।

४८२०. प्रति सं० ३२ । पत्र स० ६४ । घा० ६ ४ ६<sup>3</sup> इंच । ले० काल स० १०४६ पीय नुदी ६ । पूर्या । बेकून स० ३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दीसा ।

विशेष - मेवाराम ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी।

४८२१. प्रतिसं० २३ । पत्रसं० ७१ । आ० १३ ४४ १ इखा । ले० काल स० १८६१ डि० चंत्र बुदी ८ । पूर्ण । बेष्टनस० १५-२४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जॅन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

विशेष-देवगरी (दौसा) निवासी उर्देचन्द लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

४**८२२. प्रतिसं० ३४ । पत्र**स० ६६ । आ०१२ × ६ इच । ले०काल स०१८६१ भाववा **बुदी ७ ।** पूर्णावेषून स०३७-७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बडाबीसपथी दौना।

विशेष-प्रमन महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई पृथ्वीगिह जी का मे दोवान श्रारतिसिह खिदुको सुसाहिब खुरुयालीराम बोहरी। लिखी सरूपचद खिदुका को बेटो पिरागदास जी खिन्दुको।

४६२३. प्रतिसं० ३५ । पत्र स० ४६ । ब्रा० १३ ×६० इन्ड । ले०काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २८६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष-भीलोडा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६२४. प्रति सं० ३६। पत्र स० ६७ । प्रा० १२ $\times$ ५, इच । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४६२५. प्रतिसं० ३७ । पत्र स० ६३ । आ०१०४६ इ.च । ले० काल म०१८६२ । पूर्ण । वेल्टन सं०७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर गजमहल टोक ।

विशेष-राजमहल में प्रतिलिपि हुई थी।

४८२६. सम्यक्स्य कीमुदी भाषा—मृति दयाचद । पत्र स०६१ । प्रा०११ ४ ४ १ इश्व । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—कथा । र०काल स०१८०० । ले० काल स०१८०२ धाषाद बृदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स०६७-६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बढ़ा बीनपथी दौना ।

४६२७. सम्प्रकृत्व कौमुदी- विनोदीलाल । पत्र सं०११२ । बा०१२×६६ च । माषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल सं०१७४६ । ले० काल म०१६२६ । पूर्ण। वेप्टन स०११५ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन स्रदेलवाल मन्दिर उदयपुर । ४८२६. सस्यक्स्य कौमुदी — जगतराय । पत्र स० १०२ । प्रा० १० $\frac{2}{3} \times \frac{1}{2}$  इच्च । माषा – हिन्दी । विषय — कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल सं० १७२२ वैद्याल सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर टीवान जी कामा ।

विशेष-प्रशस्ति मे लिखा है-

काशीदास ने जगतराम के हित ग्रंथ रचना की थी।

४६२६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ११६ । घा० १२ ४ ६ इचा । ले० काल स० १८०३ । पूर्छ । बेष्टतसं० १५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

४८३०. सम्यक्त कौमुदी कथा × । पत्र स० ६३ । प्रा० १०×४; इन्त्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । १०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४७ । प्राप्ति स्थान—अट्टारकीय टि॰ जैन महिर ग्रजमेर ।

४६३१. सम्यक्त्व कौमुदो कथा —  $\times$  । पत्रस० ५६ । धा० १०  $\times$   $^{1}$ हे इत्त । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । २० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६६४ । प्रास्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

४८३२. सम्यक्त्व कीमुदी कथा  $-\times$ । पत्र छ० १२२। घा० १० $\forall \times ^2 \in \forall = 1$  साधा- सम्कत । विषय-कथा । र०काल  $\times$ । ते० काल स० १८५३ माह सुदी १३। । पूर्ण । वे० स० ६६२ । प्राप्ति स्थान—अट्टारकीय दि० जैन मन्दिर स्थानेर ।

४८३४. सस्यक्त्व कीमुदी कथा—  $\times$  । पत्र स० ०६। प्रा० १०  $\times$  ६ $^1_2$  इखा । साधा- सस्कृत । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ते० काल स० १८१२ पीय सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ४०२ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० हेन मन्दिर प्रवर्गर ।

४८३४. सम्यक्त्व कौमुदी कथा —  $\times$  । पत्र स० १३४ । प्रा० १२ $\times$ ४ इव । साया- सस्कृत । विषय कथा । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १६४६ । चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० २३-१३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोटडियों का हु सरपुर ।

विशेष--- ग्राचार्य सकलनद्र के भाई प० जैसा की पुस्तक है।

४८३६. सम्यक्तव कौमुदी कथा— $\times$ । पत्र स०६२। प्रा० १० $\times$ ४} इ.च । मापा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$ । ते० काल स० १६८६। पूर्ण । वेष्टन स० ११३-४४। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

प्रशस्ति—सनत् १६६८ वर्षे चैत्र सुदि १३ दिने लिपी कृतं पूज्य श्री १०५ विशालसोमसूरि शिष्य सिंहमोम लिपि कृतं ।

४८३७. प्रति सं०२। पत्र स०१२६। झा०१३×७ इ.च । ले० काल स०१८८५ । पूर्णं। वेष्टतस०११४-४४। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त । ४८३६. सम्यक्त कौमुदी कथा—  $\times$  । पत्रसं० ५२ । ग्रा० ११२  $\times$  ४ $^{\circ}$  इख । माधा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १४ $\times$  । प्राप्ति स्थान— किंठ जैन प्रवाल मन्दिर उदयपर ।

४८३६. सम्यक्तव कौमुदी कथा। पत्रसं० १३४। ग्रा० ११ ४ ४) इन्छ। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ४ । ले०काल सं० १८३७ प्रासीज बदी १२।पूर्ण। बेष्ट्रनस० १६२ । प्राप्ति स्थान----वि० जेन पत्रायती मंदिर करोली।

विशेष--वैग्सव जानकीदास ने डालचद के पठनायं करौली में प्रतिलिप की थी।

४८४०. सम्यक्त्व कौमुदीं कथा— × । पत्र स० १०० । घा० १ः ै × ५ इश्रा । पापा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स० २३ । प्राप्ति स्थान—पवायती विक जैन मदिर बयाना ।

४८४१. सस्यक्स्व कौमुदी कथा— × । पत्रसं० १-३४, ६१ आधा-सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । बेष्टनस० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

४८४२. सम्यवस्य कौमुदी कथा—  $\times$  । पत्रसः १६ । घा० १० $\times$ ४ इश्व । मापाः-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । धपूर्णं । वेष्ट्रन स० १७८ । प्राप्तिः स्थान - दि० जैन मन्दिर बोरसती कोटा ।

४८४३. सम्यक्तकोमुदी कथा—  $\times$  । पत्र स० १०७ । ब्रा $\circ$  १०  $\times$  ४ $^{\circ}$  एख । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०कास  $\times$  । ले०काल सं $\circ$  १७४५ । पूर्ण । बेष्टन स $\circ$  २६७ । प्राप्ति स्थान— दि $\circ$  जैन मदिर बोरसनी कोटा ।

प्रशस्ति—सबन् १७४४ वर्षे पीप मासे गुक्त पक्षे त्रयोदश्या तिथौ भौमवासरे श्री होरापुरे निकित सकस्तर्माएं नगेन्द्रगरिए श्री ४ रत्नसागर तिस्त्रिच्य गरिणगणोत्तम सगरिए श्री बतुरसागर तिच्छ्रच्य गरिए गरिणालकार गरिए श्री रामसागर तिस्त्रिच्य पंडित सुमितिसागरे**रए** ।

४४८४. सम्यक्तकामुद्री—  $\times$  । पत्रस॰ ११३ । प्रा॰ १२  $\times$  ५ इख । भाषा-मन्कृत । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टनसं॰ ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी ।

विशेष—सवत् १७४६ वर्षे मिती कार्तिक गुक्का तृतीयाया ३ भीमत्रासरे लिखितिमद चीवे रूपसी स्वीवसी ज्ञाति सिनावढ वणाहटा मध्ये लिखायत च पाहडया मयाचद माधो सुत ।

४६४५. सम्बन्धकोमुदो कथा—  $\times$  । पत्रतः ४०। ग्राः ११ $\times$ ५ इश्वः। भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनसं० १०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष--लिखित कृषि कपूरचन्द नीमच मध्ये । प्रति प्राचीन है ।

४६४६. सम्प्रकृत केमुदी कथा—  $\times$  । पत्र स०२-६२ । प्रा०१०  $\times$  ४ $^{1}_{2}$  इखा । भाषा— संस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६६६ फागुए। मुदी ३ । प्रपूर्ण । बेष्टन स०२। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैएया ।

विशेष - प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। महोपाध्याय मेघविजयजी तत् फिट्य प० कुशलिजय जी तत् फिट्य कदिविजय जी शिप्य पं० मुवन विजयजी तत् शिप्य विनीत विजय गरिंग लिखितं।

४८४७. सम्यदस्य कौमुदो कथा— X । पत्रसं० १४३ । प्रा॰ ११ X १ इखा । भाषा-सस्क्रतं । विषय-कथा । र०काल X । ले० काल X । पूर्णं । वेष्ट्रनसं० १३१-२११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टॉक ।

४८४८ सम्पन्नव कोमुदी कथा — × । पत्रसं० ११ । ग्रा० ११ ४६ इत्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १७२१ फागुन वदी ४ । पूर्ण । वष्ट्रन सं० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर प्रमिनस्त स्वामी, बुंदी ।

विशेष-साह जोधराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी।

४८४६. सम्यक्तव कौमुदी कथा—  $\times$  । पत्रस० १५–१११ । प्रा० ११  $\times$  ४ $^1_2$  इश्व । मापा-संस्कृत । विषय कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेष्टन सं० १४१ । प्राप्तिः स्थानः दि० जैन मदिर पार्वनाय चौगानः व दी ।

४८५०. सम्यक्तव कोमुदी कथा—  $\times$  । पत्र स० ५४ । आ० ११ $\frac{1}{5}$   $\times$  ५ इख । प्राया—सम्कृति । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रन स० २२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थन।थ चोगान, बूदी  $\mathbf 1$ 

विशेष---प्रति प्राचीत है।

४८५१. सस्यक्त कौमुदी कथा — $\times$  । पत्र त० ५४। प्रा० १ $\xi$   $\times$ ४ इख । भाषा -सस्कृत । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पार्वताथ मन्दिर चीगान वृदी ।

४८५२. सम्यवस्व लीलाबिलास कथा—िबनोदीलाल । पत्र स $\bullet$  २२६ । मा $\circ$  ६ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इञ्च । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल । ले $\circ$  काल स $\circ$  ११५३ । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  १२८ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

४८५३, सस्यादर्शन कथा—  $\times$  । पत्र सं॰ १२६ । ब्रा॰ १० $^{\circ}_{2}\times Y^{\circ}_{2}$  हुळ्न । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ७६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४८ ५४, सिद्धचक कथा — शुमचन्द्र । पत्रस० ५ । प्रा०११३ $\chi$ ६ इथा । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।  $\chi$  ले०काल सं०१६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मिदर बयाना ।

४८५५ प्रति सं०२ । पत्रस० ५ । मा०१२ 🗶 ४६ इत्र । ले०काल सं०१८४२ । पूर्ण । बेष्टनसं०२५३ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन पावर्षनाथ मदिर चौगान बृंदी ।

४८५६. सिद्धचक कथा—अतुसागर। पत्रस० २३। ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा संस्कृत। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल स० १४७६ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टनसं० २७२। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा। विशेष-मार्था जानश्री ने प्रतिलिपि करायी थी।

४८५७. सिद्धचक कथा - म० सुरेन्द्रकोति । पत्र सं० ४ । मा० १४ × ६ इवा । साधा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ते० काल स १८७६ । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ८७ । प्राप्ति स्थान-वि• जैन पवायती मन्दिर दुनी (टोक)

विशेष-प्रशस्ति में निम्न प्रकार मट्टारक परंपरादी है देवेन्द्रकीर्ति महेन्द्रकीर्ति क्षेमेन्द्रकीर्ति भीर सुरेन्द्रकीर्ति।

४८५८. सिद्धचकतत कथा—नैमिचन्द्र पत्रसं॰ १६६ । प्राथा-संस्कृत । विषय—कथा । २०काल imes । ते० काल imes पूर्ण । वेण्टन सं० ७७-२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय

विशेष-प्रन्तिम पुष्पिका निम्न द्रकार है-

इति विद्वदर श्री नेमिचन्द्र विरचिते श्री सिद्धचकसार कथा सबये श्री हरियेण चक्रवर वैराग्य दीक्षा वर्णनी नाम क्षप्तम सर्ग ।।७।।

४८% . सिद्धचकता कथा — नथमल । पत्र सं० २६ । भाषा – हिन्दी गद्य । विषय – कथा । रक्काल  $\times$  । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० २००१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नगरी बुदी

विशेष-जादराम छावडा चाकसुवाला ने बोली मे प्रतिलिपि करवाई थी।

ग्रन्थ का नाम श्रीपाल चरित्र है तथा ग्रष्टाह्निका कथा भी है।

४८६०. प्रतिसं० २ । पत्र स० १३ । ग्रा० १२३४८ - ३६७ । ले०काल 🗴 पूर्णः । वेष्टन स ३५० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४८६१. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ७ । ग्रा० १२ ४७ हे इञ्च । ते०काल स० १६४२ कार्तिक सुदी ४ । ग्रपुर्स । वेष्टन स० ३४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४८६२. सिहासन बस्तीसी-जानचन्द्र । पत्र स० २६ । प्रा० १० $\frac{7}{2}$  ४ इख । माषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स०  $\frac{1}{2}$  सिहासन स्थान—दि० जैन मन्दिर दक्ताना बुंदी ।

४८६३. सिहासन बसोसी—विनय समुद्र। पत्र स० २६ । आ०१० $\times$ ४६ख । भाषा— हिन्दी (गद्य) । विषय—क्या । र०काल स०१६११ । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०७४२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दवलाना (बंदी)

विशेष-इसमे ४१ पद्य है। रचन। का आदि अन्त माग निम्न प्रकार है-

श्रादि माग—

श्री सारदाई नमः। श्री गुरुम्यो नमः। सयल मगल करण बादीसः। मुनयण दाईणि सारदा सुगुरु नाम नियः। चितवारिय गीर राद विकस त्रण्डः। सत्तसील साहस विचारीयः॥ सिहासन बत्तीसी जिनउ सिद्धसेन गराधारि। भारुषु ते लबलेस लहि दायद्द विनद्द विचार ॥१॥

दहा----

सिहासन सौहण समा निणि पुतत्नी बत्तीस । मोजराइ ब्रागलि करइ विक्रमराइ सतीस ।।२॥ ते सिहासन केहनउ किस्णि ब्राप्यु किम भोजि । लाधउ केम कथा कही ते सभलज्यो बोज ।।३॥

ग्रन्तिम-

पास सतानी गुणे वारिट्ट केमी गुरु सरिवा जिल जिट्ठ ॥
रसणपाद सूरीसर जिसा धनुकीम कर्यु मृरिगुण निता ॥३७॥
तामु पाटि देवपुर्तत गुरुवर,तेहन्द पाटिह सिद्ध सुरिदं ॥
तहन्द पर पंजक जिस भारण, जे गुरु गरु भागुणे निहाला ॥३६॥
स पइ जिवयवत कर्यु सूर्त, तस पताइ मह आरण सूरि ।
अतेवामी तेहन्त सदा, हर्ष समुद्र जिसो निषि मुद्रा ॥३६॥
ततु प्यकसन कम्मल सम् भू ग, विनय समुद्र वाचकमन रंग ॥
सवत् सोलह वरसह प्यार, विधासमा वसीसी सार ॥४०॥
भागत हर कथा प्रवस्त सम् स् चीटपह विष ।
भागती गुणात हर कल्याग, स्विवसन वीकनीयर अहिठाला ॥४१॥

इति सिधासरावत्तीसी कथा चरित्र सपर्गं

४८६४. सिहासन बत्तीसी—हिर्फूला। पत्रस० १२३ । प्रा० १२४५३ इश्व । भाषा-हिन्दी (पदा)। विषय—क्या। र०काल स० १६३६ । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सण्डेलवाल तेरहाथी मन्दिर दीसा।

#### पारस्थ---मगला चरमा ।

स्रारादी श्री रियभप्रसु जुगलायमं निवारि । क्या कहो विकारतारी, जाम साकउ विक्तार ।। साकौ बरस्यो दान थी दान बडी ससारी । बलि विशेष जिएा सासणो बोल्या पंचप्रकार ।। समय सुपात्र दान चिट्ठ प्रारोगी मोख सजीन । समुक्रपा चरि तकुं चित एतिह दाने मोग।।

#### पत्र ७२ पर कथा ६

हिवसारारे नयरी, भोज निरेमह। सिधासरा रे आवे मुभ महूर्त बरु।। तब राधारे दशमी बोर्लेऊ मही। विकम समरे होवें तो बैसे सही।। चंद---

वैसे सही इम सुगरी पूछ भोज ततिखए पूतनी।
किम हुयो विकमराय दाता मर्ग ते हरके चली।।
नयरी श्रवतीराय विकम सभा बैठो सन्यदा।
धन खंड योगी एक श्रायौ कहैं वनमाली तदा।

ग्रन्तिम-प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं:-

श्री सरतर रे गएहर गुरु गोग्रम समी,
निति उठी रे श्री जिनवह सूरि एय नमी।
तसु गई रे सप्रति गुए पाठक तिनो।
वड बादीने श्री विजयता बचुपा निनो।।
वड बादीने श्री विजयता बचुपा निनो।।
दे से साल सहेह नगरी सदा जे प्राएद गरी।
संवर सोलह से छुतीस मे बीत प्रास् विद स्था।

- ं तिहि कहिय सिंघासस बत्तीसी कही हीर सुणी यथा।
  - परा चरित रे दहा गाहा चौपई।
- सह ग्रकेश वाबीस से बात्रीसथई।।
- . खांमू बली ह सब से मुखि मान छोडिय ग्रापराौ।
- जे सासत्र शाक हवे मिलतो तेह निरतौ थापर्गा
- ए चरिन साभित जेय मानव दान ग्रापी निज करें जे पृण्य पसामें मुखी थापै रिधि पामें बह परें।

इति श्री कलियुग प्रधान दानाधिकार श्री विकथराय श्री भोजनींदर विधानए बित्तीशी चौगई संपूर्ण । जिल् श्री जिलाजी की सानाजाद नास्त्रोत्तम गोधो बागी स्तात्राढ को, पढेंत्या दर्न श्री जिनाय नमः स्वच्या । भूत्यों कृष्यों सुचारी सीजयोत्री निती द्वितीय भादवा मुटी १० दीतवार स० १८०६ का । लिसाई ब्रह्म श्री श्री रूपमार जी विराज बेराठमध्ये । मुन नवत् ।

४८६४. सिहासन बत्तीसी — ४ । पत्र स० २१ । ग्रा० ११३४४ इञ्च । माषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा । २० काल ४ । से क्वाल ४ । प्रपृष्ठी । वेष्टन स० १४६५ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मंदिर स्रवेश ।

४६६६. सिंहासन बत्तीसी—  $\times$  । पत्र स० १६ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०कात  $\times$  । ते० कात  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन प चायती मन्दिर भरतपुर ।

४८६७. सिहासन बसीसी— $\times$  । पत्रस० १२३ । प्रा० ५ $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इचा । मापा—सस्कृत । विषय—कमा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६४४ चैत बुरी १० । पूर्ण । बेष्टन स० १६८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागरी (बु री)

विशेष --चंपापुरी मे लिखा गया था।

४८६८. सिंहासन बत्तोसो—  $\times$  । पत्र सं० १० । छा० १० $\times$ ४ ६ खः। भाषा—हिन्दी पद्यः। विषय—कथा । ४०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन सं० ३२। **प्राप्तिः स्थान—दि०** जैन मन्दिर प्रादिनाप स्थानी, भाषपुरा (टोक)

४८६६. सुकुमार कथा— $\times$  । पत्रस० ८ । ग्रा० १० $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ इ.स. । प्राथा— संस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन श्रग्रवाल मन्दिर उदयप्तर ।

४८७०. सुकुमालस्वामी छंद—कः धर्मवास । पत्र सं०३ । प्रा०११४६ इ.च. । भाषा— हिन्दी । विषय—कथा । र०काल ४ । ले० काल सं०१७२४ सावण वृदी २ । पूर्ण । बेष्टनसं०२२४/४६ प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-इ० शिवराज ने कोट महानगर मे प्रतिलिपि की थी। इ. धर्मदास सुमतिकीति के शिष्य थे।

४८७१. सुस्रसंयक्ति विधान कथा—  $\times$  । पत्र सं०२। मा०१०१ $\times$ ४५ इ.स.। भाषा— प्राष्ट्रतः। विषय कथा। र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्ट्रन स•१३०। प्राप्ति स्थान—दि॰ शैन प्रतिन होजनजी काम।

विशेष-- प्रति प्राचीन है।

४८७२, सुखसंपत्ति विधान कथा—। पत्रसं० २। प्रा॰ १४४ ६०च । माथा—प्राहत । विध्य—कथा। र० काल  $\times$ । ले०कान  $\times$ ।,पूर्ण । बेष्टुन स० १८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

४८७३. सुगन्धदशमी कथा—राजवन्द्र । पत्रसं०६। म्रा० १२ $\times$ १ इख । माया — सस्कृत । विषय—कया । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, नागदी व दी ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

४८७४. सुगन्धदशमी कथा—सुशासचन्द्र । पत्र स० १२ । प्रा० ११ ४६ इ.च. । भाषा— हिन्दी । विषय —कया । २०काल ४ । ले०काल सं० १६१४ । पूर्णे । वेष्ट्रन सं० १३४/६६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

४८७५ प्रतिसं० २ । पत्र स० ११ । घा० १०३ ×५३ । ले० काल सं० १६१२ घाजोज बुधी ८ । पूर्ण । वेप्टन स० १५५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पात्रवंताय मन्दिर इन्दरसङ (कोटा)

विशेष--लिखित सेवाराम बधेरवाल इन्दरगढ मध्ये ।

४८७६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १३ । छा० १० $imes Y_v^2$  इश्व । ले० काल सं० १६४४ भादवा सुदी १० । पूर्ण । बहुन स० ५४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

विशेष---पन्दरलाल वंद ने लिखी थी।

४६७७. प्रति सं० ४। पत्रस०७। मा०१२१,४७१ इञ्च। ले०काल सं०११२७ भादवा बुदी १४। पूर्ण। बेष्टन स०७४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पूरीनी क्रीग।

विशेष-शीगवाले मोतीलाल जी बालमुकन्दजी जी के पुत्र के पठनायं भरतपुर में प्रतिलिपि हुई थी। ४८७६. प्रति सं० १। पत्रसं० १३। मा० १३ ४५। से०कास ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ११। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सीगाणी मन्दिर करीली। ४८७६. प्रतिसं०६ । पत्र स०१५ । ध्रा०६×६ इच्छ । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**— टि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

४८८०. सुसंधदशमी कथा— $\times$ । पत्र सं० ४। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल $\times$ । सैं० काल  $\times$ । पूर्ण। केटन स० ५०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष--सुतक विचार भी हैं।

४८६१. सुमाधित कथा —  $\times$  । पत्र सं० १७१। ग्रा० ११ $\times$ ४ इन्त । भाषा-सस्कृत । विषय — कथा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । वेष्टुन सं० २०३। प्रास्ति स्थान — दि० जैन संस्ति कौरानी कौटा।

विशेष-इससे आगे पत्र नहीं है। रत्नचूल कथा तक है।

४८६२. सुरसुन्दरी कथा— $\times$ । पत्रसं० १७। धा० १० $\times$ ४५ इञ्च। भाषाः—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण। बेहनस० ७४/४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दर कोटिंदियो का इंगरपर।

४८६३. सेठ सुबर्शन स्वाच्याय—विजयलाल। पत्र स०३। प्रा०११ $rac{1}{2} imes rac{1}{2} rac{1}{2} imes rac{1}{2} imes r^2 imes r^2 rac{1}{2} imes r^2 imes$ 

विशेष -- सूर्यपुर नगर मे लिला गया था।

४६६४, **सोमबती कथा** — । पत्र स**०**६। ग्रा०११ $\times$ ५ इख । भाषा सस्कृत । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स०४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी त्रुंबी ।

विशेष--'महाभारते भीष्म युधिष्ठर सवादे' में से है।

४८८५. सीमाग्य पंचमी कथा— X ) पम स०१०। माया—सहत । विषय —कथा। र०काल स०१६४४। ते०कान स०१८६०। पूर्णं। वेष्टन म०६०२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्वायती मन्दिर प्रत्याप्तः

विशेष--हिन्दी टिप्पण सहित है।

४८६६. संघवुल---  $\times$  । पत्रसं॰ ३, ७-१० । म्रा० १० $\times$ ४ इञ्च । भाषा -- हिन्दी (प्र्या) । विषय---कथा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । स्पूर्ण । वेप्टन म० ३५६ । **प्राप्ति स्थान** --- प्रथवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४८६७. संबादसुस्दर  $\times$  । पत्रस० ११ । धा० १० $\times$ ४) इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १३ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगान बृंदी ।

विशेष — भारदापदापति सवाद, गगादारिक्षपप सवाद, लोकलक्ष्मी सवाद, सिह हस्ति सवाद, गोभूमचलक संवाद पञ्चेत्रिय सवाद, मृगमदचन्दन मवाद एव दानादिचतुरक सवाद का वर्रान है।

प्रारम्भ---

प्रसम्य श्रीमहावीर वदमानपुर दरम् । कुट्वें स्वारमोपकाराय ग्रथ सवादमुन्दरम् ॥१॥ ४८६६. स्थानक कथा — × । पत्रस॰ ६६ । आ॰ ११ × ४६व । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । २० काल × । ते०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ३३० । प्रास्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर कोमको कोग

धन्तिम पुष्टिपका-इति श्री एकादश स्थाने करुणुदेवकथानक संपूर्ण । ११ कथाये हैं ।

४८६६. हनुसत कथा— बहा रायसल्ल । पत्रस० ३६ । प्रा० १० रू 🗴 ६ रूड्य । नाषा-हिन्दी प.। विषय कथा। र०काल स० १६१६ । ले०काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहस्यो दोसा।

विशेष-जानवद तेरापथी दौसा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४६६०. प्रतिसं० २ । पत्रस० २७ । मा०१० ४४ । इत्था । से०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । प्राप्ति स्थान---दि० जेन म्राग्रनाल प्रनायती मदिर म्रालवर ।

४८६१ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५६। आ० १२ 🗙 ५ इचा। ले॰काल मं० १६५०। पूर्ण। वैष्टन स० ७७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

विशेष-जैन पाठशाला जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४८६२. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ७० । म्रा० ११ × ५ है इन्हा । ले०काल × । पूर्ण । बेहन म० ७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पनायती मन्दिर भ्रलवर ।

४८६**२. हरिश्चन्द्र राजा की सउम्भाय** —  $\times$  । पत्रसं० १ । ग्रा० १० $\times$ ४ $\cdot\$  इस्र । भाषा— हिन्दी । विषय —कवा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स० २२४ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रदी) ।

४६१४. हरि**येए। चक्रवर्ती कया — विद्यागित्व ।** पत्रसं० ५। ग्रा० ११ $\times$ ४५ द्व । भाषा— सस्कत । विषय-क्या ।  $^{7}$ ० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्णं । जीएाँ । बेष्टन स० १६३ । प्रास्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोकारायसित (टोक) ।

४८६५. होली कथा। पत्रस०३। ब्रा०११है  $\times$  ५ $^1$ ६२७ । भाषा -संस्कृत। विषय-कथा। र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । वेष्ट्रसं०१७६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

४८६६. प्रतिसं०२ । पत्रस०४ । ग्रा०११×५ इ.च. । ले० काल × । वेष्टन स०१८० । प्रास्ति स्थान — उपरोक्त मंदिर ।

४८६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४ । आ० ६ ४४ है इञ्च । ले०काल स० १६७४ । वेष्टनसं० १८१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर, लक्कर जयपुर ।

विशेष --- मोजाबाद मे रामदास जोशी ने प्रतिलिपि की थी।

४८६८ होली कथा— × । पत्रस० २। घा०११ × ४ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय — कथा। र० काल × ले० काल सं०१८७८ पीय बुदी ११। पूर्णा। वेष्टनसं०१४७। प्रास्ति स्थान —य० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर। ४८६६. होली कथा। पत्र सं०३। मा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इञ्च। माथा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल  $\times$ । ले० काल सं०१८६०। पूर्ण। वेष्टन स०१७७-७५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटिबर्जे का इंगरपुर।

४६००. होली कथा — पुनि शुमचन्द्र । पत्रस० १४ । आ० ६ $\frac{3}{4}$  ४ $\frac{3}{4}$  इच । माया— हिन्दी (पक्ष) । विषय—कथा । र०काल स० १७४५ । ते•काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६६ । प्राप्ति मधान — दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष — इति श्री धर्म परीक्षा श्र यजतै द्भा श्राचारिज श्रुभचन्द्र कृत होती कया संपूर्ण । प्रशस्ति निम्न प्रकार है— श्री मुलसं प मद्रारक संत, पट्ट आमेरि महा गुरावत ।

> नरेन्द्रकीर्ति पाट सोहंत, सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारकवत ॥११६॥ ताके पाटि धर्म को थभ, सोहै जगतकीति कलथभ। क्षमावत शीतल परिनाम, पहित कला सोहै गुरा धाम ।।११७।। ता शिष्य धाचारिज भेष. लीया सही सील की रेख। मनि शभवन्द नाम प्रसिद्ध कवि कला मे ग्रधिकी वृद्धि ।।११८।। ताके शिष्य पंडित गुराधाम, नगराज है ताको नाम । मेघो जीवराज अन जोगी, दिव चोखो जसो णूभ नियोगी ।।११६।। देस हाडौती सुवसै देस, तामे पूर कुजड कही " ....। ताकी शोभा अधिक ग्रपार, निस्या सोहै बहुत प्रकार ॥१२०।। हाडावशी महा प्रचण्ड, श्री रामस्यय धर्म को भाड । ताके राज खुणाली लोग, धर्म कर्म को लीहा स जोग ।।१२१।। तिहा पौरा छनीमू कीडा करें, आपराो मार्ग चित्त मे घरें। श्रावक लोग बसँ तिहथान, देव धर्मगुरू राख्नैमान ।।१२२। श्री चन्द्रप्रभ चैतालो जहा, ताकी मोभा को लग कहा । तहा रहे हम बहोत लुख्याल, श्रावक की देख्या ग्रुभ चाल। तातै उदिय कियो गुमकर्म, होली कथा बनाई परम ।। माषा बध चौपई करी, संगति भली तै चित मे घरी ।।१२४।। मनि शमचन्द करी याक्या, धर्म परीक्षा मे छी जया। होंसी कथा मन जो कोई, मुक्ति तर्गा, सूख पार्व सोय ।। संवत सतरारी परि जोर, वर्ष पचावन अधिका और ॥१२६॥ साक गरिए सोलाखेबीम, चैत मुदि सातै कहीस। ता दिन कथा संपूरण भई, एक सो तीस चौपई भई।। सायदिन मे जोडी पात, दोन्यू दिसा कुशलात ।।१२७॥

संवत १८६४ मे साह मोजीराम कटारया ने राजमहल मे चन्द्रप्रम चैत्यालय मे प्रतिलिपि कराई थी।

४६०१. होली कथा - च्हीतर ठोलिया। पत्र सं०१०। प्रा०७ १८४६ इव । प्राथा-हिन्दी ए०। विषय--क्या। र०काल सं०१६६० फाल्गुस्स सुदी १५। लेक्काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन सं०१६३। प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलाबाटी (सीकर)। ४६०२. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६ । आ० ११३ ४४ है इला । लेक्काल सं० १८८० फागुए। सुदी १ । पूर्ण । बेब्द स०१६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

४६०३. होलीपर्यक्तया— × । पत्रसं०३ । मा०१है×४ इ.स. । माषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । लेवकाल × । पूर्ण । बेष्टनस०६०६ । प्राप्तिस्थान—भ०दि० जैन मन्दिर सजकेर ।

४६०४. होली पर्व कथा—  $\times$  । पत्रस $\circ$ २ । ग्रा० १० $\frac{1}{2} \times Y_{\varphi}^2$  ६७४ । माथा—सस्क्रत । विषय—कथा । २० काल  $\times$  । वे०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन सहार प्रस्तेष्ठ ।

४६०**४. होलीरज पर्यक्षमा** —  $\times$  । पत्रस०२। ग्रा०१२ $\times$ ४ इख । भाषा — सस्कृत। विषय—कथा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०२५२/११४। **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर।

४६०६. होलीपर्वकथा—  $\times$  । पत्रसन्दे । मान ११ $\frac{1}{4}$  $\times$  $\frac{1}{4}$ ्रच्च । भाषा-हिन्दी (रख)। विषय-कथा । २० काल $\frac{1}{4}$  $\times$  । लेक्साल  $\times$  । धपूर्ण । बेष्टन मन ४१ । प्राप्ति स्थान— सन्दिन अंतर्ग मन्दिर प्रजोग ।

४६०७. होलीरेणुकापर्व-पंडित जिनदास । पत्रसं०४० । प्रा० ११×६६ इच । भाषा--- सस्कृत । विषय---कथा । र०काल स० १५७१ ज्येष्ठ मृती १० । ते०कालस० १६२८ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टनस० २३६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर सक्कर खबपुर ।

विशेष—खडेलवाल जातीय साह गोत्रोत्पन्न श्री पदारय ने प्रतिक्तिप करवायी । फागुई वास्तब्ये । ४६०**८. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ३६ । प्रा० १०हे×४', ले०काल स० १६११ फागुण सुदी १ । वेग्रन स० १७६ । पूर्ग । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्ष्यर स्वयप्त ।

विशेष-- तक्षकगढ में महाराजा श्री कल्याएं के राज्य में प्रतिलिप हुई थी।

४६०६. हसराज बच्छराज जीप $\xi$ —जिनोबयस्रि । पत्र सं०२६ । ब्रा० १० $\xi$  ×  $\xi$  इन्द्र । भाषा—हिन्दी (पदा) । विषय—कथा । र० काल  $\times$  । लेक्काल स०१८७६ ग्रासोज मुदी १ । पूर्णे । वेष्ट्रन सं०३४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृंदी)

विशेष--- मिमल ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६१०. हंसराज बच्छराज चौपई $\to \times$ । पत्रस० २-१६ । झा० १०  $\times$  ४५ इख । प्रापा-हिन्दी (पद्य) ।विषय-कथा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ७०३ । प्राप्ति स्थान-म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

# विषय -- व्याकरण शास्त्र

४६११. मनिटकारिका— × । पत्र सं०१६ । मा०१०१ ४१ इंब । नापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स०१७४४ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१४६४ । प्रास्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

४६१२, ध्रेनिटकारिका—  $\times$  । पत्र स०३ । प्रा॰ १० $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इच । मापा—सस्कृत । विषय-व्याकरस्स । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनस०२४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर्र ।

४६**१३. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ४ । ग्रा० १०३ × ४ $\frac{1}{2}$  इच्य । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टन स० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४६१४. प्रतिटकारिका—  $\times$  । पत्र स०४ । प्रा० ११ $\times$ ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषयव्याकरण । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १=४२ प्रापाद णुक्ता = । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१४ । प्राप्ति
स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--श्रीचंद ने प्रतिलिपि की थी।

४६**१५. क्षतिटसेटकारिका**— × पत्रस॰ २ । प्रा॰ १० × ४ इच । भाषा-सस्तृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टुनसं० २३१,५६५ । प्राप्ति स्थान— सभवनाय दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष-भट्टारक श्री देवेन्द्रकीति के शिष्य ब्र॰ मोहन ने प्रतिलिपि की थी।

प्रति सस्कृत टीका सहित है।

**४६१६. प्रतिसं० २** । पत्र स० ३ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २३२/५६४ । **प्राप्ति स्थान** —सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६१७. म्रनेकार्थ संग्रह—हेमराज । पत्र तं० ६४ । भाषा-सस्कृत । विषय व्य करण् । र०काल्  $\times$  । ले० काल्  $\times$  । श्रपूर्ण् । वेष्टन स० २४ । प्राप्ति स्थान—स भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

े विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

श्री मूलसर्वे अट्टारक श्री सकतकीति त० म० श्री मुबनकीति त० म० श्री ज्ञानभूषण देव स्तशिष्य मूनि भनतकीति । पुस्तकमिद श्री गिरिपुरे लिखायित ।

४६१८. स्रव्ययार्थ —  $\times$  । पत्रस्त ४ । स्रा०१०१ ×४१ इन्छ । मापा — सस्कृत । विषय — व्याकरण । राज्यात्र  $\times$  । ले० काल सं०१०६० । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२७५ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मदिर स्रवसेर ।

४६१६. म्राच्ययार्थं —  $\times$  । पत्र स॰ ४। मा॰ १०३ ×४३ दश्वः । माषा — सस्कृतः । विषय — व्याकरणः । र०कालः  $\times$  । ले॰ कालः  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन सं॰ १६६ । प्राप्तिः स्थानः — दि॰ जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

४६२०. प्राख्यात प्रक्रिया—प्रमुपूति स्वरूपाचार्य। पत्रसः १०। घा० १०४६ स्था। प्राया—सह्हत । विषय—स्थाकरण । रक्तान ४ । ते० कास ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्चनाथ चौगान व ही ।

४६२**१ प्रतिसं०२** । पत्रसं०६३ । प्रा०६<sup>2</sup>,४४ इच्च । ले० काल सं०१ ८७६ फागुन मुदी ४ । पर्यो । बेमनस०११८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ व टी।

विशेष-सवाईमाघोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६२२. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ३० । आ० ११ 🗡 इ.ख । ले०काल 🗶 । प्रपूर्ण । बेष्टुन स० १३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ बुंदी ।

४६२३. उपसर्ग वृत्ति  $\cdots$ ो पत्रस०४। स्रा० १० $_2^3 \times 4^5$  इचा । सावा-संस्कृत । विषय- व्याकरण । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टन स०२५६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४६२४. कातन्त्ररूपमाला— शिववर्षा । पत्र स० ६४ । प्रा० १०३ $\times$ ४३ इस्त । प्राथा— सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$ । धपूर्ण । वैष्टन सं० ८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागडी व दी ।

विशेष -- ६४ से आगे पत्र नहीं है।

४६२५. प्रतिसं० २ । पत्र स० २६ । आ० ११४५ इञ्च । ने० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन म० २१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४६२६. कातन्त्रविक्तमसूत्र—शिववर्षा। पत्रसः ० । ग्रा० १० $\frac{1}{5}$   $\times$  ४ $\frac{1}{5}$ द्व । ग्रापा-सस्त्रत । विषय-व्याकरण । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १६८१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६७ । प्रास्ति स्थान— य० दि० जैन मदिर ग्रजोर ।

विशेष-श्वनूरि सहित है।

४६२७. प्रति सं० २ । पत्रस० ४ । ब्रा० ११imes४२४. उन्छ । लेक्काल imes । पूर्ण । बेष्टन म० ४२४/५७२ । प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष-- ग्रन्तिम प्रशस्त--

इति श्री कातन्त्रमुत्र विक्रममुत्र समाप्त । प० ग्रमीपाल लिखित । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४६२८. कातन्त्रतरूपमाला टीका—दौर्ग्यासिह। पत्र स० ७३। बा० ११ ४४) इश्व। भाषा—सन्द्रत। विषय—व्याकरण। र०काल ४। ले०काल ४। पृर्ण। बेप्टन सं० ३६६-१४१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का इंगरपुर।

४६२६. कातन्त्रकरमाला वृत्ति— भावसेन । पत्रस् ६६। ब्रा० १० $^1_2$  $\times$ ५ $^1_2$  इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय-व्याकरए।  $^1$ र०कान  $\times$  । ने० कान  $\times$  ।  $^1$ पूर्ण । वेष्टन म०५० । प्राप्ति स्थान— म० वि॰ जैन मन्दिर ब्रजमेर ।

ः ४६३०. प्रति सं०२ । पत्रस०११७ । षा०१४×४ इच । ने०काल सं०१४४४ । पूर्ण । बेहुत स०२०६/४७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर । विशेष - प्रति शुद्ध एवं सुन्दर है।

प्रशस्ति—धंवत् १५४५ वर्षे धाषाङ दुदी १४ भीमे श्री कोटस्थाने श्री चन्द्रप्रम जिनवैत्यालये श्रीमूलसंवे सरस्वनीयच्छे बलास्कारवाणे श्री कुन्दकुन्दावायावये स्ट्रारक श्री पर्यस्तिदेशा तरपट्टे भ० श्रीसक्त कीत्तिदेशा तरपट्टे धट्टारक श्री दुवनकीतिदेश तरपट्टे ५० श्री ज्ञानपूषणदेशा तत्त्रीवय्य बहु। सर्रासह जोग्य पठनार्थं नाधी परवत ज्ञानावर्णी कर्मध्यापर्य रूपमालास्य प्रक्रिया लिखित । ग्रुभ सब्दु।

४६३**१. प्रति सं० ३ ।** पत्रसं० १३८ । घा० १२४४ इच । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेकृत स०४२७/४७१ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन समवनाय मंदिर उदयपुर ।

विशेष - मारे पत्र फटा हुमा है।

प्रशस्ति - निम्न प्रकार है-

स्वस्ति संवत १६३७ वर्षे मार्गसिर विद चतुर्थी दिने गुक्रवासरे श्रीमत् काष्टासये निरंतट गच्छे विद्यागणे भः रामदेतान्वये भः सोमकीति भः नहेन्द्रतेत भः शिवालकीति तरहर्ने परणीयर भः श्री विषय पूचण कः श्री हीरा कः श्री बानसागर कः विद्याबाई कमल श्री वाः जयवती समस्तपुर्कः श्रीमत् मरहटदेशे बद्याहाहात्वपुरे श्री पाष्ट्रवेनाच चैर्यालये श्री भः प्रतापकीति गुर्वाजापालण प्रवीण वयेरवाल ज्ञातीय नाटल गौत्र विनाक्ष। धानक सा माजन मार्यो मदा, तयो, पुत्र सर्व कला सपूर्ण गग्गाम्यः

४६३२. कारकसंडन—मीठम । पत्र स० ४ । प्रा० ११  $\times$  ५ दुः व । माषा-सस्कृत । विषय-ध्याकरस्य । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बुंदी ।

विशेष---ग्रन्तिम पृष्पिका-

इति श्री भीष्म विराचिते वलबधक कारकखंडन समाप्त । प्रति प्राचीन है।

४६३३. कारकविचार—  $\times$  । पत्रस॰ ६ । प्रा॰ ६ $\times$ ४ इंच । मापा—सस्कृत । विषय— ब्याकरण । र॰काल  $\times$  । से॰ काल स॰ १८८८ । पूर्ण । बेष्टुनस॰ १३४ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मंदिर राजमङ्गल टोक ।

विशेष -- मालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६३४. कारिका $-\times$ । पत्रस० ६। भाषा सस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल  $\times$ । के॰ काल स० १८६४। पूर्ण। बेष्टनसं० ७४६। प्रास्ति स्थान-दि० जैन पनायती मन्दिर मरतपुर।

४६३४. काशिकावृत्ति - वामनाचार्यः । पत्र स० ३४ । आ० ६२ ४४ स्थः । भाषा — सस्कृतः । विषय – व्याकरणः । र०कालः ४ । ले०कालः सं०१४६७ । पूर्णः । बेष्टनसं०२०२/६८७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन समवनाथं मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति —संवत् १५ आपादादि ६७ वर्षे शाके १४३२ प्रवर्तमाने आववन बुदि मासे कृष्णपक्षे तीया तिथी भृतुवस्तरे पुस्तकमिदं लिखित ।

४६३६. कृदंतप्रकिया—मनुपूर्ति स्वरूपाचार्य । पत्र स० १६। म्रा० ११४७ इवा । प्राप-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल ४ । लेकाल स० १६०४। पूर्ण । बेष्टन सं० २७४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रापनव्दन स्वामी बृदी । ४६३७. **कियाकलाप – विजयानन्द ।** पत्रसः १२ म्रा० १०४५ इ.च.। भाषा—संस्कृत । विषय –व्याकरणः। २० काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णः। बेष्टनसं० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जन पार्यनाय मंदिर, इन्दरगद (कोटा) )

४६३६. चतुष्क वृक्ति टिप्पस्—पं० गोत्ह्रस् । पत्रस० २-६२। मा० १३४४ इ.च. माषा—सस्कृतः। विषय —व्याकरस्य। गण्काल ४। से०काल ४ । पूर्णः। बेष्टनः स०४०८/२६०। प्रास्ति स्थान—दि० जैन समबनाय मन्दिर, उदयपुर।

विशेष-प्रति प्राचीन है। श्रन्तिम पूष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री पडित गोत्रहण विरचिताया चतुष्क वृत्ति टिप्पिणिकाया चतुर्थपादसमाप्त.

४६३६. चुरादिगरा—  $\times$  । पत्रसं० ७ । आ० १० $_{1}^{3}\times$ ५ इज । आपा — सस्कृत । विषय— स्थाकरए। २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टनसं० ६७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४६४०. जैनेन्द्रव्याकरस्म — वेदनंदि । पत्र स० १३२। प्रा० १२ $\times$ ७ $^{3}$  इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय — व्याकरस्म । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १४७६ । प्राप्ति स्थान प्राठ दिव जैन सन्दिर प्रवर्तर ।

विशेष--प्रथ का नाम पचाध्यायी भी है। देवनन्दि का दूसरा नाम पुज्यपाद भी है।

४६४१. प्रति स०२ । पत्र स०२०१। घा०११ × ४३ इ.च. ले०काल × । घपूर्ए। वेष्टन सं०११२ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

४६४२, प्रति सं० ३। पत्रस० ८१। प्रा० १३४८ इच्छा। ले०काल स० १६३५ माघ बुदी २। पूर्ण। बेपून स० ८२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बुदी।

४९४३. तत्बदीपिका —  $\times$  । पत्रस० १२ । प्रा० ११ $\frac{1}{4}$  $\times$  $\frac{1}{4}$  १७४। भाषा — सस्कृत । विषय — व्याकरण् । २० काल । ले० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन स० ३४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर सकर जयपुर ।

विशेष- सिद्धान्त चन्द्रिका की तत्वदीपिका व्याख्या है।

४६४४. तद्धितप्रक्रिया—प्रमुमूतिस्वरूपाचार्य । पत्रसं० ६५ । प्रा० १० $\times$ ५ इव । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । १०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २४८ । प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन मिटर दवलाना (व दी)

४६४५. तद्धितप्रकिया—सहोसट्टी। पत्र स०६६। प्रा० ६४४ इच । सापा—संस्कृत। विषय—व्य-करता। र०काल ४। ले०काल स०१६६४।पूर्ण। वेच्टन स०६१। प्राप्ति स्थान— दि०जैन मन्दिर दवलाना (बुदी)।

४१४६. तद्धितप्रक्रिया —  $\times$  । पत्र सं० १६-४२ । ग्रा० १० $\times$ ६३ इला । भाषा — संस्कृत । विषय —स्वाकरस्य । २०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । मपूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्चनाथ चौगान इंदः ।

४६४७. प्रति सं० २ । पत्र स० ७६ । घा० १ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{3}{2}$  इच । ले० काल  $\times$  । पूर्ग । वेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४६४ स्. तर्कपरिमामा प्रक्रिया—श्री चिक्रमहृ। पत्रस0४६। प्रा0१० $\times$ ४ $^{1}_{7}$  दश्व। भ्रामा—सस्क्रत । विषय—स्थाकरस्स । र0काल  $\times$  । पूर्स । वेष्ट्रनस0 प्रक्षि स्थान—दि0 जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

४६४६. <mark>धातु तरंगिस्यो — हर्षकोस्ति । पत्रस०</mark> ४६। ब्रा० १० ४४ इखा । भाषा — सस्कृत । विषय — व्याकरसा । र०काल स० १६६३ । लेकाल स० १७४६ । पूर्णा । वेष्टनस० २६३ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी वंदी ।

विशेष—स्वोपज टीका है। रिर्णीमध्ये स्थलीदेशे। महाराज श्री श्रतूपसाह राज्ये लिखित ।) पत्र जिपके हुए हैं।

४६५०, **धातुतर्रामग्री**— ४ । पत्रसं∘ ५२ । सा०१०¦४४ | इंखा । भाषा— स्स्कृत । विषय——स्वापतराम् । प्रकास ४ । ते∘काल स०१६२ मगसिर सुदी ६ । पूर्षः । वेप्टन रा०१२१६ । प्राप्ति स्थास— भ०दि० जैन मन्दिर ग्राजीर ।

४९५१, घातुनाममाला—  $\times$  । पत्र म०१२। ब्रा०११ $^{1}$  $\times$ ४ $^{1}$  इञ्च । मापा-सन्कृत । बिषय-व्याकरण् । रक्काल  $\times$  । । लेक्काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टुनस०२६५-१०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर कोटडियो का हूं गरपुर ।

४६५२. **धातुपद पर्याय** — $\times$  । पत्र म० ६। घा० ६ $\frac{3}{6}$  $\times$ १ इख । भाषा-सस्कृत । विषय— ध्याकरस्य । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्य । वेध्न म० ११०० । प्रास्ति स्थान — भ. दि० जैन मन्दिर धवमेर ।

४९५३. **घानुपाठ--पाश्चिनी** । पत्र स०१७ । ब्रा० ६<sup>3</sup>, ४४ इचा । भाषा --सम्कृत । विषय-व्याकरमा । रजकाल ×ं। ने० काल स०१६२४ वैशाख बुदी ऽऽ। पूर्णा । वेटन स०१८४ । प्रास्ति स्थान---दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

विशेष -- प० णिवदास सुत श्री नाथेन लिखित।

४९.४४. धातुपाठ—शाकटायन । पत्रस० १२ । आ० ११ × ४६२व । भाषा-सम्कृत । विषय— व्याकरण । २०काल × । ले०काल स० १७२६ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ३० । प्राप्ति स्थान—दि० जेन स्रघवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- माकटायन व्याकरण में से है। प्रमस्ति निम्न प्रकार है---

सबत् १७२८ वर्षे वैज्ञान बुदी १३ णुक्ले श्री चाउंड नगरे श्री ग्रादिनाय कैयालये श्री मूलक्षे सरस्वतीगच्छे बलात्कार गणे श्री कुद कुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री बादिभूपणदेवास्ततुषट्टे भ० श्री रामकीति देवास्तरपट्टे भ. श्री पण्यतिदेदास्तरपट्टे भ. श्री देवेन्द्रकीतिदेवास्तदाम्नायं ग्राचायं श्री करणाणकीति तिच्छित्याचार्यश्री श्रिष्टुबनचन्द्ररेण ज्ञाकटायन व्याकरण् धातुषाठ ज्ञानावरणकर्म झपायं । णुभभवतु ।

४६ थ्र. धानुगठ—हवंकींसि । पत्रस॰ १४ । घा॰ १०  $\times$  ४ $^{\circ}$  इञ्च । मावा सस्क्रत । विवय-व्याकरण । र०कान स॰ १६१३ । से०काल स १७६२ । मादवा मुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १३४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर प्रादिनाथ जूँदी ।

विशेष---श्रितम---

खडेलवाल सद्वांशे हेर्मासहाभिषः सुधी : तस्याभ्यार्थन पाथेय निर्मितो नदताश्चिरम ।

४६५६. **धातुपाठ**—  $\times$  । पत्र स० १८ । प्रा० ११ $\times$ ४३ इ.च. । प्राथा-सस्कृत । विषय— व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १५८० प्रासोज सुदी द । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४२५ । प्रास्ति स्थान—४० दि० जैन मन्दिर प्रजयेर ।

विशेष-भट्टारक लक्ष्मीचन्द के शिष्य पं० शिवराम के पठनार्थ लिखा गया था ।

४६५७. **धातुपाठ**—  $\times$  । पत्रसं० १०। म्रा० १० $^{\circ}$  $\times$  ५ इत्रव । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण् । र०काल्  $\times$  । ते०काल्  $\times$  । पूर्ण् । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह रोक) ।

विषय -- केवल चरादिगरा है।

४६५८. धातु शब्दावली—  $\times$  । पत्र सं० ३० । घ्रा॰ ७ $\frac{3}{7}$   $\times$  ५ $\frac{3}{7}$  दश्च । भाषा—सस्तत । विषय—स्याकरण । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २१५–६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सिर कोटडियो का हु सरपूर ।

४६५६. घातु समास $-\times$ । पत्रस० २० । घा० ११ $\times$ ४ $_{g}^{2}$  इञ्च । भाषा —सस्त्रत । विषय व्याकरण । र०काल  $\times$  । लेकाल स० १०६१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६५ । प्राप्ति स्थान—मट्टारकीय दि० जॅन मन्दिर ग्रजमेर ।

४६६०. निदाननिरुत्त —  $\times$  । पत्रस॰ ३ । धा० १० $\times$ ४, दुःच । भाषा सस्कृत । विषय— व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुनसं॰ १४ । प्राप्ति स्थान — सण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६६१. पंचसधि—  $\times$  । पत्र सं० १४ । प्रा॰ ६ $^1_2 \times Y^1_2$  इस्त्र । आषा-सस्कृत । विषय— व्याकरण् । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० ५६ । प्राप्ति स्थान—प्रव्वाल दि॰ जैन सन्दर उदयपुर ।

४६६२. पंचर्साध— × । पत्रसः ४ । मा०८ ४ ६ इच्च । भाषा सस्कृत । विषय-व्याकरण् । र०कातः × । ने०काल स० १८१६ ब्रायाद बुदी १४ । पूर्ण् । बेष्टनसं० १४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना वृदी ।

विशेष--- समह म थ है। भाग्य विमल ने प्रतिलिपि की थी।

४६६३. पंचसिय —  $\times$  । पत्रस०७ । प्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरस्य । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुनस० २३६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन सन्दिर दबलाना (बुदी) ।

४६६४. पंचसिय $-\times$ । पत्र स० १४ । प्रा० १० $\times$ ५ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय- व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १६०१ । पूर्ण । बेष्टन सं० २१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मैन्दिर दवलाना व दी ।

विशेष--प्रति जीर्णावस्था मे है।

४६६५. पचर्सांघ —  $\times$  । पत्र स॰ १३ । मा० ११ $\frac{1}{7}$   $\times$  ६ इश्व । माधा-सस्कृत । विषय-व्याकरस्य । र०काल  $\times$  । अपूर्ण । वे० स० १२४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना वृंदी ।

४६६६. पाशिनी व्याकरश्—पाशिनी। पत्रसः ७४७ । म्राः १२४४ इत्र । प्रापा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सः २६५/४१४ । प्राप्ति स्थान—सम्भवनाय दि॰ जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—वीच मे कई पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन है। इसका नाम प्रकिया कौमुरी व्याख्यान समनप्रसाद: नामक टीका भी दिया है। सस्कृत मे प्रसाद नामी टीका है। प्रथाय थ १५६२५।

४६६६ प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राचार्य। पत्र त०१२। म्रा०११ $\times$ ४ $\frac{3}{6}$  इञ्च। माषा— संस्कृत । विषय—च्याकरण । र०काल  $\times$ । लेखन काल  $\times$ । स्रपूर्ण। वेष्ट्रन स०७१२। प्रास्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर स्रलमेर ।

**४६६६. प्रतिसं० २** । पत्रस० १०५ । घा० ६ $\frac{3}{7} \times 4\frac{3}{7}$  इत्व । ले० काल स. १७१३ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वेस्टन स० २७० **। प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष -- साहिजिहाबादे लिखित मवानीदास पुत्र रएछोडाय ।

४६७०. प्रक्रिया कौमुर्वी—  $\times$  । पत्र स० ५३ से ११७ । प्रा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$  $^{1}$  $\frac{1}{6}$  इन्त । भाषा— सस्कृत । विषय— व्याकरण । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १७ । प्राप्ति स्थान— २० दि० जैन सदिर प्रजमेर ।

४९७१. प्रक्रिया कौमुदी —  $\times$  । पत्र स० १-७६ । प्रा० ६ $\frac{3}{7}$  $\times$  $\frac{3}{7}$  इन्त्र । भाषा — सस्कृत । विषय —व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० २४७ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर दवलाना वृदी ।

विशेष--पाणिनि के अनुमार व्याकरण है तथा प्रति प्राचीन है।

४६७२, प्रक्रिया कौमुदी—  $\times$ । पत्रत० १७६ । बा० १० $\times$ ४ इख । मापा-सास्क्रत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६७१ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

४६७३ प्रक्रिया संग्रह— $\times$  । पत्रस० १६६ । ग्रा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ १ इला । प्राप्त स्थान—ग्रग्रवाल दि० व्यक्तरण । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । तेष्टनसं० ३१४ । प्राप्ति स्थान—ग्रग्रवाल दि० वेन संदिर उदयपुर ।

४८७४. प्रक्रिया ध्यास्या— चन्द्रकोत्ति सूरि । पत्र स० २४-१४६ । झा० १४  $\times$  ७ इश्व । प्राया—सस्कृत । विषय— व्याकरण । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रनस० ४४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मध्यर चौर्धारयान मालपुरा (टोक) ।

४८७५. प्रबोध चिन्द्रका—चैजल मूपति। पत्रस०१४। मा०१२  $\times$  ७ इच । भाषा— संस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०२५३-१०२ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर कोटडियो का दुगरपुर ।

४६७६. प्रबोध चिन्द्रका —  $\times$  । पत्र स० २०। या० ११ $\frac{1}{4}$   $\times$  ५ $\frac{1}{7}$  इन्थ । मापा-मस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १००० । पूर्ण । बेष्टनसं०१६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पण्डेनाथ मस्तिर इन्दरगढ ।

विशेष — सबत् १८८० शाके १७४५ बाहुल स्याम पक्षे तियो ६ षष्ट्या शनिवासरे लिखत मुनि सल विमल स्वात्म पठनार्थ लिपि कृत गोठडा ग्राम मध्ये श्रीमद् लाखन जिनालय ।

४६७७. प्रसाद संग्रह—  $\times$  । पत्र स०१५–१०, ४-३३। ग्रा०१२ $\times$ ४. इञ्च। भाषा—सल्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टन स० ३३/३ । प्राप्ति स्थान—दि० जन प्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६७ म. प्राचीन व्याकरण् —पिणिनि । पत्र स० ४६। प्रा०  $\mathfrak{e}_{2}^{1} \mathbf{X} \times_{3}^{2}$  इत्र । भाषा— संस्कृत । विषय -व्याकरण् । र० कान्य  $\mathbf{X}$  । ते० काल स० १८२७ प्रषाढ मुदी म । पूर्णं । वेष्ट्न स० ६६६ । प्राप्ति स्थान — भ० वि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४६७६. प्राकृत व्याकरण्—चंड किया । पत्रस० २६ । सा० १०  $\times Y$ ृे दुख । भाषा— प्राकृत । विषय — व्याकरण् । ७० काल  $\times$  । ले०काल स० १८७६ । पूर्णः । वेष्टुनसं० १६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्थामी वृदी ।

४६६०. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४ । घा० १० १४ ४ है इश्व । लेक्सल imes । पूर्ण । बेष्टन सं० २४४ । प्राप्ति स्थान—रि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४६ द १. लपुसिद्धांत कीमुबी—मट्टोजी दीक्षित । पत्र स॰ ६२ । ब्रा॰ ६ $\times$ ४ इ.च । साथा— सस्कृत । विषय—स्याकरण । र॰ काल  $\times$  । ते॰ काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स॰ ४१४ । प्राप्ति स्थान— मट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४९६२. प्रति सं०२ । पत्रस० ४६४ । म्रा०१२imes४ ३ च्या । ले० काल imes । पूर्ण । बेब्रुनस०११६६ । प्राप्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

४६६३. प्रति स० ३ । पत्रस०१० । था० १०×४ इचा । र०काल × । से०काल × । सपूर्ण । बेप्टन स० १२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना बृंदी ।

४६६४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ५८ । घा० १२  $\times$  ५ $^3_1$  इञ्च । ले० काल  $\times$ । पूर्ए । बेष्टन स० ७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

४६६५. महीमट्टी प्रकिया—अनुसूति स्वरूपाचार्य । पत्रसं० ४६ । प्रा॰ ११३४४३ इञ्च । साषा—संस्कृत । विषय—ध्याकरणः । र०कालः ४ । ले०कालः स० १६०० । पूर्णः । बेष्टनसः ६२ । प्राप्तिः स्थान—दिः जैन मन्दिर नागदी बृदी ।

४६ द सही भट्टी स्थाकर स्थानमही म्ही । पत्र सल्द २१ मा० ६ $\frac{1}{4}$   $\times$  ६ ३४ । भाषा— सल्हत । विषय – व्याकर स्था । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टन स०११७ -२६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर टोडारार्यांस ह ।

४६८७ प्रति सं०२ । पत्र सं०२० । ग्रा०१० ४६ इञ्च। ले०काल ४ । श्रपूर्ण । बेष्टन स० ७४ । प्रास्ति स्थास — टि० जैन पंचायती संदिर कामा ।

४६८८. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ११ से ४२ । घा० ११ 🗴 ५ इञ्च । ले० काल 🗴 । सपूर्ण । वेष्ट्रन सं० १०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टॉक ।

४८.६. राजाविगरा वृक्ति —  $\times$  । पत्रस॰ २२ । मा॰ १२ $^2_7 \times ^3_7$  इल । भाषा-सस्कृत । विषय-व्यावन्यादन्य । रे० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । प्रास्ति स्थान —प्रयवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपर ।

४६६०, रूपमाला—माबसेन त्रितिष्ठदेव । पत्रस $\circ$  ४६। प्रा $\circ$ ्रै $\times$ ४९ इज । साधा-सस्कृत । विषय-व्याकरण् । र॰काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्ट्रनस $\circ$  १४२ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४८६**१. रूपमाला** —  $\times$  । पत्रस० ५०। ब्रा०१० $\times$ ५ इव । भाषा-सस्कृत । विषय-भाकरण १०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ ।पूर्ण । बेष्टन स०२१७ । प्राप्ति स्थान — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४६६२, रूपावली—  $\times$  । पत्र स॰ १०८ । धा० १० $\times$ ४ $^2$  इचा । भाषा न्मस्कृत । विषय— ध्याकरण । र०काव  $\times$  । ले० काल  $\times$  । धपूर्णं । वेष्टनस॰ १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल, टोक ।

४६६३, लघुउयसर्गवृत्ति —  $\times$  । पत्र स॰ ६। घा० १०३ $\times$ ४ ३ दश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण् । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स॰ २४० । प्राप्ति स्थान —िद० जैन प्रयंवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६६४. **लबुजातकटीका-मट्टोत्पल । पत्रस**्क ६०। म्रा० ६) ४४६च । मापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । **८०काल** ४। ले० काल स० १४६५ मापाढ मासे ७ कानी । पूर्ण । बेटन सं० २०३/६०६ । प्राप्ति स्थान -सम्मवनाथ ६० जैन महिर उदयपर ।

४६६५. **लघुनाममाला—हर्षकीति**। पत्र स०४२। भाषा सस्कृत। विषयः व्याकरण। र०काल × । ले० काल म० १८३५। पूर्ण। वेष्टन स० ५८। **प्राप्ति स्थान—दि**० जैन तंरहपथी मदिर बसवा। विशेष — वसवा मे प्रतिलिपि इर्दे थी।

दिन थी मक्षीयपुरीयतथागच्छीय भट्टारक भी हुपँकीत सुरि विरविवाया मालीयाभियानिया लघु ताममाला गनाला । सबत् १८३४ वर्ष साके १७०० मिती भादवा सुकत पत्ने बार दीतवार एके ने सपूर्ण कियो । जीवनाज पारे ।

्८६६, लघुनेत्र समास $-\times$ । पत्रसः ३२। प्राः ११ $\times$ ४ ृद्दः। माया-प्राङ्ग-सस्हतः। विषय-व्याकःणः। र०कालः  $\times$ । ले० कालः सः० १६६२ द्यासोजः सुदी ११ । पूर्णः। वेप्टनः सः० १७४। प्राप्तिः स्थानः —विः जैन पंचायती मन्दिरः करोलीः।

४६६७. लघुरोलर (शब्देन्दु)—  $\times$  । पत्र स० १२४ । प्रा० ११ × १ $\frac{1}{6}$  इचा । माधा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । वेष्ट्रन सं० ६६६ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर सम्बद्ध, जनपुर ।

४६६८. लघृतिद्वांत कौमुदी - वरदराज । पत्र स० ६३ । घा० ११×४६ इश्व । माषा — सस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल × । लेकाल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०३२ । प्राप्ति स्थान— भड़ारकीय दि० जैन मन्दिर अवसेर ।

४६९६. प्रति स० २ । पत्रस० १६६ । प्रा० १०×४३ इञ्च । ले०काल स० १८३६ । पूर्ण । बेष्टन स० ३१५ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

५०००. प्रति सं० ३ । पत्र स॰ ३२ । प्रा॰ ११ × ४३ दृष्टा । ले० काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २४-१३ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मदिर कोटडियों का द्व गरपुर ।

४००१. **बाक्य मंजरी**— × । पत्रस० ३०। सा० ६×४ इ**च । माया-सस्कृत । विषय**— स्थाकरस्य। र०कान् × । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स०७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोगसमी कोरा

५००२, विसर्ग सिध— $\times$  । पत्र त० १२ । प्रा० ६ $\frac{1}{6}$   $\times$  ५ इःव । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर देवलाना वंदी ।

५००३ शाकटायन व्याकरस् —शाकटायन । पत्रस० ७७१। ब्रा० ११ x १ हे छ। भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल 🗴 । ले०काल म० १६६१ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ४६ । प्राप्ति स्थान— वि० जन प्रययान मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—सवत् १६८१ वर्षे जेष्ठ मुदी ७ गुरु समाप्तोय ग्रन्थ ।

५००४, शब्दरूपावली—imes । पत्रस० १३ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्याकरस्य । र०कालimes । ते०कालimes । पूर्ण । बेष्ट्रन गरु ७५५ । **प्राप्ति स्थान**—दिर्जन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

५००५. शब्द भेदप्रकाश—महेस्बर । पत्र स० २-२०। घ्रा० १३ $\frac{1}{2}$   $\times$  ६ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय — व्याकरण । र०काल  $\times$  । लेक्काल स० १४५७ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ११२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रयवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १५४७ वर्षे ब्रापाट बृरी १४ दिने लिखित श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जानभूषण गुरूपदेशात् हवड जातीय श्रेष्ठि जडता भार्या पाचु पुत्री श्री धर्मणि।

५००६ षट्कारक---विनश्वरनंदि श्राचार्य । पत्रस० १७ । ग्रा० ११ $\times$ ४९ १% । भाषा-संस्कृत । विषय -- व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले० काल शक स० १४४१ । श्रपूर्ण । येष्ट्रन स० १७१८ । प्राप्ति स्थान -- वि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारार्थास्ट (टोक)

विशेद—प्रनित्तम पुष्पिका—इति श्री महान बोढाग्रगण्य पट्कारक समाप्ता विनायदरादि मह चार्य विरावितोय सम्बन्धो । जाके १४४१ कार्याटक देत्रे गीरसोसानगरे आचार्य श्री गुराबद्ध तराहे सडनाच य श्रीमत् भट्टारक श्री सकल २०८ गिष्य बहा श्री वीरदामेन निर्क्ति बोढकारक ॥

**४००७. घट्कारक विवररण** $-\times$  । पत्रस०३। प्रा०११ $^2\times Y^2_2$  इत्व । भाषा - सस्कृत । विषय-ध्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०११६५ । प्राप्ति स्थान-म० दि० जैन सदिर धर्माः ५००६, बट्कारिका— X । पत्र सं०४। मा० ११ X १ हुन्य । भाष'—संस्कृत । विषय—व्य करण । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० २६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर १

५००६. बद्कारिका —  $\times$  । पत्र सं० १ । मा० ११  $\times$  १ $^2$  इवा । माव —सस्कृत । विषय — व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० २६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर सक्कर, जनपूर

भू०२०. **षठटपाद — × ।** पत्र स० ६ । म्रा० ११×५ इ.ख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टुन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष – कुदन्त प्रकरण है।

४०१**१. सप्तसमासतकारा**— × । पत्रसः २। घा०११ × ५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरए। र०काल × । से०कान × । पूर्णः। वेष्टनसं०४२३/५७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपर।

५०**१२. संस्कृत मंजरी—वरवराज ।** पत्र स॰ ११ । ग्रा० ११ $\times$ ६ इंच । माषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले० काल सं० १८६६ मादवा बुदी = । पूर्ण । वेष्टन स० =२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ (बूंदी)

**५०१३. संस्कृत मंजरी**  $\times$  । पत्रसं० १० । घा०  $= \frac{1}{2} \times V_0^2$  इश्व । आधा-संस्कृत । विषय— व्याकरण । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३३ । प्राप्ति स्थान — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४०**१४.संस्कृत मंजरी**— $\times$  । पत्र स $\circ$  ४। घा० १० $^2_8$   $\times$  ४ $^2_8$  इख । भाषा – सस्कृत । विषय-व्याकरण । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्ट्रन स $\circ$  २३७ । प्राप्ति स्थान— भट्टारकीय दि $\circ$  जैन मन्दिर अजमेर ।

५०**१५. संस्कृत मंजरी**—× । पत्रस॰ ४ । झा० १०× ४<sup>°</sup>, इच । माषा-सस्कृत । विषय-व्याकरणः । रे०काल × । से०काल स० १६५३ । पूर्णः । वेहत स० १४५ । **प्रान्ति स्थान** — दि० जैन पाण्वेनाय मन्दिर चौगान बुंदी ।

४०१६. संस्कृत मजरी—  $\times$  १पत्र स०१३। प्रा०६  $\times$  ५ इवा । साया-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१-६१ । पूर्ण । वे०स०१४० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पार्यनाथ सन्दर चौगान बुदी ।

५०१७. प्रतिसं० २ । पत्रस० १२ । घा० प×६ इचा । ले० काल × । पूर्ण । बेप्टन स० १६० । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त ।

५०१८. संस्कृत मंजरीं —  $\times$  । पत्रस० ७ । मा० ११  $\times$  ५ इश्व । माप — सस्कृत । विषय-ध्याकरए र०कान  $\times$  । से०काल स० १८३५ । पूर्ण वेष्टनसं० ८८ । प्राप्तिः, स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल टोन ।

४०१६. संस्कृत मंजरी— $\times$ । पत्रस॰ ६। प्रा॰ ११ $\times$ ४ $\xi$  इञ्च । मापा-सस्कृत । विषय— ध्याकरण । र०काल  $\times$ । ले०काल स॰ १८६६ काती सुदी ४। पूर्ण । वेष्टन स२४६। प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन पार्थनाय मन्दिर इन्दराइ (कोटा)

४०२०. प्रति सं० २ । पत्रस० ४ । ले० काल स० १८४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष--लाबेरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०२१. समासचक $-\times$ । पत्रसं० ८। झा० ६ $\frac{3}{7} \times \frac{1}{7}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय— व्याकरण । र० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टुनसं० १६३४। प्राप्तिः स्थान—सहारकीय विश् र्जन प्रतिकृति प्रकार।

५०२२. समासप्रीक्ष्या  $\times \times$ । पत्र स० २६। घा० १० $_2^2 \times Y_2^3$  इञ्च । माषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण् । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १३१७ । प्राप्ति स्थान—मट्टारकीय वि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

५०२३. समास लक्षराः— $\times$ । पत्रस०१। प्रा० १० $\times$ ४६व । भाषा-सस्कृतः।विषय-व्याकरए। र०काल  $\times$ । ले० काल । वेष्टन स० ३५१-५६०। प्राप्तिः स्थान दि० जैन सभवनाय मन्दिर ध्रजमेर।

विशेष - सस्कृत टीका सहित है।

५०२४. सारसिद्धान्त कोमुबी— $\times$  । पत्रस० २३ । मा० १०६ $^{\circ}$  ४ $^{\circ}$ ६ च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरए। १०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०६-७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का हुगरपुर ।

५०२५. सारसंबह्—  $\times$  । पत्र स $\circ$  ४। ब्रा $\circ$  १२ $\times$ ५ इचा । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरस्म । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स $\circ$  ४२४-५७३ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन सभवनाय मदिर उदयपुर ।

५०२६. **सारस्वत टोका**— $\times$  । पत्र सस्या ७६ । द्वा० १० $_{\chi}^{2}$  $\times$ ५ $_{\chi}^{2}$  इत्व । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरए। २०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (वृदी) ।

४०२७. सारस्वत चिन्न्निका—अनुमूतिस्वरूपाचार्यः । पत्र स $\kappa$ । छा० ११ $\times$ ५५ इच । भाषा-सस्त्र । विषय—व्याकरणः । र०काल $\times$ । ले० काल $\times$ । अपूर्णः । वेष्टन स०१२५ । प्राप्तिः स्थाल—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष - प्रति संस्कृत टीका सहित है।

**५०२६. सारस्वत टीका—पुंजराज ।** पत्रस० १६३ । ग्रा० १० $\times$ ४ इ.च. । भाषा— सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२४३,४६६ । **प्राप्ति** स्थान—स भवनाय दि० जैन मदिर उदयपर ।

चिशेष — पुंजराज का विस्तृत परिषय दिया है । नमदवनसमर्थस्तत्वविज्ञानपार्थ. । सुजनविद्वित तापः श्रीनिध्वतितादोषः । स्रवनिपतित्वरण्यात् प्रोवधीमे च संत्री । मकत्लमन्तिकाव्यात् भीवयाताद्वावत । पतिव्रता जीवनधर्मपत्नी धन्यामकुनामकुटबमान्या । श्रीप जराजास्यमस्त पुत्रं मु जं चेतेस्तेश्वारित. पवित्र ॥१४॥

२४ पदा तक परिचय है। अन्तिम पदा निम्न प्रकार है---योय रुचिर चरित्रो गुरोविचित्रेरिप प्रसम । दिगदताबल दतावली बलक्ष शस्तनते ॥२३॥ साय टीका व्यरचयदिमां चारु सारस्वतस्य । व्यत्पिश्वना सम्पकृताय प्रजराजा नरेन्द्रः ॥२४॥ गभीरार्थरुचित विवृत्तेस्वीयसूत्रै पवित्रमेन । मभ्यस्यत इह मुदात् प्रसन्नाः ॥२४॥

श्री श्री पुंजराजकृतेय सारस्वत टीका संपूर्ण। इति गोपालेन इति कृष्णाय प्रदत्तं । ग्रथा ग्रंथ ४५०० । प्रति प्राचीन है ।

४०२६. प्रतिसंव २ । पत्र सव ७२ । आव ११३ × ६ इश्व । लेव्काल × । वेय्टन सव ४००। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर।

विशेष-प्रति बहत प्राचीन है।

४०३०. सारस्वत दीपिका बत्ति—चंद्रकोंति । पत्र स० २६० । आ० १० 🖂 ४३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । पूर्ण । र०काल × । ले० काल स० १६३१ श्रासोज बदी ह । बेग्रनस० १५ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान वृदी ।

विशेष --- महात्मा मानजी ने सवाई जयपुर के महाराज सवाई पथ्वीसिंह के राज्य में लिखा था।

प्र**०३१. प्रतिसं०२** । पत्रस०४१ । प्रा०१०० × ४३ डचा ले० काल × । ग्रपुर्गा। वेष्टनसं ० १०५ । प्राप्ति स्थान-दि ० जैन मन्दिर श्रीभनन्दन स्वामी व दी ।

विशेष---४१ से आगे पत्र नहीं है।

५०३२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २२१ । स्रा० टर्ड्रे ४४६ इच्छ । ले० काल ६ । पूर्ण । वेप्रन स॰ ४ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मदिर दबलाना (व दी) ।

पूरु ३३, प्रतिसंर ४ । पत्र स॰ २०२ । आर० ६×४३ इचा। ले॰ काल ৮ । पूर्ण। बेस्टन स० २६१/१०५ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इ गरपुर ।

**ग्रान्तिम पृष्टिपका**-इति श्री नागपुरीय तपागच्छाधिराज भ० श्री चन्द्रकीसिसीर विरचिताया सारस्वत व्याकरण दीपिका सम्पूर्ण ।

प्र• ३४. प्रतिसं• ४ । पत्र सख्या १८२ । आ • १९३ × ४ ) इच । ले० काल स० १८४१ पीप बदी १ । पर्रो । बेप्टन स० १६४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगह ।

प्०३५ सारस्वत धातुपाठ—ग्रनुमृतिस्चरूपाचार्य । पत्रस० ७ । आ०१०३ ×४३ इश्व । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल 🔀 । ले०काल 🔀 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४३ । प्राप्ति स्थान-वि॰ जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)।

प्०३६. सारस्वत प्रकरसा— × । पत्रस० १७-७५ । ग्रा० ११× ५ दश्व । भाषा -सस्कत । विषय-व्याकरण । र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । घपूर्गं । वेष्ट्रन स० ३३३-१२८ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इगरपुर।

५०३७. सारस्वत प्रक्रिया—अनुमृतिस्वरूपाचार्यः। पत्र स०१०१। आ०१० $\times$ ४२ इन्छ । भाषा-संस्कृतः। विषय-व्याकरणः। र०काल  $\times$ ा ले०काल  $\times$ ा पूर्णः। वेष्ट्रन स०१५२४। प्राप्तिः स्थान—स०द० जैन मदिर अजेमेर।

विशेष-इस मन्दिर में इसकी ११ प्रतियां और हैं।

५०३६. प्रतिसं०२ । पत्र स०७४ । प्रा०१२ × ५ इच्छा । ले०काल स०१६४३ । बेष्ट्रन स०६०५ । प्राप्तिस्थान—दि०जैन मदिर लक्कर जयपुर।

**५०३६. प्रति सं० ३ ।** पत्र स० ३२ । प्रा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ $\frac{1}{4}$  इच्छ । ले० काल स० १६८७ । वेष्टुत स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

१०४०. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६० से १३६ । लेक्सल स० १७२६ । अपूर्ण । बेष्टन सं० ६२/५६६ । प्राप्ति स्थान — संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रशस्त्र निम्न प्रकार है ---

सबन् १७२८ वर्षे पौप माने कृष्ण पक्षे पचम्या तिबौ बुधवासरे देवगढे राज्य श्री हीरसिंघराज्ये भट्ट श्री कल्याण जी सनिधाने निस्तिनिद पुस्तक रामकृष्णेन बागडगच्छेन वास्तव्येन भट्ट मेवाडा ज्ञातीय \*\*\* · · · · निस्ति ।

५०४१. प्रतिसं०५ । पत्र स०२४ । धा०११४७ इञ्च । ले०काल ४ । धपूर्णा विष्टन स० ६१ । प्राप्तिस्थान---दि० जैन मन्दिर नागदीवदी।

५०४२. प्रतिसं० ६ । पत्र स०६६ । ग्रा० ११ $_2^2$   $\times$  ७ इच्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०२२० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिग् ग्रभिनन्दन स्वामी बदी ।

५०४३ प्रतिसं०७ । पत्रस० ३२-६६ । घा० १२ $\times$ ५२ इन्छ । ले०काल  $\times$  । सपूर्ण । बेष्टुनस० २५७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर प्राप्तनन्दन स्वामी, बुदी ।

**५०**४४. प्रतिसं**० ८** । पत्र स० ५१। ग्रा० १० $\times$ ४२ है इंच । ले० काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । वेष्टत स० २५४ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष - ६१ से आग पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है।

५०४५. प्रतिसं० ६ । पत्र स १२ । मा० ६ $\frac{1}{2}$   $\frac{1}{2}$   $\times$   $\frac{1}{2}$  इश्व । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बु दी ।

५०४६. प्रतिसं० १० । पत्रस० म०। म्रा० ११ × ५ इचा। ले० काल स० १म७० । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर पार्यनाथ चीगान खुँदी।

५०४७. प्रतिसं० १९। पत्रस० पत्र स० १३ । प्रा० १३ $\frac{3}{2} \times 4\frac{3}{2}$  इच । लेकाल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पाश्वेनाथ चौगान बूदी ।

५०४ द. प्रति स०१२ । पत्र स०१० । प्रा०१० ${}^9_7 \times$ ७ इ.स. । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२४६ । प्रान्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

५०४६. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ५७ । आ० १० $\times$ ५ इश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन तेरहपयी मन्दिर नैसुवा ।

**५०५०. प्रतिसं० १४ ।** पत्रस० १२८ । प्रा० १२ $\times$ ५ इश्व । लेकाल  $\times$  । पूर्ग । वेष्टन सं० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५०५१. प्रति सं०१५ । पत्र स०४५ । घा०६ ३ ४४ ३ इल्बाले० काल स०१६६५ । पूर्ण । बेष्ट्रत स०१६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

भू०५२. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ६४ । आ.० ११६ × ३ ई इ.च.। ले० काल × । पूर्गा। वेक्नसं० ३१६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

**५०५३. प्रतिसं० १७ ।** पत्रस० २५ । घा० १०३ ४५ इल्डा । ले०कान ४ । घ्रपूर्ण । वेष्टन स० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**५०५४. प्रतिसं० १८ । पत्रस्० २० । आ०** ११ $\frac{1}{6}$   $\times$  ६ $\frac{1}{7}$  इन्थ । ते० काल स० १६०६ म्रासोज बुदी ४ । पूर्ग् । बेष्टन सं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**विशेष**—कामा में बलवन्तसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

५०५०. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ६५ । आ० १०४ ५ है इख । ले० काल स० १८६२ फागुरा वदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

५०५६. प्रति सं० २० १ पत्रस० ६२ । ले० काल स०१ म्ह४ । अपूर्णा । बेष्टनसं० ५१६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

५०५७. प्रति स०२१। पत्र सं०४५। ग्रा०६ $^1_7 imes ^3_7 imes ^3_8$  इन्तः। ल० काल $\times$ । पूर्णः। बेष्टन सं०१६७। प्राप्ति स्थान—पार्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ।

**५०५**年. प्र**तिसं० २२ ।** पत्र स० १०६ । घा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ १ $\frac{1}{2}$  इश्व । से०काल स० १८४० । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

**५०५६. प्रति सं० २३ ।** पत्र सं० १८ । मा० ११ $\times$ ४ $\S^3$  इश्वः । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । बेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

५०६०. प्रतिसं० २४ । पत्रसं० २-६४ । ले०काल स०१८५ । प्रपूर्ण । बेष्टनसं०१३० । प्रास्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

**५०६१. प्रतिसं० २५ ।** पत्र स० १४-५८ । झा० १०३ imes ५ हे इ.स. । ले०काल imes । छपूर्ण । बेकुत स० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंचे)

**५०६२. प्रति सं० २६ ।** पत्र स० ६३ । प्रा० १०  $\times$  ४ इच ।ले० काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेस्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मदिर दबलाना (वृंदी) ।

**५०६३. प्रतिसं० २७ ।** पत्र म० १३६ । **ले॰काल स०** १७७३ पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति** स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत् १७७३ वर्षे चैत्र माने गुभे गुम्बयको तिथी तृतीयामा २ मृगुवासरे निवित रूडामहात्मा गढ म्रांबादती मध्ये लिखाइत प्रात्मार्थे पठनार्थं पाना १३६ ग्लोक पाना १ मे १४ जी के लेखे ग्लोक प्रकार वसीस का २००० दो हजार हुमा। लिखाई रुपया २।।।) बाचे जीने श्रीराम श्रीराम ख्रै जी। ५०६४, प्रति स॰ २८ । पत्रस॰ ४६ । प्रा॰ १  $\frac{1}{2}$   $\times$  ४  $\frac{1}{2}$  इञ्ज । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुत स॰ ५४ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मदिर ।

विशेष -- प्रथम वत्ति तक है।

५०६५. प्रति स० २६ । पत्र स० ६ । ग्रा० ५२ ४४ है इचा। ले० काल स० १८६० । पूर्ग । वेष्टुन स० ७ । प्राप्ति स्थान–दि० जैन सन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

विशेष-विसर्गं सन्धि तक है। द्रव्यपूर (मालपूरा) मे प्रतिलिप हुई थी।

५०६६. प्रतिसं• ३० । पत्र स॰ १०५ । घा॰ ६ $\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{4}$  इन्छ । लेब्बाल  $\times$  । पूर्ण । बेब्रन सं॰ ४ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन सन्दिर घादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

**५०६७. प्रतिसं० ३१** । पत्र स०४४ । स्ना० १० × ६ इन्ह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन म० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

**५०६८. प्रतिसं० ३२।** पत्र म० ७४**।** श्रा० ११३ ४ ४ इश्व । लेखन काल स० १६३८ पीप बदी ३५। पर्गा। बे० ग० ६५–३६। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इर्गरपुर ।

प्रशस्ति—सबन् १६३६ वर्षे पौप बृदी १५ मुकं श्री मुल्सचे सरस्वतीपच्छे बनात्कारगरो मागवाडा पुरोनमस्थान श्री भ्रादिनाथ चैत्यालये श्री कुन्दकुन्दाचर्यान्वये महारक श्री पद्मनिददेवा तन्पट्टे भ० श्री मकन्वकीनिदेवा तन्पट्टे भ० श्री शुवनकीन्ति देवा तन्पट्टे भ० श्री जानपूरमाञ्चासत्त्वट्टे भ० श्री विजयकीन्ति देवास्तनपट्टे भ० श्री मुभवश्रदेवास्तपट्टे भ० श्री मुमतिकीन्ति देवास्त भ० श्री गुराकीन्ति गुरूपदेगात् स्वास्म पद्माधं सारस्वत प्रक्रिया निवास स्वज्ञानावागीं अयार्थं स्वपद्मावं । श्री मममस्त ।

**५०६**६. प्रतिसं**० ३३** । पत्र स०६० । ग्रा० १९ 🗴 ४ इ.च. । ले० काल स०१६६४ । पूर्ण । वे० स०३७२-१४२ **। प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर ।

**५०७०. प्रतिसं० २४ । पत्रस**० २६–६७ । आ० १२imes६ इ.स. । **ते०काल** imes । पूर्ण । बेस्टन स० २४६–१०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर ।

**५०७१. प्रतिसं० ३५** । पत्र स० ६६ । आ० ११×५ इच । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६१~४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का हुगरपुर ।

**५०७२. प्रतिसं० ३६ ।** पत्र स०४४ । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन २०४६३ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-छोटी २ पाच प्रतिया और है।

**५०७३. प्रतिसं० ३७** । पत्र स० १४७ । ग्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इञ्च । ले०काल  $\times$  । ग्रापूर्ण । वेष्टन स० २२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

५०७४. प्रतिस**े ३६** । पत्र स० २७ । स्ना०११४ ४.३ इश्व । ले**०काल स०१**६३४ । पूर्यो । बेष्टन स०१४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर (राजमहल) टोक ।

विशेष--विद्वान् दिलसुखराय नृपसदन (राजमहल) मध्ये लिखित ।

१०७५. प्रतिस० ३६ । पत्र स० ५१ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष--प्रथम वृत्ति तक है।

५०७६. प्रति सं०४० । पत्रस०७१–१५३ । धा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इन्थ । से०काल  $\times$  । बेष्टन स०७१५ । प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

४०७७. सारस्वत प्रक्रिया—  $\times$  । पत्रस $_0$  ४। ग्रा॰  $_{\frac{1}{2}}$   $\times$  ४ $_{\frac{3}{2}}$  इश्व । भाषा–सस्हत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टन स $_0$  ४६–१४७ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर नैमिनाथ टोडारासीसह (टोंक) ।

४०७६. सारस्वत प्रक्रिया—  $\times$  । पत्रसं० १३ । स्रा० ६ $\frac{1}{4}$   $\times$  ४ इल्ल । भाषा-सस्क्रत । बिषय-स्थाकरणः । र०कालः  $\times$  । ले०कालः  $\times$  । पूर्णः । बेष्टनसं० ४७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन संदिर राजमहल टोकः ।

विशेष - पचसचि तक है।

४०७६. सारस्वत प्रक्रिया —  $\times$  । पत्रसं० १० । प्रा० ११ $\times$ ४१ इञ्च । भाषा — सस्वत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  ! पूर्ण । वेष्ट्रन स०३१ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मदिर प्रभिनवन स्वामी व दी ।

४०८०. सारस्वत प्रकिया वृत्ति—महोभद्राचार्य । पत्रस०६७ । प्रापा—सस्कृत । विषय— व्याकरण । र०कात  $\times$  । से केकात  $\times$  । तुर्णे । वेष्ट्रनसं०४० । प्राप्ति स्थान—दि० जेन पनायती मन्दिर हण्डानाओं का डीम ।

५००१. सारस्वत वृत्ति —  $\times$  । पत्रसं० ६२ । प्रा० १० $\frac{3}{6}$   $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  दश्च । भाषा-सस्क्रत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले० काल सं० १४६५ फाणुगा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन म० ११२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (वृदी) ।

विशेष-जोधपुर महादुर्गे राव श्री मालदेव विजयराज्ये ।

५०६२. सारस्वत व्याकरण् $-\times$ । पत्र स० २०। प्रा० ११ $\frac{1}{3}$   $\times$  ६३व। भाषा-सम्बद्ध । विषय-व्याकरण् । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । प्रपूर्णः। वेष्ट्य स० ६०-४३। प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर वडा बोससभी दोसा ।

विशेष--- भन्द एवं धानुग्रो के रूप हैं।

५०६३. सारस्वत व्याकरणः वीपिका—मट्टारक चन्न्नकीति सूरि । पत्र स० १२६ । म्रा०११×४२ख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरणः । र०कात × । से•काल सं०१७४० भारवा बुरी १०। पूर्णः । बेष्टन स०३४६ । **प्राप्ति स्थान**—(द० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**५०८४. प्रतिसं० २** । पत्र स० ५२ । प्रा० ११ $\times$ ४ $\xi$  इञ्च । ते० कान  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २४६ । प्रा**प्तिस्यान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४०८४. सारस्वत ब्याकररा पंच संधि — झनुमृति स्वरूपाचार्य । पत्रस० ६ । ग्रा० १०४ ४ है इ.च । भाषा —सस्कृत । विषय — व्याकरता । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ३६६ । प्राप्ति रूपान—दि० जैन मन्दिर लक्कर अयपुर ।

५०६६. सारस्वत वृत्ति —नरेन्द्रपुरी । पत्र सस्या ७०। ग्रा० ११ $\times$ ४ $_{g}^{3}$  इ.च.। भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । ते॰काल  $\times$  । वेष्टन स०३६६। प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

५०६७. सारस्वत सूत्र—  $\times$  । पत्रस०७ । सा० १२ $\times$ ५ इञ्च । साथा— सस्ट्रत । विषय— व्याकरम् । र० काल  $\times$  । ते०काल स० १७२० । पूर्णे । वेष्ट्रन स० १६१/५६५ । प्राप्ति स्थान— संमवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

श्चन्तिम पुष्पिका इस प्रकार है-इति श्री भारतीकृत सारस्वत सुत्र पाठ संपूर्णम् ।

प्रशस्ति — सबन् १७२० वर्षे पीच सुदी ४ बुधे श्री कोटनगरे झादोश्वरर्षस्यालये श्री मूलसधे सरस्वतीपच्छे बलास्कारगरी कुन्दकुन्दाचार्यात्वये भट्टारक श्री पद्यनदिदेवा तरपट्टे म० श्री देवेनद्रकीतिदेवा तदामनाये झावार्ये श्री कल्याराकीति तत्रिकृत्य ४० तेवपालेन स्वहस्तेन मत्र पाठी लिखित:।

५०८६. सारस्वत सूत्र— श्रनुभूतिस्वरूपाचार्य। पत्रसं० ५। प्रा० १० $\times$ ४ इख । भाषा— स म्कृत। विषय— व्याकरण्। ७० काल  $\times$ । लेक्काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्ट्रन स०२३०। **प्रास्ति स्थान**— भटास्कीय दि० जैन मन्दिर ग्रजीर ।

५० द६. प्रति सं०२ । पत्रस०३ । ले॰ काल स०१ दद३ । पूर्ण। बेष्टन स०२ ३१ । प्राप्ति स्थान — भटटाकीय दि॰ जैन मन्दिर अर्जमर ।

**५०६०. प्रतिसं० ३**। पत्रस० १६ । आ० १२ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{3}{2}$  इख । ते**०का**ल स० ४६-१८५ । बेकृत स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेमिनाथ टोडारायमिह (टोक) ।

५०६१. सारस्वत सूत्र—  $\times$  । पत्रस० ११। प्रा० ६ $^1_y \times ^2_{\psi}$  इश्व । भाषा-सस्क्रत । विषय—व्याकरण । र०काल  $\times$  ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वष्टन स० ११०१ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

५०६२. प्रति स०२ । पत्रस०६। घा०१० $\frac{1}{2}$ ४ $\frac{2}{3}$ ४७ । भाषा—सम्बत् । विषय—स्याकरण । १०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०११६ । प्राप्ति स्थान—अहारकीय दि० जैन मन्दिर प्रवसेर ।

५०६३, प्रतिसं०३ । पत्र म०३६ । ले०काल x । पूर्णा वेष्टन म०४६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

५०६४. प्रतिसं०४ । पत्र म०३६ । ले०काल x । ब्रपूर्गा । बेष्टुन स०२२० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर श्रीमनन्दन स्वामी व दी ।

विशेष---३८ से भ्रागे पत्र नहीं है।

**५०६५. सारस्वत सुत्र पाठ**—  $\times$  1 पत्र स० ४ । ग्रा० १० $\frac{3}{4}$   $\times$   $\frac{3}{4}$  इच्च । भाषा—सस्क्रत । विषय—व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले० काल म० १६६१ । वेष्टन स० ६१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-सवत् १६६१ वर्षे भाद्रपद मृदि १० दिने लिखिन आकोला मध्ये चेला कल्यागा लिखिन ।

५०**६६. सिद्धांत कौमुदी**— imes । पत्र स**०** १३४ । ग्रा० १० $^3_{
m c}$  ४ $^2_{
m c}$  इच्छ । ले० काल imes । ग्रपूर्ण । बेष्टन स० ३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

५०६७, प्रति स० २ । पत्रस० १६२ । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टनस० ४१६ १५६ । प्रापितः स्थान—दि० जैन मदिर कोटडिया का डुगरपुर । **५०६** म्, **प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० १४ । म्रा० १० ४४ इञ्च । ले० काल स० १४५० । पूर्ण । वेष्टुत सं० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ड्र'गरपुर ।

ज्ञास्ति—स॰ १४४० वर्षे धास्त्रिन मासे णुक्तपक्षे ज्योदस्या तिची रिवतासरे घरी ४६३ माइपरे तक्ते घरी ४० ब्याचात योगे घरी १७ दिनहरात्त्रण विचित्तं श्री सिरोही नगरे राउ श्री जगमाल विजय राज्ये प्रिणुमार्थने कक्कोलीवालगच्छे धासस्ययाम श्रीतवीण्डस्त्रीरस्तत्यट्टे भ० श्री गुणसागरसृरिस्तत्यट्टे श्री विजयसन्वरीणा विषय मृति सक्सीतिकक विचित्त ।

४०६६. सिद्धांत कौमुदी (इतत्व प्रादि)—  $\times$  । पत्रतः १–६। याः १२ $\times$ ६२४ । प्राप्तः सात्रः—सात्रः—सात्रः—सात्रः । विषय—स्थाकरणः । २० कालः  $\times$  । त्रो॰कालः  $\times$  । प्रपूर्णः । वेष्टनं सः ६१ । प्राप्तिः स्थानः—एः जैन पनायती मन्दिरं कामा ।

**५१००. सिद्धांतचिन्द्रका** — **रामचन्द्राधम** । पत्रस $\circ$  ५६ । प्रा $\circ$  ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  डन्स । भाषा — सस्कृत । विषय — त्याकरण् । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण् । बेष्ट्रनस $\circ$  ६६४ । प्रास्ति स्थान — टटारकीय दि $\circ$  जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**५१०१. प्रतिसं० २**। पत्र स० न६ । प्रा० ११ $\frac{1}{6}$  $\times$ ५ $\frac{1}{6}$  इचा। ले० काल स० १६२८ डितीय श्राषाढ सुदी १। पूर्ण। वेष्टतस० ६७७ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

**५१०२. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० ६ ⊏ । झा० १०×६ <sup>2</sup>, इश्वा । ले० काल स० १८ ⊏४ । पूर्ण । वेष्ठन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि**० जैन** मदिर क्रजमेर ।

**५१०३. प्रति सं०४ ।** पत्रस०१२ ⊏ । आर्थ० १०४ ५ इ.च. । ले० काल ६ । पूर्ण। वेष्ट्रन स०१३६३ । **प्राप्ति स्थान** — म० डि० जैन मन्टिर स्रजमेर ।

**५१०४. प्रतिसं० ४ । पत्र**स० ५६ । घा० १०३ ४४३ डच । ले०काल स० १८४७ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० **१००६ । प्राप्ति स्थान** —भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**५१०५. प्रति स०६।** पत्र स०६४। घा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इखा लेल काल स०१७५४ मगमिर सुदी १५। पूर्णा वेष्टुन सं०१३१८। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर ।

**५१०६. प्रति सं०७ ।** पत्र स०६० । आ०१०×४५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०५२/३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इनग्पर ।

**५१०७. प्रति सं० ६** । पत्र स० ६६ । बा० १० ४४ } दश्व । ले० काल स० १८८५ **।** पूर्ण । वेष्टन स० ५१ २४४ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पशायती मन्दिर ग्रालवर ।

विशेष--मृनि रत्नचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

**५१०८. प्रतिसं० ६**। पत्र स $\bullet$  ४५ । प्रा० ६ $\frac{1}{2}$  ४५ हुन्छ । ले**०का**ल स $\bullet$  १८८१ । पूर्ग् । बेष्टन स $\bullet$  १६० । **प्राप्ति स्थान** —वि $\bullet$  जैन पाश्वेनाथ महिर इन्दरगढ (कोटा)

**५१०६. प्रतिसं० १०**। पत्र स०६१। प्रा० १०×५ इञ्च । ले० काल × । प्रपूर्ण । बेष्टन स० २२८ । प्राप्ति **स्थान** - पार्श्वनाथ दि० जैन सदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष--सिद्धान्तवन्द्रिका की तत्वदीपिका नामा व्याख्या है।

४११०. प्रति स० ११ । पत्रस० १०२ । प्रा० ६२ ४४डच्य । ले०कास 🗶 । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० ५५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दबलाना (बुदी) विशेष--१०२ से धागे के पत्र नही है।

**५१११. प्रतिसं० १**२ । पत्र स० ११ । झा० १० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इच्च । ले० काल स० १७६६ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाक्ष्मंगय चौगान बूंदी ।

५११२. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ३६ । ग्रा० ११×५ इश्व । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० १५५ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन संदिर पार्श्वनाय चौगान बूंदी ।

५११३. प्रति स०१४ । पत्रस०२-६०। ग्रा०११×४ हृदःवा । ले०काल × । ग्रपूर्णं। वेष्टनसंकदः। प्राप्ति स्थान—दिक्षेत्र मन्दिर पात्रवेनाथ चौगान व दी।

**५११४. प्रतिसं० १५ ।** पत्रस० ७२ । ब्रा० १३ ४५ इश्व । से०काल ४ । पूर्ण । वेष्टत सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ चौथान वंदी ।

**५११५. प्रति सं०१६।** पत्रस०११५। ग्रा०११ $\times$ ४ $^2_i$  इच। ले० काल स०१ प्रदर्श वैद्याल मुदी। पूर्णाविद्यास०२५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

५११६. प्रति स॰ १७ । पत्रस॰ ५० । प्रा० ११ imes ५६ काल imes । वेष्टन स॰ २६१ प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**४११७. सिद्धांतचिन्द्रका**— $\times$  । पत्र स० २४ । प्रा०न $\frac{2}{3}$   $\times$  ३ इन्च । माषा-सस्कृत । विषय-व्याक्षरण । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५३१ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मंदिर प्रजानर ।

**५११ ८ प्रति स\circ २** । पत्र स $\circ$  ५४ । ब्रा० १० $^3_4$  imes ४ ६ खा । ले $\circ$ काल imes । स्रपूर्ण । वेष्टन स $\circ$  १४५२ **। प्राप्ति स्थान** — भ $\circ$  दि $\circ$  जैन मन्दिर अजमेर ।

**५११६. प्रति स० ३** । पत्र स० ७२ । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति** स्थान— म० दि० जैन मन्दिर ग्रजसेर ।

**५१२०. प्रति सं०४**। पत्रस्त $\times$ ३। म्रा०१२ $\times$ ५१ हजा। ने०काल  $\times$ । म्रपूर्ण। वेष्टुन स०१५६५। प्राप्ति स्थान—गटटारकीय दि० जैन मन्दिर म्रजमेर।

**४१२१. सिद्धान्तचिन्द्रका**  $\times$  । पत्र स० २२ । बा० १० $^2_1$   $\times$  ४ $^2_2$  इच । भाषा —संस्कृत । विषय—व्याकरए। १०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । बपूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । प्राप्ति स्थान —भट्टारकीय दि० जैन मंदिर सजसेर ।

**४१२२. सिद्धान्त चंद्रिका**—  $\times$  । पत्र स० २७ । म्रा० ११  $\times$  ४ $^{1}$  इन्छ । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । ८०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २५०-१०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्व गरपुर ।

**५१२३. सिद्धान्त चिन्यका**— $\times$  । पत्रस० द । म्रा० १२ $^1_7 \times ^1_7 \times ^1_7 \times ^1_7$  इख । माषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल $\times$  । ले० काल । पूर्ण । बेष्टुनसं० ३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पंचायती मदिर करीली ।

४१२४. सिद्धान्त चिन्नका $\times$ । पत्र स॰ ४६ । द्वा॰ ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इंच। प्रावा-संस्कृत । विषय-च्याकरण । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं॰ २१६ । प्रास्तिस्थान—दि॰ जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**५१२५. सिद्धान्त चिन्निका टीका—सदानंद ।** पत्रस्व १५२। म्रा०  $\mathbb{E}_{i}^{1} \times \mathbb{Y}^{3}$  इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल—  $\times$  । ले० काल स० १८७२ माह मुदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मंदिर स्रजनेर ।

**४१२६. प्रतिसं० २** । पत्रस**० ६ । मा० १०**६  $\times$  ४१ इला । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं**०** १-६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर दबलाना बूदी ।

**५१२७.** सिद्धान्त चिन्त्रका टीका $-\times$ । पत्र स० ११३। प्रा० १२  $\times$ ६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरए। र०काल  $\times$ । से०काल सं० १८७५। पूर्ण । वेष्ट्रत स० ६७। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्राविनाथ बुदी।

**५१२८.** सिद्धान्तचिन्नका टीका-हथंकींति । पत्रसः १०७ । प्रा० १०  $\times$  ४ ; उत्र । भाष — सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १२७ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

**५१२६. सिद्धहेम शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचायं** । पत्रस० १६ । ग्रा० १०५४ १३ व । **भाषा**—सस्कृत । विषय—व्याकराए । र०काल ४ । **ने०काल** स० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म्रप्रवाल मन्दिर उदयदर ।

विशेष-प्रति पत्र १५ पक्ति तथा प्रतिपक्ति ६० ग्रक्षर । ग्रधार सुक्ष्म एव सुन्दर है ।

प्रशस्ति -- निम्न प्रकार है---

सबत् १६१४ वर्षे भाद्रपद मुदी १ घनौ श्रीमूलसबे भ० श्री बुभवन्द्रदेवा नत् जिप्योगाध्याय श्री मकल भूषणाय पठनार्थ । इल प्राकार वास्तव्य हुंवड जातीय गगाउम्रा गोत्रे डोभाडा कर्मती भार्या पूर्शनमु मा० भेषराज भार्या पाची तात्र्या दत्तं मिद शास्त्र ।

**५१३०. सिद्धहेमशब्दानुशासन स्वोपज्ञ वृति—हेमबन्द्राचार्य** । पत्र न०७१ । द्वा०६ $\times$ ४ इन्छ । साथा—सम्कृत । विषय—ब्याकरस्र र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन न०२१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

**५१३१. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १४ । आग् १२ x ४ इखा । ले०काल x । श्रपूर्ग । बेष्टनस० ३११/५६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**५१३२. मुबोधिका**— ×ा पत्र सु० ४ ते १४४ । बा० १० ४ ४ २ चा। भाषा-मरकृत । विषय व्याकरणा । र०काल ×ा ले०काल सु० १६४६ ज्येष्ठ मुदी १३ । अपूर्णा । वेष्टुन सु० १३३६ । **प्राप्तिस्थान**-मद्रारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**५१३३. सूत्रसार—लक्ष्मर्शासह** । पत्रस० २४: म्रा० ११४५ इच्च । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरणः । र०कालः ४ । ले**०कालः ४** । पूर्णः । वेष्टनस० १४३१ । **प्राप्तिस्यान**— मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर म्रजमेरः ।

**५१३४. संस्कृत मजरी** —  $\times$  । पत्रसं० ६। ब्रा० १०१४५ इन्छ । भाषा-संस्कृत । विषय— व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले० कान स० १६२० ज्येष्ट बुदी ८। पूर्ण । वेष्टनस० ३०४। प्रास्ति स्थान— दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - केशरीसिंह ने प्रतिनिपि की थी।

## विषय--कोश

४१३५. ग्रनेकार्थध्विन मंजरि—सप्राक पत्रस० १०। प्रा० ६ $\frac{1}{6}\times 1$  माथा-अंस्कृत । विषय—कोण । र०काल  $\times$  । ते०काल स० १५४६ फागुन सुदी १४ । वेष्ट्रन स० १५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ पन्दिर चौगान व दी ।

४१३६. ग्रनेकार्यःविन मंजरी $-\times$ । पत्र स०२७। ग्रा०१ $\times$ ६ हे स्व। भाषा-संस्कृत। विषय-कोण। र०काल $\times$ । ले०काल स०१६०४। पूर्ण। बेप्टन स०१६४। प्राप्ति स्थानं-दि० जैन मन्दिर ग्रीननव्तन स्वामी वृदी।

४१३७. ग्रनेकार्थस्विन मंजरी $--\times$ ापत्र सं०६। ग्रा० १ $\times$ ४ इच। साथा-संस्कृत । विषय-कोशा र०कास  $\times$ । लेकास  $\times$ । यूर्ण। वेष्टन स०११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोमळा कोगः

४१३८. प्रानेकार्यध्यिति संजरी $-\times$ । पत्र स॰ १४। प्रा॰ ११ $\times$ ६ इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कोप । र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स॰ २१६ । प्राप्ति स्थान - दि॰ जैन संदिर लक्कर, जयपुर ।

११३६. प्रनेकाथं नाममाला भ० हवंकीति । । पत्रस० १६ । प्रा॰ १ $\times$  ४ इश्व । प्राया—सङ्कत । विषय —कोश । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनसं॰ २२१ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनव्दन स्वामी, बु दी ।

विशेष--दाहिने ग्रोर के पत्र फटे हुये हैं।

**५१४०. प्रतेकार्य नाममाला** —  $\times$  । पत्र स॰ १३। ग्रा॰ ११ $\times$ ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोष । र॰क ल  $\times$  । ले॰काल स॰ १६४१। पूर्ण । वेष्टन स॰ २४६ । **प्रास्ति स्थान** —दि॰ जैन प्रथवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

सवन् १६४१ वर्षे बैणाल मुदी ४ गुरौ श्री मुलसघे सरस्वतीगच्छे भ० सुमतिकीत्ति तत्पट्टे मट्टारक श्री गुराकीर्ति गुरुपदेशान् मट्टारक श्री ४ पदानदि तत् शिष्य ब्रह्म कल्यारा पठनार्थ ।

५१४१. **प्रनेकाथं मजरो**—जिनदास × पत्र स० १०। प्रा० ८×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कोश। र०काल ×। ले०काल स०१८७६ सावन बुदी ७। पूर्एं। बेष्टन स०१३०१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर प्रजमेर।

विशेष---प्रारम्भ

तुव प्रभु जोति जगत मे कारन करन ध्रभेव । विष्न हरन सब सुख करन नमो नमो तिहिदेव । एकं वस्त भ्रनेक है जगमगाति जग भाम । जिम कचन तें किकनी ककन कु डल दाम ।।२।। उचरि सर्क न संस्कृत भ्रौ समभ न समरय । तिन हित एांद सुप्तति भाख भ्रनेक भ्ररथ ।।

ग्रान्तिम-इति श्री श्रनेकार्य मजरी नाम भा० नदकृत।

**५१४३. धनेकार्य मंजरी**— × । व्यस्त० २१ । ग्रा० ०३ × ४ ६वा । गायान्स स्कृत । विषय-कोता । र० काल × । वे० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन भन्दिर फतेह्नपुर नेखाबाटी (श्रीकर)

**५१४४. घनेकार्य संजरी**— $\times$ । पत्रस० १४। घा० १०  $\times$  ४ इला। साया—संस्कृत । विषय-कोष। २०काल  $\times$ । ते०काल स० १७८४ माह सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० २७३। प्राप्तिस्थान—विक जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी बृंदी।

**५१४५. ग्रानेकार्य शब्द मंजरी ।** पत्र स $\circ$  ४ । ग्रा $\circ$  ११imes ४ । नापा-सस्कृत । विषय-कोम्रा । रूकाल imes । लेकाल imes । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  २६०।६२१ प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन समवनाथ मंदिर उदयपुर ।

४१४६. ग्रीभधान चितासिंग्। नाममाला—हेमचन्द्राचार्यः। पत्र स०४१। ग्रा०१० $\times$ ४ इ.च.। भाषा-संस्कृतः। विषय-कोशः। २०कालः  $\times$ । ले०कालः $\times$ । श्रपूर्णः। वेष्ट्रनः स०२०१। प्रास्तिः स्वानः—दि० जैन प्रथवालः मन्दिर उदयपुरः।

**५१४७. प्रति सं० २ । पत्र स० १**०० । का० ६ ${}^2$  $\times$ ४ $^2$  इ.ख । ले० काल स० १६४१ । बेहुन स० ६ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — इसे हेमीनाम माला भी कहते है । प्रति स्वापन टीका साहत है प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत् १६५१ वर्षे माघ मुदी ६ चन्द्रवासरे लिखित मुनि श्री कृष्ण्यदास । मुनि श्री वद्धंमान लिखित श्री प्राणिहिद्धपुरपत्तनमध्ये लिखित । भद्र भवनु सामत्तपागच्छे उपाध्याय श्री ७ शांतिचन्द्र लिखापित ।

**५१**४**८. प्रति सं० ३।** पत्र सं० ५७। श्रा० १२ $imes^2$ हुन्छ। ले० काल imes। पूर्ण । बेष्टनसं० ६३–३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ड्रांगरपुर।

विशेष -- कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुये हैं।

५१४६. प्रति स० ४ । पत्रसं० १३७ । ग्रा० १०३ ४४ इन्य । ले०काल × । पूर्गा । बेष्टनसं० १७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जसपुर ।

विशेष — दूसरा पत्र नहीं है। जोशी गरोशदास के पुत्र तुलसीदास ने नागपुर में प्रपिलिपि की थी। प्रति सटीक है।

**५१५०. प्रतिसं० ५ ।** पत्रसं० ११-१६२ । ब्रा॰६ $\frac{1}{4}$   $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  इस्त्र । लेब्काल  $\times$  । पूर्ए । बेब्रनसं० २१०।६४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष — सारोद्वार नाम की टीका वाचनाचार्यवादी श्री बक्षभ गिए की है जिसको स०१६६७ में लिखागयाथा।

५१५१, प्रतिसं∘ ६ । पत्रस॰ ११ । ले॰काल × । पूर्गः । वेष्टन स० ७६४ । प्राप्ति स्थान– दि॰ जैन पचायती मन्दिर भरतपुर । ४१५२. प्रभिषासनार संग्रह— $\times$ । पत्र न० ६४। प्रा० १० $\times$ ६ दे इसं। भाषा-सःस्कृत। विषय-कोशः। २०कालः  $\times$ । ले॰काल सं० १६४० माघ सुदी १। पूर्णः। वेष्टन सं० दः। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर श्री महावीर बदी।

**४१४३. प्रमरकोश—प्रमर्शासह।** पत्र स०११। मा० ११३ $\times$ ४३ इ.च. भाषा-संस्कृत। विषय-कोशः। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णः। वेग्टन स० १३३०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

विशेष--इम मन्दिर में अमरकोश की ६ प्रतिया और है।

५१५४ प्रति सं०२ । पत्रस०१६५ । प्रा०१०४४ इच । लेक्काल स०१७२१ । पूर्ण । बेष्टन सं०१६२६ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-प्रतिसटीक है।

५९५५. प्रति सं० ३ । पत्रस० १६७ । ले०काल । श्रपूर्ण । वेष्टन सं० १६३० । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--प्रति सटीक है।

५१५६. प्रति स०४ । पत्र स०१७४ । प्रा०६४६१ँ इखा। ले० काल ४ । पूर्णा विवृत्त म० २२६-६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

विशेष-ज्योतिपसार ग्रन्थ ग्रीर है जिसका वे० स० २३०-६२ है पत्र स० मी इसी मे है।

५१५७. प्रति स० ५ । पत्र म० ७७ । श्रा० १० ४५ १ इ.ख । ले० काल 🗴 । पूर्णे । वेष्टुनम० १११ ।प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

५१५८. प्रति स० ६ । पत्रस० २-६० । ब्रा० ८×४ॄै इञ्च । ले०काल× । पूर्ण । बेष्ट्रनस० १५१-६६ । प्रास्तिस्थान-- वि० जैन मदिर कोटडियो का द्वारपुर ।

**५१५६. प्रतिसं० ७।** पत्र स० १०। ग्रा० ११imes ४ इञ्च । ले० ´काल सं० १८४३ माघ बुदी ५। ब्रपूर्ण । बेप्टन स० २०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ब्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१६०. प्रतिसं० ६। पत्र स० २-१४। ले०काल × । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ४४२। प्राप्ति स्थान-वि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**४१६१. प्रति सं० ६** । पत्र स० ६८ । ग्रा० ११imes४ हे इन्ज । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० ५८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर करीली ।

**५१६२. प्रति सं० १० ।** पत्र स० ४२ । प्रा० ६ $\times$ ५ै इख ।ले० काल  $\times$  । दूसरे काड तक पूर्ण । बेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

**५१६४. प्रति**ंसं० १२ । पत्र स० १४ । ले०काल imes । पूर्ण ।वेष्टन सं० ४६८ । **प्राप्तिस्थान** $\stackrel{-}{\sim}$  दि॰ जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

**४१६४. प्रति सं० १३**। पत्र सं० ४१। प्रा० ११ $\times$ ४ $^{\circ}$  इश्व । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ११३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर प्रलवर ।

विशेष-सागारधर्मामृत पत्र ३६ मपूर्णं तथा दर्शन पाठ पत्र २४ इसके साथ और है।

५१९६६, प्रति सं०१४ । पत्र स०३ - ६६ । आर्थ० ६२,४४२ । इत्या । लेकाला । पूर्णा विष्टन स०४१ । प्राप्ति स्थान-—दि० जैन मन्दिर वैर ।

५१६७. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ६२ । घा० १०३ ४५३ इञ्च । लेकाल स० १०५० चैत वृदी १४ । पूर्ण वे० स० १६१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५१६८, प्रतिसं० १६ । पत्रसः० २६ । झा० १० रे ४ इञ्च । ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ वृदी २ । पर्या विकृतसं० १६२ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष - केवल प्रथम काण्ड ही है।

५१६६. प्रति सं० १७ । पत्र स० ४३ – ६३ । घा० १० ४ ५ इश्व । ले०काल 🗴 । घपूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बंदी) ।

११७०. प्रतिसं० १८ । पत्र स० १०३ । घा० १०३ ४ १ इञ्च । ते० काल ४ । घपूर्णं । वेष्टन स० १७५ श्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृदी)

विशेष-इस मन्दिर मे २ प्रतिया ग्रीर हैं।

**५९७१. प्रति सं० १६ ।** पत्रस० २७ । घा० ६×५<sup>2</sup> इखा । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैसाव ।

**४१७२. प्रतिसं० २०।** पत्र स० ११–३४। घा० १० $^1_i \times ^0_i$  इस्त्र । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १२१। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टोक)

**५१७३. प्रतिसं० २१ ।** पत्रस० मह । ग्रा० १० ४ ६) इञ्च । लेब्बाल स० १६६६ । पूर्ण । बेष्टुन स० १म३। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वामी वृदी ।

विशेष—यं • सेवाराम ने श्रावक गुमानीराम रावका से सर्वाई माधोपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

५१७४ . प्रति स०२२ । पत्र स०३२ । घा०११४६ इञ्च । ले० काल स०१६३७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नागदी बुदी ।

**४१७४. प्रति सं० २३ ।** पत्र स०३० नप्र । धा०१ $\times$ ६ इञ्च । ले० काल स०१८६६ । **धपू**र्ण । बेष्टन म०२६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर धनिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष-वृंदी मे प्रतिलिपि हुई थी।

५१७६. प्रतिसं० २४ । पत्रस० १६५ । मा० १० $\frac{1}{3} \times \frac{1}{3}$  इख । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुनसं० १८३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बूदी ।

५१७७. प्रतिसं०२५ । पत्र स०२३ । मा०११र्¦४५ै इचा। ले० काल सं०१६७३ । बेष्टन स०२२१ । प्रयम काण्डतक । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--अयपुर में प्रतिलिपि की गई थी। इस मन्दिर मे प्रतियां और हैं।

**५१७**न. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १३० । प्रा० १०३ ४५ इवा । ते० काल स० १८४४ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेटटन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ∤

विशेष — जयपुर मे लक्कर के मन्दिर मे पडित केशरीसिंहने अपने शिष्य लालघन्द के पठनायं प्रतिलिपि की थी।

४१७६. प्रतिसं० २७। पत्रस० १६६। ग्रा० १२ X ४ इश्व । ले०काल X । ग्रपूर्ण । बेष्टन स० २४०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्वेनाथ नौगान बुदी।

प्रति टीका सहित है।

५१८०. प्रतिसं०२८ । पत्र स०६० । ग्रा०१२×५६ च । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स०६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ वृदी ।

विशेष - द्वितीय खण्ड से है। टीका सहित है।

५१६१. प्रति सं० २६ । पत्रस० स० १६ । धा० १२ $\frac{3}{4} \times \frac{3}{4}$  इला । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ध्यवाल मन्दिर उदयपुर ।

४१८२. उद्धारकोश---दक्षिरामूर्ति मृति । जन्न ०१८ । बा० ११४ ६ इश्व । भाषा---सन्कृत । विषय --कोष । र०काल × । ले०काल स०१८३७ । पूर्ण । वेष्टन सं०४४६ । प्राप्ति स्थान---म० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष -- २ित रक्षिगापूर्ति मुनिना विरचिते उद्घारकोणे मकलागमसूरि दणदेवी सप्तकुमार नवप्रह णिष्यदेविष्यान निर्मायो नामसन्तमकल्य ।

४१६३. एकाक्षरी नाममाला —  $\times$  । पत्र सं०२ । प्रा० र $_{0}^{2}\times$ ४ इख । भाषा — सस्क्रत । विषय — कांग । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वे० स० १११० । प्राप्ति स्थान — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अवनेर ।

विशेष--दुसरा पत्र फटा हम्रा है।

**५१६४. प्रति स**० २ । पत्रस० २ । ग्रा० १० $\frac{1}{3} \times \frac{3}{2}$  इञ्च । ले० काल सं० १९७१ । पूर्स । बेहुत स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर ।

५१६५ प्रति स०३ । पत्र स०२ । मा०१०५ $\times$ ४ इ.च । ले०काल स०१६६१ । बेप्टन स०३०५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेच--सागानेर मे प्रतिलिपि की गयी थो।

५१८६. प्रति सं० ४ । पत्र स० २ । घा० १२imes५ इया । ले० काल imes । पूर्ण । वेस्टन सं० ७० । प्रास्ति स्थान —िद० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी वृंदी ।

४१८७. एकाक्षर नाममालिका — विश्वरांभु । पत्र म० ४ । बा० ११ $\chi$ ४ $\xi$  इव । भाषा— सस्कृत । विषय—कोषा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० ३०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**५१८ म. प्रति सं०** २ । पत्रस० ६ । घा० १० $\frac{9}{8}$  $\times$ ५ 'इल्ब । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० ३०२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**५१८६. प्रति सं०३ ।** पत्रस**०७ । धा० १०**३ ×५ इला । ले०काल १८५४ ज्येष्ठ बुदी ८ । वेष्ट्रत सं०३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

, ५१६०. **एक्।क्षरनामा**—  $\times$  । पत्रसं० ६ । मा० १३ $\frac{1}{7} \times$  ६ इ.ख. । भाषा—सस्कृत । विषय— कोश । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ११४/११ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्नवाल मन्दिर उदयपर ।

५२६१, जिकाण्ड कोश-पुरघोत्तमदेव । पत्र स०४६ । ग्रा०१० $\frac{3}{2}$  ४ $\frac{3}{2}$  इच्च । माथा— संस्कृत । विषय-कोश । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन सं० ३०० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

प्रहेर: सनंजयनाममाला—कवि धनंजय । पत्र सं० १३ । घा० ६४४ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय—कोषा । र०काल ४ । ले० काल स० १८०६। पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४४ । प्राप्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मन्दिर धन्नेर ।

**५१६३. प्रति सं० २ ।** पत्रस० १६ । प्रा० ११ $\times$ ४ $\xi$  इश्व । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १६२८ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

**५१६४. प्रति सं० ३**। पत्र स० १५। मा० १०×५ हुँ इञ्च । ले०काल स०१८५९ पीय बुदी १ । पुर्णु । बेष्टन सं०१६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाइबेनाय इन्टरगढ ।

**५१६५. प्रति सं० ४ ।** पत्र स०३-१६ । ग्रा०७ $\times$ ५ इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०३-६४ $\sim$ १४० । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

**५१९६. प्रति सं० ५.। पत्र सं० २४.। प्रा० १३** $\times$ ४ है इच्चा ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेहुत स० २६६–**१०६.। प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर कोटडियो का हुगरपुर।

**५१६७. प्रति सं० ६ ।** पत्रस० १३ । झा० १०×५ इश्व । ले०काल स० १८४४ । पूर्ण । के<del>वृत सं</del>० ८४–४४ । **प्राप्टिः, स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

प्रशस्ति—सं०१८४४ का मासोत्तम माने णुक्तपक्षे तिथी ७ भोभवासरे निर्पाकृत तुलाराम । णुभ भवत् पठनार्थं पडित सेवकराम णुभ भवतु ।

११८८. प्रति सं०७ । पत्रस०१८ । ग्रा०१० ४४ १ इ.स. ने० काल स०१६४६ । पूर्णः । वेकृतसं०२३७-६३ । प्राप्ति स्थान-विक्जन मन्दिर कोटडियो का हुनस्पुर।

प्रशस्ति—सन्त १६४६ वर्षे चैत्र मुदि २ गुरु श्री मुन्तस्ये सरस्वतीयच्यं बनात्कारमणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० रत्नकीति देवा त० मडलाचार्य म० श्री जगकीतिदेवा तत्पट्टे म० श्री गुणवन्द्र राजे तत्पट्टे मडलाचार्यं श्री जिनचन्द्र गुरुपदेशाल् सागबाडा नगरे हुवह जातीय भागलीया च० सिच जो।

**५१६६. प्रति सं० द**ा पत्र स०२०। ग्रा० ११×४ इ.च.। ले० काल स०१५६७ आसोज दृदी १०। पूर्ण। बेष्टुन स०२४६। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन ग्रुप्रवाल मन्दिर उदयपुर।

५२००. प्रति सं०६। पत्रसं०१४। घ्रा०८१४६ इन्छा। ले∘काल स०१८१४। पूर्ण। बेष्टन सं०३६। प्राप्ति स्थान--दि० जैन सोगाणी मन्दिर करोली।

५२०१. प्रति स०१०। पत्र स०१ से ४६। ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण। वेष्टनसं०२३। प्राप्ति स्थान–दि० जैन पचायती मन्दिर डीग। ५२०२. प्रतिसं० ११ । पत्रसः० ११ । मा० १२ २ ×५ १ इन्छ । से०काल × । पूर्ण । बेहन सं० ७ । प्राप्ति स्थान — छोटा दि० जैन मंदिर बयाना ।

५२०३. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० १३ । स्ना० १० $\frac{1}{7}$  $\times$  ५ इन्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० = । प्राप्तिस्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

५२,०४. प्रति सं० १३ । पत्र स०२४-३३ । घा०१२ $\frac{1}{4}$  $\times$ ६ इञ्च । ले० काल  $\times$  । धपूर्ण । बेक्न सं०६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मंदिर कामा ।

**५२०५. प्रति सं० १४ ।** पत्र संख्या १३ । घा॰ १२imes१ । ले०काल imes । बेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मदिर लक्ष्कर, जयपुर ।

प्रे.२०६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १० । घा० १र्२४१ है इचा । ले० काल स० १७६६ । वेष्ट्रन स० २१४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

५२०७. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० १५ । ग्रा० १०×५ इ.च. । ले०काल स० १६१६ झासोज सुदी ७ । वेष्टन स० २१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - प॰ द्वांगर द्वार ।प्रतिनिधि की गई थी । सम्बत् १६१६ वर्षे ग्राप्त्रिन मुदी मप्तम्या लिखितं प॰ द्वांगरेण ।

५२०८. प्रति स० १७ । पत्र स० १७ । भ्रा० ६×४१ इस्त । ले०काल स० १८१४ । पूर्ण । बेष्टनस० २२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दबलाना (बदी) ।

५२०६. प्रतिसं० १⊏ । पत्र सं० १६ । झा० ६ र्रू ४ ५ इला । ले० काल स० १८७५ । पूर्ण। वेष्टन सं० ३४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना इ.दी ।

**४२१०. प्रतिसं० १६ ।** पत्र स० १८ । झा० १०  $\times$  ४ इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २४३ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दर प्रभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष --मालपुरा मे लिखा गया था।

**५२११. प्रतिसं० २०** । पत्रस० १४ । आर० १०१४ ४ इश्व । ले०काल ४ । पूर्ण । बेहन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बदी ।

**५२१२. प्रति सं० २१ ।** पत्र स० १७ । घा० ६ $\frac{1}{2}$   $\times$ ४ इश्व । ले० काल  $\times$  । घ्रपूर्ण । बेष्टन सं० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रसिनन्दन स्वामी बूदी ।

**४२१३. प्रतिसं० २२।** पत्रसं० ४६-१०१। ग्रा० १०१४४ इल्डा। ले०काल स० १७५० श्रावण बुदी ११। श्रपुर्णः। बेष्टन स० ५६। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मंदिर ग्रादिनाथ बुदी।

**५२१४. प्रतिसं० २३** । पत्र स०१२ । द्या० ६×४ डञ्च । ले०काल स०१७३७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाश्वेनाथ चौतान, बुदी ।

विशेष — ए० १७३७ वर्षे मामोतममासो पोयमासे कृष्णपक्षे सप्तमी तिथौ पुनाली पामे मुनि सुगण हर्षे पठन कृते। विद्या हर्षेण लेखिता।

**५२१५. प्रतिसं० २४।** पत्र स०६। ब्रा०११  $\times$  ४ इ.खा ले० काल  $\times$  । पूर्णं। बेष्टन स०६८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमजी कोटा ।

५२१६. प्रतिसं० २५ । पत्र स० १३ । ले॰काल 🔀 । स्रपूर्ण । वेष्टनसं० ५०२ । प्राप्ति स्थान — दि० जेन प्रवायती मन्दिर मस्तपुर ।

 $\chi$ २१७, प्रतिसं० २६। पत्र स० ५७। झा० १० $\chi$ ४ $^2_1$  इञ्च । ले०काल  $\chi$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ३२३ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन प्रयवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

५२१८. नाममाला—नन्ददास । पत्र स०३०। भाषा—हिन्दी। विषय—कोश। र०कान ⋉ । लेखन काल स०१८४८ । पूर्ण । वेष्टन स०४६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पव।यती मदिर भरतपर।

१२१६. नाममाला—हरिबत्त । पत्र स०३ । ग्रा० १०,३×१३ इख । भाषा-सस्त्रत । विषय —कोण । १०काल × । ने०काल × । पूर्ण । बेष्टन स०१०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्राप्तेनाम प्रविद्यारक होगा

**५२२०. नाममाला—बनारसीवास** । पत्रसं• ६। घ्रा० १२×४१ इंच । प्रापा—हिन्दी नख । विषय—कोण । र०काल स• १६७० घ्रामोज सुदी १०। ले० काल स• १८६१ प्र० चंत बुदी ५। पूर्ण । वेष्ठन स• १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

**५२२१. प्रतिसं० २** । पत्रसं० १२ । म्रा० १०imes५ इञ्च । ले**०** काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष--नाममाला तक पूर्ण है तथा अनेकार्थ माला अपूर्ण है।

X२२२. नामरस्नाकर $- \times 1$  पत्रसं०६१। स्ना०६ $\times Y$ ृदश्च। मापा-हिन्दी। विषय-कोत्रा रक्काल स०१७५६। लेक्काल  $\times 1$  पूर्ण। वेष्ट्नसं०६७६। प्राप्ति स्थान-म० दि० जैन सन्दिर स्वयोग

५२२३. नामिलगानुशासन—मा० हेमचन्द्र । पत्र स० ८६ । मा० ६४५ इच । भाषा-स्टकृत । विषय-कोश । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेय्टन स० ८४४ । प्राप्ति स्थान—४० दि० चैन मन्दिर प्रजमेर ।

**५२२४. प्रति सं २ ।** पत्रस**ः** १२० । ग्रा॰ १० $^3_i \times ^3_i$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टनसं• १३५२ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

५२२५. नार्मीलयानुशासन वृत्ति—  $\times$  । पत्र स०१३। ग्रा०१० $\times$ ४ । इत्र । भाषा— संस्कृत । विषय-कोश ।  $^{1}$ ० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स०२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन स्थ्येनवाल मन्दिर उरयपुर ।

४२२६. नार्मीलगानुशासन—प्रमरसिंह। पत्र म०१४४। ग्रा०१२४४ इ.च.। भाषा— संस्कृत । विषय—कोष । र०काल ४ । लेक्काल स०१६०४ ग्रासोज मुदी १४। पूर्ण । वेष्टन स०११४। प्राप्ति स्थान—अ०६० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष — कालाडेहरा मे साह दोलतराम ने थी धनन्तकीर्ति के णिप्य उदयराम को भेंट मे दी थी।

५२२७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ११४ । ग्रा० ६४ ४ इञ्च । ले∘काल स०१६२७ वैद्याल सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस०१४५२ । प्राप्ति स्थान— ग०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर । विशेष-तृतीय खंड तक है।

४२२८. पासिनोर्थोत्त्वानुशासन वृत्ति —  $\times$  । पत्रसं० १६ । घा०१०३  $\times$  ४३ इत्व । भाषा — सस्कृत । विषय —कोण । र०काल  $\times$  । ले०काल सं०१६६ ... .. । पूर्ण । बेष्टन सं०२७१ । धारिन स्थान — ४० वि० जैन मन्दिर प्रजेरेर ।

४२२६. **मान मंजरी**—नन्दवासा । पत्रस्य २०। मा० ६×६ इचा । माया-हिन्दी । विषय-कोष । र०काल × । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । बेष्टन स० ६१ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमतल टोक ।

४२३०. लिगानुशासन (शब्द संकीर्ण स्वरूप) — घनंजय । पत्र स०२३ । भाषा-सस्कृत । विषय-कीय । र०काल ४ । ले० काल ४ । धरूपाँ । वेष्टन स०६०, ४६६ । प्राप्ति स्थान—सम्बनाय विकृतिक मिन्द्र सुवर्ग ।

विशेष — इति श्री धनजयस्य कृतौ निघटसमये कन्दराकीर्णस्वरूपे निरुपणो द्वितीय परिच्छेद समाप्त । मु $\circ$  श्री कल्याण कीर्निमद पुस्तक ।

प्रति प्राचीन है।

४२३१. तिगानुसारोद्धार —  $\times$  । पत्र स० १० । भाषा-सस्कृत । विषय — कोश । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेधन स० ६१/१६४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन समबनाय मन्दिर उदयपुर । **विशेष** — प्रति प्राचीन है । लिपि मृत्य है । प० शुरचन्द्र ने प्रतिनिधि की थी । स० तेजपाल की पुस्तक है ।

५२३२. बचन कोश - बृनाकीदास । यत्र सं० २५२ । घा० १५ $3\times$ ५ इथा । भाषा — हिन्दी (उद्य) । विषय — कोश । २० काल म० १७३७ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनस० १ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्रोमहाधीर बू ी ।

**५२३३. प्रति सं० २** । पत्र स० २८२ । प्रा० ६ $\times$ ५ $\xi$  इचा। ले०काल स १८५६ । पूर्ण  $\lambda$  वेण्टन स० २७६ १११ । **प्राप्ति स्थान** पदि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर ।

**१२३४. वैदिक प्रयोग**— × । पत्र स० ६ । म्रा० ६ × ४ इव । भाषा-सस्वृत । विषय-कोशा । ० काल × । ने० काल म० १४५७ घाषाढ बुदी १० । पूर्ण । बेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान** — म्राप्याल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेज-प॰ जेमा लिखित ।

## विशेष —पारस्म—

सिद्धौपधानि भवदुःखमहागदानां, पुण्यात्मना परमकर्णरसायनानि । प्रक्षालनेक सलिलानि मनोमलानां, सिद्धौदने प्रवचनानि चिरं जयन्ति ॥१॥ ५२३६. शब्दानुशासनवृत्ति—  $\times$  । पत्र सं० ५७ । मा० ११ $\frac{3}{7} \times 3$ े ६ख । भाषा-प्राहत-सस्कृत । विषय-व्याकरण । रक्ताल  $\times$  । लेक्काल । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्द्ररात (कोटा) ।

**४२३७. शारदीयनाममाला—हर्षकीति** । पत्र स २६ । ब्रा० १०×४ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-कोण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स १३५४ । **प्रा**प्तिः स्थान—महारकीय वि० र्जन मन्दिर प्रजनर ।

४२३६. सिद्धांतरस शब्दानुशासन $-\times$ । पत्रस $\circ$  ३७। प्रा $\circ$  १० $^2$   $\times$  ४५ इस । भाषा - सस्कृत । विषय-कोषा ए०काल  $\times$ । ले० काल स $\circ$  १८६४ वैशाल युदी १। पूर्ण्। बेष्टन सं $\circ$  ६४०। प्राप्ति स्थान-भ $\circ$  दि $\circ$  जैन मन्दिर प्रजमेर।

५२३६. हेमीनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । एत्र स॰ २-४१ । द्या॰ १०३४४ ६ वा । साला-सांस्कृत । विषय-कोश । र॰काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं॰ १२८ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दबलाना (व दी) ।

## विषय--ज्योतिष, शकुन एवं निमित्त शास्त्र

५२४० **झरहंत केवली पाशा**— ४ । पत्रस० ६। झा०६ ४ ५ इखा । भाषा-सस्कृत । विषय-शकुन सास्त्र । र० काल ४ । ले०काल स० १६७६ माघ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १८८ । **प्राप्ति श**ाम—रि० जैन मन्दिर फतेहपुर सेलावाटी (श्लीकर)।

५२४१. प्ररहेत केवली पाशा—  $\times$  । पत्र स०४१ । प्रा० ५  $\times$  ६ इब । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुत शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६१७ । पूर्य । वेष्ट्रन स०२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर श्री महाबीर वृदी ।

४२४२, ग्ररिव्हाध्याय $-\times$ । पत्रस० ७ । मा० ११ $\S\times$ ४ इञ्च । भाषा-प्राष्ट्रत । विषय-जयोतिष । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । बेष्टनस० १३४ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४,२४३, प्रष्टोत्तरीदशाकरण्— × । पत्रसं० ४ । घा०११र्ड्नै × ४,६४ ॥ । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल × । ले•काल × । पूर्णं । वेष्ट्रनसं०११वेक । प्रास्ति स्थान— भटटारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

४२४४. ग्रहगैरा विधि—  $\times$  । पत्र सं०२ । ग्रा० ११  $\times$  ५ $^{\circ}$  इस्त्र । गापा-हिन्दी गद्य । विषय-ज्योतिय । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेषृत्र स०१३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैत मन्दिर ग्राभितन्दत स्थामी वृदी ।

४२४५. द्वा सस्पर्शन —  $\times$  । पत्र स०१। आ०६ $\frac{1}{6}$  $\times$  $\frac{1}{6}$  द्वव । भाषा – सङ्कृत । विषय — ज्योतिय । ग० काल  $\times$  । ले०काल स०१६१६ । वेष्टन स०३३१। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

५२४६. ग्रंगविद्याः—imes। पत्रस० १। ग्रा० ११imes५ ६ श्वः । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०कालimes। सेimesकालimes। सेimesम ६२imes। सार्प्त स्थान—दि० जैन मदिर सफकर जयपुर ।

४२४७. श्रांतरदशावर्गन—  $\times$ । पत्रस० १०-१४। घा० १०  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  स्व । भाषा-सस्कृत । विषय-च्योतिय । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । घपूर्ण । वेष्टन सं० २५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बृंदी) ।

५२४८, भ्राशाधर ज्योतिर्घं य—स्राशाधर । पत्र स०२ । म्रा० १२  $\times$  ४ इच । भ्राया—संस्कृत । विषय-स्योतिय । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वे० सं० १६४/५५२ । प्राप्ति स्थान—सम्बनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रन्तिम भाग निम्न प्रकार है।

- श्रासीदृष्टि सनिहितादिवासी, श्रीमृद्गली बह्मविदांबरीष्टः ।
- तरयान्वयो वेद विदायरीष्ट श्रीमानुनामारविवन् प्रसिद्धः ॥१६॥ तस्योत्पन्नप्रयमतनयो विष्णुगामा मनीषी।
  - वेदे शास्त्रे प्रतिहतमतिस्तस्य पुत्रो वभूवः।

श्रीवत्सास्यो धनपतिरसी कल्पनृक्षीपमान । तस्यकोभूतं प्रवरतनयो रोहितास्यामृदिद्वान् ॥१७॥ तस्याद्यभृतृगैणकाष्त्रभानुराणाधरो विष्ण्पदाबुरक्तः । सदोत्तमाग कुरुते संवेदं चकार देवज्ञ हिताय शास्त्रं ॥

इत्याशाधरोज्योतिग्र<sup>°</sup>थ समाप्त: ।

५२४६. कंट्र बिचार—  $\times$  । पत्र सं०२ । घा० ११ $\frac{7}{4}$   $\times$  ५ इच्छ । माया-हिन्दी । विषय- ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुनस० ८१३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मिदर सक्कर जयपुर ।

विशेष-जिस बार को बीमार पडे उसका विचार दिया हुआ है।

५२**५०. कालज्ञान** ─ × । पत्र स०१६ । घा०१०×७६ खा माषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । के काल × । पूर्णुं। वेष्टन स०११४ । **प्राप्ति स्थान** ─ दि० जैन मदिर राजकटन दोक

विशेष — प्रति सटीक है।

**४२५१. कुतूहलरत्नावली—कल्यारा** । पत्र स०६। प्रा०१२ $\times$ ४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्यंतिय । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स०२१३/६४४। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपर ।

५२५२. केशवी पद्धति—श्री केशव दैवज्ञ । पत्र स॰ ५२ । घा०  $e_t^2 \times y^2$  इन्त्र । भाषा-सस्कृत । विषय-व्यंतिष । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २०३ । प्राप्ति स्थान—गावंताय दि॰ जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा ।

**५२५३. प्रतिसं०२।** पत्रस**०६। प्रा०**२३ ४ ५ डखा ले**०काल स०१**८७८ चैत बुदि६। पर्यो। बेल्टन स०२०**५। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरमह (कोटा)।

। बेष्टन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) केवल प्रथम सर्ग है।

४२५४. कोशामुची— $\times$ .। पत्रसः २। आ० १२ $\times$ ४ इश्वः । आपा सम्कृतः । विषय-ज्योतिष । र०कालः  $\times$  । से०कालः  $\times$  । अपूर्णः । वेष्टन स० १६६/४५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४२४५ सम्पति मुहत्तं — रावल गरापति । पत्रसः १०७ । घा० ११४५ है दश्च । भाषा -संस्कृत । विषय -ज्योतिष । र०काल ४ । ते०काल स० १६५१ ब्रापाड मुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३२१ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर दवनाना (व दी) ।

५२५६. गरियतनामनाला—इरिवास । पत्रतन ७ । प्रा० १० $^3$   $imes ^3$  इब । भाषा— सस्कृत । विषय-च्योतिय । २०काल imes । लेकाल imes । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष —सूर्यग्रह मधिकार तक है।

५२५७. **गर्गमनोरमा — गर्गऋषि** । पत्रस॰ ६ । झा॰ ६ ४ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय - ज्योतिष । र**॰कात** ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६७ **। प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर खबसेर । ५२५६. **गर्भचवज्**त— × । पत्रस० १४ । बा० ११ x ४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २३२ । प्राप्ति स्थान— सन्नवाल दि० जैन मन्दिर उदयपर ।

**४२५६. गुराबटित विचार** —  $\times$  । पत्र सं०६। प्रा०११ $\times$  ५ $\xi$  इन्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-प्योगिय । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१००। प्रास्ति स्थान—दि० जैन सिंहर राजस्वत्व रोक ।

४२६०. गौतम पृष्ट्या —  $\times$  । पत्र स० १० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-जकुन ज्ञास्त्र । रचना काल  $\times$  । ले० काल स० १७५० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मदिर भरनपुर ।

 $\sqrt{2}$ ६१. ग्रह्पचवर्गन $\sim \times$  । पत्रस०२। ग्रा०१० $\times$ १ इस्र । माषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस०२०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

१२६२. ग्रहमाव प्रकाश—  $\times$  । पत्र स० ५ । ग्रा० १३ $_{i}^{2}$   $\times$  ५ इंब । भाषा—स स्कृत । बियय-ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६८/११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्बनाय मंदिर उदयार ।

४२६३. ग्रहराशिकतः —  $\times$  । पत्र स॰ २ । माया संस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ ४४३ । प्राप्ति स्थान—संभवनाय दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४२६४. ग्रह्माघव — गणेश्रदैवज्ञ । पत्र स॰ २१ । घा० १० ४ थर्डे इश्व । माया-स स्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस॰ ६६३ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मदिर श्रजमेर ।

५२६५. प्रतिसं० २ । पत्र स०१३ । ले० काल स०१६३० । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी व दी ।

विशेष - पुस्तक ह्रगरसी की है। एक प्रति अपूर्ण और है।

५२६६. यहलाखन - देवदत्त (केशव ग्रात्मज) । पत्र स॰ १३ । ग्रा० १ $^2$  ४ $^3$  इश्व । भाषा — सस्कृत । विषय — ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । प्राप्ति स्थाल — दि० जैन मनिर गार्ण्वनाथ इन्दरगढ ।

**४२६७. ग्रहलाघव**—  $\times$  । पत्रस०१६ । घा०१०३ x ४३ इश्व । भाषा-सस्त्रत । विषय— ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१२६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मिन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी वृदी ।

**५२६८. प्रति सं० २**— $\times$  । पत्र स० ३ । मा० ११ $\S$  $\times$ ५ $\S$  इख । ले० काल  $\times$  । बेष्टुन स० ६६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

१२७०. चमस्कार चिंतामस्यी—नारायस्य । यत्र स० ११ । ब्रा० ११  $\chi$  ४ $\chi$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिय । र० काल  $\chi$  । से० काल  $\chi$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०६६ । प्रास्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर धजेर ।

**५२७१. प्रति सं० २** । पत्रसं० २ । घा० ६ 🗙 ४ इश्वः । ते० काल स० १८३४ मंगसिर सुदी ३ । पूर्णे । बेष्टन सं० १११७ । **प्राप्त्रि स्थान** — मट्रारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष -- प्रजयगढ में पं० गोपालदास ने प्रतिलिप की थी।

५२७२. चमस्कार विस्तामिं  $-\times 1$  पत्रस $\circ$  ११ । आ $\circ$  ११ $\times$  ४ २०० । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । वेष्ट्रन स $\circ$  ३२३ । प्राप्टिः स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**५२७३ प्रतिसं०२ । पत्र**स०६ । म्रा०६ ४ ६ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनस०२३ । **प्राप्ति स्था**न—वि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४२७४. **चमस्कारफल**—  $\times$  । यत्रस $\circ$  ६। प्रा $\circ$  १० $\times$ ६ इत्र । भाषा — सस्कृत । विषय — ज्योतित । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  २४ । प्राप्ति स्थान — दि $\circ$  जैन मन्दिर दबलाना (ब दी)

विशेष--विभिन्न राशियों का फल दिया हमा है।

५२७५. चन्द्राबलोक —  $\times$  । पत्र सः १२ । ग्रा० १२ ४५ इञ्च । मापा-सन्हृत । विषय— ज्योतिष । र० काल  $\times$  । ले० काल सं० १८८६ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । बेहनस० १४०२ । प्राप्ति स्थान — ए० दिल जैन संदिर प्रवेश ।

५२७६. प्रति सं०२ । पत्रस०१-११ । प्रा०१९३४ ६ इश्व । ले० काल ४ । वेष्टनस० ७०० । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मंदिर लक्कर जयपुर ।

४२७७. चन्द्रावलोक टीका—विश्वेतर प्रपरनाम गंगाभट्ट। पत्र म०१३०। भाषा— संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।,र०काल × । ले०काल स०१८६४। पूर्ण । वेप्टन स०७६१। प्राप्ति रचाः ि ः प्रवासती मन्दिर भरतपुर।

विशेष--बलवन्तसिह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी।

**५२७६. चन्द्रोदय विचार**—  $\times$  । पत्रस्त १-२७ । स्रा॰ ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ १ इच्छ । भाषा — हिन्दी । विषय—ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेप्टन् स० ११ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन छोटा मदिर वयाना ।

५२७६. **चौघडिया निकालने को विधि**  $\times$  । पत्रस $\circ$  ४। प्रा० १० $\times$ ७ इन्छ । भाषा-हिस्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं $\circ$  १३६ । प्राप्ति स्थान — दि $\circ$  जैन मन्दिर गजमहल टोक ।

१२६०. झींक दोष निवारक विधि—  $\times$  । पत्र स० १ ।। माया-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायनी मदिर भरतपुर ।

१२द१. जन्मकुण्डली —  $\times$  । पत्र सं० ७। प्रा० १० $\times$ १ $^1$ ृद्धः । भाषा-सरकृत । विषय- ज्योतिष । र० काल $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन स० २६४-१४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटिंडियो का इंगरपर ।

४२६२. जन्मकुण्डली प्रह विचार —  $\times$  । पत्र सं. १ । प्रा० ११ $\times$ ५ इन्छ । भाषा — संस्कृत । विषय — ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स० ३६ । प्राप्ति स्थान — स्रदेशवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२६३. जन्म जातक चिन्ह— × । पत्र स० ६ । घा० ७१ ४६४ व । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिय । र० काल × । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । बेप्टन सं० ३०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाण्डेनाथ, चौगान बंदी ।

विशेष--सागवाडा का ग्राम सुदारा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४२६४. जन्मपत्री पद्धति—  $\times$  । पत्रस॰ ४८ । घा॰ १२ $\times$ १ इवः । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनस॰ ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर प्रारिताय व दो ।

विशेष-द्याचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

५२०५. जन्मपत्री पद्धति —  $\times$  । पत्रसं• १०। प्रा॰ १० $\times$ ४ $^1$  इच । मापा—संस्कृत । विषय —ज्योनिय । र०काल  $\times$  । क्षे०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४२८६. जातक—मोलकंठ। पत्र स०३६। प्रा०१० $\times$ ६ दश्व । माषा-सस्कृत । विषय- ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं। वेष्टन सं०२७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मिस्दर प्रभिनन्दन स्थामी बूंदी ।

४२८७. जातकपद्धित— केशव वैवज्ञ। पत्र स॰ १६। घा०११६ $\times$ ४२ इश्व। भाषा-सस्त्तः। विषय— ज्योतिष । रुक्ताः। वेष्टन स॰ ६७४। प्रास्ति स्थान— म॰ दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर।

५२ म. प्रति स० २ । पत्रस० १४ । ग्रा० १०३×४३ इ.च । ते०कात  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सबेलव ल मन्दिर उदयपुर ।

४२८६. जातक संग्रह— × । पत्रस० ६ । ग्रा० १×४२ इश्व । भाषा—सस्कृत । विषय— ज्योतिय । र०काल × । क्षे०काल स० ११४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भ्रजमेर ।

५२६०. जातकामरस्य-ढुं डिराज देवत । पत्र सं० ६२ । प्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$  १ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष — हूंगरसीटास ने नेमिनाय चैत्यासय में प्रतिसिपि की थी। ग्रंथ का नाम जातक⊸ माला भी है। **५२६१. प्रतिसं० २** । पत्र स० स६ । म्रा० ११ $^2_{
m x}$  ५ $^2_{
m x}$  इन्छ । ले०काल सं० १७६६ मगिसर **वर्षी २** । पूर्ण । वेष्टन १६६ । **प्राप्तिः स्थान** —दि० जैन मन्दिर दवलाना (बृंदी)

५२६२. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १३ । ब्रा० १२४६ इश्वा । ले०काल स० १८७८ भादवा बुरी ११ । पूर्यो । वेष्टनस० ११७ ५७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर कोटटियो का हुगरपुर ।

५२६३ जातकालंकार—  $\times$ । पत्र स० १७ । बा० ६ $\frac{7}{8} \times \frac{1}{8}$  इन्छ । बापा-गम्कृत । विषय-ज्योतिष । ७० काल  $\times$  । ले० काल स० १६०३ चैन मुदी = पूर्ण । बेप्टन ग० १४०२ । प्रास्ति स्थान—५० दि० जैन मन्दिर स्रजेर ।

**५२६४. प्रतिसं० २ । पत्र स० २० । ब्रा०** ८० है ४ ५ है इस्थ । ले० काल म० १९१६ मावन बुरी १ । पूर्ण । वे० स० १०६६ । **प्राप्ति स्थान—भ०** वि० जैन मदिर बजमेर ।

**५२६५. प्रतिसं० ३ । पत्र** स० १४ । ग्रा० ११३ / ४५ इन्छ । ले० काल 🗴 । पूर्ग । बेहन स० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर प्रिप्तनन्दन स्वामी, बाँदी ।

**५२९६. जोग विचार**—  $\times$  । पत्रसं० १६। माषा-सम्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । केल्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ३६७-१४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

५२६७. ज्ञानलावर्गी—  $\times$  । पत्र तु॰ २-८। प्रा॰ १० $\times$ ४ दश्व। भाषा सम्क्रम । विषय—ज्यंतिया । रुकास  $\times$  । ते० काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेपून स॰ ४२२/२६३। प्रान्ति स्थान—दि॰ जैन सथनाथ मन्दिर जदयपर ।

**५२६६. ज्ञानस्वरोदय—चरनदास** । पत्र म०१६ । ग्रा०१×४ इच । भाषा—मस्त्रन । **विषय—**मकुन गास्त्र । र०काल × । ले०काल × । ग्रपर्ग । वेष्टन म०४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर प्रादिनाय स्वामी, मालपुरा (टांक)

**५२६६. ज्योतिर्विद्याफल**— $\times$ । पत्रस $\circ$ ३ । भाषा-मस्कृत । विषय - त्योतिष् । रूकाल  $\times$  । क्लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  १६६/१५४ । **प्राप्ति स्थान**—वि $\circ$  जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**५३००. ज्योतिषप्रंय—मास्कराचार्य** । पत्र त० १२ । ग्रा॰ १० $\times$ ४ इश्व । भाषा-सम्बन्न । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० १६५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी ।

५३०**१. प्रति सं०२ ।** पत्र स०३३ ४२० । झा०६ है ४४ है इखा विकासक् ४ । पूर्या । बेक्टन स०१०१-४६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नुगरपुर ।

विशेष-ज्योतिषोत्पत्ति एव प्रश्नोत्पत्ति ग्रध्याय है।

**५२,०२. ज्योतिषपं य**ः ×। पत्र स० ४। प्रा० १०> ६<sup>९</sup> इन्त्र । भाषाः -हिन्दी । विषय--ज्योतिष । २०काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वेस्टन ग०३ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन तेरहत्रथी मिरिर दौसा ।

**५३०३. ज्योतिवर्षःथ**— × । पत्र त० १६ । चा० ११ × ५ इ.च.। भाषा-सस्हन । ले∘काल × । गुर्गः। पेष्टन स० १६५ । **प्राप्तिः स्थान**िद० जैन मदिर फलेहपुरः शेक्षावाटी (सीकर)

**५२०४. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० २–१० । आ० १० $\times$  ४ $\S$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवसाल मन्दिर उदयपुर ।

- ५३०५. ज्योतिषपत्य माषा—कायस्य नायूराम । पत्रस० ४० । प्रा० १२  $\times$ ६ इश्व । माषा—हिस्ती । विशेष—ज्योतिष । र०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० ५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)
- ११०६. ज्वोतिष रत्नमाला—केशव । पत्रसः ७६ । प्राः ५८१ हश्व । साथा-सस्कृत । विशेष —ज्योतिष ।र०काल ४ । से०काल स० १८०६ । पूर्ण । बेष्टनसं० २२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर प्रभितन्दन स्वामी, य दी ।
- ४३०७. ज्योतिष रत्नमाला —श्रीपतिमट्ट । पश्चः ६ -२३ । घ्राः ६ ०  $\times$  ५ ६वा । भाषा- सस्कृत । विशेष —ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्ट्रनसः ६ १ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर प्राटिनाथ व दी ।

विशेष-हिन्दी टीका सहित है।

**५३०८. प्रति सं** २ २ । पत्र स० ११० । प्रा० ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इच । ले० काल स० १५४७ । पूर्ण । वेकृत सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर क्रमिनन्दन स्वामी बुदी ।

५३०६. प्रतिसं०३ । पत्रस०३२ । ग्रा०१२ ४४ ुँ इचा ले० काल स० १७८६ माघ बुदी १३ । पूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ व दी ।

५२१०. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ७४ । झा० १०३/४ ५ हेच । ले० काल स० १०४० ज्येष्ठ मदी ८ । पूर्ण । बेटन स० १३१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर दबलाना (ब दी)

विशेष -- प्रति हिन्दी टीका महिन है।

५३११ ज्योतिष रत्नमाला टोका— प० वैजा मूलकर्ता पं० श्रीपतिमट्ट । पत्रत० ११६। ग्रा० ११ $\times$ ५ इञ्च । भाषा-सस्त्रत । विषय ज्योतिष । र०काल  $\times$  केश्काल स० १५१६ । पूर्ण । वेष्टन म० १३६ । प्राप्तिन स्थान— दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय व दी ।

स्रन्तिम पुष्टिपका — ज्योतिषरत्नमालाविषयरा श्रीपतिमध्येय तस्यामृटीका प्रकटार्थ युक्ता दिनिमित्रवादवाणवीजागोपान्ये थान्य दनि प्रसिद्धी गोत्रप्रभूवाचित्रज्ञास्त्रवेतः सोपेश्यः व गृरु हस्तु वेजा बानावयोय सप्तकार टीका । इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिय पहित वैजाहृत टीनाया प्रतिष्ट प्रकरायानि कर्षा करणा समात ।

प्रशस्ति --मबन् १४१६ प्रवर्तमाने पृशुद्वयोगं मध्ये सोभन नाम सबन्बरे ॥ सबन् १६४१ वर्षे चेत मुदी प्रति पदा १ मगनवारे चपावनी कोटाल् मध्ये लिखित प्रकटर राज्ये लिखित पारासर गोत्रे प० सेमचंद प्रात्मज पुत्र पठनार्थ मोहन लिखित ।

- **५३१२. ज्योतिय शास्त्र —हरिभद्रसूरि**। पत्र तं० ४६। झा० ११ $rac{1}{2}$  imes  $rac{1}{2}$  सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र० काल imes । ते० काल imes । पूर्णं । वेष्ट्रनसं० १०६४ । प्रास्ति स्थान भ० दि० जैन मन्दिर अवसेर ।
- **५२१३. ज्योतिष शास्त्र—िंबतामिंग पंडिताचार्य** । पत्र सं०२६ । बा॰ ११  $\times$ ७६ च । भाषा— संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०५०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४३१४. ज्योतिव शास्त्र— $\times$ । पत्र सं०१०। घा० १०  $\times$ १ इचा भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिव। र०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वे० सं०१२४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदित सजस्र।

५२१५. जयोतिष शास्त्र  $\times$  । पत्र सं० १२ । प्रा० १० $\times$ ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १११६ । प्राप्ति स्थान-महारकीय दि० जैन प्रतिक प्रयते ।

% २१६६ ज्योतिय शास्त्र—  $\times$  । पत्रस्त ६ । ग्रा० १ $\times$ ४% इंच । ग्राय-संस्कृत । विषय-क्योतिय । रंक्काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन सक १०६६ । प्राप्ति स्थान—भव दिव जैन सक्तित स्थाने ।

**५३१७. प्रति सं०२।** पत्र सं०१६ । घा०१ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इचा  $^{2}$ ० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । ध्रपुर्ता। बेष्टुत सं०४३६ **। प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन मन्दिर घजमेर ।

५३१ फ. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ११ । झा० ११ ×५ १ इचा। ले०काल × । पूर्णा विष्टन स० १०६१ । प्राप्ति स्थान — भ० वि० जैन मन्दिर सजमेर ।

५३१६. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १६ । प्रा० ६ र्र ४ ; इश्व । लेक्काल स० १६३१ श्रावस सुदी ६ । वेक्तस० ३३० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर लक्कर, जयपर ।

५३२०. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५ । प्रा० ११ 🗴 ४ ६ वा । ले०काल 🗴 । पूर्ए । वेट्टन स० २६१ । प्राप्ति स्थानं — संभवनाथ दि० जैन मदिर जवयपुर ।

**५३२१. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० द । द्या॰ १० $_{3}^{2} \times \forall_{3}^{2}$  इश्व । ले०काल स० १८८५ काती सुदी ४ । पूर्वा । वेष्टुन सं० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर दवलाना (वृदी) ।

विशेष-- २ प्रतियों का सम्मिश्रगा है। नागढ़ नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४३२२. ज्योतिषसार—नारचन्द्र । पत्र स० ७ । आ०१ $^2_7 \times Y$  इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्णं। वेष्टन स० ४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी, बृदी ।

**५३२३. प्रतिसं० २** । पत्र सं० १४ । ब्रा० ११ $_{c}^{b}$   $\times$  ५ $_{c}^{b}$  इल्बा । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं० ११३१ । **प्राप्ति स्थान** — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ब्रजनेर ।

५२२४. प्रतिसं०३ । पत्र स०७ । ग्रा०११४५ इचा । ले०काल स०१८१८ । पूर्ण। बेड्टन स०२०२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा।

**५३२५. ज्योतिय सारर्गो**—  $\times$  1 पत्रसं० २६। ब्रा० १० $\frac{2}{5}$  $\times$  ४ इ.ख । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १८८५ मादवा सुरी १२ 1 पूर्ण । वेष्टनसं० १२३५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर स्रजेनेर ।

४२२६. ज्योतिषसार संग्रह—मुंजादित्य । पत्रसं० १६ । ग्रा० म ४२ है वंच । भाषा— संस्कृत । विषय-ज्योतिय । २०काल ४ । ते०काल स० १ म४० ग्रायाद मुदी २ । पूर्ण । बेष्टनसं० १४७३ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर ग्रवमेर । ५३२७. ताजिकसार—हरिमद्रगिण । पत्र स० ४०। घा० १२×५ इवा । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४० । द्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसलो कोटा ।

**५३२८. प्रतिसं० २ ।** पत्र सस्या ३२ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन सं० २७१ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी वंदी ।

**विशेष**—दो प्रतियों का मिश्रण है।

४३२६. **ताजिक ग्रंथ**—**नीलकंठ** । पत्र त० २६ । ग्रग $^{-1}$ २५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-च्योतिष · र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन त० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनस्त स्वामी व दी ।

५३३०. **ताजिकालंकृति — विद्याधर** । पत्रस० १२ । म्रा० द ४ ६ इश्व । माषा संस्कृत । विषय-ज्योनिप । र० काल ४ । ले० काल सं० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन स०२६० **। प्राप्ति स्थान** — दि० क्रीन मन्दिर प्रक्षितन्दन स्वामी वंदी ।

विशेष-विद्याधर गोपाल के पुत्र थे।

५३३१. तिथिवीपकयन्त्र—  $\times$  । पत्रस॰ ६४ । झा॰ १० $\times$ ५ इञ्च । मापा-हिन्दी। विषय-गणित (व्योतिष)। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्ट्रनसं० २३ । प्राप्तिस्थान—दि॰ जैन मन्दिर दक्षलान (वृदी)।

५३३२. तिथिसारिएंगे—  $\times$  । पत्र स० ११ । आ० १० $\frac{1}{7}$   $\times$  ४ $\frac{1}{5}$  इन्छ । आधा—सस्कृत । विषय—ज्योतिय । २० काल  $\times$  । ले ०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६७३ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मिटर अजनेर ।

५३३३ दिनचर्या गृहागम कुतुहल — भास्कर । पत्रस० ७ । ब्रा०१०  $\times$  ४ $^1_{c}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ५४८ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मदिर ध्रयमेर ।

४३३४. दिन प्रमार्ग —  $\times$  । पत्र स०१। प्रा०१०  $\times$  ४ $^{3}$  इख । प्रापा-सस्कृत । विषय-क्योतिय । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेण्टन स०३१६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४३३४. दुर्घाडया मुहर्से— ४ । पत्रस० ६ । प्रा०६४ ४ इचा । प्राथा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र० काल । ले०काल स० १६६३ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । बेष्टनसं० २०७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दवलाना बृदी ।

विशेष-इति श्री शिवा लिखितं दुगडयो मुहत्तं ।

५३३६. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ते० काल स० १६२० श्रावसा । बुदी ६ । पूर्स । बेष्टन स० २०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५३३७. दोषावली—  $\times$  । पत्रसं॰ २ । प्रा॰ ६ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-च्योतिष । र० काल  $\times$  । ले०काल सं॰ १८७३ केठ सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं॰ १७/२८४ । प्रास्ति स्थान —दि॰ जैन सन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिंह (टॉक) । विशेष-साहीसेडा मे लिखी गई थी।

५२३६. द्वादशराशि संकातिकल $-\times$ । पत्र म०७ । घा०११  $\times$ १३ इच । मापा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रन स०५०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इ गरपुर ।

५२३६. द्विषह योगफल — × । यत्र सल्या १ । म्रा॰ १११  $\times$  ५ इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २२४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**५३४०. नरपति जयचर्या—नरपति ।** पत्र स० ५३। मा० १० $\times$ ५े इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल स० १५२३ चैत सुदी १४। लेकाल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ३४६-१३६। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपर ।

**५२४१. नक्षत्रफल**  $\times$  । पत्र सं०२ । ब्रा०१० $\times$ ४५ इल्व । भाषा-संस्कृत । विषय- ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्ट्रन सं० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५३४२. नारचन्द्र ज्योतिष —नारचन्द्र । पत्र म०१४। ब्रा०१० $^{9}_{1} \times ^{9}_{1}$  इवा भाषा— संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल  $\times$  । ले० काल स०१६४७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१०६७ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

स वत् १३४७ वर्षे आमु विदि = दि० प्रति लीघी । पातिमाह श्री घकवर विजडराजे । मेडता मध्ये महाराजि श्री बलिसद्र जी विजदराज्ये ।

**५३४३. प्रतिसं०२।** पत्र स $\circ$  ३। ग्रा० १० $\times$  ४] इथा । ले॰काल सं० १६६६ कार्तिक बुदी १३। पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  १३२६। **प्राप्ति स्थान**—स $\circ$  दि० जैन मन्दिर श्रजमर ।

**५३४४. प्रति सं० ३ ।** पत्र स० २३ । प्रा० ६imes२ $^2_{
m g}$  इश्व । ले०काल imes । पूर्ग । वेष्टनम० ६७४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मस्दिर ग्रजमेर ।

**५३४**४. **प्रतिसं०४ । प**त्र स०३१ । ले॰काल× । प्रपूर्ण । बेपून स० ७६५ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रायती सदिर सरतवर ।

विशेष -- देवगढ मे प्रतिलिधि हुई थी।

**५३४६ प्रति स० १।** पत्रस० २२। या० १०५४ ४ इन्था। ले०काल 🗴 । पूर्गा। वेष्ट्रनस० १३६ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर फनेहपुर मेलावाटी (सीकर)।

**विशेष** — एक श्रपूर्ण प्रति और है।

**५३४७. प्रति सं०६** । पत्र स०२ - ७२ । ब्रा० १०३ ४४ इ.चा ले० काल 🗴 । ब्रपूर्ण। वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर ब्रादिनाय बूदी।

विशेष -- प्रति सटीक है।

४३४८. प्रतिसं० ७ । पत्र स०२२ । झा० ६१ ४४१ इच । ले० काल स०१७४६ फाल्गुन ७ । पूर्ण । वेष्टन सं०१६६ । प्रास्ति स्थान —पाध्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्टरगढ (कोटा) ।

५२४६. प्रतिसं० म । पत्र सं० ३३ । प्रा० ११ × ८३ इच्च । ले०काल स ० १७१६ मासोज सटी १३ म । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हंगरपुर ।

५३४० निमित्तशास्त्र— × । पत्र सं० १-१२। प्रा॰ १०३ +४३ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । ध्यूप्एं । वेष्ट्रन सं० ७३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, व्ययर ।

५३५१. नीलकंठ ज्योतिष — नीलकंठ। पत्रसं०५। म्रा० ५२  $\times$ ४ इखा। भाषा-सस्कृत। विषय — ज्योतिष । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६७१। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**५३**५२. **नेमित्तिक शास्त्र—सद्वाहु**। पत्रस० ४७ । घा०११ है $\times$ ४ इखा । भाषा-सस्कृत । विषय-अ्योनिष । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६८० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन प्रचायती मन्दिर कामा ।

४३४३. पचदशाक्षर—नारद । पत्रत० ४ । घा० २, X ४ $_{2}^{2}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । <sup>7</sup>०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ७४० । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर स्थानः ।

५३**५४. पंचांग**—× । पत्र स० ५६। बा० ११×७ इंच। भाषा—सन्द्रतः । विषय— ज्योतियः । २०कातः × । ने०कातः × । पूर्णु। बेष्टन स० ७२। **प्राप्तिः स्थान**--दि० जैन पद्मावती सरितः कामाः

विशेष--स॰ १६४६ मे ४६ तक के है ४ प्रतिया है।

४२५५. सं० १८६०। पत्र स० १२। ब्रा० १० $\frac{3}{2}$  ४५ $\frac{3}{5}$  दखा भाषा — सरहत । विषय — उबोलिय। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दिञ्जेन महिर बोरसली कोटा।

**५३५६. पंचाम**— $\times$  । पत्र स० ६ । झा० ६ $\times$ ६ $^{\circ}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत | विषय – ज्योतिय । र०काल $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन ४४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मदिर दौना ।

**५३५७. पचाग**— $\times$  । पत्रस० १२ । ब्राउ ७ $\frac{3}{2}$  × १ इच । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । राज्याल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारावसिह (टोक)

विशेष-स०१६१६ का पंचाग है।

**४२५६. पचारात् प्रश्न—सहाचन्द्र।** पत्रस**०**६। आ० ७ र्रे ४ २ हे इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल ४ । ते०काल स०१६२४ आसोज बुदी १४। पूर्ण । वेष्टनस०४२६ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३५६. पंथराह सुभासुमं ४ । पत्र स०२ । ग्रा०१३ ४ ४ इञ्च । भाषा~सस्कृत । विषय– ज्योतिष । र०काल ४ । ले०काल ४ । बेष्टन स०३२२ ।**प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

% ३६०. पत्यविचार—  $\times$  । पत्र स०२। ध्रा०  $= \frac{1}{2} \times$  ४ ६का । प्राप्त — हिन्दी । विधय-ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२१० । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर धजमेर । ५३६१ पत्य विचार— × । पत्र सं० २ । घा० ११ × ५१ दुवा । माया-संस्कृत । विचय-ज्योतिय । र०काल × । ले०काल × । अपूर्एं। वेष्टन स० ३१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर सक्कर. जयपर ।

विशेष--चित्र भी है।

५३६२. प्रति सं०२ । पत्र स०२ । धा० ११ $\times$ ४ $^3_{
m c}$  इन्थ । ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं॰ ११६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५३६३. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १ । प्रा० ६ × ५ इन्छ । ले० काल × । पूर्णं । वेष्ट्रनसं० ३२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्ष्तर, जयपर ।

**५३६४, पारापारी टोका** —  $\mathbf{x}$  । पत्र सं० ७ । मा॰ १ $\times$ ४ $\frac{1}{\epsilon}$  इल । भाषा-संस्कृत । विषय— ज्योतिय । २०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स॰ १४०४ । **प्राप्ति स्थान**—सट्टारकीय दि॰ जैन मिटर चजरेर ।

४३६४.पाशा केवती — गर्गमुनि । पत्र स०२३ । ग्रा०१० $\frac{3}{7}$ (४ $\frac{3}{7}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६४३ । पूर्ण । वेष्टन स०१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लम्कर, जयपर ।

विशेष-नेमिनाथ जिनालय लश्कर, जयपर के मन्दिर मे आअराम ने प्रतिलिपि की थी।

**५३६६.—प्रति स०२।** पत्र स०१०। प्रा० १० $\frac{2}{9}$  $\times$ ५ इश्वः। ले० काल स० १६०१। प्रार्णं। बेष्टन स०५३। प्राण्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

**५३६७. प्रतिसं० ३।** पत्रस० ११।१० का० $\times$ ४३ इखा । ले०काल  $\times$ ।पूर्ण । बेष्टन स० १३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर, जयपुर ।

**५३६** द. प्रति स**०४** । पत्रस०६ । द्वा०४ $\times$ ४ दे इञ्च । ले०काल स०१६२३ । पूर्णं । बेष्टुनसं०१३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सण्डेनवाल मन्दिर उदयपुर ।

**५३६६. प्रति स० ५ ।** पत्रस० १० । ले**०काल** × । पूर्ण । वेष्टनग० २६-५५५ । प्राप्ति स्थान-- वि० जैर सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

**५३७०. प्रति सं०६।** पत्रसं०द। या०६ $\times$ ४ । ले**०काल**  $\times$  । पूर्णं।वेष्टन स०२ $\alpha$ ४ । प्रा**पित स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसजी कोटा।

५३७१. प्रतिस०७ । पत्रस०१४। बा०१२×४। ले०काल × । पूर्ण। बेष्टनसं०१०६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

५३७२. प्रति स० ⊏ । पत्रस० १६ । घा० ११× ४ ) दुःव । ले∘काल स० १८१७ घासोज सुरी १। पूर्ण । बेष्टन स० १०,४⊏ ।प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाय मन्दिर इदराख (कोटा)

४२७२ पाशाकेवली —  $\times$  । पत्र स॰ ४ । प्रा॰ १०  $\times$  ५ इश्वः । भाषा – सस्कृतः । विषय – निर्मित्त शास्त्रः । र०कालः  $\times$  । ले॰ काल स॰ १८२४ प्राक्षोत्र बुदी १४ । पूर्णः । वेष्टनः स॰ ११११ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेरः ।

विशेष - पंडित परममुख ने चौमू नगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

**५३७४. प्रतिसं०** २ । पत्रसं० १६ । ले०काल स० १६४० पौष बुदी ४ । पूर्णं। वेष्टन सं० १११२ । **प्राप्ति स्थान** — भटारकीय दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

**५३७५. प्रतिसं० ३**। पत्र स० १०। प्रा० ६३ ४४ इच्च । लंबकाल स० १०२० प्रापाढ सुदी ३। पर्गा। बेग्रन स० ६४४। **प्राप्ति स्थान**— महारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

५३७६. प्रतिसं० ४ । पत्र स०६ । घा०१२×५१ इचा। ले∘काल स०१६३७ । पूर्णं। बेष्टुत स०३६ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन पार्थनाथ मन्दिर टोडारार्यासह (टोक)

विशेष -- प० जीहरीनाल मालपरा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

**५३७७. प्रतिसं० ५ ।** पत्र स० द । ग्रा० १०<sup>3</sup> × ४३ इच्च । ले० काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टत स० १६७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर राजनहल (टोक)

५३७८. प्रतिसं०६ । पत्र स०८ । ग्रा० ६ ४५ इ.च । ले०काल स०१६११ । पूर्ए । बेष्टन स०६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर ग्राभिनन्दन स्वामी बुदी ।

४३७८. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १० । मा० १३ ४४ ई इञ्च । ते० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० २६६-१०६ । प्राप्ति स्थान —-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वगरपूर ।

५३ म०. प्रति स० म। पत्रस० २२ । घा० ११ ४४ ¦ इखा । ले० काल स० १६६७ । पूर्ण । जीर्स्स । बेष्टन स० १५८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन घ्रयलाल पत्रायती मन्दिर घलवर।

४३८१. पाशाकेवली माथा—  $\times$  । पत्र म० ४ । प्रा० ६ $\frac{5}{8}$   $\times$  ४ ! इ.च.। मापा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । रुकाल  $\times$  । तेककाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्न स० ६३३ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन प्रमुद्ध प्रजान ।

४३ द२, पाशाकेवली माषा— × । पत्रतः १ । प्राः ६४४ इच । माषा—हिन्दी । विषय-निमित्त व्यास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स०१४२२ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मध्यित प्रजासर ।

५२६२, पाशाकेवली भाषा । पत्रस० १ । भाषा-हिन्छै । विषय-निमित्त लास्त्र । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १२२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३० । प्राप्ति स्थान—पत्रावती दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

५३६४. प्रतिसं० २ । पत्रस०१५ । ले०काल सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टनस०४३१ । प्राप्ति स्थान —पत्रायती दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -टोडा में लिपि हुई थी।

**५३८५. प्रतिसं० ३**। पत्र सं० २४। ले०काल स०१८२६। पूर्णे। बेष्टन स० ४३२। **प्राप्ति** स्थान-—दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर।

५३ न ६. पाशाकेवली —  $\times$  । पत्र संस्था ११ । घा० ५ $\times$ ४ ६ व । भाषा-हिन्दी । विषय – निमित्त शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सस्या ४३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन छोटा मंदिर दयाना ।

**४३८७. पासाकेवसी**— × । पत्र स०११। झा० ५२ ×४ दथा । भाषा-हिन्दी । विषय-विमित्त ज्ञारण । १०कारा × । वे०काल × । बपूर्ण । वेष्टन स०५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० वैन छोटा

**५३६६. पाशाकेवली** —  $\times$  । पश्चल ६। आ०१० $^3$   $\times$  ४) इख । भाषा क्रियी पछ । विषय-जकुन शास्त्र । रक्ताल —  $\times$  । लेक्काल  $\times$  ।पूर्ण । बेप्टन संव १६४ । प्रास्ति स्थान — दिव जैन मंदिर पार्थनाथ चीमान व दी ।

**५३**०६. **पाशाकेवली** —  $\times$  । पत्र स० १२ । प्रा० ६ $^1_1 \times \mathbb{V}_2^3$  उत्त । भाषा-किवी । विषय-व्यीतिप । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेक्टन स० ४५६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर कोटव्यो का उत्तरपुर ।

**४३६०. पुरुषोत्पत्ति लक्षस्**— $\times$  । पत्रस**्ट**। प्रा०१० $\frac{1}{2}$   $\times$   $\frac{1}{2}$  इच । भाषा-सम्मृत । विषय-क्योतिप । र०कान  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टुन स० ११२ । **प्राप्तिः स्थान**— दि० जैन भन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**५३६१. प्रश्न बुड़ामिए**। —  $\times$  । पत्र म०२१ । ध्रा०  $= \frac{1}{2} \times \frac{3}{2}$  इन्छ । भाषा-सम्बन्ध । विषय-स्वोतिम । रब्बाय  $\times$  । ने विषय स्वोतिम । रब्बाय  $\times$  । ने विषय स्वोतिम । प्रश्न मंत्र ध्याप्त । विषय स्वाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत

**५३६२. प्रश्नतार**—  $\times$  । पत्र स०१० । ब्रा० १० $\times$  ६ उच्च । भाषा-सम्बन् । विषय-व्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेशन म० १५६२ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर फ्रांमेर ।

**४.२६३. प्रश्नावली—श्री देवीनंद** । पत्र म०३ । घा० १२ % ५ दश्च । भाषा-सन्कृत | विषय-जकुन जास्त्र (ज्योतिष) । र०काल ४ । ले०काल म०१६२२ । पूर्ण । वेष्ट्रन म०६२ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**५३६४ प्रश्नावली**  $-\times$  । पत्रस० १३ । स्रा० १० $\frac{3}{2}$   $\mathbb{X}$  ५ $\frac{3}{2}$  ह च । भाषा-सम्बुत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । वेष्टुन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**५३६५ प्रश्नोत्तरी** —  $\times$  । पत्र स॰  $\times$  । प्रा॰ ६ $\times$  ४ इज्च । मापा-क्रिदी । विषय-शकुत शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ १३३ । प्राप्ति स्थान — दि॰ तेन मन्दिर प्रवासनी दनी (टोक) ।

विशेष—गहिले प्रश्न किया गया है और बाद में उसका उत्तर भी लिख दिया गया है। इस प्रकार १६० प्रश्नों के उत्तर है।

पत्रों के ऊरर की छोर की घोर पक्षियों के—मोर, वतक, उल्लू, खरगोश, तौता, कोयल ग्राहि रूप में हैं। विभिन्न मण्डलों के वित्र हैं।

**५२६६. प्रश्न शास्त्र**  $\times$  । पत्रस्त १५ । या० ११  $\times$  ५ इश्व । मापा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६५० पीप मुदी ६ । वेप्टन स० ३२६ **। प्राप्ति स्थान** दि० जैन मिदर लक्कर, जयपुर ।

**५३६७. बक्तीस लक्षरा छपय—गगादास** । पत्रस्व २ । प्राव १०  $\times$  ५ दश्व । माषा-हिन्दी । विषय शकुन शारत्र । रुकाल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेहन म० १७६-१७० । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

४३६८, बसरतराज टीका-महोपाध्याय श्री मानुचन्द्र गरिए । पत्रस० २०० । श्रा० १०३ ४४ इन्द्र । भाषा-म स्कृत । विषय शकुन शास्त्र । रण्काल ४ । ले० काल स० १८५६ श्रावण बुदी ७ । बेय्टन स० २४४ । प्राप्ति स्थान—धि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

विशेष -- प्रशस्ति -- श्री णत्रु जयकरमोचनादि मुक्तकारि महोपाघ्याय भानुबन्द्रगर्गि । विरचितायां वमन्तराज टीकाया प्रथायक कथन नाम विजतिनमी वर्ग ।

**५३६६. बालबोध ज्योतिष** -  $\times$  । पत्रसः १४ । म्राज् न $^{9}$  $\times$ ४ इख । भाषा-सन्दृत । विषय-न्योतिष । रज्वान  $\times$  । लेज्वान  $\times$  । प्रपूर्ण । वेषुन सञ्जस्त २३६६-१४६ । प्राप्ति स्थान—दिञ्जैन मन्दिर इनस्पर ।

४४०० **बालबोध—मुंजादित्य।** पत्रस०१४ । मा०६२ ४ ६ इच । भाषा-सन्तृन। विषय-ज्योगिया रुकाल ४ । ल०काल ४ । पूर्ण । वेटन स०१०६७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन सर्विट क्रामेण

**१४०१. प्रतिस० २** । पत्र स० ११ । प्रा० ७ , ४४, इन्छ । ले० काल स० १६२० । पूर्स । वेष्टन म० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

५४०२. प्रति स० ३ । पत्रस० १७ । घा० ६४६ इश्व । लेब्काल म० १७६८ धामोज मुदी १४ । पूर्म । बेपून म० २६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर दबलाना (ब्रुदी) ।

विशेष - निखित छात्र विमल शिय वाली वाम मध्ये ।

४४०**२. बहानुत्यकररा — भास्कराचार्य।** पत्र स०१२ । ब्रा०१० ४४ इखा भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिया । रण्काल ४ । लेण्काल स०१७४४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस०३५० । **प्राप्ति** स्थान—दिर्णतेन मदिर वोज्यनी कोटा ।

प्रशस्ति—सबन् १७४४ वर्षे चैत्र मुदी २ शनी लिखत मुनि नदलाल गीडदेश गू5नगर मध्ये प्रात्मार्थी लिखत ।

**५४०४. भडली**-- र । पत्रस० ५६ । ब्रा० ६ $\times$ ४ $\} इच । भाषा संस्कृत । विवय-उग्नीतप ।$  $रक्ताल <math>\times$  । लेक्साल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष -- भड़ली बात विवार है।

४४० १८. मडली - × । पत्र म०१। सा० ६४४ इन्दा। भाषा-हिन्दी। विषय - ज्योगिय। र०काल ४। ने० काल ४। पूर्ण। बेहन म०१४०। **प्राप्ति स्थान** — महास्कीय दि० जैन मन्दिर प्रकोर।

विशेष--३५ पद्य है।

५४०६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १२ । प्रा० १० $^1_2$  $\times$ ६ इंच । र० काल imes । ले०काल imes । पूर्णं । वेष्टन स० ४३२ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

. **१४०७. मडली** —  $\times$  । पत्रस्य०२२ ४२ । सा० ६ $\times$ ६ इश्व । भाषा — हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल सं०१६२० मादवा दुदी ६ । पूर्ण । वेस्टन स०३७३। प्रास्ति **४७।न** - टि० जैन मस्टिर बोरससी कोटा ।

**५४० द. मडली पुराग्**— $\times$ । पत्रसं० १३ । ब्रा॰ ११ $\frac{3}{7}$   $\times$  ९ $\frac{5}{7}$  इक्त । प्रापा हिनी प०। विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  : ले०काल स० १८५६ वैशास बुदी ५ । पूर्ण । बेष्टन म० १४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फेतेहपर शेलावाटी (सीकर) ।

**५४०६. मडली वर्णन ।** पत्र स० १६। भाषा-हिन्दी । विषय  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टुन स० २०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

४४**१०. मडलीबाक्यपुरुछा**— × । पत्रसं० ४ । झा० १०, ै×५ इन्छ । भाषा-हिन्दी (पष) । विषय-ज्योतिष निमित्त । र० काल × । ले०काल स० १६४४ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३८७ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष — लिखत जोसी सरदास ग्रर्जन सन ।

४४११. भड़**नी विचार**— × । पत्र स० १ । था० ११ × ६ इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-उद्योतिष । र०कात × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४७-२४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारार्गासिह (टोक) ।

**५४१२. मडली विचार**  $\times$  । पत्रस० ४० था० १० $\times$ ४ इ.च । मापा-क्रिती । विषय- ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १०५७ । पूर्ण । वे० स० २०१ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर फ्लेब्रुप्र मेसावाटी (सीकर) ।

५४१३ मडली विचार— ×। पत्रस०५। आ०१०×४ इञ्च। मापा-हिन्दी प०। विषय-ज्योतिष । र०काल ×। ते०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स०५४५। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मस्टिर कोटडियो का हुगरपुर।

**५४१४ मद्रवाहु संहिता— मद्रवाहु** । पत्र सं०६६ । घ्रा० ६२  $\times$ ४६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योनिय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स ० १२०० । प्रा**प्ति स्थान**— ग० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**५४९४. प्रतिसं०२। पत्रस० ६४। ग्रा०५** ४६ इस्त । लेकाल ×। पूर्ण । बेष्टन स**०५२६। प्राप्ति स्थान** —अद्गरकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

५४१६. प्रति सं० ३ । पत्र स.० ६६ । घा०१२ 🗴 ६ इला । ले०काल 🗴 । पूर्ण। बेष्टन स.० ५४३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४४१७ प्रतिसं०४ । पत्र स०६२ । घा०१३ × ४३ इ.च. । लेक्सल स०१८६ श्रावसः वदी १३ । पूर्सं । वेप्टन सं० ४४ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

विशेष - रूपलाल जी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि करवाई थी।

्र४१८. **मावफल**— × । पत्र स ०११ मा०११×४ इश्व । भाषा-स स्कृत । विषय-ज्योतिष । र•कातः × । ले॰काल स ०१६६९ । पूर्ण । वेष्टन स ०३६-१४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायतिह (टॉक) । **५४१६. भाविसमय प्रकर्**ग—पत्र सं०८। भाषा प्राकृत संस्कृत । विषय- $\times$ । रचना काल  $\times$ । वेञ्काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं०४६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४४२०. भुवनदीपक—पद्मप्रसमूरि । पत्र स० १४ । घा० १० $\times$ ४ हे इख । भाषा—स स्कृत । विषय-प्रयोतिय । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १४६६ भारवा बुढी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४६ । प्राप्ति क्षणान—दि० जैन मन्दिर प्रजमेर भण्डार ।

५४२१ प्रतिसं०२ । पत्र स०१२ । म्रा०१० ४४ १ इच्छा। ले० काल ४ । पूर्णावेष्टन स०५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन वण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१४२२. भुवन दीपक $--\times$ । पत्र स॰ १०। मा॰ १० $^3$  $\times$ ४ $^2$ ६ इख । भाषा--सरकृत । विषय-ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ल०काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स॰ १४१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मिटन बोगसली बोटा ।

४४२३. **भुवनदीपक टीका**— ४। पत्र स०१६ । धा०१०४४<sup>3</sup> इन्दा। भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योगिता राज्यात् ४। ते०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं०१६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्ति जोगसी कोटा।

४४२४. भूबनदीपक वृत्ति—सिंहतिलक सूरि । पत्र स०२४ । प्रा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  दश्च । भाषा—सहकृत । विषय —ज्योतिष । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०१४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर लग्कर जयपुर ।

विशेष — रस युग गुरोन्दु वर्ष १३२६ शास्त्रे भुवनदीपके वृत्ति । युवराज वाटकादिह विकोध्य वीजापरे निविता ॥१॥

५४२५. भुवनिविचार—  $\times$  । पत्र सं०२ । प्राः १० $^2\times$ ५ इश्व । भाषा—सम्ब्रत । विषय— ज्योतिय । २०काव  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म०५३। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सब्देलवाल जदयपुर ।

विशेष--प्रति हिन्दी प्रथं सहित है।

४४२६. सकरंद (मध्यलान ज्योतिक) —  $\times$  । पत्र स॰ ६ । भाषा — सस्हत । विषय — ज्योतिक । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ६६/४६२ । **प्राप्ति स्थान** — वि॰ जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४४२७. मुहर्तेखितासरिए—त्रिमल्ल । पत्र स०३६ । मा० १०३ ×४३ इच । माषा-सस्त्रत । विषय-ज्योतिय । रुकाल  $\times$  । लेक्सल स० १०७४ । पूर्णे । बेष्टन स० १४४७ । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन सन्दिर प्रजीरे ।

४४२ द. सुहूर्तीचतामस्ति - दैवज्ञराम । पत्रसं ० ६०। मा० ११ ४४ इख । भाषा — सस्कृत । विषय — ज्योतिय । २० काल स० १६४७ । लेक्सल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं ० १६३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुदो ।

५४२६. प्रति सं०२ । पत्रस०१८ । म्रा०१३imes१३ इञ्च । ले० काल imes । पूर्एं । बेष्टुन स०१६६ । प्राप्तिः स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

१४३०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ८५ । प्रा० १०२ ४५ इ.च । ले०काल स० १८५१ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १६२ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)

**५४३१. प्रतिसं०४ ।** पत्रस०५१ । आ० ६ १×४ १ इचा । ले०काल स०१००६ । पूर्ण । वैक्रनसं०२०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाथ्येनाथ इन्दरसङ ।

विशेष — सबत् १८७१ काके १७४४ मासानाम मासोत्तम श्रावस्थानाम कुभे कृवनपदी १ भृगुवासरे चिरजीव सदामुख निषिक्कत करवारास्य कुभेजामे ।

**५४३२, प्रति सं० ५** । पत्र स० ७४ । ग्रा० ७ ९ ४ ई। इश्वः । ले० कात्र स० १८७८ । पूर्णे । वेष्टन स० २३५, १२६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर कोटडियो का द्रगरपुर ।

४४३३. प्रति स०६। पत्र स०६६। ब्रा०७ ४४२ प्रज्यः। ले०कालः ४। ब्रपूर्णः। बेष्टन स०३३६ १३०। प्राप्ति स्थानः – दि० जैन मदिर कोटडियो का हुगरपुरः।

१४३४ मुहूर्तेवतासिंगः—  $\times$  । पत्र स॰ १०३। ब्रा० १० $\times$ ४) । आषा सन्तन । विषय— ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८४१ ज्येष्ठ बुरी १ । पूर्ण । बेशन स० १९११ । प्राप्तिस्थान — म० दि० जैन मन्दिर, अवनेर ।

विशेष-मामाक वस्ट ने किशनगढ़ में प्रतिनिधि की थी

५४३५. प्रति सं० २ । पत्रस० २६ । आ०११ $\times$ ५ इञ्च । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । बेयुन स०१४० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर राजमहल (टाक) ।

**५४३६. प्रति सं० ३ ।** पत्रस**० ४०** । स्रा० ११ ९४६ इञ्च । ले० काल  $\times$  । वेतृन म० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मिदिर लब्कर जयपुर ।

५४३७. मुहूर्तपरोक्षा----× । पत्रस०२ । बा० १९ रू४ । भाषा-मस्या । ले० काल स०१६१६ मर्गार । पूर्ण । बेष्टन म०११२६ । प्राप्ति स्थान । म०द० जैन मदिर सत्रार ।

**४४३८. सहरतित्**वः  $\times$  । पत्रमु० २ । भाषा—गरुत्त । विषय—जोतिक । २०वास्  $\times$  । कि क्षाः  $\times$  । प्राप्तः । विष्टतं सुरु । वेष्टतं सु० १९७ १४६ । प्राप्ति स्थानः । विष्णं ते सभवनाव मिर्दरः उद्ययुर ।

५४३६. सहर्रामुक्तावली - परमहंत परिवाजकाचार्य । पत्रस्व ७ । बाव २४४८ इन्य । भाषा--सम्हत । विषय -चर्गातिय । २० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वेय्टन स० १४४६ । प्राप्ति स्थान --भ० दि० जैन मंदिर स्रजनेर ।

५४४० प्रति स०२। पत्रस०१०। ले०काल म०१६७७। पूर्णं। ये उन ग०१४५०। प्राप्ति स्थान - भ०दि० जैन मन्दिर प्रजीन ।

५४४**१. प्रतिसं० ३** । पतस० ११ । ले०काल म० १८७७ । पूर्ण । बेष्टनस० ७५६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रायती मस्दिर भरनपुर ।

विशेष-हिन्दी ग्रर्थ सहित है तथा नखनऊ मे निखी गई थी।

**५४४२. प्रति सं०४** । पत्रस० १३ । श्रा० म**्र** ४ इला । ले०काल स०१८४६ । पूर्सा । बेष्टन स०१६६ । ब्राप्ति **स्थान** —दि० जैन मन्दिर फोहपुर बेलाबाटी (सीकर) ४४४३ प्रतिसं०५ पत्रस० ६। आ०१०४ ६ इल्बा ले०काल । पूर्णवेष्टन स०१७५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाप्यंताथ मन्दिर चौगान बुदी।

१४४४. मृह्तं मृताविल—  $\times$  । पत्रतः ६ । ग्रा॰ १०  $\times$  रे इचा भाषा-सस्कृतः । विषय- ज्योतिप । र०कालः  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनः म० ३३५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैनः मन्दिरं लक्कर, जयपुरः ।

पूर्वे ४५. मुह्न मृक्ताविल— ४ । पत्रत० १२ । प्रा० ६२ ४ ४ हे इस्त । भाषा - सस्कृत । विषय-क्योतिष । रेजकाल ४ । लेजकाल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन म०२४७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन महिर पार्थनाथ चौगान वंदी ।

१४४६ मृहूर्ल मृह्माविल--- × । पत्र म० १२ । घा० १२.४६ स्व । भाषा सम्बृत । विषय-ज्योतित । र०काल प्रानेश्वाल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । प्राण्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर बोरमनी कोटा ।

४४४७ महर्त्त मुक्ताविल— ४ । पत्रम० ३-७ । या० ८ ४ १ ख । भाषा-मस्तृत । विषय-ज्यांतिव । २०काश्च ४ । ले रुकाल म० १६२० प्रथम म्रापाढ मुदी १० । पूर्ण । वेट्टन स०२७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर देवलाना (बृदी)

५४४८ महर्स विधि-× । पत्रम० १७ । आ । ११ ८५ इ.च. । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतित । र०कातः × । लेक्बाल × । पूर्ण । तेष्टन म० २१६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर राजमहन् (टोक) दिशेष--प्रति प्राचीन हैं।

प्रथेष्ठ महूर्त्तं शास्त्र—> । पत्रम० १७।ग्रा० १०३४ ४ इञ्च । र०काल ४ । लेकाल स० १८८५ । पर्यो । वेटन ग० ११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्तिर फनेट्रपर शेखावाटी ,सीकर)

विशेष-विशालपुर में प्रतिनिधि हुई थी।

४४५०. मेघमाला—शंकर । पत्रस० २१। घा० १० $^{1}$  प्रश्ने १ आपा—सम्बन । विषय— ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६८१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमञ्ज (टोक)

विशेष-अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

इति श्रीणकर कुमेघ मालाया प्रथमोध्यायः।

द्दांत श्री ईश्वरपार्वेती स वादे सनिष्यरसता स पूर्या । मिति श्रापाढ शुक्ल पक्षे मगलवारे स० १८६१ श्रादिनाथ चैत्यालये । द० पहित जैबन्द का परते मुखजी साजी की म उतारी छै ।

**५४५१. मेघमाला**—  $\times$  । पत्र स० ६ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २०काल  $\times$  ।  ${\bf q}$ र्र्ण । बैष्टन स० ४२२-१५६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का उंगरपुर ।

४४५२. मेघमाला (भटलीविचार)— $\times$ । पत्रस $\circ$ १। आ $\circ$ १×४ इक्षः। भाषा—संस्कृतः। विषय—ज्योतिषः। र॰कालः  $\times$ । ले $\circ$ काल स $\circ$ १६६२ । अपूर्णः। वेष्टनस $\circ$ १३४ । **प्राप्तिः स्थान**—दि $\circ$ जैन खदेलबाल मन्दिर उदयपुरः।

**४४५३. मेधमाना प्रकरण**—— $\times$  । पत्र स०१४। आ०१२ $\times$ ५ इश्व। भाषा सस्क्रत। विषय-तिमित्त शास्त्र। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०२५२-४६३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

विशेष-भडलीविचार जैसा है।

४४४४. योगमाला —  $\times$  । पत्रस० १ । प्राः १०  $\times$  ४ इत्र । भाषा -सम्हत । विषय — ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ३२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मिदर दबलाना (वंदी)

४४५५ योगातिसार— मागोरय कायस्य कातूगो । पत्र स० ३५ । ग्रा० १०४५ इन्द । मागा-हिन्दी । विषय-ज्योतिय । र०काल ४ । ते०काल स० १०५० ब्रासोज मुदी १ । पूर्ण । वे०स० १११४ । प्राप्ति स्थान—भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर अजोर ।

विशेष-सेवग चित्तीहवासी हेह्या मालवा देश के नोलाई नगर में प्रतिलिप की थी।

४४५६. योगिनीवशा -- ४ । पत्र स०६ । आ०११९ ४ ४०६ श्वा । भाषा- सस्कृत । विषय-ज्योतिष । रक्काल ४ । ले०काल । पूर्णा । वेष्टन स०११२६ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्त्रि एउनेप्र ।

**५४५७. योगिनोदशा** —  $\times$  । पत्र सु० ८ । प्रा० ६ $^1$   $\times$   $^2$  इन्छ । आधा-सस्कृत । विषय — ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५४० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डगरपर ।

४४५६. रस्त गुड़ामि(ग — × । पत्र स० ७ । म्रा० ११३ ४४ इश्व । माधा-सस्कृत । विषय-ज्योताय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेग्टन स० २००-४६४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन समयनाध्य मन्दिर उदयपुर ।

४४५६. रत्नबीपक — × । पत्र स० ११ । बा० १०१ ४४ १ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतित । र०काल × । ने०कान स० १०७६ कार्तिक सुरी ७ । पूर्ण । वेट्न स २०१ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन पावनाथ मन्दिर इन्टराज (कोटा)

**५४६०. रस्त्रदीप**—  $\times$  । पत्र स० ८ । ग्रा० ५ $\stackrel{!}{\times}$ ६ इख । भाषा-सम्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वट्टन स० ३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुदी) ।

४४६२. रत्नदीपक— ापत्र स०७। म्रा०१३४४ इखा भाषा—परकृत। विषय— ज्योतिषा रज्याल ४। क्षे•काल म०१०४६। पूर्णा वेष्ट्रत स०१६१०। प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मधिर सबसेर।

**४४६२. प्रतिस०२** । पत्रस०६ । म्रा०११ x ४ इश्व**ा से०काल** x । पूर्ण । बेष्टन स० ३४१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर बारसली कोटा ।

१४६३. प्रतिसं० ३ । पत्र म०७ । सा० १०६४ ४ ७६ इन्ह । ले०काल ४ । प्रपूर्ण ।वेष्ट्रन सं० १७ । प्राप्ति स्थान— दि० तैन मन्दिर दबलाना (ब दी)

४४६४. रस्तमाला — महादेव पत्र स० ४६ । ग्रा० १० $\times$ ४ इ.च । प्राधा-सस्कृत । विषय- ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १४८६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४७७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैत संभवनाय मदिर उदयपुर ।

विशेष-प्रतिम पुष्पिका निम्न द्रकार है-

प्रशस्ति—स्वास्ति संवत् १४८६ वर्षे कार्तिक बुदी ११ एकादश्या तियो भीमवासरे प्रवेह खानू दिक पुरे वास्तव्य मट्ट मेरपाटेझातीय ज्योतियो कडूपात्मत्र राकेन द्यास वादादि समस्त आतृ्णा पठनाय नच विज्ना प्रकास प्रयोगकातम्य राज्यान कार्यस्यस्य आयां नितेखः ।

४४६५. प्रति सं०२। पत्र सं०१३०। ले० काल 🗴 । पूर्एं । वेष्ट्रन सं०४७८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

५४६६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६-६० । घा० ११४५ इ.च । ले० काल 🗴 । घपूर्ए । वेष्टन सं० २३० । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन पारवैनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष--प्रतिप्राचीत है।

सचि के ग्रन्त में निस्त प्रकार उल्लेख है-

शक्तत्र वाक्यप्रमाष्ट्रप्रवणरद्भनोः वेदवेदागवेतः, सून्, श्री लृष्णिगस्यावृतः चरणरतिः श्री महादेवनामा तत् प्रोक्ते रत्नमाला स्विरविवरस्ये सञ्जनाता भोजयानो दुर्जनेन्द्रा प्रकरणमगमत् योग भज्ञा चर्तर्ष ।

१४६७. रमल $-\times$ । पत्रस० है। ग्रा० १०  $\times$  ४,६ व । प्राचा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$ । ले०काल स० १८७५ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १००० । प्राप्ति स्थान-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

१४६ म. **रमल प्रश्न**— $\times$  । पत्र स० २ । घा० ६ $\times$ ४ है इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय— ज्योतिष । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

१४६६. रमल ज्ञान— $\times$  । पत्र स० १६ । आ० ६ $\times$ ४ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय— ज्योतिष । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

१४७०. रमल प्रश्नतंत्र—दैवज्ञ चिंतामिंगः। पत्र सं० २३। प्रा०  $\times$  ४ $^{3}$  हजा । माषा— संस्कृतः। विषय-ज्योतिषः। २०कालः  $\times$ । से०कालः  $\times$ । पूर्णः। वेष्ठन स० २८७। प्राप्ति स्थानं — दि० जैन मदिर प्रश्निनदन स्वामी, व दी।

१४७१. रमलशाकुनावली —  $\times$  । पत्रसः १ । याः १०  $\times$  ५ दश्व । भाषा — हिन्दी । विषय — ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६ । प्राप्तिस्थान विः जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगात व दी ।

४४७२. रसल शकुनावली —  $\times$  । पत्र सं० ७ । प्रा०  $= \frac{1}{2} \times Y$  इञ्च । भाषा —िहिन्दं, । विषय-च्योतिय । र०क ल  $\times$  । से०काल सं० १०५३ । पूर्णं । वेष्टन सं० ००-४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

श्रम्तिम—इति श्री मुसलमानी शकुनावली सपूर्ण । संवत् १८४३ का मिती चेत बुदी १२ सुखकीरत बाचनार्थं नगर सेलवेडा मध्ये । १४७३. रमल शास्त्र— × । पत्र स० ३५ । ग्रा०६ १४७ इन्त । मारा-सस्कृत । विषय ज्योतिष । र०काल × । से०काल ३० १८६६ वैशास बुदी ६ । पूर्ण । वष्ट्रन स०२१४ । प्राप्तिस्थान— भटारकीय दि० जैन मदिर ग्रजोर ।

विरोष—िलिखत तिवाडी विद्याघरेन ठाकुर श्रीमंश्वक्सणी ठाकुर श्री रामवक्सजी राज्ये कलुलेडीमध्ये ।

 $\chi$ ४७४. रमलशास्त्र —  $\times$ । पत्र स० २४। प्रा०  $\xi \times Y$  दश्व । भाषा-सस्क्रत । विषय-ज्योतिष । र॰काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३३४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर. जयगर ।

प्रथ्यः. रमलज्ञास्य  $\times$  । पत्रसं  $\circ$  ४४ । घा० ११  $\times$  ७ इव । भाषा-हिन्दी । विषय- ज्योतिष । २०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५०४ । प्राप्ति स्थान - दि० अन सन्दिर कोटडियों का इसन्पर ।

विशेष ---प्रक्नोत्तर के रूप में दिया हुआ है।

५४७६, राजावली—×। पत्रस० ११। बा० १२४४, उत्त । भाषा—सस्तृत । विषय— ज्योतिष । र०काल ४। ले०काल स० १७२१ माघ सुदी ७। पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३६ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर ब्रमिनन्दन स्वामी, ब्रुदी ।

इति सबत्सर फल समाप्त ।

५४७७. राजावली— × । पत्रसः १६ । बा० १०> ४ दश्व । भाषा-गर्जन । विषय-ज्योतिक । र०काल × । ले०काल म० १६३५ थावगा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन म० २३२ । प्राध्तिस्थान-दि० जैन पार्थनाथ सन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष-- इति पष्टि (६०) सवन्सरनामानि ।

४४७६. संधरसर राजाविति— $\times$ । पत्रम० ४ । प्रा० ६ $\times$ ४ $^3$  टब्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ४४३ ।  $\times$  प्राप्तिस्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इ गरपुरः।

४४७६. राहुफल— × । पत्रस०६। ग्रा०१०×४} इचा भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल ×। ते काल ×। पूर्ण । वेहनस०६३६। **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन संदित कार्यर ।

४४६०. राशिफल $-\times$ । पत्र स०५। ग्रा० १ $\times$ ४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय- ज्योतिष। र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । प्रपूर्ण। वेष्टुन स०३११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मंदिर उदयपुर।

**१४६१. राशिफल**—  $\times$  । पत्र सु० २ । सा० १०  $\times$  ५ इ.ख । आषा-हिन्दी । विषय— ज्योतिष । २०काल  $\times$  । ले०काल स० १८१६ सावन मुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

१४८२, लथुजातक—मट्टोरपल । पत्र स०६-४४ । घा० ६×४ इवा । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं०१८०६ मादवा सुदी ३ । प्रपूर्ण । बेष्टनसं०१७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान इंदी ।

४४६३. **लघुजातक** — । पत्रस०६। ग्रा०११्रै४४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र•काल ४ । ले॰ काल स॰ १७१७ हि ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स॰ १५६६ । **प्रास्ति स्थान** — म॰ कि जैन मस्टिर प्रजीत ।

पूर्रदर, लग्न**चन्द्रिका**—काशीनाथ । पत्रस॰ ३३ । ब्रा॰ १० ४ १ इच । मापा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल र । मे•काल х । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रश्नितरत स्थामी व दी ।

**५४८५ प्रतिसं०२** । पत्र स०३२ । द्या०६<sup>2</sup> ४ ४ इ.च । ले०काल स०१८५२ । पूर्ण । वेष्टन सं०२८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर क्रमिनदन स्वामी वृदी ।

**५४८६. प्रतिसं० ३** । पत्र स०५८ । ग्रा०६ $^{3}$   $\times$  ४ $^{3}$  इश्व । ले०काल स० १८७८ । पर्गा । वेष्ट्रनस०२३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रूटी) ।

विशेष --गोठडा मे प्रतिलिपि हुई थी।

५४८ प्रतिस०४ । पत्रस०७४ । ग्रा०१० 🗴 ४ इ.च. । ले०काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वेष्ट्रनस०२५६ । प्राप्तिस्थान —दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृदी) ।

**५४८८. प्रति स० ५।** पत्रस० २४ । घा० ११  $\times$  ५ $^{3}$  इन्छ । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म० ४८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैत मन्दिर दबलाना (बंदी) ।

५४८६. प्रति स०६ । पत्रस०१२। ग्रा०७ $\frac{1}{4}$  $\times$ ६ $\frac{1}{4}$  इ.व । ले० काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । बेष्टन स०१६२ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन मिरिर दवलाना (ब्रुंदी) ।

१४६०. वर्षतत्र—नीलकंठ । पत्र म० ६६ । मा०११ $\frac{1}{2}$  ×  $\frac{1}{2}$  इच । मापा—सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६२ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४४६१. प्रतिसं०२। पत्रस०३६। ग्रा०१२४४ इखा। ले० काल स०१८४४ । पूर्ण। वेष्टनसं०३४२। प्राप्तिः स्थान-—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

**५४६२. वर्षकल---वामन ।** पत्रस॰ २-६ । प्रा॰ १० $\frac{1}{2} \times \sqrt{3}$  इव । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । वेष्ट्रन स॰ ७१३ । स्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नकर, अयपुर ।

४४६३. वर्षकला— × । पत्र स०६ । घा०११२४६ इत्र । भाषा सस्कृत । विषय— ज्योतिष । २०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१०७-१८० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

४४६४. **बर्षभावफल** — × । पत्र सं०६ । घा०६३,४४ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ए। वेष्टन सं० ४०४ । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मंदिर प्रजमेर । **५४६५. विवाह पडल**—  $\times$  1 पत्र स०२४। घा०१० $\times$ ४ है इच । भाषा संस्कृत । विषय- ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१७६३ । पूर्ण । वेग्टन सं० १५२ । प्राप्ति स्थान—संबेशनाल वि० जैन मंदिर उदयपर ।

विशेष---प्रनित्म प्रणस्ति ।

इति थी विवाह पडल ग्रंथ सम्पूर्ण। लिखितेयं सकल पडित शिरोमिण पं॰ श्री जसवत सागर गिए। शिष्य मृति विनयसागरेए।। सवत् १७६३ वर्षे श्री महावीर प्रसादात् शुभभवत्।

१४६६. वृन्द संहिता—परस विद्याराज । पत्र स०१४३ । प्राः० ११  $\times$  ४ $^{\circ}$  इश्व । भाषा— संस्कृत । विषय — व्यंगीतथ । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टत स०२२० । प्राप्ति स्थान— याव्यंनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ ।

१४६७. बृहरुजातक  $\times$  । पत्र सं॰ १-१०। ब्रा॰ ११ $^{\circ}$  ४ ४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय- ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टन स॰ ७०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

 $\mathbf{Y}$ ४६ द. **बृहज्जातक** —  $\times$  । पत्रस**्**रि २२ । ग्रा० ११  $\times$  ५ $^{1}$  इज्य । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । श्रद्भूषं । वेष्टनसं० २०२ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर प्रभिनन्दत स्वामी वंदी ।

४४ **६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६० । घा० १०** ४ ५ इ.ख.। ले० काल ४ । ब्रपूर्सा वेष्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

४५००. बृहज्जातक (टीका)—बराहिमिहर । पत्र स० ८८ । प्रा० १२ $\times$ ४% इच । भाषा—सम्ब्रत । विषय— ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन म० २१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दर प्रिनन्दन स्वामी, बूदी ।

४४०२. शकुनविचार— × । यत्रस० ४ । मा०६ै × ४ इचा भाषा—सस्कृत । विषय-सकुन शास्त्र । रुकाल × । ले०काल × । पूर्णे । वेस्टन स०१७४ **। प्रास्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर ध्यवेर

१५०६. शकुन विचार —  $\times$  । पत्र स० १ । आ० ११  $\times$  १ इच । भाषा — सस्कृत । विषय — ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेग्टन स० ६१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर संस्कर अयपुर ।

४५०४. शकुन विचार —  $\times$  । पत्रसं० २ । भाषा — सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णे । वेष्टन स०७७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

५५०५. शकुन विचार — imesापत्रस०२ –१०। भाषा सस्हत । विषय-शकुन । र०कासimes। से॰ काल imes। धपूर्ण । वेष्टतस०७००। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

 $\chi\chi$ ०६. शकुन विचार—  $\times$  । पत्र सं०१ । भाषा—सल्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६२/५५६ । प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष-आवार्य श्री कल्याराकीर्ति के शिष्य मनि भवनवद ने प्रतिलिपि की थी।

४५०७. शकुन विचार— × । पत्र स०३। घा०६ × ४६व । माषा-हिन्दी । विषय-स्थोतिस। र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—महास्कीय दि० जैन मनिस्न स्वतिम्

४५०५. शकुन विचार—  $\times$  । पत्रस० १२ । प्रा॰ १२५ ×६ इच । यापा-हिन्दी । विचय- ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ४०/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रावती मन्दिर हती (टोक) ।

४५०६. शकुनावली—गौतम स्वामी । पत्रसं∘ ३ । या॰ ११०३४४३ इला । भाषा—प्राकृत । संस्कृत । विषय—िर्नामल शास्त्र । र॰ काल × । ले॰काल × । वेष्ट्रनसं॰ १३२ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर लक्ष्यर, जवपर ।

**४५१०. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ३ । ग्रा० ११ imes ४ इच्छ । ले० काल imes । वेष्टन स० १३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मस्दिर लक्कर जयपर ।

x ५१११. शकुनावली— x । पत्रस० ६ । ग्रा० ६ x x इन्त्र । साधा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र० कारा x । ले०काल x । श्रपूर्ण । बेप्टन स० २७०-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का उनग्यर ।

५५१२. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८ । घा० १० × ७३ इत्त्र । से•काल सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० २४४/१२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का हु गरपुर ।

५५१३ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४ । मा० ६ २४६ इश्व । ले॰काल सं० १८७५ । पूर्ग । वैष्टन स० ४६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

५५१६ . प्रतिसं० २ । पत्रस० १६ । म्रा० १० १० ३० ४ है इ.च.। ले० काल 🗴 । वेष्टन सं० ६४० । प्राप्तिः स्थान—उपरोक्त मदिर ।

५५१६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १ । घा० १०५ $^3\times$ ५ इञ्च । ले०काल imes । बेष्टनसं० ६७१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर, लक्कर जयपुर ।

५५१७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २ । घा० १०३ ४५३ इन्छ । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेग्रन स० २०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिह (टोंक) ।

ሂሂ१८. । पत्रस०४। मा० ७×५ इला । ले० काल स०१८२० सावरा बुदी ८ । पूर्ण । वेच्टन सं०२०१ : प्रास्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी) ।

विशेष--गोठडा में प्रतिलिपि हुई थी।

४.५९६. सीझबोच - काशोनावा । पत्रत्त० प्र-२६ । ग्रा० ६३ ४.५ देव । भाषा-सस्कृत । विषम — ज्योतिवा १० काल × । ते० काल × । पूर्ण । बेष्टनस० १०३१ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन महिन्दु प्रज्ञाने

**४५२०. प्रतिसं० २** । पत्र स०१० । म्रा०१० $\times$ ४ $\} इञ्च । ले० काल <math>\times$  । पूर्ए । वेष्टन स० ४६० । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**५५२१. प्रति सं० ३** । पत्रस० ३६ । छा० १० ४ ४ <sup>‡</sup> इश्वा । ले०काल ४ । पूर्णा । वेष्टन स० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर छजमेर ।

**५५२२ प्रतिसं०४।** पत्र स०४३। द्या०६ $rac{1}{4}$ ×५ $rac{1}{2}$  इञ्च। ले० काल imes। पूर्ण । बेष्टन सं०६३२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर क्रजमेर।

विशेष - गटका साइज में है।

**५५२३. प्रति सं० ५ ।** पत्रस० ५६ । छा० ६ $\times$ ४ $\S$  इन्छ । ले० काल स० १८८६ वैगाल बुदी **११ । पूर्त** । वेक्नस**०** १८६ । **प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष--किशनगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

५५२४. प्रति**सं० ६** । पत्र स० १५ । प्रा० ६ ४ ४ है इच्छ । ले०काल १६०३ । पूर्ए । वेष्टन स० १११६ । **प्राप्ति स्थान**—प्र• वि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**५५२५. प्रतिसं० ७।** पत्र स० ३५ । प्रा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इश्व । ले० काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० ३२४ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**५५२६. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ६-६१ । ग्रा० ७ × ५<sup>3</sup> इच । ले० काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवात पुरानी डीग ।

१५२७. प्रतिसं० ६ । पत्र स०५६ । ग्रा०१३ 🖰 🗴 है इ.ख.। लेब्काल सं०१८६० भादता बुदी १५ । पूर्णा। बेटन स०७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैत छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष ---ला० नथमल के पठनार्थ बयाना मे प्रतिलिपि की गई थी।

५५२६. प्रतिसं० १० । पत्रस० ३१ । धा० ६ $\times$ ४ $^+$  इचा । ले० काल स० १६४५ चैत्र शुक्ला ११ । पूर्ता । वेष्टन स० २४२ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मिदिर राजमहल (टोक) ।

**५५२६. प्रतिसं० ११।** पत्र म० ६६ । ग्रा० क्ट्रै $\times$ ४ इंच । **भे०कात स० १**०५५ । पूर्ण । बेष्टुत स० १८६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर फनेटपुर शेखाबाटी (गीकर) ।

५५३०. प्रति स० १२ । पत्र म० १३ । खा० द×५ इचा । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स∙ २६० । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर छनिनन्दन स्वामी, बूदी ।

x ५२२ . प्रतिसं० १४ । पत्रस० २० । प्रा०६ $\frac{2}{7}$   $\times$  x  $\frac{1}{7}$  इवा । ले०काल स० १८२० वैद्याख सुदी २ । । पूर्ण । वेहन स०१६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर आदिनाख बुदी ।

५५३३, प्रति सं० १४ । पत्रसं० १४ । आ० १०१ ४ ४१ इआ। ले० काल 🗴 । पूर्एं । बेब्बस० ७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-हिन्दी में टब्बा टीका है।

१५३४. प्रति सं० १६। पत्र स० २०। घा० १०४४ इञ्च। ने०कान म० १७४७। पूर्णं । वेष्टन स० ३४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसनी कोटा।

५५३५ प्रतिसं० १७ । पत्रस० १६ । ग्रा० १० ४४ इश्व । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ३५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (वृदी) ।

४४३६. प्रतिसं० १८ । पत्र सं० ३३ । आ० ११×४ ट्रैडच । ले० काल × । पूर्ण । बेट्टन २७० ३०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दवलाना (ब दी) ।

५५३७. द्रतिसं० १६ । पत्र सख्या २१ । म्रा० १० , ४५ ३ इ.च. । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेस्टन स० २०६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

**४५३८. प्रतिसं० २०।** पत्र स० २१-३२। द्या० ८<sup>3</sup>,४४ इखा ले० काल ४ । द्रपूर्ण। वेस्टन स० २१६-८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपर।

५५३६. षट्यंचाशिका – मट्टोत्पल । पत्रस्त ४ । स्ना०  $\times x \stackrel{>}{\sim} 2$  दश्च । भाषा – सस्कृत । विषय — न्योगिय । र० कास स० १०५२ । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२०५ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मदिर अजेगर ।

४१४ठ०. प्रतिसं० रे। पत्र म० ८। म्रा० १२४४ डब्च । ले॰काल स० १६२६ ब्रायाङ बुदी ६। पर्गा । वेपन स० ११६१ **। प्राप्ति स्थान**-- म० दि० त्रैन मन्दिर श्रजमेर ।

विशेष---प्रक्त भी दिये है।

**५५४१. प्रतिसं० ३** । पत्र स० २२ । धा० ६ $\frac{6}{7}$  $\times$ ४ $\frac{7}{7}$ दश्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टत म० १०७० । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मदिर खजमेर ।

विशेष - प्रति संस्कृत वत्ति सहित है।

५५४२. प्रति सं० ४ । पत्र स०२-६ । घा० १०५ $\times$ ४३ इश्वः । ले० काल  $\times$  । बेष्टन सo ७०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**५५४३ प्रतिसं० ५** । पत्र स०२। ब्रा०११×५३ इचा। लेश्काल स०१८२५ संगसिर सुदी ७ । बेस्टन स०३२० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४५४४. प्रतिसं०६ । पत्र स०२ । ग्रा०१०४४ है इञ्च । ले० काल ४ । पूर्णं । बेप्टन स० ४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-शेरगढ में पं० हीरावल ने लिखा था।

५५४५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ८ । घा० ११ $\frac{1}{2}$ ४५ $\frac{1}{2}$  इ.च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुनस० २०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष - लिखित मुनि घर्म विमलेन सीसवाली नगर मध्ये मिनी कार्त्तिक बुदी २ सबत् १७६८ वर्षे गुण्वासरे सपूर्ण। ४५४६. बड्बर्गफल— × । पत्र सं०१३। प्रा० ११है×४है इखा भाषा—सस्हत । विषय—ज्योतिषा रुकाल × । मे०काल सं०१६०३ फागुण बुदी १२। पूर्ण। बेष्टन स०११२७। प्रास्ति स्थान—भ० वि० जैन मस्टिर प्रवरेर।

**११४७. विकि योग प्रकर्**स —  $\times$  । पत्रसं० ८ । ग्रा० १० $\frac{1}{5}$   $\times$  १ द्वा । मावा-सस्कृत । विषय-क्योतिष । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० ३३२ । प्राप्ति स्थान — दि० जन मंदिर लक्कर, जयपर ।

४४४... विष्ठसंबतस्सरी—सुगेदेव । पत्रस्करी । प्रा० १०४४ इन्छ । भाषा—संस्कृत, हिन्सी । विषय —ज्योतिष । र॰काल  $\times$  । ते० काल स० १६६४ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन संक १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पावनंनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

१६६५ वर्षे मगसिर सुदी १५ णनिवारे, माडरणा ग्रामे जिल्लवता श्रीलक्ष्मीविमल गाणे ।

**५५४६. वष्टि संवत्सरफल**—  $\times$  । पत्रस०२। ग्रा०६ $\times$ ४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय- ख्योतिष । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टुनस० ३२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**१५५०. सप्तवारघटो** —  $\times$  1 पत्रस० १५०। प्रा० ११×४ ६ व । भाषा — सस्कृत । विषय — ज्योतिष (गिरात)। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४। प्राप्ति स्थान — वि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

४४११. समरसार—रामचन्द्र सोमराजा— । पत्रसं० १ । धा० १२ imes ६ इचा भाषा— संस्कृत । विषय—स्थीतिष् । र० काल imes । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्ट्रनसः० १६७ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनस्द स्थामो, बु दी ।

५५५२. साठसंबदसरी — imes । पत्र स०७ । भाषा-सस्क्रत । विषय-ज्योतिष । र० काल imes । कुर्ण । वेष्टन म० १७१२ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- सबत्सर के फलो का वर्णन है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

संबर् १७१२ वर्षे बैगाल बुदी १४ दिनोसागपत्तने श्री ग्रादिनाथ चैरवालये ब्रह्म भीराख्येन लिखि गर्मिद ।

४५५३. साठ संबदसरी—  $\times$  । पत्र स० २७ । प्रा० १० $\} \times$  ४ $\}$  इख । भाषा— मस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल  $\times$  । त० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २२३-६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष —सवत्सरी वर्णन दिया हुमा है। प्रति प्राचीन है। म० विजयकीर्ति जी की प्रति है।

४.५५४. साठि संबरसरी—  $\times$  । पत्र स $\circ$  ६। मा० १० $\times$ ४ ६ ६०च । भाषा-हिन्दी । विषय – ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स $\circ$  ३८१–१४३ । **भाग्ति स्थाम—दि**० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

**५५५५. साठ संवरसरी** — 🗴 । पत्रसु० ११ । भाषा-हिन्दी । विषय--ज्योतिष । र०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टुन सं० ६८/५३४ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**४५५६. साठि संबरसरी**— $\times$ । पत्रसं $\bullet$ १० । घा० ११ $\times$ ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय — ज्योनिय । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस $\bullet$ ४५७- $\times$ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंपरपर ।

**५५५७. प्रतिस**ं० २ । पत्र सं०४ । ग्रा० १२imes७ ६ खा । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० ४८८ । प्रा**प्ति स्थान** —दि० जैन सदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४५५६. साठिसंबरसरप्रहरूल—पण्डित शिरोमिरा । पत्र सं० २१ । या० १२३ ४ ५१ इच । भाषा—सङ्कत । विषय—ज्योतिष । र०काल ४ । ले० काल ४ । वेष्टन स० ६११ । प्राप्तिस्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

४५५६. सामुद्रिक शास्त्र $-\times$ । पत्रस० १०। घा॰ १० $^1_2 \times \S^2_3$  इञ्च । भाषा—सन्छत । विषय—सम्राग्धास्त्र । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६६ । प्राप्ति स्थान-भ० वि० जैन मन्दिर प्रजरेर ।

विशेष--- शरीर के ग्रांगी पागी की देखकर उनका फल निकालना ।

५५६०. सामुद्रिक शास्त्र  $-\times$ । पत्र स०१२। घा० ६ $\frac{1}{3}\times 4\frac{1}{3}$  इच्च । भाषा -सस्कृत । विषय -लकारण शास्त्र । र०काल्  $\times$ । ले० काल्म ०१६०२ भादवा बुदी ६। पूर्णः । वे० सं०६७६। प्राप्ति स्थान-भ०दि० जैन सन्दिर छजसेर ।

४४६१. सामुहिक शास्त्र— × । पत्रस० ०। मा०६६ ४४) इच। माषा—हिन्दी विषय-नक्षरा णास्त्र। रक्काल × । ले० काल स० १७६४ चैत्र। पूर्णः । वेष्टन स० १०३६। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४.५६२. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रसं∘ ५६ । ग्रा०० - ४डला । भाषा-सस्कृत । विषय-लक्षरा शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० १२७ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

विशेष---प्रति हिन्दी ग्रथं सहित है ।

४५६३. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रसः २४। प्रा० ११४४ इचा । माथा -हिन्दी । विषय-लक्षण शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्णं । बेष्टनसः १११४। प्राप्ति स्थान— मः दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

 $\mathbf{x}$  **५६४. सारसग्रह**—  $\times$  । पत्रस**० २०** । आ० २ $^{1}$   $\times$  ४ ' इल्ब । भाषा सस्कृत । विषय— ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० १००२ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि**०** जैन मन्दिर प्रजमेर ।

प्रद्रम्. सिद्धांत शिरोमिण्—भास्कराचार्य । पत्रसं०७ । घा० १०४४ ' इच । प्रापा— संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल ४ । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनसं०४४७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मंदिर ग्रजमेर । x ५६६. सूर्य ग्रहरण —  $\times$  । पत्र स॰ १ । मा० स $\times$  ५ इन्द । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल x । त्रे० काल x । पूर्ण । वेष्टन सं॰ ५४१ — x । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मदिर कोटडियों का इंगरपर ।

४५६७ संकटदशा— × । पत्रस०१०। मा०१०×४३ दश्व। भाषा-सग्रुत। विषय — ज्योतिय। र०काल ४ । ले० काल स १८२६। पूर्ण। वेष्ट्रन स०१८-२६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिट्ट वेषिनाय टोडारायसिंह (टोक)।

 $\chi \chi = \frac{1}{4}$  संवत्सर महास्म्य टीका—  $\times 1$  पत्रस्व । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । रक्ताल  $\times$  । लेक काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्ट्नस्व ६६ । प्राप्ति स्थान—सम्भवनाय दिव जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-सवत्सर का पर्गा विवरमा है।

**५५६६. संबदसरी**—  $\times$  । पत्रस्व १७। म्राव ६ $\times$ ४ इःव । माघा-हिन्दी (गर्च) । विषय- ज्योतिष । रक्ताल  $\times$  । लेक्ताल सक् १६२४ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण । येष्ट्रन सक् २६। प्राप्ति स्थान—- दिक्जन मन्दिर दबलान (बंदी) ।

विशेष—सवत् १७०१ से १६०० तक के सौ वर्षों का फल दिया है। गोठडा ग्राम में रूपविमल के के क्रिय्य भाग्यविमल ने प्रतिलिपि को थी।

५५७०. स्त्री जन्म कुंडली— × । पत्रसः १ । जाः १० × ५ इलः । भाषा-सस्त्रन । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्णः । बेष्टन म २३१ । प्राध्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोरमली कोटा ।

४५७१. स्वर विचार—  $\times$  । पत्रसः २ । श्रा॰ ११  $\times$  ५१ इस । भाषा-हिन्दी (गवा) । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन ग॰ ६ । प्राप्ति स्थरन—दि० जैन पचावती मन्दिर बयाना ।

११७२, स्वयन विचार —  $\times$  । पत्र स०१। म्रा०१३ $\times$ ६ दश्व । भाषा — हिन्दी । विषय - निर्मित्त मास्त्र । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टोक) ।

विशेष-स्वप्न के फलो का वर्शन है।

४५७३ स्वयनसती टीका — गोबद्धं नाचार्यः । पत्रस० २६४ । ख्रा० १० है ४ ४ इचा । भाषा-सस्कतः । विषय-निमित्तः गास्त्र । र०काल ४ । ले०काल स० १६८० पीध मुदी २ । पूर्णः । बेष्टन स० २६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४५७४. स्वप्नाध्याय— × । पत्रस०४ । म्रा० १ × ४ इञ्च । माया— सस्कृत । विषय— निमित्त शास्त्र । र०काल ×। से०काल स०१८६८ पीष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रनस०३६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन छोटा मदिर वयाना ।

विशेष-वयाना मे प्रतितिषि हुई थी।

४५७५ स्वरनाध्यायी—  $\times$  । पत्रतः २-४। ग्रा० ११ $\times$ ४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय— निमित्त शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २११/६४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० **जैन** संगवनाथ मदिर उदयपुर ।

११७६, स्वयनाध्यायी —  $\times$  । पत्रस० ११। प्रा० प्र्ने  $\times$   $\vee$  इत्त्व । भाषा-सस्कृत । विषयनिमित्त झास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० १३२ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन मन्दिर
प्रमिनन्दन स्वामी, वृद्ये ।

विशेष---१४६ म्लोक हैं।

४५७६. स्वप्नावली —  $\times$  । पत्रस० ३। ग्रा॰ १०  $\times$  ४, इश्व । भाषा-स स्कृत । विषय-निमित्त णाम्त्र । १०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स० १७३। **ग्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोमानी कोमा

४५७६. स्वरोदय — । पत्रस $\circ$  ६। धा $\circ$  ६ $^3$  х $^3$ रवः। भाषा — सम्कृत। विषय-निर्मल शास्त्र। С $\circ$ काल х । त्रेलकाल х । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  १४२३। **प्राप्ति स्थान**—अट्टारकीय दि $\circ$  जैन मिटर कार्याण

विशेष --नासिका के स्वरो सबधी ज्ञान का विषय है।

४४८०. स्वरोदय — ४१ पत्र स०४। घा० १११ू४४} दव। भाषा-सस्कृत। विषय-निमित्त शास्त्र। रण्काल ४ । लेकाल स०१७६५ बैगाल सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १०५६। प्रास्ति स्थान— म०१० जैन मधिर धन्नेगः।

११८१ स्वरोदय टीका —  $\times$  । पत्र स० २७ । प्रा० ११ $\frac{1}{2} \times 1$  इञ्च । मापा-सस्कृत । विषय-निमिन्त ज्ञास्य । र०काल  $\times$  । । ने०काल स० १८०६ बैगाल बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टनसं० २४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बुदी ।

५५८२, स्वरोदय  $-\times$ । पत्र स० १८। प्रा० १०४४} इन्त । भाषा-सस्कृत । विषय—
तिमित्त शास्त्र । २००१  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन
मन्दिर दवलाला (वृदी) ।

४५८३ स्वरोदय  $-\times$ । पत्र स० १८ । मा०  $-\frac{3}{6}\times\frac{3}{6}$  इच । भाषा — सस्कृत । विषय-निमित्त भास्त्र । रक्ताल  $\times$ । ले० काल म० १७१५ प्रमहन बुदी १३ । प्रपूर्ण । बेस्टन स० ७१ । प्रास्तिः स्थान—दि० जैन महिर दबलाना (व दी) ।

विशेष - १२ से १७ पत्र नहीं है। पवन विजय नामक ग्रंथ से लिया गया है।

४५८४. स्वरोदय—  $\times$  । पत्रसः २२ । घा० ६ $\times$ ६ $^{1}$  इश्वः । भाषा-सस्कृत । विषय— निमित्त णास्त्र । २० काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टनसं० २२०-६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हांगरपुर ।

११८५. स्थरोदय—  $\times$  । पत्रस० २७ । झा० ७ $\frac{1}{2}$  $\times$ १ इञ्च । माषा सस्कृत । विषय-निर्मित्त सारत । र० काल  $\times$  । लेक्काल स १६०५ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ३२४-१२२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर कोटडियो का डंगएपर ।

इति पवनविजयशास्त्रे ईश्वर पार्वती मंबादे तस्य भेद स्वरोदय संपूर्ण ।।

४.४८६. स्वरोवय—मुनि कपूरचन्दा। पत्रसं०२७ । ग्रा०८ ४४ हेच। भाषा-हिन्दी। विषय-निमित्त सास्त्र। र०काल ४ । के•काल स०१६२३ चैत सुदी। पूर्ण। वेष्टन स०७३८ । प्रास्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर।

विशेष -- कृष्ण ग्रसाढी दशम दिन गुक्रवार सुखकार। संवत वररा निपराता नदबद घार।

४४६७. स्वरोदयः — जरगादासः । पत्र स०१४ । ब्रा० ६३/४६३ इत्व । भाषा हिन्दी (प ) । विषयः निमिस्तक्रान । रक्काल ४ । लेक्काल स०१६२५ । पूर्ण । वेष्टन संक ३३६ । **प्राप्ति स्थान** — विकलित मनिष्द स्वसाना (क्वी)

४५८६. स्वोरवय—प्रहलाद । पत्र स० १४। ग्रा० ६ $\times$ ४) इज्व । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स ० ३३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सन्दिर दबलाना (बंदी) ।

विशेष - जती दूदा ने आत्रदा मे प्रतिलिपि की थी।

ग्रादि ग्रंत भाग निम्न प्रकार है-

द्याविमाग---

गज बदन मुक्तभाल सुन्दर त्रिय नयए।।
एक मुल दत कर पर सकल माला।
मोदक सघ मूसी वाहाए।।
मुघये सिंग मुख्य मूल पाएगी।

सुर सर जटाँ साखा सुकी कठे। अरधग गोर गजवालसो देवो कुरण्ड सुभवाणी। अन्तिम—पाठक देत बखानी भाषा मन पवना जिहि दिड करि राखी।

> परम तत्व प्रहलाद प्रकास जनम जनम के तिमिर विनाम । पढे सुने सो मुकत कहाव गुरु के चरण कमल सिरनाव ।। ऐसा मत्र तंत्र जग नाही जैसा ज्ञान सरोदा माही ।

> > वोहा---

मिसर पाठक के कहे पाई जीवन मूल । मरामूल जीव तह सदा ब्रनुकूल ।

इति श्रीपवनजय सरोदाग्रथ ।

४४८६. होराप्रकाश— × पत्र स० ८ । आया-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १६१४ । पूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वेगरपुर ।

४४६१. होरामकरंव-गुसाकर । पत्र स० ४६ । मापा-सस्कृत । विषय-व्योतिव । र०कालimes । के काल imes । व्यप्तां । वेष्टनस० ११७ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

## विषय--ग्रायुर्वेद

४५६२. **ब्राजीर्ग मंजरी—न्यामतलां**। पत्रस० १२ । ब्रा० १२ ४६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-प्रापुर्वेद। र०काल स० १७०४। ले०काल स० १८२३। पूर्ण। वेष्ट्रन सं० ५३३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर प्रजमेर।

विशेष-- कति का ग्रतिम पाठ निम्न प्रकार है--

संबद् सतरेसी चतुर परिवा प्रगहेन मास ।
स पूर्ण ममरेज कहि कहों। अजीएं नाम ॥६६॥
सब देनन में मुकुटमिंग बागडदेस विक्यात ॥६६॥
सब स्तर फरेनुर पतिसार परिसदि प्रति विक्यात ॥६६॥
क्यामस्तान को राज जहा दाता सुर सुज्ञान ।
स्यामस्तान को यो स्ति स्वामि ॥१०१॥
विक्रकास्त्र को देनि करी नित यह कीयो बस्तान ।
पर उपकार के कारयों मो यह य सुक्तान ॥१०२॥
पर उपमार को सुनान कीयो मोक महीचरराज ।
नाजिप प्रस्ता पर रहे सदा । जि महाराज ॥१०३॥

इति श्री ग्रजीर्गानाम ग्रंथ सपूर्गा । स० १८२३ वैशाख बुदी ६ । लिखतं नगराज महाजन पठनार्थ ।

४५६३, ग्रम्तमंजरी—काशीराज । पत्र स०४। ग्रा० ११६ ४६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-प्राप्युदे । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णे । वेष्ट्रन स०४३२ । **प्राप्ति स्थान**—म०दि० जैन मन्दिर प्रायमेर ।

विशेष---हरिद्र्गें (किशनगढ़) मध्ये श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये।

४५६५. झमृतसागर—महाराजा सबाई प्रतापिसह। पत्रस० ३३१। छा०  $= \frac{2}{7} \times 4\frac{1}{3}$  इन्न । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आपुर्वेद । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० १०-८ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रनिद कोटडियो का हुंगरपुर ।

**५५६६. प्रतिसं० २**। पत्र स० १४ । म्रा० १० $\times$ ६ इन्त्रा । ले० काल  $\times$  । म्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० २१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान ब्रुंदी ।

विशेष -- स्त्रियों के प्रदर रोग के लक्ष्मण तथा चिकित्सा दी है।

**४.५८७. प्रतिसं० ३।** पत्र सं० १६४ । आर्ग्न  $= \frac{1}{2} \times$ ६ इ.च. । ले० काल  $\times$  । पूर्ग्। बेष्टन स० ४४२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर लग्कर जयपुर ।

विशेष—प्रमृतसागर ग्रंथ में से निम्न प्रकरण हैं। ग्रजीएं रोग प्रमेह रोग चौरासी प्रकार की बाय, रक्त पित्त रोग। ज्वर लक्षण, शल्य चिकित्सा, प्रतीसार रोग, सुद्ररोग, वाजीकरण, प्रदि।

५५६ म. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ म. आ० १३  $\times$  ६ इंच । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन स० ५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैसावा ।

विशेष--पत्र स० २६८ से धागे के पत्र नहीं है।

५५.६६. प्रति सः ५ । पत्रसं० २८७ । प्रा० १२ imes ७ इत्व । ले०काल स० १६०५ चैत बुदी ३ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन लण्डेलवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष — ग्रंथ में २५ तरंग (ग्रध्याय) है जिनमें ग्रायुर्वेद के विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

**१६००. प्रवधूत**—  $\times$  । पत्र स० १३ । प्रा० १०  $\times$  ४३ इस्त्र । नाया-सरकृत । विषय-ग्रायुक्तेंद । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १८०। **प्राप्ति स्थान**-म० दि० जैन सन्दिर ग्रावनेर ।

४६०१. **श्रांल के तेरह दोष वर्**षान —  $\mathbf{x}$  । पत्र स $_0$ ६ । श्रां०६  $\times$ ६ $_1^3$  इश्व । भाषा – हिन्दी । विषय —श्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० २०१ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन बन्दिर दवलाना (ब्रू दी) ।

विशेष—पुटकाकार है। तीसरे पत्र से प्रायुर्वेद के प्रन्य नुस्थे भी है। दिनका विचार चौघिष्ठया भी है।

**४६०२. ग्रात्मप्रकाश —ग्रात्माराम** । पत्र स० १४० । ग्रा० १२ $\S \times \S ^3_2$  इश्व । भाषा— हिन्दी । विषय—ग्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६१२ बैजाल सुरी १२ । पूर्ण । वष्ट्रन स० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पायवंताथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

**५६०३. ग्रायुर्वेद ग्रंथ**—  $\times$  । पत्र स० २५ । ग्रा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इव । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । ग्राप्तु । वे० ग० २१६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (वृदी) ।

**५६०४. धायुर्वेद ग्र थ**—×। पत्र स०६-। घ्रा०६ × ५ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-धायुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । ष्रपूर्ण । वे० स०२७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाला (वृदी) ।

• विशेष—ग्रायकेंद्र के नस्वे है।

५६०५. **श्रायुर्वेद ग्रन्थ**—पत्रस० १६ । भाषा सस्कृत । विषय-वैद्यकः । रनता काल 🗙 । के**काल** 🗴 । श्रपुर्त्य । वेष्ट्रन स० ७६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर मन्तपर ।

५६०६, म्रायुर्वेद ग्रंथ —  $\times$  । पत्र स०२३। म्रा०१० $\times$ ४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-म्रायुर्वेद । रक्ताल  $\times$  । लेक्ताल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स०१७०-१७६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायिसह (टोक)।

विशेष - वेष्टन म॰ ६ में समयसारनाटक एव पूजादि के फुटकर पत्र हैं।

५६०६. सायुर्बेर प्रंथ—  $\times$  । पत्रस० न०। म्रा० ६ $^{1}_{i} \times ^{1}_{i}$  इच्च । माषा-हिन्दी । विषय-म्रायुर्बेर । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ७३० । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रकार ।

१६०६. म्रायुर्वेद के नुस्के  $\times$  । पत्र सं०१६ । ब्रा०११ $^{\circ}$   $\times$  १ $^{\circ}$  इन्त । मापा-हिन्दी । विषय-भ्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । वेष्टन सं०६१४ । ब्रपूर्ग । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

विशेष---पत्र फुटकर है।

५६१०. प्रायुर्वेद के नुस्के —  $\times$ । पत्र स० ८। प्रा० ७ $\times$ ६ है इञ्च। प्राया-हिन्दी। विषय-प्रायुर्वेद। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० ६८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)।

४६११. प्रायुर्वेद निदान—  $\times$  । पत्र तः २२। प्राः ११ $\times$ ४ है इ.च. । मापा—मस्कृत । विषय— प्रापृवेद । रुकाल  $\times$  । लें० काल  $\times$  । प्रपूर्णं । वेष्टुन सं० ५४६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर कोटडियो का इनरगुर ।

५६१२. **प्रायुवॅदमहोदधि—सुबदैव ।** पत्रस०४०३ । भाषा-सस्कृत । विषय-घायुवॅद ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । ले० काल म० १६६६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुपरपुर ।

५६१३. श्रायुर्वे दिक शास्त्र—  $\times$  । पत्र स० ६४ । श्रा० ११  $\times$  १ इख । भाषा — हिन्दी ग० । विवय — श्राप्तें र । रुकाल  $\times$  । ते ० कान  $\times$  । श्रपूर्णें । वेष्टनस०६६ । श्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागरी युरी ।

५६१४. श्रोषधि विधि —  $\times$  । पत्र स० ४-२४। द्या० ६ $\times$  ४ $\xi$  इखं। भाषा- हिन्दी । विषय-धायुर्वेद । र० काल  $\times$  1 ने काल स० १७६३ मादवा मुदी २ । श्रपूर्णं । वेष्टन स० ३५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

**४६१४. ऋतुचर्या —वाग्भट्ट ।** पत्रस० ८ । स्ना० ११ $\times$ ६२ इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-स्रायुर्वेद । रक्ताल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । स्र्पूर्ण । वेष्टुन स०४४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पास्वेनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

४६**१६. कर्मविपाक —बीर्सिहदेव ।** पत्र स॰ १२ । मा॰ ६ $\times$ ४ इच्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रापुर्वेद । र॰ काल  $\times$  । ले॰ काल स ॰ १६४३ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्णे । वेष्टुन सं० ६७४ । **प्राप्ति** स्थान—भ॰ दि॰ जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष—इति श्री तोमरवणवतसमूरि प्रभूत श्री वीर्गीसहदेवविरचिते वीर्रीसह्।वलोक ज्योति शास्त्र कर्म विशक ग्रापुर्वेदोक्त प्रयोगोभिश्रकाध्यायः ।

४६**१७. कालज्ञान** —  $\times$  । पत्र स०२४ । घा०११ $\times$ ४ इच्च । भाषा-सस्कृत । विषय-घायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले०काल सं०१६१० । पूर्ण । वेष्ट्र स०२६२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर धाजमेर । ४६१८. कालज्ञान— × । पत्रसं∘ २६ । प्रा०क् रे ४३० हथा । प्राथा-संस्कृत । विषय-मायुर्वेद । र०काल × । ले०काल स०१६०२ सावन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं०१६३ । प्रास्तिस्थान— वि• जैन महिर पार्थनाथ जीमान बंदी ।

विशेष -- व्यास गोविदराम चाटस ने कोटा मे लिखा था।

५६१६. कालकान $-\times$ । पत्रस $\circ$ ६। प्राः ११ $\times$ ५६%। प्राण्न-सस्कृत। विषय- प्राप्वेद । र $\circ$ काल $\times$ । संपूर्ण। येष्ट्रन स $\circ$ ४६। प्राण्ति स्थान-दि $\circ$  जैन मन्दिर नगरी वृदी।

**५६२०. कालकान** —  $\times$  । पत्रस० ११ । मा० ११ $\S \times \S$  इन्छ । माषा — सस्कृत । विषय — मायुर्वेद । र०कान  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेध्दन स० २१५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्श्वनाय संदिर करनगढ ।

**५६२१. प्रतिसं• २।** पत्रस•३३ । घा० १०३४५३ इञ्च । ले०काल सं• १८७८ मगसिर बुदी ६। पूर्णा । वेष्टन सं• २१८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष -- चिरंजीव सदासुख ने प्रतिलिपि की थी।

४६२२. कारतज्ञान—  $\times$  । पत्रसं॰ ११ । ग्रा॰ १० $\times$ ४६३च । भाषा—सस्कृत । विषय— श्वापुर्वेद । र०काल  $\times$  । क्षे॰काल सं॰ १८८० । पूर्णे । वेष्ट्रन स॰ १२-६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

लिपिकृत कानकुरूब ब्राह्मए। शालिब्रोमेरा नगर मारवाड मध्ये सवत् १८८० मिती श्रावरा बुदी २ गुक्रवारे ।

**५६२३. प्रति सं० २ ।** पत्र स**० २-**१३ । ग्रा० १०२४४ इश्व । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टुत स० २०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१६२४. कालज्ञान माया—लक्ष्मोबल्लम ।** पत्र स०१२ । ग्रा०११ ४ ४ ∤ै डखा प्रापा— हिन्दी। विषय-प्रायुर्वेद। र० काल ४ । ले० काल स०१८८१ वैशाल सृती / पूर्णावेष्टन स०१४८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अत्रमेर।

**४६२४. कालक्रान भाषा**—  $\times$  । पत्रस० १२ । ग्रा० १ $\times$ ४६ न । भाषा - हिन्दी । विषय — ग्रापुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पाक्ष्वेनाथ मन्दिर चीगान बूदी ।

४६२६. **कालज्ञान सटीक**—  $\times$  । पत्र स० ३३ । ग्रा॰  $+ \times \cdot$  इस्त । भ्राषा सस्कृत-हिन्दी विषय—प्राप्तुर्वेद । र०काल  $\times$  । ते॰ काल  $\times$  । पूर्णे । वेष्ट्रन स॰ ४४७ । प्राप्ति स्थान—प्रद्वारकीय दि॰ जैन मन्दिर स्रजनेर ।

विशेष-- ७ वें समुद्देश तक है।

**४६२७. कृमि रोग का क्योरा**—  $\times$  । पत्रस्व १ । घा० १० ६ इन्छ । भाषा—हिन्दी । विषय — ब्रायुर्वेद । र० काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजगहल (टॉक) ।

४६२ म. कुष्टीचिकित्सा—  $\times$  । पत्र स॰ ६। मा॰ ११ $\times$ ६ स्वः। माण-हिन्दी । विषय- मायुर्वेद । र०काल  $\times$  । से॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ १४५३ । **प्राप्ति स्वान**—मट्टारकीय दि॰ जैन संदिर ग्रजभेर ।

**५६२६. गुरारत्नमाला—मिश्रमाव**। पत्र स० ४-६५। ग्रा० ११ $\times$ र्पृंह स्व। माषा— संस्कृत । विषय—मायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले०काल । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पण्डेनाष मन्दिर इन्दराइ ।

४६३०. चन्द्रोदय कर्ष्य टीका—कविराज शङ्क्ष्यर । पत्रस० ६। म्रा० १० ४७ इच । भाषा—सरकृत । विषय — म्रायुवॅर । र०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस०१०० । प्राप्ति स्थान—पर० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी व दी ।

४६३१. चिकित्सासार—घीरजराम । पत्र स० १२६ । ग्रा० १२ × ५३ इवा । मावा— संस्कृत । विषय—सायुर्वेद । र०काल × । से०काल स० १८६० फागुए। बुदी ११ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भटारकीय मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--ग्रजयगढ नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

धजमेर में पदस्य मदारक भवनकीति के शिष्य प० चतुर्भ जदास ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

४६३२. जोटा की विधि—  $\times$  । पत्र स० १। प्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ७ इच । माधा—हिन्दी । विधय-प्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ६६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमत्न (टॉक) ।

४६३३. ज्वर त्रिज्ञती – **शार्ङ्ग घर**। पत्रसं॰ ३३। मा॰ १imes४ $^2$  इश्व । भाषा-स स्कृत । विषय — मायुवेंद । र०काल imes । से॰काल स॰ १८८६। पूर्ण । वेष्ट्रन सं॰ २६१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सटारकीय मन्दिर स्रजमेर ।

विशेष--कृष्णगढ में देवकरण ने प्रतिलिपि की थी।

%६३४. ज्वर पराजय — ×ापत्र स०१६। झा०१०×४६वा । भाषा नसङ्कत । विषय – झायुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । झपूर्णे । वेष्टन सं०७। प्राप्ति स्थान — स०दि० जैन पदिर झजोरे ।

४६३४. दोषावसी —  $\times$  । पत्रसः २-४ । स्राः १० $\times$ ४ ६ सः । भाषा — हिन्दी । विषय — स्रायुवँद । २० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेष्टनसः ३६-२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटदियो का इ गरपर ।

५६३६. द्रव्यपुरा शतक —  $\times$  । पत्रसं० ३३ । प्रा० ६ $^3_{\nu} \times ^3_{\nu}$  इच । भाषा-सस्कृत । विषय—प्रापुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ४५४ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४६३७. नाडी परीक्षा— $\times$ । पत्रस $\circ$ ४। घा॰ ११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इंच। भाषा-सस्कृत। विषय— घायुर्वेद। र०काल $\times$ । ले० काल सं० १६१६। पूर्णं। वेष्टन सं० १४४। प्राप्तिः स्थान म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर। **५६३ म. प्रति सं० २ ।** पत्रसं० म. प्रा० ६  $\frac{1}{3}$   $\times$  ४ इश्वः । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्णे । वेष्टनसं० .५ । प्राप्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-पहिले सस्कृत मे बाद मे हिन्दी पद्य मे ग्रर्थ दिया हुन्ना है।

५६३६. प्रति स० ३ । पत्रस० ३ । घा० ८ ४ ६ इला । ले०काल म० १८६४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ८४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

४६४०. निघंदु— $\times$ । पत्रस० १६८। घा० १ $\frac{1}{3}$  $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय— सायुर्वेद। ग्र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टुनस० १०३४। प्राप्तिः, स्थान—अट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

५६४१. प्रतिसं०२ । पत्र स०३ से १२७ । ग्रा०१० 🗴 ४६ इञ्च । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०५६ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**५६४३. प्रतिसं०४** । पत्र स०६० । ग्रा०६×४ उल्ब । ले०काल १७५५ प्रथम ज्येष्ठ मुदी ६ । बेष्ट्रत स०३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**५६४४. प्रति सं० ५ । पत्र स**० ७० । **प्रा० २** $\frac{7}{3}$  $\times$ ६ इ.स. । ले॰काल म० १८८८ माघ बृदी **१० । पूर्ए** । बेष्टुन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टांक) ।

**५६४५. निघंदु**—  $\times$  । पत्रस०४६। स्ना० ६ $\frac{1}{2}$ × $\frac{1}{3}$ र व । भाषा — सस्कृत । विषय— स्नायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टत म०२१६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

**५६४६**. प्र**तिसं०२।** पत्र स०४६ । स्रा०१० $\times$ ४ है इख । **मे**०काल स०१७५३ कार्त्तिक सुदी ७ । पूर्णा। बेष्टन सं०२२१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

**५६४७. निघुटीका**—  $\times$  । पत्र स०५-१३। छा० ११ $^{3}$  $\times$ ५ $^{3}$ ६खा भाषा-सस्कृत। विषय—छायुर्वेद । २०काल  $\times$  । लेलन काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स०२४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दक्ताना (बृदी) ।

**५६४८. निदान** —  $\times$  । पत्र सः १६ । ब्रा० ११ $\times$ ७ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय ब्रायुर्वेद । र०काल $\times$ । ले० काल $\times$  । पूर्णः । वेष्टन स० २१६ । प्रा**प्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर राजमहल (टांक) ।

विशेष-पं वित्तसुख ने नृपहम्यं (राजमहल) मे प्रतिलिपि की थी।

**५६४६. निदान भाषा—श्रीपतमहु।** पत्र स० ६२ । ग्रा० ५<sup>3</sup> x ४ इच्च । भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—ग्रापुर्वेद। र०काल स० १७३० भादवा सुदी १३ । ले०काल स० १८१० ग्रासोज दुदी ४ । पूर्णा। वेष्टन स० ४४६ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर श्रवमेर।

विशेष--- प्रवकार परिचय---

गुजराती श्रीदीच्यकुलरावल श्रीगोपाल ॥ श्रीपुरुषोत्तम ताम सृत श्रायुर्वेद विसला ॥ तासो सुत श्रीपतिभिषक हिमतेषा परसाद। रच्यौ ग्रथ जग के लिये प्रभु को ग्रासीरवाद।।

५६५०, पथ्या निर्माय —  $\times$  । पत्रस०१। प्रा०१० $^2_4$  $\times$ ५ इव । प्राया — हिन्दी । विषय — प्रायुक्त । २० तकाल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१५३। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर पावनाथ चोगान बढी ।

**५६५१, पथ्य निर्**ग्य $-\times$ । पत्रस० -४। फ्रा॰ १२ $\times$ ४३। मापा-मस्कृत । विषय-**बा**युर्वेद ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण । बेहन सं० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५६५२. पथ्यापय्यनिर्माय — × । पत्र स० ११ । ग्रा० १०२ ×४३ इन्था । भाषा-सस्कृत । विषय-म्प्रापृदेदा १०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन सहिर ग्राप्ते में ।

**५६५३. प्रतिस०२ ।** पत्र स०१७ । घ्रा०१०×५ इला। ले० काल स०१८७**१ चैत्र** सुदी ५ । पूर्णा। वेष्टन स०३४३ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन मदिर लक्कर जयपुर।

**५६५४, प्रति सं० ३ ।** पत्रस $\circ$  १ । प्रा $\circ$  ११ $\frac{1}{4}$ imes $\frac{1}{4}$ imes $\frac{1}{4}$ imes $\frac{1}{4}$  $\frac{1}{4$ 

 $\chi \xi \chi \chi \chi \pi \pi \pi \circ \chi$ । पत्र स $\circ$  २१। ते $\circ$  काल  $\chi$ । पूर्णं। वेष्टन स $\circ$  २२६। प्राप्तिः स्थानः— दि $\circ$  जैन पार्यनाथ मिदिर इस्दरगढ (कोटा)।

४६४६ पथ्यापथ्य विचार —  $\times$  । पत्र स० ४२ । या० ६ $\times$ ४ $^1_2$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय — प्रायुर्वेर । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६० । प्राप्ति स्थान — भ० वि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

विशेष - क्रप्सगढ मध्ये निन्दापित ।

१६५७, पथ्यापथ्य विवोधक वैद्यालयदेव । पत्र स० २०२ । झा० ८ १% ६ १ इस । भाषा− सस्कृत । विषय आयुर्वेद । २०काल ४ । ले० काल स० १६०४ वैज्ञाल सुदी ६ । पूर्णे । वेष्ट्रन स० २२ । प्राप्ति स्थान—भ० वि० जैन मीन्दर छजनेर ।

५६५ म. पचामृत नाम रस— × । पत्रस० १०। ग्रा० १२×५ हु च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रायुद्धरा ००० लाल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन त० ४३४ । ग्रास्ति स्थान—स० दि० जैन मदिर अवोर ।

विशेष--१० पत्र से आगं नहीं है।

५६५६. प्रकृति विच्छेद प्रकरण—जयतिलक । पत्रस $\circ$  २ । प्रा $\circ$  १ $\frac{2}{5}$   $\times$  ५ $\frac{2}{5}$  इंच । भाषा— सस्कृत । विषय-प्रापृष्टें । र $\circ$  काल  $\times$  । ले $\circ$  काल  $\times$  । पूर्णे । वेष्टन सं $\circ$  १२४३ । प्राप्ति स्थान—भ $\circ$  दि $\circ$  जैन मन्दिर अनेप ।

५६६०. पाक शास्त्र— $\times$ । पत्रस०१२। प्रा०१० $^{3}$  $\times$ ५३म । भाषा—सस्कृत। विषय — प्रायुक्त । र० काल  $\times$ । प्रेर कोटियों । वेष्टन सं०१६५–५०। प्राप्ति स्थान – दि० जैन संदिर कोटियों का इनस्प्राः।

विशेष-- विविध प्रकार के पाकों के बनाने की विधि दी है।

**४६६१. बाल जिकित्सा**— $\times$  । पत्रसं० २०। घा० १० $\times$ ५ $^{3}$ १ व । गाया-संस्कृत । विषय-घायुर्वेद । रक्शाल  $\times$  । लेक्शाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स० १०५/५०। **प्राप्ति स्वान**—दि० जैन मिन्दिर कोटडियों का ड'गरपुर ।

**४६६२. बालतंत्र**— $\times$  । पत्रसं० ३१। प्रा० ११ $\times$ ६ इ.च.। भाषा—संस्कृत । विषय— **बा**युर्वेद । र० काल  $\times$  । ले०काल सं० १७४६ । बेष्टुनसं० ४३१ । प्राप्ति स्थान— मट्टारकीय दि० जैन सन्दिर मज्जेर।

**४६६३. बालतंत्र भाषा—पं० कत्यारमवास** । पत्र सं० ६६ । झा० १२ $\times$  प $^2_7$  इञ्च । माषा—हिन्दी । विषय—झायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८८६ क्रवाढ सुदी १४ । पूर्ण । बेहन स० ४२० । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर क्रवमेर ।

४६६४. **बंघफल**—  $\times$  । पत्र सं०१ । ,मा० ११ $\times$ ४ डञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मायुर्वेद । र०काल $\times$ । ले० काल $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स०३७ । **भाषित स्थान**—दि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

४६६४. बंध्या स्त्री करय $-\times$ । पत्रस० १। मा० १० $\frac{1}{2}\times V_0^2$  इखा भाषा-हिस्दी। विषय-मायुर्वेद। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णे। बेष्टन स० २२३। प्राप्ति स्थान-म० दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रुदी)।

... विशेष --- सतान होने भादि की विधि है।

**४६६६ सावप्रकाश**—**भावसिक्ष**ा पत्रसः १४३। प्रा० १३imes६६ दः । माषा-सस्कृत । विषय-प्रापुर्वेद । र०काल imes । ते० काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सिंदर नागदी बूदी ।

विशेष-प्रथम खड है।

**४६६७. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० २३० । ग्रा० १४ imes६ दुः इन्द । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टुनसं० १४ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष---मध्यम खड है।

**४६६**न. **सावप्रकाश**— $\times$  । पत्र स $\circ$  ६ । आ $\circ$  १३ $\frac{1}{2}$   $\times$  ६ $\frac{1}{5}$  इन्छ । भाषा—सस्कृत । विषय- आयुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले $\circ$  काल  $\times$  । अपूर्ण । बेहुनस $\circ$  २२६ । **प्राप्तिस्थान**-दि $\circ$  जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरसङ्क्रीकार (कीटा)

४६६६. सावप्रकाशः— ४ । पत्र स० २-६४ । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रायुर्वेद । र०काल ४ । ले०काल ४ । प्रपूर्ण । वे०स०४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहण्यी मन्दिर बसवा ।

४६७०. साधवितदान—साधव । पत्रस० २१० । म्रा० ११ $\frac{1}{4}$  $\times$ ८ दश्व । भावा—सरकत । विषय— । र०कात  $\times$  । से०कान स० १११६ मासोज मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—स्वास्कीय दि० जैन मंदिर मजसेर ।

४६७१. प्रति सं० २ । पत्र स० ७८ । प्रा० १०१ × ४३ दश्य । लेक्काल स० १७१० । पूर्ण । वेष्टन स० ४४६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रकोर ।

विशेष---प्रति टब्बा टीका सहित है।

**५६७२. प्रतिसं० ३।** पत्र स०१२६ । फ्रा०१०×४ रै इञ्च । ले० काल सं०१८५५ ।पूर्ण। वेष्टन स०५२६ । **प्राप्ति स्थान**— म०दि० जैन मन्टिर ग्रजीर ।

४६७३. प्रति सं० ४ । पत्रस० १२६ । घा० १२३ ४६ इ.च. । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १४६६ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**५६७४. प्रतिसं० ५।** पत्र स० ४६। म्रा० १०×४ इञ्च । ले०काल स० १८२२ । म्रपूर्ण । वेष्टन स० २५६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन म्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६७४. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० १११ । घा० १० ४४ इञ्च । ले०काल स० १८७४ ज्येष्ठ मुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन स० १३३। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर स्रादिनाय बृदी ।

४६७६. प्रति सं०७ । पत्र स०४६ । ग्रा० १२ $\times$ ४ है इञ्च । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पंचायती दृती (टोक)

**५६७७. प्रति सं० म ।** पत्र स०म्६ । आ० १० $\times$ ४ $^3_{\nu}$  द्वन्य । ले० काल सं० १६२२ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टुन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० नैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष-ऋषि मायाचद ने शिवपुरी मे प्रतिनिपि की थी।

४६७८. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २६ । ब्रा० -5  $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  इ.ख । से०काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । बेहन सं० ६८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

४६७६. साधव निदान टीका—वैद्य वाचस्पति । पत्रसं० १३६ । झा० १२४ ५ हे इत्त्र । भाषा—सस्कृत । विषय— प्रायुर्वेद । र०काल ४ । ले०काल स० १६१२ साघ सुदी ४ । पूर्णे । वेष्टनसं० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय वृदी ।

विशेष .. दयाचन्द ने चपावती के भ्रादिनाय चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

५६००. सूत्र परीक्षा—  $\times$  । पत्र स०२ । म्रा० १२ $\times$ ५ $\frac{1}{5}$  इञ्च । काषा— सस्कृत । विषय— म्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ७४३ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर मजमेर ।

**१६८१. पूत्र परीक्षा**—  $\times$  । पत्र स॰ १ । प्रा॰ १० $_1^2 \times _2^2$  इश्वः । भाषा—सस्कृत । विषय—प्रायुक्त । र०काल  $\times$  । लेक्काल स॰ १८६० पीव सुदी ६ । पूर्णः । वेष्ट्रन स॰ ११६६ । प्राप्ति स्थान—म॰ दि॰ जैन मदिर धजमेर ।

५६ स्ट, सूत्र परीक्षा—  $\times$  । पत्र स० ५ । प्रा॰ स्ट्रैं रूचा । साथा— सस्ट्रत । विषय— वैद्यक । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७ म्४ । पूर्ण । वे० स० २१२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुंदी ।)

४६०३. योगांचतामरिए — हर्षकीर्ति  $\times$  । पत्रसः १६०। प्रा॰ ११ $\frac{1}{2} \times \mathbb{I}_{2}^{\frac{1}{2}}$  इत्था । प्राधा— संस्कृत । विषय — प्रायुर्वेद । र० काल । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टुन स० १५६४ । प्राध्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मन्दिर धनमेर ।

**५६ दर्ध, प्रति सं०२।** पत्र सं०५०। घा०१२ $\times$ ५१ इच्च। ले**०काल**  $\times$ । घ्रपूर्ण। वेष्टन स०४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा।

विशेष--प्रति टीका सहित है।

**४६८४. प्रति सं०३।** पत्र स०४१ । आर्० ६ै,४४<sub>१</sub> इश्वा ले**०**काल स०१८७३। पूर्ण । वेष्टन सं०२७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बंदी ।

विशेष - बुन्दावती ग्राम मे नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

**४६८६. योगींबतामिए**न $\times$ । पत्रस०६६। आ०१२ $\frac{1}{2}$  $\times$ प $\frac{1}{2}$  = । भाषा—सस्कृत । विषय- आयुर्वेद । २०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं० १६३-८०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का ड्रंगरपुर ।

**४६०७. योगींजतामिंग टीका—ग्रमरकीति ।** पत्र स० २४६। प्रा० ६ $\frac{1}{2}$  × $\frac{1}{2}$  दश्च। प्राण-सस्कृत । विषय—प्रापुर्वेद । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १८२७ मगिसर मुदी १४। पूर्ण । वेष्टन स० १३०६। प्राप्ति स्थान—२० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

**४६८६. योगतरिंगगो**—**त्रिमल्ल मट्ट**। पत्र स०११४। मा० १० $\times$ ४ $_{g}^{2}$  इखा । माषा— सस्कृत । लियय—मायुर्वेद । र०काल  $\times$ । लेक्काल स०१७७४ माषाढ मुदी १ पूर्ण । बेष्ट्नस०१७६। **प्राप्ति स्थान**—म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४६न्हर योगमुक्तावली—  $\times$  । पत्रस्क १। माः १०३  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । माषा-सस्कृत । विशेष — मायुवँद । लेकनाल  $\times$  । पूर्ण वेष्टनसक्त । प्राप्ति स्थान --म० दि० जैन मन्दिर क्रजमर ।

५६०. योगशत —  $\times$  । पत्रस० १३ । प्रा॰ २३  $\times$  ४१ व्हन्त । माषा—सस्वत । विषय- स्रायुर्वेद । रकाल  $\times$  । लेकाल स० १७२६ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं॰ १२४४ । प्राप्तिः स्थान- म० दि० जैन मन्दिर स्रवनेर ।

विशेष -- पचनाइ मे प० दीपचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

५६९१. **'योग**शतः — × । पत्र स**०**६ । झा०१०<sup>1</sup>२४४ है इश्वः । भाषाः सस्कृतः। विषय— योगश्रास्त्र । र०कालः × । ले० कालः × । पूर्णा वैष्टनः स०१७० । **प्राप्तिः स्थान**— स०दि० जैन मन्दिर खन्तेर ।

५६६२. **योगशत** -- × । । पत्रस० १४ । मा० १२ × ४१ इ.च । भाषा —सम्कृत । विषय— स्रायुक्तद । २०काल × । के०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११०८ । **प्राप्ति स्थान** —म० दि० जैन सर्वित्र स्वजीत

५६६३. योगशत $-\times$ । पत्र स०२-२२। ग्रा०१० $\times$ ४ इक्षः। माधा-सस्कृतः। विषय-ग्रापुर्वेदः। र०काल  $\times$ । ले० काल सं०१६०६ । यपूर्णः। वेष्ठन स०६७। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन संदिर राजमहल (टोक)

विशेष -- प्रति प्राचीन है तथा जीएाँ है। ग्राये पत्र में हिन्दी टीका दी हुई है।

टोका — श्लोक १६ —

बाता जुः। स्थाप्याः वास ३ गिलोयं किरमालो। काढो किर एरड को नेल ट ४ माहि धालि पीवएग्या समस्त झरीर को वानरक्त भाजइ। वासादि क्वाय रसाजन-ध्यास्या-रसवित चौलाई जड। मधु। चावल के धोवए। माहिधालि पीवएगिया प्रदक्ष भाजइ। ४६६४. योगशत टीका—  $\times$  । पत्र स० २०। आ० ११ $\times$ ४ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय— प्रायुर्वेद । रक्काल  $\times$  । ले०काल स० १७७६ कार्तिक सुदी १०। बेष्टन स० १३७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैनमन्दिर प्रादिनाथ बुंदी ।

विशेष -- प्रारम्भ---

श्री बर्ड मान प्रशिपत्य मुघर्न समतभद्राय जनाय हेतो।

श्री पुर्णसेन मुखबोधनार्थं प्राम्रयते योगशतस्य टीका ॥

ग्रन्तिम — तपागच्छे पुन्यास जी श्री तिलक सौभाग्य जी केन लिखपित भैसरोडदुर्ग मध्ये ।

**५६६५. योगशत टीका**— $\times$ ।पत्रस० २१। प्रा० १० $\frac{1}{5}$  $\times$ ४ $\frac{1}{5}$ इख । माषा—संस्कृत । विषय— प्रायुक्त । र०काल  $\times$  । ते० काल म १८५४ । पूर्ण । वेष्टन म० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर पाण्येनाथ इत्दरगढ ।

विशेष —१०५४ वैशाले सिते पक्षे तिथी द्वादश्या दानविमलेन लिपि कृत नगर इन्दरगढ मध्ये विजये राज्ये महाराजा जी श्री सुनमानीसह जी—

५६६६, योगशतक—धन्वन्तरि । पत्रस० १६ । झा० × ६४६ इल । साधा—म स्कृत । विषय - ब्रायुक्तेर । र०कान × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०७५ । प्राप्तिः स्थान—स० दि० जैन महिर क्रजमेर ।

विशेष-नेमीचद ने लिखवाया था।

५६६७. प्रतिसं० २ । पत्रस० १० । ले॰काल १६४३ । पूर्ण । वेप्टन स० १०७६ । प्राप्ति स्थान — २० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

४६६ म. योगशतक $-\times$ । पत्रस० १५ । म्रा० १३ ४४ हु इञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय— म्रायुवेंद । र०काल  $\times$ ।ले० काल स० १८७३ फागुरा सुदी ४ । पूर्ण ।वेष्टन स० ४४२ । प्रास्ति स्थान— भट्टास्कीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-चेला मोहनदास के पठनाथं कृष्णगढ (किशनगढ़) मे प्रतिलिपि हुई थी।

**४६८६ योगसार संग्रह(योगशात)** —  $\times$  । पत्र स॰ ३१ । ग्रा०४ $\times$ ३१ इ व । भाषा— $संस्कृत । विराय — ग्रापुर्वेद । र०काल <math>\times$  । ले०काल स० १८२० । पूर्ण वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति** स्थान—भ०दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

५७००. रत्नकोश—उपाध्याय देवेश्वर । पत्र स॰ २६७ । म्रा० ११ $\times$ ६ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय—प्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल स॰ १६२१ प्रषााढ सुदी १ । पूर्णे । वेस्टन स० १२७७ । प्राप्ति स्थान—भ० वि० जैन मदिर प्रजमेर ।

५७०१. रसर्चितामिए।— $\times$ । पत्र स० १६ । आ० १ $\frac{3}{2}$   $\times$ ४ इ.च । माषा-सस्कृत । विषय – आयुर्वेद । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स० ४४५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर स्रवनेर ।

४,७०२. रसतरिमिसी—भानुदसः । पत्र स• २४ । आ ० ११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आधुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले०काल स॰ १९०४ वैद्याल बुदी २ । पूर्णं । वेन्टन म० १२६३ । प्रास्ति स्थान— म० दि॰ जैन मन्दिर अजमेर ।

**५७०३, प्रति सं० २** । पत्र सं० ३१ । घा० ११ 🗴 ६ इ.च. । ले० काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टुत सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर प्रभिनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष-व्यास श्री सालिगरामजी ने बाह्मए। हरिनारायए। गूजर गौड से प्रतिलिपि करवायी थी।

**४७०४, रसतरिंगर्गो — बेर्गोदस**ा पत्र सं० १२४ । मा० १००६ ४५ हरून । भाषा-सस्कृत । विषय-मापुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६४४ भादो बदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० २०४ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मंदिर प्रीभनस्न स्वामी, बंदी ।

४७०५. रसपद्धति—  $\times$  । पत्रसं० ३६। प्रा० ११ $\times$ ५ हुन्न । प्रापा-सस्कृत । विषय-प्रायुर्वेद । ग्रकाल  $\times$  । सेक्झाल स०१८२६ वैज्ञाल बुदी १० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ५४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्राविनाथ बंदी ।

विशेष-वहा जैन सागर ने धारम पठनाथे लिखा ।

५७०६. **रस मंजरी - मानुबस्त** । पत्र स०२४ । घा० १०×४६ व । मापा---सस्कृत । विषय-पायुक्ट । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । बेष्टन स०१६३ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर कोष्णयों केटा ।

**५७०७. रसमंजरो—शालिनाय** । पत्रस०४४। ब्रा० ११ $\times$ ४- इस्त्र । भाषा-संस्कृत । विषय-ब्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८२६ ज्येष्ठ बुदो ५ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं०४४४ । **प्राप्ति** स्थान—न० दि० जैन मंदिर प्रजमेर ।

**५७०६. रसरात्माकर—ित्यनाथसिद्ध**ा पत्रस०७१। ग्रा॰ १०×६ इचा । मापा-सस्कृत। विषय-ग्रायुर्वेद। र० काल  $\times$ । ले०काल स०१८७१। पूर्णः। वेष्ट्रन स०३५१। प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर।

५७०६. प्रति स० २ । पत्रस० २-१६ । या० ११ ४४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय— ग्रायुर्वेद । र० काल ४ । के०काल ४ । ग्रार्ग्ण । वेष्ट्रन स० ३६६/२०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मदिर उदयपर ।

५७१०. रसरस्नाकर—रस्नाकरः। पत्रसः ४८ । प्राः १२  $\times$  ४ ६वा । भाषा-सस्कृत । विषय-सापुर्वेद १०काल  $\times$  । लेक्शाल  $\times$  । प्रपूर्णः। बेहनसंक २३३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पार्थनाय मिट प्रदत्यका क्षीत्रा

%७११. रसरत्ताकर $-\times$ । पत्रस $\circ$ ६०। धा $\circ$ १० $\times$ ४ इञ्च । भाषाः संस्कृतः। विषय-झापुर्वर । र०काल $\times$ । । अपूर्णः। बेष्टनसं $\circ$ २०३ । प्राप्तिः, स्थान-दि $\circ$  जैन मन्दिर राजसङ्ग्त (टोकः)।

४७१२. रामिबनोद —नयनसुख । पत्रस० १०० । ग्रा० ५×५ इच । माषा-हिन्दी । विषय-म्रायुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १००० फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२७ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेट ।

विशेष--प॰ दीपचन्द ने भागी नगर मध्ये लिखित ।

५७१३. रामिवनीय — राममन्त्रः । पत्रसः १६२ । छा॰ - १ $\times$  ४) द्रश्यः । मापा-हिन्दी (पद्यः) ।विषयः नद्यकः । रुकालः  $\times$  । ते॰कालः सं० १८२७ । पूर्णः । वेष्टनसः १२२२ । प्राप्तिस्थान — भ० दि० कैन पीदिर प्रजानेरः ।

५७१४. प्रति सं०२ । पत्रस० ०३ । प्रा०१० $^2_{\sigma}$  $\times$  $^2_{\tau}$ ६% । र० काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्णे । बेष्टनस०१३५६ । प्राप्ति स्यान—भ० दि० जैन मदिर ग्रजनेर ।

५७१५ प्रति स० ३। पत्र स० १८। घा० १२×६ इञ्च। ले॰काल स० १८८८ द्वितीय वैज्ञाल बुदी २। पूर्ण । बेष्टुन स० २४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोक)।

५७१६. प्रति सं० ४ । पत्रस० ११४ । म्रा० ११९ ४ इञ्च । ले०काल स० १७३० । पूर्ण । बेष्टुत स० २०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फ्रांभनन्दन स्वामी, बुदी ।

४७१७. रामिवनोद $-\times$ । पत्र स०५१। घा० १० $\times$ ४ | इत्र । नापा-सस्कृत । विषय- घापुर्वेद । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ ११। प्राप्ति स्थान — ध्रयवाल दि० जैन सदिर उदयपुर ।

४७१८. लंबनपथ्यतिराये — × । पत्रस्य १६। प्रा १२४५ है इञ्च । भाषा-सस्त्रत । विषय — प्रायुर्वेद । रकाल × । ते० काल स० १८६० कार्तिक बुदी १। पूर्ण । बेप्टनस०४३५ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर ग्रवसेर ।

विशेष-मो ीराम बाह्मण ने गो भीनाथ जी के देवरा में लिखा था।

५७१६. लाजनपथ्य निर्माय —  $\times$  । पत्रस०१२। मा०११  $\times$  ६ इन्छ । मापा-सस्हत । विषय-आपुर्वेद । र० काल  $\times$  । ने ब्राल स० १४४६ बैशास बदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० ४६६ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर सजसेर ।

५७२१. वंशक प्रंय —  $\times$  । पत्रस० ४२ । घा० ६ $\frac{1}{2}$  ६२३ । भाषा सस्कृत । विषय- घापुर्वेद । र०काल  $\times$  । त्रे०काल  $\times$  । त्रुणं । वेष्टन स० २२६–६१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का ड्यरपुर ।

४७२२. वैद्यक ग्रंब $-\times$ । पत्र सं०२। ग्रा०१० $\times$ ४ $^{1}_{7}$  इश्व। भाषा-िहन्दी। विषय- ग्रापुर्वेद। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टनसं० १६१ **प्राप्ति स्थान** -िद० जैन मन्दिर नेमिनाय टीकारायसिंह (टॉक)

विशेष--भायुर्वेदिक नुससे दिये हये हैं।

**५७२३. बैद्यकरा ब** $-\times$ । पत्र स॰ ४ । मा० १० $\frac{7}{2}$  $\times$  $^{7}{2}$ इचा । भाषा-सस्हत । विषय - मायुर्वेद । र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स० १४-६२२ । प्राप्ति स्थान-िद० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- कम स० १६/६२३ से २४/६३० तक पर्गा अपूर्ण वैद्यक ग्रंथो की प्रतिया है।

**५७२४. वैद्यक नुस्खे**— $\times$  । पत्र स॰ ४ । स्रा॰ ५ $\c^2$ ४४ $\c^3$  इश्व । भाषा—सस्कृत । विषय— वैद्यक । र०काल $\times$  । ने०काल $\times$  । पूर्ण ।थेष्टनस॰ १२४६ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि॰ जैन मन्दिर धवमेर ।

प्र७२५. वैद्यक नुस्के—×। पत्र स०४ । भाषा सःकृत । विषय-बायुर्वेद । र०काल ४ । के•काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०४०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूनरपुर ।

५७२६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५० । लेब्बाल 🗴 । पूर्गा । बेष्टन स० ४०१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डुगरपुर ।

**५७२७. वैद्यक शास्त्र—** $\times$  । पत्र स०२०३ । आ०१२ $\times$  ५ $^{\circ}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी (गळ) । विषय-आधुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१८६२ चैत बुदी  $\varepsilon$  । पूर्ण । वेष्टन स० ७११ । **प्राप्ति** स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अवभेर ।

**५७२८, बैद्यक शास्त्र** —  $\times$  । पत्रम० १६।ग्रा० ११ $\frac{1}{2}$  ४५ $\frac{3}{2}$  इखा । भाषा —सस्कृत । विषय-धायुर्वेद । र०काल स ०  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेटन स० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर दन्दरगढ (कोटा)

५७२६. वैद्यक समुच्चय—×। पत्रस० ५१। ग्रा० ६२५ इन्च । भाषा — हिन्दी । विषय— वैद्यक । र० काल  $\times$  । ले०काल १६८० फागुगा गुदी १५ । पूर्ण । वेष्ट्न स० १७८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाला (वृदी)

**विशेष** —दिलिकामङले पालवग्राममध्ये लिखित ।

४७६०. बैद्यकसार— $\times$  । पत्रस० ५२। मा० ५ $^1_2$  ४६ $^1_3$  इन्ता । माणा—सःस्कृत । विषय-धावेंबुद । र०काल  $\times$  । ले०काल म०१६४३ कार्तिक मुदी २। पूर्ण । वेष्टन स० ३७–२१ । **प्राप्ति** स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

५७३१. वैद्यकतार—हर्षकीति । पत्रस॰ १५ से १६१ । ब्रा॰ १२ × ४३ डव्स । माया-सस्क्रन । विषय-प्रापुर्वेद । र० काल × । लेव्काल स० १८०५ चैत्र बुदी ३ । ब्रयूर्ग । बेष्टनस० १७७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर ।

५७३२. प्रति स०२ । पत्रस० ३४ । प्रा०१० $\times$ ४ हुँ इ.च.। लेक्सल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स०२५२ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५७३३. प्रति सं० ३ । पत्रस० १७४ । प्रा० ११ $\frac{3}{6} \times \frac{1}{6}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । बेध्यन स० ३४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-प्रणस्ति मिटा रस्त्री है।

५७३४. बंद्य जीवन—लोतिम्बराज । पत्र स० ५१ । म्रा० १ imes ६ इख । मापा-सस्कृत । विषय-मायुर्वेद । ले॰काल स० १६१२ । पूर्ण । बेष्टनस॰ २६६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रयमेर ।

५७३५. प्रति सं०२ । पत्र स०३७ । ६००६ १४४ १ इ.च.। ले० काल ४ । पूर्णावेष्टन स०१२४० । प्राप्टित स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

५७३६. प्रति सं० ३ । पत्र स०६। ते० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० १२४१ । प्राप्ति स्थान—२० दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

५७३७. प्रति सं० ४ । पत्र स० १४ । ग्रा० ११ x ४१ डख । ले० काल x । ग्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १६४-८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इगरपर ।

५७३ म. प्रति स० ५ । पत्र स० १२ । घा० ११ 🛮 ४ ¦ इचा । ले० काल 🗡 । पूर्णे । वेष्टनस० १५६६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

५७३६. प्रति स०६ । पत्रस०१६ । द्या०११२,४५३ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण। बेष्टनस० १५४ । प्राप्तिस्थान — भ०दि० जैन मदिर अजभेर ।

**५७४०. प्रतिसं० ७ ।** पत्र म० ५३ । **प्रा० १०** $\frac{1}{2}$  $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  दुञ्च । ले० काल स० १७५३ कार्तिक बढी ७ । पूर्ण । बप्रन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—पाष्ट्रवैनाय दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

५७४१. प्रतिसं० म । पत्र स०१७ । मा०११ $\frac{1}{2}$ ×१ $\frac{1}{2}$  इख । ले० काल स०१म्म० मंगसिर सुदी १ । पूर्ण । बेपून स०२२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५७४२. प्रति सं० ६ । पत्र स० २४ । आ० ११×५ इश्व । ले० काल स० माघ सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन म० ६ । प्राप्ति स्थान—ंद० जैन मन्दिर दबलाना (बृदी) ।

५७४३. प्रतिसं० १० । पत्र म० १३ । छा० १० $_{g}^{2}$   $\times$  ४ $_{g}^{2}$  इख । ले० काल स० १८०१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । लेष्ट्रन म० ३०४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष - वातीली नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

५७४४ प्रतिसं० ११ । पत्र स० १२ । द्या० १२ × ५ै इञ्च । ले०काल स० १६७६ । पूर्ण । बेष्टन स० =५ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पाक्ताथ मन्दिर चौगान बूटी ।

४७४४. प्रति स० १२ । पत्र स० ३६ । ग्रा० १० ४ १३ इञ्च । ले०काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टुन स० २०४ । प्राप्ति रूथान-दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान सूदी ।

विशेष —हिन्दी धर्य सहित है।

५७४६ प्रतिसं० १३ । पत्रस० १२ । ग्रा० ११×४३ इथा । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५७४७. प्रतिसं० १४ । पत्रस० २३ । ग्रा० ११ $imes Y^2_2$  इञ्च । लेकाल स० १५२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्राभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष-साहपुरा के गातिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

ጲও४६. प्रति स० १४ । पत्रस० २ से १६ । मा० १०×४ इचा । ले० काल सं० १७१७ । म्रपूर्ण । बेष्टनसं० २ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर म्रादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक) । ५७४६, वैद्यजीवन टीका — हरिनाथ । पत्र सं०४४। ब्रा०११४४ इश्व । भाषा -स स्कृत । विषय – प्राप्टुवेंद । र०कारा ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१२३६ । प्राप्ति स्थान — प्र० दि० र्जन मन्दिर क्रवभेर ।

१७१०, प्रतिसं०२ । पत्रस०३७ । ग्रा०१२ × ४ ृँ इश्वा ले०काल × । पूर्णा केट्टनस० ६४४ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मन्दिर मजमेर ।

५७५१ प्रति सं०३। पत्रस०४१। आ०११ $\times$ ५ $^2$ , इंब। भाषा — संस्कृत। विषय — आयुर्वेद। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्ट्रनस०४००। प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर स्वयोर।

५७५२. प्रति सं० ४ । पत्रस०१६ । ले॰काल स० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन स०४१० प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर खजमेर ।

**५७५३. प्रति सं० ५ ।** पत्र स**० ३१ । आ० १०** $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इश्व । ले०काल  $\times$  । बेप्टन स०३३६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५७५४. प्रतिसं०६ । पत्रस० ३१ । ब्रा०१० $\frac{3}{7}$  $\times$ ५ इचा । ले० काल imes । बेष्टुनस० ३४० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

५७५५, वैद्यानीवन टीका — रहमट्टा पत्रस० ४१ । बा० ११४४ है इञ्च । भाषा - सस्कृत । विषय — ब्राहुर्वेद । '०कार ४ । ले० काल० स०१८८५ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रनस०११६३ । प्राप्तिः स्थाप — भ० दि० जैन सन्दिर स्रजीर ।

५७५६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४६ । लेब्काल स० १८८५ प्रथम धापाह बुरी ऽऽ। पूर्ण । वेष्ट्रत स० १९६७ । प्राप्ति, स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर खबर्गर ।

विशेष - प० देवकरमा ने किणनगढ़ में नेमिनाय चैन्यालय में प्रतिलिपि की थी।

५७५७ **वैद्यक प्रश्न सपह**— ४ । पत्र म० १० । ग्रा०१११ॄ४५ इला । भाषा—सस्क्रत विषय—चाऽवेद । ०७५० ४ । ने०काल ४ । गूर्मा । देष्टनस० १०६३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टाग्कीय किल्कोन महिष्य प्रश्नम ।

४,७४८. वैद्यामनोत्सव—केशवदास । पत्र स $\circ$  ३४–४७ । आ $\circ$   $\circ$ , ४६, दश्च । आया—सन्द्रत । वियय — रुप्युवेद । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  ३६६–१४० । प्रास्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

५७५९. प्रति स॰ २ । पत्र स० ३ । ग्रा० १३×५ इज्य । ले०कास × । श्रपूर्ण । बेष्ट्रनसं० ३३-१३६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्यासह (टोक) ।

१७६०. **वेदा मनोत्सव — नयनसुख ।** पत्र स०११ । घ्रा०१३/४४३ इञ्च । घ्राया-हिन्दी । विषय — ग्रायुर्वेद । रक्काल म०१६४६ ग्रायाड सुदी २। लेककाल स०१६०० भाववा सुदी १। पूर्ण । वेद्युत्त संक १०७७। प्राप्ति स्थान— महारकीय दिव जैन मन्दिर घडमेर ।

५७६१ प्रति स० २ । पत्रस० ११ । ब्रा०१० . ४४ ट्रेडचा ले∘काल स० १८६१ । पूर्ण। बेष्टन स० १०२६ । प्रास्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर । ५७६२, प्रति सं०३ । पत्र सं०४ । म्रा०६×६ इञ्च । ले० काल सं०१ ६२२ म्रायाढ बुदी ६ । पूर्ण । बेवन स०५०६ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर म्रजमेर ।

५७६३. प्रति सं० ४ । पत्र तः १२० । धा० ६ ४४ ) इचा । ले०काल स १८३५ । पूर्ण । वेष्टत स० ८६५ । प्राप्ति स्थान—पट्टारकीय दि० जैन मन्दिर क्षत्रमेर ।

विशेष — गृटका साइज मे है। १९७६ ४ समि सार १। स्वयंत्र २६। सार १०१४४ व्यव । जेर काल सर १८६७

४.७६४. प्रतिस०४.। पत्रसं०२६ । घा०१०}४४ इ.च.। ले०काल स०१८६७ माह बुदी २ । पूर्णा वेष्टनस०४७३ । प्राप्ति स्थान - महारकोय दि० जैन मदिर घजमेर ।

५७६५. प्रतिसं०६ । पत्र स०३७ । प्रा०६ $\times$ ४३ दश्व । ले०काल स०१८८४ सगसिर बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स०६६६ । प्राप्ति स्थान भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष - पं० क्षेमकरण ने किशनगढ मे प्रतिलिपि की थी।

५७६६. प्रति सं० ७ । पत्र त० १७ । स्ना० १० $^{\circ}$  $\times$ ५ $^{\circ}$  इश्व । ते०काल स० १०५१ ज्येष्ठ मुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टौक)

विशेष - लिखी कृस्याली रामपुरा मध्ये पडित भू गरसीदास ।

५७६७. प्रति स० म । पत्र स० १६ । ब्रा० ११ $_{F}^{3}$ imes६ इच ।ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

५७६८. वैद्यरत्न भाषा – गोस्वामी जनादंन भट्ट । पत्रस०२०। प्रा० ५ $\frac{3}{2}$  ×  $\frac{1}{2}$  इच्च । भाषा – सरहत । विषय — धावुर्वेद ।  $^{2}$ ०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्णे । वेष्ट्रनस०२४६ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर राजमहत्र (टोक)

विशेष — लिखित साधु जैकृत्समहतजी श्री प्रवीदासजी भाडारेज का शिष्य किशनदास ने लिखी हाडोती सेरगढ मध्ये ।

१७६६. वैद्यारम भाषा—  $\times$  । पत्र म० ४७ । या० १०  $\times$  १ इञ्च । माया-हिन्दी (पद्य) । विषय— प्राप्नुवेंद । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४१६ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

५७७०, बैद्यवस्त्मभ $--- \times 1$  पत्रस०२६४ । द्या० १ $\times$ ४ ६ व्या भाषा सस्क्रत । विषय- ब्यायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टनसं०६ । प्राप्ति स्थान- महारकीय दि० जैन मदिर क्रवमेर ।

विशेष -- प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

५७७१. प्रति स० २ । पत्र स० २४ । स्रा० १०३ ४४ इञ्च । ले०काल ४ । स्रपूर्ण । बेष्टुनसं० २६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थ्याय इन्दरगढ (कोटा)

१७७२. वैद्य बल्लभ—हिस्तरुचि । पत्रस० ५६। मा० २४५ इचा । भाषा-सस्क्रत । विषय-बावुर्वेद । र०काल स० १७२६ । ले०काल स० १६११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष - प्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इति मुरादिसाहि गुटिका स्तमनोपरि--

श्रीमत्तपाण्णाभीजनासनैक नभोमण् ।
प्राप्तोदयरूचिनामा वभूव विदुषाग्रण्णे ।
तस्यानेक महाशिष्या हिनादि रूचयो वरा ।
जगनमान्यास्तराध्याय स्थ्यपारंकादमुबन ।
स्मानौत्रमा विप्तुना हस्तरूचिना बुँध वस्मोप थ. ।
रस ६ नयन २ मनिन्द १ वर्षे स० १७२६ काराय विदितीय ।।

इति श्रीमत्तपागच्छे महोपाध्याय हिरुकाच तर् शिष्य हिन्दरूचि कवि विरिवित वैद्यवल्वभे शेषयोग निरूपणो नामा प्रष्टमोऽध्यायः।

५७७३, वैद्यवस्तम—  $\times$ । पत्र स॰ ३३। ग्रा०  $= \frac{1}{2} \times 2\frac{3}{2}$  इस । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स॰ ३२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मस्तिर नीगान व दी ।

५७७४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३३ । म्रा० ८ ५ ४ ५ इन्छ । ले० काल स० १६५० । पूर्ण । वेदन स० २७ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी व दी ।

**५७७५. वैद्यवल्लम टीका**—  $\times$  । पत्र स० २६ । म्रा० १२ $\times$ ५ $^1$ , इञ्च । भापः—हिन्दी । विषय—वैद्यक । र०काल  $\times$  । लेकाल स० १६०६ वैद्याख मुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५७ । प्राप्ति स्यान—म० दि० जैन मन्दिर खज्येर ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है।

५७७६. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४ । धा० ६ $\frac{3}{2}$  $\times$ ४ $\frac{3}{6}$  इन्छ । लेक्शल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४४३ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

४७७७. वैद्याविनोद— × । पत्रस॰ २६ । घा० १० २४ ६ इन्त । आया-सरहत । विषय-प्रायुक्त । र०काल × । नै०काल स० १८८६ ज्येष्ठ मु, १४ । पूर्ण । वेष्टन म० ६६६ । **प्रास्ति स्यान**— भ० दिल जैन महिन्द प्रावसे ।

बिशेष - लिखित प० देवकरमा हरिदर्ग (किशतगढ) मध्ये ।

%७७ म. वगसेन सूत्र — वगसेन । पत्र न० ४७४ । या० १२×६ इथा । भाषा — सस्कृत । विषया — मार्जुदे । ८० काल × । तेकलाल स० १७६६ साबाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०७० । प्रास्ति स्थान – पार्कृतंत्र दि० जैन महिंदर त्रदराज्ञ ।

विशेष-प्रादिभाग एव प्रतिम पूष्पिका निम्न प्रकार है-

प्रारम-

नत्वा शिव प्रथमतः प्रशिपत्य चडी बाग्देवता तदनुता पद गुरुण्च सप्रह्मते किमपि यत्पुजनास्तदत्र चेनो विद्यान् मुचिन् मदनुग्रहेश ॥१.। भ्रायुर्वेद ] [ ५६१

पुष्पिका---

इति श्री अगसेन ग्रंथिने चिकित्सा महार्गावे सकल वैद्यक शिरोमिंग वगसेन ग्रंथ सम्पर्गा ।

४७७६. साङ्गीयर $-\times$ । पत्रस० १०। ग्रा० १०  $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  द्वा । साया-सस्कृत । विषय-ग्रायुवेंद । रंकाल  $\times$ । सेक्काल  $\times$ । पूर्ण । वेण्टन स० ६४२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्तिर ग्रायुवेंद

. विशेष — हरिदुर्ग (किशनगढ) के जुहाऊयों के मन्दिर में प० देवकरण ने लिखा था।

४७८० शार्जुधर दीपिका— झाडमत्ला। पत्रतः ६४। झा०१२१४८ इचा। भाषा— सम्झतः । विषय— धायुर्वेद । र०काल  $\times$ ा ले०काल स०१६२१ चैन सुदी ४। पूर्णः। बेष्टनस०१२३१। प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन सन्दिर ग्रवसेर।

विशेष--ग्रजमेर नगर मे प्रतिनिपि हुई थी।

४७८१. शङ्क्तं **धर पद्धति — शाङ्क्तं धर** । पत्रस० १४१ । प्रा० १०३४६ इत्र । भाषा---म स्कृत । विषय—ग्रावद । २०काल × । ले०काल × । स्रपूर्ण । वेष्ट्रनस० २२६ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर तस्कर जयपुर ।

४७६२. शार्क्सधर सहिता—शार्क्सघर । पत्र न०३१। आ०११४५ हे इथा। भाषा-सस्कत । विषय-घागुर्वेद । र०काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । बेटन स०२३०। प्राप्ति स्थान--वि० जैन मन्दिर ग्रजीर ।

५७८३ प्रतिसं०२ । पत्र स०१३ । धा०६४४६२३ । ले०काल ४ । पूर्णा । बेष्टन स०१३०२ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

५७५४ प्रतिसं० ३ । पत्र म० १२४ । ब्रा० ११ $\times$ ४ डञ्च । ले० काल  $\times$ । बेप्टन स० ३३६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मदिर लक्कर, जयपर ।

५७६४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १७० । प्रा० ११ 🗴 ४ इच्च । ले० काल स० १६२७ प्रापाढ वर्षी १३ । वेष्ट्रन स० ३३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

५७८६. प्रति स० ६ । पत्रस० ५७ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनस० ४१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

५७८७. प्रतिसं० ६ । पर स० ४२ मे ६६ । घा० १० $_{7}^{2}$  $\times$ ४ $_{7}^{2}$  इञ्च । ले॰काल imes । प्रपूर्त । वेष्ट्न स० १८३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पार्धनाय मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

५७८८. श्वासभैरवरस—  $\times$  । पत्रस०२-१४ । भाषा—सस्कृत । विषय— प्रापुर्वेद । र० काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन म०८ । प्राप्ति स्थान—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर बमवा ।

५७६६. सिन्नपातकत्तिका -- ४। पत्रस० १७ । प्रा० १०३ ४४ इवा । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रापुत्रदे । र०काल ४। ले० काल स० १६६३ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४३३ । प्रास्ति स्थान— सटारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

५७६०. सम्निपातकत्तिका— ×। पत्रसं∘२३ । मा० = ×३३ देखा । भाषा — सस्त्रत । विषय – भावृत्द । र०काल × । ले॰काल × । भ्रपूर्ण, । वेष्टन स॰ ४४० । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर प्रक्रमेर विशेष-- १६ व २० वा पत्र नही है।

**५७६१. सम्निपातकालिका** —  $\times$  । पत्रसं० ७ । ग्रा० १० $\times$ ५३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २२४ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प. प्रवेनाथ भारिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५७६२. संतान होने का विचार —  $\times$  । पत्र स०७ । प्रा०  $-\times$ ४ १ इख । भाषा -हिन्दी । विषय -प्रायवेंद । र० काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । प्राप्त स्थान —िद $\sigma$  जैन मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर ।

**५७६३. स्त्री द्वावर्ग विधि** —  $\times$  1 पत्र म०७। ग्रा०७ $\times$ ४ है हञ्च । भाषा-संस्कृत 1 विषयः ग्रावृद्धँ । र०काल  $\times$  1 ले० काल  $\times$  1 वेष्ट्रन स० ६१७। पूर्ण । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

५७६४. स्वरोदय —मोहनदास कायस्य । पत्रत्त०१२ । ग्रा०१२ $\times$ ५ै, इत्र । भापा—हिस्वी । विषय — प्राप्तुर्वेद । र०काल स०१६=७ मगिसर मुदी ७ । ले०काल  $\times$  । बेट्टन स०६१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-इसमें स्वर के साथ नाडी की परीक्षा का वर्णत है - कवि परिचय दोहा-

किथत मोहनदास किव काइथ कुल धहिठान । श्री मर्ग के कुल दिग कनोजे के सस्थान । मैमलार के निकट ही कुरस्थ गाव विक्यान । तहा हमारो वामु नि 5 थी जादौ मन तात । सबन् सीरह से रच्यो अपिर प्रभी सात, विक्रमते बीत वस मारग गृदि तिथि सात ।।

f .

to de la companya de la co

इति श्री पदन विजय स्वरोदये ग्रय मोहनदाल कायय श्रीहरानी प्रियविने भाषा ग्रय निवृत्ति प्रवृत्ति मार्गे खड ब्रह्माड ज्ञान तथा शुवाशुभे नाम दक्षिण स्वर तन भय विवार काल सायन सर्गा।

१७६१. हिकमत प्रकास—महादेव । पत्रस० १६१ । भाषा सस्कृत । विषय-वैद्यक । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८३१ । पूर्ण वेष्टनस० ७६६ । प्राप्तिः स्थान —पवायती दि० जैन मदिर

## विषय--ग्रलंकार एवं छन्द शास्त्र

५७६६. ग्रलंकार चंक्रिका—ग्राप्यवीक्षित । पत्र सं० ७६ । सा० ११ $\times$ ४ $^2$  इत्त्व । माषा— संस्कृत । विषय-प्रवकार । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० र्खन मन्दिर प्राप्तिनाथ व दी ।

४७६७. कवि कल्पद्रम् — कवीन्दाचार्य । पत्रस६ । घा० १०१ ४१ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय- ग्रस्सार । २० काल् <math>1 ले० काल् 2 । पूर्ण । बेष्ट्रन स0 २७२ । प्राप्ति स्थान — विष् जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४७६८. **कुवनयानस्य-ग्रस्ययरीक्षितः।** यत्र स० ७७ । झा० १०१ × ५ इंच । भाषा-संस्कृतः। विषय-रसः सिद्धानतः। र०कालः × । ले० कालः स० १८४४ वैशासः बुदी ६ । वेष्ट्रन स० २०६। **प्राप्तिः** स्थान—दि० जैन मन्दिर सक्तरः, जयपरः।

विशेष -- लश्कर के इसी मन्दिर में पर केशरीसित ने ग्रंथ की प्रतिलिप करवाई थी।

५७६६. प्रतिसं०२ । पत्र स०१० । फ्रा॰ ६imes४ । ले॰ काल imes । बेटन स०२११ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---कारिका मात्र है।

५०००. प्रति स० ३ । पत्रस० १३ । घा० १०३ ४ ५३ इच । भाषा-सस्कृत । ले०काल ४ । पूर्णं । वेष्ट्रन म० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर घादिनाय बुंदी ।

विशेष --- प्रथ का नाम ग्रनकार चन्द्रिका भी है।

१६०१, प्रति सं०४ । पत्र गं० ६ । घ्रा०११  $\times$ १ । ले० काल  $\times$  । बेप्टन सं०२०६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

५८०२. प्रति सं० ५ । पत्र रा॰ १४ । छा॰ १हैं  $\times$  ५हैं । ले॰ काल  $\times$  । वेष्टन सं॰ २०६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर लग्कर, जयपुर ।

१८०३. प्रति स०६ । पत्र स०१२ । आ०६ है 🗴 ५ इच्च । ले०काल स०१ ८२२ झाषाढ बुटी १ । पूर्णावेष्टन स०१५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुटी) ।

५६०४. छुंदकोश टीका — चंदकोसि । पत्र सं० १७ । मा० १०  $\times$  ४ ६ ख । माषा – प्राप्त न-सस्त्रत । विषय-छुद सास्त्र । २०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३१४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मदिर प्राप्तन्तन स्वामी वृदी ।

१८०५. छंदरलाविल — हरिरामदास निरंजनी । पत्रस०१७ । प्रा०१२ 🗶 १६२४ । प्रापा-हिन्दी । विषय-छर शस्त्र । र०काल स०१७६४ । ले० काल स०१६०६ सावए। सुरी ८ । पूर्ण । केष्ट्रन सं०१४३३ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन संदिर स्रजमेर ।

विशेष-ग्रंथ तथा ग्रंथकार का वर्णन निम्न प्रकार है।

प्रथ छ्दरस्तावली सारण याकी नाम।
भूषन भरतीते भरयो कहै दास हरिराम ॥१०॥
१६७१
सवतसर नव मनि शशि नभ नवगी गरूमान।

सवतसर नव मुनि शशि नभ नवमी गुरूमान । डीडवान हढ की पतिहिंग्रथ जन्म थल जानि ।।

१८०६. प्रतिसं०२ । पत्र स०२४ । आ०० - 🗴 ५्रेड्स । ले०काल स०१६३५ ज्येष्ठ सदी४ । पूर्णा वेष्टन स०४५३ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर श्रवमेर ।

१८०७. प्रतिसं० ३। पत्रस० २-२४ । आ०६×६इच । ले०काल × । ब्रपूर्ण। बेस्टन स०१३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर वयाना।

विशेष--- ५-१०५ पद्म तक है।

५८०८. छुद्र**बुत्तरत्नाकर टीका-पं० सल्ह्**रण । पत्र म० ३६ । भाषा-सम्ब्रत । विषय-छुद शास्त्र । रक्काल  $\times$  । तेक्काल स० १४६४ । पूर्ण । बेष्टनस० ७६, ६०८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मंदिर उदयपुर ।

४८०६. भ्र'तिम—इति पडित श्री सुल्हरा विरिचतायां छदोवृत्तौ पट् प्रत्याध्याय पट्ट समाप्तः ॥

सवत् १४६५ वर्षे भाद्रपद मासे कृष्णपक्षे १ प्रतिगदा गुरौ श्री मूलसये ।

५८१०. छंदानुशासन स्वोपज्ञ बृत्ति - हेमचन्द्राचार्य। पत्रस०६०। ब्रा०१४ × ५ इख। भाषा-सम्बन्त । विषय-छुद शास्त्र । र०काल ४ । ले०काल म०१५६०। ब्रपूर्णे । बेष्टनस०३३२ ५६७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - श्रतिम पूष्पिका निम्न प्रकार है---

इत्याचार्यश्री हेमचेत्द्र विरचिताया स्वोपन छत्रानुशासनवृतौ प्रस्तारादि व्यावर्गानाम पक्षोध्याय समाप्ताः

प्रशस्ति—सबन् १५६० वर्षे कार्तिकमाने महमागाकेन पुस्तक लिखिन । महारमा श्री गुरगनदि पठनार्थे ।

**५८११. छांदसीय सूत्र—मट्टकेदार** । पत्रस० १ । छा० ११ × ४३ इन्छ । मापा-सस्कृत । विषय-छट मास्त्र । र०काल × । ले० काल × । छपूर्ण । वेष्टनस० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

 $x \in \mathbb{R}^2$  नदीय छद — निविताङ्ग । पत्रसन्द । । प्रान्त १० $\times$  ४ इखा । भाषा-प्राकृत । विषय— छद शास्त्र । रन्ता  $\times$  । लेनकाल सन्द १४३६ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसन्ध २३ । प्राप्ति स्थान— दिन्न जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-१४ गाथाए है।

५८२३. पिगलशास्त्र—नागराजा । पनस० ११ । ग्रा० १०३४४ १ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-छद शास्त्र । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ३४२ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मर्दिर ध्रमिनन्दन स्वामी बूंदी । **५८१४. पिगल सारोद्धार** — 🗴 । पत्रस॰ २० । झा॰ ८<sup>2</sup>, 🗶 ६ इ**च** । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र०काल 🗴 से॰काल स॰ १६६१ । पूर्ण । बेष्टन स॰ १७३-१३३ **। प्राप्ति स्थान--**दि॰ जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष--जयदेव ने प्रतिलिपि की थी।

**५८१५. पिगलरूपदीप भाषा** —  $\times$  । पत्रस्त० १। छा० ६ $\frac{1}{4}$   $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इटब । भाषा-हिन्दी । विषय-छद शास्त्र । र०काल सं० १७६३ । भाषा-हिन्दी । विषय-छद शास्त्र । र०काल सं० १७६३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पास्त्रेनाथ मदिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष -सोरठा-दिज पोलर तेन्य तिस मे गोन कटारिया ।

मृति प्राकृत सौ वैन तैसी ही भाषा रची ।।५४।।

बाहा---बावन वरनी चाल सबै जैसी मोमैं बृद्ध ।

भूलि-भेद जाकौ कहा। करो कवीश्वर सुद्धि ।।४४।। सबन सनर्रमै वरथ जर निहलर्र पाछ।

भादौ सदि द्वितीय गरू भयो ग्रथ सम्बदाय : १६६।।

इति श्री रूपदीप भाषा ग्रथ सपूर्ण । सबत् १८८६ का चैत्र सुदी ७ मगलवार लिलित राजाराम ।

५६९६, प्राक्तल छुंद --- × । नजस०६ । ग्रा० ११४५ इ.च । भाषा --- प्राक्तन । विषय --- छुद । र० काल × । ले०काल × । पूर्गा। बहुन स० ११३४ । प्रास्ति स्थान --- भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४०१७. प्राकृत छन्दकोश $-\times$ । पत्र स०७। ग्रा०१२ $\times$ ४ $^9$  दश्च। भाषा-सस्कृत। विषय-छन्द। र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । वेष्ट्रनस० ४५६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर

५८१८. प्राकृत लक्षरा—चड किंब। पत्रस० २०। मा० १० $\S \times \ell$  इन्त्र। भाषा सस्त्रत । विषय—स्त्रत प्राप्त्र । २०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण् । बष्टन स० १२४७। प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

५८१६. बडा पिंगल $\sim X$ ा पत्र स०३७ । प्रा॰ ६ $^{3}$  $\times$  $^{3}$  इव । भाषा सस्कृत । विषय-छत्द । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१७२-१६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायांनह (टोक) ।

५६२०. भाषा भूषरा—जसवर्तासह। पत्र स०१५। आ०१ $\times$ ४ $\रेेे १चा। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—अलकार आग्न्य। २०काल <math>\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०६२। प्रास्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर शजमहल टोक।

विशेष - धन्तिम पाठ निम्न प्रकार है-

लक्षिन तिय ग्रम्भ पुरुषके हाव भाव रस धाम । घलंकार सजोग तै भावा भूषण नाम ॥ भाषा भूषण ग्रंथ को जे देखे बित लाइ । विविध ग्रंरय सहित रस संपुर्क सब बनाइ ॥३३७॥

इति श्री महाराजाधिराज घनवधराधीश जसवतस्यघ विरचिते भाषा भूषण सपूर्णं।

**५८२१. रसमंजरी—मानु । पत्र**स० २१ । ग्रा० १०  $\times$  २२ इखा । माषा—सस्कृत । विषय—रस ग्रतकार । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २६३/२२४ । **प्राप्ति स्थान**—वि• जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

१८२२. रूपदीपक पिगल —  $\times$  । जनस्क १० । छा० ६ $\frac{1}{2} \times 5^{\circ}$  इत्त्व । भाषा —िहिरी । विषम — छत्द शास्त्र । रक्ताल सक १७७३ भादवा सुदी २ । लेक्ताल सक १६०२ सावरा बुटी ६ । पूर्ण । बेहनसंक १०१४ । प्राप्ति स्थान — सक्दिक जैन सदिर छननेर । इनका दूवरर नाम विगल रूप दीप मावा भी है ।

५६२३. बाग्महालंकार बाग्भहापत्र सं०२१। घा०११४५ इचा भाषा—सस्कृत। विषय—प्रत्नकार । र०काल ४। ले०काल स० १६०४ वैशाल सुदी १३। पूर्णः। वेष्टन स० १२५७ । प्रास्ति स्थान — भ० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष—इसकी एक प्रति ग्रीर है। वेष्टन सं० ४८१ है।

५६२४. प्रति स $\circ$  २ । पत्र स $\circ$  २१ । प्रा० १० $\times$ ४ $\sharp$  इश्वः । ले $\circ$  काल imes । प्रपूर्णः । वेष्टन स $\circ$  ११२४ । प्राप्ति स्थान—भ $\circ$  दि $\circ$  जैन सन्दिर प्रजमेर ।

५६२५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १४ । धा० १० × ५२ इ.च.। ले० काल स० १७६७ चैत सुदी २ ! पूर्ण । बेष्टनस० २०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाक्ष्वेताय चौगान बूदी ।

विशेष पडिन लगालचन्द्र न तक्षकपूर में लिखवाया था।

५८२६. प्रतिसं० ४ । पत्रस०२८ । घा०१०imes४ $^1_{ij}$  इथा । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागडी बूंदी ।

्रद्रमुख्यः प्रतिसंव्धः । पत्रसव्येशः । साव्धः ४४ दुःखः । लेवकाल सव्येष्ट्राः पूर्णः । बेहुत सव्येष्ट्राः प्राप्तिः स्थान—दिव्जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष -- लिखापित पडित जिनदासेन स्वपठनार्थं ।

५६२६, प्रतिसं०६। पत्रस०१६। छा०१२४४ इन्छ। ने०काल ४। पूर्णं। बेष्टन स० ३२६/५४६। प्रान्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

४८२६ प्रतिसं०७ । पत्रस०१० । ले॰काल स०१४६२ ब्रायाढ बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३२४/४४६ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

५८२०. प्रतिसंo ८ । पत्र स० ७ । प्रा० १०imes imes imes imes ३ व्या स०काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० १८१/७७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

५८३१. प्रति सं० ६ । पत्र स०१७ । ग्रा० ११ $\frac{3}{2}$ imes५५ $\frac{1}{3}$  इथा । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टन स०४५१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

५८३२. प्रति सं० १०। पत्रसं० ११ । घा० ११ $\frac{2}{5}$ imes१ $\frac{2}{5}$  इचा । ले० काल imes । प्रपूर्ण। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर लक्ष्कर जयपुर ।

५६३३. प्रति सं० ११। पत्रसं० १८। प्रा० ११ $\frac{3}{5} \times 1\frac{3}{5} \times \frac{3}{5} = 1$  ले०काल स० १८१६ प्रापाढ बुदी ६। प्रपूर्ण। बेष्टन सं० ४५४। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

४८३४ . प्रतिसं० १२ । पत्रस० ८६ । ब्रा० ११ × ४ इञ्च । ले०काल् × । ऋपूर्एं । बेष्टन सं० १३४ । प्रान्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

५८३५. प्रति सं०१३ । पत्रस०२३ । घ्रा०१०१४४ ट्रैइचाले० काल 🗴 । पूर्णी वेकनसं०५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा।

४८३६. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० २३ । घा० ११ ४ ४ इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन म • २१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रति संस्कृत टीका सहित है।

५६३७.वाभम्हालकार टीका — जिनवर्द्ध न सूरि । पत्र त० ४ । घा० ११३ ४ १ इव । माया-सस्कृत । विषय श्रनकार । २०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वैष्टनसं० ११४८ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

४६३६. बाग्भट्टालंकार टीका — वर्द्ध मान सूरि । पत्रत० २०। म्रा॰ ११ $^1$ ×४ $^2_2$ । माषा-सम्कत । विषय-फ्रलकार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४८३६. बाग्मेट्टालंकार टाका — वादिराज (पेसराज सुत)। पत्र सं० ४६। धा० १२ x ४ इन्छ । भाषा-स स्कृत । विषय धनकार । र०काल सं० १७२६ । लेकाल सं. १८४२ भादवा सुदी ४ । पूर्ण । बेटन सं ४५३। ध्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष -- टीका का नाम कविचद्रका भी दिया है।

४८४०. **बागमट्टालंकार टीका**—  $\times$  । पत्र सं २। द्या० १० $\frac{3}{2}$  $\times$ ५ इ.च । भाषा-स स्कृत । विषय-प्रतकार । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**— मट्टारकीय दि. जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५८४१. वाग्महालंकार टीका— $\times$ । पत्र स. २७। ग्रा॰ १० $\times$ ४ $\frac{3}{2}$  इव । भाषा-सस्कृत । विषय— ग्रलकार । रक्काल  $\times$ । ले॰ काल स. १७४१ । पूर्ण । वेष्टन सं. २२२। प्राप्तिस्थान—दि॰ जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**प्रशस्ति—**निम्न प्रकार है।

स . १७५१ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ दशस्यां चन्द्रवासरे श्री फतेहपुरमध्ये लि । ले. पाठकयो सुभं । प्रति सुन्दर है ।

५६४२, **बाग्सट्टालंकार वृ**त्ति—  $\times$  । पत्र सं॰ ५७ । घा. १०४५ इंच । माधा-संस्कृत । विषय—म्बलकार शास्त्र र०काल $\times$  । ले.काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टन सं . ५१६ । प्राप्ति स्थान— म. दि. जैन सन्दिर सजमेर ।

प्रदेश, बाग्मद्रालंकार वृत्ति—ज्ञानप्रमोद वाचकगरिंगः। पत्र सः, ४७ । ग्राः, १२ ४ ४ है इंच । ग्रागा—संस्कृतः। विषय—ग्रतकार । र.काल सं. १६ न १ । ले,काल अर । पूर्णः। १४२ । प्रास्ति स्थान—दि. जैन मन्दिर मादिनाय बूंदी। भू ८४४. **बृतचिन्द्रका** — कृष्ट्**गकिव ।** पत्र सं. २–४४ । ग्रा० ६ $\times$ ६ इव । मागा हिन्दी (पद्य) । विश्वय-छुद शास्त्र । रकाल  $\times$  । ले. काल सं. १८१६ । ग्रपूर्णं । वेष्ट्रन सं ३५३ । प्राप्ति स्थान-भः दि. जैन सन्दिर ग्रजभेर ।

विशेष -पृष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री कृष्णुकवि कलानिधि कृत वृतर्चान्द्रकाया मात्रावर्ण् वृत्त निरूपण नाम द्वितीय प्रकरण । मात्रा छद एव वर्ण छद ग्रलग २ दिये है ।

मात्रा छद २१६ एव वर्गा छद ३८० है।

१६४१. **बृत रत्नाकार**— × । पत्र सं. १ । आ. ६ $\frac{1}{2}$ × $\frac{1}{2}$  इव । भाषा-प्राकृत । विषय— खद शास्त्र । र०काल × । पर्एं । वेष्टुन सं. १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दवलाना (बुदी)

५८४६. वृत्त रस्नाकार — मट्ट केदार । पत्र स० = । छा०६१ ४४ इच । भाषा —स स्कृत । विषय — छर शास्त्र । रक्शाल ४ । लेक्शाल स० १८१६ माह सुदी १० । पूर्णा । वेष्ट्रन स०१२४२ । प्राप्ति स्थान — भ. दि. जैन मन्दिर अवभेर ।

५ क४७. प्रति सं०२ । पत्रस०स० व । ग्रा०१०  $\times$  ४ $\xi$  इत्रा । ने०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनस०११६१ । प्राप्ति स्थान—म. दि०जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**५६४८ प्रतिसं०३।** पत्र स०११। आ०१०ॄं ४४। ले०काल स०१७७६ सावण बुदी ऽऽ। पूर्ण। वेप्टन स०१**१६०। प्राप्ति स्थान** – भ० दि० जैन मन्दिर धजमेर।

५८५६. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ६ । झा० १०४५ इ.ख । ले०काल ४ । पूर्एं । बेष्टनस० ६६४ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मस्दिर स्रजेनर ।

४६५०. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४ । फ्रा० १०१ ×४ ( इञ्च । ले०काल ≾ । पूर्ण । वेष्टनस∙ २६४-१०५ । प्राप्ति रथान —िक जैन मन्दिर कोटङियों का ङ्गरपुर ।

५६५१. प्रतिसं० ६ । पत्र स०१६ । सा०१० $\frac{1}{2} \times 6^3_g$  इञ्च । ले० वाल  $\times$  । पूर्ण । वे० स०१६६-५०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिग्कोटडियो का डूगग्पुर ।

५८५२. प्रतिसं०७ । पत्र स $\circ$ २४ । ध्रा $\circ$ ११ $^{\circ}_{
m y}$  $\times$ ५ इञ्च । ले $\circ$  काल  $\times$  । वेष्ट्रन स $\circ$ ४५६ । प्राप्ति स्थान— दि $\circ$  जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

प्रद**५३ प्रतिसं० द**ा पत्रस० १० । बा० ११ हे × ५ है इश्व । ले० काल स० १५३६ ज्येष्ठ बुदी ४ । बेष्टन स० ४५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैंग मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

विशेष — सवाई जयपुर के ब्रादिनाय चैत्यालय में विद्वान् कृष्णदास के शिष्य जिनदास रे पठनायें लिला गया था।

५८५४. प्रतिसं० ६ । पत्रम० ३ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६८ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४६४४. प्रतिसं० १० । पत्रस० १२ । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टनस० ७२, ६०६ । प्राप्ति स्थान—द० जैन सम्बनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष-- अह प्रतियाँ ग्रीर हैं जिनके वेष्टन स० ७३/६१० से ७८/६१६ हैं।

. ५८५७. प्रति सं०१२। पत्र स०१४। प्रा०१०४५ दश्वा। ले०काल स०१८२६ मनसिर मुदी४। पूर्ण। बेष्टन स०२४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

**५८५८. प्रतिसं०१३।** पत्र स०१४। ग्रा०१२  $\times$  ५३ इञ्च । ले०काल स०१६४० माघ मुदी २। पूर्ण। वष्टन स०६/१६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर लेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)।

विशेष —हुम्बड जातीय बाई जी श्री बाई ने भट्टारक वादिचन्द्र के शिष्य सहा श्री कीर्तिमागर को प्रदान किया था।

५६५६. प्रतिसं० १४ । पत्रस०१६ । ग्रा०१० 🗴 ५ इख । लेवकाल स०१७२० । पूर्ण । बेष्ट्रनस० ५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमनन्दन स्वामी, बंदी ।

४८६०. प्रतिसं० १४ । पत्रस० २७ । मा० ११ 🗴 ६ इश्व । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेब्रनस० ११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर झादिनाथ बंदी ।

५८६९. प्रतिसं० १६ । पत्र स०४ । मा० १० $\frac{7}{2} \times \frac{3}{2}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । म्रपूर्ण । बष्टत स० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर देवलाना (वृंदी) ।

४८६२. वृत्तरत्नाकर—कालिदास । पत्र स॰ ६। ग्रा॰ ११  $\times$  ४ इख । आया—मन्द्रत । विषयः छन्द शान्त्र । र॰ काल  $\times$  । ले॰काल स॰ १८१६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ ६१ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन मन्दिर श्रीमनन्दन स्वामी बंदी ।

विशेष-भानपुर में रिपभदास ने प्रतिलिपि की थी।

४८६३. **बुत्तरत्नाकर टोका—पं० सोमचन्द्र।** पत्र स०१४। **भाषा—स**स्कृत। विषयः— छुद बाग्त्र। रज्जाल ग०१३२४ । लेज्काल X । पूर्णः । बेष्ट्रन ७**१ । प्राप्तिः स्थान—दि०** जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष - रचनाकाल निम्न प्रकार है।

श्री विकामनृपकाल नदकर कृपीटयोनि कृपीटयोनि शश्रा सक्ये (स. १३२५) समज निष्णोस्सर्वेदिन विक्तिया मृत्य बोधा करी ।

४,८६४. **बृत्तरत्नाकर टोका—जनार्वन विबुध** । पत्रस्य २८ । ग्राण् $\{2,3,4\}$  इन्छ । पापासस्कृत । विषय — छर शास्त्र । । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । बेष्टनसं ०११६ । प्रास्ति स्थान— दि॰ जैन मन्तिर प्रादिनाय बुदी ।

विशेष—प्रशस्ति इति श्री जनार्थन विव्ध विरक्तिया भावार्थ दीपिकाया वृत्तरसाकर टीकाया प्रस्तारादिनिरूपए। नामा पट्टो ग्रम्थाय ।

**५६६५. प्रतिसं० २** । पत्र स० ३३ । आ० ६ $\frac{3}{6}$  × ६ इश्व । ले० काल × । पूर्ण । वेग्ट्रन स० २१६ । **प्राप्ति स्था**न — दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५६६६. **बृत्तरत्नाकर वृत्ति—समयमुंवर ।** पत्र स०४२ । ब्रा०१०हे×१रे इखा । साया— सस्कृत । विषय-छद शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । । पूर्ण । वे० स०२०५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर स्राभनन्दन स्वामी बूदी । **प्रान्तम पुष्पिका**—इति वृत्तरत्नाकरे केदार शैव विरिचिते खदिस.समयसुन्टरोपाध्याय विरिचिते सगम इती षष्टोऽध्याय ।।७५०।।

५६६७. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३० । घा० १०  $\times$  ४ इन्छ । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेहन सं० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

प्रसद्धः बुत्तरत्नोकर बुल्लि—हरिमास्कर । पत्रसं० ३७। सा० ११×५ है रब । मापा-संस्कृत । विषयः बुद सारत । र०काल × । लेकाल स० १०४७ पीय मुदी १०। पूर्ण । वेष्टनस० २६६ । पारित्र क्यात – हिंठ जैन प्रतिक कोम्बनी कोण

४८६१. **शब्दालंकार दोपक —पोंडरीक रामेश्वर ।** पत्र स०१८ । झा०१०१ ४५१ इत्त । भाषा — सस्कृत । विषय—भाषकार । र०काल ४ । ले० काल स०१८२७ चैत्र सुदी १४ । वेष्ट्रन स० २१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४८७०. **अनुत्रवोध — कालिदास**ा पत्र स०६ । ग्रा०११४४ इव । भाषा — सस्हत । विषय — छह शास्त्र । र०काल ४ । ले० काल स०१८६८ । पूर्ण । वेष्टन स०१४१८ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन सदिर ग्रजमेर ।

५८७१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५ । प्रा० १ $\times$ ४ $\frac{1}{9}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० १२६५ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्त्रिर प्रजमेर ।

५६७२. प्रतिसं० ३ । पत्र स०२ । ग्रा० १०३ 🗡 ३ इ.ख । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

५८७३. प्रति सं०४ । पत्र स०४। ले॰काल॰ 🗴 । पूर्णं। बेप्टन स०२५०। प्राप्ति स्थान--दि॰ जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४८७४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६ । ब्रा० १०३ ४४ ' इश्व । ले० काल स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० २७०-१४१ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मदिर कोटडियों का हु गरपुर ।

**५८७५. प्रतिसं० ६** । पत्र म०७ । ब्रा० ६ imes ५ इ.च । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टत सं $oldsymbol{\epsilon}$  २६७-१०६ । **पाप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर कोटेडियो का हुगरपुर ।

**५८७६. प्रतिसं० ७ ।** पत्र स॰ ६ । प्रा॰ ६ $\frac{1}{2}$  × ५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । प्राथा-सस्क्रत । विषय-छर । र०काल × । ने०काल स० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४६-६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपूर ।

विशेच-सागपुर में प्रतिनिधि हुई थी।

४८७७. प्रतिसं० म । पत्रस० ४ । प्रा० १०१४ ४१ इन्छ । से०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० १४६ । प्राप्ति स्थान—ंदि० जैन मन्दिर बोरसती कोटा ।

१८७८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६ । मा० १० ४४ इन्ब । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । बेष्टन स० २४८ । प्राप्ति स्थान --दि० जैन पाववैनाथ मन्दिर इन्दराढ (कोटा) ।

विशेष-इन्दरगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

१६७६. प्रतिसं० १०। पत्रतः ४। ग्रा० १०४ ४ दे इश्वः। लेक्सल ४। पूर्णः। वेस्टन सं० ३६। प्राप्तिक स्थान-दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रुदी)।

विशेच---भ० देवेन्द्रकीति ने प्रतिलिपि की थी।

४८६०. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ३ । धा० १० है ४४ है इश्व । ले०काल × । पूर्एँ । वेस्टन सं० ३१० । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर दबलाना (वृदी) ।

१८८६ १ प्रतिसं० १२ । पत्र स० ४ । षा० १० है ४ ६ खा । ले०काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर दबलाना (त्रुदी) ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सक्त् १००२ द्यायाङ मासे जुकत पक्षे तृतीयार्था गुरुवासरे सवाई जयपुर मध्ये हरचन्द लिपिकृतं बाचकानां।।

**५८६२. प्रतिसं० १३।** पत्र स० ५। घा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इञ्च । ले॰काल स० १८७७ । बेस्टन स० २०७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१८८३ प्रतिसं० १४ । पत्रस० ६ । छा० १३ ४४) इञ्च । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । आर्ष-, स्थान - दि० जैन प्रवतान प्रचायती मन्दिर प्रजवर ।

५६६५. प्रति सं १५। पत्र त० १५। ग्रा० १८६ इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं०५९ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाव स्वामी मालपुरा (टोक)

४८८५ प्रतिस० १६। पत्रस० ४। म्रा० ८ $^{'}$  $\times$ ६ इञ्च । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० १०। प्राप्ति स्थान—द० जैन मन्दिर चौधित्यान मानपुरा (टोक)

४ मम् ६. प्रति स० १७ । पत्र स० ४ । घा० ६×६ इश्वः । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थानः दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैसुवा।

४६६७. प्रतिसं० १६ । पत्र स०४। स्ना०१०४६१ इच । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टत स० ३१/१६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मदिर पश्चावती दूती (टोक)

५८८८ प्रतिसं० १६ । पत्रतः० ३ । या० १० १४४ १ इश्व । ले० काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टनसं० २८४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मीदर प्रसिनन्दन स्वामी, बुदी ।

४८६६. श्रुतबोध टीका —मनोहर शर्मा । पत्रत्त० १४ । धा० ५ $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ दश्च । भाषा — सस्कृत । विषय —छन्द शास्त्र । ८० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २३५ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर प्रवर्गर ।

४६६०. श्रुतबोध टीका — वरशस्मे । पत्रतः १२ । घा० ११४६ इन्छ । भाषा सस्कृत । विषय - छन्द शास्त्र । २०कास ४ । ले० काल स० १६३३ वैशास सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० १-१२ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर वडा बीसपयी दौसा ।

१८६१. श्रु तबोध टोका — हर्षकीस्ति । पत्र स०२०। प्रा०११३ ४४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ७ विषय — छन्द भास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल सं०१६०१ भादवा सुदी ७। पूर्ण । वेष्टन सं०२६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टॉक)

४.८२. प्रृंगारवीपिका—कोमट सूपाल । पत्र सं० १ । प्रा० १०  $\times$  ४ हु इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय— रस प्रतकार । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०१ । प्राप्ति स्थान—(द० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

५८६२. संस्कृत मंजरी—  $\times$  । पत्र स॰ ६ । ग्रा॰ १० $\times$ ४ इश्वः । माया—सस्कृत । विषय— छन्द । र० काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं॰ २४५-१५ । प्रास्ति स्थान—वि॰ जैन मन्दिर कोटहियो का हुंगरपुर ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

# विषय--नाटक एवं संगीत

१८६४. इन्द्रिय नाटक —  $\times$  । पत्रसः १६ । छा० १२ $\times$ ७ १ इच । साथा — हिन्दी पद्य । विषय — नाटक । र०काल स० १६४४ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४० । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर राजमहल (टीक)

विशेष—नाटक की रचना ग्रंथकार ने प्रपने शिष्य तिलोका पाटनी, राजबस्तम नेमीचन्य फूलकन्य पटनारी सेमराज के पुत्र झादि की ग्रेरणा ने झायाड मास की घरटाह्निका महोत्सव के उपलब्ध में स० १९४५ में केकड़ी में की थी। रचना का झादि ग्रन्त मान निग्न प्रकार है।

ग्रादि भाग---

परम पुरुष प्रमेस जिन सारदेशी वर पाय। यथा शक्ति तुम ध्यानतै नाटक कह बनाय।।

×

धन्तिम भाग--

जिय परगात त्रिय भेट बताई । ण्न धर बण्भ बुद्ध यूगाई। नाटक प्रमुभ मूर्भ्य दोय जानू। शुद्ध कथन अनुभव हियमान ।। मो नाटक पुरसा रस थाना. पहित जन उपयोग लगाना । उतपत नाटक की विघ जा रू। विद्याशिष्य के प्रेम लखात । भ्रप्टाह्निक उत्सव जिन राजा। माह मास का हबा समाजा। शक्र तिथि ग्यारस मूज पासा। भ्राये शिष्य नाटक करि भ्रासः ।। गोत पाटगी नाम तिलोका. राजमल्ल नेमीचन्द्र कोका । फूलचन्द्रजी है पटवारी, कहे सब नाटक क्यो कहो सुखकारी ।। खेमराज सूत बैन उचारी, इन्द्री नाटक है उपकारी। वर्म हेत् यह काज विचारयो, नाना ग्रयं लेय मन धारयो ॥

लाज त्याग उद्यत इस काजा. लह्य भेद वेद न धसमाजा। पारख क्षमा करो वृधि को शे, हेर धर्थ कूल्याय घटोरी ।: नीर बुद मधि सीप समाई. केम मूक्त नहीं हो प्रभूताई। कर उपकार सूधारह वीरा, रति एह नहि तुम धीरा ।।७।1 कवि नाम ध्रुरु गाम बत।या, श्रद्धं दोय चौपई पर गाया। मगल नृपति प्रजा सब साजा, ए पूरण भयो समाजा ॥=॥ नादो चिरजीवो साधर्मी. ग्रन्त समाधी मिलो सतकर्मी । धर्मवासना सब सुखदायी, रहो अवड युहोय बढाई।। उग्रामीसो पचान विषै नाटक भयो प्रमान । गाव के कडी धन्य जहा रहे सदा मतिमान ।।

्रद्रहभू, ज्ञानसूर्योदय नाटक- वादिचन्द्रसूरि । पत्रतः २७ । आ० ५ , ४५२ । भागा— सस्कृत । विषय — न टक । २०काल म० १६४८ साम सुदी स । ले०काल स० १८०० । पूर्ण । वेष्ट्रा स० १२६४ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१८६६. प्रति सं०२ । पत्रतः ४३ । स्रा०११ ४ ५ है इञ्च । ले०काल ४ । पूर्णं । बेष्टन स० १२५६ । प्राप्तित स्थान – म० दि० जैन मदिर खजेंगर ।

५८६७ प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३१ । ग्रा० १२ ४ ५ । ले०काल स० १८२८ ग्रावाढ सदी ७ । पूर्वा । बेब्रन स० ८५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**विशेष**— केशरीसिंह ने ५तिलिपि की थी।

४८६८ प्रतिसं० ४ । पत्रतः २६ । ग्रा० १२ ४५} डखा । ले०काल स० १७६२ कालिक सुदी ३ । पूर्ण । बेहनस० २४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीशनजी कामा ।

४८६६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३३ । आ० ११ ४ ४ इच्छ । ले० कान स० १७३० ग्रासोज बुदी ४ । पूर्णं । बेठन स० ४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मदिर दूनी (टोक)

विशेष-व्यावर नगर मे णातिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गयी थी।

५६००. प्रति स० ६ । पत्र स०६६ । घा०६ $\frac{1}{6} \times 4^{\frac{1}{2}}$  डब्च । ले० काल स० १५७४ माघ बुदी १३ । पूर्ण । बेप्टन स० १३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मदिर करीली ।

विशेष--गुमानीराम के सुपुत्र जीवनराम ने लिखकर करौली के मन्दिर मे चढाया था।

१९०१. ज्ञानसूर्योदय नाटक भाषा—भागचन्द । पत्रसं० २०। धा० १०\४६\ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—नाटक । २० काल स० १६०७ भादवा सुदी ७। ले० काल स० १६२६ ज्येष्ठ सुदी २। पूर्ण । वेप्टन स० ६२। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर प्रजमेर।

५६०**२ प्रति सं० २ ।** पत्रस० ६१ । प्रा० १०४५ हुँ इक्व । ले० काल स० १६१६ । पूर्ए । वेष्टन स० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५६०३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५१ । ले॰काल सं०१६२२ । पूर्णं। बेष्टनसं०२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डीग ।

५६०४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १०४ । स्ना० १२×५३ इंच । ते०काल स० १९१५ मादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवान चेननदास पुरानी डीग ।

५६०५. प्रति सं० ५ । पत्र त० ५५ । मा० १०१८६६ इञ्च । ले० काल १६२६ । पूर्ण । बेप्टन स० ३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

५६०६. प्रति सं०६ । पत्रस० ८३ । बा० ११४५) इन्छ । ले०काल सं०१८३७ जेस्ट सुदी २ । पूर्ण । बेट्टन स० ११ । प्राप्तिः स्थान —दि० जैन मन्दिर फतेहपूर गेलावाटी (सीकरः

विशेष — पालमग्राम मे श्रावक ग्रमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । लाला रिखबदास के पुत्र रामचन्द्र ने लिखवावा था ।

५८०७. प्रतिसंo ७ । पत्र स० ८४ । आ०१०×६ इच । ले•काल स०१६४१ वैशाख मुदी १४ । पूर्ण। बेष्टन स०१४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर स्वामी बूदी।

५६०८. प्रतिसं० ८ । पप्रतः ५४ । बा० १२३ ४८ इथा ।ले० काल सं० १६३६ वैशाख बुदी ६ । वेग्टन स० २६ १०८ । प्रास्ति स्थान - दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

५६०६. प्रतिसं० ६ । पत्रत्तर ७२ । ग्रा० १६ ५ ४ ८ इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेप्न स० १०३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन ग्रग्नवाल पत्रायती मन्दिर ग्रनवर ।

५८१०. प्रतिस० १० । पत्र स० ५६ । ग्रा० १० १ ४७ इश्व । ले० काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टन स० १०४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन श्रयवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

५६११. प्रति स० ११। पत्रस०६३ लेक्काल स०१६१४। पूर्णं। बेष्टन स०१६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डांगः।

५६१२. ज्ञानसूर्योदय नाटक - पारसवास निगोत्या । पत्र मं० ७६ । आ० ११३ $\times$   $= \frac{1}{2}$  इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । र०काल म० १६१७ वैशास बुदी ६ । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ५३६ । प्राप्तिक स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५६१३. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५० । बा० ११ रें ४ म्रेट खा लेक्काल 🗴 । ब्रपूर्ण । बेष्टत स० ५३६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५६९४. प्रति स०३ । पत्र स०१०४ । घा० ६४६ इचा। ले० काल स०१६१४ । पूर्गः वैष्टन स०५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर कामा।

४६**१४. प्रतिसं**० ४। पत्र स०४०। घा० १२ $\frac{1}{6}$  imes ७ इञ्च । से०काल स १६३४। पूर्ण । बेप्टन सं० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टॉक्) ।

**५६१६ प्रति सं० ५ ।** पत्रस० ४७ । झा० १२ ४ १ है इख । ने०काल स० १६३६ (ता० २-४-१८६२) । पूर्ण । वेष्टनस०११४-८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) । विशेष —राजा सरदारसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

**५६५६. प्रति सं०६ ।** पत्र स०३५ । प्रा०११८ दश्वा । ले० काल स० १६३६ फागुए। बुदी ७ । बेपन स०२२३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन स्रयत्रला मंदिर उदयपर ।

**४.९१८ ज्ञान सूर्योदय नाटक** --  $\times$  । पत्रस० १७ । भाषा —िहन्त्री । विषय —नाटक । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । धपुर्ण । वेष्टनस० २८, १७३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पद्मावती मन्दिर भववर ।

५६१६ प्रतिसं० २ । पत्र स ० ४७ । ले० काल \star । पूर्णाः वेष्ट्रन सं० ३०/१६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१८२०. प्रबोध चंद्रोदय नाटक —कृष्णिमिश्र । पत्रस० ७० । प्रा० १३५ ४५ हन्छ । भाषा —सन्द्रत । विशेष —नाटक । र०काल ४ । ले०काल स० १७६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी बृदी ।

विशेष — दीक्षित रामदास कृत सस्कृत टीका सहित है। बीच में मूल तथा ऊरर नीचे टीका है। स॰ १७६५ वर्षे लिपिकृत बंधनापुर मध्ये स्रविगम पठनार्थ प्रहोत (प्रोहित) उर्दराम।

**५६२१. प्रतिसं० २ ।** पत्रस्० ६६ । स्व० ११ $\times$ ५ ५ इ.च. । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

विशेष — इति श्री मदभट्ट विनायकारमज दीक्षित रामदास विरचिन प्रकाणाख्ये प्रवोध चन्द्रोदय नाटक व्याख्याने जीवन्मृत्ति निरुपणु नान पण्टाक ।

**५६२२. सदनपराजय — जिनवेवसूरि** । प्रसं ५२ । घ्रा० १०  $\times$  ५ इन्त । भाषा सस्कृत । विशेष — नाटक । रक्काल  $\times$  । लेक काल स १६२८ ध्रामोज मुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस् ० २५० । प्राप्ति स्थान — भद्रापकीय दिक जैन मन्दिर ध्रजनेर ।

५६२३. प्रति सं०२ । पनस० ७४ । प्रा०११४५ इच । ले०काल स०१६४१ वैशाख मुदी ३ । पूर्ण । वेष्टुनस० ३६६ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**विशेष** - प्रति हिन्दी टीका सहित है।

५६२४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४६ । झा० ११ ४४३ इवा । ले० काल स० १६०७ फाल्गुन बुदी ५ सोमवार । पूर्ण । वृटन स० ⊏३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

५६२**५. प्रतिसं० ४**ः । पत्र स० ३५ । म्रा०११ × ४३ इन्त्र । ले० काल स० १८०० ज्येष्ठ सुरी १२ । बेष्ट्रन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

विशेष--लवाण नगर के चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प० भ० महेन्द्र कीर्ति ने प्रतिनिधि कराकर स्वय ने संशोधन किया था।

५६२६. प्रतिसं० ४ । पत्र म०३७ । प्रा०११४६ इच । ले॰काल स० १६२६ मगसिर बुदी ४ । पूर्णे । बेष्टन स०.६७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपूर ।

विशेष -- प्रशस्ति विस्त प्रकार है---

सवन् १६२६ वर्षे मार्गशिर विद ४२वी श्री मूनसपे मरस्वतीगच्छे बलात्कारणी कुरकुंदावायिक्ये म० पपनिस्त तराष्ट्रे भट्टारक सकलकीति तराष्ट्रे भट्टारक मानभूषणदेवा तराष्ट्रे भट्टारक विजयकीतिदेवा तराष्ट्रे भट्टारक गुमश्चरदेवा तराष्ट्रे भट्टारक मुमितकीतिदेवा तद्युक भाता आवार्य श्री सकलभूषण गुम्पदेशातृ जिल्ला कर हरला पठनायं भीलोडा वास्तव्य हुंबडआतीय दो. मूला भावी वा पूर्तिल तयो सुन धर्मभार्यय जिनमूजापुरदर ब्राहारमधर्मपण्यमास्त्रदानितरागैकतत्वर जिनशासनस्त्रागर हार दो. सकर भावी सकपदे ऐतेवा मध्ये दो. सकरस्तेन स्वजाना वरणी कर्मक्षयां श्री मदन पराजय नाम शास्त्र निवाण्य दत्तं ।।

ब्रा. शिवदास तत् शिष्य पडित बीरभाग पठनार्थ।

५६२७ प्रति सं०६। पत्रस०३२। प्रा०१०१ै ४ ४१ इचा। ले०काल म०१६६० वैशाल मुदी ६। पूर्ण। वेष्टुनस०१६७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुदी।

प्रशस्ति—सन् १६६० वर्षे मिनी बैजाल सासे गुनल पक्षे नवस्या निची रिववासरे श्री मूलसभे नवाम्नाचे नरस्वनीगच्छे कु दकुदाचार्यस्वये महलाचार्य श्री नेमिचन्द्र श्री तत्पट्टे महलाचार्य श्री यक्ष कीर्ति तिच्छन्य ब्रह्म गोपानदास स्नेनिलिपिकृतीमद सदनपराजयाङ्कम स्वास्परनार्थ कुमनगढ मध्ये ।

**५६२८. प्रतिसं०७।** पत्रस०५१। ग्रा०१०हें 🗴 ५ इला। **ले०काल** स०१८४२ चैत बृदि ३ ।पूर्णा। वेष्टन स०३२६। **प्राप्ति स्थान**—दि॰जैन मस्दिर पार्श्वनाथ चौगान बृंदी।

४६२६. प्रति स० ६ । पत्र स० ३१ । स्ना० १०}४५ इचा । ले० काल 🗴 । पूर्गा । बेशून स० १३७ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर पार्थ्वनाथ चौगान बृदी ।

५६३०. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८६ । सा० ६imes imes imes imes imes imes १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सरिदर पार्थ्यनय चौगान बूंदी ।

५६३१. प्रतिसं० १०। पत्र स० ५१। ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं० ५५-३५। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर।

४६३२. मिथारव **संडन नाटक वस्तराम साह**। पत्र स०१६३। भाषा हिन्दी। विषय-नाटक। र०काल स०१६२१ पोष सुदी ४। लेकाल स०१६१२ म्रासोज सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन म० १४६। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पत्रायनी मदिर मरनपुर।

५६३**२. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० १०६ । ग्रा० १०३ × ४ हुँ दश्व । ले०काल स० १०५७ ग्रायाद सुदी १५ । पूर्ण । बेट्टन स० ६६-६७ । प्राप्तिः स्थान---दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारार्थीसह (टोक) । विरोध----सिकपुर मे प० शिवजीराम ने सहजराम व्यास से लिखनाया था ॥

५६३४. प्रतिसं० ३ । पत्र स०१८ । बा०६ × ६ इ'च । ले० काल × । ब्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०१२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

५६३५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १६ से ११६ । आ०६ १४६६ चान के काल स० १६४५ । प्रपूर्ण । बेष्ट्रत स० १६३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल टॉक ।

प्रहत्न प्रतिसं**० ५ ।** पत्र स० १०१ । आ० १० × ५ इ.खा । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पंजायती दूनी (टॉक) ।

विशेष-दूनी के जैन मन्दिर में सा॰ १६३६ में हजारीलाल ने वढाया था क

५८३७. प्रतिसं०६ । पत्रत्त०६१ । स्रा०१० ४ ५ है इचा ते०काल म०१८७८ प्रथम झासोज सुदी ⊏ । पूर्ण । वेष्टुन.स० ७३ । प्रापित स्थान — दि० जैन मंत्रर प्रवायनी दूरी (टोक) ।

विशेष -- महात्मा गुमानीराम देवग्राम वासी ने तक्षकपुर मे प्रतिलिधि की थी।

५६३ म. प्रतिसं० ७। पत्र स० ३६ । म्रा० १३ ४४ दृं इञ्च । ले० काल 🗴 । म्रपूर्ण । बेष्टन स० ६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

४६३६. प्रतिसं० म । पत्र स० ४= । आ० १११ ४४ ई इश्व । ते० काल 🗴 । अपूर्ण । बेष्टन स० २७०। प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर पार्वनाथ चीमान वृदी ।

५६४०. प्रतिसं० ६ ।पत्रस० ४४ । मा० १२ ×५ हुन्दः । ले०काल 🗴 । स्रपूर्णः । वेष्टन स० २३० । प्राप्ति स्थान—द० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

**५६४१. प्रतिसं० १०**। पत्रस० १२७। **प्रा**० ६१XYै इ.च. । ले०काल X। पूर्ण । वेप्टन स० १४६ ६७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर।

५६४२ प्रतिसं० ११ । पत्रस० ६२ । घा० १२  $^1$  ४ ६ $^1$ ४ ६व । ले०काल imes । पूर्ण । वेध्यत सं० ४६–२० । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ङ्व गरपुर ।

५६४३. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ११५ । आ० ११ × ५ इचा । ले० काल स० १८६१ छाषाढ बुदी ४ । पूर्ण । त्रेष्टन स० ६०-४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

विशेष-- गुद्ध एव उत्तम प्रति है।

१९४४. **१३ ।** पत्र स० २८ । खा० १२ ४ ८ इस । ले०काल मं० १६५७ जेठ सुरी १५ । छपूर्ण । बेष्टन स० ५० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन अपवाल पत्रायती मन्दिर अलवर ।

**५.६४५. मिध्यास्य संदन नाटक** —  $\times$  । पत्रस्त २४ । झा० १२  $\times$  = इस्व । मापा - हिन्दी गद्य । विषय—नाटक । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १६४५ । पूर्ण । जीएँ । बेष्टन स० २०-७५ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायं सह (टोक) ।

५६४६, **हनुबन्नाटक — मिश्र मोहनदास** । पत्र स० २७ । घा० १३×६५ डवा भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेट्टन स० २०० । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मंदिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष - प्रति सटीक है।

५६४७. **तालुस्बुरज्ञान**— × । पत्र स०६ । छा० ११ ×५ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-सगीत । र०कारा × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०४२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्वनाय मन्दिर उदयपुर।

म्नंतिम प्रहास्ति —ऽति श्री मानभट्टसगीतरामानुष्यवन्द्रवास्ति विरक्षिते व्रतमुपैष्यन्निति सत-पपस्य प्रथम श्राति प्रभावः । √वस्यि पद तालाः ।

५६४६. रागमाला—  $\times$  । पत्र स० ५ । प्रा० १०  $\times$  ४ इ.स. । प्रापा-सस्कृत । विषय-राग रागनियां के नाम । र०काल—  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टन स० २१२ । प्राप्ति स्थान— दि० भैन सदिर लक्कर, जयपुरु  $_{*}$ 

५६४६. रागरांगिनी (सचित्र) —  $\times$  । पत्र स० ३० । ग्रा० १०  $\times$  ७ $\frac{1}{2}$  इख । विषय-संगीत । पूर्ण । वेप्टन स० ३–२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष-३० राग रागनियों के चित्र हैं। चित्र सुन्दर हैं।

५६५१. सभाविनोद (रागमाला) — गंगाराम । पत्र स॰ २४। द्वा॰  $-\frac{3}{4}$   $\times$  ४ इच । भाषा-हिन्दी पछ।। विषय-सगीत । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेषृत सं॰ १२६४। **प्राप्ति स्वान**—भ० दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर ।

#### विशेष---प्राटिमाग---

गावत नाचत घापही डौरु में सब घंग। नमो नाथ पैदा कहैं सीस गग घरघग ।।१।। हिंछ न घावें घगम चाति मनस्य की गम नाहि।। विषट निकट समही रहें बोर्ल घटघट माहि।।

#### द्यंतिम-पट राग प्रभाव कविल ---

ब्दुराग अन्य काशन स्मेरन से स्वतं जात ।
माल कोशा पाये गुनी ग्रंगन जरातु है।
हिंडोर की ब्रालापने हिंडोर श्राप भोटा लेत
दीपक गाये गुनी दीपक जरातु है।
श्री में इह गुन प्रकट बलानत है सुकी।
रूप हमो होन फिर्स हलसात है
गारासम कहें भेवराग को प्रभाव
इह मेप बरमात है।

इति श्री सभाविनोद रागमाला ग्रंथ स पूर्ण।

५६५२. सगीतशास्त्र—  $\times$  । पत्र स० ६१-६४ । प्रा० १२  $\times$  ४ ६% । माषा-सस्कृत । विषय-संगीत । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वेहन सं० ४६४/६१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**५६५३ संगीतस्वरभेद**—  $\times$  । पत्र सः  $\times$  । प्रा॰ १२  $\times$  ४ इश्वः । भाषा-सस्कृत । विषय-संगीत । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं॰ ४६५/६१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संमबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

---:0:----

### विषय -- लोक विज्ञान

**५६५४. चन्द्रप्रज्ञाति— ×** । पत्रस० २६ । ब्रा० १३ रे ४ ६ च । भाषा-संस्कृत । विषय-सोक विज्ञान । र०काल ४ । **से०का**ल स० १५०३ । पूर्या । वेष्टन स० १७७/५३६ । **प्रार्गत स्थान---**समबनाथ टि० जैनं-मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति पतने कागज पर है। एक पत्र पर २७ पत्तिया है। श्रान्तम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति चन्दपणाती सूत्रं। ग्रथाग्रथ २००॥ श्रांतिम-श्री गथारापुर्यो प्राग्वाट ज्ञाति सक्टमजनिष्ठ।

जोगाक: सथपित: तम्हलसदामंकमंसित: 11१11
तस्यानुरक्त जिलायिताडारहीत्मुगुफ्तिता।
तेनमोताया मुविनयो लयामिम, रमजाति समृद्ध: ॥
भान् नगराम मुख्यि प्राम्कर गौरीसभृति बहुकुट्ठं बंयुत: ।
राखीजाति रया मुज्याति पुष्पानुविध जाते. 1311
प्रथित तया बाख्य गमनं गेख्य मामन भागमाननानुमता।
श्री जयक्यद गुम्यामुप्येशे नावनात तक्व ॥४11
निजनदमी मुक्षेत्रे निक्षेत्रं मान्विद्धतास्याह।
लक्षान्मित ग्रथ विकास लेक्याव्यः ॥११॥
लिक्यातिम्य श्रीमक्षाद्धप्रजन्मागमुत्रीमद ।
लोचन स्व निधि मिनावर्ध ११०३ विद्युपा मतनोययोगिसनात् ॥६॥
श्रीहरमत्त्री राजहमावर्ध्वरक्षत्व वृक्तरे।
श्रीहरमत्त्री राजहमावर्ध्वरक्षत्व वृक्तरे।

**४६५५ जम्बूदीय पर्यान्त** — ४ । पत्र स० १३१ । म्रा०१०४४ रेटच्च । माया-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । २०काल ४ । ल०काल ४ । पूर्ण । वेस्टन स० १३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**— वि• जैन कडेलवाल मन्दिर उदयप्र ।

विशेष-प्रतिप्राचीन है।

५६५६. प्रतिसं० २ । पत्रस० १६६ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन  $\times$  । प्राप्ति स्थान—- दि॰ जैन पत्रापनी मंदिर भरतपुर ।

४६४७. जम्बूहीय संघयिए— हरिमद्र सूरि । पत्रतः ६ । धा०१० $\times$ ४ इच । माषा— प्राकृत । विषय——र्गागत । र०काल  $\times$  । ले०काल म०१६०७ झानोज सुदी ७ । पूर्ण । वेस्टम स०६८–१२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायितह (टोक) ।

विशेष - संस्कृत टब्बा टीका सहित है।

४६५८. तिलोय परेएाति— प्राचार्य यतिवृषम । पत्रस० ३१६ । प्रा॰ १२५ ४७ है इ व । भाषा-प्राहृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल ४ । लेक काल २०१८१४ माघ सुदी ६ । पूर्ण । बेहन सं० २११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा । विशेष--प॰ मेघावी कृत संस्कृत में विस्तृत प्रशस्ति है। कामा में प्रतिलिपि हुई थी।

१८५६. प्रतिसं०२ । पत्र सं०३४६ । घा०११×५ इचा । ले०काल स०१७६६ वैज्ञाल बुदी६ । पूर्णावेष्टन स०१३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दीवान जीकामा।

विशेष — प्रजवाल ज्ञातीय नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी। पत्र स० ३४० ३४६ तक मेघाबीकृत संबद् १४१६ की विस्तृत प्रणस्ति दी हुई है।

**५६६०. प्रति सं० ३ ।** पत्र स० २७ । ब्रा० ११×६ <sup>2</sup>, इन्त्र । ले० काल सं० १७५० । पूर्ण । वैष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

४६६१. त्रिलोक दीपक—वामदेव । पत्र तं० ८६ । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञात । र०काल × । ले० काल स० १७६५ सावन सुरी १ । पूर्ण । बेष्टनसं० २८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती सन्तिर भरतपर ।

विशेष--प्रति सचित्र है।

**५९६२ प्रतिसं०२।** पत्र स० द२। प्रा०१२ $\times$ ७ $^{1}_{7}$  इञ्च। ले० काल सं०१७३४ कार्तिक सदी१०। पूर्ण। बेक्न स०२१। **प्राप्तिः स्थान**— दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष--- भ० रत्नकीति ने प्रतिलिपि की थी। प्रति सचित्र हैं।

५८६६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २३ ७२ । आ ०१२ ४ ६ इञ्च । ले०काल ४ । अपूर्णं । वैकृत स० ०१ । प्राप्ति स्थान---- दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

**विशेष** – सहिंटया है ।

५६६४ प्रतिसं०४ । पत्र स०१ – ३२ । ले० काल 🗴 । घपूर्ए । वेष्टन स०६२ । प्रास्ति स्थान — १२० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

**५**६६**५. प्रतिसं० ५**। पत्रस० **१०१**। मा० १३imes६इ च । ले**०काल** स० १४७२ । पूर्ण । बेष्टन सं० १३२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मुख्याल मदिर जदयपुर ।

विशेष - पत्र ४० पर एक वित्र भी है ब्रम्यन्तर परिषद् इन्द्र के रनिवास का चित्र है। वरुएकुमार मोमा, यम, ब्रादि के भी चित्र हैं।

४.६६६. जिलोक प्रक्रांप्त टोका —  $\times$  । पत्र सं०२४ । प्रा०११ × ४ इंच । मार्थ — प्राकृत सस्कृत । विषय लोक विज्ञान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रन सं०१४६ । प्राप्ति स्थान — भ० ि० जैन सन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-प्रति प्रच्छी है।

 $\chi$ ६६७. त्रिलोक वर्णन—जिनसेनाचार्य। पत्र सं० ११-५६ । भाषा—सम्ब्रत । विषय— नोक विज्ञान । रूकाल  $\chi$  । ते० काल  $\chi$  । श्रदूर्णं । वेष्टन स० ६१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष-हरिवंश पुराश में से है।

 $\chi$ ६६ म. त्रिलोक बर्गन $-\times$ । पत्रसं० १०। घा० ११ $\times$ ४े इचा । माया—प्रकृत। विषय—सोक वर्गन। र०काल  $\times$ । लेकाल सं० १४३० घाषाद सुदी ७। पूर्णं। बेष्टन सं० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारावसिंह (टॉक)।

५८६६. त्रिलोकसार— नेसिचनद्वाचार्यं। पत्रस० ६६ । ब्रा० ११  $\times Y_{i}^{2}$  इन्त्र। आपा—आकृत । विषय— सिद्धान्त । र०काल  $\times$ । ले॰ काल सं॰ १६६१ । पूर्णं । वेष्टन स॰ ४७४ । प्रास्ति स्थान—वि॰ जैन सभवनाथ मन्तिर उदयपुर ।

विरोध----प्रशस्ति इस प्रकार है---सं० १६६१ वर्षे मुलसंधे मट्टारक श्री बादिभूषमा गुरुपदेशात् तत् फिल्म इक श्री बडा मान प्रत्मार्थे।

५६७०, प्रति सं०२ । पत्रसं०१७ । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०६४/१८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

**५६७१. प्रति स**े **२ । पत्रस**०७६ । ब्रा०११imes४ इञ्च । ले० काल स०१६६७ पीय बुदी १० । वेग्टन स०२५१/६३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष - श्री गिरिपुर (इ गरपुर नगर) मे श्री म्रादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

भू६७२, प्रतिसं० ४ । पत्र स० २६ । म्रा० १० ×४ हुन्दा । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७१ । प्राप्ति स्थान-भ० दि० जैन मन्दिर म्रजमेर ।

५९७३. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ३-१४ । ग्रा० १०<sup>९</sup>×४) इश्व । ले०काल × । सपूर्ण । वेक्रनस० २६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष— १४ यत्रों के चित्र दिये हुए है।

**५६७४. प्रतिसं० ६** । पत्र स० १६ । सा० १० $^{3}_{1}$ ×४ $^{3}_{2}$  इच्च । ले० काल स० १६६२ बैशाख सुदी १५ । पर्सा । बेष्टुन स० २७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर ख्रादिनाथ .बूदी) ।

विशेष बहाचारी केशवराज ने ग्राम सालोडा में प्रतिलिपि की थी। प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

पूह**७५. प्रतिसं०७** । पत्र स०२२ । आर०११ ४५<sup>5</sup> इन्हाले काल स०१५१८ काती सुदी ३ । पर्यो । वे०स०६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर झादिनाय बुदी ।

विशेष - प्रणस्ति—सन्त १४१० वर्षे कालिक सुदी ३ मगलवारे देवसाह नवरे रावत भोजा भोकल राज्ये श्री मुलन्मे बलाकारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तस्य शिष्य महात्मा सुभवन्द्रदेव लिखापित श्री श्री नेमिनाच चैत्यालये मध्ये । बिएक पुत्र माहराजेन वास्ते ।

५८७६. प्रतिसं० म पत्र स० १–२० । आ० १२imes ४ $\xi$  इश्व । ले०काल imes । बृष्टन स० ७४म । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

५६७७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २७ । घा० १४×७ ६घ्च । ले०काल स० १६३२ मगसिर बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टनस० ३१ । प्राप्ति स्थान----विः जैन मन्दिर तेरहपथी नैसाबा ।

विशेष--चन्दालाल बैंद ने स्वय प्रपने हाथ से पढ़ने को लिखा था।

५८७८. प्रतिसं० १०। पत्र स०६०। खा०१२ × ५३ इत्रा। ले० काल स०१८४६। पूर्णं। वेद्यनसं०१८७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ इन्दरगढ।

विशेष--- प्रति सस्कृत टीका सहित है। साह रोड्ड सभद्रा का बेटा मनस्या ने ज्ञान विमल की प्रति से उताराथा।

**५८७६. प्रतिसं० ११।** पत्र स॰ १०५। ग्रा॰ ६ $\frac{1}{4}$  × ४ $\frac{1}{4}$  इन्छ । ले॰काल स॰ १७६६ प्रासीज बुदी द । पूर्णे । बेष्टन स॰ १४/१। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरमङ् (कोटा)

प्रकृतः प्रतिसं० १२ । पत्रसः वर्षः मा० १३×६ है इश्वः। ले० काल स० १७६६ पौप मुदी ११ । पर्याः । बहुत स० १४६/२ । प्राप्तिः स्थान—वि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरमङ् (कोटा) ।

५६८९. प्रतिसं० १३ । पत्र सं०२८ । ग्रा० १३imes५६ इञ्च । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं०३१८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष---६३ मलाका के चित्र है।

५६८२, प्रतिसं०१४। पत्रस०२८ । प्रा०१० $\frac{1}{2}$ ४ $\frac{1}{2}$  इंच। ले० काल स० १५३० चैत बदी ५। पूर्यं। बेहुनसं०२०४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

्रि**विशय** — खण्डेलवाल जातीय पाटनी गोत्रोत्पन्न स॰ तोल्हा मार्या तोल्ही तथा उनके पुत्र क्षेती पीत्र जिनदास टीला, तथा बोटा ने कर्मक्षय निमित्त प्रतिलिपि करवाई थी।

४६८३. प्रतिसं० १४। पत्र स०५१। प्रा०५३ ४३ इ.स.। ले॰ काल स० १५२७ चैत्र बुदी १३। पूर्ण। वे० स०१८४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

५९६५ प्रतिसं० १६ । पत्रस० २६ । झा० १०१४४३ इ.च.। ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । प्राध्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानणी कामा ।

४६८४. प्रतिसं० १७। पत्र स० ७२। मा० १२३ ४५ इ.च.। ले०काल स० १६०६। म्रपूर्ण। वेष्ट्रत स० १५३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन म्रप्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष-प्रति टीका सहित है किन्तु सब पत्र अस्त व्यस्त हो रहे है।

५६८६ प्रतिसं०१६ । पत्र स० ⊏३ । घा०११र्¦ ४४ है इश्वा । ले० काल स०११४४ । पूर्ण । बेष्टत स०१६३ । प्राप्ति स्थान—घषवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

१९६६. त्रिलोकसार—  $\times$  । पत्र स०१७४। ब्रा०११ $^1_2\times^2_2$  इख । भाषा—सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१६५६ पौष बुदी ४। पूर्ण । बेष्ट्रन स०१५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर ब्रादिनाथ बुदी ।

विशेष-- प्रशस्त--

सवत् १६४६ पीय विद चतुर्थी दिवसे वृहस्पितिवारे श्री मूल्सचे नद्यामनाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुरवृत्दाचार्याचये भट्टारक श्री पद्मनिदिवा तत्पट्टे भट्टारक श्री ग्रुमचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनबद्ध देवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभावन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री चन्द्रकीत्तित्तदाम्नाये खडेनवालात्त्रये स बडा गोत्रं प्रवाबती सध्ये राजा श्री मानसिंख प्रवत्तं माने साह धण्राज तद्भायें प्रथम धण्यस्ति द्वितीया सुहागिण प्रथम मार्थी स्थान

५६८६. प्रति स० २ । पत्रस० ६–६ । प्रा० ११ $^4_1 imes imes ^4_2$  इ.स. । ले० काल स० imes । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

३.८.९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २-३१ । घा० १०४१ इच्च । लेक्सल स० १७४१ । घपूर्ण । वेष्टम स० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नौषरियान मानपुरा (टॉक्स)

**५९६१. प्रति सं० ४ ।** पत्रस० १२३ । घा० ११ $\times$ ५ इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं $\bullet$ २५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ब्रववाल मन्दिर उदयपुर ।

५६६२, प्रति सं० ५ । पत्रस० ६ । ग्रा० १० ४ ५ है इचा । ले०काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वेष्टनमं० १४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भ्रमवाल मदिर उदयपुर ।

५८६३. त्रिलोकसार सटीक —  $\times$  । पत्र स॰ १० । मा० १२  $\times$  ६ त्था । माषा — प्राकृत । संस्कृत । विषय — लोक विज्ञान । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन स॰ १६ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन सम्बन्त मदिर उदयपुर ।

**५६६४. त्रिलोकतार भाषा** —  $\times$  । पत्र स० ३१ । ब्रा० १ $\times$ ६ इन्छ । भाषा हिन्दी गढा । विषय—पू विज्ञान । र०काल  $\times$  । से०काल सं० १८६६ ज्येष्ठ सुदी १ । प्रपूर्ण । वेष्ट्र स० ७१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पद्मायती हुनी (टोक)

विशेष---मध्नवा देश के सिरोज नगर में लिखा गया था।

**५६६५. प्रति सं० २ ।** पत्रस० ३४-४३ । झा० १२ ४ ६ इञ्च । ले**०काल** ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाता (बुदी)

**५६६६. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० ६ । म्रा० ११×४ | इञ्च । ले०काल × । स्रपूर्ण । वेष्टनस० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—हि० जैन महिर बोरसली कोरः ।

**५६६७. प्रति सं ४।** पत्रस० २१ । ग्रा० १० $\times$ ४ इ.च.। ले॰काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन स॰ १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी शैसा।

विशेष -- त्रिलोकसार में से कुछ चर्चाए है।

**५६६६. त्रिलोक सार** —  $\times$  । पत्र स० ११५। ग्रा० ११  $\times$  ५े इखा। आया—मम्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेग्टन म० १२२. १७ । प्रास्ति र**थान** — दि० जैन प्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष---११५ से ग्रागे के पत्र नहीं है।

५६६६. त्रैलोक्यसार टोका – नेमिचन्द्रगरिंग । पत्रस० २२ । ग्रा० १०४४ दश्च । भाषा— सस्कृत । विषय लोक विज्ञान । रक्शाल  $\times$  । लेक्शाल म० १५३१ बायाड मृदी १३ । बेष्टुन म० १५५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६००० प्रतिसं०२ । पत्र स०३८ । आ.०१० ५.५ इ.आ. । ले०काल ४ । यण्टन स० १८६ । प्राप्तिस्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर, अथपुर :

**६००१. प्रतिसं०३** । पत्रस०८६ । आ०११′ ×४ दश्व । ले० काल स०१८८३ भाववा सुदी ४ । पूर्णे । वष्टन स०१८२ । **प्राप्ति स्थान** ---दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - चपावती नगरी में सोलकी राजा रामचन्द्र के राज्य में प्रतितिषि हुई थी।

६००२. प्रतिसं० ४ । पत्र स०७१ । ग्रा० १००० ४४ ई. : । ते•काल स०१५४० फागुन सुदी ३ । बेष्टन स०१८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लग्कर जयपुर ।

विशेष---जोशी श्री परसराम ने प्रतिलिपि की थी।

६००३, प्रति सं० ४ । पत्रस० ६४ । धा० १० $\frac{3}{6} \times \frac{3}{6}$  इ.ख । के०काल स० १८८३ घासोज बढी ६ । बेष्टन स० १८४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६००४. त्रिलोकसार टोका—माध्यचन्द्रत्रिविद्यः। पत्रस० १४६ । झा०१२  $\times$ ४ $^2_{\gamma}$  इन्थः। मावा-सःस्त्रतः। विषयः लोकविज्ञानः। र०कालः  $\times$ । लेकालः स० १४८६ सावरणः सुरीः १४ । पूर्णः। श्रेष्टतःस० ६२— ...। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिरः नेमिनाथ टोडारायसिंहः (टोकः)।

प्रशस्ति— सवत् १५८८ वर्षे धावण मृदि वतुरेशी दिने गुरुवारे श्री मूलसंघे सरस्वती गाहे बलात्कार गागे थी कुन्दकुन्दाचार्याच्ये महारक श्री पधानिंदस्तरहें भ० श्री सकलकीति देवास्तरपट्टे महारक श्री बुवन-कीति देवास्तरपट्टी भ० श्री ज्ञानमूष्यग् देवा ...... ।

सा० १८२१ फागूगा मुदी १० को प० सुखेरा द्वारा लिखा हुआ एक विषय सूची का पत्र और है।

६००५. प्रतिसं० २ । पत्र स० २२८ । घा॰ १०imes १ हुँ हुख । केश्काल स० १४४१ कामुस्स सुदी १३ । पूर्स । बेष्टुन स० २०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष——वडेलवाल जातीय वाकलीवाल गोत्रीत्पन्न साहलाला गार्यालखमी के वण मे उत्पन्न नेता व नायुने ग्रथ की लिपि करवायीथी।

६००६. प्रति सं० ३ । पत्रस० १६ । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनस० २५ । प्राप्ति स्थान — पचायनी दि० जैन मन्दिर डीग ।

६००७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६० । प्रा० १२१ × ४ हुँ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-नोकविज्ञान । र०काल × । ने० कान ग० १७१५ फागुगा वदि ४ । पूर्ण । वेग्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान—पंचायती दि० जैन मन्दिर करोली ।

विशेष - २ प्रातेया और है। नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की।

**६००६. प्रतिसं० ५** । पत्र स० दह-११७ । ग्रा० १२३ ×७ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वपन स० ७३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६००६. प्रति स० ६ । पत्रत्त०१४५ । छा० १३ $\times$ ५ $\S$  हुआ । ले०काल ग० १००२ । पार्ग । बेष्टन स० १७३ । प्राप्ति स्थानः— दि० जैन श्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६०**१०. प्रति सं०७ ।** पत्र म०१६५ । म्रा०११र्¦ ४ इ.ख. । ले० काल → । पूगा । बेण्टन स०७६ । **प्राप्तिः स्थान**—वि० जैन ग्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — दो प्रतियो का मिश्रस है। ६० में श्रामें दूसरी प्रति के पत्र है। यह पुग्तक स्नाचार्य त्रिभुवनचन्द के पढ़ने की थी। प्रति प्राचीन है।

६०**११. त्रैलोक्यसार टीका — सहस्रकीर्ति ।** पत्र स०१७ । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल १७६३ । वूर्ण । वेष्टन स०२२ । **प्राप्ति स्थान** — पनायती दि० जैन मदिर डीग ।

६०१२. त्रिलोकसार चर्चा— × । पत्र सः ६३ । प्राः १३ × ६ इश्व । मागा-प्राकृत । विषय-चर्चा र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । वेष्टन म०१४२१ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मस्टिर जनसेर । ६०१३, जैलोक्य दीपक---वामबेद । पत्र स न १ । प्रा० २०४१२ इन्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक-विज्ञान । र०काल ४ । ले० काल स० १७२१ फाल्गुन मुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं १७६ । प्राप्ति स्थान----वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष — प्रति बडे घाकार की है। कोटा दुगें में महाराज जगतसिंह के राज्य में महावीर जैत्यालय में जगसी एव सावल सोगाणी से लिखवाकर भ० नरेन्द्र कीर्ति के शिष्य बालचन्द्र की भेंट की थी। प्रति सचित्र है।

६०१४, त्रैलोक्स स्थिति बस्पंत $-\times$ । पत्रस० १२ । प्रा॰ १२ × ५ $^2_1$  इख । साधा-हिस्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान । र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं॰ १६१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चोगान वृदी ।

६०१५. त्रिलोकसार—सुमितिकोर्ति । पत्र स०१५ । घा०१२४६ इचा । भाषा-हिन्दी पदा। विषय−लोक विज्ञान । र०काल स०१६२७ माघ सुदी१२ । ले०काल स०१८५६ । पूर्णं। वेष्टन स० १६२२ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर प्रवर्षर ।

६०१६. प्रतिसं० २ । पत्रस० १३ । घा० १०४५ इला । ले०काल स० १७६३ बाबाढ सुदी १४ । पुर्छा । बेग्न स० ४० । प्राप्टित स्थान — दि० जैन मदिर दबलाना (ब्रॉदी) ।

**६०१७. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स०११ । ब्रा०१०  $\times$  ४ $\frac{3}{6}$  इच्च । ले० काल स०१७६२ फाल्गुन सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स०१८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६०१६. प्रतिसं० ४ । पत्र स०२-४४ । म्रा०२ $rac{2}{3} imes rac{3}{3}$  इञ्च । ले०काल imes । मपूर्ण । केवनस० १२७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मस्दिर दबलाना (वंदी) ।

**६०१**६. **प्रतिसं० ५ ।** पत्रस० ११ । ले०काल  $\times$  । पूर्ग । वेष्टनसं० ४१०-१५३ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मदिर कोटडियो का हु गरपुर ।

**६०२०. त्रिलोकसार—सुमतिसागर** । पत्रस**्** १२६ । गापा सम्ब्रत । र०काल $\times$  । ले०काल सं० १७२४ वैशास सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टुनस० ८६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६०२१. त्रितोकसार वचनिका—  $\times$  । पत्रस० ३७६ । आ० १२३ ४६ दे इ. च. भाषा — हिसी गद्य । जिपय — लोकविकात । २० काल . । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १५२/६२ । प्राप्ति स्थान — पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर इन्द्रगङ्ग कोटा ।

६०२२. त्रिलोकसार पट $-\times$ । पत्र स०१ । ग्रा० २५  $\times$  १३ इश्व । विषय- लीक विज्ञान । २०काल  $\times$ । लेखन काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० २७३-१०६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गुण्यूर ।

विशेष-कपडे पर तीन लोक का चित्र हैं।

६०२३. त्रिलोकसार— $\times$ । पत्र स ५१। प्रा० १२ $\times$ ६ ६ द्व । साथा हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान । र०कान $\times$ । ले० कान $\times$ । प्रपूर्ण । वेध्टन स० १७२-७३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्टीट्यों का हुनरपुर ।

६०२४. त्रिलोकदर्यम् -- खडमसेन । पत्र सं० १४६ । मा० १२ 🗴 ५१ हञ्च । आखा — हिन्दी पछ । विषय-लोक विज्ञान । रक्काल सं० १७१३ । लेक्काल सं० १८६६ । पूर्ण । बेष्टन सं० ११५१। प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर पचावती दूनी (टॉक) । ६०२५. प्रतिसं०२ । पत्रसं०२७० । घा०१० × ५ इल्डा लेकाल स०१ ८९८ पौष सदी२ । पूर्ता बेहनसं०१४०७ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर धजमेर मण्डार ।

६०२६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १२१ । प्रा० १२४४ है इथा । ले० काल सं० १८४५ पीष इदी १ । पूर्ण । बेष्टुनसं० ३१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुंदी) ।

६०२७. प्रतिसं० ४ । पत्रस०६० । ब्रा०१० $\times$ ६ $^1_2$  इन्ब । से०काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टन सं०६३ । प्राप्ति स्थान — टि० जैन मन्दिर नागदी बंदी ।

विशेष ---६० से आगे पत्र नहीं हैं।

६०**२ प्र. प्रतिसं० ४ ।** पत्र सं० ११२ । प्रा० १० ४ इन्खा ले॰ काल स० १७६० वैशास बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान—**यवायती दि० जैन मन्दिर करौली । इसका दूसरा नाम त्रिलीक चीपाई, त्रिलोकसार दीपक भी है ।

विशेष—स० १७६० वर्षे वैशाल मासे कृष्ण पक्के सप्तम्यां गुरुवासरे श्री मूलसचे बलात्कार गर्गे सरम्बती गर्छे कु दक्कुन्दावार्यम्यो अजमबलवेशे कह्वताहा गीत्रे राजा जैतीस्य राज्ये कामवनमध्ये 1 भट्टारक श्री विश्वयूष्यपुरेदास्तरपट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रभूष्यपुरेदास्तरपट्टे भट्टारक श्री पुरेन्द्रमृषयपुरेवास्तरिक्य परिव राजा गोगा सकनक्षत्रेववार्थं श्रीमन्त्रेवीक्यवारमाचा घंधीय निवित 1

क्षय हिलाबटीपुर सुभस्याने तत्र निवास कानु सोगानी जाति साहजी मोहतदास तस्य मार्या हीरा तन्तुत्र द्वी व्यंत्रे जनकः नस्य भागां प्रतरी तत्तुत्र भोगीराम द्विगेय जनकस्य भाता जन्त् तेषा मध्ये साह जनकरेगु लिखापित स्वजानवर्गी क्षयाये। श्रीमत्त्रिजोकदीपक नाम ग्राय नित्य प्रत्मति। सर्व ग्रंय सस्या ४००६।

६०२६. प्रतिसं०६ । । पत्र संख्या ३२० । ग्रा० ६ $\times$ ६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-सोकविज्ञान । ले० काल स० १७३२ । पूर्ण । बेष्टन संख्या ८८२ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन भन्दिर प्रजीर ।

६०३०, प्रतिसं० ७ । पत्र सं० १४० । बा० १२ 🗡 ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । ले०काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स.०५ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपूषी दि० जैन मंदिर नैसावा ।

६०३१. त्रिलोकसार भाषा —  $\times$  । पत्र स० २४२ । म्रा० १३ $\times$ ६ $^1_2$  इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल स० १६४४ । ले**०काल** स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१४ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मदिर सजसेर ।

६०३२. त्रिलोकसार सायाः— × । पत्र स० ३१० । धा० १० × ७ इत्त्र । भाषाः—हिन्दी नयः । विषय-त्रिलोक वर्णतः । २०काल × । से०कालः स० १८७४ मगसिर बुदी १२ । पूर्णः । बेष्टन सं• ८० । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाय दुनी (टोक) ।

विशेष — निस्ततं महात्मा जयदेव वासी जोवनेर लिख्यौ सवाई जयपुर मध्ये । कटि कुवरी करवे डाडी, नीचे मुख घर नयए । इए। सकट पुस्तक लिख्यौ, नीके रिस्तयौ सयए।। ६०३३. त्रिलोकसार भावा—महापंडित टोडरमल । पत्र सं०२४२ । भावा-राजस्थानी द्वडारी गया । विषय-तीन लोक का वर्णन । २० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वेष्टन सं०३५१ । प्राप्ति । स्थान— दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- भरतपर में विजयपाल चादवाड ने लिखवाया था।

६०३४. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १४६ । प्रा० १२  $\times$ ६ $^{9}$  इच्छ । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स०२४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रप्रवाल मदिर नैरावा ।

६०३५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २८७ । ग्रा० १२ 🗴 ७ इ.ख । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । बेष्टन स० १३६ । प्राप्ति स्थान—-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बृदी ।

६०३६. प्रति स०४ । पत्रस० २३ ४ । ग्रा० ११×७<sup>3</sup> इल्बाले० काल स०१८ प्रसोज बुदी ५ । पूर्याः बंधुन स०१२/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर ग्रलवर ।

६०३७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २८४ । ग्रा० १०३ ४ ७ इखा । लेक्सल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्तिर तेरहतथी दौसा ।

इ०इम प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ३०० । घा० १४×० दस्य । ने० कान स० ११७३ प्रायाड बुदी ११ । पूर्णा । देवटन स० १०४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेन्द्रुप ग्रेणवादाटी (सीकर)। ब्रिकेय —मजवारीसाल स्तसमाढ जि० एटा थाना नियोगी कना में प्रतिनिधि दर्धी।

६०३६ प्रतिसंo ७ । पत्रसर्व ४१८ । ग्रा० ११६ ४ ७ हे इञ्च । लेव्काल सर्व १६२३ प्रामीज बदी ६ । पूर्ण । बेब्रनसर्व २४ **। प्राप्ति स्थान**—दिव्योन मन्दिर फतेहपुर शैलावाटी (सीकर) ।

विशेष — सवाई जयपुर मे लिखा गयाथा। प्रति सुन्दर है।

६०४०, प्रति सं० ६ । पत्रस० २४१ । आ० १२९ ४ ६९ इचा । ले०काल स० १६०३ ज्येष्ठ बदी ४ । पूर्णा । बेष्टनस० ६० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपूर शेखाबाटी (सीकर) ।

६०४१. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २५० । ग्रा० १२४६ इन्थः । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञात । २० काल ४ । ने० काल स० १८१६ ग्रासोज मृदी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मंदिर भावना ।

६०४२ प्रतिसं० १०। पत्र स०३६४। आ०१२ ४६) इञ्च । ले० काल स०१८८३। पूर्यो। बेष्टुन स०२६-१७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर।

प्रशस्ति—श्री मृतसर्थे मनस्वती गस्त्रं बनात्कारगणे कुन्दकुनदाचार्यन्वये बागड पट्टे म० श्री नेमिचद्र जी तत्पट्टे म० श्री रत्नचन्द जी तत् शिष्ण प० रामचन्द्र सदारा नगरे पाश्वीजनचैत्यालये साह जी श्री बनाजी व्यवस्था नत् भाषां सोनाबाई इद पुस्तक दत्त ।

६०४३ प्रति सं० ११ । पत्रसर् २५६ । बा० १४×७ इचा । ले०काल × । अपूर्ण । वेटन सं० २१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाय चौगान बुदी ।

विशेष--- प्रागे के पत्र नहीं है।

६०४४ प्रतिसं० १२ । पत्रस० २००१ प्रा० १४४७ इञ्च । ले० काल , स० १६०२ भावता हुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । प्राप्ति, स्थान — दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)। विशेष — मालपुरामे लिखागयाथा।

**६०४५ फुटकर सर्वय्या** × । पत्र सं०२२ । मावा-हिन्दी प**य** । विषय-तीन लोक वर्णत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं०४२४-१६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंबरपुर ।

६०४६. सूकंप एवं सूचाल वर्णन  $\times$ । पत्रसं० १। घा०१० $\frac{1}{7}$  $\times$ ४ ६%। माषा-हिन्दी गढा। र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । अपूर्ण। वेष्टन स०२०२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपर शेखावाटी (सीकर)।

**६०४७. संघायिए।—हेमसूरि** । पत्र सं०४६ । आ०६ $\frac{1}{2}$  ×  $\frac{1}{2}$  इख । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय— लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्ट्रन स०१३४ र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टीक) ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

६०४६. क्षेत्रन्यास —  $\times$  । पत्र स० २ । प्रा०१०  $\times$  ६ इश्व । भाषा- हिन्दी । विषय- लोक विज्ञान । र०काल  $\times$  । पेर्लेश विद्यान सं० २१३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर राजमहत टोक ।

६०४६. **क्षेत्र समास**— ४ । पत्र स०२३ । ग्रा०१०४४ इ.ख.। **भाषा-प्राक्**त । विषय-लोक विज्ञान । र०काल **४** । ले०काल स०१४३६ । पूर्ण । वेष्टन म०२८८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर ग्रीगनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष - प्रशस्त---मवन् १४३६ वर्षे वैशाख सूदी ३।

### विषय -- मंत्र शास्त्र

६०५०. ग्रास्म रक्षा मंत्र  $\times$  । पत्र सं०१ । ग्रा० ११ $\frac{1}{2} \times V_0^2$  इन्त्र । माया—संस्कृत । विवय-मत्र शास्त्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं०४३४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर, व्ययुर ।

६०५१. ग्रोंकार वर्चानका —  $\times$ । पत्र सल्या ५। ग्रा० १२ $^1_i \times Y^2_j$  इ.च.। प्रापा-िकृती। विषय-मत्र शास्त्र । र०काल  $\times$ । लेखन काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टुन सं० १६/१६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्राप्तः भारता (राज)।

६०५२. गोरोचन कल्प $--\times$ । पत्र सं०१। द्या० १० $\times$ १३ इंच। आया—हिन्दी। विद्यप-मत्र। रुकाल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टनसं० ३६२-१४३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर कोटवियो का इंगरपर।

**६०५३. घंटाकर्ण कल्प**  $\times$  । पत्र स० १०। भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय - मत्र शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं०४२१-१५६ । प्रास्त्रिः स्थान -दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

६०५४: घंटाकर्स कल्प $-\times$ । पत्र मं०१। छा०१२ $\times$ ६१ इस्त्र। भाषा-हिन्दी, सस्कृत। विषय-मत्र ज्ञास्त्र। २० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०२४४–१०२ प्रास्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो क। हुगपुर।

विशेष-- १३ यत्र दिये हुए हैं। यत्र एव मत्र विधि हिन्दी में भी दी हुई है।

६०**५५ घटाकर्मा क**ल्प  $\times$ । पत्रस**ः** ११। ब्रा० १० $^{1}$  $\times$ ५ $^{1}$  इञ्च । माया-सस्क्रत । विषय - मत्र ब्रास्त । २०काल  $\times$ । से काल स०१६५० चैत सुरी १। पूर्ण । वेष्टन स०४२४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्तिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष — सवाई जयनगरे लिखित ।

६०५६, घंटाकरण मंत्र—  $\times$  । पत्र स ६२ । प्रा० ६ $^2\chi$  २ $^2\chi$  इश्व । भाषा—सस्कृत । विषय-मत्र गास्त्र । २० काल  $\chi$  । ले० काल  $\chi$  । पूर्ण । बेष्टन स० १०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैगाया ।

६०५७. घटाकररा मंत्र विधि विधान— × । पत्र न०६ । घा० १२ ×६१ इन्त्र । माषा-संस्कृत । विषय—मत्र गास्त्र । र०काल × । ले० काल म०१८१४ । पूर्ण । बेष्टन स०२७७-१०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डुगरपुर ।

६०५ स्. जीन नायत्री—  $\times$  । पत्रसं० १। प्रा० १० $rac{1}{2} \times V_0^2$  इत्त्व । भाषा-संस्कृत । विषय-संत्र शास्त्र । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । वेष्टन स०४२७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर लक्कर, जयपुर । ६०५६ ज्ञान मंजरी— × । पत्रकः २०। पा०१०×४ द्वाः मात्रा—स्टक्त । विषय— मत्र नाहत । रंकताल × । लेकताल × । पूर्ण । बेष्टन संक २०१/२२३ । प्राप्तिः स्थान—दिव जैन मत्रिर सम्भवनाय उदयपर ।

विशेष -- त्रिपुर सुन्दरी को भी नमस्कार किया गया है।

६०६०. **प्रिपुर सुन्दरी यंत्र**— × । पत्रस**०३ । घा० १०३ × ५ इच । भाषा-सस्कृत ।** विषय-मन्त्र तास्त्र । र०काल × । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन सं॰ ४२४ **। प्राप्तिः स्थान-**--दि० जैन मन्दिर लक्कर, जपपर ।

विशेष--यंत्र का चित्र दिया हथा है।

६०६१. त्रीलोक्य मोहन कवच —। पत्रस० ३। धा० १०३  $\times Y_{q}^{2}$  इखा। माथा—सस्कृत । विषय-मन्त्र ग्रास्त्र । र० काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । वेष्ट्रनसं० २८६। **प्रास्त्र स्थान**—दि० जैन मदिर सक्तर जयपुर ।

६०६२. त्रैलोक्स मोहनी संत्र— × । पत्रसं० ३ । सा० द × ४ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र । २०काल × । ते•काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्राप्तनन्त्र स्वामी, बुदी ।

६०६३. नवकार सत्र नाया—  $\times$  । पत्र स०१ । घा०६३  $\times$ ४३ इन्छ । भाषा-प्राहत । विषय-मत्र । र०काल $\mathbf{j} \times$  । ले०काल $\mathbf{j} \times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं०१४४ । प्रास्ति स्थान—सण्डेलवाल दि० जैन मदिर उथयुर ।

विशेष -- ३ मन्त्र और हैं। अस्तिम मन्त्र नवकार कथा का है।

६०६४. पूर्ण बधन सन्त्र—  $\times$  । पत्रस०७ । झा० १० $\times$ ६ इवा । आषा-हिन्दी । विषय— सन्त्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० ४४६-  $\times$  । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिल्दिर कोटडियों का उंगरपुर ।

६०६५. **बावन बोरा का नाम**—  $\times$ । पत्र सं०२। ग्रा० ११ $\times$ ५ इ**थ**। मापा—संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र। र०काल  $\times$ । ने०काल  $\times$ । पूर्णं। **बेष्ट**नसं०४२६**। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

६०६६, बालित्रपुर सुन्वरी पद्धति— × । पत्रस० ६ । घा० ११ × ५ इ.च. भाषा— सस्कृत । विषय— सन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८७६ फालगुरा सुदी ८ । पूर्ण । बेठून सं० १२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

६०६७. **बीजकोष**— × 1 पत्र सं० ४० । मा० ८ १ ४ ७ इ**.स. । भाषा**-मस्कृत । विषय --मन्त्र शास्त्र । र०काल × । लेकाल स० १६६३ । पूर्ण । बेवृन सं० १८ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर असवर ।

६०६ स. भेरव करण $--\times$ । पत्र सं० ५८। प्रा० ११  $\times$  ४. इ.च.) प्राथा— संस्कृत । विषय-सन्त ज्ञास्त्र । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ११५। प्रास्प्ति, स्थान — दि० जैन पनायती मन्दिर धलवर । ६०६६. **बैदव प्रधावती क**रम—न्नाः मल्लिबेस् । पत्रसः २३। प्राः १२ ४ ४ इच । भावा-स स्कृत । विषय—मन्त्र ब्रास्त्र । रकाल ४ । सेक्काल सः १८६१ जेष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । बेष्ट्रन संव १८०। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पांष्वंनाय चौगान, बुदी ।

६०७०. **प्रतिसं०२ ।** पत्रसं०<sup>५</sup>२ । ग्रा०१४ × ७१ इ.ज्व । ले०काल सं० १६२१ माह सुदी १२ । पुर्एं। बेष्टन स०१०२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पत्रावती मन्दिर स्रलवर ।

**६०७१. प्रति सं० ३** । पत्र सं० २४ । प्रा० ११ x ४ } इञ्च । ले० काल स० १६८५ । पूर्ण **।** बेष्टन सं० २६५ - १४० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर कोटडियो का इसरपुर ।

प्रशस्ति —सवत् १६=५ वर्षे माह मासे कृष्ण पक्षे २ दिने श्री मूल सथे मोडी ग्रामे पार्थनाथ चैत्यालये भ० मकलचन्द्र तत्पट्टे भ० खूबचन्द तदाम्नाये व० श्री बेसा तन् शिष्य ग्रा० जयकीर्ति लिम्नितं।

६०७२. **मातृंका नियं: महोगर।** पत्रसं०४। मा०११ × १६च। भाषा-सस्हत। विषय-सन्त्र प्रास्त्र । रकाल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६१५। **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

६०७३ मोहिनी मंत्र —  $\times$  । पत्र स०२२ । छा० ५ $\times$ ४ इ.च । भाषा — सरकृत । विषय — सन्त्र ज्ञास्त्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०१८३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी वदी ।

**प्रतिसम**—इति श्रीपरवादिगजकेसरि बेदबादिविध्वसक भावसेन श्रीविश्वदेवेन जिनसंहितया मन्त्र प्रकरण सवक दिकारणकं परिखमार्जिं ोश्री नेत्रतन्दि मनिना लिखापित ।

६०**७५. संत्र यंत्र** — × । पत्र स०२ । ब्रा० १२४५ इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०६३१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६०७६. संत्र शास्त्र $--\times$ । पत्रस $\circ$  १। प्रा $\circ$  १  $\times$  ६ इत्रत्र। भाषा हिन्दी। विषय-सन्त्र शास्त्र। र $\circ$ काल  $\times$ । ले $\circ$ काल  $\times$ । पूर्णै। वेष्ट्न स $\circ$  ५४४। प्राप्ति स्थान-वि $\circ$  जैन मन्दिर कोटडियो का हु वरपुर।

्विशेष—चामुँ डादेत्रीकामन्त्र है । विशेष—चामुँ डादेत्रीकामन्त्र है ।

६०७७ मेर्ग शास्त्र — imes । पत्र स० ६ । माषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल imes । लेरु काल imes । पूर्ण । तेष्टुन सं० ४६३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पंचायती मदिर भरतपूर ।

६०७६. मंत्रीशास्त्र्य- × । पत्र सं०२। प्रा०११×४ इत्ता । माषा-सस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । रुकाल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स०२६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर संभवनाय जवयपुर ।

६०७६. सेच्चं'संबह्' —ं ४ं। पत्रसं०१४ । घा० १२४६ हेवं। भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय—सत्र त्रास्त्र ।'र्पंकालं ४ । ते०काल स०१६०४ । पूर्णं। बेष्ट्नसं०४६१ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर । प्रशास्ति—सवत् स्पाद जयनगरे मूलसघे सारवा गच्छे सूरि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी तस्य शिष्य राम-कीर्ति जी प० लक्ष्मीराम, मन्नामास, रामचन्द्र, लक्ष्मीचन्द्र, श्रमोलकचन्द्र, श्रीपाल पठमार्थ ।

६०६०. **मायाकरप**— imes । पत्रस $\circ$  २ । भाषा सस्कृत । विषय<sup>‡</sup>मंत्र शास्त्र । र $\circ$ काल imes ।  $\mathbf{q}$ र्एं । वेप्टन स $\circ$  ६६३ । प्राप्तिः स्थान —दि $\circ$  जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

६०६१. यक्षिर्मोक्त्य—मस्लिषेर्मः। पत्र स॰ ६ं। भाषा —सस्कृतः। विषय—मत्र शास्त्रः। र०कालः  $\times$ । लेकालः सं॰ १७६६ वैशालः सुरी १४। पूर्णः। वेष्ट्रन स॰ १६। प्रास्ति स्थान—दि० जैन तेरहप्यी मन्दिर वसवाः।

६०६२. यंत्रावसी— अनुपाराम । पत्रस०७० । आ०६×४ इन्छ । भाषा— सन्द्रत । विषय— मत्र मास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनं स०३०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर अभिनन्दन स्वामी, व दी ।

#### 714±#---

दक्षिराभूत्तिगुरु प्रसम्य तदीरित श्रीताडबस्या । यावती मकमयी प्रवस्ताच्य व्याकुमहे सज्जनरजनायः ।। जिवनाडव टीकेयमभूपाराम सजिता । यजकल्पमद्र ममयी दत्तोद्दोभीष्ट सतित ।। रा

६०६३. विजय यंत्र—  $\times$ :। पत्रस० १ । झा० ४imes४१ हुः । विषय—यत्र । र०काल imes । से०काल imes । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ६२४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-कपडे पर श्रद्ध ही श्रद्ध लिसे है। कोरो पर मत्र दिए है।

६०६४ विजयसञ्ज— × । पत्रस० = । आ० ६×४१ इत्रा । भाषा संस्कृत । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । बेकृतस० २३७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ चौगान बुंदी ।

६०**८५. विद्यानुशासन—मन्तिवेस्। ।** पत्र स०१०२-१२६। **प्रा०११**४४ इश्व । भाषा— सस्कृत । विषय— मत्र शास्त्र । २० काल ४ । ले०काल ४ । अपूर्ण । वेग्टन स०४३७/२१४ । प्रास्ति स्थान—दि० वेन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**६०६६. विविध मत्र संग्रह**—  $\times$  । पत्र स**०** १२० । भाषा—सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र ।  $\tau$ 0 काल  $\tau$ 1 के काल  $\tau$ 2 पूर्ण । वेष्टन स० ४१४-१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटिंडयो का हु परपुर ।

विशेष -- विविध प्रकार के मत्र तत्र सचित्र हैं तथा उनकी विधि भी दी हुई है।

६०८७. शान्ति पूजा मंत्र— × । पत्रसः ६ । मा० १०३ × ४३ इश्व । माया- संस्कृत । विषय---मत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्ट्रनसं० ४४४ । **प्राप्ति स्थान**---वि० जैन मंदिर लस्कर, जबपुर ।

६०ममः **बट् प्रकार यंत्र**—× । पत्र स०३ । झा० १० × ५ इचा । भाषा—हिती । विषय—मंत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६० । **प्राप्ति स्थान**—महास्कीय दि० जैन्**वनिरंजकको**रः। ६०८१. संवर्णनादि साधन—सिद्ध नागार्जुन । पत्र तं० २६ । प्रा॰ १ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मत्र काश्व । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं॰ १ । प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन सन्दिर नागरी बूंडी ।

**ग्रान्तिम पुष्टिमका**-इति श्री सिद्ध नागार्जुन विरन्ति कक्षयुटे सवाजनादि साधन पचदश पटल ।

- ६०६०. सरस्वती संत्र—  $\times$  । पत्र सं० १। घा० १० $^{1}$  $\times$ १ इंच । भाषा-हिल्दी । विषय-संत्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ४४०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तस्कर जयपुर ।
- ६०६१. संच्याः स्त्र —गौतम स्वामी । पत्रसं० १ । मा० १०३४ १ इव । माया—संस्कृत । विषय—मत्र ज्ञास्त्र । र०काले ४ । से०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १११ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

विशेष--मंत्र संग्रह है।

६०६२. यंत्र संत्र संग्रह—निम्न यंत्र संत्रों का संग्रह है—

**१ वृहद् सिद्ध चक यंत्र— × ।** पत्र स०१ । स्रा०२२ हे×२२ हेश्व । भाषा— - संस्कृत । विषय—यत्र स्रादि । र०काल × । ले•काल सं०१६१६ कागुण मुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपंत्री नैयात ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबन् १६१६ वर्षे फाल्गुन सुरी ३ गुरुवासरे आध्वनि नक्षत्रे श्रीमूलस्व नद्यान्नायं बलात्कारमण् सरस्वतीपच्ये श्री कुन्दकुन्दावार्यान्वये मडलावार्यं श्री ३ घर्मकीत्तिस्त् जिप्य ब्रह्म श्री लाहड नित्य प्रणमित वातेनवृहत् सिद्धवक यत्र लिखित ।

**६०६३. २ जितामिए। यंत्र बडा — × ।** पत्र तं**० १ । घा० १८-४१८ इज । भाषा-सस्कृत ।** विषय—यत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वैष्टृत स० २ । **ृप्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह्मपी मन्दिर नेगावा ।

विशेष---कपढे पर है।

६०६४. **२ धर्मचक संत्र**— ४ । पत्र स०१ । स्रा० २४४२५ इच्च । भाषा—सस्त्रत । र०काल ४ । ले०काल स०१६७४ । पूर्ण । वेष्टनस०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर तेरहणसी नेगावा ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है ---

सवत् १६७४ वर्षे वैशाल सुदी १५ दिने श्री ॥१॥ नागपुर मध्ये लिखापित । शुभ भवत् ॥ कपडे पर यत्र है ।

६०**६५. ४ ऋषि मंडल यत्र**— × । पत्रसं॰ १ । झा॰ २१×२३ इत्त्व । भाषा—संस्कृत । विषय—यत्र । र०काल × । ले•काल स॰ १४=४ । पूर्ण । वेष्ट्रत स **० ४ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मैसावा ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

श्री श्री श्री शुमचन्द्र सूरिम्योनमः । श्रय संवत्सररेस्मिन श्री नृप विक्रमादित्य गताब्दः सवत् १४८४

मंत्र शास्त्र ]

**६२**४

वर्षे कात्तिक वदि ३ शुभदिने श्री रिवि मंडल यत्र बहा घण्डू योग्य पं० झहंदासेन शिष्य प० गजमल्लेन लिखितं। शुभं भवत्। कपढे पर यत्र है।

६०१६. ५ म्रहाई द्वीप मंडल- ४। मा॰ ४२imes४२ इञ्च । पूर्ए । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन तेरहपंथी मन्दिर नैरावा ।

विशेष--- यह कपडे पर है।

६ नंदीस्वरद्वीप मंडल — 🗴 । यह पत्र २४४२४ इच का है । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन तेरहपंथी मन्दिर नैसावा ।

विशेष-इसमें भजनगिरि भादि का भाकार पुराने मडल से सं० १६०६ में बनाया गया है।



# विषय -- श्रृंगार एवं काम शास्त्र

६०६७. **प्रानंगरंग—कल्यारामस्त**ायत्र स० ३०। प्रा० १२४४ है इश्वा भाषा—संस्कृत । विषय—काम शास्त्र । र०काल ४ । ले० काल स० १६०७ । पूर्णा । वेष्टन म० १४ । **प्राप्ति स्थान**— भटारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६०६८. प्रति सु० २। पत्रस० ३३ । झा० १०×४ हे डखा । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मस्टिर पाण्येनाथ चौगान बुदी ।

विशेष-मूल के नीचे गूजराती भाषा मे अर्थ दिया हुआ है।

६०६**६. प्रतिसंठ ३ ।** पत्र स०४३। ले० काल स० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन स०७०५ । **प्राप्ति स्वा**त—वि० जैन पचावती मदिर भरतपुर ।

६२००. कोकसंजरी— ग्रानंद । पत्र त०२६ । ग्रा०१० $^{\circ}$  $\times$ ४ एख । भाषा-हिन्दी । विषय— काम शास्त्र । ७० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

०१०१. कोकसास्त्र—कोकदेव। पत्र म० ६। प्रा० १० $\times$ ४ इला। प्रापा-हिन्दी। पिषय-काम गान्त्र। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनस०२१०। प्राप्ति स्थान— दि०जॅन मिदर दबलाना (बंदी)

विशेष—-राग्यभीर में राजा भैरवसेन ने कोकदेव की बुलाया और कोकजास्त्र की रचना करवायीथी।

६१०२. कोकसार $-\times$ । पत्रस॰ ३६। स्ना०१० $\times$ ६\टश्च। भाषा-हिन्दी। विषय-काम शास्त्र । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वैष्टनसं॰ २३७। प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर पायनेनाथ इन्तरमह (कोटा)

विशेच---गमृद्रिक शास्त्र भी दिया हमा है।

६१०३. कोकसार । पत्र स०१ । बा० १०४६ है इत्त्र । सापा हिन्दी ले० काल 🗴 । धपूर्ण । वेधन स०२३६ ३३ । **प्रास्त्र स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

६२०४: प्रेम रहनाकर —  $\times$  । पत्र स० १३ – ४७ तक । आ ० ६ $\times$  ४ है इख । आ पा — हिन्दी पद्य । विषय —  $\pi$ र्गाप । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १८६६ जेल्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० १०६ । प्रास्ति स्थान दि० जैन पत्रायनी मन्दिर करीली ।

विशेष--इसकी पाच तरङ्ग है। प्रथम तरङ्ग नहीं है।

६१०५ बिहारी सतसई — बिहारीलाल । पत्र स०१४८ । घा०६ै ४६६७ । त्राखा— हिन्दी पद्य । विदय—रुग्गर । र०काल स०१७६२ कार्तिक बुदी ४ । ले०काल स०१८६२ पीप बुदी ८ । पूर्ण । बेष्टन स०१४ । प्राप्तिः स्थान—वि० जैन मन्दिर चौषरियान मालपुरा (टोक)

विशेष-बिहारी सतसई की इस प्रति मे ७३५ दोहे है।

**६१०६. प्रतिसं० २** । पत्र सं० २-४० । झा०१ ४४ ट्रै इ.च. । ले०काल ४ । झपूर्ए । वेष्टन सं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अधिनन्दन स्वामी, बुंदी ।

**६१०७. प्रतिसं० ३**। पत्र सं० ७०। ले०काल 🔀 । प्रपूर्णः। वेष्टन सं० ७६८। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपुर ।

६१० म. बिहारी सतसई टींका —  $\times$ । पत्र स०२७ । प्रा० ८ $\times$ ६ इजा । भाषा-हिन्दी । विषय-श्रृ गार बएंग । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेप्टन सं०३५३ । प्राप्ति स्थान — दि० र्जन मन्दिर बोरसनी कोटा ।

विशेष — पहिले मूल दोहे फिर उसका हिन्दी गद्य में अर्थ तथा फिर एक एक वद्य में अर्थ को स्रौर स्पष्ट किया गया है।

६२०६. **भामिनो विलास—प० जगन्नाथ ।** पत्र स० ३ से २२। भाषा—सस्कृत । विषय— काम ज्ञास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८७६ । धपूर्ण । वेष्टन स० ७६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मंदिर भरतपर ।

६११०. प्रतिसं० २ । पत्र स० २४ । धा० ११ × ४ इच्छ । ले० काल स० १८-३ माह् मुदी १४ । पूर्गा । वेष्टनसं० ३०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष — सरोअपुर मे चितामिंग्गियाध्वनाथ चैत्यालय मे प० बूलचद ने स्वपठनाय प्रतिलिपि की थी।

६११**१. भ्रमरगीत — मुंकुंददास**ा पत्र स॰ ३२ । म्रा॰ ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इन्द्र । भाषा — हिन्दी । विषय — विरुह (वियोग २२ गार)। र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३७ । प्रास्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर दीवान चेननदास पुरानी डींग ।

विशेष-७५ पद्य है। २५ वे पत्र से उपाचरित्र है जिसके केवल १४ पद्य है।

६११२ मधुकर कलानिधि— सरसुति । पत्र स०४० । ब्रा०१०१४ ५१ इ.च.। भाषा— हिन्दी ।विषय-शृगार । र०काल स०१८२२ चेत सुदी १। ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०४७३ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--ग्रंतिम प्रशस्ति तथा रचनाकाल सबधी पद्य निम्न प्रकार है।

इति श्री सारस्वत सरि मबुकर कलानिधि सपूर्णम् ।

सवन ग्रठारह सै बाबीस पहल दिन चैत सूदी

शकवार ग्रंथ उल्हास्यो सही।

श्री महाराना माधवेश मन के विनोद हेत सुरसति कीनो यह दूध ज्यो जमे नही ।।

६११३. माधवानल प्रबन्ध—गरणपति । पत्र स॰ ५२ । ग्राठ ११ ४४ ६ञ्च । माषा— हिन्दी प.। विषय—कथा (श्रृगार रस)। र०काल सं० १६६४ श्रावण बुदी ७ । ले० काल सं० १६६३ जेठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टुन स० १७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बृदी ।

६११४. रसमंजरी—  $\times$  । पत्र सल्ण । प्राल्ट २० $\frac{1}{4}$   $\times$  ४ $\frac{1}{4}$  इच्च । मापा-हिन्दी (प.) । विषय— ग्रृंगार रस । रलकाल  $\times$  । सेलकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन संल्प ५७१ । प्राप्ति स्थान—दिल्जैन मन्दिर सम्बद्ध ।

६११५. रसमंजरी— मानुबत्त सिक्षा । प्रत्नं ०४१ । घा० ११ ४५ ६ वा । यादा—संस्कृत । विषय—प्रांगार । र० काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णं । वेष्ट्रन सं० ४८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-गोपाल भट्टकत रसिक रंजिनी टीका सहित है।

६११६. प्रति सं०२ । पत्रस० ७४ । म्रा०११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्णं। बेष्टन सं० ५६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर लक्षर जयपुर।

विशेष-भट्टाचार्य वेग्गीदत्त कृत रसिकरं जिनी व्याख्यासहित है।

६११७. रसराज—मितराम । पत्रस० १७ । घा॰ ६imes ६ इत्र । प्राया -हिन्दी पत्र । विषय—ग्रुंगार । र०काल imes । ले० काल स० १८६६ कालगुण सुदी ४ । पूर्ण । वंकृतस० ४२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मंदिर म्रादिनाय स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

६११८. रसिकप्रिया— महाराजकुमार इन्द्रजीत । पत्र सं०१३६ । ग्रा०६ 🗴 ६ इन्व । भाषा-हिन्दी । विषय-परुगार रस । र०काल 🗴 । ले०काल स०१७४६ । पूर्ण । वे०स०५०१ । प्रास्ति स्थान—अहारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६११६. प्रतिसं० २ । पत्र स०६-६४ । ले० काल स०१७५७ मगसिर मुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टत स०६१ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६१२०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ७१ । मा० ६ × ४ इल्ब । ले०काल स० १८४४ । पूर्ण । बेस्टन सं० १६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६१२**१. भूगार कविस** —  $\times$  । पत्र स० ५ । म्रा०११×६ इच । भाषा-हित्दी । विषय – गूगार । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टन स० ५६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६१२२. श्रृं यार शतक—सर्नुं हरि । पत्र स० ६ । आ० १ $\times$  ४ $\}$  इख । भाषा-सस्कृत । विषय-श्रृं गर रस । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स ३/१६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारार्योसह (टोक) ।

विशेष---१०२ पद्य है।

६१२३. प्रतिसं० २ । पत्र स० १२ । झा० १०२०४ इ.खा । ले०काल 🗴 । बेष्टुन स० ४६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

६१२४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २० । झा० ११ 🗡 इचा लेब्काल 🗡 । वेष्टन स० ४६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---प्रति टिप्परा सहित है।

६१२५. प्रतिसं० ४ । पत्रस॰ ४० । झा० १०३ × ५ इच । ले०काल × । बेष्टन सं० ४६४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--- श्लोक स० ४४० है।

६१२६. सुन्दर श्टुंगार — महाकवि राज । पत्र सं० ३२ । घा० ००००००००० । शाया — हिन्दी पद्य । विषय —श्टुंगार । र०काल ४ । ले०काल स०१८०३ । पूर्ण । बेष्टून सं०१६१–७१ । प्राप्ति स्वान — टि० जैन मन्दिर कोटबियों का इंगरपर ।

यह मुंदर सिंगार की पोथि रचि विचारि । कूक्यो होइ कठ्ठ लघु लीज्यो सुकवि सुधारि ॥ इति श्रीमत् महाकविराज विरचित सुंदर सिगार सपूर्ण ।

सवत् १८८३ वर्षे ग्राके १७४८ प्रवर्त्तमाने पीष मासे **गुक्ल पक्षे तिथी २ श**निवासरे सायकाले जिल्लीन ।

६१२७. प्रतिसं० २। पत्र स०७। प्रा० १० $\times$ ५ है द व । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३६३-१४०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियों का द्वरारपुर ।

६१२८. प्रतिसं० ३ । प्त्रस० २४ । ग्रा० ६ $rac{1}{4} imes rac{1}{4} imes imes rac{1}{4}$  ६२७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन यन्दिर बबलाना बुंदी ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

६१२६ प्रतिसं ०४ । पत्र स०११-६२ । प्रा०७×६ इञ्च । लेखन काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्टन म०६२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर पाष्ट्रनाथ टोडारायसिह (टॉक) ।

६१३०. प्रतिसं० ४ । पत्र स०२४ । स्रा० १०×४ है इश्व । लेक्काल स०१७२० । बेष्टन स०६१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष—ग्रंत मे सुन्दरदास कृत बारहमासा भी है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि मालपुरा मे हुई थी।

६१३१. **सुन्दररु गार**—सुन्दरदासः । पत्र स० ४७ । ग्रा० ११×५ इचा । आया—हिन्दी ए. । विषय – प्रांगर । र०काल × । ले० काल स० १०५६ । पूर्ण । वे० स० ५७२ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष -- नेमिनाथ चैत्यालय मे पं० विजयराम ने पूरा किया था।

६१३२. प्रति सं•६ । पत्रस•४२ । प्रा॰ ८×५ इ.च. । ले• काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं•६ । प्राप्ति स्थान-दि• जैन मन्दिर नागदी वृदी ।

# विषय -- रास, फागु वेलि

**६१३३. प्रजितनाथ रास** — क**्जनदास ।** पत्र सं०४० । ब्रा० १२ $\times$  $^{\vee}$  इख । माषा — हिन्दी (पक्ष) । विषय — रास । ७० काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन ध्रयाना मदिर उदयपुर ।

विशेष — भ्रांदि धन्त भाग निम्न प्रकार है —
प्रारंभ — वस्तु छंद —
प्रावत जिनेसर। प्रजित जिनेसर।
पाय प्रणमि सुनीयंकर पति निरमना
मन बांछित फनदान मुभकर।
गण्यर स्वाभी नमस्करू
सरस्वति स्वाभिणे स्याऊ निरमर।
श्री सकलकीरति पाय प्रणमि

त्रिमुबन कीरित भवतार। रास करिसृहु निरमलो

बंह्य जिल्हास तिल्हास

# मास यशोधर—

मिवयण भावेइ मुगुण चग मिनधारे झानन्दु। श्राजित जियोसर चारित्रसार कह गुणचन्द।।

### ग्रन्तिम---

श्री सकनकीरित गुरू प्रस्तमीने
मृनि मवनकीरित भवतार ।
दास कीधो मैं निरमल
प्रावित जिस्तेसर सार ।।
पडई गुराइ जे सामलइ मनि धरि प्रविचन भाव ।
तेहन्द रिद्धि धर गरा। समझ कियुहर प्रमी ।।
जास सासण प्रति निरमनु भिन भवि देउ मुभसार ।।
जास सिराध सिराध मनि ने भी विराध सुमति सामार ।।
जास सिराधस इस वीनवेद भी जिस्सार मुमति सामार ।

इति श्री ग्रजित जिग्गनाथ रास समाप्त ।

**६१३४ प्रमरदत्त मित्रानंद रासो—जयकोत्ति ।** पत्र स०२७ । प्रा०१२ ४६ इञ्च । माषा-हित्दी (पदा) । विषय-रासा साहित्य । र०काल स०१६=६ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं०१३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपयी दौसा ।

विशेष--प्रति नवीन है।

६१३५. ब्राबिपुरास रास— क० जिनवास । पत्रस० १८० । ब्रा० १० $\times$ ६३ इवा । साधा-हिन्दी पद्य । विषय-पुरास् । र०काल १४ वी सताब्दी । ले०काल सं० १८३१ मादवा बुदी १२ । पूर्स । बेष्ट्रन सं० ११८-४३ । प्राप्ति स्थान— दि० जन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

खिशेष-भट्टारक नागौर के श्री जयकीर्त्ति तत् शिष्य ग्राचार्य श्री देवेन्द्रकीर्त्त के समय ग्रादिनाथ चैरवालय ग्रजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**६१३६. प्रतिसं० २** । पत्र स० ६ । मा० १२imes६३ इञ्च । ले०काल imes । प्रपूर्ण । वेण्टन स० ४२६–१६१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरपुर ।

६१३७. झाविनाथ फायु—स० ज्ञानसूष्यम् । पत्रस०३-१४। झा०११ ४ ४ इच्च । भाषा-हिन्दी। विषय-फायु साहित्य। र०काल ४ । ले०काल ४ स्रपूर्णः । वेष्ट्रन स०४०२ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विभेश-पाचार्य नरेन्टकीर्ति के शिष्य बर्ज शिवदास ने लिपि की थी।

**६१३८. प्रति सं० २।** पत्र स० २६। म्रा० १३<mark>१</mark> ४६ इञ्च । ले० काल स० १८६८। पूर्ण । वेस्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म्रावनाल मदिर जदयपुर ।

प्रणस्ति निम्न प्रकार है-

सब्त् १८६८ फार्स बुरी १४ रविवासरे श्री सल् बर नगरे मूलसंधे सरस्वती गच्छे कु दकु दाचार्या-न्यये भट्टारक श्री १०८ श्री श्री चन्द्रकीर्ति विजयराज्ये तत् किय्य पडित श्री मुलावचन्द्र जी लिखित ।

६१३६. प्रति सं०३। पत्र म०२८। ग्रा०१२ ४४ इञ्च। ले०काल 🗴 । पूर्णः। बेष्टन म०२७१ ४४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

विशेष—कुल ४०१ पद्य है।

६१४०. ग्रावाहमूतरास—ज्ञानसागर। पत्रस० १२। ग्रा० १० $\times$ ४ देश्व। भाषा-हिन्दी। विषय सथा। २०काल  $\times$  से०काल  $\times$  । पूर्ण। बेष्टनस० २३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मिदर बोरमनी कोटा।

६१४१**. इलायचीकुमार रास—जानसागर।** गत्र स०१०। प्रा०१ × ४९ इत्था भाषा-हिन्दी पद्यः। विषय कथा। र०काल सं०१७१६ प्रासोज सुदी २। ले०काल स**०१७**२६ जे**ड** मास। पूर्णः। वेष्ठत स०१५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

> सवत् १७१६ सावरसे शेषपुर मन हरवे । स्रामोज मुदी द्वितीया दिन सारे हस्तनक्षत्र बुधवारके ।। ग्यान सागर कहे.....

६१४२. प्रति सं० २ । पत्र स०१४ । म्रा०११×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण् । वेष्टत स० ३३२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर वोग्सली कोटा ।

६१४३, प्रजासा रास $-\times$  । पत्रसं०१४ । प्रा०१०  $\times$  ४ स्था । भाषा-हिन्दी (पत्र) । विषय-चित्र । र०काल  $\times$  । से०काल सं०१६०७ माण बृदी २ । पूर्स । वेष्ट्रन स०३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी) ।

६१४४. ग्रांकना सुन्दरी सतीनो रास- × । पत्र सं० ४-१७ । ग्रा० १० × ४ ६ व । माया---हिन्दी पद्य । दिष्य-कथा । र० काल × । ले० काल स० १७१३ फागुन बदि ७ । ग्रपूरी । बेष्टन सं० ४६६ । ग्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डंगरपर ।

६१४५. प्रश्लिकारास—  $\times$  । पत्रतः ३ । धाः ११  $\times$  ४३ इत्र । भाषा-हित्ती । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनसः २६ $\kappa$  । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रथमल मंदिर उदयपुर ।

६१४६. कर्म विपाकरास—वः जिनदास । धा०१० $\frac{1}{2} \times k\frac{1}{2}$  इचा । मापा-हिस्दी पद्य । विषय-रास । र० काल  $\times$  । सै०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०६२-४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मध्दिर कोटक्षियों का इंगरपर ।

६२४७. करकुं डनोरास—बद्धा जि॰ दास । पत्रसं॰ २१। घा० १० $\times$ ४ $\xi$  इञ्च। मापा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल  $\times$  । ले॰काल स० १६२१। पूर्ण । वेष्टन सं० ७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सविर राजनहल (टॉफ्) ।

विशेष-सवत् १६२१ वर्षे भट्टारक श्री १०० धम्मंत्रज्ञ जो तत्सीस ब्र. गोकलजी लिखीत तत् लघु भाता ब्र. मेघजी पठनार्थ।

६१४८. गौतमरास—  $\times$  । पत्रस० ३ । ग्रा० १० $\frac{3}{6} \times \frac{1}{2}$  इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-कवा । र०काल  $\times$  । लेकाल सं० १८०४. । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १३२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर ग्रजिस रण्डार ।

**६१४६. चतुर्गति रास--धीरचन्द।** पत्रसं०४। ग्रा० ६ ४४ १ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय--चारगतियों को बर्णन। र०काल ४। ले० काल सं०१६१४। पूर्ण। बेष्टनस०१०३। प्राप्तिः स्थान--दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

**६२५०. चाववत्त अंक्टोनो रास – स. यहःकीति**। पत्रम०२-४२ । स्रा० ६ $\frac{3}{7}\times$ ६ स्थ । साबा-हिररी । विषय-कवं । र०काल सं० १८७६ ज्येष्ठ सुदी १५ । लेकाल स० १९७६ । स्रपूर्ण । वेष्टन सं० २२३ ५५ । **प्राप्त स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयवर ।

विशेष—भी मूलसके बतात्कारगणे भारतीगको कुंदकुंदाचार्यान्वयं मूरीक्वर सकलकीति सुवनकीति तत्त्रहुं सुभन्नेत्र तत्त्रहुं सुभन्नेत्र तत्त्रहुं सुमन्नेत्रीत तत्त्रहुं सुग्तकीति तत्त्रहुं स्थाप्त्र तत्त्रहुं सुमन्नेत्र तत्त्रहुं स्थाप्त्र तत्त्रहुं स्थाप्त्र तत्त्रहुं स्थाप्त्र तत्त्रहुं स्थाप्त्र तत्त्र होति तत्त्रहुं देवे-प्रकीति तत्त्रहुं सेमे-प्रकीति तत्त्रहुं सेमे-प्रकीति तत्त्रहुं सेमे-प्रकीति निमन्नेत्र जी मण्डक्तित पृहं कीतिराम दक्षी के गच्छपति यशाकीति ने सदय देश में भूतेव गाव मे प्राप्ति जिनेवद के भाग पर रचना की थी।

बबेला मे भ० यशः कीर्ति के शिष्य खुशाल ने प्रतिलिपि की थी।

६१४१. चिद्र पचिन्तन फागु— $\times$ । पत्र स $^3$  दः । मा $^3$  १२ $\times$ ५ है इच । मापा-हित्दी (पद्य)। विषय-चिन्तन । र $^3$  काल  $\times$  । ले $^3$  काल  $\times$  । पूर्ण । बेपन स $^3$  १८० । प्रास्ति स्थान— दि $^3$  के सम्बाल मन्दिर उदयपुर ।

६२५२. चपकमाला सती रास $-\times$ । पत्र सं $\circ$ । ग्रा $\circ$   $\varepsilon_{\xi}^{2}\times v_{\xi}^{2}$  इच्च । ग्राया-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र $\circ$ काल  $\times$ । ले $\circ$  काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन सं $\circ$  २६३। **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  जैन मंदिर दबलाना (च्रुदी)।

६१५३. जस्बुस्वामीरास—बहा जिनदास । पत्रतं ७३। प्रा० १० $\times$ ५ देश । प्रापा— राजस्थानी पद्य । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । लेकाल स० १६२१ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष —सबन् १६२१ वर्षे गोस बदी ११ गुक्रवासरे श्री मुलसर्थ सरस्वतीगछे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दावार्यात्र्यये भट्टारक श्री १०८ देवबन्द्रजी तत्पट्टे मट्टारक श्री १०८ देवबन्द्रजी तत्पट्टे मट्टारक श्री १०८ सम्बन्द्र जी तत शिष्य प्रद्या गोकल स्वहस्ते लखीता । स्व ज्ञानावर्णी कर्म्म क्षयार्थ ।

११५४. जम्बूस्वामी रास — नयविमल । पत्र सं० २४। झा० ११ ४४ इथा। माषा-हिन्सी (पदा)। विषय-क्या। राज्ञाल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण। वेष्टन मं० ३३३। प्राप्ति स्थान—दि० कील प्रतिकासिक क्षेत्र।

**६१४५. जिनदत्तरास**—ररनमूबस्य । पत्र स०२० । घा० १० $\frac{3}{4} \times$ ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ए । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन घरवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रादिभाग निम्न प्रकार हैं--

सकल मुराभुर पद नीम नमू ते जिनवर राय
गएवरकी गोतम नमू , बहु मुनि सेवित पास ।।१।।
मुक्कर मारिग वाहनी, भगवती भवनी तार ।।
तेत तगा चरण कमल नमू , वे देणा पुत्तक घार ।।२।।
श्री जान गृवण जानी नमू , नमू मुमति कीनि मुरिद ।
दक्षण देणनो मह्यति नमू , श्री गुरु धर्मवर ।।३।।
एत नणा चरण कमल नमि , कह निनदत्तवरिठ विचार ।
भविवाण जनवह सामती, जिम होन हरिण भगर ।।४।।

#### चरितम भाग---

मूलसघ सरसतीगिछ सोहामणो रे,

काई कुदकुदयति राय ।

तिशि ग्रनुकारी ते बलात्कारगणी,

जारगीएरे ज्ञान भूषरण निम पाय ।।१।।

श्री सूरिवर रे सुमित कीरित पदनमीरे नमी श्री गीर धमचन्द्र।

श्री जिनदत्त रास करिया मनि उपन्नो रो.

कारवामीन उपन्नीरो, कांइ एक दिवासी ग्रानंद ।।

### वूहा---

देवि सरस्वती गुरू नमीमि कीमी रास सार।
इस्सो होद ते साम्यज्यो पूरी करज्यो सुविचार।
श्री हासीट नगरे सुहामणूं श्री झादि जिनद भवतार।
तिश्चि नगरे रचना रची श्री जिन साम्रान श्रुंगार।

द्वासो मास सोहामणो मुदि पंचमी बुचवार ।
ए रचना पूरी करी सांसची मिवजन सार ।।३।।
श्री रत्नभूषण पूरिवर कही जे वाचे जिनदत्त एगस ।
श्री रत्नभूषण पूरिवर कही जे वाचे जिनदत्त एगस ।
जिनदत्तमी परि सुख लही पोहीचि तहती प्राप्त ॥४।।
मणि भणावि ए सही लिखि लिखावि रास ।
तेह चिर नवनिषि संपणि पूजना जिन गाय ॥॥॥
भवियण जन जे सामिल रास मनोहर सार ।
श्री रत्नमवणा मुरीवर कही तेह घरि मनगचावार ॥६॥।

**५१५६. प्रति स० २** । पत्र स० ४० । ब्रा० ११×४  $\frac{1}{2}$  इख । ले० काल स० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३१-१२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

विशेष-सवत १६६५ वर्षे फालगरा मासे कृष्णापक्षे १२ बुधवारेमा लिखितमिदं जिनदत्त रास ।

**६१५७. जीवंघर रास—बहा जिनदास ।** पत्रस० ७४ । स्ना० ११ $\times$ ४ इच । भाषा- हिन्दी । विषय-चरित्र । रक्शल  $\times$  । केक्शल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टन स० २१६/६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-एक बृदित प्रति भौर है।

**४१४८. प्रतिसं० २** । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८१४ । पूर्या । वेष्टनस० ५०/५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष-मेवाडदेश के गेमला ग्राम में ब्रादिनाथ चैत्यालय में स० १८६४ में प्रतिलिपि हुई थी।

**६१४६. जोगोरासा — जिनदास** । पत्रस ३। प्राः ११४४ इख । भाषा - हिन्दी (पद्य) । विषय — मध्यास । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स २ २१६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

६१६०. प्रतिसं०२ । पत्रस०२ । स्रा०१०, ४४ ई. इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्णा । बेष्टन स०६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रुदी) ।

६१६१. दानफलरास—**व** जिनदास । पत्रस० १ । ग्रा० ११×७ इव । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय —क्या । र०कान × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रदेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — लुब्धदत्त एव विनयवती कथा भाग है। श्रन्तिम पृष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री दान फलचरित्रे ब्रह्मा जिनदास विरोवतं लुब्बदत्त विनयवतीकथारास । १८२२ वर्षे श्रीवर्ण बुदी ११ तिथी पडिन रूपचन्दत्रीकस्य वाचनार्याय ।

६१६२. द्वीयदीशील गुरगरास—स्ना० नरेन्द्रकीलि । पत्र स०१३ । स्ना० ११४४ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल ४ । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स०१०४ । प्रारित स्थान— दि० जैन सम्बान महिर उदयपुर । **६१६३. बन्यकुमार रास**—क**ा** जनदास । पत्रस० २६। ब्रा॰ ११ $\times$ ५ इच । भाषा— हिन्दी (पद्य) । विषय—रास । र० काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**— दि॰ जैन ब्रववाल मन्दिर उदयपुर ।

६१६४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३३ । ले॰काल स० १६४५ । पूर्ण । वेप्टन स० ३३/४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयुर ।

**६१६५. धर्मपरीक्षारास—क जिनवास** । पत्रस्व ३-२६ । घ्रा॰ १० $\times$ ४ हञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कया । र०काल  $\times$  । ले॰ काल स॰ १६३५ । ध्रपूर्णं । बेष्टन स॰ १४ । **प्राप्ति स्थान**-दि॰ जैन मन्दिर दवलाना (व दी) ।

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सबत् १६५१ वर्षे ज्यंग्ट सुरी १० स्वस्ति श्री मूलराभे सरस्वतीगच्छे बलान्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्या— स्वयं महारक श्री पप्पनिददेवास्तरपट्टे भ० श्री सकलकोत्तिदेवा तरपट्टे भ० श्री कुवनकोतिदेवा तरपट्टे म० श्री ज्ञानसूपलादेवा तरपट्टे श्री विजयकोत्तिदेवा तरपट्टे श्री गुमचन्द्रदेवा तरपट्टे श्री मुमतिकौत्तिदेवास्तरपट्टे भ० श्री गुलाकीतिदंवास्त्रदास्त्रयं ब० जिनदास तन्पट्टे ब० श्री शानिदास तरपट्टे ब० श्री हेमराज तरपट्टे ब० श्री गजपाल तहीशिता ज्ञान विज्ञान विचलगा बाई श्री कडीये प्रमंपरीक्षा रास ज्ञानावर्णीय कर्मक्ष्याभं पिढत

६१६६, धर्मपरीकारास — सुमतिकार्तिः। पत्र त०१८२। धा०११४७ इत्था। भाषा — हिन्दी पद्य । विषय — पर्म। १०काल स०१६२१। ने०काल स०१६३१। प्रपूर्ण। वेष्टन त०४०४। प्राप्त मध्यान – देळ तेन सिट्य कोम्बर्ण कोटा।

६१६७. प्रति सं०२ । पत्र स०३६ । ग्रा०१० ४६ इश्वः । लेब्काल ४ । ग्रपूर्णं । बेष्टन स०२६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६१६८. प्रति स० ३ । पत्र स० १७८ । ग्रा० १०४५ इचा । लेल्काल स० १७३२ चैत्र बुदी ४ । पूर्णा । वेटन स० १७०/१११ प्राप्ति स्थान—वि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष - ग्रहमदाबाद मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६१६६. धर्मरासो— $\times$ । पत्र म०१०। आ०१० $\S\times$ ४ $\S$  इच्च । आषा—हिन्दी पद्य । विषय— धर्म । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन म०५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाय बुदी ।

६१७०, ध्यानामृत रास—त्र० करमसो । पत्र स०३२ । आ०१०४४ इस्त । भाषा— हिन्दी । विषय—कथा । र०काल ४ । ले० काल सं०१६१६ । पूर्ण । वे० स०२६१-११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर कोटडियो का हुगरगुर ।

६१७१. नवकाररास—व्र० जिस्तदास । पत्रस०२। प्रा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{6}$  इञ्च । माषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०११६२ । प्राप्ति स्थान-मट्टारकीय वि॰ जैन मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष -- गुमोकार मंत्र सम्बन्धी कथा है।

६२७२. नागकुमार रास-य० जिनदास । पत्रसं० ६। घा० ११४४ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास साहित्य । र०काल १४ वीं शताब्दि । ले०काल सं० १८२६ । पूर्णे । वेष्टन सं० ६३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१७३. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३१ । ले०काल सं० १७१४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४२/१३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१७४. नेमिनाधरास—पुष्परतनमुनि । पत्रसं० ३ । ग्रा० १०४४ है इ.च । भाषा—हिन्दी । विषय—क्या । र०काल सं० १५८६ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३६ । प्राप्ति स्थान—न० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-शादि मन्त भाग निम्न प्रकार है।

द्यावि भाग--

सारद पय प्रण्मी करी, नेमितना गुण हीइ घरेवि । रास मग्रु स्त्रीयामणड, गुण गुरुवड गाइपू संकेवि ॥१॥ हूँ बिलहारी जादव एक, रस उरबई खडवाति । सपराप न मइ को सेचड, काइ खोडइ नवयोवनवात ॥२॥ सोरीपुर सोहामणड, राजा समुदविजय नउ ठाम । जिवादेवी राणी तस तुणी, मुनोष रुषह रुप सामाण ॥३॥

म्रन्तिम पाठ--

सवम पाल्यन सातसइ बरम सहसनन प्रतन्त प्रतन्त प्राव ।

प्रासात बुटी भारामी मुक्ती पहला जिएकराय ।।६६।

सवत पनरिख्यासिंद रास रिचन आगो मन भाइ।

राजगढ़ मडण तिनन गुरु श्री निर्देश्व ने हिर सुपताई ॥६७।

प्रह उठोनद प्रत्मोगद श्री यादवमडन गिरिलारि ।

मनविद्यत फन ते ते लहह हरियिद जो गावइ नरनारि ।।६६।

समुद्रिवन्य तन गुण निनन तेस करह जमु मुर नर बृन्द ।

पुष्प रतन मुनिवर सण्ड श्री सम मुत्रवन नेमि जिएद ।।६६।

श्री नेमिनाव रास समापता ।

**६१७५. प्रतिसं० २** । पत्र स०२ । धा० ९४४ इ.ख । ले०काल ४ । पूर्णं। वेप्टन सं**०** ४६६ । **प्राप्ति स्थान** – भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

६१७६. नेमिनाथ विवाह लो—खेतसी । पत्रस॰ १२। प्रा॰ ११ $\times$ १ इञ्च । माया—हिन्दी पद्य । विषय—विवाह वर्णन । र०काल कि १६६१ सावरा । ते० काल सं० १७६३ कार्तिक बुदी १४। पूर्ण । वेष्टनसं० १८६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६१७७. नेमिनाय फागु—विद्यानंदि । पत्रस०४०। मा० १० $\times$ ४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—फागु । र०काल स० १०१७ माथ मुदी ४ । के०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०  $\chi$ /३३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारार्यासह (टोक्क) ।

विशेष-प्रति बहुत सुन्दर है तथा ७६६ पद्य है।

६१७८. प्रतिसं०२ । पत्र स०४४ । ग्रा० ६१×४१ इचा । लेक्काल सं०१८३१ माघ सुदी १३ । पूर्वा । वेष्टन स०७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६१७६. नेमीश्वररास—ब॰ जिनवास । पत्र स॰ १६५ । ग्रा०  $= x \xi \xi = 1$  । प्रापा—हिन्दी । विवय—रास साहित्य । र॰ काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १५३/=३ । प्राप्ति स्थान—हि॰ जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

६२८०. परसहंस रास—का जिनवास । पत्रस० २० । प्रा० १०३ ४४३ इञ्च । प्राप्ता-हिन्दी । विषय—रुपक काव्य । र० काल ४ । ले० काल स० १८२६ ज्येष्ठ सुरी १० । पूर्ण । वेहनसं० १६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खखेलवाल मदिर उदयपुर ।

६१८**१. पत्यविघान रास— स<b>्धानवन्त** । पत्र स०१ । ब्रा०१०१२४ इच्छ । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय— कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेण्टन सं०१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन प्रतिद्य बोरसली कोटा ।

#### प्रारम्भ--

श्री जिनवर कर मानस करी, पत्य विधान रे भाई कहिन्यू कर्म विधाक हर। ए पुष्य तसु निधान रे भाई क्योहस्परि उपवास, पत्य तस्य तसा वेला च्यार सह स्रञर ॥ पाप पक हर करि करती मक सोह ठार॥ रा। भाइवा मान विद ६ वडी तूर्य प्रभ उपवासी। माई उपवान पत्य तसु करता स्व मुरामुर दासार॥ ।।।।

### ग्रन्तिम--

एिंग परमारय साबो, माया मोह में बाघो ।। शुभचन्द्र मट्टारक बोलि, शुद्धो घर्म घ्यान घरी बाघो ।। पत्य ५ वस्तु ।

#### छटोमद्वत २

मुगति दातार भगता सिव मुख सपित ।
उपित प्राप प्राप्त कद हो प्रमत पस्य उपवास फल
सकल विदुल निर्मल प्रापंद कदह ।
भट्टारक ग्रुभक्टसमित भगता सिवती रास ।
असरकेवर सकट निवार लदमी होइ तस दास ।।
हित पच्य विधानरास समागत।

संबत् १६६० श्री मूलसंघे फागरा विद ४ दिने उदयपुरे पं॰ कानजि लिखितोयं रासः व॰ लाल जी पठनार्थं।

**६१८२. प्रति सं० २ ।** पत्र सं० ६ । प्रा० १० $\{ \times^{V} \}$  इस्त । **ले॰काल**  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्बेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**६१८ ३. प्रतिसं० ३** । पत्रस०६ । घ्रा०१० 🗴 ४ इच्चा ले०काल 🗴 । पूर्णावेष्टनसं० ३२२/१२२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन समयनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**६१८४. प्रति सं०४ ।** पत्र सस्या ६ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३२३/१२३ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर जदयपुर ।

विशेष—पहिले पत्र के ऊपर की भ्रोर 'नागद्रा रास' नागदा जाति का रास ज्ञानभूषण का हिन्दी में दिया है। यह ऐतिहासिक रचना है पर श्रपूर्ण है। केवल श्रन्तिम २२ वा पद है।

श्रारितम ---

श्री ज्ञान भूषणा मुनिवरि प्रमुणिया कीचु रास मैं सारण् हबुय जिए। वरिक कहीय बसुणि श्रीग्रंथ माहि रास रचु श्रति रूबहु हिब भिण् जो नर नारे। भिण्ती भगावेजे साभने तेलहिसीइ फल विचार।

इति नागद्वारास सम्पर्ण ।

**६१८५. पाएगोगालन रास**—ज्ञानमूचर्ग । पत्र स०४ । म्रा०१०  $\times$ ४ $\xi$  इख । भागा—हिन्दी (पद्य) । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०३५७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन स्रवसान मन्दिर उदयपुर ।

६१६६ पोषहरास – ज्ञानमूषस्य । पत्र स० २–८ । ग्रा० १० $\times$ ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । वे० म०२७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समजनाथ मन्तिर उदयपुर ।

**६९८७. प्रदारनरासो — बहारायम**रल । पत्रस० २०। प्रा० ११४६ इश्व । भाषा — हिन्दी । विषय—कथा । र०कील सं० १६२६ । ले०काल ४ । । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४४- ४ । **प्राप्ति स्थान**— विक्र जैन मदिर बडा बीम पढी दोगा ।

विशेष--गढ हरसौर मे ग्रन्थ रचना हुई थी।

**६१८६. बृद्धिरांस**—  $\times$  ।पत्रस० १। सा० १ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  $\times$ व । मापा-हिन्दी (पद्य) । विषय - विविध । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं• २१४ । प्रास्ति स्थान --दि० जैन मन्दिर दबलाना (वृद्धी) ।

विशेष — इसमे १६ पथ है। ब्रातिम पथ तिम्म प्रकार है— सालिमध पुरु सक्तव हुए ए मर्वि गील विधान । पावि ते मित्र सपदाए तिम परि नवय विधान । १५६॥ इति ब्रिडियम सप्पर्ण ।

६१८६. बाहुबलिबेलि —बीरचग्द सूरि । पत्रस० १०। ग्रा० ११imes ४३ इञ्च । आषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल imes । ले०काल स० १७४४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन वण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१९०**. बक** बु**लरास— क**ा**जनवास** । पत्र सुरु २। घ्रा०११ ४ ४ इचा । भाषा - हिन्दी (पद्य)। विषय—कश्यः। र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण। बेप्टन सुरु १९७ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन घ्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर। विशेष--उपा॰ श्री गुराभूषरा तत् शिष्य देवसी पठनार्थ ।

६१६१. मद्रबाहुरास—क्विजनदास । पत्रस० १० । ग्रा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  ६व । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०कान  $\times$  ।ने०कान  $\times$  ।पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । प्राप्ति स्थान—दि० र्जन म्रग्रवास मदिर उटयपुर ।

**६१६२. प्रति सं० २ ।** पत्र सं० ११ । ष्रा० ११ × ५ इश्व । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१६३. भविष्यवस्तरास--बह्य जिनदास । पत्रसं० ८४। ग्रा० १०४४है इख । भाषा--हिन्दां (पद्य)। विषय--कथा। र०काल ४ । ले०काल स० १७३६ ग्रासोज बुदी १। पूर्यं । वेष्टन सं० १६। **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन खण्डेनवाल मदिर उदयपुर।

६१६४. मविष्यदस्यग्सः — विद्यामूष्यग्सूरि । पत्रसः २१ । प्रा॰ ११ $\times$ ४ हुण्डः । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल म० १६३३ प्रयाद्य मुदी १४ । ले०काल  $\times$  । पूर्णः। वेष्ट्रन स० ७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बद्या बीस पथी दीसा

६२६**५. मृनि गुरारास बेलि— क∘ गांगजी** । पत्र स० १०। ग्रा० ६×४¸ इन्छ । मापा— हिन्दी पद्य । र० कान × । ने० कान सं० १६१४ । पूर्ण । बेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिन्द बोरमानी कोटा ।

६१६६. मृगापुत्रावेलि—  $\times$  । पत्र स० २ । ग्रा० १० $\times$  ४ $_{c}^{2}$  इश्व । भाषा — हिन्दी । विषय — कथा । र०काल  $\times$  । के काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मिर दबलाना (ब्री)।

६**१६७. यशोधर रास—वाण्यनदास ।** पत्र सु० २६ । ख्रा० ११ 🗙 ५ ६वा । मागा-हिन्दी पत्र । विषय-राम (क्या) । रब्काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ११६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मदिर पार्ष्वतस्य चौगान युदी ।

६१६८. प्रतिसं० २ । पत्र म० २४ । म्रा० ११ x ६ इवा । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । बेब्रन स० २०२-८३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डगरपुर ।

६१६६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४ । ग्रा॰ १० ${}^{3}$ ×४ $^{3}$  इला । ले॰काल सं० १५२२ । पूर्ण । वेट्टन स॰ ५६-३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

प्रशस्ति—सं० १६२२ वर्षे पीप मासे गुक्त पक्षे सोमवासरे कुणलगढ मध्ये श्री पार्थनाथ कैरायालये श्री मुलससे सरस्तरीमच्छे बलात्कारगणे श्री कुत्कुदावार्यात्वये बागड पट्टे भ० श्री १०६ रतनवन्द जी तर्गट्टे भ० श्री १०६ देवचन्द्र जी तरपट्टे भ० श्री १०६ पर्भवन्द्र जी तत् श्रिष्य पहित मुक्तराम लिखित । श्री करुयारामस्त ।।

**६२००. प्रतिसं०४ ।** पत्र स० ३५ । ग्रा०१०  $\times$  ४ हुँ इञ्च । ले० कान सं०१७२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ -६६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

६२०१. रस्तपाल रास—सुरचन्द । पत्रस० २०। धा०१ $\times$  ४ इत्व । भाषा-हिस्दी पव । विषय-रास । २० काल स० १७३६ ।स०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० २१५-११५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

६२०२. रामचन्द्ररास— बहा जिनदास । पत्र स॰ ३२० । प्रा॰ १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इ.स. । माषा— राजस्थानी । विषय—राम काव्य । र०काल सं० १५०८ । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६ । प्राप्ति स्थान—विं० जैन संदिर पार्यनाथ चौगान बंदी ।

विशेष---

संबत् १५ मठारोतरा मागसिर मास विसाल मुक्त पक्ष च उरिय दिने, हस्त नक्षत्र रास कियो तिसा गुरामाल ।

वस्त बंध-रास कियो २ श्रतिसार मनोहार।

भनेक कथा गुर्गी भागलो, रात तर्गो रास निरमल,

श्री सकलकीर्नि पाय प्रशामीने बहा जिनदास भरासे सार

पढें गणे जो सांभले तहिने द्रव्य भ्रापार ।

इति श्री रामचन्द्र महामुनीश्वर रास संपूर्ण समाप्त । भववा गांव में प्रतिलिपि की थी ।

विशेष-इसका दूसरा नाम रामराम/रामसीताराम भी है।

६२०**३. रामरास —वः जिनदास**ा पत्रसः ४०४। ग्रा०१२४६ इञ्च। भाषा-राजस्थानी विषय-रामकाव्य। र०काल सं१४०६। लेककाल सं०१७४०। बेष्टनसं०६-६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ब्रंगरपुर।

प्रशस्ति—तबद १७४८ शाके १६१३ वर्षे धावाढ पर मामे शुक्त पक्षे त्रयोदशी तिथी रिवसारो प्रजापति सस्तरो तिश्वित रामराम स्थामीनो श्री देउत्यागे श्रुमस्थाने श्री मुस्तवसे नेननाएँ पुष्करपाएँनामना श्रीवृत्त्रमसेनाथस्य पृष्टावली श्री जिनसेन भट्टारक तरपट्टे म्ह्टारक श्री सम्तरमस्याह श्री धार्षेत सुत रतनेका शिवित माह श्री जयवत सा. माताप्रशास इन्द्रेत जन्म बन शाती वर्षेत्रसानाय गोव साहत ।

विशेष -इसका दूसरा नाम रामसीतारास । रामचन्द्र रास भी है।

६२०४. रामरास--माधवदास । पत्रसं० ३६ । त्रा० १०३ × ४ इच । भाषा-हिन्दी पप विषय-कथा । र०काल × । से०काल स० १७६८ वैशाल सृदी ७ । पूर्ण । वेष्ठनसं० ६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२०५. रुक्मिस्विहरस्परास — रस्तमुखस्पसूरि । पत्र सं० २-६ । झा० ११ 🗴 ५ स्व । माया-हित्री । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७२१ । झपूर्सं । वेष्ट्रत स० २४१/७४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — भन्य का भन्तिम भाग एव प्रशस्ति निस्त प्रकार है। श्रावरण विदे दे मुश्र आएंगे कि बनी एकादशी रास सुरथ माहि रे एह रचना रची जिहा भारित अगदीश वे तर ए निरे सिर्णित भरागविस तेहनि यर सम्बाचार श्री रतन भूवरण सुरीवर हम कहिली आदि जिस्स वयकार।

इति श्री रुक्मिग्गी हरण समाप्ता ।

प्रशस्ति —संवत् १७२१ वर्षं वैनाल मुदी १३ सोने श्री सागवाडा सुभस्वाने श्री झादिनाय चैत्यालये श्री मुन्तरांचे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कृदकु दावार्याच्ये ४० श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे देवेन्द्रकीति तदाम्नाये श्री मुनि धमंत्रवण तत् जिब्ब इ. बाघजी लिखित ।

**६२०६. रोहिस्गोरास—ऋ०जिनदास** । पत्रस० २४ । प्रा० ११ $\times$ ४ $\S$  दख । भाषा— राजस्थानी । विषय-रास । र० काल  $\times$  । **ले०काल स०** १६०२ । पूर्ण । वेष्टन स० २०५–१११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर ।

प्रसास्ति—सबन् १६०२ वर्षे कार्तिक मासे णुक्त पक्षे चतुर्थी सोमशसरिदने लिखितोयं रास । श्री मुलसाचे भट्टारक श्री ज्ञानमूषण तत्यहे भट्टारक श्री प्रभावन्द्र तत्पहे भ० वादिवन्द्र तत्पहे श्री महीवन्द्रणो विषय घासीसाह पठनायं ।

६२०७. बद्धंमान रास—बद्धंमानकवि । पत्र स०२३ । प्रा०१० ${}_{1}^{3}\times{}_{2}^{3}$  इक्त्व । भाषा– हिन्दी (पद्य) । विवय-कथा । र० काल स०१६६४ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०३६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रजाल मन्दिर उदयपर ।

६२०६. विज्ञु सेठ विजया सती रास - रामचन्द । पत्रसः २-४ । प्रा०११ ४४ इञ्च । भाषा —हिन्दी पद्म । विषय - कया । र०काल सः०१६४२ । ले० काल सः०१७४४ । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १०२-२ । प्राप्ति स्थाल - दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौता ।

६२०६. व्यतविद्यानरासो—दिलाराम । पत्रस०२४ । प्रा०१२×६२ इस्र । प्रापा-हिन्दी पद्य । विषय-कदा । र-काल स०१७६७ । ले० काल स०१८६१ । पूर्ण । वेष्टन स०४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दीसा ।

विशेष-- ब्राह्मण् भोपतराम ने माधोपूर मे प्रतिलिपि की थी।

६२१० प्रति स० २ । पत्रस० २४ । प्रा० १० ४६ इञ्च । ले० काल स० १८६४ मगसिर सुदी १ । पर्सा । बेष्टुन स० १६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर केलावाटी (सीकर) ।

६२११. शिखरगिरिरास — ४ । पत्रसं०१३ । आ० १०३ ४४३ इच्छा भाषा — हिन्दी। विषय — माहात्म्य । २०काल ४ । ले० काल स० १६०१ श्रावसा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८० । प्राप्ति स्थान — न० दि० जैन मन्दिर स्रवसेर ।

६२१२ शोलप्रकासरास—पद्मविजय । पत्र स० ४६ । श्रा० १० $\times$ ४ है इञ्च । माया-हिन्दी पद्म । बियय—सिद्वान्त । र० काल स० १७१७ । ले० काल स० १७१६ । पूर्ण । बेष्टनस० १७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

६२१३. शोलामुईशनरास— ४ । पत्र स०१४ । मा०१०१४ - इन्त । मापा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल । म्रपूर्ण । वेष्टन स०६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैशावा ।

६२१४. श्रावकाचाररास—जिस्पदास । पत्र सं० १३६ । घा० ११ $\times$ ४ हे इच । भाषा— हिन्दी पद्य । दिवय—प्राचार शास्त्र । र०काल स० १६१५ मादवा मुदी १३ । ले०काल सं० १७८३ माह सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० १४-२८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस यंगी दौसा । विशेष — श्रीमत काष्ठा सने भग्नामित बारी साह प्रदेतीय भाषां घ्रम् यदेनी सहोडा (मृहाडिया) गोत्रे सुत यानसिंह कमेक्षवार्य सामनिरपुर मध्ये श्री मिल्लिनाय चैत्यालये ५० त्यास केगर सागर लिखी— भामीर का रपा ३॥) साडा त्रण बैठ्या छुँच्या ।

६२१५. श्रीपालरास — बर्जानवास । पत्रसः २७। घा० १० $\frac{3}{7} \times Y_0^2$  इन्छ । भाषा-राजस्थानी । विषय-काव्य । र०काल  $\times$  । लेकाल सं० १६१३ मंगसिर बुदी १२ । बेष्टन सं० ३०२ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन प्रवाल मदिर उदयपर ।

विशेष-संवत १६१३ वर्षे मगसिर बृदि १२ सनी लख्यत बाई धमरा पठनाथे ।

६२१६. प्रति सं० २ । पत्रस० २३ । घा० १११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इला । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ब्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

**६२१७. प्रतिसं० ३** । पत्र स० ३६ । प्रा० १० $\frac{3}{4} \times \frac{3}{4}$  इश्वा। ले० काल स० १८८२ फागुन सुदी १ । पूर्णा विष्टन स० ४७–३६ । प्रा**प्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ह्र गरपुर ।

प्रशस्ति—सबन् १८२२ वर्षे फागृन मुदी ४ दिन गुरुवासरे नगर भीलोडा मध्ये शांतिनाथ चैत्यालये अरु श्री रत्नचद तत्पट्टे भरु श्री देवचन्द्र तत्पट्टे भरु श्री १०८ श्री धर्मचन्द तत् शिष्य परु मुखराम निक्ति।

**६२१८. श्रीपालरास—बहा रायमस्ल ।** पत्र स०१२-४७। म्रा०६ $\times$ ४ इ.च । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल स०१६३०। ले० काल  $\times$  । स्पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारार्सीसह (टोक) ।

**६२१९ प्रति सं०२** । पत्रस०२१ । श्रा०१० $\times$ ४ ॄे इचा । जे० काल स०१७४० सावस्स सुदी ६ । पूर्णे । वेष्टनस०४७ । प्राप्टिः स्**यान**—वि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष--- मुंभन्न मे लिखा गया था।

६२२**१. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०४६ । ले०काल ४ । पूर्णः । वेष्टन स०७२८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

६२२२. प्रति स० ३ । पत्र सं० ४६ । ले०काल स० १८६२ । पूर्ण । बेक्टनसं० ४८३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२२३. श्रुतकेबिलिरास – वर्जाजनवास । पत्र सं० ३६। ग्रा० ६ $^{1}_{6}$  $\times$ ५ इत्थ । भाषा — हिन्दी । विषय — कथा । र०काल  $\times$  । ले॰काल स०१७६१ फाल्गुन मृदी ७ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३७२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर बोरसली, कोटा ।

६२२४. श्रोरिएक प्रबन्ध रास**-ब्रह्मसंघजी।** पत्र स०६३। प्रा०१०३×५ इ**चा। आया—** हिन्दी पद्यः। विषय—कथा। र०काल स०१७७४। ले०काल स०१८५३। पूर्णः। वेष्टन स०४३९– १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटदियों का हुंनरपुर। रास, कागु वेलि ]

**६२२५. ओ रिगकरास—बह्य जिनवास** । पत्र स०६२ । ग्रा०६ $\times$ ४ इश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ते०काल स०१७७० । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति - सबत् १७७० प्रवर्तमाने प्रषाड सुदी २ गुरुवासरे भ० श्री सकलकीर्ति परम्परान्वये श्री मूनसाचे सरस्वतीगच्छे भ० श्री विजयकीर्ति विजयराज्ये श्री प्रमदाबाद नगरे श्री राजपुरे श्री हुबड वास्तव्य हुंबडजाती उनेस्वर गोने साह श्री १ धनराज कसनदास कोटडिया नखिन ।

६२२६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४४ । बा० १० $\times$ ४ $^{2}$  इश्व । ले०काल स० १७६० भादवा सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० २७ । प्राप्तिस स्थान—दि० जैन प्रयवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२२७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४० । घा० १०३ × ४ इच । लेक्काल स० १७६८ प्रासोज सुदी १ । पूर्णे । बेष्टन स० १९७ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारावसिह (टॉक)

विशेष —पत्र ३८ से पोषधरास दिया हमा है। ले० काल स० १७६६ काती सुदी १४ है।

६२२८ में स्पिकरास—सोमविमल सूरि । पत्र त॰ २१ । प्रा॰ १०४४ इच्च । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय —कया । र०काल स० १६०३ । ले०काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० । १६-१ प्राप्ति स्थान —टि० जैन प्रटिट बटाबीस पद्यो होसा ।

विशेष--- २६ से आगे के पत्र नहीं है। प्रशस्ति दी हुई है।

पारस्य--

सकल ऋदि मगल करण, जिए चउवीस नमेवि । श्रद्धा पुत्री सरसती माय पय पर्णमेवि ।।१।।
गोयम गण्हर नइ नमुं विवन विद्यासण हार ।
सोहम स्वर्धाम नमु सदा, असु शास्त्रा विद्यार ।।
सार सदा फल गुरु तर्णा, दुई प्रविचल पट्ट ।
प्रमूक्ति प्रचावन मइ, जसु नामिइ गृहमुट्ट ।।३।।
हेम विमल तर्णु दीपनु, श्री हेम विमल सूरिद ।
तेह तर्णा चल्लो नमी, हीयइ घरी प्राण्द ।।४।।
चद परिचंडती कला, सब्द जेइ नइ नामि ।
सोभाग हरिय सुरिद वर, हरियद तामु ग्रामा ।।५।।
पुरुष ध्रसर च कड्ड, ते सवि सुगुरु पताय ।।
वर्ष पात्र जिल्लाक तेहना प्रस्पुर्वाय ।।

बस्तु —

सफल जिएावर २ चलएा बदेवि । देवि श्री सरसति तएगा पाय कसल बहुभत्ति जुत्तउ प्रएमी गोयम स्वामि वर शुगुहराय, पय कमलि रत्तउ श्रीएक राजा गुएनिलु निर्मल बुढि विवाल । रिब सुरासहं तेह तजु सुएएज्यो भति हरसाल ।।

#### ग्रन्तिम---

तप गछ नायक गराधक एहा, सोम सुन्दर सुरि राय । तस पटि गछपति वेद सुं एमा, सुमित सुन्दर सुरि पाय ।। तस् शाला मोहा करू एमा रत्नशेखर सूरिद । तस पट गयगा दीपावता एमा लिखिमी सागर सुरिचद ।। स्मति साध् सुरीपद एमा, अजमाल गुरु पाट । सोमागी सोहामग्री एठा ए महा, जसू नामिइ गह गटस्ं हेम परिइ जगवल्लह एग्गए मा श्रे. हेमविमल सुरि । सोभाग हरस पाट घर मा नामि सपद भूरि सु।। सोम विमल सुरि तास पाटि मा, पामी सु गुरु ए साय । श्री बीर जिनवर मधी एमा गायु श्रे शिक राज ।। भुवन ग्राकाश हिम किरए। मा सवत् १६०३ इशि ग्रहि नाशि सु। भादव मास सोहामणाइ एमा, पडेवि चडिउ प्रमाणि । कुमरपाल राय थापीउ एमा कुमर गिरपुर सारसु। साति जिएाँद सुपसाउ लए मा, रचु रास उदार सु 1,७511 चुपई दूहा वस्तू गात मा, सुवि मिलीए तूं मान सूं। वसइ बसी बागलां एमा, जारणु सहुइ जारा । ग्रधिक उछउ मद भए।उ एमा जे हुइ रास मभारि ॥ ते कवि जन सोधी करी, ग्रागम नइ ग्रनुसारि ।।७६॥ जेनरनारी गाईसउंस्एासिई प्राणीरग। ते मुख सपद पामइ स ए मा, र ग चली परिचग। जालगइ मेरु मही घरु ए, मा जालगिइ ससि तार। ··· चड जपूए मामगल जय २ कार ।। ८०।।

६२२९. बट्कमंरास—जानमुखरा । पत्र स० १०। ग्रा०  $= \frac{1}{2} \times$  ५ इथा । प्रापानहिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं। वेष्टन स० ४८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संवेबवाल मन्दिर उदयपुर।

६२३०. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । घा० १२ × ५ इंच । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ वृंदी ।

६२३१. सनत्कुमार रास—ऊदौ । पत्र स०३। घा०१०४४ इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा। र०काल स०१६७७ सावरा मुदी १३ । ले०काल स०१७६२। पूर्ण । बेष्टन सं०३१९/६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर।

विशेष--रचना का भादि अन्त भाग निम्न प्रकार है।

## प्रारम्म--

सुल कर सतीसर नमुं सद्गुष्ठ सेव करूं निसदीसः। , तास पसार्वे घरामरु सिद्धं सकल मननी जगीसः। सनत्कुमार सहामराज उत्तम गुरा मरिगनउठारा। चक्रीसर चउथज सही चतुर पर्रो सोहै सपराण। × × ×

× ग्रन्तिम---

सोलहसइ सत्तरोत्तरइ सावरा सुर तेरत प्रवधार !
उत्तराथ भरो संवेपयी विरत पकी कीघउ उद्धार ॥६२॥
पासवन्द गुरु पाय नमी हरण घरीए रवीयउ रास ।
ऋषि तै उदौ इम कहै भराइ सिहा धरि मगल लखि निवास ॥६३॥
इति जी सनत्कुमार सामाजेति ।
वीत्रमणी सुमताद यी लिखतं जटमल राम ।

६२३२. सीताशीलपताकागुरा बेलि— प्राचार्य जयकीति । पत्रसं० ३१। भाषा-हिन्दी। विषय-कया। र० काल स० १६०४। ले० काल स० १६७४। पूर्ण। वेष्टन स० ५३/१४१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाय मन्दिर उदयपुर। यह मुल पांडुलिपि है।

विशेष-श्रादि अन्त भाग निम्न प्रकार है-

प्रारम-राग ग्रासावरी-

सकल जिनेण्यर पद गुगल,

प्रानि हृदय कमलि घर तेह ।

सिद्ध समूह गुण घरोपम मनि

प्रणासि परवी गृह ॥१॥

मूरीवर पाठक मुनी सह

प्रानि मगवनी मुबनाधार

सरस सिद्धात समूहिन

जिन मुखा प्रगटी प्रतार ॥२॥

प्रति को स्रनादि गणधर होथ

प्रति अमृन मिस्ट विस्तार ।

प्राण्ड उल्लिहि सहय बन्दिव

बेल्ल आन की कहि कबीसार

Х

× चन्तिम—

सीता समरण जिनवर करी धानि सहु लोक प्रति कहि बाच पर पुरुष ज्यों नि इच्छयों होय तो प्रगन्य प्रकट करें सांच। इम कही जब भग्नलावीयुं तब प्रगन्य गई जल बामि। जय जय शब्द देव उच्चिर पूजि प्रणामी सीता त्याप पाव। पृद्ध गई गुरु की दीक्षा लेंद्र तप जप करी घम प्यान। समाचि सम्यासि प्राणानि उजी स्वयं सोलीनि ययों इन्द्र जाति।

×

×

सागर बाबीस तरा ग्रायसुलही सुख समुद्र मीलत । भ्रागिल मुगत्य वधुवर षई सुम ग्रवत गुरा कीडत ॥३१॥

दूहा---

सकलकीरति धादि सहु गुएकीति गुएमाल ।
बाविष्मूपण पट्ट प्राटियो रामकोति विवाल ॥१॥
बहा इरसा परसादयी जयकीति कही ता ।
कोट नगरि कोडामिण धादिनाय भवतार ॥१॥।
सकत् सोल चड उनिर सीता तरणी गुण वेल्ल ।
ज्येष्ठ मृदि तेरस वृषि रची भणी कर गेल्ल ॥३॥।
भाव भगति भणि मृत्य सीता सती गुण जेह ।
जनकीरति सूरी कही मुल मुं च्यो पलहि तेह ॥४॥
सुढ यो सीता सोल पताका ।
मुख यो सीता सोल पताका ।

सवत् १६७४ वर्षे प्रापाड सुदी ७ गुरौ श्री कोट नगरे स्वज्ञानावरःगी कर्मक्षवार्थ प्रा० श्री जयकीतिना स्वहस्ताम्यां लखितेयं ।

६२३३. सीताहररणरास---जयसागर । पत्रसः १२६ । ग्रा० १४४ इंब । माषा-हिन्दी (पदा)। विषय-कथा। र०काल सः० १७३२ वंशाल मुदी २ । के॰काल सः० १७४४ वंशाल सुदी १ । पूर्ण । वेष्टुन स॰ २३० । प्राप्ति स्थान----दि० जैन प्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विरोष—इस के कुल = प्रियकार है। श्रन्त में रामवन्द्र का मोक्ष गमन का वर्णन है। ग्रंथ का श्रादि श्रन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्म---

सकल जिनेण्यर पद नमुं सारद समरु माय । गराधर गुरु गौतम नमु जे त्रिशुवन बदित पाय ॥१॥ महीचन्द गुरु पद नमी रामचन्द्र घर नारि । सीना हररा जहु कहू साभल ज्यो नरनारि ॥२॥

धन्त मे धन्य प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

प्रभाचन्द्र गुरू तेहने पट्टे वास्ती सभी रसाल जी। वादिचन्द्र बादी बहु जीत्या घर सरसित गुरापाल जी ।।६।। महीचन्द्र मृतिजन मनमोहन वागी जेहे विस्तार जी। परवादीना मान मुकाव्या गर्बं न करे लगार जी ।।७।। मेरबन्द तस पाटे सोहे मोहे भवियग मन्न जी। व्याख्यान वासी भ्रमीय समास्त्री सामला एके मन्नजी ।। वाक गीर महीचन्द्र शिष्य जयसागर रच्यु सीता हरएा मनोहार जी। नर नारी जे भए। सुघासे तस घरे जय जय कार जी । है। ह बड थस रामा सतोषी रमादे तेहनी नार जी। तेह तगाो पुत्र श्याम सुलक्षरा पंडित के मनोहार जी ॥१०॥ तेह तसी बादर सीता हरसा ए की बूमन उल्लास जी। सांभलता गाता सूख होसी सीना सील विसाल जी ॥११॥ सवत् सत्तर बत्रीसा बरसे वैणाख सुदि बीज सार जी। ब्घवारे परिपूर्णंज रच्य सुरत नयर मकार जी ॥१२॥ श्रादि जिसेसुर तसे प्रसादे पद्मावती पसाय जी। साभलता गाता ए सहूने मन मा श्रानन्द थाय जी ।।१३॥ महापुरागा तमो अनुसारे की घू के मनोहार जी। कविजन दोस म देसी कोई सोघ ज्यो तमे मुखकार जी 1. १४॥ मुभ धालमुने उजमचढ्यु सारदा ये मति दीघ जी। तेह प्रसादे ग्रथ ए कीधी श्याम दासेज सतीध जी ॥१५॥ सीना सील तराो ए महिमा गाय सह नरनार जी। भाव घरी जे गाने अनुदिन तम घर मंगलचार जी । १६॥

दुहा -

भाव घरी जे भगो सुरो सीतासील विसाल। जयसागर इम उच्चरेपोहचे तस मन श्रास।

इति भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब० जयसागर विरिचने सीताहरएक्याने श्री रामचन्द्र मुक्ति गमन वर्मान नाम पष्टीथिकार समाप्ता । ग्रुम । ग्रंथाग्र ष २४१० लिखत सवत् १७४४ वैशाख सुदी १ गुरी ।

६२३४. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ६६ । म्रा० ११३४४ इञ्च । ले० काल सं० १६२२ । पूर्ण । बेष्टन स० १६६- स१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हूगरपुर ।

६२३५. सुकौशलरास—वेस्पीदास । पत्र स० १७ । प्रा० १० $^{\circ}$  × ४ $^{\circ}$  इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १७२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८-५७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियों का हुगस्पुर ।

**धन्तिम--**श्री विश्वसेन गुरू पाय नमी, वीनवी **बह्य** वेसीदास । परम सौस्य जिहा पायीइ,

तेषु मगति निवास ।।

इति सकोशल रास समाप्ता .

प्रशस्ति—संबत् १०१४ वर्षे श्री माघ वती ४ शुक्ते श्रीसहमदाबाद नगरे श्री सीतसनाय चैत्यासये श्रीकाष्ट्रायये नदीतट गच्छे विद्यागरी म० रामसेनान्वये म० श्री विद्याभूषरायेवास्तराष्ट्र म० श्री मृष्या देवास्तराय्टे म० श्री चंदकीत्तिदेवास्तरपट्टे म० श्री ५ राजकीत्तिस्तष्टिष्टय ४० श्री देवसागरेन निकापितं कर्मसमार्था

६२३६. सुदर्शतरास—य० जिनदास । पत्रसं० ४-१७ । ब्रा० ११ $\xi$ ४५ इश्व । भाषा— हिन्दी । विषय — रास कथा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । ब्रपूर्ग । वेष्ट्रनसं० २१४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन ब्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- व े नेमिदास की पुस्तक है पड़ित तेजपाल के पठनार्थ लिखी गयी थी।

६२३७. प्रतिसं० २ । पत्रसः १६ । ग्रा० १० ३४ ४ है दश्व । ले०काल सं० १७२६ माह सुरी २। पूर्णे । बेष्टनस० ३०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन श्रम्रताल मदिर उदयपुर ।

६२३ द. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २ – २० । घा० १० १ ४ ६ इ.च. । ले० काल ४ । घ्रपूर्ण । वेष्टन सं० ६२ ३ द । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोटडियों का हुगरपुर ।

विशेष — प्रांचार्य रामकीति जी ने ईलचपुर में प्रतिलिपि की थी। ६२३६. सोलहकार**ए। रास — व० जिनदास**ा । पत्र सं० द । प्रा०१०×६ इ.ज । माषा− हिन्दी पद्या विषय-रास । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । बेष्टन स०३२१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रायान मन्दिर उदयप्र।

६२४०. प्रतिसं०२ । पत्र स०६। प्रा०११४५ हे इच्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कवा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स०३६१-१३६। प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरपर।

६२४**१. प्रति स० ३** । पत्र स० १० । द्या० ११×५ <sup>१</sup> इञ्च । ते० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३५७ १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इ*नरव्*र ।

६२४२. स्कूलमद्रनुरास — उदयरतन । ण्यसः ६ । प्रा० १४५ इख । भाषा - हिन्दी। विषय-रास । रेजकालं ४ । लेजकालं ४ । पूर्णं । वेष्ट्रन सः० १४६० । प्राप्ति स्थान — मद्दारकीय दिक जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

६२४३. हनुमंतरास - त० जिनदास । पत्रस०४१ । घा० १०४४ है इखा भाषा-हिसी पदा। विषय-गस । १०काल ४ । ले० काल स० १७०४ । पूर्णा । वेष्टनसं० ६१-४४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मदिर कोटडियो का हु गरपुर।

प्रशस्ति—सबन् १७०४ वर्षे भाद्रपर विद द्विनीया बुधे कारजा नगरमध्ये लखीतं । श्री मूलसंथे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगरी कुन्दकुन्दाचार्याच्ये भ० देवेन्द्रकीति तत्पट्टे भ० धर्मचन्द्र तत्पट्टे भ श्री धर्म-भूवरा त. प. भ. देवेन्द्रकीति त प. भ० क्षुदचन्द्र त. प. भ. श्री धर्मचन्द्र तदास्नाये ब्याझे तवाल ज्ञाति पहर सोरा योचे शा. श्री रामा तस्य पुत्र शा. श्री मेघा तस्य मार्या हीराई तयो पुत्र शा. नेमा तस्य भाषां जीवाई तयोः पुत्र शा. श्री श्रीतसमेषा द्वितीय पुत्र शा. भोजराज तस्य भावां सोनाई तथोःपुत्र शा. श्री भेषा ऐतेषा मध्ये श्री भोजा साक्षेण मट्टारक श्री पद्मनित्व तिच्छस्य श्र. श्री वीरिन पठनार्य झानावरणी कर्मक्षयार्य हनुमान रास लिखापित श्रभ भयात ।

६२४४ प्रति सं०२ । पत्र स०६७ । प्रा०११४५ इ.च. । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं०२७३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवताल मदिर उदयपुर ।

६२४ ४. हनुमंत कथा रास— इ. रायमरूल । पत्र सं०४१ । प्रा०१२ ४ ८ डच। मापा— हिन्दी (पयः ।। विषयः— रासः । र०काल ते० १६५६ वेद्याला वृदी ६ । ले० काल स०१६६१ । पूर्णः। केटन स०२८ । प्राणिक स्थान — हि० और प्रधानल मन्दिर नैसायः।

विशेष-- उगाही करके मिनी काली सुदी १ स० १६६१ को जयपूर मे लिखा गया।

६२४६. प्रतिस०२ । पत्रस०४२ । ग्रा०१२×६ इञ्च । ले०काल ×। पूर्णावेष्टन सं०१०१ । प्राप्तिस्थान-दि०जैन मन्दिरपंचायनीदनी(टोक)।

६२४७. प्रतिसं० ३ । पत्र सं०६-३३ । प्रा०१३ × ७ इञ्च । ले० काल सं०१८६८ । पूर्ण । वे० स०१३३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष -- फागी मे प्रतिलिपि की गयी थी।

६२४ द. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ३४ । म्रा० १२ × ६ इ.च । ले० काल सं०१ ६६ द । पूर्ण। वेष्टन स० ४३ । प्राप्ति स्यान — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

विशेष श्योवनम ने फागी मे प्रतिलिपि की थी।

६२४६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १०५ । घा० × । ले०काल × । घपूर्णं । बेष्टनसं० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

६२५०. प्रतिसं०६ । पत्रस०६१ । घा० 🗴 । ले० काल 🗴 । घपूर्णं । जीर्णं । बेष्टनसं० ५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

६२५१. प्रति सं० ७ । पत्रस० ८३ । ते० काल १६२५ । पूर्ण । वेष्टन स०४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी मरतपुर ।

६२५२. प्रति सं० ह । पत्रस० ३७ । ले•काल स०१८८६ घ्रासौज बदी ११ । पूर्ण । बेष्टन सं० ५३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष — भरतपुर में लिखा गया था।

६२५३. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ५४ । ले०काल सं० १९५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

६२५४. प्रतिसं०१०। पत्रस०४४ । घा०६×५ इला । ले०काल सं०१७४२ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०२३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवान जीकामा।

विशेष--प्रति जीर्ग है।

६२५५. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० ८४ । ग्रा० ८ ४ ६ इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टनसं० ११५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा । विशेष-गुटका के भाकार मे है। पत्र ७६ तक हनुमान चौपई रास है तथा भागे फुटकर पद्य हैं।

६२५६. प्रति सं० १२ । पत्रसं० ४५ । घा० ११ $\frac{3}{4}$ ×६ $\frac{3}{4}$  इखा । ले० काल सं० १६१८ मादवा सदी १२ । प्रर्ण । बेप्रन स० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

६२५७. प्रति सं० १३ । पत्रस० ६७ । घा० मः 🖟 ४५ देवञ्च । ले०काल सं० १०१२ चैत बदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष — वेर ग्राम मध्ये लिखित । ग्रंतिम पाठ नहीं है। पद्य स० ८७० है पत्र स० ६८-७० तक पंच परमेध्टी गृह्या स्तवन है।

६२४८. प्रति सं० १४ । पत्र स० ५६ । प्रा० १० हुँ ४ ५ इञ्च । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर करीली ।

बिशेष--हीरापरी में लालचन्द ने लिखा था।

६२५६. प्रतिस० १४ । पत्रस०४० । ब्रा० १०३ ४ ७३ इश्वः । ले० काल 🗴 । ब्रपूर्णः । वेष्ट्रत सं० ३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष---२५--२६ वा पत्र नही है।

६२६०. प्रति सं०१६। पत्र स०४७ । घा०६ $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । ले०काल $\times$ । पूर्णं। बेक्नसं०६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (मीकर)।

**६२६१. प्रति सं० १७ ।** पत्र स० ४३ । प्रा० ११×५ इश्व । ले० काल स० १८६२ वैशाख **बदी १**४ । पूर्ण । बेठून स० ६६/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

६२६२ प्रति सं० १८ । पत्र स० ५६ । आ० १० $\times$ ६ हुँ इख । ले० काल स० १६२८ आसीज बदी = । पूर्ण । बेस्टन स० ४५ । प्राप्ति स्थान—सीगाणी दि० जैन मंदिर करीली ।

विशेष -- बगालीमल ने देवाराम से करौली नगर मे प्रतिलिप करवाई थी।

६२६३. प्रति सं० १६ । पत्रस० ७० । आ० १२ 🖂 ६ खा । लेक्सल म० १८३७ । पूर्गा । वेष्ट्रनस० ४४६-३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-गाव स्वामी मध्ये लिखित । प॰ जसक्ष्पदास जी ।

६२६४. प्रति सं०२०। पत्रस०७६। घा०७ 🖯 ४५ इञ्च। ले॰काल स १८१५। पूर्ण। वेकनसं०२०। प्राप्ति स्थान — दि०जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर।

# विषय -- इतिहास

६२६४. उत्सव पत्रिका—  $\times$  । पत्रस०२। म्रा० ६ $^1_i \times ^1_i$  इत्व । माषा-हिन्दी । विषय-पत्र लेखन इतिहास । र०काल  $\times$  । ले॰काल स ० १६३०। पूर्ण । वेष्टनस० २१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाखनाय चीगान बृंदी ।

विशेष-सागत्वपुर की पत्रिका है।

६२६६. कुन्दकुन्य के पांच नामों का इतिहास —  $\times$  । पत्र स० ६। प्रा० ११ $\times$ ६ इन्च । भाषा—िहन्दी । विषय — इतिहास । र०काल  $\times$  । ले० काल १८६६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६०/६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष--इन्दौर मे प्रतिलिपि हुई थी।

६२६७. कुलकरी—  $\times$  । पत्र सं०२४। प्रा०१० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इख । माषा—संस्कृत । विषय— कुलकरों का इतिहास । र० काल  $\times$  । ले० काल सं०१८०४ कार्तिक सुरी १। पूर्ण । बेष्टुन सं०१२०– ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर कोटडियों का इंगरपर ।

विशेष-- उदयपुर मे लिखा गया था।

६२६८. गुरावली —  $\times$  । पत्रस॰ २६ । मा॰ १३ $\times$ ४. गृहे इन्छ । भःपा-संस्कृत । विषय — इतिहास । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं॰ १८५ १ प्राप्ति स्थान — म॰ दि॰ जैन मन्दिर मजोर ।

६२६६. गुर्वावलीसज्भाय— × । पत्र स० १०। मा० १०×४ इच । भाषा—प्राहत । विषय—इतिहान । र०काल × । ते० काल × । पूर्णं। वेष्ट्रन स० ४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सडेलवाल मन्दिर उदयपर ।

६२७०. ज्ञातरास—भारामस्ल । पत्रसं० २४ । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल $\times$ । के काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० = । प्राप्ति स्थान—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

विशेष-संघाधिपति देवदत्त के पुत्र भारामल्ल थे।

६२७१. **चौरासो गोत्र विवररा**—  $\times$  । पत्र स० ०। माषा-हिस्सी । विषय-इतिहास । र० काल  $\times$  । ले०काल १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२७२. प्रतिसं० २ । पत्र सस्या ६ । प्रा० ११×६ इश्व । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टत स० <४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदाव पुरानी डीग ।

विशेष--- चौरासी गोत्र के मितिरिक्त वश, गांव व देवियों के नाम भी हैं।

६२७३. चौरासी जयमाल (माला सहोत्सव)—विनोदीलाल । पत्र स०२। ग्रा० ११४५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहात । र०काल X । ते० काल X । पूर्ण । वेष्टन स०६१६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर खबदुर । ६२७४. चौरासीजाति जयमाल—  $\times$ । पत्रसं $\circ$  । प्रा $\circ$   $\circ$   $^{1}$   $\times$  ५ दश्व । आया—हिन्दी पद्य । विषय—इतिहास । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनस $\circ$  १८६ प्रास्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर फतेहपर केलावाटी (सीकर)

६२७५. चौरासी <mark>जाति की विहाडी</mark> — × । पत्रतः ३। मा०१०२/४५ इच। माया — हिन्दी। विषय — इतिहास। र० काल × । ले०काल × । प्रपूर्ण। वेष्टन स०६७४। **प्रास्ति स्थान** — दि० जैन मन्तिर लक्कर जयपर।

विशेष-- चौरासी जातियों की देवियों का वर्शन है।

६२७६. जयपुर जिन संदिर यात्रा—पं० गिरकारी । पत्र स० १३ । घा० ६ १ ४६ ६च । माषा—हिन्दी । विषय—यात्रा वर्गन (इतिहास) । र०काल × । ले० काल स० १६०८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२६ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६२७७. तीर्थमाला स्तबन— × । पत्रस॰३। ग्रा॰१०३ इख । भाषा-—हिन्दी पद्य। विषय —इतिहास । र०काल × । लेकाल × । पूर्ण । वेष्टन स॰१३२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर उदक्षर

विशेष-सं०१५२६ वर्षे माघबुदी ६ दिने गुक्रवारे लिखित ।

६२७८. **निर्वाश काण्ड गाथा**— ४ । पत्रस**्थ ।** आ० ११४५ इव । भाषा—प्राहत । विषय—इतिहास । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११-१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्थासह (टोक)

६२७६. प्रतिसं०२। पत्रस०२। प्रा०१११ै×६ इञ्च। से०काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन म० ३६ । प्राप्ति स्थान — ६० जैन प्रवायती मन्दिर करोली।

६२८०. निर्वास कांड माषा —भैया मगवतीदास । पत्रसं ४ । ह्या० ११ × ४ है इन्छ । माषा —हिन्दी पद्य । विषय —इतिहास । र०काल स० १७४१ । ते०काल × । पूर्स । वेष्ट्रन स० १६ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष -- प्राकृत निर्वाग् काण्ड की भाषा है।

६२**८१. पद्मानंदिगच्छ को पट्टावली—वेदाबह्य**। पत्र त०७। ब्रा०११×४ इ.च.। प्रापा-हिन्दी। विषय—इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन त०३४२/४१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर समवनाथ उदयपुर।

विशेष-रचना निम्न प्रकार है-

विकसी सक्य तक्व दर्श हिंय गुरु इन्द्र समान ए जाएीएजु । नदीनाथ मुतापति पुत्र विकट कुणिल हिंध विस्त बाएीएजु । सज्ञान कि स्नम्न चिकटन कुं एह जान कि भानु बरवाएगी एजु । देवजी बहा वाएगी वींद ग्रह नायक पपनिंद जग मानिदेवु ॥१॥ स्थाकरण सुद्र स्वतिति काच्य मुतकं पुराण, क्विस्तत परा । नत्तेज महावत चन्समिति कि साइपरे वर्षण, समरा । स्नोर ध्यान कि ज्ञान गुमान नहिं तींव लाम लीय तस्एगा चीवरा । रामकीति पट्टोयर पपनिंद कांह देवजी बहु सेवो चुनरा ॥२॥।

बादि गजेन्द्र तिहां जु भाँड जिहां पद्मनंदि मृगरंजन गजे। कौरव किचक त्याहाज लडि ज्यहा भीम महा भड हाथ न बजे। रामकीर्ति के पट्टपयोज प्रबोदनकुं रविराज सूरजे। देवजी ब्रह्मवृदि गुच्छनायक सारदागुच्छ सदा ए छाजे ।।३।। वादि कमत फांग दरवागापति वादिकरी सभिमह भयो है। वादि जलद समिरए। ए गुरु वादिय वंद की भेद लयो है। राय श्री सच मिलि पद्मनदि कु रामकीति को पट्ट दयो है। बद्धा करो देवाजी गरजी याक इन्द्र नारद प्रसाम कियो है ॥४॥ राजगृह पद्मनदि समोवर मेघ केंद्र नहि पावति । ताको निरतर चाहन चातक तोकृपाट जिन धावतहि। मेघ निरन्तर वरषत निरतु भारिय दानिक गाजतुहि। धो दान समिमूख सामत् गोर कल्याए। मृनि गुए। गावतहि ॥ ॥।। श्रीमुलस्य सरागार पद्मनदि मद्भारक सकलकीति गृहसार । भवनकीति भवतारक ज्ञानभूषसा गुरुवग विजयकीति समचन्द्र । सुमतिकीर्ति गुराकीर्ति बदो भवियरा मनरगह तसपट्टे गुरु जारिएय । श्रीवादीभृषण् यतिराय पूजराज इमि उच्चइं गुरु सेविनरपति पाय ॥६॥

पवमहाव्रतमार पवसमिति प्रतिपाति ।
गृतिवय मुखकार मोर मोहा द्वीर टारिन ।
पवाचार विचार भेद विज्ञान मुजाऐ।
गृताकीति पट्टे निपुस श्री वादिभूषण बदो सदा।
गृजाकीति पट्टे निपुस श्री वादिभूषण बदो सदा।
गुजराज पहित इम उच्चरे गुरुवरण सेवो मुदा।
सवल निसारण प्रनाफन गर्जित माननी लाद जु मज़्क गायो।
विद्या के नेज करे घरि हेत कु उरवादिषाय बदन मायो।
स्वर्ण के नाव जिस गुजरात तास जुगमानी को मान नमायो।
बदे धर्मभूषण पयनदि गुरु पाटस माहि जुसामो करायो।
एक स्ताव रिपर रहे करणी कथनी एक घर परे।
एक सोभ के कारण चारण मे एक मा चारि।
स्वेष्टम फिरीह एक स्थादिक नाम विकल्डकरि।
यहे धर्मभूषण पयनदि निकलक कु भूष प्रसाम करिहि।।।।

इसके झागे निम्न पाठ और हैं--

नेमिपच्चीसी कल्यास्कीर्ति हिन्दी चौबीस तीर्थंकर स्तुती ,, ,,

६२६२. पट्टाबली— $\times$ । पत्रसं॰ ४। मा॰ १० $\times$ ४६त्व । माषा—हिन्दी गव । विषय— इतिहास । र० कास  $\times$ । से॰कास  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागरी इंदी । विशेष - श्वेताम्बर पट्टावली है। संवत् १४६१ जिनवद्धं न सूरि तक पट्टावली दी हुई है।

**६२८२. प्रतिसं० २**। पत्र स० २४ **। धा० ६** $_7^2$  $\times$ **५ इ**खा। ले० काल सं० १८३० सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६ र । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष-श्वेताम्बर पट्टावली है।

६२५४. प्रतिष्ठा पट्टावली —  $\times$  । यत्रसं०१८ । धा०११ $\times$ ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०कास  $\times$  । से०कास  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्ट्रनसं०१६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

६२**०५. मट्टारक पट्टावली** — 🗙 । पत्र सं० ४ । ग्रा०१०१ ५५ डख । भाषा — हिन्दी । विषय — इतिहास । र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । वेष्ट्रन स०६७४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर सफकर जयपर ।

विशेष - सं० १०४ भदाबह से लेकर स० १८६३ म० देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट तक का वर्णन है।

६२८६. **भट्टारक पट्टावली**— × । पत्र स॰ ३० । ग्रा० १।। × ४ इञ्च । भाषा — हिन्दी । विषय — इतिहास । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३४ । **प्राप्ति स्थान** — समबनाय वि॰ जैन मन्दिर उदयपर ।

विशेष-सवत १६६७ से स० १७४७ तक के भट्टारको वर्गान है।

६२६६. **भट्टारक पट्टाबली** — । पत्रस्व० १४ । म्रा० १० ४७ इला । भाषा — हिन्दी । विषय-इतिहास । २०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २८०-१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटटियों का इंगरपुर ।

६२८६. **ब्रु**निपट्टावली —  $\times$  । पत्र स॰ ५५ । ब्रा॰ ११×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय— ६तिहास । २०काल  $\times$  । प्रेणं । वेष्ट्रन स० १४४८ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मदिर भजेर ।

विशेष-संवत् ४ से सबत १८४० तक की पट्टावलि है।

६२६०. प्रबंधविन्तामित्--राजशेलर सूरि। पत्रतः ६०। म्रा०१४४४ दश्यः। भाषा-संस्कृत गयः। विषय-इतिहासः। र०काल ४ । ले०काल सं०१४०५ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्गः। बेहुनसं० १२४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवाजी कामः।

विशेष -[इस्ली (देहली) में मुहम्मद शाह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

६२८१. प्रवध चिन्तामिंगा — प्रा० मेरूतुंग । पत्रस०४६। प्रा० १४४४ इ.च. । माषा – सस्कृत । विषय-इतिहास । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०१२२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६२६२ महापुरव चरित्र— झा० सेरुनुंग। पत्रसं० ४२। झा० १४४४ इत्राः। जाया— संस्कृतः। विषय-काव्यं (इतिहास)। र०काल ४। लेकाल ४। पूर्णः। वेष्ट्रन स०१२१। प्रास्तिः स्थान—दि० जैन सन्दिर दीवानजी कामा। विशेष--प्रति प्राचीन है।

६२**६३. यात्रा बर्गन** —  $\times$  । पत्र सं॰ ११ । प्रा॰ ११  $\times$  ७ इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-वर्णन । र०काल स॰ १९०६ । **से॰काल**  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ५६-४८ । प्रा**प्टिर स्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विरोष — गिरनार, महाबीर, चौरासी, सौरीपुर स्नादि क्षेत्रो की बात्रा का दर्शन एवं उनकी पूजा बनाकर सर्घ स्नादि चढाये गये हैं।

६२६४. यात्राखली—  $\times$  । पत्र स०४ । आ०१० $^1_i$   $\times$   $^1_j$  इत्य । आधा-हित्दी (पद्य) । विषय—इतिहास । र०काल  $\times$  । ले•काल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स०१६८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष - १६३२ भादवा मूदी ६ की यात्रा का वर्ण न है।

६२६४. विकमसेन चउपई—विकमसेन । पत्र स० ४७ । घा० १०३ 🗙 ४ इन्छ । भाषा— हिन्दी (पद्य) । विषय-इतिहास । र० काल स० १७२४ कार्तिक । ले० काल स० १७४६ मंगसिर सुदी ११ । पर्ता । वेष्टन स० १२६६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रवर्भर ।

६२६६ विरदावली—  $\times$  । पत्र स० ४ । प्रा० क $^2_i \times ^2_i$  इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थाम**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाल टोडान्यर्मिह (टोक) ।

विशेष-इसमे दिगम्बर भट्टारको की पट्टावली दी हुई है।

६२९७ विरदावली —  $\times$  । पत्र स॰ ७। धा० १० $\times$ ४ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय — इतिहाम । २०काल  $\times$  । ते० काल सं० १६३७ मार्गशीर्य मुदी १३। पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २५३ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--मुरतिविदर (मुरत) मे लिखा गया था।

६२६८. **बृह्द् तपागच्छ गुरावली**— imes। पत्र सं०१४ । **प्रा० १०**१ imes४१ इञ्च। प्रापा—सस्कृत। विषय-इतिहास। र०काल imes। ले०काल स० १४६२ चैत्र सुदी ५। पूर्णः। बेष्टुन स० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रग्रवाल प्वायती मन्दिर सनवर।

विशेष-१४६६ तक के तयागच्छ गुरुश्रो का नाम दिया हुआ है। मुनि सुन्दर सूरि तक है।

६२८६. बृहत्तयागच्छ गुर्वावली—पुनि सुन्दर सूरि । पत्र संस्था र से ४५ । माया-सस्कृत । विषय-इतिहास । र०कास ४ लेकाल स० १४६० फागृन सुदी १० । सपूर्ण । वेष्टन सं० ४६१ । प्राप्ति स्थान—पवायती मन्दिर भरतपुर ।

६२००. शतपदी—  $\times$ । पत्र सं०२१-२४ । श्रा० १२  $\times$  ४ $^2_2$  दश्च । भाषा—संस्कृत । र०काल  $\times$  । लेथकाल  $\times$  । विषय-इतिहास । वेष्ट्रन सं०७०५ । श्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर

विसेच — स्वेताम्बर प्राचार्यों के जन्म-स्थान, अन्म-संवत तथा पट्ट संवत् खादि दिये है। सै. ११३६ से १४४४ तक का विवरण है। ६३०१. स्वेतांवर पट्टाबसी—  $\times$  । पत्र सं ० ५ । म्रा० १०  $\times$  Y हे इन्व । भाषा-हिन्दी (गदा) । विषय-इतिहास । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं ० ३००। प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दवतान (बंदी) ।

विशेष-महाबीर स्वामी से लेकर विजयरत्न सुरि तक ६४ साध्यों का पट्ट वर्ण न है।

६२०२. **धुतस्कंध — त्र० हेमजग्र**। पत्र सं० १०। म्रा० १० $\times$ ४। इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय – इतिहास । र० काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । वेष्टन स०७४। **प्राप्ति स्यान** — मास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर सम्बर, जयपुर ।

६२०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । षा० १०३ ४४ है । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र•काल×। ले॰काल×। वेष्टन स • ७५ । प्राप्ति स्थान—गास्त्र भण्डार दि० जैन मस्टिर लक्कर जयपुर ।

६२०४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४ । झा० ११४४ इन्त्रा ले०काल ४ ।पूर्ण । बेष्टन स० २४७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दर प्रसिनन्दन स्वासी बंदी ।

विशेष-पं० सरजन ने प्रतिलिपि की थी।

६३०**४. प्रतिसं०४ । पत्र सं०४ । ले०काल 🗴** । पूर्णं । बेष्टनस०२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर उदयपुर ।

६२०६. **श्रुतस्कष सूत्र**— × । पत्रस० २९ । झा० १०१ ×४१ इश्व । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल स० १६६८ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेहन सं० ५० । **प्रास्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बैर ।

विशेष - चपावती नगर मे ऋषि मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी।

६२० ७. **श्रुतावतार** —  $\times$  । पत्र स० ५ । घा० ११  $\times$  ५ इञ्च । आया-सस्कृत । विषय — इतिहास । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेपृन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दनी (टोक) ।

६२० **क. श्रुताबतार** — × । पत्रस० ४ । म्रा० १२ × ४ इश्व । माषा-सस्कृत । विषय— इतिहास । र०काल × । ले**०का**ल सं० १७०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०४/११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समबनाष मन्दिर उदययुर<sup>े</sup>।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स बत् १७०६ वर्षे मार्गशीपं मासे गुक्लपक्षे सप्तमी दिवसे ग्रहिमदाबाद नगरे ग्राचार्यश्री कल्यासा कीर्ति तत शिष्य व ० श्री तेजपाल लिखित ।

६२०६. श्रु ताबतार— $\times$  । पत्र स $\circ$  ४। ग्रा० ११ $\times$ ४ इख । मापा–सन्कृत । विषय- इतिहास । र $\circ$  काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स $\circ$ ४१७/५०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

६३१०. महारक सकल कोतिनुरास – बर्णसामान । पत्र स० ११। प्रा० ११  $\times \times$  इश्व । माषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३१४/४१० । प्राप्ति स्थान — संग्वनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- भन्तिम भाग----

चउवीस जिऐसर प्रसादि
श्री भुवनकीति नवनविल नादि ।
जयवता सकल तथ कत्याग करण।

इति श्री मद्वारक सकलकीतिनुरास समाप्तः । श्राविकाबाई पुतलि पठनार्थं ।

६२११. सम्मेदशिखर बर्गन— $\times$ । पत्रस० ४। मा०१२है  $\times$  ५ $^{3}$  इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र०कास  $\times$ । लेकास स० १६६२। पूर्ण। वेष्टन स० ५२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दि लक्कर जयपुर।

विशेष--प्रारंभ मे लघु सामायिक पाठ भी दिया है।

६३१२, सम्मेदशिखरयात्रा बर्गन—पं । गिरधारीलाल । पत्रसः ७ । प्रा०१२ ४ ४.१ इ.च । भाषा —हिन्दी । विषय—इतिहास । र०काल सं०१८६६ मादवा बुदी १२ । लेक्काल ४ । पर्ण । वेष्टन स०६६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रजमेर मण्डार ।

६२१२. सम्मेद शिखर विलास - रामचन्द्र । पत्रसं० ७ । ग्रा० ८ ४ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय- इतिहास । र०काल ४ । ले०काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ५२/८८ । प्राप्ति म्यान--- टि० जैन मन्दिर भादश (राज०) ।

विशेष-पे प्रसान सवका ने प्रतिनिधि की थी।

६३१४. संघ पराष्ट्रक टोका - वः जिनवल्लम सूरि । पत्र सः २०। घा०११ ४५ इन्व । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिशम । रंजकाल 🗴 । लेजकाल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं०४७ । प्राप्ति स्थान— विक जैन मन्दिर टीवानजी कामा ।

६३**१४. प्रति सं० २ ।** पत्रस**० २१ । ले॰काल × ।** पूर्ण । वेष्टन स० ४८ **। प्राप्ति स्थान**— तक मन्दिर ।

६२१६. संघषट्टप्रकरण् । पत्र सं० ७ । प्रा० १०३ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इल । भाषा -सस्कृत । विषय-इतिहास । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण् । वेष्ट्रन सं० ७४१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मिंदर प्रकार भणवार ।

६२१७. संबरसरी- $\times$ । पत्रस $\circ$ ४। प्राः १० $^2\times$ ५ द्रशः भाषा-हिन्से । विषय-इतिहास । र०काल  $\times$  । ले० काल स $\circ$ १८१७। पूर्ण । बेष्टनसं $\circ$ १३११ । प्रास्ति स्थान —भट्टारकीय दि $\circ$  जैन मस्बर प्रजमेर ।

विशेष—स०१७०१ से लेकर सं०१७४४ तक कावर्णन है। लिखित ग्रार्यानगोनासमत १⊏१७ वर्षे।

# विषय -- विलास एवं संग्रह कृतियां

**६३१८. प्रागम विलास—द्यानतराय ।** पत्र स०३६२ । प्रा० १०४६ इञ्च । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय—सग्रह । र०काल सं० १७६४ । ले० काल स०१८३६ । पूर्ण । वेशन स०४६-३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

विशेष--- कृष्णागढ मे ख्वेताम्बर श्री कन्हीराम भाऊ ने प्रतिलिपि की थी। इसका दूसरा नाम धानत विकास भी है।

६३११. कवित्त—  $\times$ ं। पत्र सं०६। आ०६% $\times$ ं। इत्था माया—हिन्दी पत्र । विश्व—सुमाषित। र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । अपूर्ण । वेष्टनस०२=। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दक्ताना (वृदी)

६३२०. कवित्त—बनारसीदास । पत्रसं॰ १। ब्रा॰ १० $\times$ ४ ६ व । भाषा — हिन्दी । विषय-फुटकर । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । वेष्टन स॰ २१२ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दवलना (वृंदी)

विशेष-दो कवित्त नीचे दिये जाते है --

कचन भड़ार पाय नैक न मगन हुने। पाव नव योवना न हुने ए बनारमी। काल प्रियकार जाएँ। ज्यात बनारा सोई। कामनी कनक मुद्रा दुहु कु बनारसी। दोउ है बिनासी सदैव तू है प्रविनासी। जीव याही जगतबीच पड़वे बनारसी। याकों तू सग त्याग कूप सू निकस भागी। प्राण्डि मेरे कहे लागी कहत बनारसी।

× × **x** ×

किते गिली बैठी है डॉकिस्पी दिल्ली । इत मानकरी पति पडम सु । पृथ्वीराज के सगी महाहित हिल्ली । हेम हमाऊ प्रकवर बब्बर । साहिजिहा सुभी कीनी है भल्ली । साहि जिहा मुखी मन रग । तउ विरची साहि श्रीरंग मिल्ली। कोटि कटास कहै तक्सी वै किते......

६३२१. प्रतिसं०२ । पत्र सं०१। ग्रा०१० ४४ इच्चा ले० काल ४ । पूर्णा वेष्ठन सं० २०३। प्राप्तिः स्थान—दि० जन मन्दिर दवलाना (बंदी)

विशेष-समयसार नाटक के कवित्त है।

६३२२. कवित्त-सुन्दरदास । पत्रसः ३। मा०१०१४५ इखा माषा-हिन्दी पखा विषय-सुभाषित । रुकाल ४। ले०काल स.० १८७४। पूर्ण । वेष्ट्रत सं० २१६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पार्थनाय, जोगान बंदी ।

विशेष--प॰ रतनचन्द के पठनायं लिखा गया था।

६२२३. कवित्त एवं स्तोत्र संग्रह—  $\times$  । पत्रस॰ ६० । झा० ११ $\times$ ५ इख । साथा—हिन्दी काव्य । विषय—सग्रह । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स॰ ७११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---भजगोविन्द स्तोत्र, नवरत्नकवित्त, गिरधर कु डलिया हैं।

६२२४. गुराकरंड गुराबली—ऋषिदीय । पत्रस० २१ । प्रा॰ १० ४ ४ हे इख । भाषा— हिन्दी । विषय —मुगापित । र०कालस० १७५७ । ले०काल स० १८१७ । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० ६७४ । प्राप्ति स्थान —भग्नतकीय दि० जैन मन्दिर प्रवर्गर ।

विशेष — मिती प्रापाट बुदी ११ स॰ १८१७ का श्रीमत श्री सकलमूरि शिरोमिए। श्री मङलाचार्य श्री १०८ श्री विद्यानद जी नद् जिया प० श्री ग्रवैराम ही लियिक्च । शिष्य मूरि श्री रामकीति पठनार्यं।

६३२५ चसस्कार षट् पंचाशिका —सहास्मा विद्याविनोद । पत्र स० ४। घा० ११६/५४६६ इच । माषा —सह्यतः। विषय —विवित्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णं । वेष्टन स० १७६– १८६। प्राप्ति स्थान —वि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

६३२६. ग्रंथसूची शास्त्र भंडार वबलाना—४ । पत्रस० ६ । ग्रा० २७ ४४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय — मूची । र० कान ४ । ने० काल १८६६ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स०३३१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बवनागा (ब्रु दी)

विशेष-वहीं की तरह सूची बनी हुई है।

६३२७. चम्पा शतक--चम्पाबाई । पत्रस्० २३ । घा० १०४ ८ हे इस । माषा--हिन्दी पद्य । विषय--- सग्रह । रक्ताल ४ । ले०काल सं० ११७४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२६ । **प्राप्ति** स्थान--- दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६२२ ८ चेतनविलास -परमानस्य जौहरी । पत्रसं १७० । या॰ १२ $\times$ ७ ई ४व । माषा-हिन्दी गण-पण । विषय-चिविष । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ २२ । प्राप्ति स्थान---दि॰ जैन मन्दिर फतेहपुर शेलावाटी (शीकर)

विशेष--गंथकार के विभिन्न रचनान्नों का सग्रह है। अधिकांश पद एवं चर्चायें हैं।

६३२६. प्रति स०२ । पत्रसं०१७३ । ग्रा०१२४८ इ.च । लेक्काल ४ । पूर्णं । वेहन सं०२७६ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर । ६३३०, **सौरासी बोल**—  $\times$  । पत्र सं० १०। मा० ११,  $\times$ ६ इञ्च । माषा—हिन्दी (गष्ट)। विषय—पर्म । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६–७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटिक्यों का इंगरपर ।

६२३१. जैन विलास— मूघरदास । पत्रसं० १०४ । ग्रा० ८४४ इका । मापा-हिन्दी पद्य । विषय—विविध । २०काल ४ । से०काल सं० १८६६ माघ बुरी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७ । प्राप्ति स्थान-किंत्रने कोण प्रस्तन न्यामा ।

विशेष-भूधरदास के विविध पाठों का संग्रह है। मिट्ट राम ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करायी थी।

६३३२. **डालसागर —गुरासागर सूरि ।** पत्र स०१२६ । भाषा—हिन्दी प**य । विषय—** विविद्य । रं∘काल × । ले० काल स०१६६६ । पूर्ण । वेष्टनस०१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पनायती मन्दिर वसवा ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १६६६ वर्षे कार्त्तिक मासे श्क्रक मासे चतुर्दंश्या तिथौ देवली मध्ये लिखितं।

६३**३३. डालसंग्रह—जयमल** । पत्र स० ३६ । भाषा-हिन्दी । विषय-फुटकर । र०काल× । से०काल × । छपूर्ण । वेष्टन स० २०७/६६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

निम्न पाठो का सग्रह है-

१. परदेशीनी ढाल जयमल हिन्दी र०काल सं०१८७७ अपूर्ण।

प्रश्तिम---

मंबत महार्र से सतोत्तर रे बुद तेरस मास स्रथात । सिंख प्रदेशीरायनी एक हीय मूत थी काबो रे ॥४६॥ पुत्र बनाजीयताद थी रे तत् सिंख प्रश्वरदास । ताम सिंस जेमल कहै रे छोडे सलार नापसोरे । इति परशेणीनी सिंद समाजा ।

२. मृगोलोडानी चरित्र जयमल हिन्दी ले॰काल स॰ १८१५ अपूर्ण

इतिमरगालोढानो चरित्र समाप्ता ।

३. मुबाहु चरित्र जयमल हिन्दी **अपूरां** 

६३३४ हष्टान्त सतक $-\times$ । पत्रस॰२३। घा०१० $^1_i \times ^2_0$  द्वा। भाषा—स स्कृत। विषय—विविध। र० काल  $\times$ । ते०काल स॰१६४२ फानुस बुदी ११। पूर्स्स। बेहन सं०१६५। **प्रास्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर वोरमती कोटा।

विशेष--पोशी पडित जिनदासजी की छै।

६३३ थ्र. दौलत बिलास --बौलतराम । पत्रस०२७। धा॰ १२ $\times$ ७ इच । भाषा—हिन्दी पद्य । बियम—सग्रह । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१२६४ ब्रायाद्य सुदी १०। पूर्ण । बेष्टन सं०६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवसल पनायती मन्दिर धलवर ।

६२३६. दोलत बिलास—दोलतराम पत्लोबाल । पत्रसं० ४३ । आः १२२१ ४७१ इस । भाषा—हिःरी पद्य । विषय—सणह । र०काल X । से०काल X । अपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४१/११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर प्रतवर । विशेख - दौलतराम की रचनाथी का संग्रह है।

६३३७. **धर्मविलास — व्यानतराय**ा पत्र सस्या १७२ । घा० १४×७ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सग्रह। र०काल स०१७०१। ते० काल म०१९३७ मासोज बुदी ४ । पूर्ण । वेप्टन स०२६। प्राप्ति स्थान--- दि० जैन पार्थनाय मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष-रामगोपाल बाह्यरण ने केकड़ी में लिखी थी।

६३३८. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४८ । प्रा० ११ $\times$ ४ इच । से० काल सं० १७८६ पौष बुदी १०। पूर्यः । वेप्टन स० ८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६३३६. प्रतिस० ३। पत्रस० १४० । म्रा० १३×४ $\xi$  दश्व । ले० काल  $\times$  । म्रपूर्ण । बेष्टन स० ७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोक) ।

६३४०. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २८७ । घा० १२×४ है इञ्च । ले०काल सं० १८५८ । पूर्ण । बेष्टत स० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बूंदी ।

६३४१. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २४४ । बा० ११×४ुँ इख । ले० काल सं० १८≈३ मगसिर सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनस० ६११ । प्राप्ति स्थान—अ० दि० जैन मंदिर ब्रजमेर ।

्र विशेष — जयपुर नगर के कालाडेहरा के मन्दिर में विजेराम पारीक सांभर निक≀सी ने प्रतिलिपि की थी।

६३४२. प्रति सं०६ । पत्र स०२६१ । ब्रा०४×६ इचा । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स∙ ६६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन तेरहवयी मन्दिर नैरावा ।

६३४३ प्रतिसं०७ । पत्र स० १८७। ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० १० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवानजी मरतपुर ।

विशेष--भरतपुर मे लिखा गया था।

६२४४. प्रति सं० द्वापत्र स०१७०। प्रा०१२imes६२ इच । ले० काल स०१५२६ प्रापाढ बुदी २ । पूर्ण । वेप्टन स०७ प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मदिर ।

विशेष — १४६ फुटकर पद्य तथा भ्रन्य रचनाम्रो का संग्रह है।

६३४५. प्रति सं० ६ । पत्रस०२७३ । मा०११  $\times$  ५ $\frac{1}{4}$  इञ्च । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्ट्रनसं०२६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर करौली ।

६३४६. प्रति सं० १०। पत्र स०२५०। ले०काल स०१८७६। पूर्ण। बेष्टन स०६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती मंदिर हण्डावालो का डीग।

६३४७. प्रति सं० ११ । पत्रसं० २७६ । आ० १२ $_4^2 \times 9_5^2$  इल्ख । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टुन सं० १३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पचायती मंदिर कामा ।

६२४ ८. प्रति सं०१२ । पत्र स०२३१ । घा०१०१ ४६ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । वेदनसं०१३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटामन्दिर बयाना ।

६२४६. प्रति सं० १३ । पत्रसं० २६३ । प्रा० १०३ ४५ इचा । ले०काल सं० १७६४ । पूर्ण । वेष्टुन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना । विशेष — बयाना में केशोदास कासलीबाल के पुत्र हिरदैराम ने चन्द्रप्रम चैत्यालय में इन्य लिखवायाया

६३५०. प्रति सं० १४ । पत्र सं० २६० । ले० काल स०१००४ ज्येष्ठ मुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० ३३७ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-प्रति जीगं है।

६३५१. प्रति सं० १५ । पत्रस० १६६ । लेक्काल सं० १८६७ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मस्दिर भरतपुर ।

विशेष-नानकराम ने मरतपूर में लिखी थी।

६२५२. प्रति नं १६। पत्र सं० २६६। ले० काल सं० १८७७। पूर्णं। बेष्टन सं० ४०६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवायती मन्दिर मरतपुर।

६३**५३. प्रतिसं∘ १७ ।** पत्रस॰ २०६ । ले**०काल** स० १८७७ सावन मुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४**१० । फ्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष — परमानन्द मिश्र ने घमंपूर्ति दीवान जोधराज के पठनार्थ प्रतिलिपि की सावन बदी ७ को।

६३४४. प्रति सं० १६ । पत्रस० ७६ । ब्रा० १२ $^3_1 imes$ ७ ६ च । ले० काल imes । पूर्णं । बेष्टनस० १२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहरूर गेलावाटी (सीकर) ।

६२५५. प्रति स॰ १६ । पत्रस॰ २०१ । घा० ११६४७ इन्छ। ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन स॰ १०१ प्राप्ति स्थान---दि० जैन ग्रग्रवाल प्रचायती मन्दिर ग्रलवर ।

६२४६. प्रति सं० २० । पत्रस० १८१ । ग्रा० १२ $\frac{1}{2}$   $\times$  ७ $\frac{1}{2}$  इक्ष । लेक्सल स० १९१२ माह सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ४६/८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर ग्रलवर ।

६३५७. प्रतिसं० २१ । पत्रस० १७० । ग्रा० १२ $\frac{1}{4}$ imesदश्च । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टुनस० ४६७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सदिर लक्कर, जयपुर ।

६२ ५८. प्रतिः स०२२ । पत्रस०२४ । या०६% ६ इञ्च । ले०काल० सं०१६४४ । पूर्ण । वेष्टुनस०७६ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

६२४.६. प्रतिसं०२३ । पत्र म०२०३। प्रा०१११र्४४६ इ.ख.। ले∘काल स०१६३३ ग्रापाढ सुदी१४ । पूर्णा । बेष्टन स०६२-२३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दौसा।

विशेष - जयपुर् मे प्रतिनिधि की गई थी।

६३६०. प्रति स० २४। पत्र स० १५१। घा० १२ $rac{1}{2} imes$ ६ इ.च । ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ सुदी ११। पूर्ण । बेष्टनसं० १०१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा।

विशेष -- नानूलाल तेरापथी ने चिमनलाल तेरापथी से प्रतिलिपि करवाई थी।

६३६१. प्रति सं० २५ । पत्र स० ३६ । धा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इन्छ । ले॰काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्ट्रन स० १२६-५४ । प्राप्ति स्थान —उपरोक्त मन्दिर ।

६३६२. नित्यपाठ संग्रह्—  $\times$  । पत्र सं० २४ । प्रा० १० $\times$ ६३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पाठ सग्रह । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैसावा ।

विशेष --- निम्न पाठों का सग्रह है---

भक्तामर स्तीत्र, तत्वायं सत्र, सहस्रनाम-स्तीत्र, एव विधापहारस्तीत्र भाषा ।

६३६३. **पद एवं डाल** $-\times$ । पत्र स०७-२६। घा० १० $\times$ ४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पदा २०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्तं। वेष्टन स०१७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दक्षताना (वंदी)।

विशेष-- निम्न रचनाओं का मुख्यतः सग्रह है-

नेमि व्याहलो-हीरो हिन्दी। र०काल स०१८४०।

विशेष — व दी में नेमिनाथ चैत्यालय में ग्रंथ रचना की थी।

मज्भाय — जैमल

विज्ञेष---कवि जैमल ने जालोर में ग्रंथ रचना की थी।

रिप जैमल जी कह जालोर में है.

मृतर भाष सो परमाशा है।

पद----धजयराज हिन्दी

पद पदमराजगरिंग

६३६४ पद संग्रह— खुगालचन्द । पत्रस० ६ । प्रा० २ $\frac{7}{4}$   $\times$ ७ इच । प्राचा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स० ६१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैराया ।

६३६४. पद संग्रह— खेनमुख । पत्रस० ६। प्रा० ११  $\times$  ६ इल । भाषा-हिन्दी। विषय-पद । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । धपूर्ण । बेष्टन स० ४८२ । प्रास्ति स्थान— दिवं जैन मदिर लक्कर, जयपुर।

विशेष-इसका नाम ग्रात्म विलास भी दिया है।

६३६६. पद संग्रह—देवाब्रह्मा । पत्रस० ६६ । प्रा० १२  $\times$   $\chi$ ृे इञ्च । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-पद सग्रह । र०काल  $\times$  । प्रेणं । वेष्टन स० १४१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मिंदर पार्थनाय चौगान बूं दी ।

विशेष - देवाब्रह्म कृत पद, विनती एव अन्य पाठी का सग्रह है।

६३६७. प्रतिसं० २ । पत्र स०३१ । त्रा०१०imes६३ इ.चा। ले० काल imes1 पूर्गं। वेष्टन स०१४२ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

६३६ म. पद संग्रह – वेदानहा । पत्र स० ४०। प्रा०७ ४६ दे इ.स. । भाषा – हिन्दी पद्यः विषय – पद संग्रह । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ३६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी वृंदी ।

६३६६. पद संग्रह (गुटका)—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ६६ । प्रा $\sigma_s^2 \times \xi_s^2$  इश्व । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पद । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर दूरी ।

विशेष--गृटका सजिल्द है।

६२७०. पद संग्रह—हीराचन्द । पत्रसं॰ ३७ । या॰ १३-४६ इन्द । भाषा – हिन्दी । विषय— भजनों का सग्रह । र०काल × । ले॰काल × । पूर्ण । बेष्टन स० ५७/४६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर भारता (राज॰)

विशेष - ८० पदो का संग्रह है।

६३७१. पद संग्रह— $\times$ । पत्र सं॰ १३२। घा॰ ५ $\frac{1}{6}$  $\times$ ५ द च । भाषा- हिन्दी पद्य । पद । र० काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३७६। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर बोरसली (कोटा)।

विशेष---विभिन्न कवियों के पदों का सग्रह है।

६३७२, **पद संग्रह।** पत्र स०२ से ६८ । आर० १० रे ४ ४ ६०४ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वैष्ठन सं०१६२ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष - प्रथम पत्र नहीं है । विभिन्न कवियों के पदों का वर्णन है ।

६३७३. **यद सग्रह** । पत्र स०४.–३४ । ग्रा० १ × ७ इ.च । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स**०** २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६३७४ **पद संग्रह**।पत्र स०२८ । ब्रा०६४ ४ इ.च.। ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यों का नैसावा।

विशेष -- किशनचन्द्र प्रादि के पद हैं।

६२७**४. पद संग्रह!** किशनचन्द, हर्षकीति, जगतराम, देवीदाम, महेन्यकीति, भूवरदास धादि के पदो का सग्रह है। पूर्ण । बेष्टुन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यमे। का नेणवा।

६२७६. **पद संग्रह** । पत्रस० २४ । प्रा॰ ६ × ४३ इश्व । से०काल × । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० १९६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नागदी, व दी ।

६३७७. **पर्व सग्रह** । पत्र स० ४७ । घा० ५ imes ४ इश्व । ले०काल imes । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपयी नैगवा ।

विशेष-मंथ जीएां अवस्था में है तथा लिपि खराब है।

६२७८. **पद सग्रह।** पत्र स० ६२ । म्रा० २१४२ इखा। ले० काल सं० १८६८ चैत्र बुदी १०। पूर्ण। बेष्टनस०७८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर म्रादिनाय बुदी।

६३७६. पद संग्रह । पत्र स०६६ । घ्रा०१२imes६ च । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टनसं०१६२१ । प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष — विभिन्न कवियों के पदों का सग्रह है।

६३ ८० पद सग्रह। पत्र स०६ । धा० १ $_{\mathcal{C}}^2 \times$ ४ इ.च.। ले० काल  $\times$  । पूर्ण। बेष्टन सं•४७ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर ध्रजमेर ।

**६३८१. पद संग्रह** । पत्रस॰ ६६ । घ० १० $\frac{1}{4}$  $\times$  $V_0^2$  इंच । ुले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । बेच्टन सं॰ २६७ । **प्राप्ति स्थान** – दि॰ जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६३ दर. पढ संग्रह । यत्रस० ६३ । भाषा-हिन्दी पद्य । भ्रा० १० X ४ इंच । ले० काल X । पूर्णं । बेष्ट्रन सं० ६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष -- बड़ा कपर, समयमन्दर, देवा बड़ा के पदो का सम्रह है।

६३८३. **पद संग्रह** । पत्रस० ६० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपर ।

विशेष---दौलतराम देवीदास म्रादि के पदो का सम्रह है।

६३ द ४. पद सग्रह । पत्र स० १६२ । भाषा-हिन्दी पद्य । ग्रा० ११ × ६ । इन्ह । ले० काल × । बेहन सं० २०। प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर बैर।

विशेष-मुख्यतः निम्न कवियो के पदो का साग्रह है-नवलराम, जगराम, ज्ञानतराय ग्राहि ।

६३८५. पद संग्रह । पत्र म० १६ । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल 🗶 । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ७९ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन तेरहवथी मन्दिर बसवा।

विशेष--- निम्न कवियों के पद एवं रचनाएं मुख्यत संग्रह में है--

यशोदेवसरि पूरिसा दाग्री पास जी भेटण श्रधिक उल्हास

हे प्रभु ताहर सनमूख जोडवे ध्रमृत नयस विकास ।।

गुराभद्रसुरि नमस्कार महामत्र पत्र राजकवि

ज्यदेश बनीसी

समयमुन्दर

बीतराग तेरा पाया सररा।

बच्मा बलिभद्र सिउभाय। गुरमसागर

मेधकुमार सिज्भःयः

जीवमृत सिज्भाय ।

पचेरिय मिजमाय । ग्रजित देवसरि

पचवोल चौबीस तीर्थकर स्तवन ।

महमद महमद

पद निम्न प्रकार है --

भलो मन भ्रमरा काई भ्रम भर्म दिवसनै राति । मायानो बाध्यौ प्राशायो भ्रम परिमल जाति । कुम काचो काया करिसी तेहना करो रे जतन्न । विरासता बार लागं नही निमल राखो मन्न ॥२॥ श्च स्या इ गर जेवडी मरिबो पगला हेठि। धन रांचीनै काई मरो करिधी दैवनी बढि। कोना छोर कोना बाछर कोना माय नै बाप । प्रारमी जावो छै एकलो साथै पुण्य व पाप ।।३.। मुरिख कहै धन माहरो घोलै घान न खाय। बस्त्र बिना जाइ पैठिस्यो लखपति लाकड मांहि ।

सलपति खत्रपति सब गये गये लाला न लाला । गरव करी गोर्ल बेसते भये जल बलि राला ।६।। भ भव सायर भव दुल भरयो तरिजी कुँ तेह । जिल मे बीहक सबल कुँ तर ते घमो मेह । उत्तर नथी प्रारा वालिबो उत्तरि योर्ल पार । भागे हारम बगसियो शेवल लीज्यो लार ।। मेहमद कहे वस्त्र योहरी ये जो क्यू चाले प्रार्थि । लाहा धपमा। ठगाहि क्ये लेला साथि हाथ ।

६३**८६. पद संग्रह**—imes। पत्रस $\circ$  २२। प्रा $\circ$  १२imes५ ६ खः। भाषा-हिन्दीले $\circ$  काल imes। प्रपूर्ण। बेष्टनस $\circ$  ५३- imes। **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दौसा।

६३८७. पर संग्रह—× । पत्रस० १८ । झा० १२×६ इञ्च । ले॰काल × । पूर्ण । बेष्टन स० २२७-६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष-नवल, भूघर, दीपचन्द, उदयराम, जादवराम, जगराम, धनकाति, दाम वशन, लालचन्द जोघा, धानत जुवजन, जिनदास, घनश्याम, भागचन्द, रतनलाल स्नादि कवियो के पद है।

**६३८६. पद सग्रह**— $\times$ । पत्रस० ८६। ले**०**काल  $\times$ । पूर्ग । वेष्टन स० ४२०-१५७। **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरगुर ।

**६३८६. पद सग्रह**— × । पत्र स०१ । प्रा०६५ × ४ है इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । वेक्रनसंक ८१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-नयन विमल, विमल विजय, शुभचन्द्र, ऋष्यभस्तवन, ज्ञान विमल। गोडी पाश्वेनाय स्तवन रचना मवत १६८२ है।

६३६०. पद सग्रह—× । पत्र स० ५ । प्रा० ६ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पञ्च । लेकाल × । भुपूर्ण । बेग्रन स० १६४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर दवलाना (बु दी) ।

विशेष—बनारसीदास जोधराज स्नादि कवियों के नीति परक पद्यों का सम्रह है।

६३६१. पाठ भंग्रह—  $\times$  । पत्र मं० ७०। ब्रा०११  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इस्त । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सग्रह । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेण्टन स० १११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ब्रग्रवाल पद्मायती मंदिर ब्रल्बर ।

विशेष-विभिन्न पाठी का सम्रह है।

६३६२. पाठ संग्रह—imes। पत्र म०२०। धा०१२imes५९ । भाषा–प्राकृत—सस्कृत । ले० काल imes। पूर्णे । बेहन स०३७६। **प्राप्तिः स्थान—दि० जैन** मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष --भाव पूजा, चैत्य भक्ति, सामायिक स्रादि है।

६३६३. पाठ संग्रह—imes 1 पत्र स॰ १२७ सं १७६ । भाषा-सस्कृत । नै० काल imes 1 प्रपूर्ण । बेष्टन सं॰ ६१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायनी मन्दिर भरतपुर ।

६३६४. पाठ संग्रह—- $\times$ । पत्रस० १२ । भाषा-हिन्दी । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेप्टन स० ४४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष — त्रिभुवन गुरु स्वामी की बीनती, भक्तामर स्त्रोत्र भाषा, कल्याएा मन्दिर स्तोत्र भाषा, पच मगल ब्रादि पाठ हैं।

६३६**४. पाठ सग्रह**— ४ । पत्र स० ५६–११३ । ब्रा० १२१ ४५१ इल्ब । भाषा-संस्कृत । ले**०** काल ४ । श्रपुर्णे । बेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६३६६ पाठसंग्रह— ×। पत्र स०२३६ । ले०काल × । ब्रपूर्ण । वेष्टन स०२० । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मस्टिर वेर ।

विशेय--- निम्न पाठी का संग्रह है---

भ्रादिपुरारा	जिनसेन। चार्य	संस्कृत	पत्र १८४	श्रपूर्ग ।
उत्तरपुरासा	गुराभद्राचार्य		5	",
षट् पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	२७	n
कर्मकाण्ड	नेमिचन्द्राचार्य	,,	٧	
कलिकुण्डपूजा	46	संस्कृत	x	11
चौवीस महाराज	ापूजा,,	हिन्दी	2 8	n

६३६७. पाठ संग्रह— $\mathbf{x}$  । पत्रम० १४ । ग्रा० १२ $\frac{1}{4} \times \mathbf{t}_{\gamma}^2$  इश्व । माषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पर्गा । बेबन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर केखावाटी (सीकर)

विशेष--नत्वार्थ सत्र, भक्तामर स्तोत्र एवं गोम्मट स्वामी पूजा हिन्दी) आदि है ।

६३८८ पाठ सम्मह $-\times$ ा पत्रस० २१ । म्रा॰ $\}१०२ \times ४$  इश्व । भाषा-सस्कर-हिन्दी । ले॰ काल  $\vee$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६६/६१ । प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन मन्दिर भादवा (राज॰)

विशेष-मुख्यत निम्न पाठो का सम्रह है।

१. भक्तामर स्तोत्र २ –कल्यारा मन्दिर स्तोत्र ३ –दानशील तप भावना कुलक (प्राकृत) हिन्दी में मध्ये दिया हुम्रा है।

६३८६. पाठ संग्रह — 🔀 । पत्रस० १९०। ग्रा० ८ ८६ इन्छ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ४४/ ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन *मस्विर* मादवा (राज०)

विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है।

१- ननक वर्गान पत्र ४ २- सनकारण वर्गान १३ २- स्वर्ग वर्गान १४ ४- गुगस्थानवर्गान १२ ५- चौसठ ऋदि वर्गान १७ ६- मौक्ष मुल वर्गान १६ ७- डावस श्रुत वर्गान १

६४००. पाठ सग्रह— imes । पत्रस० १६० । द्या० ६imes ६ द च । भाषा - हिन्दी । ले० कालimes । पूर्णे । बेष्टन स० १६० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

विशेष---विभिन्न पाठों का सग्रह है।

• ६४०१. पारस बिलास—पारसदास निगोत्या। पत्रसः २७७ । प्राः ११/४ ८ इ च । प्राचा—हिन्दी। विषय—पारसदास की रचनाभ्रो का सग्रह। र०काल × । से०काल × । पूर्णं। वेष्टन सः० ५०५ । प्राप्ति स्थान—दिः जैन मन्दिर संकर, जयपर।

६४०२. पाश्येनाथ कवित्त—भूधरवास । पत्रस० ३। मा० १० $\frac{1}{2}\times$ ४ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-स्कृट । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १००६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मंदिर प्रजमेर ।

६४०३. बनारसी विलास— सं० कर्ता जगजीबन। पत्रसं० ६४ । झा० १०४ ६६च । माषा-हिन्दी। विषय-स ग्रह। संग्रह काल स.० १७०१। ले०काल स० १६४६। दूर्ण। बेष्टनसं० १४७१। प्राप्ति स्थान— स० दि० जैन मदिर ग्रजमेर।

विशेष-- बन।रसीदास की रचनाथ्रो का संग्रह है।

६४०**४ प्रति सं० २**। पत्र स० १३३। ग्रा० ६<sup>3</sup> ×७ इञ्च। ले॰काल सं० १५२६ **वैशाख** सुदी ७। पर्एो । बेष्टन स० ६३३। **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मंदिर अज़मेर ।

६४०**५. प्रति सं० ३ । पत्रस० ११६** । घा० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १७४३ । पूर्ण । बेष्टुन स० १९७/७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

६४०६. प्रति सं०४ । पत्र स०२-१०६। घा०११x४ $^2_i$  इश्व । ले० काल x । घ्रपूर्ए । बेब्रन सं० ३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाक्वनाथ मदिर दबलाना (कोटा) ।

६४०७. प्रति सं० ४.। पत्रस०१६२ । ले०काल × । पूर्णं । बेष्टनसं०१६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

६४०**८. प्रतिसं० ६**। पत्रस० १३४ । म्रा० ११ × ७ॄँ इश्व । से॰काल स० १७४३ श्रावसा सुदी ७। पूर्ण । वेष्टुन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

६४०६. प्रति सं०७ । पत्र स० १३१ । ग्रा० १२ ४५ दृंदश्वा । ले॰काल ४ । पूर्णा । बेष्टनसं० १०४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दीवान जी कामा ।

६४१०. प्रति संस्या = । पत्रस० ७६ । आ०१४×६ ३ इच । लेक्काल सं०१६६६ प्रवाढ सुदी १२ । पूर्ण । बेटून स०१०; । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—कामबन (कामा) मे प्रतिलिपि हुई थी।

६४**११. प्रति सं० ६** । पत्र स० ६५ । ले०काल स० १=६३ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ४४ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

६४१२, प्रति सं० १० । पत्र स० १४७ । मा० १० ४४ है इन्छ । ले०काल सं० १०६० फागुन बदी ६ । पूर्ण । बेप्टन स० २५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—कोटा नगर मध्ये वासपूच्य जिनालये पहित जिराह्यस उपदेशातृ लिखापित खडेलवालाम्बये कासलीवाल गोत्रे बर्मज साह जैतरामेरा स्वपटनार्थ ।

६४**१३. प्रतिसं० ११ ।** पत्र स०४६ । आर० १०×५ इ.च. । ले० काल स०१७८७ घाषाड<sub>े.</sub> बुदी ३ । पूर्ण, । बेष्टन स०१३६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर दबलाना (बूदी) । ६४१४. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० १४ म । ग्रा० ६४७ है इसा ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० ६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पश्चायती मदिर बयाना ।

विशेष--१२४ पत्र के ग्रागे रूपचन्द के पदों का संग्रह है।

६४१**४. प्रति सं० १३** । पत्रसं० ४४ । ब्रा० १३१ 🗴 ६१ इवा । ले०काल सं० १६०६ फागुरा बुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन मन्दिर कोठ्यों का नैएवा ।

विशेष-साह पन्नालाल अजमेरा ने प्रतिलिपि की थी।

६४१६. प्रति सं० १४ । पत्रसं० १६४ । झा० १० 🗴 ७ इचा । ले० काल स० १८०५ । पूर्ण । नेपन स० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वचेरवालो का क्रांवा (उल्लियारा) ।

विशेख-- नरसिंहदास ने लिखा था। समयसार नाटक भी है।

६४१७. प्रति सं०१४,। पत्र स०११। ग्रा०१० ४४ इञ्च । ते० काल स०१८८४ । पूर्ण। वेष्ट्रत स०२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृंदी ।

६४१८. प्रति स० १६ । पत्रस० १०२ । मा० १०३४ ४ इचा । ले०काल सं०१८८७ कार्तिक बुदी १ । पूर्ण ।

विशेष--श्योलाल जी ने पन्नालाल साह से प्रतिलिपि कराई थी।

६४१६ प्रतिसं० १७ । पत्र सं० ६६ । बा० १३ imes ६ इखा । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ । प्राप्ति स्थान—र्दि० जैन मन्दिर राजमहस्र (टोक) ।

६४२०. प्रतिसं०१ स्। पत्र स०१४ । प्रा०१२ ४४ इचा। ले० काल स०१ ८४४ । पूर्ण। बेष्टतस०५२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर घादिनाय बूदी।

६४२१. प्रति सं० १६ । पत्रस० ७६-०० । या० ६ $\times$ ४३ इञ्च । से०कास स० १७३० । पूर्ण । बेटन स० १०६-४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटबियो का डूंगरपुर ।

६४२२. बृद्धि विलास--वस्तराम साह । पत्र स० ८६। प्राः १०४४ इन्त्र । भाषा--हिन्दी पद्य । विषय--विविध । र०काल स० १८२७ । लेक्काल ४ । वेष्टन स० ८२७ । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान -दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६४२३ **ब्याजन विलास - ब्याजन ।** पत्रस० १००। म्रा० १२<mark>३४७५ स्वा ।</mark> माषा-हिन्दी पद्य । विषय-मुभाषित । र०काल स० १६६१ काती सुदी २ । ले०काल स० १६४५ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । बेकृत स० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, लक्कर जयपुर ।

विशेष — सवाई जयपुर मे प्रतिलिनि हुई थी।

६४२४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ७१ । र०काल स० १८७६ कालिक मुदी ४ । ले**०** काल स० १९२४ । पूर्यो । बेस्टन सं० १४६ । आस्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६४२५. प्रति सं ३ । पत्रस॰ म्४ । ले०काल स० १९२४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि**०** जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६४२६. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ७४ । आर् १२ $\frac{1}{4}$  $\times$ ६ इचा ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टनसं० २७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६४२७.. बहा विलास —भैया भगवंतोबास । पत्र सं० १३३ । घा० १४४७ इ.स. । भाषा — हिन्दी । विषय —सग्रह । र०काल ४ । से०कास स० १६१७ घासोज बुदी ४ । पूर्णः । वेट्टन स० ३१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ टोडारार्गीसह (टोक) ।

विशेष-गोपाचल (ग्वालियर) मे प्रतिलिपि हुई थी।

६४२६, प्रति सं०२ । पत्र स०१६६। ले० काल स०१६७६ प्र० धासोज मुदी ७। पूर्ण। बेष्टुन स०१४७। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर।

६४२**६. प्रति सं० ३ ।** पत्र स० १४८ । ले० काल स० १८१४ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । प्रा**प्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६४३०. प्रति सं०४ । पत्र स०१०१ । ले० कान 🗙 । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मदिर भरतपुर ।

६**४३१. प्रतिसं० ५।** पत्रसं० २४। र०काल १७४४। ले**०का**ल स० १८६४। पूर्ण । बेष्टनसं० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प चायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—्रमुलसीराम कासलीवाल वैरका ने भरतपुर में महाराजा बलवतीसह के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी। भरतपुर वासी दीवान गर्जासह प्रपने पुत्र माधोसिह गौत्र वैद्य के पठनायं लिपि कराई।

६४३२. प्रतिसं०६ । पत्र म०१०२ । घ्रा०१३ × ७१ इश्वः । ले० काल × । ग्रपूर्णः । वेकन स०११५ । प्राप्ति स्थानः – दि० जैन छोटामन्दिर वयाना ।

**६४३३. प्रतिसं**० ७ । पत्र स० १४४ । म्रा० १२ $^{3}$  $\times$  $^{5}$  इश्व । ले०काल स० १६२६ पोष बुदी ११ । पूर्ण । बेटून स०,५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायनी मदिर बयाना ।

विशेष - ठाकुरचन्द ने माधीमिह के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

६४३४, प्रति स० ६ । पत्रस० ६४ । ले०काल $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । प्राप्ति स्थान—- दि० जैन पत्रायती सदिर बयाना ।

**६४३५. प्रतिसं ६।** पत्र म० २३४। प्रा० ६ १४ ६ इञ्च । ते० काल म० १८८२ ग्रापाट सदी ८। पूर्ण । बेकन स**० ६१। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष -- कामा निवासी ऋषभदास के पुत्र सदामुखजी कासलीवाल ने सवन् १८८२ में प्रतिलिधि की थी।

६४३६. प्रतिसं० १०। पत्र स० १००। प्रा० १३×६ इन्छ । ले० काल स० १८८२ फागुगा मुदी १ । पूर्मा । बेहुत स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाण्येनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष-नैएवा मे ब्राह्मए गिरधारीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

६४३७. प्रति सं० ११ । पत्र स० १०७ । ग्रा० १४ $\frac{1}{2}$  $\times$ = इश्व । ले० काल स० १८६६ पीष सुदी ४ । पूर्ण । बेष्ट्रम स० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर फनेहपुर मेलाबाटी (सीकर)

विशेष - देवकीनन्दन पोहार ने प्रतिलिपि की थी।

६४३६. प्रतिसं० १२ । पत्र स० २२० । प्रा०१२×५ इ.च. । ले० काल स० १६१७ भादवा सुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर मेलावाटी (सीकर)

६४३६. **प्रतिसं० १**३ । पत्र म० १४८ । ग्रा० १२ $\times$ ७ इञ्च । ले० काल स० १६४१ मादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्र स० ६७ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रान्वर ।

६४४०. प्रति सं० १४। पत्रस० २००। मा० ११४४ इचा । लेक्काल ४। म्रपूर्ण । बेष्टन स० २४३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष---२०० से आगे पत्र नहीं है।

६४४**१. प्रति सं० १४ ।** पत्रस० १२२ । प्रा० १० है ४५ है दश्व । से०काल म० १८६६ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १०३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

उदयपुर सेर बसे सुमधान , दीषे उत्तम सुरग समान । स्त्रा विलास य घो भाग, लीखीयो ता माही जिन खास । जिल्लापिन साहा बेएगोचन्द्र, जान खेलोडा नाम प्रसिद्ध । बाचनार्थ भव्य जीवनताई, मेलो जिन मन्दिर भाई । मबन् कष्टांदण कन जान, ता उत्तर नीन्याग्य बलान । अगहन मुसी दक्षमी मार पूरो मिल्यो गजनी पतिवार ।।

६४४**२. प्रतिसं०१६ ।** पत्रस०२३३ । स्रा०७३¦ × ५ इश्वा ले० काल स०१⊏१७ । पूर्ण। वेष्ट्रनस०१०२.७६ ।

विशेष---नन्दराम बिलाला ने प्रतिलिपि की थी।

६४४३ प्रतिसं० १७ । पत्र स० १२७ । ब्रा० १२४५ ६ इञ्च । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । बेपून स० १०२ । प्राप्ति स्थान—स० दि० जैन मन्दिर तेन्हणयी दौसा ।

विशेष--नाइलाल तेरहपंथी ने चिम्मनलाल तेरहपथी से प्रतिलिपि करवाई थी।

६४४४ प्रति सं०१६ । पत्रस०२२६ । झा०६३ॄँ ४४३ दश्यः । ले०काल म०१८३४ कास्तिक मृदी ५। पूर्णा । वेष्टनस०२१७ । प्राप्तिः स्थान—वि० जैन मन्दिर वोरमली कोटा ।

६४४**४. प्रतिसं० १६** । पत्र स० १८५ । ग्रा० १०४४ ६ उश्व । लेकाल १६०४ ग्रासोज सुदी ४ । पूर्य । बेटून स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—िद० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६४६४. प्रतिसं०२० । पत्र स०१२४ । ग्रा०१२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इत्र्वा । ते० काल स०१६१३ भादवा मुदी २ । बेष्टत स०१२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष -- चैदापुर मे लिखा गयाथा।

६४४७. प्रतिसं० २१ । पत्र स० १७-११४ । घा०११×४ इच । ले० काल स० १८५२ घाषाड बुदी ७ । घपुर्गु । बेस्टन स० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेग्ट्यथी नैगुवा ।

् ६४४६. प्रतिसं० २२ । पत्र स० २११ । झा० ६ ४७ इ॰ब । लेव्काल सं० १८५४ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेरटन स० ६७-६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष--रतनचन्द पाटनी ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी।

६४४६. प्रतिस्त २३ । पत्रस० ४५ । ग्रा० ११imes६ इ.च । ले० काल स० १७८७ बैंगाल सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती $\S$ मदिर करौली ।

५४ ४०. प्रतिसं०२४ । पत्र म०२४४ । झा०१२×४ है इ.च । लेब्काल मं०१६४४ । पूर्ण । बेष्टुत स०३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दोवान चेननदास पुरानी डीग ।

विशेष -- डीग में प्रतिलिपि की गई थी।

६४५१. प्रति सं० २५ । पत्र म० २१६-२४६ । घा० १२ ४४ ै इचा । ले० काल सं० १७६६ प्राप्तीज सुदी ६ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ७३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

६४५२. प्रतिसं० २६ । पत्रस० १३२ । म्रा० १२३४६३ इ.च. । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन म्रधवाल मन्दिर नैसावा ।

**६४५३, प्रति सं०२७** । पत्र स०२०६ । मा०११×६ इञ्च । ले०काल स०१७६२ ब्रितीय ज्येष्ठ सुदी । पूर्णे । वेष्टन सं०५१६ । **प्राप्ति स्थान** --- स० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष--प्रति सन्दर है।

६४५४. प्रतिसं०२६ । पत्र सं०१४६ । झा०११४५ इ.चा। ले० काल स०१६४० । पूर्णं। वेष्ठन स०६४३ । **प्राप्ति स्थान**— प्र० टि०जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६४४**५. प्रतिसं० २६** । पत्र स० ११७ । ग्रा० १०¦४५ हुन्न । ले०काल स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टुन स० १४६ ७**१ । प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपूर ।

६४५६. प्रतिसं० ३० । पत्र स०१४४ । घा०१०१४५ ५ इलाः ले०काल स०१८१२ । पूर्णं । वेष्टनसं०३४–२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६४५७. प्रतिसं० ३१ । पत्रस० १०१ । सा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ इ.स. । ले०काल स० १८७३ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । बेहन सं० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर सनवर ।

६४५८. प्रतिसं० ३२ । पत्र स० २३४ । घ्रा० ७ 💢 ४ १ इञ्च । ले० काल स० १९४१ माघ बुदी १४ । पूर्णः । बेष्टन स० ६१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मदिर ग्रनवर ।

**६४५६. प्रति सं० ३३ ।** पत्रस० ६६ । घा० १२ ${}^{3}_{c}$ ४७ इख । ले० काल स० १६७७ सावन मुदी ५ । पूर्या । बेहन स० द२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन अग्रवान पत्रायती मदिर सलवर ।

**विशेष**—जिल्द सहित गुटकाकार है।

् **६४६०. प्रतिसं० ३४ । प**त्र स०२०६ । घा० १२×५ इञ्च । ले•काल स० १६२३ । पूर्ण । <sup>१</sup>९ वेष्टन सं०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर थो महाबीर बुढी ।

्र ६४६१. प्रतिसं० ३४ । पत्र स० २६४ । ग्रा० ६४५ इचा। ले० काल स० १८१७ । पूर्ण। वेष्टन स० २८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्राभनन्दन स्वामी बूदी।

६४६२. प्रतिसं० ३६ । पत्रतः १६६ । ब्रा० १२imes१ $^2$ ६ च । ले० काल स० १७६६ भादवा सुदी २ । पूर्ण । बेध्टन स० ४२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर बैर ।

विशेष - चौबे जगतराम ने प्रतिलिपि कराई थी।

६४६३. मवानीबाई केरा दूहा— ×। पत्र स० २-७। मा० १० × ६ इथ । माला-राजस्थानी विषय—स्कृट । २०काल × । ले० काल स० १८६२ चैत्र सुदी १२ । म्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० २४१ । म्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहत्त्र (टॉक) । ६४६४. सूथर विलास—सूथरवास । पत्र सं० ४६ । या० ११४६ इञ्च । माया—हिन्दी पद्य । विषय—संग्रह । र०काल ४ । ले० काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १४३ । आफ्ति स्थान—दि० कैन मन्दिर श्री महावीर व दी ।

६४६४. प्रति सं०२। पत्र स०६२। म्रा०१३ ४७३ इच्छा । ले०काल स०१८८६। पूर्णे। वैष्टन सं०७। प्राप्तिक स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

६४६६. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६३ । ले०काल स० १८५१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मदिर भरतपुर ।

६४६७. प्रतिसं० ४। पत्र स० ८६। प्रा०११ x ४२ इता । लेकाल सं० १९०४ मंगसिर सुदी ६। पूर्ण । बेष्टन सं० ७८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—मिश्र रामदयाल ने फाक नगर में प्रतिलिपि की थी।

६४६८. सनोरथमाला गीत-धर्ममुखरा। पत्रसं> 1 भाषा—िहन्दी : विषय—गीत संग्रह । राज्याल  $\times 1$  लेक्सल  $\times 1$  पूर्ण । बेहन सं0 > 7 ५७० । प्राप्ति स्थान—दिः जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६४६६. सरकत बिलास—मोतीलाल । पत्र त० १४८ । भाषा—हिन्दी १ विषय — समे । र०काल × । ले० काल १६८५ ग्रालोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष--- प्रति सुन्दर है।

६४७०. मास्पक्तपद संप्रह्—मास्पकचन्द्र । पत्र स॰ २-५३ । प्रा॰ ११ ४६ १ इंच । माषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पद । र०कान $\times$ । ले॰ काल स॰ १६४ म् फागुस्स सुदी २ । प्रापूर्स । बेष्टनसं॰ २२२ । प्राप्तिस स्थान—दि॰ जैन प्रयवान मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रथम पत्र नही है।

६४७१ सानवावनी—  $\times$  । पत्र स॰ २६ । प्रा॰ १२ $\times$ र् हंच । भाषा—पुरानी हिन्दी पद्य । विषय—स्कुट । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स॰ २७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मंदिर तेरहयपी दौसा ।

६४७२. मानविनय प्रबंध —  $\times$  । पत्र स ७। प्रा॰ १० $\times Y_0^1$  इच भाषा-पुरानौ हिन्दी। विधय — स्कुट । र०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्ए । वेष्टन सं. ४६३। प्राप्ति स्थान — म॰दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर।

विशेष---कौनो पर फटा हुमा है।

६४७३. यात्रा समुख्यय—  $\times$  । पत्र स॰ ४। घा. ६ $\times$ ४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय— विविध । र०काल  $\times$  । ते काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ १४६ । प्राप्ति स्थान—विञ्जन मन्दिर सस्कर, जयपुर ।

६४७४. रस्नसंग्रह—नन्नुमल । पत्र स. ६६। ग्रा. १२ $\frac{1}{2}$  ४ व व प्रापा—हिन्दी गवा । र.काल सं. १९४६ मंगसिर सुदी ४। ले०काल स० १९६७ चैत बुदी ४। पूर्ण बेष्टनसं०। १२। प्राप्ति स्थान—दि. जैन मन्दिर फतेहपुर शेलाबाटी (सीकर)

#### विशेष---

## प्रारम्म-वोहा-

प्रथम बीर सन्मति चरग्, दूतीया सारदा माय । नमू रतन सग्रह करन, ज्यो मववन निस जाय ।। ग्रथ समृह विचारते, तिनहीं के भनुसारि । रत्न चुन इम कारने, पठत मनत भव पार ।।२।।

#### ग्रहितस—

शुभ सुथान मुहबतपुरा, जिला झलीगढ जान। शैली श्रावक जनन की, जन्म भूमि मुभ मान।।दा। मैडू वासी श्रावक, जैसवग्ल कुल भान। वश इटबाक स उपने मोलानाय प्रधान।।६॥

# चौपई---

मुत गोपालदास है तास, पुत्र युगल तिनके हम तास। प्रनुज गरोगीलाल बरबानि, दूजा भगवता गुरु मानि।। उर्फ लकव नन्त्रमल कहा), जन्म युफल जिन बच पढि भयो। भुल बक धोमान सम्हार, प्रन्यमती लिल दया विचार।।

#### सोरठा---

रतन पुज चुनि लोन, पढी पढ़ाली सजन जन। कमें बध हो क्षीन, लिखी लिखाबी प्रीतिघर।। घव नपूर्ण कीन, सबत् सर विकार तनी। ग्राम सहस में हीन, धर्ष शतक चव में मनी।।

#### गीतछंद--

मर्गासर जु शुक्ता पत्रमी बुधवार पूर्वाचाह के। दिन कियो पूरण रतन साहर शुम मुख्यानि के। सनुमान फ़र परिमान सारे है थी जिनवानि के। सपनी तरफ से कुछ नहीं में लिखा सविजन जानि के। ।। इति श्री रतन नशह ममास्त्र।।

लिखत लाला परणाधीलाल जैनी साकिन नगले सिकदरा जिला प्रागरा पोस्ट हिम्मतपुर मिती चैत कृष्णा ४ णनिवार सं० १६६७ विकम । रामचन्द्र बलदेवदाम फनेत्रपुर वालो ने जैन मन्दिर में चढाया हस्ते पं० हीरालाल भ्रासीज सुवी ४ म० १६६७ ।

६४७५. लक्ष्मी बिलास – पंक लक्ष्मीचंद्र । पत्रत्व १२०। ब्राव् १२ $\frac{1}{2}$   $\times$ ७ इक्ष । भाषा – हिन्दी पद्य । विषय – संग्रह । रक्काल  $\times$  । लेव काल मक्ष्य १६६६ । पूर्ण । वेष्टन सक १२०। प्रास्ति स्थान — दिव जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

विशेष-वैष्णव मत के विरोधी का लण्डन किया गया है

६४७६. विचारामृत संग्रह— $\times$  । पत्र सः ६३। प्राः १० $\stackrel{1}{\downarrow}$   $\times$  $\stackrel{1}{\downarrow}$  एव । माणा-सस्कृत । विध्य-संग्रह । र०काल  $\times$  । ले. कान सं. १०६१ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं. २२० **। प्राप्ति स्था**न— दि. जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६४७७. विचारसार षडशोति— × । पत्र स . ३ । ब्रा. १०,२४४ ृदंव । मापा-संस्कृत । विषय—स्कुट । र०काल × । ते०काल स० १६४० । पूर्णा । बेष्टन स . ७४० । प्राप्ति स्थान— म० दि. कैत प्रतितर प्रजीत

६४७ म. विनती संग्रह — देवत्रह्मा । पत्र सं० ७३ । ग्रा० १० ४६ इंच । भाषा — हिन्दी । विषय — स्तुति । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । ग्रपूर्ण । बेहन सं० २८७ । प्राप्ति स्थान — दि. जैन मन्दिर दक्ताना (व दी) ।

६४७६. विनतो संग्रह— $\times$  । पत्रस्र० २-१० । प्राः० १०  $\times$ ४ इंच । साथा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ४६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

वशेष-- पाठो का संग्रह है--

१—चउबीस तीर्यंकर विनती-जयकीति । हिन्दी । पत्र ३ ५ श्रादि धन्त भाग निम्ब प्रकार है —

प्रारम --

सकल जिनेश्वर प्ररामीया सरसती स्वामीरा समिरमाय । वर्तमान चउवीमी जेह नव विधान वोलेह तेह ।

धन्तिम —

काष्ट्राक्षय नदी तट गच्छ यती त्रिभुवनकीति सूरिक्यर स्वच्छ । रत्नभूषण पवितल गछपति सेन शुभकर मोहमती । जयकीति सूरि पद घार हर्ष घरि करयु एही विचार । भणि सूर्णिक भवीयणसार, ते निष्चनरसी ससार ।।२।।

इति नव विधान चउवीमी तीर्थकर वीनती सपूर्ण ।

२ परमानन्द स्तवन

स स्कृत

२५ क्लोक

३ बाहुबलीछद

वादिचन्द

हिन्दी

वारम्भ--

कोमल देश प्रयोध्या सोहि, राजा वृषभत्तण् मनमोहि । धि हो दीसि प्रनोपम राखी, रूप कलाघाती इन्द्राखी । जसोमति जाया भरतकुमार, वाहुबली सुनदा मल्हार । नीलजसः गाटिक विभगः, बन्य वैरागह चित्तिनिरज्य ।

ग्रन्तिम---

सिद्ध सिद्ध युगती भरतार, बाहुबली करुसहु जयकार । तुमः पाये लागि प्रमाचन्द्र, वासी बोलि वादिचन्द्र ४।६०।।

इति बाहुबली छद सपूर्ण।

४ गुएात्तीसी भावना

ग्रन्तिम---

भोगभलाजे नरलाहि हरषि जु देइदान । समफित विएग शिवपद नहीं जिहा धनत सुखठाम ।। ए गुरात्रीसी भावना भगाकि सुधु विचार । जे मन भाड़ी समरिसी ते तरसी ससार ।।३१॥

इति उगरातीसी भावना सपूर्णं

६४६०. विनती संग्रह—वैवाबह्य —  $\times$  । पत्र सं॰ १६। धा॰ -्रै $\times$ ५ इख । भाषा—हिन्दी । विषय — स्तवन । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ५६४ । प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन मन्दिर लक्षर, जयपुर ।

विशेष-तीर्थंकरों की विनतियाँ हैं।

६४८१. विनती एवं पर संग्रह—देवाबह्य । पत्र सं०११३ । प्रा०१० $\times$ ४ दे इथा । माषा— हिन्दी पद्य । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन सं०३०४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर ग्राभिनन्दन स्वामी, बुंदी ।

विशेष-१६ पद एव मजनों का सम्रह है।

६४८२. विनती पद संग्रह—X। पत्र सं०४। प्रा०१२X६ इत्र । प्रापा-हिन्दी। विषय-पद स्तवन। र०काल X। लेकाल X। पूर्णं। बेष्टन सं०६८४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर सफर, जयपुर।

विशेष-- व कपूर, जिनदास जगराम भ्रादि के पद हैं।

६४८३. विनती सग्रह— $\times$  । पत्रस॰ ६ । ग्रा॰ ११ $\frac{1}{7}$   $\times$  ५ $\frac{1}{7}$  इखा । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं॰ १२२-४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का हुंगरपुर ।

विशेष-भूबर कृत विनितयों का सम्रह है।

६४६४. विवेक विलास—जिनवत्त सूरि। पत्र स० १४-७०। म्रा० १० $^1$  $\times$ १ इच्च । भ्राषा—हिन्दं । विषय विविध । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० २१५ । प्रास्ति स्थान—हिन्दं । विषय टोडारायसिंह (टोक)

६४८६. **शास्त्रमुची**— × । पत्र स० १०। भाषा—हिन्दी । विषय—मूची । र०काल × । क्षेत्रकाल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१२-१४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरवर ।

६४६७. शिखर बिलास-—लालचन्दा। पत्रस० ४७ । आ०१० ४६१ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्या विषय—महत्स्य वस्तां। र०काल स०१६४२। ले०काल सं०१३४७। पूर्स। वेष्ट्रन सं० ४०/१००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पश्चायती मन्दिर स्रलयर।

६४८.८. इलोक संग्रह—  $\times$ । पत्र स॰ ६। मा० १० $\times$  $^{\vee}$  इन्छ । भाषा—संस्कृत ।विषय— फुठकर । र० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टन सं॰ ३३५। **प्राप्तिः स्थान—**दि० जैन मन्दिर दक्ताना (त्रु दी) ।

६४८६. श्लोक संग्रह— $\times$ । पत्रसं० २४। माया-संस्कृत-हिन्दी। ले० कास  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४४०-१६५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष—विभिन्न ग्रंथों में से म्लोक एवं गायाएं प्रश्नों के उत्तर देने के लिए संग्रह की गई हैं।

६४६०. श्रावकाचार सुचिनिका— × । पत्रसः १ । ग्रा० ११ **४४ द्वः । भाषा**—हिन्दी । विषय – सूची । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **बेट्टनसः० १४**६ । **प्राप्ति स्थान –** दि० जैन मन्दिर पार्यनाय चौगान वंदी ।

विशेष-शावकाचारों की निम्न संबी दी है।

1-1-1			
१, रत्नकरण्ड श्रावकाचार	समन्तभद्र	क्लोक संब	१२५
२. श्रावकाचार	वसुनस्दि	.,	४२६
३. चरित्रसार	चामुण्डराय	n	७६५
४. पुरुषार्थसिद्धयुपाय	ध्रमृतचन्द	***	१६३
५. श्रावकाचार	र्म्मातगति	21	१०५०
६. सागारधर्मामृत	ग्रागाधर		१२६२
७. प्रश्नोत्तरोपासकाचार	सकलकीत्ति	11	<b>\$</b> 868

६४६**१. यम विलास**—  $\times$  । पत्रसुर १० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । र०काल  $\times$ । से•काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्टन म० ४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

६४६३. खर्ट्रांश्रशित —  $\times$  । पत्रसं० १०। मा० १० $\times$  ५ हे च । भाषा-संस्कृत । विषय — विविध । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३८ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर फ्रजिर ।

६४६४. वर्ट्मिश्रतिका सूत्र —  $\times$  । पत्र स०१-७ । आ०११ $\times$ ४ इचा । भाषा — सस्हत । विषय — फुटकर । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन सं०१६२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

६४९**४. प्रतिसं०२** । पत्र स०४ । ले॰ काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं०१८२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- ४० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी।

६४८६. घटपाठ—  $\times$  1 पत्र सं० ४६ । घा० १२ $\times$ ७ इ.ख । भाषा-हिन्दी (गढा) । विषय— संग्रह । र०काल  $\times$ । ले०काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लडेलवाल पंचायती मदिर म्रुलयर ।

विशेष — निम्न पाठों का संग्रह है — दर्शन पञ्चोसी, बृधजन छत्तीसी, बचन बत्तीसी तथा ग्रन्य कवियों के पदों का संग्रह है। ६४६७. सरुकाय एवं बारहमासा—  $\times$  । पत्र स०१। प्रा०१० $\times$ ४ इंच। भाषा— हिन्सी। विषय— स्पुट। र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स०२४०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

६४६**६. सबैयां - सुन्दरदास ।** पत्रस॰ ६ । ग्रा॰ १० $^{\dagger}$ imes६ इथा । माषा —हित्दी । विषय — र०काल imes । ले॰ काल imes । पूर्ण । बेष्टनसं॰ २ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष-ं२७ सर्वया तथा ३३ पद्य हसाल छद के है।

६४६६. सारसंग्रह - सुरेन्द्रभूवरा । पत्र स०७ । घा० १२४१ इस्त्र । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल ४ । से० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्यनाय मन्दिर चीगान व दी ।

६५००. सुखविलास -जीधराज कासलीवाल । पत्रस० २४२। ग्रा०१३८८ इस । भाषा—हिन्दी पद्या विषय—मृक्ति सग्रह । र०काल स०१८८४ मनतिर सुदी १ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टुनसं०२३ २१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्राधनी मन्दिर ग्रतवर ।

६**५०१. प्रतिसं०२**। पत्रस०७७ । ब्रा०१३ × ४ इश्वा ले० काल × । पूर्या । **वेष्ट्रनस०** ३२ (१०। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैनमन्दिर भादवा (राज०)

विशेष-कवि की विभिन्न रचनाथी का सग्रह है।

**६५०२. संग्रह**—  $\times$ । पत्रस०६४। घ्रा०६ $\times$ ४ इञ्च। भागा—हिन्दी। विषय—सग्रह।  $\tau$ ०काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनसं०५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर पंचायती दूनी (टोक)।

विशेष — जैन एव जैनेतर विभिन्न ग्रंथों में से मूल्य स्थलों का संग्रह है।

६५०३. सप्रह प्रस्थ — × । पत्रसः ७ । प्रा० १०×४ } इत्रा । मापा —सस्कृत । विषय — सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बष्टनस० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पाण्येनाथ चौगान वृदी ।

विशेष-विविध विषयों के श्लोकों का सग्रह है।

६५०४. संग्रह ग्रन्थ— ४ । पत्रस०६५ । ब्रा०१०४६१ इला । ले०काल स०१६२० । ब्रुपर्स । बेल्टन स०६४ । **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

१. मदनपराजय हिन्दी । श्रपुर्शा ।

२. ज्ञानस्वरोदय चरमादास रमाजीत हिन्दी । पूर्ण । र०काल स०१८६६ । ग्रान्तिस—

> सुखदेव गुरुकी दया सु साध तथा सुजान । चरणदास ररणजीत ने कहाो सरोदे ज्ञान ।। डहरे मे मेरो जनम, नाम ररणजीत बखानो । मुरली को सुन जान जाति दसर पहचानो ।।

बाल ग्रवस्था माहि वहुर दली मे आयो। रमति मिले सुखदेव नाम चरणदास कहायो।।

इति ज्ञान सरोदो सपूर्ण सं० १८६६ को साल मे बरणयौ । भुलोय मे प्रतिलिपि हुई ।

 बारह भावना ४. ग्रकृतिम बदना ४. बच्च पजर स्तोत्र ६. श्रुतबोध टीका
 जिपपंजर स्तोत्र ६. प्रस्ताविक श्लोक ६. दशलक्षरा मडल पूजा १०. फुटकर क्लोक ११. चतुर्गति नाटक—शासूराम ।

#### धादि माग---

धरिहृत नमू सिरनाय पुनि सिद्ध मकल मुनदाई। ध्रवारत के पुन गाऊ पद उपाध्याय सिर नाऊ। सिरनाय सकल उपाधि नासन सर्व साथूँ नमूं सदा। जिनराय माधित धर्म प्रणमू विचन व्यापे न हूँ कदा। य परम मान रूप ववपद नोक में उत्तम यही। जब नटत नाटक जानत चीय केवक पर तनक सही।

#### ग्रन्तिम---

ई विधि जीव नटवा नाच्यी,
तक्ष चौरामी र ग राच्यो ।
इक इक भेय न माही,
माचि काल प्रनत गुमाहि .।
बीरसी धनतकाल नाचेत उपसम्य पाताल में ।
असे क्यें नाच जजाबत विद्या तट स्था नवल लेक

ज्यो कर्मनाच नचावत जिय नट त्यो नचत बेहाल में।। सर्वे छाडि कर्मकुमग वजिय निच ज्ञान नृति बेहाल में। यिर रूप डाल्राम गहि ज्यो होय सिव के मुख सर्वे।

१२ बाईस परीषह हिन्दी। वि**० लाल** ने पार्श्वनाथ मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

६५०५. सगह द्रम्थ—  $\times$ । पत्र स०२ । आ०११ $\times$ ५ ६वा । ते०काल $\times$  । पूर्णं । बेष्टन स०१३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान दृंदी ।

विशेष-चौदह कला, पच्चीस किया ग्रादि का वर्गन है।

६५०६. स्फुट पत्र संग्रह्—  $\times$  । पत्र स० १४। प्रा०  $-\frac{1}{4}\times \frac{1}{5}$  इच । गापा—सत्स्तृत । विषय—सुमाषित । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ३३६–१३२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

६५०७. स्कुट पाठ संग्रह— ४। पत्रस० १६। प्राः १४४ इंच। भाषा—हिन्सी। विषय— सग्रह। र०काल ४। ले०काल स० १८२०। प्रपूर्ण। वेष्टनस० ४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान जीकामा।

विशेष-विविध पाठों एवं कथाओं का संग्रह है।

६५०६, ह्फुट संग्रह् —  $\times$  । पत्रसं॰ ५२ । माषा —हिन्दी । विषय —सग्रह । र०कास  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्र ४४६ । प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

----:0.-----

विशेष---निम्न पाठ हैं।

बाईस परीषह वर्गन, कवित छह्ठाला, उपदेश बतीसी तथा कृपण पणिसी है।

# विषय -- नीति एवं सभाषित

६५०६. प्रक्षर बावनी—केशवदास (लावण्यरत्न केशिष्य)। पत्रस० १४। प्रा० १०४ ४ है इंच। माषा-हिन्दी पद्य। विषय-मुमाषित। र०काल स० १७३६ सावश सुदी ४ गुरुवार। से०काल स० १०६६ वैवाख बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ७४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा, मन्दिर बयाना।

विशेष — पत्रस० १३ से राजुल नेमी बारहमासा केशबदास इस्त (स० १७३४) दिया हुन्ना है। शीतकाल सर्वया भी दिया हमा है।

द्यक्षर बावनी का ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है---

## द्यादि भाग---

भ्रोंकार सदा मुख देवत ही जिन सेवत चंछित इन्छित पार्व । बावन प्रक्षर माहि शिगोमणी योग योगीसर इन की ध्यावे । ध्यान मे जान मे वेद पुराण मे नीरित जाकी सर्वे मन भावे । केशवदास को दीजिये दौलत भावम् साहिव के गुगा गार्व ॥६॥

#### ग्रन्तिम---

बाबन प्रक्षर जोग कर भैया गाबु पच्याविह मैं मल घावं। सतरसीत छत्तीस को आवश् सुदि पांचे भृगुवार कहावं। मुख सोभाग्यनी कौतिन को हुवे बाबन प्रक्षर जो गुण गावं। लावण्यरन गुरु गुपमावसु केषवदास सदा मुख पावं।।

इति श्री केणवदास कृत ग्रक्षर बावनी संपूर्ण ।

६५१०. ग्रक्षस्वावनी —  $\times$  । पत्रस० १४ । ग्रा० १३ $\times$ ० इवा । भाषा — हिन्दी । विषय — सुभाषित । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ २६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सम्बनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- द पत्र से ग्रागे ग्रध्यात्म बारहखडी है ।

६५११ **प्रक्कु बत्तीसी--चन्द**ापत्र सं०३। प्रा०१०४४ है इखा भाषा-हिन्दी।विषय-सुपाणित । र**०**काल सं०१७२०।ले०काल ४ ।पूर्णं। वेष्टन स०२६० । **प्राप्ति स्थान** –दि• जैन मन्दिर पार्थनाथ इन्दराद (कोटा)

विशेष-भादि धन्त भाग निम्न प्रकार है-

×

प्रारम्भ--

बोमकार अपार है जाको घरिये घ्यान । सर्वे वस्तुकी सिद्धि ह्वं अरु घट उपजे जान । कथा कामिनि कनक सो मित बार्थ तूहेत । ए दोऊ है अति बुरे अन्ति नरक मे देत ।।

धरितम —

िशनक माभ्र करता पुत्य करन घोर सौ घोर। जनम सिरानो जात है छाडि चन्द जन छोर।।३१॥ सबत सबह सै घिवक बोते बीसर ग्राट। कार्य बुढि हो हो हो हो हो हो हो है। पार्थनाय स्तति भी दो हो है।

६५१२ इन्द्रनंदिनीतिसार—इन्द्रनंदि । पत्र स॰ ६। घा॰ १२imes४ ६०% । आपन्सस्कृत । विषय-नीति । र॰काल imes। ले॰ काल imes। पूर्ण । वेप्टन स॰ ३६०/८७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन संसदनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१३. प्रतिसं०२ । पत्र सं०७ । ते०काल 🗙 । पूर्णं। वेष्टन सं०३६१/८८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१४. प्रतिसं० ३ । पत्र स०७। ले०काल  $\times$  । पूर्णे । वेध्दन स०३६२/५६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**६५१५. उपदेश बावनी— किशनदास** । पत्र स०११ । द्या०१०<sub>९</sub>४५ इख । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय — मुगापित । र०काल स०१७६७ घ्रासोज मुदी १०। ले० काल स०१८६० । पूर्ण । वेस्टन स० २१४<sub>१</sub>६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

विशेष ---

श्रीय सपराज लोकागछ सरिताज गुरु, तिनकी कुचा ज कविवाद पाद पावनी । सवत सत्तर सतगई विजय दणमी को, प्रथ की समापत गड़ है मम भावनी।। साथ बीस ग्यानमा की जाड़ थी रतनबाई, तज्यो देह तापे गहु रची पर बावनी। मत कीन मति जीनी नत्वी ही जैं कहा बीनी, बावक किजन कीनी उपदेश बावनी।

६५१६. उपदेश बीसी—रामचन्द ऋषि । पत्र सं० ३ । प्रा० १०६४४ इथा । प्राथा-हिन्दी । विषय-सुमाधित । र०काल स० १८०८ वैशाल गुरी ६ । ते० काल स० १८३६ चैत्र बुदि । पूर्ण । वेष्टत सं० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा । ष तिम---

संमत ब्राठारैनीसैं ने ब्राठ, बैसाख मुद्द कहैं छुं छुठ। युज जैमलजी रा प्रतापसु, तीवरी माहे कहैं छुं रीव रायचन्द। छोडो रे छोडो ससार नो फद, त चेन रे।।

(दीवरा पेठ तरकपर माहे लीखी हैं। दसकत सरावक बेला कोठारी रा छैं।

**६५१७. झानचालीसा** —  $\times$  । पत्र स० २२ । घा० ६  $\times$  ४ $^{3}$  इचा भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय—मुर्भाषित । र०काल  $\times$  । से०काल सं०१६१४ बैशाल युदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२४ । **प्राप्ति स्थान**— २० दि० जैन मन्दिर स्रजोर ।

६५१६. **ज्ञान समुद्र**—जोधराजा । पत्रस० ३७ । ब्रा० १०<sup>३</sup> × ४<sup>३</sup> इख । भाषा-हिन्दी गख । विषय-मुभाषित । र०काल स० १७२२ चैत्र मुदी ४ । ले० काल सं० १७५२ चैत्र बुदी ४ : पूर्ण । बेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)

विशेष - हिण्डोली ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी।

६५१६. चतुर्विषदान कवित्त — वहा ज्ञानसागर । पत्र स०३ । प्रा०६ $\frac{1}{4}$   $\times$   $\frac{1}{4}$  इश्व । प्राया-हिन्दी . प्राः) । विषय-मुशापित । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १-१५० । प्राप्ति स्थान—। द० जेन मन्दर नेमिनाथ टोडारायमिंह (टोक)

विशेष-दान, पन्ने न्द्रिय एवं भोजन सम्बन्धी कविल है।

६५२०. चारावय नीति—चारावय । पत्र स०२०। घा०७३ ४ १३ इश्व । नाषा-सस्कृत । विषय-नीति ग्रास्त्र । र०काल ४ । ले०काल स०१८६६। पूर्ण । वेष्टुन सं०७०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्यनाथ मन्त्रिर टोडा गर्यामह (टोक)

६५२१ प्रति सं०२ । पत्र म०२४ । ले०काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टन स०१५ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरतपत्री मन्दिर बनगा।

६४२२. प्रति स<sup>्</sup> ३ । पत्रस॰ १६ । सा॰ १०४ ४<sup>१</sup> इञ्च । ले० काल ४ । सपूर्ण । वेष्टन स॰ ६३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सदिर कोटको वा नैरावा ।

६५२३. प्रतिसं० ४ । पत्र सं०७ । घ्रा०५ 👋 दश्वः । । ले० काल 🗴 । पूर्रो । वेष्टन स०४६३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुनग्पूरः ।

६५२४. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ११ । ग्रा० १० ई 🖂 ५ इश्व । ले०काल 🔀 । श्रपूर्ण । वेष्टनसं० २१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहनधी मन्दिर दौता ।

विशेष -- ११ से आगे पत्र नही है।

६५२५. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० १२ । मा० ११×४३ हवा । ले॰काल स॰ १५६२ । पूर्ण । बेष्टुन स० १५२/६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन संमयनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति— सबत् १४६२ वर्षे प्राप्तन बुढी १ मुझे लिखित चारणायके जोशी देइदास । सुममस्तु । नीचे क्लिसा है— द्याचार्यं श्री जयकीति तत् शिष्य ब्रह्म संवराज इदं पुस्तक।

६५२६. प्रति सं०७ । पत्र सं० १०। ग्रा० १२४६ इ.च.। ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष--बृहद् एव लघु चाएाक्य राजनीति शास्त्र है।

६५२७. प्रतिसं० म । पत्र स० ७६ । स्रा० ४ $^3_7 imes ^3_7 imes ^3$  इन्त । ले०काल स० १७५४ प्रापाष बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

६५२ द. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १५ । घा० १०३ ४ ५ इ.च. ने० काल सं०१८७३ पीच सुदी द। पूर्णं। बेष्टनसं० २९६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६४२६. प्रति सं० १०। पत्रस० ३-२३। झा० १०×५ हेडच । ले०काल × । पूर्ण। केव्रनसं० ३२६-१२२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपूर।

६५३०. जैनसतक— सूधरदासः । पत्रस०६-४०। घा०६ x ४३ इखः । सावा-—हिन्दी । विषय — मुमायित । र०काल सं०१७६१ । ले० काल स०१६२८ । घपूर्णं । वेस्टन स०१६६ । **प्राप्ति** स्थान— स० दि० जैन मन्दिर प्रयमेर ।

६५३१. प्रतिसं० २ । पत्र सं०२ । ग्रा०११ ४ ६ इञ्च । ले०काल ४ । श्रपूर्ण । बेष्टन स०४३२–२३८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**६५२२. प्रति सं० २** । पत्रस**० स० १४** । द्या० १० 🗴 ५ हुँ इच्छ । ले०काल स० १८४७ स्वाबात बढी ३ । पर्यो । वेष्टनस० २१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—लिखापितं सेरगढ मध्ये लिखि हरीस्यघ टोंग्या श्री पाश्वेनाय चैत्यालै लिखापित । पडित जिनदास जी पठनार्थ ।

६५३३. प्रति सं०४ । पत्रसं०१७। प्रा०१०४४ इचा ले० काल स०४ । पूर्ण। बेष्टनस०३११ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर।

६५३४, प्रतिसं० ४ । पन स० १८ । मा० १० ४ ६ व्य । से०कास सं० १६४० । पूर्ण । बेष्टन स०३-२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर दुनी (टोक)

विशेष — श्री हजारीलाल साह ने भ्रष्टभी, चतुर्दशी के उपवास के उपलक्ष मे दूनी के मन्दिर मे चढाई थी।

६५३५. प्रतिसं०६। पत्रसं०१६। झा०१३४७ इञ्च≀ ले०काल स० १६४४ भादवा बुदी५। पूर्णः। बेष्टनस०११६। प्राप्ति स्थान---दि० जैन पचायती मन्दिर हुनी (टोक)

विशेष-पुस्तक किसनलाल पांडया की है।

६५३६. प्रतिसंo ७ । पत्र स० २० । प्रा० १०×४३ इ.च । ले० काल स० १६३६ द्वितीय सावरा बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैरावा ।

विशेष-अप्रयालों के मन्दिर की पुस्तक से उतारा गया है।

६५६७. प्रतिसंo छ । पत्र स०१६ । घा० ६×५६ इन्छ । ले०काल स०१६३५ । पूर्ण। वेष्टन सं०३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी दृंदी। ६५३ म. प्रतिसं**० ८**। पत्र सं०३ – १६। ब्रा० १०×६ इञ्चा ने० काल स० १६१०। ब्रपूर्सं। बेटन स०२६५। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर बृंदी।

विशेष--- नगर भिलाय मे प्रतिलिपि हुई थी।

६५३६ प्रतिसं० १०। पत्रस० ३१। घा॰ १० $\frac{1}{7} \times$ ५ इला । ले० काल $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन पास्तेनाथ मन्दिर चौनान बुदी।

विशेष - इसके भतिरिक्त द्यानतराय कृत चरचाशतक भी है।

६५४० प्रतिसं०११ । पत्र स०१६ । प्रा०११  $\times$  ५ $^2_7$  इचा। केश्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०१५० । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेलावाटी (क्षीकर)

६५४९. प्रतिसं० १२ । पत्रस० १२ । घा० १३ imes६ हृन्य । ते०काल सं० १८१८ । पूर्ण । जीगां । बेष्टनस० ७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्यनाय मदिर टोडारायसिंह (टोक)

६५४२. प्रति स०१३ । पत्रस०१६ । घा०१० $\frac{1}{6}$   $\times$  ५ $\frac{1}{5}$  इञ्च । ले०काल $\times$  । पूर्एं। वेष्टनस०१०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर वेखावाटी (सीकर)

६५४३. प्रति स० १४। पत्रसं० १७। धा० ११×६ इचा ले•काल स० १७८७। पूर्ण। वेष्टन म० १६५-१२१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नेमिनाच टोडारासिह (टोक)

६५४४. प्रति स० १५। पत्रसं० १७। म्रा० ८४४ इञ्च। लेब्सल स० १८४३। पूर्गा। वेष्टन स० १६५-७२। प्राप्ति स्थान-- दि० जैन मदिर कोटडियों का हुंगरपुर।

६५४५. प्रतिस० १६ । पत्रस० १२ । म्रा० १२ 🗴 ८ इञ्च । ले०काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टुन स० ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पारवेनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

६५४६. प्रति सं० १७ । पत्रस० ८१ । ले०काल स० १७८६ । पूर्यं । वेष्ट्रन स० ३० । **प्राप्ति** स्**यान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी मरतपुर ।

विशेष---गुटका मे है।

६५४७ प्रति सं०१६ । पत्र ृंस० । मा०१०३ $\times$ ५ इचा । ले॰काल  $\times$  । वेष्टन स०६२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६५४ म्. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १२ । प्रा॰ ६imes७ इच्च । ले०काल सं० १६६६ । पूर्ण । बेष्टन स० ६७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६५४६. प्रतिसं० २०। पत्र स०१६ । घा०११ ४४ इञ्च । ले०काल स०१६५६ । बेष्टन स० ७२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६४.४०. प्रति सं०२१ । पत्रस०१४ । घा०१२४४ ६०वा। ले∘काल स०१८८४ सावसा सुदी१३ । बेष्टन स०६०९ । **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-दीवान सगही ग्रमरचन्द खिन्द्रका दसकत हबचन्द ग्रग्रवाल का ।

६४४१. जैन शतक दोहा —  $\times$ ा पत्र सं०२ । म्रा० १० $^1_1 \times ^2_2$  स्वा । माया -हिन्दी यदा । विषय –गुमाबित । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । दूर्ण । वेष्टन सं०१६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्खनाय मदिर चौगान बूंदी ।

६५१२. वेशना शतकः—  $\times$  । पत्र सं॰ १८। मा० १०  $\times$  ४ $<math>^2_2$  इश्व । भाषा—माहत । विषय-सुमापित । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७६१ । पूर्ण । वेहनसं॰ ३२३ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन स्रयनाल मदिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

श्रीमच्चन्द्रगच्छे उपाध्यायजी थी लिखमीचन्दजी तत् शिष्य वा श्री सं (सो) माचन्दजी तत् शिष्य लालचन्दजी लिखत । सं० १७६१ वर्षे बैशास सुदी २ सोम श्री उदयपुरे गद्र भूयात् ।

६४५**३. दोहा शतक**— × । पत्र स०४। भाषा हिन्दी (पदा)। विषय-सुभाषित । र०काल × । से०काल × । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०७०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

६५५४. हस्टान्त शासक – कुसुमदेव । पत्र स०६। प्रा० १०  $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  इश्व । भाषा—मन्कृत । विषय—मुभाषित । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेध्टन स०१२८ । प्राप्ति स्थान —ि४० जैन मदिर प्राप्तिनस्याने, बूदी ।

६५४५. **बर्मामृत सूक्ति संग्रह**— $\times$  । पत्रस**०** ७६ । म्रा० १०×४ हुः हा । भाषा—सरुकृ । विषय सुप्राणित । रक्काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ५६ । **प्राण्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर करीली ।

६५५६. नवरस्न वाक्यः — $\times$  । पत्र स०१ । आ० ६ $\frac{3}{2} \times Y$ े डब्ब । भाषा-सम्कृत । विषय-सुमापित । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २६४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर देवलाना (बु.थी)

**बिशेष — वि**क्रमादिस्य के नवरत्नों के वाक्य है

६४.४७. नसीहत बोल — × । पत्रसन्थ १ । घा० १२ हे ४ हे इस । माया हिन्दी । विषय-सुमावित । रक्काल × । लेक्काल × । पूर्णी । बेष्टन सक्देश्द । प्राप्ति स्थान — भन्न दिन्दीन मन्दिर स्थाने

६४४ म नीति संजरी —  $\times$ । पत्रस०६। प्रा०१२  $\times$  ५. इख । मापा-हिन्दी प०। विषय-सुभाषित ।  $\tau$ ०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टनस०६६६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मिंदर लक्कर, जयपुर ।

६<br/>प्रस्थः नीति बाक्यामृत—ग्रा० सोमदेव । पत्र स० २०। ग्रा० १२ $\times$ ४% दश्व । भाषा—<br/>संस्कृत । विषय-नीति, शास्त्र । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$  । पूर्णः । वृष्ट्न स० १४७ । प्राप्ति स्थान—दि०<br/>जैन धववाल मदिर उरवपुर ।

६५६०. नीति स्लोक —  $\times$  । पत्रम० १-११,१७ । घा० ६३  $\times$  ४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय—नीति । र०काल  $\times$  । के०काल  $\times$  । घपूर्णं । वेष्टनसं० ६१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

६५६१. नीतिसार—प्रा० इन्द्रमन्दि । पत्रस०६। प्रा० १२ $\times$ ५ इश्व । माया-सस्कृत । विषय-नीति । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर. जयपर ।

नेत्रक प्रशस्ति—सवत्तरे बसु बागु यमि मुधाकर मिते १७५६ वृद्रावतीननरे श्री पार्थनाथ वैत्यानये श्री मुलसभे नदालाये बसान्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकु दाचार्यानये भ० श्री नरेरक्वीतस्तव्ख्रिय्य साचार्यवर्थ ४ श्रीकृदुर्यभूसागु शिष्य पंडित जी ६ तुनसीदास शिष्य बुध तिलोकचरेणेर ज्ञास्त्र स्व-पठनार्थ स्वरूपेन निवित ।

६५६२. द्र**ति सं०२।** पत्र स०१२। प्रा०१० $\frac{1}{5}$  $\times$ ४ $\frac{1}{5}$ दश्व । **से०काल** स०१६५० चैत्र मास मुदी १२। पूर्ण । बेष्टुन सं०४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

६५६३. प्रति सं०३ । पत्रस० १४ । म्रा०६ 🗙 ५३ दश्व । लेक्काल 🔀 । पूर्णं । बेष्टनस० ४२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर, जयपुर ।

६५६४. प्रतिसं० ४ । प्रसं० ६ । मा० ११ $\frac{1}{6}$   $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  द च । लेक्सल स १९७१ । पूर्ण । बेट्न म० २०७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६.६५ नद बत्तीसी--नदकिव । पत्रस $\circ$  ४। म्रा० १० $\times$  ४ $\stackrel{?}{\downarrow}$ ६ च । माषा-सस्कृत । विषय-नीति । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १७६१ सावन सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन सं० १६६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन तरहपथी मन्दिर दोसा ।

विशेष--नीति के श्लोक है।

६४६६ परमानंद पच्चीसी—  $\times$  । पत्र स $\circ$  २। म्रा० १० × ६ $\frac{1}{2}$  इख ! भाषा—सःस्कृत विषय—सुभाषित । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । तेष्टन स $\circ$  ६२–४४ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरपुर ।

६५६७. पंचतन्त्र- विष्णुशस्ति । पत्र स० ११ । प्रा०१०  $\times$  ४ $\frac{1}{4}$  इव । भाषा—सस्त्र । विषय—मीति शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६५६८. प्रतिसं० २ । पत्र स०१८ । मा०१० ४४ इला । ले०काल ४ । सपूर्ण । बेष्टन स० २८६/५८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

६५६८. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २३ । घा० १२ × ६ इचा । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष-सहदभेद तक है।

६५७०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०२ । या० १०३ ४ ४ हुँ इश्व । ले० काल x । प्रपूर्ण । बेष्टन स० २७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । विशेष--१०२ से भागे पत्र नहीं हैं।

६५७१. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० १२३ । घा० १०४५ इवा । के०काल सं० १८४४ घाषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ८० । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर राजहमल (टोक) ।

विशेष—दौलतराम बचेरकाल शास्त्र घटायो पत्नाच्यान को सहर का हामलक हाडीती सहर कोटा को लाडपुरो राज राएा।वतजी को देहुरो श्री शांतिनाथजी को श्राचार्य श्री विजयकीति ने घटायो पंडिता नानाव्यमा

६४७२. **प्रतिसं०६।** पत्रसं०२३। ग्रा० १२ ४६ इ.खा । ले० काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टन स० ७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी वंदी।

**६५७३. प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ११२ । म्रा० १० 🗙 ४ इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्एं । बेष्टनस० ६२ । प्राप्तिः **स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

६५७४. पंचास्थान (हितोपदेश)— × । पत्र स॰ ६३। मा० १०४६ १४ । भाषा— सस्कृत । विषय—नीति शास्त्र । र०काल × । ते० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६२/३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाथ इदराढ (कोटा)

विशेष -- ऋषि बालिकशन जती ने करवर मे प्रतिलिधि की थी। मित्र भेद प्रथम तन्त्र तक है।

६५७५. प्रकाप्रकाश यद्विशका—रूपसिंह। पत्रस्य ४। घा०६३  $\times$ ३3६ द । भाषा—संस्कृत । विषय—पुगापित । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०३२४ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर धजोर ।

६५७६, प्रश्नोत्तर रत्नमाला—प्रमोधहर्ष । पत्र स० ३। धा० १२४४ इश्वः। भाषा-संस्कृत । विषय-मुभाषित । र०काल ४ । ले० काल स० १६१६ । पूर्णः। वेष्ट्रनसं० २०४/०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समनगण मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६१६ वर्षे पीष सुदी २ दिने स्वस्ति श्री ग्रहमदाबाद शुभ स्थाने मोजमपुर श्री ग्राविजिन जैत्यालये लिखित । **त**े सवराजस्येद ।

६५७७. प्रश्नोत्तर रत्नमाला - स्रमोघहर्ष । यत तं ४ । बार १०१४ ६ इव । भाषा— संस्कृत । विषय—मुमापित र०काल× । लेकाल स०१६१७ फाल्गुम बुदी ११ । पूर्ण । वेट्टन सं०७८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्षर जयपुर ।

विशेष -- बागडदेश के सागवाडा नगर मे श्री ग्रादिनाथ जिन चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

६५७८. प्रतिसं० २ । पत्र स० २ । प्रा० ११ $\times$  $Y_0^2$  इश्वः । ले०काल  $\times$  । बेष्ट्रन स० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६५७६. प्रश्नोत्तर ररनमाला—बुनाकोदास । पत्रसं० २ । घा० १० x x  $\xi$  इश्व । माला—सस्कृत । विषय—सुनापित । र०काल x । लेकाल x । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बूदी ।

६४६०. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—विमलसेन । पत्र स०२। प्राः ६ $\frac{3}{8}$  $\times$  $\times$  $\frac{1}{8}$  इश्वः । भाषा— सस्कतः । विषय—सुभाषितः । । र०कालः  $\times$  । ले०कालः  $\times$  । वेष्ट्रन स०१८ः । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुरः । ६५८१. प्रश्नोत्तर रत्नमाला —  $\times$  । पत्र स० ५७ । मा० १ $\frac{3}{6}$  $\times$ ६ $\frac{3}{6}$  दश्च । माषा — सस्कृत । विषय — सुभाषित । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान व दी ।

विशेष-प्रति जीसं शीरां है।

६५८२, प्रस्ताविक स्लोक $-\times$ । पत्र स॰ २२। मा॰ ११ $\times$ ४ $^2_7$  इश्वः। भाषा—संस्कृतः। विषय —सुभाषितः। २०कालः  $\times$ । ले॰ काल सं० १८८० मगीसर मुदी २। पूर्णः। वैष्टन स० ४४१। प्राप्ति स्थान—स॰ दि० जैन मस्टिर प्रजमेरः।

६५८३. प्रस्ताविक क्लोक —  $\times$  । पत्र सं० २४ । मा० १० $\frac{1}{4}$  ४५ हुख । भाषा —सस्कृत हिन्दी । विषय —सुभाषित । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४८६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हांगरपुर ।

**६५८५. प्रस्ताबित रस्तोक** —  $\times$  । पत्र स०२। ग्रा०१० $\times$ ४६७। भाषा—सस्कृत। विषय—मुशाबित । र०काल  $\times$ । ले०काल स०१८६६। पूर्ण। वेष्टुन सं०३६। प्राप्तिः स्थान —दि० जैन कडेलवाल मदिर उदयपुर।

६५८६. **बाबनी**—जिन**हर्ष**। पत्र स०४। बा०१० ४ ५ इञ्च। भाषा —हिन्दी। विषय— सुभाषित। र०काल स०१७३८। ले० काल ४ । पूर्ण। वेष्टन स०१७२। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेग।

६४६७. **बावनी—वयासागर।** पत्रस०३। घा०६३४४६ इत्था। भाषा—हिन्दी। विषय**—** सुगापित। र०काल ४। ले०काल ४। पूर्णे। वेष्टनसं०१०६६। **प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मन्दिर धजेरे।

विशेष--सूक्ति मुक्तावली का पद्यानुवाद है।

१७ ह

सवत् चद समुद कथा निधि फागुरा के वदि तीज भलीया। श्री दयासागर बावन श्रक्षर पुररा कीध कविन तेवीया।।५८।।

**६५८.६. बाबनी—ब्र॰ मार्गक ।** पत्र स॰ २-६ । प्रा॰ ६  $\times$  ४ इच । भाषा—हिल्दी । विषय—सुभाषित । र॰काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्णे । बेष्टुन स॰ ४६२/२६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---श्रन्तिम माग

ब्रह्मचारि मराक इम बोलइ। सघ सहित गुरु चिरजीबहु।। इससे धागे ज्ञानभुषरा की बेलि दी हई है। **ग्रन्तिम भाग**--- निम्न प्रकार है।

सेवकिर सहु संघ सदा जस महिमा मेरु समान । श्री जानभूषण गुरु सहहाथ दब याकनु कीजर्ड जान । ग्रमीयगाल साह कर जो नद बोलह एणा परियास । स्वामीद बेलि बलीबलीए तलउ एणु उत्तम मरीदि उवास ॥ हत्ति वेलि समाना ।

६५८६. **बुधजन सत्सई— बुधजन।** पत्र स०३१। प्रा०११४५, इत्था। भाषा-हित्यी। विषय-मुभाषित। रण्काल संक १८-६१ जेडे बुदी ६। लेक्काल सक् १८०६। पूर्ण। बेटन सक् १११०। पारिन क्यान-भार कि जीन पतिस्व प्रवोग।

६५६०. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३० । प्रा० १०१ × ६ इंड्य । ले० काल स० १६३६ चैन सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टनस० २१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष - मुकाम चन्द्रपुर में लिखा गया है।

६५६१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २३ । आ० ११ हे ४ ८ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० ६८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रधायती मन्दिर सलवर ।

६५६२ प्रतिसं० ४ । पत्र स० २-५ । ले० काल रा० ११५६ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ६१ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन प्रवायती मन्दिर अलवर ।

६५६३. प्रतिसं० ५ । पत्र स०२४ । । ले॰काल स०१६४५ । पूर्ण । वेष्टन स०१०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर घलवर ।

६५६४ . प्रति स०६ । पत्रस०२०। श्रा०११४७ इच्चाले० काल स०१६६१ । पूर्णा वेष्टन सं०४ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी।

६५६५. प्रतिसं०७। पत्र स०२६। आ०१०१८७) इत्त्वा ले०काल 🗴 । पूर्ण। बेष्टन स०१८३। प्राप्ति स्थान---दि०जैन पवायती मदिर करौली।

६५६६. प्रतिसं० म । पत्र स० २८ । ग्रा० ११ × ५ है इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सप्रवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

६५६७ प्रति सं०६। पत्रस०१०७। ले॰काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनस०३३। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष-गृहंक हम में है।

६५१६ = बुधिप्रकाश रास—पाल । पत्रस० ३ । सा० १०  $\times$  ४) इत्त्र । मापा-हिन्दी पत्र । विषय-सुप्रापित । र० काल  $\times$  । पे॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । प्राप्ति स्थान—महारकीय वि॰ जैन मंदिर स्रजभेर ।

उद्धरग्---भूखो मित चालै सीयालै। जीमर मित चालै उन्हालै।। बामए। होय प्रस्प खायो।
क्षत्री होय रिएम में मागो जाय।।२०।।
कायय होय र लेखी मूर्लं।
एगी, जिम्माहीन तीलें।२१।।
काबुधिमार तर्गो विचार।
मार्ग पान पुरुषोत्तम युता।
काबुधिमार तर्गा विचार।
मार्ग पान पुरुषोत्तम युता।
काब रोपरिवार सानुता।।२२।।
कित वयप्रकागा रास समुर्गो।

६५८६८ मर्नुहरि शतक — मर्नुहरि। पत्र स०३३ । आ० १०३/४४ ) इन्छ । आपा— सस्कृत । विषय — मुभाषित । र०काल । ले० काल स०१६६ पौष सुदी ७ । पूर्यो । बेटन स०६७२ । प्राप्ति स्थान— अ०दि० जैन मन्दिर स्रजोर ।

६६००. प्रतिसं०२ । पत्रस०१६ । ४ झा० १०४४ इन्छ । ले॰काल 🗴 । झपूर्ए । वैष्टनसं०१२६० । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर झजमेर ।

विशेष--१३ वा १४ वा पृष्ठ नही है।

६६०१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३८ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुनस०१२८२ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

६६०२. प्रतिसं० ४। पत्रस०२७। घा०६×४ इश्वः। ले०काल सं० १७५६। पूर्णः। वेष्टनस०१३२८। प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

६६०३. प्रतिसं० ४ । पत्र स०२-४४ । ले० काल 🗴 । ब्रपूर्ण । वेष्टन सं०७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपयी मन्दिर बसवा ।

६६०४. प्रतिसं०६।। पत्र सख्या ३५ । ले० काल 🗴 । पूर्णा । वेष्टन सख्या ७५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष--सस्कृत टीक सहित है।

६६०**५. प्रतिसं० ७** । पत्र स० १० । ग्रा० १२ ४ ६ इञ्च । लेब्बाल 🗴 । पूर्णं । वेष्टन सं**०** १३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ बूदी ।

विशेख - शतक त्रय है।

६६०६. प्रतिसं० मा पत्र स० ३५। धा०६ $\frac{1}{7} \times \chi_{\frac{1}{7}}^2$  हक्षा ले० काल सं०१८०४। पूर्णा वेस्टन स० २३५। प्राप्ति स्थान— दि० जैन पार्यनाथ मन्दिर चौगान बूदी।

विशेष-- मूल के नीचे गुजराती मे प्रथं भी है।

६६०७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २१ । घा० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८६६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० १० । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष-गोठडा भाग में रूप विमल के शिष्य माग्य विमल ने प्रतिलिपि की थी।

६६०**८. प्रति सं**० १० । पत्र सं० २४ । द्वा० ११imes४ इच्च । ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर क्रीभनन्दन स्थामी, बृंदी ।

**६६०१. प्रति सं० ११ ।** पत्र सं० ३२ । ग्रा० १२ $\times$ ७ $^{3}$  एका ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । प्राप्टिर **स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दुनी (टोंक)

६६१०. भतृंहिरि शतक साथा— × । पत्र स॰ २६ । ग्रा० ११ × ५ इला । ग्रापा-हिन्दी पद्य । विषय-नीति । र० काल × । लंबकाल × । श्रपूर्ण । वेष्टन स॰ १०० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ वृंदी

विशेष--नीति शतक ही है।

६५११. मतृंहिरि शतक टीका — × । स०पत्र २६ । आ० ११३ × ५३ इत्र । भाषा — सस्कृत । विषय-नीति । र०काल × । ले०काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० २३१ । प्रास्ति स्थान — वि० जैन पार्थनाथ मन्तिर इन्टरगढ (कोटा)

विशेष-भत्रृहिर काव्यस्यटीका श्री पाठकेन विद्येध्यनमार नाम्ना ।

६६१२, मर्तहरि शतक टोका—× । पत्रसं० ४६ । भाषा-सःस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । त्रे०काल × । पूर्णः । वेष्टनस० ७५६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पवावती मन्दिर मरतपुर ।

६६१३. मतृंहिर शतक माया—सवाई प्रतापित्तह। पत्रत०२३। धा०१३ $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इश्व। भाया-हिन्दी (खा)। र०काल  $\times$ । ले० काल स० १८६२। पूर्ण। बेप्टन सं०४४१। प्राप्ति स्थान - भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

**६६१४. मनराज शराक-मनराज ।** पत्र स०७ । म्रा० १२ × ५ इख । भाषा —हिन्दी । विषय-मुगापित । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स०४६८/२५७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समय भाष मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- ग्रन्तिम भाग---

समय नुजाबन समय पन समय न बार बार । सिलन वहित सुरितिकारि इह शुरुवाति नायारि । समयाबेदुनास्थित निष्म सु भीति जु कसी । एहती पुणी पिरु नहिं चणन प्रकल्तह जमी । पडित कुं मुख देखि भिषक हुसि लाज करती । प्रथम तथा घारे महि राजिबम नीर भरती । प्रथम तथा घारे महि राजिबम नीर भरती । भूमा नुष्म कुमुण इह जग जुट्टिश निव भनो । श्रीमानु कही निस सगवो हो कह कोई सपर चली ।।

कुल ३--४ पद हैं।

६६१४. सरस्य करडिका— × । पत्र सं० १२०। घा० १० ४४ इस्व । माषा-संस्कृत (पद्य)। विषय-सुमापित । र०काल x । ले० काल स० १६२७। पूर्ण । वेट्टन सं० द । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन प्रप्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष-स॰ १६२७ भादवा मुदी ३ गुरौ दिने सागवाडा ग्रामे पुस्तिका लेखक श्री राजवन्द्रे गा ।

६६१६. राजनीति समुख्वयः—चारावयः । पत्रसः ६ । म्राः १०३४४३ इव । भाषा— सस्कृतः । विषयः—नीति । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्णः । बेष्टनः सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मदिर भजनेर भण्डार ।

६६१७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० २८० । **प्राप्ति स्थान**-भ० विक जैन मन्तिर ग्रजीन मण्डार ।

६६१६. राजनीति सर्वेया—वेबीदास । पत्रसं० १८८ । भाषा-हिन्सी (पद्य)। विषय— राजनीति । र०काल × । ले०काल स० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरदर्णयी मन्दिर बसवा ।

ब्रादि अन्त भाग निम्न प्रकार हैं---

×

DITEM-

नीतिही ते धर्म, यमंते सकल सीधि मीतिहीते प्रादर समानि बीचि पाइयो। मीति ते प्रनीति छटें नीतिहीते सुख लूटें भीतिहीते कोच भनी बकता कहाइयो। नीति होते राज राजें नीति होते पाया ही भीति होते राज राजें नीति होते पाया ही भीति होते नोउसक साहि जस गाइयो। छोटन को बडो करें बडें महा बडें घरें नातें सबाों को राजनीति ही सवाइयो।

×

ग्र'तिस—

जब जब गाढ परी दासिन को
देवीदास जब तब ही आग हिर जूने कीनी है।
जैसे कण्ट नरहिर देव तु द्यानिधान
ऐसो कोन अवतार द्यारम भीनी है।
मातानि पेटतें स्वरूप धर्म और ठीर
सोतो है उचित ऐसो और को प्रवीन है।
पहलाद वेतु जानि ता दम के बाएँ
आप भावर के पेट मैं ते अवतार लीनी है।।१२२।।

इति देवीदास कृत राजनीति सर्वया सपूर्ण ।

६६२०. लघुचाराक्य नीति (राजनीति शास्त्र)—चाराक्य । पत्र त० ११ । घा० ११ $\times$ १६ $\times$ १ साम —सस्कृत । विषय—राजनीति । र०काल $\times$  । ले०काल $\times$  । पूर्ण । वे० त० १४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्यनाथ मंदिर चीगान बूंदी ।

विशेष--बृहद् राजनीति शास्त्र भी है।

६६२**१. खुकमान हकीम को नसीहत**— × । । पत्रस०७ । घा० १२ र्४ ४६ इञ्चा भाषा-हिन्दी । विषय — सुभाषित । र०काल × । ने०काल स० १६०७ श्रावस सुदी ८ । पूर्स । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर छोटा बयाना ।

विशेष—प्रथम पाच पत्र तक लुकमात हकीम की नसीहते है तथा इससे प्रागे के पत्रों में १०० प्रकार के मुखों के भेद दिये हुए हैं।

६६२२. वज्जवली—पं० वल्लह । पत्र स०१८ । झा० १४ $\frac{3}{2} \times 1\frac{3}{9}$  इन्थ । भाषा—प्राकृत । विषय—सुभाषित । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०१३६१ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर झबमेर ।

**६६२३, विवेक शतक — यार्गासह ठोल्या** । पत्र स० ६ । घा० १० $^1$  $\times$ ६ $^1$ ृं इल । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय —सुभाषित । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टून स० १६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पनावनी मन्दिर करीली ।

६६२४. **वृत्व शातक —कवि वृत्व ।** पत्र स०४ । आ० १०३ ×६३ ६ च । भाषा—हिनी (पद्य) । विषय — मुभाषित । र०काल × । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन पार्यकाय सदिर टोडारायिसह (टोक)

६६२५. सज्जन क्ति बल्लम — मिल्लबेस्। । पत्रस॰ ३। घा॰ १० $\times$ ४२ इन्स । भाषा — सस्क्रत । विषय—सुभाषित । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रनस॰ ३०६ । प्राप्ति स्थान — भ॰ दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**६६२६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ३ । घा० १२४५ इखा । ले०काल स० १८०६ कार्तिक बुदी ८ । पूर्यो । बेस्टन स० १४६ ।**प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवाजी कामा ।

६६२७. **सज्जन चित्तन बस्लम**imes imes 1 पत्रस $\circ$  १। ग्रा॰ ६ $rac{1}{3} imes rac{1}{3} imes rac{1}{3}$  अपन स्वान-म $\circ$  विषय—मुगापित । रक्शल imes 1 ले॰ काल imes 1 पूर्ण । बेप्टन स $\circ$  ६०७ । **प्राप्ति स्थान**-म $\circ$  दि॰ जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६२८. सज्जन नित्त बल्लभ भाषा— ऋषभदास । पत्रम०१२ । प्रा० १२ $\times$ ४५ उत्थ । भाषा-हिरी गद्य ।विषय-सुभाषित । र०काल  $\times$  । त्येष्ठन स० ६८ । प्राप्ति स्थान—रि० जैन मन्दिर श्री महाशेर बूरी ।

६६२६. सज्जनचित्त बल्लम माया—हरपूलाल । पत्रतः २२ । प्राः १०  $\frac{1}{2}$  ४ $\frac{1}{2}$  इच । मापा-हिन्दी (गया) । विषय— मुमापित । २०काल स० १२०७ । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० ५२—६४ । प्राप्ति स्थान —हि० जैन पचायती मन्दिर प्रतवर ।

विशेष — लेखक करौली के रहने वान थे तथा वहांसे सहारनपुर जाकर रहने लगे थे। ग्रंथ प्रमस्ति दीहर्द है।

६६३०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १६। या० १११ x ७ इञ्च । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वेष्टुन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर । ६६३१. सप्तस्यसन चन्द्रावल— ज्ञानभूषस्। पत्रस०१। द्वा०१२ $\times$ ४ इंव। नापा— हिन्दी। विषय —मुभाषित। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन सं० २१०-६५८। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६६३२. सर् माधितावली (सुमाधितावली)—सकलकीति । पत्र सं• २६ । प्रा० १२४ ६ इखा । भाषा-संस्कृत । विषय-सुमाधित । र०काल ४ । ले० काल स० १७०२ फाल्गुन बुदी ७ । पूर्ण । वेग्रन स० ७१ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-महाराजिसह के शासनकाल में साह पाब ने अम्बावती गढ़ में लिप की थी।

६६३३. प्रतिसं०२ । पत्र सं०२३ । घा०१०ॄै ×६ इश्वा। ले० काल स०१७ । पूर्ण। वेष्टनस०७२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर।

विशेष-चम्पावनी महाद्गं में प्रतिलिपि हुई लेखक प्रशस्ति बहुत विस्तार से है।

६६३४.प्रति सं०३ । पत्र स०३४ । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स०१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर हण्डाबालों का डीग ।

६६३४. सद्भाषितावली —  $\times$  । पत्र स० १६ । ब्रा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ १ $\frac{1}{2}$  उत्थ । भाषा — स्टकृत । विषय---गुभाषित । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टत सं० ६८६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मिटर नक्कर, जयपुर ।

६६३६. स.दूरियतावली $-\times$ । यत्रस०१-२४। आ० १० $\times$ ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-गुआपित । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सम्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६६३७. सद्भाषितावली— $\times$ । पत्र सं॰  $\times$ र। प्रा॰ १० $\times$ ४ इ.च । माषा-सस्कृत । विषय-मुगाषित । र॰काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टनसं॰ २६६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मंदिर तीवानजी कामा ।

६६३ म. **स.द्वाधितावली** — X । पत्र स० २६ । आ० ११ X ४ इश्व । **आषा** - सस्कृत । विषय -सुभाषित । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

६६३९. सदमाधितावली—imes। पत्रस० २४ । भाषा-सस्कृत । विषय-सुमाधित । र०कालimes। ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डोग ।

६६४०. सऱ्झाषितावली माषा—पन्नालाल चौघरी— $\times$ । पत्र स० ११६। प्रा० ११ $\frac{3}{8}$  $\times$ ७ $\frac{3}{8}$ १९ । मार्गा-हिन्दी (गद्य)। विषय — गुर्माणित । र० काल सं० १६३१ ज्येष्ठ मुर्गी १। लेकाल  $\times$ । पूर्ण । बेहन स० १५८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर सेखावाटी (सीकर)

६६४१. प्रति सं० २ । पत्रसं० १०२ । मा० १३ र्रे ४ ७ इञ्च । ले**०काल** सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टुनसं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर ब्रुदी ।

्र ६६४२. प्रतिसं० ३ । पत्र स०६१ । मा०१३ × ७६ इञ्च । से० काल सं०१६४२ । पूर्यों । बेष्टन स०३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रग्याल मन्दिर नैशाबा । ६६४**३. प्रति सं०४ ।** पत्र सं०६६ । घा०१२ ४७ है इ.च । ले० काल सं०१६४४ । पूर्ण । वेष्टनसं०२७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर दूंदी ।

विशेष--इन्दौर में लिखा गया था।

६६४४. सभातरंग— $\times$ । पत्रसं०२७। म्रा०१० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इंच। प्रापा–संस्कृत । विषय-सुमाषित। र०काल  $\times$ । के०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० २८७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लाकर, जयपुर।

६६४**४. सारसमुज्ज्ञय**— × । पत्रस०१० । मा०११×५ इला । भाषा—सस्कृत । विषय-मुनायित । रक्काल ४ । लेक्काल सं०१८८० । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ **प्राप्ति स्थान**—म०दि० जैन सन्दिर ग्रादोगः

६६४६. **सारसमुख्यम** × । पत्रस०२२ । घा०१०}×५६ व । भाषा—सस्कृत । विषय-सुमापित । र०काल × । लेक्काल स०१६५२ कार्तिक सुक्ता १२ । पूर्ण । वेष्टन स०३४२ । **प्राप्ति** स्थान—म०१० के तम्मिटन प्रवोर ।

**६६४७. सारसमुख्यय**— $\times$  । पत्र सं० १६ । प्रा० १०  $^{\circ}$   $\times$  ५ $^{\circ}$  इश्व । भाषा—गंस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३२८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रधवाल मन्दिर उदयवर ।

६६४८. सिन्दूर प्रकरण्—वनारसीदास । पत्रस०२४। द्वा०१२ $\gamma$ ४१ $\graph$ १२० ४१ $\graph$ १६८। प्राप्ति स्थान-हिन्दी पद्य । विषय —सुमाधित । र०काल  $\xspace \times$  । ले०काल  $\xspace \times$  । पूर्ण । वेप्टन स०१६६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर फेतेहपर शेलावादी (सीकर)

६६४६. **प्रतिसं०** २ । पत्रसं० ६२ । घा० ६४६ इञ्च । ले**०काल** ४ । पूर्ण । बेप्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्टिर सोगानी करीली ।

विशेष - १८ पत्र से समयसार नाटक वधधार तक है आगे पत्र नहीं है।

**६६५०. प्रतिसं०३ ।** पत्रस० ५-२१ । घा० १० × ६ इच । ले० काल × । घपूर्ए। वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

**६६५१: प्रतिसं० ४।** पत्र स०१३। ग्रा०१० $\times$ ६ $\frac{9}{2}$  इञ्च । ले० काल स०१६०८ चैत सदी १२। पूर्णा विष्टन स०६। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष --गणेशीलाल बैनाडा ने पुस्तक चटाई थी।

**६६५२. प्रति स०५ ।** पत्र स०१४ । आ०१०×६ इश्वः । ले० काल स०१८६१ । पूर्ए । बेष्टुन सं०६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

६६५३. प्रतिसं० ६ । पत्र स०१८ । मा०११४४ है इच्छ । ले०काल ४ । अपूर्ण । बेप्टन स०५६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

**६६५४. प्रतिसं० ७**। पत्र स० २–२२ । ध्रा० ७  $\times$  ४ $^{\circ}_{i}$  इञ्च । ले०काल स० १८०८ । प्रार्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मंदर कोट्यो का नैरावा ।

६६४४. प्रतिसं० ट । पत्र स० १४ । आ० ११३ ४ ५३ इन्छ । ले० काल ४ । अपूर्ण । बेष्टन स० द३४/द३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलक्द । ६६५६. प्रतिसं∘ ६ । पत्रसं∘ २१ । धा॰ ११×४ इच । ले•काल × । पूर्ण । बेष्टन सं∘ म्मा प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पंवायती मदिर करौली ।

विशेष-प्रति नवीन है।

६६५७. प्रतिसं० १०। पत्र सं०२–१३। घा० ९×४ इञ्च। ले∘काल सं० १६६६ भादवा सुदी १५। प्रपूर्ण। बेष्टन स० ⊏६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाला (बृंदी)।

विशेष--प्रथम पत्र नहीं है।

सबत् १६६६ वर्षे भाववा सुदी १५ सोमवासरे श्री स्नागरा मध्ये पातिसाह श्री साहिजहा राज्ये विक्तित साह रामचन्द्र पठनार्थं लिखित वीरवाला ।

६६५८. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १६ । ले० काल स० १७१७ । पूर्ण । बेप्टन सं० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

६६५६. सिन्दूरप्रकरण भाषा—  $\times$  । पृत्रस०४१ । घा०११ $\times$ ५ $^{1}$  दश्च । भाषा—हिन्दी (तद्य) । विषय -सुमापित । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तैरहपथी मन्दिर नैस्सा ।

६६६०. सुगुरु शतक—जोधराज । पत्र स०६ । ग्रा०११४५ इचा । गाया-हिन्दी । वियय-सुभाषिन । र०काल स०१८५२ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन म० ७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी सालपुरा (टोक)

६६६१. सुबुद्धिप्रकाश-स्थानसिंह। पत्र स० ७६। मा० ११४४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-मुभाषित। रज्काल स० १६४७ फायुन बुदी ६। ले० काल स० १६०० ज्येष्ठ बुदी १३। पूर्ण। येष्टन सं० ६३। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पंचायनी मदिर करौली।

६६६२ प्रति सं०२। पत्र स० ११६। ग्रा०१३४६ इश्वः। ले०काल स०१६०० कार्तिक सुदी १। पूर्णः वेष्ट्न स०५०। प्राप्ति स्थानः—दि० जैन पत्रावती मन्दिर बयाना ।

६६६३. सुमाधित —  $\times$  । पत्रस०१७ । स्रा०६ $\times$ ४ $_{2}^{+}$  इंच । माधा—संस्कृत । विषय— सुमाधित । ः ० काल  $\times$  । ले ० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन सं०४७० । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर सक्तर अद्भूर ।

६६६४. प्रति सं०२ । पत्र स०२५ । झा०१० है×५ इ.चा। ले० काल 🗴 । पूर्णा। वेय्टन स०६४ । प्रार्गित स्थान— म० दि० जैन मदिर झजमेर ।

६६६५. प्रति सं०३ । पत्रस०१६ । घा० ८ ४४ इ.च.। से॰काल ४ । पूर्ण । बेहनसं० ४६५ । प्राप्ति स्थान—भ० वि० जैन मन्दिर घजमेर ।

६६६६. सुआखित दोहा —  $\times$  । पत्र स०२-४२ । ग्रा० ६ $\times$ ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुआखि र '२०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं०२७८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दौवागजी कामा ।

६६६७. सुभाषित प्रस्तोत्तर रत्ननाला—का ज्ञानसागर। पत्रसं०१४१। द्या०१०४५ इ.स.। मापा—संस्कृत। विषय—सुमाषित। र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन सं०६६१। प्राप्ति स्थान—मः० वि० जैन मन्दिर प्रजमेर। विशेष — सुभाषित प्रकाति रमास्मिक्यमालामहाग्रंथे अ० श्री ज्ञानसागर सग्रहीते चतुर्थोऽधिकारः ।

६६६ म. सुमाधित रत्नसंदोह— ग्रमितिगति । पत्रसः ११४ । ग्रा० ७, ४४ इ.ख. । अता— सस्कृतः विषय—सुमापितः र० कालः ४ । ले०काल सं० १४६४ कार्तिक मुदी ६ । पूर्णः । वेष्टनसं० १२०३ । प्राप्ति स्थान--भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेरः ।

६६६६ प्रति स०२। पत्रस० ७४। ग्रा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इक्ष । ले० काल स० १५७४ मगिसर सुदी १। पूर्णा। बेपून स० ७४६। प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

६६७०. प्रति स॰ ३ । पत्रस० ७१ । प्रा० १०१ × ४ हे इञ्च । ले०काल स० १५६० । पूर्ण । बेहनसं० ७०६ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६७१. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६५ । ग्रा० १२ × ४ १ इञ्च । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०० । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

६६७२ प्रति स० ५ । पत्रस० ४६ । ले० काल स० १८२७ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष---ग्राणाराम ने भरतपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

६६७३. **सुभाषितावली—सकलकोति** । पत्र स०४२ । आर०१४४ इत्र । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । २०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णः। वेष्टन स०२६३ । **प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मदिर अत्रोगर ।

विशेष-ग्रथ का नाम सुभाषित रत्नावली एव सद्भाषितावली भी है।

६६७४. प्रतिसं० २ । पत्रस० २३ । या० ६×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । बेट्टन स० १४२६ । प्राप्ति स्थान— २० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६७४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४१ । घा० ११४४ दख । लेब्काल स० १६६७ भादवा बुदी ४ । पूर्या । बहुत स० १४६५ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर अवसर ।

विशेष - मडलाचार्यं यशःकीति के शिष्य प्र० गोपाल ने प्रतिलिपि की थी।

६६७६. प्रति स० ४ । पत्र स० २८ । ग्रा० १० है ४४ १ इला । ले०काल० ४ । पूर्णं । बेष्टन स० १⊏३ । प्राप्ति स्थान⊸- म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६७७. प्रतिसं० ४.। पत्र स०२२ । आ०११×४ इथा। ले०काल स०१६३२ चैत सुदी १०।पूर्या। बेस्टन स०१०४१ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मदिर प्रजमेर।

विशेष--सिकदरा मे हरवणदास लुहाडिया ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६६७८. प्रतिसं०६ । पत्र स०१८ । झा०६ 🗴 ४ इंच । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ११०२ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष — प्रति जीसं है।

६६७६. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ३३ । घा० ११३ ४५३ ६७ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर प्रणिनन्दन स्थामी बृंदी । ६६६०. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २१ । द्या० १०३ ४४ ३ इञ्च । ले०काल स० १५६४ । पूर्ए। वैष्टन सं० ३१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी वदी।

प्रगहित—सवत् १९८४ वर्षे घासोज मुदी १५ बुणवार लथत श्री मूलरावे महामृति भट्टारक श्री सकलकोति देवातराट्टे भ० श्री ५ भुवनकोत्ति झातृ धाचार्यं श्री ज्ञानकोति विषय घाचार्यं श्री रत्नकोति तस्य विषय घा० श्री सक्कोति तत्र विषय ब्रह्म विद्यावर पठनार्थं उपासकेन लिखाय्य दत्त ।

६६६९. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १४ । म्रा० ६४ ४५ दुवा। लेब्लाल म० १८४६ जेठ सुदी १ । पूर्णं । बेब्रन स० ४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बुदी ।

६६६२. प्रतिसं० १० । पत्रस०६ । झा०६×४१ ६७ । ले० काल स०१७४८ माघ शुक्ला ६ । पूर्ण । बेटून स०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाथ बृदी ।

६६८३ प्रति स० ११ । पत्रतः ४० । झा० १२४४ इन्था । ले०काल ४ । पूर्ण । बेप्टन सं० ६० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्धनाथ चौगान बुदी ।

६६८४. प्रतिसं० १२ । पत्र स० २-३७ । ग्रा० १० 🗆 ४ इन्छ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिटर बोरसली कोटा ।

६६०५. प्रति सं० १३ । पत्रस० ४१ । ग्रा० १२ $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इन्त । ले०काल स० १७१० ग्रासोज बुदी १ । पूर्ण । बेष्टनस० २०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष — मोजमाबाद मे ऋषमनाथ चैत्यालय मे पडित मगवान ने स्वय के पठनार्थ प्रतिनिधि की थी।

६६८६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० २२ । घ्रा० ६ $\times$ ५ ई डब्ज । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेशन स० १८२-७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

६६८७. प्रतिसं० १५ । पत्र स० १० । मा० १२imes५३ इन्त्र । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**विशेष** — प्रति जीएं किन्तु प्राचीन है। प्रति की लिखाई सुन्दर है।

६६८८. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २४ । खा० २ है × ६ इश्व । ले०काल स० १८७६ सगसिर बुरी ७ । पूर्णे । बेष्टन स० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक)

६६८६. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २४ । घा० ११ रे ४ रे इखा । ले०काल स० १८२२ माघ बुदी ऽऽ पूर्ण । वेग्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष-प्रनिलिधि दिल्ली में हुई थी।

६६८०. प्रतिसं० १८ । पत्रस० ७६ । ले॰काल सं० १७२२ चैत बुदो ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन तेरहपयी मदिर बसवा ।

विशेष-दौसा मे प्र'तलिपि हुई थी।

६६६१. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १७ । ग्रा० १०-४५ इ.च । ले० काल × । पूर्ए । बेष्टन सं० १६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलना (बूंदी) ६६९२. प्रति सं० २०। पत्रस० ३३। धा० ६ $\frac{3}{7} \times V_{\gamma}^2$  इच्च । ले०काल स० १८३१ वैशास्त्र इ.दी ५। पूर्ण । वेष्टुनस० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)।

विशेष — भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य बह्य मेघजी ने प्रतापगढ नगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिक्रियि की थी।

६६६३. मुमाबितरत्नाविल $-\times$ । पत्र सं०१७। प्रा०६४४ इत्रः। माया-संस्कृत। विषय-सुभावित। र०काल $\times$ । ले०काल स०१७४६ प्राचाढ सुदी२। पूर्ण। बेष्ट्रनसं०६६७। प्राप्ति स्थान-म०दि० जैन मन्दिर प्रवरेर।

विशेष--प० सुन्दर विजय ने प्रतिलिपि की थी।

६६६४. सुमाबितावली—कनककीलि । पत्र त०३३। प्रा० ११ रै४ ६ इव । भाषा— संस्कृत । विषय—मुनापित । र०काल × । ले०काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन तेरहपदी मन्दिर दौना ।

६६६४. सुमाधितावली — X । पत्रसः १४ । म्रा॰ १० X ५ इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय-सुमाधित । र०काल X । ले॰काल X । । पूर्ण । वेष्टनसं० ४० । प्राप्तिः स्थान-४० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६६८६. सुमाधिताबली— × । पत्र स० ६ । आग० ६४४ इ.चा । आगा – सम्कृत । विषय— सुभाधित । रःकाल × । ले० काल × । पूर्ण । वैच्टन स० ४६० – २८६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६६९७. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल 🛛 ४ । पूर्मा । बेष्टन म० ४६१-२८४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६६८. सुमाधितावली—दुलीचन्द्र। पत्र स०१७। घा०१३ $\times$  ५ रेड च। भाषा हिन्दी पद्य । विवय-सुभाषित । र०काल स०१६२१ ज्येष्ठ मुदी१। लेककाल स०१६४६ भादवा बुदी १४। पर्यो। बेष्टन सं०६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर प्रलवर।

**६६८६. प्रतिसं० २ ।** पप्रस**०** ७५ । र०काल स० १६२१ । ले०काल सं० १६५२ । पूर्णे । **बेह्नसं०** ४४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पवायती मन्दिर मरतपुर ।

६७००. सुभाषितावली भाषा—खुशालचद । पत्रसः २-६४ । धा० १०४४ इत्य । भाषा-हिन्दी (पदा) । विषय —सुभाषित । र०काल स० १७६४ सावसा सुदी १४ । लेकाल स० १८०२ चैत सुदी ४ । पूर्णं । बेष्टनसं०६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायनी मन्दिर बयाना ।

विशेष -- ग्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है --

वीतराग देवह कहा। मुभापित ग्रंथ । क्यारि त्यान धारक गर्गा रूपी तुमावजी । इन्द्र धरणीन्द्र कहार्योन्द्र प्रकर्ता धारिक सेवतु है तीनवोक के मोह को मुदीपक कहायजी ॥ साधु पुरुष् के देन धनृत सम निषट धैन धर्मी वीज पावन गुभाषि फलदायजी

सर्वाजन हितकार जाम मुख है प्रपार
ऐसी ज्ञान तीरण ग्रमोल चितलायजी।
बीहा —
सतरासी चीराएवें श्रावण मास मभ्यार।
मृदि चवदसि पूरण अयो इह श्रुन ग्रसि मुलकार
सवसिंद एक्टा तर्यो नंदन राजाराम।
तीन उपदेसें में रच्यो श्रृति ज्ञाल प्रमिराम।।

इति सुभाषितावलि ग्रंथ भाषा ख्शालचन्द कृत समाप्तम् ।

६७०**१. प्रति सं० २।** पत्र सस्या ३३। ब्रा॰ ५×४१ इला। ले∘काल सं० १८१२ आसोज बदी ११। पुर्ण। वेष्ट्रन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सीगासी मन्दिर करीली।

६७०**२. प्रतिसं० ३**। पत्रस० ६३। म्रा० १० ४ ५ है इका। लेवकाल स० १८६६ पौप बुदी २। पूर्णं। बेष्टतसं० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष- छवीलचन्द मीतल ने करौली नगर में पार्श्वनाथ के मन्दिर में प्रतिलिपि कराई थी।

६७०**३. मुभाषितार्गव—शुभवंत्र ।** पत्रसः ११३ । मा० ६४४ है इवा । भाषा—सास्कृत । विषय—मुभाषित । र०काल ४ । ले० काल सः० १६६६ सावन मृदी १३ । । पूर्ण । वेण्टन सं० ६२-५० । **प्राप्ति स्थान—दि**० जैन सीगानी मन्दिर करीली ।

६७०४. प्रतिसं०२ । पत्रस०२४७ । ले० कालस० १९३० । पूर्णा । । वेष्टनसं० ५३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७०५. प्रति सं० ३ । पत्रस० ४१ । मा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इञ्च । ले० काल १७४४ । पूर्ण । बेहन स० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रग्नशाल मन्दिर उदयपुर ।

६७०६. सुभाषितार्गव—× । पत्रसः ४५ । झा० ११३ ४६ इत्रत्र । सामा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । ४०काल × । ले०काल म० १७६४ माघ मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मदिर दूनी (टोक)

६७०७. सुभाषितार्गव --  $\times$  । पत्रसः ४६। आ० १२  $\times$  ४ $^2_4$  इखा । आषा—सरहत । विषय—सुभाषित । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६०७ भारवा बुदी ६ । पूर्ण । बेहन स० ७३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लाकर, जयपुर ।

विशेष - चम्पावती महादुर्ग में प्रतिलिपि हुई । लेखक प्रशस्ति बहुत विस्तार पूर्वक है ।

६७०६. सूक्ति मुक्ताबली—झाबार्य मेक्तुंग। पत्रत० ३। झा० १४imes४ इञ्च। मादा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल imes। ले०काल imes। पूर्ण। वेष्ट्रन सं० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर रीवानजी कामा।

विशेष---महापुरुष चरित्र का मूलमात्र है।

६७०६. सुक्तिमुक्तावली-मा० सोमप्रमः।पत्रस० ६ । मा० ६३ ×४३ इञ्च । मावा-सस्कृत । विषय-मुगावित । र०काल × । जे०काल × । पूर्ण । वैष्टन सं० १४१ । प्राप्ति स्थान--- ४० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर । विशेष--दो पंतिया और है।

६७१०. प्रति सं० २ । पत्रस० ८ । ग्रा० १०३×४ है इश्व । ले०काल । पूर्ण । बेष्टन स० ११८७ । प्राप्ति स्थान— २० दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

६७१**१. प्रतिसं**ठ ३ । पत्र स०७ । ब्रा० १०×४ ६ वा । ले०काल × । पूर्णं। वेष्टन स० १३४० । **प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मन्दिर धन्नमेर ।

६७**१२. प्रतिसं०४ ।** पत्रस०२ । आर्थ०४ ४ इ.च. । ले०काल स० १७८ । पूर्ण । वेष्टुनसं०२८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर अप्रजेर भण्डार ।

६७१**३. प्रतिसं० ५ ।** पत्रस० ८ । ग्रा० ९ $\frac{1}{4}$  imes imes । त्यं । बेष्टनसं• ६६ तः **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

टब्बाटीका सहित है तथा प्रति जीर्ग् है।

६७**१४. प्रतिसं०६** । पत्र स०१६ । द्या०**१०** × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्णं। बेष्टन स०१८७ । **प्राप्ति स्थान** - म०४६० जैन मन्दिर झजमेर ।

६७१**५. प्रतिस०७** । पत्रस०११ । ब्रा०६ $\times$ ४ इ.च । ले०काल $\times$ 1 पूर्ण । वेप्टन स०१४२६ । **प्राप्तिस्थान**— म०दि० जैन मन्दिर धनमेर ।

६७१६. प्रति संब्दा पत्र सब्द । ग्राब ११ हुँ $\times$ ५ हुन्दा । लेक्सल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सब्द १३ प्रक्रिक स्थान — मब्दिव जैन मन्दिर ध्रजसेर ।

६७१७. **प्रतिस**०६ । पत्र स०१०। घा०११४४ ¦ इश्वालेल्काल म०१८११ । पूर्ण। वेष्टन स०१२७४ । **प्राप्ति स्थान** — भ०दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

६७१८. प्रतिसं० १० । पत्रस० १४ । आ० ११×४ इश्व । ले० काल × । प्रपूर्ण । बेष्टन स०२२७/२२२ प्राप्तिः स्थान-—थि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

६७१६. प्रतिसं० ११ । पत्र स०७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल म० १७७६ । अपूर्ण । बेष्टुन स० २५६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६७२०. प्रतिसं०१२ । पत्रस०१४ । झा०११३४४ इचा ले० काल स०१६४०। पूर्णा वेष्टुनस०१०० । प्रास्ति स्थान— वि०र्जन क्षत्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

सवत् १६४० वर्ष श्रावसा युदी ६ दिने लिखित श्रिष्य य० टीला स्न० नाथू के पाठे गोइन्द शुभ भवत् कल्यासमस्त ।

६७२**१. प्रतिसं० १३ ।** पत्रस० १३ । बार १०<sup>१</sup>८४ इथा । से०काल स० १७२६ । पूर्ण । बेष्टन स० २११ । प्रास्तिः स्थान—दि० जैन ब्रायवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—संवत् १७२६ में सावरण सुदी १० को श्री प्रतापपुर के ब्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई थी।

६७२२. प्रतिसं० १४ । पत्र स०१८ । घा०१० ४ ५१ इत्व । ले० काल 🗴 । घपूर्ण । वेष्टन स०१४५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मग्रानः मन्दिर उदयदुर । ६७२**३. प्रतिसं० १४** । पत्र स०११ । सा०१० $\frac{2}{3}$   $\times$  ५ $\frac{2}{3}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेकृतस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर, जयपुर ।

६७२४. प्रति सं०१६ । पत्रस०२०। आ०१० $\frac{1}{2}$  $\times$  ५. इन्छ । भाषा — संस्कृत । विषय — सुभाषित । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१७२० चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्य, जयपुर ।

विशेष --- मोहम्मद शाह के राज्य में शरपुर में चिन्तामिस पाध्यनाथ के चैत्यालय में हारिक्षेम ने स्वपटनार्थ प्रतिलिपि की थी।

६७२**५. प्रतिसं० १७ । पत्र**स० १४ । झा० १२imes६ इ**था । ले०काल** स० १८४४ प्रयम श्रावसा सदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जसपूर ।

विशेष — ११-१२ वापत्र नहीं हैं।

६७२६. प्रतिसं०१६ । पत्र सं०१५ । आ०१० $\{XX_i^2\}$  इश्वः । ले० काल X । पूर्णः । वे० स०१३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लंककर, जयपुरः ।

विशेष---१५ मे ब्रागे नही लिखा गया है।

६७२७. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १२ । प्रा० १२×६ इच । ने•काल स० १६४६ । पूर्ण । बेट्टन ग०६१० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

६७२ स. प्रतिसंठ २०। पत्रम० २–१४। ब्रा० पर्ै ४३ ैृ इच। ले०काल ४ । ह्यूर्ग्। बेष्टन म० ७१६ । प्राप्ति स्थान—दिञ्जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

६७२६ प्रतिसं**०२१**। पत्र स० १०। ग्रा० ६४६ इ.खा ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । बेग्रन म०३२५-१२२ । **प्राप्ति स्थान**ाद० जैन मन्दिर कोटडियो का ट्र'गरपुर ।

६७३० प्रतिसं**०१२।** पत्रस०१२। आ०१०x४ ईडला। लेक्काल स०१७३१ श्रावसः शक्ता१।पूर्ण।वेस्टन स०२७≒१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपूर।

६७३१ प्रतिसं० १३ । पत्रस० १२। आ० १० $^1_2 \times ^1_3$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन स० १२६-५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

६७३२. प्रतिसं०१४ । पत्र स०१४ । म्रा०१०३ $\times$ ४३ इ.च । ले० काल $\times$ । पूर्ग । बेष्टन स०१५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष - मट्टारक गुभवन्द्र शिष्य मुनि श्री सोमकीर्ति पठनार्थ स्वहस्तेन लिखित ।

६७३३. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १४ । घा० १० ४५ इ.च । ले० काल ४ । पूर्सं। वेष्ट्रन स० २६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६७३४. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० १० । आर० १०३ ४४ ६ खा ले०काल स० १६०३ । पूर्ण। बेध्टन सं० १३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

लेखक प्रशस्ति—सवत् १६०३ वर्षे शाके १४६६ प्रवर्तमाने महामागस्य नाउपदमाने शुक्तपक्षे दक्षम्या तिथौ रिविवासरे तक्षक महादुर्गे राजाधिराज सोलकीराउ श्री रामचन्द विजयराज्ये श्री ऋषभ जिन चैत्यालये श्री मूलसवे बलात्कारगणे सरस्वनीगच्छे ............ महनाचार्यं धर्म्य तदास्नाये खण्डेलनालान्यदे बैद गोत्रै ...... साह पोषा तस्य पौत्र सा. होला तद्भार्या खीवसी इद शास्त्र लिखाप्य मुनि श्री कमल-कीतिये दत्तं ।

६७३**४. प्रतिसं०१७।** पत्रस०५। घा०१३ 🗴 ५ इच्च । ले०काल सं०१८८६। पूर्णे। वेष्टुन सं०१०५। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६७३६. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ३५ । ग्रा० ६ है 🗙 ४ दे इला । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वैकृतसं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल पत्रायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष - मेडता मे प्रतिलिपि हुई थी।

६७३७. प्रतिसं० १६ । पत्र स० १६ । बा० ६ $\frac{1}{3} \times 3^3$  इश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन स्रववाल पचायती मन्दिर स्रनवर ।

६७३ **८. प्रतिसं०२०**। पत्र स०१३। मा०१०×५ इन्त्राले० काल × । पूर्णं। **प्राप्ति** स्थान—वि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष--प्रति जीर्ग है।

६७३६. **प्रतिसं० २१ ।** पत्र स० १६ । घा० च<sub>र</sub>ै ४४<sup>९</sup> इञ्च । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दो प्रतिया ग्रौर है।

६७४०, प्रति सं० २२ । पत्र स० ११ । घ्रा० १० $\frac{3}{7} \times 3^{\frac{1}{7}}$  इप्रच । ले० काल स० १६६८ काती सुदी ११ । पूर्ण । बेटून स० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६७४**१. प्रतिसं० २३ ।** पत्र स० १७ । स्ना० १३ × ५२ इच्च । ले०काल स० १६५५ कानी सुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २३७ । **प्राप्त्र स्थान**— दि० जैन मदिर दीवानशी कामा ।

६७४**२. प्रतिसं० २४ ।** पत्र स० २२ । सा० १०×४ ¦ इश्व । ले० काल× । पूर्ग । बेष्टन स० ७६ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवासती मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति हर्षकीर्ति कृत संस्कृत टीका सहित है।

६७४**३. प्रतिसं० २४** । पत्रस० १६। ग्रा० १० ×४<sup>२</sup>, इ.च.। लेकाल स० १६६६ । पूर्णः । वेष्टन स० १२२/२४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ इन्दराख कोटा ।

विशेष -प्रति हर्षकीति कृत संस्कृत टीका महित है।

सवत् १६६६ वर्षे फागुण बुदी प्रमावस्थामोमे पाटण नगरे लिखितेयं टीका ऋषि लक्ष्मीदासेन ऋषि जीवाय बाजनार्थं। इन्टरसङ का बढा जैन मन्दिर ।

६७४४. प्रतिसं० २६ । पत्रस०२६ । प्रा० १०४५ इत्य । भाषा-सास्कृत । विषय-सुमापित । र०काल ४ । ने०काल स०१८२७ । पूर्ण । वेष्टनसं०१२१/२६ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन पार्थनाय मन्दिर इन्दरगर (कोटा)

विशेष-करवाड ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी।

६७४४. प्रतिसं० २६। पत्र स० १०। प्रा० १२ × ४ इचा। भाषा — संस्कृत। विषय-सुमा-वितारक काल ×। सेक्शल स० १७८१। पूर्ण। वेष्टन स० ४८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पारवेनाथ सन्दिर स्वरंगसः (कोटा)

६७४६. प्रति सं० २७ । पत्र सं० १० । घा० १० $\frac{5}{4} \times 10^3$  इश्व । ले०काल $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाता (ब्रृंदी) ।

६७४७. प्रतिसं० २८ । पत्रसं० १ । प्रा० १०imes५ ६ खा भाषा -संस्कृत । विषय-सुमाषित । १०काल imes । पूर्ण । बेकन सं० ५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बंदी)

विशेष-ध्यान विमल पठनार्थ ।

६७४ म. प्रतिसं० २६। पत्रस० १०। घा० १०  $\times$ ४ इ.स.। भाषा-सस्कृत । विषय-मुमा- षित । र०काल  $\times$ । ले० काल स० १४६२ माघ बुदी ३। पूर्ण । बेष्टनसं० ५५/५६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

बिशेष-प्रति जीगां है। बीर मदारक के लिए प्रतिलिप की गई थी।

६७४**६. प्रतिसं० २०।** पत्रसं० १। ब्रा० १०×४<sup>3</sup>, इञ्च। साथा-संस्कृत । विषय-सुमा-षित । रक्ताल ×। ले० काल सा० १६६६ कार्तिक बुदी १४। पूर्ण । वे**वृत्तसं०** २२२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर सनिनदन स्वामी, बुदी ।

विशेष - ग्रहमदाबाद में लिखा गया था।

६७५०. प्रतिसं० ३१ । पत्र स० ३-१५ । मा० १० १४ ६ च्या । भाषा-सस्कृत । विषय-सुप्राधित । र०काल × । ले० काल स०१६०४ । पूर्ण । बेय्टन स०२५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिदर पार्थनाथ चौगान बृदी ।

विशेष — मूल के नीचे सस्कृत में टीका भी है। वृन्दावती में नेमिनाथ चैंस्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

् ६७४१. प्रतिसं० ३२ । पत्रस० ३० । ग्रा० ६४४ इचा । ले० काल सं० १६४४ । पूर्यं। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बूदी ।

६७५२. प्रति सं० ३३ । पत्रस० २४ । घा० १० ४७ है इन्छ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६३ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर पाय्वेनाय, चौगान बृदी ।

६७५३. प्रति सं० ३४ । पत्र मं०७६ । मा० १०४५ इचा। ले०काल स० १७१७ काल्तिक बुदी। १४ । पुर्सा। लेशन स० १० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर झादिनाथ वृदी।

विशेष---भौजमाबाद में लिखा गया था।

६७४४. प्रतिसं० ३५ । पत्र सं० १७ । घा० ६ $\times$ ५ इथ । भाषा-संस्कृत । विषय-सुमा-वित । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६७६ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२११ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

६७४५. प्रतिसं० ३६ । पत्रस० १३ । सा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इन्त । माषा-संस्कृत । विषय-सुमा-पित । र०काल $-\times$  । ले० काल सं० ११४५ प्रायाड बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन संदिर राजमहल (टॉक) विशेष-कोटा स्थित वासुपूज्य चैत्यालय में समवराम ने स्वपठनाथं प्रतिलिपि की थी।

**६७५६ प्रतिसं० ३७ ।** पत्र सस्था २१ । ले०काल स० १७६५ पौष बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं**०** २०२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष---मृत्दरलाल ने सुरत में लिपि की थी।

६७४७. प्रतिसं० ३८ । पत्रस० २७ । ले०काल स० १८६२ चैत्र मुदी ४ । पूर्ण । बेष्टुन स० २०६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेच-भरतपुर में लिखी गई थी।

**६७५८. प्रतिसं० ३६।** पत्रसं० १६। ले॰काल स०१८२५ माषाड सुदी १२। पूर्गं। बेष्टन स० २८७। **प्राप्ति स्थान**—दिञ्जैन पचायती मन्दिर मरतपुर।

विशेष--- भुत्रो पर दूदा कृत हिन्दी गद्य टीका है । केसरीसिह ने प्रतिलिपि की थी ।

६७५६. प्रति सं० ४० । पत्र स० ११ । ले॰काल स १६५२ । पूर्ण । वेग्टन स० २७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती सदिर मरतपुर ।

६७६०. प्रति स० ४१ । पत्रस० ३२ । ले०काल स० १८७२ । पूर्णे । बेष्ट्रनस० ७१८ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

विशेष -- प्रति हपंकीति कृत संस्कृत टीका सहित है ।

**६७६१. प्रति स० ४२।** पत्र स० ६६। प्रा० ६ $\times$  ४ $\frac{1}{4}$  इन्छ । ले०काल स० १९५२। पूर्मा । बेध्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

६७६२. प्रतिसं० ४३ । पत्रसं० १३ । आर० ११३,४४ इञ्च । ले० काल स० १८४७ माह सुदी ⊏ । पूर्या। बेपून स० २३ । प्राप्ति स्थानी-—दि० जैन मन्दिर बैर ।

**६७६३. मुक्तिमुक्तावली टीका**—हथंकीित । पत्र स॰ ३४ । घा० १० ४४ इश्व । भाषा— सस्कृत । विषय-मुभाषित । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १७६० प्रयम सावस्य सुदी ४ । पूर्स । वेष्ट्रन स० ४७ । प्रारित स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ इन्दरगढ़ कोटा ।

विशेष -- अमर विमल के प्रशिष्य एव रत्नविमल के शिष्य रामविमल ने प्रतिलिपि की थी।

६७६४. प्रतिसं०२ । पत्रस०४४ । सा०१०३,४४२, इथ्य । ले०काल स०१७५० माघ बुदी १ । पर्गावेशन स०१४६ । प्राप्ति स्थान— म०दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

विशेष -- शाकभरी वास्तब्ये श्राविका गोगलंदे ने रत्नकीति के लिए लिखवाया था।

६७६५. प्रति स० ३ । पत्र सं० २६ । ले०काल x । पूर्ण । बेष्टनसं० ६४३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

६७६६. प्रति सं०४ । पत्रस०४२ । या०१२imes५६ इ.स. । ले०काल imes । पूर्ण। बेष्टुन सं०२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष-नागपुरीयगच्छ के श्री चन्द्रकीति के शिष्य श्री हर्षकीति ने सस्कृत टीका की है।

६७६७. सूक्ति मुक्ताबली माखा—सुन्दरलाल । पत्रस० ४६ । ग्रा० १२४४ । दूर्वा भाषा− हिन्दी (गष्ट)। विषय–सुभाषित । र० काल स० १७६६ ज्येष्ठ बृदी २ । ले० काल स० १८३४ । पूर्णा वेष्ट्रन सं० ⊏१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर ग्रनवर ।

विशेष--रचना सबतु के निम्न सकेत दिये है--

'रसयग सराशशि'

६७६८. सुक्तिमुक्ताबसी माथा—सुन्दर। पत्रस०४४। झा०१३४४ इत्रः। माथा-हिन्दी पद्य। विषय—मुभाषित। र०काल ४। ले० काल ४। पूर्णः। बेष्टनस०१२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वंदी।

६७६६. सूर्तिसमुक्तावली टीका —  $\times$  । पत्र स० २-२४ । भाषा — सरकृत । विषय — सुमाषित । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । सपूर्ण । बेष्टन सं० ७५३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर भरनपुर ।

६७७०. प्रतिसं० २ । पत्र स० २२ । ध्रा० ६ / ४४ इच्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल् ४ । ले० काल स० १८३६ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्णः । बेष्टन स० ६८४ । प्राप्ति स्थान – भ० दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

**६७७२. सुक्ति मुक्तावली वचनिका**— $\times$  । पत्र स० ४३। म्रा० १० $^1$  $\times$ ६२ इण्च । माषा— सम्ब्रन हिन्दी । विषय—मुभाषित । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १६४५ । पूर्ग । वेपून स० १८८ । **प्राप्ति** स्थान—विः जैन पार्कनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६७७३. सूक्तिसंग्रह—  $\times$ । पत्रस० १०। भाषा—संस्कृत । विषय — नुभाषित । २०काल $\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्ण । वप्रन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

६७७४: सुक्ति संग्रह—  $\times$  । पत्रस० २७ । घा॰ १० $\times$ ६ इख । भाषा-सास्कृत । विषय— सुभाषित । २०काल  $\times$  । ल० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २२७-१२२ । प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन मन्दिर कीटडियों का उग्रपुर ।

६७७५. संबोध पंचासिका -  $\times$  । पत्र स० १३। घा० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{3}$  हज । भाषा — प्राकृत । विषय — सुभाषित । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर बोरसली, कोटा ।

६७७६. संबोध संलारानु दूहा — बीरचन्व । पत्रस० ६। ब्रा० १४४; इञ्च। आषा— हिन्दी। विषय-सुभाषित। र०काल ४। ले०काल सं०१८३७ कार्तिक बुदी ११। पूर्ण। बेष्टनसं०७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा। ६७७७. हरियाली छप्यय—गंग। पत्र सं० १। घा० ६ $\frac{1}{7} \times Y_0^2$  इंच। भाषा-हिस्दी पद्य। विषय—सुभाषित। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन सं० १०६-५०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ह गरपुर।

६७७८. हितोपदेश—वाजिद। पत्रस० १-२१। प्रा० ११४४ इन्छ। भाषा—हिन्दी प्रषः । विषय—नीति ब्राह्म। र० काल ४ । से०काल ४ । ब्रपूर्ण। वेष्टन सं० २४४ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दवनाना (ब्रंदी)।

६७७६. हितोपदेश—विष्णुशर्मा। पत्र सं० ३-६०। प्रा० १० $\frac{3}{7}$  $\times$ ५ इञ्च। आया—सस्कृत । विषय-नीति एथ सुभाषित । र०काल  $\times$ । ले०काल सं० १६४२। प्रपूर्ण । बेष्टन सं० ३६०। प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृंदी) ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है।

६७८०. प्रति सं०२ । पत्रसं०५४ । झा० ६३ $\times$ ४ ६२व । साथा-संस्कृत । विषय कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल । धपूर्ण । बेष्टनसं० २०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बूँदी ।

६७६**१. हितोपदेश चौपई**—  $\times$  । **पत्रस**० १। **धा०** १२ ४ इचा आया -हिन्दी गया। विषय-सुभाषित । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्ट्रन स०१५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सहिर पावर्षेनाथ चौगान बदी ।

# विषय--स्तोत्र साहित्य

६७६२. प्रकलंकाष्टक प्रकलंकदेव । पत्र सं० ४-६। प्रा॰ १२ $\times$ ४ इन्त्र । भाव:-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ४५५/४३७२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन संभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - एक प्रति वेष्ट्रन स० ४५६/४३८ मे और है।

६७८३ प्रतिसं०२। पत्रस०२। ग्रा०१३१ ४६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०४१० । प्राप्ति स्थान---दि०जैन मन्दिरलक्कर, जबपुर ।

६७६४. प्रतिसं० ३ । पत्र स०३। प्रेग० ६४५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय स्तोत्र । र० कालimes । ले० कालimes । पूर्ए । बेष्टन सं० १२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिरबोरसली कोटा ।

६७८५. ग्रकलंकाष्टक भाषा---जयवन्य छाबदा। पत्र स०११ । ग्रा०१११ ४८ इ.च. भाषा हिन्दी पद्य । विषय -स्तोत्र । र०काल ४ । ले० काल सं०१६२६ फाल्गुस मुदी १४ । पूर्ण । वेट्टत स०३६-३२ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन पनायती मन्दिर क्रलवर ।

६७६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६ । ले०काल स० १६३० । पूर्एं । वेष्टन सं० ३७-३२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर धलवर ।

६७६७. श्रकलंकाष्टक माषा — सवामुखजी कासलीवाल । पत्र स०१४ । माषा – हिन्दी। विषय – स्तोत्र । र०काल स०१६१४ सावन मुटी २ । ले० काल म०१६६२ । पूर्णा वेष्टन स०४२४ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६७८८. प्रति सं०२ । पत्र सं०१० । लेश्काल 🔀 । पूर्णं । वेष्टन सं० ४२५ । प्रास्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

६७८६. प्रतिसं० ३ । पत्र स०६ । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं०४२६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-प्यारेलाल व्यास ने कठ्मर में प्रतिलिपि की थी।

६७६०. प्रतिसंo ४ । पत्र स०१६ । ग्रा० द×६५६चा । से∘काच स०१६३ स्रावस सुदी१३ । पूर्सा वेष्टन स०६५७ । प्राप्ति स्चान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

६७६१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । प्रा० १२ $\frac{1}{2} \times \mathbb{V}^{\frac{1}{2}}$  इत्य । ले०काल स० १६२६ श्रावस्स सुदी ११ । पूर्स । बेहन सं० ३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती संदिर बयाना ।

विशेष - सं॰ १६३२ में हिण्डौन मे प्रतिलिपि करवाकर यहां मन्दिर में चढाया था।

६७६२, प्रतिसं०६ । पत्रसं०१६ । प्रा०११×५३ ६ च । से क्कास × । प्रपूर्ण। बेहन सं०११ । प्राप्तिस स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर दीवानजीकामा । ६७६३. प्रति सं०७ । पत्र सं०६ । ग्रा०१३  $\times$  ७ $^3$  इश्व । ले०काल स० १६४१ कार्तिक ब्रुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं०४३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

६७६४. **ग्रकलंकदेव स्तोत्र भाषा—चंपालाल बागडिया** । पत्रसं० ४४ । ग्रा० १०१ ४ ७ इश्वा । भाषा-हिन्दी पद्या विषय-स्तोत्र । र०काल सं० १६१३ । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्यनाथः सन्तिर चोगान बंदी ।

विशेष—परमतलंडिनी नामा टीका है । श्री चपालाल जी बागडिया फालरा पाटन के रहते बाले थे ।

प्रारम्म--

श्री परमान्म प्रगम्य करि प्रगण्ड श्री जिनदेव वानि । ग्रंथ रहित सदगुरु नमी रत्नत्रय भ्रमलान । श्री भ्रमलक देव मुनीमण्द मैं निमहो सिरिनाय । ज्ञानोद्योतन प्रथमुम कह कथा मुखदाय ॥

ग्रस्तिय ---

श्रावण कृष्णा सुतीज रिव नयन बहा ग्रहचन्द्र । पूरण टीका स्तोत्र की कृत ग्रकलक द्विजेन्द्र ।। सिद्ध सूरि पाठक बहुरि सर्व साधु जिनवानि । श्रष्ट जिन्तम् नमी सदा मगलकारि ग्रमलान ।

मारहर गाम में पाण्यनाथ चैत्यालय में विरधीचंद्र ने प्रतिलिप की थी।

६७६**५. प्रजितसांति स्तवन** —निव्येस्म । पत्र स $\times$ । ब्रा॰ ६ $\times$ ४ $_{g}^{3}$  दख । भाषा प्राकृत । वियय-स्तोत्र । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १७६० प्रासोत्र बुदी २ । पूर्ण । वेय्यन स १४२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)

६७६६. **प्रजित शांति स्तवन**  $-\times$  । पत्रस $\circ$  १ आ हं १० $^{1}_{2}$  ४  $^{1}_{3}$  इख । भाषा-सम्ब्रत । विषय - रवं ११ । उपलिद स्थान - ४० दि० जैन मन्दिर फ्रजंगेर ।

विशेष-दितीय एवं सोलहवें तीर्थंकर ग्राजितनाथ और शांतिनाथ की स्तृति है।

६७६७. प्रजित शांति स्तवन---  $\times$  । पत्रतः ३ । ग्राः १० $\times$ ४१ इ.च । भाषा — प्राकृत । विषय —स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन २०४६७ । प्राप्ति स्थान— भ० वि० जैन मन्दिर प्रजीर ।

६७६८. **प्रट्ठोतरी स्तोत्र विधि**  $\times$  । पत्र स०४ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । धपूर्ण । बेप्टन स० ६२४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

६७६**६. सन्यात्मोपयोगिनी स्तुति—महिमाप्रम सूरि** ।पत्र स०४।म्रा० ११४४ इश्व । माषा—हिन्दी (पदा) । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ ।ले०काल ४ ।पूर्णं ।वेष्टन स० ५० ।**प्राप्ति** स्थान—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयदुर । ६८००. **श्वपराजित संत्र साधमिका** — × । पत्रसं० १ । झा० १२ × ५१ इखा । आषा — सस्हत । विषय — स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेहृत सं० ४३१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन महिर लक्कर, जयपुर।

६**८०१. ग्रपामाजंन स्तोत्र**— × । पत्र स०१२ । ग्रा॰ द<sup>7</sup>ू ४५<sup>3</sup> इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स०१७७६ । पूर्ण । वे० म०२३३-६२ । **प्राप्ति स्थान**— वि• जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

६००२. **प्रांतजञ्काय कुल** $-- \times 1$  पत्रस०२ । भाषा---प्रा<u>ह</u>त । विषय----स्तोत्र । र०काल $\times$  । ते॰काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रन स०६४७ । <mark>प्राप्ति स्थान</mark>----दि० जैन पंचायती मदिर प्ररतपुर ।

६८०**३. प्रार्गत श्रायक सधि-श्रीसार** । पत्र स०१८ । ब्रा०१०३ 🗙 ४३ इच्च । भाषा—हिन्दी गुजराती । विषय-स्तवन । र०काल स०१६६७ । ते०काल स०१६३० श्रावण मृदी३ । पूर्ण । बेहुन स०१२ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन मन्दिर बीरमली कोटा।

#### प्रारम्भ

वर्द्ध मान जिनवर चरण नमता नव निधि होई। सधि करु आगादनी, सभिनज्यो वह कोई॥१॥

#### ग्रन्तिम---

मवत् रिमि सिथिरम सित तिरापुरी मई कीयो चौमात । ए सवव कीयो रिलया मगो, सुग्र माथाई उल्हास ॥२॥ रतन हरप गुरु वाचक साहरा हेमनस्य सुबकार । हेमकीरित गरु वायवनै कहड प्रमणक मनि श्रीसार ॥१२॥

इति श्री ग्रागाद श्रावक सधि संपूर्ण ।

६८०**४. प्राविजिन स्तवन**—कल्या<mark>स्य सागर</mark>।पत्रस०४। प्राया-हिन्दी। विषय-स्तत्रन। ।र०काल × । ले०काल × । पूर्सा वेष्टनसं० ७२१ । **प्राप्ति स्थान**-दि०जेन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६८०**५. ग्रावित्य हृदय स्तोत्र**  $-\times$  । पत्र स० ८ । मा० १०३ ४ ६५ इत्था भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  नि० कान म० ११२८ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवन चेतनदास पुरानी डीग ।

६८०६. द्वादिनाथ मंगल—नयनसुस्त imes 1 पत्र त० ६। त्रा० ११imes 2६८ २। माषा—हिंदी विषय—स्तोत्र । र०काल imes 1 ने०काल imes 1 पूर्ण । बेष्टनसं० २४६। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष --- ग्रन्तिम भाग निम्न प्रकार है---

पादि जिन तीरय मुनो तिसके प्रमुखवारि चिरित्त ध्यायो। भाग भव्यो नव जोग मिस्यो जगरामधी प्रकृतीके मुनायो। वो उपवेश लगो हमे कुमुसभाव परे जीव में ठहरायो। कहे तेंगा मुख्य मुनो मिंब होय श्री प्रात्निया जो को मगल गायो। 1,5511 ६८०७. **ग्राविनाय स्तवन**—मेहुउ।पत्र सं०३। ग्रा० ८ $\frac{2}{3} \times Y$  इङ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—स्तोत्र। र**्कास स**०१४६६। ले०काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्ट्रन स०७६। **प्राप्तिस्थान**—विश् र्जन मन्दिर दवलाना (वंदी)।

विशेच-मृति श्री माशिक्य उदय वाचनार्थ । राउपूर मंडन श्री ग्रादिनाथ स्तवन ।

६८० स. **सादिनाय स्तुति**— ×। पत्र सं० २। सा० १० × ५ इच । भाषा—हिसी (पदा)। विषय-स्तवन । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । बैद्धनसं० ३१३। **प्रान्ति स्थान**— ४० दि० जैन मन्दिर क्राजेप

विशेष-मगवान मादिनाथ की स्तुति है।

६८०६. **प्राविनाथ स्तोत्र** । पत्रस० १३ । घा० १० 🗙 ४ इञ्च । माथा-हिस्सी । विषय-स्तोत्र । र०काल 🗴 । ले०काल स० १६०२ मादवा बुदो ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २१० । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मदिर प्रमिनव्दन स्वाभी बंदी ।

विशेष — इति श्री कषुं जयाशीक श्री नाभिराय कुलावतस श्री युगादिदेवस्थयोश्य भव. स्नवन सुपूर्ण मिति मई भवत् ॥ श्री श्रमण समस्यान्त्रवर नदत् । सः १६०२ वर्ष भारवा बुदि ११ सोम विने मन्नाइशीयपछे पुज्य महारक श्री पद्मसागर सुरि तत्यहें श्री नयकीति तत्यहें श्री महीगुन्दर सुरि तत्यहार्स सन्तर विजयसान श्री भ समस्यागर वा श्री जयसागर लिखत श्राविका सही एटनार्थ ।

६ द १० द्वानन्द लहरी—शंकराचार्य । पत्रसं० ३ । ह्या०  $- \epsilon^2 \times \epsilon$  इच्छ । भाषा—स स्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २०७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहन (टॉक)

६०११. झाराधना— $\times$ । पत्रकं॰ ५। झा० ११  $\times$  ४१ इ.स. भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । क्षे०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन प्रथवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—टब्बाटीका सहित है।

६८**१२, प्राहार पवलार्ग।** पत्रस॰ ६। ग्रा०१०४४} इञ्च। भाषा प्राहत । निषय— स्त्रोत । र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्ट्रन स० ४८८। प्रास्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

६त**१३. उपस**र्गहर स्तोत्र —  $\times$  । पन ग०१। प्रा० १०%  $\times$ ४ ६ च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ४४१। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६८१४. उपसागंहर स्तोत्र--- $\times$ । पत्र ग०१। ग्रा०१०  $\times$  ४१ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेटन सं० ३ । प्राप्तिः स्थान —िद० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६८ १४. एकालरी छंद $-\times$  । पत्रतः ३ । प्रा॰ ६  $\times$  ५ $^1_1$  इन्द्रा । माण हिन्दी । विषय-स्तीत्र । रुकाल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेहुनसं॰ २०२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन प्रप्रवाल मंदिर उदयपुर ।

**६८१६. एकावसी स्तुति—गुराहर्ष।** पत्रसं०१। ग्रा०१० ×४) इच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र०काल ×। ले**०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन स० २२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर दवलाना (वंदी)

६६१७. एकीमाव स्तोत्र—वाविराज । पत्रस०६ । सा० १०×४ ६ व । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रुकाल × । ले० काल × । पूर्ण । वेहनसं० ६०६ । प्राप्ति स्थान – मर्शद० जैन मन्दिर कमेरा

६ स् १८ त. प्रतिसं० २ । पत्र स०७ । स्रा०१ $^2_7 \times ^2_7$  इ.च. । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन स०१४२७ । प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष - प्रति सस्कृत टीका सहित है।

६८१६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४ । ग्रा० १० ४ ४ है इच । ले०काल 🗴 । पूर्गं। बेहनसं० ४६६ । प्राप्ति स्थान भ० दि० जैन मदिर श्रजमेरः।

६८२०. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४ । ग्रा० १०३ ४ इत्था । ले०काल 🗴 । पूर्गा । बेष्टन सं० ८५ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुदी ।

६८२१. प्रतिस०५ । । पत्रस०२३ । आर्थ १०}४४ इच्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दीगद्याः लेककाल ४ । पूर्वाः वेष्टन स०८६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

६८२२. प्रतिसं०६ । पत्रस०८ । म्रा०११×४ ड्रैडचा लेक्सल स०१६४२ । पूर्ण। वेप्टन स०२६ । प्राप्ति स्थान— दि०जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी, बूदी ।

६८२३ प्रति सं०७। पत्रस०८ । ग्रा०१०१ 🗙 ४ इच। ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टुनस०५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८२**४. प्रति स**ु ८ । पत्रस**ु**४ । आ ० १०१ ४ ४ हुँ इखा सापा-सस्कृत । ले**०काल** ४ । पूर्ण । वेष्टत सु० ६ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है।

६८२५. प्रति सं० २ । पत्रस० ४ । धा० १० ४ ४है इश्व । ले०काल ४ । पूर्ए । बेहन स० १७५-५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाव्यंनाय मन्दिर इत्यरगढ (कोटा) ।

विशेषा निर्वास काण्ड गाथाभीदीहुई है।

६८२७. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० १० । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूरा । बेहुनसं० १७५ १४० । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर, नेदिनाय टोडारायसिंह ( टॉक ) ।

६८२६. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ७ । मा० ११ × ५ दे इन्त्र । ले० काल स० १७४४ । पूर्यं । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६८२६. प्रतिसं० १३ । पत्रस० २ । ग्रा० १३  $\frac{1}{6}$  $\times$ ६ इला । से०काल  $\times$  । वेष्टन सं० ४२१ । प्राप्ति स्थान—जैन मन्दिर लक्षकर, जयपुर ।

६ द ३० **एको माय स्तोत्र टीका**  $\times$  । पत्र स०७। ब्रा० ६ $^3_7 \times$ ६ $^3_7$  इन्छ। भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०काल  $\times$  । तै०काल सं०१६३२ प्राप्तोज सुदी १०। पूर्ण। बेष्टन स०१५६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर गेलाबाटी (सीकर)।

६८३१: एकोमाव स्तोत्र टीका  $\times$  । पत्रतः १६ । प्राः १०३ $\times$ ४२ इत्थः। भाषा —सस्कृत विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । वेष्टनसः ३६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

६८३२. प्रतिसं० २ । पत्रम० ८ । म्रा० ११ $\times$ ५२ इश्व । ले० काल  $\times$  । वेष्टन स० ३१४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

विशेष-श्लोक १७ तक की राजस्थानी भाषा टीका सहित है।

६८३३. एकीभाव स्तोत्र माषा— $\times$ । पत्र स०११। म्रा०१३ $\times$ ५२व । भाषा हिन्दी प०। विषय-स्तोत्र । ७०कान  $\times$ । ले०काल स०१७६४ मगसिर सुदी ११। पूर्णः। वेग्टन स०२६। प्राप्ति स्थान—द० जैन मदिर ग्रादिनाय, बूदी।

विशेष-कर्मप्रकृतिविधान एव सहस्रनाम भाषा भी है।

६८३४, **एकोभाव स्तोत्र भाषा**— X । पत्र स० ३१ । भाषा - हिन्दी । विषय— स्तोत्र । र**०काल** X । ले० काल X । पूर्णा । वेष्ट्रन स० ४११-१४४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रदिश कोहांड्यों का उनस्पर ।

विशेष- सबोध पचासिका भाषा भी है।

६८३५ एकोभाव स्तोत्र भाषा—भूवच्यास । पत्र मं०४। ब्रा०१०४६ इत् । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । २०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णा । वेष्टन स०७०। प्राप्ति स्थान—हिर्जने मन्दिर पाष्ट्रेनाय चौगान, बृदी ।

६८३६. एकीभाव स्तोत्र वृत्ति--नागचन्द्र सूरि । पत्रस० ८ । प्रा० १० 🗙 ४३ इत्य । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल 🗴 । ने०काल 🗡 । वेष्टनसं० ३८५ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन सन्दिर लक्कर, वयपुर ।

६८३७. ऋहि नवकार यत्र स्तोत्र $-\times$ । पत्रस०१। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना-काल $\times$ । ललनकाल $\times$ । पूर्ण । वेष्टन म०७११। प्राप्ति स्थान—पंचायती दि० जैन सन्दिर, सरतपुर ।

६८३८. ऋषभवेव स्तवन—रत्निस्त मुनि । पत्र स० १ । घा० १० $\times$ ४ इच । माषा—हिन्दी । विषय—रतृति । र०काल स० १६६६ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स० २८८ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर, दवलाना (बूदी) ।

विशेष-विकमपुर मे ग्रन्थ रचना हुई थी।

६८३६. ऋषिमण्डल स्तोत्र—गौतम स्वामी । पत्र सं०१६ । पा०६२ ४ ६ खा । प्रावा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रेज्जात ४ । लेज्जाल स०१८६३ । पूर्णं । वेष्ट्रलस०२६६ । प्राप्तिः स्वात—दि० जैन मन्दिर गावंताष चौगान, बृदी ।

विशेष-प्रति टब्बा ठीका सहित है। उशियारे मे प्रतिलिपि हुई थी।

६८४०. प्रति सं०२ । पत्रस०७ । घा०१३ ४७ हुइन्था । ले०काल хापूर्णा । वेष्टन स० ४२ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जन मन्दिर पाइर्थनाय चौगान, बुदी ।

६ क**ं**र. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४ । घा० ५ $\frac{2}{3}$   $\times$  $\frac{1}{3}$  इख । प्राया सस्कृत । विषय—स्तोत्र । **१०काल**  $\times$  । ले० काल स० १८६० भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६६ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मदिर, अजसर ।

६८४२, प्रतिसं०४ । पत्रस०२ । ग्रा०१०×४२ दश्च । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१८८ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

६६४३. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४ । घा० ५ $\frac{1}{8}$ ४३ हुआः भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७६४ माध बुदी ४ । पूर्णः । बेष्टन स० १०३७ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर, प्रजमेर ।

विशेष-- लिखित सिकन्दरपुर मध्ये ।

६८४४. प्रतिसं० ६ । पत्रस०६ । खा० ११ $\times$ ४६ देव । भाषा—सन्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० २४३ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन खबबाल मदिर, उदयपुर ।

६८४**५. प्रतिसं० ७** । पत्रस० ७ । मापा-सस्कृत । विषय स्तात्र । र०काल ४ । ले०काल स० १७२५ माह सुरी ११ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४१६-१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का ह्रगरपुर ।

विशेष — देवगढ मध्ये श्री मल्लिनाथ चैत्यालये श्री मूल सम्रे नंद्याम्नाये भ० णुभचन्दजी तदाम्नापे अरु जसराजजी ब्रह्म मध्ये जिल्लित ।

क्षरं ६. प्रतिसं० ६ । यत्र स० ४ । प्राः० १० $\frac{1}{2}$  ४ $\frac{1}{2}$  ६७ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्णा । बेप्टन स० ६ । प्राप्ति स्थान—खण्डेयवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

६ तथं ७. प्रतिसं ० ६ । पत्र स० ६ । प्रा०१० $\frac{1}{2}$  ४ ६ च । भाषा-सम्ब्रत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । वे ० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १७४/४६ । प्राप्ति स्थान—पार्वनाथ दि० जैन मदिर, इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष-इसमें ४४ छन्द है तथा मुनि दयाविमल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

६ न ४६. प्रस्तरिका पाश्चनाथ स्तवन—लावध्य समय । पत्र स॰ ३। प्रा॰ १०३४४३ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २६०। प्राप्ति स्थान—(द० जैन मन्दिर, दबलाना (बूदी) ।

क्षेत्र ५०. करुगाष्टक—पद्मनित्व । पत्र सं० १ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ $\frac{3}{2}$  इञ्च। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टत स० ४२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सक्कर, जयपूर ।

६ स्प्रशः कर्सस्तवस्तीत्र—  $\times$ । पत्रसः ६। माः १० $\times$ ४] इंच। भाषा— प्राकृतः। विषय-स्तोत्रः। र०कालः  $\times$ । ले०कालः  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन सं०१३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवालः मन्दिर उदयपरः।

विशेष--प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

६८%२. कल्यार्ग कल्यद्र म—चृन्दावन । पत्र स॰ २३ । भाषा -हिन्दी । विषय -स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले०काल १९६४ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ११२ । प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन पचायती मन्दिर मरतपुर।

विशेष-संकट हरए। वीनती भी है।

६ त्र ५३ कल्यारामियर स्तवनाव दूरि — गुरूरत्सूरि । पत्र स०१२ । आ०६५ ५५ ६ व्या । सावा – सस्कृत । विषय – स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल १६३२ काती बुदी ५ । पूर्णं । बेप्टन सं०१५३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर फनेहपुर गेलाबाटी (सीकर) ।

६८५४. कत्याम् मन्दिर स्तोत्र--कुमुदबन्द्र । पत्रसः ६। घा० १० ४४६ ख । भाषा-सस्कृत । विषय--स्तोत्र । र०काल ४ । ते०काल ४। पूर्णं । वेष्ट्रन स०६०४। प्राप्ति स्थान--- न०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--प्रति टब्बा टीका सहित है।

६८५५. ¦प्रति स० २ । पत्रस० १६ । झा० १०×४ है इञ्च । ले० काल स० १७०० । पूर्ण । वेष्टन स० ७०४ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बाटीका सहित है। पडित कल्याए। सागर ने श्रजीर्एगढ (श्रजभेर) नगर मे प्रतिकिथि की थी।

६८५६. प्रतिसं० ३ । पत्रतः २ । घा० १० $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इञ्च । ते०कात  $\times$  । पूर्णः। बेष्टनस० २३३ । प्राप्ति स्थान—भ० द० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६ स.५७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १४ । मा० १० ४ ४ , इंच । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टन स० २५३ । प्राप्ति स्थान---न० दि० जैन मन्दिर मजमेर ।

६८५८. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४ । घा० १०४५ इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० १६५ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

६८४६. प्रति सं० ६ । पत्रत० ६ । ग्रा० ६४४६चा । ले०काल स०१८२३ प्रथम चैत्र सुदी १० । पूर्ण । बेप्टन स०४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—-प्रतिहिन्दी टब्बा टीका सहित है। प्रतिपत्र में ६ पक्तिया एवं प्रति पक्ति में ३१ भक्तर हैं।

सबत १८२७ मे प्रति मंदिर में चढाई गई थी।

६ ६ ६०. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ११ । झा० ११  $\times$  ५ इंच । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स० १६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर झादिनाथ बूदी ।

६८६१. प्रतिसं**०८ ।** पत्रस०४ । घा०११४४ इला । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नागदी बुंधी ।

बिशेष-प्रति प्राचीन है एवं संस्कृत टीका सहित है।

विशेष - मल के नीचे हिन्दी टीका है।

६८६२. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४ । आ० १० ×४ इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)

६८६२. प्रति सं० १०। पत्र स०४। प्रा० १०×४३ इश्व । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६ स ६४. प्रति स० ११ । पत्रस० २४ । ग्रा० सimes६ इखा । लेक्सल स० १८६६ चैत्र बुदी ३ । पूर्णं । वेष्टन स० २०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष -- प० गुमानीराम ने बसतपुर में श्री मुमेरसिंहजी के राज्य में मिश्र रामनाथ के पास पठनार्थ लिखा था।

६८६५. प्रतिसं० १२ । पत्र स०२ । झा०८४६ इन्छ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६८६६. प्रति सं० १३ । पत्र स० ६ । घा० १०imes३ इ.ख । ले० काल स० १८१४ वैद्याख सुदी १३ । पूर्स । वेग्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडाबीस पथी दौमा ।

विशेष --- दयाराम ने देवपुरी मे प्रतिलिपि की थी।

६८६७. प्रतिसं० १४ । पत्र स०३ । ग्रा० १०×४ इञ्च । ले०काल 🗙 । ग्रपूर्ण । बेटन स० १०१-६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष--- ग्रागेके पत्र नहीं है।

६८६८. प्रतिसं०१४ । पत्र स०४ । आ०१०४४ $\frac{3}{4}$  इन्था ले० काल imes । पूर्ण। बेष्टन स०११४–६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर बडाबीसपथी दौना।

विशेष --सस्कृत टीका सहित है पुण्यसागर गांगुकृत ।

स्तोत्र को सिद्धसेन दिवाकर द्वारा रचित लिखा हुमा है।

६८६**६. प्रतिसं० १६**। पत्रसं० १। म्रा० १०×४ इश्वा लेक्काल × । पूर्णा वेष्टन स० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवायती मन्दिर कामा ।

विशेष-प्रति प्राचीन है तथा कमलप्रभ सुरि कृत संस्कृत टीका सहित है।

६८७०. प्रतिसं० १७ । पत्रसं० ४ । आ० ११ ४४ इ.च. । ले•काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टन स० ४२। प्राप्ति स्थान — दि० जैन खडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

६८७१. प्रतिसं० १८ । पत्र सं० ४। ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ५०७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर । विशेष --- प्रति सटीक है ।

६८७२. प्रति सं० १६ । पत्रसं० ३ । त्रे० काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ७१३ । प्राप्तिः स्थान – दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

६ स.७३. प्रति सं० २०। पत्र सं० ६। फ्रा॰  $\xi_1^2 \times \xi_2^2$  इश्वः। ले० काल  $\times$ ः। वेष्टन सं० ६७७। प्राप्ति स्थानः  $\rightarrow$ दि०जैन मन्दिर लक्करः जयपरः।

६ स.७४ . प्रति सं० २१ । पत्र स०७ । मा०११६ ४ ४ इच्छा । ले० काल स०१७४७ । पूर्ण । वेष्टनसं०३७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लब्कर, जयपर ।

विशेष-प्रति व्याख्या सहित है।

६८७**५. प्रति सं**०२२ । पत्र स०४ । झा०१०×४इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०

३७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर । विशेष — २६ से भागे के श्लोक नही है ।

६८७६. प्रति सं०२३ । पत्रस०३ । प्रा०१३ $\{ \times \in \mathbb{R}^n : \hat{\mathbb{R}}^n \in \times : \mathbb{Q}^n : \hat{\mathbb{Q}}^n : \hat{\mathbb{Q}}^n$ 

६८७७, प्रतिसं० २४ । पत्र स० ५ । फ्रा० १० $^3_7 \times ^3_7$  इश्वः । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । बेस्टनः स० ३६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्करः जयपर ।

६८७६, **प्रतिसं० २५** । पत्रस० २ । द्या० १० $\times$ ४ है इस्त्र । सापा-सम्क्रत । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पुर्ण । वेकन म० १६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८७६. प्रतिसं०२६। पत्रस०१०। प्रा०१० $\times$ ४६७४। भाषा-सम्ब्रत, हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०कात  $\times$ । ले० कात  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन स०२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैनमन्दिर बबलान (बढी)

विशेष-प्रति हिन्दी ग्रर्थ सहित है।

६८६०. कस्यारण मन्दिर स्तोत्र टीका – हथंकीति । पत्र स०२१ । आ० ५ $\frac{1}{2}$  ४ $\frac{3}{2}$  इन्छ । भाषा — मन्द्रत । विषय — स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ते० काल स०१७१७ ब्रासोज सुदी ४ । बेष्टुन स०२६४ । प्राप्ति स्थात - दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपर ।

६८८२ प्रतिसं० २ । पत्र स० १६ । प्रा० १०३ $\times$ ४ $\frac{3}{9}$  ६%। ले० काल स० १६२७ कार्तिक सुदी १४ । यूर्ण । वेष्टन स० ३८६ । प्राप्ति स्थान —िव० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-वध केणरीसिह न स्वय लिखी थी।

६८६२. कल्यास्स सन्दिर स्तोत्र टीका—चित्रिबर्द्धन । पत्र सस्या ६ । ग्रा० १० $\frac{1}{2} \times 4$  ६ व । नापा - न्यन्त्रत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स० १८६ । प्रास्ति स्थान — (द० जैन मन्दिर देवलाना (बूंदी)

६८६३. कल्या**रा मन्दिर स्तोत्र टीका**— imes 1 पत्र सं०७। झा० १०imes १, इञ्च। माषा-सस्कृतः विषय-स्तोत्र । २० काल imes। वे०काल imes। पूर्णे । वेष्टन स**०१६०। प्राप्ति स्थान—२०** टिंठ जीन मन्दिर प्रमोत ६८६४. कल्यास्यमिन्दरस्तोत्र टीका—  $\times$  । पत्रस $\circ$  २-१ $\circ$  । छा $\circ$  ९ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  दश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल स $\circ$ १७४५ माह सुवी १२ । प्रपूर्ण । बेष्टनसं $\circ$ १८४ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन महिर दबलाना (बुंदी)

विशेष--हिण्डोली नगरे लिखित ।

६८६५. करवासमिन्दर स्तीत्र टीका  $--\times$ । पत्र स० २०। ग्रा०  $-\frac{1}{6}\times \frac{1}{6}$  स्था भाषा-सस्त्रत । विषय स्तीत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७५१ सायस्य बुदी ७। पूर्स् । बेहन स० २२६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मदिर दबलाना (बुदी) ।

६ तद ६. कल्या समित्वर स्तोत्र टीका $-\times$ । पत्रस० २६१। प्राः० ६ $\times$ ५ १व । प्रापः हिस्दी नद्यः। विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन स॰ २६१। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर ग्रीमनस्त स्वामी, व दी।

विशेष--पत्र १६ में ग्रागे द्रव्य संग्रह की टीका भी हिन्दी में है।

६८७७ कल्यास्प्रसन्दिर स्तोत्र टीका—  $\times$  । पत्र स०३। ग्रा०,१० $\times$  ४ $^{\circ}_{i}$  इख । भ्रापा-सरकृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल स० $\times$  । ने०काल स० $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०१८७–७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटटियों का हु गण्यर ।

विशेष---हिन्दी टीका सहित है।

६८८. करु**याःगमदिर भाषा — बनारसीदास** । पत्रस**० २ । प्रा० २** ${}^2_i \times$ १ इश्व । भाषा — हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ११२ । **प्राप्ति स्थान** — दि॰ जैन गरिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--- ग्रत में बनारसीदास कृत तेरह काठिया भी दिया है।

६८८६. कल्यासमिदिर स्तोत्र भाषा—  $\times$  । पत्र स०१। आ०१० $\forall$  ५६६० । भाषा— मग्हत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । ए० काल  $\times$  । ले० काल स०१८५५ कार्तिक बुदी १२। पूर्ण । वेष्टन स०२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा ।

। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा
 विशेष —तन्द्रयाम में लिखा गया था।

६८६०, कल्यारणमन्दिर स्तोत्र भाषा—ग्रल्यराज श्रीमाल । पत्रस० २१ । ग्रा० ११.४ $\chi^2$  इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल स०  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० २३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६ स्ट. १. प्रति सं०२ । पत्रस०२२ । आ० १२ $\times$ ४  $\frac{1}{4}$  इच्छा। ले० काल स० १७२२ चैत्र बदी ४ । पूर्णा। वेस्टन स०१० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर बडाबीस पथी, दौसा।

६८६२ प्रति सं०३ । पत्रसं० ३३ । ग्रा०१० $^2$  imes ४ $^2$  इज्ज्ञ । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टत सं०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी बृंदी ।

ः ६ म ६३. कस्यारामित्र स्तोत्र वचिनिका—पं० मोहनलास । पत्रतः ४० । प्रा० म $^2$  $\times \times_g^2$  इच्च । भाषा —हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल स० १६२२ कार्तिक बुदी १३ । ले० काल स० १६६५ सावन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१३ । प्राप्ति स्थान—स० दि० लेत मन्दिर प्रजार ।

६८६४. **करवास्मानिदर स्तोत्र वृत्ति—वेवतिलक ।** पत्र सं० १२ । मापा-सस्कृत । विषय-स्तोत्रं । रचनाकाल 🗴 । लेखनकाल १७६० । पूर्णं । वेष्टनसं० ७२४ । **प्राप्ति स्थान—**पत्रायती दि० जैन मदिर, मरतपुर ।

विशेष--टोंक मे लिपि हुई थी।

६८६४. कर्त्यारण मन्तिर स्तोत्र वृत्ति — गुरुदत्त । पत्र स० २० । धा० १२  $\times$  ४ है इत्त्र । प्रापा— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १६४० मगसिर सुदी १४ । वेष्टन सं० ३८७ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्मर, जयपर ।

६८६६. कस्यारा मन्दिर स्तीत्र वृत्ति—नागचन्द्र सूरि । पत्र स० १६ । घा० ११३ ४४ छै इन्छ । भाषा—सस्कृतं । विषय--स्तीत्र । रक्ताल × । लेक्बाल स० १६०४ वैद्याल बुदी ३ । वेष्टन स० ३८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, ज्ययर ।

६ द ६७ कल्यास मन्दिर स्तोत्र बृक्ति  $\times$  । पत्र सं० २२ । ग्रा० ११  $\times$  ४ $^1_2$  इच । मापा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । भ्रपूर्ण । वेष्टत स० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब दी) ।

विशेष--- २२ से धागे के पत्र नहीं है।

६८६८. क्षेत्रपालाध्टक —  $\times$  । पत्र स $\circ$  ६। प्रा $\circ$  १० $^1$   $\times$  ४ $^1$  ६ च । नाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  १३३१ । प्राप्ति स्थान-भ $\circ$  दि $\circ$  जैन मस्दिर, प्रजनेर ।

६८६. कृष्ण्यासिमद्र सङ्काय-रतर्नीसह । पत्र स०१ । ग्रा० १०३  $\times$  ४५ इच । भ्राथा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णा । वेण्टन स० २२१ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

६००. गर्भवडारचक्र—देवनिद । पत्र स० ५ । धा० स् $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इ.च. भाषा-सरकृत । विषय-स्तोतः । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १६३७ । पूर्णः । वेष्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर, प्रजमेर ।

६६०**१. प्रतिसं०**२ । पत्रस०३ । ग्रा०११ $\times$ ४ हे इत्य । ले०काल  $\times$  । पूर्ण ।वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मदिर सजमेर ।

६९०२. प्रति स० ३ । पत्रस० १४ । घा० १० $^1_1$  $\times$ ६ इञ्च । ले०काल $\times$  । घपूर्ण । बेष्टनसं० २७ । प्राप्तिः स्थान $\rightarrow$ वि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

६६०**२. प्रतिसं**०.४। पत्र स०४ । घा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इचा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुनसं० ८७-४६ । प्रास्ति स्थान—दि० जॅन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

६६०४. गीत भोरिवर--जयदेव । पत्रसः ४-३७ । याः १२४६ दश्व । माया-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल सः १७१७ । सपूर्ण । बेष्टन सं० ११० । प्राप्तिः स्थान--दि० जैन मन्दिर बोरसती कोटा । ६८०%. पुरामाला — ऋषि जयमल्ल । पत्र सं० १ । प्राः । ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ इख । भाषा –हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । के०काल  $\times$  । पुरां । वेष्ट्रन सं० २६१ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन सन्तिर पार्थनाय स्न्दरगढ (कोटा) ।

विशेष---निम्न पाठ घौर है।

महाबीर जिनवृद्धि स्तवन	समयसुन्दर
चित संभू की सज्भाय	×
 स्तुति	भूघरदास
नवकार सज्भाय	×
चौबीस तीथंकर स्तवन	×
बभए।वाडि स्तवन	×
शाति स्तवन	गुरासागर

६६०६. गुरावलो स्तोत्र $-\times$ । पत्र सं $\circ$  १०। प्राः ६ $\frac{1}{8} \times \frac{1}{8}$  इखा ग्राया—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं $\circ$  १५३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८०७ पुरु स्तोत्र—विजयदेव सूरि । पत्र सं० २ । प्रा० १०  $\times$  ४ इन्छ । माषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रक्शल  $\times$  । लेक्शल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३३१-४०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर संभवदाथ उदयपुर ।

विशेष--इति श्री विजयदेव मूरि स्वाध्याय सपूर्ण ।

६६० द. गोपाल सहस्र नाम —  $\mathbf{x}$  । पत्रस० २१ । ग्रा० ४३  $\times$  ४३ ६२च । माषा-सस्क्रत । विषय-श्रीकृत्सा स्तात्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

६९०**६. गोम्मट स्वामी स्तोत्र**—  $\times$  । पत्र स०६। प्रा० १०  $\times$  ७ इञ्च। भाषा— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स०२१८-८७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६६१०. गौडोपारवंनाथ छंद —कुमललाभ । पत्रस० १ । मः० १२  $\times$  ४ दश्च । माषा—हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स० ३६४/४७२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६**११. गौतमऋषि सङ्फाय**—  $\times$  । पत्रस $\circ$ १ । प्रा॰ १०१  $\times$ ४१ इख । माषा-प्राहत । विषय-गौत । ए० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २६२ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दक्लाना (वंदी)

विशेष---लिखित रिषि हरजी । बाई चापा पठनार्थ ।

६६१२. गंगा लहरी स्तोत्र — सट्ट जगन्नाचा । पत्र सं०६। प्रा०६ $\frac{1}{2} \times \sqrt{\frac{1}{2}}$  ६२४ । साथा – संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल सं०१०२४ ज्येष्ठ बुदी ६। पूर्ण । वेष्टन सं०१०२४ प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर बोरसभी कोटा ।

विशेष--गिरिपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

- ६९१३. चकरेवरीवेवी स्तोत्र—। पत्रसः ६। ग्रा० १११४४३ इश्वा। भाषा-सस्क्रत। विषय-स्तोत्र। रजकाल ४। लेककाल संव १८७६। पूर्णा। वेष्टलसंव १३८६। **प्राप्ति स्थान**— यव दिव जैन मन्दिर प्रकोर।
- ६६१४. खतुर्देश भक्तिपाठ। पत्रस० २०। घा०१०×६३ दश्य । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६०४ मगसिर सुदी = । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२३ १५ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन पवायती मन्दिर दूनी (टोक)
- ६६१५. खर्तुविध स्तबन $-\times$ । पत्रस०५। स्रा०१०१ $\times$ ४१ इथा । प्रापा-सस्कृत । विध्य-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० १२२ । प्राप्ति स्थान-िद० जैन प्रचारति प्रतबर ।
- **६९१६. चतुर्विशति जयमाला** माधनन्दि सती । पत्रस० १। प्रा० १३ $\frac{1}{2} \times$ ६ दश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्गे । वेट्टन स० ४१४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।
- ६९**१७. चतुर्विशति जिन नमस्कार—×**। पत्र स०३। भाषा-सम्कृत। विषय —स्तवन । र•काल ×। ले•काल म० ×। पूर्ण। बेष्टन स. ६६७। प्राप्ति स्थान—दि जैन मन्दिर भरतपुर।
- ६६१ स. चतुर्विशति जिन स्तवन $-\times$ । पत्र स. ० १ । ग्रा०१० $^{\circ}$  x ५ इ.च.। आया— प्राकृत। विषय—स्तवन। र०काल x । ले०काल स० १४६५। पूर्ण। वेष्ट्रन म०१६७-११७। प्राप्ति स्थाल— दि जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिह (टोक)
- **६८१६. चतुर्विकाति जिनस्तुति**  $\times$  । प्रश्नक ४ । माषा –सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । के०काल स० १६६२ । पूर्ण । बेष्टन स० ६६० । प्राप्ति स्थान दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।
- ६६२० **चतुर्विशति जिन स्तोत्र टीका जिनप्रभसूरि ।** पत्रस०६। आ०१०×४३ इचा आषा —सःस्कृत । विषय —स्तोत्र । र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । बेष्टनस०२३६ । प्राप्ति स्थास —हि० जैन मन्दिर सभिनव्दन स्वामी, वृदी ।
- विशेष बीच मे ध्लोक है तथा ऊपर नीचे सन्कृत में टीका है। गरिए बीरविजय ने प्रति— लिपि की थी।
- **६६२१. प्रतिसं० २** । पत्र स०१ । घा०१२;८४ दश्वः । ले० काल 🗴 । पूर्णः । वेष्ट्रन म० ३५६/४६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुरः ।
- ६६२२. चतुर्विशति जिन दोहा—  $\times$  । पत्र स०२ । ग्रा०१० $\times$ ४ इच्च । भाषा— हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल  $\times$  । ते०काल स०१६२६ माह सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स०१३ मा प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)
- **६६२३ चर्जुर्वशाति स्तवन** × । पत्रस० २-१३। **भाषा —**सस्कृत । विषय स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६७ । **प्राप्ति स्थान** —वि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६६२४. **चर्नावंशतिस्तवन---पं० जयतिलक ।** पत्र स० १। प्रा० १२×४ इचा। भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र,। र०काल × । ले॰काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३६६/४७४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन समयनाथ मन्तिर उदयपुर ।

६६२५. **चतुर्विशति स्तुति—शोमनमुनि ।** पत्रसर्व ६। घा० १० ४५ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल ४ । ले०काल स्त० १४६३ धासोज बुदी ४ । पूर्णः । बेष्टुन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायर्सिंस (टोक) ।

विशेष--इति वर्द्धमान स्तृति. ।

मध्य रेशस्य **संकाशात्रं ग** निवासी देविष्मृतः सर्वदेवस्तन्यात्मकेन गोभन मुनिना विहिता इमाण्यनु-विज्ञाति जिनस्तुत्या त्वद्यव्य परित्त स्वापाल विहिता विवरणानुवरेण त्रयसवकूणिर्महायमकवण्डनस्ताणां नासालनीना जनानेत्रिया सक्तन १४=३ वर्षे आर्थानं मा व ४।

६६२६. **चतुर्विशति स्तोत्र—प० जगन्नाथा।** पत्र स०१४ । ग्रा०११×६ इचा। भाषा— सस्कृतः। विषय —स्तोत्रः। र०कालः × । ले०कालः ×। पूर्णः। वेष्ट्रन स०६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिरं ग्रादिनाथ व दी ।

विशेष -- प्रति सटीक है। प० जगन्नाथ भ० नरेन्द्रकीति के शिष्य थे।

 $\xi \in \mathbb{R}^{0}$ . चन्द्रप्रभु स्तवन—प्रानन्दघन । पत्र स०२ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०७७० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्राधनी मन्दिर भन्तपुर ।

६६२६. चित्रबंध स्तोत्र—  $\times$  । पत्र त० ४ । ब्राठ १० $\times$ ४ ६% । भाषा-सस्कृत । विषय— स्तोत्र । र०काल $\times$ । ले० काल $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० ११२० । प्राप्ति स्थान—महाप्त्रीय दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

६६२६. चित्रबन्धास्तोत्र—  $\times$  । पत्रतः २ । मा०१० $\frac{1}{2} \times V_0^2$  इत्त्व । भाषा—प्राहतः । विषयः—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । तं०काल  $\times$  । वेस्टनस०३७६ । **प्राप्तिः स्थान** — दि०र्जनमंदिर लक्करः जयपर।

६६३०. चित्रबन्ध स्तोत्र-  $\times$  । पत्रस०२। म्रा० १० $^1_2$   $\times$   $^2_3$  रूवा । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । बेष्टन स०४३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - महाराजा माधर्वासह के राज्य मे ग्रादिनाथ चैत्यालय मे जयनगर मे प० केशरीसिंह के पठनार्थ प्रतिनिधि हुई थी। प्रशस्ति भ्रच्छी है।

६६३१. चिन्तामिए। पाष्टवंनाय स्तोत्र— $\times$  । पत्र स० १ । प्रा० १३ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इचा । प्राया-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० ४१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५६३२. **चेतन नमस्कार**  $- \times 1$  पत्र स॰ ३। आ० ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इञ्च । आपा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल्  $\times$  । से॰काल्  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन सं॰ २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोरा । ६६३३. चैत्यवंदना— $\times$ । पत्रसं॰Y। धा॰ १० $\times$ Yृे इसः। माया-प्राहतः। विषय— स्तवनः।र०कालः  $\times$ । ले॰काल $\times$ । पूर्णः। बेहन सं॰ ४१०। प्राप्तिः स्थान—महारकीय दि॰ जैन मन्दिर धक्रोरेः।

विशेष--प्रति संस्कृत टब्वा टीका सहित है।

**६९३४. चैत्यालय वोनती—दिगम्बर शिष्य** । पत्रस०३ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २०कासimes । ले० कालimes । पूर्णे । वेष्टुन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ सन्दिर उदयपुर ।

### धारितम परा---

दिगम्बर शिष्य इम मरोइ ए बीनतीमई करीए। द्यो प्रभु मो मनिवास सफल कीरती गुरु इम भरो ए।

विशेष-हिन्दी में एक नेमीश्वर बीनती और दी हुई है।

६८३५. चौरासी लाख जोनना बिनती—सुमितिकीर्ति । पत्रस०६ । ग्रा०१० $\frac{1}{7}$ × $\frac{1}{7}$ ६७ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल $\times$  । ले०काल $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स०१६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटिंडियों का हु गरपुर ।

श्री मुलसाय महतसंत गुरु लक्ष्मीचन्द । बीरचन्द विबुधवंत ज्ञानभूषता मुनीद ।। जिनवद बीनती जो भागे मन घरी घानद । प्रुगती मुगती कर ते लहे परमानद ॥ मुमतिकोति मावे कहिए घ्याजो जिनवर देव । ससार माही नहीं प्रवर्षो पाम्यो सिवाय हेन ॥

इति चौरासी लक्ष जोनना वीनजी सपूर्ण ।

- ६९३६. चौबीस सीर्थंकर वीनती—वेदाह्म । पत्र स० १६ । घा० १२ $\times$  धुः हवा । माया—हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० २४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।
- ६९३७. चौबोस तीर्थंकर स्तुति— ४। पत्र म०२। मा०१०है×५ इचा । भाषा–संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र•काल × । ले०काल × । वेष्टन स०३४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, कयपुर ।
- ६६३८. चौबीस तीर्थंकर स्तुति (लजुस्वयंमू)— $\times$ । पत्रसं $\circ$ ३। मा $\circ$  ८६ $^{\circ}$ १ इं । माया-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०काव $\times$ । ले $\circ$ काल $\times$ । पूर्णः । वैष्ट्रन सं $\circ$ ११४५ । **प्राप्ति स्थान** म $\circ$  दि $\circ$  जैन मदिर क्षत्रमेर ।
- ६६३६. चौबीस महाराज को बिनती—चन्द्रकवि । पत्र स० ६-२३ । घा० ६ $\frac{1}{4}$ ४६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ले० काल सं० १८६० ग्रासोज सुदी १४ । श्रपूर्ण । बेष्टन सं० ४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

६६४०. चौबीस महाराज की बीनती --हिरचन्द्र संघी। पत्र सं०२६। भाषा—हिन्दी। विषय—विनती। र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । यपूर्ण। बेष्टनसं०२८१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष--कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है। प्रति प्राचीन है इसके अतिरिक्त निम्न और हैं--

विशेष — बहाचारी करुएं। सागर ने कायस्थ रामप्रसाद श्रीवास्तव झटेर वालो से प्रतिलिपि करवाई थी।

२- पूजाफल---×।

३- मुदर्शन् चरित्र--श्री भट्टारक जिनेन्द्रभूषए।।

विशेष —श्री घोरीपुर वटेश्वर ते लश्करी देहरे में श्री पं० केसरीसिंह क्षेके लिए श्रुतज्ञानावरस्णी कर्मक्षत्रार्थं बनाई थी।

विशेष--- लिपिकार प० भाभराम ।

६६४२. चौसठ योगिनी स्तोत्र—  $\times$  । पत्रस० २ । म्रा॰ ११ $\times$ ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं॰ ३०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

विशेष -- ऋषि मडल स्तोत्र भी है।

६८४३. चन्द्रप्रस छंब — ब० नेसचन्व । पत्र सं० ४६ । ग्रा० ६ $\frac{2}{3} \times$ ६ इव । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल स० १८५० । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१/४२ । प्राप्ति ‡स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

६६४४. छुंब वेसंतरी पारसनाथ—लखमी बल्लम गिए। पत्रस= 1। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल  $\times 1$  ले०काल  $\times 1$  अपूर्ण। वेष्टन स०७१४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रामती मन्दिर भरतपुर।

६ हे ४ ४. जबतिहुबस्स प्रकरस्य — स्रभयदेव । पत्र स० ३ । स्रा० १० $\times$ ४ इश्व । भाषा— प्राकृत । विषय — स्तवन । र० काल । ले० काल  $\times$  । स्पूर्ण । वेष्टन स० ४४३/२६४ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

ग्रन्तिम---

एयम दारियजतदेव ईम न्हवण अङ्गुसवज धरणितम । मुगगहरण तुम्ह भंगीकरिय मुणिगण तिद्धः ।। एमह रसीअमु पासनाइ वर्भणपुर टिबद्धः । मुश्चिवर श्री अभयदेव विनवयद सारणदियः।। इति श्री अवतिह्वयण अकरण शर्मा ।

- ६६४६. **जिनदर्शन स्तुति** ×। पत्रे स०३। 'झांके ११४८ इञ्च । साधा-संस्कृत । विषय -स्तोत्र । र० काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णे । बेष्टन सं०४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन नेरहवंबी सन्दिर सीचार
- ६६४७. जिनपाल ऋषिकाचौडलिया— जिनपाल । पत्र स॰ ३। प्रा॰ १०४४ इञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय-स्तुति । र० काल ४। ले०बाल स०१६६५ । पूर्ण । बेष्ठन स॰ ३५३। प्राप्ति स्थान — दि० जैन संदिर इडलाना (बदी) ।
- **६८४८. जिनपिजर स्तोत्र—कमलप्रम** । पत्र स $\circ$  ३। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र $\circ$ काल $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्टन स $\circ$  ६०६० । **प्राप्ति स्थान** दि $\circ$  जैन प्चायती मदिर भरतपुर ।
- **६८४८ जिनपिजर स्तोत्र**—। पत्र स०१। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  ।  $\hat{\sigma}$  काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपूर ।
- ६९५०. जिनपिंकर स्तीत्र  $\times$  । पत्र सं० ५ । मा०  $-\times$ ५ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नेरहपथी दौना ।
- **६६५१. जिनपिजर स्तोत्र**  $\times$  । पत्र स $\circ$  ४। ब्रा $\circ$  १ $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ दश्व । माशा-मस्कृत । विषय-स्तोत्र । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स $\circ$  १७३ ४= । **प्राप्ति स्थान** पार्थनाथ दि $\circ$  जैन मदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

## विशेष - परमानद स्तोत्र भी है।

- **६६५२, जिनसभा स्तोत्र** पत्र स०५ । म्रा०६४३ इक्त । भाषा–सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले**० का**ल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।
- ६९५३. जिनबर दर्शन स्तवन --पदानिव । पत्रस०४ । प्रा० न $\frac{5}{4} \times 5$  इक्ष । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तां क । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन मं० ३६० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर नक्कर, जयपुर ।  $\frac{1}{16}$
- **६६५४. जिनगतक ∖ा**षत्र स०१७। छा०८<mark>१ × ३ इत्वा भाषा-सस्कृत। विषय-</mark> स्त्रोत । र०काल × । ते०काल × । पूर्णा विष्टन स०१४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ जोगान, बंदी।
- ६९**५५. जिनशतक**  $\cdot \times$  । पत्रस० २८ । प्रा० १२ $\times$  १ $^1$ ६ ख । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत । २०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० १२७ । प्राप्तिः स्थान-—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।
- ६६५६ जिनसमबशररामगल नथमल । पत्र स०२४। झा०१०२ ४६ इच्च । भाषा हिन्दी । विषय —स्तवन । र० काल सं०१५२१ वैद्यास सुदी १४। ले० काल ४ । पूर्यो । बेष्टन स०२२ । प्राप्ति स्थान —दि० कैन पवायनी मंदिर वयाना ।

विशेष—नयमल ने यह रचना फकीरचद की सहायता से पूर्ण की थी औरसामिक निम्न पद्य से पता लगता है—

> चन्द फकीर सहायते मूल ग्रंब श्रनुसार । समोसरन रचना कथन भाषा कीनी सार ॥ २०१ ॥

पद्यों की स० २०२ है।

६९४७. जिनदर्शन स्तवन माथा—  $\times$  । पत्र स०२। प्रा० ६ $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा— हिन्दी (प्रा) । विषय-स्तवन । र० कान  $\times$  । ते० कान  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन स०१५१ । प्रास्ति स्थान— वि० जैन गदिर दवलाना (बुंदी)

विशेष--मुलकर्ता पद्मनदि है।

**६९५६. जिनसहस्रनाम— ग्राशाघर** । पत्रसं० ४ । ग्रा॰ ६ है  $\times$  ४ है कुच्य । आषा-सस्कृत । विषय-स्तात्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०६४७ । **प्राप्ति, स्थान**—स० दि० जैन सन्दिर ग्रजसेर ।

६६५६. प्रति स० २ । पत्र स० २५ । प्रा० १३  $\lambda$  ६ इच्च । से०काल स०१८६५ कातिक बुदी ६ । पूर्मा । वेप्टन स०४८२ । प्राप्ति स्थान — म०४८० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

विशेष---प्रति सस्कृत टीका महित है।

६८६०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १ । आ०१०३ ४ ५ इखा भाषा-सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्यो । बेष्टनस० ३६३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

**६८६१. प्रति सं०४ ।** पत्र स० ६ । प्रा० १० $\frac{3}{4}$  $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इच्छ । ले० काल स० १६०१ (शक) । प्राप्ति **स्थान** — प्रप्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

६६६२. प्रति सं० ५ । पत्र स०७ । आ० १० $\S \times \S$  इश्व । ले० काल imes । अपूर्ण । बेष्टन स० ५० । प्राप्तिस स्थान—पार्यनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६९६३. प्रति स०६ । पत्रस०१४ । ग्रा०१२ ४४ इश्व । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टनस० ३०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

**विशेष**—प्रति सस्कृत टीका सहित है । टीकाकार रस्तकीर्त्ति शिष्य यश**की**र्ति । उपासको के लिए लिली थो । प्रति प्राचीन है ।

६६६४. प्रतिसं०७। पत्र स०१०। झा०१२imes४ दश्व । लेक्सल imes। पूर्एं । बेष्टन स० २०६। प्राप्ति स्थान — उपरोक्त सदिर।

**६६६५. प्रतिसं० म ।** पत्र स०६ । आरंग् १० $\times$ ४ इ.ख.। ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेस्टन स०२ २०३ । प्रा**रित स्थान**—दि० जन मन्दिर दबलाना (बृदी)

**६६६६. जिनसहस्रताम**— **जिनसेनाचार्य** । पत्र स०७ ग्रा० ६२ ४४ इश्व । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । रकाल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—प्र० दि० जैन मन्दिर धक्रोर । ६६६७. **प्रतिसं०** २ । पत्रसं०६ । मा०११×५ इन्दा ले०काल× । पूर्णं। वेष्टनसं० १२३४ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

६६६८ प्रति सं० ३ । पत्र स० १३ । मा० ६४४ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । बेहन स०४७१ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मंदिर प्रजमेर ।

६६६६. प्रति सं० ४ । पत्रस० १६ । मा० ११ $\times$ ४ हुँ इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । प्रार्थित रच्यान—भ० वि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६९७०. प्रेंति सं० ४.। पत्र सं० ११ । घा० ६ 🗙 ४ इ.चाले० काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टन सं० १३०४ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मदिर ग्रजभेर ।

६९७१. प्रति स०६ । पत्रस०३६ । ले०काल x । पूर्णं । वेष्टनसं०१६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-भक्तामर भादि स्तोत्र भी है।

६९७२, प्रति सं० ७ । पत्रस० २८ । ले॰काल ×। पूर्ण । बेष्टन स०११ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष —दो प्रतियां ग्रीर हैं।

**६९७३ प्रतिस**० स**।** पत्रस०१०। ग्रा० १०३ ४ ४ ई. इ.चा ले०काल 🗴 । पूर्णा वेष्टनस० १३०। **प्राप्ति रूपान**— दि०जैन पत्रायती मन्दिर धलवर।

६९७४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ११ । घा० ११ ×४३ इञ्च। ले० काल स० १६०५ । पूर्णं। बेष्टन स० ४४ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी।

६६७५. प्रति सं० १० । पत्र स० १२ । ग्रा० ६ $^1_1 imes ^3_2 imes ^3_1$  इन्द्र । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेस्टन स० २४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्यनाम चौगान बूंदी ।

६९७६. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ११ । प्रा०  $- \times ६ ^2$  इंच । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १२६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

६९७७ प्रति सं० १२ । पत्रस० १ । प्रा० १० $\frac{1}{4} \times v_{\sigma}^2$  इन्त्र । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ६७ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुंदी)

६९७६. प्रतिसं० १३ । पत्र स० २४ । झा० ६२ ४४ इश्व । ले०कान ४ । पूर्णे । बेष्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैसावा ।

६६७६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० २१-३५ । आ० १२५४ ४ है इचा । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६६०. जिन सहस्रनाम टीका—स्रमरकोर्ति  $\times$ । पत्रसं० ६५ । प्रा० १२ $\frac{1}{8}\times \frac{1}{8}$  इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० १२६६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन महिर प्रजमेर ।

विशेष -- मूल्य ७ र० दस भाना लिखा है।

**६६६१. प्रतिसं**० २ । पत्र स० ७४ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इंच । ले०काल स० १६६२ मगसिर ब्रदी ६ । पूर्ण । वेस्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६८६२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७७ । प्रा० १४ ५ इश्व । ले०काल ४ । पूर्णं । वेष्टन सं० ३४ । प्राप्ति रुधान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६ स**२. प्रतिसं∘४ ।** पत्रस०१५३ । ग्रा० द<sup>2</sup>,×४<sup>3</sup>, इच्चाले० काल × । पूर्णा। वेष्टन स०१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवाना कामा ।

५६ मर्थ, प्रतिसं**० ४ ।** पत्र स०२ - मः। प्रा०१२ × ५ है इंच । ने∘काल स०१७४२ मगसिर इदी१४ । प्रपूर्ण । बेपून स०३२६ । प्राप्ति, स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

६८ ६५. जिनसहस्र नाम टीका — श्रुतसागर । पत्रस० १४० । घा० १२ ४६ रख । प्राथा — सस्कृत । विषय — स्तोत्र । र०कान ४ । ते० कान स० १६०१ प्रासोज मृदी ६ । पूर्ण । बेहनसं० ३६३ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

६९८६. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०१ । मा० १३ × ५<sup>२</sup>, इश्व । ले०काल स० १५६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन प्रयाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबत् १५६६ वर्षे पीष बुदी १३ भौमे परम निरमं बाचार्य श्री त्रिभुवनकीरपुँपदेशात् श्री सहस्र नाम लिलापिता । मगलमन्तु ।

६६६७. प्रति सं ० ३ । पत्र स० ११० । प्रा० १२ $\frac{9}{3}$  imes ६ इ.स. । लेश्काल imes । पूर्ण । बेहुन सं ० १४७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर प्रादिनाथ दूरी ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

६९८६. प्रति संस्था ४ । पत्र स० १०६ । ग्रा० ११ $\times$ ४० हुँ इखा । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वामी, बूदी ।

६८८६. प्रति सं० ५ । पत्र त० ्७३ । झा०१२ × ५ इचा। ले० काल । पूर्गा वेष्टनसं० ३६० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६८६०. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १३७ । म्रा० ११ x ४ १६७ । ले०काल x ।पूर्ण । बेष्टनसं० १३३-६१ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मदिर कोटडियो का द्वांगरपुर ।

६९६१. जिनसहस्त्र नाम वचनिका— × । पत्र स०२६ । प्रा०१०×४६ च । भाषा— हिन्दी । विषय —स्तोत्र । र०काल, × । ले० काल ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पनायती मदिर मरतपुर ।

६९६२, जिनस्मरस्य स्तोत्र $--\times$ । पत्रस $\circ$  ६। माषा--हिन्दी । विषय--स्तोत्र । र $\circ$ काल  $\times$ । प्रेस् । वेडूनसं $\circ$  १६। **प्राप्ति स्थान**--दि $\circ$  जैन मन्दिर दीवानजी मरतपुर ।

६२६३, जैननामत्री—×। पत्रसं∘ ४। घा॰ ⊏×३१ इ'न। मापा—सस्कृत। विषय– स्तोत्र। र०काल ×। सं∘काल स० १६२७ कार्तिक बुदी ४। पूर्यं। बेष्टन सं० १०१६। प्रास्ति स्थान—स० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर। ६९९४. ज्वाला मास्तिनी स्तोत्र  $\times$  । पत्रतः २० । प्राः $- \times 2 \frac{1}{2}$  क्य । माया-संस्कृत । विषय—स्तोतः । रूक लाल्  $\times$  । लेक काल्  $\times$  । पूर्णः । बैहन संक्र १४३६ । प्राप्ति स्थान—भक्त दिव जैक्सिट कार्येषः ।

६६६५. ज्वाला मालिनी स्तोत्र $-\times$ । पत्र स॰ ५। प्रा॰ ११ $\times$ = इन्छ। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स॰ ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मस्दिर तेरव्यथी दौना।

६९६६. तकाराक्षर स्तोत्र— $\times$  । पत्रसं० २ । म्रा० १० $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} \times \frac{1}{4}$  भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेकाल स०१=२२ । पूर्ण । बेष्टन स०२५४ । प्राप्तिः स्थान—भ० टि० जैन मन्दिर ब्राज्ञेसर ।

बिशोष-प्रत्येक पद तकार से प्रारम होता है।

६८६७. ताररण तररण स्त्रुति (पच परमेष्टी जयमाल)—×। पत्र स०२। छा०२/५ इचा। भाषा—हिन्दी पद्याः विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्मा विष्टुन स०५३० ×। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का हुंगप्युर।

६६८६ तीर्थ महास्म्य (सम्मेद शिखर विलास)—मनसुखराय । पत्र ग० ११० । द्याठ १० | ४६ १ ४२ ॥ भाष — हिन्दी । विषय—महास्य स्त्रीत्र । रक्ताल स० १७४५ प्रासीत्र सुदी १० । केक्सल स० १११० सामोज नृदी २ । पूर्ण । बेष्टम स०७६ × । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्त्रिय बत्रा बीमध्यो होता ।

विशेष -- जानचर नेरापथी ने प्रतिलिपि की थी।

६८६६. <mark>त्रिकाल संघ्या व्याख्यान</mark>— ×। पत्र सं ०६ । आ० ११ ४४ इ**च** । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तात्र । २०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोध्यभी कोटा ।

७००० **थंमरा पार्श्वनाय स्तवन**— × । पत्र स०३। भाषा—प्राक्टतः। विषय-स्तवन। र० काल × । ने०काल × । पूर्णा । वेष्ट्रन स०६७२**। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७००१. दशंन पच्चीसी—गुमानीराम । पत्र स०११। आ० ७ imes ६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—स्वन । र०काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन क्रयाल प्रचारती मदिर अलवर ।

विशेष--ग्रारितराम ने सशोधन किया था।

७००**२. प्रति सं० २** । पत्रस०६ । आ०१२×६३ इन । ने०काल 🖂 । पूर्ण । बेष्टन म० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन घष्रवाल पचायती मन्दिर घलवर ।

७००३. दर्शन स्तोत्र—म० सुरेन्द्र कीर्ति । पत्र सं०१ । आ० १० $\xi \times \xi^1_{\gamma}$  इन्ध । आपा — सस्कत । विषय — स्तात्र । २०कान  $\times$  । ने० कान  $\times$  । वेष्टन स०६६८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७००**४. हार्जिसिका (युक्त्यव्टक)**— × । पत्रस० ३ । धा० १० ट्रे × ४ ट्रे इत्था । सावा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०कास × । ने० काल × । दूर्ण । वेष्टनसं० १४० **। प्राप्ति स्थान**— विकास स्वास्त्रस्त्राच्या साथा

७००५. नन्दीश्वर तीर्षं नमस्कार—  $\times$ । पत्रतं २। प्रापा-प्राकृत। विध्य-स्तवन। रिकाल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्ट्रन स० ६६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती महिर भरतपुर।

७००**६. नवकार सर्वया—विनोदीलाल** । पत्रम० १२ । श्रा० ७४६ इश्व । माषा—हिरी पद्य । विषय-स्रोत्र । र०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४६-१६ । **प्राप्ति स्थान**—हि० जैन मन्दिर कोटडियो का उभरपर ।

७००७. नवग्रह स्तवन—  $\times$  । पत्रस्त १३ । आ० १० $\times$ ४ इञ्च । भाषा-प्राहृत, सस्हृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रनस० २२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रु दी)

विशेष-- ३ मे ६ तक पत्र नहीं है। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७००८. **नवघह स्तोत्र—भद्रबाहु।** पत्र स०१। प्रा०६ $^2$   $\times$   $^2$  ह्व । भाषा-सस्क्रत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्णं। वेष्टनसं०२३६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन सदिर पाध्वेनाय चौगान बुँदी ।

७००६. तबग्रह स्तोत्र—  $\times$  । पत्रस०१ । ग्रा०१०  $\times$  ४ $\frac{2}{6}$  इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र : र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० ४२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संदिर लक्षर, जयपुर ।

७०१० नवग्रह पाश्वनाथ स्तोत्र—  $\times$  । पत्र स०१ । ग्रा० ६ $\frac{3}{3}$   $\times$  ४ इन्छ । मापा- प्राकृत । विवय-स्तोत्र । २० काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । वष्ट्र स० ४४३ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर लक्कर जवपूर ।

७०**११ निर्वासा काण्ड माचा-भैया सगवती वास ।** पत्रस०२। स्रा०१०३ × ४ इन्थ । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल स०१७४१। ब्रासोज सुदी १०। पूर्सा । बेहन सं०६०१। प्रार्थित स्थान-वि० जैन मधिर लक्कर जयपुर ।

७०१२. प्रति स० २ । पत्र स० २ । घा० १ imes ५ ई. इ.स. । ले० काल imes । बेष्टन स० ६६२ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन मन्दिर लक्ष्य, जयपुर ।

७०१३. नेमिजिनस्तवन—ऋषिवद्धंन । पत्रस०१। आ०१० $\frac{2}{5} \times 1$  इच । भाषा— सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन स०४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रहेलबाल मन्दिर उदयपुर ।

७०१४. नेमिनाथ छंद—हैमचंद्र । पत्रसं॰ १६ । मा॰ ६६ ४ ४ ६च्छ । माषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र । र०काल ×। ले०काल सं॰ १८८१ । पूर्ण । बेष्टनसं॰ २४३/६३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इनएसर ।

विशेष-वोरी मध्ये संभवनाथ नैत्यालये लिखितं ।

७०१५. नेमिनाथ नव मंगल—विनोबीलाल। पत्रस० ८। माधा—हिन्दी। विधय-स्तवन। र०काल सं० १७४४। ले०काल सं० १६४०। पूर्ण। वेष्ट्रन सं० ४६६। प्राप्ति स्थान-दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपर।

७०**१६. पद्मावती गीरा — समयसुन्दर ।** पत्रसं० २ । मा० × ५ इञ्च । माषा- हिन्दी (पद्म) । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन स्रदेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--३४ पद्य हैं 1

७०१७. पद्मावरि पंचांग स्रोत्र— $\times$  । पत्र सं॰ २६ । प्रा॰  $= \frac{1}{2} \times \times$  इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १७६२ । पूर्ण । वैष्टन सं॰ १६६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर फेनेहचर शेखावाटी (मीकर)

**७०१८. पद्मावसी स्तोत्र**—  $\times$  । पत्रसं० ४६। ग्रा॰ ३ $\times$ ३ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय — स्तोत्र। र०काल  $\times$ । लेकाल स०१८६०। पूर्ण। वेष्टन स० ६१२। प्राप्ति स्थास— स० कि॰ जैन मन्दिर ग्रजमेर।

७०**१६. पद्मावती स्तोत्र**— $\times$  । पत्र स॰ ४। प्रा॰ ११ $\frac{1}{6}$   $\times$  ४ $\frac{3}{6}$  इन्त । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ॰ दि॰ जीन मन्दिर प्रजमेर ।

७०२०. पद्मावती स्रोज $-\times$ । पत्रस० २४। प्रा॰ ६ $\times$ ४ $^{2}$  इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र र०काल  $\times$  । वे० काल  $\times$  । दूर्ण । बेष्टनसं० ६१३। प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

७०२१. पद्मावती स्रोति —  $\times$  । पत्र स॰ ४ । मा॰ ११  $\times$  ४ $१ इव । भाषा — सस्कृत । विषय — स्तोत्र । र॰काल <math>\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ १०० । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मदिर मजमेर ।

७०२२. पद्मावशी स्रोति  $-\times$  । पत्र सं० २ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । 7०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रत सं० ६४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मदिर भरतपुर ।

७०२**३. पद्मावरी स्रोत्र**— × । पत्रसः १० । भाषा—सःकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्णे । बेष्टनसं० ३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

७०२४. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । से०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ३४५ । प्राप्ति स्थान-— ४० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

७०२५. पद्मावती स्तोजन—४ । पत्र सं० ७२ । प्रा० १०३४ ७ इन्थ । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४६/७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्वनाय मन्दिर इन्दरगढ (कीटा)

विशेष-यत्र साधन विधि भी दं, हुई हैं।

७०२६. परमञ्जाति (कल्यास मन्दिर स्तीत्र ) भाषा—बनारसीदास । पत्र स० ४। मा० १२×५१ इच । भाष:—हिन्दी । विषय—स्तीत्र । र०काल ४ । लेकाल ४ । पूर्त । वेस्टत स० ६०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जन्यर ।

७०२७. वरमानन्व स्तोश— × । पत्रसः ३। प्राः १४६ इञ्च । माधा-शःस्तः । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्णः । वेष्ट्न स०३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जेन छोटा मन्दिर वयाना ।

७०२८. पात्र केशरी स्तोत्र—पात्र केशरी । पत्र स० १ । प्रा० १२ $\times$ १ ६ व । प्रापा— संस्कृत । विषय-स्नोत्र । र० काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३७० । प्राप्ति : स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७०२६. पात्र केशरी स्तोत्र टीका  $-\times$  । पत्र स० १४। प्रा० १२ $\times$ ४ इश्व । भाषा— सम्कृत । विषय- स्तोत्र । र० काल  $\times$ । ले०काल स० १६८७ प्रासीज बुदो - । पूर्ण । वेषृत्र स० ३४५।४२ $\times$  प्राप्ति स्थान - दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०३०. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १४ । ले०काल 🗴 । ब्रपूर्ण । बेष्टन स०.३५६/४३५ प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०३१. पाश्चीजन स्तुति— 🗴 । पत्र स०१। आ०११४४ ६चा । आपा-सस्तृत । विषय-स्तोत्र । र०काल 🗴 । लेक्काल 🗴 । पूर्णा विष्टन स० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मंदिर उदयप्र ।

७०३२. पावर्बजिन स्तीत्र—जिनप्रभ सूरि । पत्रस० ४ । ग्रा० ६२ ४ ४) इख । भाषा-सहतः । विषय-स्तीत्र । र०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्णः । वेटनसं०१४४१ । प्राप्ति स्थान-भ० टि० जैन मिटर प्रवर्षरः ।

विशेष--इति जिनप्रभ कृत पारसी भाषा नमस्कार काव्यार्थ ।

७०**३३, पाश्वंतिम स्तोत्र—** × । यत्र सं०३। मा• ११ ४५<sup>5</sup>, इंच<sup>ं</sup> भाषा—संस्<u>त</u>त । विषय—स्तोत्र । रक्शल × । ले० काल × । पूर्णं। वेष्टन सं०६६। **प्राप्ति स्थान**—मंग्दिर जैन मन्दिर सर्वोत्र ।

७०३४. पाश्वेदेव स्तवन—जिनलाभ सूरि । पत्र सं० १७ । भाषा —हिन्दी । विषय— स्तवन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७०३५. पाश्वेनाथ खंद — हर्षकीर्ति —  $\times$  । पत्र स॰ ४। ग्रा.  $\mathfrak{E}_{q}^{+} \times Y_{p}^{+}$  इच । भाषा-हिन्दी । विषय — स्तोत । रक्ताल  $\times$  । ले.काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२००० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन महिदर राजमहल (टोक्त)

विशेष--२= छद है।

तरीवन जाऊ सोमा पाउ बीनतडी सुणंदा है। वया कहुं तोसूं सगत्मा बहोती तौतु मेरा मन उर्लभदा है। सिद्धि दोवासी तिह रहवासी सेवक बल संदा है। पजाब निसाणी पासवप्राणी मुख हर्षकीति गवदा है।। ७०३६. पार्क्नाच झंद—लब्धरूचि (हवंशचि के शिख्य) । पत्र स. २ । प्रा० १०१ $\times$ ४६ इंच । मापा — हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनसं० ३१५ । प्राण्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दसलाना (वृदी)

७०**२७. पार्स्वनायकी की निज्ञानी — जिनहर्ष** । पत्रसं $\bullet \lor$ । प्रा $\bullet ११ \times ५ ६ इन्द । भाषा — हिन्दी । विषय — स्तुति । र०काल <math>\times$  । क्षे $\bullet$ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुनसं $\bullet$  ३४१/४०६। प्राप्ति स्थान — दि $\bullet$  जैन मभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

ग्रन्तिम पद्यानिम्न प्रकार है।

तहां सिद्धादाबासीय निरदाबा सेवक जस विलवदा है । घुघर निसागी सा पास बखागी गूगा जिगाहर्य सुगदा है ।।

७०**२ म. प्रति सं०२ १** पत्र स०१४ । ग्रा० ७ है x ४ इल्डा से० काल स०१७६७ । पूर्ण । वेष्टन स०१२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर क्रिभिनन्दन स्वामी, बुंदी ।

७०**२६ पाप्यंस्तवन** — × । पत्र स०१। ग्रा०१०४४. इच । ग्राषा—संस्कृत । विषय— स्तोत्र । रुकताल × । तेरुकताल × । पूर्तः । वेष्टन स०११८८ । प्राप्ति स्थान — म०दि० जॅन मंदिर स्रजनेर ।

७०४१. **पार्यःाय स्तवन**— × । पत्रसः १ । म्रा०१०,४ इश्वः । भाषा—सस्त्रः । विषय—स्तवन । र०कालः × । ले०कालः × । पूर्णः । बेष्टनः सः २६०/४६८ । **प्रा**प्तः स्थानः—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

७०**४२. पाश्चेनाथ स्रोबन**— ∤ पत्र स० ३। प्रा० ११≾४ इञ्च । भाषा — संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेग्टन स० ६०५ । **श्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर स्रजनेर ।

विशेष-कही २ कठिन शब्दों के ग्रर्थ दिये हैं।

७०४३, पारवंनाथ (देसंतरी)स्तुति —पास कवि । पत्रस०३ । भाषा —सस्कृत । विषय — स्तवन । २०काल × । लेक्काल स०१७६८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर तेरहपथी वसवा ।

विशेष--रचना का ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है।

ग्रादि भाग---

मुक्वन सपो सारवा मया करो मुक्त माय। तोषु प्रसन सुक्वन तर्गा कुमगान श्री भावं काय।। कालिदास सरिया किया रक वकी कविराज। महिर करे माता मुने निज सुत जागि निवाज।।

## धन्तिम भाग---

जर्प सको जगदीस ईस त्रम भवण घलित । प्रदृष्ठत रूप प्रतृष्ट फिए मिए सिर महित । पर घाए सह ध्याहु उद्योध मित्र पिजताई । प्रकट सात पानाल सरम कीरित गृहाई । मिरित्तविवस भवा पानु नन प्ररूप प्रभू बैंकु ठ्युरी । प्रयोभेव पास कविराज डम नवीसी छद देनतरी ।।

इति श्री पार्श्वनाथ देसतरी छद रापूर्ण ।

७०४४. पास्वंनाथ स्तोत्र —  $\times$  । पत्र स॰ ४। मा॰ १२ $\frac{1}{2} \times 9 \frac{1}{6}$  दखा भाषा — सस्कृत । विषय — स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स॰ १६६३ मात्र सुदी १४। पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १११। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी वृदी ।

७०४%, पाष्टवंनाय स्तोत्र—  $\times$  । पत्रतः १ । धाः १३ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इता । भाषा—सस्कृत । विषय— स्तोत्र । रुकताल  $\times$  । वेष्ट्रन संक ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

७०४६. प्रतिसं०२ । पत्र ग०२ । प्रा०११ $\times$ ५ इश्वः । ले॰काल $\times$  । वेष्टन स०४३२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

७०४७. पार्श्वनाय स्तीत्र (तथ्) —  $\times$  । पत्र न०१। ग्रा०१० $\times$ ४ इत्थ । भाषा — सस्कत । विषय स्तीत्र । र०काल  $\times$  । ते०काल म०१६६२ नैजाल मृदी १२ । पूर्या । वेशन स०३२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवनाना (बूंदी)

७०४८. **पार्यनाथ स्तोत्र—पद्मार्यदि।** पत्र स०६। आ०१०३ ४४३ द्य । मादा—सम्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं। वेष्टुन सं०६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर देवलाना (बुदी)

विशेष-पत्र ३ में मिद्धित्रिय तथा स्वयंभू स्तीत्र भी है।

७०४६. **पार्श्वनाय स्तोत्र** —पद्मप्रमदेव । पत्र स०१। म्रा०१०६२४ इचा । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स०१४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरससी कोटा ।

७०५०, प्रतिसं०२ । पत्रस०१ । प्रा०१२ $\times$ १३ इला । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल $\times$  । ले०काल सं०१९२२ । वेष्टन स०६९० । प्राप्तिः स्थान-प्रति जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--पत्र पर चारों स्रोर सस्छत टीका दी हुई है। कोई जगह खाली नहीं है।

७०**५१. पोयह गीत**—पुष्पलास । पत्र स०१। सा०१० $\frac{1}{2}$   $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इ.स.। भाषा-हिन्दी। िषय-स्तोत्र। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दवलाना (वंदी)।

७०**५२. पंच कल्याराक स्तीत्र**— $\times$  । पत्र सं०६। म्रा० ५ $\frac{1}{5}$  $\times$   $\frac{1}{5}$  इचा । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१३२२ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन संदिर प्रजारेर ।

७०**५३. पंच परमेल्ठी गुरा**— $\times$ । बेहनसं०७। झा० ११ $\times$ ४ $^2$  दःच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल  $\times$ । लेक्काल  $\times$ । पूर्यं। बेहन सं० ५ $\times$ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, अयपुर।

७०१४, संख परसेट्ठी गुरा खर्णन $-\times$ । पत्र स०२०। झा० ८३ $\times$ ४3 दंब । सावा<math>- संस्कृत-हिन्दी। विषय-सत्तका।रकाल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनस० १७५-४५। प्रास्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष-इसके ग्रतिरिक्त कर्म प्रकृतिया तथा बारह भावनाओं ग्राहि का वर्गन भी है ।

७०**५५. पंचमगल — रूपचन्द**ापत्र सं∘ ६। घा० १०×४ ¦ इक्षा प्रापा — हिन्दी (पदा)। विषय-स्तवना र०काल ×। ले•काल ×। पूर्णा । बेशन स० ४३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मुख्याल मन्दिर उदसपुर।

७०५६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५ । म्रा० १०४६ है इ.स. । र०काल ४ । ल०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४/६२ आफ्टिस्थान—दि० जैन मन्दिर गादवा (राज०)

७०५७. प्रति सं ३ । पत्रस॰ ६ । प्रा॰ १० $^1_2 imes imes ^2_2 imes 1$  से०काल म० १८१७ मगिसर बुदी १ । पूर्ण । बेष्टुन सं॰ ३१६ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी, बूर्वी ।

७०५८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४-१३। झा० ११ ३४ ४३ इत्व । लेक्सल ४ । सपूर्ण । वेक्टनस० ८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर समिनन्दन स्वामी, बुदी ।

७०५६. प्रति स० ५ । पत्र सं० १२ । ग्रा० ६×४ इ.च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सादिनाय बुदी ।

७०**६०. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ४ । ब्रा० १० १४४ इञ्च । ले०काल । पूर्गं। वेष्टन स० ३०२ **।** प्राप्तिक स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ व दी ।

७०६**१. प्रति सं**० ७ । पत्रस० ६ । म्रा०६ 🗙 ५ है इञ्च । ले०काल । पूर्ण । बेटून स० ४७ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

७०६२. प्रतिसं० ६ । पत्र स०११ । पूर्णं। ले०काल 🗴 । वेष्ट्रन स०४६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाता।

विशेष--एक प्रति ग्रीर है।

७०६३ **प्रतिसं० ६** । प्त्र स०७ । झा०  $\mathfrak{E}_{\eta}^{\eta} \times$  ७ इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स**०** १४४/६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्ष्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ । (कोटा)

७०६४. पंचवटी सटोक । पत्र सं०३। आ० १२ $\times$ ४ $\S$  इञ्च । आषा—संस्कृत । विषय— स्तोत्र । १०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सम्बद्ध जम्बद्ध । विशेष--चौबीस तीर्चकर एव सरस्वती स्तुति सटीक है।

७०६५: पंचस्तोत्र— × । पत्रस॰ २१ । घा०,११×४३ इका । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । नेकाल × । पूर्णं । वेष्ट्रन स० ७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोमसनी को ।

७०६६. पंचस्तोत्र—  $\times$  । पत्रसं० ७३ । ष्रा० १० $\times$ ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमङ्गल (टोक)

विशेष -- प्रति टीका सहित है।

७०६७. पंचस्तीत्र व्याख्या imes। पत्र स०११ । माषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल imes । स्थान imes । पूर्ण । वेष्टन स०३६/४४१ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०६८ पंचमीस्तोत्र—उदय । पत्र सं०१। या०१०४ ४ द्वे इत्य । माया-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर दवलाना वृदी ।

विशेष--- प्रन्तिम पद्य निम्न प्रकार है--

नेमि जिल्लावर तमित सुरवर सिघ वधूवर नायको । भ्रालांद माली भजन प्रास्ती मुख सतित दायको । वर विवृध भूषण् विगत दूषण् श्री शकर सोभाग्य कवीण्वरो । तससीम अपद तदय दांगा परि स्वयन्ति मधि मतल करो ।

इति पचमी स्तोत्र ।

७०६९ पंचवनसारए— imes। पत्र तं० १। ग्रा०१०imesे हुन । माया–प्राकृत । विषय-स्तवत । र०काल imes। ते वेहन तं० २३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दकलाना (बूंदी)

७०७० **प्रवोधवाकनो — जिनरंग सूरि** । पत्रस० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल स०१७८१ । ले०काल 🗴 । पूर्णा । वेष्टनसं० ४७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन प्रवायनी मन्दिर भरतपुर ।

७०७१. बगलामुक्ती स्तोज्ञ $-\times$  । पत्र सं० ३ । घा० ६  $\times$  ४ $\frac{7}{6}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १२४८ । प्राप्ति स्थान-भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७०७२. **बारा धारा का स्तवन--ऋषमी (रिलव)**। पत्र सं०१। बा० १०१ x ४ १ इ.स.। आवा---हिन्दी। विषय - स्तुति। र० काल सं०१७५१ प्रादवा सुदी २। ले०काल x । पूर्णे। वेष्टन सं०६१। **प्राप्ति स्वान**---दि० जैन मन्दिर दबलाना बूँदी।

विशेष -- प्रन्तिम कलश निम्न प्रकार है--

भलत वन कीथो नाम लीघो गोतम प्रश्नोत्तर सही। सबत् सतरे इंदचंद सुभाववा सुदी दोयज मही। तपगच्छ तिलक समान सद्गुरु विजयसेन सूरि तस् । सागरमृत रिषभो इम बोल नाप झालोव झापस् ॥७५॥

इति की बारा आरा को स्तवन संपूर्ण।

७०७३. सन्तामर स्तोत्र - मानतु गालायं। पत्र सं० ६ । बा० ११ × ४ हे इच । मापा— संस्कृत । विषय — स्तोत्र । २०काल × । ले०काल × । ब्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०१०६ । प्राप्ति स्थान— स० विक जैन मन्दिर क्रजरेर ।

७०७४. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । घा० ४ ४ ४ इ.च. । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४४ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष — हिन्दीटव्याटीका सहित है। प्रति प्राचीन है।

७०७**४. प्रतिसं० ३।** पत्र स०१४ । द्या० १०४४ इ.चा। लेश्काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टन सं०१७६४ । **प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन मन्दिर प्रवमेर ।

विशेष--- प्रति सम्बन्त टीका महित है।

७०७६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ६ । ग्रा० १०६ × ५ इ.ख. । ले॰काल स० १८७० माह सुदी १३ । पूर्णः । बेष्टनस० ३५२ । प्राप्ति १स्यान—दि० जैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

विशेष-पद्मनदिवृत पाव्यंनाथ स्तीत्र भी है।

७०७७. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ६ । ग्रा० ११<sup>5</sup>,४ ४ इचा ने०काल स० १७४७ । पूर्णः। वेष्ट्रनस० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष - प्रांत टिल्प्स महित है। प० तिलोकचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

७-७=. प्रतिसं० ६ । पत्र स०२७ । झा०६४४ ृैइच्च । ले० काल स०१=१२ पोष मुदी बुदी ५ । पूर्णाविकृत स०-६१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मंदिर लक्कर जयबुर ।

विशेष---प्रति सटीक है प० लालचन्द ने ग्रपने लिये लिखी थी।

७०७६. प्रति स० ७ । पत्रस० ६ । झा०८ 🗴 ६ है । ते०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टुनसं०६४२ । प्राप्तिः स्थान -- दि० जैन मदिर सन्कर जयपुर ।

विशेष ५प्रतियाश्रीरहै।

७०८० प्रतिसं० ८ । पत्र स०८ । घा० ६१ × ४१ इञ्च । ले•काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष-दो प्रतिया ग्रार है।

७०६१. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६ । प्रा० ६<sup>3</sup>,×५ <sup>2</sup> इश्व । ते० काल × ) पूर्ण । बेष्टन सं० १७२१४७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७०६२. प्रतिसं० १०। पत्रस०६। ब्रा० ११ × ५ इ.च । ले० काल स०११६५ । पूर्णः । वैष्टन सं०१६७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

७०६३. प्रतिसं० ११। पत्रस० ६। घा० १०३ ४४ इचा। ले०काल सं० १७२० मससिर बुदी. १। पूर्यों। बेहुनस० १६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष--- माचार्य रामचन्द तत् शिष्य श्री राषवदास के पठनार्थ गोपाचल मे प्रतिलिपि हुई थी।

७० स्ट. प्रतिसं० १२ । पश्च ०२३ । धा० १२ imes६ इ.स. । से $\circ$ ्वाल imes । पूर्ण । बेष्टनसं० ३२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सदिर बोरसली कोटा ।

विशेष--प्रति कथा तथा टब्वा टीका सहित है।

७०**८ ५. प्रति स**० १३ । पत्रस० ७ । झा० १०३ × ५ इ.च. । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन सं• ४/२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पवायती मन्दिर दुनी (टॉक)

७०६६. प्रति सं० १४ । पत्र स० १६ । घा० ६४ ६ ६ व्यः । ले० काल ४ । पूरों । बेष्टन स० ६१ । प्राप्तिः स्थान—सम्बल दि० जैन पवायती मन्दिर भलवर ।

विशेष -- प्रारम्भ में ग्रादित्यवार कथा हिन्दी में और है।

७०८७. प्रति सं० १४ । पत्र स०६ । घा० ७imes ६ इञ्च । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । बेष्टन स०१७१-७३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ढुगरपुर ।

७०८ ८. प्रति स०१६ । पत्रस०७ । झा०६१,४४१ इ.च. । ले०काल 🗴 । पूर्णावेष्टनसं०६४-३६ धारितः स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटड़ियाकाङ्गगरपुर ।

विशेख-हिन्दी व गुजराती टब्बा टीका सहित है।

७०८६. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २१ । मा० १०३ ४७ इ.च. । ले०काल स० १६५१ । झपूर्ण। वेष्टन स० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैरावा।

विक्षेत्र — मुख्यतः निम्न पाठो का सम्रह भ्रौर भी है — तत्वार्थं सूत्र, कल्यारण मन्दिर, एकी साव । बीच के १९ सं १६ पत्र नहीं है।

७०६० प्रतिसं०१६ । पत्रस० २-२४ । ले०काल x । प्रपूर्ण । वेष्टनसं०६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बमवा।

विशेष -- प्रांत हिन्दी टीका सहित है।

७०**६१. प्रति सं० १६।** पत्रस० ४। ग्रा० ६×४ इञ्च। भाषा-सरुव्रतः। विषय-स्तोत्रः। से**०काल** र । सपूर्या । वेष्टन म० ४७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्बनाथः सन्दिर उदयद्रः।

७०६२ प्रतिस २०। पत्रस०२ –१६। घा०११४६ इ.च. ले०काल 🗴 । छपूर्गा वेष्टन स० ४३३ । प्राप्त स्थान — दि० जैन सभवन थ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - प्रति सस्कृत टीका सहित है।

७०६३. प्रतिसं० २१ । पत्र स० १६ । घा० १०×४ इ.च । ले०काल × । पूर्एं । बेष्टत स० १११ । प्राप्ति स्थान— ति० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - करी कहीं हिन्दी मे शब्दों के अर्थ दिये हैं।

७०६४ प्रतिसं० २२ । पत्रस**्थामा ११**४४ इ.च । ले० काल स० १७५८ । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन धप्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष — घटा कर्णयत्र भी है।

७०**६५. प्रति सं**० २३ । पत्रस० १२ । प्रा० ⊏×४ इञ्चाले० काल स० १६८० । पूर्ण । वैष्टन ४४ ८८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष -- भादवा में अवरलाल चौधरी ने लिपि की थी।

७०६६. प्रति सं० २४ । पत्र स०११। प्रा०११४७ इञ्च । ले० काल 🗙 । पूर्णे। बेष्टन सं० ६८, ६७ । प्रास्ति स्थान---वि० जैन मंदिर प्रादवा (राज०) विशेष-प्रति हिन्दी धर्थ सहित है।

७०६७. प्रशिक्षं० २४ । पत्रसं० ८ । द्वा० ८ ४ इञ्च । से०कास ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० १८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर)

**विमेश**—एक प्रति और है।

७०६८. प्रतिसं० २६। पत्र स०६। प्रा०७३/४४, दश्वा । ते० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० १६१ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर फतेहपुर मेलाबाटी (सीकर) ।

विशेष — उमास्वामि इत तत्वार्थसूत्र भी है जिसके ३२ पृष्ठ हैं। ब्राच्युराम सरावगी ने सदनगोपाल सरावगी से प्रतिलिपि कराई थी।

७०**१६. प्रतिसं० २७ ।** पत्र स० १ । झा० ८×१ इचा । ले**०काल ×** । पूर्ण । वेष्टन स० ४८-१३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष --- कही २ कठिन शब्दों के श्रर्थ दिये हैं।

७१००. प्रति सं० २८ । पत्रसं० २ । ग्रा० म्ू४४ॄ इञ्च । ले०काल स०१६४८ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनसं०१४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लडेलवाल पंचायती मंदिर अनवर ।

विशेष—इस प्रति मे ४२ पद्य है। प्रति स्वर्गाक्षरी है। प्रत्तिम चार पद्र निस्त प्रकार है—

नाथ. परः परमदेव बचोभिदेयो ।

लोकनवेशि सकलार्षं वदस्ति सब्वं । उच्चरतीव भवतः परियोधयेतो । नैकुशंभीर सुरदुंत्वयः समाया ॥४६॥ वृद्धिदिवः सुमनसां परितः प्रपातः । ग्रीतिप्रदा सुमनसां च मधुबताना, श्रीतो राजीव सा सुमनसा सुकुमार सारा,

सामोदस पदमराजि नते सदस्या ॥१०॥
मुद्रता मनुष्द्रय महुसामपि कोटि सस्या,
भाजा प्रमाप्तसर सम्बद्ध माहुसति।
तर्थ्यस्तमः पदस्त्रेदमहत्त्राहुति,
जेनी तनु खृतिरशेष तमो पहुली॥५१।
देवन्बदीय णक्तामणकेवलाव,
बोधाति गाद्य निहुयस्त्रवरनराणि।

बाधात गाद्य । नह्य स्नवरत्नराण । घोष स एव यति सज्जन तानुमेने, गभीर मार मरित तव दिव्य घोष: ।।४२।।

७१०१. प्रतिसं० २६ । पत्र स०७ । ते० काल स० १६७६ । पूर्या । वेष्टन स० ७३३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष — संस्कृत टीका सहित मिर्जापुर मे प्रतिलिपि हुई । मढार मे ४ प्रतिया प्रीर हैं।

७१०**२. प्रतिसं० ३०** । पत्र सं० ६ । प्रा० १०३×४३ इ.च. । ले० कांस सं० १८७२ फामुस्स् सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टुन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रमिनन्दन स्वामी, बुंदी ।

७१०३. प्रति सं० ३१ । पत्र स० २४ । घा० ११×७ इ.च. । ले० काला स० १६६४ । पूर्ण । बेटुत स० १४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फॉमनन्दन स्वामी दूदी ।

विशेष - ४८ मंत्र यंत्र दिये हुए हैं। प्रति ऋदि मंत्र सहित है।

७१०४. प्रतिसं० ३२ । पत्र सं० १० । घा० १०४४ इथा । ते० कालः स० १६०८ । पूर्णः । वेष्ट्रत स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पाण्वनाय चौणान बृदी ।

७१०**५. प्रतिसं० ३३** । पत्र सं० ६ । म्रा० १०३ ४६ हे इञ्च । ले० काल सं० १९०४ । पूर्ण । वेष्टुत स० २२४ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मदिर ।

विशेष — त्रूदी मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि तुई थी। सस्कृत में संकेतार्थ दिए हैं।

७१०६. प्रति सं० ३४। पत्रस॰ ४। ले॰काल × । पूर्एं। बेष्ट्यसं॰ २२५। प्राप्ति स्थान-उपरोक्त मन्दिर।

विशेष-प्रति प्राचीन एव जीएं है। ३ प्रतिया भीर है।

७१०७. प्रतिसं० ३५ । पत्र स० ८ । आ० ५३ ४४ हुँ इञ्च । लेक काल स०१ ५३४ । पूर्ण । वेपून स०१२० । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष-स्वणाक्षरो में लिखी हुई है। स्लोकों के चारों ग्रोर मिन्न २ प्रकार की रगीन वार्डर है।

७१० म. भक्तामर स्तोत्र भाषा ऋदि मंत्र सहित— 🗴 । पत्र सं० ७ । झा० ६२ ४४ इख । भाषा- द्वित्री (गदा) । विषय-स्तोत्र एव मंत्र झास्त्र । र०काल 🗴 । ले०काल ४। पूर्ण । बेहन स० ११६८ । प्रास्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर फजमेर ।

विशेष - प्रति जीएां है।

७११०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । प्रा० १० $\times$ ६ इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर फतेहपूर शेखावाटी (सीकर)

७**१११. प्रति सं० ३ ।** पत्र सं० १–२४ । आ ० ६imes ६ इत्यः । ले० काल imes । अपूर्णं । बेष्टुन.स० १३४–६२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर कोटडियों का ड्रांगरपुर ।

७११२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । घा० १०×६ इंच । ले० काल × । घपूर्ण । वेस्टन स० १३४-६२ प्रास्टिः स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

७**११३. प्रति सं० ४ ।** पत्रसं० <sup>४</sup>६ । घा० १४६ इ.च. । ले० काल ४ । पूर्ए। बेष्टन सं० ३८६–१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

, ७११४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २४ । सा० १०३ $\times$ ६३ हत्र । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टतस० १२/४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर पास्त्रेनाथ इन्दरगढ (कोटा)

७११४. प्रसित सं० ७ । पत्र सं०४५ । घा० १० ४४ इन्छ । ले० काल 🗴 । सपूर्ण । बेष्टन स.० २८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर दबलाना (बृंदी)

७११६. प्रसिसं॰ प्र $^{1}$ पत्रसं॰ १-२१। धा० १० $\times$ ५ $^{1}$  इश्व । ले•काल  $\times$  । धपूर्ण । बेष्टन सं॰ २७०। प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन मन्दिर दवलाना (बृंदी)

७११७. प्रतिसं० है। पत्रस० ५२। धा० ६ ×६ इश्वः। ले०काल × । धपूर्णः। बेष्टनसं० ३४१। प्रास्ति स्थान-रि० जैन प्रतिर दीवानजी कामा।

७१**९ फ. प्रतिसं० १० ।** पत्रसं० ०६ । झा० ६ ै × ४ इन्छ । ले०काल सं० १८४६ भावता बुदी १४ । पूर्ण । वेटन सं७ ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैरावा ।

७११**६. प्रतिसं० ११**। पत्र सं० १६ । ग्रा० ६३ ४४ इच्चा लेलकाल सं० १७६२ फाल्गुन सुदी १ । पूर्ण । बष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बंदी ।

७१२०. **प्रतिसं० १२।** पत्र स०२७। ग्रा० १०¦ ४७ हुन्छ । ले०काल ४ । पूर्गा । वेष्टन सं० ६० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मस्टिर श्री महाबीर बंदी ।

विशेष-चोबे जगन्नाथ चदेरीवाले ने चन्द्रपरी में प्रतिविध की थी।

७२२१ भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित —  $\times$ । यत्र स०२४-६६ । ग्रा०४ $\times$ ४ इत्य । माथा-मस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण् । वेष्टन स०७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर व्यक्तिम धूदी ।

७१२२. मक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित —  $\times$ । पत्र स०२१ । प्रा० ११ $^{3}$  $\times$ ५ इश्व । माधा— संस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । ए० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । धपूर्ण । वेट्टन स०१७ । प्राप्ति स्थाम — दि० जैन मन्दिर प्रादिशाय बुदी ।

७१२३. भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित $-\times$ । पत्र सस्या १। धा०६)  $\times$ ४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषयु-मत्र स्तोत्र । र०काल  $\times$ । मे० काल  $\times$ । वेष्टन स०६६०। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर सक्तर, अयपुर ।

७१२४. सक्तासरस्तोत्र टोका—ग्रसरप्रस सूरि । पत्र सः १०। भाषा—सस्कृत । विषय— स्तोत्र । र०काल ४.।. लं० काल सः०१६१ । पूर्णं। वेय्टन सः०४३७ । प्रास्ति स्थान् – दि० जैन पंचायती महिर भरतपुर ।

७१२**५. प्रतिसं० २ ।** पत्र सं० २६ । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । येटटन स० ७४४ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--पत्र स॰ १६ से जीवाजीव विचार है।

७१२६. प्रतिसं० ३ । पत्र सं०६ । ग्रा०६ ( ४४ इ.च. । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । वेध्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जन मन्दिर बंद ।

विशेष -- टीका का नाम मुखबोधिनी है। केवल ४४ सूत्र हैं। प्रति श्वेतास्वर प्रास्ताय की है।

७१२७. भक्तासार स्तोत्र टोका- ४ । पत्रस० २६ । मा० १०३ ४४३ इच्य । ले०काल ४ । पूर्णं । बेष्टनस० २४७ । प्राप्ति स्थान-नन्न वि० जैन मन्दिर ग्रजनेर । विशेष--शिका का नाम सुख बोधिनी टीका है।

७१२मः प्रतिसंव २ । पत्रसव्य । भाव ११ है 🗴 ४ है इल्प्य । सेव्हाल 💥 । मपूर्ण । बेष्टुनसंव १४३ । प्राप्ति स्थान — भव दिव जैन मदिर क्रजमेर ।

७१२६. प्रतिसं० ३ । पत्र स०१६५ । घा०६ $\frac{3}{5} \times \frac{7}{4}$  इञ्च । से० कास्य  $\chi$  । पूर्ण । बेहन सं०१३२५ । प्राप्ति स्थान — म० वि० जैन मन्दिर धजनेर ।

७१३०. प्रति स०४ । पत्र स०६७ । मा०द×४३ ६ च्या । ले० काल 🔀 ६ ख्युसँ । बेप्टन स० १८६ । प्राप्ति स्थान— म०दि० जैन मन्दिर धनमेर ।

७१३१. प्रति सं०५। पत्र सं०१२ । मा०१०४४ इ**था। लेल्ह्यस् सं०**१६६७। पूर्यः ॥ बेष्टन स०१३३। प्राप्ति स्थान— दि०जैन मन्दिर दबकाना (बृंदी)

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवत् १६६७ वर्षे ग० श्री गड् श्री जिल्लादास शिष्य ग० हर्षेविम**ल लिक्किलं कराय**ला नगरे स्वयं पटनार्थ।

७१३२. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२ । ब्रा० ८ $^3_i \times 9^3_i$  इश्व । तेल्काल सं० १६३२ काती बुदी ६ । पूर्ण । वेस्टन सं० १५४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर फतेहपुर नेलावाटी स्सीकर)

७१३३. प्रतिसं• ७ । पत्रस॰ ४ । मा॰ १०३ ४ ४ दे इचा ले॰ कॉला ४ । मपूर्ग। बेप्टन स॰ ७४२ । प्राप्तिः स्थान—दि॰ जैन मदिर लक्कर, जयपुर।

७१३४. प्रतिसं० ६ । पत्र स०१२ । ग्रा०११ ४ ७ ६ञ्च । ते० काल 🗴 । पूर्ण् । बेष्टन स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७१३४. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४१ । मा० १० $^3$  $\times$ ४ $^3$  इंच । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुतसं० २० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर पास्वेनाथ चौनान बूदी ।

विशेष — हिन्दी टीका भी दी हुई है।

७१३६. प्रतिसं०१०। पत्रस०१४। मा०१०×४३ दवा। से•काकः × । म्रदूर्सा। वेष्टन स०२६४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दबलाना (ब्रुदी)

७१३७. प्रतिसं० ११ । पत्र स०२१ । प्रा०११×५ हुँ इच्छ । ले० काल स०१८५० प्रगहन बुदी १ । पूर्ण । बेपन स०१८९/४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष - लाखेरी ग्राम मे प्रतिविधि हुई थी।

७१३म. प्रतिसं० १२ । पत्र स० १४ । आ०१० ४ ६ हुँ इञ्च । ले०काल × । पूर्ए । बेष्टन ६० ५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारार्यासह (टोंक)

७१३**९. प्रति सं० १३ ।** पत्रस० २६ । घा० १२×६ इथा । ते० काल अः । पूर्ण । बेष्टन स० १३/३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन धप्रवाल प्वायती मन्दिर धलकर ।

बिशेष--- मत्रों के चित्र भी दे रखे हैं।

७१४०. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ८० । खा० ६१४४ इचा । से०कास अः । धपूर्ण । बेष्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा महिदर बयाता । विशेष-गुटकाकार में है।

७१४१. प्रसिसं० १४ । पत्र सं० ३६ । घा० १४४ | इत्थ । ले० काल स० १६५० ज्येष्ठ बुदी १४ । पूर्ण । वेपटन स० ७५ **। प्राप्ति स्थान**—वि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है।

७१४२, प्रतिसं० १६। पत्रस० ४०। ग्रा० १३x७ है इंच। से०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ६६। प्राप्ति स्थान-—वि० जैन शंचायती मन्दिर कामा।

७१४२, प्रतिसं०१७। पत्रस०२४। प्रा०११४७६२४। लेकाल सं०१८६८। पूर्णै। वेष्ट्रसं०८६। प्राण्ति रूथाल—र्नेदि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलावाटी (सीकर)

विशेष--प्रति सुन्दर है।

७१४४, ब्रह्मिसं० १ = । पत्रसं० २४ । घा० १०×४६ च । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० २६३-११५ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन मदिर कोटडियो का ड गरपुर ।

७१४५. द्रस्तिसं० १६ । पत्र स०२७ । घा० ६ $\frac{1}{4}$ ४६ $\frac{3}{4}$ ६२ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०४७ । प्राप्ति स्थ्रान—दि० जैन धप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७१४६. ब्रिजिस ०२०। पत्रस०२४। से०कास imes। पूर्णः। वेट्टन स०४५०। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पदायती मन्दिर भरतपुरः।

७१४ ६ भक्तामर स्तोत्र वालावकोच टीका—  $\times$ । पत्र म०११। ग्रा०१२४६ इखा। भग्या-हिन्दी गया। विषय स्तोत्र। र०काल  $\times$ । ले०काल सं०१६६१ पूर्ण। वेष्ठन सं०३५६। प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दक्लाना (बृदी)

७१४१. भक्तामर स्तोत्र भाषा—धर्बराज श्रीमाल । पत्रस० २४। प्रा० १० $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । साथा-सस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७१५०. प्रति सं० २ । पत्रस० १३ । लेब्बाल × । पूर्ण । बेष्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प चापती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

७१५१. मक्तामर स्तोत्र माना—नथमल बिलाला । पत्रसं० ५२ । ग्रा० १०४५ इख । भन्ता—हिन्दी । विशय-ऋषोत्र । र०कान सं० १८२६ ज्येष्ठ मुदी १० । ले०काल सं० १८६४ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १४६ : प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)

७१४२ प्रति सं०२ । पत्रकः ४०। धा० ११ ×४, द्वतः। ले० काल सं०१६५५ । पूर्णः। वेष्टन सं०१३६ । **प्राप्तिः स्थान**--- दि० जैन मदिर राज्ञमहल (टोक)

विशेष --- प्रति ऋढि मत्र सहित है। तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

७१५३, प्रतिस०३ । पत्रस०२ - ४४ । घा०११ ×६ १ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वैकृतसं०१४ ३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बडाबीसपथी दौसा

७१४४. भक्तामर स्तोत्र मांचा — जयबंद खावड़ा । पत्र स० ३६ । ब्रा० म्रे ४ प्रे इंच। माषा — हिन्दी । विषय — स्तोत्र । र०काल सं० १८७० कातिक बुदी १२ । ले०काल 🗴 । पूर्य । वेष्टन सं० ६९७ । प्राप्ति स्थान — ५० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष - लालसोट वासी प० विहारीलौंल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

७१४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले॰ काल स॰ १६०६ । पूर्ण । वेप्टन सं० ३८ । प्राप्ति स्थान—दिः जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

७१**४६ प्रतिस**०३ । पन्नस०२०। ग्रा०१३ ४ ८ वृङ्क्चाले० काल स०११४४ । पूर्या। वेष्टन स०६ = । **प्राप्तिस्थान** — दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर।

७१५७. प्रति स०४ । पत्र स०२३ । ग्रा०१३ ४ म इच्छा। ले०काल० स०१६०म ।। पूर्ण। वेष्टन स०१७२ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन लडेलवाल पचायती मन्दिर मनवर ।

विशेष — दीवान बालमुकन्दजी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी। एक दूसरी प्रति २० पत्र की भीर है।

७१५८. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २० । घा० ११ ४ ४ १ इ.स. । ले० काल स० १६६४ मगसिर बुदी १० । पूर्णः । वेप्टन स० १२८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (मीकर)

७१५६. प्रतिसं०६ । पत्र स०३८ । प्रा०११ 🗴 ४ है इंब । ले०काल स०१६४४ । पूर्ण। वेष्टन स०३८५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

७१६०. मक्तामर स्तीत्र भाषा— × । पत्र स० ४ । धा० १० रे ४४ । इत्यः । भाषा— हिन्दी (पत्र) । विषय स्तात्र । रुकाल × । ते० काल × । पूर्णः । वेच्टत स० २.४ । **प्राप्ति स्थान**— च्या हिन्दीत सहर प्रकोश

## द्यादि माग--चौपई

धमर मुकुटमिंग उद्योत । दुरित हरण जिन चरणह ज्योत । नमह त्रिविधयुग ग्रादि ग्रगर । भव जल निवि पर तह ग्राधार ।।

धन्तिम---

मतामर की भाषा भली। जानिपयो विचि सत्तामिली। मन समाव **जपि करहि** विचार। ते नर होत **जयश्री** सारु।।

इति श्री भक्तामर भाषा सपूर्ण।

७१६१. भक्तामर स्तोत्र भाषा—× । पत्रसं० ५० । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । से०काल् × । पूर्ण । बेष्टन स० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष---भन्तिम पत्र नही है।

७१६२. भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका--विनोबीलाल । पत्र त० १७३ । प्रा० ६३ ४ ५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल त० १७४७ सावरण बुदी २ । ले० काल १०४३ सावरण बुदी २ । ले० काल १०४३ सावरण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६४ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष--प्रति कथा सहित है।

७१६३. प्रतिसं०२ । पत्रस०२३०। ले०काल स०१८६५ फामुन सुदी२ । पूर्णा। बेष्टन सं०५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानओं भरतपुर।

विशेष - कुम्हेर नगर मे लिखा गया था।

७१६४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १७३ । ले॰काल 🗴 । श्रपूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी मरतपुर ।

७१६५. प्रतिसं०४ । पत्र स० १३० । वे० काल  $\times$  । पूर्ण । वेकृत स०४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी मरतपुर ।

विशेख - १६२६ में मन्दिर में चढायाथा।

७१६७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १३८ । झा० १२ ४८ दुःचा । ले०काल स० १६६६ । पूर्ण । वेदनसं० १७३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन खंडेलवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

७१६म. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १८३ । आ० १३ × ७ इत्था । ले० काल 🛛 ४ । अपूर्ण । वेष्टन स० १४२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायांगह (टोक)

७१६६. प्रतिसं० म । पत्रस०१०६ । म्रा०१२ ४७ इञ्च । लेक्बाल स०१०५ । पूर्ण। बेब्रनस०६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

७१७०. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १७४ । ले०काल 🔀 । सपूर्णः । बेष्टुनम० १३ । प्राप्ति स्थान -दि० जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

विशेष--- ६५ से भागे पत्र नही है।

**७१७१. प्रति स० ११ ।** पत्रस० २२६ । या० १२३ू ८७ इन्च । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेरटन स**० १४ । प्राप्तिः, स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर कामा ।

७१७२. मक्तामर स्तोत्र टीका—लिक्शियद्वंन । पत्रस०२१ । ग्रा०१०४४ ॄै इश्व । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७१७३, भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका — हेमराजा। पत्र ग०७६ । ब्रा०६ ४ ६ हआ। भाषा — हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रण्काल ४ । मेण्काल म०१७७० । पूर्णा वेष्टर ग०१५४ । प्रास्ति स्थान — म०दि० जैन मन्दिर बजमेर।

भक्तामर टीका सदा पर्ट सुनेजो कोई।

हेमराज सिव सुख लहै तन मन बस्चिन होय । विशेष— गुटका आकार में हैं।

विश्वाच--गुटका धाकार महा

७१७४. प्रतिसं० २ । पत्र स०१४ । आ० ७१ ४४ इखा । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष--हिन्दी पद्य महिन है ।

७१७५. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ४ । झा० ६१ ४४ है इन्दा । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० १२२-५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटबियो का ह्र गरपुर ।

विशेष - हिन्दी पद्य टीका है।

७१७६. प्रतिसं० ४ । पत्र स०४ । घा०१० 🗡 इच्चा । ले० कान 🗴 । पूर्णः। बेष्टन सं०२४७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष -- हिन्दी पद्य है।

७१७७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २८ । ले॰काल स० १८६६ ज्येष्ठ गुक्ला ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० १४४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पंचायती सन्दिर भरतपुर ।

विशेष--जोधाराज कासलीवाल ने लिखवाई थी। हिन्दी पद्य है।

७**१७८. प्रतिसं० ६**। पत्र स० ११२। घा० ४<sup>२</sup> × ४<sup>2</sup> इचा। ले०काल स० १८३० माघ बदी ४ <u>१</u> पूर्ण। बेष्टन स० १२०। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष-- बाटिकापुर मे लिपि की गई थी। प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। गुटकाकार है।

७१७६. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ६६ । घा०६×४ १ इ.च । ले०काल × ः पूर्णः । वेध्टन स०३४४ । प्राप्ति स्थानः दि० जैन मन्दिर दीवान जीकामा ।

विशेष--हिन्दी गद्य एवं पद्य दोनों में अर्थ है।

७**१८०. प्रतिसं**० मः। पत्रस• २१ । प्रा॰ १०×४ ¦ इलाः। ते•काल स॰ १७२७ । पूर्णः । वेष्टन स॰ २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैनः मदिर दीवानजी कामाः ।

विशेष — हेमराज पाड्या की पुस्तक है।

७१८१. भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका — 🗴 । पत्र स० २० । प्रा० ११ है 🗴 ५ इश्व । भाषा — सस्कृत, हिन्दी । विषय स्तोत्र । र०काल 🗴 । ते० काल स० १८४४ मगसिर सुदी १ । पूर्ण । वेष्टृतस० ११७ । प्राप्ति स्थान — ग० दि० जैन मदिर ग्रजभेर ।

विशेष--- प० चिमतलाल ने दलीचद के पठनार्थ किशनगढ मे प्रतिलिपि की थी।

७१६२. **मक्तामर स्तोत्र टीका—पुराकर सूरि।** पत्र स० ६४। माया-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रक्ताल 🗴 । लेक्साल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपुर ।

७१**८३. प्रति सं०**२ । पत्र स० ४४ । ले०काल 🗴 । पूर्णं। बेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान** – वि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

७१८४ भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—कनक कुशल । पत्रस० १४ । ग्रा० १०४४ दवा । मापा-सरकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ने० काल स० १६८२ ग्रासोज सुदी १ । पूर्ण । नेष्टृनसं० २६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ सदिर बोगान वृदी ।

विशेष--वैराठ नगर में विजयदशमी पर रचना हुई थी। नारायना नगर मे नयनरुवि ने प्रतिलिपि की यो।

७१८५. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—रत्नचन्द्र। पत्र स०२४। मा०११२४६ इखा भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वेष्टन स०१२६१। **प्राप्ति स्थान—**भ० विश्वजैत स्विष्ट स्वक्रमर । ७१८६. प्रतिसं०२।पत्रसं०४६। घा०११४५ इंच। ले॰काल सं०१७५७ घगहन सुदी ७। पर्यो। बेबन सं० २७४-१४२। प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर कोटबियो का द्वंगरपुर।

७१८७. प्रति स<sup>ु</sup> ३। पत्रसं० ४६।मा०१२४ ८ है इक्व। ले० काल सं०१८३४ पौष बुदी ६। पुर्यो । बेप्टन सं०४७ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मदिर मजमेर।

विशेष — सिद्धनदी के तट ग्रीवापुर नगर में श्री चन्द्रप्रम के मन्दिर में करमसी नामक श्रावक की प्रेरणा से ग्रंच रचना की गयी। प्रतिलिपि कामा में हुई थी।

७१८८. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १४-४३ । से०काल सं०१८२४ । प्रपूर्णं । बेष्ट्रनसं० ६३ । प्राप्ति स्थात--वि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

विशेष--प्रति जीर्गं है।

७१८६. भक्तामर स्तोत्र वृक्ति—का रायमल्ल । पत्र स॰ ५७। प्रा॰ x = 3ृेश्व । भ्राया-सक्तृत । विषय-स्तोत्र । र०काल सं० १६६७ प्रायाड सुदी ५ । ले०काल x । पूर्ण । वेश्न सं० १३६३ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७१६०. प्रतिसं० २ । पत्रस०४७ । घा० १० 🗴 ४ूँ इचा । ले०काल स० १७४६ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टनसं०१४१४ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर खजमेर ।

७**९९९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६४** । मा० १०×४१ इन्छ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर श्रजनेर ।

७१६२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४२ । प्रा० १०imes४ इखा । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टनस० ६६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष-भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य ब्र॰ मेध ने प्रतिनिधि की थी।

७१६**३. प्रतिसं० ५** । पत्र स०३७ । घा०६३ ४४३ इ.च.। ले० काल सं०१७८३ माह सुदी ६ । पर्यो । बेहन स०५ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर कोटकों का नैसावा ।

७१६४. प्रतिसं० ६ । । पत्र संस्था ४८ । बा० १०३ ४४ इला । ले० काल सं० १७४१ सावन सदी ५ । पूर्ता । वेष्टुन सस्या ३८६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

विशेष---बगरू ग्राम में सवलसिंहजी के राज्य मे प० हीरा ने ग्रादिनाय चैत्यालय में लिपि की थी।

७१९५. प्रतिसं० ७। पत्र सं० ४३ । आ० १०३  $\times$  ४३ इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्गा । बेच्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर प्रिभिन्दन स्वामी बृंदी ।

विशेष वृदवादिमध्ये प० तुलसीद्वादसी के शिष्य ऋषि प्रहलाद ने प्रतिलिपि की थी।

७१६६. प्रतिसं० मा पत्र सं० ४२ । घा० १ 🗶 ४३ इथा । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० ३४५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७१९७. प्रतिसं**० ६** । पत्र स० ३६ । प्रा० ६ ४ ६ इञ्च । से० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । बेपुन स० १५८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष--छत्र भिमल के पटनार्थ प्रतिलिपि कराई थी।

७१९ द्र. प्रति सं० १०। पत्रसं० ३४। द्रा०७ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4} द्वा । ले० काल सं० १७६२ वैद्याल दुरी १२। पूर्ण। बेटन सं०७२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब'दी) ।$ 

७१९६६. प्रतिसं० ११। पत्र स० ३६। ध्रा॰ १०३ × ४३ इचा। ले० काल सं०१०३५ कार्तिक सुदी ४। पूर्ण। वेष्टुन सं००३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर बोरसली कोटा।

७२००. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ४१ । घा० १० $\frac{3}{4} \times Y$  इञ्च । ले० काल स० १०१७ माघ बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० ०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-नाथुराम बाह्यण ने लिखा था।

७२०१. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० २-३७ । ले० काल स० १७३६ । अपूर्णं । बेस्टन सं० ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर डीग ।

विशेष-कामा मे प्रतिलिपि हई थी।

७२०२. प्रतिसं०१४ । पत्र स० ३३ । म्रा०११४४ इला । ले० काल सं०१६७२ । पूर्ण । बेष्टन सं०२४१ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मसवारः मन्दिर उदयपुर ।

७२०**३. प्रतिसं० १४।** पत्र स० २४। क्रा० ११×५३ हवा । ने० काल स० १७१३ । पूर्ण । वेदन स० ७४ । **प्राप्ति स्यान** — दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७२०**४. प्रतिसं० १६**। पत्र स०४३ । ले०काल 🗴 । पूर्णः । बेष्टन स०४३६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

७२०**४. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति** —  $\times$  । पत्र स॰ ४४ । ग्रा० क $^1_{V}$  ८ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ १२६७ । **प्राप्ति स्थान** – भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमर ।

७२०६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ७० । मा० १० ४ ६ इ.च. । ले०काल 🗴 । म्रपूर्ण । बेष्टन स० १२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर म्रादिनाय बूंदी ।

विशेष--कथा भी है।

७२०७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २४ । घा० ११×५ इचा। ले० काल × । पूर्णा । बेष्टन स० ६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी ।

विशेष-पस्तक पं० देवीलाल चि० विरध की छै।

७२०**८. प्रतिस<b>०४।** पत्रस०२४। ले०काल ४। पूर्या। वेष्टन स०४१८। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रायती सन्दिर मरतपुर।

विशेष -- टीका सहित है।

७२०**६. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति** — X। पत्र स०१६। भाषा-संस्कृत । २०काल X । क्षे० काल X । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४३४ । **प्रान्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपूर ।

७२१०. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ८ । ले॰काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ४३७ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है तथा ३६ वीं काव्य तक टीका है। आगे पत्र नहीं हैं।

७२११ अफ्तासर स्तोत्रावधूरि—  $\times$  । पत्र सं०२-२६ । प्रा०१ $\times$ ५ इख । आया— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । ्रं०काल्  $\times$ । ले० काल सं०१६७१ । प्रपूर्णं । वेष्टन सं०३११/४२४-४२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्विर उदयपुर ।

विशेष-प्रनितम पृष्पिका--

इति श्री मानत् गाचार्यकृत भक्तामर स्तोत्राव चूरि टिप्पगुकं संपूर्णं कृत ।

प्रशस्ति -- रूह्तगपुर वास्तव्य चौषरी वसावन तत्पुत्र चौषरी सुरदास तत् पुत्र चौषरी सौहल सुख चैन ब्रमालपुर वास्तव्य लिखित कायस्य माषुर ययालदास तत्पुत्र सुदर्शनेन । संवत् १६७१ ।

७२१२. भक्तामर स्तोत्राखबूरि—  $\times$  । पत्र सं० १११ । घा० १० $\times$ ४ हे इखा आपा-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० २६२-१०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

विशेष-- श्वेताम्बर भ्राम्नाय का ग्रथ है। ४४ काव्य है।

७२१३. भगवती स्तोत्र—  $\times$  । पत्रस०३ । प्रा० ६ $\frac{3}{2}$   $\times$  ५ $\frac{3}{2}$  इत । भाषा-हिन्दी । विषय— स्तवन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७२१४. **भज गोविन्द स्तोत्र**— ४ । पत्रसं०१ । झा०१२४६ इ**थ**ा भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । वेष्ट्रन स०४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७२१५. सबहर्स्तोत्र (गुरुगीता) — । पत्रस० ४ । ग्रा० ४ $\times$ ३ $^{3}$  इन्छ । साधा — सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ४ $^{2}$  । प्राप्ति स्थान — दि० जैन छोटा मस्दिर बयाना ।

७२१६. मवानीं सहस्रनाम स्तोत्र—  $\mathbf{x}$  । पत्रस्र०१३ । घा० ६ $\times$ ४१ इञ्च । मागा— सस्ह्रत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\mathbf{x}$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन ग० १२६ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--- प्रन्तिम दो पत्र मे रामरक्षा स्तीत्र है।

७२१७. मवानी सहस्रनाम स्तोत्र —  $\times 1$  पत्रम०२—२६ । भाषा — संस्कृत । विषय — स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१७६७ पौष मुदी ७ । श्रपूर्ण । बेष्ट्रन स०२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपथी गरिस्र बमवा ।

विशेष—मादसोडा मे प्रतिलिपि हुई थी।

७२१८. सारती लखु स्तवन—भारती । पत्रसः ७ । प्राः १० $\langle x, y \rangle$  इत्र । भाषा— संस्कृत । विषय— स्तोत्र । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रनसः २६७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सन्दर लक्षर जयपुर ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७२१६. (यति) भावनाष्टकः —  $\times$  । पत्र म०१। या०१३ $\$  ४६ इश्व । भाषा संस्कृत । विषयः — रतीत्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स०४११ । प्राप्ति स्थानः —दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७२२०. भावना बत्तोसी—ग्राचार्य ग्रामितगति । पत्रमं० २ । ग्रा० १३२४६ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । वेट्टन स० ४०३ । **प्राप्ति स्थान—दि**० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर । ७२२**१. भाव शतक — नागराजा** । पत्रस० १७ । म्रा० १० $\frac{1}{2}$ ×६ इ**च । भ्राया**—सस्कृत । विषय – स्तवन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० २२७ । **प्राप्ति स्थान —**दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

विशेष--- १८ पदा हैं।

७२२२. प्रतिसं०२ । पत्र स०५ । मा०१०×४ इचा । ले०काल 🗴 । बेष्टत स०२२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-१०१ पद्य हैं। ग्रथ प्रशस्ति भ्रच्छी है।

७२२३. सूपालचतुर्विशतिका—सूपाल कवि । पत्रसंब्धः। भाषा—सःकृतः। विषय—स्तोत्रः। au०कालः imes। पूर्णः। वेष्टनः स॰ ६६७ । प्राप्ति स्थान—स॰ दि० जैन सन्दिरः ग्रजमेरः।

७२२४. प्रति स० २ । पत्रस० १३ । ग्रा॰ ६imes३ इञ्च । ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ६८६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७२**२४. प्रतिसं० ३।** पत्र स०४। प्रा०११४४ इञ्च । ने०कान ४ । पूर्णं । बेष्टन स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रीगनन्दन स्वाभी बुदी।

७२२६. प्रतिसं० ४ । पत्र स०४ । झा० १०० ४४ इञ्च । ले० काल स०१६०७ । पूर्ण । वृष्टुन स०४१ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन सडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

सबत् १६०७ वर्षे आवण विदि ८ थी मूलमधे बलान्कारगेगो भट्टारक सकलकीलिदेवा तदास्नाये क्र० किनदान ब्रह्म बाघत्री पठनार्थ।

७२२७. प्रति सं० ४ । पत्रस० १४ । म्रा० ११३ ×४ डव्य । ले०काल स० १७४७ । बेष्टुनस० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७२२**८. प्रतिसं० ६।** पत्रसं० ६। मा० १०३<sup>२</sup>४५ दखा। ले०काल imesा वेग्टन स० ३६२ । प्रा**प्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-- टब्बाटीका सहित है।

७२**२६. प्रतिसं०**७ । पत्र स०४ । आर्थ १० ${}^2_4$  ×५ डश्वा । ले० काल imes । वेष्टन स० ३६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर।

७२३०.प्रति सं० मः। पत्र स०३। प्रा०१३ $\frac{3}{4}$  $\times$ ६ इश्वः। ले० काल $\times$ । बेष्ट्रन स०४०१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुरः।

७२३१. सूपाल चतुर्विशतिका टीका--- भट्टास्क चन्द्रकोत्ति । पत्रस०१० । ग्रा०६१ × ६२ इ.च. भाषा--- सन्कृत । विषय---- स्तोत्र । ग्०काल × । ने०काल स०१६३२ कांत्तिक बुटि २ । पूर्णे । बेक्नसं०१०६ । प्राप्ति स्थान--- वि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलाबाटी (सीकर)

७२३२. सूपाल चौबीसी माषा—श्रव्यवाज । पत्र म०१६ । मा०११ ४४, इश्व । भाषा -हिन्दी । विषय-स्तोव । र०काल ४ । नै०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनसं०२३४ । **प्राप्तितः स्या**न—दि०जैन मन्दिर दीवानजी कामा । ७२३३. प्रति सं०२ । पत्रस०१२ । मा०११४६ इन्छ । के॰काल सं०१७३३ काती बुदी ४ । पूर्यो । बेष्टन सं०४९३ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है इसकी प्रति सांगानेर में हुई थी।

७२३४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १२ । प्रा० ११ $\times$ ४ है इन्ध । ले०काल  $\times$  । बेष्टन सं० ६७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७२३ ५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २७ । बा० १०३  $\times$  ४३ इख । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रश्निनदन स्वामी वृंदी ।

७२३६. प्रतिसं० ४ । पत्र त० २-१७ । आ० ११\४४ हे इञ्च । ले०काल स० १७२३ चैत्र बुदी १ । अपूर्ण । बेहन सं० ४३ । प्राप्तिः, स्थान—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौना ।

विशेष - ईश्वरदास ठोलिया ने सम्रामपूर में जोशी मानन्दराम से प्रतिलिपि कराई थी।

७२३७. **मूपाल चौबोसी भाषा** × । पत्र स०२। मा०६२ ४४८ दश्वः। माषा— हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । लेकाल × । पूर्णः। वेष्टन स०१०३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० विक्रजेन मीटर स्रजमेर।

७२३ द्र. भैरवाष्टक —  $\times$  । पत्र सं० १४ । ग्रा० १२  $\times$  ६ हे इल । ग्रापा-सस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत स० ३७/६७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

७२३६. संगल स्तोत्र— ×। पत्र स०२। द्या०१०×४९ दश्व। आपा—सस्कृत। विषय-धर्मः र०काल ×। ले०काल ×।पूर्णः वेष्टन सं०६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैसला।

७२४०. सिंग्सिद्रजी रो छन्ट—राजरत्न पाठक । पत्रसः २ । सा० ८४६ इन्त । माया— हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३७४/१४२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डंगरपर ।

> सगरवाडापुर मडग्गो चतुलवली मज्जरगा करण राजरत पाठक जयो देव जय जय करण

७२४१. मिल्लिनाथ स्तवन—धर्मांसह । पत्रस० ३। मा० १०४४ इ.च.। भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल स० १६०७ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३६-४०६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-अन्तिम भाग निम्नप्रकार है।

श्री रतन सघ गणीन्द्र तसगट केशवजी कुलबद ए। तस पिट दिनकर तिनक मुनिवर श्री शिवजी मुग्गिद ए।। धर्मसिह मुनि तस शिष्य भेगी चृष्या मिल जिल्लाए ए।।११।। स्वाप्त मिल रस शिष्य में श्री दोवाजी श्रीकार ए। श्वार सक्य नयरपुन्दर बीकानेट सभार ए। श्वीसघ श्रीमती सरस जाली कीधो स्तवन उदार ए। श्रीमिल्ल जिनवर सेवक जननि सदाणिव सुसकार ए ।

इति श्री मल्लिनाथ स्तवन सपूर्णें। भार्या जवरणादे पठनार्थ।

७२४२. सहासहिष्टस्तवन —  $\times$ । पत्र त०२। द्रा०१० $\times$ Yकुँ द्वा। मापा—सस्त्रत । विषय—स्तोत्र । र०कात  $\times$ । ते०कात  $\times$ । वेष्टन सं०३५७। प्राप्ति स्थान—दं०र्जन मन्दिर सक्तर जयपुर ।

७२४३. सहाँव स्तवन $-\times$ । पत्र स॰ १। ग्रा० १० $\times$ १ $^1$ ६२॥ । भाषा- सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्ट्रन सं० ३७७। प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष-प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

७२४४. महर्षि स्.सन $-\times$ । पत्र स० =। ग्रा० १२ $\times$ १ $^1$ १ दंव। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तित। २०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनसं० १८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर सोबानकी काम।

७२४५. महाकाली सहस्रनाम स्तोश— x । पत्रस० २६। घा० ६×४ ! इंच । भाषा— सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले०काल स० १७६४ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ६६४ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष-गृटका साइज मे है।

७२४६. महाविद्यासकेवरो स्तोश्र $-\times$ । पत्र सं॰ १२। या॰ १×४ है इख । भाषा— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ते॰ काल $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ १२०। प्राप्ति स्थान—दि॰ र्जन महिर पार्थनाथ इदरगढ (कोटा)

७२४६ महावोर स्तवन—जिनवल्लम सूरि । पत्र स॰ ४ । नावा—गाकत । विषय— स्तोत्र । र॰ काल ४ । ले॰काल । पूर्ण । वेप्टन स॰ ६११ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन प्रवायती मदिर मस्तपर ।

विशेष--प॰ चोला ने पं० हर्षके पठनार्थं लिली थी।

७२४६. महावीर स्तवन — विनयकोत् । पत्र सं०३। घा०१० $\times$ ४ इंच। भाषा हिन्दी। विषय स्तवन। र० काल  $\times$ । से•काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टनस०३३४-४०४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवन।य मन्तिर उदयपर।

द्यन्तिम भाग--

इति श्री स्याद्वाद मुबक श्री महाबीर जिनस्तवन संपूर्ण ।

७२५०. महाबीरनी स्तवन—सकलचन्द्रायप्रसंश्र रामा०१०४४) इचा भाषा-हिन्दी। विषय—स्तवन । र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स॰३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा। ७२४१. सहावीर स्तोश वृक्ति—क्षित्रप्रस्ति । पत्रसं०४। प्रा०१०१४४ इञ्च। प्राया— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । रक्तात ४ । सेक्तात ४ । पूर्ण । वेष्टन स०१७३ । **प्रास्ति स्थान—दि०** जैन मन्दिर ग्रामिनस्त स्वामी, वृदी ।

७२४२. सहाबीर स्वामीनो स्तवन —  $\times$  । पत्र सं०१ । घा० १०  $\times$  ४ है इ.स.। भाषा — हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१८४० चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

बिशेष -- ग्रीरङ्गाबाद में लिखा गया था।

७२४३. सिहम्म स्तोश-पुष्पदताचार्यः । पत्रस० ६ । प्रा०६१८४ इ.च । मापा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णः । वेष्ट्नसं०४५२ । प्राप्ति स्थान---भ० दि० जैन प्रतिद स्रजोर ।

७२५४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । प्रा० ११ imes ४  $rac{1}{2}$  इन्छ । से०काल imes । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० ३३८ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मदिर ब्रजमेर ।

विशेष-प्रति जीसं है।

७२**५५, प्रति सं**० ३ । पत्रसं० ७ । ग्रा॰ ६×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ए । बेष्टनस० १५६ । **प्रास्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)

७२**५६, प्रति स०४।** पत्रस०२-६। धा०६३,×४३ इला। ले•काल 🗴 । धपूर्णः। बेष्टन स०२७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बृदी)

७२५७, प्रति स० ४ । पत्रस० १० । आ० ११४६३ इञ्च । ले•काल ४ । पूर्ण । बेटून म० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन गदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

७२५ मानसद्ग स्तवन — मार्गक । पत्र सं०५ । बा० १०४४ है इस । भाषा – हिन्दी । विषय - स्तोत्र । २०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७२५६. मार्सण्ड ह्वय स्तोत्र $-\times$ । पत्रस०२। स्ना०१० $^2\chi$ ६ इञ्च। माया सस्क्रन। वियय-वैदिक साहित्य। र०काल  $\chi$ । ले०काल स० १८६६ फागुरा मुदी६।पूर्गं। वेष्टनस० १३१०। प्राप्ति स्थान—प० दि० जैन मन्दिर स्रजेर।

७२६०. **धृति मालिका** $-\times$  । पत्रतः २ । मा॰ ६ $\frac{3}{4}$   $\times$  ४ इश्व । भाषा-क्रियो । विषय- स्तवन । र०काल $\times$  । पूर्णं । बेष्टन ४०२६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

७२६१. मूलगुरासङक्षाय – विजयवैव । पत्र त० १ । घा०१०, २४ इंव । माषा-हिन्दी। विषय — स्तुति । २०काल × । ते०काल × । पूर्णावेष्टन स०४४ । प्रास्ति स्थान — दि० औन स्रष्टेलवाल मन्दिर उदयपुर। ७२६२. **सांतीमुं गी सङ्गाय—प्रमयचन्द्र सूरि**। पत्र स $\circ$  २ । प्रा $\circ$  १०  $\times$  ४ $^{2}$  इन्छ । माषा–हिन्दी (ग्रष्ट) । विषय–स्तवन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं $\circ$  १४२ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  भैन मन्दिर दबलाना (ब दी) ।

७२६३. यसक बध स्तोत्र — × । पत्र स० २। मा० १२ × द इन्ब । माथा —संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले•काल × । पूर्णं । वेष्टन स० । २०२ प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नागरी वंदी ।

विशेष---टीका सहित है।

७२६४. यमक स्तोत्र—  $\times$  । पत्र सं०६ । ग्रा० १० $\times$ ५ $\xi$  इश्व । भाषा —सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । वेष्ट्रनस० १० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्राधती मन्दिर वनी (टोक)

विशेष-- पाव्यंनाथ स्तवन यमक चलंकार मे है।

७२६५. यसक स्तोत्राष्टक—विद्यानंदि । पत्र स॰६। घा०११  $\times$  ६ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेप्टन सं० २४४। प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन सदिर प्रवर्षर।

विशेष-पृति संस्कृत जीका सहित है। ग्रहंत परमेश्वरीय यमक स्तीवाष्ट्रक है।

७२६६. **रामचःद्र स्तोत्र**— $\times$  । पत्र स०१ । घा०१२  $\times$  ४ इच्च । माषा —संस्कृत । विषय —स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रन सं० ३६५-४७३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपर ।

७२६७. रामसहस्र नाम $-\times$ । पत्रस० १७ । मा० ६ $^1_2 \times ^1_2$  उत्था भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$ । ने०काल सं०१८०६ वैशाल बुदी ऽऽ। पूर्ण । वेष्टन स०२१०। प्रास्ति स्थान-भ० दि० जैन मन्दर बोरमनी कोटा।

लिखित चिरजीव उपाध्याय मयारामेण श्रीपुरामध्ये बास्तव्य ।

७२६८. रोहिस्सी स्तवन $-\times$ । पत्र स॰ २ । प्रा० १० $^1\times ^2$  इच । भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । सपूर्णं। वेष्ट्रन सं० ३६०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन प्रवत्न मन्दिर उदयपुर।

७२६६. सक्सी स्तोत्र—पद्मप्रसदेव । पत्र स० १ । प्रा० १३ रे४६ इच । प्रापा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल 🗴 । लेकाल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर व्यवस्र ।

७२७०. **लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मप्रमदेव ।** पत्रसं० ७१ । घा० १०३ ×४३ दश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्णं। बेष्टन सं० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७२७१. लक्ष्मी स्तोत्रा— $\times$  । पत्र सं०२ । धा०७ $rac{1}{4}$  imes ४ इ.ख । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४० । प्रास्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७२७२, लक्ष्मी स्लोश $-\times$ ा पत्र स० १ । म्रा॰ र $\frac{1}{3} \times \frac{1}{3}$  ह्वा । मापा-संस्कृत । विषय<math>-स्लोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल । पूर्ण । वैष्टनसं० ७४८ । **प्राप्ति स्थान**--भ०दि० जैन मन्दिर मजमेर ।

७२७३. **लक्ष्मी स्तोश गायशी**—imes। पत्रसं॰ २। माथा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०कालimes। ले०काल सं॰ १७६७। पूर्ण। बेष्टन सं॰ १६**। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मदिर बसवा।

विशेष- पश्लीवाल गच्छ के स्खमल ने लिपि की थी।

७२७४. लक्ष्मी स्तोण टीका — × । पत्रसं० ४ । माषा—सस्कृत । र०काल × । से०काल सं० १८६० भावना सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन सं० २८ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-भरतपुर मे लिखा गया था।

७२७५. सक्सो स्तोश टीका— $\times$  । पत्रस० ७। ब्रा० ११ $\times$ ४ $) दश्य । माया—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल <math>\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण ।वेयटन सं० १६७ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर कोरसबी करा ।

विशेष-सरोंज नगर में पं० मुलचन्द ने लिखा सं० १८४ ....।

७२७६. लक्ष्मी स्तोत्र टीका—  $\times$  । पत्र तं० ४ । धा० प्र $\times$ १; इच । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । से•काल । पूर्ण । बेष्टनस• २०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)

७२७७. लाजुशांति स्रोम —  $\times$  । पन सं० १। ब्रा० १० $\times$ ४ इस । भाषा-संस्कृत । विषय— स्तोत्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टुनस० १५०। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

७२७६. लघुस्तवन टीका—भाव शर्मा। पत्र स०३-३६। आ० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इवा। भाषा— संस्कृत । विषय-विधान । र०काल स० १५६० । ले॰काल स० १७७० । अपूर्ण । वेष्टुन स० ७५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

विशेष—अवावती में नेमिनाय पैत्यालय में म० जगतकीति के शिष्य दोदराज ने धपनी ज्ञान नृद्धि के लिए टीका की प्रनिनिषि अपने हाल के की थी। उसटी के तास सबत् १७७०, चंत्र बृद्धि ४ की, ४० तथा ४१ वे पृष्ठ पर विस्तृत प्रशस्ति है, जिसमें निल्हा है कि जगनकीति के ज्ञिप्य प० दोदराज के लिए प्रतिलिपि की गई थी।

७२६०. लघु स्तवन टीका— x । पत्र स० x । मापा—संस्कृत । विषय—स्तीत्र । र०काल x । से०काल x । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहण्यो मन्दिर बसवा ।

७२६१. लघुस्तोत्र विधि— ४ । पत्र स॰ ७ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल 🗙 । के॰काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं॰ ६६३ । प्राप्तिः, स्थान —दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर । ७२८२. **लबुस्वयं मू स्तोश—देवनंदि** । पत्र सं० ४ । मा० १० हुँ 🗙 ४२ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण् । बेष्टन सं०६०३ **। प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७२८३. प्रतिसं०२ । पत्र सं०७ । ग्रा०७ $\times$ ५ इ.स. । भाषा—संस्कृते । विषय-स्तोत्र । र०काल $\times$ । जे०काल $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं०२४८ । प्राप्ति स्थान—दि० र्जन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान वडी ।

विशेष ---दशलक्षरा धर्म व सोलहकाररा के भी कवित्त हैं।

७२८४. लघुस्वयं मू स्तोश टीका—  $\times$  । पत्र सं० ३३ । मावा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । के॰काल स० १७८४ कालिक बुदि ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

७२८५. बच्चपंतर स्तोश यंश सहित— × । पत्र स०१। बेहन सं०७७-४३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हंगरपुर।

७२ स. इ. बंबना जलाडी — ४ । पत्रस०६ । घा० १२ ४ १ इचा । भाषा-हिन्दी (पत्रा)। विषय-स्नवन । र०काल ४ । ले०काल स० ११४२ । पूर्णं। वेष्टन सं०१७१ । प्राप्ति स्थान — दि∙ जैन मदिर श्री महाकोर बूंदी ।

७२८७. **बद्धमान विलास स्तोप्र—जगद्मुषरा । पत्रस**०४से ४८ । माषा—सस्कृत । विषय—स्तोप्र । र०काल × । ले•काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन सं०२२ (क) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बढा पत्तावती मन्दिर डीग ।

विरोष---४०२ पद्य हैं। मट्टारक श्री ज्ञानभूषण् पट्टस्थिनेन श्री मट्टारक जगत्भूषणेत विरावित वद्यमान विलास स्तोत्र ।

४०१ वा श्लोक निम्न प्रकार है।

एता श्रीवदं मानस्तुति मतिवित्तसद् वदं मानातुरागात्, व्यक्ति नीता मनस्या वसति तनुषिया श्री जगदभूवरोन । यो श्रीते तस्य कायाद् विगलति दुरितं वदासकासप्राणायो, विद्या हृया नवद्या मवति विज्ञुसिता कीर्तिदहामलक्ष्मी ॥४०१॥

७२८८. वर्ड मान स्तुतिः—imes। पत्र सं० १ । प्रापा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल imes । के०काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ६४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

७२८६. **बसुधारा स्तोत्र**— × । पत्रस० ८ । ग्रा० ७ १४६२ । पाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०१४६३ । प्रास्ति स्थान—स० दि० जैन मन्दिर ग्रजीर ।

७२६०. **बसुधारा स्तोत्र**— X । पत्र सं० ४ । घा० १० X ४ ई इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रक्ताल X । ले०काल X । पूर्ण । बेटन सं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन प्रग्रवाल पंचारती प्रतिद्या प्रस्तवर । ७२६१. **बसुध्यारा स्तोत्र**— × । पत्र सं०४। ग्रा० १२ × ६ इश्व । माघा — सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × श्वे **० काल** × । श्रपूर्ण । वेष्टन सं० ७३५। प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर सम्बर, जयपुर ।

७२६३ विद्या विलास प्रवन्ध-साज्ञासुन्दर । पत्र स० १७ । घा० १०×४ इज्न । मार्चा-हिन्दी (पदा) । । विदय-स्तोत्र । र०काल स० १५१६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५० । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर दबलाना (वंदी) ।

७२६४. विनती ब्रादीश्वर—त्रिलोककीत्ति । पत्र स॰ २ । या॰  $\mathbbm{4}_{i}^{\lambda} \times \mathbbm{4}_{i}^{\lambda}$  इन्त्र । याथा—हिन्दी । यिषय —स्तवन । रे०काल्  $\times$  । ले० काल्  $\times$  । पूर्णं । बेप्टन स॰ २०१ । प्राप्ति स्थान— म॰ दि० जैन प्रक्रिट प्रजीर ।

विशेष— प्राविजिनवर सेविये र लाल ।
पूलेवगढ जिनराज हितकारी रे ।
जिम्नुवनवाहित पूलेरे लाल ।
सार प्रातमकाव हितकारी रे ।
प्राविजिनवर ...........

७२६५. विनती संग्रह — वेबाबह्य । पत्र स॰ ११ । आ० ११  $\times$  ४ इ.च । आपा - हिन्दी पर्य । विषय स्तवन । र्०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ व दी ।

७२**६६. प्रति सं० २ ।** पत्र स० २२ । द्वा० १२imes४ $^2$ , इश्वः । ले० काल imes । पूर्णः। बेप्टन स० ५५–७१ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दीसा ।

विशेष - विनतियो का सपह है।

७२६७. प्रतिसं० ३ । पत्र म० ३१ । लेक्जल 🗴 । पूर्ण । बेष्ट्रन स०४०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायनी मदिर भरतपुर ।

७२६ म. विवापहार स्तोत्र महाकवि धनजय । पत्र स॰ ७ । मा॰ १०४४) इश्व । भाषा-सम्कृत । विषय—स्तोत्र । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । बेष्ट्रन स॰ १२६१ । प्राप्ति स्थान—स॰ विक जैन प्रतिर धजनर ।

७२६६. प्रतिसं०२ । पत्र स०७ । ध्रा०१०१४ ४ इश्वः । लेक्काल 🗴 । पूर्णः । बेष्टन स० ६४० । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर ध्रजमेर ।

विशेष-- स्तोत्र टीका सहित है।

७२००. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३ । प्रा० १०३ $\times$ ४ $\frac{3}{7}$  इच्च । ले०काल  $\times$  । वेष्टन सं० ३४४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७**३०१. प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ३ । घा० १३३ ×६ इ**चा**। ले०का**ख ≭**ा वेष्टन सं० ४१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

७३०२. प्रति स्त  $\mathbf{x}$  । पत्रस $\mathbf{a}$  । प्राः  $\mathbf{v} \times \mathbf{x}$  । इस । ते•कास  $\mathbf{x}$  । पूरां । वेष्टन सं० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७२०२. प्रतिसं०६ । पणस०६ । धा॰ १०% ४५% इन्थाले काळ 🗴 । पूर्णं। वेष्टनस० २२४ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन पार्थनाय मन्दिर चौगान बुंदी ।

विशेष-- प्रति हिन्दी टीका सहित है। जिनदास ने स्वयं के पठनायं प्रतिलिपि की थी।

७३०**४. प्रति सं०७ ।** पत्र सं०३ । ग्रा० १०४४ इला । ले० काल 🗴 । ग्र**ा**र्ग् । बेष्टन स० ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ अस्टिर उदयपुर ।

७३०५. विषयपहार स्तोत्र साथा— $\times$  । पत्रस० ८ । मा॰ १० $\frac{1}{2} \times V_0^2 \times V_0^2$  इज्य । साधा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्टनसं० ७३ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर बीमवधी दीसा ।

७३०६.सिषापहार स्तोश टीका — नागचन्द्र । पत्र स० १३ । धा० १६ ४ ६ १ ४वा । भाषा -सस्कृत । पिपय-स्नोत्र । २०काल ४ । ले० काल स० १६३२ काती मुदी ३ । पूर्ण १ बेष्ट्रन स०१४४ । प्रास्ति स्थान दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७३०७. प्रति स० २ । पत्रस० १२ । प्रा० १० $^3_2 \times ^3_1$  इचा । लेक्साल  $\times$  । बंघन स० २=३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७३०म. प्रति सं० ३ । पत्रस० १७ । मा० १९१ ४४ है इञ्च । **क्षे॰काल** ४ । बेष्टनस० ३९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर,जयपुर ।

विशेष-- ग्राचार्य विशालकीति ने लिखवाई थी।

७२०६. वि<mark>षापहार स्तोश टीका – प्रभाचन्द ।</mark> पत्र स**्र६ । भाषा –** सम्कृत । विषय— स्तोत्र । रःकाल 🗶 । लेक काल सं०१७३१ । पूर्ण । वेप्टन स०४१७–१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का दूसरपुर ।

७३१०. बिवायहार स्तोश टीका  $\times$  । पत्रसं $\circ$  १४ । आ ०११  $\times$  ६ ३ इश्व । भाषा -सस्कृत । पछ । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १७०१ । पूर्ण । बेहन सं $\circ$  १०६२ । **प्राप्ति स्थान** - भ० दि० जैन मन्दिर प्रजगर ।

विशेष - विजयपुर नगर मे श्री धर्मनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

७३११. विवायहार स्तोत्र टीका—  $\times$  । यत्र स० १० । ब्रा० १०३  $\times$  ५ हृ इव । भाषा— सस्कृत । विषय – स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३० । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर दवलाना (वृदी)

विशेष - ६ वा तथा १० से आगे पत्र नहीं हैं।

७२६२. विद्यापहार स्तोत्र माथा—प्रस्तयराज । पत्रस० २० । प्रा०.१० $\times$ ४ हवा । माया—हिनी गद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १९४२ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १४ । प्राप्ति स्थान---- दि० जैन मंदिर ग्रीमनन्दन स्वामी (बूँदी)

७३१३. **प्रशित सं०२।** पत्रस०१-२०। प्रा०१२×४३ इस्था लेश्काल सं०१७२३ चैत्र सुदी१। पूर्यो। वेस्टन स०१२ × । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर बडाबीम पथी, दौसा।

७३१४. प्रति सं० ३। पत्रसं० १४। घा० ११×४३ इञ्च । ले॰काल स० १७२० मंगसिर सदी ११ । पर्या । वेष्ट्रनसं० २३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

७३१**५. विषापहार माषा — ग्रचलकोत्ति** । पत्र सं० ३२ । भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र । र०काल 🗴 । लेण्कार्ल । पूर्ण । बेष्टन स० ४७४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

७३**१६. बीराराग स्तवन**—× । पत्रसः १ । घा० १२ ×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । लेकाल × । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३६६-४७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि॰ जैन सभवनाथ मन्दिर उदयगर ।

७३१७. **बीरजिनस्तोत्र--श्रमयसूरि** । पत्रस० — । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × **≱पूर्ण । वे**टुनसं ० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पचायनी मन्दिर मरतपुर ।

७३१ स. सीरस्तुति— $\times$ । पत्रस०४ । ग्रा०त $\times$ ४ | इ.स.। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल $\times$ । ते०काल स०१८४४ । पूर्ण। वेष्टनसं०२२३ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर ग्राजीर।

दिशेष--दितीयांगम्य वीरस्तृति स्गडाग को पटुमो ग्रध्यायः । हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७३१६. **बृह्ह्यांति स्तोत्र**— ४ । यत्रतः १ । म्रा० ११४ ४ इत्य । मापा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णः । बेष्ट्न स०३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सडेलवाल मन्दिर उदयर्ग

७३२०. वृष्यंत्रदेव स्तवन —नारावर्ण । पत्र सल्या ३। प्रा० ७ $\frac{1}{2} \times x$  इंच । आपा —हिन्दी पद्य । विषय—स्तवनं । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १७५३ । पूर्ण । वेप्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दललान (त्रूपी)

७३२१ वृष्टम स्तोत्र — पं० पद्मानित्  $\times$  । पत्र मं० ११ । मा० १० $^\circ$   $\times$  १ इन्छ । भाषा — संस्कृत विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन मं० २५४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर संस्कर जयपुर ।

विशेष-श्री पद्मनिंद कृत दर्शन भी है। प्रति संस्कृत छाया महित है।

७३२२. बुहरू शांतिपाठ  $\times$  ।पत्रस० २। म्रा०१० $\times$ ४) द्वा । भागा सस्हत । विषय-स्तोत । र०काल  $\times$  । श्रेण । वेष्टनस० २०३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन महिर बोरसलो कोटा ।

७३२३. **शत्रृंबाय गिरि स्तवन—केशराज**ापत्र स०१। ग्रा०१०३  $\times \times_{q}^{1}$  इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। २० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूरा। वेप्टन सं०६३। **प्राप्ति स्वान—**वि० जैन सन्दिर दवलाना (ब्रुंदी)

## विशेष ---

श्री विजयगच्छपति पद्मसागर पाठ श्री बुरगुसागह । केशराज गावद सर्वि सुहावद सहगिरवर सुखकर ॥३॥

इति श्री शत्रं जय स्तवन ।

७३२४. शत्रुंजय शीर्थस्तुति—ऋषभदास । पत्रसं० १ । मा०१०imes४ $^1_2$  इञ्च । भाषा– हिन्ती । विषय –स्तुति । र०काल स०imes । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन स०७० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रु दी)

विशेष---निम्न पाठ ग्रीर हैं ---

ब्रइमाता ऋषि सज्भाय

म्रारांदचद

हिन्दी स्तक्न (२०कालस०१६६७)

चद्रपूरी मे पाश्वंनाथ चैत्यालय मे रचना हुई थी

७३२५. शत्रुं जय मास—विलास सुन्दर । पत्र सं०१ । प्रा०१० $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ ६ था । भाषा—हिन्दी । विषय -स्तोत्र । र०काल स०  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संकेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२६. शत्रुं ज्ञयं मंडल-सुहकर। पत्रसं॰ १। घा०१०  $\times$  ४ इचा। भाषा — सस्कृत । विषय-प्राहृत। र० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टुन स० २२६। प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मंदिर दबलान (बूदी)

७३२ म. शांतिकर स्तवन $--\times$ । पत्रस्व २ । मा० १०imes४ इ.च । भाषा - प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल imes । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० ३५ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन सहैनवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२६. शांतिजिन स्तवन — गुरासागर  $\times$  । पत्र स० १ । प्रा० १० $\times$ ४ ६वा । भाषा- हिन्दी (पद्य । बिषय — स्तोत्र । २०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेग्रन स० ३५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवनाना (ब्रुदी)

७३३०. शांतिजिन स्तवन । पत्र स० ३-८ । प्रा० १० $\times$ ४ इश्व । माया—प्राकृत । विषय-स्तीत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० २६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रृंदी)

विशेष-मूल के नीचे हिन्दी में प्रयं भी दिया है।

७३३१. शांतिनाथ स्तवन — उदय सागरसूरि । पत्र छं० १ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इवा । भाषा – हिन्दी । विषय-स्तोत्र । । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान — वि॰ जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष-सीमधर स्तवन धुजमलदास कृत भौर है।

७३३२. शांतिनाय स्तथन—पदार्नाद । पत्रसः १ । घा० १२ imes ४ ६७ । भाषा संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल imes ।ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टनसं०३६१-४६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्रजनाथ मन्दिर उदयपर ।

७३३३. **शांतिनाथ स्तवन— मालदेव सूरि** । पत्र स० ३७ से ४७ । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । धपूर्ण । बेष्ट्रनसं० ६१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पनायती मन्दिर भरतपूर ।

विशेष-- बारम्भ में दूसरे पाठ है।

७३३४. शांतिनाथ स्तुति— $\times$ । पत्रस॰ ७। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तवन। र०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टनस॰ ७१७। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर।

७३२.४. शांतिनाथ स्तोत्र— $\times$ । पत्र स०१२। ग्रा० १० $\times$ ४ $^{2}$  इच । भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (वृंदी) ।

बिशेष-प्रति सस्कृत टीका सहित है। श्लोको के ऊपर तथा नीचे टीका दी हुई है।

७३३६. शांतिनाथ स्तोत्र— $\times$ । पत्रस० ४। प्रा० १०३ $\times$ ६ $^3$  इख । भाषा—सस्क्रत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टुन स० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मिहर कोश्यो का नेगावा ।

७३२७. **शारवतजिन स्तवन**—— $\times$ ाण्य स०२। आः १० $\times$ ४ इञ्च । भाषा–प्रकृत । विषय-स्तोत्र । २०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वे०स०१३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (वृदी)

७३३६. शिव मन्दिर स्तोत्र टीका $-\times$ । पत्रस० २ से २४ । सा०  $-\times$ ४ इत्व । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्ट्न स० २४७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर बोज्यली कोटा ।

७३३६. शीतलनाय स्तवन-रायचंद । पत्र म० १ । प्रा० १०  $\times$  ४ े इन्च । भाषा — हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ल०काल  $\times$  । प्vं। वेष्टन म० ७२१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मिन्दर लक्कर जयपुर ।

७३४०. श्रीपालराज सिरुक्षात ः लेमा । पत्र स०२ । ग्रा० ११० $\times$ ४ $\int$  इवा । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन मं० २७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिदर दबलाना (बूदी)

७३४**१. स्वेताम्बर मरा स्तोत्र स**ग्नह $-\times$ । पत्रसं $\epsilon$  । ग्रा०११ $\times$ ४ इव । श्राधा– प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$ । वि•काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-सप्तित जिनस्तोत्र, भयहर स्तीत्र, लघुणानि स्तीत्र, ग्रजितणान्ति स्तीत्र एव मत्र ग्रादि हैं।

७३४२. शोभन स्तुति —  $\times$  । पत्र सं० ६ । ग्रा० १० $\times$ ४२ इच । भाषा — हिन्दी । विषय — स्तवन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर बोरसत्ती, कोटा ।

विशेष-चौबीस तीर्थकर स्तुति है।

७३४३. श्लोकाबली — × । पत्रस० ६। म्रा० ६ × ४ ६ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल सं०१८२० ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं०८०-४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इगरपर ।

विशेष-श्री महलाचार्य श्री रामकीरत जी पठनार्थ ग्राम उर्दगढमध्ये ब्राह्मरा भट्ट-

७३४४. षट त्रारामय स्तवन—जिनकीिंतः। पत्रसं०३। माषा—सन्कृतः। विषय-स्तवन । र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । प्रपूर्णः। वेष्टनस्०६९४। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पनायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष — केवल तीसरा पत्र ही है।

७३४५. खट्पदी—शंकराचार्य । पत्र सं०१। प्रा०११  $\times$  ४ ६ इञ्च । भाषा—सस्त्रत । विषय—स्तवन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७५ । प्राप्ति स्थान—दि० बैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७३४६. षष्ठिशतक—भडारी नेमिचन्द्र । पत्रसं $\circ$  १ ब्रा $\circ$  १०  $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  रख । भाषा— प्राकृत । विषय-स्तोत्र । २०काल  $\times$  । ले०काल स० १६०८ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । चेकृतसं $\circ$  ३१६ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७३४७. सकल प्रतिबोध —बौलतराम । पत्र स० १ । म्रा० १०  $\times$  ६ इख । माषा-हिन्दी । विषय-स्नोत्र । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स २७७-१४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इ गरपुर ।

७३४६. सङ्भ्राय—समयसुन्दर— × । पत्रसः ४ । धा०१०}४४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रंक्काल × । लेक्काल × । पूर्णं । वेष्टन स०६४६ । **प्राप्ति स्थान**— म०दि० जैन सन्दिर ग्राज्ञीर

७३४६. सध्तस्तवन imes। पत्रस० १४ । म्रा० ६imes२५ै इख । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र०काल imes। ले०काल imes। पूर्ण । बेष्टनस० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मदिर म्रजमेर ।

जवक्षायागहर, तीजर्रपोन, कल्यारणमदिर स्तवन, ग्रजितशातिस्तवन, घोडशथिया स्तवन, बृहद्शांति स्तवन, गोतमाष्टक ।

७३४०, समन्तमद्व स्तुति—समन्तमद्वा।पत्र सं०२६। ध्रा०१४४१ दश्वा। माया-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ४ । ने० काल सं०१६१६ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्णा । वेष्टन स०६६१। **प्राप्ति** स्थान—म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

विशेष--- प्रथमल्ल ने प्रथ की प्रतिलिपि की थी।

७३४१. समनः भन्न स्तुति— ×। पत्रसं∘ ६३। म्रा॰ ८४६ इच । भाषा —प्राकृत-सस्कृत । विषय-प्रतिक्रमण एव स्तोत्र । र॰काल ×। ले॰काल सं॰ १६६७। पूर्ण । वेष्टन सं॰ ३। प्राप्ति स्थान— वि॰ जैन मम्बाल मंदिर उदयपर।

विशेष — संबत् १६६७ वर्षे वैशाल मुदी ४ रवी श्री मूलसघे सरस्वतीमच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री गुणकीतिदेवास्तत्पट्टे भ० वादिभूषण गुरूपदेशाए ब्रह्मगोपालेन श्री देवनन्दिना इंद यदावस्थक प्रदत्त सुभं भवत् ।

इस ग्रंश का दूसरा नाम खडावश्यक भी है प्रारम्भ में प्रतिक्रमण भी है।

७३४२. समन्तभद्र ब्लुशि— $\times$ । पत्रसं॰ ६१। घा० १२ $\times$ ४ $\frac{2}{7}$  इत्य । गाया—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टनसं॰ ३६। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन प्रधवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष - २ पत्र बध त्रिभगी के हैं तथा प्रतिक्रमण पाठ भी है।

७३४३. समन्ताभद्र स्तुति— $\times$ । पत्र सं०३२। धा० १० $\frac{1}{5}$  $\times$ ४१ इंच। भाषा सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल $\times$ । ले०काल स० १६६४ पौष बुदी ६। वेष्टन सं०३४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

विशेष -- प्रति, संस्कृत टीका सहित है। प० उदर्यासह ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी।

७३५४. समयशरस्य पाठ — रेखराज । पत्रस्य १०। प्रा० १० $\frac{1}{2} \times 0$  द्वा । प्रापा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । लेक्काल स०१८५६ कार्तिक शुदी १४। पूर्ण । वेष्टन स०४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

**७३४५. समबशरण मंगल-मायाराम ।** पत्र स॰ २६ । माधा-हिन्दी । विध्य-स्तोत्र । र०काल स० १८२१ । ले० काल स० १८४४ सावन बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पनायतो मंदिर भरतपुर ।

विशेष---भरतपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

७३५६. समयसरएा स्तोत्र—विष्णुसेन । पत्र स० ८ । झा० ८ ४६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८१३ मर्गासर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०८० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान ब दी ।

७३.५७. प्रतिसं०२ । पत्र म०४ । घ्रा०१२ है×६ १ इत्वः । ले•काल स०१८२७ माघ मुदी ११ । पूर्णा । बेष्टन स०४७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७३५८. समबगरण स्तोत्र $\cdots \times 1$  पत्रस $\circ \in \mathbb{R}^3 \times \mathbb{R}^3$  इञ्च । भाषा - सस्कृत । बिपय-स्तोत्र । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स $\circ$  १०६४ । प्रास्ति स्थान - भ $\circ$  दि $\circ$  जैन मन्दिर अगमेर ।

७३५६. समबशरण स्तोत्र—४ । पत्र स०६ । भाषा-प्राकृत । विषय -स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णे । वेष्टन स०६६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर मरतपुर । ७३६०. समबसरण् स्तोत्र । पत्रसं० ६ । मा० १० ४ ४ हे इच्च । मावा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वष्टन स० २३३ । प्राप्ति स्थान—वि• जैन संदिर प्रभिनन्दन स्वामी वंदी ।

७३६१. समबसरए स्तोत्रा—  $\times$  । पत्र स०६। छा०१२ $\times$ ६३ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१५२४ प्राथाढ बुदी १।पूर्ण। बेष्टन स०१५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर धादिनाथ बंदी।

विशेष--टब्बा टीका सहित है।

७३६२. समयसरण स्तोत्रा— $\times$ । पत्र स०६। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । के०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५/४३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर।

७३६३. समबसरण स्तोज $-\times$ । पत्र सं०११। घा० ११ $\times$ ४ $१ दश्व । माया-संस्कृत । विषय-स्त्रीत्र । र०काल <math>\times$  । सेश्काल  $\times$  । घपूर्ण । बेष्टन सं०१८८ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बीबानजी कामा ।

७३६४. सम्मेवशिखर स्तवन —  $\times$  । पत्रस $\circ$  ६ । प्राः ६ $\times$ ६ इख । भाषा — हिन्दी । विवय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्टन स $\circ$  ४६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७३६५. सरस्वती स्तवन — × । पत्रसः २ । भाषा — संस्कृत । विषय –स्तवन । र०काल ४ । ते०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ७१० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशोध—स्तवन के पूर्व थूलिभद्र मुनि स्वाध्याय उदयरत कृत दी हुई है। यह हिन्दी की रचना है। र०काल स० १७५६ एव ले०काल सं० १७६१ है। प्रति राधरणपुर ग्राम में हुई थी।

७३६६. सरस्वती स्तोत्र—ग्रस्थलायन । पत्र सं०२। ग्रा० ५ $\times$ ४ इंच । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०३६२/४७०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर समयनाथ उदयपुर ।

७३६७. सरस्वती स्तुति—पं० प्राशाखर । पत्रत० १-६ । घा० १२ $\times$ ४ इख । माषा- सस्कृत । विषय —स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० १६६/४६४ । प्राप्ति स्थान- वि० जैन समत्रनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६६८. सरस्वती स्तोश- $\times$ । पत्र स०१। आ०१० $\frac{1}{2}$ ४० $\frac{1}{2}$ ४७ । आपा-सम्प्रतः। विषय-स्तोत्रः। र०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन स०३६४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्मर, जयपुरः।

७३६६. सरस्वती स्तोज —  $\times$  । पत्र सं०३। घा० ११ $\frac{1}{2} \times 1$  इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय — स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाय जीनान. वंदी ।

७३७०. सर्वजित स्तुति । पत्र स० ६ । भाषा — सस्कृत । विषय — स्तवन । ८०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती संदिर भरतपूर । ७३७१. ससुस्मारी सक्काय — बृधचंद । पत्रसः २ । प्राः  $\alpha_{V}^{2} \times V_{V}^{2}$  इञ्च । भाषा — हिन्दी । विषय – स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १८४१ प्राणाः बुदी ६ । पूर्स । बेष्टन सं० १७१। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरवली कोरा ।

विशेष---लिखतंत बाई जवता ।

७२७२. सहस्राक्षी स्तोत्रा—× । पत्रसं ०२-६ । घा० ० × २६ ६ च । भाषा —संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । से ०कालस० १७६२ घासोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५/४६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समननाथ परिटर उदयपर ।

७३७३. साधारण जिन स्तवन—मानुबन्द्र गिण । पत्र सं०६ । घा० १९४४ हे स्व । माया सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल स०१७७० वेत सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस०३२६ । प्राप्त स्थान—४० दि० जैन प्रकृत प्रजोत ।

विशेष --- प्रति सस्कत टीका सहित है।

७३७४. साधारम् जिन स्तवन $-\times$  । पत्रस्व १ । प्रा० ६ $\times$ ३ $^2$  हच । भाषा-सस्कृत । विषय स्तोत्र । रक्ताल  $\times$  । लेक्नाल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रन सं० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३७४. साथारण जिन स्तवन वृत्ति —कनककुशल। पत्र स॰ ३। घा० ६  $\times$  ४ ६७ । माया-सस्कृत। विषय-स्तवन। र० काल  $\times$ । ले॰काल सं॰ १७४४ माघ बुरी ४। पूर्ण। वेष्टनस॰ २७०। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूरी)

७३७६ **साधु बन्दना — ब्राचायं कुंबरजो ।** पत्रस०१ । ब्रा० १०<sup>3</sup> ×४ इत्र । माषा— हिन्दी । विषय स्तुति । र०काल × । ले०काल स० १७४१ ब्रवाढ बुटी म । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति** स्थान-दि० जैन मन्दिर चैर ।

विशेष -- प्राल्हरापुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

७३७७. **साधु वन्दना—बनारसोदास** । पत्र सं० ३ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल 🗴 । ले० काल 🔀 । पूर्णु । बेष्टुन स० ५०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरनपुर ।

७३७८. सिद्धमिरि स्तवन—सेमबिजय । पत्रस०२ । प्रा०१०४५ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल ४ । ले०कान स०१८७६ प्रथम चैन सुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स०१४–२०४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नेमिनाव टोडारायसिह (टोक)

७३७६. सिद्धचक स्तुति —  $\times$  । पत्र स० १। मा० १०  $\times$   $\times$   $^1$  इवा । माषा – प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृदी) ।

७२६०. सिद्धमिक्ति— $\times$  । पत्र स॰ २ । प्रा॰ १० $\times$ ६ इन्त । माया—प्राकृत । विषय— स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस॰ १५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर वबलाना (वृंदी)

७३**८१. सिद्धिविध्वका स्तवन—** $\times$ । पत्रसं०१। प्रा०६ $\times$   $\times$  देश्व,। भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स०२-१५४। **प्राप्ति, स्यान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टॉक)

विशेष--१३ गाथाएं हैं।

७३८२. सिद्धिप्रिय स्तोत्र—वेवनस्यि । पत्र स०३। प्रा०११ $\times$ ८ इ.च. भाषा—स्रुहत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सा० २४३। प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्तिर प्रजनेर ।

७३८३. प्रतिसं० २ । पत्रस० १४ । ले॰काल सं० १८३२ । पूर्ण । बेष्टन म० २४४ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७२**६४. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० १२ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वस्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष- कल्यामा मन्दिर एव भूपाल स्तीत्र भी है।

७३८४: प्रतिसं० ४ । पत्र म०१२ । ने०काल ४ । पूर्णा । बेष्टन स०२४८ । प्राप्तिः स्थान – उपरोक्तः मन्दिर ।

विशेष---प्रति सटीक है।

७३८६. प्रति स० ४ : पत्रम० २ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टुन स० २५१ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त प्रनिदर ।

७३**८७. प्रतिसं० ६।** पत्र म० १०। ले॰काल 🔀 । पूर्णं । बेष्टनसं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**--उपरोक्त मदिर ।

विशेष -- प्रति टीका सहित है ।

७३८ म. प्रतिसं०७ । पत्रस०१३ । प्रा०१०imes१३ इञ्च । ले०काल स० १६०३ । पूर्ण । बेष्टुन स० ६५२ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मदिर प्रजनेर ।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७३८६. प्रतिसं० ८ । पत्र सं०४ । धा० १०×४ है इन्छ । ने० काल स० १८८० सावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ब्रजमर ।

विशेष --- प्रति टब्बा टीका सहित है।

७२६०. प्रति सं० ६ । पत्रतः ४ । ग्रा॰ १० × ४ इ.च । ते० कान स० १७४६ ग्रवाढ सुदी १० । पूर्ण । बेहनस० ⊏१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर (कामा)

७३.**६१. प्रति सं० १०**। पत्र सं० ६। ले० काल 🗴 । बेष्टन स**० ५१० । प्राप्ति स्थान —** दि० जैन १चायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष---टीका सहित है।

७३६२. प्रति सं० ११ । पत्रस० ६ । मा० ६ है ४४ है इन्छ । ले० काल ४ । पूर्ए । बेष्टनसं० ३७३ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर लम्कर, जयपुर । विशेष-प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

७३६३. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ३ । ग्रा० ११३ ×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं• ३७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जमपुर ।

७३६४. प्रतिसं०१३ । पत्रस०२ । प्रा०१३ है ×६ इ.च. । ले०काल × । पूर्ण। बेष्टन सं∙ ४१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

७३६४. प्रतिसं० १४ । पत्र मं० ८ । ग्रा० १००० ४५ है इचा । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० २२० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृंदी)

विशेष-प्रति संस्तृत टीका सहित है।

७३६६. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १३ । से०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान – वि० जैन पंचायती मन्दिरं हण्डावालों का डीग ।

विशेष -- हिन्दी प्रयं सहित है।

७३**६७. प्रति सं०१६ ।** पत्र सं०७ । प्रा०१०×५ इचा । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष-इन्दौर नगर में लिखा गया । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

७३६८. सिद्धिप्रय स्तोत्र । टोका --प्राशाधर । पत्रत० १० । प्रा०११ $\times$ ४ $^2$  इच । भाषा - सस्कृत । विषय --स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल सं० १७०२ ज्येष्ठ सुदी १२ । वेष्ट्रन स० १६२ । प्राप्ति स्थान --- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७३६६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका —  $\times$  । पत्र स०११ । द्या०६३  $\times$ ४%, इ.च । भाषा— संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं०१२२७ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७४००. सिद्धिप्रिय स्तोत्रा टीका —  $\times$  । पत्रतः ६ । ग्रा०१२ $\times$ ६ हुन्न । ग्रापा — संस्कृत । विषय — स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १७६० फागुन मुदी १ । वेष्टन स० ३६३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-प्रति टोंक मध्ये लिखी गई थी।

७४०१. सिद्धिप्रिय स्तोत्र भाषा—सेमराज । पत्रत० १३ । म्रा० १२×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १७२३ पौष मुदी १० । पूर्ण । वेहनसं० ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीनपुर्यी दोसा ।

विशेष-साह ईश्वरदाम ठोलिया ने ब्रात्म पठनार्थ ब्रानन्दराम से प्रतिलिपि करवाई थी।

७४०२. सीमंबर स्ट्रीत —  $\times$  । पत्र स०१२ । प्रा०६ $\times$ ६३ इञ्च । प्रापा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेय्टन स०२७/४१ । प्राप्ति स्यान—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टॉक)

७४०३. सीमंघर स्वामी स्तवन—प० जयवंत । पत्र सं० ३ । प्रा० १० $\times$ ४ इख । माया-हिन्दी । विषय-स्तुति । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३४०/४०७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन समयनाथ मन्दिर उदवपुर ।

विशेष - रचना का ग्रन्तिम भाग निम्न प्रकार है-

सामु मिरोमणि जागीइ श्री विनयमङन उवकायरे। तास सीस गुणि घागली बहुला पढित राय रे।। घासो मुदी ५ नेमिदिनि गुकवार एकाति रे।

कागल जयवत पृष्ठितिङ्ग लिखी उमा फिमण्सिङ्ग रे ।। इति श्री सीमावर स्वामी लेख समाप्त । श्री गुणसोमाग्य मुरि लिखित ।

हमी के साथ पहित जयवत का लोचन परवेश पत्नग गीत भी है। प्रति प्राचीन है।

७४०४. सीसघर स्वामी स्तवन—  $\times$  । पत्र त०४। म्रा० ११ $\times$ ४ इन्द्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स०४३०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खच्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७४० ५. सुन्दर स्तोत्र —  $\times$  । पत्र स०१०। मा०१० $\times$ ४ ६%। भाषा-सस्कृत । विषय — स्तोत्र । र०काल  $\times$ । ले॰काल स०१६४२। पूर्ण । वेष्टन स०६७। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन प्रदवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १६५२ वर्षे श्रावरण सुदी ११ रविवारे विक्रमपुर मध्ये लिपिकृत । प्रतिसंस्कृतटीका सहित है।

७४०६. सुप्रभातिक स्तोत्रा—  $\times$  । पत्र स०२। ग्रा० १२ $\frac{2}{5}$   $\times$ ६ इ.स. । भाषा—मंस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०४१६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्मर, जयपुर ।

७४०७. सुप्रमारिक स्तोत्रा—  $\times$  । पत्र सं० १ । ब्रा० १२ $\frac{3}{2}$   $\times$  ६ इल्ल । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल $\times$  । ले० काल $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४१७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन संदिर लक्कर, जयपूर ।

७४० द. सुम्रहा सङ्भाय —  $\times$ । पत्र स०१। ब्रा०१० $\times$ ४ इखः। भाषा — हिन्दी। विषय — स्तवनः। र०कालः  $\times$ । ले०कालः  $\times$ । पूर्णः। वेष्टल सं०२६६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७४०६. सीहं स्तोश $-\times$ । पत्रसं० १। प्रा० १० $\frac{1}{5}$  $\times$ ६ $\frac{1}{5}$  इश्व । प्राप्त स्स्तात । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १०६ । प्राप्ति स्थान -वि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान, **बु**ंदी ।

७४१०. स्तवन — पुरासूरि । पत्र सं० १ । घा० १० $\frac{3}{4} \times V_0^{\frac{3}{4}}$  इञ्च । भाषा – हिन्दी । विषय — स्तुति । र० काल सं० १६४२ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर देवलान (वंदी)

विशेष-- प्रयवतीपुर के ग्रानन्दनगर में ग्रंथ रचना हुई।

७४११. स्तवन—  $\times$  । पत्र सं०२। म्रा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इचा भाषा-सस्कृत। विषय-स्तवन। र० काल  $\times$ । ले काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स०१२/१४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाण त्रीक्षाराश्रीस्ट (टीक)

७४**१२. स्तवन — भ्राग्द**। पत्र सं०३–१०। भाषा-हिन्दी। विधन-स्तवन । र०काल imes। ले॰ काल imes। अपर्यं। बेटनस०१७। **प्राप्ति स्थान**—वि॰ जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

विशेष-इसके ग्रतिरिक्त नदिवेशा गौत्तम स्वामी ग्रादि के द्वारा रचित स्तवन भी है।

७४१४. स्तवन संग्रह—  $\times$  । पत्र स० ६ । प्रा०६ $\times$ ४ है इ.च. । भाषा हिन्दी-सम्इत । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३७०-१४१ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मदिर कोटडियों का हंगरपुर ।

७४१५. स्तोत्रा पास्कं (अंत्रस्) —  $\times$  । पत्रसं० २। स्नाः १० $\times$ ४३ इत्रः। भाषा — हिन्दी । विषय — स्तोत्र । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन सं० २११ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर प्रभितन्दन स्थामी दृष्टी ।

७४१६ स्तुति पंचाशिका—पाण्डे सिहराज । पत्र म० २-८ । या० १०४४} इःच । भाषा-सम्बृत । विषय—स्तेत्र । २०काल ४ । ले०काल स०१७७८ । पूर्ण । त्रेष्टन म० ३१४ । प्राप्ति स्थान-म० दि० जैन मन्दिर स्रतनेर ।

७४१७. स्तुति संग्रह् – imes । पत्रस०१। माया—हिन्दी। विषय—स्ववन। २०काल imes। कुर्काल imes। पूर्ण। बेष्टनसं०६८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पनायती मन्दिर भरतपुर।

७४१६. स्तुति सग्रह्स् $\times$ । पत्र स० २-६६। भाषा-सस्कृत। विषय-सग्रह् । र० काल $\times$ । लेळकाल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन सं० ७०६। प्राप्ति स्थान—रि० जैन पनायती मन्दिर सरसपुर।

७४१६. स्तोश—  $\times$  । पत्रसुष् ६। स्राप्तः  $= \frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इन्तः। भाषा—सस्कृतः। विषय—वैदिक साहित्यः। रुकतालः  $\times$  । लुकतालः  $\times$  । पूर्णः। बेष्टनं सर्व १०४७ । प्राप्तिः स्थान—भुविदः जैन मन्दिरं प्रवर्भरः।

७४२०. स्तोत्र— × । पत्रस० १६। भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले॰ काल × । अपूर्णः । वेष्टुन स० ४७। प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीन । विजेश —हिन्दी सर्थ सहित है ।

विशेष- कृतिरिय वादीन्द्र विणालकीति मट्टारक पिय सून यति विद्यानंदस्य ।

७:२२. प्र**ति सं०२** । पत्रस० ३१ । घा० १२×५ ६ व । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं**०** ४९=/४३६ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इत्याशाघर कृत स्तोत्र टीका समाप्ता ।

कृतिरिय वादीन्द्र विज्ञालकीति भट्टारक प्रियणिच्य यति विज्ञानदस्य यद्वभी निर्वेदस्योतृषः । बोषेन स्फुरता यस्यानुष्यहतो इत्यादि स्तोत्र चतुष्ट्य टीका समान्ता ।

७४२३. स्तोत्रा नायी — × । पत्रसं० १० । मा० १०३४६ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०काल × । ने०काल × । बेष्टनसं० ३७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर । विशेष —सिद्धिप्रय, एकीभाव एव कल्याण मन्दिर स्तोत्र है ।

७४२४ स्तोधा पाठ—  $\times$  । पत्र स॰ ६ । प्रा॰ १० $^3_1$ ×४ $^3_2$  इखा । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र॰ काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । बेठ्न स॰ ११३-११७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर कोटडियो का इनगरपुर ।

विशेष — उपसर्गहरस्तोत्र, भयहर स्तोत्र, श्रजितनाथ स्तवन, लघु शानि धादि पाठो का सग्रह है। ७४२५. स्तोत्रय टीका —  $\times$  । पत्रस०२५ । झा०११ $\times$ ४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं०१०६। प्रास्ति स्थान — न०दि० जैन मन्दिर भागोर ।

विशेष---निम्न स्तोत्र टीका सहित है।

१. भक्तामर स्तीत्र २. कल्यासा मदिर स्तीत्र तथा ३. एकीभाव स्तीत्र ।

७४२६. स्तोश संग्रह— ४ । पत्रसं० ६६ । घा० १० है ४५ इश्व । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ते०काल स० १६०५ ग्रासोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ७२४ । **प्राप्ति स्थान—** भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजोर ।

विशेष - निम्न पाठी का सग्रह है-

भक्तामर, कल्यारामदिर, भूपालचौबीसी, देवागम स्तोत्र, देवपूजा, सहस्रनाम, तथा पंच मङ्गल (हिन्दी)।

७४२७. स्तोश संग्रह—  $\times$  । पत्र सं० ६ । आ० १० $\frac{1}{5} \times$ ५ इञ्च । भाषा -संस्कृत । विषय— स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर फ्रजनेर ।

विशेष -- भक्तामर एव सिद्धित्रिय स्तीत्र संग्रह हैं । सामान्य टिप्परा भी दिया हमा है ।

७४२८. स्तोत्रा संग्रह— $\times$  । पत्र स० १० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्नोत्र । र० काल  $\times$  । स्र्र्ण । बेष्टन सं० १०१ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष---निम्न स्तोत्रो का संग्रह है।

एकोभाव बादिराज संस्कृत

विषापहार धनंजय "

भूपालस्तोत्र भूपाल ,,

७४२६. स्तोज संग्रह—  $\times$  । पत्र सं॰ ४ । ग्रा० १० $\times$ ४ , दंव । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । ए० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण , विषय सं० ११६६ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

. विशेष — पार्श्वनाथ एवं महाबीर स्तोत्र है।

७४३०. स्तोश संग्रह—  $\times$  । पत्र स०४७ । ब्रा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इञ्च । माषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१४२० । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मिद्र शबसेर ।

. । विशेष---भक्तामर, कल्यारा मदिर, तत्वार्थं सत्र एव ऋषिमङल स्तीत्र हैं।

७४**३१. स्तोत्रा सम्रह**—  $\times$  । पत्र स०४ । म्रा०६ $\frac{3}{4} \times 6$  इचा भाषा सस्कृत । विषय—संग्रह । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स०२३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्थ्यनाथ चौगान ब्रंदी ।

विशेष -- निम्न पाठो का सम्रह है।

(१) नवरस्न कवित्त (२) चतुर्विणानि स्तुति (३) तीर्थंकरो के माना पिता के नाम (४) सज गोविद स्तोत्र (५) णारदा स्तोत्र ।

७४३२. स्तोत्र संग्रह —  $\times$  । पत्र सं॰ ४१ । ग्रा० म $\times$ ५१ हस्त । भाषा-सन्कृत । विषय — स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म $\circ$ ६३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर राज – महल (टॉक)

विशेष - निम्न स्तोत्रो का संग्रह है---

सहस्रनाम स्तोत्र जिनमेनाचार्य सस्कृत कत्यागामदिर ,, कुमुदचन्द्र ,,

भक्तामर ,, मानतुङ्गाचार्य , एकीभाव ,, वादिराज ,,

७४३३. स्तोत्र संग्रह—  $\times$  । पत्र स०७ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$  < १ इ च । ग्रापा-हिन्दी । विषय स्तोत्र । र० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६२४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष -- एकी मान भूधरदास कृत तथा परमज्योति बनारसीदास कृत है ।

७४३४. स्तोत्र संबह्— $\times$ ा पत्रस० १ । झा० १० $_s^2 \times 3\xi$  इश्च । आया—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । वेष्टन स० ४४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयगर ।

' विशेष - चको स्वरी एव क्षेत्रपाल पद्मावनी स्लोत है।

७४३५ स्तोत्र संग्रह— $\times$ । पत्र स०१५ (१६–२०)। या० स् $\frac{7}{4} \times$ ६ इका। भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर लक्कर जयपुर।

७३३६. स्तोत्रसम्रह $-\times$  पत्रस० २ । मा० १० $rac{3}{2} \times$  प्रश्च । साथा -सस्कृत । विषय स्तोत्र । २०काल  $\times$  । त्रे०काल  $\times$  । पूर्णे । वेष्टन स० ४३६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन संदिर लक्कर जयपूर ।

विशेष--महालक्ष्मी, चक्रेश्वरी एव ज्वालामालिनी स्तोत्र ।

७४३७. स्तोत्रसंग्रह —  $\times$  । पत्र सं० ७ । ग्रा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इच । ग्राषा—सस्कृत । विषय— स्तोच । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपर ।

विशेष-- ज्वाला मालिनी, जिनपंजर एव पचागुली स्तोत्र है।

७४**३८. स्तोत्र संग्रह— × । पत्र**स०१६। ब्रा०११३ $\chi$ ५ $\chi^2$  इचा **भाषा-स**स्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\chi$  । ले०काल  $\chi$ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर।

१. भूगाल चोबीसी भूगाल कवि पश्चस् ६ २. विवागहार स्तोत्र चनजप "६-११ ३. भावना बत्तीसी प्रमित्तर्गात "११-१६

७४६६. स्तोत्र सम्ब्र $--\times$ । पत्रस० २। मा० १० $\frac{3}{2}\times 6\frac{3}{2}$  दश्व। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। १०काल  $\times$ । ले०काल । पूर्ण। बेच्टन स० ३६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जमपूर।

विशेष--लघु सामायिक, परमानन्द स्तोत्र एव गायत्री विधान है।

७४४०. स्तोत्रसम्मह— $\times$ । पत्रस० ६–४० । म्ना० ५ $\frac{1}{6}$  $\times$ ५ इ.स. । माया-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । २०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ३१७–११६ । प्रास्तिः स्थान—दि० जन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष - जैन सकार वर्णन भी है।

७४४१. स्तोत्र संग्रह—imes । पत्रसं० १७ । मा० ५ हैimes ५६ इञ्च । माषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल imes । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० ६७ मे ६६ तक-४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हूं गरपुर ।

विशेष —तीन प्रतिया है। ऋषि मण्डल स्तीत्र, पद्मावती स्तीत्र, किरातवराही स्तीत्र, त्रैलोक्य मोहन कवच ब्रादि स्तीत्र हैं।

७४४२. स्तोत्रसम्बद्धः X । पत्रस० ८७ । सा० ६५X X ५X इञ्च । सापा-मस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २०काल X । से०काल स० १७६२ । पूर्णः । बेष्टनसं० १०२ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन संदेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रति जीर्ग है।

सवत् १७६२ मिती ज्येष्ठ मुदि चतुर्दंशी लि० पष्टित खेतसी उदयपुरमध्ये ।

े अक्ष्रिके, स्तोत्र संग्रह—  $\times$  । पत्र स०२१। आ० १  $\times$  ४ इंच । आपा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन स०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागरी बूंदी।

विशेष- परमानन्द, कल्यारण मदिर, एकी भाव एवं विधापहार स्तोत्र है।

७४४४. स्तोत्र संग्रह्स —  $\times$  । पत्र सं० २३। मा० १०  $\times$   $ilde Y_{2}^{2}$  इंच । माचा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोठ्यो का नैश्वा ।

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है--

सरस्वती स्तोत्र		संस्कृत
सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषस्य	u
क्षेत्रपाल स्तोत्र		"
दशनक्षरण स्तोत्र		a
महाबीर समस्या स्तवन		u
ाढ <sup>°</sup> मान स्तोत्र		и
ार्खनाथ स्तोत्र मत्र सहित		n
ार्खनाथ स्तोत्र		**
चंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र		"
न्द्रप्रभ स्तोत्र मंत्र सहित		u
ोजाक्षर ऋषि मडल स्तोत्र		"
<b>दृषि मडल स्तोत्र</b>	गौतमस्वामी	u

७४४५. स्तोत्र संग्रह— $\times$  । पत्र स०७ । म्रा०११  $\times$  ६ है इश्व । माण-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचनकाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर कोळ्यो का नैरावा ।

विशेष-- निम्न स्तोत्रो का सग्रह है--

पार्श्वनाथ स्तोत्र		सस्कृत
स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	и
क्षेत्रपाल स्तोत्र	-	u
पार्श्वनाथ स्तोत्र	राजसेन	·(
चन्द्रप्रभ स्तोत्र	_	n
लघुभक्तामर स्तोत्र		**

नमो जोति मुर्ति त्रिकाल त्रिसियं। नमो नरविकारं नरागत्र गयः।। नमो तो नराकार नर भाग थास्मी। नमो तो नराधार ग्राधार जासी।।

७४४६. स्तोत्र संग्रह $-\times$ । पत्र स०१६। म्रा०१० $^2_8\times^4_2$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल imes । ले० काल imes । म्राप्तं । वेष्टन सं०१६४ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर** बोरसली कोटा ।

विशेष -- कल्यारण मदिर, विषापहार एव लक्ष्मी स्तोत्र अपूर्ण है।

७४४७, स्तोत्र संग्रह — X । पत्र सं०१८ । या॰ १ X ४ इञ्च । आया—प्राकृत-संस्कृत ! विषय—स्तोत्र । र०काल X । ले॰ काल X । प्रपूर्ण । बेष्ट्रन सं०१८ । प्राप्तिक स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (वंदी)

विशेष---मस्यतः निम्न स्तोत्रों का सग्रह है।

भयहर स्तोत्र, श्रजितशाति स्तोत्र एव भक्तामर स्तोत्र आदि ।

७४४ द. स्तोत्र संप्रह $-\times$ । पत्र सं॰ ६। ग्रा॰ १० $\times$ ६ इच । नाया—बस्हत । विषय— स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ २१७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बंदी)

विशेष---निम्न स्तोत्रो का सग्रह है।

स्वयभू स्तोत्र समन्तभद्र मस्कृत महावीर स्तोत्र विद्यानदि नेमि स्तोत्र —

७४४ ह. स्तोत्र संग्रह—  $\times$  । पत्रसः १ । आ॰ १ $\frac{1}{4}$  ४ ३०च । नापा—सः हत । विषय— स्तोत्र । ७० काल  $\times$  । त्रुष्णं । वेष्टन स॰ १४१ । प्राप्ति स्थान—दिः जैन मदिर दवलान (वृदी)

विशेष - निम्न स्तोशो का सग्रह है---

स्वयभ स्तोत्र, भूपालचनुर्विशति स्तोत्र, सिद्धिप्रिय स्तोत्र एव विधापहार स्तोत्र का स ग्रह है।

७४५०. रतोत्र सम्रह—  $\times$  । पत्र स० २१ में ३६। भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । लेकन काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ६७१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर, भरतपर।

विशेष--गुजराती में ग्रथं दिया हुग्रा है।

७४५१. स्तोत्र संग्रह—  $\times$  । पत्र स० १६ । माषा—हिन्दी-मस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । वेप्टन स० ११३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पश्चायती महिर भरतपुर ।

## विशेष ---

नवकार मत्र. जिनदर्शन, परमजोति, निर्वाग काण्ड भाषा, मक्तामर स्तोत्र एव लक्ष्मी स्तोत्र है।

७४**५२. स्तोत्र संग्रह**—  $\times$  । पत्र स०१४ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०३५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायनी मन्दिर मरतपुर ।

विशेष-एकीमाव, विषापहार, कल्यामा मन्दिर एव भ्याल चौबीसी स्तीत्र है ।

७४५३. स्वयं मूस्तोत्र—समन्तमद्वापत्र स०२४ । म्रा०१२ $\times$ ५ इखा भाषा—सम्बन्धतः । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी जयपुर ।

७४**५४. प्रतिसं० २** । पत्र स०४६ । मा०६<sup>3</sup>,×४ इ.च.। ले० काल स०१०१६ मगसिर बुदी १ । पूर्णा वेष्टन सं०२३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्त्रिर बोरमली कोटा। विशेष--प्रारम्भ में सामायिक पाठ भी हैं।

७४५५. स्वयंत्र स्तोत्र (स्वयंत्र पञ्जिका)—समन्तानद्राचार्यः । पत्र सं०११ । जा० १२६ × ५ इत्र । आवा-संस्कृतः । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं०१७६२ । बेप्टन सं०६३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

विशेष — इसमे टीका भी दी हुई है। टीका का नाम स्वयम् पितका है। वर्षेन भागवीतेन्द्र कृते दीपोत्सवे दिने।

स्वयभवंजिका लेखि लक्ष्माराख्येन धीमता ॥

७४५६. स्वयं मूस्तोत्र टीका—प्रमाचन्द्र । पत्र सं०६१। घा०६४४ इखा । माषा— संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रकाल ४ । ले० काल स०१३२० । पूर्ण । वेष्टन सं०६५ । प्राप्ति स्थान— म०ति० जैन महिर ग्रजीर ।

विशेष-प्रथ का नाम कियाकलाप टीका भी है।

**७४५७. प्रतिसं० २** । पत्रस० १५२ । मा० ११४४ <sup>‡</sup> इंच । ले∍काल स० १७७७ । पूर्ण <sup>।</sup> वेकन सं० २६६ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मंदिर ग्रजसेर ।

७४**५ ८. प्रति सं० ३** । पत्रस**० ४६ । प्रा० १२\frac{3}{6}×५\frac{3}{6} इन्छ । ले०काल स०१७०२ । पूर्ण । बेष्टत सं० २४१ । <b>प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विक्रीय - ग्रलवर मे प्रतिलिपि की गई थी।

७४**५६. प्रति सं०४ । पत्रस० ६८। ग्रा०११×४**ई इन्छ । ले०काल स०१६६५ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं०१**४ । प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन मन्दिर दीवाओं कामा ।

विशेष--रोहतक नगर मे भा० गुराचन्द ने प्रतिनिधि करवायी थी।

७**४६०. स्वयंम्र स्तोत्र भावा - शानताराय** । पत्रस०४६ । ग्रा०१२×५) इ**श्व । भाषा -**हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल 🗴 । से०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०१६२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० वि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

७४६१. हीपाली—रिख। पत्र स०१। प्रा०१० $\times$ ४३ इत्था भाषा-हिन्दी। विषय—स्तोत्र। र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०२७४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुंदी)

---:0 ----

विशेष-साध्वी श्री मागा सज्भाय भी।



# विषय -- पूजा एवं विधान साहित्य

७४६२. ध्रकृषिम चैत्यालय जयमाल—भैया भगवतीवास । पत्र सं०३। प्रा० ६३ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$ ६ंच । मापा—हिन्दी (पदा) । विषय—पूजा । र०काल सं०१७४५ मादवा मुदी ४ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत स० १०१२ । प्राप्ति स्थान— म० वि० जैन मंदिर मजेमेर ।

विशेष-- प्रकृतिम जिन चैत्यालयों की पूजा है।

७४६३. प्रकृतिम चैरवालय पूजा—चैनसुखा। पत्रसं० ३६। प्रा० १३ × ६ हु इस । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा। र० काल सं० १६३०। ले०कात स० १६६४। पूर्ण । बेहनसं० ४५६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

७४६४. प्रकृतिम चैरयालय पूजा—मिल्लिसागर । पत्र स०२० । द्या०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इच । मापा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ने०काल । पूर्ण । बेष्टनसं०२=५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनदन स्वानी बुदी ।

७४६५. ग्रकृतिम चैत्यालय पूजा— ४ । पत्रसं० १७७ । मा० १२, १४७ इच । माषा— हिन्दी पद्य । विषय — पूजा । र०काल स० १८६० । से०काल स०१६११ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १६६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन सण्डेलवाल पनायती मन्दिर ग्रलवर ।

७४६६. ग्रकुत्रिम जिन चैरमालय पूजा— लालजीत । पत्रसं•२२६ । ग्रा० १३४७ इचा । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल स० १८७० कालिक मुदी १२ । ले० काल स० १८६६ वैद्याख मुदी ११ । पुर्णा । वेष्टनस० १४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवताल पचायती मदिर धलवर ।

७४६७. प्रति स० २ । पत्रस० १२६ । घा० १०२ ×६ १ इश्व । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर बयाना ।

विशेष---लक्ष्मगादास वाकलीवाल खुमेरवाले ने महात्मा पन्नालाल जयपुर वाले मे ग्रागरा में प्रतिलिपि करवाई थी।

७४६८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १५६ । ले०काल 🗶 । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पत्रायनी मदिर हण्डावालो का डीग ।

विरोष -- ग्रागरा में प्रतिलिपि की गई थी।

७४६**६. प्रति सं०४।** पत्र स०१४५। घा०१३ x ७३ इचा। ले०काल स०१६२८। पूर्णाः बेष्टंन सं०४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

७४७०. प्रति स० ५ । पत्रस० १४७ । ले०कास स० १६०५ । पूर्णे । वेष्ट्रन सं० ३०५ । भ्राध्ति स्थान—दिः जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

म्र'तिम प्रशस्ति--

पूजा झारम्म ठ्यो, काशी देश हवं मयो, भेलुपुर ग्राम जैनजन को निवास है। ग्रकीतंम मन्दिर है रचा चारि सै ग्रठावन । जेतिन को सपाठ लालजीत यौ प्रकास है ।

७४७१. प्रति सं०६। पत्र सं०१६७। ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०३२७। प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रवायती मन्तिर भरतपुर।

७४७२. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १७६ । द्वा० २२imes६ ६ स्व । ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्टन स॰ ५१–३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का हु गरपुर ।

७४७३. प्रतिसं० ६ । पत्रस०१११ । ग्रा०११, ४६० हुँ इच्छ । ले० काल सं०१६४१ सावन सुदी १२ । पुर्या । बेक्नस०१०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर गेखावाटी (सीकर)

विशेष-शायक केदारमलजी न फतेहपूर में सोनीराम मोजग से प्रतिलिपि कराई थी।

७४७४**. ग्रक्षयदशमी पूजा**— ४ । पत्र स॰ ६ । द्वा॰ १०४४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर नोप्रसर्वे कोरा

विशेष-- मृक्तावली पूजा भी है।

७४७५. स्नष्टाह द्वीप पूजा —  $\times$  । पत्र स०१७६ । बा०  $= \frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इत्त्र । भाषा — सन्कृत । विषय — पूजा । र० काल  $\times$  । से ब्हाल स०१६१४ ज्येष्ठ मुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स०१३४,३७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर स्वरुग्त (कोटा)

७४७६. **ग्रहाई होर पूजा—डाल्राम ।** पत्रसन् २~३०। ग्रा०१४ ४८ इञ्च । साया— हिन्दी। विषय—पूजा । र० काल स०१८=७ ज्येष्ठ सुदी १३। ले० काल स०१६३१ ग्रापाट सुदी ६। पूर्गा। वेकृतसं• १०४। **प्राध्ति स्थान**—दि० जैन पवायनी मन्दिर वयाना।

विशेष-ईश्वरी प्रशादशर्मा समणावादवालो ने प्रतिलिपि की थी।

७४७७. प्रतिसं० २ । पत्र स०११३ । घा०१२ × ६ इ.च । ले० काल स०१६३१ । पूर्णा। वेबनस०१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चीघरियान मालपुरा (टोक)

७४७८. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १११ । ग्रा० १२३/४४} इ.स. । ले० काल स० ११६३ । पूर्ण । बेघन स० ५२३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लष्कर, जयपुर ।

विशेष — छोटे दीवानजी के मन्दिर की प्रति से रिषभचन्द बिन्दायक्या ने प्रतिलिपि की थी।

७४७६. म्रदाईहोप पूजा— म० मुभचन्द्र । पत्र स० २६८ । मा० ११ $\times$ ५ इन्त्र । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६२४ सावर्ण बुरी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७४८०. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६७ । या० ११६ ४७ इव्ह । ले० काल स० १८६० द्यायाड सुदी १४ । पूर्ण । वेग्टन स० १७ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष-१ से २० तथा ६५ व ६६ पत्रो पर सुन्दर रगीन बेले है।

बखतलाल तेरावधी ने दौसा मे प्रतितिपि करवाई थी।

७४८**२. प्रतिसं० २**। पत्रस०३७३। ले॰काल स०१८७४। पूर्य । वेष्टनस०२४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मस्दिर कामा। विशेष-जोघराज कासलीवाल कामा ने प्रतिलिपि कराई थी।

७४८२. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २४३ । बा० १३३ ४ ७३ इञ्च । ले०काल स० १६११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन लण्डेलवाल पचायती मन्दिर धलवर ।

७४८३. **श्रदाईहोप पूजा** लालजीरा। पत्रसं० १३७। घा० १३४६ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय—पूजा। र०काल ४। मै०काल सं० १८७० भादों सुदी ३।पूर्ण। बेष्टन सं० १२५। प्राप्ति स्थान—दिव जैन पंचायती मन्दिर करीली।

७४८४. म्रदार्श्वहोय पूजा —  $\times$  । पत्र सं०३६। म्रा०११ $\times$ ५ इख । माया —संस्कृत । विषय —पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२५२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष-धटाई द्वीप पूजा के पहिले धौर भी पूजाए दी हैं।

७४८ प्रतिसं० २ १ पत्र सल्या १४० । १२० ४६ इन्छ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेप्टन सं० २१/४६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन सीगासी मन्दिर करीली ।

७४६६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २१४ । धा० १२ $\frac{1}{2} \times 0^{\frac{1}{2}}$  इस । ने०काल स० १६०६जेठ बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स० १४/३३ । प्राध्ति स्थान —दि० जैन सौगाणी मन्दिर करीली ।

७४८७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २४० । ग्रा० २३ $\times$ ६ $^1_2$  इच । लेक्सले स०१८८८ पौप सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स०१११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर करीली ।

विशेष---रामचन्द्र ने नानगराम से किरीशी नगर में दीवान बुवसिंग जी के मन्दिर में प्रति-लिंगि करवाई थी।

७४८८. प्रति सं० ५ । पत्र स० १०४ । ग्रा० १०५ ४७ इश्व । ले०काल स० १८४२ । पूर्ण । वेप्टन स० ११२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

७४८६. प्रति स० ६ । पत्रम० १४४ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० ७० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पनायनी मंदिर हण्डावालो का डीग ।

७४६०. श्वनतत्तत्तुं दशी पूजा —श्री सूषरायित । पत्र स०२४ । भाषा — मस्त्रत । निषय — पूजा । र०काल  $\times$  । त्रं । त्रं । वेष्टन स०५२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मिदर हण्डावालो का डीग ।

७४६१. ग्र-न्तवातुरंशी पूजा—शान्तिदास । पत्रस० ११ । मा० १२४६ खा । भाषा— संस्कृत । विषय — पूजा । र०काल ४ । ले०काल स० १७६७ वैशाख सुदी ४ । वेष्टन स० ६१४ । प्रास्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष — नरायण नगर मे भ० जगत्कीति के शिष्य बुध दोदराज ने घपने हाय से प्रतिनिधि की थी।

७४६२. धननत चतुर्वेशी पूजी — × । पत्रस० १४। धा० १० ४६ इचा। भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा। र०कास × । ले०काल × । पूर्ण। बेष्टन स० १२८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर
नायदी व दी।

७४६३. झनस्त्रजतुर्वेसी पूजा—  $\times$ । पत्र सं० १०। प्रा॰ ११ $\frac{7}{2}\noting \frac{2}{3}\noting \frac{2}{3}\$ 

७४६४. ध्रानस्थानतुर्वशी सत् पूजा— 🗴 । पत्र स०२७। घा०११४५ इञ्च । माया— संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल 🗴 । ते० काल 🗴 । पूर्णु । वेष्टन स०१३७० । **श्राप्ति स्थान**—म० विक्रजन मन्दिर प्रजमेर ।

७४६५. ध्रनस्तलतुर्वशी व्रत पूजा—विश्वसूष्यग् । पत्रसं०१४ । घा० ६३ $\times$ ४३ दश्व । साथा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रनसं०१३६८ । प्राप्ति स्थान—प्र० वि० जैन मन्दिर, अजनेर ।

**७४६६ ग्रनत जिनपुका— पं० जिनदास** । पत्रसं० २६। ग्रा० १०१ँ ४ ४ इश्व । साया-सस्छ्व । विषय-पूजा । र०काल ४ । लेकाल स०१८२३ सावए मुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ४६ । प्राप्ति कथान — दि० जैन पार्वनाय मन्दिर टोडारायसिह (टोक)

७४९७. म्रनन्तनाथ पूजा—श्रीसूचर्गा । पत्रसं∘ १३ । म्रा० १० ४४ गृँ इन्छ । भाषा - सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १०२४ मगसिर बुदी ४ । पूर्णे । बेष्टुनस०४१० । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

७४६८. प्रतिसं० २ । पत्रस० १६ । ले० काल स० १८७६ भादवा बुदी ८ । पूर्ण ।वेष्ट्रनस० १५३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर ग्रजमेर भण्डार ।

७४**६६. प्रति स० ३ ।** पत्रस० १६ । आर० १२ ४१ हे इञ्च । ले०काल म० १८७६ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० ६४३ । **प्राप्**ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५००. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १-२२ । ले०काल 🔀 । स्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरहर्षणी भन्दिर बसवा ।

७५०१. मनन्तनाथ पूजा—रामचन्त्र । पत्र स०५। मा०६ $^{\circ}_{1}\times$ ५ $^{\circ}_{2}$  इज । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय— पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १६६१ । पूर्ण । बेष्टन स०६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

७५०२. ब्रनन्तनाथ पूजा-  $\times$  । पत्रस०२४। ब्रा०१० $\times$ ४ है इ.च । भाषा - हिन्दी पद्य । विध्य- पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०१००७। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर ब्रजीर अण्डार ।

७५०३. **प्रनन्तनाथ पूजा**—  $\times$ । पत्र स०१३। ब्रा०१३  $\times$  ५ इचा। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। २०काल स०१८५३ भादवा बुदी ७। ले०काल  $\times$ । दूर्गा। वेष्टन स०१०२। **प्राप्ति** स्थान—दि०जैन मन्दिर पार्वनाथ चीगान, बूदी।

७५०४. ग्रनस्ताथ पूजा $-\times$ । पत्र स०१८ । ग्रा०१०४६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । सेकाल  $\times$ । पूर्ण। वेष्ट्रन स०३४७ । प्राप्ति स्थान -दि० जैन मिदर ग्रिमनस्तर स्वामी (बूदी)।

७५०५. धनन्तनाथ पूजा  $\times$  । पत्रस० २७ । धा० १ $\times$ १ $\frac{1}{2}$  इज । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दवलाना (बृंदी)

७५०६. ध्रनन्तनाथ पूजा $-\times$  । पत्र स० २१। मा० १० $\frac{1}{2}\times \frac{1}{2}$  इच्च । माया-सस्कृत । विषय-पूजा । २० काल  $\times$  । ते० काल स० १६२४ मादवा बुरी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३७ । प्राप्ति स्थान—दि० नैन मदिर ध्रभिनस्वन स्वामी, (बुंदी)

विशेष-नागदी के नेमीश्वरजी के मन्दिर में गुरुजी साहब शिवलालजी की भेरिसा से ब्राह्मस्स गिर-बारी ने प्रतिलिप की थी।

७५० म. स्रनन्तनाथ पूजा सङ्ख विधान-गुराजन्त्राचार्य । पत्र सं० २२ । या० १२३ ४६ इञ्च । भाषा-तस्कृत । विषय-पूजा । र०काल अ । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स० २५६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन सन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, (वृदी)

ं ७५०**६. प्रतिसं० २** । पत्रसं० २६ । ग्रा०१२×५ इ.च. । ले०काल स० १६३० । पूर्ग । बेष्टनस० १४६ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी

७५१०. प्रति सं० ३ । पत्रस० ४६ । छा० १०imes४ इन्छ । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७**५१२. प्रतिसं० ५**। पत्र सं० ४१ । ब्रा० ११ ×५ इन्च । लेक्काल अ । पूर्ण । बेष्ट्रनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर प्रमिनन्दन स्वामी (ब्रृंदी)

७**५१३. प्रति सं०६।** पत्र संस्था २६। झा०१० 🗴 ५ इश्वा लेक्काल स०१८७६ पूर्ण। वेबन स०१२६। **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)

७**५१४. प्रतिसं० ७**। पत्रस**०४२ । झा० ५**१ × ५ ६ श्वाले० काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पास्वेनाथ जौगान बुदी ।

विशेष-श्री शाकमागपुर मे रचना हुई थी । नेमीसुर चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७४१४. सनन्त पूजा विधान । पत्र सं० ३। प्रा० ११ 🗴 ५ ६ ७ । भाषा — संस्कृत । विषय-पूजा र० काल 🗴 । से०काल 🗴 । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० ४=/२६२ । **प्राण्तिः स्थान** - दि० जैन मस्तिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टोक)

७५१६. ग्रनन्त बरा कथा पूजा—लिलाकीत्ति। पत्रस० -1 ग्रा० ११ $\times$ ४ इख । माषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ११२२ । प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टॉक)

७५१७, अनित्रावरा पूजा - पाण्डे धर्मदास । पत्रस० २७ । ब्रा० न 🗙 ५ इञ्च । भाषा — संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल 🗴 । ले०काल प० १६६३ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३२४ । प्राप्ति स्थान -वि० जैन सबसाल मन्दिर उदयपुर ।

७५१ म. मनस्थान पूजा — सेवाराम साह । पत्रस $\circ$  २। म्रा० म $^{3}$  ४ ६ इख । भाषा - हिन्दी । विषय - पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १६४७ । पूर्ण । बेहन सं० ६५० । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७५१६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३ । ग्रा० ११ × ४ } इश्व । ले०काल × । पूर्ण । बेप्टन स० ४ = १ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७५२०. श्रनस्रावरा पूजा —  $\times$  । पत्र स॰ १४ । ग्रा० ११  $\times$  ४ $^{\circ}$  इञ्च । भाषा —सस्त्र । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रत स॰ ११५ । प्राप्ति स्थान —भ० दि॰ जैन सन्दिर प्रजोर ।

७५२१. ब्रनस्तवस पूजा $-\times$ । पत्र सं० ७। द्या० ५ $^1$  $^2$  $^2$  इन्थ । भाषा- हिन्दी । विषय-पूजा  $^1$ र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेहन सं० १४८० । प्राप्ति स्थान-िद० जैन मन्दिर क्षजीर भण्डार ।

७५२२. धननस्वरा पूजा $-\times$ । पत्र स०१४। धां०११  $\times$  ४१ इख । भाषा -सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ते० काल स०१६५० सावस्य बुदी १४ । पूर्ण। वेष्ट्रन स०११०। प्राप्ति स्थान-भ० दि० जैन मन्दिर धनमेर।

७५२३. स्रनत्तवत पूजा— $\times$  । पत्रत० २० । स्रा. १२ $\times$ ५ $^2$ ६ व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रक्ताल  $\times$  । ले.काल स० १६६४ । पूर्ण । बेष्टन सं० २५/१५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर दुनी (ोक)

७**५२४. सनस्ततः पूजा**— ×ापत्रम० २३। ग्रा० २¦ ४६ इचा। भाषा-महलून, हिन्दी। विषय—पूजा। रकताल ×ा लेक्काल स०१६०=। पूर्णा। बेष्टन स०६६। **प्राप्ति स्यान**—दि० जैन मन्दिर-नामदी वंदी।

जिशेष—१४ पुजाये है। जयमाल हिन्दी मे है—कड़ी २ अप्टक भी हिन्दी मे है।

७५२५. **ग्रनन्त वत पूजा** — × । पत्रस० १८ । भाषा — सस्कृत । त्रियय — पूजा । र०काल × । ले० काल × । **प्रपूर्त** । वेष्ट्रनसं० ३३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन तेरहवयी भन्दिर वसवा ।

७५२६. ग्रमन्तवत पूजा -  $\times$  । पत्र स० १३। ग्रा० १३ $\times$ ६ इजा। ग्रापा — मम्हता। विषय — पूजा। र०काल  $\times$ । क्षे०काण  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० ११३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर शोगस्थी कोटा।

७५२७. अनस्रावरा यूजा $-\times$ । पत्रम० १७ । या० १५ $\times$ ४ इ.च । भाषा सस्कृत । विषय- यूजा । र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । यूर्ण । वेष्टन स० ५१५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो हू गरपुर ।

७**५२ त. धनस्यक्षरा पूजा** — × । पत्र त०१२ । घा०१० × ६ इञ्च। भाषा — सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । लेक्काल त० १८०१ भारवा सुदी ८ । पूर्णः । वेष्ट्रन त०२४३ । **प्रास्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर राजस्थान (टोक)

# विशेष-प्रति जीएं है।

७४२६. क्यनस्पादम पूजा — × । पत्र स० १ । मा० १ × ६ इ.च. । माषा – सस्कृत । विषय — पूजा । र०काल × । ले० काल क० १०६६ सावण सुबी १० । पूर्ण । वेष्टन संबंध ४-१०६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन भन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टॉक)

७**५२० अनन्तव्रत पूजा**—  $\times$  । पत्रस० १–२१ । आ० ७ $\frac{1}{7}\times \xi_0^1$  देख । आपा-हिन्दी पद्य । विषय – पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ – २६६ । **प्राप्ति स्थान** —वि॰ जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

# विशेष-धिन्तम पत्र नही है।

७४३२. प्रति सं० २ । पत्र स० ४१ । ले०काल स० १६२६ मगसिर सुदी६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७६ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

७५३३. ग्रनस्तवरा पूजा विधान भावा—  $\times$  । पत्र सं० ३२ । ग्रा०  $-\frac{1}{8}\times$  ६२ इस । भाषा- हिस्सी । विषय- पूजा । ग्र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० १५३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर प्रजान भण्या ।

७५३४. ग्रानःतवरा विधान—शानिस्तास— × । पत्रस०२४। ग्रा० १०१४५ इश्व । भाषा-क्रियी पद्य । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल स० १६२५ । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० ५४-२४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष-- णिवबक्स ने दौमा मे प्रतिलिपि की थी।

७५३५. धनन्तव्रहो**राणन**— नाराय**रा ।** पत्र म० ४०। प्रा०६  $\times$  ६ इत्त्व । मायाः— सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । लेकाल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

७५३६, ग्रनन्तवराद्यायन— × । पत्रसः २ से ३२ । ग्रा० ११ ×५ इश्वा । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेटटन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन सीगानी मदिर करीली ।

# विशेष-प्रयम पत्र नहीं है।

७५३७. **धनन्तव्रतोद्यापन पूजा**—  $\times$  । पत्र स॰ ११ । घा॰ ११ $\times$ ४ इच । भाषा-सरकृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी

७**४३ - अभियेक पाठ** — × । पत्र स० ४ । मा॰ न्ै ×७ स्न्य । भाषा— सन्द्रतः । विषय – पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्णः। वेष्टनं स० ६४७ । **प्राप्तिः स्थान**— दि० जैन मन्दिर सक्कर जयपुरः। ७५३६. श्रमिषेक पाठ $--\times$ । पत्र सं०७। झा० १० $\frac{3}{4}\times$ ५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय--पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल सं०१६०६। पूर्णा। वेष्टन सं०२०६। <mark>प्राप्ति स्थान ---</mark> वि० जैन मन्दिर भ्रमिनत्दन स्वामी (कृंदी)।

विशेष - पूर्ताभिषेक पाठ है।

प्रशस्ति—सबत् १६०६ वर्षे मार्गसुदि नवमी वृहस्पतिवासरे उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे घृत गुण् भारम पठनार्थे लिखिलंप० ज्योति श्री महेस गोपा सत्।

७५४०. द्वासियेक पाठ $---- \times 1$  पत्र सं० ४७ । द्वा० १०  $--- \times 1$  साम संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल  $-\times$  । ले० काल  $-\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । प्राप्ति स्थानदि० जैन सब्देलवाल मदिर उदयपर ।

७१४१. **प्रमिषेक पूजा**— × । पत्र स॰ ३ । प्रा० १० × ५१ इवा । माषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । से०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कनेहपुर शेखावाटी (सीकर) .

७५४२. ग्रामिषेक पूजा — विनोदीलाल । पत्रस० १ । ग्रा० ६ $\frac{1}{3} \times 4^{\frac{1}{3}}$  इच । ग्रापा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन स० १६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेंहपूर शेखादाटी (सीकर)

७**५४३. ग्रभिषेक विधि** × । पत्रस**०४ । ग्रा० १०**३ × ४ इच्च । भाषा–सस्कृत । विषय— विधान । र०काल × । ले०काल । वेष्टन स०५८३ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयाुर ।

७५४४. **झब्दद्रव्य महा-झर्ष**—  $\times$  1 पत्रसः १ । झाः  $= \times \xi$  इंच । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०कान्त $\times$ । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सः ६६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लक्कर जयगर ।

७५४५. अष्टाह्निका पूजा — सकलकोत्ति । पत्र स० १६ । घा० ११  $\times$  ४ दे इस । घाषा — संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । वे० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६२/५६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पावर्षनाथ मन्दिर इन्टरगढ (कोटा)

७५४६. ऋष्टाह्निका बृतोद्यापन-शोभावन्द । पत्र सं २० । सा० ११२ ४५ देश्व । मावा-सस्कृत । विषय पूर्वा । रिकाल ४ । लेज्काल स० १८१७ चैत सुदी १ । पूर्णे । बेट्न स० ४१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्तिर बोर्यनी कोटा ।

७५४७. ब्रष्टाह्मिका पूजा— × । पत्रस० २०। घा० वहुँ × ६३ इखा । भाषा—सस्तृता। विषय पूजा । र०काल स० १०७६ कॉतिक बुदी ६। से०काल × । पूर्णा। वेष्ट्रन स० ११४७। प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मस्दिर प्रकोर।

विशेष -दो प्रतियो का मिश्रग् है।

७१४८, ब्रष्टाह्निका पूजा — ४ । पत्रतः ११ । ब्रा॰ ६ ४ ६ इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय-पूजा । र०कालं ४ । लेकालं ४ । पूर्णं । वेष्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मिस्टर अजमेर भण्डार । ७५४६, झष्टास्त्रिका पूजा— × । पत्रसं० १३ । सा० १० × ४ इचा । साया-हिन्दी। विवय—पूजा । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३८३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर सक्तेर अस्पर्त

७४५०. ब्रास्टाह्मिका पूजा— $\times$ । पत्र सं० १६। ब्रा० १० $; \times *$  १०व । प्राप्त स्थान—संस्कृत । विषय—पूजा । २०काल  $\times$ । ते० काल सं० १६२०। पूर्ण । बेष्टन स० ४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर समिनन्दर स्थान, इरो।

७४**४१. ग्रन्टाह्मिका पूजा**—× । पत्र सं०३ । ग्रा०११ × ४ दश्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३७, ३३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७४४२. प्रष्टाह्मिका पूजा उद्यापन—शुभवन्द्र । पत्रकः १२ । प्रा० ११ ४ ४ इत्व । माषा— संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल 🗴 । ले० काल सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन लडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

७५५३. घरटाह्निकापूजा—म० शुभवन्द्र । पत्रसं० ४ । ग्रा० ११४५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रधवाल मदिर उदयपुर ।

७**४१४ प्रतिसं०२।** पत्रस०६। ले०काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टनसं०४४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पत्रस्यती मन्दिर सरनपुर।

७४४.४. प्रष्टाह्मिका पूजा—सुमितिसागर । पत्र स० ८। भाषा-हिन्ही । विषय-पूजा । र०कान × । ने०कान स०१८५८ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं०११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४४६. ग्राटाह्मिका पूजा — द्यानतराय । पत्रसं० १६ । भाषा — हिन्दी । विषय — पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्या । वेष्टनसं० १२६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष---२ ६०१५ ग्राना लगा था।

७४४.८. प्रस्टाह्मिका संडल प्जा-×। पत्र सं० ६। प्रा०१०×७ इञ्च। आया-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा । र०काल ×। ले०काल ×। पूर्णं। वेष्टन स०७६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरहयथी मन्दरदीसा !

ं ७५५६. अष्टास्त्रिका बतोष्टापन पूजा—पं० नैमिचवंद्र । पत्र तं० २५ । घा० ६ ४५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल ४ । के० काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पत्रायती दूनी (टॉक) ७५६०. प्रस्टाह्मिका पूजा— × । यत्रस० २७। मा० ६) ×६ इत्र । मापा—हिन्दी पर्य । विषय—पूजा । र०काल × । लेक्काल सं० १८६६ । पूर्ण । बेष्ट्रन स०४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरलपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

**७५६१. झष्टान्हिका पूजा**- × । पत्र स०१४ । ग्रा०१३ ×७ इचा। र०काल स०१८७६ । ले**०**काल स०१८६४ । पूर्ण। बेष्टन स०४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

७५६२. ग्राटा**हिका पूजा** — × । जनस**० २२ । ग्रा० १०३**४६३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । १०काल × । लेकाल × । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २७ । प्राप्ति स्थान—दि० जन तेरहपयी मस्टिर सेणवा ।

७५६३ ग्रहट प्रकारी पूजा— 🗙 । पत्र सं०४। भाषा— हिन्दी। विषय पूजा। र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पर्सा। वेष्टन सं०६८६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रवासती मन्दिर भन्नपुर।

७५६५. **धसङभाय विधि ।** पत्र स०२। भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । २०काल 🗴 । क्षेठकाल 🗴 । पूर्ण । वेदन स०६७७ । **प्राप्तिः स्थान—दि**० जैन पंचायती मदिर भरतपूर ।

७५६६. म्राकार मुद्धि विधान - देवेन्द्रकीत्ति । पत्रस० १ । प्रा० १११ × ५ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । २० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६१-१४८ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इगरपर ।

७५६ = स्नादिस्यजिन पृजा—केशवसेन । पत्रस॰ द । स्रा॰ ११ $\times$ ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल स॰ १६४६ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ५३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर कोटडियो का हुगरपुर।

७५६६. फ्राबिस्य जिनयूजा—म० वेवेन्द्रकीत्ति । पत्रसं०१७ । प्रा०१०४६ इश्रा । भाषा— संस्कृत । विषय ,क्षा । २०काल ४ । लेक्काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष-इसका दूसरा नाम ग्रादित्यवार व्रत विधान भी है।

७५७०. प्रति सं०२ । पत्र स०१६ । धा०१०४४ देश्वा। ले॰काल स०१६१६ श्रावण सुदी ६ पूर्णावेष्टन स०१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटामन्दिर बयाना।

विशेष--- भगलचन्द श्रावक ने प्रतिलिपि की थी।

७५७१. ब्रादित्यवार वतोद्यापन पूजा—जयसागर । पत्रस० १० । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । २०वाज × । ते०काल स० १०१६ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचावनी मन्दिर भरतपुर । ७५७२: **प्रावित्यवस पूजा** — ×।पत्र सं०१२ । प्रा०१०}×५ इञ्च । भाषा —संस्कृत । विषय—पत्रा । रं∘काल × । ने०काल सं०१८३६ जेठ बुदी ६ ।पूर्ण ।वेष्ट्रन स०१**१ । प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसभी कोटा ।

विशेष-पं ग्रालमचन्द ने लिखा था।

७५७३. झादित्यक्रत पूजा — × । पत्रस०४ । घा०१०×४ देखा । भाषा — संस्कृत । विषय—ः जा । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । बेष्टन सं०६१२ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन स्रीटर प्रजोग

७५७४, इन्द्रध्यक्त प्जा-म० विश्वभूष्या। प्यतः १११। प्रा॰ १२४६ इत्र । माषा-संस्कृतः । विषयः उत्रः । रुकानः 🗴 । ले० कानः 🗴 । पूर्णः। वे० स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रथमल प्वापनी मन्दिर उद्राप्तः ।

७**५७५. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १९८ । झा० १९३४५ 'इस्टच । ले० काल सं० १८८३ फायुस बुदी ३ । पूर्स । बेहन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टॉक)

७५७६. प्रति सं० ३ । पत्रस०११२ । द्वा०११४७३ इन्छ । ले० काल स०११८८५ । पूर्ण । वैष्टनसं०१०३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७५७७. इन्द्रध्वज पूजा  $- \times 1$  पत्र स० ६०। प्रा० १२ $\times$  ७ $\frac{1}{2}$  इव । माषा - संस्कृत । विषय - पुजा 1 रकात  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १५७। प्राप्ति स्थान - दि० जैन संदिर फनेहपुर शेलावाटी (सीकर)

विशेष-- ग्रथ का लागत मृत्य १३।-) है।

७५७८. **इकवोस विविध्**चा— ४ पत्र म०१३। माषा—हिनी गुजराती। विषय—पूजा । रंक्काल ४ । लेककाल संबर्धक्षा पूर्णा। वेष्टन सब्दर्श**। प्राप्ति स्थान**—दिव् जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७४७६. ऋविमंडल पूजा — शुभवन्द । पत्र सं०१८ । भाषा — सम्बन । विषय — पूजा । रक्तान ४ । लेक्कान २०१८६६ जेठ मुरी ११ । पूर्ण । वेष्टन स०१० । प्राप्ति स्थान-दिश्जैन मन्दिर भरतपुर ।

७५८०. ऋषि मंडल पूजा—विद्यामुष्यस्य। पत्रस०२०। ब्रा०११४४ इञ्च। भाषा— सम्कृतः। विषय—पुजा। र०काल ४.। ले०काल ४.। पूर्णः। बेष्टनसं०१८३। **प्राप्ति स्थान —दि०** जैन सक्डेलवाल मन्दिर उदयपुरः।

७५८२. ऋषि मंडल पूजा---गुरानिट । पत्रसं० २१। प्रा० १०४५ रेडच्च । भाषा---संस्कृत । विषय -- पुजा । र० काल ४ । लेब्काल सं० १६११ । पूर्ण । बेष्टन स० २८२ । **प्राप्ति स्थान-**दि० जैन मन्दिर पार्थनाय चौगान बूँची ।

विशेष - बूंदी मे नेमिनाथ चैत्यालय मे पं० रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

७५८२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २-२४ । ग्रा० ११ x ५ इ.च.। ले०काल x । ग्रपूर्ण । बेष्टन सं० ५१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर कोटडियों का हुंगरपुर । ७५८३ . प्रतिसं० ३ । पत्र सं० २०। सा० १०३ ×५१ इन्छ । ले० काल × । वेष्ट्रन सं० ४३३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७५०४. ऋषिमंडल पूजा माथा—दौलत ग्रोसेरी । पत्र सं०१२ । प्रा०१२ $\frac{1}{4}$  ४६ $\frac{1}{4}$  इंच । माधा—हिन्दी पदा । विषय-पूजा । र० काल सं०१६०० । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर वेसावाटी (सीकर)

७५६५. प्रति सं० २ । पत्रस० १४ । प्रा॰ ८३ ४४ ३ इचा । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ८ । प्राधित स्थान — दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपरा (टीक)

७४८६. ऋषिमंडल पूजा —  $\times$  । पत्र स० $^{\vee}$ । छा० ११ $_{7}^{2} \times ^{9}$  इचा भाषा — सस्कृत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनसं० १४३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ वंदी ।

७**५८७. ऋषिमंडल पूजा**— X । पत्र स० ४ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल X । से**०**काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७/३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-६ प्रतिया भीर है जिनके बेष्टन सं० ३८/३६७ से ४३/३७२ तक है।

७५६ स्ट. ऋषिमंडल पूजा--- × । पत्र स०१७ । मा० ११×७ इला । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स०१६२२ । पूर्ण । बेष्टन स०१४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

७५८६. ऋविमंडल पूर्णा— imes । पत्रसः २ । भाषा-सः स्कृत । विषय-पूजा । र० काल imes । वेशन संकृत । वेशन संकृत । उर्णा । वेष्टनसः ७२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

७५६०. ऋषिमंडल पूजा भाषा— × । पत्रस० १३ । ग्रा० १० × ५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ते० काल सं० १०६४ फागुण बुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १२३२ । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर सजमेर ।

७५६६. ऋषिमंडल यत्र पूजा—  $\times$  । पत्रसः १४ । म्रा॰ ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इन्छ । भाषा— सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ १६७ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन मन्दिर शांदिनाथ वृदी ।

विशेष-प्रतापगढ मे प॰ रामलाल ने प्रतिलिपि की थी।

७५६६ **. प्रंकुरारोपर्गा विधि—ग्राशाघर** । पत्रत०६ । मा० ६३ ४४३ इश्व । मा**या**— संस्कृत । विषय—ग्रीतप्टा विधान । र०कान × । ले०कात × । पूर्ण । वेप्टन स० ३स३ । **प्राप्ति** स्थान—म० टि० जैन मन्दिर धजनेर ।

. ७४६४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । ग्रा० १० × ४ इ.च । भाषा — सस्कृत । विषय — प्रतिष्ठा विभाग । र०काल × । ते० काल × । वेष्टन स० २६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर, खयपुर ४, ७५९५. प्रतिसं० ३ । पत्र स०६ । म्रा० ८ ४६६ इ.च. १ र०काल ४ । के० काल सं० १६४८ । पूर्यो । बेबन सं० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर स्निमन्दन स्वामी, बंदी ।

७५८६. म्र कुरारोपस्य विधि—इन्द्रनिन्द । पत्रस० १५६ । मा० १२ × ६ इंच । माषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । से०काल स० १६४० बैशाल मुक्ता ४ । पूर्ण । वेशून स० २६७-११७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर कोटबियों का हूगरपुर ।

७५६७. कमल चन्द्रायस्य **बतोद्यापन**—×। पत्र स०१०। द्या० १०×६ इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्स । वेष्टन स० ५२३—× । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटडियो का द्वपस्पर ।

७४६ म. कम्मे पूर उद्यापन —  $\times$ । पत्रस० १। प्रा० ११  $\times$ ७ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल  $\times$ । लेकाल स०१ म्में। पूर्णा वेष्ट्रन स०११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

७५६६ कमंदहन उद्यापन—विश्वसूचरा । पत्र स०२६ । धा० १० $\frac{3}{7} \times \frac{1}{9}$  इन्छ । प्रापा- संस्कृत । विषय-पृजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वष्ट्रन स० २६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिदिर बोरमली कोटा ।

७६००. कमंबहृत पूजा—टेकचंद । पत्र त०१७ । मा०११  $\times$  ७ इख । मापा -हिन्दी पच । विपय-पृजा । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन सं० ७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिहर नागदी व दी ।

७६०१. प्रतिसंठ २ । पत्र स०१३ । ग्रा०११४७ इन्छ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । नेष्टन स०१२०। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

७६०२. **प्रतिसं० ३**। पत्रस० १८। ग्रा०१० ४ ७ इश्वा । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टनसं० १०८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

७६०**३. प्रति सं०४ ।** पत्र स०२३ । प्रा०६ 🗙 ६ इचा। ले०काल 🗴 । पूर्णा। बेष्टन स० ७३–१०७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७६०४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । स्ना० १०३ $\times$ ४ इन्ड ले० काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन सं० ७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर भरतपुर ।

**७६०४. प्रतिसं० ६ । पत्र**स० २२ । से०काल स० ११६२ । पूर्ण ।वेष्टन स० ५१७ । **प्राप्ति** स्थान— दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०६. प्रति सं०७ । पत्रस०१६ । प्रा० १२ × ६ इ.च । ले० काल × । पूर्या । वेष्टुनस०१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चौषरियान मालपुरा (टोक)

७६०७. प्रति सं० म । पत्रस० २०। घा० १४७ इ.च । ले•काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

७६० द. प्रति सं० ६ । पत्रसं० २४ । घा० ६ 🗴 ७ इत्वा । लेक्काल स०१८ द श्रावसा बुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३७ । प्रास्ति चान—दि० जैन तेरहत्त्वी मन्दिर मालपुरा (टॉक) विशेष--- वामलाल पहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी।

७६०**६. प्रतिसं० १**० । पत्रसं० २१ । ध्रा० १० ४ ४ ¦ इंच। ले०काल स० १६२७ । पूर्णी। वेष्टन सं० १७ । **प्राप्टित रूपान**— दि० जैन मदिर कोट्यो कानै सवा।

**७६१०. प्रतिसं० ११** । पत्रस० २० । घा० ११-}ु×४-} इञ्च । ले०काल सं० १६४४ । पूर्णं। वेष्ट्रन सं० ४६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

७६११. प्रतिसं० १२ । पत्रस $\circ$  ४१ । ग्रा० १२ $\frac{3}{2} \times \mathbb{R}^3_2$  इस्त । ले० काल स $\circ$  १६४६ चैत सदी १ । पूर्ण । वेस्टन म $\circ$  ४२६ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर लक्कर जवपूर ।

७६१२.प्रति सं० १३ । पत्रस० ६६ । ले०काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० २**१ । प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रस्यती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - सदासुल रिषभदास द्वारा प्रतिलिपि कराई गई थी।

७६१**३. प्रतिसं० १४ ।** पत्र स० २२ । ग्राठ ११ 🗙 ४ <sup>‡</sup> इञ्च । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ३५७ । **प्राप्ति स्थान** — भः दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**७६१४. कर्मबहन पूजा-शुमचन्द्र ।** पत्र सः १६ । घा० १०४६ इ.ख.। भाषा -सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल ४ । ले० काल स० १६३६ । पूर्ण । वेच्चन स० ४३०। **प्राप्ति स्थान**—विश् जैन मन्दिर कोटबियों का द्वांगपुर ।

७६१४. प्रतिसं० २ । पत्रस० १८ । आ० ११ imes ६ इ.स. । ले०काल imes । पूर्णं । बेष्टनसं० ६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष-हरविशदास लुहाडिया ने सिकन्दरा मे प्रतिनिधि भी थी।

७६**१६. प्रति सं०३ ।** पत्र स०१०। घा०११३,४४३ दश्वा ले० काल 🗴 । पूर्गा। वेष्टन स०६४ । प्राप्तिः स्थान — दि०जैन मन्दिर आस्ति।थ बुदी।

७६१७. प्रति सं०४ । पत्रतः १२ । प्रा०११४५ इ'च । ने०काल स०१७६० वैशाल बुदी ५ । पूर्यो । बेष्टन स०६८ । प्राप्ति स्थान--- वि०जैन मन्दिर तेरहपदी मानवुरा )टोकः)

विशेष-- ग्रा॰ ज्ञानकीति ने नगर में प्रतिलिपि की थी।

७६१६. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १० । घ्रा० ११ imes १८ स्थान —हिंग् । विषय -पूजा । र०काल imes । ते०काल सimes १६७३ । पूर्ण । विष्टन सimes १६६ । प्राप्ति स्थान —हिं० जैन मिस्ट स्थलाना (वृदी)

विशेष -- प्रशस्ति निम्त प्रकार है।

सवत् १६७३ वर्षे झामोज नृशी १९ १६ मागवाडा नगरे श्री खादिनाव चैत्यानां श्री मूलसवे सरस्वती गच्छे महलावार्षे श्री रत्नकीति तन्पट्टे महत्त्वावार्षे श्री सग कीति तत्त्पट्टे म० महावटा त० म० म० श्री जिनचन्द्र म० सकलबन्दान्वये म० श्री रत्नवन्दं विराजमान हुवड ज्ञातीय सजेववर गांत्रं सा० सासा आर्या सजारादे तन्त्रुचो सा काला भाषीं कहु सा० घरेथी भाषीं इन्हों तत्त्युत्र बलभदास स्वस्वज्ञानावरस्यो कर्मक्षतार्थं अ० श्री ठाकरा कर्मदहन तृजा जिलाप्यने दस ।

७६१६ प्रति स० ६ । पत्र स० २२ । घा० १० 🖰 ६९ ६२ व । ले० काल स० १६१६ ग्रायाङ सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पजायती मन्दिर बयाना । ७६२०. प्रति सं०७ । पत्र स०१७। ले॰काल स०१६६५ प्रापाड सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं०१८६–३७८। प्राप्ति स्थान — दि० जैन समबनाप मन्दिर उदयपुर।

७६२१ प्रति सं० का पण सं०१७ । मा० ११ रे ४ इ.च. । ले० काल सं०१७२१ । पूर्ण । वेष्टन सं०१४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२२. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १५ । घा० १२ × ४१ इल्ड । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान — टि॰ जैन प्रप्रवाल मन्दिर उटयपर।

७६२३. प्रतिसं० १० । पत्रतः १६ । मार्व १४ ४ इ.च.। ले० काल स० १७३१ 🗶 । पूर्ण । वेस्टन स० २७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन स्नप्रवाल मदिर उदयपुर ।

७६२४. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० १४ । लें०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स०२८०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन ब्रह्मयाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२५. कमं वहन पूजा— 🗴 । पत्रसः १२ । प्राः ११हें ४५ है इव । माया—सस्तः । विषय—पूजा । रक्तःत 🗴 । लेक काल सः १८८० सावगः बुदी १० । पूर्णः । वेष्ट्रनसं ०१५५ । प्राप्ति स्थान—भ० दिव्जेन मन्दिर प्रजमेर ।

७६२६. प्रति सं०२ । पत्र स० ६ । घ्रा० ११×५ इल्डा लेञ्काल स०१८२८ । पूर्ण । बेष्टनस० २५५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

७६२७. प्रतिसं० ३ । पत्र म० १२ । झा० १२ × ४ है इला । ले०काल सं० १८६२ सावग् सुदी ६ । पूर्णा । वेटन स० १०२० । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर फ्रजनेर ।

७६२६. प्रति सं०४ । पत्रस०२३ । घा०१०}४१०ई दश्वा । ले•काल 🗶 । पूर्णं । बेष्टन स०१४३६ । प्रास्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७६२**६. प्रतिसं० ४**.। पत्र स०२३ । झा०१०% ४४% इल्डा। ले० काल × । पूर्ण। बेष्टनस०१२२४ । **प्राप्तिस्थान**— अ०दि०जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—मृत्य ४॥ - । लिखा है।

७६३० प्रतिसं०६ । पत्रस०१२ । द्या०११×४ इ.च । ने०काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टनसं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

७६३१. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १४ । मा० १२imes६७ इथा । ले० काल imes । पूर्ण । वेय्टन सं० २१५ । आस्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

७६३२, प्रति सं० ८ । पत्रसं० २२६ से २७० । ले०काल × । पूर्णं । बेष्ट्रनसं० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - यणोनदि की पचपरमें ठी पूजा भी आगे दी गई है।

७६३३. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ११ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० ६० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पत्तायनी मन्दिर मरतपुर । ७६३४. प्रति सं० ११ । पत्र मं०६ । ले०काल 🗵 । मपूर्ण । वेष्टन स०१६७/३४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६३१. प्रति सं० १०। पत्र स०१७। ले॰काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०१८६/३३६। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेय-प्रणस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् , ५८२ वर्षे मासो वदि ५ भूमे गुजरियेन बीजापुर सुमस्याने श्री गातिनाय चैत्यालये श्री सुलसंघे नदिवने सरस्वतीगच्छे बलात्काराण्ये थी कुरन्दुस्वायसांनध्ये महारक्ष श्री पधनरिदसत्यहुँ स० भी सकल कीत्तिदेवा तत्यहुँ स० भी मुबनस्वतित तदानाये भ० भी ज्ञातन्त्रणुस्तराहुँ म० श्री हात रामिःदेशस्तराहुँ भ० श्री मुन्न पहरदेवसत्त्राम्नाये चन्द्रावती नगरे नागहहा ज्ञातीय साह धाना भार्या वास्त्र सुत विवत राजा पठनार्थ ।

७६३६. प्रतिसं० १२ । पत्रस० १७ । घा० १२×४ ¦ दश्व । ले०काल स० १८१६ घाषाढ सदी ८ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष — महादास श्रग्रवाल ने प्रतिलिपि करवाई थी।

७६३७. प्रति सं०१३। पत्रस०२७। स्ना०११३,×४३ इञ्च। ले∘काल स०१०१३। पूर्णावेषून स०६६। प्राप्ति स्थान – दि० जैन सौगाणी मदिर करोली।

७६३८. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १७ । झा० ११×५३ इ.च । ले०काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बृंदी ।

७६३६ प्रतिसं०१५ । पत्र स०१७ । ग्रा०१२ × ५ै३६७ । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन स०१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७६४०. प्रतिसं० १६ । पत्र स० १६ । मा० ६×६ इञ्च । लेक्काल १६४० । पूर्ण । बेप्टन स० १७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मजबान मन्दिर नैस्पता ।

विशेष - नैरावा मे प्रतिनिपि हुई थी।

७६४१. कमंदहन पूजा विधान —  $\times$  । पत्रस॰ ३० । ग्रा॰ १०  $\times$ ६ै हच । गाया — हिन्दी (पर्य) । विषय — पूजा । २०काल  $\times$  । से०काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ ६६ ३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरहायी दीसा ।

**७६४२. प्रतिसं० २** । पत्र स० २७ । ग्रा० १० $\times$ ६१ इ.च. । ले०काल  $\times$  । पूर्ग । वेष्टन स० १०-३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेन्द्रपथी दौसा ।

७६४३: **कर्म निर्णर**सी **चतुरंशी विधान**  $\times$  । पत्र स० १०४ । प्रा० १० $\frac{3}{7} \times \frac{3}{9}$  इश्व । भाषा — सस्कृत । विषय — प्रा । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पारवेनाय चौगान वृती ।

विशेष--सर्वत १६२८ वर्गे जंग्र हुदी ५ जनी श्री मूलनचे सरस्वतीनच्छे बलास्कारमधी थी कुन्द-कुन्दाचार्यांग्यं भ० श्री पथनदिवेसासन्तर्ग्ये भ० बस्तक्षीतस्तरत्युं भ० श्री भुवनक्षीतिस्ता स्तरस्युं भी विजयकीतिवेसास्तरपुं म० श्री गुजयग्रस्तत्यपुं भ० श्री मुमतिकीत्तिवेसास्त्रामार्थे गुठ श्री प्रभायवग्रस्त-जिथ्य क० श्री देवरास पठनार्थं पोभीना वास्तय्य हुवक्षणतीय श्रे० वाचा मार्यो वनारे। तयो सुत श्रे० गोशिंद मार्यो गुरारे। भाता गोगाल मार्यां गगार्थ एतेवा मध्ये श्री गुरारे """""" ७६४४ कलकाविधि— × । पत्र सं०१ । ग्रा०१०२ × १ स्था। भाषा-संस्कृत । विषय—
पूजा। र०काल × । ते० काल × । पूर्ण। बेष्टन सं०२७७। प्राप्ति स्थान—मट्टारकीय दि० औसं
मंदिर प्रजमेर।

७६४५. कलकारोह्स विधान— $\times$ । पत्रसं० १२ । धा॰  $- \times \xi$  इञ्च । मापा-संस्कृत । विध्य विधान । र० काल  $\times$  । ले॰काल स० ११४८ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १६३ । प्राप्ति स्थान—विश्वेन समिनन्दन स्वामी वृद्धी ।

विशेष - प॰ रतनलाल नेमीचन्द की पुस्तक है।

७६४६. कलकारोहरूग विधि— $\times$ । पत्रस०१४। ग्रा०त $\times$ ६ इत्थ । माषा-सस्कृत । विधय-विधान । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टनसं० ३८६–१४६। प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर कोर्टाटयो का ङ्गण्युर ।

७६४७. कस्यारा मन्दिर पूजा-चेदेन्द्रकोति । पत्रस०६। प्राः ११३ ४ ४ इश्वः। भाषा-संस्कृतः। विषयः पृजाः। र०कालः ४ । ले०कालः स०१८६१ । पूर्णः। वेष्टनस०१०५ । प्राप्तिः स्थान--- टि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी वृदीः।

विशेष -- प॰ मदामुख ने जम्बू स्वामी चैत्यालय मे पजा की थी।

७६४ द्र. करुया**रा मिदिर पूजा** —  $\times$  । पत्रस० १२। ग्रा० १०  $\times$  ६ इत्त्व । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा र० काल  $\times$ । ले० काल स० १६३६ । पूर्ण । वेल्टन स० ५३२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मिदर कोटडियो का हु गण्पुर ।

७६४६. किलिकुण्ड पूजा— $\times$ । पत्रस० २ । ग्रा० १० $\frac{2}{3}\times$ ५ इ.स. । माषा सस्कृत । विषय— पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १२३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर ग्रजमेर भण्डार ।

७६४०. कलिकुण्ड प्जा $-\times$ । पत्र सं०६। ग्रा० १० $\times$ ४ है इन्छ। भाषा-सन्कृत। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स० १४६६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर प्रजमेर भण्डार।

विशेष --पद्मावनी पूजा भी दी हुई है।

७६४१. कलिकुण्ड यूजा —  $\times$  । पत्रस= 1 । प्राप्त १३ $\times$ ६ इ.च । भाषा सस्कृत । विषय — यूजा । र०काल  $\times$  लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स= 1 ५५४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयप्र ।

७६५३ **कोजी बतोद्यापन— रत्नकीर्ति** । पत्र सं० ४ । मार्ग १०३  $\times$ ४ इन्त्र । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल । ने०काल स० १०६० झासोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति** स्थान-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--पं० चिदानन्द ने लिखा था।

७६४४. कजिकावतोद्यापन—मुनि ललितकोति । पत्र सं०६ । मा० १०  $\times$  ४ इचा । माथा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल सं०१७६२ प्रपाढ सुदी १० । पूर्णं । बेष्टन स०३ ६० । प्राप्ति स्थान — दि० भ०जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७६५५. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५ । ग्रा० ११ $^{\circ}_{X}$ ४ $^{\circ}_{3}$  इच्च । माषा-हिन्दी पद्य । र०काल imes । पूर्ण । बेष्टनसं० १६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर ग्रादिनाय बूदी ।

विशेष---महाराज जगतिसह के शासन काल में सवाईमाधोपुर में ग्रमरचंद कोटेवाले ने लिखा था।

७६४६. कुरब्दिसिद्ध— $\times$ । पत्र स॰६। प्रा॰ ११ $\times$ ५ इन्छ। माया-सस्कृत। विषय-विधान। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टनसं० २३२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चीमान वृदी।

विशेष-मडप कुण्ड सिद्धि दी गयी है।

७६५७. कोकिला बतोद्यापन—× । पत्रस० १२ । ग्रा०६ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७०४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन म्राग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- गुटकानं. ६ मे है।

७६५ द्र. गराधरदलय पूजा—सकलकोति । पत्र स०४ । भाषा भस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत म०२–३१६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैत सभवनाथ भदिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

७६५६. प्रति स० २ । पत्रस० ४ । ले०काल स० १६७३ ग्रपाढ मृदी ६ । पूर्ण । बेष्टनस० ३–३१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवन् १६७३ वर्षे प्रापाढ बुदी ६ गुरौ श्री कोटणुमस्याने श्री घादिनाथ चंग्यालये श्राचार्य श्री अद-कोतिना स्वज्ञानवरणी वर्मसम्याधं स्वहस्ताम्या निम्बितेय पूजा । श्री हरस्राप्रसादन् । क्र० श्री स्तवराजस्येद ।

७६६०. प्रति स० ३ । पत्रस०६ । आ०१२ 🗶 ६ इ.च । ले०काल 🗴 । पूर्ण। बेष्टन स० ७२० । प्राप्ति, स्थान — म० दि० जैन मदिर अजनेर ।

७६६१. प्रति स $\circ$  ४। पत्रस $\circ$  १२। ग्रा $\circ$  १० imes ४ ३ इच्च । माया–सन्क्रन । विषय–पूजा । र $\circ$ काल imes । ले $\circ$ काल imes । पूर्ण । बेटन सं $\circ$  १२२ । प्राप्ति स्थान—ांद $\circ$  जैन मदिर बोरसली कोटा ।

७६६२. **गराधरवलय पूजा**— × । पत्र स०४ । ग्रा०१० × ४१ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेस्टन सं० ३०१-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का ट्रंगरपुर ।

७६६३. गराधरवलय यूजा×ायत्रतः ६ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । से॰काल × । पूर्णं । बेष्टन स०१/३२० । प्राप्ति स्थान-- दि० जैन सभवनाथ मन्दिर जवयपुर । ७६६४. गरावरवलय पूजा विधान—  $\times$ । पत्रस० १०। झा० १२ $\times$ ६ ६७। आधा— संस्कृत । विध्य- पूजा । र०काल  $\times$ । से० काल सं० १००७ खावरा बुदी  $\times$  । वेष्टनसं० १७। **प्राप्तिः** स्थान— दि० जैन मन्दिर मादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक)

७६६५. गिरनार पूजा—हजारीसल । पत्र सं०४३ । द्या॰ ११ $\frac{3}{5}$  $\times$ ८ इक्ष । भाषा—हिन्सी (पद्य) । विषय — पूजा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०११४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**७६६६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ⊏६ । घा० १०×६ है इश्व । ले० काल स० १६३७ ज्येष्ठ सुदी १२ । पुर्ग । वेष्ट्रन स० २३ । **प्राप्त्ति स्थान**—दि० जैन मग्रदाल मन्दिर नैरावा ।

विशेष — हजारीमल के रिता का नाम हरिकिशन था। वे लक्कर के रहने वाले थे। वहा तैरहर्षण सीली थो। दौलनराम को शहाय से उन्हें ज्ञान प्राप्त हुम्रा था। वे वहां से सायपुर म्राकर रहने लगे ये गीयल गोजीक क्षयवाल थे।

७६६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १२ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० ७३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पत्रायती मन्दिर मरतपुर ।

**७६६८. प्रतिसं० ४** । पत्रस० ४२ । ब्रा० १०¦ ४७३ इ.चा। ले० काल स० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन स० १९ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बृदी ।

७६६६. गुरावली पूजा—शुभवन्द्र । पत्रस $\circ$  ३। ग्रा० १०  $\times$  ४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स $\circ$  ६१ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६७०. गुरावली समुक्खय पूजा $-\times$ ा पत्र सं०२। ग्रा० १२  $\times$  ५ $^2$  इव । भाषा— सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । त० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

७६७१. गुर्वोवली (चौसठ ऋद्धि) पूजा—स्वरूपचन्द विलाला। पत्रसं०२०। धा० धे $_{2}^{2}$   $\times$ ५ $_{3}^{3}$  इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स० १६१०। ले० काल  $\times$ । प्रपूर्णै। वेष्टनसं० १२४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष-- ग्रन्तिम पत्र नही है।

७६७२. प्रतिसं०२ । पत्र स०४४.। घा०१०४६-हेइ चा। ले•काल स० १६२३। पूर्या। वेष्टन स०१०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर बयाना।

७६७३. गुरु जयमाल — त्रः जिनदास । पत्रसं० ४ । घा०१० $\times$ ५ इख । भाषा–हिन्दो पद्य । विषय–पूजा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१६७–८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटिंदयो का हू गरपुर ।

विशेष हिन्दी गद्य में अर्थ भी दिया है।

७६७४. **गोरस विधि** —  $\times$  । पत्र स० २। ग्रा० १० $\frac{3}{9}$  $\times$ ५ इ.च । माया — संस्कृत । विषय — विधि विधान । र०काल  $\times$  । से•काल  $\times$  । यूर्णं। वेष्टन स० २०२। प्रास्ति स्थान — दि० जैन पार्स्थनाथ मन्दिर चौगान वृदि।

७६७%. पृहसांति विधि--वर्द्धमान सूरि । पत्रसं० १२ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स०१८४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७४ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपर ।

७६७६. अर्गवित क्षेत्रपाल पूजा —विश्वसेत । पत्र सं० ८ । झा० १२४६ इच । आवा— संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले० काल स० १८६१ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर राजमहल (टीक)

७६७७. **क्षेत्रपाल पूजा**— ४ । पत्रसं० १३ । मा० १०४४ ट्रेड्य । माषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले० काल सं० १८४१ मासोज सुदी ३ १ पूर्ण । बेष्टन सं० ४८५ । प्राप्ति स्थान— कि. जैन मन्दिर सजमेर मण्डार ।

७६७ **८. प्रति सं०२ ।** पत्रस०५। घा०१०×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ए। बेष्टनसं० १२० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मंदिर कोटडियो का हुंगरपुर।

७६७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । प्रा० १०४६ इचा ले० काल स० १६६४ । पूर्ण। वेकृतसं० ३४४ - १३२ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन सन्दिर कोटडियो का द्वारपूर ।

७६**८१. चतुर्वशी बतोद्यापन पूजा—विद्यानंवि**। पत्रसं०१२। ग्रा०११३ × ५ इत्था। माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०५०। **प्राप्ति स्थान**— किंठ जैन मन्दिर वोरसती कोटा।

#### वारंम-

सकलभुवनपूज्य वर्द्धमानजिनेन्द्र । मुरपतिकृतसेव त प्रग्मस्यादरेग् ॥ विमलद्रतचतुर्दश्या गुभोग्रोतन च । भविकजनस्लार्थं पचमस्याः प्रवश्ये ॥१॥

## धन्तिम---

शास्त्राच्ये पारगामी परममितमान महलावार्यमुख्यः । श्रीतिवानस्वेतामानित्र्वल मुगानित्यः पूर्वमृत्रित्रसित्वः ।। तिहरूका संप्रमारी तिबृत्तमरो हर्षं मदानदत्ते । साक्षोत्ते राम नामा विधिरमुमकरोत् पूजनाया विषे । श्रीवर्साहरूपुरस्य मत्री मुख्यो गुगी सताम् । श्रावरूताराचहारयस्तेने ह हत समुद्रतं ।।२।। तर वसर समृत्रिय पूर्वगास्त्रानुहित् । इतोधोतनसेतेन कारितं पूष्यहेत्वं ।।३।।

७६८२. प्रतिसं०२ । पत्र स०११ । घा०११ ४६ दश्व । से०कास ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १३४६ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मदिर धजोर । ७६८ ३ प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १०। ले० काल स० १८०० भादवा बुदी ११ । पूर्ण। वेष्टन सं० १२५०। प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७६८ ५. प्रतिसं०२ । पत्र स०२८ । घा० १३ ४ ६ १ इ.च. । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०१६४ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर घलमेर ।

७६८६. **खतुबिशति जिन शासन देवी पूजा**—  $\times$  । पत्रसं॰ ३-६ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स॰ ३८२/३७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन संमवन थ मन्दिर उदयदुर ।

७६८७. **खंदनखरठी ग्रत पूजा— विजयकी** स्ति । पत्र सं॰ ४। म्रा॰ १२ $\times$ ४ है इंच । माया-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्यं । वेप्टन स॰ १४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी, बुदी ।

७६८८ चन्दनवरुटीपूजा—पं० चोक्षचन्द १ पत्र सं०६। घा०१२×५३ इंच । माषा— संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले॰काल × । पूर्ण । बेष्टनसं०६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रथवान मन्दिर उदयपुर ।

७६८६. सन्दनसण्टीटात पूजा $-\times$ । पत्र सं०८। ग्रा० १२३  $\times$ ६ इंच। भाषा— सस्कृत। विषय - पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स० ११४। प्रास्ति स्थान -दि० जैन पनावती सदिर करौली।

७६८०.**चमत्कार पूजा—राजकुमार।** पत्रसं० ४ । घा० १२हें × ५६े इचा । साया-हित्यी (पया) । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष--चमत्कार क्षेत्र का परिचय भी आगे के दो पत्रों मे दिया गया है।

७६६१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३ । घा० १२ imes ६ इत्रा । साथा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल imes । से०काल स० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७६६२. चमस्कार पूजा-- imes। पत्रसं०२। मा० ६imes५ इवा। माषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०कालimes। ले०कालimes। पूर्ण। बेष्टनसं०१४१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंटी।

७६६३. चारित्र मुद्धि पूजा—श्रीमूचरा । पत्र सं० ६४ । मा० १०३ 🗙 ५ इन्छ । माषा— संस्कृत । विषय-पूजा विधान । र०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०३६० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर प्रिमनन्दन स्वामी बृंदी

७६**९४. प्रति सं०२** । पत्रसं० ११४ । जे०काल सं०१८६ माच सुरी ११ । पूर्ण । बेहन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर । विशेष — दक्षिण स्थित देवीगरि में श्री पार्थनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी। पाढे लालचन्द ने लिपि कराकर मरतपुर के मन्दिर में रखी गयी थी।

७६९५. **चारित्र गुद्धि विधान—म**०**गुभचन्द्र** । पत्रस०५०। प्रा०५ $\frac{1}{4}\times$ ५ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६०३ । पूर्णः । वेट्टन स० द२४ । प्राप्ति स्थान– विक जैन प्रजमेर भण्यार ।

विशेष-गृटका में सम्रहीत है।

७६८६. प्रति सं० २ । पत्रस्० २२ । ग्रा० १ $\frac{3}{7}$  $\times$ ४ $\frac{3}{7}$  इन्ध । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ४२४ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन सन्दिर सजमेर ।

७६९७. चिन्तामिए। पार्श्वनाथ पूजा—शुमचः ह्न । पत्रतः २-१४ । मा० ११  $\times$  ५ ६च । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । प्ररितः स्थान—विः जैन मन्दिर नागदी बंदी ।

७६९**८. प्रतिसं० २ ।** पत्र सं० ७ । घ्रा० १० 🗴 ५ इञ्च । ले० काल स० १६०८ । पूर्ण । वेष्टुत स० ५०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६०८ वर्षे चैत्रमासे कृष्णपक्षे ५ दिने वास्वरदेशे सिरपुरवास्तव्ये श्री प्रादि-नाथ चैत्यालये लिखित श्री मूलसये म० विजयकीत्तिस्तत्पट्टे भ० श्री शुभवद्रदेश तत् शिष्य प० सूरदामेन लिखापित पठनार्थं ग्राचार्यं मेरूकीर्ति ।

७६८६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ११ । आ० १० x ४ हेडच्च । ले॰ काल स० १८६१ सावन सुदी १३ । पूर्ण । बेटुन स० १०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ बृंदी ।

७७००. चिन्तामिए पार्यनाथ पूजा  $-\times$  । पत्र त० र । द्या० ११  $\times$  ५ इला । सावा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १२०५ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७७०**१. विस्तामिए। पाण्यंनाय पूजा** —  $\times$  । पत्रम**०** ११। ग्रा० १० $\times$ ४) इत । भाषा— सस्कृत । विषय  $\pm$ पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ४४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७७०**२.प्रति सं० २** । पत्र स०२० । धान म $_{r}^{2}$  $\times$ ४३ृङ्ख । ले०कान  $\times$  । धपूर्स । वेष्टन स०३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सीमानी मदिर करोनी ।

श्चन्तिम पत्र नहीं है।

७७०**३. चतुर्विशति पूजा-भ० गुमचन्द्र।** पत्रतः ३-३२। प्रा०१०×५ इवा। माषा-सस्कृतः । विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल १६६०। प्रपूर्णः । वेष्ट्रन स० ३०३। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सनत् १६६० वर्षे भाषाड सुदी ४ गुरुवारे श्री मूलसचे अट्टारक श्री वादिभूषण गुरुपदेशात् तत् शिष्य इ.० श्री वर्द्धभानकेन लिखापित कर्मक्षयार्थे । ७७०**४. प्रतिसं० २**। पत्र स० ५८। ले० काल सं० ११४० कार्तिक सुदी ३ पूर्ण। बेष्टन स० ७८। **प्राप्ति स्थान — दि०** जैन प्रवासती सदिर भरतपुर।

७७०५. **चतुविशति जिन पूजा**— ×। पत्रस०५-५८। ग्रा०१ ×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा । र० काल × । ले० कालस० १८१७ । श्रपूर्ण । वेष्टनसं०१६७ । प्रा**रित स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७७०६. **चतुविशति तीर्यंकर पूजा** — × । पत्र स॰ ४७ । म्रा॰ ११३/४३ इन्ड । मापा — मस्कृत । विषय — पूजा । र०काल × । ले॰ काल स॰ १८६६ म्रावाड मुटी १३ । पूर्ण । वेष्टन स॰ १६८ । प्रास्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर राजमहल(टोक)

७७०८. **चतुर्विशति जिन पूजा** — × । पत्रस० ४६ । घा० १०३ × ४३ इन्छ । भाषा सस्कृत । विषय — पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६३४ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७४ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान बुदी ।

७७०६. चतुर्विशति तीर्थकर पूजा $-\times$ । पत्र सं०६०। प्रा०१०३  $\times$  ४ इख । आया— संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं०२७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाश्वेनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

७७१० चतुर्विशति जिन पूजा  $\times$  । पत्र स॰ ४१। प्रा॰ १०  $\times$  ६ रख । भाषा-संस्कृत । पृजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । ध्रपूर्ण । वेष्टन स० १५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नगरित दृदी ।

विशेष—४१ से आगे पत्र नहीं है।

७७**११. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ४४ । आ० १० 🗙 ५ इच्च । ले**०काल स०** १६५७ । पूर्ण । बेष्टन स० १६० । प्रा**प्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७७१२. चतुर्विशति तीर्थंकर पूजा— $\times$ । पत्रस०१२७। ग्रा०  $-\xi$   $\times$  ६३ इथा। भाषा- सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । प्रपूर्ण। वैष्टन स० २६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मानपुरा (टोक)

७७**१३. चतुर्विशति जिन पूजा**— 🗙 । पत्रस०५०। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टनस०६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

७७१४**. बतुविशति पंच कत्याराक समुख्ययोद्यापन विधि—क० गोपाल** । पत्रस० १३ । ब्रा०११×४ हे इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स०१६६५ । पर्णा । बेकन स०११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-इति ब्रह्म भीमाग्रहानुब्रह्म गोपाल कृत चतुर्णिति पच कल्यास्मक समुज्वयो द्यापन विधि ।

७७१४. **चतुर्वशो प्रति मासोपवास प्**जा—४। पत्र स०१६। आर० ११ ४ ४ ६ था। मापा—सम्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेण्टन स०१६१ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान वृदी । ७७१६. चौबीस तीर्षंकराष्टक $-\times$ । पत्रसं॰ २०। मा॰ १ $\times$  ४ इच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । क्षे॰काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स॰ २६०। प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान इंदी।

७७१७. **चौबीस तीर्थंकर पूजा —बस्तादरलाल।** पत्र संग्रह । प्राण १२ रे ४ ७ इच । मापा-हिरो । विषय-पूजा । र०काल स० १८६२ कार्तिक सुदी १४। पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन प्रवासी मंदिर बयाना ।

७७१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६७ । घा० ११×५% इज्व । ले०काल १६०३ । पूर्ण । बेष्टन सं० २७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर चौधरियान मालपूरा (टीक)

७७**१६. प्रति सं०३।** पत्र स० ५७। ले० काल स० १६५६। पूर्णं। वेष्टन स० ८५। प्रा**प्ति** स्थान – दि० जैन प्रवायती मदिर भरतपर।

विशेष — प्रतिलिपि कियोरीलाल भरतपुर वाले ने कराई थी। तुलसीराम जलालपुर वाले ने प्रति-विषि की थी।

७७२०. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६० । ब्रा० ८३ ४ ६३ इन । ले०काल स० १६४७ वैद्याल बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान वि० जैन मन्दिर फतेहपुर थेलावाटी (सीकर)

७७२१. चौबीस महाराज पूजन — बुन्नीलाज । पत्रस० ४७ । मापा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल स०१८२७ । ले०काल स०१६१५ । प्रपूर्ण । नेष्टनस०२६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

७७२२. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०२ । घा० ११ × ४ इथा। ले॰काल स० १६३० । पूर्णा । वेष्टन स० १२३ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्डिर वडा बीमपथी दौसा।

विशेष--प्रति नवीन है।

७७२**२. प्रतिसं० ३।**पत्र स० ४१।ले०काल 🗴 । पूर्णं। बेष्टुन स० ६१। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानकी भरतपुर।

७७२४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६४ । घ्र० १०४६ हु इ.च । ले०काल स० १६३४ । पूर्ण । वैकृत स० ७० । प्राप्ति स्थान —वि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदान परानी डीग ।

विशेष — चुन्नीलाल करोली के रहने बाज थे। पूजा करीली से मदनगोपाल जी के शासन काल में रखी गई थी। प्रतिलियि कोट में हुई थी।

७७२**५. प्रतिसं० ५** । पत्र स० ६२ । ले०काल स० १२१७ । पूर्णं । बेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर धलवर ।

७७२६. चौबीस तोर्थकः पूजा — जबाहरलाल । यत्र० स०४८ । प्रा० १३४८ दश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा १०कल स०१६६२ । ते०काल स०१६६२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।



७७२७. **जोबीस तीर्यकर पूजा** — वेबीबास × । पत्र सं०४३ से १३। भाषा-हिन्दी पत्र । विषय-पूजा । र० काल स० १६२१ सावन मुदी १। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१-२४० । प्रास्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर टोडारायांतह (टोक)

ग्रन्तिम---

समत ब्रष्टादस घरौजा उपर इकईस । सावन सुदि परिवा सुंरिववासर घरा उगीस ।। बासव घरा उगीस सगाम नाम नद गीडी। जैनी जन वस वास ग्रींडछे सोपूर ठोडौ ।। सांवध सिंघ सुराज धात्र परजासवय बतु। जह निरमें करि रची देव पजा घरि सबतु।।१।। गोलारारे जानियौ बंस खरौ बाहीत । सोनविपार सुंबैंकतम् पुनिकासिल्ल सुगोत। पूनि कामल्ल सुगोत सीक-सीक हारा केरी ।। देस भदावर माहि जो मुवरम्यौ तिन्हि केरौ। केलि गामके वसनहार मतीव सुभारे ।। कवि देवी सपुत्र दुगुडै गोलारारे। संवत श्री निरमय गुर ग्ररू श्री श्ररिहंत देव ॥ पढत स्नत सिद्धान्त श्रुत सदा सकल स्वमेव । तुक ग्रक्षर घट बड कह ग्ररू ग्रनर्थ सहोइ। ग्रन्प कवि पर कर छिमा घर ली जै बृधि सोइ।।

इति वर्तमान चौबीमी जिनपुजा देवीदाम कृत समाप्त ।।

७७२८. चौबीस तीर्थकर पूजा—मनरंगलाल । पत्र स० ४२ । प्रा० १२ रे ४ ८ इस्य । भाषा-हिस्ती । विषय पृजा । र०काल स०१८८७ मासिर मृदी १० । ले०काल स०१८८४ । पूर्ण । वेष्टन सं०१२४ प्राप्ति स्थान— ४० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७७२९. प्रति सं० २ । पत्र स० ४० । घा० १२ ' ४ ६ ' इ.ख । ले०काल सं० १६६५ । पूर्ण । बेष्टन सं०५२५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

७७३०. प्रतिसं० ३ । पत्र स०४४ । ले० काल स०१६०८ । पूर्णा वेष्टन सं०**११ । प्राप्तिः** स्थान — दि० जैन पदायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

७७३१. चौबीसा तीर्षकर पूजा--रामचन्द्रा । पत्रस० ८१। घा०११ × ६ इञ्च । साषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०काल × । ले०काल स० १८७२ चंत सुदी १०। पूर्ण । वेष्टन सं० १०२८ । प्रास्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर यजमेर भण्डार ।

विशेष—ोरोजपुर के जयकृष्ण ने लिखवायाथा। इसकी दो प्रतियां ग्रीर हैं।

७७३२. प्रति सं० २ । पत्र स० ३२ । धा० ११×५१ इन्छ । ले०काल × । धपूर्ण । बेष्टन सं० १६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर । ७७३३. प्रति सं० ३ । पत्रस० ७६ । सा० १०×४३ इला । ले॰काल × । पूर्ण । बेहनसं० १७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन धप्रवाल मन्दिर उदवपुर ।

७७३४. प्रतिसं०४ । पत्र सं०४४ । आ०१० $\frac{1}{2} \times \mathbb{Q}^{\frac{1}{2}}$  इन्छ । । ने० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन सं० = । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सकेतवाल मन्दिर उदयपुर ।

७७३४. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ६६ । प्रा० ११ × ४ , इश्व । ले०काल स० १८१६ मगसिर मुदी २ । पर्यो । बेब्रनस० २ । **प्राप्ति स्था**न — दि० जैन सन्दिर बैर ।

विशेष-महादास ने प्रतिलिपि की थी।

७७३६. प्रतिसं०६। पत्र स०४७। ले० काल स०१८८८। पूर्ण। बेष्टन स०८४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७७३७. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ११६ । ले०काल स० १८८८ । पूर्ग । वेष्टन सं० ८० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--सं० १६६५ मे लिखाकर इस ग्रथ को चढाया था ।

७७३ द. **चौबीस महारज पूजन—हीरालाल ।** पत्रसं० ३५। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र•काल × । ले॰काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ८१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर।

७७३६. चौबस तीर्थंकर पूजा—रामचन्द्र । पत्रस०७७। घा० ११ $\times$ ७ इश्व । भाषा-विषय-पूजा । २०काल  $\mathbf{x}$  । ते०काल स०१६६१ । पूर्ण । वेष्टुन स०२०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन हिन्दी । प्राप्ती मन्दिर नागरी वृदी ।

৬৬४०. प्रति स०२ । पत्रस०६२ । प्रा०१२ ¦४६ ¦ इञ्चाले० काल सं०११५४ । पूर्ण। वेष्ट्रत स०४१ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन पचायती मदिर कामा

७७**४१. प्रतिसं० ३** । पत्रस० ५१ । झा० ११×६ डेब्ब । **ले•काल सं०** १६११ । पूर्ण । बेष्टुत सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर श्री महाबीर बूदी ।

७७४२ प्रतिसं० ४ । पत्र स० ७३ । आ० १०४७ इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेप्टन सं० १०३ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

७७४३. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १३२ । झा० ११ ४६ ई. इ.च । ले०काल स० १८२८ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्यो । बेहनसं० ३६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

७७४**४. प्रतिसं० ६।** पत्रस० १०-६०। ले०काल । प्रपूर्ण । वेष्टनस० १६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर वयाना ।

७७४४. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ८७ । ले०काल 🗴 । पूर्णः । बेच्टनस० १७ । प्राप्ति स्थान – टि॰ जैन वडा पचायती मन्दिर डीग ।

७७४६, प्रतिसं० ८ । पत्रस० ८० । द्या० ६imes६१ हुन्छ । ले०काल imes। प्रपूर्ण । वेष्टुनसं० ७१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष -- प्रारम्भ का पत्र नहीं है।

७७४७. प्रतिसंव ह । पत्रसंव १२० । स्नाव ७३×६३ इश्व । लेक्सल सव १६१३ । पूर्ण । केव्यन सं ६० । पारित स्थान-अपरोक्त सन्दिर ।

विक्रोच--- डीग मे प्रतिलिपि हुई थी।

७७४८. प्रति सं० १० । पत्रस० ८६ । घा० ६ १×७ इन्द्र । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं • ६१ । प्राप्तिः स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास परानी डीग ।

विशेष - गुटका जैसा भाकार है।

विशेष --चार प्रतियां धीर है।

७७४६. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ४१ । ग्रा० १२×६ इन्ह । से०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ६६ । चारित स्थान---दि० जैन ग्रयबाल प्रवायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष - गुटकाकार है।

७७४०. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ४४ । आ० १० × ६ दे इञ्च । ले० काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४२ । प्राप्ति स्थान - उपरोक्त मदिर ।

७७५१. प्रति सं० १३ । पत्रसं० ८४ । ग्रा० १३ 🗴 ७ इच । ले०काल सं० १६४६ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं ० ४५ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैगावा ।

७७५२. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० ६१ । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वेप्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान - दिल जैन तेरहपूर्ण मन्दिर नैगावा ।

विशेष -- ब्राह्मण् भैरूराम उण्यियारा वाले ने चतुं मूं जजी के मन्दिर के सामनेवाले मकान में प्रतिलिपि की थी । साहजी ग्रमोदरामजी अग्रवाल कासल गोत्रीय ने प्रतिलिपि करायी थी।

७७४३. प्रतिसं ०१४ । पत्रस० १४६ । ग्रा० ६ १४६ इ.च । लेक्सल स०१६२४ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४ । प्राप्ति स्थान -दि॰ जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टींक)

विशेष---सहमल्ल के पुत्र कुंबर मशाराम नगर निवासी ने कामवन मे प्रतिलिपि कराई थी।

७७४४. प्रतिसं० १६। पत्रस० १०३ । ग्रा० ८३ × ४३ इन्छ । ले०काल स० १८८४ सावन बदी १२ । पूर्ण । बेपन स**्र । प्राध्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

७७४४. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ४७ । ग्रा० १०×६ इच । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । बेष्टन स॰ १८। प्राप्ति स्थान -दि॰ जैन ग्रग्रवाल मदिर नैगावा

७७५६. प्रतिसं० १ = । पत्र स० १२ । ब्रा० १० ×६ है इन्ह । ले० काल × । अपूर्ण । बेष्ट्रन सं • २४। प्राप्ति स्थान -दि • जैन ग्रग्रवाल मन्दिर नैएवा।

७७४७. प्रतिसं० १६ । पत्र स० १४३ । ग्रा० ७×५३ इल्ड । ले० काल स० १८२४ । पूर्ण । बेष्ट्रन स॰ १८७ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

७७४ ट. प्रति स० २०। पत्र स० १०४। ग्रा० ११×५ इवा ले० काल स० १६०५। पूर्ण । वैष्टन स॰ ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (व दी)

विशेष - इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

७७४६. प्रतिसं० २१ । पत्र सं० ७१ । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । बेष्टन स० ३६६ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर दबलाना (बुंदी)

विशेष - देवेन्द्र विमल ने कृन्दनपुर में प्रतिलिपि कराई थी।

७७६०. प्रति सं०२२ । पत्रस० स्मः । धा० ६×७ इचा ते०काल सं० १६७१ । पूर्णं । वेष्ट्रत सं०२४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७७६१. प्रतिसं० २३ । पत्रस० १६ । सा० १३ ४६ हुँ इख । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनसं• १४७/=७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाय मन्दिर इन्दगढ़ (कोटा)

७७६२. प्रतिसं० २४। पत्र सं० ६१। घा० ११ रे ४५ इच्च । ले०काल सं० १६६० ।पूर्ण । वैष्टम सं० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सक्षेतवाल पचायती मन्दिर प्रलवर ।

विशेष-- २ प्रतिया और हैं जिनकी पत्र स॰ कमशः ६० ब्रोर ६१ है।

७७६३. प्रतिसं०२४ । । पत्र सं० ७८ । ग्रा० १४६ इवा । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स०१८ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन मन्दिर चौघरियान मालपुरा (टॉक)

७७६४. प्रतिसं० २६ । पत्र सं० ५४ । ग्रा० ६२ ४ ६३ इञ्च । ले०काल सं० १६१२ मगसिर बदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स ० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैसाना ।

विशेष-- लोचनपर नैरावा मे प्रतिलिपि की गयी थी।

७७६५. प्रतिसं० २७ । पत्र स०५०। मा० १०४६ है इसा । ले० काल 🗴 । म्रपूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैसुवा ।

७७६६. प्रतिसं० २८ । पत्र स०७६ । प्रा० ११ 🗴 १३ इचा। ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं०३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बंधेर वालो का प्रावा (उल्लियारा) ।

७७६७. प्रतिसं० २९। पत्र स० ६६। ले॰काल स० १६०१। पूर्ण । बेष्टन सं० १२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बेथेरवालो का भावा ।

विशेष—मात्रा मं फर्तिसिंह जी के शासन काल में मीतीराम के पुत्र राथेलाल तत्पुत्र कान्हा नोर-संद्वया वर्षेरवाल ने प्रतिलिपि की थी।

७७६८. प्रतिसं० ३० । पत्र स० ६१ । ग्रा०—१०४५ इखा से०काल स० १८१४ । पूर्ण । केवन सं०४ । प्राप्तिः, स्थान —दि० जैन मदिर लख्डेलवालो का ग्रावां (उल्लियारा)

७७६९. प्रतिसं० ३१। पत्र स० १०। या० १×६ है इन्हा । ले॰काल × । पूर्ण । बेष्टन सं— •१४५। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पनायती मन्दिर करौली ।

७७७०. प्रति सं० ३२ । पत्रमं० ७१ । सा० ११} × ५१ इचा। ले० काल सं०-१६२६ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेटन म० २४६ । प्राप्ति स्चान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जमपुर।

७७७२. प्रतिसं० ३४ । पत्रसं० ७३ । स्रा० १२ हे×४ हे इ.च । ले०काल सं० १६६⊏ । पूर्ण। बेष्टतसं० २५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७७७३: प्रतिसं० २ ४ । पत्रस० ७५ । घा० १०३ 🗶 ५ इचा ले० काल सं० 🗶 । पूर्ण । बेहुत सं० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन जैन मन्दिर राजमहत्न (टॉक्र) । ७७७४. प्रतिसं० ३४ । पत्र सं० ७६ । मा० ६×७ इन्त्र । ले०काल सं. १६२१ प्रासीज सुदी १ सपूर्ण बेष्टन सं०—११२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टॉक ।

विशेष - प्रथम पत्र नही है।

७७७५. प्रतिसं० ३६। पत्रसं० ४२। प्रा० १२×६ इश्व । से०काल सं० १९०७ प्रयाड बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनसं० ६६/११२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टॉंक)

७७७६, प्रतिसं० ३७। पत्र त० ४६। घा० ११३ ४७ इखा। ले० काल सं० १६०४ संगितर बुदी ६। पूर्गा। वेष्ट्रन स० ११४-४१। प्राप्ति स्थान —वि० जैन मंदिर नेमिनाव टोडारायसिह (टॉक)। खिरोख —वैष्णव रामप्रसाद ने तलकपुर में प्रतिलिपि की थी।

७७७७. प्रतिसं० ३ दा। पत्रसं० ४६ । बा० १२ ३ ४६ इ.च.। ले०काल 🗴 । पूर्णं। बेहन सं०—२ द/१६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हूं गरपुर।

७७७८, प्रति सं० ३६ । पत्र सं० ६६ । ले० काल 🗙 । स्रपूर्ण । बेष्टन सं० ४०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हंसरपुर ।

७७७६. प्रति सं० ४० । पत्रसं० ७० । घा० १२%६ इञ्च । ले० काल सं० १८७४ ।पूर्ण । वेष्टुन स०— १८/४७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैनमन्दिर भादवा (राज०)

७७८०. प्रति सं०४१। पत्र स०६८। म्रा०११×५ इचा। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०६७-५८। प्राप्ति स्थान—दि०जैन मंदिर भादवा (राज०)।

७७८१ प्रति सं०४२ । पत्रस०८१ । झा०१२ ४५ १ इखा ले०काल ४ । पूर्ण । बेहनसं• १३३-३० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर तेरहमंत्री दौसा ।

७७६२, प्रति सं० ४३ । पत्र स०६६ । घा०६४६ इचा । ले॰काल सं० १६६२ जैत सुरी २ । पूर्ण । वेस्टन स०१५ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर तेरहुपंथी दौक्षा ।

विशेष — पत्र ६३ वें से बागे ब्रन्य पूजाएं भी हैं।

७७६३. प्रतिसं०४४ । पत्रस०६१ । मा॰  $-\frac{1}{4}\times \frac{1}{4}$  इला । ते॰ काल  $\times$  । मपूर्ण । वेष्टन स०४४ । प्राप्टि, स्थान—दि॰ जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

७७६४. प्रतिसं०४४ । पत्र स०१०६। ग्रा०१२४४ इञ्च । ले० काल सं०१८६० घ्रायाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टा स०७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेरहपथी टौसा ।

विशेष-पत्र सार ६० से १०६ तक चौबीस तीर्थकरों की विनती है।

७७८५. प्रतिसं०४६ । पत्रसं०४६ । आ० १४६६ च । ले०काल स०१११४ पीष सुदी १४ । पूर्ण । बेहन स०४१ ७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

७७८६. प्रतिसं० ४७ । पत्रसं० ११ । या० ११ ४५ ६७। से०काल सं० १८५१ वैशास मुदी ७ । पूर्या । वेष्ट्रन स० ४४-८० । प्राप्तिः स्थान---दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष--दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी।

७७८७. प्रतिसं०४८ । पत्र स०७४ । प्रा० पर्दे ४६ इव । ले०काल स०११२६ । पूर्ण । बेष्टुन स०१२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा । विशेष -- स्योबक्स ने प्रतिलिपि की थी।

७७८८. प्रतिसं० ४६ । पत्र स०८५ । आ०१०१ ४६ इञ्च । ने०काल सं० १९०६ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स०१२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर मेलावाटी (सीकर)

विशेष-एक प्रति भीर भपूर्ण है।

७७८१. चौबीस तीर्थं कर पूजा—श्रीलाल पाटनी । पत्रम० ५७ । प्रा० १०३ ४६ इच । माषा—हिन्दी पत्र । र०काल स० ११७८ । ले० काल ४ । पूर्ण । बेप्टन स० २७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान व दी ।

७७६०. **चौबीस तीर्यंकर पूजा वृग्दावन ।** पत्रस० ८२। ग्रा० १०×४ है इवा। भाषा-हिन्दी। विषय —पूजा। र०काल स० १८४७। ले०काल १८२६ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ११४४। **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

७७६**१. प्रतिसं० २।** पत्रस० ६६। .प्रा० ११३ ×६} इञ्च। ले०काल सं० १८५५ । पूर्ण । बेष्टुनसं० ११०। **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** खंडेलवाल मंदिर उदयपुर।

७७६२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ८४ । घा० ११ $(\times x)$  इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १४५/१०५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

७७**९३. प्रति स० ४ । पत्र स० १०१ । घा**० १२४ ५ इखा। ले० काल स० १६३० **। पूर्ए ।** केप्टन स० १२ म**ा प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

७७**६४. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० ७४ । म्रा० ६४ ६ इच । ले॰काल स० १६०७ वैशाल मुदी **१२ । पूर्ण** । बेष्टन सं० २२ **। प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर चीघरियान मालपुरा (टॉक)

७७**६५. प्रति सं० ६ ।** पत्र स० ६४ । घा० ११ ४ ५ इच । ले० काल ४ । घपूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ष्रादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक)

विशेष---- प्रन्तिम पत्र नही है।

७७**६६. प्रतिसं० ७ ।** पत्र स.० १८१ । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ **) प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर सरतपुर ।

विशेष-इसकी ४ प्रतिया श्रीर है।

७७६७. प्रतिसं० म । पत्रस० म श । ग्रा० १० ४ ४ ं इचा । से∙काल सा० १६१३ चैत बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७१ । प्राप्ति स्थानः —िद० जैन मन्दिर फोनहसूर शेखावाटी (सीकर)

७७६**८. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ४७ । या० १२ ४ ८ इ.ख. । ले०काल स० १६८३ प्र० चैत्र सुदी ६ । पूर्यो । चेष्टन सं० १७४ । **प्राप्ति स्यान** पि० जैन मिरि फतेहपुर वेखावाटी (सीकर)

७७६६. प्रतिसं० १०। पत्रस० १००। म्रा० १२ $\frac{1}{2}$   $\times$  दश्य । से०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेण्टन स० १२३ । प्राप्ति स्थान —िव० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष-एक प्रि भीर है।

७८००. प्रतिसं० ११। पत्र स० ७७। ग्रा० १२ ४६ इचा ले∘काल स० १६१२ । पूर्ण । वैष्टन स० ८-५। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोटडियो का हुंगरपुर । विशेष - इसकी दो प्रतिया और हैं।

प्रशस्ति—सवत् १९१२ माह सुदी १३ लिखापित मवौराय जैचन्द गैबीलाल श्री हुंगरपरना नास्त्रि श्री बागमपुर मे हस्ने नौगमी श्र पुनमचन्द तथा गादि पुनमचन्द लिखितं समादि आगमेरबन्द ।

७८०**१. प्रतिसं० १२ ।** पत्र सं० १०६ । म्रा० १०×५ इला । ले**०काल सं० १**६२१ । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बृ'दी ।

७८०**२. प्रति सं० १३** । पत्रस० ५३ । मा० १०×६ दे इखा ले० काल सं० १६४१ । पूर्ण । बेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रिनन्दन स्वामी, ब्रंबी ।

विशेष — नैस्पना मे प्रतिलिपि हुई थी। साह पन्नालाल वैद वूंदीवाले ने श्रमिनदनजी के मन्दिर मे यथ चन्नाया था।

७८०**३. प्रति सं० १४ ।** पत्रसं० ६२ । का० १२ ४ ७३ इ**ष्ट ।** ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४४५ । प्रास्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर सक्कर, जयपुर ।

७८०**४. प्रतिसं० १४.** । पत्र स०६१ । प्रा०१३ ४८ ६ इञ्च । ले**० काल सं०१**६६४ । पूर्ण । बेष्टन सं०४ ४६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७८०५. प्रति स० १६ । पत्रस० ३७ । झा० १२ है×७ है इन्दानिककाल 🗴 । झपूर्ण् । बेष्टनसंक ६। प्राफ्ति स्थान— दि० जैन छोट/ मन्तिर बयाना ।

विशेष--- मिलनाथ तीर्थंकर की पृजातक है। एक प्रति और है।

७८०६. प्रतिसं० १७ । पत्र सं० १२ । ग्रा॰ १०४७ इ.च. । ने०काल 🗴 । पूर्सा । वेल्टन स० १४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रग्वाल पचावती मन्दिर भ्रनवर ।

विशेष दो प्रतिया और है।

७८०७. प्रतिसं० १८ । पत्रस० १०१ । घा० ११×६ इश्व । ले० काल स० १६१५ । पूर्त । बेहनसं० ३६४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुंदी)

७८०८. प्रति सं० १६ । पत्रस० ४४ । आ० १०३ ४६ १ इङ्च । **से॰काल ×** । धपूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बंधेरवालो का धावा (उण्लियारा)

७८०**६. प्रति सं२० १ पत्रस० १२ । ले॰काल** ×। श्रपूर्णं। वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डाबालों का डीग ।

विशेष - महावीर स्वामी की जयमाल नही है।

७८१०. प्रतिसं० २१ । पत्र स० ५६ । झा० ११×६ इंच । ले०काल × । पूर्णं । बेष्टन स० ७२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

७६९**१. प्रति सं०२२ ।** पत्रसं०१०१ । झा०१३×५२¦ इ.चं । ले० काल स०१९६४ चैत्र सुदी१४ । पूर्णावेष्टन म०३४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर बडाबीसपं**यी दोसा** ।

विशेष--सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

७६१२. प्रति सं० २३ । पत्रस० ४० । घा० १२१ै×८ इङ्च । ले० काल स० १६०० । पूर्ण । वेष्टन ३२/५६ । प्राप्ति स्**वान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ७६१३, प्रति सं०२४। पत्र सं०१६। मा०१२ $\times$ ४ $^2_2$  इञ्च। ले० कात्र imes। पूर्णं। बेष्टन सं०१६४। प्रास्ति स्थान—वि० जैन पंचायती संदिर करौती।

विशेष-एक प्रति और है।

७६१४, प्रति सं० २४ । पत्रसं० ४७ । प्रा०११ $_2^2 \times \$_7^2$  इचा । ले॰काल सं० १८८१ सावन बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १४/३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाएगी मन्दिर करीली ।

७६**१४. प्रतिसं० २६ । पत्रस० ४६ । धा• १३**४६ इन्दा। ले० काल सं० १६११ पीष सुदी ४ <sub>। पूरो</sub> । बेहन स० २६/३७ । **प्राप्ति स्थान**— दि**० जैन सो**गाएी मन्दिर करोली ।

विशेष-एक प्रति भीर है।

७**८१६. प्रति सं०२७ । पत्र** स०६८ । घा०११×७ इ.च । ले० काल सं०१६६३ । पूर्ण । वेष्टन सं०५८ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैरावा।

विशेष-कीमत ३) रुपया बचेरवालों का मन्दिर स० १६६४।

७६**१७. प्रति सं०२८ । पत्र**सं० ७१ । मा०१०४६ देश यो लेकाल स०१६३२ काती सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं०२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवाल मन्दिर नैरावा ।

विशेष—एक प्रतिभौर है।

७८१८. प्रतिसं० २६ । पत्रसं० ४४ । घा० १२% ४० हेश्व । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० १०३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोक)

**७८१६, प्रति सं०३**०। पत्रस०१८। घा०१२×६} इञ्च। से०काल स० १८६७। वेकनस०६,३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायत मन्दिर दुनी (टॉक)

विशेष —श्री हजारीलाल कटारा ने दशलक्षरा बतोधापन के उपलक्ष में स० १६४३ भादवा सुदी १४ को दनी के मंदिर में चशाया था।

७८२०. प्रतिसं० ३१ । पत्र सं० ७७। ग्रा० ११४६ ; इ.च. । ले०काल 🗴 । पूर्णावेष्टन सं० ८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महादीर बृदी ।

७८२१. प्रतिसं० ३२। पत्रसः ४२। ग्रा० १०' ×६े इत्था । लेव्काल सव १६२१ फागुन बुदी ३ । क्षपूर्णः । बेष्टनसव १०७ । प्राप्ति स्थान – दिव जैन मन्दिर श्री महावीर बृदी ।

विशेष--- ५५ से ५ द तक प्रत्र नहीं है।

७६२२. **चोबोसतोर्यं कर पूजा —सेवग**ागत्रम० ७१। ब्राठ १० ४४ द्वे द्वा । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय —पूजा । २०काल ४ । ले० काल स० १७७४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७८२३. प्रतिसं० २ । पत्र स०४६ । प्रा०६ हे ४६ इच्च । ले०काल स०१८६१ । पूर्ण । बेष्टन सं०१६८ ७३ । प्रसम्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोटडिया का हंगरपुर ।

७८२४. सौबोस तीर्थकर पूजा – सेवाराम । पत्रतः ४४ । मा० १०० ४४ इता मावा– हिन्दी (पद्य) । विषय-पुजा । र०काल स०१८५४ मर्गामर बुटी ६ । लेक्काल स०१८५४ 'पीय सुटी १३ । पूर्णे । केटन स०१०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

## विशेष -

तिनम्भु को सेवण्यु हो बखतराम इहनाम ।
साहगोन आवक्त्युची गुण मंदित कवि राम ।।
तिन निम्यात खडत रुप्तो मुख्य निक्त केव राम ।।
विन निम्यात खडत रुप्तो मुख्य निक्त यु ।
विन को लचु मुत जानियो नेवगराम मुनाम ।
लखि पुत्रन के ग्रंथ बहु रच्यो ग्रंथ मंत्रिराम ।
क्येंग्ठ आत सेरो कवि जीवनराम मुजानि ।
प्रभु की स्तुति के पद रचे महामित्तवर मानि ।
ताम नाम घरयो जु है जगतीरन गुण लानि ।
तिन की पाय सहाय को कियो ग्रंथ मह जानि ।।

एक प्रति और है।

७८२५. प्रति सं० २ । पत्र स० ६२ । घा० ११ x ४ है इन्दा । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । वेट्टन सं० १२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७८२६. प्रतिसं० ३ । पत्र स०६५ । ग्रा० ११ x ४ ; इन्हा । लेक्सल सं० १६१७ । पूर्ण । वेप्टन स०३८ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पावनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७६२७ प्रतिसं०४ । पत्रस०११ । घा०६ २४ इचा । ले०काल स०१८६४ कार्तिक सुदी ५ । पूर्णं । वेष्टन स०३०- - ३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बडाबीस पथी दौसा ।

विशेष-हुकमचन्द विलाला निवाई वालो ने प्रतिलिप की थी।

७ मरम प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४२ । मा० १२ × ५ है इन्थ । ले०काल सं० १८६२ भादवा कुदी २ । पूर्ण । बेबुन सं० ४० ८१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष - चिमनराम नरापधी ने प्रतिलिपि की थी।

७६२६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ५६ । घा० १० रे ४ ६ इच्च । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण । बेष्टुन स० १० । प्राप्ति स्थान वि० जैन महिर पार्थनाथ टोडारावसिंह (टोक)

७ करे≎. प्रति सरु ७ । पत्रसः ६० । घा० ११ ४ ४ इश्वाले काल सं०१६२ व । पूर्णं । वेष्टनसं०६ व । प्रास्तिः स्थान - दि० जैन मदिर राजमहल (टॉक)

विशेष—-- १० दिल :स ने राजमहल मे प्रतिसिधि की थी । तेलो मेस्या श्री शिवचन्द जी चैत बुदी ७ स॰ १९२२ के चन्द्रप्रभ चैट्यालय में चढाया था ।

७६**२१ प्रतिसं**० ६ । पत्र स०४२ । घा० ११×७३ इञ्च । **ले॰काल रा० १६४**६ । पूर्ण । बेष्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्राधनन्दन स्वामी, बुदी ।

विशेष - बूंदी में प्रतिलिपि हुई थी।

७८३२. प्रतिसंव र । पत्र सव् ४३। धाव ११३४५ इचा। लेवकाल सव् १६२२ । पूर्ण । वेष्टुन सव् १५६ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर राजमहल (टॉक) ७६३३. प्रतिसं० १०। पत्रसं० ६४ । ब्रा० १०३ ४४ इ.च । ले० काल सं० १८४४ । पूर्ण। बेटन सं० २४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।

७६३४. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १२ । घा० ११×५३ इला । ले०काल स० १८४६ आयाढ बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स०२४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७८३**४. प्रतिसं०१२ । पत्रस०४**३ । द्या०१०, ४७ इला। ले०काल स०१८२६ माह सुदी१४ । पूर्णा वेष्टनस०४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर प्रादिनाथ वृदी।

७⊏३६. प्रति सं०१३ । पत्र सं०४३ । ग्रा०११×७¹ इश्वाले० काल स०११५७ । पूर्ण। वेष्टन स०७४ । प्राप्तिः स्थान—दि०जैन मन्दिर श्री|महाबीर बूंदी।

७८३७. प्रतिसं० १४ । पत्र स० ६-५४ । आ० १२×४ है इच । ले•काल स० १८६० । पर्यो । बेकन स० १६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पाक्वनाथ चौगान, बंदी ।

**७८ ३८. प्रति सं० १४ । पत्र स**० ३७ । झा० १०×६३ इ.च. । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । केवनसं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, ब दी ।

**७८३६. प्रतिसं० १६**। पत्र स० ५६। ग्रा०११] ×५र्टु इन्छ । ले•काल स० १८६२ प्रासोज सदी १। पूर्ण । बेष्टन सं० ६३-८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडार।यसिह (टोक)

७८४०. प्रति सं०१७ । पत्र स०८४ । ग्रा० ५ ¦४६ ३ व्यः । ले०काल स०१६०३ माह सुदी ११ । पूर्वा । वेटन स० ४३ । प्राप्ति स्थान—सोगासी मदिर करौली ।

७६४१. चौबीस तीर्थंकर पूजा—हीरालाल । पत्रस० ६३। मा०१०४७ इश्वः। भाषा— हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल ४ । लेकाल स० १६२६ चैत्र मुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । प्राप्ति स्थान—खण्डेलवाल प्वायती मंदिर म्रजवर ।

७८४२, सौबीस तीर्षंकरों के पंच कत्यास्पकः— $\times$ । पत्र स०१६। ग्रा० ८ $\times$ ४३ इञ्च । माषा-हिन्दी (पद्य) विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । स्पूर्ण । वेष्टन सं०३। प्रास्ति स्थान — जैन मन्दिर वैर ।

७६४३. खीबीस तीर्थंकर पंच कल्याग्यक— × । पत्र स० १३। आ० १२ × ६ इखा भाषा—हिन्दी। विषय —पुजा। र०काल × । ले० काल × । पूर्णा वेष्ट्रन स० २४०। ३०३। आपित स्थान —सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

७६४४. चतुविशति तीर्यंकर पंचकत्यास्मक पुडास्—जयकीति । पत्रस॰ १२ । स्रा॰ १०१४ ६ इच । प्राप्ताः सन्द्रतः । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्षः । वेष्टनसं० १८४ । प्राप्ति स्थानस्कृतः । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्षः । वेष्टनसं० १८४ । प्राप्ति स्थानस्कृति चैत्रतः

## द्यन्तिम---

देवपरली स्थितेनापि मूरिगा जयकीतिना। जिनकत्याग्यकानां च, पूजेय विहिता ग्रुमा। मट्टारकश्री पद्मनदि तन् शिष्य अहा रूपसी निमित। विशेष-- प्रति प्राचीन है।

. ७८४ ४. चौसठ ऋ खि पूजा—स्वरूपचाद्र । पत्रस० २८ । ग्रा० १२ ४८ ६ इन्च । माया-हिन्दी । विचय-पूजा । रक्ताल स० १६१० । लेक्साल ४ । पूर्ण । बेष्टुनस० २२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७८४६. प्रति सं०२ । पत्रसः०३३ । ग्रा०१०४७ । इत्या । ले० काल—४ । पूर्णं। बेष्टन सं० १६० । प्राप्ति स्थानः दि० जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी. बंदी ।

७८४७. प्रति स० ३ । यत्र स० २४ । प्रा० ११ $\frac{1}{8}$  $\times$ ६ इचा। ले॰ काल सं० ११३६। पूर्ण । बेष्टन सं० ४ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर श्री महाबीर ब्रुदी ।

७६४ ६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २५ । घा० ११ × ७ इ.चा ले० काल स० १६५७ । पूर्णे। वैकृतसं० १७७ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी, बुटी ।

विशेष पुस्तक साह धन्नालालजी चिरजीलाल जी नैरायबा वालो ने लिखा कर नैरायब सुद्धप्रप्राम के मन्दिर भेट किया। महनताना २) होगल २=)

७८४**६. प्रतिसं० ५** पत्र स० ५० । प्रा० ८ ६ <sup>१</sup>, इश्व । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । जीर्या बेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सीगासी मन्दिर करीली ।

७८५० प्रतिसं०६ । पत्रस० २०। ग्रा०१३ ४ ८६ चाले ०काल स०१९६४ । पूर्ए । बेहनसं० १२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बडाबोस पथी दौसा।

७८५१. प्रतिसं०७ । पत्र सं०४७ । ग्रा० १४६ इ.च.। ते० काल imes । पूर्णं । वेष्टन सं० १२६ imes । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

७८५१. प्रतिसं०८ । पत्रसं०२० । ग्रा०१३ 🗴 ८ १ इ.च । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टन स० १०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

७८५२. प्रति स<sup>्</sup> ६ । पत्रसः २५ । ग्रा० ११ × ५ इत्व । ले० काल सः० १६६३ । पूर्णं । वेष्टन सः० ३६ २० । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

विशेष--- प॰ पन्नालाल के शिष्य मुन्दरलाल ने बमुवा मे प्रतिलिपि की थी।

७८५३ प्रतिसं० १० । पत्रस० २० । ग्रा० १४ 🗴 ६ े इल्ब । ले०काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूबी ।

ं ७८४४. प्रतिसं० ११। पत्रस० १८। ले०काल स० ११८०। पूर्ण । वेष्टनसं० ४८। प्राप्ति स्थान—दि० जन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

७८४५. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ३४ । प्रा० १२ ९४७ । क्षा । ले० काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७८**५६. प्रति स० १३** । पत्रस० २६ । ग्रा० १३ × ८<sup>°</sup>, इञ्च । ले०काल सं० १६८६ । पूर्ण *।* वैक्टनसं० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर

७८ ४७. प्रति सं०१४ । पत्र सं०४३ । द्वा० १५ $\frac{3}{2}$  ४६ $\frac{1}{2}$  इश्वा । ले० काल स०१९७२ सावन सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स०३१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पात्रवंताय सदिर चौगान बूंदी ।

विशेष--- मडल का चित्र भी है।

७८५८. प्रति सं० १५ । पत्रसं० ५८ । मा० १०३ ४४ है इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० ३१६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

७८४६. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० २६ । प्रा० १३ × ४ ; इल्बा लेक काल सं० १६७४ । पूर्ण । वेस्टन स० ८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन धप्रवान पचायती मदिर झलवर ।

विशेष-एक प्रति भीर है जिसमें २४ पत्र हैं।

७८६०. प्रतिसं० १७ । पत्र सं० ३६ । ले॰काल सं० १८४० । पूर्णं । बेस्टन सं० २ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मदिर हण्डावालों डीम

७६६१. प्रतिसं० १६ । पत्र स० २४ । बा० १२४६ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ ।प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्वनाय मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

७६६२. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ५६ । मा० १० ४७ इचा । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टत सं० ४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टॉक)

७६६३. प्रतिसं० २० । पत्रस० ३६ । घा० ११३ ४७ इक्षा ले० काल म० १६७० घासोज अदी १० । पूर्ण । बेष्टन स० ४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

विशेष-हीरालाल के पत्र मुलचंद सौगासी ने मन्दिर मडी मालपुरा में लिखा था।

७६६४, प्रति सं० २१। पत्र स० ४६। प्रा० ११४६ इञ्च । ने०काल स० १६३६ कार्तिक बृदी ५ । पूर्ण । केष्टन सं०४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाक्ष्येनध्य मन्दिर टोडागर्यासह (टोक)

७**८६५. प्रतिसं० २२** । पत्र सं० ५–४१ । बा० ⊏ै ४ ६ इञ्च । ले० काल सं० १६३४ माह्र सुदी ५ । ब्रपूर्स । बेप्टन स० १८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोबारावसिह ,टॉक)

७६६६. जम्बूद्वीप प्रकृतिम जैत्यालय पूजा — जिनदास । पत्रस० ३। प्रा० १२ ४७ इचा। भाषा — सस्कृत । विषय — पृजा । र० काल स० १४२४ माध मुदी ५। ले०काल × । पूर्ण । बेहनसं० ११७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पनायती मन्दिर बयाना ।

विशेष-रचना सम्बन्धी वलोक

श्राद्धे ब्याचार द्रव्येके वर्तमानजिनेशिता । फाल्मुले शुक्लपचम्या पुजेय प० रचितामया ।।

७८६७. प्रतिसं०२ । पत्र स०४० । धा०१२ ४६ है इत्था। ले०काल ४ । पूर्ण। बेष्टन सं०४०। प्राप्तिस्थान—दि०जैन मन्दिर देर ।

विशेष--लक्ष्मीसागर के शिष्य प० जिनदास ने पूजा रचना की थी।

७८६८. जस्मूदीप पूजा—पं० जिनदास । पत्रसं० ३२ । माषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१८१६ नाप बुदी ११। पूर्ण । वेष्टन स०२२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--पं जिनदास लक्ष्मीसागर के शिष्य थे।

७६६. **जम्बूस्वामी पूजा**— × । पत्रस०२७। म्रा० १२×७ इच । आचा-हिन्नी (पत्र)। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल स० १८६०। पूर्ण । बेष्टनसं०८२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहतथी मन्दिर दौता।

७८७०. **जम्बूस्वामी पूजा जयमाल ।** पत्र स० १०। प्रापा—संस्कृत । **स्वय**-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६१२ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३४ । <mark>प्राप्ति स्थान</mark>—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावासों का क्षीग ।

७८७१. जरविधि —  $\times$ । पत्रस०६। म्रा०११ $\times$ १३ इसः। भाषा-संस्कृतः। विषय-पूजा। र०काल  $\times$  ले०काल स०१६२१ । पूर्णः। वेष्टन सं०११८। म्राप्ति स्थान-दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान बुदी।

विशेष—-पूज्य श्री जुनिगढि का बागड पट्टे सामावाडान्वये का श्री १०८ राजेन्द्रभूषस्त्रजी लिपि कृतम् स० १६२१ सामवाडा नगरे

७८७२. **जलसात्रा पूजा विधान**—— × । पत्रस**ेर । धा०१०**३ × प्रदश्च । माषा-संस्कृत । । विषय-पूजा । र०काल × । से•काल × । पूर्ण । वेष्टर स० ६४८ । **प्राप्ति स्थान** – म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७६.७३. जलयात्रा विधान $-\times$  । पत्र सं०३। घा० १० $^2_x$ ४ $^2_y$  इन्छ । माया-सस्कृत । विध्य-विधि विधान । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०२३२ । **प्राप्ति स्था**न — दि० जैन मदिर फ्रांभनस्त स्वामी, बुदी ।

७५७४. जलयात्रा विधि— $\times$  । पत्रसं० २। मा० १० $\times$ ६ इश्व । माषा-सस्कृत । विधयविधान । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६–१३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

७६७४. जलहर तेला उद्यापन— $\times$ ा पत्र स॰ ११ । झा॰ ७  $\times$  ४ $\xi$ ष्टच्च । भाषा-सम्बत्त । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

७८७६. जलहोम विधान— $\times$  । पत्र सं० । प्राः १० $\times$ ६ इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ले० काल सं०१६३८ । पूर्ण । बेष्टन स०३४५-१३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटांडयो का द्व गरपूर ।

विशेष-सलंबर में लिखा गया था।

७८७७. जालहोस विधान— $\times$  । पत्र सं॰ ४ । बा॰ ११ $\times$ ७ इंच । आधा—सस्कृत ) विध्य-विधान । र॰काल  $\times$ । ले॰काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४२७–६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मदिर कोटडियो का हु गरपुर ।

७८७८. जतहोसिबिधि— × । पत्र सं० ४ । त्रैप्रा०८ ४७ इञ्च । साधा-संस्कृत । विषय-विषात । र०काल × । ले०काल सं० १६४० । पूर्ण । वैष्टन सं० ५४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर कोटडियों का द्वारपुर । ७८७६. जिनगुरासंपत्ति बतोद्यापन पूजा × । पत्रसः० ६ । म्रा० १२ ×६ इ.च. । माषा-सस्कत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७२१ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर म्रजमेर ।

७८८०. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८ । मा० १०३ ४४ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं∙ ३८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर म्रजमेर भण्डार ।

७८८१: प्रति सं०३। पत्रसः० सं०४। घा० १०४४ इवा। ले०काल स० १८६० मादवा बुदी १४। पूर्ण। बेष्टनसं०६। प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर घादिनाथ बृदी।

**७८६२. प्रति सं०४** । पत्रस० ७ । ग्रा० १० × ५६२व । ले० काल × । पूर्ण । बेहन सं० ६३-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडोरायसिंह (टोक)

७८६३. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ६ । झा० ११×५ इन्छ । ले०काल × । झपूर्ण ।वेष्टनस० ६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

विशेष -- केवल प्रथम पत्र नहीं है।

७८८४. जिन पूजा विधि —जिनसेनाचार्य । पत्रसः ११ । ब्रा० ११ ४ ६ व । माषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल 🗴 । ते० काल सः० १८८५ कार्तिक मुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसः० ४१-२७ । प्राप्ति स्थान —पार्थनाथ जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष -- लिखापित भ. देवेन्द्र कीर्ति लिपि कृत महात्मा शभुराम ।

७८८५. जिन सहामिषेक विधि स्नाशाधर । पत्र स० २४ । सा० १०४४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-विद्यान । र०काल ४ । लेवकाल म० १८३७ मगमिर बुरी ४ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० २८३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष-सुरत मध्ये लिखापित ग्राचःर्य नग्न श्री नरेन्द्रकीर्ति ।

७८६६, जिन यज्ञेकल्प - स्राशाधर । पत्रसः १३४ । ब्रा० १२४४, इल्ब। प्रापा— संस्कृत । विषय विधान । रे०कॉल स० १०८४ । से०कान ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११३ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन सन्विर पार्थनाथ चौगान वृंदी ।

विशेष—मानगर में प्रतिलिपि हुईथी। प्रति प्राचीत एवं सम्कृत में ऊपर तीचे सक्षिप्त टीका है।

७ म्म. प्रतिसं०२ । पत्र स०६४ । आ०१३ ४६ इ.ख.। ले०काल स०१ ८५६ पीष सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स०५ ३ । प्राप्ति स्थान—ंद० जैन पवायती मन्दिर दुनी (टीक) ।

७८८८ प्रति सं० ३ । पत्र स० १७ । त० काल १४१६ श्रावसा बदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पवायती मन्दिर (बडा) डांग ।

७८८६. प्रतिसं० ४ । पत्र स०१४७ । सा०१२ ४ ५ है इन्था । लेक्काल स०१७४७ । माघ सुदी २ । पूर्णे । बेहनस०११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायनी मन्दिर दूनी ।

विशेष-कहीं सस्कृत टीका तथा शब्दों के ग्रर्थ भी दिये हुए हैं।

७८१०. जिन सहलनाम पुजा—सुमिति सागर । पत्रसं० २० । झा० १२४६ हचा । याप-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले० काल स० १८१२ माघ बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० २३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७६१. जिनसंहिता— स० एकसिथ्य । पत्र सं० २१६ । छा० ११३ $\times$ ४ इच । साषा— संस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ११५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पाव्येनाथ चौगान बुँदी ।

७८६२. शैन विवाह पद्धति — जिनसेनाचार्य । पत्रसं• ४६ । मा० ११३ ४८ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल 🗴 । नै०काल सं• १९५२ दैशाख मुदी २ । पूर्ण । देष्टनसं• २०४ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है । टीका काल सं० १६३३ ज्येष्ठ बुदी ३ ।

विशेष-- प्रति हिन्दी ग्रथं तथा टीका सहित है।

७८६**४. प्रति स०३ ।** पत्रस०२८ । ग्रा०१२१४७ इञ्च । ले०काल सं० १६३३ । पूर्ण। वेष्टुन सं०२२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्राभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष-- बीच में सस्कृत श्लोक हैं तथा ऊपर नीचे हिन्दी टीका है।

७८६५. प्रतिसं० ४ । पत्रम० २६ । आ० १२ ४७ इञ्च । ले∘काल सं० १६६३ । पूर्ण । बेप्टन स० ५२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर श्री महाबीर बूदी ।

७८६६ प्रतिसं० ४ । पत्रस० २६ । ष्रा० ११×५ है कच्च । ले•काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० २१-१२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियों का संगरपुर ।

विशेष-पडित फतेहलाल विरचित हिन्दी भाषा मे अर्थ भी दिया हुआ है।

७८६७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४६ । आ० १२४७ इन्थ । लेक्सल स० ११३३ । पूर्ण । बेहन म० १०६/१४ । प्राप्ति स्थान--वि० जैन पावर्गनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७८८८. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ४४ । बा० ११३४८ ६ व्या । से०काल 🗶 । पूर्ण । वेच्टन सं० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल पचायती मन्दिर छलवर ।

७६६६. जैन विवाह विधि —  $\times$  । पत्रसं० २। प्रा० ११ $\times$ ५ इख । प्राया —संस्कृत । विधय — विधि विधान । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ११ $\times$ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७६००. जेष्ठ जिनवर वतोद्यापन— 🗙 । पत्रस**०६ । ग्रा०१०**२४५ इश्व । माषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्णी । वेष्टनसं० २७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर सम्बद्ध वयपुर ।

७६०१. तयोग्रहर्ग विधि—×। पत्रसं० १: भाषा-सस्कृत । विषय-विद्यात । र०काल ×। से•काल ×। पूर्ण । बेष्टन सं० ६७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर अस्तपुर ।

७६०**३. तीन खीबीसी पूजा** — × । पत्रस**० ७ । पा० ११ ×५** ३ इखा । भाषा — हिन्दी । विषय पूजा । र०कास × । से०कास × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर फ्रजमेर भण्डार ।

७६०४. **तीन चौबीसी पूजा**—त्रिभुवनचन्द । पत्र स० ६ । प्रा० ११४४ इञ्च । आषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ ते० काल स० १००१ प्रवाड बुदी ७ । पूर्ण । बेपून स० ५३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा

७६०**४. तीन सौबीसी पूजा — वृग्वःबन ।** पत्रसं० १४२ । मा० १०४७ है स्वा । माषा — हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल स० १८७०। पूर्ण । वेष्ट्रनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान** — विक जैन अवेतवाल पंचायनी मन्तिर प्रजवर ।

७६०**६. प्रति सं०२ ।** पत्रस० ८८ । ले० काल सं० १६४२ । पूर्णं । वेष्ट्रनस०१६२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७६०७. तीन लोक पूजा— टेकचंदा । पत्रसं० २०२ । घा० १२ $\frac{1}{2}\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इखा । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १०२० ध्रपांक बुदी ४ । ते०काल सं० १९४६ फाल्गुग सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष--प - नीमलाल जी ने बुंदी में प्रतिलिपि कराई थी।

७६०**८. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३२४ । षा० १४**×६ ' इश्व । ले० काल स० १६७१ । पूर्ण । वेष्टन स**० ६ । प्राप्ति स्थान** - वि० जैन मन्दिर चोषरियान मालपुरा (टोक)

विशेष - बीधरी मांगीलाल बकील ने प्रतिलिपि करवाई थी।

७**९०६. प्रतिसं० ३**। पत्रस० ३७४। घा० १९ × ९ इख। ले०काल सं० १९६७ माह बुदी २ । पुरुषं। बेपून सं० २६। **प्राप्ति स्थान** -- वि० जेन ग्रयसन मन्दिर नैसावा ।

**विशेष** — पं∘ लक्ष्मीचन्द्र नैसाव। वाले का ग्रथ है। स० १६६८ में उद्यापनार्थ चढाया पन्नालाल चम स्थान (१) बेटा जडचन्द्र का।

७६**१०. प्रतिसं० ४**। पत्रस**ः २४४**। प्रा०१२<sup>९</sup>,८६<sup>९</sup> इश्वः। **ले०काल सं०१**६३८ प्रापाढ बुदी ९। पूर्णः। बष्टन स०२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तरहपयी मन्दिर नेशावा।

७६**११. प्रति सं० ४।** एत्र स० ४०४ लेक्काल स० १६१२ । पूर्णं । बेप्टन स० ११६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जन पचायती मिरिन भरतपुर ।

७६१२. प्रति स०६। पत्रम०३०८। प्रा०१३×७१ इस्त्रा ले॰काल सं०१६३४ चैत सुदी २। पूर्ण । बेष्टनस०६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्वायती मंदिर करीली।

७६१६. तीन लोक पूजा-नेमाचन्द पाटनी । पत्रसं० ६४० । प्रा० १२१४-८१ स्था । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ते० काल स० १६७६ मनसिर सुधी १४ । पूर्ण । बेटनस० १६ । प्राप्ति स्थान-विक जैन मंदिर प्रादिनाय स्थामी मालपूरा (टोक) विशेष — धन्नालात सोनी के पुत्र मूलचन्द सोनी ने झादिन।थ चैत्यालय मे प्रतिलिपि करवाकर भैट की थी।

७६१४. तीस चौबोसी पूजा— न० शुभच क्ष्मा । पत्र सं० ७४ । प्रा० १०४४ इचा । माचा -संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । बेहन स० १३७८ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन सदिर सजसर ।

७६१५. प्रति सं० २ । पत्रस० ६१ । झा० १० ४ ४ दे इंच । ले०काल स० १७२८ बैशाख सुदी १४ । पूर्णा । वेट्टन स० २०० । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर झजमेर ।

बिशेष--ग्रन्था-ग्रन्थ सं० १५००।

७९१६. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १८४६ । पूर्णं । वेष्ट्रनस० ८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष—सखरामजी वसक वाले ने प्रतिलिपि की थी।

लिखत दयाचन्द वासी किशनकोट का बेटा फतेहबन्द छावडा के पुत्र सात केसरीसिंह के कारण पाय हम भरतपुर में रहे।

७६१७ प्रति सं०४ । पत्रसं० ३६ । ते० काल सं०१७६६ मात्र मुदी १३ । पूर्ण । बेहनसं• ४२ । प्राप्तिः स्थान वि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - प्रति का जाएं। द्वार हुपा है।

७६१८. प्रति सं० ५ । पत्रस० ६१ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राध्ति स्थान** - दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरतपुर ।

७६१**६. प्रति सं० ६** । पत्र स० ३–४५ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इञ्च । ले०काल स० १६४४ । श्रपूरों । बेहनस० १७२ । <mark>प्राप्ति स्थान</mark> —दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स यत् १६ घाषाशादि ४४ वर्षे घाष्यन सुदी ७ गुरी श्री विद्यापुरे शासत्याने ब० तेजपाल ब० पदमा पंडित माङ्ग् चानुमंसिक स्थिति चतुर्तिशतिका पूजा लिखापिता । ब० तेजपाल पटनार्थ मुनि घर्मदत्त लिखितं किवद गीक गच्छे ।

७६२०. प्रति सं० ७ । पत्रस० २-४७ । ले०काल 🗴 । सपूर्ण । वेष्टन स० ३७६।२६७ । प्राप्ति स्थान—दि० अन संभवनाथ सदिर उदयपुर ।

७६२१. प्रतिसं० ⊏ । पत्र स०१०७ । झा० म× ⊏ इश्वा ने०काल स १८४५ भादों सुदी ११ । पूर्ण । वष्टन स०८६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

विशेष - गुटका साइज है। लालजी मल ने दी षंपुर में लिखा था।

७६२२. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६०। मा॰ १०४५ इन्छ । ले॰काल — ४। मपूर्ण । वैष्टन सं० ३६६। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७६२३. प्रति सं० १०। पत्र सं० ७२। ग्रा० १०४५३ इन्छ। लेश्काल—४ । पूर्णः । वेष्टन सं० २४८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर ग्रीभनन्दन स्वामी, बूंदी । ७६२४. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ४२ । सा० १९ $\frac{3}{2}$ × $\frac{3}{5}$  इख । ले०काल स० १७८० चैत्र बुदी द । पूर्णे । वेष्ट्रन स० ४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर आदिनाथ बुदी ।

विशेष- मालपुरा नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प० सोदराज के पठनार्थ लिखा गया था।

७८२५. तीसचीबीसीपूजा—पं नसावारता । पत्रसः ३५ । ब्रा०१२ ४४ है इव । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल सं ० × । तेश्काल स० १८५२ ब्रासोज सुदी १३ । पूर्ता । वेटन स० ८ । ब्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

७६२६. तीस चौबीसो पाठ—रामचन्द्र । पत्रस० ७६ । ब्रा० १२ $\frac{1}{4} \times 9\frac{1}{5}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १८६३ चैत वदी ४ । ले०काल स०१६०८ सावन वदी ८ । पूर्ण । बेहन स०११४ । प्राप्ति स्थान—दि० र्जन मन्दिर फतेहपुर केलावाटी सीकर ।

विक्रोत -- देश्वरीप्रसाद शर्माने प्रतिलिपि की थी।

७६२७. प्रतिसं०२ । पत्र स०६४ । प्रा०१४ $\frac{1}{6}$  $\times$  प $\frac{1}{6}$  इञ्च । ले०काल सं०१६२६ भावव सुदी ११ । पूर्ण । बेय्टन स०११६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-लाला कल्यागुचन्द ने मिश्र श्री प्रसाद श्यामलाल से प्रतिलिपि कराई थी।

७६२८. तीस चौबीसी पूजा—बृन्डाबन । पत्र स० १२७ । घा० ११३४१ हश्च । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल—४ । लेक्सल स० १६२६ कार्तिक मुरी १३ । ब्रपूर्ण । वेष्टन म० ६०-२१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिह टोक ।

विशेष---१०४ का पत्र नहीं है।

**७६२६. प्रतिसं० २ । पत्रस०** २६६ । ग्रा० १०४ ४ है उचा। ने० काला सा० १८६४ । पीप बुदी १४ । पूर्णा । वेग्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचावती मन्दिर वयाना ।

विशेष—गुटका साइज में है।

७६३०. प्रतिसं∘ ३ । पत्रस० ११० । घा० १२१ ४६३ इल्डा । ले०काल म० १६१० ध्रासीज सुदी ५ । पूर्णा । बेहन स०४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष-वयाना मे प्रतिलिपि हुई थी।

७६३**१. प्रतिसं०४** । पत्रस० १०६ । म्रा०११×६ उच्च । ले० काल— (। पूर्ण् वेष्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पाध्वेनाथ टोडागयसिंह टोक ।

७६३२. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १०६ । म्रा० १०४७ इन्छ । ले० काल स० १९५८ । पूर्ण । बेक्टनसं० ३६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

७**६३३. प्रतिसं० । ६** । पत्र स० १०७ । ग्रा० ९३ ४ ६१ इ'च । ले∙काल म० १८८६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २७,१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ड गरपुर ।

विशेष-प्रतापगढ मे पंडित रामपाल ने लिला था।

७६३४. तीस चौबीसी पूजा $-\times$ । पत्रसः । मा॰ १६ $\frac{1}{5}\times$ ६ $\frac{1}{5}$ रू । प्राथा-हिन्दी । विषय-पूजा।र०काल  $\times$ । ले॰काल सः १८८७। प्राप्ति स्थान-प्रजोर भण्डार।

७६३५. तीस चौबीसी पूजा- $-\times$ । पत्रसं०६। भाषा-हिन्दी। विषय पूजा। र०काल  $\times$ । के०काल $\times$ । बपुर्युः। बेष्टुन स०३७७ २६८। प्राप्ति स्था--दि० जैन समवनाय मंदिर उदयपुर।

७६३६. तरह द्वीप पूजा—लालजीत । पत्र स० १६०। झा० ११९ ४८ इच्च । माषा-विषय—पुत्रा। २०काल स० १६७०। ते० काल स० १६६७। पूर्ण। वेष्टन स० १३६। प्राप्ति स्थान— विक जैन मिटन प्राजेश मध्याः।

विशेष---क्रप्समढ मध्ये लिखिपत ।

७६३७. **प्रतिसं**० २ । पत्र स०११४ । बा० १४४६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रक्काल स०१६७० । लेक्काल स०१६१६ । वैशाख बुदो १० । पूर्ण । वेष्टन स०१५६ । **प्राप्ति स्थान**— विक्जन मन्दिर राजमहल टोक ।

७६३ म. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २१७ । ग्रा० १२४६ । इन्छा । लेक्काल स० १६६० । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरह पथी मन्दिर नैसावा ।

विशेष— भट्ट रामचन्द्र ने नैगावा मे प्रतिनिधि की थी। ग्रानीलाल जी के पुत्र सावलर।मजी माई मोदान जी चि० फलचन्द्र श्रावक नैगावा वाले ने प्रतिनिधि करवाई थी।

७६३ ६ प्रतिसं० ४ । पत्र सं०१७४ । ग्रा०१३ ४ ६ ईंडञ्च । ले० काल स०१६०३ । पूर्णं। वेष्टत स०६६ । प्राप्ति स्थानं—दि० जैन मन्दिर थी महावीर, वृदी ।

७६४०. प्रतिसं० ५ । पत्र स०२०२ । झा०१०४४ है इन्धा ने क्वाल स १८०६ पूर्ण। बेष्टुन स०६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर भादवा राजस्थान ।

विशेष - मारोठ में भ थाराम ने प्रतिलिपि की थी।

७६४१ प्रति सं०६ । पत्र स०२०६ । प्रा०१०× ८ इला। ले० काल २०१८२४ । पूर्ण। बेष्टन स०१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर, बूदी।

७६४२ प्रति स० ७ । पत्र स० १६३ । ले०काल १६६४ । पूर्णे । वेष्ट्रत स० ७१ । प्राप्ति— स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

७<mark>६४३ प्रतिसं०। ⊏</mark> । पत्रस० १६६। ग्रा० १३×७, ँडचाले काल **सं०** १६०७ । गीप मुदी। पूर्णालेहन स०२४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष — प्रति उत्तम है।

७**६४४. प्रति सं०६** । पत्रस०१४०। ग्रा० १२<sup>°</sup>,४८<sup>°</sup>, इङ्च । ले० काल स० १६२३ **।** ग्रासीज मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स०१४८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर फनेहपुर शेखावाटी सीकर ।

७६४६. तेरह द्वीप विधान— $\times$  ।। पत्र तं० ४४। घा० १० $\times$ ४ है इञ्च । माषा-सत्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागरी, (बूंदी) ।

७६४७. तेरह द्वीप पूजा विश्वान—× । पत्रसः १३६ । प्राः १२१ ४८ ६ इञ्च । मावा—हिन्दी पद्य । विषय – पूजा । र०काल × । ते० काल सः १६६१ मादवा वदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं• १०७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेष्टुर गेस्नावाटी सीकर ।

विशेष---परशादीलाल पदावती परवाल ने सिकन्द्रा (ग्रागरे) मे प्रतिलिपि की थी।

७६४८. त्रिकाल चौबीसी यूजा—  $\times$  । पत्रस॰ ११ । प्रा॰ ११ $\frac{3}{8}$  ×  $\frac{1}{8}$  इच । माषा— संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ते॰ काल  $\times$  । प्एाँ । वेष्ट्रन स॰ । प्राप्ति स्थान— म॰ दि॰ जैन मन्दिर प्रादिनाथ स्थामी मालपुरा (टोक) ।

७६४६. त्रिकाल चर्तुविशति पूजा- त्रिभुवनचन्द्र । पत्रसः १४। घा० १११४४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णं । वेष्टन सः ६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रधिनन्दन स्वामी व दी ।

७६५०. त्रिकाल खर्तीबशित पूजा $--\times$ । पत्र सं०११। द्या० १२ $\times$ ६ इथा। भाषा-सस्कत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेध्यन सं०६/१८। प्राप्तिः स्थान--भ० दि० जैन मदिर टोडारायसिंह (टोंक)।

७६५१. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा —  $\times$  । पत्रसं० १६ । आ० ६ $\frac{1}{2} \times y$  इत्र । भाषा –सस्कृत । विषय –पूजा । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १०६/१७२ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायिन्ह (टॉक) ।

विशेष--तक्षकपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

**७६५२. त्रिकाल चतुर्विसति पूजा**— × । पत्र स॰ २२ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र•काल × । ते॰ काल × । पूर्णे । बेष्टनस॰ ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन पत्रायदी मन्दिर मरतपुर ।

विशेष-भक्तामर स्तीत्र तथा कल्याएा मन्दिर पूजा भी है।

७६५३. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा—  $\times$ 1 पत्रतं॰ १३। प्रा॰ १० $\times$ ४ दश । भाषा–स स्कृत । विषय-पूजा  $\chi_{\mathbb{Z}}$ ० काल  $\times$  । से०काल  $\times$ 1 पूर्ण । वेष्टन स० २२२। प्राप्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर राजमहल (टॉक) ।

७६४४. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा—म० शुनचन्द्र । पत्र स० ४६। ग्रा० १३imes६२७ । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—वि• जैन सोगाणी मदिर करौली ।

७६५६. त्रिकाल **चौबोसी पूजा** —  $\times$  । पत्रस० १० । प्राः ६ $\times$ ६ इच । भाषा — हिन्दी षद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । बेट्टन स० २०६ । प्रा**प्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पार्धनाय चौगान बुदी ।

७६५६. त्रिपंचाशत् कियाधातीशापन $-\times$ ा पत्र स॰ ४। आ० १० $^2_4$ ×४ $^3_7$  इचा । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰काल सं० $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं०६८३ । **प्राप्ति स्थान**— म॰ दि० जैन मन्दिर प्रजमेर । ७६४७. त्रिरांचाशत क्रियावतोद्यापन—  $\times$  । पत्र सं $\circ$  १। प्रा॰ १० $\times$ ६ देश । प्राप- संस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं $\circ$  ११८ । प्राप्ति स्थान— वि $\circ$  जैन मन्दिर कोटदियों का इंगरपुर ।

७६५६ त्रिःशिक्षाशत् कियावतोद्यापन —  $\times$  । पत्र सं॰  $\times$  । द्याः १२२ $\times$ ४३ इत्थ । मावा –सस्कृत । विषय –पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० ३६६ । प्राप्ति स्थान — वि॰ जैन मंदिर प्रजमेर भण्डार ।

७६५६. त्रिपंचाशत् कियाजतोद्यापन  $\times$  । पत्र सं०६ । आ०१० $\times$ ७३ इञ्च । आया—संग्रुत । विषय—पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन सं०१०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपर ।

७६६०. त्रिरांचासत् कियावतोद्यापन $-\times$ । पत्रतं० १। मा०११ $\xi \times \xi$  इच । मापा-संस्कृत । विषय-पृजा । र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं०१६० । **प्राप्ति स्थान**-िह० जैन मन्दिर म्रादिनाथ बदी ।

७६६१. त्रिलोक विधान पूजा— टेकचन्व । पत्रसं० २०२ । धा० १२ ४ स् इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विधय-पूजा । र०काल स० १६२६ । ले०काल सं० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

७६६२. त्रिलोकसार पूजा – नेमीचन्द । पत्रसं० ६६१ । बा० १४४८ ६३६थ । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय — पूजा । र०काल ४ । ले०काल सं० १६६४ चैत मुदी १३ । बेहन स०३ । प्रास्तिर स्थान — दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाथ स्वामी मानपुरा (टोक)

७६६३. त्रिलोकसार पूजा— सहाचन्द्रा।पत्र सं०१६६। ग्रा०१० $\frac{1}{4}$  $\times$ ७ इ.च। माया-हिन्दी । विषय-पूजा।र० काल स.०१६१४ कार्तिक बुदी म.। ले॰ काल सं०१६२४ कार्तिक सुदी१४। पूर्णं। वेप्टन स.०१०६। प्राप्ति स्थान—दि०जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष - प० महाचन्द्र सीकर के रहने वाले थे। समेद णिखर की यात्रा से औटते समय प्रतापगढ़ में ठहरे तथा वही ग्रन्थ रचना की थी।

**७६६४. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० १७२ । मा० १०३ ४ ७ इ.च । ले० काल स० १६२४ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रन्सदर ।

विशेष - मट्टारक भानुकीर्ति के परम्परा मे से प० महाचन्द थे।

७६६४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १८६ । मा० १०३ × ६३ इ च । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेकृत सं० १६४ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन खडेलवाल पत्रायती मन्दिर मलवर ।

७६६६. प्रतिसं० ४ । पत्र स०१०१। प्रा०१३imes = 1 इञ्च । ले॰काल imes 1 प्रपूर्ण । बेष्टन सं०३५६ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन संभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

७६६७. त्रिलोक पूजा - शुमचन्द्र । पत्र सं० १६६ । घा० ६×६ इचा । मापा-सम्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६४२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पावनाय संदिर चौगात दृदी । ७६६ म. प्रतिसं०२ । पत्र स०१२ । प्रा०१२ <sup>3</sup>,४ ५ इ.च । ले०काल स०१ द३० । पूर्ण। बेष्ट्रन स०२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बैर ।

७६६६, प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १४७ । झा० १२×७३ इल्डालेक कालासं० १६१२ । पूर्णं। केवनस० २०० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर ब्रलवर ।

७६७०. प्रति सं० ४ । पत्रस० १२६ । ते०काल सं० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स०२०१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन सण्डेलवाल पवायती मन्दिर अलवर ।

७६७**१. प्रति सं० ४ ।** पत्र सं० ४२ । घ्रा० १२ × ४ इ.च । ले० काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टन स० ३३० । घ्राप्तिः स्थान— दि० जैन स्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

७६७२. त्रिलोकसार पूजा—सुमितसागर । पत्र स० ८२। ग्रा० १२ / ४६ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय पूजा । रक्काल × । लेक्काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं ० १२०-४७ । प्राप्ति स्थान— विरु जैन मन्दिर नेविनाथ टोडारासीन्द्र (टीक)

विशेष — उदंबन्द ने स्थोत्रीराम बीजावर्गीय खू टेटा से इब्यपुर (मालपुरा) मे प्रतिनिषि कराई थी।

७६७३, प्रतिसं० २ । पत्रस० १०१। ते०काल स० १८६४।पूर्ण । वेग्टन स० ७१। प्राप्ति
स्थान — दि० जैन पंनायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष--गृटका साइज है।

७९७४. त्रिलोकसार पूजा — × । पत्रस ० १० । घा० ११ × ६ दश्व । भाषा-हिन्दी पछ । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । घपूर्ण । वेष्टनस० २४३ । प्राप्तिः स्थान-दि० जैन पार्थनाय महिर चौगान व दी ।

विशेष---नित्य 9जा स ग्रह भी है।

७६७४, त्रिलोकसार पूजा— × । पत्रस॰ ६ । ग्रा॰ १२×६ हेड । भाषा सन्हत। विषय-पूजा । र० काल × । ते०काल × । पूर्णा । बष्टन स० १७३–७३ । प्रास्ति स्थान — द० जैन मन्दिर कोटिडियो का द्वंगरपुर ।

विशेष - जयमाला हिन्दी में है।

७९७६. त्रिलोकसार पूजा - 🗙 । पत्र म० २२२ । ग्रा० १२ ४६ इ.स. । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । २०काल 🗴 । ले० काल म० ११४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११०-७८ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मदिर कोटडियो का इंगरपुर ।

७६७७ जिलोकसार पूजा - र । पत्रसण १०२ । प्रा० १२<sup>२</sup> ४६ है इस । भाषा -सस्ट्रत । विषय-पूजा । र०काल स० १२२१ । ने०काल 🗴 पूर्णा । वेष्ट्रनस० १३६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन सदिर प्रतिनन्दन स्वामी बुंदी ।

७६७६. निलोकसार पूजा— × । पत्रसः १३१ । झा० द ४६ इञ्च । माया—सःकृत । विषय-पूजा र०काल ४ । ले०काल सः १९८६ मामूगा दुदी १। पूर्णा। वेष्टनसं० १६४ । प्राप्ति स्थान— किंग्रेज लक्षेत्रताल प्रवादी मेटिर धनवर ।

७६००. त्रैलोक्यसार पूजा $-\times$ । पत्र स०७६। ग्रा॰ ११ $\frac{1}{2} \times X_{\frac{1}{2}}$  इञ्च । भावा-सग्कृत । विषय-पूजा र०काल  $\times$ । ले० काल स० १००७ मगमिर बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स०६६। प्राप्ति स्थान-भ० दि० जैन मन्दिर अजनेर।

७**६८९. प्रतिसं०२ ।** पत्र स०१३२ । ले०काल 🗙 **।** पूर्ण । बेष्टन स०६० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर मण्डार ।

विशेष-- ऊपर वाली प्रति की नकल है।

७६ मर्२ त्रेलोक्यसार पूजा— × । पत्र स० ६१ । ब्रा०१२ ४६ हुँ इखा । भाषा-सम्ब्रत । विषय-पूजा । र०काल × । सेक्काल स०१ मध्य कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन म०७२२ । प्राप्ति स्थान— ५०दि० बैन मस्दिर बजमेर ।

७६६३. त्रेपन किया उद्यापन । पत्रसं० १ । झा० १० $^1$  ×१ ६२व । मापा-प्रत्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर स्रजमेर भण्डार ।

७६८. त्रेपन किया ततोद्यासन —  $\times$  । पत्र स० ७। प्रा० १० $\frac{2}{4}$   $\times$  १ दृश्व । भाषा — सस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूणें । वेष्ट्रन स० ३४६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७६**८५. प्रति सं०२।** पत्रस०६। म्रा०६५ ४४६ इश्व । ले•काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३४२। **प्राप्ति थान**--- उपरोक्त मन्दिर।

७६८६. त्रेपनिकियास्नत पूजा— देवेन्द्रकोति । पत्र स०६। स्रा०११४४, इन्था । भावा— सस्हत । विषय-पूजा । र०कान ४ ले० काल स०१७६० वैद्याख बुदी ८ । पूर्ण । बेट्टनस०६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहयथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

विशेष-ग्राचार्य ज्ञानकीति ने अपने शिष्य भानुकेशी सहित वासी नगर मे प्रतिलिपि की थी।

७६८६ . श्र**तिसं० २** । पत्र स॰ ४४ । आ॰ ११ $^2_1 \times$ ५ इ**थ ।** भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल imes । ते० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि०जैन मन्दिर श्रजनेर ।

७६८६. दश दिवपालाचेन विधी— $\times$ । पत्रस०२। प्रा०१० $\times$ ४२ दश्व। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल $\times$ । ले०काल सं० $\times$ । पूर्णं। वेष्टनसं० ३४०–१३२। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरपुर।

७६१०. **बशलकारा उद्यापन पूजा**— × । पत्रसं० ४१ । घा० ७३ × ६ इञ्च । सावा-संस्कृत । विषय-पूजा । रुकाल × । लेक काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—स० विक जैन मन्ति प्रकार ।

७६६२. दशलक्षरण उद्यापन पूजा — 🗙 । पत्रसः १-५। मा० १२-४६) इत् । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल 🗙 । ले०काल 🗙 । मपूर्ण । बेष्टनसं० ७३६। प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७६६३ **. बशलकारा उद्यापन पूजा** —  $\times$  । पत्र स० ४४ । द्या० ११ $^{1}$ ×प्र $^{3}$  इत्र व । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय – पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल सबत् १६३३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । बेठन सं०३६ – ७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

७६६४. दशलकार्ग उद्यापन पूजा $\longrightarrow \times 1$  पत्रसं०२०। प्रा०१० $\frac{1}{2} \times \mathbb{V}_{\frac{1}{2}}^{\frac{1}{2}}$  दश्च । भाषा— संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल स०१८३। पूर्ण । वेष्ट्रन स०१००। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नागरी व दी ।

७६६%. दशलक्षाम् जयमाल —  $\times$  । पत्र स० १४ । प्राः० ११ $\times$ ४) त्या । माषा-संस्कृत । विषय-पुजा । २० काल  $\times$  । ले० काल स०  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६१-७ । प्राप्ति स्थान — स० विष्णेत्र मिहर प्रयोग ।

७६६६. वसलक्षम् जयमाल —  $\times$  । पत्र सं॰ १ । मा॰ ११ $\times$ ४ इञ्च । भाषा-सन्तृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । से॰काल सं॰  $\times$  । धपूर्ण । बेष्टन स॰ १९८ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जॅन सिन्दर दक्षणान । वर्षे ।

७६६७. दशलकारण जयमाल पूजा — साव शर्माः । पत्रस०१२ । प्रा०१०  $\times$ ५ $^{3}_{2}$  दश्व । माथा – प्राकृत । विषय - पूजा । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन स०११४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी बुदी ।

**७६६८. प्रति सं० २ ।** पत्र स० १ । घा० १० ४ ४ इच्च । ले०काल स० ४ । पूर्ण । वेस्टन स० ६८१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--संग्रामपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

७६६६. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६ । प्रा० १० $\frac{3}{7} \times \mathbb{E}_{\frac{3}{7}}$  ६ च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन सं० ११६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

द्व०००. प्रतिस० ४ । पत्रस०६ । छा० ११×४′, इन्त्र । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १८५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८००१. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ६ । प्रा० ११ $imes rac{3}{6}$  इच्च । से०काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं० १७० । प्राप्तिःस्थानः—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । प्रति सं $rac{1}{6}$ त टव्या टीका संहित है ।

द्र००२. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १० । ले० काल स० १७१४ । पूर्ण। वेय्टन सं० २२ (क) ≱ प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचासनी प्रदिर होग। विशेष — नृतपुर में विसलनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी। गाथाओं पर संस्कृत टीका थी हुई है।

=००३, प्रतिसं०७। पत्रस०२२। घा० १२×६३ इचा। ते∘कात स० १६४५ । पूर्ण। बेहुनसं०७=। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पारवेनाथ चौगान बुंदी।

द्य०**४. प्रति सं**० ६ । पत्र सं० १३ । ग्रा० १० हैं ४ ५ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन स० २२० । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन पावनगय मन्दिर चौगान बृदी ।

विशेष-सवाई प्रतापसिंह जी के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी।

**६००५. दशलक्षरण जयमाल**  $\times$  । पत्रसं॰ ६। मा॰ १२ $\times$ ४ हे इच्च । भाषा प्राकृत । **विषय** पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰काल सं० १७२१ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर मजमेर ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबत् १७२१ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे द्वितीया दिवसे श्रीमत् परमपूज्य श्री श्री १०८ श्री भूषण् जीतत्पट्टे मङलाचार्यश्री ५ धर्मचन्द्रजी तदास्नाये लिखित पाण्डे उधा राजगढ मध्ये ।

६००६. दशसकारण जयमाल × । पत्र सं०१६ । धा० ६ है×६) इञ्च । माया प्राकृत विषय पूजा । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०६२६ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जीन महिर प्रजनेर

 $\mathbf{coo}$ ७. दशलक्षरा जयमाल  $\mathbf{x}$  । पत्रसं $\mathbf{e}$  रहे। म्रा $\mathbf{e}$  र $\mathbf{c}$  रूपे । साथा — म्राइत  $\mathbf{e}$  विषय पूजा । र०काल  $\mathbf{x}$  । त्रेक्शल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । बेष्टन स $\mathbf{e}$  १२६६ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मिटर क्रजेर ।

८००८. दशलक्षरा जयमाल × । पत्रस॰ २० । पा॰ ६२ ४४ हु इश्व । माषा—प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । लें∙काल स० १६१४ । पूर्ण । बेष्टनसं० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

विशेष -- रत्नत्रय जयमाल भी है। हिन्दी ग्रर्थ सहित है।

८००**६. दशलक्षरा जयमाल × ।** पत्र सं० ५ । भाषा प्राकृत । विषय पूजा । र० काल × । के०काल ⋋ । क्षपूर्ण । वेष्टन २० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

विशेष -- प्रति सम्बन्त टीका सहित है ।

८०१०. दशलक्षरण जयमाल × । पत्र स० २ । ग्रा० १२ × ६ इच्च । माध्या प्राकृत । विषय धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मदिर नेमिनाव टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष — गाथाग्रों के ऊपर हिन्दी मे छापा दी हुई है।

विशेष --- लशालचन्द ने कोटा में लिखा था।

६०१२, दशलक्षरा जयमाल—ररष्ट्र| पत्र सं० ४ से११। ब्रा०१०४५ हे इत्र । भाषा— बपफ्रंस । विषय पूजा । र०काल ४ । ले०काल ४ । बपूर्ण । वेष्टन सं० ४३-२२४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह ंटोंक) ।

द०१३. .प्रति सं०२। पत्रसं०द । झा० ६ $^1_g imes imes^1_g imes imes^1_g$  इचा। ले०काल स० imes ।पूर्णं। बेहुतसं० ५४–६७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मस्दिर नेमिनाच टोडारार्यासह (टोक)।

६०१८. प्रतिसं० ३ । पत्र स०१४ । ले० काल स०१८४२ । पूर्णं। बेष्टन स०५३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--हिन्दी टीका सहित है।

६०**१४. प्रति सं०४** । पत्र स०४ । ले०काल 🗴 । पूर्या । वेष्टन स०४४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भग्तपुर ।

विशेष - भरतपूर में मुनि कल्याएं जी ने प्रतिलिपि लिखी थी।

६०**१६. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स० १४ । का० ११ $\times$ ४ ६ञ्च । ले० काल  $\times$  । । पूर्ण । बेष्टन प्रं० २१ । **प्राप्तिग न्यान** ंदि० जैन मदिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

८०९७. प्रति सं०६ । पत्रसं०१२ । द्या०११४४ इत्रा । ने०कान ४ । । पूर्णं । बेष्टनस∙ १०२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर स्रमिनन्दन स्वामी, बुंदी ।

विशेष-सस्कृत टब्बा टीका सहित है।

द०१८. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ११ । मा० १० ४५ इ.ख । ले∙काल ४ । सपूर्ण । वेष्टनस० १२० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर स्रीभनन्दन स्वामी, बृदी ।

विशेष — हिन्दी टीका सहित है। ग्रन्तिम पत्र नहीं है।

**८०१६. प्रतिसं० म । पत्रस० म । प्राप्त १२**४६ इचा। लेक्काल म० १८५२ प्रथम भाववा **बदी ⊏ । पूर्यो । बेप्टन** स**० १६० । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष - हिन्दी में ग्रथं दिया हुमा है।

द०२०. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० १०। घा० १२×६ दश्व । ले० काल स० १७८८ । पूर्ग । वेकन स० ७८ ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडागर्यासद (टोक) ।

विशेष—प्रति हिन्दी छाया महित है। तूगा मे श्री चन्द्रप्रभ चैन्यालय मे पं० मोहनदास के पठनार्थ लिखी थी।

**८०२१. प्रतिसं० १०।** पत्रस० ८। घार० ै× ४ है उन्हां ले० काल स० १८०० काती सुदी ६। पूरों। वेष्टन स०२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दवलाना बंदी ।

विशेष-सीसवालि नग्र मध्ये लिखित ।

म०२२. प्रति सं०११। पत्रस०४ । घा०६ $\frac{3}{4} \times 4$  इ.ख.। ले०काल  $\times$  । बेष्टनसं०२११। पूर्णं। प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)।

ष्ठ०२३. प्रतिसं० १२ । पत्र सं० १२ । ते०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१ । प्राप्ति स्थान⊸ दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा । विशेष --- प्रति टीका सहित है।

विशेष-अनुधा मे चन्द्रपभ चैत्यालय मे प्रतिलिहि हुई।

८०२५. प्रतिसं० १४ । पत्रसः १८ । ले॰ काल X । पूर्णः । बेष्ट्रनसं० ७३ (म्र.) । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पत्रायती मन्तिर भरतपर ।

६०२६. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १६ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टुनसं० ७३ (व) । प्राप्ति स्थान उपरोक्त मन्दिर ।

६०२७. प्रति सं० १६ । पत्रस० १७ । ले०काल स० ११३७ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० । ७३ (स) । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर अरतपर ।

**६०२६. दशलक्षरा जयमाल**—पत्र सं०२०। ग्रा०१२ $\times$ ५, हच । मावा—प्राहृत । विषय-धर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८६४ सावरा सुदी ६ । पूर्ण । वेहनसं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष---मम्बन टब्बा-टीका सहित है ।

६०३०. दशलक्षरण जयमाल —  $\times$  । पत्र मं॰ २६ । मा॰ ११ $^{\circ}_{1}$  ४ $^{\circ}_{2}$  इञ्च भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । ५०काल  $\times$  । ले॰ काल । पूर्ण । वेष्ट्रनसं॰ ३२२ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर अजमेर ।

५०३१. दशलक्षरण जयमाल $-\times$ । पत्र स० २६ । भाषा हिन्दी । विषय पूजा । र०काल $-\times$  नि०काल स० १६६४ पूर्ण । वेष्टन स० ३१२ । प्राप्ति स्थान-भ० दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०३२. दशलक्षरण् पूजा जयमाल $-\times$ । पत्रस० १४। प्रा० १२ ४५ इचा माषा- हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । ५०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टनस० ३१७ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बृदी ।

म०३३. प्रतिसं०२। पत्र स०३७। घा० १०४६ है इश्वा ले०काल स० १६४७। पूर्णं । वेष्टनसं०३१⊂। प्राप्ति स्थान —उपरोक्त मन्दिर।

विशेष - बाह्मए। गूजर गौड कृष्णचन्द्र ने बूंदी मे लिखा था ।

द०३४. दशलक्षर्ण धर्मोद्यापन — × । पत्र सं० १२ । मा० ६<sup>2</sup>, ४ ४ इख । माषा —संस्कृत । विषय—पर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ४२२ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर प्रजनेर । ८०३५. दशलकारा उद्यापन विधि—  $\times$ । पत्र स॰ २५। प्रा॰ ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  दश्व । भाषा— संस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ ३११ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पाप्रवेनाथ चौगान बूदी ।

५०३६. दशलकरण पूजा—स्नानतराय । पत्र स॰ ७। मा॰ ७ $\frac{1}{4}$   $\times$   $\frac{1}{4}$  इस्व । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र॰ काल  $\times$  । ले॰ काल । पूर्ण । वेष्टन स॰ १६० । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर फ्लेक्टर शेखावाटी सीकर ।

मञ्चेषः प्रतिसं०२ । पत्र सं०२ । घा० १२ ४७ इ.चा। ले० काल स० १६४७ । पूर्ण। वेष्टुत सं०४ ४३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर सन्कर, जनपूर ।

म०२मः प्रतिसं० २ । पत्र सं० ५ । मा० १० ४६ है इन्य । से०काल × । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० २२ । प्राप्ति स्थास-वि० जैन मन्दिर पार्थनाय चौगान वृदी ।

विशेष-दूसरे पत्र से भक्तामर भाषा हेमराज कृत पूर्ण है।

८०३६. दशलक्षन पूजा विधान—टेकचन्य । पत्रस० ४२ । म्रा० १३ $\times$ ७ इञ्च । माषा– हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० ७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी, व दी ।

प्र∘४०. दशलकारण मंडल पूजा—डालुराम । पत्रतः ३४ । मा० ११४४ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १८२१ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १००/६२ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा राज० ।

**८०४१. प्रतिसं० २** । पत्रस० २० । म्रा० १२-३४८ इन्दा ने० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० **१०८ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रप्रवाल मदिर उदयपुर ।

८०४२. दशलक्षरण विधान पूजा— $\times$ । पत्रत० २६। प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\times$ दश । भाषा— संस्कृत। विधय-पूजा। २०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वेष्टन स०५८। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोकारायसिङ (टोक)।

६०४३. दशलकारण विधान पूजा  $\times$  । पत्र स०२४ । प्रा०११ $\times$  ६ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । के०काल स०१६१० । पूर्ण । वेष्टन स०६२/६३ । प्रास्ति स्थान —िर्दि० जैन मन्दिर भारता (राज.) ।

विशेष — मारोठ नगर मे प्रतिलिपि की गई।

द०४४. दशलक्षरा वृत पूजा— × । पत्रस०२१। मा०११×५ इव । प्रापा-सस्कृत । विषय—पूजा। र०काल × । सं•काल × । पूर्णं। वेष्टन स०३६४। प्राप्ति स्थान— म०दि० जैन मरिदर प्रजमेर।

८०४५. दशलकारण तत पूजा  $\times$  । पत्र स०१६ । प्रा०१ $\times$ ४६ इच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१३७७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

प्त ४६. दशलक्षरण पूजा—विश्व सूचरा। पत्र स०३०। झा०११×६े इञ्च। भाषा— संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल स०-१७०४। लेक काल सं०-१८९७ भंगसिर सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मंदिर बयाता। विशेष - चरामन बयाना वाले ने करौली में ग्रन्य की प्रतिलिप कराई थी।

८०४७. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १६ । ले०काल × । पर्श । वेष्टन सं०१२ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर पचायती भरतपुर।

८०४८. दशलक्षरा बतोद्यापन पुजा-सुमतिसागर । पत्र स०१६ । घा० १०१×४% इ.च.। भाषा-संस्कृत । विषय-पजा । २०काल 🗙 । ले०काल 🗙 ।पूर्ण । वेष्टन सं० ३७० । प्राप्तिस स्थान-भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

द०४६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १४ । ग्रा० १०३ × ५० इ.च. । ले०काल × । पूर्ण । बेहनसं० १६६-७३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटाडेयों का ह गरपूर ।

द्रुष्ट प्रति सं ठ है। पत्र सं० ६ । ग्रा० १५×४ दश्व । से० काल सं० १८४४ पर्गा। वेष्ट्रन सं ० ५१२ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपूर ।

द्रु०५१, प्रति सं० ४ । पत्रस० १८ । घा० १०×६ इ'च । ले०काल सं० १६३८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ ५२७ । प्राप्ति स्थान-वि॰ जैन मन्दिर कोटडियों का हंगरपूर ।

८०६२. प्रतिसंव ४ । पत्रसव २० । ग्राव १४×४ इन्हा । लेक्काल × । पूर्ण । वेष्टनसंव ६४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बुंदी।

विशेष-सवाई माधोपूर में भालरापाटन के जैनी ने प्रतिलिप कराई थी।

द्रुठ प्रतिसं० ६ । पत्र स० २१ । ग्रा० १० ी× ५ इला । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स॰ ७२ । प्राप्ति स्थान-दि॰जैन मन्दिर नागदी (ब्रंदी)

८०५४. प्रति सं०७ । पत्र स० १७। मा० १३ X ४ इचा । ले०काल सं० १६३३ । पूर्णं। बेष्टन स॰ ५७ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी ब्रंदी ।

८०४४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४ । आ० १० × ६ इश्व । ले∘काल सं० १८६७ भादवा सुदी ४ । पूर्णं । वेष्ट्रन सं०२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादिनाथ ब दी ।

विशेष--सुमित सागर श्री ग्रभयनन्दि के शिष्य थे।

द्रुठ प्रदेश के काल × । प्रशं । वेष्ट्र स्था के काल × । पूर्श । वेष्ट्र संक १४ = । प्राप्ति स्थान दि॰ जैन मन्दिर राजमल (टोंक)

विशेष -- गुलाबचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

द०४७. प्रतिसं० १० । पत्रस० २८ । ले०काल सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राध्ति स्थान-दि॰ जैन पंचायती मदिर मरतपुर।

द्मार प्रतिसंव ११ । पत्र सक २४ । आव महि 🛠 ६ है इला। लेक्सल संव १६५२ । पूर्ण । बेष्टन सं० १८३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर मलवर ।

द्रुवार प्रतिसंव १२ । पत्र सव १२ । मा० १२ × ७ इचा लेव काल 🗴 । पूर्णा वेष्टन सं०२। प्राप्ति स्थान---दि० जैन तेग्हपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष--- ग्रागे वोडश कारण उद्यापन हैं पर अपूर्ण है।

६०६०. प्रति सं० १३ । पत्रस० ११ । ब्रा० १० x ४ इश्वाले०काल x । पूर्णा । वेष्टन सं० ३०४ । प्राप्ति स्थास — दि० जैन मग्रवाल सन्दिर उदयपर ।

विशेष---प्रशस्ति---

श्री ग्रमयनन्दि गुरु शील सुसागर । समति सागर जिन धर्म घरा ॥७॥

 $\mathbf{co}$ ६१. दशलकारण दातीचापन पूजा—सुधीसागर । पत्र स०२४ । ब्रा० १४५ इंच । सापा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रुंदी)

६०६२. दशलकार्ष वतीद्यापन. — × १ पत्रसं० १४ । बा० ११२/४४ इस्त । माया— सस्कृत । विषय —पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८६० प्रायाद सुदी ६ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १३४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर धजनेर ।

६०६३. प्रतिसं० २ । पत्रस० १० । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० १३५२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

**८०६४. दश लक्षमण व्रतोद्यापन** —  $\times$  । पत्र स० १२ । ब्रा० ११ $\frac{3}{6}\times$ ६ इव । भाषा- संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१३४६ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर भण्डार ।

विशेष--- लिखित बाह्य ए फौजूराम ।

८०६५. दशलक्षरण कतोद्यापन पूजा — म० ज्ञानभूषरण । पत्रस० ३७। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल × । ले० काल स०१८६ सावन मुदी ११ । पूर्ण । वेटन स०५६ । प्रास्ति स्थान—वि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--- भरतपुर के पचो ने करौली में प्रतिलिपि कराई थी।

 $\mathbf{c}_{0}$ ६६. दशलकास्य क्लोबायन पूजां — रह्यू। पत्र त० २६। प्रा०  $\mathbf{c}_{i}^{+} \times \mathbf{c}_{i}^{+}$  इचा भाषा— प्रमुख सः। तिषय-पूजा। १०कालः  $\mathbf{x}$ । त०काल सः० १८२२। पूर्णः। वंग्टन सः० १८२। प्राप्ति क्यांत— तिकी वेश प्रवादी। परिष्ठ सजदर।

विशेष--- १ प्रतिया भीर है।

ष्ट**०६७. दशलकारा वतोद्यापन**— × । पत्रस०३० । स्रा०१०<sup>5</sup> ×६६७ । भाषा-सस्कृत । विषय-पुना । र०काल ×। ले•काल स०१६४६ । ध्रपूर्ण । बेष्टन स०१४ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैसावा ।

**००६०. दश लक्ष्म्ए स्रतीद्यापन**  $\times$  । पत्रस०२५ । घा०१० $\times$ ६ इञ्च । भाषा हिन्दी (पर्यः) । विषय पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल स०१०५० भादवा सुरी १। पूर्णः । वेष्ट्रन स०६ । प्राप्ति स्थान – वि० जैन तेरह्मधी मन्दिर नैसाव ।

**०५६. दशलक्षरण ब्रतोद्यापन** -  $\times$  । पत्र सु०४६ । ग्रा० १०  $\times$  ६ इञ्च । माथा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । ले०काल स० १६५२ । पूर्ण । बेष्टन स० १६ । **प्राप्तिः स्थान** —दि० जैन प्रग्रवाल मन्दिर नैस्प्ता ।

प्रवास स्वास स्व

विशेष--- निली मानी कवरलाल ने निलाई घासीराम । चि० भवरीनाल भारवाडा ने श्रधवालों के मन्दिर में चढाई थी।

६०७**१. दशलक्षरा बतोद्यापन**— $\times$  । पत्रसं० १६ । झा० १० $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इख । मापा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ जीमान, **य**ंदी ।

८०७२. दशलक्षरा पूजा उद्यापन $-\times$ । पत्रसं०२१। घा०५ $\times$ १ दशः। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल $\times$ । ते०काल सं०१६४४ सावरा मुदी १४। पूर्णा वेष्टुन मं०२०६। प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष - धाचार्य विजयकीर्तिजी तत् शिष्य सदामुख लिपिकृत ।

८०७३. दशलकारा पूजा उद्यापन—  $\times$  । पत्र स० २३ । आ० १०३ $\times$ १ $\frac{1}{2}$  इस्व । भाषा— सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३३/३१ । प्राप्ति स्थान- वि० जैन मन्दिर पार्थ्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष--- मिति चैत्र मुदी २ भृगुवासरे वृन्दावती नगरे सुपावर्वचैत्यालये लिखतं स्वहस्तेन लिखतं विविवसन पठनार्थं स०१६१७।

६०७४. दशलक्षरा पूजा उद्योपन $-\times$ । पत्रस० ४। मा० ५ $^1_1 \times ^1_2 \times ^1_3$  इञ्च। मापा- सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वेष्टन स० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रृंदी)

५०७५. दशलक्षरा पूजाः—  $\times$  । पत्रतः ६। आ०११ $\frac{1}{2}$   $\times$ ५ इत्रः । साधाः संस्कृतः ।विषयः – पूजाः । र०कालः  $\times$  । ले०कालः  $\times$  । पूर्णः । बेष्टतः संग्रं २२६। प्रास्ति स्थान—वि० जैन प्रग्रवाल मन्दिर उदयपुरः ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

६०७६, दशलक्षरा पूजा — 👋 । पत्रसः ११। मा० १०५४ ६५ इञ्च । भाषा नास्कृत । विषय-पूजा । २० काल 🗴 । ते०काल सः० १०४० श्रावणः सुदी ६ । पूर्णः । वेष्ट्रन सः० १०४ । प्रास्ति ' स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान वृदी ।

८०७७. दश लक्षरा पूजा —  $\times$ । पत्र सं० १६ । आ० १० $\times$ ४ है इञ्च ; आया — सस्कृत । विषय — पूजा । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर । दबलाना (बंदी)

६०७६, दशलक्षेसा पूजा — × 1 पत्रस० १ । प्रा० ११ २ १ देखा । आया - यासत । विषय — पूजा । रक्ताल × 1 लेक काल × 1 पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन महिद विकास (द्वारी)

८०७६. **दशलक्षरा पूजा** — × । पत्रस॰ २८ । मा॰ ११×७ इरूव । भाषा हिन्दी (पदा)। विषय—पूजा । र०काल × । क्षे०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सक्षेतवास मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-दो स्पये तेरह धाना में खरीदा गया था।

 $\mathbf{c} \circ \mathbf{c}$  **१. वश लक्षरण पूजा**  $- \times$  । पत्र स॰ ४२ । घा॰ ११ $\times$ ५ इच्छ । याषा —संस्कृत । विषय—पूजा । रक्काल  $\times$  । ले॰काल सं॰ ११०३ । पूर्ण । वेष्टत स॰ ३१ । प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन तेरहतंथी संदिर दौसा ।

= ०६२ **. दशलक्षरण यूजा**---- × । पत्र सं० ४४ । भाषा-सस्कृत । विषय यूजा । र०काल × । ले**०काल** × । बपूर्णा। बेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पनायती मन्दिर भरतपुर ।

प्रवास क्षेत्र प्राप्त प्राप्त  $\mathbf{x} = \mathbf{x} + \mathbf{x$ 

**६०६४. दश लक्ष्मीक ग्रंग**— ४ । पत्र स० १ । ग्रा० १०४४<sup>2</sup>, इच । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्रा**प्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

्रक्ता स्वादमा पूजा विधान — × । पत्र सं० ६ । म्रा० १३ ४६ इच । भाषा —सस्कृत । विध्य-पूजा । २०काल × । ले०कान × । म्रपूर्ण । वेष्टनस० १६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर पादिनाथ वृदी ।

विशेष--- द से घाने पत्र नहीं हैं।

स्र-०म् ६. **द्वादश यत पूजा—देवेन्द्रकीति ।** पत्रस०१४ । द्वा० १००,४४२ इञ्च । मात्रा— संस्कृत । विषय-पूजा ंर० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वेष्टन स० ३७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर क्रजमेर भण्डार ।

**८०८७ द्वादश यत पूजा**—भोजदेव । पत्रस०१८ । प्रा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इन्छ । प्राया—सस्कृत । विषय-पूजा । रक्शल  $\times$  । लेक काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२८२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्राप्तिन-दिन स्थामी बुंदी ।

प्रवन्न द्वादश व्यतोद्यापन—× । पत्र स० १६ । प्रा० १२×५ इखा भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रुकाल × । ले०काल स० १८५६ कातिक बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० २६–१३ ।. प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायशिह (टोक)

विशेष - टोडारायसिंह में लिखा गया था।

- ६०६६. हावसांग पूजा  $\times$  । पत्र सं० ७ । धा० ५ $\times$ ६ $\}$  इंच । भाषा —संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर धजनेर मण्डार ।
- ष्क ८६०. दीपाविल महिमा जिनप्रमसूरि पत्र सं∘ २१। मावा नस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले॰ काल × । पूर्ण। वेष्टन सं∘ ६२३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।
- म०६१. बीक्षापटल— × । पत्र सं०७ । घा० ६×४ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय— विषान । र०काल × । के•काल स० १६२७ । पूर्य । वेष्टुनसं० २५८ । प्राप्ति स्थान—म० दि० ॐस मन्दिर धनमेर ।
- फ०६२ **दीक्षाविधि**  $\times$  । पत्र सं०३। म्रा०११ $\times$ ५ इन्त्र । साया-सम्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस**०**१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संदिर पाक्ष्वेनाथ चौगान बुंदी ।
- म**्ट**. **दीक्षाविधि** × । जनसं०१४ । मा०१० ×५ इन्त्र । माणा—सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल स०१४३४ ज्येष्ठ सुदी । पूर्ण । दे० स०१३ **। प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानो डीग ।
- ८०१४. दुखहरस्। उद्यापन—सराःकीति । पत्र सं० १। झा०१०४६ इखा । भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। २० काल ४ । ले० काल स०११३८। पूर्ण्। बेष्ट्रन स०५३१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वंगरपुर।
- फ**०६५. वेबपूजा** ×ा पत्रसं०४ । द्या० द × ५ हे इंच । सामा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ×ाले० काल । पूर्ण । वेष्टन स०६४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।
- ८०६६. **वेबयुजा**—×। पत्र स०१४। माषा—हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले॰काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं०१६६। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टोक)
- ८०६७ वेसपूजा— ४ । पत्रस०३३ । प्रा०१० x ४ इ.च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टुनस०४१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर तेरहपयी मालपुरा (टोक)
- म् ०६ म. वे**बपूजा** पत्रस॰ ११ । मा० ६ imes ६ इश्वः । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । ए०काल imes । ले०काल imes । पूर्ण । बेपून स॰ ३७६–१४२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर ।
  - विशेष--हिन्दी ग्रथं सहित पूजा है।
- ५०**६६. वेषपूजा भाषा—पं० जयचन्द छावडा** । पत्रसं० २४। भाषा-हिन्दी पद्य **।** विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स०१६१६ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४६। **प्राप्ति स्थान—दि० जै**न मन्दिर दीवानजी मरतपुर ।
- **६९००. वेबपूजा माधा-देवीदास ।** पत्र सं०२३ । मा०१२ है×६ है इथा । भाषा-हिन्दी प**छ ।** विषय-पूजा । र०काल स० × । ले० काल × पूर्ण । देष्टन स०४६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहसंगी मन्दिर दौता ।

विशेष---पत्र २१ से दशलक्षण जखडी है (शपूर्ण)।

- **८१०१. वेदशास्त्र गुरु पूजा—द्यानतराय** । पत्रसं०६ । मा०१०ई४ ५ इञ्च । भाषा−हिन्दी विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०११४३ । **प्राप्ति स्थान**—प्र०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।
- ं ६१०२. वेवगुदशास्त्र पूजा जयमाल भाषा $-\times$ । पत्रतः २०। म्रा० १२ $\frac{1}{2}$ ४७ $\frac{1}{6}$  इन्त । म्राग-हिन्दी पद्य । विषय--पूजा । र०काल  $\times$ । ते०काल स० १६० । पूर्ण । वेष्ट्रन स०११०। प्राप्तिः स्थान- वि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।
- **६ १०३. वेव सिद्ध पूजा**  $\times$  । पत्र स॰ १४ । म्रा० १२  $\times$  ४३ हश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ७१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पाण्वेनाथ मन्दिर इत्तरसन्द्र (कोटा) ।
- **८१०४. धर्मचक पूजा-ख**रुगसेन । पत्रस० ३१। ग्रा०११ 🗴 ५ इच । भाषा-सम्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले**०काल** स० १८२३ फागुन बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १० । **प्राप्ति स्थान** —हि० जैन पार्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष-- प० भागचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

द्धरुप्, धर्मचक पूजा—यशोनन्वि । पत्र त० ४३ । ग्रा० ६४४ हे इला ।भागा सस्कृत । विषय —पूजा । २०काल ४ । ले०काल स०—१६१६ माघ बुदी ७ । पूर्ण । बेब्रुन त० ३७ । प्रास्ति स्थान --वि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष--मिट्टूराम अग्रवाल ने यह ग्रथ महादाम के लिये लिखाया था।

**८१०६ धर्मजक पूजा**— ४ । पत्रस०२ । ग्रा० १० र्रै ४४ द्वा । ग्राधा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल ४ । ले० काल स०—१८१८ । पूर्ण । वेष्टन म०३७१ । **प्राप्ति स्थान** -- ४० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६२०७. धर्मस्तम - बर्द्धमानसूरि । पत्र स० ३७ । भाषा -- सन्कृत । विषय  $\times$  । रुकाल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १९६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरनपुर ।

विशेष—इत्याचार्य श्री वर्डमानम्रिङ्नं ग्राचारदिनकरे उभयधर्मन्तभे बलिदान कीतिनो नाम षटित्रशत्मो उद्देश ।

- **६१०६. धातकीखड द्वीप पूजा**— $\times$  । पत्र म० २० । ब्रा० १२ $\times$ ५ $^{1}$  इ**थ** । मापा—संस्कृत विषय —पत्रा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । बेप्टन स० ६३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।
- द१०६. ध्वजारोपर्गाविधि × । पत्रस० ७। ग्रा० द×६६ दुवा । साथा-सम्हता । विषय-विधान । र०काल × । ते•काल स० १६४६ । पूर्ण । त्रेष्टन म० १४३७ । **प्राप्ति स्थान**-४० दि० जैन सदिर ग्रजमेर ।
- **८११० ध्वजारोपएाविधि** X । पत्रसं० १२ । आ० १२ X ४ इ**चा । भाषा**-संस्कृत । विषय-विषात । र०काल X । लेक्काल X । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३००-११७। **धारित स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो ना हु गण्युर ।

- **६१११. व्यक्तारोपरगविधि**— $\times$  । पत्रस० १०। ग्रा० ११ $\times$ ५ ६७ । माथा संस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०२० । प्राप्ति स्थान -दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।
- **६११२. ध्वजारोपर्गाविध**  $\times$  । पत्रस०१६। प्रा० ६ $\times$ ६३ इन्छ । भाषा-संस्कृत । विषय—विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१६४७ । पूर्णं । वेष्ट्रन स०१६१ । प्रा**प्ति स्थान**—वि जैन मन्दिर प्रिमनन्दन स्वामो बुदी ।

विशेष---लखमीचन्द सागलपूर नग्न वालो ने प्रतिलिपि कराई थी।

- **६११३. ध्वजारोपराविध**  $\times$  । पत्र स $\circ$  ३। घा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इन्छ। भाषा—सन्छत । विषय—विधान । र $\circ$ काल  $\times$  । क्षे $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  जैन मंदिर बोरसली कोटा ।
- **८११४. नवकार पूजा**  $\mathbf{x}$  । पत्र स० २२ । ग्रा० १० $\mathbf{x}$ ५ इ.च.। भाषा –सस्कृत । विषय पूजा । र० काल  $\mathbf{x}$ । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । बेष्टनसं० १३३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नागदी वृंदी

विशेष- धनादि मत्र पूजा भी है।

**६११५. नवकार पंतीसो पूजा** $-\times$  । पत्रस्र०२ । प्रा॰ ६ $^{1}$  $\times$ ४ $^{1}$ दञ्च । भाषा-सस्क्रत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । से०काल स० १६१७ माघ बुरी १० । पूर्ण । बेप्टन स० ४२१ । **प्राप्ति** स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष - - लिखित चिमन सागरेगा । गामोकार मत्र में पैतीस ब्रक्षर है और उसी बाधार पर रचना की गर्धी है

**८११६. नवकार पैतीसी पूजा**— $\times$  । पत्रस०२१ । आ०११ $\xi$ ×५ इच । भाषा-मस्कृत । विषय—पूजा । रब्बान  $\times$  । तं ० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०३५५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनन्दन स्वामी बुदी ।

**८११७. नवकार पैतीसी व्रतोद्यापन पूजा** — सुमितिसायर । पत्र स०१४ । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा। रुकाल  $\times$  । ले० काल स०१८१६ प्रापित स्थान — दि० जैन पचायनी मदिर भरतपुर ।

**८११८. नवग्रह पूजा**— $\times$  । पत्रस्क ५ । धा० १११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स० ३६५ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जॅन मदिर प्रजमेर भण्डार ।

विशेष--रिव सोम एव राहुकेतु ग्रादिनवप्रहो केग्रानिष्टु निवारण हेतु नो तीर्थंकरोकी पूजाए है।

**८११६. नवग्रह पूजा** — × । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ इ**च । भाषा** — सस्कृत । विषय – पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं०३५६ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर भण्डार । दरेर०. नवग्रह पूजा—× । पत्रकः ४ । मा० १०३ ४ ४ इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय— पूजा । र०काश्र ४ । ले० काल स० १८८० सावसा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर सजसेर ।

६१२१. नवग्रह पूजा—  $\times$  । पत्र स॰  $\forall$  । झा॰ १० $\frac{1}{6}$   $\times$  ४ हन्व । भाषा—संस्कृत । विषय- पूजा । र०काल  $\times$  लेल काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स॰ २७६ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर पार्थनाथ चीगान बुदी ।

द १२२. नवप्रह पूजा। पत्र स०७। आ० १० $\times$ ४ है द्वा। भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा। ए० काल  $\times$ । ले०काल स०१ ६२२। पूर्ण । बेष्टन सं०१४७/५४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

द १२३. नवशह पूजा। पत्र सं १४ । घा० १०३ ४४ हुँ इश्व । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल ४ । ले०काल स० १८८६ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६०/४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

**८१२४. नवग्रह पूजा**— $\times$  । पत्र स०७ । मा० ५ $\times$ ६२ इच । माषा—सस्त्रत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टन स० ३११–११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० भैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

विशेष--पद्मावती जाप्य भी है।

द**१२५. नदग्रह पूजा**— × । पत्रत० ६ । आरा० ११ ४७ डच्च । भाषा–सस्कृत । विषय— पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ब्रुदी ।

**६२२६. नवग्रह पूजा**—  $\times$ 1 पत्र सं० ३। प्रा० ६ $\times$ ३ इञ्च । भाषा-सरङ्ग । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २६४-३५० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मभनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१२७. प्रति सं० २ । पत्र स०३ । ले॰काल  $\lambda$  । पूर्ण । वेष्टनम० २६४,३६१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सम्बनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**८१८. नवगृह पूजा**  $\longrightarrow$  । पत्रस० ४। मा० १२  $\times$  प्रृंदि इन्ता । साम  $\longrightarrow$  सास्कृत । विषय - पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पन्नायती मिदर करीली ।

६१२६. नवग्रह पूजा — x । पत्रसं० १३ । घा० १२ x६ इञ्च। भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल x। ले०काल x। पूर्ण। वेष्टन स० ६४। **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन पचायती मन्दिर दुनी (टोक)

विशेष-शातिक विधान भी दिया हुआ है।

**८१३१. नवप्रह पूजा**— $\times$  । पत्रसं० ७ । ग्रा० ६ $\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इ**थ** । **नाषा**-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल $\times$  । ने० काल स० १६४ $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १७६ (ग्र) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लंडेलवाल पंचायती मन्दिर ग्रलवर ।

द १३२. नवप्रह पूजा—सनसुखलाल । पत्रसं∘ १६ । प्रा० चै×७ इजा भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १८७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर फतेहदूर केलावाटी (सीकर)

६१३३. प्रति सं०२। पत्र स०१६ । आ०११imes७ ६%। लेक्कालimes। पूर्एं। बेहुनसं०१७४। प्राप्ति स्थान— दि० जैन खंडेलवाल मदिर उदयपुर।

द १३४. नवग्रह पुका— × । पत्र स० १७ । मा० १० × ४ ६ व्याभागा—हिन्दी। विषय— पूजा। रक्काल ×। ते० काल स० १६३४ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण। बेष्टन स० २०३। प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन पत्रिक्ट प्रजोपेर।

दश्यः नवप्रह पूजा  $-\times$  । पत्रस० ६ । प्रा० १०  $\times$  ५ $\xi$  इखा भाषा-हिन्दी पद्य । विषय- पूजा । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिरिर पार्थनाथ चौगान बूरी ।

विशेष--गृटका साइज मे है।

**६२३७ नवयह पूजा** —  $\times$  । पत्रस० १० । स्रा० ७ $\times$ ४ इ.ख.। भाषा-हिन्सी पछ। विषय — पूजा। र०काल  $\times$ । ले० कात्र  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन सं० १८६ र। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायमिह (टोक)

 $\mathbf{x}$  १३८. नवप्रह प्ररिव्द निवारस पूजा $\mathbf{x}$  । पत्र स० ४१ । घा० ६ $\mathbf{x}$  ६) दश्व । माया-हिन्दी पत्र । विषय नुजा र० काल  $\mathbf{x}$  । तेण्काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ ) प्राप्ति स्थान—दिव जैन कहेलवाल वचावती प्रदिष्ट कावत्र ।

विशेष -- निम्न पुजाको का कौर सम्रह है --

नंदीश्वर पूजा, पाश्वेनाय पूजा, रत्नत्रय पूजा। (सस्कृत) सिद्धचक पूजा, शीतलनाय पूजा। सुगन्य दशमी पूजा, रत्नत्रय पूजा।

**६२३६. नवप्रह पूजा विधान**—  $\times 1$  पत्रस० १०। प्रा॰ ६ $\frac{2}{8} \times 4$  ६ खा आषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । रक्शल  $\times$  । ते०काल सं० १६११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१२ । **प्राप्ति स्था**न— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चीगान चू ही ।

**६१४०. सबग्रह विधान** —  $\times$  । पत्र सं०२०। ग्रा० ५ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इ.च.। प्रापा-हिन्दी पद्यः। विध्य-पूजाः। र०कालः  $\times$  । ले० काल सं०१६५७। पूर्णः। विष्टनः स०१६०। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वंदी।

६१४२. म्हावरण पाठ मण्या—बुध मोहन । पत्रमं० ४ । घा. १०४४ $^{3}$  इव । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले.काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (शेक)

विशेष---प्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है---

धी जिनेन्द्र प्रभिषेक पाठ सस्कृत मावा सकतकीर्ति मुनि बिष्य रच्यो घरि जिनमत द्वासा। ताको प्रयं विचारि घारि मन में हुलसायो। वृष्य मोहन जिन व्हवन देसमाया में गायो।

इति भाषा न्हावरा पाठ सपर्रा ।

**६१४३. नाम निर्माय विधान**  $--\times$  । पत्र स० ११ । ग्रा० १० $\times$ ५े, इञ्च । भाषा —िहन्दी ग्रह्य । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर)

विशेष - दश बोल ग्रीर दिये है।

**८१४४. निस्य पूजा**— $\times$  । पत्रस० २० । ब्रा० १२imes६ इन्छ । भाषा-सम्हन । विषय-पूजा । र०काल imes । लेकाल imes । पूर्ण । बेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन छोटा मदिर वयाना ।

**८१४५. नित्य पूजा** —  $\times$ । पत्रस० ६२। ग्रा॰ ६ $\frac{1}{2}$   $\times$ ६ इञ्च । भाषा-सरहृत । विषय-पृजा । र०काल  $\times$ । ले० काल स० १६५४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७। प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर व दी ।

**५२४६. निरय पूजा**  $-\times$  । पत्र स० २०। ग्रा० ६ $\times$ ४, इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १७२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन सदिर दीवानजी कामा ।

**६१४७. निरस पूजा** $\times$ । पत्रस० १२ । झा० ११  $\times$  १ $\frac{1}{2}$  इख । भाषा-हिस्सी पद्य । विषय- पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । बेष्ट्रन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपयी मन्दिर मालपुरा (टोक)

दश्यद्र. नित्य पूजा—× । पत्रस० २ से १२ । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय—यूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टुन स० ११ : प्राप्ति स्थान —दि० जैन तेरहाथी मंदिर वसवा ।

द**१४६. नित्य पूजा**— × । पत्र स॰ ५०। ग्रा॰ द×५ इला । मावा -हिन्दी । विषय-पूजा । र॰ काल × । ले॰काल × । पूर्ण । वेटून स॰ १८० । **प्राप्ति स्थान** —दि॰ जैन मन्दिर बंदी ।

**६१५०.** निरं**य पूजा** —  $\times$  । पत्र त० ३३ । घा० १ $\times$ ६ इ.च. भाषा — हिन्दी-संस्कृत । विध्य — पूजा । र०काल  $\times$ । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बुदी ।

**६१४१ निरयपूजा पाठ— फ्रांशाचर।** पत्र सं०२०। घा०११६ै X७३ इन्छ। भाषा– संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण । वेष्टन स०१४१०। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपर।

विशेष — मूल रचना में ग्राणाधर का नाम नहीं है पर नैस्पक ने ग्राणाधर विरचित पूजाग्र थ ऐसा उल्लेख किया है।

- **६१४२. नित्य पूजा पाठ**— $\times$  । पत्र स० ६-२४ । धा० ६ $\times$ ६ इच्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले**०काल**  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टन स० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।
- **८१४३. निरय पूजा पाठ संप्रह**— $\times$ । पत्रस० २२। आ०६ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इचा। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टनस० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रोटा मन्दिर बयाना।
- द्र**१४४. निरुष पूजा माथा—पं० सदामुख कासलीवाल**—पत्र सं० ३१। झा० १३१% स्टै इक्डा भाषा-हिन्दी गद्या विषय-पूजा I र०काल स० १८२१ माह मुदी २। से०काल स० १६६६ कार्तिक बुदी दाापूर्णा वेष्टन ग० ४६१। **प्राप्ति स्थान**ंदि० जैन मन्दिर लज्कर, जयपुरा
- **८१४५. प्रतिसं० २** । पत्रस० ३६ । म्रा० ११४ ७ इच्च । ले०काल स० १६४१ । पूर्सा। वेष्ट्रनस०१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर, तुदी ।

विशेष--नयनापुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

द्धर्**६. प्रति स० ३।** पत्रस• ३६। या० १२×५३ डञ्च । ले॰काल सं० १६२८ भादवा बुदी ८ । पर्गा । वेकनसं० १। प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

**८१५७. प्रतिसं० ४**। पत्रम० ४० । प्रां० ११३ ४६ दश्व । ने०कान म० ११४० । पूर्ण । बेष्टुतस्क ७४ । **प्राप्ति स्थान-दि**० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

द्धर्भद्धः प्रति स० ४ । पत्रस० ४६ । ब्रा० १० ॄैं ४ ६ इश्वा। ले० काल स० १९३६ उबेस्ठ मुदी ७ । पूर्णा । बेब्रन स० ३६/६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर वटाबीस पथीदीमा ।

- दश्यहः प्रतिसं० ६। पत्रस० ३४। झा० १२३ × ८ इञ्च । ले०काल म०११४६ । पूर्या । वेकनस० ११४ ६४। **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।
- ६१६०. निस्य पूजा भाषा— × । पत्रस०१५ । ग्रा०१०३ ×५ इखा। भाषा-हिन्दी पद्या विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस०४७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बडाबीस पथी दौसा।
- **८१६१. निरय पूजा पाठ संग्रह**  $\times$  । पत्रस० ६० । आ० ११ $\stackrel{7}{\downarrow}$   $\times$ ६ इन्त्र । माथा— हिन्दी, सन्द्रन । विषय—पूजा पाठ । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३८-५२ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

दश्दरः निश्च पूजा वचनिका—जयमन्द छावडा। पत्रसः ४२। पा० पर्टु ४७ हेस्य। सावा—हित्ती गद्याः विषय—पूजा। र०काल ४ । ले० काल सं० १६३४। पूर्णः। बेष्टनसं० १३६। पादिक समानः—हित्र केंद्र प्रवाल यंचायती प्रतिर प्रवारः।

= १६३. निस्य पूजा संग्रह — × । पत्र सं०७४ । ग्रा० १४१२ है इ.च.। भाषा-संस्कृत हिन्दी । निषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०१४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर मलवर ।

म १६४. नित्य नियम पूजा-- × । पत्र सं० १४ । मा० १० ई.४७ है इञ्च । नाया-संस्कृत । हिन्दी । विषय पूजा । र०काल । ले० काल ४ । स० १६४२ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । आस्ति स्थान--दि० जैन पार्थनाथ मंदिर चौगान बुंदी ।

विशेष-श्री कृष्णलाल भट्ट ने लोचनपुर में लिखा था।

**८१६५. निरय नियम पूजा**— $\times$ । पत्रस॰ १४। ग्रा॰ १२  $\times$  ७ इश्व। भाषा—िहन्दी-संस्कृत । विषय - पूजा । र० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । ग्रपूर्णं । बेष्ट्रन सं० १३३। प्राप्ति स्थान—िद० जैन छोटा मदिर जयाना ।

विशेष-प्रतिदिन करने योग्य पुजाओं का संग्रह है।

**८१६६. निरय नियम पूजा** —  $\times$ । पत्र सु० ४३। प्रा० १२ $\times$ ८ इ.ख.। गाया –सस्कृत हिन्दी। विषय — पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वेष्टन सं० १०२। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी।

विशेष-४३ से आगे पत्र नहीं है।

६१६७ निस्य नियम पूजाः —  $\times$  । पत्रस० १६ । धा० ६ $\frac{1}{5}$  $\times$ ५ $\frac{1}{5}$  स्था । भाषा हिन्दी – सस्कृत । विषय पूजा । ए०काल  $\cdot$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ५४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पार्वताथ मदिर इन्दराइ (कोटा) ।

**८१६८. निस्य नियम पूजा** —  $\times$  । पत्रस० ५०। म्रा० १२  $\times$  = इला। भाषा संस्कृत । विषय — पूजा। र०काल  $\times$  । ले०काल 4० १६५३। पूर्ण। वेष्टन स० २३६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पास्वेनाय मन्दिर इन्दरमङ (कोटा)।

विशेष -- व्रतो की पृजाएं भी है।

६१६६. निरम पूजा $-\times$ । पत्र म० ४८ । म्रा० ११ $\times$ ४ $^{\circ}$  इ च । माषा-सस्कृत-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल  $\times$ ।। ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० ११२। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेलाबादी (सीकर)।

६१७०. निस्य नियम पूजा— $\times$  । पत्र स॰ १०। घा॰ ११  $\times$  ४ $^1_{y}$  इश्वः । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र॰ काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स॰ ५६२ । प्रास्ति स्थान – दि॰ जैन मन्दिर सकर, जयपुर ।

६९७१. निरम नियम पूजा-imes। पत्र सं० २४। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०कान imes। ले॰ काल imes। पूर्ण। वेष्टन स॰ २६। प्राप्ति स्थान-पदि॰ जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष--मायाराम ने प्रतिलिपि की थी।

दश्क ३. नित्य नैमिलिक पूजा— × । पत्रसं० १०६ । घा॰ ७×७ इन्छ । जाणा-संस्कृत । हिन्दी । विषय-पूजा । ले०काल सं० १६६⊏ । पूर्ण । बेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पावर्वनाथ मन्दिर चीगान, (बंदी) ।

विशेष--वजरगलाल ने बुदी में लिखा था।

**८१७४. निर्दोध सप्तमी जल पूजा---त्र० जिनदास** । पत्रसं० २१। प्रा०१०१४ ६च्च । भाषा---हिन्दी पद्य । विषय---पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६० । प्रास्ति--स्थान-----दि० जैन प्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

**८१७५.** निर्वेषि सप्तमी स्रतोद्यापन $-\times$ । पत्रसः १६। याः ११×४ इत्र । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल $\times$  । ले० काल सं०१७४६ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४३५/३५४ । प्राप्ति-स्थान-दि० जैन स भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**८१७६. निर्वास कांड गाथा व पूजा— उदयक्तीसि—**पत्र मं॰ ४। प्रा॰  $\pm \times \frac{3}{2}$  इक्त । भाषा–प्राइत, सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६। प्रास्ति स्थान—ंद०जैन मन्दिर फतेहनूर शेलावाटी (सीकर) ।

दश्**७. निर्वागकाण्ड पूजा** - × । पत्रस्य द। ग्राप्त १२<sup>९</sup> × ७<sup>न्</sup> इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स०१८७१ भारवा बुरी ७ । ले० काल । पूर्णे । वेष्ठन सं०४१८ । **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष — श्रंत में भैथ्या भगवती दास कृत निवार्ण काण्ड भाषा भी है। इस मण्डार में ३ प्रतियां भौर भी हैं।

दश्यः निर्वास्य कल्यास्य पूजा— × । पत्रसं∘ १४ । घा० ११ × ४ इत्य । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ल०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३४३ । प्राप्ति स्थान— म० वि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष-भगवान महाबीर के निर्वाण कल्याणककी पूजा है।

दश्कर. निर्वाशासित्र पूजा — ×। पत्र स०१२। ग्रा० स्ट्रै ४६ हुइच। भाषा-हिन्दी। विषय~पूजा र रकाल स०१८७१ भारो सुरी १। लेकाल स०१८८६ जेठ बुरी १०। पूर्ण। बेष्टन स०५६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मदिर करीली।

विशेष---नानिगराम ग्राप्रवाल से देवीदास श्रीमाल ने करौली में लिखवाई थी।

**८१८०. निर्वार्ग क्षेत्र प्**जा—  $\times$ । पत्र स०१७ । सा० ७५ ँ  $\times$  ५) इ.च.। माण-हिस्दी प**ध** । विषय—पूजा र०काल  $\times$ । ले० काल स०१८८५ चंत वदी ६। पूर्णः। वेष्टनस०३६। **प्राप्ति स्थाल** – विश्व चैन सौगानी मन्दिर करोली।

विशेष--लल्ल्राम प्रजमेरा ने प्रलवर में प्रतिलिपि की थी।

- ८१८१. निर्वास क्षेत्र पूजा- ४ । पत्रस० १२ । सा० ११ ४ ४६ इञ्च । माया-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८०१ । ने०काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२६ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मदिर वडा बीस पयी दौसा ।
- **८१८२. निर्वास्य क्षेत्र पूजा** $\times 1$  पत्रस**्ध**। प्राप्त ६ इस्य । भाषा-हित्ती। विषय-पूजा। २०काल  $\times 1$  ने०काल स०१८२२ आषाढ बुदी ७। पूर्ण। बेष्ट्रन स०२६। प्राण्ति— स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा राज०।
- दश्द ३. निर्वाशः क्षेत्र पूजा— ४ । पत्रस० ११ । मा॰ ११४७ ३ इन्छ । भाषा-हिन्दो । विषय-पूजा । र०काल सं०१८७१ । ले०काल स०१६६६ । पूर्ण । बेष्टन स०६२४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।
- **८१८४** निर्वास क्षेत्र पूजा  $\times$ 1 पत्र स० १६ । आ०१३ $\times$ ४ है इ.स. । माया—हिस्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८७१ मादवा सुदी ७ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६२४ । प्रास्ति—स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।
- ६९८५. निर्वाश क्षेत्र मंडल पूजा $-\times$ । पत्रस० ४४ । बा० १२  $\times$  ४ $\frac{1}{4}$  इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । २०काल स० १६१६ कालिक दुदी १३ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १०३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।
- **८१८६. निर्वास क्षेत्र मण्डल पूजा**  $--\times$  । पत्र सं० २२ । प्रा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$   $\chi^2_{y}$  इत्त । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६४ । प्राप्ति स्थान—- दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।
- दश्तः निर्वाण मंगल विधान जगराम । पत्रस० २६ । प्रा० १३ ४४ ) इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल स०१८४६ । ले० काल स०१८७१ पूर्ण । बेष्टनस० ११४ । प्राप्ति – स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।
- **८१८म. प्रतिसं० २** । पत्र स॰ ३६ । प्रा॰ ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इख । ले० काल स० १८८६ भादी मुदी १२ । पूर्णा । बेहन स॰ ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहथवी मन्दिर मालपुरा (टोक) ।

विशेष-पत्र ३४ से ग्रागे श्रीजिन स्तवन है।

- **८१८६. प्रतिसं∘ ३ । पत्रस**०२२ । झा०६र्¦×६६ च । ले०काल स० १६४४ । पूर्ण । बेष्टन स०२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बूदी ।
- क्ष १६०. निन्द संगल विधान—imes । पत्रस॰ न । सा॰ १०imes६ इंब । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र॰काल imes । ते॰काल imes । पूर्णः । वेष्टनसं॰ २१५-११७ । प्राप्ति स्थान—म॰ दि॰ जैन संदिर कोटडियो का द्वंगरपुर ।
- **६९६१. नदीरवर जयमाल**—X। पत्रसं० २। प्रा० १०३ X ४ इच । माया-प्राकृत । विषय-पूजा । रक्काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ६२४ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर स्थानेर ।

६२६२. नंदीश्वर जयमाल—  $\times$ । पत्रमं० ७ । म्रा० पहें  $\times$ ४ हें इवा । माषा-प्राकृत । विषय-पुत्रा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १३२४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर मजमेर भण्डार ।

विशेष---प्रशन्ति संस्कृत टीका सहित है। अप्टाह्मिका पर्व की पूजा भी है।

- **६१६३. नंदीश्वर द्वीप पूजा** x । पत्रसं० १६ । आषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल स॰ १-७६ कार्तिक बुदी ४ ।ते० काल स॰ १६४१ । पूर्ण । बेष्टनस॰ ७/३३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपर ।
- **८१६४. नंदीस्वर द्वीप पूजा**  $\times$  । पत्रस० ७३ । प्रा॰  $\times$  । माया । विषय-पुजा । र०काल  $\times$  । नेक्ताल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १७० । प्राप्ति स्थान दि॰ जैन मन्दिर फतेहपुर क्षेत्रावाटी (मीकर)
- **८१८५. नंदीश्वर द्वीप पूजा** $--\times$  । पत्रस $\circ$  ११ । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल स $\circ$ १८६० । पूर्ण । वेषृत स $\circ$ २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  जैन तेरहपयी मन्दिर वसवा ।
- **८१८६. नंदीश्वर द्वीप पूजा**— $\times$  । पत्र स० ५२ । द्वा० ७६ ४४) इन्त । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५०/७८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भावना (राज०)
- दर्धः नदीश्वर द्वीप पूजा—× । पत्र स० १४ । भाषा-हिन्दी (पदा)। विषय—पूजा । र•काल स० १८६६ । ले०काल स० १८८० । पूर्ण् । वेट्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपयी मन्दिर वसवा ।

विशेष-- वीर नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

- **६१६ त. तदीश्वर द्वीप पूजा उद्यापन**  $--\times$  । पत्र स० १०। ब्रा० ६ $\frac{1}{2}\times$ ६ $\frac{1}{2}$  दवा । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १७३०। पूर्ण । बेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पाध्वेताय मन्दिर चौगान बूंदी ।
- **८१६६ नंदीश्वर पंक्ति पूजा**—स॰ ग्रुसचन्द्र। पत्रस॰ ४-२२। घा॰ ११४४ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । से॰काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रनस॰ २८०,३४७ । प्राप्ति स्थान— वि॰ जैन सभवनाय मदिर जरवपुर ।
- ६२००. नन्बीश्वर पंक्ति पूजा $--\times$ । पत्रस०६। भाषा--स $\epsilon$ हतः। विषय-पूजा। र०काल $\times$ । से०काल $\times$ । पूज्ं। वेष्टनस०४५३। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर।
- ६२०१. —नदीस्वर पक्ति पूजा— $\times$  । पत्र स॰ ६ । प्रा॰ १० $\times$ ४ इञ्च । भाषा सरकृत । विषय—्यूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स० २७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मणवाल मन्दिर उदयपुर ।
- ५२०२. नदीस्वर पंक्ति पूर्णा $\times 1$ पत्र सं० ११। मा० १० $\times$ ७ इन्छ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूत्रा । र० काल  $\times$ । ले० काल सं० १६०१ म्रास्ति ह्यान-वि० जैन तेरहरंथी मन्दिर दौसा ।

६२०३. नंदीस्वर पंक्ति पूराा— × । पत्र स० १३ झा० १२×४ इ.च । सामा — सस्कृत । विषय-पुत्रा र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०३५३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर स्रोतनस्त स्वामी वंदी ।

६२०४. नदीश्वर पंक्ति पूजाः  $\times$  । पत्रतः  $\times$  । प्रां० ११ $\times$ ४ ६७ । भाषा-स स्कृत । विषयः -पूजा । र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०३६० । प्राप्ति स्थानः -भ० दि० जैन मन्दिर खबसेर ।

६२०५. नंदीक्ष्वर **सतीद्यापन**— × । पत्रस० ४ । घा० १५ × ४ इच । माथा-संस्कृत । विषय-पूषा । र०काल × । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टुन सं०५१३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कीटडियों का इंगरपुर ।

६२०६. नदीश्वर द्वीप पूजा— × । पत्रस॰ १०। घा० १०१ × ४१ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल सा०११०५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थवनाथ चौनान बृंदी ।

दरु७. नंबीश्वर पूजा—टेकचन्व । पत्र सं० ३६। प्रा० १२× द इश्वः। भाषा-हिस्सी पद्यः। विषय-स्तोत्रः र०काल स० १८८५ सावन मुदी १० । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टन स १२६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

क्द२० फ्र. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४१ । बा० १२३  $\times$ ६३ इ.च । ले•काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १०६ । प्राप्ति स्थान  $\sim$  भ० दि० जैन ब्रह्मनाल मंदिर उदयपुर ।

६२०६. प्रति सं० ३ । पत्रस० ४७ । प्रा० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4}$  इचा । ले०काल स० १६०४ सावस्य सुदी ६ । पूर्यो । लेपून स० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन नेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

=२१०. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४३ । प्रा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इख । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स० ५०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गएएर ।

दरे१. नंदीश्वर पूजा — डॉल्राम । पत्र स० १८ । घा० ११२ॄ ४७ इश्व । भाषा हिन्दी । विषय – पुजा । २०काल स० १८७६ । ले०काल स० १६४१ । पूर्ण । वेहन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन लडेनवाल मन्दिर उदयपुर ।

स्२१२. प्रति सं०२ । पत्रस०१४ । मा० १२ ¦ ४६ इख । ते०काल स०१६३४ । पूर्ण । बेष्टनसं०१७७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सहैलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२१३. प्रतिसं० ३ । पत्र स $\circ$  २ । घा० १२ $^{\circ}_{i}$ imes६ इत्य । ले॰काल imes । पूर्ण । बेस्टन सं $\circ$ १७६ । प्राप्ति स्थान — दि $\circ$  जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-धाननराय कृत है।

६२१४. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १४ । झा० १२ ×७३ इ.स. । ले∘काल स० १६१७ । पूर्ण । बेष्टुन सं० १२६ । प्राप्तिःस्थान—दि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर् ।

६२१४. प्रति सं० ४ । पत्रतः १४ । ले॰काल 🗴 । पूर्णः । बेष्टुनसं० १४६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन सदेलवाल मन्दिर उदयपुर । क्द**२६. प्रतिसं० ६** । पत्रसं० २४ । घा० १० ४ ६५ इत्य । से**०काल** सं० १६६२ । पूर्ण । बे<del>हत सं०</del> १३५ । **प्राप्ति रूपान**—दि० जैन संडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष-पानेट के बाह्यण किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

दरश्७. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० १६ । मा० १२३ ४६ है इ.च.। ले० काल सं० १६८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७ - २७ । आफ्टिस्स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर ।

५२१६. संदीक्ष्यर पूजा— रत्नतंषि । पत्र सं०१६ । मा० ६ $\frac{1}{7}$  $\times 1_0^2$  हुन्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना वंदी ।

दर्ह संवीक्ष्यर पूजा—  $\times$  । पत्र सं०१२ । प्रा०११  $\times$ ६ इ.स. । माया—संस्कृत । विषय- पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०३५७ । प्रास्त्रि स्थान— म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६२२०. नदीश्वर पूजा —  $\times$  । पत्र स० ४ । ग्रा० १० $\frac{1}{4}$   $\times$  ५ इचा । साया-प्राकृत-सम्कृत । विषय-पूजा । रक्ताल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१८७७ । प्रास्ति स्थान — भ० दि० जैन सन्दिर प्रजनेर ।

 $\mathbf{a} \sim \mathbf{r}$  , **गंदीस्वर पूजा**  $\rightarrow \mathbf{x}$  । पत्रक २ । आ० १२ $\times$  ४  $^2$  इंच । आषा – सस्कृत । विषय – पूजा । र० काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बैष्टन सं० ११ । आफ्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर धादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक) ।

द२२२. **नंदीश्वर पूजा**—×। पत्रस**०७। प्रा०१०**×५ इ.ख.। माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स०१६२१ मगसिर बुदी १४। दूर्ण । बेष्टन सं०२६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबताना बुदी ।

विशेष-- मुरोज नगर मे पाम्बंनाथ चैंत्थालय में प्रतिलिपि हुई थी। पं० श्रालमदास ने जिनदास के पठनाथं प्रतिलिपि की थी।

**८२२३. नंबीश्वर पूजा**— $\times$  । पत्रस**०१** । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । क्रुणं । बेष्टन सं०६२७ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

६२२५. नंबीश्वर पूजा— 🗙 । पत्रसं० ६०। झा० १०४७ इञ्च। माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल 🗴 । लेकाल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन सं० ३६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

=२२७. **लंबीस्वर पूजा विधान** =  $\times$ 1 पत्र सं० ४४ । धा० ११३  $\times$  = रच । भाषा सस्कृत । विध्य-पूजा । र० काल  $\times$  । केंप्रकाल स० १६३४ सावस्य बुदी ४। पूर्ण । वेष्ठन सं० ४६। प्रास्ति स्थान = दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायॉसंह (टोक) ।

विशेष ---इस पर बेष्टन संख्यानही है।

स्२२ स. नंबीस्वर द्वीप उद्यापन पूजा — × । पत्र सं० १७ । म्रा० स्४४ इत्व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८५७ चैत बुरी ७ । पूर्ण । वेच्टन स० ७१-४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर टोडारापसिह (टोक) ।

विशेष-प० शिवजीराम की पुस्तक है तक्षकपूर मे प्रतिलिपि की गयी थी।

च२२६. नन्दीश्वर द्वीप पूजा—पं० जिनेश्वरदास । पत्रस० ६७ । मा०१३ ४ ८ ६ वा भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल ४ । ले० काल सं०१८८१ । पूर्ण । बेष्टनसं०४८/१०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

=२३०. **संदीश्वर हीय पूजा**—लाल । । पत्रसः ११ । ग्रा० १०×६) इश्व । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपशी मन्दिर नैशवा ।

द**२३१. नन्दीश्यर द्वीप पूजा**— विर**धीसन्द ।** पत्रसं०४४। फ्रा॰ द×६ इत्र । आया-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १६०३ । **ते∘का**ल स०१६०४ । पूर्ण । वेष्ठन स०१०६ ६३ । **प्राप्ति** स्थान— दि० जैन मन्दिर आदवा (राज०) ।

विशेष--विरधीचन्द मारोठ नगर के रहने वाले थे।

**६२३२. नन्दीस्वर द्वीप पूजा** $--\times$  । पत्रस० ३३ । भाषा-ीहन्दी । विषय-पूजा । र०काल $\times$ । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान --दि० जैन पवायनी मन्दिर सरनपुर ।

विशेष -- दौलतराम कृत छहदाला तथा नित्य पूजा भी है।

कर्दे हे. नैमितिक पूजा सम्मह $-\times$ । पत्रम० १२। मा० ११ $\frac{3}{6}\times k_{\phi}^2$  हवा । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल  $\times$ । लः काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर मादिनाथ स्वामी मालपूरा (टोक)

विशेष - निम्न पूजाओं क सग्रह है -

दश लक्षरण पूजा, मुख सपति पूजा, पचमी व्रत पूजा, मेघमाला व्रतोद्यापन पूजा, कर्मचूर व्रतोद्यापन पूजा एवं धनन व्रत पूजा ।

= २२४. **शैमित्तक पूजा संग्रह**—  $\times$  । पत्र स० ६१ । प्रा० १२ $\frac{1}{2}$   $\times$  ६ $\frac{1}{2}$  इ.ख. । प्राचा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टनस० १२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फेलेहपुर केलावाटी (सीकर)

विशेष-दश लक्षएा, रत्नत्रय एव सोलह कारए। ग्रादि पूजाये हैं।

द२३४. पंक्ति माला— ४ । पत्रस० दश्यामा—हिन्दी । विवय-पुजाः। र०कालः ४ । ले∘काल स०१७६६ । अपूर्णः । वेष्टनसं०६३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरतपुरः। विशेष--- बीच २ के पत्र नहीं हैं। संख्या दं, हुई है।

द२३६. **पंच क**रुया**राक उद्यापन - गूजरमल ठग**। पत्र स०७४। झा०७४१ इचा। भाषा--हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल ४। ले० काल। पूर्णं। वेष्टन सं० ६४। **प्राप्ति स्थान**---वि० जैन मंदिर कोट्यों का नैराखा।

द्भ २ वे **. पंच कत्याराक उद्यापन** — × । पत्र स० ३१ । मा० १० × ४ है इ.च । भाषा-हित्ती (पद्म) । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० द७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोठ्यों का नेणवा ।

६२३६. **ांच कत्याराक पूजा—टेकजंद** । पत्र सं०३३ । प्राः १२३ $\times$ ४३, इञ्च । माथा—हिस्सी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ने०काल स० १६६४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ६०० । प्राधित स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६२३६. प्रतिसं० २ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १६२२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६२४०. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १६ । मा० ११ ४७ इन्द्र । ले० काल ४ । मपूर्ए । बेष्टन स० ३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पावर्षनाथ चौमान बूदी ।

द**२४१. पंच कत्याराक प्रा—प्रभाचन्य** । पत्रस**०१**२। ग्रा०१० $\times$ ७ इत्र । भाषा— सस्कृत । विषय-पूत्रा । र०काल  $\times$  । **ते०काल म०१**१३८ । पूर्ण । वेष्टुनस०१७-१२ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

ষিষ্ঠায—- লিলিন নম सन् वरमध्ये l निलापित गडित जी श्रीलान चिरजीव। ग्रुभ सवत् १६३८ वर्षे शाके १८०३ प्र० मास पीप बुदी १२।

६२४२. पं**व कल्यारणक पूजा—पं० बृधजन** । पत्रस० ३४ । ग्रा० १०×६ इच्य । आपा— हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३३ मयाढ मुदी २ । पूर्णा । वेक्टनस० ६०-३४ । प्राप्तिः **स्थान**— दि० जैन वडा बीसपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष --- शिवबक्स ने प्रतिलिपि की थी।

दर्थ **३. रांच कत्याराक पूजा**—रामचन्द्र । पत्र सं० १६ । आ०६ ४ ४ इचा । मारा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले० काल स० १०२२ ज्येष्ठ मुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष - कु भेर तगर मे प्रतिलिपि हुई थी । चौत्रीम तीर्थंकरो के पच कल्यासक का वसीन है ।

 $\mathbf{q} = \mathbf{q} \cdot \mathbf{q} \cdot \mathbf{q}$  कस्यास्पक—वाविसूयस्य (भुवनकीति के शिष्य) । पत्र स० १६ । प्रा० १० $\{\mathbf{x}\} \times \mathbf{q} \cdot \mathbf{q}$  साधा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । लेश्काल म० १७१३ । पूर्य । वेष्टुनसंक ५५ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन सक्षेतवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२४**४. पंच करवाराक पूजा—सुषा सागर** । पत्रसं० १४ । घा० १२५४ है इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रक्काल 🗙 । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । वेट्टन मं०४४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी दृरी । द्ध-२४६. प्रसिसं० २ । पत्र स०११ । घा० ७, ४४, ६चा। ले∙काल ४ । पूर्णे। वेष्टनसं० १२६ । प्राप्ति स्थाल— दि० जैन मंदिर पाध्येनाथ चौगान दूदी।

विशेष--प्रथम १ पत्रो में भ्राशाघर कृत पंच कल्याएक माला दी हुई है।

द्दर्थ**ः प्रति** सं० ३ । पत्रस० २४ । धा० १० ' ×४ <sup>१</sup> इथा । **ले∘काल** सं० १८४४ । पूर्ण । वैकृत सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष - सदासुख ने कोटा के लाडपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

लोकाकास प्रहोत्तमे सुजिनयो जातः प्रदीपस्सदा । सद्रस्तत्रय रत्नदर्शनपरः पापे धनी नाणकः । श्रीमञ्जी श्रवणोत्तमस्यतनुजः प्रागबाट वर्णोमयो । हमारुवाय नतः श्रयच्छत सनाय श्री स्वासायर ।

द२४६. प्रतिसं∘ ४ । पत्रस॰ २१ । प्रा॰ १'४६ इचा ले•काल स॰ १६०३ । पूर्ण । वेष्टन सं• ७४ । प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष--गुजराती ब्राह्मण हीरालाल ने प्रतिलिपि की थी।

८२४**६. प्रति सं० ५**। पत्र स० १२। ले०काल स० १६०२। पूर्णः। वेग्टन स० ४४। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा।

६२५०. प्रति स०६ । पत्रस०२१ । ले०काल सं० १६२० । पूर्णं । बेष्ट्रन स०४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मंदिर बलवा ।

द्र२**४१. प्रति सं० ७ ।** पत्रस० २१ । आ ० १०∫ ४५ इश्व । ले० काल स० १७५**० ....पीष मुदी** ११ । पूर्ण । बेष्टनसं० २७३ । प्राप्ति स्थान ⊸िंद० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

दरेश्ररः पंच कल्याग्यक पूत्र। —सुमति सागर । पत्र स० १४ । ब्रा० ११४६ॐ इंच । भाषा — सन्द्रन । विषय —-पूत्रा । ००जल × । ने० काल म० १८१७ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पवायनी। मदिर वयाना ।

विशेष — महाराग्ट प्रदश म बल्लभपुर म नशीश्वर चंत्यालय मे ग्रत्य रचना हुई थी । लालचन्द पांडे ने करीली में भूरामल के लिये प्रतित्विप की थी ।

दर¥ दे. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४ । बारु १३ है ४ ६ है इच्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेस्टन सं∙ ४०–४४ । प्राप्ति स्थान विरुजन सीमार्गा भांतर करोली ।

**८२४४. प्रतिसं० २** । पश्चन १६ । लेब्बाल  $\times$  । पूर्ग । बेष्टनसंब १२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि॰ जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

६२४५. पंच कल्यारा पूजा जन्द्रकीति । यत्रस०२६ । भाषा—सङ्क्त । विषय-पूजा । र०काल X । ले० काल X । qm । वेष्ट्रन स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पद्मायती मन्दिर भरतपुर ।

पर्धरः पांच कत्याराक पूजा— × । पत्रतः १६। मा॰ ११३ ×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेट्टन स० १४६ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर भाविनाय बुदी । स२५७. पंच कल्यास्पक पूजा--- $\times$ । पत्र तं०२४। मा०१०४५ इच । माचा---संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५। प्रास्ति स्थान---दि० जैन मंदिर प्रमिनस्त स्थानी इंदी ।

६२५६. **ांक क**ल्यास्**क पूजा** $-\times$ । पत्रस० १७। घा॰ ११ $\frac{1}{7}$  $\times$ ५ दच । साथा -सस्कृत । विकय- पूजा । र०काल  $\times$ । से० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनसं०२०६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्तिर पार्खनाथ जोगान दृशी ।

६२५६. पं**च कल्याराक पूजा** $\longrightarrow \times 1$  पत्र स० १६ । प्रा० १० $^3 \times 1^3_7$  इन्छ । याषा —सन्छत्त । विषय—पूजा । र०काल  $\times 1$  ले० काल  $\times 1$  पूर्यं । वेष्ट्रन स० ६३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर देवनाना (वंदी) ।

द२६०. **रांच क**रूया<u>राक प्रजा</u>— × । पत्र सं०१४ । ग्रा० १० × ७<sup>९</sup> इचा माचा-संस्कृत । विचय-पजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्णं। बेष्टनसं०१०७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन ग्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर।

द**२६१. पंच कल्यासमक पूजा**— × । पत्रस० २४ । झा० १०४४] इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । से०काल स० १००१ झासोज बुरी १० । पूर्स । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्था**ल— दि० जैन मन्दिर बोरससी कोटा ।

दर्दर. रोच कत्यास्मक पूजा $-\times$ । यत्र स॰ १४। मा॰ १ $\frac{1}{7}$  ४६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय पूजा। र०काल ४। ले० काल स० १८१७ बैजाल मुदी ७। पूर्ण। बेगृत स० २७८। प्रास्ति-स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

पर्दर, पंच कल्यासाक विधान—महारक सुरेन्द्र कोति × । पत्रसं०४६ । घा०६४४ इच । प्रापा नम्हत । विषय-पुत्रा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३४ । प्राप्ति— स्थान दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा ।

द२६४. 'चि कल्यार्गक पूजा— $\times$ । पत्रसं० १०। मा० ११ ५७' इन्छ। माचा-हिन्दी । विषय पजा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टनस० १२२४। प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर धजनेर।

दर्६६. पंचा कस्याराक प्जा— × । पत्र सं०२०। झा०१० ४५६ इच । साचा -हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७६। प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मरिर क्रजमेर।

द २६७. पंच कस्यासक पूजा — × । पत्रतं ०३७ । मा० १०४६ इचा । माथा हिन्दी गया। विषय -पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६०७ मादवा बुदी १३ । पूर्स । वेष्ट्रन सं० १० । प्रास्ति -स्थाल — दि० वैन तेरहांथी मन्दिर नैसावा

८२६१. **एांच क**ल्या**गक पूजा**— $\times$ ।'पत्र० सं० १३ । **धा०** ७ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$ ६ख । माषा-हिल्दी । पद्म । विषय-पूजा । रकाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेष्ट्रन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दवनाना (वृदी) ।

विशेष-तप कल्याएक तक ही पूजा है। आगे लिखना बन्द कर दिया गया है।

८२७० **पंच कस्यारगक पूजा**—×। पत्रस०२१। प्रा०६×४ इसा। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा।र०काल ×। ले०काल स०१६४४। पूर्ण। बेष्टन सं०४६३,३०४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर।

६२७१ पंच कत्याग्यक पूजा— $\times$  । पत्र सं०२२ । भाषा-हिन्दी । विषय-पृजा । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १६०४ कालिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पंचायती मंदिर भगतपुर।

विशेष — दो प्रतिया भीर है।

६२७२ पांच कल्याराक पूजा—× । पत्र मंग्रह । ग्राव्ह १०१ ४४ इस्त । आवा हिस्ती । विषय—पूजा । रब्काल × । लेश्काल मण् १६६२ । पूर्ण । वेष्टन सण् ६२ । प्रास्ति स्थान-दिश्जीत सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२७४. एांच कल्यारणक पूजा $--\times$  । पत्रसः १४ । घा० १२ $\times$ ४ ६च । भूत्रा-हिन्सी । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । लंग्काल स० १६३६ । पूर्ण । बेहनसं० ६६ ६० । प्रास्ति स्थान -िदंश जैन मन्दिर भावता (राजस्थान) ।

६२७५. **रांच कल्यारएक पूजा**— X । पत्रस• ३५ । घा॰ ७४७ **६वा । माया**-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । बेष्टनस॰ २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्**वा**यनी मदिर करोली ।

विशेष--प्रति गृटकाकार है।

स्२७७. पांच कल्याराक पूजा— X । पत्र स०२७ । प्रा० ६ X ६ इवा । आया-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल X । ने०काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन म०२१३ । प्राप्ति क्याम— दि० जैन मदिर पार्वनाय चीनान वृदी । ६२७६. पंच करवाराक पूजा $-\times$ । पत्रस० १७। ग्रा० १३ $\times$ ६ इञ्च। भाषा-हिन्दी, पद्य। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टनस० १२४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रयवाल प्रवास्ती मन्दिर भ्रमदर।

दर्७६. प्रति सं०२ । पत्र स० ६८ । घा० १२ ४७ इञ्च । ले०काल ४ । प्रपूर्ण वेष्टन सं० १४४ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

प्रस्त व्यास्त विधान—हरीकिशन—×। पत्रसं∘ २१। हाः १४४७ द्वा । प्रापा हिन्दी-गर्ग । विषय-पूजा । र०काल स० १८६० प्रपाद सुदी १५ । क्रे•काल ×। पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १६२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी ।

६२६१: **रांच कल्यारण वत टिप्परण** $-\times$ । पत्र स०४। म्रा० $-\times$ । माथा-हिन्दी। विषय-पुत्रा विधान। र०काल $-\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०४६०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर।

६२६२. **पंचलान पूजा** – पत्र स० १। माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल — × ै। लेकाल — × १ पूर्ण । वेशन म० ६६४। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पंचायनी मन्दिर भरतपुर ।

दरद ३. पंचगुरु गुरामाला पूजा— मे ग्रुभचन्द्र । पत्र स०१६। ग्रा०११ $\times$ ४  $\frac{1}{4}$  दख । भाषा—सम्कृत । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्न सं०१२ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बोरमनी कोटा ।

द२६४. **ए च परमेश्ठी पूजा — भ० वेवेन्द्रकोति** । पत्रसं•०। घा०१४६ इश्वा माचा — सस्कृत । विषय -पत्रा । २०काल ४ । ने०काल स० ११३६ । पूर्ण । वेग्टन स० ४११ । प्राप्ति -स्थान— प्रिच जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरगुर ।

दर्द्भ पं**च परमेष्ठी पूजा – यशोनन्दि।** पत्र सं०३२ । ग्रा०११×५ इत्व । माया– सम्कृत । विषय–पूजा । रण्काल × । ले० काल स०१६५२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०३५६ । प्रास्ति स्थान– भ०दि० जैन मन्दिर अवभेर ।

६२६६, प्रति सं०२। पत्र स०३५। आ०१२ $\frac{1}{2}$ ×१ $\frac{1}{2}$ र स्वाः लेश्काल स०१६५७ आयाढ बुदी१३। पूर्णः वेष्टन स०१४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)।

विशेष - प० जिवलान के पठनार्थ रामनाथ मट्ट ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

६२६७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३१ । प्रा० १३×४.) इत्व । लेव्काल  $\times$  । पूर्ण । वेय्टन स० १४७ । प्रास्ति स्थान— दिव जैन सबेजवाल पवायती मन्दिर प्रलवर ।

६२८६ प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ३६ । मा० १४७ इन्द्रा । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६५ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रप्रवाल प्रवायती संदिर मलवर।

द२द६. द्रतिसं० ४ । पत्रस० ४० । घा० ११ × ६ र्रै इला । ले०काल सं० १८१७ मादवा सुदी ४ । पूर्ण । बेहन सं० द । प्राप्ति स्थान—वि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष-- उदयराम के पुत्र रूरों ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बयाना में करायी थी।

६२०. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० २६ । ले॰ काल सं० १८५६ जेठ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । प्राप्ति स्थान दि॰ जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

 $\mathbf{x} \in \mathcal{E}$ १. प्रति सं०७ । पत्रसं० २४ । ग्रा० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इल्बा ले० काल  $\times$  । पूर्ण हे बेह्नसं०  $\mathbf{x} \in \mathbb{R}$  प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

द२६२ प्रतिसं∘ द।पत्र सं०३६। धा०१०२४६ इञ्च।से०काल ४ ।पूर्णं। बेष्टन सं० ११६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर करोली।

दन्**रहे, प्रतिसं० है।** पत्र सं० २८। घा० ११×५२ इन्छ। ले० काल स० १८३५ जेठ सदी ७। पूर्या । बेष्टुन स० ३५**१। प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुदी ।

८२६४. प्रतिसं० १० । पत्र सं० २७ । मा० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर लक्कर,जयपर ।

८२६४. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ३७ । घा० १०३४५ इज्य । ले० काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टुन स० ४६ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर योगान बृदी ।

६२८६. प्रतिसं० १२ । पत्र स० २७ । म्रा० १०३ ४७३ इला। ले०काल 🗴 । पूर्ए। वेष्टन सं० १०४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन धप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२६७. पंच परमेष्ठ**ो पूजा— अ० शुमचन्द्र।** पत्रसु० २४। ग्रा० ५३ $\times$ ४३ दखा। आया— सस्कृत। विषय— पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल स० १७६७। पूर्णं। वेष्ट्रन स० ४५। प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

द्धंतिम प्रशस्ति— थी मूल संवे जननदस्य।

तया भवछी विजादिकीति।

ततपद्रधारी शमचन्द्रदेव।

कल्यानमात्मा कृताप्तपुत्रा। १२।

बिशेष--श्री लालचन्द्र ने लिखा था।

८२९८६. पंच परमेष्ठी पूजा— टेकचन्द्र । पत्र सं॰ ७ । धा॰ ८ $\times$ ६ है इ.च । मापा- हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्ण । बेच्टन स॰ २२८/११ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन मन्दिर कोटडियों का हंगरपुर ।

द्ध२६६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३३ । प्रा० ११×५३ हरूच । के॰काल स० १८६६ । पूर्ण । बेहुतसं० २६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन खडेनवाल मदिर उदयपुर ।

द २००. प्रतिसं० रे । पत्र सं० १४ । प्रा० १२ ४ ६ इञ्च । ले० काल म० १८४६ । पूर्ण । बेष्टुन सं० १३१ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन लण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — उदयपुर में नगराज जोशी ने प्रतिलिपि की थी।

द३०१. प्रति स० ४ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८४५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६/३०७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रदेश-१ प्रति संश्रध । पत्र संश्रध १३ । साश्रध ११४४ इत्था सेश्काससंश्—१८४५ । पूर्ण । वेष्टम संश्रध-३१० । प्राप्ति स्वास---रिश्णेन संभवनाय मन्तिर उदयपुर । द**्रे. प्रति सं०६।** पत्र सं०१२। ले० काल × । धपूर्णः । बेष्टन स० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

द२०४. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० २४ । सा० १ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इच्छ । ले० काल $\times$ । पूर्णं । वेष्टन सं० १४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सप्रवाल पंचायती मन्दिर प्रतवर ।

द्र३०**४. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० १४ । घा० १२**४७३ इ**वा । से०काल सं०∼१**१३५ फागुण सुदी १. । पूर्ण । बेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहाबीरजी (बुंदी) ।

बिशेष - ईसरदावासी हीरालाल भावसा ने लिखवाया था।

द२०६. पञ्च परसेष्ठी पूजा—डालूराम । पत्रस० ४०। घा० १०३ ४५३ इच । सावा— हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १०६२ मंगसिर बुदी ६ । से०काल स० १६४८ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन सं०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्वनाय सविर टोडारास्प्रित (टोक) ।

६२०७. प्रतिसं० २ । पत्र त० ३१ । ग्रा० १४६ इ.स. । लेक्सल स० १६८१ झासीज बुदी १० । पूर्ण । बेष्टनस० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तरहवथी मंदिर मालपूरा (टॉक) ।

६२०६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २० । आ० १२्रै ४ ६ इच । लेकाल स० १६६१ ब्रायाड़ सुरी ६ । पूर्ण । वेप्टन स० ४६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६३०६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २२ । घा० १४ X ७ १ इ.च. । ले०काल सं० १६६१ । पूर्ण । बेष्टन स० ४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपयी मदिर नैराजा ।

८३१०. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४७ । घा० १०३ ४४३ इञ्च । से∘काल ४ । पूर्ए । बेहन सं० २४४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर पार्थनाय इन्दराह (कोटा) ।

६३११ प्रतिसं० ६ । पत्र सं०४१ । घा० ६ ¦ ४६ इ.च. । ले•काल स०१८७६ श्रावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स०२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर मदवा (राज०) ।

विशेष -- भादवा मे प्रतिलिपि हुई थी।

६३१२. **एंच संगल पूजा** ×ापत्र सं०३४। ब्रा० ११×११३ हवा भाषा हिन्दी । विषय -पूजा । र०काल × । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०४-१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हंगरपुर ।

६३१३. **रांच परमेरुठी पूजा— बुधजन** । पत्र सं०१६। मा०१० $\mathbf{x}$ ६ इ.ख.। माया-किसी । विषय—पूजा । र०काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । बेष्टन सं०१३०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपशी मन्दिर दौसा ।

६३१४. रांच परमेक्टी यूजा- $-\times$ । पत्र सं० १३। धा० १ $\frac{1}{4}\times \frac{1}{4}$  इंच । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल सं०---१६६६। पूर्ण। वेष्टनसं० ३८४-१४४। प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन संदिर कोटडियों का द्वंगरपुर।

महेर्थ, पांच परमेल्डो पूजा × । पत्रस० रैका प्रा० ११ × ४ १०० ४ स्वस्थ (सवय-पूजा। भाषा— सस्कृत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ३६४-१४६ । प्राप्तिस् स्वाह्म्स—दि० जैन मन्दिर कोटकियों का द्वेषरपुर। म् २१६. **पंच परमेष्ठी पूजा**  $\times$  । पत्रसं० ४० । माषा-सस्कृत । र०काल  $\times$ । ले० काल सं० १६४ । पूर्णे । वेष्टन सं० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-कुं भावती नगरी मे प्रतिलिपि की गई भी।

**८३१७. रांच परमेष्ठी पूजा × ।** पत्रस० २५ । भाषा --संस्कृत । विषय --पूजा । से०काल --१९५७ । पूर्ण । वेष्टुन सं० २३ । **प्रास्ति स्थान** --वि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

म्हर्गम् पंचापरमेष्ठी पूजा imes । पत्रस्क २-५ ग्रा० १० $^3_1 imes imes^3_1$  इत्था । माषा—संस्कृत । विषय-पूजा । रक्ताल imes । लेक्काल स० १६१५ । ग्रपूर्त । वेष्ट्रन सं० ३५६ । प्राप्ति स्थान । दि० जैन प्रधवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

नागराज लिखत । सनत् १६६५ वर्षे भाषाङ् मासे कृरगापक्षे पचमीदिने गुरुवासरे लिखत ।

क्ष २९६. गंबपरमेष्ठी पूजा  $\times$  । पत्र स॰  $\times$  । धा॰ १४ $\times$ ५ $^{\circ}$  इव्य । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २७६ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन अधवाल महिर उदयपुर ।

**८३२० पंच परमेष्ठी पूजा**  $\times$  । पत्र स० २ । भाषा –कस्कृत । विषय -पूजा । र०काल  $\times$  ।  $\hat{\pi}$  कान  $\times$  । पूर्णे । वेष्टन स० ३७६-३०६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**८२८: प्रतिसं०२** । पत्रस०४ । ले०काल $\times$  । पूर्णं। वेष्टनं स०३७६-२०६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — ग्राचार्य सोमकीति ने प्रतिनिधि की थी।

⊏३२२. **पंच परसेष्ठी पूजा** × । यत्र स० ६६ । प्रा० १०, ४४ ) इश्व । भाषा— भस्कृत । विषय — पूजा । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । बेय्टन स० १४७ । **प्राप्ति, स्थान** — दि० जैन मंदिर दबलामा (बुदी) ।

विशेष-देवेन्द्र विमल ने प्रतिलिपि की थी।

**६३२३. पंच परमेष्ठी पूजा** । पत्रंत० ३६ स्ना० स्ट्रें १४ इला । भाषा सम्करः। विषय — पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्या । बेठून स० १६४ । **प्राप्ति स्थान** ⊸ दि० जैन सन्दिर खादिना**य** बूदी ।

क्दर $\times$  **एंच परमे**ड्डी पूजा  $\times$  । पत्रस**ः** ३६ । प्रा० ११ $\frac{3}{7}$  $\times$ ५ $\frac{1}{7}$  इश्व । भाषा-सस्क्रत । विषय—पूजा । रक्शल  $\times$  । से० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टुत स ० ७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाव स्वामी मालपूरा (टॉक) ।

= ३२५. **रांच परमेट्टो पूजा**—ं × । पत्र स० ३५ । झा० ६ैं ×६ैं इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल स० १८७४ मादवा सुदी ४ । पूर्ण । वेटटन स० ११४६ । **प्रास्ति स्थान**—स० दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

६२२६. पांच परमेष्ठते पूजा ४ । पत्रस॰ ३६। ग्रा॰ ६४४ ट्रैड्स । भाषा—हिन्दी (पष्य)। विषय—पूजा। र०काल स॰ १८६८ मगसिर सुदी द।ले∘काल मं∘—१८८६ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण। वेस्टन स॰ १३००। प्राप्ति स्थान—भ∘दि० जैन मन्दिर ग्रजमर। **६३२७ पंच परमेरुटी पूजा** × 1 पत्रसं० २० । मा० १×६ इचा । माषा-सस्कृत । विषय– पूजा । र०काल → × 1 ने०काल × 1 पूर्ण । वेष्टन स० ११३७ । **प्राप्ति स्थान** → भ० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

६३२६. **रांच परमेष्ठी पूजा** × । पत्र सं०४ । आ० ११×५ है इसा । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ने०काल × । सपूर्ण । वेष्टन सं०१०३ । प्राप्तिः स्थान—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३२६. रांच परमेष्ठी पूजा $-\times$ । पत्रसं० १३। घा० १२ $\times$ ५ इख। भाषा-हित्ती। विषय-पूजा। र० काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । अपूर्ण। बेष्टनसं० ३१/८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्तिर भावता (राज०)

विशेष -- प्रति पृही ने स्वारसी है।

६३३१. पंच परमेष्ठी पूजा— $\times$ ा पत्रस० ४२। मा० १० $\S \times \S$  इखा। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। २०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । सपूर्ण। वेक्टर स० ६६। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन वडा बीमाणी मन्दिर दौना।

६३३२. **ंच परमेरुठी पूजा**— $\times$  । पत्रस**०**३७ । मा० ११ $\times$ ६ इ**था** । मावा-हिन्दी रख । विषय-पुजा । र०काल  $\times$  । लेकाल स० १८१८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म्रजनल पत्रायती मन्दिर म्रलदर ।

६३३३ प्रतिसं० २ । पत्र स० ४२ । प्रा० ११ $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  इत्त्व । ले०कालimes । पूर्ण । बेष्टन स० १२१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन प्रवत्नाल पंचायती मन्दिर भ्रलवर ।

द्र २२ **५ प्रति सं० २** । पत्रसं० ४४ । घा० द<sup>3</sup>, ४६ डुँ इञ्च । ले०काल सं० ११५६ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

द३३५. रांच परमेष्ठी पूजा— × । पत्रसं• ४० । म्रा० १२१ ४७१ इञ्च । भाषा - हिन्दी पद्य । विषय-विवान । र०काल × । लेकाल × । पूर्ण । बेहन सं० ७२ । म्राप्तिः स्थान - वि० जैन म्रायाल पचासती मन्दिर मनदर ।

द २३६. पंच परमेक्ठी पूजा— × । पत्रसं ० ३६। प्रा० ११×६ है इ.च.। आपा हिन्दी पछ । विषय-पूजा । र०काल सं० १६६२। ले०काल स० १६२६। पूर्णं। वेप्टनस० १४६। प्राप्ति स्थान – दि० जैन लक्षेत्रवाल पचायती मन्दिर प्रनवर ।

विशेष--- अलवर में प्रतिलिपि की गई थी। एक प्रति भीर है जिसकी पत्र सं० २४ है।

६३३७. **रांच परमेष्ठी पूजा** —  $\times$  । पत्रतं ० १२। सा० १ $\times$ ६ १ इच । भाषा — हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १६६२ मार्गणीय बुदी ६ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस• २२,११ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवासती मन्दिर हुनी (टॉक) क्षेत्रेस्ट. संज वर्षकेकी नमस्कार पूजा $-\times$ । पत्रतं० ७। क्षा॰ ह $\frac{1}{6}\times$ ४ इथा। माथा— संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । कपूर्णं। बेष्टन स० ३६१। प्राप्ति स्थान-वि॰ जैन क्षयकाल मन्दिर उदयपुर।

द ३३६. रांचवालयती तीर्षकर पूजा— × । पत्र स॰ १० । घा॰ द×४३ इचा माया-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर सम्बद रायर ।

६२४०. **रायमास यतुरंशी तत पूजा**— $\times$ । पत्र स० ६ । मा० १ $^1$  $\times$ ६ स्था । भाषा-सस्कृत । विषय- $^1$ जा । र०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

= ३४१. **राचमास चतुर्वेशी ततोद्यापन—म० सुरेन्द्रकींलि** । पत्र सं० ५ । धा० ११}४५ इच्छ । भाषा–सस्क्रत । विषय-पूजा र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति** स्थान दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बृदी ।

६३४२. प्रति सं०२ । पत्रस०६। प्रा०६}४४ है इञ्चाले ∘काल ४ । पूर्ण। वेष्ट्रनसं∙ ६६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर धीभनन्दन स्वामी इंदी।

प्रदेश रोबमास चतुर्वेशी स्रतोद्यापन— ४ । पत्रस० ४ । मा० १०}४५ इस । मावा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० −१६,३४ । प्रास्ति स्थान—वि• जैन सीमाणी सन्तिर करोली ।

६३४४. रोचमान चतुरंशी खनोद्यापन--  $\times$ । पत्रस॰ ६। प्रा॰ १० $^{\dagger}$  $\times$ ६२ इच। माषा-- संस्कृत । विषय पूजा । २०काल  $\times$  लेकबान  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस॰ ११। प्राप्ति स्चान--- दि० जैन पंचायती मन्दिर करीती ।

= २४५. पंचमास चतुर्वशो द्रतोद्यापन विधि— × पत्रस॰ ४७ ।धा॰ १०×४१ इञ्च । माषा-सस्कृत । विषय पूजा । ०५।अ ४ ले॰ काल स॰ १००६ सावरा सुदी १३ ।पूर्ण । वेष्ट्रत सं० १०० ।**प्राप्ति स्था**न िर केंग प्रचायती मन्दिर करोत्ती ।

विशेष—वृजनाल गोकलचनः और ने पचायती मन्दिर के लिए बालमुकुन्द से प्रतिलिपि करवाई थी।

**६२४६. पंचमी विधान**— । प्रवस० १३। मा० ११× ७ इचा । भाषा-सस्कृत । विधय-पूजा । र० काल × । ले० काल × . पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० अनि मन्दिर राजमहल (टोक)

म् ३४७. **पंचमी तत् पूजः** कत्या**रा सागर**। पत्रस**ं ६। प्रा०१०<sup>3</sup>. ६ इचा। प्राचा-**सस्कृतः। विषयः पूजाः। र०कालः ४ । ले०कालः ४ । पूर्यः। वेष्टतं स० ६६ । **प्राप्ति स्थान-दि० जैन** मन्दिर ग्रामिनन्दनं स्वाभी बुदाः।

श्रन्तिम पाठ---

तीर्थकरा सकलल कहितकरास्ते । देवेनःवृदमहिता सहिता युएगैर्घ । ृष्दावती नभगतां वगता शिवानी
तुष्वेतु गुद्ध बनितामुत विक्तजानि ॥१॥
जगति विवति कोर्ते रामकीर्तेषु शिष्यो
जिम्मतियभक्ती हर्गनामा सुषरि।
रिषत उत्प्रयमुतेन कस्यास्य प्रमने
विधिष्टम भवनी सा मौक्ष सोस्य ददान्॥२॥

च्हे¥च. पं**चमी तत पूजा**— ×। पत्रस० ३। घा० ११×५ इचा । माषा-सस्कृत । विषय-पुजा । र०काल × । **से०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर क्रजमेर भण्डार ।

६३४६. **रांचमी वती पूजा** —  $\times$  । पत्र स० ६ । प्रा०११ $\times$ ५ इंग । प्रापा — सस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन सं०१४४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर राजमहल (टॉक)

६३४०. **रांचमी बत पूजा**—× । पत्रसं० ४ । घा० १०३ ४४} इच । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । बेहन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय स्वामी बुंदी ।

विशेष — महाराज श्री जगर्तासह विजयराज्ये कोटा वासी धमरचन्द्र ने सवाई माघोपुर में लिखा था।

म ३४१. पंचामी कत पूजा — × । पत्रस० ७ । मा० १० × ६ इश्वा । भाषा सस्कृत । विषय — पूजा । र०काल × ले०काल । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान ब्रुटी ∙

६३ २२ च चनी वत पूजा —  $\times$  । पत्रस्क्ष्यः । प्रा०११ $\frac{2}{3} \times 2\frac{1}{3}$  इन्द्रः भाषा संस्कृतः । विषयः पूजाः २०कालः  $\times$  । लेक कालः  $\times$  । पूर्णः। बेष्ट्रनसंक ३५० । प्राप्तिः स्थान — दिव् जैन मन्दिरं प्रभिनन्दन स्वामी वृदीः।

**८३४३ एंचमी तत पूजा**  $-\times$  । पत्र स० ६ । मा० १२ $^{1}$  $\times$ ४ $^{1}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । लेक्साल स० १६२५ पौष मुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स० =५ ६५ । **प्राप्तिः** स्थान — दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष चाटस में इ गरसी कासलीवाल वासी फागी ने प्रतिलिपि की थी।

द ३ ४४. प 'बमी ततीद्यापन - हवं कल्यासा । पत्र स॰ द । मा॰ १२ } ४६ इथा । माषा-संस्कृत । विषय पुत्रा । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १०१ । प्राप्ति स्थान—दि० चैन पंचायती मन्दिर करोली ।

६१.४. पंचामी बतोब्रायन—× । पत्र सं∘ ६। घा० ११×४ हे इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पुत्रा । र०काल × । से०काल ×। पूर्ण । बेष्टन सं०३५१ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर सबनेर । दश्र६. पं**चमी ततोद्यापन**— $\times$ । पत्रस $\circ$  ४। बार्॰ १०ई ४६ इखा। भाषा सस्कृत। विषय पुजा र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टनसं० ७३७। **प्राप्तिः स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर बज्जोरः।

विशेष--- महात्मा रिचलाल किशनगढ वाले ने ग्रजमेर में प्रतिलिपि की थी।

- **८३४७ पंचमी ततोष्ठापन** × । पत्रत० ६ । म्रा० ८ ×४<sup>3</sup> दश्व । माषा सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमकल (टोक)
  - द्रश्र्द्र. **पचमी सतीद्यापन** × । पत्रस्य ७ । प्रायः १०१ँ×४, दश्वा भाषा-पस्कृत । विषयः पूजा रय्कालः × । से•कालः × । पूर्णः । वेष्टनस्य १७/३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सीमास्पी मन्दिर करीली ।
- ६२५६. **पंचमी सतोद्यापन**  $\times$  । पत्र स० १०। ग्रा० १X <sup>प</sup>है इखा भाषा-सस्कृत। विषय पूजा गर०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती सदिर करीली।
- $\mathbf{x}$  ३६०. **पंचमी ततोद्यापन पूजा** नरेन्द्रसेन । पत्रतः ११ । घा० ११ $\times$ ४ ् इष्ट्य । मापा–सस्कृत । विषय-पूजा । रक्ताल  $\times$  । नेंक काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सक्दे७–१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।
- विशेष ज्याला मालिनी स्तीत्र, पूजा एव आरती है। ज्यालामालिनी चन्द्रप्रस की देवी है। पूजा तथा आरमी नरसेन कुछ भी है जिनका नाम मनुजेन्द्र सेन भी है।
- ६३६१. **ंचमी ततोद्यापन पूजा**—हर्षकोति । पत्रसः ७ । म्रा० २ $\frac{2}{3}$  $\times$ ६ इन्त । म्रापा—सस्कृत । विषय-पूजा । २० काल  $\times$  । ले० काल स० १८०८ । पूर्ता । देष्टुन सं० २८५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुदी)
- द३६२ प्रतिसं० २ । पत्र स० ६ । र०काल × । ले० काल स०१६३१ । पूर्ण । बेटन स० ६० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरनपुर ।
- ६३६३. पं**चमी वतोष्ठा**स्त विधि × । पत्र सः ७ । मा० १०×६ दश्व । भाषा संस्कृत । विषय पूता । रण्काल × । ले० काल सः० १८७४ माघ सुदी १ । पूर्णा । वेष्ट्रन सः० १७१ । प्राप्ति स्थान - दि० अंग मन्दिर फतेहपुर णेखावाटी (सीकर)

विशेष-- एक प्रति और है।

६३६४. **रांचमेरु पूजा—गुमचन्द्र ।** पत्रस०१४ । प्रा०१२३ ५७३ ३च्च । मापा—सम्बन्धाः विषय-पूजाः र०काल ४ ते०काल स०१८१४ फागुण बुटी १४ । पूर्णः वेष्टनस०१३६ । प्रास्ति स्थान—दि०जैन प्रयवाल पचायती मदिर प्रसवर।

विशेष नधीसापुरा वासी बसतलाल ने लिखी थी।

६३६४. पंचमेरू पूजा—पं व गंगावास । पत्र सव १३ । प्राव १०४४ है इञ्च । मापा— संस्कृत । विषय — पूजा । रवकात 🗴 । तेव काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन मव २४ । प्राप्ति स्थान—दिव औन मन्दिर प्रनिनन्दन स्वामी बुंदी । द्ध २६६. पंचनेक पूजा-मि० रस्त चंदा पत्र स० १ । घा० १२ ४ ४ १ द्वा भाषा-सम्ब्रत । विषय-पूजा। २० काल र । लेकाल सं०१६६० पोष सुदी १ । पूर्ण । वेष्टतस० ४१ । प्रास्ति स्थान — वि• जैन मन्दिर प्रादिनाय बूँदी।

बिशेष - सवाई माधोपूर में जगतिसह के राज्य मे लिखा गया था।

= ६६७. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ४ । ग्रा० ११ है ४६ है इश्वा । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ठन सं∙ १३४ । प्राप्ति रूपान — दि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी ।

द्धर्मद्भः प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४ । ग्रा० १२×४ इत्वः । ले०काल सं०१६३६ । पूर्णः । वेद्यनसं०१४२ । प्राप्ति स्थानः दि०जैन मन्दिर नागदी वृदी ।

द्भ ६६६. प्रति सं०४ । पत्रसं०६ । ले०काल सं०१८५६ । पूर्या विष्टन स०५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष —दोनो कोर के पूठटे सचित्र हैं।

६३७०. **पंचमेरु पूजा-** $\times$ 1 पत्रस० २ । ग्रा० १० $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  हजा । भाषा-सम्बन । विषय-पूजा । र० कालimes । ले०कालimes । पूर्ण । बेष्टन सं० ३७२ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६३७१. पंचमेरु पूजा- $\times$ । पत्र स०२-६। प्रा०६ $\times$ ४ इन्द्रः। भाषा सस्कतः। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । प्रपृर्णे। बेष्टन सं०१३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी सदिर दूनी (टोक)।

६२७२. प चमेरु पूजा - टेकचन्द । पत्रस० ७ । ग्राव ११ $\S \times \S$  इन्त । भाषा -हिन्दी पदा । विषय -पूजा । १०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २४६ । प्रास्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर पार्थनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

द ३७३ पंचमेरु पूजा — डालूराम । पत्र स०२४। धा०११४६ इश्वः। भाषा हिन्दी पद्यः। विषय – पूजा। २०काल स०१८०६। लेबकाल स०४। पूर्णं। वेष्ट्रन स०११६-८६। प्रास्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर नेमिनाप टोडारायसिह (टोक)।

दश्**४ पंचनेर पूजा— दघानतराय** । पत्रस॰ ३ । माण ७ " ४६ इचा । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल ४ । नं०काल ११४२ । पूर्ण । बेष्टन स०६६६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जॅन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

द ३०४. पंचमेरु पूजा— सूधरदासः । पत्रसः २-५ । प्राः दः रे ४ इःवः । भाषा–हिन्दी पद्यः। विषय−पूजाः। र०कालः ४ । ले० कालः ४ । प्रपूर्णः। वेष्टनः सं०१२ १२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पंचायती मदिरः दूती (टोके)।

६३७६. प्रतिसं०७। पत्र सं०३। ले० काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टन स०३०। प्राप्ति स्थान— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

द २७७. पंचनेर पूजा—सुकानंद । पत्र स० १६ । मा० १० रे ४७ इत्व । माधा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल स० १६३२ कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० १३६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन स्यवाल पंचायनी मन्दिर प्रतवर । विशेष - थी रामिकलाल जी ग्ररूपगढ वाले ने स्यौबक्स से प्रतिलिपि करवायी ।

दर्धः पंचमेर पूजा— × । पत्र स॰ २६ । ग्रा॰ १×६ दःव । भाषा-हिन्दी पद्य । पूजा । र०काल × । ले॰ काल १८७७ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४३८ । प्राप्ति स्थान — म॰ दि॰ जैन सन्दर धजमेर ।

ं द3७६. पंचमेरु पूजा— × । पत्रसं∘ ३३ । ब्रा॰ १२ × द इञ्च । आया-हिन्दी गया। विचय-पूजा। र॰ काल × । ले॰ काल सं॰ १६७१ । पूर्ण । वेष्टनसं॰ ४ । प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन प्रवदाल मन्दिर नैएवा।

विशेष-मोनीलाल भौंसा जयपूर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

द३८०. पश्चमेर पूजा— × । पत्रस० ३६ । घा० १० ४६ इच । प्राथा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ **। प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर पावनाथ चौगान च दी ।

ददे**⊏१. पश्चमेरु पूजा विधान**— × । पत्र स०४४ । ग्रा० १.×६ इ.ख.। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्णा । बेष्टन स०२४**८ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन महिर बोरससी कोटा ।

द ३ स्ट२, पश्चमेरु पूजा विधान—टेकचन्द्र । पत्र स० ४६। ग्रा० ११ १४ ४ इचा । माया-हिन्दं। विध्य—पूजा । र०काल ४ । ले०काल स० १६४४ । पूर्णं। वेष्टन स० ५७६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लम्कर जयपुर ।

द३द३. एंचमेरु मंडस विधान— $\times$  । पत्रसं० ४५ । ग्रा० ६ $\frac{1}{2}\times$ ७ इख । भाषा-हिन्दी । विध्य—पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णा । वेष्टन म० २८८ । प्राप्ति स्थान—िवि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६३६४. पंचमेरू तथा नन्दीस्वर द्वीपा पूजा—यानमल। पत्र स० ११। घा०  $= \frac{1}{4} \times \frac{1}{2}$  इखा आया-हिन्टी। विषय-पूजा विधान। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन म० ६४४। प्रास्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपूर।

दश्द प्रश्वामृतामिषेक— $\times$  । पत्रतः ६। झा० १२ $\times$ ६ इञ्च। भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा। र०काल  $\times$  । ले०काल स०१०७० । पूर्यः। बेष्टन सं०६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रथायी मन्दिर दनी (टोक)।

विशेष--प॰ शिवजीराम ने महेश्वर मे प्रतिनिधि की थी।

६३६६, पद्मावती देव कस्य मंडल पूजा-इन्द्रनन्वि । पत्रसं० १६ । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ते•काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४७ । प्राप्तिस्थान--दि० जैन पद्मावती मन्दिर भरतपुर ।

द देद ७. वदावती पटल — ४ । पत्रतं० ३२ । घा० ७३ ४६ इथा । मावा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ते•काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० दरेश । प्राप्ति स्थान— भ० वि० जैन मन्दिर स्थाने

## विशेष--गुटका धाकार मे है।

न्देन्द्र, पद्मावती पूजा--टोपरा। पत्र सं० ३७। मा० ६×४६ वृंद्रंवा। प्रापा संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ४। ले० काल स०१७४६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१०-११७। प्राप्ति स्थान--दि० जैन मस्टिर कोटडियो का द्वांगपुर।

ददेद है. पद्यावती पूजा— × । पत्रसं∘ २ । मा० १२ × ६ इचा । मावा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६७। पूर्ण । वेष्टनसं० १५२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर स्रजभेर भण्डार ।

६३६० पद्मावती पूजा —  $\times$  । पत्र सं० २६ । प्रा॰  $= c_V^2 \times 1$  क्षावा —संस्कृत । विषय — पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन सा० १३७३ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर भ्रजमेर भण्डार ।

६३६२. पद्मावती पूजा $-\times$ । पत्रतः २२। मा॰  $+^2_i \times v^2_i$  इश्व। माषा-संस्कृत। विषय-पूजा। ७० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स॰ १६४। प्राप्ति स्थान--दि० जैन मंदिर कतेहपुर क्षेत्रावाटी (सीकर)।

## विशेष--जैनेतर पूजा है।

६३६३. पद्मावती पूजा— $\times$ । पत्रस॰ १४। प्रा॰ १२ $\frac{1}{6}$  $\times$ प $\frac{1}{6}$  इस । भाषा-सस्क्रत । विषय-पूजा । र॰काल  $\times$ । से॰कास स॰ १६५६ । पूर्ण । बेष्टन स॰ २१ । प्राप्तिः स्थान—दि॰ जैन अग्रवास भावर नेपाना ।

६३६४. पद्मावती पूजा— $\times$ । पत्रसं॰ २६। घा॰ ७ $; \times$ ५ $; \times$ ६ इन्त्र। साया-सन्दृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टुन स॰ १८६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर शेक्षावाटी (सीकर)।

विशेष-वांक्षागीत (हिन्दी) ग्रीर है।

६२६५. पद्मावती पूजा विधान— $\mathbf{x}$  । पत्रसं० २२ । प्रा० १०३ ×५ $\frac{1}{2}$   $\mathbf{r} = \mathbf{r} \cdot \mathbf{r} \cdot \mathbf{r} \cdot \mathbf{r}$  सस्कृत । विध्य-पूजा । २० काल  $\mathbf{x}$  । ले•काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ५४६ । प्राप्ति स्थान —ि० जैन मन्दिर कोटिबयों का हुं गरपूर ।

६३६६, पद्मावती पूजा स्तोत्र— $\times$ । पत्र स०१। घा०१० $^1_1 \times ^2_2$  इच्छ । भाषा—सन्छत । विषय—पूजा स्तोत्र । र०काल $\times$  । के॰काल $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२१। **प्राप्ति स्था**न—िंद० जैन पार्यनाथ चौधान कूँदी ।

**६६६. पद्मावती व्रत** उद्धापन— $\times$  । पत्रसं॰ ७४-६५ । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । ए० कास  $\times$  । ले०कास  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुनस॰ ४१३-११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटबियों का हं गरपुर ।

**८२८६. पत्य विचार**  $\times$  । पत्र सं० १। भाषा-सस्कृत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ७६८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

क ४००. सस्य विद्यान — × । यक्त ० १ । ग्रा० १२ × ४ इका । भाषा-हिन्दी । विद्यान पूजा । रक्ताल × । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरससी कोटा ।

५४० १. पस्य विधान —  $\times$  । पत्र स॰ ६ । प्रा॰ १ $\times$ ४ इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय — पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण ! बेष्टन स० १४५४ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर सजिर ।

६४०२. परंय विधान पूजा—विद्यामूष्या । पत्रस०६ । झा० १०४४ इश्वः । भाषा-संस्कृत । विधय—पूजा । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०१६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवसाना (वंदी)।

८४०३. परविवान पूजा $-\times$ । पत्रस० ७। म्रा० ११ $\frac{3}{4}$  $\times$ ६ इच । माषा-सस्त्रा। विषय-पूजा। २०काल  $\times$ । ले०काल सं०१८८१। पूर्ण। वेष्टन स०१३४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रजनेर भण्डार।

क्षरे**०४. यस्य विधान यूजा**—  $\times$  । पत्रस्व  $\vee$  । बार्व्य १० $\frac{1}{6}$   $\times$   $\frac{1}{7}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रव्यक्तल  $\times$  । लेव काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सव् १३४८ । **प्राप्ति स्थान**— भवदिव जैन मन्दिर प्रजनेर ।

क्ष्रं प्रस्य विधान पूजा $-\times$ । पत्रस॰ व। मा० ११ $\times$ ४ $^2_{V}$  इखा भाषा-सः $_{PR}$ त । विषय पूजा। २० काल  $\times$ । से॰काल स॰ १८६० म्राध्विन बुरी १४। पूर्ण। बेष्टनस० १४५। प्रास्ति – स्थान—दि० जैन मन्दिर म्रादिनाथ वदी।

८४०६. पर्वय विद्यान पूजा— म० रतनादि । पत्रस० ८ । प्रा०११ . ४ ६ व । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । २०काल ४ । न०कान स०१८४० । पूर्ण । बेष्टनस० ३६१ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन सन्तिर प्रकोर ।

६४०७. प्रति स० २ । पत्र स० १४ । प्रा० १२×४ इच । ले०काल × । पूर्ण । बेप्टन स० ६६ ६० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान, ।

द्ध४०६. प्रति संव ३ । पत्रस्व ११ । मा० ११४४ इ.च. ले०काल स० १६२७ । पूर्णः। वेप्टन सं०२७६ ३४३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपूर ।

विशेष—स॰ १६२७ वर्षे मारवा बुदि सार्नामितनो सागवाडा सुमस्थाने श्री घादिनाथ चैत्यालये सातिम बृहस्यतिवारे श्री मूल सथे भाषायं श्री यशकीर्ति भाषायं श्री गुएएबन्द्र ह० पूजा स्बहस्तेन निवित्त । ८४०६. प्रतिसं० ४ । पत्रस०७ । आ॰ १ $\times$ ६ इत्थ । आया-संस्कृत । विषय-पूजा । १०काल  $\times$  । ले॰काल स॰ १८४१ श्रावरण सुदी ६ । पूर्ण । बेहन स॰ १४ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर भादिनाथ वंदी !

 $\mathbf{x}$ ४१०. प्रतिसं $\mathbf{v}$  । पत्रसं $\mathbf{v}$  ११ । घा० ११ $\mathbf{x}$ ४३ इन्छ । से॰काल सं $\mathbf{v}$  १६४० श्रावस सुदी ११ । पूर्स । बे॰न स $\mathbf{v}$  ४१ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--- मालपूरा मे भाचार्य श्री गूराचन्द्र ने पं० जयच द से लिखया था।

८४११. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ११ । घा० १०×४ इच्छ । ले० काल × । पूर्ण । वेट्टन सं० २२० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन महिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष — प्रति प्राचीन है।

८४१२, परुष विधान—**शुभव**न्द्र । पत्र स०५ । ग्रा० १० $\S \times Y \S र्देष । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल <math>\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन सं०४६० । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर प्रकृत ।

दर्श रे . प्रतिसं० २ । पत्र स०७ । घा० ११ x ४ इच । ले० काल सं० १६०६ ज्येष्ठ मुदी १ । तुर्गा । तेपन स०१४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन क्षत्रवाल मदिर उदयपर ।

विशेष पहित जीवधर ने प्रतिलिपि की थी।

६४१४. प्रतिसं० ३ । पत्रम० ६ । मा० १०३ ४४३ इ.च. १ ले० काल  $\times$  । मपूर्ण । बेप्टन स.०. २४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

६४१**५. प्रतिसं०४ ।** पत्र स०७ । धा०११×४३ इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म०६२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

द्व**४१६. प्रतिसं० ४।** पत्र स०११ । प्रा० १०४५<sup>2</sup> इचा नि०काल स० १६४० । पूर्सा । बेष्टन स० २००। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन ग्रग्नवान मन्दिर उदयपुर ।

विज्ञेस-— प्रत्येक पत्र मे ११ पक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ४२ ग्रक्षर हैं। उद्योगन विश्वं भी दी हुई है।

८४१७. प्रति सं०६। पत्र स०१०। ने० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२७४। प्रास्ति -स्थान — उपरोक्त मन्दिर।

द्ध४१८. प्रति सं० ७ । पत्रसं० १ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७७ ३४४ । प्राप्ति-स्थान—वि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - गुरु श्री ग्रमयचन्द्र शिप्य शुभ भवतु । दवे महारावजी लिखित ।

६४**१६. प्रतिसं**० ६ । पत्रसं० ६ । ले० काल सं०१६४३ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० २७६√३४४ । **प्रास्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

बिशेय — प्रथम पत्र पर एक चित्र है। जिसमें दो स्त्रियों एवं एक पुरुष सड़ा है। यो वार्ती स्त्री के हाथ में एक कमल है। मेबाडी पगड़ी लगाये पुरुष सामने खड़ा है। वह भी एक हाथ को ऊचं उठाये हुए है। बोडितयों के छोर लये तीथे निकले हुए हैं। द४२१. यस्य विधान वतोद्यापन एवं कथा—धृतसागर। पत्र स०१८८। घा० ८३४५५ इ.च.। प्राथा-सस्कृत। विषय-पूजा एवं कथा। र० काल ४। ले० काल सबत् १८८०। पूर्ण। वेष्ट्रन सं० १०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंजायती मन्दिर दनी (टॉक)।

क्ष्रेप २१. पत्य व्रतः पूजा $-\times$ । पत्रसं $\circ$  २। प्रा $\circ$  १० $\times$ ४ इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र $\circ$ काल  $\times$  । क्षे $\circ$ काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन सं $\circ$  ३७४। प्राप्ति स्थान-दि $\circ$  जैन सन्दिर धजनेर भण्डार ।

 $\kappa$ ४२२, **पश्चपरकी पूजा** — **बेणु बह्यजारी।** पत्र स० ७। माथा-हिरी। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स० ४८८। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष-प्रारम्भ में ज्ञान बसीसी ग्रादि हैं।

दोज पत्रमी भ्रष्टमी एक।दशी तथा चतुरंशी इन पांच पर्वों की पजा है।

८४२३. पास्वेनाय पूजा—वेवेन्द्रकोति । पत्र स० १४ । या० ८४६} इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल ४ । से०काल स० १६२८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०११४३ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष-ग्रमरावती में प्रतिलिपि हुई थी।

**८४२४. पार्श्वनाय पूजा--वृदांबन** । पत्रसं०३ । घा०१२४६ इश्व । मापा -हिन्दी पद्य । विषय -पृजा । २०काल ४ । लेककाल स०१६३२ । पूर्ण । वेष्टन स०१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेखाबाटी (सीकर) ·

मर्थर्**४. प्रति सं**० २ । पत्र स० ४ । घा०म<sup>2</sup>, ४६ इश्वा ले∘काल ४ । पूर्णं । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन छोटामन्दिर वयाना ।

**८४२६ पिडविशुद्धि प्रकररा**— × । पत्रस॰ ४ । ग्रा० १० ४४ इश्व । प्राचा -संस्कृत । विषय विधान । र०काल × । से०काल × श्रपूर्ण । वेष्टनस०४०० । प्रास्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमर ।

**८४२७. पिण्डविशुद्धि प्रकररा**—×! पत्रतः टा धा० १०×४ इच्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते•काल स० १६०१ ध्रापाढ बुरी ४ । पूर्ण । वकृत स० १३२ । **प्राप्ति -**स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष-प॰ सप्तिकलण ने महिमनगर मे प्रतिलिपि की थी।

प्रध्यत्वाचन—म्राज्ञाधरः। यत्र स००। प्रा० १्रे×७ इन्च । भाषा—संस्कृतः। विषय—विषान । रं०काल × । नं०काल × । पूर्णः। वेष्ट्रन स० ४३१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपूरः।

८४२६. पुष्पाह्वाचन — × । पत्रसः ६ । ग्रा० १० × ६ इश्व । माया — संस्कृत । विषय-विषान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ३४७-१३२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का ढूंगरपुर ।

 $\mathbf{c} \mathbf{Y}$  ३१. **पुष्याहवाखन** —  $\mathbf{X}$ । पत्रसः ०  $\mathbf{c}$ । प्रा॰  $\mathbf{c}_{\mathbf{r}}^{\mathbf{Y}}$  ४ इ.च.। प्राखा-संस्कृत । विषयः - विधान । रे॰ काल  $\mathbf{X}$ । से काल सं ० १८६४ चैत सुदी १४.। पूर्णः । वेहनसं ०  $\mathbf{X}$ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)

८४३२. पुष्पाह वाचन $-\times$ । पत्रस $\circ$  ७। झा० १० $]\times$ ४] इञ्च। भाषा सस्कृत। विचय-विचान। र०काल  $\times$ । ले०काल स $\circ$ १८८१। पूर्ण। वेष्टन स $\circ$ २७१। प्राप्ति स्थान - दि $\circ$  जैन मन्दिर सक्कर जवपूर।

विशेष -- प॰ केशरीसिंह ने शिष्य ने प॰ देवालाल के लिए प्रतिलिपि की थी।

क्ष ४३३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । घा० ११ ४ ५ इचा । ले०काल सं० १७७३ । पूर्ण । बेष्टनसं० २७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६४२४. पुण्याह्वाचन —  $\times$  । पत्र स०२६ । ग्रा० ६ $^1_i$  $\times$ ४ इत्त्र । माषा – सस्कृत । विषय – पूजा । र०काल  $\times$  । लेकाल स०१६६४ पौष बुदीरेरे । पूर्ण । वेष्टनसं०१४२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर पार्ध्वनाथ चौगान बुदी ।

प्रथे २. पुरंदर **वतोद्यापन —सुरेग्द्रकीति**ः पत्रसं० २ । घा० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पुजा । ४० काल स० १६२७ । **ले•काल ×** । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्रास्ति स्थान**— दि० जैन पत्रायनी मदिर दूती (टोक)

विशेष-नमीचदजी के पठनाथं प्रतिनिधि हुई थी।

प्रथे पुरस्वर **बनोधायन** — × । पत्रस्य ३। मार्ग १९<sup>3</sup>८४ । प्रामा नास्कृत । विषय-पुत्रा । :०काल ४ । रेकाल स० १९१३ । पूर्ण । वेष्टनस० १८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर फेनिस्टन स्थामा वृद्यो ।

 $\mathbf{c}$ ४३७ पुष्पमाला प्रकर्ण $-\times$ । पत्रस० २२ । ग्रा० १२ $\times$ ४ ६२० । भाषा प्राकृत । विषय-विधान । रण्काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रन स० ४२१/२५६ । प्रास्ति स्थान —िद् जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- केशवराज की पुस्तक है। प्रति प्राचीन है।

८४३६ पुष्पांजलि जयमाल $-\times$ । पत्रतः ७। ग्राः १० $^{1}\times$ १ $^{2}$  इन्न । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

६४४०. पुष्पाञ्चलाल पूजा—मन सहीचन्द । पत्र सन् ४ । छा॰ १२ ४ १ इच । माषा— संस्कृत । विषय-पूजा : रक्शल ४ । से॰काल ४ । पूर्ण । बेहनस॰ १०४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैत पारवेनाय मन्दिर चौगान व दो ।

विशेष--पट्टरा सहर मध्ये शिपिकृतं ।

च ४४२. प्रतिसं० २ । पत्रस०६ । सा० १०८४ है इ.च. । ले० काल ४ । पूर्ण । बेहनसं० ४७७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर सजमेर ।

६४४३. पुरुषा-रूजिल पूला —  $\times$  । पत्र स० ६ । प्रा०११ $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय पूजा । र० काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोरसली कोटा ।

८४४४. पुष्वाध्यक्तिल पूजा—  $\times$  । पश्चः  $\circ$  ६। मा $\circ$  ११ $^{3}$  $\times$ १ $^{3}$  $^{2}$ द्वः । भाषा-संस्कृत । क्रियय-पूजा । र $\circ$ काल  $\times$  ते $\circ$  काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्ट्नसं $\circ$  १४ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जंन मन्दिर प्रादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक)

६४४५. पुष्पाञ्जलि दतीशापन—गंगादासः । पनसः ५ । झा० १२४७ इतः । भाषा-सस्कृतः । विषय-पूजाः । २० कालः ४ । ते०कालः ४ । पूर्णः । बेष्टनः स० ४३५ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुरः ।

८८४६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । ष्रा० १०३/४५ द**त्य । ले०काल** सं० १७५३ । पूर्ए । वेक्टनसं० १०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष-इति भट्टारक श्री धर्मचन्द्र शिष्य प० गगावास कृत श्री पुष्पाजलि व्रतोद्यापन सपूर्ण ।

सवत् १७५२ वर्षे शाके १६१८ प्रवतमाने आधिवन मासे छुष्णपक्षे वशमी तिथौ शनिवासरे लिखिला प्रतिरिच । सचवी हुसरान मयुरादास पठनार्थ । श्री ध्रमदाबाद मध्ये लिखित । प० कूशल सागर गाँख ।

चंद्रदेश. प्रति सं० रे १ पत्र सं० १२ । आ० ६×४ हञ्च । लेवकास स० १८७६ चैत बुदी ६ । पूर्य । बेपून स० १० । प्राप्ति स्थान---दिव जैन मन्दिर ग्रादिनाथ मालपूरा (टोक)

द्र४४ द. प्रति सं०४ । पत्रस०१० । ग्रा०१ ४४ इ.च. । ले∙काल × । पूर्णा वेष्टन सं० ३१ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर बोरससी कोडा ।

द्र४४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । मा० द×४ इला । ने० काल х । पूर्ण । बेहन स० १२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर दूर्ना (टोक)

द्र४४०. प्रतिसं०६। यत्रसं०४ । घर०१२×४६ (संघ । ले० काम × । आसी । केश्ननसं० १०७ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन पाल्वनाय मन्दिर चौगान बृंदी । स्४५१. कुष्यांत्रील संतीद्यापन टीका — ४ । पत्र सं०४ । सा० १२ ४ ४ इ.स. । माषा-संस्कृत । विषय पूत्रा । रुकाल ४ । से•काल सं०१६११ सावन सुदी २ । पूर्ण । बेहन सं०१३४७ । प्राप्ति म्यान — ४० ति० जैन मन्दिर सजसेर ।

क्षप्रेर. पूजाष्ट्क — ज्ञानसूबर्ग। पत्रसं० ४४। सा० १२×४ इञ्च। भागा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १४२०। पूर्ण। वेष्ट्रनसं० ४४०/३७१। प्राप्ति स्थान —दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

ग्रन्तिम पृष्टिपका---

इति भट्टारक श्री पुवनकीर्ति शिष्य मुनि ज्ञानभूषण् विरचितायां स्वकृताष्टक दशक टीकायां विद्व-ज्ञान बल्लभा संज्ञायां नदीश्वर द्वीप जिनालयांचनवर्णसीय नामा दशमीषिकारः ।

प्रशस्ति -

श्रीमत् विकामभूपराज्य समयातीते । सवत् १५२६ वसुद्वीन्द्रय क्षोगी संमितहायने गिरिपुरे नामेय-चैरयालये । भ्रतित श्री भुवनादिकीति मृनियस्तस्यांगिर । सेवितास्यो ज्ञानेविभूमणामृनिना टीका ग्रुमेय कृता ।

क्ष ४३. प्रतिसं०२ । पत्रसं०२०। मा०१०४४} २८६ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति जीर्ग् है एव धन्तिम पत्र नहीं है।

मध्यप्रस्**रुजास्टक—हरवज्यन्द । पत्रस**्य ३ । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल 🗶 । ले॰काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ ६६४ । **प्राप्ति स्थान—दि॰** जैन प्रवायती मदिर भरतप्र ।

प्रथम प्रजाटकः - × । पत्र स० ४। मा० ११×६ इचा । भाषा —िहन्दी ।विषय— पूजा । र∘काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ६२१ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन संदिर सक्कर जयपुर ।

विशेष- प्रादिनाथ पूजाप्टक, ऋषभदेव पूजा तथा भूधरदास कृत गृरु वीनती है।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

८४५७. यूजापाठ संग्रह  $\times$  । पत्रस० १४ । मा० १२ $\times$ ५५ ह्र-च । भाषा -हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५६ । प्राप्ति स्थान -भ०दि० जैन मन्दिर प्रवर्षर ।

द४५६, पूजापाठ सग्रह— × । पत्रसं० ७० । झा० १४५ इञ्च । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्णे । वेष्टन सं० १४६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संदिर जवनेर मण्डार ।

विशेष--दशलक्षरा पूजा तथा वोडवकाररा पूजा भी है।

६४१६. पूजापाठ संग्रह— $\times$ । पत्र सं० १३। मा० ७ $\times$ १ इन्न । मापा हिन्दी । विषय-पूजा १ र०कास  $\times$ । से०कास  $\times$ । पूर्ण । वैष्टन सं० १२/बद्ध । **प्राप्ति स्था**न —दि० जैन मन्दिर मादना (राज०)। **६४६०. पूजापाठ संग्रह**—  $\times$  । पत्रस० २१६ । धा०६ $\times$ ७ इच । भाषा-िहत्दी । विषय-पूजा । र० काल $\times$  । ले० काल $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपयी मिंदर नैसावा ।

बिशेष -- सामान्य नित्य नैमित्तिक पूजाओं एव चौबीसी तीर्थंकर पूजाओं का सग्रह है।

म्४६२. पूजापाठ संग्रह । पत्रतः २-४०। ग्राः १२४६ ईंट्य । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा एव स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स० ४६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियों का क्रारप्र ।

विशेष - नवप्रहस्तोत्र एव ग्रन्य पाठ है।

दर्श्सर. पूजापाठ संग्रह—  $\times$  । पत्र स०७० । ग्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इच । भाषा-सम्कृत । विषय-पूजा पाठ । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स० ३६०-१४७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

विशेष--विभिन्न पूजाए एव स्तीत्र है।

विशेष — जिन महस्रनाम (जिनसेन) सरस्वती पूजा (अ० जिनदाम) एव सामान्य पूजाओ का सम्रह है।

६४६४. पूजापाठ संग्रह्म-  $\times$  । पत्रस०१६ । ग्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ ६वा । ग्राप- िन्सी सम्बन्धा विषय-संग्रह । र०काल  $\times$ । ले० काल स० १६६४ । पूर्ण । वेण्टन स० २३६ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हूं गरपुर ।

८४६५. पूजापाठ संग्रह— × । पत्रस० ४६ । ग्रा० १०%७ डवा । भाषा-हिन्दी-सम्कृत । विषय-पूजा पाठ । रक्काल × । लेक्काल × । पूर्णै । वेष्टनस०७-४ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन सन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

विशेष--२७ पूजा पाठों का सग्रह है।

विशेष-भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका तथा मत्र ऋदि श्रादि सहित हैं।

८४६७. पूजा पाठ सग्रह $-\times$ । पत्र स० १३२। प्रा० ५ $\frac{1}{4}$  ४५ $\frac{1}{4}$  ६ च । भाषा - सस्कृत । विषय-पुत्रा पाठ । र० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ३२६-१२७। प्राप्ति स्थान -दि० जैन सन्दिर कोटडियो का हु गरपुर।

विशेष--विभिन्न प्रकार के स्तीत्रों एव पूजा पाठी का सग्रह है।

· द४६८. **पूजा पाठ संग्रह**—×। पत्रस० १६। ग्रा० द×४ इञ्चा भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा पाठ । र०काल ×। ले० काल। पूर्ण । वेष्टनस० २०७-द४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हगरपुर। **८४५१. पुजा पाठ संगह**—४ । पत्र स०७० । झा० ८४५१ हवा । भावा-सस्कृत-हिन्दी । विषय ∙पूजा पाठ । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं०४३०-१६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

८४७०. पूजा पाठ संग्रह।पत्रसं० ४६। ग्रा॰ ७४६ इञ्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-पुजा पाठ। र०काल ४। ले॰ काल ४। पूर्ण। वेष्टनस॰ ४३६-१६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपर।

द**४७१. पुजापाठ संग्रह— × ।** पत्र सं०१११ । घा० १०×५ इक्षा । याया—सस्कृत । विषय-सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०४११ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वगरपर ।

स्थ्र प्रता पाठ संग्रह— × । पत्रस० २३ । ब्रा० १२ ४६ इचा । भाषा-हिन्दी पद्य । विवय-सब्रहार० काल × । ले०काल स० १११४ फाल्गुग बुरी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२५ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर णेवाबाटी सीकर ।

द४७३. पूजा पाठ संग्रह—×। पत्रस० ५६। बा० १३३ूँ×-दै इञ्च । भाषा-सम्बन्धनिहन्दी विषय-पृत्रा । र०काल× । ले०काल स० १६६७ पीष बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनमं० ११३ । प्राप्ति स्थान— जैन मन्दिर फतेन्द्रपर शेलाबाटी (शीकर)

विशेष - भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा निखाया गया है।

= ४७४. **पूजा पाठ संग्रह**—  $\times$  । पत्र स० २०। आ० १ $\times$ ६ है इन्छ। सावा-सस्कृत हिन्दी। विषय-पृष्ठा। २०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वष्टन स० ६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रचायती मन्दिर करीनी।

विशेष--सामान्य पूजा पाठो का सम्रह है।

६४७६. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रस० ६ से ४६ । ग्रा० ७१ ४४१ इन्छ । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । प्रपूर्ण । वेष्ट्रनस० ७७ । प्राप्ति स्थान—ाद० जेन प्रचावती मन्दिर करोली ।

विशेष -- गृटका साइज है।

८४७७. पूजा पाठ संग्रह— X । पत्रसः ३४ । घा० १२ x ७ १ ६ छ। माधा-हिली सरहत । विषय — पूजा । र०काल X । ने०काल X । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर करोत्ती ।

विशेष---निमित्त नैमित्तिक पुजाओं का समह है।

८४७८, पूजा पाठ संग्रह—imes । पत्रसं० ५२ । माया-हिन्दी । विषय-पूजा । राज्यान imes से कान imes । धपूर्णा । बेहन सं० २६२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पंचायती , सन्दिर भरतपुर ।

६४७६. **पूंका पाठ संग्रह**—×। पत्र सं० १७२ । माचा नहिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ६१ । **प्रास्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

६४६०. पूजा पाठ संग्रह—×। पत्रसं० ७२। माथा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पृजा । र०काल ४ । । ले०काल × । पूर्वो । वेटटन स० १४। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

 $\mathbf{c} \times \mathbf{c}$  , पूजा पाठ संग्रह —  $\times$  । पत्र स० १०६ । भाषा — हिन्दी संस्कृत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

द्र४८२. **पूंजा पाठ संगह—** × । पत्र सं० १०७ । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेटनसं० ४७ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपूर ।

द४द३. पूंजा संग्रह—  $\times$  । पत्रस० १४२ । मा॰ १० $\times$ ६ $^{\circ}$  इख । भाषा -हिन्दी सस्कृत । विषय-पुजा पाठ । र०काल  $\times$  ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं॰ ३८० । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

द४द४. **पूजा पाठ संगह** — ४ । पत्रसं• १३ । झा॰ ६३४६३ हंच । माषा—हिन्दी । विषय-पुजा । ले॰काल सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बरमली कोटा ।

विशेष-द्लीचन्द के पठन थंबुदी नगर में लिखा गया है।

**८४८५. पूजा पाठ संग्रह** × । पत्रसं० १४४ । प्रा० ८ ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय—पुजा पाठ । से०काल × । पूर्ण । बेहनसं० ३७८ । **प्राप्ति स्थान**ं दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-सामन्य पाठो का सम्रह है।

८४८६. युजा पाठ संग्रह —  $\times$  । पत्र स० ६४ । आ० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इन्त्र । आपा-हिन्दी संग्रहत । विषय-पुजा पाठ । २०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । स्मूर्यों । वेष्टन स० १७७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सदिर दवलाना (बृंदी)

विशेष --- प्रति जीर्ग है

**८४८७. पूजा पाठ संग्रह** — × । पत्रम० २२६ । म्रा० ७ रै.४१ है इस । भाषा हिन्दी-सस्कृत । विषय-पुजा। ४०काल × । से•काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दराह (कोट)

**८४८८. पूजा संग्रह** —  $\times$  । पत्र स० ६ । ग्रा० ८ $\times$ ६ इ.स. । मापा-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—िवः जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष - गूर्वाविल पूजा एव क्षेत्रपाल पूजा है।

क्षंचर्तः पुत्रा पाठ संग्रह $-\times$ । पत्रसं० १०४। ग्रा० ७ $\frac{3}{4}$   $\times$  ६ द्व । माया-हिन्दी-संस्कृत । विषय-पूत्रा पाठ। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टनसं० ७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाव्यंनाथ संदिर इन्दराइ (कोटा)

क्षप्रह. पूजा पाठ संबह्न $-\times$  1 पत्र संबर्धः। ब्राह्म १ इक्ष्मः। ब्राह्म नहिन्दी, संस्कृत । विषय-संबहः। रूक्षाः  $\times$  । लेक्सलः  $\times$  । व्यपूर्णः। वेष्ट्रम संब्धः । रूक्षाः  $\times$  । लेक्सलः  $\times$  । व्यपूर्णः। वेष्ट्रम संब्धः । रूक्षाः  $\times$  । लेक्सलः  $\times$  । व्यपूर्णः। वेष्ट्रम संब्धः । रूक्षाः ।

 $x^2 \in \S$ . सूकापाठ संग्रह— $\times$ । पत्र सं० ११। प्रा०- $\times$ । श्राधा-सस्कृतः, क्रियी। विषय-संग्रह । र०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ५३। प्राप्तिः स्थान—वि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टॉक)

प्रस्थ- पूजा पाठ संग्रह—×। पत्र सं० २ से २०३। धा० ७०० ४५ ६०० । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा पाठ। र०काल ×। ते०काल ×। पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १४३-२५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टॉक)

## विशेष-- निम्न पाठ है---

- महाणान्तिक विधि— × । संस्कृत । ले•काल स० १५२३ वंशास बुदी १ । पत्रस० १-६१ नेनवा पत्तने सुरवास अलाउट्टीन राज्य प्रवर्तमाने ।
- २. गागुधर बलय पूजा- × । पूर्ण । ले०काल स० १५२३ पश्वस० ८२-१४० । ६८ से ११२ तक पत्र खाली है।

द४६४. पूजा पाठ संग्रह—४। पत्रस० २४४। घा० ७३४४१ देवा। प्रापानसङ्कत, हिन्दी। विषय सबहु। र०काल ४। ले०काल ४। पूर्ण। वेष्टन सं० १३। **प्राप्ति स्थान**—(६० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडागर्यासह (टोक)।

६४६५. पूजा पाठ संग्रह— $\times$ । पत्र सं०७२। मा० ६५ $^2$  $\times$ १५ इञ्च। भाषा-हिन्दी, संस्कृत। विषय—पूजापाठ। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन सं०६७। प्राप्ति स्थान—हि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

८४६६. पूजा पाठ संग्रह— $\times$  । जनसं॰ १-६६ । ग्रा० ५ $\times$ ४ इञ्च । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह । र०काल— $\times$  । ले०काल स॰ १६५१ । प्रपूर्ण । बेहनसं॰ ६१ । प्राप्ति स्थान—हि० जैन पार्थनाय मन्दिर टोडारायीवह (टोंक) ।

६४६७. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्र न० ६०-१८१। ग्रा० १ × १ हरून । जावा-हिन्सै, संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्णः। वेष्टन सं० ७१। ग्राप्ति स्थान— क्रिक क्रीन क्रीस्टर पार्श्वनाय टोबाएम(विह् (टोक) ।

८४६ ८. पूजा पाठ संग्रह—×। पत्रसं॰ १२७। झा॰ १०४४ इज्न । माषा-क्रिसे, सस्कृत । स्वयय-अपूजा । रक्ताल ४ । से० काल स० १६४८ । पूर्ण । ब्रेहनसं० २ । प्राप्ति स्थान → क्रिक क्रेन कक्ष्याल मस्तिर संग्रहा ।

विक्रोच--नैशावा में प्रतिलिपि की गयी थी।

द४६६. **यूजा पाठ संगह— ×** । पत्रसं• २१६ । ष्रा• ४३४४ ६व्य । भाषा -हिस्सै, संस्कृत । विषय—पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्णे । वेष्ट्रन स०६६ । **प्राप्ति स्थान**— वि• जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

 $\mathbf{c}$  ५००. पूजा पीठ संग्रह— $\mathbf{x}$  । पत्र मं॰ १२६ । प्रा॰ १ $\mathbf{x}$ ६ ६ व । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-पूजा पाठ : र०काल  $\mathbf{x}$  । ले॰ काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । वेटन स॰ ७१ । प्राप्ति स्थान । दि॰ जैन तेरक्षणी मन्दिर नैसाना ।

दथ्०१. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रस० १३० । घा० ६ × ५ इचा । भाषा हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । से०काल × । अपूर्ण । बेष्ट्रन स० ७२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नेगावा ।

 $\mathbf{x}$ ५२२. **पूजा पाठ संग्र**ह— $\mathbf{x}$ । पत्र स० १३६। ग्रा० ४ $\mathbf{x}$ ४६ वः। भाषा-हिन्दी। विषय- पूजा पाठ। र०काल  $\mathbf{x}$ । ते०काल  $\mathbf{x}$ । पूर्ण। वेष्टनसं० ७४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहथपी मन्दिर नैगाव।

५५०३. यूजा पाठ संग्रह —  $\times$  । पत्र स०४०। मा०६ $\times$ ५ इचा। भाषा-हिन्दी । विषय - सग्रह। र०काल  $\times$ । ते॰ काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्ट्रन स०७५। प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैसावा।

विशेष-पूजा पाठ सम्रह है।

**८५०४. पूजा पाठ संग्रह**—  $\times$  । पत्रस० ७० । ग्रा० ६×१, इ.ख । मापा-हिन्दी, सस्क्रत । विषय-पूजा पाठ । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६४ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन तरहपथी मन्दिर नैराजा

विशेष-सामान्य पूजा एव पाठो का संग्रह है।

द्र**०५. पूजा पाठ सम्रह** × । पत्र स० ६१ । म्रा० १०×५' इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय- पृत्रा एव स्तीत्र · २०कारा ४ । न०काल स० १८११ फागुण मुदी ५ । दूर्ण । वेष्ट्रतस० ७२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर कोटको का नैगाया ।

**८५०६. पूजा पाठ संग्रह**—  $\times$  पत्रसः ११ । ग्रा० १० $\times$ ६२ । भाषा हिन्दी-सस्कृत । विषय-पुजा पाठो का संग्रह । र० काल  $\times$  । के बकाल सः० १८७ माथ सुदी १ । पूर्ण । त्रह्न सं० ७२ । **प्राप्ति स्था**न— टि० जैन भन्दिर कोटको का नेणवा ।

= ५०%. पूजा पाठे संग्रह— × । पत्रस० १८७ । झा० ६ × ४ ∫ इत्था भाषा न्मस्कृत, हिन्दी। विषय-पूजा पाठो कासग्रह । रक्काल × । लक्काल ४ । पूर्ण । वेष्टन म० ७४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोटको का मैसाब।

द५०६. पूजा पाठ संग्रह—× पत्र स०१४४। प्रा० १×४ दश्च । भागा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०। प्रास्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोट्या का नैरावा। ।

प्रश्रेष्ठ पुरुष पाठ संग्रह— × । पत्र स० २-२-४ । ग्रा० १८ ×७ इखा । आवा-हिन्दी-सस्हत । विषय सग्रः। र०काल × । ले०काल × । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० २१४ । प्राप्तिः, स्थान—दि० जैन मिरिर राजमहल (टोक) । विशेष--नित्य नैमिलिक पूजा पाठों का सग्रह है।

**८५१०. पूजा पाठ संघह**—  $\times$  1 पत्र स० ६४। प्रा० १ $\times$ ५६ स्व । माया-प्राष्ट्रत-सम्ब्रत । विषय-संघह । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २४०। प्राप्ति स्थान—वि० जन मन्दिर राजमहल (टॉक) ।

विशेष-पंच स्तोत्र, पूजा, तत्वार्थ सूत्र, पंच मंगल आदि पाठों का सम्रह है।

**५५११. पूजापाठ संग्रह**—  $\times$  । पत्र सं० ५१। प्रा० ११ $\frac{1}{7}$   $\times$  ५ इ.स. । गाया-संस्कृत । विषय-पाठ संग्रह । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

**८५१२. पूजापाठ संग्रह**— $\times$  । पत्र सं० ३४ । घा० ११ $\times$ ५ इला । माया-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र प्राटि का सग्रह । **से०काल**  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २५१ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

**८५१३. पूजायाठ संग्रह**—  $\times$  । पत्र सं० २–३२ । प्रा० ६ $\frac{3}{4}$   $\times$  ७ इ.स. । प्राथा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर दूदी ।

**८५१४. पूजापाठ संग्रह—х** । पत्र स० ७० । ग्रा० ११imes६ इ**थ** । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-संग्रह । ले० कान imes । पूर्ण । बेष्टन म० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष-- बूदी मे प्रतिलिपि हुई थी। निम्न पाठ एव पूजाये है--

मगलपाठ, सिद्धपूजा, मोलहकाररा पूजा, भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वायंसूत्र सहस्रनाम एव स्वयभू स्तोत्र ।

६४१४. पूजापाठ संग्रह $-\times$  । पत्रस० २७६ । प्रा॰ ६५ूँ ४६ इखः । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । पूर्णं । बेहनस० १७२ । प्रास्ति स्थान--- दि० जैन मस्दिर नागदी बूंदी ।

**८४१६. पूजापाठ सग्रह**— $\times$ । पत्र स० ८०। घा० १० $^2_7 \times$ ८ इच्च । माथा सस्कृत-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले० काल imes । घ्रपूर्ण । बेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर नागरी बूंदी **।** 

विशेष-- नित्य नैमितिक पूजा तथा स्तीत्र है।

**८५१७ पूजापाठ संग्रह**—  $\times$  । पत्रस०५६ । प्रा०१० $\times$ ४ इ.स. । भाषा सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागती बंदी ।

**विशेख** - नित्य पूजापाठ एवं तत्त्वार्थ मुत्र है।

**८११८. पूजापाठ सम्रह**—४। पत्र स०४७। म्रा०६×६ इखा भाषा-हिस्दी संस्कृत। विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल ४। ले०काल स०१८५७ जेठ बुदी १। पूर्णा वेप्टन स०१६। **प्राप्ति** स्थान – दि० जैन मन्दिर म्रादिनाप बृदी।

विशेष -- नित्य पूजा पाठ संग्रह हैं।

**८५१६. पूजा गांठ संग्रह**—  $\times 1$  पत्र सं० ६–६६ । मा० १२ $\times$ ६ इचा श्राया संस्कृत-हिन्दी । विषय-संग्रह । १०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रारिताय व दी ।

१ वस क्याल

\$

विशेष--सामान्य पूजा पाठ सम्रह है।

च्**४२०. पूजा पाठ संग्रह**— ४ । पत्रतः ४१ । ग्रा० १२४७ } इल्बा भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-पूजा परकाल ≭ा लेकाल **≭ा** पूर्णं। वेष्टन स०४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय ब दी।

विशेष — २५ पूजा पाठो का संग्रह हैं।

६५२१. पूजा गाठ संग्रह— × । पत्रत० ६६ । ग्रा० १० × ५ इला । भाषा-प्रजा स्तोत्र । र०काम × । लंग्काल स०१६१८ लेठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स०२० । ग्रास्ति स्थान—दिव जंन मन्दिर प्रादिनाथ वंदी ।

विशेष--शिवजीलाल जी ने लिखवाया था।

**६५२२. पूजा पाठ संबह**—  $\times$ । पत्रस० ११०। म्रा० १३ $\times$ ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा स्तीत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेगृन स० ६६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर म्रादिनाथ बुंदी ।

विशेष--1ूजा एव स्तोत्र भादि पाठो का सग्रह है।

---- स्थानस्ट ।

**६५२२. पूजा पाठ संग्रह**—  $\times$  । पत्रस**्** ३१.। ग्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$ टख । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तात्र । २०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । । पूर्ण । वेष्ट्रन स**०** ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० अंत मन्दिर ग्रीमनस्टन स्वामी बुदी ।

**८५२४. पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्रस०१ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पूजा । जे०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१०२-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

विशेष —िन-न पूजा पाठो का एक एक का प्रतग प्रलग सग्रह है। गुटका प्राकार में ⊏ पुस्तकं है– चन्द्रप्रम पूजा, निर्वाणक्षेत्र पूजा, गुरु पूजा, भक्तामर स्तोत्र, चनुविज्ञति पूजा, (रामचन्द्र) नित्य नियम पूजा एवं भक्तामर रतोत्र।

६५२५. पूजा पाठ संग्रह— ४ । पत्र स०११६ । ग्रा० ६ ४६३ इन्छ । भाषा-हिन्दी पत्र । विषय-सग्रह। ने० कान स०१६७६ बैसान बुटी ६ । पूर्ण । बेप्टन स०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चीर्घारामा सलुपा (टोक) ।

	4.4.4.1		13.4	
٦.	राधु वन्दना		वनारमीदासः।	;
₹.	परम ज्योति		*,	
٧.	विषापहार		<b>अचलकी</b> नि	पत्र १−१६ तक
٧.	भक्तामर रतोत्र		माननु ग	
٤.	कथि मडल स्तोत्र		×	
٥.	रामचन्द्र स्तात्र	-	×	पत्र स०१६। संस्कृत
۲.	चौसठ योगिनी स्तोत्र		×	सस्कृत २०
ε.	क्षेत्रपाल पूजा		शानिदास ।	,
٥.	क्षेत्रपाल स्तोत्र		×ι	,, २२

११. स्टबरा

संस्कृत ।२३

```
१२. क्षेत्रपाल
                           --- मनिश्रभवन्द।
                                                                 हिन्दी पद्य । २४
         क्षेत्रापाल की विनती लिख्यते :---
         जैन को जद्योन भैकंसमकति धारी।
                    साति मुरति भव्य जन सुखकारी ।। जैन० ।। टेर
         पृषरियालो केस सिंदुर तेल छवि को।
                    मोतिया की माला भावी उग्यों भाउ रवि को ॥१॥
         सिर पर मुकट कुण्डल काना सोहती।
                    कठी सोहे भूगभूगी हीय हार मोहती 11२11
         भुख सोहे दाता नै तंबील मुख चुवती ।
                    नैएग रेखा काजल की तिलक सिर सोहतो ॥३॥
         बाजबध भी रख्या प्रौच्यान पौचि लाल की।
                    नवग्रह धांगुल्या नै पकड्या डोरि स्वान की ॥४॥
         कटि परि घघरा तन्यों लाल पाट की।
                    जग धनधोर वालै रमे भूमि चाट को ।।४।।
         पहरिकडि मेखला पग तलि पावडी।
                    चटक मटक वार्ज खुटया मोहै भावडा ॥६॥
         छडी लिया हाथ में देहरा के वारगाँ।
                    पूजा करें नरच रखवाली के कारगी।।७।।
         नृत्य करै देहरा कै वारीएकज लाप कै।
                    तान तौडे प्रभु धार्न जिन गुए। बगाय के ।। दश
         पहली क्षेत्रपाल पूजे तैल कावी बाकुला।
                    गुगल तिलोट गुल ग्राठी द्रव्य मोकला ॥६॥
         रोग सोग लाप बाडि मरी की भगाय दे।
                    वालकां की रक्षा करें भन धन पूत दे ।।१०।।
         गीत पहली गाय जी रक्ताय क्षेत्रपाल की।
                   मृति सुभवन्द गायो गीत भैरू लाल कौ ॥११॥
१३. चत्विशति पूजाधक
                                    ×
                                                                संस्कृत । पत्र सं० २५
 १४. बंदेतान जयमाल
                                                                संस्कृत । पत्र सं० २६
      मनिश्वरों की जयमाल - द्र० जिलादास ।
                                                                 हिन्दी। पत्र स० ३२
१६. दश लक्षरा पूजा
                                                                  संस्कृत ।
      सोलहकारस पूजा
₹७.
₹5.
      सिद्ध पुजा
88.
      पट
                                                                 हिन्दी। पत्र सं०३७
```

× I

=19	<b>६</b> ]				]	ग्रन्थ ह	ची-पंच	म माम
			हासाहिव मेरा।					
		लाक काउ	ठ लीजत नाम सवेरा	н				
₹∘.			×ͺı		संस्कृत	पत्र स	• 85	
٦१.			पद्मप्रभदेव ।		.,,	"	8.3	
२२.		-			हिन्दी	"	8.6	
₹₹.	••		भूषरदास ।		"	"	¥ o	
₹४.			ज्ञान भूषरा ।		"	"	**	_
			ावैसासासुदी ६ रवि	बार स०१६७६ मे	मालपु	रा नगर	में भौसों	के बास
केम	न्दिर में स्वपठनार्थं प्र	तिलिपि की	ाषी।					
₹۲.	तत्वार्थसूत्र		उमार स्वामी।		सस्कृत	i "	ęυ	
₹.	सहस्रनाम	-	माशाधर ।		.,	۱,,	७३	
२७.	विनती		रूपचन्द ।		**	1 ,,	७४	
		जिन देवन						
	सुरतर स	।कल करैतु	म सेवा।					
२८.	पद	_	रूपचन्द ।		हिन्दी	t "	Уe	
	ग्रव मैं वि	जनवर दरस	रगपायो।					
₹٤.	विनती		कनककीत्ति		,,	1 ,,	ષ્ટ્ર	
	बदौश्री	जिनराय म	न वच काय करेजी ।					
₹0,	विनती		रायचन्द ।		हिन्दो	۱ "		
		ाम घनि ले						
	श्री जिन	राज भला ग	पुस्तपेस्याः।					
₹.	विनती	_	व ० जिनदास ।		हिन्दी	۱ "	७६	
			जिरग्द करी विनती र					
			रुवदि जिनवर वीनत					
			रगो जिनदास मुक्ति व	हांगए। ते वरै ।।				
₹२.	निर्वाग काण्डभाषा	-	भैया भगवतीदास ।		हिन्दी	। पत्र सं	० ७९	
	<b>विशेष</b> —५० वि	शवलाल ज	ती वाकली वाल शिष्य	ग्राचार्यं मारिएकच	न्द नेः	गलपुरा	में मौंसे ब	के बास
के मि			मे प्रतिलिपि की थी।			•		
3 3	भारती		द्यानतराय ।		ਵਿਜ਼ਰੀ	। पत्र संब	16.2	
₹.	पचमबघावा	-	XI		,, 1		50	
, ••		गम्हाके व	्र. गिव भ्रति भायातो ।		,, ,	,,		
			जीकी भावनाजी।					
X.	विनती	-	ह्मदचन्द्र ।		विक्ती ।	पत्र संब		
٠,٠.	<b>प्रारम्म</b> —दुनिय				6.41	नन सब		
		त भगति न						
	*****		ς. <b>4</b>					

## **अस्तिम** नहीं एक की हुई घला की भरतारी,

नारी कहत कुमदचन्द कौरा संगि जलसी घरा पुरिचा नारी ।।

₹.	वसमगति वेलि	_	हवंकीर्ति ।	हिन्दी	। पत्र सं	o = 3
				र० क	स्तर :	₹€₹
₹७.	नींदडली		किशोर ।	हिन्दी	। पत्र सं	o = \$
₹5.	विनती		भूधरदास ।	,,	,,	50
	हमारी करुए	ग़लैं।	जिनराज हमारी।			
₹₹.	भक्तामर भाषा		हेमराज	हिन्दी	। पत्र सं	0 55
٧o.	वीनती		रामदास	,,	,,	13
٧٤.	वानती		<b>ग्रजैराज</b>	,,	,,	¥3.
४२.	जोगीरासा		जिरादास	,,	,,	€ 4
٧٦.	पद		ग्रजैराज, बनारसीदास, एव मनरय	٠ ,,	,,	
88.	न्दूहरी		मुन्दर ।	,,	. 11	33
	सहैल्यो हे ये	सिसा	र ग्रसार ।			
٧٧.	रविवार कथा		भाऊ।	,,	,,	309
84.	शनिश्चरदेव की कथा		× ı	हिन्दी गद्य ।	पत्र सं०	११२
80	पार्ग्वनाथाष्ट्रक		विश्वभूषम् ।	सस्कृत ।	,,	588
٧٤.	खण्डेलवालों के गोत्र ।	<b>دلا</b> ا				
86.	बधेर वालो के गोत्र –	-५२				
¥0.	ग्रयवालो के गोत्र१	5				

**८ ४.२६. पुजागठ संग्रह**— $\times$  । पत्र सं० ६० । मा० १२ $\times$  ५ इच । माषा —हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा । ले० काल १६४३ । पूर्ण । वेष्टन स०२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वधेरवालों का म्रावा (उग्गियारा)

विशेष -- निमित्त नैमित्तिक पूजा पाठों का सग्रह है । लोचनपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

दंश्रेशः पूजापाठ सग्रह— × । पत्रस० ६३ । आ० ६× = डलः । माया हिन्दी । विश्वन पत्रा पाठ । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनस० =६/६२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर भारता (राज०)

विशेष-पच मगल, देवपूजा वृहद् एवं सिद्ध पूजा आदि का सग्रह है।

स्थ्रेन्द्र, **पूजांगाठ संग्रह**— × । पत्र सं० ४१। ब्रार्ग,१२× दृद्धाः भाषा-हिन्दी पद्धाः विषय-पूजाः र०कालः × । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टन स० १०६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौनाः।

विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है।

्रद्रन्थः यूजापाठ संग्रह— × । पत्रसंश्वी- १००१ । मा० १०० ४४ दे इचा आया-हिन्दी। विषय-पूजा। २०कास × । ले० काल × । मपूर्णः । प्राप्ति- स्थान — दि० जैन सडेलवाल सन्दिर उदयपुर।  $\mathbf{c}$ ५३०. पूजा पाठ संग्रह $-\times$ । पत्र सं०  $\mathbf{c}$  $\mathbf{c}$ । प्राः १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इञ्च। भाषा-संस्कृत, हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्ट्रन स० ७५। प्राप्ति स्थान — दि० जैन सण्डेसवाल मदिर उदयपुर।

**६५३१. पूजा ााठ संग्रह**— $\times$  । पत्रस० ७६। प्रा० १२ $\times$ ० इत्थ । आषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय—पूजा। र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० २०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मदिर उदयपृद्ध ।

६५३२. पूजा पाठ संग्रह— $\times$  । पत्रस० १०४ । प्रा० ११ $\frac{1}{7}$ प्रभ $\frac{1}{7}$ हवा । भाषा-संस्कृत । विषय-पत्रा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २७० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

 $\mathbf{c}$  ४३. **पूजा भाठ संबह**— $\times$ । पत्रसं० ४३। ब्रा० ११ $_{1}^{2}\times$ १ $_{2}^{3}$  इच्च । साथा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६३ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--नित्य उपयोग में आने वाले पुजा पाठो संग्रह है।

**८१३४. पूजा पाठ संग्रह**—  $\times$ । पत्र स० १३३४। प्रा० १२ $\times$ ५ $^2_7$  हजा। साथा—सस्क्रत-हिन्दी। विषय-पूजा। रक्ताल  $\times$ । सेक्ताल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स० ७६६। प्रास्ति स्थान - दि० जॅन मन्दिर लक्तर. जयपुर।

विशेष — इसमे कुल १४२ पूजा एवं गाठो सग्रह है। प्रारम्भ में सूची दी हुई है। कही २ बीच में से कुछ पाठ बाहर निकले हुए है। नित्य नैमित्तिक पूजाओं के प्रतिरिक्त बत पूजा, अतोद्यापन, पच स्तोत्र, वन कवा प्रादि का संग्रह है। काष्ट्रासम्ब के भी निम्म पाठ हैं —

सनन्त पूजा: श्री भूषएए काष्ठा संबीकृत, प्रतिष्ठाकल्प काष्ठा संघ का, प्रतिष्ठा तिवक काष्ठा संघका, सक्तीकरएए विधि काष्ठा संघ की, ध्वजा रोपए। काष्ठा संघ, होम विधान काष्ट्रा संघ का, बृहद् ध्वजा पोपए। काष्ट्रा संघ का,

जमास्वामी इन्त पूजा प्रकरण भी दिया है। पत्र सु० ३१२ पर १ पत्र है जिसमें पूजा किम स्रोर मुंह करके भीर कैसे करना चाहिए इस पर प्रकाश डाला गया है। यह ग्रंथ लकडी की रगीन पेटी मे विराजमान है।

सकडी के सुन्दर दर्शनीय पुट्टे, जिनमे सुन्दर बेल बूंटे तथो पाश्वैनाय व सरस्वती चित्र है इसी सदूक में हैं। प्रथ के लगे हुए सहित ४ पुट्टे हैं। २ कागज के सचित्र पुट्टे भी दर्शनीय है।

म् **४३५. पूजापाठ संग्रह—** × । पत्रस०२७ । श्रा० ६×६ इ.च.। श्राषा–हिन्दी । विषय– पूजा। र०काना × । ले०कान × । पूर्ण। वेष्टन स०६४१ । **प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष--नित्य नैमित्तिक प्रवास्रो का सग्रह है।

दर्शने६. पूजा पाठ सम्रह— imes । तन स० ४४ । मा० ११२ $^{\circ}$  imes ४ देखा । माना—संस्कृत । विषय—पजा पाठ । र० काल imes । ले० काल स० १६११ । वेष्टन सं० ६०८ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**८१३७. पूजा पाठ संग्रह** —  $\times$  । पत्रस० २-४६ । म्रा० ५ $\frac{1}{5}$   $\times$  ४ $\frac{1}{5}$  इन्ब । भाषा –सम्कृत –िहन्दी । विषय — पूजा पाठ । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । म्रपूर्ण । वेहन सं० ३७४ । म्राप्ति स्थान —िद० जैन मिठर बोरसली कोटा ।

दश्चेदः पूजापाठ तथा कथा संग्रह— ×। पत्र स० २६६ । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । विष्टत स० १०० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पवायनी मदिर भरतपुर ।

विशेष - विविध कथाये पुजा एव स्तीत्र ग्रादि है ।

**८५३ ९. पूजा पाठ विधान** —  $\times$  । पत्रस० १६। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३८३,३७५ । **प्राप्ति स्थान** — दि०कैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

दश्**४०. पूजा प्रकर्ण** --  $\times$ । पत्रस० १३। छा० १ $\times$ ४ इच । भाषा-सस्क्रन । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल म० १८६६ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मदिर दूनी (टोक)

विशेष--गुरुकी गुमानीराम ने प्रतिनिधि की थी।

६५४१. पुरुष पूजक वर्णन $\longrightarrow \times 1$  पत्रस० ६ । या० १० $\times$ ४ $\frac{1}{6}$  इञ्च । आयाः हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाइवेनाथ नीमान वृंदी ।

६५४२. पूजा विधान—पं० स्त्राप्ताधर । पत्रस० २४ । भाषा-सहक्त । विषय – पूजा । र०काल  $\times$  । ले० कात्र  $\times$  । पूर्णा । वेष्टन स०  $\epsilon/$ २१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रति जीर्ग है।

८.५४३. प्रति सं०२ । पत्र स०४४ । घा॰ ११४४ १ृद्धाः ले०काल ४ । पूर्णाः बेष्टनसं० ७६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर पायंनाय चौगान बूंदी ।

 $\mathbf{c}$  ४४४. पूजा विधान— $\times$  । पत्र स०६। आ०६ $^2_7$  $\times$ ६ इच । भाषा—हिन्दी गद्य । विध्यम् । विधान । रक्शाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर अभिनादन ज्यामी वृद्धी ।

विशेष- यटकर्मायदेण रुनमाला मे से है।

**८५४५. पूजाविधान**— $\times$ । पत्रस० ५६ । या.  $= \frac{1}{2} \times$ ६६ व । भाषा-सस्कृत । दिषय- विधान । र०काल $\times$ । ते.काल  $\times$ । पूर्ण । वष्टन स०५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

६५४६. पूजासार— $\times$  । पत्रस० ६१। मा० १२६ ६६ खः । भाषा-सस्कृत । विषय— पूजा । r० काल  $\times$  । से० काल रा० १६६३ बैशाल सुदी १४। पूर्ण । वेष्टनसं० १०२५ । प्रास्ति स्थान— भ० दि० जैन महिर स्रजनेंग ।

दध्×७ **पूजासार** — × । पत्र स० ६० । घा० १२×५ १ इञ्च । माषा-संस्कृत । । विषय-पूजा। र०काल । ले०काल ×। पूर्णा। वेष्टन म० २७४ । **श्राप्ति स्थान—दि० जैन** पाक्वनाथ मदिर चौगान दूरी । स्थ्रं स्र्यासार समुख्या— × । पत्र सं∘ ६२ । मा० ११ × ४ स्था । माथा— संस्कृत । विषय-पुत्रा । र०काल × । तेण्काल का १६०० कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७६ । प्रास्ति स्थान— म० ६० जीन मनिद स्वयोग स्थारा ।

५ ४४६. यूजासारसमुख्यय —  $\times$  । पत्र सं० १०१ । प्रा० १२ $\frac{1}{8} \times V_{7}^{3}$  इन्थ । मापा — संस्कृत । विषय-पूत्रा । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १८६१ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर प्रादिनाथ बृदी ।

विशेष - मधुरा में प्रतिलिपि हुई थी। संग्रह ग्रथ है।

**ग्रस्तिम पुण्यिका**—इति श्री विद्याविद्यानुवादोपासकाध्ययन जिनसंहिता चरणानुयोगाकाय पूजासार समुच्चय समाप्तम् ।

५ ५५०. पूजा संग्रह—कानतराय । पत्रस० १४ । प्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ $\frac{1}{2}$  ६७ । आया-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६१६ । पूर्ण । बेष्टनसं० ५५२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष — निम्न पूजाओं का सम्रह है — दशनकारण वत पूजा, धननत वत पूजा, रतनवय वत पूजा, सोलहकारण पूजा।

**८४५१. पूजा संग्रह—खानतराय** । पत्र स० ११ । प्रा० ६ $\frac{2}{7}$ ४५ $\frac{2}{7}$  इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सकर जयपर ।

दप्रस्र. पूजा सम्मह—×। पत्रस० १८। ग्रा० ११×११ इञ्च। भावा-हिन्दी। विषय-पूजा। रुकाल ×। लेकाल स०१८८० सावस्य बुदी ६। पूर्णः। वेष्टनसं०१०४। प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन महिरामज्ञेरा।

**८५५३. पूजा संबह**—  $\times$ 1 पत्रत० २१। प्रा० ६ $\frac{1}{5}$   $\times$  $\frac{1}{5}$  इ.ख । प्राचा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ने० काल स० १६४७ फायुग्ग सुदी १०। पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६१४ । प्राप्ति स्थान— २० दि० जैन मन्दिर प्रजंगर ।

विशेष-पडित महीपाल ने प्रतिलिपि की थी।

मध्रथः पुजासग्रह— × । पत्र स०१० । ग्रा० म×६ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय— पूजा । र०काल × । ले•काल × । पूर्णः । बेष्टनस० ४६२ । ग्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-सोलह कारण, पच मेरु, ग्रन्टाह्निका ग्रादि पूजाग्रो का सग्रह है।

**८५८५ पूजासंग्रह**— ४ । पत्र स०१४ । घा०१२४८ इ**ख । भाषा हिन्दी । विषय**— पूजा । र०काल ४ । ले०काल सं० १९६१ । पूर्णा वेष्टनस०१४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।

हिन्दी

दशसक्षरा पूजा	द्यानतराय	"
पंचमेरु पूजा	भूषरदास	,,
रत्नत्रय पूजा	द्यानतराय	
भव्टाह्मिका पूजा	द्यानतराय	,,
<b>मा</b> तिपाठ		,,

**५५.५६. पूजा सप्रह**— $\times$  । पत्र सं० १०। ग्रा० ६ $\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इखा । माणा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० ६५३ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६५५७. प्रति सं०२ । पत्रसं०६ । द्या०  $Y_{\gamma}^2 \times Y_{\gamma}^3$  इश्वा । ले० काल  $\times$  । पूर्ए । बेष्टन सं०६४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**८५५८. प्रति सं०३।** पत्र सं०६। मा० १०३४ ४७ इञ्च। ले० काल सं० १९६३। पूर्गी। वेष्टन स०६६३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

विशेष - द्यानतराय कृत दशलक्षरा पूजा तथा भूधरदास कृत पन्त मेरू पूजा है।

म्प्रपुष्ट पूजा सम्रह—× । पत्र सं• ३६–६३ । मा० १२३४६ इच्छा । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० ७४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सक्कर, जयपुर ।

विशेष--नित्य नैमित्तिक पूजाओं का सग्रह है।

 $-4 \xi \xi \circ$ . पूजा संग्रह—क्यांतिदास । पत्रस० २-७। झा $\circ e \times \forall \xi$  इज । माषा-हिन्दी पदा । विषय-पूजा ।  $\circ$  काल  $\times$  । ले $\circ$  काल । प्रपूर्ण । वेष्टन स $\circ$  २६६ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर दक्षताना वृदी ।

विशेष--- प्रजितनाथ, सभवनाथ की पूजाए पूर्ण एव वृषधनाथ एव प्रसिनन्दननाथ की पूजायं अपूर्ण हैं।

**८१६१. पूजा संग्रह**—  $\times$  । पत्र सं० ३४-१४६ । ग्रा० १२ $\times$ ५ है इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । भपूर्ण । वेष्टन स० ३४ । प्राप्ति स्थान —हिन्दी । मिटर बैर ।

 $\mathbf{c}_{\mathbf{x}}$ ६२ **पूजा सग्रह**—  $\times$  । पत्र सं० १४३ । आग० ७ $\frac{1}{2}$  $\times$  $^{1}$  $^{1}$  $^{2}$ र्थ । आगा-सस्कृत-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल स०१६२०। पूर्ण। वेष्टन सं०५०। प्रास्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

विशेष -- भौबीस तीर्थंकर पूजाओं का संग्रह है।

 $\mathbf{x}$  ५६३. पूजा संबह् $-\times$  । पत्र स० ४१ । आ० ११ $\frac{1}{4}$  ४६३ इंच । माला -हिन्दी । विषय- पूजा । र०काल  $\times$  । के० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन सं० ३८ । प्राप्ति स्थान —दि० उँन पंचायती मन्दिर कामा ।

८६६४. **पूजा संग्रह**— × । पत्र स० ४१ । धा० १२×६ दत्त्व । माषा—हिन्से । विषय-पूजा । र०काल × । ते० काल × । पूर्णुं । देष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चैतनदास परानी डीग ।

विशेष--वृन्दावन कृत चौबीसी तीर्थंकर पूजा एव सम्मेद शिखर पूजा का सप्रह है।

**८५६५. पूजा संग्रह**— $\times$ ापत्र स०२७। आ० ११ $\times$  $^{1}$  इचा। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। रुकात  $\times$ । ते०काल  $\times$ । प्रपूष्णं। वेष्ट्रन स०२७। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर दीवानाजी काम।

**८५६. पूजा संग्रह**—  $\times$  । पत्र सं २७६ । ग्रा॰ १२ $\times$ ७ इच । साधा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ १४४ । प्राप्ति स्थाम—दि० जैन भग्रवाल पचायती मन्दिर भग्रव ।

. विशेष —नैमित्तिक पुजाओं का सग्रह है।

**८५६७. पूजासग्रह—** × 1। पत्र स० १२६। मा० १३×५६ **व्हा**। भाषा—हिन्दी-पद्य। विषय—पूजा र०काल × । ले०काल सं०१६६७ । पूर्णं। वेष्टत स०१६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्वेहतवाल प्रवासती मन्दिर धनवर ।

**विशेष**—मस्यतः निम्न पजाश्रो का सग्रह है। जो विभिन्न वेहनों में बधे है।

मुगन्य दशमी पूत्रा, रत्नत्रयव्रत पूजा, सम्मेदशिखर पूजा, (२ प्रति) वौमठ ऋद्धि पूजा (२ प्रति) चौबीसतीर्थकर पूजा–रामचन्द्र पत्र स० १४४। निर्वाण क्षेत्र पूजा (३ प्रति) यनन्तव्रत पूजा (४ प्रति) मिद्धचक पूजा।

**८५६. पूजा सम्म** $-\times$  । पत्रस $-\times$  । माण ११ $\frac{1}{4}\times Y_0^2$  इक्न । भाषा-सम्भृत । विषय — पूजा । रुकाल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन थै॰ पंचायनी मन्दिर अलवर ।

विशेष — मस्यतः निम्न पजाग्रो कासग्रह है।

श्रुनस्कध पूजा	संस्कृत	पत्र १३
पचकल्याग्ग्क पूजा	,	२२
,,	"	२२
ऋषि मडल पूजा	**	२५
रत्नत्रय उद्यापन	**	8.8
पूजासार	**	<b>5</b> 2
कर्मध्वज पूजा		१६-१७

**८४६६. पूजा संग्रह**—  $\times$ । पत्रतः ७१। धा॰ ७ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{2}{5}$  इञ्जः। भाषा-सस्कृतः। विषय-पूजा। र०कालः  $\times$ । ्ने॰ कालः  $\times$ । पूगां। वेष्टुन स॰ १८८। **प्राप्तिः स्थान**— दि॰ जैन प्रचायनी मन्दिर प्रजनरः।

विशेष--- निम्न पत्राधी का सग्रह है।

पच कल्यासक पूजा	संस्कृत	पत्र १३
रोहिस्गी वतोद्यापन पूजा	,,	₹ ₹

सार्द्धय द्वीप पूजा	,,	१४
सुगघ दशमी	.,	<b>१</b> ५
रत्नश्रय व्रत एजा		**

प्रभुष्ठः, पुजा संग्रहः— ४। पत्र सं०१४० । ग्रा॰ प्हें ४६ हे इंच । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय—पूजा रक्ताल ४ । ले० काल सं०१६६७ । पूर्णः । बेष्टन सं०१८० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन स० पंचायतो मन्दिर ग्रनवर ।

विशेष-प्रलंबर में प्रतिलिपि हुई थी।

द्र५७१. प्रति सं०२ । पत्र स०१ द०। ते∘काल स०१६५३ मादवा बुदी ३ । पूर्ण। वेष्टनस० १ द१ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर।

**८५७२. पूजा संग्रह**—  $\times$  । पत्रस०४२ । ग्रा०६ $^2_4$  ×६ ६ श्व । भाषा—हिन्दी पद्य । प्राप्त स्थान — प्रा । रे०काल  $\times$  । ले० काल स०१८६५ ग्राहत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स०१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पाण्वेनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोक)

**८ १७३. पूजा सम्रह**—  $\mathbf{X}$  । पत्रस० १७ । घा० ६  $\mathbf{X}$  ६ रूच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\mathbf{X}$  । ले०काल स० १९३६ । पूर्ण । बेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नागदी, ब दी ।

५५७४. पूजा संग्रह— $\times$  । पत्र स० ८० । ग्रा० ११ $\times$ ५ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय— पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । नेहन स० १५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदा (बुदी) ।

विशेष--- जातिपाठ, पार्श्वजिन पूजा, अनतप्रत पूजा, शांतिनाथ पूजा, पश्चमेर पूजः, क्षेत्रपाल पृजा एव चमन्कार की पूजा है।

द×७४ पूजा सबह— × । पत्र सं० ४१। झा० ११ ×४३ इञ्च । भाषा - सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल ∵ । सपूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान— 'द०त्रैन मन्दिर नागदी वंदी ।

**८५७६. पूजा संग्रह** — X । पत्रस० २२ । ग्रा० ७ $\times$ ४ है इचा भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर श्रीमहावीर बृंदी ।

**८४७७. पूजा सग्रह**— $\times$  । पत्र स $\circ$  २। ग्रा० १२ $\times$ ६ इश्वः। भाषा सस्कृत । विषय—पूजा । र $\circ$ काल  $\times$  । से॰काल स $\circ$ १८६० पीय सुदी १। पूर्णः । बेष्टन सं $\circ$  ६४ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर क्रादिनाथ (ब्रुदी) ।

विशेष-धक्षयनिधि पूजा सौख्य पूजा, रामो पैतीसी पूजा है।

५ ५७६. पूजा संग्रह— $\times$ । पत्र तं॰ ४७-१४६। मा॰ ११ $\times$ ४ै इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । मपूर्ण । वेष्टन स॰ ६५ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर मादिनाष (बूंदी) ।

विशेष-तीस चौबीसी पूजा शमचन्द एवं घोडपकारए। पूजा सुमति सागर की है।

म् प्रथ. पूजा संग्रह— × । पत्रसं० २४ । ग्रा० १० ×६ इन्छ । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६४४ । पूर्णे । वेष्टन स० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहप्यी नैसावा ।

विशेष-- नैराया मे प्रतिलिपि की गयी थी। दशनक्षण पूजा, रतनत्रय पूजा श्रादि का सग्रह है।

द**५८० पजासंग्रह—** × । पत्र स०१७६। ब्रा०६×४६ च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले**०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स०६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपयी नैगावा ।

५ ६९. पूजा संग्रह— $\times$ । पत्रसः ११–२२७। म्रा० १३ $\times$ ७३ इखः। माणा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । अपूर्ण। वेष्टन सः० १३४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्टिर फतेहपूर केसाबाटी (सीकर)।

विशेष--पूजाओं का सम्रह है।

**८४८२. पूजा सबह**— ×। पत्रसं० १००। ब्रा० ११० ४६३ इश्वः। भाषा-हिन्दी पद्यः। विषय-पूजा। र०कालः ×। ले०कालः ×। पूर्णः। वेष्टनसं० १४१। प्राप्तिः स्थान—दि० जन मन्दिर फतेहपुर जेलावाटी (संकरः।

विशेष—विविध पूजाधो का सम्रह है।

स्थ्रस् २. पूजा संप्रह्— ४ । पत्र स० ४६ । झा० ४ ४ १ दे दत्रा । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । से•काल स० १६४४ वैसाव गृदी १ । पूर्णा । वेष्टनम० द० । प्रास्ति स्थान—दि० जेन विषयानी क्रांत्रिक कोणी ।

विशेष—उदैसागर के पठनार्थ चिम्मनलाल न प्रतिलिपिकी थी। पचपरमष्टीपूजा सशोनदि कुन भी है।

**८५८४. पूजा सग्रह**— $\times$  । पत्र स०१६। ग्रा० १२ $\times$ ७ $^3$  इला । भाषा-हिन्दं,-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६४२ ग्राध्वित सुदी १०। पूर्णं । वाटन स०१०६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर करोली ।

**विशेष**— चुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

६४६४. पूजा सग्रहे— ४ । पत्र म०३-५७ । घा० १४४ इन्छ । भाषा मध्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल ४ । ध्रपूर्ण । वेष्टन स०३६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रववान मदिर उदयपुर ।

विशेष--नित्य नैमितिक पूजाए हैं।

**८५८५. पूजा संग्रह**— $\times$  । पत्रस० ७६ । ग्रा० १२ $\times$ ४ है इन्छ । भाषा-सस्क्रन । विषय-पूजा । र०काल $\times$  । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०(व) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--निम्म पूजाओं का सम्रह है। रत्तत्रय पूजा, दशलक्षण पूजा, पंचमेर पूजा, पचपरमेष्ठी पूजा। **८५८७. पूजा संग्रह**—  $\times$  । पत्रम० २५ । म्रा० १० $\times$ ४ इ**च** । माचा—संस्कृत । विषय— पुत्रा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—स्रोडेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष--- नित्य नैमिलिक पूजाओ का सम्रह है।

ह्रभूद्रह. पूजा संग्रह × । पत्र स० ६०। भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × ।ले० काल सं०१६४० । पूर्ण । बेष्ट्रन सं०१६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — निश्य नैमित्तिक पूजाएं तथा भाइपद पूजा सम्रह है। रगलाल जी गदिया साहपुरा वालों ने जयपुर में प्रतिलिपि करा कर उदयपुर में नाल के मदिर चढाया था।

दथ्रह. पूजा संग्रह—× । पत्रसं० द२ । ग्रा० १०४४ इचा । प्राथा-हिन्दी (पदा) ।विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर होसा ।

**८५६० पूजा संग्रह—** × । पत्र स०७०। भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले•काल म०१६८६। पूर्ण । वेष्टन स०६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपत्री मन्दिर दौसा ।

**८५८१. पूजा सग्रह—** × । पत्र स०११ । भाषा–सम्कृत । विषय~पूजा । र०कील × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मरनपुर ।

**८५६२. पूजा संग्रह**— imes । पत्र स० १६ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र०कानimes । त्रेकान imes । पर्ण । वेटन स० ४७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

**८५६३. पूजा सग्रह**—imes । पत्र स० ७५ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०कालimes । लेकालimes । पूर्ण । वेष्टुन स०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर सरनपुर ।

विशेष—छहपूजाबो का सबहहै।

स्प्र£४. पूजा संग्रह— × । पत्र स० ३४ । भाषा-सन्छन । विषय-पूजा । र०काल × । ले•काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर ।

८५.६५. पूजा सम्रह्—imesा पत्रस $\circ$ ४८ । माया—हिन्दी । विषय-पूजा । २०काल imes ।  $\circ$ 

**८५.६६. पूजा संग्रह**—imes । पत्र स॰ ५३-१०३ । भाषा-सम्ब्रत । विषय-पूजा । र० काल imes । के० काल imes । पूर्ण । वेटन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पदायती मन्दिर सरतपुर ।

=द**६७ पूजा संग्रह**— × । पत्रस० ४०। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स०१८६७ । पूर्ण । **दैवे**ष्टनसं०७० । **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन पत्रायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- नित्य नैमितक पूजाए है।

८.५६८. पूजा संबह्— $\times$ । पत्र सं० १६७। माषा-हिन्दी-सम्ब्रतः । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन स० ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

**८५८ ९. पूजा संग्रह**—  $\times$  । पत्रस**० ५ से ३५ । भाषा**-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेहुत सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

द्ध ६००. **पूजा संग्रह**— ४ । पत्र सं०७० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टत सं०१ द । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

**६६०१. पूजा सग्रह**—  $\times$  । पत्रस० १४ । घा० ११imes५ इ.स. भाषाः सस्कृत । विषय-पूजा । **२०काल** imes । ले० काल imes । पूर्ग । बेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

**६६०२. पूजा संग्रह** —  $\times$  1 पत्रस० १७६ । झा० ६ $\times$  ४ $^3$  इश्व । भाषा-हिन्दो सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । लेकाल स० १८३३ भारवा बुदी ७ । पूर्ण । बेहन स० ३५६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—श्रन्त मे नवरोकदा की चउपई सोमगिए। कृत है जिसकी रचना काल स० १७२० है। तथा कर्मबुद्धि की चोपई है।

मालव देश के सुसनेर नगर के जिन चैत्यालय में आलमचन्द्र द्वारा लिखा गया था ।

**६६०३. पूजा सग्रह** —  $\times$  । पत्रस०६८ । म्रा० ७ $\times$ ५ इखा। माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ३६० । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष--निम्नलिखित पुजाए है--

अनतन्नत पूजा, अक्षमदशभी पूजा, कलिकुण्ड पूजा, शान्ति पाठ (आशामर), मृक्तावनि पूजा, जलयात्रा पूजा, पचमेरु पूजा तथा कर्मदहन पूजा।

**६६०४ पूजा संग्रह** —  $\times$  1 पत्रस० १५६ । झा॰ ६  $\times$  १ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा । र॰काल  $\times$  । ल॰काल॰ स १६६१ भादवा बुरी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं॰ ३६२ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मदिर बोरसनी (कोटा) ।

विशेष — ४० पूत्रायों का मग्रह है। चितामिंग पार्ण्यताथ-णूभचन्द्र, गुरुपूत्रा-रतनबन्द तथा सिद्ध मक्ति विधान-प्राथाधर कृत विशेषत उत्तेखतीय है।

 $\mathbf{x} \in \mathbf{c} \cdot \mathbf{x}$ . पूजा संग्रह —  $\times$  । पत्रस० ७-७४ । आ० १० $\times$ ६ इन्छ । भाषा न्सस्हत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टनस० ३६३ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष--- प्रजाभी का समह है

**८६०५. पूजासप्रह**—  $\times$ । पत्र स०७०। ग्रा० १० $\times$ ४ इच्छ । माषा—हिन्दी । विषय-पणा । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठो का सग्रह है।

**८६०७. पूजा संग्रह**——  $\times$  । पत्रस० १० । ग्रा० १० $\times$ ६ हे इवा । ग्राथा हिन्दी—संस्कृत । विषय—संग्रह । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्टित स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहन (टोंक)

विशेष—विभिन्न प्रकार की ३८ पूजाओं एवं पाठों का सग्रह है।

८६०८. पूजासम्बह् $-\times$ । पत्रसं०६३। प्रा॰ १ $\times$ ४३ इवः। भाषा-प्राहतः। विषय-पूजा। र०काल $\times$ । तेर्काल $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०२३१। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष---मुख्यतः निम्न पुजाओं का संग्रह है---

रत्नत्रय पूजा, (प्राकृत) कमंदहन पूजा, (", ) (श्रपूर्ण)

**८६०६. पूजा संग्रह**— $\times$  । पत्र म०१२ । ग्रा० ११ $\times$ ४ है इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय- पूजा । र० काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १३७-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरपुर ।

विशेष--पचमेरु द्यानत एव नदीश्वर जयमाल भैया भगवतीदास कत है।

=६१०. प्रतिमा स्थापना—× । पत्र स०२१। आ० ११×४} दश्व । भाषा-प्राकृत । विषय-विधि । रण्काल × । लेण्काल × । पूर्णा । वेष्टन स०१४१० । प्रा**प्ति -स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोर्टाच्यो का हुगरपुर ।

विशेष-श्री ग्राम श्री थानेदा नगरमध्ये निवित पन्डिन मूखराम ।

६६११. प्रतिष्ठा कत्य— प्रकलंक देव—  $\times$  । पत्र स०१४२ । प्रा० [१३ $\frac{1}{8}$   $\times$  ५ $\frac{1}{9}$  इच्च । आपा-सन्द्रः । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०११८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सन्दिर फनेहपुर संवाबाटी (सीकर)

प्रारम—

बदिन्ता च गणाधीरा श्रृत स्कथ च ।
ऐद पुगि मानाचार्य तथि मक्त्या नमान्यह ।।१॥
अय श्री नेमिचन्द्राय प्रतिष्ठा जास्त्र मार्गतः
प्रतिष्ठायास्तदा बुन राजानां स्वय मगिना ।।२॥
इन्द्र प्रतिष्ठा ।

 $\mathbf{x} \in \{2, \mathbf{x} \mid \mathbf{x} \in \mathbb{R} \}$  तिलक —  $\mathbf{x} \mid \mathbf{x} \mid \mathbf{x} \in \mathbb{R}$  । प्रस्त २७ । स्रा० १२ $\times$ ६ इच्च । साधा-संस्कृत । विवय-विधान । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१-१८ ।  $\mathbf{x} \mid \mathbf{x} \mid \mathbf{x} \mid \mathbf{x} \mid \mathbf{x} \mid$ वि० जैन सन्दर कोटडियों का हुंगरपुर ।

विशेष—मुनि महाराज थी १० = महारक जी श्री मुनीन्द्रकीत्ति जी की पुस्तक । लिखित जाती हवड मुलसंबी रूपडावम् कस्नुरवद तत् पृत्र बोकचन्द ।

द**्र३. प्रतिष्ठा पद्धति**— ४. । पत्रस० ३६ । प्रा० १०×४<sup>3</sup>, इश्वा । साया नस्कृत । जियास— विधान । र०काल ४ । से०काल स० १०२४ कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७४ । प्राप्ति स्थान— वि• जैन संदिर प्रजमेर भण्डार । ६६१४. प्रतिस्ठा याठ— क्रांझाचर । पत्रसः १६ । घा० १२३४६ इञ्च । माया-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४। ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६८ । प्राप्तिस्थान— म० दि० जैन मन्तिर स्वयोर ।

**८६१४. प्रतिसं० २** । पत्रस० २३ । ले० काल स० १८६४ । पूर्स । वेष्टनसं० ४**१ । प्राप्ति** स्थान—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपर ।

विशेष — मडल विधान दिया है।

संबत् १८६५ के बैशाल बुढ़ी १ दिने सोमवासरे श्री दक्षिण देशे श्री गिरवी ग्रामे चैत्यालये श्री मूलसाथे सरस्वतीगच्छे बलात्कारमणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० यश कीति देवा त० प० भ० सुरेन्द्रकीति तत्पट्टें गुरु भ्राता पं ० लगानचन्द लिखित ।

**८६१६. प्रति स० ३ ।** पत्र स० २० । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३४/३६१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**८६१७. प्रतिसं० ४**। पत्रस० ६२-१६४ । ले॰काल  $\times$  । भपूर्ण । बेष्टुनस० ३४/२६० । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपर ।

**८६१८. प्रति सं० ४** । पत्रस० १३ । ब्रा० १२ <mark>र</mark>ू ४ ८ ३ इन्छ । ले० काल ⋋ । पूर्ण । बेष्टनस० २०/१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरप र ।

द६१६. प्रतिसं० ६। पत्रसं० ७७ । ले०काल x । घपूर्ण। वेष्टनस० १६। प्राप्ति स्थान—दिञ्जन बडा पचायती मस्टिर बीग।

विशेष---प्रति जीर्ग है।

६९२०. प्रतिष्ठा पाठ—प्रमाकरसेन । पत्र स॰ ४२-६५ । प्रा॰ ६ $\frac{1}{4}$ ४६ े इश्व । प्राषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वैष्टून स॰ ७४० । प्राप्ति स्थान— वि॰ जैन भदिर लक्कर जयपर ।

**६६२१. प्रतिष्ठा पाठ**—  $\times$  । पत्र सं० २७ । ग्रा॰ ११ $\times$ ६२ ह्वा । माषा —हिन्दी गर्थ । विषय-विधान ।  $^{7}$ ०काल  $\times$  । ले०काल स० १६१३ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६६-६४ । प्राप्तिः स्थान् — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्थासह (टोक) ।

विशेष - शातिसागर ब्रह्मचारी की प्रत्यक से विद्रुष नेमिचन्द्र ने स्वय लिखा था।

**६६२२. प्रतिष्ठा पाठ**— $\times$  । पत्रस० १३३ । मा० १२ $\times$ ४२ इख । भाषा-सस्कृत । विषय— विचान । र० काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर स्रमिनस्टन स्वामी व दी ।

विशेष-प्रारम्म एव बीच के कितने ही पत्र नहीं है।

-६२३. प्रतिष्ठा पाठ टीका (जिनसक्त कल्प टीका) —परशुराम । पत्रस० १२६ । झा० १२×६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । सपूर्ण । बेष्टनसं०३६/२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रग्वाल मदिर उदयपुर ।

विशेष---१२ पंक्ति और २४ श्रक्षर हैं।

द६२४. प्रतिष्ठा पाठ वचनिका— × । पत्रसं० ११६ । मा० ११४८ इञ्च । माषा-हिन्दी गण्य । विषय — विमाना र०काल × । ले०काल सं० १६६६ बैशाल बुदी १० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

विशेष — नटवरलाल शर्मा ने श्रीमान् माहाराजाधिराज श्री माधर्वीसह के राज्य में सर्वाई जयपुर जगर में प्रतिलिपि की थी।

६६२५. प्रतिष्ठा मंत्र संग्रह्— $\times$ । पत्र सं०१०। प्रा०१२ $\times$ ७ इखः। भाषा-संस्कृतः। विषय-विधानः। र०कालः  $\times$ । से०कालः  $\times$ । पूर्णः। बेहनसं०३१४-११७। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटदियों का डंगरपरः।

विशेष — पहिले विभिन्न ब्रतोद्यापनों के चित्र, तीर्यकर परिचय, गुरास्थान चर्चा एवं त्रिलोक वर्णन है इसके बाद मत्र हैं।

६६२७. प्रतिष्ठा यंत्र—  $\times$  । पत्रसं॰ ६ । धा॰ १२ $\times$ ७ $^{1}_{7}$  इचा । भाषा-सस्कृत । विषय— विधान । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ १६५ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी बुंदी ।

विशेष--४५ यत्रो का सप्रह है।

६६२६. प्रतिष्ठाविधि—imes । पत्र सं०२। भाषा—हिन्दी । विषय—प्रतिष्ठा । र०काल imes के काल imes । पूर्ण । वेष्टन स०६४४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

प्रदेशः प्रतिष्ठासार संग्रह—आः बसुनंदि । पत्र स०२६ । प्रा० ११ $\times$ ४ $^2_7$  इन्छ । प्राप्त स्थान—सर्कत । विषय—विषान । र०काल  $\times$  । ले०काल सं०१६२१ । पूर्ण । बेष्टनस०१४ $\kappa$  । प्राप्ति स्थान—दि० नैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष - मंडलाचार्यं धर्मचन्द्र के शिष्य धाचार्यं श्री नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी।

 $\kappa$  ६२१. प्रतिसं० २ । पत्रस० २६ । बा० १०३ $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । ले० काल सं० १६७ : । पूर्ण । बेहनसं० ६२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अजसेर अण्डार ।

प्रशस्ति-निम्न प्रकार है-

संबत् १६७१ वर्षे श्री मूलसंवे भट्टारक श्री गुरासेन देवाः मार्याका बाई गौत्तम श्री तस्य शिष्य पण्डित श्री रामाजी जसवन्त वघेरवाल ज्ञानमुक्तमंडरण चमरीया गोत्री ।

क्ष्म २ प्रतिसं० ३ । पत्र सं० सं० १२ से २२ । झा० १० ४ ५ है इखा । ले०कास ४ । झपूर्ण । वेष्टन सं० ७४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर । द्ध दे प्रति सं०४ । पत्रस०१ द−२४ । झा० ६५° ४४ } इचा। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं०११४ (क०स०)। प्राप्ति स्वान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष-प्रथम १७ पत्र नही है।

द६३४. प्रतिसं०५ । पत्रस०२७ । झा०१२×५३ दश्व । ले∘काल स०१८६१ ज्येष्ठ बुदी ३ । सपूर्ण । बेष्टन स०११० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**८६३५. प्रतिसं०६** । पत्र सं०३० । घ्रा०११×६ ¦ इच्च । ले०काल स० १६४८ । पूर्ण । बेष्टुन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी ब्रुदी ।

विशेष-- प॰ रतनलाल जी ने बूंदी मे प्रतिलिपि की थी।

द६३६. प्रतिसंo ७ । पत्र स० ३३ । मा• १३×७ इश्व । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

**८६३७. प्रति सं०८।** पत्र स०२४ । द्या०१२ ४६<sup>3</sup> इला। ले० काल ४ । पूर्ण। वेष्टन स० ३०४−११७ । **प्राप्ति रूपान**—्दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

क्टरेक. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २६ । ले॰काल म० १०७७ फागुण सुरी ७ । पूर्ण । बेहनस० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावाली का डीग

द६४०. प्रोषम् तेने का विभान—  $\times$  । पत्र स॰२। म्रा०११  $\times$ १ इत्था। भाषाः  ${}_{[rrt]}$ । विषय-विभानः। र०कालः  $\times$ । ले०काल स०१८४७। पूर्णः। वेष्टन स०१६५–१६१ः **प्राप्तिः स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टोक)।

६६४२. **बारहसी चौतीस यत पूजा—शुमचन्द्र**। पत्र स० ७१। द्रा०१२ $\mathbf{x}$  ४ $\frac{1}{2}$  इच्छ । क्षाच-संस्कृत । विषय—पूजा विधान । र० काल  $\mathbf{x}$  । ले० काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३६। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६४३. बारहसी चीतीस व्यात पूजा—श्रीमूचरण । यत्रस० ७६ । द्या० १२ ४ ४ ३ इच । मामा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल ४ । ले० काल स० १८४३ ग्रावाट बुदी ६ । पूर्स । वेहनसं० ४५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर

विशेष-सवाई जयनगर के ग्रादिनाथ चैत्यालय में सवाई राम गोघा ने प्रतिलिपि की थी।

६६४४, बिस्स प्रतिष्ठा संडल $-\times$  । पत्रसं०१। प्रा० ६ $\times$ ६ इच्छ । साथा-सस्कृत । विषय-विषान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २०६/११७। प्रास्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर । कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष---महल का चित्र है।

**८६४५. बीस तीर्थंकर जयमाल**—हर्षकीर्ति । पत्र स॰ २ । ब्रा॰ ११ $\times$ ५ इच । आषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । के॰काल १८५१ । पूर्ण । वेष्टनतुः ६३४ । ब्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**८६४६. बोस तीयँकर पूजा**— **जौहरीलाल**। पत्र सं० ४५। झा० १३ $^{1}$  ×  $^{2}$  ६२व । माषा— हिन्दी। विषय-पूजा। रुकाल स० १६४६ सावन मुदी ४। ले० काल  $\times$  । पूर्ण। बेष्टन सं० ४८६। **प्राप्ति स्था**न—वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

क्ष इंप्रिज **बीस तीर्थंकर पूजा—धानजी ग्रजमेरा**। पत्र सं०७३। ग्रा० १२३ै ४७३ हश्व। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल स० १६३४ ग्रामोज सुदी १। ले० काल स० १६४४ मगसिर बुदी १३। पूर्ण । बेष्टन स० ४०५। **ग्राम्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर (अयुर्)।

विशेष--- ग्रन्तिम पृष्ठ पर पद भी है।

**८६४८. बीस तीर्थंकर पूजा**— × । पत्रसं∘ ४। ग्रा∘१ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर लक्कर (जगपर) ।

६६४६. **बीस तीर्थंकर पूजा** —  $\times$ 1 पत्रस० ४७ । भाषा हिन्दी पद्य । विषय -पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६४२ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

प्रदर्भ ०. **बीस विवेह क्षेत्रपूजा—चुन्नीलाल** । पत्रतः २६ । झा० १२ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्म । विषय-पूजा । र०काल × । ने० काल स० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायनी मन्दिर करौली ।

**८६५१. बीस विवेह क्षेत्र पूजा—शिखरचंद** । पत्र स॰ ४१। घा० ६ $_{g}^{2} \times$   $\mathbf{c}_{g}^{2}$  इब । भाषा— हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल म १६२६ चेठ मुदी १। ले॰ काल स० १६२६ चेंसाख मुदी ७। पूर्ण । वेक्नस॰ ४२। प्रार्णित स्थान—दि॰ जैन मोगाणी मंदिर करीली।

६६५२. **बीस विरहमान पूजा**— ४ । पत्रस∘४ । झा० १०४६ इ**च । भाषा - स**स्कृत । विषय— पूजा । र०काल ४ । ले० काल स० १६३८ फाल्गुन बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं०५२४ । **प्राप्ति स्थान**— दिं० जैन सन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष--विदेहक्षेत्र बीस तीर्थंकरों की पूजा है।

६६५३ भक्तामर स्तोत्र पूजा — नंबराम । पत्रस०२६ । म्रा०१३ रे४५ इख । माणा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स०१६०४ वैसाख सुदी १० । ले०काल सं०१६०४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन स०११६ । **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन पंचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष--श्योजीराम बयाना वाले से बक्सीराम ने प्रतिलिपि कराई थी।

६६४४. मक्तामर स्तोत्र पूजा—सोमसेन । पत्र स०१३ । आ०१० $\times$ ४३ इ.स. । माषा—संस्कृत । विषय-पुजा । र०कास  $\times$  । ले०कास  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं०३६२ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन सन्दिर प्रजमेर ।

 $\mathbf{x} \in \mathbf{x} \cdot \mathbf{x}$ .  $\mathbf{x}$  ति सं० २ । पत्र सं० १७ । आ० ६ $\frac{1}{2} \times \mathbf{y}^2$  इत्त्र । ले०काल सं० १६२८ फाल्मुसा सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ११४४ ।  $\mathbf{x}$  प्राप्तिः स्थान — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

क्ष ६ १६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । आ० ११ ४४ ३ इ.च. । ले॰ कालसं० १७४१ चैत बुदी ४ । पूर्णे । वेष्टन सं० १४ । आस्थित स्थान—दि० जैन मन्दिर ध्रादिनाय दूंदी ।

विशेष-करवर नगर में पं० मायाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

**८६४७. प्रतिसं० ४**। पत्र स० १०। घा० ११×४ इन्छ । ले॰काल सं० १६०४ श्रावसा सुदी ६। पूर्यो । वेष्टुनस० ४२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

म्ह¥म्. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १२ । ग्रा०१२ ४ ६ ञ्च । ले०काल + । पूर्ण । वेष्टन सं० १९७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मंदिर श्री महावीर वृंदी ।

**६६४६. भक्तासर स्तोत्र पूजा** $--\times$ । पत्रसंबरिश धावरिर $\times$ ६५ इ.ज. भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रव्यक्ताल  $\times$ । लेवकाल संब १६२०। पूर्ण । बेष्टन संब २६२। **प्राप्ति स्थान**—विक् जैन मिलद प्रजमेर ।

**८६६०. अक्तासर स्तोत्र पूजा** —  $\times$  । पत्र सं० १६ । झा० ६ $\frac{2}{5}$   $\times$  ६ इंच । भाषा — संस्कृत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ते० काल सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्ठन स० १८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सोगाणी मदिर करीली ।

**८६६१. भक्तामर स्तोत्र पूजा**— $\times$ । पत्र सं० १०। प्रा० ६ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इन्छ। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल स० १०२७ ज्येष्ठ मुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बुंदी।

**८६६२. सक्तामर स्तीत्र पूजा** $-\times$ । पत्र स॰ र। धा० ११  $\times$ ४ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल सं० १८८० पीष बुदी ४। पूर्ण । बेष्टन स० १३४। **प्राप्ति** स्थान-भ० दि० जैन मन्दिर धजमेर। भण्डार।

विशेष---ग्रजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

६६३. सक्तासर स्तोत्र उद्यापन पूजा—केशवसेन । पत्रस॰ १७ । हा॰ ६ $\frac{2}{7} \times \frac{7}{2}$  इञ्च । स्वाय-स्कृत । विषय-पूजा । २०कास  $\times$  । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३-२४ । **प्राप्ति** स्वाम—दि० जैन मन्दिर पंचायती दुनी (टॉक)

द६६४. सकासर स्तोत्र पूजा—× । पत्रसं० ११ । मा० १०×४ हुं इंब । प्राया-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८४० । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहन (टोक)

च्द्द्**र. भुवनकोति पूजा** — × । पत्रसं∘२। म्रा०१३ × ५ इ.च. । माया – संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स०१८६० । पूर्णा । वेष्टन स०१६११ । **प्राप्तिः स्थान** — भ०दि**० जैन** मन्दिर अजनेर ।

विशेष मट्टारक भुवनकीर्ति की पूजा है।

- ८६६६. **सहाभिषेक विधि** × । पत्रसं∘ ३३ । प्रा॰ ११ ×४० है इच । भाषा-सस्कृत । विषय — पूजा विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टनसं∘ २४१ । **प्राप्ति स्थान** —वि० जैन मंदिर प्रभिनन्दन स्थानी वंदी ।
- **८६६७. सहामियेक विधि** × । पत्रस० २-२३ । सा० १० $\frac{3}{4}$  ×  $\frac{1}{4}$  दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल ... ५१६४ पौष बुदी १४ । स्रपूर्ण । वेष्टन स० ३१४ । प्रा**प्तिस् साल** दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)
- विशेष--सारमंगपुर में प्रतिलिपि हुई थी। सं० १६४५ में मंडलाचार्य गुराचन्द्र तत् शिष्य ब्र० जेसा ब्र० स्थारणा ने कमंक्षयार्थ पं० माराक के लिये की थी।
- ष्ट६६६. सहाबोर पूजा— वृत्वाबन। पत्र स० ४। झा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इंच। साधा-हिन्दी पद्य। विषय—पूजा। र०काल  $\times$ ।। से० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० ४६। प्राप्ति स्थान दि० जैन बडा बीसपथी मंदिर दौसा।
- **८६६६. महाशांतिक विधि**— $\times$ । पत्रस**० ६५**। म्रा० १० $_2^2\times \xi_2^2$  इश्वः। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  ।  $\underline{b}$ एँ। वैष्टन सं० २५ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन प्रथवाल मन्दिर उदयपुर ।
- म्ह७०. **मासान्त चतुर्वेगी वतोद्यापन** x । पत्र स॰ २६। घा० १०३८५३ इश्व । भाषा– सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले० काल × । पूर्णं । वेष्टन स ० १२२ । **प्राप्ति, स्थान**—दि० जैन प्रचायती मीटर करोली ।
- ६६७१. मासांत चतुर्वशी बतोद्यापन $-\times$ । पत्रसं० १६। म्रा० १० $\frac{2}{6}\times 4$ ्रह द । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १८७२ बँगाल सुदी २। पूजी । बेष्टनसं० २०/३४। प्राप्ति स्थान-दि० जैन सौगाली मन्दिर करौती ।
- ६६७२. मासांत चतुर्वशी बतोद्यापन $-\times$  । पत्रस॰ ११। मा॰ १० $\times$ ६ $^2$  ६०० । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३१४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ चौगान दूँदी ।
- ष्द६७३. सांगीतुं गौ पूजा—विश्वभूदगा । पत्र सं० ११ । घा० ११ ४४, इसा । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०कास २०१६०४ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० २७७ । प्रास्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर सक्कर जयपूर ।
- **६६७४. मुक्तावली तत पूजा**  $\mathbf{x}$ । पत्रसं॰ २ । प्रा॰ ६ $^2_{\mathbf{x}} \mathbf{x}$  ४ $^3_{\mathbf{y}}$  इच । सावा—सस्कृत । विवय— पूजा । र०काल  $\mathbf{x}$  । से॰काल  $\mathbf{x}$  । पूजी । वेष्टन सं॰ ६४-६५ । प्रास्ति स्थान —दि॰ जैन मदिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टोक)
  - विशेष-भट्टारक सकलकीति कृत मुक्तावली गीत हिन्दी मे ब्रोर है।
- द्ध  $\mathbf{y}$ क्तावसी द्वस पूजा $\mathbf{x} \times \mathbf{y}$ ा पत्रस॰ १९। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र॰काल  $\mathbf{x}$ । से॰ काल सं॰ १९२४। पूर्ण । वेष्टन सं॰ २२। आप्ति स्थान दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

**⊏६७६. मुक्ताविल बतोद्यापन**— × । पत्र स०१२ । धा०६×६३ दश्व । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेध्टन स० ४०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटबियो का इंगरपर ।

ष्ट६७७. सुक्तावित बतोद्यापन — × । पत्रसः १४ । घा ×। मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र•काल × । ले॰काल सं॰ १८८६ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसः० १०-३६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष - गुमानीराम ने देवगोद बास्तव्य मे प्रतिलिपि की थी ।

**६६७६. मुक्ताविल बतोद्यापन**  $-\times$  । पत्रसु० १४ । आ० ११ $\}$  $\times$ ४ इञ्च । माया-संस्कृत । विषय-पूजा । रक्ताल  $\times$  । लेक्साल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसु० ६०-१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायिसिंह (टोक)

विशेष-प० शिवजीराम के शिष्य सदासूल के पठनार्थ लिखी गई थी।

६६०. मेघमालिका वतोद्यापन $-\times$ । पत्र स०६। ग्रा० १० $\times$ ६६च। मापा-सम्कृत। विषय-पूत्रा। र०काल  $\times$ । पे०काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वेष्ट्रन सं०५३३। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डुगरपुर।

**६६. सेघमाला वत पूजा**  $\times$  1 पत्रस० २१ । प्रा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ १ क्या । भाषा-सस्कृत । विषय — पूजा । र० काल  $\times$  । क्षे०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स० २५८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मस्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बूँदी ।

म्द्रम् २. मेघमाला द्रत पूजा × । पत्रस० ४ । ग्रा० १०×५ इच्चा भाषा-सम्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ३०-१२ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायिसह (टोक) ।

८६६३. **याग संडल पूजा**— ∧ । पत्रत० ४ । ग्रा० ११ x ४ इञ्च । प्राथा-सर्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । नेककाल × । पूर्ण । बेप्टनन० १४६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन सन्दिर पाध्वेनाथ चौगान युदी ।

**८६८४. याग मडल विधान—प० घमंदेव।** पत्र स० ४०। प्रा० ६ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$  इव । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । २०काल × । ते० काल स० १६३६ । पूर्ण । वेप्टन स० ३२०-१२० **। प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हूमरपुर ।

**८६८५. याग मण्डल विधान** —  $\times$  । पत्र स॰ २५-५३। मा॰ १० $\times$ ७ इ**श्वा भाषा**- संस्कृत । विध्य-पूजा । र॰काल  $\times$  । ल॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स॰ ४६ । **प्राप्ति स्थान** — दि॰ जैन मन्दिर नागदी दूदी ।

 $\pi \in \mathbb{C}$ . रत्नत्रय उद्यापन—केशवसेन । पत्र सं० १२ । प्रा० १० $\frac{1}{4} \times V_{\xi}^2$  इच्च । भाषा— संस्कृत । विषय पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल सं० १८१७ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वेप्न सं० ३७ । प्राप्तिक स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष---प० भालमचन्द के शिष्य जिनदास ने लिखा था।

द६ द रत्नक्षय उद्यापन पूजा- $\times$ । पत्रसं० १। मा० ११ $\stackrel{1}{\times}$ ४ $\stackrel{1}{\times}$  इञ्च । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । से०काल सं० १८५० सावण बुदी २। पूर्ण । वेष्टन सं० १३६१। प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर म्रजमेर।

**८६८. रत्मत्रय उद्यापन पूजा**— $\times$ । पत्र सं० ३६। घा० १० $\times$ ६१ इस । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६४६ घ्रासाढ बुदी १४। पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर केटियां का नैरावा ।

विशेष -- नैरावा में धन्नालाल जी छोगालालजी धानोत्या भावा वालों ने प्रतिलिप कराई थी।

**८६८०. रत्नत्रय उद्यापन विधान** —  $\times$  1. पत्रस० ३२ । प्रा० ११ $\times$ ७ इ.च. । साया-हिन्दी पद्य । विध्य-पूजा 1. र०काल  $\times$  1 ले० काल  $\times$  1 पूर्ण । विध्यन म० १०६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, वृदी ।

६६६१. रत्नत्रम जयमाल $-\times$  । पत्र स० १४ । मा० ११ $\times$ ४२ हे हज्य । भाषा सास्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । ल० काज १६६४ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेनवाल मदिर उदयपुर ।

द६६२. रत्नत्रय जयमाल $-\times$  । पत्रस॰ १८ । या॰ ६ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इख । मापा सस्कृत । विषय-पृत्रा र०काल × । से०काल स॰ १८७२ वैशास सुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ११२ । प्रास्ति स्थान —वि० जैन प्लायनी मन्दिर वयाना ।

**विशेष**—खुश.लचन्द्र ने बयाना मे प्रतिनिधि को थी। श्लोको के ऊपर हिन्दी मे प्रयंदिया हुग्रा है।

६६६३. रत्नत्रय **जयमाल**— × । पत्रस॰ ४ । आ॰ १०३ ×५३ इखा । भाषा-पाकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**— भ ०दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष प्रति टब्बा टीका सहित है।

द६६४. रस्मत्रय जयमाल—×।पत्र सं० द। झा० द×४ इचा। भाषा-प्रा⊵त । विषय-पुजा।र०काल×। ले०काल×।पूर्ण।वेष्टन स०६७७।**प्राप्ति स्थान**—स०दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

६६६५, रस्तन्नय **अग्रमाल**—× । पनसं०४। मा०१०२¦ ४४ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०२७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सदिर पार्थनाथ चीमान बुंदी ।

६६६. रत्नवय अयमाल  $-\times$ । पत्रसं० ११। मा० ६ $\frac{3}{5}\times\xi^{\frac{3}{5}}$  हञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल सं० १६६३ माषाढ बुदो २। पूर्ण । बेष्टन सं० ६६३। **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर म्रजमेर।

विशेष-मागीलाल बडजात्या क्वामरा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

द६६६. **रत्नत्रय जयमाल भोषा—नवमल** । पत्र सं ० १० । घ्रा० १२ × ७ इ.चा भाषा— हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६२५ फागुण मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—(द० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

द७००. रस्तमस्य पूर्णा—स० पदानित्व । पत्रसं• १६ । मा० ११ x ४ दश्व । आषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल x । ले० काल x । पूर्णु । बेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर बोरसली कोटा ।

८७०**१. रस्तत्रय पूजा**— × 1 पत्रसं० १४ । झा०११×७३ इचा। माषा-सस्कृत । विषय– पूजा। र•काल ×। ले०काल ×। पूर्णं। बेष्टन सं०१४७६ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर झजमेर ।

द्ध**०२. रत्नत्रय पूजा**—× । पत्र सं० १२ । म्रा० १२ १४४ १ इ.चा । साथा-सस्कृत । विषय— पूजा । र०काल × । क्षे∙काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६⊏ । प्राप्ति स्थान— स० दि० जैन सन्दिर म्रजमेर ।

६७०३. रस्तत्रस्य पूजा $-\times$ । पत्र स० १४। सा० < ४  $\S^1_2$  इ.ख । माया-सस्कृत । विषय-पूजा । रुकाल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्तित स्थान**—दि० जैन तेरहांची मच्चिर दौना ।

प्रश्र**ः रत्नन्नय पूजा — × ।** पत्रस० ४ । म्रा० १२ × ६१ इ.च. । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । लेक्काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६-११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाप टोडारायसिंह (टोंक)

**६७०५. रत्नत्रय पुजा** -  $\times$  । पत्रसं०२२ । म्रा० ११ $\times$ ५५ इचा भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हूं गरपुर ।

विशेष-सवाई जयपुर में लिखा गया था।

**६७०६. रत्नत्रवपूजा**—XI पत्रसं० १६ । घा०  $= \times \, \mathbb{1}^2 \, \mathbb{1}^2 \, \mathbb{1}^2 \, \mathbb{1}^2 \, \mathbb{1}^2$  र०काल  $\times \, \mathbb{1}^2 \, \mathbb{1}^2 \, \mathbb{1}^2 \, \mathbb{1}^2 \, \mathbb{1}^2$  र०काल  $\times \, \mathbb{1}^2 \, \mathbb{1}^2 \, \mathbb{1}^2 \, \mathbb{1}^2$  र प्राप्त स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)

ष्ठ०७. रत्नत्रय पूजा—X। पत्रसं० १६। मा० १०×६ इचा। माषा-संस्कृत। विषय— पूजा। र०काल X। ले०काल सं० १८७६। पूर्णं। बेष्ट्रनसं० १०८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक) ८७०८. रत्नमय पूजा $-\times$ । पत्रसं॰ ६। सा॰ १०२ $\times$ ४५े इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनसं॰ ११/३४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन सौगासी मंदिर करौली ।

विशेष-दोहा शतक-रूपचन्द कृत तथा विवेक जखडी-जिनदास कृत हिन्दी मे और है।

**८७१०. रत्नत्रय पूजा** —  $\times$  । पत्र स० ४-२५ । माषा — सस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । सपूर्ण । बेष्ट्रन सं॰ ६०/३१३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन संमवनाय मंदिर उदयपुर ।

**८७११. रत्नत्रय पूजा**  $\times$  । पत्र सं०२३ । ग्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  ह्व । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ते० काल सं०  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१४७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रजनेर मण्डार ।

**८७१२. रस्तत्रय पूजा**— $\times$ । पत्रस० १६ । द्वा० १२ $\times$ ७ इन्दा। माषा-हिन्दी पदा। विषय-पूजा। २० काल  $\times$ । ले•काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन सं० ११०। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर प्रिमिनन्दन स्वामी बूंदी।

**८७१३. रत्नत्रय पूजा जयमाल**  $-\times$  । पत्रसं० १७ । माषा न्यपन्नं ग विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल १७६६ कार्तिक सुदी १० । पूर्णं । वेष्टन स० १३ । प्रास्ति स्थान -िद० जैन पबायती मदिर मरतपुर ।

ष्प्रश्रे. रस्तत्रय पूजा—टेकचस्य । पत्र स०२६। द्वा० १४×६ इश्वः। भाषा-हित्यो। विषय पूजा। र०काल ×। ले०काल सं०१६२६ फागुण मुदी१४। पूर्णाविष्टन स०३६। प्रास्ति – स्थान — दि०जैन तेरहपयी मन्दिर नैएवा।

**५७१४. प्रतिसं० २** । पत्रस० ३५ । द्या० १३ $\frac{1}{4}$ ×५ $\frac{1}{4}$  इन्छ । ले० काल स० १६७२ । पूर्णे । वेष्टन म० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

५७१६. रत्नत्रय पूजा—द्यानतराय । पत्र स० ६ । घा० ११  $\times$  ५ इ च । भाषा-हिल्दी पद्य । विषय-पूजा । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तैरहपयी मालपुरा (टोक) ।

ष्प्रश्**७. प्रति सं० २ । पत्र**सं० ६ । मा० १०×४३ इ.च । ले० काल सं० १९६**१ ।** पूर्यो । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन प्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

क्ष ९६८. रत्मत्रस्य पूजा भाषा— × । पत्रतः १२। सा० ११६ँ× इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल स०१६४६ । पूर्ण । वेष्टन स०११४६ । प्राप्ति स्थान— म०दि० जैन संदिर स्रजमेर ।

ष्ठ ९१६. रस्नक्रय पूजा— × । पत्रस० ४६ । भा० ६×५ इ.च.। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६४० । पूर्ण । बेष्टन सं० १० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर नैरासा । द७२०. रस्तन्नय पूजा— × । पत्र सं० २० । घा० १२×५२ इश्व । मावा-हिन्दी पद्य । विवय-पूजा र० गाल × । लेव्हाल स० १६०७ । पूर्ण । वेश्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौचरियान मालपरा (टोक) ।

६७२१. रत्नत्रय पूजा— $\times$  । पत्रत० २०। ग्रा०११ $\times$ ६ इचा । प्रापा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ६३/६१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

विशेष-दीसा मे प्रतिलिपि हई थी ।

**८७२३. रत्नत्रय पूजा** — × । पत्रस० १६ । झा० १० × ६ इचा । मावा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर श्री महावीर व दी ।

८७२४. रस्तत्रय पूजा—imes । पत्र स० २३ । माषा—हिन्दी । विषय-पूजा । ले॰काल imes । पूर्ण । बेप्न स० २० । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पचायती मदिर भरतपूर ।

**६७२५. रत्नत्रय पूजा विधान**  $-\times$  । पत्र स०१६ । प्रा० १०१४४१ टख । भाषा-संस्कृत । विषय -पूजा । २०काल  $-\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ६५१ । **प्राप्ति स्थान** स० वि० जैन मन्दिर सर्वमेर ।

६७२६. रत्नत्रय पूजा विधान—पत्र म० १६। घा० ६ $\frac{2}{3}$  $\times$ १६ द । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल— $\times$  । लेकाल— $\times$  । पूर्ण । वेपन स०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर धादिनाथ स्वामी मालपूरा (टोक) ।

६७२७. रत्नत्रय संडल विषान — × । पत्र सं० ३६ । ब्रा० १४ ४४, इला । साया – हिन्दीपदा । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६४० चैत्र मुदीर । पूर्णा । बेष्टन स०३२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरहप चीमालपुरा (टोक्र) ।

विशेष- फुलचन्द सौगागी ने प्रतिलिपि की थी।

६७२६. रतनगय मंडल विधान— $\times$ । पत्रतं १०। धा०६ $\frac{1}{6}$  $\times$ ७ $\frac{1}{2}$ ६७। प्राप हिली। विध्य-पूजा। र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टत सं० ७३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बेशनाल मन्दिर उदयपुर।

द्धः ५२६. रत्नत्रय विधान (वृहर) —  $\times$  । पत्र सं०६। प्रा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ७) इश्व । मावा— संस्कृत । विषय-पूजा । रब्बाल  $\times$  । लेक्बाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० १०५ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन प्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

द्ध ५३०. रस्तत्रय विधान—×। पत्र सं०२४। प्रा० १२×६१ इश्वः। भाषा-हिन्दी पद्यः। विषय—पूत्रा। र०काल ×। ने०काल स० १६३० पौप बुरी १३। पूर्या। बेष्ट्रन म० १७७। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर केखाबाटी (सीकर)। विशेष - स्योवन्स श्रावक ने फतेहपूर में लिपि कराई थी।

६७३१. रतनत्रमः विधान—×। पत्रसं० ११। मा० १०<sup>5</sup>,४५ इचा भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। २०काल ४। ले०काल स० १∈६३ मासोज बुदी ६। पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १८६। **प्राप्ति-**स्थान—दि० जैन संदिर फतेदपर गेलावाटी (सीकर)।

८७३२. रस्तत्रय विधान— $\times$ । पत्र० सं० ४४। प्रा० ११ $\times$ ४६वा। भाषा–हिन्दी। विध्य-पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स०६३/६४ प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्राह्मा (राजस्थान)।

ष्प्रदेहे. रस्तम्रय विद्यान—× । पत्रस०१ । प्रा० १३×४ इश्व । भाषा-सस्कृत । विद्यर-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०४३६/३६७ । प्राप्ति,स्थान—दि० जैन संप्रवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८७३४. रस्तत्रय विद्यान— $\times$ । पत्रसं०३६। द्या० १० $\times$ ६५ इता। भाषा—हिन्दी। विद्य—पृत्रा। र० काल  $\times$ । ले० काल सं० ११४३। पूर्णः। वेष्टनसं०२१४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान वंदी।

**८७२५. रत्नत्रय विधान** —  $\times$  । पत्रसं॰ ४७ । प्रा॰ १२ $\times$ ६ इच । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्गा । बेहनसं॰ २६ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मंदिर नागदी बंदी ।

ष्पञ्च राज्यस्य विश्वान — × । पत्रस्य २ । सा० १३ × ४ इत्त । भाषा –सस्कृत । विषय – पूजा । रक्ताल × । वेल काल × । पूर्ण । वेष्टन सक १६६/१८७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोशाग्यसिक ।

५०३७. रत्नश्रय धतोद्यापन— $\times$  । पत्रस० १२ । धा० १२ $\times$ ६ $^1$ , इख । भाषा-सस्कृत । विषय-पृजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० २५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सक्कर, जसपूर ।

८७३८. रत्नद्राय धातोबचापन—× । पत्रसं• १४ । म्रा• १२ ×४ है इञ्च ।भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८४६ मादों सुदी ३ । पूर्ण । वेप्टन स० २६/१४ । **प्राप्ति -**स्थान-दि० जैन मन्दिर पवायती हुनी (टोक) ।

द्मुष्ठ**ः प्रति सं०**२ । पत्र स०१ । घा० १०४५ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पावनेनाय चौगान व दी ।

६७४१. रिविकात पूजा— $\times$  । पत्रस० १० । मा० १० $\times$ ४ इ.च । भाषा संस्कृत । विषय— पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० २२१ । प्राप्ति— स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहत्त टॉक ।

६७४२. रिवय्यत पूजा एवं कथा—सनोहरवास ।पत्रसं∘ २०।प्रा॰ ११४४३ इवा। भाषा —हिन्दी । विषय पूजा एवं कथा। र०काल ४ ।केकाल ४ ।पूर्णं। वेष्ट्रन सं० ६७ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनवास प्रानी डीग।

ष्ठ ४३. रविद्यतो**षापन पूजा—रस्नमूषरा**। पत्रसं• ६। म्रा० १०४६ इञ्च। माषा-संस्कृत । विषय-पूजा रुकाल 🗴 । लेकाल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं• २४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पात्रक्ताय चौगान वृंदी ।

द्ध**७४४. प्रति सं०२ ।** पत्र स० १३ । प्रा० १० <mark>१</mark> × ६ हुँ इत्य । ले∙काल × । पूर्ण। वेष्टन सं०१४४ / ६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डंगरपर ।

६७४५. रविधतोद्यापन पूजा—केशवतेन । पत्र सं०६। आ० १२ $\times$ ५ $^2$  इञ्च। आषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१००। प्राप्ति स्थान—विक जैन मन्दिर प्यायती करीली ।

द७४६. रेवा नदी पूजा—विश्वसूष्या । पत्रसं∘६। मा०११×५३ दश्वाः भाषा-सस्कृतः । विषय-पूजाः। र०कालः × । ले०कालः × । पूर्णः। वेष्टनं स० २७६ । प्रास्तिः स्थान—उपरोक्तः मन्दिरः।

विशेष - रेवा नदी के तट पर स्थित सिद्धवरकूट तीर्थ की पूजा है-

६७४७. रोहिस्सी बात पूजा—  $\times$  । पत्र स० १। मा० ११ $\frac{3}{6}$  $\times$ ६ ६वा । माया—सम्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन सं० १३४५ । प्रास्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

६७४६. रोहिस्सी स्नत पूजा—× । पत्र सं० ४ । प्रा० १०४६ इखा । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन स०३६४ । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन भनिद प्रवर्भर ।

६७४६. रोहिएसी बत पूजा। पत्र सं०२१ । मा० ६ $\times$ १३ हंव । भाषा-हिन्ती (पद्य)। विषय – पूजा। र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं। वेष्टन सं०२७६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मंदिर पावनाय बोभान, बुंदी।

विशेष--- मूल पूजा सकलकीति कृत है।

६७५०. रोहिस्सी क्रत संडन विधान— X। पत्र सं० २०। प्रा० ६ $\frac{1}{4} \times \chi$  इन्त्र । आधा— संस्कृत हिन्दी। —विषय पूजा। र०काल X। ले॰काल X। पूर्ण। वेष्टन सं० २८७। प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बूंदी।

ष्पप्रश्र. रोहिस्सी वलोद्यापन — बाविचन्द्र । पत्रसं∘ २१ । झा०१०४४ | इचा । भाषा — सस्कृत । विषय ृजा । र०काल ४ । ले०काल सं०१७१३ मंगसिर मुरी ४ । । पूर्ण । वेष्टनसं० १०२ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन ध्रववाल मन्दिर उदयपुर । ष्ठ¥२, रोहिस्सी क्लोबायन—× । पत्रसं० १६। मा० १×६ इवा । साथा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८६८ । पूर्णः । वेष्टनसं० ११ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मस्दिर पार्थनाथ चौगान वंदी ।

द**्रध्**र, रोहिस्सी बतोद्यापन — ४ । पत्रसं० १४ । घा० ११ ४४ इञ्च । माया — सस्कृत । विषय-पूता । र०काल ४। ले०काल सं० १८६४ । पूर्स । बेष्टन सं० २५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजबन्नल (टोक)

विशेष-- प्रति जीसं है।

**८७** ५ रोहिस्सी **उरतोखायन पूजा** — × । पत्र सं० २०। प्रा० १०३ × ६ इवा । प्रावा – संस्कृत-हिन्दी थियय-१जा । र०काल × । से०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर राजमहल (टॉक)

ष्ठ**५५. रोहिस्सी बतोद्यापन — केसवसेन —** ×। पत्रस० १७। प्रा० १४ × ६ इव । भाषा– सस्कृत । विषय-पूत्रा । र०काल × । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

म्प्प्रस्. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १३ । बा० १२ × ४ ३ इ.च.। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।

ष्ट**५५७. प्रतिसं० ३ । पत्र**सं० १० । झा० १०३<sup>°</sup> ४४<sup>°</sup> इश्वरा ले०काल ४ । पूर्णे । बेष्टनसं० ६१⊏ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

८७५६. प्रति सo ४। 4784० १६ । ब्राo १० $\frac{2}{5}\times$ ४ इश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन संo ११ । प्राप्ति स्थान—दिo जैन मन्दिर चौधरियान मालयुरा (टॉक)

६७५६. प्रतिसं०५। पत्रसं०४। घा०११४७ इ.चा । ले० काल ४ । पूर्ण । बेहनसं० २५५ । प्राप्ति स्चान---वि० जैन मन्दिर पाण्वेनाच चौगान बृंदी ।

द७६०. सचु पंच कस्यारगक पूजा - हरिमान । पत्रसं० १७ । मा० १२ x ७० हुँ दुवा । मावा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १६२६ । ले०काल सं० १६२८ मार्गशीर्ष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन प्वायती मन्दिर करौली ।

विशेष — भीकालाल छावड़ा की बहिन मूलोबाई ने पंचायती मन्दिर करौली में सं० १८८१ में चढाई थी।

द्ध**६१ लघुशांति पाठ — सूरि मानदेव ।** पत्रसं० १ । मा० १० ४४ इचा । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वैष्टन स० ६२०। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर सफ्तर जयपर।

विशेष - प्रारम्भ मे पार्श्वनाथ स्तवन दिया हुआ है, जिसे घण्टाकर्ए भी कहते हैं।

८७६२. **तधुशान्ति पाठ**—  $\times$  । पत्र स०३। मा०१० $\times$ ४ इञ्च। भाषा-सस्कृत । विषय-पूत्रा । रुकत्तत्र  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०१६८/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाइवैनाय इन्दरगढ (कोटा)

**८७६४. लघुशान्तिक विधि** —  $\times$  । पत्र स० १७ । घा॰ १०३ $\times$ ४३ इन्त्र । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १४४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

## विशेष--प्रशस्त-- .

सबत् १५४८ वर्षे चैत्र बुदी १० गुरु दिने श्री मूलसभे नद्याप्नाये स० गच्छे, बलात्कारगरी श्री कुन्द-कुन्दाचार्यात्वये भ० पद्मनित्दिया तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत् जिप्य म० रत्नकीतिदेवास्तत् जिप्य ब्रह्म मोटराज ज्ञानावरसी कर्मक्षयार्थं लिखापित ।

> ज्ञानवान ज्ञानदानेन निभंयो ऽ मयदानतः । भ्रभयदानात सखी नित्यनिर्व्याची भैषज्ञ भवेत

८७६५. लघु सिद्धचक पूजा—म० शुमचन्द्र । पत्रसं० ४६ । प्रा०११४५ इचा गाया— सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्ट्रनस०२४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लाकर व्यवप ।

**८७६६. लघुस्तपन विधि**— $\times$  । पत्रस॰ ४ । मा॰ ६ $^{3}$   $\times$  ४ $^{3}$  हुन्न । भाषा-स्तकृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । से•काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४४ । प्राप्ति स्थान-प्रिः जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

**८७६७. लिब्धविधनोद्यापन पूजा**  $\times$  । पत्रस॰ ११ । ब्रा०११ $\times$ ४ ६ञ्च । भाषा- सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल म० १६१० । पूर्ण । वेप्टन स० ४४/२४ । **प्राप्तिः** स्थान — दि० जैन पनायती मदिर दुनी (टोक)

८७६८. लब्बिविधान—म० मुरेग्द्रकीति। पत्रम० १०। प्रा० १०¦ ४ ५ ६७। भाषा-सस्कृत । विषय-ध्या । र०काल × । ले०काल स० १६६८ प्रापुण बुदी १४। पूर्ण । बेप्टन स० १४-१०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेमिनाथ टोडा स्थान्त (टोड)

**८७६१. लक्ष्मिवधान**  $- \times 1$  पत्र स॰ ४ ११। या॰ १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इ**ख**ा भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । यम्मा । वहुनस॰ १४१ । प्राप्ति स्**यान** -भे दि॰ जैन मन्दिर सन्तिर।

म् ७७०. लिब्बियान उद्योपनं । यत्र स०। ग्रा० ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इश्वा। माषा-सम्कृतः। विषय-पूजा। रक्ताल $\times$ । लेक्शल $\times$ पूर्ण। अप्टनं म० ५३२ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मदिरं लक्कर जयपुर।

**८७७१. लब्धिविधान उदधापन पाठ ।** पत्रतः १२। प्राः ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इ**च । भाषा-संस्कृत ।** विषय-पूत्रा एव विधान । र०काल । न०काल सः १६०४ भारवा सुदी **८ । पूर्ण । वेष्टुन सं॰ १६६ ।** प्रा**रित स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

ष्ठ७२ लिख्य विद्यान पूजा—हर्षकोति । पत्रसं∘ २ । घा॰ १०४४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र॰काल ४ । ले•काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स॰ १४२ । प्राप्ति स्थान—म॰ दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)

६७७३. लिखिविधान पूजा-- $\times$ । । पत्रस॰ १२। धा॰ १ $^2_7 \times Y^2_7$  इ.च.। मापा-संस्कृत । विध्य-पूजा। र० काल  $\times$ । ते०काल स० १८८६ भादना बुदी १०। पूर्यं। वेष्ट्रन सं० १२२। प्रास्ति स्वान--दि० जैन पनाधनी संदिर बयाना।

६७७४. लिक्ष विधानोध्यापन पाठ— $\mathbf{x}$  । पत्रसं० ७ । धा० १० $_{i}^{2} \times 4^{i}_{j}$  इला । माधा-सस्कृत । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १६/३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सौगानी मंदिर करोली ।

८७७%. वर्तमान चौबोसी पूजा—चुकोलाल । पत्रस० ७१। घा० १२हे×७हे इच । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ने० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पंचायती मंदिर करोली ।

८७७६. बर्तमान चौद्योसी पूजा—  $\times$  । पत्र स०१११। म्रा०१० $^3$   $\times$ ६ $^3$  ६७। मापा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा। र०काल  $\times$  । ते० काल स०१६१७ पीप बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१३७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरहपयी दौसा।

**८७७७. वर्धमान पूजा—सेवकराम ।** पत्र स०२ । प्रा०११ $\times$ ६२ ह्व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल १९४६ । पूर्ण । बेप्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

५७०५. वसुधारा— $\times$  पत्रसः ३। धाः ६ $\times$ १६ सः । भाषा-सम्कृत विषय-विधि विद्यात । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८६-१२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाध टोड.रायसिह (टोक) ।

८७७६. वास्तुपूजा विधान— $\times$ । पत्र स॰ त/११। प्रा॰ १३४४ इश्वः। भाषा-संस्कृत । विषय-विधानः। र०कालः  $\times$ । ले॰कालः  $\times$ । प्रपूर्णः। वेष्ट्न स॰ ४३७, ३८८। प्राप्तिः स्थान—दि॰ जैन मन्दिरः संभवनाथ उदयपुरः।

८७८०. **वास्तुपूजा विधि**— × । पत्रसं∘६। मा०६ दे<sup>2</sup> ×६ इश्वा मावा-सस्कृत । विषय -पूजा। र०काल × । ले०काल स०१६४४ भादवा सुदी १३ । पूर्णी। वेष्टन स०१२१३ । प्राप्ति स्थान — म०६० जैन मन्दिर मजभेर।

**६७६१. वास्तु पूजा विधि**— $\times$  । पत्र सं०७ । मा० ५ $\times$ ६१ इख । भाषा-विधान । विधय- विधान । र० काल  $\times$  । क्षे**०काल**  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० २६६/११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरपुर ।

६७६२. वास्तु विधान— ४ । पत्रस०६ । प्रा०६४६३च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । क्रांकाल ४ । ले•काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स०२२७/३६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सभवनाय उदयपुर । **८७८३. विदेहक्षेत्र पूजा**—  $\times$  । पत्रत० ३८ । घा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ८ ६ श्वः । माया-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेण्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर स्रदेशवाल उदयपुर ।

द्धादार्थे. विद्यमान बीस विरहमान पूजा —जौहरीलाल । पत्रसं∘ दाधा० ७३ ४ ५३ १ चा । माथा-हिन्दी। विदय-पूजा। र०काल ४ । ले०काल ४ । धपूर्ण। बेष्टन स० ४७३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

द्ध⊏.५. विषयान बीस तीर्यंकर पूजा— समरचन्य । पत्रसं० २६ । घा० ११ × ५ हे रुज्य । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स०१६२५ फालगुण सुदी १। ले०काल स०१६२५ । पूर्णं। वेष्ट्रत स०१६४ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन सक्षेतवाल पचायती मन्दिर सलदर।

द्राध्यद्भः प्रतिसंव २। । पत्रस्व २६। तेवकाल संव १६२६। पूर्णं। वेष्ट्रन संव ७। प्राप्ति स्थान — दिव जैन प वायती मन्दिर भरतपुर ।

६७६७. विमानपंक्ति पूजा-×। पत्रस० ४। घा० ११×४ इव । माषा—संस्कृत ≀ विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ३३६/३३४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपर।

**८७८६. विमानर्राक्ति पूजा**  $-\times$  । पत्रस० १ । म्रा० १० $\times$ ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल स० १६३८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०१/११७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इ गरपुर ।

**८७८. विमानपंक्ति पूजा**— $\times$ । पत्रसुरु ७ । द्वारु १० $_{i}^{2} \times ^{i}$ ्डच्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५० ( ध्र ) । प्रास्ति स्थान —दि० जैन ध्रयस्य मन्दिर उदयपुर ।

८७६०. विमान पंक्ति ब्रातोवचापन—म्राचार्यं सकलमूबर्णः । पत्रसं• ६ । म्रा॰ ११  $\times$  ४ दे इञ्च । माषा-सस्कृतः । विषय-पूजा । र॰ काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्णः । बेष्टन सं॰ २२४ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जंन प्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

= ७६**१. प्रतिसं० २** । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ इश्व । र० काल × । **मे∙ काल** × । पूर्णं । बेष्टन स० २७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रयवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-अाचार्य नरेन्द्र कीति के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

८७६२. विमान सुद्धि पूजा— $\times$ । पत्रस० ४१ । प्रा० १० $^3_4 \times \S^2_5$  ६वः । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्यनाथ मन्दिर चौगान (वृदी) ।

विशेष - सरोले ग्राम में लिखा गया था।

५७६३. विमान सुद्धि शांतिक विधान—चन्नकोर्ति । पत्रसं $\bullet$  १४ । मा॰ ५ $\times$  ६ $\frac{1}{2}$  इश्व । माषा-संस्कृत । विध्य-विधान । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन सं $\bullet$  ३०३/११७ । **प्राप्तिः** स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

६७६४. विवाह पटल $-\times$ । पत्र सं॰ ११। मा॰ १० $\times$  इच । प्रावा-संस्कृत । विवय-विवान । र०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन सं॰ २३। प्राप्ति स्थान-वि॰ जैन पार्श्वनाप संदिर क्रदराज (कोटा)।

८७६५. विवाह पटल—×। पत्र सं०२७। भाषा-संस्कृत । विवय-विवान । र०काल ४। कै॰काल सं०१७८७ द्वि० भादवा बृदी १। पूर्ण । वेष्टन सं०४५। प्राप्ति स्वान—वि० जैन तेरहपंगी मन्दिर बसवा।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है

६७६६. विवाह पटल $-\times$ । पत्र सं० ७। धा० १० $\frac{1}{7}\times \frac{1}{7}$  हवा। प्रापा-सस्कृत । विषय विधान । र०काल  $\times$ । ले० काल स० १६६६ । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १७३ । प्राप्ति स्थान-न० दि० कैन मंदिर प्रजनेर ।

६७६७. विवाह पटल—  $\times$  । पत्रसं॰ ६ । प्रा॰ १० $\times Y$ ्रेट्स । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । रंक्शल  $\times$  । सेक्शल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ १०६६ । प्राप्ति स्थान— म॰ दि॰ जैन मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष --श्री हरिदर्ग मध्ये लिपिकृतं।

८७६८. विवाह यद्वीत $-\times$ । पत्र स० १६। मा० १ $\xi$  $\times$ १ इन्द्र। माथा-संस्कृत। विषय-विचान। र०काल  $\times$ । ते० काल सं० १८५७ आवण बुदी २। पूर्ण। बेष्टन सं० २८०। प्राप्ति स्थान-विच जैन पार्थनाथ मन्दिर जीगान बंदी।

द्धिः है. विवाह विधि —  $\times$  । पत्रसं॰ २७ । प्रा॰ १  $\times$  ३ १ ज । मापा-संस्कृत । विषय — विधान । २०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन सं॰ २२१/६६७ । प्राप्ति स्थान — दि॰ वैन सभवनाय मंदिर उदयपुर ।

ष्प्रतः प्रतिसं० २ । पत्रस॰ १-११ । से॰काल × । सपूर्ण । वेष्टन स॰ २२२/६६४ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

द्रद०१. वेदी एवं झब्टपताका स्थापन नवग्रह पूजा—× । पत्र सं० १। घा०११×६३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । २०काल × । ते०काल × ।पूष्णं ।वेप्टन सं० २०२-११७ । प्राप्तिः स्थान—म० दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ब गरपुर।

मन्दर तत निर्मुष — × । पत्रसुर ४० । सार १३ × ५३ इस्त । भाषा-सस्कृत । विषय— विधि विधान । रक्ताल × । से•काल संर १६५२। पूर्ण । बेष्टनसंर ३२२ । प्रास्ति स्थान-दिर जैन मन्दिर पार्यनाथ चौनान बुंदी ।

प्रप्त : स्वत पूजा सम्रह---- × । पत्र सं० २०६ । स्रा० १०३ २४ इवा । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८०६ आवरण सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० द१ । प्राप्ति स्थान --वि० जैन सविर पार्यनाथ चौगान बूँदी ।

सद०४. सत्त विद्यान— × । पत्र सं० १६ । सा० १०३ ४४ है इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-विद्यान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १०४६ । प्रास्तिस्थान— प० दि० जैन मन्दिर स्रवसेर ।

×

विशेष -- वतों का ब्योरा है।

विशेष--पं० केसरीसिंह ने जयपूर में प्रतिलिपि कराई थी।

द्रद**्धः । तत विधान**— × । पत्र सं० ४। ग्रा० १२४६ इन्छः। माषा—सस्कृतः। विषय— विधान । र०काल × । ले०काल । पूर्णः। वेष्टन स० ४४६ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर।

द्रद**्रात विधान पूजा—श्रमरच**न्व । पत्रसं० ४२ । ब्रा० ६्रै ×७ डख ' साथा हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पवायती मन्दिर बयाना ।

×

विशेष--प्रारम्म का पाठ--

बन्दौ श्री जिनराय पद, ग्यान बुद्धि दातार । वत पुत्रा भाषा कहो, यथा मुश्रुत ग्रनुसार ।

×

ग्रन्तिस पाठ--

तीन लोक माहि सार मध्य लोक को विचार। ताके मध्य दीपोदघि ग्रसख प्रमानजी । सब द्वीप मध्य लसै जब नामा दीय यह ताकी दिशा दस तामै भरत परबान जी। तामें देस मेवात है बसत सुबुद्धी लोग नगर पिरोजपुर फिरकी महान जी। जामे चैत्य तीन बने पुजत है लोग धने बसत श्रावग वहा बड़े पून्यवान जी ॥१॥ मलसधी संघलसै सरस्वतीगच्छ जिसे गरासी विलातकार कुन्दकृत्व ग्रानजी। ऐसी कुलमाना है वस में खडेलवाल गोत की लुहाडया रुच करौ जिनवानी जी। किसन हीरालाल सुत श्रमरचन्द नित बाल के स्थाल बन छद यो बखान जी। यामे भूल-चूक होय साथ लीज्यो प्राग्य लोग मेरो दोष विमा करो खिमा बडो गुरा या उर ग्रानो जी ॥२॥ दद०६. **बतसार** —  $\times$  । पत्रसं० ६ । प्रा० १० $\frac{3}{5}$   $\times$  ५ $\frac{1}{5}$  इन्छ । प्राण-संस्कृत । विषय — कत विभाग । र०काल  $\times$  । से० काल सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टुन सं० १७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर सकर वयपुर ।

**८८१०. सतोद्यापन संग्रह**— $\times$  । बेष्टन स॰ ३३-१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का ड्गरपूर ।

<b>विशेष</b> — निम्न संग्रह है —		
१. जिनगुरा सम्पत्ति वतोद्यानन	सुमति सागर।	संस्कृत
२. कर्मदहन पूजा	विद्याभूषरा ।	
३. घोडशकारए। वृतोद्यापन	मुनि ज्ञान सागर ।	,,
४. भक्तामर स्तीत्र मंडल स्तवन	× ı	"
५. श्रुतस्कध पूजा	वीरदास ।	,,
६. पञ्च परमेष्टि पूजा विधान	यशोनन्दि ।	12
७, रत्नत्रयोद्यापन पूजा	भ० केशवसेन ।	
<ul><li>पञ्चमी वतोद्यापन पूत्रा</li></ul>	×	
१. कजिका व्रतोद्यापन	यणःकीर्ति ।	•,
१०. रोहिस्सी बनोद्यापन	×	,,
११. दशलक्षरम् व्रतोद्यापन	×	"
१२. पल्य विधान पूजा	ग्रभयनन्दि ।	,,
<b>१</b> ३. पुरपाञ्जिली वतोद्यापन	×	,,
१४, नवनिघान चतुर्दश रत्न पूजाः	लक्ष्मीसेन ।	,,
१५. चिन्तामिंग पार्ग्वनाथ पूजा	विद्याभूषरा ।	. "
१६. पच कल्यास्मक पूजा	×	,,
१७. सप्त परमस्थान पूजा	×	,,
१८. ग्रप्टाह्मिका वृत पूजा	<b>ब</b> ह्य सागर ।	,,
१६. ग्रष्ट कमंचूर्ण उद्यापन पूजा	×	
२०. कवल चन्द्रायरा पूजा	जिनसागर	,,
२१. सूर्यव्रतोद्यापन पूजा	व० ज्ञानसागर	,,
२२ हबन विधि	<b>x</b> ·	,,
२३. बारहरी चौबीसी व्रतोद्यापन	×	<b>,</b> ,
२४. तीस चौबीसी वतोद्यापन	भ०विद्याभूषरा ।	
२५. धनन्त चतुर्दशी पूजा	भ० विश्वभूषरा।	"
२६. त्रिपचाणत त्रियोद्यापन	×	,,

द्रदर्शः सतोद्यापन पूजा संग्रह—× । पत्र सं० १२-६६। मा० १०-४६ इचा भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल १६२१ । पूर्ण । बेष्टनसं० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रतिदर कोरसभी कोटा । रस्तर्नान्द कृत परुष विधानोद्यापन, न दीश्वरवतोद्यापन, सप्तमी उद्यापन, नेपनिक्रया उद्यापन विजनुष्ण सम्पत्ति व्रतोद्यापन, बारह बतोद्यापन, बोडगकारण उद्यापन, बारित्र व्रतोद्यापन का संग्रह है ।

द्रदश्यः ज्ञतों का क्योरा—× । पत्रसं० १२ । मा० ७४५ इच । माषा—हिल्दी । विषय-विचान । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० बैन सन्दिर पार्थनाथ इन्दरस्य (कोटा)

६६१३. बृह्द गुरावली पूजा – स्वरूपचन्द्र । पत्रस्य ६२। प्राय १२ ४५३ १४४ । प्राय – हिन्दी पद्य । विषय पूजा । र०काल स० १६१० सावन सुदी ७ । से०काल सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पंचायती मन्दिर करीती ।

विशेष—जीवनलाल गिरधारीलाल के तृतीय पुत्र किशनलाल ने नगर करौली में नेमिनाधाध चैरथालय में प्रतिनिधि करवायी थी।

म्मर्थः प्रतिसंव २ । पत्रसंव २२ । माव १५ ४५ इञ्च । लेवकाल सव १९१० । पूर्ण । बेष्टन संव ३६ । प्राप्ति स्थान— दिव जैन मन्दिर नागरी बंदी ।

स्दर्शः **बृहद् पूजा संग्रह**—×। पत्रसं० २१६ । मा० च<sup>2</sup>, ४६<sup>8</sup> इत्रा । माषा-सस्हत-प्राहत । विषय-पूजा १०काल ४। ले०काल सं० १८२१ फागुत बुदी ३ । पूर्ण । **बेट**नसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**— वि• केवपबायती मन्दिर करोली ।

विशेष---नैमित्तिक पुजाओं का संग्रह है।

c=0. वृहद् पांच कल्यास्णक पूजा विद्यान— $\times$ । पत्रस० २२। प्रा०  $\mathcal{E}_{i}^{2}\times\mathcal{E}_{j}^{2}$  इच्च । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० २५०। प्राप्ति स्थान—िर्दि० जैन मंदिर प्राप्तिनन्दन स्वामी दूरी ।

 $\mathbf{c} = \mathbf{c}^{\dagger} \mathbf{c} - \mathbf{q}$  हत् शांति पूजा— $\times$ । पत्रतः १२। धाः  $\mathbf{c}^{\dagger}_{\mathbf{c}} \times \mathbf{v}_{\mathbf{d}}^{2}$  इश्वः। भाषा—संस्कृतः। विषय-पूजाः। र०कालः  $\times$ । से०कालः  $\times$ । सपूजं। वेष्टनः सं० १३१२ः। प्रास्ति स्थान— स०६० जैन मन्दिर धजमेरः।

म्पर्टरः बृहर् शान्ति विधान—धर्मदेव । पत्रसः ३६ । मा॰ ११४१ इञ्च । माषा— सस्कृत । विषय-विधान । र०कान ४ । ले॰कान सः० १८८२ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

विशोध — बगरू ग्राम के ध्रादिनाथ चैत्यालय मे ठाकुर वार्घासह के राज्य में फ्रांफ़ूराम ने प्रतिलिपि की थी।

द्रदर्श. बृहत् सान्ति विश्वान— × । पनसं० ३ । मा० ११र्फु × ४३ इव । नाषा-संस्कृत । विषय— पुजा । १० काल × । से० काल × । पूर्ण । बेष्टन मं० १६६ । **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन सरिद कोरणकी कोटा ।

⊏⊏२२. बृहद् शान्ति विधि एवं पूजा संग्रह— ४ । पत्र सं∘ २६ । ग्रा॰ १०३ ४४ इच । भाषा-संस्कृत । निषय-पूजा । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३६ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन संदिर वोरसनी कोडा ।

६६२३. बृहद् बोदशकारस्य पूजा— $\times$ । पत्रतः ४५। प्राः १० $_{7}^{2}$ ×५ १ सा । १० $_{7}^{2}$ ×५ १ सा । संस्कृत । विषय-पूजा । र०कात  $\times$  । ते०कात  $\times$  । पूर्ण । बेच्टनसं० २७४। प्रास्ति स्थान — दि० जैन मिलर हीवानजी कामा ।

द्रदर्भ. बृहद् वोडशकारण पूजा-×। पत्रतं∘ १४। प्रा॰ १०३ ×४३ इन्च। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल सं०१ द१६ सावण मुदी १२। पूर्ण । वेष्ट्रन सं०३६७। प्राप्ति स्थान-भ० दि० जैन मन्दिर प्रवर्भर।

द्रदर्भ. **बृहद् सम्मेव शिखर महास्म्य --मनसुबसागर**ः पत्रसं०१३७ । घा० १२ ¦४५ । इथ्यः। भाषा-हिल्दी (पद्यः)। विषय—पूजा । र०काल ४ । **ले∘कान सं० १**६३० मात्र मुदी १४ । पूर्णः। वेष्टन स० १२१६ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

६८२६. **बृहद् सिद्धलक पूजा - भ० मानुकीति ।**पत्रसं० १४६ । म्रा० ११ ×५ इत्त । माषा -सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल 🗴 । से०काल 🗴 ।पूर्ण । बेष्टन सं० २४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

### विशेष -- प्रशस्ति -- प्रच्छी है ।

, जयपुर नगर में लक्कर के मन्दिर में पं० केशरीसिह जी के शिष्य भौडूराम देवकरण ने प्रतिसिपि की थी।

ं द्रद्रद्र सास्त्र पूजा— × । पत्र सं० ४३-६३ । प्रा० ७१-४४ है स्वः । भाषा –हिन्दीः विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० × । पूर्णं । वेष्टन सं० ६८-४८ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

क्रद्भ २ सांतिकामिषेक $-\times$ । पत्र सं० १४ । घा० १० $\frac{1}{2}\times Y_0^2$  इंच । माया—सस्कृत । विषय - पूषा । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ४३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सस्कर जयपुर ।

विशेष--नैरावा मे प्रतिलिपि हुई थी।

द्यद्व २. शान्ति पाठ—पं० धर्मदेव । पत्र स० २१ । पा० ११ ४ ४ इच । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६० । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

६६३४, **शांतिक पूजा विधान** —  $\times$  । पत्र सं०५। मा० १० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३०६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पार्यवास, चौगान बूरी ।

८६२५, **शांतिक विधान—धर्मदेव ।** पत्रस० ४७ । मा० ८ $\frac{1}{4}$ × ४ $\frac{1}{6}$  इच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । से०काल स० १८५६ चैत्र वदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ११७७ । प्राप्ति-स्थान—म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**८०३** × प्रतिसं० २ । पत्रसं० २७ । मा० १०३ × ४ इन्छ । ते०काल स० १८६४ माह बुदी ६ । पूर्ण । बण्टन स० २५-११ **। प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

**विशेष**—टोडारायॉसहमेप०श्री बृन्दावनके प्रक्षिप्य एवं सीतारामके शिष्य क्योजीरामने प्रतिलिपिकीथी।

कद्भ ७. शास्तिक विधि —  $\times$  । पत्रसं॰ २ । भाषा-सस्कृत । विधय विधि । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत सर्थ  $\times$  । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन पंचायती मदिर मस्तपर ।

स्मम् स्मातिस**क पूजा — × ।** पत्र स०३ । ग्रा**० १०** × ४ दश्व । माषा–सस्टून । त्रियय– पूजा । रुकास **४ । से॰का**स × । पूर्ण । बेटन स० १४६८ । **प्राप्ति स्थान** — भ∘दि० जैन सन्दिर स्रजीर ।

**८६२. शान्तित्वक पूजा** $-\times$  । पत्र स० ७ । घा० १ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इथा । आया-सस्कृत । विषय-पुजा । र०काल  $\times$  । ते० काल स० ११४६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । प्राप्ति स्थान-िह $\bullet$  जैन मन्दिर घमिनन्दन स्वामी, वृदी ।

म्मण्डला स्थापिक पूजा - × । पत्रस० ४ । ग्रा०११र् ४६० इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा : र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैयावा ।

ष्ट प्रश्रीत चक्र पूजा —  $\times$  । पत्र सं० ४ । प्रा० ६  $\frac{1}{2} \times G$  इ.च । माया - संस्कृत । विषय – पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८५६ धायाद सुदी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४४ – द१ । प्राप्ति – स्थान — दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष--राजमहल नगर में श्री चन्द्रप्रम चैत्यालय में मुखेन पंडित ने प्रतिलिपि की श्री।

द्रदर्भ साति चक्र पूजा— × । पत्र स० ३ । प्रा० १० × ५ इच । माषा-संस्कृत । विषय— पूजा । र०काल × । सं∘काल × । पूर्णं । बेष्टन स० ४८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

a=5 , शांतिचक विधि— $\times$ । पत्र सं० ४। प्रा० ११ $\times$ ४ दश्व। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन सं० ३८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

प्रतिखन्द्र संडल पूजा— $\times$ । पत्रस्य ४। म्रा० ११ $\times$ ५ इञ्च : मावा-सस्कत । विषय—पूजा । र० काल  $\times$ । से०काल सं० १६४८। पूजा । वेष्ट्रन सं० ५०६। प्रास्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरपूर ।

a=3 स्रांतिसक संडल विधान—x । पत्रसं० ४ । धा० १० $\frac{1}{2}\times 4\frac{1}{2}$  इला । भाषा— सम्झत । विध्य-पूजा । र०काल x । जेकाल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५, ५७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पार्थनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

द्रदर्भ, प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । ले०काल सं० १८०६ धवाढ बुदी १० । पूर्ण । बेट्टन स० १५१/५७ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

प्रवर्ष । शान्तिनाथ पूजा $-\times$ । पत्रसं० १३ । प्रा० ७ $\times$ ६ इश्र । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० १७०/७३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरपुर ।

द्रदर्भद्र, **शांतिनाथ (बृहर्व) पूजा-वः शांतिरास** । पत्र सं∘ १६ । प्रा० १२ ४८ द्रखा । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनस० ३६२**-१४**८ । **प्राप्ति स्थान**-रि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

मन्द्र ६. सान्तिमंत्र— ४। पत्रसं० ४। मा०१०४२ दृश्यः। मावा—सस्कृतः। विवय-विधानः। र०कालः ४। ले०कालः सं०१६३म। पूर्णः। वेष्टनसं०३४१/१३२। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दरः कोटदियो का द्वंगरपूरः।

प्रमुश्तः शांति होम विधान—स्राशाधर । पत्र स० ४ । प्रा० १२  $\times$  ४ $\frac{1}{4}$  इञ्च । माषा—सस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

८६५१. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १ । धा० ११×६ $\frac{1}{4}$  इत्थ । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टनसं० ६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

द्रद्भर्भः **शीतलनाथ पूजा विधान**—× । पत्रसं० १ । मा० ११×५ इचा । भाषा-सस्कृत । विध्य-पूजा । र० काल× । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टनसं० १३०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

 $\pi \pi \chi \chi$  , शुक्लपंक्सी सतीक्षोपन —  $\times$  । पत्र सं॰ ११ । सा० १२ $\chi$ ४ इंच । साथा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल  $\chi$  । ले०काल  $\chi$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६/३५१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन संग्रकनाथ मन्तिर उदयपुर ।

विशेष -- मट्टारक वादिभूषण के भिष्य ब॰ बेला के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी प्रति प्राचीन है।

 $\mathbf{c} = \mathbf{k} \cdot \mathbf{k}$  शुक्लपंचमी सतोद्यापन— $\times$ । पत्रस० १०। घा० ११६  $\times$  ५६ ६ सः। भाषा— सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल  $\times$ । ले॰काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं॰ १७७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाव्वेनाथ चौनान, (ब्रूंदी)।

 $\mathbf{c}$   $\mathbf{c}$  प्रश्न संक्ष्म का स्वाचायन -  $\times$  । पत्र सं० ६ । प्रा० १०  $\times$  ६ दृष्ट । भाषा - संस्कृत । विषय - प्रजा । २०काल  $\times$  । लेलन काल सं० १६३८ । प्राप्त । वेष्टुन सं० ५१७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटिक्यो का द्वंगरपुर ।

क्ष्यप्रस्य मुक्तपंत्रमी व्यतोद्यापन— $\times$ । पत्र स०७। ग्रा० ११६ $\times$ १६ व । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६/६०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर कोटडियों का हुं परपुर ।

 $\mathbf{cc} \mathbf{x} \mathbf{0}$ . **शुक्लपंचमी ातोद्यापन**— $\mathbf{x}$ । पत्र सं०७  $\mathbf{I}_{\mathbf{x}}^{\mathbf{x}}$ मा० १० $\mathbf{x}$ ६ इञ्च। भाषा-सस्कृत । विषय-पुजा। र० काल  $\mathbf{x}$ । ले० काल  $\mathbf{x}$ । पूर्णं। वेष्टन स० ५२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर।

द्वद्रभ्दः **धाद्व विधि—रत्नगेखर सूरि** । पत्रस॰ १६६ । घा॰ १० $\times$ ४ $_{\zeta}$  इख । माषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल सं०१४०६ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०६४-२०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

द्रदश्चरः **आवक रात विधान—प्राप्तदेव।** पत्रत० ११। घा० १०३ ४६२ इचा। माषा— सस्कृत । विषय-विधान । र०काल ४ । ले०काल स० १७६४ माघ मुदी ११। पूर्ण । **वेष्ट्रनसं० ४०२।** प्रा**रित स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर घत्रमेर ।

**८६६०. श्रुत पृजा**— × । पत्रस० ४ । झा० ११ ×५ इ.च । माषा—संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टुन स०३६३ । **प्राप्ति स्थान**— म**०** दि० जैन मन्तिर स्रजनेर ।

म्बद्ध है. **श्रुत पूजा** —  $\times$  । पत्रस $\circ$  ४ । ब्रा॰ १० $\frac{3}{7}$  ×४ $\frac{3}{8}$  हवा । सावा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ । प्राप्ति स्थान — स $\circ$  दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

- द्विर स्वात पूजा- × । पत्र स॰ ४ । सा॰ १००० ४५ इस्व । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वेष्टन स॰ २११ **। प्राप्ति स्थान-**-- दि० जैन मन्दिर पाखेनाय चौगान बुदी ।

 $ack \times e$ , तस्कंच पूजा—कानमुष्या । पत्रसंe ६ । घा॰ १० $\times$ ६ है इस । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । तेक्काल संe १८६१ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्णे । वेष्ट्रन संe १० $\times$  । प्राप्तिः स्थान—दिe जैन मन्दिर धादिनाव बुंदी ।

८८६६. .प्रति सं०२ । पत्रसं०३ । ले॰काल स॰ × । पूर्या । वेष्टनसं० ४/३१६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन संगवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रवर्ष**ः अनुतस्करण पूजाः—भ० श्रीमृत्रा**ः। पत्र सं०१६। प्रा०१४×४ इंच । मावा-संस्कृतः। विषय-पूजाः। र०कालः × । ले०काल सं०१७३१ । पूर्णः। वेष्टन सं० ५१४ । **प्राप्ति स्थानः—** वि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुनरपुरः।

विशेष---बहाराद्रमध्ये पं० भोमजी लिखितं ।

प्रदर्भ श्रातस्करण पूजा — वर्द्ध मान देव । पत्रसं• ७ । मा० १० × ४ इ.च.। माषा – संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेहन सं• ४४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रिनन्दन स्वामी बुंदी ।

द्रदर्शः **अुतस्क**रे**ष पूजा** — × । पत्रसं० ६ । ग्रा० ११ × ५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ने०काल × । पूर्णः । बेष्टन सं० १४ द्र । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर चौगान बुंदी ।

विशेष-एक प्रति भीर है।

क्ष्मण्ड. श्रुतस्कंच पूजा —  $\times$  । पत्र स० ५। मा० ११ $\frac{1}{3} \times$ ५ इञ्च । मावा-संस्कृत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मिंदर बोरसली कोटा ।

द्या २० काल  $\times$  । ते०काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० २७-६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—प॰ शिवजीराम ने घ्रपने शिष्य चैनसुझ नेमीचन्द के पढ़ने के लिए टोडा में प्रतिलिपि की थी।

न्न प्रश्ने **क्षुतस्कंष पूजा** -- ×। पत्रसं∘ द। ग्रा० ११ ×५ इश्वाः। भाषा -- संस्कृतः। विषय-पूजाः। र० कालः ×। ले० कालः ×। पूर्णः। वेष्टन सं० ३५६। **प्राप्तिः स्थान** -- दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्थामी वृदी।

६६७४. श्रुं सहसंख पूजा —  $\times$  । पत्रसं० १०। आ० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इच । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते० कात  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० १६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मन्दिर हुनी (टॉक)

द्रद७५. श्रुत स्कंच पूजा विधान—बालचन्व । पत्रस० ३४ । मा० ११ॐ४ ४ इ.च. । मापा-हिन्दी पद्य । विषय-कया । र०काल ४ । ले० काल स० १६४५ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० १२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

म्म्य-हिन्दी पद्या । विषय-पूजा। र०काल ४ । के०काल स० १६३२ । पूर्ण। वेष्ट्रत स०७ मा प्राप्ति स्थान-हिन्दी पद्या । विषय-पूजा। र०काल ४ । के०काल स० १६३२ । पूर्ण। वेष्ट्रत स०७ मा प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बंदी।

विशेष-हजारीमल्ल साहिपुरा के रहने वाले थे।

६६७७. श्रुत स्कंच मण्डल विधान $-\times$ । पत्रस॰ १। ग्रा॰ २३ ×११ है इञ्च। भाषा-सस्कृत। देवप्य-पूजा। र० काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स॰ ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन पथायती मन्दिर देनी (टोक)।

विशेष---मण्डल का नक्शा दिया हुन्ना है।

**८८८. घोडशका रण जयमाल**  $-\times 1$  पत्रम० १७। भाषा - मस्कृत । विषय - पूत्रा । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायती मस्दिर भरतपुर ।

विशेष-ऋषि रामकृष्ण् ने भरतपूर मे प्रतिलिपि लिखी थी।

क्षत्रक**्षां अध्यक्षत्रकारम्। जयमाल**— × । पत्रस्य ६ । ब्राव्हर-४५ दश्वाः भाषा-संस्कृतः । विषय-पूजाः र०काल × । लेक्शालः स० १७६२ भादवाः बुदी १४ । पूर्णः। वेष्ट्रनसंव १२२६ । प्रास्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर सजमेर ।

म्मम् र वोडशकारण जयमाल— × । पत्रसं∘ ४१ । ब्रा० १३ × ५ दश्वः । साथा-प्राकृतः। विषय-पूजा । र०काल × । से०काल स० १६४० भारवा बुदी १० । पूर्णः। वेष्टृनस० १०४ । प्रास्तिः स्थाल— दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर

विशेष--गौरीलाल बाकलीवाल ने स्वपठनायं प्रतिलिपि की थी । टब्बा टीका सहित है ।

८८६२. षोडशकारस्य जयमाल $-\times$ । पत्रसंग् १०। भाषा-प्राकृतः। विवय-पूजाः। र $\circ$  काल $\times$ । त्रे $\circ$ कालः  $\times$ । पूर्णः। वेष्टनं स $\circ$ ४। प्राप्तिः स्थानः-दि $\circ$ जैनः पत्रावतीः मन्दरं भरतपुरः।

विशेष -- सस्कृत मे टीका है।

- बद्द ३. **बोडशकारएा जयमाल**— × । पत्र स॰ १२ । घा० ११×४ डचा । **माया**—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७१९ माह सुदी १३ । पूर्ण । वेटून स० १२२ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

विशेष -- गुमानीराम ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी।

६६६५. द्रतिसं०२ । पत्र सं०२७ । म्रा० ११ $\times$ ४ ५ इ.स. ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३imes१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-कहीं २ सस्कृत में शब्दार्य दिये हैं।

द्यद्य ६. बोडशकार ए। जयमाल वृत्ति— पं० शिवजीवरुत (शिवजीलाल)। पत्रसं० २६ । मा० १२२  $\times$  ७, १ च । मापा-प्राकृत सन्द्रत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

क्रम् चेडशकाररा पूजा  $--\times$  । पत्र सं० २४ । मा० ११ $\times$ ४ इखा । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वष्टन स० २७६ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

प्रदादमः **बोडशकार्**स पूजा— × । पत्र स० १२। आ० १२ दे ४ पहें इश्वः। भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्णं। बेष्टुत स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर करीली ।

द्रद्रदर्श चोडमकारस्य पूजा संडल विधान—टेकचर्य— $\times$ ा पत्रस० ४१ । प्रा॰ १२ $\times$ ४ इञ्च । साया-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन स्रवान मन्दिर उदयपुर ।

प्रम्हे०. प्रति सं०२ । पत्रसं०५३ । झा०६ १०४६ १ दुवा । ले०काल स०१६५६ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं०१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैत मन्दिर ग्राभितन्दन स्वामी, वदी ।

मम्ह**१. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० ४२ । लेक्काल स० १९७३ । पूर्ण । बष्टन सं० ३६६**-१४म ।** प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

प्रमाण स्वाप्त करोष्टापन — ज्ञानसागर — ×। पत्रस० २३ । झा० १२३ ×७ स्व । भाषा –सस्कृत । विषय –पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति** हथान —दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगप्पुर ।

द्रदर्भ वोडशकारण द्रतोद्यापन पूजा—सुम्रति सागर । पत्रस० ३२ । प्रा० ११ ४६ दे इञ्च । माषा—सम्झत । विषय-पूजा । र० काल ४ से० काल स० १८१७ भादवा सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं•३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मदिर वयाना ।

विशेष-प्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है---

शाः तिम्म प्रकार है—
प्रवास्त नाम सुदेशमध्ये विश्वासणालेन विश्वाति भूनतं ।
सुशास्तिनायस्तु जयोस्तु निर्द्धां, सुञ्जेनकेण परदेव तत्र ।।१।।
श्रीसव्यक्ते विपुलेयदूरे बह्यो प्रगृहे वलशास्तिन गर्छे ।
तत्रास्ति यो गोतम नाम चेया त्वये प्रणातो जिलक्त्र सुरि ।।२।।
श्रीपदानिद्धंवतापहारी देवेन्द्रकीतिम् वनेककीति ।
विद्यादितदिदरमस्तिभूषः सक्त्यादिवन्द्रो सयवन्द्रदेव ।।३।।

तत्पट्टं अपनानिससे रत्नकीति नुणाप्रणी ।
जीयाद भट्टारको लोको तत्नकीति जगोतम ॥४॥
मृति सागरदेव कके पूजा मणाप्तां ।
स्वरेवनातान्ये यः प्रह्वादो हृत्यदानुषी ॥४॥
कत्तापरोषपुजाया भूससथिवदास्रणी ॥
सुमतिसागरदेव अद्याधोडककारणी ॥
इति पोडमकारण जतोधापनगठः ।
वंचाणदिकके स्वर्णे प्रमित्त महत् ।
तीर्षकृत्यपुजाया भूमतिसागरीदितः ॥७॥

द्रदृष्ट्र प्रति सं०२ । पत्रसं०२७ । ले॰काल 🗴 । पूर्णः । बेष्टनसं०४ । प्राप्ति स्थान—-प्रदेश कीटा मन्दिर वयाना ।

 द्वट १५, प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । प्रा० १२×१ है इच । ले०काल सा० १८६७ फागुण

 बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१-१०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टोक) ।

 क्रिकेट—प्रमयनस्य के लिख्य समितिसागर ने पूजा बनाई । प्रमयनस्य की पूरी प्रशस्ति दे रखी

है। टोडा मे श्याम चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी। नाथूरामजी लुहाडिया ने नासिरदा मे मन्दिर चढाया था।

६८६६: प्रतिसं० ४ । पत्र स० २६ । ले॰कालimes । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ५८ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

प्रप्त १ । प्राः १ । प्र

६६६६. सकलोकरण विधान—४ । पत्रसंग् रे। माग्र १०४४; इस्त्र । भाषा-त्रस्कृत । विषय पूजा । रण्काल ४ । सेण्काल ४ । पूर्ण । बेष्टनसंग्रेन । **प्राप्ति स्थान**—भण्दिण जैन मन्दिर

a=0, सकलीकरस्- राष्ट्र सं  $\times$  । पत्र सं॰ २। मा॰ १२ $\frac{1}{6}$  × ६ ६ था। भावा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं॰ ६८६ । प्राप्ति स्थान—म॰ दि॰ जैन मन्दिर सबसेर ।

 $= e^{2}$ . सकलीकर्श $= \times 1$  पत्र स $\circ \times 1$  प्राप्त २ प्राप्त २ १० १० १० । प्राप्त संस्कृत । तिरयः विद्यान । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टन सं॰ १०३ । प्राप्ति स्थान = दि० जैन प्रादिनाथ मन्दिर बंदी ।

्रह $\bullet$ २. सकलीकरस् विधान  $\times$  । पत्र स० ३। धा० १० $\frac{3}{2}$   $\times$ ५ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४२६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन संदिर लक्कर, जयपूर ।

- क्ट्रि. सकलीकरण विधान— $\times$  । पत्र सं०२। प्रा० १० $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4}$ , क्रज्य । भाषा-संस्कृत । विध्य—विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन सं०२४। प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमस्त (टॉक) ।
- प्रह**ेर. सकलीकररा विधि**  $\times$  । पत्र सं० १ । प्रा० १२ $\times$ ५ इच । माधा हिन्दी । विधय विधान । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । प्राप्ति स्थान दि० जैन नेमिनाय मदिर टीकारायसिंह (टॉक) ।
- ६८०५. सकलीकररा विधि— $\times$ । पत्र सं० २। मावा-संस्कृत। विषय-विधान। र०काल  $\times$ ।। से०काल सं० १८६४।पूर्ण। वेष्टन स० ३४५-१३२। प्रास्ति स्थान-द० जैन मन्दिर कोटडियों का द्रगरपुर।
- ६६०६. सकलोकररा विधि— $\times$ । पत्र सं॰ २४ । सावा—सस्कृत । विषय—विधान । र॰काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ २७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पार्श्वनाय मन्दिर चौनान वंदी ।
  - विशेष प्रन्त में शान्तिक दुजा भी है।
- ष्ट**्ण. सकलीकरस्ग विधि**— $\times$  । पत्र सं $\sigma$  ४ । घा० ६  $\times$  १ है इन्छ । भाषा-संस्कृत । विषय विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल सं $\sigma$  १६११ । पूर्स । वेष्टनसं $\sigma$  २४६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पाइवैनाघ मन्दिर चौगान (बूंदी) ।
- ८६०८. सकलीकर्श विधि— $\times$  । पत्रतः ३ । प्राः १० $\frac{1}{4}$  $\times$ १ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-मंत्रणास्त्र । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाय मन्दिर जीनान (बंदी) ।
- ८६०६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेण्टन सं० १६७ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन पार्यनाथ मन्दिर चौगान (बंदी) ।
- ६६९०. सत्तर मेदी पूजा × । पत्रसं∘ २ । मापा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल— × । ले० काल स० १८००। पूर्ण । वेष्टनसं०३४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर।
- स्द**११.सप्तिष पूजा—विश्वभूवर्ग** । पत्रतं∘ ४६ । सा॰ १० है × है इसा । नावा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । सपूर्ण । वेष्टन सं० १३७१ । **प्राप्ति स्वान**⊸म० दि० जैन मन्दिर स्वयोर ।
- क्ष ६१३. प्रति सं०३ । पत्र सं०७ । ले०काल 🔀 । घपूर्ण । वेष्टन सं०६२ । प्राप्ति स्थान उपरोक्त मन्दिर भरतपुर ।
- ८०१४. प्रति सं० ४। पत्रसं० ३ से १ तक । ले॰काल सं० १८५२ । अपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।
- ८६१४. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १० । ले॰काल 🔀 । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मंदिर करतपुर ।

**८१६. प्रति सं०६** । पत्र स०१० । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०६५ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर मरतपुर ।

८६१७. प्रति सं०७ । पत्र सं०१२ । ले०काल । पूर्णं। वेष्टन स०६६ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन पत्रायती मंदिर भरतपुर ।

८६१८. प्रतिसं० ६ । पत्र स०१७ । ले० काल 🗴 । पूर्णा । वेष्टन स०५३ । प्राप्ति स्थान दि० जैन तेरहलंथी मन्दिर बसवा ।

क्षरेहर. सस्तिषि पूजा— × । पत्रसं∘ ३ । घा० ११० रू४ १ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय— पूजा । रक्षाल × । से०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर क्षजनेर ।

**६२०. सप्तर्वि पूजा**— $\times$ । पत्र स० ११। प्रा० ६ $\times$ ६ $\frac{1}{5}$  इञ्च। भ्राषा - संस्कृत। विषय—पूजा। र०क्राल  $\times$ । ले० काल सं० १६३६ भादवा बुदी १३। पूर्ण। बेष्टन सं० १७७। प्राप्ति स्थान—स० पचायती मन्तिर उदयपर।

फ १२ र. सप्तर्षि पूजा $-\times$ । पत्र सं $\circ$  १। प्रा $\circ$  ११  $\times$   $\vee$  हुन्त । प्राया-सस्कृत । विषय -पूजा। २०काल- $\times$ । ले०काल स $\circ$  १७६८ । पूर्ण । बेष्टन सं $\circ$  १६१/५८ । प्राप्ति स्थान--- वि $\circ$  जैन पार्वनाथ मन्दिर इन्टराउ (कोटा) ।

विशेष-सवत् १७६८ भट्टारक श्री १०८ जगत् कीर्ति शिष्येगा दोदराजेन लिखित ।

**८१२२. स॰र्ताव पूजा—मनरंगलाल** । पत्र स० ३ । ष्रा० १२×८ इञ्च । माया-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ने०काल स० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागरी (बृदी) ।

**८६२३. प्रतिसं० २** । पत्रस० ४ । मा० ६१ँ४७१ इच । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन स०-११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बदी ।

**८६२४. सर्प्ताय पूजा—स्वरूपचरद ।** पत्र स०११ । प्रा० ६४६३ इ.च । प्राथा-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल स०१६०६ । लेकाल ४ । पूर्य । वेष्टन स०१७८ । प्राप्ति स्थान—स० पंचायती मन्दिर धलदर ।

विशेष - एक अन्य प्रति १२ पत्रों की और है।

म्हर्स. सप्तपरमस्थान पूजा - गंगादास । पत्रस । प्रा १२ ६ इंच । आपा-सस्कृत । विषय-पूजा । र काल । ले० काल । पूर्ण । बेष्टनसं १६० र । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर टोडारायशिष्ठ (टोक) ।

६६२६. सस्तपरसस्थान पूजा — imesा पत्र स $\circ$  ४। ग्रा $\circ$  १०imes४६ स्था। माथा-संस्कृत । विषय-पूजा। रक्काल imes। ते $\circ$ काल imes। पूर्ण। बेहनसं $\circ$ ३८६। **प्राप्ति स्थान** — म $\circ$ दि $\circ$  जैन मन्दिर खजनेरा

न्दरेशः समबसरस्य पूजा-चन्नःसाला । पत्रसः ७४ । मा० १२× = इंच । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १६२१ मास्रोज बुदी ३ । से•काल × । पूर्यो । बेष्टन स० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक) । विशेष--- ५४४ पद्य हैं।

८६२८. प्रतिसं० २ । पत्रस०६८ । ग्रा० १९३४५३ इ.च. ले० काल सं० १६३३ वैज्ञास बृदी ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारार्थासह (टॉक) ।

**८६२६, प्रतिसं० ३।** पत्रस० १४०। म्रा० १२२४६ इ**७। ते०काल स०** १६२६ ज्येष्ठ सुडी ७। पूर्णे । **बेट्टन स० ११३। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पदायती मन्दिर बयाना।

विशेष---प॰ लामचन्द ने मधुरा मे घाटी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की।

फ**६३०. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० १४३ । घा० १०३ ×५ इच्छ । ले०काल सं० १६२६ झायाढ बुदी २ ।पुर्ले । बेहुनसं० ६२ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्तिर बयाना ।

**८६३१. प्रतिसं० ४.।** पत्रसं० ६६ । ग्रा० ११ॄै ४.८ इ.च । ले०काल सं० १६८३ । पूर्णं । वेष्ट्रतसं० ४४० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

प्रद**े२. समबसरण पूजा—रूपबन्द।** पत्रसं• ६७। घा०१३ ४ ६ इवा। भाषा-सम्बन्त। विषय-पूजा। र०काल ४। ले•काल स०१८६४ मावन मुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ३५/१७ **प्रास्ति**— स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)।

 $\pm$ ६२३ प्रति सं०२ । पत्रस० १६४ । ग्रा० १० $^2_1 imes 0$  ६०० इञ्च । ले०काल imes । पूर्ग । वेष्टुन स० ५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर धिमनन्दन स्वामी बूंदी ।

८६३४. समबशरण पूजा—विनोदीलाल लालचन्द्र । पत्रत०४६ । प्रा० १३हें ४६हे इखा । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल म० १८३४ माह बुदी ⊏ । ले०काल х । पूर्ण । वेष्टन स० १०२६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर सजमेर ।

६६३**४. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ६२ । घ्रा० १० $\frac{3}{2}$  ४  $\frac{3}{7}$  इच्च । ले०काल imes । पूर्एँ । वेष्टन स० १३६६ । प्राप्ति स्थान – भ० दि० जैनमन्दिर प्रजमेर ।

विशेष---श्रीर भी पाठ सग्रह हैं।

स्ट्रेस्, प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४ । ग्रा॰ १२ रे४ ६ इञ्च । ले० काल स० १२६६ । चैत सुदी १४ ।‡पूर्ण । वेष्टन स० १२६७ । प्राप्ति स्थान - भ० दि० जैन संदिर ग्रजमेर ।

म्ब**्रिंश. प्रति सं०४ ।** पत्र स०१३२ । घ्रा०१०×१-र्देशंच । ले०काल सं० १६२३ । पूर्ता । वेष्टन स०६१ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

विशेष — धौर भी पाठों का सम्रह है।

**८६३ ८. प्रति सं० ५**!। पत्र सं० ११६। झा० ११ ४४ इ.च.। ले∘काल सं०१८८६ मादवा बुदी २ ∤ पूर्ण। वेष्टन स०१०३/७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा।

विशेष -- देवली ग्राम के उदैराम ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

८६३**६. प्रति सं०६**। पत्रसं०३४। ले॰काल स॰ १८८२ पूर्ण। बेस्टन स० ७६। प्रास्टित स्थान—बि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

द्र६४०. प्रतिसं०७ । पत्रसं०६६ । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टनस०१२७ । प्रास्ति स्थान —वि० जैन पंचावती मन्दिर मरतपुर । म्रह४१. प्रतिसंम् । पत्रसं०४१ । घा० १३३ × म्ह खासे०कालासं० १६३६ । पूर्णः। बेष्टुतसं०४५ । प्राप्तिस्थान-—दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

विशेष —स्योलाल श्रीमाल के पुत्र गैंदालाल सुगनवन्द ने लिखवा कर करीली के नेमिनाच चैरमालय में बढाया था।

८६४२. प्रति सं० ६ । पत्रसं०१४२ । बा० ८६ ४६ १ इ.स.। ले०काल सं०१६४० । पूर्ण । वेष्टन सं०४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मस्दिर चौधरियान मालपूरा (टोंक) ।

बिशेष-- साजूलाल जी छावडा ने मालपुरा मे प्रतिलिपि करवाई थी।

६६४३, प्रतिसं० १० । पत्र सं० १४२ । घा० ४ $\frac{1}{6}$  $\times$ १ $\frac{1}{6}$  इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन ए० ४३ । प्राप्ति क्यान - दि० जैन मदिर चौषयान मालपुरा (टॉक)

विशेष-लालजी कनहरदास पद्मावती पूरवाल सकूराबाद निवासी के बढ़े लड़के थे।

द्ध ४८. प्रतिसं० ११। पत्र स० १०४। मा० १२५ $\times$ ६ $^{\dagger}$  इचा। ले०काल × । पूर्ण। बेष्टुन सं० १३७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल प्रवायती मदिर सलवर।

द्ध हे अप्र. प्रतिसं० १२ । पत्र सं० ३४ । घा० १२३४७ इञ्च । ले०काल स० १६६३ । पूर्ण । बेहन सं० १४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रमनल पथायती मन्दिर प्रसवर ।

विशेष --- लालजीन भी नाम है।

८६४६. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ११४ । प्रा० ११३४६ इ.चा । ले०काल × । पूर्णं । बेहनसं० १६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन खडेलवाल मदिर उयदपुर ।

८६४७. प्रतिसं० १४ । पत्र स० ७८ । ले० काल सं० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--- लिखित गुरु उमेदचन्द लोकागच्छ का प्रजमेर मध्ये सुखलालजी हरभगतजी प्रजमेर. के हस्ते लिखाई थी।

म्ह४म. प्रतिसंग् १५ पत्रसम् ११ । मा० १४imes६ ६ तः । ले० काल imes । पूर्णं । बेष्टन स० १५२ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर नागदी सूदी ।

८६४६. प्रति सं० १६ । पत्रस० ८८ । प्रा० ६२ ×५३ हवा । ते० काल सं० १८४५ मगसिर बुदी ४ । पूर्णे । बेष्टन स० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाण्वेताच चौगान बूदी ।

८६५०. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ४२ । बा० १० हे×५ इला । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जन मन्दिर श्री महावीर बृदी ।

स्ट**१४. प्रतिसं० १६ ।** पत्रस० ४२ । झा० १४ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६-११३ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर कोटडियों का हंगरपुर ।

ष्ट६५२. प्रति सं० १६ । पत्रसं• १२३ । प्रा० ८३४६ इचा। ले•काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टनसं• ३० । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर तैर ।

स्ट¥रे. प्रतिसं० २० । पत्रस० स्६ । झा० ११४६ इश्व । से०काल सं० ११४६ श्रावरण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । प्राप्ति स्थान—दि जैन मन्दिर फतेक्ष्युर सेखाबाटी (सीकर) विशेष—माई वन्दहंस जैसवास लाइबेडा (धागरा) ने कलकता घगरतस्का में प्रतिविधि की थी। फश्थ× प्रति सं० २१। पनसं० ४४। मा० १३×८ इचा। ले० काल सं० १६१६ सावन बुदी ६। पुर्णे। वेष्टन सं० १०२। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

क्रहेश्चर. प्रतिसं० २२ । पत्रसं० ७१ । घा० १०३ ४७३ इंच । ले॰काल सं० १६२६ । पूर्ण । बेहन सं० १६० । प्राप्ति स्थान---वि० जैन श्रहेलवाल पंचायती मन्दिर सलवर ।

विशेष---४२ पत्र की नित्य पूजा और है।

स्टश्र्फ, समबसररण पूजार—× । पत्र सं०२७ । घा० १३×६ इ.च । भाषा—सस्तृत । विषय-पूजा । र०काल × । से० काल × । पूर्णु । वेष्ट्रन सं०४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सदिर कोजसमी कोण

**८६४६. समबशरण पूजा**— $\times$ । पत्र स**०१७। मा०१**१ $\times$ ४ इ.स.। मावा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं०२०१ । प्राप्ति स्थान—दि० चैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

प्त ६६०. समबसरण् पूजा —  $\times$  । पत्र स० १७०। प्रा० ६ $\frac{1}{6}$   $\times$  ५ दश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल सं० १६२३ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रिभिनन्दन स्वामी बुंदी ।

विशेष — बुदी में लिखा गया था।

म् ६६६१. समबसररण् पूजा— × । पत्रसः ३३ । मा०११४४ ६वा शाषा-शस्कृतः । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्णः । वेष्टनसं० ३४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्राप्तिनदन स्वामी बूदी ।

म्ह६२. समबसरण पूजा $-\times$ । पत्रसं॰ ११। घा० ११ $\times$ ५ इच । माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ते॰ काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन सं॰ ११३। प्राप्ति स्थान--दि॰ जैन मन्दिर मादवा (राज॰)

म् ६६६. समबसरण विधान—पं० हीरानन्य— × । पत्र सं० २४। मा० ११४४ रचा । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०कास सं० १७०१ । ले०काल स० १७४१ पौच सुदी ४। पूर्ण ऽ वेष्टनसं० ४०। प्राप्ति स्थान— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष-वनहर्ट नगर में जोशी सांवलराम ने प्रतिलिपि की थी।

प8्रें समबसरस्य पूजा—×। पत्रस० १४ । घा० ११×५ इञ्च । माधा-हिसी । विधय-पूजा । र०कास × । से० कास × । पूर्ण । बेहन सं० १६३ । प्राप्ति स्थान—य० दि० जैन संदिर प्रजमेर । **८९६५. समबसरस पूजा** —  $\times 1$  पत्र सं० १००। ग्रा० १२ $\times$ ६ १ वया । माया-हिन्सी प्रय । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल सं० १९७२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर पायनेनाय चौगान बुंदी ।

विशेष-धीर भी पाठ है।

८६६६, समयसरस्य को स्नावृद्दी— $\times$ । पत्र सं० ४। प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  दः था भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिर्टर कोरमानी कोरा ।

**८६६७. समबसरण चौबीसी पाठ—वार्नासह ठोल्या ।** पत्र स॰ २६। मा॰ १०३ ४६ इ.स. भाषा-हिल्दी पद्य । विषय-पूत्रा । र० काल स० १०४० ज्येष्ठ सुदी २ । ले०काल स० १०४६ माध्य वदी २ । पर्ण । वेष्ट्रन स॰ १६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवासती मदिर करोली ।

विशेष — करौली में रचना हुई। सेवाराम जती ने प्रतिलिप की थी।

स्टि६्स. समबसरएा संगल चौबीसी पाठ— $\times$ । पत्र सं० ११। प्रा०  $\varepsilon \times$ १ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्यः। विषय-पूत्राः। र० काल स० १८४६ चेठ बुढी २। ले०काल  $\times$ । पूर्णः। बेष्टन सं० ६१। प्राप्ति स्थान - दि० जैन प्वायती मन्दिर करीली।

विशेष — इसके कर्ता करौली निवासी थे लेकिन कही नाम देखने मे नही ब्राया । छद स० ४०५ है। श्रावक के उपदेश सी सतसगति परमाया।

धान करौरी में भाषा छंद बनाया ।।

**८६६. समबसरए। रचना**— × । पत्र स॰ ४१ । घा० १०४६ दव । भाषा-हिस्दी गछ । विषय-पूजा एवं वर्णन । र०काल × । ले०काल × । सपूर्ण । वेष्टन स॰ ६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी वंदी ।

विशेष-समवसरण के प्रतिरिक्त नके स्वर्ग मोक्ष सभी का वर्णन है।

**मध्यः समयश्रुत पूजा— शुमचन्द्र** । पत्र स० ३६ । घा० १२ ४ ४ हेट्स । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । लेक्सल ४ । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वपमी बृंदी ।

**८६७१. समबभ्रत पूजा** $--\times$  । पत्र स०४२ । मा० ८ $^1_{2}$  $\times$ ६३ था । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल $\times$  । ले० काल $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स०२२६ । प्राप्ति स्थान-म०दि० जैन मन्दिर स्थानेर ।

८६७२. सम्मेदशिक्षर पूजा—स० सुरेन्द्रकोति । पत्रस० १। प्रा० १११४ ४ इङ्न । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ने० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २७६ । प्राप्ति स्थान --दि० जैन मन्दिर लक्कर वयपुर ।

८६७३. सम्मेदशिखर पूजा — × । पत्र स०१७ । माथा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । से०काल × । प्रपूर्ण । बेष्टन सं०१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन नेरहलंगी मस्दिर बसवा ।

दश्धरं, सस्मेदशिकर पुजा--गंगावासः । पत्र म० १२ । आ० ७३ ×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृतः । विषय--पूजा । २०काल × । ते०काल × । पूर्णः । वेहन सं० १४६-६८ । प्राप्तिः स्वान--रि० जैन मन्दिर कोटदियो का इंगरपुर । दश्**ध्र. प्रतिसं० २** । पत्र स० १७ । घा० ६२ × ६ है इ.च. । ते० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

द्ध**७६. प्रति सं० ३।** पत्र सं० ६। ब्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ इन्छ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२/१९५ । द्वापित स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

द्र8७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । घा० ७२ ४ १ है व । ले०काल सं० १८८४ फाल्युन सुदी ७ । पर्यो । केप्टन स० ३७ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर सीगासी करौली ।

६६७६. सम्मेदशिखर पूजा—सेवकराम । पत्रस० २३ । धा० १०३ $\times$ ६३ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १६११ माष बुदी ४ । ले०काल स० १६११ । पूर्ण । बेष्टन सं० ११४ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन पवायती मन्दिर बयाना ।

विशेष-नाई के मन्दिर में सुललाल की प्रतिलिपि की थी।

**८६७६. सम्मेदशिखर पूजा — संतदास ।** पत्र म० ३। घा० १०३ ४६ इ**च । भाषा-**हित्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ने० काल × । पूर्ण । वेण्टन स० ५७६ । **प्राप्ति स्थान –** दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**८६००. सम्मेदशिखर पूजा—हजारीम**रूल। पत्रसं०२४। बा०१२४६ इ**च**। माषा-हिन्दी पद्यः। विषय-पूजाः। र०कालः ४। ले०कालः स०१६३२। पूर्णः। वेष्ट्न सं०**८१। प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर व दी।

ष्ट्रह**१. सम्मेदशिखर पूजा—ज्ञानचन्द्र**ापत्र स०१४। ग्रा० प×६३ इंच। भाषा— हिन्दी प**छ**। त्रिपय—पूजा। र०काल सं०१६६६ चैत सुती २। ले० काल स०१६८६। पूर्णी वेप्टन सं० १४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रीभनस्त स्वामी, बुदी।

प्रारम्भ--- शिवार समेद से बीस जिनेश्वर सिद्ध अये । भौर मुनीश्वर बहुत तहा ते झिव गये॥ बहु मन बच काय नमू शिर नायके। तिष्ठे श्री महाराज सर्वे इत भायके।।

**ग्रन्तिम**—उन्नीसो छासठ के माही ।

स्रवत विक्रम राज कराही ।। चैत सुदी दोयज दिन जान । देश पंजाब लाहोर शुभ स्थान ॥ पूजा शिक्सर रची हरवा। नमें झानचन्द्र शीश नसाय ॥

इसके अतिरिक्त निर्वाण क्षेत्र पूजा ज्ञानचन्द्र इत और है जिसका र०काल एवं लेखन काल भी बड़ी है ।

विशेष — बूदी नगर वासी गैदीलाल के पुत्र संतलाल छावड़ा ने प्रतिलिपि करके ईश्वरीसिंह के शासनकाल में मेंट की थी।

 $\pi \in \mathbb{R}^2$ , सम्मेबिशिकर पूजा—जवाहरलाल । पत्र छं० २७ । प्रा० २ $\frac{1}{7} \times 9^2_{\chi}$  इ.च. । प्राप्ता—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । २० काल सः० १०१२ वंशाल सुदी । ले॰काल सं० १११६ । पूर्ण । बेहन सः० १११ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनन्दन स्वाप्ती व दी ।

विशेष — कवि छत्रपुर के रहने वाले थे। मुक्तागिरि की यात्रा कूं गये भौर भ्रमरावती में यह ग्रन्थ रकता करी।

श्रमरावती नगरी विषै पुजा समकित कीन ।

खिमाजी सब जन तुम करो मोहि दोस मत दीन ॥

पं• भगवानदास हरलाल वाले ने नन्द प्राम मे प्रतिलिपि की थी। पुस्तक पं• रतनलाल नेमीचन्द की है।

स्टस्**न प्रतिसं० ३ । प**त्रसं० २३ । घा० ११×६ इञ्चा लेशकाल स०१६४६ । पूर्या। वेष्टनसं०२०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी।

विशेष - २-३ प्रतियों का मिश्रण है।

द्रश्चर्यः प्रतिसं०४ । पत्र स०१४ । घा० ११३ ४६ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्णः । बेष्ट्रन स०२ प्रदिश्रः । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इ. यरपुरः ।

**८६८५. प्रति स० ५** । पत्र स० १८ । आर० ११ ४ ५} इ.ख । ले० काल स० १६५४ वैणास बुदी १० । पूर्णः । वेष्टन स० ५८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

स्ट्रस्ट्, प्रति सं∘ ६ । पत्र सं∘ १४ । मा॰ १०×६ इ.च. । ने∘कालस०-१६४३ प्रापाट सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन स० १६४ । प्रा**प्ति स्थान** – दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

द्धक्ष प्रतिसं० ७ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १६१४ । पूर्ग । वेष्ट्रन सं० ६६/२६४ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन सभवनाथ भदिर उदयपुर ।

**८९८८. प्रति सं० ६ ।** पत्रसं० १७ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २४४-२६४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

क्रक्ष्म ६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १२ । झा० १२ $\frac{1}{4} imes 0$  इञ्च । लेक्काल imes । पूर्ण । बेशून म० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेह्युर गेलावाटी (सीकर) ।

दृष्ट्र है. प्रतिसंग् १० । पत्र संग् १७ । ग्राग् ११% ६ इ.स. । ले॰ काल संग् १६२६ । पूर्या । बेष्टन संग्थ/४ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पत्रायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

बिरोख — प्रमरावती मे रचना हुई। मुन्नालाल कटारा ने हजारीलाल कंकरलाल के पठनायं व्यास रामवस्य से दूनी में प्रतिलिपि करवाई थी। सवत् १६४३ में हजारीलाल कटारा ने प्रनन्तवत के उपसक्ष मं दूनी के मन्दिर में चढ़ाई।

दृष्ट्र**१. प्रतिसं०११** । पत्र सं०१२ । सा०१२×५ इञ्चा ले० काल सं०१दृष्ट् । पूर्ण । केव्रुत सं०१०द । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानवी (कासा) । प्ट**८२. प्रतिसं० १२ ।** पत्र सं० १६ । घा० १०×६३ इथा । ले॰काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० बैन प्रग्रवाल मन्दिर नैशावा ।

विशेष -- निम्न पाठों का संग्रह भौर है---

नवग्रह स्तोत्र, पाश्वंनाथ स्तोत्र, भूपाल चतुर्विणतिका स्तोत्र ।

**८६६३. प्रतिसं० १३** । पत्रसं० १६ । म्रा० १० $\frac{2}{8} \times 0$  इंच । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस ० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरङ्गंथी मन्दिर मालपुरा (टॉक) ।

**८६६४. प्रतिसं० १४ ।** पत्र सं० ७ । ले०काल सं० १६२६ स्नायाद मुदी १२ । पूर्या । बेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--लालजी लुहाडिया भरतपूर वाले ने प्रतिलिपि करवाई बी।

**६६६५. सम्मेद शिखर पूजा**—मागीर**ण।** पत्र स० २६। प्रापा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । से० काल सं० १६३७। पूर्ण । बेष्टन सं० १२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

द्ध ६६६. सम्मेद शिखर पूजा—कानतराय— × । पत्रतः १८ । मा० १० ४६ इच । प्राप्तः हिन्दी (पदा) । विषय-चरित्र । र०काल स० १८३४ । ले०काल × । घपूर्णः । वेष्टन स० ८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैगुवा ।

**८६९७. सम्मेद शिखर पूजा—बुष्जन । पत्र**स०१६ । प्रा० १०×६२ इन्छ । माया-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन म०७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संडेलबाल मन्दिर उदयपुर ।

**८९८६. सम्मेद शिखर पूजा—रामपाल ।** पत्र स० ११ । प्रा० ९४६ इश्व । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८८६ । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० २४७-१०२ । प्रास्ति स्थान— दि०जैन मन्तिर कोटडियों का डंगरपुर ।

श्रन्तिम-मूलसंघ मनुहार मट्टारक गुगाचन्द्र जी।

तस पट सोहे सार हेमचन्द्र गख्यती सही ।।
सकलकीति प्राचारण जी जानी ।
तिन के शिष्य कहे मन मानो ।
रामपाल पडित मन त्यांवे ।
समु जी के गुरा बहुविच गावे ।।
सहर प्रतापनद जानो रे माई ।
धोडा टेकचन्द तिहा रह्याई ।।
सम्मेद मिल्लर की याजा प्रावे ।
ता दिन ये पूजा रचांचे ।।
संगत प्रतारास साल में बौर दिवासी लाव ।
कागुण हुज सुभ जानिये रामपाल मुसा गाव ।
विस्तित पंट रामपाल स्वहस्तेण ।

जुगादीके सुगेह मे पिडत वरवान शी।।
रतनचन्द ताको नाम बुद्धि को निवान शी।।
ताको मित्र रामपाल हाथ शोर कहत है।
हेस्यारा मोक्स दीशिये शिनेन्द्र नाम लेत है।

च्द्रहरू. सम्मेद शिक्षर पूजा—लालचन्द । पत्रसं∘ च३ । घा०६×५ इ.स. । माषा-हिन्दं। । विषय-पूजा । र•काल सं० १८४२ फागुस सुदी ५ । ले० काल स० १८४४ बैशाल बुदी ऽऽ.। पूर्णं । केच्टन स०४ । प्राप्ति यान—दि० जैन मन्दिर तेरहसंथी नैसला ।

विशेष--लालचाद भ० जगत्कोति के शिष्य थे।

श्चन्तिम--प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

×

काष्ट्रासय भीर माषुरगच्छ पोकरगण कहो सुभगच्छ। लोहाचार्य भ्रामनाथ जो कही हिसार पद मनोक्षा सही ॥३६.॥ महारक सत्कीति जाति, सथ्य पयोचा प्रकाशन मान। तासु पट्ट महीनकीति तथा विद्यागुण भदार जुभयो। देवेन्द्रकीति तत्पट्ट बखान, शीन शिरोमिण कियावान। विनके पट्ट परम गुणवान, जातकीति महारक जान।

इति श्री सम्मदशिखन्महान्यं लोहाचार्यानुसारं भट्टारक जगत्कीति तत् शिष्यं नानचन्य विराचनं भटकूट वर्णनां नाम एक विश्वति नमः सर्ग. ।

**६०००. प्रतिसं० २** । पत्रस० ६० । मा० १२१३ ५३ इञ्च । ले०काल स० १६१३ । पूर्ण । केव्नसं**० १० । प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन छोटा महिर बयाना ।

**६००१. प्रतिसं० । ३** पत्रस० ३६ । ग्रा० ६ ६ ४ ८ ६ इख । लेक्सल स० १६७० फागुए। सृशी ६ । पूर्ण । बेग्न स० १६२ ।दि० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

**६००२. प्रति सं० ४।** पत्रस० २६। ले०काल सं० १८४३। पूर्ण। बेण्टन स० ५१। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर हण्डाबालो का डीग।

६००**३. प्रतिसं० ४** । पत्रस० ४ । घा० १३ ४ ४ <sup>3</sup> इच । **ले∘काल सं० १६०६ घाषाड मुदी** ४ । पूर्णे । बेष्टनस० ४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिरफतेहपुर शेखाबाटी (सीकर)

विशेष—जगतकीर्तिके प्रशिष्य लिजिकीर्तिके विषय राजेन्द्रकीर्तिके लघु भ्राताके पठनार्थ प्रतिमिपि हुई थी। जगह २ प्रति संबोधित की हुई है। **१००४. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ४७ । म्रा० १० $\frac{3}{4}$  ×्र $\frac{3}{4}$  इन्छ । से० काल स० १८५४ भ्रासोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपूर श्रेखावाटी सीकर ।

विशेष--रेवाडी मे ग्रंथ रचना हुई । देवी महाय नारनील वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

**१००५. प्रतिसं०७**। पत्रसं० ४४। स्ना० १९२१ ४५३ इ.च.। लेब्काल स०१६१४ पीप मुदी। पूर्णा वेष्टन स०८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर क्षेत्रावाटी।

### विशेष---

सतिम प्रशस्ति—इति श्री सम्मेरशिवरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण महारक श्री जगत्कीति तत् शिष्य लालबन्द विरोचिते मुवर्गाभद्रकृटवर्गामीनाम विशंतिका मंपूर्णं । जीवनराम ने फतेहपुर मे प्रतिसिंग की थी ।

**६००६. प्रतिसं० ६** ।पत्रस० ५० । धा० ६×५ इ**ला । ले०काल** × । पूर्ण । बेहनसं० २२०/ ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संमवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**६००७. प्रतिसं० ६** । पत्र स०६६ । घा० ६×७ इला । ले**०काल** स०१ दब्द । सपूर्ण । वेष्टन स०। ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर, दीवानजी कामा ।

६००८. सस्मेद शिखर महारूप पूजा—मोतीराम । पत्रतं० ४२। भाषा-[हत्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८४१ भादो नृदी ६। ते०काल स० १८४८ वैसाल मुदी ४। पूर्ण । बेष्टन स० ४६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० नैन पचावनी मन्दिर भरतपुर ।

१.००१. प्रति सं०२ । पत्रस० ७२ । ले०काल स० १९२०। पूर्ण । बेष्टनस० ४६६ । प्रास्तिस्थान—दि०जैन पचायती मन्दिर भरतपूर ।

**६०१०. सस्मेद शिखर पूजा**—  $\times$  । पत्रस०७ । ग्रा० १० $^1_i \times \S^1_2$  दश्व । भाषा-हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते०काल म० १७६३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर शश्वेनाथ चौगान व दी ।

**६०११. सस्मेद शिखर पूजा**— × । पत्र स० १२ । आ० १२×५ हे इञ्च । आया-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल म० १६४४ झानोज बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० ११४५ । **प्राप्ति**-स्थान— भ० दि० जैन मदिर झजेमेर ।

६०१२. सम्मेव शिखर पूजा—  $\times$  । पत्रस०३०। धा० १२६  $\times$  ४ $\xi$  दश्च । माघा—हिन्दो, पद्य । विदय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । धपूर्ण । बेष्टन स०१२१० । प्राप्टित स्थान—स० दि० त्रैन मन्दिर फ्रामेर ।

६०१३. सम्मेव शिखर पूजा— × । पत्र स० ६ । ग्रा० द×६ ६ खा आपा–हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६४६ ग्रासोज बुदी १२ । पूर्णा । वेष्टन सं० १२६६ । प्राप्ति स्थान-त्रक वि० जैन मन्दिर भ्रजभेग ।

१०१४. सम्मेव शिखर पूजा— ४। पत्र स०१७। झा०१०४५ है इच। भाषा-हिन्दी यथ। विषय-पूजा। र०काल सं०१०६१। ले० काल सं०१६००। पूर्ण। वेल्टन सं०६०। प्राप्ति स्थाम — दि० जैन मंदिर प्रक्रिनस्य स्वामी बूँदी। **६०१४. सम्मेव शिकार पूदा**— × । पत्र सं०१०। गा०१२ ×६ रचा आवा-हिन्दी, पच। विषय-पूचा र०काल् × । ले० काल सं०१६१२ । पूर्ण। वेष्टन सं०६-५। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मनिदर कोटवियों का द्रारपुर।

 $\xi$ ०१६. सम्मेद शिखर पूजा —  $\times$  । पत्रतः १०। मा० ७२ $\times$ ४२ हत्राः मामा — हिन्तै, पद्य । काया — हिन्तै, पद्य । काया — राज्या — किन्तै। पद्य । काया — राज्या — वि० जैन मंदिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टॉक) ।

ह०१७. सम्मेद शिखर पूजा — × । पत्र तं० १६ । मा० म्हे ४६ दश्व । बाषा -हिन्दी पत्र । विषय -पूजा । र०काल ४ । से०काल स० १६४२ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन स० ७१-१२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडाग्यसिह (टोक) ।

ह०१८. सम्मेद शिखर पूजा — × । पत्र सं∘ १८ । आ० ११४४ रू इख । भाषा-हिन्दी पत्र । विषय — पूजा । र०काल × । से० काल सं० ११३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर बडा बीध पथी दौसा ।

६०१९. सम्मेव शिखर पूजा— $\times$  । पत्र स०६४ । मा० १० $^2_Y$ ८ इंच । माषा-हिन्दी । विवय—पूजा । र०कास  $\times$  । ले० काल स०१६०४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४-६६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर मादवा (राज०) ।

१०२०. सम्मेद शिक्षर पूजा----× । पत्रसं० ४३ । घा० ६×१ इचा भाषा---हिन्दी, पदाा विषय पूजा । र०काल × । ले०काल स०× । पूर्ण । बेष्टनस०१५ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन मन्दिर कोळ्यो का नैरणवा ।

६०२२. सम्मेद शिखर महास्म्य पूजा—मनशुक्तागर । पत्र त० १०० । मा० १२ $\times$ ६ दश्व । माषा—हिन्दी, पद्य । विषय — पूजा । र० काल  $\times$  । ते० काल त० १६६६ । जेठ मुद्री १५ । पूर्ण । बेष्टन त० १००-६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर तेरहपथी दौता ।

विशेष -- ज्ञानचन्द छावडा ने प्रतिलिपि की थी।

६०२३. सम्मेद शिखर महारम्य पूजा — मनसुखसागर । पत्रस० ६३ । प्रा० १०६ ४६६ इत । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय — पूजा । र० काल ४ । ते०काल सं० १६०७ । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर श्रीमहाबीर वृदी ।

६०२४. सम्मेद शिखर महात्म्य —दीक्षित देवदत्त । पत्रसं∘ ७६ । घा० ११६ ४ ६ १ द्व । भाषा -संस्कृत । विषय-पजा एक कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८४१। पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २६० । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६०२५ प्रतिसं०२ । पत्र सं० १०६ । प्रा० १२८ ४६ इ.स. से० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६-४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर कोटडियों का हु गरपूर ।

- १०२६, सम्मेव शिखरमहास्थ्य— × १ पत्रसं० २१। मा० म × ६ दश्व । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल × । से०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४६। प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्चनाथ इन्दराह (कोटा)।
- १०२७. सस्मेदाचल पूजा उद्यापन— $\times$ । पत्र सं० द। घा० १२ $\frac{1}{2} \times \S$  १०४। प्राचा— संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३। प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चीमान व दी ।
- १०२६. सम्यक्त्व चिंतामित् — $\times$ । पत्र सं॰ १२२६ । प्रा॰ १२ $\times$ ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र॰ काल  $\times$ । से॰काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स॰ २७६ । प्राप्ति स्थान —िद॰ जैन प्राप्ताल मंदिर उदयपुर ।
- **६०२६. सरस्वती पूजा**  $\times$  । पत्र स०७ । धा० ११ $\times$ ४२ इ.स. । प्राचा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । क्षे**०काल**  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४२ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मंदिर बोरसली कौटा ।
- ६०२०. सरस्वती यूजा—संबी पद्मालाल । पत्र स० ११ । घा० १२ दे× च इञ्च । आया-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल स० १६२१ व्येष्ट सुती ४ । ले० काल सं० १६८४ द्वाषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०४६० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

विशेष - रियभचन्द विन्दायक्या ने लक्कर के मन्दिर के लिये जयपूर में प्रतिलिपि की थी।

- १०३१. सर्वजिनालय पूजा ( कृतिमाकृत्रिमचंत्यालय पूजा )—माघोलाल जैसवाल १ पत्र स०१६। प्रा०८४७ इत्था भाषा-हिन्दी पद्या। विषय-पूजा । २०काल ४ । के०काल ४ । पूर्णा । बेष्टन स०१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर शोधरियान मालपुरा (टॉक) ।
- ६०३२. सहस्रगुरा पूजा---म० धर्मकीति । पत्रत्त० ६१ । या० १२ $\frac{1}{4} \times 0$ ने इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते०काल स० १८७६ मागमिर बुरी ३ । पूर्ण । बेष्टन सं० १७ । प्राप्ति स्थान----वि० जैन मन्दिर राजमहन (टोक) ।

## विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

इति भट्टारक श्री ललितकीतिस्तत्त्रिण्य भट्टारक श्री घर्मकीतिबिरचिन श्री सहस्रगुरा पूजा सपूर्ण। लिक्यतं महास्मा राघाकृष्ण सवाई जयपुर मध्ये वासी कृष्णागढका। मिति मगसिर बुदी ३ शुक्रवार स॰ १८७६।

- ६०३३. प्रति सं०२।पत्र स० ७२।घा०११ैं,४७३ इचा।ले०काल सं१६३१ बैशाख सुदी है।पूर्णे।बेष्ट्रनसं०४६५।प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपूर।
- **१०३५. प्रतिसं० २** । पत्र सं० ४६ । ले०काल सं० १८८६ झासोज सुदी या पूर्ण । बेहन सं० १३४३ । **प्राप्ति स्थास—**म० वि० जैन मन्दिर सजनेर सम्बार ।

ह**०३६. सहलगुरियत पूजा — य॰ गुभवन्त्र** । पत्र स॰ १२७ । घा॰ १३४४ इवा आया — संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ते० काल सं० १७४१ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । येष्ट्रन सं० ७००३ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर खन्मेर ।

विशेष---धा० कल्याग्कीर्ति के शिष्य पं० कबीरदास के पठनार्थ गृटका लिखा गया था।

**१०३७. प्रतिसं० २**। पत्र सं० ४२। **ले**०काल स० १६६⊏। पूर्ण वेष्टन सं०६। प्राप्तिः क्**षान** —दि० जैन पत्रायती मन्दिर कीग।

विसेष — मानसिंह जी के शासन काल में भाभर मे प्रतिलिपि हुई पी। बाई किसना ने किनका करोखापन में चटाई थी।

**६०३६. सहस्रपृश्चित पूजा** —  $\times$  । पत्रस० ११-७२ । म्रा० १० $\times$ ६ इज । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । मपूर्ण । बेष्टनस० ३२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर मिनन्दन स्वामी बुंदी ।

**१०३१. सहलगुरागे पूजा- सङ्गसेन** । पत्र सं० १७ । घा० १२×४ इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १७२८ । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लडकर जयपर ।

विशेष-प्रशस्ति धच्छी दी हुई है।

**६०४०. सहस्रताम पूजा — धर्मचन्द्रमृति**— × । पत्र त० ४०। म्रा० १२ ४६ ६ इ.च.। भाषा–सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स०१०६१ चैत मुदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रत स०१२४ । प्रारित स्थान—दि० जैन तेरहराथी मन्दिर दौता ।

विशेष-सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

६०४१. **सहस्रताम पूजा---धर्मभूषस्य।** पत्रस० = ४। छः०११×६ भाषा-सस्कृत । विषय-पुजा । लेक्काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**-- वि० जैन स्रोटा मन्दिर बयाना ।

**६०४२. सहस्रताम पुजा—र्जनसुखा** । पत्र म० ३२ । घा० १३×६ट्टे इ**का । माया**-हिन्दी । विषय-पूजा। र०काल × । लेकाल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टनम० ४४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० त्रैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

१०४३ सार्वं इयद्वीप पूजा—विष्णुमूचरणः। पत्र म०११६ । घा० १२४५ है इला । मावा— सस्कृतः। विषय-पूजा। र०काल ४ । ले०काल स०१६६१ । पूर्णः। बेग्रुनम० ५७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर।

६०४४. सार्द्धं हमद्वोप पूजा — गुमचन्द्र । पत्र स०१२०। प्रा० १०४१ दश्व । भावा — सस्कृतः ।विषय –पूजा । र०काल ४ । ले०काल स०१८६८ सावन मुदी १ । पूर्णे । बेष्टन सं०४४ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६०४५. प्रति सं०२ । पत्रसं०६३ । प्रा०१०×५३, इश्वााले० काल × । पूर्णावेष्टन सं०१⊂६ । प्राप्ति स्थान—भ०दि०जैन मन्दिर ग्रजमेर।

**६०४६. प्रतिसं० ३**। पत्रस० ३००। ग्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ दला । ले०काल $\times$  । पूर्ग । बेष्टन म० ३८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बरसली कोटा । १०४७. प्रतिसं० ४ 1 पत्र स० १२४ । लेश्काल सं० १६२६ प्राचाढ सुरी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-शाशाराम ने मरतपूर में लिखा था।

ह०४ म. प्रतिसं० प्रः। पत्र सं० ६६ । ले० काल स०१ म्६४ ज्येष्ठ मुदी ११ । पूर्णं। वेष्टनस∙ ११७ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

. १०४६. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० २५६ । ले०काल सं० ११६३ । पूर्ण । बेब्टनसं० ११८ । प्राप्ति स्थान—तपरोक्त संदिर ।

**६०५०. प्रतिसं**० ७ । पत्रम० १०⊏ । ग्रा० ११×४ इच्छा । ले०काल सं० १८७० । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन मन्दिर बैर ।

**८०५१. प्रतिसं० द**ापत्रस० १४४। ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्ट्रन स० ४। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

६०५२. **सादं द्वयद्वीप पूजा—सुधा सागर** । पत्रस० ६८ । माया-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ने०काल स० १८५५ फागुरा बुदी ४ । पूर्ण । **बेह**नसं०५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरद्वपथी गोल्टर बसवा ।

६०४३. साह्य द्वयद्वोप पूजा—×। पत्रस० २०१। माया-सस्कृत। विषय-पजा। २०कास ्राने०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ७४। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६०५४. सार्द्ध होप पूजा—× । पत्र सं० ८८ । ग्रा० १२३ ४७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल ४ । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० १११ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेन्पुर शेखाबाटी (मीकर) ।

विशेष — श्रय सवत्तर्शमन नृपति विक्रमादित्य गताब्द संवत् १८६५ मिनी फालगुण बुदी ६ वार 
गादित्यवार । श्री काष्ट्रावये मादुराज्यं पुष्करणायणे हिसारपट्टे भट्टारक श्री त्रिष्ठवनकीतिदेवात्पट्टे 
मट्टारक श्री क्षेमकीतिदेवा तन्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीतिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचन्ददेवा तत्पट्टे 
मट्टारक देवेन्द्रशीतिदेवा तन्पट्टे भट्टारक व्यातकीतिदेवा तत्पट्टे भट्टारक स्वीतकीति वर्तमान तिपट्टि निमतः । 
स्वयानकाति नहर वासी धर्ममूरित पर्मावतार सुश्रावक पुण्यश्रमावक घर्मजः लाला दुनीचन्द्र तत्पुत्र साला 
गद्रमण तत्पुत्र नाला पुसामल तत्पुत्र गणाशस तत्वषु बहालमिन्द् तेतेद श्रवाईद्वीप पूजा जिसायित्वा दत्तां तेन 
क्रानावर्णी कर्मार्थः विमित्तायं क्षास्त्र स्थापित् ।

प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की धी तथा उनके शिष्य मुखरास ने घमंपुरा के पार्थनाथ चैरयालै स्थापित्ं।

**६०४४. साढ्डिय द्वीप**—× । पत्र स०१०२ । घा० १०३ ४ ६ इथा । आशा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पंजायती मन्दिर बयाना ।

विरोध-स॰ १६२६ या १६६१ की प्रति से प्रतिनिधि की गई है। पं॰ ग्राक्षाराम ने भरतपुर मे प्रतिनिधि की थी। है **१५६. साहर्ट्ड य द्वीप पूजा — X**ापत्र सं० १६६। प्रा० १३×७ है इ.च. भाषा-संस्कृत । विषय पूजा। र०कास × । ले० काल सं० १६०१। पूर्ण । बेहनसं० १४=। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रयुवाल पंचायती संदिर प्रलंबर।

६०५७. प्रति सं० २ । पत्रसं० १२३ । घा० १० $\frac{3}{6}$  $\times$ ५ इ.च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनसं० १४६ । प्राप्ति रचान—उपरोक्त मन्दिर ।

**१०५०. प्रतिसं० ३**। पत्र सं० ३१४ । ध्रा० ११ $\frac{1}{6}$  $\times$ ४ $\frac{1}{7}$ क्का ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । बेस्टन स० १४० । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

**८०५८. प्रति सं०४ । पत्र स०**६३ । प्रा०११ है×६ है इला। **ले•काल स०**१८७६ पीय सुदी ११। पुर्छ। बेकृत स०१५१ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर।

६०६०. सिद्धकृष्ट पूजा—× । पत्रसं० १०। मा०१२×६ इचा । माधा-संस्कृत । विधय-पुजा । र०काल × । ते० काल स० १८८७ ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्णे । वेष्ट्रनसं० १८ । प्राप्टिर स्थान —ि६० जैन सिटर माधिनाथ स्वामी मालपूरा (टॉक) ।

**१०६१. सिद्धलेत्र पूजा—दोलतराम ।** पत्रस० ८४ । म्रा०१० $^{3}$  $\times$ ७ $^{3}$  इच्च । मापा-िहन्दी । विषय-पूजा । र० काल स०१८४ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कांमा ।

### विशेष — चल्लिस पर —

सवतसर दस प्राठ सत नब्बेचार मुघोर । प्रमुनोसुतदोपन भलो रविवार सिर मोर ।।४४ ।। तादिन पूजा पाठ करि पर्ड मुनै ने जेव । ते पाव मुल स्वासते निजघातम रस पीव ।।४१ । सोमानन्द मुनन्द हो नदन सोहत्तलाल । ताको नंद मुनन्द है दीलतराम विवाल ।।४६।।

**१०६२, सिद्धक्षेत्र पूजा—प्रकाशचन्य ।** पत्रसण्य । प्राण् ११×५ इ.च. । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६१६ । ने०काल स० १६४५ । । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान** — विण्यंत्र मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

**६०६३. सिद्धलेत्र पूजा**— × । पत्रस०१६ । प्रा०१०} ×११ इस्त्र । भाषा-हिल्दी । विषय-पूजा । र०काल × । से०काल स०१६३६ आसोज सुदी१४ । पूर्ण। वेष्टन सं०७६ । **प्राप्ति स्थाम**— दि० जैन तेरहपयी मन्दिर नैस्प्ता ।

१०६४. सिद्धसेत्र पूजा— $\times$ । पत्रस० ११। या॰ १० $\times$ ६ स्वः। भाषा-हिन्दी पद्यः। विवय-पूजा। र० काल  $\times$ । ले०काल सं० १६३६। पूर्णः। वेष्ट्रन स० १४। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर अवसान नैराजा।

६०६५. प्रति सं० २ । पत्रसं० १८ । ले०कान स० १६३६ । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० १४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन प्रप्रवास मन्दिर नैसाबा । विशेष--लोचनपुर (नैरावा) में प्रतिलिपि हुई थी।

- **१०६६. सिद्धलेत्र पूजा** × । पत्रसंग् १८ । आ० १३ × ४३ इखं। आया-हिन्दी पदा। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १६३६ । पूर्णः। वेष्टन सं० २१० । **प्राप्तिः स्थान**— दि० जैन मंदिर पार्वनाथ चौनान वंदी।
- **१८५७. सिद्धलेल पूजा**— $\times$ । पत्र सं॰ १। मा॰ ११ $\times$  म $^{1}_{2}$  ६ जा। भाषा-हिन्दी। विषयं-पूजा। र०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूजा। वेष्टन सं॰ १२०। **प्राप्ति स्वान**—दि॰ जैन संदिर सम्कर जयपुर।
- **६०६८. सिद्धक्षेत्र मण्डल पूजा—स्वरूपचन्य ।** पत्रस० १६। ग्रा० ११×८ इथा। माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल स० १६१६। पूर्णः। वेष्टनसं० ४५१। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।
- **१०६६. सिद्धचक पूजा—पं० ग्राशाचर** । पत्रस० ३ । मा० ११×५ दश्व । भाषा-सस्तृत । विषय-पूजा । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०६= । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्थामी वृदी ।
- ६०७०. सिद्धचक पूजा—धर्मकीति । पत्र स॰ १३६ । भाषा—सरकृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । प्राप्ति स्थाने—दि० जैन तेरहपंची मन्तिर बसवा ।
- **१०७१. सिद्धचक पूजा**—ल**सितकोर्ति । पत्रसं॰** ६६। मा॰ १३ $\times$ ६ दश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र॰ काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ १७२ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर फतेहपुर वेसावाटी (सीकर) ।
- ६०७२. सिद्धचक पूजा---म. शुमचन्द्र । पत्रव० ७०। याया-संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल ४ । केकाल स० १०२४ मनीसर बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ७२। प्राप्ति स्थान---वि० जैन सोगानी सिंहर करोती।

विशेष--पत्र ग्रलग ग्रलग हैं।

**१०७३. प्रतिसं० २** । पत्रस० ६८ । मा० ६५% ६ ६७४ । ले०काल स० १६०६ णाके । पूर्गा । केवनसं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**िद० जैन पत्रायती मन्दिर करोली ।

६०७४. प्रति स०३ । पत्र सं०१० । ले०काल ×। पूर्णा । बेष्टन सं०१५ ⊏ । प्राप्ति स्थान— दि० जीन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

**६०७५. प्रतिसं**० ४ । पत्रसं० ६ । धा० १० ४ ४ ई इ.ख. । ले० काल स० १४८३ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । बेहन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

**१०७६. प्रतिसं० ४**। पत्रसं० २३ । घा० १२ है× ८ है इला। ले∘काल स० ११८५ ज्येष्ठ सुरी ११। पूर्ण । बेक्टनसं० ४८८ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**१०७७. प्रति सं०६**। पत्र सं०१९। मा०११४ प्रदश्वाले० काल ×ा घपूर्ए। बेहन स० ३४६। **प्रान्ति स्थान**—दि० जैन मजबाल मंदिर उदयपुर।

विशेष - समयरससमग्रं पूर्णभाव विभावं,

जनितसुशिवसारं यः स्मरेत् सिद्धचक ॥ प्रस्तिल नर सुपूज्य सौमचन्द्रादि सेव्य ।

१०७६, सिद्धचक पूजा—संतलाल। पत्रस०१३१। पा०१३४६ इञ्च। साचा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा।र०काल ४ । ले०काल स०१६६१।पूर्ण।वेष्टन स०१८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर श्रीमहावीरजी बुंदी।

विशेष --इन्दौर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१०७१. प्रतिसं० २ । पत्र स० १०५ । ग्रा० १२ $\frac{1}{4} \times 0^{\frac{3}{2}}$  इन्ज । ले०काल स० १६६६ मायात सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स० ४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष - धजमर वालो के चौबारा में जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

१०**८०. प्रति सं० ३**। पत्रतः १-१०३। द्या० १३४८ इश्व। लेक्काल ४। अपूर्ण। बेहुनसं० १४७ र। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिह (टोक)।

**६०८१. प्रतिसं०४।** पत्र सं०१४३। ग्रा०१३×८ इला। ले० काल स०१६८७ कार्तिक बुदी३।पूर्ण। वेण्टन स०१४८ र०।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिह (टोंक)।

**६०८२. प्रतिसं० प्र ।** पत्र सं० २५१ । धा० ५×६  $\S$  इश्व । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपूरा (टोक) ।

**१०८३. प्रतिसं०६**। पत्र स०१५३। ग्रा०१३imes६७८३ इश्वा। ले०कालimes। पूर्णं। वेदनसं०८०७। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष-पत्र स० १२४ मे आगे २६ पृष्ठों में पचमेर एवं नंदीश्वर पजा दी गयी है।

**६०६४. सिद्धचक पूजा**— × । पत्र स० ६१ । मा० १२×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६८१ । पूर्ग । बेप्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन ल० पनायती मन्दिर फलदर ।

€०६५. सिद्ध पूजाा— × । पत्र ग० ४ । म्रा० १०ँ४६ ट्वैडच । माषा-संस्कृत । विषय – पूजा । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । बेष्टन ग० ७२३ । प्राप्ति स्थान — ग०दि० जैन मन्दिर म्रजमेर ।

६०६६. सिद्ध पूरा। —  $\times$  । पत्र म०७। ब्रा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ १ इस्त । आया-सस्कृत । विषय-पूत्रा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म०६। प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर श्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

६०म७. सिद्ध पूजा—४। पत्रस० २। माषा सस्कृत। विषय-पूजा । र०काल ४। ले॰काल ४। प्रपूर्ण। बेष्टनसं॰ ३६१/३७४। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन संमवनाथ मदिर उदयपुर ।

६०८८. सि**ढ पूजा भाषा**— × । पत्रस० ४ । प्रा० ८ × ४ है इश्व । माषा-हिस्सी पछ । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सदिर राजमहल (टोक) । **६०८६. सिद्ध भूमिका उद्यापन— बृध्यजन** । पत्र सं∘ ४। आर० १२१ ×७ इन्छ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा। र० काल स०१८०६। ले•काल स०१८६३। पूर्ण । वेष्टन स०५२७। **प्राप्ति**— स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरपुर।

६०६०. सुगम्ध बशमी पूजा— × । पत्रतं० ६ । आ० ६×७ ६ आ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ते०काल × । पूर्व । बेहनसं० ६४ । आग्ति स्थान—दि० जैन तरहायी मन्दिर मालपुरा (टोक) ।

**६०६१. सुवन्ध दशमी ततोद्यापन---- ×** । पत्र सं० १० । धा० म $\times$ ६े इज । भाषा-- सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ५६६ । **प्राप्ति** स्थान-- दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**६०६२. प्रतिसं० २** । पत्रस० १० । बा० म ४ ६३ इन्छ । ले० काल ४ । पूर्त । भप्नसं० ४७० । **प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन मन्दिर लक्कर अयपुर ।

**६०६३ सूतक निर्णय—सोमसेन**ा पत्र म० १६ । ग्रा० ६×५ इन्ता आपा-सस्द्वत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन स०** ३२६ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ जीगान ब दी ।

६०६४. सूतक दर्गन $-\times$ । पत्रस०१। घा०११ $\times$ ५ इखा भाषा-सरकृत । विषय-विभान शास्त्र। र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पृग्ं। वेष्टनसं०१००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान वंदी।

**१०६५. सोनागिर पूजा** $-\times$ । पत्रत० मः भाषा-हिन्दी । विषय —पूजा । ले० काल  $\times$  । पूजा । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**ः—दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

**१०६६. सोनागिरि पूजा**—  $\times$  । पत्रस $\circ$  ६ । घा $\circ$  ६ $? \times ४$ १ इंच । भाषा-तित्दी । विषय-पूजा ।  $\circ$  काल  $\times$  । ले $\circ$  काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस $\circ$  ६२ । प्रास्ति स्थान—दि $\circ$  जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

**६०६७. सोनागिरि पूजा**— × । पत्र म०४ । आर. ६×= इ.च.। भाषा-हिस्दी । विषय-पूजा । र०काल स०१८८० फायुग्ग बुदी १३ । ले० काल स०१६४६ । पूर्णा । वेष्टन स०५६८ । **प्राप्ति—** स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**६०६६. सोलहकारण उद्यापन—सुमितिसागर ।** पत्र स० १६ । म्रा० १२ $\times$ ५ $^{\frac{1}{6}}$  इन्त्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  $^{70}$ काल  $\times$  । ते॰काल सं० १८६७ । पूर्ण । वेण्टन स० २५ । प्राप्ति—स्थान—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

विशेष--नाथुराम साह ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६०६६. सोलहकाररा उद्यापन—स्रमयनन्ति । पत्र स० २०। स्रा० १०,५४५ इञ्च। प्रापा–संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल ४ । ले० काल सं० १८१७ बैशाल बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । ब्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरससी कोटा।

विशेष-सरोज नगर में मुपार्श्व चैत्यालय में पं॰ प्रालमचन्द के शिष्य जिनदाम ने लिखा।

- . ११००. सोलहकारसा उखायन— $\times$ । पत्र सं २०। सा० १ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इच । साथा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन सन्दिर नागरी वंदी ।
- ्र **१९१. सोसह कारए। जयमाल भ० वेवेन्द्रकोति ।** पत्र स० २३ । **यापा** संस्कृत । विषय — पूत्रा । र०काल १६४३ । ले० काल १८६० । पूर्ण । वेय्टन सं०८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पत्राचरी मन्दिर मरतपुर ।
- हरै०२. सोलहकारण जयमाल— X । पत्रसं १६ । ग्रा० १० X ४ इञ्च । माषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल X । ते० काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । प्राप्ति स्थान— म० वि० जैन महिर प्रकृषेर ।
- १९०३. सोलहकार स्पाजयमाल— $\times$ । पत्र स०१०। प्रा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$  प्रस्य। माया-प्राकृत। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल स०१७५४।पूर्ण। वेष्टन स०२५२। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूंदी

प्रारम्भ--

सोलहकारण पडयमि गुरागरा सायरहं। परावर्षि तित्यकरं ग्रसह दूवयकर ॥

- **१९०४. सोलहकारणः जयमाल—रद्वपृ**। पत्र स०७। धा० १३४६ **६७**। भाषा— प्रपन्नंत्र। विषय-पूजा। र०काल ४। ले०काल ४। धपूर्णः। बेष्टन सं० ५६ ४। **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन बहा बीसपदी मन्तिर दोसा।
- **१०५. सोलहकारएा जयमाल**— $\times$  । पत्र म०२२ । प्रा० ६ $\frac{1}{7}$  $\times$ ६ इञ्च । माषा— प्राकृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सोसाणी मन्दिर करीली ।

विशेष--गाथाओं पर हिन्दी मर्थ दिया हमा है।

१९०६. सोलहकारणा जयमाल $-\times$ । पत्र सं०२८। प्रा० १२ $\times$ ६ इव । भाषा- प्राकृत ।विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वप्टन स० ४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचावती करोली।

विशेष--रत्नकरंड एव अकृतिम चैत्यालय जयमाल भी है।

- ६१०७. सोलहकारण पूजा— $\times$ । पत्र स०११। प्रा०१२ $\times$ ६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन सं०१६। प्राप्ति स्थान दि० जैन मंदिर प्रादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक)।
- १०० सोलहकारण पूजा—×। पत्र स० ४२। मा० १२४७ दुँ इ० च। सावा-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल ४। ले० काल स० १६३६ म्रासोज बुदी ११। पूर्ण। बेष्टन सं० ४४। प्रास्ति-स्वान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बुंदी।

विशेष-हीरालाल बडजात्या ने टोंक में लिखवाया था।

- ६१०६. सोसहकारसम् पूजा विधान—टेकचन्द्रः। यमस्य ६। याः  $\kappa \times \xi$  इचा माषा—हिन्दी। विषय-पूजा विधान। रण्कास  $\times$ । सेककाल  $\times$ । पूर्णं। बेहन संय ५६१। **प्रान्तिः स्थान** दि॰ जैन मंदिर सफ्कर बयपुर।
- ६११०. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४१ । प्रा० १० ४४ दे इचा। ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं∙ ४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैतावा।

विशेष---भट्ट शिवलाल ने प्रतिलिपि की थी।

- ६१११. प्रति सं० है। पत्रसं० ७४। घा० १०३ 🗴 ४३ इञ्च। से०काल 🗴 । पूर्ण। बेहन स॰ ७४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहर्षणी मन्दिर दौसा।
- **६११२. प्रतिसं० ४।** पत्रसं० ४६। मा०१२५ ४६ है इस्त । से०काल सं० १६६७ चैत सुदी ६। पत्तो । बेष्टन सं० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बंदी ।
- **६११३. सोलहकारए। पूजा**— $\times$  । पत्रसं• २७। मा॰ १० $\times$ ४ इच । माग-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं• २३४/३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन समजनाथ मन्दिर उदयपर ।
- **६११४. सोलहकारण पूजा**— $\times$ । पत्रकं २-१७ । प्रा $\circ$  ११ $\times$ ४ है इज । प्रावा-संस्कृत । विषय-पूजा । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$  काल  $\times$  । ध्रूपुर्ण । वेष्ट्रम स $\circ$  ४३ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर बोगसली कोटा ।
- ६९१४. सोलहकारण मण्डल पृजा—×। पत्रसं∘ ४० । घा० ११×८६ च । प्राथा— सस्कृत । विषय-पृजा । र०काल × । से०कास स० १६११ ज्येष्ठ बुदी थ । पूर्ण । बेहनसं०४/६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष--मारोठ में भू बाराम ने लिखवाया था।

- ६११६. सोलहकारण मण्डल विधान $-\times$  । पत्रम० ००। घा० ११३ $\times$ ५३ ६७ । प्राणा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते०काल स० १६५४ सावण बुदी २ । पूर्ण । बेल्टन सं० ११६४ । प्राण्ति स्थान-म० दि० जैन मन्दिर धजमेर ।
- **६११७. सोलहकारत्य क्लोखापन पूजा** $--\times$ । पत्रसं० १८। प्रा० ११४७ १=य । भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा स्तोत्र। र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० १५३। प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर नागरी बूंदी।
- €११८. सोलहकारए। बतोद्यापन पूजा—×। पनसं० १२। मा० १०४७ इचा। माषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा। र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०७८ ७८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन तेरहणंथी मन्दिर दोहा।
- ६११६. सोलहकारण बत पूजा विधान $-\times$ । पत्रतं० ६ । मा० ११ $\times$ ६ ६८ । प्राप्त हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेहन सं० ६६-१ । प्राप्ति स्थान— वि॰ जैन बता बीलपंदी मन्दिर दौता ।

**११२०. सौंध्य काख्य क्रातेखापन विधि**  $\times$ । पत्रमु० ६। ब्रा॰ १० $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4}$  रूपा । माधा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । प्राप्ति स्थान — भ० वि० जैन संदिर खजरेर ।

**१९२१. संघारा पोरस विधि**— $\times$  । पत्र सं० १ । घा० १० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इन्त । भाषा-प्राहुत । विषय—विधाय । ले० काल १६४३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । प्राप्ति स्थान— दि०जैन मन्दिर देवलाना इंदी ।

बिशेष---पठनार्थ विरागी रूपाजी ।

**११२२. संबारा विधि**— ×। पत्र त० १२ । धा०१० × ४३६ च । साथा-प्राकृत । विध्यप-विधान । र०काल × । ले०काल । धपूर्ण । वेग्टन त० ४६६ । **प्रास्ति स्थान**— म० दि० जैन सन्दिर क्राजीय

विशेष--टब्वा टीका सहित है।

**११२३. स्तोत्र पूजा** $- \times 1$  पत्रस० १ से ५ । मावा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । के काल  $\times$  । प्राप्त । वे० सं० ७४४ । प्राप्त स्थान--- दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

**११२४. स्तोत्र पूजा**— × । पत्र सं० ६। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पर्ए। वेष्ट्रन स० ७२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

**६१२५. स्नयन विधि**— $\times$ । पत्र सं॰ ५ । भाषा—सस्कृत । विषय-विधि । र०काल  $\times$ ।  ${\bf q} \hat{{\bf n}}$  ।  ${\bf q}$  ।  ${\bf q} \hat{{\bf n}}$  ।  ${\bf q}$ 

**११२६ स्तपन**ं**विधि यृह्**य्— $\times$ । पत्रस०१४। माया-सस्कृत। विषय—विधान। र०काल  $\times$ । ते०काल स०१५४७ कार्तिक सुदी ४। पूर्णा वेष्टन म०२३६। **प्राप्ति स्थान**—दि०र्जन श्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

**११२७. होम एवं प्रतिष्ठा सामग्री सूची** — × । पत्रस•२०। ब्रा० १२ × ५३ दंच। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय—पूजा । २०काव × । ले० काल × । पूर्णा । बेष्टन स० ३०७-११० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

**६९२८. होम विचान—प्राशाधर । पत्र**स० ३। प्रा० १०४४ इच । मावा-सस्तृत । विचय-पूजा विचान । र०काल ४ । ने०काल ४। पूर्ण । वेष्टन स० ३८१। **प्राप्ति स्थान**—स० दि० जेन मन्दिर प्रजमेर ।

**६१२६. प्रति सं०२ । पत्र स०३ । घा० १२**×४ दै इचा। ले० काल स० १६४० चैत सुरी १ । पूर्णा। बेहन सं०२४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौतान बंदी ।

विशेष--पडित देवालाल ने चाटसू मे प्रतिलिपि की थी।

**६१३०. प्रति सं० ३**। पत्र स०६। ग्रा० १२ $\times$ ४ $^{2}$  इञ्च । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२१–१२० । प्राप्ति स्थान  $\sim$ दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वंगरपुर ।

**११२१. होम विधान**— $\times$ । पत्रस० १० । मा० [१० $\frac{1}{2} \times Y_{p}^{2}$  इन्छ । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टतसं० २७४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर स्थलेर ।

**११३२. होस विधान**— $\times$ । पत्र सं०६। म्रा०  $= \frac{1}{2} \times ६ दःवा। सावा-संस्कृत। विषय विधान । ले० काल <math>\times$ । पुर्णा । वेष्टन सं०११७४। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर प्रवसेर।

**११३२, होस विधान---**× । पत्र सं० २३ । झा० १२×७ इ**च । भाषा**-प्राकृत-संस्कृत । विषय-विधान । र०कास × । के०काल ×। पूर्ण । वेष्टनसं० ⊏० । **प्राप्ति स्थान-**--दि० जैन सन्दिर कोटदियों का इंगरपुर ।

**६१३४, होस विदान —** ×। पत्रसं० २-८ । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । बेकुनसं० ४३१/३=७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**१२५. होस विधि**—  $\times$  । पत्रस $\circ$  न । या $\circ$  ११ $\times$  $Y^2_{\circ}$  इ.ख । माया—संस्कृत । विध्य-विधान । २० काल  $\times$  । लेक्काल । पूर्ण । बेष्टन स $\circ$  ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  जैन मंदिर लक्कर जयपुर ।

**१२६. होम विधि**—× । पत्रत० ६२ । घा० १×४<sup>2</sup>, इ.च.। भाषा-सस्कृत विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० ११६० । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाण्येनाथ चौपान चुंदी ।

# गुटका -- संग्रह

# ( महारकीय दि • जैन मन्दिर अजमेर )

ृश्क्षकः सुरुक्तास्य १ । पत्रसं∘ ७० । मा०१२ × ८ दे इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं∘ १≂३४ साह सुदी ⊏ । पूर्ण। बेहन सं० २३ । **प्राप्ति स्वाल**— मं० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--विभिन्न पाठो का संग्रह है। मुख्यतः लष्णेलवालों की उत्पत्ति, प्र४ गोत्र तथा निम्न रास हैं।

मिक्छियदत्त रास — त्र श्यमक्र सुदर्शन रास — " श्रीपाल रास — "

**११३ स. युटका सं**० २ । पत्र स० १३१ । म्रा० ११४ प्रदश्च । भाषा - सस्कृत⊸प्राकृत । ले**०काल** ४ |[यूर्ण । वेष्टनसं० ४२ ।

विशेष --सामान्य पाठों का सग्रह है। गुटका प्राचीन है।

**६१३६. गुटका सं० ३** । पत्रस० १६६ । घ्रा० ५imes६ दश्व । माषा-हिन्दी । र०काल imes । केशकाल imes । पूर्ण । वेहन सं० ११६ ।

विशेष — ब्रह्म रायमङ्ग कृत विभिन्न रासाम्रो का संग्रह है।

**६१४०. गुटका सं०४ ।** पत्र स० ११४ । द्या० ६२<sup>९</sup>×४ ६ञ्च । भाषा–सस्कृत हिन्दी । ले**० काल × । प्रपूर्ण** । वेष्टन स० २२७ ।

**विशेष--**पूजा पाठ संग्रह है।

**६१४१. गुटका सं० ५ ।** पत्र सं० ७६ । ग्रा० ६×४३ डला । भाषा−हिन्दी । लं० काल म० १६७३ चेत सुदी ४ । पूर्णा वेष्टन स० २४१ ।

**विशेख**---हिन्दी पदो का सग्रह है।

**६१४२. गुटका सं०६।** पत्र स०४६ । आ ।०६ $\times$   $४ \ दृष्टा । मावा-हिन्दी । से०काल <math>\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं०२४२ ।

विशेष-विविध पूजाधो का सम्रह है।

**११४३. गुटका७ ।** पत्र सं०१२८ । ग्रा०८ ४ इला। मावा–हिन्दी । ले०काल स**०**१८०७ । पूर्णं। बेष्टन सं०३६३ ।

विशेष---

मुख्य पाठ निम्न प्रकार है---

नाम ग्रंथ १— मवुमालती कथा – - नाम सन्दर्भन भाषा टिल्टी

ने कान सं०१ म०७ ।

#### पद्य सं० ८६३।

२ —दिल्ली के बादमाहों के नाम— $\times$ ।

**६१४४. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १६०** । स्रा॰ १३ ×६ इश्वर । भाषा-हिन्दी । से॰कास  $\times$  । पूर्ण । वेश्टन सं० ३६४ ।

विशेष-स्तोत्र, पूजा एवं हिन्दी पवों का सम्रह है।

**६१४५. गुटका सं० ६** । पत्र सं० २७५ । घा० = दे×६ इचा । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६६७ मंगसिर मुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३६५ ।

विशेष---निम्न प्रकार संग्रह है---

नाम संभ प्रंच कर्ता समयसार वनारसीवास सृक्ति मुक्तावली "क करुवाला मन्दिर स्तोण माणा जकडी दिएह जान पण्णीसी वनारसीदास कर्मेखतीसी " प्रधारमवलीसी "

दोहरा आलूकवि द्वादशानुमं क्षा —

६१४६. सुटकासं० १०। पत्रसं० २०२। झा० ६ x ४ है इञ्च। भाषा-हिन्दी। र०काल x । सै०काल x । पूर्णी। बेष्टन स० ५०२।

विशेष--हिन्दी पदों का सग्रह है।

हर्षचन्त्र ग्रादि कवियो के पदों का संग्रह है। पद संग्रह की दृष्टि से गुटका महत्वपूर्ण है।

**६१४७. गुटका सं०११**। पत्र सं०४६। आ.०५imes४६ च्या । भाषा-हिल्दी। र०कालimes। जै०काल स०१८७६। प्रपूर्ण। बेष्टन सं०५०३।

विशेष-स्तोत्र एवं मन्य पाठी का सम्रह है।

**६१४ स. गुटकासं०१२ ।** पत्रसं०१० । आगण्डे ४ ५ ६ व्या। सावा⊸हिन्दी। ले० काल ४ । पूर्ण। **वेह**न सं०५०४ ।

विशेष--गुएस्थान चर्चा भादि है।

**६१४६. गुटका सं० १३** । पत्र सं० ११८ । घा० १०×५ इचा। भाषा–हिन्दी । के•काल × ।पूर्णावेष्टन सं०५०७।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है---

समयसार — बनारमीदास
महाबीरस्तवन — समयसुन्दर
(बीर सुनो मेरी बीनती कर जोड़ि है कहो
सनती बात बासकनी परिविनक)

. ११४०. गुटका सं०१४ । पत्रसं∘ ८८ । घा॰ ५४४ इश्वा । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । र०काल ४ । क्षेण्काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं०४०८ ।

विशेष-प्रति जीएां है। पूजा पाठ संग्रह है।

**६१५१. गुटका सं०१५** । पत्रस०२००। ग्रा०६ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ द । माषा—हिन्दी-सस्कृत । ले**काल** स०१८१२ । पूर्ण । बेहन स०५५१ ।

विशेष —स्तोत्र एवं सामान्य पाठों के प्रतिरिक्त क्षमा बत्तीसी, (समय सुन्दर), जीव विचार टब्बार्थ सहित, क्वियरपटिविश्वा टब्बार्थ, पद संग्रह (भव सागर) सीमधर स्तवन (कवि कमस विजय), धर्मनाथ स्तवन, (प्रारादघन)।

गुटका म्बेताबरीय पाठो का है।

**६१५२. गुटका स०१६** । पत्रस० १६८ । घा०६×६ इथा । माषा-सस्कृत । **से०काल** × । पुर्यो । वेष्टन स०५४३ ।

**विशेष**—पुजा पाठ सग्रह है। गुटका जीएं है।

**६१४३. गुटकासं०१७** × । पत्र स०३३ । घा०४×३३, दश्वा। भाषा⊸हिन्दी। ले० काल स०१७७४ जैत सुदी११। पूर्सावेष्टन स०४४४ ।

विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है---

१-- शत्रुं जय रास -- समयसुन्दर

२ - मडोवर पार्श्वनाथ स्तवन - सुमित हेम

३---ऋषभदेवस्तवन

६१४४. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७३ । आर० ५ ५५४५ हरून । मापा-सस्कृत । ले॰ काल सं०१४७५ मादवा सुदी ३ । पूर्णा वेष्टन स ४५४ ।

विशेष-विभिन्त ग्रंथों में से पाठ है सामान्य पाठो का संग्रह है।

**६१५५. गुटका सं० १६** । पत्रस० १४४ । घा०६ $\frac{1}{4}$  $\times$ ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले॰ काल सं० १८०७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५७ ।

विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है।

भक्तामर, एकीभाव, सूक्तिमुक्तावली, नीतिशनक (भनृहरि) श्रृगारणतक (भनृहरि) कविश्रिया (कथवदास)।

६१४६. गुटकासं०२० ।पत्रस०६७ । झा० ११४४ ७ इचा । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । लं∘कान ४ । पूर्णावेष्ठन सं०४४⊏ ।

विशेष---सामायिक ग्रादि सामान्य पाठो का सग्रह है।

६१४७. गृटका स०२०। पत्र स०१४०। घा०११ $\frac{1}{4} \times 0^{\frac{1}{4}}$  इन्धा। सम्बा- शिक्टिश से काल स०१८५८ फागुरा सुदी२। पूर्णा वेष्टन सं०४४६।

निम्न पाठों का संग्रह है-

भविष्य दत्त कथा ब ० रायमल्ल

श्रीपास रास

सुदर्शन रास	ब्रह्मराय मल	
निर्दोष सप्तमी कथा	,,	
प्रद्युम्न राम	रायमस्ल	
नेमीश्वर रास	,,	
हनुमत चौपई	"	
शालिमद्र चौपई	जिनराज सूरि	
शीलप <del>च्</del> वीसी		
स्थूलभद्रको नवरस		
श्रकलंकनिकलंक चौपई	म० विजयकौति	र <b>ंकाल</b> सं० १८२४

**६१४ द. गुटका सं०२१** । पत्रसं०७० । झा० ४ x ४ दे डबा। भाषा –सस्कृत । ले०काल स्०− १७६४ । पूर्णा वेष्ट्रन सं०४६० ।

विशेष - चौरासी बोल-हेमराज के तथा पुजा-पाठ सम्रह है।

**६१४६. गृटका सं० २२ ।** पत्र स० १४६ । ब्रा० ४३<sup>3</sup> × ३३ े डखामाषा−हिन्दी । ले० काल⊸ × । पूर्णा । बेस्टन सं० ४६१ ।

विशेष-पदो का सम्रह है।

**११६०. ग्टकासं० २३ । पत्रस०** द । ध्रा० द ×६ इश्वा । भाषा-हिन्दी । ले० काल स०— १=द६ । युगाँ। वेष्टनसं∙ ४६२ ।

विशेष--नेमिनाथ के नवसगल एव पाठ आदि है।

**११६१. गटकास०२४। पत्रस०** ४६ । ब्रा० ७ $\frac{3}{4}$ ४१ इश्व । भाषा-हिन्दो सस्कृत । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बैष्टन स० ४६३ ।

विशेष—भायुर्वेदिक पाठो का सम्रह है। इसके भ्रतिरिक्त २४ पत्र में काल ज्ञान सटीक है। हिन्दी में अर्थ दिया हुमा है।

१**९६२. गुटकासं०२४.। पत्रस०**६२.। ब्रा०४२०४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स०१८८८ । पूर्णा**वेष्ट**नसं०५६४।

विशेष -- गोम्मटसार में से चर्चांक्रों का सग्रह है तथा पद्मावती पूजा भी दी हुई है।

**९१६३. गृटका सं**०२६ । पत्र स०२४२ । द्या०६ $\frac{1}{2} \times \mathbb{E}_{q}^{2}$  इन्छ । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । से०काल स०१७१९ । पूर्णी विष्टन सं०५६४ ।

विशेष--- निम्न पाठों का संग्रह है---

भक्तामर स्तोत्र, तरवार्थ मृत एवं पूजाधी के प्रतिरिक्त भाउ कृत रवित्रत कथा, ब्र० रायमस्त कृत नेमिनाथ रास एवं बालिमद्र जीपई धादि का सबक्ष है।

**११०१ : पूर्णावेश राज्य सं**वस्थान्नावे स्वर्धान्य विश्वस्थाने स्वर्णान्य स्वर्णाने स्वरत्य स्वर्णाने स्वरत्य स्वर्णाने स्वरत्य स्वरत्य स्वरत्य स्वरत्य स्वर्णाने स्वर्णाने स्वर्णाने स्वरत्य स्वर्णाने स्वरत्य स्वरत्य स्वरत्य स्वरत्य स्वर्णाने स्वर्णाने स्व

विशेष —स्तोत्र भादि का सम्रह् है तथा भंग में कुछ मन्त्रों का भी संग्रह् है।

**६१६५. गुटका सं**०२६। पत्र सं०२६४। ग्रा० न् $\frac{1}{4} \times \mathbb{Q}^3$  इच्छ । माया-हिन्दी  $\frac{1}{4}$  लेकाल सं०१६६। प्रिक्त । वेष्टन सं०१६७।

# विशेष--- निम्न प्रकार सग्रह हैं---

	पत्र १—४२ प्रारम्भ में		
इन्द्रजालविद्या			
चक्रकेवली	?? •		
शकुनावली	58-RE		
सकांति विचार-			
- भ्रसोदूका शकुन	७६ पत्र तक		
कोक शास्त्र	६ = पत्र तक्		
संवत्सर फल	,		
सामुद्रिक शास्त्र	१४६ तक		
ससार वचनिका	१५० तक		
रमल शास्त्र	१७३ तक		
भागे जन्म कुण्डली भादि भी हैं।			
गुटका महत्वपूर्ण है।			

**११६६. गुटका स**० २**६ । पत्र स० ३७१ । आ० ५ \frac{1}{2} ×६\frac{3}{4} इ.स. । आया-हिन्दी । से०काल म० १७२८ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४६८ ।** 

## विशेष--- निम्न रचनाधो का सम्रह है।

नामग्रय	ग्रंथकार	भाषा	रचना सं०	पत्र स०	विशेष
पार्श्वनायरास	क्रूरचन्द	हिन्दी	१६६७	३८−५€	
नेमीसुर कारास	पुण्यरत्न		-	40-48	६४ पद्य
जैनरास	_	,,,		<b>६</b> ५−= •	
प्रचुम्नरास	<b>ग</b> ० रायमङ्ग	,,		< <b>₹</b> − <b>१</b> 0 १	*******
त्रैलोक्य स्वरूप चौपई	सुमनिकीर्ति	"	१६२७	101-115	_
<b>गील बत्तीसी</b>	धक्षुमल	n	_		पत्र स •
•					नहीं लगी है
भविष्यदत्त कथा	त्र० रायमहा	,,		<b>११७-७३</b>	
नद बत्तीसी	विमल कीर्ति	,,	3009	\$98-8=8	-
निर्दोष सप्तमी कथा	<b>ब</b> ० रायमङ्ख			<b>१</b> 5 ₹-5¥	
यशोवर चउपर्ध		,,	_	164-20E	
म्रादित्यवार कथा	माउ कवि	लिपिकाल	सं॰ १७२=	जीवनपुर मध्ये	निपिकृतं ।
		"		२२०-२२६	

सीतासतु	<b>मगौ</b> तीदास	हिन्दी पद्य	<b>१</b> ६८४	२३०-२७० श्राषाढ सुदी ३	
<b>अ्येष्ठ जिनवर कथा</b>	<b>इ०</b> रायमञ्ज	हिन्दी	१६२४	२७१-७४ सांभर में रचना की	 mit aft
चन्दनमलयागिरि कथा	चन्द्रसेन	"		२७४-८४	
<b>मृगीसंवा</b> द	देवराज	"	१६६३	२८६ – ३०१ चैत सुदी ९ र्रा	— वेवार
वसुधरि चरित्र	श्री मूबस्		3009	307-378	
हतुमंत कथा	<b>इ॰ रायम्</b> ल	,,		377-XX	
पासाकेवली		,,		३५६-६०	
मालीरास	जिनदास	,,		3 <b>6 6 - 6</b> R	
गौतम पृच्छा		,		३६५-३७१	_

सीता सतु-मगौतीदास

ष्नावि माग-

ऊँकार नमी धरि भाऊ, मुगति वरंगीए। वर जगराऊ । सारद पद पकज सिर नाऊ जिह प्रसादि रिधिसिघि निधि पाऊ ।। गुरु मुनि महिंदसेन भट्टारक, भव संसार जलधि जल तारक । तामु परए। निन होत धनदो, बढइ बुधि जिम दुनिया पदो ।।

मध्य भाग--

सोरठा---

सीय न हुइ भय भीय करे रूपि रावसा धरो । हरिकरिसरह विसाय भत प्रेत वेताल निसि । ५६॥

चौपई---

सम्म उपतम् करह धामा, सो मुमरह चिति लिख्निनरामा । गृह्य रैनि रिवि उस्यी दिनेसु, हुइ निरास चरि गयी लगेसू ॥ १० ॥ बालु पीडत तेल न लहिने, फीए मस्पिकमिए जिवनन गहिये । सतिय पयोहर को करि छावड़ बहुनि परित तिनि को जींग जीवड ॥ ५५॥

धन्तिम--

बलि विकम नृप करन सम सुखर सुभा सुजाए। धकबर नंदरा धनि वली सबल जगति तिस धारा ॥६६॥

सोरठा---

देस कोमु गज बाजि जामु नमहि नृप छत्रपति । जहांगोर इक राजि सीता सतु मइ मनि कीया । ६७॥ गुरु गुरु चंदुरितिष्ठ बसानिए । सकल बन्दु तिह पट्टि जयतमहि जानिए । तासुपट्टिजस धामु खिमागुरा मंडरगो । परुहा गुरुमिशा महिद मेरा मैराह्र म खडरगौ ।।६८।।

#### ग्रहिल्ल--

गुरु मुनि महिंदसीए मगोती, रिसि पर पक्त रेण् मगोती। कृष्णदास बनि तनुज मगोती, तुरिय गद्धो बतु मनुज मगोती।।६७।। नगरि चृडिये वासि भगोती, जन्म मूमि चिरु झासि भगोती। स्वयाल कुल बस लगि, पहितपरि निरसी मिम भगोती।। ७०।।

#### चौपई--

जमानिपुर पुरपति प्रति राजइ, राइ पीरि नित नौबति बाजइ।
बसहि महाजन धन धनवत, नागरि नारि पथर मतिवत ।।७१।।
मोतीहिट जिनभवनु विराजइ, पिडमा पास निरिक्ष प्रमु भाजइ।
श्रायक समुन मुजान दयाल, पट् जिय जानि करहि प्रतिपाल ।।७२।।
विनय विवेक देहि रिति दानू, पिडत गुना करिह सनमानू।
करि करणा निरयन धनु देही, प्रति प्रतीण जगमाहि जतु लेही ।।७३।।
कहि करणा निरयन धनु देही, प्रति प्रतीण जगमाहि जतु लेही ।।७३।।
सीता सत् विति कधी बसानी, छद भेद पद सार न जानी ।।७४।।

# दोहरा--

पढिह पढाविह सुनि मनहि, लिखिह लिखाबिह गोह। मुर नर नृप खग पदु लहुइ, मुकति वरहि हाँग मोह।।७५।।

#### सोरठ--

बरसी पावस मेहु बाजह तूर फानद के।
दर्यात करता मनेहु घर घर मामल गाइयी ११०६१।
फुनि हा नवसतनह बमु बारिसु स्वत जानिय।
साहि मुक्त मिस तीज दिवन मित धानित।
सिमुत रागि रिव जोड चन्दु दुजा गन्यो।
पर हा कविम भगौनीदामि स्नासि सीय मनु भग्यो।।६७७।।
इति स्री पद पुरास् मौता सनु सप्यां ममापना।
सन् १७३० का दुगोस मोता साहस्या।
पत्रे एकारस्या गुक्तमार्थि लिपप्कृत महास्या।
जसा मुन कलवा जोवयोग माये।

मृगी संवाद---(वेष्टन सं० ५६=) ग्रथ मृगी सवाद लिख्यने---

## बूहा---

सकल देव सारद नमी प्रगाम गौतम पाड । राम भए। रिलया मगा, सिंह गुरु तस्गै पसाड ॥१॥ जबू द्वीप सुहावर्गो, महिश्रर मेर उत्तंग। जिहेषे दक्षिण दिसा भली मरथ क्षेत्र सुजग।।रा। नगर निरोपम तिहां बसे कललीपुर विरक्षात। देखी राजा नट नृपर्ग, किती कह स्रवदात।।३।।

#### मध्य भाग---

कोई नर एक जिमावे जाति, सहु कोई वसै एकिए। पाति । पकलए। इत्तरी स्पीरा करें, तिहकै पािंग सूर्य पर हरे।।११३।। साचा माएता ने देई प्रान्त, मार्थ मार्र नान्हा बाल। सासू मूनरा नें जो दसै, सा नारी वापुलि होड़ सी।।११४॥ घरि पावें ची निरंपन पराौ, चिनन वो लवे स्वामी ताएगी। मुखें हुएं दूवें सनाए, रहीं लागे तिह नो पांच।।११४॥

#### ग्रन्तिम पाठ---

इहा वे मिर कहा जाइसी, त्यौ भाजे सन्देह। केवली भाषा समनी, इहा वे मिर सब पह ॥२४०॥ जण तप समम सादरी टाल्यों भेये दुस । मुक्ति मनोरव पामिसी, जदुशों बहुता गुल ॥२४६॥ सवत सोलसे तेसढे चैत्रसुदि रविवार। नवसी दिन भला मावस्यों गस रच्यों सुविचार ॥२४६॥ वीजागळ मांडण पवर पास सुर देवराज। श्री यनतरत दिन दिन, देह शामीस मुकाज ॥२४०॥ इति मृगी मनाद कथा समाप्ता।

सवत् १७२३ का वर्षे मिति विदि ५ शुक्रवार लिखितं पाडे वीरू कालाडेहरामध्ये ।

वसुधरि चरित्र (वेष्ट्रन स० १६६) धादि माग — ऊनमो वीतरागाय नमः

# वोहडा---

सारद सामिए पय नभी गरापित लागी पाय ।
किटिसि कथा रिलयावरागी, गोतम तराग पसाय ।।१।
जब्दीप सृहावरागे, लख जोजन विसतार ।
मध्य मुदरसरा मेर है, दिखरा दिसा सुखसार ।।२।
मरतक्षेत्र जन मर तहुं दिखरा देसा सुखसार ।।३।
मरतक्षेत्र जन मर तहुं दिखरा देस सुखसाल ।
का वापी जिन भवन घित, नदी तीर सुभताल ।।३॥
कुसम नगर घित सोमतो कोट उतन घाला ।।३॥

मध्य भाग---

स्रति सास्तर हुनो तिस्तानार, प्रास्त्य दोक नीर सासार। साय पहता तब तर चारि, गाने गीन सुमम नर नारि। नाने नाने नाने नाने नाने हमार एक हमिर। जन समारी। जन समारी। जन समारी। जन समारी प्राप्त उद्योति तिनो वसु थीर।। मोजन मगति भई सुमराह, विजन वृद बहुत वस्तान। मोथक सेवा मिठाइ पकवान, जीमै वाला वृद्ध जवान।। सीयल जन सुनस सनाद, पीवत तथा श्री जाय विषाद।। जिपस्ता इन्हें तस्तर वर्षा, नर नारी स्नेह रस नैया।।

शन्तिम माग--

बाग बाप निद ताल सुम, सुम श्रावग धर्म थेत । पोसी सामायक सदा, देव पूज गुह हेत । श्रवर मात न जाएशही हासि तजो किंदराव । सुर्गी कचा तैसी रची, सीता कृत्रल भाव । सतरासी निडीतराय कातिन मुभ गुण्वार । सेत सत्तमी कथा रची पढत मुणत सुबसार । एक्सड तरेपन दोहडा सोर्ट्ड ग्यारह् सार । इस्वासी घर एक सत सुग चउपई मुडार । इति मुद्रार विरन्न समाप्त ।

**६१६७. गुटका सं० ३०.** । पत्र स० ३६६ । ग्रा०६्रे ४ ४ इचा। भाषा-सस्कृत । ले० काल ४ । पूर्णा वेहन स०४६६ ।

विशेष-- निम्न पजाओं का सग्रह है--

त्रेपन कियापूजा

कर्मदहन पूजा धर्मंचक पूजा

**बृहद् घोडणकार**स पूजा

दशलक्षरा पूजा

पद्मावती पूजा आदि

**६१६** म. गुटका सं० ३१ । पत्रस० ४२० । द्या० ६imes६ इत्था। माया-हिन्दीसस्कृत। से० काल imes। पूर्णावेष्टनसं०५७०।

विशेष-पूजा पाठ स्तोत्र कथा ग्रादि का संग्रह है।

**९९६९. गुटकासं०३२ ।** पत्रस०१२४ । ग्रा० ५×६ इला । भाषा−हिन्दी । **ले∘काल स०** १∝११ । पूर्णे । बेष्टन स०४७१ ।

विशेष-हिन्दी पदो का सम्रह है।

मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

पारसनाय की सहेलो—बहा नायू नेमिनाय का बारहमासा—हवंकीति देवेन्द्रकीति जसबी

**६१७०. गुटका सं० ३३ ।** पत्रसं० ३७ । ब्रा० ५ × ४ इल्ब । भाषा−हिन्दी~संस्कृत । ले०काल × । पूर्वा । बेक्नसं∙ ४७२ ।

विशेष-चौबीसठासा चर्चा ग्रादि का संग्रह है।

**११७१. गुटका सं० ३४**। पत्र सं०११८ । घा० १५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेक्काल सं०१७६३ । पूर्ण । बेष्टन सं०१७६३ ।

विशेष---

यादवरात पुण्यरत्न भाषा हिन्दी पत्र ६-१३ दानशील तप भावना समयमुन्दर ,, १०१ इनके ग्रांतिरिक्त भन्य स्तोत्र एव पदों भादि का सम्रह है।

**६१७२ गुटकास०३५** । पत्र सं०१८४ । घा० ६४६ इश्वा । माषा−हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्णो । वेष्टन स० ५७४ ।

# विशेष ---

बावनी	<b>छीह</b> ल	हिन्दी	रचनास० १५६४	५३ पद्य
स्वप्नशुभाशुभ विचार	_	,,	armore	पत्र ४६-५०
चतुर्विशति जिनस्तुति	_	,,		५०-६५
बावनी	बनारसीदाम	,,	_	१७२-११८
सीवव की बाबवी का	erfant ner	_		

चौरासी ग्रागने सोब पनरह संबरसर । ग्रुक्पश्र प्रष्टमी मास कातिग गुरु मासर । हिर्दे उपनी बुचे नाम श्रीगुरु की लीह्नी । सारद तणो पसाइ कवित संपूरण कीन्ही । तहा तिग वस नाम मुतन ग्रमबाल पुर प्रगट रिव । बाबनी वमुचा विस्तरी कर कक्ए छोहल कवि ।।

**६१७३. गुटका सं०३६ ।** पत्र सं०४२ । झा०६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ने० काल × । पूर्णं। वेष्टन सं०४७ र।

विशेष--गुर्गस्थान चर्चा का संग्रह है।

**६१७४. गुटकासं०३७**। पत्रसं०४७। म्रा० प<sup>2</sup>्र४६ इला। भाषा—हिन्दी । ले०कालसं १७४८ पूर्णाकेष्ठनसं०६७६।

विशेष --- धवजद केवली पाशा है।

**६१७५. गुटकासं**० ३ स्न।पत्रसं० १२ । घा० ११ ४ ६ इ.च.। माद्या-हिन्दी-। ले० काल ४ । ग्रपूर्सावेष्टन सं०५७७ । विशेष--१५६ पद्य हैं। बीच-बीच में चित्रों के लिये स्थान छोड रखा हैं मधुमालती कथा है।

**९१७६. गुटकासं० ३.६** । पत्र सं० ३०६ । सा० १×४ ¦ इ.चा प्राषा—हिन्दी—संस्कृत । ले•काल १८२० श्रावण सुदी । पूर्णावेष्टन स० १७८ ।

विशेष -- पूजा पाठ सम्रह है। बीच के बहत से पत्र खाली है।

**६१७७. गुटका सं**० ४० । पत्रसं० २६४ । ग्रा० ४ × १ इश्व । भाषा−हिन्दी ~संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ४७६ ।

विशेष-भूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

**६१७ म. गुटकासं०४ १**। पत्रस० १० से २६४ । झा०७३<sup>2</sup> ४७३ इञ्चा भाषा∽हिन्दी। ले० काल स० १७६४ चैत सुदी १०। झपूर्णावेष्टन स०४ म०।

विशेष--निम्न पाठों का सप्रहर्ह-

44444 (1111)	44 /1466	
धर्मं परीक्षा	हिन्दी	मनोहर सोनी
<b>ज्ञानचि</b> न्तामिंग	,,	मनोहरदास
चौबीस तीर्थंकर परिचय	,,	
पंचास्यान भाषा	**	
(मित्र लाभ एव सुहृद् भेद)	11	
प्रति सटीक है।		

**६१७६. गुटका सं०४२ । पत्रसं०३१६ । ग्रा०८**३%६ इच्चा भाषा-हिन्दी। ले० काल ८**।** पूर्यो। बेग्न स०५५१ ।

विशेष-गुटके में पूजाएं स्तोत्र, एवं पद्य ग्रादि का सग्रह है।

**११६०. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० १४० । धा०** ६x४ इश्व । माया-सस्कृत । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५६२ ।

सम्यक्तकौमुदी, वृष नजिनस्तोव, प्रश्नोत्तरस्तमाला(शहराचाय), षांडर्शानयम एव अन्य पाठ है । कुछ पाठ नैनतर प्रथी में से भी है ।

**६१८९. गुटका स० ४४ । पत्र सं० १७८ । ब्रा० ५** ४४ इकन । भाषा~सरकृत-हिन्दी । ले• काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ५८३ ।

विशेष--पद स्तोत्र एव पृजा पाठ म्रादि का सम्रह है।

**६१८२. गृटका सं** ४५ । पत्र सं० ६८ । स्रा॰ ६ $^{1}$  ४५ $^{2}$  इन्त । माया-सस्कृत-हिन्दी । ले॰ काल सं० १६४१ । पूर्ण । बेष्टुन मु० ५८४ ।

विरोध ---पत्रों एव मत्रों का संग्रह है। मुख्य मत्र प्रत्याटन, सतानोपचार, गर्भवन्यन मत्र, वशी-करए, शत्रुकीलन, सर्पमत्र, बालक के पेटबच, प्राप्तों की वशीकरए। मत्र, शाकिनी यंत्र, सत्यकोपचार प्रादि मत्र दिवं हुये है।

६९ स्न. सुटका सं० ४६ । पत्रस० २६० । घा० ७×५ ¦ इचा । भाषा-सस्कृत । **ले०कास × ।** पूर्ण । बेष्टन स० ४८४ । विशेष - पूजा एवं स्तीत्र भादि का संग्रह है।

**८१८४. गुटका सं० ४७** । पत्रसं० ४२ । म्रा० ५ $\frac{2}{5}$  $\times$ ६ इत्र्वं । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६६ ।

विशेष -- स्तोत्र, पुजा, श्रमरकोश एव श्रायुर्वेदिक नुस्खे श्रादि का सग्रह है।

**६१८५. गुटका सं०४६** । पत्रसं०३६ । ग्रा०६imes४ इ.स. । माषाimesहिन्दी । ले०काल imes । पूर्यों । बेष्टन स०५६७ ।

विशेष--नंददास की मानमजरी है।

१९८६, **गृटका सं०४**६ । पत्र सं०५०। ग्रा०६ $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ इञ्च । माषा-हिन्दी । ले०काल सं०१८८ । पूर्ण । बेस्टन स०५८८ ।

विशेष--- निम्न पाठों का सग्रह है।

नीतिशतक हिन्दी सवाई प्रतापिनह भृगार मजरी " नवाई प्रतापिनह

**६१८७. गुटकासं० ५० । पत्रस०** १४२ । ब्रा० ६१<sup>\*</sup> ४६२<sup>\*</sup>, इखा गापा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्णा। वेस्टन स० ५८६ ।

विशेष-- नत्वार्थं गुत्र हिन्दी टीका सहित है। राजस्थानी भाषा है।

६१८८. गुटका स० ५१। पत्रस०६८। ग्रा०८×५ै इश्वा । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । पूर्णा । बेष्टनस०५६०।

विशेष -- पूजा एव स्तोत्र संग्रह है।

**६१८६. गुटका स० ४२** । पत्र स० ११० आ० ४imes ४ $^3$  इश्व । भाषा-सस्कृत । ले०काल imes । पर्गा । बेष्टनस० ५६१ ।

विशेष - पूजा पाठ समह है। गुटका जीएाँ है।

**१९६०. गुटका सं० ५३** । पत्र स० ६२ । घा० ११×४ है इन्त्र । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८२० भावता सुदी १४ । पूर्ण । बेप्टन स० ४६२ ।

निम्न प्रकार संग्रह है-

111.11	~0.0			
ग्रन्यनाम	ग्रन्थकार	भाषा	पद्य स॰	विणेष
म्राराघाना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	xx	
पोसह रास	ज्ञानभूषरग	11	-	
मिथ्यादुक्कड्	व ० जिगावास	**	28	_
धर्मतरु गीत	पं० जिनदास	**		
जोगीरास	जिरगदास	,,	४१	
द्वादशानुप्रेक्षा	प० जिनदास		<b>१</b> २	
,,	ईसर	,,	१२	
पाणीगालग् रास	ज्ञानभूषरा	17	₹₹	
सीखामण रास		**	<b>१३</b>	

बहुंगति चुपई	_	हिन्दी	*5	
नेमिनाधराम	भ्रमयचन्द	,,	७११	-
संबोधन सत्तावस्त्री मावना	वीरचन्द	,,	€0	
दोहाबावनी	पं• जिरगदास	,.		
जिनवर स्वामी विनती	सुमतिकीर्ति	"	२३	-
<b>गुराठारागीत</b>	बहावर्द्ध न	,,	१७	
सिद्धचकगीत	धभयचन्द्र	,,		
परमात्म प्रकाश	योगीन्द्	भ्रपञ्च म	१०१	-
ज्येष्ठ जिनवरनी विनती	<b>ब</b> ० जिनदास	,,	64	
शेपन कियागीत	शुभवन्द्र	,,	19	
मुक्तावलीगीत		,,	<b>१</b> २	
भालोचना गीत	श्रमचन्द्र	,,	२३	_
धाचार्य रतनकीति वेलि	_			-
पद सम्रह		,,	বিশিস কৰি	यो के
			ਧਣ	

**१९६१. गुटका सं० ५४** । पत्रस**० ६२ । घा० ६**×४ **३ इ.च. । प्रापा-हिन्दी-संस्कृत** । लेक्कास × । पूर्ण । जेस्टन स० ५६३ ।

#### ् निम्न संग्रह है---

1444 4MG 6				
ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	भाषा	पद्य सं०	विशेष
गुर्वावलि		हिन्दी	8.K	
श्रेरिएक पुच्छा	भ ० गुराकीति	n	७२	_
चितामांगा पाश्वेनाथ विनती	प्रभाचन्द्र	"	<b>१</b> २	
भावना विनती	<b>द्य</b> ० जिनदास	n	-	
गुरावेलि	भ० धर्मदास	,,	२८	
जिना०क		n	७२	-
ऋषिस्डल स्तोत्र	****	संस्कृत		
रोहिस्तित्रत कथा	<b>ब</b> ० ज्ञानसागर	हिन्दी		-

**६१६२. गुटकासं० ५५** । पत्रस० ७० । ग्रा० ६×६ इच्छ । भाषा—सस्क्रत, हिन्दी। ले∘कालस० १६५५ चैत्र बुदी २ ।पुर्सा। बेष्टनस० ५६४ ।

विशेष-सर्वया बावनी एव सुभाषित ग्रन्थ का राग्रह है।

६१६३. गृटका सं० ५६ । पत्र स०११४ । प्रा०५ $\times$ ४  $\frac{1}{2}$  इच्छ । साथा-हिन्दी, संस्कृत । ले $\bullet$ काल  $\times$  । पूर्णा चेष्टन स०५६४ ।

विशेष — स्तोत्र, जीगीरासा, नाममाला ग्रादि का सम्रह है।

**६१६४. गुटकासं० ४**७ । पत्र स० १२४ । द्या० ४×५ इचा माषा∹हिन्दी, संस्कृत । ने∘काल × । पूर्ण । बेहनस० ४६६ ।

विशेषनिम्न पाठे	का संग्रह है—	
नेमिनाथ रास	मुनि रत्न कीर्ति	हिन्दी
भक्तामर स्तोत्र	मानतुं ग	संस्कृत
कल्यारा मन्दिर	कुम्दचन्द	,,
एकीभाव	वादिराज	,,
विषायहार	धनंजय	,,
नेमिनाथ वेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी
भादिनाथ विनती	सुमतिकीर्ति	,,
मनकरहा जयमाल		0

**१९६५. गुटका सं० ५**८ । पत्र सं० २०३ । स्रा॰  $- \frac{1}{4} \times 4$  इत्थ । भाषा —सस्कृत, हिन्दी । ते॰ काल स० १६६६ । पूर्ण । बेहन सं० ५६७ ।

निस्न पानों का संग्रह है -

कालावलि			_
चन्द्रगुप्त के स्वप्न	<b>॥०</b> राममल्ल	हिन्दी	
चौबीस ठ।गा			
खियालीस ठाएगा		,.	
कर्मों की प्रकृतिया		**	
तत्वार्थं सूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	
पचस्तोत्र		,,	_
प्रयान रास	ब० रायमल्ल	हिन्दी	ले० काल स १७०४
सुदर्शन गस	"	"	र०काल स०१६३७

६१६६. गुटका सं० ५६ । पत्र स० ११४ । घा० ६४४ इत्ता। भाषा—सस्कृत,हिन्दी। विषय-स्यहाले० काल स०१६४७ फायुए। सुदी ११ । दुर्गावेष्टन सं० ५६ ⊏ ।

निम्न प्रकार संग्रह है---

संक्षेप पट्टावलि	_	
मूत्र परीक्षा		ले०काल स्४० १८२६
काल ज्ञान		
उपसर्गहर स्तोत्र		
मक्तामर स्तोत्र	भा० मानतुंग	
<b>धा</b> युर्वेद के नुस्के		-

**६१६७. गुटका सं**०६०। पत्रसं० १५२। द्या० ६ $\times$ ५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी, संस्कृत । क्रेक्शक्त  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स०५९६ ।

विशेष--- मक्तामर स्तोत्र भाषा एवं धन्य पाठों का संग्रह है।

६९६ ⊏. सुटकासं० ६१ । पत्र सं०१४० । घा०६ ४६ इञ्च । भाषा हिन्दी। ले०काल सं∙ १ ⊏६० प्रासोज मुदी ⊏ । पूर्ण। वेष्टन सं० ६०० । विशेष — प्रायुर्वेद शास्त्र माषा है। ग्रन्थ प्रच्छा है। ग्रन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री दुजुलपुराखे वैद्य शास्त्र भाषा हकीम फारसी संस्कृत ममूत विरचते चुरन समापिता।

**११६६. गुटका सं०६२। पत्रसं०३**५। ग्रा० ७×५ इश्वा मापा-हिन्दी । र०काल × । ले•काल स०१६३६। पूर्णे। वेहनसं०७५१।

विशेष — पं॰ खुशालचन्द काला द्वारा रचित व्रत कथा कोष मे से दशलक्षरा, शिखरजी की पूजा, कथा एवं सगन्य दशमी कथा है।

**६२००. गुटकासं०६३ ।** पत्रसं०१७५ । म्रा० ७४५ इश्वा । भाषा−हिन्दी । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४२ ।

# निम्नपाठों का संग्रह है-

Intertation and table 6.			
धर्मबृद्धि पाप बुद्धि चौपई	जिनहर्ष	हिन्दी	र०काल म० १७४२
मालिमद्र चीपई	जिनराज सूरी		१६७=
चन्द्रलेहा चौपई	रामबल्लभ	,,	१७२८
			श्रासीज सुदि १०
हसराज गच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	11	ले० काल स०१ द६२ ।
मृबनकीर्तिके शिष्य पं०गगाराम	ने प्रतिलिपि की शी।		
कानडरे कढियारा ।		,,	१७४७
म्गी सवाद चौपई		n	अपूरम्
•			

**६२०१, गुटका सं० ६४ । ण्यस०** १४६ । ग्रा० ७ ४ ५<sup>3</sup> दश्व भाषा⊸क्रिकी सस्कृत । ले∘काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५३ ।

**विशेष**---पूजा स्तोत्र एव पदों भादि का सग्रह है

**६२०२. गुटका सं० ६४ ।** पत्रसं∙ १६ । ब्रा•७×५ इश्वा । भाषा-मस्कृत हिन्दी । ले०काल × । पर्यो बेष्टन स० ७४४ ।

विशेष--व्याउला भावद समूह सम्रह है। धानु एव गव्द लिखे गये है।

**६२०३. गुटकासं०६६।** पत्र स० ८४। घा० ६×६ दश्वा भाषा -हिन्दी । ले०काल स० १८४४। पूर्णा वेष्टन स० ७५६।

विशेष--बसतराम साह द्वारा रचित मिध्यात्व लटन नाटक है।

**१२०४. गुटका स०६७** । पत्रम० १४२ । ग्रा० ⊏ै्र×४्रे इच । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । बेहन स०७५७ ।

विशेष-ग्रायुर्वेदिक नस्त्रों की महत्वपूर्ण सामग्री है।

**६२०५. गुटकासं०** ६ च। पत्र स०१६४ । ब्रा०६<sup>2</sup>, ४४, द्वचा मावा⊣संस्कृत । ले•काल सं•१६४१ । पूर्णावेष्ठन स०७५८ ।

विशेष - ग्रनुभूति स्वरूपाचार्य की मारस्वन प्रक्रिय। है।

प्रशस्ति - निम्न प्रकार है--

संवत् १६४१ वर्षे मादवा सुधी १३ सोमवातरे घनिष्ठानकात्रे श्री प्रतसमे बलात्कारमणे सरस्वती सम्बेत न्यामाये २० पघनितदेवा तराष्ट्रे मे ० ग्रुनमहरेवा तराष्ट्रे मे ० जिनकन्द्रदेवा तराष्ट्रे मे ० प्रप्राचन्द वेवा द्वितीय निष्य रत्नकीतिदेवा तराष्ट्रे महत्वाचार्य श्री प्रुवनकीतिदेवा तत् निष्य श्री जयकीतिदेवा सारस्वत प्रक्रिया निल्लापित् । निलला कालकाभरी छाउका ।

**१**२०**६. गुटकासं० ६९ ।** पत्रस० ६६ । म्रा० ६ $imes imes imes_{7}^{2}$  इश्वा । साथा—हिन्दी । ले०काल imes । पूर्णा । वेस्टन स० ७४६ ।

विशेष — निम्न प्रकार सम्रह है। कल्यारा मन्दिर भाषा, नेमजी की विनती एव कानड कढियारानी चौपई मादि का संग्रह है।

६२०७. गुटका स० ७०। पत्रसं∘ २७ । म्रा० ७ x ४ ॄै इञ्च । भाषा−हिन्दी । ले∙काल x । पूर्णे । बेष्टन स० ७६० ।

विशेष--- श्रायुर्वेदिक नुस्खो का सग्रह है।

**६२० म. गुटका सं० ७१** । पत्रस॰ ३२२ । घा॰ ५ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इ.च. । माषा-सस्कृत हिन्दी । ले॰काल imes । पूर्ण । बेष्टून स० ७६१ ।

विशेष—तत्वार्थमूत्र, स्तोत्र पद्मावती स्तोत्र, कथाश्रो, मुक्तावलीराम (सकलकीति) सोलहकारए। राम (सकलकीति) धर्मगरिए, गौलमध्टच्छा द्यादि का सम्रह है।

**६२०६. गुटका स० ७२ ।** पत्र सं० ६८ । आ ० ६imes४ ६ञ्च । भाषा –हिन्दी प्राकृत । ले०काल स० १८५३ कार्तिक मृदी २ । पूर्ण । बेप्टन स० ७६२ ।

विशेष--मामायिक पाठ एव आप्तमीमासा (मूल) आदि का सग्रह है।

€२१०. गुटकासं० ७३ । पत्रस० ४० । ग्रा० ४ × ४ इ.चा। भाषा−हिन्दीसस्कृत । ले० काल ४. । पूर्णा । बेष्टन स० ७६३ ।

विशेष -- बत विधान, एव त्रिपचाशतिकया बतोद्यापन तथा क्षेत्रपाल विनती है।

**६२११ गुटकास**० ७४ । पत्रस० ३० । ग्रा० ६×५ इश्वा । भाषा−हिन्दी । ले०काल सं∙ १८६८ मगमिर बुदी १३ । पूर्णा । वेष्टनस० ७६४ ।

विशेष---निम्न पाठो का साग्रह है---

शत्रुं जय मडल, भ्रादिनाथ स्तवन (पासचन्द सूरि) है।

६२१२. गुटकासं० ७५ पत्रसं० २६ । घा० ५ × ३ इचा । भाष—हिन्दी । ले∙काल × । पूरा बेष्टन स० ७६५ ।

विशेष---मुभाषित पद्यों का संग्रह है। पद्य सं० १६६ है।

**६२१३. गुटका सं० ७६** । पत्रस० ५१ । द्या० ६ $imes imes^2$  इश्वा । भाषा-हिन्दी । ले०काल imes । कृष्यं । बेष्टन स० ७६६ ।

विशेष---निम्न पद्यों का संग्रह है--

नेमिनाय स्तवन रूपचन्द हिन्दी बिनती रामचन्द्र "

द्म त्मसंबोध		हिन्दी
राजुलय पश्वीसी		,,
विवरी	वालचन्द	,,
उपदेशमाला		,,
राजुलकी सज्भाय	_	n

 $\xi$ २१४. गुटकासं० ७७ । पत्रस० १०३ । प्रा० ६imes४ ६%। माषा-हिन्दी । ले॰काल imes । पूर्णे । बेष्टन स० ७६८ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठी मावि का सम्रह है।

**६२१५. युटका सं**० ७६ । पत्र सं० १७० । स्रा० ४ $\frac{3}{7}$  $\times$ ६ इ.ख.। माया-हिन्दी, सस्कृत । के०काल imes । पूर्ण । बेठन स० ७६६ ।

विशेष—निमन पूजा पाठो का संग्रह है देवसिद्ध पूजा, सोलहकारए। पूजा, कलिकुंड पूजा, चिन्ना— सरिए पूजा, नन्दीश्वर पूजा, गुरावली पूजा, जिनसहस्र नाम (जिनसेनाचार्य) एव धन्य पूजाए ।

**६२१६. गुटका सं० ७६ । पत्र स**० १६२ । म्रा० २ $^1_2 \times y^1_3$  इ.खा माषा-हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पूर्यों । बेष्टम सं० ७७१ ।

<b>विशेष</b> निम्न पाठों व	नासग्रहहै—	
स्तभनक पार्श्वनाथ नमस्कार	संस्कृत	ग्रभयदेव नुरि
धजितशांति स्तवन	71	नन्दिपेरा
ग्रजित शांति स्तवन	,,	
मयहर स्तोत्र	n	
ग्रादिसप्त स्म रए।	हिन्दी	_
मक्तामर स्तोत्र	सस्कृत	मानतु गाचार्यं
गौत्तम स्वामी राम	हिन्दी	र०काल स० १४१२
नेमिनाथ रास	,,	
नेमीश्वर फाग	"	****
	(श्वेताबरीय पाठों का सम्रह है)	

६२१७. गुटकास० ८०। पत्रस० १४२। मा० ८×७ इञ्च। मावा—सपभ्रंता । पूर्स। के∘काल × । पूर्स। बेहन स०७७२।

विशेष — महाकवि घनपाल की मविसय कहा सम्रहीत है इसकी लिपि स० १६४३ ज्येष्ट सुदी भ को नई थी।

मेदतीपुर शुभस्यानो मङलाचार्य धर्मकीर्ति देवान्नाये खन्डेलवालाम्बये पाटनी गांत्रे भार्यका श्री सीक्षत्री का पठनार्थ ।

**६२१८. गुटका सं०।** पत्रस० ६-१०२। स्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ३ $\frac{1}{2}$  इञ्च। भाषा-हिन्दी। से•काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनसं० स० ७७३।

विशेष-हिन्दी के सामान्य पाठो का सम्रह है।

६२**९६ गुटका सं**० द**२ ।** पत्रसं० १२४ मा० द<sup>3</sup> ×६३ इञ्च । भाषा−हिन्दी (पदा) । ले०कास × । पुर्सं। बेहन स० ७७४ ।

विशेष ---पं० दीपचन्द रचित भारमवलोकन ग्रंथ है।

६२२०. गुटका सं० द३। पत्रसं० २४४। प्रा० ५×७ ६ञ्च। भाषा–हिन्दी-संस्कृत। ले०काल सं०१६४० चैत सुदी १। पूर्ण। बेष्टन सं० ७७४।

# विशेष - निम्न पाठों का सम्रह है-

जिनसङ्स्रनाम	संस्कृत	माशाधर
पच स्तोत्र	,,	
रत्नकण्ड श्रवकाचार	,,,	समन्तभद्र
तत्वार्थसूत्र	,,	उमास्वा <i>मा</i>
जीवसमास	हिन्दी	
गुरास्थान चर्चा	,,	
चौबीस ठागा चर्चा	,,	
भट्टारक पट्टावली	,,	******
खण्डेलबाल श्रावक उत्पत्ति बर्गान		
वतो का ब्योग	"	
पट्टावली	,,	
-	,,	

६२२१. गुटका स० ६४ । पत्रस० ६६ । स्ना०७imes५ इ.स. । भाषा-हिन्दी । ले•कालimes । पर्गा । बेप्टनम० ७७६ ।

विशेष--सामान्य पाठो का सम्रह है।

६२२२. गुटका सं० ६५ । पत्रस० ४६ । घा० ६ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ इश्व । भाषा-पुरानी हिन्दी । ले०काल स० १५६० चैत्र मुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन सं० ७७७ ।

# विशेष--- निम्न पाठो का संग्रह---

उपदेशमाला	घर्मदासगरिए
शीलोपदेश माला	जयसिंह मुनि
संबोह सत्तरि	जयशेखर
सबोध रसायरा	नयचन्द्र भूरि

प्रशस्ति--- निम्न प्रकार है----

सवत् १४८० वर्षे चैत्र बुदी ६ तिथौ वा॰ श्रीसागर शिष्य मु॰ रत्नसागर निस्ततं श्री दाङ्गाएँ स्थानतः श्री होरु कृते एपा पुस्तिका कृता ।

**६२२३. गुटका स० ६६ ।** पत्रस० ७६ । मा० ६<sup>3</sup>, ४६ इचा भाषा⊸हिन्दी-सस्कृत । ् से•काल स०१८१७ इ० सावए। सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ७७८।

विशेष — निम्न प्रकार संग्रहहै-

बायुर्वेदिक नुस्के ─ हिन्दी पत्र ११२-

जिनपंजर स्तोत्र	कमलप्रभ सुरि	संस्कृत	<b>१</b> ३
शातिनाथ स्तोत्र		"	8x-8x
वर्द्ध मान स्तोत्र		"	१५
पार्श्वनाथ स्तोत्र	पद्मप्रभदेव		१६–१७
चौबीस तीर्थकर स्तवन		हिन्दी	१८२४
ग्रादित्यवार कथा		,,	₹ <b>४-</b> ४
पार्श्वनाथ चिन्तामिए रास		,,	8X-8c
उपदेश पच्चीसी	रामदास	"	¥ 2 − ¥ ₹
राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल	79	५४–६२
कल्याए। मन्दिर भाषा	बनारसीदास	11	<b>६२-७</b> ०

६२२४. गुटका सं० ८७ । पत्रस॰ ४४ । ब्रा॰ ७ × १ इन्हा । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले॰काल स० १८३४। पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ७७६।

विशेष-मूख्य निम्न पाठो का संग्रह है-

भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगा वार्य	सस्कृत
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी
द्यादित्यवार कथा	मु० सकलकीर्ति	हिन्दी
		(र०काल स १७४४)
<b>कपरापच्चीसी</b>	विनोदीलाल	हिन्दी

विशेष-पादित्यवार कथा ब्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है-

## धादिभाग--

धय धादित्यवार वृत की कथा लिखते ---प्रथम सुमरि जिनवर चौबीस, चौदहरी त्रेपन जेसूनीस । सुमरो सारद भक्ति धनना, गुरु देवेन्द्रकीर्ति महत । मेरे मन इक उपज्यो भाउ, रविव्रत कथा कहन की चाउ। मैं तुकहीन जुबक्षक करी तुम गृतीवर कवि नीकै घरौ। ×

ग्रन्तिम पाठ---

हा जू सवत् विक्रमराइ भने सत्रहरी मानी। ता ऊपर चवालीस जेठ मूदी दशमी जानी। बारु जुमगलवार हस्तून छित् जुपरीयौ। तब यह रविव्रत कथा मुनेन्द्र रचना मुझ करीयी। बारबार हो कहा कही रवित्रत फल जुझनन्त । घरनेद्रे प्रभुदया करी दीनी लख्डि ग्रनन्त ।।१०६॥ गर्गगोत ग्रग्रवाल तिहुनगरी के जो वासी। साहुमल कौ पूतु माहु भाऊ बुधि जुनासी ।

तिन जुकरी रिवयत कथा मली तुर्के जुमिलाई। तिनिक बुधि मैं कीजियौ सोवे पूरे गुनवंत।

कहत मुनिराइज्, सकलकीर्ति उपदेश सुनौ चतुर सुजानजू ॥१०७॥

इति श्री ब्रादित्यवार व्रत की कथा सपूर्ण समात । लिखित हरिकृष्ण्यास पठनार्थ साला हीरार्मान ज्येष्ठ बुदी ६ सं० १८३४ का ।

६२२५४. गुटकास० मन । पत्रस० ४६ । झा० ⊏ 🗙 ६ इश्वर। माषा−हिन्दी । ले० काल 🗙 । . पूर्णं। बेष्टन सं० ७=० ।

विशेष — प्रस्ताविक दोहा, तीर्थंकर स्तुति, अट्टारक विजयकीर्ति के शिष्यों का ब्योरा, अट्टारक पट्टा-वसी एवं पद समृह ग्रादि है।

**६२२६. गुटकासं० ⊏६** । पत्र स० ४–२६ । घ्रा० ⊏×६ इश्वा।भाषा-हिन्दी। ले०काल × । घ्रपूर्ण। वेष्टन स० ७६१।

विशेष-- भृंगार रस के ३६ से ३७६ तक पद्य है।

६२२७. गुटकासं०६०। पत्र स०६०। म्रा० द×६ इचा । सावा−संस्कृत-हिन्दी । ले∙काल × । पूर्णा । वेष्टन स०७ प्रदर ।

विशेष—सोलहकारण भावता, पट्डव्य विवरण, पट्लेखा गाथा, नरक विवरण, प्रंतोक्य वर्णन, रामाष्ट्रक, नीमनाथ जयमाल, नदीव्यर जयमाल, नवपदार्थ वर्णन, नीतिसार (समय भूषण), निदताद्य छ्रद जिमगी, प्रायण्यिन पाठ ग्रादि पाठो का सम्रह है।

६२२ द. **गुटकासं**० ६**१** । पत्रम० ७६ । ग्रा० ७imes६२ च । भाषा–हिन्दी । २०काल imes । पूर्ण। वेप्टन स० ७६४ ।

**विशेष — व**० रायमल्ल की हनुमत कथा है ।

६२२६. गुटकासं०६२ । पत्र सं०१०७ । ग्रा० ७१४४ इ.चाभाषा-हिन्दीयस्कृत । ले०काल x ।पूर्णावेष्टनस०७८४ ।

विशेष--नित्य नैमित्तिक पूजाओं का सग्रह है।

 $\mathbf{c}$ २३०. गुटका सं० ६३ । पत्रस० ४४ । स्ना॰ ८ $imes imes imes^2$  इच्छ । माषा-हिन्दी । र०काल imes । के०काल imes । पूर्णा वेष्टन स० ७८६ ।

विशेष — धनेक कवियो के पदों का सग्रह हैं।

**६२३१. गुटकासं०६४।** पत्रस० १३०। घा०५१,×६६व। माघा हिन्दी–सस्कृत। से∙कास × । पूर्ण।वेष्टन स०७६७।

विशेष-सस्कृत एव हिन्दी में सुभाषित पद्यों का सग्रह है।

६२३१. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० २–३४ । ग्रा० ४ $\frac{1}{5}$ imes५ इंच । भाषा–सस्कृत । ले॰काल imes । पूर्ण । बेट्टन स० ७६६ ।

विशेष--- आयुर्वेद के नुस्खों का संग्रह है।

६२३३. गुटकासं० ६६ । पत्र स० १२६ । घा० ६×४ हे इ.च । माया-हिन्दी । ले०काल सं० १७५० ग्रासीज सुदी १ । । पूर्ण । वेष्टन सं० ७-६ । विशेष--निम्न प्रकार संग्रह है :--

पंचस घि (प्रक्रिया कौमुदी) समयसुन्दर के पर एवं दानशीलतपशावना नेमिनाय दारहगाता, झान-पञ्चीसी (बनारसीदान) क्षमाछतीसी (समयसुन्दर) एवं विभिन्न कॉवयों के पदों का संग्रह है गुटका संग्रह की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

**६२३४. मुटका सं० ६७** । पत्र सं० ३१२ । द्या० ६३ ४ ५ इ.च.। भाषा—हिन्दी-संस्कृत । के•काल सं० १७०२ साह बदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६० ।

विशेष-जोबनेर में प्रतिलिपि की गई थी। निम्न रचनाम्रो का सामह है।

पजस्तोत्र, तस्वार्थमूत्र, गुणुस्चानचर्चा जोगीरासा, बड़ा कल्याएक, झाराधनासार, चूनड़ीरास (विनय-चन्द्र), चौबीसठाण, कर्मक्रति (नैमिचन्द्र) एव प्रजाभो का सम्बद्ध है ।

**६२३५. शुटका सं० ६८ । पत्र**सं० २२६ । मा० ८ x ४३ ६ श्वा । भाषा−हिन्दी । र०काल x । के०काल x । पूर्ण । वेहन सं० ७६२ ।

विशेष - इ॰ रायमल्ल की हनुमत कथा है।

६२३६, गुटकासं०६६। पत्रसं०१८०। ग्रा०६४५ इ.च। माया-सस्कृत-हिन्दी। के•काल स०१६४२ फालगुण सुदी१ पूर्ण। वेष्टन स०७६३।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है---

प्रतिकमस्य — पत्र सं० १-६१ गुर्वोदली — पत्र सं० ६२-६५ भ्रारायनासार — — नेषकुमारगीत (पूनो) — — इत्यादि पाठो का समझ है।

**६२३७. गुटका सं० १००**। पत्रस० १८४। ग्रा० ७ × ४ है इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत **३** के•काल स० १४७६ माघ मुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ७६४।

विशेष - भयरोठा ग्राम में लिखा गया था । निम्न पाठों का सम्रह है-

स्यूलभद्र फागु प्रबन्ध		प्राकृत	२७ गाथा
उपदेश रत्नमाला		,,	२४ ,,
द्वादशानुप्रेक्षा		.,	¥¥ "
परमात्मश्रकाश	योगीन्दु	ग्रपभ्रं ग	३४२ पद्य
		(ले० व	गल स॰ १५६१ म्रापाढ ब्दी <b>१</b> )-
प्रायश्चितविधि	-	गस्कृत	
दशलक्षरा पूजा		श्रपभ्र स	
सुभाषित	सकलकीति	संस्कृत	३९० पद्य
दादणानपेश्वा	fazza	Great Control	

६२३ म. मुटका सं०१०१ । पत्रस०३१६ । धा०१२imes४ हुन्छ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । क्षेत्रकाल imes । पूर्ण । बेष्टन स०७६५ ।

विशेष -- सामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्रों के अतिरिक्त निम्न महस्वपूर्ण सामग्री ग्रीर है--

विश्वभूषरा भ्रष्टाह्निका कथा विनयकीर्ति ब्रष्टाह्निका रास धनन्तचत्रदंशी कथा भेक र० काल सं० १७८७ चौरासीजाति की जयमाला व० गुलाल दशलक्षरा कथा **ग्री**सेरीलाल र० काल सं० १७८८ धादित्यवार कथा पूष्पाञ्जलि कथा माचार्यं गुराकीतिका शिष्ट्य सेवक सुदर्शन सेठ कथा र० काल १६६३ मृगांकलेखा चउपई र० काल सं० १८२५ मानुबन्द सम्यक्त कीमुदी चौरासी जाति की जयमाल **ब**० गुलाल

भादि भन्त भाग निम्न प्रकार है —

दोहा — जैन मर्मे तेपन किया दयाधर्म संयुक्त । इध्वाक के कुल बंस मैं तीन ज्ञान उत्तपत्त ।। मया महोखब नेम की जूनागढ गिरिनार । ज्ञान चौरासी जैनमत जुरे छोहनी चार ।।

#### ग्रन्तिम पाठ---

प्रगटे लखमी मोई धमं लगे।

किंग जय्य विधान पुरास कर दान निमित्त धनै करके क्रम वई । मुभ देहरे जॅन मृबिक प्रतिष्ठा सुभ मण जन सुमन रवजे ।। क्षयभा कोई कारस मनल चारसा विवाह कुटक पनत पर्ग । कहि बह्म गुनान गर्ड लसो मैं प्रगट नक्सी सोई धर्म सर्ग ।। इति श्री चौगसी जाति की जयमाल सम्पूर्स ।

६२३६. युटकास० १०२ । पत्रसं० ४४ । ग्रा० ७×४ ३ इञ्च । भाषा−हिन्दी । ले०कास × ।पूर्ण । बेष्टनसं० ७६६ ।

विशेष -- महापुराण च उपई (गंगादास) एव धन्य पाठों का संग्रह है।

**६२४०. गुटका सं० १०३ ।** पत्र सं० ३६ से ५४ । म्रा० ६imes ४ इन्य । माया-सस्कृत । लेल्कासimes । पूर्ण । वेप्टन स० ६६७ ।

विशेष-दारुए सप्तक एव महापुराए। में से ग्रभिकार कल्प है।

**८२४१. गुटका सं० १०४ ।** पत्रसं० २२६ ।धा० ६ $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ $\frac{1}{7}$  इत्र । भाषा-हिन्दी-प्राकृत—सर्हत । ले० काल  $\times$  । पर्ए। वेष्ट्रन सं० ७६६ ।

विशेष - मूरुयतः निम्न पाठों का संग्रह है।

मकामर स्तोत्र मानतु गावार्य संस्कृत तत्वार्षे मुत्र उमास्वामी "

र०कास (सं० १६६०)

समयसार नाटक बनारसीदास हिन्दी बैद्यमनोत्सय नयनभुख "

६२४२. गुटका सं० १०५ । पत्रस०३६ । मा० ६imes६३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८४४ सावस्य सुदी ५ । पूर्ण । बेष्टन सं० ७६६ ।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है----कपराजगावरा (ब्र॰ गुलाल) सामयिक पाठ तथा जोगारास ग्रादि ।

कृपराजगावरा (इ.० गुलान) समियक पाठ तथा जागीरास धादि।

६२४३. **गुटकासं० १०६** । पत्रस० १४६ । घा० ७×६ इ.चा । स्रापा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णा। वेप्टन स० ६०० ।

विशेष---निम्न पाठी का संग्रह है---

मधुमालती कथा चतुर्भुजदास हिन्दी पद्य स० ६१६ प्रमोपालरी बात लेककाल सक त० १८३१ बीरविलास नयमल हिन्दी साबित्री कथा — हिन्दी गद्य

लेक्सल मक स० १८४५ ६२४४. गुटकासं० १०७ । पत्र सं०२० से ३६ । घा० ७×६ इला । भाषा–हिन्दी ।

वैद्यमनोत्सव कथा, मगकपोत कथा एव चन्द्रनमन्यागिरि कथा ।

**६२४५. गुटका सं० १०८** । पत्र स० १४-१२८ । ग्रा० ४४६ इश्व । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०२ ।

विशेष --सामान्य पाठों के धतिरिक्त निम्न पाठो का सग्रह है---

योगीन्द्र परमारम प्रकाश सप्ततत्वगीत चउदह गुरगगीत बाहबलि गीत कल्याराकीति नेमिनास बेलि ठक्कुरमी पंचेन्द्रीबेलि ठक्कूरसी पद ठक्कू रसी दप बचा बमराां गीत वर्मकीर्ति गीव मुवनकीति गीत विशासकीति गीत जसकीति गीत

नेमीस्बर राजुल गीत जयकीति गीत रत्नकीर्ति

६२४६, गुटका सं० १०६ । पत्रस० ११८ । धा० द x ४ ६०व । साथा -हिन्दी । ले∘काल सं० १७४४ चेत नही १। पूर्ण । बेहन सं० द०३ ।

विशेष -- रविवत कथा (माउ) पंचेन्द्रीवेलि, एव कक्का बत्तीसी भादि पाठों का संग्रह है।

**६२४७. गुटकासं० ११०।** पत्रसं०४०। ग्रा०६×५६७४। भाषा–सस्कृत। ले०कास ×। पूर्यो । बेष्टनसं०⊏०४।

विशेष-सामान्य पाठी का संग्रह है।

६२४ द. गुटकासं० १११ । पत्रसं∘ १४२ । मा∘ द×५३ इ.च.। भाषा-हिन्दी। ले∘काल × । पूर्ण। बेष्टनसं∘ ८०४ ।

विशेष-पजाएं, स्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, कर्मप्रकृति विधान (हिन्दी) ग्रादि पाठों का साँग्रह है।

६२४**६. गुटकासं०११२ ।** पत्र सं०६० । घा० द×४२ॄँ इच्च । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । पूर्णा वेष्टन स० द०६ ।

विशेष-गृटका जीएाँ है। धायुर्वेदिके नुस्खों का संग्रह है।

६२५०. गुटका सं०११३ । पत्र सं०७ । घा० म ४६ ६ खा । भाषा - हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्मा । वेष्टन स० म०७ ।

विशेष -- धर्मवृद्धि पापवृद्धि चौपई एव ज्योतिससार माषा का साग्रह है।

६२**४१. गुटका स० ११४** । पत्रम० ६३ । घा० प×७ द्वै इञ्च । भाषा−हिन्दी । ले०काल स**०** १७१७ पौष सुरी १ । पूर्मा । बेष्टन स० प०द ।

विशेष - भूधरदास कृत पाक्वंपूराण है।

६२५२. गुटकासं० ११५ । पत्र सं० ६४ । द्या० १० ४४ इञ्च । भाषा−हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्णं । बेष्टनस० २०६ ।

विशेष - सामान्य चर्चाओं के अतिरिक्त २५ आर्यदेशों के नाम एव अन्य स्फूट पाठ हैं।

६२५३. गुटका स॰ ११६ । पत्रस॰ १७४ । घा॰ ५imes४ ६ ख । भाषा-हिन्दी । ले॰काल imes । पूर्ण । बेप्टन स॰ ६१० ।

विशेष—वनारसीविलास, समयसार नाटक, सामायिकपाठ भाषा तथा भक्तामर स्तोत्र धादि का संग्रह है।

६२,५४ - युटका सं०११७ । पत्रस०१३८ । घा०१० $\times$ ५ इ.च । भाषा-हिन्दी । ले० कास सं०१८२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन सं०६११ ।

विषय-वनारसीदास कृत समयसार नाटक तथा धन्य पाठ विकृत लिपि में हैं।

६२ प्रप्तः मुदकासं०१ १६ । पत्रसं०१ ५० । मा॰ ६ रे ४६ है इञ्च। भाषा−हिन्दी−संस्कृत ३ कें•काल × । पूर्या । बेष्टनसं० ६१२ ।

विशेष---निम्न पूजाओं का संबह है--

सहस्रगुरिगत पूजा	मुभ चन्द्र	संस्कृत
सोलहकारण पूजा		,,
दञ्चलक्षारा धर्म पूजा		,,
कलिकुण्ड पूजा	-	,,
कर्मदहन पूजा	<b>गु</b> स चन्द्र	,,
धर्मधक पृजा	_	,,
तीस चौबीसी पूजा	<b>गुभच</b> नद्र	,,

इनके मतिरिक्त प्रतिष्ठा सम्बन्धी सामग्री भी हैं।

**६२५६. गुटकासं०११६ ।** पत्र सं०१४६ । ग्रा० प×७ इचा। प्रावा⊸हिन्दी–संस्कृत । ले∘काल ×। पूर्णा। वेष्टन स० प१३ ।

विशेष-सामान्य पूजा स्तोत्र एवं पाठों का सम्रह है।

**६२५७. गुटका सं० १२०**। पत्रसं० ४१। ग्रा० ⊏४५<sup>5</sup>ृद्वश्वः । माया∹संस्कृत−हिन्दी । ले०काल ⋉ । पूर्णा वेष्टनस० =१४।

विशेष - दर्शन पाठ, कल्यामा मन्दिर स्तीत्र एवं समाधान जिन वर्णन ग्रादि पाठों का संग्रह है।

६२**५८. युटकासं० १२१ ।** पत्रसं० २४ । **ग्रा**० ४३,४५ इञ्च<sub>र</sub>। भाषा-सस्कृत । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ६१४ ।

विशेष--कष्टाविल, गतवस्तु ज्ञान, श्रीकविचार, कालसारा एवं तिथि मत्र श्रादि है।

**८२४.६. गुटका सं**०१२२ । पत्र सं० ८६ । म्रा० ४६ ४४ दृष्य । भाषा~हिन्दी संस्कृत । नि∘काल सं०१८६ । पूर्ण । बेष्टन सं०८१६ ।

विशेष---नित्य पूजा पाठों का सम्रह है।

६२६०. **गुटका लं० १२३** । पत्रसं० १६२ । श्रा०७×६ इञ्च । सामा−हिन्दी । ले०काल सं० १८६७ क्येष्ठ बुदी १३ पूर्ण । केप्टन सं० ६१७ ।

विशेष-नाटक समयसार (बनारसीदास) तत्वार्थ सूत्र, श्रीपाल स्तुति झादि का संग्रह है।

**६२६१. गुटका सं० १२४ ।** पत्र स० १४७ । झा० ६ $\times$  ३ है इन्जा। भाषा—संस्कृत, हिन्दी। से० काल  $\times$  । पूर्ण। बेष्टन सं० ६९८ ।

विशेष--गुटके में स्तीत्र, अक्षरमाला, तत्वार्थसूत्र एवं पूजाओं का संग्रह है।

**१२६२. गुटका सं० १२५ ।** पत्रस० १२६ । घा० ७ $\frac{3}{4} \times Y_0^2$  इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । से**० काल ×**ापूर्ण । वेष्टन स० ६२० ।

श्रिहेख—जिनसहस्रनाम (धाणाधर) एवं घंकुरारोपस, नकलीकरस विधान तथा ग्रन्य पाठं। का संबद्द है ∤

हरु६३, बुटका सं०१२६। पत्र सं०१५३। सा० ४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृतः। ले० काल ×। पूर्णाः बेष्टन सं० =२१।

विशेख — सामविक पाठ, तत्वार्यसूत्र, समयसार नाया, भाराधनासार एव समन्तभद्रस्तुति का संबद्ध है।  $\xi = \xi \xi$  , युष्टका सं० १२७ । यत्र सं० १४६ । घा०  $\xi \times \xi$  दश्व । माथा-संस्कृत । क्षे॰काल  $\times$  । पूर्व । बेष्टन सं० २२२ ।

विशेष---पूजाओं का संग्रह है।

**१२६५. गुटकासं० १२६**। पत्रस० ४२ । ग्रा• ६×६ इला। भाषा-हिन्दी। ले० काल×। पूर्णै। बेष्टन सं० ६२३।

विशेष-सुन्दरदास कृत सुन्दर शृंगार है।

**६२६६. गुटका सं०१२६ ।** पत्र सं०६–६२ । घा० ५३,४४ इ**.स.। भाषा**-सस्कृत । ले० काल メ । ध्यपूर्णा विष्टन स०६२४ ।

विशेष--रत्नावली टीका एवं शकदेव दीक्षित वार्ता (श्रपुर्गा) है।

**६२६७. गुटकासं०१३०।** पत्रस०६०। घा० ६ $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इश्वः। माधा-हिन्दी। र०काल imes। लुर्णः। बेष्टन स० ५२६।

विशेष--हिन्दी पद संग्रह है।

**६२६⊏. गुटकासं०१३१** । पत्र स०२४ । झा> ७१<mark>२४ ३ इत्था। औषा</mark>-हिन्दी। ले०काल ४ । पूर्णाविष्टनसं० ६२७ ।

विशेष -- हंमराज बच्छराज चौपई है।

**६२६६. गुटका सं० १३२** । पत्र स॰ ६६ । आ॰ ६imes५ इश्वर । से॰काल imes । पूर्गा । बेष्टन स॰ ६२६ ।

विशेष---नेमिक्मार बेलि, सामायिक पाठ, मिक्पाठ एवं गूर्वाविल स्नादि पाठों का संग्रह है।

 $\epsilon$ २०७०. गुटकासं० १३३ । पत्रसं० ५६ । आर्थ ५ ५ ५ ६ अर्थ । भाषा-हिन्दी । ले० काल imes । पूर्ण । बैष्टन सं० ५३० ।

विशेष--- निम्न पाठीं का संग्रह है---

कोकसार, रसराज (सनीराम) एव फुटकर पद्य, हष्टात शतक, इन्क चिमन (महाराज कुवर सावत सिंह) भादि रचनाभ्यो का संग्रह है।

६२७**१. गुटका सं० १३४। पत्रसं०** १६८। ग्रा०६३ ४४ $\xi$  टब्ल् । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेस्टन स० १८३३ ।

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है--

मंत्र तंत्र, ग्रादित्यवार कथा, जैनबद्री की पत्री, चौदस कथा (टीकम) ।

**६२७२. गुटका सं०१३४. ।** पत्रसं०२२८ । श्रा०५×४ इञ्च। मावा-सस्कृत≁हिल्दी। से० काल × । पूर्ण । **बेहनसं०** ६३२ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठों का संप्रह है।

६२७३. गुटका सं०१३६ । पत्रसं०१०० । घा० ६imes४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० कास imes । पूर्ण । बेष्टन सं० =३६ ।

विशेष--सामान्य पाठीं का संग्रह है।

६२७४. **गुटका सं०१२७**। पत्र सं०६४ । झा०७×४३ इ**चा।** मामा - हिन्दी। ले० काल सं०१⊂१० बैगाल सुदी ४। पूर्ण। वेष्टनसं०⊏३७।

विशेष--- निम्न रचनाओं का सम्रह है---

श्रीपालरास---व्र० रायमल्ल

प्रद्युम्नरास -- इ० रायमल्ल

**१२७४. गुटकास० १३** स्वापत्र सं० ११४ । झा० ६×५ इथा। भाषा−हिन्दी। **ले∘काल** × । पूर्णा। वेष्टन स० स३ स्वा

इक्वरीस्त्रद कदिहेम

स्यूलभद्र सज्भाय ---

पंचसहली गीत छीहल बलभद्रगीत श्रभयचन्द्रमृरि

भ्रमर मुन्दरी विधि —

चेतना गीत समयसन्दर

सामदिक शास्त्र भाषा ---

इसके श्रतिरिक्त ज्योतिय सबधी साहित्य भी है।

**६२७६. गुटका सं० १३६**। पत्रस• ४६८। मा• ७ ४ ४ इखा भाषा-हिन्दी–सस्कृत । विषय-पुजा सम्रहाले० काल ×ापूर्सा विषय-पुजा सम्रहाले० काल ×ापूर्सा विषय-पुजा सम्रहाले० काल ×

विशेष — सामान्य नित्य पूजाओं के प्रतिरिक्त प्रमंत्रक पूजा, बृहद सिडलक पूजा, सहस्रनाम पूजा, तीस चौबीसी पूजा, बृहद पचकल्यागाक पूजा, कर्मदहन पूजा, गरायरवलय पूजा, दशनक्षण पूजा, तीन चौबीसी पूजा प्रादि का समझ है।

**६२७७. गुटका सं० १४०** । पत्रम० ८४ । घा॰ ५३ ×४ इल्ड । भाषा–प्रश्कृत । ले•काल × । पुर्स । वेष्टन सं० ८४० ।

विशेष — विभिन्न प्रकार के मत्र एव यंत्रो का संग्रह है।

 $\epsilon$ २७८. गुटकास० १४१। पत्रस० १७२। ग्रा० ७imes६२७ । भाषा-सस्कृत । विषयimesके०काल imes। पूर्या । बेष्टन स० ८४१।

विशेष -- निम्न पाठों का सग्रह है---

प्रद्युम्नरासो **द**०रायमल्ल

ज्येष्ठ जिनवर कथा , निर्दोष मध्यमी वत कथा .

।नदाय सध्यमा प्रत कथा ,

६२७६. गुटका सं० १४२ । पत्रस० ३४ । घा० महे ४५ हे इञ्च । माषा−हिन्दी । के•काल सं० १७३६ । पूर्ण । बेहनस० म४२ ।

विशेष -- निम्न पाठों का संग्रह है--

नेमिनाथ रास इत्रायमस्ल

पद हेमकीर्ति

वैरी विसहर सारिखी।

६२६०. गुटकां सं० १४३ । पत्र सं∘ ६६ । घा० ६४६ इला । माषा सस्हत हिन्दी। ले∘ काल ४ । पूर्णावेष्ठन स० ६४३ ।

विशेष -- सामान्य पूजा एवं स्तीओं का संप्रह है।

**६२८ १. गुटका सं० १४४ ।** पत्र सं० २३ । म्रा॰ ७ $\frac{3}{4} \times$ ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ६४६ ।

विशेष-- पूजा पाठ संग्रह है।

६२ त. गुटका स०१४ ४ । पत्र संब ३८ । मा०१० ${}^{1}_{2}$  ४ ६ ६%। मावा-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन संब ८४६ ।

विशेष --- गुगा स्थानचर्चा है।

**६२८ ३. गुटकासं० १४६ । पत्रस**० २४० । झा०६ $\frac{3}{2}$  $\times$ ५ इंच । भाष्य-संस्कृत-हिन्दी । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०८४७ ।

कल्यागमन्दिर स्तोत्र, पच स्तोत्र, सज्जन चित्तवल्लम, मामयिक पाठ, तत्वार्यमूत्र, वृहत् स्वय-भू स्तोत्र, ब्राराधनासार एव पट्टावलि ।

६२ तर्प. गुटकास०१४७ । पत्र स० ७२ । ग्रा०६ $^1_1 \times 4^1_2$  इञ्च । माषा-हिन्दी, सस्कृत । के० काल imes । पूर्ण । वेष्टनस०६४६ ।

विशेष--सामान्य ज्योतिष के पाठो का संग्रह है।

६२ न पुटका सं०१४ म । पत्र सं०१० म । मा०६ $^1_2 imes ^2_3$  इञ्च । माषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०कास imes । पूर्ण । वेष्टन स० म४६ ।

विशेष --सामान्य पाठों का सम्रह है।

६२ स्म है स्वाप्त सं०१४ ६ । पत्र स०३१ । घा०६×६ देवा । भाषा-हिल्दी−संस्कृत । से०काल × ।पूर्स।वेष्टन स०६५०।

विशेष-भक्तामर स्तोत्र, पदावती पूजा, एव कविश्रिया का एक भाग है।

६२८७. गुटका सं० १४०। पत्रस०६। बा०८×४६ दश्व । भाषा–हिन्दी। ले०काल स० १६२० माम सुदी १२। पूर्णा। बेहन सं० ८५१।

विशेष-लुकमान हकीम की नसीहतें हैं।

६२८८८ <mark>गुटकासं०१४१।</mark> पत्रसं०१४। ग्रा॰८×४ॄै इञ्च।भाषा-हिन्दी। ले०काल ४.। पूर्णावेहनसं०८४२।

विशेष--सोलह कारए। पूजा एवं रत्नचक पूजाओं का संग्रह है।

६२ स्ट. गुटका सं० १४२ । पत्र सं०६० । घा० ४ है  $\times$  २ है इच्छ । भाषा-सस्कृत । लेक्काल सं०१६०१ । पूर्ण । बेहन सं० स्४३ ।

निम्न पाठों का संग्रह है---

युगादिदेव स्तोत्र जिनदर्शन सप्तव्यसन चौपई एवं हिन्दी पदों का संग्रह है।

**६२६०. गुटका सं० १५३।** पत्र सं० २६। स्रा० ५<sub>२</sub> ×४ इ.च.। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं० १८६६। पूर्ण। वेस्टन सं० ८५४।

विशेष-देवगुरुघों के स्वरूप का निर्णय है।

e 
ightharpoonup 
ightharpoonup

निम्न प्रकार संग्रह है-

ग्रष्टकमँग्रकृति वर्णन पचपरमेष्ठी पद एवं तत्वार्धसूत्र है।

**६२६२. गुटका सं० १५५ ।** पत्रसं० १६० । घा० द×६ इच्छ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १६४२ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० द५६ ।

विशेष---निम्न रचनाग्रो का संग्रह है।

मविष्यदत्त राम	हिन्दी	<b>व</b> ० रायमल्ल
प्रस्तुम्न रास	**	<b>ब॰</b> रायमल्स
भादित्यवार कथा	,,	भाऊ
श्रीपःल रासो	"	<b>४०</b> राययल्ल
सुदर्शन गस	**	"

वामली मध्ये लिखित ३० हीरा

६२<mark>६३. गुटका सं०१४६ ।</mark> पत्रस०१६० । ग्रा० ५×४ **६व । ग्रावा**-हिन्दी सस्कृत । ले∘काल × ापुर्गा वेष्टन स० **८५७ ।** 

विशेष-मामान्य पाठा का संग्रह है।

६२६४. **गुटका सं० १५७**। पत्रस० ८६। ग्रा० ६×५<mark>१ इ.स.। भाषा-हिल्थी।</mark> ने०कान× । पूर्या । वेग्न स० ८५८।

विशेष--- निम्न पाठी का सम्रह है---

पदावनी स्तात्र टीका मत्र सहित कमं प्रकृति क्योरा तथा वण्टाकर्एं कल्प, ग्रष्टप्रकारी देवपूजा है।

६२६५. गुटकासं० १५६ । पत्रस० १८६ । घा० द×६ इञ्च । साथा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेस्टन स० द५६ ।

विशेष-भया भगवतीदास के ब्रह्मविनास का संबह है।

६२६६. गुटका सं०१४६ । पत्रस० ११६ । मा० ७३४६ इ.च. । भाषा-हिस्सी । ले०काल सं०१७७ पोग नृत्री बृधवार । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६० ।

विशेष--तत्वार्धसूत्र माथा टीका एवं प्र० रायमल्ल इत नेमीश्वर रास है।

**६२६७. गुटका सं० १६० १ पश्रसं० २३४ । बा० ७**४६ इञ्च । जावा-संस्कृत । ले०काल सं० १७२४ माप बदी ४ । पूर्ण । बेहन स० ६६१ ।

**विशेष** — निम्न पाठो का संग्रह है।

सर्वार्धासिदि - पूज्यपाद धासापपदति - देवसेन

**६२८ स्. गुटका सं०१६**१ । पत्र स०१६ । प्रा०१ x x ४ इ.चा माषा-हिन्दी संस्कृत । ले•काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०६६२ ।

# विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है।

नीति शास्त्र	संस्कृत	चासक्य
तेरहकाठिया	हिन्दी	बनारसीदास
इष्टछत्तीसी	**	बुधजन
ग्रध्यातम बत्तीसी	**	बनारसीदास
तत्वार्ध सूत्र	**	उमास्वामी

६२६६. गुटका सं० १६२ । पत्र स० ६४ , झा० ४imes४ १रूव । भाषा—पस्कृत-हिन्दी । लेक्काल imes । पूर्ण । वेष्टन मं० ८६४ ।

विशेष - सामान्य पाठ, मक्तामर स्तोत्र मत्र सहित एवं मत्र शास्त्र का सब्रह है ।

**८३००. गुटका सं० १६३**। पत्रसं० १८६। झा०६imes५ इ.ख.। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। लेकाल imes। पूर्णः बेष्टन स०८६३।

विशेष—वहाबिलास एव बनारसी विलास के पाठों का संग्रह है। इसके ग्रतिरिक्त रत्लचुडरास (र०काल स० १४०१) एवं सुग्रा बहुतारी भी हैं।

रतन बुडरास -- पद्य सा० ३१२

बादि बंत भाग निम्न प्रकार है-

# प्रारम्भ दोहा---

सरस्वति देवि पाय नमी, मांगु चित पसाव।
रतनज्ञुह गुरा वराँड दान विषद् असु नाम।।१।।
जबूदीप साहि मध्ये सरते केन साविषा।
तामनी नयरी तिहां, राजा भजित नरिद।।२।।
तिरा नयरो जे जिन वसह, वरा प्रकारह लोक।
मोग पुरंदर मोगवह, सुझ संपति सुरलोक।।३।।

### चौपई---

सरोवर वाडि करी घाराम, तिहां पाच विकरतु धनिराम । विवध वृथ छह तिहि यन मोहि वसनइ वास वसइ परवाहि ॥४॥ पोह मिदर पोलि पगार, हार श्रोण निव लाभइ पार।
श्वित्तह रमण हर तोरणमाल, लकानी परिफाक फमाल ॥४॥
बडरासी चडहटा स्रतिवन, नव नव ठछा नव नवरन।
कोटिघन दोसद प्रति क्या, लालेसरी नीन राही का मणा ॥६॥
माइद दोसी भविका पट्ट, सराया दोसद सोनी दृ।
माग्रिक चडक जब बहरी रह्या, हीरद माग्रिक मोती सहा।॥७॥
मुद दीया फोफलीया सोनार, नाई तेली न नहु पार।
तबोली मरदठ पविटि, एक माइदनी सत फहहुटा॥६॥

#### मध्य भाग--

हाच चलाविउमानी पाहि वन तउ किह काइ छह माहि। माहाराज मीमलिज्यो तम्हे, कुमर कहइ प्रसरामए ग्रम्हे।।२८२।। मानो प्रीछवीउते तलइ, सुक्रवार ग्राविउ ते तलइ। कुमर कहिय ग्रम्हे मालिउमु गामि, कली पाइ थाउ भाट कामि।।२८३।।

#### ग्रन्तिम माग---

नगर माहि न्याय धेरज हुउ, स्रोटा लोकत साचु थयउ। करी सजाइ घाले बाभग्गी, हुई बाहुग तग्गी पूराग्गी। यम घटा मोकला वीकरी, बालउ कूमर सवाहगाज भरी। चाल्या वाहरण वायतइ भारिण, खेम कुसल पहुता निवारिण । बाहरा वस्तु उतारी घरणी, छाबीसकोडि हिव द्रव्यह तरणी। हीर बीर धन सोवन बहु, साध्य लिखाउ रण घटा बहु। रए। घटा नइ सुहम मजरी, आगाइ परग्। बद्द रत्न सुन्दरी। नव नव उछव नव नव रग, भोग भोग बद्द ग्रनिह सुचग। तिरण नगरी ब्राव्या केवली, तिहा बादू सघ सर्व मिली। मिर्गिचूड तिहां पूछइ सिउं, कहुउ बेटा नउ करम हुई किसउ । रतनकूड नउ सघलउ विचार, पात्र दान दीघउ तिगिवार। दान प्रभावइ एव जि रिधि, दान प्रभावइ पामीइय सर्वेसिधि ।।३०७।। दानसील तप भावन सार, दान तरगुउ उत्तम विस्तार। दानइ जस कीरति विस्तरइ, दान दीयता दुरत भरइ ॥३०८॥ पनरइ एकोत्तरइ नीयनु संबध, रत्नचूड नउ ए सबध। बहुल बीज, भाइ वहू रनी, कवित नीयनु मगुरेवती ।।३०१।। बढ तप गच्छ रत्न मृरिद उदभत कला ग्राभिन उच द। ताम सेवदक इम उचरइ, षट् प द चरण कमल झण्मरइ ।।३१०।। सर्वेषुष्त हुइ दूशाइ भगाइ, नर नारी वेई दूशुगाइ। तेह घरि सखमी सदाइ भयद, चद मूरज जा निर्मल तपद।।३११।। ए मंगल एहज कत्यारण, भगाउ भगावहु जा सित भागा। रस्त्युद्धनाउ वारित्रसार, श्री समनद करउ जय जयकार।।३१२।।

इति श्री रत्न चुडरास समाप्त ।

मिति वैशाख विदि ४ संबत् १८१७ का । वीर मध्ये पठनायं विरंजीवि पश्चित सवाईराम ॥ सुवा बहत्तरी (वेष्टनसं॰ ८६३)

सुवा बहत्तरी की कथा लिस्यते---

किर प्रणाम श्री सारदा, प्रापणी बुद्धि परमाण ।
सुक सप्तिक वार्तिक करी, नाई तै देवीदान ।।१॥
बीकानेर सुद्दावनी सुख संपति की ढोर ।
हिंदुधानि हिन्दु धरम, ऐसो सहर न धौर ।।२॥
तिहा तपै राजा उत्तरण, जसन को पतिसाह ।
ताक कुंबर ध्रुंपसिह; दाता सुर सुबाह ।।३॥
तिन मोकी प्राजा वर्द मुयमन्त होई के एहु ।
सन्कृत हती बातिक मुक सप्तिक किर देह ।४॥।

#### स्थ कथा प्रारम्भ---

एक मेदुपुर नाम नगर। ते थि हण्दत्त आणि भी सी। ते पैरे घरि मदन मृन्दरी स्त्री भ्रष्ठ मदन वेटी। तो पैरे सोमस्त साहरी वेटी प्रभावती नाम । सोमदत्त ग्रापकी स्त्री प्रभावती सेती लागो रहें। माता चितारों कहियो न करें। ताज राज वे मदन नू देणन ताई हरिदत्त एक सुवो एक सारिका मंगाई। सो पुष्पा गणवं रो जीव धणीरा सराय हुती सुवो। हुवो भ्रष्ट मालती गणवंणी रो जीव धणीरा सराय हुती सारिका हुई। सो जुदै जुदै पिवरं रहे। एक दिन मदन रो भ्रार देखि शुक्त भ्रष्ट सरिका मदन भ्राणे वात कहें छै।।

# बोहा--

जो दुल मात पिता तवी घन्न बात जो होइ। तिय पाप करता हरि देह सपडानि होइ।।१॥

# बात मदन पूछियौ---

वार्ता बपूर्य है—१२ वीं बात तक पूर्य है १३ वीं बात वहोडि तेरमें दिन प्रभावती ग्रुंगार करि रामि समै सुवानुं पूछीयों थे कहो तो जावी, सुर्व कहो।

### बोहा--

जो भाव प्रभावती सो मोनुन सहाय।
पिएमारग जाता देथिका ज्यो होय बुद्धि सुहाय।
करि हैं सो तु जायकरि घषिरज बुद्धि विचारि।
बाह्यए। मार्ग दिभका जिस हो कीये प्रकास।।२४।।

#### वार्ता--

तहरा प्रभावती बोली मारग बहता दिभका किसी बुद्धि उपाई मिरु बाह्मए मार्ग किसुं प्रकार कीयो वा कहै। समिलापा नाम माय, ते विति लोचन नाम बाह्मए। गावरो पटेल । तिएर दिभका नाम स्त्री। तिएएर कामरी समिलाया। परिए ये हरें माटी। हुस्बिहेतो कोई सर्थ नहीं। एक दिन दिभका। यहों ले पार्गी ने गई हुती। पारिए भरि ले झावता एक बटाउ जुवान सरूपदीठो बेहनु कीढा रै ताई सालिरी सैन दे बुलायो। सप पूछियो तु कीए छी। वेह कही हूं भाट छो। मार्ग मांगए ने जावी छो। दिभका कह्मों साजि गति सहरें ही रहस्यो।

**६३०१. गुटका सं०१६४ । पत्रस०६**२ । म्रा०६ × ४ इच्चा मापा—हिन्दी । ले० काल स० १६८६ पौप मुद्दी १०। पूर्णा वे**हन स०** ८६४ ।

### विशेष--- निम्न रचनाओं का संग्रह है।

बुद्धिप्रकाश	*****	कवि घेल्ह
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न		व्र० रायमल्ल
द्वादशानुप्रे क्षा		<b>ब</b> ० जिनदास
लेक्या वर्णन		Linearth
'रेमन' गीत		छीहन
ज्येष्ठ जिनवर वृत कथा	-	क रायमस्ल
मेचकुमार गीत		यूनो
water william		

#### बद्धिप्रकाश कवि घेल्ह पत्र सं० १६-२६ तक

भूको पथ न जायह सीहालो जीवा पंथी न जाह उन्हालो । सावसी भारवी गाय न जाजे प्रासोजा मी मौयन सोजो ।।१६।॥ मस्पर्यालो किन नीहि साजे, प्रार पिछाल्या की साथी न जाजे । जाय दिसाविर राती न सोजे, चालतपथी रोस न कीजे ।। प्रवर्षार लगा उत्तरी जे घाटे करमा न बेची गरवके साटे।। पाहसी माया प्रार दीजे, सामस्य साक मगति करीजे दानदेय लखमी फल लीजे, जुनो ढोर ने कपड लीजे ।।१८।। पढ़न होय की सिही बैचालै वचन घालि तुस जो रालै। विराज न की ने धास पराय, धारभज्यौ काम त्यौ नीरवहि ॥१६॥ नित प्रतिदान सदाही दीजे, दुग्गा ऊपरि ब्याज न लीजै । धरिही ए। राखी हीए। कुल नारि, मुक्त उपाय मंतीपास्तरी ।।२०।। विस्तुसं घीयउ हसि हसीलाय, बीस्तुसी बहु ज परिचरि जाय । बीए। सै पुत पछोकडी छाडी, बीए। सौ गय गवाडी भीडी 1,२१।। बीगारी बिरा असुवार घोडो, बीरारी सेवन आहर थोडो । बीग्एमी राज् मत्री नो थोडो, ग्रचगीलट न बोलसिक्डो ॥२२॥ बुद्धि होइ करि सो नर जीवो, मधीमा के घरि पाग्नी न पीव। हरियन कीजे जेबुठडौ पाग्गी, ग्रग्गनीयनै मुकाल न जाग्गी 11२३।। मत्र न की जे हीयडी कुडी मील बीगा नारी गापहराय चूडी। ऐसी सीख मुस्पीरी पुन्या, लाज न कीजे मागत करवा ।।२४॥ बाह्यरण होय सबेद भग्गावी. श्रावग होय सग्रगा ह स्पाजीवी। बाण्या होय सबीगाज करावो, कायच होय, सलेखो भएगात्री ।।२४।। कल मारगा जुगा छोडी करमा, सगलीसीख सुरोजे घरमा। बुधी प्रगास पढीर विचारी, वीरो न आवी कदहि सहसारी ॥२६॥ ऐसी सीख सुर्एं सहकोय, कहता मुखतापुनी जुहोय। कही देल्ह परयोत्तम पुत्ता, करौ राज परिवार संजूता ॥७२॥

सबन् १६८६ मिती पीष मुदी १० बुधीप्रगास समाप्त । लिखित पंडित रुडा, लिखामत पडित सिघजी।

**६३०२. गुटकासं० १६५ ।** पत्रसं० १३८ । आ० ५×५ इन्छ । भाषा-संस्कृत हिन्दी। ने∘काल×।पूर्णावेष्टनसं∾८६६ ।

विशेष - निम्न रचनाओं का सग्रह है-

तत्वाथ सूत्र		उनास्यामा
रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा	-	सदासुख कासलीवाल
	7. 9V.99.1 MT	, <b>ி</b> ∨ மிரணா, எனா, செகிட

६**३०३. गुटकासं० १६६।** पत्रस० १४–११०। ग्रा० ६<sup>1</sup>, ४४<sup>5</sup>, इ.च.। माषा-हिन्दी। से०कालस० १६८७ ज्येष्ठ बुटी प्रमावसः। प्रपूर्णः। वेष्टनसं० ८६७।

विशेष--निम्न पाठी का संग्रह है--

मादित्यवार कथा --- भाऊकवि

<b>ब</b> नुत्रे का	 योगदेव
मादिनाय स्तवन	 सुमतिकीर्ति
जिनवर वृत कथा	 <b>द</b> ० रायमस्ल

गुटका जोबनेर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं॰ केसी के पठनार्थ लिखा गया था।

**६३०४. गुटकासं० १६७** । पत्रसं∘ १३४ । ग्रा०५२<sup>3</sup> × ४ इचा। माया-हिन्दी-सस्कृत । ले∘काल × । पूर्णा। बेकन सं० ⊏६६ ।

विशेष—सामाधिक पाठ, भक्तामर स्तोत्र, जोगीरास तथा भक्ति पाठ ग्रादि रचनाभ्रों का सम्बद्ध है।

**१३०५. गुटका सं० १६८।** पत्रसं० **१५ । ग्रा० ६**४३ इ.च. । माया−हिन्दी-संस्कृत । ले**०कास** × । पूर्यो । लेष्टन सं० ६७० ।

विशेष - नित्य पूजा पाठएव मंगल भादि पाठों का संग्रह है।

६३०६. **गुटका सं०१**६६। पत्र सं०१००। घा० ५×४ ६ चा सामा−संस्कृत । ले०काल × । पूर्णे । बेष्टन सं० ⊂७१।

विशेष-- ब्रायुर्वेद एव मत्रशास्त्र सम्बन्धी सामग्री है।

ह३०७. गुटका सं०१७० । पत्रस० १३६ । झा० ७४५ इ.चाः माषा रहिन्दी-सम्कृत । ले० काल ४ । पूर्ण वेष्टनसं० ६७२ ।

विशेष-सामान्य पूजाएं स्तोत्र ए 4 पाठों का संब ह है।

**६३० ज. युटका सं० १७१** । पत्रस॰ १०६ । स्रा॰ दर्¦ ×६६ व्यः । भाषा हिन्दी-सस्कृत । ले•काल × । पूर्णा वेष्टुन स० ५७३ ।

विशेष -- सामन्य पूजा पाठ, बायुर्वेदिक नुस्ते, काल ज्ञान एव मंत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य है ।

**६३०६. युटका स० १७२** । पत्रसं॰ ६८ । ग्रा॰  $- c_2^2 \times c_3^2$  इन्त्र । मापा-हिन्दी । ले**०काल** स॰ १७१८ पीप वृदी ८ । पूर्ण । वेल्टन स॰ ८७४ ।

विशेष---निम्न रचनाश्रों का संग्रह है---

शासिभद्र चोपई	हिन्दी	जिनराजसूरि
राजुलपश्चीसी	,,	विनोदीलाल
पंचमंगल पाठ	,•	क्यभन्द

६३१०. गुटका सं० १७३ । पणस० ११४ । ब्रा० ३ $\frac{3}{4} \times 3\frac{3}{4}$  दश्व । भाषां-संस्कृत । ले॰काल  $\times$  । पूर्णं । वेहन सं० ५७४ ।

विशेष -- स्तोत्र एवं मंत्रशास्त्र का साहित्य है।

€३१<mark>१. गुटकासं० १७४ । पत्रसं०</mark> ३३ । घा० ६×३ ॄेडच । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्णा बेष्टतसं० ८७६ ।

विशेष--भक्तामर स्तोत्र एव पूजा पाठ संग्रह है।

६३१२. गुटका सं०१७५६। पत्र स०११०। ग्रा० ६imes५५ ै इंच। माषा — हिन्दी-सस्कृत। ने०कान imes। पूर्ण। बेष्टन सं०६७७।

विशेष — त्रेपन किया (हेमचन्द्र हिन्दी पद्य) पद, भक्तिपाठ, चतुर्विजति स्तोत्र (समंतभद) भक्तासर स्तोत्र (मानतुःगाचार्य) ग्रादि का सम्रह है।

**६३१३. गुटकास० १७६ ।** पत्रसं० २१६ । धा• ५३ ×५ डला । माधा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा । बेष्टुत म० ६७६ ।

विशेष -- सामान्य पूजा पाठ एवं स्तीत्रों का संग्रह है।

**६३१४. गटका सं०१७७।** पत्रस•२७२। झा०४×६ इच। **भाषा**−हिन्दी। ले•काल – गं०१८२७ काली सुदी ४। पूर्ण। बेष्टन सं०८७६।

**६३१५. गुटका स० १७८** । पत्रसं० ६८ । प्रा० ४३ २२ इञ्च । भाषा−हिन्दी, संस्कृत । से० काल स० १८६० श्रावण मुद्री १२ । पर्ण । वेटन स० ६८० ।

**विदेश्य**—पूजा स्तोत्र, चर्चाए, चौबीस दडक, नवमगल धादि पाठों का सग्रह है। धजमेर में प्रतिलिपि हुई थी।

६३१६. गुटकासं०१७६। पत्र स०६०। घा० ७४४. देखा। भाषा-सस्कृत। ले०काल ४। पूर्ण। वेष्टनसं० मन्दर।

विशेष—पस्य विधि, शेपनिकयापूजा, पत्यक्त विधान, त्रिकाल वौबीसी पूजा भादि का संग्रह है।

६३१७. गुटका स० १८० । पत्र सं० ४० । झा० ६ $\mathbf{X}$  ५३ ६७। भाषा-हिन्दी ले•काल  $\mathbf{X}$  । पूर्ण । बेहन स० ८६३ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ सप्रह है।

**६३१८. गुटेका सं०१८१।** पत्रसं० २६। घा०६×४३ इ.चा। भाषा−हिन्दी। ले०काल सं०१८७३ माह सुदी १५। पूर्णी। वेटन सं०६ ८५। विशेष-सामुद्रिक भाषा शास्त्र है।

€३१६. गुटकासं० १८२ । पत्रसं० ७० । ग्रा० ४×४५ हचा । साथा-हिन्दी । के•काल – × । पूर्ण । बेष्टन स० ८८७ ।

विशेष--- भक्तामर स्तोत्र मंत्र सहित, एवं धनेकार्थ मंत्ररी का संग्रह है।

**६३२०. गुटकासं० १८३ ।** पत्रसं० ४०−२४४ । झा० ६×३ इ.चा। भाषा-हिल्दी । ले•काल × । पूर्णा । वेध्टन सं० ८८६ ।

विशेष--- सूक्ति मुक्तावली, पदसग्रह तथा मंत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य है।

६३२१. गुटका सं०१६४ । पत्रस०६ । प्रा०७४४ इचा। भाषा-हिन्दी । ले०काल सं०---१७६४ मंगसर सुदी ८ । पूर्यों । बेष्टनसं०६६१ ।

विशेष---बीज उजावलीरी धुई है।

**६३**२२. गुटका सं० १८४ । पत्रस० १६६ । आ० ८×६ इथा । आपा-हिन्दी । ले∘काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टनस० ८६३ ।

विशेष--नित्य प्रति काम मे ग्राने वाली पूजाएं एवं पद हैं।

**६३२३, गुटका सं० १०६।** पत्रसं० २००। आ० ६ $\times$ ५% इञ्च । मावा-संस्कृत-हिन्दी ले**०काल** सं० १०५१ भादवा बुदी व । पूर्णा वेष्टनस० ८६४।

#### विशेष---

धर्मोपदेशामृत — पदानदि पद्मनदि पर्चावशाति — पद्मनदि नेमिपुरागा — —

सुदर्शनरास

**व**० रायमल्ल ले०कालासं०१६३५ सावगासुदी१३।

लिखापि साह सातू खण्डेलबान ।

६३२४. गुटका स० १८७ । पत्रस०६२ । ग्रा०६ $\times$ ५३ इच्छ । भाषा-हिन्दी ।से॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ८६४ ।

विशेष —खुनालचन्द, धानतराय, भ्रादि कवियों के पद, तथा धर्म पाप सवाद, चरला चौपई भ्रादि का सम्रह है।

**१३२५. गुटकासं० १८६**। पत्रसं०२६६। स्रा०४ $\times$ ४ हे इ.च.। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले॰ काल  $\times$ ।पूर्ण। वेष्टनसं०६६६।

विशेष —सामान्य पूजाओं के अतिरिक्त वृश्यावनदाम कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा आदि का संग्रह है।

६३२६. पुटकासं०१६६। पत्रस०६४ । झा० ५ $^1_7 \times 5^1_7$  इ.च.। भाषा—हिन्दी। ले०काल  $\times$  । पूर्ण। वेष्टनस०८६७ ।

विशेष-- मंत्रतंत्र एव बायुर्वेद के नुस्कों का संग्रह है।

१६२७ **गुटका सं० १९०।** पत्र सं० २५०। मा० ४× इ**च**ा नाषा-प्राकृत-सस्कृत । **से०कास** सं० १६५० फानूस्स् वृदी मा। पूर्स्सः विकासं० मध्या

विशेष-भूस्यतः निम्न रचनाभ्रों का संग्रह है।

बारावनासार	शक <del>ृत</del>	देवसेन
संबोध पंचासिका		
दशरथ की जयमाल		
सामायिक पाठ	संस्कृत	_
तत्वार्थसूत्र	,>	उमास्वामी
पच स्तोत्र	••	_

**६३**२८. **युटकासं**० १६१ । पत्र स०२२७ । आ० ५ $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इल्खाभाषा–सस्कृत हिन्दी। ले०काल  $\times$ । पूर्ता। वेष्टन स०८६६।

विशेष-सामान्य पूजा पाठो, श्रायुर्वेद एव ज्योतिष श्रादि के ग्रंथो कृ सग्रह है।

६३२६. गुटकासं० १६२ । पत्रसं० २२८ । धा॰ ६imes३ $\frac{1}{4}$  ६%। भाषा-संस्कृत । ले॰ काल imes । पूर्ण । बेप्टन स॰ ६०० ।

विशेष-तीस चतुर्विशति पूजा त्रिकालचतुर्विशति पूजा मादि का संग्रह हैं।

६३३०. मु<mark>टका सं० १६३ ।</mark> पत्रसं० ⊏२ । प्रा०५×४१ हश्व । भाषा–संस्कृत । ले०काल स० १६६० बैंगाल मुदी । १४ । पूर्ण । वेल्टन सं० ६०१ ।

विशेष —गुराविल, चितामिए स्तवन, प्रतिक्रमए, सुमापित पद्य, गुरुघों की विनती, म० धर्मचन्द्र का सर्वया प्रदिका सम्रह है।

**६३३१. गुटका स**० १६४ । पत्र सं०३२४ । प्रा॰  $= \frac{1}{4} \times 1$ , इन्य । भाषा= 44 + 5त । ले० काल सं०१ = माथ मुदी १२ । पूर्ण । बेष्ट्रन स०६०२ ।

विशेष —पाप्यंनाय स्तवन, सम्यक्त कौमुदी कथा, प्रश्नोत्तर माला, हतुमत कवच एव वृन्दावन कवि इत सतमई, सुभाषित पंथ मादि पाटों का संग्रह है।

६३३२. गुटकासं० १६५ । पत्र स० १८६ । घा०५२४ ५ इचा । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । वै∙काल ४ पूर्णे । वेष्ट्रसं० सं० ६०३ ।

विशेष —िजनसहस्रनाम, प्रस्ताविक क्लोक, भक्तामर स्तीत्र एवं वडा कल्याए। ग्रावि पाठों का संग्रह है।

६३३३**. गुटका सं० १६६** । पत्रसं० ७० । घा० ५×४६ 'च ः माष्या∽हिन्दी-संस्कृत । ले०कास ×। पर्तो । वेष्ठन स० ६०४ ।

विशेष --सामान्य पाठों का संप्रह है।

६३३४. गुटका सं० १६७। पत्र सं० ६६। ग्रा॰ ६ $\times$ ४ $\S$  दश्वः। भाषा-हिन्दी। ले॰काल सं० १०३६ मादवा बुदी १३। पूर्या। बेण्टन सं० ६०६।

विशेष — जैनरासो, सुरर्णन रास (ब्रह्म रायमल्ल) शीलरास (विजयदेव सूरि) एभ अविष्यदक्त चौपई ब्रादि का समह है।

६३,३५४. गुटका सं०१६६ । पत्र सं०६६ । द्या०५ $\times$ ४ $\frac{1}{3}$  इच्या। भाषा-हिन्दी-सस्क्रत । ले॰काल सं०१८६३ प्रासोज मुदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं०६०७ ।

बिशेष--- नित्य प्रति काम मे आने वाले स्तोत्र एव पाठो का सग्रह है।

**६३३६. गुटका सं० १६६। पत्र स० १६-१३**६ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले• काल सं० १=६३ मासोज मुदी१ । पूर्ण । बेम्नसं० ६०६ ।

विशेष-पानोचना पाठ, सामायिक पाठ, तत्वार्थ सत्र ग्रादि पाठो का सग्रह है।

**६३३७. गुटका सं०२००**। पत्रसं०४०। घा० ५३ ४४ ॄै इश्वा । भाषा∽हिन्दी । ले०काल 🗴 । पर्यो । बेकनसं०६१०।

विशेष--विभिन्न महीनों में प्राने वाले एनतदशी महातस्य का वर्णन है।

**६३३८. गुटका सं० २०१।** पत्र स० ६४। छा० ६३ ४५ देखा। भाषा-संस्कृतः ल० काल स १८८७ प्रापाद सदी १०। पर्सा । बेप्टनस० ६११।

विशेष-जिनसहस्रनाम (ब्राशाधर) एवं तत्वार्थ सुत्र (उमास्वामी) ब्रादि पाठी का सग्र है।

**६३३६. गुटकासं० २०२ ।** पत्रस० २०-७० । धा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । के०काल स० १=२३ भाववा सूदी ४ । पूर्णा । वेष्ट्रन स० ६१२ ।

विशेष--- निम्न रचनाश्रो का संग्रह है ---

सबोध दोहा	हिन्दी	स्प्रभाचायं
संबोध पचासिका	,,	गौतमस्वामी
गिरनारी गीत	,	विद्यानदि
लाहागीत	n	****
वास्तुकर्म गीत	,,	_
शांति गीत	29	
सम्यक्तव गीत	<b>1</b> *	
ग्रमिनन्दन बीत	,,	
भ्रष्टापद गीत	,,	
नेमीश्वर गीत	**	
चन्द्रप्रम गीत		
सप्तऋषि गीत	,,	विद्यानन्दि
नववाड़ी विनती	a	

**६३४०, गुटका सं० २०३।** पत्रस० २०-१४२। आ० ६×५ इश्वा आपा-संस्कृत-हिन्दी । ने**०**काल स०  $\times$  । पूर्णा वेष्टनसं० ६१३।

विशेष-प्रवस्तोत्र एव प्रादित्यवार कथा है।

**६३४१. गुटका सं० २०४।** पत्र सं० ५२। घा० ६ ${}^1_4 imes$ ६ इ.स.। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले**॰काल** स॰ १८०१ घाषाढ़ सुदी ६ । पूर्ण। वैष्टन सं० ६१४ ।

विशेष -- मक्तामर स्तोत्र ऋदि मत्र एवं वचनिका सहित है ।

**६३४२. गुटका सं०२०५** । पत्रस० ६० । ग्रा०६ $\times$ ४ $\xi$  इश्व । भाषा-संस्कृत । से**०काल**  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म० १९६ ।

विशेष---फुटकर क्लोक, जिनसहस्रताम (ग्राशाधर) मागीतु गी चौपई, देवपूजा, राजुलपचीसी, बारहमासा ग्रादि का मग्रह है।

६३ : शुटकासं० २०६ । पत्रस०२६ । श्रा० द×४ ॄै इचा । माषा–सस्कृत । ले० काल × । पूर्णा । वेस्टन स०१९७ ।

विशेष--- नित्य प्रति काम आने वाले पाठो का संग्रह है।

६३४४. गटका सं० २०७ । पत्रसं० २४ । धा० ७×५ इच । द्वानासस्कृत । से०कास× । पूर्ण । बेपून म० ११८ ।

विशेष-- नत्वार्थं सूत्र एव एकीभाव स्रोत्र अर्थ सहित है।

६३४ ४. गृष्टकासं० २०६ । पत्रस०२३४ । झा० ४imes४ ू दखाभाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले॰काल imes। पूर्ण। बेष्टनस०६१६ ।

विशेष--- पूजा पाठ एवं स्तीत्र ग्रादिका संग्रह है।

६३४६ गटकासं०२०६। पत्र स०२०६। धा०४३ॄं×४४ॄं इश्वा मापा—हिन्दी-सस्कृत। ले•काल स०१७६४ । पूर्ण। बेस्टन म०६२०।

विशेष - सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

€३४७. गुटकासं०२१०।पत्रसं० ७६ । ग्रा०६×४ॄै इञ्च । भ्राषा-हिन्दी—सस्कृत । ले∘काल स०१८०६ ज्येरठ ब्री४। पूर्ण। बेष्टनसं० ६२१ ।

विशेष -- मक्तामर स्रोत्र, कल्याण मदिर भाषा एवं तत्वार्थ सुत्र भादि पाठो का संग्रह है।

८३४८. गुटका सं०२११। पत्र स०१००। ध्रा० ६ $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इन्था भाषा-हिन्दी-संस्कृत । से० काल $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स०१३३।

विशेष —िनन्न रचनाधी का संग्रह है। मुनीश्वर जयमाल (जिनदान) प्रतिक्रमण्, तत्वार्थ सूत्र, पट्टावलि, मूठमत्र, प्रक्तिगठ पट्टारक पट्टावलि एवं संत्र शास्त्र।

६३४६. गृटका सं० २१२ । पत्र सं० १४० । ग्रा० ५imes६३ इंच । मादा—सस्कृत-हिन्दी । ले॰ काल imes । पूर्णु । बेष्टन स० ६२४ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ एवं स्तोत्र बादि का संबह है।

**६३५०. गुटका सं० २१३** । पत्र सं० १२४ । घा० ६ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इचा । माघा –हिन्दी । ले०काल स० १=२३ मादवा बृदी । पूर्णे । बेहन सं० ६२४ ।

विशेष--निम्न रचनाभीं का संग्रह है।

नेमीस्वर रास	 <b>व</b> ० रायमस्ल
कृष्णजी का बारहमासा	 जीवराराम
छनाल पश्चीसी	 ****

**६३५१. गुटका सं० २१४**। पत्र सं० ६२। आ० ६imes६ इ**था**। भाषा—संस्कृत-हिन्दी। से० काल imes। पूर्ण । बेष्टन सं० ६२६।

**विशेष** —सोलहकारए। जयमाल, गराघरवलय पूजा जिनसहस्रनाम (झाशाघर) एवं स्वस्त्ययन पाठ झादि का संबह है ।

६३ ५२. गुटका सं०२१५ । पत्रस० ६०। घा०६ ४४ इ.चा भाषा∽हिन्दी। ले०काल सं०१⊂११ प्रापाद बुदी११ । पूर्णावेष्टन स०६२७।

विशेष—प्रठारह नाता का चौढाल्या (लोहट), चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्त, नेमिराजमित गीत, कुर्मात सङकाय एवं साधु बन्दना भादि पाठों का संग्रह है

**६३४३. गृटका सं०२१६** । पत्र सं०१६० । घा**०** प्र $\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इंच । घाषा-हिन्दी । ले०काल स०१७पर मगमिर मुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं०१२ ह

विशेष—नामिकेत पुरास्।, (१० प्रध्याय तक) एवं सीना चरित्र (कवि बालक प्रपूर्स) प्रादि रचनाम्रो का सम्रह है ।

**६३.५४. गुटकासं० २१७ ।** पत्रसं० १५० । घा० ⊏ै,×६ इश्वा। माया−हिन्दीसस्कृत । ले०कालस०१७७७ पीव बुदी७ । पूर्णा। वेष्टनसं०६२६ ।

विशेष--- निम्न स्तोत्रों का संग्रह है---

भक्तामर स्नोत्र भाषा	सस्कृत-हिन्दी	हेमराज
कल्यारण मदिर स्तोत्र माषा	*1	बनारसीदास
एकीभाव स्तोत्र भाषा	•:	

**६३५५.** गुटका सं० २१ त । पत्रसं० २०२ । मा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इन्छ । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७८६ कार्तिक बुदी १ ।पूर्ण । वेटन स० ६३० ।

विशेष--निम्न रचनायों का संग्रह है।

मांगीतुंगी स्तवन	हिन्दी	हिन्दी पत्र ३०-३५
कुमति कं, विनती	,,	,,
ननद मौजाई का मगडा शक्षर बलीसी	"	**
भवार बसासा ज्ञान पश्चीसी	**	,
साम पञ्चाला		,,

परमज्योति		हिन्दी
निदौंष सप्तमी कथा		,,,
जिनाष्ट्रक		,,
गीत	विनोदीसास	,,
भादिनाय स्तवन	नेमचन्द (जगत्कीति के,शिष्य)	"
कठियारा कानडदे चउपई	मानसागर	**
नवकार रास		,,
घठारह नाता	लोहट	हिम्दी
<b>धर्म</b> रासो	जोगीदास	,,
त्रेपन, कियाकोश		,,
कक्का बत्तीसी	_	
ग्यारह प्रतिमा वर्णन		,,
पद संग्रह	विभिन्न कवियों के	,,
सप्तब्यसन गीत	-	
पार्श्वनाथ का महेल!		,.

६२.**५६. गुरुकासं० २१६** । पत्रसं० १७४ । ग्रा० ५३<sup>3</sup> × ४<sub>२</sub> इ.चा भाषा–हिस्दी-सन्दन । लेञ्चलसः० १०४० ग्रामीज बुदी १० । पूर्णा वेष्टनसं० ८३१ ।

विशेष-- बायुर्वेद एवं मत्र शास्त्र से सम्बन्धित साहित्य का बच्छा संग्रह है।

६२५७. गुटका सं०२२०। पत्रसं०१५०। म्रा०६ ${}^3_1 \times {}^4_2$  इवा । माया—हिन्दी-संस्कृत । सं०काल स०१-६१। पूर्णे । बेहन स० ६२३।

### विशेष--- निम्न रचनाभो का संग्रह है।

सारसमु <del>च्य</del> य य थ सुकुमाल मज्भाय	 जन्तिहर्ष (जि० जिनहर्ष)	संस्कृत र०काल १७४१
बोघसत्तरी		हिन्दी
कान गीता स्तोत्र		_
समोकार रास		
चन्द्राकी	दिनकर	

६३४ द. गुडका सं० २२१ । पत्रसं० ६६ । म्रा॰ ६ $rac{1}{2} imes rac{1}{4}$  इन्त्र । भाषा-संस्कृत । लेकाल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ६३४ ।

विशेष-तत्वार्थं सूत्र, ज्ञानचिन्तामिए एवं प्रन्य पाठों का संप्रह है ।

**६३५६. बुटका सं**० २२३ । पत्रसं० २१३ । मा० ६ $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} \times \frac{1}{4}$  सचा-सस्कृत । ले० काल सं० १६२२ मणाउ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३४ ।

विशेष-ज्योतिष साहित्य एवं सं० १५८२ से सं० १७०० तक का संवत्सर फल दिया हुआ है।

**६३६०. गुटकासं २२३ ।** पत्र स० ७२ । ध्रा० ६×४ इश्वर । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्णा वेष्टन स० ६३६ ।

विशेष - शकुनावली लघुस्वयभू स्तोत्र, पष्टिसवत्सरी धादि पाठो का सग्रह है।

**६३६१. युटका सं**० २२४ । पत्रस**० ६० । आ० ७\frac{1}{4}\times६ इञ्च । भाषा**-हिन्दी-संस्कृत । ले॰ काल म०१७६४ फायुरा बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६३७ ।

विशेष--- निम्न रचनाओं का संग्रह है---

तीस चौबीसी	श्यामकवि	हिन्दी	र०काल स १७४६ चैत सुदी ५
विनती	गोपालदास	,,	

इसके अप्तिरिक्त अन्य पाठों का भी सग्रह है।

६३६२. गुटकासं०२२ × । पत्र स०१७५ । घा०६२ × ४६ इ.च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल स०१६१४ माघ मुदी१। पूर्ण। वेष्टन स०१३ द।

विशेष--निम्न रचनाग्रो का सग्रह हैं।

मक्तिपाठ		सस्कृत
चतुर्विशति तीर्थंकर जयमाल		हिन्दी
चतुर्दश गुग्गस्थान बेलि	<b>ब्र</b> ० जीवघर	हिन्दी
चेतन गीत	जिनदास	,,
लामालाभ मन सकल्प	महादेवी	संस्कृत
सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनदि	,,
परमार्थ गीन	रूपचन्द	हिन्दी
परमार्थं दोहाशतक	रूपचन्द	"

**६३६३. गुटकास० २२६**। पत्रस० ६७ । झा० ६३,४६ इश्वा। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले∘कालस०१८२१ झाबाढमुटी ४ । पूर्णं। बेष्टनसं०६३६।

विशेष -- मक्तामर स्तोत्र, विषापहार, प्रमगल, तत्वार्थ सूत्र भादि का संप्रह है।

६३,६४, **गुटकासं० २** द्वापत्र सं० ४६ से ७६ । झा० द×५ है इच्चा नावा–संस्कृत । ने०काल ×। पूर्यो । वस्टन स० ६४० ।

विशेष--- दशलक्षण पूजा, धनंत वत पूजा, एवं मत्तामर स्तोन धादि का संबह है।

€२६५. गुटका सं०२२ सः । पत्रस०२ तः। धा०८ ×६ इञ्चः। भाषा-हिन्दीः। ले०काल सं०१७६६ । पूर्णावेष्टन सं०६४१।

विशेष -- निम्न रचनाओं का संग्रह है।

कमंत्रकृति भाषा मगीसवाद वनारसीदास हिन्दी देवराज र० मं० १६६३ ,,

**९३६६. गुटका सं०२२६**। पत्रसं०१ द६। घा० ७३ × ५ इ.च. । साया-प्राइत-सस्कृत । ने० काल स०१६ द० सावरण बुदी १० । ग्रनुर्एग । बेष्टन स०६४२ ।

विशेष--- मुरुपत: निम्न पाठों का सग्रह है---

बाराधना सार परमात्म प्रकाग दोहा	देवसेन योगीन्द्रदेव	মাকৃল স্বসায়
द्वादशानुत्रे का	_	धप% श
मालाप पद्धति	देवमेन	सस्कृत
ब्रष्टपाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत

€२६७. गटकासं०२३० । पत्र स०६८ । म्रा०६१ँ ४४१ँ इश्वामाया-हिन्दी। ले० काल ४ । पूर्णावेष्टनस० ६४३ ।

विशेष --- ग्रायुर्वेद के नुस्थे है।

६२६ म. **गुटकास० २३१** । पत्रस० ७० : झा० १८ ४७ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ते० कालस०१९३८ आरमोज बुदी हा पूर्मा **बेहनसं० १**४४ ।

विशेष--वृहद् सम्मेद शिलर पूजा महातम्य का सग्रह है।

**६३६६. गुटका सं०** २३२ । पत्रसं० ४१५ । झा० ४१<sup>°</sup> ×४<sup>°</sup> इञ्च । भाषा−हिन्दी । ले० काल × । पूर्णं । बेष्टन स० ६४४ ।

विशेष--निम्न पाठी का संग्रह है।

नाम ग्रंच	ग्रंथकार	भाषा	पत्र सं ०	विशेष
नेमीश्वर रास	इ० रायमल	हिंदी	3-86	र० सं० १६४४
				फागुएा सुदी ४
चेतनपुद्गल धमाल	बस्ह	21	¥0-00	पद्य स० १३०
भील महिमा	सकल भूषरा	"	₹ <i>0-00</i>	पद्य सं० १६
बीरचन्द दूहा	लक्ष्मीचन्द	"	98-=£	पद्य सं० ६६
पद	हर्षगरिए	n	≂ 19	पद्य स० ७
नेमीश्वर राजमति	सिंहनदि	n	37	पद्म सं० ४
<b>चात्</b> र्मास				ले०काल सं०१६५५

बलिभद्र गीत	सुमतिकीर्ति	हिन्दी	\$3	
मेषकुमार गीत	पूनी	,,	ę=	
नेमिराजमित बिल	ठक रसी	n	<b>₹</b> ₹\$	48
क्रुपरण षट्पद	,,	,,	<b>१२</b> •	
पद	,,	**	१२६	
पद	साहरा	**	<b>१</b> २६	
पद	बूचा	,,	<b>१३०-३३</b>	
पचेन्द्रीवेलि	ठक्कुरसी	,,	440	
योगीचर्या			6AA	
गीत	बूचा	,,	१४७	
म० घमंकीति भुवन		"	१६५	
कीर्ति गीत				
मदनजुद्ध	बूचाकवि	,,	१८४	पद्य स० १५ ८
			(र० सं० १५८६	से०काल सं० १६१६)
विवेक जकडी	जिरादास	,,		
मुक्ति गीत				
पोषहरास	ज्ञानभूषरा	• 7	₹ <b>X</b> X	
शीलरण्स	विजयदेव सूरि	.,	३६५	48
नेमिनायरास	वहारतन	,,	३७३	
पद	बूचा	,,	३=२	
मादिनाथविनती	ज्ञानभूषरा		×3 F	
नेमीश्वर रास	माऊ कि		४१५	
चनुगंतिवेलि	हर्षकीति		_	

६३७०. गुटका सं०२३३ । पत्रस० ४० । सा०१३×६३ ६७। साथा-हिन्दी⊸सस्कृत । से•कास सं०१०६६ साघ गुरी १४ । पूर्णा वेष्टन सं०६४६ ।

विशेष-पूजाओ एव पदों का समह है।

**६३७१. गुटका सं**०२३४ । पत्र सं०४०३ । ग्रा०७imes६ $^2_7$  इ.स. । भाषा-हिन्दी । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं०४६७ ।

## विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है।

सीतासतु	मगवतीदास	हिन्दी	पत्र सं•
<b>मीलबत्तीसी</b>		,,	<b>१−</b> ५३
राजमतिगीत		.,	4¥-44
बाबनी छपई			

खहडाल		हिन्दी	
पद एव गीत	भगवतीदास	,,	७० तक
पद एवं राजमति सतु		,,	
भादित्यवार कथा		,,	
दयारास	गुलाबचंद	,,	
<b>भूनडी</b> रास	भगवतीदास	,,	
रविवत कथा	_	•,	
सीचडरास		,,	
रोहिए। रास	_	,,	
जोगरा रास		,,	
मनकरहारास	-	,,	
बीर जिएाद		.,	
दशलक्षरा पद		"	
राजावलि	nan-se	,,	
विभिन्न पद एव गीत	-	:,	१७६ पत्र तक
बराजारा गीत		,,	-
राजमति नेमीश्वरढाल		,,	-
समयसार नाटक	वनारसीदास	,,	
चतुर बराजारा गीत	भगवतीदास	,,	
श्चर्यलपुरजिन बदना		,,	
जलगालन विधि	<b>द</b> ० गुलाल	,,	
गुनाल मथुराबाद पच्चीसी	-	,,	
बनारसी विलास के पाठी	बनारसीदास	,,	
का संग्रह			

€ ३७२. गुटका सं० २६४ । पत्र सं० द२ । ब्रा० ७ ४ ४ इचा । आषा -हिन्दी । ले० काल सं∙ १७४८ / १७६० । पूर्ण । बेहन स० १४७४ ।

विशेष---निम्न पाठों का सम्रह है---

नेमीश्वर के पंचकत्याएक गीत, सज्आय, बृद्धिरासी, धाषाढमूति धमालि, धर्मरासी धादि धनेक पाठों का सबह है।

६३७३, गृटकार सं० २३६। पत्रसं० २४। मा० द x ६ इला। भाषा-संस्कृत । ले∘काल x ३ पूर्णे। बेष्टन सं० १४७४।

विशेष -- निम्न पूजा पाठों का संग्रह है--

पद्मावती स्तोत्र, पद्मावती पूत्रा, पद्मावती सहस्रताम, पार्थनाथ पूत्रा, पद्मावती झारती, पद्मावती गायची मादि पाठों का संबद्ध है। ६३७४. गृटका सं० २३७ । पत्र सं० १०० । ग्रा० ६३ ४६ इश्वा भाषा –सस्कृत । ले० काल सं० १८४५ माह सुदी १२ । पूर्णा । वेष्टन सं० १४६५ ।

विशेष-ज्योतिप सबधी पाठो का सम्रह है।

**६३७५. गुटका सं० २३ द। पत्र स०** १२०। ग्रा० पर्<sup>2</sup> ×५ १ इ.च. । भाषा-*हिन्दी* –संस्कृत । ले० काल स०१८४० फागुसा बदी ७ । पर्गा। वेष्टन सं०१४८६ ।

विशेष -- नाटक समयसार एवं त्रिलोकेन्द्र कीर्ति कृत सामायिक भाषा टीका हैं।

**६३७६. गृटका सं० २३६ ।पत्र स० १**२६ । ग्रा० म×६ इ.च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । को∙काल स०१ मन्दर्भ कागुरा बुदी ६ । पूर्णा वेष्टन सं०१४म७ ।

विशेष --- मस्यतः निम्न पाठो का सग्रह है।

नाम ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
व्रत विधान रामो	दौलत राम पाटनी	हिन्दी	र• स० १७६७
प्रायश्चित ग्रथ	श्रकलक स्वामी	संस्कृत	
ज्ञान पच्चीसी		हिन्दी	
नारी पच्चीसी		••	
वसुघारा महाविद्या		सस्कृत	
मिथ्यात्व भजन राम	_	हिन्दी	
पचनमस्कार स्तोत्र	उमःस्वामी	संस्कृत	

६३७७. गृटका सं० २४०। पत्रस० १४४। ब्रा० ५३ $\times$ ६ इ.च.। भाषा-हिन्दी।  $\cdot$ ० काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स० १४५६।

### विशेष-पद संग्रह है।

**६३७८. गुटका सं० २४१।** पत्र स०१०६। ग्रा०५**x**४ इञ्च। भाषा−हिन्दी। र०काल×। के०काल ×। पूर्ण। बेष्टन सं१४६०।

विशेष-पदों का संग्रह है।

**६३७६. गुटकासं० २४२** । पत्र स० ६६ । ग्रा० ८ ४४ इ.ख.। भाषा – – सस्कृत । र०का<del>ल</del> メ । ले० काल स० १७२६ । पूर्ण। बेष्टन स० १४६१ ।

विशेष-पूजा पाठ सग्रह है।

६३ म. जुटका सं० २४३ । पत्रस० ३०६ । ग्रा० ६ ४ ५ ई डबा। प्राया-संस्कृत-हिन्दं। । र∙काल 🗴 । ले० काल स० १६६२ फायुगाबुदी ट। पूर्णा। वेष्टन सं० १४६२ ।

विशेष-सागवाडा नगर में प्रतिलिपि की गयी थी। पूजा पाठ एव स्तोत्र संबह है।

६३८६. गुटकासं० २४४ । पत्रसं० १७० । घा० ६१,४५३ इञ्च । माया–संस्कृत । ने०काल सं० ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४६३ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

६३ दर, गुटकासं० २४ ४ । पत्रसं० ७० । आर० ११ ४ ६ ३ ६ था। सामा−हिन्दी। र०काल ४ । ले० काल सं०१ द६४ पौप सुदी ४ । पूर्णावेष्टन स०१४६४ ।

विशेष - भरतपुरवासी पं ० हेमराज कृत पदों का संग्रह है।

**१३ व. गुटका सं० २४६ । प**त्रस० ६७ । घा० प्र×४ <sup>2</sup> इ.च.। माषा-हिन्दी । से**०काल** ×। पर्सा । वेस्टन स० १४६५ ।

विशेष--हिन्दी पदो का संग्रह है।

**६३ न ४. गुटका सं**० २४७ । पत्रसं० ४० । मा•६×५ देवाः भाषा−हिन्दी । विषय – संबह । से०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६६ ।

विशेष---पुजा पाठ सब्रह है ।

**६३८५. प्रतिसं०२४**८ । पत्र म०१३४ । ग्रा०१०×४ इ.चा। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १६३५ ग्रासोज सुदी ४ । पूर्ण। देवन स०१४८७ ।

विशेष-भट्टारक सकलकीर्ति, ब्रह्मजिनदास, ज्ञानभूषण सुमतिकीर्ति भादि के पदो का सम्रह है।

**६३८६. प्रतिसं० २४६**। पत्रसं० ११७। ग्रा० ६×१ इंच । भाषा⊸हिन्दी । ले०काल म०१८९८ ज्येष्ठ सुदी३। पूर्णायेषुत स०१४६५।

विशेष--पुजा पाठ सप्रह है।

६३ ८७. गुटका २५०। पत्रस० ४१। घा० १ $\times$ ६ इश्व। विषय-हिन्दी। ले०काल  $\times$ । पूर्ण। बेहन म०१४६६।

विशेष--पूजा पाठ एव स्तीत्र सम्रह है।

£ ३ तद. गुटका सं० २ ४१ । पत्र सं० १३ दामा० १० हे ४६ इ.स. । भाषा−हिन्दी । ले∘काल सं० १७६३ । कागुण सुदी १३ पूर्ण । बेष्टन स० । १५०१ ।

विशेष - स्तवन तथा पूजा पाठ सबह है।

६३ म्ह . गुटकास० २५२ । पत्रसं∘ १२७ । झा० ४३, ४४ इचा । भाषा-हिन्दी के•काल ४ । पूर्णावेष्टन सं०१५०२ ।

विशेष---निम्न रचनाओं का सग्रह है।

घष्टाह्निका पूजा---

धवन्ति कुमार रास--(जिनहर्ष) र० सं० १७४१ भाषाढ सुदी म ।

€३६०. प्रति सं०२५३ । पत्रसं०६८ । सा०४×४ इचा । साथा-हिल्दी । ले०काल × । पूर्ण । केष्टनसं०१४०३ ।

विशेष--सामान्य पाठों का संग्रह है।

**६३६१. गुटका सं० २५४** । पत्रसं० २०२ । द्या० १०imes४ इन्छ । भाषा-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्ण । बेहन सं० १४०५ ।

विशेष-- ज्योतिष शास्त्र सर्वधी सामग्री है।

**६३६२. गुटका सं० २५५ ।** पत्र सं० २०० । आ० ५×५ इञ्च । भाषा−हिन्दी । ले० काल स० १६५३ कार्तिक सुदी १० । अपूर्ण । बेष्टन स० १४०६ ।

विशेष--निम्न पाठों का सम्रह है।

वीरनायस्तवन, चउसरएाययम, गजसकुमालचरित्र, बावनी, रतनचूत्ररास, माघवानल चौपई धादि पाठों का संबह है।

**६३६३.** गुटका सं० २**४६।** पत्रस०३६। ग्रा॰  $= \frac{1}{4} \times$ ६ इ.च.। साथा— संस्कृत। ले॰ काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन स॰ १४०७।

विशेष-मनतन एवं रमल आदि का संग्रह है।

६३,६४. गुटकासं०२,५७ । पत्रस० ५७ । झा• ६ ४.५ इचा। भाषा—हिन्दी। ले०काल ४ । पूर्णावेष्टनसं०१,५० ⊏ ।

विशेष--पूजा पाठ सग्रह है।

**६३६४. गुटकासं०२४.८।** पत्रस• ७२ । ग्रा• ४२<mark>,</mark> ४४ इचा। भाषा-हिन्दी,संस्कृत । ले∘काल × । पूर्ण । वेष्टनसं•१४०६ ।

विशेष-पूजा पाठों का संग्रह है।

६३,६६. गुटकासं०२,४६ । पत्र स० १७४ । द्या० ६ ४ ४ इ.च । भाषा-हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनसं०१ ४१० ।

विशेष-हिन्दी के सामान्य पाठों का संग्रह ।

**६३६७. गुटका सं०२६०। पत्र** सं०६२। ग्रा• ७४५ इ.च.। माचा-हिन्दी। ले० काल – सं०१⊂३८। पूर्णावेष्टनसं०१४११।

विशेष-वंद्य मनोत्सव के पाठों का संग्रह है।

€३.६६. सुटकास०२६१ । पत्रसं०१०० । झा० ६×४ इ.चा। भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्णावेष्टनसं०१४१२ ।

विशेष-गुरास्थान चर्चा एव रत्नत्रय पूजा है।

६२६६. सुटका सं०२६२ । पत्रसं०२४ । झा०५×४३ इ.च. । भाषा~सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१४१३ ।

विशेष-मानार्य केशव विरन्तित पोडणकारए। वतीग्रापनपूजा जयमास है।

१४००. युटका सं० २६३ । पत्र सं० ७३ । मा० म $\frac{1}{2} \times Y_1^2$  इ.ख. । माषा—हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० १४१४ ।

विशेष--- निम्न पाठों का संग्रह है----

चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न, धर्मनाय रो स्तवन (गुणसागर) उपदेश पञ्चीसी, (रामदास) वालिभद्र धन्ना चउपई (मुणसागर)।

**६४०१. गुटकासं०२६४** । पत्र स०१०७ । झा०१×६ इ.च. । आरबा−हिन्दी, । ले० काल × । पूर्णावेष्टन सं०१४१५ ।

विशेष - गूग्स्थान चर्चा एव घर्य पाठों का संग्रह है।

**६४०२. गृटका सं०२६४**। पत्रसं० १३४। घा० ७×५ इचा। मा**षा**—हिन्दी। से•काल स०१८८० पौष सदी ४। पूर्ण। **बेब्रन सं०**१५१६।

विशेष---मृत्यतः रसालुकंवर की वार्ता है।

 $\pmb{\mathcal{E}}$ ४०२. गुटका सं० २६६ । पत्र स० १२०। स्रा० ९ $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इन्छ । भाषा-हिन्दी से•काल imes । पूर्ण । बेष्टन स०१४१७ ।

विशेष-- विभिन्न कवियों के हिन्दी पदों सग्रह है।

£ ४०४. गुटकासं०२६७ । पत्र स॰ १२७ । घा०६×४ इचाभावा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्णावेष्टन स०१४१⊏ ।

विशेष-ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है।

६४०५. गुटका सं० २६ सः । पत्र स० १२३ । म्रा॰ ६ $rac{1}{2} imes rac{1}{4}$  इन्छ । माथा-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्णा वेष्टन सं० १५१६ ।

विशेष-- ग्रालिभद्र चौपई के ग्रांतिरक्त विभिन्न कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है।

**९४०६. गुटकासं०२६६** । पत्र सा१४४ । घा०६ है×६ इञ्च। भाषा-हिरदी। ले∘काल ४, । पूर्ण। वेष्टन स०१५२० ।

विशेष-विभिन्न कवियों के हिन्दी पदो का संग्रह है।

६४०७. **गुटकासं**०२७० । पत्रस०२=२ । घा० ४२<sup>°</sup> ४४<sup>°</sup>, इला। भाषा-संस्कृत-हिन्दी । क्री•कालासं०१६६० । पूर्णावेटन सं०१५२२ ।

विशेष-- पजाएं एवं बह्म रायमझ कृत नेमि निर्वाण है।

**१४० त. गुटका सं०** २७१ । पत्र स०१४० । घा० प $\times$ ६ इचा । भाषा—हिन्दी । लेञ्चाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०१४२३ ।

विशेष-सामान्य पाठ एव बायुर्वेदिक नुस्ते हैं।

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर नागदी-वृंदी।

् १४०१. गुटका स० १। पत्रस० ११५ । झा० ४×४ इचा। भाषा–सन्द्रत–हिन्दो। ले∘कालं ×ापूर्णावेष्टन सं० १६३।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है।

६४१०, गुटका सं० २ । पत्रसं∘ २१६ । ग्रा० ६४६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । के∘काल×।पूर्णा वेष्टनसं∘ १६४ ।

विशेष-पूजा स्तोत्र एवं धन्य पाठों का संग्रह है।

**६४११. गुटका सं० ३** । पत्रस• २१२ । द्या० ८×४ इ.च. । माया-संस्कृत-हिल्दी । ले•काल × । पूर्गा । वेष्टन सं० १६२ ।

विशेष--गूग्स्थान चर्चाग्रादि कासग्रह है।

**६४२२. गुटका सं०४ ।** पत्र स०३४ । घा०६ $\times$ ४ इञ्च । माचा– हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स०१८७ ।

विशेष-ग्रायुर्वेद के नुस्खे हैं।

**६४१३, गुटकासं० ४ ।** पत्र सं ० ११६ । द्या॰ ५imes६ इ.च.। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। ले॰कालimes। पूर्णं। वेष्टन स० १६६ ।

विशेष-पूजा पाठो का संग्रह है।

£ ४१**४. गुटकासं०६ ।** पत्रस• ४०। धा०१०×४ इ∙वः। भाषा–सस्कृत, हिन्दी। ले०कास × । पूर्णावेष्टनसं०१ ५६।

विशेष ---पूजा पाठ सग्रह है।

**६४१५. गुटका सं०७ ।** पत्रस०७८ । घा०५ $\times$ ४ $^2$ , इ.ख । भाषा–हिन्दी । ले०काल $\times$ । पूर्णं । बेहन सं०१८५ ।

विशेष-पूजा पाठ एव पद सग्रह है।

**६४१६. गुटका सं० द**ापत्रस०४६ । घा० ५२<sup>°</sup>,४४ इ.चा । भाषा−हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा वेट्टन म०१६२ ।

विशेष-गृटका दादू पथियों का है। दादूदयाल कृत सूमिररण एव विनती को ग्रंग है।

६४१७. गुटका सं० ६ । पत्रस० ७६ । छा० ४२्×४३ इन्छ । भाषा-सस्कृत । ले०काल  $\times$  । पूर्या । बेष्टनस० १७५ ।

विशेष -- मुभाषित संग्रह है।

६४**१८. गुटका सं० १०।** पत्रस० १४०। म्रा॰  $= \frac{1}{5} \times ६ द्वा। माया-हिन्दी-सस्कृत। से$ **॰का** $ल <math>\times$ । पूर्ण। बेष्टन स०१७६।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६४१६. सुट**का स**०११ 'पत्रसं∘६२ । घा० ५×४३ इञ्च । भाषा–सस्कृत । ले०काल सं∙ १४४१ फाल्युस बुदी १२ । पूर्सा। वेष्टन स०१७७ ।

१. सम्प्रत्नं पूत्रा संस्कृत **दु**षसेन । २. सम्प्रक नारित पूत्रा ,, नरेन्द्रसेन । ३. शानिक विधि ,, **धर्मदेव ।**  £४२०. गुटकासं० १२ । पत्रसं० ११६ । झा० ७x ५३ इ.च. । साथा-सस्कृत-हिन्दी। से०काल x । पूर्वा वेस्टनसं० १७६ ।

६४२१. गुटकासं०१३ । पत्रसं०१२६ । घा०६३ $\times$ ४६ व्याः भाषा-सस्कृत-हिन्दी। के०काल $\times$ । पूर्णः वेष्टन सं०१७६ ।

हिन्दी

,,

विशेष —सामान्य पाठी का संग्रह है।

संतोष जयतिलक वृत्रपाज
 नेतन पुद्गाल धमालि वृत्रपाज

. १४२२**. गुटकासं० १४** । पत्रस• ६२ । घा० ६×६ हे दचा । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णा । बेष्टन स० १७४ ।

विशेष-- ध्रादित्यवार कथा एव पूजा संग्रह है।

६४२२३. **गुटकासं० १४.।** पत्र सं०२४२ । ब्रा• ६४५ इ.ख.। भाषा⊸मस्कृत-हिन्दी । ले•काल × । पूर्ण। बेष्टन स०१७३ ।

 पुवनदीयक भाषा टीका सहित पद्मनिद मूरि । सह्यून लेक्बाल स॰ १७६० हिस्सी
 प्रीयंग्य मार मुमिनिकीति सस्यून ।
 प्रीश्यवीप काशीनाय ,,
 गम्यस्थार नाटक बनारमीदास हिन्दी पद्य

६४२**४. ग्टका स०१६** । पत्र स०४–४७ । घा०१०} × ⊏ इखा । माघा–सस्ट्न । ने०काल × । घष्णी । **बेहन स०१६**४ ।

विशेष---नित्य पूजा पाठ एव स्तोत्र सम्रह् है।

६४२५. गृटकासं०१७ । पत्रस०२०० । म्रा०६४५ इ.च.। भाषा-हिन्दी। ले०काल x । पूर्णं। बेष्टनसं०६६ ।

विशेष-समयसार नाटक एवं भक्तामर स्तीत्र, एकीभाव स्तीत्र ग्रादि भाषा में है।

 $\mathbf{E}$  ४२ ६. गुटका सं० १८ । पत्रस॰ ६–२०४ । प्रा॰ ६imes ६ न्व । भाषा-सस्तृत-हिन्दी । ले॰ काल imes । प्रपूर्ण । वेष्टन स॰ ६४ ।

विशेष — पूजास्तोत्र भादि है इसके अतिरिक्त विमलकीर्ति कृत आराधाना सार है—जिसका शादि भ्रन्त भाग निम्न है।

#### प्रारम्म---

श्री जिनवर वास्ति निर्माव गुरु निर्माय प्रस्तिनित्त । कहूं झाराधना सुविवार संसे पदंसारोबार ॥१॥ हो क्षपक वयस भवधारि।

हवेइंचात्युतुं भवपार।

हास्युं सट कहं तक्त भेय

बुरि समकित पालिन एह ।।

मन्तिम--

सन्यास तसा फल जोइ।

हो सारगिरपि सुख होइ।

वली श्रावकनु कुल पामी

लहर निरवाण मुगतइगामी ।।

जे मड सुराइ नरनारी,

ते जोइ भवनइ पारि ।

श्री विमल कीरति कहथु विचार।

श्री भाराधना प्रतिबोध सार ।।

६४२७. गुटका सं०१६ । पत्रसं∘३६ । ग्रा०१३ ४ ४ इचा। भाषा−हिन्दी । से∙कास ४ । पूर्णे । वेष्टन सं०३१ ।

विशेष - गुरास्थान चर्चा एवं प्रन्य स्फुट चर्चाएं हैं।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बुंदी।

**६४२ म. गुटका सं०१। पत्र सं०**४५। घा०१०३ ×७ इ.चा। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ते० काल × । पूर्णं। वेष्ट्रनसं०१६६।

विशेष --पूजा पाठ सग्रह है ।

६४२६. गुटकासं०२ । पत्रस० १४४ । धा०१०४६ इचा । माथा-हिन्सी । ले∘काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टन स०१६४ ।

विशेष -- निम्न पाठ है:-- गुरास्थान चर्चा, मार्गगा चर्चा एव नरक वर्गान

६४२०. गुटका सं०३ । पत्र स०४० मा ग्रा०१० ४६ इचा । भाषा–सस्कृत । से•कास ४ । पूर्णा वेष्टन स०११६ ।

बिशेष -- पूजाओं का सम्रह है।

६४३१. गुटका सं०४। पत्र स०२१२ । ग्रा० १०१४ ७ इञ्च । मावा-सस्कृत-हिन्दी । कै०काल सं०१६४७ । भ्रपूर्ण ।

विशेष--- नित्य पूजा पाठ एव छहडाला, ध्यान बत्तीसी एव सिंदूर प्रकरण है।

६४३२. गुटका सं० ४ । पत्रस० १४१ । ग्रा०१३१४ ८१ इला । माया-संस्कृत-हिन्दी । मे•काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०६८ ।

विशेष---नित्य नैमित्तिक पूजा तथा पाठों का सग्रह है।

**१४३३. गुटका सं०६** । पत्रसं० ४४ । मा०१०३ ×७ इ.च. । माया–संस्कृत । के०काल × । पूर्यों । बेकृत सं०६ ⊏ ।

विशेष -- निम्न लिखित पाठ है---

रै. मरिष्टाध्याय (२) प्रायश्चित भाषा (३) सामायिक पाठ (४) शांति पाठ एवं (४) समतभद्र कृत बृहद्द स्वयंभ्र स्तोत्र ।

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी बुंदी।

६४२४. **गुटकासं०१** पत्रसं०३ स**ः। ग्रा० ७**४६ इ.चा। माया−हिन्दी ।ले०काल ४ । पूर्यों। बेष्टन सं०७६।

विशेष--निम्न पाठ है---चर्चाशतक कलयुग बत्तीसी भादि है।

६४ **२ १. गृटका सं० २ ।** पत्रसं० ५६ । घा० ६४ ५ <sup>2</sup>, इश्वर । भाषा−हिन्दी प० । ले०काल स० १७=० कागुरावदी १० । पूर्ण। वेष्टन सं० ७४ ।

विशेष---निम्न पाठ हैं---

१. बिहारी सतमई

-- पत्र १-५४ पद्य सं० ६७६

२. रसिक त्रिया -- ,, ४४-४६

 $\mathbf{e}$ ४३६. गुटकासं० ३ । पत्र स०६४ । घा० ४.४.५ ६९४ । ध्राया-हिन्दी । ले॰काल $\mathbf{x}$  । युर्णे । येष्टनसं०७३ ।

विशेष--- पद एव विनती संग्रह है

६४३७. गुटका सं०४ । पत्र स० ७२ । घा०६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल ४ । पूर्णः । वेप्टन स०७१ ।

विशेष-धातु पाठ एवं चौबीसी ठाएग चर्चा है।

**६४३ ≒. गुटकास० ५ ।** पत्र स० ६० । ग्रा० ७×४ इ**च । भाषा**-हिन्दी-सस्कृत । **ले∙काल** × । पूर्णा वेष्टन स० ७२ ।

विशेष---पूजा स्तोत्र सग्रह है।

६४३६. गुटकास०६ । पत्रस०११६ । झा०७४४, इल्डाभाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले•काल ४ । पूर्णं। बेष्टन स०६६ ।

्रि४४०. गुटका सं०७। पत्र सं० ४७४। ग्रा॰ ६४५ इन्छ। भाषा–सस्कृत-हिन्दी। सै॰काल ४। पूर्ण। बेष्टनसं०६६।

विशेष--पृत्रा पाठ सम्रह हैं।

१८४४१. गुटकासं० ६ । पत्रसं० २७२ । मा० ७ ४६ इञ्च । भाषा-हिन्दी−संस्कृत । से०कास ४ । पूर्णा। केप्टन स०४६ ।

विशेष-र्जलोक्येश्वर जयमाल, सोलहकारण जयमाल, दशलक्षरण जयमाल, पुरपरयण जयमाल । व्यक्ति पाठों का मण्ड है।

६४४२. पुटका सं०६ । पत्र सं०४० । घा० ७×५ इ.च. । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०कास × । पूर्णः वेष्टन सं०४४ ।

विशेष-कस्थाए मन्दिर भाषा एवं तत्वार्थ सूत्र का संग्रह है।

. **६४४३, गुटका सं० १०।** पत्रसं० ३१८। ग्रा० ६×६ इश्वः। भाषा–हिन्दी-सस्कृतः। ले**०काल** × । पूर्णः। बेष्टन स०४४।

विशेष- पूजा पाठ स्तोत्र बादि का संग्रह है।

**६४४४. गुटका सं०११** । पत्रस० ४४ । घा०६×६ इञ्च । भाषा-स*स्कृत*−हिन्दी । ले**०काल** ×। घपूर्एं। बेहन स०२६ ।

**८४४५. गुटकासं०१२।** पत्रसं०२६–२१७ । ग्रा०६×६ दश्वः। भाषा-हिन्दी-सम्कृतः। क्वे•कालः। श्रपूर्णः। वेष्टनसं०२१।

विशेष--- पुजायें स्तोत्र एव सामान्य पाठो का संग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बुंदी।

**६४४६. गुटकासं० १।** पत्रसं०३५३ । ब्रा० ⊏्रै×४<sub>२</sub> इञ्च । भाषा-सस्क्रत-प्राकृत । ले० काल स०१७१८ ।पूर्ण । वेष्ट्रसं०३६६ ।

विशेष--निम्न पाठीं का संग्रह है।

<b>।वश्य-</b> ।नमन पाठा का	ଖୟର୍ଚ ।	
१. ज्ञानसार	पद्मनन्दि	प्राष्ट्रन
२. चारित्रसार	Υ	"
३. ढाढसी गाथा	×	,,
४. मृत्युमहोत्सव	×	स <b>म्</b> कृत
५. नयचक	देवसेन	"
६. ग्रष्टपाहुड	कुन्द हुन्द	प्राकृत
७. त्रैनोक्यसार	नेमिचन्द	71
<ol> <li>श्रुतस्कत्र</li> </ol>	हेमचन्द	11
६. योगसार	योगीन्द्र	भ्रपभ्र श
१०. परमात्म प्रकाश	11	11
११. स्वामी कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा	कान्तिकेय	<b>प्राकृत</b>
१२. भक्तिपाठ	×	<b>সাকৃ</b> ৰ
१३. वृहद् स्वयंभू स्तोत्र	समंत सद्र	सस्कृत
१४. संबोध पचासिका	1	प्राकृत
१५. समयसार पीठिका	×	संस्कृत
१६. यतिभावनाष्ट्रक	×	,,
१७. वीतराग स्तवन	पद्मनिन्द	,,
१८. सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनस्दि	,,
१६. मावना चीबीसी	पद्मनन्दि	"
२०. परमात्मराज स्तवन	×	"
२१. श्रावकाचार	प्रभाचन्द	,,
२२. दशलाक्षरिएक कथा	नरेन्द्र	,,
		,,

२३. श्रक्षयनिधि दशमी कथा	×	संस्कृत
२४. रत्नत्रय कथा	ललितकीर्ति	19
२५. सुभाषितार्णव	सकलकी ति	"
२६. भनन्तनाथ कथा	×	i,
२७. पाशाकेवली	×	ŧı.
२८. भाषाष्ट्रक	X	n

इसके धतिरिक्त घन्य पाठ भी है।

**६४४७. गुटका रां०२ ।** पत्र स०१७२ । धा० म $\frac{7}{4} \times \frac{7}{4}$  इल्ब । माषा-हिल्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०३६७ ।

विशेष — भ्रायुर्वेदिक नुसन्धो का सग्रह है।

६४४ ८. गुटकास० ३ । पत्रस० ३४६ । मा० ६ ४ ४ ॄै इश्वः। माषा−सस्कृत−प्राकृत−हिन्दी। ते० काल स० १७१२ पौप बुदी ४ । पूर्णा विकृतसं० ३६ ८ ।

विशेष---निम्न पाठी का सग्रह है।

१-समयमार नाटक बनारसीदास हिन्दी पद्य २-बनारसी विलास

ले॰काल १७१२ पीप वदी ४ । लाहीर मध्ये लिखापितं ।

३-बोबीमठागा वर्षा — "
४-सामाधिक पाठ — सस्कृत
४-तत्वाथं मृत्र उमास्वामि संस्कृत
६-रवागसार — प्राकृत
७-परमानद स्तोत्र — सस्कृत
द-मागान्या महानद हिन्दी ४२ पद्य हैं।

भाराधना नार, नामायिक पाठ, भव्टपाहुड, भक्तामर स्तोत्र भादि का सग्रह और है।

६४४६ गुटकासं०४ । पत्रस०४०। म्रा०११४४ १ इ.च.। माषा−हिन्दी पद्यः। ले० काल ४ । पर्णावेटन स०३६४ ।

विशेष -- लिपि विकृत है। विभिन्त पदों का सम्रह है।

६४५०. गुटकासं०५ । पत्र सं०७६ । झा०६ ४४ इ.चा। भाषा−हिन्दी – संस्कृत । ले० काल ४ । अपूर्णा वेष्ट्रन सं०३६२ ।

विशेष-सामान्य पाठों का सग्रह है।

६४४.१. गुटकासं०६ । पत्र स०२०। मा०६×४. ६२०व । माषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्णावेष्टन सं०३२३ ।

विशेष--कोकशास्त्र के कुछ प्रंस हैं।

्रि**४५२. गुटका सं० ७ ।** पत्रस० ५६ । ग्रा० ६×४ै इ.ख । माषा−हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ ।

विशेष--सामान्य पाठो का संग्रह है।

**६४५३. गुटका सं० ६** । पत्र सं० ६–६४ । झा० ५ $\times$ ५ इन्छ । भाषा-हिन्दी । ले० काल  $\times$ । **भए**एँ । वेष्टन सं० ३२५ ।

विशेष-मने किवयों के हिन्दी पदो का संबह है।

**६४५४. गुटकासं० ६** । पत्रस० ६० । ग्रा० ६×५ इ.च.। भाषा-हिन्दी पद्यः। ले०काल × । पूर्षांविष्टन स० ३२६ ।

विशेष --स्तोत्र पाठ एवं रविव्रत कथा, कक्का बत्तीसी, पचेन्द्रिय वेलि धादि पाठो का सग्रह है।

**६४४५. गुटकासं० १०** । पत्रसं० ५२ । ग्रा० ८<sub>१</sub>४६ इ'च । भाषा−हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्णावेष्टन स०३२७ ।

विशेष-पूजास्तोत्र भादि का सम्रह है।

**९४५६. गुटका सं० ११**। पत्रमं०१७६ । म्रा० ५ $^1_2 \times ^1_2 \times ^1_3$  सम्ब $^1_1$  निक्ताल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन सं० ३२८ ।

विशेष—तःवार्यमुत्र, सामायिक पाठ स्त्रोत्र, जेच्ठ जिनवर पूजा, तीस चौबीगी नाम ग्रादि पाठो का सभेह है।

**६४५७. गुटका सं० १२** । पत्र म० १६१ । ग्रा० ४ $\frac{1}{7}$ ४ $\frac{1}{7}$  इ.च. । भाषा — संस्कृत । के० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स०३२६ ।

विशेष-सामायिक पाठ, पन्त स्तोत्र, लक्ष्मी स्तोत्र ग्रादि का सग्रह है।

१८४५ . गुटका सं० १३ । पत्रस० १४३ । ग्रा० ७imes४६ इ.स. । भाषा–सस्कृत । ले०काल imes । पूर्णा । वेष्टन स० ३३० ।

विशेष---सहस्रनाम स्तोत्र, प्रतिष्ठापाठ सम्बन्धी पाठो का संग्रह है।

६४४६. गुटका रॉ० १४ । पत्रस० १४१ । घा० ६४४ इचा माया-सन्कृत । ले० काल ४ । पूर्यो । वेहन सं०४३१ ।

विशेष --सहस्रनाम, सकलीकराम, गमकुटी, इन्द्रलक्षाम, लघुस्तपन, रत्नवसपूजा, सिद्धचक पूजा। झच्छक-पद्मनदीकृत, झच्छक सिद्धचक पूजा-पद्मनदी कृत, जलवाबा पूजा एव सन्य पाठ हैं।

ग्रन्त में सिद्धचक यंत्र, सस्यव्यान यत्र, सस्यप्तान यंत्र, पचपरमेरिठ यत्र, सम्यक् चारित्र यंत्र, दक्तकलाण यत्र, लघु गान्ति यंत्र श्रादि यंत्र दिये हये हैं।

**६४६०. गुटका राँ० १४ ।** यत्रस**० ११४ । ग्रा० ६** $\times$ ४१ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले**॰कास**  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३२ ।

विशेष - रसिक प्रिया-इन्द्रजीत, योगमत-ध्रमृत प्रभव का संबह है।

**६३६१. गुटका रो० १६**। पत्र सं०११४ । घा०६×६ इ.चामाषा⊸हिन्दी। ले० काल × । दूर्षा । बेष्टन सं०३३३ ।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।

**६४६२. गुटका सं०१७।** पत्र सं०६। ग्रा०६×७ इच्छा। भाषा–संस्कृत-हिन्दी। र०काल ×ाले ककाल ×ापूर्णावेष्टन सं०१ ⊏६।

विशेष - दर्शन स्तीत्र, कल्यामा मन्दिर स्तीत्र तथा दव्य संग्रह है।

**१८४६३. युटका सं०१६** । पत्रसं० २१ । मा० १२×६ $^{\circ}_{7}$  इच । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । यूर्गं। बेष्टनसं० १६० ।

विशेष--- पूजा एवं यज्ञ विधान भादि का वर्णन है।

**९४६४. गुटका सं०१६।** पत्रस०१ न्हामा०७ × ५ है इ.च.। भाषा–सस्कृत । ले०काल × । पूर्या। बेष्टन सं०३६।

विशेष--पूजा एवं प्रतिष्ठादि सम्बन्धी पाठ है।

**६४६५. गुटका सं०२०**। पत्रस० २०६। झा०६२¦ ×५१ इल्बा भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले०काल × । पूर्गावेष्टन स०३४ ।

विशेष--- पूजा पाठ संग्रह है।

१४६६. गुरका सं० २१। पत्रसं॰ ७२। म्रा॰ ६imes५ ६२व । मापाimesहन्दी । से॰कासimes१ पूर्ग । बेष्टन म॰ २४ ।

विशेष-पुजा पाठ मादि का संग्रह है

**६४६७. गुटकारां० २२** । पत्र सं० द∹७० । धा० ६×६ इश्वा । भाषा –सुस्कृत । ले०काल × । अपूर्णा । बेष्टन स०२ द ।

१४६ द. गुटकासं० २३ । पत्रसं०४ द । घा० १० $^1_2$  २६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टनसं० द ।

विशेष - चौबीसी दण्डक, गुरास्थान चर्चा थादि का संग्रह हैं।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर पार्श्वनाय चौगान बृंदी ।

१८४६२. गुटकासं० १ । पत्रसं० २-१९४ । झा० ६×६ १ इला । माया—संस्कृत-हिन्दी । के•काल×। पूर्ण । वेष्टनसं० ३३४ ।

**विशेष**—निम्न पाठों का संग्रह हैं।

(१) प्रतिक्रमण् (२) भक्तामर स्तोत्र (३) गांति स्तोत्र (४) गौतम राता (४) पुग्य मालिका (६) शत्रुजयरात (सयसपुष्दर) (७) सूत्र विक्रि (६) संगलपाठ (६) इन्पण् णुकल पक्ष उच्चाय (१०) सनाची ऋषि सज्काय (११) नवकार रात (१२) बुद्धिरास (१३) नवरस स्तुति स्थूलअदकत ।  $\xi$ ४७०, सुरुक्ता सं०२ । पत्र सं०१०७ । घा॰  $\pi_{\xi}^2 \times \xi_{\xi}^2$  इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी। ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०३३३ ।

विशेष---नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का सग्रह है। पत्र फट रहे हैं।

**६४७१. गुटका सं३।** पत्रसं०४१। घा०७४७ इचा भाषा-संस्कृत– हिन्दी। ले०कास ४ । पूर्ण। वेष्टनसं०३१।

विशेष---पुजा पाठ संग्रह है।

**६४७२. गुटका सं०४** । पत्रस० १८ । ग्रा०६ हैं ४८ है इखा भाषा-हिन्दी । के•काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं०३३०।

विशेष-धर्म पश्चीसी, कर्म प्रकृति. बारह भावना एवं परीषह ग्रादि का वर्एन है।

**६४७३. गुटका सं०५**। पत्रस० २४१ । घा० ८ै्×६ इश्वा भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लै•काल स०१८२३ बैबाल बुदी ४। पूर्णा वेष्टन स०२६४।

विशेष-जयपुर में पं॰ दोदराज के शिष्य दयाचन्द ने लिखा था। निम्न पाठ हैं-

(१) त्रिकाल चौबीसी विधान

(२) सौस्य पूजा।

(३) जिनमहस्त्रनाम-आशाधर (५) षोडश कारगा व्रतोद्यापन (४) वृहद् दशनक्षरा पूजा---केशवमेन ।

- (६) भविष्यदत्त कथा-ब्रह्म रायमझ.
- (७) नदीप्रवर पक्ति पूजा।

(=) द्वादश व्रत मङल पूजा।

(१) ऋषिमडल पूजा-गुणनन्दि ।

**६४७४. गुटका सं०६।** पत्रसं०६४ । ग्रा०६×६ इथा। भाषा-हिन्दी। ले∙काल स० १६४४ आवण, मुदी१० । पूर्णी। वे**हन सं०**२६४।

विशेष--पारसदास कृत पद सब्ह है, तीम पूजा तथा अन्य पूजाये है।

£४७५८. गुटका स्रं० ७ । पत्र सं० २१ । ब्रा० १०¦ ४४ इश्व । भाषा⊸सम्कृत−हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्णाः बेष्टन म०२६३ ।

विशेष - जेप्ठ जिनवर पूजा एव जिनमेनाचार्य कृत सहस्रताम स्तोत्र है।

६४७६. गुरका सं० म । पत्रस० १म० । ग्रा० ११×६ इ.चा भाषा-स∗कृत-हिन्दी। ले∘काल × । पूर्णा । चेष्टनस०२१२ ।

विशेष - सामान्य पूजा पाठ मग्रह है।

 $\mathbf{c}$ ४७७. गुटका सं०  $\mathbf{c}$  । पत्र स० १६५–२०१ । स्रा॰  $\mathbf{c}_{i}^{2}\times\mathbf{c}_{i}^{2}$  इन्छ । साथा–सस्कृत । से॰काल  $\times$  । सपूर्ण । बेष्टनसं० २६९ ।

विशेष-- स्तांत्र पाठ पूजा ग्रादि का सबह है ।

६४७८. गुटकासं० १०। पत्रस० १७१ । घा० ०४ ५ हे इच्छ । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं∙ १७१७ । पूर्ण । बेष्टनसं० २८६ । विशेष---पूजा पाठ संबह है।

**१८४८ ह. गुटकारी० ११ ।** पत्रस० १६४ । झा० ५३, ४४ इ.च.। सामा-हिन्दी। ले०काल स० १८६६ चैन बुदी १४ । पूर्ण। वेष्टन सं० २८६ ।

विशेष - रामविनोद भाषा योग शतक भाषा आदि का सबह है।

**१४८०. गुटकारां० १२ । पत्रस० १०६** । प्रा०⊏×६ इच । मापा—संस्कृत-हिन्दी । ले∘काल स० १९६८ । पूर्णावेष्टनसं०२८६।

विशेष—गुटकेकानाम सिद्धान्तसारहै। धाचारशास्त्र परविभिन्न प्रकारमे विवेचन करके दक्ष ६ मंकाविस्तृत वर्गान किया गया है।

**६४८ १. गुटका सं०१३** । पत्र स०४ – ३२ । घा० ६×४ इञ्चाभाषासंस्कृत–हिन्दी। ले० काल × । पूर्णा वेष्टन स०२८५ ।

विशेष--- नथ एवं वहद चागुक्य नीति शास्त्र हिन्दी टीका सहित है।

**१४६२. गुटकारी०१४।** पत्र स० ५७। ग्रा० ५imes६ दर्श्वामावा-सस्कृतः। ते० काल imes। पूर्णः। वेग्टन स०२५४।

विशेष - श्रकुरारोपमा विधि, विभान मृद्धि पूजा तथ। लघु मान्तिक पूजा है।

**६४६३. गृटका सं० १५** । पत्र सं० ५० । धा॰ १०imes६ इश्वः । भाषा-हिन्दी—सस्कृत । ले**॰का**ल imes । धपुर्स्स । बेष्टन म०२४५ ।

विशेष-नित्य नैमित्तिक पूजा सग्रह है।

६४ द४. **गुटकारां० १**६ । पत्र स०१४५ । ग्रा० १०×७२ व्या । भाषा–हिन्दी, सस्कृत । ले∘काल × । पूर्णा वेष्टन स०२४४ ।

विशेष-- निम्न पाठों का सग्रह है--

१-एकीभावस्तोत्र २-विषापहार ३-तत्वार्थसूत्र ४-छहुडाला ४-भक्तामरस्तोत्रटीका ६-मृत्युमहोस्सव ७-मोक्षमार्गवतीसी दौलतकृत ५-मृषयकृपथपच्चीसी १-नरकदोहा १०-सहस्रनाम।

£४६६४. गुटकासी०१७ । पत्रस० ००। झा० द×६ ॄै इश्वा भाषा−हिन्दी, सस्कृत । ले∘काल × ।पूर्णावेष्टनसं०२२०।

विशेष--- नित्य पूजा पाठ व तत्वार्थ सूत्र मादि हैं।

**६४८६. गुटका सं०१८ ।** पत्र स०२३ । घा० ६×५ इञ्चा माया-हिन्दी पद्या ले•काल स०१६२३ । पूर्णावेषून स०२१५ ।

विशेष---

१. सहस्रनाम भाषा -- बनारसीदास

२. द्वादशीकथा --- त्र० ज्ञानसागर

**६४८७. गुटकारो०१६**। पत्र स० दशाझा०६×५ **६४४।** भाषा-हिन्दी, संस्कृत। ले० कास × । पुर्या। नेप्रन सं०१७४।

विशेष--परमातम प्रकास, पंच मगल, राजुल पच्चीसी, दशलक्षण उद्यापन पाठ (श्रुतसागर) एवं तीर्णंकर प्ञा का संग्रह है।

€ॅडदर. गुटका सौ० २०। पत्र सं०३१२ । घा० ११×५ ॄै इञ्च। भाषा—हिस्दी, संस्कृत । ले॰ काल ×ापूर्ण। वेष्टन स० ७५ ।

विशेष-पंचस्तोत्र तथा पुत्रामो का समह है।

ध्यं मध्य स्थाप स्थाप सं १८०। मा १८८ हे इ.स.। भाषा-हिन्दी, सस्कृत । से के काल सं १९४२। पूर्वा विकृत सं १६६।

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैंन तेरहपंथी मन्दिर नैश्ववा

६४६०. **गुटकास**० १। पत्रसं०१०१। घा०६ $\times$ ५ इ.ख । भाषा-प्राकृत । ले०काल  $\times$  । पूर्णं। बेहन सं०१५।

विशेष---मुख्यत. निम्न पाठों का सग्रह है---

श्चरिष्टाध्याय प्राकृत — श्राचार शास्त्र , — विलोकसार , ग्रा० नेमिचन्द्र

 $\boldsymbol{\epsilon}$ ४६१. गुटका सं०२ । पत्र स०११७ । घा०६imes५ ६imesच । आया-हिन्दी, संस्कृत । केल्कालimes । घपूर्ण । बेष्टनसं०१७ ।

विशेष - पूजाभी एवं स्तीत्रों का संग्रह है।

 $\mathbf{E}^{\mathbf{x}}\mathbf{E}^{\mathbf{x}}$ . गुटका सं० । पत्रसं० २–६५ । ग्रा० ६ x ४ $\xi$  इश्व । साथा-हिन्दी, सस्कृत  $\mathbf{k}$  ले० काल imes । ग्रपूर्ण । बेकुनसं० १८ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

६४६६३. मृदकासांठ३ । पत्र स० १४८ । घा०१०x ५ इ.चा । आया-हिन्दी संसकृत । ले०काल स०१८७७ । पूर्णावेष्टनस०१६ ।

<b>विशेष</b> — मुख्यत <i>्</i> निम	न पाठों का सग्रह है		
श्रीपाल चरित्र भाषा		हिन्दी	
जिन महस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	****
भविष्यदत्त बोपई	बह्य रायमस्ल	हिन्द <u>ी</u>	

ह¥१४, गुटकासं० ४ । पत्र सं० १६० । घा० ६×४० इन्द्राः भाषा—हिन्दी-संस्कृत । से० काल × । घपर्यो । देवन सं० १६ ।

£४६५. गुटकास०५ । पत्र सं०१४६ । म्रा० ७४५ इचा। भाषा-हिन्दीसंस्कृत । ले० काल ४ । घपूर्णा। बेष्टन सं०२०।

विशेष-धायुर्वेद, मंत्र शास्त्र ग्रादि पाठो का संग्रह है।

£४६६, गुटकासं०६ । पत्रसं० १७६ । घा० ४५ ४४ इश्वः । प्राथा-सस्कृत हिन्दी। ले∘कालस० ४ । पूर्णावेष्टनसं०६२ ।

विशेष - प्रायुर्वेदिक नुस्लों का प्रच्छा संग्रह है।

**६४६७. गुटका सं० ७ ।** पत्रसं• १३६ । मा॰ ६imes५२ हश्व । भाषा-हिन्दी । से•कास imes । पूर्ण । बेप्टनसं॰ ६५ ।

विशेष -- पुजा पाठ तथा स्तोत्रों एवं पदों का सग्रह है।

## प्राप्ति स्थान-दि • जैन प'चायती मन्दिर दनी (टोंक) ।

६४६८. गुटका स० १। पत्र सं∙१८८ । माचा—संरकृत हिन्दीः ले० काल 🗴 । पूर्णः । वेष्टन सं०१०६ ।

विशेष-नित्य नैमित्तिक पूजाग्रों का सग्रह है।

६४६६. गुटकास०२ । पत्रस०७२ । घा० ५imes ४ देइ चा। भाषा-हिल्दी । ले० काल imes । पूर्ण । बेहन स०१२ र ।

विशेष---प्रति जीर्ग् है तथा लिपि विकृत है । मुख्य निम्न पाठ हैं ।

<b>१–घुच</b> रित	परमानन्द	पत्र १-५ ।	र०काल १८०३ माह सुदी ६।
२-सिंहनाभ चरित्र		४-६ ।	१७ पद्य हैं।
३-जंबुक नामो		4-10 1	७ पद्य हैं।
४-सुभाषित संग्रह		७-१५ ।	३४ पद्य हैं।
<b>५ - सु</b> भाषित सग्रह्		१६-२८ ।	१२५ पद्य हैं।
६-सिंहासन बत्तीसी		78-07 1	

६५००. युटकासं० ३ । पत्रसं० २०४ । मा० ६ 🗙 ५ इ.च । माचा-संस्कृत-हिल्दी । ले० काल पूर्ण। बेहन स० १३० ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है। कहीं २ हिन्दी के पद भी हैं।

६५०**१. गुटकासं∘ ४**। पत्र सं∘ ४५। मा. ७८५ इ.च.। माषा-हिन्दीः संस्कृत । ले**० काल** ४.। पूर्णः। बेष्टन सं०१३२।

विशेष---पूजा पाठ संबह है।

**६५०२. गुटका सं**० ५ । पत्रसं० ७-२६ । ब्रा० प<sup>2</sup>,×६ इचा। साचा−सस्कृत । लेश्काल × । घपुर्सावेष्टन स० १३२ ।

विशेष--तत्वार्थं सुत्र सहस्रनाम स्तोत्र, ग्रादि पाठों का संग्रह है।

६५०३. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ११५ । द्या० ७imes५ इ.च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० १३४ ।

विशेष-- पुजा पाठ संग्रह हैं।

**६५०४. गुटका सं० ७ ।** पत्र सं०६ म् से १२५ । ब्रा०६×४ इश्वा। भाषा सस्कृत−हिन्दी। ले० काल× । धपूर्ण। बेस्टन स०१३४ ।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह हैं।

**६५०५. गुटका सं० ८ ।** पत्रस० १६२ । झा० ७ × ५ इ.च. । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पर्यो । वेष्टन स० १३६ ।

विशेष— लिपि विकृत हैं। पूजा पाठ सग्रह हैं।

६५०६. सुटकासं० ६ । पत्रसं० ७१ । ग्रा० ७४ ४ इ.च.। भाषा-हिन्दी~संस्कृत । ले०काल ४ । पूर्णे । बेष्ट्रनसं० १३७ ।

विशेष—सामान्य पाठ हैं। पट्टी पहाडे भी हैं।

६ ४०७. गृटकास० १०। पत्रस०६६। ब्रा०६४४ डञ्च। भाषा-सम्कृत-हिन्दी। ले∘काल ४। पूर्ण। वेष्टन स०१३ स्।

**विशेष**—सामान्य पाठो का सग्रह है।

**६५० म. गुटका सं० ११ ।** पत्र सं० २२ । ग्रा० ११ $\times$ ५ इञ्च । माषा–हिन्दी । ले० काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १३६

**६५०६. गुटका सं०१**२ । पत्र स०६८ । आर० ८×५ इ.च.। भाषा-सस्कृतः हिन्दी । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टन स०१४० ।

विशेष- निम्न पूजा पाठों का संग्रह है-

(१) भक्तामर स्तोत्र (२) प्रकृतिम चैत्यालय पूजा (३) स्वयभू स्तोत्र (४) बील तीर्थंकर पूजा (४) तीस चौबीसी पूजा एवं (६) सिद्ध पूजा (बातनराय कत) ।

**६५१०. गृटकारां० १३ । पत्र**सं० १४४ । घा० ६×६ इ.ख.। साथा<sup>-</sup>हिन्दी । ले०काल *स०* १८०१ । पूर्ण । **बेहन सं०** १४१ ।

विशेष-साहिपुरा में उम्मेदसिंह के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी।

	10	•	•	
(१) सुन्दर शृंगार		सुन्दरदास	पत्र १-५७ ।	हिन्दी
(२) विहारी सतसई		विहारीदाम	४८-१२४।	हिन्दी
(३) कलियुग चरित्र		वास	135-458	,

र०काल स० १६७४

हिन्दी || || || || || || ||

#### प्रारम्भ

(४) कलि व्यवहार पश्चीसी

१४. राजुल बारह मासा

पहलूं मुमरि गुर गएपपित को सहासाय के पाय ।।
आके मुचिरत ही सर्वे। पाप हरि है जाय ।।
सवत् सोलासे कोहोत्तरिया केत दांद उपियारै
स्वित सोलासे कोहोत्तरिया केत दांद उपियारै
मा समुक्ते में के के मनमाने पत्र को लगे मुहाई।
मैं कवि बान नाम ते जानी मालर की मारणाई।।
बामन जाति मयरिया पाठक बान नाम जग जाने ।
रांद कियो राजाधिराज यो महास्थि मनमाने।।
कहे मुझे ने पाप न परसी म्रोसेटान केलि दौने।।।

पत्र १३०-१३४

२६ पद्य हैं

		२५ पद्य हैं	
(४) पंचेन्द्रिकाब्यौरा	_	पत्र १३४-३७	
(६) राम कथा	रामानन्द	8 30 - 8 x 0	
(७) पश्चिनी बलाग्		१४३ तक	
(८) कविल	बुधराव बूंदी।	१४५ तक	
<b>६५११. गुटका</b> × । पूर्णः । बेष्टन स०१४:	<b>स्ं०१४।</b> पत्रस०१३६ । घा० २।	५×५ इश्वामाषा−हिन्दी।	ले०
<b>विशेष</b> निम्न प	ठ है		
१ सर्वया	कुमुदचन्द	पद्य स॰ ४	
२. मोलह स्वप्न छप्पय	विद्यासागर	11 €	
३. जिन जन्म महोत्सव			
षट् पद	i i	।। <b>१</b> २	
४. सप्तव्यमन	ŧı	11 9	
५. दर्शनाष्ट्रकसर्वया	ii .	11	
६. विषापहार छापय	11	11 Yo	
७. भूपाल स्तोत्र छुप्पय	11	।। २७	
<ul><li>प. वीस विरहमान संगैया</li></ul>	11	11 78	
६. नेमिराजमतीकारेखता	विनोदीलाल	11	
१०. भूलना	तानुसाह	४२ पद्य हैं	
११. प्रस्ताविक सनीया	×	२७	
१२. छप्पय	×	४ पद्य हैं	
रै. राजुल बारह मासा	गंगकवि	१३ पद्य हैं	
४. महाराष्ट्र मावा			
द्वादश मासा	चिमना	१३ पद्य हैं	

विनोदीलाल

नन्दराम

### प्राप्ति स्थान—दि० जैन खएडेलवाल मन्दिर-धावां

६५१२. गुटकासं० १ । पत्र सं० ७८ । घा० ११×६ इ.च. । भाषा-संस्कृत−हिन्दी । ले०काल × । पर्सा । बेहन स० ३ ।

विशेष-नित्य नैमित्तिक पुत्राओं का संग्रह है।

**६५१३. गुटका सं० २ ।** पत्र सं० ६० । घा० ७ × ४ इन्त्र । भाषा−संस्कृत−हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २ ।

विशेष-सामान्य पूजा गठ संब्रह है।

### प्राप्ति स्थान---दि० जैन बघेरबाल मन्दिर-धार्ग

**६५१४. गुटका सं०१ । पत्र** सं०१५६ । ग्रा०६<sup>2</sup>, ४४ इ.चा। भाषा−हिन्दी⊸संस्कृत । ले०काल × । पूर्वा। वेष्टन सं०४ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

**६५१५. गुटका सं**०२ । पत्रस० १७८ । धा०६imes४ृ इ॰क । माषा-हिन्दी-संस्कृत । लेबकाल imes। पूर्ण । वेस्टन सं०५ ।

विशेष - पूजा पाठ सग्रह है। बीच के कई पत्र खाली है।

**६५१६.** ग्<mark>टकासं०३</mark> । पत्रसं०७४ । सा०१×७ ६२६ । मापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्णं। बेष्टन स०६ ।

विशेष---पजा पाठ सग्रह है।

६५१७. गुटकासं०४ । पत्रस० ८८ । ग्रा०६४४ रेखा भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-पूजासप्रहाले०काल ४ । पूर्णाविष्टनसं०८।

### प्राप्त स्थान-दि॰ जैन मन्दिर, राजमहल (टॉक)

६५१ म. गुटकारां० १ । पत्रस० ७६ । घा० ५×४ दश्व । माया-सस्कृत−हिन्दी । ले०काल × । घपूर्ण । वेष्टनस० १७४ ।

विशेष-- आयुर्वेद, ज्योतिष स्तीत्र आदि का सप्रह है। स्वप्न फल भी दिया हुआ है।

६.५१६. गुटकासं० २ । पत्र सं११ । झा० ४.४४ इ.चा। मावा-सस्कृत,हिन्दी। ले०काल ४.। पूर्या। वेष्ट्रन सं०१७४.।

विशेष---मामाना पाठों का संग्रह है।

६५२०. गुटकासं० ३ । पत्र स० ७५ । ब्रा० ६२,४६ इञ्च । माचा—हिन्दी। ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण। बेस्टन सं० १७६ ।

विशेष-- चौबीस तीर्थंकर पूजा गुटकाकार मे है। पत्र एक दूसरे के विपके हुए है।

**६५२१. गुटका स**० ४। पत्रसं० ८४ । प्राप्त ६imes४ ६ इञ्च । प्रापा-संस्कृत, हिस्दी । ले० काल imes । पूर्ण, । बेष्टन स० १७७ ।

£ ५२२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ५६ – १२२ । झा० ७ ४६ इन्च । भावा - संस्कृत हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १७६ ।

विशेष---मस्यतः निम्न पाठों का संग्रह है----

भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्यसूत्र, मामायिक पाठ ब्रादि ।

**६५२३. गुटका सं० ६**। पत्र सं० २८। आ० ६ $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इ.ख.। माषा—सस्कृत, हिन्दी। ले॰काल imes। पूर्ण। बेष्टन सं० १७६।

विशेष---निम्न रचनाओं का सग्रह है---

पश्चस्तोत्र		सस्कृत
सहस्रनाम स्तोत्र	<b>ग्रा</b> शाधर	,,
तत्वार्थसुत्र	उमास्वामी	,,
विषापहार स्तोत्र मावा	<b>प्रचलकी</b> ति	हिन्दी
चौबीस ठाएग गाया		प्राकृत
क्षिलर विलास	केशरीसिह	हिन्दी
पचमगल	रूपचन्द	,
पूजा संग्रह	_	,,
बाईस परीपद वर्णन	_	हिन्दी
नेमिनाथ स्तोत्र		संस्कृत
भैरव स्तोत्र	शोभाचन्द	हिन्दी

६५२४. गुटका सं ७ । पत्र स॰ ३-६४ । झा० ७imes६ इञ्च । माष, —हिन्दी । नं०काल imes । द्यपूर्ण । बेयुन स० १८० ।

विशेष--मन्यतः निम्न पाठो का सदह है--

चौबीसतीर्थंकर स्तुति	देवाब्रह्म	हिन्दी
ग्रठारह् नाना कथा		n
पद संग्रह	_	,,
खण्डेलवालों की उत्पत्ति		,,
चौरासी गोत्र वर्गन		**
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	व । रायमल्ल	,,

**६५२५. गुटका सं० ६ ।** पत्र सं० १२ । घा० ६ $\mathbf{X}$  १३ इ.स.। भाषा-संस्कृत । ले०काल  $\mathbf{X}$  । पूर्वी । वेष्टन सं० १८१ ।

विशेष---शेसठ शालाका पुरुष वर्णन है।

**६५२६. गुटका सं० ६** । पत्र सं० २५६ । ग्रा० ७ 🗴 ६ इञ्च । भाषा –संस्कृत, हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्गा । वेष्टन सं० १५२ ।

विशेष -- मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है---

शत ब्रष्टोत्तरी कवित	मैया भगवतीदास	हिन् <b>दी</b>
द्रव्य संवह भाषा	n	19
चेतक कर्मचरित्र	19	,,
मक्षर बत्तीसी	19	,,
ब्रह्म विलास के भ्रम्य पाठ	,,	

वैश्व मनोत्सव	तयनसुख	हिन्दी
पूजा एव स्तोत्र		संस्कृत हिन्दी
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	संस्कृत
मायुर्वेद के नुस्से		हिन्दी

**६५२७. गुटकारां० १०।** पत्र सं०६४ । घा० ४×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्वा । बेक्रन स०१८३ ।

विशेष—सामान्य पाठों का सप्रह है। तत्वार्थ सूत्र, भक्तामर स्तोत्र ग्रादि भी दिये हुए हैं।

**६५२ ८. गुटकासं०११** । पत्र स०१४२ । ब्रा०६×४ इ.चा। भाषा-हिन्दीसस्कृत । ले० काल × । पर्णा विकास०१८४ ।

विशेष -- गुटके में ३८ पाठो का सपेह है जिनमे स्तोत्र पूजाएं तत्वार्धमृत्र ग्रादि सभी सप्रहीत हैं।

**६**५२ ह. गुटका सं०१२ । पत्र स०२४–७२ । घा० १२imes४ इन्द्रा भाषा–सस्कृत हिन्दी । लेकाल imes। घण्याँ वेष्ट्रन सं०१८ ।

विशेष -- पाशा केवली एव प्रस्ताविक श्लोक आदि का संग्रह है।

**६५३०. गुटका सं०१३** । पत्र सं०६–१२६३ से १००। छा०६imes५ इ.चा भाषा-हिन्दी। ले॰काल imes। छपूर्णा वेष्टन सं०१=६।

विशेष--ग्रायुर्वेद नुस्लों का सग्रह है।

**६५३१. गुटका सं०१४।** पत्र स०२ - ६०। ग्रा०६×५ इ.चा। भाषा-संस्कृत। ले० काल × । मपूर्णावेष्टन स०१६७।

विशेष--पत्रस॰ २-३० तक पचपरमेष्ठी पूजा तथा ब्रायुर्वेदिक न्स्वे दिये हुए है।

**६५३२. गुटका सं०१४।** पत्र स०१६१। ग्रा०६×६ इ.च। भाषा–सस्कृत–हिन्दी। ले० काल ×ापूर्ण। बेष्टन स०१८६।

विशेष — निम्त पाठो का सग्रह है---

पच स्तोत्र		सस्कृत
तत्वार्थम्त्र	उमास्वामि	,,
इष्टोपदेश भाषा	_	हिन्दी
सहस्रनाम	जिनसेन।चार्य	सस्कृत
द्यालाप पढित	देवसेन	संस्कृत
ग्रक्षर बावनी	कबीरदास	हिन्दी

सक्षर बावनी का अ। दि माग निम्न प्रकार है ---

#### प्रारम्म--

बावन प्रक्षर लोक त्रयी सब कुछ इनही माहि। भीर क्षरैंगे छए। छिए। सी प्रक्षर इनमे नाहि।।१।। को कडु घक्तर बोसत धावा, जह मनोल तह मन न लगावा।
बोल सबोल मध्य है तोई, जह वो है तस लखे न कांई ।।२।।
तुरक नरीकम जोइ के, हिन्दू बेद पुरागा।
पन समभाया कारणे कवी में कछू येक जान ।।३।।
ऊकार धादि में जाना, लिखकें मेरे ताहि न माना।
ऊकार जादि में जाना, लिखकें मेरे ताहि न माना।
ऊकार जादि से लोता, लिखकें मेरे ताहि न माना।
कका किरण करक मे सावा, सींस विकास तहा संपुर नावा।
सम्जे तहा कृतम रस पावा जकह कहाने नहि सासिम सावा।।४।।

#### मध्य माग

ममा मन स्यो काम है मन मनै सिधि होइ। मन ही मनस्यों कही कवीर मनस्यो मिल्यान कोई ॥३६॥

#### ग्रन्तिम भाग--

बावन शक्षर तेरि श्रानि एकै श्रक्षर सक्या न जानि ॥
" सबद कबीरा कहैं बूभौ जाइ कह: मन रहें ॥४१॥

इति बावनि ग्यान संपर्शे ।

**६५३३. गुटकासं०१६। पत्र**सं०३-६३। घा०६×५ इश्वर। माषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल स०१८८८ । घपूर्ण**। वेष्टनस०**२२८।

विशेष---माधारण पूजा पाठ सग्रह एव देवाबह्य कृत सास वह का ऋगडा है।

६५२४. गुटका सं०१७ । पत्रस०१४ । झार् ६imes४६ च । भाषा -हिन्दी–सस्कृत । लेकाल स०imes। धपूर्ण । बेब्रुनस०२२६ ।

**विशेष** — पूजा पाठ संग्रह है ।

**९५३५. गुटका सं १८ ।** पत्रसं∘ ४६ । घा० ६×७ इन्त । माषा⊸सस्कृत । क्षे∙काल सं० १८८७ । पूर्णे वेष्टनसं० २३० ।

**विशेष**—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है---

सन्तर्षि पूजा श्री पूजरण सस्क्रत प्रनन्त तत पूजा ग्रुमजन्द्र , गरापद बलय पूजा — , तत्वार्थ मुख्य उमास्वामि ,

**६५३६. गुटका स**ं० **१६** । पत्र सं० ६६ । घा० ११ × ५ इ.च. । भाषा – संस्कृत । ले**०काल** × । घपुर्छ । बेक्टन सं० २३१ ।

विशेष--- नित्य नैमित्तिक पूजाभी एवं पाठीं का सबह है।

£५३७. युटकासं∘२०। पत्रसं∘४४ । घा॰ ११×४ इचा । साथा–संस्कृत-हिन्दी । ले∙काल × । घपूर्ण । वेष्टुनसं∘२३२ ।

विशेष--- मुख्यत निम्न पाठों का सग्रह है---

चतुर्विशति जिन-षट्पद बंध स्तोत्र

वर्मकीर्ति हिन्दी

पद्मनदिस्तृति

-- संस्कृत

६५३ म. गुटकासं०२१ । पत्रसं० २०। घा०१ ४४ इ.चा। भाषा−हिन्दी। ने०कास ४ । घपुर्यावेहन सं०२३४ ।

विशेष-ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी बातो का विवरण है। भडली विचार भी दिया है।

 $\mathbf{e}$  ५३.६. गुटका सं० २२ । पत्रसं० २६ । धा० १० $imes \mathbf{v}_{i}^{2}$  इन्त्रा । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । सेक्नस्त imes । पूर्ण । बेष्टनसं० २३४ ।

विशेष — दोहाशनक परमात्म प्रकाश (योगीन्दुदेव) द्रव्य संग्रह माचा तथा धन्य पाठों का संग्रह है।

६५४ ठ. गुटकासं० २३ । पत्रसं० १५ । मा० ११×५ इ.च.। मावा हिन्दी—संस्कृत । के•कालसः ०१८६० वैशाल बुदी १४ । पूर्णा । बेष्टनसं० २३६ ।

विशेष-ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

६५४१. गुटकासं० २४ । पत्रस० ८७ । घा० ५ $\times$ ५ इश्व । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले॰काल imes । भपूर्ण । बेहनसं० २५४ ।

६५४२. गुटकासं०२५ । पत्रसं०१६० । मा०१४×६ इ.च. । माचा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल × । पूर्णं। बेष्टनस०२५५ ।

विशेष-६६ पाठो का सग्रह है जिसमे पूजाएं स्तोत्र नित्यपाठ भादि सभी हैं।

प्राप्त स्थान--दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारायसिंह ।

६५४३ गृटका सं० १ । पत्रस०११३ । ग्रा०७ ४४ ६ खा भाषा∹हिन्दी –संस्कृत । से∙कास स०१६४१ । गूर्यो । बेष्टनसं० १२२ र ।

विशेष--पूजा पाठ सग्रह है।

६५४४. गुटकासं०२ । पत्रसं०१३ । घा०६ ४५ इ.चा। भाषा -हिन्दी-सस्कृत । क्रे•काल ४ । पूर्णे। बेलुनसं०१२३ र ।

विशेष-पूजा स्तोत्र एव हिन्दी पद संग्रह है।

६५४५ गुटकासं० ३ । पत्रसं० । झा० ७३ ४६ ६ इ.च.। माया-हिन्दी-संस्कृतः। से०कास ४ । पूर्णं : बेष्टनसं० १२४ र ।

६५४६. गुटका सं० ४ । पत्रस०४४-१५०। ग्रा० ६ $\times$ ४२ इश्व । माषा-हिन्दी-सस्कृत । मे॰कास imes । श्रप्तुर्ग । वेष्ट्रन स०१२५ ।

विशेष--पूजमादि सतोत्र है।

६ ५४ ४७. गुटकास० ६ । पत्र सं०१४६ । घा०६ ४४ इ.चा भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल ४ । अपूर्ण । बेष्टन सं०१२६ र ।

**विशेष-**--पूजा स्तोत्र संग्रह है।

£ ५४ द. गुटका सं० ६ । पत्रसं० १२७ । घा० द ४ ६ ६०४ । आषा -हिन्दी-संस्कृत । से०काल ४ । ब्रपूर्स । जीर्स । वेष्टनसं० १२७ र ।

६५४६. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १७५ । ग्रा० - 🗙 ४ इ.च. । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । से०कास 🗴 । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० १२- र ।

६५५० गुटकासं० ६ । पत्रसं० ६ – ७५ । ग्रा० ७ ४ ४ है इश्वा। माषा-हिन्दी – संस्कृत। ने०काल ४ । पूर्णाविष्टनसं० १२६ र ।

विशेष— ७२ पद्म से ६६४ पद्म तक बृद सनसई है।

६५५५१. गुटकासं० ६ । पत्रसं०११७ । घा०६४४ इ.च.। भाषा−हिन्दी पद्यः। ले∘काल ४ । पूर्णः। वेष्टन स०१३० र ।

विशेष--रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है।

६५५२. गुटकासं०१० । पत्रस० ६-६१। घा०४३ ४४ इ.च.। आया प्रस्कृत-हिन्दी। के•कास ४ । पूर्ण । वेष्टनस०१६० ।

विशेष — हिन्दी में पद संग्रह भी हैं।

६५४३. गुटका सं० ११ । पत्रस० २६ । म्रा० ५×४ इचा । भाषा-हिन्दी ।पद्य लेकाल ×। पूर्णे । बेष्टनस० १८१६ ।

६५५४. गुटकास $^{'}$ ०१२ । पत्रस० ५–६१ । घार् $^{1}_{3}$ imes४ ६२४ । मावा-सस्कृत । केकालimes। घपूर्ण । बेहन सं०१६१ ।

विशेष -- भक्तामर स्तोत्र, तत्वाथं सूत्र, पद्मावती पूजा वगैरह का सग्रह है।

**६५५४. गुटका** स० **१३ ।** पत्रसं० ३३-१५१ । घा०  $Y_{2}^{3} \times Y_{2}^{3}$  इन्छ । आया-संस्कृत । केश्काल  $\times$  । घपूर्ण । वेष्टनसं० १६४  $\times$  ।

च च च च च र । अपूर्ण । वष्ट्रन स ० १०।	• 🛪 1	
१. पुरुष जातक	-	३३ से ३ =
२. नारिपत्रिका		३६से ४१
<ol> <li>मुबन दीपक</li> </ol>		४२ से ६१
४. जयपराजय		६२ से ६६
५. षट पचाशिका	-	६७ से ७३
६. साठि सक्त्यरी		७४ से १२३
७. कूपचक	-	६२४ से ६३४

१४१ मे १४६ तक पत्र नहीं है।

६५४६. गुटकासं० १४ । पत्रसं० १०–५२ । घा० ६×६ इचा भाषा—संस्कृत-हिन्दी । कै•काल× । धपूर्णावेष्टन सं०२०४ ।

विशेष--पूजा तथा स्तोत्र संग्रह है।

६५५. गुटका सं०१४ । पत्र सं०११२ । घा० ५imes४ इश्व । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । क्षेण्काल imes। पूर्ण । बेष्टन सं०२०६ ।

विशेष--तत्वार्थं सुत्र, भक्तामर स्तोत्र एव पूजा पाठ का सब्रह है।

**६५५६. गुटका स**० **१६**। पत्र सं० ८८ । ध्रा० ५ $^{3}_{\gamma} \times \checkmark^{3}_{\gamma}$  इश्व । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १५६५ माह सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स० २०७ ।

१-तीस चौबीसी पूजा---१-६८

२-त्रिकाल चौबीसी पूजा---६८-८८ तक

£ ५६०. गुटकासं०१७ । पत्र सं०१० । ग्रा०६ ४ ६ इ.च.। भाषा–संस्कृत । ले०कालास० १८६२ । पूर्ण। वेप्टन स०२० ⊏ ।

विशेष---भक्तामर स्तोत्र है।

**६५६१. गुटका सं०१६** । पत्र स०११४ । घा०७×४ ॄै इन्ता । भाषा-सस्क्रत । ले० काल २८। पूर्या । बेष्टन स०२०६ ।

विशेष---पत्र १-२१ तक पुजा पाठ तथा पत्र २२-११४ तक कथायें हैं।

**६५६२. गुटका एं० १६ ।** पत्र स०४६ । घ्रा० ७×५ इंच । माघा-मस्कृत-हिन्दी । र०काल × ।लेकाल × ।पूर्ण।वेष्टन स०२१०।

**१५६३. गुटका सं० २० ।** पत्रस० १०७ । घ्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ दश्च । भाषा-सस्क्रत-हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । येष्ट्रन स० २११ ।

६५६४. गुटका सं० २१ । पत्रस० १६-८२ । घा० ७४४ ६ इन्च । मापा-हिन्दी पद्य । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स• २१२ ।

विशेष-पदो का संग्रह है।

६ ४६५. गुटकासं० २२ । पत्रसं० १४−१४८ । घा० ६×५१ इ.च.। नाषा-सस्कृत–हिन्दी। ले∘काल × । पूर्ण। बेष्टुनसं० २१३ ।

पत्र संस्था १—पूजा पाठ स्तोत्र १-११२ हिस्दी संस्कृत १—मीन बनीमी-प्रकामन ११२-१२१ हिस्दी ने०कान स०१६३६ पोप सदी १४।

३---हमनस्याकी कथा--- १२४-१३५

६५६६. गुटका सं० २३ । पत्र स० १५ । ग्रा० ६imes५ इ.ख । भाषा सस्कृत । ने०काल imes । पूर्णे । तेष्ट्रन स० २१४ ।

हिन्दी

विशेष-पुजा पाठ सग्रह है।

## प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाय टोड़ारायसिंह

**६५६७. गुटका सं० १।** पत्र स**० ५०। घा०**  $- \times \chi_{\eta}^2$  इश्वा। भाषा—हिन्दी । ले० काल  $\times$ । पर्सा। वेस्टन सं० ६।

विशेष---नित्मनैमित्तिक पजाभी का सग्रह है।

**६५६ म. गुटका सं० २ । पत्रसं∘** २२१ । द्या<sup>,</sup> १२× म्ह दश्वा । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले•काल × । पूर्णावेष्टन स०१०।

१-देव पूजा  $\times$  । २-मास्त्र पूजा—भूभरदास । ३-मास्त्र पूजा-धानतराय । ४-सोलह कारण् पूजा  $\times$  । १-मोजह कारण् पूजा (प्राकृत) । २-दणलभण पूजा-धानतराय । ७-रतनव्य पूजा—धानतराय । १-प्रेच के प्रकृत । १० - तिव्य के प्रकृत । १० - त्याय क्ष्मित्र । २० - त्याय प्रकृत । १० - त्याय क्ष्मित्र । राम्प्रकृत । २० - त्याय प्रकृत । १० - त्याय ।

**६५६६ गुटका सं०३ ।** पत्र सं०२३२ । झा०६ $\times$ ५ इल्ब । सापा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०११ ।

१—चर्चासमाधान — भूघर मिश्राः।

२--भकामर स्तोत्र--मानतु गाचार्य ।

३ —कल्याम मन्दिर स्तोत्र ।

६५७०. गुटकास० ४ । पत्रस० १८६ । घा० ६२ ४ ५ इचा। मापा हिन्दी –हास्कृत । ले•काल ४ । पूर्णा । बेष्टन म० १२ ।

विशेष ---सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६ ४.७१ गुटकास० ४ । पत्रस० ४ । ध्रा• ५२, ४२, इ.च.। भाषा-हिन्दी—सस्कृत । ले० काल ४ । पूर्णां वेष्टन म०२१ ।

विशेष --पद सग्रह एवं धनञ्जय कृत नाममाला है।

**६५७२. गुटका स**०६ । पत्र स०६४ । घा० ७×४ इ.च । माचा हिन्दी। ले० काल सं० १∼६६ सावरा बुरी १०। पूर्णावेष्टन स०२२ ।

१--समाविलास---× । २७३ पद्य है।

विहोष-- वि॰ लखमीवन्द के पठनार्थ व्यास रामवक्स ने रावजी जीवण सिंह दिगावत के राज्य में दूर्गी द्वाम में लिला था। ले॰काल स॰ १८६६ सावण बुदी १०।

२-दोहे-तुलसीदास । ६८ दोहे हैं।

३--कुण्डलियां--गिरघरराय । ४१ कुण्डलियां हैं।

४—विमिग्न छन्द $-\times$ । जिसमें बरवें छंद-४०, ग्रहिल्ल छंद-२०, पहेलिया-४० एव मुकुरी छंद २६ हैं।

**६५७३. गुटका सं० ७ । पत्रस**० ⊏ । द्या० ⊏ ४६ १ इश्वरा माधा–हिन्दी गद्या र०**काल** × । ले०काल × । पूर्णावेष्टन सं० ४० ।

विशेष—प्रावती मत्र, लण्डेलवाल जाति की उत्पत्ति तथा वणावली, तीर्थंकारो के माता पिता के नाम, तीर्थंकर की माता तथा चन्द्रगुप्त के स्वप्त है।

१५७४. गुटका सं०६ । पत्रसं० २६४ । घा० ५imes७ रे इञ्च । भावा हिन्दी–संस्कृत । के० काल imes । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३ ।

विशेष--वौबीस ठाएगा चर्चा एवं स्तीत्र पाठ पूजा मादि हैं।

६५७५. गुटकासं०६ । पत्रसं०६४ । घा० ५ × ७ है इञ्च। भाषा−हिन्दी। ने० काल सं० १८६७ । पूर्णे। वेष्टन स०७४ ।

१-मादित्यवार कथा--भाऊ कवि

२-चन्द्रगृप्त के सोलह स्वप्न

३ पद संग्रह--देवाबहा

४ खण्डेलवालों के ८४ गोत्र

५-साम बहुका भगडा—देव।ब्रह्म

६५७६, गुटकासं० १० । पत्र स० ६१-११६ । घा० ५×६ इश्वा। भाषा-हिन्दी पद्या के∘काल स०१६४६ माघनुदी ५ । घपूर्णा। वेष्टनसं०७६ ।

विशेष--बनारसी विलास है।

६५७७ युटकासं०११ । पत्र स०४४ । धा०७imes४ द्वै इ.चा। मापा-हिन्दी पद्या ले०काल imes । पूर्णाविष्टन सं०७६ ।

विशेष-पद सग्रह है।

६५७ फ. गुटकासं०१२ । पत्रस०३२ । घा०५ ४४४ इ.चा। माचाःहिन्दीपद्याले० काल ४ । पूर्वाषेहनसं० म०।

विशेष-भक्तामर स्तोत्र एव कल्याए। मदिर स्तोत्र हिन्दी में है।

**६५७६. गुटकासं०१३।** पत्रसं०१६–४६। घा० ४३,४४३ दश्वा। भाषाहिन्दी पद्या। कि∙कालस० × । ब्रपूर्ण। वेष्टनसं०⊏१।

विशेष-सामान्य पाठी का संग्रह है।

## दि॰ जैन मन्दिर दबलाना (बृंदी)

६५६०, सुटका सं०१ । पत्रसं∘२४० । मा॰ ७३ ४६३ इन्छ । सामा-हिन्दी । ले० काल ४ । मपुर्ण । बेहन सं०२७६ ।

विशेष-प्रति जीएं शीएं है तथा बहुन से पत्र नहीं हैं। मुख्यत: पूजा पाठो का संग्रह है।

६५८९. गुटका सं०२ । ण्यसं०२०८ । आर० ८ ४४ इन्ड । भाषां –हिन्दी । ले०काल ४ । सपूर्ण । बेष्टन स०३७७ ।

विशेष--गुरास्थान चर्चा एवं अन्य चर्चाओं का सग्रह है।

**६५८२. गृटका सं० ३** । ण्यस० ४-१३६ । घा० ६ $\frac{1}{2} \times$ ६ $\frac{1}{2}$  दश्च । मादा – हिन्दी । र० काल सं० १६७-३ । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ३७६ ।

विशेष-मितसागर कृत सालिभद्र चीपई है जिसका रचना काल संव १६७८ है।

**६५८ २. गुटकासं० ४ ।** पत्र सं०२८ । झा०६४ ५ इ.चा। भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्णावेष्टन सं०३७६ ।

विशेष-धनपतराय का चर्चा शतक है।

**६५८४. गुटका सं०५** । पत्रस०११५ । घा० ६×६ॄै ६ घा। भाषा-मस्कृत । ले० काल ×। पूर्या । वेकन स०३६० ।

विशेष — निम्न पाठों का संग्रह है।

समवशरण पूजा रूपबन्द हिन्दी समवशरण रचना ---

£ ४.८४. सटकासं०६ । पत्र म०१७४ । घ्रा०४ ४३ दे इचा। प्राषा-हिन्दी-सस्कृत । क्षे•कालस०१७६२ । पूर्ण। वेष्टन स०३६१ ।

विशेष-पुजा पाठों के ग्रांतिरक्त मुख्यतः निम्न पाठों का सग्रह है-

त्रेन रातो — हिन्दी सुदर्शन रास बहा रायमल्ल ,, जोगीरासो जिनदास ,,

**६५८६. गृटका सं०७।** पत्रसं० १५०। मा० ⊏ै,×४ इखा माया—संस्कृत, हिन्दी। ले०काल × । पूर्णा। वेप्टन सं०३ पर

विशेष-प्रति जीएं है ।

रामविनोद एवं धन्य प्रायुर्वेद नुस्खों का संग्रह है।

६५ म.७. सृ<mark>टकासं० म.।</mark> पत्रसं० ७२ । ब्रा० म.्रे ४६ इञ्च । भाषा−हिस्दी, संस्कृत । ले•काल सं० १७६३ । पूर्ता। वेष्टन सं० ३८३ ।

विशेष -- मुख्यतः निम्न रचनाम्रों का संग्रह है---

श्रीपाल रास बहा रायमस्त हिन्दी — पंचपति की बेलि हर्षकीरि ,, (से-काल सं० १७६३) एकी.माब स्त्रीप्र मापा हीरानन्द ,, (वे-काल सं० १७६४) श्रायाबञ्जूति पुनि का चोढास्या कनकसीम ,, (र०काल सं० १६६६ । से-काल सं० १७६६ )

६ ५८ मन्द**, गुटका सं० ६** । पत्रसं० १६० । स्रा० प्र<sup>2</sup>,×६ इ.चा। माचा−हिन्दी । ले० काल सं० १७१० स्रायाङ सुदी १५ । पूर्णा । बेष्टन स० ३ म ४ ।

विशेष--निम्न रचनाओं का सग्रह है-

समयसार नाटक

बनारसीदास

हिन्दी

इतिहाससार समुच्चय

(ले०काल स०१७१०)

लालदास

।त (ले०काल स०१७०८ ग्रवाट सदी १४)

**६५८६. गुटका सं० १०**। पत्र स**ं०४-५४ । घा० ६**४६ इञ्च**। भाषा-**हिन्दी-सस्कृत । लेक्काल ४ । प्रपुर्ता वेषटन स० ३८५ ।

विशेष — पूजा पाठ सम्रह है।

**६५६०. गुटकासं० ११।** पत्रस०६६ । मा०६<sup>3</sup>, ४६<sup>3</sup>, इश्वा । भाषा−हिन्दी, सस्कृत । ले∙ काल × । प्रपूर्ण । वेष्टुनसं० ३८६ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

६५६६१. गृटकासं०१२ । पत्रस०१७ । ग्रा०४ ुँ×७ ैइला। भाषा−प्रकृत । ले०काल × ।पूर्या वेष्टनसं० ३८७ ।

विशेष -- प्रतिक्रमण पाठ है ।

६५६२. गृटका सं० १३ । पत्र स० ५-२४= । आ० ५ $\frac{1}{7}$  $\times$ ४ $\frac{1}{7}$  इन्छ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । से-काल imes । अपूर्ण । बेष्टन स० ३८८ ।

विशेष-पूजा स्तोत्र एव धादित्यवार कथा धादि का संग्रह है।

**६५६३ मुटकासं०१४** । पत्रस०१२० । बा॰ ० $(x \times x)$  इश्वर । भाषा-हिन्दी, सस्कृत। **वि•कास**स०१७५३ ग्रामोज बुदी१४ । पूर्ण। वेष्टनस०३०० ।

विशेष-मूख्य पाठों का सम्रह निम्न प्रकार से है-

नेमिनाथ स्तवन		हिन्दी	१४ पद्य
		(र०काल सं०१७२४)	
सुमद्र कथा	सिघो	हिन्दी	२३ पद्य
श्रतिचार वर्णन	_	n	-
ग्रम्य विवेक चितवसी	सुन्दरदास	n	५६ पद्य

### ग्रन्तिम पद्य निम्न प्रकार है-

सकल सिरोमिन है नर देही नारायन को निज घर येही जामहि पढ़ये देव मुरारी मद्भवा मनुषठ क्रुक्त तुम्हारी ॥ ११॥

चेतह कैसो माई उहका वैराम दहाई मृन्दरदास ज् पुकारी भइया मनुष जु बुभ तुम्हारी ।।१६।। विवेक चितामशिग मृन्दरदास हिन्दी **भा**त्मशिष्यावरिग मोहनद स शीलबावनी मालकवि कृष्ण बलिमद्र मिल्माय शीलनाराम विजयदेव मुरि ,, इनके प्रतिरिक्त अन्य पाठी का सग्रह भी है। ६५६४. गृटका स० १५ । पत्रसं० ३०६ । ग्रा० ६×५ इवा । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनस०३६०। विशेष-- मृख्यतः निम्न रचनाग्रो का सग्रह है--प्रयम्न चरित कवि सधारू हिन्दी धपूर्ण विशेष-- ६८५ पद्य हैं। प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं है। कर्मविपाक वनार सीटास हनुमत कथा प्रव रायमल्ल जम्य स्वामी कया पाडे जिनदास श्रीपाल गस ब • रायमल्ल ६५६५. गटका स० १६ । ।पत्रस० १७६ । ग्रा० ६ 🖂 ४ | इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । बेप्टन स० ३८१ । विशेष-पुजा पाठ सपह है। **६५६६. गटका सं०१७।** पत्र स० ७४। ग्रा• ७३<sup>९</sup> ×४३ दश्वा भाषा-सस्युत । ले० काल 🗴 । पूर्णा विष्टनस० ३६२ । विशेष--सामान्य पाठी का संप्रह है। ६४६७. गृटका सं० १८ । पत्रसं० १२० । ग्रा० ६४७ इव । माषा-हिन्दी । ले•काल × । पूर्ण । बेष्ट्रनस० ३६३ । विशेष-सामान्य पाठी का सप्रह है। ६५६८. गुटका स० १६ । पत्रस० १०१ । मा० ६×७ इश्व । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४ । विशेष-- निम्न रचनाश्रो का सग्रह है--मावा मुवग् टीका नारायगादास हिन्दी (र०काल सं० १८०७) ग्रलंकार सर्वया क्रवसाजी (नरवर में लिखा गया)

हथहह, गटका सं०२० । पत्रस० द१। ब्रा० ६×४६ इला । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले॰ काल सं० १८७६ । पूर्ण। वेष्ट्रन स० ३६४ ।

विशेष---पूजा पाठ सग्रह है।

१६००. गुटका सं० २१। पत्रस० ३२१। मा० ४×६ इचा। भाषा-हिन्दी। ले•काल ×। पुर्शे । बेष्टनसं० ३६६ ।

विशेष -- निम्न रचनाश्रों का संग्रह है--

श्रीपालरास **व**० रायमल्ल हिन्दी पदा (१८१ से २४०) घन्य पाठों का भी सग्रह है।

६६०१. गटका सं० २२ । पत्र स० १६० । मा० ५×५ इच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × 1 पूर्ण । बेष्टनसं ० ३६७ ।

विशेष---निम्न रचनाओं का संग्रह है---

हितीपदेश दोहा हेमराज

(र०काल सं० १७२४)

हिन्दी

संस्कृत

हिन्दी

इसके अतिरिक्त स्तोत्र एव पूजा पाठ संग्रह है।

६६०२. गृटका स० २३ । पत्र सं० ७४ । घा० ७३ ×६३ इंच । माषा —सस्कृत । से०काल X । पर्ण । वेष्ट्रन स०३६८ ।

विशेष -- शब्दरूप समास एव कृदन्त के उदाहरण दिये गये हैं।

६६०३. गुटका स० २४ । पत्रस० ६८ । ग्रा० ७×५ इश्व । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्ट्रन म० ३६६ ।

विशेष -- सामान्य पूजा पाठ सम्रह है।

६६०४. गृटका सं० २५ । पत्रस० ७० । मा० ६×७ इच । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । से•काल×। पूर्ण । बेष्ट्रनसं० ४००।

विशेष-मुख्यतः निम्न भाग्वेदिक ग्रन्यो का सग्रह है -

राम विनोद प० पद्मरग हपंकीति

(शिष्य रामचन्द्र)

भन्य भायुर्वेदिक रचनाएं भी हैं।

योगचितामस्मि

१६०५. गुटका सं० २६ । पत्रस० १२६ । घा० ५३×४३ इश्व । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । से•काल 🗙 । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०,४०१ ।

विशेष - सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है।

९६०६. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १० । घा० धर्रै×४ देखा । माबा-हिन्दी । ले॰काल × । पूर्णा वेष्टन सं० ४०२ ।

विशेष --- निम्न रचनाओं का संग्रह है---

सर्वया हिन्दी

रगुकपुर ब्रादिनाथ स्तवन	— हिन्दी	
रतनसिंहजीरी बात		
-	पत्रसं०६६। झा०५×४ इ.अ.। म	ाषा -हिन्दी -सस्कृत । ले० काल
तिशेषविभिन्न कवियों के	rai re e mai ma nina de .	
१६६० म. गुटकास०२६। पूर्णावेष्टनस०४०४।	पत्रसं०२६ । ग्रा०७३ <sup>3</sup> ×७३ इञ्च ।	भाषा - संस्कृत । ले०काल ×।
विशेष—सामन्य पूजापाठस	ma à l	
<b>६६०६. युटकास०३०।</b> ⋉। पूर्णावेस्टनस०४०४।	पत्रस॰ ६४ । धा॰ ६ 🗙 ४ है इन्स ।	माषा−प्राकृत संस्कृत । ल•काल
विशेष—निम्न रचनाधों का	संग्रह है—	
बसुधारा स्तोत्र	- संस्कृत	
बुद्ध सप्तिति यत्र	- "	
महालक्ष्मी स्तोत्र	- "	
६६१०. गटका स० ३१।	पत्रस॰ ३४। <b>धा॰ ५</b> 🗙 ४ इञ्च	। भाषा — संस्कृत । ले० काल
🗴 । पूर्णा । बेष्टन स०४०६ ।		
विशेष—स्वामी वाचन पाठ	है।	
६६११. गुटकासं०३२ ।	पत्रस॰ ६३ । झा० ४३×३३ इञ्च ।	भाषा-सस्कृत । ले०काल स०
रै⊏३६ श्रापाढ सुदी १५। पूर्णं। वेष्टन स		
<b>विशेष</b> विष्णुसहस्रनाम एव	भादित्यहृदय स्तोत्र हैं।	
६६१२. गुटकासं० ३३ ।	पत्रस०१७ । झा०६×४ इ <b>श्व</b> ।	माषा-सस्कृत । ले <b>∘काल</b> × ।
पूर्ण । बेष्टन स० ४०८ ।		
<b>विशेष</b> पूजा पाठ संग्रह है	t	
६६१३. गुटका सं०३४।	पत्रस॰ १४। झा० ४३×३ इचा ।	भाषा-हिन्दी। ले०काल 🗴 🛭
भपूर्णं । बेष्टन स० ४०६ ।		
<b>विशेष</b> पदो का संग्रह है।		
६६१४. गुटका सं० ३५।	पत्रसं० यया द्या <b>० ५</b> ×३ इ <b>न्छ</b> ।	माषा-सस्कृत । ले०काल 🗴 I
पूर्वे । बेष्टन सं० ४१० ।		
<b>विशेष मु</b> ख्यतः निम्न पाठीं	का संग्रह है—	
पंचपरमेष्ठी गुरा	-	संस्कृत
<b>बु</b> ग्णमाला		हिन्दी
		(पद्य स॰ १४ हैं)
बादित्यहृदय स्तोत्र		संस्कृत
निर्वाश कांड	भगवतीदास	हिन्दी

दिन्दी

हर्षकीति

**६६१५. गुटकासं०** ३६ । पत्रसं०४२ । ग्रा॰  $Y_2^3 \times Y_3^3$  इन्छ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्णी वेष्टन सं०४११ ।

विशेष-ऋषमंडल स्तीत्र एवं पद संग्रह है।

६६१६, गुटकास० ३७ । पत्रसं∘ ३४ । घा० ५२ ×६ दचा माषा-हिन्दी। ले∘काल सं∙१ द६६ । पर्सा। बेहनस० ४१२ ।

विशेष--- पूजा पाठ एवं पदों का संग्रह है---

६६१७. गुटकासं० ३६ । पत्रस० २५ । घा० ६×४ इचा । साया-हिन्दी । ले०काल × । पूर्यों । बेहनस०४१३ ।

विशेष-- निम्न रचनाओं का संग्रहहै--

ब्याहनो ---

(१२५ पद्य है। र०काल स० १६४३) बारहमासा वर्णन क्षेमकरण

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन तेग्हपंथी मन्दिर मालपुर। (टोंक)

**६६९ स. गुटकास० ३१।** पत्रस० ११६। ग्रा० ४५ ४५ इ.च.। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल × । पूर्णा । जीर्णा । बेग्नस० ५६।

विशेष-निम्न पाटों का मग्रह है।

१. तत्वार्षं मृत्र सम्झन उमास्वामी
 २. जिनसहस्रनाम " आशापर
 ३. श्रादित्यवार कथा हिन्दी माऊ

४. पंचमगति वेलि इनके ग्रतिरिक्त सामान्य पूजा पाठ है।

**६६१६. गुटका सं० २** । पत्र सं० ६४ । घा० imes इन्द्रा । साथा-हिन्दी-सम्कृत । से०काल imes । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६ ।

विशेष---पूजा पाठ सम्रह है।

**६६२०. गुटकासं० ३** । पत्रसं∙ १२० । ग्रा० ६×६ इञ्च । माषा−हिन्दी। ले०काल × । पूर्णे। बेष्टनसं० २६ ।

विशेष--सैदांतिक चर्चात्रों का सग्रह है।

**६६२१. गुटका सं**० ४ । पत्र स०१४६ । झा०६×६ इ.चा । भाषा-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेध्टन सं० २२ ।

विशेष---निम्न पाठ है---

- १. बनारसी विसास के १७ पाठ (बनारसीदास)
- २. समवसार नाटक (बनारसीदास)

विशेष-जीवनराम ने विदरसां मे प्रतिनिपि की थी।

**१६२२. गुटका सं० ४ । पत्र**सं० १६० । आर्थ ४×५ इच्च । भाषा-प्राकृत—संस्कृत-हिन्दी । के० काल १६७४ भादवा बूदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ ।

### विशेष---निम्न पाठ है ---

१. तत्व। यं सूत्र	उमास्वामी	पत्र १–३१
२. बौबीसठाएग चर्चा	×	पत्र ३२-१३१
३. सामायिक पाठ	×	पत्र १३२-१८३

विशेष-साह श्री जिनदास के पठनार्थ नारायशादास ने लिखा था ।

६६२३. गुटका सं०६ । पत्र स०५४ - १८१ । ग्रा०४ २३४६ इञ्च । भावा-सस्कृत-हिल्दी। ले०काल स०१७५ ८ कार्तिक मुदी ४ । ब्रपूर्ण। वेष्टन सं०२४ ।

### विशेष -- निम्न पाठ है।

٤.	मुदर्शनरास	<b>ब</b> ह्मरायमक्ष	हिन्दी	पत्र ४६ से ६४ तक
₹.	दर्भनाष्ट्रक		संस्कृत	६५-६६
3	बैराग्य गीत	×	हिन्दी	=3-03
٧.	विनती	×	,,	3)
×	फागकी लहुनि	×	,,	<b>१</b> 00
Ę	श्रीपाल स्तुति	×	,,	१०१-१०३
u.	जीवगति वर्गान	×	n	80X-80X
۲.	जिनगीत	हर्षकीर्ति	,,	808-700
3	टडारगा गीन	×	,,	309-209
ţ٥.	ऋषभनाथ विनती	×	,,	११०-१११
₹₹.	जीवढाल रास	समयमुन्दर	,,	885-888
₹₹.	पद	रूपचन्द	हिम्दी	पत्र ११४
		ग्रनन्त चित्त छांड़दे <sup>ं</sup>	रे भग <b>व</b> न्त चरणा चित्त लाई	

१३. नाममाला धनञ्जय संस्कृत ११६-१६० १४. कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा — बनारसीदास हिन्दी १६१-१६७

१४. विवेक जकडी --- जिनदास १६५--१६९ १६. पार्थनाथ कथा × ,, भपूर्ण १६०-१८१

**६६२४. गुटका सं**० ७ । पत्रसं० १२० । म्रा॰ ७imes५२ ६ खा । माया सस्कृत-कृत्वी । ले॰काल imes । पूर्यो । वेप्टन स० २४ ।

विशेष-पूजा पाठों का सप्रह है।

६६२%. युटका सं० ६ । पत्र सं० ३२४ । ग्रा० ६ x ७ है इस्य । मावा-संस्कृत-हिस्वी । ले०काल सं० १७४६ चैत बुदी x । पूर्ण । बेहन सं० २६ ।

विशेष---निम्न पाठौं का संग्रह है---

रै. भविष्यवस रास अञ्चारायमक्ष हिन्दी र०काल सं० १६३३ । ले०काल स० १७६५ २. प्रवोधवादनी जिनदास हिन्दी । ले०काल सं १७४६

**श्चान्तम पृथ्यिका**—इति प्रयोध दृहा बावनी साधू जिनदास कत समाप्त । १३ दोहे हैं ।

श्रीपाल रासो ४० रायमळा । हिन्दी

४. विभिन्न पूजा एवं पाठों का संग्रह है।

१९६२६, गुटकासं० ६ । पत्रस० व्हामा० व्हे×६३ इ.चा भाषा-हिन्दी। ले∘काल 🗴 । पूर्यावेष्टनसं० २७ ।

विशेष—विभिन्न कवियो के पदों का सग्रह है। द्यानतराय के पद ग्रधिक हैं।

६६२७. गुटकासं० १०। पत्रसं० ४८ । ग्रा० ४ ४४ इञ्च । माषा−सस्कृत -हिन्दी । ले∙काल ४ । पूर्णः । वेष्टन स०२८ ।

विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर चोधरियों का मालपुरा (टाँक)

**१६२८. गुटका सं०१**। पत्र स०१८६। मा० ५६ $\times$ ६ इश्व। मापा- $\mathbb Z$ न्दी पद्य। लेकाल स०१७६८ मादवा सुदी २।। पूर्ण। वेष्टन स०१६।

विशेष---निम्न पाठ है --

१. सबैया	विनोदीलाल	हिन्दी ।
२. भक्तामर माषा	हेमराज	19
३. निर्वाण काण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	,,
¥. फुटकर दोहे	×	,,
५. राजुल पञ्चीसी	विनोदीलास	"
६. यंत्र सग्रह		बत्तीसयंत्र हैं।
७. कछबाहा राज बशावलि	×	,,
<b>विशेष११</b> ५ राजाम्रो वे	नाम है माघोसिंहतक सं० १६३७।	
द. <b>भीववि</b> यों के नुस्त्रे		
<ol> <li>चौरासी गौत्र वर्णन</li> </ol>		
१०. ढोलमारू की बात	×	हिन्दी श्रपूर्ण ।
		४२३ प <b>द्य</b> तक

**१६२९. गुटका सं०२** । मा॰ म×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । से॰कास × । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३७ ।

विशेष-विविध जैनेतर कवियों के पद है।

६६३०. गुटकासं०३ । पत्र सं०६७ । म्रा०६×६ इचा भाषा⊣हिन्दी गद्या ले०काल × । भ्रपुर्शा वेष्टन स०३६ ।

विशेष--हिलोपदेण की कथाये हैं।

**६६३१. गुटका सं०४ ।** पत्र स०४ –६६ । झा० ७ $\frac{1}{2} \times V_{\gamma}^2$  इंच । भाषा–संस्कृत । ले० काल  $\times$  । झपूर्या । वेष्टन स०३७ ।

विशेष---सामान पुजाओं का संग्रह है।

**१६३२. गुटका सं० ५ । पत्र स० ६-१४ । भा**० प×६ इला । माषा-हिन्दी । लं० काल **× ।** भ्रपुर्सा । बेस्टन स० ३६ ।

विशेष-- नित्य पूजाओं का सम्रह.है।

**६६३३. गुटकासं०६**। पत्रस०१७२ । धा० ५×६ दश्वा गाया–सस्कृत–हिन्दी। ले०काल ⋉ा पूर्णावेष्ट्रस०३६।

विशेष -- विविध पुजापाठी का संग्रह है।

६६३४. **गुटका सं०७ ।** पत्रमं०७४ । धा•६४५ इञ्च्'। माषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल ४ । पूर्णा वेष्टनम०४० ।

विशेष-- नित्य पूजा पाठों का सम्रह है।

६६३६. गुटकास० ६ । पत्रस० २२ । घा० ७ ४४ डशा । मापा−हिन्दी पद्या । ले०काल ४ । पूर्णा । बेष्टन स० ४१ ।

विशेष — नित्य पूजा संग्रह हैं।

६६३६. युटका स० ६ । पत्रस० ६६ । झा० ६imes६६ व । माया-सस्कृत-हिन्दी । ले०कालimes। पूर्णं । वेष्टन स० ४६ ।

विशेष--- श्रायुर्वेद के नुस्त्वे तथा पूजा पाठ सप्रह है।

**६६३७. गुटका सं० १० ।** पत्रसं•६२ । मा० प्र $\times$ ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । के० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४६ ।

विशेष---पुत्रा पाठ सप्रह है।

 $\xi \xi \xi \pi$ , गुटकासं० ११ । पत्रसं० ३ से २६० । ब्रा॰ म $\xi \times \xi^2$  इश्वा । आवा-हिल्दी-सस्कृत । ले॰काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । वेष्टनसं० ५० ।

विशेष--- निम्न प्रकार संग्रह है। इसके मतिरिक्त अन्य सामान्य पाठ है।

१-संबोध पचासिका-मृति धर्मचन्द्र।

यह संबोध पंचासिका, देखे गाहा छद । मावा बंध दूहा रच्या, गछपति मृनि धर्मचद ॥५१॥

२-धमंचन्द्र की लहर (चतुर्विशति स्तवन) ।

३-पाक्ष्मेनाय रास-ब॰ कपूरचंद। र०काल सं० १६१७ बेगाल सुदी ४। मूलसंघ सरस्वती गच्छु गळ्पति नेमीबन्द। उनके पाट जशकीति, उनके पाठ गुरुवन्द।। तासु सिथि ससु पष्टित कपूरजी चंद। कीनो रास चिति धरियि धानन्द।।

रत्नबाई की शिष्या श्राविका पार्वती गंगवाल ने सं० १७२२ जेठ बरी ५ को प्रतिलिपि कराई थी।

४-पंच सहेली---छीहल हिन्दी १-विवेक चौपई— ब्रह्म गुलाल ,, ६-सदर्भेन रास— ∎० रायमल्ल ,,,

## प्राप्ति स्थान - दि • जैन मन्दिर कोखो का नैयवा ।

**६६३६. गुटका सं० १** । पत्रसं० १४१ । घा० ६३ ४५ इश्वः । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । विषय – संग्रह । ले∘काल स० १६१४ घासोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ ।

विशेष--मूख्यत. निम्न पाठी का संग्रह है--

जिन सहस्रनाम		संस्कृत	_
शानिचऋ पूजा		,,	
रविवार व्रत कथा		हिन्दी	
वार्ता	बुलाकीदास	,,	
भक्ताभर स्तोत्र	मानतु गाचायं	सम्बन	
कल्यास्य मंदिर स्तोत्र	कुमुदचद		
एकीभाव स्वोत्र	वादिराज	"	
विषापहार स्तोत्र	धन जय		
तत्वार्थं सूत्र	उमास्वामि	**	
दशलक्षरण पूजा		"	
रत्नत्रय पूजा तथा समस	सार नाटक बनार	सीदास	

प॰ जीवराज ने धावा नगर में स्वयभुराम से प्रतिलिपि कराई थी।

**६६४०. गुटका सं०२ ।** पत्रस०१४१ । प्रा०  $a_{2}^{4} \times \xi_{3}^{2}$  इ.खा । ले०काल सं० $\times$  । **प्रपूर्ण ।** वेष्टनसं०७० ।

विशेष-चौबीस तीर्थंकर पूजा है।

६६४१. गुटका सं० ३ । पत्रस॰ २१३ । मा॰ ६imes४२ हेच्य । माया-हिन्दी । से॰कास imes । पूर्णै । बेहन सं० ७१ ।

विशेष-विविध स्तोत्र एव पाठों का सम्रह है।

६६४२. गुटका सं० ४। पत्रसं० १३०। छा० ११imes ५ $^2$  इचा। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले० काल imes । बेष्टनस० ७४।

विशेष - पूजा स्तोत्र एवं गुरा स्थान वर्जी ग्रादि का संग्रह है।

€३४**३. गुटकासं० ४** । पत्रसं• १४४ । घा० ७ × ४ इ॰डा भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पर्यो । बेबनसं० ७७ ।

**१६४४. गुटका सं० ६**। पत्रस**०१६७**। ब्रा० ६imes५ $^2_1$  इश्व । भाषा-हिन्दी—संस्कृत । ले॰काल imes। पूर्ण । वेष्ट्रस॰ द०।

**६६४४. गुटकास० ७ ।** पत्रस० ४२ । घा० ११x ४ इ.च. । माया–सस्कृत–हिन्दी । के०काल × । घपुर्साकेकृत करे हे ।

विशेष--मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है।

१-यशोधर रास जिनदास

हिन्दी

(र०काल सं० १६७६)

मवत् मोलासौ परमाग् बरष उपुन्यासी ऊपर जाग् । किमन पक्ष कानी भलो तिथि पत्रभी सहित गरवार ॥

कवि रसाथभ गढ (रसाथभौर) के निकट क्षेरपूर का रहने वाला था।

२-पंजा पाट मग्रह

सस्कृत-हिन्दी

९६४६. गुटकासंघ्यः । पत्रस० ४७ । प्रा० ७×४ इश्वः । सावासस्कृतः। ले० कालस० १६६६ । पूर्णः । बेष्टनस०६८ ।

**६६४७. गुटका सं० ६ । पत्र**स० १२० । झा० ६imes४ हे इश्वर । भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ने० काल imes । पूर्ण । बेहन सं० ६६।

६६४ स. गुटकासं० १०। पत्र स० १४०। प्रा०६ै, ४४ ६ व्यत्र। भाषा⊸मस्कृत-हिन्दी। से•काल ×। पूर्ण। बेस्टन स०१०२।

**६६४६. गुटका सं० ११**। पत्रस० १०-२४७ । ग्रा० ७ x ४ इन्त्र । भाषा-हिन्दी पद्म । ने काल स० १४८५ । ग्रपुर्श । वेकन स० १०४ ।

विशेष--गुटका प्राचीन है तथा उसमे निम्न पाठो का सग्रह है--

•			
ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	
१-चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न	व० रायमल्ल	हिन्दी	बपूर्
२-बारह मनुषे आ		**	पूर्ण
३-विवेक जकडी	जिरगदास	1)	,,
४–धर्मतरू गीन (मालीरास)	,,	"	"
<b>४-कर्महिडोलना</b>	हर्षकीर्ति	**	>>
पद-(तज मिथ्या पंच दुख काररण)		**	,,

पद-(साधो मन हस्ती मद मातो	)	,,	,,
पद	हर्षकीति	,. n	,,
(हूं तो काई बोलू रै बोलुं भव दु	ख बोलती न धार्व)		
६ पोथी के विषय की सूची। इस	के ऊपरीभागपर वि	नेसा है	
पोथी को टीक लिस्यते वैसाख दुत	ीक सुदी १४ संवद्	१६४४ गढ रखय वर	मध्ये ।।
		पत्र	पश्च
१. ग्राराघना प्रतिबोध सार	विमलकी <b>ति</b>	۶-۶	४५
२. मिछादोकड		<b>६−</b> ⊑	२८
३. उन्तीस भावना		<b>=-</b> १0	₹€
४. ईश्वर शिक्षा		१०-१३	२१
५. जम्बूस्वामी जकड़ी	साधुकीर्ति	१३-१७	3.5
६. जलगालन रास	ज्ञान मूषरा	80-30	३२
७. पोसहपारवानीविधि तथा रास	_	२०-२७	
८. ग्रनादि स्तोत्र	-	२७-२६	२२ (सस्कृत)
६. परमानद स्तोत्र	_	२९−३१	२५
१०. सीलामिए रास	सकलकीति	३१-३४	
११. देव परीषह चौपई	उदयप्रभ सूरि	€X-30	२१
१२. बलिभद्रकृष्ण मायागीत	-	३७−३⊏	
१३. बलिभद्र भावना	-	₹⊏-४३	¥¥
१४. रियमनाथ धूल	सोमकीर्ति	<b>૪</b> ३- <b>४</b> ४	¥
१४. जीववैराग्यगीत		४५	<b>u</b>
१६. मत्र सग्रह	-	¥4-¥9	संस्कृत
१७. नेमिनाथ युति	-	Yc	हिन्दी पद्य
		(;	(०काल १५६०)
१८. नेमिनाथ गीत	द्र० यशोधर	86-85	
<b>?E.</b> "		x - x z	
२०. योगीवासी	यशःकीति	**	७ पद्य
२१. पद (मन गीत)		χ×	
२१. (क) मल्लिगीत	सोमकीर्ति	*8-**	¥
२२. मल्लिनाथ गीत	<b>द</b> ० यशोधर	<b>44-4</b> 6	ŧ
२३. जलडी		x 4 - 4 10	¥

२४. कायाक्षेत्र गीत

पद्य संख्या

Ę

¥9-85

			٠,
२५. नेमिनाथ गीत	इ० यशोधर	५६-६३	₹ €
२६. चौबीस तीर्थंकर भावना	यश.कीर्ति	<b>€</b> ₹ <b>- €</b> ¥	२४
२७. राममीतारास	<b>व</b> ० जिस्तदास	६५-६१	
२८. सकौसलरास	सांसु	809-13	
२१. जिनसेन बोल	जिनसेन	१०६	¥
३०. गीत	-	७०९	×
३१. शत्रुं जयगीत	_	२०५-१०८	6.8
३२. पार्श्वनाय स्तवन	मुनि लावण्य समय	१०५-११२	şх
(इति श्री पाश्वंनाथ स्तवन पं	डेत नरवद पठनायं)		
३३ पचेन्द्रिय गीत	जिनसेन	११२	৩
३४. मेघकुमार रास	कवि कनक	<b>११३-११६</b>	85
३४. बलिमद्रचौपइ	<b>४</b> ० यशोधर	११६-१३२	१८७
		(र०का	लास १५८५)
सवत प	नर पचासीइ स्कथनयर	मभारि।	
भविंग !	भ्रजित जिनवर तिए ए गुर	ग़ गाथा सार । <b>।१</b> ८८	ıt
३६. बुविरास		<b>१३</b> २–३६	४८ पद्य
३७. पद	<b>स</b> ० यशोधर	<b>9</b> ३ ६	¥
(प्रीतडी रेपाली राजिस	त इम कहिरे)		
३८. पद	_	234-30	
चेतुलोई २ थिर २ कह	<b>द</b> कोइ		
३१. पद		<b>१३७</b>	×
(श्रादि श्रनादि एक पर	मेक्वर सयल जीव साधाररा	)	
४०. त्रेपनिकयागीत	सोमकीर्ति	१३७	¥
४१. रत्नत्रयगीत		₹३=	₹ ₹
४२. देहस्तगीत		680-86	¥
¥३. पर रमग्री गीत	स्तीमराज	3 F \$	¥
¥¥. "		9 ₹ \$	4
४५. वैराग्य गीत	<b>व</b> ० यशोधर	१४१	•
४६. शासपाल खद		<b>१४१-१५१</b>	
४७. व्यसन गीत	*****	१४१	
४८. मंगल कलश चौपई		1×1-41	ΥĘ
"इति मंगलयुपाई समास्य	ा ब्रह्म यशोघर लिखितं।		

धनपाल

४६. पद नेमिनाथ	<b>व</b> ० यशोधर	१६३	4
(भंगि हो झनोयम वेरा	रिकरी उग्नसेन घरि	जाइ राजुल वरी)	
५०. नेमिनाथ बारह मासा		<i>१६३-१६४</i>	१२ पद्य
५१. षट्लेशा व्लोक	-	\$ & X- & X	११ सस्कृत
५२. जीरावली स्तवन	-	१६५-६६	<b>११</b>
<b>५३. घ</b> रावनासार	सकलकीर्ति	१६६-१६=	२४ पद्ध
५४. वासपूज्य गीत	<b>ब्र</b> ० यशोघर	१६=	१२
५५. भादिनाथ गीत		१६५-६६	₹
४६. म्रादि दिगबर गीत		<b>१</b> ६६	ą
५७. गीत	यशःकीति	१६९	ş
(मयरा मोह माया	मदिमातु)		
५८. गीत	यश:कीर्ति	800	Ę
तडिक लागि जिस	त्रेह त्रूटि, अंजलि	उदक जिम झाऊ पुष्टि।	
५१. गीत	व ० यशोधर	१७०	9
(वागवाग्गिवर मांगु म	ातादि मुक्त भ्रविर	ल बाग्गी रे)	
६०. गीत	व्र० यशोधर	१७१	¥
(गढ दूत् जस तलहटी	रेलाई गिरिसवा	माहि सार)	
६१. मेघकुमार रास	पूम्यू	६७-१७१	२१
६२. स्यूलभद्रगीत	लावण्यसमय	००१ – ६०१	२१
६३. मुप्यय दोहा		१७७-१८२	७८ प्राकृत गाथा
६४. उपदेश श्लोक		<b>\$</b> =3	५ स० झ्लोक
६५. नेमिनाथ राजिमति बेलि	सिंघदास	<b>१</b> =३− <b>=</b> ¥	१७ हिन्दी पद्य
६६. नेमिनाय गीत		१८६	हिन्दी पद्य
६७. नेमिनाथ गीत	<b>ब</b> ० यशोधर	१८६	¥
(यान लेई नेमि तो राए	गिद्राउ <sup>्</sup> पस् छोडिः	गढ गिरनार)	
६८. प्रतिबोध गीत		<b>१</b> व६	हिन्दी परा
(चेतरे प्रामी मुए। जि	नवारगी)		
६१. गीत (पार्श्वनाथ)	व ० यशोधर	१८७	11
७० गीत (नेमिनग्य)		१८७	,,
(समुद्र विजय मृत याद	व राजातोरिंग् ग्र	ाया करी दिवाजा)	
७१. चेतना गीत	समयमुन्दर	₹ = 19	,,
७२. झठारहनाते की कथा	_	<b>१</b> यद	प्राक्त
विशेषहिन्दी में भनुवाद म	शि दिया है।		
७३. कुबेरदल गीत		\$55-E0	¥
(भ्रठारह नाता रास)			-
		-	

७४. गीत	#० यश	ो <b>ध</b> र	<b>१</b> ६ <b>१</b>	हिन्दी पद्य
(तोररि	ए भावी वेशगवल्युरे प			16.11.14
	गोत <b>ब</b> ०यशो		939	,,
७६. गीत			73-739	"
(प्रसामू	नेमि कुमार जिएि।	संवम घरउ)		,,
७६. नेमिगीत	₩•	यशोधर	989	हिन्दी प <b>द्य</b>
(पसूड्	त तोरगि परिहरी)			
७७ नेमिगीत		,,	₹3~53	*,
नेसि	निरंजन निरोपम तोरा		नीरे)	,,
७८. पार्श्वगीत		,,	£3 <b>9</b>	,,
(मूर्रा	त मोह्रण वेल मग्गिजि	भवर उपमा क	हुकुए। दीजि)	
७६. नेमि गीत		**	₹€₹	,,
(पसूड	ाकारिंग परहरयुरे <b>ः</b>	प्रजिल सरसुर	াস)	
८० नेमिगीत			₹39	,,
	बढीरे निहालि निरोप	ाउद्यावतुनैमि <b>व्</b>	हु।र)	
<b>८१ औन व</b> स्एज	ारा रास		73-439	,,
८२. बावनी		मतिशेखर	१६६-२०१	ξ¥
<b>⊏</b> ३. सिद्ध धुल		रत्नकीति	708-703	,,
<b>८४. राजुल</b> नेि		लावण्यसमय	२०३-५	<b>?</b> ¥
घबोला				
६५. यशोधर र	ास -	सोमकीर्ति	₹ 0 % - ₹ ४	
			(से∙काल	सं० १५८५)
विशेष इति	ग्रशोचर रास समाप्त	। संबत् १५८५	वर्षे सुदि १२ स्त्रो ।	
८६. कमकमल	<b>अयमा</b> ल	-	23x-3X	
(निव	ए। काण्ड भाषा है)			
८७. <b>शत्रु</b> ंजय वि	वत्र प्रवाड		₹₹ <b>-</b> ₹=	¥ξ
८६. मनोरथ म	ाला	-	२३६	
<b>४</b> ६. सातबीसन	गीत	कल्यास मुनि	23E-80	१०
६०. पंचेन्द्री बेरि	ल		280-85	-
६१. संसार सार	रयों शीत		585-83	
<b>१</b> २. रावलियो	गीत	सिहनन्दि	585-RR	_
६३. चेतन गीत		नंदनदास	588-8 <b>8</b>	
१४. चेतन गीत		जिनदास	२४४	
६५. जोगीरासा			२४४-४७	₹=
(केवल २ = पद्य तक है) अपूर्ण				

६६५०. गुटका सं० १२ । पत्रसं० २४७ । घा० ६३४ ५ इञ्च । माया-हिन्दी । लेक्काल ४। पूर्णे । बेष्टन सं० १०४ ।

# प्राप्ति स्थार-दि॰ जैन मन्दिर श्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

**६६५१. गुटकासं०१ । पत्रसं**० ४१ । घा०६ ४६ इञ्च। भाषा−हिन्दी । ले०काल ४ । प्रणी। बेबन स०५६ ।

ह६५२२, <mark>गुटकासं०२ ।</mark> पत्रस०१४ । ग्रा०१×६ इश्वा। भाषा−हिन्दी।से∙कास × । पूर्या।बेष्टन स०४७ ।

६६५३, गुटकासं०३ । पत्रस०१३ । घा०७ ४ ४ इ.चा। भाषा−हिन्दी। ले० काल ४ । पूर्णावेष्टनसं०५६ ।

**६६५४. गुटकासं∘४** । पत्रस०३० । घा० ७×५ इ.च.। भाषा–हिन्दी पद्य । ले०काल × । पर्यो । बेब्रन स०५२ ।

विशेष—भानुकविकृत ग्रादियत्वार कथा है।

**६६४४. गुटकासं० ४ ।** पत्र सं० २३ । घा० ४ x ४ इ.चा। भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्णी। वे**ष्टनसं०** ४१ ।

**६६५६. गुटका सं०६ । पत्र स०**१६ । **घा०** ७×५ इखा भाषा-हिन्दी । ले∘काल ⋌ । पूर्मा । बेह्न सं०५० ।

**६६५७. गुटकासं०७ ।** पत्र स०२४० । ग्रा० ७४४ इ**वा**। भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्या। वेग्रन स०४६ ।

विशेष--- चौबीसी ठाए। चर्चा है।

**६६५८. गुटका सं० म**ापत्र स०२७। घा०५×४ इ.चा। भाषा-हिस्दी पद्या ले० काल × । पूर्यो । वेष्टन स०४म।

६६५६. गुटका सं०६ । पत्रसं०३५ । घा० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल ×। पूर्यो । बेष्टन सं०४७ ।

**६६६०. गुटका सं० १० ।** पत्रस• ६४ । घा० द×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । **से०काल** ×। पूर्ण । वेष्टन स• ४१ ।

**१६६१. गुटका सं०११।** पत्रस०२६। ग्रा०६×५ इन्दामावा-हिन्दी पद्या ने बकान×ा पूर्यो। बेस्टन स० २०।

विशेष-स्तृतियों का सग्रह है।

६६६२. युटकासं०१२ । पत्रस०६१ । ग्रा०८ ४६ इ.चा। भाषा–हिन्दीपदा। ले∘काल ४ । ग्रमुर्खावेकन स०३१ ।

विशेष — पूजाधों का संबह है।

**६६६३. गुटका सं० १३** । पत्र सं० ६-१२४ । घा० ६×६ इन्ब । माषा-हिन्दी पद्य । ले०काल पूर्ण । बेल्टन सं० ३२ ।

विशेष--रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है।

**६६६४. गुटका १४**। पत्रसं० २२५। आ० ६imes६ इखा मावा-प्राकृत,-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल imesा पर्छ। बेष्टन सं० ३३।

विशेष --- निम्न पाठी का संग्रह है:---

जयतिहुग्रण स्तोत्र	मुनि श्रभयदेव	प्राकृत । स्रपूर्ण ।
नव तत्व समाप्त	×	प्राकृत
श्रावक ग्रतिचार	×	
ग्रादिनाथ जन्माभिषेक	×	
कुमुमा ञ्जलि	×	"
महावीर कलण	×	,,
लूग पानी विधि	×	,
णोमन स्तुति	×	संस्कृत
गराधर वाद	श्री विजयदास मृनि	हिन्दी
जग्यू स्वामी चौपई	कमलविजय	,,
डोलामा <b>र</b> णी	वाचक कुसललाभ	"
	जग्यूस्वामी चौपई	नव तत्व समाप्त  श्रावक प्रतिचार  श्रावकाय जन्माभिषेक  कुमुमा-व्यक्ति  महाबीर कनण  लूगा पानी विधि  शोभन रनुनि  गापावर आदि विजयदात मृति  जरबू स्वामी वीपर्द  कमनविजय

र०काल ग०१६७७। ले० काल स १७११ चैत मुदी २।

प्रारंम--

दिविस रमित २ सुमित दातार कासभीर कमलासनी । ब्रह्म पुत्रिका वाएा सोहह मोहुए। तक धरि मजरी । मुख सथक त्रिहुप्युवन सोहह पय तकज प्ररामी करी । मुखा मयक प्राणुद सरस चरित गृर्थ वार रम, मन पमिशुय परमासुद

### द्यस्तिम---

सवत् सोलह सत्तोत्तरङ्गादवा त्रीज दिवस मन खरङ्। जोडी जेसलमेरु मज्जारि वाच्या मुख पामइ संसारी। समित गहगहङ्गवाचक कुसल लाम इम कहङ् रिधि वृधि सुख सपति सदा समलता पामइ सबदा।।७०६।।

**६६६५. गुटकास० १५** । पत्रस० ३४ । घा० ४ ×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । ले०काल ⋉ । जीएाँ भीए**ं। पूर्णं । बेष्टनस०** ३४ ।

विशेष-सामान्य पाठों का सग्रह है।

**१६६६, गुटकासं०१६** । पत्र स०३० । ग्रा०७ \ ४, दश्वामाषा-हिन्दी पद्याले० काल 🗙 । पूर्णाबेष्टन सं०३ ४, ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है।

६६६७. शुटकासं० १७ । पत्रसं० १०१ । घा० ६×४ इ.च.। भाषा-हिल्दी,संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । बेहनसं० ३६ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ हैं।

६६६ स. युटकासं० १ स. । पत्र सं० १ ४ स. । आ०० ४ ४ ६ इञ्च । भाषा⊸हिन्दी, संस्कृत । ले० कालास० १७७६ । अपूर्णा । बेष्टन सं० ३७ ।

विशेष-पूजा पाठों का संग्रह है।

६६६६. गुरुका सं०१६ । पत्र सं०२०। ग्रा० ६४६ इत्था। माषा-हिन्दी प∙ा के•काल ४ । पूर्वा। बेध्टन सं०३ ⊏।

**१६७०. गुटका सं०२०**। पत्रसं०७८ । मा० ७×५ इचा। भाषा−हिन्दी प०। ले**०काल** – स०१८२३ । पूर्णा वेष्टनसं०३६ ।

विशेष-अक्षर घसीट है पढ़ने में कम धाते है। पद, पूजा एवं कथाओ का संग्रह है।

# प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

**६६७१. गुटका सं० १।** पत्र स०२८ । झा०१२×८ ॄै इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले∙काल ×। पूर्यो । बेष्टन स०१३–७४।

विशेष--- मुख्यतः निम्न रचनाग्रों का संग्रह है---

पंच स्तोत्र भाषा		हिन्दी	
बारहसडी	सूरत	,,	
श्रान चितामिए।	_	**	

(र०काल सं० १७२८ माघ मुदी)

सवत सतरासै भठाईस सार, माह मुदी सप्तमी मुक्तवार ॥ नगर बुहारन पुर पालान देस माही, ममारलपुर सेवग गुरा गाई ॥

**६६७२. गुटकासं० २**।पत्र सं०११। ग्रा०६ $^2_7 \times 5^3_7$  दश्वा। भाषा हिन्दी। के० काल  $\times$  । पूर्णा। बेष्टन स०४२।

विशेष -- मुख्यतः निम्न पदो का सम्रह है---

पार्श्वनाथ की निसार्गी, कल्याग् मन्दिर भाषा, विचापहार, वृष्यमदेव का छद ।

६६७३. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १४८ । घा० १०×७ हे इचा। भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२६ भादवा बुदी १० ।पूर्ण । बेहुन सं० ५१ ।

विशेष - साधारण पाठो के ग्रतिरिक्त निम्न रचनाएं और हैं -

षमंपरीक्षा मनोहरकाल हिन्दी (र०काल सं १७००। से०काल स० १८१४) पार्श्वपूराण भूपरदास

सहवेब कर्ण ने प्रतिलिपि करवायी थी।

**१६७४. गुटका सं०४** । पत्रसं∙१४ । धा॰ १०×७ इन्द्र । माषा−हिन्दी पद्य । ले•काल सं० × । पूर्ण । तेष्ट्रन स०६२ ।

विशेष-सेवाराम इत चौबीस तीर्थंकर पूजा एव इत कथा कोष में से एक कथा का सम्रह है।

**६६७५. गुटकासं० ५ ।** पत्रसं० १३६ । सा० ६×६ दवा। मात्रा–हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण। वेकृतसं० ७५ ।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है --

पद्मावती पूजाहरू, बनारसी विजास तथा भैरव पद्मावती कवच (मस्लिवेस) झादि का संग्रह है।  $\xi = \xi = \xi = 1$  स्वात है।  $\xi = \xi = \xi = 1$  साथा-हिन्दी-संस्कृत । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० १४१/७७ ।

विशेष --- नित्य नैमित्तक पाठी का सम्रह है।

**६६७७. गुटका सं**० ७ । पत्र स० ११२ । घा॰ ६३ ×६३ इन्छ । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले॰काल × । पूर्ण । वेस्टन सं० १४२ 'च० ।

विशेष-पूजा पाठ एव स्लोत्र भादि का संग्रह है।

६६७ म. गुटकार्संक्ता पत्र संक्ष्याः ग्राक्ष्यः ६ इत्याः मादा-हिन्दी-सस्कृतः । क्ष्याः प्रदेशः इत्याः मादा-हिन्दी-सस्कृतः । क्ष्याः प्रदेशः सक्ष्यः । पूर्णः। वेष्टनं सक्ष्यः ।

**विशेष**—पुत्रा पाठ के श्रतिरिक्त सेठ शानिमद्र रास एव मेठ मुदर्शनरास (व॰ रायमस्ल ) और है।

व्यक्तिमद राम

फकीर

र०काल सं०१७४३

प्रारम्भ---

नार । सकत सिरोमणी जीतवर सार, पार न पार्व ते प्रथम प्रयार। तीन तिरानोक वर्द सदा सुर फुनी इंद नर पूत्रता ईस। ताब ते बस में ऊपनी घही श्री वरखयान सामी नमु सीस।। सालिभद्र ग्रुण वरतड ॥१॥

ग्रन्तिम---

भ्रही अस वधेरवारै लडीय्या गीत

वंस वेग्गा दुहाजी हौता।

तास ते मृत फकीर में साली ते भेद को मंडियो राप्त

मन मरोहू चीते उपनी मही देखी वाग्त्रि की धीजी परगास ॥२२०॥

प्रहो सबत सतरासं वरस तीयाल (१७४३) मास बंसास पूरिएम प्रतिपास । जोग नीरवतर सब भव्या मिल्या नृता मभी पुरश्वास रावने प्रनरण राजई। भागे समी मण ची पाची प्रकासिमार मूख वरखा। १२१।

### सेठ सुदर्शन रास-

घौलपूर नगर में रचागया था।

धौलपुर सहर देवरो बगाो

वान देवपुर सोभैजी इन्द समाने

सोव छतीस लीलाकर भवी महाजनै वस धनवन्त।

देव गुरुसासत्र सेवाकर घोहो करैजीपूजन ते घरहंत जी।।१६८।।

६६७६. गुटका सं० ६ । पत्रत $\circ$  २४ त्। प्रा $\circ$  ६imes४ इ.च । माषा-हिन्दी-सस्कृत । ले॰काल स $\circ$ १७७६ वैशास सुदी १३। पूर्ण । बेष्टन सं $\circ$  २६३ ।

#### विशेष — निम्न पाठों का सग्रह है---

समयसार नाटक समयसार कलशा बनारसीदास भ्रमतचन्द्र सरि हिन्दी सस्कृत

१६६०. गुटका सं० १० । पत्रसं० २६० । मा० ६४६ इ.च. । माषा–सस्कृत−हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६४ ।

विशेष--- मुख्यतः पूजाको का संग्रह है।

**६६०२. गुटकासं० ११।** पत्र स० १०० । ग्रा० ६×४ इचा। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले∙काल × । पूर्णावेहनसं० २६४ ।

विशेष --- पूजा पाठ संग्रह है।

**९६**न**२. गुटका सं० १२** । पत्रसं० २१७ । घा० ६imes६३ हश्व । भाषा हिन्दी । क्षे**०काल** imes । पूर्ण । बेष्टन स० २५६ ।

विशेष--मुख्यत. निम्न पाठों का संग्रह है।

चतुर्दंशी कथा	टीकम	हिन्दी
ज्येष्ठ जिनवर वृत कथा	<b>व</b> ० रायमल	"
त्रेपन किया रास	हर्षकीति	,,
		र०काल १६८४
<b>धर्म</b> रासो	-	,,
मविष्यदत्त चौपई	ब ० रायमल्ल	

**९६** म. गुटका सं० १३ । पत्रस० ३२५ । ग्रा० ६ $imes imes imes^3$  इ.स. माया-हिन्दी-सस्कृत । लेकाल imes । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ ।

विशेष--कथा स्तोत्र एवं पूजा पाठ के म्रतिरिक्त गुराठारा। गीत और है।

गुराठारा। गीत-बह्य बद्ध न

हिन्दी

र०काल १६ वीं शताब्दी

प्रारम्म

गोयम गणाहर गिरुधा मिन घरि गुराठाला गुगा गाऊं।
गुगा गाऊं रिगमरी रेगि मरीय गाऊं।
गुम्य गाऊं भेद गुराठाला तरा।
मियात पहिलाहि गुराह ठाएी वसह औव धनतुगुरा।
मियात पह माने रूपयां हमाने धनतु गुरा।
मियात पह प्रकार हमाने धनते मिरा लहह
मियात पह माने प्रकार कार्य निहारहं।
मित हीन म्युहार्गि अभि भूला मनो धनेते मिरा लहह

मन्तिम---

परस चिदानन्द संपद पद घरा ।
धनन्त गुला कर मंकर शिवकरा ।
शिवकराए श्री मिद्ध भुन्दर माउ गुण गल्छाल्या
जिम मोक्ष साक्य मुल्त साधु केवल लाल प्रमाल्या
धुमचन्द्र मृति पद कम्पल स्तालु केवल लाल प्रमाल्या
धुमचन्द्र मृति पद कम्पल स्तालुई मधुप वत मनोहर घर
मण्डादित सी वद्धन बद्धा एह वालि सवियल मुल करई ॥१७॥
इति गुण उल्लागीत

६६ तथुरका संव १४ । पत्र सर्व १० । ग्रा० ६२ ४४ इ.अ. । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । से० काल सर्व १६६१ । पूर्णा वेष्टन संव २६ त्।

विशेष---पूजा पाठ सग्रह है।

सेवाराम बघेरवाल ने इन्दरगढ मे प्रतिलिपि की थी।

**६६ न.स. गृटकास**०१ **४** । पत्र सं०२ न्४ । धा०६ दे×६ दे इ.च । भाषा—हिन्दी –संस्कृत । ले•काल × । पूर्णावेष्टन स०२६ न्।

बिशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

गुटका लिखवाने में १४। = ।। व्यय हुन्ना था।

६६८६, गुटकासं०१६ । पत्र सं०१०८ । घा०६ै; ४४ ६२४ । भाषा-हिन्दी । ले० काल ४। पूर्वा। बेहनसं०२७०।

विशेष-- श्वेताम्बर कवियों के पद एवं पाठ संग्रह है।

६६ ६८७. गुटकासं०१७ । पत्रसं०४२ । घा०४ ३ ×५ ३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । से०कास ×। पूर्णं। बेहन सं०२७१ ।

विशेष-डोलामारूवासी की बात है। पद्म सं० ५०४ है।

**१६**८ म. **गुटका सं**० १८। पत्र सं० १९८ । सा० ६३ ४ ४ ३ इ.च.। भाषा −हिन्दी । ले०काल सं० १८४३ । पूर्वी । बेस्टन सं० २७२ ।

विशेष -- गरिएत छद शास्त्र है गरिएत शास्त्र पर अच्छा ग्रंथ है।

६६ स्ट. गुटकासं० १६ । पत्र सं०६१ । घा० ६×६ इला। माया –हिन्दी। ले∙काल × । पूर्णावेहन सं०२७३ ।

विशेष-सामान्य स्तोत्रों एवं पाठों का संग्रह है।

६६६०, गुटका सं०२०। पत्रस०६३। ग्रा०६×५ दञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १६४६। पूर्ण। वेष्टनसं०२७४।

**६६८१. गुटका सं०२१**। पत्रसं०२४। म्रा०६×६६७। म्राया-सस्कृत । ले∘काल ×ादूर्यः । वैकृतस०२७४।

बिशेष--ऋषि महल पूजा, पद्मावती स्तोत्र एव अन्य पूजा पाठ सग्रह है।

सेवाराम बधरवान ने भीगासा मध्ये चरमनदी तटे लिखित ।

६६६२. गुटकासं०२२ । पत्रसं०११० । घा०६×६ इंच । माषा-हिन्दी-सस्कृत। ले∙काल स०१६१० । पूर्ण। वेष्टुन स०२७६ ।

विशेष---पूजा पाठ सग्रह है तथा गुटका फटा हथा एव जीएां है।

६६६३. गुटकासं० २३ । पत्रसं० ७६ । घा०६४ ४ दश्व । भाषा−हिन्दी-संस्कृत । ले∙काल ४ । पूर्ला । वेष्टनस०२७७ ।

विशेष--पूजा पाठ सम्रह है।

६६६४. सटकास० २०। पत्र म०१७१। प्रा० ६>>६<६०वा। भाषा—सस्त्रत-क्रिन्दी। लेक कालस० १८५८ प्रामीत मुधी ११। पूर्णा। वेष्टन म०२७८।

विशेष-- पूजा पाठ एवं स्तीत्र ब्रादि का सग्रह है।

**१६६४. गुटका सं०२४ । पत्रसं०**२१७ । धा०६ी ४४३ इञ्च । भाषा-क्रिन्दी । ले∘काल स०१६१२ । पूर्ण । वेष्टनस०२७३ ।

**विशेष** —मुख्यत<sup>.</sup> निम्न पाठो का संग्रह है —

गीता तत्वसार — हिन्दी पद्य सं०१६० (से•काल स०१६१२)

सेवाराम बचेरवाल ने प्रतिलिपि की थी। मक्तिनिधि ——

हिन्दी प**रा** म० ५४१

वेदविवेक एव भीम का उपदेश

---

लें•काल स०१६१३ समस्तिर सुदी १२ । ६६६६. गुटका सं०२६ । पत्रसं०६१ । सा०६३×५३ इच्च । आया-हिन्दी । लें•काल स०

८ ६८६ - गुलकासण् ९६ । पत्रसण् ६१ । आर्थ ५ ऱ् ४ १, इच्च । आया –हिन्दी । ने०कालस० १६०४ । पूर्ण। वेष्ठन स० २०० ।

विशेष-भक्तामर स्तोत्र भाषा मत्र सहित है।

्र ६६९७. गृहका सं० २७ । पत्रसं० ७० । प्रा० ६ x ४५ इश्व । ृमाबा-हिन्दी । ले०काल स० १८३४ फागुण बुदी ४ ।

विशेष - मक्तामर स्तीत्र भाषा मंत्र सहित है।

```
१६६६. सटका सं० २८ । पत्रसं० १३८ । धा०६×४ इला । भाषा-सस्कत । से∙काल
 सं १७६४ सावए। सुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २८२ ।
         विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है---
                                          मानत् गाचार्यं
 भक्तामर स्तोत्र
                                                                                      संस्कृत
 तस्वार्थ सूत्र
                                           उमास्वामी
 कल्याण मन्दिर स्तीत्र
                                           कुमदबन्द्र
 भूपाल चतुर्विशतिका
                                           भूपाल
 बध् सहस्रनाम
         कुल १३ = पत्र है जिनमें धारे के धार्थ ग्रर्थात ६६ खाली हैं।
         ६६. ह. शटका सं० २६ । पत्र सं० ७६ । म्रा० ६×६ इथा । भाषा-हिन्दी । ले•काल × ।
 पर्गावेष्टन स०२८३।
         विशेष - नित्य पूजा पाठ के भतिरिक्त निम्न पाठों का भौर संग्रह है-
रत्नत्रय पुजा
                                                                                       हिन्दी
योगीन्द्र पुजा
क्षेत्रपाल पुजा
         ६७००. ग्टका सं० ३०। पत्रस० १६४। घा० ८×६ है इन्छ । माषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल
स० १६१६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २५४ ।
         विशेष - निम्न रचनामी का सम्रह है --
सगर शतकः
                                               र०काल सं० १८५२। (ले०काल सं० १६१६)
                          करावता नगर में प्रतिलिपि हुई थी।
ढाल गरासार
                                                                                           ۶Ę
                                                                   ,,
सामायिक पाठ
                                                                 प्राकृत
                                                                                           3 €
सामायिक पाठ भाषा
                               स्याम
                                                                हिन्दी
                                                                                           ٧X
                          सो सामायिक साधसी लहसी प्रविचल थान ।
                          करी चौपई भावम् जैसराज सुत स्थाम ।।
                                (र०काल स० १७४६ पौष सुदी १०)
विषापहार स्तीत्र
                             घनजय
                                                                 संस्कृत
                                                                                          804
सामाधिक वचनिका
                                                                 हिन्दी (ग०)
                             जयचन्द छाबडा
जैनबद्री यात्रा वर्शन
                            सुरेन्द्रकीर्ति
                                                                हिन्दी
        मदिर चैत्यालय ग्रादि का जहां जहां यात्रा गये वर्णन मिलता है। भ्रामेर घाट ग्रादि का भी वर्णन
किया हुमा है।
संपक पंचासिका
                                     जिनदास
                                                                               हिन्दी (पद्य)-
         जैनेतर साधुधों की पोल खोली गई है।
हुक्कानियेथ
                                     भूबर
```

६७०१. गटका सं० ३१। पत्र सं० १०-७०। घा० ७×५ इन्द्र। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । से •कास × । अपूर्ण । बेप्रन स॰ २८४ । बिशेष---नित्य पुजा पाठ सग्रह है। १७०२. गुटका सं०३२। पत्र स०१६०। आ० १४४ इश्वा भाषा-हिन्दी, ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २८६ । विशेष--- निम्न पाठों का संग्रह है---षडदर्शन पास्त्रह दिल्दी जैन दर्शन व १६ पालंड---मलमधी काष्ट्रामंधी निग्रंथ भाल धाजिका दलना धादती इवडिंग भावलिंगी विपर्मय श्राचार्य भट्टारक स्वयभ मिश्री साव्य बारहमास पुर्णमासी फल हिन्दी साठ सवत्सरी सवत १७०१ से लेकर १७८६ तक का फल है। इसराज वच्छराज चौपई जिनोदय सरि-हिन्दी---(र०काल स० १६८०) कवि चिया के भाव हिस्टी ६०७३. गुटका सं० ३३ । पत्रस० १४२ । ब्रा० ४×३ इला । माषा—मस्कृत ।ले•काल × । पूर्णावेष्टन स०२८७। विशेष---गम स्तीत एवं जगन्नाथाएक ग्रादि का सप्रह है। ६०७४. गृटका सं० ३४ । पत्रस० ७६ । आ० ६×४% इचा। भाषा-हिन्दी । से ब्हास × । पूर्णं। बेष्टनसं० २८८। विशेष-भाऊ कवि कृत रविवार कथा का संग्रह है। ६७०५. गृटका सं० ३५ । पत्र म० ८५ । ग्रा० ५३×४ इञ्च । आया-सस्कृत-हिन्दी । ले॰ काल स०१८२४ । पूर्णा वेष्ट्रन स०२८६ । विशेष-मन्यत निम्न पाठी का सम्रह है। बाईम परीयह मक्तामर स्तोत्र पजा देव पजा कका वीननी पार्श्वनाय मगल (ले०काल स०१८२४) विननी पाठ संबह हिन्दी चनुर्विणति तीर्थंकर स्त्रति ---

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर घोर बली कोटा

६७०६. गूटका सं० १ । पत्रसं० १७ । मा० ६×६ इश्व । भाषा-संस्कृत । ले•काल × । पर्सा । बेबन सं० २४७ ।

विशेष --तत्वार्थं सत्र प्रादि हैं।

६७०७. गुटका सं० २ । पत्रसं० ११-६७ । ब्रा० ८×६३ इन्य । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले •काल 🗴 । श्रपुर्श । वेष्ट्रन सं० ३५१ ।

विशेष--तत्वार्थं सत्र भादि सामान्य पाठ एवं पृजाभों का संग्रह है। सुरेन्द्रकीर्ति विरचित अनन्तवत समञ्चय पजा भी है।

६७०८. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १०४ । आ० ६×४ इथा। माषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण। बेष्टनसं० ३४२।

विशेष-वेगराज कृत रचनाओं का संग्रह है।

- १. चनडी वेगराज ।
- २. ज्ञान चनडी
- ३. पद सम्रह
- ४. नेम व्याह पच्चीसी
- ५. बाग्हस्यडी
- ६. साग्द लक्ष्मी सवाद

६७०६. गुटका सं० ४। पत्र स० ११-१६ तथा १। आ० ८×४ देखा। भाषा-हिन्दी। के काल सं० १७२२ । श्रपुर्ण । बेष्ट्रन स० ३५६ ।

- १. कवि प्रिया केशवदास
- २. बिहारी सतसई -- बिहारी लाल
- ३. मघमालती
- ४. सदयवच्छवासार्वालग ---। धपुर्ग ।

६७१०. गूटका सं० ५ । पत्रस० ७-१८४ । घा० ६×४ है इला। सावा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०६ । स्रपृत्ती । वेष्टन सं० ३४८ ।

विशेष---निम्न पाठ मुख्य हैं।

- १. श्रावकानिचार चउपई-पासचन्द्र सूरि । ले॰काल सं० १८०६ ।
- २. साध्वंदना---× । ८८ पद्य हैं। चंडवीसा — जिनराजसरि ।
- ४. तीजी पाण्यंनाय स्तवन---× ।
- ४. पद संबेह---× I

विशेष -- गृटका नागौर में कर्मचन्द्र बादिया के पठनार्थ लिखा गया था।

- तत्वार्थं सत्र उमास्वामी । भाषा-संस्कृत ।
- २. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंग । ले० काल १७६४ ।
- ३. पद्मावती राखी रास-× । हिन्दी ।
- ४. गौतम स्वामी सज्भाय---× । ,,
- ४. स्तवन ---× ।
- ६. चित्तौड बसने का समय (सबत् १०१)
- ७. दान शील तप भावना---× । हिन्दी । से० काल १७६१ ।
- मज्भाय─× । हिन्दी ।
- पदमध्या की बीहालो—

  × । हिन्दी ले० काल १७६३ ।
- १०. ढोलामारू चौपई-कृशललाम । हिन्दी ।

१८७१२. गुटका रॉ० ७ । पत्र सं∘ ४० । घा॰६४६ इला । साथा-सस्कृत । ले० काल ४ । पूर्वा। बेष्टन सं०३६४ ।

विशेष - ज्योतिष सबंधी साहित्य है।

 $\boldsymbol{\epsilon}$ ७१३. **गुटकास**० द्र। पत्रस० १००। घा० ६imes६ इ.च.। साथा--हिन्दी। ले० काल imes। पूर्ण। बेष्टनसं० २६६।

मस्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

- १. विहारी सतसई विहारीलाल । पद्य स० ७०६
- २. नवरत्न कवित्त ×
- ३ परमार्थं दोहा रूपचन्द ।
- ४. योगसार योगीन्द्र देव

६७१४. गुटका सं०६ । पत्रस०१२६ । द्या० ७ $(\times$ ४) इश्वर। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले॰ काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनसं०३६७ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्रो का मग्रह है।

६७१५. **गुटका स० १०** । पत्रस० ६० । स्ना० ६imes५ इ.च. । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले॰काल imes। पूर्ण । बेष्टन सं० ३७० ।

विरोष—पूजा सग्रह के ध्रतिरिक्त गुलाल पज्जीमी तथा भाऊ कृत रवित्रत कथा है। लिपिकार वेनराग है।

६७१६. गुटकासं०११ । पत्र स०२१६ । मा०६<sup>2</sup>,४६ इञ्च। माषा⊸सस्कृत हिल्दी। के०कालस०१६३४ फागुन सुदी ४ । पूर्ण। बेष्टनस०३७६ ।

प्रशस्ति—श्री मुलबंधे भट्टारक श्री धर्मकीति तत्पट्टे म० त्रीलपूषण तत्पट्टे म० ज्ञानभूषण तदाम्नावेजैतवानान्वये प्रवात श्री दुर्गाराम द्वितीय आता क्यूरचन्द तद्मायां हर्रिसहरे तत्पुत्र श्री नोदी तैनेदं पुस्तक लिलान्य दत्तं श्री बद्धा श्री बुद्धोनाय । पूजा एव स्तोत्र संग्रह है। मुख्यतः पंडितवर सिघारमज पं॰ रूपचन्दकृत दशलाक्षरिएक पूजा तथा भाज कृत रवित्रत हैं।

**६७१७. गुटका** सं० १२ । पत्र सं०१०० । प्रा० ७ $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ इ.ख । माषा-हिन्दी । ने० काल imes । पूर्ण । वेस्टन सं० ३७७ ।

विशेष-वनारमीदास, भूधरदास, मोहनदास ब्रादि कवियो के पाठो का संग्रह है।

६७१८. युटकासं० १३ । पत्रस० १४० । प्रा० ६ ४४ ई इआर । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७३४ । पूर्णा वेष्टनसं० ६७६ ।

- १. गौतमराम-वितयमल । रं०काल १४१२।
- २. अजितनाथ शानि स्तवन-मेरूनंदन ।
- ३. भारावाहयनि सज्भाय—× ।
- ४. ब्राबाट भृत धमाल--- × । र०काल सं० १६३८ ।
- ४. दान णील तप भावना-सययमन्दर

६७१६. गुटकासं०१४ । पत्रस०१४ मा घा०६४ ५ इश्वामाया – हिन्दी। ले∘काल 🗴 । पूर्यो । वेष्ट्रास०३ ६४ ।

विशेष — यन्य पूजाक्रों के अतिरिक्त चौबीस तीर्यकर पूजा भी दी हुई है।

६७२०. गुटका सं० १५ । पत्रसं० ६४ । धा० ६४६} इश्व । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ते०काल ६ । पूर्ण । बेष्टन स०३=४ ।

विशेष - मत्र तत्र नग्रह है।

६७२१. गुटका स०१६ । पत्रस०११६ । आ० दर्<sup>2</sup> ४६<sup>१</sup> इश्वा भाषा-हिन्दी । ले∙ काल सं०१७७१ द्विष्ठ सामाद बुदी १ । पर्सु बेष्टन स०३६३ ।

१, स्वामी कार्तिकेयानप्रक्षा - कार्तिकेय।

हिन्दी टीका महित

२. प्रीतिकर चरित्र --- जोधराज

६७२२. गुटकासं०१७ । पत्रसं०४६ । झा०७४४ इ.चा। भाषा–हिन्दी । ले० काल ४ । पर्यो । बेब्रन स०३ न२ ।

**विशेष**— विभिन्न पाठों का संग्रह है।

६७२३. गुटका सं०१ ⊏ ।पत्रसं०५० । घा०६×६ इख । भाषा---हिन्दी-संस्कृत । ने०काल × ।पूर्ण।येष्टन सं०३<६।

- १. भक्तामर स्तोत्र--मानतुंग ।
- २. दशलक्षणोद्यापन--- X ।

१७२४. गुटका सं०१६ । पत्रसं०५६६ । झा०६१ै×४१ दश्व । भाषा-हिन्दी । ले० काल स०१६१६ घासोज बदी ७ । पूर्ण । बेष्टन सं०३६७ ।

- १. पाव्यपुरागा-भूषरदास । पत्रस० १-१८८
- २. सीता चरित्र-कविद्यालक । ,, १८६-३४८
- ३. धर्मसार---×। ,, १-६० तक।

### प्राप्ति स्थान-खरहेलवाल दि॰ जैन शंचायती मन्दिर अलबर

६७२**५. शुटकासं०१ ।** पत्रसं०१३ द। म्रा०६×४ दचा । भाषा−हिन्दी। ले० काल सं० × । पर्एं वेष्ठन स०२०२ ।

**६७२६. गुटका सं०२ । पत्र स०१०२ । मा०६**४७ इ.च.। भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स०२०३ ।

विशेष--पूजामो का संग्रह है।

६७२ स. गुटकासं० ३ । पत्रसं० ११३ । घा० ७३ ४७ इ.च.। भाषा−हिन्दी । ले०कान ४ । घपूर्णः। बेटन स०२०४ ।

विशेष--गोम्मटसार, त्रिलोकसार, क्षप्रशासार बादि सिद्धात ग्रंथों में से चर्चाएं हैं।

६७२६. गुटका सं० ४ । पत्र सं० द० । घा० दर्भ ४ ६ घ्न्व । भाषा-हिन्दी । से०काल सं० १दद२ । पूर्ण । बेकुन सं० १०४ ।

विशेष--स्तोत्र एव पूजा संग्रह है।

६७३०. गुटका सं० ४.।पत्र स०१४०। द्वा० १०१८७ दखाभाषाहिन्दी।ले०काल ४.।पूर्णं। वेष्टन सं०१०६।

विशेष--स्फुट चर्चाग्रो का संग्रह है।

६७३१. गुटकासं०६ । पत्रस० ६१ । घा० ७ $^1_i imes ^1_i$  इ.स. । भाषा-हिन्दी । ले० काल imes । पूर्ण । बेहन स०१०७ ।

विशेष--- निम्न पाठो का मुख्यतः संग्रह है---

१. दर्शन पाठ व पूजाएं स्नादि

२. धर्मवायनी-वपाराम दीवान । र०काल स १८८४ । पूर्ण । चपाराम वृन्दावन के रहने वाले थे ।

६७३**२. गुटका सं०७ ।** पत्र स० २८ । घा० ७४४ इ'च । भाषा हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन म०१०८ ।

विशेष—विभिन्त पदों का संग्रह है।

१७३३ मुटकासं० ६ । पत्रसं० ७६ । ग्रा० ६ ४ ५ इला। भाषा-हिन्दीसम्कृत । ले**० काल** メ≀पूर्णा वेष्ट्रन स० १०६ ।

विशेष--पूजा एव स्तोत्र संग्रह है।

६७३४. **गुटका सं० ६ ।** पत्रस०२२७ । म्रा० ८×४२ इ**चा । मावा**-हिन्दी<del>-सस्कृत । से ०कास</del> सं०१७३४ मादवा मुदी ८ । पूर्ण । वेष्टुनस० ११० ।

विशेष — समयसार तथा बनारसी विलास का संग्रह है। नोट----३७ छोटे वड़े गुटके भीर है तथा इनमें पूजा स्तोत्र एवं कथाओं का भी संग्रह है।

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन अधवाल पंचायती मन्दिर अलवर

१८७३४. गुटका सं० १। पत्रस॰ दश्। ग्रा॰ ११×६ इंच भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्णं। वेष्टन सं० १४६ ।

विशेष-हिन्दी कवियों की विभिन्न रचनाओं का संग्रह है। मरूप पाठ है.--

- १. च्यान बलीसी । (२) नेमीश्वर की लहरी ।
- सगलद्रशीनंद्र । (४) मौक्ष पैडी---बनारसीदास
- ध. पंचम गृति बेलि । (६) जैन शतक भृषद्दास
- ७ बाहिरावार कथा-भारत।

६७३६ गुटका सं० २ । पत्र स० ३७ । ग्रा० १० × ४३ इश्व । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले•काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० १६० ।

विशेष -- नित्य नियम पूजा तथा रविवृत कथा है।

६७३७. गुटका सं०३ । पत्रस०१४६ । ग्रा० १०×५ इचा। भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण। बेव्टन स०१६१।

विशेष -- मरूय निम्न पाठ है---

१. यशोधर चौपई २. जम्बूस्वार्थ, चौपई

वाण्डे जिनराम

४. पुरदर चौपई Y. बकचूल की कथा

पद्य ५७२ (भप्रशं)

६७३८. गुटका सं० ४ : पत्र सं० ४३ : झा० १०३ ×६३ इन्ह्रा : भाषा-हिन्दी : ले०काल ×। पूर्णी। वेष्ट्रन स०१६२।

विशेष-समयसार कलशा की हिन्दी टीका पाग्डे राजमल कृत है।

६७३६. गटका सं० ४ । पत्रसं० १४८ । आ० ६×४३ इचा भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण। बेप्रनसं०१६३।

१ सनिस्य पश्चासिका

२. समयसार नाटक

बनारसीदास प्रपुर्श

इब्य संग्रह भाषा

पर्वत धर्मार्थी

४. नाममाला

६७४०. गृटका सं० ६ । पत्र सं० २२२ । धा० ६३ × ५३ इच । माषा-संस्कृत-हिन्दी । कै • काल स॰ १८०४ भाषाठ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ ।

१. जिनसहस्रवाम

जिनसेनाचार्यं

र. पूजा सम्रह

३. घादित्यवार कथा

×

२५ पूजार्वे हैं।

१७४**१. गुरुका सं०७** । पत्रक्षं० १४० । ग्रा०७×४ इला । भाषा–संस्कृत∽हिन्दी । ले०काल सं०१⊏६२ । पूर्णा । वेष्टन स०१६४ ।

विशेष--जैन शतक (भूघरदास),पाश्वैनाथ स्तोत्र, पच स्तीत्र एवं पूजाओं का संग्रह है।

६७४२. युटका सं० म । पत्रसं० २५ । म्रा० ११×६३ इश्वा । माया-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्या । बेष्टन स० १६६ ।

विशेष-इसके प्रधिकाश पत्र लाली है द्रव्य सग्रह गाया एव जैन शतक टीका है।

१८४३, गुटका सं०६। पत्रसं० ७३ । घा० १र्रै ४६१ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स०१११६ माहबुटी⊍। पूर्णे। बेष्टनसं०१६७।

विशेष---निम्न पाठ है।

१. पूजा संग्रह ।

- (२) पच मंगल-रूपचन्द । (४) नेमिनाय नवमगल---लालचन्द
- २. बारहस्रड़ी सूरत ।
  - र०काल स० १७४४।
- ४. नेमिनाथ का बारहमामा-विनोदीलाल ।

**६७४४. गुटका सं० १०।** पत्र स०२३७ । घा० ६४७ इच्चा मापा–हिन्दी । ले∘काल 🗴 । पूर्यो । बेष्टन म०१६⊏ ।

१. प्रीत्यकर चौपर्ड

नेमिचन्द्र

- २. राजाचन्द्र की कथा ३. हरिबंश पुरास
- र०काल स० १७६६ ग्रामोज सदी १०

१७४५. गुटकासं० ११ । पत्रस० ८६ । ग्रा० ७४ ४ ¦ इङ्च । भाषा- स्स्कृत–हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण। बेपन मं० १६६ ।

विशेष-सामान्य पूजाओं का संग्रह है। ४३ से आगे पत्र खाली हैं।

९७४६. गुटका सं०१२ । पत्र स०६४ । म्रा०६×४ ॄैइंच । भाषा−हिन्दी । ले० काल × 1 मपुर्गा । वेटटत स०१७०।

१ द्यादित्यवार कथा

अपूर्ण

- २. शनिश्चर कथा
- २. बागरमर गणा ३. बिद्या पुजर स्तोत्र

६७४७. गृटका स०१३ । पत्र स०१२ । घा०६imes४३ ६ खः। भाषा-हिन्दी। ले $\circ$  काlpha imes । सपूर्ण। बेप्टन स०१७१।

६७४ म. गुटका स०१४ । पत्र सं०११६ । स्ना० ४ $\frac{1}{4} \times \frac{1}{2}$  इल्खा भाषा—हिल्दो । ले०कास imes । पूर्ण । वेष्टन स०१७२ ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ (हिन्दी)। सबन् १०६१ ( त्रयपुर ) तक की प्रतिष्ठामों का वर्गन तथान आर्थक की चीरासी किया मादि प्रन्य पाठ भी हैं। ६७४६, गुटकासं०१५ । पत्र सं०६६ । धा०५×४ इ.चा। माचा−हिन्दी । ले≉काल × । घपुर्ए। वेष्टनसं०१७३ ।

विशेष—मक्तामर सटीक ( श्रे॰ )। महापुराण संक्षिप्त-गगाराम । विश्वक छत्तीसी तथा चैत्य वेदना ।

१७५०, गुरुका सं०१६ । पत्र स०५० । ध्रा०४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल $\times$ । भपूर्ए । बेप्टन स०१४४ ।

विशेष --- जिन सहस्रनाम, परमानन्द स्तोत्र, स्वयभूस्तोत्र एव समाधिमरण धादि का सग्रह है।

**६७५१. गुटकासं० १७** । पत्र सं० ३४ । द्या० ७×६ इचा। भाषा-हिल्दी –सरकृत । ले**०काल** × । पूर्या। बेष्टन स० १७४ ।

विशेष—सम्मेदावल पूजा गगाराम इत, गिरनार पूजा तथा मागीतुगी पूत्रा धादि का सम्बह है।

६७५२. गुटकासं०१६ । पत्र सं०११५ । झा० ७२,४६ - इ.चा भाषा−हिन्दी। ले० काल ४ । पूर्णावेष्टन स०१७६ ।

विशेष—गोम्मटमार, क्षपणामार, लब्बिसार में से ५० टोडरमल एव रायमल्ल जी कृत चर्चामी का सम्रह है।

६७५३, गुटकासं० १६ । पत्रसं० च६ । घा० ६४४ इचा। भाषा-हिन्दी–सस्कृत । भे∙काल ४ । पूर्ला वेदनस० १७७ ।

विशेष--- नित्य नियम पूजा संग्रह है।

६७५४ पुटका सं०२०। पत्र म०२०। घा॰ द×६ इश्वः। भाषा-हिन्दी । से∙काल स० १८६५ झानोत्र सुदी २ । पूर्णा । बेष्टन सं०१७६ ।

विशेष — इष्ट पिचावनी रखुनाथ कृत तथा बह्म महिमा मादि कविल है।

६७५५. गुटकासं०२१ । पत्र स∙ ६६ । ग्रा० ⊏×७ इ.चा। भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णावेष्टन म०१७६ ।

विशेष -- नित्यनियम पूजा मंग्रह, सूरत की बारह खडी, बारहभावना ग्रादि का सग्रह है।

१७४६, **युटकासं**०२२ । पत्र स०२४८ । झा०१५ ४६ १ इ.च. । साया-हिल्दी । से०काल ४ । पर्यो । वेष्ट्रत सं०१८० ।

विशेष--- निम्न मध्य पाठ है---

	विशव-ानम्न मुख्य	पाठ ह—		
₹.	उपदेश शतक	चानतराय	1	र०काल सं∙ १७४⊏
₹.	संबोध प्रक्षर बावनी	,,		
₹.	धर्मपच्चीसी	,,		
٧.	तत्वसार	,,		
ĸ.	दर्शन शतक	,,		
۹.	शान दशक	,,		
<b>v</b> .	मोक्ष पच्चीसी	,,		

कविर्थसह संवाददानतराय

ह. दशस्थान चौबीसी

विशेषतः द्यानतराय कृत धर्मविलास में से पाठ है ।

६७५७. युटकासं०२३ । पत्र सं०६० । मा०६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले∘काल× । पर्गा। बेब्रन स०१८ ।

विशेष-सामान्य प्जाश्रों का संग्रह है।

१७५६ गुटकासं०२४। पत्रसं०२८। म्रा० म् $^1_2$ ×६ $^3_3$  इला। मावा-हिन्दी-संस्कृत । से॰काल  $\times$ । पूर्ण। बंग्टन स०१८२।

विशेष -- ग्रादित्यवार कथा, भक्तामर स्तीत्र एव तत्वार्थ सत्र का संग्रह है।

×

६७५६. गुटकास० २५ । पत्रसं∘ ४४ । मा० १०३ ४५३ इ.च.। भाषा—हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण। वेष्टनस० १⊂३ ।

१ तत्वार्थसत्र भाषा पद्य छोटीलाल ।

२. देव सिद्ध पूजा

९७६०. गुटकासं० २६ । पत्रस० ७४ । घा॰ ८३ 🗴 ६३ दश्वा माषा∽हिन्दी । ले०काल 🗴 । घपुर्यु। वेष्टनसं० १८४ ।

विशेष — बनारमी विलाग में में पाठों का समह है। जैन शतक भृषरदास हुन भी है। इसके फ्रांतिरिक्त सामान्य पाठों एवं पुताओं वा समह है।

**८७६१. गुटकासं०२७** । पत्र म०१०४ । ब्रा०न×६ इंच । भाषा ङ्विः । ले०काल × । फ्रुप्यमें । वेक्नसं०१४⊏ ।

विशेष — भक्तामर स्तोत्र भाषा, बाईस परीषह एवं कल्याल मन्दिर स्तोत्र मापा भादि का संग्रह है।

१८५२. गुटका सं०२ त। पत्रस०१३३ । घा०११×७३ इच्च । माषा सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०८६ ।

विशेष-पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन दीवानजी मंदिर मस्तुप्र ।

६७६२. गुटकार्स०१। पत्र स०२०। भाषा-सस्कृतः। ले० काल imes। पूर्णः। दशा सामान्यः। वेष्टनं स०१।

**६७६३. गुटका सं०२**। पत्र स०२०। साइज imes। प्राचा-संस्कृत । **से॰काल** imesो पूर्णे। बेहन स०२।

विशेष—प्रथम गुटके में बाये हुये पाठों के धनिरिक्त पात्र्यंनाय स्तोत्र, घंटाकर्ण संत्र तथा ऋषिसंडल स्तोत्र घादि का सम्रह है। **८७६४. गुटका सं० ३**। पत्रसं∙ २६१ से ३२३ तक। भाषा—संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टतसं०३।

विशेष-स्तोत्र, तत्वार्थं सूत्र बादि हैं।

६७६**५. गुटका सं० ४** । पत्र स० १५ । भाषा-सम्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० १६ ।

विशेष-देवपूजा तथा सिद्ध पूजा है।

**६७६६. गुटका सं० ५ ।** पत्रसं० ६७ । भाषा-सस्कृत । ले०काल ४ । पूर्मा । वेस्टन स० २५ ।

विशेष-गुटका खुले पत्रों में है तथा स्तीत्र तथा पूजाक्यों का सबह है।

६७६७. गृटका सं० ६ । पत्रसं० १९७ । भाषा--हिन्दी-सस्कृत । ले०काल 🗸 । पूर्या । बेष्टनसं० २६ ।

**१७६८. गुटका स०७। पर** स०२४२। माया हिन्दी-संस्कृत। ले∘काल × । पूर्णः। बेष्टन स०३३।

विशेष-गृटके में विषय-सूची प्रारम्भ में दी गई है तथा पूजा पाठ ग्रादि का संग्रह है।

६७६६. गुटका सं० म । पत्र म० ६४ । भाषा-सस्कृत । ते०काल imes । पूर्णं । बेघ्टन स०३४ ।

१८७०. गुरका सं०१। पत्र स०१०६ । भाषा-हिन्दी । से•कास × । पूर्गः। बेष्टन स०३६ ।

६७७१. गुटका सं० १० । पत्रसं० १३४ । भाषा-सस्कृत । ले०काल ४ । पूर्या । वेष्टनसं०३७।

१७७२. गुटकासं० ११ । पत्र सं० १७३ । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १०२४ भाषां मुदी १ । पूर्णे । बेष्टन स० ३१ ।

विशेष-- निम्न पाठों का संग्रह है।

- (१) पद संग्रह (अगराम गोदीका)
- (२) समवशारण मगल (नथमल रचना सं० १८२१ लेखन सं० १८२३)
- (३) जैन बदी की चिट्ठी (नथमल )
- (४) फुटकर दोहा (नयमल )
- (५) नेमीनाथजी का काहला (नथमल)
- (६) पद संग्रह (नथमल )
- (७) भूषर विलास (मूषरदासजी)
- (a) बनारसी विलास (बनारसीवासजी ) । ग्राशाराम ने प्रतिलिपि की शी ।

१७७३. **गुटका सं० १२ । पत्र**सं०४६। भाषा-हिन्दी पद्य । **के॰काल** × । पूर्ण । केल्नसं०४०।

विशेष-(१) सभाभूषम् प्रथ-(गंगाराम) पद्य संख्या ६४ । रचना काल-१७४४ ।

(२) पद सग्रह-(हेतराम) विभिन्न राग रागनियों के पदों का सग्रह है।

६७७४. युटकासं० १३ । पत्रसं०१६० । भाषा-सस्कृत । ले०काल स०१७७६ । पूर्ण । वेष्टुनसं०४४ ।

विशेष--पुजास्रो का सप्रह है।

१८७५१. गुटका सं० १४ । पत्रस० ७६ । माया-हिन्दी । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । बेहन सं० ४६ । विशेष —(१) चौबीस ठाएगा चर्चा ।

(२) चौबीस तीर्थं करो के ६२ ठाएगा चर्चा।

६७७६. **गुटका सं० १५ ।** पत्रस० ११८ । भाषा-हिन्दी । र०काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टनस०५०।

विशेष-इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की गई थी। समयसार (बनारसीदासजी) भी है।

१८७७. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ४२ । भाषा-हिन्दी । के∘काल × । पूर्ण । बेष्टन स०७ । १८७७ म. गुटका सं० १७ । पत्रसं० ११ । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण ।बेष्टन स० म ।

विशेष — शनिश्चर की कथा दी हुई है।

९७७६. गुटका सं० १८ । पत्रस० ८५ । भाषा-हिन्दी । के∘काल ×। पूर्णे । वेष्टत स० २१ । विशेद—कुथवन सतसर्द, पद व दचन वत्तीसी है ।

१८६० मुटका सं० १६ । पत्रसं• १६३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । 🗴 । ले•काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं• २४ ।

विशेष - पूजा पाठ व कथा-सग्रह है।

**६७६१. गुटका सं० २०।** पत्रसं० ८०। भाषा-हिन्दी-सस्कृत ।  $\times$  । के॰कासः।  $\times$  । पूर्णं । बेष्टनसं० २५ ।

विशेष-पूजा पाठ भादि सबह है।

६७६२. गुटका सं० २१। पत्रसं० ८२। माया-हिन्दी। ले०काल 🔀। पूर्ण । बेहनसं० २६। विशेष — रत्नकरण्ड आवकाचार माया वचनिका है।

६७६३. गुटका सं० २२ । पत्र स० १०१ । आचा-हिल्दी । ले∘काल 🗴 । पूर्णं । बेहनसं०२७ ।

विशेष--चर्चा वर्गरह है।

**६७८४. गुटका सं० २३ ।** पत्रसं∘ २७०। माषा−हिन्दी। ले∘काल × । पूर्णे । वेष्ट्रनसं•२⊏।

विशेष-पूजा पाठ स्तीत्र आदि है।

६७६५. गुटका सं०२४ । पत्रस॰ ४७ । भाषा-हिन्दी । ले॰काल × । पूर्ण । बेहनसं०२६ ।

विशेष—प्रक्षर बावनी, ज्ञान पच्चीसी, वैशस्य पच्चीसी, सामायिक पाठ, मृत्यु महोत्सव ब्रादि के पाठ हैं।

**१७८६. गुटका सं० २५ ।** पत्रसं० ४३ । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टन सं० ३१ ।

विशेष-चेतन कर्म चरित्र है।

१८७६**७. गुटकास०२६**। पत्रस०२ से २६६१ भाषा-हिन्दी। लेक्काल 🗴 । सपूर्णं। वेष्टतस०२२।

विशेष- भृषरदास, जिनदास, नवलराम, जगतराम श्रादि कवियो के पदों का सग्रह है।

६७६६. गुटकासं०२७ । पत्र स०६७ से २२३ । भाषा-हिन्दी। ले∘काल × । अपूर्ण। वेष्टन स०३४ ।

विशेष-पद, स्तोत्र, पूजादि का सग्रह है !

६७८६. गुटकास० २८ । पत्र स ० १०३ । भाषा~प्राकृत । ले०काल सं० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ ।

विशेष-परमात्म प्रकाम, परमानन्द स्तोत्र, वावनाक्षर, केवली, लेश्या ग्रादि पाठों का सग्रह है।

६७६०. गुटकास० २६ । पत्र स० २२७ । भाषा-हिन्दी । ले०काल स०१६३० । पूर्णा। वेहनसं०४६ ।

विशेष--नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ है।

६७६१. गुटका सं०३०। पत्र स०३७५। माषा-हिन्दी।ले० काल × । पूर्णं। बेष्टनसं० ४७।

विशेष-- नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ, पंचस्तोत्र एव जैन भतक भादि हैं।

६७६२, गुटकासं० ३१ । पत्रसं० ७२ । माया-हिन्दी । लेकाल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०५० । विशेष—देव पूजा भाषा-टीका जयवन्द जी कृत है ।

१७६३. गुटका सं०३२। पत्रस०३२। भाषा-हिन्दी। ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०५१ विशेष --देव पुत्रा तथा सक्तामर स्तोत्र है।

**६७६४. गुटकासं**० ३३ । पत्र सं०२६ । साथा—हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्णा। वेष्टन सं०४२ ।

विशेष-पूजन संग्रह है।

१८७६ **४. गुटका सं०३४** । पत्र सं०२ से ३६ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं०४३ । विशोज — नित्य पूजा संग्रह है ।

१.७६६. गुटकासं० ३५.। पत्रस० ४६-१३४ । माषा—हिन्दी-सस्कृत । ले०कास 🗴 । पूर्णावेष्टन स०४६ ।

विशेष-जिन सहस्रनाम एव पूजा पाठ है --

९७९७. गुटका सं० ३६। पत्रसं० ७१। भाषा-हिन्दी। से∘काल ×। पूर्ण। बेष्टनसं० ५४। विशेष—जिन सहस्रनाम स्तोत्र-प्राणाघर, बोडव कारए। पूजा, पत्रमेश पूजाएं हैं।

६७६**८. गुटकासं०३७।** पत्रस० १४३ । माषा-हिन्दी-सस्कृत । ले**०कास** 🗴 **। पूर्णे ।** वेष्ट्रतसं०४४ ।

विद्योष-पवमगल-रूपचन्द । सिद्ध पूत्रा प्रष्टाहिका पूत्रा, दशलक्षरा पूत्रा, स्वयभू स्तोत्र, नवसंगल नेमिनाय, श्रीमयर जी की जलडी —हत्य कीत्ति । परम ज्योति, अकामर स्तोत्र धादि हैं ।

६७६६. युटका सं०३ सः । पत्रसः०२४० । भाषा−हिन्दी -सम्कृत । ले∘काल × । पूर्गः । बेष्टन सः० ४६ ।

विशेष — नित्य नीमिनिक पूजा पाठ, सम्मेदाचल पूजा, चौजीस महाराज पूजा, पंच मंगल, इत कवा व पूजाएं हैं।

६८००. गुटकास०३६ । पत्र स० २२३ । भाषा-हिन्दी⊸सғक्कत । ले० काल ४ । पूर्णः । वेष्टनसं०५७ ।

विशेष —तत्वार्य मूत्र, मगल, पूजा, पंच परमेष्टी पूजा, रत्तत्रय पूजा, भादित्यवार कथा, राजुल पच्चीमी भारि पाठ है।

पद--१-मक्सी पारमनाथ--- मागवस्द ।

२-प्रमुदर्णन का मेला है- बलिभद्र।

३-मै कैसी करु साजन मेरा प्रिया जाता गढ़ गिरनार-इन्द्रचन्द्र ।

४-सेवक कू जान कै---लाल।

५-जिया परलोक सुघारो — किशनचन्द्र।

६-मार्ग कहा करसी भैया जब माजासी काल रे--बुधजन ।

६८०१. गृटका सं०४०। विशेष-सत्रा प्रृंगार है। प्रन्तिम पाठ-

> भाषा करी नाम समाधूषन गिरंच कह सीजिए। यांने रागरांगिनी की जात सम् ......यह ते तान ताल याम मुरगुनी मृनि रोफिए। गगाराम विनय करत कवि कांन सुनि बरनत धूने तो सुधारि कीजिए।

बोहा

सत्रह सत संबत् सरस बतुर प्रथिक बालीस । कातिक सुदि तिथि घण्टमी बार सरस रखनीस ॥६२॥ सांगानेर मुधान में रामसिंह नृषराज । तहा कविजन बचपन में राजित सामा समाज ॥६२॥ गणाराम तह सरस कार्य कीनी सुधि प्रकास । श्री भणवंत प्रसाद तें इह सम समा विजास ॥६४॥

इति समा सृगार ग्रंथ सपूरन।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

६८०२. गुटका स० १ । पत्र सं० १३-१४३ । मादा-हिन्दी । ले॰काल 🗴 । पूर्णी वैकृतसं० ३३४ ।

विशेष — पदों का समृह है। मुख्यतः जग्गाराम के पद हैं। ऋतं में हर्श्वंद संघी कृत चौबीस महाराज की बीनती है।

ष्रातम विन सुत्र धौर कहा रे।
कोटि उपाय करी किन कोउ, विन ग्यानी नहीं जात लहारे।
भव विरक्त जोगी मुर हैगे, जिहिबे चिरावि चराचिर हारे।
बरनन करि कही कैसे कोहिए, जिसका रूप प्रशुपम हारे।
जिहि हे पाये विन ससारी, जग धन्दर विचि जात बहारे।
जिहि हे याये विन ससारी, जग धन्दर विचि जात बहारे।
जिहि दे बल करि के पाइब ने धौर तपस्या सकल सहारे।
जिहि दे बल करि के पाइब ने धौर तपस्या सकल सहारे।
कहे दीग नर तेही चन्य है जिस दानीउ सदा रूप चहारे।।धातमा।

६८०३. गुटका सं० २ । पत्रस० ४३ । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्यां। वेक्टनसं० ३०६।

विशेष---निम्न पाठ हैं।

 द्रव्य-संग्रह—हिन्दी टीका सहित टीकाकार वंशीघर है।

२. तपोस्रोतक सत्तावनी, द्वादणानुप्रका, पंच मंगल ।

१८०४ मुटकासं० ३ । पत्रसं० ७६ । मावा-संस्कृत । ले० काल सं० १६०७ । पूर्णे । वेष्टन सं०२८४ ।

श्विहेश्व---नित्य नीमित्तिक १२ पूजाओं का संग्रह है। इनमें नवसेना विचान, दस दान, मतमंतार वर्षेनाष्ट्रक कादि भी हैं।

६८०४. गुटका स० ४ । पत्रसं० १६० । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६२६ । पूर्णं । वेष्टन स० २७४ ।

विशेष—७५ पाठो का संग्रह है जिनमे ग्राधिक स्तोत्र सग्रह हैं । कुछ विनती तथा साधारण कक्षाएँ हैं । कुछ उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार है ।

- १. कलिय्ग कथा--रचयिता, पाडे केशव, ज्ञान भूषरा के उपदेश से । भाषा हिन्दी पद्य ।
- २. कमं ब्रिडोलना---रचयिता---व्रवंकीति । भाषा-ब्रिन्दी पद्य ।

#### पव---

साधो छाडों कुमति धनेती, जाके मिथ्या सन सहेती।
माधो लोज्यो मुमति धकेती, जाके समता सन महेती।
बह सान नरक ... यह सभयदायक ।।१।।
यह धाने कोच यह दरसन निरमल तिन भागित धर्म बचाने।।२।।
यह मुमति तनो व्यवहार वित्त चेनो ज्ञान सभाक ।
यह कवल कीरोति गति गाउँ भोड जीवन के सन भावे।

### पत्र १४७ मालीरासा --

भव तह मीच हो मालिया, तिह चह चाह मुशल । चिहु डार्भी फल जुब जुदर,ते फल रालय नाल रे। प्रानी तृबग्रहेन चेत रे॥ रे॥ काल कहें मुनि मालिया, मीच जुमाया गबार। देलत हो की होडा होड है, भोतर नहीं कुछ सार रे। ६॥

×

कायाकारी हो कन करें बीज मुदेशन नोष। भील सुकरना मालिया, घरम ब्रकुरो होय रे प्राणी। यहि वैराग कुटाल की, लोदि सुवान्त कूप। भाव रहेट युन बोलि छट कार्ष श्रृन जूपरे।। १७।1

×

· ×

×

धरम महा तरु विरय तो, बहु विस्तार करेय। प्रवितामी मुख कारने, मोल महाफल देव रे। कहै जितदास सुरालियो हसुउ बीज सुभाल। मन वर्ष्टिछस फल लागमी, किस ही यब भव कालरे। १८६॥

पत्र १६३ से १८१ तक पत्नी से काट कर ने जाये गये हैं।

×

निम्न पाठ नहीं हैं---

ऋषभदेव जी की स्तुति, वहत्तरि सील, घप्ट गथ की विधियत्र, नामावली, मृहत्रं, सरोघा, विरूपी की जन्म पत्रिका।

यह पुस्तक स॰ १६३१ में बख्दलीराम रामप्रमाद कासलीवाल वैर वाले ने मरतपुर के मंदिर में चढाई।

**६८०६. गृटका सं० ५ । पत्र**स० २०२ ।भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले**०काल** स०१८८२ । पूर्ण । वेष्टन स०२६७ ।

विशेष - नित्य पूजा पाठ हैं। पत्र १०३ मे १६६ तक बहुत मोटे प्रक्षर हैं। घोडण कारए। तचा दणसक्षरण जयमान हैं। प्राकृत गायाओं के नीचे संस्कृत प्रयं है। ३५ पाठों का संग्रह है।

**६८०७. गुटका सं० ६।** पत्र स० ७४.६ । भाषा−हिन्दी । ले•काल × । पूर्ण। वेष्टन स०२७२ ।

विशेष — १२० पाठो का सबह है। प्राध्य सुन्दर तथा काफी मोटे हैं। प्रास्थ्य में पूजा प्राकृत तथा विनोधी लाल कृत मगल पाठ है। प्रास्थ्य में विषय सूचना भी दी हुई है। तिश्य नीमित्तिक पाठो के मितिरिक्त निम्न पाठ और है—

भजन--- जगतराम, नवलजी, जोधराज, खानतराय जी खादि के पद तथा टोडरमल कृत दर्शन तथा मिला छन्द ।

ह€०८ गुटकास०७ । पत्रस० ६६ । माचाःहिन्दी । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टनसं∙ २६४ ।

विशेष---निम्न सग्रह है ---

पार्थनाथ स्तीत्र, िद्ध पूजा, भक्तामर स्तीत्र, सस्कृत तथा भाषा, कल्यास मन्दिर स्तीत्र, भाषा द्वादशानुमें क्षा, त्रिलोकसार भाषा-रचना मुमित कीति, र०काल १६२७ ।

छहराला-चानतगय । र०काल १७५६ ।

समाधिमरस

**१**८०१. गुटका सं० द । पत्रस० ३१६ । भाषा-हिन्दी ।ले०काल सं० १८८४ ।पूर्ण ।वेष्टनसं० २६६ ।

विशेष—४६ पाठों का सबह है। सब नित्य पाठ ही है। जोघराज जो कासलीवाल कामा वालों ने लिखाई। प्रश्नर बहुत मोटे टैएक पत्र पर प्राठ लाइन है तथा प्रत्येक लाइन मे १३ प्रश्नर हैं। एक टोडर मल कृत दर्शन भी है जो गया मे है।

६ द १०. गुटकासं०६ । पत्रसं० १७० । भाषा-हिन्दी। लेण्कालसं० १७६४ । पूर्णी। वेष्ट्रसं०२६३ ।

विशेष---निम्न सग्रह है---

- (१) तत्वार्यं सूत्र टीका---पत्र १०२ तक । रखयिता---प्रज्ञात ।
- (२) धनित्य पञ्चीसी-भगवतीदास
- (३) बह्यविसास-भगवतीदास-पत्रसं० ६६ । र०कास सं० १७४५ ।

६८११. गटका सं० १०। पत्रसं० १४६। भाषा-हिन्दी । लेक्सल 🗴 । अपूर्ण । बेष्ट्रन सं० 7681

विशेष -- नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है। मोक्ष शास्त्र के प्रारम्भ में भगवान का एक सन्दर चित्र है। चित्र में एक मोर गोडी डाले हाथ जोडे मूनि तथा दूसरी मोर इन्द्र हैं।

६८१२, गृटका सं० ११ । पत्रसं० १०८ । भाषा-सस्कृत । ले•काल × । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० 1 885

विशेष-भरतपूर में लिखा गया था। पद्मावती स्तोत्र, चतुःपष्टि योगित्री स्तोत्र, लक्ष्मी स्तोत्र, परमानन्द स्तोत्र, सामोकार महिमा, यमक वय स्तोत्र, कष्ट नाशक स्तोत्र, ग्रादित्यहृदय स्तोत्र ग्रादि पाठों का संप्रह है।

हद्ध १३. गटका सं० १२ । पत्र स० ४२३ । भाषा-हिन्दी । से ब्हाल स० १८०० । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० १७८।

#### विशेष---

- (१) पद्म पुराग्- ल्यान बन्द । पत्रस० १३६ । र०काल १७८३ । पूर्ण ।
- (२) हरिवश पूरारग्-स्थालचन्द । पत्रसं० १०१ ।
- (३) उत्तरपुरागा—खुशालचन्द । पत्रस० १८३ । र०काल स० १७६६ ।

१८११. गृटका सं० १३ । पत्र म० ३४६ । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्गं । वेष्टन स० 1 285

<b>विशेष</b> — गुटके में ि	नेम्न पाठ हैं।	
१. बहाविलाम	भगवतीदास ।	पत्र स०१३३
•		ले∙कालास० १७६३ चैत्र गुक्टा१०।
२. पद ४		पत्र सं० १३४ से १३६
३. बनारसी विलास	बनारसीदास ।	पत्र स० १४१—२०६ तक ।
		ले•काल स०१८१८ कार्तिक सुदी६।
४. समयसार नाटक	बनारमीदास ।	पत्र स०१ से १२७ तक
५. पद सग्रह		पत्र सं०१ से १७ तक

# पद सुन्दर है--

निजनन्दन हलरावै, वामादेवी निजनन्दन हलरावै। चिरजीवो त्रिभूवन के नायक कहि कहि कठ लगावै ॥ १॥ नील कमल दल ग्रगमनोहर मुखद्तिचन्द इगर्ब उन्नतभाल विमाल विलोचन देखत ही वर्तन ग्राव ।।२।। मस्तक मुक्ट कान युग कुण्डल तिलक ललाट बनावै । उञ्जल उर मुकताफल माला, उडगन मोहि तिहरावै ।।३॥

मुख्य रूप से हर्षचन्द के पद हैं।

सुन्दर सहस घट्टोत्तर लक्षन ग्रंग गुन सूभग सहावै। मुख मृदुहास दतदुति उज्जल ग्रानन्द ग्रधिक बढावै ॥४॥ जाकी कीरत तीन लोक मैं सुरनर मुनि जन गावै। सो मन हरषचन्द बामा दै, ले ले गोद खिलाब ।।।।।

धन्य पाठ संग्रह है--- पत्र स० ३५

**६८१६. गृटका सं० १४** । पत्रसं० १३४ । भाषा-हिन्दी-तस्कृत । ले० काल सं० १८०७ । पूर्णा वेष्ट्रन मं० १२०।

विशेख--जगतराम कृत १६५ पदो का सप्रह है। ६१ पत्र तक पद हैं। इसके बाद सिद्ध चक पूजा है।

६८१७. गटका सं० १४ । पत्रसं० २४६ । माषा-हिन्दी । ले•काल 🗴 । पूर्णं । वेष्ट्रन स॰ १०७।

विशेष -- पूजा भजन तथा पद ग्रादि का सुन्दर संग्रह है।

**६८१८. गटका सं०१६ ।** पत्र सं०३४३ । माषा-हिन्दी । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । बेष्टनसं० १०६।

१८१**६. गृटका स० १७** । पत्रसं० २६५ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल 🔀 । पूर्ण । बेष्टनसं० १०.।

विशेष--पूजायो तथा कथायो थादि का सग्रह है।

६८२०, गुटका सं० १८ । पत्रस०४० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन म० १०२ ।

विशेष--सामान्य पाठो का सग्रह है।

६ द २१. गृटका सं० १६ । पत्रसं० ३१ । भाषा - हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३।

विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है।

६८२२. गुटका सं० २०। पत्रसं० ४६। भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ४०३

विशेष--हिरसिंह के पद हैं।

६८२३. गृटका सं० २१ । पत्रसं० ३६ । भाषा-हिन्दी । ने०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ४०४ ।

विशेष-समाधि मरगा तथा जिन शतक मादि हैं।

हद्भार तुरका सं० २२ । पत्रस० २०० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०६।

विशेष--व्यजन, हेतराम,भूधरदास, भागचन्द, विनोदीलाल, जगतराम मादि के पदों का सग्रह है। हद्ध , गटका सं० २३। पत्र सं० ६ से १६०। भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वेष्टन सं० ३६७ । विशेष--मूख्य पाठ निम्न प्रकार है-

हिन्दी १. कलियुग की कथा

हिन्दी

केशव पाण्डे कमलकीति

२. बारहलडी, ग्रठारह नाते की कथा

 ३. रामदास पश्चीसी
 —
 रामदास

 ४. मेषकुमार निज्ञाय
 —
 पूत्रो

 ५. कवित्त जन्म जल्याएक महोत्सव
 —
 हरिचन्द

 इसमें २६ गद्य हैं।

६. सूम सूमनी की कथा, परमार्थ जकडी ---

रामकृष्स

**६८२६, गुटकासं० २४**। पत्रस० ३०से २०६ । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल × । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० ३६८।

**विशेष** — मुख्य पाठ ये है।

 $\boldsymbol{\epsilon}$ स्त२७. **गुटका सं० २५** । पत्र स० ४४ । भाषाः हिन्दी । लेल्काल imes । पूर्णं । वेष्टन सं• २१६ ।

विशेष---राजुल पच्चीमी विनोदीलाल, नेमिनाथ राजमित का रेखता---विनोदीलाल

६८२६. **गुटका सं० २६** । पत्रस० ६३ । ले० काल सं० १६६० । पूर्ण । वेष्टन सं०४००।

विशेष--नित्य पूजा पाठ है।

६८२६. गुटकासं० २७ । पत्रस० ४० । भाषा हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०४०१ ।

विशेष-सेंद्राम कृत पद हैं।

**६८३०. गुटका सं २८।** पत्र मं०६७। भाषा−हिन्दी−संस्कृत । ले०काल स०१८१४। पूर्ण । वेहन सं०४०२ ।

विशेष — नित्य पाठ तथा स्तीत्र सब्ह है। गूजरमन पुत्र मेचराज मोजमाबाद वाज की पुस्तक है। ६स ३१. गुटका सं० २६। पत्र स०५०। जाचा-हिन्दी । से∙काल ×। पूर्ण। बेष्टन सं० ३५६।

विशेष ---मामान्य पाठ हैं ।

६ ६ ३२. गुटका सं∘ ३०। पत्रसं∘ ४६ । भाषा—हिन्दी-संस्कृत, । से०कासः × । पूर्णै । वेकृत सं∘ ३५१ ।

विशेष-तत्वार्थं सूत्र एव पूजा संग्रह है।

बेक्नसं ० ३३६।

६ द ३ ३. शुटका सं० ३ १ । पत्र सं० १० से ४० । मापा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । प्रपूर्ण । बेहुत सं० ३ ४ २ ।

विशेश--स्तोत्र सग्रह है।

६८ दे**४. गुटका सं० ३२** । पत्र सं० ६४ । माषा-हिन्दी-सम्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्णे । वैकृतसं० २५३ ।

विशेष --- पूजा पाठ संग्रह है।

६८२**१. गुटका सं० ३३।** पत्र सं० ४६मे१४३। माषा-हिन्दी-मंस्कृत । ले०काल ×। ग्र**पूर्ए ।** वेष्टनसं० ३४६।

विशेष - धार्मिक चर्चाऐ हैं।

६६३६, गुटका स॰ ३४ । पत्रस॰ ४० । भाषा-हिन्दी-सम्कृत । ले०काल imes । सपूर्ण । वेष्टन स॰ ३५० ।

विशेष -- नवमंगल (विनोदीलाल) पद्यावनी स्तोत्र (सम्कृत) चक्र वनरी स्तोत्र (संस्कृत)

६८६५ मुटकास०३५ । पत्र स०२३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स०१६६६ । पूर्ण। वेष्टनस०३४ ।

विषय --- बनारसीदास कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है।

६ ६३ ६. गुटकासं० ३६ । पत्रस० २० । भाषा-हिन्दी । र०काल 🗙 । ले०काल 🗴 । पूर्ग। बेटुन स०३४६ ।

६ प्रदेशः, गुटकासं०३७ । पत्रस०१६ से । १२० । माया-हिन्दी । झे०काल 🗴 पूर्णं। वेष्टनसं०३४ प्रा

विशेष — स्वेतास्वरीय पूजाओं का संग्रह है। १०८ पत्र से पत्रमतपवृद्धि स्तवन (समय~ सुन्दर) वृद्धि गोतम रास है।

१८४०, गटका सं० देदः। पत्रसः० १६ । भाषा-हिन्दीः। ते०कासः×। पूर्णः। वेष्ट्रनसः० ३४२ । विशेष—दण्तलस्या पुत्राः तथा स्वयम्भ स्तोत्र माषाः है ।

९ मर्ड १. गुटका सं० ३६। पत्रसं० २४। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। बेष्टन सं० ३४३। विकोख — कोर्ड उल्लेखनीय पाठ नहीं हैं।

६८४२. गुटका सं० ४० । पत्रसं० ४८ । भाषा हिन्दी । ले॰काल 🗴 पूर्णं । बेष्टनसं० ३४४ । ६८४३. गुटका सं० ४१ । पत्रसं० १६ से ७० नक । भाषा-हिन्दी । से॰काल 🗴 । प्रपूर्ण । ६ स**४४. गुटका सं० ४२** । पत्र स० ७४ । माया-हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्णः। वेकृत सं० ३४० ।

विशेष-- १ पूजाओं का सम्रह है।

६८४५. गुटकासं०४३ । पत्रसं० ४७ । मापा-हिन्दं। । ले० काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टन सं०३४१ ।

विशेष-धार्मिक चर्चाएं हैं।

६८४६. गुटका सं० ४४ । पत्रस०७ से ५७ । भाषा-हिन्दी । ले०काल 🗴 । धपूर्णः। वेष्ट्रन सं०२२४ ।

विशेष—वहारायमल्ल कृत सोलह स्वप्न किसनसिंह कृत प्रच्छादना पच्चीसी तथा मूरत की बारहसडी है।

**६८४७. गुटकासं० ४५ ।** पत्रस० ७२ । मापा-हिन्दी। ले०काल सं० १८०६ मगसिर मुदी ६ । पूर्ण। बेयुन स० ३३६ ।

विशेष-सामान्य पाठ है।

६८४७. युटका सं०४६। पत्र सं०१८८। भाषा हिन्दी। ले॰काल imes। पूर्णै। बेष्टन सं०७७२।

विशेष--पूजा पाठ एव पद संग्रह है।

६८४८. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० २०४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णं। बेष्टनसं० ७७३ ।

विशेष — छोटे २ मजन हैं।

६८४**६. गुटका सं० ४८ ।** पत्र सं०३३ से ६०। भाषा⊸सस्कृत-हिन्दी। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन स०६६२।

६८५०. युटका सं० ४६ । पत्रस० २० । माया-प्राकृत । ले०काल imes । घपूर्ण । वेष्टन सं० ६३१ ।

१८६१. गुरुका एं० ५० । पत्र स० ६५ । माचा-हिन्दी । विषय-सप्रह । ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेप्टन स० ५२१ ।

विशेष--विनोदीलाल इत पद तथा नित्य पूजा पाठ हैं।

६८५२. **गुटका सं०५**१। पत्र स०६०। भाषा-हिन्दी। विषय—संग्रह। र०काल × । ले॰काल सं०१६४४ । दूर्ण। बेष्टन स०५२४ ।

विशेष-सामान्य पाठ हैं।

६ ८ ५ ६ . गुटकासं० ५२ । पत्र स० ४ से २२१ । आषा ~हिन्दी -संस्कृत । **ले∘काल** 🗴 । भ्रदुर्शावेप्टन स० ५०१ ।

विशेष-नित्य पूजा पाठो का सग्रह है। उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार हैं।

चतुर्विमति देवपूजा-सस्कृत

जोगीरास-- जिनदास कृत

सज्जनवित्तबल्लभ---

श्रुतस्कथ---भ० हेमचन्द्र ।

नवग्रह पूजा-सस्कृत

ऋषि मडल, रत्न त्रय पूजा----

चिन्तामिंग जयमाल-- राइमल

माला-इसमें बहुत से देशों के तथा नगरो के नाम गिनाये गपे है।

६८५४. गुटका स० ५३ । पत्र सं० १६-६३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल imes । पूर्यं । बेष्टन सं० ४६६ ।

विशेष-पूजा सप्रह-दशलक्षण जयमाल श्रादि है।

**६८५५. गुटका सं०५४** । पत्र स०५०। सामा∹संस्कृत~हिन्दी। से•काल × । बपूर्यं। वेष्टन सं०४६७।

**८८५६, गुटका सं०५५** । पत्रसं० ४१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल ४ । सपूर्ण । वेष्टन सं०४६ ।

विशेष---नित्य पूजा, स्तोत्रादि भी हैं।

**६८५७. गुटका सं० ५६।** पत्र स०२५। माथा-हिन्दी। ले॰काल  $\times$ । ध्रपूर्ण्। बेष्टन स०६८७।

१८५८. गुटका सं० ५७। पत्रसं० १८०। मावा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल सं० १८६४। पूर्ए। बेप्टन स० ४६३।

विशेष---नित्यपुजा पाठ स्तोत्र भ्रादि सवह है।

६८६६. गुटका सं० ५६। पत्रस० १७-११३। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले॰काल स० १८२४। प्रपूर्ण। बेष्टन स० ४६४।

विशेष--पूजाभी का सवह है।

६८६०. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १-२४ । माषा-संस्कृत-हिन्दी । लेश्काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६५ ।

विशेष--पूजा पाठ ग्रादि का सग्रह है। लालचन्द के मगल ग्रादि भी हैं।

६८६१. गुटकासं०६०। पत्र सं०४४। भाषा-हिन्दी—सस्कृतः। ले०काल सं०१४४६। भारवासुवी ४। प्रापूर्णः वेष्टन सं०४६१।

विशेष---निम्न संवह है---नित्य पूजा, चारित्र पूजा--नरेन्द्रसेन ।

**१७६२. पुटका सं**० ६१ । पत्र सं० ६६ से १६३ । माचा-हिन्दी⊸संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ४०२

६.६६३, गृहका सं० ६२ । पत्रसं० ३४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८८१ माघ वदी ७ । पूर्ण । बेष्टुन सं०४८१ । ६८६४. गुटका सं०६३ । पत्र सं०१७-६४ । भाषा—हिन्दी । लेञ्काल × । पूर्णं । वेष्टन सं०४८६ ।

विशेष- मक्तासर स्तोत्र, कल्याए। मन्दिर स्तोत्र भाषा स्तोत्र भाषि है।

६८६६६. गुटकासं० ६४ । पत्र सं० ५८ । भाषा-सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्णा वेष्टन सं० ४७३ ।

६८६६. गुटका सं०६५ । पत्र सं०४४ । भाषा~सस्कृत-हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स०४६० ।

विशेष— कमें प्रकृति, चतुविकति तीर्यंकर वासीठस्थान, वावन ठाग्गा की चौपई, परमण्यक (भगवतीदास) मान बलीमी (भगवतीदास) का सम्रह है।

**८८६७ गुटका सं∘६६।** पत्रसं∘२६१। भाषा≔मस्कृत-हिन्दी। ले∘काल सं०१४६३ मगमिर बदी२ पूर्णावैष्टनसं०४७१।

विशेष--- मुशायितविन, सारसमुख्यम, सिध की पापडी, योगसार, द्वादशान्त्रेक्षा, चौबीस ठागा, कर्मप्रकृति, भाव सबेह (श्रुतमृति) सुभाषित शतक, गुरास्थान चर्चा, खध्यान्म बावनी ख्रादि का सबेह है।

६८६६ **गुटका सं० ६७ ।** पत्रस**ः ।** २६८ । माषा-प्राकृत-सम्कृत-हिन्दी । लेश्काल imes । पूर्या । वेप्रनम् ४७२ ।

विशेष--पूजा सग्रह हैं।

**६६६९ गुटकासं० ६**६ । पत्रस० ६६ । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले०कान ४ । पूर्यो । वेष्ठनसं० ४६४ ।

विशेष-सामायिक पाठ, पूजा पाठ, स्तीत्र ग्रादि का सप्रह है।

६८७०. गुटका सं० ६६ । पत्रसं∘ ३८। भाषा-संस्कृत । ले∘काल 🗴 । पूर्ण । बेहनसं० ४४६ ।

६८०१. गुटकासं०७०। पत्रस०३६०। भाषा-सस्कृत-कृत्वी। ले०काल 🗴 । सपूर्या। वेष्ट्रनसं०४६२।

विशेष--- पूजा पाठ एवं पद सबह है।

१८४ . गुटका सं० ७१ । पत्रस॰ १६४ । भाषा-प्राहत-सस्कृत । से॰काल 🗴 । पूर्ण । बेहनसं० ४६४ ।

विशेष--पडमिक, मावना बनीसी, प्राएांदा । गीतडी प्रादि पाठो का संबह है ।

६८७३. गुटका सं० ७२ । पत्र सं०३४० । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ते०काल 🗴 । पूर्ण ।

बेष्ट्रन सं० ४५६।			
विषय -सूची	कर्त्ताका नाम	भाषा	विशेष
घंटाकर्ण संव	<del></del>	सम्बत	(पद्य ७)
देवपूजा बहाजिनदाम	_	**	
मास्त्र पूजा ""		**	

भूघरदास	हिन्दी	
	,,	
दौलतराम	1)	
चरनदास	,,	608
समयसुन्दर	11	
	,,	
मानुकीर्ति रचना १६७२	**	
से∙काल १⊏२८	,,	
	,,	
चरनदास	,,	
र०काल म०१६७८		पदा २४७
भाउकवि		
_		
	दोलतराम चरनदास समयमुन्दर — मानुकीति रचना १६७२ ले•काल १६२८ — चरनदास — -	दोलतराम ", बरनदास ", समयमुन्दर ", मानुकीति रचना १६७२ ", ते•काल १६२६ ", बरनदास ", " र०काल म०१६७६ ",

**६८७४. गुटका सं० ७३** । पत्रसं० ७२ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्एं । वेष्टनस० ४५० ।

विशेष—अक्तामर ऋद्धि स्तोत्र मत्र सहित, सूरत की बारहसडी, पूत्रा सब्रह, अरतबाहुबिल रास (२६ पद्य) ब्रादि पाठ हैं।

**६ ⊏७४. गुटका सं०७४ ।** पत्र सं०३७ । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वेष्टन म०४४२ ।

विशेष--पूजा संग्रह है।

**६८७६. गुटकासं० ७५।** पत्र सं० १०१। भाषा-हिन्दी । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स०४०६।

**६-७७. गुटका सं० ७६।** पत्र स॰ २३। भाषा-हिन्दी। ले॰ काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन म॰ ४१६।

विशेष—आत चिन्तामिंग 'मनोहरदास' जैन बारहसड़ी, 'मूरत' लघु बारहसड़ी 'कनक कीर्ति'। वैराम्य पच्चीसी, धर्मपच्चीसी, कलियुग कथा, जैन शतक, राजुन पच्चीसी, बहत्तर सीख ग्रादि हैं।

६८८ पुटकासं०७७ । पत्र स०१४०। भाषा- × । ले० काल × । पूर्णा । बेष्टन सं०८००।

विशेष---नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

६८७६. गुटकासं०७६ । पत्रसं० ७० । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० ५०१ ।

विशेष-चौरासी गोत्र ग्रादि का वर्णन हैं।

६८८०. गुटका सं० ७६ । पत्रसं० १५६ । माषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल 🗙 । पूर्णः । वेक्टनसं० ७६६ ।

६८८१. **गुटका सं० ८०**। पत्र स० ७०। भाषा –संस्कृत-हिन्दी **। ले∘काल** 🗴 । पूर्ण। वेष्टन सं• ७६७।

विशेष—साधारण पाठ एव पूजाएं हैं।

६८८२. गुटकासं० ६१। पत्रस०१५०। भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल x। सपूर्ए। वेबन स० ७६६।

६८८८३, युटकासं०८२ । पत्रस०६६ । भाषा–सस्कृत-हिन्दी। ले∘कालसं० 🗴 । पूर्ला। बेष्ट्रसं∙ ७८६ ।

विशेष-स्तोत्र व पूजा पाठ सग्रह है।

६८८४. गुटकास० ८३ । पत्रस० ७७ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले∙काल ४ । पूर्णुः वेष्ट्रनसं∙७६० ।

विशेष---पूजा, स्तोत्र भादि का सग्रह है।

६ दस्प्र. गुटकासं० स्४ । पत्रसं० स्७ । भाषा−हिन्दी । ले∘काल स० १८९८ । पूर्सा । वेप्रनस० ७६१ ।

विशोध—पत्र ६२ तक जैन शतक (भूघरदास) तथा ६३-८७ तक बलभद्र कृत नखसिखदर्शन दिया हुआ है।

६८८६६. गुटका सं० ६४.। पत्रसं० २२६। भाषा—सस्कृत-हिन्दी। ले० काल 🗴 । पूर्णः बेहन स०७८६।

**विशेष** – पूजासग्रह्है।

ृद्धतः ७. गुटका सं० ६६ । पत्रसः० ४६ । आषा-संस्कृत-हिन्दी । ले∘काल × । पूर्णः । बेहनसं० ७६७ ।

६८८८. गुटका सं०८७ । पत्रस०११४ । भाषा-सस्कृत−हिन्दी । ले∘काल ४ । पूर्णं। बेक्टनसं०७८८ ।

विशेष-पद, स्तोत्र एव पूजायों का संग्रह है।

६८८६, गुटका सं०८८। पत्रसं०२७०। प्राचा–सस्कृत-हिन्दी। ले॰काल × । पूर्णः। वेक्टनसं०७६३।

विशेष-पाठों का भच्छा संग्रह है।

६६००. सुटकासं० ६६ । पत्रसं० १११ । माचा-संस्कृत-हिन्दी । से∘काल सं० १६२१ । पूर्यो । वेय्टन स० ७६४ ।

विशेष--पूजा संग्रह है।

**६८६१. गुटका सं० ६०। पत्र**सं० १८२ । भाषा हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ७८१।

विशेष--पूजा संप्रह है।

६८६२. गुटकासं० ६१ । पत्रस० १८० । साया-हिन्दी । लेक्काल सं०१८२३ । पूर्ए । बेहनस०७८० ।

विशेष-चतुर्विशति जिन स्तृति,

जिनवर सात बोल स्तवन-जसकीति । उपधान विधि स्तवन-सामुकीति । सिक्ताय-जिन्दा । नगाद भोजाई गीत-सानव्य बढाँन । दिगम्बरी देव पूजा-पोसह गांडे । कम्मण् विधि-रतनसूरि । स्मीसाा पार्श्वनाथ स्तोत्र, भानुकाति स्यूद्धभद्र रास्रो उदय रतन् । स्तावारी सती गिरुभाय तथा मैंक संबाद ।

६८६३. गुटकासं०६२ । पत्र स॰ १४२ । माया∼हिन्दी : ले॰काल 🗙 । भूर्ण। वेष्टन म ०७७८ :

विशेष - पद सम्रह स्प्लिमाय, अवृंदाचल तीर्थ स्तवन, मवद् १८२६ पोष बुदी ११ से १८३१ माघ बंश ६ तक की यात्रा का व्योग, गोडी पार्वनाथ स्तवन, सिद्धावल स्तवन ।

६ म ६४ **गुटकासं** ० ६ ३ । पत्र स० २ से १६। मापा∸हिन्दी । ले० काल 🗴 । घपूर्ए । वेष्टन स० ७७६ ।

विशेष--पुत्रा पाठ सग्रह है।

६८६**५. गुटका सं०६४ ।** पत्र स०२० । भाषा-हिन्दी। ले० काल 🗴 । ध्रपूर्ण। वेष्टन सं०७७६ ।

विशेष - ज्ञानकल्यास स्तवन तथा चर्चा है।

६ म.६६. गुटका सं० ६५ । पत्र स० व४ । माषा-हिन्दी । ते० काल ४ ।पूर्ण । वेष्टन सं० विशेष —दानशील तप भावना सादि पाठो का संग्रह हैं । समयसुन्दर । सिद्धाचन स्त्रवन, झानन्द रास, गौतम स्वामी रास, विजयभद्र पाथ्वनाथ स्त्रवन-विजय वाचक । कल्याएा मन्दिर भाषा-बनारसीदास । अमा छत्तीसी-समय मुन्दर ।

**६८६७. गुटकास**०६६ । पत्रसं∘ २३६। भाषा−हिन्दी । ले∘काल 🗴 । पूर्णः । बेटन सं∘ ७७४।

विशेष - छोटे २ पदों का संग्रह है।

१६६८, गुटका सं० ६७ । माया-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल 🗴 । घपूर्ण । बेहनसं० ७७५ । विकेष---पूजा पाठ मादि है ।

## प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मन्दिर (बयाना)

६८६. गृटका सं० १। पत्रस० ३१२। ग्रा० ६×६ इ.च । मापा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल X । पूर्ण । बेप्रन सं० १४० ।

विशेष--- निम्न पाठी का संग्रह है।

१. मक्तामर स्तोत्र संस्कृत हिन्दी

विशेष- जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२. यद लध्मगदास हिन्दी ४ ग्रतरे राजमति सुनु हो रानी पद घनश्याम ३ ग्रतरे जवरथ दूर गयो जब चेती घठारह नाते का चौजात्या लोहर तीस चौतीसी के नाम ₹P 0 3 - 3 3 तथा चौपर्ड र०काल म० १७४६ लेकाल सब् १८०६

#### विशेष--

### श्चरितम-पद्य निम्न प्रकार है-

नाम चौपरीय थे में रचने नाम दास विस्थाम । जैसराज सन ठोलिया जोविनपुर सभयान । मत्तरामै उतचास मे पुरशा ग्रथ सुभाय। चैत्र उजासनी पचमी विजेसिह नपराय। एक बार जो सरवहै भ्रयवा करसी पाठ। नरक नीच गति कै विर्णरोग की ली गाइ।

इति भी तीम चौपर नाम यथ ममाप्ता । ऋषचन्द्रजी विजेशमंत्री विनायक्या कामजी के ने

प्रतिसिपि की थी। नैमजी की डोरी हिस्दी ब वनाय 19 E पांबापुर गीन श्रलै राम 9€ सालिभद्र चौपई जिनराजसरि

र०काल सं० १६७८ ग्रामीज मुदी ६ ले०काल सं० १८०३ मादवा बुदी ११ ।

जयपर के पार्श्वनाथ चैन्यालय में प्रतिलिपि हुई थी। विजैराम कासली के ने प्रतिलिपि की थी।

•	•		
मेघकुमार गीत	पूनो	हिन्दी	१०२
नन्दू की सप्तमी कथा		**	₹ • ₹
<b>ग्र</b> ।दित्यवार	भाऊ		888

924

वन्ता वर्द्ध		"	१२४
नित्य पूजा पाठ		<b>9</b> 7	
नेमिश्वर रास	<b>ब</b> ० रायमस्ल	,,	१७५
धन्मा सज्भाय	त्रिलोकप्रसाद	हिन्दी	१८२
		ले•काल स•	१८०१
मृगीसवाद	_	••	
		र०काल स०	१६६३
	संवत सोलर्स त्रेमठे चैत्र सुद्दि रविवा	7 1	
	नवमी दिन काला भावस्यौ रास रच		
	विजागच्छ माडगापुर वास सुरदेव र		
	थी घननदन दिने हुई मुसीस सुकाज		
इति मुगी सवाद सं			
•	W., ,		
चौरासी जाति की उत्पत्ति		हिन्दी	२०१
श्रीपाल राम	<b>ब</b> ० रायमल्ल	**	२३२
पचमगल	रूपचन्द	,,	२३४
जन्म कुण्डली	_		
१. साह रूपचन्द्र के पौत्र तथा	टकचन्द के पुत्र की ग्रंथ १८२५ का		
े. साह टेकचन्द की पुत्री ( <b>म</b>	नबाई) की स॰ १८२६ की ।		
प्रद्यम्न रामो	ब्र० रायमस्ल	,,	२ <b>∊३</b>

र०काल स० १६२८ से०काल स० १८०७

प० रक्सल ने प्रतिलिपि की थी। भविष्यदत्त कथा

ब्रह्मा रायमल्ल

हिन्दी

६६००. गुटका स० २ । पत्रस० १६६ । ग्रा० ६३ ×४ इ'च । माषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ग । बेष्टन स० १४८ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठों का सम्रह है।

६६०१. गृटका सं० ३। पत्रसं० ८०। बा० ६३ ×४ इञ्च। भाषा-सम्कृत-हिन्दी। ले० काल × । ब्रपुर्ग-जीर्ग । वेव्टन सं० १४६ ।

विशेष-सामान्य पाठो का सग्रह है।

६६०२. गृटका सं० ४ । पत्रस० ७३ । घा० ६×४ देश्व । भाषा-सम्कृत-हिन्दी । ने०काल × । पूर्णं । बेष्टनस० १४७ ।

विशेष--- निम्न पूजाओं का सम्रह है---

वृहत् सिद्धं पूजा	णुभ <i>चन्द</i>	सम्कृत	38-8
घष्टाह्निका पूजा	_	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	₹e-0×

६६०**२. गुटकासं० ५ ।** पत्र सं∙३६ । घा० ६ ४ ७ इ.चा। माचा-हिन्दी । ले∘काल ४ । घपूर्यावेष्टन सं० १४४ ।

विशेष---निम्न पाठों का सबह है।

स्तुति ग्रहँत देव	बृग्दावन	हिन्दी	पत्र १-१६
<b>मं</b> गलाष्ट्रक	,	,,	39-09
स्तवन	,,	,,	१६-२५
मरहठी	,11	,,	२६-२६
जम्बूस्वामी पूजा	"	"	₹०-३६

६६०४. सुटका सं०६ । पत्रस०२ ८। प्रा० ५३ ×३३ इ.स. भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। बेष्टन सं०१४३।

विशेष-- जैन गायत्री विधान दिया हुन्ना है।

६६०**५. गुटका स० ७ ।** पत्र स० म्४ । मा० ७४५ <sup>हे</sup> इ.च.। मावा—सस्कृत-हिन्दी। ते० काल ४ । मपूर्ण। बेस्टन स० १४०।

विशेष-सामान्य पाठों का सबह है।

**६६०६, गुटका सं∘ ⊏** । पत्रस॰ २४ । ग्रा॰ ४×४ ¦ इ.च. । भाषा-मश्हन-हिन्दी । ले॰ काल × । पूर्यो । बेष्टन स॰ १४२ ।

विशेष-सामान्य पाठो का सग्रह है।

**६६०७. गुटका सं० ६** । पत्र स० ६३ । घा० ७ $\frac{7}{4} \times 5$  इ.च.। भाषा-हिन्दी—संस्कृत । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १४० ।

विशेष-सामान्य पूजा एवं ग्रन्थ पाठो का सग्रह है।

६६० म. सृदका सं० १० । पत्र स० ७ १४० । मा० ४ $\S imes$ ५५ इञ्च । भाषा -हिन्दी । ले•काल imes । भ्रपूर्स । बेष्टन स० १३७ ।

विशेष -- नित्य पूजाको का संग्रह है।

**६६०६. गुटकासं०११।** पत्र म०८१। ग्रा०४×३, इटच । मावा−हिन्दी-सस्हत। ले•काल × । पूर्ण । वेप्टन स०१३६ ।

विशेष---मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है----

9	•		
कल्याग्।मन्दिर स्तीत्र भाषा	बनारमीदास	हिन्दी	
जिनसहस्रनाम स्तोत्र	जिनसेनाचार्यं	संस्कृत	_
भक्तामर स्तोत्र	मानतुं गाचार्य	*1	

**६६१०. गुटकासं० १२** । पत्र सं०३० । ग्रा०६३ ४५ इल्डा माचा-हिन्दी । लेक्काल ४ । पूर्णावेष्टन सं०१३६ ।

विशेष---निम्न पाठों का संपह है ---

जम्बूस्वामी पूजा जगतराम हिन्दी १-१३

चमत्कारजी पूजा		हिन्दी	79-88
रोटतीज व्रत कथा	चुन्नीलाल बैनाडा	n	१=-२६
			र०काल सं०१६०६

विशेष--कवि करौली के रहने वाले थे।

**६६११: गुटकासं० १३ ।** पत्रसं० ८१ । धा॰ प्र $^2_2 \times \mathbb{S}^2_2$  इन्त्रः । आघा-हिन्दी । ले॰काल  $\times$  । अपूर्णः । बेहुनसं० १३४ ।

## विशेष--- निम्न पूजाओं का संग्रह है---

चौबीस महाराज पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी	<i>₹•-9</i>
पचमेरु पूजा			७३-८१

**. १.६१२. गृटका सं० १४** १ पत्र सं॰ १०१-१६६ । घ्रा॰ ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इला । मापा — हिन्दी । से॰काल $\times$ । घट्नुर्यो । बेष्टन सं॰ १३५ ।

विशेष---पूजाओं का समह है

६९१३. गृटकासं० १४. । गण्यक ४८. । धा० ७४६ इ.चा। भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले∙ कालस०१८४१ । पूर्णावेष्ठनसं०१३३ ।

## विशेष--निम्न पाठो का संग्रह है-

पच नवकार		प्राकृत	?
भक्तामर स्तोत्र सत्र सहित		सम्कृत	२-११
ऋषि मडल स्तोत्र		**	१२-१७
श्रीपाल को दर्शन		हिन्दी	१७-२०
नवलादेव जी		,,	२०-२२
महा सरस्वती स्तोत्र		संस्कृत	<b>२२-२४</b>
पद्मावती स्तोत्र		**	38-88
कल्याए। मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	*,	₹०-३६
चितामरिंग स्तोत्र		संस्कृत	३७
नेमि राजुल के बारह मासा		हिन्दी	४२ -४६
पारवंनाच स्तोत्र		संस्कृत	80
सक्मी स्तोत्र	पधप्रभदेव	,,	Y0
स्तवन	गुरासूरि	हिन्दी	٧e
	- "	ले०काल सं	• १५५१

**१८९४. गुटका सं०१६** । पत्रसं० २६ । ग्रा०७ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इ.च. । मापा-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । बेष्टन सं०१३२ ।

विशेष--देवात्रहा के पदों का संप्रह है।

९६९४. गुटका सं०१७ । पत्रसं०३२ । धा०७ $\frac{1}{2}$  ४. ६ इन्तः । भाषा –िस्पी । से०कास imes । पूर्यो । बेहन सं०१३१ ।

विशेष---मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है---

भक्तिमाल पद बलदेव पाटनी हिन्दी भौबीस तीर्थंकरों का स्नवन है।
 पद , — —

पदों की संख्या १ ८ है।

६६१६. ग्टका सं० १८ । पत्र सं० ६६ । घा० ५×४ इच्छ । माषा-हिन्दी । लेक्काल सं० १८२३ डितीय चैत बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन सं० १३० ।

विशेष--तत्वारंसुत्र की चतुर्य ग्रध्याय तक हिन्दी टीका है।

**६६१७. गुटका सं० १६।** पत्र सं० १२७ । ग्रा० ६ $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ इ.ख.। ग्राया—हिन्दी। ले० काल  $\times$ । ग्रदुर्गा। वेप्टन सं० १२६।

विशेष—पूजाएव स्तोत्र तथा सामान्य पटि। कासग्रह है। बीच केतथा प्रारम्भ के कुछ, पत्र नहीं हैं।

**६६१ द. गृटका सं०२०।** पत्रसं०२७४ । ग्रा०६×२ हे इञ्च। माषा – हिन्दी। ने०काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स०१६८।

विशेष---निम्न पाठी का संग्रह है।

तत्वार्थ सूत्र के प्रथम सूत्र की टीका कनककीर्ति हिन्दी सामाधिक पाठ टीका सदामुखजी

६६१६. गुँउका सं० २१ । पत्र स० ३६ । धा० ५  $^3$   $\times$ ७ इ.च । भाषा -हिन्दी । ले० काल  $\times$  । धपर्या । बेष्टन स० १२७ ।

विशेष—स्वामी हरिदाम के पदों का संग्रह है। पत्र २२ तक हरिदास के १२६ पदों का अग्रह है। २३ में पत्र से २६ में पत्र तक विद्वलदास के ३८ पदों का संग्रह है। २६ पत्र से ३६ पत्र तक विहारीदास का पद रहस्य ज़िला हुमा है।

६६२०. गुटका सं० २२। पत्र स० ११४। मा० ६३ ४६ इंच। भाषा-सस्कृत-प्राकृत-हिन्दी। से० काल ४। पूर्ण। वेष्टन सं० १२६।

विशेष--मुख्यतः निम्न पाठों का सग्रह है ।

ग्रंथ	ग्रं चकार	भाषा	विशेष पर
प्रतिक्रमरा		प्राकृत	\$-¥
पद	महमद	हिन्दी	¥

प्रारम्म-

भूल्यो मन भमरारे काइ मर्मे दिवसनि रानि । मायानौ बांध्यो प्रासीयौ भर्मे प्रमलजाय ॥१॥

#### प्रन्तिम--

महमद कहै वस्त्र बहरीयो जो कोई झावै रे साथ। भापनो लोभनी वाहिते लेखो साहिब हाथ।।७०।। भूल्यो

कुमुदचन्द्र	सस्कृत
मानतु गाचार्यं,	
_	हिन्दी
दीपचद	,,
मोतीराम	.,
द्यानतराय	,,
	1,
छीहल	,,
भचलकीर्ति	,,
भवध	"
गुराचन्द्र	"
	मानतु गाचार्य, —— दीपबद मोतीराम धानतराय —— छीहल भवलकीर्ति

प्रारम्म के ७ पद्य नही हैं। द वा पद्य निम्मी प्रकार है---

#### प्रारम्म---

मंजन साला हरि गये लेलत संग जिन राय रे। करजुगहो प्रजुनेम को हरि करि ग्रंगुलि लपटाइ हो।। देव तहा जप जप करैं बाजैं दुदुभिनाद रे। पुष्प वृष्टितहा मति मद्दै विलस मद्देश। × × ×

## धन्तिम---

पुर सुनताण मुहावणी जहा बसै सरावण नोगजी।
पुर परियन धानन्द स्थो कर है विविध्यस भोगी जी ॥७१॥
काष्टा संघ सुहावणा मधुरा गच्छ धनुषरे।
सोलवन्द्र मुनि जानियं सब जीतयन सिर मूजती ॥७२॥
तासु पर जस कीति मुनि काष्टा संघ सिगार रे।
तासु पर जस कीति मुनि काष्टा संघ सिगार रे।
मन वच कथा मानस्यों प्रवृहि सुनहि नर नारि रे।।७३॥
रिदि सिद्धि सुन्न संगदा तिन चरणा पर नारि रे।।७४॥

इस से झागे के पद नहीं हैं।

द्वादशानुत्रेका सूरत हिन्दी -

ले•काल स॰ १८२८ बैशाख बढी ६

```
ग्रन्तिम---
```

हंसा दुल्लंची हो मुकति सरोबरतीर। इन्द्रिय बाहियाजहो पीचत विषयह नीर। धांत विषयनीर पियास लागी बिरह वेदन व्याकुने। बारह ग्रंका सुरति छांडी एम भूलो बावने। धब होड एतनु कहऊ तेतर बुढ बंसह बन्मणु। संज्ञा समरणाउ आय सरतब एरम रयनतम्म गरा।।१२।।

### इति द्वादशानुप्रेका समापिता ।

मादिनाय स्तुति विनोदीलाल हिन्दी स्विचरी कमलकीर्ति ...

### प्रारम्म--

सजन की प्रष्टु सेज मगाऊ स्याद्वाद को गेंदुवा। पानी हो जिन पानी मंगऊ चरवा वौदिष्य संपकी। प्रारूज नाय प्रनयाइन लाइ, पीपर कोमल जावरी। पनिया हो जिन पर को लाइ मूठ महामद छाडिये। पीरज को प्रयु जीरो लाई सब विस्थारमु वेक्सणा। मुकल ध्यान की सूठ सगाऊ कमकाड ईयनु पर्णे।

### ग्रन्तिम ---

श्री धादिनाथ जिनराज ......शावग हो तहां चतुर सुवान । धर्म घ्यान गुण घागरी कीजे ...... परमारिय जानि । यह दिननी जिनराज की चहुँ सघ कं .........कल्याता । श्री कमन कीनि मुनिहर कही........

X

## इति स्विचरी समाप्ता

सोलहसती की सिरकाय प्रेमचंद हिन्दी क्षेत्रपाल गीत सोभाचद ,, अकामर स्तोत्र भाषा हेमगाल ,,,

विशेष -- जतीमान सागर ने जती सेवाराम के पठनार्थ पिगोरा में प्रतिलिपि की थी। श्री महावीर

जी के प्रसाद से ।

शस्पति स्तीत्र — संस्कृत
बारहकारी मुदामा हिन्दी
वीर पतिर — ,,
स्कृत भक्ष सिज्नाय गुरावर्ड न सूरि ,,
स्कृत भक्ष सिजनाय गुरावर्ड न सूरि ,,

शत्रु जय स्तवन	समयसुन्दर	हिन्दी
तस्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	संस्कृत
भक्तामर स्तोत्र	मानतु ग	11
लक्ष्मी स्तोत्र		"
चौसठ योगिनी स्तोत्र		11
वृषभदेव बदना	ग्रानंद	हिन्दी
ऋषि मङल स्तोत्र		सस्कृत
पोसह कारण गाथा		,,
गौतम पृच्छा		1)
जिनाष्ट्रक		11
६६२१. गुटकास	० २३ । पत्रस	॰ ४८ । ग्रा॰ ५१ <sup>°</sup> ×४ <sup>°</sup> इश्वा भाषा-हिन्दी-सस्कृत।
ले•काल × । पूर्णं । वेष्टनसं		
विशेषपुत्रामी त	था अन्य सामान्य प	गठो का सम्रह है ।

पूर्णं। वेष्ट्रनसं० ६१। विशेष--मृत्यत निम्न पाठी का सप्रह है--

> १ बाह्यलिछद कृम दचन्द हिन्दी

> > (43 kb)

र०काल स० १४६७ विशेष -- कुल २११ पद्य है रचना का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है--

आदि का पाठ

प्रयमितियद धादी ब्वर फेरा, जेह नामे छुटे भव फेरा। बह्य मृता समय मति दाता, गुगा गुगा पडित जगविदला ॥२॥ भरत महीर्पात कृत मही रक्षणा, बाहूबलि बलवत विचक्षण । तेह भनो करमूं नवछद, साभलता भग्ता भानद ॥३॥ देह मनोहर कौशल मोहै, निरपता सुरनर मन मोहे। तेह माहि राजे श्रति सुन्दर, साकेता नगरी तब मदिर । Х ×

१९६२. ग्टका स० २४ । पत्रसं० ७६ । मा० ७×५ हे इश्व । भाषा-हिन्दी । ले०काल × ।

मध्य पाठ --

विकसति कमल समल दलपती. कोमल कमल समुज्जल कती।

बनवाडी श्री राम सुरगी भांब कदंबा ऊवर तुंगा ॥४२॥ करशा केतकी कमरख केली, नव नारंगी नागर बेली। धगर नगर तर तृंद्रक ताला, सरल सुपारी तरल तमाला ।।४३।। बदनि वकूल बादाम विजोरी, जाई जुई, जबू जंभीरी। संदन संपक बारु जारोजी, वर वासति वर सोली ॥४४॥

#### ग्रन्तिम पाठ---

सबत् बौदस में सडसठो, ज्येष्ट बुल्क पबनी तिथि छट्टे। कबीबर बारे पोषा नयरे, ग्रांत उत्तर मनोहर कुभ घरे। १२००११ ग्राम विनवर ने प्रासादे सांमतियों जिनगाना सुवारे। रत्नकीति पदवी मुख्य पूरे, रिचयों छंद कुमुद ग्रामी सूरे। १२००।। सोमजता मनतां प्राप्तर, मब भ्रातप नामे सुब कंद। दुल दरित बहु पीडा नासे, रोग ग्रोक नहि पार्व पार्थ। १२०६।। ग्राकिनी श्रांकिनी नरे पकच्य पुत्र भेत जावे सहू पूरं। ग्रामिनी श्रांकिनी व्यक्तियों, सख सपति भ्रांविन्त परकारी। १२०।।

#### कलस----

उत्कट विकट कठोर रोग गिरि मंजन सत्यवि । विहित कोह सदोह मोहतम भीष हरए। रिव । विहित रूप रित भूप चारु गुरा कृप विनुत कवि । धनुष पाच से पचीस वरत सहुँग तत्र छवी ।। ससार सारि स्याग गर्ज विवृद्ध वृंद विदत चरणं। कहे क्रमुदचक्य मुजबन जयो सकल संघ मंगल करए।।२११।। इति वाहबिल छंद संप्रणं।

२. नेमिनाय को छद हेमचन्द्र हिन्दी -(श्रीभूषरण के शिष्य)

विशेष —यह रचना २०५ पद्यों की है। रचनाका भादिभात माग निम्न प्रकार है—

> विदेहं विमलं वेष स्तभ तीर्थस्य नायकः। गीराष्ट्रगौतमं वीर छद्र प्रारम मिद्रये ॥१॥

#### छंद बाल-

पारस्य -

प्रथम नमोहं जिन मुखकेह बज कम नारंसकल विदेहं। बदन मुचदे निर्मल कदे तिमुबन वदे भगत सुखदे।।२।। फलकानि भन्ने भगमग गल्ले, बनुर मुजाय गणगगण चल्ले। कपडल पोथी कमल सुहस्ती मधुर वचना शुभ बाचती।।३।।

#### मध्य माग-

राय मनोहर धारिनी नारी पतिबरतानी जत घर नारी। समरीराय निज चिन मफारी, इम धनुभवता मुख संसारी।।६८।। गृंथी बिनत्त पेत्त पवारी, सोम मुखी सोमांति गोरी। नेत्र जीति चकित चकोरी, साहन की गज गमन बिहारी।।६९।। मल पति ही डे जोवन भारी, पैव पवित विषय विकारी। जाने विधि कामनि सिनगारी, संगी भगति कला अधिकारी।।१००।।

¥

धनिम पाठ--

×

काष्ट्रा संघ विक्यात धर्म विशंदर घारक । तस नंदी तटगण्छ गए। विद्या भवितारक । पुरु गोयम कुल गोत्र, रामसेन गछ नायक । नरसिच पुरादि प्रसिद्ध द्वादक न्याति विधायक ।

×

×

तद ग्रनृकमे भागु भन्या गछ नायक श्री कार । श्री भषणु सिल्य कहे हेमचन्द विस्तार ॥२०४॥

६६२३. गुटकासं० २५ । पत्रसं० १३४ । घा० ४ै ४७ ॄै इचा माघा−हिन्दी-संस्कृत । ले∘काल ४ । पूर्ण। वेष्टनस० ६६ ।

विशेष - पुजा एव स्तोत्र संग्रह है।

**६६२४. गुटका सं० २६**। पत्रस० ११४ । झा० ७×१३ दचा। मावा हिन्दी–संस्कृत। ले∘काल × । पूर्णा वेकृतसं≎ ६०।

विशेष-पृजायो का सग्रह है।

**६६२५. गुटका** सं० २७ । पत्रस० २१~१२१ । बा॰ ६×६ इश्व । भाषा–हिन्दी । ले•काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० ६७ ।

विशेष-धायुर्वेद के नुस्से है।

१८२६. गुटका सं०२६ । पत्र स॰ ३६–३२० । घा०६×७ इ.च । भाषा--हिन्दी । विषय-संग्रह । २०काल imes । ले० काल imes । घणूणें । वेष्टन स० ६४ ।

विशेष-पूजा तथा स्तोत्र समह है ग्रमर कीय एव ग्रादित्य कथा संग्रह ग्रादि है।

६६२७, **गुटकासं**०२६। पत्र सं०३-२३६। ग्रा०६×६६७। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रहाले∘काल × ।पूर्णावेष्टन सं०

विशेष-वृत्दावन कृत चौबीसी पूजा है। तथा सुस्तमागर कृत प्रशाह्मिका रासो भी है।

६९२५. **गुटका सं**०३०। पत्र सं०७६८। ग्रा०८ॄे×७ इ**था।** भाषा–संस्कृत-हिन्दी। विषय—संग्रह।र०काल ×ाले०काल सं०१६६३ माघ सुदी१४।पूर्णं। वेष्टन सं०६४।

निम्न पाठो का संग्रह है:—			
ग्रंच	ग्रथकार	भाषा	विशेष
पद्मनंदि पञ्चीसी मापा	जगतराम	हिन्दी, संस्कृत	र०काल सं०१७२२ फागुए। सुदी१०
<b>ब</b> ह्य विलास	भगवतीदास	हिन्दी	
समयसार नाटक	बनारसीदास	,,	र०कास सं० १६१३
स्तोत्रत्रय भाषा		**	
तत्वसार	द्यानतराय	11	
चौबीस दण्डक झादि पाठ	-	,,	_
चेतन चरित्र	भैया भगवतीदास	••	
श्रादक प्रति कमण		प्राकृत	
सामायिक पाठ		हिन्दी	_
तत्वार्थं सूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	
सामायिक पाठ भाषा	जयचन्द	हिन्दी	_
चरवा शतक	धानतराय	हिन्दी	-
त्रिलोक वर्गांन		हिन्दी	
भाचार्यादि के गुरा वर्गान		,,	
पट्टावली		,,	सं० १२४८
			लक है।
द्यागे लिखा है कि १२४ ८ तक न	ो गुद्ध भाम्नाय रही । हे	नेकिन स०१३१६	के साल भट्टारक प्रमा-
मान की में की योगोजमान का जिला के जोत	wal arminarr ares	use uch 1	

गुटके के घन्त में निम्न पाठ लिखा हुचा है-

चादण प्राम मुजाण महाचीर मन्दिर जहा । नन्दराम सस्यान ऊठा पाठ बेटे पढ़े ॥६॥ सुनयन मैं जुमाई जींबह बहालिस्ह हरपरसाव समिचन्द जदि जानियो । रोसनचन्द्र गंगदास सासानग्द मझचन्द्र सज्जन सनेक तिहां पड़ै सर्वानियो । ता माइयों की कृपा सेती लिक्यो रामसनी पाठ नन्दलाल के पढन कूं सुनो जू ज्ञानियो ।। यामें भूलक्क होइ ताहि सोध सुध कीजो मोहि मल्य ब्यजान खिमा उर मानियो ।।२।।

### चीपई----

संबन् ठारासं वारावं जान. माघ गुक्त पूर्णमासी बलान । सोमबार दिन हैगो श्रेष्ठ, पूरण पाठ लिस्थो प्रति श्रेष्ठ ।

**६६२६. गुटका सं० ३१** । पत्र स० ३७० । प्रा॰ १२imes७ इ.चा माया-हिन्दी। ले**०काल** स० imes । पूर्ण । बेष्टन सं० ६३ ।

विशेष--मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है-

।वशवमुल्यत	. । नम्न पाठा का सम्रह ह—		
ग्रंथ	ग्र थकार	भाषा	विशेष
द्रव्य संग्रह भाषा	A	हिन्दी	
नक्षत्र एवं वार विचार			
<b>विशेष</b> विभिन	त नक्षत्रों में होते वाले फलो का वर्ण	~ हैं।	
पच स्तोत्र एवं			
तत्वायं सूत्र तथा पच	_	सस्कृत	
मगल पाठ		हिन्दी	
धनन्त व्रत कथा	मुनि ज्ञानसागर	सस्कृत	_
जिनसहस्रनाम ।	जिनसेनाचार्य	"	-
मादित्यवार कथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	~
लघु धादित्यवार कथा	मनोहरदास	**	३५ पद्य
पूजा सग्रह	-	tr.	promptor.
जैन मतक	भूवरदास	हिन्दी	
पूजा संबह		**	_
शील कथा	भाराम्ह	हिन्दी	
निशि भोजन कथा		,,	
घठारह नाता	भ्रचलकीर्ति	,,	
जैन विसास	भूघरदास		
पद संग्रह	बनारसीदास, जगराम विनोदीलाल, चानतरा	कनककीति, हर्षचन्द्र, ाय,	नवलराम, देवाबहा,
भौबीस महाराज पूजा,	वृन्दावन	हिन्दी	

ह€३०. गुटकासं० ३२ । पत्रसं० २३१ । धा० १०×६ १ इ.च.। माषा-हिली। ले० काल ×। पूर्णा वेष्टनसं० ⊏२ ।

विशेष---पूजाओं का सग्रह है।

 $\pmb{\epsilon}$  **६६२१. गुटका सं० ३३ । पत्र स०** ७–२६४ । ग्रा० १०imes६२ इ.स. । माणा-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टुन सं० ७६ ।

विशेष---मुख्य पाठो का संग्रह निम्न प्रकार है।

ग्रंष	य थकार	भाषा	विशेष
कल्याग् मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द	संस्कृत	
भास्त्र पूजा	द्यानतराय	हिन्दी	-
ग्रादित्यवार कथा		**	
नवमंगल	लालबन्द	17	-
धनस्त वत कथा	मुनि ज्ञानसागर	33	
मक्तामर तथा ग्रन्य स्तोत्र		संस्कृत	
जिन महस्रनाम	जिनमेनाचार्य		Market .
पूजासग्रह	****	सम्कृत, हिन्दी	anna.
ग्रादित्यवार कथा	<b>मुरेग्द्रकी</b> र्ति	हिन्दी	र० काल
			म०१७४४
जैन मतक	सूधरदास	10	र० काल
			म० १७<१
चौबीस महाराद पूजा	वृन्दावन	**	

ह६३२<mark>. गुटका सं०३४ ।</mark> पत्रसं०२६३ । ग्रा०१०४६ ग्रञ्च। भाषा हिन्दी-सन्कृत । के० कालास०१६१२ । पूर्ण। बेष्टनसं०७४ ।

विशेष--मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है--

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
कल्यामा मन्दिर भाषा	वनारसीदाम	हिन्दी	
भक्तामर स्तोत्र	मानन् गाचार्य	संस्कृत	
भक्तामर भाषा	हेमराज	हिन्दी	
लुटमी स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	सस्कृत	_
तत्वार्थ सूत्र	उमाम्बामी	"	
पूजा संग्रह		**	

नित्य पूजा, पोडव कारण, दशलक्षण, रानवय, पंचमेक, नंदीश्वर द्वीप एवं चोबीस तीर्थंकर पूजा रामवर्ट्स कुन हैं। धारियवार क्वा भाऊ हिपी

<b>ंचमं</b> गल	रूपचन्द	हिन्दी	,,
नेमिनाय के नवमंगल	विनोदीलाल	,,	र०काल सं० १७०४
सामायिक पाठ		संस्कृत	
व्रत कथाएं	खुशालचन्द	हिन्दी	
जिन सहस्रनाम	-	संस्कृत	

**६६३३. गुटकासं**० ३५ । पत्रसं० २८० । ग्रा० १२ × ७ इञ्च । भाषा∽हिन्दी । ले० काल स० १७६५ चैत ब्दी ⊾ । पूर्णावेष्टन सं० ६४ ।

## विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है---

पाण्डव पुराग्	बुलाकीदास	हिन्दी	र०काल स०१७८४
सीता चरित्र	कविवालक (रामचन्द्र)	**	१७१३

**९६३४. गुटका सं० ३**६ । पत्र स० ६८ । धा० ५×६५ इन्छ । मापा-हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १६ ।

## विशेष--निम्न पाठो का संग्रह है।

सूरत की बारहवडी	सृरत	हिन्दी	पत्र १-१३
द्यादित्यवार कथा	माऊ	,,	१३-१६
पद	भूघरदास, जगतराम	,,	१६-१७
चौबीस महाराज पूजा	वृन्दावन	**	१७६=

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन छोटा मन्दिर, बयाना

**६६३४. गुटका सं० १** । पत्र सं० १६६ । धा० ५ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इन्छ । माधा-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० १४१ ।

#### विशेष--मुख्य पाठ निम्न प्रकार है---बारहसडी सुरत हिन्दी 85 नवसंगल 32 रविचत कथा माऊ 80 बाईस परीषह वर्णन लावरगी जिनदास 838 पर लाभ नहिं लीया जिनन्द मजिके ₹3€ ,,

	श्रव श्रजब रसीलो नेम	,,
लावसी	<b>रू</b> डागुरुजी	١, ﴿٢٠
		T

पद क्षान मुहम्मद "१४५

#### सोरठा करवा-

तोसौं कौन करिबो कर काम भवचर हर । करत बीनती बलभट राजा । करत टकार हं कार बर बक्यो तीन लोक भय चक्रत जाग्या। वाई कर ग्रंगुली कृष्ण हिण्डोलियो नेमनरनाथ राजाधिराजा ॥२॥ तौसौ स्वामी नग्न पखबर भरयो मान दर्जन गरया कप करिनारिद्वाल तस्कालागा। हिरन रोभ सारंग हरिवास भडकत फिर स्था गजराज बह दक्ख पाया ।।३।। सतनौ दतनौ ग्रजरतो ग्रमरतो सदतो बदतो ज्ञानवता। माई सिवादेवी के उदर उपश्चियो चित्त चिन्तामनी रतनवता ।।४।। तोसी स्वामी जिन नाग मिश्यादली नेम जिन श्चिति बली बाई कर श्चंयुक्ती धनुष साजा। बहा बहा।परी इन्द्र ग्रामन टरी कपियो सेप जब मख बाजा ११५० नोसी छपन कोटि जादौ तम मकट मनि तीन लोक तेरी करत सेवा म्बानमहमद करत है बीनती राखिले शरमा देवाधिदेवा ॥६॥ तोसी कौन करवी कर काम भय धर हर करत बीतनी वलभट राजा ।।।।।

दमके प्रतिरिक्त जगनगम, भूषण्याम, द्याननराय, मुखानन्द प्रादि के पदो का सप्रह है। भूषरदास का जैन जनक भी है।

६६३६. गुटकासं०२ । पत्र स०२७४ । धा०१×४५ इञ्च । भाषा—हिन्दी। ले∘काल स०१८५० गादवाबुदी १ । अपूर्ण। वेष्टन स०१५० ।

विशेष--मृष्य पाठ निम्न प्रकार हैं---

शाङ्गंघर टीका हिन्दी ले०काल सं०१८५० मादवा मुदी ६ । अपूर्ण ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है। वैर मे प्रतिनिधि हुई थी।

घटजट प्रक्रावली

मजीर्ग मंजरी	वैद्य पचनाभ	हिन्दी	, , ,
वैद्य वल्लभ	लोलिम्बराज	सस्कृत	ले०काल सं०१८५१ " ले०काल स०१८५०
🗴 । पूर्णा । वेष्टन सं० १		• १०५×७ दश्व ।	भाषा-हिन्दी। ले० काल
विशेषमुस्यत	ाः निम्न पाठों का संग्रह है—		
चौबीत महाराज पूजा	रामचरद्र	हिन्दी पद्य	पत्रस १७
शास्त्र पूजा	<b>व</b> ० जिनदास	,,	२३
गुरू पूजा	p.	,,	२३
बीस तीर्थकर अखडी	हपंकीर्ति	,,	२८
पचमेरु पूजा	मुललन्द	••	ΥĘ
शेपन कियाकोष	<b>स</b> ० गुलाल	"	११८
		र०काल स० १६६४	कःर्तिक सुदी ३
<i>बारत</i> वडो	मृरत	हिन्दी	-
मनिश्चरकी कथा		हिन्दी गद्य	१३१
कलियुगकी क्या	पांडे केशाव	, पञ्च	9 = 9
<b>विशेष</b> — गाडे व	केशबदास ने ज्ञान भूपरा की धेरर	। से रचनाकी थी।	
श्रोकारकी चौपई	भैया भगवतीदास	हिन्दी पश्च	१४०
ग्रादिनाथ स्तृति	विनोदील।ल	,,	१४१
राजुल बारहमासा	**	,,	,,
राबुल पच्चीसी	n	"	,,
रेखता	**	**	"
रविक्रत कया	सुरेन्द्र कीर्ति		્યું ક
		₹० कार	र स <b>० १७४४</b>

६६३ द. गुटका स०४ । पत्र स०५० । मा०७ ४६ ६%। । माषा−हिन्दी सस्कृत । ले•काल ४ । पूर्ण । देष्टन स०१११ ।

विशेष-- पच मगल सपचन्द के एव तत्वार्थ सूत्र प्रादि पठ है।

**९६३६. गुटकास० ४ ।** पत्रम० १०-६४ । ग्रा० ५३ × ८ इ.च । भाषा–हिन्दी। ले∘काल × । पूर्णावेष्टन स०११० ।

विशेष--- निम्न पाठो का सपह है---

पद संग्रह	नवल, जगनराम	हिन्दी (पद्य)	पत्र १०-१४
जैन पच्चीसी	नवल	"	? 5

बारह मावना	नवस	,,	<b>१</b> =
मादित्यवार कथा	सुरेन्द्र कीर्ति	,,	44
			र०काल सं० १७४४
<b>बारह</b> खडी	सूरत	,,	Yo
राजुल पच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	,.	¥χ
<b>भक्षर बाव</b> नी	चानतराय	.,	Ys
			(र०काल सं● १७५⊏)
नवमगल	विनोदीलाल	p	४६
पद	देवा ब्रह्म	,,	Ę٥
घर्म पञ्चीसी	बनारसीदाम	,,	६२
श्रठारह नाते की कथा	ध्रचलकीति		६२
विनती	<b>ग</b> र्लं मल	,,	£X

कौन जाने कल की स्वदर नहीं इह जगमें पल की। यह देह तेरी मसम होयसी चंदन चरची।। सतपुरुतैसीलन मानीविननीग्रन्थमल की

इनके म्रतिरिक्त देवा ब्रह्म, विनोदीलाल, भूघरदाम म्रादि के पदो का सग्रह है।

**६६४०. गुटका सं**० ६। पत्रस ० ११२। घा० ७३×५ इखा आपा सम्क्रन । ले० कान × । पूर्ण । वेप्टनसं० ६६।

## विशेष - मृख्यत निम्न पाठो का सग्रह है-

भक्तः मरस्तोत्र	मानतु चार्य	सम्बन
तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	,,
पच मगल	रू । चन्द	हिन्दी
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	सस्द्रत
पद	माराक, रत्नकीति	हिन्दी
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्म प्रम	संस्कृत
विनती	वृन्द	हिन्दी
चितामिए स्तोत्र	<u>·</u>	,,
घ्यान वर्णन	_	
बावनी	हरमुख	,, पद्म

६६४१. गृटकासं० ७ । पत्रसं० २२ । मा० ७४५ इचा। माया-संस्कृत-हिन्दी । के•कास ४ । पूर्ण । वेष्टन स०६⊏ ।

विशेष--नित्य पाठ संग्रह है।

**१८४२. गुरुका सं० म ।** पत्र स० ५२ । मा ० ७imes ५ ६०% । माचा – हिन्दी । ले ० काल imes । मपूर्ण । बेहन सं० १७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

ग्राठारह नाते की कथा श्रचलकीर्ति हिन्दी

इसके म्रतिरिक्त नित्य पूजा पाठ भी है।

**९९४३. गुटका सं० ९** । पत्रसं० १०८ । ग्रा० ६ × ६ इश्वा । भाषा−हिन्दी । ले∘काल × । पूर्णे । बेक्टन सं० ६६ ।

विशेष---निम्न पाठों का सग्रह है---

नित्य पूजा पाठ एवं नवल, ब्रधजन, मधरदास गादि के पदो का सग्रह है।

६९४४. गुटका सं० १०। पत्र स०४२ । घा० ६४४ इञ्च। भाषा−िहन्दी-सस्कृत । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन म० ६४ ।

विशेष--- नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है ।

६६४५. गुटकास०११। पत्रस०६४ । स्रा०६ $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  इन्वः । भाषा-हिन्दी-सस्कृतः । तेश्कास imes । पर्ण। वेस्टन स०६४ ।

६६४६. गुटकासं० १२ । पत्र सं० ⊏ मे च⊏। घा०६ १४ ५ इ.च.। भाषा–हिन्दी। ले० काल ४.। ग्रपुर्गा। बेहन स० १३ ।

विशेष - मुख्यत निम्न पाठो का सम्रह है---

म्रादित्यवार कथा विनोदीलाल हिन्दी (पद्य) जल्लडी वीम विण्हमान हर्षकीति

विशेष-इनके श्रतिरिक्त नित्य नैमित्तिक पूजाएं भी है।

**६६४७. गटका सं**० १३ । पत्र सं० १०४ । घा० दimes६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । लेब्बाल imes । भरूष् । बेप्टन सं० घट ।

विशेष -- नित्य नैमित्तिक पाठ सम्रह एव जवाहरलाल कृत सम्मेद शिखर पूजा है।

६६४८. गुटकासं० १४ । पत्रसं० २०० । प्रा० ६ै ४५३ इ.ख. । माषा∽हिन्दी-सस्कृत । छ० काल ४ । ग्रपूर्ण । वेष्टनसं० द४ ।

विशेष--- बीच के पत्र स० ७१-२३३ तक के नहीं है। मुश्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

बारहत्वडी मृत्त हिन्दी राजूल बारहमासा विनोदीलाल " पूर्या चष्ट्र पाहड भाषा

सामाविक पाठ भाषा 205-233 तत्वसार भाषा हिन्दी ¥ - 2¥ द्यानतराय पंच मंगल ग्राशाघर 84 सज्जन चिन्न वल्लभ मिळिषेरग संस्कृत 25-38 हिन्दी धर्ष सहित है। वतसार 25-30 लघसामायिक किमनदास 38-38

६६ ४७. गुटकासं० २३ । पत्रस० ११४ । मा० ७ ४४ इ.च.। शाषा–सस्कृत–हिन्दी । ले०काल ४.। पूर्ण। बेहनस० ४० ।

समन्तभद

विशेष-- तिम्न पदों का संग्रह है--

स्वयंभू स्तोत्र संस्कृत

**६६५ म. गुटका सं० २४ । पण**सं० ३३ – १४७ । म्रा० ५ $^2_7 \times$ ३ $^2_7 = ^2$  = खा । माषा - हिन्दी-सरकृत । ने काल  $\times$  । पूर्ण । बेकन सं० ३५ ।

हिन्दी

विशेष--सामान्य पाठों का संग्रह है।

**६६५६. गुटका सं० २५** । पत्र स० **८६** । ग्रा॰ ५ है  $\times$  ४ इन्त्र । भाषा-हिस्सी सस्कृत । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेण्टन सं० २६।

विशेष --सामान्य पाठों का संग्रह है।

**६६६०. गुटका सं०२६ ।** पत्र सं०६४ । ब्रा०६×४ **१ इ.स. । भाषा** सम्बन्धतः। ले०काल सं०१८६.... × । पूर्णावेषुत स०२४ ।

विशेष--- मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है---

एकीसाब स्तोत्र सम्हत बाहिराज देवसिंढ पूजा , — प्रास्त प्रबोध ,, ....

**९९६१. गुटका सं० २७ ।** पत्रसं० १४ । द्या० ६२  $\times$ ४ इञ्च । माषा-संस्कृत । ले०काल  $\times$ । सपूर्ण । बेष्टन सं० २४ ।

विशेष-- निम्न पाठों का संग्रह है।

एकीमाव स्तोत साम्कृत तत्त्वार्षे पुत्र उमास्वामी संस्कृत तत्त्वार्षे पुत्र उमास्वामी संस्कृत प्रमाणकामा स्तोत्र जमस्तिह ६.६६२. गुटकासं०२ ⊏ । पत्रसं०२० । घा•६×३ ॄै ६ च । माचासस्कृत प्राकृत । ले०काल × । पूर्णावेष्टन स०२२ ।

विशेष-मुलाचार भादि ग्रन्थों में से गाथाओं का संग्रह है।

**१८६३. गुटका सं**०२**६ । पत्र सं०१४० । म्रा०६\frac{1}{4}\times V\_{\frac{1}{4}} इ.ख.। माबा-हिन्दी-संस्कृत । से०काल\times । पूर्णे । बेष्टन सं०२१ ।** 

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है।

भादित्यकार कथा	भाऊ	हिन्दी	१-३•
संबोध पंचासिका	बुधजन	"	800-80B

इसके श्रतिरिक्त पूजाओं, मक्तामर एवं कल्याग्रामन्दिर श्रादि स्तोत्र पाठो का सग्रह है।

**९.६६४. गुटकासं०३०** । पत्रसं०३० । श्रा० ४ $\frac{1}{4}$  ×३ $\frac{1}{4}$  इ.च. । भाषा—संस्कृत । ले०काल  $\times$  ।पूर्णे । बेष्टनसं०१६ ।

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है-

पार्श्वनाथ स्तोत्र		सस्कृत	
कल्याग्गमन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द	,,	_
दर्भन		,,	
एकी भावस्तीत्र	वादिराज	2)	

**६६६५. गुटका सं० ३१** । पत्रसं० ७३ । धा० ६ x ४ ३ इ.स. । भाषा –संस्कृत । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । त्रेष्टन स० २० ।

विशेष गुटका जीर्ल है। सामान्य पाठों का संग्रह है।

**६६६६. गुटकासं०३२ ।** पत्रसं०⊏२ । घा० ७३<sup>3</sup> ×६६ शा । माषा−हिन्दी । ले० काल स० १६१०। पूर्णा विष्टन सं०१३ ।

विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है --

14414	गाठा यम संबद्ध -		
चेतनगारी	विनोदीलाल	हिन्दी	पत्र १-२
शिक्षा	मनोहरदास	"	₹−₹
नेमिनाथ का बारहमासा	विनोदीलाल	.,	₹-¥
राजुल गीत		**	<b></b>
शातिनाथ स्तवन	_	,,	<b>9 - ۵</b>
		(र०काल सं०१	(080)
मविष्यदत्त रास	प्र० रायमहा	**	8- =8

र०काल सं०१६३३

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर बैर (बयाना)

६६६७. गुटका सं०१ । पत्रसं०१६४ । धा॰  $\mathbf{c}_{i}^{2} \times \mathbf{\hat{z}}^{2}$  इञ्च । मावा-हिन्दी । ले॰काल सं०१७२० । ध्रपूर्ण । वेष्टन स०४६ ।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है---

चन्द्रगुप्त के सोलहस्वप्त−क रायमल्ल । हिन्दी । ले०काल सं०१७२० । झानन्दराम ने प्रतिलिपि की की एवं कुसला गोदीका ने प्रतिलिपि कराई थी ।

श्रीपाल स्तुति		हिन्दी	
रविवार कथा	भाऊ	,,	१७२०
जकड़ी	रूपचन्द	,,	
बारह ग्रनुप्रेक्षा		,,	१७२४
निमित्त उपादान	बनारसीदास	79	
बीस तीर्थंकर जकडी		,	
चन्द्रप्रभ जकडी	खुशाल	,,	
पद	बनारसीदास	,,	
	जाको सब दरस तै भगत को	नैनन को	

जाको मुख २८स उँ मगत को नैनन को
ियरता विनि वर्ध चचलता विनसी
पूडा देखि केवती की मुद्दा थाद धावे
जेह जाके धार्म इन्द्र की विभूति दीसी नएसी।
जाको जस जपन प्रकास जन्मो हिरदानै
सोही सुमगती हीई हुता सो मिलनसी।
कहत बनारसी महिसा राग्य जाकी

इनके अतिरिक्त नित्य पूजा पाठ और है।

६६६ स्त. गुटकासं० २ । पत्रस०१०१ । भाषा-हिन्दी (पदा) । ले०काल × । पूर्ण। वेष्ट्रनसं०३५ ।

**६६६. गुटका स० ३।** पद । दरगाह कवि । वेष्टन स० ३६ ।

£६७०. गुटकासं० ४ । पत्र स०२०२ । घा०६४७ इश्वः । माया—संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं०१⊂१३ । पूर्णं। वेष्टन स०३२ ।

विशेष---मूख्यतः निम्न पाठों का सग्रह है---

षोडवकारए। पूजा	सुमतिसागर	संस्कृत	पत्र १६-२६
सूर्यंत्रतोद्यापन	<b>व०</b> जयसागर	,,	98-36
ऋषिमंडल पूजा	***	,,	₹७-ҰҰ

त्रिशंच्यतुर्विशति पूजा	<b>गुभव</b> न्द्र	,,	44-808
रणमोकार पैतीसी	सुमति सागर	,,	४४-११६
रत्नत्रय व्रतोद्यापन	धर्मभूषरग	,,	१२०-१३२
श्रुत स्कथ पूजा		,,	१३२-१३५
भक्तामर स्तोत्र पूजा	_	,,	63x-686
गराधर वलय पूजा	मुभचनद	n	626-626
पंच परमेष्ठी पूजा	यमोनंदी	संस्कृत	१५०-१८५
पच कल्यासाक पूजा		,,	<b>१</b> =६-२०२

**६६७१. गुटकासं० ४ ।** पत्रस० १७६ । मा॰ ७४५ इन्व । भाषा हिन्दी । ले॰काल ४ । पूर्यों । बेहनसं० ३१ ।

**६६७२. गुटका सं० ६।** पत्र स० १६५ । ग्रा० ६imes५ ६ च्या । भाषा-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्ण । वैष्टन मं० २३५ ।

विशेष - पूजा एवं स्तोत्र पाठो का संग्रह है।

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन पंचायती मन्दिर कामा ( मरतपुर )

**६६७३. गुटकासं०१** । पत्रस०१२० । म्रा०५imes४ इला। मापा-हिन्दी । ले॰काल imes । पूर्णावेष्टन म०११२ ।

विशेष - मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है।

भ्रादित्यवार कथा, तेरह काठिया, पच्चीसी।

६६७४. गुटका सं०२।पत्र स०१७०। घा०७×५ इखा भाषा−हिन्दी। से•काल ×। पूर्ण। बेष्टन स०११३।

विशेष — हिन्दी पदो का सम्रह है।

**६६७५. गुटका सं० ३**। पत्र स० १०८। ग्रा० ७४५ इचा। भाषा-हिन्दी। ले∘काल × । पूर्णा। वेष्टन सं० ११० ।

विशेष-स्फुट पाठो का संग्रह है।

६६७६. गुटका ४ । पत्रस० १०⊏ । म्रा० ७×६ इचा भाषा -हिन्दी । ले०काल × । पूर्ए । वेष्ठन सं० १११ ।

विशेष--पूजा संग्रह है।

६६७७. गुटका सं० ५ । पत्र स० ७७ । घा० १२ x ५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-कृन्दी ।ले०काल x । पूर्ण । बेहनस० १०८ ।

विशेष - गुरास्थान पीठिका दी हुई है।

**६६७८. गुटकासं० ६**। पत्र सं० २१०। मा० ६×४ इञ्च। माया−प्राकृत-हिन्दी। ले०काल पूर्यो। बेष्टन सं० १०६।

विशेष--स्फूट पूजा पाठों कः संग्रह है।

६१७६. **गुटका सं० ७** । पत्रस० २१० । झा० ६ $^2_8 imes 5$ ६ अथा-हिन्दी । ले०काल सं० १६६४ ।  $g \approx -4$  वृत्र स० ६५ ।

चिशेष---मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है।

सम्मेदशिख ा	अवाहरलाल	हिन्दी
चौबीमी नाम		
<b>प्रा</b> दित्यवार क भ	भाऊ	,,
नित्य पाठ सरा	-	,,

६६८०. गुटका सं० ६। पत्रसं० ६७। ग्रा० ७imes ६४। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल imes । पुर्ग ःटन स० ६४।

ंंंध--निम्न पाठो का संग्रह है--

िर ाठ सग्रह, ग्रादित्यवार कथा (भाऊ) परमज्योति स्तोत्र ग्रादि ।

६६८ २<mark>. गुटकास०६ । पत्र सं∙१६ । घा०११×६ इ.चा।</mark> प्राषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल ४.१ *ग्रापुर्गाः*टन म० ६५ ।

विशेग-पूजापाठ सग्रह है।

 $\mathfrak{E} \in \mathbb{R}^2$ . **युटका स० १०**। पत्र स० १८०। ग्रा० ७ $\frac{1}{3} \times \mathfrak{t}_2^3$  इ.खा भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले॰काल • । पूर्ण । बेष्टनसं॰ ७६।

विशेष - मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है --

तत्वार्थं मत्र जिन्दी टीका सहित ।

२ ज्ञानानन्दश्रानकाचार। ३. निर्वास काण्यभदि।

हर्द्धः गुटकास० ११ । पत्र स० ६–१६ । घा० ७ ४ ५ ॄै इश्वः । माषा–सम्कृत–हिन्दी । ले० काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टनस० ७२ ।

विशेष -- पूजा पाठ संग्रह है।

६६६४ मुद्रका सं०१२ । पत्रस०१३२ । म्रा०६४६३ इचा भाषा∽सस्कृत । लेक्काल ४। प्रपूर्ण । बेपून स०७३ ।

विशेष — नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

**६६**८५. गुटकास० १३ । पत्र स० ६० । ग्रा० १०imes७ इ.ख । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १६८६ । ः पूर्ण । बेप्टन स० ६६ ।

विशेष - नित्य पूजा पाठ, तस्वायंसून, मक्तामर स्तोत्र, ग्रादि का सबह है । सूरत की बारहणडी भी ह ।

६६८६, गुटका स० १४। पत्र स० ६-१६। आ० ७ $\times$ ५ $\frac{1}{5}$  इन्त । मावा—संस्कृत । से०काल  $\times$  । अपूर्ण । बेप्टन स० ७०।

विशेष - बाग्हमासा वर्णन है।

**६६ छ७. गुटका सं० १५ । प**ण सं० १०० । घा० ७imes६ दे दक्षा भाषा-ा ते काल सं० १६०३ । पूर्णा वेष्ट्रन सं० ४१ ।

विशेष---मुख्यतः निम्न पाठों का सम्रह है---

लपु चारण्वय नीतिवास्त्र भाषा कार्याराम हिन्दी विशेष र शाल सः १७७४ इन्प्ण रुपिरणी विवाह — ,, २२० पद्म दानसीला — ,, १६ पद्म

**९९ मन्. मृटकासं०१६ ।** पत्रस० २०म । झा०म×६ हे इआह । आसपार्न्हन्दी-सस्कृत । ले∙काल × । पूर्णावेष्टन स०२६ ।

विशेष--स्फुट पाठों का संग्रह है।

**६६८६. गुटका सं० १७ ।** पत्रस० ३५३ । झा० १२×६ इ**न्छ । मावा-संस्कृ**ः । ले०काल × । पूर्गो । बेग्रन स० २० ।

विशेष — पत्र २६ तक सस्कृत में रचनाएं हैं। फिर ३२५ पत्र तक सिद्धातसार दीपक माथा है। वह अपूर्ण है।

६६६०. गुटकासं० १६ । पत्रसं० २८० । ग्रा० ६२, ४६ है इञ्च । भाषा−हिल्दी । ले०काल ×ापूर्ण। बेष्टनस० १४ ।

विशेष-विविध पूजाएं है।

६९६**१. गुटका सं० १**६ । पत्रसं० १६५ । घा०१२ ४७ ¦ इश्वा भाषा –हिन्दी –सम्कृत । लेवकाल × । पूर्णा विद्यन स०११ ।

विशेष — ३४ पूजा पाठो का संग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा (भरतपुर)

६.६६२२. गुटकासं० १ । पत्रस० १६० । ग्रा० ६ ४ ४ इ.च. । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण। बेष्टन स० ३४४ ।

**विशेष**---पूजाधो कासंग्रह है।

**६६६३. गुटका सं० २ । पत्र सं० १**४४ । घा० ७imes४ $^3_{\gamma}$  इ.च. । भाषा- हिन्दी – मस् $_{+1}$  । लेक्काल imes । प्रपूर्ण । बेहन सं० ३४६ ।

विशेष--- नित्य पूजा पाठ सग्रह तथा तत्वार्य सूत्र ग्रादि हैं।

**६६६४. गुटका सं०३ ।** पत्रस० १४४ । घा० ७४४ इ.ख. । शाषा –हिन्दी⊸सस्कृत । ले०काल ४ । ग्रपूर्ण । वेष्टनसं० ३४६ ।

. विशेष—-नित्य काम भाने वाले पाठों का संग्रह है।

**६६६५. गुटका सं० ४ ।** पत्र सं० १२३–१५६ पुनः १-४६ । ब्रा० १०imes६८ व । भाषा— संस्कृत । सेक्शाल imes । ब्रदुर्ग । बेहुन सं० ३४२ ।

विशेष-पूजा तथा अन्य पाठों का सम्रह है।

**९९९६. गुटका सं० ५** । पत्र स० ४०२ । ग्रा० १×६ इ.च.। माषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । ग्रमुर्स्स । वेस्टन स० ३४३ ।

विशेष—विविध पाठो स्तोत्रों तथा पूजाओं का संग्रह है।

हरहरू. गुटकासं० ६ । पत्रसं० २३४ । प्रा० १ ४ ६ इ.च. । साथा – हिन्दी । ले•काल सं० १७४६ । प्रपूर्ण । बेच्टन स० ३३१ ।

विशेष—-फुटकर पद्य हैं। भविष्यदत्तरास तथा पंचकल्याएक पाठ भी हैं। बीच मे कई पत्र नहीं हैं।

**६६६ द. गृटका सं०७ ।** पत्र सं०४ ३ – १६२ । ग्रा०६imes६ ६ चा। भाषा – हिन्दी । **ले** •काल imes । ग्रपूर्ण । बेष्टन सं०३ ४० ।

विशेष--- भविष्यदत्त रास तथा श्रीपःल रास है। प्रति जीर्ए है।

६६६६. गुटकासं० ⊏ । पत्र स०१४१ । घा०६×४ है इचा। माषा—हिन्दी। ले•काल स० १६४३ । घपूर्णः। बेष्टन स०३३ ⊏।

विशेष-हिन्दी के विविध पाठी का संग्रह है।

धालोचना जयमाल **व० जिनदास** हिन्दी नेमीश्वर रास ——

१००००. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ३८ १। ग्रा० ८ १४७ इथा। मोधल-दिन्दी। से०काल ४। ग्रुर्गावेहनसं० ३३१।

विशेष-- निम्न रचनाओं का सग्रह है--

पद	गुराचन्द्र	हिन्दी	
बारहबत	यशःकीर्ति	,,	
सामुद्रिकशास्त्र	_	सम्हल	_
मुरु शिष्य प्रश्नोत्तर		,,	~
मदन जुरुभ	बूचराज	हिन्दी	रचनाकाल स०१५८६
जिन सहस्रनाम	जिनसेन	संस्कृत	
पूजा संग्रह		,,,	_
गराघर वलय पूजा		"	-
ज्वालामालिनी स्तोत्र		,,	-
ग्राराधनासार	देवसेन	"	
रविव्रत कथा	भाऊ	हिन्दी	
श्रावकाचार		,,	
<b>धर्मचऋ</b> पूजा •	_	संस्कृत	*****
तत्वार्यसूत्र	उमास्वामी	,,	
ऋषि मडल स्तोत्र		,,	****

चेतनपुद्धल घमाल	बू <b>चराज</b> -	हिन्दी	
पद	वल्ह (बूचराज)	,,	
पद (राजमति)	वूचराज	n	
पूजा		**	
बूनडी		,,	
संखियारास	कोल्हा	,,	
नेमीश्वररास	बहाद्वीप	,,	

## विशेष-रचनाकार सबंधी पद्य निम्न प्रकार है-

राणक्षभीर की तलहटी जी राणपुरु सावय वामु । नेमिनाचु को देहरीजी बंभ दीप रिव रासु । यह ससारु घसारु किव होसे भवपारु ॥ हो स्वामी ॥२४॥

घवञ्ज परीक्षा (ब्रध्नुवानुत्रेक्षा)		हिन्दी	_
रोस की पायडी		,,	
जय जय स्वामी पाथडी	पल्हरणु	,,	
पंडित गुगा प्रकाश	नल्ह	,,	
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	<b>ब</b> ० रायमल्ल	19	
मनकरह।रास	क्र० दीप	**	-

## विशेष--बहादीप टोडा भी असेन के रहने वाले थे।

खटोला	<b>ब</b> ० धर्मदास	हिन्दी	_
हिंदोला	भैरवदास	,,	
पंचे न्द्रियवेलि	ठक्दुरसी	*,	
सुगधदशमीवत कथा	मलयकीर्ति	,,	
कथा सग्रह	जसकीर्ति	n	
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	ग्रमभ्र श	
पाशोकेवली		,	
षन्यकुमार चरित्र	रइधू	<b>भप</b> श्रंश	

१०००**१. गुटका सं**० १० । पत्र स० १०३ । घा० ६२<sup>°</sup>,×६२<sup>°</sup> इञ्च । भाषा-संस्कृत–हिन्दी । के**०** काल × । घपूर्यी। वेष्टन स० ३३० ।

विशेष--- मुख्यतः निम्न पूजाओं का सम्रह है---

गराघरतलय पूजा, तीस चौबीसी पूजा, घररोगद्र पद्मावती पूजा, योगीन्द्र पूजा, सप्त ऋषि पूजा, जलयात्रा, व हवन विधि झादि हैं। १०००२, गुटका सं०११। पत्र सं०४६। घा॰ द×७ इ.च.। भाषा−हिन्दी। ले∙काच ×। घपूर्यं। बेष्टन सं०३२ द।

विशेष--धानतराय, भूबरदास, जगतराम मादि के पद हैं।

१०००**३. गुटकारां० १२**। पत्र सं० ४-८३ । घा० १×६ $\S$  इन्छ । भाषा-हिन्दी ले० काल  $\times$  । घपूर्णं । वेष्टन सं० ३२१ ।

विशेष — हर्षकीर्ति, मनराम, खानत ग्रादि की पूजायें तथा जिनयंञ्जर स्तोत्र ग्रादि पाठों का सम्बद्ध है।

१००० ४. गुटकासं० १३ । पत्रसं० २२६ । ब्रा॰ ६ रे 🗴 ७ ६२४ । माषा-सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्या । बेब्न सं० ३०६ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह, भूपाल स्तोत्र, पच परमेष्टी पूजा, पच कल्याराक पाठ (रूपचन्द कृत) भक्तमर स्तोत्र एवं तत्वार्थ सत्र ग्रादि का संग्रह है।

१००० ५. गुटका सं०१४ । पत्र स०११६ । ग्रा०७imes४ दे इ.स. । भाषा-हिन्दी । ले० काल imes । श्रदुर्एं । वेस्टन स०२८ म

२०००**६. गुटकासं० १५ ।** पत्रसं० ४२ । घा०७ 🗙 ४ इचा । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल 🗙 । घपुर्ण । वेस्टन सं० २८५ ।

विशेष-स्तोत्र एव पद सग्रह है।

१०००**७. गुटकासं० १६** । पत्र स० २१-२८६ । ग्रा०६×४३ इट्चा भाषा-सस्कृत । के० काल × । श्रपूर्ण ।वेष्टन स०२८६ ।

विशेष—गृटका जीर्गहै। पूजाओं का संग्रह है।

१००० स. गुटका सं० १७ । पत्र स० २७३ । म्रा० ४२०४१ इञ्च । नाया - हिन्दी । लेक्काल × । म्रपूर्ण । बेष्टन सं० २०७ ।

विशेष-बीच के अधिकाश पत्र नहीं है। हिन्दी पाठी का मग्रह है।

१०००**६. गुटका सं०१**८ । पत्र स० ३६ । छा० ९×६ दै इश्वरा भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल स०१७⊏३ ।पूर्णा वेष्टन सं०२८३ ।

विशेष — श्रादित्यवार कथा (भाऊ किव) तथा गञ्लपच्चीसी (लाल विनोदी) एव पूजा पाठ सग्रह है।

१००१०. गुटकासं० १६ । पत्र स० १६ । ग्रा० ८ । ४६ इन्छ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । लेक काल स० १७४३ पीप बुरी ६ । ग्रपूर्ण वेष्टन सं० २८४ ।

विशेष-भक्तामर स्तोत्र, कल्यास मन्दिर स्तोत्र, तत्वार्थ मुत्र हिन्दी टीका ब्रादि का सग्रह है।

१००**११. गुटका** सं०२०। पत्रस०१२४ । झा०७×४ इचा **भाषा**−हिन्दी। ले•काल स० १७४६ । पूर्ण। वेष्टनसं०२७७।

विशेष-निम्न पाठी का संग्रह है।

नेमिनाथ रास — ले०काल स० १७५६

चंदन मलयागिरि कथा — ले•काल स० १७५८

गुटका पढने में नहीं झाता। झक्तर मिट से गये है।

१००१२, गुटकास ०२१ । पत्रसं∘ १२४ । झा० ७×४ ्दश्व । भाषा∸हिन्दी । के∘काल स० १७४६ । पूर्ण । केवन सं० २७६ ।

विशेख-पदों का भ्रम्खा संग्रह है। इसके भ्रतिरिक्त हन् मत रास, श्रीपाल रास भ्रादि पाठ भी हैं।

१००१**३. गुटका स**ंग्र**२२ ।** पत्रसंग्र४४ । झा०६imes६५ हथा । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । सैक्काल imes । पूर्ण । केहन संग्र६९ ।

बिशेष-विविध पाठों व पूजाधो का सग्रह है।

१००१४. गुटका सं० २३ । पत्रसं० २४४ । घा० ७imes ६ इ.स. । भाषा-हिन्दी । ले॰काल imes । घपुर्एं । बेहन सं० २४६ ।

विशेष-संदातिक चर्चाएं हैं।

१००१**४. गुटकास**ं० २४ । पत्रस० ३७ । प्रा० १०४४ इश्वा सामा—सस्कृत-हिन्दी । ले०कालास० १७६४ । स्रपूर्णावेदनसं० २४७ ।

विशेष --- निम्न पाठो का सबह है। एकीभाव स्तोत्र एव कल्याग्रामन्दिर स्तोत्र भाषा ।

१००१६, गुटका सं० २५:। पत्रस० ४४ । ग्रा० ५ $\times$ ५ इ.ख.। भाषा –हिन्दी । ले०कास imes। पूर्णे । बेष्टन सं० २०२ ।

१००१७. गुरका सं० २६ । पत्र सं० ७० । ग्रा० ६imes५  $^2$  इ.स. । भाषा – संस्कृत । ले०काल imes । पूर्ण । बेहुन स० १७१ ।

विशेष -- स्तोत्र ग्रादि पाठों का संग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन पंचायती मन्दिर हरुडावालों का डीग (भरतपुर)

**१००१ त. गुटका सं० १ । पत्रस**० ३० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेकनसं० २३ । पूर्वा पाठ है ।

१००**१६. गुटका सं०२** । पत्रसं० १३३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । श्रपूर्ण । वैष्टनसं०२७ ।

विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है।

१००२०. गुटका स० ३ । पत्रसं० ७७ । भाषा-सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेहनसं० २८ ।

विशेष--तत्वार्थ सूत्र एव पूजा घादि हैं।

१००२१. गुटका सं० ४ । पत्रस० २४ । भाषा –हिन्दी सस्कृत । के०काल × । पूर्ए । केवनसं०२६ ।

**विशेष--**पूजा संग्रह है ।

१००२२. गुटकासं० ४ । पत्रसं० १८६ से २१३ । भाषा-हिन्दी । ले०काल 🗴 । सपूर्णः । वेहनसं० स० ३१ ।

विशेष-- अध्यात्म बत्तीसी, अक्षर बावनी मादि हैं।

१००**२३. गुटकासं०६** । पत्र सं०१८२ । भाषा-हिन्दी। ले०कात 🗴 । श्रपूर्णः। बेष्टन-सं०३४ ।

विशेष—सम्बोध ग्रक्षर वावनी, धर्म पञ्चीसी तथा पर्मविकास द्यानतराय कृत हैं एवं तत्वसार भाषा है।

र १००२ स**्टब्स सं०७ । पत्र** सं० ४० से १०३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०१ ८०७ । सपूर्ता । वेटन स०३७ ।

विशेष---पूजा सप्रह है।

१००**२५. गुटका सं**० ८ । पत्रसं० २से ११४ ।भाषा-हिन्दी । ले॰काल 🗙 । पूर्णे । बेहनसं० ३८ ।

विशेष--- बस्तराम, जगराम ग्रादि के पदो का सम्रह है।

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन बढ़ा पंचायती मन्दिर डीग

१००२६. गुटका सं० १ । पत्रस० १०३ । भाषा-हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० २६ ।

**विशेष**---हिन्दी पदों का संग्रह है।

**१००२७. गुटका सं० २ ।** पत्रस० २६१ । माषा-हिन्दी-सस्कृत । से•काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० २० ।

विशेष---पूजा पाठ है।

१००२ स. गुटकासं० ३ । पत्रसं० १८० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्टनसं०२६ ।

विशेष—प्रति जीर्ण है, नाममाला, पूजा पाठ ग्रादि का सग्रह है।

१००२६. गुटका सं०४ । पत्रस०११६ ।भाषा-हिन्दी । ले॰ काल× । स्रपूर्ण । वेष्टनसं० २७ ।

विशेष-धर्म विलास मे से पद लिखे हुए हैं।

१००३०. गुटका स० ५ । पत्रस० ६० । भाषा-संस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० २८ ।

विशेष-जिन सहस्रनाम, प्रतिष्ठा सारोद्धार ब्रादि के पाठ है।

१००**३१. गुटकासं**०६ । पत्र स० २४७ । भाषा−हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । ग्र*र्*एं । वेष्टनसं०१४ ।

विशेष-वनारसी विलास, समयसार नाटक तथा पूजा पाठ ब्रादि का सग्रह है।

**१००३ २. गुटका सं०७** । पत्र सं० १२० । माषा−हिन्दी−सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०१४ ।

विशेष---पूजा पाठ हैं।

१००३ ३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १७४ । भाषा-ग्रपन्नंश-सस्कृत । ले० काल 🗴 । षपुर्गावेष्टन सं०२४ ।

विशेष -- कथा तथा पूजा पाठ सग्रह है।

# प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान, पुरानी डीग

**१००३४. गुटका स० १** । पत्रस० ७२ । स्रा० १० $\times$  ६ १ इ.स. । साथा-हिन्दी-संस्कृत । ले $\bullet$  काल  $\times$  । पर्ए बेष्टन स० १७ ।

विशेष-चौबीस तीर्थंकर पूजा तथा भक्तामर स्तीत्र मत्र सहित है।

१००३ ५. गुटका सं०२ । पत्रसं०१६६ । घ्रा० म्है ४५ है इन्छ । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं०१७७ वैचान्य मृती ११ । पूर्ती । बेहन सं०३६ ।

विशेष-श्रीपाल चरित्र भाषा (परिमल्ल) त्रेपन किया, त्रिलोकसार ग्रादि रचनाएं है।

१००३ ६. गुटकासं० ३ । पत्रस०२ ४ । फ्रा०११×७ ॄै इश्वर। भाषा~संस्कृत । ले० काल × । पूर्वा। जीर्स्य।वेष्टन सं०४४ ।

विशेष--नत्वार्थं सुत्र एवं सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

१००३ ७. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ३६ । स्रा० १० $\frac{1}{2} \times \mathbf{5}^{\frac{1}{2}}$  इन्छ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल  $\times$  । पूर्गा । वेप्टन स० ४६ ।

विशेष-पजाओं का संग्रह है।

१००३ म. गुटकासं० ४,।पत्रस० ४२ । आर० ६२ ४६ इ.च. । भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८५८ चैत्र बुदी २ ।पर्गा वेष्टनसं० ४८ ।

विशेष— लूहरी रामदास विनती ...

पदसग्रह -

१००३ ६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २४५ । घा० ६imes ५ ५ इ.ख.। भाषा हिन्दं। । ले० काल imes । पूर्वं। वेष्टन सं० ४६ ।

१००४०. गुटकासं० ७ । पत्रसं० १३४ । घा॰ ६imes६ इचा। भाषा-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्णं । बेष्टनसं० ४१ ।

बिशोष---जगतराम के पदों का सब्रह है। अन्त में भक्तामर स्तीत्र भाषा तथा पच मंगल पाठ हैं।

१००४१, गुटका सं० ६। पत्रस० ६०। घा० ७×५ इन्छ । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १६००।घनूर्यो । बेष्टनसं० ५२।

विशेष-ज्योतिव सम्बन्धी पद्य है।

१००४२, गुटका सं० ६ ।पत्र सं० ४४ । ग्रा० ७४१ इ.चा । भाषा—हिन्दी । ले०काल ४ । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० ५३ ।

चित्रोच — मतृहरि शतक तथा मन्य पाठ है लेकिन अपूर्ण है। २२ से आगे के पत्र नहीं हैं। आगे अप्रगार मजरी सवाई ज्ञापनित देव विरवित है जिससे कल १०१ पदा हैं तथा पूर्ण है।

१००**४ ३, बुटका सं०१० ।** पत्रसं०६० । प्रा०५ 🗙 ४ इ.चा । भाषा-हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्णा । वेप्टन स० ४४ ।

विशेष-गृटका नवीन है । हिन्दी पदो का सपह है ।

१००४ ४. युटकासं० ११ । पत्रस० २२ - ५४ । धा• ५×४ इ.च.। भाषा-हिन्दी । लेक्काल × । कपूर्ता। वेहनस० ५५ ।

विशेष- जैन शतक एव भक्तामर स्तोत्र आदि का संग्रह है।

१००४ ५. गुटकासं० १२ । पत्र स०१-४४ । घा० ७×५ ३ इ.च.। भाषा–संस्कृत । ले०काल × । घपुर्या। बेघन स० ५६ ।

विशेष--लक्ष्मी स्तोत्र, ऋषिमडल, जिनपजर ग्रादि स्तोत्रों का सग्रह है।

**१००४६. गुटका सं० १३ ।** पत्र स०६५ । झ्रा० ४,४४ इ.चा भाषा∸हिन्दी। ले०काल सं० १⊏२३ । पूर्णावेष्टन स०४७ ।

विशेष--चेतन कमं चरित्र (भगवतीदास) पद-जिनलाभ सूर्रि, दादाजी स्तवन, पार्थ्वनाथ स्तवन ग्रादि विभिन्न कवियो के पाठ हैं।

१००४७. गुटकासं० १४ । पत्रस० २३२ । ग्रा० ६४.५ इ.चा। भाषा⊸सस्कृत । ले०काल ४. । पूर्यो । बेष्टन स० ५८ ।

विशेष—योडज कारमा, शीन चौबीसी, योडण कारमा मङल पूजा. दशलक्षमा पूजा-सहस्रनाम ग्रादि का संग्रह है।

१००४ म. गुटका सं० १४ । पत्रस॰ ४१ । प्रा॰ ७ ४ ५ दे इखा माया-हिन्दी । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं॰ ४६ ।

विशेष--हिन्दी के विविध पाठों का संग्रह है।

१००४६. गुटका सं०१६। पत्रस०६०। प्रा०६४५ ॄंदञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ४। पूर्ण। बेष्टन स०६०।

विशेष-पच स्तोत्र, तत्वार्थ मूत्र, सिद्ध पूजा, योडशकारण तथा दशलक्षरण पूजा का सम्रह है।

**१००५०. गुटका सं० १७** । पत्रस० ४४ । ग्रा० ७ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इञ्च । भाषा ––हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६१ ।

विशेष-सामान्य हिन्दी पदी का संग्रह है।

१००५१. गुटका सं०१ मा पत्र स०१४ । ग्रा० प्र.५ इ.च । साथा-हिन्दी-संस्कृत । के० काल imes । पूर्णावेष्टन स०६२ ।

विशेष — पूजा सग्रह, रामाष्ट्रक, बारहमासा, नेमिनाय का व्याहला, संवत्सर फल, पाझा केदली पाठों का सग्रह है।

**१०५२. गुटका स०१**६। पत्र सं∘४६। घा० ७×७ इ.च.। **माया**-हिन्दी । ले० काल स**०** १८२४ । पूर्णे । बेप्टन स०६३ । १. प्राणायाम विषि × ६५ प**य** २. पदस्य घ्यान लक्षण × ७४ प**य** ३. बारह मावना —

४. दोहा पाटुड योगीन्द्रदेव

विशेष — हिन्दी ग्रर्थ सहित है। सेवाराम पाटनी ने कुम्हेर में प्रतिलिपि की थी।

१००५ दे. गुटकास० २०। पत्रसं०२० । घा० ७ ४ ५ इ.च. । भाषा–संस्कृत—हिन्दी। ले∘कालसं०१-८६ पीय सुदी ११ । पूर्ण। वेष्टन स० ६७ ।

विशेष-- मुख्यत. निम्न पाठों का सग्रह है--

भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्यं	सस्कृत
जम्बू्र्यामी प्जा		हिन्दी
प्रारगीडा गीत	man.	, ,
मगल प्रभाती	विनोदीलाल	
		n

१००४४. गुटकार्स० २१ । पत्रम० ८४ । धा० ६ ४४ ेु इ.च. भाषा⊸हिल्दी । ले∘काल सं० १७६७ पूर्णा । वेष्टन स० ६६ ।

विशेष—मुस्यत निम्न प्रकार सग्रहहै—

फुटकर सर्वया		हिन्दी
सिद्धात गुरग चौबीसी	कल्यासादास	•
कल्यारण मन्दिर भाषा	बनारमीदाम	"
बारहखडी		"
कालीकवच		"
विनती नेमिक्मार	भूघरदास	"
पद नेमिक्मार	द्व गरसीदास	,,
	22.	11

१००५५. गुटकासं० २२ । पत्र स०७६ । मा० ६३ ४४ ई इ.च. । भाषा–हिन्दी सस्कृत । से०काल × । मपूर्ण । वेष्टनस०७७ ।

विशेष— पूजा पाठ, जिनदास कृत जोगीरास, विदागहार स्तोत्र, भानुकीति कृत रवित्रत कथा (र०काल स० १६८७) क्षेत्रपाल पूजा सस्कृत एव सुमति कुमति की जयडी विनोदीलाल की है।

**१००४६. गुटकासं० २३ ।** पत्रस० २४१ । झा० ७३ ४४३ दश्व । भाषा−हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण, । वेरटन स० ७६ ।

विशेष — करीब ७८ पाठो का संग्रह है। प्रारम्भ मे ७२ सीले दी हुई हैं। मुख्य पाठ तिम्त हैं — १. प्राट्याह नाता — कमलकीर्ति । (२) घटाकरण मंत्र । (३) मगलाचरण हीरानन्द । (४) गोरख चक्कर । (४) रोटतीज कथा (६) चेतनगारी (७) सास-बहु का क्रगडा-देवाबहा । (८) सूरत की बारहक्षडी प्रादि ।

ें १००५७. गुटका सं० ४ । पत्रसं० ६० । झा० ८ 🗙 ६ हे इ.ख. । आवा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं०१८८७ साह सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं०८० ।

विशेष --गुर्गस्थान चर्चा तत्वार्थ सूत्र हिन्दी धर्य (अपूर्ण) सहित है।

पं० जयचन्द जी छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी।

१००५ म. सुटका सं० २५ । पत्र सं० १७० । मा० ७२ × ६ इश्वा भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७=५ दि० वैद्याल सुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन सं० = ५ ।

विशेष —निम्न पाठ है---

१. त्रेपन किया कौश-किशनसिंह।

ले॰काल स० १७८४ । पूर्ण ।

१६२ पत्र तक।

२. ६४ बासादन दोव-हिन्दी ।

२०. कलिकाल पंचासिका

२१. फुटकर वचनिका एवं कवित्त 🗴

X 53

83

**१००५६. गुटका सं०२६** । पत्र स०६२ । द्या०  $= \frac{1}{2} \times 5 \frac{1}{2}$  इ.ख । माया-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टन स० =६ ।

```
पत्र १५ तक। र०काल सं० १७७० फागूए। बुदी २।
 १. रस्तकरण्ड श्रावचार माचा
                               ×
                                      पत्र २ म तक। र०काल स० १७७० चैत्र बुदी म ११२ पद्य है।
 २. समाधि तत्र भाषा
                              ×
 3. रमगासार भाषा
                               ×
                                      पत्र ३५ तक। र०काल सं० १७६८
 ४. उपदेश रत्नमाला
                              x
                                      पत्र ४३ तक । र०काल स० १७०२ चैत सुदी १४
 ४. दर्शनसार
                              ×
                                      पत्र ४६ तक । र०काल स० १७७२
 ६. दर्शन शदि प्रकाश
                              ×
                                     पत्र ४६ तकः।
 ७. ग्रष्टकमंबय विद्यान
                             ×
                                     प ४६ तक।
 s. विवेक चौबीमी
                            X
                                    पत्र ६२ तक । र०काल स० १७६६ ।

 पचनमस्कार स्तोत्र भाषा

                             ×
                                    पत्र ६३ तकः।
१०. दर्शन स्त्रोत्र मावा
                          रामचस्ट
११. सुमतवादी जयाप्रक
                                    € €
१२. चौरासी ब्रासादना
                            ×
                                    £ 19
१३. बत्तीस दोष सामायिक
                            Х
१४, जिन पूजा प्रतिक्रमण
                            Х
१५. पुजा लक्षरा
                            ×
१६. कषायजय भावना
                            ×
                                   ६७-७२ तक
१ 3. वैराग्य बारहमासा
                           X
                                   હય ..
    प्रकृतोलर चौपई
१८. जयमाल
                           ×
                                   .. 30
१९. परमार्थं विशतिका
                           ×
                                   5 و
```

गुटका संबह ] 1 १०६७

**१००६०. गुटका सं० २७ ।** पत्रसं० १०६ । घा॰ ६ $^1_2$  $\times$ ४ $^1_2$  इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० २१ ।

विशेष--- नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

१००६१. गुटका सं० २८ । पत्रसं० १२ । धा० ७४५ इश्वा । भाषा −हिन्दी –सस्कृत । ले०काल ४ । पूर्णा वेष्टन सं० १३ ।

विशेष--तत्वार्थ सुत्र, पूजा पाठ सग्रह, लक्ष्मी स्तोत्र एव पदों का संग्रह है।

१००६२. गुटकासं० २.६.। पत्रसं० ७० । ग्रा० ७ × ४ है इश्व । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६० । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ६४ ।

विशेष — सेंद्वांतिक चर्चा, कृत्रिम स्रकृत्रिम चैत्य बंदना, बारह भावना, त्रेपन भात्र एवं ग्रीषिधियों केनुसक्षे हैं।

**१००६ ३. गुटका सं० ३० ।** पत्र स० २३२ । धा• ७ $^1_2 \times ^1_2$  इन्ज । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स० ६५ ।

विशेष--- निम्न पाठ हैं---

चतुविशति पूजा, भक्तासर, सहश्रनाम, राजुल पच्चीसी, ज्ञान पच्चीसी, पश्चिनाथ पूजा, धनत वर्त कया, मुवा बत्तीसी. ज्ञान पच्चीसी एवं पद (हरचन्द) हैं।

**१००६४. गुटका सं० ३१।** पत्रस० ३८। भ्रा० ६imes४ इ.चा। माया-हिन्दी। ले० काल imes। पूर्ण। वेष्टन मं $m{o}$  ६६।

विशेष---

१. रविव्रत कथा सुरेन्द्र कीर्ति र०काल सं० १७०४।

२. पद ब्रह्म कपूर प्रभुजी थांकी मूरत मनडो मोहियो ।

**१००६ ४. गुटका** सं० ३२ । पत्र स० ३२१ । मा० ६ $imes Y_2^2$  इश्व । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले॰काल imes । पूर्ण । बंदटन स०६६ ।

विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है---

तत्वार्थं सूत्र उमास्वामी । सस्कृत ।

२. भक्तामर स्तोत्र मानत्ंगः।

३. मक्तामर पूजा विश्वभूषणा। "

श्रीकाष्ठसचे मुनि राम सेनो

नदी तटाख्यो गुरु विश्वसेन ।

तत्पट्टघारी जनसौख्यकारी

विद्याविभूषो मृनिराय वभूव।

तत्पादपद्माचंनशृद्धभान्:

श्रीभूषर्गे वादिगजेन्द्रसिंह।

भट्टारकाधीश्वर सेव्यमाने

दिल्लीश्व रेगापितराजमान्यः ॥

तस्यास्ति शिष्यो वतमारबार

ज्ञानाब्यि नाम्ना जिनसेवको य।

तेनै नदघेय प्रपूर्वपूजा मक्तामरस्यात्मज विशुद्ध जैवैः ।।

इति भक्तामरस्तोत्रस्य पूजा पुन्य प्रविद्विनी ।

१००६६. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ३४६ । घा० ६ $\frac{1}{2} \times \mathbb{Y}_{\epsilon}^2$  इ.च. । माषा -हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स०१ म्हरू यैशाल सदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं०१०० ।

विशेष---निम्न संग्रह है---

त्रत विवरण । प्रतिकमण । दश भक्ति । तत्वार्थसूत्र । वृहत् प्रतिकमण । पंच स्तोत्र । गर्भ-पद्यार स्तोत्र-देवनन्दि । स्वनावली-वीरसेन । जिनसहस्रनाम-जिनसेन । रवित्रत कथा-भाऊ ।

१००६७. गुटकासं० ३४ । पत्र सं० २०० । का० ६×४ है इ.च. । भाषा—संस्कृत, हिन्दी। ले० काल × । पूर्वावेषन स०१०१।

विशेष--६० पाठो एव पदों का संग्रह है। प्रारम्भ के ४ पत्र तक पाठों की सुची है।

मुख्य पाठ ये हैं—चेतन जलडी बाई मेघश्री जलडी—कविदास । रोगापहार स्तोत्र मनराम । जलडी साहरा जुबरी वर्णन ।

कक्का-मनरामा जन्म-पत्रिका खुशालचन्द की पत्र १५७ स्वति श्री गरीश कुल देव्या प्रसादात ।

जननि जन्म सौस्याना वर्द्धनी कुलसपदा ।

पदवी पूर्वपुन्याना लिख्यते जन्म पत्रिका ।।

भ्रत गृम सवस्परिस्मन श्री नृपति विक्रमादित्य राज्यं सवन् १७५६ वर्षं लाके १६२१ प्रवर्तमाने महामांगल्यप्रदुक्तमानोत्तममाने पीयमाने लुग लुक्पको सूर्यं उत्तरायत्ये हेमकृती पृथ्यस्तियौ एकादमी सुक्रवारे वटी ४० भरणीतिस्त्र घटी था प्राप्त प्रमुद्ध का उन्तरायत्ये हेमकृती श्री असु दत्ता मध्यं जनम गीरी वात के म्रष्टी भारी विकास के साता पिता धानम्दकारी मारमा दोष विवर्षत सम्प्रे क्रकं गताल दिन २२ । भोग्यास विन दिन प्रमाण घटी २६ । राजिप्रमाण चटी २२ । महो राजि प्रमाण घटी २६ । राजिप्रमाण चटी २२ । महो राजि प्रमाण घटी २६ । मागोनीर वास्त्रव्य साह जो श्री रामचन्द बेनावा गोने तत्पृत्र विरंजीव दयाराम यहे भाषां, गृत्र जन्म मान न वर्ष न मात १२ वर्ष १२ वर्ष ६ वर्ष १३ कुर्य भवन् । कच्टवययमं करणा । काता नवस्त्र त्या वर्षत्र वहारीणी । दालिह दुन्न दाइंड मलई प्रगीपित सकल लोक विवर्धि वर्जी केसद गूला पार्यव वस लोगी ।।१।।

## प्राप्ति स्थान--दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली

१००६ ६. सृटका सं०१ । पत्रस०१४ ८ । झा०७३ ४४३ इ.चा। भाषा⊸हिन्दी–सस्कृत । ले∘काल स०१८१ । भादो सुदी ४ । पूर्णे। वेष्टनसं०२४ ।

विशेष---नित्य एवं नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है।

१००६ ८. गुटकासं०२ । पत्रस०१२४ । घा०१०imes७ $^7_2$  इत्रा भाषा-सस्कृत । के•कासimes। पूर्ण । बेष्टनसं०२६ ।

विशेष--पूजा स्तोत्र, पाठ एवं पदो का संग्रह है।

१००७०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ७८ । झा० ४३०६ ६ चा । माया –हिन्दी –संस्कृत । ले०काल × । पूर्या । बेष्टन सं० ७८ ।

विशेष-पद विनती श्रादि हैं।

१००७१. गृहका सं० ४ । पत्रसं० ७४ । प्रा० ४  $\frac{1}{5} \times 3\frac{1}{5}$  इ.ख.। माया-हिन्दी-सस्कृत । से॰कास  $\times$  । पूर्ण । बेक्टनसं० =२ ।

विशेष-जिनसेन कत सहस्रनाम तथा रूपचंद कत पंच मगल पाठ हैं।

**१००७२, गुटका स० ५** । पत्र सं० ६४ । द्या० ५ ×४ इश्वा । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले० काल × । पूर्तो । बेष्टन सं० १०६ ।

विशेष-सामान्य पूजा स्तोत्र एवं पाठ हैं।

१००७**३, गुटका सं०६**। पत्रसं० ६३। ब्रा०५×४ है इ'च। माथा–हिन्दी। ले•काला सं० १०४२ कालिक बुदी ११। पूर्ण। वेष्ट्रनसं० १०६।

विशेष---निम्न पाठ हैं---

(१) सूरसगाई--सूरदास । पद्य स० ४

(२) बारहमासा--- मुरलीदास । १२

धगहन धगम श्रपार सलीरी

यादसार्मै कासों कहैं।

एक एक जीय मे एसी झावत है

जाय यमुना मैं बँहु।। बहु यमुना जरु पायक

सीस करवत सारि हो।

पथ निहारत ए दिन बीते

कौ लगि पंथ निहारि हों।।

निहार पंथ ग्रनाथ में भई

या दुख मैं कासो कहूँ।

भनत मुरली दास जाय

यमुना में बहु ॥६॥

#### धरितम--

भनत गिरवर सून हो देवा

गति मकति कैसे पाइये।

कोटि तीरथ किये को

फल बारामासा गाइये।।

- (३) चौवनी लीला-X ।
- (४) कविरा-नागरीदास । पत्र सं॰ १२० ।

(५) पचायच्याई---नददास । पत्र सं० १२७ ।

इति श्री भागवतपुराले दशमस्कंघ राज कीडा वर्णन मो नाम पञ्चाध्याय प्रथम ग्रम्थाय पूर्णा। इसके बाद =६ पद्य ग्रीर हैं।

> भ्रय हरनी मन हरनी सुन्दर प्रेम वीसतानी। नददास कै कंठ बसो सदा मगल करनी।

सवतु १८४२ वर्षे पोथी दरवार री पोथी थी उनारी।

१००७४. गुटकासं० ७ । प्रमसं० २२४ । घा० ६४६ है इ.च.। सावा हिन्दी । के०काल स० १७६६ चैत सुदी १२ । पूर्ण । वेहन सं० १३६ ।

विशेष-धर्मविलास का संप्रह है।

१००**७५. गुटकासं**० प्राप्तसं० ४४४। ग्रा० ६×१३ इचा। माचा-हिन्दी-सम्कृतः लेक्कालसं०१८६० ज्येष्टस्टी २। पूर्णा वेष्टनसं०१४८।

विशेष -- नित्य नैमित्तिक एव मडल विधान भादि का सग्रह है।

१००७६. गुटका सं०६ । पत्रस० ११७ । झा०६ $\frac{1}{4} \times \epsilon_y^2$  इ.च. । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । क्रेक्सल स०१८४६ भादों बदी ६ । पूर्ण । बेष्टनसं०१६६ ।

विशेष---नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ स्तोत्र ग्रादि का संग्रह है।

### प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर सौगाशियों का करीनो

१००७७. गुटका सं० १ । पत्रसं० ३६ । ब्रा॰ ६ $rac{1}{2}$ × $rac{1}{2}$ दश्व । भाषा-सस्कृत । ले•काल imes । धपुर्ए। बेष्टनस॰ ७३ ।

विशेष--- भक्तामर स्तीत्र भ्रादि हैं।

१००७ स. गुरुका सं० २ । पत्रस॰ १२–१२८ । घा॰ ६ $\frac{1}{7} imes \frac{1}{7}$  हजा । माया-संस्कृत-हिन्दी । ले॰काल imes । घपूर्ए । वेष्टन सं॰ ७४ ।

विशेष-सामान्य पूजाओं का संग्रह है।

१००७६. गुटकासं० ३ । पत्रसं∘ १० से ६२ । धा० ६ × ६ इचा प्राचा-हिन्दी । क्रे•काल × । बपुर्सं। वेहन सं०७५ ।

१००८०. गुटकासं०४ । पत्रस० २४ मे ११४ । ब्रा० ६×६२, इञ्च । माया-संस्कृत-प्राकृत । से॰काल × । ब्रपूर्ण । बेकुन सं० ७६ ।

विशेष---निमित्त एव नौमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

१००**० १. गुटका सं० ५** । पत्रसं० ६ से ४४ । ग्रा० ४ <mark>२</mark> × ४ १ इक्च । आवा-हिन्दी । मे॰कास × । अपूर्ण । बेष्टन स० ७७ ।

विशेष-प्रन्तिम पृष्पिका---

इति सदैवश्वसावलिंगा की बात संपूरण ।

१०० द. गुटकासं० ६ । पत्रसं० ३ से १२६ । स्ना॰ ६ $imes^{1}$  इ.ख । सावा-हिन्दी-सस्कृत । से॰कास imes । सपूर्ण । वेष्टन स॰ ७८ ।

विशेष- प्राभी के प्रतिरिक्त लघु रिवयत कथा, राजुल पच्चीक्षी, नव संगल भीर रिवयत कथा (भूपर्स) है।

१०० द ३. गुटका सं०७ । पत्र स०११ से ८०। आर०६ हैं 💢 ६ इ.च.। भाषा—सन्कृत । ले०-काल 🗴 । घपुर्स। वेष्टन सं०७६ ।

विशेष---पुजा एव पाठों का सग्रह है।

१००**८४. गुटका सं०८ । पत्र** स०६८ से ३०६ । ग्रा०६ हुँ ४६ है इ.चा। भाषा–संस्कृत । के•काल × ।पर्यो । वेष्टन स०८०।

विशेष--सामान्य पूजा पाठ हैं।

१००**०५. गुटका सं० १ । पत्रस**० ४७ से १४**१ । आ०** ६ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{3}{2}$  इंच । माया-हिन्दी-सस्हत। कंक्काल  $\times$  । प्रयुर्ण । बेष्टन स० ०१ ।

विशेष-पुजा, स्तीत्र एव विनतियों का संग्रह है।

१००६ स्. गुटका सं० १० । पत्र सं० २२ से १४४ । प्रा० ६ $\frac{1}{2} \times \forall \frac{3}{2}$  इला । भाषा-हिन्दी से०काल स० १८४० चैत्र बुदी द । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० ६२।

१००८७. सुटका सं०११। पत्र स०४-७७। द्या॰ ५३४५ इन्छ। भाषा—सस्कृत-प्राकृत। ले॰काल ४। प्रपुर्ता। वेष्टन स०६३।

१०० म म. **पुटकासं० १२** । पत्रस० ४१ । घा० ५×६ है इ.च.। भाषा—हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण। बेष्टन सं० ५४ ।

**१००६६. गुटका सं०१३।** पत्रसं० ५१ । घा० ६×६ है इ.चा। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। त्रे०काल सं०१७६५ प्रासीज बुदी ४ । पूर्णु। **बेकुन सं०**६४ ।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है।

१. मोक्ष गास्त्र	उमास्वामी	सस्कृत	ले०काल स०
		१७६५	
२. रविवार कथा	×	हिन्दी	
३. जम्बूस्वामी कथा	पाण्डे जिनदास	"	र०काल सं०

१६४२ भादवाबुदी ५ । ले०काल सं० १८२८ ।

१००६०. गुटका सं० १४ । पत्रस० २ से ३६६ । घा० ५×६ है इ'च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । लेब्काल× । घपूर्ण । बेष्टन सं० ५७ ।

### प्राप्ति स्थान--हि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा

१००**६१. गुटका सं० १**। पत्रसं० × । माषा-हिन्दी । ले॰काल ×। पूर्णः । बेष्टनसं० ७३ । **विशेष** —निम्न पाठों का संग्रह है—- पद दीपचन्द हिन्दी

भव मोरी प्रभु सूं प्रीति लगी

धनेक कवियों के पदो का सग्रह है। रचना सुन्दर एव उत्तम है।

१००६२. गुटका सं०२ । पत्र सं० × । भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। बेष्टन म० ७२।

विशेष---निम्न पाठी का सग्रह है।

मेषकुमार गीत सम्प्रयुक्तर हिन्दी
बनना वृषि सिरम्भाय हृषंकीति ,,
सुमति कुमित सवाद विनोदीलाल ,,
पाचो गति की बेलि , (र०काल स०१६८३)

माली रासो जिनदास

१००६३ गुटकासं० ३ । पत्रस० २४२ । भाषा-हिन्दी—सस्कृत । क्षे०काल 🗴 । पूर्णः। वेष्टन सं०३ ।

विशेष—पूजापाठो कासग्रह है । राजुल पञ्चोसीतथा राजुल नेमजी का बारहसामा भी दिया है।

**१००६४. गुटका सं**०४ । पत्रस० ३० । भाषा—हिन्दी । से०काल imes । भ्रपूर्ण । बेष्टन स०७४ । **विशेष**——बनारमी विलास में से कुछ संग्रह दिया हुधा है ।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर बड़ा बीवपंथी दौना

१००**६५. गुटका सं० १**। पत्रस० १५०। म्रा० ५; ४६ इच । ले०काल ४। म्रपूर्ण । बेप्टनम० १३०।

चिरोच—सामान्य पूजा पाठों का सम्रहः। गुटका भीगा होने से प्रक्षर मिट गये है इसलिए स्ररूर्धः तरहसे पढ़ने में नहीं प्रासकता है।

**१००६६. गुटका सं०२ ।** घ्रा॰ ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इन्छ । मापा-हिन्दी सम्बन्त । ले० काल  $\times$  । घपूर्ण । बेबून स॰१३१ ।

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर तेरहर्णथी दौसा

**१००६७. गुटका सं०१** । पत्र सं०१ न४ । या० १२ ४ ७३ माया−हिन्दी- प्राकृत । ने०काल स०१६६६ फागुरा बुदी ⊏ । पूर्णे । बेष्टन सं०१३६ ।

विशेष-- निम्न पाठो सग्रह है --

ज्ञान पञ्चीसी, गवमगल, इथ्य सम्रह, चेपन किया, डाइसं, गाया, पात्रभेद, यद् पाहुड गाया, उत्पत्ति महादेव नारायण (हिन्दी) श्रुत ज्ञान के भेद, खियालीसठाणु, यद् इथ्यभेद, समयसार, वर्गनसार सुभाषिताविल, कर्मश्रकृति, गोम्मटसार गाया । १००६ **=. गुटकासं० १ ।** पत्रस०२४६ । झा०८×६ <sup>१</sup>, इ.च.। शाषा-हिन्दी-संस्कृत । ×ाले०काल × । क्यपूर्ण । बेट्टन स०१४० ।

विशेष-पृत्राधों के संग्रह के धतिरिक्त तत्वार्धमूत्र परमान्य प्रकाश, इष्ट ख्रतीसी, शीलरास परमानन्द स्तोत्र, खोगीरासो, सञ्जनिक्तवल्सभ तथा सुष्यय दोहा, ग्रादि का सग्रह है। दो गुटकों को एक मे भी रखा है।

१००६**६. गुटकासं० १४** । पत्रसं० ३ से १०⊏ । ब्रा० ८ ४६ है इन्छ । माषा–सस्कृत । से०काल 🗶 । ब्रपूर्ण । बेष्टन सं० ८६ ।

विशेष-पंच कल्यास्तक पूजा एवं सामायिक पाठ हैं।

**१०१००. गुटका सं० ४** । पत्रमं० २२५ । द्या० १०×६ इ-ख । भाषा∽प्राकृत । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनस**० १३**द ।

विशेष---गुगस्थान चर्चा है । गुटका जीगां है ।

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर मादवा (राज॰)

१०१०**१. गुटका सं०१ ।** पत्रस० १४६ । प्रा०७ $\frac{1}{6}$  $\times$ ७ $\frac{1}{6}$  टचा । साम्या-हिन्दी । ले० काल स०१७५६ पोप बुटी ६ । पूर्ण । बेहन स०१३२ ।

विशेष--निम्न पाठों का सग्रह है--

<b>म</b> मयमार	वनासरीदास	हिन्दी
मुदामा चरित्र		,,
सज्ञाप्रक्रिया		सस्कृत

१०१०२. गुटका सं० २ । पत्रसं० २४८ । घा० ७ × ७ हे इन्दा भाषा -हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । बेष्ट्रसर० १३० ।

विशेष---मूरुयतः निम्न पाठो का संग्रह है---

समाधितन्त्र भाषा -- पर्वत धर्माचीं इथ्य संग्रह भाषा -- (ने•काल सं० १७०० भाषाढ सदी १५ ।

जोबनेर मे प्रतिलिपि हुई यो ।

१०१०३. गुटका सं० ३ । पत्रस॰ 🗴 ।वेष्ट्रनस॰ १३१।

विषय-भीग जाने के कारण सभी शक्षर धूल गये हैं।

१०१०४, गृहका स० ४। भाषा-हिन्दी-। ले॰ काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० १३३ ।

विशेष- फटकर पद्यों में धर्मदास कृत धर्मीपदेश श्रावकाचार है।

१०१०४. गुटकासं०४ । पत्रस०६४ । घा० ⊏४६ इचा। भाषा-हिन्दी–संस्कृत । ले० काल ४ । पूर्या। बेप्टन स०४१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन सन्दिर घादिनाय स्वामी मालपुरा।

### प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन पंचायती मन्दिर मस्तपूर (धवशिष्ट)

१०१०६. गृटका सं० १। पत्रसं० १८८। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × ।पूर्ण । बैप्रन सं० २०३।

विशेष-- सामान्य पाठी का संग्रह है।

१०१०७. गुटका सं० २ । पत्रस० ६४ । भाषा-हिन्दी । ले॰काल × । प्रां । वेष्टन स॰ २०४।

१०१० म. गृटका सं० ३ । पत्र स० १३४ । भाषा - हिन्दी - सस्कृत । ले०काल सं० १६५० भादवा सदी २ । पूर्णं। वेष्टन स० २०८ ।

विशेष--कोई उल्लेखनीय पाठ नही है।

१०१०६. गुटका सं०४। पत्रस० १४८ । भाषा-हिन्दी-सम्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २०६ ।

१०११०. गृटका सं० ५ । पत्र स॰ ६३-६४ । मापा-हिन्दी-सस्कृत । ले॰काल × । श्रपूर्ण । वेष्ट्रनसं० १६४।

१०११, गुटका स० ६ । पत्रस० ३४ । भाषा-संस्कृत । लेश्काल स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६४।

बिशेष---तत्वार्थं मत्र मक्तामर स्तोत्र आदि पाठ है।

१०११२, गुटका स० ७ । पत्र स० ८० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १६२१पीप सुदी ११ । पूर्ग । बेष्टन स० २००।

विशेष - मुतर्क वर्णन, मृत्यु महोत्मव, गुर्णस्थान वर्णन, प्रतो का वर्णन, प्रथंप्रकाणिका से लिया गया है। ग्रादित्यवार की कथा भी है।

१०११३. गटका सं० ६। पत्र सं० १४१ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । से०काल × । पूर्ण । वेप्रन स० २११।

विशेष-सम्यक्त के ६७ भेद, निर्वाण काण्ड, भक्तामर स्तीत्र सटीक (हर्पकीति) नवमंगल, राजुल पर्चीसी (विनोदीलाल) सरत की ब्रठारह नाता, मोक्ष पंडी, पद संब्रह है।

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

१०११४. गृटका सं०१। पत्रसं० ७३। आ० ७×४ इथा। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २२१।

विशेष---निम्न पाठो का सप्रह है---

- १. पच बधावा (हर्षकीति) भाषा हिन्दी
- २. ग्रादन(थ मगल (रूपचन्द)
- ३. खण्डेलवाल जाति उत्पत्ति
- ४. सरस्वती पूजा
- ५. कक्का मनराम \*
- ६. पद भलो मन भ्रमरा भाई

```
१०११पू. सुटका सं० २ । पत्रसं० ६-१०३ । घा०६ रे×६ रे इन्छ । माषा-हिन्दी । ले० काल
× । पर्शा वेष्ट्रन सं० २२२ ।
       विशेष--मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है--
       १. जिनस्तवन--गरासागर
                                                                                हिन्दी
       २. वहा कक्का ।
       ३. बारहमासा---खेतसी ।
       ४. राजुल पञ्चीसी --विनोदीलाल-लालचन्द ।
       ४. विनती--दीपचन्द ।
       ६. पद-हर्षकीति
       ७. शीलरय-शभवन्द (१५ पद्य)।
       द. इटोई गीत ।

 पद∼रूपचन्द ।

      १०. विनती-कनककीति ।
      ११. मक्तामर स्तोत्र।
                                                                              सस्कत
      १२. छोटा मंगल--- अपचन्द ।
                                                                               हिन्दी
     १३. नेमिनाथ की लहरि
     १४. पद-मन्दर ।
      १४. करम घटा--कनककीर्त ।
      १६. पद-जीवां ते तो नर भव बादि गमायो-कनककीर्ति ।
     १७. सबोध प'बासिका-जानतराय ।
     १८. धारती संग्रह ।
      १६. पद-भघर, द्यानतराय, भागचन्द ।
     २०. पद---मति चेतन खेली-फागरण हो ।
               भहो तुम चेतन-जगजीवन ।
               जिनराज वरगा मन .....। भूधर ।
     २१. चौबीम तीर्थंकर जैमाल-विनोदीलाल ।
                                                                               हिन्दी
     २२. निर्वाण काण्ड ( भैं य्या भगवतीदास )
     २३. बारह-धनप्रेक्षा।
     २४. बारह-भावना ।
     २४. प्रासीका गीत ।
     २६ सं०१८७३ की सीताराम जी की, सं०१७६४ की फतेराम की, सं०१८०३ की बाई लुश-
          माला की-शादि-जन्म-पत्रियां भी हैं।
```

मृति मायाराम ने दौसा में चि॰ दीपचन्द की पुस्तक से प्रति की थी।

बिन्दी

१०११६. गुटकासं० ३ । पत्र सं० १४० । धा० १×६ दृै इला। भाषा–हिन्दी । ले∘काल आः,। पूर्ण। बेष्टन सं०२२३ ।

#### विशेष -- निम्न समह है।

१. पद---मनराम

२. मक्तामर भाषा—हेमराज

३. नाटक समयसार---बनारसीदास "

४. नेमीश्वर रास-- ब्र॰ रायमल्ल सं० १६१५

५. श्रीपाल स्नुति

६. चितामिंग पार्श्वनाथ ७. पंचमगति वेलि—हर्षकीति

१०**१९७. गुटका सं० ४।** पत्रस० १४१ । घा० ७ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । से०कास × । पूर्वा । बेब्रनसं० २२४ ।

### विशेष---निम्न प्रकार संग्रह है---

१ सीता चरित्र— रामचन्द्र । पत्र स०११६ तक हिन्दी पद्य । र०काल स०१७१३ । ले०काल स०१६४१ ।

मोतीरास ग्रजमेरा मौजाद के ने सवाई जयपुर में महाराज प्रतापसिंह के शासन में लिखा था।

२. जम्बूस्वामी कथा—पाण्डे जिनदास । र०काल सं०१६४२ । **ले∘का**ल स०१⊂४५ । सं०१९६६ मे लक्कर के मन्दिर में चढायाथा।

१०**११ स. गुटकासं० ५.४** पत्र स० २६७ । झा० ६×७ इथा । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । झपूर्सा । वेप्टन सं० २२४ ।

### विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है--

- १. जिन सहस्रनाम भाषा
- २. सिन्दूर प्रकरण
- ३. नाटक समवसार---माषा---हिन्दी।
- ४. स्फट दोहा---भाषा हिन्दी ।

७१ दोह

१०११६. गृटकासं० ६ । पत्र स॰ १२ । झा॰ ६ $\frac{1}{4}$   $\times$   $\frac{1}{4}$  इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल  $\times$  । स्रपूर्ण । लेपून सं० २२६ ।

विशेष-पड़ी पहाड़े तथा सीधावर्ण समाना बादि पाठी का संग्रह है ।

१०१२०. गुटकासं० ७ । पत्र सं० १६१ । घा० ७ 🗙 ५ हे इच्छा भाषा 🗶 । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण। बेष्टनस० २२७ ।

विशेष--- मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है

पट्टावली-वलान्कार गरग गुर्वावली है।

पडिकस्मण, सामयिक, मक्ति पाठ, पश्च स्तोत्र, बन्देशान जयमाल, यक्तोषर रास—जिल्हास, माकात पंचमी कथा-बहा जिनदात, प्रठाईस मूल गुण रास—जिल्हास, पाणी गालला रास-क० जिनदात । प्रति प्राचीन है।

**१०१२ १. गुटका सं**० का पत्र स०२७ । धा० क $\frac{1}{4}$   $\times$  १ हे दशाः भाषा-हिन्दी। ले० काल भपूर्णं। बेष्टन सं०२२ क

विशेष--नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

**१०१२२, गुटका सं० ६ ।** पत्रसं० १४६ । घा० १० ×६ इञ्च । भाषा⊸सस्कृत । **ले∙काल** × । घपुर्यो । बेकन सं० २२६ ।

विशेष--विशेषतः पूजा पाठी का सम्रह है।

पद---जिन बादल चढि भागो.

भया भ्रपराध क्या किया--विजय कीर्ति

समिक नर जीवन थोरो-- रूपचन्द । जगतराम ग्रादि के पद भी हैं।

पूजा सग्रह, सात तत्व, ११ प्रतिमा विचार-त्रिलोक चन्द्र-हिन्दी (पद्य)

पात्रवंपुराग्ग--भूघरदास ।

१०१२३. गुटका सं० १० । पत्र स० ३४६ । घा० ७×५ इञ्च । माया–हिन्दी । ले० काल स० १६६६ । घपूर्ण । वेप्टन स० २३० ।

विशेष-मुख्यत निम्न पाठी का सग्रह है-

पडिकोराा, श्रृत स्कन्य-- बहा हेम, बक्ति पाठ सथह, पट्टावलि, (मूल सघ) पडित जयमाल, जसो-घर जयमाल, मुदंसरा की जयमाल, फटकर जयमाल।

१०१२ ४. गुटकासं०११ । पत्रस०१४३ । घा०५२ ४ ४ इ॰व । माषा−िवन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण । बेहन स० ७७७ ।

विशेष---मस्थतः निम्न कवियों के पदों का संग्रह है---

किशन गुलाब, हरवचन्द्र, जगतराम, राज, नवल जोघा, प्रमाती लालचन्द विनोदी लाल, रूपचन्द्र, सुरेन्द्रकीर्ति, नित्य पूजन, मंगल, जगतराम । नित्य पूजन भी है ।

सम्मेदशिखर पच्चीसी-सेमकरण-र०काल स० १८३६

रविवार कया — माऊ कवि

भक्तामर भाषा-हेमराज

सभी पद धनेक राग रागिनियों में है।

**१०१२ ५. गुटका सं० १२ ।** पत्र सं० ६६ । झा० ६ × ४ <mark>५ इ.च. । भाषा—हिन्दी ।</mark> ले० काल  $\times$  । झपुर्सा । बेप्टन स० ७७६ ।

विशेष--- नित्य पाठ एव स्तोत्रों के अतिरिक्त कुछ मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं---

स्तवन---ज्ञानभूपरा पद---भानकीति

```
पद—पं॰ नायू हिन्दी
पद—पनोहर ",
पद—जिनहरव ',
पद—विमलप्रम
बारहमासा की जिनती—पाँडे राज मुबन मृष्एा— ",
पर—चन्द्रकीर्ति ",
धारती संग्रह ",
```

१०१२६ गुटकासं०१३ । पत्रसं०६६ । सा० $-\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{6}$  इ.खा । साया-हिन्दी । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं० ७७६ । गुटका प्राचीन है ।

```
विशेष — मुनीश्वर जयमाल — ज जिएादास हिन्दी
नन्दीश्वर जयमाल — सुमतिसागर हिन्दी
चतुर्विजाति तीर्थेकर क्यमाल हिन्दी
गुरु स्तवन — नरेन्द्र कीर्ति —
सामयिक पाठ संस्कृत
सहस्रताम — प्रामाघर संस्कृत
स्तरम निमित्तक पूजा संस्कृत
```

**१०१२७. गुटका सं० १४** । पत्रसं॰ २१ । घा० दimes६ इच्च । आषा~हिल्दी । ले० काल imes । पूर्णे । बेष्टन सं० ७६० ।

विशेष---निम्न सग्रह है---

पाश्वंनाथ स्तोत्र

द्यादित्यवार कथा (द्यपभ्रंम)

मानवावनी-मनोहर (इसका नाम संबोधन बावनी भी है)

सर्वया बावनी --मन्ता साह

बावनी---ह्रंगरसी

१०१२ ८. गृटका सं० १५ । पत्र सं० १८४ । ग्रा॰ ६imes ५ ई. इ.च । भाषा-हिन्दी । ले॰ काल imes । पूर्वो । बेहनसं॰ ७८१ ।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है---

सामायिक पाठ

भक्ति पाठ

तत्वार्थं सूत्र---भादि का संग्रह है।

परित, १३ पच हैं।

```
× १ पूर्णं। वेष्ट्रन स० ७८२ ।
         विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है---
         मदन जुज्ज-- वृचराज--र०काल १५८६।
                                                                         हिन्दी
         मान बाबनी--मनोहर
         हनुमान कथा---व्र० रायमक्ष र०काल १६१६।
         टहाना गीत
         दशसंसरण जयभाल
         देवपजा, गुरु पजा--शास्त्र पुजा
         सिद्ध पुत्रा
         सोलह कारए। पूजा
         कलिकंड पजा
         चितामस्यि पूजा जयमाल
        नेमीश्वर पुजा
         शातिचक पूजा
         गराधर बलय पुजा
         सरस्वती पूजा
         शास्त्र पूजा
         गुरु पूजा
         १०१३०. गुटका सं० १७ । पत्र स० ४२ । झा० ६३ x ४३ इ-स । बेष्टन स० ७८३ ।
         विशेष - मानमजरी-नन्ददास । से काल सं ० १८१६ दः जीवनराज पांड्या का ।
        इसके ग्रागे भीषधियों के नस्त्ते तथा बनारसीदास कृत सिन्दर प्रकरण है।
         १०१३१. गृटका सं० १८ । पत्रसं० १०२ । मा० ६×४३ इचा । मावा---हिन्दी-सस्कत ।
वेष्ट्रन सं० ७८४।
         विशेष---नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।
         १०१३२. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १६-६६ । घा० ६×४% इन्ह । बेष्ट्रनसं० ७८५ ।
        राजुल पच्चीसी
पंच संगल
                                                                        रूपचन्द
पूजा एवं स्तीत्र
        १०१३३. गूटका सं० २०। पत्र सं० ४-६७। भाषा-हिन्दी-संग्रह । बेष्ट्रन सं० ७०६ ।
        बचाई---
```

बिशेष--पद-सर्वसूख हरीकिशन, सेवग, जगजीवन, रामचन्द नवल, नेमकीति, द्यानत, ।कर्म-

१०१२६. गटका सं० १६। पत्र सं० १७० । घा० ६×६ इन्छ । मावा-हिन्दी । ले•काल

```
१०१३४. गृहका सं०२१। पत्रसः १२६। ग्रा०४×६ ५ सः । भाषा-हिन्दी-संब्रहः।
वेष्टनहा० ७८७ ।
        विशेष--- नित्य पाठ संग्रह एवं विनती सादि है--
कल्यारा मन्दिर भाषा
नेमजी की विनती
        १०१३५. गृटका स० २२ । पत्र स० ६६ । घा० ६३ × ४५ इन्छ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत ।
वेषत सं ० ७८८ ।
कोकशास्त्र
                                     धानस्य
                                                                            मपुर्श
        १०१३६. गटका सं० २३ । पत्र स० १६ । धा०६३×४३ इश्वा । मापा-हिन्दी।
वेष्ट्रतस्र ० ५८६।
       विशेष-पजा सम्रह है।
        १०१३७. गुटका सं० २४ । पत्रस० ७४ । झा०६×४ इवा। बेष्ट्रनसं० ७६० ।
        विशेष--निम्न पाठो का सग्रहहै--
        १. रविवार कथा
        २. जोगीरासा
                                                                    जिगादास
       3 जान जकरी
                                                                    जिनदास
       ४. लपदेश वेलि
                                                                    प०गोविन्द
                       पडित गोध्यद प्रचल महोछव उपदेशी बेलीसार ।
                       माधमं रुचि ब्रह्म हेत भगी कीथी जासि ने भवपार ॥
                                      ६ बाहबलि वेलि
       ५. जिन गेह पूजा जयमाल
                                                                   शान्तिदास
       ७. पद दहा
                                         राजपाल

 तीर्थकर माता-पिता नाम वर्णन हेमल

                                                           ३० पद, २०काल स० १५४८
       €. कवि परिचय—
                       ह मितहीन श्रयानी प्रक्षिर कानी जोडि ।
                       जो यह पढड पढावड भविजन लावड खोडि ।।
                       कवितासर कहायो नारी कवी गरु पन ।
                       कानो मानु न जानो पद्रहमय श्रहताला ।
                       बरसा सुगति मुबाला गीत् नो धसराला ।।
                       वस्त डारनी रूमप सोखा भलिहड गाऊ।
                       गोल पूर्व महाजन हेमलू हड तम् नाउ ॥
                      तिसकी माता देल्हा पिता नाउ जिनदास ।
                      जो यह कावि पढ स्यो कञ्च पुन्य को ध्राज् ।।
```

१०. मुक्तावली गीत ११. प्राराधना प्रतिबोध सार दिगम्बर १२. राम सीता गीत-ब्रह्म श्री वर्द्धन १३. द्वादशानु प्रेका∽भवधु १४. सरस्वती स्तुति-ज्ञानमूषर्ग-हिन्दी

१५ कलिक हपुजा १६. मांगीत् गी गीत ग्रभयचन्द सूरि हिन्दी ४४ पदा १७. जब कमार गीत ४४ पद्य १८ रोहिसी गीत श्रतसागर १०१३४. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ४-६८ । श्रा० ६×६३ इन्छ । वेष्ट्रन स० ७६१ । १. शतक संबत्सरी-विशोध — प्रारम्म के ३ पत्र नहीं है। स॰ १७०० से १७६६ तक १०० वर्ष का वर्षफल दिया गया है। महात्मा भवानीदास ने लवाए। मे प्रतिलिपि की । प्रशस्ति निम्न प्रकार है-स० १७८५ वर्षे शाके १६४० प्रवर्तमाने मिति भ्रषाढ मुदी ६ बार गुरुवासरे सपूर्ण दिल्ली तत्वतपति साह भी महैमदसाहि । भ्रांबेर नगर महाराजा श्री सवाई जयसिंहजी लवारा ग्रामे महाराजाधिराज श्री वाका बहादर श्री करांदरामजी राजवालीं स्वा २. चितोड की गजल--कवि सेनान हिन्दी र०काल स १७४८ प्रारम्भ के चार पत्र नहीं हैं। खरतर जनी कवि खेताक ग्रास्त्रै भाजस एताक । सवत् सतरामै भ्रडताल, श्रावरा मगिसर माल ।। वदि पाल बारमी ते रीक कीन्ही गजल पढियो ठीक। कवि ने ४६ पद्यों में जिल्ली इगढ़ का वर्णन किया है। प्रारंभ के ३७ पद्य नहीं है। रचनाएं ऐतिहासिक है। ३. शकर स्तोत्र शकराचार्य सस्कत ४, कर्म विपाक स्रयशिव धपरां ग्रस्तिम २५ पत्र संस्कृत में हैं। १०१३६. गृटका सं० २६ । पत्रसं० ४१-१२८ । ग्रा० ६×५ इश्व । माषा-हिन्दी । वेट्टन 1 F30 OF १, मनोरथ माला साह ग्रचल २. जिन धमाल ...... 3. घर्म रासा ४. संबोध यचासिका प्राकृत ४. समध्रगीत मनोहर ६, जकडी रूपचन्द ब्रह्मदीप, देवसुन्दर, कबीरदास, बील्हौ, ७. पद ८. धर्मतत्व सर्वया सुन्दर १. बट्नेश्या वर्णन (संस्कृत) १०. ढ़ाड्सी गाथा 9.8 बीस विरहमान गाथा

१०१४०. गुटका सं० २७ । पत्रसं० २-२३ । आ० ७ 🗵 इला । भाषा-हिन्दी । सपूर्णं । बेष्टन सं० ७६३ ।

विशेष--गुटका प्राचीन है। मोज चरित्र हैपर लेखक का नाम नहीं है) इसमें रतनसेन सौर पद्मावती की भी कवा है।

१०१४**१. गुटका सं० २**६ । पत्रसं० ४-२४४ । द्या॰ ६ $\frac{1}{4}$  $\times$  ५६ च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । कपूर्त । बेहन सं० ७६४ ।

विशेष--- मुख्यतः नित्य नैमित्तिक पाठ पूजा का संग्रह है । पत्र खुले हुए हैं।

१०१४२, गुटकासं० २६ । पत्रसं० १५-११८ । धा० ४ x ४ इचा । भाषा-हिन्दी । सपूर्ण । वेष्टमसं० ७६४ ।

विशेष-भूषरदास, द्यानतराय व बुधजन भादि कवियों के पदों का संग्रह है।

१०१४ हे. युटका सं० ३० । पत्र सं० ६ । ग्रा० ६ $\times$  ४ हे इन्छ । भाषा-सस्हत । ले० काल स०१८४६ । पूर्ण । बेष्टन स० ७६६ ।

विशेष—स्तरमा स्तोत्र, शान्ति स्तोत्र सादि । देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य प० नोनदराम ने किशनपुरा में प्रतिसिपि की थी ।

१०१४४. गुटका सं० ३१। पत्रसं०१६ । मा॰ २३  $\times$  ४३ दवा। भाषा-हिन्दी सस्कृत। पूर्ण। वेष्टन स० ७६७।

विशेष--- नित्य पाठ करने योग्य स्तोत्र पूजा एवं पाठों का संबद्ध है।

**१०१: ४. गुटका सं० ३२ । पत्रस०** ७८ । मा० ४×४ इ.च । भाषा— हिन्दी-संस्कृत । पूर्णः। बेष्टनस० ७६८ ।

विशेष — इसमें कडुवाहा राजाम्रो की वणावली है महाराजा ईमरीसिंह जी तक १८७ पीढ़ी गिनाई है। मागे वजावली की पूरी विगत भी दी है।

**१०१४६. गृटका सं० ३३** । पत्रस० ३१ । म्रा० प×६२<sup>१</sup> । भाषा─हिन्दी−सस्कृत । पूर्ण । वेष्टन म० ७६६ ।

विशेष---नित्य पूजा पाठो का सम्रह है।

१०१४७. गुटकासं० ३४ । पत्र स.० ४८ । धा० ४२ ्४४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्णं। बेस्टन स० ६००।

विशेष-- भौषिवयों के नुस्त्वे है तथा कुछ पद भी हैं।

१०१४ द. गुटका सं० ३५ । पत्रस० ७० । घा० ५३ ×४ इ.च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्णे । वेष्ट्रनस० ८०१ ।

विशेष--पद स्तीत्र एव प्रन्य पाठों का सग्रह हैं । गरोश स्तीत्र (१७६५ का लिपिकाल)

१०१४६. गुटका स० ३६ । पत्रस० २०-६२ । आ० ६ $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  इन्छ । साबा-संस्कृत-हिन्दी । पूर्ण । बेहन सं० ५०२ ।

१. मुनीश्वरों की जयमाल

२. पंचम गति वेलि हिन्दी हर्षकीति **र०कास सं०१**६८३ ३. पद संब्रह **१०१५०. गुटकासं०३७**। पत्र सं०६२ । धा० ४×४<sub>१</sub> इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण । बेष्टन सं०६०३।

- १. पद संग्रह २ पूजा पाठ सग्रह
- ३. शनिश्वर की कथा-विकम ने काल १८१६
- ४. सर्वं स्तृति-हिन्दी। ५१ पद्य। ले काल १८१६

विशेष-हीरानन्द सीयाशी ने प्रतिलिप की थी।

- ४. नवकार मंत्र--- लालचन्द---- ले० काल १८१७
- ६. सुरज जी की रसोई ७ खौपई द कवित
- E. संज्ञाय १० पद

१०१**५१. गुटका सं**० ३६ । पत्रस० ४१-६६ । धा॰ ६ $^1_7 \times 5^1_7$  इन्छ । आया-हिन्दी । पूर्णे । बेच्टन सं० ६०४ ।

विशेष--नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

१०१५२. गुटका सं० ३६। पत्रसं० २८। घा० ५ $\frac{1}{4}$  $\times$ ६ $\frac{5}{4}$  इचा। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। पूर्णं। वेष्टन सं० ५०५।

विशेष--वाल सहेली शुक्रवार की तरफ से चढाई गई नित्य नियम पूजा की प्रति सं० १९७८

१०१४३. गुटका सं ४०। चतुर्विगतिपुजा—जिनेश्वरदास । पत्रसं० द७। आ० ६×७ इवा । माया-हिन्दी । ले॰काल स० १६४६ । पूर्ण । लिपिकाल १६६१ बिष्टन सं० ८०६।

विशेष-(जिनेश्वरदास मुजानगढ के थे।)

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर)

**१०१४४. गुटका सं० १**। पत्रसं० मन । सा**० ६** $\frac{1}{4}$  × ५ $\frac{1}{4}$  इन्छ । भाषा-हिन्दी । से०काल  $\times$  । पूर्ण ।

१. पद संग्रह	×	पत्र १–४
२. विनती (महो जगत गुरु)	भूषरदास	पत्र ४५
३. पद संग्रह		पत्र ४-१०
४. सहेल्यो पद	सुन्दरदास	पत्र १०-११
५. पद संग्रह		यम १२६२
६. स्वप्न बलीसी	<b>मगौतीदास</b>	पत्र ६२-६४

विशेष---३४ वस है।

७. पद संग्रह --- पत्र ६६-८८

विशेष — विभिन्न कवियों के पद हैं। पदों का सच्छा संग्रह है। पदों के साथ राग रागिनियों का नाम भी विद्या है।

```
१०१४४, गुटका सं० २ । पत्रसं० ११२ । ग्रा० ५३ ×४३ इन्ह । माया हिन्दी । ने० काल
 ×। पर्रा
         विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है---
                                                                १ वर्ध १ ज्या सरकार श्राप्त
 १. जैन शतक
                                      भघरदास
 २. कवित्व छप्पय
                                                     तिन्दी
                                                                 पत्र २०-३७
                                        ×
 ३. विषापहार स्तोत्र
                                                                  पत्र ३८-४२
                                     ग्रचलकी ति
 ४. पुजा पाठ
                                                                  87-88
 ५. कमलामती का सिज्भाय
                                                                 ¥ २-× ६
                                                   ३२ पद्य हैं। कथा है।
 ६. चौबीस दंडक
                                     दे.लतराध
                                                      हिन्दी
                                                                   X9-53
 ७. सिखरजी की चौपई
                                     केशरीसिह
                                                      हिन्दी
                                                                   88-EE
                                                      ४५ पद्य है।

 पकसौ अप्रोत्तर नाम

                                                      हिन्दी
                                                                   90-00
 ६. स्तुति चानतराय
                                                      हिन्दी
                                                                   ७२-७३
१०. पाइवंनाथ स्तोत्र
                                                     हिन्दी
                                    शानत राय
                                                                    801-Ee
११. नेमिनाथ के १० मव
                                       ×
                                                                    94-99
                                                       ٠.
१२. रिखमदेव जी लावगी
                                    दीपविजय
                                                                    52-010
          ६२ पद्य है। र० काल मं० १८७४ फागून मूदी १३।
          विशेष -- उदयपर के भीवसिंह के शासन काल में लिखा था।
१३. पद सग्रह
                                                    हिन्दी
                                       ×
                                                                   पत्र ६४-१०
१४. सबैय्या
                                    मनोहर
                                                                   33-83
१५. प्रतिमा बहोत्तरी
                                                    हिस्दी
                                   द्यानतराय
                                                                   86-804
 १६. नेमिनाथ का बारहमासा
                                  विनोदीलाल
                                                                   905-887
          १०१४७. गुटका सं० ३ । पत्रस० १८३ । घा० ७ ४ ४ इश्व । भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ ।
  पुर्गा विक्रनसं० ।
          १. पचमगल-
                                                     हिस्ती
                                     रूपचन्द
                                                                  पत्र १-१४
          २. बीम विरहमान पूजा
                                                                  पत्र १४-२१
          ३. राजुल पच्चीसी
                                                                  पत्र २२-३१
          ४. द्याकाण पचमी कथा
                                      ब॰ जान सागर
                                                                  पत्र ३१-४३
          ५. नेमिनाथ बारहमासा
                                     विनोदीलाल
```

७. निर्वाग पूजा 97 US-50 प. निर्वास काण्ड पत्र ६०-६३ देव पुजा विधान पत्र ५३-१०८ १०. पद सम्रह पत्र १०६-१८३ विशेष -- विभिन्न कवियों के पद है। लिपि विकृत है इसलिये अपाठ्य है।

माऊ कवि

६. ग्रादित्यवार कथा

पत्र ४४-५२

पण १३-७६

**१०१५ ज. गुटका सं० ४** । पत्र सं० १२२ ज्ञान श्र $\frac{1}{2}$  प्र $\frac{1}{2}$  हल्ब । भाषा – हिन्दी । ले०काल सं० १९१७ केठ बुदी २ । पूर्ण ।

विशेष---इसमें ज्योतिष, ब्रायुर्वेदिक एवं मंत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य का उत्तम संबह है। लिपि वारीक है लेकिन स्पष्ट एवं सुपाट्य है।

- पं॰ जीवनराम ने फतेहपुर मे प्रतिर्लिप की थी।
- १. नाडी परीक्षा---× । संस्कृत । पत्र १ घपर्ण
- २. गृह प्रवेश प्रकरण---× । हिन्दी । पत्र २ अपूर्ण
- ३. ग्रायुर्वेदिक नुसमे × । हिन्दी । पत्र ३-५
- ४. नेत्र रोग की दवा--× । हिन्दी । पत्र ६-=
- ४. सारगी सं ० ६४ ६६ की --- × । हिन्दी । = १२
- ६. हक्कमैं कला--× । संस्कृत । १३-१४
- ७. सारसी स० १७८२ से १८१२ तक संस्कृत । १४-२१
- द निषेक---× । संस्कृत । २२ २४
- €. निषेकोदाहरमा--× । हिन्दी गद्य । २४-३४
- १०. माम प्रवेण सारगी, पत्र ३५-५२।
- ११. ग्रहमा बर्मन शक सबत् १७६२ से १८२१ तक पत्र ४१-६२।
- १२ १८ प्रकार की लिपियों

के नाम······· हम निषि, भूतनिषि, यशनिषि, राक्षस लिपि, उड्डी लिपि, पावनी लिपि, मालवी निषि, नागरी निषि, लाटी निषि, पारसी निषि, ग्रनिमित्त लिपि, चारासी, मौलवी, देशाविशेष ।

इनके ब्रतिरिक्त—लाटो, चोटो, माहसी, कानडी, गुजरी, सोरटी, मरहटी, कांकराी, लुराससी, मागबी, सिहली, हाडी, कीरी, हस्मीरी, परतीय, मसी, मालबी, महायोबी ब्रीर नाम निनाय हैं।

- १३. पुरुष की ७२ कलाये, स्त्री की ६४ कला, बत्तादि भेद (हिन्दी) नसक्षे—६४ पत्र तक
- १४. सारिसी स० १८७५ शक सबत् १७४० से १६२५ तक १६५ तक
- १५. भायुर्वेदिक नसले हिन्दी-पत्र १६६-२०६ तक एव भ्रानेको प्रकार की विधिया।
- १६. विभिन्न ग्रंथों से पत्र २०७-२४७ हिन्दी में।
- १७. ग्रहसिद्ध क्लोक-महादेव । संस्कृत । २४६-२४६
- १८. उपकरसानि एवं घटिका वर्सन-मांकों में । २५०-३५५
- १ ह. गोरखनाथ का जोग—× । हिन्दी । ३४६-३७७
- २१. दिनमान एवं लग्न भ्रादि फल भ्रांकों में । ३८३ ४२६
- २२. लग्न फल ग्रादि── × । संस्कृत । ४३०-५⊏२
- २३. ज्योतिष सार संग्रह—× । संस्कृत । ४०२-६१०

### २४. गिरवरानन्द--- 🗙 । संस्कृत । वच ६१६-६७६

### नै॰काल सं॰ १८१४ मंगसिर बुदी १२।

### विशेष--- ५० जीवसाराम ने चूक में प्रतिलिपि की यी।

२४. तिथिसारगी---लक्ष्मीचंद्र । संस्कृत । ६८०-६१६

र०काल सं० १७६०।

# विशेष--ये जयचद सूरि के शिष्य थे।

२६. कामधेनु सारगी--- प्र'कों में । ६६७-७१६

२७. सारोद्धार-हर्षकीति सूरि । संस्कृत । ७१७-७८८

२६. ग्रासम्ब मस्तिका कल्प--मानतुंग । संस्कृत । ७६१-७६५

विशेष — प्रतिनमुष्पिका —श्वेताम्बराचार्यंश्री मानतुंगं कृते श्री मानतुंगं नंदाभिघानो पर ब्रह्मसागरे उत्पन्न मिएसकेतस्यानं लक्षणोनामस्वमानंद मिणका करूप समाप्तः ।

- ३०. केशवी पद्धति भाषा उदाहरगा---× । संस्कृत । पत्र ७६६-८३७
- ३२. षड्वर्गफल---× । सस्कृत । पत्र ६६७-६०३
- ३३. मृष्टिका ज्ञान—× । संस्कृत । ६०४
- ३४. ग्रांषाढी पूर्णिमाफल—श्री ग्रन्नपाचार्य संस्कृत ६०४
- ३५. वस्तुज्ञान—× । मंस्कृत । १०६-१०१
- ३७. शीद्यफल—ग्रंकों में । ६६७-६६५
- ३८. शूलमत्र, मेथस्तंभन गर्भवंधन, वशीकरएा मत्र श्रादि—× । सस्कृत । पत्र ६९६-६६७ यत्र भी दिया हुखा है ।
- ३१. ताजिक नीलकठोक्त घोडण योग—× । सस्कृत । पत्र ६१०-१००४ । ले०काल सं० १८६६ माध सुदी ७

#### विशेष--प॰ जीवए।राम ने पूरू में लिखा था।

- ४०. घरिष्टाध्याय— × । संस्कृत । पत्र १००६-१००८ (हिल्लाज जातके वर्ष मध्ये)
- ४१. दुर्गमग योग—× । संस्कृत । १००८-१०१० ।
- ४२. घोरकालानतचक- । संस्कृत । १०१०-१०११
- ४३. तिथि, चक्र तिथि, सौरभ, योगसोरभ, वाटिका, वाल्लि, गृहफल, शोद्राफल-भ कों में ।

१०१२ से १०४३

- ४४. विजयसत्र परिकर-- 🗴 । सस्कृत । १०५८--१०६१
- ४६. विजय यत्र प्रतिष्ठा विधि सस्कृत १०५६-१०६१

```
४७. पन्द्रह खंक यत्र-सस्कृत । १०६५-६६
      ४८. पन्द्रह ध क विधि एवं यंत्र साधन---सस्कृत-हिन्दी । १०६६-६९
      ४६. सुभाषित--। हिन्दी । १०७०-१०८८
      ५०. सतक श्लोक-। संस्कृत । १०८८-८६
      ४१. प्रात संघ्या-। संस्कृत । १०६४-९६
      ५२. बतस्वरूप-भटारक सोमसेन । संस्कृत । १०६०-६३
      ४३. ग्ररिष्टाध्याय-धनपति । संस्कृत । १०६७-११०s
      ५४. कर्म जिलाध्याय--। संस्कृत । ११०६-११५
      ४४. ग्रहराशिकल (जातका भरखे)---× । संस्कृत । १११६-३६
      ४७. टिप्परा-X । हिन्दी । ११४६-११४३
      प्रद ग्राय्वेंदिक न्ससे—×।
      ४६. चन्द्रग्रहरा कारक
           मारक किया---× । हिन्दी । ११७०-११७३
      ६० ग्रायवेदिक नुसले — × । हिन्दी । ११८४-११८६
      ६१. गरापति नाममाला-- 🗙 । संस्कृत । ११६०-१२०४
      ६२. रत्न दीपिका-वडेश्वर । सस्कृत । १२०६-१२११
                         लेकाल सं० १६१७ ।
        विशेष-- फटेहपुर मे लिखा गया।
      १०१४६. गृटका सं० ४ । पत्रत० १७४ । मा० १०×६ इञ्च । मावा-हिन्दी । ले० काल ×।
पूर्ग ।
       १. पूजा संवह--× । हिन्दी ।
       २. तत्वार्थरूत्र--- उमास्वामी । संस्कृत ।
       ३, पाश्वंनाथ जयमाल--× । हिन्दी ।
       ४. पांडे की जयमाल---नल्ह । हिन्दी ।
       ४, पूण्य की जयमाल — × । हिन्दी।
       ६. भरत की जयमाल -- × । हिन्दी।

 फ़्टबर्ग एवं पूजा व स्तोत्र—× । हिन्दी-संस्कृत ।

    मनन्त चौदश कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी-संस्कृत

       ६. भक्तामर स्तीत्र - मानत् ग । संस्कृत
      १०. नेमिनाय बारहमासा -- × । हिन्दी
      ११. विक्रमाय --मान कवि हिन्दी।
      १२. पाव्यंनाय के श्चंद — × । हिन्दी । ४७ पद्म हैं ३
```

१३. पद एव विनती संग्रह—× । हिन्दी ।

१४. बारहमासा--- × । हिन्दी ।

१४. क्षमा छत्तीसी-समयसन्दर । हिन्दी ।

१६. उपदेश बत्तीसी-राज कवि । हिन्दी ।

१७. राजमती चनरी-हेमराज । हिन्दी ।

१८. सर्वया-धर्मासह । हिन्दी ।

१६. बारहखड़ी-दत्तलाल । "

२०. निर्दोष सप्तसी कथा-रायमस्त ।

ले॰काल सं॰ १०३२ फाल्ग्रस सुदी १२।

विशेष--- चुरू में हरीसिंह के राज्य में बखतमस्ल ने प्रतिलिपि की थी।

१०१६०. गुटका सां० ६ । पत्रस० १३० । प्रा०१२ ४ ७ इश्वा भाषा−संस्कृत−हिन्दी। ले∘काल स०१६२६ पीप बुरी २ । पूर्णा।

विशेष—पिंडत महीचन्द के प्रशिष्य प० मास्मिकचन्द के पठनार्थ लिखा गया था। सामान्य पाटों का सदह है।

आदित्यवार की छोटी कथा भानुकीति कृत है जिसमे १२४ पद्य है-प्रानिम पाठ निम्न प्रकार है-

रस भृति सोरह संत यदा कथा रची दिनकर की। नदा यह ब्रत कर वे सुख लहे, भानुकीरत मुनि ग्रस कहै।।१२४।।

**१०१६१. गुटका स० ७** । पत्र स० १-६+ १-७६+ १५ + १८ + ८ × ८६ + ५५+ २४ $\times$  २ १+ १+ ५ + २+ २+ ३ + ३ + ४ + २ + २× × ०१२६ । ने० काल स० १८५७ । प्रसं ।

१. मकामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	पत्र १-६
२. तीन चीबीमी पूजा	<b>णुभचन्द्र</b>	**	30-9
		ले • कालासं० १८५७ भादवा बृ	दी ५।
<ol> <li>चिन्तार्मास पाश्वंनाथ पूजा</li> </ol>	×	संस्कृत	8 – 8 X
४. कर्मदहन पूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत	<b>१−१</b> =
५. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	**	3-9
६. सहस्रनाम पूजा	धर्मभूषम्	,,	8-58
७. मिद्धचऋ पूजा	देवन्द्रकीर्ति	11	8-44
<ul><li>मक्तामर सिद्ध पूजा</li></ul>	ज्ञानसागर	11	१-१३
<ol><li>१ वचकल्यासक पूजा</li></ol>	×	संस्कृत	8-58
१०. विश विद्यमान तीर्थंकर पूजा	×	n	<b>१-</b> २
११. ब्रष्टाह्मिका पूजा	×	संस्कृत	8
१२. पचमेरू की झारती	द्याननराय	हिन्दी	ŧ
१३. ब्रष्टाह्निका पूजा	×	संस्कृत	<b>₹</b> —¥

१४. गुरु पूजा	हेमराज	हिन्दी	<b>१</b> २
१५. घारा विघान	×	,,	१-२
१६. श्रठाई का रासा	विनयकीर्ति	.,	<b>१−</b> ३
१७. रत्नत्रय कथा	ज्ञानसागर	**	₹-9
१८. दशसक्षरण द्रत कथा	_	"	<b>१−</b> ४
१६. मोलहकारण रास	सकलकीति	1,	१−२
२०. पखवाडा	जती तुलसी	हिन्दी	१-२
२१. सम्मेद शिखर पूजा	×	संस्कृत	6-8

**१०१६२. गुटकास**० दापत्र स० ३६ । ब्रा०१×६ है इ.च.। भाषा-हिन्दी पद्याने कताल स०१६६१ पीष बुदी ३ । पूर्णा।

विशेष---मारामस्त कृत दान कथा है।

१०१६३. गुटका सं० £ । पत्रसं∘ ४२ । ब्रा० द×६ै इश्वाः प्राया-हिन्दी गद्यः। वे∘काल×।पूर्णावेष्टन ×।

विशेष—भाजार्यं जिनतेन इतं जैन विवाह विधि की हिन्दी माषा है। भाषाकर्ता-पं० फतेहलाल। श्रादक प्रप्रालाल ने लिलवाया था।

१०१६४ गुटका सं० १० । पत्रस० ४६ । झा॰ ७ $\times$ ४ $^1_\xi$  इख । भाषा—संस्कृत । ले॰काल imes । पूर्ण ।

विशेष—मक्तामर स्तीत्र ऋषि यत्र सहित है। यन्त्रों के चित्र दिये हुये हैं। परशादीलाल बनिया (सिकन्दरा) ग्रागरे वाले ने लिखा था।

१०१६ प्र. गुटका सं०११ । पत्रस०११६ । घा॰ ६imes६३ इ.च । मापा-हिन्दी । ले॰ काल घ॰ १६१७ प्रथम आसीज सुरी ७ । पूर्ण ।

विशेष—रामचन्द्र इत बोबीस तीर्पकर पूजा है। नारायण जानडावासी ने सककर में लिखा या। १०१६६, गुटका सं० १२। पत्रसं० ७५। घा० ६४७ इञ्च। मावा-हिन्ती। ले० काल

× । पूर्ण ।

१, छह	हाला वचनिका	and the second	हिन्दी ग०	पत्र १–१४
	विशेष — शानतराय	कृत प्रक्षर बावनी की ग <b>द्य भाषा है</b>	E	
₹.	,,	×	**	पत्र १४-३०
	विशेष बुधजन कृत	। छहडालाकी गद्य टीका है।		
३. दर्श	न कथा	भारामल्ल	हिन्दी पद्य	f #8
४. दर्श	न स्तोत्र	×	सस्कृत	¥¥

१०१६७. गुठका सं० १३ । पत्रसं० ४४ । बा० १imes६ इथा । भाषा-हिन्दी । से०काल सं० १६६४ । दूर्ण ।

विशेष—भारामस्ल कृत शील कथा है। परसादीलाल ने नगले सिकन्दरा (झागरे) में लिखा था ।

**१०१६ त. पुटका सं० १४ ।** पत्र सं० ११७ । घा०  $-\frac{1}{6} \times \frac{1}{6}^2$  इ.च. । नावा-संस्कृत । लेश्काल सं० १६२० पीच ब्रुदी ३ । पूर्ण ।

विशेष--पंडित रूपचन्द कृत समवसरए। पूजा है ।

१०१६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२८ । ग्रा० ६×७ इ.च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण ।

विशेष-पूजा एव स्तोत्र संग्रह है। पीताम्बरदास पुत्र मोहनलाल ने लिखा था।

१०१७० गुटकासं० १६ । पत्रसं० ८१ । घा० ६२ ४६ इचा । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल ४ । पूर्या ।

विशेष-तत्वार्थ सूत्र, सहस्रनाम एवं पूजाओं का सम्रह है।

१०१७**१. गुटका सं०१७ । पण**सं०२७ । मा० ७ $^1_{\mathbf{k}} \times ^1_{\mathbf{k}}$ ६ इ.च.। भाषा-सस्कृत-हिली। ले॰काल imes । पूर्ण ।

विशेष---निम्न पाठो का संप्रह है।

बनारसीदास	हिन्दी	₹-३
हेमराज	हिन्दी	₹-⊏
×	संस्कृत	<b>∽-१२ धपू</b> र्ण
×	,,	<b>१</b> २-२६
	संस्कृत	२६
बीज मत्र सहित	,,	२७
	हेमराज × ×	हेमराज हिन्दी  × सस्कृत  × ,,

१०१७२. युटका सं० १६ । पत्रस० ६० । ग्रा० ७ $\frac{1}{4} \times \mathbb{Q}^{\frac{1}{4}}$  इ.च. । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले•काल स० १६६६ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्णं ।

विशेष - स्तोत्र एव पूजामां का सम्रह है।

१०१७**३. गुटकासं०१६** । पत्र स०७३ । द्या०६ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$  इच्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले॰काल स०१८८१ । पूर्णे ।

विशेष - मुश्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. समोसरग पूजा सामग्रीनाम

हिन्दी

र०कास सं० १८३४

विशेष -- छोटेराम ने लिखा था।

२. चौबीस जिन पूजा देवीदास हिस्दी

इनके बतिरिक्त सामान्य पूजायें और है।

्रि**१७४८ गुटका सं० २०।** पत्र सं० ३१। घा॰ ४ है×४ है इश्वाः माया−हिन्दी। ले० काल सं• १⊂१६ साह सुदी १२ । पूर्णः।

विशेष-चरणदास विरचित स्वरोदम है।

१०१७**४. गुटका सं०२१। पत्र सं०१२०। पा०**६×६ देवन्य । भाषा-पूत्रा पाठ। ते**०काल** सं०१६६१ मादवा सुदी ४ । पूर्णे।

विशेष-पूजा एव विभिन्न पाठो का संग्रह है।

**१०१७६. गुटका रां० २२।** पत्र सं०१६। घा०७×४२ इ.च. । माषा-संस्कृत । ले०काल सं•१६४० पीच द्वरी ११। पूर्ण ।

विशेष--उमास्वामी कृत तत्वार्थं सत्र है । लालाराम श्रावक ने लिखा था ।

**१०१७७. गुटका सं० २३।** पत्र सं० ३६। घा० ७×४१ इश्वरा भाषा—सस्कृत । ले०काल सं० १९६२ संगक्तिर बृदी ४ । पूर्ण।

विशेष—भक्तामर स्तीत्र, तत्वार्थं सूत्र एवं जिनसहस्रनाम जिननेनाचार्यं इत है। परशादीलाल ने सिकन्दरा (ग्रागरा) में प्रतिलिपि की थी।

१०१७ म. युटकासं०२४ । पत्रसं०६ । ध्रा० ७imes५ दे दः व । माया-सस्कृत । से॰काल imes । पूर्ण ।

विशेष--मक्तामर स्तोत्र है।

**१०१७६. गुटका सं०२५ ।** पत्र स॰ ३-१३४ । घा७ ४४ <sup>2</sup>, इश्वा भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले॰ काल सं०१६१३ । पूर्णा।

विशेष —सामायिक पाठ, दशलक्षरा पूजा, एवं देव शास्त्र गुरु की पूजा हिन्दी टीका सहित है। तत्वार्य सत्र अपूर्ण है।

**१०१८०. गुटका सं**० २६ । पत्र सं० १३३ । घा० ७×६२ ृदख । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १६६१ भाववा सुदी ८ पूर्ण ।

विशेष--पूजा पाठ संप्रह हैं।

**१०१८ १. गुटका सं० २७ ।** पत्र सं० ६५ । धा• ७ $\times$ ४ $\frac{1}{7}$  इश्व । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८७ केठ जुक्ला १५ । पूर्ण ।

विशेष---मनसुख सागर विरचित यशोधर चरित है। मूलकर्ता वासवसेन हैं।

७ द ६ भूनि वसु वसु सित समय गत विक्रम राज महान्। जेष्ट मुकल ए फ्रांत तिष्य, पूरारण मासी ज्ञान ।। चित्र सुष्य सागर सुगुरु दीनों रह उपदेशा। जिल्लो पठो चित्र देसूनो बाढे पर्म विशेषा। १०१६२. गुटका सं० २६ । पत्रसं० १६६ । घा० ७imes ५ ६ खः। भाषा-हिन्दी-शंस्कृतः । केश्काल imes । पूर्वं ।

#### विशेष---निम्न पाठी का संग्रह है।

१. भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत
२, तत्वार्थं सूत्र	उमास्वामी	n
३. जिनसहस्रनाम	जिनसेन	,
४. मैरवाष्ट्रक		••
५. ऋषि मडल स्तोत्र	×	.,
६. पार्श्वनाथ स्तोत्र	×	,,
७ कल्याए। मन्दिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी पद्ध
<ul> <li>मक्तामर स्तोत्र भाषा</li> </ul>	हेमराज	**
६. मूपाल चौबीसी माषा	जगजीवन	,,
o. विषापहार भाषा	ग्रचलकीर्ति	n
१. एकीभाव स्तोत्र	भघरदास	21

१०१६ ३, गुटका सं० २६ । पत्र सं॰ ५० । घ्रा॰ ७imes१३ इ.च. । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले॰काल imes1 पूर्ण ।

विशेष--पुजा पाठ संग्रह है।

१०० स्४. गुटकासं० ३०। पत्र सं०४२ । झा० ८×६ दै इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०१६६६ श्रावरा मुक्ता १२ । पूर्ण ।

विशेष-मारामल्ल कृत दर्शन कथा है।

१०१८ प्र. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६३ । घा० ६ 🗙 ४ इ.च. । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल स० १६५३ धावरा बुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष--पूजा पाठ सग्रह है।

१००६६. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० १७७ । मा० ७४६ इ.च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल ४ । पूर्ण ।

विशेष -- पुजा, स्तीत्र एव कथाओं का संग्रह है।

१०१८ ७, गुटकासं० ३४ । पत्रबं• ३३ । घा• ६×५३ इ.चाः भाषा–हिन्दी । से•काल सं० १९६६ । पूर्णाः

विशेष--वर्वाग्री का सग्रह है।

१०१८ स. गुटकासं० ३५४ । पत्र सं०१३७ । झा० ६२,४६ इ.च. । भाषा-हिन्दी—संस्कृत । से∙काल स०१७६४ कार्तिक गुदी७ । पूर्णै।

विशेष-- उल्लेखनीय पाठ---

```
१. क्षेत्रपाल पूजा---बुघटोटर । हिन्दी । १-३
        २. रोहिस्ती त्रत कथा-बंगीदास । ,, । ६-१४ । ले०काल सं० १७६५ ।
         विशेष - धाचायं कीतिसरि ने प्रतिलिपि की ।
         ३. तत्वार्थं सत्र वाल बोध टीका सहित-- × । हिन्दी संस्कृत । २१-६७
        ४. सहस्रनाम---ग्राशाघर । संस्कृत । ६८-८२
        ४. देवसिद्ध पत्रा×। ..
        ६. त्रेपन किया वृतोद्यापन — विकमदेव । संस्कृत ११२ - २२
        ७. पंचमेरु पुजा---महीचन्द । संस्कृत । १२५-१३३

 दल्नवय पूजा × । संस्कृत । १४५-१६६

        विशेष--कासम बाजार में प्रतिलिपि हुई।
        १०१८६, गटका सं० ३६। पत्र सं० ३२८। घा० ६×४२ इ.स.। भाषा-हिन्दी-सस्कत ।
ले० काल × । पर्गा।
        १. नेमिनाथ नव मगल X । हिन्दी
        २. रत्नत्रय वृत कथा---ज्ञानसागर । हिन्दी
        ३. षोडण कारमा कथा - भैकदास । "र०काल १७६१ । ७४ पदा हैं।
        ४. दणलक्षरा कया---ज्ञानसागर । ,,
        ५. दशलक्षरा रास-विनयकीति । "। ३३ पद्य हैं।
        ६. पूप्पाजिल वृत कथा-सेवक । हिन्दी । पत्रसं० ५२-६४
        ७. अष्टाह्मिनका कथा-विश्वभूषस्। ,, ६४-७=

    म. ,, रास—विनयकीति । ,, ७९-६४
    ध्याकाशपत्रमी कथा-वासीदास ,, ६५-१०१ र०काल स०१७६२ ग्रासोज बुदी १२।

      १० निर्दोष सप्तमी कथा × । "१०१-११० । ४२ पद्य है।
      ११. निशस्याप्रमी कथा---जानसागर । हिन्दी । ११०-१२० । ६४ पद्य है।
      १२. दशमी कथा--ज्ञानसागर । , । १२१-१२६ ।
      १३. श्रावमा द्वादणी कथा--जानसागर । हिन्दी । १२६-१३२ ।
      १४. धनन्त चतुर्दणी कथा--भैरूद्रास । ,, १३२-१४१ ।
       र०काल सं० १७२७ ग्रासीज सुदी १०।
       विशेष-कवि लालपुर के रहते वाने थे।
      १४. रोहिग्गी वत कथा -- हेमराज:। हिन्दी । १४१-१४४
          र०काल स० १७४२ पौष सुदी १३।
      १६. रसीवत कथा---भ० विश्वभूषरा । हिन्दी । १५४-५७ ।
      १७. दघारस कथा---विनयकीति ,, १५७-१५६
      १८. ज्येष्ठ जिनवर वृत कया-खशालचन्द । हिन्दी । १५६-१७१ ।
```

२४ रिवव्रत कथा ×। "२७६-३०८।

१०१६०. गुटका सं० ३७ । पत्रसं० ४६ । घा॰ ६imes४ इन्छ । भाषा-हिन्दी । से॰कास imes । पूर्षे ।

विशेष — भक्ताभर स्तोत्र ऋदि मत्र सहित एवं हिन्दी सर्प सहित है। कल्याए। मन्दिर स्तोइ भाषा भी है।

१०१६१, गुटकासं० ३६ । पत्रसं॰ २४ । ग्रा॰ ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ ह॰ वा । साथा-संस्कृत । ले॰काल पूर्णं ।

विशेष-वृत बच पद्धति है।

१०१६२. गुटका सं० ३६। पत्रस० ३१६। घा० ४२४४ ६०४। जापा-हिन्दी-सस्कृत। क्षे•काल स०१८६१ बैगाल सुदी १४। पूर्ण।

विशेष---नवाबगंज में गोपालयन्द वन्दावन के पोते सोहनलाल के लड़के ने प्रतिलिपि की थी।

४.५ स्तोत्रों का संग्रह है। जिल्द लकड़ी के फोम पर है जिसमें लोहे के वक्षमुए तथा खटके का ताला है। पुट्टों में दोनों घोर ही घन्दर की तरफ कांच में जड़े हुए नैमिनाथ एवं पद्मप्रम के पद्मासन चित्र है। चित्र क्षेतास्वर धास्ताय के हैं। प्रारम्भ के स्पत्रों में दोनों घोर मिलाकर ४६ वेलबूटों के मुख्यर चित्र है। चित्र प्रिकार के हैं। इसी तरह प्रत्तिम पत्रों पर भी पेडणीयों घादि के १६ मुल्दर चित्र हैं।

- १. ऋषिमंडल स्तोत्र-गोतमस्वामी । संस्कृत । पत्र ६ तक
- २. पद्मावती स्तोत्र—× । संस्कृत । १८ तक
- ३. नवकार स्तोत्र—× । " २० तक
- ४. धकलंकाष्ट्रक स्तोत्र—×। ,, २३ तक
- ४. पद्मावती पटल—× । संस्कृत । २७ तक
- ६. सक्सी स्तोत्र—पद्मप्रमदेव , २६ तक ७ पार्श्वनाथ स्तोत्र—राजसेन ,, ३१ तक

मदन मद हर श्री बीरसेनस्य शिष्यं,

सुभग वचन पूरं राजसेन प्रशीतं । जयति पठिति नित्यं पाम्बेनायाष्ट्रकाय,

स भवत सिव सौक्यं मुक्ति श्री शांति बीम ।। विगत ब्रजन यूथं नौग्यहं पारवेंनाथं ।।

```
द. भैरव स्तोत्र--- ¥
                                संस्कृत । ३२ तक । ६ पदा है।
  ६. वर्ड मान स्तोत्र— × ।
                                हिन्दी। ३४ तका प्रत्यहाँ।
१०, हनुमत्कवच-- X
                               संस्कत । ३० तक ।
 विशेष-- भन्तिम पूष्पिका निम्न प्रकार है--
 इति श्री सदर्शन सहितायां रामचन्द्र मनोहर सीताया पंचमुखी हनुमत्कवच संपूर्ण ।
११. ज्वालामालिनी स्तोत्र— 🗴 ।
                                  संस्कृत। ४२ तक।
१२. बीतराग स्तोत्र --
                    पदमनंदि
 विशेष--- १ पव हैं।
१३. सूर्याष्ट्रक स्तोत्र----× ।
                                  संस्कृत । ४४ पर
१४ परमानन्द स्तोत्र--- × ।
                                  संस्कृत । ४७ तक । २३ पदा है ।
१४. महिनाय स्तोत्र-- 🗙 ।
                                        ४६ तक । ६ पव है।
१६. पार्श्वनाथ स्तोत्र- 🗙 ।
                                       ४३ तका ३३ ..
१७. शातिनाथ स्तोत्र-X
                                       ५५ तक । १८ ..
१८. पद्मावती दण्डक---× ।
                                       X € तक 1 € ..
१६ पद्मावती कवच--- x ।
                                       ६१ तक।
२०. द्यादिनाय स्तोत्र--- 🗴 ।
                                हिन्दी ६२ तक ६ पद्य है।
 प्रारम्भ- संसारसमूद्र' महाकालरूप,
           नहीं बार पारं विकार विरूपं।
           जरा जाय रोमावली भाव रूप ।
           तद नोहि सरगां नमी धाविताय ।।
२१. उपसर्गहर स्तोत्र-× ।
                            प्राकृत। पत्र ६४ तक।
२२. चौसठ योगिनी स्तोत्र--- ×। सस्कृत ।
                                        ६५
२३. नेमिनाथ स्तोत्र-पं शासि । ,, ।
                                        € 19
२४. सरस्वती स्तोत्र — 🗙 ।
                            हिन्दी।
                                        ६६ तक । ६ पद्य है।
२५. चिन्तामिंग स्तोत्र- × । संस्कृत ।
२६. शांतिनाथ स्तोत्र--- × ।
                            संस्कृत। पत्र ७१ तक।
७४ तक । १६ पदा है।
 विशेष-१६ नामों का उल्लेख है।
२८. सरस्वती स्तोत्र (इसरा) --- × । संस्कृत ।
                                          ७६ तक । १४ ॥
२६. सरस्वती दिग्विजय स्तोत्र- संस्कृत ।
                                       UF 1 83 11
दर तक ।
३१. चौबीस तीर्थंकर स्तोत्र-× । संस्कृत ।
                                       द3ेतक।
 विशेष--- प्रन्तिम
```

सकल गुरा निधान यंत्रमेनं विमुदं हृदय कमल कोसं धामता बेय रूप । जयति तिलक गुरो शूर राजस्य शिष्य बदत सुख निघानं मीक्ष लक्ष्मी निवास ।।

#### ३२ रावलादेव स्तोत्र—× । हिन्दी । ८४ तक ।

श्री रावलादेव कह जुहारा, स्वामी कर सेवक निव सारा ।
तृ विक्व विन्तामिए एक देवा, करें सदा चौमठ इन्द्रसेवा ।।१।।
सेवा करें लक्षण नाग राजा, सारें सदा मेवक ना कोई कावा ।
पीडा तएए दुलना भून तोई, पटी घटी सकट सी विकोई ।।२।।
वे तहरों नाव जगत जाएँ, विन विन महिमा ते बसाएँ।।
वो बृहदा पोहुए माफ ध्यावे, ने ऊनरी सकट पारी जावें ।।३।।
वे दुष्टरमों को तरीपात वार्ज, जे विन्तर्ग विननी दोष दार्भ।।
वे प्रेत पीम प्रभु तुफ ध्यावें। वे ऊनरि सकट पारी नावें ।।४।।
वे काल किकान ये सांच शीजें,

जे भूत वैताल पैमाल की है। जे डाकरगी दए पडिलाज ध्यावै.

ते ऊतरि सकट पार जावै।।४।। जे नाग विधे विषक्षाल मुक्तै,

तिए। विषे भूमिया भाड सूर्क।

ने तिग्रै इस्या प्रभु तुभ ध्यावे ,

ते ऊतरि सकट पार जात्रै ।।६॥

जे द्रव्य हीगा मुख दीन मामै,

जे देह कीगग दिनरान खासै।

जे ग्रन्ति माभः पडियाज ध्यावै,

ते ऊतरिसकट पःर जावै ॥७ ।

जे चक्षुपीडा मुखबब फार्ड,

जे रोग रुध्या निज देह ताडै। जे वेदनी कष्टनी कष्ट पडियाज ध्यायै.

ते उन्नरिसकट पार जावै ॥ व। जे राज विश्रेह पश्चियात थटं.

फिरी फिरी पार का देह कूटै। ते लोह बध्या प्रभूतुभः घ्याबै,

ते कतरि सकट पार जागै ॥ ह॥

```
दःकर्मणा कष्ट समग्र चूरौ ।
                            मुभ कर्मजा सपदा एक झापी,
                                          कृपा करि सेवक मुक्त थापो ॥१०॥
                              इति श्री रावल देव स्तीत्र सपूर्ण।
         ३३ - सर्वजिन नमस्कार---- ४ । स० । पत्र ६० ।
             (सर्व चैत्य गदना)
        ३४-नेमिनाथ स्तोत्र - × । संस्कृत । पत्र ६१ तक । २० पद्य हैं ।
        ३५-मृनिमृदननाथ स्तोत्र-- × । संस्कृत । ६३ तक ।
        ३६--नेमिनाथ स्तोत्र---× । सस्कृत । ६६ तक ।
        ३७-स्वप्नावली-देवनदि । संस्कृत । १०० तक ।
        ३८-करुपाग मन्दिर स्तीत्र-कृमुदचन्द । संस्कृत । १०० तक ।
        ३६-विषापहार स्तोत्र--धनजय । संस्कृत । १२१ ।
        ४०-भूपाल स्तोत्र-भूपालकवि । सस्कृत ।
       ४१-भन्तामर स्तोत्र ऋदि मत्र सहित- 🗶 । संस्कृत ।
        ४२-भगवनी भाराधना--- × । संस्कृत । २८ पदा है ।
        ४३ - स्वयभू स्तोत्र (बडा) समतभद्र । सस्कृत ।
        ४४-स्वयभूस्तोत्र (लघु)—देवनन्दि । सस्कृतः । पत्र १६० तकः ।
        ४५-मामयिक पाठ---× । सस्कृत । पत्र २१७ तक ।
        ४६-प्रतिकमग्ग--- × । प्राकृत-सस्कृत । पत्र २४१ तक ।
        ४७-सहस्रनाम---जिनसेन । सस्क्रत । पत्र २६३ तक ।
       ४८-नस्वार्थमुत्र-उमास्वामी । संस्कृत । पत्र २६३ तक ।
       ४६-श्री स्गृह चिनामिंग देव--- 🖈 । हिन्दी । पत्र २०७ ।
       ५०-चिन्तामिए पार्श्वनाथ स्तोत्र-पं० पदार्थ । संस्कृत । पत्र २६ ।
       ४१-पार्श्वनाथ स्तोत्र--पद्मन दि । संस्कृत । पत्र २६४ ।
       ४२-पार्श्वनाथ स्तोत्र---× । संस्कृत । २६७ तक ।
       ४३-ब्रह्मा के ६ लक्षण--× । संस्कृत । २६७ ।
       ४४-फूटकर श्लोक---× । संस्कृत । २६६ ।
       ४५-घटाकरम् स्तोत्र व मंत्र--× । संस्कृत ।
       ५६-सिद्धि प्रिय स्तोत्र-चेवनंदि । संस्कृत । ३१० ।
       ४, द=लक्ष्मीस्तोत्र—× । संस्कृत । ३१६ ।
         १०१६३. गुटका सं० ४०। पत्र स० १४१। ग्रा० १ x ४ इ-व। माषा-सस्कृत-हिन्दी।
ले० काल । पूर्णा
         विशेष -- सामान्य पाठो का संग्रह है।
```

श्री पाधासा हम एक पूरी,

े १०१९ **४. गृटका सं० ४१।** पत्र स० २२७ । छा० ४×४ <mark>दे इ.स.। भाषा-हिन्दी</mark>। लेक्काल × । पूर्ण।

विशेष--मुख्य पाठ निम्न हैं--

१-शालिभद्र चौपई-सुमित सागर। हिन्दी। पत्र २८-१४०।

र०काल स० १६०८। से०काल सं० १६१६ चैत बुदी ६।

२-राजमती की चूनडी-हिमराज। हिन्दी। १५२-१७३।

प्रारम्स--

श्री जिनवर पद पकर्ज, सदा नमो घर भाव हो। सोरीपुर सुरपति छनी, ग्रांति ही ग्रन्थम ढांम हो।।

ग्रस्तिम---

काष्ट्रासंच मुहाबनी, मचुरा नगर भद्गय हो। हेमचन्द्र मुनि जाएगे, सब कारीयन निर भूप जी।।७६।। तास पट कसकीर्ति मुनि, काष्ट्र संघ स्वाद्य हो। तास निष्य गुराचन्द्रमुनि, निचा गुराह् भंजार हो।।७०॥ हहां बदराग होयडी परी, निसमह सोर निरमारे । हम भराँ ने जांसीयों ते साबे भवचार हो।।।।।

इति राजमति की चूनडी संपूर्णम् ।

३. नेमिनाय का बारह मासा—पांडेजी पत । हिन्दी । पत्र २११-२२४ ।

**१०१६ ४. गृटका सं० ४२ ।** पत्र सं० १८५ । स्रा० ४ $\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$  इल्बा भाषा—हिन्दी। ले॰काल $\times$ । पूर्णं।

विशेष -- पद एव विनती मग्रह है। निधि भच्छी नहीं है।

१०१६६ गुटका स० ४३ । पत्रस० ४० । घा॰ ६imes४ इचा । माषा—सस्क्रन-हिन्दी । ले॰ काल imes । पूर्ए।

विशेष--पार्श्शाय स्तोत्र, देवपूजा, बीस विरहमान पूजा, वासुपूज्य पूजा (रामचन्द्र) एव वियायदार स्तोत्र प्रादि का संग्रह है।

१०१९७. गृटका सं० ४४। पत्रसं० ६२-११७। ग्रा॰ ४imes३ इच्च । माया-हिन्दी । ले॰ काल imes । ग्रपुर्ए।

१ नेमिनाय का बारहमासा-पांडेजीवन । हिन्दी । ७४-६६

२, ,, ,, --विनोदीलाल । ,, । ६६-११२

३. पद संग्रह—⋉ । हिन्दी । ११२-११७

१०१६ स. गुटका सं० ४५ । पत्रस० ३३ । ग्रा० द $\times$ ५ इञ्च । श्राषा—संस्कृत । के॰ काल imes । पूर्ण ।

देवसिद्ध पूजा, भक्तामर स्तोत्र, सहस्रनाम (जिनसेन कत) है।

**१०१६६. गुटका स**० ४६ ।पत्रसं०२६ । द्या०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ इला । मावा-हिन्दी । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण ।

विशेष — भक्तामर स्तोत्र भाषा (हेमराज) बाईस परीषह, पद एवं विनती, दर्णनपच्चीसी (बृधजन) समाधिमरए। (बानतराय), तेरह काठिया (बनारसीदास) सोलह सती (मेपराज), बारहमासा (दौलतराम) चेतनगारी (विनोदीलाल) का सम्रह है।

े १०२००. गुटका सं० ४७ । पत्रसं० २४ । ब्रा० ५imes ४ हृदः । भाषा—सस्कृत-हिली । से ककास imes । पर्यो ।

विशेष-देवपुजा, निर्वाणकाण्ड, चौबीस दण्डक (दौलतराम) पाठ का संग्रह है।

**१०२०१. गुटका सं०४६ ।** पत्रसं०५६ । घा०७ $\times$ ५ इ.च । माया — सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स०१८६६ माघ गुक्ला १३ । पूर्ण ।

#### विशेष---

१. विमलनाथ पूजा, धनन्तनाथ पूजा (जहा शांतिदास कृत) एवं सरस्वती पूजा जयमाल हिन्दी (जहा जिनदास कृत) हैं।

ग्रज्ञानितमिरहर, सज्ञान गुणाकरं

पढई गूराइ जे भावधरी।

ब्रह्म जिनदास भागह, विवह पपासह,

मन बस्तित फल बिच चन ॥१३॥

१०२०२. गुटकासं० ४६ । पत्रस० ३६ । झा०६ है ×६ है इवा । माषा⊸हिन्दी । ले०काल स०१६३२ । पर्या ।

विशेष --- मगवतीदास कृत चेतनकमंचरित्र है।

१०२०**२, गुटका सं०५०**। एकस० ४६। म्रा०६×४ इला। माषा--संस्कृत। ले०कास ×। पूर्णा।

विशेष —देवपूजा, भक्तामर स्तोत्र, पद्मावतीसहस्रनाम घरलेन्द्र पूजा, पद्मावती पूजा, शांतिपाठ एव ऋषि मण्डल स्तोत्र का सग्रह है।

**१०२०४. गुटका सं० ५१** । पत्र स० २-१२४ । घा० ६१ × ५३ इन्छ । माषा-हिन्दी । ले**०काल** सं० १६०२ श्रावण सदी १४ । पूर्ण ।

विशेष - निम्न पाठो का सम्रह है।

१. श्रीपाल दरस— × । हिन्दी । पत्र १-२ ।

२. निर्वाण काण्ड गाथा---× । प्राकृत । ३--४।

३. विषापहार स्तोत्र—हिन्दी पद्य । ५-६ ।

विशेष--१२ से १० तक पत्र नहीं है।

४. सीता जी की बीनती -- × । हिन्दी । १६-२०।

४. कलियुग बत्तीसी--× । हिन्दी । २१-२४ ।

६. भौबीस भगवान के पद--हिन्दी । २४-४६ ।

७. नेमिनाम विनती--धर्ममन्द्र । ६०-६४ ।

- प. हितोपदेश के दोहे---× । हिन्दी । ६४-७२ ।
- झठारह नाता वर्शन—कमलकीति । हिन्दी । ७५-८० ।
- १०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न-×। हिन्दी ६०-६२।
- १०. चन्द्रगुप्त के सालह स्थप्न × । हिन्दी । घ३ घ४ । ११. धरहतों के गुण वर्णन — × । हिन्दी । घ३ – घ४ ।
- १२. नेमिनाथ राजमती संवाद-कहा ज्ञानसागर । हिन्दी । ८७-६४ ।
- १३. पच मंगल रूपचन्द । हिन्दी । ६४-१०४।

१०२०५८. सृटकासं० ५२ । पत्रस०१२ । घा०७४ ५ हे दश्व । भाषा-संस्कृत । ले•काल ४. पूर्णा

विशेष—चर्चाओं कासंग्रह है।

१०२०६ गुटकासं० ५३ । पत्रसं० १०१ । मा०७×६ इश्वरा भाषा —हिन्दी। ले०काल स०१६७१ पीय जुक्ता१४ । पूर्णा।

विशेष--चम्पाबाई दिल्ली निवासी के पदो का संग्रह है। जिसने प्रपनी बीमारी की हालत में भी पद रचना की थी और उसमें रोग की शांति हो गई थी। यह संग्रह चम्पाशतक के नाम से प्रकाशित हो चुका है।

१०२०७. गुटकासं० ५४ । पत्रस० ६६ । घा० ६×४ ग्रैडचा भाषा-हिन्दी । ले॰काल × । पूर्णा

१०२० ब. गृटका सं० ४४ । पत्र सं० १८१ । आ० ६३/४४ हे इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १६३१ । पूर्ण ।

विशेष--- २० पुजाओं का सग्रह है। बडी पचपरमेष्टी पूजा भी है।

१०२०६. गृटका सं० ४६। पत्र सं० १६१। घा० ५३ × ३ इचा । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेकाल स० १६१४ श्रावरा मुदी २ । पूर्ण ।

विशेष--सामायिक पाठ, श्रावक प्रतिक्रमण, पंच स्तोत्र ग्रादि का संग्रह है।

१०२१०. युटका सं० ४७ । पत्रस० १८३ । मा० ४ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इ.स. । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १८६७ पीव सुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष- चौबीस तीर्थंकर पूजा-रामचन्द्र कृत हैं।

१०२**११. गुटका सं० ५६ ।** पत्र सं० ५४ । घा०६ २ ४५ ६ व्याः भाषा-हिन्दी। ले० काल x । पूर्णः।

विशेष-पद एवं स्तोत्र तथा सामान्य पाठो का संग्रह है।

१०२१२. गुटकासं०६० । पत्रसं॰ ५३ - १५३ । घा०६ है ४४ है इ.ख.। भाषा-हिन्दी – संस्कृत। ले∘काल म० १६३७ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण।

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है--

- १. पाशा केवली---× । संस्कृत । १-१७
- २. पद संग्रह--- × । हिन्दी । १८-४४

३. पांच परवी कथा — ब्रह्म विक्रम ४५-५३

४. चौबीसी तीर्थंकर पूजा-बस्तावरसिंह । १-१५३

१०२१३. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० १६८ । मा० ५५ ×४५ इन्छ । माषा-हिन्दी-संस्कृत । ले•काल × । पर्शा

विशेष--स्तोत्र एवं श्रन्य पाठों का संग्रह है।

१०२१४. गटका सं० ६२ । पत्र सं० ६० । मा० ५×५३ इ.च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६६ द्याचाउ बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है।

१. मालिभद्र चौपई मतिमागर हिन्दी 888 २. पद × हिन्दी 84-44 ३. गोरावादल कथा जटमन

र०काल स० १६८० फागुरा नदी १२ । पद्य सं० २२४

48-E0

विशेष---जोगीदास ने प्रतिलिपि की थी।

१०२१४. गृटका स०६३ । पत्र सं०१३६ । घा० ४३ × ४ इश्व । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पर्शा।

विशेष-पुता एव स्तीव भादि का सपह है।

१०२१६. गुटका सं० ६४ । पत्र स० १०७ । मा० ५३×४६ इन्छ । भाषा-हिन्दी । ले•काल स० १८७६ ग्रामोज वदी १३। पूर्ण।

विशेष--निम्न पाठा का सम्रह है।

१. मादित्यवार कथा भाऊकवि हिन्दी १-२२ २. मानगीत हिन्दी २७-२६ ३. बुढा चरित्र जतीचस्द .. 30-83

र०काल सवत् १६३६

विशेष-वद्ध निवाह के विरोध मे है।

४. शालिमद चौपर्ड मतिसागर हिन्दी ४४-१०७

१०२१७. गृटका स० ६५ । पत्रस० १६५ । म्रा०१०×५ इन्छ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले∙काल × । पूर्णः :

विशेष--पूजाये, स्तोत्र एवं चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदाम) का सग्रह है।

प्रारम्भ में - पटलेश्या, श्रादित्यवार वतोद्यापन का मंडल, चिन्तामणि पाश्वेनाथ पूजा का महल, कल्यारामन्दिरम्नोत्र की रचना, विधापहार स्तोत्र की रचना, कर्म-दहन मंडल पूजा, एकीभाव रचना, नंदीस्वर द्वीप का मंडल आदि के चित्र है। चित्र सामान्य हैं।

१०२१८. गृटका सं० ६६ । पत्र सं०६ । आ० ८३ ×७ इखा मापा-हिन्दी। ले॰काल × । प्रशं।

विशेष -- जलगालन विधि है।

१०**२१६. गुटका** सं०६७। पत्र सं०१२। धा० प्रे×७ इन्ता भाषा-हिन्दी। के•काल सं० १९६४ । पूर्णः।

विशेष-दीलतराम कृत छहवाला है।

१०२२०. गुटकासं० ६८ । पत्रसं० ४४ । घा॰  $4 + 2 \times 5 + 2 \times 1$  भाषा-हिन्दी । ले॰काल  $\times$  । प्रजी

विशेष--पद सबह है।

१०२२**१. गुटका सं०६**६ । पत्र सं० ४१ । ब्रा० ५ $^2_4 \times 4^2_5$  इन्था । प्राथा-हिल्दी । ले०काल imes । पूर्ण ।

विशेष--भक्तामर स्तोत्र एवं दौलतराम के पद हैं।

१०२२२. गुटका सं०७०। पत्रसं० १२। झा० द×६ इचा। भाषा~संस्कृत । ले०काल × । पर्यो।

विशेष--विम्व निर्माण विधि है।

१०२२३. युटका सं० ७१। पत्रसं०२४ । घा० ६ $imes \xi_2^2$  इला । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । से॰ काल imes । पूर्ण ।

विशेष--- मक्तामर स्तोत्र एवं निर्वाण काण्ड ग्रादि पाठ हैं।

१०२२४. गुटका संo ७२ । पत्र संo १२ । मा∘ ६×४ इ.चा। माथा---हिन्दी। ले∘ काल × । पूर्वा।

१०२२ ५. गुटका सं० ७३ । पत्र स० १४ । घा० ६ ५ × ४ ६ इञ्च । मावा-हिन्दी । से • कास imes । पूर्ण ।

विशेष-सामान्य पाठ्सग्रह है।

पामी गालनरो रास

# प्राप्ति स्थान - दि॰ जैन खएडेलबाल मन्दिर उदयपुर

१०२२६. गृहका सं० १। पत्रस० ५०। भाषा-हिन्दी । पूर्ण । वेष्टन स० १००। विशेष-मूख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है-जम्बुस्वामी वेलि बी रसस्य हिन्दी पद्म जिनांतररास चौबीस जिन चौपई कमलकीति बिनती कुम्दचन्द्र वीरचन्द बीर विसास से॰कास स० (१६८६) भ्रमर गीत बीरचस्ट (र०काल सं० १६०४) ग्रादीश्वर विवाहली हिन्दी पद्य

ज्ञानभूषस्य

रिक्मिसिहरस	रत्नभूषरा	हिन्दी
द्वादश भावना	वादिचन्द्र	,,
गौतमस्वामी स्तोत्र	"	,,
नेमिनाथ समवशररा	,,	,,
फुटकर पद	-	п

१०२२७. सुटका सं०२ । पत्रसं०११-७२ । घा० ५२+४३ इन्छ । भाषा-हिन् $\xi_1$  । ले० काल स०१५०६ । धपूर्ण । बेष्टनसं० ६७ ।

विशेष---मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है---

त्रिभुवन वीनती	गगादास	हिन्दी प०
सत्ताणु दूहा	वीरचन्द	,,
विस्तार वीनती		"
चैत्यालय बदना	मही <b>चन्द</b>	29
ग्रष्टकर्म चौपई	रत्नभूषगा	,
		(र०काल सं०१६७७)

इस रचनामे ६२ पद्य हैं।

१०२२ स्. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ३७-१४६ । घा० १०२्ं×६ इथा। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । लंककाल सक्षर ८७८ । पूर्णा वेष्टनसंक ३०।

विशेष--मुस्यतः निम्न पाठों का सग्रह है--

4444 3		
१. कक्का बत्तीसी		हिन्दी प
		(२०काल स०१७२५)
२. जैनशतक	भूधरदास	,
३. दृष्टांत पच्चीसी	मगवतीदास	,,
४. मधु बिन्दु चौपई	_	<b>»</b> ;
	ť	र०काल स०१७४०)
४. म्रष्टोतरी शतक	भगवतीदास	17
६. बौरासी बोल		,,
७. सूरत की बारहखडी	सूरत	,,
<ul> <li>वाईस परीषह कथन</li> </ul>	मगवतीदास	,,
<b>१. धर्मप<del>ण्</del>वीसी</b>	भगवतीदास	हिन्दी
१०. ब्रह्म विलास	भगवतीदास	एव
बनारसी विलास (बनार	सीवास) के धन्य पाठों व	हा संबह है।

# प्राप्ति स्थान — दि. जैन अप्रवाल मन्दिर उदयपुर

१०२२६. गुटका सं० १। पत्रसं०६३। मा० ६×६ इचा। भाषा−प्राकृत । ले∙काल सं० १७१८ सगसिर बुदी १४ । पूर्यो ।

विशेष-पट पाहड की संस्कृत टीका सहित प्रति है।

१०२३०. गुटका सं०२ । पत्र स०४०-⊏२ । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले०काल स०१६७० । अपूर्ण । बेप्टन सं०३ ⊏ ।

विशेषमुख्यतः निम्न पा	ठो कासग्रह है	
लघुतत्वार्थं सूत्र		संस्कृत
दान तपशील भावना	ब्रह्म वामन	हिन्दी
गीत	मतिसागर	,,
ऋषिमंडल स्तवन		संस्कृत
सबोघ पचासिका		
गुटक	जो जो एं है ।	

१०२३१. गुटका सं० ३ । पत्र सं० १८-२६८ । घा० ११ $\frac{1}{2}$  x ७ $\frac{1}{2}$  इन्छ । माषा-सम्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १६४३ घासोज बुदी ८ । घपूर्ण । बेष्टनसं० ।

विशोध — गुटका बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसमें हिन्दी एव संस्कृत की अनेक अज्ञात एव महत्वपूर्ण रचनाएं है। गुटके में सबहीत मुख्य रचनाओं का विवरण निम्न प्रकार है—

स० नामग्रथ	ग्रथकार	पत्र सं० ४६	भाषा	विशेष
१. सीमधर स्तवन	_	3	हिन्दी प	द्य स॰ ३१
२. स्त्रीलक्षरण		2.5	.,	
३. श्री रामचन्द्र स्तवन		8.8	q	द्य स० १०
		धन्नानि	वत	
४. बकच्ल कथा	_	<b>११-</b> १३	,	ख सं० १०३
५. विषय सूची	-	१६-१७	*,	
६. चौवीमी तीर्थकर स्तवन	विद्याभूषस	पत्र १७	हिन्दी	
विशेषवृषभदेव श्री ग्राज	तत सकल समव र्घा	भन्नन्दन ।		
मुमति पद्म मुपाः	<mark>र्व</mark> शीचतुर चन्द प्रः	भ वंदन ।।		
७ जिनमगल	_	१८	संस्कृत	
८. मेवाडीना गौत्र			हिन्दी	
	३० गोत्रों का वस	र्णन है।	-	
६. ग्रठारहपुराएगे की नाम	।।वली —	.,	,,	
<b>विशेष</b> — पुन. पत्र स १ से	चालू हैं			
१०. गुरुराणि गत विचार		8	संस्कृत	
			(ज्योतिष)	

११. निरजनाष्ट्रक		8	सस्कृत
१२. पत्यविधान कथा		₹-8	10
			(पद्य गद्य)
<b>विशेष</b> — संवत् १६ वर्षे श्र	चार्यश्री विनयकीर्ति	ततृशिष्य व	श्री घन्नालियत ।
१३. विनती	ब्र ० जिनदाम	` *	हिन्दी
१४. गुराठासमविन	जीवन्धर	8-€	,, पश
विशेषजीवन्घर यणःकीति	के शिष्य थे ।		
१४. जीवनी धालोचना		Ę	,,
१६. महाबतीनि चौमामानुदङ		Ę	 हिन्दी
विशेषचतुर्मास में मृनियो	के दोषपरिद्वार विधान	t Ř i	•
१७. चिन्तामिण पार्श्वनाथ पूज		७-११	संस्कृत
,	3		<b>स० १६१६)</b>
विशेषचित्तामणि पार्श्वना	ध्यस्तोच भी है।	•	
		साचैशी सनिका	व्यत्वैत्यालये प्राचार्यश्री विजय
र्शिति शिष्ये अरुधका केन पठनार्थ।		ran an gong	***************************************
१८. नीतिसार	_	<b>₹9</b> − <b>9</b> 3	सस्कृत
१६ सञ्जन चित्तवस्त्रभ		१३-१४	,,
२०. साठिसवत्यरी		१४-२१	, [हन्दी
	(ऐतिहासिक विवरण	है)	• •
सवत् १६०६ मे १६८६ तक व	ी सवन्सरी दीगयी	है।	
२१. सवत्सर ६० नाम	_	२ <b>१</b>	71
२२. वर्षनाम	-	२१	संस्कृत
२३. तीस चौबीसी नाम		२१-३४	हिन्दी
२४. सकातिफल	-	२६	सस्ङ्त
(श्री	वनयकीर्तिने धन्नाके	पठनार्घलिखाव	r)
२४. गुरु विरुदावली	विद्याभूषरा	२६-२=	सस्कृत
२६- श्रेसठशलाका	_ ;	? <b>⊏</b> −₹ø	हिन्दी
पुरुष भवावलि			
२७. भक्तामर स्तोत्र सटीक	;	११-३६	संस्कृत
२८. दर्शनप्रतिमा का व्यौरा	1	5	हिन्दी
२६. छद संग्रह	गंगादास ३	द <b>-</b> ३६ - ३	हिन्दी
		१७ छन	. है।
३०. षट्कर्मछोद	- 3	8	.;
३१. भादिनाय स्तवन	maren.	3.5	संस्कृत
३२. बलभद्र रास	द्र० यशोधर ४	2-AC	हिन्दी

वि	<b>शेष—स्कं</b> य नगर मे रचन	नाकी गयी	षी ।	
₹₹-	बीस तीर्थंकर स्तवन	ज्ञान भूष	ण ४३	संस्कृत
₹8-	दिगम्बरों के ४ भेद		¥ş	संस्कृत
34-	वतसार		Аá	संस्कृत
₹.	. दश धर्म वर्गन		¥\$	.,
₹७	श्रेरिएक कथा		88-80	,,
35.	लब्धि विधान कथा	ণ ০ মস	38-08 B	,,
₹8.	पुष्पांजलि कथा		86-X8	,,
80	जिनरात्रि कथा		48-45	
٧१.	जिनमुखावलोकन कथा	सकलकीर्ति	<b>.</b>	,,
٧٦,	एकावली कथा		43-XX	"
٧٩.	शील कल्याग्।क व्रत कथा		५४-५५	
٧٧.	नक्षत्रमाला वन कथा		**	**
	व्रत कथा			,,
	विघान करनेकी विधि	_	ሂሂ	संस्कृत
-	स्रकृत्रिम चैत्यालय विनती		€७	संस्कृत
	ग्रालोचना विधि	_	७३	**
	७७ भक्तिपाठ संग्रह		७६ तक	"
		समतभद्र	<b>=</b> ₹	,,
		उमास्वामी	<b>π</b> 3	•,
۲۰.	लघुतत्वार्थं सूत्र		<b>4</b> 3	11
		वदि ५ को घ	स्त्राने प्रतिलिपि की । ५ इ	ाध्याय हैं।
	प्रतिक्रमरा (श्रावक)	_	<b>4</b>	संस्कृत
	लघुद्यालोचना		,,	,,
	महाव्रती श्रालोचना		<b>¤</b> Ę	71
ς٧.	सीखामण राम		59	हिन्दी
<b>5</b> ٤.	जीवन्यर राम ि	त्रभुवनकीर्ति	<b>59−6</b> 3	"
वि	<b>शेख</b> — र०काल सं० १६०	६ है इसकी	रचनाकल्पवल्लीनगरमे	हुई थी।
ग्र	न्तिम पद्य निम्न प्रकार	<b>8</b> —		
			करी पुहतु शिव पद ठाम	
त्रिभुवनकीरति इम बीनिव देयो तम गुरा ग्राम ॥६१॥				
<b>د</b> ξ.	पाशाकेवली व	गर्गमुनि	x3-€3	संस्कृत
c/9	यति मावनाटक		£Х	
44,	जीरावलि बीतनी		n	ू हिन्दी

द <b>१- कमैवियाक</b> रास	व्र जिस्	दास ६६	हिन्दी
			(ने∙काल सं० १६१६)
६०, नेमिनाय रास	विद्याभूवर	ij <b>१००∼</b> ₹α	
<b>विरोध</b> देवपल्ली स्था			न्नाने प्रतिलिपि की थी।
६१. शावकाचार	प्रतापकीरि	त १०४-७	हिन्दी
			(र॰काल स०१५७४ मगसिर सुदी २)
€२. यशोधर रास	सोमकीर्ति	₹9-00\$	हिन्दी
६४. भविष्यदत्त रास	विद्याभूषर	7 888-20	,,
			(र०काल स० १६०० आवरण सुदी ४)
१४- उपासकाध्ययन	प्रभावन्द्र		सस्कृत
			मे•काल स०१६०० मगसर बुदी६
६६. सामुद्रिक शास्त्र		१२०-१२४	संस्कृत
			ले॰काल सं० १६१६ मंगसिर बुदी ११
१७. ब्रालिहोत्र		858-58	संस्कृत
६८. सुदर्शनरास	इ० जिनदास	१२५-२६	हिन्दी पद्य
			ले •कास सं० १६१६ मगसिर बुदी ४
६६. नागश्रीरास	**	836-35	ले∙काल स०१६१६ पौष सुदी३
(रात्रि मोजन रास)			
१००. श्रीपालरास	- 11	१३२-३६	>,
१०१. महापुरारा विनती	गंगादास	35-059	14
			ले∙काल सं०१६१६ पौष बुदी
१०२, सुकौशल रास	गगुकवि	636-86	
१०३. पत्य विचार वार्ता	-	686	,,
१०४ पोसानुरास	_	683	n
१०५. चहुं गति चौपई		<b>\$</b> 83	ii .
१०६. पार्श्वनाय गीत मुनि	ालवण्य समय	१४३	n
राग धवरस			
दीन	ानाथ त्रिजगन	ार्थं दशगराखर	रिव साथ।
देहर	नवहायं पारिक	बनायं तुतारिभ	विषाध रे।।
१०७. ग्यारहप्रतिमा बीनती	<b>ब</b> ० जिए। दास	£ 43	हिन्दी
१०८- पानीगालन रास	-	688	19
१०१. भादित्यवतरास	-	१४५	,
११०. मास्रए मूछ क्या	_	\$8X-RE	17
<del></del>			€४ पख हैं
१११. गुराठासा चौपई	वीरचन्द	<b>ξ</b> λ <b>£</b>	,,

```
११२. रत्नत्रयगीत
                                    १४६
                                                                    हिन्दी
                    जीव रत्नवय मन मांहि घरीनि कहि मू चारित्र सार
११४. अविकासार
                        व० जिरादास १४८-४८
                                                              १४६ पद्य हैं।
                        सकलकीर्ति १४८-४६
११५. ब्राराधना
                                                                    हिन्दी ४५ पदा
      प्रतिबोध सार
११६. गुरातीसी सीवना
                                     388
                                                                     ,, ३२ पद्य
११७. मिश्रादोकरा
                      ब॰ जिरादास
                                                                    हिन्दी पद्य
      (मिथ्याद्कड)
                                                 ले॰काल स॰ १६१६ माह सूदी १४
११८. सतास् भावना
                      वीरचन्द
                                १४०-४१
                                                                    हिन्दी ६७ प०
                   ग्रतिम पद्म निम्न प्रकार है---
                   सूरि श्री विद्यानंदि जय श्री मिल्लाभूषरा मूनिचन्द ।
                   तस पट महिमानिलु गुर श्रीचन्द लक्ष्मीचन्द ।
                   तेह कुल कमल दिव संपती जंगति जिप वीरचन्द ।
                   सुरगता भरगता ए भावना पामीइ परमानन्द ॥८७॥
 ११६. नेमिकुमार गीत
                        मुनि
                                 848
                                                                  हिन्दी
      (हमची नेमनाय) लावण्य समय
                                              र०काल सं०१४६४ ७८ प०
१२०. कलियुग चौपई
                                                                  हिन्दी ७७ प०
                                 १५२
१२१. कर्मविपाक चौपई
                                 847-43
                                                                    ,, ६४ प०
१२२. वृहद् गुरावली
                                 १५३
                                                                   संस्कृत
१२३. ज्योतिय शास्त्र
                                 848-48
१२४. जम्बूस्वामी रास ब्र॰जिसादास १५६-६६
                                                                   हिन्दी
                                                                  १००६ पद्य हैं।
१२५. चौबीस अतिशय
                                 १६६-६७
                                                                     ,, २७ पद्य
      विनती
१२६. गराधर विनती
                                                                   हिन्दी २६ पदा
 १२७. लघु बाहुबलि बेलि गातिदास १६७
   विशेष -- शानिदास कल्यासाकीर्ति के शिष्य थे।
   ग्रंतिम पद्य निम्न प्रकार है-
                    भरत नरेश्वर ग्राबीया नाम्यु निजवर शीस जी।
                   स्तवन करी इस जंपए हैं किकर तुंईस जी।
                   ईस तुमनि छांडीराज मऋनि धापीउ।
                   इम कही मन्दिर गया मुन्दर ज्ञान भुवने व्यापीउ ।
                   श्री कल्यागाकीरति सीम मूरति चरण सेव मिनशा कड ।
                   गानिदास स्वामी बाहुबलि सरण राख् पुत्र तस्ह तसी ।
```

```
१२८. तीन चौबीसी पूजा
                                विद्याभवरा
                                               १६५ ७१
                                                                       संस्कृत
                                            ले • काल सं० १६१६ ज्येष्ठ बुदी १३
     १२६. पस्य विघान पूजा
                                                Fer-909
     १३०. ऋषिमंडल पूजा
                                                803-60
                                                                        मस्कृत
                                                     ने • काल सं० १६१७ ग्राघाट सुदी ११
                                                                        संस्कृत
     १३१. वृहद्दकलिकुण्ड पूजा
                                           30-209
     १३२. कर्मदहन पूजा
                                           808-58
                                शुभचन्द्र
                                                        ले•काल स० १६१७ ग्रापाद ब्दी ७
     १३३ गराधरवलयपूजा
                                           828-28
     १३४. सककलीरसा विधान
                                           2-2--5
                              जिनसेनाचार्य १८६-८८
     १३४. सहस्रनाम स्तोत्र
                                                  से बाल सं० १६१७ बाबाड स्दी ११
     १३६. वहद स्नपन विधि
                                           8==-68
                                                       सं०कास सं० १६१७ सावरा सुदी १०
        प्रशस्ति--निम्न प्रकार है--
        सवत् १६१७ वर्षे श्रावरण सुवी १० गुरी देवपस्था श्री पार्श्वनाश्रमुवने श्री काष्ठासचे भट्टारक श्री
विद्याभूषण् भावायं श्री १ विनयकीर्ति तन्छिष्य बह्य घरः लिखत एटनार्थ ।
     १३७. लघुस्तपन विधि
                                          73-839
      १३=-४१ सामान्य पूजा पाठ —
                                         १६६-२००
     १४२. सोलहकारएापालडी
     १४३-१४७ नित्य नैमित्तिक पूजा ---
                                      २००-५
                                                        लेक्सल स० १६१७
                               नरेन्द्रसेन
      १४८. रत्नत्रय विधान
                                          २०५-६
            (बडा श्रध्यं खमावग्री विधि)
         इति भट्टारक श्री नरेन्द्रसेन विरचिते रत्नत्रयविधि समाप्त । इ० धन्ना केन लिखित ।
      १४६. जलयात्रा विधि
                                          २०६
                                                                         संस्कृत
                                                        ले०काल स० १६१७ मादवा बुदी ११
```

प्रशस्ति— म॰ १६१७ वर्षे मादवा बुदी ११ श्री काष्ट्रास्थ म॰ श्री राममेनास्यये । मट्टारक श्री विश्वसेन तत्तदुः मट्टारक श्री विद्याभूषण ग्रावार्ये श्री विनयकीति तच्छिप्य श्री धम्नास्येन निखतं । देवपत्यां श्री पार्थनाय श्रुवने निखित ।

१४०. जिनवर स्थामी शीनती सुमितकीति २०६-६ हिन्दी श्रीमृतसंघ महत संत गुरु श्री सक्ष्मीचन्द । श्रीरवन्द शिनुध शंवस्थाय भूवराष मुनिन्द । विनवस शीनती के मरिष मनिषदी माराष । मनति सुगति मुनिवर ते लहि जिटा परमानंद ।

```
सुमतिकीर्ति भवि भएि। ये ध्याबी जिनवर देव ।
                         संसार माहि नवतयु पाम्यु सिवपर देव ॥२३॥
        इति जिनवर स्वामी विनती समाप्त ।
      १४१- लक्ष्मी स्तोत्र सटीक
                                         200-205
                                                                        संस्कृत
      १४२. कर्म की १४ = प्रकृतियों ---
                                                                         दिस्वी
                                      305-80
            का वर्णन
     १५३ जिनती पार्श्वनाथ
                                          280-88
                                                                    पद्य सं० १४
                         जय जगगुरु देवाधिदेव तुं त्रिभूदन तारए।।
                         रोग शोक अपहरराधरि सबि संपद काररा।
                         रागादिक ग्रंतरंग रिपु तेह निवारण ।
                         तिहुं भ्राण सल्य जे मयरा मोह भड देवि भंजरा।
                         चिन्तामिं श्रीयपास जिनवर प्रद्वनवर श्रुंगार।
                         मनह मनोरथ पुरस्पुए वाख्रित फल दातार ।।
     १५४. विद्युत्त्रम गीत
                                ×
                                        286-85
                                                                        हिन्दी
     १५५. बाईस परीषह वर्णन ---
                                        282-88
                                                                        संस्कत
                                            ले ब्लाल संब १६३२ बैशाख सदी १०
        प्रहलादपुर में बि॰ धन्नाने ग्रपने पठनार्थ लिखा था।
     १५६. षटकाल भेद वर्शन
                                       284
                                                                        संस्कृत
     १५७- दुर्गा विचार
                                       २१६
     १५८. ज्योतिय विचार
                                       २१६
        विशेष-इसमें वापस विचार, शकुन विचार, पत्ली विचार छीक विचार, स्वप्न विचार, ग्रगफडक
विचार, एव वापस घट विचार श्रादि दिये हुए हैं।
     १५६. ग्रकलंकाच्ठक
                                      284-80
                                                                        संस्कृत
     १६०. परमानद स्तोत्र
                                      २१७
     १६१. ज्ञानांकुश शास्त्र
                                     २१७−१⊏
                              -- २१=-१६
     १६२ श्रुत स्कथ शास्त्र
     १६३. सप्ततत्व वार्ता
                            -- २१६-२०
      १६४. सिद्धातमार
                             ---
                                      २२० -- २२
     १६५-६८ कमी की १४८ प्रकृतियों का बर्शन
                जैन सिद्धांत वर्णन चौबीसी ठाएा।
                चर्चा, तीर्थकर प्रायु वर्णन
                                      223-38
                                                                       हिन्दी
                                             ले ब्लान संब १६१८ मासीज सुदी १
     १६९. सुकृमाल स्वामी रास अर्मरुचि २५१-६५
                                                                       हिन्दी
```

```
धरितमधारा--
                          रास मनोहर २ किथु मि सार।
                          मुकुमालनु प्रति रुप्रबु सुराता दुखदालिह टालि प्रति ऊजन ।
                          मण्यो तह्यो भविजस्यु अनेक कथा इस वर्ण वीलोह जल ।
                          श्री भ्रमयचन्द्र बुरु प्रशामीनि बह्यधर्म रुचि मश्रिसार ।
                          मिए। गुरिएज सोमलि ते पामि सूख धपार ।
         इति श्री सुकुमाल स्वामी रास समाप्त ।
       १७०. श्री नेमिनाथ प्रवध
                                    लावण्य समय मृति
                                                         २६५-७०
                                                                          हिन्दी
      १७१. उत्पत्ति गीत
                                                         २७१
      १७२- नरसगपुरा गोत्र छद
      १७३ हनमा रास
                                 ब्र० जिरादास
                                                        3-7-805
   ग्रन्तिम पाठ---
        वस्तु---रास कहयु २ सार मनोहर महितयुग सार सहोजल।
                         हनुमंत बीनु निर्मेल ग्रजल ।
                          भ्राति केडवा श्रतिष्णा भवीयलसुणवासार भ्रजल
                         श्री सकलकौरति गृह प्रणासीनि भवनकीरति भवसार ।
                         बह्याजिगादाम एग्री परिभग्री पढता पूज्य भ्रमार ॥७२७॥
        ७२७ पद्य है।
      १७४. जिनराज बीनती
                                                282
                                                                          हिन्दी
      १७४. जीरावलदेव बीनती
                                                     ले •काल स०१६३८
        सबत् १६२२ वर्षे दोमडी ग्रामे लिखित ।
      १७६- नेमिनाथ स्तवन
                                               335
                                                                                ३६ पद्य
                                 व • जिएदास २१६
      १७७ होलीरास
                                          ले•काल स० १६२४ चैत सुदी ४
      १७८. सम्यक्त्व रास
                                 व • जिरादास २१६-२१७
                                                ले • काल स० १६२ ४ पौष सूदी २
      १७६. मुक्तावली गीत
                                 सकलकीति
                                                ले • काल स० १६२६ पौष बूदी १३
      १८०. वृषभनाथ छंद
                                                ले०कालासं•१६४३ झासोजा दुवी ३ ।
        १०२३२. बुटका० सं०४ । पत्रस० १३० । माषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८३३ । पूर्ण ।
बेप्रन सं० ३८६।
        विशेष-- निम्न दो रचनाम्रों का संग्रह है-
```

त्रेपनिकया विधि--दौलतराम । भाषा-हिन्दी । ।पुर्णे । र०काल स० १७६५ मादवा सदी १२ । लेक काल संघ १८३३ ।

#### प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत १८३३ वर्षे मासोत्तमासे अभज्येष्ठ मासे कृष्णा पक्षे पांडिया सुक्रवासरे श्री उदयपुर नगरे मध्ये लिखित साह मनोहरदास तोलेशलासजी सत श्री जिनघरमी दौलतराम जी सीव ग्रथ करता जरगारी श्राज्ञा थकी सरधा धानी तेरेपंथी देवधरम गृह सरधा शास्त्र प्रमारों वा ग्रंथ गृह मस्ति कारक ।

२. श्रीपाल मूनीश्वर चरित बदा जिल्हास

हिन्दी (कें•काल स० १८३४)

१०२३३ गृटका सं० ४ । पत्रस० १८० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेक्सल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८४ ।

विशेष -- मस्यतः निम्न रचनाग्री का संग्रह है-कविस मानकवि िन्दी ऋषि मडल जाप्य सस्कत

देव पूजापृक

धन्य साधाररा पाठ है।

१०२३४. गृटका स० ६ । पत्रसं० १६६ । बा० ११× म इन्हा भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले ० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ३८४।

विशेष-- निम्न प्रकर सप्रह है--

पूजा पाठ, पद, जिनती एव तत्वार्थमूत्र भादि पाठो का सम्रह है।

बीच बीच में कई पत्र खाली हैं।

१०२३४. गुटका सं० ७ । पत्रस० १८४ । आ० ७×४ इन्त । भाषा सम्क्रन-हिन्दी । ले • काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८३ ।

मस्य पाठ निम्न प्रकार है-

विशेष-सामायिक पाठ, भक्ति पाठ, आराधनासार, पट्टावलि, द्रव्य सब्रह, परमात्म प्रकाश, द्वादशानप्रेक्षा एव पुजा पाठ सग्रह है।

१०२३६. गुटका सं० द । पत्रस० १४० । ग्रा० ६ x ४ इ ख । भाषा-प्राकृत-हिन्दी-सस्कृत । ले • काल × । ग्रप्तां। वेष्टन स०३६२ ।

हिन्दी

विशेष--- मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है ---

गुरास्थान चर्चा प्राकृत तत्वार्थसुत्र सार्थ हिन्दी (गद्य) नेमिचन्द्राचार्य भाव त्रिभंगी সাহর धाश्रव त्रिभंगी <u>पंचारितकाय</u>

हिन्दी गद्य टीका महितहै

१०२३७. गुटका सं० ६ । पत्रस० २१-१३१ । मा० ६×४ इश्व । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । लेक्सल स० १७८१ । धपूर्ण । बेप्टन सं० ३८१ । विशेष - मुख्यतः निम्न पाठों का सप्रह है। ब० जिनदास व्यतस्त्रताथवत राम हिन्दी भाचार्य मानतंग भक्तामर स्तोत्र सस्कृत समय सुन्दर वाचक दान चौपई हिन्दी पाइवंनायजी खद सबोध (ले॰काल १७८१) बाहबलिनी निषद्या (ले॰काल १७८१) रविवत कथा जयकीति भोगाकारम कथा कः जिनदास पाशीगालन रास ज्ञानभष्म १०२३६. गुटका सं० १०। पत्रस० ४६-६६। ग्रा० ६ है X ४ इश्वा भाषा-हिन्दी (पद्य)। ने काल स० १७६१ । अपूर्ण । बेक्न सं० ३८० । विशेख - निस्त रचनाओं का सग्रह है---हनमत कथा ब ० रायमल्ल हिन्दी प्रपूर्ण जम्ब स्वामी चौपई पाडे जिनदास पूर्ण •• मगी सवाद धपुरां १०२३६. गृटका सं० ११ । पत्रस० ४२० । प्रा० १०×६ इन्ह । माषा-हिन्दी । ले०काल स० १८२० काती सुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३७६ । विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है---धनन्तवत कथा ब ० जिनदास **ਵਿਜ਼ੀ** पत्रसं ६ सोलहकारण रासा ٤x दशलकारा वत कथा 3.5 चारुदत्त प्रबंध रास ХX गृह जयमाला ¥ £ पूरपांजलि पूजा सस्कत 30 गातिदास धनन्त वत पूजा हिन्दी ब ० जिनदास पृथ्यांजलि रास महापुरारा चौपई गंगदास ग्रकत्रिम चैत्यालय लक्ष्मरा विनती काशसंघ विरुपात सुरी श्री भूषण शोमताए

चन्द्रकीर्ति सरि राय तस्य णिष्य लक्ष्मण बीनती करू ए ।।

378

मारबी राम जिलंद गीत बराजारा गीत

लुंकामत निराकरण रास	बीरचन्द	हिन्दी
•		(र०काल सं० १६२७ माथ सुदी ५)
मायागीत	व्र॰ नाराण (विजयकीर्तिका	शिष्य) हिन्दी १७७
त्रिलोकसार चौपई	सुमतिकीर्ति	,,
होली भास	<b>व</b> ० जिनदास	,, ,,
-	रुनगर में प्रतिलिपि की थी।	
सिन्द्रर प्रकरण भाषा	बनारसीदास	हिन्दी
		(ले≉्काल स० १७≈४)
प्रशस्ति निम्न प्रकार है-	_	***************************************
•		
सवत् राज्या वया प्रापुरा मास गोत्रो मेवाडदेशे श्री उदयपुरनगरे मह		सरे पूर्व भाद्रपदनक्षत्रे साकानामि
गात्र मवाडदश था उपयपुरंगगर मह चैत्यालये म० श्री विजयकीति जी झाम्ना		
मक्ति कारक श्री जिनाज्ञाप्रतिपालक ह		
विराजमान वाले सा श्री रतन जी पठना		ता दवला तत् सुत एक विशास गुरस
		C-2 2V2
3	• जिनदास	हिन्दी पत्रस०२४३
रात्रि मोजनरास	*,	?=X
		(ले∙कास स० १७८७)
दानकया रास		— 7EX
******		कथा लुब्धदन साहकी)
दानकथा रास		
_		साह बनपाल की दान कथा है।
श्रकलक यति रास	<b>व</b> ० जयकीर्ति	हिन्दी
		(र०काल स० १६६७)
कोटानगर में रचनाकी गई।	<b>यी</b> ।	
नामावलि छंद	ब्र॰ कामराज	हिन्दी
तूर की शकुनावली	नूर	_
		ग्रांस फडकने संबन्धी विचार
बारह द्रत गीत	<b>व</b> जिनदास	हिन्दी पत्रसं•३५३
ग्यारह प्रतिमा रास		_
मिच्या दकड जयमाल		
वीवडा गीत	-	
दर्शन बीनती	-	

चेतन प्रासी गीत काया जीव सूवाद गीत ब्रह्मदेव श्री मूल संधे गछपति रामकीर्ति भवतार । तस पट कमन दिनसपति पद्मनंदि गुगाबीर । तेहुगा चरण कमल नमी गंगदास बह्य पसाये। काया जीव सुवादको देवजी सहानुरा गाय। पोषह राम ज्ञानभूषस्य हिन्दी ज्ञान पच्चीसी बनारसीदास गोरखकविस गोरखदास जिनदत्त कथा रत्न मूषरा ,, संबन् १६२० में उदयपुर में प्रतिलिपि हुई थी। १०२४०. स्टका सं० १२ । पत्र स० ११० । झा०७×५ इला । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णावेष्ट्रन सं ० ३७८ । विशेष---मस्यतः निम्न पाठो का सग्रह है। क्षेत्रपाल पुजा संस्कृत ऋषिमडज पुजा सस्कृत मागीतृगीतीकीयात्रा ग्रभयवन्दसूरि हिन्दी विशेष - इसमे ४२ पद्य है। ग्रन्तिय पक्तिया निम्न प्रकार है--भाव मे भवियण सामलोरं भगा ग्रभयचन्द सुरी रे। जाहूने वलभद्रजुहारिजो पापुजाइ जिमि दूरि रे। योगीरामा जिनदास हिन्दी कलिक् डपाग्वंनाथ स्तृति । १०२४१. गुटका स० १३ । पत्रस० ६० । बा० ५३ ×५३ इला । भाषा–हिन्दी सस्कृत । **ले॰काल** × । धपूर्णं । वेष्ट्रनस० ३७७ । विशेष-मध्यत: निम्न पाठो का सप्रह है । कलिक् ड स्तवन, सोलहकारम्ग पूजा दशनक्षम्। पूजा, ग्रनन्तवत पूजा। ग्रन्थ पूजा पाउ संबंह है। १०२४२. गुटकास० १४ । पत्रस० २०६ । ग्रा० ६×५ दश्व । भगा-हिन्दी । ले० काल---🗙 । पुर्शी । वेष्टन सं० ३७६ । मृख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है ---विरह के फुटकर दोहे लालकवि हिन्दी

```
नित्य पुजा
                                           हिन्दी
 बुधरासा
                                            .. लेञ्काल संब् १७३७
          प्रारम्भ का पाठ निम्न प्रकार है---
                        प्रसामीइ देव माय, पांचाइसा कमसी ।
                        समरिए देव सहाय जैन सालग सामग्री।
                       प्रशामीइ गरा हर गीम सामगी।
                       दरियशासे जेने नानि सदगढ वेसिशारी की जे।
         चन्त्र में---
         सवत् १७३७ मंगसर सुदी ११ सँगडी किलागाजी सीमजी पठनाये ।
राजा ग्रंगोधर धरित्र--
                           हिन्दी
कामा जीव संवाद गीत
                           हिन्दी
                                                      देवा ब्रह्म
         ध'तिम भाग निम्न प्रकार है---
                    गगदास ब्रह्म पसाये राग्गी काय जीव स्वादडो ।
                    देवजी ब्रह्म गुरा गाय रासीला।
        इति काया जीव सुवादजीव संपूर्ण ।
                 गढ़ी ग्राड का लाल जी कलागुजी स्वलिखिता।
                 सवत् १७१२ वर्षे भाषाढ बदी ११ गूरौ श्री उज्जेशी नगरे लिखता ।
यशोघरगस
                               हिन्दी
                                                     व्रह्म जिनदास
श्रे शिकरास
                                ,,
                                        ले•काल सं०१७१३ माघ सदी ४।
         विशेष - ग्रहमदाबाद नगर में प्रतिलिपि हुई थी।
                                       हिन्दी पद्य ।
जिनदत्तरास
         १०२४३. गूटका सं० १४ । पत्र स० ११० । मा० ८×७ इन्छ । भाषा संस्कृत-हिन्दी ।
लेक्सल सं० १७३० । प्रपुर्श । बेष्ट्रन सं० ३७२ ।
        विशेष-मन्यतः निम्न पाठो का सग्रह है।
                              व० जिनदास
                                                 हिन्दी
व्यतस्थवत रास
जिनसहस्रनाम स्तोत्र
                              ग्राशाधर
                                                 संस्कृत
                                                            ले॰काल सं॰ १७१६
प्रदास्त प्रबंध
                                                  हिन्दी
        १०२४४. गुटका स० १६ । पत्रसं० ३६ । घा० ६×४ इचा भाषा— संस्कृत । लेक्काल
× । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० ३७३ ।
        विशेष---नदीश्वर पूजा जयमाल झादि है।
```

		FFE 5 Plant
१०२४४. ह	<b>टुका सं०१७।</b> पत्र	ासं∙ ⊏-प्रशासा∘ ६×४३ इ≃दा माथा—संस्कृत-हिन्दी।
ले•काल × । मपूर्णः ।	। बेष्टन सं० ३७४।	7 70%
<b>विशेष</b> नि	म्न पाठों का संग्रह है	ı
प्रतिक्रमस् पाठ		संस्कृत
राजुल पच्चोसी		हिन्दी
सामायिक पाठ		हिन्दी
१०२४६. गु	टकास०१८। पत्र	सं०४६। मा० व×४ इचा। भाषा−हिन्दी। के≉काल × ।
पूर्णा। बेष्ट्रन सं०३७५ ।	i	
विशेषमनो	हिरवास सोनी कृत धर्म	ंपरीक्षा ।
१०२४७. ग्	टकासं० १६ । पत्र	सि•३~४३। ग्रा॰ ६×४३ इ॰६। भाषा–हिन्दी∽संस्कृतः।
ले • काल × । ग्रपूर्ग।		
विशेष्यूना	पाठ तथा विनती एव	पदो का सम्रह है।
		ात्रस० ७४ । या० ८३°×४३ इ.च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी ।
ले० काल 🗴 । झपूर्ण		The state of the s
	यतः निम्न पाठों का स	रक्ष है ।
भक्तिपाठ		संस्कृत
बृहद् स्वयंभू स्तोत्र		"
गुर्वावति		D.
नेमिनाघ की विनती		हिन्दी
१०२४६. गू	टकासं० २१ । पत्र	स० २०७ । भाषा−हिन्दी-संस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्ण ।
बेष्टन स० ३६६।		.4,
	ातः निम्न पाठो का स	ग्रह है ।
हनुमतरास .	ब्र० जिनदास	्रिन्दों हिन्दों
जम्बूस्थामी रास	,,	"
यो <b>प</b> हरास	ज्ञानभूषर <b>ा</b>	
सबोध सनास् दूहा	वीरचन्द	
नेमकुमार	वीरचन्द	•
•		ले∘काल स० १६३⊏
सुदर्शनरास	🛮 ० जिनदास	हिन्दी 🕡 🧎
धर्मपरीक्षारास	द्र० जिनदास	n ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' '
		ने∙काल सं∘ १६४४
धाजितनाथ रास	19	हिन्दी
१०२५०. यु	टका सं०२२। पत्र	सं० २२ ८। धा०६ ३ ×६ इ.च्.। भाषा-प्राकृतः । ले <b>०काल</b>
🗶 । धपूर्ण । बेष्टनसं०	३६७ ।	
		। तत्पश्चात् जम्बूद्रीप पण्णस्ति दी हिंदै है । यह तिरह उद्देश
तक है।		COLUMN TO A TAX TO A CAN

**१०२४१. गुटका सं**० २३ । पत्र स० ६४ । घा॰ ५ $\times$ ४ ६०४ । माशा—हिन्दी गद्य । ले•काल  $\times$  । घपूर्ण । बेहन सं०३६६ ।

विशेष-गुरुस्थान चर्चा एव समाधि मररा का संग्रह है।

१०**२४२. गुटका सं० २४**। पत्रस**०** ८६। झा०४×४ इञ्च । माथा-हिन्दी-संस्कृत। ले॰काल × । पूर्णा। बेष्टन सं०३६४।

विशेष---मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है---

भादित्यवार कथा	_	<b>মা</b> ऊ	हिन्दी
विषापहार भाषा	-	<b>ग्रचलकी</b> र्ति	"
कल्याग मंदिर भाषा	-	बनारसीदास	,,
सर्वेजिनालय पूजा	_		संस्कृत

**१०२५३. गुटका स**० २**४** । पत्रसं० १४ । घा० ६३ imes४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । ले०काल imes । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० ३६५ ।

विशेष-भाचार शास्त्र सबधी ११८ गाथाए हैं।

**१०२४४. गुटकासं० २६।** पत्र स०२६-१२३ । धा०७×६ इचा। भाषा-हिन्दी। ले∘काल ×। पूर्णा। वेष्टन स०२६४ ।

विशेष---मुख्य पाठ निम्न प्रकार है।

ग्रादित्यवार कथा	_	भाऊ। कवि	हिन्दी
श्रीपाल स्तुति		महाराम	लेब्काल म०१८१०
भक्तामर भाषा		हेमराज	हिन्दी
विनती	-	कनककीर्ति	, लेश्काल स०१८०८

**१०२४.४. गुटका सं० २७** । पत्रस० १० सं १८०। द्या०११३ ${f \times}$ ७ ${f /}$  इल्बा भाषा- हिन्दी। ले०काल  ${f \times}$  । पूर्ण। बेष्टन सं० २८४ ।

**१०२५६. गुटका सं० २०।** पत्र स० १४०। ग्रा०१०१४६ इ≪ा । माथा--संस्कृता । के० काल × । ग्रपुर्णा वेष्ठन स० २०६।

विशेष — निम्न पाठो का सम्बह है — सामायिक पाठ सटीक — हिन्दी गर्छ । ले•काल स० १८२३ कर्म विपाक भाषा विचार — इंडारी पछ । पछ स० २४०४ हैं'।

सम्यक्त कौमुदी--जोधराज गोदीका । हिन्दी गद्य । सं ० काल स० १ ५३२

महाराजा हमीरसिंह के शासन काल में उदयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

१०२४ ७. गुटकासं० २६ । पत्र स०२६६ । ग्रा० ७२४ ४ ६ व्या सावा–हिन्दी। ले० काल सं०१८२३ अपूर्ण। वेष्टन स०२८७ । विज्ञेख-निम्न पाठों का संग्रह है-

नाटक समयसार बनःरसीदास र०काल स०१६६३। वंचास्तिकाय भाषा ही रानन्द भक्तामर माषा टेमराज

१०२४८. गुटका ३० । पत्रस॰ १७६ । ग्रा० १२×६ इचा । ले॰काल × । ग्रपुर्स । वेष्टन स० २८६।

रत्नत्रय पुजा

विशेष --- नरेन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी।

ग्रादित्यवार कथा

कल्यागस्तोत्र वत्ति विनयच द सस्कत

१०२**५६. गृटका सं० ३१।** पत्र स० ७०। ग्रा० १०**×**६} इञ्च । भाषा— भस्कृत। ले ब्लाल 🗴 । अपूर्ण । बेष्टनसब् २८६ ।

१०२६०. गृटका सं• ३२ । पत्र स० ८६ । ग्रा० १२ × ८इ च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ने० कान स० १७६० । पूर्ण । बेप्टन स० २६० ।

विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है---

गरम्वती स्तवन एवं पजा-जानभूपरा मनीश्वर जयमाल पाण्डे जिनदास हिन्दी जोधराजगोदिका .. सम्यक्तव की मदी

१०२६१. गुटका सं० ३३ । पत्र स० ४० । आ०६×५ इचा भाषा-हिन्दी। ले∙काल 🗴 । अपूर्ण । बेष्टन स० २६३ ।

१०२६२. **गृटकास**० ३४ । पत्र स०१०० । ग्रा०६×४६ इ.च । भाषा---हिन्दी । ले० काल धपूर्ण। वेष्टनस० २६४।

विशेष---निम्न मध्य पाठो का सम्रह है---

मृति जिनहर्ष हिन्दी वाइबंताथ जी की विनती

क्षेमचन्द ,, ले० काल स०१६२४ योगसा र

ग्रात्मपटल जिनमेनाचार्यं संस्कृत जिनसहस्रनाम योगीन्द्र देव प्रपन्नं स

१०२६३. गुटका सं० ३४ । पत्रसं० ६३ । आ० ८×७ इथा । भाषा-हिन्दी । लेब्कास सं० १६८६ । पूर्ण । बेष्टन सं० २६६ ।

विशेष--- पूजा पाठ संग्रह है।

परमास्माप्रकाश

१०२६४. गृहका सं० ३६ । पत्रसं० ४३ । मा० ६×४३ इला। माषा-हिन्दी संस्कृत । से•कास × । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० २६७ ।

विशेष-पूजा पाठ एवं सामायिक पाठ ग्रादि का संग्रह है।

१०२६ **४. पुटका सं**० ३७ । पत्रसं• १०४ । ग्रा० ४३ × ६३ इन्या । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले॰काल × । पूर्णः । बेष्टनसं॰ २६८ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

**१०२६६. गुटका सं**० ३६ । पत्रस० १६ । द्या० ५imes४ इ.ख.। माषा-हिन्दी-सस्कृत । के०काल imes । पूर्ण । केवन सं० २६६ ।

विशेष--पूजा पाठ सग्रह है।

**१०२६७. बुटका स**ंब दे**६**। पत्रसंब ३--२३०। द्याब ४ $\frac{1}{2}$ imes४ इ.स.। साथा-हिन्दी पद्यः। सेक्साल imes। सप्तर्गः। देवनसंब ३००।

विशेय-वनारसीदासकृत नाटक समयसार है।

**१०२६ म. गुटका स**ं० ४०। पत्रस० २००। प्रा० म $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ इथा। भाषा—सस्कृत-हिन्दी। ले०काल स०१६म् ६ बेग्राल बुदी १४। बेष्टनसं० २३१।

विशेष--मस्य पाठ निम्न प्रकार है--

परमात्म प्रकाश, द्रव्य सग्रह, योगसार, समयसार भाषा (राजमल्ल—झागरा मे स० १६-६ मे प्रतिलिपि हुई यी ) एव गुएएस्यान चर्चा प्रारि है ।

१०२६६. गुटका सं० ४१।

विशेष---

समयसार वित्त है। अपूर्ण **। वेष्ट्रन सं०**३३२ ।

१०२७०. गुटकास० ४२ । पत्रस० १४० । ग्रा० ४५ ४६ इला। भाषा-हिन्दी । ले•काल メ । ग्रमुर्णे । वेष्टनस० ३३३ ।

विशेष---प्रक्षर घसीट हैं।

१०२७१. गुटकासं०४३ । पत्रस० २४ । स्ना०६×६ इचा समया-हिन्दीसम्कृत। से∙काल×।पूर्णः वेष्टनसं०२३४ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

१०२७२. सुटका सं० ४४ । पत्रस० २२६ । म्रा० ८ ४६ इन्त्रा । भाषा—हिली । मे०काल सं१८३३ । पूर्ण । बेष्टनसं० ३३४ ।

विशेष-- निम्न रचनाधीं का सग्रह है---

समयसार नाटक---वनारसीदास हिन्दी

पोषहराम ज्ञानमुषरा ,

१०२७३. गुटकासं० ४४,। यत्रसं० १२०। घा० ४ x ५ ६००मा। भाषा-हिल्ली। ले०काल 🗴 । पूर्णे। वेष्टनसं० ३३६।

विशेष-- वारहसड़ी मादि पाठों का सम्रह है।

१०२७४. गुटका सं०४६ । यन सं०४१ । धा०६ 🗙 ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी। ले०काल 🗙 । प्रपूर्ण। बेष्टन सं०३३७ ।

विशेष-पद एव स्तोत्रों का सम्रह है।

१०२७ ५. गुटकासं० ४७ । पत्रस०१ ५५ । घा० ५ ५ × ३ इ.स. । साथा –हिन्दी । लेकाल × । पूर्ण । बेष्टनसं०३३ न ।

विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है।

मधुविदुचौपई सगवतीदास (र०काल सं०१७४०)

हिन्दी (पद्य)

७ पद्य है

सिद्ध चतुर्दशी सम्यक्तव पच्चीमी

(ले०काल सं०१ द२४)

ब्रह्मविवास के शस्य पाठ

१०२७६ - गुटकासं०४६ । पत्रस० ३४४ । घा०६ ४४ इ.चा भाषा-प्राकृत-क्सकृत । ले∘काल म०२ ⊏१२ बँगास मृदी १०। पूर्णे। वेष्ट्रन सं०३३६ ।

विशेष---निम्न पाठों का संबह है।

गुगास्थान एवं लोक चर्चा, पचस्तिकाय टब्बा टीका ।

तत्वज्ञान तरगरिए--- ज्ञानमप्रस्म की भी दी हुई है।

उदयपुर नगरे राजाधिरात्र महाराजा श्रीराजसिंहजी विजयते सवत् १८१२ का बैशास्त्र सुरी १०।

१०२७७. गुटकासं० ४६ । पत्र सं०६० । ग्रा० ६ ४४ इचा। मापा—सस्कृत-हिन्दी। ने०काल × । पूर्णा। बेष्टन स० ३४०।

१०२७ म. गुटकासं० ५०। पत्र स० १३। मा० १०×७ इका भाषा—सस्कृत-हिन्दी। लेब्सल × । पूर्णावेष्टन स०३४१।

विशेष--पूजा, स्तीत्र एवं सामायिक भादि पाठी का सग्रह है।

१०२७६. गुटका सं० ५१।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है।

हर्षकीर्ति ,, घेल्ह ..

पंचेन्द्रिय बेलि घेल्ह ,, इनके झितरिक्त पढ, विनती एव छोटे मोटे पदो का सग्रह है—

१०२.८०. गुटकासं० ५२ । पत्रसं०१३४ । घा० १०×७ इ.चा। माथा~संस्कृत-हिल्दी। ले∘काल × । पूर्णावेष्टनसं०३४३ ।

विशेष--निम्न पाठो का संग्रह है।

जिनसहस्रताम

जिनसेनाचार्य

संस्कृत

दशसक्षाम् पूजा	,	संस्कृत
क्षमावसी पूजा	नरेन्द्रसेन	
पूजा पाठ सग्रह		
वृहद चतुर्विगति -		
तीर्थंकर पूजा		सस्कृत
चौरासीज्ञाति जयमाल	ब्र० जिनदास	हिन्दी
शील बत्तीसी	ग्रकूमल	हिन्दी
चितामिण पार्श्वनाथ	विद्यासागर	,,
बृहद् पूजा		
स्फुट पद	भानुकीर्ति एव	,,
	महेन्द्रकीर्ति	

१०२६**२. गुटका** सं**० ५३ ।** पत्रस० १४१ । ग्रा० ११×४ | इ.स. । भाषा—सस्कृत । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनसं० ३४४ ।

विशेष -- विभिन्न ग्रन्थों के पाठी का संग्रह है।

१०२६ न. गुटका सं० ५४ । पत्र म० ६० । ग्रा० ६ $imes imes^1_i$  इन्थ । भाषा–सस्क्रन । ले०काल imes । पूर्ण । बेहन स० ३४५ ।

**विशेष--**पूजा पाठ सग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर

**१०२** स्ट्रे. **गुटका सं०१**। पत्रम०१०० । ग्रा०१०imes६ ६२व । भाषा-हिन्दी-सम्कृत । ले०काल imes। पूर्णा विष्टुन स०५१३ ।

१०२५४. गटका सं० २ । पत्रस० × । बेष्ट्रनस० ४४२ ।

विशेष -- निम्न पाठी का सग्रह है--

१. नेमि विवाहको — 🗴 । हिन्दी । पद्य । २०काल म० १६६१ ।

२. वीबीस स्नवन-- x । " ।

२. त्रेपनकिया बिनती—बद्यागुलाल । हिन्दी पद्य ।

४. महापुरासा की चौपाई--गादास । हिन्दी पद्य ।

४. बिन्तामिए जयमाल -- × । हिन्दी पद्य ।

**१०२८६. गुटकास**०३ । पत्र स०६२ । प्रा०५ुँ×४¦ इन्ता मावा⊸हिन्दी-सस्कृता। ति•काल × । प्रपूर्णावेल्टन स०५५६।

विरोध—करुयासामन्दर स्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र स्रादि स्तोत्र, मैनागुस्री सङ्ग्रसम् एव पद संग्रह है।

**१०२८६. गुटका सं० ४ ।** पत्र स०८० । द्या**०** ४×४ इ**०० । माषा-हिन्दी । मे०काल × । पूर्णे । बेप्टन मं०४६६ ।** 

विशेष-प्रायुर्वेद के नुस्को का संग्रह है।

१०२८७. गुटका सं० ५ । पत्रसं० ६४ । वेष्ट्रनसं० ६८ ।

#### विशेष---निम्न पाठ हैं---

- १. प्रतिकशरम सूत्र--- × । भाषा---प्राकृत ।
- २. स्तति संग्रह—× । भाषा—हिन्दी ।
- ३ स्त्री सजमाय---× । भाषा---हिन्दी ।

**१०२८ . गुटका सं० ६ । पत्र सं० ६३ । प्रा**० ८ $\frac{1}{4}$  $\times$ **६ इ.स. ।** भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० Yर्द्ध ।

### विशेष-निम्न पाठ हैं---

- १. बारहसाडी--- × । हिन्दी । पत्र १--७
- २. बारहमासा-- × । हिन्दी।
- ३. मनित्य प्रचाशिका -- त्रिभवनचन्द । हिन्दी ।
- ¥. जैनशतक --- × । भघरदास । हिन्दी ।
- ४. शनिक्चर देव कथा—×। "।

**१०२८६. गुटका सं**० ७ । पत्र सं० ४४ । द्वा॰  $= \frac{1}{2} \times \xi$  इञ्ज । मापा—सस्कृत । ले•काल  $\times$  । पूर्ण । बेकृत सं० ५८४ !

# विशेष--निम्न स्तीत्रों का संग्रह है-

- १. शिवकवच—──── । संस्कृत ।
- २. शिवछन्द—×। "
- ३. वसवारा स्तोत्र-× । संस्कृत ।
- ४. नवग्रह स्तोत्र-- imes 1 । "
- ५. मूर्यमहस्रनाम— × । ,
- ६. सुर्य कवच--×।

१०२६०. गुटका सं० म । पत्रसं० १ । माथा-हिन्दी । से॰काल सं० imes । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४५० ।

# विशेष-नेमिनाथ के नव मंगल हैं।

१०२६ १. गुटकासं० ६ । पत्रसं० १६ । छा० ५६ 🕆 ४ ६ 🖘 । भाषा संस्कृत । ले० काल 🗴 । पूर्णा वेषन स० ४७६ ।

### **विशेष** — संघ्या पाठ भादि हैं ।

१०२६२. सृष्टकास० १०। पत्रसं० १६०। घा० ६×४ ६०४। आया-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल × । पूर्णः। बेष्टन सं०४७६।

विशेष—िनस्य पूजा पाठ, स्तवन, चिन्तामणि स्तोत्र, कर्म प्रकृति, जीव समास मादि का वर्षन है। स्नेह परिक्रम--नरपति । हिन्दी ।

विशेष-- नारी से मोह न करने का उपदेश दिया है।

```
नेमीश्वर गीत--- 🗴 ।
         १०२६३, गृटका सं० ११ । पत्रसं० २०० । घा० ६ × ५ इन्ह । भाषा-संस्कृत-प्राकत ।
ले • काल 🗙 । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० ४७७ ।
        विशेष--- मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं---
१. कजिकावतोद्यापन---सितकीति । संस्कृत ।
२. सप्त भक्ति-- × । प्राकत । मालपुरा नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।
३. स्वयम स्तोत्र--- × ।
                                    संस्कृत ।
४. तत्वार्थं सत्र--उमास्वामि ।
४. लघसहस्रनाम -- × ।
६. इष्टोपदेश---पुज्यपाद ।
        १०२६४. गुटका सं० १२ । पत्रसं० ४० । झा० ५×४ इन्छ । माषा-संस्कृत । ले •काल सं०
१७८१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४७६ ।
       १०२६४. गुटका सं० १३ । पत्रस० १८० । घा० ७×४ इथा । भाषा-हिन्दी-सम्कृत ।
लेञ्काल 🗙 । पूर्णा विष्टन स० ४७५ ।
       विशेष--- निम्न पाठी का संग्रह है।
       १ भद्रबाह गुरु की नामावली --- × ।
       विशेष-सवत् १४६७ से १६०७ पौष सुदी १५ तक । गोपाचल मे प्रतिलिपि हुई बी।
       भटारक पद्मनंदि तक पट्टावली दी है।
       २. गच्छभेद
                                 मलसघे
                                              सघ ४
                                                           गच्छ
                                                                     १६ भेद नामानि
          नदि सधे
                                 नदि १
                                             चन्द्र २
                                                           कीति
                                                                    ३ भवरा
          देवसंबे
                                 देश
                                             दत्ते २
                                      ۶
                                                           सःस
                                                                    ३तग
          सेनच सधे
                                 सिंह
                                             कं भ २
                                                           घासव
                                                                    ३ सागर
          श्रेगी संघे
                                मेन
                                      8
                                                          बीर
                                                                   ३ राज
          श्रीनदिस्पे
                                सरस्वतीगच्छे
                                                          बलात्कारगरो
          श्री देवसधे
                               पुस्तकगच्छे
                                                          देसीगगो
          श्री सेनसचे
                               पूष्करगच्छे
                                                          सरस्थगसे
          श्री सिहसंचे
                               चन्द्रकपाटगच्छे
                                                          कानूरगरो
       3. सामाधिक पाठ
                                ४ भक्तिपाठ
                                                          ५ तत्वार्थसूत्र
                               ७ स्तोत्रसग्रह
       ६. भक्तामर स्तोत्र
                                                          द गदेनान की जयमाल।

 सबोध पंचासिका

                                   रह्य
                                                              श्रवभाषा ।
                                         ले •कास सं०१५६७
```

प्रवास्ति—सवत् १५६७ वर्षे कारिकमासे कृष्णपक्षे मगल त्रयोदस्यां सुसनेर नगरे श्री पद्म प्रम वैत्यालये श्री मूलसमे सरस्तीमच्छे बनात्कारगणे श्री कृदक् दाचार्यान्यये महारक श्री पदमंदि देवास्तरपट्टे महारक श्री सकत्वकीतिदेवास्तरपट्टे महारक प्रकृतकारितदेवातरपट्टे महारक श्री ज्ञानपूरणपेदासन्तर् बृहर् पुरुभोत्त्री रत्कत्वीतिस्थविराचार्यदेवातत्त्रिष्याचार्यं श्री देवकीतिदेश तदीष्याचार्यं श्री शीतभूषण गिष्टिस्थ कः केसचन्द पटनार्थं स्वज्ञानादरणी कर्मकार्योष परोपकारायधान्यर पद्यावस्थक ग्रंथ स्वहस्तेनातिस आचार्यं श्री

सवत् १६६१ वर्षे शाके सागवाडा नगरे धादिनाथ चैत्यालये मंडलावार्यं श्री सकलचन्द्रे ए इदं पुस्तकं पण्डित वीरदासेए। गृहीतं ॥

-		
१०. जिन सहस्रनाम	×	संस्कृत
११. पद सब्रह	×	हिन्दी
१२. पच परमेष्टी गीत	यश.कीर्ति	हिन्दी
१३ नेमिजिन जयमाल	विद्यानन्दि	,,
१४. मिथ्यादुवकड	<b>व</b> ० जिनदास	,,
१५. विननी	×	,,

१०२६६. गुटकासं० १४ । पत्रसं० १०१ । ग्रा० ४⋌३ ६%। भाषा–सस्कृत । ले∙काल × । पूर्णावेष्टनस०४७४ ।

विशेष--नीति के श्लोक हैं।

**१०२६७. गुटका सं० १५** । पत्र स० २६ । ग्रा० ४ $imes imes imes^2$  इ.स. भाषा–हिन्दी । ले०काल imes । पूर्ण। बेष्टन सं०४७३ imes

विशेष-विनती एव पद ब्रादि है।

**१०२६ = गुटकासं०१६** । पत्र स०१०२ । द्या०५ ×५ <sup>‡</sup> दश्वा । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । सपुर्ता। बेप्टन सं०४७२ ।

विशेष-- मुख्य पाट निम्न प्रकार है--

१. नवमगल लालविनोदी

२. लेश्यावली हवंकीति र०काल स०१६८३

पद सग्रह बखतराम, भूषए। ग्रादि के हैं।

१०२९६. गुटका सं० १७ । पत्र सं०५२ । घा० ६ ${}_{1}^{2}$   $\times$ ६ ${}_{2}^{3}$  इन्थ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । के० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन सं० ४७१ ।

विशेष-पट्टी पहाडे तथा स्तोत्र एन मत्र प्रादि है।

१०३००. गुटका सं०१८ । पत्रस०२३३ । घा०४ × ४ इ.च । माया-हिन्दी । ले०कास × । पर्सा । बेकनसं०४७० ।

विशेष-मुख्य पाठ निम्न प्रकार है-

१. क्षेत्रपालाष्ट्रक विद्यासागर

२. गुरु जयमाल जिनदास

विशेष-वहा रूपसागर ने वारडोली में प्रतिसिप की थी।

१०**२०१. गुटका सं०१६ ।** पत्रसं० २४०। घा०५×४ है इ.चा। भाषा-संस्कृत-प्राकृत । ले०काल ×। पूर्णा वेष्टनसं०४६६ ।

विशेष--- नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ सम्रह है। प्रति प्राचीन है।

१०२०२. गुटका सं०२०। पत्रसं०२२४। मा० ७ $\times$  $^{V}$  इ.ख.। माथा-हिन्दं। । ले० काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन स०४६ ।

विशेष-ग्रायुर्वेद के नुमखों का सगह है।

१०२०२. गुटकासं० २१ । पत्रस० ७७ । घा॰ ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इश्वा । प्राचा-संस्कृत-हिन्दी । से॰काल $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ४६७ ।

विशेष--- मुख्य निम्न पाठ हैं---

१. गौतमस्वामी रास विनयप्रभ हिन्दी

चारित्रमिह

र०काल स**० १४१**२

२. चौबीस दण्डक गजसागर

ले॰काल सं॰ १७६६

३. मूनिमालिका

ले • काल सं०१६३२

ग्रन्तिम--

सवन् सोल बनीस ए श्री विमलनाथ सुए साल । दीक्षा कल्यारफ दिने ग्रूपी भी मुनिमाल ।।३२॥ श्री रिराणीपुरे रिलया मर्गा श्री कारिल किराणक्य । मूर विजय राजे तदा सम अधिक आराण्ट ।।३३॥ श्री मतिश्रद सुगुर तर्गी सु पसाये मुक्कार। मन्हर श्री मुनिमालिका गर्ग गर्ग परिपल पूर ।।३४॥ महामुनीसर गावता सुर तर सफल विहाल। अष्ट महानिषि पर फलें सदा सदा कल्याए।।

इति श्री मृनिमालिका संपूर्ण ।

पद सग्रह विमलगिरि, दुर्गीदास भादि के

१०३०४. गुटका सं० २२ । पत्रसं० १३१ । मा० ४ $\frac{1}{2}$   $\times$  ६ इन्छ । भाषा-हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनसं० सं० ४६६ ।

विशेष-निम्न पाठों का संग्रह है।

धारती संग्रह, विजया सेठनी वीनती, मुभद्रा वीनती, रत्नगुरु वीनती, निर्वास काण्ड भाषा, चन्द्र-गृप्त के सोलह स्वप्न, चौबीस तीर्थकर वीनतो, गर्भवेति-देवसूरार

न वरेमाम गरभ में रह्यो

ते दिन प्रास्ती विसरि गयो।

देवमुरार जी वीनती कही

झापेन पाई प्रभु झाये लहि।।७।।

यलभद्र वीनती, जिनराज बीनती, विनती संग्रह भादि हैं।

१०२० थ्र. गुटका सं०२३ । पत्रसं०११२ । घा॰ imes । भाषा –हिन्दी-संस्कृत । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं०४६४ ।

विशेष---निम्न लिखित पाठ हैं---

१. पच कत्यासाक रुपचन्द

मानकी नि

हिन्दी

२. अर्धदत्यावार कथा ३ अन्तर्यवसराम

नागुनगाग **व**० जिनद्यास

मत्र तथा यत्र भी दिये हैं।

१०३०६. गुटकासं०२४ । पत्र स०२१ । छा०६×६ इ.च । माषा-संस्कृत । ले०काल ×। पूर्णा । वेष्टन स०४६४ ।

विशेष--केवल पूजाएं हैं।

१०२०**७. गुटकास० २४** । पत्रसं• ००। ग्रा• ६×४, इ.चः : माषा–हिन्दी । ले०का**ल सं•** १८१३ । पूर्णा । वेष्टन स० ४६३ ।

विशेष -- निम्न पाठ है---

१. भडली विचार

हिन्दी

ज्योतिष

विशेष---पाचोता मे लिखा गया था।

२. सम्मेद विलास

× ग्या। देवकरण

हिन्दी

ग्रन्तिम---

लोहाचार्य मुनिद सुषमं विनीत है।
तिन कृत गाया वध सुम्रंय पुनीत है।।
साह तने भ्रंबुसार सम्मेद विनास खु।
देवकरण विनवं प्रभु कौ दासजु।।
भ्रा जिनवर कूंसीस नमाव सोय।
धर्म बुद्ध तहा सबरे सिद्ध पदारय सोय।

३ जीवदया छद भूपर हिन्दी ४. मंतरीक्ष पार्वनाथ छद भाव विजय " ५. रेलता माडका "

६. भूलना		हिन्दी
७- छदसार	नारायगुदास	"
८. छद	केशवदास	हिन्दी
<ul><li>राग रत्नाकर</li></ul>	राधाकृष्ण	हिन्दी
१० ज्ञानाएं।	शुमचन्द	सस्कृत

**१०३० क. गुटका सं० २६ ।** पत्रस॰ ८४ । भाषा–हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्णा। **बेहनसं∘** ४६२ ।

विशेष--मुख्य पाठ निम्न प्रकार है---

अवभनाय लावग्री मयाराम

विशेष—इसमे घुलेव नगर के वृषभनाथ (रिखबदेव) का वर्णन है। घूलेव पर चडाई भ्रादि कावर्णन है।

१०२०**ट. गुटका सं०२७** । पत्र स० ४० । प्रा० ५ $^{1}_{2}$  × ६ इच्च । भाषा सस्कृत हिन्दी। ले॰काल × । पूर्णा । बेष्टन सं०४६१।

विशेष--मुख्यतः निम्न पाठ है--

- १. वृषभदेवनी छद × हिन्दी
- २. सुभाषित सग्रह X संस्कृत ३. ज्ञान्तिनाथ को लावणी X हिन्दी
- **१०३१०. गुटका सं० २८ । ।** भाषा-हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६ ।

विशेष---पद पूजा पाठ ग्रादि हैं।

**१०३११. गुटका सं**० २**६ ।** पत्रसं० ६४ । ग्रा० ६ $\frac{1}{4} \times 3\frac{1}{4}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी-सम्कृत । ले•काल × । पूर्ण । बेष्टन म० ४४७ ।

विशेष - पद स्तुतियों का मग्रह है।

**१०३१२. गुटका सं० ३०। भाषा**-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ४५६ ।

विशेष -- ग्रमिषेक स्नपन पुजा पाठ एवं मत्र विधि ग्रादि है।

१०३१३. गुटकासं०३१ । पत्र स०५४ । भाषा-हिन्दी । ले•काल 🗴 । पूर्ण । बेण्टन सं० ४४४ ।

विशेष - विभिन्न कवियों के पद, स्तुति गिरधर की कूडिनियों, पिंगल विचार तथा स्तुतिया हैं।

१०३१४ , गुटकास० ३२ । पत्रसं॰ ८०। घा॰ ७ ४६ ई इ**चा प्रावा-संस्कृत-हिन्दी।** लेब्काल ४ । पूर्णावेष्टन सं॰ ४४४।

विशेष-प्रापृथेंद एवं ज्योतिष सम्बन्धी विवरण है।

पर्शा । वेष्ट्रन सं० ४५३ ।

विशेष -- निम्न पाठ हैं---

१. त्रिलोकसार चौपई समतिसागर हिन्दी २. गीत सलना कमदचन्द १०३१६. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० १०० । भाषा-हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ २४२ । विशेष--- निम्न पाठ हैं---१. पद सम्रह--२. विनती रिखब देव जी घलेव व ० तेवचन्त विशेष---गागड देश में घलेव के वयभदेव (केशरिया जी) की दिगम्बर विनती हैं। मंदिर ४२ शिखर होने का विवरसा है। कल २६ पद्य है। ष० रामपाल ने प्रतिलिपि की थी। 3 पच परमेष्टी स्तति व ० चन्द्रसागर धरितस---दिगम्बरी गछ महा सिरागार। सकलकीति गछपति गुराधार तास शिष्य कहे मध्री वाशि । बह्य चन्द्र सागर वलाए। ।।३२।। नयर सज्यत्रा परसिद्ध जारा । सासन देवी देवल मनुहार।। भगो गुणो तिह काल उदार । तह घर होसे जय-जयकार ॥३३॥ ४. नेमिनाथ लावगी रामपाल विशेष---रामपाल नं स्वय ग्रपने हाथ से लिखा था। ४. चौबीस ठारगाचर्चा Х हिन्दी ६. भीषियों के नससे × ७. भ्रमर सिज्भाय × ,, क्रिकेश -- परनारी की प्रीत का वर्णन है। १०३१७. गुटका सं० ३५ । पत्रसं० १०० । माथा-सस्कृत । ले०काल स० 🗙 । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४५० । विज्ञेश---निम्न सुख्य पाठ है---संस्कृत ले•कास सं० १७२१ १. मेचमाला

१०३१५. गृटका सं० ३३ । पत्र सं० ६६ । ग्रा० 🗶 । माथा-हिन्दी । ले० काल 🗶 ।

प्रशस्ति—संबद् १७२१ वर्षे झासोज सुदी १० सोमे बागोदोरा (बांसवाडा जिला) रुवाने श्री गांति-नाव चैरयालये त्र० श्री सएदास तत् शिष्य त्र० श्री झास्त्रेन स्वहस्तेन लिखितेयं मेवमाला संपूर्ण । ।

सबत् १११५ से ११६२ तक के फल दिये हैं।

मेह नक्षत्र विचार, ताजिक शास्त्र एवं वर्षफल (सरस्वती महादेवी वाक्य)।
 ज्योतिक संबंधी गटका है।

**१०३१ स. गुटका सं**० ३६ । पत्र स०१५० । ग्रा०५×४ इ.चा । भाषा–संस्कृत । ले० काल सं०१७१४ व १७२२ । पर्सा। वेट्टन सं०४४६ ।

निम्न उल्लेखनीय पाठ है---

५ गराघर वलय

१. पूजा भ्रमिवेक पाठ 🗴 सस्कृत

२. ऋषिमडल जाप्य विधि 💢 सस्कृत

ले०काल सं०१७२२ माघसुदी १५

सस्कन

प्रशस्ति—१७२२ वर्षे माम सुरी १५ शुके श्री मूललंवे ग्राचार्य श्री कल्याएकीति शिष्य क्रव्चारि संघ जिष्णाना निस्तित एडित हरिदास पठनार्थ।

३. नरेन्द्रकीर्ति गुरु ब्रष्टक X सस्क्रत ४. जिन सहस्रनाम X सस्झत

> . से•कास स०१७३४

प्रशस्ति—सं ० १७१४ वर्षे माघ बुदी २ मीमे श्री मूलसपे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगरो कुंग्सुन्दा-चार्यावन्ये महत्त्व श्री रामकीति तत्त्वहे भ०श्री पद्मनदि तत्त्वहे भ०वेवेब्ब्रकीति तत् गुरु भाता मुनि श्री देव-कोति तत् विष्याचार्य स्त्री कस्याराकीति तत विष्या क० चदिसीय निष्याता विश्वितं प्रश्मस्ती पटनार्थ ।

म • सकलकीर्ति

६ चार यंत्र हैं-- जलमहल, धरिनमंडल, नामिमडल वायमहल ।

पटटाविल हिंदी मद्रारक पटटाविल दी हुई है।

१०३१६. गुटका सं०३७ । पत्रस०५४ । ब्रा०७ ४७ इवा । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल ४ । पर्यो । बेग्रन सं०४४ ⊏ ।

विशेष — ग्रीपथियो के नुसले, यंत्र मंत्र तंत्र भादि, सूर्य पताका यंत्र, वौसठ योगिनी यंत्र लाक्णी— जसकति ।

श्रनितस-- कोट भपराप में कीना तारा क्षमा करो जिनवर स्वामी। तीन लोक नाइक साष्ट्रित सर्व जीव मन्तर जामी।। जमकीर्ति की भरज नुनीले राखो सेवक तुम पाइ। सीनव्याल क्रणा निष् सागर सारिताय प्रभ सकत्यी।। १०३२०. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ३२२ । घा० ६×४२ इन्द्राः प्राचा—संस्कृत । ले०काल ×। पूर्यों । बेष्टन सं० ४४७ ।

# विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है।

१. सूक्ति मुक्तावली	सोनप्रमाचार्य	सुभाषित
२. सुमाषितावली	×	,,
३. सारोदार		,,
४. मतुंहरि शतक	<b>भत्</b> हरि	,,
<ol> <li>विष्णुकुमार कथा</li> </ol>	×	,,
६. मुकुमाल कथा	×	
७. सागरचकवित की कथा	×	,,
<ol> <li>सोह स्तोत्र</li> </ol>	×	,,

१०३२१. गुटका सं० ३६ । पत्रसं• १८१ । घा• ६४५ इश्व । भाषा -हिन्दी संस्कृत । से•कास 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं• ४४५ ।

विशेष--गुटका सहत्वपूर्ण है। वाजीकरण प्रौविषियां, यत्र संत्र तंत्र, रासायनिक विधि, भनेक रोगों की भौषिया दी हुई है। प० स्थामलाल की पुस्तक है।

१०३२२. गुटका सं०४० । पत्र सं०१४⊏ । झा० ६×७ इचा । नापा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । बेष्ट्रत सं०४४१ ।

विशेष-मूख्य पाठ निम्न है-

१. महाबीर वीनती - प्रभाचन्द्र । हिन्दी ।

धन्तिम-डाकिनी साकिनि मत बैताल

वाघ सिंघ ते नडे विकराल तृक्ष नाम ध्याता दयाल ॥२८॥ जग मगलकारी जिनेन्द्र ॥ प्रभावन्द्र वादिवन्द्र जोगिन्द्र ॥ स्तव विकस देवेन्द्र ॥२६॥

२. पार्श्वनाथ बीनती--वादिनन्त्र । हिन्दी । र०काल सं० १६४८ ।

३. सामायिक टीका---× । संस्कृत ।

४. लबु सामायिक -- 🗙 । संस्कृत ।

४. शांतिनाम स्तोत-नेरूपन्त । सस्कृत ।

# धन्तिम -

स्थापारे नगरे रम्ये शांतिनायजिनालये । रचितं मेरूचन्द्रोग पढंतु सुधियो जनाः ॥

२. यशोधर चरित्र--- खुणालचंद ।

```
६. बास्पूज्य स्तोत्र--मेरुबन्द्र । संस्कृत ।
 ७. तत्वार्थसूत्र--उमास्वामी ।
 द. ऋषि मंडल पूजा---×।
 ध. चैत्यालय वदना---महीचन्द । हिन्दी ।
         श्चन्तिम - मृतस्ये गळपति वीरचन्द्र पटे ज्ञानमयस्य मनीद ।
                 प्रमाचन्द्र तस पटे हसे, उदयो धन्य ते हैंवड वशे ।
         तेह पड़े जेसी प्रकट ज करी
                            श्री वादिचन्द्र जगमोर ग्रवतरयो।
         तेह पट्टे सूरि श्री महीचन्द्र,
                            जेह दीठे होय सानन्द।
        चैत्याला भरासि नर नार.
                            तेह घट होसि जयजयकार। संपूर्ण।
        लिखितं अ॰ मेघसागर सं॰ १७२४ मासोज सुदी १।
        १०३२३. गुटका सं० ४१। पत्र सं० १६७। ग्रा॰ ६ × ६ इंच भाषा-हिन्दी। ले॰कास सं०
१८६३ । पर्स । बेष्टन स॰ ४२२ ।
        विशेष---मस्य पाठ निम्न प्रकार है---
१. पंचास्यान कथा--- × । हिन्दी ।
        विशेष-हितोपदेश की कथा है। मंडा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी।
२. चटनमलयागिरि कथा--- मद्रसेन । हिन्दी ।
        विशेष-मारोठ मे आचार्य सकलकीति ने प्रतिलिपि की थी।
3. चतर मकट और चन्द्र किरए। की कथा— × । हिन्दी।
        विशेष-३२७ पदा है। रचनाकार का नाम नहीं दिया हमा है।
        १०३२४. गटका स० ४२ । पत्र सं० २१० । ग्रा॰ ६×६ इन्ह । मावा-हिन्दी । ले० काल
x । पूर्णं। बेष्टन सं० ४४३ ।
        बिशेष-पूजा पाठ सग्रह है । मुख्य पाठ निम्न हैं---
भक्तामर माषा-हेमराज ।
        सुरप---
              सोरठ देश मकार गाम नदीवर जालो।
              मलसंघ महंत तिजग मांहि बखारारे।।
              सीत रोग सरीर तहां भाचारिय निपनो ।
              लेह गया समसान काष्ट मो भली निपनी ।।
              संवतु १८ सौ तले त्रैपन गुरु वसना लोपी करि ।
              सोम श्री ब्रह्म वागी वंदे चमरी पीछी कर घरी।।
```

१०३२ प्र. गुटकासं० ४३ । पत्रसं० ७६ । झा० ८×५६ इ.च.। मावा-संस्कृत-हिन्दी । के•काल × । पूर्ण । वेहनसं० ४४४ ।

विशेष - नित्य तथा नैमित्तिक पूजा पाठ एवं स्तीत्र ग्रादि हैं।

१०२२६. गुटका सं०४४ । पत्रसं०४४ । ग्रा० ५ $^1_2$   $\times$ ६ $^1_2$  इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । से०काम imes । पूर्ण । बेहनसं० ४२३-१६३ ।

विशेष--- पूजा एवं धन्य पाठों का सप्रह है।

**१०३२७. गुटका स० ४५ ।** पत्र सं०६६ । माषा-संस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स०४३२-१६३ ।

विशेष---निम्न पाठ है ---

	*	
१. पद्मावती गायत्री	संस्कृत	पत्र २१
२. पद्मावती सहस्रनाम	às.	एक २३
३. पद्मावती कवच	,,	पत्र २ ५
४. घण्टा कर्ण मंत्र	<i>n</i>	पत्र ३२
४. हनुमत्त कवच	,,	पत्र ३२
६ मोहनी मंत्र	**	ণস ३=

**१०२२ स्. युटका सं० ४६। पत्र सं०२२१ । द्या ७ ५**४५ **द्वा । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०** काल स०१ ८६५ । पूर्ण । वेण्टन स०४३१-१६३ ।

विशेष---निम्न मृख्य पाठ है---

🕈 म्रादित्य द्रत कथापाडे जिनदास ।	हिन्दी	पत्र १३७
२ " द्र∙ महितसागर	**	पत्र १४४
३. धनन्तकथा जिनसागर ।	*1	पत्र १७४

सामायिक पाठ, भक्तामर स्तोत्र एव पूजा पाठों का सग्रह है।

**१०३२ ६. गुटका सं∘ ४७**। पत्र सं॰ १७६ । प्रा० ७×७ इचा । भाषा—संस्कृत–प्राकृत । से∙काल स॰ १६११ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२६–१६२ ।

विशेष--लघु एव वृहद् प्रतिकमरा पाठ, काष्ठासघ पद्राविल भादि पाठ है।

१०३२०. गुटकासं०४ ६ । पत्र स०१८५ । भाषा-सङ्कृत । ले०काल सं०१८८२ । पूर्ण। वेष्टन स० ४२६-१६० ।

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है।

<b>विश्वय</b> —निम्न पाठा का संग्रह है।		
१. क्षेत्रपाल स्त्रोत्रमृति शोभाचन्द	हिन्दी	पत्र ३
२. स्तपन		पत्र ६
३, पूजा मग्रह एवं जिन सहस्रनाम	संस्कृत ।	पत्र ५२
४, पुरुपांजलि वत कथा—व० जिनदास ।	हिन्दी	पत्र ध्=
५. सोलहकारए। व्रत कथा	3)	पत्र ६३

६. दशसक्षण वृत कथा—		हिन्दी	पत्र ६०
७. धनन्तवत रास		11	पत्र ७४
<ul> <li>प. रात्रि भोजन वर्गन</li> </ul>	व० वीर	n	पत्र ७६

विशेष-श्री मूल संघे मंडगो जयो सरसीत गच्छराय ।

रतनवस्द पाटेहवो ब्रह्मवीर जी गुरगगाय।।

श्वाहुबनि नो छन्द—वादीचन्द्र ।

हिन्दी।

विशेष — तम पाय लागे प्रभासचन्द।

वारिंग बोल्ये वादिचन्द्र ॥५८॥

१०. पारसनाथ नो छन्द—× ।

हिन्दी ।

पत्र व्य पत्र ६३

पत्र ८४

११. नेमि राजुल संबाद —कस्वारणकीर्ति । हिन्दी पत्र ६३ १०३३१. गटका सं० ४६ । पत्र सं० ३४ । माषा−हिन्दी । से०काल × । पुर्सं । बेष्टन

१०२२ र. शुदका स० वर्षा पत्र स० २४। मामा−।हन्दा। स०काल ४। पूरा। वष्ट्रन स०४२५-१६०।

विशेष-तीन लोक एवं गुणस्थान वर्णन हैं।

**१०३३२. गुटका सं ५०**। पत्र सं• १२ । भाषा-हिन्दी । ले॰ काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं• ४२३–१५६ ।

विशेष -- निम्न पाठ है---

१. मट्टारक परस्परा २ बघेरवाल छंद

१०३३३. गृटकासं० ४१ । पत्रसं० ४४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टनसं० ४१४-१४४ ।

विशेष-पहिले पद संग्रह है तथा पश्चात् मट्टारक पट्टावलि है।

१०३२ ४. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ४०३ । भाषा-सन्कत-हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्ए । केप्टन सं० ४०७ १५३ ।

विशेष---पूजा पाठ संग्रह है ।

१०३३ स. युटका सं० ५३ । पत्र सं०१ न्हः। मा०३ $\frac{1}{4}$   $\times$  ४ इ.च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले॰काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन स०३ न्४-१४३।

विशेष--मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं---

श्रावित्यवार कथा वाविचन्द्र सृति के पत्र १४७ तक विषय महीचन्द
 श्राराधना प्रतिवोधसार सकलकीर्ति पत्र १४६ ,
 श्रावित्यवारनी वेल कथा — १६४ ,

१११ पद्य हैं।

१०६६६. गुटका सं० ५४। पत्रसं० ४०। मा० ११×४३ इथा। सावा-हिन्दी। के∘कास×। पूर्यो । वेष्टनसं० ३६७-१४०।

विशेष-गुरास्थान चर्चा, स्तोत्र एवं ग्राराधना प्रतिबोधसार है।

**१०३३७. गुटकासं० ४.४** । पत्र सं० ४६४ । ब्रा० ८×५ इ**था।** माषा-संस्कृत-हिन्दी। ले∘काल × । पूर्णे। बेहन सं० ३५६ – १३८ ।

विशेष--विभिन्न प्रकार की १०५ पूजा एव स्तोत्रों का संग्रह है। गुटके में सूची दी हुई है।

**१०३३ स. गुटकासं० ५६** । पत्र स० १०० । ग्रा० १०×५ इ**चा भाषा**-हिन्दी। ले०काल × । पूर्यावेष्टन सं० ३५५-१३७ ।

मस्य निम्न पाठ है---

•			
१. गुग्स्यान चर्चा	×	त्निदी	पत्र १-६६ पर
२ त्रैनोक्यसार	×	,,	<b>६७−</b> ६६ "
५. महापुरास विनती	गगादास	,,	

१०३३ ह. गुटकासं० ५७ । पत्रसं० ५६४ । ग्रा० ६ x ७ इ.च.। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । x । ने०कास x । पूर्ण । बेब्रन स०३५२-१३८ ।

विशेष--मुख्य पाठ निम्न हैं---

१ भक्तिपाठ	×	प्राकृत-संस्कृत
२. स्वयभूस्तोत्र	समतभद्र	21
३. मक्तामर स्तोत्र		
(समस्या पूर्ति)	भुवनकीर्ति	,, ४६ पदा है।
४. ,, (द्वितीय स्तोत्र	) ×	**
५. पच स्तोत्र	×	"
६. महिम्न स्तोत्र	पुष्पदत	n
७. सकलीकरण मत्र	×	<b>&gt;</b> 1
<ul><li>मरस्वती स्तोत्र</li></ul>	×	"१६० पत्र पर
६. झन्तपूर्णीस्तोत्र	×	,, १६१ पत्र
१०. चक्रोश्वरी स्तोत्र	×	., १६२ "
११. इन्द्राक्षी स्तोत्र	×	" <b>१६</b> ६ "
१२. ज्वालामालिनी स्तोत्र	×	,, १६= ,,
१३. पचमखी हनुमान कवच	×	,, १७१ ,,
१४. शनिश्चर स्तोत्र	×	संस्कृत १८७ पत्र पर
१५. पार्श्वनाथ पूजा	×	,, 888 ,,
१६. पद्मावती कवच एवं सह	स्रनाम ×	" 56x "
१७. पार्श्वनाथ मारति	×	हिन्दी
१८. भैरव सहस्रनाम पूजा	×	संस्कृत २३३ "

<b>१</b> ६. मैरव मानभद्र पूजा ए स्तोत्र	एवं शान्तिदास	19	२४६ ,,
रतान ÷०, नवग्रह पूजा	×		4xx "
२१. क्षेत्रपाल पूजा	×	" संस्कृत	
२२. ग्रावन्ति	×		र६र ,, मदा २६७
२२. गुरायाल २३. जिनामिषेक विधान	्र सुमतिसागर		₹9%
२२. सप्तिषि पूजा	सोमदेव सोमदेव	'' संस्कृत	2
	**************************************	•	
२५. पुण्याह <b>वा</b> चन २६. देवसिद्ध पूजा	× ग्राशाधर	*1	
२५. दवासङ्ग पूजा २७. विद्यादेवताचैन		"	
	×	"	₹°0 ,,
२८. चतुर्विशति पट्मावती स्थापित पूजा		,,	<b>∌</b> ∌% *'
२१. जिनसहस्रनाम	जिनसेन	,,	₹¥\$ ,,
३०. विभिन्न पूजा स्तोत्र	×	"	,, 80¢
३१- छत्पय	जिनसागर	हिन्दी	३७६ ,,
३२. चौबीसी	रत्नचन्द	,	₹≒२ ,,
		र०काल सं० १६७६	
३३. लवांकुशघटपट	भ०महीचन्द	"	3€% "
३४. रविवृत कथा	<b>ब</b> ह्म जिनदास	हिन्दी	860 "
३४. पञ्चकत्यारा	×	n	85 o
३६. धनन्त व्रत कथा	×	हिन्दी	४३१ पत्र पर
३७. ग्रन्तरीक्ष पार्श्वनाथ स्त	ावन 🗙	n n	£46 "
३८. माड्या भूलना	×	n	800
३६. कवित्त	सुन्दरदाम	n	<b>₹</b> 50
४०. भवबोध	×		
४१. भगवद् गीता	×		866-864
१०३४०. गुटका सं०	<b>५८। पत्रस०</b> ३७७	। ग्रा०४×४ <mark>३ द<b>्या भाषा</b></mark>	-हिन्दी-सम्हत-
प्राकृतः। ले० काल 🗴 । पूर्गः। बेह			
<b>विशेष</b> — पूजास्कोत्र पद	एव ग्रन्थ पाठी का सग्रह	द है। गुटके मे पूरी सूचीदी हु <del>ई</del>	है ।
१०३४१. गुटका सं० प्र	( <b>६ । बे</b> ष्टनसं० ३५०-१	321	
<b>विशेष</b> —निम्न पाठो का	संग्रह है		
<ol> <li>रत्नत्रय विधान—</li> </ol>	काष्ट्रासधी भ० नरेन्द्र	पेन। संस्कृत।	
२. वृहद्स्नपन विधि	×	*1	
३. गुरु ग्रष्टक —	श्रीभूषस्	,,	
४. कमंदहनपूजा	<b>श्भचन्द</b>	,,	
५. जलयात्रा विधि —	×	,	
		,	

ż

६. पत्य विधान — X संस्कृत ७. जिनदत्तरास — X

शंक संबत् १६२४ सर्वगति नाम संवत्सरे भाषाठ सुदी ८ गुस्वारे लिखितं कारंजामाहिनगरे श्री पार्वनाथ चैत्यालये मटारक श्री छत्रसेन गुरूपदेशात लिखित बाबा बाइन लेहिबल ।

लघुस्तपन विधि -- बि॰ ज्ञानसागर । संस्कृत ।

१०३४२. गुटका सं० ६०। पत्र सं० 🗴 । वेष्टन स० ३३४-१२८।

विशेष--- निम्न पाठ हैं---

₹.	दानशीलतप भावना	 श्री भूषरा	हिन्दी पद्य	ले० काल १७६५
۹,	द्यापाड भूतनी चौपई	 ×	12	_
₹.	बैद्यक ग्रथ	 नयनमुख	,,	ले० काल १८१४
٧,	मुकीशन रास	 ×	,,	
٧.	प्रेज्मनगस	 ×	,,	

प्रज्ञानित--मंबन् १८१४ वर्षे शाके १६७६ प्रवर्तमाने मासोत्तम माक्ते पुत्रकारीमासे प्राक्षितमासे जुननपक्षे तिथि ५ चद्रवारे श्रीमन् काष्टासये निन्दितटगच्छे विद्यापारी य० श्री रामसेनान्यये तदनुकसेरा अ० श्री मुमिनिकीति जी तत्रपट्टे ग्रा० श्री रूपसेन जी तत्पट्टे ग्रा० विनयकीति जी तत् क्रिप्य श्री विजयसागर जी प० केणव जी पडिन नाथ जी लिखिन ।

१०३४३. गुटका स०६१ । पत्र सं∘१६६ । घा०⊂×६ ६०० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । बेटून स०२६०-११४ ।

विशेष---निम्न पाठ हैं---

१. श्रेणिक चरित्र -- ह्रगा बैंद र०काल स० १६६६ भादवा बदी १३

२. ऑसोधर चौपई — लक्ष्मीदास

३. सम्यक्त्वकौमुदी — जोघराज

४. जम्बूस्थामी चोपई - पाडे जिनदास र०काल स० १६४२

४. प्रदानकथा 🗥 --- ब० वेसीदास

६. नागश्री कथा - - किशनसिंह ले व काल सव १६१६

विशेष-प्रहित्रर मे अतिसिप हुई।

विशेष--- निम्न पाठ हैं---

१-विनती एवं भावनाएं --- X । हिन्दी

२-पच मगल--रूपचन्द--X । "

३-सिंदूर प्रकरग्-वनारसीदास । हिन्दी

५-भक्तिबोध-दासद्वत । गुजराती

```
६-लघु द्यादित्यवार कथा---भानुकीर्ति । हिन्दी
```

७-भादित्यवार कथा---माऊ हिन्दी ।

प्रमुख्या । हिन्दी ।

६-जलडी--भूषरदास । हिन्दी ।

१०-ऋषभदेवगीत--रामकृष्णः । हिन्दी ।

११-बनारसी विसास-वनारसीदास । हिन्दी ।

१२-विलिभद्र विनती---× । हिन्दी ।

१३-छन्द--नारायनदास । हिन्दी ।

१०३४ **४. गृटका सं०६३।** पत्र स० ३४। माषा-हिन्दी। ले॰ काल सं०१७६५। पूर्ण। वेहन सं०२७४-१०७।

विशेष-—देव, विहारी, केशव घादि की रचनाम्रों कासंग्रेह है। गुटका वडा है बारहमासा सुन्दर कवि काभी है।

१०३४६. गुरुका सं० ६४। पत्र स॰ ४६। ग्रा॰ १ $\times$ ५ इला। मावा-हिन्दी पद्यः। ले॰ काल  $\times$ । ग्रपुर्ती। वेप्टन सं॰ २२०-६७।

#### विशेष -- निम्न पाठ हैं --

१-धनुरुद्ध हररा --- जयसागर।

२-श्रीपाल दर्शन — X ।

३-पद्मावती छद --- 🗴 ।

४-सरस्वती पूजा -- × ।

**१३४७. गुटकासं० ६५**। पत्र स० फुटकर । प्रा०६२<sup>3</sup>,४४३ इ.आर.। भाषा−हिन्दी पद्यः। ले∘काल—×। धपूर्णः। बेष्टन स०२१३-८६।

विशेष -- सप्तव्यसन चौपई,मादित्यवार कथा म्रादि हैं।

विशेष-- लघ चागुक्य एवं श्रादिनाथ स्तवन धौर धर्मसार हिन्दी में है।

१०३४६. ग्रुटका सं०६७। पत्र स० १०४। द्या० ८×५२ हथा। भाषा⊸हिल्दी।। ले० काल ×।पूर्णः वेहनसं०१६६-७२।

विशेष - निम्न ग्रंथ हैं---

१-माचा भूवगा-जसवंत सिंह। २०८ पदा है।

२-मुन्दर ऋंगार-महाकविराज ।

३-विहारी सतसई -विहारीलाल । ले० काल सं० १८२८ ।

४-मधुमालती कया-वर्तुं मुजदास । ८७७ छन्द है।

**१०३४०. गुटका सं० ६० ।** पत्रसं० २१४ । झा० ८×५० ह्रेचा साचा—संस्कृत-हिन्दी । से•कास सं०१८८६ वैद्याल वदी ४ । पूर्ण । बेक्टनसं०१४२-६४ ।

विशेष — इसी वेष्टन सं० पर एक गुटका और है।

**१०२४१. जुटकासं० ६६** । पत्र क्लं०१४२ । बा० २२४६ इ.च. । भाषा-हिन्दी—संस्कृत । कै•काल सं०१८७० । पूर्ण । बेहनसं०१४१−६४ ।

विशेष---निम्न संग्रह है।

१-नैमिलिक पूजायें।

२-मानत्ंग मानवती--मोहन विजय । हिन्दी ।

३-साड समछरी--- × । सं० १८०१ से १८६८ तक का बर्शन है।

४-धनत वत रास--जिनसेन।

१०३ **५२. गुटका सं**०७०। पत्र स० फुटकर पत्र । आर० ७ $rac{3}{4} \times rac{3}{4}$  इञ्च । आर्था-र्जश्कृत । हिन्दी। ते० काल imes । अपूर्ण। बेष्टनसं० ११२ – ४४।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है।

१०३४३. गुटका सं० ७१। पत्र सं० १००। झा० ६४४ है इन्था भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल ×ा पूर्णा वेष्टनसं० ७२-४२।

विशेष -- भक्तिपाठ के प्रतिरिक्त मुख्य निम्न पाठ हैं--

१. म्रादित्यवार कथा—महीचन्द्र। हिम्दी। पत्र ७६ महिमा फ्रादित्य वत तग्गोग हुवे जगत विख्यात। वेकरमीनर नारी एहुते प्राथे मुख्त भवार। मूल सम्मादिया उत्तरी सुरिवादी चंद्र। गछ नायकतम पटेचर कड़े श्री महीचन्द्र।

२ महापुराण विनती---गंगदास । हिन्दी पत्र ६२ ।

१०३ ⊻४. गृटका सं० ७२ । पत्रसं० १६६ । घा० ६ × ५ है इन्ता । भाषा∽संस्कृत-हिन्दी । के•कास × । पूर्ण । बेहन सं०६७ -४१।

विशेष--नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है।

**१०३५५. गुटका सं**० ७३ । पत्र सं० १३८ । मा०६ $\frac{1}{7}$ ×५ इन्द्र । माषा-हिन्दी-संस्कृत । लेककाल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ८-६ ।

विशेष-पूजा पाठ एव स्तोत्र संग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-संमवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर

**१०३५६. गुटका सं० १**। पत्रसं० २२३ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । ले∘काल × । घपूर्यी । बेष्टन सं० ४६३ ।

विशेष---धश्विकित्सा सम्बन्धी पूर्ण विवरण है।

**१०३५७. गुटका सं०**२ । पत्र स० ७२ । घा० ६×६ इंच । भाषा−हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्या । वेष्टनसं० ४४१ ।

विशेष---पूजा पाठ तथा विरुदावली है।

१०३५ ८. गुटका सं०३ । पत्रसं०६० । घा०६ ४ ६ इ.च.। भाषा⊸हिन्दी–संस्कृत । ले∙काल ४ । ग्रपूर्स । वेष्ट्रन सं०४४० ।

विशेष---नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

**१०३५६. गुटकास० ४** । पत्र स०७-१२२ । घा०४ ′<६ इल्डा भाषा—हिन्दी । ले० काल ⋉। ब्रापुर्ण । वेष्टन स०३७३ ।

विशेष-कबीरदास के पदो का संग्रह है।

१०२६०. गुटकास० ४.।पत्रस० २०। घा० ६×४ इच । भाषा—भाकृत-हिन्दी।ले०कास × । घपुर्सा वेष्टनस० २२६ ।

विशेष — मुमाषित तथा गोम्मटसार चर्चासग्रह है।

**१०३६१. गुटका सं०६।** पत्रस०२-२३ । झा० १x ४ इ.च.। भाषा-हिन्दी । ले०काल x । प्रपूर्ण । बेष्टन सं०२५१-६४०।

विशेष—वैद्य रसायन ग्रंथ है।

**१०३६२. गुटका सं० ७ ।** पत्र स०४**६ । घ्रा०५** $\times$ ४ इ.च. । मापा-हिन्दी । **ले•का**ल  $\times$  । घपुर्ए। वेष्टन स०२३०।

म्रनत पूजा व्र॰ शांतिदास हिन्दी ---भ्रनतब्रतराम व्र॰ जिग्गदास ,, ----प्रति प्राचीन है।

**१०३६३. गुटका सं०६।** पत्रस**०११३**। घ्रा०६ $rac{1}{2} imes extbf{४.५ इ.च.}$  माया-सस्कृत-हिन्दी **।** से**०काल** imes। पूर्णा वेष्टन स०२२६।

विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है---

चरचा बामठ बुवलाल हिन्दी स्तवन

विशेष — चौबीस नीर्थकरो के तमकत्यारणक तिथि, सहिमा वर्णन, शरीर की ऊ चाई वर्णन, शरीर का रग तथा नीर्थकरो के शासन व उपदेश निरूपमा का वर्णन है।

ग्रन्तिस भाग---

धन्त एकादण पूरव चोदह धौर प्रज्ञापनि पंच बलारो । चुनीका पच है प्रथमानुयोग सुभ सिद्धान्त मु एकही जानी ॥ प्रकीर्गक चोदह कहे जगदीस सबै मिलि सूत्र एकावत मानो । ए जिन भाषित सूत्र प्रमास कहे बुखलाल सदाचित झानो ॥६२॥ दोहा

देव शास्त्र गुढ़ नमी करी ए जिनगुरा पुण्य महान ।
मुफ्त बुधि सूत्र करी माल गृथि सुखतान ॥१॥
मित्रजन पावे पहरण्यों एक धपुरव हार ।
यक्तकीर्त गुरुनाम करि कहे लाल गुष्ककार ॥२॥
सवत् क्षोगसि दश साल में सुद फागुराना सुभमास ।
दशमिदिन पूरए। भया चरचा बास्तर माश ॥३॥
पढ़े सूरी जे आवधी भविजन को सुल कर्यो।
साल कहे मुफ्त भव मब बी मुष्ट हो जो तुम चरए।॥४॥

डात	चरचा	बासित	सपुर्ग ।

۲.	सार सम्रह		संस्कृत			पूरा
₹	शान्तिहोम विधान		उपाध्याय व्योमरस	संस्कृत		
	श्रन्तिम पुष्पिका	_	इति श्री उपाध्याय वोमरस समाप्तं	त विरचिते शांति	होम	বিঘা
٧.	मगलाप्टक		म ॰ यश कीति	संस्कृत		
¥.	वृषभदेव लावग्गी		लाल	हिन्दी		
	(मट्टारक यश कीर्ति	रेशिष्यल	ाल )			
गुज	रात देश में चोरीवाड़ न	गमकस्या	न के मादिनाथ की लावएी है	<b>}</b> 1		
उन	की प्रतिष्ठाका संवत् ।	नेम्न प्रका	₹—			
	सवत् उर	ो सासात	वरवे वैशाल मास शुक्लपक्षे	r I		
	षप्ठदिन ।	सिगासरा वि	जनकी प्रतिष्ठा की धी मनहरः	111		
इस	के झतिरिक्त नित्यनैमि	लेक पुजाझं	ों का संग्रह है।			

# चित्र व यंत्र

### यंत्र कागज व कपडे पर

१०३६४. १-हाथी के चित्र में यंत्र-

विशेष---- यह वित्र कागज पर है किन्तु कपढ़े पर विषका हुआ है। यह १५ वी शताब्दी की कला का घोतक है। हाथी काफी बड़ा है। उस पर देव (इंडो बैठा है। सामने बच्चे को गोद में निये हुए एक वैद्यो है संगव है इन्द्राएंगे हो। ऐसा लगता है कि मगवान के जन्मोत्सव का हो। चित्र में लोगों की पगड़ियां उदयपुरी हैं।

१०३६५. २-पंच हनुमान वीर--

विशेष-कपडे पर (२०×२० इंच) हाथी, घोड़े तथा हनुमानजी का चित्र है।

१०३६६. ३-ध्रुत ज्ञान यंत्र--

**विशेष**— अट्टारक हेमचन्द्र का बनाया हुआ। यह यंत्र कपड़े पर है। इसका आकार ३६ $\times$ ४४ इन्स है।

१०३६७. ४-काल यंत्र---

विशेष—यह उत्सर्पिएगी और अवसर्पिएगी काल चक्र का यत्र कपडे पर है। इसका आयकार  $22 \times 27$  है। इस पर स० १७४७ का निम्न लेख है—

सवत् १७४७ भादवासुदी १५ लिख्तं तेजपाल संघई प्रगरवाला गर्गगीति बांचे ज्यानै म्हाको श्री जिनाय नम<sup>.</sup>।

१०३६८. ५—तीन लोक चित्र—

विशेष—यह यत्र ४० ४ २२ इंव के ब्राकार वाले कपडेपर है। यह काफी प्राचीन प्रतीत होता है। इससे स्वर्ग,नरक तथा मध्यलोक का सचित्र वर्णन है। सभी चित्र १५ वीं या १६ वी बताब्दी के हैं।

१०३६९. ६-शांतिनाथ यंत्र---

विशेष-१२×१२ इच के श्राकार वाले कपड़े पर यह यत्र है।

१०३७०. ७-ग्रढाई द्वीप मंडल रचना---

विशेष—यह ३६ ४ ३६ इंच झाकार वाले कपडे पर है। इसमें तीर्यंकरों तथा देवदेवियों झादि के सैकड़ों चित्र है। चित्र १६ वी शताब्दी की कला के द्योतक हैं तथा स्वेतास्वर परंपरा के पोषक है।

१०३७१. ८-नेमीश्वर बारात तथा सम्मेदशिखर चित्र-

विशोख—यह ७२ × ३६ इंच के ग्राकार के कपडे पर है। इसमे गिरनार तथा सम्मेदाचल तीर्घ वहां के मदिरों तथा यात्रियो ग्रादि के चित्र हैं। चित्र-कला प्राचीन है।

प्राप्ति स्थान-(संमवनाथ मंदिर उदयपुर)

# ग्रवशिष्ट रचनायें

१०३७२, ग्राठारह नाता का गीत—शुमबन्द्र । पत्रसं $\circ$  १। ग्रा $\circ$  ११ $\times$ १ ६ व । माषा—हिन्दी पद्य । विषय-क्या । र०कास  $\times$  । से०कास  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन सं $\circ$  ३१८ । प्रास्ति स्थान— प्रश्रवास दि $\circ$  औन मन्दिर उदयपुर ।

१०३७३. अयर्थस्यवेद प्रकरस्य—  $\times$  । पत्र सं० ५६ । आ०१० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इच । आवा— संस्कृत । विषय-वैद्धिक साहित्य । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१०४४ मादवा बुदी १। पूर्ण । बेष्ट्रन सं० ६४ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टॉक ।

विशेष--- शाचार्य विजयकीर्ति ने नन्दशाम में प्रतिलिपि की थी।

१०३७४. स्नास्त कर्मेनुपादान $-\times$ । पत्रस०२। प्रा॰ ११imes४ इ.स.। मासा-प्राइत। विषय-सिद्धान्त। र०कालimes। ले० कालimes1 पूर्णः। वेष्टन सं० ५७। प्रास्ति स्थान-सदेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर।

१०२७५. ग्रावीस्वर फान-सहारक ज्ञानभूषसा। पत्र सं० ३१। ग्रा० १०१४४६ स्व। भाषा-संस्कृत-हिरी। विषय-फानु काव्य। र०काल ४। ले० काल सं० १५८७ श्रावाद सुरी ७। पूर्ण । वेच्दन स० १११। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष—म० गुभवन्द्र के शिष्य विद्यासागर के पठनार्थ लिखा गया था।

१०३७६. म्रास्मावलोकन स्तोत्र—दीपचन्द्र । पत्र सं०६६। म्रा० ११ $\times$ ६ $^2_1$  इच । माया—हिन्दी पद्य । विषय- प्रध्यात्म । २०काल  $\times$  । ले० काल सं०१८६० । पूर्ण । बेष्टन सं०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दीता ।

विशेष—इसका दूसरा नाम दर्पए दर्शन भी दिया है। श्री हनूलाल तेरहपंची ने माधोपुर निवासी बाह्यरा भोपत से प्रतिनिधि करवाकर दौसा के मन्दिर में रखी थी।

१०३७७. झाविनाथ देशनाद्वार— $\times$ । पत्र स० ५। सा० १० $\times$ ४ इवा । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१४ । **प्राप्ति स्थान**—प्र० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

विशेष-भगवान ग्रादिनाथ के उपदेशों का सार है।

१०३७८. इस्टोपदेश--पूरुपपाव । पत्र सं० ४। मा० १०४१ इवा । माया-संस्कृत । विषय मध्यारम । र०काल ४ । ले०काल स०१६४७ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ७६ । प्रास्ति स्थान--वि० जैन मन्दिर मनिनन्दन स्वामी, बृंदी ।

१०३७६. उडमर भाष्य-जयन्त महा । पत्र सं०३६। मा० × । मापा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टत सं०७०४ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन पत्रायती संदिर भरतपुर ।

विशेष-इति श्री मज्जयन भट्ट विरिषते बादि घटमुक्तर वृदन्त समाप्तमिति ।

१०३६०. उपवेश रसमाता—सकलमूष्या । पत्रसं०११७ । घा०११३ $\times$ १ ६व । भाषा—संस्कृत । विषय-सुभाषित । २०काल-स०१६२७ । लेक्कान  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन प्यायती मन्दिर कामा ।

विशेष-प्रति जीगं है।

१०३६१, उपदेश रत्नमाला -- धर्मश्रास गर्सि । पत्र स०११ । घा० १०४४ हु इञ्च । माबा-प्रपन्नं म । विषय-सुभाषित । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्णं । वेष्टन सं० ७३३ । प्राप्ति --स्काल-प्रकृतिक जैन प्रतिर प्रजीर ।

**१०३६२. प्रतिसं० २** । पत्रत्त० २ से २३ । ग्रा० १० $\times$ ४ $^2_1$  इञ्च । ले० काल  $\times$  । भूपूर्ता । बेब्नस० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

बिशेष--प्रति प्राचीन है। प्रथम पत्र नहीं है।

**१०३ ⊏ ३. प्रतिसं० ३**। पत्र स० २३ । द्या० ११३/४ ४१/३० चा ले०काल सं० १४६७ घाषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स**० १४६ । प्राप्ति स्थान** — दि० जैन घादिनाथ मन्दिर बृदी ।

विशेष --योगिनीपुर (दिल्ली) मे लिखा गया था ।

१०३ द ४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १० । घा० ६ $\frac{1}{2}$  ४  $\frac{1}{6}$  इश्व । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३१ । **घाण्या स्थान** — दि० जैन म्रादिनाय मन्दिर बंदी ।

१०२८५. उपदेश सिद्धान्त रस्नमाला माबा—भागचन्द । पत्रतं० ४०। म्रा० ११४६३ इन्द्र । माषा-हिन्दी गद्य । विषय-सुमाषित । र०काल स० १६१४ माघ बुदी १३ । से०काल स० १६४४ । पूर्णुं । बेहुनसं० २५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्यनाय मन्दिर टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष-म्होरीलाल भौंसा ने चोरू में प्रतिलिपि की थी।

र०काल निम्न प्रकार भीर मिलता है।

दि॰ जैन तेरहपथी मन्दिर जयपुर स॰ १६१२।

दि॰ जैन ग्रग्रवाल मन्दिर नैएावा सं॰ १९२२ ग्रापाट बुदी ह।

**१०३६६. प्रतिसं० २**। पत्र सं० २६। ग्रा० १२ × ७ दे इसा ले० काल स०१६४७। पूर्यो । **बे**ष्टन स०३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन धप्रवाल मन्दिर नैएवा।

१०३८७. उपवेशसिद्धान्त रस्तमाला— $\times$ । पत्रस० ४०। मा० १२  $\times$  १ $^+$  इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सुभाषित । ४०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । प्रपूर्ण । बेष्टत सं० २०० । **प्राप्ति स्थान** —िर्दर जैन पचायती मन्दिर मनदर ।

१०२६ स्. प्रतिसं०२ । पत्र स० ४३ । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० ६१/१८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर प्रलवर ।

१०२ न ६. ऋषिषंचमो उद्यापन  $\times$ । पत्र स०१०। प्रा०१० $\frac{1}{7}$  $\times$  $\frac{1}{7}$  इ.च.। भाषा संस्कृत। विषय-वैदिक साहित्य। र०कात  $\times$ । से०कात  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन सं०११०६। **प्राप्ति स्थान**— म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

१०३६०. कृष्या पुषिष्ठिर संवाद — ४ ! पत्र स० १६ । प्रा० १०४१ इश्वा । आसा — सस्कृत । विषय –वार्ता (क्या ) । र०काल ४ । लेक्काल स० १७०४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । । प्राप्ति स्थान — द० जैन मन्दिर दवलान (ब्रंदी) ।

विशेष-चि नदासुख ने प्रतिलिपि की थी। पत्र दीमकों ने खा रखा है।

१०३६१. कृष्या **रुक्मारा बेलि — पृथ्वीराज (कत्यारामल के पुत्र**) । पत्र सं० २-१६। मा० १×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काव्य । रुकाल × । लेक्काल × । मपूर्ण । बेहुन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

विशेष-पद्य सं० ३०८ हैं।

१०३६२. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २३ । ग्रा० १०४४ इश्वरा ने०काल स० १७३४ । पूर्णा। वेक्ससं० १०६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना बुंदी ।

विशेष -- श्री रग विमल शिशुदान मिल लिखतं सं० १७३४ ई टिडिया मध्ये।

१०३६३. कर्गामृत पुराग्-मृहारक विजयकीर्ति । पत्र सo ४१ । ब्राo १२ $\times$ ६ $\frac{1}{6}$  इञ्च । प्राप्-हिन्दी पद्य । विषय-पुराग् । र०काल सo १६२६ काती बुदी १२ । तेoकाल  $\times$  । प्रपूर्ग् । वेष्टन सo १८ । प्राप्ति स्थान-टिoकी तेरहपंथी सन्दिर दोता ।

विशेष---भगवान ग्रादिनाथ के पूर्व भवी की कई कथाएं दी हैं।

१०३६४. कलजुगरास—ठक्कुरसी कवि। पत्र सं० २१। घा० ६×५ इच । भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-विविध । र०काल स०१८०८। ने० काल स०१८३६ द्वि उपेय्ठ बुदी १३। पूर्ण। बेष्टन म०१७/११। प्राप्ति स्थान—दिजैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष--- ग्रन्थ का ग्रादि भ्रन्त माग निम्न प्रकार है---

पारम्म---

वीतराग जित तमुं बंदु गुर के पाय । मिनव जन्म वह दीहिला गुरू भास्थी चितलाय । साथ ऋषि स्वर धार्ग भाषिया कलजुग एसा धार्व । माध ऋषिस्वर साच तो बीलिया ठाकुरसी ऋषि गार्व । प्राणी कुडाररे कलजुग घाया ।।

नग्र देलियो गाव सरीखा उजर बास बसाया। राज हम्रा वाजम सारिखा भजा तो दूख पायारे।।३॥

ग्रन्तिम—

मबत् प्रधारतं प्राठ बरसं जुडु बारसेहर भक्ता रे। तिथ बारस मगलवार सावला सुद जग सार रे। प्राणी कुडार के कलकुग प्राया।। पालडि की बहुत जो पूजा साथ रेख दुल पावे। ठाकरमी कुटिस साची भावें चतुर नार चित आई।।३।। १०३६<u>४. कलियुन की विनती—देवा बहा</u> । पत्र सं० ६ । बा० ४.४६ इचा । बाचा -हित्दी । विषय-विविध । रंक्ताव × । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३८ । **प्राप्ति स्वा**ल—दि० वैन मन्दिर सकर (जयपर) ।

१०३६६. कल्प**तुम क**ल्लिका- $\times$  । पत्रसं० १८० । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । र०काल ले०काल सं० १८६२ । पूर्णे । बेष्टनसं० ७४० । **प्राप्ति स्थाल**—वि० अंत पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

१०३६७. कस्पसूत्र बलारण  $\cdots$ ापत्र सं०१४७ । प्राचा-हिन्दी । र० काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । प्राप्ते । बेठन संवर्द करेन सिंदर प्राप्ते । प्राप्ते । विश्वान  $\sim$ वि० चैन सिंदर भरतपर ।

विशेष--कल्पसूत्र चतुर्थं, पंचम एवं सप्तम २ वेष्ट्रनों में है।

१०३६८. कस्यास्प्रभाला—पं० झाशाधर । पत्रस०४। मा० ११३४५ इच । माषा— संस्कृत । विषय—विविध । र०काल—४ । ले० काल ४ । पूर्ण । बेहुन सं०४२-१५८ । प्राप्ति-स्थान—दिठ जैन मन्तिर नेमिनाव टोडारायसिंह टोक ।

विशेष--तीर्यकरों के कल्यासक की तिथियाँ दी हुई हैं।

१०३६६. कंबरपाल बत्तोसी—कंबरपाल । पत्र सं० ४ । घा० १०३ $\times$ ४३ इ.च । याषा– हिन्दो । विषय–धर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । घपूर्ण । बेष्टन सं० २६० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाल (ब्रुंदी) ।

१०४००. कविकाय्य नास $-\times$ । पत्र सं०३-१४। घा०१२ $\times$ ४ इ.स.। भाषा-सस्तृत। विक्य-सुति। र०काल् $\times$ । ले० काल् $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स० २१४/६४०। प्राप्ति स्थान-दि० जीन सन्दिर संभवनाय उदयपुर।

१०४०१. कविकाच्या नाम गर्मचक्रयुत्त $-\times$ । यत्र स० १६। प्रा०१२ $\times$ ५ इख। माया-सस्कृत। विषय—स्तुति। र०काल $\times$ । ले०काल स०१६६८। पूर्ण। वेष्टुन सं०१४४/२४०। **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर।

विशेष—कुल ११६ म्लोक हैं। प्रति सस्कृत टीका सहित है। ११६ म्लोको के प्रागे लिखा है— कवि काल्य नाम गर्मचक बृत्तं। ७ चक नीचे दिये हुए हैं। टीका के प्रांत मे निम्न प्रवस्ति है—

सवत् १६९८ वर्षे ज्येष्ट सुदी २ शनौ जिनशतका स्थालकृते स्वज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं पृष्टित सहस्र वीराख्येण स्वदस्तास्यालिलिता ।

टीका का नाम जिनशतका स्थालवृति है।

१०४०२. कवि रहस्य-इलायुषा । पत्रसं०४। मा०११३ ४६ इचा । माया संस्कृत । विषय-कोशा । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णा । बेष्टनस० २२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर. जयपर ।

१०४०३. कार्तिक महास्म्य — × । पत्रसं० ३७ । झा० १० × ५० हे इचा । माया-सस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल — × । से० काल × । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० २२१ । प्रास्ति स्थान — वि• जैन सन्तिर प्रमितस्कर स्वामी बंदी ।

विशेष--३७ से भागे पत्र नहीं हैं।

१०४०४, काली तस्य— $\times$  । पत्रसं॰ =१। मा॰ ११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इत्य । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा एवं यंत्र शास्त्र । २०काल  $\times$  । से॰ काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्ट्रन सं॰ ६८ । प्राध्ति स्थान—दि॰ अंत सनियर बोरससी कोटा ।

विशेष---प्रति प्राचीन है। म्रांत में निम्न प्रकार लिखा है---"इति उत्तर क्षेत्री टीका संपर्धा"

१०४०६. क्षेत्र गिरात टीका $-\times$ । पत्र सं०२१। प्रा०११ $\frac{1}{4}\times$ ५ इञ्च । आपा-संस्कृत । विषय-गिरात । र०कास  $\times$ । से०कास  $\times$ । पूर्णं । बेष्टनसं० २०१। प्राप्ति स्थान-िद० जैन प्रयेवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम उत्तर छत्तीसी टीका भी है। यहारक श्री विजयकीर्ति जित् ब्रह्म नारायण दसमूत्तरछत्तीसी टीका।

१०४०७. क्षेत्र गिर्मतः व्यवहार फल सहित— x । पत्र सं० १x। प्राः ११xxxy रच । भाषा-संस्कृत । विषय—गिर्मतः सास्त्र । र०काल x । ले० काल x1 पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ५२ । प्रास्ति-स्थान—दि० जैन लण्डेलशल मन्दिर उदयपर ।

विशेष--प्रति रेखा चित्रो सहित है।

१०४० द्र. सीरार्गेय — विश्वकस्ती । पत्र सं० ४१ । प्रा० ६  $\frac{2}{3} \times \xi_0^2$  ह्या । माया-संस्कृत । विषय — जिल्ला सास्त्र । र०काल —  $\times$  । ले०काल स० १९५३ । पूर्ण । वेष्टलसं० ४-२ । प्राप्ति – स्थाल — १४० जेन म दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

षिशेष — इति थी विश्वकर्माकृते क्षीरास्थि नारव पुच्छते सतामुख एकोर्नावमोऽध्याय ।। १६।। संपूर्ण । सवत् १६४३ वर्षे कार्तिक सुदी ११ रवी लिखितं दशीम बाह्यस्य ज्ञाति व्यास पुरुषोत्तमेन हस्ताक्षारं नष हुनरपुर मध्ये गुभ प्रवतु ।

१०४० २. खण्ड प्रशस्ति— $\times$ ा पत्रसंक २ । घा० १० $\times$ ४ ६ रूच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । ५० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २८८ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

१०४११. शंगक प्रायश्चित— × । पत्र सं∘ १४ । घा० ११×४ ६ चा। नाषा-हिल्ती। विषय–काचार झाल्य । र०कान × । ते० काल × । पूर्ण । बेहनसं∘ २८४ । प्राप्ति स्चान—वि० जैन मंदिर बोरसनी कोटा। १०४१२. गिर्णतनाममाला—हरिवतः । (श्रीपति के पुत्र) — पत्र सं० ५। प्रा० ११ ×४ इत्थ । प्राचा —सस्कृतः । विषय —गिर्णतः । र०कालः ४। ले० काल सं० १७३४ । पूर्णः । बेहुनसं० ४७४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन संग्रवनाव मन्दिर उदयपुर ।

#### प्रारम्म---

गिर्मुतस्य नाममाला वश्ये गुरु प्रसादतः बासानां मूलबोयाय हरिदत्तो द्विजाग्रस्मी ।

#### श्चरितम---

श्री श्रीपतिमृतेनैते वालाना बुद्धिवृद्धये । गरिगतस्य नाममाला श्रोक्तं गुरुप्रसादतः ।

१०४१ ते. गिरातनाममाला— × । पत्रसं०१० । मा०११ × ४ ६ खा । भाषा—संस्कृत । विषय—गरिगत शास्त्र । राजकाल × । जेककाल स०१६०८ मंगसिर सुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१४०६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

१०४१४. गिर्णतनाममाला— $\times$ । पत्रसं•३। प्रा॰१० $\times$ ४ $^{\dagger}_{7}$  इखा । भाषा—संस्कृत । विषय—गिर्णत । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णे । बेष्टन स॰ १०१७ । प्राप्तिः स्थान—म॰ दि० जैन मन्दिर सजमेर ।

१०४१५. गिर्मित शास्त्र—×ा पत्र सं० २६ । बा० २४६ इ.स. । माबा-सस्कृत । विश्य-गर्मित । २०काल ४ । ले॰काल सं० १५४० । धपूर्ण । बेष्टनसं० ४७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समबनाथ म दिर उदयपुर ।

विशेष — संवत् १४५० वर्षे श्रावए। बुदी ३ गुरौ प्रचंह कोट नगरे वास्तव्य सृत्रा देवा सृत कान्हादे भ्रातृग्गां पठनार्थं लिलितमया ।

निमित्त शास्त्र भी है। घत मे है---

इति गरिएत शास्त्रे शोर खाया नलहए। समाप्त ।

**१०४१६. गिएत शास्त्र**— $\times$ ा पत्र सं० कुटकर। ग्रा०१२ $\times$ ४ इत्था भाषा-मस्कृत। विषय—गिएत। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । मपूर्ण। वेष्टुनस०३२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० वेन प्रवास मंदिर उदयपुर।

१०४१७. गिएतसार—हेमराज । पत्रसं० ४ । प्रा० ११ $\frac{1}{2} \times V_g^2$  इश्वः । माया-हिन्दी पद्यः । विषय—गिएत । र०काल  $\times$  । लेकाल स० १७६४ जेव्ट मुटी १ । पूर्णः । बेष्टन सं० १६२ । प्रास्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ बुदी ।

१०४१ ट. गिरातसार संग्रह—महावोराचार्य । पत्रस० ४३ । ग्रा० ११ ४७ इंच । भाषा— संस्कृत । विषय-गरित । र०काल 🗴 । लेक्काल सं० १७०४ श्रावश सुत्री २ । पूर्ण । वेष्टन सं० 🗴 । प्रास्ति स्थान—लडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

१०४१६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३६ । ग्रा० १२ ३ ४ ५ दश्व । भाषा-संस्कृत । के०काक्त 🗙 । के० काल 🗴 । पूर्ण । केटन स० १४६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुनरपुर । १०४२०, **गाथा लक्षरा**  $\times$  । पत्रसं॰ १-८ । आ॰ १२ $\times$ ५ । माया-आकृत । विषय-सक्षरा य । १०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ ८११ । **आफ्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर सक्कर जयपूर ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत टीका सहित है।

**१०४२१. गोणिरात्रवातोद्यापन**—  $\times$  । पत्र सं० ७ । ब्रा० १० $\times$ ४ हे इन्त्र । भाषा—सस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२७ । प्राप्ति स्थान—भ० वि० जैन मन्तिर प्रवर्धर ।

**१०४२२. यहरणराहुप्रकरण.**— × । पत्र सं०४ । घा० ११ × ५१ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल × । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टन स०७०४ । **प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन मस्टिस्म्योरा

**१०४२३. चन्द्रोमीलन— मधुसूदन** । पत्र स० ३२ । ग्रा० १२×४ दश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य णास्त्र । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६३ । प्रास्ति स्थान—समवनाय दि० जैन मन्दिर उदयद्वर ।

विशेष — इसका दूसरा नाम शिष्य निर्होंग प्रकरहा तथा शिष्य परीक्षा प्रकरहा भी है। चन्द्रोन्भी-लन जैन ग्रथ में उद्ध त है। प्रारम्म में चन्द्रप्रम मगवान एवं सरस्वती की नमस्कार किया है।

#### ग्रन्तिम —

लग्यपादमहाज्ञान स्वयं जैनेन्द्रभाषिनं । चन्द्रोम्पीननक शास्त्र तस्म मध्यानमयो घृतं ॥ रुद्रे सा भाषित पूर्व बाह्यपा मधु सूरने । न व हष्ट मया ज्ञान मापित च म्रतोकसा १०। एनत् ज्ञान महाज्ञान सर्वे ज्ञानेषु चोनम । गोपितच्य प्रकतनन विदयौ रोप इलंभ ।।

इति चन्द्रोन्मीलने जान्त्राणेव विनर्गतिष् शिष्य निर्णय प्रकरस्य । प्रस्तुन ग्रंथ में शिष्य किसे, कब ग्रोर कैमे बनाया जाय इमका पूर्ण विवरण है । प्रति प्रचीन है ।

**१०४२४. चर सब्यूह**—**वेदस्थास** । पत्र स $\circ$  ४ । प्रा $\circ$  ६ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इन्द्र । भाषा—सस्कृत । विषय-बंदिक साहित्य । राजाल  $\times$  । से $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  १०४७ । प्राप्ति स्थान—भ $\circ$  वि $\circ$  जैन मन्दिर सजीर ।

१०४२५. चेतन कर्म संवाद — भैया भगवतोदास । पत्रसंग्री प्राण १०४४ इच्छ । भाषा-हिल्दी पण । विषय-स्पक काव्य । र०काल स०१७३२ ज्येट्ट बुदी ७ । लेककाल ४ । पूर्ण । बेहनसंग्री ४५ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय बुदी ।

१०४२६. प्रतिसं०२ । पत्रस०४६ । ले॰काल स०१६३६ । पूर्णे । वेष्टनसं०१४ । प्रास्तिः स्थान—वि॰ जैन तेरहययी मन्दिर बसवा । १०४२७. प्रसिस्ं० ३ । पत्रसं० १६ । से०कास सं० १६३६ । पूर्णं । वेष्ट्रन सं० १४ । प्राप्तिः स्थान— दि० चैन मन्दिर तेरक्षंथी बसवा ।

१०४२६. प्रति सं०४। पत्रसं०१६। मा०१३३/४४ इथा ले∘काल ४। प्रपूर्ण । वेक्नसं०१६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

१०४२६. चेलननारी—विनोबीलाल । पत्र सं० १४ । आ० १४४ इत्र । आचा-हिन्दी। विवय-प्रध्यात्म । र०काल स० १७४२ । से०काल × । पूर्ण । बेहन सं० ४६ । प्राण्ति स्थान—दि० वैक पंचायती मन्दिर कामा ।

१०४३०. खेलन गीत— $\times$ । पत्रसं०१। मा० १० $\frac{1}{4}$  $\times$  $Y_{4}^{2}$  इ.ख । मावा-हिन्दी गया। विषय-मध्यास्य। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टनसं०२११-प्रशास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हंगरपुर।

१०४३ १. **चेतन पुद्गल घमाल— यूचराज** । पत्र सं० १८ । घा० १२<sup>3</sup>४४ <sup>३</sup> इञ्च । माया-हिन्दी । विषय— रूपककाल । र०काल × । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८८६ । प्रास्ति – प्रास्ति — म० दि० जैन मदिर धजनेर ।

विशेष--ग्रा० मानुकीति के शिष्य मु० विजयकीति ने सिखा था ।

गृटके में संप्रहित है।

१०४३२, खेतन मोहराज संबाद—खेमसागर । पत्र सं०४६ । प्रा०९०३८४३ इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय—रूपक कथा २०काल ४ । ते०काल सं० १७३७ । प्रपूर्ण । वेष्टनसं०३५४ । प्रास्ति स्थान — दि० जन प्रकाल मंदिर उदवपुर ।

विशेष-भीलोडा नगर मे शातिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई।

१०४३३. चौडाल्यो—मृगु प्रोहित । पत्र सं० २। प्रा० १ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इन्छ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—स्कुट । ग०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टन सं० २११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दक्ताना बूंदी ।

१०४३४. चौदह विद्यानाम × । पत्र स०१। मा०११४५ इचा आया-हिन्दी। विषय-सक्षण ग्रन्थ। ते०काल × । ते०काल × । पूर्ण। वेण्टन स०६३७। प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर सक्कर जनपुर।

विशेष-चौदह विद्यामों का नाम कवित्त दोहा तथा गोरोचन खन्द (कल्प) दिया हुमा है।

१०४३ ५. चौबीस तीयेकर दूजा—वृत्वावन । पत्र संब्द्धः । मा०११४६ इच्छ । भाषा-हिन्दी पद्या । विषय-पूजा । ले॰काल ४ । ते॰काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स॰ १४३-६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि॰ जैन मदिर कोटड़ियों का हुंगरपुर ।

१०४३६. प्रतिसं०२ । पत्रस०६४ । आ०१३×६ इचा से०कान 🗴 । पूर्णा वेष्ट्रनसं० २२४–६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हूं नरपुर ।

१०४३७. छेदपिड—पत्रस०४। मा० १३×३ इ**था। सावा-माकृत। विवय-सिद्धान्त।** से॰काल × । से॰काल × । प्रपूर्ण। बेहनसं०७०। **प्राप्ति स्थाल—धप्रवाल दि॰ जैन मन्दिर उदयपुर** 

विशेष--जंबूद्वीप का नक्या है।

१०४३९. जिनगुरम् विलास—सबस्सः । पत्र सं॰ ६१ । ब्रा॰ ७ $\frac{3}{4}$  ४ १ $\frac{3}{4}$  इन्द्र । ब्रावा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तवन । र०काल स॰ १८२२ सावाड सुदी १० । ते॰ काल सं॰ १८२२ सावाड सुदी २ । पूर्ण । बेहनसं॰ २६/१४ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन सीमाशी मंदिर करीली ।

विशेष-- ४२ पत्र से भक्तामर स्तीत्र हिन्दी में है।

साह श्री लशालवन्द के पृत्र रतनवन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१०४४०. प्रसिसं० २ । पत्र स० १६ । घा० १२ $\frac{1}{6}$  $\times$ ६ इचा से०कास सं० १८२३ काती सुदी १५ । पूर्ण । बेहन सं० ३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर बदाना ।

विशेष—सवाई राम पाटनी ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी। १०४४१. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ६४। झा० १३×४० है।

१०४४**१. प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ६४। मा० १२×४३ इ**च । ते०काम** सं० १८२३ मादवा बुदी १४। पूर्णे । वेहनसं० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग । विसेष—नीनिधराम ने प्रासाराम के पास प्रतिस्थित करवायी दी ।

१०४४२. प्रतिसं०४। पत्र सं०६। मा० ८३ ४६ इचा। ले०कास सं०१८२२ भादवा मुदी१२। वेष्टतसं०१८। प्राप्ति स्थान—वि० जैन पंचायती संदिर करीली। विभेष—होटराज ने करीली नगर में जिल्लावारा था।

१०४४ ३. जिनप्रतिमास्त्रक्ष वर्णन—स्त्रीतर काला। पत्रसं । २६। धा० १२ $\xi \times 0$  इवा। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—सक्ष्य । १०काल सं । ११२४ वैशाल सुदी ३। ने०काल सं । ११४५ वेशाल सुदी १। पूर्ण। बेष्टनसं । १४०। प्राप्ति स्थान—दि । जैन मदिर धनिनन्दन स्थानी, वृंदी।

विशेष—छीतर काला प्रजमेर के रहने वाले थे। प्राजीविका वश इन्दौर ग्राये वहीं १९२५ में प्रांथ को पर्ए किया।

> सहर वास ध्रजमेर में तहां एक सरावण जान । नाम तास छीतर कहें गोत्र ज कालो मान । कोई दिन वहां मुखसो रह्यों फेर कोई कारए। पाय। नमत काम धाजीविका सहर इन्दौर में धाय।

X X

धन्तिम---

नगर सहर इन्दौर में मुद्धि सहिस होय । तहा जिन मन्दिर के विषे पुरों कीनो सोय।

सं॰ १६२३ मावन मुदी १४ को इन्दीर आये। और सं॰ १६२४ में क्षंय रचना प्रारम्स कर सं॰ १६२४ बैशाल मुदी ३ को समाप्त किया।

×

छोगालाल लुहाडिया धाकोदा वालों ने इन्दौर में प्रतिलिपि की थी।

१०४४४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४६ । झा० ११ ४६ ई दश्व । ले०काल सं० १६६० । पूर्ण । वेकृतसं० ४०२ । प्रास्तिः स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

**१०४४५,** जिन**बिस्वनिर्मा**स विभिन्न  $\times$  । पत्र सं॰ ५७ । मा॰ ६ $^{3}$  $\times$ ६ $^{3}$  इला । माषा-संस्कृत । विषय—विंव निर्माण जिल्ल शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं॰ ६१४ । आफ्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर सजनेर ।

विशेष--गृटका साइज है।

१०४४६, जिनिकस्य निर्माश विधि —  $\times$  । पत्रसं० ११ । मा॰ १२  $\times$  १ हे स्था । माषा – हिन्दी गद्य । विवय — शिल्प साल्त्र । र०काल  $\times$  । ले॰काल सं० १६४५ । पूर्ण । बेहनसं० ११२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मंदिर श्री महावीर वंदी ।

१०४४७. जिनसिस्य निर्माण विधि— $\times$ । पत्रसं० १०। प्रा० १२ $\times$ ६ $^2$  ६वः। माषा-हिन्दी । निषय—जिल्स सास्त्र। २०काल  $\times$ । ने०काल  $\times$ ।पूर्णं। नेष्टनस० २०-१६। प्राप्ति स्थान-कि जैन संकिर भारता।

१०४४८. जिनशतिका— $\times$ । वश्वतः १६। ग्रा० १२ $\times$ १) दश्व । भाषा—सम्कृतः विषय—लक्षण ग्रथ। र०काल  $\times$ । से•काल  $\times$ । वेष्ट्रतसं• ६६१। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन सदिर सक्कर, अग्रपर।

विशेष-भ त में इति थी जिनमतिकामा हस्त वर्णन दितीय परिदाय चर्ण ॥२॥

१०४४६. जी प्रवात-नासिका-नयनकर्मासंबाद—नारायम् मुनि । पत्रसः २ । प्रा० १०४४ इचा । माया-हिन्दी पद्याः विषय—सवादाः र०कालः ४ । ने० कालः स०१७८१ प्रामोज वृदी ⊏।पूर्णः । वेष्ट्रतसः ५३५। प्रास्तिः स्थान— २० दि० जैन सदिर स्रवमेरः।

१०४५०. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २ । प्रा० १०४४ इचा । लेक्सल 🗴 । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० १८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

१०४५१. ज्ञानमास्कर—×। पत्र म० २६ । ग्रा० १२×४ इ**थ । भाषा** —सस्कृत । विषय-चैदिक णास्त्र । र०काल × । ले० काल म० १६८५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—इति थी शानभास्करे कर्मथियाके सूर्यास्मामवादे कालनिर्मायो नाम प्रथम प्रकरमा । स॰ १६५५ वर्षे चैन सुरी ७ सोमे महेदेगा लेखि ।

१०४५२. जानस्वरोवय—चरनदास । पत्र म०४३ । म्रा० ५ $\times$ ६२ हे इस । भाषा-हिन्दी । विषय-उपरेश । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागरी (व्रंदी) ।

१०४५३. ढ़ाइसी गाया- $\times$ । पत्रस०२। प्रा०१० $^2_1 \times 5^2_7$  दृश्व। भाषा-प्राकृत। विषय-सिंद्धास्त। र०काल  $\times$ । ले०काल १८२१, भारवा बुदी ११। बेप्टनसं०६५। **प्राप्ति स्थान**—पद० जैन मन्दिर सम्बर (प्राप्तुर)।

विशेष--प० मृत्रराम के लिये लिखा था।

**१०४४४. रगुमोकार महारम्य---** $\times$ । पत्र स० ४। द्रा० प $\frac{3}{2}$  $\times$ ४ $\frac{3}{2}$  इचा। माया-संस्कृत। विषय-स्तवन। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । वेष्टनसं० ४२३। **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर लक्कर (जयपूर)।

१०४४४. तरवज्ञान तरंगिर्गी—ज्ञानमूचर्गा । पत्रस० ६३ । पा० १२०४६ हु इश्व । माषा-मस्कृत । विषय-सिद्यान । र०काल स० १५६० । ले० काल स० १८४६ घासीज बुदी १ । प्रास्ति स्थान-म० दि० जैन मन्दिर प्रवमेर ।

विशेष-अन्त मे निम्न प्रकार लिखा है-

भागचन्द सोनी की बीदग्री के असाध्य समय चढाया। १६८५ चैत बूदी १२।

१०४५६, तस्वसार—वेबसेन । पत्र सं० १२ । ब्रा० १० $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ इ.स. । भाषा-प्राकृत । क्विय— सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—प्र० दि० जैन सन्दिर गर्जमेर ।

विशेत -- ग्राचार्य नेमिचन्द्र के पठनाथं प्रतिलिपि हुई थी।

१०४५७. तत्वार्यं सूत्र-उमास्वामि । पत्र सं० १३ । मा० ६ $\frac{3}{6}$  $\times$ ५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-मिदान्त । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १६६५ । वेष्टुनसं० ६५१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर (जयपुर) ।

१०४५६. तस्वार्ष सूत्र माया-पं० सदासुल कासलीवाल । पत्र सं० १७७ । घा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\chi^2_{\pi}$  इञ्च । भाषा-राजस्थानी (क्रु डारी-गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र०काल स० १८१० फागुए। बुदी १० । लेक्काल म० १८५२ । प्रपूर्ण । वेष्ट्र सं० ३६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

१०४५६. तस्वाल् सङ्भाय-धारणंद ऋषि । पत्रसं०१ । धा०६ $\times \cdot \cdot$ 

१०४६०. तोस चौबीसी पूजा—सूर्यमल । पत्रस० १८ । या० ११२ ४६ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । २०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्णे । वेष्टनसं० २७१-१०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

१०४६१. **दक्जिवरिगया**— × । पत्रसं०६। माधा-प्राक्टन । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । धपूर्ण । वेष्टन स०४८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर सरतपुर ।

१०४६२. दस ग्रांगों की नामावली— X । पत्रसं∘ ६ । प्राः ८२, ४४, इन्छ । सावा— हिन्दी । विषय-प्रागम । र०काल X । ने०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३३१ । प्राप्ति स्थान— प्र० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

१०४६३. दशस्विन्तामिंग प्रकरणः— $\times$ । पत्र सं०११। माया-प्राकृतः। विषय-विविच। र०कालः  $\times$ । के॰कालः  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन सं०७२३। प्राप्तिः स्थानः—वि॰ जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१०४६४. **इस प्रकार छाह्यारा विकार**  $\times$  । पत्रसं $\circ$  रे। आ $\circ$  रे१ $\times$ ४ इन्त्र । मापा-संस्कृत । र $\circ$ कास  $\times$  । से $\circ$ कास  $\times$  । वेष्ट्रन सं $\circ$   $\circ$ २० । **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  जैन मन्दिर सकर जयपर ।

१०४६५, बातासूम संबाव × । पत्रसं० २१। मा॰ १२×६३ इन्छ। माचा-हिनी। विषय-संबाद। र०काल × । वे०काल स॰ १६४८ माचाइ बुदी १। पूर्ण। वेष्ट्रन सं०१। प्रास्ति स्वाल-स्वः जैन पार्थनाय मन्दिर टोडारायसिह (टोंक)।

विशेष---जीर्सएवं फटा हमा है।

१०४६६. **विसानुवाई**— × । पत्रसं० १। घा० १० ×४ है इ.च.। भाषा-हिन्दी पदा । विषय-तिद्वास्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । येष्टन सं० ४१४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मंदिर सबसेर ।

विशेष---शंशांग सत्र के भाभार पर है।

१०४६७. विसानुवाई— $\times$ । पत्रस०१। मा०१० $\times$ १ हत्यः। मापा~हिन्दी। विषय-फुटकर। र०काल $\times$ । से०काल $\times$ । पूर्णः। बेष्टन सं०३७१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दक्ताना वंदी।

१०४६८. दूरियरम सभीर स्तोत्र वृति—समय सुन्दर उपाध्याय । पत्र सं०१४ । भाषा— संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल 🗶 । ले०काल १८७६ । पूर्ण । बेहुन सं०५६४ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन प्रवादती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६६. देवागम स्तोत्र—समंतमद्वाचार्यं। पत्र सं० ४। धा० १३×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र एव दर्मन । २०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४२८-४३२ । प्राप्ति स्वान—दि० जैन मन्दिर संभवनाय उदयपुर ।

विशेष--- प्रति प्राचीन है।

१०४७०. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १२ । आ० ११ 🗶 ६ १ सा । से०काल 🗶 । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- इसका नाम भाशमीमासा भी है। प्रति प्राचीन है।

१०४७१**. प्रतिसं० ३**। पत्रस० मा प्रा०११×५ इन्त्र । केश्कास × । पूर्ण । बेष्टनसं० १०४–२२ । **प्राप्ति स्थान**— रि० जैन मन्दिर पास्वेनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

१०४७२. प्रतिसं० ४ । पत्र स० = । या० ११%६ इन्छ । से०कास 🗴 । सपूर्ण । बेठून सं० १२३ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर पार्थनाच इन्दरगढ़ (कोटा) ।

१०४७३. प्रतिसं० ४ । पत्र सं०४ । प्रा० १०३ $\times$ ४३ इञ्च । से०काल स० १८७७ । पूर्ण। वेष्टन सं० १२८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रताल लंबायती मन्दिर प्रसुदर ।

१०४७४. प्रतिसं०६ । पत्रसं०८ । घा०१०४४ इवा । ते० काल 🗴 । पूर्ण । बेहनसं० ६१ । प्रास्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर समिनन्दन स्थामी बूंदी । १०४७५. प्रतिसं० ७ । पणसं० ५ । धार० ६ $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ इचा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ६७ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

१०४७६. देवानम स्तोत्र वृत्ति —झाचार्य वसुमंदि । पत्रतः ४३। घा०११ ४५ हता । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णे । देष्टन सं० ४७५ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन सभवनाव मन्दिर उदयपुर ।

१०४७७. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २४ । घा०११×४ इच्च । ने०काल सं० १८४३ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-जयपुर में सवाई राम गोघा ने प्रतिलिपि की थी।

१०४७८. द्वादशनाम—शंकराचार्यं। पत्रसं० ४। ग्रा० ५ ४ ३ इच । प्रावा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल ४। से०कालसं० १८३४ सावरण बुदी १३। पूर्णं। वेष्टन स० २५१। प्राप्ति स्यान—दि० जैन मन्दिर इन्दरनद कोटा ।

१०४७९. द्वासप्तित कला काव्य — × । पत्रसं० २ । प्रा० ११ × ५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-तक्षण यंष । र०काल × । से०काल × । पूर्ण वेष्टन सं० ६३६ । प्राप्ति स्थान— दि• जैन मन्दिर सक्तर जयपुर ।

विशेष--पुरुष की ७२ कला एवं स्त्री की चौसट कलाओं का नाम है।

१०४८० सम्पाप संवाद — विजयकोति । पत्रसं• ५६ । मा० ६२ ४४६७ । माषा-हित्दी । विषय-चर्चा । र०काल स० १८२७ मगसिर सुदी १४। ले•काल 🗶 । पूर्ण । वेष्टन स० १४६५ । प्राप्ति स्थात — २० टि० जैन मन्दिर प्रजसेर ।

१०४६१ वर्ष प्रवृत्ति (वाशुयत सूत्रारिए)नाराय $v_- \times 1$  पत्रसं० १२२ । मा० ११ × ५ ६ द्व । मावा-संस्कृत । विषय-वैदित साहित्य । र०काल  $\times 1$  से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०३ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन भग्दिर प्रजमेर ।

१०४८२, धर्मपुषिष्ठिर संवाद —  $\times$  । पत्र सं० १४ । आ० ६ $\times$ ५ $^1_2$  इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-महाभारत (इतिहास) । र०काल  $\times$  । से०काल सं० १७६४ । पूर्ण । वेहन स० १२७ । प्रास्ति स्थान — अ० दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

विशेष-महाभारते शत सहस्रगीतायां । अध्वमेष यज्ञं धर्मयुधिष्ठर सवादे ।।

१०४८३. **बालु परीक्षा** — × । पत्रसं० १३ । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण् ग्रंथ । र०काल × । के•काल × । भपूर्ण् । बेष्टन सं ६२६ । **प्राप्तिः स्थान** —दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४८४. ध्रु चरित्र— × । पत्रसं० ४६ । मा० ५२, ४४३ इत्य । माषा-हिस्सी। विवय-चरित काव्य । २०काल × । से०काल × । पूर्णं। वेष्टन सं० ६२२ । **प्राप्ति स्वान**— म० दि० जैन मस्तिर ध्रक्रमेर।

किरोस --- इसमें २०० पद्य हैं।

१०४ छ.५. नलोदय काव्य $--\times$ । पत्र स॰ २०। छा॰ १० $^1_1 \times Y^1_2$ । मावा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल  $\times$ । ले०काल स० १७१६ वैद्याल सुदी छ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१४ । **प्राप्ति स्थान-**भ० दि० जैन मन्दिर छजनेर ।

विशेष-- नलदमयती कथा है।

१०४६६. नवपद फेरी—imes । पत्रसं $\circ$  ६। भाषा-संस्कृत । विषय विविध । र $\circ$ कासimes। से $\circ$ कास imes । पूर्णा । वेष्ट्रन स $\circ$  ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४८७. नवरस्न कवित्त $-\times$ । पत्रसं॰ १। मा॰ १२ $\times$ ७५ इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल  $\times$ । ले॰काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टनसं॰ ५३१ । **प्राप्ति स्थान** — दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१०४६६. नवरस्न काव्यः —  $\times$  । पत्रसं॰ २। ग्रा॰ १० $\times$  ४३ इसा । माषा—संस्कृत विषय-काव्यः । र०कालः  $\times$  । क्वे॰कालः  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं॰ २६१। प्राप्तिः स्थान—दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपुरः ।

१०४८६. प्रतिसं०२ । पत्रसं०१ । मा० १०४४ दे इत्थ । ले∘काल ४ । पूर्ण । बेहनस० २६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर अयपुर ।

१०४६०. प्रतिसं० ३ । पत्रस०१ । घा०११×५ इन्छ । ले•काल × । बेष्टन स०२६३ । प्राप्तिस स्थान—पि० जैन सन्दिर लक्कर, जयपुर ।

१०४६१. नारचन्द्र ज्योतिष प्रंथ-नारचन्द्र । पत्रसं० २४ । माथा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ते०कान स १७८६ साह बुदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरहपथी मन्दिर (वसना)

विशेष-हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है। कैलवा नगर मे मूनि सोभाग्यमल ने प्रतिलिपि की थी।

१०४६२. नारबोय पुरार्ग— ४ । पत्रसं० २० । घा०६३ ४ ४३ दश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-वैदिक-साहित्य । र०काल ४ । क्षे•काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०२०६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी वंदी ।

१०४६३. निस्य पूजा पाठ संबह— 🗙 । पत्र छ १६। मा०१०१२५ ६च। मापा अस्कृत । विषय-पूजा । र०काल 🗴 । सेकाल 🗴 । पूर्णे । बेष्टनसं० २१६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर देवनाना (वृत्ते)

१०४६४. निर्वारा काण्ड मावा—भैया मगवतीवास । पत्रसं०४। मा० ८१४४३ इच । मावा-हित्यी (पद्य)। विषय-स्तवन, इतिहास । र०कान स०१७४१। ते०कान सं०१६४० पोप सुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं०१५१। प्राप्ति स्थान-स्वि० जैन सण्डेतवान गंवायती मन्दिर सनवर।

विशेष — प्रति स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई हैं। मुणी रिमकलालजी ने लिखवाकर प्रति विराज-मान की थी ।

१०४६ म. निर्वाण काण्य गाया— ४ । पत्रस्व २ । आ० १०४६ द्वा । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । रक्ताल ४ । लेक्काल सं०१६२७ । पूर्ण । वेष्ट्रन त०४५७ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर सम्बर जयपुर । १०४८६, प्रतिसं० २ । पत्रसं० २ । मा० १२ × १ है इला । ले०काल सं० १८६२ मासोज नुदी ७ । पूर्णे । बेष्टनसं० ५२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २-३ । आ० १०३ 🗡 ६ इच । से०काल 🗴 । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

**१०४६ ८. प्रतिसं० ४** । पत्रस० ३ । प्रा० १० $\frac{3}{7}$  ४  $\frac{3}{7}$  ६ श्वा । ले०काल  $\times$  । पूर्एं । बेहन स० ३६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

**१०४६६. प्रतिसं० ५** । पत्रसं० २४ । घा० १०४५ इ.ख । ले०काल ४ । पूर्णं । बेष्टन सं० २२८ । **प्राप्ति स्थान** — टि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

**१०५००. नेभिराजसती शतक—सावण्य समय**। पत्रस०४। माषा-हिन्दी। विषय– फुटकर।र०काल सं०१५६४।ले०काल ४ । पूर्णु।वेष्टन सं०५४/६४१।

विशेष - प्रन्तिम भाग निम्न प्रकार है -

हम बीर हम बीर इस चलइउ रासी मृति लावण्य समय इमाविल हमित हर्षे इवासी रे।। संबन् पनरच उतिह इरेगाय उनामिकुमार। मृति लावण्य समझ इमा बालिङ वरति जय जयकार।

दृति श्री नेमिनाथ राजमती शतक समाप्त ।

१०५०१. नेमिराजुल बारहमासा—विनोदीलाल । पत्रस० २ । प्रा०१०१४४६ इस । माषा-किरी । विषय-विषोग २६ गण । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६४६ । प्राप्ति स्थान – म०६७ जैन मन्दिर प्रजयेर ।

विशेष - नेमिनाथ द्वारा तीरण द्वार से मुह मोड़कर चले जाने एवं दीक्षा धारण कर लेने पर राजुलमती एवं नेमिनाथ का बारहमाना का रोजक सवाद रूप वर्णन है।

१०५०२. प्रतिसं०२ । पत्रस०२। प्रा०६×४ इ.च.। ले०काल × । पूर्णं। वेष्टन स० ३४१ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर देवलाना (बुदी)

१०५०३. पंच कत्यास्पक फाग—ज्ञानसूषस्य । पत्रसं० २-२६ । म्रा० १०३ $\times$ ४ $^1_2$  इच । माया—सस्कल-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५०४. पश्च कल्याराक गीत — $\times$  । पत्रसं० द । घा० द $\times$ ६ $^1$  इख । माघा-हिन्दी प० । विषय-गीत । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णे । वेष्टन स० ३३६-१३२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

**१०६०५. पखदल ग्रंक पत्र विधान**— $\times$  । पत्र सं० १ । ग्रा॰ १२३ $\times$ ५१ इस । माषा संस्कृत । विषय-वैदिक । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मस्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बुंदी ।

विशेष -शिव ताडव से उध्दत ।

१०४०६. पंचमी सतक पद —  $\times$  । पत्रसं०१ । या० १० $\frac{1}{2}$  $\times Y_{\frac{1}{2}}$  द्वा । माया-संस्कृत । विषय-विविध । र० काल  $\times$  । से०काल सं० १४६१ सावस्म सुनी १० । पूर्ण । बेष्टन सं० १८०-१४३ । प्राप्ति स्थान — ६० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टॉक)

विशेष- । अग्रवालान्वये पं० फरेस्स सिखापितं मोपाश्चलदुर्गे गोलाराडान्वये पं० केमराज । सस्यपुत्र पं० हरिगसा लिख्ति ।

१०५०७ पं**चम कर्मग्रं य**— $\times$ । पत्रसं० १६। मा॰ १० $^2_7 \times$ ५६ कः। माषा-संस्कृत । विषय-सिद्धात । र० काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०५० ८. पंच सिंध्य-xा पत्रसं० ४। म्रा॰ ११x४ है इ.च. भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल xा ले०काल xा मपूर्ण । बेष्टन सं० १८२ । म्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टोक)

१०५०१. पंचेन्द्रिय संवाद—भैन्या भगवतीदास । पत्रस $\circ$  ४ । प्रा $\circ$  १० $\times$ ५ हुन्य । भाषा- हिन्दी (पद्य) । विषय-वाद-विवाद । र०काल स $\circ$  १७५१ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  १६१ । प्राप्ति स्यान—दि जैन मन्दिर दबलाना (दुंदी)

विशेष---१४२ पद्य हैं।

१०५१०. पंचेन्द्रिय संवाद — यशःकीर्ति सूरि । पत्रसं० १४ । प्रा० १४ ४ इच । माया — हिन्दी (पद्य) । विषय-पात्रो इन्द्रियो का वाद विवाद है । र०काल सं० १८६० चैत मुदी २ । ले०काल  $\times$  । पूर्षो । बेहन सं० ४६७-२५८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

**१०५११. पज्जुष्मा कहा (प्रदा्ष्टन कथा) — महाकवि सिंह।** पत्रस० ३६ । घा० १०४४४¦ इश्वा भाषा- घपफ्रांगा विषय-काव्या र०काल ४ । ने०काल सं०१४४८ कार्तिक बुदी १ । **वेहन**सं०१६६ । प्रगस्ति मच्छी है। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर।

**१०५१२. प्रति सं०२ । पत्र**स०१४ । प्रा०११ $\xi imes imes imes 1$  र०काल imes । से•काल imes । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मदिर नागदी बूदी ।

१०५१३. पद स्थापना विधि—जिनवस सूरि । पत्र स० २ । आया-सस्कृत । विधय-विधान । र०काल 🗴 । ले॰काल स० १०५७ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०५१४. पद्मनीदि पंचिविशति माया—सन्तालाल खिल्हुका । पत्रस०२०६ । मा० १३×८-१ इ.च.। मापा-हिन्दी (पदा)। विषय-मानार जास्त्र । र०काल सं०१६-५ । से० काल सं० १६३५ । पूर्त्य । वेष्टन म०८१ । प्राप्ति स्थान—सहेशवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

१०५१५ परदेशीमितिबोध—कानचन्दा पत्र स० २१। माषा-हिन्दी। विवय-उपदेशात्मक ३ र०काव X। ते० काल स०१७८६ कार्तिक वदी २। पूर्णः। वेष्टन स०१५५। प्राप्ति स्थान— दि० जैन पंचायती मदिर मरतपुर।

विशेष-वैराठ शहर में लिखवाई थी।

१०**४१६. परसहंस कथा चौपई— का० रायमस्त्त** । पत्रसं २०। प्रा० ६४६३ इखा । भाषा-हित्दी । विषय-रुपक काव्य । रुकाल सं० १६३६ ज्येष्ठ बुदी १३। लेकाल सं० १७६४ ज्येष्ठ बुदी ११। पूर्ण । बेष्टनसं० १०४। **प्राप्ति स्थान—** भ० दि० जैन मंदिर ग्रजमेर ।

विशेष-- गुटका धाकार मे है।

१०५१७. प्रति सं०२ । पत्र सं०३६ । झा०१२×५ इ.ख.। ले०काल सं०१८४४ कार्लिक सुदी ६ । पूर्णावेष्टनसं०२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर बडाबीस पथीदौसा।

विशेष — प्रशस्ति में तक्षकगढ़ का वर्णन है। राजा जगन्नाथ के शासन काल में सं० १५३५ में पार्श्वनाथ मदिर था। ऐसा उल्लेख है।

पडित दमाचद ने सारोला में ब्रह्मजी शिवसागर जी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१०५१८. परुष विचार  $\times$  । पत्रसं॰ ६। बा॰  $=\frac{1}{6}\times \frac{1}{2}$  इथा । भाषा-हिन्दी। विचय-स्फुट । र० काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ १४६-२७५ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर भक्ताय रोजायमित (टीक) ।

विशेष--वाईस परीषह पार्श्वपूरासा 'भूधर कृत' में से ग्रीर है।

१०५१६. पाकशास्त्र—  $\times$  । पत्रसं० ५८ । घा० १० $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ $\frac{1}{5}$  इन्त । जाषा-सस्कृत । विषय-पाकशास्त्र । र०काल  $\times$  । क्षे०काल स० १९१६ चंत्र सुदी १ सोमवार । पूर्ण बेष्ट्रन स० ६ । प्राप्ति स्थान — ५० दि० जैन महिर खजेर ।

१०४२०. **पाकाबली**  $\times$  । पत्रसं०२०। प्रा०११ $\times$ ४६ था । प्राचा-सस्कृत । विषय-पाक शास्त्र । र०काल  $\times$  । ल०काल सं०१७४१ फाल्गुरा शुक्ला ६ । बेष्ट्रन सं०३४१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लग्कर, जयपुर ।

१०५२**१. पाण्डल चन्द्रिका—स्वरूपदास ।** पत्र स० ६२ । स्रा० ११<sup>2</sup> × ४ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-वैदिक माहित्य । र०काल × । ले०काल स० १६०६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टुन स० ४२२ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१०५२२. पाण्डवपुरास्म —  $\times$  । पत्रस० ३४६। मा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुरास्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रन स० ४६। **प्रास्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर प्रवसेर ।

१०५२३. पुष्पपुरुष नामाविलि— × । पत्रसं•३ । घा० १०×५रे इन्था। भाषा-संस्कृत । विषय-स्फृट । २०काल × । ले०काल सं•१६८१ माघ वदि ७ । पूर्ण । बेष्टन सं•१२०६ । प्रास्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर ध्रजमेर ।

विशेष-पं वदेव कृष्णा ने अजयदुर्ग में प्रतिलिपि की थी।

१०५२४. पुण्याह मंत्र— $\times$ । पत्रसं० १। घा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इखः। माधा-संस्कृतः। विषय-वैदिकः साहित्यः। र०कालः  $\times$ । ले०कालः  $\times$ । पूर्णः। वेष्टनः सं० ४२३। प्राप्तिः स्थान— म० दि० जैन मन्दिर प्रवसेरः।

१०५२५. पोसहरास— **जानमूषरा ।** पत्रसं० ⊏ामा० १०० रे४ ४ है इ.खा मावा–हिल्दी प०। विषय–कथाकाव्या। र०काल ४ । लेक्काल सं० १००६ । पूर्णावेष्टन सं० १६४–७२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हंगरपुर। १०५२६. प्रतिस्ं० २ । पत्रस० ५ । घा० ११३ ४ ६ इचा । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २८७-१११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हांगरपुर ।

१०४२७. प्रदूर्ण गाथाना प्रयं $-\times$ । ण्यस० ६०। प्रा॰ १ $\times$ ४२ इथा। प्राचा-प्राकृत हिन्दी। विषय-सुमावित। र०काल  $\times$ । से०काल स० १७६८। पूर्ण । बेष्टन सं० ३४६-१३२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर कोटडियों का इंशरपुर र

१०५२ <br/> प्रझाबस्तरीय— $\times$ । पत्र स०२। धा०१० $\times$ ४ इखा। माषा—सस्त्रतः। विषय—<br/>काम्यः। र०काल $\times$ । से०काल $\times$ । वेष्ट्रन सं०७३२ । सपूर्णं। भाष्तिः स्थान-वि० जैन मन्दिर लक्कर<br/>(बयपुर)।

१०४२६. प्रतिमा बहत्तरी— चानतराम । पत्रसं० ३ । मा० १२×५ इश्व । भाषा-हिन्दी प० । विषय-स्तवन । र०काल सं० १७८१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४१-१४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष —धन्त्रिम —

दिल्ली तस्तत बस्तत परकास, सडीसँ इक्यासी बास ।

जेठ सुकल जगचन्द उदोत, द्यानत प्रगट्यो प्रतिमा जोत ॥७१॥

**१०५३०. प्रत्यान पूर्वालपूठ—** × । पत्रसं० ५४ । भाषा-प्राकृत । वेषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टुन स० ६३३ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर सरतपुर ।

१०**५३१. प्रबोध चन्द्रिका — बैजल सूपति** । पत्रस० २२ । प्रा०११ ४५ इश्वा । भाषा – संस्कृत । विषय -व्याकरण् । र०काल × । ले**०काल** × । पूर्णं । वेष्टन सं०१३११ । प्राप्तिः स्थान — म० दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

**१०५३२. प्रतिसं०२** । पत्रस०३१ । प्रा०१×६ इथा । ले०काल सं०११४३ फागुग्ग बुदी ६ सोमवार । पूर्णं । बेटन स०१२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

**१०५३३ प्रतिसं० ३**। पत्रस० २१। आ.० ११×५ इचा । ते० काल × । पूर्ण । बेप्टन सं० ४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी, बुंदी।

१०५३४. प्रबोध चितामिए — जयशेखर सूरि । पत्रस० ४-४०। झा० १०३ ×४१ द्रश्व । विषय-विविध । र०काल × । ने० काल स० १७२० चेत मुदी १२ । झपूर्ण । वेष्ट्रन स० ७१०। प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर लकार (वयपर)।

१०४३ ४. प्रसास्ति काशिका — त्रिपाठी बालकृष्णः । पत्रसः० १८ । सा० ६० ४४ इखा । माषा—सस्टनः । विषय -स्कुट नेपन विषि । र०कासः ४ । ते० काल स० १८४१ वैशास मुदी २ । पूर्णः । वेष्टन मं० ७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्ण्वनाय मन्दिर चौगान चूंदी ।

**१०४३६. प्रस्तुतालंकार**—imes । पत्रसं $\circ$  ३। प्राया-सस्कृत । विषय-विविष । र०काल imes ॥ ले॰ काल imes । पूर्ण । वेष्टन त॰ ६६० । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-प्रशस्ति में प्रयोग होने वाले भ्रलंकारों का वर्शन है।

१०५३७. प्रस्ताविक श्लोकः —  $\times$  । पासं० १०७ । मा० १० $\frac{1}{4}$   $\times$  ५ इख । भाषा – संस्कृत । विषय – सुप्रापित । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । मपूर्ण । वेष्टन स० ७२६ । प्राप्ति स्थान — द० जैन मन्दिर लक्कर (जयपुर) ।

१०४३ च. प्रतिसं० २ । पत्रसं०१- दाक्षा०१०४ ५ दे इञ्चाले० काल ४ । प्रपूर्णाविष्ठन स० ७३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर (जयपुर) ।

१०५३६. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १-३३ । घा० १०३४ ५ इन्छ । ले० काल 🗙 । घपूर्एं । बेष्टन सं० ७३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर (जयपुर) ।

विशेष --कवित्त संग्रह भी है।

**१०५४० प्रासाद बरुलम**— **मंडन।** पत्रस**्४०।** ग्रा० ६ $\frac{1}{6}$  $\times$ ७ इचा। भाषा-संस्कृत। विषय-गिल्प शाक्ष्त। र०काल  $\times$ । ले०काल स०१६५३। पूर्णं। बेष्टन स०२५१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर।

म्रान्तिन — इति थी मूत्रवारमङनविरचिते वास्तुवास्थे प्रासादमंडन साघारस्य धटनोध्याय ।। इति श्री प्रासाद वन्तभ प्रथ सपुर्या । इंगरपुर मे प्रतिन्तिषि हुई थी ।

१०५४१. प्रिया प्रकरन —  $\times$  । पत्रक्ष० १७-७६ । भाषा-प्राहत । विषय-विविध । र०काल  $\gamma$  । ते० काल म० १८७६ । धपूर्ण । वेष्ट्रन स० ४६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मन्दिर भग्तपुर ।

१०५४२, प्रेसपित्रका दूहा— $\times$ । पत्रसं० २ । आ० १० $\times$ ४ $} दश्च। माषा-हिन्दी। विषय-विविध । ८०काल <math>\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६। प्रास्ति स्थान—सण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

१०४४ ३, प्रोतिकर चरित्र— × । पत्रसं•४ ६ । घा० १३, ४०३, इत्राः माषा–हिन्दी। विषय–चरित्र । २०काल म०१७२१ । ले० काल सं•१६४३ । पूर्णा । बेष्टन सं•४३ । **श्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायनी मन्दिर कामा ।

१०५४४. फुटकर ग्रन्थ—× । पत्रसं∘ १ । माषा -कर्णाटी । बेष्टन सं० २१०/६५६ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

बिशेष-कर्णाटी भाषा में कुछ लिखा है। लिपि नागरी है।

१०४४५. बस्तारा— $\times$  । पत्र सं॰ १८—३१ । आ॰ १० $\times$ ५ इस । साया—प्राहत । विषय—सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं॰ १५ । प्राप्तिः स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दक्षलान (वंदी) ।

बिशेष--हिन्दी गद्य टीका सहित है।

१०४४६. बरागारा गीत—कुमुबचन्त्र सूरि । पत्रस० २ । घा० १.४४ हे इत्य । प्राचा– हिन्दी (पदा) । विषय— रूपक काव्य । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । प्राप्ति⊸ स्थान—दि० जैन मंदिर लख्डेलवाल उदगपुर । १०४४७. बारहमासा— × । पत्रसं० १। घा० १०३४४ इचा। प्राचा-हिन्ची (पदा)। विषय—विरह सर्गत्। र०काल × । से०काल × । पूर्णं। बेष्टन सं० १०। **प्राप्तिः स्थान**—वि० जैन सण्डेसवाल महिर उदयपर।

१०४४८. बिहारीवास प्रश्नोत्तर—× । पत्रसं० ६ । घा० १४४३ इख । भावा—हिली । विषय—विविध । र०काल × । से०काल सं० १७६० मंगसिर सुदी ४ । पूर्ण । से०काल १२४ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर भादवा ।

विशेष --साह दीपचन्द के पठनायं प्रतिलिपि हुई यी।

१०४४६. **धाहा वेवलं पुरारा**—४ । पत्रस० ४४ । झा० १२४६ इच । माया—सस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल—४ । से०काल—४ । पूर्णे । बेष्टनसं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मदिर स्निनन्दन स्वामी, बंधी ।

इति श्री ब्रह्मवैवनं पुरासी श्रावसा कृष्णपक्षे कामिका नाम महारम्य ।

१०४४०. **राह्यसूत्र—** X । पत्रसं० ७ । प्रा० १० X X दे इच । साला—संस्कृत । विषय -वैदिक साहित्य । २०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० १००१ । **प्राप्ति स्थाल**—प्र० दि० जैन सन्दिर प्रवर्षेत ।

१०५५१. मक्तानर पूजा विचान स्वीमुक्त् । पत्रसं०१४ । सा० ८ $\frac{1}{5}$  × ९ $\frac{1}{5}$  रख । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ते० काल सं०१८६५ कागुण सुरी १ । पूर्ण । बेष्टन स० ८५ । प्राप्ति स्थान----वि० जैन मन्दिर पार्यनाथ इत्यरण्ड कोटा ।

विशेष —भीलवाडा में चि० सेवाराम बचेरवाल हुमारा वाले ने पुस्तक उतारी पं० ऋषमदास जी बचेरवाल गोत ठोल्यामाले गांव मं कोस २० तंगीगिरि में प्रतिलिपि हुई थी।

**१०५५२. मक्तामर भाषा—हेमराज। पत्र**सं• ३६। घा० ११×६२ इचा। माषा-हिन्दी पद्य विषयः स्तोत्र। र० काल स० १७०६ माच मुदी ४। ले०काल सं०१८८३ फानुण सुदी ६। पूर्ण। बेप्टन सं• ७३। प्राप्तिः स्थान —दि० जैन प्यायती मन्दिर बयाना।

विशेष-प्रमीचन्द पाटनी ने प्रतिनिपि की थी।

१०५५३. सर्तृं हरि—सर्तृं हरि । पत्र सं० ५७ । सा० १० $\frac{1}{2} \times V_0^2$  रख । भाषा-संस्कृत । विषय-सुमाधित । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-प्रति टिप्पसी सहित है।

**१०५५५ प्रतिसं० २** । पत्रसं० १३ । घा० १० $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ इन्त्र । से०काल  $\times$ । वेष्टन सं $^{1}$  $^{1}$ ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर अवपुर ।

१०४५**५. प्रतिसं**० ६ १ पत्र सं० ७० । झा० १०कुै×४६ इचा । ले०काल सं० १०६७ कार्तिक इसी ४ । केप्टन सं० ४४६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जसपूर ।

विशेष - लिपिकार विरंजीव जैकृष्णा । प्रति सटीक है ।

१०४५६. सलेबाबनी—विनयमेरः । पत्र सं० ५ । मा० १०४४ इ.च । भाषा -हिन्दी (पय)। विषय-सुमापितः । र०कालः ४ । से०काल सं० १०६५ साह सुदी ७ । पूर्णः । वेष्टन सं० ३५१ । **प्रास्तिः** स्वानः दि० जैन मंदिर बदलाना वंदी ।

**१०५५७. मागबत**—  $\times$  । पत्र स॰ = । प्रा॰ ६  $\times$  ३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराए। र॰ काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टत सं॰ २१३ । प्राप्ति स्थान — सभवनाथ दि॰ जैन मंदिर उदयपर।

१०४५८. सगबद् गीता $-\times$ । पत्रसं॰ ६०। घा॰ ६ $^1_2\times$ ४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-घमं। र०काल  $\times$ । लेकाल स० १७२१। भादवा बुदी १। पूर्णं। बेष्ट्रनस० ५२। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मंदिर दबनाना (बुदी)

विशेष ---मोहनदास नागजी ने प्रतिलिपि की थी।

१०५५६. मगबद् गीता----× । पत्रसं० ८० । घा० ५३ ×३३ इचा । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्ट्रसं० १०४४ । प्राप्ति स्थान ---भ० दि० जैन मदिर घजमेर ।

१०५६०. मावनासार पंत्रह (चारित्रसार)—चामुं डराय । पत्रसं० ६६। घा० ११४५ इ.च.। भाषा-सन्छत । विषय-चारित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० २६४। प्रास्ति स्थान—दि० नैन मदिर दीद नजी कामा ।

विशेष---सस्क्रन में कांठन जन्मी के सम्मं विसे हुए हैं। प्रति जीएँ एवं प्राचीन है। कुछ पत्र चूहे काट गये है।

**१०५६१. भावशतक — नागराज । पत्रसं**० ३०। घा० ११×५ इखा मा<mark>या-सस्कृत।</mark> विषय-शृगर। र०काल ×। ले०काल स०१६६३ मादवाबुदी १३। पूर्णा। बेष्टनसं० ५६०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्ष्कर जयपुर।

१०५६२. माषामुख्या—भ० जसवन्तिसह । पत्रस० ११ । मा० ११ $\times$ ५ । भाषा–हिन्दी । विषय-लक्षण ४ थ । २०काल  $\times$  । ले०काल सं० १८५३ । बेष्टन सं० ६०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्य जयपुर ।

१०४६३. भुवनद्वार — $\times$ । पत्रसं० २४-११६ । प्रा॰ १८ $\times$ ६ ५ द्वा । साधा-हिन्दी । विषय-चर्चा । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर बोरमधी कोरा ।

१०४६४. मूचर शतक—मूचरदास । पत्रस०६। माथा-हिन्दी (पदा)। विषय-सुमापित । र०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०३००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष --- १७ पद्य है। इसका दूसरा नाम जैन शतक भी है।

१०५६५. मृत्यु सहोत्सव — सवासुख कासलीवाल । पत्रसं० २६ । षा० १२३ ४७ इच । प्राया-हिन्दी (पद्म) | विषय-प्रप्यारम । र०काल सं० १६५ । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । बेहन सं० ४७ । प्राप्ति स्वान-सि० बेन मंदिर श्री महावीर बूंदी । १०५६६. प्रति सं०२ । पत्रसं०११ । घ्रा० १२४६ है इश्वा ले∙काल ४ । पूर्सं। वेष्टन सं०२१ । **प्राप्ति स्थान—**दि०जैन सम्बेलवाल मदिर उदयपुर ।

१०५६७. प्रति सं० ३ । ले॰ काल × । पूर्णं । बेष्टन सं॰ ४६ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

१०५६ म. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १४ । घा० प्र×६ है इन्हा । लेकाल स०१६४६ माच बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन सं०१२६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१०५६६. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० १२ । घा० १२४६ हे इ.च. । ले०काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टन सं० २३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५७०. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ५३ । मा॰ ११ ४६ हुँ इन्छ । ले॰काल स० १६६५ माप बुदी ६ । बेबन सं० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर फतेहपुर केलावाटी (सीकर)

विशेष---रत्नकरण्ड श्रावकाचार में से है।

१०५७१. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० २१ । ले०काल imes । पूर्णै । बेष्टनसं० १६६ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५७२. प्रतिसंग्रह । पत्रसग् ६ । झा०१४४७३ इला । ले० काल स०११७६ । पूर्ण । बेष्टन संग्रहर । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर पास्वेनाय चौपान, बृंदी ।

१०५७३. प्रतिसं० ६। पत्रसः ६। मा०१०८५ इन्छा लेक्सल ४ । पूर्णं। बेप्टन सः ८६। प्राप्तिः स्थान—दिः जन मन्दिर पार्थनाथ चौगान, ब्रंदी ।

१०५७४. पत्रस० १० । घा० ११  $\times$  ५ ३ इ.च. । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं॰ २४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाव्यंनाथ चौगान बूदी ।

१०५७४. मृत्यु महोत्सव —  $\times$  । पत्र स०२ । मा० १२  $\times$  ६ व । भाषा -सस्कृत । विषय मध्यातम । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६३/४७१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभव नाय मदिर उदयपुर ।

१०५७६. मृत्यु महोत्सव पाठ— $\times$ । पत्रतः २। प्राः १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ५ इंच। भाषा सत्कृत । विषय-चित्तन रक्तान  $\times$ । लेक्नान  $\times$ । पूर्णं । वेष्टन स॰ २०३। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर पार्खनाय चौगान, बूंदी ।

१०५७७. मराकर**हा अधमाल**— × । पत्रस॰ ३। घा॰ ११३०४४ हेड्य। मावा— हिन्दी। विषय-रूपक काय्य। र०काल × । ले॰काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१७८ **। प्रास्ति स्थान**— प्र०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

विशेष --मनरूपी करघा (चर्या) की जयमाल गुरा वर्ग्न किया है।

१०४७६. मनमोरङ्गा गीत – हर्षकीति । पत्र सं० १ । मा० १० $\times$ ४  $\xi^2$  इत्र । माणा–हिन्दी । विषय-गीत । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन सं० २२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष - महारा रे मन मीरडा त तो उडि उडि गिरनार जाइ", यह गीत के प्रथम पक्ति है।

१०५८० महायेव पार्वती संबाद— $\times$  । पत्रस् ० १-२६। प्रा० १२ $\frac{1}{8}$  $\times$ ६ इ.स. । सावा—हिन्दी (गवा) । विषय-वैदिक-साहित्य (संवात) । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । सपूर्ण ।वेष्टन स० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजगहल (टोक)

विशेष - कई रोगों की ग्रीषधियों का भी वर्शन है।

१०४६ १. महासती सरुकाय $-\times$ । पुत्र तं० १। घा० १० $\times$ ४ इन्त । भाषा-हिन्दी ग०। विषय-विविध । र०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०१। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोशारायसिंह (टीक)

विशेष---मतियों के नाम दियेहैं।

१०५६२ मानतुंग मानवती चौपई—रूपविजयः। पत्रसं० ३१। भाषा-हिन्दी । विषय-कया । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५६ । प्राप्तिः स्थानः—दि० जैन मन्दिर पंचायती मन्दिरः भरतपुर ।

१०४८ ६. सिच्छा दुक्कड़ —  $\times$  । पत्रसः १ । धा० १२ $\times$ ५ इत्त्र । भाषा –हिन्दी । विवय- धर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्टन स० १८ $\times$ /४२२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन संगव — नाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०४८४ मोन एकादशी ध्यास्यान—पत्र स० २ । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा। र०काल  $\times$  । क्षे॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ ७३४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवासती संदिर भरतपर।

१०**५८५. यत्याचार** —  $\times$  । पत्र स०२। मा०१२ $\times$ ५ इखा । भाषा-सस्कृत । विषय-मृति माचार मर्म । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टतसं०२६६/१५५ । **प्रास्ति स्थान** — सभवनाय टि० जैन मदिर उदयपुर ।

**१०५८६ रत्नपरीक्षा** —  $\times$  । पत्र स० १-३५ । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण यां या । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं०६१४ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५८७, रयरासारव चितका—जयवन्य छावडा । पत्र स० ७ । झा० ११ $\times$ ८ इथ । मापा–राजस्यानी (नय) । विषय-माचार गारत । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १०२ । प्रास्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन संदिर मजमेर ।

१०५६ स्व राज्या कथा एवं पूजा—पत्र कं० र । या० ११ $\times$ ५ है द्व । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । प्राप्ति स्थाल—दि० जैन मन्दिर राजमहस्र टॉक ।

१०४८६. राजुल छत्तीली—बालमुकस्य । पत्रसं∘ ८। भाषा-हिन्दी । विषय-वियोग प्रांगार । र०काल × । ले•काल × । पूर्या । वेहनसं० ४६८ । आफ्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

१०५६०. राजुल पच्चोसी— $\times$  । पत्रसंग् २ । माग्रः ४ १ इसः । मापा-हिन्दी । विषय-वियोग प्रांगार । रुकाल  $\times$  । सेश्कास  $\times$  । मपूर्ण । वेष्टन सर्ग् १४१ । प्राप्ति स्थास—दिव्यंन मन्दिर राजबहन रोक ।

१०५६१, राजुल परुजीसी— $\times$ । पत्रस०६। धा०६ $\times$ ६६चः। भाषा-हिन्दी। विषय-वियोग ग्रुगार। र०काल $\times$ । से०काल $\times$ । पूर्ण। वेष्टन सं०७०-४२। **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मिलर कोट्रीयो का डंगरयर।

विशेष-- निम्न पाठ भीर है :---

मुनीश्वर जयमाल भूघरदास कृत तथा चौबीस नीर्थंकर स्तुति ।

१०४६२. राजुल पत्रिका—सोयकवि । पत्रस० १ । भाषा-हिन्दी । विषय-पत्र-लेखन (फुटकर) । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं ५६,६३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभव-नाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---

17 FH---

स्वश्नि श्री पद्गति पाय निम गढ गिरनार मुठायरे सामस्विया । लिबनुं राजुल रिग बीनती सदेसद परिलामरे पीयारा शिक्षा एक बार प्रवोरे मिदर मा हरद जिम निलय मन हेमरे सामलिया । तुम जिन सूना मन्दिर मासिया मूनी राजुल केमरे पीयारा ।। १२।। पत्र कुमल ते मुजीना प्यान की तुम कुमल निन मेव रे समस्तिया । चरणनी चाकरी चाहुं ताहरी दरमन दिस्तबहु देव पीयारा ।३।।

प्रश्तिम---

×

वर्गामानए करी जेवा लही दोल भएं रहि कामरे।
पारित नलद मद पीउडा पातली टोहिनो विरह विरायरे पीयारारे।।२०॥
मह विद मातिम दिन इति सगल लेख निक्यौ लख बोलरे सामलिया।
सह विद मातिम दिन इति सगल लेख निक्यौ लख बोलरे सामलिया।
उस सोम कवि सीस साहि प्रीति राजुल मनरंग रोमरे पीयारा।।११॥
दृष्याराध्य कुने प्राणिकस वी बदुमति करामुदे सामलिया।
गाजुल पतिया पाठनी प्रेम की मह मिरनाय सुठामरे पीयारा।।२२॥
एक बार मावोरे मल्दिर माहरे॥

१०५६३. रामजस-केसराज । पत्र स० २४२ । घा० १० ४४ देव्या : माघा-हिन्दी (पष्ट) । विषय-विविध । र०काल सं० १६८० धामोज बुरी १३ । से०काल स० १८७४ घवाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१ । प्राप्ति स्थान-पिठ जैन मदिर दवलाना बुढी ।

×

विशेष-इसका नाम रामरस भी दिया है। मंतिम-श्री राम रसीधिकारे संपूर्ण ।

१०५६४. रावरा परस्त्री सेवन ध्यसन कथा— $\times$ । पत्र सं० २४। बा० ११ $\frac{9}{5}\times$ ६ इव । भावा—संस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । धपूर्य । वेष्टन स० २२०/६२। प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपर।

विशेष - ६५७ म्लोकों से ग्रागे नहीं है।

१०५६५ रूपकमाला बालाबोध—रत्नरंगोपाध्याय । पत्रसं० १०। ग्रा० १०३ × ४३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल सं० १६५१। पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ७३४ । प्राप्ति स्थान—ग० दि० जैन मन्दिर प्रविधेर ।

#### विशेष---

स० १६५१ वर्षे श्रावणः बृदी ११ दिने गुरुवारेश्री मुलतासमध्ये पं० श्री र गवर्द्धन गरिसवरासां जिल्ला पं० थिरउजम्स जिल्लेगा विक्षिती बालावडीच ।

१०४६६. लिध्यस्त्रय टीका—समयवन्द्र सूरि। पत्रसं० २६। मा० १४×५६ इश्व । मापा 407 + 1 िपय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० त्रैन प्रकाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५६७. लघुक्षेत्र समास वृत्ति— रत्नशैक्षर । पत्रसं० २६ । घा० १० $\xi \times \xi$  इत्त्र । माया- संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वृश्ष्पं । वेष्ट्रन स० १०६ । प्रास्ति स्थान— ५० जैन मन्दिर सक्तर तथपुर ।

१०५६म. लिधसार **मावा--पं० टोडरमल** । पत्रसं० १४ । मा० १४--७ इख । माषा-क्रिन्दी (गव्य) । विषय-सिद्धान । र०काल  $\times$  ।**क्रे॰काल**  $\times$ । मपूर्ण । वेष्टन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन म्राप्रताल मन्दिर त्रदयपुर ।

१०४६६. लोलावती—भास्कराचार्य । पत्रसं० २१ । झा० ११४४ इच । माषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिय-गरिएत । २०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थात**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१०६००. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १० । झा०१०३imes५३ इ.स. । ले॰काल imes । अपूर्ण । बेष्टन सं०१६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-१० से भागे के पत्र नहीं हैं।

१०६०१ स्रोसावती— × । पत्रसं० ३३ । मा० १२ ×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिव-गिरात । र०कास × । न० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मतिव क्रावेर ।

१०६०२, स्तीलावती— × । पत्रसं॰ २०। मा॰ १×५ इचा भाषा-संस्कृत । विषय— क्योतिष-मिलत । र०काल × । ले०काल × । मपूर्ण । वेष्टन सं॰ ४७३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संसबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०६०३. सीलाबती—×। पत्रसं० ६७ । मा० १०१ ×४ इच । माषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष-मीता । रुकास × । से०कास × । सपूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन पार्वनाय मनिद इन्दरगढ (कोटा) १०६०४. लीलायतो माया—लालचन्द सूरि । पत्रतः २८ । मा० ११ x ४ ई इया । माया— हिन्दी (पद्म) । विषय-ज्योतिय-गरिएत । र०काल सं० १७३६ मयाढ बुदी ४ । ले०काल स० ११०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन स्रोटा मन्दिर (वयाता)

विशेष-- प्रथ का धादि धन्त भाग निम्न प्रकार है---

#### प्रारम्म--

शोमित सिन्दूर पूर गण सीस नीकइ।
नूर एक मुदर विराजें भाल चन्द जु
म्र कोरिक रजेंदि भ्रमिमान दूरि छोरि
प्रस्पमत जाके पर पक्ज धनन्दज्ज ।
गौरीपून तेवें जोउ मन चित्यो,
पावें रिख बृढि मिढि होत है धनवडज्ज ।
विधन निवारें सत लोक कूं मुधार
ऐसे गरापति है क जब जब सुक्कडज्ज ।

#### वोहा

गरापति देव मनाय के सुभरि बात सुरस्रति भाषा लीलावती करू चतुर मुगो इक चित्त ॥२॥ श्री भारकराचार्य कृत संस्कृत भाषा सप्तसती ॥ लीलावती नाम इस ऊपरि सिद्ध ॥३॥

#### मन्तिम पाठ---

सपरमा लीनावती भाषा मे भल रीति। ज्यं की घि जिसादिन हुई तिको कहुँ घरि प्रीति ।। सतरासै छत्तीम ममै वदि भ्रषाढ बलान । पाचम तिथि बुधवार दिन ग्रंथ सपरमा जान ।। गुरु मी चउरामी गच्छे गच्छ खरतर सुनदीत । महिमडल मोटा मनुष्य पुरी कर प्रतीत ॥११॥ गछनायक गुगावन अनि प्रकट पुन्य अकुर। सोभागी मृत्यर वरण श्री जिनचद मृरिद ॥१२॥ सेवग तासुसोमायनिधि सेम साला सुखकार। शांति हर्ष वाचक मन्यो जस मोभाग्य अवार ॥१३॥ शिष्य नास मुविनीत मति लालबन्द इसा नाम । गुरु प्रसाद कीथी भली ग्रंथ मण्या ग्रमिराम ॥१४॥ मला शास्त्र यद्यपि भला तो परिंग चित्त उल्टास । गित्त शास्त्र धूरि झन्ति लगि कीयो विशेष धम्यास ॥१५॥ बीकानेर बढ़ो सहर चिह दिस में प्रशिद्ध । घरघर कवन धन प्रवल घरघर ऋदि समदि ॥१६।

घरघर मुन्दर नारि सुन फिलामिग कंचन देह ।
कोकल प्रका कामनी नित नित बंदली नेह ।। १७।।
गवसव निदर देहुत देवत हरवन नैन ।
सर्वाद सीरम ऐसी कहै स्वर्ण लोग मनु ऐन ।। १६।।
राजें तिहां राजा बड़ो श्री घनोपसिंह भूग ।
राजें तिहां राजा बड़ो श्री घनोपसिंह भूग ।।
राजें तत्वाह जांचे बसे सात बचा श्रीकार ।
लाव्या में विद्याभिणी कियो सास्त्र धन्यास ।। २०।।
सप्तमनी तीलावती मगी बहुकीच घन्यास ।।
साम नीलावती करी कीच ससी घरदास ।। २१।।
भाषा नीलावती करी वेंच सुगम ज्युं होइ ।
य मातसं मानहु टहरायों कहि ठीक ।
मूनसान्य जिनरी कियों कहिर ठीक ।

इति लीलावती भाषा लालचन्द सूरि कृत सपुर्ण ।

सवत् १६०१ मिती प्रसाद बुदी ११ मगलवारे निल्ला श्रावग पाटणी उंकार नलपुर मध्ये सिली हैं। श्रावग उदासी मोगाणी वामी जेपुर भाई के नन्दराम वाचनार्थ। श्रावक गोत्र बाकलीवाल मूलाजी कनी-राम वीरचन्द्र निलाय दीदी।।

१०६० थ्र. लीलाबतो टीका — दैवजराम कृष्ट्सा। पत्रस० १४८ । प्रा० १० $\times$ ४ है इच । मापा – संस्कृत । विषय-अयोतिस, गीलत । र० काल  $\times$  । से•काल सं०१८३७ प्रवाद बुदी ४ । पूर्सा । वेग्रनम०१२५ । प्राप्ति स्थात — म० दि० जैन मन्दिर प्रजसेर ।

विशेष-सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१०६०६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १०६ । मा० ६४४ इच्च । से०काल सं० १६०६ (शक स०) । पर्यो । बेबल सं० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रश्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इति श्री नृसिंह दैश्शास्मज लक्ष्मए। दैवज्ञ मृत सिद्धात वि० दैवज्ञ रामकृष्योत विर्याचत सीसावती वित्ति ।

१०६०७. लेख पद्धति— $\times$ । पत्रस०७। घा०११ $\forall^2 \times \forall^2$  इचा शावा-सास्कृत । विषय– विविच । र० काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्णं। वेष्टन सं० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन शत्वर बोरसलो कोटा ।

विशेष---पत्र लेखन विधि दी हुई है।

१०६० द्वर्यविनोदसतसई — वृत्यकिवि। पत्रस०४ = । प्रा०११ ४४ इ.च । भाषा-हिन्दी, (पद्य)। विवय – भृंगार रसः। र०काल ४ । लेक्काल ४ । पूर्णं। वेष्टन सं० १७३ । प्रास्ति स्वयास — वि• वैन मन्दिर राजमल (टोंक) **१०६०८- वृत्रमदेव गोल— तहामोहन ।** पत्रस० २ । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल≾। ले॰काल × । पूर्णं । वेष्टन सं॰ ६६/४७८ **प्राप्ति स्थात**—दि० जॅन संगवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-मंतिम पाठ निम्न प्रकार है-

नारि भारि विभान हारे संसार सागर तारीगी पनि भर्मभवरा पद पकज प्रशामी करिमोहन ब्रह्मचारिसी

**१०६१०. वका उत्पत्ति वर्रान---** ४ । पत्रसं ३ । भाषा-संस्कृत । विषय-विविष । र०काल ×। ले॰काल×। वेष्टनसं ० ६१४ । पूर्ण वेष्टन ६१४ । प्रा**प्ति स्थान**-दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

१०६११. वज्यसूची (उपनिषत्)—भीधराचार्य । पत्र स०४। प्रा०११४४ इच । भाष-संस्कृत । विषय-भैदिक (तास्त्र) । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०४१६/५०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

१०६१२. बरुग् प्रतिष्ठा— $\times$ । पत्र स०१६। प्रा०१० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इख । भाषा—संस्कृत । विषय—विष्यान । लेक्काल स०१६२४ कार्तिक युदी ६। पूर्ण् । वेष्टन सं०११०५। प्राप्ति स्थान — भवदि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**१०६१३. वाकटार पिङ कथा**— × । पत्रस० २१ । मा० ६ × ४ इचा । माषा-हिन्दी । विषय-कथा र० काल × । ते०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**— म०दि० जैन मन्दिर प्रत्रमेर ।

**१०६१४. बाजनेय संहिता**—  $\times$  । पत्र सं० १ से १७ । भाषा-संस्कृत । विषय-घानार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । धपूर्ण । बेष्टन सं० ७५१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पजायती मदिर भरतपुर ।

**१०६१५. बाजनेय संहिता**— $\times$  । पत्रमः २०६ । भाषा-संस्कृत । विषय-प्राचार-मास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६४६ । भूपूर्ण । बेष्टन स० ७०-७०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरनपुर ।

विशेष---बीच २ के बहुत से पत्र नहीं है।

**१०६१६. बाच्छा करुय**— $\times$ । पत्रस० २४ । घा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ३ इ.च । भाषा-सरकृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल  $\times$  । **ने०काल**  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १०४४ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

१०६१७. **बास्तुराज— राजसिंह**। पत्रस० ४७। ग्रा॰  $\propto \times \xi_1^2$  इच । मापा-सस्कृत । विषय-वास्तु नास्त्र । र०काल  $\times$  । ले॰काल सं॰ १६५३ । पूर्ण । बेष्टन स॰ ४४६ । प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन मन्दिर कोटडियो का हूं गरपुर ।

म्रन्तिम—६ति श्री वास्नुशास्त्रे वास्नुराज सूत्रधार राजसिंह विरचिते मिक्सर प्रमास्। कथन नाम दशमेष्याय ।।

संबद् १६५३ वर्षे भृगमास सुदी १५ रवी लिखितं दशोरा ब्राह्मण ब्राति व्यास पुरुषोत्तमे हस्ताकारं नग्र इंगरपुर मध्ये । १०६१८. **बास्तु स्थापन** —  $\times$  । पत्रतं० १८ । प्रा० १ $\times$ ४ इन्ध ।, भाषा-संस्कृत । विषय-बास्तु बास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन २२८/३८१ प्राप्ति स्थान—वि० जैन संगव-नाथ मनिर उदयपुर ।

१०६१६. **बास्तु** शास्त्र -  $\times$ । पत्र सं०१-१७ । छा० ६ $\frac{1}{2}$   $\times$   $\frac{1}{6}$  दञ्ज । माबा-सस्कृत । विवय-वास्तु तास्त्र । र०कास  $\times$ । से०कास  $\times$ । धपूर्णं। बेष्टन सं० ७४५ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर सरकार बयपूर्

१०६२०. विजयमद्भ क्षेत्रपाल गीता—त्र० नेमिदास । पत्रसं० १। प्रा० १२ $\times$ ४ इथा। साथा-हित्ती । विषय-स्तोत्र । र०काल $\times$ । के॰काल $\times$ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६७/४७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संगवनाय मन्दिर उदवपुर ।

## विशेष---धनितन---

नित नित स्नावि बचावए। चन्द्रनाथ ना भुवन सभार रे। धवन सगल गाइया गोरडी तहां बरत्यो जय जयकार रे।। इस्सि परि सगति सनी करो जिस निषन तक्षु दुख नाति रे। इति नरेन्द्र कीरति चरसे नमी इस बोलि कु नेसिटास रे।

१०६२१. विदाध मुखसंद्रन—बर्मदास । पत्रतं ०२२ । ग्रा० ११ $\times$ ४ इच । माचा-संस्कृत । विषय-काव्य । रक्शाल  $\times$  । भूष् । वेष्ट्रनसं ० १२२१ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष - प्रति टब्बा टीका सहित है।

१०६२२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ४ । मा० ६×४२ इ.च. । से०काल × । पूर्णः । बेहनसं० ११७ । प्राप्तिस्थान—भ० दि० जैन मन्तिर स्रजमेर ।

**१०६२३. प्रतिसं० ३** । पत्रस० १३ । ले०काल सं० १७४० जेष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । बेहनसं० २८७ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

१०६२४. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ४२ । झा० ६३ ४४३ इ.च.। ले०काल सं०१८०० पीय बुदी ६ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं०१४२६ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

१०६२४। विदश्य भुक्संडन टोका — विनय सागर । पत्र सं० १०८ । पा० १०४४ इच । साथ-सस्कृत । विषय-काच्य । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ । प्राप्ति स्थान — ५० वि० वेल मिलर धवनेर ।

## विशेष---टीका काल---

श्चंकत्रुं रसराकेश वर्षः तेजपुरे वरे । मार्गे शुक्ल तृतीयायां स्रावेषा विनिर्मिता ।।

इति सरतरागच्छालकार श्री जिनहर्ष सूरि तत् शिष्य श्री विनयसागरमुनि विर्शेषतायां विदग्ध श्रुवसंद्रशासंकारटीकायां शब्दार्थसंदाकित्यां महेलादि प्रदर्शको नाम चतुर्योघ्याय । १०६२६. विहरजन बोषक—संघी प्रजालाल । पत्र सं० १८२। प्रा० ११३ ४७३ स्था। भाषा-हिन्दी गया । विषय-सुप्राधित । र०काल सं० १६३६ माघ सुदी ४ । ले०काल स० १६६७ पीय सदी ५ । पत्री । वेषत्र स० ४६ । प्राधित स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारायसिह (टोक)

१०६२७. बीतराग देव चेत्यालय शोमा वर्णन— X । पत्रस० ६ । ग्रा० १२ ४६ इश्व । भाषा-हिन्दी ग्रस्थ । विषय— चेत्य बदना । र०काल X । ते० काल X । पूर्णा । बेहुनसं० ४६६ । प्राप्ति स्थान— दि० जेन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- द० सवराज की पोधी।

१०६२ स. वेलि काम विडस्बना—समयसुन्दरः। पत्रस०१। मा० ६ $\frac{1}{2} \times 3^{\frac{1}{2}}$  इन्तः। प्रापा—हिन्दे। र०काल  $\times$ । से॰काल। प्रपूर्णः। विषय—वेलि। वेष्टनस०७१७। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर सक्कर जयपुरः।

विशेष-वनारमीदास कृत चितामिंग पार्श्वनाथ भजन भी है। "चितामिंग साचा साझि मेरा"

१०६२६. बैराग्य शांति पर्व (सहामारत)—× । पत्रतं० २-१४ । घा० ६ ४ इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय—वैदिक ज्ञास्त्र । र०काल 🗴 । लेठकाल स० १६०४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दवलाना (बूंदी) ।

विशेष-- नियी तत् वाहिशी कृप्णपुर नंदगाव मध्ये ।

१०६३०. श्रृं सार वैराज्य तरिंगिसी—सोमप्रभाषार्थं । पत्रस०६। प्रा० १२३ ४५ दृश्च । प्राया-सस्कृत । विषय—सुमाधित। र०काल × । से०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०२ । प्रास्ति—स्थान—दि० जैन प्रपायती मरिर करीली ।

विशेष-४७ ल्लोक है। सकबरा बाद मे ऋषि बालचढ़ ने प्रतिलिपि की थी।

१०६३१. शकर पार्वती सवाव—×। पत्रम०७। झा०१०×४० देवा आवा—सस्कृत। विषय—सवाद। र०कात ×। से०काल स०१६३०। पूर्ण। वेष्टन सं०२०१। **प्राप्ति स्थान— दि०** जैन मंदिर राजमहल (टॉक)।

१०६३२. शतरज खेलने की विधि  $\mathbf x$ -पत्र स० ७ । माषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-विधिय । र० काल  $\mathbf x$  । अपूर्ण । बेहनस० ७०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मिदर भरतपुर ।

विशेष — ४ पत्र नही हैं। ७१ दाव दिये हुए हैं। हाभी, घोड़ा, ऊंट, प्यादा भादि का प्रमाश दिया हुमा है।

र ०६२३. शत्रृंजय तीर्थ महात्स्य — धनेतवर सूरि । पत्रकं २-२३८ । भाषा — सस्कृत । विषय — इतिहास-शत्रुजय तीर्थका वर्णत है। र०काल imes। से०काल imes। सपूर्ण। वेष्ट्रसंस्थ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहुपयी मदिर बसवा।

१०६३४. शब्द मेदप्रकाश — × । पत्र सं०१७ । झा० ११ ×४ ६ च । भाषा – सस्कृत । विषय — कोष । र० काल × । मे० काल स०१६२६ जेष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं०२८ व । प्राप्ति स्वान प्र०६० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--महलावार्य धर्मवन्द्र के शिष्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

१०६३५. ज्ञाब्दानुज्ञासन —हेमचन्द्राचार्यं । पत्र स०७ । घा० १०३४४ हे इच । माषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण् । र० काल × । ले०काल × । घपूर्णं । वेष्टनसं०१०१३ । प्रास्ति स्थान — म०दि० जैन मन्दिर घवमेर ।

**१०६३६. प्रतिसं०२** । पत्रसं०४६ । आर०१३४४,<sup>2</sup> इश्वः । ले∘कालास० १४१४ । पूर्णं । वेष्टनसं०४२⊏ । प्राप्ति स्थान — म०दि० जैन मन्दिर धजमेर । प्रति सटीक है ।

विशेष --- प्रशस्ति निम्त प्रकार है---

संबन् १४१४ वर्षे ज्येष्ठ मुद्दी ३ गुरिदिनं पुनर्बनुनक्षत्र वृद्धियोगी श्री हिमारपेरोजापत्तने तत्र तक्ष्मविज्ञयपुर मुर्ग्याण श्री बहलोल साह राज्य प्रवत्तंमानं श्री काश्वासये मानुरात्वये पुण्याणे महारक श्रीहेमकीतिदेवाल्यान्त्र महारक श्री क्षमतिदेवा तत्य गुरु श्राता मुनि श्री धर्मवन्द्रदेवास्ति व्याप्त स्त्री प्रमावन्द्रदेव तस्य गिर्म्यो मुनि श्री खुमवन्द्र देव श्री धर्मवन्द्र विदिव्यती शातिकाजुष्यश्री तस्य विद्यत्या प्रातिकाजुष्यश्री तस्य विद्यत्या प्रातिकाजुष्यश्री तस्य विद्यत्या धातिकाजुष्यश्री तस्य विद्यत्या प्रमावन्त्र स्त्री स्त्रीवन्त्र । एनेदामच्ये प्रश्नीवन्ने वंत्राल गोत्रे परम श्रावक साथु भू गड नामा तस्य भाषा वित्रवस्दत्वती सासु मीवाजी नामी तथी पुत्राच्य-त्वार प्रथम पुत्र अनुविद्यत्वतित्ररम्य कल्पवृत्यः साधु श्रावन्त्रत्या साधुनी वृत्राच प्रमावन्त्रत्या साधुनी वृत्राच पुत्र साधु राजुनामा । तद्धार्या साधुनी त्यो गामनी । नृतीय पुत्र साधु राजुनामा । तद्धार्या साधुनी त्यो गामनी । नृतीय पुत्र साधु देवान्यः तत्य भाषा साधुनी जील्हाहो । पत्र्वमाम्ये परम श्रावकेत साधु धानुनामना इम प्राह्मन वृत्ति पुत्रक नित्र द्वन्ये लिखाच्य प्रवित्त श्री मेघावि सजाय प्रदत्तं निज्ञानावरणकर्मश्रीया वृत्रम् मुनेलक पाठक्यों ।

१०६३७. शारङ्कथर संहिता—दामोबर । पत्र स० ३१४ । घा० ६५४४ इस्त । माया— सम्कृत । विषय—प्रापृर्वेद । र० कात्र ४ । से•काल स० १६०७ वैद्याल सुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं• ४४ । प्राप्ति स्थान—रिठ जैन महिर राजसहल (टोक )।

विशेष-लाज कृत्या मिश्र ने काशी में प्रतिलिपि की थी।

**१०६३ त. शोल विषये दोर सेन कथा** —  $\times$  । पत्र स०११ । प्रा० ६ $\frac{1}{4}$   $\times$  ४ इ.स. । भाषा-संस्कृत । विषय — कथा । से•काल  $\times$  । पूर्ण । वेन्न स०६ त्र । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दबलाला (वृदी) ।

**१०६३१: धमरा सूत्र मावा**— × । तत्र सं०७ । प्रा०१०×७ रेड्य । भाषा—हित्ती । विषय—सिद्धति । र०काल × । क्षे•काल × । पूर्णे । बेष्टन स० १० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मत्तिर बोरस्सी कोटा ।

१०६४०. **षट् कर्स वर्गन**—× । पत्र स०१०। मा०११×४ इचा। भाषा—संस्कृत। विषय—वैदिक शास्त्र। र०काल ×। ले०काल ×।पूर्ण। वेष्टन स०१३४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर प्रजमेर मण्डार।

**१०६४१. श्रुतपंचमी कथा—धन्यालः।** पत्र स०४४ । मा०१०१४३ इ.च.। माया— मपफ्रांगः। विषय—कथा। र० कालः ४.। ते०कालः सं०१४०१ कागुणः सुदी ४.। पूर्णः। बेष्टन स० द४१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहरंदीस निदर दौता।

विशेष--नेसक प्रशस्ति निम्न प्रकार है। संवत् १५०१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५। शुक्र दिने तिजारा

नगर बास्तच्ये श्री मूलसने माषुरान्वये पुण्करगरो श्री सहस्रकीति देवाः तत्यहें श्री गुराकीति देवाः तत्यहें श्री यणः कीति देवाः तत्यहें प्रतिच्छानार्यं श्री मलयकीति देवाः तेवामास्नाये ।

१०६४२, संख्या सम्ब साधिका— × । पत्र सं०२। मा० १० × ५ इचा। भाषा-संस्कृत । विषय—पासित । र०काल × । ले•कान × । वेष्ट्रन स० २१६। प्राप्ति स्थान— द० जैन मन्दिर सक्कर जयपर ।

१०६४ दे. सकत्प शस्त्र—× । पत्र सं० १२ । मा० १०×४ दे दस्य । सावा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल × । ले•काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ११०४ । प्राप्ति स्थान— स० दि० जैन सदिर सजसेर ।

१०६४४. संघ्या बंदना— × । पत्र स०४ । घा० द ×२ दे इ.च । सापा— सस्कृत । विषय-वंदिक साहित्या १० काल × । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स०१०१६ । प्राप्ति स्थान— स०१० जीव समित्र प्रजेशे ।

१०६४५. सजजनिवत्त बस्तम—मिल्लवेस्। पत्र सं० ६। प्रा० १० $\times$ ४३ दव । माषा—सस्कृत । विषय—मुमाषित । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुँदी) ।

विशेष--मूल के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया है । किन्तू गुजराती मिश्रित हिन्दी है ।

१०६४६. सत्तरी कर्म ग्रन्थ $--\times$ । पत्र म० ३६। भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । स्पूर्ण । वेष्टन स०६२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पश्चानी मदिर भन्तपुर ।

**१०६४७. सत्तरिरूपठारा**—पत्र म० २ से १२ । भाषा—प्राकृत । विषय-सिद्धात । २०काल ४ । लेककाल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ६४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी सदिर भरतपर ।

१०६४८ समाचारी —पत्र मं० २९-५३ । भाषा न्यस्कृत । विषय -विविध । र०काल 🔀 । लेब्काल स० १८२७ । प्रपूर्ण । वेष्टुन स० ६२६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०६४६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ११३ । ने०कान 🗴 । धपूर्ण । बेष्ट्रन स० ६२५ । प्राप्ति-स्थान-टि० जैन पनायनी मंदिर भरनपुर ।

१०६५०, सर्वरसी-- $\times$ । पत्र सं० २६ । ग्रा॰ ६ $\frac{3}{4}$  ×६ $\frac{1}{4}$  इक्षा भाषा-हिन्दी। विषय-मग्रह । रुकाल  $\times$ । नेकाल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स॰ २६८ । प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन मन्दिर ग्रामिनन्दन स्वामी दृदी।

१०६५१. सर्वार्थसिद्धि भाषा-जयजन्य आवडा । पत्रस्व २८२ । प्राठ १४३ ४७३ इत्रः । माषा-राजस्थानी (इंडार्ग गर्छ) । विषय-सिद्धान्त । रुक्तान संव १६६५ चैत सुदी ४ । लेक काल सव १६६२ । पूर्ण । वेष्टन सव १३१ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

१०६५२. साठि — × । पत्रसं∘ १२ । मा॰ १०ई ×४३ इचा । साथा-संस्कृत । विषय—— ज्योतिय । र०काल × । ले० काल स० १८११ चेत बुदी १० । पूर्ण । बेष्टन सं० २०२ । **प्राप्तिः स्यान**— वि० जैन मन्दिर इन्दरस्क ।

विशेष-स्पवन्द ने लिखा था।

१०६५६: **सामुद्रिक शास्त्र**— × । ऽनसं॰ ११ । प्रा॰  $-\frac{1}{6}$  × इत्था नाया—संस्कृत । विषय-लक्षर्ण प्रन्य । र०काल × । ले॰ काल × । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स॰ १८१ । **प्राप्ति स्थान**—वि॰ शैन पार्वनाथ मन्दिर चौगान व दी ।

१०६५४. सामुद्रिक शास्त्र— $\times$  । पत्रसं०१७ । प्रा० १० ४  $Y_{ij}^2$  इंच । प्राचा-सकलुपंच । २०काल  $\times$  । से० काल सं० १५८६ । पूर्ण । बेष्टन स० २११ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर चौगन बंदी ।

विशेष---जैनाचार्य कृत है।

१०६५५. सामुद्रिक शास्त्र— $\times$  । पत्र सं०१० । मा० ६ $\frac{2}{5} \times 7$  इन्ह्या । माया-सस्कृत । विषय-लक्षण, ग्रन्थ । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनाथ करी ।

१०६५६, सामुद्रिक शास्त्र  $-\times$ । पत्र स०२०। भाषा—हिन्दी। विषय—लक्षण ग्रन्थ। ए०काल  $\times$ । न०काल स०१८६६ वैद्याल वदी ७। पूर्ण । वेष्टन सं०२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचाधनी मन्दिर दीवानजी, भरनपुर।

१०६५७. सामुद्रिक शास्त्र (स्त्री पुरुष सकारा)— × । पत्र स० ४ । मा० १० ×४) इख । भाषा-सन्कृत । विषय गामुद्रिक शास्त्र । र०कास × । ने० काल × । वेष्टन स० १४० । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर बारा ।

१०६५ म. सामुद्रिक शास्त्र (स्त्री पुरव लक्ष्या) —  $\times$  । पत्र स० ३६ । या० ५ $\times$  ४ स्त्रा । भाषा-[xन्दी । विषय -सामृद्रिक (लक्ष्या पन्य) । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १८४० काती सुदी ७ । पूर्ण । वेप्टन स० १६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर राजमहत्त्र टोक ।

विशेष-तक्षकपुर मे प्रतिनिपि हुई थी।

**१०६५६. सामृद्रिक सुरूप लक्षरा**−× । पत्रसं• १६ । प्रा॰ ६×५ इचा । माथा–सस्क्रत-हिन्दी। विषय–सामृद्रिक रिश्वाल × । लेश्काल स० १७६२ मादवा सुदी ४ । पूर्ण। वेष्टन संश १४१३ । **प्राप्ति स्थाल**— म० दिजीन मन्दिर प्रजमेर ।

कि प्रेत -- इस प्रति की जोबनेर में पहित प्रवर टोडरमल जी के पठनाथं लिपि की गई थी।

१०६६०. सार संबह महाबीराचार्य। पत्रसं० ४१। प्रा० ११४५ ५ इ.च.। मापा-सन्कृत। विषय-गणित। र०काल ४ । ले०काल स० १६०६ । वेटटन सं० १०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर (अयुर्)।

विशेष -- महाराजा रामसिंह के राज्य में लिखा गया था । इसका दूसरा नाम गरिएतमार संग्रह है।

**१०६६१. सारस्यत प्रक्रिया—परिवाजकाषार्य ।** पत्रसं० ६२ । भाषा-संस्कृत । विषय— स्याकरस्य । र०कास्त्र  $\times$  । से॰कास्त्र  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ६६/५६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संग्रकताथ मन्त्रिर उदयपुर ।

१०६६२. सिद्धाचक पूजा—गुभवनद्व । पत्र तं० १०० । भावा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १६/३१४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर संभवनाय उदयपुर ।

विशेष -- इसका नाम सिद्ध यत्र स्तवन भी दिया है।

१०६६३. **सुट्टिट्सरियनी भाषा—टेकचन्द्र।** पत्रस०४२६। प्रा०१४५/४७ **६वा।** भाषा-हिन्दीगद्य। विषय-मुमापित। र०काल स०१८२८ सावरा मुदी ११। ले**०काल स०**१६०७ वैपाल सुदी १४। पूर्यो। वेप्टन सं०१७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष — सबाई जयपुर में ब्राह्मए। जमनालाल ने चि॰ सदामुखजी तथा पं॰ चिमनलाल ने ब्रू दी वालों के पठनाथं प्रतिलिपि की थी। प्रथाय थ १६२२२ पंडिनजी की प्रशस्तिः—

स्राचायं हर्षकीर्ति—स० १६०७ प्राचायं श्री हरिकीतिओ संबत् १६६६ के साल टोडा में हुमा, ज्याकी बात छत्री हाल मोजूद । त्याके राज्य रामकीर्तिः, तत्रिण्य मबतकीर्तिः, टेकबद, पेमराज, मुक्तराम, पद्मकीर्तिः दोदराज पढित हुए। तत्रिण्य खाइराम, तत्रीण्य प० दयावंद, तत्रिण्य स्वप्यस्ताम त० शि० सेवाराम, हितीय हु गरसीदाम, हृतीय माहिबराम एतेषा मध्ये पं० हुंगरसीदाम के शिष्य मदामुग जिवलाल तत्रीण्या सत्त्वान, देवालाल मध्ये बृहत् शिष्येन लिपीहता। प० चिमनसाल पठनार्थः।

ऐमा हुपा बूदी के सेडे पिडत जिवलाल । बाग बगाया तसि जिनने तलाब उत्तर न्यारा । सव दुनिया में जोभा जिनकी रुपया देव उत्तरा । जिनका जिप्य रतनलाल गीत्र नेमीचद प्यारा ॥ सवन् १९०० के मई यथ निकाया सारा । जाग दुकाना कटना का दरवाजा बगाया नागदी माई ॥

१०६६४. प्रतिसं० २ । पत्र म० ५२१ । झा० ११४८ इ.च. । ले०काल स० १९६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन महित्र पावर्तनाथ इस्टरसङ् ।

विशेष-ईश्वरलाल चादबाड ने प्रतिलिपि की थी।

१०६६५. सुक्तावसी— $\times$ । पत्र सं०१-५८। म्रा०१० $\times$ ४ है इ.च.। मावा-संस्कृत । विषय-सुमाषित । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । वेष्टन सं०७२१। म्रपूर्ण । म्राप्स स्थान—दि० जैन मन्दिर लम्कर जवपुर ।

१०६६६. सूर्य सहस्रनाम —  $\times$  । पत्र स० ११ । प्रा० ७ $\frac{1}{2}$  × ३ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत । २०कास  $\times$  । से०कास  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ११०७ । प्रास्ति स्थास — म० दि० जैन सरिर प्रवसेर ।

विशेष---मविष्य पुरासा में से है।

१०६६७. स्तोत्र पूजासंग्रह— 🗴 । पत्र सं०२ से ४१ । झा०११ ४५ १ इंब । आषा– हिन्दीपयाः विषय-पूजास्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल स०१८४७ । झपूर्णः वेष्ठन स०५० । झास्ति स्थान—दि० जैन मंदिर श्रमिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष-प्रारम्म का केवल एक पत्र नहीं है।

१०६६म स्थरावसी चरित्र—हेमधन्द्राचार्य। पत्र सं० १२७। माषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। र०काल  $\times$ । से॰काल सं० १८७६ त्रेठ सुदी ११। पूर्ण। बेष्टन स० ५५१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचावती संदिर भरतपुर।

**१०६६ प्रतिसं० २** । पत्र सं०२ मे १५० । ले•काल imes । बपूर्ण । वेष्ट्रन स० ५६६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

१०६७०. हिण्डोर का दोहा—  $\times$  । पत्र स०१। मा० १० $^1_2$   $\times$  ५ दश्व । भाषा—हिन्दी । विषय-गुटसर । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६१६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सम्बद्ध अवसूर ।

॥ समाप्त ॥



## ग्रंथानुकमशिका अकारादि स्वर

ग्रंगनाम लेखक भाषा पत्रसङ्याः	ग्रंथनाम लेखक भाषा पत्रसंस्या
धकलक चरित हि॰ ३१४	प्रश्चर बावनी—दौलतराम हि० १०५६
धकलंक निकलक चौपईभ० विजयकीति	ग्रक्षर बावनीचानतराय हि० १०७८, १११ <b>१</b>
हि॰ ६४३	घक्षर गाला सं० १६४
श्रकलंक यति रासव ० जयकीर्ति हि० ११४४	ग्रक्षर माला—मनराम हि० ४ <b>४</b>
धकलकाष्ट्रक—धकलंकदेव स० ७०६	धगलदत्तककया—अयगेलारसूरि सं०४२१
११२¥, ११¥•	ग्रवासों के १८ गोत- हि॰ ८७७
प्रकलकाष्ट्रक भाषा अयचन्द्र छावडा हि० ७० <b>२</b>	ग्रजितनाथ रास व० जिनदास हि० ६३०,११४७
<b>भ</b> कलकाष्ट्रक मापा सद्दासुख कासलीवाल हि० ७०६	धजित गाति स्तवन सं• ६५६
भक्तलबदेव स्तोत्र भाषा चपालाल बाग्रहिया	धजित शांति स्तवन — नन्विषेश प्रा० ७१०
हि॰ ७१०	प्रजित शांति स्तवन — स॰ ७१०
मक्तिम मैरयालय जबमालभैया मगवतीदास हि० ७७७	भाजित गाति स्तवन — मेरूनंदन हि॰ १०३६
भक्तिम चैत्यालय पूजा—चैत्रसङ्ख हि० ७७७	ग्रजीर्शंमजरी—न्यामतस्त्रा <b>हि॰ ५७३</b>
मक्तिम चैन्यालय पूजामिलसागर सं० ७७७	ग्रजीर्ग्ग मंजरी—वैद्य पद्मनाम
मकृतिम चैत्यालय पूजा लालजीत हि॰ ७७:,७७८	ग्र <b>ठाईका रासा—विनयकीति हि०</b> १११६
भक्तिम वैत्यालय पूजा हि० १००२	घठाईस मूलगुरा रास — व ० जिरादास हि० ११०७
मङ्गिम चैत्यालय विनती सदमसा हि० ११४५	प्रठारह नाता-श्रचलकीति हि० १०७३,
मक्रियम चैत्यालय विजती स॰ ११:६	१०७८, १०७९
भक्षय नवसी कथा स॰ ४२६	ग्रठारह नाता कथा हि० १००५
म्रजय दशमी कथा — ललितकीति स० ४७६	ग्रठारहनाते की क्या प्रा० १०२६
यस्य दशमी पूजा स० ७७=	ग्रठारह नाते की कथा — कमलकीति हि० १०५३,
मक्षय निधि दशमी कवा सं ६६४	१०६४,११३०
मकर बत्तीको हि० ६००	ग्रठारह नाते की कथा—देशलाल हि० ४२१,
श्रकर बतीसीभैया भगवतीदास हि॰ १००५	ग्रठारह नाते की कथा भीवत स॰ ४२१
	चठारह नाताका गीत—मुमचन्द्र हि० ११७३
16- 1-10	ग्रठारह नाता का चौदाल्या हि० १०५६
., ., .,	श्रठारह नाता का चौढ़ाल्या—सोहट हि॰ ४२६,
	\$70\$ \$73,023
	घठारह पुरालों की नामावली हि॰ ११३४०
भवार कावनी हि० ६८१	बट्ठोत्तरी स्तीत्र विधि हि॰ ७१०

प्रंथ नाम	लेखक :	भाषा	पत्र सख्या	प्रंथ नाम	संसक	भाषा	पत्र संख्या
धकाई द्वीप पूजा		<b>स</b> 4	956	बनत जिन पूर	सः प० जिनदा	स स	७८०
	डा लूराम	हि	,,	धनस्य पूजाः	व० मान्तिदास	f₹	० ११७०
घढाई द्वीप पूजा	<b>ম</b> ৹ গুমৰক	स ०	.,	धनन्तनाथ कथ	rr	स •	¥33
श्रदाई हीप पूजा	नानजीत	हि०	300	धनन्तनाथ पूज	ा प्रशास्तिक	ास हि	११२६
भदाई द्वीप मडल			६२४	धनन्तनाथ पूज	ाः श्रीभूषस	<b>#</b> 0	19190
धटाई द्वीप मडल	रचना		११७२		रामचन्द्र	fa	,
ध्रतिचार वर्णन		हि०	80,0088		_	₹◎	७८१
ग्रववंवेद प्रकरम्			<b>१</b> १७२	धनन्तनाथ पूज	ा महल विधान	गुगा चर	द्राचार्य
श्रद्धारम कल्पद्रुम	मुनि सुन्दर सू	रिस०	१८०	धनंतवत कथा		₩•	७=१
ब्रध्यात्म तरंगिएगी			800	बनन्त पूजावि	धान	स •	950
श्रध्यात्म पैडी	बनारसीदास	हि०	1011	धनन्त व्रत पूज	T	हि	१०१७
श्रध्यात्म बत्तीसी		हि०	1301	.,	: मुनि ज्ञानस	गर स०	४२२
,,	बनारसीदास	fę o	373	i		₹ •	४७०१ हर
•	,,	हि०	888	••	ः व ० जिनदाः	म हि०	66.83
ग्रध्यातम बारहसङ्गी	. दौसतराम	कासली	वाल ।	,	: भ० पद्मनन्दि	स •	४२१,
		fg۰					ХźХ
			<b>१</b> =१	•.	ं य० श्रुतसार	ार सं०	2 3 8
ग्रव्यात्म बावनी		हि •	<b>१०</b> ५=	••	ललित कीर्ति	सं०	¥95
श्रध्यातम रामायण		स•	१८१	,,	_	हि •	*=*
ग्रध्यातमोपनिषदः	रेमचन्द्रः	 स•	850	••	. हरिक्वच्या पा	वडे हि०	¥33
ब्रध्यारमोपयोगिनी स	-			धनस्त वृत कथा	पूत्राः ललितक	निति स०	७=१
भव्यातमापयात्रमा र	त्तुःतः भाहमा	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		धनन्त त्रन पूजा	: पाण्डे धर्मदास	<b>4</b> •	७६२
		हि॰	a \$ .	,,	सेबाराम साह	हि०	७=२
<b>भनगार धर्मामृत</b> प			ۥ			सर्व	हे० ७८२
भनगरंग . कल्यासा		स •	६२६	,,	-	स०	52€
ग्रनन्तकया जिनस		हि॰	११६३ :	धनन्तं वतः पूजा	उद्यापन : भ॰	सकलकी	त
धनन्तचतुर्दशोकयाः	भेरदास	हि •	133	,,		₩•	७८३
			1117	धनन्त बन पूजा	व० शांतिदास	सं०	? tra
<b>धनन्तचतुर्दशी</b> वतकः	याः खुशालच	•		,,	: णुभचन्द्र	सं०	8000
		हि॰	856	,,	स्वाराम	हि •	550
भनन्तचीदशक्याः	शानसागर	हि •	2220	धनन्त वत पूजा	विधान भाषा	fg o	3=2
मनन्त चतुदंशी पूजा	ः श्रीभूषण्य	तिः	-	भवन्त वत विधा			<b>ড</b> দই
		स०	300	धनन्त वत रास	-	हि॰	1114
n ,,	गान्तिदास	स∘	300		व० जिनदास		ttu.
घनन्त चतुदर्शी व्रतः	(जा. विश् <b>व</b> भूष	स हि	950			, ११४६	

प्रंथनाम लेखक मा	श पत्र	। संख्या	प्रथनाम लेखक भाषा पत्रसंख्या
ग्रनस्तवत रास : जिनसेन	हि •	११६६	घरुजद प्रश्नावनी हि० १०७६
धनस्तवतोद्यापनः नारायग्	सं०	७८३	धर्बुदाचल स्तवन हि० १०६१
,,		.,	प्रमयकुमार कथा — हि० ४२४
,, পুজা	٠,		ग्रमयकुमार प्रवय हि० ४२६
द्यनाथी ऋषि स <b>ञ्</b> काय	हि ०	033	ध्रभयगालरी बात — हि० १६२
धनादि स्तोत्र	स०	१०२४	ग्रभिषान चितामिए। नाममाना : हेमचन्द्राचार्यं
धनाव्य कर्मनुषादान	গা ০	६६७३	सं० ५३२
ग्रनिटकारिका	स∙	480	प्रशिधानसारसंग्रह मं० ५३३
श्चनित्य पंचामनः त्रिभुवनचन्द	हि०	ۥ	ग्रभिनन्दन गीत — हि॰ १७८
ग्रनित्य पचासिका	हि ०	१०४१	द्यमियेकपाठ स० ७०३,
भ्रतित्य प्रचासिका त्रिभुवनचन्द	हि•	8 8 X 3.	820
		१०७१	द्यभिषेकपूजा.विनोदीसास हि० ७६४
ग्रनित्य पच्चीसी : भगवनीदाम	楞。	१०४१	অমিটক বিলি ন০ ৬૬४
धनिरुद्धहरुगा जयसागर	हि०	११६८,	ग्रमण्कोश स० १०७१
		३, ४२४	श्चमरकोश: भ्रमरसिंह सं० ५३३
धनिरुद्धहरमा (उपहारमा) रस्तभूया	ए सूरि		५३४, ४३४, १०८२
	हि०	855	ध्रमग्दल मित्रानंद रासो . <b>जयकीति हि० ६३०</b>
ग्रनुत्रेक्षा प्रवयू	fp o	0379	- ग्रमरम्ब्दरीविधि हि० १६६
भ्रनुप्रेक्षाः योगदेव	म् ०	४७३	धमस्क शतक स० ३१४
भनुप्रेक्षासग्रह —	fgo	१८१	ग्रमितिगति श्रावकाचार भाषाः मागचन्द
अनुभव प्रकाण दोपचन्द कासली	ब(ल	i	हि-प∙ ६०
	हि ०	8 = 8	ग्रमृतमजरी काशीराज स० <b>५७३</b>
<b>ध</b> नुयोगद्वार सूत्र—प्राकृत	গা ০	۶ :	श्रमृतसागरः सर्वाई प्रतापसिंह हि० ५७३,
सनैकार्यध्वनि मजरी : क्षपण्क	म०	प्र३१	४७४
• · · ·		.,	धर्गनपुरजिनवन्दना — हि० ६८४
धनकार्यं नाममालाः भ० हर्षकीि	म ०	X 3 8	ंग्रची निर्मेय — × — हि० ६०
,,	19	,,	धर्यप्रकाशिकासदामुख कासलीवालराज०गद्य
धनेकार्यमं जरी	हि०	१७६	ţ .
,, जिनदास	हि •	४३१	प्रर्थमंड्ब्टि— प्रा∙सं॰ २
	#ļ o	५३२	ग्रहंतप्रवचन× स० ६०
यनेकार्थणस्य संजरी	स•	e e y	ग्ररहॅन केवनी पाशा— स० ५४१
भनेकार्थ सम्रह : <b>हे</b> यराज	सं०	४१०	ग्ररिष्टध्याय
भगराजित प्रंच (गौरी महेश्वाबाः	र्ग) स०	*5*	१११६, ४४१, ६६३
श्रपराजित सत्र साधितका	<b>#</b> o	७११	ं ब्रस्थिटध्यायः धनपति स० १११७
धपामार्जन स्तोत्र	# o	990	ं ब्ररिहंतो के गुरावर्णन — हि॰ ११३०

	राषा	पत्र संख्या	ग्रंथनाम लेखक भाषा पत्रसंख्य
<b>सलकारचन्द्रिकाः</b> ग्रप्थय दीक्षित		£3.x	व्यव्दाहिनकापूजाःसक्तलकीनि स <b>० ७</b> ६
<b>भलंकार</b> सर्वयाः कृवलाजी	हि•	6068	्यष्टाहिनका पूजा: शुम <del>चन्द्र</del> स० ७८
<b>श्रवसू</b> परीक्षा (ग्रध्युवःनुप्रे <b>क्ष</b> ा)	हि०	3209	,,त्रतोद्यापनः कोभावन्द स० ७८
धवधूत	स∙	X08	,, पूजा— स०हि० ७६५
भवन्तिकुम।र रासः जिनहर्ष	हि॰	६६७	,, ,, उद्यापनः शुमचन्द्र
सवती सुकुमाल स्वाध्याय : प <b>०</b>	जिनहर्ष		स॰ ७८१
	हि •	४२५	,, ,, — मृप्रतिसागर
चन्ययार्थ	۹o	४१०	্তি ৩=১
ग्रद्य चिकित्सा	हि॰	8846	,, ,, द्यानगराय हि० ७०५
भ्रशोक शेहिएति कथा	स •	४२४	55
ब्रष्टक : पद्मनन्दि	स०	₹ € €	,, ,, — सं०हि० ७८६
बहुकमंत्रूर उद्यापन पूजा	स०	७०३	ग्रष्टाहिनकार।सः हि० ६६१
म्रव्टकमं चौपई . रत्न भूषरा	हि०	* * * *	,, :सुकासागर हि० १०७१
ग्रष्ट कमं प्रकृति वर्णन	₩٥	१६८	मध्टाहि्नकावत कया — स० ४२५ <u>.</u>
ग्रष्ट कमें बंध विधान	हि०	१०१६	954
ग्रष्ट द्रव्य महा ग्रर्च	हि०	65Y	,, : म• सुमचनद्र ४२४,४२६
स्रष्ट प्रकारी पूजा	हि•	७८६ .	, वश्चानसागर
चट प्रकारो पूजा जयमाला —	,,	,,	हि० ४२६ रेज
ग्रष्ट प्रकारी देव पूजा	हि •	<b>{</b> \$\$	,, म० सुरेन्द्रकीति
भ्रष्ट पाहुड कुन्दकुन्दाचार्य	স! ০	₹=₹	म० ४३४
•	5₹, E	£¥, EEX	, सोमकीति सं० ४७८
ब्रष्ट पाहड भाषा	हि॰	१०६२	घट्टाहिनका वनीद्यापन पूजाः प० नेमिचन्द्र
ग्रस्ट पोहुड भाषा : जयचन्द छा <b>ब</b> र		. 851.	# • # # # # # # # # # # # # # # # # # #
•		=२, १८३	श्रन्टाहिनका व्याख्यान : हृदयरंग स० ६१
भ्रष्ट सहस्त्रती: ग्रा० विद्यानन्दि	स०	२४८	ग्रष्टोत्तरीदशाकरण- स॰ १४१
ब्रष्ट महस्त्री (टिप्पग्)—	<b>₹</b> 0	२४६	ग्रष्टोत्तरी शतक भगवतीयास हि० ११३३
बष्टापद गीत	हि०	€७=	धमज्याय नियुक्ति — प्रा॰ १८१
भ्रष्टावक कथा टीका : विश्वेष्टवर	सं∙	*4*	भसम्भाय विश्व — हि० ७८६
श्रष्टाग सम्यक्तव कथा : ब्र॰ जिनर	ास		प्रसिज्माय जुल — प्रा० ७११
	हि०	४२४ :	धर्मोद्दकाशकुन — हि० ६४४
घष्टाहिनका कथा . विश्वमूषणा	हि॰	252	ग्रहर्गरणविधि हि॰ ५४१
		<b>११२३</b>	ग्रहिसा धर्म महात्स्य सं• ६१
मण्टाहिनका रामः विनयकीति वि	हे॰ ६१	1,1177	ग्रंकफल १११६
	हि॰	₹50,	ग्रंकबत्तीसीः चन्द हि≉ ६८१
	4 . 4	1, १११¤	म <del>हु</del> रारोपस्। सं∙ <b>१</b> ६४

ग्रंथनाम लेखक	माषा प	त्र संख्या	प्र'थ नाम लेखक भाषा पत्र संस्था
श्चं कूर।रोपरा विधि	स•	333	धागम विनासः खानतराय हि० ६४ ॥
मं कुरारोपस विवि : माशामर	. स•	955	ग्राचार शास्त्र प्रा० १०००
	सं•	9=6	माचार सार वचनिकाः पन्नालाल चौघरी
ध गपष्णसी —	ЖIO	Ę	हि॰ ६१
मंगविचा	ۥ	288	श्राचारागमृत्रवृत्ति — प्रा∙ ३
भंग स्पर्शन -	सं०	१४१	भावायं गुरा वर्णन — सं० <b>१</b> १
ग्रंजना चरित्र भुवनकीर्ति	हि∙	388	<b>ग्राचार्यादि गुरा वर्णन —</b> हि॰ १०७२
घं अग्रारास	हि॰	438	धजितजिन पुरासाः पण्डिताचार्यं धस्सामसि
घणना सुन्दरी च उपई: पुण्यस	सगर हि∙	368	म० २६४
घं जनासु-दरीसतीनो रास	हि •	<b>६३</b> २	ग्राठप्रकारपूजाक <b>वानक</b> — प्रा० ७८६
भन्तकृत्दशांगवृत्ति	भा•	<b>ર</b>	<b>बा</b> एंद श्रावक सिव: श्रीसार हि० ७११
भन्तगढ दसाम्रो	Ale	٦ .	द्यागुद्धा — हि॰ १०५८
म्रतरदशादर्णन —	स •	१४१	म्राग्यदाः महानद हि॰ ६६५
ग्रन्तरिक्ष पाश्वंनाथ स्तवन : १	भावविजय व	19क	धारान्दमिशका कल्पः मानतुंग स० १११६
	हि॰	७१५	म्रात्मपटल— हि० ११४ <b>६</b>
	लावण्य स	ामय	<b>धात्मप्रकाण धातमाराम</b> हि० ५७४
	हि०	७१४	द्यात्मप्रबोध सं० १०८२
ग्रतरीक्ष पार्वनः य छदः भाव	विजय हि०	११४७	धात्मप्रवोधः कुमार कवि स० १८१,१८४
भ्रवेड चरित्र	हि०	3 (8	धात्मरक्षामत्र सं० ६२०
र्घावका रास	हि॰	६२३	धात्मशिष्याविशः मोहनदास हि॰ १०१५
म विकासार : प्र० जिल्हास	हि०	<b>११३</b> ⊏	<b>धा</b> त्मसबोध हि० ६५६
<b>ध।कार मुद्धि विधान</b> ः देवेन्द्र	कीनि		<b>भा</b> रमानुशासन : गुगामद्राचार्य स० १८४
	<b>स∘</b>	७८६	प्रात्मानुशासन टीका : पं <b>० प्रभावन्द्र</b>
भाकाण पंचमी कथाः घासीद	स हि०	११२३	सं॰ १८४,१८५
,, :इहारि	बनदास हि०	2200	धात्मानुशासन भाषा हि० १८५
,, : রু০ জা			,, प०टोडरमल हि० १८५,
	हि॰	\$ \$ \$ \$	१८६, १८७, १८८, १८६
,, ः सनित			बात्मानुशासन मात्रा टीका सं० हि० १८५
•		196,840	म्रारमावलोकनः दीपचन्द कासलीवाल
, इरिक्	प्रा पाण्डे		हि० १८६,६५७
	हि•	X \$ \$	1
श्रांस के १३ दोष वर्णन	- हि॰	Kax	i i
बास्यात प्रश्रिया : धनुभूतिस्व	स्पानायं		ब्रादित्यजिन पूजाः केष्ठवसेन सं॰ ७८६
	सं०	211	": म० देवेन्द्रकीर्ति
पानमसारोद्धार : देवीचन्द	हि॰	3	सं० ७८६

प्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संस्था	, प्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र सक्या
भावित्य वृत व	त्याः पाडेः जिम	दास हि०	११६३	ग्रादिनाथ चरि	4	स •	<b>३१</b> ४
,,	: ब्र॰ महति	सागर		ग्रादिनाथ जन्म	ामियेक	प्रा॰	१०२६
		हि०	११६३	भादिनाथ के द	स मव	हि॰	3 8 %
धादित्यवत पूज	T	स०	७८७	द्यादिनाथ देशन	ादार	সা •	११७३
भ्रादित्यव्रत रास	<del>1</del> —	सि०	११३७	ं ग्रादिनाथ फागु	ः भ० ज्ञानभूव	ग्ग हि∘	438
ग्रादिस्यवार क	वा	हि०	850	द्यादिनाय मंगल	: नयनमुख	हि०	990
	€%=,	E 4 8 , E 1	₹, <b>१</b> ०७४	••	ः रुपचन्द	हि०	8608
द्यादित्यवार कर	ाः सपन्नंश		₹ € 0 5	, मादिनाथ की व			
धादित्यवार कर	ाः धर्जुन	ार	3888	मादिनाय विनर्त			
٠,	: प गगावास	हि०	853	म्रादिनाथ विनर्त			
"	: इ० नेमिदर	ा हि०	४२८	भादिनाथ स्तवन	·	हि	
**	: भाऊ	हि० ४२	c, १०१८,	ग्रादिनाथ स्तवन		७१ हि	t, ११३ <b>४</b>
*	१४८, ११३१,			भारतगय स्तवन भारतगय स्तवन			
	१०६०, १०१	7, 808	१, १०४२,	भारताय स्तवन भारिनाथ स्तवन		प्रार ।त. हिर	
	\$ 0 KK			मादिनाय स्तवन			
	१०८३, १०६			मादिनाथ स्तुनि		fgo	१०६७ १०६७
			१, १०७४,	मादिनाय स्तुति		fgo	(543 8X
भादित्यवार कथ	-	हि०	१११=,	म्रादिनाथ स्तुति		हिं हिं	
	805	₹ <b>८, ११</b> ५	, ११६८,	anana egia	. स्वताकालाल	150	१०५५
,,	ः मनोहग्दास	हि ०	€e 0 9	ग्रादिनाथ स्तोत्र		हि॰	
.,	ः महीचन्द	e B	११६४,	Milania mila		150	
			3355	धादिपुरासा . ब्र	farren	राज०	७१२
**	. विनोदीलाल	हि ०	3009	भाविषुरासाः प्रव		रागण स्रपभ्रंश	२६७
7.	ः मु०सकलकी	ৰি হি॰	C X =	माध्यपुराखाः पुर ग्रादि पुराखाः भ			२: <b>६</b>
**	ः सुरेन्द्रकीर्ति	filo	४२१,	आदि पुरामा भाष			<b>e</b> ६,२६७
	१०७३, १०७	8, tou=	3409	AII4 31171 AII4	ः भ दालानर		
ग्रादिस्यक्षा मग्र		हि०	308			हि॰	240
स्मादित्यवार पूजा	व कथा—	स॰ हि	\$33	भादि पुराग महा		२६८, २ <del>१</del>	
मादित्यवानी व	ल कथा	हि०		माध्य पुरासा महा धर्मद पुरासा रास		₩ o	258
भ्रादित्यवार वतो	द्यापन पूत्रा. ज	यमागर		भादतम् स्मरण	ः चणाजनदा		498
		₩●		भावसत समरण प्रादीस्वर विवाहलं		fğ o	EXE
म्रादित्य हृदय स्त	तेत्र	Æ●		भादास्वर । बदाहल धानस्द रास	ाः वास्थस्य	हि	<b>११३२</b>
				आगन्दरास मानन्दसहरीः शं		हिं	१०६१
मादिनाथ गीत-	-	fig.	. 4	मानन्दलहराः शा प्राप्तपरीकाः विद		40	150
			1-14	भाग परा <b>क्षाः ।वर</b>	।।नान्द	सं०	<b>á</b> A∉

			1		पत्र संख्या
भाग मीमासा : भ्रा० समन्तमद			1		933
	4,	११ ३ उर	1	•	१०२६
ग्राप्त-मीमासा भाषाः जयचन्द	खाबडा		धाराधनासार टोकाः पंचि		
	राज	₹¥€,		•	
		3×0			
भाष्तस्वरूप विचार	स•	२५०			
भःयुर्वद ग्रन्थ	सं∘	408	į.		
•	हि० ५४	४०४ ४	ं भागधनासार वचनिकाः पर		ारी ह <b>र</b>
भायुवॅद निदान	सं•	404	arriva wa . shaafe		
प्रायुवंद के नुस्के—	हि॰ ४०	<b>\$</b> \$ \$ \$ \$			
६५६, ६५७, १६०, १०१	3, <b>११</b> १५,	2225,	, भागाप पद्धात - प्यचन		
		3111	malain .		.,, (004 3=8
अध्युवेंद महोद्रिकः पृक्षदेव	स०	204	í	•	£ ¥ ₹
भायुयें दिक शास्त्र	हि॰	५७५		•	\$#E
म्राराधना	हि	£ ?		414 160	१०५५
<b>ध</b> ःराधना	सं∘	७१२	malar ms	πo	3=8
ग्रःराधना कथाकोश	स ०	४२६			8834
बाराधना ,, बल्तावरमिंह रतन	नाल हि॰	810			\$ 117
बाराधना, ब॰ नेमिदत	₩•	830			4
भाराधना,, श्रुत सागर	ŧi∘	830	अत्यस्यकं द्वार राजुरसा . शाम	id addis	
ग्राराधना ,, हरियेग	म०	830		₹∙	3
ग्राराचना सार कया प्रवंध : प्रभा	चन्द स०	¥3.		পাহ	6883
धाराधना चतुष्पदी । धर्मसःगर	हि०	830			3
म्राराधना पंजिकाः देवकीर्ति	₩o	€3			*85
माराधना प्रतिबोधसारः	हि०	9880	., .	पाचार्य सं०	१११६
भाराचना प्रतिबोधसार : विमल	कीर्ति हि॰	8028	मावाढ़ भूतनी चौपई	हि॰	११६७
धारावना प्रतिबोधसारः सकल	कीर्ति	- 1	ग्राबाढ़ भूति घमालि	हिं•	€ = ¥
	<b>.</b>		द्यापाढभूत धमाल	हि०	3609
	-		भाषाढभूति मुनिका बोढाल्या	कनकसोम	r
ाल मीमाला : आ					
षाराषनासार	•				१०१३
माराधनासार	-				4 \$ \$
			_	-	१०२४
माराधनासार : देवसेन		.,	•		8000
	€=3	, १०६६	भाहार पचलाए।	গা •	७१२

प्रंथ नाम	तेसक	मावा	पत्र संख्य	। प्रथमाम	वेसक	मावा	पत्र सरुया
धासादना कोश	:	स	£3	उत्पत्ति महादे	व नारायस —	हि०	११०२
श्वासपाल छद		हि०	2024			हि॰	
भ्रोंकार की चौप	ः भैवा मग	तीदास		उत्तरपुराणः	गुरमदावार्य	•	२७०,२७१
		हि	१०७७		-	धमः	
ग्रेकार वचनिका		हि	<b>६</b> २०	उत्तर पुरासा	सकलकीति	स०	707
<b>भौ</b> षघियों के नुस्के	t :	हि०	१०२०	उत्तर पुरासा	गवाः खुशालच	न्द हि०	202
भ्रीषघि-विधिः		हि॰	४७४		•		8 , 8 o x 2
भ्रीषघ सग्रहः		हि॰ स॰	११६१	उत्तर पुराण भ	गयाः पन्नालाल	हि०	<b>₹७४</b>
इक्कावन सूत्र :		हि०	₹3	उत्तर प्रकृतिक	र्ग्न:	हि॰	¥
इक्कीस ठाएगा प्रक	रसाः नेमिच	द्रवार्यः		उत्तरध्ययन टी	का:	য়া ০ :	स॰ ४
		श्रा •	¥	वत्तराध्ययन सू	<b>7</b>	সা ০	¥
इकवीस विविधूजा		हि॰	95 ¥	उत्तराध्ययन सू	त वालावबोध त	ीका प्रा॰	स॰ ४
इतिहास सार समु	व्यव:लालद	स हि॰	8088	उत्सव पत्रिका	;	हि॰	<b>4</b> 48
इन्द्रजाल विद्याः		हि॰	EXX	उक्ति निरूपसाः		हि॰	¥
इन्द्रघ्यजपूजाः स	विश्वभूवरा	₩.	৩ৼ७	उदरगीतः स्त्रो	हल	हि॰	8040
10		₹ •	<b>9</b> 50	उद्धारकोशः :	किंगा-मृति मूर्व	ने स०	***
इन्द्रनन्दि नीतिसार	ः इन्द्रनन्दि	स •	६६२	उसीस भावना	:	हिं०	8028
इन्द्रमहोत्सव :		हि॰	€3	उपकरस्मानि एव	षटिका वर्णन	: हि॰	222×
इन्द्रनक्षराः		स •	€ € €	उपदेश पच्चीपी	: रामदास	fg∘ €	¥5,858
इन्द्रिय नाटकः:		हि०	<b>६</b> 03	उपदेश बलीसी	राजकवि	fe o	१११=
इन्द्रिय विवरमाः		प्रा०	120	उपदेश बावनी :	किशनदास	fg o	€ <b>c</b> ?
इलायची कुमार रा	त - झान साग	र हि०	६३१	उपदेश बीमी :र	मचन्द्र ऋषि	हि०	EXS
इश्कचिमनः महार	तत्र कुवर स	वतसिह		उपदेशमालाः:		हि •	EXE
		हि•	ह६५ :	उपदेश मानाः ।	मंदास गरिंग	ग्रा॰	240
इन्दरी छन्दः कवि	हेम	हि०	₹ €	उपदेश रतमासा		प्रा॰ ६६	
इप्ट छन्।भी :		fę۰	₹१०३	उपदेश रत्नमाला	ः धर्मदास सहि	ים מדט פי	W 9910V
इष्ट छनीसी : बुधर		हिं ॰	. ३३३,६३	उपदेश रत्नमामा	, सकल भवरग	. <b>सं</b> ∙	£¥,£¥
इप्ट मिचावनी : रह		हि०	8083	उपदेश बेलि : प	गोबिन्द	fgo	2880
इष्टोपदेग . पूज्यपा	•		63,880	उपदेश मनक : इ		हि॰	1.11.
		1 4 4	8,8803			-	\$ o Y 3
इष्टोपदेश भाषा :		हि०	\$005	उपदेश सिद्धान्तः	रत्नमालाः भाग		
ईश्वर शिक्षा:		हिं •	१०२४	उपदेश स्त्रोक :			1,8108
ईश्वर का मृब्टि कतृ	त्व सहन	स •			-	हि॰	१०२६
उज्मर माय : जय	त मट्ट	सं०	1103	उपदेश सिद्धान्त र नपदेश सिद्धान्त र	त्तनासाः	हि॰	\$ \$08
उत्पत्ति गीत		हि०	1885	वपदेश सिद्धान्त र	ल्यासाः वैक्रि		
						आः स	० १५

ग्रंथनाम लेखक म	वा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला-पाण्डे	নালৰ	म्द	एकीमाब स्तोः	- भवरदास	हि	७१४.
	हि	, ех				<b>११२२</b>
उपधान विधि स्तवन-साधुकीति	हि	1048	एकीमाव स्तोव	वादिराज	सं०	७१३,
उपसर्ग बुत्ति	<b>स</b>	* * * * *	৬৩	१,७७२,७७४,	१०२२,१	57,8053
उपसर्गहर स्तोत्र	प्रा	७ ७१२	एकीभाव स्तोत्र	टीका	सं •	७१४
उपसर्गहर स्तोत्र	सं०	७१२,६५३	एकीमाव स्तोत्र	माथा	हि॰	७१४,६६१
		<b>११२</b> %				<b>£</b> 50
उपः वि प्रकरस्	सं०	२५१	एकी माव स्तोत्र			१०१३
उपासका बार	सं०	83,83	एकी माव स्तोत्र	वृत्ति — नागर	न्द्र सूरि	
उपासकाचार पूज्यपाद	सं०	£\$			सं०	७१४
उपासका दशांग	সা ব		ऋतुचर्यावार	-	सं०	४७४
उनासकाच्ययन-प्रमाचन्द्र	सं०	११३७	ऋतु संहार	गलिदास	सं०	३१५
उपासकाध्ययनविश्ल श्रीमाल			ऋढि नवकार		स∙	७१४
	हि	. 69	ऋप मदेवगीत	-	हि०	११६८
उपासकाध्ययन टिप्परा	स	8.9	ऋषमदेव स्तवः		हि०	685
उपासकाध्ययन विवरशा	स		ऋषभदेव स्तवः		पुनिहि०	98x
उपसकाध्ययन श्रावकाचार श्रीप			ऋषमनाथ विन		हि०	3909
उपासकाध्ययन सूत्र भाषा टीका			ऋषिदत्ता चौप		हि०	836
उवाई सूत्र	भा०	X.	ऋषि पचमी उ		स∘	8608
एकष्ठि प्रकरम	प्रा०	i	ऋषि मडल जा	-य	सं०	११४२
एकसी शहतालीम प्रकृति का व्योर		Ę	ऋषि मडल जा	य विधि	स०	११६०
एकमी भारोत्तर नाम	हि०		ऋषि मंडल पूज		सं०	445
एकासरी छंद	fgo	<b>७१</b> २				६, ११४५
एकाक्षरी नाममाला	स०	***	ऋषि मङल पूत			959,885
•		५३५,५३६	ऋषि मङल पूज		सं०	9=9
एक कर नामा	. स •	४३६	ऋषि मडल पूज			620
एकादशी महात्स्य		840,838	ऋषि मडल मा		सेरी हि॰	955
एकादशी वृत कथा	সা		ऋषि मंडल मह		सं∘	835
एकादशी स्तुतिगुराहर्ष	हि		ऋषि महल यत्र		सं∘	£38,0==
एकावसी कथा	ाह∙ स•		ऋषि मडस स्त	वन	सं०	955,
एकावली कथा-लनित कीर्ति	सं०					<b>\$\$</b> \$\$
•			ऋषि मंडल स्त		₹•	\$ 0.0
एकावली वतकवा विमलकीति	संब		EX7, १०१=,१			
एकीमाय स्तोत्रः वादिराज	स०		ऋषि मडल स्तो	त्र-गतम स्व		84,688
33	ε, τ	०६१,११२०			3	<b>!</b> #,११२४

प्रंथ नास	लेखक	भाषा प	त्र संस्था	प्रंच नाम	लेकक	मावा	पत्र संन्धाः
	क			कर्मदहन उद्याप	न — विश्वभूवः	ए : सं•	७८१
	••			कमंदहन उद्याप	न पूजा—टेकः	बन्द हि०	०३७,५२
कक्का-मनरा	म	हिं∘	708=	कर्मदहन उद्याप	न पूजा—शुन	चन्दसं०४	१३७,०५
		8408	, ११०५	कमंदहन उद्याप	न पूजाविधान	r हि∘	७६२
कक्का बलीसी		हि०	ξξ₹,	कर्मध्याज पूजा		मं ०	445
	६⊏१,	££ <b>\$, १</b> १३३	. ११५१	कर्म निर्वेरावत			40E,4=0
कक्का वोनती		हि ०	१०३६	कर्मनिजंग्सी व	बतुर्दशी विधान	न सं०	७६२
कछवाहाराज व	<b>ां</b> शावलि	हि०	१०२०	कर्म प्रकृति		हि॰	€ € =
			१११२	7.2.0		•	\$ 0 X =
कजिका वतोद्याप	म-—ललितव	होति स०	११५४	कर्मों की प्रकृति		हि॰	€X3
कठियार कानड	री चौपईम	गनसागर हि	,	कर्मप्रकृति — ने		সা৽	4,840
		X	₹,६८₹	कर्मकी १४८ ऽ		ફિ∘	११४०
कर्णामृत पुरासा	—— ম৹ বিজয	कीर्तिहि०	२७४,	कमं प्रकृति टीक			<u> </u>
			११७४	कर्मप्रकृति टीक	।भ० सुभार	ाका।त एव स∙	ज्ञानभूषरा
कथाकोण — चन्द्र	इकीर्ति	स •	836	कर्म प्रकृति भाव	ा 🗕 बनारमीट		£=₹
कथाकोश द्र॰	नेमिदत्त	सं०	४३२ -	कमं प्रकृति वर्ण		ii. ig∗ ig∙	5
कथाकोश—मार	(1मल्ल	हि०	,,	कर्मप्रकृति विश		हि॰	£13
कबाकोश — मु०	रामचन्द्र	सं∘	/•	कर्म विपाक स			=. १०१४
कषाकोशश्रुत	सागर	स •	**	कर्म विपाक — वं		संब	-, (-, \ x
कवाकोश—हरि	वेस	सं०	19	कमं विशक — म	-		101
कयाकोश		हि॰	834	कर्म विपाक — सु		हि०	2222
कथासग्रह		स∘ ४३	₹¥¥ :	कर्म विपाक कथ	•	, हु। हि•	¥30
कवा सम्रह		भा०	**	कर्म विपाक चौप		हि॰	883c
<b>कथा</b> सग्रह—वि	जयकीर्ति	हि॰	¥\$¥	कर्म विपाक भाष	•	।ছ <i>॰</i> हि•	\$ 5 A C
कया संग्रह जय	कीति	हि∙	3006	कर्म विपाक सूत्र		e TR	****
कमकमल जयमा		हि॰	8030	कर्म विपाक सूत्र कर्म विपाक सूत्र			
कमलबन्द्रायण व	तोद्यापन	सं०	320	कर्मावपाक सूत्र कर्म विपाक सूत्र		्रिया हिव	ę E
कमलामती का स	<b>उभाय</b>	हि॰	\$668	कम विपाक सूत्र कर्म विपाक रास		हिं	
कम्मरा विधि	रतन सुरि	हि॰	१०६१				<b> </b>
कर्मचिताध्याय		सं •	2220	कर्म विपाक रास	प्राचनदार	स हि॰	६१२ ११३७
कमंचूर खद्यापन		स∘	320	कर्म सिद्धान्त मा	हर्सी	সা •	1,10
कमं छसीसी	नारसी <b>दास</b>	हि॰	628	कर्मस्तव स्तोन	-	স্থা ০	990
कमंदद्दन पूजा		o IR	CE0	कर्म हिडोलना	- हर्षकीति	(go	१०२३
	€४८, १	११८, ११३६,	११६६	•	• "		40%0

पंचनाम लेखक स	सवा	पत्र संख्या	ग्रंच नाम	लेखक	मावा	पत्र संस्था
करकण्डुचरित्र मुनि कनकामर	भ्रप०	* * *	कल्यार मन्दिर		₹₽	3\$0,2\$0
करकण्डुचरित्र— स० शुभवन्द्र	संव	384	वस्यागुमन्दिर	स्तोत्र माषा	हि॰	6088
करकण्डुनोरास— इ० जिनदास	हि॰	६३२				१०६१
करुणाष्ट्रक – पद्मनन्दि	सं०	७१६	, कल्बारण मन्दिर	स्तोत्र माया -	- धसय राष	। श्रीमाल
कल्पद्रम कलिका	<b>4</b> •	११७६			हि०	390
कल्पलता टीका-समयसुन्दर उप	ाध्याय		कस्यागः मन्दिर	स्त्रीत्रवयनिक	7 <b></b> -F	मोहनसास
	€ •	<b>१</b> २			हि०	७१६
करूपसूत्र — भद्रबाहु स्वामा	সা৹	१०	कल्यारा मन्दिर	वृत्ति-देवतिर	नक स०	७२०
कल्पमूत्र बसारा	हि०	११७६	कस्यारा मन्दिर			७२०
कल्पमूत्रबालावबोध	яг.	हि० ११	कत्वारा मन्दिर	वृत्तिनागव	न्द्रसूरिसं	• ७२०
			कल्यास मन्दिर	वृश्ति	स०	७२०
कल्पसूत्र टीका	हि॰	<b>११</b>	कस्यागमाला	प धाशावर	स०	११७६
करपसूत्र वृत्ति : करुपार्थ	সা ০ হ		कत्यारा मन्दिर	स्तोत्रवृत्ति—ि	वेनयचन्द्र	
	সা৹ সা৹	€ E			स०	888€
कल्पाध्ययन सूत्र		११	कलजुगरास— ठ	क्कुरसीकवि	हि॰	११७४
कल्यावचूरि	গ্ৰ	१२	कलयुग बन्तीसी		हि०	₹33
कल्याम्। कल्पद्रुम वृन्दादन	हि०	७१६	कलकाविधि		सं०	₹30
कल्यारा मन्दिर—कुमुदचन्द्र	<b>₹</b> 0 ₹	₹ లల, ⊂ లe	कसभारोहरा ति	<b>धा</b> न	हि०	₹3€
33		5 × 3 , × e	कलशारोहरा वि	घि	सं०	७२०
कत्याण मन्दिर स्तोत्र-कुमुदचन		१०२२	कस'वती सती वि	<b>न</b> ज्भाय	हि॰	१०६१
१०३४, १०६४, १०७४		३, ११२७	कलिकाल पंचारि	का	हि॰	80€€
कल्यारण मन्दिर पूजा - देवेन्द्रकी		\$30	कलियुग कथा	पाडे केशव	हि •	१०५०
				१०५३, १०१	५१, १०६	७, १०७७
कल्यारण मन्दिर माथा	हि०	₹33	कलियुग चरित्र-	—बाग्	हि॰	१००२
		0, 8030	कल्थियुग चौपई		हि०	११३८
कल्याम् मन्दिर भाषावनारसीव		1	कलियुग बत्तीसी		हि०	1176
ह्¥≒, ह≂०, १०१६			कलियुगकी विन	तीदेवा बह	ा हि∙	₹ ₹७६
१०६१, १०६४, ११२	२, ११२	¥, ११४=	कलिकुंड पूजा		हि॰ ।	, <i>71</i> 23,53e
कल्याए। मन्दिर स्तवनावचूरि-	<b>गुरा</b> रत्न	सूरि			64	¥, ११११
	सं०	७१६	कलिकुंड पार्श्वन	ाष स्तुति	हि०	* * * * *
कल्याका मन्दिर क्तोत्र	मं •	€ € ७,	कलि चौदस कथा	- म० सुरेन्दव	तिति हि०	४३५
	* 0 \$	१, १०१२	कलि व्यवहार प	च्चोसीनन्द <b>र</b>	ाम हि॰	\$00\$
करवासमन्दर टीका-हवंकीर्व	सं०	७१=	कंबरपाल बलीसी	<del>पंपर</del> पास	हि०	₹₹७₹
कस्थारा मन्दरचरित्रवर न	# 0	3\$0,2\$0	कबल चन्द्रावरण	पूजा	सं०	600

ग्रंगनाम लेखक	मावा	पत्र संख्या	प्रथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
कविकस्पद्वमकवीन्द्राचार्य	स∘	487	कार्तिक पचमी	कथा	स०	४३४
कविकाव्य नाम	स ∘	११७६	कार्तिक महत्स्म	व	सं०	ΧŧΧ
कविकाव्य नाम गर्भ चक्रवृत्त	₹∘	११७६	कातिक महात्म	प	₩•	११७६
<b>कवि रहस्य</b> हलायुघ	Ŧ o	११७६	काति कसेठ को	चौढाल्यो	हि०	ХŻХ
कवित्त	f₹o	६४८	कानड कठियार	तनी चौपई	हि०	EXX
कवित्त—बनारसी दास	हि ०	६४८	कानहरे कठिय	ारा	हि०	EXR
कवित्तबुधराव वूंदी	हि०	8003	कामधेनुस।रए	ît	हि०	१११६
कवित्त-मानकवि	हि ०	११४२	कामशिकाय ये	गि प्रसंग	स०	१२
कवित्तसुन्दरदास	हि०	११६६	कार्यक्षेत्र गीत –	-धनपाल	₩ •	१०२४
कवित्व छप्पय	हि०	6668	काया जीव सव	।द—देवा ब्रह्म	हि०	१११६
कवित्त जन्म कल्यागाक महोत्सव	—हरिच	स्द	कायाजीव संब	ादगीत—क्रह	µदेव हिं	११४५ •
	हि०	१०५४	कारक खडन	भोष्म	सं∘	४१२
कवित्त नागरीदास	हि०	3308	कारक विचार		स०	* १२
कवित्त व स्तोत्र संग्रह	हि०	EXE :	कारिका		स ०	५१२
कविप्रिया	स०	£ 9 .	कालक कथा		সা •	<b>858</b>
कवित्रिया — केशवदास	स० ६'	४२,१०३७ .	कालकाचार्यक	या — समयसुन्द	र हि०	ХġХ
कविसिहविवाद—द्यानतराय	हि०	8088	कालकाचार्यकः	पा — मास् <del>यिय</del>	मूरिस०	<b>X5X</b>
कष्ट नाश्चक स्तोत्र	सं∘	१०४२	कालका वःर्यप्रबं	बबिनसुखसू	रि हि०	X\$X
कष्ट विचार	हि०	**	कालज्ञान		<b>स</b> •	५४२,
कष्टावलि	स०	€ € ¥			४७४,	५७६,६५३
कषाय जय भावना	हि०	१०६६	कालज्ञान भाषा	—लङमोवस्लव	र हि०	४७६
काषाय मार्गेग्गा	<b>स</b> ◦	<b>१</b> २	कानज्ञान सटीक	;	स०	४७६
कांजकायत कथा - ललितकीति	<b>₹</b> •	56	कासयत्र			११७२
काजी बनोद्यापन—रत्नकीनि	स •	<b>७</b> ६३	कालाबलि		fgo	દયક
., , मुनि ललितकीर्नि	स ०	98¥ ;	कालीकवच		(Fo	૧ ૦ દ પ્ર
कानन्त्र रूपमालः शित्रवर्मा	₩•	488	कालीतस्व		Ħ o	११७७
कातन्त्र रूपमाला टीका—दौर्ग्यस्	तह स ०	* 44	काव्य संग्रह		Fi o	₹84
कातन्त्र रूपमाला वृत्तिभावनेन	स स •	* * * *	कामिका वृत्ति-	-वामनाचार्यं	सं०	483
कातन्त्र विक्रम सूत्र—क्षित्रवर्मा	मं०	* 88	क्रियाकलायवि		<b>#</b> 0	483
कार्तिकेयानुत्रक्षास्वामी कार्तिवे	ৰ য়া•	;	क्रियाकलाप टीक			€=,
		1939,03				68.800
कार्तिकेयानुत्रेक्षा टीका-शुमयन	₹ <b>स</b> • !	188,888	कियाकोश भावा	—किश्वनसिंह	हि•	200
कः निकेयानुप्रदेशा भाषा जयक	न्द्र भावह	र राज		-	-	¥05,£05
			क्रियाकोश भाषा		हिं•	

ग्रंचनाम लेखक	मावा	पत्र संख्या	प्रंथनाम लेखक	मावा '	पत्र संख्या
क्रिया पद्धति	सं०	१०४	कोकसार	हि॰	દદ્દપ
कियासार — भद्रवाहु	प्रा॰	१०४	कोकिला द्रतोद्यापन	सं०	७६४
किरातार्जुनीय — भारवि	स०	३१६,३१७	कोए। सूची	सं०	488
कुण्डलियांगिरचरराय	fa•	१०११	कीमुदी कथा	स०	४३६
कुण्डसिद्धि	स	430	कृतिम म शिम चैत्यबदना	हि॰	208
कुतूहल रस्तावनीकस्यारा	सं०	***	कृदन्त प्रक्रिया – ग्रनुभूतिस्वश	स्पाचार्यं सं०	482
कुदेव स्वरूप बर्णन	f₹∘	۶3	कृपए। कथा—श्रीरवन्द्र सूरि	हि०	४३१
कुदकुदाचार्यकथा	हि०	ХŝХ	 कृपण जगावण व ० गुलाल		६६२
कुन्दकुन्द के पांच नामीं का इति	हास		कृपरण पञ्चीसीविनोदी ल		£ ¥ =
	हि०	६५१	कृपरा षट्पद—ठक्कुरसी	हि०	६६४
कुबेग्दत्त गीत (भठारह नाता र	.ास)		कृमि-ोग का ब्यौरा	fão	५७६
	हि०	<b>१</b> ०२६	कृष्ण बलिमत्र सज्काय	हि०	१०१५
कुमति की विनती	हि०	€=•	कृष्ण बनिसद्ध सण्भाय—रत	नसिंह हि॰	७२०
कुमनि सज्भाय	हि •	650	कृष्णजी का वारहमासा—जी	वनराम हि०	850
कुमारपाल प्रबन्ध - हेमचन्द्राचा	र्यसं०	280	कृष्ण युविष्ठिर सवाद	सं०	११७५
कुमार समव — का लिदास	स०	३१७,३१८	कृष्ण रुक्मिणी विवाह	हि०	१०८७
कुमार समय — मटीक मल्लिना	प सूरि		कृष्ण स्वमिण वेलिपृथ्वीर	ाज हि॰	११७५
	स०	३१८	कृष्ण शुक्त पक्ष सजमाय	हि०	<b>e33</b>
कुवलयानन्द — अप्पय दीक्षित	स०	<b>₹3</b> ≵			
कुलकरी	स •	६५१	ख		
बुष्टी विकित्सा	हि०	४७७			
कुमुमाञ्जलि	গা •	१०२६	खटोला—य० धर्मदास	हि	१०५६
<b>ब्</b> ट प्रकार	सं०	<b>१</b> २	स्वण्ड प्रशस्ति	₹∘	११७७
क्रयवक	स०	3008	सम्डेसवाको की उत्पत्ति	हि०	१००५
केवली	हि॰	१०७	,		११०४
केशर चन्दन निर्णय	हि०	ग० ६८	खण्डेनवाल जाति की उत्पत्ति	व वंशावली	
केशवी पद्धतिकेशव दैवज्ञ	सं०	५४२		हि०	१०१२
केशवी पद्धत्ति भाषोदाहरसा	₩•	१११६	खण्डेलवालों के ८४ गोत्र	हि॰	१०१२
कोकमंजरीमानन्द	हि०	६२६	खण्डेलवासों के ८४ गोत	हि०	
कोकशास्त्र	हि०	EXX	सण्डेलवाल आवक उत्पत्ति व		940
कोकशास्त्रधानन्द	हि •	१११०	स्विचरी कमलकीर्ति	∵ हि∘	१०६८
कोकमास्त्र-कोक देव	हि०	६२६	सीवड़ रास	हि०	
कोकसार	680	६२६	खडन साद्य प्रकरगा	₹•	248
कीक सास्त्र के शंच	हि∙	<b>દ</b> દય	खंड प्रशस्ति काञ्य	सं∙	₹\$

प्रंचनाम लेखक	भाषा	वत्र संस्था	ग्रंथ नाम	लेखक	माचा	पत्र संख्या
संब प्रशस्ति श्लोक	स	० ११७७	गर्भवक्वृत सस्य	। परिसाम	प्रा ०	१२
			गर्भ बंधन		सं०	१११६
ग			गभंघडार वक	-वेवनन्दि	€.	७२०
			£			9.08=
गर्गमनोरमा—गर्गऋषि	सं∗		गर्ब्ड पुरासा		सं०	२७४
गज सुकुमाल चरित्र	हि		<b>ृह्यतिकम</b> ण सू	त्र टीकारा	लाशेखर गरि	ŋ
यत्र सुकुमाल व्यरिष —जिनसूरि		> ३१८	2		₹•	१०५
गशसिंह कुमार चरित्र—विनय			; ग्रह प्रवेश प्रकरत	ए	हि•	2 ? ? X
	₩.		। गृह शान्ति विधि	-वहं मान	सूरि सं०	990
गर्जासह चौपईराजसुन्दर	हि॰	83€	गावा लक्षाए		ЖIO	3099
गराधरवलय पूजा	١Ę٥	₹=0	गिरिवर की कुं।	स्मा	हि	११५८
		द, ११३ <b>६</b>	<b>निरधरा</b> नन्द		सं०	2555
गण्धरवलय पुत्रा	हि०	¥30	विरमार पूजा		fe•	8083
गराधरवलय पूजा	श्रा ०		मिरनार पूजा	हजा रीमल	(E)	७१५
गणघरवलय पूजा	सं∘		गिरनार बीनती		हि०	222
गराघरवलय पुत्राविधान	सं०	9€₩	गिरनारी गीत	विद्यानन्दि	हि०	€9=
गरमधन्वलय पूजा — शुभवन्द्र	हि०	१०६५	गीन-मतिसागः	:	fgo	* * * *
गणघरवलय पूजा भ० सकल	होति स०	११६०,	गोत-यगःकीति		हि०	१०२६
		618	मीतविनोदीस	দে	हिं	6=8
गराधरवाद -विवयदास सुनि	हि∙	१०२६	गीत गोविन्द	यदेव	स०	७२०
गए। घर विनती	हि०	११३८	गीत सनूना — कु		हि०	3.8.5
गण्यति नाम माला	स •	१११७	गीता तत्वमार	-	हि॰	8038
गरापति मुहूर्नं - रावन गरापति	सं०	**5	गुर्गकरण्ड गुरगाब	नीऋषि द		<b>5</b> 48
गस्पति स्तोत्र	e IF	१०६८	गुगाधि । विचार		स०	444
गरामुन्दरी चरपई - कुषललाभ	राज०	×3€	गुएकासामीत	ह्या बर्द्धन	हि॰	£47.
गरिएतनाममा <b>ला—हरिदा</b> स	<b>₩</b> •	**	•			१०३२
		११७८	गुस्तकारमा चौपई -	_ सी र सारक	٤٠	११३७
गिरात शास्त्र	fée	₹•₹₹,	गुणुठाणा वेबि		हि॰	
		? =	पुस्तिसी मा <b>व</b> ना	- HINTY	-	११२४
गणित सारहेमराब	fg o	११७८	युक्ताता नावना युक्तासी सीवना		€.	662
यागितसारवस्तु मबह-महाबीरा			पुछवाता सामना गुराहोस विचार		€°	११३=
गरोश स्वोत्र	₹io		पुराकात ।वसार गुराकाला		#• ⊷-	\$e¥
गतनस्तुज्ञान	ei.	i	•	-	€.	8.80
गर्भवकवृत	<b>₹</b> 0	1	गुणमाला — ऋषि गणराज्याः		ફિં•	७२१
<b>.</b>		4.4	गुरारत्नमाला — मि	अभाव	सं०	X 1919

प्रंथनाम लेखक म	वा	पत्र संस्था	ग्रयनाम लेखक म	क्या	पत्र संख्या
युक्तवर्मी चरित्र - माश्लिक्य सुन्दर	सूरि		गुरु स्तोत्र-विजयदेव सूरि	慢。	७२१
•	सं०	38€	गुलाल मथुराबाद पञ्जीसी	हि॰	१०४
गुराविलासनथमल विसाला	हि ०	838	गुर्वावित	हि०	६५२,
गुण्वेलि भ० धर्मदास	हि०	દેષર	}	€	६०, ११४७
गुराइयान ऋमारोह	सं०	१३	गुर्वादली (चौसठ ऋद्वि) पूजार	बरूपच	न्द विलाला
गुरास्थान गाथा	शा०	₹ \$		हि०	७६४
गुरगम्थान चर्चा	स०	१२, १३,	गुर्वावली सण्भाय	সা৹	६५१
८६०, ६६७, ६८६, ६६	€, €€	0, १०५६,	गोतिरात्र वतोद्यासन	स०	११७६
		१०१९	गोपाल सहस्त्र नाम	सं०	७२१
गुशगुरुथान चर्चा	সা৹	6684	गोम्मट सारनेमिचन्द्राचार्यं	সাত	१५, १६
गुग्गस्थान चौपईं - ब्र॰ जिनदास	हि०	8.8	गोम्मटसार भार)—पं॰ टोडरमर	राव	• १=, १६
गुरास्थान पीठिका	हि०	१०६४	गोम्भटसार कर्म काण्ड टीका-ने	मिचन्द्र	
गुरास्थान भागंसा चर्चा	सं०	6.8		সা৹	सं० १७
गुरास्थान मागंगा वर्णन-नेमिन	प्दाचा	น์์	गोम्मटसार चर्चा	हि०	म॰ १७
	গা ০	18	गोम्मटसार चूलिका	सं०	१७
गुर्णस्थान रचना	हि०	१४	गोम्मटसार टोकासुमतिकीर्ति	#∘	१६
गुरगस्थःने बर्शन	प्रा०	8.8	गोम्पटसार (कर्मकाण्ड) भाषाः है	मराज	
गुणम्थान वृत्ति—ग्ताशेखर	H o	१५		हि०	39
गुरावला	स •	EX8	गोम्मटसार पूर्वाद्ध (जीवकाण्ड)-	-सं०	१७
गुराबली पूजा	हिं०	દયદ	गोम्मटसार पूर्वाद भाषा-पं॰ टें	डिरमल	t
गुरावली पूजाः शुभचन्द्र	स०	७१५		राज	० १८,११
गुगवली समुख्यम पूजा	₩e	vex	गोम्मटसार जीवकाण्ड वृत्ति (तत्व	त्रदीपि	का)
गुरावसी स्तोत्र	सं०	७२१		सं०	21
गुरु भण्टक-धी भूषण	स•	११६६	गोम्मटसार (पंच संग्रह) वृत्ति	<b>मयव</b>	দ্ৰ
गुरु जयमाल - ४० जिनदास	हि०	<i>હ</i> દૂ <b>ર</b> ,		सं०	79
•	११४	(3, <b>११</b> %)	गोम्मटसार वृत्तिकेशववर्णी	सं०	₹\$
गुरुवदेश श्रावकाचारडालूराम	हि०	१०४,१०६	गौम्मटसार संहष्टि-धा • नेमिन	न्द्र प्रा	• २१
गुरु पूजा— व <b>ं विनदा</b> स	हि०	0009	गोम्मट स्वामी स्तोत्र	सं०	७२१
गुरु पूजाहेमराज	fgo	3888	गोरस कवित्तगोरसदास	हि०	\$ \$ 8 X
गुड राशि नत विचार	स०	8848	गोरख चनकर	हि०	¥30\$
गुष विनती	₩o	<i>છ</i> છ 3	गोरखनाथ का जोग	हि	१११५
गुरु विरुदावलीविश्वाभूषण	Ħ o	<b>११३</b> %	गोरस विधि	सं०	७६५
गुष्ठ शिष्य प्रकातिर	æi∘	<b>१</b> 055	गोराबादल कथाबटमल	हि०	2838
गुरु स्तवननरेग्द्र कीर्ति	f₹٥	११०=	गोरीचन कल्प	' হি	• ६२.

प्रयास लेखक भा	षा प	क्त संख्या	पंथनाम लेखक म	का प	त्र संख्या
गौडी पारवंनाय खंद - कुशल लाम	हि०	७२१	यहसिद्धश्लोक-महादेव	सं०	१११४
गौडी पारवंनाय स्तवन	हि॰	१०३७			
		१०६१	ঘ		
गौतम ऋषि सज्भाय	श्रा ०	७२१		_	
गोतम पुञ्छ।	सं॰	२१,२२	षोरकालानंतचक 	सं०	१११६
A\$£' XX\$	-	८, १०६६	घण्टाकर्शकस्प	हि॰	<b>६</b> २०,
गौतमपृच्छासूत्र प्रा०	हि •	₹ १	घण्टाकर्ण मंत्र	۵.	१६६
गौतमरास	हि०	432		हि०	470
		689	१०४४, १०५६ घण्टाकर्गाविधिविधास	, ११५३ सं०	
गौतमरासविनयप्रम	हि०	3 € 0 \$	वण्टाकरणस्तोत्र व मत्र	-	<b>\$</b> 70
गौतम स्वामी परिष-पर्भवन्द्र	€ 0	38€	वण्टाकरणस्तात्र व सत	सं०	११२७
		३२०	ৰ		
गौतमस्य मीरास	हि•	€ ४ ६			
गौतगस्वाभीरास — विजयभ्रद	हि॰	4041	च उदइ गुरागीत	हि॰	5 7 3
गौतमक्षामी रास — बिनयप्रम	हि॰	११६५	च उबोली की चौपई चतर		
गौतमस्वामी सज्भाय	हि०	१०३८		हि ०	<b>१</b> 05
गोनम स्वामा स्तोत्र —बादिचन्द्र	हि०	११३=	च उबीसा जिनराज मृरि	हि०	8030
गगड प्राप्तांश्वत	हि॰	११७७	चउमरग्री पयन्न	हि॰	£ 0 5
गगालहरी स्तोत्र — मट्ट जगन्नाथ	स०	७२१	चउसरण वृत्ति	সা ০	80%
गंधकुटी -	₩•	€€€	चक्र केवली	हि०	888
ग्यारह प्रतिया रास	हि०	११४४	चक्रोश्यरी देवी स्तोत्र	<b>स</b> ∘	७२२
ग्यारह प्र <sub>ि</sub> मा <b>वर्</b> शन	हि॰	६८१	चतुर्गतिरास-वीरचन्द	feo	<b>43</b> 2
ग्यारः प्रोतमा बीनती—इ जिनदास	हि०	११३७	चतुर्गति वेलि - हर्षकीर्ति	हि ०	EEY
ग्रन्थ विवक <b>चितवसी—सुन्दरदास</b>	हि०	१०१४	चत्रचितारणी—दौनतराम	हि॰	\$ 0 X
ग्रम्थ सूची शास्त्र भण्डार दबलाना	-f <b>z•</b>	६५६	चतुर्दश भक्ति पाठ	₩.	922
<b>प्रह</b> ्णवर्गन	(go	१११५	चतुर्दशोकवा—टीकम	fg o	₹ <b>•</b> ₹₹
प्रहर्णावचार	सं०	४४३	चतुर्दशीकया —शलुराम	हि∙ हि•	844
<b>१ह</b> प चवरांन	₩•	#X3	चतुर्दशासायाःवाश्वरामः चतुर्दशासूग्रास्थान वेलि - त० जीव	-	• • • •
प्रमावप्रकास	सं०	ध्४३	चतुन्य गुरात्यान पाल - प्रण्यान	( <b>8</b> €	<b>६</b> ८२
<b>ग्हरा</b> शिपाल	H o	***	चतुर्दशी चीपईचतुरमस	हिन्दी	to K
<b>ाह</b> राशिकन	सं०	१९१७	चनदंशी प्रतिमासीपवास पूजा-	₹0	986
हरा राहु प्रकरता	<b>#</b> •	3055	चतुरंशी वतीधापन पूजा-विधान		3.0
हुनःघय-गरोश दैवन	e.	484	Afterna antenna Caramana	₩io	986
इलाधनदेबदश	<b>स</b> •	488			989

प्रंचनाम लेखक मावा	पत्र सस्या	प्रथमाम लेखक	भाषा पत्र संख्या
अनुर बल बारा गंध्तः भगवतीदास हि	. 8=4	चतविशति स्रोत्र - प० जगर	गव सं∘ ७२३
अतुर्माय धर्पव्यास्थान हि	ह० १०५	चतुर्विशति स्तोत्र-समन्तभद्र	स॰ ६७५
चतुर्मास व्यास्थान : समयमुन्दर उपाध्य	गय	चतुः शरशः प्रकीशंक सूत्र —	स॰ २२
सं	० १०४	चतुः षष्ठि योगित्री स्तोत्र —	स० १०५२
	१०६	चनुष्क वृत्ति टिप्पण-पं गोर	हिए। सं० ४१३
चतुर मुकुट-चन्द्रकिरए। को कथा हि	० ११६२	चतुष्कणरण वर्णन	प्रा∘हि∘ १०४
<b>चतु</b> िषक्षान कवित्त—ब्रह्म ज्ञानसागर वि	हे० ६६३	<b>चतुः स</b> रगप्रज्ञन्ति	मा॰ २२
चतुनिध स्तवन	० ७२२	चन्दनमलयागिरिकया	हि॰ १६२
चतुर्विगति जयमाला माधनन्दि व्रती स	। ७२२		₹0€•
चतुर्विमति जिन दोश— हि	७ ७२२	चन्दन मलयागिरी कथा—चन्	स्मेन हि० १४५
चतुर्विगति जिन नमस्कार— स	७२२	चन्दन मलवागिर कथा भद्र	
चतुर्विंशति जिन पूजा हि	<i>છ3</i> છ	चन्दन मलकाणिरी चौपई-म	
	330	बन्दन परिठ पूजा-प० बोख	-
चन्रिंशित जिन शासन देत्री पूत्रा — संब		च दन बच्छे दत कथाखुशा	
चतुर्विगति जिन षट् पद वध स्तोत्र—ध		चन्दन घण्ठी वृत कथा - श्रुत	
हि	१००६	चन्दन थप्ठि बत पूत्रा— विजय	
चतुर्विभति जिनस्तवन प्रा		थन्द्रना घरित्र — म० शु <b>मचन्द्र</b>	स॰ ३२०
चतुर्विमति जिनस्तुति हिल्	. 1	चन्दराजानीढाल-मोहन	_
	१६, १०६१		
चतुर्विमति जिन स्तीत्र टीकाजिनप्रम		चन्द्र गुप्त के १६ स्वप्न	हि० ६८०,
<b>स</b>		•	८८६, १०१२, ११३०
चतुर्विशति तीर्थंकर जयमाल हि	1	चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न क	। रायमल्स
चतुर्विशिति तीर्थं हर वासी स्थान हि			हि॰ ६५३,
चतुर्विणति तीर्थकर स्तुति— हि	i		८०, १००५, १०१२,
चनुविभति पूत्रा- स		१०२३, १०	es, tone 1130
चतुर्विभति पूत्राजिनेश्वरदास हिल्	1	चन्द्रग्रहरण कारक मारक किया	१११७
चतुर्विशति पूजा म० शुक्ष्यत्वे म०	i	चन्द्र दूश काव्य-विनयप्रम	सं० ३२०
	330	चन्द्रप्रम काव्य भाषा टीका	हि० ३२२
चतुनिमति पूजाष्ट्रक	1		-
चतुर्विवति पंच कल्याराक समुख्ययोद्यापन	ा विधि	चन्द्रप्रभगीत	हि० ६ ३ द
वा०गोपाल स		चन्द्रप्रभ खकडीखुनास	हि० १०५४
चतुर्विणनि स्तवन संव		चन्द्रप्रभ चरित्र—यशकीति	षपभ्रंत ३२०
चतुर्विमति स्तवनप० त्रयतिलक सं	७२३	चन्द्रधम चरित्र—वीरमन्दि	सं० ३२० ३२१
चत्विवति स्तृति - शोशन मुनि सं	७ ७२३	चन्द्रप्रम चरित्र — सक्सकीर्ति	सं॰ १२१

क्षं व नाम	लेखक	भाषा	पत्र संस्था	प्रथ नाम	सेसक	मावा	पत्र संस्या
चन्द्रप्रम चरित्र-	श्रीयम्ब	यवभ्र	क ३२१	चर्चा गतक		हिं	£33 •
क्टब्रम चरित्र	माथा —हीराल	त्म हि		वर्गा मतक	चा रतराय	<b>ਫ਼ਿ</b>	
	,	-	<b>३२</b> २	24,	२४, १०११, १०	₹3, ₹os	२, १०८१
चन्द्रप्रम छन्द	प्रश्नेम बन्द	fe	७ ७२५	चर्चा शतक टी	कानाथूनाल	दो ी हि०	२७
चन्द्रप्रम पुरासा	– जिनेन्द्र भूषरा	हि	• २७४	चर्चा शतक टे	काहरत्री=ल	हिन्दी	₹,₹%
चन्द्रवस पुरासा-	– মুগৰ-র	<b>स</b>	२७४	चर्चासमाधान	—भधरदाम	हि	२७
<del>चन्</del> द्रप्रमु त <i>वन</i> —	ग्रानन्दचन	हि	७२३			२=, ३	₹00₹
चन्द्रप्रभ स्तोत्र		₹ 4	४७४	चर्चासमाधान	भूषर मि <b>श्र</b>	हिन्दी	२६
चन्द्रप्रभ स्वामिन	विवाह—- म०	नरेन्द्रकी	বি				१०११
		गाजा	¥₹9	1	प॰ चम्पालाल	हि०ग	0 30
चन्द्रप्रज्ञप्ति		स •	<b>Ę</b> ? o	चर्वासागरव		हि०	30
चन्द्रतहा चौपई-	–रामबस्सभ	f₹∘	६५४	चर्चामार – धन	नामान	हि •	₹•
चन्द्राको — दिनक	₹	हि०	१ = ३	चर्नामार-पं		हि०	şo
चन्द्रावलोक		सं०	***	चर्चासार सग्रह	:भ०गुरेन्द्रभू	पए। म०	
चन्द्रावलोक टीका	विश्वेसर (ग	गःभट्ट) र	jo አጸደ				3 ₹
चन्द्रादय कव्यं टीः	nı — कविरा <b>ज</b>	मखबर स	<i>৩০</i> ৮ ০ ৮	चर्चामग्रह	সাহ	सं० हि०	₹१
चन्द्रादय विनार		1≅•	* * *	चर्चासग्रह		fŖo	१०१३.
चन्द्रान्भीलन - म	धुमूदन	₹7.0	1800				११३०
चमस्कार चितामा	ण — नाराय <b>ण</b>	स∘	* 2.8	चरमी ब्यूह-	वेद व्याग	#1 ¢	११७६
चमस्काग्पूजा -	राजकुमार	f₹∙	હ ફહ	चहु गति ची ।ई		fa •	દેધર,
चमत्कार पूत्रा		स •	७१७				₹₹₹•
चमत्क। रफल		₩•	५ ४४	चाराक्य नीति-	चागम्य	म०	Ęĸ
चमत्कार षट् पंचा	सिका—महास्म	া বিভাগি	बनोद			Ų,	¥, €€¥
		स •	६५८	चार कषाय सब	भागपदा <b>मुम्ब</b> र	: ફિ∙	158
चम्पः जनसःचम्प	ा <b>बा</b> ई	हि•	\$40	चार मित्रो की		सं०	X3=
बन्धा चीपई		हि॰	ا بادع	चारित्र पूत्रा-	नरेळ्सेन	₩●	8080
वर्ना		₩•	<b>२</b> २,२३	चारित्र गुढि पू		料。	<b>€ ₹ 5</b>
चर्चा म० मुरेन्द्र	हीन <del>ि</del>	₩•	22	मान्त्रि गुढि वि	।≅।ন⊸-ম৹ সুম	चःद्र स०	e 3 e
यचा राग		fg.	93	चारित्र सार		M: o	833
चर्चा यस्य		fg∘	23	चारित्र सार-ः		47 0	१०६
बचानागावली		<b>1</b> ₹ •	23	वारित्र सार		Sip	308
<b>च</b> र्चा पट		fg.	<b>२३</b>	चःित्र साग्यच	निका-सन्ताला	न हि०	₹0€
चरचा बागठ - बुध	नाम	fgo	7830	ब ददल कथा		e #	358
चर्चा बंग्ध		हि०	२३	च.स्दल चरित्र-	-र्याक्षत देवदस	₹1 0	<b>३२</b> २

वं च नाम	लेखक म	ावा प	त्र संस्वा	ग्रंथ नाम	नेसक	मावा व	रत्र संस्था
बारूयस प्रवस्थ	ा—कल्य <b>स</b> कीर्नि	हि०	388	चूनडी		हि∙	80€
चारूरत प्रवध	शस - ब० जिनदा	स हि०	११४३	चूनडी-वेगर		हि॰	१०३७
च स्दत्त सेठ र	तस (समोकार रा	F)¶□	जिनदास	बूनडीरास —		हि∙	Eax
		हि०	A3 E	चूनडोरास—ि		हि•	€ € 0
बारूदत श्रोदर्श	ोनोरास—भ• यश	কারি		चेतनकमं वरिष	न	हि०	१०४७
		ĺξe	६३२	चेतनकमं चरित्र	भैया भगव	ीदाम हि०	१००५
वारों गति का	चौढ निया	हि०	₹0€		8000, \$	०६४, ११२	€, ११३१
चार्वाकमनी भः	री	60	२५१	चेतनकमंसवाद	भैया भगवत	ीदास हि॰	११७१
विकित्मासार-	–धीरजराम	सं∘	<i>90 प्र</i>	चेतनगारी		fe•	80EX
वितीहकी गर	नि—कवि सेताम	हि०	5555	चेतनगारी	वनोहीसाम	feo	<b>११</b> 50.
चिती इबमने	का समय	हि॰	₹•३=	41111111		-	6.2053
विदितिनास	दीपचनः कासलीया	Ħ		वेशनगीत		ੀ. ਵਿ•	2250
		<b>€</b> α ₹	£8,8£X	चेतनगीत	• विनदाय	हि•	१६५२
चिद्रम चिन्तन	फागु	हि॰	६३२	-44.1.114 W	- 1-1-1-1	٠٠٠	१०२७
चित्रवध स्नीत्र		₩•	450	चेतनगोतनर	:तहास	हि •	8030
चित्रदय स्तीत्र		পা •	७२३	चेतनजखडी		हि०	2305
सचित्र यत्र			११६२	चेतनजलडा चेतन नमस्कार		1E •	करह करह
चित्रमेन पद्माव	ती कथा. गुरासाधु	सं०	3£8	चेतन पुद्गल घ		•	733
चित्रसेन पद्माव	नीकयाः राजवल्य	म स•	3 <b>\$</b> ¥	चतन पुर्वाल व	माल — श्रूष रा		122 0=\$9.3
चिन्तःमांगः अध	ामाल	हि •	११५२	चेनन प्दगन व	m = ====	हि	£=3
बिश्यामिण जर	मालः रायमल्ल	हि०	१०५७	चेतनप्रासी गीर		हि॰	\$ \$ \$ \$ \$ \$
बिन्त।मग्गिपा	व्वंनाथ. विद्यास गर	हि०	११५२	चेतनमोहराज्ञ स			28=0
चि-तामशि पा	ध्वंताय पूत्रा	₹0	१११=	चेतनविलाम			£ X &
चिन्तामिए पा	क्वनाथ पूजाभ०	शुभचन्द्र		चे । नागीतस		fe o	666
	ę	१० ७६	=, ११:५	4 1-11-11-4	2	,,,	*•२६
बिन्तामिंग पा	क्वेनाथ विनतीः प्र	भाचन्द्र वि	ह• ६५२	चे नावसी ग्रन्थ-	-रामचरमा	हि •	184
चितःमिरग पाष	वंनाय स्तोत्र	<b>स</b> •	७२३	चेलसा सतीको		•	
चितमशि पाश	नाय स्तोत्र-पं०	पदार्थ स	०११२७	चलला चलाख	41011441	-	
चिन्ताम ए। प	ज :	हि	६५६	चैत्यबदना		राज•	358
चितामस्सियंत्र		€ 0	६२४	यत्भवयम्।		भार	७२४ १०४३
वितामिंग स्त	न	सं०	દ હ છ 3	चैत्यालय वस्दन	ामहीखन्द	हि॰	\$ \$ \$ \$
वितामिए। स्ती	স	स •	१०६४			·q,	1149
		800	s, ११२x	चैत्याल बोनती	—दिगम्बर वि	ष्य हि॰	958
<b>बुर।</b> दिगरा		सं०	<b>K</b> 83	चैत्यालयों का व	<b>ा</b> एंन	<b>(g</b> •	<b>१०</b> 0१

प्रथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संस्थ	ा। ग्रंथनाम	लेखक	मावा	पत्र संस्था
भौषडिया निका		स	XX.	४ चौत्रीस ठ सा	संस्कृत		\$8,EX\$
चौदास्यो – भृगु	•	€ o		•		€0,6	.६३,१०५६
चौरम कथार्ट	ोकम	हि॰		६ बौबीस ठाराए।	गया	प्रा०	\$00X
चौदह् गुरास्वान		हिन्दी		र विवीस ठःगाः	वर्षा	fr.	३=,8५७
चौरह् गुग्गस्थान	वचनिका — इ	स्वयराज			£ E X , 2 0 7 E , 8	१०३६,१०	349,38
		राज		चौबीस ठासाः	वर्जानेमिचन	द्वाचार्यप्र	10 #10
चौदतपुग्रस्थान व	एांन —नेमिव	न्द्राचार्य प्र			31	.34.3E.	30.8050
चौदह मार्गका टी	_	C A	₹,३२	े विविध्य राजारा	पीठिका		şe
चौदह मिल्लास टा चौदह विद्या नाम	क्।	हिन्दी	3 6	चीवास ताथ कर	तष्टक	fg•	510
•		हि∙ G-	1150	ं चीडीस नीथं कर	पूत्राबस्नाव	रसिंह हि	* * * * * *
, भौतोनी लीनावर्ती भौरासी ग्रामादन		•	318	बोबोस तीयं कर			
चारासा मानादन चौरासी प्राप्तादना	दाष	हि•	9309	भौडीस तीर्थं कर	पुताजनाहः	रमान हि	• 500
		हि०	१०६६	चौबीस तीर्थ कर	पुजा चन्नील	ाल हि	0 500
चौरासी गोत्र		हि०	११६०	चौबीय सीर्थ कर	पत्रादेवोदा		
चौरासी गोत्र वर्सन	7	हि०	१००५ १०२०	भौबीस तीर्व कर			
भौरासी गोत्र विवर	ran	fá•	<b>5</b>	बौबीस तीर्थं कर			-
वौरासी जयमाल (	-	•		l	507,	503, 5	08, <b>50</b> 8
	and agica	fë•	5 ¥ \$	चौबीस तीर्थं कर	पूजाहीर.ल	ाल हि	E07,
चौरासी जाति की	तत्प्रति	हि •	8013	l			= १ 0
चौरासी जाति जयम		हि•	<b>54</b> 7	चौबीस तीर्थ कर	यूजाधोनास	पाटनी हि	0 504
चौरासी जाति की			***	भौत्रीस तीर्थं कर	पुत्रावृद्धावन	fr	505
		हि∙	843		-	<b>5</b> c	9, 505
चौरामी जाति जयम	rrw	•	(1)	चौबीस तीर्थकर	पूजा—सेवग	fee	505
41411 4111 444		हि॰	११४२	चीबीस तार्थं कर	पूजा—सेवारास	र हि	505
भौरासी जातिको वि	बहाडी	fā o	EXZ			508,58	3609.
चौरासी बोल	•	fie :	5 8 0 5	चौबीस तीयं कर	गावना — यशक	Fr fe	१०२५
		े११३	3,450	चौबीस तीयं कर पू	ब्रागमचन्द्र	fgo	3009
बौरासी लाख जोनन।	विनतीसु	मतिकी नि	- 1	•		₹ ₹ ₹ €	2210
•		f#•	७२४	भौबीस तीर्थं कर पू	माव्दावनः	अस हि०	205
रीवनी मीला		हि •	1086	-	•		<b>११</b> 50
तिबोस प्रतिषय बीन-	ft	f40	283=	चौबीम तीर्थं कर पू	वा सेवाराम	· fg o	2038
ीदह गृशा पान चर्चा	- गोबिन्ददा	स हि॰		चौतास तीर्थ करों वे			= 2 0
विस त्रिन चोतर्र			2232	चौडीम तीर्च कर पष	। दस्यासाम् — र		•
विश्व जिन पुत्रा—रे			111			<b>#</b>	<b>5</b> {*
		•					

प्रंथ नाम	लेखक	मावा	पः	संस्था	ग्रंथ नाम	लेखक	भावा पत्र संख्वा
भौबीस तीर्थ कर	(भवान्तर	1		308	चौसठ ठाएा। व	वि	हि० १०११
चौबीम नीम क	र मात पितान	14	हे	१०६	चौपठ योगिनी	स्तोत्र	स॰ ७२४,
चौबीस तीर्थं कर	( वीनभीदेव	। ब्रह्म	है॰	७२४			११२५
चोबीस महाराज	की बीनती-	-चन्द्र क	र हि	० ७२४	चपकमाला सर		हि॰ ६३२
चौबीस महाराज	की वीनती—	-हरिइचर			चपावती सील	कल्यागावेमु	निराज <b>चद</b> हि॰ ४३८
•		•	हि०	७२४			
चौबीस तीर्थंकर	1282		è.	७२१		<b>অ</b>	
414101 01440	****		6-	£ 4 =	छत्तीसी ग्रन्थ		
	····				खनामा प्रत्ये खनाम पच्चीसं		सं० ३६
वीबीस नीर्थं कर						•	हि॰ ६८०
चीबाम तीथे कर	-		सं ०	658	छपय		हि॰ १००३
चौशीम तीर्वकर					खहडाला		हि० ६८४, ६६२, ६६६
चौबीस तीर्थं कर		-	•	\$00X	बहुडालाटेक	नस्ट	f <b>ĕ∘ १</b> ⋶ <b>६</b>
चौत्रीय तीथं कर	स्तीव		H 0	११२५	खहडाला—दौर		हि॰ ११३२
चौतीस दण्डक		ſ	ġο	દ ૭૫	सहडाला—दीत		
				8009	खहढाला — धार		हि० १०५१ -
चौबीस दण्डक-	-गजसागर	f	हे	११४६	alcount an	144	3157
चौबीस दण्डक-	–धवलचन्द्र	5	По	१०७	छहढाला — बुध	जन	हि० १६६
चौकीस दण्डक	-सुरेन्द्रकीर्ति		र्स •	¢00	छादसीय सूत्र	- अटबेटार	∄ነያያ ∀ይሂ ቀሙ
चीबीस दण्डकमा	।या — प० दौस	तराम हि	0	200.	खियालीस ठ रा		हि॰ ६५३
		o=, ११		११२६	छियालीस ठार		्हि∙ ३६
चौबोस भगवान	के पद	f	<b>.</b> 0	११२६	छिपालीस गुरा	वर्णन	स० १०=
चौबीस महार ज			•	१०६४	छीक दोष निव	रक विधि	Ho XXX
11414			•	१०७७	छीक विवाद		हि॰ १६४
चौबीस महाराज		- f		₹0७३.	छेद पिंड		प्रा० ११८०
चाबास महाराज	X 44 9 414	IT 18	ŀ	8008	छद - केशवदास	ī	हि० ११५८
					छद - नारायस्	दास	हि० ११६८
भौसठ योगिनी र	নৌৰ			3309	खंदकोश टीका	~च-द्रकीति	प्राव्संव ५६३
चौबीस स्तवन				<b>१</b> १५२			निरंबनी हि॰ ५६३
चौबोसी कथा			सं•	3€8	छुद वृत्तरत्नाक		
बौर्ब सी व्रत कर	ar	1	है॰	840	छंदानुशासन स्व		
बीब सी वनक्ष	—धन्नकोति		स∙	840	-, -, 2 , -		सं० ४६४
भौसठ ऋांद्र पूर	ना स्वरूपक	at f	₹•	588	छद देसतरी पा	रसनाब-स्व	ी बह्लम गिरा
				<b>= १</b> २			हि॰ ७२५

श्रंथनाम आविक्तक अस	ावा पत्रसंस्या	ग्रंब नाम लेखक भाषा पत्र संख्या
स्रदमार-नारायस्थातस	हि॰ ११५८	जम्बू स्वामी कथा पांडे जिनदास हिं १०१५
खद सप्रह - गगादास	हिं ११३४	
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	जम्युस्तामी चरिष्ठ—महाकवि बीर घप० ३२२
<b>ज</b>		अम्बूस्वामी वरित्र — भ०सकलकीति सं० ३२२,
		वस्त्र स्वामा कार्य- मण्डवालकातात राज १९९३
जकडीदिगह	हि० ६४१	toxe, 1140
खकडी—मोहर .	हि० ११११	जम्बू स्वामी चरित्र — ब ० जिनदास स० ३२३
जकडीरूपबन्द	हि० १०८४	जम्बू स्वामी चरित्र-पांडे जिनदास हि० ३२४
जस्तिया सम्रह	हि० १०११	यस्य स्थामा यार्ग-पाढ विनवास १६० २२०
ज्ञाडी — ज्ञाडी – कविद्यास	हि० १०२४ हि० १०६८	1
जलही — गमकुष्ण जलही — गमकुष्ण	हि० ११६८	अम्ब्रस्वामी चरित्र—नाषुराम केमेचू हि० ३२५ अम्ब्रस्वामी चरित्र— प्राव्संव ३२५
जसङी भूष (दास	हि॰ ११६८	,
बलडो बंग्म बिरहमान हर्पकीति	हि० १०७६	जम्बूस्वामी चौगईकमल विजय हि॰ १०२६ अम्बूस्वामी जकडोसाधुकीति हि० १०२४
जलडा साहरा जू <b>वरी वर्छन</b>	हि० १०६=	अन्यू स्वामी पूजा हि० ६१३
वागन्नाथ शब्दक	हि॰ १०३६	अम्बुस्वामी पूजा जयमाल स० ६१३
अस्य कुन्डली	सं• ५४४	अम्बुस्वामी पूजा हि॰ १०६४
	8043	जम्बू स्वामी पूत्राजगतराम हि॰ १०६४
सन्त क्∙डती <b>प्रह विचार</b>	सं० ५४५	जम्बू स्वामी पूत्रा — वृत्र्वावन हि० १०६४
भन्न जन्दक चिद्व	मं० १४५	जम्बूस्वामी रास-विश्वित्याम हि० ६३३
बन्न पात्रका — खुशाल बन्द	म॰ १०६६	जम्बूस्वामी रासनयविमल दि० ६३३
<b>ब</b> न्मपत्री पद्धति	सं० ४४५	जम्बूस्वामी रास — ब्र० जिम्मदास हि॰ ११३८,
<b>जा</b> यर्ग र्शाच	स॰ ८१३	\$ (40)
<b>च</b> न्दृतुसार <b>मज्भाग</b>	हि० 🕠	
अन्यू हा≅ <i>न्</i> कृत्रिम चैत्यालय पूजा-	-র৹ জিলবাম	अस्त्र स्वामी वेलि—वीरचन्द हि॰ ११३२
	स॰ ६१२	जयकीति गीत हि॰ १६३
सम्युद्धीय पट	स॰ ११८१	जयकुमार चरित्र—-त्र० कामराज म० ६२६
बम्बू इं। व प्रशासि	प्रा॰ ६१०	जय जय स्वामो पायडीपल्टरमु हि० १०६६
कम्बू ही≀ प्र <b>वा—-प० जिनदास</b>	सं॰ ६१२	अयं तिहुवस्य प्रकरसा—अभयदेव प्राट ७५५
बस्यू इत्य सं <b>थमस्ति—शहरिमद्र सूरि</b>	शा० ६१०	जय तिहुम्रण स्तोत्र—मृति भ्रभयदेव प्रा॰ १०२६ जय पराजय— स॰ १००६
बम्बू स्वानी <b>प्रव्ययमपदातिसक र</b>		• •
	No Ato	जयपुर जिन मन्दिर यात्रा - पं॰ गिरघःरी
सम्बूम्बामी <b>कथा</b>	Eo ARO	हि॰ ६५२
प्रस्तु स्टामी कवा-पं व दीवतसम	_ }	जयपुर के जैन मन्दिर हिं १०८१
	E. ARO	जयपुरासा—ब॰कामराज सं॰ २७६

प्रंचनाम लेखक	मावा '	<b>पत्र संस्था</b>	प्रंथनामः वेकाक मावा पत्रसच्या
जनगलन रास—ज्ञान भूषास	हिं •	8058	ज्योतिष प्रंथ मावा-कायस्यः नायूराम
जलगालन विधि- वर्ण्यास	हि॰	<b>₹</b> <¥	हि॰ ५४७
जलगासन विधि	हि •	8838	ज्योतिय रत्नमाला—केशवः स० ५४७
<b>जयमाल</b>	हि०	१०१६	ज्योतिष रत्नमाला टीका — पं० <b>वैजा</b> ५४७
जलयात्रा पूजा	म०	₹ ₹	उदोतिष विचार सं ११४०
जलकात्रापूता विवान	स ०	= १३	उन्नीति विद्यापन — स० ५४६
अलयात्रा विधान	म०	द <b>१</b> ३	उथीतिय णाम्त्र सं० ११३८
जनगणा विधि	र्स •	٩٤.	ज्योतिष गास्त्र—हरिभद्रमूरि सं० ५४७
	183	ह, ११६६	ज्योतिष भारत्र — चितामस्मि पष्टिताचार्य
जलहर तेला उद्यापन	सं∙	<b>= ₹ ३</b>	स० ५४७
जल होम विधान	Ħゥ	<b>८१</b> ३	ज्योतिषशस्त्र स० ५४८
जल होम विश्वि	स •	E 8 3	ज्योतिष सार- सं० ११६०
जयकी निगीन	हि०	<b>2 5</b> 2	'ज्योतिष नारचन्द्र सं० ४४८,११८६
जमश्र सरिउपुरपदन्त	ग्रप०	३२६	, ज्योतिसारभा <b>षा—</b> ि० ६ <b>१६</b>
जम धः चौपईलक्ष्मीदास	हि०	११६७	ज्योतिषमारसम्बद्धः स० ११४३
≆सोधर जयम⊪ल	দি •	2800	ज्योतिषमार सम्रह—मुंजादित्य स० ५०५
भ्यष्ट विनवर कथा-श्रुतम	गर स॰	368	ज्योतिवासारसी , सं० ४४८
ज्येष्ठ जिनवर कथा—सिल		868	ज्बरत्रिणती——क्षाङ्गीधर सं∙ ५'७
ज्येष्ठ जिनवर कथा—हरिकृष	सापारहे		ज्बर पराजय— म० ५७७
	हि •	693	ज्वालामालिनी स्तीत्रस० ७३०
ज्येत्र जिनवर कथाक० (	यमल्य		१००६ ११२५
.,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,		<b>۷</b> ٧,९६६,	जातक नीलकण्ठ सं० ५४५
		६७२	जातक पद्धति—केशवदैवक्य सं० ५४५
क्येष्ठ जिनवर पूजा	हि•	833	जातकाभरणः—दुंढिराज देवकः स० ५४६
			जानका सं० ५४६
ज्येष्ठ जिन्दर द्वन कथा⊸-खु			जिनकल्पेस्थविर धा <b>चार विचार</b> हि॰ १०६
	हि •	₹ <b>१२३</b>	जिन कल्याराक पं <b>ग्याशाखर</b> स० १०६
	_	8833	जिन गौन—हर्षकोति हि० १०१६
स्थेष्ठ जिनवर <b>व</b> नोद्यःपन	सं०	≒१४	जिनगुण बिलास—न <b>यमल</b> हि॰ ११८ <b>१</b>
ज्येष्ठ जिनवरनी विनती प्र	० मिनदास		जिन गुरा सम्पत्ति कथा ललितकीति हि० ४३३
		६४२	जिन गुरा सम्पत्ति द्व <b>ोद्यापन—सुम</b> तिसागर
ज्योतिष गथ - नारचन्द्र	स •	११.६	स॰ ६०७
ज्योतिष ग्रंथ - भास्कराचाय	स •	५४६	जिन गुरा संपति <b>वतोद्यापन पूजा</b> —स० ८१४
ज्योतिष संय	हि०	¥ , Ę	तिनगेह पूजा <b>जयसाल</b> हि० १११०

विन जन्म महोस्थर्थ चट्पद—विवासागर विन दे००२ विनदल कथा—रस्तभूषण है० ११४५ विनदल कथा—स्तभूषण से० २२७, विनदल कथा—संतभूषण से० २२७, विनदल कथा पंण १६० ४५१ विनदल कथा पंण १६० ४५१ विनदल नर्गठ पंण है० ४५१ विनदल नर्गठ पंण है० १२५ विनदल नर्गठ पंण है० २२५ विनदल नर्गठ प्रमान है० ३२५ विनदल नर्गठ प्रमान है० ३२६ विनदल संदन प्रमान क्षाम है० २२६ विनदल संदन प्रमान क्षाम है० ६६६ विनदल संदन प्रमान क्षाम है० ५२६ विनदल संदन प्रमान है० ६६६ विनदल संदन प्रमान है० ६६६ विनदल संदन प्रमान है० ५२६ विनदल संदन प्रमान क्षाम है० ५२६ विनदल संदन प्रमान है० ५२६ विनदल संदन प्रमान है० ५२६ विनदल संदन प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान विनदल संदन प्रमान प्रमान प्रमान पर्वाच क्षाम क्षाम है० ५२६ विनदल संदन प्रमान क्षाम है० ५२६ विनदल संदन प्रमान प्रमान है० ५२६ विनदल संदन प्रमान प्रमान है० ५२६ विनदल संदन प्रमान है० ५२६ विनदल संदन प्रमान है० ५२६ विनदल संदन प्रमान है०० १०६६ विनदल संदन प्रमान प्र	गषा	पत्र संस्था
जिनदल कथा—रत्सभूषण हि॰ ११४५ विनमहामिषेक विधि — प्राणाधा विनमुलाव लोकन कथा—सकल विनयत वरित — पुणमबाषाय सं० २२५० १६६ ४४१ विनयत वरित — पुणमबाषाय हि॰ ४४१ विनयत वरित — पुणमबाषाय हि॰ ४५६ विनयत वरित — पुणमबाण पुरि हि॰ ३२५ विनयत वरित — वर्षम्भूषण पुरि हि॰ ३२५ विनयत वरित — वर्षम्भूषण हि॰ ६३३ १८६ विनयत सम्वा—कमलनयन हि॰ ६३३ १६४ विनयत साम — कमलनयन हि॰ ६३३ १६४ विनयत साम — वर्षम्भूषण हि॰ ६३३ १६४६ विनयत साम — वर्षम्भूषण हि॰ ६३३ १६४६ विनयत साम — वर्षम्भूषण हि॰ ६३३ १६४६ विनयत साम — वर्षम्भूषण हि॰ ६३३ विनयत साम वर्षम्भूषण हि॰ ६३३ विनयत साम वर्षम्भूषण हि॰ ६३३ विनयत साम वर्षम्भ व	सं०	११⊂२
जिनदत कथा में ४४० जिनसुवाब लोकन कथा—सकल विजयस वरित — युष्णस्वाचार्य सं ० ६२७, १४१ जिनस्व वरित — युष्णस्वाचार्य सं ० ६२५ ४११ जिनस्व वरित — युष्णस्व प्राप्त हि० ४४१ जिनस्व वरित — युष्णस्व प्राप्त हि० १२० जिनस्व वरित — विष्णस्व प्राप्त हि० १२० जिनस्व वरित — विष्णस्व प्राप्त हि० १२० जिनस्व परित — विष्णस्व प्राप्त हि० १२६ जिनस्व रास — स्काप्त वर्ष हि० ११६ जिनस्व रास — वर्ष वर्ष वर्ष हि० ११६ जिनस्व रास जिनस्व — वर्ष वर्ष हि० ११६ जिनस्व रास वर्ष हि० १९६ जिनस्व रास वर्ष हि० १९४ जिनस्व रास हि० १९४ हि	हि०	
जिनदस्त चरित— पुरामशावार्य सं० २२७, १६६, ४४१ जिनदस्त कवा थांवा हि० ४४१ जिनदस्त वरित—पं० लासू घपभं ल २२६ जिनदस्त वरित—संव वर्षाय—कामनावर्ग हि० १२६ जिनदस्त सावा ह० १६४ जिनदस्त सावा ह० १८६ जिनदस्त न सावा जिल्लाम् प्राचा जिल्लाम् प्राचा जिल्लाम् प्राचा जिल्लाम् प्राचा जिल्लाम् प्राचा प्राचा जिल्लाम् प्राचा जिल्लाम् प्राचा पर्व वर्षाय स्वत वर्य		# 6A
हि० ४४१ विजयस कथा थांवा हि० ४४१ विजयस कथा थांवा हि० ४४१ विजयस वरित्र — वंश लाख् यपण स ३२६ विजयस वरित्र — वंश लाख् यपण स ३२६ विजयस वरित्र — वंश लाख्य या १६ ६० ३२० विजयस वरित्र — विश्व थ्या हि० ३२० विजयस वरित्र — विश्व थ्या हि० ३२० विजयस वरित्र भावा — कमननपन हि० ३२६ विजयस परित्र भावा — कमननपन हि० १६६ विजयस परित्र भावा — कमननपन हि० १६६ विजयस परित्र भावा — कमननपन विश्व १६६ विजयस परित्र भावा — विश्व	भौति सं	• ११३६
जिनवत्त क्या थांवा हि॰ ४४१ जिनवत्त वरित्र — पं॰ बाख् प्रपंभ सं ३२६ जिनवत्त वरित्र — पं॰ बाख् प्रपंभ सं ३२६ जिनवत्त वरित्र — पं॰ बाख् प्रपंभ सं ३२६ जिनवत्त वरित्र — पं॰ बाख्य प्रपं हि॰ ३२० जिनवत्त वरित्र — विश्वस्थ्यण हि॰ ३२० जिनवत्त प्राया — क्षम्ममन्तन हि॰ ३२६ जिनवत्त प्राया — क्षम्ममन्त्र हि॰ ३२६ जिनवत्त प्राया — क्षम्ममन्त्र हि॰ ११६५ जिनवत्त सं वर्ग स्ववन — पर्मावित कीति जिनवत्त सं वर्ग स्ववन — पर्मावित कीति जिनवत्त सं वर्ग स्ववन — पर्मावित कीति जिनवत्त सं वर्ग स्ववन — पर्मावित जिनवत्त सं वर्ग सं वर्ग स्ववन — पर्मावित जिनवत्त सं वर्ग स्ववन — पर्मावित जिनवत्त सं वर्ग सं वर्ग स्ववन सं वर्ग सं वर्य सं वर्ग सं वर्ग सं वर्ग सं वर्य सं वर्ग सं व	सं०	6638
जिनदस्त परि च चंत्र हार्यु धपभं च १२६ जिनराज बीनती जिनदस्त परि चंत्र हार्यु धपभं च १२६ जिनराज बीनती जिनराज विषय स्वराज स्वराज स्वराज स्वराज स्वराज स्वराज है १२६ जिनदस्त परि स्वराज क्या स्वराज जिनस्त मीति विषय जिनदस्त परि स्वराज क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या	Ħ 0	E 6 A
जिनदात चरित —पे काल्यु प्रपान है २२५   जिनरात कथा विवास विव	स०	७२६
विनदत्त चरित्र —स्त्रनेसुण्या पूरि हि॰ ३२७   विनदत्त चरित्र —सिनस्पूरण हि॰ ३२७   १२६   विनदत्त चरित्र साथा—कमलनयन हि॰ ३२६   विनदत्त साथा—कमलनयन हि॰ ३२६   विनदत्त साथा—सिनत कीर्ति विनदत्त साथा—सिनत कीर्ति विनदत्त सर्वास्त —सिन्त कीर्ति विनदत्त सर्वास्त विल् ११६५   विनदत्त सर्वास्त विल् ११६५   विनदत्त सर्वास्त विल् विल् विनदान स्वृति स॰ ७२६   विनदान स्वृत्त संव विनदान स्वृति स॰ १८६   विनदान स्वृत्त संव विनदान स्वृत्त स्वृत्त संव विनदान स्वृत्त संव विव स्वृत्त संव विनदान स्वृत्त संव विनदान स्वृत्त संव विव संव विव संव विव संव विव संव विव संव संव विव संव संव संव संव संव विव संव संव संव संव संव संव संव संव संव सं	हि०	
विनदस परिन - विषयप्रया हि॰ ३२५ । १२८ विनदान परिन - विषयप्रया हि॰ ३२६ विनदान परिन सामा-कामलनन हि॰ ३२६ विनदान परिन सामा-कामलन हि॰ ३६६ विनदान परिन सामा-कामलन कोति विश्व है। १६६ विनदान परिन सामा विश्व विश्व है। १६६ विनदान मदान विश्व है। १६६ विनदान मदान विश्व है। १६६ विनदान मदान विश्व है। १६६ विनदान कामा विश्व विश्व है। १६६ विनदान है। १६६ वि	सं०	• • • • •
जिनदार चरित हाचा—कमलनयन हि॰ हेरहे जिनदरारास—रहलबुचण हि॰ ६२१, जिनदरारास—रहलबुचण हि॰ ६१४, जिनदरारास हि॰ ११४६, जिनदरारास हि॰ ११४६, जिनदर्यन स्प्तब्स्झल चीपई सं० ६६६ जिनदर्यन स्पतब्स्झल चीपई सं० ६६६ जिनदर्यन स्पत्वि सं० ५२६ जिनदर्यन स्पत्वि सं० ५२६ जिनदर्यन स्पत्वि का चौढालिया—जिनय सं० ५२६ जिनद्यन स्पत्वि का चौढालिया सं० ५२६ जिनदर्यन स्पत्व का चीहि॰ ५२० जिनदर्यन स्पत्वि का चौढालिया सं० ६४५ हि॰, १६६, १०६०, १०४६ जिनदर्यन स्पत्वि का चौढालिया सं० ६४६ जिनदर्यन साम माणायर ६४६, १६६, १०६०, १०४६ जिनदर्यन स्पत्वि का चौढालिया संत्वि ५२० जिनदर्यन साम माणायर ६४६, १६६, १०६०, १०४६, १६६, १०६०, १०४६, १६६, १६६, १६६, १६६, १६६, १६६, १६६, १	सं०	AXS
जिनदत्त परिच श्राचा—कमलनयन हि॰ ६२६ विनराजि कथा—लित कीर्ति हि॰ ६३६ ६४६ विनराजि कथा—लित कीर्ति हि॰ ११६६ जिनदत्त स्तान बोल स्तवन—परानीय जिनदत्त मन्तवस्त्र विषद् से ० ६६६ जिनदा त्रा विषद से विषद से ० ६६६ जिनदा त्रा विषद से विषद से ० ६६६ जिनदा त्रा विषद से विषद से ० ६६६ जिनदा त्र विषद से १६६६ विषद से १६६ विषद से १६६६ विषद से १६६ विषद से १६		
विनदस्तरास — राख्युषण   हि॰ ६३६   इनरात्र कथा — लांशत कीति   ६६४   विनदस्तरास   हि॰ ११४६   ११६५   विनदस्तरास   हि॰ ११६५   विनदस्तरास   हि॰ १९६   विनदस्तरात आपा   हि॰ १९६   विनदस्तरात आपा   हि॰ १९६   विनदस्तरात कथा — विवदस्तरात विवदस्तरात विव	सं∘	888
विनदस्तरास , हि० ११४६, ११६० (जनसद् दर्गन स्तवन—प्रामिद ११६० (जनस्त स्तवन—प्रामिद जनस्त क्षया—व० रायगस्य जिनस्य त क्षया—व० रायगस्य जिनस्य त्व क्षया—व० रायगस्य जिनस्य स्वामि विनती—सुपति व १६० ११११ (जनस्य स्वामि विनती—सुपति व ११११ (जनस्य स्वामि व १६० व १	स०	¥9=,
बिनदस्तरास हि॰ ११४६, ११६२ विनयसंत स्वत्य व्यक्षण चिष्य सं ६६६ विनयसंत स्वत्य व्यक्षण चिष्य सं ६६६ विनयसंत स्वति सं ६६६ विनयसंत हि॰ ११११ विनयसंत हि॰ ११११ विनयसंत प्रविका चौदानिया—विनय सं ६६६ विनयसंत प्रविका चौदानिया—विनय सं ६६६ विनयसंत प्रविका चौदानिया सं ६६६ विनयसंत स्वत्य संत्र व्यवसंत संत्र विवसंत संत्य संत्र विवसंत संत्र विवस		84.0
विनदर्भन सद्भवस्त्र वीप स्थि सं० ६६६ विनदर्भन स्पाप हि० ७२० विनदर्भन स्पुष स्थ ७२६ विनयस्थ स्पुष स्थ ७२६ विनयस्थ स्पुष स्थ ७२६ विनयस्थ स्पुष स्थ विनयस्थ स्थ ७२६ विनयस्थ स्पुष स्थ विनयस्थ स्थ विनयस्थ स्थ ७२६ विनयस्थ स्थ ७२६ विनयस्थ स्थ १०६६ विनयस्थ स्थ विवयस्थ स्थ विवयस्य स्थ विवयस्थ स्थ विवयस्थ स्थ विवयस्थ स्थ विवयस्थ स्थ विवयस्थ स्थ विवयस्य स्थ विवयस्थ स्थ विवयस्थ स्थ विवयस्थ स्थ विवयस्य स्थ विवयस	श्र	७२६
जिनदर्शन मध्यक्ष्मम चीपई सं० ६६६ जिनस्तर स्वामी विनती—सुवित व जिनस्तर स्वामी विनती—सुवित व जिनस्तान सुवि का चीढालिया—जिनप ल हि० ११११ जिनस्तर स्वामी विनती—सुवित व जिनस्तान सुविश्व का चीढालिया—जिनप ल हि० ७२६ जिनसहल नाम जिनसम्बर्णा संगल—न्यमन जिनसहल नाम जिनसम्बर्णा संगल—न्यमन जिनसहल नाम जिनसम्बर्णा संगल—न्यमन व जिनसहल नाम जिनसहल नाम चित्र का स्वयं का स्व	ा हि∙	१७४
जिनदणनस्तवन साथा हि॰ ७२० जिनवर स्वाभी विनती—सुविन व जिनदणन स्तुति स॰ ७२६ जिनवानकः जिन्नानकः हि॰ १६११ जिनवानकः जिन्नानकः जिन्नानकः जिन्नानकः जिन्नानकः जिन्नानकः विनत्ति स्तुति विनती—सुविन विज्ञानकः जिन्नानकः जिन्नानकः जिन्नानकः जिन्नानकः विश्व जिन्नानकः विश्व जिन्नानकः विज्ञानकः विज्ञानकः विज्ञानकः विज्ञानकः विज्ञानकः विज्ञानकः विव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव	होनि	
जिनदर्शन स्तुति स० ७२६ जिनवर्शन स्तुति स० ७२६ जिनवर्शन प्रथरदाम जिनता ज्ञान प्रथरदाम जिनता ज्ञान स्तुति का स्विता ज्ञान ज्ञान का प्रथरदाम जिनता ज्ञान का प्रथर ज्ञान का प्रवास ज्ञान	f∉∘	१०६१
जिनममान हि॰ ११११ जिनमान पूपरदाय जिनममान पूपरद	गिति हि	• १५२
जिनपाल ऋषि का चौढालिया— जिनप ल हि॰ ७२६ जिनसहल नाम जिनपाल का कि १०६६ जिनसहल नाम पाणाय १०६८, १६६८, १०६८ जिनसहल नाम पाणाय १०६८, १६६८, १०६८ जिनसहल नाम पाणाय १०६८, १६६८, १०६८ जिनसहल नाम पाणाय १०६८, १६८८, १०६८ जिनसहल नाम पाणाय १०६८, १६८८, १०६८ जिनसहल नाम पाणाय १०६८, १६८८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १०६८, १९६८,	स०	७२६
हि० ७२६ जिनसमयणरण संगल—नयसल जिनहिल नाम सं० ७२६ जिनसहल नाम सं० ७२६ जिनसहल नाम हि० १०६६ जिनसहल नाम पाणपर केन्य न १०६० हि० १०६० जिनसहल नाम पाणपर १०६० १०६० जिनसहल नाम पाणपर १०६० १०६० जिनसहल नाम पाणपर जिनयं रूने ने स्थाप प्राणपर जिनयं रूने ने स्थाप प्राणपर जिनयं रूने ने स्थाप प्राणपर जिनयं रूने है० १०६० है०६० १०६० है०६० १०६० है०६० १०६० है०६० १०६० है०६० १०६० है०६० है०६० है०६० है१६० है१६६ है१६० है१६	हि०	3 % 0 \$
जिनाजिर स्नोज — कसलप्रम सं० ७२६ जिनसहस्र नाम जिनपुत्रा प्रिचिक स्वतिमाणार्थं सं० ६८४ जिनसहस्र नाम—प्राप्ताधर जैनपुत्रा विचि — जिनसेनाणार्थं सं० ६८४ हिर्म, १८६, १०१८ जैनप्रत्नित्वन साथा हि० ७२० जिनसहस्र नाम प्राप्ताधर जैनपप्राप्ताचन साथा हि० १०६ जिनसहस्र नाम प्राप्ताधर जैनपप्राप्ताचन साथा हि० १०६ जिनसहस्र नाम प्राप्ताधर जैनपप्ताप्ताचन स्थल स्थल स्थल स्थल स्थल स्थल स्थल स्थल	सं०	<b>११</b> =२
जिनपुत्र। प्रनिकमस्य हि॰ १०६६ जिनसहस्र नःम—प्राणापर जिनसहस्र नःम—प्राणापर जिनसहस्र नःम—प्राणापर जिनसहस्र नःम—प्राणापर किन्दर हि॰ १०६४ जिनसहस्र नःम प्राणापर जिनसहस्र नःम प्राणापर जिनसहस्र नःम प्राणापर जिनसहस्र नःम प्राणापर जिनसहस्र नःम जिनस्र नाम जिनस्य नाम जिनसहस्य नाम जिनसहर्य नाम जिनसहस्य नाम जिनसहर्य नाम जिनसहस्य नाम जिन	हि०	475
विनयूना विक् — जिनसेनाषार्थं स० ६१४ जिनसहस्र नाम — प्रानापर स० १०६४ ६६४, १६६, १०६६ जनवर्गन-वनवन प्राप्ता हिं ५२० जिनसहस्र नाम प्रानापर जनवर्ग-राभीय — क्यान प्रस्तुरि स० १५६ जिनसहस्र नाम प्रानापर वनपर्य-राभीय — क्यान प्रस्तुरि १०६ १०६ १५६, १५६, १०००, १०४१, १०५६, १५६, १०००, १०४१,	स०	१०२२
बनय जर स० १०१४ लनटगंतन्त्र वत भाषा हि० ७२० जितसहस्र नाम प्रामाण र जनप बर स्थोत — कमल प्रयसूरि स० १५८ जित सहस्र नाम — जितसेनाचार्य बनप्रतम स्वक्य भाषा — छीतरसम् काला हि० १०८ १०४१, १०७५, १०७८, १०८२,		<b>ሄ</b> ሂ
कतरणंत्रकतवत प्राचा हि० ७२० जितसहस्र ताम प्राणाणर जनपजः स्तोत्र—कसल प्रमसूरि स० १५६ जित सहस्र नाम- जितसेताचार्य वतप्रत्नम स्वक्षर हि० १०६ वनप्रतिमा स्वक्ष्य बाषा—छीतरमल काला हि० १०६ १९६५, १०७५, १०५६, १९६२,	मं ॰	६५७
जनपत्र स्तोत्र — कमल प्रमसूरि स० १५८ जिन सहस्र नाम — जिनसेनाचार्य सनप्रतम स्वक्य अवा — छीतरमल काला हि० १०८ (१७५१, १०७४, १०५८, १०८२, १९८८, ११९८	: १०४	E. 8886
जनपनः स्तोतकमल प्रमसूरि स० १५८ जिन सहस्र नाम- जिनसेनाचार्य बनप्रतमः स्वक्ष्यं बाषाछीतरमल काला हि० १०८ (१७५९, १०७५, १०८८, १०८८,	सं०	450
क्षेत्रप्रतम् स्वक्ष्यः स्वापा—छीतरसम् कालाः १०००, १०४१, क्षेत्रप्रतिमा स्वक्ष्यः साथा—छीतरसम् कालाः १०००, १०७५, १०७५, १००५, १००५, हि० १००	सं •	9 · Y.
बनप्रतिमा स्वस्य आया—छीतरमल काला हि० १०८ ११६८, ११२२		
हि० १०० १११४, ११२२		
वित्रक्ष वित्र व्याप्त व्याप्त वित्रक्ष वित्र वित्रक्ष वि	Ħo.	97Y
हि∙ १११⊏ <sup>)</sup>	410	७२ व

ग्रंथनाम लेखक इ	गवा	पत्रसंख्या	प्रथमाम लेखक	227.00	पत्रसंख्या
जिनसहस्रनाम टीका	स०	७२८.७२६	जीवन्बर चरित्ररह्न	्रमाणा सर्व	नन संख्या ३३०
जिनसहस्रनाम व बनिका	हि०	७२६	अीवन्धर चरित्र—दौलतः		
जिनसहस्रनाम टीका-धृतसागर		976	जीवन्बर प्रबन्ध — भ० य	मकीति हि०	330
जिनसहस्रनामजिन सेनाचार्य	स •	£ ¥ €.	जीवन्यर चरित्र-नथमल	विनामा रिक	330
\$000, \$088, \$083	. १०६				३ <b>१</b> , ३३२,
१०५६, १०६६, ११२२,			जीवन्धर रास-वि जिन	वास हि॰	11, 111, EBY
११४१, ११७३,			जीवन्वररास त्रिभुवनर्क		<b>११३</b> ६
जिनसहस्त्रनाम स्तोत्र-वनारसीट	स		जीव विचार	feo	£¥3
	हि॰	१०५५	जीव विचार	NI.	108
जिनसङ्खनाम पूजा—सुमति स	ाग र		जीव विवार प्रकरण	प्रा∙	₹•€
family also Garage	# o	⊏१५	जीय विचार प्रकरशा—श		Υ.
जिनसेन बोस जिनसेन	हि०	१०२५	जीव विचार सूत्र	सं०हि०	3 6
जिनसहिता—म० एकसवि जिन्हासून	स•	≈ ₹X	जीव वैराग्य गीत	्रा - हिं• हिं•	१०२४
जिनस्तवनगुगा सागर	हि०	११०५	जीवसमास	(ਰੂ-	£ ¥ 19
जिनस्मरम् स्तोत्र	हि०	७२६	जीवसमास विचार	प्रा०स०	80
जिनवर स्वामी बीनती मुनतिकी			जीवसार समुच्चय	Ho.	308
जिनाप्टक	हि० E-	११३१	जीवस्बह्नय	NI o	36
11 H-91	160	१०६६ १०६६	जीवस्वरूप वर्णान	सं०प्रा०	¥0
विनातररासवीर्चन्द	हि०	104E 1832	जीवाजीव विचार	01K	38
जीभदांत नासिका नयन कर्ण संवाद-	.6°	१८२२ । नामा मन्दि	जैनगायत्रे :		
	fg.	११६२	200190	सं०	420
और।वल देव वीनती	हि० हि०	1525	जैनगायत्रो विधान	6	७२६
जीर।वलि बीनती	हिं हिं	1838	जैनपच्चोसी— नवस	( <b>€</b> ∘	8068
	हि०	8078	जनप्रकास।— नवल जैनप्रबोधिनी द्वि० भाग	हि॰	१०७७
जीव उत्पत्ति सज्भाय-हरससूरि !	ie s Fara			हिं•	१०६
जीवको सङ्ग्राय	60	3.5	जैनबदी की चिट्टी — नथमह जैनबदी की पत्री		१०४४
-AF :	F= -	3 40 \$		ig o	६६४
	Ēο €-	3909	जैनबद्री यात्रा वर्णन — मुरेव जैनरास	-	१०३४
	fg∘ C−	6688	<b>या</b> न रास	हि०	ERR
जीवतत्व स्वरूप	हि॰	3808		602	:, १०१३
	€ o	3.6	जैनवनजारा रास	हि०	<b>१</b> ०२ <b>9</b>
जीव दयामावसेन	सं∘	848	जैनविलासभूघरदास	हि •	€009
	हि०	6 6 X 9			६६०
	हि०	११३५	जैनबिवाह पद्धति— जिनसे	तःचार्यस०	८१५
जीवन्धर चरित्र — शुभवन्द्र	₩•	378	जैनविवाह विधि	स०⊏१	• • •

प्रथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या	प्रथ नाम	लेखक	मोवा	पत्र संख्या	
<b>जैन</b> ततक		हि०	१०४७	<b>.</b>				
			१०५७		•			
जैनशतकभूष	रदास	हि०	१०११	ढाढसी गाथा-	– ढाडसी	সা ০	**	
8087, 8050	१०७१, १०३	₹, <b>१</b> ०	3009,80	डाढसी गाथा		সা৹	११=२	
१०८१, १११४, ११३३, ११ <b>५३</b>				दाढसी गाथा प्रा०			888	
जैनशतक दौहा		हि०	६६४	डाउसी गाथा		हि•प्रा०	११०२	
जैन श्रावक स्नाम्नाय—समताराम हि० १०३			डाउसी गावा भाषा हि०			2222		
जैन सदाचार मातंण्ड — नामक पत्र का उत्तर				ढालगरासार	१०३५			
		हि०	१०६	ढालसागर —	गुरासाग <b>रसू</b> रि	हि०	440	
जैन सध्या		सं०	१००१	ढालसंग्रहज	यमल	हि०	६६०	
जैनेन्द्र व्याकरण	देवनन्दि	₩•	* \$ 3	दृढियामत उ	पदेश	हि ०	999	
जोगीरासा		ह०	१६०	हो नामारु चौप	ाईकुणललाभ	हि०	१०२६.	
	3	98, 8º	२७, ११०३		-		8032	
जोगसरास		हि०	€ = ¥	ढोला मारुगी	चौपई	राज०	४४१	
जोगीरासा — जि	नदास	हि०	६३४	ढोलामार की	बात	हि०	8020	
≂ড <b>৩</b> , 8	<b>42, 2022</b> ,	१०१	, १०५६.	ढोलामा स्वर्णी	री बान	हि •	१०३३	
		१०३	. ४, १११०					
जोग विचार		₽∘	४४६	ग्।				
जोराकी विधि		हि०	৭ ওও					
जबूकुमार गीत		हि०	११११ ,		र्गा - ∼मुमितसागः		१०५४	
जबू स्वामी चौपई	—पाण्डे जिनद	ास हि∙	68.83	<b>गामोकार</b> महिग		料。	<b>१</b> ०५२	
जंबुक नामो		हिं ०	१००१	रामोकार मत्र		įέο	886	
				गमोकार महा	स्य	Ąo	११=३	
	भ			गामोकाररास		हि०	€ ⊏ १	
		_		सोमिचरिउ		धप ०	३३२	
भूलना		हि०	११४८ :	सायकुमार च	रंजपुष्पदस्त	ध्रपञ्च ग	३३२	
मूननातानुसाह		हि०	₹003		_			
			न					
	ट		1	तकाराक्षर स्थो	_	_		
टंडाग्गा गीत		हि०	3085			म ०	0 3 0	
टंडाएग गीत		हि०	3088	तत्वकोन्तुम — प० पन्नालाल पाडमा हि० ४१ तत्वकान तंरगिर्गा— भ० ज्ञानभूषयग				
	-				— ল চ লাল <u>দ্</u>	(वयग स o	V.	
	ठ			तत्वदीपिका		fe	86	
ठाणांग सुत		प्रार		I		16.0	१११ ५१३	
. 6.	5.4	3	THE WATER COLUMN	Dane .				

प्रंचनाम लेखक	मावा	पत्र संख्या	प्रथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
तत्वधर्मामृत	स०	888	तस्वार्धसूत्र भा	वा—महाचन्द्र	हि	48
तत्वप्रकाणिनी टीका	<b>4</b> o	२०२	तत्वायंसूत्र भा	षापं० सदाः	मु <b>स</b> कासले	विश्व
तत्व वर्णन	हि०	४२	!		हि	
तत्वसार	हि०	१३०१				११८३
तत्वसारदेवसेन	<b>ध</b> प ०	४२	तत्वार्थसूत्र भा	पा- <del>सा</del> हबरा	म पाटना हिः	<b>,</b>
		११८३	तत्वार्यसूत्र मा	षाटीका	हि	
तत्वसार चानतराय	हि०	१०४३		पापद्य	•	
		१०७२		षा(वचनिका)		
तत्वसार भावा	हि०	१०६२		( ,		TO 48,88
तत्वानुशासनरामसेन	स •	४२	. तत्वार्थसत्र भा	षा (वर्षानका)		
तत्वार्थबोध बुधजन	हि०	४२		(		स्यानी ५४
तत्वार्थंग्स्नप्रभाकर-भ०	प्रभाचन्द्र २००	82,83	तस्वार्थसूत्र मग	<b>'</b> ल	 हि	
_	प्रकलक सं०	¥₹	तत्वार्थसूत्र वृश्		 €1 °	
तत्वार्थवृत्तिप० योगदेव		8.8	तत्वार्थसूत्र सा		हि	, ११४२
तस्वार्थश्लोकवातिक प्राट	विद्यानिद		तत्वार्थमूत्र सद		सं०	€€₹
	स०	₹\$		् – धनुभूति स्वस्		
तत्वार्थमारप्रमृतचन्द्राच		<b>¥</b> ₹	त द्धितप्रश्रियाः		e ja	
तत्वार्थसार दीपकभ० स	प्रकलकीर्तिस	o &&	त शेग्रहरण विशि		₩.	
तत्वार्थं मूत्र	स०	ह५७	तपोद्योतक सर		प्रा	
2003	, 282, 90	११, १०६७	तकंदीपिका-	विश्वनाथाश्रम	<b>#</b> 0	२४२
तस्वार्थं सूत्र —उबास्वामी	₹ •	88	तकं परिभाषा-	—केशव मिश्र	संव	242
¥¥, ¥ŧ, ¥७, ¥८, ¥€,	X0, 508,	८४३, ६६६	तर्कपरिभाषा	प्रकाशिकाचे	क्रिभट संब	747
€93, €€4, ₹₹04, ₹	1008, 208	द, १०१६		प्रक्रिया—चित्र		768
१०२२, १०३५, १०७२,	१०६२, १००	5, <b>१</b> ११७,	तर्कभाषा		. E	
<b>११२२, <b>११</b>२७,</b>	११३६, ११	५४, ११८३	तकभाषा वास्ति	क	सं०	
सत्याःथं सूत्र टीका	स०हि०	१०८१	तकंसप्रह—ग्रा			<b>२</b> ५२,२५३
तत्वार्थं सूत्र टीका—गिरि	वरसिंह हि०	४२	ताजिक ग्रन्थ	•	 स <b>०</b>	
तत्वार्थं सूत्र टीकाश्रुतस	रागर स०	४० ४१	ताजिक लकृति		 सं•	
तत्वार्थं सूत्र शलावबोध टीन	हा हि०स०	११२३	ताबिक नीलक			
तत्वार्थं सूत्र भाषा -	हि०	y o	ताजिक सार		 सं ०	
	प्रथ, ४६, ४	9, <b>૫</b> ૦, ૫૬	ताबिक सार-	- हरिभद्रगणि	 सं ०	XXE.
		१०६५	तारणतरण स			
तत्वार्थमूत्र मावा-कनकः	हीर्ति हि <b>∘</b>	४१,४२	,		हि	
तत्वार्थसूत्र भाषाखोटेन	ाल हि॰	χş	तालस्वरञ्चान		सं०	₹05

प्रंथ माम लेखक	भाषा	पत्र सल्या	ग्रंथ नाम लेखक	माषा	पत्र संख्या
तिथि दीपक यत्र	हि०	**6	तेरहकाठिया	हि०	<b>₹</b> ∘≈¥
तिथि मंत्र	स∘	१६४	तेरहक।ठियाबनारसीद।स	हि॰	£ \$ £ ,
तिथि सारगीनक्ष्मीचन्द	स०	१११६	i		2838
तिथि सारिएी	स •	**E	तेरहद्वीप पृजालालजीत	हि •	397
तिलोयपण्णत्ति भा ० यति	वृषभ प्रा०	६१०	तेरहद्वीप पूजा-स्वरूपवन्द	हि ०	= 1 €
क्षीन चौबीसी पूजा	स०	<b>८१६</b>	ंतेरहद्वीप <b>विधान</b>	स०	518
तीन चौबीशी पूजा	हि०	= <b>? </b>	तेरहद्वीप पूजा विधान	हि०	<b>=</b> 20
तीनचौबीसी पूजा त्रिमुबन	चन्द स०	= ? 4	े तेरहपद्यखडन पन्नालाल दूनी	बाले हि०	111
तीनचौबीसी पूजाबृन्दाबन	ा ह०	⊏ <b>१</b> ६			
तीनलोक चित्र		११७२	द		
तीनलोक पूजा—टेकबन्द	₹∘	= १६		_	
रीनलोक पूजा नेमीचन्द प	।टनी हि॰	≂१७	दिन्जवरिग्या	हि०	११५३
तीबंगहातम्य (सम्मेद शिखर	विलास)	मनसुख राय	दयारास — गुलाबचन्द	हि॰	551
	हि०	930	दण्डक	स ० हि ०	११२
नीयं करमाता-पिता नाम व	र्गान—हेमलु		दण्डकप्रकरण जिनहस मुनि	प्रा० 	११३
	हि०	१११०	दण्डकप्रकरण्— वृन्दावन	हि. -	<b>₹</b> ₹\$
तीर्थं करों के माता-पिता के	नाम हि०	१०१२	दण्डकवर्णन	fह∙ 	<b>११३</b>
तीर्थमाल।स्तवन	हि •	६५२	दण्डकस्तवनगजसार दमयन्ती कथाविविकम मट्ट	সা৹	₹१३
तीर्थवदनाभालोचन कया	स •	१११	दर्शन कथा	₩ o	8.8.3
तीयं करस्तुति	हि ०	3 \$ 3		हि० ४४. १११	883
तीसचौबीसी	हि०	999	् दर्शनपच्चीसी गुमानीराम	,	
तीसचौबीसी- स्याम कवि	हि०	६६२	दर्शनपञ्चासाः गुमानाराम दर्शनपञ्चीसी — बृधअन	हि०	०६७
तीसचौबीसीनाम	हि •	११३५,	दर्शनप्रकासः — बुधवन ं दर्शनप्रतिमाकाव्यौरा	हि०	११२८
		१०६२		हि∙	११३५
तीसचौबीसी पाठप॰ रा	मचन्द्र हि०	<b>€</b> ₹ ⊏	दशंनविशुद्धि प्रकरण — देव मह दशंनवीनती	-	
तीसचौबीसी पूजा	हि∙	१००२,	दर्शनशतक - द्यानतराय	हि <b>०</b>	\$\$88
		१०१०	दशनशतक – द्यानतराय दर्शनशुद्धि प्रकाश	fg o	6025
तीनव'बीसी पूजा - विद्याभू	षसा स०	3411	दशनगुष्ट प्रकाश दर्शनसप्तति	हि •	8088
तीसचौबीसी पूजावृन्दावः	न हि∘	= 2=	दशनसप्तात दशंन रूप्ततिका	भा०	<b>\$</b> \$8
तीसचौबीसी पूजा-गुमच	द्र स०	£ 48,	दशन रूप्तातका दर्शनसार	o IR	\$ \$ \$
	= १७, = १	s, <b>१</b> ११s		हि •	१०६६
तीसचौबीसी पूजापं० सा			दर्शनसार देवसेन	<b>X</b> ( o	248,
तीसचौबीसी पूजा-सूर्यमल		₹₹=३	दर्शनक्तोत्र म० सुरेन्द्रकीति	æi o	244
तीसचीबीसीवतोद्यापन	.ह- सं•	603	दर्शनस्तीत भाषा-रामचन्द्र		050
	40	(00	पगणरतान भाषीरामचन्द्र	ŧ٤٥	\$062

ग्नंथ नाम लेखक	माषा	पत्र संस्था	प्रंच नाम	लेसक	मावा	पत्र संख्या
दर्गन।ष्टक	स०	305	दशनकारा पूत्र	r	सं०	£ 4=, £ € •
दर्भनाष्टकसर्वयाविद्यासाग	र हि०	8003	दशलकाग्। पूजा	चानतराय	हि०	दरेट दद१,
दशविन्तामिंग प्रकरण	हि०	११८३			16-	१०११,
दशदिक्य'लार्चनविधि	सं०	<b>=</b> ₹₹	दशलकारा पूज	विधान — टेकः	बन्द हि०	s ? s
दशधर्मवर्गान	स •	११३६		- विश्वभूषस	स०	576
दशपरमस्थान कथाललित	कीति मं०	750	दशनक्षम् पूज		हि ०	=32
दक्षप्रकारक।ह्याग्यविचार	सं०	११८४	दशलक्षरा पूज		सं०	<b>=</b> \$2
दशमक्ति	हि०	१०६=		नाप० मदा	मत काम	त्रीवाल
दशमीक्या - ज्ञानसागर	हि०	1843			ुः राज•	
दशरथकीजयमःल	हिं ०	v <b>e</b> 3	वशलक्षरण मंड	ल पूजाडालूर		= ?=
दशनकाराउद्यापनपाठश्रुतः	सागर सं०	8000	दशलक्षरास-		हि॰	1117
दशनक्षरणज्ञापन पूजा	सं०	दर्४	दशसक्षग्विधा		हि॰	द२द
दशनक्षण्उद्यापन पूजा	हि०	<b>८</b> २४	दशल क्षरण विषा		हि०	द२द
दशलक्षरण उद्यपःन विधि	सं०	= ?=	दशलक्षसावत	•	हि॰	2886.
<b>ः मलक्षण कथा — धौसेरीला</b> र	न हि०	९६१	,		•	8848
दणलक्षम्। कथा ज्ञानसागर	हि ०	११२३	दशनक्षरा वत	कथा	हि •	8848
दशलक्षण कथा—हरिचन्द	<b>ध</b> प ०	XXX		कथाव्र०विन		११४३
दशनक्षाम् कथा	₹∙	AAA	दशलक्षण वृत		स०	575
दशलक्षमा कथाव्र० जिनद			दशलक्षरण वत		हि०	575
दशसक्षण कथा	f,∘		दशलक्षण वतो		सं०	<b>6</b> § <b>9</b>
दशतक्षण कथाललितकी	त स०	४७१,४८०	दशसक्षरा वतो		हि०	= 3 f
दशलक्षम्। कथा - हरिकृष्णः।	पाण्डे हि०	853	दशलक्षण वती		हि॰	<b>=3 ?</b>
दशनक्षम् जयमाल	हि०	द२४		व्यापन पूजा—र		
द <b>२४,</b> द२७,	, द२द, १	३, ११०६		**	सं०	592
दशसदाएा जयमास पूजाभ	विश्वम		दशलक्षरा वती	द्यापन मुघीस	गर स०	530
		द <b>२४. द२</b> ५	दशलकारा वती		सं०	= 3 •
दशनक्षण जयमाल – रह्यू	भ्रप°	-	दशलक्षरा व्रतो	द्यापनभ० झ	ान भूषरा	
दणलक्षण धर्मपूत्रा	₩.				सं०	<b>530</b>
दशस्याधर्मवर्णन	हि०		दशसक्षाग् वती	द्यापन — रद्दधू	भप०	द ३ ०
दशसक्षणधर्म वर्णन	₹•		दशलकारा वतो		प्रा॰सं०	= 3 ?
दशसक्षराधमं वर्शन रहधू	श्रपभंग		दशलक्षरास्तीत्र		सं०	७७४
			दशलक्षरगीकम		₹10	= 3 =
दणनक्षण्धमीचापन	सं०		दशलाक्षरिएकः		स•	€€4
दणलक्षरापद	हि०	£=X	दशलाक्षास्मिकः	पूजापं० रूपः	क्द हि•	3609

प्रंच नाम	लेखक	मावा	पत्र संस्था	प्रथ माम	लंसक	भाषा	पत्र संख्या
दशबैकालिक सूर	r	ЯIe	६२	दानडी की क	पा	हि०	Yvu
दशस्यान जीबीस	ीबानतरा	य हि॰	8088	दानतपशील म	।वना — बह्मबा		6648
दसमंगों की ना	माबली	हि०	११८३			हि॰	ĘĘY
दसदान		₹•	380}	दानलीला		हि॰	8050
द्रश्य गुरा शतक		₹ 0	४७७	दानशीलतप भ	खना	हि•	₹ <b>•</b> ३८,
द्रव्यपदार्थ		सं∙	२१४	1		•	१०६१
द्रव्यसमुच्चय व	जकीति	सं०	६२	दानशीलतप भ	विना—मुनि स	सोग प्रा॰	११५
द्रव्यसंग्रह		हि०	११४२,	दानशीलतप भ	वना—की भूद	ास हि∘	११६७
			११५०	दानशीलतप म	विना-समयसु	न्दर हि०	£¥£,
द्रव्यसग्रहनेमिच	न्द्राचार्य	সা৹	4.7			१०३	E, <b>१</b> ०५६
		६३, १०४	¥, १०८०	दानशीलभावना	भगौतीदास	हि •	888
द्रव्यसंग्रह टीका		प्रा॰हि॰	६४	दानादिकुल वृत्ति	i —	सं०	288
द्रव्यसंग्रह टीका		सं०हि०	ĘX	द्वादशनामश	कराचार्य	स०	११=४
द्रव्यसम्रह टीका —	प्रम।चन्द्र	₽o	ŧ٧	द्वादशमासा — ि	वेमना भाषा म	रहा ०	₹00}
द्रव्यसम्रह माचा		हि॰	Ę¥	द्वादशानुत्रे का		हि •	£88,
Ę	६, ६७, १०	०८, १०७	३, ११०३	€ €	0, 6=7, 80	४६, १०५१	(, <b>१</b> . ५ = ,
द्रव्यसग्रह भाषा	प० जयचम्द	छाबहा				888	०, ११४२
		राज∙	६७,६८	द्वादशानुत्रे का	-कुन्दकुन्दाचार्य	मा•	२०३
द्रव्यसम्हमाथाप	र्वत धर्मार्थी :	ī.	44,	द्वादशानुत्रीका	-गौतम	Alo	203
			१०४१	द्वादशानुप्रका	-प० जिनदास	हि०	848
द्रव्यसग्रह भाषा	मैया मगवती	दास हि०	१००५	द्वादमानुषेक्षा	- ईमर	हि॰	8 × 3
द्रव्यसम्रह भाषा टी		हि॰	ĘX	द्वादशानुष्टेका	-जिनदाम	हि०	€ € •
इब्यसग्रह माचा टीन	ग—बसीघर	हि॰	6.3	द्वादशानुत्रे का	त्र ॰ जिनदास	हि०	६७३
द्रव्यसद्रह वृत्ति — ब	ह्मदेव	सस्कृत	६४,६४	द्वादमपूजाविधान	ř	<b>#</b> •	द३२
द्रव्यसंग्रह सटीक	:	गा०हि०	<b>\$</b> \$	द्वादणमावना	वादिचन्द्र	हि •	११३३
द्रव्यमग्रह सटीक —	बशोषर :	ग ∙हि०	3808	<b>के</b> दण गशिसका	न्तपल	सं०	440
दातासूम सबांद		हि०	\$ \$ C &	द्वादशयत कथा -	- पं॰ ग्रभ्रदेव	स०	820
दानकथा भारामस	स	हि०	४४६	(ग्रक्षय निधि वि	घान कथा)	<b>₹</b> 0	880
दानकथा — भारामल	ल	हि०	1998	द्वादशक्तकथा	लसितकी नि	₹₽	Y08.
			8819				Ye o
दानशील कथा—भा	रामल्ल	हि॰	880	द्वादशक्त पूजा	देवेन्द्रकीर्ति	सं०	<b>=</b> \$2
दानश्रील संवाद —स	मयसुन्दर	हि •		द्वादशक्त पूजा-		#•	====
रानकवा रास	-	हि •		इादशकतमंड <b>ल</b> पूर		feo	£6=
रानचीपई सम्बसुर	दर बाचक	fg o		हादश्वतीचापन -		गहण सं∙	455
•		•				4.0	798

ग्रंथं नाम	लेखक '	मावा	पत्र संख्या	ग्रथ नाम	लेखक :	मावा	पत्र संख्या
द्वादशीन था	व्र० ज्ञानसागर	हि ०	333	देवपूजा		हि	=33
द्वादशाग पूत्रा		स०	5 \$ 2	1		•	2034
द्वातिशिका (यु	ब्स्यष्टक)	₹∙	७३१	े देवपूजा — ब्रह्म	जिनदास	₹ 0	\$ 0 X E
द्वासप्ततिक जा	<b>क</b> ाव्य	हि •	११=५	देवपूत्रा भाषा-	प० अयवन्द छ	वद्याहि	० ५३३.
दिगम्बरीदेव पृ	(जापोसह पाटे	हि०	१०६१				१०४७
दिगम्बरो के ४	भेद	₩•	११३६	ं देवपूजा भाषा-	देवीदास	हि०	<b>6</b> § 2
दिनचर्यागुहागः	कुतुहल-सास्क	र स०	*86	देवपूजाप्टक		सं०	8888
विनन्नमग्ग		स०	**£	े देवशास्त्रगुरु पू	त्रा — द्यानतराय	हि•	= <b>₹</b> ¥
दिनमानकरण		۴ę۰	१११५	देवशास्त्रगुरु पू	ना}जयमाल भाषा	हि०	458
दिशानुवार्ड		हि०	११८४	देवसिद्ध पूजा		स• व	₹8,84€
्ष्टातपच्ची <b>सी</b>	—भगवतीदाम	हि •	£ \$ \$ \$		१०४४, १०८	२, ११२	3, ११२=
हु दानशतक		fē.o	દદ્દપ	देवागमस्तीत्र -	समन्तमद्वाचार्य	सं०	११८४
हरटान्त <b>शतक</b>		स ०	<b>\$</b> \$ 0	देवागमस्तोत्र वृ	त्ति—द्या० वस्नी	न्द सं०	११८५
इण्टान्त्रजनक ~	कुमुमदेव	सं०	६८६	देवीमहातम्य	•	स०	885
द्विग्रहयोगफल		<b>स∘</b>	४४०	देशनाशतक		য়া০	€=€
द्विजमतसार		सं०	११५	देहस्तगीत		हिं •	१०२५
ड्रिजबदनचपेटा		सं०	<b>2</b> ××	दोषावली		-	vex,38)
हडप्रहार — लार	<b>व्यसमय</b>	हिंद	884	दोहरा	5वि	हि॰	686
दीपमालिकाकल	1	सं०	**	दोह।पाहुङय		ग्रा०	१०६४
दीपमालिकाचि	रत्र	सं०	3 3 2	दोहाबाबनी		हि०	દયર
दीपावलीय ल्पर्न	) कथा	हि०	884	दोहाशतक		हि •	ξ= <b>ξ</b> .
दोपावलि महिम	n — जिन <b>प्रभसू</b> रि	मं ०	<b>5</b>			•	1005
दीक्षापटन		सं०	<b>⊏</b> ३३	बोहे तुलसीदा	स	हि०	१०११
दीक्षाविधि		सं०	<b>5</b>	द्रौपदीशीलगुग्	रास—ग्रा० नरेन्द्र	कीर्तिहि	४६३ ०]
दुखहः रगउद्यापः	न—यमकीति	स०	<b>= ₹</b> ₹	दौलतविलास	-दोलतराम	हि०	६६०
द्घडियामृहर्न		<b>स∘</b>	388	दौलतविलास	दौलतराम पल्लीव	ाल हि	<b> </b>
दुधारस केवा	-विनयकीर्ति	हि०	११२३				
दुर्ग मगयोग		स०	₹₹₹\$		ध		
दुगंमबोधमटीक		म ०	332				
दुर्घटकाव्य		#•	333	धनकलश कथा-		स•	308
दुर्गाविचार		₩•	\$ <b>\$ &amp; 0</b>	धनञ्जय नामम	।लाकवि घनंज		¥₹,
दूरियरयसमीर	स्तोत्रवृत्ति —समय	मुन्दर			-2 <i>d</i> -L		(v, ¥3⊏
		सं०	\$ \$ C.A.	धम्नाऋषि सङ्भ	ыय हचकाति	हि॰	११०२
देवकीनीडाल		हिं०	885	धन्नाचउपई		हि०	१०६३
देवपरीषह चौप	६ उदयप्रभसूरि	हि०	१०२४	धन्नाच उपई म	गत <b>गस</b> र	हि •	<b>44</b> 4

प्रंथ नाम	लेलक	भाषा	वत्र संख्या	प्रंचनाम लेखक	मावा	पत्रसं-वा
धन्नाजीकी थी		हि॰	<b>10</b> 55	धर्मपच्चीसी	हि•	₹€=,
घम्ना सज्भःय-	—त्रिलोकीनाथ	हि॰	₹0€3			xE, 80ER
	त्र – गुराभद्राचा	र्यं सं०	3 3 3	धर्मपस्चीसीद्यानतराय	हि०	6083
घन्यकुमार चरि	त्र — सकलकीति	स०	₹ <b>₹</b> \$,	धर्मपञ्चीसीबनारसीदास	हि० हि०	₹00=
			255,855	धर्मप्रचीसी — भगवतीदास	हि०	<b>११</b> ३३
धन्यकुमार चरि	त्र-विश्व नेमिदत्	T # 0	३२४,३३६	धर्मगरीका	-	22×,224
धन्यकुमार चरि	त्रभ०मल्लिभ्	दुषए। स	, 334	धर्मपरीक्षा कथा—देवचन्द्र	सं०	388
वस्यकुमार चरि	न —बुशासवन्द	काला हि	<b>₹</b> ○ ₹₹¢,	धर्मपरीक्षा भाषा - दमरण निगं	रिया हि	. १२१
		,	१३७, ३३=	धर्मपशीक्षा भाषाबाबा दुलीच	-	२२१
धन्यकुमार चरि	••	मपभ	ंश १०⊏६	वर्मपरीक्षा भाषामनोहरदास		
<b>धन्यकुमार च</b> रि		हि०	₹ ३ ८	वनवराका नावा	हि॰	११७
धन्यकुमार चरिः	त्र भाषाजोवः	राज हि॰	93=		-	079 188, <b>3</b> 89
धन्यकुमाररास -	- ब॰ जिनदास	हि०	€₹¥			((c, (10 (o, <b>(1</b> 80
धरखेन्द्र पूजा		स •	११२६			
धर्मकथा चर्चा		हि०	६व	धर्मपरीक्षा भाषा — सुमतिकीर्ति	हि०	१२१.
वर्मकीति गीत		हि०	६६२			ĘĘX
धमंकु डलियां	बाल मुकुन्द	हि०	११५	धर्मपरेकारास — वर्शवनदास	हि•	६३४,
धमंचक पूजा		स •	£&c.			११४७
		६४, १६	₹, १०६=	धर्मपरीक्षा वचनिकापन्नालाल	चौघरी	
धर्मचक पूजा-		<b>₹</b> •	# <b>*</b> * * *		हि०	171
धर्मचक पूजा	पशोनस्दि	₩∘	≈ <b>3</b> x	धर्मपाप सवाद	fg o	દૃહ દ્
धर्मचक यंत्र		۴۰	६२४	धमंगाय सवादविजयकीति	fg •	११८५
धर्मचन्द्र की लह	र (चतुर्विश्रति	स्तवन)			-	
		हि०	१०२१	घर्मवर्षायमतिका – वः जिन्दास	ZI0	122
धर्मच वी		हि०	ĘĘ	धर्म प्रवृत्ति (पाशुपत सूत्रारिए) न	गरायस	
वर्मडाल		हिल	8 \$ \$		हि∙	<b>१</b> १८४
धर्मतन्व सर्वया-	-सुन्दर	हि०	2 2 2 2	धर्मप्रक्तोत्त गी	fe o	<b>१</b> २२
धर्मनहर्गीतप	- जिनदास	हि •	£ 4.8	धर्मबावनी बंपाराम दीवान	fę۰	\$080
धर्मतस्यीत (मा	लीरास)—जिर	एद:स	1	वर्मबृद्धि कथा	fs.	348
		हि०	₹0 ₹	धमंबुद्धि पापबृद्धि श्रीपई	fg •	£ \$ \$
धर्मदस चरित्र-	-दयासागर सुरि	हि॰	<b>33</b> c	धमंत्रहि पापबुद्धि चौपई विनष्ट	-	EXX
धर्मदत्त वरित्र-		-		धर्मवृद्धिमंत्री कथा - बस्तराम	E.	880
वर्मनाबस्तवन		Î fe o	683	धर्ममंदन भाषासासा नवमस	fg •	199
धर्मनाथ रोस्तव		हि॰	9=3	षम् रुविष्ठिर संबाद	₹iο	₹ <b>१</b> =¥
			1		<b>y.</b> -	

ग्रं वासुकमस्यका ]					[	\$48\$
दंशनाम लेखक ग	गवा	पत्र संख्या	प्रथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संस्या
वर्म रत्नाकरजयसेन	₩∘	१५२,	ध्यानामृतरास-	ब० करमसी	हि०	<b>4</b> 11
		१२३	दश्जारोपस विर्	घ	स∙	C 3 &
धर्मरसायनपद्मनन्दि	সাত	१२३,	वातकीसहद्वीप	(जा	सं०	5 <b>3</b> X
<b>धर्म</b> रासा	हि०	1999	वातुतरगिरगी	हषंकीर्ति	सं०	४१४
धर्मरासो	हि०	€ <b>३</b> ¥	धातुनाममाना		स०	488
	£	<b>८४, १०३</b> २	<b>बातुपद</b> पर्या <b>य</b>		सं०	प्रथ
धर्मरासो — जोगीदास	हि	६⊏१	घातुपरीक्षा		₹•	११८५
धर्मेविसास	feo	1200	<b>घातुपाठ</b>		स∘	₹33
धर्मविलास — द्यानतराय	ŧξ۰	६६१	धातुपाठपारिए	नी	सं०	<b>468</b>
44	२, १०	४४, १०१२	धातुपाठशाक	टायन	सं०	४१४
वर्मशर्माम्युदयमहाकवि हरिच	न्द स०	38€	धातुपाठहर्षर्क	ति	सं०	<b>4</b> 58
धर्मसम्मित्रदय टीका-यश कीर्ति	स∙	3 \$ \$	धातुपाठ		सं०	488
धर्मगुक्लध्यान निरूपरा	स०	<b>१</b> २३	धातु क्रव्दावली		सं∘	* * *
वर्मस्तम्भ-वर्द्धं मान सूरि	स०	238	घातुसमास		सं०	* * *
धर्मसार	हि०	११६८	धाराविधान		हि॰	3999
धर्मसारपं० झिरोमिशा दास	हि०	१२३,१२४	धुवरित्रपरमा	नन्द	हि०	१००१
धर्मसम्बद्ध श्रावकाचारप० मेघा	वीस ०	१२३	ध्रुचरित्र		हि०	११८५
घर्मसंग्रहसार — सकलकीर्ति	स०	१२४				
धर्मामृतसूक्ति सग्रह	स०	<b>६ ६ ६</b>		न		
<b>ध</b> र्मोपदेश	हि०	१२४				
धर्मोपदेण रत्नभूषरा	सं०	१२५	नक्षत्रफल		40	***
धर्मोपदेश रतमालानेमिचंद	সা ০	१२५	नक्षत्रमालावत क नक्षत्र एव बार वि		स ० हि ०	<b>११३</b> ६
धर्मोपदेश श्रावकाचारप० जि	नदासः	मं॰ १२६	नल सिलावर्शन-			
धर्मो देश श्रावकाचार -धर्मदास	हि०	१२६,	नलासला पर्याप नगादभी जाई गीर		हि० केट टेक	<b>१०६०</b>
		११०३	ननदभोजाई का		∉ ग।इ० हि०	१०६१ ६८०
धर्मो बदेश श्रावकाचार-क ने	मद∗ास	io १२५	नन्दबत्तीक्षीनन		सं∙	€= <b>0</b>
		१२६	नन्द बत्तीसी		हि०	688
धर्मो गदेशसिद्धान्त रत्नमाला-भ	ागचन्द		नन्दिमगल विद्या		įęυ <b>ŧi</b> ∘	#8.5 6.0
	हि०		तन्दीश्वर जयमा		स ०	•
धर्मोपदेशामृत — पचनन्दि	स•		नन्दीस्वर जयमा			<b>१५</b> ६
<b>ध्यानव</b> सीसी	हि•	£ E R	नन्दीश्वरतीर्थ न		भराहण प्राव	<b>११</b> 0⊏
	•	१०४१	नन्दीश्वर पूजा	7771	हि० हि०	१६७
	言。	₹ <b>0</b> 05	नन्दास्वर पूजा नन्द्रसप्तमीकी	RWTT	हि० हि०	6 X 4
ध्यानवर्गन	-			,41	-	<b>१</b> •६२
ध्यानसार	स •	₹•३	नमस्कारमहात्स्य		स∘	<b>१२</b> ६

प्रथमाम लेखक	माषा	पत्र संस्या	प्रथनाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या		
नय चक्र देवसेन	स॰	२४४,	नवकार सज्भाय	हि०	७२१		
		888	नवकार सर्वया विनोदीलाल	हिं	७३१		
नयचक भाषानिहालचन्द	हि •	२५४,	नवकारस्तोत्र	स०	११२४		
		२५६	नवग्रहम्मरिष्ट निवारण पूजा	हि ०	⊏३७		
नयचक्रभाषा वचनिका—हेमरा	जहि०	२५४,	नवग्रह पूजा	स०	द ३ <b>५</b> ,		
		२५५		4٤, د :	७, १०५७		
नरकदुख वर्णन—भूघरदास	हि•	१२६	नदग्रह पूजा— मनसुखलाल	हि०	<b>5</b> \$ 9		
नरकदोहा	हि०	533	नवग्रह पूजा	हि ०	530		
नरकवर्णन	हि∙	€33	नवग्रहपूजा 🗨 यान	हि	= ३७		
नरकविवरण	हि०	3 × 3	नवग्रह स्तवन	प्रा	मं• ७३१		
नरकनुढाल — गुग्गसागर	हि॰	8X 0	नवग्रह स्तोत्र — भद्रबाहु	सं०	७३१		
नरपति जयचर्या — नरपति	Яo	* * 0	नवप्रहपाद्यंनाथ स्तोत्र	स •	4 6 0		
नरसंगपुरागोत्र छद	हि०	\$ \$ x \$	नवप्रहस्तीत्र	स०	११५३		
नरेन्द्रकीतिगुरु ग्रष्टक	स •	११६०	नवतन्वगाया	সা৹	Ę=		
नलदमयती च उपई	हि॰	¥¥•	नवतत्वगाया माषा-पन्तासात वौधरी हि० ६				
नलदमयती संबोधसमयसुन्दर	हि॰	440	नवतत्व प्रकरशा	সা৹	६६		
नलोयाः व्यान स० ४५०			नवतत्वप्रकरसाटीका—प० भा	नविजय			
नलोदय काव्य	<b>#</b> •	<b>१</b> १८६		स∘र्	हे॰ ६१		
नलोदय काव्य—कालिदास	म ०	356	नवतः वशस्यार्थं	प्रा०	3,3		
नलोदय काव्य टीका	₹ o	3 6 6	नदतस्वममास	OIK	१०२६		
निदेश काव्य टी <b>का—</b> रामऋवि	Ħ o	380	नवतस्य मूत्र	प्रा०	60		
नोदय काव्य टीकारविदेव	Ŧ o	380	नवनिधान चनुर्देश रत्न पूजा —	लक्ष्मीयन			
वकार-म्ययं	हि०	१२६		e P	وه څ		
त्वकार पूजा	Ħ o	<b>≒</b> ₹¥	नवयदफेरी	40	2254		
विकार पैतीसी पूजा	स०	<b>4</b> 34	नवपदार्थ वर्णन	हि०	£ ¥.8		
	मुमतिस	ागर	नवसगल	हि॰	Ke3		
,	स •	534	नवमगल — लालबन्द	fg۰	8008		
विकार बालावबीच	हि०	120	नवमगल विनोदीलाल	हि०	₹ <b>0</b> ⊌₹,		
विकार मत्र	स•	you		१०७	=, ११५५		
विकार मत्र लालचन्द	<b>8</b> •	2223	नवरत्नकवित्र	हि •	१०३व,		
विकारमत्र गाथा	प्रा∙	<b>६२१</b>			22=4		
विकाररास	हि०	£58,	नवरस्न काव्य	स०	9956		
	-	093	नवरत्न काव्य	सं∙	4=4		
	हि॰				777		

षंथ नाम	लेखक	माषा	पत्र सल्या	। ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
नवलादेव		हि •	१०६५	नःममाला —	- धनञ्जय	₹♀	१०११,
नवबाडीविनती		हि॰	. १७ ५				3909
नवसेनाविधान		स•	3808	नाममः।ला	- नन्ददास	हि	भ्रेद
नसीहन — सुरूप	ानहकीम	fgo	. ૬૬૭	नाममाला—	-हरिदत्त	सं०	प्रदे≒
नमीहतकोल	-	हि॰	६=६	नामभाला	बनारसीदास	हि०	५३⊏
त्यायग्रथ		₩.	२५६	नामरत्नाका	र	हि०	४३८
स्यायचन्द्रिका	भट्टकेदार	₩∘	<b>२५६</b>	नामनिस्थिनि	वेद्य(न	信。	<i>د</i> ۶ د
न्यायदीविका -		ぜ。	२५६	नामलिंगानुष	गासन — ग्रा० हेम	चन्द्र स०	χąς
न्यायदी पिका मा	या वचनिका—	-सधी पन	ालाल	नामलिंगानुष	गासन वृत्ति	म०	४३८
		स०	२५६		गासनप्रमरसिङ्	ृ सं०	४३६
न्यायबोधिनी		सं०	२४७		— ब्र० कामराज	हि०	8888
न्यायविनिश्वय -	श्रकलकदेव	Ħo	२५७	नारचन्द ज्यं	ोतिष — नारचन्द	सं०	५५०,५५१
श्याय सिद्धान्तदी व	किदीका श्री	शेषर म०	२५७	नारदीय पुर	।ग्	सं०	११⊏६
न्य।यसिद्धान्त प्र	गा श्रनन्तमूरि	रं स०	२४७	नारिपत्रिका		स ∘	3008
म्यायावतार वृत्ति		ぞっ	२४६	नारी पच्चीर	fi:	हि॰	६ = ६
न्हबग्ग एवं पूज	स्तीत्र	हि∘स	e:999 o	नासिकेतपुरा	ग्	हि०	620
न्हबगाविधि — ह	गामधर	स०	<b>= } =</b>	निषदु		स०	४७८
न्हाबरापाठ माष		हि०	<b>د ξ</b> د	निषदु टीका		स •	४७६
नागकुमारचरित्र	मस्लिधेस्	स०	₹ € 0 ,	नित्यकर्मपा		हि०	१२७
		¥	<b>Ϋο, ΧΧ</b> ξ	निरयनियम	पूजा	स ०	580,
नागकुमारचरित्र							< 8 s
नागकुमारचरित्र			386	नित्यनियम	पूजा	हि०	280
नागकुमारचरित्र	नथमल विन	गलाहि०	<b>\$</b> κ∮,	नित्यनियम		हि •	6083
			₹85	नित्यनैभित्ति	क पूजा	सं०	2,8
नागकुमाररास -	- क अनिदास	हि ०	<b>६</b> :६				3899
नागश्रोकया -	किशनसिंह	हि०	११६७	निरयपाठ सं	प्रह	सं०	443
नागबीरास (	रात्रिभोजन र	स ) व	• जिनदास	नित्य पूअन		सं०	<b>د</b> \$ <b>د</b>
		हि•	<b>७६</b> ११	नित्य पूजा		हि•	5 <b>5 5</b>
नागधी क्या	ब ० नेमिदत्त	Ħ o	848	नित्यपूजा पा	ठ—ग्राशाधर	सं०	582
नाडीपरीका		₩.	५७७,	नित्यपूजा प	ाठ	स०	€ <b>₹</b> £
		Χu	८, १११६	नित्यपूजासं	पह	हि०	5\$E
नाम व भेद सम	ह	हि०	90	नित्मपूजा म	ाषा — प० सदासु	ख कासली	वाल
नामबासा		हि०	tort,	l	-	हि •	-3£
			१०६२	नित्यपूजा प	ाठ संग्रह	हि०सं०	<b>5</b> \$2

नित्यपूजा सबेह निस्धाुजा वजनिका निरंथपूजापाठ संग्रह	सं कामका सावका	0 =80	निर्वासकाण्ड पुत्रा		
निस्वपूजापाठ संग्रह	******************************		Ladielana Zan	हि	=४१
	444.4 04.40.	हि० ८४०		•	ER\$'ER5
	Ħ ·	० ११⊏६	, , ,	हि	
निदान	सं	০ ৠঙ্			
निदान भाषा-श्रीपत					
निदाननिषक्त	सं∙	५१५ -		हि ०	
निपट के कबित्व	हि		1		8 x 2 , 8 x 3
निमित्त उपादान बना			1		<b>ጻ</b> ጀ३, <b>४</b> ሂ४
निभित्तशास्त्र	संब		1 -	<b>हरिकृष्</b> ण	
नैमिलकशास्त्र - मद्रवा	•		निषेक	₩•	
नियमसार टीका – पदाः			निषेकोदाहरए।	हि॰	१११४
नियमसार माषाजय	बन्द छाबडाहि	90	नीतिमंजरी	£.	
निवमावलिसुत्त	সা •		नीतिवाक्यामृत-मा॰ सोमदेव	₩•	६८६
निरजंनाष्टक	सं०		नीतिशतक-स॰ प्रतापसिह	हि •	६५१
निजँरानुप्रे का	हि०	२०३	नीतिशतक-मतृंहरि	€ •	६४३
निकॅरपंचमीविषान	<b>भ</b> प ०		नीतिश्लोक	स०	€ = '9
निर्दोषसतमी कथा	हि•	6 - 8	नीतिशास्त्रवाग्यवय	स •	333
		११२३	भीतिसार	Ħo	8
निर्दोषसप्तमी कथा—व	रायमल्ल हि०	४४२,	नीतिसार—ग्रा० इन्द्रनन्दि	<b>#</b> •	₹ = '9
¥50, 8	¥4, E¥¥, E	६६, १११=	नीतिसार चासक्य	₹•	373
निर्दोषसतमी कथाहर्गि	रकृष्ण हि॰	¥33	नीतिसार-समय भूषरा	हि०	€ % €
निर्दोषसप्तमी वृत पुना		हे व्य	नीसकण्ठज्योतिष नीसकण्ठ	स •	४४१
निर्दोषसममी बतोद्यापन	<b>∓</b> ∘	488	नीदडनी — किझोर	हि•	= 60
निर्वाणकल्याण पूजा	सं०	<b>68</b> §	नूरको प्रकुन।बनि—नूर	हि ०	6688
निर्वाशकाण्ड-भैया भग	 वतीदास हि०	9 - 9 10	नेत्ररोगकी दवा	हि०	2
विवासिकाण्ड स्वा सर	विदास हि०	१०१७, ११०५	नेमकुमारबीरचन्द	f∉∘	\$ \$ \$ 4 0
निर्वाशकाण्ड गाथा			नेमजी की डोरीव॰ नाषू	हि •	१०६७
निवासकाण्ड गाया	प्रा॰ ११२६, ११	११२×,	नेमजी की विनरी	हि॰	EXX,
निर्वासकाण्ड गावा					1110
	সা৹	६४२	नेमध्याहपण्डीसीदेवराज	fig o	1033
निर्वाणकाण्ड माथा—भै	या मगवतीदास	हि॰ ६४२	नेमिकुमार गीतमूनि लावण्यस		
	७३०, १०	२०, ११८६	नेमिकुमारवेलि	fge	ESX
निर्वासकाण्ड गाथा व पू	बा उदयकीति		नेमिश्रन्दिका	ig.	2080
•	<b>प्रा</b> •सं •	486		- g -	<b>११</b> २४

प्रंथनाम लेखक	मावा	पत्र सस्या	ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
नैमिचन्द्रिका मःषा	हि•	३४२	नेमिनाथराजम	तीसबादव०	शान साग	₹
नेमिवरित्र – हेमबन्द्र	स	३४२	1		हि	<b>११३</b> •
नैमिजिनचरित्रव ० नेमिद	त स०	3×5	नेमिन। यरास		fg •	દય <b>વ,</b>
नेमिजिनजयमासविद्यानि	द हि	११४४				8080
नेमिजिनस्तवन-ऋषि वर्ज	न स०	७३१	नेमिनाथर।स-		हि०	£¥3
नेमिद्गतकाव्यविकम	स •	385	3	- जनवयःः - प्रण्यस्तन मृनि	हि	636
		383	नेनिनाथशस—		हि॰	
नेमिनवमगलविनोदीसाल	हि०			- मुनिरत्नकीर्ति		
नेमिनाधत्रीकाध्याहला—न				- <b>ब</b> ० रायमल्ल	· · · · ·	£ \$ \$
नेमिनाथ गीत	हि०		नेमिनाषरास—		हि॰	
नेमिनाय गीत-ना० यशोधर			नेमिनाबरेखता		fg o	१०७१
नेमिनाय चरित्र	সা		नेमिन।यकीलह		हि०	११०५
नेमिनःथ चरित्र	स	, ,	नेमिनाथलावस्		हि०	2888
न्मिनाथ छद — हेमचन्द्र	हि०	७३१, १०७०	नेशिनाथकी विर		हि०	668.0
नेमिनाथ जयम।ल	स०	•	नेभिनाथविनती	धर्मचन्द्र	हि०	११२६
नेमिन,थ के दशभव	fgo		नेमिनाथविवाह	लो—खेतसी	हि॰	434
नेमिनाथनवमगल	. ह हि		नेमिनाय वेलि-	— ठक्कुरसी	हि०	£ <b>¥</b> 3
नेमिनायनवमगल-लालचन्द				•		१६२
नेमिनाय-व मगल विनोदीर	•		नेमिनायसमबस	।रसा वादिचन	द्र हि॰	8833
नेमिताबपुरासा—व ० नेमिदर		२७७,२७६	नेमिनाथस्तवन	•	हि०	₹0₹¥,
नेमिनाय प्रवध - लावण्य सम			į		`	88.88
नेविनायफागु विद्यानन्दि	हि॰		नेमिन। बस्तवन		fg o	EXX
	-	६३७	नेमिनाचस्त् <sub>ति</sub>		हि० हि०	१०२४
नेमिनाथबारहमासा	f₹∘	१०२६.	नेमिना <b>यस्त्रोत्र</b>		, हु ० हि ०	१० <b>०</b> %,
	११	१७, ११२८	11.0.11.4.4.4.4		16-	8830
नेबिनाय का बारहमासा	ाडे जीवत	हि० ११२८	नेमिनाथस्तोत्र-	ria melia	स∘	११२४
नेमिनाथ का बारहमासा-			नेमिनिर्वाश		हि॰	६६५२ १८६
		१४, ११२=	नेमिनिर्वाश		।ह० सं०	373 575
			4141410	3115	40	388
नेमिनाथ का बारहमासा — ह	[यक≀।त ।ः हिं		नेमिपुरास		हि॰	2 v 3
नेमिनाच का व्याहला	•	• -	नेमिपुरास्य भा		हि०	२७५ २७७
मेविनायराजिमति वेलि-सि			नेमिराजमतिगी		।हर हि०	995 8=3
नेविनावराजमति का रेखता-		।ल ००३,१०५ <i>३</i>			हिंद हिंद	१८४ १८४
	<b>€</b> ∘ १	002,704.	[नामराजमातवा	4-04B 441	150	62.

ग्रंथनाम लेखक	मावा	वत्र सख्या	ग्रंथनाम लेखक	माधा	पत्र संस्या
नेमिराजमतीकातक —लावण्य सम	स्य हि०	११८७	नंदी भ्वर जयमाल	সা৹	<b>4</b> 85
नेमिराजुलगीतगुणचन्द्र	हि ०	१०६७			E.R.\$
नेमिराजुल का बारहमासा	हि •	१०६५	नदीश्व≀द्वीप पूजा	हि०	2,85
नेमिराजुल बारहमासाविनोर्द	ोलाल हि	० ११८७	नंदी श्वरद्वीप पूजा	सं०	#8X
नेमिराजुलसंबाद कल्याणकीर्ति		8888	नदीश्वरद्वीप पूजा उद्यापन	₹∔•	€.8.3
नेसि विवाहली	हि •	88×3	नदीश्वर व्रतोद्यापन	स०	<b>E</b> & &
नेमिस्तोत्र	₩.	xee	नंदी इवर पूजा	स०	288
नेमीश्वरगीत	f₹∘	203	नंदीस्वरद्वीय पूजाटेकचन्द	हि०	<b>288</b>
		११५४	नंदीश्वर पूजा डालूराम	हि०	C 4.8.
नेमियवर के पचकल्यासक गीत	हि •	<b>ह</b> = ५	नदीस्वर पूजारत्ननन्दि	म०	<b>48</b>
नेसीश्वरफाग	fee	EXE	नंदी श्वरहीय पूजा — पं० जिनेः	वरदास सं	० द४६
ने भी एव <i>र बारात</i> चित्र	10-	११७२	नदीश्वरद्वीय पूजालाल	দি •	=8£
नेमीश्वरराजमति — सिहनन्दि	fgo	£ 5 3	नदीश्वरद्वीप यूजा —विरधीचन	द्र हि०	<b>c</b> \$ <b>£</b>
नेमीम्बरराजुलगीत — रत्नकीति	हिं	:23	नदीश्वरद्वीप उद्यापन पूजा	押。	486
नेमीश्वररास	हि॰	<b>१</b> 055	नदीइवर ∤जः[विधान	सं०	<b>=</b> ¥4
नेमीश्वरराम—इ० जिनदाम	fe o	£30	नदी ६व रद्वीपम इल		६२५
नेमीश्वररास—ब्रह्माद्वीप	f₹∘	8058	नंदीश्वरपक्ति पूजाम० शुभ	चन्द्र स०	484
नेमीश्वररास—भाऊकवि	हि०	858	नदीश्वरपिक प्जा	हि॰स॰	EXX
नेमीश्वररास—व <b>ः रायम</b> ल्ल	fg o		नदीश्वरपक्ति पूजा	€.∘	€ € ⊂
वमाश्वररास—व्र <b>ण्या</b> यमल्ल ६ <b>८४</b> , ६६	-	₹=3,			
•			प		
नेमी श्व≀कोलहरी	हि०	8088			
नेमीयुर का रास पुण्यरत्न	f₹ o	ERR	पविस्वयं मुन्न	प्रा•	७४
नैभित्तिक पूजासग्रह	मं ०	282	पस्तवाडा—- जती तुलसी	हि०	३११६
नैमितिक पूत्रासप्रह	हि ॰	=8£	पच्चकारण भाष्य	সা৹	२०३
नैषध वस्त्रिटीकः	स०	388	पट्टावलि	हि ०	£ ¥ ₹,
नैषभीयप्रकाश नरसिद् पाढे	€	388	६४४, ६५७, १०७२. ११	०६, ११४	२, ११५६,
मंदिताढ्य छंद	हि०	દપ્રદ			9840
नदीयछद — नदिताढप	व्राष्ट	83,8	प्रतिष्ठापट्टावसी	हि०	EXX
नंदीश्वर कथा—शुप्तचन्द्र	軒。	848	भट्टारकपट्टावली	हि॰	4×
नंदीश्वर व्रतः कथा	स॰	EXX	मूनि पट्टावकी	हि	44¥
		¥¥¥	पडिकम्मण	ছি <i>০</i>	११०७
				, Q ~	1100
नंदीस्वर कथा— रत्नपाल.	सं०	308	पडिकोसाः	fg o	800

ग्रंथनाम लेख	क मावा	पत्र संख्या	ग्रंच नाम	बेखक	माषा	पत्र सस्या
पत्र गरीकाविद्यानी	ेद स	२५७	पद-द्यानतरा	व	हि	\$ ? o X
पथ्य निर्णय	हि	3ex	पदभागचन्द		हि०	११०५
पश्य निर्माय	<b>स</b> e	30%	पद-सनराम		हि	११०६
पथ्यापच्य निर्गाय	#i e	307	पद—विजयकी	fe	हि	११०७
पथ्यापथ्य विचार	<b>स c</b>	. યુહદ	पद जगतराम	r	हि	११०७
पण्यापथ्य विवोधक	वैद्याजयदेव संब	. ૫૭૬	पद – रूपचन्द		हि	660
पद — करबीदास	हि०	११७०	पद हर्षगरिए		हिं	६ = ३
<b>पद —</b> गुरम्चन्द्र	हि	१०६६	पद एवं ढाल		हि	६६३
पदजिनलाभ सूरि	हि	¥30\$	पद नेमिकुमार	डूंगरसीदास	हि ०	१०६५
पद — ठक्कुन्सी	हिल	8=8	पद बहाराज	पान	हि	. १११०
पद साहरण्	हि॰	8 न ४	पदमध्याकी वी	हालो	fe	१०३८
पद - यचा	हि	६८४	पद संग्रह	-	हि	१०५३,
पद— ग्रः दोप, देव स्	न्दर हि०	2222	-			3099
कबीरदास, बील	ही		पदसग्रह—कि	-	हि	
पद दीपचस्द	fgo	११०२	पद सम्रह—हर		हि	
पद – जानतराय	fgo		पद संग्रह जर		हि	
पद बनारसीदास	हि <i>•</i>		पद संग्रहनव		हि	
	-	७७. १०८४	पद सम्रह प्रश	राती, लालचन्द		
पद — वन्ह (बूचराज)	fão		पद सम्रह—रुप		हि	
			पद सग्रह—सुरे	रेन्द्रकीर्ति	हि	११०७
पद—इस्तराम, जगरा पद — जगतराम, द्यानर			पद संग्रह—सः		हि	
	ाराय कर हिं		पद सग्रह—भा	•	हि	
पद भूषःदास	हि० हि०		पद संग्रह—-प	नाथू	हिं	११०८
पद बहाकपूर	150	•	पद सग्रह— मन	-	हि	११०८
	•	9080	पद संग्रह जि	नहषं	हि	११०८
पद रूपचन्द	हि		पद संबह—वि	मल प्रभ	हि	११०८
_	_	6608	पद संग्रह—चन	दकीति	हि	2205
पद बनारसीदास	हि		पद संग्रह—म्बु	गालवन्द	हि	• ६६३
पद्य-सनस्य	্তি <b>ব</b>		पद संग्रह—चैन	र <b>मृ</b> ख	हि	६६३
पद त्र० यक्तोधर	हि०		पद संग्रह—देव	त ब्रह्म	हि	, ६६३
		२६, १०२७	पद संग्रहपा	रसदास निगोल	ग हि	5 5 5
पदहर्षकीर्ति	हि		पद संग्रह—ही	राचन्द	हि	६६४
प <del>दसुन</del> ्दर	हि		पद सम्रह		हि	5 558
पदभूधर	हि		पद सग्रह		हि	• ६६४
पदककीति	हि	११०५	पद संग्रह		हि	६६६

धंचनाम हे	नेसक भाषा	पत्र संख्या	ग्रंथ माम	वेसक	मावा	पत्र संख्या
पद संग्रहजगतर	ाम, भूषरदास हि	१०७६	पद्मनन्दि पंचरि	ाशतिटीका	सं०	198,
द्यानतराय,	, मुखानन्द, नबस हि	० १०७७				: १२
पद संग्रह— जगराय	मगोदीका हिल	१०४५	पद्मनन्दि पश्च	सी भाषा—ज	गतराय हि	० १३२
पद संग्रहनथमल	। हि	x809 c	पद्मनन्द्र पच्ची	सी भाषाम	नालाल (	बन्द्रका
पदसग्रह — हेतराम	्रि <b>व</b>	१०४६			राज०	१३२,
पद सम्रह-भूषरद	ास हि∘	१०४७	l			११८८
पद संग्रहजिनदा				हाव्य टी <b>का</b> —प्र	· .	
पद सग्रहनवलरा				<b>हाचारपदा</b> न	दिसं	144
पद सम्रह जगतरः			पद्मनन्दि स्तुति	•	स०	
वद सम्रह-पारसद			पद्मपुराश	(शालचन्द काल		
पद सदह-वनारस					2	5X, १०४२
पद संग्रहअगर।म	-		वद्मपुरास-		स	
पद सग्रह—कनकर्न			पद्मपुरासा—भ		<b>स</b> •	
पद सग्रह—हर्षचन्द्र	हिन्दी	₹00\$	वद्मपुरारार			२७६, २७६
पद सम्रह <del>— नवल</del> रा				— भ० शुमवन		
पद सम्रह बानतर		₹00\$	वद्यपुराश-म		स •	
पद संग्रह—देवाबहा			पद्मपुरास भाव	। — दौलतशम		
पद संग्रह — विनोदी	•				हि ०	२६०,
पद सग्रह	fę o				१, २=२,	२८३, ₹⊏४
		१०६५	पद्मावती कवच		<b>#</b> 0	• • • •
पद सग्रह—मब संग	•		पद्मावती गायः		<b>#</b> •	* \$ \$ \$ \$
पद सग्रह—वेगराज	-	80 = 10	पद्म वती सहस्र	नाम	स •	1143
पद सग्रह—- म० सब	-	६८६,६८७	पद्मावती कवच		₩.	4 4 4 2
त्र ० जिन	रदाम, ज्ञानभूषरा, मृ	[मनिकीर्नि	पद्मावनी गीन-		हि	७३२
पद सग्रह—स्वामी	हरिदास हि०	१०६६	पद्मावनी स्तोत्र		स०	७३२
पद सग्रह सिज्मतय	fao	१०६१	पद्मावती छद		हि	११६८
पदस्य ध्यान सक्षशा	हि०	१०६४	पद्मावती दण्डव	ī	मं •	११२५
पदस्थापना विधि	जिनदत्त सूरि स॰	8855	पद्मावती देवका	प मंडल पूजा-	दुन्द्रनि	₹
पद्म चरित्र	₩	348			सं०	
पद्म चरित्र—विनयः	समुद्र विग् हि०	344	पद्मावती पटल		सं०	440,
पद्मचरित्र टिप्पस		२७६				2558
	हावलीदेवाबहा हि	हे॰ ६५२	पद्मावती पूजा		सं०	£¥¤,
पद्मनन्दि पत्रविशति		124,			£	40, ११२६
	१२६, १३० ।	178, 864	पद्मावती पूजा-	-टोपस	₩.	

	_						
प्रंच नाम	लेखक	माषा	पत्र संख्या	प्रंचनाम	लेखक	मावा	पत्र संस्या
पद्मावः रे पूजाव		हि०	१०३१		દષ	₹, ह६०, ह	<b>६२, ६</b> ६४,
पद्मावती पूजा		सं०	= ६१		१००5, १	०४७, १०६	६, ११०३,
पद्मावती पूजा		नं ०	<b>८६१</b>	1		१४२, ११४	e, ११४0
पद्मावती महत		स०	न ६१	परमात्म प्रकार	स टीका	सं०	२०४
पद्मावती प्रचान	स्तोत्र	स०	७३२	परमात्म प्रकाः	घटीका	धप	स० २०६
पथावती मंत्र		हि०	१०१२	परमास्म प्रकार	स टीका	जीवराज	
पद्मावती वत स		Я°	= <b>६</b> २	Ì		हि०	२०४,२०६
पद्मावती राग्		हि ०	१०३८	परमात्म प्रकाश	त टीका—पाप	खबराम सं०	२०४
पद्मावनी सहस्र	नाम	स •	388	परमात्म प्रकार	त टीका—बह	दिव श्रप	सं० २०४
पद्मावती स्तीव		€0	७७३,	परमात्म प्रकार	त भाषा े	हि॰	२०६
хз	४, १०२७, १०:	५२, १०१	प्र, ११२४	परमात्म प्रकाश	त भाषा—दौर	वतराम कास	लीवाल
पद्मावती स्तोत्र	पूजा	स∘	₹ 5 %			हि॰	२०७,२०=
पथिनी बस्तास्		हि०	8003	परमातम प्रकार	গুমাৰা – কম	जन हि०	२०६
भन्द्र अंक यत	ı	₩.	१११७	परमास्य प्रकार	-	•	
पन्द्रहभंकि वि	बि	₹•	१११७	परमातम प्रकाश		सं०	₹0€
	ाईभ <b>० भगव</b> र			परमात्म प्रकाश	•	fgo	8000
	न सज्भाय-कुनु	दबन्द 🗀 ह	० ४५६	परमात्मराज स	तवन	सं०	888
परदेशी मतिबी		हि०	११०५	परमात्म स्वरू	4	सं०	२०६
परदेशी राजानी	सज्भाय	हि∙	४५६	परमानन्द पच्च		स०	Ęco
परमज्योति		हि०	€=₹	परमानन्द स्तोः	*	सं०	673.
परमञ्योगि ।	कल्यास गन्दि।	(स्तीत्र)	भाषा		७३, ६६ <b>४,</b> १		
बनारसीद	।स	f∉∘	\$ F &	-		१०३, <b>१</b> १२	
			508	परमार्थ गीत		हिं•	£=?
परमज्योति स्तं	াস	स०	१०८६	परमार्थ जरूडी		हि॰	8.88
परम शतक	भगवतीदास	fgo	१०५८	परमार्थ जकडी		हि॰	१०५४
परमहस कया	बौपईब० राय	मल्ल हि	328	परमार्थ दोहा-		हि॰	१०३=
परमहस रास-	-व ० जिनदास	हि०	430	परमार्थदोहा क		•	६६२.
परमहत सबोध	चरित्रनवरग	₩.	348	TOTAL SEC. ST.	(141	100	१०११.
परमहस संबोध	चरित्र	शह	\$8.R	परमार्थ विश्वति	æt	fgo	१०१६ १०१६
परमात्मपूराण-	दीपचन्द कास	लीवास	İ	परमार्थ शतक-		हि० हि०	203
•		हि०	२०१,२०४	पररमणी गीत	***************************************	্তি টি	१०२५
परमास्य प्रकाश	—योगीम्द्रदेव	श्र <b>प</b> ०	२०४,	पर्वरस्नावली	-उपा॰ जयसा		YY 6
			२०६,	परिकर्म विधि		सं∙	285

प्रंथ गांम लेखक	मावा	पत्र संस्था	्रयंथनाम लेखक	भाषा	वत्र संस्था
परिकर्माध्ट ह	हि०	৬४	पासिनी व्याकरसपासिनी	सं ०	* * *
परीक्षा मुख—मालिक्यनन्दि	₩.	२५७	पाशिनीय सिगानुशासन वृत्ति	मं ०	3 + 1
परीकां मुख (सषु वृत्ति)	Ħ o	२५७	पानीगालनरास	हि ०	2499
परीक्षामुख मावाजयचन्द छ।	बड़ा राज	० २५७	पारगीगालगारास-व० जिनदार	हिं	<i>७</i> ०५५
पत्यव्रत पूजा	स •	८७४	पालीगालनरासज्ञानभूषरा	हि०	434,
पत्यवत फल	स०	8 ₹ ₹	¥3	१, ११	३२, ११४३
पस्यविचार	हि•	४४१.	पाण्डबचन्द्रिका —स्वरूपदास	हि •	११=ह
		२, ११८६	पाण्डवचरित्र	₩•	<b>\$</b> 8 8
पत्यविचार वार्ता	हि ०	११३७	पाण्डक्चरित्र देवभद्रसूरि	₩•	388
पस्यविधान	स •	<b>≈</b> ६२,	पाण्डव पुरागा	# 0	3299
•		११६७	पाण्डव पुरागा— इ० जिनदास	स०	२८७
पत्यविषान कथा	स०	४५६, ११३५	पाण्डव पुरासा-देवप्रभसूरि	स०	२०७
पल्यविधान कथा खुत्रालचन्द ।	erer fa.		पाण्डव पुरासा— बुलाकीदास	fe •	٠,=
पल्यविधान वतोद्यापन कथा श्र		• • • •			≂६ <b>,</b> १०७४
Acataata attaataa mat	40	<b>¥</b> ¥ <b>Ę</b>	पाण्डब पुरागायशःकीर्ति	भ्रपभ्र	
वस्यविधान पूजा	सं०		पाण्डव पुरासा भ० जुभचन्द्र		२८६, २८७
नत्यावयाग पूजा		=≒२, 1, ११३€	पाण्डव पुरारग-श्रीभ्वरग		२८४, २८६
पत्यविधान रास — भ० शुप्रचन्द्र		, ((4¢ {₹ø,	पाण्डव पुराग्ग व चनिका — पत्ना		
पत्याववान रात — नण्युनवन्त्र	₹∘	440, 435		हि •	₹ € 0
पत्यविधान वतोद्यापन एव कथा-			पाण्डकी गीता	सं ०	१३६
पत्याववान अताधापन एव कथा-	•		पां <b>डेकी अधमाल</b> नल्ह	हि०	१११७
पल्य विधि	₩•	£ £ 8	पात्र केश्वरी स्तीत्र—पात्र केशरी	सं०	७३३
	₩•	દહય	पात्र केशारी स्तोत्र टीका	सं०	७३३
पत्यवत विधान	-स•	દુહથ	पात्र भेद	हि ०	११०२
पल्लीविचार	सं०	१११६	पारसीसूत्र	त्रा ०	৬খ
पवनजय चरित्रभुवनकोति	हि०	4*4	पारमनाथ की सहेकी व्र० नायू	हि०	8.8.8
पाक शास्त्र	स∘	મ⊌દ,	पारसविलास-पारसदास निर्वात	या हि॰	<b>६६</b> ≍
		3=55	पाराशरी टीका	स ∘	४४२
पाकावली	₩•	११८६	पारिकात हरशा-पंडिताचार्य न	रायस	
पाठ सबह	हि०	444		₹•	₹¥¥
पाठ संग्रह	प्रा० सं	. 666	पाद्वंचरित्र—तेजपास इ	म स्र	\$8X
पाठ संब्रह	स ०	६६७	पारवंजिन स्तुति	₹	500
पाठ सम्रह	स०हि∙	६६७	पार्श्वजिन स्तोत्र-जिनप्रभसूरि	सं •	977
पाठ संग्रह	<b>(E</b> •	550	पास्वेदेव स्तवन-जिनलांभसूरि	हि०	450
पाठ संग्रह	हि०	११०२	पार्श्वेषुरास — चन्द्रकीर्ति	स•	780,38%

प्रंथ नाम लेखक	माथा	पत्रसंख्या	ग्रंथ नश्य	सेसक	मावा	पत्रसंस्या
पारवंपुरारा-यद्मकीर्ति	धपश्र श	२६०	पारवंताब स्तवस	नविजय वा	वक हि०	१०६१
पाव्यंपुरारा-भूधरदास	हि०	३४६,३४७,	पारवंनाथ स्तुति	बलु	हि०	**
३४८, ३४६, ३५	o, 348, <b>3</b>	४२, ६६३,	पादर्वनाथ स्तोत्र		₹ 0	७३४,
8	०३०, १०	६, ११०७	७७४	, १०४२, १०	४४, १०६	५, १०६३,
पाश्वंपुरागा—रह्यू	भ्रपभंश	२६०		*	१०८, ११३	२, ११२५
पाश्वंपुराण — बादिचन्द्र	सं०	२६०	पाइवंनाथ स्नोत्र	खानतराय	हि०	\$ <b>6</b> 6 8 x
पारवेनाथ सुन्टक —विश्वभूष	ग्ग स∙	< 99	पार्श्वनाथ स्तोत्र	पद्मनस्दि	स०७	३४,११२७
पारवंनाय कया —जिनदास	हि॰	१०१६	पार्श्वनाथ स्तोत्र		सं०	७३४,६४=
पाश्वंनाय कवित्त —भूधरदास	ा हि०	<b>६६</b> ८	पाइवंनाय स्तोत्र	राजसेन	祝り	११२४
पाइवंताय गीत - मुनिलावण्य	समय हि॰	११३७	पाशा केवली			५५२,५५३
पार्श्वनाथ चरित्रम० सकत	नकीति स०	388		<b>५, १००६,</b> १	०८६, १०	४, ११३०
पाइवंताय चिन्तामणिदास	हि •	१४ =	पाणाकेवली	गर्ग मुनि	स०	४४२,
पाश्वंनाय के छद	हि०	१११७			٠.	7 8 3 5
पारवंनाय छंद हवंकीर्ति	हि०	७३३	पाद्याकेवली मा		-	प्र३, स्प्र४
पाइवंनाथ छद लब्धरुचि	हि ०	४१७	पाहुइ दोहा—र		भपभंश	
पाप्रवेताथजी छद सबोध	हि०	68.83	पाचपस्तीकथा-		हि∘	\$ \$ \$ \$
पाञ्चंनाय जयमाल	हि०	१११७	पांचोंगति की बे	-		११०२
पःदर्वनाय की निसारगी	हि०	१०३०	पांबापुर गीत-		हि॰	१०६२
पाश्वंताथओं की निशानी —	जिनहर्ष हि०		विगल रूपदीय	4141	हि०	५६५ ११५=
पाश्वंनाथ पूजा	सं०	٤٣٧,	पिगल विचार		हि०	
		१०६७	पिंगल शास्त्र		সাৎ	५६४ ५६४
पाम्बंताय पूजा -देवेण्डकीरि		e & 8	विगल सारो <b>द्धाः</b>		<b>₹</b> 0	4 £ £
पार्श्वनाथ पूजावृन्दावन	हि०	583	पिडविशुद्धि प्रक		प्रा०	~ <b>~ 4 *</b>
पार्श्वनाथ मगल	हि∙ 	१०३६	पिडविशुद्धि प्रक		₩.	*40
ष।श्र्वनाथरासकपूरचन्द	हि०	१४४ १०२२	पुष्णास <b>व क</b> हा		<b>अ</b> प०	•40
पाश्यंनाम विनती	हि०	११४०	पुष्यास्तव कथा	જારમ — મુમુલુ		84£,840
पाश्वेनाथ विनती-मुनि जि		3888	पुष्यास्त्रव कथाव	तेश भाषा		
पार्श्वनाथ का सहेला	हि॰	8=3	3			8X0,8XC
पाश्वंस्तवन	₩.	७३४				4X 6, 8 6 0
पार्श्वनाथ स्तवन	हि०	७३४	पुण्य की जयमा		हि ०	१११७
पार्श्वनाथ (देसतरी) स्तुति-	-		पुण्य पुरुष नाम	विल	सं०	११८६
4144.114 (47017.) (3.11	₹ •	४६७	युष्यफल		भार	
पार्श्वनाथ स्तवन	स •	,وەھ	पुण्यसार चौपई	पुष्यकीर्ति	हि०	
***		१०२४	पुण्याह मंत्र		सं०	11=6

पुष्पाह्वाचन — साक्ष सर स० द६४ द६४ दुष्पानिक तत कथा — सिक्क हि० ११६ दुर्यर कथा — भावदेव सूरि हि० ६६६ दुर्यर विधान कथा — सिक्क हि० ११६ दुर्यर विधान कथा — सिक्क हि० ११६ दुर्यर विधान कथा — सिक्क हि० ११६ दुर्यर विधान कथा — सिक्क हि० १९६ दूर्यर विधान कथा — सिक्क हि० १९६ दूर्यर विधान — सुरम्प कथा हि० १९६ दूर्यर विधान — सुरम्प कथा हि० १९६ दूर्यर विधान — सुरम्प कथा हि० १९६ दुर्यर विधान — स्वापरेतेन स० १९६ दुर्यार विधान — स्वापरेतेन स० १९६ दुर्यार विधान — स्वापरेतेन स० १९६ दुर्यार विधान — स्वापरेते हि० द६६ दुर्यापाठ सियान — स० सामा स्वाप हि० द६६ दुर्यापाठ सियान — स० सामा स० दुर्याराठ सम्बाक हि० १९६ दुर्याराठ सम्बाक स्वाप — स० स्वापरेत समझ दूर्याराठ समझ स्वाप हि० द६६ दुर्याराठ समझ स्वाप हि० १९६ दूर्या प्रकार स्वाप स्वाप हि० द६६ दूर्या प्रकार स्वाप स्वाप हि० द६६ दूर्याराठ समझ सम्बच स० द६ दूर्याराठ समझ सम्बच स० द६ दूर्याराठ समझ सम्बच स० द६ दूर्याराठ समझ समझ हि० ६६ १९६ १९६ १९६ १९६ १९६ १९६ १९६ १९६ १९६						
तुष्या-तिकता साव साव साव साव साव साव साव साव साव सा	ग्रंचनाम लेखक	भाषा ।	<b>१त्र संख्या</b>	पंचनाम लेखक	मावा	पत्र सं+या
पुरंदर कथा—भावदेव सूरि हि॰ ६६१ पुरंदर विधान कथा स॰ ४०० पुरंदर विधान कथा स॰ ४०० पुरंदर विधान कथा स॰ १६० १००१ पुरंदर कोछापन—मुरंद्रकीति स॰ ६६० पुरंदर विधान कथा स॰ १६० १००१ पुरंदर कोछापन—मुरंद्रकीति स॰ ६६० पुरंदर विधान कथा स॰ १६० १००१ पुरंदर कोछापन—मुरंद्रकीति स॰ ६६० पुरंदर विधान कथा १६० १००१ पुरंदर केछिएन सिंह १००१ पुरंदर केछिएन सिंह १००१ पुरंदर विधान कथा स॰ १६० पुरंदर विधान कथा १६० १००१ पुरंदर केछिएन सिंह १००१ पुरंदर केछिएन सिंह १००१ पुरंदर विधान कथा १६० १००१ पुरंदर केछिएन सिंह १००१ पुरंदर विधान कथा १६० १००१ पुरंदर केछिएन सिंह १००१ पुरंदर विधान कथा १६० १६०० पुरंद विधान कथा १६० १६०० १६०० १६०० १६०० १६०० १६०० १६००	पुण्याहवाचन भाषाः घर	स००	= <b>6</b> R = <b>6</b> X	1 ~		¥ » E
पुरंदर विधान कथा स० ४०० पुरंदर विधान कथा स० ४०० पुरंदर विधान कथा—सुरिक्षण हि० ४३३ पुरस्त थोपई हि० ४०३१ पुराणातार (उत्तर पुराणा)—य॰ सकलकीति ० २६०,२६१ पुराणातार (उत्तर पुराणा)—य॰ सकलकीति ० १६०,१६१ पुराणातार (उत्तर पुराणा)—य॰ सकलकीति ० १६०,१६१ पुराणातात्व्या स्वया स० १६१,१६९ पुराणातीत्व्या स्वया है० १६१,१६९ पुराणातीत पुराणा स० १६६१ पुराणातीत पुराणा स० ११३६ पुराणातीत पुराणा स० १६०६ पुराणातीत पुराणा - १० महीचन्द्र स० ६६१ पुराणातीत पुराणा - १० महीचन्द्र स० ६६१ पुराणातीत पुराणा - १० महीचन्द्र स० ६६१ पुराणातीत पुराणा - १० महीचन्द्र स० ६६६ पुराणातीत पुराणा - १० सहीचन्द्र स० ६६६ पुराणातीत प्रताणा स० १११३ पुराणातीत यत कथा - सण्ततासार स० १११३ पुराणातीत वत कथा - सणातासा स० १११३	पुन्धमः लिका		33	1 7		1123
पुरदर विधान कथा—सुरिक्षणा हि॰ ४३३ पुरसर विधान कथा—सुरिक्षणा हि॰ १०११ पुरारह क्रोधान—मुरेक्षकीर्त स॰ ६६० पुरारास (उत्तर पुरारा)—भ॰ सकनकीर्त ०२६०,२६१ पुरारास (उत्तर पुरारा)—भ॰ सकनकीर्त १००,०६५ पुरारास (उत्तर पुरारा)—भ॰ सकनकीर्त १००,०६५ पुरारास संदर पुरारा भाग १००,०६५ पुरारास पुरारा १००,०६५ पुरारास संदर पुरारा भाग १००,०६५ पुरारास पुरारा १००,०६५ पुरारास प्रारा १६०,०६५ पुरारास व्यव स्वा १६०,०६५ पुरारास व्यव स्व कथा—सुवास सं १५१ पुरारास व कथा—सुवास सं १५१ पुरारास व कथा—संदर सं १६०,०६५		हि०			_	=७€
पुरस्दर बोखायन—सुरेन्द्रकोति स० वर्षप्त पुरस्दर बतोखायन—सुरेन्द्रकोति स० वर्षप्त पुरस्दर बतोखायन—सुरेन्द्रकोति स० वर्षप्त पुरस्दर बतोखायन—सुरेन्द्रकोति स० वर्षप्त पुरस्दर व्यवस्थायन स्व वि व्यवस्थायन स्व वि व्यवस्थायन स्व व्यवस्थायन स० व्यवस्थायन स्व वि व्यवस्थायन स्व व्यवस्थायन स० व्यवस्थायन स्व व्यवस्थायन स० व्यवस्थायन स्व व्यवस्थायन स्व व्यवस्थायन स० व्यवस्थायन व्यवस्थायन स० व्यवस्थायन स० व्यवस्थायन स० व्यवस्थायन स० व्यवस्थायन व्यवस्थायन स० व्यवस्य				पूत्राकथा (मेंडक की)व्र०		
पुरावर प्रतीवायन—मुरेहक्कीति स० वर्ष पुरावर प्रतीवायन—मुरेहक्कीति स० वर्ष पुरावर प्रवास प्रवास हि० वर्ष पुरावर पुराय)—भ० सकनकीति व रहे, रहेर पुरायातार (उत्तर पुराय)—भ० सकनकीति व रहे, रहेर पुरायातार (उत्तर पुराय)—भ० सकनकीति व रहे, वर्ष पुरावर ताक स० वर्ष रूप पुरावर ताक स० वर्ष पुरावर ताक स० वर्ष पुरावर ताक सा संवह स० वर्ष पुरावर ताक स्वास संवह हि० स० पुरावर ताक स्वास संवह हि० वर्ष पुरावर ताक स्वास हि० ११६३ पुरावर्गित ताक स्वास स्वास हि० ११६३ पुरावर्गित ताक स्वास स्वास संव ४११ पुरावर्गित ताक स्वास स्वास संव ४११ पुरावर्गित ताक स्वास स्वास संव ४११ पुरावर्गित ताक स्वास संव स्वास संव ४११ पुरावर्गित ताक स्वास संव स्वास संव ४११ पुरावर्गित ताक स्वास संव संव ४११ पुरावर्गित काक स्वास संव संव ४११ पुरावर्गित काक स्वास संव संव ४११ पुरावर्गित काक स्वास संव संव स्वास संव संव स्वास संव संव स्वास संव स्वास संव संव संव संव संव संव संव संव संव सं	पुरंदर विधान कवा—हरिकृष्ए				हि •	868
पुरारारता जयमाल हि॰ ६९२ पुराशालार (जतर पुराशा)—भ॰ सकलकीति ० १६०,२६१ पुराशालार (जतर पुराशा)—भ॰ सकलकीति ० १६०,२६१ पुराशालार (जतर पुराशा)—भ॰ सकलकीति ० १६०,२६१ पुराशालार (जार पुराशा)—भ॰ सकलकीति ० १६०,२६५ (५००,६०५,००५,६०७ (५००,६०५) (५००००) (५०००००) (५०००००००) (५००००००००००	<b>पुरस्दर चौ</b> पई	हि०	6088	पूजापाठ	e FF	८६७
ुराश्यार (उत्तर पुराश्)—भ॰ सक्तक्कीत ०२६०,२६१ पुराश्यार — सागरतेन स॰ २६१ पुराश्यार — सागरतेन स॰ २६१ पुराश्यार — सागरतेन स॰ २०६१ पुराश्यार — सागरतेन स॰ १००६ पुराश्यार निवार प्राप्य — सागरतेन स॰ १६१ पुराश्यार निवार प्राप्य — सागरतेन स॰ १६१ पुराश्यार निवार प्राप्य — स० ६६१ पुराश्यार निवार में सिंह सिंह प्राप्य — स० ६६१ पुराश्यार निवार — स० सागर स० ६०० पुराश्यार निवार — स० सागर प्राप्य मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार — स० सागर प्राप्य मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार — स० सागर प्राप्य मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार — स० सागर प्राप्य मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार — स० सागर प्राप्य मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार — स० सागर प्राप्य मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार — स० सागर प्राप्य मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार मान १६० ११६१ पुराश्यार निवार मान १६० १६६ पुराश्यार निवार निवार मान १६० १६६ पुराश्यार निवार निवार मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार निवार मान १६० ६६१ पुराश्यार निवार निवार मान १६० १६९ १६९ १६९ १६९ १६९ १६९ १६९ १६९ १६९ १६९	पुरन्दर व्रतोद्यापनसुरेन्द्रकोरि	1 स∙	= ६ ५	पूजापाठ सम्रह		द६७
० २६०,२६१ पुरासातार—सागरतेन स॰ २६१ पुरव बानक सं० १००६ पुरवायां तिक दुगाय —प्रमृत्वचन्द्रावातं ति १३३, पुरवायां तिक दुगाय —प्रमृतवचन्द्रावातं ति १३३, पुरवायां तिक दुगाय भाषा हु॰ १३६। पुरवायां तिक त्वा माण्यां ति १० ६६१ पुरवायां ति प्रवा माण्यां ति १० ६६९ पुरवायां ति प्रवा माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति वत ने स्वाप माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति वत ने स्वाप माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति वत ने स्वाप माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति वत ने स्वाप माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति वत ने स्वाप माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति वत ने स्वाप माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति वत ने स्वाप माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति वत ने स्वाप माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति वत ने स्वाप माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति वत कवा माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति वत कवा माण्यां ति १० १९६३ पुरवायां ति कवा माण्यां ति १० १९६३						500
पुरास्तार—वागरसेन स॰ २११ पुरास्तार—वागरसेन स॰ १११ पुरास्तार व्याप्त स्वयान्य साम संवत् हु॰ सं॰ ६० पुरास्ता सिक्ष दुगाय — प्रमुक्त प्रवास संवत् हु॰ सं॰ ६० पुरास्ता सिक्ष दुगाय — प्रमुक्त प्रवास संवत् हु॰ सं॰ ६० पुरास्ता सिक्ष दुगाय अभा हु॰ ११६ रू४ रू४ रू४ पुरास्ता प्रकरण प्राः ६० ५१६ पुरास्त्र प्रवः प्राः ६० ६६१ पुरास्त्र प्रवः प्राः ६० ६११ पुरास्त्र प्रवः प	पुरालसार (उत्तर पुराल)—म	• सकलकी	ਰਿ	पूजापाठ संबह	स∘हि∉	4 - ,
पुरुष बातक सं तं १००१ पुरुष वातक सा संग्रह हि॰ सं० ६७ पुरुष वातक सा संग्रह १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५		۰ ۶	€•,₹€₹	٦٩٤, ١٥٥,	६७१, व	७२, ८७३,
पुरुषार्थं विद्धपुराय — प्रमृत्वरहाषार्थं त० १३३, १३४, १३४, १३४, १३४, १३४, १३४, १३४,	पुरारासा र—सागरसेन	स •	₹3,5	८७४, ८७४, ८७६,	=6 <b>0</b> , •	७८, ८७६
१३४ १३४, १३६  पुरुषार्थ सिद्धपुराय भाषा हु १३६  पुरुषां सिद्धपुराय भाषा हु १३६  पुरुषां सिद्धपुराय भाषा सु १३६  पुरुषां सिद्धपुराय सिद्धपुराय सिद्धपुराय सिद्धपुराय सिद्धपुराय सिद्धपुरुषा सिद्धपुराय सिद्धपुरुषा सिद्धपुरुष्ठ सिद	पुरुष जातक	सं०	₹••€	पूजापाठ तथा कथा संग्रह	हि∙	सं॰ =७१
पुरुषार्थं सिद्धपुराय भाषा हु॰ १३६ पुरुषार्थं सिद्धपुराय भाषा हु॰ १३६ पुरुषार्थं सिद्धपुराय भाषा हु॰ १३६ पुरुषार्थं स्वरूप स्वरूप स० ००० पुरुषार्थं स्वर्पार्थं स्वर्पार्थं स० ००० पुरुषार्थं स्वर्पार्थं स्वर्पारं स्वर्पार्थं स्वर्पारं स्वर्	पुरुषार्थं सिद्ध गुपाय — ग्रमृतचन्द्र	चायं स •	₹₹₹.	पूजापाठ विधान	ぞ。	307
पुष्पावित्त कथा स्वरास स्वर्ध प्रवास प्रकारण से विद्या प्रकारण प्राव करेंद्र प्रवास प्रवास स्वर्ध प्रवास कथा से विद्यास से विद्यास सिक्त कथा से विजयस से प्रवास से विद्यास से विद्यास सिक्त कथा से विजयस से प्रवास से विद्यास सिक्त कथा से विजयस से विद्यास से विद्यास सिक्त कथा से विजयस से विद्यास सिक्त सिक्त सिक्त सिक्त सिक्त सिक्त सिक्त स्वास सिक्त सि		63x 63	14, 234	पूजापाठ विधान प० झ शावर	. स०	508
पुष्पत्राला प्रकरण प्रा० ६६५ पुष्पांजित कवा प्रा० पुण्कांति हि० ६६१ पुष्पांजित जयमाल हि० ६६१ पुष्पांजित जयमाल हि० ६६१ पुष्पांजित ज्ञा—पानतराय हि० ६६५ पुष्पांजित पुत्रा— प० महोचन्द स० ६६६ पुष्पांजित पुत्रा— प० महोचन्द स० ६६६ पुष्पांजित पुत्रा— रतनवन्द्र स० ६६६ पुष्पांजित ज्ञाचापन— नगादास स० ६६६ पुष्पांजित ज्ञाचापन— नगादास स० ६६६ पुष्पांजित पुत्रा स० नगादास स० ६६६ पुष्पांजित पुत्रा स० ११६३ पुष्पांजित प्रता स० वित्र ११६३ पुष्पांजित ज्ञा कथा— ज्ञातदास हि० ११६३ पुष्पांजित ज्ञा कथा— ज्ञातदास हि० ११६३ पुष्पांजित ज्ञा कथा— ज्ञातदास स० ४११ पुष्पांजित ज्ञा कथा— मणावी स० ४११ पुष्पांजित ज्ञा कथा— मणावी स० ४११ पुष्पांजित कथा मणावी स० ४११ पुष्पांजित कथा मणावी स० ४११	पुरुषायं सिद्धयुपाय भाषा	8.	<b>१</b> ३६	पूजापाठ संब्रह		१८६,१८७
पुष्पांत्रिक कथा म० ११३६ पूजाय्क सिहट हि० ०७ पुष्पांत्रिक कथा म० ११३६ पूजाय्क सिहट हि० ०७ पुष्पांत्रिक कथा मा० गुण्कांति हि० ६६१ पुष्पांत्रिक प्रशास सिहण्य स० ६६ पुष्पांत्रिक प्रशास सिहण्य म० ६६ पुष्पांत्रिक प्रशास सिहण्य म० ६६ पुष्पांत्रिक वर्तेष्ठापन नगायास स० ६६६ पुष्पांत्रिक वर्तेष्ठापन नगायास स० ६६६ पुष्पांत्रिक वर्तेष्ठापन मण्यास स० ६६६ पुष्पांत्रिक वर्तेष्ठापन मण्यास स० ११६३ पुष्पांत्रिक वर्ते कथा स० ११६३ पुष्पांत्रिक वर्ते कथा स्वास्त्रिक ११६३ पुष्पांत्रिक वर्ते कथा स्वास्त्री स० ४११ पुष्पांत्रिक कथा स्वास्त्री स० ४११ पुष्पांत्रीक कथा स्वास्त्री स० ४११ पुष्पांत्रीक कथा स्वास्त्री स० ४११ पुष्पांत्रीक कथा स्वास्त्री स० ४११	पुरुषोप्तिना सक्षरा	स२	**	पूजाप्रकरण	棋・	50₽
पुष्पाविति कथा - शां गुण्यक्षीति हि० ६६१ पुष्पाविति प्रथम - शां गुण्यक्षीति हि० ६६१ पुष्पाविति प्रथम - यानतराय हि० ६६५ पुष्पाविति प्रथम - यानतराय हि० ६६६ पुष्पाविति प्रथम - रानवराय स० ६६६ पुष्पाविति प्रथम - रानवराय स० ६६६ पुष्पाविति प्रथम - रानवराय स० ६६६ पुष्पाविति प्रथम - यानतराय स० ६६६ पुष्पाविति प्रथम - यानतराय स० ६६६ पुष्पाविति प्रथम - यानतराय स० ६६६ पुष्पाविति प्रथम - यानवराय स० ११०३ पुष्पाविति यान कथा - वानतराय हि० ११६३ पुष्पाविति यान कथा - वानतराय हि० ११६३ पुष्पावित यान कथा - वानतराय स० ४११ पुष्पावित यान कथा - वानतराय हि० ११६३ पुष्पावित यान कथा - वानतराय हि० ६२ पुष्पावित यान कथा - वानतराय हि० ११६३ पुष्पावित यान कथा - वानाराय स० ४११ पुष्पावित वान कथा - वानाराय स० ४११	पुष्पमाला प्रकरसा	9 I R	<b>5</b> 55	पूजालकारा	fa o	8064
पुष्पार्जाल त्रवा— वानतराय हि॰ ८६५ पुष्पार्जाल प्रवा— वानतराय हि॰ ८६५ पुष्पार्जाल प्रवा— वानतराय हि॰ ८६५ पुष्पार्जाल प्रवा— परनेवचन स॰ ८६६ पुष्पार्जाल त्रवा— भगावास स॰ ८६६ पुष्पार्जाल प्रवा— वानतराय स॰ ८६६ पुष्पार्जाल प्रवा— वानतराय स॰ ८६६ पुष्पार्जाल प्रवाच स॰ ११०३ पुष्पार्जाल प्रवाच स॰ ११०३ पुष्पार्जाल वर्ग कवा - वाजनतास हि॰ ११० पुष्पार्जाल वर्ग कवा - वाजनतास हि॰ ११०३ पुष्पार्वाल वर्ग कवा - वाजनास स॰ ४११ पुष्पार्वाल कवा - वाजनास स॰ ४११ पुष्पार्वाल वर्ग कवा - वाजनास स॰ ४११ पुष्पार्वाल वर्ग कवा - वाजनास स॰ ४११ पुष्पार्वाल कवा - वाजनास स॰ ४११ पुष्पार्वाल वर्ग कवा - वाजनास स॰ ४११	पुष्पांजलि कथा	स •	११३६	पूजाप्टक-सोहट	f₹∘	٠ ७ ६
पुष्पार्जाल त्रवा— वानतराय हि॰ ८६५ पुष्पार्जाल प्रवा— वानतराय हि॰ ८६५ पुष्पार्जाल प्रवा— वानतराय हि॰ ८६५ पुष्पार्जाल प्रवा— परनेवचन स॰ ८६६ पुष्पार्जाल त्रवा— भगावास स॰ ८६६ पुष्पार्जाल प्रवा— वानतराय स॰ ८६६ पुष्पार्जाल प्रवा— वानतराय स॰ ८६६ पुष्पार्जाल प्रवाच स॰ ११०३ पुष्पार्जाल प्रवाच स॰ ११०३ पुष्पार्जाल वर्ग कवा - वाजनतास हि॰ ११० पुष्पार्जाल वर्ग कवा - वाजनतास हि॰ ११०३ पुष्पार्वाल वर्ग कवा - वाजनास स॰ ४११ पुष्पार्वाल कवा - वाजनास स॰ ४११ पुष्पार्वाल वर्ग कवा - वाजनास स॰ ४११ पुष्पार्वाल वर्ग कवा - वाजनास स॰ ४११ पुष्पार्वाल कवा - वाजनास स॰ ४११ पुष्पार्वाल वर्ग कवा - वाजनास स॰ ४११	पूष्पाञ्जलि कथा - श्रा० गुएकं	नि हि॰	६६१	पूजाव्टकज्ञानम्बर्ग	Ħ•	E
पुष्पार्वात पुत्रा— भः महोचन्द सं० ६६६ पुष्पार्वात पुत्रा— राज्य मागारास सः० ६६६ पुष्पार्वात वर्तो घापन र का नगारास सः० ६६६ पुष्पार्वात वर्तो घापन र का नगारास सः० ६६६ पुष्पार्वात पुत्रा सः० १६६३ पुष्पार्वात पुत्रा सः० १६६३ पुष्पार्वात प्रता जिनदास हि० ११६३ पुष्पार्वात वर्त कथा स्वः जिनदास सं० ४११ पुष्पार्वात वर्त कथा न गगारास सं० ४११ पुष्पार्वात वर्त कथा न गगारास सं० ४११ पुष्पार्वात वर्त कथा न गगारास सं० ४११ पुष्पार्वात वर्त कथा मोथायी सः० ४११ पुष्पार्वात वर्त कथा मोथायी सः० ४११	पुष्पांजनि जयमाल	हि•	= ; 4	पुजास्टक — हरसचन्द	हि •	510
पुष्पार्वात पुत्रा— भः महोचन्द सं० ६६६ पुष्पार्वात पुत्रा— राज्य मागारास सः० ६६६ पुष्पार्वात वर्तो घापन र का नगारास सः० ६६६ पुष्पार्वात वर्तो घापन र का नगारास सः० ६६६ पुष्पार्वात पुत्रा सः० १६६३ पुष्पार्वात पुत्रा सः० १६६३ पुष्पार्वात प्रता जिनदास हि० ११६३ पुष्पार्वात वर्त कथा स्वः जिनदास सं० ४११ पुष्पार्वात वर्त कथा न गगारास सं० ४११ पुष्पार्वात वर्त कथा न गगारास सं० ४११ पुष्पार्वात वर्त कथा न गगारास सं० ४११ पुष्पार्वात वर्त कथा मोथायी सः० ४११ पुष्पार्वात वर्त कथा मोथायी सः० ४११	पूज्याजील पुत्रा-धानतराय	हि •	द६५	पूजासार	संब	=७१,⊏⊏२
पुष्पार्वति ततोषापन — गगादास स० ६६६ पुष्पार्वति ततोषापन टंका — गगादास स० ६६६ पुष्पार्वति पुत्रा त० ११०३ पुष्पार्वति पुत्रा पुर्वात्रित पुत्रा पुर्वात्रित पुत्रा पुर्वात्रित पुत्रा पुर्वात्रित पुत्रा पुर्वात्रित यत कथा — खुत्रासप्य सं० ४१४ पुष्पार्वति तत कथा — खुलासचन्य राज० ४११ पुष्पार्वति तत कथा — जगादाम सं० ४११ पुष्पार्वति तत कथा — गगादाम सं० ४११ पुष्पार्वति तत कथा — मगादाम सं० ४११ पुष्पार्वति तत कथा — मगादा स० ४११ पुष्पार्वति तत कथा — मगादी स० ४११		सं०	44	पूजासार सम <del>्ब</del> य	म •	540
पुष्पार्वति ततोषापन — गगादास स० ६६६ पुष्पार्वति ततोषापन टंका — गगादास स० ६६६ पुष्पार्वति पुत्रा त० ११०३ पुष्पार्वति पुत्रा पुर्वात्रित पुत्रा पुर्वात्रित पुत्रा पुर्वात्रित पुत्रा पुर्वात्रित पुत्रा पुर्वात्रित यत कथा — खुत्रासप्य सं० ४१४ पुष्पार्वति तत कथा — खुलासचन्य राज० ४११ पुष्पार्वति तत कथा — जगादाम सं० ४११ पुष्पार्वति तत कथा — गगादाम सं० ४११ पुष्पार्वति तत कथा — मगादाम सं० ४११ पुष्पार्वति तत कथा — मगादा स० ४११ पुष्पार्वति तत कथा — मगादी स० ४११		स•			fe o	toox.
पुष्पावित त्रतोषापन टंका — गगादास स० ६६६   पूजा समह — षानतराय हि० ६६ पूषां निवराग — वर्णा कि ११६३ पुष्पां निवराग — वर्णा निवरास हि० ११६३ पुष्पां निवराग — वर्णा निवरास हि० ११६३ पुष्पां निवर कर्या - कर्णा निवरास हि० ११६३ पुष्पां निवर कर्या - अत्रास्पर सं० ४३१ पुष्पां निवर कर्या - मुजासक्य राज ४११ पुष्पांचित व्रत कर्या - गगादास सं० ४११ पुष्पांचित व्रत कर्या - मेगावी स० ४११ पुष्पांचित व्रत कर्या - मेगावी स० ४११ पुष्पांचित व्रत कर्या - मेगावी स० ४११ पोसहकारण गाया हि० १०६ पुष्पांचित क्रव स्था - मेगावी स० ४११ पोसहकारण गाया हि० १०६ पुष्पांचित क्रवा स्वीत प्रातस्व हि० १०६						
पुरुपांचित पूजा स० ११०३ पुरुपांचितरामच० जिनदास हि० ११४३ पुरुपांचित यत कथा च० जिनदास हि० ११६३ पुरुपांचित यत कथा						550
पुष्पांजितराग—ज्ञाजनास हि॰ ११४३ पुष्पांजितराग—ज्ञाजनास हि॰ ११६३ पुष्पांजित वत कथा - क्राजनसम् हि॰ ११६३ पुष्पांजित वत कथा - क्राजनसम्बद्धा ४४४ पुष्पांजित वत कथा - क्राजनसम्बद्धा ४४४ पुष्पांजित वत कथा - क्राजास सं॰ ४११ पुष्पांजित वत कथा - मेवावी स॰ ४११ पुष्पांजित कथा सटीक प्राजस्थ १६९ पोस्तकारण गांचा हि॰ १०६					हि •सं	· == ?.
पुरांजनि वत कथा - बर्जनिदास हि० ११६३ पुरांजनि वत कथा - अतायार सं० ४३४ पुरांजनि वत कथा - असायक्षात्रकर राज० ४११ पुरांजनि वत कथा - नगादास सं० ४११ पुरांजनि वत कथा - मेवायी सं० ४११ पुरांजनि वत कथा - मेवायी सं० ४११ पुरांजनि वत कथा - मेवायी सं० ४११ पुरांजनि कथा सटीक प्रांत्स ४११ पोसहकारण गांवा हि० १०२						
पुष्पार्शन प्रत कथा—श्रृतसागर सं० ४३४ पुष्पार्शन प्रत कथा—श्रुवासक्वर राज० ४११ पुष्पार्शन प्रत कथा—गगादास सं० ४११ पुष्पार्शन प्रत कथा—गगादास सं० ४११ पुष्पार्शन प्रत कथा—मेपायी स० ४११ पुष्पार्शन कथा सटीक प्राप्त ४६१ पोसहकारण गाथा हि० १०६	-					478
पुष्पार्वात ब्रत कथा—मुबासचन्द राज० ४११ पुष्पार्वात ब्रत कथा— नगादास सं० ४११ पुष्पार्वात ब्रत कथा— मेपायी स० ४११ पुष्पार्वात ब्रत कथा— मेपायी स० ४११ पुष्पार्वात कथा सटीक प्रान्स० ४६१ पोसहकारण गाथा हि० १०६				1		७३४
कुष्पांत्रनि वत कथा — गणादास सं० ४११ दुष्पांत्रनि वत कथा — मेणावी स॰ ४११ दुष्पांत्रनि कथा तटीक प्रान्स० ४६१ दुष्पांत्रनि कथा सटीक प्रान्स० ४६१ पोसह पारवानी विधि तथा रास हि० १०२						
युष्पांत्रनि तत क्या— मेघायी स॰ ४११ योसहकारमा गाया हि॰ १०६ युष्पांत्रनि क्या सटीक प्राल्स० ४६१ योसह पारवानी विश्वितया रास हि॰ १०२						
पुरुषांजिल कवा सटीक प्रा०स० ४६१ पोसह पारवानी विकि तथा रास हि० १०२					_	
			- 1		-	१०६९
प्रभागां वर्षा क्या सं ४६१ विशानरास be ११३						
	हुष्पान्ताल । बचानं कथा	स•	A 6 6	<b>पोसानुरास</b>	हि •	११३७

पंथनाम लेखक भा	वा पत्र	सस्या	प्रंथनाम लेखक माचा पत्रसंख्या
पंचदन्द्री चौपई भूबरदास	हि॰	१०७२	पवपरमेष्टो गीतयशकीति हि॰ ११५६
पंचकत्याएक रूपचन्द	हि॰	११४७	पचपरमेष्टी गुरा सं० ७३६,
पंचक्त्यासक उद्यापनगुजरमल	ठग		6703
,	हि ०	280	पचपरमेष्टी गुरूवर्णन सं०७३६,१२७
पचक्त्यारमक मीत	हि०	११८७	पचपरमेण्टी गुणवर्णन - डालुराम हि० १०११
पंचकल्याम पाठरूपचन्द	हि॰	9080	पंचपरमेष्ठी नमस्कारपूजा स० ८५६
वचकल्यासक पूजा	स•	522	पचपरभेष्टीपद सं० ६६६
पंचकत्याग् कपूजा	सं०	१०६५,	पचपरमेथ्ठी पूजाभ० देशेन्द्रकीति स० ८५१
		१११८	पचपरमेष्ठी पूजायशोनन्दि सं० ८५१,८५२
पंचकत्यासक पूजाटेकचन्द	हि•	-80	पचपरमेष्ठी पूजाभ० शुमचन्द्र स० ८५१,८५२
पचकत्याणक पूजा-प्रम चन्द	मं ०	-80	पचपरमेष्ठी पूजाटेकचन्द हि॰ ८५१,
पचकत्यागाक पूत्रा बुधजन	दि०	28.0	े ८५२, ८५३
पचकत्यासाक पूजारामचन्द्र	हि॰	5 80	वचपरमेच्ठां पूजाडासूराम हि॰ ८५३
षंचकत्यारणक पूजा—बादिभूषरण	सं∙	280	पचपरमेक्डी प्ञा—बुधजन हि॰ ८४३
पचकल्यासक पृजा - सुधीस।सर		७,८४८	पचपरमेन्छौपूजा संग्हिन् ६५४,
पवकल्याणक पूजा मृमतिसावर	मं •	282	ς x x
पंचकत्यासाक पूजाचन्द्रकीर्ति		द,८४६	पचपरमेष्ठी यूजा—यशोनन्दी स० १०८५
पवकत्यागक विधान—भ० सुरेन्द्र			पचपरमेष्ठी स्तुति—वृत् चन्द्रसागर हि० ११५६
	हि० ६४		पंचपसीकथा—बह्नविनय हि० ४६६
पंचकत्यासक कान — ज्ञानभूषस	स०हि०		पञ्चपस्तीपूजावेगुब्रह्मचारी हि० ६६४
वनकत्यास्त्रत टिप्पस	हि <b>॰</b>	= X 8	पंचारावर्तन वर्णन हिं०७१,१२७
पंचकल्यामक विधान—हिरिकिणन		= ५१	पचपरावर्तन टीका सं० ७१
पचकस्यः स्पयः विधान—भ० मुग्नः			पंचपरावर्तनस्वरूप सं० ७१
	स०	=8E	पत्रपादिका विवरण — प्रकाशात्मज भगवत
पंचकस्थास्यक स्तोत्र	स०	७३६	सं॰ २६०
पच्चक्स।रग	সা •	७३७	पव्यव्रकार समारवर्गन सं० १२७
पंचपुर गुराम।ला पूजा—म० शुभ			पचवधावाहर्षकीति हि० ११०४
	स∙	< X 8	पंचबालयती तीर्थकर पूजा हि॰ ६५६
प्यज्ञान पूजा	हि०	5 X P	पचमास चतुर्दशी वतपूजा सं० ८५६
पंचतत्र — विष्गुशर्मा			पंचमास चतुर्दशीवतोद्यापन-भ० सुरेग्द्रकीर्ति
पंचदल ग्रंकपत्र विधान	स <b>∘</b> ∹	११८७	स० वर्ष
पंचदशाक्षरनारद	सं∙	प्रपृष्	पंचमास चतुर्दशीवतोचासन विधि सं० ८५६
पचनवकार	प्रा∘	१०६५	पचमेरू की भारती — ग्रानतराम हि० १११७
पंचनमस्कार स्तोत उमास्यामी	सं०	१=६	पचमेरू तथा नन्दोश्वर द्वीप पूजा-धानमल
पंचनमस्कार स्तोत्र भाषा	हि∙	१०६६	. , हि॰ ====

ग्रंग नाम लेखक	मावा	वत्र सस्या	प्रथमाम	सेसक :	माया '	पत्र संख्या
पंचामेह पूजा	हि०	₹ a¥ 5,	वच स्तोत्र मावा		हि०	१०३०
u .		१०६४	पंच हनुमानवीर	<b>বি</b> স		११७२
पचमेर पूडाडालूराम	हि०	११२३	पचम कर्मग्रंथ		स •	११८७
पंचनेर पूजा वानतराम	हि०	₹ 0 ₹ ₹,	पचम गति वेलि		हि०	8088
		₹१२३	पंचमगति वेलि -	- हर्षकीति	हि०	۳ <i>७७</i> ,
पंचमेर पूजाश्रवरदास	हि० ।	६७६,८८१		\$08	३, १०१८	, ११०६,
पंचमेरु पूजासुसानन्द	हि॰	१०७७			8883	₹, ११६२
पंचमेत्र पूजा	हि॰	<b>5</b> ۥ	प्रमतपत्रहि स्तव	नपमयम्बद	र हि॰	१०४४
पचमेरु पूजा विधान	स०	=६०	पत्रमी कथा-सुरे	न्द्र भूषरा	हि० ४	<b>€</b> ≈¥, <b>€</b> €1
पंचमेर पूजा विषानटेकचन्य	द हि∘	= ६०	पत्रमी कवा टिप्प		धप०स	. ४५५
पंचमेर महल विधान	हिल	= 40	पचमी वन कथा	–सुरेन्द्र भूषण	हि०	<b>4</b> ¥ ₹
पंच मगल	हि ०	2000	पचमी व्रत पूत्रा –	कस्यास सागर	स० =	५६,८५७
पंचमगल धाशाघर	मं •	₹050,	प्रचमी विद्यान		स •	<b>= X </b> §
		१०=२	प्रवमी वतोद्यापन-	—हर्षकस्याग्	Ħ•	⊏४७
प व मगलरूप चन्द	हि०	9 € €	प्रसी वनोद्यापन	पूजानरेन्द्रसे	स -	44
=08, ¢0	0x, 8083	, 808E,	प्रवसी वतीसापन	पूजा – हर्षकीति	<b>₹</b> •	= % =
१०६३, १०	७५, १०५७	, १०७६,	पचमी वतोद्यापनः	विभि	ਰ≎	= 1 =
११०६, ११	१४, ११३०	, ११६७,	वंचमीशतक पद		सं०	११८८
पचमंगल पाठ-रूपचन्द	हि०	Ye3	पवर्मास्त्रोत्र - उ	: य	हि •	७३७
पचमगल पूजा	हि०	E ¥ 3	प वास्यान		<b>स</b> •	600
प् <b>चल</b> ब्बि	Ħο	११८८	वचास्यानविष्यु	दल	₹0	***
पच <b>वटी</b> सटोक	स •	७३६	प्रवास्यान कथा		fg o	११६२
पंचसहेली गीतखीहल	हि ०	६६६	प्चास्यान भाषा		fgo	6 X 9
		१०२२	प्रवातनाम रस		Æ.	308
पचसग्रहनेमिचन्द्राचार्यं	গা ০	50	प बाभृतामिवे क		स •	550
पंचसंग्रह वृत्ति-सुमतिकीति	प्रा∘स∘	30	पनावच्याई नदद	सि	fg •	1200
पंच सघि (प्रक्रिया कौमुदी)	हि०	EXE	वंबानीनी व्याह	गुरासागर सरि	हि•	४५६
पंच सिंग	स० ४		प्यामन्त प्रम्मम		स•	411
पचससार स्वरूप निरूपण्	₩∘		प्रवास्तिकाय	•	দ্বিত	<b>११४</b> २
पचस्तीत्र	सं० ७३	१७,६४३,	पच।स्तिकायमा	0 <b>477387</b> 2	NI.	90,90
६४७, ६६७,	600, 664		पवास्तिकाय टब्बा		সা • ভি	-
₹ • • ¥ . ₹ •	•६, १०४२		पवास्तिकाय टीका			
				450 4.814	41.44	- 47,
		. 206=		-		9

ग्रंथ नाम लेखक	मीवा	वत्र संख्या	ग्रयनाम लेखक	मावा पत्र संख्या
पंचारितकाय भाषाबुधजन	हि •	४७	प्रतिक्रमण् टीका—प्रमान	बन्द्र सं० २०६
पन्तास्तिकाय भाषापाण्डे हे	हमराज हि	, fer apa	प्रतिक्रमण पाठ	प्रा०हि॰ २०१
	-	७४	प्रतिक्रमरा पाठ	स० ११४७
पचास्तिकाय मापा-हीरानक	इ हि०प	· 93,	प्रप्रिकमण सूत्र	प्रा० २०६,
		6686	1	२१०, ११५३
पंचाग	स०	448	प्रतिकापत्र	हि० १३६
प <b>श्चाग</b>	हि	4 4 8	प्रतिमा बहत्तरी-चानत	राय हि॰ १३६,
पंचेन्द्रिय गीत जिन <b>से</b> न	हि०	8024		१११४, ११६०
पंचेन्द्रियकाव्यौरा	fg o	₹00₹	प्रतिमा स्वापना	সা০ দদভ
पञ्चेन्द्रिय वेलि	fşo	६६३,	प्रतिष्ठाकल्प – ग्रकलक	देव सं० ८८७
	8.3	દેર, १०२७	प्रतिष्टातिलक— ग्रा॰ न	रेन्द्र सेन सं० ==७
पचेन्द्रियबेलि— टक्कुरसी	हि ०	६६२,	সনিষ্ঠা পত্ৰতি	सं० ८८७
4	६४, १०५	(x, fore	प्रतिष्ठापाट	म० ६६६,
ग बेन्द्रियवेलि—चल्ह	हि०	११५१		१०४२
पचेन्द्रिय संवाद — भैया भगवन	ीदास हि॰	११८८	प्रतिष्ठापःठ – झाझाघर	सं० ६६६
पचेन्द्रिय सवाद यशः कीर्नि स्	इरि हि०	११८८	प्रतिष्ठा पाठ—प्रभाकर से	न स० ६८६
पडितगुग्ग प्रकाश – नल्ह	हि •	3=09	<b>प्र</b> तिष्ठः पाठ	सं०हि० ८८८
पहित जयमाल	हि∙	११०७	प्रतिष्ठा पाठ टीका—गरः	राम स० ५०५
पंक्तिमाला	हि॰	=8€	प्रतिष्ठा पाठ वचनिका	f <sub>€</sub> ∘ ==€
पथराह णुभागुभ	स०	४४१	प्रतिष्ठा मंत्र सम्रह	स० ६८६
प्रक्रिया कौमुदीरामवन्द्रावार्य	स०	४१६	प्रतिष्ठा मंत्र सग्रह	सं०हि० ८८६
प्रक्रिया व्याच्या - चन्द्रकीति सृ	रिसं०	४१६	प्रतिष्ठा मंत्र	सं० ८६६
प्रकियासग्रह	₩•	प्रश्६	प्रतिष्ठा विधि –ग्राशावर	मं० ८६६
प्रकृति विच्छेद प्रकरण्—जयति	लकस०	30%	प्रतिष्ठा विवरण	हि० १०८०
प्रज्ञापना सूत्र (उपाग)	সা৹	હય	प्रतिब्ठासार सप्रह	वसुनिदिसं० ६६०
प्रजाप्राकाण षट्त्रिणका—स्पी	सह सं०	<b>\$</b> 66		560
प्रज्ञावल्ल रीय	सं०	1880	प्रतिष्ठा सारोद्धार-धाशा	घर सं० ८१०
प्रकृर्ण गायाना घर्ष	प्रा०	1160	प्रस्थान पूर्वलि पाठ	०३११ भार
व्रतिक्रमरा	प्रा ० स	io 204,	प्रत्येक बुद्ध चतुष्टय कथा	सं० ४६१
		२०१	प्रद्युम्न कथाव ० त्रेसीट	nस हि० ११६७
प्रतिक्रमरा	मं ०	٤٤٥,	प्रद्युम्न कथासिहकवि	श्रप० ११८६
	७७, १०५४	, १०६८,	प्रशुम्न कथा प्रवध भ०	देवेन्द्रकीति हि॰ ४६१
	११२	७, ११३६	प्रद्युम्न चरित्र	हि॰ ३५३
प्रतिक्रमर्गौतम स्वामी	সা•	२०६		***

प्रंथ नाम लेखक	मावा	पत्र संख्या	पंचनाम लेखक	मावा प	त्र संस्था
प्रखुम्न वरित्र-महासेन	ाचार्यं सं०	३५२	प्रमासन्यतत्वालोकालंकार वृत्ति	रत्नप्रभ	ाचार्य
प्रस्तुम्न चरित्र-सोमकी	ति सं०	<b>३</b> १२		सं०	२४६
		₹X ₹	प्रमाणनय निर्णय-भी यसमा	ार गरिए स	० २५८
प्रसुप्त चरित्र मुभवन्द्र	स०	343	प्रमारा निर्एयविद्यानन्दि	सं०	२४६
प्रधुम्न चरित्र टीका	# o	ŧΧŝ	पमाण परीकाविद्यानन्दि	स०	२५६
प्रश्नुम्त चरित्र रत्नवन्द्र		<b>\$</b> ¥ \$	l		3,४,₹
प्रसाम्न चरित्रसवारु	हि∙	३५३	प्रमास परीका भाषा — अयचन्व	ভাৰতা বি	<b>४० २५</b> ६
_	_	१०१५	प्रमासा प्रमेव कलिकानरेन्द्रहे	न स०	. ૨૫૬
प्रवास्त चरित्रमन्नामान		३५३	प्रमाल मजरी टिप्पली	सं०	२४६
प्रस्कृत्न चरित्र वृत्ति-देव		3 火 ≺	प्रमेयरत्नमाला — धनन्त वीर्य	स•	२५६
प्रचुम्न चरित्र भाषाज्य					२६०
	हि॰	इस्र इस्र	प्रवयनसार कुदकुदावार्य	भा०	२१०
	द हि॰	3 X X	प्रवचनसार टीका	<b>प्रा</b> ०	720
प्रवास्त वरित्र-खुकालवः	্ব ।হত হিত		प्रवचनसार टीकापं॰ प्रमाक		280
प्रस्तुम्न प्रबन्ध	-	११४६ ३५५	प्रवचनसार भाषा	fgo	280
प्रश्रुम्न प्रबन्ध-भ० देवेर	2 4114 18 0	इत्रप्र श्रद	443000 3040	160	788
प्रसम्बद्धाः	हि •	2850			
प्रसम्बद्धाः रामा	-	\$ ? E	प्रवचन सार माथा वचनिका	हेमराज सं	. २११
5A3 ' 5AA' 6A				7	१२, २१३
प्रच_म्न लीला बर्ग्यन—शि	•		प्रवचनगार वृत्ति-प्रमृतचन्द्र सू	रिहि०	२१३
प्रबन्ध चिन्तामरित - राजरे		<b>EXX</b>	प्रवस्तनसारोद्धार	सं०हि०	283
प्रबन्ध चिन्तामश्चि — ग्रा॰		44.8 <b>5</b> 48	प्रवज्याभिवान समृतृति	<b>#</b> •	245
प्रबोध चन्द्रिका	•		प्रक्तभूडामरिए	सं०	444
	संः	३४६	प्रक्रमाला	हि॰	99
प्रबोध चन्द्रिका—वैजल मू	•	४१७	प्रदेशमाला भाषा	fe -	<b>!</b> ? 5
प्रकोध चन्द्रिका	सं •	५१७ ११६०	प्रश्नमासा वयनिका	हि॰	96
प्रवोध चन्द्रोदय नाटक — क्र	em fores vi.	7 X F.	प्रदन्यव्टि शतक काव्य टीका —		
7414 4.7144 4154 — B	•(i i H % # *	₹ . E . E	प्रशन सार	g-auto (	488
प्रकोश वितामिता—जयशेष			प्रश्नावली-स्त्री देवीमन्द	π·	228
नवाय । यदानासः—ज्ययस् प्रदोध बावनी—जिनदास		6860	प्रदर्भासरी		
	हि•	1020		सं•	488
प्रबोध बावनी—विनरंगसू		950	प्रश्नशास्त्र	सं•	KKX
प्रसम्बन चरित्र	₩•	376	प्रकालरमाना	सं∙	96
ष्रमाखनयतत्वालोकालं कार-	.,	:			600
	सं०	220	प्रकोत्तरमाणिका	ۥ	130

प्रकोत्तर रस्त्रमामा—समीयवृषं सं० ७७ प्रकोत्तर रस्त्रमामा—समीयवृषं सं० ७७ प्रकोत्तर रस्त्रमामा—समीयवृषं सं० ५६६ प्रकात्तर रस्त्रमामा—सुनाकोदास सं० ६६६ प्रकात्तर रस्त्रमामा सुन मा० देवेट सं० १२७ प्रकात्तर रस्त्रमामा सुन मा० देवेट सं० १३७ प्रकात्तर रस्त्रमामा सुन मा० देवेट सं० १३७ प्रकात्तर रावा मा० देवेट सं० १३७ प्रकात्तर शाव मा० देवेट सं० १३० प्रकात्तर शाव मा० देवेट सं० १३० प्रकात्तर शाव मा० हि० प्रकात्तर शाव मा० हि० प्रकात्तर साव मा० हि० प्रकात्तरों स० ५५० प्रकात्तरामा स्वार्ण मा० प्रकात	प्रंव नाम लेखक स	गवा पः	संख्या	प्रंथनम लेखक क	ाषा	पत्र सच्या
प्रकाशितर रश्नमामा—समोषहर्ष सं ० ५० प्रकाशितर रश्नमामा—सुनाकोदास सं ० ६६६ प्रमानितर रलन्यामा स० ६६६ प्रमानितर रलन्यामा स० ६६६ प्रमानितर रलन्यामा स० ६६६ प्रमानितर रलन्यामा स० ६६० प्रमानितर रलन्यामा साथ वर्नानिका स० ६६० प्रमानितर आवकाचार आया वर्नानिका स० ६६० प्रमानितर आवकाचार माया वर्नानिका स० ६६० प्रमानितर आवकाचार प्रमानितर्व हि० प्रमानितर स्वाम्य हि० प्रमानितर हि० प्रमा	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	हि०	१३७	प्राणीडा गीत	हि०	१०६५
प्रकाशित रहनवाना—चुनाकोदास सं० ६६८ प्रकाशित रहनवाना—चुनाकोदास सं० ६६८ प्रकाशित रहनवाना स० ६८८ प्रकाशित रहनवाना स० ६८८ प्रकाशित प्रकाश स० ६८८ प्रकाशित रहनवान म० सकतकोति स० ६८० १२५, १२५, १४० प्रकाशित प्रवाद कावार म० वर्षक सकोति स० ६८० प्रकाशित प्रवाद कावार म० वर्षक सकोति स० ६८० प्रकाशित प्रवाद कावार म० वर्षक सक्याति प्रकाशित प्रवाद कावार म० वर्षक सम्भाव स्वाद कावार स० प्रवाद कावार म० वर्षक सम्भाव स्वाद कावार स० वर्षक प्रकाशित स० वर्षक सम्भाव स० वर्षक सम्भाव स्वाद कावार म० वर्षक सम्भाव स्वाद कावार मावा वर्षक स्वाद स्वाद सम्भाव स्वाद स० प्रवाद कावार स० वर्षक सम्भाव स्वाद स० प्रवाद कावार सम्भाव स्वाद स० प्रवाद कावार स० वर्षक सम्भाव स० प्रवाद कावार सम्भाव स्वाद स० प्रवाद कावार सम्भाव स्वाद स० प्रवाद कावार स्वाद स० प्रवाद कावार स्वाद स० प्रवाद कावार स्वाद स० प्रवाद कावार स० वर्षक सम्भाव स्वाद स० प्रवाद कावार स० वर्षक सम्भाव स्वाद स० प्रवाद कावार स० वर्षक स्वाद स० वर्षक स्वाद स० प्रवाद कावार स० वर्षक स्वाद स० वर्षक स्वाद स० वर्षक स्वाद स० वर्षक स्वाद स० वर्षक स० वर्षक स्वाद स० वर्षक स० वर्षक स० वर्षक स० वर्षक स्वाद स० वर्षक			€ሂቀ	प्रातः संध्या	सं०	१११७
प्रजीतर रहनवाका—विश्वसेत सं० ६८६ प्रकारित रहनवाका—विश्वसेत सं० ६८६ प्रकारित रहनवाका—विश्वसेत सं० ६८६ प्रकारित रहनवाका—विश्वसेत सं० ६८६ प्रकारित रहनवाका चूलि—चा० देनेट सं० १३७ १३० १३० १३० १३० १३० १३० १३० १३० १३० १३०	प्रश्वोत्तर रत्नकामासमोपहर्व	सं०	৬৬	प्रायश्चित ग्रंथ प्राक	सं ०हि०	१४१
प्रमानात र रहनवामा— विषमतीन सं			६८८	प्रायश्चित ग्रन्थ ग्रकलक स्वामी	सं∘	६८६.
प्रमानेतर रत्नवाला सुल — या॰ देवेट सं । १३७ प्रमानेतर रत्नवाला बुलि — या॰ देवेट सं । १३७ प्रयानेतर रत्नवाला बुलि — या॰ देवेट सं । १३७ प्रयानेतर रत्नवाला बुलि — या॰ देवेट सं । १३० प्रयानेतर रत्नवाला बुलि — या॰ देवेट १३९, १४० प्रयानेतर त्रावकावार माया यवनिका सं । १४० प्रयानेतर त्रावकावार माया यवनिका सं । १४० प्रयानेतर त्रावकावार माया यवनिका सं । १४० प्रयानेतरोपासकावार — कुनाकीदास हि॰ १४३ प्रयानेतरोपासकावार — कुनाकीदास हि॰ १४३ प्रयानेतरोपासकावार — कुनाकीदास हि॰ १४३ प्रयानेतरोपासकावार — प्रयावेद गरिए प्रयाने माया यवनिका प्रयावेद गरिए प्रयानेतरोपासकावार — प्रयावेद गरिए प्रयानेतर्काव वाहि — कुनाकावार सं । १९६६ प्रवाद संग्रह सं । १९६६ प्रसाद संग्रह सं । १९६६ प्रसाविक संवेवा सं । १९६६ प्रसाविक संवेवा हि॰ १०६६	प्रश्नोत्तर रत्नमासाबुलाकीदार	त सं∘	£EE			880.
प्रकार रलनावा स० ६-६८ प्राविक्त पाठ प्रकार रलनावा हिए पाठ देनेट सं ० १२७ प्रकार रलनावा हिए पाठ देनेट सं ० १२७ प्रकार रलनावा हिए पाठ देनेट सं ० १२० प्रकार राव प्रवाद हो । १०० प्रवाद हो	प्रश्नोत्तर रत्नमाला—विमलसेन	सं०	<b>5</b> 44			¥8, 78¥,
प्रकाश स्वाप्त का का स्वाप्त का का स्वाप्त	प्रक्लोत्तर रत्नमाला	स०	<b>६</b> ८€	प्रायश्चित पाठ		દયદ
प्रकारत स्वाब हाबार—भ० सकतकाति त ० १२७ १२०, १२०, १४० १४० १६०, १२०, १४० १४० १८०, १२०, १४० १४० १८०, १४० १४० १४० १४० १४० १४० १४० १४० १४४ १४४	•		१३७	प्रायदिवत भाषा	हि०	₹33
स० १३७ १३०, १३०, १४० प्राचीतर आवाब वाद स्वाचित साव प्रवाचित साव प्रवाचच साव साव प्रवाचित साव प्रवाचित साव प्रवाचच साव साव प्रवाचच साव	प्रदेशीलर श्राव हाचारभ० सक	लकोति			-	₹१४
प्रयोगतर आवकावार भाषा ववनिका  स ० है ।  प्रश्नोत्तरी स ० ७७  प्रश्नोत्तरी स ० ७७  प्रश्नोत्तरी स ० ७५  प्रश्नोत्तरी स ० ७५  प्रश्नोत्तरी स ० ७५  प्रश्नोत्तरी स ० ७६  प्रश्नात्वाक्तरस्य स्वर्ण मार्ग हिल प्रश्ना स्वर्ण स					-	६६०
स०हि० १४२ प्रश्नीलरो स० ७७ प्रश्नीलरो स० ७७ प्रश्नीलरो स० ७७ प्रश्नीलरोपसकाचार—हुनाकीदास हि० १४३ प्रश्नीलरोपसकाचार—हुनाकीदास हि० १४३ प्रश्नीलरोपसकाचार—हुनाकीदास हि० १४३ प्रश्नीलरोपसकाचार—हुनाकीदास हि० १४३ प्रश्नीलरापसुन प्राच १६६० प्रश्नीलरापसुन हि० प्रश्नीय प्रश्नीय प्रश्नीय हि० हि० प्रश्नीय हि० हि० प्रश्नीय हि० हि० प्रश्नीय हि०			९, १४०			
प्रश्नोत्तरी स॰ ७७ प्रश्नोत्तरीयासकावार—कुवाकीदास हि॰ १४३ प्रश्नात्तरीयासकावार—कुवाकीदास हि॰ १४३ प्रश्नाव्यक्तरराष्ट्रम् वृत्ति—प्रमयदेव गरिष् प्रश्नाव्यक्तराष्ट्रम् वृत्ति—प्रमयदेव गरिष् प्रश्नाव्यक्तः—विद्याद्यक्त वृत्ति—प्रमयदेव गरिष् प्रश्नाव्यक्तः—विद्यादेव गरिष् प्रश्नाव्यक्तः—विद्यादेव गरिष् प्रश्नाव्यक्तः—विद्यादेव गरिष् प्रश्नाद्यक्तः—विद्यादेव गरिष् प्रश्नाद्यक्तः—विद्यादेव गरिष् प्रश्नाद्यक्तः—विद्यादेव गरिष् प्रश्नाद्यक्तः—विद्यादेव गरिष् प्रश्नाविक गरीत्वादः—विद्यादेव हि॰ प्रश्नाविक गरीत्वादः विद्यादेव विद्यादेव गरिष् प्रश्नाविक गरीत्वादः—विद्यादेव विद्यादेव प्रश्नाव्यक्तः—विद्यादेव विद्यादेव विद्यादेव विद्याद्याद्याद्याद्याद्याद्याद्याद्याद्या	प्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा वर्व	निका				
प्राण्योत्तरोपासकावार—बुलाकोदास हि॰ १४३ १४४ प्राण्याकरणसूत्र प्राण्याकरणस्त्र प्राण्याकरणसूत्र प्राण्याकरणसूत्र प्राण्याकरणसूत्र प्राण्याकरणस्त्र प्राण्याकरम् प्राण्याकरणस्त्र प्राण्याकरणस्त्र प्राण्याकरम् ाकरम् प्राण्याकरम् प्र		स ० हि ०	625			
प्रश्नातात् विकास क्षेत्र क्षिप्त क्षेत्र क्ष	प्रश्नोत्तरी	स •			-	
प्रकल्याकररासुन प्राच प्रकल्याकररासुन प्राच प्रकल्याकररासुन प्राच प्रकल्याकररासुन हिल्लाच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्य	प्रश्नोत्तरोपासकाचारबुलाकीद	ास हि॰				
प्रश्ननवाहरुपपुत्र वृत्ति—समयदेव गाँग प्राच्या प्रश्ननवाहरुपपुत्र वृत्ति—समयदेव गाँग प्राच्या प्रश्ननवाहरुपपुत्र वृत्ति—समयदेव गाँग प्राच्या प्रश्ननवाहरुपपुत्र वृत्ति—समयदेव गाँग प्राच्या प्र			4 8 8		•	
प्रकारवाकरराजून वृत्ति—चम्रयदेव गाँख प्राच्याकरराजून वृत्ति—चम्रयदेव गाँख प्राच्याकर—विनवालन पूरि सं ध्रित्ते प्रित्याचिक स्वित्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच	प्रश्नव्याकरणसूत्र	910	७६	, ,		
प्राचन व्यवक — प्रवचन विकास स्वाचन विकास स्वचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वचन विकास स्वाचन विकास स्वाचन विकास स्वचन	प्रश्नव्याकरसम्बन् वृत्ति-श्रभयदे	वगिए।				
प्रश्न सतक—विजयनतम सूरि सं० ५६ प्रश्निकर चरित्र—बोधराज हि० प्रश्निकराधिका—विषामी बालकुण्य स० ११९६ प्रश्नाद समझ स्वाद स्वत् स० ११९६ प्रश्नाद समझ स्वाद स० १९६६ प्रश्नादिक स्वीव स० १९६६ प्रश्नादिक सबेवा हि० १९६६ प्रश्नादिक सबेवा हि० १९६६ प्रश्नाद समझ स्वाद स० ११६६ प्रश्नाद समझ स्वाद स० ११६६ प्रश्नाद समझ स्वाद स० ११६६ प्रश्नाद समझ स० ११६६ प्रश्नाद समझ स० ११६६ प्रश्नाद समझ स० १६६ प्रश्नाद समझ स० १६० प्रश्ना			७६			
प्रसाद समग्र स० ११६६ प्रसाद समग्र स० ११६६ प्रसाद समग्र स० ११६६ प्रसाद समग्र स० ११६ प्रसाद समग्र स० ११६ प्रसाद समग्र स० ११६ प्रसाद समग्र साथ	प्रकृत शतक	सं०	७६		-	
प्रसाद संग्रह सं क्ष्म ११० प्रश्निक र चरित्र — व के निमयत सं के प्रश्निक रहित है। हिंद ११६ स्ति सं के प्रश्निक रहित है। है। स्ति सं के प्रश्निक रहित है। है। स्ति सं के प्रश्निक संवी है। है। स्ति सं के प्रश्निक संवी संवी संवी संवी संवी संवी संवी संवी			3388	प्राप्तकर चारत्रजावराज	160	3603
प्रस्ताविक दोहा हि॰ ६५६ प्रस्ताविक स्रोत सिंग्याचिक स्रोत सिंग्याचिक स्रोत सिंग्याचिक स्रोत सिंग्याचिक स्रोत सिंग्याचिक स्रोत्त स्राचिक स्रोत्त सिंग्याचिक स्रोत सिंग्याचिक स्रोत्त सिंग्याचिक स्रोत सिंग्याचिक स्रोत्त सिंग्याचिक स्रोत्त सिंग्याचिक स्रोत सिंग्य सिंग्याचिक स्रोत सिंग्याचिक स्रोत सिंग्याच सिंग्यच  सिंग्यच सिं	प्रसाद संग्रह	स •	४१७	->c	٠.	
प्रस्ताविक श्लोक स० ६२८ स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स		हि०	3 × 3			
प्रस्ताबिक श्लोक सं ६० ६२१ प्रेम रास्ताकर हि० १८२६ प्राथम विद्या हि० १८०३ प्राथम विद्या हि० प्राथम व्यवस्थ प्राथम व्यवस्थ प्राथम व्यवस्थ हि० प्राथम व्यवस्थ हि० प्राथम व्यवस्थ हि० प्राथम विद्या हि० प्राथम व्यवस्थ हि० प्राथम व्यवस्थ हि० प्राथम व्यवस्थ हि०		स •	६८६			
प्रस्ताविक सर्वेया हि॰ १००३ अस्युतालंकार स॰ ११६२ प्राव्य विचान हि॰ प्राप्त कांचा स॰ ११६२ प्राव्य कांचा स॰ १६६४ आहत संद प्राप्त प्राप्त संद प्राप्त प्राप्त संद प्राप्त संद प्राप्त प्राप्त संद प्राप्त प्राप्	प्रस्ताविक प्रसोक	# •	६८१			
प्रस्ताविक सर्वेवा हि॰ १००३ अस्तुतालकार स॰ ११६२ प्राइत कोण स० ११६२ प्राइत कोण प्रा० १६६४ प्राइत छंद प्रा० १६६४ प्राइत छंद प्रा० १६६४ प्राइत छंद प्रा० १६६५ प्राइत स्वराण—चंद्रकवि स० १६५ प्रटक्तर यथ प्रतक्तर शाकरण्य—चंद्रकवि प्रा० ११७ प्रतक्तर दोहा—नवयल हि॰ प्राचीन क्षाकरण्—ारिएनि सं॰ ११७ प्रतक्तर दोहा—नवयल हि॰ प्राचीन क्षाकरण्—ारिएनि सं॰ ११७ प्रतक्तर वेवनिका एवं कवित्त हि॰			1315			
प्रसुताशंकार स० ११६२ पूर् प्राइत कोश स० १६४ प्राइत खंदर प्रा० १६४ प्राइत कारा—चंदकवि प्रा० १६५ प्राइत काराए—चंदकवि प्रा० १६५ प्राइत काराए—चंदकवि प्रा० १६५ प्राइत काराए—चंदकवि प्रा० १६५ प्राइत काराए—गंदकवि प्रा० १६०	प्रस्तिक सहैता	हि०	१००३	प्रावध विद्यान	16.0	
प्राहृत कोल स॰ १६५ प्राहृत छोन । स॰ १६५ प्राहृत छोन । स॰ १६५ प्राहृत छोन । स॰ १६५ प्राहृत आह्त अस्तरा — नवकि । स॰ १६५ प्राहृत आह्त अस्तरा — नवकि । प्राहृत आह्त अस्तरा — नारामि स॰ १६७ प्रुटकर यस्य । प्राहृत आह्त अस्तरा — नारामि स॰ १६७ प्रुटकर विहा — नवस्त्र हि॰ प्राहृत आह्त । सि॰			-	OF.		
प्राकृत खंदर प्रा० १६६ फाग की नहूरि हि॰ प्राकृत लावाए—चंद्रकिव सं० १६५ फुटकर यन्य प्राकृत आंकराए—चंद्रकिव प्रा० ११७ फुटकर रोहा—नवयल हि॰ प्राचीन ब्याकराए—गारिएनि सं० ११७ फुटकर दोहा—नवयल हि॰				1		
प्राकृत आकरण—चंडकवि सं० ४१५ पुटकर यथा प्राकृत आकरण—चंडकवि प्रा० ४१७ पुटकर दोहा—नवयल हि० प्राचीन स्थाकरण—गणिनि सं० ४१७ पुटकर देवनिका एवं कवित्त हि०				फाग की लहुरि	हि	<b>१०१</b> ६
प्राकृत आकरण्—चण्डकीव प्रा॰ ४१७ फुटकर दोहा—नवमल हि॰ प्राचीन श्याकरण्—गणिनि सं॰ ४१७ फुटकर वचनिका एवं कवित्त हि॰						8388
ब्राचीन अयाकरसा—गरिसनि सं० ४१७ फुटकर वचनिका एवं कवित्त हि०					हि	\$ 0 Y X
Man					हि	9309
	प्राशासास विधि	fg •	१०६४	फुटकर सर्वया		

ग्रंथ नाम	लेखक '	मावा	पत्र संख्या	प्रथाना लेखक	भावा व	त्र संख्या
				ब्याहली	हि०	१०१=
	व			वद्याज्योति स्वरूप-श्री धराच	ार्थ स॰	२१४
				वहानुत्यकरणः - भास्कराचार्य	₩•	***
बसारा		प्राव	9388	बह्य के ६ लक्षण	स •	११२७
बगलामुखी स्तो		स∙		बहापूजा	#0	5 € o
बधेरवालों के ५	२ गोत्र	हि०		बह्य बावनीनिहालचन्द	हि•	6.8.3
बधेरवाल छंद		हि •		वहा महिमा	हि•	6083
बटोई गीत		हि •		ब्रह्म विलास — भैया भगवतीदा	स हि॰	<b>६७०</b>
बड़ा पिगल		स •	* 5 %	६७१, ६७२ ह६८, १०		
बराजारा गीत		हि ०	€=×	बह्य विलास के घन्य पाठ – भै	या भगवतीद	ास
_	_	_	\$ <b>\$</b> 8 8 8	1	हि०	१००४
बराजारा गोत्-		हि०	8388	बहा बैबर्त पुराए।	₩•	११६२
वसवारो रासो-		हि०	११५१	बहा सूत्र	मं •	११६२
वतीस दोष साम		हि •	₹0€€	बाईस ग्रमक्ष वर्णन	हि०	१४२
बसीस नक्षण छ	प्यय-गगादास	हि ०	યુપ્	बाईस परीवह	हि•	8036
बनारसी विलास-	जगजीवन	हि०	<b>६६</b> =		6088	<b>, ११</b> २६
		•	<b>4</b> 48, 833	बाईस परीपह भूधन्दास	हि०	<b>१४</b> २
		€.	४, १०१२,	बाईम परीवह कथनभगवती	दास हि॰	\$ \$ \$ \$
		१०१	८, १०३१,	बाईस परीष हवसान	हि ०	१००५
	808	¥, १०	17, ११६=	,		\$ 620
बभएा गीत		हि०	६६२	वारत भनुप्रेक्ता	हि ०	१०२३ १०२३
बलिभद्र कृष्णाम	ाया गीत	fgo	8058	बारह अनुप्रका— डालूराम	हि०	१०११
बल मद्रगीत ग्रम		fg o	६६६	नारह अनुम का — कालूरान नारहस्रही	हि०	१०६५
बलियद्र गीत-स		हि॰	६८४	41.6401	180	8 5 X 3
बलिभद्र चौपई	•	हि॰	१०२५	बारहसडीकमल कीर्नि	fg o	१०५३
विसमद्र भावना		हि०	१०२४	बारहसडी कनक कीर्ति	fgo	3.80\$
बलभद्ररास	यशोधर	हि०	११३४	बारहबडी दललाल	fe o	1115
बलिभद्र विनती		fgo	184=	बारहसडी-वेगराज	हि॰	4603
बलियद्र बीनती	मुनिषस्द	हि•	१०७१	बारहसडीसुदामा	fg۰	3066
वित महानरेन्द्र च	रित्र	सं∙	350	बारहसडी - सूरत	180	\$030
बसन्तराज टीका	-भानुषन्द्र गरिए		- 1	\$082, \$083, \$088, \$00	-	
	•	स •	***	₹00 <b>年</b> , ₹00		
बसंत वर्णन-का	लंदास	सं∘	340	बारह मावना	ig.	388
बहसर सीस		हि॰	2048	-	. १० १३, १०६५	
•				,,,	7, 1004	, , - (0

प्रंथनाम लेखक	मावा	पत्र संस्था	प्रथ नाम	लेखक	बावा	पत्र संस्था
कारह भावना व परिषह	fgo	₹33	बावनीवना	सीदास	हि०	£&£
बारह भावना - नवल	fg۰	१०७६	बावनी — हूं गर	सी	हि०	११०५
बारह भावनाभगवतीदास	fg o	2050	बादनीजिनह	(वं	हि •	६८ ह
बारह मासा	हि०	3+3	बाबनीदयास	गगर	हि∙	६८६
₹0€¥,	222x, 222	(₹ <b>, १</b> १६२	बावनीव्र	नागक	हि०	4=6
बारहमासा-स्तिसी	हि०	११०५	बाबनी खपई		हि०	६८४
बारहमासा पाडेजीवन	हि॰	<b>११२</b> ४	बाबनी मति	ोसर	हि०	१०२७
कारहमासा - दीलतराम	हि •	११२६	बावनी हरमु	स	हि०	१०७८
बारहम।सा मुरजीदास	हि •	3309	बासठ मार्गगा	बोल	हि०	৩৩
बारहमासा वर्णन	f∉∘	2054	बाहुबलि गीत-	कस्यास्य की	ने हि∘	६६२
बारहमासावसंत-कोमकरस	त्र हि०	१०१८	बाहुबलि छद-	-कुमुदनःइ	हि०	१०६९
बारहमासा की बीनती-पा	डेराजभूवनः	भूषरा	बाहुबलिनो छद	—वादीचम्द्र	हि०	११६४
	fgo	2205	बाहुबलिनी हि	धा	हि०	1143
बारहमासी पूर्णमासी फल	हि०	१०३६	बाहुबलि वेि -	-वीरबन्द सूरि	हि०	६३८
बारह वन-यग कीति	fgo	2055	वाहुबलि बेलि-		हि०	१११०
अवारहवत गीत—अा० जिनव	ास हि∘	6888	बिम्ब निर्माण		हि०	111€
बारहर्स चौबीसी वनोद्यापन	Ħο	૯૦૩	विम्ब प्रतिष्ठा	महल	स०	<b>5€</b> 0
बारहसी चौतीस वत पूजा-	- णुभचन्द्र स	- 5ĉo	वियालीस ढाएं	Ì	हि०	৩৩
बारहसी चीतीस वत पूत्रा	-श्रोभूषसास	- 560	विहारीदास प्रश		हि०	<b>११६</b> २
बारा ग्रारा महा चौपई बच	—- व ० रूपजी	r	बिहारी सतसई			६२६
	हि०	३५७	६२ विहारी सत-ई	७, १००२, १ जीवर	०३७, १०: हि०	=, ११३⊏ ६२७
बारा ग्रारा का स्तवन - ऋ	एमो हि०	७३७	बोजउजावलीरी बोजउजावलीरी		हि०	7 v 3
बाल विकित्सा	e B	¥εο	वाज्यकापलार बोजकोष	34	.हर स•	<b>६</b> २१
<b>ब</b> । सत्तत्र	स०	ሂፍዕ	बोस तीथं कर	mar of t	हि०	8028
बासतंत्र भाषाप० कल्या	सदास स०	¥=0		मनःदाः जकडी हर्षकी	•	2000
क≀स्र त्रिपुर सुन्दरी पद्वति	# o	६२१	ı	जग्रमाल—हर्पः जग्रमाल—हर्पः		588
बाल प्रबोध विश्वतिकामं	ोतीलाल पन्ना	सास	•	प्रजाजौहरी <i>व</i>	-	433
बाबबोधमंजादित्य	सं०	422		रूजाजाहरार पूजाधानजी		
बालबोध ज्योतिय	Ħ•	***	बीस तीर्थं कर		हि०	\$007
श्रावनाक्षर	গা	१०४७		रूपः तवनज्ञानभूष		2834
बावन ठ गों की चौपई	हि०	१०४८	बीस विरहमान		हिं।	2222
बावन बीराका नाम	₩•	६२१	बात । परहुनान बीस विश्हमान		, वृज् स o	\$32
बावनी	हि०	६६६	410 14 (6414	4	हि०	8888
बायनी — छोहल	हि॰	3¥3			•	११२=
	•					

ग्रंचनाम लेखक	भावा	पत्र सख्या	(प्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संस्था	
बीस विरहमान सर्वयाविद्य	ासागर हि	£003	मक्तामर सटी	<b>F</b>	हि	१०४३	
बीस विदेहक्षेत्र पूत्रा-शिकार	वन्द हि०	<b>८६</b> १	भक्तामर सर्वय	т	हि •	1058	
बीस विदेहक्षेत्र पूजाचुन्नील	ाल हि∘	588	भक्तामर सिद्ध	पूजा ज्ञानसा	गर स	१११=	
बुद्धि प्रकाश — टेकचन्द	हि०	885	मक्तामर स्तोत्र	—मागतु <sup>ं</sup> गाचा	यं स॰	৬ইল	
		6.8.3	48, UY	०, ७४१, ७४२	, 508,	exa, exa,	
बुद्धि प्रकाश —कवि घेल्ह	हि॰	€ 33	१०११, १०१	२, १०२२, १०	३५, ११	७, १११८,	
बुद्धि प्रकाश रासपाल	हि०	६९८	l	११२२, १	१२४, ११	२७, ११४३	
बुद्धि रास	हि०	<b>६३</b> =	भक्तामर ऋदि	मत्र ग्रर्थ सहि	हत स॰	1170	
		e=x, ee0	भक्तामर स्तोत्र	। (ऋदिसत्र स	हित) स०	985	
बुद्धि विनासजस्तराम	हि०	१४३ ६६२		(ऋषियत्र स			
बुधजन विलायबुधजन	हि॰	44C 44E		कथा-विनोदी	•	XEX	
बुधजन सतसई	हि॰	44c	भक्तामर स्तोत्र		सं०	४६४	
Ann unas	,60	१०४६			-	YEX	
		१०६१		कथानथमर	न हि॰	४६५	
बु <b>धिरा</b> स	हि॰	205X	2	: कथः—न्यमरः टीका—ग्रमरः			
<b>લુાવ રા</b> સ	160		भक्तामर स्तीत		मन्द्रारस सक		
	₹ •	6684	भक्तामर स्ताव	CIPI	40	683	
बुधाष्टमी कथा		863			٠.	988	
बूड़ा चरित्र—जतीचन्द	<b>€</b> •	8838	भक्तामर स्तोत्र	पूजा	हि०	१०३६	
बोष सत्तरी	हि०	€=१			•	१०८५	
बकचून की कथा	हि०	१०४१	भक्तामर स्तोव		-	<b>=€</b> ₹	
_	_	1118	भ कामर स्तोत्र			# £ \$	
वंकनूलरासव० जिनदास	हि∙	₹३∈	मक्तामर स्तोत्र		स॰	<b>=</b> € ₹	
वंकचोर कथा (धनदत्त सेठ की			मक्तामर स्तोत्र उद्यापन पूजाकेणवसेन				
	हि•	AER			सं०	<b>= 6 ?</b>	
बंघतत्व —देवेन्द्र सूरि	সা৹	99	भक्तामर स्तोत्र			<b>ወ</b> ሄሄ	
बंधफल	सं •	X=0	भक्तामर स्तोत्र		•	VYV	
बंध्यास्त्रीकल्प	हि०	XΕΦ	मकामर स्तोत्र	भाषा न <b>बमर</b>			
		ı			हि०	688	
भ		- 1	मक्तामर स्तोत्र	मापाअयवन			
_		ı		_	हि•	48.8	
मक्तामर पूजा-विश्वभूषण	सं•	1060	मन्त्रमर स्तोत्र	माषाटीका		7	
मक्तामर पूजा विद्यान—श्री भूव		१११२			हि∙	484	
मक्तामर मावा—हेमराज	ۥ	530	मक्ताबर स्तोत्र	मापा टीका—			
1020, 1120, 1184, 1186	E, ११६:	१, ११६२			fξ۰	486	

दंबनाम लेखक मा	वा	पत्र संख्या	ग्रंथनाम लेखक भ	वा	पत्र संस्था
मक्तामर स्तोत्र मावा—हेमराज	हि०	68£,	मगवती श्राराधना माषापं०स	दासुस	कासलीवाल
	¥	¥७, €¥5,		राज०	१४६
*	ŧ	:o, १०६¤,			१४७
		२२, ११२६	भगवती स्तोत्र	हि•	७४०
मक्तामर स्तीत्र भाषा (ऋद्वि मत्र			मगवतीं सूत्र	সা•	90
	हि०		मगवती सूत्र वृति	40	99
		७४२	भगवद् गीता	सं०	<b>२१४</b>
भक्तामर स्नोत्र भाषा टीका—गुणा					११६३
	सं०		मज गोविन्द स्तोत्र	₹ •	-
मक्त मर स्तोत्र वृत्ति — कनक कुश			मट्टारक पट्टावली	हि०	
भक्तामर स्तीत्र वृत्ति—ग्त्नथन्द्र	₩•				\$ \$ K R
		9X5	मट्टारक परम्परा	हि०	
भक्तामर स्तोत्र वृत्ति— इ० रायमः	ल सं	০ ৬४৬	भडली	स०	* * *
		હજ્ર	<b>भडली</b>	हि०	
मक्तामर स्तोत्रावचूरि	स०	380			४५६
मक्तामर स्तात्रावचूरि	स०	ه پرور	मक्रेली पुरासा	हि०	४५६
मक्तामर स्तोत्र सटीक-हर्षकीति	सं०	8608	भडली वर्णन	हि०	४५६
भक्तामर स्तोत्र सटीक	₩ •	2834	भडली विचार	हि०	
भक्ति निषि	हि	6028	भडली वाक्य पृच्छ।	हि०	
मिक्त पाठ	स०	१८२	भडली वचन	हि०	
		888	भडली विचार	हि०	
मिक्त पाठ	स०		मद्रवाहुकया—हरिकृष्ण	हि०	
भक्ति पाठ संप्रह (५७)	स०		भद्रबाहु गुरु की नामाक्ली	हि०	
मक्तिमाल पद — बलदेव पाटनी	हि०		मद्रबाहु चरित्ररत्ननिद	स०	३५८
मक्ति बोध-दासद्वैत	गु०				3 % €
मगवती झाराधना	स		भद्रबाहु चरित्र नाषाकिश्वनसि	-	
भगवती भाराचना — शिवार्य	प्राव		}	हि॰	
			मद्रबाहु वरित्र भाषावम्पाराम	-	
भगवती ग्राराचना (विजयोदया टी			मद्रबाहु चरित्र सटीक	हि०	३६२
	स	, रब्द १४६	भद्रबाहु चरित्र-श्रीघर	भप०	
					3 € \$
भगवती प्राराधनाटीका प्र	1०स	688	मद्रबाहु रास — व ० जिनदास	हि •	
भगवती झाराधना टीका नन्दिन	ग्गि		मद्रबाहु सहिता मद्रबाहु	₹	१४७
	1०सं ५	884			***

<b>१</b> २६२ ]			[ 1	'बानुकम	<b>रिएका</b>
प्रंच बाम सेलक	श्राचा पत्र	संख्या	ग्रंथनाम लेखक म	•	। संख्या
मग्रहर स्तोत्र	सं०	248	भ्रमरगीतबीरचन्द	हि॰	6636
ममहर स्तान भयहर स्तोत्र (गुरु गीता)	सं०	৬২০	भ्रमर सिज्भाय	हि॰	8 8 X E
	स.•	४६५	भागवत	स०	88€3
भरटक कथा भरत की जयमाल	हि•	१११७	मागवत महापुरास	f6 •	368
भरत का जयनाय भरत बाहुबलि रास	fgo	2045	भागवत महातुरागा	सं०	93€
भरत वाहुवाल राज भर्तुंहरि मतक	हि॰	8308	भागवत महापुरास भावार्थ दी	का (प्रथम	स्कथ)
भतु हरि शतक मर्तु हरि	स०	488,		श्रीधर	3 8
भविहार सतमा नपु छ। र		११६१,	भागवर महापुराण मावार्थ दीपि	का (द्वि०	स्कघ)
		<b>१</b> १६२	, ,	श्रीवर	₹€
मर्तृहरि शतक भाषा	हि॰	<b>£</b> £₹	भागवत महापुरामा भःवार्थ दी	का (तृ०	स्कंच)
भतुहार गतक नाया भतुहिर शतक टीका	₩•	६६२		श्रीवर	₹ €
मतुंहरि इतक मावासव	र्ट चनार्वासर		भागवत महापुराल भावार्थ दी	पेका (च०	स्कध)
मतुहार सतक नापा—तप	हि० हि०	६१२		श्रीघर	3 €
भले बावनी-विनयमेरु	हि॰	₹3€₹	भागवत महापुराण भावार्थदी	विका (सह	र स्थलका
भवदीपक भाषा — जोधराज		218	भागवत महायुराला नामाम पा	श्रीक्षर	3.5
भव वैराग्य शाक	द्रा०	<b>२१४</b>	भागवत सहापुरासा भावार्थ दी		
भवानी बाई केरा दूहा	शज०	409	भागवत महायुरासा भागाम पा	श्रीधर	٦
भवानी सङ्गरत नाम स्तोत	<b>स∘</b>	৩২০			
अविसयत्तकहा धनपाल	ध्य	४६३	मागवत महापुराए। भावार्थ दी	। प्रकार अन्तर श्रीधर	7 (TV4)
4711111		६५६	भागवत महापुराण भावार्थ दी		
भविष्यदत्त कथा—व० रा	पमल्ल हि॰	856	भागवत महापुराल नावाय या	श्रीधर श्रीधर	₹€
भावव्यदत्तं कथः—४० रा		87. E88,	भाग रत महापुरासा भावार्ष दी		
		₹8=	मागात महापुरास मावाच दा	। १२०। (४२ श्रीवर	78
		१०६२	į.		
भविष्यदत्त चौपई	हि॰	£95	भागवत सहापुरासा भावार्थ दी		
मविष्यदत्त चौपई — इ० र		\$ 6 3		श्रीधर `(	₹€
माबय्यदत्ता चापइ—क्रवर		, १०३२ १०३२ (०)	भागवत महापुराण माबार्थ दी	पका (द्वाद	
_				श्रीघर	₹:
मविष्यदत्त रास-कि॰ रा		6 6 0	भामिनी विनासपं० अगन्ना	ष स०	Ę
	६६८, १०२		भारती राग जिसांद गीत	180	161
भविष्यदत्त रास व ० जि		353	भागती लघुस्तवनभारती	暖。	es
मविष्यदत्त रास-विद्याभूष	स्सासूरि हि॰	3 € 3	मारानाह्वनि सज्भाय	हि०	₹ • 3
		<b>११३७</b>	भाव त्रिभगीनेमिचन्द्राचार्य	NI.	,
स्रमरगीत पृकु ददास	हि०	६२७	1		181

साब दीपक सावा हि॰ १४७  सावप्रविषक । हि॰ २१४  सावप्रविषक । हि॰ २१४  सावप्रविषक । स॰ १४७  सावप्रविका । स॰ १४७  स्वाप्रविका । स॰ १४७  स्वाप्रविका । स॰ १४८  सावप्रविका । स॰ १४८  स्वाप्रविका । स॰ १४८  सक्तिप्रविका । स॰ १४८  सक्तिप्रविका । स॰ १४८  सक्तिप्रविका । स॰ १४८  सक्तिप्रविका । सि॰ ११९४  सक्तिप्रविका । स॰ १९९४  सक्तिप्रविका । सावप्रविका । स॰ १९९४  सक्तिप्रविका । स॰ १९९४  सक्तिप्रविका । स॰ १९९४  सक्तिप्रविका । सि॰ १९९४  सक्तिप्रविका । सि॰ १९९४  सक्तिप्रविका । स॰ १९९४  सक्तिप्रविका	प्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र स	ख्या	ग्रंच नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
सावप्रवास साथ स० ४६० सावप्रविष्ठा स० ४६० सावप्रविष्ठा स० ४६६ भावप्रवास हि० ६०६, १८६६ भावप्रवास स० ४६६ भावप्रवास हि० ६०६, १८६६ भावप्रवास स० ४६६ भावप्रवास स० ४६६ भावप्रवास स० ४६६ भावप्रवास स० ४६६ भावप्रवास स० १४७, १८६६, १८६८ भावप्रवास स० १४५, १८६८ भावप्रवास स० १४५, भावप्रवास स० १८६ भावप्रवास स०	माव दीपक भा	वा	हि	,	१४७	भुवन भानु केव	लीचरित्र	स •	3 6 8
सावप्रकाश — साव विश्व स० १८० । सावप्रतिषिका स० १४७ । सावप्रतिषिका स० १४७ । सावप्रतिषिका स० १४७ । सावप्रतिष्क स० १४५ । सावप्रति हि० १०४८ । सावप्रति हि० १०४८ । सावप्रति प्रति १४० । सावप्रति — वागराज स० १४७ । सावप्रति प्रति १४० । सावप्रति — वागराज स० १४० । सावप्रति — वागराज स० १४८ । सावप्रति — वागराज हि० १४१ । सावप्रति — वागराज हि० १४४ । सावप्रति — वागराज हि० १४१ । सावप्रति — वागराज हि० १४१ । सावप्रति — वागराज वागराज वागराज हि० १४१ । सावप्रति — वागराज वागराज हि० १४१ । सावप्रति — वागराज वागराज वागराज वागराज हि० १४१ । सावप्रति — वागराज वागराज वागराज हि० १४१ । सावप्रति — वागराज वागराज वागराज हि० १११ । सावप्रति — वागराज वागराज वागराज हि० १११ । सावप्रति — वागराज वागराज वागराज हि० १११ । सावप्रति — वागराज वागराज हि० १११ । सेवाप्रता — वागराज हिव । सेवाप्रता	मावदीपिकाः		हि	ı	२१४	भूकप एवं भूच	ाम वर्णन	हि०	६१६
सावप्रदेशिका स० १४७  सावप्रत स० १४७  सावप्रत स० १४७  सावप्रत नगरराज स० १४७  प्रत १४६२  सावप्रत नगरराज स० १४७  प्रत १४६२  सावप्रत नगरराज स० १४७  सावप्रत नगरराज स० १४७  सावप्रत नगरराज स० १४७  सावप्रत नगरराज स० १४७  सावप्रत नगरराज स० १४५  स्वाप्त चौबीसी माषा—स्वयराज हि० १४१२  स्वाप्त चौबीसी माषा—स्वयतीव हि० १४२  स्वाप्त चौबीसी माषा—स्वयतीव हि० १२२  स्वाप्त चौबीसी माषा—स्वयतीव हि० १२२२  स्वाप्त प्राप्त चौबीसी माषा—स्वयतीव हि० १२२२  स्वाप्त चौवीसी माषा—स्वयतीव हि० १२२२  स्वाप्त चौवीसी माषा—स्वयतीव हि० १२२२  स्वाप्त चौबीसी माषा—स्वयतीव हि० १२२२२  स्वाप्त चौबीसी माषा—स्वयतीव हि० १२२२२२२२२२२२२	मावप्रकाश — भ	। विस्थ	स	,	¥۲۰				<b>€</b> ⊌₹,
सावपाल सालि हि॰ १०६८ सावपालता हि॰ १०६८ सावपालता हि॰ १८६८ सावपालता हि॰ १८६ सावपालता हि॰ १८६८ सावपालता हि॰ १८६८ सावपालता हि॰ १८६८ सावपालता	भावप्रदीपिका		₩ •	,	१४७	.,	"	808	¥. ११६३
बाबना बत्तीसी हि॰ १०६८ अ०१, ७०६१, ७०६८, सावजतक - नागराज स० १४७, १९६२ प्रावस्थह— देवसेन प्रा० १४८ सावस्थह— देवसेन प्रा० १४८ सावस्थह— जन्तमृति प्रा० ७६, १०६८ प्रावस्थह— जन्तमृति प्रा० ७६, १०६८ प्रावस्थह रांका सं० १४८ प्रावस्थ वांविसी— प्रानतार स० १८८ प्रावस्थ वांविसी— प्रानता वांविसी— प्रानता कं ठ०० १८८ प्रावस्थ वांविसी— प्रावस्थ सं० १८८ प्रावस्थ वांविसी— प्रावस्थ वांविसी— प्रावस्थ सं० १८८ प्रावस्थ वांविसी— प्रावस्थ वांविसी— प्रावस्थ वांविसी— प्रावस्थ सं० १८६ प्रावस्थ संवस्थ संवस्थ संवस्थ संवस्थ संवस्थ संवस्थ संवस्य संवस्थ संवस्य संवस्थ संवस्य	भावफल		₹₹		४४६	भ गल चलजिङ	तिका		
साव सावतक - नागराज स० १४७, ०४१,११२२  प्रावस्यह—दंबसेन प्रा० १४८  भावन्यव्र—वंबसेन प्रा० १४८  भावन्यव्य—वंबसेनि मोषा—स्वयराज हि॰ ११२२  भ्याव्यव्यव्य—वंबसानाय स्व० १६४  भावन्य वंबसेनि मोषा—स्वयंव्यव्य स० १६४  भावन्य वंबसेनि माषा—स्वयंव्यव्य स० १६४  भावन्य वंबसेनि माषा—स्वयंव्यव्य स० १६४  भावन्य वंवन्येनि—प्रान्यव्य स० १६४  भावन्य वंवन्येनि—प्रान्यव्य स० १६६४  भावन्य वंवन्येनि—प्रान्यव्य स० १६६४  भावन्य वंवन्येनि—प्रान्यव्य स० १६६४  भावन्य प्राव्यव्य स० १६६४  भावव्य प्राव्यव्य स० १६६४  भावव्य प्राव्यव्य स० १६६४  भावव्य प्राव्यवेनि स्वय्य—सिलयेष हि॰ १०६४  भ्याव्य प्राव्यते कव्य—सिलयेष हि॰ १०६४  भ्याव प्राव्यत्य स० १६६५  भाव्य प्राव्य मुव्यः हि॰ १०६४  भाव्य प्राव्य स्वयः हि॰ १०६४  भाव्य प्राव्य स्वयः स० १६६५  भाव्य प्राव्य स० १६६५  भाव्य प्राव्य स० १६६०  भाव्यव्य स० ३६४  भाव्यव्य स० ३६६  भाव्यव्य स० ३६४  भाव्यव्यव्य स० ३६४  भाव्यव्यव्य स० ३६४  भाव्यव्य स० ३६४  भाव्यव्य स० ३६४  भाव्यव्यव्य स० ३६४  भाव्यव्य स० ३६४  भाव्यव्य स० ३६४  भाव्यव्यव्य स० ३६४  भाव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव	मावना बत्तीसी		हि	, 8	०५५	,g	3		,
प्रश् , ११६२ । प्रावसमहरू—देवसेन प्राव १८६२ । प्रावसमहरू—देवसेन प्राव १८६२ । प्रावसमहरू—जान्देव सं	भावशतक - ना	गराज	<b>स</b> ०		१४७,				
भावसमह — दवसन प्रा० १४८ । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।			· ·	५१, १	188		·		
भावसमाह — वासवव से १४६ । १४६   १४६	भावसग्रह—देव	सेन	प्राष्ट	,	१४5				
प्रावस्यहर-जू-जू-गृहान प्रा० ७६- १४६, १४६-  सावस्यहर्शका सं० १४६-  सावस्यहर्शका सं० १४६-  सावस्यवाधीस-प्रमात्य स० ६६४-  सावस्यवाधीस-प्रमात्य स० ६६८-  सावस्य स्वत्य-बागुण्डराय स० १६६३-  सावस्य प्रमात्य स्वत्य-बागुण्डराय स० १६६३-  सावस्य प्रमात्य स्वत्य-बागुण्डराय स० १६६३-  सावस्य प्रमात्य प्रमात्य स० ६६४-  सावस्य प्रमात्य प्रमात्य स० ६६०-  स० १६६०-  स० १६६०-  सावस्य प्रमात्य प्रमात्य हि० १६६६-  सावस्य प्रमात्य प्रमात्य हि० १६६६-  सावस्य प्रमात्य प्रमात्य हि० १६६५-  स्वत्य स्वत्य-स्वात्य स० ३६५-  स्वत्य स्वत्य-प्रमात्य स० ३६५-  स्वत्य स्वत्य स० ६०-  स्वत्य स्वत्य स० ६०-  स्वत्य स्वत्य स० ३६५-  स्वत्य स्वत्य स० ६०-  स्वत्य स्वत्य स० ६०-  स्वत्य स्वत्य स० १६७-  स्वत्य स्वत्य स० ६०-  स्वत्य स्वत्य स० १६७-  स्वत्य स्वत्य स० ६०-  स्वत्य स्वत्य स० स० १६७-  स्वत्य स्वत्य स० स० १६७-  स्वत्य स्वत्य स० ६०-  स्वत्य स्वत्य स० स० १६७-  स्वत्य स्वत्य स० स० १६०-  स्वत्य स्वत्य स० स० स० स० १६०-  स्वत्य स्वत्य स्वत्य स० १०-  स्वत्य स्वत्य स० स० १६०-  स्वत्य स्वत्य स० स० १६०-  स्वत्य स्वत्य स० स० १६०-  स्वत्य स्वत्य स०	भावसम्बद्ध वा	मदे <b>व</b>	<b>#</b> 0	,	885	भूपाल चाबास	। मावाभक	यराजाहरू	
साहमता हुंगे । संव रुध्य स्तोष्ठ ख्रण्य-विद्यामाण्य हुं । १००३ सेरबाट्क संव हिं । १४२ सेरबाट्क संव । ६२४ सेरबाट्क स्ति । ६२४ सेरबाट्या संव । १४६ संव प्यास्तो कव्य—मान्तवेष हि । १०३१ संव प्राप्ता संव । १६० संव स्तोष संव संव । १६० संव स्तोष संव । १६० संव स्तोष संव । १६० संव स्तोष संव । १६० संव स्ताष्ट संव । १६० संव संव संव संव संव संव संव संव । १६० संव	म(बसप्रहश्रु	तमुनि							
भारतारक स० ७५०  भारता वांशीसी—प्रपतित स० ६६४  भारता वांशीसी—प्रपतित स० ६६४  भारता वांशीसी—प्रपतित स० ७६४  भारता वांशीसी—प्रपतित स० ७६४  भारता वांशीसी—प्रपतित स० ७६४  भारता वांशीसी—प्रपतित स० १६६६  भारता वांशीसी—प्रपतित स० १६६६  भारता वांशीस सम्म क्रिक्सेस्य स० १६६६  भारता प्रपत्—वांगुण्डराय स० १६६६  भाग प्रपत्म चांगुण्डराय स० ३६६६			*	¥4, <b>१</b>	oxs				
मावना बोबीसी—पपनित सं १६४ में स्वा प्रमावन सां १६९ मावना बनानी—प्रमितनित सं ७ ४४० मावना विननी—प्रणावना हि० १४२ भेरवा प्रमावनी कव्य—पानित्र वि १६०१ भेरवा प्रमावनी कव्य—पानित्र वि १८६१ भेरवा प्रमावनी क्षां १८६४ भेरवा प्रमावनी क्षां १८६४ भेरवा प्रमावनी क्षां १८६४ भेरवा प्रमावनी क्षां १८६४ भेरवा प्रमावन क्षां १८६४ भेरवा प्रमावनी क्षां १८६४ भेरवा प्रमावन क्षां १८६४ भेरवा प्रमावन क्षां १८६४ भेरवा प्रमावन्य हि० १८६४ भेरवा प्रमावन क्षां १८६४	भावसग्रह टीका		सं	•	\$8€	1 2	छ्प्य-ावद्या		
प्रावना वनाती—प्राप्तवाति तं ७ ७५० प्रावना विनती—व ० जिनदास हि ० १५२ भावना विनती—व ० जिनदास हि ० १५२ भावना वानती—प्राप्तवाति तं ० १६६३ भावा प्राप्तवाति विज्ञानाव वंवानन भट्टाचार्ति सं ० २६० भावा प्राप्तवा—प्राप्तवाति हि ० १६४, भावा प्राप्तवा—प्राप्तवाति हि ० १६४, भावा प्राप्तवा—प्राप्तवात्ति हि ० १६४, भावा प्राप्तवा चेवानन पर्वाचार्ति है ० १६५ भाव पर्वाच चेवानन सं ० १६५ भाव पर्वाच चेवानन सं ० १६६ भाव पर्वाच चेवान सं ० १६६ भाव पर्वाच चेवानन सं ० १६६ भाव पर्वाच चेवानन सं ० १६६ भाव पर्वाच चेवानन सं ० १६६			स	•	-	1 .		•	
प्रश्वन विजनी— ब जिनदास हि ० १२२ अरवा पषावती कवच—मह्लिषेष हि ० १०३१ अरवा पषावती कवच—मह्लिषेष हि ० १०३१ अरवा प्रणान प्रणान प्रणान स्वाच स्वच्या से ० ११६३ अरवा प्रणान स्वच्या से ० ११६३ अरवा प्रणान से ० ११६५ अरवा स्वाच से ० १६६४ अरवा स्वाच से ० १६६४ अरवा स्वाच से ० १६६४ अरवा स्वाच माराव्या से ० १६६४ अर्थ स्वाच से ० १६६४ अर्थ स्वाच प्रणान माराव्या से ० १६६४ अर्थ स्वाच प्रणान माराव्या से ० १६६४ अर्थ स्वच्या से ० १६६४ अर्थ स्वच्या से ० १६६४ अर्थ से अर्थ स्वच्या से ० १६६४ अर्थ से						ł.			
भावनायार तयह—बायुण्डराय सं० ११६२ भरवा पूजा हि० १०४६ भरवा पूजा सं० ११६३५ भरवा प्रजा संग ११६३५ भरवा प्रजा — बायुण्ड स्व १६० १६५५ भरवा प्रजा — बायुण्ड स्व १६० १६५५ भर्ग मात्रा परिच्छेर—विश्वनाय पंचानन भट्टामार्थ संव १६० १६६५ भर्ग मात्रा प्रवास निव १६० १६६५ भर्ग मात्रा प्रवास निव १६० १६६५ भर्ग मात्रा प्रवास निव १६६६ भरवा प्रवास निव १६६६ १६६६ भरवा प्रवास निव १६६६ भरवा प्रवास निव १६६६ भरवा प्रवास निव १६६६ भरवा प्रवास निव १६६६ भरवा प्रवास निव १६६६ १६६६ भरवा प्रवास निव १६६६ १६६६ भरवा प्रवास निव १६६६ भरवा प्रवास निव १६६६ १६६६ भरवा प्रवास निव १६६ भरवा प्रवास निव १६६६ भरवा प्रवास न								_	
सांव समय प्रकरण म० ४१७ अरवा स्तोत्र सं० ११३४ अरवा स्तोत्र समय प्रकरण म० ६६४ अरवा स्तोत्र मोमाचन्द हि० १००४ अरवा स्तोत्र —विश्वनाय वंचानन महानार्य सं० २६० अरवा स्तोत्र —विश्वनाय वंचानन महानार्य सं० २६० अर्थ स्तात्र प्रवाद्य स्ति १९१२ मोज वरित्र —मवानीयास व्याप्त हि० १९१२ मोज वरित्र —मवानीयास व्याप्त सि० १६६० मोज प्रवाय स० ३६४ मुझन होएक —पद्य प्रज नृति स० ४४७ मन्ती पारसनाय—माणकन्द हि० १०४८ मुझन दोषक होता म० ४४७ मन्ती पारसनाय—माणकन्द हि० १०४८ मुझन दोषक होता—सिहतिनक सृति स० ४५७ मन्ती पारसनाय—माणकन्द हि० १०४८	भावना विनती	व्र० जिनदा				1.	ता कवचमा		
प्रावाप्टक मिंच १६० १००४ प्रेक सबाद हि॰ १००४ प्रेक सबाद हि॰ १००४ प्रेक सबाद हि॰ १०६४ प्रेक सबाद हि॰ १६६२ प्रेक सावा प्रावाप्याप्ट हि॰ १६६२ प्रेक सबाद हि॰ १६६२ प्रेक सबाद हि॰ १६६२ प्रेक सबाद हि॰ १६६२ प्रेक सबाद हि॰ १६६२ प्रेक प्रवाप्ट प्रेक मावा प्रवार्थ टोका—मारावर्ध्याव हि॰ १०६५ प्रेक प्रवाप्ट हि॰ १६६२ प्रेक प्रवाप्ट हि॰ १६६२ प्रेक प्रवाप्ट हि॰ १६६३ प्रक हि॰ १६६४	भावनामार मग्र	ह—चामुण्डरा	य सं	• 1				7	
भाषा परिच्छेर—विश्वनाय पंचानन भट्टाचार्य सं ० २६० भीज चरित्र हि० १९१२ भीज चरित्र में विष्ण १९१२ भीज चरित्र म्यानीयास व्यास हि० १९१२ भीज चरित्र म्यानीयास व्यास हि० १९१२ भीज प्रत्य प्रवास विष्ण १९६६ १९१४ भीज प्रत्य प्रवास विष्ण १९६६ १९१५ भीज प्रत्य प्रवास विष्ण १९६५ भीज प्रत्य व्यास विष्ण १६६५ भीज प्रत्य स्वास विष्ण १६६५ भीज प्रत्य स्वस्त स्वास स्वस्त स्वस्त स्वास स्वस्त स्वास स्वस्त स्वस स्वस	भावि समय प्रव	हरस्	<b>स</b>	0			->		
सं० २६० भोज बरिज हि॰ १११२ भोज बरिज हि॰ १११२ भोज बरिज मावा पूर्या —जसबरतिहिं हि॰ १६४, ११६२, ११६२ भोज बरिज —पवालाल सं० ३६४ भोज प्रज्या —पवस्ताल सं० ३६४ भोज प्रज्या —पवस्ताल सं० ३६४ भोज प्रज्या — पवस्ताल सं० ३६४ भोज प्रज्या — पवस्ताल सं० ३६५ भाज प्रज्या — प्रत्य — प्रज्या — प्र						l .	– शामाचन्द		
प्रशास प्रवस्य — जसबन्तसिह हि॰ ११५ भीज प्रदेश — अवाशीयास व्यास हि॰ १६५ भीज प्रदेश — पश्चिम सिंह १६६ भीज प्रदेश — सिंह १६६ भीज प्रवेश — सिंह १६६ भीज प्रवेश — पश्चिम सिंह १६६ भीज प्रवेश — पश्चिम सिंह १६० १६६ भीज प्रवेश — पश्चिम सिंह शिक्ष — पश्च प्रवेश में १५७ भूजन दीपक सिंह भीज प्रवेश भीज हिल्ल सिंह सिंह १६६ भीज प्रवेश — प्रवेश भीज हिल्ल सिंह सिंह १६६ भीज प्रवेश — प्रवेश भीज हिल्ल सिंह सिंह सिंह १६६ भीज प्रवेश — प्रवेश भीज हिल्ल सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह	भाषापरिच्छेद	विश्वनाथ		-		4			
रि१६८, ११६३ मोज प्रवन्ध स० ३६४ माज प्रवन्ध स० ३६४ माज प्रवन्ध स० १८०६ मुक्त वीपक निर्माण में १८०४ महिली प्रवन्ध स्वापक निर्माण में १८०४ महिली प्रविक्र स्वापक निर्माण में १८०४ महिली प्रवन्ध स्वापक निर्माण में १८०४ महिली प्रविक्र स्वापक निर्माण में १८०४ महिली प्रवन्ध स्वापक महिली प्रवन्ध स्वापक निर्माण में १८०४ महिली प्रविक्र स्वापक महिली प्रवन्ध स्वापक महिली प्रवन्ध स्वापक महिली प्रविक्र स्वापक महिली प्रविक्र स्वापक महिली प्रविक्र स्वापक महिली प्रवन्ध स्वापक महिली प्रविक्र स्वापक महिली स्वापक महिली स्वापक महिली स्वापक महिली स्वापक महिली स्वापक महिली स्वापक स्वपक स्वापक स्व						1			
माथ। भूषणा टीका—नारायणवास हि॰ १०१५ मोज प्रवत्य स० ३६५ मोज राज काव्य स० ३६५ में ते राज काव	मावा भूषरा—	जसबन्तसिह				1 .		•	
पुननकीति गीत हि॰ ६६९ मोज राज काव्य सं॰ ३६५ पुननकीति पुना सं॰ ६६५ पुनन हार हि॰ ११६३ मा प्राप्त सं॰ १०६६ पुनन दीपक संग प्राप्त सं॰ १८६६ पुनन दीपक टीका मं॰ १५७ मक्सी पारसनाय— मागवन्द हि॰ १०४८ पुनन दीपक होति— सिहतिसक सूरि सं॰ १५७ प्राप्त होतामा हि॰ १९४८ प्राप्त होतामा हि॰ १९४८ प्राप्त होतामा हि॰ १९४८		)				1	५० वल्लाल		
दुबनकोति पूजा सं॰ ६६२ प्रुवन दोषक सं॰ १००६ प्रुवन दोषक —पद्म प्रजन मृदि सं॰ ४,५७ प्रुवन दोषक टोका सं॰ ४,५७ मक्ते (मध्यलक क्योतिय ) सं॰ ४,६५ प्रुवन दोषक टोका सं॰ ४,५७ मक्ते पारसनाव — मागकाद हि॰ १०४८ प्रुवन दोषक होत्ति—सिहतिनक सृदि सं॰ ४,५७						3			
प्रश्न हार हि॰ ११६२ प्रवन दोपक सं॰ १००६ प्रवन दोपक —पद्म जन नृति स॰ ४५७ प्रवन दोपक टोका मं॰ ४५७ मक्सी पारसनाब — मापचन्द हि॰ १०४८ प्रवन दोपक होत्ति—सिहतिनक सूरि सं॰ ४५७	_					माजराजका	<b>०</b> य	₩•	44%
प्रवन दीपक सं रै००६ प्रवन दीपक —पद्म प्रज नृति स० ४१७ प्रवन दीपक टीका म० ४१७ मक्ती पारसनाय — भागवन्द हि० १०४८ प्रवन दीपक हित्त सहितसक सृति सं० ४५७	_	ır				1	137		
पुरन दोगक —पद्म प्रम मृति स० ४१७ मकरत (मध्यलान क्योतिय) स० ४१७ मुक्त दोपक टोका म० ४१७ मक्ती पारसनाव — मागवन्द हि० १०४८ मुक्त दोपक ट्रिलिंग —िसहतिसक सूरि सं० ४५७ मण्डल रहा बदमास हि० १९४४	-		-			l	71		
हुनन दीशक टीका मं० ४५७ मनसी पारसनाब— मागकन्द हि० १०४८ प्रुवन दीशक हत्ति—सिहतिनक सूरि सं० ४५७ स्वर्णकरहा जयमास हि० १९६४						मकरंद (मध	यलभ्न उयोतिष	) संद	. ¥¥6
मुबन दीपक वृत्ति—सिहतिसक सूरि सं० १५७ मसावरहा जयमास हि० ११६४	-					1			
after the self- after the self- are						ı .		-	
	•	ात-ासहातः			***				
344 (441)		A	-		440				
भुदन दीपक माथा टीका—पद्मनित्द सूरि सः । सार्यभद्भना रा छन्दराजरत्न पाठक हि॰ ७१२ सः १०४६	मुदन दापक म	सवाटाका	पचनान्द । स	,o Zic	133				

ग्रंथनाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या	. प्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संस्था
मदनजुरम —कृषराज	हि•		मल्लिनाच गीत			१०२४
	-	π, <b>१</b> ₹∙€	महिलनाथ परि		-	3 <b>5</b> X
मदनपराजय जिनदेव सूरि	सं ०		मल्सिनाथ चरि			355
		Ę o o	मस्तिनाय परि			री
मदान्ध प्रबोध	सं०	8868			f₹∘	344.
मधुकर कलानिधि -सरसुति	हि॰	६२७			.6-	3 6 0
मधुमालती	हि॰	१०३७	मस्लिनाथ पुरा	ता	ŧi o	767
मधुमालती कथा	हि०	४६६	मल्लिन। च पुरा			
मधुमालती कथाचतुर्युं ज	हि ०	£80,			हि॰	 २६३
<b>4</b>	£ <b>६</b>	२, ११६८	महिलनाय स्तव	नधर्ममिह	ाह∙ हि•	७४२
मधुबिन्दु चौपई	हि॰	8833	महर्षि स्तवन		.v €7 •	७४३
मधुविन्दु चोपई-मगवतीदाम	हि०	११५१	महाकाली सहस्र	नाम स्तोत्र	₩.	७४३
मनकरहा जयमाल	हि०	દ્યય,	महा दण्डक		€0	763
		६७२	महादण्डकवि	(जबकोति	हि	
मनकरहा रास	हि०	£=X	10.7 01.			£3 <i>F</i>
मनकरहा रास — द० दीप	हि॰	₹05€	महादेव पार्वती	सबाद	f∉∘	
मन गीत	हि०	१०२४	महादुरास		हि॰	
मनराज शतक मनराज	€ि	६६२	महापुरासा वि	तसेन।चार्यं ग		• • • •
मन मोरड़ा गीतहर्वकीर्ति	हि०	११६५	14.3			₹€₹,₹€¥
मनुष्यमव दुर्लम कथा	सं०	४६६	महापुरासा चीप	र्र — गगदाम	हि०	£ 4 8.
मनोरथ माला	हि •	१०२७			२६४, ११४	
मनोरथ माला—साह ग्रयल	हि०	5555	महापुरारा विन			283E,
मनोरथ माला-मनोरय	গা •	१०५४	1613/1/4 141			x. ११६६
मनोरथमाला गीत — धर्म भूषर	ग हि०	€ 19 ₹				
मयसारेहाचरित्र	हि॰	३६५	महापुरुष चरित्र	— द्या० मस्तु	•	ĘĄY
मरकत विलासमोतीलाल	हिं∘	६७३	महाभारत		ۥ	568
मरण करडिका	<b>स∘</b>	<b>4</b> 69	महाभिषेक विधि		सं∙	€3≈
मरहडीवृन्दावन	हि•	१०६४	महायक्ष विद्याध			•
मलय सुन्दरी कथा—जब तिर	क सूरि		महालक्ष्मी स्तोत्र		₩•	4-44
		३६४,	महाबती बालोप		सं •	8846
		855	महःव्रतीनि चीम	।सानुदण्ड	हि॰	११वप
मलय सुन्दरी चरित्र भाषा।	<b>18</b> (117) 11 2		महाविद्या		₩•	२६०
g	भक्षवराम लु हि०		महाविद्याचकी		सं•	<b>4</b> 43
मल्लि गीत-सोमकीति	•	3 <b>4 X</b>	महाविद्या स्तोत्र	मत्र	सं०	병보학
and and a gladeliti	हि०	\$058	महावीर कलश		Mie	१०२€

ग्रंथनाम लेखक म	ावा पः	र संस्या	प्रंथ नाम	लेख क	माबा	पत्र संस्था
महाबीर जिनवृद्धि स्तवन-समयस्	पुन्दर हि०	७२१	मृत्यु महोत्सव		₹•	££¥,
महाबीर निर्वाण कथा	सं०	866		8,8	०११, १०४	'o, १०५ <b>१</b>
महाबीर पूजावृन्दावन	हि०	5£3	मृत्यु महोत्सव	माषा-सदासुर	त कासलीव	ाल
महाबीर वीनतीपाविचन्द्र	١Ę٥	११६१			हि०	११६३,
महाबीर सत्ताबीस मव चरित्र	प्रा॰	३६७	l			1868
महाबीर समस्या स्तवन	<b>₹</b> ∘	99x	मृत्यु महोत्सव		सं०	6668
महाबीर स्तवन-जिनबल्लम सूरि	মে।•	७५३	मासरा मूख का	वा	हि॰	9 ₹ ₹ %
महाबीर स्तवन—विनयकीति	हि॰	७५३	माराक पद सम्र	हमार्गकचन्य	र हिं∙	६७३
म हार्वार स्तवन सकलचन्द्र	fg o	₹ X &	मातृका निघंदु-	महीबर	低。	६२२
महावोर स्वामीनो स्तबन	हि •	७१४	माधवनिदान	माधव	₩•	X=6.
महाबोर स्तोत्र वृत्ति — जिनप्रभ सू	रिस०	७५४				४८१
महाबीर स्तवनसमयमुन्दर	हि०	ERS	माघवनिदान टी			४=१
महाबीर स्तोत्र—विद्यानन्दि	स०	४७७	माधवानल काम	कन्दला चापइ-	—कुशलल राज∘	भ ४६६
महासरस्वतीस्तोत्र	₩•	१०६५	माघवानल चौप	£	हिं•	840
महा शांतिक विधि	<b>₹</b> •	<b>5</b> 8₽	माधवानस चीप		हि॰	£55
महासती सज्भाय	हि॰	११६५	माधवानल प्रवन		[ <b>€</b> ∘	<b>\$</b> 70
महिम्न स्त्रीत्रपुष्पदंताचार्यं	स०	७५४	मानगीत	4	हि० हि०	<b>११३१</b>
महोपाल चरित्रवीरदेव गरिए	সা •	३६७	मानतुंग मानवर	री-पोटन वि		375
महीपाल चरित्रचारित्र भूषसा	<b>स</b> ∙	₹७,	मानत् म मानवर			
		३६८	मान बत्तीसी-		.,,,,,, <sub>6</sub> ,	१०५८
महीपाल चरित्र भाषा नवमल दं	ोसी हि॰	३६८	मान बाबनी	444444	हि॰	<b>403</b>
महीमट्ट काव्य — महीमट्ट	सं०	3,4€	मान बाबनी -	मनोदर	हि०	११०=
महीमट्टी प्रक्रिया—प्रमुप्ति स्वरूप	ाचार्य सं ०	प्रश्	मान बाबनी		हि०	3015
महीमट्टी व्याकरण – महीमट्टी	<b>#</b> ∘	५१७,	मान भद्र स्तबन	-	हि॰	948
		५१⊏	मान मंजरी		हि०	4381
महुरा परीक्षा	₩°	१११७			٠٠٠	3089
मृथ चर्म कवा	٠.	840	मान विनय प्रव	ष	हि०	६७३
मृगापुत्र बेलि	fë o	<b>43E</b>	माया कल्प		सं•	478
मृगापुत्र सञ्काय	हि॰	YEU	म।यागीत		हि॰	1188
मृगावती वरित्र-समयसुन्दर	हि॰	300	मायागीत	नारायण	हि॰	6588
मृशंक लेका चीपईभानुबन्द	हि•	873	मार्गसा चर्चा	•	हि॰	F33
मूनी सबाद देवराज	fg o	£84.	मागंगा स्वरूप		प्रा∘सं∘	95
•		\$ · 43	मागंगा सत्ता वि	नमंगीनैमिय		
मृगी संवाद चौपई	ξo	883			सं•	UXX

ग्रंच नाम	लेखक	भाषा '	षत्र सं <del>स्</del> या	ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संश्या
<b>माली</b> रासा		हि०	१०४०	मुक्तावली वत	पूजा	स०	<b>₹</b> 3≈
मालीरास—जिन	दास	हि०	ERX,	मृक्तावली वती।	वापन	सं०	¥32
			११०२	मुक्तिगीत		हि •	$\mathcal{E} \subset \mathcal{R}$
मास प्रवेश सारस	गी	हि०	१११५	मुक्तिस्वयंवर-	- वेग्शिचन्द	<sup>6</sup> ह ०	१५०
मासान्त चतुर्दशी	व्रतोद्यापन	सं •	583	मुनि गुरारास वे	वेलि—-व∙गाः	ाजी हि∘	3 7 7
मांगीतुंगी गीत-	–ग्रमयचन्द सून्ति	र हि॰	2222	मुनिमालिका		हि∙	७४४
मांगीतुंगी चौपई		₩0	303	मुनिमालिका-	–चारित्रसिह	हि •	११५६
मागीतुंगी पूजा		हि०	१०४६	मुनिराज के छि	यालीस घन्तर	यभेया	मगवतीदास
मौगीतुगी पूत्रा –	-विश्वभूषरा	₩•	<b>53</b> 2			हि०	१५०
मांगीतुगीजी की	यात्रा-समयव	<b>म्द</b> मूरि		मुनिरंग चौपई-	लालचन्द	हि ०	37€
		हि०	6 6 R.X	मुनिवत पुरासा-	इ० कृथ्सदा	स स०	२८४
मांगीतुंगी सज्भा	यप्रभयचन्द्र	सूरि हि०	৬২২	मुनिसुत्रन नाष	स्तोत्र	₹ •	११२७
मांगीतुंगी स्तवन		हि०	6=0	मुनीश्वर जयमा	लजिनदास	हि०	<b>=</b> ७¥,
मित्रलाभ-सुहदभेद	i	हि०	٤٤٥				36, ११०=
मिण्यादुक्कड		हि०	११६५	मुनीश्वर जयमा	ल पाण्डाजः		8888
मिय्या दुवकड़ —	व० जिनदाम	हि०	<b>⋷</b> ५१,	मुर्गिटका ज्ञान		म०	<b>१११</b> ६
		<b>११</b> ३	=, ११५५	मुहर्न चितामरिंग		म ०	* * 0
मिथ्यादुवकड जय	माल	हि०	११०४	मुहूर्न वितामणि	दवेशराम	सं०	૧૫૭,
मिथ्यात्व खंडन-	-बस्तराम	हि ०	8.85				X X C
			६०७,	मुहूर्नपरीक्षा		स •	* * *
			६०८	मृहतं तत्व		<b>4</b> 0	५५=
मिध्यास्य व्य <b>डन</b> ः	नाटक	f₹o	٤٥٥,	मुहूर्त मुक्ताबनी	परमहंस परि		
			24.8			मं •	५५ =
मिथ्य⊹त्व दुक्कड़	(मिछादोकड)	हि०	१०२४	मुह्तं विधि		40	*48
मिच्यात्त्र निषे <b>ध</b>		हि०	१४९,	मुहर्नमास्त्र		स∙	3 x x
			१५०	मूत्र परीक्षा		<b>4</b> 0	४५१
मिथ्यात्व भजनरा	म	हि०	१ = ६	मूत्र परीक्षा		fgo	* X 3
मुकुट सप्तमी कर	॥मकलकोनि	स०	४७६	मूल गुगा सज्कार		हिं•	688
मुक्तावनी गीत		श्रप ०	દપ્રર	मृत्राचार प्रदीप-		40	<b>१</b> ५१
मुक्तावली गीत		हि०	१११०	म्लाचार माया-	–ऋषभदास		
मुक्तावनी गीत-		हि०	8888	म्याबार मूत्र-	बटकेरा वार्य	प्रा॰	५१, १४२ १४०
मुक्तावली रास –		हि०	દેષપ	मूनाचार वृत्ति-		₹í°	<b>१</b> १ १
मुक्तावली व्रत क			8810	मयकुमार गीत-	-	fg o	£ 6 0.
मुक्तावली व्रत क	थासकल की	ते स०	४६७				२, १०६२

ग्रंचनाम लेखक स	माचा पः	त्र संख्या	प्रधानाम लेखक	माचा पत्र	संख्या
मेधकुमार गीत-समयमुन्दर	fg•	2102	मंगलकलश चौपई	fë•	१०२५
मेघकुमार का चौढाल्या-गणेश	-	४६७	मंगलाचरण -हीरानत्द	हि॰	8084
मेथकुमार रास — कवि कनक	हि०	१०२४	मगल पाठ	हि॰	e33
मेथकूमार रास—पूनी	fe•	१०२६	मगल प्रभाती —विनोदीलाल	हि∙	१०६५
मेथकुमार सिज्भाय —पूनो	हि०	४०४४	मंगल स्तीत	स•	υx
मेवदूत-कालिदास	सं०	346	मगलहरीसिह	हि०	१०४१
मेधदूत टीकामिलनाय सूरि	θĠ	₹७०	मडो शर पाश्वंनीय स्तवन — स		
मेघमाला	₩°	¥ X E ,		हि॰	£¥?
7441111	4.	3 × 8 8	मंत्र प्रकरण सूचक टिप्पण	भावसेन त्रैवेद्य	देव
<b></b>			-	सं०	६२२
मेघमाना प्रकरमा	सं ०	<b>XXE</b> ,	मत्र यत्र	स०	<b>६२</b> २
मेच मालिका वृतोद्यापन	_	3288	मत्र शास्त्र	हि∙	122
	<b>₹</b> 0	E66	मत्र शास्त्र	हि०सं०	६२२
मेघमालिका वनोद्यापत पूजा मेघम्तमन	# o -:	£83	मत्र सग्रह	हि०सं०	६२२
मध स्तमन मेवाडीनागोत्र	सं∘ G-	2886	मत्र सग्रह	सं०हि०	€¥∘,
	ſξ∙ C−	6628			१०२४
मैना सुन्दरी सज्भाय	हि •	११५२			
मोक्ष पच्चीसी—द्यानतराय	हि॰	\$083	य		
मोक्ष पाहडकुंदकुदाचार्य	प्रा•	२१५	•		
मोक्ष पाहडकुंदकुदाचायं मोक्ष पैडी	प्रा• हि०	२१४ ११०४	यक्षिणो कल्पमिललेण	स •	<b>६</b> २३
मोक्ष पाहुड—कुंदकुदाचार्य मोक्ष पंडो मोक्ष पंडो —बनारसीदास	प्रा• हि• हि•	१०४१ ११०४ २१४	•	स <i>॰</i> स॰	,¥33
मोक्ष पाहडकुंदकुदाचायं मोक्ष पैडी	प्रा• हि• हि• स्वाराज•	२१५ ११०४ १०४१ १५३,	यक्षिणो कल्पमिल्लपेण यति भावनाष्टक	स०	११३६ ११३६
मोक्ष पाहुड—कुंदकुदाचार्य मोक्ष पंडो मोक्ष पंडो —बनारसीदास	प्रा• हि• हि• स्वाराज•	१०४१ ११०४ २१४	यक्षिसो कल्प—मल्लियेस यति भावनाष्टक यत्याचार	स <b>०</b> स०	884, 1834 1831
मोक्ष पाहुड—कुंदकुदाचार्य मोक्ष पंडो मोक्ष पंडो —बनारसीदास	प्रा• हि• हि• स्वाराज•	२१५ ११०४ १०४१ १५३, ४, १५५	यक्षिणो कल्प—मल्लिषेण यति भावनाष्टक यत्याचार यत्याचार वृत्ति – असुनन्दि	स∘ स <i>∘</i> सं•	844 844 844 844
मोक्ष पाहुड—कुंदकुदाचार्य मोक्ष पैडी मोक्ष पैडी—बनारसीदास मोक्षमार्गप्रकाशक—प०टोडरा	प्रा• हि॰ हि॰ स्वराज॰ १५	\$66 \$43, \$40\$ \$40\$ \$1\$	यक्षिणो कल्प	स० स० सं• हि०	668, ११३६ ११६४ १४४ ६७७
मोक्ष पाहुड — कुंदकु दाचायं मोक्ष पंडी मोक्ष पंडी — बनारसीदास मोक्षमागं प्रकाशक — प० टोडरा मोक्षमागं बत्तोसी — दौणतराम	प्रा• हि॰ हि॰ स्र राज॰ ११ हि॰	\$66 \$43, \$40\$ \$40\$ \$1\$	यक्षिणो कल्प—मल्लिषेण यति भावनाष्टक यत्याचार यत्याचार वृत्ति – असुनन्दि	स∘ स <i>∘</i> सं•	668, ११३६ ११६४ १४४ ६७७ ७४४,
मोक्ष पाहुड — कुंदकुदाचायं मोक्ष पैडी मोक्ष पैडी — बनारसीदास मोक्षमागं प्रकाशक — प०टोडरा मोक्षमागं बलोसी — दौलतराम मोक्षमागं बलोसी — दौलतराम मोक्षमागं वावनी — मोहनदास	प्रा• हि॰ हि॰ स्वराज॰ १५ हि॰ हि॰	\$25 \$08 \$40\$ \$43 \$48 \$48 \$33	यक्तियो कल्प-मिलवेश यति भावनाध्यक यत्याचार यत्याचार वृत्ति - असुनन्दि यम निनास यमक बच स्तोत्र	स ० स ० सं • हि ० स •	664, 1134 1164 144 144 164 164 173 173 173 173 173 173 173 173
मोक्ष पाहुड — कुंदकु दावायं भोक्ष पंडी मोक्ष पंडी — बनारसीदास मोक्षमागं प्रकाशक — प० टोडरा मोक्षमागं बत्तांसी — दौलतराम मोक्षमागं वावनी — मोहनदास मोक्षमागं वावनी — मोहनदास	प्रा• हि॰ हि॰ गल राज॰ १५ हि॰ हि॰	784 8088 8088 843, 4,844 888 888 888 888	यक्तिएो कल्प-सिलयेए स्रति भावनाध्यक यत्याचार यत्याचार कृति - ४सुनन्दि यम तलास यमक वध स्तोत	स ० स ० सं • हि ० स ० सं ०	\$ ? ? \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$
मोक्ष पाहुड — कुंदकु दावायं भोक्ष पंडी मोक्ष पंडी — बनारसीदास मोक्षमार्ग प्रकाशक — प० टोइरा मोक्षमार्ग वर्षोसी — दीनतराम मोक्षमार्ग वाबनी — मोहनदास मोशस्वरूप मोहविबंक मुख	प्रा• हि॰ हि॰ स्त राज॰ १५ हि॰ हि॰ हि॰	\$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	यक्तिएो कल्प-मिलवेए। यति भावनाध्यक यत्याचार यत्याचार वृत्ति - असुनन्दि यम निलास यमक वध स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र	स० सं• हि० स• सं• सं•	268, 2835 2848 2888 2088 2088 2088 2088
मोक्ष पाहुड — कुंदकु दावायं भोक्ष पंडी — बनारसीदास मोक्षमागं प्रकाशक — प० टोइरा मोक्षमागं वस्तोसी — दौलतराम मोक्षमागं वाबनी — पोहुनदास मोज्ञागं वाबनी — पोहुनदास मोज्ञास्बरूप मोहृत्विक युद्ध घोहिनी पंत्र	प्रा• हि॰ हि॰ स्त राज॰ १५ हि॰ हि॰ हि॰	\$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	यक्षिणो कत्व-सिलयेण बति भारनाध्टक यरवाचार वृत्ति - अनुनिद्द यम निलास यमक कप स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र - निकानि यमक स्तोत्र - सिकानि यमक स्तोत्राध्टक - विकानि यमक स्तोत्राध्टक - विकानि	स० सं• हि० स• सं• सं• मदेव सं•	\$235 \$235 \$244 \$244 \$244 \$244 \$244 \$244
मोक्ष पाहुड — कुंदकु दावायं मोक्ष पंडी — बनारसीदास मोक्षमायं प्रकाशक — प० टोडरा मोक्षमायं प्रकाशक — प० टोडरा मोक्षमायं वावनी — योहतदास मोक्षमायं वावनी — योहतदास मोक्षमायं वावनी — योहतदास मोक्षमायं कुंद मोक्षमायं कुंद मोक्षमायं क्षाम्यान	प्रा• हि॰ हि॰ सन राज॰ १५ हि॰ हि॰ हि॰ सं•	२१४ ११०४ १४३, १४४ १८६ १४५ १०६३ १२२,	यक्तियां कल्य-मिलवेया यति भावनाध्यक यत्याचार यत्याचार वृत्ति - असुनन्दि यम निवाच यमक वघ स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र	स ० स • हि० स • सं० सं० पदेव सं० तक्तागर सं०	\$235 \$235 \$235 \$244 \$244 \$244 \$00 \$00 \$00
मोक्ष पाहुड — कुंदकु दावायं भोक्ष पंडी — बनारसीदास मोक्षमागं प्रकाशक — प० टोइरा मोक्षमागं वस्तोसी — दौलतराम मोक्षमागं वाबनी — पोहुनदास मोज्ञागं वाबनी — पोहुनदास मोज्ञास्बरूप मोहृत्विक युद्ध घोहिनी पंत्र	प्रा• हि॰ हि॰ स्न राज॰ १५ हि॰ हि॰ हि॰ सं॰	\$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	यक्तियां कल्य—मिलवेशा यता भावनाध्यक यरवाचार यरवाचार वृत्ति — असुनन्दि यम ततास यमक स्वाम यमक स्वोम यमक स्वोम यमक स्वोमाध्यक्त—विद्यानिय यमक स्वोमाध्यक—विद्यानिय यमक स्वोमाध्यक—विद्यानिय यम्तित्वक वस्यू टीका—व्यावित्वक वस्यू टीका—व्यावित्वक वस्यू यमास्ववक वस्यू यमास्ववक वस्यू यमास्ववक विष्यस्य	स ० स • हि० स • सं० सं० मदेव सं० तक्तागर सं० सं०	\$
मोक्ष पाहुड — कुंदकु दावायं मोक्ष पंडी मोक्ष पंडी — बनारसीदास मोक्षमागं प्रकाशक — प० टोडरर मोक्षमागं बत्तांची — दौलतराम मोक्षमागं वावनी — मोहनदास मोऽस्वक्य मोहव्यंक मुख मोत्रव्यंक मुख मौन एकादणी व्याख्यान मौन एकादणी व्याख्यान	प्रा• हि० हि० स्र राज० १५ हि० हि० सं० इानसागर हि०	\$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	यस्तिए। कल्य—मिलवेए यति भावनाध्यक यत्याचार यत्याचार कृति — ४सुनन्दि यम तिलास यमक तथा स्तोत्र यमक स्तोत्राध्यक — विद्यानि यणस्तिलक चन्नू — आः सीः यस्तितक चन्नू दीका — व् यस्तितक दिप्पण् यस्तितक दिप्पण् यस्तित कथा — विद्यानि	स॰ सं॰ हि॰ स॰ सं॰ द्यं सं॰ पदेव सं॰ तसागर सं॰ सं॰	\$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$
मोक्ष पाहुड — कुंदकु दावायं मोक्ष पंडी — बनारसीदास मोक्षमायं प्रकाशक — प० टोडरा मोक्षमायं प्रकाशक — प० टोडरा मोक्षमायं वावनी — योहतदास मोक्षमायं वावनी — योहतदास मोक्षमायं वावनी — योहतदास मोक्षमायं कुंद मोक्षमायं कुंद मोक्षमायं क्षाम्यान	प्रा• हि॰ हि॰ स्न राज॰ १५ हि॰ हि॰ हि॰ सं॰	\$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	यक्तियां कल्य—मिलवेशा यता भावनाध्यक यरवाचार यरवाचार वृत्ति — असुनन्दि यम ततास यमक स्वाम यमक स्वोम यमक स्वोम यमक स्वोमाध्यक्त—विद्यानिय यमक स्वोमाध्यक—विद्यानिय यमक स्वोमाध्यक—विद्यानिय यम्तित्वक वस्यू टीका—व्यावित्वक वस्यू टीका—व्यावित्वक वस्यू यमास्ववक वस्यू यमास्ववक वस्यू यमास्ववक विष्यस्य	स ० स • हि० स • सं० सं० मदेव सं० तक्तागर सं० सं०	\$

[ प्रस्वानुकमरिएका

प्रंच नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या	प्रंच नाम	संखक '	मावा	पत्र संस्था
य नोघर चरित्र-	—टिष्पग्री	प्रमाप	स्ट्र ३७१	योग पाठ		₹•	8058
यशीवर चरित्र	– वादिराज	₹i∙	३७२	योगमाला		स •	४६०
यशोधर चरित्र-	वासबसेन	सं•	३७२	योगशत		सं •	४८३
यशोधर चरित्र-	पद्मनाम काय	स्थ मं०	多の年	योगशत टीका		स∘	*=3
यशोधर चरित्र-	पद्मराज	सं०	₹ ⊘ ₹	योग मतक—धन्य	<b>ग्त</b> रि	₩•	4=3
यशोधर चरित्र-	– ग्रा॰ पूर्णदेव	सं०	303	योग शतक भाषा		हि०	333
यशोधर चरित्र-	-सोमकीर्ति	सं∘	३७३	योग झास्त्र—हेम		स०	२१४
यशोधर चरित्र-	-सक्लकीति	सं०	३७४,	योगसतध्रमृतः	र भव	सं∙	133
			३७५	योगसार		हि०	१०५८
यशोषर वरित्र-	-बुशासचन्द	हि॰	₹७७,	योगसार—क्षेमच	न्द्र	हि०	88.8€
		₹ 9	a, <b>११</b> ६२				११५०
यशोधर चरित्र-	-मनसुख सागर	हि॰	* * * *	योगसारयोगीन	द देव	<b>श</b> प ०	२१४,
यक्षोधर चरित्र-	–साह लोहट	हि॰	३७८		२१६, ६६	४, १०३	E, 2040
बद्योधर चरित्र-	—विकम सुत दे	वेन्द्र स०	३७६	योगसार वचनिका		हि०	२१६
यशोधर चरित्र ।	रिठिका	₩•	३७२	योगसार संग्रह		स•	<b>4</b> < 3
यशोधर चरित्र प	ोठबंध प्रमजं	न गुरु संद	३७२	योगातिसार मा	गिरय कायस्य	कानुगो	
यशोधर चौपई		हि•	₹७=,			हि॰	४६०
		£\$	¥, १०४१	योनिनी दशा		स०	४६०
यशोवर रास—	। ॰ जिनदास	हि॰	₹₹€,	योगिनी दशाफल		सं०	१११६
	१०२	₹, ११०	७, ११४६	योगीचर्या		हि•	8=8
यशोधर रास—स	ोम श्रीति	हि •	१०२७,	योगीरासा — जिनद	na	हि०	8888
			११३७	योगीवाग्गी यगः	बीति	हि०	१०२४
याग महल पूजा		सं∙	432	योगोन्द्र पूजा		<b>#</b> •	¥32
याग मडत विवास	पं० <b>धर्मदेव</b>	सं०	द६४	योगीन्द्र पूजा		हि०	१०३४
यादव रासपुण्य	रत्न	हि•	383	योगेन्द्सार-वृध्य	ान <b>्</b>	हि०	215
यात्रा वर्णन		हि॰	<b>EXX</b>	यत्र ँ		सं∘	233
यात्रावसी		हि∙	६५५	यंत्र संग्रह		हि ०स	• १०२०,
यात्रा समुच्चय		祖。	६७३				8850
युगादि देव स्तोः		सं०	६६८	यत्रावली	107	₹i o	<b>६</b> २३
योग चितामिंग	<del> हवंकी</del> ति	सं०	५८१,	44.47	•••	40	444
			१०१६		₹		
योग चितामिश		ीति स॰	<b>४</b> व २		`		
योग तरंगिए। -	-त्रिमल्ल भट्ट	₩•	#25	रक्षक विद्यान कथा-	नलितकीर्ति	सं०	308
योग मुक्ताबली		सं०	457	रक्षारुयान रत्मन		ŧiο	305
							,

ग्रंच नाम	लेखक	मावा	पत्र संस्था	प्रंच नाम	लेखक	मावा	पत्र संस्था
रक्षा बंधन कथ	ाव० <b>ज्ञानसा</b>	गर हि०	800	रत्नदीप		सं०	४६०
रक्षावंधन कथ	ाविनोदीलास	हि•	800	रत्नदीपक		सं∘	¥ ¢ o
रक्षा विवान क	या —सकल कीर्रि	ा स∘	¥90,	रत्नदीपिका -	चंडेश्वर	सं०	१११७
			७१,३८०	रत्नत्रय उद्याप	ान .	सं०	==?
रघुवंश — कालि	वास	सं∘	₹७८,	रत्नत्रय कथाः	ज्ञानसागर	हि॰	१११६,
			₹७ <b>६, ३</b> ८०				११२३
रघुवंश टीका	-मस्लिनाथ	सं०	3=0	रत्नत्रय कथा	– समितकीर्ति	सं०	४७८,
रघुवश टीका	-समयसुन्दरः	स •	३⊂१	l		١	ડહદ, દદય
रघुवंश काव्यवृ	त्तसुमति वि	वय सं०	३८१	रत्मचय कथा-	– मु० प्रभाचन्द्र	सं०	४६८
रघुवंश काव्यवृ	त्तंगुरा विनय	सं∘	३८२	रस्नत्रय कथा-	देवेन्द्र कीर्ति	सं०	४६८
रघुवंश सूत्र		₩ •	३८२	रत्नत्रय गीत		हि०	१०२५
रशकपुर ग्रादिन	ाथ स्तवन	हि०	१०१७	l			283=
रतनचूड रास		हि०	£ 5 5	रत्नत्रय जयमा	स	सं०	≂६४
रतनसिहजी शी	बात	हि•	१०१७	रत्नत्रय जयमा	ल	সা •	۶£٤,
रतनाहमीर री	बात	राज∙	४६७				¤8 <b>€</b>
रत्नकरण्ड श्राबः	काचार—मा∘	समन्त्र भद्र		रत्नत्रय जयमा	ल माषा—नवम	न हि०	≖१६
		स•	१५४,	रस्मत्रय पूजा		सं०	<b>55</b> ₹,
			१४७		550, E55, E	६६, १०२	३, १०३६
			८४७	रत्नत्रय पूजा	-चानतराय	हि०	558,
रत्नकरण्ड श्राव	<b>काचार टीका</b>	प्रमाचन्द	सं० १४६,			€७, 5€	⊏, १०११
			१४६	रत्नत्रय पूजा	-टेकचन्द	हि०	5 £ §
रत्नकरण्ड श्रावः		हि०	१०६६	रत्नत्रय पूजा	-भ० पद्मनन्दि	₹ •	<b>⊏ૄ</b> ધ્
रत्नकरण्ड श्राव	काचार माषा—	पं॰ सदास्	<b>ख-</b>	रत्नत्रय मडल	विधान	हि∙	££5,
काससीवाल		राज॰	१५७				3=3
		१¥=, १º	,€, €93,	रत्नत्रय वर्णन		सं •	१६०
रस्नकरण्ड आव	हाचार भाषा व	दनिका	-पन्नालाल	रत्नत्रय विधान		सं०	ς <b>υξ</b> ,
दुनीवःले		राज०	१५६			5	६५, ५६६
रत्नकरण्ड श्रावर	ताचार माथा वर	रनिका हि	१० १०४६	रत्नत्रय विधान-	—नरेम्द्रसेन	सं०	1116,
धा• रत्नकीति <sup>ह</sup>		स •	EXR				<b>१</b> १६६
रत्नकोश		₩•	95	रत्नवय विद्यान	क्याव० श्रुत	सागर स	YĄY,
रत्नकोश उपा	o देवेश्वर	स∙	४८३		,		835
रत्नकोश सूत्र व्य		सं०	\$60		कथापद्मनन्दि	सं•	<i>\$£€</i>
रत्नबुड रास		स०	373	रत्नत्रय वतोद्या	न-वमंभूवरा	सं०	१०६५
रत्नभूड्रामस्सि		₩•	<b>१</b> ६०	रत्न परीक्षा		सं∘	११६५

वंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या	प्रथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संस्या
रत्नपाल च उपई	बातभावि	तंसक हि०	840	रविवत कथा	–भानुकीर्ति	हि०	1084
रत्नपाल प्रबंध		भाषा०	3=₹	रविवार कथा-	– रइधू	<b>ध</b> ग०	378
रत्नपात रास-	सूरवन्द	हि०	६३६	रविवार कथा-	—िवद्यासःगर	हि०	४६€
रत्नमालामहा	देव	₩ •	ሂ६०	रविव्रत कथा-	–सुरेन्द्रकीर्ति	हि०	११७७,
रत्नभेखर रत्नाव	ली क्या	प्रा०	४६=	रविवार कथा	एव पूजा	₩•	<b>235</b> 5
रत्न संप्रहनन्	मल	हि०	६७३	रविवत पूजा-	-भ० देवेन्द्र की	त सं०	330
रस्नःवली टीका		₩•	£ <b>ξ</b> X	रविव्रत पूजाव	च्या —मनोहरदा	ास हि∘	<b>5</b> €
रस्नाबली न्यायवृ	त्ति —जिनहर्ष	सूरिस०	२६०	रवित्रतोद्यापन	पूजारत्नभूषर	ण् सं०	600
रमन गोत-छी	हल	हि०	<b>१</b> ३३	रिविवतोद्यापन	पूजा — केशवसेन	र सं०	600
रमल		हि०	४३४	रस चितामशि		₩o	५⊏३
रमल प्रश्न		सं०	प्र६१	रस तर्रागसी -	–भानुदत्त	स०	४८३
रमल ज्ञान		ぜゅ	५६१	रस तरंगिएगे-	–वेग्गीदत्त	e P	4=8
रमल प्रदेन पत्र		₩∘	४६१	रस पद्धत्ति		₹10	***
रमल शकुनावली		हि •	४६१	रस मजरी		हि०	६२७
रमल शास्त्र		<b>₹</b> ∘	થ્રફ	रस मजरी	रानदत्त मिश्र	स०	५१६.
रमल शास्त्र		हि •	४६१				६२८, ५८४
रमल चिंतामिए।		₩•	<b>१११</b> ६	रम मजगे		मं व	
रमल शास्त्र		हि ०	888	रम मजगे—श	। लिनाथ	<b>40</b>	X = 8
रयससार—कुद	कुदाचार्य	श र	७५,	रस रत्नाकर-		₩o	
			¥33	रस रत्नाकर	-रत्नाकर	मं •	¥ = ¥
			90	रस राज मरि	राम	सि	० ६२०
रयगसार भाषा		हि•	\$30\$	रस राज-सर्न		हि	
रयससार वचनि	का —जयचन्द	खावहा			—कवि राष्ट्रराम		
		र≀ज०	<b>१</b> १६ <b>५</b>	रसलुक्दर की	•••	i'g	
रमगागर कथा		210	¥Ę¢	रिनक ब्रिया—		# o	
रविवन कथा		हि०	€ < X				<b>६</b> २=
	६६६, १०	२२, १०१	११, ११२४	रविवृत कथा	भ० विश्वमूषस्	ī fē•	
रविव्रत कथा।	<b>कलक</b>	হি •	853	राक्षम काव्य		सं०	३०२
रविवृत कथा	<b>पकी</b> ति	हि०	११४३	रागमाला		सं०	€0€
रिववत कथा	। ॰ जिनदास	f₹o	¥8E,	रागमाला		हि	408
			११६६	राग रत्नाकर-	-राधाङ्गब्स	हिं	
रविवार कथा	भाऊ	हि०	833,	रागरागिनी		हि•	
८७७, १६३	, १०३६, १०		==. ११६=	राधव पाण्डवीय	- धनंत्रय	₩.	<b>३</b> ∈२
			6002	राघव पाण्डवीय			३६२

-							
ग्रंथ नाम	लेखक	मावा (	पत्र संस्था	ग्रथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संख्या
राघत पाण्डवीय	ाटीका—चरित्र	वर्द्धन सं०	£2\$	राजि मोजन	कयाव्र० नेमिय	त्त सं०	४७१
राघव पाण्डबीर	तकविराजप	ण्डित सं•	३६३	रात्रिमोजन	कथा—म०सिंहः	नंदिस०	४७१
रायव पाण्डवीय	टोकाकविर	ाज पण्डित		रात्रिभोजन	चौपईहस	हि •	४७१
		मं •	३८३	रात्रि भोजन	रवाग कथा—श्रु	तसायर स	० ४७२
राजनीति समृच	चयचःग्राक्य	स०	\$83	रात्रि भोजन	रास—-व० जिन्द	सस हि०	6688
राजनीति सर्वय		हि॰	£3#	रात्रिमोजन	वर्णन — त्र० बीर	हि०	8868
राजमति गीत		feo	६८४	रात्रि विधान	कथा	सं०	४७१
राजमती की चू	नडीहेमराज	fe •	११२=,	राम कथाः	रामानन्द	हिं०	8003
		•	2552	रामचन्द्र रास	— व्र० जिनदास	हि०	€¥•
गजमति नेमीक	सर्व जान	हि०	६६५	राम रास—ग		f₹∘	६४०
राजाचन्द्रकी व		हिं•	8085	श्रीरामचन्द्रः		हि०	6638
राजावलि		हि०	ξ = ¥	रामचन्द्र स्तोः		स•	७५५
राजाविकम की	कथा	हिं•	Yug	र।मजस के	<b>गराज</b>	हि०	११८६
राजाहरियद व		fgo	४७१	रामदास पञ्ची	सीरामदाम	हि०	१०५४
राजादिगसा वृत्ति		<b>#</b> 0	५१=	रामपुरास-	सकलकी <b>र्ति</b>	सं०	२१४
राजावली .		सं०	४६२	राम पुराशा—	-म० सोमसेन	सं०	२६५
रण्जावली संवत्स	ार	मं •	४६२	राम यश रसा		हि॰	४७२.
राजुल गीत		हि•	१०५३	W. 44 W.	11 90014	16.	४७३
राज्ल छत्तीसी-	—बाग मुकुन्द	রি ০	११६६	राम विनोद		हि०	१०१३
राजुल नेमि ग्रबं	ोला लाबण्यम	मय हि०	१०२७	राम विनोद-	20209	हि०	X = X
राजुल पञ्चौसी		हि०	ε¥ξ,	राम विनोद-	-	हि०	* - *
5	£98, <b>१</b> 00	०, १०५६	, 2080,	राम विनोद		.ए. स∙	X = X
		8, 888		राम विनोद-	य० पदारस	हि •	१०१६
राजुल पच्चीसी-	लालवन्द	हि०	११०६	राम विनोद भ		हि०	333
राज्ञल पच्चोसी -		हि०	£45.	राम सहस्र ना		स०	७४५
tiga avaiai.	१०४, १०३		,	राम सीता गीत	ı— ब्रह्म श्रीव <b>र्द्ध</b> न	हि॰	2220
	१०७७, १०७			राम सीता प्रक	च – समयसुन्दर	हि॰	808
राजुल पच्चोसी		हि॰	808=	राम सीता रास	न—- <b>म</b> ० जिनदास	हि०	१०२५
राजुल पञ्चासा राजुल पत्रिका	- सोमकवि	हि०	9389	राम स्तीत		सं०	\$ 0 3 5
राजुन बारहमास	п—नंगकवि	हि॰	8003	रामाष्ट्रक		सं∘	EXE
रागुल बारह मार	मा — विनोदीला		१००३.	रामाष्ट्रक		हि०	8088
734 4176 AL	209	१, १०७७			सेवन व्यसन कवा	सं०	2399
राबुल की सज्का		हि	£ # £	राबलादेव स्तोः	Г	हि॰	११२६

ग्रंथ नाम लेखक	मावा	वत्र संख्या	। प्रंच नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
रावलियो गीत—सिंहनन्दि	हि ०	१०२७	रोहिसी रास	— व ० जिनदास	राज	<b>5</b> 48
राशिफल	सं∘	<b>५</b> ६२	रोहिस्मी बत	्जा	हि	£00
राणिफल	हि०	४६२	रोहिएगी वत पृ	(जा	हि•स०	€••,
रास सग्रह—व० रायमल्ल	हि०	680				१७३
राहफल	स०	४६२	1	जा-केशवसेन	<b>स</b> •	
िपमदेवजी लाबग्गीदीप वि	नय हि०	6668	रोहिएरी वत म		सं०हि०	
रियमनाथ धूल-सोमकीति	सं०	१०१४		।पनवादिवन		-
रुनिस्ती कथा—सत्रसेनाचार्य	स०	AźA	रोहिसी वतोच		सं०	
कविसर्गा <b>हरण-रत्वम्यण</b>	हि॰	६४०,	रोहिसी वतोब	ापन पूजा	€0	
`		११३३	रोहिएगि स्तवन		हि०	७४४
रुपकमाला बालावबोध—रतनर	गोगध्यम् हि०	। ११ <b>२</b> ६		ल		
रूप दीपक पिंगल	हि ०	* 6 6	लक्ष्मी विलास-	- पंo लक्ष्मी <b>ब</b> न्द	: हि॰	¥e.3
रुप मालाभावसेन त्रिविषदेव	<b>₹</b> 0	४१⊏	सक्मी सुकृत क	षा	₹•	833
रुपावली	स०	५१८	सक्ष्मी स्तोत्र		स०	৩৩২,
रुपसेन चौपई	हि०	४७६	६६६, १०४	7, १०६६, १०	er. to	६७, ११२७
रुपसेन राजा कथा—जिनसूरि	<b>स</b> o	308	लक्ष्मी स्तोत्र	-पद्मप्रभदेव	स∙	હ્યુપ્.
रेखतामांडका	हि०	११५७	७४६. ८७	Ę, १०६¥, १०	98, <b>१</b> =1	e, ११२४ .
रेखताविनोदीलाल	हि०	6000	सक्ष्मी स्तोत्र ग	यत्री	स०	७५६
रेवा नदी पूजाविश्व	स •	€00	लक्ष्मी स्तीत्र सर	<b>ीक</b>	₹ o	७४६,
रोगापहार स्तोत्र मनराय	<b>₹</b> 0	8+3=				6580
रोटजीत कथा	स•	808	सग्न चन्द्रिका	काशीनाथ	₩•	* 6 \$
रोटतीज वत कथा बुझीराय व	व हि॰	¥3¥.	सन्द फल		हि०	2777
•	•	१०६४	लवियस्त्रय टीक	I— धभय <b>चन्द्र</b> र्	रिंग•	2355
रोटतीज कथागुरानन्दि	刊の	808	लघु द्वालोचना		सं∘	2835
रोस की पायडी	ۥ	3205	लष् उप सगंद्रसि	r	स •	X ? =
रोहिंगी गीत श्रुतसागर	हि॰	2222	लवक्षेत्र समास		प्रा॰सं॰	५१=
रोहिस्सी व्रत कथा—व० ज्ञान स	यर हि०	६५२	स्थलेत्र समास रि	वेबरशरत्नहे	सार सरि	
रोहिसी वत कवा-मानुकीर्ति	सं०	Yex	•	•	प्रा∙	95
रोहिसी वत कथाललितकीति	स०	308	लव्योत्र समास	वश्यि — रत्नकेस		8860
रोहिस्ती वत कथा	हि॰	Yex	सध् चाराक्य	Z	fg o	225=
रोहिस्ती वत कथावशीदास	fg o	223	लघु चारावय नी	ति (रावासीति ।	•	
रोहिली वत कथा-हेमराज	€ •	¥43.			iiva) a Eis	453
•	•	1888	लघु चाराक्य नी	A 1112 11111		
रोहिसी रास	हि॰	€=¥	· ? andas di	प्य नारण गायाः	काशाः हिं	तम १०६७

	मावा	पत्र संख्या	। মুখ নাম	संसक	******	पत्र संख्या
श्रंथनाम लेखक			X 4 114	लक्षक	माचा	
लघु जातक — भट्टोत्पल	स •					860
लघु जात टीका	मं∙			पूजाहर्षकीरि		
समुतत्वार्थं सूत्र	स∙		ल विघ विघानी		सं∘	
लधुनाम माला-हर्षकीति	सं∘		लब्धि विधानो	चापन पूजा	<b>म्</b>	
नयु पच कल्याग्यक पूजा-हि			लब्धिसार		हि	
लघ् बाहुबलि बेलि-मातिदा		११३८	लाब्बसार मार	।। वचनिकाप		
सधुशेसार (शब्देन्दु)	<b>#</b> •	48=			राज०	95,
भाषुकाति पाठ-सूरि मान्हे सम्बातिक पूजा	विस∘ स∘	903 333			_	११६७
लघुणातिक पूजा — पद्मनन्दि		202 203	लाब्बसार क्षप	गासार भाषा वः		
लघुणातक पूजा — पश्चनान्द लघुणातिक विधि	₩° #°	£07			राज	
लघुसहस्य नाम	स <b>॰</b>	७४६,		- पाडे राममस्त •		
44 4614 114		३४,११५४ ३४,११५४	\$	संकल्पमहा		
			लावग्गीजिन		हि	
लघुमाम।यिक—किशनदास	हि •	१०वर	सावग्रीरुड	। गुरुजा	हि •	
सघु सिद्धचक पूजा — भ० हुः सघु सिद्धान्त कौमुदी—भट्टोः		€0 <b>₹</b>	साहागीत C-C		हि	
लघु सिद्धान्त को मुदोवरद			लिपियां		हि	
लघु सग्रहणी सूत्र	राज सब्		लिगानुशासन	(शब्द संकीर्ग स		
लघुस्तोत्र टीका	स०				स (	
लघुस्तीत्र टीका भाव सम			लिगानुसारो <b>ढ</b> ।		संब	
समुस्तोत्र विधि	, सर		लीलावती		. स	
लघुस्तपन	मं ०		,	रा – लालचन्द		
लघुस्तपन विधि	₩.	٤٠٦,	1	п—दैवज्ञ रामः		
44	4.5	₹ <b>१</b> ३€	लुकमान हकी।		हि <i>र</i> 	
			1 -	करण रास—-		
सम् स्नपन विधिस० ज्ञान	सागर सब् सब्		लूए पानी वि		प्रा	
सपुस्त्रयभूक्तोत			बूहरीरामव		हि	
सम् स्वयंभू क्तोत्र —देवनि			बूहरी-सुन्दर	(	हिं 	
लघुस्वयंभूस्तोत्र टीका	सर		लेख पद्यति		<b>सं</b>	
लक्षि विधान म० सुरेन्द्रव			लेखा		XI.	-
सब्धि उद्यापन सब्धि उद्यापन पाठ	स∙		लेश्या वर्णन	.i.Afi	हि∗ ਵਿ	
	संब		लेश्यावली —ह	्षकात करस <b>ारास</b> —ः	हि उद्यक्ति	
लब्बि विचान कथापं० ध				करण रास—ः र कथा—मानू		
who are were formalis	γοξ, : 				गापा ।ह∙ संै	
सब्ध इत कथा-किमनसि	ह हि०	४७६,	लघन पथ्यानि	ত্ৰ	41	* 151

ग्रंथनाम लेखक	भावा	पत्र संख्या	प्रंयनाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या
लंप ह पंचासिका — जिनदाम	हि •	१०३४	वर्द्धमान स्वामी कथामुनि	श्री ब्रह्मान	न्दि
				सं०	830
7			वयं तत्रनीलकण्ठ	सं०	४६३
	_		वर्षफलवामन	सं०	५६३
वचनकोश - बुलाकीदास	हि॰	3 & %	वर्षभावफल	सं०	**
वज्ञवलीप॰ वस्त्रह बज्ज उत्पत्ति बर्गान	সা৹	488	वर्षनाम	स०	4438
	F	१२००	वराग चरित्र—तेजपाल	श्रप ०	३८३
व ज्ञनाभि चक्रवती वैराग्य माव	ना हि०	२१६	वराग चरित्र-भ० वर्द्ध मान	देश धाप०	३८३,
बच्चपजर स्तोत्र यत्र सहित बच्च पद्मर स्तोत्र	सं ०	૭૪૭	1		ませえ
वच्च पत्रर स्तात्र वच्च मुवी (उपनिषद) श्रीधराचा		<b>१</b> 050	वरांग चरित्र—कमलनयन	fg o	≨≃R
वस्त्र मूचा (उपानवद) आवराचा बन्देतान जयमाल	य स० हि०	१२० ११०७	वराग चरित्रपाडे लाभचन्द	fz o	३≍५
बन्दतान जयमाल बन्देतान जयमालमाघनन्दी	।ह० स०		वरुग प्रतिष्ठा	F o	१२००
बन्दतान जयमाल-साधनन्दाः बर्तमान चौबीसी पुत्रा-चुत्रीलाः		হও ধ	वशीकरणामत्र	मं ०	१११६
	नाहरू स्रपट	ह०३ ३⊑६	वसुदेव प्रथम—प्रयकीति	हि०	808
बद्धंमान काव्य - जयमित्र हल बद्धंमान चरित्र - श्रीधर	स्पर स्पर		वसुधीरचरित्र—श्रीभूषमा	हि०	£ & X
बद्धमान चारत्र - श्रावर बर्द्धमान चरित्र — ग्रावर		326	वमुघारा	म०	€ • 5
	म <b>०</b> म ०	३८६	वसुधारा मह।विद्या	# o	€ = €
वर्द्ध मान चरित्र — मुनि पद्मनित	# 0	355 355	वसुधरास्तोत्र	म ०	હયું ૭,
बर्द्धमान चरित्र — विद्याभूषण			9	४८, १०१	७, ११५७
वर्द्धमान चरित्र—सकलकीर्नि	म• हि०	३८६	वसुनन्दि भावकाचार ग्रा० व	।मृतन्दि सं०	950,
बद्धं मान पुरासा		२३६			१६१
वर्दमान पुगराकवि ग्रमग	मं०	<b>३</b> ०६	वसुनन्दिश्रावकाचार भाषा	हि०	१६२
बर्द्ध मान पुरागा —नवल शाह	हि०	२६६, ₹८७	वस्तिव्द श्रावकाचार भाषा - श्र	ह्यभदास	
वद्धं मान पुरागा	मं०	783	•	हि०	१६१
वदं मान पुरासा भाषा	हि ०	२६६	वस्तित्व श्रावकाचार माया—	तैलतराम वि	<b>इ</b> ० १६२
वर्द्धमान पुरास माया-नवलराम	fg •	285	वसुनन्दि थावकाचार माषा-प		
वर्द्ध मान पूजा — सेवकराम	हि०	£03	वस्तन्दि शावकाचार वचनिका	হি-	<b>१६</b> २
वर्द्धमान राम-वर्द्धमान कवि	हि०	£8?	वस्त्ज्ञान	सं०	2995
बढंमान विलास स्तोत्र-जगद भूग	श्रम सं∘	e ye	व्यसनगीत	हि॰	१०२४
वद्धं मान समबक्तरण वर्गान-व०	गुनान		दतकथा	₩•	7 7 7 5
	fg o	१६२	दनकथासुभागमन्द	हिं•	१०७४
बदं मान स्तृति	हि•	989	त्रतकवा कोणश्रुत्सागर	सं०	800
बर्डमान स्तीत्र	स॰	99¥.	व्रतकवाकोशदेवेण्द्रकीति	स •	800
			वतकथाकोशव • नेनियत	सं०	800

प्रंथनाम लेखक	मावा	पत्रसंख्या	प्रथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
वतकवाकोगमिल्लीभूवरा	स•	४७७	वृत्त रत्नाकर-	-भट्ट केदार	भा०	33#
वतकथाकोश मु० रामचन्द्र	स •	8.99	वन रत्नाकर टी	का — प० सोमव	न्द्र स०	33.K
यनकथाकोश-स हलकीर्ति	स०	४७८	वृत रत्नाकर टी	का-जनादंन वि	बुध सः	33.8
व्रतकथाकोश — प० सभ्रदेव	初り	¥35,	वृत रत्नाकर वृ	त्तं — रमयमुन्दर	स०	યક દ
	¥	98, 850	वृत्त रत्नाकर वृ	सि—हरिमास्क	र सं∙	६००
वतकथाकोश-सुशालचन्द	हि०	¥50,	वृत बघ पद्धति		स०	११२४
3	-	८१, ४८२	बृद्ध सप्तति यत्र		€i o	१०१७
वतकथा ससो	हि०		वृद्धि गौतमरास		हि०	१०५५
वतकथा सप्रह	# 0	843	वृन्द विनोद सत	सईबृन्दकवि	हि०	3399
अतक्षा सम्रह	हि०	8=3	वृन्द विनास —	कविवृन्द	हि ०	६७६
वनकथासम्ह	हिं•	856	वृन्द शनकव		हि०	£ £ &
			वृत्द महिता —		₩•	४६४
वन निर्णय	押り	848.	वृषमजिन स्तोः		सं०	€ 7 0
		¥03	वृषभदेव गोत-		हि०	१२००
वत्पूत्रासग्रह	<b>#</b> •	Çoğ	वृषभदेव काछ		हि०	१०३०
व्रतविधान	सं०	£ o X	वृषमदेवनी छन्द		f₹∘	११५८
व्यविधान	स०	€ • €	वृषभदेव लावग्		हि०	११७१
वाविधान पूत्रा — प्रमरचस्द	हि०	4 ه ع	वृषभदेव वन्दन		हि०	१०६६
त्र नविश्वानरामो —दिन।राम	हि०	£ & \$	वृषभदेव स्तवन		हि०	७६०
वनविधानरासो —दोलतराम ।		६ ≒ ६	वृषभ स्तोत्र—		स •	७६०
व्रत विवरग	हि॰	8082	वृषमनाथ चरित्र	—सकलकोति	स •	₹50,
व्रत समुच्चय	हि०	<i>\$ £</i> 8				३८८
वनसार	स •	१६४,	वृषभनाच छन्द		हि०	6 62.6
	१०७, १०६	२, ११३६	वृषमनाथ लावा	णीमायाराम	हि	११५८
व्रतस्यरूप—भ०गोमसेन	₹ο	१११७	वृहद कलिकुण्ड	पूजा	स०	3 6 9 8
वनोद्यापन सग्रह	स•	603	वृहद गुरावली		स •	११३८
व्रतीद्यापन पूजा सग्रह	₹10	603	वृहद गुरावली	रूजा-स्वरूपचन्द	हि •	१०५
व्रतोत्रोतन श्रावकाचार ग्र	ादेव मं०	868	बृहरजातक		सं∘	४६४
		oፍ, हሂ <b>ଓ</b>	बृहज्जातक टीय	ा—वराहमिहिर	स ०	४६४
वतों का व्योरा	हि •	१६४.	बृहद्तपागच्छ गु	रावली	सं०	६५५
वृत्त चन्द्रिका—कृष्णकवि	ि •	<b>x</b> e=	वृहद् सपागच्छ	गुरावली मुनिः	पुन्दर <b>सू</b> ि	τ
वृत्त रत्नाकर—भट्ट केदार	₩o	४१८,			सं•	६५५
			बृहद् दशलकाए		हि ॰	€€=

ग्रंथनाम लेखक	मावा	पत्र सख्या	प्रथमाम लेखक	मावा	पत्र संस्वा
बृहद् पुष्पाहवाचन	4; ∘	€05	वासुपूज्य पूजा-रामचन	इ हि०	११२=
वृहद पूजा सम्रह	सं०प्र	70 805	बासु उच स्तोत्र — मेहबन	इ सं•	<b>११६</b> २
बृहद पच कल्यासाक पूजा विधा	न स॰	£ 0 5	वास्तुकर्भगीत	हि०	१७६
वृहद नातिपाठ	स०	७६०	बास्नुपूजा व वन	Ħ o	£03
बृहत शांति पूत्रा	स०	€∘⊏	वास्तुपूजाविधि	₹ •	€03
वृहत माति विचानधर्मदेव	<b>स∘</b>	=03	वास्तु विद्यान	₹•	१०३
		303	वास्तुरातरात्रसिंह	सं०	<b>१२००</b>
बृहत शांति विधि एवं पूजा संग्र		303	वास्तु शास्त्र	₩・	१२०१
बृहद शांति स्तोत्र	स •	७६०	वास्तु स्थापन	स •	1208
वृहद वोडशकारए। पूजा	सं०	€∘€,	विकम चरित्र —रामचन्द्र	सूरि स०	३८७
		680	विकम चरित्र चौपईभ	<b>।ऊ कवि हि</b> ०	३८७
वृहद सम्मेद शिखर महात्म्य			विकमसीलाबती चौपई	-जिनचन्द्र हि०	* 4 7
	्हि <b>॰</b>	303	विक्रमसेन चउपई विक्रा	मसेन हि॰	६५५
वृहद सिद्धचक पूजा — म० भानु			विचरषड्त्रिशिका	स०	5 8 3
बृहत सिद्ध पूजाशुभचन्द्र	स •	१०६॥	विचारपट्त्रिशकावपूरिंग	<b>#</b> •	843
बृहद स्नपन विधि	<b>₹</b> ∘	११३६,	विचारपड्जिशिकास्तवन		77
	<b></b> .	1111	14 117 10 114141111111111	श्रा•ि	
बृहद स्वयंभू स्तोत्र-समंतभद	स∙	€83. €€४	विचारसार पडणीत	<b>#</b> 0	Ę to t
वाकद्वार पिडकया	fø۰	1200	विचार सूलडी	Ħ0	623
वाक्य मजरी	<b>#</b> •	५११	विचार संग्रहिंगी वृत्ति	গা	50
बाग् मट्टालकार वाग् मट्ट	₩∘	¥8\$,	विचारामृत संग्रह	ぞっ	६७४
		489	विवयचन्द चरिय	Al o	3 < 3
वाग् मट्टाल का र टीकः — जिनवद्ध	न सूरि		विजयमद्र क्षेत्रपाल गीत-	— इ.० नेमिदास	
· •	₩•	પ્રદુષ્		हि •	१२०१
वाग् मट्टालंकार टीका - वद्धं मान	सूरि	1	विजय यंत्र	•	<b>६२३</b>
	स•	480	विजय मंत्र	स∘	<b>६</b> २३
वाग् म्हालकार टीकावादिराज	₩.	४६७	विजय यंत्र परिकर	# o	१११६
वाग्मष्टालंकार वृत्ति जान प्रमो	दवाचक	गरिए	विजय यत्र प्रतिरठ' विवि	<b>स</b> •	2224
	सं०	<b>25</b> 0			****
वाच्छा कल्प	सं०	1200	विज्ञु सेठ विजया सती र		
वाजनेय सहिता	सं०	1200		हि०	4.8
वार्ता-बुनाकीनास	fe•	१०२२	विदग्ध मुखमडन-धर्मदार	त सं०	२६०,
वासपूज्य गीत-व यशोधर	ۥ	१०२६	विदाय मुख मंडन टीका	-विनयसागर सं	१२०१

ग्रंथ नाम लेखक	मावा	पत्र संस्या	ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संस्या	
विदम्ध मुख मंडन शिवचन्द	स०	₹ 5 ₹	विनतीकाग्र	ग	हि०	033	
विद्वज्जन बोधक-सधी पन्नाल	লে বৰী	वाला	विनती ब्रादीश्वरत्रिलोककीर्ति हि॰ ७५८				
	राज		बिनती पाठ सं	प्रह	हि०	१०३६	
		१२०२	विनती सग्रह-	–देवासहा	हि०	६७४	
विद्वदभूषण काव्य	40	3==	`		` 6	७६, ७४८	
बिदरभी चौपई पारसदत्त	हि ०	844	विनती सग्रह		हिं	११५७	
विदेहक्षेत्र पूजा	हि॰	803	विपाक सूत्र		श्रा •	50	
विद्यमान वीस तीर्थं कर पूजा	ग्रमरचन	द		ारा—व० इन्द	ग्दास सं०	398	
	हि ०	ۥ\$	विमलनाथ पुर	ाग भाषापा	हे लालचन	τ	
विद्यमान बीस विरहमान पूजा	- जोहरी	नाल	•		हि०	335	
	ŧ٤٥	¥03	विमलनाथ पूत	T	हि०	११२६	
विद्यानुषासन — मन्निवेरम	स०	६२३	विमान पक्ति पृ	्जा	सं०	808	
विद्याविलाम प्रवय-स्मानामुन्दः	र हि॰	७५=	विमान पंक्ति व	तोद्यापन—म्रा	० सकलभूष	<b>ग्</b> ग	
विचुत्प्रम गीन	f≠∙	1140			सं०	803	
विधःन विधि	40	११३६	विमान गुद्धिः			£08,88£	
विननीधर्ममन	हि०	१०७८	विमान गुढि व	गांतिक विधान-	- चन्द्रकीर्ति	r	
विनती-—ग्रजयगाज	fặo	- cos			सं•	808	
विनर्ता - ऋषभदेव ४० देवच	•		विरदावली		हि०	६५५	
विनती – कनककीर्ति	हि०	=७६	विरदावली		स॰	EXX	
		११४८,	विरहदोहे≈		हि०	<b>668</b> 8	
दिनती <b>-</b> —कुमुदचरद्र	हि०	८७६,	विस्हरा चौपई	—कविसारंग	हि०	***	
		११३२	विवाह पटल			१०५, ५६४	
विनती — गोपालदास	हि •		विवाह पद्धति			१०५, ५६४	
विनती-पि॰ जिनदास	हि०	- 1	विवाह विवि		सं०	<b>203</b>	
		११३५	विविध मत्र मंग	-	40	६२३	
विनतीदोपचन्द	हि०	११०५		णि-सुन्दरदार		१०१५	
विनती नेमिकुमार—भूघरदास	हि०	१०६५,	विवेक चौपई-	•	हि०	१०२२	
		=99	विवेक चौबीसा		हि०	१०६६	
विनतीरामचन्द्र	<b>ड्</b> ०	દયય	विवेक छत्तीसी		हि॰	6083	
विन्ती —रामदास	हि०	<b>410</b>	विवेक जकड़ी-	जिरादास	١Ę٥	€=¥,	
	6.	₹30\$	636		-	१६, १०२३	
विनती - रायचन्द	हि० सं०	=•€	विवेक विलास-	ाजनदत्त सूरि	: सं∘िं		
बिनती — रूपचन्द		₹ <i>0</i>	विवेकशतक	malina shan	· a.	₹0₽	
बिनतीवृन्द	हि•	१०७८	। वयक्शतक	नानासह ठाल्या	ि हिं∙	€68	

ग्रंथनाम लेखक		क्ष संख्या	। यथनाम लेखक	-	पत्र संख्या
ग्रं <b>थ नाम लेखक</b> विशासकीर्ति गीत — वेस्ट	<b>माधा</b> । हि०	मञ्जलक्या १६२	प्रथानामा लासका बीरविलासनथमल	माया हि	
विशेषसत्ता त्रिभंगोनेमिचन्द्रा		547	1	•	
विवापहार छापय — विद्यासाग		8.03	वीरविलास-वीरचन्द	हि	
	•	•	वंद विवेक	हि	8628
विषापहार धनजय	₩ o	.3 KU	वेदान्त सग्रह	स	२६१
	, ४३८, ७७४, ७४४, ७६४, ४४०, १४२७, ३३३, <b>१</b> ४३			ग्रह पूर	TT .
		. (0+1, o, <b>१</b> १२=		₹0	£04
	رد, (۱۱ ۳۰	3, 1, 1, 1, 3, 1, 2, 2	वेलि काम विडम्बना—समयपुरः	≀र हि०	१२०२
विषापहार ीका-नागवन्द		૭૫૯ ૭૫૨	वैताल पच्चीसं।	fg o	¥63,
विदापहार टीका	स •				858
विषापहार स्तोत्र	िर ०	<b>(</b> 0₹9,	वैताल पंचविश्वतिका शिवदास	_	853
		<b>११</b> २६	वताल पंचावशातका।शवदास वैदिक प्रयोग	स० स०	४६२ ४३८
विषापहार स्तोत्र माषाग्रस्व	ाराज हि०	3 8 6	वेद्यकग्रय	हिं हिं	
विषापहार स्तोत्र भाषा अवल	कोति हि०	٧٧,	वैद्यक्त प्रदन संग्रह	≀हर स०	११६७
७ <b>६०, ६७</b>	x, १००४	, १११४,			¥EE
	<b>११२</b> ३	, ११४=	वैद्य मनोत्यवनयनमुख	हि०	¥==,
विष्णुकुमार कथा	स •	¥59,			५ स ह
		११६१	वंद्य मनोत्सवकेशवदाम	Ħ o	५८६
विष्मु पुराम	हि०	300	वैद्य मनोत्सव	ē 0	€ = =
विष्सापुर वर स्तोत्र	Ą٥	१०४२	वैद्य मनोःसव—नयनसुख	हि०	ε ५₹.
विष्या सहस्रताम	सं∙	१०१७			१००६
विसमं सन्धि	स०	4१६	वैद्य रस्न भाषा —गोस्वामी जना	சின் மா	•
विश विद्यमान तीर्थ कर पूत्रा	स०	१११=	वय रत्न नायायास्याना अना	५७ मह संक	•
विश स्थान	हि•	१६४			
वीतराग देव चैत्यालय शोमावर्	नि हि०	<b>१</b> २०२	त्रैशा बल्लभ - गोम्बामी जनादंन	<b>₹</b> 0	<b>४</b> ८६
वीतरागस्तवन	円の	υξο	र्वेद्य वल्लमहस्तिस्चि	祖。	X=€
बीतराग स्तवनपद्मन'न्द	Ħ o	ξ€૪,	वैद्य बल्लाम टीकाहस्ति कृषि	हि०	460
		११२४	वैद्य विनोद	सं०	ध्ह०
बीरचन्द दूहालक्ष्मीचन्द	f₹∘	६८३	वैद्य रसायन	fg	2200
बीर जिस्तद	हि ०	2=1	वैद्यवल्लभ लोलिम्बाराज	स०	8035
वीर जिन स्तोत्र— ग्रभयमूरि	भा०	७६०	वैद्यक्रमन्य	मं ०	XCX
बीर त्नुति	সা৹	હદ્દ	बैद्यकग्रन्थ	स•	*= 4
बीरनाथ स्तवन	हि०	8:2	<b>वैश्व स</b> नुस्ये	सं०	¥¤£
वीरपस्वार	हि॰	१०६८	वैद्यक्सांस्थ	fgo	*==

		I			
		संख्या ४=६	पंचनम लेखक माः शत्रुजय गीत गिरिस्तवन केलराव		सस्या ७६०
वैद्यकणास्त्र	स० हि०	X===	शतुजय चित्र प्रवाह	हि० हि०	१०१७
वैद्यक समुख्यय		4-4 4=6	शतुष्य नीर्थमहात्म्य—धनेश्वरः ।	-	१२०२
वैद्यकसार	यु० स०	X=4	शतु जय तीर्थं स्तृति ऋषभदास	हिर हिर	५५०५ ७६ <b>१</b>
वैश्वकसार हर्षकीति वैश्वकशीवन लोलिम्बराज स		, <u>५</u> =७	शतु जय ताय स्तुति ऋषमदास शक्तुं त्रय भासविलास सन्दर	हि॰ हि॰	७६१
वंद्यकटीकाहरिनाय स		५ ५८८	शतु जय मान-ापलान गुण्डर शतु जय मंडल — नटुकर	ाहर सं०	७६१
वैद्यकटीका स्ट्रमङ्	सं०	455	शतुजय मंडल	हि॰	444
वेराग्यउपजावन ग्रंग-चरनदास		2042	गतु जय स्तवन	ijο	७६१
वैराग्य गीत	हि०	3508	शतु जय सायन शत्रु जय राम — समय मृद्दर	हि०	६४२.
बैराग्य गीतत्र० सशोधर	fizo	१०२४	13 ad (14 44 a big.	16.	033
वैशाध्यपच्चीमी		8080,	शत्रुंजय स्तवन-समयसुन्दर	fgo	808
a Monta caren	.4	१०५६	णनिङ्चर कथा	E0	१०४२
वैराग्य बाहरमामा प्रश्नोत्तर चौप	ाई हि <b>॰</b>	9048		. १०७७,	
वैशाय वसुमाला	हि०	२१६	शनिइचर देव की कथा	, (-сс) fg o	50 <b>0</b> ,
र्वराग्यशनक	भा ०	२१६	***************************************		११४३
वैराग्य शतकथानांसह ठोल्या	Fe .	₹ १ ६	शब्दकीश — धर्मदास	o FF	3 F.X
वैगाय ज्ञातिपर्व ( महाभारत )	H •	<b>१</b> २०२	गन्दभेद प्रकाम	#jo	१२०२
वैराय योडग्र—श्वानतराय	हि •	१०६७	जब्दभेद प्रकाश—भहेऽवर	स०	488
वगसेन सूत्र - वगसेन	स०	860	शब्दरूप।वली	ЮB	५१६
वदना जलडी	हि•	७४७	शब्दानुशासन—हेम्बन्द्राचार्य	सं०	१२०३
श				० स ०	480
शक्त वर्गन	हि ०	४६४	शब्दालकार दीपक∼ पींडरीक रामे	इबर	
शक्त विचार	Ħ o	४६४		सं०	€00
शकुत विचार	हि•	४६४	जतवलोक टीका-मल्लमट्ट	ŧίο	३६६
शकुनावली — गौनमस्वामी	গ ০	४६५	शतश्लोकी टीका — त्रिमल्ल	सं०	50
शकुनावली - गौतमस्वामी	स०	***	शत्राका पृथ्व नाम निर्णय—मरत	दास हि०	१६५
शकुनावली — गौतमस्वामी	हि०	£88,	शाकटायन व्याकरण शाकटायन		४१६
वत प्रव्होत्तरी कवित भैया भ	naतीहास	६=३	<b>शाङ्गधर</b>	सं∘	398
श्रत प्रवटातरा कावतःभवा न	हि०	१००४	शाङ्गं वर टीका	हि०	३०७६
शतक सवत्सरी	fg o	1111	शाङ्गं घर दीपिका — धाढमल्ल	सं∙	* 53 %
शतपदी	₩•	ĘXX	शाङ्ग वर पद्धति-माञ्जीवर	सं०	x t e
गतप्र शतरंजकीडा विधि	हि०स०	१२०२	माङ्गंबर संहिता—माङ्गंबर	सं •	756
श्रेष्ठ जय उद्धार-नयनमुन्दर	हि॰	8 ● 3	शारङ्गधर संहिता—दामोदर	सं०	१०२३
श्राप्तु जय गीत	हि •	<b>१०२</b> ६	शारदीय नाम माला —हवंकीति	सं०	480
43 44 114					

ग्रंथ नाम लेखक व	गवा	पत्र संख्या	। प्रंच नाम	लेखक	माषा प	त्र संख्या
शालिभद्र चौपई-जिनराज सूरि	िह∙	¥ <b>=</b> ७,	शांति चक्र मंडल	पूजाविधि	सं •	113
. "	,	,343,93	शाति जिन स्तवन	—गुरा सागर	हि•	910
	8	प्र, १७४	भाति जिन स्तवन		সা৹	७६१
शालिभद्र चरित्र—पं० धर्मकुमार	सं०	<b>33</b> £	शांतिनःथ चरित्र		स•	३८६
शालिभद्र चौपईमतिसागर	हि •	१०१३,	मान्तिनाथ चरित्र	– भ्रजितप्रम	मूरिस०	३८६
HINNE HITE - HINNIN		2232	शान्तिनाथ बरित्र-	— म्राग्तंव उद	य हि॰	32€
शालिमद्र चौपई-समित सागर	fgo	<b>११</b> २=	शान्तिनाव चरित्र-			३⋍६
शालमद्रचीपर्ड	हि॰	850	शान्तिनाथ चरित्र	सकलकीर्ति	स०	३८१,
	•					98.
शालिमद्र चौपई — विजयकीर्ति	हि॰	8==	शान्तिनाथ चरित्र-			938
मानिभद्र घन्ना चौपई—सुमति स			शःन्तिनाथ चरित्र		-	338
मालिभद्र धन्ना चउपई—गुण सा		६५६	शास्त्रिनाथ पुरासा	—सेवाराम प	-	308
मालिभद्र राम	हि०	१०३१	शान्तिनाथ पूजा	_	स∙	183
शालि होत्र	स •	\$ \$ \$ 9	मान्तिनाव पूजा —			113
शास्त्रत जिन स्तवन	भा०	७६२	शास्तिनाथ की बार	रह भावना	١Ę٥	₹₹
शास्त्रदान कथा ग्रभ्रदेव	स• ⊆-	858	शान्तिनाथ यत्र	_	_	११७२
शास्त्र पूजा	हि॰	€∘€	शःन्तिनाथ की लाव	<b>ग</b> री	हिं•	११५८
म।स्त्र पूजाब्रह्म जिनदास	हि०	१०५८	शःन्तिनाथ स्तवन		हि०	१०८३
शास्त्रपूजावानतराय	हि•	१०११,	शान्तिनाथ स्तवन -		" -	७६१
		१०७४,	भान्तिनाथ स्तवन		स •	७६२
		१०७७	भान्तिन।थ स्तवन	मालदेव सू		७६२
णःहत्र पूजाभूषरदास	fgo	१०११	शान्तिनाथ स्तुति		स∙	664
मास्त्र समुख्यय	₹i∙	१६४	शान्तिनाथ स्तीव		सं०	<b>७६</b> २,
•	-					, ११२४
शास्त्र सूची	हि०	६७६	गान्तिन.थ स्तोत्र -	- मरचन्द्र	<b>स∘</b>	8886
मातिकाभिषे <b>क</b>	स•	٤٥٩,	शान्ति पाठ		हि •	٤१٠,
		6 \$ 0			€6∌	, ११२६
शांतिकर स्तवन	प्रा०	७६१	मान्ति पाठ-धर्मदे	व	₹•	210
मान्तिक विधि	स •	680	शान्ति पुरासा		ei o	300
मातिक विधिध मंदेव	₩•	.33	गाति पुरासापं०	भागाधर क	विसं०	300
मांति गीत			शान्ति पुरासाठा	<b>y</b> €€	हि॰	300
क्षांति चक्र पूजा	हि∙	€७≉	गान्ति पुराशा—स	क्स कीति	सं•	308
नात यक पूजा	स •	280,	मान्ति पुरासा भाषा	r	हि •	308
	€ ₹ 1	१, १०२२	सारित पूजा संब		सं•	473

प्रंच गाम लेखक	भाषा	पत्र संस्था	प्रंचन।म	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
दातिक पूजा विवान	<b>स</b> •	. ६१०	शील बत्तीसी		हि	, <b>E</b> EX
शांतिक पूजा विवान —वर्मदेव	r <del>ti</del> o	013	शोस बत्तीसी-	- प्रकमल	<b>स</b> 4	१०१०
शास्ति मन	सं∘	213	l			888
शान्ति ।तदनगुरा ।गर	fg∘	<b>७२१</b>				११५२
शांति होम विधानधाशाध	र स०	113	क्रोल बावनी	मालकवि	fg	१०१५
शाति होम विधान उपा० व	योगरस सं	• ११७१	शील महारम्य-	-बृन्द	हि	300\$
शिक्षामनोहरदास	₹10	<b>₹</b> 06₹	शील महिमा—	-सकलभूषरा	हि०	१ न ३
शिक्षास्त्रद	हि०	१०४१	शीलरथ — गुभ	चन्द	हि	११०५
शिखर गिरिरास	हि०	£88	जील रास		हि •	११०३
शिक्षर विलास—केशरीसिंह	हि ०		शीलरास—विश	नयदेव सुरि	हि०	€9 <b>⊊</b> ,
श्विलर विलासलालचन्द	हि•		1	•	`	648
शिव कवच	स •		गील विलास		स०	६७७
णिव छन्द	हि•		शील विषये वी	र सेन कथा	संव	१२०३
शिव मन्दिर स्तोत्र टीका	स०		शांत्र प्रत कयाः	मलुक	हि •	8=3
शिव विधान टीका	हि•स०		कील मुदर्शन र	: !स	हि॰	६४१
शिशुपाल वच-साधकवि	स •	₹€₹,	शील सुन्दरी प्र	बन्ध जयकीरि	तं हि०	860
5		३६२	शीलीपदेश माल	⊓—जयसिंह मृ	ुनि हि∘	१५७
शिशुपाल वध टीका — मल्लिन	**		शीलोपदेश माल	ा-सोमतिलक	स ०	१६४
शीघ्रबोध काशीनाथ	सं०	४६६, १६७, ६११	भी जोपदेश रत्न	माला-जसकी	লি সা৹	•38
शीघ्रकल	हि॰	१११ <b>६</b>	भीलोपदेश माल	ा – मेस्सुन्दर	₹io	4£.
भीतलनाय पूजा विधान	, हुउ स ०		मुकदेव दीक्षित	बार्ता	<b>₹</b> 0	१३३
शीतलनाथ स्तवन-रायचन्द	हि०	७६२	शुक्ल पचमी वर	ोद्यापन	सं०	883
शील कथा-भारामल्ल	हि॰ हि॰	¥55.	शुद्ध कोश्टक		सं०	१११७
		७३. ११२०	शूल मंत्र		सं०	१११६
मील कथा—मेरोलाल	हि•	86.0	शोभन स्तुति		सं०	३०२६
शील कल्यासक वत कथा	मं०	११३६	भोमन स्तुति		हि०	<b>७६३</b>
शोल चुनडीमूनि गुराचन्द	हि०	११२४	शकर पार्वती मं	बाद	सं०	<b>१</b> २ <b>०२</b>
भील तरंगिए।(मलय सुन्दरी व	चा)मलयः	रामलुह्या डिया	शंकर स्तोस्र—	शकराचार्य	सं	* * * * * *
	हि०		श्लोकबातिक	विद्यानन्दि	संब	<-
शीसनोरास-विजयदेव सूरि	हि०		इसोकवातिका स	<b>र्गका</b> र	सं०	40
शील पच्चीसी	fg∘		श्लोक संग्रह		सं०	६७६
शील पुरन्दर चीपई	हि०	860	एलोक संग्रह		सं ०हि०	६७७
शील प्रकास रास-पदा विज	य हि॰		<b>प्रलोकावली</b>		सं∘	७६३
सील प्राभृत-कुन्दकुन्दावार्य	श्रा०	२१७	श्वास भैरव रस		सं∙	४९१

ग्रंथनाम ले	तक भाषा	पत्र संस्था	प्रथ नाम	लेलक	भाषा	पत्र संस्या
श्वेताम्बर पट्टावली	fē	्० ६५६	षट् पाहुडमा	० कुश्दकुस्द	সা৹	२१७,
क्षेतःस्वरं मन स्नोत्र	सग्रह प्र	ro ७६१			2	१=,११०२
			षट् पाहुड टीका		हि०ग•	718
	q		षट्पाहुड भाषा		विकाहिन	395 01
	£.		षट् पाहुड भाषा	देवी सिंह छ	ाबड़ा हि०	२११
षट्कमं छद षट्कमंरास—— ज्ञान भू	हि चरण हि		षर् पाहुड वृत्ति-	– श्रुतयागर	स०	<b>२</b> २०,२२१
षट्कमरास——झानभू षट्कमंवर्गन		० १२०३ ० १२०३	षट् पचः सिका		स •	3009
षट् कर्मोपदेश रत्नमा			षट् पंचाशिक'	-भट्टोत्पल	र्स∘	४६७
षट्कर्मोपदेश रस्तमा			षट् प्रकार यत्र		<b>ৰি</b> ০	६२३
पट्कर्मोनदेश रत्नमा			षट्रस कथा —		स∙	838
		· १६=,१६8	षट्रस कथा	शिव मुनि	<b># 0</b>	368
षड्कारक~विनश्वर	-		षट् लेश्या गावा		हि •	ક પ્રક
पड्कारक ≃ावनस्वर षट्विदरण	.गान्य मामाय स स		पट्लेश्या वर्गन		हि∙	8888
षट् कारिका	सं		षट् लेक्याक्लोक		हि०	१०२६
षट् कारका षष्ट्रपाद			षट् वर्गफल		सं ०	४६८,
पष्टभाव षट्काल मेद वर्शन	्त स					१११६
षट्काल नव पर्वत षट् त्राणमय स्तवन—			पड्मिक्ति		म०	१०४८
षट त्रिणति	स- स-		पहावश्यक		সা ০	\$ 40
पट्तिशतिकासूत्र पट्तिशतिकासूत्र	- T		<b>पडाब</b> श्यक		हि०	138
पट्दर्शन	Ħ e		यडावस्यक बालाव		प्रा॰सं॰	१७०
44.4	71.	¥33	षडःवस्यक बालाव			० १७०
षट्दर्शन के खिनवेप	ालण्ड हि		षडावश्यक बालाव		प्रा०हि०	१७०
बट्दर्शन पात्रण्ड	हि		पडावश्यक विवस		#J o	१७१
षट्दर्शन वचन	सं		पड्गीतिक शास्त्र		स०हि०	१७०
षट्दर्शन विचार	<b>4</b>		पष्ठि योग प्रकरत		स ०	४६८
षट दर्शन समुच्चय	म		ৰতিত লবক — সভ	परी ने मिचन्द्र	Al.	19 6 3
षट्दर्शन समृज्वय—।			पष्ठि संबन्सरी		स॰	8=3
वर् पश्चन तत्रुष्यय-न	कारमञ्जूषार सब		पष्ठि संबत्सरी	•	सं •	4 € =
		२६२	षष्ठि सबत्सर फल	ı	सं∙	* * =
षट्दर्शन समुच्यय टी			<b>बोइसकार</b> स		€.	\$=£X
षट् दर्शन समुख्यम टीर			पोड़शकारण कथा		हि•	1843
बद्द्रव्य विवरस्य	हि <b>•</b>		पोड्शकारम कथा		सं सं •	AAE
बट् पदीशकराचार्य	संब		पोड़मकारण जनम		€o	<b>११४</b>
बट् पाठ	हि	६७७	षोडणकारसः खयम	ाल रहपू	<b>ध</b> य ०	662

प्रंचनाम लेखक	भावा व	त्र संस्था	प्रंथ नाम	लेखक '	माषा	पत्र संस्था	
बोडशकारण जयमाल वृति-	গিৰজীলাল		सज्जन चित्त वर	नभ	स०	११३४	
	प्रा॰सं॰	etx	सज्जन चित्त बरू			₹050.	
बोड्जकारण दशलक्षण जय						१२०४	
बोड्शकारसा पूजा	स•	Elx.	सङ्भाय		हि०	٤٣٧,	
षोड्शकारम् पूजा मडल वि		-, -,			१०	३८,१११३	
manner of the state of	हि॰	684	सज्भाय-समय	सुन्दर	हि०	७६३	
		808€	सङ्भाय एवं बार	हमासा	हि०	६७=	
पोड़गकारल पूजा सुमति	सागर स०	8058	मत्तर मेदी पूजा		हि०	६१७	
षोडणकारण भावना - प०			सतरी कर्मग्रन्थ		प्राव	१२०४	
,	fe s	१७१	स <b>स</b> री रूपठारा		प्रा०	१२०४	
योडशकारम वतोद्यापन	ਫ਼ਿ॰	=33	सतसई—वृदावन	r	हि०	દે છ છ	
पंड्रमकारस्य वतोद्यापन		£ 8 ¥	सत्ता त्रिभगी	प्रा०नेमिचन्द्र	সা৹	50	
पोडणकारमा बनोद्यापन पूज			सत्तास्वरुद		हि०	۶ ۽	
	fgo	દેશ્ય	सन्तारपु दूहा वं	रिचन्द	हि०	११३३	
		६१६	सदयवच्छान।वहि		हि०	१०३७,	
पोडणकारस वतोद्यापन	<b>₹</b> •	६१६				2800	
षोड्शकारम् वतोद्यापन जय	माल धाः	£==	सदयवच्छ स।वलि	गाचौपई	हि०	888	
पोड़ग नियम	棋・	ह५०	सनत्कुमार रास-	–ऊदी	हि०	488	
योडगयोग टीका	₹∘	२२०	सन्तान होने का	विचार	हि ०	५६२	
भ ० सकलकी तनुरास <b>– व</b> ०	सावल हि०	६४६	सन्निपात कलिका	r	सं०	(६१, ५६२	
-			सम ऋषि गीत	-विद्यानस्दि	हि०	२७३	
स			सप्तर्षि पूजा—श्री	भूषरा	स०	8000	
		- 1	सप्ति पूजा — विश्वभूषण सं ० ६१७,६१=				
सकल प्रतिबोध—दौनतराम	i feo	७६३	सप्तिषि पूजाम		हि०	284	
सकलीकरण	स •	€१६,	सप्तपि पूजा – स		हिं०	६१५	
		१ हे इ	सप्त तत्व गीत		हि॰	६६२	
सकलीकरण विधान	щo	€ १६,	सप्त तस्य वार्ता		₩.	6680	
सकनीकरसा विधान	स •	, 093	सप्तति हा		स०	58	
सकलीकरण विधि	₹५४ fe•	, ११३६ ७१३	सप्ततिका सूत्र स	रीक	সা৹	१७१	
		680	सप्तदश बोल		हि॰	१७१	
शक्तिकरम् विचि	स•		सप्त पदार्थ वृक्ति		सं०	48	
ससियारास-कोल्हा	िह∙ — –	3008	सप्त पदार्थी — वि	ग <b>वा</b> निम्स	सं०	757	
सगर वरित्र-दीक्षित देवव		308	सप्त पदार्थी टीक			32	
सगर प्रवस्थ — भा० नरेन्द्रव		838	सप्त परमस्यान		स०	ي ر وه ع	
सङ्जन वित्त वल्लभ	हि०	१६७, १०५७	सप्त परमस्थान				
		१०१७।	सन्त परमस्थान प	रिका शशाबास	. 40	€₹#	

प्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र सं <del>ख</del> ्या	प्रंथ नाम	लेखक	मावा	বস	संस्था
सन्त भक्ति		भार	११५४	समयसार टीक	गम० देवेन्द्रकी	ति सं•		२२५
सप्त भंगी स्थाय		सं०	२६२	समयसार टीक	त (ब्रघ्या म तरी	गेगी) भ	• ঝু	मचन्द्र
सप्त मंगी वर्ण	7	₩・	२६२	1		सं∘		<b>२</b> २२
सप्तब्यसनवि	खासागर	हि०	₹00₹	समयसार नाट	कवनारसीदास	ि हिं	,	२२८,
सप्तब्बसन कथा	—सोमकीति	स०	¥88,	1	२२१,	₹₹•.	२३१,	२३२,
			४६२, ४६३	1	233	, <b>२३४</b> , (	٤٧٩,	१६२,
सप्तव्यसन कथाः	भारामल्ल		834 KER	l	εξ₹,	£ \$¥,	ξ=¥,	£ £ ₹,
सप्तव्यसन गीत		हि०	8=3		3.3	¥, १०1	١٧, ١	0 \$ 4,
सप्तव्यसन चन्द्रा	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		€EX	1		₹ 0 :	₹₹, ₹	o₹₹,
सप्तब्यसन चौपर्द	•	हि०	११६८			803	٠, ا	088,
सप्तवार घटी		स •	४६८			22	o ₹ , 1	?¥0,
सप्तसमास लक्षर	Ŧ	म ॰	४२०	l		₹ 0	42,	१०७२
सप्त स्तवन		<b>स∘</b>	७६३	समयसार पीटि	T#F	ei o		¥33
सबद		हि०	3408	समयसार प्रकार	रग प्रतिबोध	য়া৹		२२६
सभानरंग		<b>#</b> •	£8 <b>\$</b>	समयसार प्राभृ	त—कुंदकुंदाचा	यं प्राव		220
समाभूषरा प्रय-		हि०	608€	समयसार भाष		fge	,	₹₹=
सभाविनोद (राग	माला)—गग		30\$	समयसार भाष	टीका—राजमः	ल हि०	२२६	
समाविनास		हि०	१०११	समयसार वृत्ति		#i•		<b>२२</b> ¥
समाश्चेगार ग्रन्थ		हि ०	१०४=,		मचन्द्र सोमराजा	₩.		44=
			3803	समवशरण पूज	ा— <b>क</b> प वस्ट	हि॰	9	•₹₹.
समक्ति वर्णन		हि •	१७१		. ,	10		
समन्त्रभद्र स्तुति		सं०	EEA			_		११२०
समन्तभद्र स्तुति	-समन्तमद्र	सं•	७६३	सम्यक्त की मुद		स०		ξχο
			७६४	मम्मदस्य कीमुदं		हि ०		६६१
समयभूषणइन्द्र	नन्दि	सं०	= ?	सम्यक्त्व की मुर्द	1धर्मकीति	स •		<b>X</b> \$X
समयसार कलशा-	—ग्रमृतबन्द्राच	ार्यं सं०	२२०,	सम्बद्ध कीमुई	—-व० खेता	सं∙		¥8¥
			२२१		ो-जोधराज गोवि	acı fe		¥8¥.
			१०३२	4.44.4 4.134		४१६, ४		
समयसार कलका-	-पाण्डे राजमस	ल हि∙	१०४१				το,	
समयसार कलका	टीका नित्य	विषय		-	ोबिनोदीलास	हि०		862
		₹ •	२२२	सम्यक्त कोमुर्द	जगतराय	हि०		338
समयसार टीका (प्र	ात्म क्याति)	- धमतचन	राषायं	सम्यक्तव कीमुर्द	ो भाषा—सुनि व	याचन्द !	हि०	¥£=
		प्रा॰सं •		सम्बक्त्व कीमुदी	कवा -	सं •		888,
		<b>२२</b>	¥. 22x	•		¥	٠٠,	* 0 \$

ग्रंचनाम लेखक स	शका प	त्र संस्था	प्रवास लेखक स	ावा	 पत्र संस्था
सम्यक्तव कीमुदी	हि०	٧.00,	समवशरण रचना	हि •	६२२
		૯૭૭	समवक्ररण विवानपं॰ हीरान	द हि०	€२१
सम्यक् चाश्त्रि पूजानरे-द्रसेन	सं∘	333	समवायाग सूत्र	द्राव	<b>= ?</b>
सम्यक्तव गीत	f≅∘	६७८	समाचारी	सं०	१२०४
सम्यक्तव चिनामित्।	सं०	373	समाचान जिन वर्गन	हि०	€ € &
सम्यदशन पूजा- बुधसेन	स•	•33	समाधितत्र - पूज्यपाद	स०	538
सम्यवत्व पञ्चीसीभगवतीदास	हि०	११४१	समाधितत्र भाषा	हि∙	२३८,
सम्यक्तव प्रकाश भाषा— डालुराव	म हि॰	१७२			१०६६
सम्यवस्य बलीसीकवरपाल	हि०	१७२	समाधितंत्र भाषानायुनाल दोव		२३८
	-		समाधितत्र भाषा पर्वत समीबी		
सम्यक्तवरास— ब्र० जिल्हास	हि०	\$ \$.x.\$	२३४, २३६, २		
सम्यक्त्य लीला विलास कथा—ि			समाधितत्र भाषामानकबन्द	हि०	२३=
	हि०	४०१	समाधितत्र भाषा रायचन्द	हि०	२३८
मम्यक्त्व सप्त षष्टि भेद	সা •	१७३	समाधिमरण	हि०	6083
सम्यग्दर्भन कथा	स०	५०१	गमाधिमरश् भाषा—द्यानतराय	हि०	२३=
समवसरग् की घाचुरी	स०	६२२	समाधिमरश भाषा	e.	११२६
समवगररा पाठ—रेखराज	स०	७६४	समाधिमरण माषा—सदासूख व	हि० 	२३६
समवशरण मगल-मायाराम	हि०	७६४	वनावन रहा नावा—वश्रमुख न	भसमाप हि०	।ल २३८
समवशरण स्तोत्र — विष्णु सेन	स•	७६४	समाधिमरण स्वरूष	<sup>10°</sup> हि∙	3 6 7
•			समाधिशतक पन्नालाल चोघरी		280
समवशरण स्तोत्र		६४,७६५	समाधि शतकपूज्यपाद	हि०	२३६
समवगरण मगल चौबीसी पाठ-			सम।धिशतक टीकाप्रभाषन्द्र	स०	280
	हिं०	६२२	समाधिस्वरूप	सं०	3 7 9
समबक्तरस पूजा – पन्नालाल	हि०	€१=	समासचक	सं०	* 7 8
समबन्नरण पूजारूपचन्द	स०	383	समास प्रक्रिया	सं •	<b></b>
 सम्बद्धाररापूजा—विनोदीलाल ल	ालचन्द		समास लक्षण	<b>e F</b>	४२१
	हि•	દશ્દ	समीरणा पावर्वनाय ६३१त-सानुव	निति सं	\$ 0 4 5
		o, E28	सम्भेद विलास-देवकरण	सं∙	११५७
		६२२	सम्मेद शिखर चित्र		११७२
समबगररापूजालालजीलाल	हि॰	११२०	सम्मेद शिखर पच्चीसी — सेमकर	-	११०७
	.ए- हिं•	60.AX	सम्मेद शिखर पूजा	सं०	3999
समबन्धरण मंगल-नथमल	-		सम्मेद शिलर पूजाबुबजन	हि०	273
समक्ष्युत पूजागुमवन्द्र	सं०	ध्र	सम्मेद शिवार पूजा रामपाव	हि॰	દર્પ

प्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या	। ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
सम्मेद शिलर	पूजा — लालचन्द	हि०	६२२,	सर्व जिनालय	दुजा	सं•	११४=
			£ 7 3	सर्व जिनालय	पूजामाधोलाः	न जयसव	स
			ह <b>२</b> =	1		हि॰	. ६२६
सम्मेद शिक्षर	पूजाजबाहरल	ाल हि०	१०८६	सर्वरसी		हि०	8408
	 (जा— म० सुरेन्द्र		० ६२२	सर्वार्थसिद्धि-पू	ज्यपाद	सस्कृत	<b>= १</b>
सम्मेद शिखर पृ	(जा - गंगादास	सं०	573	I			373
	जासेवकराम	हि०	६२३	सर्वार्थं मिद्धिः	माथापं॰ अयन	स्टराज	s = 2,
सम्मेद शिखर पू	जा-सन्दरस	हि०	६२३	1			≒३, १२०¥
सम्मेद शिस्तर पू	<b>बा</b> हजारीमल्ल	ाहि <b>॰</b>	६२३	सरस्वती दिग्	विजय स्तोत्र	<b>4</b> 0	1174
सम्मेद शिक्षर पू	जाज्ञानचन्द्र	हि ०	६२३	सरस्वती पूजा		हि०	११०४,
सम्मेद शिस्तर पू	ज्ञाजबाहरला	ल हि०	६२४,				<b>१</b> १६=
			६२४	सरम्बती पूजा-	—झान भूषस	हि ०	इ७इ
सम्मेद शिक्षर पू	जा – भागीरथ	हि०	દરપ્ર	सरस्वती पूजा-	—मधीपन्नालाल	हि०	8:3
सम्मेद शिखर पूर	न-चानतराय	हि०	દર્ય	सरस्वती पूजा		सं०	€ ₹ €
सम्मेद शिखर मह	हातम्य पूजामो	नीराम		सरस्वतीपूत्राः	द्रथमाल —- द्र०ि	नदम्स हि	१११०
		हि	६२७	सरस्वती मत्र		ۥ	६२४,
सम्मेद शिखर म	हातम्य पूजाम	नम्खस।	गर				११२०
	- "	हि०	₹₹=	गरस्वतीस्तवन	r	Ħ o	७६४
सम्मेद शिलर मह	हातम्य पुजा दी	क्षित देव	दस	सरस्वती स्ववन	ग्रद्धनायम	संव	७६५
		₽ o	६२ द	सरस्वती स्वृति	प॰ सामाधर	सं०	७६४
सम्मेद शिक्षर मह	ातम्य पूजा	fg o	678				११६०
सम्मेद शिखर याः	वा बर्गनप०	गिरधारी	लाल	सरस्वती स्तोत्र		स०	७६४
		fg o	£ ¥ 3	सरस्वती स्तवन	जानभूषरा	स०	१११०
सम्मेद शिलार वर्ष	i <b>न</b>	fe٠	६५७				3888
सम्मेद िखर बिल	गस—रामच∗द्र	fg •	६४७	सरस्वती स्तोत्र		हि०	११२५
सम्मेद शिस्तर स्तव	ा <b>न</b>	हि०	७६५	सरस्वती स्तोत्र		₩ o	480
सम्मेदाचल पूरा—	-गगराम	हि०	8083	सरस्वती स्त्रोत्र-	ज्ञानभूषण	स •	338
सम्मेदाचल पूजा स	खापन	٩	زءو	संसुणारी संज्ञः	यबुधचन्द	हि ०	७६६
त्रमोसरन रचना	-व∘ गुलाल	€ •	¥33	सर्वया कुमुदच	न्द	हि ०	₹00₹
सदयंग सार विका		fg۰	२४६	सबैया — धर्मचन	7	हिं•	E (9'3
वंज्ञ महात्म्य		₩.	२६२	सबैया — धर्म सि	5	fgo	2115
वंश सिद्धि		e B	२६३	सर्वया-मनोहर		fg۰	8888
विजन स्तुति		सं०	७६४	सर्वया विनोदी	नान	हि०	1070
वंजिन नमस्कार		<b>स</b> ∘	११२७	सर्वया-सून्दरदास		g.	६७८
				•		-	

प्रंथनाम लेखक	माचा प	त्र संस्था	प्रंथनाम लेखक	माषा प	गत्र संख्या
सर्वेषा वावनीमानासाह	fi o	११०८	साधु बन्दनाबनारसीदाम	हि०	७६६.
सहस्र पुण पुत्रा— म० घर्मकीति	<b>Ħ</b> •	878	ľ		538
सहस्र गुरिएन पूजा	स०	393	सःधु वन्दना	हि०	€=0.
सहस्र गुणित पूत्रा — म० गुमच	द्र स॰	.053	J		νοξοχ
सहस्र गुग्गी पूत्रा - लङ्गसेन	हि०	630	साधु समाचारी	モラ	१७४
सहस्रनाम	स०	333	साम्य भावना	सं०	₹¥ <b>६</b>
सहस्रनाम — प्राशाधर	सं०	च <b>ऽ६</b> ,	सामायिक प्रतिकरण	हि०	38. <b>X</b>
	११०६	, ११२३	सामायिक पाठ	प्रा॰	२४०,
सहस्रनामजिनमेन	म०	११२७	२	४१, १०३	४, १०८१
सहस्रताम पूत्रा —धर्मचन्द्र मुनि	स•	630	सामायिक पाठ	सं०	२४२,
सहस्रनाम पूजा—धर्मभूषण	स०	€₹0,	२४३, ६७७,	ECX, ११	२०११२७
		११३८	सामायिक पाठवहुमुनि	स०	२४३
सहस्रनाम पूजा— चैनमुख	हि •	۰٤3	सामायिक पाठ	हि०	२४४,
सङ्खनाम भाषा — बनारसीदास	हि •	818	ह६२, हह३, <b>१०</b>	80, tou	२, ११४७
महस्रक्षीस्त्रोत्र	स॰ ७	६६,६८६	सामाधिक पाठ टीका —सदाम्स	अजीहि०	१०६६
सःसनःसंस्तोत्रः - ग्रावाधर	<b>स</b> ◦	₹00¥,	सामगिक पाठ टीका	हि॰	२४५,
सहस्रनाम स्तोत्र -जिनसेनाचार्य	स०	७७२,			२४६
	=, १००६		सामायिक पाठ भाषा जयवर	द हि॰	213.
सागर चक्रवर्तीकी कथा	स०	<b>१३६१</b>	२	8 e, 8 0 3	8, 8038
सागर धम।भृतग्राशाधर		३, १७४	सामायिक पाठ भाषा — भ० ति	लोकेन्द्रकी	त
मागर वर्मामृत भाषा	हि॰	१७४		हि०	२४४
साठ सवन्मरो	स०	४६=,	सामायिक पाठ माषा—षन्नाल	ाल हि०	588
_	_	3008	नामायिक पाठ मायाश्यामर	ाम हि०	588
साठ सबन्मरी	हि॰	४६⊏,			१०३५
प्रहर, १०३			सामायिक पाठ माचा	हि०	१०८२
साठि सबत्यर ग्रहफल — प० मि	रोमिए स	३३४ ०	सामायिक पाठ संग्रह	सं०	5.8.M
ৰ:ডি	स•	१२०४	सामायिक भाषा टीकात्रिलो	केन्द्र कीर्ति	
सातबीसन गीतकल्याम् मुनि	हि०	१०२७		सं०	€=¶
साधारण जिन स्तवन भानुचन			सामायिक वचनिका जयचन्द		
साधारण जिन स्तवन वृति—क			सामुद्रिक	हि •	१०५९
सः मुद्राहार लक्षण	हि०	१७४	सामुद्रिक शास्त्र	सं०	४६६,
बाधुगीत	हि•	1111			७, १२०५
साबु प्रतिकमस्य सूत्र	সা৽	२४२	सामुद्रिक शास्त्र	सं०	४६६,
साम्रु बन्दनामा० कु नरजी	हि॰	७६६	I		EAR

ग्रंथ नाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम लेखक व	ावा	वत्र संस्था
सामुद्रिक शास्त्र मावा	हि०	६६६	सारस्वत वृत्ति—नरेन्द्रपुरी	स०	<b>४२६</b>
सामुद्रिक सुरूप लक्षण	₩•	१०२५	सारस्वत व्याकररा	सं०	४२६
सारचतुर्विशंतिकासकलकीर्वि	₹ स०	१७४	सारस्वत व्याकरगा दीपिकाभ	० चन्द्र	र्गित सूरि
सहर चौबीसीपाखंदास निगी	त्या हि०	१७४		सं०	४२६
सारसमुज्वय	सं∘	१७४,	सारस्वत व्याकरण पंच संधि व	<b>मुमू</b> ति	स्वरुपाचार्य
	•	६६६, ६८१	Ì	₩.	४२६
सारसमुच्चयकुलभद्राचार्य	स •	<b>د</b> ۶,	सारस्वत सूत्र	स •	५२७
• •		१७५	सारस्वत सूत्र-धनुधूति स्वरुपाः	ार्यं स	५ ५२७
सार समुच्चय	हि •	१०५=	सारस्वत सूत्र	सं०	५२७
सार सिद्धान्त कौमुदी	स ०	५२१	सारस्वत सूत्र पाठ	स∙	५२७
सार संप्रह	स∘	४२१,	सारोद्वार	सं०	8868
	4 6	€, ११७१	सारोद्धारहर्षकीति	स •	१११६
सार संग्रह—महाबीरा वार्य	स •	१२०५	सार्खं इयद्वीपपूजाविध्युभूवरा	सं०	0 ₹ 3
सार सग्रह—वरदराज	म∘	२६३	सादंदय द्वीप पूजा शुभचन्द्र	म०	.∘€3
सार सबह—सुरेन्द्र भूषण	स •	६७=			€ ∌ \$
सार संग्रह	210	१७४	साइंद्रय द्वीप पूत्रा — सुधासागर	स ∘	9 € 3
सारसी	हि०	१११४,	साढं हय होप पूजा	<b>4</b> o	553,
	_	१११७			\$8, 237
सारद नक्ष्मी सवाद — वेगराज	हि०	१०३७	सानिमद्र चौपईजिनराजसूरि	দি ০	6065
सारस्वत चन्द्रिका-धनुभूति स्व	स्पावायं		सावित्री कथा	fţ۰	573
सारस्वत टीका	स•	४२१	सास बह का भगदा-देवा बहा	١٤٠	too'9,
सःरस्वत टीका	स •	५२१,		801	7, 9084
		પ્રસર	सांस्य प्रवचन सूत्र	<b>₹</b> •	२६३
सारस्वत दीपिका वृति - चन्द्रकी		५२२	सांच्य सप्तति	सं०	२६३
सारस्वत बातुवाठ धनुभूति स्व	रूपाचार्य	l	सिलरजी की चौपईकेशरीसिंह	हि ०	8888
	₩ø	५२२	सिज्भाय — जिनरंग	हि०	१०६१
सारस्वत प्रकरस	सं ०	* २२	सिज्माय मान कवि	fee	१११७
सारस्वत प्रक्रिया-प्रनुपूर्ति स्वस	पाचार्य		सिद्ध कूट पूजा	स०	633
	स •	ध्रक,	सिद्ध क्षेत्र पूजा	सं०	2028
<b>४२४</b> ,	४२४, ४	₹६, ६५४	सिद्ध क्षेत्र पूजा-दीसतराम	हि०	E 17
सारस्वत प्रक्रिया	40	४२६	सिद्ध क्षेत्र पूजा प्रकाशकान्द्र	fg o	883
सारस्वत प्रक्रिया-परिवासकाचा	र्थ सं •	१२०४	सिंख बोत्र पूजा	fg o	213
सारस्वत प्रक्रिया बुलि-महीभट्टा	चार्य सं•	४२६	सिद्ध को त्र पूजा-स्वरूपकरद	<b>18</b> •	643
सारस्वत वृत्ति	सं∙	४२६	सिद्ध गिरि स्तवन — सेम विवय	€io	480

ग्रंच नाम लेखक मा	वा '	पत्र संख्या	प्रथम सेलक मावा पत्र सक्या
सिद्ध चक कथा गुमचन्द्र	सं∘	४०१	सिद्धान्त चन्द्रिका स० ५२६
सिद्ध चक कथाश्रुतसागर	स०	४०१	सिद्धान्त चरिद्रका टीका—सदानन्द सं० ५३०
सिद्ध चक कथा - भ० सुरेन्द्र कीर्ति	गसं∙	४०२	सिद्धान्त चन्द्रिका टीका-इर्वकीति सं० ५३०
सिद्ध चक वत कथा—नेमिचन्द्र	<b>स∘</b>	५०२	तिद्धान्त गुरा चौबीसी-कत्वासादास हि० १०६५
सिद्ध चक वत कथानथमल	हि०	४०२	सिद्धान्त मुक्तावली सं० २६३
सिद्ध चक गीत-प्रमयचन्द्र	हि०	६५२	सिद्धान्त रस शब्दानुशासन सं० ५४०
सिद्ध चक पूत्रा	सं०	€€€	सिद्धान्त शिरोमिशा—भास्कराचार्य सं० ५६६
सिद्ध चक पूजाप॰ माशाधर	₩•	£\$3	सिद्धान्त सागर प्रदीप सं० ६७
सिद्ध चक्र पूजा—धर्मकीति	स०	£\$\$	सिद्धान्तसार सं॰ ६६६.
सिद्ध चक पूजा—ललितकीति	e FF	६३३	55.00
सिद्ध चक्र पूत्रा—भ० णुभचन्द्र	Ħ o	६३३	सिद्धान्तसारजिनचन्द्राचार्य प्रा० ५३
		१२०६	सिद्धान्तसार दीपकनथमल बिलाला हि॰ ६४,
सिद्ध चक्र पूजा—संतनाल	हि०	883	८६, ८७, १०७२
सिद्धं चक्र पूजा—देवेग्द्रकीति	सं०	१११⊏	सिद्धान्तसार दीपक — भ० सकलकीर्ति सं० ८०,
सिद्ध चत्र पूजा पद्मनन्दि	स०	९१६	<b>८४, ६</b> ४
भिद्ध चक्र यत्र	स०	६२४	सिद्धान्तसा सग्रह-नरेन्द्रसेन स० ८७
सिद्ध चक्र स्तुति	भा०	७६६	सिद्धिप्रिय स्तोत्र—देवनन्दि स० ७६७,
सिद्ध चनुदंशी — भगवतीदाम	हि०	११५१	७६८, ११२७
सिद्धि दण्डिका स्तवन	গা ০	७६७	सिद्धिप्रिय स्तोत्र स॰ ७७५
निद्ध धूलरत्नकानि	हि०	१०२७	सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीकाआशाधर सं० ७६=
सिद्ध पूजा—श्वानतराय	हि०	१००२	सिद्धिप्रियस्तोत्र माषाश्वेमराज हि० ७६८
सिद्ध पूजा	स •	538	सिन्दूर प्रकरग्। हि॰ ६६२
सिद्ध पूजा भाषा	हि०	€38	सिन्दूर प्रकररग-अनारसीदास हि० ६६६,६६७
सिद्ध पचासिका प्रकररा	भा०	२४७	११४४, ११६७
सिद्ध प्रिय स्तोत्र-वंबनन्दि	स०	६=२	सिंघकी पायडी हि० १०५६
सिद्ध भक्ति	<b>\$10</b>	७६६	सिंहनाम चरित्र हि॰ १००१
सिख मूमिका उद्यापन-बुधवन	हि०	K 2.3	सिहासन बलीसी — ज्ञानचन्द्र स० ५०२
सिद्धहेममञ्दानुषासन हेमचन्द्राच	ार्य सं०	X \$ 0	सिहासन बत्तीसीविनय समुद्र हि० ५०२
सिबहेमणब्दानुशासन सोपज वृत्ति	— हेम <b>व</b>	न्द्राचार्य	तिहासन बत्तीसी — हरिफूल हि॰ ५०३
· 7	सं०	y:o	सिहासन बत्तीसी हि॰ ५०४
सिद्धाचल स्तवन	हि०	१०६१	सिहासन बत्तीसी हि॰ १००१
सिद्धान्त कौमुदी	स०	५२७	सीसामण रास हि० ६५१,
विद्यान्त चरित्रकारामवरदासम	स०	¥ २ <b>-</b> ,	रंश्वृद
•		४२६	सीसामणि रास-सकलकीति हि॰ १०२४

वंच नाम	लेखक	मावा	पत्र संस	या   संव नाम	लेखक	चावा	पत्र संस्था
चीता चरित्र	रामचस्द्र (करि	वंबालक)	igo ¥o	€, सुक्वविसास—			
١	( e. e. e.	1950	0 WX 220	§ 3		A14141 164	१७६, ६७व
सीताओं की बीत	नती	हिं	• ११२		मान कवा	দ্যা •	4 - H
सीलासीस पता	कागुए। बेलि	<b>धा</b> ० ः	वयकी ति	सुगुरु चितामरि		हि-	1170
_		हि	. £x				१०३५
सोता सतुभग	वतीदास	हिं०	€¥:	८ सुगरु शतक	<b>बोधरा</b> ज	(go	480
			€=	४ सुगंच दशमी		सं∙	44
सीताहरण रास-	-जयसागर	हि •	ÉRE	1 3			¥ 0 %,
	_		£ 81	असम्बद्धमीक	या—खुशा <b>नव</b>	मद्र सं०	<b>₹•</b> ₹,
सीमंघर स्तवन	कमलविजय	सं०	£ 8.				€₹₹
सीमंघर स्तवन		हि०	1131			हि ०	* 04
सीमघर स्तुति		स०	७६०			हि•	833
सीमंबर स्वामी स्त	स्थन प० जय	वन्त हि	ુ હદ€			<b>€</b> •	***
सुमा बहत्तरी		हि ०	<b>₹</b> ₹	सुगन्ध दशमी बत		स •	£ \$ 4
सुकुमार कवा		स •	४०४	सुगन्ध दशमी बत	कियाभकर	ंद हि∘	& <b>E</b> ≸
मुकुमाल कथा		मं •	११६१	मुगन्ध दशमी वत	कथामलय	कीनि हि०	१०६९
सुकुमाल बरिउ		and o	* \$ \$ \$	सुदर्भन चरित्र -		स∙	888
सुकुमास चरित		भप०	* ? ?	मुदगंन चरित्र		स •	88€
सुकुमास चरित्र	म० सकलकीरि		٧११,	सुवर्णन चरित्र-			XXX
		¥	१२, ४१३	सुबर्शन चरित्र			XSX
सुकुमाल चरित्रन		हि॰	*?3	मुदर्शन वरित्र		भए •	A\$#
सुकुमान चरित्रभाषा		ल पूर्व		सुदर्शन चरित्र भार			860
सुबुमाल बरित्र मार	T	हि॰	XIX	सुवर्णन गम		हि०	६४८,
सुकुमास चरित्र वच	निका	fę •	¥ \$ ¥			a' star	, ११४७
सुकुमास चरित्र		fg o	¥ <b>?</b> ¥	सुदर्शन रास व		ह्य	£¥0,
सुकुमास वरित्रभ	• यशकीति	f٤٠	848	€४३, ६४३, ६६	E, 808, 80		
सुकुमास सरमाय-			<b>₹</b> #₹				1051
सुकुमास स्वामी खंद-	🗝 । धर्मदास	f(o	४०४	सुदर्शन सेठ कवा	-तस्य	i¥•	646
सुकुमाल स्वामी रास-	वर्गरनि	₽•	\$\$80	सुदावा चरित्र		(E)	११०३
सुकीवल रास		R.	2250	सुदंसरा वयमास		हि•	2500
सुकीसम रासमंग		fg.	११३७	सुदृष्टि तरंगिस्हो	टकचन्द	हि•	\$ '0'U
सुकीमल रास-वेशी	दास	हि॰	€¥0				१७व
मुक्तीमन रास—सांसु		fۥ	1091	मुन्दर गृ'गार मह	raferra	e	१२०६
सुक्रनियान जगन्नाच		#•	YEX	\$ -1 .6 -11/ HE	१ का प्रमाण	ſξ∙	६२१, ११६८

हुण्यर त्यंगार—मुन्दरवास हि॰ ६२६, सुण्यर स्तोत्र सं ० ६६६ सुण्यर सेहाः हि॰ १०२६, सुण्यत्य सेहाः हि॰ १०२६, सुण्यत्य सेहाः हि॰ १०१६, सुण्यत्य सेहाः सं ० ६६६, सुण्यात्य स्वान्त हि॰ १०१४, सुण्यात्य स्वान्त हि॰ १०१४, सुण्यात्य स्वान्त हि॰ १०१४, सुण्यात्य स्वान्त हि॰ १०१४, सुण्यात्य स्वान्त हि॰ १०१५, सुण्यात्य सं १०१५, सुण्यात्व सं १०१, सुण्याव सं व्याप्त सं १०१, सुण्यात्व सं १०१, सुण्याव सं विल्व सं ११६०, सुण्याव सं १०१, सुण्याव सं विल्व सं ११६०, सुण्याव सं सं ११६०, सुण्याव सं १०१, सुण्याव	पंचनाम सेवक ।	गवा	वत्र संस्था	प्रंचनाम सेवक	मावा प	पत्र संस्था
हुन्य स्तोत्र सं	बुन्दर श्रृंगारमृन्दरदास	fgo				
सुन्य स्तोत्र संहा हि॰ १०१६, सुन्य स्वयादी स्वयाहक हि॰ १०१६, सुन्य प्रवचीती हि॰ १०१६, सुन्य प्रवचीती हि॰ १६६६ सुन्य प्रवचीती हि॰ १६६६ सुन्य प्रवचीती हि॰ १६६६ सुन्य प्रवचीती हि॰ १६६६ सुन्य प्रवचीती हि॰ १६९६ सुन्य सुन	• • •			सुमीम चरित्र रत्नचन्द्र	सं•	₹₹=
हुन्य होता हि ० १०२६, इसति—हुमति की जबही—बिनोदी लाल रि ० १०६६ हुम्मतान करने हि ० १०६६ हुम्मतान करने हि ० १०६६ हुम्मतान हि ० १६०६ हुम्मतान हि ० १६	सुम्बर स्तोत्र				हि०	1066
हुनेव कुपंच वण्चीयी हि० ६६६ हुमसीताब दुराण्—वीक्षात देवदस हि० ३०१ हुमुद्ध प्रकास— यानांवह ति० ६६७ हुमस्या प्राय्य—वीक्षात देवदस हि० ३०१ हुमस्या प्राय्य—वीक्षात देवदस हि० ६६० हुमस्या—यानंवह ति० ६६० हुमस्या—यानंवह ति० ६६० हुमस्या प्राय्य—वीक्षात देवदस हि० ६६० हुमस्या प्राय्य—वीक्षात देवदस हि० ६६० हुमस्या प्राय्य—वीक्षात तिराञ्य स० ४६० हुमस्या विरत्य—वादराञ्य स० ४६० हुमायित सथा स० ६६० हुमायित सथा हि० १०६० हुमायित हि० हुमायित हुमायित हुमायित हि० हुमायित हि० हुमायित हुमायित हुमायित हुमायित हुमायित हुमायित हुमायित हुमायित हुम	सुष्पम दोहा	हि०		सुमति-कुमति की जसकीविन	ोदी सास	
सुन्न विकास स्वाप्त		`			हि॰	१०६५
सुन्नाविक स्तोत सं	सुपंच कुपंच पञ्चीसी	हि०	333	सुमति कुर्मात संवादविनोदील	ाम डि॰	<b>११</b> •२
सुबुधि कराज — वानसिंह सिं	सुप्रमातिक स्तोत्र	सं०	७६१			
मुशहबरा— निर्मा हि॰ १०१४ सुम्म स्वक्रमां हि॰ ५२५ सुम्म स्वक्रमां हि॰ ६५५ सुम्म स्वक्रमां हि॰ ६५६ सुम्म स्वक्रमां हि॰ ६५६ सुम्म स्वक्रमां हि॰ ६५६ सुम्म स्वक्रमां हि॰ ६५६ सुम्म स्वक्रम स्वक्र	सुबुद्धि प्रकाम थानसिंह	fg o	६६७			-33
पुना सज्ज्ञाव हि॰ ७६% सुने सावति सं १२०६ मृत्रावित हि॰ ६९% सुन्न सावति सं ११० १९% मृत्रावित  सं ११० १०% मृत्र	सुकोधि का	₩.	¥\$•	सुरसुन्दरी कथा	हि •	* 40
मुनाबित हि॰ ६५७. सुकाबनी सं १२०६ पुत्रापित सं १११० सुकावित सं १११० सुकावित सं १९६६ सुकावित सं	मुमद्रकथा—सिधो	f∉ o	8088	सुसोचना चरित्र-वादिराज	स∙	४१८
सुनापित सं ६० ६८७ वृक्षापित सं ६० ६८७ वृक्षापित सं ६० ६८७ वृक्षापित सं ६० ६८० वृक्षापित सं ६० ६८० वृक्षापित कथा सं ६० ६८० वृक्षापित प्रश्तोपित रत्नासान नातनागर सं ६० ६८० वृक्षापित प्रश्तोपित रत्नासान नातनागर सं ६० ६८० वृक्षापित प्रश्तोपित सं ६० ६८० वृक्षापित विकास सं ६० ६८० वृक्षापित विकास विता विकास	सुमद्र सज्भाव	हि०	470	सुवेशा चरित्र	सं∘	<b>¥</b> ₹⊏
सुनाधित सं ६० ६६० मुनाधित स्वरुक्ति पुरावक्षी माया—मुन्दसाल हि॰ ७०७ मुनाधित प्रकास मानामाय सं ६० ६६० मुनाधित प्रकास मानामाय सं ६० ६६० मुनाधित प्रकास मानामाय सं ६० ६०० हि॰ १००६ हि०	मुम। वित	हि॰	<b>६९७</b> .	सूक्ता <b>व</b> ली	सं•	१२०६
हुनावित—सक्तवनीनि स० ८६० सुन्नापित कचा स० ४०६ सुन्नापित प्रश्तोति रत्नासा—नात्मापर स० ६६० सुन्नापित रत्नासा—नात्मापर स० ६६० सुन्नापित रत्नासा स० ६६० सुन्नापित रत्नासा स० ६६० सुन्नापित स्वरू हि० १०५८ सुन्नापित स्वरू हि० १०५८ सुन्नापित स्वरू हि० १०५१ सुन्नापित स्वरू हि० १६०१	•		<b>१११७</b>	मूक्ति मुक्तावली	हि•	€ <b>७</b> €
पुनार्धित कचा सं ० ८६० पुनार्धित कचा सं ० ४०६ पुनार्धित कचा सं ० ४०६ पुनार्धित व्यवस्थार रस्तमाला — नातमागर पुनार्धित व्यवस्थार — प्रतिकारित तं ० ६६८ पुनार्धित संयहं हि०स० १८६६ सुनार्धित र्धिय — सकलकीति सं ० ६६४ सुनार्धितार्धिय — सकलकीति सं ० ६६४ सुनार्धितार्धिय — सकलकीति सं ० ६६४ सुनार्धिताय्वे — सकलकोति सं ० ६६४ सुनार्धिताय्वे — स्वर्धित सं ० १८६४ सुनार्धिताय्वे — स्वर्धित सं ० ६८६ सुनार्धिताय्वे — स्वर्धित सं ० ६८६ सुनार्धिताय्वे — स्वर्धित सं ० ६८६ सुनार्धिताय्वे सं ० ६८६ सुनार्धिताय्वे — स्वर्धित सं ० ६८६ सुनार्धिताय्वे — सं ० ६८६ सुनार्धित् — सं ० ६८६ सुनार्धिताय्वे — सं ० ६८६६ सुनार्धिताय्वे — सं ० ६८६६ सुनार्धिताय्वे — सं ० ६८६६ सुनार्वे — सं ० ६८६	•	सं०	६६७	सुक्ति मुक्तावतीभाषाबनारसीव	ास कि	8¥8
पुत्राधित प्रश्नोत रस्तमाला — ज्ञानमागर  स० ६६८ पुमाधित संयह हि॰ त०० ११६८ पुमाधित संयह हि॰ त०० १६६८ पुमाधित संयह हि॰ त०० ११६८ पुमाधित संयह हि॰ त०० ११६८ पुमाधितायं पुमाधित संयह हि॰ त०० ११६८ पुमाधित संयह हि॰ त०० १६६८ पुमाधितायं पुमाधित संयह हि॰ त०० १८६८ पुमाधितायं पुमाधित संयह हि॰ त०० वर्षा पुमाधित संयह हि॰ तथ्य पुमाधित संयह हि॰ १९४४		स०	८६०			
पुनाषित अस्तार (रत्नमाला नानमाय स्त क्ष्णे क्षणे स्वाप्त स्वोह—प्रावितात म कि ६६७ पुनाषित संवह हि॰ १०६८ पुनाषित संवह हि॰ १०६८ हु॰ १०६८ हु॰ १९६८ पुनाषित संवह हि॰ १०६८ १९६६ पुनाषित संवह हि॰ १८६८ हु॰ १९६८ पुनाषित संवह हि॰ १९६८ हु॰ १९६८ पुनाषितार्थन—सकलकीत स ० ६६६ हु॰ १९६८ पुनाषितार्थन—सकलकीत स ० ६६६ हु॰ १९६८ पुनाषितार्थन सकलकीत स ० ६६६ हु॰ १९६८ पुनाषिताय्वन हु॰ १९६१ पुनाषिताय्वन हु॰ १९६६ पुनाष्त हु॰ १९६६ पुनाष हुणाय्वन हु॰ १९६६ पुनाष हु॰ १९६६ पुनाष हुणाय्वन हुणाय्वन हु॰ १९६६ पुनाष हुणाय्वन हुणाय्वन हुणाय्वन हु० १९६६ पुनाष हुणाय्वन हुणाय						
पुष्पाणितास्त्र सहोह—प्रामितार्गत न ० ६६८ एवं प्रमुख्य स्वाधित स्वाह्म प्रामितार्गत न ० ६६८ एवं प्रमुख्य स्वाधित स्वाह्म हिंद १८६६ हिंद १८६ हिंद १८६६ हिंद १८६ हिंद १८६६ हिंद १८६ हिंद १८६६ हिंद १८६६ हिंद १८	सुभाषित प्रश्नीत्तर रत्नमाला — इ	सनमा			-	
पुनाशिवरतावाकी में ० ५०६ सुनाशिवरतावाकी में ० ५०६ सुनाशिवरतावकी में ० ५०६ सुनाशिवरतावकी है ० १०६८ सुनाशिवतावं है ० १०६८ सुनाशिवतावं है ० १०६८ सुनाशिवतावं है ० १६६८			६६७			
पुनाधित त्यंक हि॰ १०४८ पुनाधित संयह हि॰ १००९ सुनाधित संयह हि॰ १००९ सुनाधित संयह हि॰ १००९ सुनाधित संयह हि॰ १००९ सुनाधिताएँच—सकलकीति स॰ ६६४, ६६०, १००९ सुनाधितायकी मु॰ ६६४, ५००, ७०१, ६६४ सुनाभितायकी मु॰ ६६४, ५००, ७०१, ११९६ सुनाभितायकी मु॰ ६६४, सुनाभितायकी स॰ ५०० सुनाधितायकी सं १००			६६६			
पुनावितावती - हुनीवार हि॰ ७००, ११४६ मुन कि सबह स॰ ७०० पुन सुनावितावती - हुनीवार हि॰ ७००, ७२१ ११६६ सुन कर्यान हि॰ ११०४ सुन सावान हि॰ १००, ७००, ७००, ११६६ सुन सावान हि॰ १०० सुन सावान हि॰ ११०४ सुन सिद्धान्त वीपर्व हि॰ ॥ ११० सुन सावान हि॰ ॥ ११० सुन सुन सावान हि॰ १०४४ सुन सावान हि॰ १०४४ सुन सावान हि॰ १०४४	-					
हु-का-विकास हिल्ल १८६०, १८४६ सुन्न हिलांच - सोमसेम सुन्न हुन्द हुन्द सुन्न कर्यान हुन्द हुन्द सुन्न विक् सुन्न विक् सुन्न हिल्ल सुन्न हुन्द सुन्न सिन्द सुन्न सुन्न हुन्द सुन्न सुन्न हुन्द सुन्न स	7 .	-				
मुभावितारांव—सकलकीति स.० ६६४, ६८६, ६८६, ६८६, ६८६, ६८६, ६८६, ६८६,						
ह्रेट, ह्रेट, जिल्हें पुनर्सावतावनी मुल्हें कर प्रदेश सुनरू विचि सं क्षेत्र स्थापन नार सोमसेन सं राष्ट्र सुनर्सावतावनी स्व जिल्हें कर स्थापन नार सोमसेन सं राष्ट्र सुनर्सावतावनी सुन्र १०० पुनर्सार सं राष्ट्र सुनर्सावतावनी सुन्र १०० पुनर्सार सं राष्ट्र सुन्न सिद्धान्त चीवर्ष सं राष्ट्र सुन्न सिद्धान्त चीवर्ष सं राष्ट्र सुन्न सिद्धान्त चीवर्ष स्व राष्ट्र सुन्न सिद्धान्त चीवर्ष सुन्न सिद्धान्त चीवर्ष सुन्न सुन्न स्वान सुन्न स			1			
१००१,६२४           मुगमिवतावली         म०         ६१६५         सृतक वर्णन         ह०         १९०४           मुगमिवतावली         म०         ११६१         सृतक वर्णन         म०         ११६१         सृतक वर्णन         म०         ११६१         सृतक वर्णन         म०         ११६१         सृतक वर्णन         म०         १११७         सृतक वर्णन         म०         १११७         स०         १११७         स०         १११७         स०         ११०         स०         ११०         स०         सृत्र विच         स०         ११०         ५००         सृत्र सिद्धान्त बोपई         १०००         ५००         सृत्र स्वान         स०         ८००         सृत्र स्वान         स०         ८००         ५००         सृत्र स्वान         स०         ८००         ५००         ५००         ५००         ५०००         ५०००         ५०००         ५००००००००००००००००००००००००००००००००००००	यु-मायवार्शय—सकलकात				4 -	-
मुभिवताबनी मु० ६११, सुनक बर्गन हि० ११०४ पुग्मिवताबनी—कनककोति स० ७००, ७२१, ११६१ सुनक कनोक स० १११७ सुग्मिवताबनी—कनककोति स० ७०० सुग्मामुन—कुन्बकुन्याबार्य सा० ८७० सुग्मामुन—कुन्बकुन्याबार्य स० ८५७ सुग्मिवताबनी हि० ७०० सुग्मामुन सिद्धान्त बीगर्य हि० ५०४ सुग्मिद्धान्त बीगर्य हि० ५७४ सुग्मिद्धान्त बीगर्य स० ८७४ सुग्मिद्धान्त बीगर्य स० ८७४ सुग्मिद्धान्त बीगर्य स० ८७४ सुग्मिद्धान्त बीगर्य सग्चम्मकरण्य हि० १७४४		,		सुतक बर्णन – भ० सोमसेन	सं ०	
पुर्व प्रश्निक स्वाप्त स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वय्य स्वर्य स्वर्य स्वय्य स्वय्य स्वय्य स्वय्य स्वय्य स्वय्य स्वय्य	C					
पुगाबितावनी-—कनकोति तः ७०० सुत्र प्राप्ट्रत —कुन्दहुन्दावार्य प्राः ८७ सुत्र प्राप्ट्रत —कुन्दहुन्दावार्य प्राः ८७ सुत्र विचि सं १६० सुत्रसार सं १६० ५०० सुत्रसार सं १६० ५०० सुत्रसार सं १६० ५०० सुत्रसार स्वाप्ट्रत स्वाप्ट्रत स्वाप्ट्रत स्वाप्ट्रत स्वाप्ट्रत स्वाप्ट्रत स्वाप्ट्रत स्व					-	
मुधावितावनी हि० १०१८ सुम्र विधि सं० ११७ सुम्राधितावनि माया—सुण सम्बद्ध ६० ७००, सुम्र साद्धात्त चीवर्ष सं० १३० ७०१ सुम्र सिद्धात्त चीवर्ष हि० ५७ सुम्र सिद्धात्त चीवर्ष स० ५०० सुम्र स्थान स० ८७ सुम्र स्थान स० ८७						
सुभाषिताविक माया—सुका सकार हि० ७००, सृत्रशार सं० ४३० ७०१ सूत्र सिद्धान्त बीपई हि० स७ सुभाषितावती—सुनीवाद हि० ७०० सुभाषिताविक माया—यमकास बीपरी	* .		1			
७०१ सूत्र सिदान्त बोपई हि॰ प७ सुप्रापितावनी—दुनीबन्द हि॰ ७०० सूत्र स्वान स॰ ८७ सुप्रापितावनि नाषा—बन्नावान बोषशे सुम सुमनी की कथा—रामकृष्ण हि॰ १०६४	-			***		
सुमावितावती—दुलीवन्द िः० ७०० सूत्र स्थान स० ८७ नुत्राचितावति माथा—प्रशासास चौथरो सुम सूमनी की कथा—रामकृष्ण हि० १०६४	Annaman and An uan	. 160				
नुभाषितावित नावा—वन्नालास वीवशे सूम सूमनी की कथा—रामकृष्ण हि० १०६४	समाधिताबसीवसीचन्द	fr o			-	
- Part 1 - P			1	•		
	4	R .	9,5%	सुरज जी की रकोई	हि॰ वि	2123

	संसक ३	गवा	पत्र सस्था	( पंच नाम	लेखक	मावा	पत्र संस्था
प्रंच नाम		।।पाः हि०		1		4io	v£3
सूरत की बारह		हिं हिं		सोलहकारण	मडल पूजा मंडल विधान	हि <b>॰</b>	v F 3
सूरसगाईसूर सूर्वाष्ट्रक स्तोत्र	दास	ाह∙ सं≎		1	नक्तापनाग शस व्र० जिनद		₹¥4,
सूर्याष्ट्रक स्तान सूर्यकवच		# e		414641761	ाल अव । जन्म	14 16 2	\$ <b>\$ \$ \$ \$</b>
सूर्यग्रहण सूर्यग्रहण		<b>#</b> 6		Dinertin	ास-सकलकोति	हि•	£ ¥ ¥.
भूगगरूल सूर्यप्रकाश – श	ro मेपिकटर	सं		""" 641.761		.6-	1116
सूर्यंद्रतीद्यापन-		संव		सोलहकारएा	वत कथा	fge	2853
	[बाव∘ ज्ञानसा				वतीद्यापन पूजा	₹•	<b>U</b> F3
भूर्यंसहस्र <b>ाम</b>		सं०		1	वतोद्यापन पूजा	हि०	€ 3
X-aba			₹₹0€	सोलहकारस		हि०	0 5 3
सूर्यस्तुति		हि॰		सोलह सनी -		हि॰	११२६
भूगा बत्तीसी		हि			सिज्ञाय—प्रेम	चन्द हि०	१०६८
	च्यायविजयसा	ल हि	५ ५ ६		छ्पयविद्यासा		₹00₹
सँद्धान्तिक चर्चा		fg o		सोह स्तोत्र		स०	७६६,
सेद्वान्तिक चर्चा		हि०					* * * *
सौनागिरि पूजा	•	fg۰	¥ £ 3	सीस्यकास्य व	तोद्यापन विधि	स०	€३=
सोमप्रतिष्ठापन	বিধি	₩•	१०८१	सीस्य पूजा		हि०	233
सोमवती कथा		स •	४०६	सीमाग्य प्रचर्म	ो कथा	<b>स</b> •	४०६
शोलहकारण उद	।।पन –सुमति स।	गरसं	e # ¥	सकट दशा		<b>स</b> •	200
	गपन <b>ध</b> मयननि		£3X	संकल्प शास्त्र		ە o	१२०४
•			६३६	सकान्ति फल		सं०	११३४
मोलस्कारण कर	ग	हि०	११४३	संकान्ति विचा	र	हिल	ERR
सोसहकारण वय		प्रा०		सक्षेप पट्टावसं	f	हि॰	६५३
सोलहकारण जय		ध्रप व		सम्या शब्द स	धिका	₩•	8508
सोलहकारण जय		ЖIO		संगीतशास्त्र		स•	<b>६०</b> €
सोलहकाररा वय		हि०	F33	संगीत स्वर भे	द	म०	₹0€
सोलहकारस पार	_	सं०	3889	संबद्ध		हि •	€ ७=
सोलहकारस पूज		₩•	834,848	संग्रह ग्रंथ		स∙	६७८
सोसहकारण पूज		ন্ত্ৰি ০	£ \$ \$ , £ 4 \$	सम्रह ग्रंथ		सं०	६७६
शोलहकारण विष		हिं•	of 3	सग्रहस्ती सूत्र		प्रा∙	50
सोलहरूरस पूजा		<b>સ</b> •	v f 3	संबह्णी सूत्र	माया	fţe	45
सोमहकारए पूज		স্য •	१०११	संबहरणी सूत्र-		• 1K	54
सोनह्यारस मार		ij o	EXE		-मल्लिक्स <b>सू</b> रि	MIP	55
क्षोसहकाहरा भाव		ۥ	102		गवा दय।सिंह		हि॰ =
G 6.0	**	•					

ग्रंथ नाम	लेखक भा	वा पत्र	संस्था	प्रथ नाम	नेपान 🕟	मावा प	त्र संस्था
संवयूत		हि०	¥ • €	सबोध सत्तासुद्	श —वीरवण्द	हि॰	19 a 16.
संघपगट्टक टीव	ग व ० जिनबस्लभ	सूरि			,	1 1	2170
		सं०	६५७	मंबोध सत्ताबसी	भावनावीः	रचन्द हि०	ह <i>५</i> .२
संव पट्ट प्रकरर	ŋ	₩ė	६१७	सबोध सत्तरि	<b>यशेखर</b>	हि॰	£ X '5
सधरा सूत्र		प्रा०	<b>5</b> €	संभवजिनचरित्र	-तेजपास	भ्रपञ्जंश	88€
संवायशि—हे	<b>सू</b> रि	9Te	387	मंबर्जनादि साधन-	-सिद्ध नागाः	ज़ॅन हि∘	£28
सजाप्रकिया		₽ o	११०३	सबत्सर फच		हि॰	£ 88;
सन्तारमु भावना	वीरचन्द	हि॰	283=				8068
सनोष जयतिल	कबूचराज	हि॰	833	सबस्सर ६० नाम		हि०	११३४
संथारा पोरस	वेषि	সা৹	२३८	संबत्सरी		हि०	५७०,
सद्यारा विवि		भा॰	१३८				६४७
सदेह समुच्चय-	—ज्ञान कलश	供。	१७१	मदरसर महात्म्य र	ीका	स∙	X 100.
मध्या वन्द्रना		स०	१२०४				e y y
मध्यामत्र—गी	निम स्वामी	स •	६२४	संबरानुत्रे छ।—सू	रत	हि०	₹¥
सबोध ग्रक्षर व	।वनी	हि ०	१०६२	सवाद मुन्दर		सं०	५०६
सबोध ग्र <b>क्त</b> र ब	ावनी द्या <b>न</b> न राय	हि॰	8083	सक्टचीय कथा	–देवेग्द्रभूषशः		***
सबोध दौहा~	सुप्रभाचार्य	हि०	१७८	संस्कृत मजरी		सं ०	¥30,
सवोध पचानिम	FT	গা ০	৬০৬,				€0₹
			१३११	सम्कृत सजरी	रदराज	स०	४२०
मंत्रोध पचासिक	57	प्रा० सं०	€ હ∙છ	संसार विचितिका		हि०	844
मबोध पचासिक	Fit	₹•	१७२,	ससार सासरयोंगी	7	feo	१०२७
		€€४,	8838	संसार स्वरूप		सं०	384
सबोध पचामिक	et.	हि०	११०५	स्तवन ग्रःएांद		हि०	990
सबोध गंचासिक	श — गौतम न्दामी	भा ०	१७२	स्तदन गुरुसूरि		हि०	७६६,
सबोध पंचासिक	51	हि०	203	- "		-	१०६५
संबोध पवासिक	ы—मुनि ध <b>मंच</b> न्द्र	हि०	१०२१	स्तवन - ज्ञानभृषः	ij	हि०	११०७
सबोध प्रवासि	कावानतराय	हि०	१७२	स्तवन पाठ		सं०	990
सबोध पचासिक	ठाबुधजन	180	805€	स्तवन सग्रह	f	हे० सं०	990
संबोध पश्चासिक	•	e PR	2848	स्तुति ग्रहंत देव	-वृन्दाबन	हि ०	१०६४
संबोध रसायन-		fg o	e \$3	स्तुतिधानतराय	-	हि॰	6668.
संबोध सन्तरी		प्रा॰	१७२	स्तुतिभृषरदास		हि •	७२१
	-जयशेखर मृरि	ЯIO	१७२	स्तुति पंचासिका-	—पाण्डेसिहरा		990
संबोध सन्तरी	"	स०	808	स्तुति संग्रह	•	हि•	600.
संबोध सन्तरी		हि॰	१७२	1		, ]	884₹
		•					

वंच माम सेसक	शावा	वत्र संख्या	ग्रंथ मान लेखक म	ाषा	पत्र संस्था
स्दुति संबद्द	πί•	990	स्वप्न बलीमी-भगौतीदास	हि॰	
स्तोत्र बतुष्टय टीका—ग्राता	बर स०	990	स्वप्न विचार	fg •	१७०
स्तोत्रत्रय माद्या	fg∙	१०७२	स्वप्न गुभासुभ विचार	fgo	848
स्तोच पार्श्व	हि	930	स्वप्नसती टीका गोवर्द्धनाचार्य	₩•	५७०
स्तोत्र पूजा	fg o	१३८	स्बप्नाध्याय	सं०	X O o
स्तोत्र पूजा	सं•	€\$5	स्वप्नाध्यायी	स •	X 10 E,
स्तोत्र पूजा सम्रह	हि॰	१२६७			४७१
स्तोत्र सग्रह	प्रा॰ स॰	900	स्वाप्नावली	सं०	ৼৢ৽৽
•	હહ	4, ११६५	स्वप्नावली — देवनन्दि	Ħ o	
स्तोत्र संग्रह	स०	000,	स्वप्नावलीवीरसेन	सं •	₹08=
७७१, ७७२, ७७३,	994. 9	७३३ , ४७	स्वयंभू स्तोत्र घा० समतमद	स०	 994.
स्तंत्रनक पारवंनाच नगरकार	ۥ	EXE	रमय पूरियान काण सम्यामक		
स्त्री जन्म कुरुडली	स •	४६०			१, १००२, '३, १००२
स्त्री द्वावण विवि	स •	<b>4</b> 62			'३, १०८२, ७, ११३६,
स्त्रो सक्षण	हि०	\$\$3R			
स्त्री सज्भाय	हि०	€ ₹ ₹ 3			४७, ११५४
स्थरावली चरित्र-हेमबन्द्रार्थ	Ħ o	१२०७	स्वयं मूस्तोत्र-विवनन्दि	स०	११२७
स्वानक कथा	यं 0	५०७	स्वयम् स्तोत्र मायाचानतराय	हि०	७७६
स्थान माला	हि •	१०५७	स्बयम् स्तोत्र रेखा प्रमाचन्द	स •	३७७
स्यूलश्रद्ध गीतसाबच्य समय	हि•	१०२६	स्वर् विचार	हि०	400
स्यूत्रभद्रको नदरास	-	£X3	स्बरोदय-चरणदास	हिं०	* * * *
स्थूलबद्ध फ.ग्रु प्रवन्ध	Ai o	وفوه	स्वरोद्रय—कपूरवन्द	fgo	9 e x
स्थूलमद्रनुराय उदय रतन	fgo	<b>4</b> 24,	म्बरोदयप्रहलाद	हि०	१७२
, -		8058	स्बरोदय — मोहनदास कायस्थ	हि•	* 8 3
स्थुलभव सण्भाव	fz o	<b>१</b> ६६	स्वरोदय टीका	<b>₹</b> 0	408
म्यूनभद्र सिज्य बगुणबद्धंन स्	रिहि•	₹•६८	र बरूपानन्द – दीपचन्द	f٤٠	5 40
स्नपन	fgo	2254	स्वरूप सबीधन पच्चीसी	स •	१७६
स्तपम विधि	<b>#</b> •	£ 9 =	स्वम्स्ययन पाठ	स०	€ = •
स्नपन बृहद	स •	€₹5	स्वाच्याय भक्ति	₩.	₹७€
स्तेह परिकम - नरपति	fg •	2248	स्वामीकीर्विकेयानुत्रे का-कार्विकेय	NI o	ĮYY,
स्फुट पत्र संग्रह	# ·	449	•		3505
स्फुट पाठ संबह	fg•	Ę= o	धमण पारवंगम स्तवन	91 o	***
स्फूटसगह	fiz o	4=0	भगस्य मूत्र मध्या	fg •	<b>१२</b> ●३
स्याद्वाद मंजरी मल्लिकेण सूरि	ਦਂ •	२६३	भाड विधिराजशेखर सूरि	# .	213

यं व नाम लेखक	मावा	पत्र संस्था	प्रथमान लेखक	भाषा	पत्र संस्था
श्रावक प्रतिवार	प्रा०	१०२६	श्रीपाल चरित्र-चन्द्रसागर	(B)	18r.
সাৰক কিবা	सं	* * * *		-	Y00, 808
শাৰক কিযা	हि०	१६६	श्रीपाल चरित्र—नाम	fire	•
श्रावक गुरा वर्णन	সা ০	* \$ \$	श्रीपाल चरित्र भाषा	į į	-
श्रावक घर्म प्ररूपशा	গা হ	₹ € €	श्रीपाल दर्शन		
श्रावक प्रतिक्रमण	₩ •	२१७	त्रापाल प्रशान	हि०	
श्रावक प्रतिक्रमश	সা ০	२१७	-9		२६, १०६५
श्रावक प्रतिक्रमसा	গাং	१०७२	श्रीपाल प्रबन्ध चतुष्पदी	हि॰	•
श्रावक प्रतिकासम्	प्रा∘हि∙	१०८१	श्रीपान राज सिज्भाय—सेम		
थावक प्रतिक्रमण	ਵਿ •	6030	श्रीपालराम श्रीपालरास— द्र० जिनदास	हि•	
श्रावक प्रतिज्ञा नन्दराम		8050	जापालरास— ५० ।जनदास	हि०	,
श्रावक वत विधानग्राफ		६१३			\$ \$ 3 \$
श्रावकाचार	গাং	<b>१</b> ६६	श्रीपात रास जिनहवं	(file	
श्रावकाचार	#•	१६६	श्रीपास रासत्र • रायमस्म	•	₹¥₹,
श्रावकाचार	हि•	१०८६	६४०, ६४२, ६६६, •६८, १		
श्रावकाचार—समितिगति		१६६			२०, १०६३
श्रावकाचार उमास्वामी	•	१६६	श्रीपाल सौमागी मास्यान		•
थावकाचार-प्रताशकीति	•	११३७	श्रीपाल स्तुति	हि०	६६४,
श्रावकाचारप्रभावन्द	₩°	£6A			१६, <b>१</b> ०5४
श्रावकाचार रास-पद्मा श्रावकाचार रास-जिए।	- ξe	१६७	श्रीपाल स्तुतिवहाराव	हि	\$\$84
•	•	£ <b>8.6</b>	श्रीमधरजी की जसही — हवंब		
श्रावकाचार सूर्वानका श्रावकातिचार चउपई—	fgo of a feet week	७७३ ७६०१ ०}	श्रुतकेवलि रास— व० जिनदा	•	₹¥₹
	••		श्रुत ज्ञान के मेद	हि॰	११०२
श्रावकाराधन-समयसुन्द		१६६ ११२३	श्रुतज्ञान सत्र		११७२
श्रावशा द्वादणी कथा — ज		₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹	श्रुत पूजा	सं∙	११३
श्रीपास परित्र—स्त शेष			श्रुत प्रचमी क्या—धनपास	<b>श्र</b> प∙ 	१२०३
श्रीपास चरित्रपं० नरा		388	श्रुतबोध — कासिदास	सं∙	€o•,
श्रीपाश चरित्रवयनित्र	•	₹3.5			६०१
श्रीपास परित्ररहपू	<b>ध</b> ा०	787	श्रुतबोध टीका मनोहर सम		<b>408</b>
श्रीपाल चरित्रसकलकी	ति स०	\$83,	अनुताबोध टीका — हर शर्म	सं॰	4.6
		358	श्रुत स्कन्ध इंग्रचन्द्र	प्रा∙सं∙	8×4,
जीवास वरित्र-वर नेवि		\$£.			.u, ११०७
औषाम वरित्र-परिमल	-	₹₹₹,	श्रुत स्कन्ध सूत्र	सं∙	4400
1	164, 1819, P	F50\$,#3	श्रुत श्कम्ध कथा	सं•	800

उंदनाम लेखक स	m	पत्र संख्या	प्रवास लेखक	भाषा	वत्र संस्वा
	 सस्कृत	557	भ्यंगाररस	fg o	3 X 3
खुत स्कन्य पूजा-ज्ञानभूषरा	सं०	£ १ २	मृ गार बेराग्य तरगिएतीसो	मप्रभावः	र्ष
श्रुत स्कन्ध पूजा-निमुबन कीर्ति	# o	£ 8 3		सं०	<b>१२ १</b>
श्रुत स्कन्ध पूजा म० श्रीमृषरा	स०	£83	भृंगारशतक भतुंहरि	स •	583
श्रुत स्कन्ध पूजा-वर्द्धमान देव	स०	£ <b>१</b> ६	ह		
श्रुत स्कन्ध पूजा विधान-बालबन	द हि॰	883	1	सं०	<b>१११</b> %
श्रुत स्कन्ध महत्र विद्यान — हजारी			हक्कामं कला	हि० हि०	
श्र त स्कन्ध मंडल विधान	सं०	. ६१४	हनुमत कथा - त० रायमल्ल	-	
श्रुत स्कल्ध मास्त्र "	₹i o	1880			¥€, €€•,
श्रुताबतार	<b>#</b> 0	<b>६५</b> ६	1		e, 88x3
श्रुतावडार कथा	स०	458	हनुमत कवच	स •	,
•	सं०	2 5 5 5			२४, ११६३
	हि०	***	हनुमञ्बरिजव्र० झजित	軒。	864
	-	102 803			398
श्री (सक चरित्र माचा		'' '	हनुमच्बरित्र - इ.० जिनदास	ŧρ	866
	हि०	¥•₹.	हनु-च्वरित्र-यश कीर्ति	fg.o	
	-	40 Y OX	हनुमच्चरित्र-विश् ज्ञानसागर	ffo	86€
श्रीख क चरित्र भाषा-दौनतराम			हनुमत बोपईब॰ गयमस्न	हि०	
•	<sub>हि०</sub>	You			¥0, €¥₹
श्री शिक चरित्र भाषादौनत श्रीस	•		हन्मन्नाटकमिश्र मोहनदास	Ħ٥	€ 0 ==
	राम् हि०		हनुमनर।स	हि०	\$ 06 \$
	•	¥0€	हनुमंतरास — ब्र॰ त्रिनदास	हि०	€χ⊏,
		09,80=			18, 8880
. •	<b>(</b> •	300	हरियाली खप्पय गग	हि०	305
श्रोशिक प्रबन्ध रास— क० संघजी	•	<b>£</b> 85	हरिवंश पुरास	सं∘	6025
	हि•	. ६५२	'हरिवश पुराण् <del> बुन्नालवन्द</del>	fę o	₹₹0,
श्रोत्तिक महामागलिक प्र <del>दश्यः । क</del> ल्य		1	₹११,	₹₹, ३१	₹, ₹0%?
	iğ o	866	हरिवन पुरास —व • जिनदास	æ.	\$04,
	हि०	₹४३,	700	₹04, ₹	٠٩٥ ,٥٠
	ξe.	66.86	हरिवंश पुरास्-जिनसेनाचार्यं	₩•	3.0
	₹•,	. ६२=	हरिवंश पुराल-दौलतराम का	सलीवाल	
	ď°	. ६२=	-	#•	104.
श्रुगार दीविका — कोमुट भूपाल स	•	408	,	, 4	•¥, ३•६
श्रुंगार मजरी— प्रतापनिह		EXR.	हरिकृत पुराशा-यज्ञ:कीरि	#q.	808
		1968	हरियम पुराशा-मानिवाहन	fg.	₹•₹

ग्रंथ नाम लेखक	मावा	पत्र संख्या	प्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
हरिवंश पुरास- श्रीमूषससू	र स॰	₹•₹	होती चरित	प० जिनदास	₹∙	४२०
हरिवंश पुरासा माथाखब्	ासेन हि∘	३०३	होली पर्वक्या	श्रुतसागर	सं• र	30¥ • E
हरिरुवन्द्र चौपई-कनक सुन्त	र हि∙	४२०	होलीपर्व कथा	•	<b>₩</b> •	301
हरिस्चन्द्र राजा को सण्काय	हि०	५०७	होलीरासव	जि <b>ग्</b> यदास	हि॰	\$6.88
हरिषेण चन्नवर्ती कथा विश	ग्रानन्दि स०	४०७				5888
हवन विधि	₹◦	१०६	होली रेखुक:पर्व	—৭০ জিলহা	स स०	301
हसनसां की कथा	हि •	१०११	हसराज बच्छर	ाज चौपई—ि	बनोदय सूर्र	रे
हिकमत प्रकास—महादेव	e ip	५६२			हि॰ :	₹0€, EX¥
हिण्डौर का दोहा	हि०	१२०७	हसराज बच्छर	ज चौपई	हि•	६६५
हितोपदेशविष्णु शर्मा	स०	৬০৯				
हितोपदेशवाजिद	हि०	905		च		
हितोपदेश चौपई	हि०	904		_		
हितोपदेश की कथाए	हि०	१०२१	क्षम्।वति क्षेत्रप	••		७९६
हितोपदेण दोहा—हेमराज	हि ०	१०१६	क्षत्रचूडामरिए	_	स∙	₹ १=
हितोपदेश के दोहे	हि०	११३०	क्षपसासार	राधवचन्द्र ऋषि		१२
हियहुनास ग्रन्थ	हि •	१०१२	क्षपसामार		हि०	6080
हिंदोला— भैरवदाम	f∉o	१०८६				\$ 0,8 €
हीयाली — रिप	हि०	<b>હ</b> હદ્	क्षमाछत्तीसी~	–समयसुन्दर	हि०	६६०
हुक्कानियेष — भूघर	fह∘	१०३५			808	६१, १११=
हेमीनाममाला —हेमबन्द्राचार	ं स॰	X 2 0	क्षमा बल्तीसी	-समयमुन्दर	हि०	685
होम एव प्रतिष्टास।मग्री सूच	ीहि० म०	६३⊏	क्षमावसी पृजा	नरेन्द्रसेन	हि०	११४२
होम विधान	स०	(15	क्षीरग्रंब—विष		सं०	११७७
होम विधान	स०	2३=	क्षेत्र गरिगत टी	e.	₹₽	११७७
		3€3	क्षेत्र गिएत व्य	वहार फन सरि	हेत सं०	११७७
होम विधान	अ।० स०	3 # 3	क्षेत्र न्यास		हि०	397
होम विधि	軒。	3 ∉ 3	क्षेत्रधलगीत-	- शोभाषःद	हि०	१०६८
होरा प्रकाश	म०	x o ?	क्षेत्रकाल पूजा		स०	७६६,
होरा मकरन्द	सं o	४७२		8	०३५, १०६	४, ११४५
होरा मकरन्द - गुगाक	स •	५७२	क्षेत्रवाल पूजा-	- बुध टोडर	हि•	११२३
होसिका परित्र	स∘	830	क्षेत्रपाल पूजा-		fgo	SoX
होली कवा	स०	X 00,	क्षेत्रपाल पूजा -		हि०	56×
-		¥ =	क्षेत्रपाल स्तुति		-	£ \$ \$ \$
होसी कथामृति शुभवन्द	fgo	५०=	क्षेत्रपाल स्तोत्र	•	स•	800
होसी कथा - छीतर ठोसिय			क्षेत्रपालव्टक		सं०	७२०
		.,				- •

ग्रंथनाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या	ग्रंच नाम	लेखक	मावा ।	पत्र संन्धा
क्षेत्रपालाष्टक —विद्यासागर	हि०	११५५	त्रलोक वर्णन		fgo	१०७२
क्षेत्र समास	श्र	१०४,	त्रिजोक वर्णन	जिनमेना चार्यं	40	६११
		39\$	त्रिलोक दर्एन		प्रा०	६११
क्षेत्र पमास प्रकरण	भाव	608	त्रिलोक विद्यान	पूजाटेक <b>च</b> न्द	हि॰	≒२ <b>१</b>
			त्रिलोक सप्तमी	वन कथा—व	० जिनदास	
73			l		हि०	888
			त्रिलोकसार	<del>ो</del> मिचन्द्राचार्य	भा०	६१२,
त्रिकाण्ड कोशपुरुषोत्तम देव	स०	X 3 €	1		\$93, 88	8, 2000
त्रिहाल चौबीसी कथाप० ग्र	भ्रदेष म	¥3¥,	त्रिलोकसार	पुमति कीर्ति	हि ०	<b>६१</b> ६
		838	ĺ		3.5	१, १०५१,
त्रिकाल चौबीसी पूजा	स०	८२०,	1		११ व	<b>४, ११</b> ६६
8	છક, રહ	५, १०१०	त्रिलोकसार —	पुमति सागर	म०	६१६
विकाल चौबीसी पूत्रा त्रिभुदन	चन्द्र स०	= 20	त्रिलोकमार	वचनिका	हि •	<b>६१</b> ६
त्रिकाल चौबीसी पूजा-म० धुम	बन्द्र स	5 5 5 0	त्रिलोकसार		हि॰	१०४०,
त्रिकाल चौबीनी विधान	हि०	233				१०६३
त्रिकाल सध्या व्यास्थान	# o	७३०	त्रिलोकसार पट		170	६१६
त्रिपुर सुन्दरी यत्र	40	६२१	त्रिलोकसार चर	ń	প্লাত	६१५
त्रियचाशन किया बनोद्यापन	मं ०	c ? o	त्रिलोकसार पुत्र	ाम7।चन्द्र	f70	⊏२१
त्रिपचाशत किया वनोद्यापन	₹o	=२१,	त्रिलोकसार पुज	। — शुमसन्द	ŧίο	⊏२१
		દયય	त्रिलोकमार पुत्र	ः - समितिमाग	र स०	= २२
त्रिपवाशत कियोद्यापन — भ० वि	श्वभूषश		जिलोकसार पु <b>ज</b>	7	平。	E 2 3
	<b>편 o</b>	600	त्रिलोकसार मा	पा	(# o	६१७
त्रिभुदन बीनती - गगादास	हि०	8833	त्रिलोकसार मा	षा प० टोडर	मल राज०	£ 8 =
त्रिभगी	ं स ०	દેવદ	त्रिलोक सार सर	ीक	সা৹	£ 8.8
त्रिभगीसार — नेमिचन्द्र।चार्य	प्रा०	€0.	तिलोक सार म	TETT	fee	£8.8
		5.8	त्रिलोकसार टी।			£ 8 X
त्रिभंगीसार टीका - विवेकनन्दि	<b>4</b> •	5.8	त्रिलोकमार टीव			
त्रभंगीसार मावा	हि•	58	तिसोकसार टी			£ ? ¥
त्रिभगी सुबोधिनी टीकापं• ध	•		त्रिलोकसार संह		সা৹	683
त्रेनोक दर्पग्वहगसेन	fe-	445	त्रिवर्णाबार १	-	सं०	111
	-	14. 410	त्रिवर्शाचारस		स <b>•</b>	111
	•	202	त्रियध्य स्लाका		-	
त्रतोक दीपकवामदेव	rie s	22.525	1-171-0 457141	244 A 14-	त्यमाना सं≎	714 705
त्रसोक प्रज्ञप्ति टीका	সা•	688			40	
नतामा नसान्य द्वाका	31 P	455 1				३३२

श्रम् लेखक म	।वा	पत्र संस्या	प्रथनाम लेखक	मावा	पत्र संस्याः
त्रिषध्ठ स्मृति	सं०	२७६			
त्रिश्च्चतुर्विशति पूजागुभचन्द्र	सं०	۵۲,	্ <b>হা</b>		
- " -		१०६४	·		
त्रेपन किया—हेमबन्द्र	<b>स</b> •	, ke3	ज्ञानरास – भारामरून	हि०	
		₹30\$	ज्ञातुषमं कथाटीका	प्रा॰	
त्रेपन कियाकोश	fgo	8≖3	ज्ञातृ धर्म सूत्र	সা৹	¥.
त्रेपन किया कोशकिशनसिंह	180	१०६६	ज्ञान कल्यारण स्तवन	हि०	१०६१
त्रेपन क्रियाको शा—- ५० गुलाल	हि०	१०७७	ज्ञान गीतास्तोत्र इत्यचि	हि <b>०</b> -	१न३
त्रेपन किया गीत गुभचन्द्र	द्यप०	દથર	शायपा	視。	४०, १२६
त्रेपन किया गीत —सोमकीर्ति	हि ०	१०२४	ज्ञान चालीसा	हि॰	१८५ ६८३
त्रेपन क्रिया पृजा	सं०	€8=	ज्ञान चिन्तामरिए	स्ट स्ट	£=₹.
त्रंपन किया पूजा—देवेग्द्र कीर्ति	Ŧ, o	८२३			8030
त्रेपन किया रास—हयंकीर्नि	हि०	१०३२	ज्ञान चिन्तामण्यि— स्नोहरद	ास हि॰	108,
श्रान किया बनोत्तापन	स०	द२३		६५०, १०	११, १०५६
त्रपन त्रिया वृतोद्यापन— विक्रमदेव	1 H o	११२३	ज्ञान चूनडीभगवतीदास	हि०	\$ \$ 5 8
भेपन भिया विधि — दौलतराम	हि०	११४२	ज्ञान भूनडी— वेगराज	हि०	१०३७
अपन किया विनती— व० गुलाल	हि०	१०५२	ज्ञान जकडी — जिनदास	े हुं १	१११०
भग <b>न भाव</b>	हि०	9309	ज्ञान दर्पग्।—दीपचन्द कासक	गवास 'ह०	१०८, १८६
अपन भाग चर्चा	fito	<b>6</b> 2	ज्ञान शतक— द्यानतराय	हि०	8083
ेंसर भनाका वर्णन	स०	\$00X	ज्ञान दीपिका भाषा	ફિ <b>ં</b>	309
श्रमठ बालाका पुरस बर्गान	f₹o	૨૭૬	ज्ञान पच्चीमी	हि०	€≂0,
त्रेमउ क्लाका पृथ्य भवावलि	fe o	११३५	8्द६, १	०४७, १०१	E'9 <b>, ११</b> ०२
•			ज्ञान पच्चीसी—बना <b>रसी</b> टास	हि०	११०,
र्वलोक्य मीहन कवच	Ħ o	६२१		६४१, ६	६०, ११४५
त्रैलोक्य मोहनी मन	स०	६२१	ज्ञान पत्रमी व्यास्यान-कनव	म्बाल सं०	9 9 0
त्रैलोक्य वर्णन	f5 o	દયદ	ज्ञान मास्कर	祝。	११८२
त्रैको <b>क्यस</b> ार	हि॰	११६५	ज्ञात मजरी	₹∘	<b>६२</b> १
त्रैसोक्य सार संदृष्टि	970	483	शन सावरणी	<b>स</b> ०	××€
त्रैशोषय स्वरूप - सुमति कीर्ति	ſg o	888	ज्ञान समुन्द्र — जोघराज गोदी	का हि०	१६७,
त्रैलोक्य स्थिति वर्णन	हि०	484	ज्ञानसारपद्मनन्दि		<b>€⊂</b> \$
•	-		ज्ञानसारपद्मनाग्द ज्ञानसारमृति पोर्मासद्व	द्रा <i>०</i>	668
त्रैलोक्यह्वर अग्रमाल	ŧ٤۰	₹33	शनसार-—मु:न पामासह	नार	8.6

ग्रंच नाम	लेखक भ	ावा व	লে <sub>'</sub>
ज्ञान सूर्योदय	नाटकवादि चन्द्र	स०	६०४
ज्ञान सूर्योदय	नाटक भ।षः—-भाग	चन्द हि	६०४
ज्ञान सूर्योदय	नाटकपारसदास	हि०	६०५
ज्ञान सूर्योदय		हि •	६०६
ज्ञान स्वरोदय	—चरनदास	हि०	५४६,
		१०५३	. ११८२
ज्ञानार्खन-म	ा० शुमचन्द्र	棋の	१६७,
	१६⊏, १६	٤٤, ٦٥	0, ११ሂ⊏
ज्ञानाएंव गद्य	टीका	e FF	२००
ज्ञानार्शव गद्य	टीका ज्ञानचन्द	हि०	₹00
ज्ञानाएं व गद्य	टीकाश्रुत सागर	स०	200

ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
ज्ञानार्णंब भाषा	r	सं	200
ज्ञानार्णव भाषा	- जयबन्द स	सबदा हि	० २०१
			२०२, २०३
ज्ञानार्शव भाषा	देकचन्द	हि	200
ज्ञानासंब भग्षा	—लब्बिविम	लागिशा	हे० २००.
			₹ • ₹
ज्ञानानन्द श्रावा	चार	संद	१०८६
ज्ञानामस्य श्रावर	हाचारभाई	रायमल्ल	
		राज	120,
			222
ज्ञानोकुश		स •	१०८१

## ग्रंथ एवं ग्रंथकार

पंजाकार का नाम गंग नाम गंग सभी पंजाकार का नाम गंग नाम गंग सभी

प्रथाकार का नाम	ग्रथनाम ग्रथसूचा पत्रसं०	प्रयाकार का नाम	ग्रयनाम ग्रयसूचा यत्र सं०
ग्रकलंक देव	ग्रकलकाप्टक स० ७०६		शीलतंरियणी ४६०
	तत्वार्थराजवानिक सं०	प्रचलकोति	ब्रादिनाथ स्तुति हि <b>॰</b>
	£\$		१०६७
	ऱ्यायविनिष्ट्यस० २५७		ग्र <b>ठारह नाते को कथा हि</b> ०
	प्रतिष्ठाकल्य स० ८८७		३७०१, २०७६, १०७६
	प्रायम्बित शास्त्र सं०		विषापहार स्तोत्र मापा हि०
	१४१, २१४		¥¥,
	प्रायक्षित ग्रथ स० ६६६		७६०, ८७४, १००५,
श्रकलंक~	रविव्रतक्षाहि० ४३३		१११४, ११२२, ११४=
धकमल	शील बत्तीसी हि० ६ ४४,		मनोरय माला हि॰ ११११
	१०१०, ११५२	ग्रजयराज-	वीनती हि॰ ६७७
द्यसयराज श्रीमाल-	- कल्यासा मन्दिर स्तोत्र भाषा		पद हि॰ ६७७
	हि॰ ७१६	<b>ब</b> ० ग्रजित—	हनुमच्चरित्र सं० ४१०, ४११
	चौदहगुरास्थान पचाणिका	र्घाजतप्रम सूरि	शान्तिनाथ चरित्र सं०
	राजा∘ ३२		3=5
	३३ भगल चौबीसी भाषा हि०	म्रजुं न	मादिस्यवार कथा प्रा०
	मूराल चाबाता चारा छि		6686
	भक्तामर स्तोत्र माया हि०	घनन्तबीर्य	प्रमेयरत्न माला सं• २५६
	मक्तानर स्तात्र नाया १६४	ग्रातरतसार	न्यायसिद्धान्त प्रमा सं ०
	-		२५७
	विषापहार स्तोत्र भाषा		र्ष-धारूयात प्रक्रिया सं०
	हि० ७५६		***
ग्रमर प्रमसूरी—	भक्तामर स्तोत्र टीकास०		कृदन्त प्रक्रिया सं० ५१२
	७४२		तद्वित प्रक्रियासं० ५१३
प्रकंपल	विनती हि० १०७०		महीमट्टी प्रक्रिया हि०
प्रशंराम	प <b>रवांपुर हि० १०</b> ६२		<b>४१७</b>
धस्ययराम सुहाडिय	१-मलयमुन्दरी चरित्र भाषा		सारस्वत चन्द्रिका सं०
•	हि॰ ३६५		४२१

ग्रंचकार का ना	म ग्रंथनाम	ग्रंथ सूब पत्र सं		प्रंथ नाम	प्रंथ सूची पत्र सं०
	सारस्वत घा	तुपाठ सं०		स्तंभनक पाश	नाथनमस्कार
		<b>X</b> ?	₹		सं० ६५६
	सारस्वत प्रति	क्यासं०	ग्रमयचन्द सूरि		
		४२३, ६५४			हि० ७१५
	सारस्वत व्या				4688
		सं० ५२६		मौगीतुंगी गी	-
	सारस्वत सूत्र		। ग्रमयनन्दि —		2222
धनूपाचायं —	श्राषाडी पूरिंग			पल्यविधान पू	
Barren		\$88\$		मोलहकारस	
धन्याराम — सप्ययबोक्षत —	यंत्रावली स		पं० अभ्रदेव	लविय विधान	¥ # 3
अल्प्यवाक्षतः—	अलकार चन्द्रिक कुबलयानन्द स		10 00 00 00 00 00		क्या स <b>०</b> ४३४, ४ <b>७६</b>
	-			व्रत कथा कोश	
भ्रपराजित सूरि—	मगवती द्याराध दयाटीका) स			लब्बि विधान	
	,				oe, ११३६
प्रभवचन्द्र —	गोम्मटसार (प			चन्दिशति कथ	
	वृति स			त्रिकाल चौबस	
	नचीयस्त्रय टीक				(२४, ४३४
ध्रमयदेव गरिए-		e559 		द्वादश व्रत कथ	H0 123
अन्यदेव गार्ग-	प्रश्न व्याकरस्			যুবীল্লাবৰ প্ৰাৰ	काचारसञ
>c-	आरंग्य			शास्त्र दान कथ	40 8:6
ग्रभयदेव सूरि	स्त भनक पश्चिन			थावक वन कय	i #10
	सं				€ 60
धमयचन्द्र	नेमिनाथ राम हि		<b>ग्र</b> मरकोति	जिनस∉स्य नाम	टीका स०
	सिद्धचक्र गीत हि				२८, ७२१
	बलभद्र गीत हि	० ६६६		योगचिन्नाविस्	टीका
धभयचन्द्राचार्य—	कमं प्रकृति टीका	स॰ ७		<b>स</b>	० ५६२
	मानारागमूत्र वृति	प्रा॰स०	ग्रमरकीति —	षट्कर्मोपदेशरस	माना
		•		भग	
प्रभवदेव	जयतिहुयम् प्रकरः	ण प्रा॰	ग्रमरचन्द	विश्वमान बीम ती	-
		, १०२६		fg	\$ 0 Y
	बीर जिन स्तोत्र प्र	TI •		तत्रविधान पूजा	g o
		960			€0€

प्रथमार कानाम	ग्रंथ साम ग्रंथ सूची पत्र स०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंग <b>सूची</b> पत्रसं०
ग्रमरसिंह—	ग्रमरकोण सं० ५३३,	ग्रागंद उदय—	शान्तिनाथ चरित्र स०
	१०६२		3=6
	नामलिगानुशासन स०	ग्रारांदऋषि⊸	तम्बाख् सज्भाय हि॰
_	१०६२		११८३
ध्रमोघवर्ष—	प्रक्शोत्तर रत्नमाला स०	श्रात्माराम —	ग्रात्मप्रकाश हि० ५७४
_	७०, ६०६	द्यानन्दधन	चन्द्रप्रभुस्तवन हि०
ध्रमृतचन्द्राचार्य	तन्वार्थसार स० ४३		७२३
	पुरुषार्थं सिद्धयुपाय सं०		धर्मनाय स्तवन हि० १४२
	समयसार कलणा स०	ग्रानन्द—	वृषभदेव वन्दनाहि॰
	२२०, २२१		१०६६
	समयसार टीका म०		स्तवन हि० ७७०
	(ग्रात्मव्याति) २२३	ग्रान्दन वर्जन—	नस्यद भोजाई गीत हि॰
	२२४, २२५		१०६१
ग्रम्त प्रमब—	योगसत स० २८६	ध्रानन्द	कॉकमजरी हि० ६२६
ग्रमितिगति—	श्राग्धनासारस० ६२ धर्मपरीक्षा स० १ <b>१</b> ४	धान्कवि—	दोहरा हि॰ ६४१
	थमपराला सर्व ११४ भावना बन्तीसी स०७७३		य कुरारोपसाविधि सं०
			৬६६
	श्रावकाचार स०६६६ सुभाषितरस्त सन्दोहस०	धाशाधर—	यनगार धर्मामृत सं०६०
	मुना।यगरत्य सन्दाह नव २६४		मःशःघर ज्योति ग्रन्थ सं <b>०</b>
ग्रहरामरिए—	रदः ग्रजितजितपुरासः स०		** **
अवसमास-	अभवताबाजुगस् सङ		कत्यारामाना ११७६
धवधू	ग्रनुप्रेक्षा हि०१०६७,		जिनमहामिषेक सं० ६१४
444	**************************************		जिनयज्ञकल्प सं० द१४
कवि ग्रशग—	बद्धं मान पुराग् स० २६६,		जिनकत्यासक सं० १०८
4114 44111	3=4		जिनसहास्रनाम सं•
	शान्ति पुरासा सं० ३००		७२४, ६७६, ६४७, ६६४,
धश्वलायन	करस्वती स्तोत्र सं० ७६४		६७८,६७६, हहर,१००४,
धृति झसोग	दानशीलतप भावना प्रा॰		१०१८, १०४८, ११०८,
31 2011	888		११२०, ११४६,
बाज्ञासुन्दर—	विद्याविसास प्रवन्थ हि०		पचमगल १०८०,
ū	७१६		9=05
बाहमल्ल-	शाङ्गीघर दीपिकासं०		त्रिभंगी सुबोधिनी टीका
	\$3.X		सं॰ ६१

	देवसिं पूर्वा रहेवस्य विश्व सं० नित्यपूत्रा पाठ सः पुष्पाहेवाचन सं० पूत्रा विचान स० प्रतिच्छा पाठ सं० प्रतिच्छा विश्व सः प्रतिच्छा सारोद्धार गान्तिच्छा सारोद्धार गान्तिच्छा सारोद्धार सरस्वती स्तुति स	になる にのに ににむ で で で で で で で で で で で で で で で で で	"	निर्वाल काण्य गामा व पूजा प्रा०सं० ८४१ देव परीयह जीपई हि० १०२४ स्पूल भद्रनुरास हि०६४८ स्पूल भद्र पासी हि० १०६१ — सास्तिनाय स्तवन हि० ७६१ स—सास्ति होम विधान स० १९७९
	रहबर्ग बिधि सं नित्यपुत्रा पाठ सः पुण्याहबाचन सं ० पूजा विद्यान सं ० प्रतिष्ठा पाठ सं ० प्रतिष्ठा पाठ सं ० प्रतिष्ठा सारोद्धार मान्तिप्रास् सं ० सरस्वती स्तृति स	に	उदय रतन — उदय सागर सूरि-	देव परीवह चौपई हि० १०२४ स्पूल भद्रनुरास हि० ६४८ स्पूल भद्र रासो हि० १०६१ झान्तिनाय स्तवन हि० ७६१ स झान्ति होम विद्यान स०
	नित्यपूजा पाठ सः पुण्याह्वाचन सं ० पूजा विचान सः ० प्रतिच्ठा पाठ सं ० प्रतिच्ठा विचि सः प्रतिच्ठा सारोद्धार गान्तिप्रासः सः सरस्वती स्तुति स	になる に	उदय रतन — उदय सागर सूरि-	१०२४ स्यूल मद्रमुरास हि०६४८ स्यूल मद्र रासो हि० १०६१ मास्तिनाय स्तबन हि० ७६१ स
	पूजा विधान स० प्रतिच्छा पाठ सं० प्रतिच्छा विधि स० प्रतिच्छा सारोद्धार गान्तिप्रासा स० सरस्वती स्तृति स	<b>エジミ</b>	उदय रतन — उदय सागर सूरि-	स्पूल प्रद्रनुरास हि॰ ६४८ स्पूल सद्र रासो हि॰ १०६१ — झाम्तिनाय स्तबन हि० ७६१ स-—शान्ति होम विद्यान स०
	पूजा विधान स० प्रतिच्छा पाठ सं० प्रतिच्छा विधि स० प्रतिच्छा सारोद्धार गान्तिप्रासा स० सरस्वती स्तृति स	सबस सबह स• स• ३•० ७६५	उदय सागर सूरि-	स्पूल मद्रासो हि० १०६१ — झान्तिनाय स्तवन हि० ७६१ स — झान्ति होम विद्यान स०
	प्रतिष्ठा विधि स० प्रतिष्ठा सारोद्धार गान्तिप्राण स० सरस्वती स्तृति स	स्यह स० सह० ३०० ७ ७६५	"	१०६१ 
	प्रतिष्ठा सारोद्धार मान्तिप्राण स० सरस्वती स्तृति स	स॰ ६६० ३०० ७ ७६५	"	— भान्तिनाथ स्तबन हि॰ ७६१ सशान्ति होम विद्यान स॰
	मान्तिप्रासः स० सरस्वतीस्तुतिस	दह• ३०० ७७६५	"	७६१ स—शान्ति होम विघान स०
	सरस्वती स्तुति स	३०० ० ७६५	ु उपाच्याय व्योमरा	स — शान्ति होम विघान स०
	सरस्वती स्तुति स	० ७६५	उपाध्याय व्योमर	-
	_			११७१
	सिद्धि प्रिय स्तोत्र ।	११६०		
	सिद्धि त्रिय स्तोत्र		उमास्वामी	तत्वार्थमूत्र सं० ४४
		टीका		४५,४७,४८,४१,५०,१६६
	#•	७६८		£x3, €x0, €x5, €\$₹,
	स्तोत्र चतुष्ट्य टीक	ा सं •		, 2009, 4008, 333
	-	6.30		१०03, १०१६, १०२२.
	सामारधर्मामृत स	•		१०३२, १०३x, १०६८,
	•	Feg		१०७२, १०७४, १०७=,
	शान्ति होम विधान			१०६२, १०६६ १०१७,
	सिद्ध चक्र पूत्रा मं			११०१, १११७, ११२१,
	होम विधान म०	283		११२२, ११३६, ११४४.
(रहचरह	पद सं०	28.03		<b>{{5</b> 3,
व्यक्तीत	रसिक प्रिया हि॰	६२८,	उमास्वामी—	श्रावकाचार हि० १६६
		€€€	उदी	सनव्कुमार रास (१०
इन्द्रनन्दि—	घंकू गरोपसा वि	घे ७⊏६		£88
	इन्द्रनिंद नीति स	ार स∘	म० एकसन्धि—	जिन सहिया म० ८१५
·	Ęc	₹ \$ 5 0	श्रौसे रोलाल—	दशनकाराकवाहि० ६६१
	पद्मावती देत का		ऋषमदास	वमुनस्दि श्रावकाचार भाषा
	पुजा स०	560	•	हि० १६१
	सभाभूषमा म०	<b>5</b> ?		सञ्जनविल बल्लम भाषा
श्लायूच		११७६		हि॰ ६१४
	द्वादशानुत्र का हि॰		ऋवभवास —	,
उवय	पचमी स्तीत्र हि॰	030	A 4414	शतु जय तीर्थं स्तुति हि॰ ७६१

प्रंचकार का नाम	षंथ नाम शंथपूर पत्रसं		ग्रं <b>व नाम ग्रंथ स्</b> वी पत्र सं०
ऋवम	बारा भारा का स्तवन हि	मुनि कपूरचन्द	स्वरोदय हि॰ ५७२
•	93		ग्रक्षर बावनी हि० ११०६
ऋषमदास निगोरय	ग—मूलाचार भाषा राज∘		पद हि॰ ११११, ११७०
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		कमलकीति	मठारह नाता हि०१०५३,
ऋषि जयमल्ल	गुरामाला हि० ७२	-	\$0EX, 8830
ऋवि वीप	गुराकरण्ड गुरावली हि॰	•	<b>लिवरी हि॰ ११६</b> ८
•	<b>\$</b> \$ <b>\$</b>	,	चौबीसजिन चौपई हि॰
ऋषि वर्द्ध न	नेमिजिन स्तवन स० ७३		११३२
कवि कनक	मेघकुमार राः हि०		बारहसडी हि० १०५३
	\$ • ₹1	कमलनवन	जिनदत्त चरित्र भाषा.
	कर्मघटा ११०:	•	हि॰ ३२६
कनककृति	तत्वार्थमूत्र भाषा हि०	क्रमलमद्र	जिनपंजर स्तीत्र सं०
	५१, ४२, १०६६		७२६, १४८
	पद हि० १०७३, ११०३		जम्बू स्थामी चौपई हि॰
	न्याहरू १०७३, ११०३ सारहसाडी हि० १०५३		१०२६
	विनतीहि०सं० ८ <b>०</b> ६		सीमघर स्तवन हि॰ ६४७
	-	20 EXXI	घ्यानामृत हि० ६३५
	११०५, ११४० सुमावितावली ७००	कल्याम	कुतुहल रतन।वली सं०५४२
		कल्याराकीति	नेमि राजुल संवाद हि०
कनक कुशल—	मकामर स्तोत्रवृत्ति स० ७४७		\$ \$ # R
	सःधारण जिनस्तवन वृत्ति		बारुदल प्रबंध हि० ४५९
	स॰ ७६		बाहुबील गीत हि० १६२
करकशाल	श्चनपचमी व्याम्यान		श्रोगिक <b>प्रबन्ध हि०</b>
	सं॰ ११		४०६, ४६१
### n#T	हरिष्णान्द्र चौपई	कल्याग्रदास —	सिद्धांत गुरा चौबीसी
करक सुन्दर	हि० ४२		हि० १०६५
कनक सोम	ग्राचाढभूति मृनि का		बालतन्त्र माथा हि० ५००
वानवा साव	भौडाल्याहि० १०१	कल्यागमल्ल	<b>ध</b> नंगरंगसं० ६२६
			सात बीसन गीत हि॰
मुनि कनकामर	करकण्डुचरित्र ध्रपभ्रंश		40709 40700
	3 P 1		
बहाकपूर	पद हि० १०६।		पंचमीवत पूजा सं० ८५६
	पाश्वंनाथ रास हि०	कंवरपास —	कंबरपाल बलीसी द्वि॰
	६४४, १०२२		११७६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंष सूची पत्र सं०	प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रं <b>थ सूची</b> पत्र सं०	
	सम्यक्तव बनीसी हि०			नागशीकथाहि० ११६७		
	१७२			निशिभोत्रन कथाहि०		
कविराज पंडित	— र।घवप।डवीय टीका स० ३८३				*K5	
				भद्रवादुचरित्र हि०		
कबीन्द्राचार्य	कवि कल्पद्रुम स० ५६३			२५९,३६० <b>,३६१</b> सब्घितियान व <b>ल कथा</b> हि०४७६		
व॰ कामरा <b>ल</b> —	जयकुमार चरित्र स० ३२६ जयपुराशास० २७६					
			किशोर	ग्रादिनाथ वीनती हि० ४५		
	जयपुरासाक २७६ नामावलि छदहि०			नीदडली हि० ८७७		
	रामायाय अदाहर		कु वकुन्वाचार्य	ग्रस्टपाहुड् प्रा <b>०१८१</b> ,		
(स्वामी) कार्तिकेय-कातिकेयानुश्रेक्षा प्रा॰				833, 828		
***************************************		168, 668,		द्वादणानुप्रकेशा प्रा० २		
	3508			पचास्तिकाय प्रा०७१,७२		
कालिदास	ऋनुसह।र म	٧٩ ۽		प्रवचनसार प्र		
	कुमारसभव	स० ३१७		मोक्षपाहुइ प्र	१११ ०	
	नलोदय काव्य			रयगसार प्रा		
	बसत वर्णन	स० ३५७		शील प्राभृत प्र	<b>७० २१७</b>	
	मेघदून स•	3 ₽ €		षट्पाहुड प्रा		
	रघुवश स०	३७६, २७६		समयमार प्राप्	पृत प्रा०	
	वृत्तरत्नाकर र				२२०	
	श्रुतकोष म०	400	_	सूत्र प्रापृत प्र		
काशीनाच —	लग्न चन्द्रिक।		कुमार कवि—	ग्रात्म प्रकोध		
	शी घ्रदोध सं०	486,668	कुमुबचन्द्र	कस्यासा मन्		
काशीराज —	ग्रमृत मजरीस० ५७३			म० ७१६, ७१०, ७१८,		
काशीराम	लघु चारावय नीनिशास्त्र			७७२, ६५३	-	
_	भाषा हि॰	१०८७		१०३४, १०६		
किशनचन्द्र	पद हि०	808€		१०७-, १०६	<b>२, ११२६</b>	
किशनवास	उपदेश <b>बावनी</b> हि॰ ६८२		म ० हु मुस्द चन्द्र —	षादिनाय स्तुति	हि० ४५	
	लघुसामायिक हि	१००२		गीत समूना	2226	
किशनसिंह				परदारो ५रशील सङकाब		
१०४६				बराजारा गीत हि•		
त्रेपन कियाकोण हि०				<b>446, 1868</b>		
१००, १०१, १ <i>०६</i> ६				बःहुबलि छंद हि॰ १०६९		

प्रंचकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्र <b>पसू</b> ची पत्र स०	प्रथकार का नाम	गंधनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
	कुमुद्रचन्द्र विनती ८७६,	<b>ग्रा० केशव</b> —	थोडशकरण द्वतीचापन
	११३२		जयमाल सं० ६८८
	सर्वयाहि० १०३०	केशराज	रामयश रसायन हि॰
कुलमदाबार्य —	साठसमुच्चय स० ६३		Yu7. 1164
म्रा <b>० कुं बर</b> जी —	साधु बन्दना हि॰ ७६६	केशवदैवज्ञ	केशवी पद्धत्ति सं० ५४२
कुशललाम —	गुरासुन्दरी च उपई		बातक पद्धति सं० १४१
	राज• ४४६	केशव मिश्र—	तकंपरिभाषासं० २५२
	गौडीपारवंनाय छद हि०	केशराज	शत्रुंजय गिरिस्तवन
	७२१		हि० ७६०
	ढोलामारुणी चौपई	केशरीसिह—	शिस्तरजीकी चौपई
	हि॰ १०२६,१०३=		हि० १११४
	मध्यानल कामकंदना		शिस्तरविलास हि०१००५
	चौपाई राज० ४६६	पाण्डे केशव	कलियुगकथाहि०
कुस्मदेव	हण्टान्त शतक सं० ६८६		१०५०, १०५३, १०७७
कूबरखाओ	ग्रलकार सबैयाहि०		ग्रादित्यजिन पूजा स०
-	8088		
कृद्गकवि—	वृतचिन्द्रकाहि० ४६⊏	केशवसेन	मक्तामर स्तोत्र उद्यापन
<b>व</b> ० कृष्णदास —	मुनिसुवत पुरासास०		पूजास० ≃६३
-	784		रत्नत्रय उद्यापन स० ८१
	विमलनाय पुरासा सं०		रविवतोद्यापन पूत्रा सं०
	339		003
कृष्णमिश्र—	प्रबोधचन्द्रोदय स०		रोहिस्सीव्रतोद्यापन सः १०१
	३४६, ६०६		रत्नश्रयोद्यापन पूजा सं•
भट्टकेदार	छदसीय सुव सं० ५६४		रत्नत्रवाधायन पूजा सङ
	वृत्तारताकर सं∘ ५६⊏		
	न्याय <b>व</b> न्द्रिकास० २५६		बृहद् दशलक्षरण पूजा स॰ ६६८
केमाब वास	प्रकार बाबनी हि० ६८१	केशव वर्गी	स० ६६ <b>म</b> गोमट्टसारवृत्तिसं०२१
ands of 64	भक्षरवावना।हरु ६६१ छद्रहि∗ ११५⊏	कशव वर्गा कांकदेव	गामद्वसारवृक्तसण् २.६ कोकशास्त्रहि० ६२६
केशबदास	छत्।हरू (१३६ वैद्यामनोत्सवासं० ५६६		काकशास्त्र । हरु ५९५ श्रुंगार दीपिका सं०६०२
		कोमट भूपाल	शुनारदायका सब्दर्भ सक्षियारास हि॰ १६९
केशवरास	कविशियाहि० १४२,	कोल्हा— कजकोति—	द्रव्यासमुख्यमस० ६२
केशय	१०३६, १०३७ ज्योतिय रस्ममासा स०	क्षप्राक	धनेकार्थध्यनि मंत्ररी

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	। स्थनाम ग्रंबसूः पत्रस
क्षेमकररा—	बारहमासा व	सुंग हि०		यशोधर चरित्र भा
	,	१०१८		हি <b>० ३७७,</b> ११
क्षेमचन्द्र	योगसार हि०	११४६		व्रतकथाकोश हि० ४६
चड्गसेन—	त्रिनोक दर्पेण कथा			¥40, \$00
•	f≅∘	४४२, ६१६		स्गन्धदशमी कथा हि०
	धमंचक पूजा	हि० ८३४		X.
	हरिवशपुरास	भाषा हि•		सुभाषितावली भाषा हि
		303		96
	सहस्रगुर्गोपूज	हिं हे ३०		हरिवश्रपुरारण भाषा हि
बानमुहम्मद		१०७५		वर०, वरर, वर
क्षीमराज	पद रमग्गीगी	त हि॰		३१३, १०५
		१०२५	स्रेतसी	नेमिनाय विवाहको हि
बुगालबन्द—	धनन्त बतुदं शी	वतकथा		<b>£</b> \$
	हि०	४२१		बारहमासा हि० ११०
	उन≀पुरामा भ	।।या हि॰	व० खेता	सम्यक्त्व कोमुदी स०
	₹૭૨ૄ∶	२७३, २७४		Υ.
		१०५०	कवि सेतान	विलोड की गजल हि०
	<b>चन्द्रनप</b> फीवन	कथ'हि०	_	* * *
		836	स्रेमकरण	सम्मेदशिक्षर पच्चीसी वि
	चन्द्रप्रमञ्ज्	f fg o	<b></b>	\$ ? 0
		१०५४	सेमराज—	सिदित्रियस्तोत्र मापा
	ज्यस्य जिनवर		S-C	हि॰ ७इ
		११२३	लेमविजय	सिद्धगिरि स्तवन सं०
	धन्यकुमार चरि	स्म हि०	सेमसागर	9.5
		÷ : <b>६</b>	समसागर	चेतनमोहनराज सवाद,
	पद सग्रह हि०	5.83	बेमा	हिं ११व
	पद्मपुरास्त भाषा	हि०	441	श्रीपालगत्र सिज्माय हि
	90	४, १०४२		90
	पत्य विधान क	वा हि०	गंग	हरियासी खप्पव हि॰
		844	गंग कवि	90
	पुष्पांजनिवतः क		and distance	रापुल बारह मासाहिः
	_	448	4	ţ
	प्रबुम्नवरित्र म	।षा हि०	पं० गंगावास	<b>प्रादित्यवार कथा हि०</b>

प्रथकार का नाम	पंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची यत्र सं०
	छद सग्रह हि०	११३५	पं. गिरधारी लाल	सम्मेद शिखाः	यात्रा वर्णन
	त्रिभुवन विनतं	ी हि०			हि० ६५७
		₹ € \$ \$		जयपुर जिनः	मदिर यात्रा
	पचमेरु पूजास	0 EXE			हि० ६४२
	पुष्भांजलि वत	कथास०	गिरिवरसिह—	तत्वार्थसूत्र	टीकाहि∘
		838			५२
	पुष्पाजिल ग्रने		गोकल गोलापूर्व—	सूकुमाल चरि	त्र माषाहि०
		द६६			४१३
	बनीस सक्षरा	छप्पय हि॰	व्यागोपाल	चतुर्विशति प	चकल्यासक
		प्रथ्य		समुस्चयो <b>छ</b> ।	ान विधि स∙
	महापुरारण ची				330
₹ 6 6, 8	€१, १०€३, <b>११</b>		गोपालदास—	विनती हि०	६८२
	महापुरास वि		गोरखदास —	गोरख कविस	हि० ११४५
	११३७, ११		वं गोल्हरण	चतुष्क वृत्ति	टिप्पश सं•
	सप्त परम स्था				¥ ? ₹
	सम्मेद शिखर	 	गोवर्द्ध नाचार्य	स्वप्नसती र्ट	ोकासं०
	सम्मद । शस्त्र र	पूजाम० ६२२			ধ্ ৩ ●
गंगाराम—	सभा भूषरा ग्र		यंगोबिन्द—	उपदेशवेलि	हि० १११०
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		90%5	गोविन्ददास	चौबीस गुरा	म्थान चर्चा
	सभाविनोद	३०३ ०इ			हि० ३४
गंगुकवि	मुकीशल रास	हि०११३७	गौतम		ग प्रा०२∙३
गजसार	दडक स्तवन	£99 07R	गौतम स्वामी	ऋषि मंडल	स्तोत्र सं•
गजसागर —	चौबीम दण्डव	ह <b>हि</b> ०			७७४ <b>११</b> २४
		११५६		प्रतिक्रमस्	
गरापति	माधवानल प्र	बन्ध हि०		शकुनावली	प्रा० ५६५
		६२७		सच्यामंत्र ।	रं० ६२४
राबस गरापति-	गरापति मुहत	मंग ५४२		सबोधपचारि	का प्रा०
गणेश देवज्ञ	ग्रहलाघव सं				₹७२, <b>१७</b> ६
गर्गऋषि	गर्गमनोरमा		<b>म० गुराकीति</b> —	श्रेशिक पुर	छाहि० ६५२
वर्षभूनि	पाशा केवली	स० ५५२	गुराचन्द्र—	नेमिराजुल	गीत हि॰
		११३६			१०६७
इ. गांग जी	मुनिगुरारास	वेलि हि०		पद हि०	१०५५
		3 f 7		शील चून ड	हि॰ ११२४

ग्रंथकार का नाम	प्रथ नाम	ग्रथ सूर्च पत्र स०		ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०
ुर <b>ाच</b> न्द्राचार्य—प्र	नन्तनाथ पूजा मडल	दियान	<b>गुरासूरि</b> —	स्तवन हि० ७	६६, १०६५
		स० ७८१	गुराहर्ष—	एकादशीस्तृति	हिं ७१३
गुरानन्दि	ऋषि मडल पूज	<b>1 刊 o</b>	गुरगाकरसूरि	मक्तामर स्वोत्र	टीकाम
	৩	८७, ७६८			৩४७
	रोटतीज कथास	০ ४७४		होरामकरंद सं	० ४७२
गुराभद्राचार्य—	भात्मानुषासन स	१० १८४	गुमानीराम —	दर्शन पच्चीसी	हि० ७३०
	उत्तर पुरासाम व		गुब्दत्त-~	कल्यागमन्दिर	स्त ! त्र
		३०, २७१		वृत्ति सं०	७२०
	जिनदत्त चरित्र	मं •	गुलाबचन्द —	दयाराम हि०	<b>€ = 4</b>
	3	२६, ४४१		कृपरम् जगावरम	हि० १६२
	घन्यकुमार चन्	त्र म०	ब∘गुलाल	चौरामी जाति	की जयमाल
		<b>\$ \$</b> \$			हि० ६६१
_	महापुराग	स० २१३		जलगालगा वि	च हित € ⊏ ४
गुरारत्मसूरि	कल्यासा मन्दिर			त्रेपनिकयाकोण	fzo
	म्तवनावच्रि स०	€ و ق			७. ११५३
गुरावडं नसूरि	स्थूलभड निज्ञाय	हि०		वर्दमान समब	
_		१०६८			हिंद १६२
गुराविनय	रघवण काब्य वृत्ति	₹ # 0		विनक नीपर हि	
nmpinz.	थोपाल चरित्र स	3 = 5		समीसरण रचन	1 170
गुरुसागर-					K 3 3
nmmn ne		४, ३६५	गूजरमल ठग	पचकन्यागक उ	द्यापन हि०
गुएसागर सूरि-	पचालीनी माह हि				480
	बिन स्थान हि०		घट कर्पर	घटकर्षर कः।ब्य	स० २२०
	द्याल मागर हि०		घनश्याम	पद हि	१०६२
	घणंनाथरो स्तवन		घासीराम —	श्राकाण पचर्मा	कथाहि०
	_	€ = €			११२३
	नस्कनुढाल हि०		संदर्भवि	प्राकृत लक्ष्मण स	• યદય
	गातिजिनस्तवन			प्राकृत व्याकरण	行る
		368			* 25
	शालिभद्रयम चौप		बन्द	ध कबलांसी हि॰	<b>६ € १</b>
			च डेश्वर ∙	रत्नदीपिका म०	
गुरासाधु-	वित्रमेन पद्माननी	कथा	चतर शिष्य	चउदोली की चौ	
	<b>H</b> 4	35%	सांबलजी		₹0=

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथमूर यत्रसं		ग्रंथनाम ग्रं <b>थसूत्री</b> पत्रसं०	
चतुर्भु जदास—	गधुमालती कथाहि०	पं० चम्पालाल	वर्षासागर हि० ३०	
	६४०, ६६२, ११६	चपाराम दोकान	भगंबावनी हि० १०४०	
चतुरमल	चतुर्देशीचीपई हि० १०	चरनदास	ज्ञानस्वरोदय स०	
(जाति)चन्द	बृदाचिन्यिहि• ११३	!	मुक्ष, मुख्य, १०५६,	
चन्द्रकवि	चौबीस महाराज की		११२१ ११८२	
	विननी हि० ७२	<b>:</b>	वैराग्य उपजीवन ध्रांग	
चन्द्रकीर्ति	कथाकोणस० ४३	<b>!</b>	हि० १०५६	
	छदकोकाटीका म० प्रा	े चरित्रवर्द्धन	कल्यासा मन्दिर स्तोत्र	
	3.8			
	पंच कल्यागक पूजा स०		टीका स० ७ <b>१</b> = राप्रव पाण्डवीय टीका स <b>०</b>	
		;		
	णाव्यंप् <b>राग स०</b> २६८	चाराक्य	३ <b>८%</b> चारावय नीति सं०६८३.	
	કે ક		चारावय नात सर ६८३, ६८४, ६८५,	
	नुपान चनुविणनिकी		रदः, ६८३ राजनीति शास्त्र स०	
	टीकाम० ७४			
	विमान शुद्धि गातिक		983, <b>8</b> 98	
	विधानस० २०		रण्जनीति समुद्यय स. ६६३	
चन्द्रकीति —	पद्रहि० ११०	चामुण्डराय	चारित्रमार स० १०६	
चन्द्रकोति सृरि	प्रक्रिया व्याख्यान स०		भ।वनासार सग्रह स०	
	५१	_	£399	
	सारस्वत दीपिकावृत्ति स		महीपाल चरित्र स०३६७	
	, ¥ ÷		मुनिमालिका हि०११४६	
	सारम्बत व्याकरमा दीपिक		ज्योतिय शास्त्र स० ५४७	
	४२	1 4 11 11	द्वादशमासा महाराष्ट्री	
चन्द्रसागर	श्रीपाल चरित्र हि∙ ३६		8003	
ब० चन्द्रसागर	पंच परमेष्ठी हि० ११५	चुन्नीलाल	चौबीस महाराज पूजन	
चन्द्रसेन	चन्दनमलयागिरि कथा	•	हि० ६००	
	teo ex		(वतंमान चौबीसी पूजा)	
बम्पाबाई	चम्पाशनक हि०६५		£03	
	पद हि० ११३		बीस विदेह क्षेत्र पूजा हि०	
चम्पाराम	भद्रवाहुचरित्र भाषा हि		मासावदह क्षत्र पूजा ।ह० द€१	
	35			
चन्दालाल बागडिय	<b>!</b> ग्रकलकदेव स्तोत्र भाषा		रोटनीज दत कथा हि०	
	fgo ৩ <b>१</b>		४७४, १०६४	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची यत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्रसं०
चित्रं भट्ट—	तकंपरिभाष				हि० १०४ <b>४</b> ६, १० <b>५३</b>
(दैवज्ञ) चितामिंग-		त्र स०	जगद् मूषरा —	बर्द्धमान विलास	
चैनसुख —	ग्रकृतिम चैत		मट्ट जगन्नाय —	गगालहरी स्त	
	पद सग्रह सहस्रनाम पूर	हि० ७७७ हि० ६६३ विहुट ३०	प० जगन्नाथ — पं० जगन्नाथ —	भामिनी विलास चतुर्विश्वति स्तो	त्र सं ०
पं० चोखचन्द	चन्दन पण्ठी		जटमल —	मुखनिधान स० गोराबादन क	
छत्रसेनाचार्य— खीतर ठोलिया—	रुक्मिएति क होचीकचा	यास०४३४ हि०५०६			११३१
छीतरमल काला —	जिन प्रतिमा हि०	स्वहत्र भाषः १०८, ११८१	जनार्वन विवृध	वृत्त रत्नाकर व	<b>x</b> e c
छीहल	उदरगीत पचमहेली गीर		गो० जनार्दन मट्ट — जयकीति —	वैद्यरन भ।पा धकलक यनिरा	
	बावनी रेमन गीन	१०२२ हि० ६४६		ग्रमरदल मित्र	
छोटेलाल—	रमन गान तत्वार्थसूत्र २	हि० ६७२ समाहि० ४३, ७४४		र्शवद्रत कथा। वस्देव प्रबन्ध	हि० ११४३
जगजीवन	बनारसी विस			शील मुन्दरी प्र	≇न्य हि० ४६०
	भूपाल बोबीम	ीभाषाहि∙ ११२२		सीना बील पत गुरगबेलि	क्षा हि॰ ६४४
जगतराय — जगतराम —	सम्यक्त कीयुः जम्बूस्वामी पु		जयकीति—	चनुविशति तीर्थ कल्यासक पूज	
		ro, १०६३, €०, १०६३	जयचन्द छाबड़ा	<b>धकलका</b> ग्टकः	भाषा हि० ७ <b>०१</b>
	पद्मनदिपश्चीसी १	भाषाहि० ३२, १०७२		ब्रव्टवाहुङ भा १८१,	वाहि० १८२,१८३
<b>जग</b> राम—	भजन निर्वागः मगल	१०५१ विधान हि० ८८२		ग्राप्तमीमांसा व तिकेषानुषे ध	२४६ ग <b>िए</b> १६२, १६३

प्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची पत्र स०	ग्रथकार का नाम	प्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रस०
	क्षानाएंव माषा हि०	जयदेव	गीत गोविन्द सं०७२०
	२०१, २०२, २०३	वैद्य जयदेव	पथ्यापथ्य विवोधक स०
	तत्वायं सूत्र भाषा हि०		५७६
	48, 88	जयन्त भट्ट	उज्भर माध्य स० ११७३
	देव पूजाभाषाहि० ६३३	जयमल	ढाल संग्रह हि०६६०
	द्रव्य सग्रह भाषा हि०	जयमित्र हल	वर्द्धमान काव्य ग्रपभंश
	६७, ६=		३८६
	नित्य पूत्रावचनिका हि०		श्रीपाल चरित्र ग्रयस्रंश
	560		₹3₽
	नियमसार भाषा हि०	पं० जयवन्त -	सीमंघर न्वामी स्तवन हि०
	90		७६६
	परीक्षामुख भाषा हि०	बयशेखर सूरि	ग्रगल दलक कथा स०
	7 7 9		84\$
	प्रमारगपरीक्षाभाषाहि०		प्रबोद चिंतामिंग सं०
	3 \$ \$ 5		0399
	मक्तामर स्तोत्र भाषा हि०	ज्ञयशेखर	सबोहसत्तरि प्रा॰ ६५७
	७४५ रयगमार वचनिकाहि०	anto Municipa	१७२ ब्रादित्यवतोद्यापन पूजा
	११६४	उपाठ जयनागर—	आव्यवताद्यापन पूत्रा स०७६६
	पट्पाहुड भाषा वचनिका		पर्वरत्नावलि स० ४५६
	हि० २१६		सूर्यंवतोद्यापन स०
	समयसार भाषा हि॰		\$05.K
	२२७, २२६	व <b>० जयसागर</b>	मनिरुद्ध हरए। कथा हि॰
	सर्वार्थमिदि भाषा हि॰		४२३, ११६८
	दर, १२०४		सीताहरण रास हि॰
	सामायिक पाठ भाषा हि०		£x£
	२४३, १०३४, १०७२	जयसिंह मुनि	शीलोपदेशमाला हि•
वयतिलक सूरि-	मलयमुन्दरी चरित्र स०		६५७
44	३६५, ४६६	जयसेन —	धर्मरत्नाकर स० १२२
जयतिलक	प्रकृति विच्छेद प्रकरण	जबाहरलाल	चौबीस तीर्थं कर पूजा
	अ०४ ०म	•	हि॰ ८००
पं० जयतिलक—	चतुर्विशत स्तवन स०		सम्मेदशिसरपूजा हि०
	७२३		६२४, १०८६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रं <b>थसू</b> ची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम	प्रंथनाम प्रं <b>थसूत्री</b> पत्रसं०
जसकीति—	शीलोपदेश रत्नमाला प्रा०		लावसो हि∙१०७४
	460		विवेक जकडी हि०६८४
जसकीति—	कथासग्रह हि०१०८६		१०१९, १०२३
	जिनवर स्ववन हि०		विनती हि• ८७६
	१०६१		होलीचरित्र स०४२०
जसबंतसिह—	मावाभूवरा हि० ४६४		होलो रेग्युका पर्वसं० ५० ६
	११६८, ११६३	पाण्डे जिनदास —	भादित्य वत कथा हि०
जिनकीर्ति	षट्त्रागमय स्तवन स०		११६३
_	590		चेतनगीत हि०१८२,
जिनचन्द	चौबोजी लोलावती कथा		<b>१</b> • २ ७
	हि॰ ४३६		जम्बूस्वामी चौपई हि०
	विकम लोनावती चौपई		३२४, १०१४, १०४१,
	हि० ४६४		११०१, ११०६, ११४३,
जिनबन्द्राचार्यः—	सिद्धान्तसार प्रा <b>०</b> ६३		११६७
जिनदत्त सूरि	पदस्यापना विधि स०		जोगीसमा हि∙६२४.
	११८८ विवेक विलास स० हि०		६४१, १०११, १०१३.
जिनदत्त सूरि	।वयक।वलास स० ।हरू १६३, ६७६		१ · १ ६ , १ · ६ १ , १ १ १ .
- c			<b>११४</b> %
प० जिनदास गाघा -	– श्रकृतिम चैन्यालय पूजा स० ८१२		दोहादावनी हि०१५२
			धर्मतकगीत हि•६५१,
	जम्बूद्वीप पूजा स० ६१२		<b>१</b> ०२३
· c	मृगुरु शतक हि० १०३ ४		प्रबोध बाबनी हि० १०२०
पं० जिनदास	ग्रनन्त <b>जिन</b> पूत्रा स०		माली रासा हि० ६४४,
ग गवाल	340		1107
	भ्रनेकार्थमजरी हि० ५३१		म्नीक्वर जयमाल हि॰
	भाराधना सार टीका हि०		=04. 208, 220c,
	£ ?		3455
	द्वादमानुष्रेका हि०६६०	बहा जिन्दास	प्रजितन। बरास हि॰
	धर्मीपदेश श्रावकाचार स०	महा । जनवातः	•
	१२६, हि० १०४७		£30, 8880
	पास्वेनाव कथा हि०		प्रस्टाय गम्ब <b>स्य क्या</b>
	3909		हि० ४२४
	लपक पचासिका हि॰		मादिपुराख <del>रास</del> हि०
	१०३४		२६७, ६३१

भावना विनती हि० ६५२

प्रश्य एवं प्रंचकार	: ]		ि १३१५
प्रंथकार का नाम	<b>ग्रंथ</b> नाम ग्रंथ सूची पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची यत्रसंब
	श्रालोचना जयमाल हि०		(चारुदत्त सेठ रा <b>स</b> )
	१८८, १०१८		दशलक्षराकया हि०
	<b>भ</b> नन्तवन रास हि०		४४४, ११४३
	११४३, ११४४, ११५७,		दानफल रास हि०६३४
	११७०		ह्वादशानुप्रक्षा हि०६७२
	ग्रनन्तवत कथा हि०		घन्यकुमार रास हि०
	११४३		६३४
	धाविकासार हि०११३⊏		धर्मपचिष्यतिका प्रा०
	भ्राकाशपचमी कथा हि०		<b>१</b> २३
	११०७		धर्मपरी <b>क्षा</b> रास हि०
	<b>श्र</b> ठाईस मूलगुलारा <b>स</b> हि०		६३४, ११४७
	6663		नागकुमार रास हि०
	कर्मविपाक राम हि०		६३६
	६३२, ११३७		नागश्रीरास हि०११३७
	बरकडुनो राग हि०६३२		निर्दोष सप्तमी वत पूजा
	गुग्गस्थान चौपई हि०१४		हि० ५४१
	गुरजयमाल द्वि०७६५,		नेमीक्ष्यर रास हि०६३७
	११४३, ११४६		पद्मपुगरा स०२७६
	गुरुपूत्रा हि०१०७७		परमहंस गस हि०६३७
	ग्यारह प्रतिमा विननी हि०		पाण्डवपुरासा स०२८७,
	e = 99		₹ <i></i> ४४
	चान्दल प्रवय राम हि०		पागोगालगारास हि०
	66.83		११०७
	चौराह्मी जाति जयमाल		पुष्पात्रलिवतकथा हि०
	हि० ११५२		११६३
	अस्यूस्वामीचरित्र स०		पूजाकया हि०४६१
	३२३		बकचूल रास हि०६३०
	जम्बूस्वामीरास हि०		बारहवत गीत हि०
	६३३, ११३८, ११४७		668.8
	जीवन्धर रास हि० ६३४		भद्रबाहुरास हि॰६३६
	ज्येष्ठ जिनवर विननी हि॰		भविष्यदस्त रास हि
	exe		६३६
			0 0 0

समोकार रास हि० ४३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रथ सूची पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	प्रंच सूनी पत्र सं०
	महायक्ष विद	बाघर रूथा		हरिवश पूरा	रा स० ३०६,
	•	हि० ४६६		\$ 0 19	, 305, 308
	मिथ्यादुकक	ड हि॰ ६५१,		होली रास	हि॰ ११४१,
	११३८, ११४४				6588
	यझोधर सस	र हि॰ ६३६,	जिनरंग	सिज्भाय	हि० १०६१
	१०२३,११०७,११४६ रविवृतकथाहि०११६६		जिनरंग सूरि	प्रबोध बावर	ती हि० ७३७
			जिनराज सूरि	<b>य</b> उदीसा	हि० १०३७
	रविवार प्रबं	ष हि०४६६		मालिभद्र चे	पई हि॰
	रात्रिभोजन	गम हि•		£83,	६४४, ६७४,
		\$ \$ 8 8	_	३६१, १	0 60, YEG
	रामचद्र राम		बर्जनवल्लम	सघ पस्टुक	टोका म०
	राम रास	हि० ६४०	सूरि—		٠ لا يا
	रामसीता र	-	जिनसूरि	गज मुकुमाल	चरित्र हि०
		१०२४			3 9 0
	रोहिस्ति सस		जिनदेव सूरि		ग}्रेम० ६०६
	बिनती	हि० ११३५	जिनपाल—	चौद्रालिया	
	शास्त्र पूत्रा		जिनप्रमसूरि	दोपावलीम	हिमा ग
	श्रावकाचार	रास हि. ६४२			£ 3
		- 68	जिनप्रमसूरि	चतुर्विभति ।	<b>बन</b> स्तोत्र टीव
	श्रीपाल राम				स० ७२
		e:55		पाद वैजिनस्ते	त्रि मं
	श्रुत केवलि ।				७३
	श्रेगिक रास सम्यक्ताराम			महाबीर स्त	ति वृत्ति स०
	सम्यवत्व राग	। १६८६ १६८६			(38)
	स रस्वती पृत्र।		जिनवल्लमसूरि	प्रदेन शनक	सं० ७१
		११२६		महाबंद स्त	ৰন সা০
	दर्भन राम	fgo E'ec,	Le .		ye.
		188, 2265	र्जिनवद्धं न सूरि	वागभट्टालका	ार टीका
	सोलहकारस				# ¥ €
		¥=, ११¥३	जिनलामसूरि —	पादवंदेवस्तक	न हि
	हनुम <b>व</b> रित्र	मं० ४१६			341
	हनुमंत राम	हि० ६४८,	जिनसागर	कवलवन्द्रावर	गपूजा स
		48, 88Va			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	प्रंथ सूची पत्र सं०	प्रथकार का ना <b>म</b>	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची यत्र सं०
जिनसागर	धनन्त कथा	हि॰ ११६३,		पद हि०	११०५
		3755			ी विनती हि०
	छप्य	हि० ११६६			1185
जिनमृख सृरि	कालकाचार्य प्र	बन्ध हि०			२६०
J "		४३५		श्रीपाल रास	हि० ६४२
जिनसूरि	≖पसेन गजाः	क्यास०		पादर्वनाथ व	ी निमानी
		<b>Y9Y</b>		हि ०	४६ छ
	ग्रनस्तग्रतसम	हि ०		बावनी हि०	६=१
		११६९	जिनहर्ष सूरि —	रत्नावली न	यायवृत्ति सं०
जिनसेन	जिनसेन बोल	हि० १०२५	जिनहंस मुनि—	दडक प्रकर	ল্ সা০ ११३
	पचेन्द्रिय गीत	हि १०२५	जिनेन्द्र मूषरा	चन्द्रप्रमपुर।	स्म हि∙
जिनसेनाचार्य	द्यादि पुराशा	म० ६१४			२७५
	२६४,	२६४, २६६	जिनेश्वरदास	नन्दी <b>श्वर</b> ही	ोपपूजा सं०
	जिन पूजावि	धि स०			=8£
	जिनसः स्ननाम	म्नोत्र		चनुविशति	
	শ০ ৬२७, ७२८, ७७२, ६४६, १००० १००६, १०४१, १०६४, १०७३, १०४४, १०७८, १०८२,				१११३
			जिनोदय सूरि		छराज चौपई
			2	हि॰	X 0 E , E X Y
			जीवन्धर	गुरम ठारमा	-
	१०६६ १०	६८, १११८,			हदर, ११३५
	११२२, ११	३९, ११५१.	2	(चौदहगुरगस्थान बेलि)	
	११६६		जीवग्रराम—		ा बारहमामा ६८०,११२४,
	जैन विवाह	पद्धति म०		,60	8834
	⊏१४, १११	3	ब्र० जीवराज	परमात्मप्र	नाश टीका हि०
	त्रिलोक वर्ग	नग० ६११			२०५, २०६
	महापुरासा स	६३५ ०१	जोगीदास—	षमंरासो वि	हे० ६८ <b>१</b>
जिनसेनाचार्थ	हन्दिश पुरा	ग्स० ३०३	जोघराज कासली	<b>वाल</b> मुख विला	स हि∘
जिमहर्ष —	ग्रवन्तीकुमा	र रास हि॰	जोघराज गोवीका	— ज्ञान समुल	:हि० १६७,
		င့်အ			१७६, ६७८
	श्चव∗त <sup>्</sup> सुकुः	गल हि० ४२४		घन्यकुमार	चरित्र भाषा
	स्वाध्याय	823			हि० ३३८
	षमंबुद्धि पा	पबुद्धि चौपई		प्रीतिकर ।	वरित्र हि०
	हि०	843			३४७, १०३६

ग्रंथकार का नाम	प्रंचनाम	ग्रं <b>च सूची</b> पत्र स०	ग्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	पंच सूची पत्र सं०
	भजन हि०	१०५१		(बलगालन रा	स) १०२४,
	मवदीपक मा	षाहि॰		११३२, ११	
		२१४		पूजाष्ट्रक स०	द६७
	सम्यक्त्व कौमु	दी भाषा		पोषहरास हि०	६३८,
	हि० ४६५, ४	६६, ४६७,		६४१, ६८४,	११४४,
	४६=, ११४६	, ११६७		<b>११</b> ४७, ११५	
	सुगुरशतक हि	० ६६७		बोस तीर्थं कर	पूजास•
जौहरी लाल —	बीस तीर्थंकर	पुत्राहि०			863€
		13=		षट्कमंरास हि	
	विद्यमान बीस	विग्हमान		अनुतस्कष प्रजा	
	पूत्राहि०	803		सप्तब्बसन नंद	
श्चानसन्द	ज्ञानार्शव गद्य	टोकाहि∙			\$ E X
		ग०२००		सरस्वती पूजा	हि० ८५६
	परदेशी प्रतिको	य हि०			6685
		88==		सरम्बनी म्नुनि	स० ७७४,
	सम्मेदक्षिणः पू	त्राहि०		? ? :	१०, ११४६
		<b>ह</b> २३		स्तवन हि०	११०७
	सिहासन बलीर्स	ो म ॰	ज्ञानविसव सूरि	भावश्यकसूत्र नि	नयुं कि. न०
		४०२			ş
ान प्रमोद	वागभद्रालकारः	वृत्ति स०	ब्र० ज्ञानसागर	<b>भ</b> ष्ट।ह्यिकात्रत	<b>क</b> था 1/0
तबकगरिए	-	પ્રદુહ			85:
० ज्ञान मुख्या —	म्रादिनाय फागु			<b>मनन्त्रतक्</b> या	f,r o
* '	•	११७३		४२२, १०७३	. १०७४
	श्चादिनाथ विनर्त	हि•		धनन्त चौदस क	वः हि०
		8=8			१११७
	तन्द्रज्ञानतर गिर्म्	ो स॰		धाषादभूत राम	fz o
	¥ŧ	. ११=३			438
	दणनकरा वतोच	पन पुत्रा		इसायकी कुमार	रास हि॰
		स॰ ८३०			\$ \$ \$
	पंचकत्यागक का	ग मं०		चत्रविष दान का	विस हि०
		1149		,	<b>5</b> <3
	पासीगालन राम			वणलक्षराक्या हि	
		ε <b>Χ</b> ₹			?- * ११२३

प्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०	ग्रथकार का नाम	गंधनाम ग्रंथसूची पत्रसं
	दशमीकया	हि० ११२३		त्रिलोक विधान पुत्रा हि
	निशल्याष्ट्रमी	क्याहि∘		
		<b>११२३</b>		दशनक्षण पूजा विधान
	नेमिराज्मति	मवाद हि०		हि० ६२६
		११३०		नदीक्ष्वर पूजा हि० ८४०
	भक्तामगसिद्ध	पूजाहि०		पचकल्याएक पूत्रा हि
		१११=		E.S.
	मीन एक (दश	ोब्रत डि०		पचपरमेष्ठीपूजा हि
		४६७		<b>۶</b> ٤'
	रक्षाबद्यम ब	त्था हि०		पचमेरुपूजा हि०६४
		8.0		,, ,, विद्यान हि
	रत्तत्रय <b>क्या</b>	हि०१११६,		<b>=</b> §
		११२३		बुद्धिप्रकाश हि० <b>१४</b>
	लघ्रनपनि			रत्नत्रयपूजा हि०८६
		११६७		षोडणकाररापूजा मडल
	पोडणकारस्			विध≀न हि०६१
		x 93,003 o		₹3
	थावसा द्वाद	शीकथाहि०		मुदृष्टितरगिरगी हि॰ १७।
	_	६६६, ११२३		820
	मुभाषित प्र		पं० टोडरमल—	ग्रात्मानुशासन माथा हि
		e33 off		१८५, १६६, १८७, १८
	मूर्यवतीद्याप	न पूजा सं०		<b>१</b> c
		eo 3		गोम्मटसार राज
		रत्र हि० ४१६		त्रिलोकसार मावा राज
<del>ब्बालाप्रसाद</del>	प्रशुम्नचार	त्र माथाहि०		É
बस्तावर्रासह	• • •	8X8		पुरुषार्थसिद्धयुपाय मा
टीकम	चतुदशाक	षाहि०१०३२		राज• १३४, १
		€ <b>६</b> ¥		मोक्षमार्गप्रकाणक राज
टेकवार	ज्ञानारगंव :	-		\$1
		२००		लव्यिसारभाषा वि
	खहराना	हि॰ १६६		११:
		काहि० ७५१		लब्धिसार क्षपणासार म
	तीन लोक	पुजाहि० ६१६		राज •

प्रथकार का नाम	। प्रथनाम	ग्रथ सूची पत्र सं०	प्रंचकार कानाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०
टोडरमल—	दशंन	हि० १०५१	हु हिराज देवज्ञ —	जातकाभरस्	स॰ ४४४
टोपर्ग	पद्मावती पू	जा स० ५६१	तानुसाह	भूत्रना	हि० १००३
ठक्कुरसी	कलजुगरास	हि॰ ११७५	भ० तिलोकेन्द्रकीर्ति	सामायिक प	ाठ भाषा हि∙
	कृपरा वट्पर	: हि०६८४	•		5 . 8
	नेमिनाथ बेलि	ल हिल्ह्५३,	(जती)तुलसी—	पसवाडा	हि० १११६
		६६२	तुलसीदास	दोहे	हि० १०११
	नेमिराजमति	हि० ६=४	तेजपाल	पाश्वंचरित	प्रभ्रपंश
	पद हि	१६२, १८४			384
	पचेन्द्रिय बेरि	र हि० ६६२,		वरागवरित्र	343
	\$ c x . \$	3209. ⋭ο		समय जिन च	
ठाकुर—	शास्तिनाय पु	गम् हि०			४१=
		₹00	त्रिभुवनकीति —	जीवन्धर राष	कि ११३६
डू गरसी	बावनी	हि० ११०८		श्रनस्कच पुज	#0 € ₹ 3
डूंगरसीदास	पद नेमिक्सा	fa.	त्रिभुवन चन्द—	मनित्यपद्माश	
		१०१४	•		€ •
डूंगा बैव	श्रे शिक चरि	त्र हि०		धनित्ययं नामि	
		११६७			1 1 X 3
डालुराम —	सराईद्वीप पुत्र	ा हि॰		तीन चौबीसी	
		995			८१६
	गुरूपदेश श्राव			(त्रिकालचतुर्वि	
	3	20X		(1.10.1.1.9)	= <del>7</del> 0
	चतुदंशी कथा		त्रिमल्ल (मट्ट)	मृहतं चितामा	
	दशलक्षरमञ्ज		14464 (48)	योग तश्मिमी	
	4-1/44/1/4-6-1	हुन। हि० द२द		शतक्लोकी टी	
	नदीश्वर पूजा		त्रिलोकचन्द्र		हिंद ११०७
	्पंचपरमेड्डीगुल्		त्रिलोक प्रसाद—	पद धन्ता स <b>रु</b> भाय	
		बाल हि॰ १०११	यानजी सजमेरा		
* *			यानवा स्वनरा	नंदीश्वर द्वीप	
	पंचपरमेष्ठी पृष				دو. - د
		<b>EX3</b>		वंश्रमेर वृजा	
*	पंचमेर पूजा हि			बीस तीर्थ केर	•
	सम्यक्त प्रकास				=११
. 1.			षामसिंह ठोल्या —	विवेक शतक	S. 26A
।इसी	ढाढसी गाया	ale as		वैराम्य सतक	हि• २१६

ग्रंबकार का नाम	ग्रंथनास र	प्रं <b>च सू</b> ची पत्र स०	प्रथकार का नाम	गंध नाम	प्रंथ सूची पत्र सं०
	समवशरण चीर्व	सिंग पाठ		ज्ञानदर्पेग्	हि॰ ११६
	1	हि० ६२२		परमात्म पुरा	ए हि॰ २०४
	सुबुद्धि प्रकाश	हि० ६६७		विनती	हि० ११०५
दसलास	बाग्हसड़ी हि			स्वरूपानद	हि० २४७
मुनि दयाचन्द	सम्यक्त कीमुदी		दीप विजय—	रिषभदेव की	लावस्ती हि.
		हि० ४६=			\$ \$ \$ \$
वयाराम	वृषभनाथ लावर	गी हि०	दुर्गदेव	वष्ठि सब्दसः	
		११५=	दुलीचन्द—	<b>धाराध</b> नासार	भाषा हि०
दयासागर	धमंदल चरित्र				٤٦
		हि०६८६		क्रियाकोश म	-
दयासिह गरिए	सग्रह्णी सूत्र म				808
,		हिं दर		धर्मपरीकाः	-
दरिगह—		हि० १४१			१२१
दशरय निगोत्या —	धर्मपरीक्षा भाष	•		सुभाषिताबलं	हि० ७००
		१२१	देवकरण	सम्मदिवसास	हि•
दादूदयाल-	मुमिरसा (				११५७
दामोदर	गोमिचरित 🖫		देवकीर्त		जेकास०६३
		३३ <b>२</b> 	वेवचन्द्र	धर्मपरीक्षाः	कया स०
वामोदर	शारङ्गधरसहि				288
		१२०३	ब्र <b>ं देवच</b> न्द—	विनती रिख	••
दासद्वंत	भनिःबोध गुरु				हि० ११५६
विगम्बर शिष्य	चैत्यालय वीनत	ती हि० ७२४	देवतिलक —	कल्यासमिव	रस्तोत्र वृत्ति
_		-			स० ७२०
दिनकर	चन्द्र।की	हि० ६८१	दं वदत्त दोक्षित	ग्रह्नाघव	ह४४ ० क्
दिलाराम पाटनी		-		सगर चरित्र	<b>₹0 ¥0</b> €
(बोलतराम)		EX8, 5=E			र महात्म्य सं•
<b>दीपचन्द</b>	भनुभव प्रकाश	हि०			६२=
कासलीबाल		१८१		मुदर्शन चरि	
	धारमाव शेकन	-		•	
		८६, ११७३		सुमतिनाय	•
		हि० १०६७			₹•₹
	विद्विलास	हि० ४६४,	देवनन्दि	गर्भषडारच	
		४६५			७२०, १०६६

वंबकार का नाब	प्रंथ नाथ प्र	च सूची पत्र सं०	द्र बकार का गाम	ग्रंच नाम	ग्र <b>ंच सूची</b> पत्र सं०
	वैनेन्द्र व्याकरस	<b>H</b> •		पद सम्रह हि	. 663.
		* 8 \$		१०१	२, १०६५
	सिद्धिप्रिय स्तोत्र	ा स०		पद्मनदिगच्छ क	ो पट्टावली
	७६७,७६८,६६			6	हं• ६४२
		११२७		विनती संग्रह हि	हु० ६ ५५.
		• ११२७			દહદ્
	लघुस्ययभूस्तोः			विनतीव पद ।	तप्रहहि०
<b>3</b>		s, ११२७		•	. ७६, ७१८
देवमट्टाचार्य —	दर्शन विशुद्धि प्रव	हरगास० ११४		सास बहुका भ	लगड़ाहि॰
देवप्रम सुरि	पाण्डवपुराग्। सं			१०१	7, १७१५
daya dir	41-643/10 41	. (=0, ≥¥4	देवालाल	घठारह नाते <b>की</b>	कथाहि०
देवमद्र सुरि	मध्हली सूत्र प्रा				856
देवराज	मृगी सवाद हिं		वेबीचन्व	भागम सारोद्धाः	रहि∙ २
4444	2	£=3	बेबीदास	भौत्रीम नीर्थकर	पृक्ताहि॰
देवसृन्तर	पद हि	* * * * *			8, 88:0
वेवसुरि	प्रदास्त चरित्र ब्री	ति स०	वेबीदास —	राजनीति सबैया	
,,		\$X.8		_	0.6.8
वेवसेन	मानामार प्रा	٤١,	बेबीनस्य		० ४४४
	€33, €⊏3	. १०==	देवोसिह छावड़ा	- व <i>्</i> याहुड माथा	हि <b>०</b> २१६
	धःलाप पद्धति म	० २४०,		सकः चौथ क्या	
	<b>ફ</b> ६१, २८३	, १००६	देवेन्द्र भूषाण	सकः चाय क्या	150
	नत्वसार प्रा	.,	म्राचार्यं देवेन्द्र	प्रत्योत्तर स्त् <b>रमा</b> स	ना वृत्ति
		5 € = \$		म	e 83.3
	दर्शनसार प्रा०	≎∦3,	देवेन्द्र (विक्रम सुत)	यशोधर चरित्र हि	<b>₽</b> € 0
	नयचऋ य०	- ¥ €, €€ €	देवेन्द्र सूरि -	कमं विपाक सूत्र प्र	१० १०
	मावासग्रह प्राट			बधानस्य प्रा	0 10
वेवाबह्य	कलियुगकी 'वन		उपा० <b>वेवेश्वर</b> —	रत्नकोत सं	० ४६३
		११८६	म० देवेन्द्रकीलि	समयमार टीका	मंब २२५
	कायाजीव सवादः	गोन हि॰	(भ० जगत्कीति के	शिष्य)	
		\$ \$ & X	भ० देवेन्द्र कीति	प्रचारन प्रवस्य हि	० ३६४.
	चौबीस नीर्थ कर	विननी		• •	858
	हि०	७२४,	देवेन्द्रकीति	धाकार मुद्धि विश	शम स०
		\$00X			७८६

कंचकार का नाम	प्रंचनाम	प्रं <b>य सूची</b> पत्र सं०	प्र'यकार का नाम	श्रंथ नाम	प्र <b>ंच सूजी</b> पत्र सं०
	मादित्य जि	न पूजा स०		बतुरवितार	सी हि॰
		७८६		•	१०५
	कत्यासा मा	दर पूता स०		चौबीस दण्ड	क हि० १०७,
		\$30		,	188, 8876
	त्रपनिकयाव	त पूजा स०		जम्बूस्यामी	कथाहि०
		<b>८२३</b>			<b>₹</b> ₹ <b>0</b>
	द्वादशयन पू	बास०		जीवन्धर च	रित्र हि॰
		८३२			***
	पचपरमेष्ठी	पूत्राम ०		त्रेपनिकयावि	र्षि हि॰
		= ५१			११४२
		ज्ञामं० ८८४		पद्मपुरासा १	सवा हि॰
	रत्नत्रय व्रत			-	२६०
		854		परमातम प्र	टाम जामा
		ाम• ६६६		7 (4)(4 %	ति० २०७
		ोश सं० ४७७			
	सिद्ध चक प्	्बास <b>०</b> १११८			याकोश हि॰
		१११६ 1 अथयमालासक			=, ४५६, ४६०
	and bank	, जायनाल नाउ १३६		वसुनोद आ	न्याचार भाषा
वीर्ग्यसिष्ठ	कातत्र स्प				हि <b>॰ १६</b> १
		* 6 6		श्रेगिक च	रित्र माया हि०
बौलत घौतेरी	ऋिष महल	पूजा भाषा			४०५
		हि० ७५५		मकल प्रति	बोध हि॰
	%रें शिकच				७६३
		808		हरिवंश पुर	
दौलतराम		S 6			३०४, ३०५
कासलीबाल -		ी हि० १०४६	दौलतराम पत्लीव	<b>ल</b> छहटाला	हि॰ १६६,
	भ्रध्यात्म ब	ार <b>ह</b> खडी हि०			<b>११३</b> २
	F	ξ		दौलत विर	⊓स हि॰ ६६०
	बादपुरास्	। भाषाहि० २६७		पद	हि॰ ११३२
	3¢	द. २६६, २७०		बारहमासा	हि॰ ११२६
	कियाकोश			सिद्धक्षेत्र पू	
	1 41 41 41 41	, e		·	. €₹₹
		,			

प्रंचकार का नाम	प्रंथ नाम	ग्न <b>य</b> सूजी पत्र सं०	प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रं <b>य सूकी</b> पत्र सं०
वानतराय	भक्ष र बावनी	हि॰		पुष्पांजिल पृ	(जाहि• ⊏६५
		७७=, १११६		पूजा सम्रह	हि० ६६०
	मष्टाह्मिका पू			प्रतिमा बह	तिरी हि॰
		७६४ ६४६			११४, ११६०
	भागम विलास			मोक्ष पच्ची	सी हि॰
	भारती पंचमे	-			१०४३
		:७६, १११६		रत्नत्रय पूज	ाहि० ∼६१,
	उपदेश शतक	-			=६७, १०११
		6088			महि० १०६७
	कविसिहसवा	-		सबोघ भक्ष	र बावनी हिन
		₹80 <b>\$</b>			\$ 0 X 3
	च विशतक			सबोध पचा	सिकाहि०
	२४, २५, १०				१७२, ११०५
		१०=१		समाधिमरए	ाभाषाहि०
		हि० १०४१			२३⊏, ११२८
	ज्ञान दक्षक			सम्मेदशिखर	:पूजाहि०
	तत्वसार भाष				ફ રુ બ્
	१०४३, १०			स्वयं भुस्तो त्र	माया हि०
	दर्शन शतक (				३०७
	दशनक्षरा पूजा		धनंजय कवि —	धन जय नाम	माला स॰
		۲ <b>१</b> ८, ۲۵۲		४३६, १	०११, १०१६
	दशस्यान चौबी	•		राधव पाण्ड	वीय स०
		6088			३८२
	देवज्ञास्त्र गुरु	र्जाहि० ⊏े∕		लिगानुशासन	। (शब्द सकी ग्रं
	धमंपच्चीसी वि			F4 F4)	3 f x o 14
		⊼° {₹ <b>, १</b> ०€°		वियापहार स	नोत्र स०
		•		७४८, ७७१	, ७७३, ६४३,
	घर्मविकास वि			१०२२, १	०३४, ११२७
	६६२, १०४३ ,१०६२		वनपति	धरिष्टाभ्य य	स० १११७
		हर्ण १०७३	धनपाल	कायाक्षेत्र गा	
	पचमेर पूत्राहि				१०२४
		2027	धनवाल	भविनयत्तकहः	-
	पार्श्वनाय स्टोट	1 180	44414	नायन्यम् कर्	24.10

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
	श्रुतपचमीकया भ्रप०	ब॰ घर्मदास—	बटोला हि॰ १०८६
	१२०३		सुकुमाल स्वामीखद हि०
	(मविसय तका दूसरा नाम)		५०१
षद्माताल	चर्वासार हि० ३०	भ० धर्मदास	गुरावेलि हि॰ ६४२
	मामायिकपाठ भाषा हि०	पॅ० धर्मदेख	यागमङल विधान सं•
_	5,8,8		¥3#
षम्बन्तरि—	योगशतक स० ५८३		वृहद शाति विभान स०
धनेश्वर सूरि	शतुंजय तीर्थ महातम्य सं०		602
	१२०२		णान्तिपाठ स० ६१०
म० धर्मकीति	पद्मपुरास स० २८०		शान्तिक विधान स०
	सम्यक्त्यकीमुदी स०		639,083
	X£X		सहस्रमुण पूजास० ६२६
	सिद्धचकपूजा स० ६३३	धमं मूचरा—	न्याय दीपिका सं०२५६
धर्मकीर्ति	चनुविशतिजिन षट्पद	वर्ममूष्य —	मनोरय गीत माला हि०
	बयस्तीत्र हि०१००६		६७३ रत्नत्रय व्रतोद्यापन स०
पं० धर्मकुमार	शालिभद्रचरित्र सं०	वमंसूषरा	
	93 £		१०६५ सहस्रतामपूजास० ६३०
धमंचन्द्र	गौतम स्वाभी चरित्र स०		१११८
	395	धर्मरुचि	स्कृमालस्वामीरास हि०
	नेभिनाय विननी हि०	44014-	पुरुमालस्यामारास १६४०
	3799	धर्मसागर	प्रानाचनाचनुष्पदी हि०
	सबोधायचासिका हि०	44414	आरायना नगुज्यसा न्ह्रण ४३०
	१०२१	धर्मसिह—	मस्लिनाथ स्तवन हि०
	सहस्रताम पूजा स०६३०		<b>૭</b> ૧ેર
षमंदास	धर्मीपदशशावकाचार		मर्थेया हि० १११⊏
	हि० १२६,	धवलचन्द्र	चौबोस दण्डक प्रा० १०७
	£099	घीरजराम—	चिकित्सासारस० ५७७
षमंदास	विदःधमुखमडन स०	घेल्ह	पचेन्द्रिय वेलि हि० ११५१
	२६०, १२०१		विशालकीर्तिगीत हि०
	शब्दकोश स० ५३६		१६२
वर्मदास गरिए	उपदेशरत्नमाला प्रा०		बुद्धिप्रकाश हि० ६७२
	६४, ६४७, ११७४	******	घमेमण्डन माथा हि०
पाण्डे धर्मदास	श्चनस्त बन पूजास० ७५२		<b>१</b> २२

प्रवकार का माम	. इ.च नाम	यं <b>य सूर्य</b> पत्र सब		षंच नाम	प्रवसूची पत्र सं०
नवमल बोसी	महिपाल वर्षि	रंत्र माषा		भक्तामरस्त	त्र पूजाहि॰
	हि∙	३६०			532
नवमल बिलाला			नम्बराम सौगार्य	ীপাৰক সনি	माहि०
		ह४, ११८१			
	जीवन्धर चरिः	गहि∙	नन्दि गरिए	भगवती ग्र	राघनाटीका
		330			সা• শ •
	जैनबद्रीकी वि	•			६२. १४६
		\$ 0 XX	नन्दि गुरू	प्रापश्चिम स	सम्बद्धां वृत्ति
	नागकुमार चि		•	स •	१४२, २१४
	20 2	386	नन्दितादय	नन्दीयछद प्र	83 y on
	नेमिनायजी व	-	मन्दिषेरा —	धजितमाति ।	स्तवन प्रा॰
	हि॰	6.88			७१०, ६५६
		\$ • ¥X	नन्त्रमल	रत्नसम्रहहि	६७३
	फुटकर दोहा हि मक्तामरस्तोत्र स		नयचन्द सूरि	सबोध रसाय	
	भक्तामरस्तात्रः (मावासहित			_	e x 3
	-	) 1 <b>6*</b> '६४, ७∙४	मयनस्दि —	मुदमसा <b>च</b> ि	उद्यम्बं ग॰
	रत्नत्रय जयमा			द्यादिनाय मंग	¥१¥
	रस्य जयनः हि०	ना नाया। <b>१</b> ६	नवनमुख	सादनाव सर	।सा ।हर ७११
	गर्ड बीर विलास हि			6 > (	
	समबद्यारम् मगर		नयनमुख	राम विनोद वि	
		। । ए° ६, १∙४५		वैद्यमनोत्मव	f/o xos.
	सिद्ध वक्रवत क्य				(६२, <b>१०</b> ०६
	I CORP TOWN TOWN	, .ç. <b>x</b> •२			११६७
	बिद्धांतस.र दीप		नयनसुन्दर	गन्नय उद्ध	ार हि०
		, <b>१</b> ०४२			304
. <b>.</b>			नयविमल	जम्बुस्वामीराह	हिन्द्र इ
·	मुदर्शन सेट कथा	•	नरपति	नरपति जयवय	Ha wwa
		848			
	नन्द बसीमी स		मरसिहयाण्डे	नैवधीय प्रकाश	
	बेतन गीत हि॰	१०२७	षं० नरसेम	श्रीपाल चरित्र	
	नाममाल। हि॰	¥3c		_	३६२
दराम	कलि व्यवहार व		नरेग्द्र —	दणसामाणिकः।	
	हि•	\$00\$			653

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ <del>जूबी</del> पत्र सं०	प्र'चकार का नक्ष्म	संबंधान संव्यवि पत्रसं०
षा० नरेन्द्रकीलि-	गुस्तवन हि० ११०६		कल्यास मन्दिर स्तोत-
	चन्द्रप्रम स्वामिनी विवाह		वृत्ति स० ७२०
	(राज०) ४३७		विधापहार स्टोन टीका
	द्रोपदीक्योल गुरारास		∌¥e oB
	(राज०) ६३४	नागराज	पिगलशास्त्र प्राप् १६४
	सगर प्रबन्घ हि० ४६ <b>१</b>	नागराज	बराजारा रागः हि॰
नरेन्द्रसेन	प्रमागा प्रमेयकलिका सं•		* ** *
	२४६	नागराज	माबणतकसं० १४७,
ग्रा० नरेन्द्रसेन — १			ندر, ११६३
	(पण्डिताचार्य) सिद्धाग्तमार	नागरीदासः—	कविल हि॰ १०६६
	सग्रह्म॰ ८७	पं० नाथू	पत्र हि० ११०८
	मम्यक् चरित्र पूजा स∙	इक्ताथू	<b>ल्मजीको डोरीहि</b> ०
	e x . 9 , 0 3 3		१०६२
	क्षमावनी पूजास० ११४२		पारमनाय की <b>सहेली</b> हि०
	५५.५ पत्रमी वतोद्यापन पूजा		3.83
	पत्रमा प्रताद्यापन पूजा स० ६५६	नायूराम	रसायन काव्य सं० ३६२
	रत्तत्रय विधान पूजा ग०	नायूराम कायस्थ	क्रीतिषग्रन्य भाषा हि॰
	११३१, ११६६		४४७
	१९२८,१९५५ लडिनगणप्रकाण हि०	नाथुराम दोसी —	चर्चाशतक टीका हि०२७
नत्ह—	ाडनग्रा अकाका १०८१ १०८१		समाधितःत्र भःषा हि॰
नवरंग	परमहस सबोध चरित्र		२३⊏
	मृ० ३४४	_	मुकुमालचरित्र हि०४१३
नवलराम	बद्धेमानपुराग भाषा २८६	नायूराम तमेवू —	जम्ब् स्वामी चरित्र हि॰
नवलगाह -	बद्धं मातपुराण हि॰		३२४
	₹ €	नारचंद्र—	नारचन्द्रज्योतिष स०
नवल	जैन पश्चीसी हि० १०७७		५५०, ११६६
	पद हि० १०४७		ज्योतिषसार स० ५४८
	बारह मावना हि० १०७८	नारद	पचदशाक्षरस० ४५९
	भजन हि॰ १०४१	पंडिताचायं नाराय	<b>एग</b> -पारिजात हर <b>ए।</b> म०
नबसराम	सरवगसार मन विचार		₹¥¥
	हि० २४६	नाराषण-	ग्रनन्तवतोद्यापन स० ७५३
नागवन्त्र सुरि	एकी भाव स्तीत्र वृत्ति सं०		वृषभ <b>देव स्तव</b> न हि॰
#**			७६०

<b>पंचकार का नाम</b>	प्रथमाम र	ंब सूची पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूर पत्रसं	
मारायग	ं चमत्कार चिन्ता	मिशा मं•		धर्मोपदेश रत्नमाला प्राट	
		788		<b>१</b> २	
•	घमं प्रवृत्ति म ०	११८४	मा० नेमिचन्द्र—	सूर्यप्रकाशसं० १७	3
<b>स</b> ० नारायरण	मायागीत हि०	4628	पं० नेमिचन्द्र	<b>ब</b> ण्टाह्मि <b>कात्र तो ग्रा</b> पन	
नारायरा मुनि	जीमदात नासिक	ा नयन-		পুরাণ৹ ৩=	•
•	कर्णसमाद हि०	<b>११</b> =२		कर्मप्रकृतिस० ६६	0
नारायखदास	छदसार हि०	११५=		त्रिलोकसार पूजा हि०	
		११६८		तीनलोक पूजाहि॰ ५१	
	भाषाभूषसा टीका	हि ०	36	= ?	?
		१०१५	नेमिचन्द्र गरिए	त्रैलोक्यमार टीकास० ६१	,
निहालचन्द —	नयचक भाषा हि	• <b>२</b> ४४	नेमिचन्द्राचार्य		•
•	बहाबाबनी हि०	6.8.3	नामचन्द्राचाय	अध्यक्ष । जनगा प्रकरमा इक्कीस ठारमा प्रकरमा	7
निस्यनाथ सिद्ध—	रसरत्नाकर म॰	¥e¥			
नित्यविजय	समयमार कलका	ीका		সা৹ কন্ত্ৰ-বিসাৎ	
	# P	२२२			
नीसकण्ठ	जातक स०	***		गुरगस्थान मःभंरगः बर्लाः	
	ताजिक ग्रन्थ सः	8 6 5		্মাণ १	
	नीलकण्ड ज्योतिष			गोम्मटमार प्रा०१५ १	•
	4144-5 441114	448		गोम्मटमार सहिन्छ प्रा०	
	वयंतस्य स०	) / ( E 3 V		۶۱ 	
नूर—	वस्तर्यस्य तृरकी शक्तावली			चौदहगुमा स्थान वर्गान चौबीस ठामा। वर्चा प्राट	
21-	प्रकाशकुरावला			चानास ठास्माचचा प्राट प्राट ३१	
नेनिचन्द		\$ \$ 5 8		38. 38. Sec.	
नामचन्द	राधवपाण्डवीय टी				
	म०	350		विभगीसार प्रा०६०,६१	
व्र० नेमचन्द	चण्द्रप्रभद्धर हि०	૭૨૫		त्रिलोकसार प्रा० ६१२	
	मादित व स्तवत हि	0		६१४, ६९४	
• •		8=3		<b>†***</b>	
नेमिचन्द्र —	प्रीत्यंकर चौपई वि	<b>7</b> 0		द्रव्य संबह्ध प्रा०६२, ६३,	
	;	(=¥?		£ 5, \$0%%, \$050	
	राजा चन्द की क्य	r fz o		पंचसंग्रह प्रा० ७१	
	;	6 X S		मायत्रिमंगी प्रा॰ ७७,	
नेमिचन्द्र मण्डारी				£ £ £ £ £	
	प्रा॰ मं॰	EX		मार्गेता सत्तात्रिभंगी प्रा॰ ७८	

प्रंथकार का नाम	प्रंथनाम ए	थि सूबी पत्र सं०	पंथकार का नाम		थ सूची पत्र सं०
	विशेषसत्ता त्रिभ	गीप्रा॰		पद्मनदि श्रावकाः	वार सं०
		50		·	<b>१३३</b>
	षष्ठीशतक प्रा	७६३		ज्ञानसार प्रा॰	833
इ॰ नेमियल	भ्रादित्यवार क	या हि०		धर्मोपदेशामृत सं•	६७६
		४२८		बद्धमान चरित्र	सं०
	धार।धनाकथा	कोश		₹¤	<b>Ę</b> , ४७७
	秤。	Χşο	पद्मनदि	धर्मरमायन प्रा०	१२३
	कथाकोश स०	855	भ० पदमनंदि —	<b>ग्र</b> नन्तव्रतकथा	स०
	धस्यकुमार चरि	त्र स०	•	४२	१, ४३४
		3 5 €		कहसमाष्ट्रक स	३१७ ०१
	धर्मोपदेश श्रावः	प्रचार सं०		जिनवर दर्शन स्त	वन सं०
		१०५			७२६
	नेमिजिन चरित्र	सं० ३४२		जिनरात्रिवृत म	हात्म्य
	प्रीतिवर चरित्र	स० ३५७			40 ጸጸ\$
	रात्रिभोजन कथ	140		पाश्वंनाच स्तोत्र	<b>स</b> •
		808		प्रइष्	, ११२७
	यनकथाकोशाः			ः दिना चौबीसी स	833 OF
	मृदशन चरित्र			रत्नत्रय पूजास०	द ह <b>६</b>
ब्र० नेमिदास	विजयमद्र क्षे	त्रप.ल गीत		रत्नत्रय विधान व	
	70	१२०१			४६=
न्यामतस्रां	धजीसे मजरी	হি০ ২৬३		लधुकातिक पूजा	
पतजिल	प्रवचित्र महाभ	ाष्य स०		वीतरागस्तवन स	10 EEX,
		५१६			११२४
प्रवमराज	श्रमयकूम(र प्र	बध हि०		वृषभ स्तोत्र स०	७६०
17-11-1		મરપ્ કરપ		शातिनाथ स्तवन	स०
पड्मकीति	षार्श्वपुराग	सपश्च ग			७६३
पर्वाचा।।त	41.43,160	च्यम् २६०			सं० ६६६
	- जस्बुस्वामी ध		वैद्य पर्मनाम—	भ्रजीर्शमजरी हि	
पर्मतिलक गरिग-	— ज∙वूस्व≀मः ध			— यशोघर चन्त्रि	
		¥ ( 0	पव्मप्रभदेव –	सदमीस्तोत्र स०	
पर्मगंबि	वपासक सम्क			७७४, ६७६,	
	<b>पदमन</b> दि पच	विभिन्नि स०		१०७४, १०७५	
	१२८, १२९,	१३०, १३१		पार्थनाय स्तोत्र	
		€ ७ इ			£ X 3

पद्मप्रममस	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्र	। व सूची पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम		सूची त्र स०
सारिवेच— पद्भप्रम सूरि— पद्भप्रम सूरि— पद्भप्रम सूरि— पद्भप्रम सूरि— प्राप्त विज्ञान तीयक सन्धार स	परमप्रममल	नियमसार टीका	<b>स</b> ৹ ৩০		सद्भाषितावति हि	<b>६</b> ६५
पद्मप्रम सृदि — वृद्ध दोवक स० १४३, संघी पञ्चालाल— विद्वजनवाधिक हि० १६६, १८६ (हुनी बाला) र १२०२ (हुनी बाला)						
हिर पुंचारा प्राप्त विज्ञोह हिर् १९१६ समझ्लरण पूजा हिर १९०१ समझ्लरण पूजा हिर १९०१ पद्माना प्राप्त विज्ञोह हिर १९०१ परम विद्याराज प्राप्त विज्ञोह हिर १९०१ परम विद्याराज व्यवस्त मरुकार एका हिर परम विद्याराज व्यवस्त हिर १९०१ परमानाव जोहरी विराप्त हिर १९०१ परमानाव जोहरी विज्ञास हिर १९०१ परमानाव हिर १		मुवन दीपक स	<b>το </b>	संघी पञ्चालाल—	विद्वज्जनबोधक हि०	₹ <b>६</b> ३,
पदाराज — यंगोवर विश्व म०३३३ । हि॰ पद्मविजय — शीलप्रकास रास हि॰ पद्मविजय — वारकवाय माज्ञाय हि॰ पद्मसुन्दर — वारकवाय माज्ञाय हि॰ पद्मसुन्दर — वारकवाय माज्ञाय हि॰ पद्मसुन्दर — वारकवाय माज्ञाय हि॰ पद्मसान्द जौहरी— वारकवाय हि॰ पद्मसान्द जौहरी— परमान्द जौहरी— वारकवाय हि॰ पद्मसान्य प्रभावाय विश्व विश्व परमान्द विश्व विश्व हि॰ वारवाय प्रभावाय विश्व हि॰ वारवाय प्रभावाय हि॰ वारवाय प्रभावाय हि॰ वारवाय ह	` "		\$33	(दूनी वाला)		१२०२
पद्मविजय   शीलप्रकास रास   हिंठ   परम विद्याराज   बृद्ध सहिता में व्यवस्थान संक्षा   हिंठ   रवस विद्याराज   वृद्ध सहिता में व	पं० पद्मरंग	गम विनोद हि	० १०१६		समवशरग् पूजा	हि०
पद्मसुस्दर — बारकवाय सज्भाग हि॰ परमानाव श्री हि॰ है॰ है परमानाव बौहरी — वारकवाय सज्भाग हि॰ परमानाव बौहरी — विद्या पत्रालाल प्रावक्षावाय रात हि॰ है॰ है परमानाव बौहरी — विद्या पत्रालाल प्रावक्षावाय त्राल हि॰ है॰ है विद्या पत्रालाल प्रावक्षावाय वर्जानका हि॰ परमहंस अंदित है॰	पद्मराज	यजीवर चरित्र	म०३७३			११५
पद्मानुस्वर वारकाय मण्डाय हि॰ १००१  १६४ परमानन्व जीहरी— वेतत वि० १००१  पद्मा— श्रावकावाण रास हि॰ १६८ परमानन्व जीहरी— वेतत वितास हि॰ ६६८ परमानन्व जीहरी— वेतत वितास हि॰ ६६८ परमानन्व जीहरी— वेतत वितास हि॰ ६६८ भर्गायान्व वित्र हि॰ १८७, ३६७, ३६७, ३६७, ३६७, ३६०, ३६०, ३६०, ३६०, ३६०, ३६०, ३६०, ३६०	पद्मविजय —	<b>शोलप्रकास रास</b>	हि •		सरम्वतीपूजाहि०	373
१६४ परमानन्व जीहरी— चैतन विलास हि० ६५६ पर्युगा— आवकावाग रास हि० रि० परशुराम— प्रतिष्ठायाठ टीका स० र्हण्य प्रभालाल आवारसार वजनिका हि० परिमल्ल — आवात वरित हि० ३६५, ३६६, ३६०, ३६०			5 € ₹	परम विद्याराज—	बृन्द सहिता म०	X £ &
हर परमानव जीहरी— बेतन बिनास हि॰ ६६६ परशुराम— प्रनिष्ठायाठ टीका स० १६६ परशुराम— प्रनिष्ठायाठ टीका स० १६६ पर सल्ल — श्रीवात वरित्र हि॰ २१६ वर्ष पर सल्ल — श्रीवात वरित्र हि॰ १६६ वर्ष पर सल्ल — स्वाप्य ति १६६ वर्ष पर सल्ल मार्थ मार्थ वर्ष पर सल्ल मार्थ मार्थ मार्थ पर सल्ल मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्य मार्य मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्य मार्थ मार्य	पद्मसुरदर —	चारकषःय सङ्ग्रा	य हि०	परमानन्द	घुचरित हि०	१००१
पश्चा प्रशासाल प्राचारमार वचनिका हि॰ पश्चिमल्ल श्रीवाल चरित्र हि॰ ३१८, ३१८, ३१८, ३१८, ३१८, ३१८, ३१८, ३१८,	. •		858	परमानन्द जौहरो—	-चेतन विलास हि	• ५५१
पश्चिम प्रशासाल प्रावरसार वजनिका हि॰ पश्चिमल - श्रीपाल जरित हि॰ ३१५, ३१६, ३१६, ३१६, ३१६, ३१६, ३१६, ३१६, ३१६	पर्मा —	श्रावकाचार रास	हि०	पर <b>गुराम</b> —	प्रनिष्ठापाठ टीका	म०
स्वेशे स्वराधनामार वर्षाका हुँ । १६६, १८३, १८६, १८३, १८६, १८३, १८६, १८३, १८६, १८३, १८६, १८३, १८४, १८४, १८४, १८४, १८४, १८४, १८४, १८४			१६७			<b>555</b>
प्रताधनासार वर्जनिका  हि० २२ परसहंस च्रान्यपुरास भाषा हि० परिवाजकाचार्य मारण्य प्रक्रिया गण्य पर्यास्त भाषा १०० तरहत्पण्यका हि० पर्वत धर्मार्थी स्थापन भाषा १११ तत्वकोतनुम हि० ४१ गर्भगरीक्षा भाषा हि० २१५ तत्वकोतनुम हि० ४१ गर्भगरीक्षा भाषा हि० २१५ तत्वकातन्म सामा परि० २१५ तत्वकातन्म सामा परि० २१५ तत्वकातन्म सामा परि० २१५ वर्णास्ति भाषा हि० २१६ वर्णास्ति भाषा हि० ११६	पःड्या पन्नालाल	भावारसार वचनि	काहि०	परिमल्ल —	श्रीपाल चरित्र हि०	\$ 6 A *
हि० २२ परमहंस मृतर् मुकाबली म० ४४६  उत्तरपुरासा भाषा हि० परिवाजकाचार्य माग्यत्व प्रक्रिया म०  २०४  तेरहपण्यका हि० पर्यंत अमीर्थी द्रश्य गेण्य भाषा  १११ तत्वकोस्तुम हि० ११ गमेपरीक्षा भाषा हि० १२४ पत्रहणु— अय जग ग्यामी पायमी तवतत्व गाणा भाषा हि० ६६ पास्पित— गतुणह न० ४१४ ग्यासदीपका भाषा हि० २४६ पाण्डकपुरास भाषा हि० २४६ पाण्डकपुरास भाषा हि० २६० २८० २८० २८० पार्मित— गतुणह न० ४१४ गाणात व्याकरस्य संव १८० २८० १८० १८० २८० १८० २८० २८० १८० २८० २८० १८० १८० २८० १८० १८० १८० १८० १८० १८० १८० १८० १८० १	चौबरी		83		38€, ३8७,	३8≤,
च्रतायुरास् भाषा हि० परिवाजकावार्य सार्थन प्रक्रिया स०		ऋ≀राघनासार व	चनिका			१०९३
२०४ १८०५  तेरहत्पवलंडन हि॰ पर्डत धर्मार्थी इध्य संघर भाषा १११ तत्वकोत्तुम हि॰ ११ समाधितक भाषा तु० भनेपरीक्षा भाषा हि॰ ६६१ तवकरेब गांवा भाषा हि॰ ६६ पास्त्रिक भाषा हि॰ १६५ पास्त्रिक भाषा हि॰ १६६ पास्त्रिक भाषा सि॰			हि० १२	परमहंस	मृहर्नमुक्तावलीसः	, XX C
नेरहपण्यकत हि॰ पर्वत धर्मार्थी इध्य संघर भाषा  १११ तस्वकोस्तुम हि॰ ८१ समाधितत माया गु॰ भागरीक्षा भाषा हि॰ २८ पहणु जय जय जय नामी पाचकी नवतस्व गाया भाषा हि॰ २८ पाणिति— य तुगठ स॰ ११८ स्थायदीपका भाषा हि॰ २६६ पाण्डकपुराल भाषा हि॰ २६६ पाण्डकपुराल भाषा हि॰ २६६ पाण्डकपुराल भाषा हि॰ २६६ सन्वतस्व स्थायस्व सि॰ १६० ११९ १८० १८० १८० १८० १८० १८० १८० १८० १८० १८०		उत्तरपुरास भाषा	fee	परिवाजकाचार्य	सारस्वतं प्रक्रिया	₽•
१११ द६, १००१ तत्वकोतनुम ति० ८१ समाधिनत माया गु० गर्मपरीक्षा भाषा ि० २३८, २०४, २०६, २०६, २०६, २०६, २०६, २०६, २०६, २०६			8€.5			<b>१</b> २०५
तत्ववरोतनुम हि० ११ समाधितत माया पु० गर्मपरीक्षा भाषा हि० १२४ पत्हणु— अय जस स्वामी पाष्टी नवतत्व याचा भाषा हि० ६= पास्पित— गतुष्ठ स० ४१४ स्वासदीयका भाषा हि० पास्पिति— गतुष्ठ स० ४१४ स्वासदीयका भाषा हि० पास्पिति ४१६ पाण्डबदुरास भाषा हि० प्राचीत व्याकरस्य स० १४६ १४१४ १४८ सन्तकरण्ड आवकाबाद पाण्डबदाल— परमास्म प्रकास झीका स० ४४९ सनुनदि आवकाबार भाषा सण्डकसराल— परमास्म प्रकास झीका स०		तेरहप <b>य</b> ाव <b>डन</b>	f≢o	पर्वत धर्मार्थी —	द्रव्य संप्रत भाषा	
प्रभवरीक्षा भाषा ि० २६४, २०५५, २०६, २०५५, २०६, २०५५ १९६५ १९४ पत्हणु— अय अस ग्यामी पाण्डी नवनत्व याचा भाषा ि० ६८ पास्पिन— पानुपाठ न० ४१६ थास्प्रीपका भाषा ि० द्रष्ट पास्प्रिक भाषा ि० ११६ पाण्डबपुरास भाषा ि० प्राचीन व्याकरण सं० ११६ पर्वकरण भाषा ि० १६० १९७ पर्वकरण परमास्य प्रकास स० वन नेका ि० ११६ परमास्य प्रकास स० वन नेका ि० ११६ परमास्य प्रकास स० वन नेका ि० ११६ परमास्य प्रवास स० वन नेका ि० ११६ परमास्य प्रवास स० वन नेका ति० ११६ परमास्य प्रवास स०			888		<b>٤</b> ٤,	6086
१२४ पत्हणु— अय जय ग्वामी पाघडी  नवनत्व गांचा भाषा हि० हि० १०६६  ६८ पास्पिनि गतुषाठ म० ११४  ग्यायदीपिका भाषा हि० पास्पिनि गतुषाठ म० ११४  पाण्डकपुरास भाषा हि० प्राचीन व्याकरस्य स०  २६० प्राच्डकपुरास भाषा हि० प्राचीन व्याकरस्य स०  २६० परनकरण्ड आवकावार पाण्डकपाल		तत्वकौस्तुम	हि० ४१		ममाधितत्र माया	गु०
नवनत्व यावा भाषा रि० हि० १०६० ६ प्रास्ति— य नुगठ स० ११४ स्थायदीपिका भाषा रि० पास्ति— य नुगठ स० ११४ ११६ पाण्डकपुरास्त भाषा हि० प्रदेश प्राप्ति व्याकरस्य सं० ११६ पाण्डकपुरास्त भाषा हि० प्राप्ति व्याकरस्य सं० १६० ११६० ११६० ११६० सनकरण्ड आवकावार पाण्डकपाल		गमंपरीक्षा मापा	120		२३४, २३४, २३६	, ५३७
नवनत्व गामा भाषा हि० हि० १०८६ ६८ <b>पांगा</b> नि गानुगाठ म० ११४ स्यायदीपिका भाषा हि० पांगािन व्याकरण सं० २४६ पाण्डकपुरासा भाषा हि० प्राचीन व्याकरण सं० २४६ पाण्डकपुरासा भाषा हि० प्राचीन व्याकरण सं० २६० रत्नकरण्ड श्रावकाषार पाण्डकपाल परमास्य प्रकास डीका सं० ४व नेका हि० १४६ र०४ कमुनदि श्रावकाषार भाषा <b>पाणकोक्तरी</b> पाणकेकारीस्तीय सं०			<b>१</b> २४	पत्हणु	जय अध्य स्वामी पा	यष्टी
न्यायदीपिका भाषा रि० पाणिति व्याकरण सं० २४६ पण्डबपुरास भाषा हि० प्राचीत व्याकरस्य सं० २६० प्राचीत व्याकरस्य सं० ११७ १८नकरण्ड श्रवकाबाद पण्डबपाल परमास्य प्रकास संक वच तेका हि० १४६ वसुनदि श्रावकाबार भाषा <b>पालकेसरी</b> पालकेसरीस्तीच स०		नवतत्व गाचा भाष	या f₹o		हि॰	\$ 05E
२४६ ४१४ पाण्डबपुरास भावा हि० प्राचीन व्याकरण सं० २६० ४१७ रत्नकरण्ड श्रवकाबा <b>र पाण्डबराम</b> ः— परमास्य प्रका <b>त डीका सः०</b> वच नेका हि० १४६ वसुनदि श्रावकाबार भाषा <b>पात्रकेसरी</b> — पात्रकेसरीस्तीत्र स०			۶Ę	पाणिन —	थ नुपाठ स०	286
२४६ ४१४ पाण्डबपुरासा भाषा ति० प्राचीन व्याकरसम् सं० २६० ४१७ रत्नकरण्ड श्रवकाबार पाण्डबराखः— परमास्य प्रकास डीका सः० वच नेका ति० १४१ वसुनदि श्रावकाबार भाषा <b>पात्रकेसरी</b> — पात्रकेसरीस्तीच सः०		न्यायदीपिका भाषा	fro		पारिमानि व्याकराम	Ħ o
पाण्डबपुरासा भाषा हि० प्राचीन व्याकरसा संव २६० ४१७ रत्नकरण्ड श्रावकाचार पाण्डबरामः परमात्म प्रका <b>ल डीका सं</b> व वच नेका हि० १४१ वमुनदि श्रावकाचार भाषा <b>पाणकोक्षरी</b> पाणकेक्षरीस्तीय संव						xex
२६० ४१७ रत्नकरण्ड आवकाबार पाण्डबरामः परमात्म प्रका <b>ल डीका स</b> ० वज नेका डि० १४६ २०४ वमुनदि आवकाबार भाषा <b>पाणकोक्षरी</b> पाणकेक्षरीस्तीय स०		वावश्रक्षवरामा भाव			प्राचीन व्याकरमा	
रत्नकरण्ड आवकाचार पाण्डवराजः— परमात्म प्रका <b>ल डीका स</b> ० ४च नेका हि० १४६ २०४ कमुनदि आवकाचार भाषा <b>पाणकेझरी</b> — पाणकेझरीस्तीच स०		11-0-2/1/0 114				
4च नेका हि० १४६ वमुनदि आवकाचार शाया <b>यात्रकेसरी</b> पात्रकेसरीस्तोत्र स०		777#70# 27 <b>7</b> ##15		वाण्डसरास	परमात्म प्रकाम की	
वमुनदि श्रावकाचार भाषः <b>पात्रकेझरो</b> — पात्रकेशरीस्तीत्र स०						
•				वासकेमरी	वाचकेशरीस्त्रोच	
		-		7197911	31 3 3141 /12/31 4	· **

प्रंथकार का नाम	पत्र स०	ग्रथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रस०
पारसदस	विदरभी चौपई हि० ४८५	पुष्पवन्ताचार्य—	महिम्तस्तोत्र स० ७५४,
पारसदास निगोत्या	— ज्ञानसूर्योदय नाटक हि०	<b>3</b>	! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! !
	₹o¥	पूज्यपाद	इष्टोपदेश सं १६३, १६०,
	पद सग्रह हि० ६६३, ६६८		११५४, ११७३
	पाण्म विज्ञास हि०६६८		उपासकाचार सं०६६
	सारचौबीमी हि०१७५		समाधितत्र सं०२३४
पाल	युद्धिपकाण रास हि०		समाधिशतक स०२३६
पास कवि —	\$ <b>6</b> 0		सर्वार्थसिद्धि स॰ ८१,
	पार्श्वनाथ स्तृति स० ७३४		333
पासचन्द सूरि	भ्रादिनाथ स्थवन हि० १४४	पूनो	मेधकुमार गीत हि० ६७२
	्रः श्रावकविचार चत्रपर्र हि०	"	८८४, १०२६, १०५४,
	\$03 <b>4</b>		₹•६२
पुंजराज	६०० <b>७</b> साम्स्वत टीका स० ५२१	ग्राचायं पूर्णदेव	यशोधर चरित्र स०३७३
पुन्यकीति –	पुण्यसार चौपई हि० ४६३	भुन पूर्णभद्र	मुक् <b>माल चरित्र धपभ्र</b> ंश
पुण्यरतनम् न	हेम्सर यास्य १२०६३६ सेम्सिय राम १२०६३६	3 47	866
33	ξοχ.	पृथ्वीराज	हुप्सारुक्मिस्सी वेलि हि॰
	यादवराम १.०१८१	•	११७४
पुष्यलाभ	पोषहगीत हि० ७०५	मुनि पोमसिह	ज्ञानसार प्रा० ६१
पुष्यसागर	भ तना सुन्दरो च उपदे हि o	पोसह पाण्डे—	दिगम्बरीदेवपूजाहि०
	* ₹ ₹	`	१०६१
	प्रश्नकांत्रणत्त्र काव्य	पौंडरीक	णल्दालंकारदीपक सं <b>०</b>
	टीका स० ३५५	रामेश्वः	६००
	गुबाहुचीन्य हि०४१७	प्रकाशचन्द	सिद्धक्षेत्र पूजा हि० ६३२
पुरुषोत्तमदेव	त्रिकाण्डकोश स० ५३६	प्रतापकीर्ति	श्रावकाचार हि० ११३६
<u> पुरुष इन्त</u> -	स्मादिपुः। सम्बद्धाः सम्बद्धाः	महाराजा सवाई	ध्रमृतसागर हि <b>॰</b>
_	उनग्पु∗ामा ग्राप्तम	-	-
	२७२	प्रतापसिह—	\$ e y
	जसहर चरिउ अपभ्राश		नीतिशतक हि०६५१
	: २६		भतृंहरि शतक भाषा हि०
	सा∤सकुमार चरिउ चपभ्र श		487
•	३३२		्रगारमञ्जरी हि०६५१
	महःपुः। सम्प्रभाग २६४	प्रतिबोध—	समयसार प्रकरण प्रा०
	£9 <b>१</b>		२२६
	- •		

ग्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रंच सूची पत्र सं०	पंचकार का नाम	प्रंथनाम ग्रंथसूप यत्रस
प्रभंजन गुरु	यशोधर च	रित्र पीठबंब	प्रमाचान्द्र	वितामित पाइवेनाय
		सं० ३७२		विनती हि०६।
प्रमाकर सेन	प्रतिष्ठा पाठ	सं ० ५८५		महाबीर विनती हि
प्रभाषान्द्र —	ग्रात्मानुशास	ान स०१८४,		***
		१८४		7:
	ग्राराधनासा	र कथा प्रबंध	प्रहलाद—	पद्मनन्दि महाकाव्य टी
		स० ४३•		<b>₹∘</b> ₹≀
	उपासकाध्यय	ान स०११३७	प्रहलाद	स्वरोदय हि०५७
	कियाकलाप	टीका स०	प्रेमचंद—	सोलहसती की सिज्माय
		8.5		हि० १०६
	द्रव्यसम्बद्ध टीव	का स०६४	पं० फतेहलाल	जैनविवाहिबधि हि
	प चकन्यारम् क	पूजा स०		199
		5 8 9	बस्तराम साह	धर्मबुद्ध मन्त्री कथा हि
	चमीकवा टि	प्परा		81
	ध्रपभ्र श	***		पदसम्रह हि०११४
	प्रतिक्रमस्य टीव	का मं० २०६		युद्धि विसाम हि०१४
	प्रवचनमार टी	का स०		56
		₹\$		मिथ्यात्व खडन हि
	यजोधरचरित्र	टिप्पग्		१४६, ६० <b>७, ६</b> ५४
		स०३७१	75447	
	रत्त्रय कथा	म• ४६८	बल्ताबर नाल-	चीबीस तीर्थं कर पूजा हि
	विषापहारस्त्रो	त्र टोका		E00, 883
		स० ७५६	बस्तावर सिंह	द्याराजना कथकोश हि
	श्रादकाचार	43 OF	रतन लाल	.K3
	समयसार वृश्ति	ास ० २२४	बनारसीदास -	ग्रध्य त्मर्पडी <b>हि• १०</b> १
	समाधिशतक	टोका सं०		<b>ब</b> न्यान्म बलोसी हि
		250		8.5
	स्वयमस्तोत्र टी	का स०		श्रनित्य पश्रासिका हि
		<b>ુ</b> છ છ		<b>₹•</b> ¥
प्रमायन्द्र	तत्वार्थरत्नप्रमा	<b>6</b> 7		कमं छलीयो हि० १४
मकोति के शिष्य)		 सं०४२		
•				कर्मप्रकृति अहि०६८
चान्द	रश्नकरण्ड श्रा			कर्मविशक हि॰ य
	टीका	सं• १५६		\$ 0 \$ 1

विकार का नाम	ग्रंच नाम	ग्रंथ सूर्च पत्र स		गनाम ग्रं <b>थनाम</b>	पंचसूची यत्र सं०
	कल्यासमिद	र स्तोत्र माध	T	साधु वदः	स हि०७६६,
	हि	७१६, ७३३	,	•	568
	F08,885	,850,8088	,	सिन्दूर प्र	करण भाषा हि॰
	१०६१, १	६४, १०७४	,	₹ <b>₹</b> ,	६६७, ११४४,
	१०६×, १	<b>२०, ११</b> २३			११६७
		888	•	मूक्ति मुक्त	<b>गवली हि०६४</b> १
	कविन हि०	६५	ः बंशीदास∽	- रोहिएी	व्रतकथा हि०
	जिनसहस्रता	म स्तीत्र			११२३
	मावा हि०	£ 8 £ , 9 0 %	१ बंसीधर	द्रव्य सग्र	हमावाटीका
	ज्ञान पच्चीर	ते हि०११	,	राज०	६७, १०४६
		650, 888		डनी भक्तिमास	। पद हि॰ १०६६
	तेरह काटिर	ग हि० ६६।	् बलिमद्र		हि० १०४८
		* ११२		सामायि	ह पाठ स <b>०</b> २४३
	धमं प-चीस	ति हि० १०७	ू बारा	कलियुग	चरित्र हि०
	नाममाला	লি০ খ	5		१००२
	निमित्त उप			क सीताच	रित्र हि०१०३६,
	ininii 3	9 07	्र (रामचन्द्र)		१०७४
	पद हि	s = 19 4 , ₹01	जानकर गा	त्रिपाठी – प्रशस्ति	
			7 · · · · · ·		6388
	बन। रसी वि		बालवन्द-		पच्चीमी हि० ६४६
		१०१=, १०\		ध्तरकः	व पूजाविधान हि०
	१०१-, बावनी	११३३, ११ हिट्ट			ه ۶۶
	बावना सोक्ष पैडी		सालमकः	, ,	डलिया हि०११४
				राजुस	छत्तीसी हि०
		(जाहि० १०			998
	समयसार	न≀टक	हि <b>ं बिरधी</b> च	न्द— मन्दी≱।	वरद्वीपपूजा हिल
	२२६,	२२१, २	₹0,		48
	२३१.	२३२, २	३३, बिहारीट	तस— पद	हि० १०६
	₹14.	£88, 8	६२, बिहारी	लाल बिहारी	सतसई हि. ६२६
	ξα¥.	££\$, 8	£¥,		२, १०३७, १०३०
	1088.	₹0₹5, ₹0	२२,	•	११६
			४६, ७३. बुधचन्द	सनसा	ारी सज्काय हि
	१०५२,	१०७२, १	03, <b>3</b> 44'9'	30	પરાયામાં પ્રદ

प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
ब्धजन	इष्ट छलोसी			प्रश्नोत्तर रत्नमाला सं०
•		8 \$ 8		<b>1</b> ==
	छहदाला	हि० १६६.		प्रश्नोत्तरोपासकाचार हि०
		3888		१४३, १४४
	तत् <b>वार्यवोध</b>	हि० ४२		वचनकोश हि० ५३६
	दर्शनपञ्चीसी ।	हि० ११२६		बार्ना हि०१०२२
	पचकल्याग्यक		<b>बू</b> चराज	चेतनपुद्गलघमाल हि०
		£¥9		१०८२, ११८०
	पचपरमेरठी वृ	ज्ञा हि० ≒४३		पद हि०१६२,१६४,
	पचास्तिकाय			१०८१
	1 411/0404	नाना हि० ७४		मदन हुझ्भ हि०६८४,
	पद हि०१०			\$04E
	परमात्मप्रकाश			संतीय अव्यक्तिसक हि०
		हि० २०६	±	بوع دور جانب سانب
	बुधजन विनास		बं जल मूपति	प्रबोध चन्द्रिना स० ५१७, ११६०
	बुधवन सनसई		ब्रह्मोय	११६० नेमीश्वररास हि०१०८३
	3	१०८१	M91814	मनकरहाराम हि०
	योगन्दुमार	70 = 95		माक्तरशासाम क्रिक्ट १०८१
	सदोध पच सिक	i feo		पर हिल्हेर्रेर
		१०८३	#∉देव	द्रव्यसद्गत्तम् स०६४
	सम्मेर निस्तर		W-244	प्रसारमञ्ज्ञास्य टीका
	£	£÷¥		ALC SOX
	निद्धभूमिका उ	वापन डिट्टिप्	वरमोहन-	नुषभदेव गीत हि० १५००
बुषटोडर	क्षेत्रपाल पुत्रा	120112	बत्रमूरि—	त्रिवरणीचः र स० १११
#acie:	कात्रसम्ब पुत्रस	\$ \$ > 3	मदानीदास व्यास-	
ब्च मोहनः	स्हावसा पाठ क		भट्टोजी वीक्षित	लब्सिद्धान्त कौमुर्द।
बुव माह्य-	Thistory 470 #	14: 180 <b>43</b> 4	Seat diversi	स∘ ४१७
बुधराव	कविन दि		मद्रोत्पत्स	संघुबाकत टीका स० ५१८
ब्धलाल	चरना बानठ वि		-1811.1.	¥€\$
बधसेन	सन्यादर्शन स	619		यद्वकाशिकास॰ ५६७
बुलाकीदास	पाण्डब पुरासा !		मद्रवाह स्वामी!—	
•		£ 100%	महबाह स्वामी II	
			awais catal re-	tauline als for

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथस्ची पत्रसं०
	नवग्रहस्कोत्रस० ७३१		शानसूर्योदय नाटक भाषा
	नैमित्तिक शास्त्र म०		ें हि॰ ६०४
	428		धर्मोपदेशसिद्धांतरस्माला
	भद्रबाह् महिना स०५५६		हि॰ १२६
मद्रसेन	चन्दरमलयागिरी श्रीपर्ड		नेमिपुराग् भाषा हि॰
	हि० ४३७, ११६२		२७७
मरतदास	शयाकापुरयनाम निर्शय		पद हि० १०४८, १०५३
	हि० १६४	मागीरथ क≀यस्य —	सोगातिसार हि० ५६०
मतृंहरि—	মৰুইিং লবক ন০ ২৪%	मागीरथ	सम्मेदशिस्तर पूजाहि०
	६६२, ११६१, ११६२		६२५
	नीनिश्रवक्षा स० १४२	भान विजय	नवतस्य प्रकरगाटीका सं०
	शृगाःशतकस् स० ६२६		हि० ६६
	6.82	म० मानुर्काति	वृहद सिद्धचक पूजा म०
भवसागर	पदसग्रह हि० ६४२		303
भाउकवि —	धादिस्यवन कया हि०	मानुकीत्ति	ध्रादित्यवार कथा हि०
	४२६, ४३३, ६५७	-	१०६५, १११८, ११५७,
	663, 868, 863,		११६=
	ξ ξ <del>ς</del>		(रवियत करा)
	(रविवार यन कथा) २७३,		पद ११०७, ११४२
	१०१२, १०१८, १०२८,		गोहिसीवत वधास०
	१०३६, १०४१, १०५६,		yev
	१०६२, १०७४, १०८३,		लोहरी दीतवार कथा स०
	१०८४, १०८६, १०८६,		3 4 0 8
	१०६८ ११०७, १११४,		समीरणा पार्वनाथ स्तीत्र
	११११, ११४८, ११६८		हि० १०६१
	नेमीश्वररास हि॰ ६५४	भानूचन्द	मृगोकलेखाचौपई हि०
	विक्रम चरित्र चौपई हि॰	•	648
	143	भानुबन्द्र गरिए	दशन्तराजटीका ग०
भागचन्द	ग्रमितगृतिश्रावकाचार		<b>५</b> ५५
	हि॰ ६०		साघारण जिनस्तवन स० ७६६
	उपदेश सिद्धास्त रतमाला	for	
	स्वयद्यासिकान्त रतनाना सावाहिक २५,६६	भानुबल मिश्र—	
			रसमजरीस० ५६४, ५८६,६२८
	1108		704, 414

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रथसूजी पत्रसं०	प्रंथकार का नाम	यं यनाम यं <b>यस्</b> की पत्रसंब
भारती	भारतील घस्तवन सं०		वहातृत्यकरसा सं० ४४५
	હય્ર •		लीलावतीस० ११६७
भारवि	किराताजुनीय स० ३१६		निद्धांत शिरोमगी स॰
भारामल्ल	कथाकोश हि० ४३२		446
	ज्ञानरास हि० ६४१	मीष्म	कारक खंडन स० ५१२
	दर्शनकथा हि० १११६	भुवनकीर्ति	मक्तारस्तीत समस्वापृति
	दानकथा हि० ४४६		स० ११६४
	दानशोलकथा हि॰ ४४७	भुवनकीर्ति	मंजनावरित्र हि० ३१४
	निशिभोजन कथा हि०		पवनजब चरित्र हि०
	४५३, ४५४		<b>\$</b> 88
	शीलकयाहि० ४८८,	पाण्डे राजभुवन	बारहमासा की विननी
	१०७३, ११२०, ११२२	भूषरग	हि० ११०=
	सप्तब्यसन कथा ति०	मूघ वास	एकीभाव स्तीत्र सावा
	४६३, ४६४		हि० ११२२
मावचन्द्र सूरि	शान्तिनाथ चरित्र स०		जखडी हि० ११६८
C	32:		जीवदयास्त्रद्विः ११४७
भावतिलक	रत्नपान चौपई हि० ४२७		जैन विलास हि० ६६०.
भावदव सूरि—	पुग्नदर कथाहि० ४६१		\$0.93
भावमिश्र	মাৰসকাল ন০ ১০০		जैन शतकहि० १०११,
भावविजय वाचक-	— भन्तरिक्ष पाइवेनाथ		8088
	स्तवन हि०७१४, ११४७		(भूघर शतक) १०४२.
भावविद्य स्वर	सप्त पदार्थटीका म०		2066, 2049, 2060,
	5. <sup>2</sup> .		2008, 2003, 2008
भावशर्मा	दक्तक्षरण जयमाल पृजा		१०७६, १०६१, १११४.
	प्रा० ६२४		११३३, ११ <b>५३, ११</b> ६३
_	सम्बह्नवन स० ७४६		नरकदःल वर्णन हि०
भावसेन	- कातत्रस्यमाला वृत्ति स०		<b>१</b> २६
	जीबदयास० ४३४		पद हि० १०४७, १०५३
भावसेन त्रवेद्य देव	- सत्रप्रकरण सूचक टिप्परण		पण इन्ह्री जीवई हि॰
	सं० ६२२		₹ <b>•</b> ७२
	रूपमालास ४१८		
मास्करचार्य	ज्योतिय ग्रन्थ स० ५४६		पचमस्पूजाहि० ८५१, ८७६, ८८१
	दिनवर्षा गृहागमक्तुहल		पार्वनाथ कवित्त हि॰
	34K • B		\$\$E

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	प्रंथ सूची पत्र स०	प्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	पादवंपुराग्य	fao εξa,		जानचूनडी	हि॰ ११२४
	900€, 90	800 9 35		दानशीलतप	स्थावनाहि०
	भूबर, वित्र	ाम हि॰			११४
		१७३, १०४४		द्रव्य स	प्रह भाषा हि॰
	विनती	हि० ८७७,			१००५
		१११३		्ट्यान पर	चीसी हि॰
	विननी नेपि				११३३
		8068		घमंपच्चीर्स	ी हि <b>० १</b> १३३
	মাদের দুজা			निर्वाशका	ण्डभाषाहि०
		प्र हि० १०३४			, ७३१, ६७६,
मूघर मिध	चर्चासम।				•20, <b>११</b> 04
	२७, २⊂,	÷ε, ξοξέ,			११८६
		\$ e-69		व चेतित्यः	मवाद हि•
भपाल कवि —	খুমাল चৰা			1 11. 2 1	* * * = =
		७:०३, १०३५		पद्रह पात्र	चौपई हि०
	भूपालग्ली			`	१२७
मृगु प्रोहित —	भौडान्यो (			पद एवं र	गीत हि॰ ६८४
भंवा मगत्रतीदास		चैत्याः य जय-		प्रमानव	८४०१ ०इी व
	मःल हि			पर मार्थः '	'क्किहि≉ २०३
	ग्रहार दर			वाईस प	रीषह कथन हि०
		१००५			११३३
		च्चीसी १०४१		बारह भ	।।वनाहि०
	प्रस्टोत्त <i>े</i>	। सनक <sup>्</sup> ट०			₹050
		११३३		ब्रह्मविल	ास हि॰ ६७०,
		टोनरी कदित		εξc,	१००४, १०४१,
	fe		l.	१०५२.	१०७२, ११३३,
	श्रोकारः	बोगई हि०		• • • •	8848
		१०७	5	মগৰিক	दुचीपई हि॰
	चत्रबगाजारा गीत हि०			3	ુંે.ે <b>૧</b> . પ્ર૧
		- {=	•	मानवर	तेसी हि० १० <b>५</b> ०
	चून ही र		¥		ज के ४६ झन्तराय
	चेत्न कर्म			3000	feo tx
		800x. 800			व पच्चीसी हि० 
	₹0£¥,	११२६, ११३		सम्यक्त	त्वपच्चासाहरू ११५
		199	€.		***

ग्रंचकार का नाम	वं <b>य नाम प्रंम सूची</b> पत्र सं०		पंचनस्य <b>एंड सूची</b> पत्रसं०
	सिद्धचतुर्दशी हि० ११५१	मनमुखराय	तीर्थं महातम्य हि० ७३०
पं॰ मगवतीबास	सीतासतु हि० ६४५		नवग्रह पूजा हि॰ ६३७
	853		यशोधर चरित्र हि०
A	स्वय्नबत्तीसी हि० १११३	, ,	1444
भैश्वास —	ग्रनस्त चतुर्देशीक <b>वा</b> हि०		वृहद सम्मेदशिकार महा-
	हदर, ११२३		रम्य (पूजा)
	वोडशकारस कथा हि०		१०६, १२६
•	११२३	मम्रालाल	चारित्रसार वचनिका हि०
भैरवदास—	हिंदोलाहि० १०८६		वारित्सार वयानका हरू १०६
भ्रोताल	शीलक्याहि० ४६०		• •
भोजद <b>व</b> —	द्वादशवत पूत्रा म० =३२	मन्नालाल खम्बूका-	— पद्मनन्दि पं <b>चविक्रति मावा</b>
मकरन्द	मृगन्ध दशमी वत कथा		हि० १३२,
	हि० ४⊏३		११८८
मंडन	प्रामाद बल्लभ स० ११६१		प्रदासन चरित्र हि० ३५४
मतिराम	रसराज हि॰ ६२८	मन्नासाह	सबैया कावनी हि॰
मतिशेखर	गीत हि०११३४		११०=
	मन्नाचउपई हि० ४४८	मनीराम	रसराज हि॰ १६५
	बाबनी हि•१०२७	मनोरथ	मनोरय माला हि०
बतिसाबर	मालिमद्र चौपई हि०	नगर्य	नगरिय माला ।हरू १०५४
	१०१३, ११३१		, ,
वयुत्तदन	चन्द्रोनमीलन म० ११७६	मनहर	पद हि०११०=
मनरंगलाल —	चौबीस तीथं कर पूजा		मानवादनी हि०११०८,
	fro sot		3019
	सप्तिषि पूजाहि० ११८		सबैया हि॰ १११४
मनराज	मनराज शतक हि० ६६२		साधुगीत हि॰ ११११
मनराम -	भक्तरमाला हि० ४५	मनोहरदास सोनी	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
44314	कदका हि०१०२ <b>६</b> ,	4116/414 4141-	
			१०६, ६५०, १०११,
	Yess.		3409
	पद हि० ११०६		धर्म परीक्षा माचा हि॰
	रोगापहार स्तोत्र हि०		११७, २४०, १०३०,
	१०६व		erss
मनसार	मालिमद्र चीपई हि०		रवियत पूजा एव कथा
	800		हि॰ ६०७
			16 . 6 .

श्रंचकार का नाम	ष्रंथ माम	प्रंच सूची पत्र स०	प्रंथकार का नाम		<b>व सूची</b> पत्र सं०
	सम् ग्रादित्यव	ारकथाहि० १०७३	महादेव	ग्रहसिद्ध श्लोक सं	१११५
मनोहर शर्मा	शिक्षा श्रुत बोध टीव	हि० १०८३		रत्नमाला <b>सं</b> ० हिकमत प्रकाश स	KAO
मलवकीर्ति—	सुगन्ध दशमी		महादेवी —	लामासाम मन सं	
मल्लमह	शनश्लोक टं कुमार संस्व	şcc	महानन्द— महाराम—	ग्रःशान्दा हि∗ श्रीपाल स्तुंति हि	
मस्लिनाथ सूरि	- मेघदून टीक	३१६ ०८६ वोस	महाबोराचार्य	गरिएतसार सम्रह	११४८ सं• ११७८
	रघ्वश टीक जिलुपाल द	। स० ३०० घटीकास० ३१२	महासेनःचार्य — इ० मह <i>ति</i> सागर—	प्रद्युष्त चरितः धादित्यदतं कथा	हि॰
मन्लिषेण सूरि-		री स० २६३	महिमा प्रमसूरि	ग्रध्यात्मोपयोगिर्न	११६३ ो हि० ७१०
महिलवेश —	भैस्त गद्मावत	६२२	म० महीचन्द	ग्नादित्यवार कथा ११६	
मह्लिवेश	यक्षिणी क विद्यानुज्ञास नागकुमार	न सं० ६२३		चैत्यालक् बदना	हि॰ ३, ११६२
		त्वल्लम स० १०२०, १०८२ ११०३		पुष्पाजिल पूजा लबाकुश घट्पद	40 EEE
म० मल्सिमूचरा-		चरित्रस० ३३ <sup>१</sup> नोशस०४७	महोघर— स्टोपरो—	मातृका निषदु तद्धित प्रक्रिया	र्ह० ५१३
मस्तिसागर	<b>श</b> कृत्रिम '	वैत्यालय पूजा स० ७७	9	महीभट्टी काव्य महीमट्टी व्याव	३६६
मसूक महाचन्द्र महाचन्द्र	पद्माशत !	कचाहि०४८ प्रदेशस० ११ प्रभाषाहि०५	<b>१</b>	सारस्वत प्रत्रि	५१७
Africa as B		ार पूजाहि० ⊏२		पद	हर ११५२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसू पत्रस		ग्रथनाम ग्रं <b>थसूची</b> यत्रसं०
महेश्वर	शब्दभेद प्रकाश सं०		१०३८, १०६४ १०६७,
	4	3	१०६१, १०७४, १०७८,
माघकवि	शिणुपाल वध स० ३	?	१०६×. १०६७, १११६,
माघनिष्ड व्रती —	चतुर्विर्णात खयमान स	,	64.83
	95	२ मानतुंग	भ्रासद मिणका काल स०
	बदेनान जयमाल स०	-	१११६
	<b>c</b> (	४ सूरिभानदेव—	लघ्मानि पठस० ६०१
माराकचन्द	समाधितत्र भाषा दि०	गानसागर	कठियार कानद्वरी चौपई
	3.5	α	₹० ४३१,
माराकचन्द	मारग्रूपद सग्रह हि०		5=8
	€ 3	<sup>३</sup> माधाराम	समवशरण मगल हि॰
	यद हि०१०७		
ा∘ माराक—	बावनी हि॰ ६=	६ मानरायः	पर हि० ८३३
	मानभद्र स्वतन हि० ७४		मानिनाध स्तवन ग०
गारिएक्यनंदि —	परीक्षामुख स० २४		ડ€ર્
नाशिक्यमृत्दरसूरि-	– गुगावर्माचरित्र सं०३१	∈ मिश्रभाव –	গুলাংকিদাকাক ২১১
• "	धमदत्त चरित्र स० ३३		हतृमधःटक स० ६०≒
गरिएक्य सूरि—	कालकाचार्यक्यास०	मुङ्ग दवास-	भ्रमण्योत हि॰ ६२७
	<b>*</b> ‡		ज्योतियसार सम्रह स०
राधव	मान्य नि <b>ज्ञान म</b> े ४६	-	५.८६
गधवच-द्र			बातकोष स० ५५५
विघरंथ	क्षांगामार मरु र	, सनिदेव सूरि—	शास्त्रिनाथ संस्थितः
गाधवदास	श्रामणामा हिरु ६०		≉ र १
।।बोलाल जैसवाल	सर्वजनात्रय पुत्रा 'ह०	मरलीदास	बाग्हमःमा हि० १०८६
italiini sitrat i	(2)	मेघराज	ऋषिदता चौपई हि०
हाकवि	कविस हि० ११४		*34
(E14:14	नावना ।२० ११६ निज्ञाय हि० १११		मोलत्रमती हि०११२६
	शान्त्रवावनी हि० १०१	00 BHIN	धर्मनदर् ध्रावकाचार मः
			पुल्पाक्रिक्टन कथा स०
ांडन	रेयना हि०११४	,	YES
।।नतुङ्गाचार्य	मन्तामर स्तोत्र स०	मेरचं द्र	बाग्युज्य स्तोत्र स०
	७३५,७३८, ७४०, ७४१		1849
	७७२, ८७४, १४३ १४६		गारिनाय स्तोत्र मं०
	१०११, १०२२, १०३४	•	1111

प्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	प्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
<b>भ्रा० मेरुतुंग-</b>	प्रबन्ध चितामस्यि स०	यशकीर्ति सूरि	पचेन्द्रिय सदाद हि०
-	६४४	,	१ <b>१</b> ==
	महायुख्य चरित्र २००	यशकीर्शि	वाजिका बतोद्यापन सं०
	६५४		6.03
	सृक्तिमुक्तावली स०		गीत हि० १०२६
	908		चारुदत्त श्रेष्ठिनो रास स०
मेरुनंदन —	ग्रजिनशानि स्तवन हि०		६३२
	१०३६		चौबोस तीर्थं कर भावना
मेरुमु दर	शीनोपदेशमाला म०		हि० १०२५
3	۲۰۰		द् सहरसा उद्यापन स०
मेहउ-	ग्र.दिनाच स्त्रजन हि०		<b>द</b> ३३
•	<b>૩</b> १ <b>વ</b>		पचपरमेष्ठीगीत हि०
मोतीराम	वौबीस तीर्थं कर ग्रास्ती		१११४
	हि० १०६ <b>७</b>		बारहवत हि० १०८८
	सम्भद्रशिकार महास्य		मगलाष्ट्रक स०११७१
	हि० हस्व		योगीबासी हि०१०२४
मोतीलाल		भ० यशकीर्ति	मुकुमाल चरित्र हि० ४१४
(पन्नातात)—	बालप्रबोध विश्वतिका		सुदर्शन चरित्र भाषा हि०
	100 960		888
	नग्कन विलास । ह०		हन्मच्चरित्र हि०४१६
	٠ ي	यणकीर्ति	जीवन्धर चरित्र प्रबन्ध
भोहन	बन्दरगताना ,।व १/०		हि० ३३०
	47.5		घमंशर्माग्युदय टीका
मोहनदास-	ग्रत्मशिष्यःवर्गाहि०		स० ३३६
•	१०१५		चन्द्रप्रभाचित्र द्यप
	माक्षमार्ग बावनी हि॰		3 <b>२</b> ०
	***		पाण्डबपुराग ग्रयभ्रों २८७
मोहनदास कायस्थ			हरिवशपुराए। श्रपभाग
पं० मोहनलाल-	कल्यासमान्दरस्तोत्र		हारवशपुराल अपन्नश ३०३
	बचनिका हि० ७१६	श्री यशसागर	प्रमासनय निर्साय स०
man form	मः नत् गमानवती हि॰	ना यससागर गरिस—	प्रमाणनयानसम्ब सर २५६
मोहन विजय—	मः नतुग मानवता । ह० ११६६	गारण— ब्रह्म यशोघर—	रद. गीतपद हि०१०२६.
		प्रहा बसाबर	१०२७
<b>धा</b> ० वतिषुवम —	तिनौयपण्एति प्रा०६१०		{646

षंचकार का माम	<b>मृंधनशमः प्रथ</b> सूकी पत्रसं०	ग्रंबकार का नाम	यं य नाम यं <b>य सूजी</b> पत्र सं०
	नेमिनाव गीत हि० १०२४		वोडशकारस वयमान
	<b>१</b> ०२४		भप० १७१
	बलिभद्र चौपई (रास) हि॰		(सीलहकारण जयमाल,
	१०२४, १०३४		ध्वप० ६१४, ६३६
	मल्लिनाथ गीत हि० १०२४		श्रीपाल चरित्र श्रप० ३१३
	वैराग्यगीत हि॰ १०२४		सबोध पंचासिका ग्रप०
बशोनन्दि	<b>षमंचक</b> पूजा स० =३४		ttax
	पंबपरमेष्ठी पूजाम ८५१,	रघुनाय	इष्ट पिवाबनी हि०
	६०७, १०८४		\$ a K \$
योगदेव I —	तत्वार्थं वृत्ति म०४३	ब॰ रतन	नेमिनाच रास हि॰ १८४
योगवेब II	धनुत्रेका हि० ६७४	रत्नकीति	कां जीवनीद्यापन
योगीन्द्रदेव	वोहा पाहड ग्र <b>प० २०</b> ०.		स० ७१३
	¥309	मुनि एत्नकीर्ति —	नेमिनाथ रास हि॰ ६५३
	परमात्म प्रकाम भाग	•	नेमीऽवर राजुल गीत हि०
	२०४, <b>६</b> ५२, १६०, १६२,		£\$3
	£43, £68, \$005,		पद हि०१०७⊏
	\$0=6, 8886		सिद्धपुल हि०१०२७
	योगसार ग्रयः २१४.	रत्नचंद्र गणि —	प्रदास्त चरित्र सं०३५४
	£84. १०२=, १०=c	रत्नचंद	चौबीमी हि०११६६
रहषु—	द्यातम सबीच चप० १८४	पं० रहमचंद	पत्रमेरपुत्रा स० ६५६
(14)	जीवधरचरित्र प्रद०		पूष्पाजलि पुत्रास० ८६६
	#144. 414.4 #40		भक्तामर स्तोत्र वृक्ति सं०
	२२० दशन्समाजयमानः धप०		6.5.9
	दशन्दारम् जयमान्य स्थव दर्द		मुभौस वस्त्रि सं०४१⊏
	टशलकास धर्मकर्मन	रत्नमंदि -	नदीश्वर पुत्रा सं० ८४४
		201114	पन्य विद्यान पूजा
	धप० ११४		यन्य विवास पूजा सं०८६२
	दश्रमकारण बतोद्यापन पूजा		सण्यक्त भद्रवाह चरित्र सं०३५८
	ध्यप० =३०		•
	वन्यकुमार वरित्र ग्रपः		रक्षास्थान सं०४७१
	\$058	रत्नपान -	नस्दीश्वरकाचा सं०४७६
	पाश्वंपुरामा भ्रापः २१०	रत्मप्रभाषार्य —	प्रमासनयसंस्था
	युष्यासम्बन्धाः भव ४६०		लोकालकार सं०२४६
	रविवार कया अप०४६६	राममुखरा	धर्मोपदेश सं० १२५

प्रंथकार का नाम	प्रंय नाम प्र	य सूची	व बकार का नाव	प्रय नाम	प्रंथ सूची
		पत्र स०			पत्र स०
	रविवनोद्यापन पू	ना	बुनि रागचंद्र	चपावती सी	नकल्यासादे⊸
_		70 C00			हि॰ ४३८
रत्नभवरम सूरि —	मनिस्द्रहरणा	हे० ४२२	राजपाल	पदक्का	
	ग्रष्टकर्म चौपई	हिं∘	पांडे राजमल्ल	साटी सहिता	
		<b>११३३</b>		समयसार भा	पाटीका
	जिनदत्त राम हि	०३२७,		हि॰ २२६, ३	₹ <b>₹</b> ₩•
	€ ∌ 3	, ११४५	राजरत्न पाठक	मशिमद्र जी	ते छन्द
	रुविम <b>र्गीहर</b> स्परास	ग हि∘			हि० ७४२
	é R o	. ११३३	पाठक राजबल्लभ	- वित्रप्तेन पद्म	वनी कवा
रत्न रंगोपाध्याय —	रुपक्रमाला बालाव	वोध			सं० ४३€
		2889	राजशेखर सूरि—	प्रबन्ध चिन्ता	परिए सं०
रस्नशेखर गरिए -	गृहप्रतिक्रमण् सूत्र	टीका			६५४
		त १०५	राजमागर —	विचारवह ि	शिकास्तवन
रत्नशेखरसूरि	श्राइविधि स	० ६१२	_	भार	हि॰ ৬१८
रत्नशेखर	लघक्षेत्र सम⊨सवृत्ति	न म∘	रा त्र सिह—	वास्तुराज	
		e399	राजसुन्दर	गजसिंह चौप	ई हि० ४३६
	श्रीपाल चरित्र श	73€ 01	राजसेन	पाश्वेनाथ स्ट	ोत्र स०
रतनसृरि	कम्मराविधि हि	१०६१	_		७४, ११२४
रत्नसिह मुनि—	ऋषभदेव स्तवन	हि॰	राजहंस—	षट्दर्शन समुच	य इंग्
		७१४			२६२
	कृष्णवलिमद्र सङ्	F.14	राधाकृष्स	रागरत्नाकर	
	fa	0 570	दैवन राम	मुहूर्त चितामरि	
रस्माकर		o XeX			४४७
रविदेव	नलोदय काव्य टीव	F1		नीनावती टीक	
	Ħ	0 380			3355
रविषेशाचार्य		• २७=	रामऋषि—	ननोदय टीका	सं ३४०
राजकवि	उपदेश बत्तीमी	हि०	रासकृत्सन	ऋषभदेव गीत	हि० ११६⊏
		१११=		परमार्थं जसाडी	
	सुन्दर भृंगार हि				४, ११६=
	3 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<b>११६</b> =		्०० सुमसूमनी कथा	
राजकुमार	चमत्कार पूजा हि			X-1 X mail and	ं हि० १०५४
राजवं प्र	सुगन्धदशमी कथा	सं०	रामचंड	रामविनोव हि	
	2	x o x	रामचंद्र सुरि	विकम परित्र	

ब्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंचनाम ग्रंचसूची पत्रसं०
रामखंद ऋवि	उपदेश बीसी	हि० ६=२	रामवास	उपदेश पच्चीसी हि०
	चेलनासतीरोः	बौढ़ा लियो		६५८, ६८६, १०५४
		रा० ४३९		<b>लूहरी</b> हि०१०६३
	विज्जुसेठ विजय	।सती रास		विनती हि० ८७७, १०६३
	_ fe	० ६४१	रामपाल	नेमिनाथ लावगी हि०
रामचंद्र (कवि	सीताचरित्र वि	हे॰ ४०६.		<b>११</b> ५ ह
बालक)	. 86	०, ११०६		सम्मेदशिखरपूज। हि०
मुमुक् रामच इ—	कथाकोश	F10 8.7		६२४
334 (144 )	पुण्याश्रव कवाको		रालबल्लभ	चन्द्रमेहा चौपई हि० ६५४
	9	५६, ४४७	रामसेन	तत्वानुशासन स० ४२
		#I Y'9=	रामानंद—	राम कथा हि० १००३
	यनन्तनाय पत्रा		रायचं द	विनती हि०८७६
	चौबीम तीर्थं	•		शीतलनाय स्तवन ि०
रामच इ —	चाबास ताथव	हर पूजा हि०		७६२
				समाधितत्रभाषा हि०
	508, 507, 50			<b>+</b> + + c
	E0%, 8008,		बहारायमल्ल	चन्द्रगृत के मोलह स्वप्त
	१०६४, १००६.			हिं∘ €४३,६७३,
		18:0		\$00%, \$052, \$0%E,
	तीम वौक्षीमी ण			\$00.6
	_	<b>= ₹</b> ≒		বিশাদীক অব্দাল হিং
	दर्गन स्थोत्र भाष	ī f≢o		6 % 9 \$
		१०६६		ज्यष्ठ जिनवर व्रत कथा
	पच वन्यागका पू	जा हि०		हिल्हेक्स, १६६, १७२,
		⊏ r ′9		६७३, १०३२
	বিনদী চি	हेर ११५		निर्दोष सप्तमी कथा हि०
	सम्मेदशिक्तर वि	लाम हि०		842, EXE, 888,
		€¥.o		६६६, १११८
रामचंद्राचार्य	प्रक्रिया कीमूटी	+. u • c		नेसि निर्वास हि० ६०३
	सिद्धांत चन्द्रिका	*T0		नेमिश्वर राम हि० ८४०,
	। चन्द्रात मान्द्रकी			£44. £44. £40.
		<b>भू</b> च्य		£=3, {o=3, {to\$
रामचंद्र सोमराजा-	-समरमार स	ने॰ ५६८		परमहसक्या चीपई हि॰
रामचरग	चेतावरणी ग्रंथ वि	to try		परमहत्तकथा चापक ।हर ११६६

रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रथसूची पत्रसंब		ग्रंचनाम ग्रं <b>गसूची</b> पत्रसं०
	प्रखुम्न राम्रो हि० ६३ व	,	दश लक्षमण पूजा हि०
	Exx, 643, 655		3505
	. १६८, १०६	}	नेमिनाथ स्तवन हि०
	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति सा	,	exa
	6.5		पचभगल हि०६७४
	भविष्यदत्तः चौपई (रास	-	Eux, 800x, 80x2
	हि०३६३, ४६६, १४०	•	१०४८, १०६३, १०७५
	685' 688' 620	,	१०७८, १०१६, १११४,
	EEC, 2000, 202	<b>K</b>	११३०, ११५०, <b>११</b> ६५ पद हिठ ८७ <b>६,१</b> ०११
	१०२०, १०३२, १०४३	,	44 160 204, \$P\$E
	१०६	3	परमार्थगीत हि॰ ६५
	श्रीपाल रास हि०६४३		परमार्थ दोहा- हि. ६६२
	१४०, १४२, १६६, १०१	₹.	शतक १०३८
	१०१४, १०१६, १०६	₹	विनती हि० ५७९
	मुदर्शनराम हि० २४०	. रूपचन्द	समवसरएा पूजा
	E 63. EX3. 209		स० ६१६,१०१३,११२
	१७६, १६६, १०१		बाराग्रारः महाचौपईवध
	१०१६, १०२२		ह्य ३४५
	हनुमत कथा (रास)	रूप विजय—	मन्तुंगमानवती चौप
	fe x 00, 4xe, ex	•	हि॰ ११६५
	६४५, ६५१, ११०		प्रशाप्रकाश स॰ ६८८
	<b>११</b> ४		समवशर्गा पाठ स० ७६
भाई रायगल्ल-	ज्ञानानद श्रावकाचार	लक्ष्मरग	धकृतिम चैत्यालय विनर्त
	राज ०११		हि० ११४ पद्रहि० १०६
वद्रमट्ट—	वैद्य जीवन टीका	लक्ष्मग्रदास-	
E	स० ५	लक्ष्मणसिह—	सूत्रधारसं० ५३ लक्ष्मीविलास हि० ६७
रूड़ा गुरूजी	सावसी हि०१०	प० लक्ष्माचाद	नक्ष्मावलाल ।हण २७ बीरचन्द दूहाहि० ६८
	द्यादिनाय मगल		तिथिसारणी सं० १११
रूपचन्द	स्रादनाय मनल हि०११:	सक्ष्मीचन्द	कालज्ञान भाषा हि०
		(14-11-1-1-1	प्राचनाम् माना हिन
	छ्योटामगल हि०११	^4	छंददेसंतरी पारसनाथ
	वकडी हि०१००		सुद्दसत्तरा पारसगाम

प्रथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रथसूची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रस०
लक्ष्मीसेन	नवविधान चनुर्दशरत्नपूजा		रक्षाविधान कथा सं०
	स० ६०७		308
लब्बरुचि —	पाप्रवेनाथ छन्द हि०		रत्नच्य वृत्त कथा सं०
	856		x33,308,208
लब्धिवर्द्धं न	भक्तामर स्तोत्र टीका स०		रोहिरगीवत कथास०
· C · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	, ~ ~		368
लाडघावमलगारा-	- जानागंव भाषा हि०		पट्रस कथा सं॰ ४७६
	२००, २०१		पंडम कारण कथा स० ४७६
ललितकीर्ति—	भक्षयदशमीकथा स०		सद्भकपूजास <b>०</b> १३३
	368	पं० लाख्	जिनदल कहा भप० ३४७
	भ्रनस्तवत कया म०४७८,	लाल	पद हि० १०४६
	७८१ भाकाण प्रमीकथा स०	ालकवि -	विरह के दोहे हि०
	भाकाश पंचमा कथा सर		११४४
	०७९ एकावत्रीकथाम० ४७६		वृषभदेव लावस्मी हि॰
	कर्मनिअंरायन कथास०		११७१
	368		श्रीपाल चरित्र हि० ५०१
	कॉजिकावन कथा स०	लालचन्द —	पचमगल हि० ११०६
	3¢Y		नवकार मध्य हि० १११३
	जिनगुरमपनि कया		सम्मेदशिक्षर पूजाहिल
	हि० ४३३, ४८०, ११४४		हर्द
	जिनर।त्रिवत कया स०	पाण्डेलालचन्द	उपदेशसिद्धात रन्नमाना
	795		हि० ८५
	ज्येष्ट जिनवर कथा स०		बरागचरित्र हि० ५८५
	808		विमलपुर माथा हि०
	दशपरमस्थान वन कथा		788
	मं० ४६०		षट्कमॉपदेश रत्नमाला
	दशसाक्षासिएक कथा स०		हि० १६८
	89€, 8€0		सम्मेदिशाग विलास हि०
	द्वादशवत कथा स॰ ४७६	372 W.Y	ڳوڳ د د جا کسات سنسات
	धनकलश कथा स० ४७६	लालकार-	मुनिरंग भौपई हि॰ ३६६
	युष्पांजसिदन कथा सं•	लालवं दसूरि	सीमावती भाषा हि॰
	Yot		<b>११</b> ६=

ष्रं यकार का नाम	प्रंथनाम ग्रद्धसूची	प्रंथकार का नाम	गंथनास ग्रंथसकी
	पत्र स०	4 4 4 4 4 4 4 4 4	गंथनाम ग्रंथसूकी पत्रसं०
लालबीलाल	समवणरसापूजाहिल	बट्टकेराचार्य	
	<b>११२</b> ०	नष्टमराचाय वंगसेन	मूलाचार प्रा०१५०
लालजीत	भक्तिम चैत्यालय जिन	वगसग— वरदराज-—	वगसेन सूत्र सं०५६०
	पूजाहि० ७७७	वरवराज	लघुसिद्धान्त कौमुदी
	श्रदाईबीप पूत्राहि० ७७६		स० ५१९
	तेरहडीप पूजा दि० ८१६		सस्तृत मंजरी स०४२०
लालदास	इतिहाससार समुख्यय हि०	वर शम्मं	सारसग्रह सं०२६३
	\$0\$8.	पर शन्त— <b>व</b> ० वर्द्धन—	श्रुत बोघटीका स. ६०१
लाबन्यसम्य	१०८६ प्रस्तरिज पाइवैनाथ	च ० पद्ध न	गुर्णठाएम गीत हि॰
			६५२, १०३२
			रामसीनागीत हि•
	हढप्रहारहि० ४४८ नेमिकुमारगीनहि०	77. 27 mm 3.	1880
	• ,	भ० वर्द्ध मान् देव	वरागचरित्र सं०३८३, ८३४
	११३⊂ नेमिनाय प्रवन्ध हि०	वहां मान कवि	वर्द्धमान रास हि० ६४१
	गामगाय अवस्य हिठ	वह मान देव	भुतस्कन्य पूजास० ११३
	नेमिराजमती शतक हि०	चढंमान सूरि	गुतस्कन्य पूजा स० ६८३ गृह शांति विधि स० ७६६
	\$ ( = 9	in an dis-	प्रत्यात । वाघ सब् ७६६ वर्मस्तम्भ सं ० ८३४
	पःश्वंनाथस्तवन गीन		वाग्भट्टालंकार टीका सं०
	हि० ११२४, ११३७		v3x
	राजुलनेमि श्रबोला हि०	बराह मिहिर—	वृहण्जातक स०४६४
	रायुक्ताम अवाला हिं	बल्ह	चेतन पुद्गल धमाल हि॰
	स्यूलभद्रगीत हि० १०२६		£=3
लिखमीदास	जसोधर चौपई हि०	पं० बल्लह—	वज्जवनी प्रा॰ ६६४
	\$243	पं० वल्लाल –	भोजप्रबन्ध स०३६४
	श्रेणिक चरित्र हि०	बलु —	पारवंनाय स्तुति हि॰ ४४
	¥00, ¥04	ग्रा० वसूनन्दि –	देवागम स्तोत्र वृत्ति स॰
लोलिम्बराज	वैद्यजीवन स० ५१६	3	११६५
	वैद्यवत्त्रभ स० १०७७		प्रतिष्ठासार संग्रह गं०
साह लोहट	मठारहनातेका चौडाः		- == E
6	लिया हि॰ ४२१, ६८१,		मूलाचार वृत्ति स०१५१
	१०६२		बसुनदि श्रावकाचार स <b>०</b>
	पुत्राध्टक हि० ८७६		<b>१</b> ६०
	यशोबर चरित्र मापा हि॰	<b>ब</b> ० वस्तुपाल—	रोहिसी वत प्रवंग हि०
	३७६		7\$0
	104		*40

प्रंथ नाम		प्रंचकार का नाम	प्रंचनाम प	य स्वी
ऋतचर्या		वारोप्रसिक्त सकि		पत्र सं०
		वायतेत्रात्तरु पूर्व		
		411144	। जलाक दापक	
			vrariwa :	६१६ न४१ ०१
		**************************************		
		- G	पानतपद्माल भाव	768 IL
ज्ञानसर्योदय नाट		สามสาขาย์	antena de	
				भ २१२ १६३
ढाटश भावना		रामसमेत		
नेसिन। सस्त्रका				
		- 1414	1/4 4/4/ 4/4	११३१ ११३१
पाइवंनाच पराजा		famuin_		
		144444		
पार्श्वनाथ बीननी		विकासीय		११२३
	११६१	144444	।वक्रमसन चंडपह	हि० ६४४
बाहुबसिनो छंद	हि॰	भ० विजयकोति—	प्रकलक निक्रमक	
	११६४			£83
श्रीपाल सौभागी ह	सस्यान		कया संग्रह	fee
fê	० ४११			K 2 3
प्रमाग्गनयतः वानो	कःलकार		करणांमृत पुरास हि.	
rj	ि २५७		₹७४,	११७४
पचकल्यासक सर	e82		चदनबरठीवन पूजा	₹To
				७६७
	,		धर्मपायसंबाद	fgo
	•			1 2 = ¥
				txe,
				263
वाग्मट्टालकार टीक	ा स०		यक्षोधर कथा संब	
	X E (3		शासिभद्र योगई हि.	
पुलोबना चरित्र	₩•		गाजना पायहाह. धेरिक पुराशा हि०	
	ऋतुवर्षा त्रीम निर्वाण वाग्नट्रालकार हितोपरेण गौतम स्वामी श ब्राट्य भावना नेमिनाथ समवण पार्थनाथ प्राण् पार्थनाथ यीननी वाहुवलिनो छंद श्रीपान मौभागी इ ग्रमाग्गनयतस्वानो ग्रमाग्गनयतस्वानो ग्रप्यकस्याणक सम् प्रमाग्गनयतस्वानो १ प्रमाग्गनयतस्वानो १ प्रमाग्गनयतस्वानो १ प्रमाग्गनयतस्वानो १ प्रमाग्गनयतस्वानो १ प्रमाग्गनयतस्वानो १ प्रमाग्गनयतस्वानो १ प्रमाग्गनयतस्वानो १	यत्र सं- कृत्ववर्षा सः ५७४ विभिन्ने सं १४३ वागुमृत्वकार सः हितोपदेश हि० ७०० गीतम स्वामी स्तीत्र हि० ६०४ हादश मावना हि० ११३३ तेमिनाथ समवजरस्य हि० ११३३ तेमिनाथ समवजरस्य हि० ११३३ ताश्वेनाथ युरास्य सं० २१६४ वाश्वेनाथ योतनी हि० ११६४ वाश्वेनाथ योतनी हि० ११६४ वाश्वेनाथ योतनी हि० ११६४ वाश्वेनाथ योतनी सं० ११६४ वाश्वेनाथ सं० ११६४ प्रमाग्गनयतःवानोक स्वार १००२५ प्रमाग्नयतःवानोक स्वार १००२५	पत्र सं० कतुवर्षा स० ५५४ वादोमसिह सूरि— नीम निर्वाण स० ३४३ वास्वये— वाग्वद्रालकार स० हितोपयेश हि० ५००० गौतम स्वामी स्तीत्र हि० ६१३३ ज्ञानसूर्योदम नाटक स० ६०४ ढादम भावना हि० ११३३ तोमनाथ समवत्रस्या हि० ११३३ तोमनाथ समवत्रस्या हि० ११३३ तोमनाथ समवत्रस्या हि० ११३३ तोमनाथ समवत्रस्या हि० ११३३ तोमनाथ वीननी हि० ११६४ श्रीपान सौमागी प्राच्यान हि० ४६१ प्रमाग्गनयत्वानोक नकार ग० २४० प्रकल्याणुक स० ६४० प्रक्रीभाव स्तीत्र स० ३६३, ७७१, ७७२ ९७२, १४३, १०२२, १०६२, १०६२	पत्र सं० कतुवर्णा स० ५५४ नेति निर्वाण स० ३४३ वासीमसिंह सूरि— वामतेवि वानतिविण स० ३४३ वानतिविण स० ३४३ वानतिविण स० ३४३ वानतिविण स० ३४३ वानतिविण स० १८३३ वानतिविण हि० ७०० गोतम स्वामी स्तोत्र हि० १८३३ वानत्विण सम्वयस्य स० १८३३ वासनाचार्य— वानतपत्रील साव १८३३ वासनाचार्य— वानतपत्रील साव १८३३ वासनाचार्य— वानतपत्रील साव १८३३ वासनाचार्य— वानतपत्रील साव १८३३ वासनाचार्य— वानतपत्रील विकास— वेतमत्र काव्य म् १८३३ वासनाचार्य समयस्य है० १८३४ वासनाचार्य समयस्य समयस्य समयस्य स्वामत्य स्वामत्य समयस्य है० १८३४ वासनाचार्य समयस्य समयस्य समयस्य स्वामत्य स्वामत्य समयस्य स्वामत्य समयस्य स्वामत्य समयस्य समयस्य स्वामत्य समयस्य स्वामत्य समयस्य स्वामत्य समयस्य स

प्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची पत्र स०	प्रंथकार का नाम	ग्रंचनाम ग्रंचसूची पत्रसं०
विजयदास मुनि	गराधरवाद हि० १०२६	विद्या भूषरग	ऋषिक इल पूजा सं०
विजयदेव सूरि	गुरुस्तोत्र हि०७२१		050
	मूलगुरासञ्काय हि०		कर्मदहन पूजा सा <b>० १०७</b>
	७४४		गुरु विरुदावली स०
	श्रीलरास हि०६७⊏,		११३५
	६८४, १०१४		चितामिशा पाद्यवेगाथ पूजा
	सेट मुदर्शन स्वाध्याय		₹†0 €0W
( <del></del>	हि० ५०६		चौबीसतीयं कर स्तवन
विजयानंद	क्रियाकलाप मं∙ ५१३		हि० ११३४
विट्ठलदास	पट हि०१०६६		तीन <b>चौबीसी</b> पूजा हि०
विद्याघर	ताजिकालकृति सं० ४४६		ें ११३६
मा० विद्यानंदि—	घग्टसहस्री सं∙ २४व		तीस चौबीसी व्रतोद्यापन
	श्राप्त परीक्षा स०२४=		e0 3 0 i 3
	तन्वायंश्लोकवार्तिक मा०		पल्यविद्यान पूजा सं•
	٧₹, =•		= ६२
	पत्र परीक्षा स०		नेमिनाय रास हि०
	7 ¥ U		११३७
	प्रमाग निर्णय		भविष्यदत्तरास हि०
	स०२४८ प्रमागपरीक्षा		६३६, ११३७
			वढं मार्चित्र सं०३८६
cc	स० २५६	महात्मा	चमत्कार षट्पंचासिका
विद्यान वि —	गिरनारी भीत हि०८७६	विद्याविनोद	स० ६५६
	चन्द्रप्रभगीत हि• १७८	विद्यासागर —	क्षेत्रपालाष्टक हि०
	नेमिजिन जयमाल हि०		११५५
	<b>११</b> ५५		चितामिए। पारवंनाथ हि०
	नेमिनाथ फागुहि० ६३६		<b>११</b> ४२
<b>मुमुष् विद्या</b> नंबि—	चनुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा		रविव्रतकथा हि०४६६
	₹१० ७१६		सोलह स्वप्न छप्पय हि०
	महाबीर स्तोत्र सं० ७७५		₹00₹
	यमक स्तीत्राष्टक सं०	ब्र० विनय	पंचपरवीक याहि० ४५५
	७५४	विनयकोत्ति	श्रठाईका रासा हि <b>∘</b>
	मुदर्शन चरित्र स०४१४		६६१, १११६
	हरियेण चकवर्ती कथा		दशलक्षण रास हि०
	eo y o f		* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

ग्रंथकार का नाम	श्रंत्र गाम	ग्रंथ सूची पत्र स०	प्रंचकार का नाम	प्रंच नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	द्घारस कथा	हि॰		चौथीस सीथं क	र जयमाख
	•	११२३		f	<b>२०११०</b> ५
	महाबीर स्तवन	हि० ७५३		चौरासी जयमा	ल हि•
विमयचन्त्र	कल्यागमन्दिरस	तोत्र वृत्ति			६५१
	₹	3889 of		नवकार सर्वया	
	वृत्रहीरास	हि॰ १६०		नेमिनाय नवमः	
विनयकः इस्रि	ग्रजसिंहकूमार	-		७३२, १०४२	
विनयमन्द्र पूर्व	, ,	∓ा० ३१६		१०४४, १०७०	
विनयप्रभ	गौतमस्वामी राग			3.6	8608
147487		E, 2844		नेमिनाथ का व	
	चन्द्रदूत काव्य			हि॰ १०४३	
विनयभेर	••	<b>१११३</b> • १		१११४, ११	
				नेमिगजमतीक	
विनय समुद्र	पद्मचरित्र	हि॰		हि० १००	
वाचक गरिए—	c	. e- . s.s.		G	७७७ १ १४०१ ह
	विहासन बनीमी			पद हि०४३ मक्तामरस्वीत्र	
		405			
वनयसागर	विदरधमुख सहत			४८०, ६ मगल प्रभाती वि	४४, ७४६
		० १००१		मगल प्रमाता। रक्षांबन्धन कवा	
वनस्वर नंदि	बट्कारक	₹1°		रकाबस्थन कथा	
		¥१€		राइल पच्चीसी	हि० हि०
वेनोदीलाल	ध्यमिषेक पूत्रा	हि॰		€ ५ € , € 5 €	
मालचं द		368		२०५४, १०७	₹, <b>१०७</b> 年.
	ब्रादिनाथ स्त्रुति	fe •			११०५
		. १०३७		राजुल बारहमा	मा हि०
	म।दिस्यवारकथा	हि०		too3, tou	, teus,
	4114(441(441	१०७६ १०७६			१०७९
		-		समवगरता पूज	हि•
	कृषमा पच्चीसी	fgo			
		F, E68		सम्यवस्य कीमुदी	î îro
	गीतसागर वि	हि० ६८१		-	¥£=
	चेतनगारी हि	१०=३,		सम्यक्त्यस्थिकावि	सास
	35\$\$	, ११८७		कवा	Bo tot

ग्रंथकार का नाम	क्रंचनाम ग्रथसूजी पत्रसं०	प्रथंकारकानाम श्रंघनाम प्रथंस्वती यत्र सं०	1
	सर्वया हि०१०२०	रविव्रत कथा हि० ११२३	
	सुर्मान कुमति की जस्वडी	रैवानदीपूजा स०६००	
	हि० १०६५, ११०२	सप्त <b>षि पूजा</b> स०६१७	
विव्धारत्नाकर	नःगकुमाः चरित्र स०	बिष्णुदत्त- पंत्रास्यान सं०४५५	
	÷8.6	विच्लु भूषश्य- साबंद्वयद्वीप पूजा सः	
विमलकोति—	भागधना प्रतिबोधसार	• \$ 3	
	हि० हह <b>१, १०२४</b>	विष्णु शर्मा - पंचतत्र से०६८७	
	द्विकावलीयत <b>क्या स</b> ०	हितोपदेश सं०७०८	
	४७६	विष्णुसेन समवसरहा स्तोत्र सं०	
	नद बलीसी हि० ६४४	७६४	
विमलप्रभ -	पद हि०११०८	विश्वशंमु एकाक्षर नाममालिका	
विमल श्रीमाल—	उपासकाध्ययन हि०६७	सं० ५३५	
विमलसेन—	प्रकोभार रत्नमाला सं०	विश्वसेन क्षरावित क्षेत्रपाल पूजा	
	<b>€</b> c <b>c</b>	€1० ७६६	
विलास सुन्दर	णत्रुजयभास हि० ७६१	विश्वेश्वर— ग्रष्टावक कथा टीका मं०	
विवेकनन्दि	त्रिभगीमार सः ६१	४२५	
त्रिश्वकर्मा	झीराएांव स०११७७	विश्वेसर (गंगामट्ट) चन्द्रावलोक टीका स०	
विश्वनाथ पंचानन	माचा परिच्छेद मा० २६०	488	
मट्टाचायं —		वीर जम्बूस्वामी <b>च</b> रित	
विश्वनाथाश्रम	तर्कदीयिका सं०२४२	<b>श</b> पभ्रंश ३२२	
<b>म० विश्वमूखरा</b> –	धनस्यतुर्दशीवनपूजा	<b>ब्र०वीर</b> — रात्रिभोजन वर्णंन हि०	
	िक ७६०, ६०७	११६४	ſ
	ग्रन्तिकाकथा हि०	वीरचन्द ग्रादीश्वर विवाहनी	
	६६१, ११२३	हि० ११३ न	3
	इन्द्रवज पूजा स०७०४	गुरूठासा चौपई हि०	
	कमेदहन उद्या≀न स०	<i>७६</i> १९	
	370	चतुर्गति रास हि०६३३	?
	जिनदत्त चरित्र हि० ३२७	<b>जम्बूस्वामि</b> बेलि हि०	
	दशनक्षमा पूजा सं०	११३ः	₹
	<b>~?</b> <	जिनातर रास हि०	
	पारवंनाचाष्ट्रक स० ८७७	११३:	
	मक्तामर पूजासं∘ १०६७	नेमकुमार हि०११४	
	मागीतुं मी पूजा सं० ५६३	बाहुबलि बेलि हि॰ ६३	5

ग्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ।	रंच सूची पत्र सं०
	भ्रमर गीत	हि॰ ११३२		पार्थनाथ पूजा	हि •
	लुकामत निः	राकरण रास			£ & ¥
		हि॰ ११४४		मगलाष्ट्रक हि	. १०६४
	बीर विलास	हि॰ ११३२		मरहठी हि	0 8058
	सबोधसत्तागू	दूहा हि०		महाबीर पूजा	हि॰ ८१३
	७०७, ११	₹ <b>₹</b> ₹ <b>¥</b> ७			ं १०६४
	सवोषसत्ताशू	माबना		स्तुति झहंहे व हि	4209 o
	8	५२, ११३=	वृंद कवि	वृत्दविनोद जीप	
शेरवन्द्र सूरि—	कृषस्य कथा	हि० ४३१	•	•	3389
बीरदास	श्रुतस् <b>कत्य</b> पूज	ा सं∙ ६०७		वृत्दविसास हि	. ६७६
बोरसिंह देव—	कर्मविपाक	€Io XUX			go EER
बीरवेव गरिए	महीपास चरि	স সা৹			0 900=
		३६७		शीलमहात्म्य हि	3009 0
वीर नन्व	भाषारसार	₹10 € <b>१</b>	वेगराज		१०३७
	चन्द्रप्रमु चरित्र	ा स्र∙	वेरलीभन्य	मृक्ति स्वयवर	हि० १५०
		३२०	वेरगीवस	रसतरिंगगी स	
	परित्रसार	प्रा० १०६	व० वेशीदास	प्रयास्त कथा हि	
मृनि बीरसेन	प्राथश्यित सास्त्र	o iș		मुकोशस रास	
		4.8.4	बेद व्यास	चरगब्यूह सं	
	स्वरनावसी	हि० १०६८	वेल् बहाचारी	पचपरवी पूजा वि	
बील्हो		हि॰ ११११	पं० बैजा	ज्योतिक रत्नमा	
बृत्दांबन	कल्यास्य कल्पर	-	1- 1-11		rto XX3
-		. 685	वंद्य वाचस्पति	माधव निदान ट	
	चौबीस तीर्थ क	रपवा	48 414(41)	मायन ।नवान ८	भूद <b>१</b>
	हि॰ ५०६, ५		शंकराचार्य		
	१७६, १०७१		शकराचाय	धानन्द सहरी	
	,	8008			११८४
	अस्यूस्यामी पू	वा हि॰		प्रक्तोत्तर रस्त्रम	
		¥, ११=+			€ ₹ •
	तीन बीबीसी			संकरस्तोत्र स	
		284	कविराज शंक्षपर	चन्द्रोदयकर्ग टी	का सं•
	तीस चौबीसी प्				200
		=ta	शशिषर	न्याय सिद्धान्त ।	ीपकस•
	दंडक प्रकरश	fr. 173			२४७

प्रंचकार का नाम	गयनाम गयसूची पत्रस०	ग्रंथकार का नाम	गंबनाम यं <b>यसूची</b> पत्रसं०
शकटावन	धातुपाठ स० ५१४ शाकटायन व्याकरण स०	पं० शिवजीदरून— (शिवजीलाल)	चर्चासार हि॰ ३०
	39.8		वोडगक।रए। जयमास
शान्तिदास —	मनन्त चतुरंशी पूजा स०		वृत्ति प्रा०सं• ११५
	300	शिवदास	वैताल पचिविश्वतिका स०
	श्रनस्त्रवन विधान हि०		843
	७८३	शिवमुनि—	षट्रसकथा सं० ४७६
	<b>भन</b> न्तनःथपूजा हि०	शिववर्मा	कातव स्पमाला सं०
	११४३, ११२८, ११७०		* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *
	क्षेत्र पूत्रा हि० ०७४		कातत्र विक्रम सूत्र सं०
	पूजासग्रह हि० ६=१		* 8 8
	बाहुबलिबेलि हि० १११०,	शिवादित्य	सप्त पदार्थीस० २६२
	2638	शुमचन्त्र	श्रीलग्य हि० ११०५
	भैरव मानभद्र पूजा हि०	ग्रःचायं गुमचन्द्र—	ज्ञान।र्एाव स० १६७, १६≈
	११६६		१ <b>१</b> ६, २००
	मौतिनाम पूजा स० ६११	म० १ मचन्द्र	ऋषिमडल पूजा स०
शांति सूरि —	जीवविचारप्रकरण् प्रा०		<b>9</b> 59
· ·	٧°		<b>भ</b> ठारहनाता का गीत
शान्तिहर्ष	सुकुमाल सञ्जायस० ६८१		हि० ११७३
शङ्गंधर	ज्बर त्रिणति स० ५७७		श्चनन्तवत पूजा स∙
	शा क्रंबर पद्धति स० ४६१		600.2
	ब्राङ्गंधर महिता स० ५६१		ग्रस्टाहि्नकायत कथा
पं० शालि—	नेमिनाथ स्तोत्र स०११२४		सं० ४२६
शासिनाथ	रसमजरी स० ५५४		ग्रस्टाहिनका पूजा स०
	हरिवशपुरास हि॰ ३०३		ξ <b>α</b> χ
शास्त्रवाहन —	बास विदेह क्षेत्र पूजा हि॰		ग्रष्टाहि नकापूजा उद्यापन
शिक्षरचन्द	932		सं॰ ७८४
पं० शिरोमशि	साठि सदत्सर बहुफल स०		<b>ग्र</b> ढाई द्वीप पूजा स० १ <b>७</b> ८
40 14114161	४६६		द्यालोचना गीत हि॰ ६५२
पं० सिगेमणिबार	द्र—धर्मसार हि०    १२३		करकण्डुचरित्र सं०३१५
शिवसन्दर्शाः —प्रद	हुम्न लीला वर्णन स०३५३		कमदहन पूजा संग् ७६०
	े विदम्ध मुख्यमद्दन स०		6 tv, 1194, 1986,
	२६१		1146

ग्रं <b>थकार का</b> नाम	ग्रंथ नाम	ग्रं <b>य सूची</b> पत्र स०	ग्रंथंकार का माम	। प्रंचनाम प्रंचसूची पत्रसंद
	कःतिकेयानुप्रो	श्रा सं∘		प.ण्डब पुरा <b>रा सं</b> ० २८६
		१६१, १६२		प्रशुप्त चरित्र स० ३५३
	गगावर दलय	पूजाहि०		यः चीनीसद्वतपूजा
		१०८४		संब दह०
	गुरावली पूज			लघ्सिद्धचक पूजा सं०
	चतुर्विशतिपूज।			१०३
	चन्दनाचरित्र	संब ३२०		वृहद्सिद्धः पूजा स० १०६३
	चन्द्रप्रम पुरास			श्रे सिकचरित्र म०४०३,
	चितामस्यिपा	श्वंताय पूता		A o ś
		:=, ११३६		समयसार टीका स० २२२
	ओवयर चरित्र	म० ३२६		(ग्रध्यात्म तरगिगी)
	१६७, १६८,			समयश्रुत पूजा म० ६२२
	तीन चोत्रीमी	पूजा सं०		∙?चगृस्मित पू <b>जा म</b> ०
		2999		€07, 65\$
	नीम (विश्वत)च	ौबीसी पूजा		साद्धं द्वयद्वीर पूजा ग० ह
	म० = १७, =२	9, EEX,		630
		१०६५		सिद्धचक कया स० ४०१
	विकास चतुर्वि।	शति पूत्रा		सिद्धनक पृत्रास० १३३.
		स० ६२०		<b>१</b> २०६
	त्रियोक पूजास		_	सुभाषितःशोवसंव ३०१
	त्रान कि <b>या गीन</b>		मृति शुभवन्द्र—	होतीयमा हि०५०६
	नदीववर कथा	म० ४१४	शोमन मृति—	चतुर्विज्ञाति स्तृति स०
	नदीश्वरपक्ति पू	तः स०	_	97.8
		=6:	शोभाखन्य	भारतिह्नका प्रतीशासन
	प्रवर्गमाला पू	हा म०		मृ० ७६४
	- "	c y ?		क्षेत्रपासस्योत हि॰ ११६३
	प्रचपरमेल्डी पुत्र		_	भैरव स्तीत्र हि० १००४
		- 40	राम कवि	तीम भौबीमी हि॰ १८२
	पंचमेर पूत्रा स		यामराम	सामधिक पाठ भाषा हि०
	पद्मनाम पुरासाः।		_	₹४४, १०३५
	पत्यविधान सम	fgo	धीसन्द	चन्द्रप्रमणरिक भाषक्रं श
	- 112411 414			<b>३२१</b>
	প <b>ন্য বি</b> ধান ন	, efs 63201	श्रीवन्द्र मृति	पचकरित टिप्यसा स
	ं न स्थाप स			205

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	प्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची यत्रसं०
श्रीधर —	भगवत महापुराश		श्रुतस्कत्म पूजा सं•
	भावार्थदीपिकाः (प्रयम		€ ₹ ₹
	स्कन्धम १२ स्कन्धनक)		सप्तऋषि पूजा सं०
	म० २६१, २६०		१००७
	भविष्यदत्तवस्त्रि ग्रप०	श्रीभवण सुरि -	पाण्डव पुरासा स० २८५
	३६२, ३६३		हरियंश पुरासा सं०३०३
	वर्दमान चरित्र ग्रयः	भोलाल पाटनी	चौबीस तर्थंकर पूत्राहि०
	322		<b>4</b>
	सुकुमाल चरित्र ग्राप०	थीवंस -	घटारहनातेकी कथा स॰
	788		४२१
भोधराचार्य	ब्रह्मक्योति स्वरूप स०	अनुतम्बि -	मावसंग्रह प्रा० ७८, (४८,
	₹१.€		१०५⊏
	वद्यसूचीस॰ १२००	श्रुतसागर	धनस्तवन कथा स०४२२
श्रोपतिभट्ट	उयोतिष पत्नमाला स०		ग्राराधनाकयाकोष स०
	XYS		830
	নিবাৰ মাঘা 7ি০ ৭১৩		उद्यापन पाठ स०१०००
<b>क</b> ्षीपति	रत्नपाल प्रबन्ध हि० ३८२		कथाकीय मं० ४५२
धीपाल —	उपासकाध्ययनश्रावकाचार		चन्दन यन्ति कया स०
	हि० ६७		308
बोमुषग्यति	स्रतन्तचसुदंशी पुत्रा स०		जिनसहस्रनाम टीका स०
*	ઉષ્ટ		390
	सनस्तन। धपूत्रासं०७८०		ज्ञानास्यंव गद्य टीकास० २००
	गुर-क्षप्रक स० ११३६		उदेश्ठ जिन <b>दर कथा सं</b> ०
	च-ित्रशुद्धिपूजा स०		उथाठ जिनवर कथा सन् ४ <b>७</b> ६
	999		तत्वार्थसूत्र टीका सं० ५०
	दानकीलतप भावना		यस्यविद्यान वतोद्यापन
	हि० ११६७		कया सं ४५६, ८६४
	पदसमझ हि०११४४		पृथ्पांजनिवत कथास॰
	बारह सौ चौतीस वत पूजा		3-11-11-11
	032 oH		यशस्तिलक चम्पूटीका सं ॰
	भक्तामग्यूजाविधान स०		308
	. ११६२		रत्नत्रय विद्यान कथा सं०
	बम्घीर चरित्र हि० १४५		A3A' A£c

प्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	षंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रं <b>थसूची</b> पत्रसं०
	रात्रिमोजन त्याग कथा		पाक्ष्वेनाथ चरित्र सं०
	म० ४७२		\$86,389, \$8E, \$8E,
	व्रत <b>कथाकोश</b> स०४७७		३५०, ३४१, ३४२
	षट् पा <b>हुड वृति म</b> ०२१६,		पुरामा सार मं २६०
	२२०		प्रश्लोत्तर श्रावकाचार
	सिद्धचक कथा स० ५०१		Fio ?36, ?34, ?38
	होली पर्व कथा स० ४७१		मन्तिनाथ चरित्र स०
च्रुतसागर	गोहिस्सी मीत हि॰ ११११		şey
म <b>० सकलको</b> ति—	धनन्त्रतपूजा उद्यापन		पुरुदसप्तमी कथा स०
	सं० ७≡३		308
	ग्रष्टान्हिकापूजास० ७२४		मुक्तावलीर्गत हि०
	घादिन्यव≀र कया हि०		11/11
	€४०		म राविल राम हि० ६५४
	द्यादिपुरासा सं००६६,		मुभाचार प्रदीप स०१४१
	ويجة		यक्रोधर अण्टित सं०३७३,
	भागाधना प्रतिकोषस <b>ः</b>		30Y
	हि० ८१. ८२१. १०३६		रक्षाविधान कथा २०० ४७०
	११३८, ११६४		गमपुराम स० २६५
	उत्तर पूरासा स०२७२		बद्धान पुरासा म०
	कमेविप∶क स०⊏		पेर्ट, २१८, ३८६
	गमध्यवस्य पूजा ग०		
	388, 22°0		
	चन्द्रप्रसंचित्र स०		व्यभनामाचरित्र हो० १८७
	30€		कातिनः व पुरास्त स०
	जस्यस्यामी चरित्र गठ		300, 178
	325		श्रीरालबरित्र सं० ३८३
	जिनमुखावलोकन कथा		सद्भावितावली स०
	सं० ११३६		££X
	तत्वार्थमार दीपक माठ		सारचनुविकशिका सं०
	**		१७१
	धम्बकुमार चरित्र हा०		सिद्धांतसारवीपक शं०
	373		<b>c 1</b>
	घर्ममारसंग्रह सं १२८		मोसामित् रास <b>्हि॰</b> १०२४

विकार का नाम	प्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०	प्रथकार का नाम	यं य नाम	यं <b>य सूर्या</b> यत्र सं०
	सुकुमाल चरित्र	सं० ४११.		नित्यपुजा भा	स हि∙
		182 883			362
	मुदर्शन चरित्र	FTO EPY		मगवती द्यारा	
	मुभाषित	स० ६८५,			₹¥€, ₹¥9
		553		मृत्यूमहोत्म <b>व</b>	
	(मुमापिनागांव	,033 (1		पत्नकरण्ड श्रा	
		7.83		साथा हि०	€23,025
	मोबहकारम	राम स०		षोडशकरशा	
	?	प्रम, १११६		समाधिमरस	भाषा हि॰
तकलचन्द्र	महाबीरनी म	तवन हि०			236
		इष्र्		सामयिक पाट	ट'काहि∙
सकलमुबस -	उपदेश रश्तम	ो <b>ला</b> ₹ं०			7055
**		, ¥e 9 9	सधार	प्रशुम्त चरित	र हि० ३५४
	मस्त्रिताथ वर्ष	रेन्र मा०	समताराम	जैन श्रावक ग्र	म्नायहि०१०६
		225	म्रा० समन्तमह <i></i> -	<b>ध्रा</b> प्त मीमांसा	सं० २४६
	विमानपंकिः	तोद्यापनमा०		चनुविश्वति स	तोत्र स०
		806			દે છે પ્
	वटकर्मावदेशः	नमाना		देवागम स्तोः	सं०,११६४
	`	हा• १६⊏		रत्नकर ण्डश्रा	वकाचार स०
	शीलमहिमा	हि० ६८३			१५४, ६५७
इ.० सधजी —	भैं साम प्रक	घरास हि०		समन्तमद्र स्त	ति सं०७६३
		445		स्वयंभू स्तोत्र	सं०७७४,
संतदास	सःभद्रशिखर			૭૭૬, દ	€ <b>₹. €</b> €¥,
		६२३		१०६२, ११	२७, <b>११३</b> €,
सदानग्द	सिद्धान्तवन्द्रि	কা তীকা			286×.
		मंत्र ४३०	समय भवरा	नीतिसार	3 × 3 0 is
सदासुक्रजी	ग्रकलंकाध्टब		समयस् वर	कालकाचार्य	कथा हि०
सवायुक्तका सामलीकास	201000	हि० ७०६			89.8
कासलाबाल	ग्रयं प्रकाशि	•		क्षमा छत्तीर्स	हि॰ ६६०,
		मायाहि.५३,			०६१, १११८
		माना हि. १२, ५४, ११, दर्			हि॰ ६४२
		रुक, ६६० मावना हि०		चेतन गीत	हि० १६६,
	दशलकारा	सालका । श्रुप			1075

प्रथकार का गुप्त	क्षंच बास प्रंच सूर्व पत्र संब		ग्रंचनाम ग्रंचसूची पत्रसं०
	जीवडाल रास हि		आवकाराधन सं०१६७
	8086	सरसुति —	मधुकरकलानिधि ∫ि०
	दान चौपई हि॰ ११४३		<b>६</b> २७
	दानक्षोलतय भावना हि०	पं० सत्हरण	छत्वृत्त रत्नाकर ग०
	१०३६, १०३६, १०५६		XER
	दान शील सवाद हि०	सहस्रकीति	<b>पैलोक्</b> यमार टीका स०
	<b>%</b> ४७		६१४
	नल दमयनी सबोध हि०	<b>इ</b> ० सागर	धप्टाह्मिका वन पूजा
	XX o		eo 3 ota
	पवस्तप वृद्धि हि० १०५५	सागरसेन —	पुराणसार मा० २२१
	पद्मावती गीन हि०	पं० साधारग—	तीस चौबीसी पूत्रा ग०
	७३२		M = 1 = 1
	प्रियमेलक चौपई राज०	साधुकीति	उपधान विधि स्तवन हि०
	¥\$2	-	1061
	बेलिकाम विश्वम्बना ि०		जम्बुस्वामी की जलही
	<b>१</b> २०२		हिं १०२४
	महःबीर स्तवन हि० ८४१	कविसारग	विन्ह्रसा कीपई हि ४०४
	मृगावनी चरित्र हिर ३७०	कु० सावतसिह—	इण्काचिमन हि०१६५
	र मेथकुमारगीन हि०	स० सांबल	भ∘सकसकीितृरःस
	\$ \$ o \$		180 88E
	रामसीना प्रबन्ध हि० ४७४	स्रांसु—	मकोसम राम हि० १०२५
	शत्रुजय राम हि० ६४०,	साहणु	पद हिल्हें हुए
	U33	साहिद्यराम	तत्वार्थसूत्र भःषः हि०
	णवुजयस्तवन हि०	पाटनी—	<b>x</b> :
	1095	सिद्ध नागाञ्च न	रावजंगांव सं ६२४
	सक्भाय हि० ७६३	सिधदास	नेमिनाच राजमति बेलि
मय मुन्दर	कल्पयना टीका सं०१२	19419	हि॰ १०२६
ाच्याय —	चतुर्मास व्यास्यान संस्कृत	सिंघो	
٠.	₹ <b>•</b> ¥		सुमद्रकथा हि०१०१४
	दूरियरय समीर स्तोत्र वृत्ति	महाकवि सिह	प्रखूम्नकथा <b>श</b> य० ११८८
	संव ११६४	instant of	
य मृत्वर	रघ्वंगटीका स॰ ३८१	सिहतिलक सूरि	भुवन दीपक वृत्ति मा० ५५७
- 3-4	वृत्तरस्य कर वृत्ति स्	सिहनस्य -	नेमीस्वर राजधीत हि॰
	Second and Sin Gar	tabata	ननानबार राज्यकादी }हित

प्रंचकार का नाम		र सूची त्र स०	प्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची पत्र स०
	प्रीतिकर चरित्र	₽Ìo	सुधासागर	दशसक्षमा वतोद्यापन पूजा
		: × 9	-	£lo ≈; o
	शत्रिभोजन कथा			पंच कल्यास्यक पूजा
	म्	० ४७१		स० ८४७
	गत्रनियो गीत	f₹∘		साइ द्वय द्वीप पूजा
		१०२७		स० ६३१
पाण्डे सिहराज -	स्तुति पचाणिका	*[0	सप्रमाचायं	सबोध दोहा हि० ६७८
		359	म० स्मतिकीर्ति —	ग्रादिनाथ विनती हि०
स्खदेव	ग्रागुवंद महोदधि	#fo		४४३, ६७४
		xex		कर्मप्रकृति टीका २०० ८
संख्यागर	भाटा(स्ट्रवा रामो	fgo		गोम्मटसार टीका मा० १६
		8038		औरासीला <b>ल</b> जोननी
स्कानन्द	पचमेरुपत्रा हि	3 K = c		विनती हि०७२४
-		१०५७		जिनवर स्वामी विनती
	पद हिल	१०५६		हि० ६५२, ११३६
सदामा	याग्हलाडी हि०	1062		त्रिलोकसार चौपई हि०
मुन्दर—	लूहरी हि	0 = 9.9		'१६, हहर, ११५१,
में दरदास	कत्रिम हि	<b>६</b> ४१,		6623
		११६६		त्रीलोवय स्वरूपाह० ६४४
	पद हिल् ११०४,			धर्मपरीक्षाभाषा हि० १२१
	विवेक चिनामिण	हि०		धर्मपरीक्षा रास हि०६२५
		१०१४		पचसंग्रह वृत्ति स॰ ७१
	विद्रकाचनवर्णा	ig o		बलिभद्र हि०६५४
		१०१४		लोकामतनिरागरगारास
	सर्वया हि	० ६७८,		हि०१६०
		११११	समिति विजय	रघ्वश काव्य वृत्ति
	सुन्दर शृंगार	हि०	•	≠10 ३६१
	£ <b>5</b> X	, १००२	तुमतिसागर—	ब्रस्टान्डिकापूजाहि०
0' FT 2111	मृक्ति मृक्तःवली म	ाषा हि०	3.4444	७६४
स् दरलाल—	Arm Garan	909		जिनगुर <del>णसापत्ति</del>
		8=0		व्रतोद्यापना स० ६०७
मुनि संबर सूरि-	- धःयात्म कल्पद्रम			जिनसहस्र नाम पूजा स०
	वृहसपागच्छ गुर			= <b>!</b> !
	1	rto EXX		.,,

प्रंचकार का नाम	संबनाम यंबसूवी यत्र सं		ग्रंथनाम ग्रंथसूबी यत्रसं०
	जिनामिषेक विधान हि	•	कलि चौदसकथा हि०
	११६६		YRX
	समोकार पैतीसी स०		वर्षा ११०२२
	\$ 0 G Y		चौबोस दण्डक स०१०७
	त्रिलोकस।रचौपई हि०		जैनवद्री यात्रा वर्णन
	8886		हि० १०३५
	त्रिलोकसार स०६१६		दर्शनस्तीत्र स०७३०
	त्रिलोकसारपूत्रा स० ८२२		पण करुयासक विधान
	दमलक्षरा वतोद्यापन पूत्रा		€10 वर्र
	स० ६२६		पचमास चतुदंशी
	नवकार पैतीसी वतोद्यापन		प्रतीद्यापन स०८४६
	पूजा स० ६३४		पुरन्दरवनोद्यायन स०
	पचकत्यासक पूजा स०		द६४
	e y c		मुक्तवलीवतकया हि०
	बोडककारस प्रतोद्यापन		813
	पूजा सा दृश्य, १०८४.		लब्धिवियान स०६०२
	शासिमद्र योगई हि० ४८८		सम्मेदकिखर पृत्रा हा०
	११०८		हरु
	नोलहकारण उद्यापन		निद्धक कथा ग० ५०२
	मा ६३५		चर्चामार साग्रह सं० ३१
सुमतिहंस –	रात्रिमं≀जनवीपई हि∙	सरेना भवता	पंचमीकवा हि०
	४७१		¥=3
सुमति हेम—	महोवर पार्थनाब स्तबन		सार गवह स० ६७८
	हि॰ ६४२	सृहकर	शतुबय महत्र स० ७६१
म० स्रेन्द्र कीर्ति	धनन्तवत सम्बद्धाः 🕞	सूरत	हादशः मुप्रेका हि० १०६७
•	<b>१</b> ०३७	•	बारहसाबी हि•१०३०,
	श्र <b>ा</b> श्चिका कथा रं∙		१०५६, १०५६ १०७५,
	YIY		\$ 000, \$ 000, \$ 050,
	मादित्यवार कथा हि०		¥9.6¥
	¥₹€, ¥₹€, <b>₹•э</b> \$		संवर धनुप्रेका हि॰
	(रवि वत कथा) १०७४,		586
	\$030, \$09E, \$05E	सूरवास	सुरसगाई हि०१०११
	1080	पूरवार सूरवार	पूरतगाद । हरू १०८८ रत्नपाल राख हि• ६३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	<b>प्रथ</b> सूची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम		ष सूची पत्र सं०
सूर्यमल	तीन चौबीशी	पूजा हि∘		सप्तव्यसन कथा	₹İ≎
		११८३		¥81, ¥8	9, 383
सूर्यार्शव-	कर्मविगर	#1 0 8 8 8 8	प० सोमचद्र —	वृत्तरत्नाकर टी	हा स०
सेंद्रराम	पद	fro fore			334
सेवक	দুমোরণি ক	वा हि•	सोमतिलक	<b>क्षीलोपदेशमा</b> ला	<b>FT 0</b>
		हद्ध, ४१०६			१६५
सेवकराम		ा हि० ६०३	सोमदेव	सप्तरिष पूजाका	११६६
	सम्मेदशिखर	पुत्रा हि०	प्रा० सोमदेव -	ग्रध्यातम तरगिर	ी स∙
		€ 5 3			850
सेवग ·	चोबीस तीथ			नीतिवस्यामृत स	ा० ६⊏६
		teo cos		यशस्तिलक वस्टू	ŧ۱۰
सेबाराम पाटनी	মহিলবংখ গু	याम भन्या			३७०
		ପ୍ରଥ ଓ ଓ	द्या० सोमप्रम	भृगार वैसम्य	तरंगिसी
	शातिनाथ पु	राम् हि॰		स	० ११०२
		३०१, ३८१		सूक्तिमुक्तावली स	ा० ७० <b>१</b> ,
सेवारामा साह	<b>ন্দ</b> -শ্ৰন্থ			७०२, ७०३,	90¥,
		७६२, ६८०		७०४, ७०६,	११६१
	चौदीस तीर्थ	करपूजा	सोमविमल सूरि -	- श्रेशिकराम	हि० ६४३
	f₹0 <0=,	560, 3038	सोमसूरि —	भाराधना सूत्र	इंड भार
सोभाचं द—	क्षेत्रपाल गी	न हि० १०६⊏	म० सोमसेन	त्रिवर्णाचार स०	११२
सोगकवि—	राजुल पत्रि	का हि०		पद्मपुराशा र	ा० २८०
		११६६		भक्तामर स्तोत्र	पूजास०
म० सोगकीर्ति	भद्राह्यकार	तक्षामः			⊏६१
		735		रामपुरास स०	? દ્રષ્ટ
	त्रंपनक्रिय।	गीन हि०		वतस्वरूप न	०१११७
		<b>१</b> 04%		सूतक वर्णन	सं० १७६,
	ছল দে ব	रित्र ११० ३४२,			<b>¥</b> ₹3
		<b>3</b> 43	स्थूलभद्र—	नवरस	७३३ ० ही
	<b>म</b> िलगीत	fee toxx		गुर्वावली पूजा	fg = 584,
	रियमनाय	٠.	बिलाला		203
		1058		बौसठ ऋदि पू	अग हि०
	यशोधर व	रिश्वसा० ३७३		•	<b>११, 5१</b> २,
		।स हि०१० <b>२</b> ७		तेरहङ्कीप पूजा	हि० ८१६
	4414 / /				

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रथसू पत्रः		ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रस०
	सप्तिषिपूजा हि०६	t=	सूकि मुक्तावली टीका
	सिद्धक्षेत्रमङल पत्राहि	0	म० ७०६
		<b>3 3</b>	हर्षकीति विधान पूजा
स्वरूपदास -	५.ण्डव चन्द्रिका वि	हे॰	₹०३ ०फ
	8.8	<sup>६६</sup> ह <b>र्षक</b> ीर्सिश	कर्महिडोलना हि०
सुन्दर दास —	मुन्दरदास हि०६	3.5	2023, 20X0
हजारीमल्ल-	श्रुतस्कत्धमन्डल विध	ान	चनुगंतिवेलि हि० ६८४
	हिट ९१	{ <b>r</b>	जिनगीत हि∙ १०१६
हरवूला <b>ल</b> —	सन्जनचित्त बल्लभ भा		त्रेपन त्रियारास हि॰
	हि∞ ६३	ξ <b>A</b>	<b>१</b> ८३२
हरजीमल	चर्चागतक ि० ३		धन्ता क्रिया - उभाग्राहरू
हरखसूरि	जोधउत्पन्ति सज्भाय हि		1100
		£	वितास का बारहमासा
हरसुख -	बावनी हि॰ १०७	ς	हि० ३ <i>८</i> ३
हर्ष कत्यारा—	पचमी बनोद्यापन स०		पचम्मति येनि हि०
	= ¥	5	EU1, \$0\$3, \$0\$E
हर्षकीर्ति I	ग्रनेकार्य नाम <b>ा</b> ला म०		\$200 \$205, \$\$\$2,
	5 x	8	***
	कत्यासमन्दर स्तात्र		पन्न बचावा हि <b>०</b> ११०४
	टीका म० ७१	4	परमग्र हि० १०१%,
	५ चमीवतीद्यापन पूजासः		१०४२ ११०४,
	£ 4 :		पारवंगाण छद हिल ७३३
	ঘাৰুণাত ন০ ২ং .		बीसनीयं कर असड़ी हि॰
	घःतुतरसिग्गी सं० ४१०	1	\$000, \$00E
	योगविन्तार्मास स०		रामतीबंद्धर अयमाम
	५६१, १०१६	•	
	लघुनामम।लाम० ५१०	;	हि० ८११
	वै <b>द्यक्</b> मारस <b>०</b> १८६	1	भक्तःमर स्तोत्र हि०
	गारदी नाममाना म०		64.8
	X.8.		मनमोग्डागीत हि॰
	श्रुतदोष टीका म०		<b>X355</b>
	£ 0 \$		लेक्यावली दिव ११६६
	सिद्धान्त चित्रका टाका		श्रीमधरजी की जलाडी
	मा० ४३०		\$ 0 X E

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची पत्र स०	ग्रंथकार का नाम	प्रंथनाम ग्रं <b>यस्</b> ची पत्रसं०
	मारोद्धाः हि० १११६	हरिदत्त	नाममाला म० ५३८,
हवंगिए	पद हि० (=३	`	४४२, ११७६
हर्ष सन्द्र	পৰ দিও १০৬३	(स्वामी) हरिदास—	- गदसग्रह्ति० -१०६६
	पूजास्टराहि० ६६०	हरिनाथ	वैद्यकीवन टीका सः
हस्तिरुचि	वैद्यवल्यम्म० ५०६		४८८
हरिकृष्म पाण्डे-	धनस्त्रतम् कथा हि०	हरिफूला	सिहासन बन्तीभी हि॰
	४३ : ग्रावाङ ० चर्माकथाहिर	हरिभद्र सूरि-	५०३ जम्बृद्वीयसध्यस्यि प्रा० ६१०
	४३३ अस्मिताक <b>कथा</b> हि०	हरिसद्र गीस-	५६० ज्योनिषशास्त्र स० ५४७ ताजिकसार स० ५४६
	४३६ ७१७४ (समञ्रक्षकारिक	हरिमान-	लघ पचकत्यासापूरा हि० ६०१
	८.५ प्रमासकारणात्त काचा विक ४३३	हरिसास्कर हरिसामदास	बुत्त-श्व- वृत्ति स० ६० <b>०</b> छद्रश्लावलि हि०
	निल्लंगम∵मी <b>कथा</b> हि० ४३३	।सरजनी हरिषेरग	५६३ ्रायश्चन कथाकोण स० ४१०
	नि शत्य सप्टमी वधा		कथ,बोशस० ४५२
	f70 ¥33	हरिविशन —	पन स्थाशक विधान हि॰
	पुरन्दर विधान कथा हि०	Q	5 q <b>१</b>
	<b>433</b>		भद्रवःह कथा हि० ४६४
हरिचन्द	प्रस्तवस्य कथा (१० ४३) प्रमासस्या कथा सपभ्र मञ	हीगचन्द- हीरालाल—	पश्सप्रहात्० ६६४ चन्द्रप्रभवश्यि भाषा
	४४४ কবিল চি৹ ২০২১		हि० २७६, ३२२ चौबीसतीर्थक्कर पूजा हि०
हरिचन्द संघी —	कोबोस सहारात की		८०२, ८१०
	विननी (२० ७२४, १०४६	हीरानंद -	⊓कीभाव स्तोत्र भाषा हि० <b>१०१</b> ३
हरिचम्ब -	धर्मणमस्युदय स०३३६		पचास्तिकाय भाषा हि०
हरिचन्द सूरि	र्मासपति चरित्र प्रा०		७३, ११४६
	३६५ पहुदर्शन समुख्याय स		मगलः चरण हि॰ १०६४ समवशरण विधान हि॰
	748		१२१

ग्रंथकार का माम	प्रंचनाम प्रंचसूची पत्रसं०	वंथकार का नाम	पंचनाम ग्रंबसूची यत्रत्र
हेतराम -	पद सम्रह हि० १००६,		गरिगुतसार हि० ११७८
	Exop		गुरुपूत्राहि∙ १११६
कविहेम—	र्वज्वसी खदहि० ६६६		गाम्मटसार (कर्मकाण्ड)
हेनकोत्ति —	पद हि० ह६७		भाषा हि० १६
हेमनन्द्राचार्य	ग्रभिषानचिन्तामरिग		चौरासीबोल सं० ६४३
	नाममाला स॰ ५३२		नयचक्रमाया वस्तिका
	भ्रप्यामोयनिषद् स०		हि० २५४
	१=0		नस्दीदश्रस्यन सम्बद्धाः (१०
	कुमारपाल प्रवस्य ,ग०		£=¥
	३१६		पच।स्तिकाय भाषा हि०
	छदानुगामन स्वोपजवृत्ति		\$ 60
	म० ५३४		परमात्मप्रकाश भाषा हि०
	तिपष्ठि <b>शसाकापु</b> रुष		3 o t
	चरित्रस० २७६,३३०		प्रवचनगार भाषा वचनिका
	नामलियानुबासन मं०		हिल २११, २१२, २१३
	¥3c		भन्दासरमनोत्र भाषा हि०
	महदानुशासन स० १२ <b>०३</b>		568, 369, cos.
	सिद्धहेमणव्यानुकामन स०		έξα, έπο, γυ√ο,
	¥ \$ 0		१०६=, ११०६, ११०७,
	सद हेमशब्दनुष्यासन		११-०, ११२२, ११२८,
	स्बोपज्ञविनिस् ५:०		११८८, ११४८, १२६१
	स्वरावली चरित्र सर		राज्यमती सूनरी हि०
			<b>१११</b> =
	1503		भेटमीश्रतकमा हि <b>०</b>
	हेमीनामालामः ५४०		≂४३, ११≈३
∘ हेमचंद्र—	श्रुतस्कत्व प्रा० ३५६		गुगन्यदशयी की कथा
	₹ ₹ \$		¥\$3,
० हेमचन्द्र	श्रुतस्कल्याहि० १०४७		जिलोपदेश दोहा हि॰
मचद्र	त्रंपन त्रियाहि० ६७४		₹ <b>०१</b> ६
	नेमिचरित्र सक् १८० है	मसु	रण्डर गिर्वे कुर मा⊓ा जिला नक्षम
	नेमिनाय छद हि० ७२१,		
	₹•७० ह		
	योगसार स० २१५	64	रष्टावरपक वालाबबोध
डेहेमराज		: sarfw	हिं॰ १७०
		ग्सूरि	र्यधायशि प्रा॰ ६११

## शासकों की नामावलि

यसवर	37, 828, 60, 309,	(गवगता) चोदसह	33€
	306,330,610,636,	(महाराजा) जसतसिह	१६०, २८६, ७१४,८५७
	४४७, <b>६५</b> ८, १४५	-	<b>5 X</b> 5
ग्राबर (जनःलुहीन)	÷g=, 303	रका जगनीमह	१८८, ४७६
म '। राजा धजयमन्त्र	\$ 5 X	राज।धिराज जगन्नाथ	3=7, <b>११</b> =६
स्रजीतीतह	၁၁ န	जयसिह	६४, ७६६
च <b>्</b> षां सह	દ ૭ ર	(महारागा) जयसिंह	39\$
प्र <b>म</b> र्गमह	3 ₹ ₹	(महाराजा) चर्राताह	७,२६५
≎ला'प्रहें।म	<'5'	(महाराजः) सव:ई जर्यासः	२ २१६, ३३४,११११
धरत्र,यस स्थान	৬২	जरा-िध	853
(राजपः) श्रामकरम्	448	जव:हर्शमह	399
(र.पाउ) उँवर्गसह	ે હેર્	जसवत <b>मि</b> ह	<b>48</b> %
<b>ईक्य</b> रंशिस्ट	हर्स, १११२	जहांगी ?	१३१, <b>१</b> ६६, ३३३, ४ <b>१</b> ७
उदयोसह	305		€.८⊀
(महाराव) उम्मेदसिह	46	जालिमसिह	48
उम्मर्शसह	३२६, १००२	जित्सीस्	و
धीरगम:ह	ः ६४, ४८४, ६४२	जीवगःसितः डिगावत	१०११
(गाता) करण	103	राजा जैनिवह	६१७
<b>क</b> मंजिह	34	(गवगत्रा) दलेलसिह	5,00
(महाराजा) कत्याम	χοċ	(हाडा) दुजेनसाल	७८, २३७
कोतिसहदेव	२०६	देवीसिह्	939
<b>बि</b> स्टरण	¥ 6¥	दौलतिराव महाराज	3 7 8
कूमारपाल	२१५	नूरमोहस्मद	१६६
क्यामः ।न	২৩३	महाराजा प्रतापसिह	₹\$=
(शास्त्रम्, गंगदास	१३८	(महाराजा सवाई) प्रताप	
गयासुद्दीन	<b>१</b> ४=		£∘¥
गुमानसिंह महाराव	315		≂२x, १०६४, ११०६
गुनागतत् पदाराप गोदर्खं नदास	२८६	राजा प्रतापसिंह	१२०, ११३, २८१
गावश्च नवास बन्द्रभाख	३७३	<b>बृध्वीराज</b>	१६१, ५४=
चन्द्रवाछ कम्मानिक	४१६	पृथ्वी सिंह	२६ ९

	7.44 #37	combone a secondo	242
सवाई पृथ्वीसिंह	४४. २४४, ४२२ ४२२	(राजाधिराज) मानम्बंध ठाकूर मानसिंह	३६३ ३० <b>८</b>
षु जराज	*** **		४२६
पुंजविजय (स्थान) पैरोज	** *c	शाहजादा मुरादस्थान	363
(सान) पराज पेरोजसाहि	२२ <b>४</b>	राव मोकल	£
पराजसाह फरोमिट	Yos	मे हम्मदशाह	\$04, \$68, 688, 203
फतारूह फरूक शाह	305	रमञ्जीत	₹=, ३ <b>६</b> ७
करूक गाह बड्डर (बाबर)	६४व	र शासन ही	\\ Ecc
बलभद	440		२०६, ३६८, ११४१
बलबन्तमिह	म्रुप, म्रुप, १७०	रागा राजिसह	343
(सवाई) बलवन्तरमह	343	रामनःद	४१८
बहलील साह	<b>₹</b> 20€	रामबन्द्र (मोलकी)	133, 003
(राजा) बीठनदास		ठाकुर रामवस्य	થ્રદર
रावराजा बुधसिह	\$0:	राम[मह	1048, 120X
महाराजा भावसिंह	₹ <b>८</b> €	महाराजा रामसिह	€X. 8XX. 3€*
राव भावनिह	२७६ ४८४	(सवाई) रामसिंह	*6 t
(रावराजा) भीर्मासह	569	(राजा) रामस्यंध	\$63
भीवगिह	<b>£</b> \$\$*	रामसाच (हाडर)	20=
राजा भैरवमेन	<b>६</b> २६	हरण द र स	*12.29
ठाकुर भैरू उक्त	५६२	<b>ब</b> म्देव	853
भोज	χe¥	विकामना	148.5
मद- मिह	858	विकसर ग	4.7
महमदलाः	338, 1989	विक्रमादि य	\$ 2, %e%
<b>म</b> ृपद	: २१	बिजयां मह	e a
महम्द <b>म</b> ीह	<b>०</b>	वि <b>म</b> र्गास्	3 7 8
महाराजीगड्ड	££X	क्षीरमित देव	<b>২</b> ৬২
महर्शनह	1003	(गवन) वंगमञ्ज	\$25
माध्यमिह	₹≠=, ₹±४, १ <b>43,</b> ₹= <b>६</b> ,	माई अहा	२ <b>१८, ६५८, ६</b> १७
	७२३, ययह	विषय: नांसह	40. 529
माध्वेत	<b>\$</b> ?0	(गगा) सवाम	780
मायोसिह	५८४, १०२०	(महाराखः) नवामनिह	Rat. Etax
मानगि:	११६, १ <b>८५, ३२३</b> ३८४	सन्वर्तिवह	36.5
	\$60, 200, 3mc, 513	समासिह	25¢
	630	समुद्र विजय	¥22, <b>(</b> 36
मानीस हदेव	168	सरदारशिक्ष	132, Co.

			[ १३६७
सलेममाह राम्या सांगा	१३१, १४०,२२४, ३८३ ३८४	•,	<b>१७३, ३७</b> ०
स दुलसिह सांग्यमिह	\$68	हुमायू' (महाराजा) हरिकृत्या	४१७, ६४८
सुनमानसिंहजी	E 0 8	हरासिह	२१६ <b>१</b> ११=
सुमेरसिह	४८३ ७१७	हीर्रसह हमीरमिह	, ( ( c
	0,0	त्याराम <b>ह</b>	११४८

## **ग्राम** एवं नगर नामावलि

भवस्य देश	3 4 3	<b>श</b> रपगढ़	*4.
<b>सक्तवर</b> पुर	३१२	धर्गलपुर	१२० २२४
शकवरावाद	७३, २२६, १२०२	धर्गलापुर	७०, ७५०
<b>इक्ष</b> यगढ	8X£	धलवर	1, tox, txo, tco
<b>धस</b> यगढ	१४८, १७२, १८४		१६२, १६७, २६३, १४६,
ग्रगलपुर (धागरा)	२४६		इस्र, ७७६, ८४१ ८१४,
<b>धगरतस्त्रा</b>	६२१		۹٤٦,
श्चनेरा	<b>?=</b> £	च ली गढ	X2, 408
स व्यय स	¥04, ¥ 0	षयवतीपुर	900
धअमेर	२, ४१, ६२, ६२, १२०,	<b>म</b> वन्ति	£\$X
	१३७ १४६, १x६, १६८,	षष्टा नगर	394
	२२४, २८४, २६१, ३१६,	ब्रह्मदाबाद	१७०, २६४, २७६, ३६४,
	₹₹£. ६६७,₹ <b>≈£,</b> ४०२,		₹¥₹. ₹ %
	¥20,800, 868 E28.		60%, 8985
	दथद, दहर, हर०, ह७४	सहमदाबाद	285
	9769	याकोदा	11=1
<b>भज्य</b> गढ्	११८, १६८, २६३, ३१६,	<b>प्राको</b> मा	V2.0
	X 65, 820, 286, 200	<b>धागरा</b>	२=, ७१, ६१,६४,३०१.
भजयदुर्ग	₹१६€		२२६, २३०,३०४ ३२८,
भ <b>ने</b> नग <i>र</i>	<b>አ</b> ው።		448, 484,380, Yox,
बजीगंगड (बजमर)	७१६		120, YXU, YEO, EUK.
Q27	১२५		£60, 040, 884.
घरा वर ग्राम	<b>₹</b> \$	<b>धा</b> र्सी	XeX
<b>प्र</b> श्लिहसपुरपत्तन	५३२	द्यावदा	२१=, ५७२
ब्रमरापुर (दक्षिरा)	YEX	ग्रामन्तपुर (बृ वी)	YXX, 808
<b>ममराव</b> ती	८६४, १२४	<b>भा</b> मेह	EXX
प्रम्बावती	u, ut, er, 202. 207,	भागेर	*
	२=६, २१४, ३३५, ३३७,		₹₹₽₽ ₹₹₹, ₹# <b>₹</b> , ₹₽¥₽,
	\$40, 402, 40E, 454,	मबिर	204, 610, \$03E
	813, 584, 485		tttt
	,	<b>मास्हरमपुर</b>	915

घावां		1956
414)	१८३, १२०, ३६८,४३६ स्रोबेर	
इटावा	द०४, द६४, १०२२	२२ •
इटावी	२७५ कठ्टमर	७५४
इन्दरगढ	Ye3 Warm	¥¥0, 60E,
s.4.44\$	₹, ६४, ६८, ≈६, १०० ma}-	111
	48E, 28E, 28E, 333	487
	28X, 36E, 36E,3Ete #72	ξε <b>ε, ε</b> ξ?
	KEE'RES' KON ALS BESTED	908
<b>ए</b> न्दीर	100, 503, 2033 20VC	*15
4.414	( a 4' 6 ho 3 A E 3 A A 3 A DO	\$ • 3 ¥
<b>स्</b> ग्नपुरी	६४१, ७६= ६३४, ११=१	9, 2E, Eu, 200.
रमपुरा इटिहिया	8 tc	१३८, १६६, २०१, २०२,
	११७५	२१२, २२७, २६६, २७०,
ईडर (गुजरान) ईलडुगँ	१२६, ३६३, ४५७,	२७१, २७८, २६७, २६६,
इस इस	<b>₹</b> 08	३०६, ३२८, ३२८, ४३०,
	380	388, 388, 38e, 366,
स्विचपुर इलाका	€¥c	360, 364, 888, 864,
	₹€•	YOY, YEU, X.O., EOY,
वर्गनी (उर्मन)	१७१, ११४६	E 0 %, 440, 488, 608,
<b>उग्रकास</b>	\$ <del>7</del> <b>7 7 8 8 7 9 8 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9</b>	926, E00, E30, E88,
र्सरदा	२२४, २२६, ८४३,	₹0१, १०=, १२o, १२२
उस्पियारा	703 91- 00-	१०६×, ११=१
	\$ \$ E X 10 80 - 2 21 341	
बदयपुर	र, ३३, ३५ <b>५०, े क</b> रणटिक	२१४, २३२,
	१२४, १४१, १६४,२०६, कलकता	398
	२१६, २४१, २७१, २८७,	२=६
	३३० ३००	953
	३८८, ४०१, ४७८, ४६१, कललीपुर	1144
	1 1, 000, 868 2	€80
	४१२, ६३७, ६४१, ६७१, कल्याग्युर	<b>५</b> ६२
		Aés
		११२, ४१६
वर्षणव (स्वयपुर)	११४४, ११४८, ११४१ कानपुर	5 <b>5</b> %
व्यवस्य (क्यमपुर) व्यवस्य	७६३ कामबन	२११
er er	१३७ कामवन (कामा)	470
,	६१८ कामबन	<b>**</b> **
	ग्यम्बन	<b>₹•</b> \$

कामा	२, ४०, १०१, १७		
	१७७, १८४, १८६, १८ १७७, १८४, १८६, १६		४७७, ४७१, ४८३,
	२२७, २३०, २३६, २६ <b>:</b>		द११, १३ <b>१</b>
	३२४, ३३७, ३६६, ३६ <i>६</i>		<b>१२०</b> २
	प्ररुप्त, ६११, ६७०, ७४।		¥=8, 403, 441
	940\$, 30E	र, क्यूक् केलवा	96
का सामद	481		₹ ₹ = 19
	* · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		
कामापुर	₹€€		२६=
कामावती नवर	7 ? ?		***
नद का मावती	93		488, 404, 880,
कारंजा	300, 820,830, 485,		४५१, ४८४, ४०४,
	<b>११६७</b>		४१२, ४२७, ६४७,
कालयी नगर	223		96x, =00, \$\$9=
कालाडेहरा	५३८, ६६१, ८४७		ec
काशी	७५७, १२०३		१ ७४, ६६. १०२, १३८,
कासम वाजार	1179		१४८,१४४, १७४, २३७,
<del>क।</del> मसी	१०६२		२४१, २५६, ३२६,
किश्चनकोट	ب دوع		33¥, 25€, ¥6₽,
किमनगढ	48, 880, 844, 787.		४१८, ४६३, ४७६,
	¥64, ¥43, ¥44,¥46,		\$\$¢, \$¢¢,
	७४७, ८४८, १७५	कोठो ग्र.म	न्द्रक, ११४४
कियनपुरा	1111	काशास कोसी	3.4
कुवामग्र	#£\$	कामा कोशलदेश	₹3₹
सुत्रह	Xos.		१०६९
कुष्ट (गांव)	<b>7:</b> 4	संक नगर	२२ ५
कुन्दनपुर	608	सहगदेश	447
कुम्भावती (कुम्हेर ?)	३०५, ह्यू ४	लंबार	3.00
<del>कुम्हे</del> र	रैन, ५३, ३४न, ७४६,	ल <b>ौलो</b>	२४३,४६७
	5Y9, 10E4	सार्जुरिकपुर	x48
<b>कु</b> र <b>श्य</b>		सुरई	१५•
कुरुजांगलदेश सुरुजांगलदेश	प्रहर	खुश्यालाश्रपुर	¥• <b>२</b>
क्रमलगढ -	७३, ३६३		796
कुसमनगर	१३७, ६३६	क्योह∙ी (डीगके पास)	₹•₹, ४५१
हुन्यागद इस्टागद	<b>U</b> F3	गअपुर	***
D	हेर्, ४व२, ४४व	मदबाल	२७७

गंधार		<b>[ १२७१</b>
गमार गंबारापुर	३२१, ३६२, २७१ सीबापुर	98
गांगरह	६१० घटयाली	₹ <b>१</b>
गाजीका बाना	३०३ घनेरिया	₹₹.
गिरधरका	६८ घाट	46 1803
गिरनार	२० घासा	794 841
******	१०३, २६६, ३५६. घिनोई दुर्ग	348
	४२३, ६४४, १६१, धोघानिल	54¢ 3¢\$
	१०२६, १०४३, ११७२, योषा	995 e0e\$
गिरनी	<b>११</b> ६४, ११६६ <b>च</b> न्दनपु∞	**** \$\$\$
गिरिपुर	मम्ब सम्देरी	नदर ७०, १३६, १४ <b>८</b> .
34	६,३५,१:८,३२७,	१७४, १६६, २४६,
	३६६, ३८८, ३६०, चन्देशी	250, XXX, 6X2
	<sup>६</sup> १४. ५१०, ६१२, चन्त्राप	२७७
गीरसोपा नगर (क		48.
गारकाचा चन्द्र (क	गाटक) ५१६ चन्द्रापुरी	963, 96€
गुढा	१०३१ चन्द्रावनीषुरी	१३३, ४१३, ७४२
गुजरःत	<sup>८४८</sup> , ११७१ चमस्कारजी	3 6 8
युअपर देश	३३०, ४३७ अस्पानगरी	030
गुपाओ	३१० चम्पापुरी	A⋬€
गुआरंद देश	५६० चन्यापुरा ७६२ चन्यावती	३१८. ३२७, ५०४
गुरुवासपुरी	843 067 4641401	1 x, 857, 868, 856
गेगमा	,	३२३, ३३३, ३३४,
गैस्होसी	<b>6</b> 88	३६०, ३८२, ५७४,
गोठडा	770 378 305 475	४४७, ४६१,६१४,
	₹¥१, ₹६=, ¥१६,	६५६, ६६४, ७०१
	४६३, ४६४, चाउण्ड	* tr
ोप: चस	४७०, ६९१ चास्स	१६, ५०२
गपन्त्रस	१४०, १८५, १६१,   वाटमू	१, १३४. १४२, २०५,
	२०६, २६६, ४६६,	३९२, ४४२, ४६५,
	६७०, ११४४, ११८८	४७६, ८५७, ६३८
विश्विरी	वांदनगाव महावीर ४४५	368
<b>ब</b> देश	विसाह	*460
डीपादवंगाब	। चनकूट	980
रहीशीय पलन	श्री अ	446
वियर	१३€ १४०, <b>६७०</b>	११२, ४४८, १११६ १११८

६७१		१४१,१६०,१६२, १०३,
***		२०४,२०६,२४४, २७६.
११७१		३२०,३२४,३३१, ३३४,
११७४		३६३,३७७,४०३, ४२२,
3,4€		६०१,६१७,६१=, ६६६,
१४७, ६४४		≤₹ <b>६, १२€, ११०</b> ६,
858		११६६, १२०६
3×4,33	_	(जहांनाबाद) ४८१
થ १२	_	500
£ <b>Y</b> \$		वैश्वे, ३६०
४७२, ४६१	-	<b>४</b> ८७
<b>६</b> ६६	_	१३८
980	<b>ब</b> ंदर्ग	A 6 3
-		3111
		£ £ 3
• •	बहानाब.द	cx,co, ! Ec, ?xe, xc !
	<b>ब्रुनागढ</b>	१६१
	जैसलमर	٧,
		२६३,४१८,४२५, १०२६
		<b>३१</b> २
**		१६८
		Ars
		३८८, ४२६
	जोधभग	368
	जीवनेर	१६४,२००, २३०,२३४,
848,883, xe8,868.		२७७,६१७,६४६, १६०,
१०७		€७४, १२०४
<b>ध</b> दे४, ४३४, ४५२,५३८,	<b>अनुवा</b>	₹¥•
६६१,६६२, ७५७,=६०,	भाडोन	vet
EEN,604,606, 676,	ऋांकरी	¥ţ•
88c, 8082,8042,	भःकरापःहन	१४१,२ <b>१४,३१२,७१०</b> ,
tost, ttow, ttsk,		# <b>?</b> £
\$\$\$\$	स्रावादाद	141
470		2234
14, 068, Yo, 186, 186	मिलाय -	70,988,5ex
	***  **  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  **  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  **  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  **  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  ***  **  ***  ***  **	१ १६० १ १६० १ १६०४ १६०४ १६०४ १६०४ १६०४ १

टोडा	<b>६४,७४,१०३,११</b> २२ <i>२</i> २	तेजपुर	
-10.	308,300,388, 360,	तजपुर तोडागड(टाडागड)	<b>१२</b> + <b>१</b>
	\$44.463,469, 600	धनाट दुर्ग	२७२, ४१८,
	XX3,883,886,87.6	धर्मपरा	२४२
टोडाभीय	€0, €05€	धर्म पुरी	1 = 9
टोबा रायसिंह	१, ४१, २६६, ४०४	धूलव	¥27
	<b>43</b> 2	्र बुलंबगढ	६३२, ११४०, ११४६
रायसिंह का टोडा	328	<b>घीलपु</b> र	७ <b>४</b> ⊏ १•३२
रोक	3, 980, 938, 38.,	थभग पुर	र कर≺ ७२५
	95.	थागा	87X 87X
डिरगी	785	यालदा	( 7 x 5 c to
डी व	१x, २१३, ३६७, ४१६,	दबलाना	Y, \$43, 343, 368,
	४०४ ५६६,६७२, ८०३		¥82, <b>%</b> 67
बहुका ग्राम		दिस्सा	₹, १०१, २७३, ३०८,
<b>श्री</b> ह्याना	X\$		३६४. ५७२. ६४४. ६४८.
ड्र गरपुर	११ ६१२ ११35, 1200		E¥4, \$063, 1111,
<b>डिमा</b> नटीपुर	£ ? 3		₹₹₹0, <b>₹₹७४</b> , ₹₹€0
डू ढार	98	दिलिकाम डल	<b>५</b> ०६
द वाहर देश (वृदाह)	२६५, ३१२, ३६१, ४०८	दीघ (डीग)	115
तक्षकपूर (टोबारायसिह	) २८, ११२, ११६, १६६	दीवपुर	884
	१६७, २३३ २६६, ३०=,	दीषंपुर (डीग)	२६४, ३२१, ८१७
	३३३, ४०४,४४२, ४४४,	दूरगी	२२, २५, १३१,
	४६४, ५०६,५६६, ६०७		१४६, १६०,२८८, ३६८,
	६०८, ७४४,८०४, ८४६,		¥08, €00, ६58, €28,
	११८६ १२०४		<b>१०१</b> १
तक्षकमहादुर्ग (टोडारा	पश्चिष्ठ) ३६२, ७०३	देउल ग्राम	485
<b>सरज</b> जिनग <sup>रे</sup>	२२४	देलवाडा	XžX
तसपुर	600	देलुलिब्राम	865
सावगर्व	\$ <del>2</del> ¥	देवगढ्	१२४, ३०१,३७८, ५२३,
तिवारा	७२, १२०४,		४५०, ७१५
तिहुनगरी	९५८	देवशिरि (दौसा)	१८७, २०४, ३४१,
<b>तु</b> गी	३६६, १०४३	देवगिरि (दक्षिण्देश)	98≅
	6.45	देवगो द	43 <i>2</i>
हु गीगिरि	7115	देवग्राम	६०द
<b>तुरसपुर</b>	६८३, ८२०	देवश	Xto

देवनाम	3 7 3	मगरचालदेश	<b>१३</b> ९
देवपस्ली	दर्व, ११३७, ११३६	न!गपुर	₹ . ६४, १ <b>६</b> ४, २४,१
<b>देवपु</b> री	३३४, ७१७		३६४, <u>५२२, ५३२, ६२४</u>
देवली	€ <b>€</b> •		७०६, ७६४
देवसाह नगर	१६	नागौर	४०४, ६३१, १०३७
देव्याड	338	नःषद्वारा	×
देहनी (दिल्ली)	२१=	नारमील	XX, £20
दोसा	१०, ६० .११८, १२३,	मागरदा	<b>इ</b> ४, ह१६
	१३१, १३४,१४६, १७१,	निम्बौनीकमा	€ १ ⊏
	१८०, २०७,२१६,  २३५,	नि वाई	s o t
	२४६, २६८,२८३, ३०६.	नीमच	Xoo
	३३०, ३४१, ३६१,३५७,	न्गामा	30€
	३६५, ४०२, ४६८,४००,	नृत <b>नपु</b> र	398, €28
	६७१, ६६६, ७७=, ७=३,	नृतसदन (राजमहत्त्र)	<b>પ્</b> રપ્ર
	८०४, ८८८, १०१४,	नुपहर्यं (गजमहन्त्र)	₹ 95
	\$e95	नेवटा	SoA
इब्यपुर (सामप्रा)	१२३, १:३, ध्रम् ६:२	नैमाप्र	१२०, २२१
द्वारावती	Yee.	<b>नैगा</b> नः	ም. <b>ዚ. ዓ.</b> ጳሱን, የንራ ጳሱሪ,
द्रोग्गीपुर (दुर्गाः)	724		<b>२१६,</b> २३३,२३७, १८६,
नगर	الاكتران وزه و المعادة		Bes, Bye, Etc Bro.
<i>नग</i> ले	638		૧૦૦, દાકાલા,દાષ્ટ્ર, દાષ્ટ્ર
नर्भारमापुर	575		दरेंह, ८०१,६६४, ६४४,
नस्याम	६४, ७११,२३४, ११७:,		89c, 995c
, , , , ,	9.00	â*	1 ne
	•	<b>नैमन्त्रा</b> र	<b>४</b> ९३
नयनापृर	£3.6	नोजाही (नीमाई)	208
नग्दर	१०१४	नीमार्ड	25.0
नारायम्	७४३, ७४४, ३१६,	नौतनपुर (ततनपुर)	oxf, age
(गढ) नचपुर	300	पचनाइ	y = ₹
नसपुर	* * * <i>t</i>	पशेवर	¥ \$ #
नवग्रामपुर	₹3 c	पंजाब	\$23
नवाबगत्र	3#¥, 880%	परसास्थल (केन्नोरायपाटन	) 783
नसीराबाद	¥€	पट्टमा	zie
नाई (दबमाना के पास)	¥€'5	पश	***
नागर नगर	<b>X</b> Xc	वरतासापुर	२ इस्

परानपुर		्ट पागुर (फागो)	
<b>पवस</b> पुर		४१७ चगरू •	x6c° x•€
पास्त्रानदेश		२३० <b>बह</b> वत नगर (ब	२३७, ७४८, ६०८
पःचोला	•	্ ২৬ ৰঙকাল	३२२
वाह्यम्		०४ वडीत	१४५
पानीपत	२६,		<b>\$3</b> \$
पा <b>यंपुर</b>		१७ बनारम	₹39, <b>火</b> 00
पालम	۶, ٤،		४२७
पा <b>लव</b>		् बराह	२३६, २६७
पःलकः (पालमः)	\$	े बयाना	४२७
पिगोरा	ŧo:	44000	१,२६, ४३,६६, ६९, १४७,
पिरोजपुर	ξ,		१४४,१६४, २३१, २३६
पुलिंदपुर	÷		२६३,३०१, ३३१, ३४०
पूर्णनगर	37		३६६, ४०४,४०८, ४१०,
परोजपुर	÷ 1		४४१, ४६६,४७०, ६६२
गोडलग्राम	- ?	•	E? c. c? 6, = x 8, = 6 8,
पोर्सानः			×3 =
<b>अ</b> गायग्र	35. 444 352 <b>4</b> 44 344 344		5 ? 9
	अस्यः सर्द्रा सर्द्रः हरू। अस्यः सर्द्रा सर्द्रः हरू।	€. वस्या	¥. ₹=,88, ₹88, ₹60.
<b>प्र</b> नागपुर	2 m 4 m 4 m 4 m 4 m 6 5 m		२४०, ३४१,३४४, ४६४,
प्रयःग	३२६, ४२४, ७०२		<b>5</b> ११, ∈२७
प्रश्ल <b>्यप्</b>	8(2	बसतपुर (राजमहल बे	989
पतेहपुर (भे <b>स्वाबार्टा</b> )	1340	नाम)	0,0
17.1 44141611	₹, E¥, १०१, १५१.	बहार। इर	***
	१४व १६० १६६, २३०,	बहोडानगर	£ <b>?</b> \$
	<sup>5</sup> ; '4, ₹ ≈ 8, ₹ ₹ 50, • 0 8,	वागडदेश	२०४, <b>३०१,३१०</b> , ३७४,
	:१६. :३०, ४६० <b>,</b> ४६४,		
	४७६, ४७३, ४६७, ६७४	बागीडोरा	४०६, १७३, ६८८
	७४८,६१६, १२७,१११५	बारापुर	११६०
	१११७	बारडोली	888
<b>8 8 8</b>	६७३	वालीग्राम	१ <b>१</b> ५६
रंगाबाद	₹₹	बाल्मीकपूर	४४५
सटन	१५०	बाबीढारे	२१०
ागी	=3, 147, 1=0, 28E.	बासली	₹8
	308, 380,384, 486,	बासब(डा	. 64=
	510	बासी	. ११६०
			¤?\$

विचाडा	\$ £ R		£24,£31, E=0,10X1
बीकाने र	¥60, X03, UX7. EU8,		१०५२, ११६१
	7355	म रतक्षेत्र	141
<b>शेव</b> सपुर	¥¥	माडल	\$X3
<b>गै</b> जापुर	प्रथः, ७६२	मादवा	१३, ३८, ६८, ११८,
गेल्ही	63		\$ x x , ∪ 3 € , ∈ x 3
<b>दुर</b> हानपुर	४६६	भादसोडा	· ¥ •
दुहारनपुर	6030	भानपुर	६२, ४हह
र् द <sup>े</sup>	१, ३१, ४३, ६०, ६१	भावगर	<b>≈१</b> ४
	<b>२६६</b> , २७०,२ <b>६६</b> , ३०२,	भाडःरेज	*= 6
	३०६, ३३४,३६०,३६६,	भिलडी	<b>२२</b> ६
	· 304, 304 388,486,	मील बाडा	4465
	xxa, €€\$,0x6' a= *,	भीलोडाग्रःम	<b>६४२, ११८०</b>
	६०७, ६०६,६१६, ८२७,	भी हर	प्र, ४०१
	E81. 530,560, 878,	<b>भुसाव</b> र	\$ F X
	१२०६	भृहा	¥45
<b>नम</b> पुर	२३१	भेदकीपुर	169
ोरी	9\$6	भेलपुर	973
ोंली	7 o 5	भेलमा	81.5
वावर	fox	<b>मै</b> मरोडदुगं	y <b>⊆</b> 3
गवतगढ	3 € ₹	भैसमागा	२१४
हरूदा नगर	१७०	भोजपुर	<i>७.</i> ४ <i>७</i>
दावर	<b>≡0</b> ₹	मक्त्रवाद।द	¥e'
<b>ब</b> रोठा	€€•	मगधः वादेश	\$73
<b>रत्</b> यूर	₹, ¥¥, ¥0, €3, 5¥.	<b>महतदुर्ग</b>	<b>२१</b> ४
3	ea, ११२, ११६, ११६,	मं डल ग इ	184
	१२१, १४६.१≈६, १६३,	महलदुर्ग	25%
	8c4, 8c4, 9.8. 989.	सङ्	tor
	२२७, २३६,३१३, ३२६,	<b>मंडीब</b> र	£¥3
	33¥, 355,36×, 36 9,	मदा	5353
	४०३, ४२८,४३०, ५०५,	मथुरा (भीगसी)	\$ 40, \$ c 7, 3 \$ \$ , e a o ,
	4 t=, 4xt, 669		=63, 686, 889=
	647. 400,58c, 005.	यम्मई (बम्बई)	-c+, e(e, ((4± 14±
	64E, 654,66E, E00,	ममारसपुर	*** ****
	ESE' ESO' ESR'ESR'	मरहठदेश	482
	1.1	-1 - Endan	424

			0055
मलयकेड	₹•	॰ मालवा	
मनारगढ़	¥£:		२३४, ४६०, ६१४
मलारसा	<b>6</b> 0.		1127
मलारसा हु गर	<b>*</b> 0.6		5 <b>44</b>
महाराष्ट्र	٤, د ډ د		५∙६
महारीठ	E9, 3=8		१८७, २८१, ३१९
(मारोठ)	808		480
		मुक्तःगिरि	१०३४
महाबीरजी	२१२. ३४ <b>४, ६५</b> ५	नुमोई (बदर्र)	४५३
महिम नगर	e \$ 8		₹₹•
महिसाला		3.4414	330
महीमान (महिसारगा)	<b>£</b> 30	<b>मु</b> लतास	1986
महुद्धाः	tro, 140, seo	मुहञ्चनपुरा रेक्ट	<b>t</b> uy
मागमजर नगर	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	मेडडा	863
माबीन् नी	2°43	मेडनापुर मेडता	₹\$
बाहरत्युर	₹0€3		ሂሂ•, <b>७</b> ०४
भाइरमा	***	मेदयार देश	३११, ३६०, ५६१
मारमपुर	355	मेदुपुर	१७३
माधवयुर	र हर ३५०, २ <b>⊏६</b>	मेदनीपुर	<b>*</b> * <b>£</b>
(मबाई माम्रोपुर)		मेहपाट	3.83
माधोगद	ext	मेल <b>सेडा</b>	४६१
गवाराजपुरा	30	मेव:ड	११०, ६३४, ६६३,
मानगर .	\$4.		\$\$88
र देवा इ	735	मेबाडा	335
।। रोड	१७६	मैनपुरी	३८४
	७१०, द१६,द२द, द४६	मोडी	<b>\$</b> ??
<b>ाम</b> पुरा	६३७, ११६२	मोजवा	255
371	¥. ¥8, ¥8, ६8, १03,	मोजिमपुर	X3
	१२४, १४३, १७४, २०७	मोजी मियाका गुढा	४८४
	२६६, ३५०,३८६, २४३,	मोरटका	, ξε.
	<b>११२, ५३७, ४४३,६११,</b>	मोहा	345
		मीजपुर	4.5 4.5 4.5
		मीजमाबाद मीजमाबाद	•
लय देश	₹01, ₹0€,४00, 55€,	गानगाना६	११६, १७४, ३८८,
तव मंडल			¥00, ¥00,
194	\$6\$	A	६८६, ७०५
	२४२, २७१, २८७ म	विवाद	११०६

_		ि पान एवं नगर नामाव्यान
योगिनीपुर (रि	त्रली) ७३,७४,⊏२,२२४, स्दायलकीमदी	
	३६३, ११७४ महत्त्रगपुर	१८६, ३८४
योध्यु र	चंद्र र १८७५ व्यक्तिमध्ये । चंद्र	७५०
रस्प कपुर	१०१० स्वाधाः	<b>5</b> ₹ <b>=</b>
रगाओडपुरी	३६० रोहनक	हर्द, ट्रु
रगाथसभीर	१२०, २१४, ६२६ गोहिसक सक्त	300
	१०२३, १०६६ (रोहतक)	1998
रगाथवर (ररायभ	गैर) १०२४ गे <i>िनग</i> ड	
ररगपुर	१००६ (गीतनक)	33.
रस्यर नगर	००० गोहितास नगर	
राउपुर	७१२ (रोहनक)	0.0.3
राधरमपुर	७६५ लकानगरी -	
राजगढ	१४१, ६२४ लघरवसिकी	Yyt
राजनगर		::
राजपाटिका नगर		<b>१</b> +43
राजपुर		8 M S
राजमहत्त्	10.5-0-0	भ्य <b>क्ष, ६०६, ११</b> ११
	१६८, २०७,२८०, १३६, आवक्रक	= 3×, 2×0, \$1
,	38.3' 883'808' Rib	***, <**, x >.
,	€85' 868'80E' E0E'	485. 388. 732.
		€≈€, १११ -
राजस्यान	<sup>788</sup> लाडवंडा सागराः	7.48
रामगढ	१,०६ नामेरी	ter, : : : : xes, xes,
रामपुर	5 30, 389, WD.	
*.	२० - ला <b>ड</b> पुरा (कोग्रा	773
Times (sime)	१४४, २०१, ४४० जनग्र	4==
रामपुरा (कोटा)	\$50, \$65, 508, 580, MISCART IN 12.	<b>३११</b>
	Transmir	- ( c, 40 €
	३६८, ३७४, ४६५,४४६ शमणाबाद	90 1
रायदेण	२००० शासमप्र	(oy
गंद रायस्य	३७४ माहमदानाबाद	E 0 19
रिम्बदेव	११४० माहपुरा	\$• <b>X</b>
रिगो नगर	<sup>ददे</sup> < शिक्पुरी	e3f
रिस्मीपुर		१८१
रितिबासानगर	7 114161	85¥
स्पनाथगर	. 41148	\$8. 850, 883, 450,
	१११	2 ce, 4 c c
		₹4€, 4€ ₹

		1 4406
<b>शेरपूर</b>	केंदरे, ७०३, १००३ सामपुर	
<b>गव</b> पुर		६००
गौरीपुर बटेश्वर	. ६३१ सामलपुर	=32
श्रीपत्तनसर	<sup>५</sup> २४ सामवाहा	३६, ४४, १०८, २३५.
थीयत्तनपुर	₹•	₹0€, ₹€0, ¥ <b>50,</b> ¥₹¥,
श्रीपद्या	30	495, 484, 588,5EE
श्रीपुरा	9 C &	६६२, ७६०, ८१३,८६२,
सर्वारी	ઝશ્ર	e==, <b>११</b> 44
सकूराबाद	११४ सागानगर	₹€३,
मकाशद्र ग (मध्यदे	€२० सागःनेर	१०३, ११६, ११६,२१६,
सगरबाहापुर	अस्य <i>ल</i> , ७२३	2×0, 2×8,388, 3∈x,
मयामपुर	७५२	408, XE3, K3K, OK4,
मगोने	१०४, २६४, ७४२, ८२४	₹0¥€, ₹0€E
मदारा नगर	२०४ मागावती	? <b>\$</b> \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$
मन्मेदशिखर सन्मेदशिखर	६१⊏ सागर(झाकभ	(री) ==३, ६६१, १४४
मन्मदाशला मन्मदा <b>य</b> ल	दर <b>१, १०७६ साज</b> पुर	
	<sup>१०४३</sup> , ११७०    सामगिरपूर	वे <b>२</b> ४
सरबाह	३७० सायपूर	£X5
स≖ज नगर	२६७ सारमंगपूर	७६४
मरोज :	<b>४०३ सार</b> गपुर	£3=
सरोजनगर	<b>१</b> ३५ माली	रथर, २६५
सरोजपुर	७८,६२७ मालोडा	<b>१</b> •३१
सरोवा	२६७ मावला	<b>६१</b> २
समूबर	६३१, ८१२, ८४७ सासनी	*\$\$
सबाई माघोपुर	८४, ६८, १००, ११०, सामवानी	Aé.
	१२० १२३, श३४, साहपुरा	₹
	\$45, \$95 \$50, \$55, \$16get	x = 0, = = 4, 6 \$ x , 6 \$ x ,
	२३७.२६२,२∈२. ५११ माहीसेडा	६२३, १००२
	५२४, ६४१, ७९४,=२८,	४५०
		७१५
सहारनपुर	. ,	के <b>०१, १४६</b> ,२०१, ३०१,
साकेता	£64	६७४, ६१८, ७६०
	१०६६ सिकंदरा (ग्रागरा 	) =२०. १११६, ११२०
सामूरम	ः४६, ३८५ सिद्धवरकूट	ĉ••
मागरवपुर -	६५१ सिरपुर	७१८
सागपत्तन	३६, ६५, ३०२, ३२१, सिरोज	१८८, २१७, २८०,३६२,
	<b>५</b> ६८	६१४, ७४६

विरोजपुर	331	सोसापुर	**
सिहपुरा	३७१	स्कवनगर	2734
सीकर	= ? ?	स्वामी	<b>\$</b> 1.0
सीगोसी	₹5¥	(गढ) हरसोर	६३८
सीलोर	YYĘ	(श्री) हरिदेश	२ <b>१</b> ८
सीसवासी	३० <b>५, ४</b> ६७, ६२६	हरिदुगं (किश्वनगर)	४७३,४६०, ४६१, ६०४
मुजानगढ	***	हरियागा	\$ 6 5
सुवासपुर	3 • 6	हसनपुर	494
नुदारा	XXX	हस्तिकातपुर	YSY
सुनेश	tex	हस्तिकांतिपुर	41
न्रोज नगर	48%	ह <b>सपन</b> न	३७१
मुलतास (पुर)	१०६७	हाजीपुर	3 8 9
सुबर्गापच (सीनीपत)	१६२, ३६३	हाडीतीदेश	<b>x • = , X = E , §</b> = =
सुसनेर	768, 558, 88XX	हाषरस	£\$
सुस्थान नगर	२५२	हासोट	35 <b>0'A5</b> 8'633
सूईनगर	ሃ.ኳሃ.	हिण्डीन	42,66,286,389,346,
सूरत (बदर)	E:, 120, 544, 514		305,308
सूरतगढ	X • &	होरापुर (हिण्डोन)	₹¥,₹∶ <b>₹.</b> ¥◆•, <b>६</b> ¥०
	603,X0X	होरापुरी (जियडौन)	२०१,३३१,३४२,००६
केंगला	¥23	हिम्मतपुर	६७४
सोजन्या	35€	हिसार	१६६,१८४,१४६,६३१
मोपुर	<b>4 • \$</b>	हिबसार (हिमार)	Fox
मोरठदेश	<b>११</b> ६=	हिमार परोजयत्तन	<b>₹</b> • 3
<b>मौ</b> रीपुर	YC# 535, \$XX	<b>हों</b> डोमी	3 \$ 4 4, 5 4 7 , 6 7 8
-		•	

## शुद्धाशुद्धि विवरण

पत्र संस्था	पक्ति	श्रमुद्ध पाठ	गुढ पाठ
Ş	28	देवेन्द्र चन्द्र मश्चि	-
3 \$	Y	चयार्थ जयार्थ	वेषेन्द्र चन्द्र गरिंग
3.5	१६		जबार्यं
8.5	•	समाज्य भएञ्रं ग	सञ्भाग
90	3.5	भगत्र श निपनावति	शकृत
<b>હ</b> હ	ŧ		नियलावनि
95	२	वियानीस ढाम्मी सिद्धान्त	बियालीस ठार्गी
50	<b>?</b> 3	स्स्रान्त तदान्माये	वर्म
१०५	* 6	पराज्याय चतुंदशी	तदाम्नावे
ररभ	*		चसुद मो
१५२	? €	दोनशान तप मावन दीवन जी	ादानमील तप भावना
₹ <b>= ¥</b>	3		द <sup>9</sup> नान-श्री
<b>†</b> ‡<	€,११,१३,१५,१७,१€	प्रतिउ गियारा प्रति स० २,३,४,४	प्रति उशियारा ,प्रति स० २(क) ३(क) ४(क)
tvt	<b>?</b> =		*(事) も(事) ゆ(事)
188	χ χ	बीरसेनामिधः :	वीरसेनाभिधे
₹४६	· .	चन्द्रप्रभा चैत्यालये	चन्द्रप्रभ चैत्यासये
<b>१</b> ४६	- *	बुद्धि वि*******	बुद्धि बिलास
₹¥ <b>c</b>	ς υχ	तलिप	मे प्रतिनिष
<b>?</b> ¥ <b>?</b>	<b>ॅर</b> २०	भाषा सस्कृत	माषा-प्राकृत
tx3	₹•	१-४७	<b>{</b> \$\$0
<b>१</b> ६•	२०	महा-प०	— महा प०
<b>१७३</b>	¥	लोकामत	लोक्यमत
₹७६	·	सागर धर्मामृत	सागारवर्मामृत
718	? ?!	मगसिर मुदी १४	मंगसिर सुदी ५
₹•३	· ·	बहा ज्योवि स्वरूप	बह्म ज्योति स्वरूप
₹₹	<b>१</b> २	६वसानुमाक्षा	दादमानुत्र सा
777	ŚĀ	रचनिका	वदनिका
	3.0	सम्प्रक	सम्यक्
२२२	31	जपतु	नयतु

पत्र संस्था	पंक्ति	घगुद्ध वाठ	যুৱ বাচ
२२६	to.	प्रकरण-प्रतिरोध	प्रकरण प्रतिबोध
२२६	₹•	समसार	समयसार
३८	¥	नाषूसान	नाथूराम
२३⊂	ς	ममाचिदत्र	समाधि तत्र
₹¥€	<b>₹</b> 某	स <b>वराधनुष</b> श्रेक्षा	सवरानुप्रे 🖚 ।
₹¥=	, २	धवसहस्री	<b>प</b> प्रसहस्वी
२६१	२२	समुख	म मृ <b>ष्</b> य
२६१	. २%	हरिचन्द्र	हरिमद्र
₹€.9	2	मबि	€fe
>€=	4, 5, ₹•	ء, ف, ≥	<b>9,</b> α, ξ
<b>३१३</b>	₹¥	वदा	बहा
₹१%	₹₹	क्वेतास्बरनाय	<b>श्</b> तेताम्बराम्नाय
₹₹4	₹	पुरतकः	पुस्त र
330	¥	भाव:	भारका
\$ ÷ o	ŧ	<b>अ</b> गनन्ध <i>र</i>	जी व स्वर
\$3c	२४	<b>य</b> न्कुमार	धन्यमु मार
3.6●	5	सङ्गत	सम्कृत
à⊀⊏	k.	नेरहण <b>व</b> ो	तरहपथी
३४८	<b>३</b> ४	सङ्गत	मम्ब्रह्
3६.	, ₹⊄	दि० जैन मन्दिर	दि० जैन मन्दिर
		वयेग्वासीका	वयेर वालों का भावा
₹६.	₹ =	कविषस्य	कवियान
₹७१	<b>१</b> -	सवाई मानमिज	मवाई रामांसह
3.56	₹3	यणोधर	मनाह रामामङ्ग यद्योधर चरित्र-परिहानस्य
₹0₹	, २८	अनमेन	बयगन
35.9	.13	र० काल 🗶	र काल सर १४६६ से
Yot	<b>१</b> २		<b>幣间 </b>
803	<b>3</b> ¥		र०कान स०१८६७
885	·		प्रतिस∙ १
*\$0	₹₹	यशःकीति	भ ॰ यमः कीनि
४२४	· • •		बाहु चरित्र
¥9E			<b>ल</b> ी
Ask	₹•	धादितवार कवा ध	दित्यबार कवा
•-•	<b>२२</b>	कामाका वार्य कवा का	मका वार्य कथा

वत्र सस्या	पंक्ति	ग्रमुद्ध पाठ	मुद्ध पाठ
¥4.,		भ ० नरेन्द्र कीर्ति	ग्रा० नरेन्द्र कीति
66:	? >	भाषा -कया	मापा-हिन्दी/विषय कथा
ev=	1	उदय <b>मुग</b>	<b>चदयपु</b> र
639	5.6	मैपन	मैदक
656	6	नवमन	~ × 1
5 4 5	* č	र-ताव∩। कथा	रत्नावली कथा
635	. 3	श्राम्स्यार	श्रुतसागर .
621	·:	चुकीराम बद	चुन्नीलाल वैनाडा
128	÷ *	श्रस्रदेव	ध्र <b>भ्रदेव</b>
650	*	कत्रिका प <b>त कथा</b>	काजिका जन कथा
653	śλ	भीवसी	धनराज
4 14	\$	श्रस्मिक	श्रेरिएक
61.5	. /	वादीम कुमस्य	वादीम कु भस्य
$\alpha^{\pm}$	- =,	प्रति पोदप	प्रतिष्ठोदय
616	• 2	म्बन्य	स्वरूप
9 ≥=	ø.	यथ उत इत्त	ग्रंथ ते चड्त
299	\$ 5	कातत्त्रतं रूपं मान	ा कातन्त्र रूप <b>माला</b>
y: a	9	कृतन्द	न दन्त
956	غ د	र्पाष्ठ सबतन्सरी	पष्ठि सवत्सरी
¥ 2 5	15	कवि चन्द्रका	ं कविचन्द्रिका
\$35	¥	जिन पूजापुरदर	जिन पूजा पुरदर
5.23	9	<b>૫</b> ૧૫૪	4848
580	<b>t</b> ¥	रामगम	' रामरास
\$Y.	14	रामसीताराम	रामसीतारास
<b>\$ 6</b> X	<b>?</b> =	श्चरोपम	अनीपम
€ ∀½	6.5	. \$208	\$ <b>\$</b> 60 ×
7.8.4	€ 6	मुखथाम	मुखयाय
424	¥	विहाडी	दिहाडी
EXX	२५-२६	तसागच्छ	तवाग = छ
4.8.6	3.5	ब्र० सामान	म्र∙ सावल
६७१	ŧ	লান	भात
६७४	90	वंगप	<b>विशे</b> य
६७१	¥ Ş	सग्रह द्रश्य	संबद्द प्रत्य
<b>६</b> =२	२०	किशनदास	वाचककियान

पत्र संख्या	पंस्क	मसुद्ध पाठ सुद्ध पाठ
७११	ŧ	साथमिका साथनिका
<b>5</b>	*	*c*•
७२४	ę	सफलकीरती भकलकीरती
<b>७२१</b>	₹ ₹	प्राकृत सस्कृत
<b>9</b> 4•	₹?	यमरा पारवंताच यभरा पारवंताच
03x	₹¥	सस्कृत हिन्दी
७७१	43	स्तोत्रय स्तोत्रत्रय
હ કે છ	3	चतुर्विकाति जिन पूजा चतुर्विकति जिन पूजा
<b>= ₹ ₹</b>	ŧŧ	मु <b>ढ घरा</b> म मृद्धाम्नाय
<b>=१२</b>	₹¥	4.0
4t¥	ર•	नम्न भन्न
s to	₹1	चतुर्ति शतिका चतुर्विशतिका
द२४	¥	दश्रसक्षण दापन दशमकागोद्यापन
<b>44</b>	Y	बतुद्रामें चन्द्रपम बसद्रामे चन्द्रप्रभ
द३६	<b>₹</b> (	मातिक गानिक
EX\$	₹•	निवार्ण काड निर्वास काड
<b>=</b> ₹७	<b>t•</b>	प्यमी बतो पूजा प्यमी ब्रुप पूजा
<b>≈</b> ¥ €	२६	प्रतिस∙७ प्रतिस∘े
# 9 F	t.	उमार स्थामी समास्थामी
€9€	<b>१</b> २	सस्कृत हिन्दी
~~	5	विद्या विद्यानु बादा विद्यानुबादो
553	3.	रामो पैटीको गमो कार पैतीको
ۥ3	२८	भावा-विधान भावा-सस्कृत
ξ¥ξ	3.4	प्रकाम प्रताम
€ 45	35	मुपरि वमुर्वार
<b>ह</b> स.२	१७	— प्राकृत
£X£	٤	हिन्दी
દયદ	<b>१</b> =	— सम् <b>कृ</b> त
2 X S	₹€	म ॰ सकसकीति   जुनि सकसकीति
• 23	<b></b> †=	निर्वासि निर्वासि
133	<b>१</b> ३	पद्मनदिसूरि एक्टब्रमसूरि
583	×	मन्तिम <b>यन्तिम</b>
<b>१</b> ००२	3•	विहारीवास विहारीलान

वत्र संस्था	वंदि		[ <b>१</b> ३/=
₹••३		धशुद्ध पाठ	যুৱ বাচ
	<b>∌</b> &−∌¥	महाराष्ट्र मावा	-
took		द्वादश मासा	
1011	₹ ₹	वेतक कर्म वरि	महाराष्ट्र भावा
₹ • ₹ ३	<b>१</b> २	उपदेशतक	ाल र जाना जारिक्स
₹•२६	e	धनपतराय	उपदेश जतक
40.44	¥	षट्लेशा	बानत राय
\$0¥3	१६	पाण्डे जिनराम	<b>ब</b> ट्लेक्स <sub>।</sub>
१०४४	ŧ	गगाराम	पाण्डे जिनवास
₹•¥ <b>c</b>	२व	काहना	गगादास
	२६	सवाभ्य गार	<sup>द्या</sup> हसा
<b>१०६९</b>	₹¥	देह	सभाश्रु गार
\$00X	<b>? 19</b>	<b>मूभग्दाम</b>	देश
tesy.	₹ (	<b>व</b> ० जयसाम्	भूषरदाम
3== 5	8	चेत्र पृद्धल समाल	उपा० जय <b>स</b> श्यर
1065	16	रमण् सार भाषा	34 4014
2305	ξ	स्वनाः बली	रयसा सार भाषा
1060	tx	मनरामा	म्बद्मा <b>ब</b> ली
1401	*	प <b>वा</b> पध्यायी	मनराम
₹ <b>₹</b> ●₹	₹ €	वनासरीदास	पंचाच्यायी
1110	₹¥	प्रसित	बनारमीदास
<b>११२</b> २	*		<b>प</b> क्षिरु
११२३	<b>!</b> ¥	<b>ब्षट</b> ोटर	बुषटोडर
<b>११</b> २८	te	मनरदास	भूषरदास
1231	<b>२</b>	पाँधेजी पत	पाण्डे जीवन
<b>1136</b>	२७	बस्तावर सिह	वस्तावर सास
<b>?</b> ?<	•	सबस्य समय	र.विष्य सम्ब
₹₹€	4.	दुसतीसी सीवना	गरातीकी आक्रम
\$AA	*	सामह कारए। वा इंडी	सोतह कारण पांसडी
trr	1.	<b>द</b> ाला भास	होलीशस
tve	₹€	निष्या दुकर	मिच्या दुक्तद
120	99	सबाम सनासु :	वंबोध सनागु
Na.	5	नाडका ३	मोडन
<b>ξ</b> 3	र २७	मयाराम व	विश्व
<b>9</b>		श्रम्प ,	पिष
- •	*		वर्ष वेद

## ्र मुखामुद्धि-सिवद्धा

पत्र सच्या	पास	श्रमुद्ध पाठ	्युद्ध पाठ
<b>११७३</b>	4	वैद्यिक	नेविक
११७५		युटका सम्रह	प्रविशय्ट साहित्य
<b>११७</b> ६	43	ग <b>मं वक्रवृ</b> स	गर्भ पण्युस
११७६	₹¥	जिनमतका रब्यान	जिनशतकारव्यस कृति
		<b>有</b> 門	
\$ <b>\$ 0 \$</b>	ર×	इलायुष	ह्मायुष
<b>११७€</b>	* *	चन्द्रोमीसन	<b>ब</b> ल्द्रोन्मीलन
<b>११८</b>	16	पञ्जुष्मा कहा	पण्डम्भाकहा
<b>११</b> ==	₹€	परदेशी मतिबोध	परवेशी प्रतिकोध
1167	4.R	रक्षसम्बारव चनिका	रयसार वचनिका
2 SEX	35	मतुं होर	सर्वेहरि गतक
1125	* *	सोमकवि	स्रोमकवि